शब्द-संख्या—२११२७

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

दूसरा खंड

[ख—त]

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच. डी.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी के प्रेमियो और सेवियो के सामने मानक हिन्दी कोश का यह द्वितीय खण्ड प्रस्तुत करते हुए हमे विशेष प्रसन्नता है। इसके प्रथम खण्ड के प्रकाशकीय वक्तव्य तथा सम्पादक के "आरम्भिक निवेदन" मे इस कोश के उद्देश्य तथा प्रयोजन के विषय मे सब बाते यथासम्भव विस्तार से कह दी गयी हैं। हिन्दी जैसी जीवित और विकास की ओर गतिशील भाषा के कोश का प्रणयन कभी सर्वथा सर्वांगपूर्ण नही हो सकता। राजभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित हुए हिन्दी को अभी थोड़ा ही समय हुआ है। पिछले कुछ वर्षों मे तीव्र गति से हिन्दी मे नये शब्द आये हैं। पिछली कुछ सदियो से जिन कतिपय विदेशी भाषाओ का सम्पर्क हिन्दी से रहा है उनसे कही अधिक विदेशी भाषाओ से हिन्दी का सम्पर्क अब होने लगा है। अपने देश की सहोदरा भाषाओ से भी हिन्दी का सम्पर्क अब बढने लगा है। जब हम यह चाहते हैं कि कम से कम समस्त भारत के लोग अन्तरप्रादेशिक विचार-विनिमय और भावाभिव्यक्ति के लिए हिन्दी का माध्यम अपनावें, तब इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है कि हम हिन्दी के क्षेत्र को कितना व्यापक बना रहे हैं। हिन्दी की उप-भाषाओ के बहुसख्यक सेवक भी अपनी रचनाओं से हिन्दी के शब्द-भण्डार की अभिवृद्धि कर रहे हैं। ऐसी अवस्था मे हिन्दी के सर्वांगपूर्ण कोश के प्रणयन का यह कार्य सूत्रपात्र मात्र कहा जायगा।

हमे खेद है कि प्रथम खण्ड के प्रकाशित होने के तुरन्त बाद द्वितीय खण्ड प्रकाशित न हो सका। इस बीच कुछ समय बीत गया। मानक हिन्दी कोश को पाँच खण्डो मे प्रकाशित करने का विचार है। हम प्रयास कर रहे हैं कि आगे के सब खण्ड शीघ्र प्रकाशित हो जायँ।

प्रथम खण्ड के प्रति हिन्दी के मनीषी विद्वानो तथा अन्यान्य हिन्दी-प्रमियो ने जो सद्भाव प्रकट किये हैं उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

हम इस कोश के प्रधान सम्पादक, उनके सहयोगी तथा अन्य ऐसे सभी लोगो के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होने इसके मुद्रण और प्रकाशन मे विशेष योगदान किया है। सम्मेलन मुद्रणालय के प्रबन्धक और कर्मचारी अपने ही हैं फिर भी उन्हें साधुवाद देना आवश्यक है क्योकि कठिन परिस्थिति में विशेष सतर्कता के साथ उन्होने इसके मुद्रण का कार्य सम्पन्न किया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव, प्रथम शासन निकाय

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अ०—अगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक मे) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अ० य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियो की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोक०—कोकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थ-शास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावा-द्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोल मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखे
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपु०—नपुसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—प० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
प०—पजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पु०—पुलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिन्दी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रा०—फ्रासीसी भाषा
बग०—बगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बु० ख०—बुदेलखडी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक सज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावे
मुहा०—महावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवा-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात हिंदुस्तानी जहाजियो की बोली
लैं०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखे
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृ०—शृंगार सतसई
स०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य मे प्रयुक्त होता है।
†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास।
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास।
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास।
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास।
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
प० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष०त० —षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनो पाणिनीय व्याकरण के सकेत हैं। इनके अर्थ है, 'पृषोदर' आदि शब्दो की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दो की सिद्धि। जिन शब्दो की सिद्धि पाणिनीय सूत्रो से समव नही होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियो का प्रयोग किया जाता है। इन विधियो से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

मानक हिन्दी कोश

दूसरा खण्ड

ख

ख—देवनागरी लिपि मे क वर्ग का दूसरा अक्षर जो अघोष, स्पृष्ट तथा महाप्राण है और कठ से उच्चरित होता है।

ख—पु०[स०√खन् (खोदना)+ड] १ गड्ढा। २ शून्य स्थान। ३ आकाश। ४ निकलने का मार्ग। निकास। ५ छेद। सूराख। ६ बिल। विवर। ७ ज्ञानेन्द्रिय। ८ कूँआ। ९ तीर से लगा हुआ घाव। १० नगर। शहर। ११ सुख। १२ गले की वह नाली जिससे प्राणवायु आती-जाती है। श्वासनलिका। १३ गाडी के पहिये की नाभि का छेद जिसमे धुरा रहता है। आखा। १४ जन्म-कुडली मे लग्न से दसवाँ स्थान। १५ विंदु। सिफर। १६ सूर्य। १७ शब्द। १८ क्षेत्र। १९ कर्म। काम। २० अभ्रक।

खंक†—वि० [स० ककाल] दुर्बल। बलहीन।
वि० दे० 'खुक्ख'।

खकर—पु० [स०√खन् (खोदना)+क्विप्,√कृ (बिखेरना)+अप्, खन्—कर कर्म० स०] बालो की लट। अलक।

खख—वि० [स० कक] १ छूछा। खाली। रिक्त। २ उजाड। ३ सुनसान। ४ दरिद्र। निर्धन।

खखणा—स्त्री० [स०] घटी, घुघरू आदि के बोलने का शब्द।

खखर*—पु० =खकर।
वि०=खख।

खँखरा†—पु० [देश०] १ ताबे का बडा देग। २ बाँस का बडा टोकरा।
वि०=खाँखर (खोखला)।

खँखार—पु०=खखार।

खँखारना—अ०=खखारना।

खग—पु० [स० खड्ग] १ तलवार। २ गैडा।

खगडा†—वि० [?] १ उजड्ड। २ उद्दड।
पु० दे० 'अगड-खगड'।

खँगना†—अ० [स० क्षय] कम होना। घटना। छीजना।

खगर—पु० [देश०] १ एक साथ चिपकी और पकी हुई कई ईंटे या उनके टुकडे।
वि० १ सूखा। शुष्क। २ दुबला-पतला। क्षीण।
मुहा०—खगर लगना=सूखा नामक रोग होना, जिससे शरीर दिन पर दिन दुबला होता जाता है।

खँगवा—पु० [देश०] पशुओ के खुर पकने का एक रोग।

खँगहा—वि० [हि० खाँग+हा (प्रत्य)] (पशु) जिसे खाँग हो या निकला हो।
पु० १ गैडा। २ सूअर। ३ मुर्गा।

खँगारना—स०=खँगालना।

खँगालना—स० [स० क्षालन, गु० खखाडवूं, मरा० खगडणे] १ किसी पात्र के अदर पानी डालकर उसे हिला-डुलाकर थोडा धोना। २ पानी से भरे हुए बरतन मे कोई चीज डुबाकर उसे हलका या थोडा धोना। ३ ऐसा काम करना कि किसी के घर की चीजे निकलकर इधर-उधर हो जायँ। चालाकी से सब कुछ ले लेना या नष्ट कर देना। ४ अदर की चीज हिला-डुलाकर बाहर निकालना।

खँगी—स्त्री० [हि० खँगना] खँगने अर्थात् कम होने या छीजने की अवस्था, क्रिया या भाव। कमी। छीज।

खँगैल—वि० [हि० खाँग] १ (पशु) जो खाँग या लबे दाँतो से युक्त हो। जैसे—गैडा, हाथी आदि। २ (पशु) जो खँगवा रोग से पीडित हो।

खँगौरिया†—स्त्री०=हँसली (गहना)।

खँघारना†—स०=खँगालना।

खँचना†—अ० [हि० खाँचना] १ खाँचा जाना। २ अकित या चिह्नित होना।
अ० [हि० खाँची] पूरी तरह से भरा हुआ होना।
†अ०=खिचना।

खँचाना—स० [हि० खाँचना] १ किसी से खाँचने (अकित करने) का काम कराना।
मुहा०—अपनी खँचाना=अपने मतलब या स्वार्थ की बात कहते चलना, दूसरे की न सुनना।
२ दे० 'खाँचना'।

खँचिया†—स्त्री०=खाँची (टोकरी)।

खँचुला†—पु०=खाँचा (बडा टोकरा)।

खँचैया†—वि० [हि० खाँचना] खाँचनेवाला।

खज—पु० [स०√खञ्ज् (लँगडाना)+अच्] पैर और जाँघ की नसो को जकड़ लेनेवाला एक वात-रोग, जिससे रोगी उठने-बैठने या चलने मे असमर्थ हो जाता है।
वि० १ जिसे उक्त रोग हुआ हो। २ पगु। लँगडा।
†पु०=खजन (पक्षी)।

खजक—वि० [स० खञ्ज+कन्] १ जो खज रोग से पीडित हो। जिसे खज रोग हुआ हो। २ पङ्गु। लँगडा।

पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसमे से रूमीमस्तगी की तरह का गोद निकलता हे ।

खजकारि—पु० [खजक-आरि ष० त०] खेसारी ।

खजखेट—पु० [स० खज√खिट् (गति)+अच्]=खजन (पक्षी) ।

खँजडी—स्त्री०=खजरी ।

खजन—पु० [स०√खञ्ज्+ल्यु—अन] १ काले या मटमैले रग की ओर लबी पूछवाली एक प्रसिद्ध चिडिया जो बहुत ही चचल होती और बराबर इधर-उधर बैठती-उठती रहती हे ।

विशेष—इसी चचलता के कारण कविगण इसकी उपमा चचल नेत्रो से देते है ।

२ उक्त पक्षी के रग का घोडा । ३ गगादक नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम ।

खजनक—वि० [स० खजन+कन्] १ जिसे खज रोग हुआ हो । २ लँगडा ।

खजन-रति—पु० [उपमित स०] (खजन पक्षी की तरह का) ऐसा गुप्त सभोग जिसका जल्दी किसी को पता न चले ।

खजना—स्त्री० [स० खजन+क्यच्+क्विप्—टाप्] =खजनिका ।

खजनासन—पु० [स० खजन-आसन उपमित स०] उपासना के लिए एक प्रकार का आसन । (तत्र)

खंजनिका—स्त्री० [स० खजन+ठन्—इक, टाप्] दलदल मे रहनेवाली खजन की जाति की एक चिडिया । सर्पपी ।

खजर—पु० [फा०] [स्त्री० अल्पा० खजरी] एक प्रकार की छोटी तलवार । कटार ।

खजरी—स्त्री० [स० खजरीट=एक ताल] एक प्रकार की छोटी डफली ।

खजरी—स्त्री० [फा० खजर] १ एक प्रकार का छोटा खजर । कटार । २ एक प्रकार का कपडा जिस पर उक्त के आकार की धारियाँ होती है ।

खजरीट—पु० [स० खञ्ज√ऋ (गति)+कीटन] १ खजन या खँडरिच नामक पक्षी । २ सगीत मे एक प्रकार का ताल ।

खजा—स्त्री० [स० √खञ्ज्+अच्—टाप्] एक अर्द्धसम वर्णिक छद जिसके विषम चरणो मे ३० लघु और एक गुरु तथा सम चरणो मे २८ लघु और एक गुरु होता है ।

खड—पु० [स०√खड् (टुकडा करना)+घञ्] १ किसी टूटी या फूटी हुई वस्तु का कोई अश । टुकडा । २ किसी सपूर्ण वस्तु का कोई विशिष्ट भाग या विभाग । जैसे—रामायण का तृतीय खड । ३ किसी इमारत या भवन का कोई तल्ला या मजिल । (स्टोरी) ४ किसी धारा या उपधारा का कोई स्वतत्र अश । ५ कुछ विशेष कार्यों के लिए व्यवस्थित रूप से किया हुआ विभाग । ६ पुराणो के अनुसार पृथ्वी के नौ मुख्य विभाग जो इस प्रकार है—भरत, इलावृत, किपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रमा और कुश । ७ उक्त के आधार पर नौ की सख्या का सूचक शब्द । ८ किसी राज्य का कोई प्रदेश या प्रात । ९ कच्ची चीनी । खाँड ।

पु० [स० खड्ग] खाँडा नाम का शस्त्र । उदा०—किक्क मरण रह पाइ किक्क खल खडणि खडै ।—चदवरदाई ।

वि० [खड+अच्] १ खडित । अपूर्ण । विकलाग । विभक्त । २. लघु या छोटा ।

खड-कद—पु० [कर्म० स०] शकरकद ।

खडक—वि० [स०√खड+ण्वुल्—अक] १ खड या विभाग करनेवाला । २ खडन करनेवाला ।

पु० [खड+क] १ खाड या मिसरी । २ नाखूनोवाला प्राणी ।

खड-कथा—स्त्री० [कर्म० स०] १ कोई अधूरी या छोटी कहानी । कथा या कहानी का टुकडा या भाग । २ प्राचीन भारतीय साहित्य म, करुण रस-प्रधान एक प्रकार की कथा या कहानी जिसमे ब्राह्मण या मत्री नायक होता था और जिसमे प्राय विरह का वर्णन होता था । ३ परवर्ती काल मे और आज-कल भी उपन्यास का वह प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक खड या भाग मे अलग-अलग छोटी कहानियाँ होती है ।

खड-काव्य—पु० [कर्म० स०] ऐसी पद्यबद्ध रचना जिसमे किसी महापुरुष या विशिष्ट व्यक्ति के जीवन की किसी एक या कुछ महान् घटनाओ का विस्तारपूर्वक वर्णन होता है । जैसे—मेघदूत, सिद्धराज ।

खड-ग्रहण—पु० [कर्म० स०] वह ग्रहण जिसमे सूर्य या चद्रमा के सारे बिब पर छाया न पडे, कुछ ही अश पर छाया पडे । 'खग्रास' का विरुद्धार्थक । (पार्शल इक्लिप्स)

खँडचिला—पु० [देश०] धान की एक जाति । उदा०—औ ससार तिलक खँडचिला ।—जायसी ।

खंडज—पु० [स० खड√जन् (उत्पन्न होना)+ड] एक प्रकार की शक्कर या गुड ।

खडता—वि० खडित ।

खंड-ताल—पु० [कर्म० स०] सगीत मे, एक प्रकार का ताल ।

खड-धारा—स्त्री० [ब० स०] कैची । कतरनी ।

खडन—पु० [स०√खड्+ल्युट्—अन] १ खड-खड अथवा टुकडे-टुकडे करने की क्रिया या भाव । २ विभक्त या विभाजित करना । हिस्सो मे बाँटना । ३ कही हुई कोई बात अथवा प्रतिपादित किये हुए सिद्धात के दोष दिखलाकर उसे अमान्य या गलत ठहराना । (कन्ट्राडिक्शन) ४ अपने सबध मे किसी द्वारा लगाये गये आरोप या अभियोग का निराकरण करते हुए उसे झूठा सिद्ध करना । (रेफ्यूटेशन) ५ नृत्य मे, मुँह या होठ इस प्रकार चलाना जिससे खाने, पढने, बडबडाने आदि का भाव प्रकट होता हो । ६ कार्य की सिद्धि मे होनेवाली बाधा अथवा इससे उत्पन्न निराशा । ७ विद्रोह या विरोध ।

वि० खड या टुकडे करनेवाला ।

खडनक—वि० [स० खडक] १ खड या टुकडे करनेवाला । २ खडन करनेवाला । ३ जिससे कोई तर्क या बात खडित होती है । ४ कोई ऐसी परस्पर विरोधी बात जिससे अपने ही पक्ष का खडन होता हो । (कन्ट्रैडिक्टरी)

खडन-मडन—पु० [द्व० स०] किसी बात या सिद्धात के पक्ष तथा विपक्ष अथवा उसकी अच्छाई तथा बुराई दोनो के सबध मे दोनो पक्षो का कुछ कहना ।

खडना*—स० [स० खडन] १ खड या टुकडे करना । तोडना । २ हिस्से लगाना । ३ मत, सिद्धात आदि का खडन करना और उसे अयुक्त सिद्ध करना ।

खंडनी—स्त्री० [स० खड] १ मध्ययुग मे, वह कर जो राज्य बडे जमीदारो और राजाओ से लेता था । २ किस्त । ३ खडी ।

खडनीय—वि० [स०√ खड्+अनीयर] १ जो तोडे-फोडे जाने के योग्य हो। २ (मत या सिद्धान्त) जिसका खडन होना आवश्यक और उपयुक्त हो।

खड-पति—पु०[ष० त०] राजा।

खड-परशु—पु०[ब० स०] १ महादेव। शिव। २ विष्णु।३ परशुराम। ४ राहु। ५ टूटे हुए दाँतोवाला हाथी।

खडपाल—पु० [स०खड√पाल् (बचाना)+णिच्+अण्] हलवाई।

खँडपूरी—स्त्री०[हि० खाँड+पूरी] एक प्रकार की मीठी पूरी जिसमे मेवे आदि भरे रहते है।

खड-प्रलय—पु०[ष० त०] वह प्रलय जिसमे पृथ्वी को छोडकर सृष्टि का और कोई पदार्थ बाकी नही रह जाता और जो एक चतुर्युगी अथवा ब्रह्मा का एक दिन बीत जाने पर होता है।

खड-प्रस्तार—पु०[ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

खड-फण—पु०[ब० स०] साँप की एक जाति।

खँडबरा—पु०[हि० खाँड+बरा] १. एक प्रकार का पकवान। मीठा बडा। २ मिसरी का लड्डू। खँडौरा।

खड-मेरु—पु०[ब० स०] छद शास्त्र मे प्रस्तार के अतर्गत मेरु नामक प्रक्रिया या रीति का एक अग या विभाग।

खड-मोदक—पु०[मध्य० स०] गुड।

खडर†—पु०=खँडहर।

खँडरना *—स०[स० खडन]१ खड-खड या टुकडे-टुकडे करना। उदा०—ताहि सियपुत्र तिल-तूल सम खडरै।—केशव। २ =खडना (खडन करना)।

खँडरा—पु०[स० खड+हि० बरा] १ एक प्रकार का मीठा बडा। २ बेसन का बना हुआ बडा।

खडरिच—पु०=खजन (पक्षी)।

खडल—पु०[स० खड√ला (लेना)+क] खड धारण करनेवाला। †पु०=खड। (डिं०)

खडल छोर†—पु०[हि० खाँड+छोरना=खोलना] बुदेलखड मे होली के दिनो मे होनेवाली एक प्रकार की प्रतियोगिता जिसमे बाँस के ऊपरी सिरे पर बधा हुआ गुड और रुपया खोल लाने का प्रयत्न किया जाता है।

खड-लवण—पु०[कर्म० स०] काला नमक।

खडला—पु०[स० खड] छोटा खड या टुकडा। कतला। †पु०=खँडरा।

खडवारा—पु०=खँडरा (बडा)।

खड-वर्षा—स्त्री०[कर्म० स०] ऐसी वर्षा जो रह-रह अथवा रुक-रुककर हो अथवा नगर के किसी एक भाग मे तो हो और दूसरे भाग मे न हो।

खँडवानी—स्त्री० [हि० खाँड+पानी] १ पानी मे खाँड आदि घोलकर बनाया हुआ शर्बत। २ बरातियो के पास भेजा जानेवाला जलपान और शर्बत।

खड-विकार—पु०[ष० त०] खाँड से बनी हुई चीनी या सफेद शक्कर।

खड विला—पु०[?] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

खड-वृष्टि—स्त्री०=खड वर्षा।

खड-व्यायाम—पु०[ब० स०] ऐसा नृत्य जिसमे केवल कमर और पैरो को गति देते है।

खडश (स्)—अ० य० [स० खड+शस्] खडो के रूप मे। खड-खड करके।

खड-शर्करा—स्त्री०[उपमित स०] १ खडसारी। चीनी। २ मिसरी।

खड-शीला—स्त्री०[ब० स०, टाप्]१ वह युवती जिसका कौमार्य खडित हो चुका हो। २ दुश्चरित्रा स्त्री। ३ वेश्या।

खडसर—पु०[स० खड+सृ (गति)+अच्] चीनी।

खँडसार—स्त्री०[स० खड+शाला] वह कारखाना जहाँ पुराने देशी ढग से चीनी बनती है।

खँडसारी—स्त्री० [देश०] खँडसार मे बनी हुई अर्थात् देशी चीनी।

खँडसाल—पु०=खँडसार।

खँडहर—पु०[स० खड+हि० घर] १ वह स्थान जिस पर बनी हुई इमारत या भवन खड-खड होकर गिरा पडा हो। गिरे या टूटे हुए मकान का बचा हुआ अश। २ चित्रकला मे, किसी चित्र मे का वह स्थान जो भूल से खाली छूट गया हो और जिसमे सौदर्य के विचार से कुछ अकित होना आवश्यक तथा उचित हो।

खडा†—पु०[स० खड] चावल का छोटा टुकडा। किनकी। †पु०=खाँडा (शस्त्र)।

खडाभ्र—पु०[स० खड-अभ्र कर्म० स०] १ दाँतो का एक रोग। २ बिखरे हुए बादल।

खडाली—स्त्री० [स० खड-आ√ला (लेना)+क-ङीष] १ तेल नापने का एक परिमाण। २ वह स्त्री जिसका पति धर्मद्रोही हो। ३ छोटा तालाब। ताल।

खडिक—पु०[स० खड+ठञ्—इक] १ वह विद्यार्थी जो किसी ग्रन्थ के विभिन्न विभागो का अलग-अलग अध्ययन करता हो। २ एक प्राचीन ऋषि। ३ काँख।

खडिका—स्त्री०[स० खडिक+टाप्] १ दे० 'खडिक'। २ किसी देय राशि का वह अश जो किसी एक निश्चित समय पर दिया जाय अथवा दिया जाने को हो। किस्त। (इन्स्टालमेन्ट)

खडित—वि०[स० √खड्+क्त]१ (वस्तु) जिसका कोई अश या भाग उससे कट या टूटकर अलग हो गया हो। जैसे—खडित भारत, खडित मूर्ति। २ (कुमारी) जिसका कौमार्य नष्ट हो चुका हो। ३. जो पूरा न हो। अपूर्ण। ४ (विचार या सिद्धान्त) जिसकी त्रुटियाँ या दोष दिखलाकर खडन किया गया हो और उसे गलत ठहराया गया हो।

खडित-विग्रह—वि० [ब० स०] विकलाग।

खडित-व्यक्तित्व—पु० [स० ब० स०] मनोविज्ञान मे, प्रबल मानसिक सघर्ष के कारण उत्पन्न होनेवाली ऐसी मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य का अपनी चेतना-शक्ति पर पूरा-पूरा अधिकार नही रह जाता। (स्प्लिट पर्सनैलिटी)

खडिता—स्त्री०[स० खडित+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जो रात भर अन्यत्र पर-स्त्री गमन करनेवाले अपने प्रिय को प्रात पर-स्त्री-ससर्ग के चिह्नो से युक्त देखकर दुखी होती हो। इसके कई भेद है—मुग्धा खडिता, मध्या खडिता, प्रौढा खडिता, आदि आदि।

खडिनी—स्त्री०[स० खड+इनि—ङीप्] पृथिवी।

खँडिया—पु०[स० खंड+हि० इया (प्रत्य०)] वह जो कोल्हू मे पेरने के लिए गन्नो के खड-खड करता या गँड़ेरियाँ बनाता हो।

†पु० =खँड (टुकडा)।

खडी†—स्त्री०[स० खड] १ गाँव के आस-पास के वृक्षो का समूह। २ राज-कर। ३ चौथ नामक कर जो मराठे वसूल करते थे। ४ लगान या किराये की खडिका। किस्त।

मुहा०—खडी करना— =किस्त बाँधना।

खँडुआ†— पु०[हिं० खड]१ कुआँ जिसकी बँधाई पत्थर के ढोको से हुई हो। २ दे० 'कदुआ'।

खडेश्वर—पु०[स० खड-ईश्वर,ष०त] एक खड (देश) का स्वामी। राजा।

खँडौरा† —पु०[हिं० खाड +औरा (प्रत्य०)] १ मिसरी का लड्डू। २ ओला।

खँडौरी† —स्त्री०[स० खड] कूटे हुए चावल के टूटे कण।

खतरा—पु०[स० अन्तर] १ दरार। खोडरा। २ अतराल। कोना।

खता† —पु०[स० खनित्र] [स्त्री० अल्पा० खती] १ जमीन खोदने का उपकरण। जैसे—कुदाल, फावडा आदि। २ वह गड्ढा जिसमे से कुम्हार बर्तन बनाने के लिए मिट्टी निकालते है। ३ गड्ढा। गर्त्त।

खति—स्त्री०[डि०] १ इच्छा। उदा०—जब दैहों तब पूजिहैं, जो मन मझ्झह खति।—चन्दबरदाई। २ चतुरता। ३ चमका। उदा०—खति लागौ त्रिभुवनपति खेडे।—प्रिथीराज।

स्त्री०[हिं० खता] एक जाति जो जमीन खोदने का काम करती है।

खदक—पु०[अ०] १ किसी गढ, भवन या महल के चारो ओर रक्षा के लिए बनाई हुई चौडी तथा गहरी नाली। खाई। २. बहुत बडा तथा गहरा गड्ढा। ३. दो बातो या मतो के बीच का बहुत बड़ा अन्तर।

खदना †—स० =खोदना।

खदा †—पु०=खता।

खँदाना†—स० =खुदवाना।

खदोली—स्त्री०[हिं० खटोली] बच्चे का बिछौना।

खँधवाना—स० [हिं० खाली] =खदाना (खुदवाना)।

स० [?] खाली कराना।

खधा—पु०[स० स्कधक] आर्यागीति नामक छद।

†पु० १ =खडिका। २ =कधा।

खंधार—पु०[स० खडाधीश] १ राजा। २. मालिक। स्वामी। उदा०—षड षड का सील्या खधार।—नरपति नाल्ह। ३. छावनी। शिविर।

२ =स्कधावार(छावनी)। उदा०—उहाँ त लूसौं कटक खँधारू।—जायसी।

†पु०१ =गाधार।

खधारी†—वि० =कधारी।

खधासाहिनी—स्त्री० =खधा (छद)।

खँधियाना †—स०[?] (पदार्थ को पात्र मे से) बाहर गिराना या निकालना। खाली करना।

खंबायची, खंबायती—स्त्री० =खम्माच।

खभ—पु०[स० स्कभ, प्रा० खभ] १ स्तभ। खभा। २. किसी चीज को पकडे या रोके रहनेवाला सहारा।

खभा—पु०[सं० स्कभ]१. ईंट, पत्थर, लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई गोल या चौकोर रचना जिस पर छत आदि टिकी रहती है।
२ ऐसा आधार जो अपने ऊपर कोई बडी या भारी चीज लिये या सँभाले हुए हो।

खभात—पु० [स० स्कभावती] गुजरात का वह पश्चिमी प्रात या भाग जो इसी नाम की खाडी के किनारे है।

खभायची कान्हडा—पु०=खम्माच कान्हडा।

खँभार†—पु०[स० क्षोभ, प्रा० खोभ] १. क्षोभ। २ घबराहट। बेचैनी। ३ भय या उसके कारण होनेवाली चिंता। आशंका। ४ खेद, रज या शोक।

†पु०=गभारी (वृक्ष)।

खभारी—स्त्री०[स० काश्मरी, प्रा० कम्हरी] =गभारी।

खभावती—स्त्री०[स० स्कभावती] ओडव सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो रात के दूसरे पहर मे गाई जाती है।

खँभिया†—स्त्री० [हिं० खभा] १ खभा का अल्पार्थक रूप। छोटा या पतला खभा। २ खूँटा।

खभेली†—स्त्री०=खँभिया।

खँवँ—स्त्री० [स० ख] जमीन मे खोदा हुआ वह गडढा जिसमे अनाज भरकर रखा जाता है। खत्ता।

खँवँडा†—पु०[हिं० खँवँ] बहुत बड़ा खत्ता।

खँसना†—अ०=खिसकना।

खई†—स्त्री० [स० क्षयी] १. क्षयकारिणी क्रिया। २ युद्ध। ३ लडाई-झगडा। उदा०—खई मिटि जायगी। अरुसे ही के रस मैं।—सेनापति।

ख-कक्षा—स्त्री०[ष० त०] आकाश की परिधि। (ज्योतिष)

ख-कुतल—पु०[ब० स०] शिव।

खक्खट—वि०[स० √खक्ख् (हँसना) +अटन्] १ कर्कश। २. कठिन। ३ कठोर।

†पु०=खडिया।

खक्खर—पु०[स० √खक्ख् +अरन्] भिखारी की छडी।

खक्खा—पु० [अ० कहकहा] जोर की हँसी। अट्टहास। कहकहा।

पु० [हिं० ख (वर्ण)] १ खत्री। २. पजाबी सिपाही। ३. अनुभवी और चतुर पुरुष। ४. बडा हाथी।

खखडा—वि०=खोखला।(पूरब)

खखरा—वि०=खेंखरा।

खखरिया†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की पतली अलोनी खस्ता पूरी।

खखसा—पु०=खेखसा।

खखार—पु०[अनु०] खखारने पर मुँह के रास्ते निकलनेवाली बलगम।

खखारना—अ०[सं०क्षरण] १. पेट की वायु को इस प्रकार मुँह के रास्ते निकालना कि वह गले मे से निकलते समय शब्द करे तथा अपने साथ कफ या बलगम भी लेती आवे। २ उक्त प्रक्रिया से मुँह मे आई हुई बलगम को थूकना।

खखेटना*—स०[हिं० खदेडना] १ भगाना। २ पीछा करना। ३. दबाना। ४ घायल करना।

खखेटा*—पु० [हिं० खखेटना] १. भगदड। २. दाब। ३. चोट। ४. शका। ५ छेद।

खखेरा—पु०[हिं० खखारना] कलक। उदा०—मनहु विद्यापति सुनवर यौवति कहइते होये खखेरा।—विद्यापति।

खखोडर† —पु०[स० ख और कोटर] पेड के कोटर मे बना हुआ किसी पक्षी का घोसला।*

खखोरना†—स० [देश०] १ किसी वस्तु को खोजना। २ चारो तरफ खोजते फिरना।

ख-गगा—स्त्री० [ष० त०] आकाश गगा।

खग—पु०[स० ख√गम्(गति)+ड] १ वह जो आकाश या हवा मे उडता हो। जैसे--ग्रह, नक्षत्र, किन्नर, गधर्व, देवता, मेघ आदि। २ हवा मे पखो के सहारे उडनेवाले जीव। पक्षी। ३ वायुयान। ४ तीर। वाण। ५ वायु। हवा।

†पु०=खड्ग।

खग-केतु—पु०[ष० त०] गरुड।

खगना†*—अ०[हिं० खाँग=काँटा] १ गडना। २ चित्त मे जमना या बैठना। ३ लीन होना। ४ अकित या चिह्नित होना। ५ खडा होना। उदा०—सखि सूधे सभाय लख्यो भज जात सो टेढो ह्वै मारग बीच खग्यौ।—घनानन्द। ६ अडना। ७ उलझना। फँसना। उदा०— न्हात रही जल मैं सब तरुनी, तब तुव नैना कहाँ खगे।— सूर। ८ कसा जाना।

स० १ कसना। २ बाँधना। ३ लीन करना।

अ० [स० क्षीण] १ क्षीण होना। २ कम होना। घटना।

खग-नाथ—पु०[ष० त०] गरुड।

खग-पति—पु०[ष० त०] १ गरुड। २ सूर्य।

खगवार—पु०[स० खड्गवान् ?]गले का हँसुली नामक आभूषण। उदा०—पन्ना सौ जटित मानौ हेम खगवारो है।—सेनापति।

खगहा—वि० दे० 'खँगहा'।

खगातक—पु०[खग-अतक, ष० त०] बाज पक्षी।

खगासन—पु०[खग-आसन, ब० स०] १ विष्णु। २ उदयगिरि।

खगि†—स्त्री०= खड्ग।

ख-गुण—वि० [ब० स०] (राशि) जिसका गुणक शून्य हो। (गणित)

खगेंद्र—पु०[खग-इद्र, ष० त०] गरुड।

खगेश—पु०[खग-ईश, ष० त०] पक्षियो के राजा, गरुड।

ख-गोल—पु०[ष० त०] १. आकाश-मडल। २ ग्रह। ३ दे० 'खगोल विद्या'।

खगोलक—पु०[स० खगोल+कन्] = खगोल।

खगोल मिति—स्त्री० [ष० त०] गणित ज्योतिष का वह अग या शाखा जिसमे तारो, नक्षत्रो आदि की नाप-जोख, दृश्य स्थितियो, गतियो आदि का विचार होता है। (एस्ट्रोमेट्री)

खगोल-विद्या—स्त्री०[ष० त०] आकाश के ग्रहो, नक्षत्रो आदि की गति-विधि का विवेचन करनेवाली विद्या। ज्योतिष। (एस्ट्रानोमी)

खग्ग—स्त्री०=खड्ग।

ख-ग्रास—पु०[ब० स०] वह ग्रहण जिसमे चद्र या सूर्य का पूरा बिंब ढक जाय। (टोटल इक्लिप्स)

खचन—पु०[स० √खच् (बाँधना, जडना) +ल्युट्—अन] १ कोई चीज जडने या बाँधने की क्रिया या भाव। २ अकित करना।

खचना—अ०[स० खचन] १ जडा जाना। २ अकित होना। ३ अच्छी तरह से भरा जाना। ४ अटकना। फँसना।

स० १ जडना। २ अकित करना।

खचमस—पु० [स० ख√चम् (खाना) +असच्] चद्रमा।

खचर—पु० [स० ख√चर् (गति)+ट] १ आकाश मे चलनेवाले पदार्थ, प्राणी आदि। जैसे—ग्रह, नक्षत्र, देवता, मेघ, वायु आदि। २ पक्षी। चिडिया। ३ तीर। वाण। ४ राक्षस। ५ सगीत मे रूपक ताल का एक नाम। ६ कसीस।

खचरा—वि० [हिं० खच्चर] १ दोगला या वर्ण-सकर। २ दुष्ट। पाजी। ३ जो कोई बात जानते हुए भी बतलाता न हो। मचला।

खचाखच—वि० [अनु०] (स्थान) जिसमे आवश्यकता से अधिक व्यक्ति सट-सट कर भरे हो अथवा जिसमे बहुत अधिक सामान रखा गया हो। जैसे--गाडी का डिब्बा यात्रियो से या आलमारी पुस्तको से खचाखच भरी थी।

खचाना—अ० [हिं० खचाखच] खचाखच भरा जाना या भरा होना।

स० दे० 'खँचाना'।

खचारी (रिन्)—वि०, पु० [स० ख√चर्+णिनि] खचर।

खचावट—स्त्री० [हिं० खाँचाना] खचने या खचाने की क्रिया या भाव। खचन।

खचित—वि० [स०√खच्+क्त] १ जडा हुआ। जडित। जैसे—मणि खचित। २ अकित या चित्रित किया हुआ। उदा०—कुसुम खचित, मारुत सुरभित खग कुल कूजित ।—पत। ३ युक्त। ४ अच्छी तरह से भरा हुआ। खचाखच।

पु० ऐसा दुशाला जिसमे बहुत से बेल-बूटे हो। (कौटिल्य)

ख-चित्र—पु० [स० त०] १ वैसी ही अनहोनी, असभव या बे-सिर पैर की बात जैसी आकाश पर चित्र अकित करना है। २ ऐसी वस्तु जो अस्तित्व मे न हो।

खचिया†—स्त्री० दे० 'खाँची'।

खचीना†—पु० [हिं० खँचाना] १ रेखा। लकीर। २ चिह्न। निशान।

खचेरना—स० [हिं० खदेरना] दबाकर वश मे करना। उदा०--कैसे, कहौ, सुनौं जस तेरे औरैं आनि खचेरे।—सूर।

खच्चर—पु० [देश०] १ एक प्रसिद्ध पशु जो गधे और घोडी या घोडे और गधी के सयोग से उत्पन्न होता है। अश्वतर। २ दोगला अथवा वर्णसकर व्यक्ति।

खज—वि० [स० प्रा० खज्जखाद्य] (वह) जो खाया जाने को हो अथवा खाये जाने के योग्य हो।

खजक—पु० [स०√खज् (मथना)+अच्+कन्] मथानी।

खजप—पु० [स० खज्+कपन्] घी।

खजमज—वि० [अनु०] साधारण से गिरा हुआ। कुछ खराब। जैसे—आज तबीयत कुछ खजमज है।

खजमजाना—अ० [अनु०] (तबीयत) कुछ भारी लगना। अस्वस्थता सी जान पडना।

ख-जल—पु० [मध्य० स०] ओस।

खजला—पु०=खाजा (मिठाई)।

खजलिया—पु० [देश०] अगूर का एक रोग जिसमे उसके पत्ते सडने लगते है।

खजहजा—पुं० [सं० खाद्याद्य<प्रा० खज्जज्ज< खजहज्ज, खजहजा] १. खाने योग्य उत्तम फल या मेवा। खाजा। उदा०—और खजहजा आव न नाऊँ।—जायसी। २. खाजा नामक पकवान।

खजा—स्त्री० [सं० √खज्+अप्+टाप्] १. मथानी। २. प्रतियोगिता। ३. युद्ध।

खजानची—पुं० [फा०] १. वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति, सभा, समिति आदि के कोष या खजाने का प्रधान अधिकारी हो। कोषाध्यक्ष। (ट्रेजरर) २. वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ या आय-व्यय का हिसाब रहता है। रोकड़िया। (कैशियर)

खजाना—पुं० [अ० खजानः] १. किसी व्यक्ति, संस्था आदि की संचित धनराशि। (ट्रेजर) २. वह स्थान जहाँ पर संचित की गई धनराशि रखी जाती है। (ट्रेजरी) ३. वह भवन या स्थान जहाँ किसी राज्य या संस्था की आय का धन रहता है और जहाँ से व्यय के लिए धन निकलता है। (ट्रेजरी) ४. कर या राजस्व जो खजाने में जमा करना पड़ता है। ५. वह स्थान जहाँ कोई चीज बहुत अधिकता से पाई जाती अथवा होती हो। भांडार।

मुहा०—खुले खजाने=सबके सामने या देखते हुए। खुलेआम। खुलकर।

६. किसी उपकरण या उपयोग में आनेवाली वस्तु का वह विशिष्ट अंश या विभाग जिसमें उसकी आवश्यक सामग्री भरकर रखी जाती है। जैसे—(क) बन्दूक का खजाना अर्थात् वह जगह जिसमें बारूद भरी जाती है। (ख) लालटेन का खजाना, जिसमें तेल भरा जाता है।

खजित्—पुं० [सं० ख√जि (जीतना)+क्विप्] एक प्रकार के शून्यवादी बौद्ध।

खजिल—वि० [फ़ा] लज्जित। शर्मिंदा।

खजीना—पुं०=खजाना। भांडार। उदा०—पीया को प्रभु परचो दीन्हो दियारे खजीना पूर। —मीरां।

खजुआ—पुं० १=खाजा (पकवान)। २. दे० 'भरवाँस' (अन्न)।

खजुरहट—स्त्री० [हिं० खजूर] नैपाल की तराई में होनेवाला एक प्रकार का छोटा खजूर जिसकी पत्तियाँ चटाई बनाने के काम आती हैं, पर फल किसी काम का नहीं होता।

†स्त्री०=खुजली।

खजुरा†—पुं०=खजूरा।

खजुराही†—स्त्री० [हिं० खजूर] वह प्रदेश या स्थान जहाँ खजूरों के बहुत से पेड़ हों।

खजुरिया†—स्त्री० [सं० खर्जूरिका] १. छोटे फलोंवाली खजूर। २. खजूर नाम की मिठाई। ३. एक प्रकार की ईख।

वि० खजूर संबंधी। खजूरी।

खजुलाना†—सं०=खुजलाना।

खजुली—स्त्री० १.=खुजली। २.=खजूरी।

खजुवा—पुं०=खाजा (पकवान)।

खजूर—स्त्री० [सं० खर्जूर, प्रा० खज्जूर, पा० खज्जूरी, ब० खाजूर, उ० खजुरी, सि० खर्जूरी] १. ताड़ की तरह का एक पेड़ जो प्रायः रेगिस्तान में होता है और जिसमें बेर के आकार के लंबोतरे मीठे फल लगते हैं। २. उक्त पेड़ का मीठा फल जो खाया जाता है। ३. आटे, घी, शक्कर आदि के संयोग से बननेवाली एक प्रकार की मिठाई।

खजूर छड़ी—स्त्री० [हिं० खजूर+छड़ी] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर खजूर की पत्तियों की तरह की धारी या बेल बनी होती है।

खजूरा†—पुं० [हिं० खजूर] १. फूस से छाई हुई छत की बँड़ेर जो प्रायः खजूर की होती है। मँगरा। २. कई लड़ों को बटा हुआ वह डोरा जिससे स्त्रियाँ चोटी गूँथती हैं। चोटी। ३. दे० 'कन-खजूरा'।

खजूरी—वि० [हिं० खजूर] १. खजूर संबंधी। खजूर का। २. आकार-प्रकार के विचार से खजूर की तरह का। ३. तीन लड़ों में गुँथा हुआ। जैसे—खजूरी चोटी (स्त्रियों की)।

खजेहजा†—पुं०=खजहजा।

खजोहरा—पुं० [सं० खर्जु, हिं० खाज] एक तरह का रोएँदार छोटा कीड़ा जिसके स्पर्श से खुजली होने लगती है।

ख-ज्योति(तिस्) पुं० [ब० स०] खद्योत। जुगनूँ।

खटंगा—पुं० [खट्वांग] जबलपुर के पास का प्रदेश। खटंग।

खट—पुं० [अनु०] दो वस्तुओं के टकराने अथवा एक वस्तु को दूसरी वस्तु से मारने पर होनेवाला शब्द।

पद—खट से—(क) खट शब्द करते हुए। (ख) तत्काल। तुरन्त।

पुं० [सं० खट् (चाहना)+अच्] १. कफ। बलगम। २. वह पुराना और टूटा-फूटा कूआँ जिसमें जल न रह गया हो। अंधा कूआँ। ३. घूँसा। मुक्का। ४. एक प्रकार की घास जो छप्पर या छाजन बनाने के काम आती है। ५. कुल्हाड़ी। ६. हल।

पुं० [सं० षट्] सबेरे के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का षाड़व राग।

खटक—स्त्री० [हिं०] १. खटकने की क्रिया या भाव। २. खटकनेवाला तत्त्व या बात। ३. आशंका। खटका।

पुं० [सं०√खट्+वुन्—अक] १. घटक। २. आधी खुली मुट्ठी। ३. मुष्टिका। मुट्ठी।

खटकना—अ० [अनु०] १. दो वस्तुओं के परस्पर टकराने से शब्द उत्पन्न होना। २. (कोई बात मन में) प्रशस्त या भली न जान पड़ने के कारण कुछ कष्टदायक जान पड़ना। खलना। ३. अनिष्ट की आशंका होना। ४. रह-रहकर हलकी पीड़ा होना। ५. आपस में अनबन होना। ६. उचटना।

खटकरम—पुं० [सं० षट्कर्म्म] तरह-तरह के व्यर्थ के और झंझटों से भरे हुए काम। खटराग।

खटकरमी—वि० [हिं० खटकरम] इधर-उधर के और व्यर्थ के काम करनेवाला।

खटका—पुं० [हिं० खट] १. खट से होनेवाला शब्द। २. इस प्रकार का कोई शब्द या संकेत होने पर अथवा कोई अनिष्टकारक घटना होने पर मन में होनेवाली आशंका और दुश्चिन्ता। ३. चिन्ता। फिक्र। ४. वह कमानी, पेंच अथवा ऐसा ही कोई टुकड़ा जिसके घुमाने, दबाने आदि से 'खट' शब्द करते हुए कोई काम होता है। (स्विच) जैसे—बन्दूक का खटका, बिजली की बत्ती का खटका। ५. किवाड़े की सिटकनी। ६. पेड़ में बँधा हुआ वह बाँस जिसे खड़खड़ाकर चिड़ियाँ उड़ाते हैं। ७. संगीत में, किसी स्वर के उच्चारण के बाद उससे कुछ ही नीचे

के स्वर पर होते हुए फिर ऊँचे स्वर की ओर का बढाव जो बहुत कलापूर्ण और सुन्दर होता है।

खटकाना—स० [हि० खटकना] १ एक वस्तु से दूसरी वस्तु पर इस प्रकार आघात करना कि वह खटखट शब्द करने लगे। खटखट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—दरवाजा खटकाना। २ किसी के मन मे खटका उत्पन्न करना। ३ परस्पर अनबन कराना।

खटकामुख—पु० [स० खटक-आमुख, ष० त०] १ नृत्य मे, हाथो की एक विशिष्ट मुद्रा। २ बैठकर तीर चलाने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

खटकीडा (कीरा)—पु० [हि० खाट+कीडा] खटमल।

खटखट—स्त्री० [अनु०] १ दो वस्तुओ के बराबर टकराते रहने से होनेवाला शब्द जो प्राय कर्णकटु हो। २ झझट। झमेला। ३ आपस मे होनेवाली कहा-सुनी और लडाई-झगडा।

खटखटा—पु० [अनु०] खेतो मे बाँधा हुआ वह बाँस जो पक्षियो को उडाने के लिए दूसरे छोटे बाँस से खटखटाया जाता है। खटका।

खटखटाना—स० [अनु०] किसी प्रकार का आघात करके खटखट शब्द उत्पन्न करना।

खटखटिया—स्त्री० [खट खट से अनु०] वह खडाऊँ, जिसमे खूँटी के स्थान पर रस्सी या फीता आदि लगा रहता है और जिसे पहनकर चलने मे खटखट शब्द होता है।

खट-खादक—पु० [ष० त०] १ कौआ। २ गीदड।

खटना—स० [?] धन उपार्जन करना या कमाना। (पश्चिम)

अ० [?] अधिक तथा कठोर परिश्रम करना। (पूरब)

खटपट—स्त्री० [अनु०] १ दो कडी वस्तुओ के आपस मे टकराने का शब्द। २ दो पक्षो मे होनेवाली सामान्य अनबन या वैर-विरोध। ३ आपस मे होनेवाली फूट।

खटपटिया—वि०[हि० खटपट] १ लोगो से खटपट करने या लडनेझगडनेवाला। जिसकी दूसरो से न बनती हो। २ दो पक्षो मे फूट डालनेवाला।

पु० काठ की चट्टी। खटखटिया।

खटपद—पु०=षट्पद।

खटपदी—स्त्री०=षट्पदी।

खटपाटी—स्त्री०[हि० खाट+पाटी] खाट या पलग की पाटी।

मुहा०—खटपाटी लेना या लगना = रूठकर काम-धन्धा छोड देना और चुपचाप कही बैठ या लेट जाना। उदा०—मै तोहिं लागि लेब खटपाटी।—जायसी।

खटपापडी—स्त्री० [देश०] अमली या करमई नाम का पेड।

खटपूरा—पु०[हि० खड्डु+पूरा] खेत की मिट्टी समतल करने की मुँगरी।

खटबारी—स्त्री०=खटपाटी।

खटबुना—पु०[हि० खाट+बुनना] वह जो खाट बुनने का काम करता हो।

खटभिलावाँ—पु०[देश०] चिरौजी का पेड। पयाल।

खटभेभल—पु० [देश०] छोटे कद तथा छोटी-छोटी पत्तियोवाला एक पेड जिसमे पीले फूल तथा दानेदार छोटी फलियाँ लगती है।

खटमल—पु०[हि० खाट+मल या मल्ल] खाट, चौकी आदि मे रहनेवाला मटमैले उन्नाबी रग का एक प्रसिद्ध कीडा जो मनुष्य के शरीर का रक्त अपने डक द्वारा चूसता है। उडस।

खटमली—वि०[हि० खटमल] खटमल के रग का। गहरे या मटमैले उन्नाबी रग का।

पु० उक्त आकार का रग।

खट-मिट्ठा—वि०=खट-मीठा।

खट-मीठा—वि०[हि० खट्टा+मीठा] जो खाने मे कुछ खट्टा, पर साथ ही मीठा भी लगता हो। जैसे— खट-मीठा फालसा।

खटमुख—पु०=षट्मुख।

खटमुत्ता—वि० [हि० खाट+मूत(=मूत्र)] (बच्चा) जिसे खाट पर ही मूतने की आदत पड गई हो।

खटरस—वि० पु०=षट्रस।

खटराग—पु० [स० षट्राग] १ लडाई-झगडा। २ झझट। बखेडा। ३ कूडा-करकट।

खटरिया—पु०[देश०] एक प्रकार का कीडा।

खटलर—पु०[देश०] सान धरनेवालो का लकडी का एक उपकरण या औजार।

खटला—पु०[देश०] कान के निचले भाग मे किया जानेवाला वह छेद जिसमे आभूषण आदि पहने जाते है।

पु०[स० कलत्र] स्त्री और बाल-बच्चे। परिवार। (महाराष्ट्र)

खटवाटी—स्त्री०=खटपाटी।

खटाई—स्त्री०[हि० खट्टा] १ खट्टे होने की अवस्था, गुण या भाव। २ कोई खट्टी वस्तु। जैसे—कच्चा आम, इमली, किसी तरह का अचार आदि।

मुहा०—खटाई मे डालना=ऐसी युक्ति या बहाना करना जिससे किसी का काम कुछ दिनो तक बिना पूरा हुए यो ही पडा रह जाय। काम लटकाये रखना, उसे खतम न करना।

विशेष—सुनार लोग गहना बना लेने पर उसे साफ करने के लिए कुछ समय तक खटाई मे छोड देते है जिससे उसकी मैल कट जाय। और इसी बहाने से वे ग्राहक को प्राय दौडाया और लौटाया करते है। इसीसे यह मुहावरा बना है।

खटाक—पु०[अनु०] किसी ऊँचे स्थान पर से काँच, मिट्टी आदि की चीजो के जमीन पर गिरकर टूटने का शब्द।

खटाखट—पु०[अनु०] 'खटखट' का शब्द।

अव्य० १ खट-खट शब्द के साथ। २ निरतर या लगातार शब्द करते हुए। ३ चटपट। तुरत।

खटाना—अ०[हि० खट्टा] किसी वस्तु मे खट्टापन आना। खट्टा होना।

अ०[हि० खटना=परिश्रम करना] १ किसी स्थान पर गुजारा या निर्वाह होना। निभना। १ परीक्षा आदि मे ठीक या पूरा उतरना।

स० किसी को खटने अर्थात विशेष परिश्रम करने मे प्रवृत्त करना। खूब मेहनत कराना।

खटापट—स्त्री०=खटपट।

खटापटी—स्त्री०=खटपट।

खटाल†—पु०[बँ० कटाल] पूर्णिमा के दिन उठनेवाली समुद्र की ऊँची लहर। ज्वार।

खटाव—पु०[हि० खटाना] १ खटने या खटाने की क्रिया या भाव। २ गुजर, निबाह। निर्वाह। ३ नाव बाधने का खूँटा।

खटास—पु०[स० खट्टाश] मुश्क बिलाव। गध बिलाव।

स्त्री०[हि० खट्टा] १ वह तत्त्व जिसके कारण कोई चीज खट्टी होती है। २ खट्टे होने का गुण या भाव। खट्टापन।

खटिक—पु०[स० खट्टिक] [स्त्री० खटकिन] एक प्रसिद्ध जाति जो तरकारियाँ, फल आदि बेचने का व्यवसाय करती है।

खटिका—स्त्री०[स० खट+कन्—टाप्, इत्व] १ खडिया मिट्टी। २ कान का छेद।

खटिनी—स्त्री०[स० खट+इनि—डीप्] खडिया मिट्टी।

खटिया—स्त्री०[स० खट्वा] छोटी खाट। चारपाई।

खटी—स्त्री०[स० √खट्+अच—डीष्] =खटिनी।

खटीक—पु० =खटिक।

खटुली†—स्त्री० =खटोली।

खटेटी†—स्त्री०[हि० खाट+पीठ ?] ऐसी खाली खाट जिसपर बिस्तर न बिछा हो।

खटोल—पु०[देश०] =खटोला।

खटोलना—पु० =खटोला।

खटोला—पु०[हि० खाट+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट या चारपाई।

पु०[?] बुदेलखड के उस भाग का नाम जिसमे आज-कल दमोह, सागर आदि जिले है और जहाँ किसी समय भीलो की बस्ती थी।

खट्ट—वि०[स० √खट्ट (छिपाना)+अच्] खट्टा।

पु०[?] एक प्रकार का पीला सगमरमर।

खट्टा—वि०[स० खट्ट, प्रा०, खट्ट, बँ० खाटा, उ० खटा, सि० खटो, गु० खाटू] आम, इमली आदि के से स्वादवाला।

मुहा०—(जी या मन) खट्टा होना=अप्रसन्न और उदासीन होना। नाराज होना। (किसी से) खट्टा खाना=अप्रसन्न रहना। मुँह फुलाना। खट्टी छाछ से भी जाना=थोडे लाभ से भी वचित होना।

पु० एक प्रकार का बडा नीबू।

पु० =खाट (चारपाई)।

खट्टा-मीठा—वि० =खट-मीठा।

पु० ससार का ऊँच-नीच या दुख-सुख। जैसे—आप तो सब खट्टा-मीठा चख या देख के बैठे है।

खट्टाश(स)—पु०[स० खट्ट√अश् (व्याप्ति)+अच्] [स्त्री० खट्टाशी (सी)] बिल्ली की तरह का एक प्रकार का जगली जतु जिसका मुँह चूहे की तरह निकला हुआ होता है। (सिवेट-कैट)

खट्टि—स्त्री०[स० √खट्ट्+इन्] अरथी।

खट्टिक—वि०[स० खट्ट+ठन्—इक] वध या हिंसा करनेवाला।

पु० १. बहेलिया। २. कसाई।

खट्टिका—स्त्री० [स० खट्ट+कन्+टाप्, इत्व] १. छोटी खाट। २. अरथी।

खट्टी—स्त्री०[स० ?] १. खट्टी नारगी या नीबू। २. गलगल।

स्त्री०[हि० खटना] आय। कमाई।

खट्टी-मीठी—स्त्री० [हि० खट्टी+मीठी] एक प्रकार की लता।

खट्टू* पु० [प० खटना=रुपया पैदा करना] कमानेवाला। कमाऊ (विपर्याय—निखट्टू)।

खट्वाग—पु०[स० खट्वा-अग, ष० त०] १ चारपाई के अग, जैसे—पाटी, पावा आदि। २ शिव का एक अस्त्र। ३ प्रायश्चित्त के दिनो मे भिक्षा माँगने का एक प्रकार का पात्र। ४ तन्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा जिससे देवता बहुत प्रसन्न होते है। ५ साधुओ की वह लकडी जिस पर हाथ रखकर वे बैठते है। अधारी। टेकनी। ६ राजा दिलीप का एक नाम।

खट्वाग-धर—पु [ष० त०] शिव।

खट्वागी (गिन्)—पु०[खट्वाग+इनि] शिव।

खट्वा—स्त्री०[स० √खट् (चाहना)+क्वन्, टाप्] खाट जिसपर सोते है। चारपाई।

खट्वाका—स्त्री० [स० खट्वा+कन्+टाप्] छोटी खाट। खटिया।

खट्विका—स्त्री० [स० खटवा+कन्—टाप्, इत्व] छोटी खाट। खटिया।

खडजा—पु० [हि० खडा+अग]१ ऊँचाई के बल मे बैठाई हुई ईंट। २ उक्त रूप मे ईंटो की होनेवाली जुडाई या उसमे बननेवाला फर्श।

*पु० दे० 'झाँवाँ'। (क्व०)

खड—पु०[स० खड् (काटना)+अप्] १ धान की पेडी। पयाल। २ धान। ३ श्योनाक। सोनापाठा। ४ चाँदी, सोने का वह चूर्ण जिससे चीजो पर गिलट चढाते है।

पु० खर (घास)।

खडक—स्त्री० =खटक।

खड़कना—अ० [अनु०] [भाव० खडखडाहट] 'खडखड' शब्द होना। खटकना।

खड़का†—पु० १. खटका। २ खरका।

खड़काना—स० =खटकाना।

खड़क्की—स्त्री०[स० खडक्√कृ (करना)+ड—डीष्] खिडकी।

खड़खड़ा—पु० [अनु०] १ =खटखटा। २ खडखडिया।

खड़खड़ाना—अ० [हि० खडखड] खडखड शब्द होना।

स० खडखड (खटखट) शब्द करना।

खड़खड़ाहट—स्त्री० [हि० खडखडाना] खडखड शब्द होने की क्रिया, भाव या शब्द।

खड़खड़िया—स्त्री०[हि० खडखडाना] १ पालकी जिसे चार कहार उठाते हैं। पीनस। २ काठ का वह ढाँचा जिसमे जोतकर गाडी खीचने के लिए घोडे सुधारे जाते हैं।

खडग—पु० =खड्ग।

खड़गी—वि० [स० खड्गिन्] जो खड्ग लिये हो। खडगधारी।

पु० गैंडा।

खड़जी—पु० =खडगी।

खड़बड़—स्त्री०[अनु०]१ वस्तुओ को उलटने-पलटने से होनेवाला शब्द। २ परस्पर होनेवाली अनबन या झगडा। खटपट। ३. अव्यवस्थित करनेवाला बडा परिवर्तन। उलट-फेर। ४ हलचल।

खड़बड़ाना—अ०[अनु०]१ खडबड शब्द होना। २ खडबड या घबराहट मे पडना। ३. व्यक्ति या व्यक्तियो का ऐसी स्थिति मे

होना कि वे दृढ, शान्त या स्थिर न रह सके। विचलित होना। ४ पदार्थो का क्रम-रहित या तितर-बितर होना।

स० १ खडबड शब्द उत्पन्न करना। २ व्यक्ति या व्यक्तियो को ऐसी स्थिति मे करना कि वे दृढ, शान्त या स्थिर न रह सके। विचलित करना। ३ चीजे अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

खडबडाहट—स्त्री० [हि० खडबडाना] खडबड करने या होने की अवस्था या भाव।

खडबडी—स्त्री० [हि० खडबडाना] १ खडबड करने या होने की अवस्था या भाव। खडबडाहट। २ अस्त-व्यस्तता। व्यतिक्रम। ३ दे० 'खलबली'।

खडबिडा—वि०=खडबीहड।

खडबीहड†—वि० [हि० खड्ड+बीहड] १ (प्रदेश या प्रान्त) जो समतल न हो। ऊँचा-नीचा। ऊबड-खाबड। २ बेढगा। ३ विकट।

खडमडल—वि० [स० खड-मडल] १ अव्यवस्थित रूप से उलटा-पलटा हुआ। अस्त-व्यस्त। तितर-बितर। २ (वर्ग या समाज) जो क्रमबद्ध या व्यवस्थित न रह गया हो।

खडसान—पु०=खरसान।

खडा—वि० [स० स्थातृ, व्रज० ठाढा, ठडा] [स्त्री० खडी] १ जो धरातल से सीधा ऊपर की ओर उठा हुआ हो। ऊँचाई के बल मे ऊपर की ओर गया हुआ। जैसे—खडी फसल। खडा मकान। २ (जीव या पशु-पक्षी) जो अपने पैरो के सहारे शरीर सीधा करके ऊपर उठा हो। जो झुका, बैठा या लेटा न हो। जैसे—नौकर सामने खडा था।

पद—खडे खडे=इतनी जल्दी की बैठने तक का अवकाश न हो। जैसे—वे आये और खडे-खडे अपना काम निकालकर चल दिये। **खडी सवारी**=किसी के आने-जाने के सबध मे, आदर या व्यग्य के लिए, चटपट, तुरन्त। जैसे—खडी सवारी आई और चली गई।

३ कोई काम करने के लिए उद्यत, तत्पर या कटिबद्ध। जैसे—आप खडे हो जायँ तो विवाह के सब काम सहज मे निपट जायँगे। ४ निर्वाचन मे चुने जाने के लिए उम्मेदवार के रूप मे प्रस्तुत होनेवाला। जैसे—इस क्षेत्र से दस उम्मेदवार खडे है। ५ जो चलते-चलते कही पहुँचकर ठहर या रुक गया हो। जैसे—मोटर या गाडी खडी कर दो। ६ एक स्थान पर जमा या रुका रहनेवाला। जैसे—खडा पानी। ७ (अन्न या दाना) जो गला, टूटा या पिसा न हो। पूरा। समूचा। जैसे—खडे चावल। ८ ठीक, पूरा या भरपूर। जैसे—खडा जवाब (देखे)। ९ जो नये रूप मे बनकर या यो ही घटनाक्रम अथवा सयोग से उपस्थित या प्राप्त हुआ हो। जैसे—(क) झगडा या प्रश्न खडा करना। (ख) कोई चीज बेचकर रुपए खडे करना। १० जो किसी प्रकार तैयार करके काम मे आने के योग्य बनाया गया हो। जैसे—खेमा खडा करना। ११ (ढाँचा) प्रस्तुत करना। बनाना। जैसे—चित्र खडा करना, योजना खडी करना। १२ बिना बीच मे विश्राम किये तत्काल या तुरत पूरा किया जानेवाला। जैसे—खडा हुकुम।

पद—खडे घाट=(कपडो की धुलाई के सबध मे) धोबी से कराई जानेवाली ऐसी धुलाई जो तुरत या एकाध दिन के अन्दर ही करा ली जाय। **खड़े पॉव**=बिना बीच मे रुके या बैठे। जैसे—(क) विदेश से आकर खडे पाँव स्थानीय देवता के दर्शन करने जाना। (ख) कही जाना और खडे पॉव लौट आना।

खडाऊँ—स्त्री० [स० काष्ठपादुका, पा० कट्ठपादुका, प्रा० खडामुआ, खडाउआ, उ० खराउ, ब० खरम, का० खराव, कन्न० कडाव, मरा० खडावा] काठ की बनी हुई एक प्रकार की प्रसिद्ध पादुका जिसमे आगे की ओर पैर का अगूठा और उँगली फँसाने के लिए खूँटी लगी रहती है।

खडाका—पु० [अनु०] खडखड शब्द। खटका।

क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

खडा जवाब—पु० [हि० खडा+जवाब] कोई ऐसी बात जिसमे स्पष्ट शब्दो मे (क) किसी को करारा उत्तर दिया गया हो। अथवा (ख) उसके अनुरोध की रक्षा न कर सकने की अपनी असमर्थता बतलाई गई हो।

खडा दसरग—पु० [देश०] कुश्ती का एक पेच जिसे हनुमत बध भी कहते है।

खडानन*—पु०=षडानन।

खडा पठान—पु० [देश०] जहाज के पिछले भाग का मस्तूल। (लश०)

खडिका—स्त्री० [स० खड+डीष्+कन्—टाप्, इत्व] खडिया मिट्टी।

खडिया—स्त्री० [स० खटिका] १ एक प्रकार की चिकनी, मुलायम और सफेद मिट्टी। २ उक्त मिट्टी की बनाई हुई डली या बत्ती जिससे तख्ती आदि पर लिखा जाता है।

पद—खडिया मे कोयला=अच्छे के साथ बुरे की मिलावट।

स्त्री० [स० काड या हि० खडा] अरहर के पेड से फलियाँ और पत्तियाँ पीटकर झाड लेने के बाद बचा हुआ डठल। रहठा। खाडी।

खडी—स्त्री० [हि० खडिया] खडिया (मिट्टी)।

स्त्री० [हि० खडा] छोटा पहाड। पहाडी।

स्त्री०=बारह-खडी।

वि० [हि० खडा का स्त्रीलिग रूप] दे० 'खडा'।

खडी चढाई—स्त्री० [हि० खडी+चढाई] वह भूमि जो थोडी ढालुआ होने पर भी बहुत-कुछ सीधी ऊपर की ओर गई हो।

खडी डकी—स्त्री० [देश०] मालखभ की एक कसरत।

खडी तैराकी—स्त्री० [हि० खडी तैराकी] जल मे सीधे खडे होकर पैरो के द्वारा तैरने की क्रिया या भाव।

खडी पाई—स्त्री० [हि०] १ खडे बल मे सीधी छोटी रेखा। २ इस प्रकार (।) खीची जानेवाली वह रेखा जो लिखते समय किसी वाक्य के समाप्त होने पर लगाई जाती है। पूर्ण विराम।

खडी फसल—स्त्री० [हि०] खेत की वह उपज या पैदावार जो तैयार तो हो गई हो परन्तु अभी काटी न गई हो। (स्टैडिंग क्राप)

खडी बोली—स्त्री० [हि० खडी+बोली] १ मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फर-नगर, सहारनपुर, अम्बाला, पटियाला के पूर्वी भागो तथा रामपुर, मुरादाबाद आदि प्रदेशो के आसपास की बोली। २ उक्त बोली का परिष्कृत, सास्कृतिक तथा साहित्यिक रूप जिसे आजकल हिंदी कहा जाता है। ३ नागरी-अक्षरो मे लिखी हुई उक्त भाषा।

खडी मसकली—स्त्री० [हि० खडा+अ० मसकला=रेती] सिकली करनेवालो का एक औजार जिससे बरतनो आदि को खुरचकर जिला करते हैं।

खडी सवारी—पद दे० 'खडा' के अन्तर्गत।

खडी हुंडी—स्त्री०[हिं० खडी+हुंडी] ऐसी हुंडी जिसके रुपयों का अभी तक भुगतान न हुआ हो।

खडआ†—पु० [हिं० कडा] एक प्रकार का कडा। (आभूषण)

खडँघाट—पद दे० 'खडा' के अन्तर्गत।

खडेपाव—पद दे० 'खडा' के अन्तर्गत।

खड्ग—पु० [सं०√खड्+गन्] १ एक प्रकार की चौडी, छोटी तलवार। खाँडा। २ गैंडा नामक जंतु। ३ एक बुद्ध का नाम।

खड्ग-कोश—पु०[ष० त०] म्यान।

खड्गधर—पु०[ष० त०]=खड्गधारी।

खड्गधार—पु०[सं० खड्ग√धृ (धारण)+अण्] बदरिकाश्रम के पास का एक पर्वत।

खड्ग-धारा—स्त्री०[ष० त०] १ तलवार की धार या फल। २ ऐसा विकट काम जो खड्ग या तलवार पर चलने के समान हो।

खड्गधारी (रिन्)—पु० [सं० खड्ग√धृ+णिनि] वह जो हाथ में खड्ग या तलवार लिये हुए हो।

खड्ग-पुत्र—पु० [ष० त०] [स्त्री० अल्पा० खड्गपुत्रिका] एक प्रकार की कटार।

खड्ग-बंध—पु० [ब० स०] चित्र-काव्य का एक भेद जिसमें किसी पद्य के शब्द इस ढंग से रखे जाते है कि वे खड्ग के चित्र में ठीक से बैठ सकें।

खड्ग-लेखा—स्त्री०[ष० त०] तलवारों की पंक्ति या रेखा।

खड्ग-हस्त—वि०[ब० स०] १ जो हाथ में खड्ग लेकर लडने के लिए तैयार हो। २ हरदम विकट रूप से लडने के लिए उद्यत।

खड्गाधार—पु०[खड्ग-आधार, ष० त०] खड्गकोश।

खड्गारीट—पु०[सं० खड्ग-अरि, ष० त० खड्गारि√इट (जाना)+क] १ चमडे की ढाल। २ तलवार की धार। ३ वह जिसने असिधारा का व्रत लिया हो।

खड्गिक—पु० [सं०खड्ग+ठन्—इक] १ खड्गधारी। २ शिकारी। ३ कसाई। ४ भैंस के दूध का फेन।

खड्गी (ड्गिन्)—पु० [सं० खड्ग+इनि] १ खड्गधारी। २ गैंडा।

खड्ड—पु०[सं० खात, प्रा० खड्डो, सिं० खडा, गु० खाड, पं० खड्ड, म० खड्डा] १ प्राकृतिक रूप से बना हुआ बहुत गहरा गड्ढा। जैसे—पहाड या मैदान का खड्ड। २. खोदा हुआ बडा गड्ढा।

खड्डा—पु० १ =खड्ड। २ =गड्ढा।

खणक—वि० [सं० खनक] खोदनेवाला।

पु० चूहा। (डिं०)

खणनाडिका—स्त्री० [सं० क्षण—नाडिका] धर्मघडी। (डिं०)

खतंग†—पु० [फा० खदग] १ एक विशिष्ट प्रकार का तीर। २ तरकश। तूणीर। उदा०—तरकस पच किरय, तीर प्रति खतग तीन सय।—चन्दबरदाई। ३. दे० 'खदग'।

पु० [?] एक प्रकार का कबूतर।

खत—पु० [अ० खत] १. रेखा। लकीर। २ अक्षर लिखने का ढंग। लिखावट। ३. वह जो कुछ लिखा जाय। लेख। ४ चिट्ठी। पत्र। ५ वह पत्र जिस पर कुछ हिसाब-किताब, लेन-देन आदि लिखा हो। उदा०—जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटे ते।—[illegible]। ६ कनपटी और दाढ़ी पर के बाल।

मुहा०—खत आना या निकलना—कनपटी और गाल पर बाल उगने लगना अर्थात् यौवनकाल आरम्भ होना। **खत बनाना** (क) दाढ़ी के बाल उस्तरे से साफ करना। (ख) हजामत बनवाना।

पु० [सं० क्षत] घाव। जखम। उदा०—[illegible], खोटि खाटि खत खाट। —बिहारी।

†स्त्री०[सं० क्षिति] पृथ्वी। (डिं०)

खत-कश—पु०[अ० खत, फा० कश] [illegible] का एक उपकरण या औजार।

खतकशी—स्त्री०[अ० + फा०] १ [illegible] रेखाएँ खींचना। २ [illegible]।

खत-किताबत—स्त्री० [अ०] १ [illegible]। पत्र-व्यवहार। पत्राचार। २ लिखा-पढ़ी।

खतखोट†—स्त्री० [सं० क्षत+हिं० खूँट] घाव या चोट के ऊपर जमनेवाली झिल्ली। खुरंड।

खतना—पु०[अ० खत्न] मुसलमानों की एक रस्म, जिसमें लडकों के लिंग का अगला भाग या ऊपरी चमडा काट दिया जाता है। सुन्नत। मुसलमानी।

†स० काटना। काटकर अलग करना।

अ० [हिं० खाना] खाते में चढ़ाया या लिखा जाना।

खतम—वि०[अ० खत्म] १ (काम या बात) जो पूरा या पूर्ण हो चुका हो। जिसमें और कुछ करने को बाकी न रह गया हो। २ जिसका अंत हो चुका हो। जो अस्तित्व में न रह गया हो।

मुहा०—(किसी को) खतम करना—मार डालना।

खतमा*—पु० [अ० खातमः] १ [illegible]। [illegible]। २ दे० [illegible]।

खतमी—स्त्री०[अ०] गुलखैरू की जाति का एक पौधा, जिसकी पत्तियों और फूलों का उपयोग, हकीमी दवाओं में होता है।

खतर—पु० खतरा।

खतरनाक—वि०[अ०] १ (काम) जो खतरे से भरा हो। जोखिम का। २ जो किसी प्रकार के खतरे का कारण बन सकता हो। जैसे—खतरनाक आदमी, खतरनाक बीमारी।

खतरस्सा—पु०[हिं० खत्री] १ खत्रियों का समाज। २ वह मुहल्ला जिसमें खत्री लोग रहते हों।

खतरा—पु०[अ० खतर] १ अनिष्ट, संकट आदि की आशंका या संभावना से युक्त स्थिति। २ डर। भय।

खतरेटा—पु० [हिं० खत्री+एटा (प्रत्य०)] खत्री। (उपेक्षासूचक शब्द)

खता—पु०[अ०] [वि० खतावार] १ अपराध। कसूर। २ चूक। भूल। ३ धोखा।

मुहा०—खता खाना—धोखे में पडकर हानि उठाना। **खता खिलाना** धोखा देकर किसी की हानि करना। उदा०—नाहिं बार रुँधे एक दिन में, कबहुँक खता खवाई।—कबीर।

पु० [सं० क्षत] घाव। जखम।

†स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी। (डि०)
खताई—पु० [अ०] उत्तरी चीन के खता नामक स्थान का बना हुआ कागज जिस पर मध्ययुग मे चित्र अंकित होते थे।
स्त्री० दे० 'नान खताई'।
खताकार—पु०=खतावार।
खतावार—वि० [अ० खता+फा० वार] जिसने कोई भूल, दोष या अपराध किया हो। अपराधी। दोषी।
खतिया†—स्त्री०=खाती।
खतियाना—स० [हि० खाता] १ खाते मे लिखना या चढाना। २ विभिन्न मदो को विभिन्न खातो मे चढाना।
खतियौनी— स्त्री० [हि० खतियाना] १ वह बही जिसमे विभिन्न मदो के अलग-अलग खाते हो। २ इन अलग-अलग खातो मे विभिन्न मदो के विवरण भरने का काम। ३ पटवारी की वह पजी, जिसमे यह लिखा जाता है कि कौन-सा खेत किसकी जोत मे है। उस पर कितना लगान है और कितनी वसूली हुई है।
ख-तिलक—पु० [ष० त०] सूर्य।
खतीब—पु० [अ०] १ किसी बादशाह के सिहासन पर बैठने के समय खुतबा पढनेवाला व्यक्ति। २ इस्लाम अर्थात् मुसलमानी धर्म का उपदेशक।
खतौनी—स्त्री० दे० 'खतियौनी'।
खत्ता—पु० [स० खात] [स्त्री० खत्ती] १ जमीन मे किसी कार्य के लिए खोदा हुआ गड्ढा। जैसे—नील या शोरा बनाने का खत्ता। २ गड्ढा। ३ कोठा या बडा पात्र जिसमे अन्न या गल्ला रखा जाता हो।
खत्म—वि०=खतम।
खत्र†—पु०=क्षत्रिय। (डि०)
खत्रवट—स्त्री० [हि० खत्री+वट (प्रत्य०)] १ खत्री (क्षत्री) होने का भाव। उदा०—खत्र बेचिया अनेक खत्रियाँ, खत्रवट थिर राखी खुम्माण।—पृथ्वीराज। २ क्षत्रियधर्म। बहादुरी। वीरता।
खत्रवाट—स्त्री०=खत्रवट।
खत्रिय—पु०=क्षत्रिय। (डि०)
खत्री—पु० [स० क्षत्रिय, प्रा० खत्तिय] [स्त्री० खतरानी, भाव० खत्रीपन] १ पजाब मे रहनेवाले क्षत्रियो की सज्ञा। ये लोग प्राय व्यापार करते है। २ क्षत्री।
खत्रीवाट†—स्त्री०=खत्रवट।
खदग—पु० [फा०] १ एक प्रकार का पेड जिसकी लकडी के तीर बनाये जाते थे। २ तीर। बाण।
खदगी*—स्त्री० [फा० खदग] एक प्रकार का छोटा तीर।
खद*—पु० [स० क्षत=कटा हुआ] मुसलमान। (डि०)
*वि०=खाद्य।
खदखदाना—अ०=खदबदाना।
खदबदाना—अ० [अनु०] किसी तरल पदार्थ का उबलते समय खद-खद शब्द करना।
खदरा†—वि० [स० क्षुद्र] तुच्छ। निकम्मा।
पु० जोतने आदि के लिए निकाला जानेवाला बछडा।
पु० दे० 'खत्ता'।
खदशा—पु० [अ० खदश] १ आशंका। भय। २ शक। सदेह।
खदान—स्त्री० [हि० खोदना या खान] १ जमीन या पहाड खोदने पर बननेवाला गड्ढा। २ दे० 'खान'।
खदिका—स्त्री० [स० ख√दा (देना)+क—टाप्+कन्, इत्व] लावा।
खदिर—पु० [स० √खद् (स्थिर रहना) +किरच्] १ खैर का पेड। २ कत्था। खैर। ३ इन्द्र। ४ चन्द्रमा। ५ एक प्राचीन ऋषि।
खदिरपत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] लाजवती या लजाधुर नाम की लता।
खदिर-सार—पु० [ष० त०] कत्था। खैर।
खदिरी—स्त्री० [स० खदिर+ङीष्] १ वराहक्राता। २ लज्जावती नामक लता। छुई-मुई।
खदी—स्त्री० [देश०] तालो आदि मे होनेवाली एक प्रकार की घास।
खदीजा—स्त्री० [अ० खदीज] मुहम्मद साहब की पहली पत्नी, जिसने स्त्रियो मे सबसे पहले इस्लाम धर्म ग्रहण किया था।
खदीव—पु० [फा०] मिस्र के पुराने बादशाहो की उपाधि।
खदुका—पु० [स० खादक=अधमर्ण] १ किसी से कर्ज लेकर व्यवसाय करनेवाला व्यवसायी। २ ऋणी। कर्जदार।
खदुहा†—पु०=खदुका।
खदूरवासिनी—स्त्री० [स० ख-दूर√वस् (बसना) + णिनि—ङीप्] बौद्धो की एक देवी या शक्ति का नाम।
खदेडना—स० [हि० खनना] बलपूर्वक अथवा डरा-धमका कर कही से भगाना या हटाना।
खदेरना†—स०=खदेडना।
खद्दड (र)—पु० [हि० खड्डी=करघा] १ आज-कल सीमित अर्थ मे, हाथ से काते हुए सूत का हाथ ही से बुना हुआ कपडा। २ व्यापक अर्थ मे किसी चीज (जैसे—ऊन, रेशम आदि) का हाथ से काते हुए सूत का हाथ से बुना हुआ कपडा।
खद्धा†—पु०=गड्ढा।
खद्योत—पु० [स० ख√द्युत् (चमकना)+अच्] १ जुगनूँ। २ सूर्य।
खद्योतक—पु० [स० खद्योत√कै (चमकना)+क] १ सूर्य्य। २ जुगनूँ। ३ एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फल बहुत जहरीले होते है।
खद्योतन—पु० [स० ख√द्युत्+णिच्+ल्यु—अन] सूर्य।
खन†—पु० [स० क्षण] १ समय का बहुत छोटा भाग। क्षण। २ वक्त। समय।
अ०य० क्षण भर मे। उसी समय। तत्काल। तुरन्त। उदा०—चेरी धाय सुनत खन धाई।—जायसी।
†पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष।
†पु० दे० 'खड'।
खनक—वि० [स० खन् (खोदना)+वुन्—अक] कोई चीज विशेषत जमीन खोदनेवाला।
पु० १ चूहा। २ वह व्यक्ति जो जमीन खोदने का काम करता हो। ३ खान खोदनेवाला मजदूर। ४ सेंध लगाकर चोरी करनेवाला चोर।
स्त्री० [अनु०] धातु-खडो के आपस मे टकराने से होनेवाला शब्द।
खनकना—अ० [हि० खनक] धातु-खडो का आपस मे टकराकर खन-खन शब्द करना।

खनकाना—स० [अनु०] धातुखंडों को इस प्रकार टकराना या हिलाना कि वे खन-खन शब्द करने लगें।

खनकार—स्त्री० [अनु०] खन-खन शब्द करने या होने की अवस्था या भाव।

खनखजूरा—पुं०=कनखजूरा।

खनखना—वि० [अनु०] जिससे 'खन खन' शब्द उत्पन्न हो।
पुं० एक प्रकार का झुनझुना।

खनखनाना—अ० खन-खन शब्द होना। जैसे—हथियारों का खनखनाना।
स० खन-खन शब्द उत्पन्न करना। जैसे—हथियार खनखनाना।

खनखाव—पुं० [?] घोड़ों का एक प्रकार का ऐब या दोष।

खनन—पुं० [सं०√खन्+ल्युट्—अन] जमीन आदि खोदने की क्रिया या भाव।

खनना†—स० [सं० खनन] गड्ढा करने के लिए जमीन खोदकर उसमें से मिट्टी निकालना। खोदना।

खनयित्री—स्त्री० [सं०√खन्+णिच्+तृच्+ङीप्] जमीन खोदने का एक उपकरण। खंती।

खनवाना—स० [हिं० खनना] खनने या खोदने का काम किसी से कराना।

खनहन†—वि० [सं० क्षीण और हीन] १. दुबला-पतला। कमजोर। २. कोमल, सुन्दर और सुडौल। ३. अच्छा और ठीक तरह से काम देनेवाला।

खना—प्रत्य० [हिं० खाना का संक्षिप्त] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर 'आघात करनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे—कटखना, मरखना आदि।

खनाई—स्त्री० [हिं० खनना] खनने का काम, भाव या मजदूरी। खोदाई।

खनिक—पुं० [सं०√खन्+इ+कन्] १. जमीन में सुरंग बनाकर छत्ता लगानेवाली मधुमक्खियों की एक जाति। २. गड्ढा खोदनेवाला व्यक्ति। ३. खान (खदान) का मालिक।

खनिज—वि० [सं० खनि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] खान से खोदकर निकाला हुआ। (मिनरल)
पुं०=खनिज-पदार्थ।

खनिज-पदार्थ—पुं० [कर्म० स०] १. वे वस्तुएँ जो खान में से खोदकर निकाली जाती हों। २. धातुओं का वह मूल रूप जिसमें वह खान से निकलती हैं।

खनिज-विज्ञान—पुं० [कर्म० स०] वह विज्ञान जिसमें खानों का पता लगाने, उनमें से खनिज पदार्थ निकालने तथा उन पदार्थों के स्वरूप आदि का विवेचन होता है। (मिनरालॉजी)

खनित्र—पुं० [सं०√खन्+इत्र] जमीन खोदने का एक उपकरण। खंता।

खनियाना*—स० [हिं० खान] १. खान खोदना। २. खाली करना।

खनि-वसति—स्त्री० [मध्य०स०] खान में काम करनेवाले मजदूरों की बस्ती।

खनी—वि० [सं० खनिक] १. खोदनेवाला। २. खान में काम करनेवाला। ३. खान में से निकलनेवाला। खनिज।

खनोना†—स० [हिं० खनना] खनना। खोदना।

खन्ना†—पुं० [सं० खनन=काटना से] वह स्थान जहाँ बैठकर पशुओं के लिए चारा काटा जाता है।

खपची—स्त्री० [तु० कमची] १. बांस की पतली तीली, जो प्रायः चटाइयां, टोकरियां आदि बनाने के काम आती है। २. बांस की पतली परन्तु अधिक चौड़ी पट्टी जिसे प्रायः डाक्टर लोग किसी टूटी हुई हड्डी को सीधी जोड़ने के लिए किसी अंग में बांधते हैं। (स्प्लिन्ट) ३. कबाब भूनने की लोहे की सीक।

खपटा†—पुं० [स्त्री० अल्पा० खपटी]=खपड़ा।

खपड़झार†—पुं० [हिं० खपड़ा+झारना] किसी ऋतु में पहली बार ऊख पेरने के समय की एक रसम।

खपड़ा—पुं० [सं० खर्पट प्रा० खप्पट] [स्त्री० खपड़ी] १. कुछ विशिष्ट आकार के पकाये हुए मिट्टी के वे खंड जो प्रायः छप्पर पर इस दृष्टि से बिछाये जाते हैं कि वर्षा का पानी छप्पर में से नीचे न चूए।
विशेष—ये दो प्रकार के होते हैं—(क) खपुआ और (ख) नरिया। (देखें)
२. मिट्टी के घड़े का निचला भाग, गोल आधा भाग। ३. ठीकरा। ४. खप्पर। ५. कछुए की पीठ पर का कड़ा आवरण।
पुं० [देश०] गेहूं में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
पुं० [सं० क्षुरपत्र] चौड़े फलवाला तीर।

खपड़ी—स्त्री० [सं० खर्पर] १. छोटी नांद के आकार का भड़भूंजे का दाना भूंजने का अर्द्ध गोलाकार पात्र। २. उक्त आकार का एक छोटा मिट्टी का बरतन।
†स्त्री०=खोपड़ी।

खपड़ैल—स्त्री० [हिं० खपड़ा] वह छाजन जिस पर खपड़ा बिछा हुआ हो। खपड़े से छाई हुई छाजन।

खपत—स्त्री० [हिं० खपना] १. खपने या खपाने की क्रिया या भाव। २. माल की वह बिक्री जो उसे कहीं खपाने के लिए होती है। बिक कर माल समाप्त होना। ३. अन्त, नाश या समाप्ति। उदा०—रस्सी जु सौंढ मिट्टी कवन, निमख्ख मौहि उतपति खपति।—चन्दबरदाई।

खपती—स्त्री० [हिं० खपना]=खपत।

खपना—अ० [सं० क्षय, प्रा० खय] [संज्ञा खपत] १. (अनावश्यक, खराब अथवा फालतू वस्तुओं का) उपयोग या व्यवहार में आना। काम में आना। जैसे—(क) ईंटों के टुकड़े भी दीवार में खप गये। (ख) इन रुपयों में यह खोटा रुपया भी खप जायगा। २. चीजों का बिक कर समाप्त होना। जैसे—दिसावर में माल खपना। ३. गुजर होना। निभना। ४. नष्ट होना। उदा०—उपजै, खपै, जोनि फिर आवै।—कबीर। ५. अस्त्र-शस्त्र आदि से काटा या मारा जाना। हत होना। जैसे—लड़ाई में सिपाहियों का खपना। ६. कोई काम करने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करते हुए तंग या परेशान होना। जैसे—दिन भर खपने पर अब यह काम पूरा हुआ है।

खपरट—पुं० [हिं० खपड़ा] खपड़े का टूटा हुआ अंश या टुकड़ा। ठीकरा।

खपरा—पुं०=खपड़ा।

ख-पराग—पुं० [ष० त०] अंधकार। अँधेरा।

खपरिया—स्त्री० [सं० खर्परी] १. भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ या उपधातु जिसे वैद्यक में क्षय, ज्वर, विष, कुष्ठ आदि का नाशक माना गया है। २. चने की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

खपरैल—स्त्री० [हिं० खपडा+ऐल (प्रत्य०)] खपडे से छाई हुई छाजन। खपडैल ।

खपली—पु० [हिं० खपडा] पश्चिमी और दक्षिणी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का गेहूँ, जिसे गोधी या कफली भी कहते है ।

खपवा†—स्त्री० [हिं० खपाना?] पुरानी चाल की एक प्रकार की कटार ।

खपाच—स्त्री० [हिं० खपची] १ रेशम फेरनेवालो का एक औजार जो बाँस की दो खपचियो को बाँधकर बनाया जाता है। २ दे० 'खपची'।

खपाची†—स्त्री०=खपची ।

खपाट—पु० [हिं० खपची] भाथी के मुँह पर लगी हुई वे खपचियाँ जिन्हे खोलने और बद करने पर चूल्हे या भट्ठी मे हवा जाती है ।

खपाना—स० [हिं० खपना का स०] १ (कोई वस्तु) इस प्रकार उपयोग या व्यवहार मे लाना कि वह समाप्त हो जाय । जैसे—इमारत के काम मे लकडी खपाना । २ माल आदि बेच डालना । ३ अवकाश या गुजाइश निकालना । जैसे—इस विभाग मे दो-तीन आदमी खपाये जा सकते है। ४ तग या परेशान करना। किसी काम या बात के लिए व्यर्थ दिक करना। ५ किसी काम मे बहुत अधिक परिश्रम करके अपनी शक्ति का व्यय या ह्रास करना। जैसे—किसी काम मे सिर खपाना। ६ नष्ट करना। ७ मार डालना। जैसे—डाकुओ ने यात्रियो को जगल मे ही कही खपा दिया।

खपुआ†—वि० [हिं० खपना=नष्ट होना] कायर । डरपोक । भगोडा ।
पु० चूल या छेद मे कोई चीज कसकर बैठाने के लिए उसके इधर-उधर ठोका जानेवाला लकडी का टुकडा या पच्चड ।
पु० [हिं० खपडा] छप्पर छाने का वह खपडा जो चिपटा और चौकोर होता है।

खपुर—पु० [स० मध्य० स०] १ कभी-कभी आकाश मे भ्रमवश दिखाई देनेवाला एक गन्धर्व-मडल, जो कई प्रकार के शुभ और अशुभ फलो का सूचक माना जाता है। २ पुराणानुसार एक आकाशस्थ नगर जो पुलोमा और कालका नाम की दैत्य-कन्याओ के प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने बनाया था। गन्धर्वनगर। ३ राजा हरिश्चन्द्र की पुरी जो आकाश मे स्थित मानी जाती है। ४ [ख √पृ (पूर्ण करना) + क] सुपारी का पेड। ५ भद्र-मुस्तक। ६ बघनखा नामक वनस्पति।

ख-पुष्प—पु०[ष० त०] १ आकाश-कुसुम। २ उक्त की तरह की अनहोनी या असभव बात।

खप्पड†—पु० १ =खप्पर। २ =खपडा।

खप्पर—पु०[स० खर्पर, प्रा० प० खप्पर, गु० खापरी, मरा० खापर, उ० खपरा, बँ० खाबर।] १ वह पात्र जो काली की मूर्ति के हाथ मे रहता है और जिसके सम्बन्ध मे यह कल्पना है कि वह इसी मे भरकर शत्रुओ का रक्त पीती थी। २ दरियाई नारियल का वह आधा भाग या उसके आकार का कोई पात्र जिसमे कुछ विशिष्ट प्रकार के साधु भिक्षा लेते है। ३ खोपडी।

खफकान—पु०[अ०] १ हृदय की धडकन का रोग। २ पागलपन।

खफकानी—वि० [अ०] १ खफकान रोग से पीडित। २ पागल। ३. खब्ती।

खफगी—स्त्री०[फा०] खफा होने की अवस्था या भाव। अप्रसन्नता। नाराजगी।

खफा—वि० [अ०] १ किसी से अप्रसन्न या असन्तुष्ट। नाराज। २ जिसे गुस्सा चढा हो। क्रुद्ध।

खफीफ—वि०[अ०] १ मात्रा, मान आदि के विचार से अल्प, थोडा या हल्का। जैसे—खफीफ चोट आना। २ बहुत ही साधारण या तुच्छ और फलत लज्जित। (व्यक्ति के सम्बन्ध मे, किसी विशिष्ट प्रसग मे) जैसे—किसी को चार आदमियो के सामने खफीफ करना।

खफीफा—पु०[अ० खफीफ] वह दीवानी अदालत जिसमे लेन-देन के छोटे-छोटे मुकदमो पर विचार होता है।

खफ्फा—पु०[देश०] कुश्ती का एक पेच।

खबर—स्त्री० [अ०] १ वृत्तान्त। हाल। जैसे—वहाँ पहुँचते ही वहाँ की खबर देना। २ इस प्रकार कही भेजा जानेवाला हाल। पैगाम। सदेश। ३ किसी नई घटना या बात की मिलनेवाली सूचना।
मुहा०—खबर उडना= किसी अनोखी या नई बात की जगह-जगह चर्चा होना।
४ नई घटनाएँ या ताजी बाते जो समाचार-पत्रो मे छपती है अथवा रेडियो द्वारा प्रसारित की जाती है। ५ जानकारी। ज्ञान। जैसे—हमे भी इस बात की खबर है। ६ सुध। होश। जैसे—उसे किसी बात की खबर नही रहती। ७ किसी की दशा की ओर जानेवाला ध्यान।
मुहा०—(किसी की) खबर लेना—(क) असहाय, दीन या दुखी व्यक्ति की ओर (उसका कष्ट दूर करने के लिए) ध्यान देना। (ख) अच्छी तरह दड देना। (परिहास और व्यग्य)

खबरगीर—वि० [अ०+फा०] १ खबर भेजनेवाला। २ देख-रेख करनेवाला।
पु० १ गुप्तचर। जासूस। २ चौकीदार। पहरेदार।

खबरगीरी—स्त्री०[फा०] १ किसी की खबर लेते रहने अर्थात् उसकी देख-रेख करते रहने का काम या भाव। २ खबरगीर का काम या पद।

खबरदार—वि० [फा०][भाव० खबरदारी] १ जाननेवाला। परिचित। २. चौकन्ना और सजग। सावधान।

खबरदारी—स्त्री० [फा०] खबरदार अर्थात् चौकन्ने या सजग रहने की अवस्था या भाव। सावधानी।

खबरि†—स्त्री०=खबर।

खबरिया*—स्त्री०=खबर।

खबरी—पु०[फा०] खबर या सदेश भेजने या लानेवाला। दूत। (डिं०)

ख-बाष्प—पु० [ष० त०] ओस।

खबीस—पु० [अ०] [भाव० खबासत, खबीसी] १ दुष्ट, निकृष्ट या बुरे कर्म करनेवाला व्यक्ति। २ कजूस। कृपण।
पु० [स० कपिश] रगीन मिट्टी। (बुदेल०)

खबीसी—स्त्री० [अ०] खबीस होने की अवस्था या भाव।

खब्त—पु०[अ०] [वि० खब्ती] १ किसी बात की झक या सनक। जैसे—आज तुम पर यह नया खब्त चढा (या सवार हुआ) है। २ पागलपन।

खब्ती—वि०[अ०] १ जिसे किसी बात का खब्त या झक हो। सनकी। सनकी। २ पागल।

खब्बर—पु० [देश०] दूब नाम की घास।

खब्बा—वि०[प०] १ बायाँ। दाहिने का उलटा। २ (व्यक्ति) जो बाएँ हाथ से काम-काज करता हो। ३ उलटे रास्ते पर चलनेवाला।

खब्भड़|—वि० [हि० खाभड़] १ बुड्ढा और दुर्बल। २ दुबला-पतला।

खभड़ना—स०—खभरना।

खभरना|—स० [हि० भरना] १ मिलाना। मिश्रित करना। २ उथल-पुथल करना या मचाना।

खभरुआ—पु०[हि० खभरना मिलना] कुलटा या पुंश्चली स्त्री का पुत्र।

खभार—पु० खभार।

खम—पु०[अ०] १ टेढ़ापन। वक्रता। २ घुमाव या झुकाव।

मुहा०—खम खाना (क) झुक या दबकर टेढ़ा होना, दबना या मुड़ना। (ख) किसी के सामने झुकना या दबना। हारना। **खम ठोकना**- लड़ने के लिए ताल ठोकना।

पद—खम ठोककर (क) लड़ने या सामना करने के लिए ताल ठोककर। (ख) दृढ़ता या निश्चयपूर्वक।

३ गाने के समय लय में लोच या सौन्दर्य लाने के लिए उसके मोड़ पर क्षण भर के लिए रुकना।

वि० झुका हुआ या टेढ़ा।

खमकना—अ० [अनु०] खम खम शब्द होना।

खमकाना—स० [अनु०] खम खम शब्द उत्पन्न करना।

ख-मणि—पु० [स० त०] सूर्य।

खमणी—वि० =क्षम (समर्थ)।

खमदम—पु० [अ० खम+दम] शक्ति और साहस का सूचक पुरुषार्थ या क्षमता।

खमदार—वि०[फा०] १ झुका हुआ। टेढ़ा। २ घुँघराला (बाल)।

ख-मध्य—पु० [प० त०] १ आकाश का ठीक मध्य भाग या बिन्दु। २ सिर के ऊपर का बिन्दु।

खमसना|—अ०[?] किसी में मिल जाना। मिश्रित होना।

स० मिश्रित करना। मिलाना।

खमसा—पु० [अ० खम्स पाँच सबंधी] १ एक प्रकार की गजल, जिसके प्रत्येक पद्यांश या बंद में पाँच-पाँच चरण होते है। २ संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते है।

खमा*—स्त्री० =क्षमा।

खमाल|—पु०[देश०] जगली खजूर के हरे फल, जो चौपायों को खिलाये जाते है।

पु० [अ० हम्माल] जहाज पर माल लादने का काम। लदाई।

खमियाजा—पु० [फा० खमयाज़] १ अँगड़ाई। २ प्राचीन काल का वह दंड, जो अपराधी को शिकजे में कसकर दिया जाता था। ३. दंड के रूप में होनेवाला बुरे कामों अथवा भूल-चूक का फलभोग।

मुहा०—खमियाजा उठाना भूल-चूक का दंड या फल पाना।

खमीदा—वि०[फा० खमीद] खम खाया हुआ। झुका हुआ। टेढ़ा।

खमीर—पु०[अ०] १ गूँधकर कुछ समय तक रखे हुए (गेहूँ, चावल, दाल आदि) आटे की वह स्थिति जब उसमें सड़न के कारण कुछ खट्टापन आना आरम्भ होता है। (ऐसे आटे की रोटी में एक विशिष्ट प्रकार का स्वाद आ जाता है।)

मुहा०—खमीर बिगड़ना गूँधे हुए आटे का अधिक सड़ने के कारण बहुत खट्टा हो जाना।

२ उक्त प्रकार से चीजें सड़ाकर तैयार किया हुआ मादा। ३ कटहल, अनन्नास आदि को सड़ाकर तैयार किया हुआ वह पदार्थ जो पान का तम्बाकू बनाते समय सुगंधि के लिए उसमें मिलाया जाता है। ४ किसी पदार्थ या व्यक्ति की मूल प्रकृति। जैसे—चालाकी तो आपके खमीर में ही है।

खमीरा—वि० [अ० खमीर] [स्त्री० खमीरी] १ (वस्तु) जिसका या जिसमें खमीर उठाया गया हो। जैसे—खमीरा आटा। २ इस प्रकार उठाये हुए खमीर से बननेवाला (पदार्थ)। जैसे—खमीरी रोटी। ३ जिसमें किसी प्रकार का खमीर मिलाया गया हो। जैसे—खमीरा तमाकू।

पु० चीनी या शीरे में पकाकर बनाया हुआ औषधियों का अवलेह। जैसे—बनफशे का खमीरा।

खमीरी—वि० दे० 'खमीरा'।

ख-मीलन—पु० [स० प० त०] तंद्रा।

ख-मूर्ति—पु० [स० ब० स०] शिव।

खमो—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा सदाबहार पेड़।

खमोश—वि० [भाव० खमोशी] खामोश।

खम्माच—स्त्री०[हि० खंबावती] मालकोस राग की एक रागिनी।

खम्माच कान्हड़ा—पु० [हि० खम्माच, कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

खम्माच टोरी—स्त्री० [हि० खंभावती+टोरी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो खंभावती और टोरी के मेल से बनती है।

खम्माची—स्त्री०=खम्माच।

खयग—पु० खग।

खय*—पु० क्षय।

खयना|—अ० [स० क्षय] १ क्षीण होना। २ शिथिल या बेजान आना। उदा०—कर समटिकर भुज उलटि, खयं सीस पट डारि।—बिहारी।

खया*—पु० खवा (भुज-मूल)।

खयानत—स्त्री० [अ०] १ अमानत या धरोहर का अनधिकारपूर्वक या अनुचित रूप से अपने काम में लाना। २ अमानत या धरोहर में से कुछ अंश निकाल या बदल देना। ३ बेईमानी।

खयाल—पु०[अ०] १ किसी पुरानी अथवा भूली हुई बात का स्मृति। याद। जैसे—न जाने क्यों मुझे आज कई वर्षों बाद अपने मित्र का खयाल आया है। २ मन में उपजने अथवा होनेवाली कोई नई बात। विचार। जैसे—नया खयाल। ३ आदरपूर्ण ध्यान। जैसे—वे उनका बहुत खयाल रखते है। ४ मन में होनेवाली किसी प्रकार की धारणा या विचार। जैसे—इस बारे में आपका क्या खयाल है।

मुहा०—(किसी को) खयाल में लाना महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—आप तो किसी को खयाल में ही नहीं लाते।

५. उदारता या कृपा की दृष्टि। जैसे—इन अनाथ बालकों का भी

खयाल रखिएगा। ६. किसी राग या रागिनी का वह रूप जो एक विशिष्ट प्राचीन शैली मे गाया जाता है। जैसे—केदारे या देश का खयाल।

विशेष—(क) यह गायन की गति के विचार से प्राय दो प्रकार (बिलबित और द्रुत) का होता है। (ख) इस रूप या शैली का प्रचलन ई० १५वी शताब्दी के अत मे जौनपुर के सुलतान हुसैन शर्की ने ध्रुपद के अनुकरण पर और उसके विकसित रूप मे किया था। (ग) उसका मुख्य विषय ईश्वर या राग-रागिनी के स्वरूप का चितन या ध्यान होता है, और इसी लिए इसका नाम 'खयाल' पडा है। ७ लावनी गाने का एक ढग या प्रकार। ८ एक प्रकार का लोक-नाट्य जो नौटकी से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है। इसमे पात्र प्राय पद्यबद्ध रचनाओ को गाते हुए वार्तालाप करते है।

खयाली—वि० [फा०] १ खयाल सबधी। २ केवल खयाल या विचार मे रहने या होनेवाला। ३ कल्पित।

मुहा०—खयाली पुलाव पकाना=केवल कल्पना के आधार पर या निराधार मन्सूबे बाधना।

खरजा—पु०=खडजा।

खर—पु०[स० ख+र] १ गधा। २ खच्चर। ३ कौआ। ४ बगला नामक जल-पक्षी। ५ तृण। तिनका। ६ यज्ञपात्र रखने की वेदी। ७ सफेद चील। कक। ८ कुरर पक्षी। ९ सूर्य का एक पार्श्वचर। १० साठ सवत्सरो मे से पचीसवाँ सवत्सर। ११ छप्पय छद का एक भेद। १२ रावण का भाई एक राक्षस जो पचवटी मे रामचद्र के हाथो मारा गया था।

वि० १ कठोर। कडा। सख्त। २ तीक्ष्ण। तेज। ३ घन और स्थूल। भारी और मोटा। ४ अमागलिक। अशुभ। जैसे—खरमास। ५ तेज धारवाला। ६ तिरछा। ७ कठोर-हृदय। निष्ठुर। ८ करारा। कुरकुरा।

मुहा०—(घी) खर करना=गरम करके इस प्रकार तपाना कि उसमे का मठा जल जाय।

†पु०=खराई।

†पु०=खड।

पु० [अ०] गधा। जैसे—खर-दिमाग=गधे का-सा मस्तिष्क रखने-वाला अर्थात् कूढ या मूढ।

खरक—पु०[स० खटक=स्थाणु] १ चौपायो आदि को बद करके रखने का घेरा। बाडा। २ पशुओ के चरने का स्थान। चरागाह।

†स्त्री० १=खटक। २=खडक।

खरकत्ता—पु० [देश०] लटोरे की तरह का एक पक्षी।

खरकना—अ० १=खटकना। २=खडखडाना। ३=खडकना (चुपचाप खिसक जाना)।

खरकर—पु०[ब० स०] सूर्य।

खरकवट—स्त्री०[देश०] वह पटरी जो करघे मे दो खूँटियो पर आडी रखी जाती है और जिस पर ताना फैलाकर बुनाई होती है।

खरका—पु०[हि० खर=तिनका] बाँस आदि के टुकडे काट और छीलकर बनाया हुआ कडा पतला तिनका जो पान आदि मे खोसने के काम आता है।

मुहा०—खरका करना—भोजन के उपरान्त दाँतो मे फँसे हुए अन्न आदि के कण तिनके से खोदकर बाहर निकालना।

†पु०=खरक।

खर-कुटी—स्त्री० [कर्म० स०] नाई की दूकान।

खरकोण—पु० [स० खर√कुण् (शब्द) +अण्] तीतर नामक पक्षी। (डि०)

खर-कोमल—पु० [च० त०] जेठ का महीना।

खरखरा†—वि० =खुरखुरा।

खरखशा—पु० [फा० खर्खश] १ व्यर्थ अथवा बिना मौके का झगडा या बखेडा। २ किसी काम या बात के बीच मे पडनेवाली बाधा।

खरखौकी*—स्त्री०[हि० खर+खौकी=खानेवाली] आग जो खर, तृण आदि खा जाती अर्थात नष्ट कर डालती है।

खरग†—पु०=खड्ग।

खरगोश—पु०[फा०] चूहे की तरह का पर उससे कुछ बडा एक प्रसिद्ध जतु, जिसके कान लबे, मुँह गोल तथा त्वचा नरम और रोएँदार होती है। खरहा। चौगडा।

खरच—पु०[अ० खर्च] १ धन, वस्तु, शक्ति आदि का होनेवाला उपभोग। जैसे—(क) शहर मे रोज हजार मन नमक का खरच है। (ख) इस काम मे दो घटे खरच हुए। २ धन की वह राशि, जो किसी वस्तु (या वस्तुओ) को क्रय करने मे अथवा आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए व्यय की जाती है। व्यय। जैसे—(क) उनका महीने का खरच ५००) है। (ख) इस पुस्तक पर १०) खरच पडा है।

मुहा०—खरच उठाना=विवश होकर व्यय का भार सहना। जैसे—उसका सारा खरच हमे उठाना पडता है। **खरच चलाना**—आवश्यक व्यय के लिए धन देते रहना। जैसे—घर का सारा खरच वही चलाते है। **(किसी को) खरच मे डालना**=किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि उसे विवश होकर खरच करना पडे। जैसे—तुमने हमे व्यर्थ के खरच मे डाल दिया। **(रकम का) खरच मे पडना**=व्यय की मद मे लिखा जाना।

३ किसी वस्तु को निर्मित अथवा प्रस्तुत करने मे होनेवाला व्यय। लागत। जैसे—इस पुस्तक को प्रकाशित करने मे १०००) खरच बैठेगा।

खरचना—स० [फा० खर्च] १ धन का खरच या व्यय करना। २ किसी वस्तु को उपयोग या काम मे लाना। बरतना। (क्व०)

खरचा—पु०[फा० खर्च] १ खाने-पहनने, खरचने आदि के लिए मिलने-वाला धन या वृत्ति। २ दे० 'खरच'।

खरची—स्त्री० [हि० खरच] १ खरच या व्यय मे लगनेवाला धन। २ वह धन जो दुश्चरित्रा स्त्रियो को कुकर्म कराने के बदले मे (अपना खरच चलाने के लिए) मिलता है।

मुहा०—खरची कमाना=अपने निर्वाह या धनोपार्जन के लिए (स्त्रियो का) कुकर्म कराते फिरना। **खरची पर चलना या जाना**=धन कमाने के लिए (स्त्रियो का) प्रमग या सभोग कराना।

खरचीला—वि०[हि० खरच+ईला (प्रत्य०)] जो आवश्यक से अधिक अथवा व्यर्थ के कामो मे बहुत सा रुपया खरच करता हो। जी खोलकर या बहुत खरच करनेवाला।

खरज—पु० दे० 'षडज'।

खरजूर—पु० =खजूर।

खरत(द)नी—स्त्री० [हिं० खरादं] खरादने का औजार या उपकरण।

खरतर—वि० [सं० खर+तरप्] अपेक्षया अधिक उग्र, कठोर या तेज। उदा०—असि की धारा से खरतर है आँखों का यह जो अभिमान।

खरतरगच्छ—पु० [सं० खरतर√गम् (जाना)+श] जैनियों की एक शाखा या सम्प्रदाय।

खरतल†—वि० [हिं० खर-तर] १ जो कोई बात साफ और स्पष्ट शब्दों में दूसरे से कह दे। २ उग्र। तीव्र। प्रचंड।

खरतुआ—पु० [हिं० खर+बथुआ] बथुए की जाति की एक घास जो आप से आप खेतों में उग आती है।

खर-दंड—पु० [ब० स०] कमल।

खरदनी—स्त्री० खराद।

खरदा—पु० [देश०] अंगूर के पौधों में होनेवाला एक रोग।

खर-दिमाग—वि० [फा०] [भाव० खरदिमागी] गधे की तरह का दिमाग रखनेवाला। बहुत बड़ा मूर्ख।

खरदुक*—पु० [?] एक प्रकार का पुराना पहनावा।

खर-दूषण—पु० [द्व० स०] १ खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे। २ [ब० स०] धतूरा।

वि० जिसमें बहुत अधिक दोष या बुराइयाँ हों।

खरधार—वि० [ब० स०] (अस्त्र) जिसकी धार बहुत तेज हो।

खरध्वंसी (सिन्)—पु० [सं० खर√ध्वस् (नष्ट करना)+णिच्+णिनि] १ खर राक्षस का नाश करनेवाले श्रीरामचन्द्र। २ श्रीकृष्ण।

खरना—स० [हिं० खरा] १ साफ या स्वच्छ करना। २ ऊन को पानी में उबालकर साफ करना।

खर-नाद—पु० [ष० त०] गधे के रेंकने का शब्द।

खरनादिनी—स्त्री० [सं० खर√नद् (शब्द)+णिनि—ङीप्] रेणुका नाम का गंध द्रव्य।

खरनादी (दिन्)—वि० [सं० खर√नद्+णिनि] जिसकी आवाज या स्वर गधे की तरह का हो।

खर-नाल—पु० [ब० स०] कमल।

खरपत—पु० [देश०] धौंगर नामक वृक्ष।

खरपा—पु० [सं० खर्व] चौबगला।

खरब—पु० [सं० खर्व] १ संख्या का बारहवाँ स्थान। सौ अरब। २ उक्त स्थान पर पड़नेवाली संख्या। उदा०—अरब खरब लौं दरब है, उदय अस्त लौं राज।—तुलसी।

खरबानक—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। उदा०—कै खरवान कसै पिय लागा। जौ घर आवै अबहूँ कागा।—जायसी।

खरबूजा—पु० [फा० खर्पज] १. ककड़ी की जाति की एक बेल। २ इस बेल के फल जो गोल, बड़े, मीठे और सुगंधित होते हैं।

कहा०—खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है=एक की देखा-देखी दूसरा भी वैसा ही हो जाता है।

खरबूजी—वि० [हिं० खरबूजा] खरबूजे के रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

खरबोजना—पु० [हिं० खार+बोजना] रंगरेजों का वह घड़ा जिस पर रंग का माट रखकर रंग टपकाते हैं।

खरब्बा†—वि० [हिं० खराब] खराब या बुरे चलनवाला। बदचलन।

खरभर†—पु० [अनु०] १ वस्तुओं के हिलने-डुलने अथवा आपस में टकराने से होनेवाला शब्द। खड़बड़। २ शोर। रौला। ३ खलबली।

खरभरना—अ० [हिं० खरभर] १ क्षुब्ध होना। २ घबराना।

स० १ क्षुब्ध करना। २ घबराहट में डालना।

खरभराना—स० [हिं० खरभर] १ खरभर शब्द करना। २ व्यर्थ शोर या हल्ला करना।

अ०, स० खड़बड़ाना।

खरभरी†—स्त्री० खलबली।

खर-मस्त—वि० [फा०] १ गधों की तरह सदा मस्त या प्रसन्न रहनेवाला। २ गधों की तरह बिना समझे-बूझे दुष्टता या पाजीपन करनेवाला।

खर-मस्ती—स्त्री० [फा०] १ खरमस्त होने की अवस्था या भाव। २ हँसी में किया जानेवाला पाजीपन।

खर-मास—पु० [कर्म० स०] पूस और चैत के महीने, जिनमें हिंदू कोई शुभ काम नहीं करते हैं।

खरमिटाव†—पु० [हिं० खराई+मिटाना] जलपान। कलेवा।

खर-मुख—पु० [ब० स०] एक राक्षस जिसे लंका में भरत जी ने मारा था।

वि० १. गधे के-से मुखवाला। २ कुरूप। बदसूरत।

खरल—पु० [सं० खल] पत्थर, लोहे आदि का वह पात्र जिसमें कोई वस्तु रखकर पत्थर, लकड़ी या लोहे के डंडे से कूटी या महीन की जाती है।

मुहा०—खरल करना औषधि आदि को खरल में डालकर महीन चूर्ण के रूप में लाना।

खरली†—स्त्री० दे० 'खली'।

खरवट—स्त्री० [देश०] काठ के दो टुकड़ों का बना हुआ एक तिकोना उपकरण जिसमें कोई वस्तु रखकर रेती जाती है।

खर-बल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] आकाश-बेल।

खरवाँस—पु० खर-मास।

खर-वार—पु० [कर्म० स०] अशुभ या बुरा दिन अथवा वार।

खर-वारि—पु० [कर्म० स०] १ वर्षा का जल। २ ओस। ३ कोहरा।

खर-विद्या—स्त्री० [कर्म० स०] ज्योतिष-विद्या।

खरशिला—पु० [कर्म० स०] मंदिर आदि की कुरसी का वह ऊपरी भाग जिस पर सारी इमारत खड़ी रहती है।

खर-श्वास—पु० [कर्म० स०] वायु।

खरस—पु० [फा० खिर्स] भालू। रीछ। (कलंदरों की बोली)

खरसा† —पु० [सं० षड्रस] एक प्रकार का पकवान।

पु० [देश०] १ गरमी के दिन। ग्रीष्म ऋतु। २ अकाल।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

†पु० [फा० खारिश] खुजली।

खरसान—स्त्री० [हिं० खर+सान] एक प्रकार की बढ़िया सान जिस पर हथियार रगड़ने से बहुत अधिक तेज और चमकीले हो जाते हैं।

खर-सिंधु—पु० [ब० स०] चंद्रमा।

खरसुमा—वि० [फा० खर+सुम] (घोडा) जिसके सुम अर्थात् खुर गधे के खुरो जैसे बिलकुल खडे हो।

खरसैला—वि० [फा० खारिश, हि० खरसा=खाज] जो खुजली रोग से पीडित हो।

खर-स्तनी—स्त्री० [ब० स०, डीष्] पृथिवी।

खरस्वर—वि० [ब० स०] [स्त्री० खरस्वरी] कठोर या कर्कश स्वरवाला।

खर-स्वस्तिक—पु० [कर्म० स०] शीर्ष बिंदु।

खर-हर—वि० [ब० स०] (राशि) जिसका हर शून्य हो। (गणित) पु० [देश०] बलूत की जाति का एक पेड।

खरहरना†—अ० [हि० खर (तिनका)+हरना] झाड देना। झाडना। स० [हि० खरहरा] घोडे के शरीर पर खरहरा करना।

खरहरा—पु० [हि० खरहरना] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १ अरहर, रहठे आदि की डठलो का बना हुआ झाडू। झखरा। २ एक प्रकार का ब्रुश जिसके दाँते प्राय धातु के होते है, तथा जिससे रगडकर घोडे के बदन पर की धूल निकाली जाती है।

खरहरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मेवा (कदाचित् खजूर)।

खरहा—पु० [हि० खर=घास + हा (प्रत्य)] [स्त्री० खरही] खरगोश।

खरही†—स्त्री० [हि० खर] (घास या अन्न आदि का) ढेर। राशि।

खराडक—पु० [स० खर-अड, ब० स०, कप्] शिव के एक अनुचर का नाम।

खराशु—पु० [स० खर-अशु, ब० स०] सूर्य।

खरा—वि० [स० खर=तीक्ष्ण] [स्त्री० खरी] १ जिसमे किसी प्रकार का खोट या मेल न हो। विशुद्ध। 'खोटा' का विपर्याय। जैसे—खरा दूध, खरा सोना। २ लेन-देन व्यवहार आदि मे ईमानदार, सच्चा और शुद्ध हृदयवाला। जैसे—खरा असामी। ३ सदा सब बाते सच और साफ कहनेवाला। जैसे—खरा आदमी।

मुहा०—(किसी को) खरी खरी सुनाना=सच्ची और साफ बात दृढतापूर्वक कहना। **(किसी को) खरी खोटी सुनाना**= ठीक या सच्ची बात बतलाते हुए किसी अनुचित आचरण या व्यवहार के लिए फटकारना।

४ जिसमे किसी प्रकार का छल-कपट न हो। जैसे--खरी बात, खरा व्यवहार। ५ बिलकुल ठीक और पूरा। उचित तथा उपयुक्त। जैसे—खरा काम, खरी मजदूरी। ६ (प्राप्य धन) जो मिल गया हो या जिसके मिलने मे कोई सदेह न रह गया हो।

मुहा०—रुपये खरे होना=प्राप्य धन मिल जाना या उसके मिलने का निश्चय होना। जैसे—अब हमारे रुपए खरे हो गये।

७ (पदार्थ) जो झुकाने या मोडने से टूट जाय। ८ (पकवान) जो तलकर अच्छी तरह सेक लिया गया हो। करारा। जैसे—खरी पूरी, खरा समोसा।

अव्य० १ वस्तुत। सचमुच। उदा०—ऊधौ! खरिए जरी हरि के सूलन की।—सूर। २ निश्चित रूप से। ठीक या पूरी तरह से।

*पु० [स० खर] तृण। तिनका। (क्व०)

मुहा०*—खरा-सा=तिनका भर। बहुत थोडा या जरा-सा। उदा०—चले मुदित मन डरु न खरोसो।—तुलसी।

खराई—स्त्री० [देश०] सबेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन न मिलने के कारण होनेवाले साधारण शारीरिक विकार। जैसे—जुकाम होना, गला बैठना आदि।

मुहा०—खराई मारना=इस उद्देश्य से जलपान करना कि उक्त प्रकार के शारीरिक विकार न होने पावे।

†स्त्री० =खरापन।

खराऊँ—स्त्री०=खडाऊँ।

खराज—पु०=खिराज।

खराद—पु० [अ० खर्रात से फा० खर्राद] एक प्रकार का यत्र जो लकडी अथवा धातु की बनी हुई वस्तुओ के बेडौल अग छीलकर उन्हे सुडौल तथा चिकना बनाता है।

मुहा०—खराद पर उतारना=कोई चीज उक्त यत्र पर रखकर सुडौल और सुदर बनाना। **खराद पर चढाना**=(क) किसी पदार्थ का हर तरह से ठीक, सुदर और सुडौल होना। (ख) ससार के ऊँच-नीच देखकर अनुभवी और व्यवहार-कुशल होना।

स्त्री० १ खरादने की क्रिया या भाव। २ वह रूप जो किसी चीज को खरादने पर बनता है। ३ बनावट का ढग। गढन।

खरादना—स० [हि० खराद] १ कोई चीज खराद पर चढाकर उसे सुन्दर और सुडौल बनाना। २ काट-छाँटकर ठीक और दुरुस्त करना।

खरादी—पु० [हि० खराद] वह व्यक्ति जो खरादने का काम करता हो। खरादनेवाला।

खरापन—पु० [हि० खरा+पन] १ खरे अर्थात् निर्मल, शुद्ध अथवा निश्छल या स्पष्टवादी होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सत्यता।

खराब—वि० [अ०] [भाव० खराबी] १ (वस्तु) किसी प्रकार का विकार होने के कारण जिसका कुछ अश गल या सड गया हो। जैसे—ये फल खराब हो गये है। २ (बान या व्यवहार) जो अनुचित अथवा अशिष्ट हो। ३ (व्यक्ति) जिसका चाल-चलन अच्छा न हो। पतित। मर्यादाभ्रष्ट।

मुहा०—(किसी को) खराब करना=किसी का कौमार्य खडित करना।

४ दुर्दशा-ग्रस्त। जैसे—मुकदमा लडकर वे खराब हो गये। ५ जो मागलिक अथवा शुभ न हो। बुरा। जैसे—खराब दिन।

खराबी—स्त्री० [फा०] १ खराब होने की अवस्था या भाव। २ दोष। ३ दुरवस्था। दुर्दशा। जैसे—तुम्हारा साथ देने के कारण हमे भी खराबी मे पडना पडा।

खरारि—वि० [स० खर-अरि, ष० त०] खरो अर्थात् राक्षसो आदि को नष्ट करनेवाला।

पु० १ विष्णु। २ रामचद्र। ३ श्रीकृष्ण। ४ बलराम (धेनुक नामक असुर को मारने के कारण) ४ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती है।

खरारी—पु० दे० 'खरारि'।

खरालिक—पु० [स० खर-आ√ला (लेना)+णिनि+कन्] १ नाई। २ तकिया। ३ लोहे का तीर।

खराश—स्त्री० [फा०] कोई अग छिलने अथवा छीले जाने पर अथवा रगड खाने पर होनेवाला छोटा या हलका घाव। खरोच। छिलन।

खरिक—पु० [देश०] वह ऊख जो खरीफ की फसल के बाद बोया जाय।

[पु० खरक।

खरिच—पु०—खरच।

खरिया—स्त्री० [हि० खर+इया (प्रत्य०)] १ रस्सी आदि की बनी हुई जाली जिसमे घास, भूसा आदि बाधा जाता है। २ झोली।

स्त्री० [देश०] १ वह लकडी जिसकी सहायता से नाद मे नील कस-कर भरते या दबाते है। २ मानभूम, रांची आदि मे रहनेवाली एक जगली जाति।

स्त्री० [हि० खार=राख] कडे की राख।

स्त्री० दे० 'खडिया'।

खरियान†—पु०=खलियान।

खरियाना†—स० [हि० खरिया] झोली मे भरना।

स०=खलियाना।

खरिहट†—स्त्री० [हि० खर] लकडी का टुकडा जिसमे वह डोरा बँधा रहता है जिससे कुम्हार लोग चाक पर से तैयार की हुई चीज काटकर अलग करते है।

खरिहान—पु० खलियान।

खरी—स्त्री० [स० खर+ङीप्] गधी।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का ऊन।

स्त्री० =खली।

खरीक*—पु० [स० खर] तिनका।

खरी-जघ—पु० [ब० स०] शिव।

खरीता—पु० [अ० खरीत] [स्त्री० अल्पा० खरीती] १ थैली। २ जेब। खीसा। ३ बडा लिफाफा, विशेषत वह लिफाफा जिसमे राजाओं के आदेश-पत्र आदि भरकर भेजे जाते थे।

खरीतिया†—पु० [अ० खरीता] मुसलमानी शासन काल का एक प्रकार का कर जो अकबर ने उठा दिया था।

खरीद—स्त्री० [फा०] १ खरीदने की क्रिया या भाव। क्रय। २ वह जो कुछ खरीदा जाय। जैसे—यह सौ रुपए की खरीद है। ३ वह मूल्य जिस पर कोई वस्तु खरीदी जाय। जैसे—दस रुपए तो इसकी खरीद है।

खरीददार—पु० [फा०] १ जो कोई वस्तु खरीदता हो। ग्राहक। २ गुणग्राहक। चाहनेवाला।

खरीदना—स० [फा० खरीदन] मोल लेना। क्रय करना।

खरीदार—पु०=खरीददार।

खरीदारी—स्त्री० [फा०] कोई वस्तु खरीदने की क्रिया या भाव। खरीदने का काम।

खरीफ—स्त्री० [अ० खरीफ] १ वह फसल जो आषाढ़ से आधे अगहन के बीच मे तैयार होती है। जैसे—धान, मकई, बाजरा, उर्द, मोठ, मूँग आदि। २ आषाढ़ से आधे अगहन तक की अवधि या भोगकाल।

खरीम—स्त्री० [देश०] मुर्गे की तरह की एक चिडिया जो प्राय. पानी के किनारे रहती है।

खरील—पु० [देश०] सिर पर पहनने की एक प्रकार की बेंदी (गहना)।

खरी-विषाण—पु० [स० ष० त०] ऐसी वस्तु जिसका उसी प्रकार अस्तित्व न हो जिस प्रकार गधी या गधे के सिर पर सींग नही होता है।

खरु—वि० [स०√खन् (खोदना) कु, न् र्] १ सफेद। २ मर्व। ३ निष्ठुर।

खरे—अव्य० [हि० खरा] अच्छी तरह। उदा०—हौंहिनर हिहि गर गारियों, खर बढ़े पर पार।—बिहारी।

पु० [हि० खरा] एक आना प्रति रुपए की दलाली जो साधारणत उचित और वाजिब मानी जाती है। (दलाल)

खरेई—अव्य० [हि० खरा+ई (ही)] १ वस्तुत। सचमुच। उदा०—सुन्दरता अरु धाम देखी नहि न सकत खरेई अमान।—सूर। २ बहुत अधिक।

खरेठ—पु० [देश०] एक प्रकार का जड़हन धान।

खरेडुआ†—पु० खरोरी।

खरेरा—पु० खरहरा।

खरोच—स्त्री० [स० क्षरण] १ नख अथवा अन्य किसी नुकीली वस्तु से छिलने से पडा हुआ दाग या चिह्न। खराश। २ कुछ विशिष्ट पत्तो को बेसन मे लपेट कर तैयार किया हुआ पकौडा। पतौड।

खरोचना—स० [स० क्षुरण] किसी नुकीली वस्तु से किसी वस्तु का खुरचना या छीलना।

खरोट—स्त्री० खरोच।

खरोई†—अव्य० दे० 'खरेई'।

खरोच—स्त्री०=खरोंच।

खरोचना—स० खरोंचना।

खरोट—स्त्री० खरोंच।

खरोटना—स० =खरोंचना।

खरोरा†—पु० =खँडौरा।

खरोरी—स्त्री० [हि० खडा] छकडे, बैलगाडी आदि मे दोनो ओर के वे दो-दो खूँटे जिन पर रोक के लिए बाँस बँधे रहते है।

खरोश—पु० [फा०] १. जोर की आवाज। २ कोलाहल। शोर। ३ आवेग या आवेश। जैसे—जोश-खरोश।

खरोष्ट्री, खरोष्ठी—स्त्री० [स० खर-उष्ट्र, मयू० स०, खरोष्ट्र+ङीप्] [खर-ओष्ठ, मयू० स०, खरोष्ठ+ङीप्] भारत की पश्चिमोत्तर सीमा की अशोककालीन एक लिपि जो दाहिनी ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी। गाधार लिपि।

खरौंट†—स्त्री० खरोंच।

खरौंटना†—स० खरोंचना।

खरौहाँ†—वि० [हि० खारा+औहाँ] जो स्वाद मे कुछ-कुछ खारा हो।

खर्जोद—पु० [स०] एक प्रकार का इन्द्रजाल।

खर्ग*—पु०=खड्ग।

खर्च—पु० दे० 'खरच'।

खर्चना—स० =खरचना।

खर्चा—पु० =खरचा।

खर्ची—स्त्री० =खरची।

खर्चीला—वि० =खरचीला।

खर्जन—पु० [स०√खर्ज् (खुजलाना)+ल्युट—अन] १ खुजलाना। २. खुजली।

खर्जरा—स्त्री० [स० √ खर्ज्+घञ्, खर्ज√रा (देना) +क—टाप] सज्जी मिट्टी।

खर्जिका—स्त्री० [स०√खर्ज+ण्वुल्–अक, टाप्, इत्व] उपदश या गरमी नाम का रोग।

खर्जु—स्त्री० [स०√खर्ज्+उन्] १ खुजली। २ जगली खजूर। ३ एक प्रकार का कीडा।

खर्जुघ्न—पु० [स० खर्जु√हन् (नष्ट करना)+टक्] १ धतूरा। २ आक। ३ चक्रमर्द। चकवँड।

खर्जुर—पु० [स०√खर्ज्+उरच्] १ एक प्रकार की खजूर। २ चाँदी।

खर्जू—स्त्री० [स०√खर्ज्+ऊ] १ खुजली। २ एक प्रकार का कीडा।

खर्जूर—पु० [स०√खर्ज्+ऊरच्] १ खजूर नामक वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल। ३ चाँदी। ४ हरताल। ५ बिच्छू।

खर्जूरक—पु० [स० खर्जूर+कन्] बिच्छू।

खर्जूर-वेध—पु० [ष० त०] ज्योतिष मे एकार्गल नामक योग जिसमे विवाह कर्म वर्जित है।

खर्जूरी—स्त्री० [स० खर्जूर+ङीष्] खजूर।

खर्पर—पु० [स०=कर्पर, पृषो० खत्व] १ खप्पर नामक पात्र। २ काली देवी का रुधिर पीने का पात्र। ३ हड्डियो की राख से बननेवाली वह छिद्रिल घरिया जिसमे चाँदी-सोना गलाने पर उसमे मिला हुआ खोट रसकर बाहर निकल जाता है। (क्यूपेल) ४ खोपडा।

खर्परी—स्त्री० [स० खर्पर+ङीष्] खपरिया।

खर्ब—वि० [स०√खर्ब् (गति)+अच्] १ जिसका कोई अग कटा या टूटा हो। विकलाग। २ छोटा। लघु। ३ बौना।

पु० [स०] १ सख्या का बारहवाँ स्थान। सौ अरब। खरब। २ बारहवे स्थान पर पडनेवाली सख्या।

वि०, पु०=खर्व।

खर्बट—पु० [स०√खर्ब्+अटन्] पहाड पर बसा हुआ गाँव। पहाडी बस्ती।

खर्रांट—वि०=खुर्राट।

खर्रा—पु० [खर खर से अनु०] १ वह बहुत लबा पर बहुत कम चौडा कागज जिसमे कोई बडा हिसाब या विवरण लिखा हो और जो प्राय मुट्ठे की तरह लपेटकर रखा जाता है। (रोल) २ एक प्रकार का रोग जिसमे पीठ पर फुसियाँ होती है और चमडा कडा पड जाता है।

खर्राच—वि० [अ०] बहुत खर्च करनेवाला। खर्चीला।

खर्राटा—पु० [अनु० खर खर] सोते समय मुँह के रास्ते जोर से साँस लेने पर होनेवाला खर-खर शब्द।

विशेष—प्राय गले या नाक मे भरी हुई बलगम से हवा के टकराने पर ऐसा शब्द होता है।

मुहा०—खर्राटा भरना, मारना या लेना=पूरी नीद मे और बेसुध होकर सोना।

खर्व—वि० [स०√खर्व्+अच्] १ खडित या भग्न अगवाला। विकलाग। २ छोटा। लघु। ३ नाटा। बौना। ४ तुच्छ। नगण्य। ५ नीच।

पु०१ सौ अरब की अर्थात् बारहवे स्थान की सख्या। २ कुबेर की एक निधि। ३ कूजा नामक वृक्ष। ४ ठिगने कद का व्यक्ति। बौना।

खर्विता—स्त्री० [स०√खर्व्+क्त+टाप्] १ चतुर्दशी से युक्त अमावास्या जो बहुत कम होती है। २ ऐसी तिथि जिसका काल-मान बीती हुई तिथि के काल-मान से कुछ कम हो।

खर्वीकरण—पु० [स० खर्व+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] कम या छोटा करने की क्रिया या भाव।

खल—वि० [स०√खल् (चलना, गिरना)+अच] [भाव० खलता] १ क्रूर और दुष्ट स्वभाववाला। दुर्जन। पाजी। लुच्चा। २ अधम। नीच। ३ निर्लज्ज। ४ धोखेबाज। ५ चुगुलखोर। पिशुन।

पु० [स०] १ सूर्य। २ पृथ्वी। ३ जगह। स्थान। ४ खलिहान। ५ तलछट। ६ धतूरा। ७ तमाल वृक्ष। ८ खरल। ९ पत्थर का टुकडा या ढोका। १० सुनारो का किटकिना नाम का ठप्पा।

†पु०=खरल।

खलई—स्त्री०=खलता।

खलक—पु० [स० ख√ला (लेना)+क+कन्] घडा।

पु० [अ० खल्क] १ जगत् या सृष्टि के प्राणी। २ जगत्। ससार। सृष्टि।

खलकत—स्त्री० [अ०] १ जगत् या ससार के सब लोग। २ जन-समूह। भीड।

खलखल—स्त्री० [अनु०] १ तरल पदार्थ उँडेलने अथवा उबालने पर होनेवाला शब्द। २ हँसने आदि मे होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द।

खलखलाना—अ० [अनु०] १ खल खल शब्द होना। २ खौलना।

स० १ खल खल शब्द उत्पन्न करना। २ उबालना। खौलाना।

खलडी—स्त्री० [हिं० खाल+डी (प्रत्य०)] खाल। त्वचा।

खलता—स्त्री० [स० खल+तल्—टाप्] खल होने की अवस्था या भाव। दुष्टता।

पु० [हिं० खरीता] एक प्रकार का बडा थैला।

खलत्व—पु० [स० खल+त्व] खलता (दे०)।

खलधान—पु० [स०√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन, खल-धान, ष० त०] खलियान।

खलना—अ० [स० खर=तीक्ष्ण] १ अनुचित, अप्रिय या कष्टदायक प्रतीत होना। दूषित या बुरा जान पडना। अखरना। २ नेत्रो को भला प्रतीत न होना। ठीक प्रकार से न जँचना या न फबना। खटकना।

स० किसी धातु को इस प्रकार खाली अर्थात् पोला करना कि वह झुक या मुड सके। (सोनार)

खलनी—स्त्री० [फा० खाली] सोनारो का एक औजार जिस पर रख कर घुडी आदि बनाई जाती है।

खलबल—स्त्री० [अनु०] १ शोर। हल्ला। २ कुलबुलाहट। ३ दे० 'खलबली'।

खलबलाना—अ० [हिं० खलबल] १ खलबल शब्द करना। २ उबलना। खौलना। ३ कीडे-मकोडो का हिलना-डोलना। कुलबुलाना। ४ दे० 'खडबडाना'।

स० १ खलबल शब्द करना। २ खलबली या हलचल उत्पन्न करना।

खलबली—स्त्री० [हिं० खलबल] १ खलबल करने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—पेट मे खलबली होना। २ घबराहट, भय आदि के कारण भीड़ या जन-समूह मे मचनेवाली हलचल। ३ क्षोभ।

खलभलाना—अ०, स०=खलबलाना।

खल-मूर्ति—पु० [ब० स०] पारा।

खल-यज्ञ—पु० [मध्य० स०] प्राचीन काल मे खलियान मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

खलल—पु० [अ०] १ किसी चलते हुए काम मे पडनेवाली बाधा या विघ्न। अडचन।

पद—खलल-दिमाग—मस्तिष्क मे होनेवाली विकृति। पागलपन।

खलसा—स्त्री० [स० खालिश] एक प्रकार की बडी मछली।

खलहल†—पु० =खलल।

स्त्री०=खलबल।

खलाइत—स्त्री० [हिं० खाल+इत (प्रत्य०)] धौकनी। भाथी।

खलाई—स्त्री०=खलता।

खलाना*†—स० [हिं० खाली] १ पात्र आदि मे भरी हुई चीज बाहर निकालना। खाली करना। २ किसी को कही मे बाहर निकालना। ३ घुडी बनाने के लिए पत्तर की कटोरी इस प्रकार बनाना कि उसका भीतरी भाग खाली रहे। (सुनार)

स० [हिं० खाल गड्ढा] १ जमीन खोदकर गड्ढा बनाना। २. भरी हुई जमीन खोदकर खाली करना। जैसे—कूआँ खलाना। ३ नीचे की ओर इस प्रकार दबाना कि वह खाली जान पडे।

मुहा०—पेट खलाना=पेट पचकाकर यह सूचित करना कि हम बहुत भूखे हैं, हमे कुछ मिलना चाहिए।

स० [हिं० खाल] मरे या मारे हुए पशु की खाल उतारना। जैसे—बकरी या शेर खलाना।

खलार†—वि० [हिं० खाली] नीचा। गहरा। जैसे—खलार भूमि।

पु० आस-पास के तल से नीचा स्थान।

खलाल—पु०[अ०] धातु का वह लबा, नुकीला, छोटा टुकडा जिससे दाँतों मे फँसा हुआ अन्न आदि खोदकर निकालते है।

वि० [हिं० खलास] (ताश के खेल मे) जो पूरी बाजी हार चुका हो।

पु० उक्त प्रकार की हार।

खलास—वि० [अ०] १ किसी प्रकार के बधन से छूटा हुआ। मुक्त। २ जिसके पास या साथ कुछ रह न गया हो। गरीब। दरिद्र। ३. खतम। समाप्त। ४ सभोग के समय जिसका वीर्य-पात हो चुका हो।

खलासी—स्त्री० [हिं० खलास] छुटकारा। मुक्ति।

पु० जहाज पर या रेलों मे छोटे-मोटे काम करनेवाला मजदूर।

खलि—स्त्री० [सं० √खल् (गति) +इन्] खली।

खलित*—वि० [सं० स्खलित] १. चलायमान। चचल। डिगा हुआ। २. अपने स्थान से गिरा या हटा हुआ। ३. जिसका वीर्यपात हो चुका हो। ४ अस्पष्ट या अर्थरहित (बात)।

वि० [सं०√खल्+क्त] अधम। नीच। पतित।

खलिन—पु० [स० ख-लीन, स० त०, पृषो० ह्रस्व] १ घोडे की लगाम। २. लोहे का वह उपकरण जिसके दोनो ओर लगाम बँधी रहती है।

खलियान—पु० [स० खल और स्थान] १. वह समतल भूमि या मैदान जहाँ फसल काटकर रखी, माँडी तथा बरसाई जाती है। २ अव्यवस्थित रूप से लगाया हुआ ढेर।

खलियाना†—स० =खलाना (सब अर्थों मे)।

खलिवर्द्धन—पु० [ष० त०] मसूडों का एक रोग जिसमे उनकी जड का मास बढ जाता और पीडा होती है।

खलिश—पु० [स० स√श्लिष् (गति या मिलना) +र] खलसा नाम की मछली।

स्त्री० [फा०] १ कोई खटकने, गडने या चुभनेवाली चीज। काँटा। २ उक्त प्रकार की चीज गडने या चुभने से होनेवाली कसक, टीस या पीडा। खटक।

खलिहान†—पु० खलियान।

खली (लिन्)— वि० [स० खल इनि] जिसमे तलछट हो।

पु० १ शिव। २ एक प्रकार के दानव जिन्हे वशिष्ठ देव ने मारा था।

स्त्री० तेलहन का वह अश जो उसे पेरकर तेल निकालने पर बच रहता और गौआ-भैंसों आदि को भूसे म मिलाकर खिलाया जाता है।

वि० [हिं० खलना] खलने या खटकनेवाला। अनुचित और अप्रिय।

खलीज—स्त्री० [अ०] खाडी। (भूगोल)

खलीता—पु० खरीता।

खलीफा—पु०[अ०] १ उत्तराधिकारी। २ मुसलिम राष्ट्र म एक सर्वोच्च पद जिस पर मुहम्मद साहब का उत्तराधिकारी नियुक्त होता था और ससार भर के मुसलमानो का नेता माना जाता था। (कैलिफ) ३ प्रधान अधिकारी। ४ बडा, बुड्ढा और मान्य व्यक्ति। ५ मुसलमान नाइयो दरजियों आदि का उपनाम। ६ बहुत बडा चालाक या धूर्त्त। खुर्राट।

खलील—पु० [अ०] सच्चा दोस्त।

खलु—क्रि० वि० [स० √खल+उन्] निश्चयवाचक शब्द। निश्चित रूप से। अवश्य।

खलूरिका—स्त्री० [स० अव्युत्पन्न] १ वह मैदान जहाँ सैनिक शिक्षा दी जाती हो अथवा जहाँ सैनिक व्यायाम आदि करते हों। २ चाँदमारी का स्थान।

खलेरा—वि० [अ० खाल मौसी] जो खाला (मौसी) के सबध मे कुछ लगता हो। मौसेरा। जैसे—खलेरा भाई।

खलेल—पु०[हिं० खली+तेल] खली आदि का वह अश जो फुलेल मे रह जाता है और निथारने या छानने पर निकलता है।

वि० पु० खलाल।

खल्क—स्त्री० दे० 'खलक'।

खल्कत—स्त्री० =खलकत।

खल्ल—पु०[स० √खल्+विच्, खल्√ला (लेना) +क] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का कपडा। २ चमडा। ३ चमडे का बनी हुई मशक। ४ चातक पक्षी। ५ औषध का खरल में डालकर घोटने या पीसने की क्रिया।

खल्लड—पु०[स० खल्ल, हि खाल] १ मृत पशु की उतारी हुई खाल। २. चमडे की मशक या थैला। ३ औषध, मसाले आदि कूटने का खरल।

खल्ला—पु०[हिं० खाली] १ नृत्य मे यह दिखलाने की क्रिया कि हमारा पेट खाली है। २ बिना साफ की हुई खाल से बनाया हुआ जूता।

†पु०=खलियान।

खल्लासर—पु०[स० ?] ज्योतिष मे एक प्रकार का योग।

खल्लिका—स्त्री० [स० खल्ल+कन्—टाप्, इत्व] कडाही।

खल्ली—पु० [स० खल्ल+ङीष्] एक प्रकार का वात रोग जिसमे हाथ पाँव मुड जाते है।

†स्त्री० =खली (तेलहन की)।

खल्लीट—पु० वि०=खल्वाट।

खल्व—पु०[स० √खल्+क्विप्, खल्√वा+क] १ सिर के बाल झड जाने का रोग। गज। २ एक प्रकार का धान। ३ चना।

खल्वाट—पु०[स० खल्√वट् (लपेटना)+अण्] वह रोग जिसमे सिर के बाल झड जाते है। गज नामक रोग।

वि० जिसके सिर के बाल झड गये हो। गजा।

ख-वल्ली—स्त्री० [स० त०] आकाशवल्ली (बौर)।

खवा—पु० [स० स्कन्ध] कधा। भुजमूल।

मुहा०—खवे से खवा छिलना=इतनी अधिक भीड होना कि सबको धक्के लगते हो।

खवाई—स्त्री० [हिं० खाना] १ खाने या खिलाने की क्रिया, भाव या पारितोषिक।

स्त्री० [?] नाव मे का वह गड्ढा जिसमे मस्तूल खडा किया जाता है।

खवाना†—स०=खिलाना (भोजन कराना)।

खवार—वि०=ख्वार।

खवास—पु० [अ०]१ वह खास नौकर जो अग-रक्षक का भी काम करता हो। २ राजपूताने मे, राजाओ की विशिष्ट प्रकार की निजी सेवाएँ करनेवाले सेवको की जाति या वर्ग। ३ उक्त जाति या वर्ग का कोई व्यक्ति।

खवासी—स्त्री०[हिं० खवास+ई (प्रत्य०)] १ खवास का काम, पद या भाव। २ चाकरी। नौकरी। ३ हाथी के हौदे, गाडी आदि मे पीछे की ओर का वह स्थान जहाँ खवास बैठता है। ४ अँगिया मे बगल की तरफ लगनेवाला जोड।

ख-विद्या—स्त्री०[स० ष० त०] ज्योतिष विद्या।

खवी—स्त्री० [फा० खवीद=हरी घास या फसल] एक प्रकार की घास।

खवैया—पु०[हिं० खाना+ऐया (प्रत्य०)] बहुत खानेवाला।

वि० [हिं० खवाना=खिलाना+ऐया (प्रत्य०)] खिलाने या भोजन करानेवाला।

खश†—पु०=खस।

खशखाश—पु०[फा०] पोस्ते का पौधा और उसका बीज। खसखस।

खशी (शिन्)—वि० [स० खश+इनि] पोस्ते के फूल के रग का। हलका आसमानी।

पु० हलका आसमानी रग।

खश्म—पु०[अ० मि० स० खष्प] कोप। क्रोध। रोष।

ख-श्वास—पु०[ष० त०] वायु।

खष्प—पु०[स०√खन् (खोदना)+प, न=ष] १ हिंसा। २ क्रोध।

खस—पु०[स० ख√सो (नष्ट करना) +क] १ वर्त्तमान गढवाल और उसके उत्तरी प्रदेश का पुराना नाम। २ इस प्रदेश मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति।

स्त्री० [फा०] गाँडर नामक घास की जडे जो सुगधित होती है और जिसकी टट्टियाँ बनाई जाती है।

पद—खस की टट्टी=खस नामक घास की जडो की बनाई जानेवाली एक प्रकार की टट्टी या परदा जिसे गरमी के दिनो मे दरवाजो पर कमरे ठढे रखने के लिए लगाते है।

खसकता—स्त्री०[हिं० खसकना+अत (प्रत्य०)] चुपके से खिसक या भाग जाने अथवा कही से उठकर चल देने की क्रिया या भाव।

खसकना—अ०[अनु०] १ पाँव तथा चूतड के बल बैठे-बैठे धीरे-धीरे किसी ओर बढना या हटना। २ चुपचाप कही से चले जाना या हट जाना। ३ किसी वस्तु का अपने स्थान से कुछ हट जाना। जैसे—खभा या दीवार खसकना।

खसकवाना—स० [खसकाना का प्रे०] १ खसकाने का काम कराना। २ किसी को कोई चीज धीरे से उठा लाने मे प्रवृत्त करना।

खसकाना—स०[हिं० खसकना] १ किसी वस्तु को धीरे-धीरे हटाते हुए उसके स्थान से इधर-उधर करना। २ धीरे से किसी की कोई वस्तु उडाकर चलते बनना।

खसखस—स्त्री०[स० खस्खस?] पोस्ते का दाना या बीज।

खसखसा—वि० [हिं० खसखस] खसखस के दानो की तरह का, अर्थात् बहुत छोटा। जैसे—खसखसी दाढी।

वि० [अनु०] भुरभुरा।

खसखसी—वि० [हिं० खसखस] खसखस या पोस्ते के दानो के रग का। कुछ मटमैला सफेद। मोतिया।

पु० उक्त प्रकार का रग। (पर्ल)

खस-खाना—पु० [फा०] खस की टट्टियो से घिरा हुआ कमरा या घर जिसमे बडे आदमी गरमियो के दिनो मे दोपहर के समय रहते है।

खस-खास—स्त्री०=खसखस।

खसतिल—पु० [स० खस√तिल् (चिकना होना)+क] पोस्ता।

खसना†—अ० [प्रा० कसई=गिरना] १ अपनी जगह मे धीरे-धीरे हटना। खिसकना। २ नीचे की ओर आना। गिरना।

†स० [अ० खसी=बकरी का बच्चा] १ काट या तोडकर अलग करना। २ नष्ट करना। उदा०—इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि।—कबीर।

खसनीब—पु० [?] एक प्रकार का गधा बिरोजा।

खसबो*—स्त्री०=खुशबू।

खसम—पु० [अ०] १ स्त्री का पति। खाविद।

मुहा०—खसम करना=किसी पर-पुरुष से पति-सबध स्थापित करना।

२ मालिक। स्वामी। ३ रहस्य सप्रदाय मे, (क) जीव या जीवात्मा। (ख) परमात्मा।

वि० [स० ख=आकाश+सम=समान] आकाश या शून्य के समान सब प्रकार के भावो या विचारो से रहित। (रहस्य सप्रदाय) जैसे—खसम स्वभाव।

खसरा—पु०[अ० खसर] १ पटवारी या लेखपाल का वह कागज जिसमे

प्रत्येक खेत का क्षेत्रफल या नाप-जोख आदि लिखी रहती है। २ हिसाब का कच्चा चिटठा।

पु०[फा० खारिश] एक प्रकार का सक्रामक रोग जिसमे शरीर पर बहुत से छोटे-छोटे दाने निकल आते है और बहुत कष्ट होता है। मसूरिका।

ख-सर्प—पु० [स० ब० स०] गौतम बुद्ध।

खसलत—स्त्री०[अ०] आदत। स्वभाव।

खसाना—स० [हि० खसना] नीचे की ओर ढकेलना या फेकना। नीचे गिराना।

खसारा—पु० [अ० खसार] १ नुकसान। हानि। २ घाटा। टोटा।

खसासत—स्त्री० [अ०] १ खसीस होने की अवस्था या भाव। कजूसी। २ क्षुद्रता। नीचता।

ख-सिंधु—पु०[स० ष० त०] चद्रमा।

खसिया—वि० [अ० खस्सी] १ (पशु) जिसके अडकोश निकाल लिए गये हो। बधिया। २ नपुसक।

पु० खस्सी (बकरा)।

खसियाना†—स० [हि० खसिया] नर पशुओ के अडकोश निकाल या कूटकर पसत्व हीन करना। खस्सी या बधिया करना।

खसी†—पु० खस्सी।

वि०=खसिया।

खसीस—वि० [अ०] कजूस। सूम।

खसोट—स्त्री० [हि० खसोटना] खसोटने की क्रिया या भाव।

वि० खसोटनेवाला। (यौ० के अत मे) जैसे— कफन खसोटना।

खसोटना—स० [स० कृष्ट] १ झटके से अथवा बलपूर्वक उखाडना। नोचना। जैसे—(क) बाल खसोटना। (ख) पत्ते खसोटना। २ बलपूर्वक किसी की चीज छीनना।

खसोटा—पु०[हि० खसोटना] [स्त्री० खसोटी] १ नोच-खसोट करनेवाला व्यक्ति। २ लुटेरा। ३ कुश्ती का एक पेच।

खसोटी—स्त्री०[हि० खसोटना] खसोटने की क्रिया या भाव। खसोट। उदा०—कफन-खसोटी को करम सबही एक समान।—भारतेंदु।

ख-स्तनी—स्त्री०[स० ब० स०, ङीष्] पृथिवी।

खस्ता—वि० [फा० खस्त] १ बहुत थोडी दाब मे टूट जानेवाला। भुरभुरा। २ जो खाने मे मुलायम तथा कुरकुरा हो। जैसे—खस्ता कचौडी, खस्ता पापड। ३ टूटा-फूटा। भग्न। ४ दुर्दशा-ग्रस्त।

ख-स्वस्तिक—पु०[उपमि० स०] वह कल्पित बिंदु जो सिर के ठीक ऊपर आकाश मे माना जाता है। शीर्षबिंदु। पाद-बिंदु, का विपर्याय। (जेनिथ)

खस्सी—पु०[अ०] १ बकरा। २ बधिया किया हुआ पशु। ३ नपुसक। हिजडा।

वि० बधिया किया हुआ।

खह—पु० [स० ख] आकाश।

†स्त्री०=खेह।

ख-हर—पु० [ब० स०] गणित मे वह राशि जिसका हर शून्य हो।

खाँ—वि० [फा० ख्वाँ] उच्चारण करने, पढने या बोलनेवाला।

पु० दे० 'खान'।

खाँई†—स्त्री०=खाई।

खाख|—स्त्री० [स० ख] छेद। सूराख।

खाँखर†—वि० दे० 'खँखरा।'

खाँग†—पु०[स० खड्ग, प्रा० खग्ग] १ काँटा। कटक। २ कुछ पक्षियो के पैरो मे निकलनेवाला काँटा। जैसे—तीतर या मुरगे का काँटा। ३ कुछ विशिष्ट पशुओ के मस्तक पर आगे की ओर सीग की तरह का निकला हुआ अग। जैसे—गैडे या जगली सूअर का खाँग। ४ खुरवाले पशुओ का एक रोग जिसमे उनके खुरो मे घाव हो जाता है। खुरपका।

स्त्री० [हि० खाँचना] १ घिसने, छीजने आदि के कारण होनेवाली कमी। छीजन। २ कसर। त्रुटि। उदा०—रागी ... नाथ कहि खाँगी।—तुलसी।

खाँगड, खाँगडा—वि० [हि० खाँग + ड (प्रत्य०)] १ जिसके पैर मे खाँग रोग हो। २ जिसके मस्तक या मुँह पर खाँग हो। ३ जिसके पास अस्त्र-शस्त्र हो। हथियारबद। ४ बलिष्ठ या हृष्ट-पुष्ट।

खाँगना†—अ० [हि० खाँग] पैर मे खाँग (रोग) निकलने के कारण ठीक तरह से चलने मे असमर्थ होना। उदा०—... गो पीर काह बिनु खाँगा।—जायसी।

खाँगी†—स्त्री० [हि० खँगना] १ कमी। त्रुटि। २ घाटा।

खाँघी—स्त्री० =खाँगी।

खाँच†—स्त्री०[हि० खाँचना] १ खाँचने की क्रिया या भाव। २ खाँचने के कारण बननेवाला चिह्न या निशान। ३ दो वस्तुओ के बीच का जोड। सधि। ४ दे० 'खचन।'

†पु० खाँचा।

खाँचना†—स० [स० खचन] [वि० खँचैया] १ अकित करना। चिह्न बनाना। खीचना। २ जल्दी-जल्दी घसीटकर और भद्दी तरह से लिखना। ३ चिह्न या निशान लगाना। ४ ... या अच्छी तरह से युक्त करना। उदा०—सूरदास गणिका ... रस खाँची।—सूर। ५ दृढतापूर्वक कोई प्रतिज्ञा करना या बात कहना। उदा०—जानहुँ नहि कि पैज पिय खाँचा।—जायसी।

खाँचा—पु० [हि० खाँचना] [स्त्री० अल्पा० खाँचिया, खाँची] १ किसी चीज मे खोदकर बनाया हुआ कुछ गहरा और लबा निशान। २ पतली टहनी आदि का बना हुआ बडा टोकरा। झाबा। ३ ... पिजरा।

खाँची—स्त्री०[हि० खाँचा] छोटा खाँचा। खँचिया।

खाँड—स्त्री० [स० खड] ऐसी चीनी जो कम साफ होने के कारण बहुत सफेद न हो, बल्कि कुछ लाल रग की हो। कच्ची चीनी या शक्कर।

†पु० खाँडा। उदा०—जाति सूर और खाँडे सूरा।—जायसी।

खाँडना†—स० [स० खड] १. खड खड करना। २ ... अथवा कुचल-कुचलकर खाना। चबाना। ३ दाँतो से काटना। उदा०—मेरे इनके बीच परै जनि अधर दसन खाँडौगी।—सूर।

खाँडर*—पु० [स० खड] छोटा टुकडा।

खांडव—पु०[स० खड + अण्, खाड√वा (गति) ...] १ दिल्ली के आसपास का एक पुराना वन जिसे अर्जुन ने अग्निदेव से जलवाया था। ...

योग्य बनाया था। २ खाँड की बनी हुई खाने की चीज। मिठाई।

खाडव-प्रस्थ—पु०[ष० त०] एक गाँव जो पाडवो को धृतराष्ट्र की ओर से मिला था। यही पर पाडवो ने इन्द्रप्रस्थ बसाया।

खाडविक—पु०[स० खाडव+ठञ्—इक] मिठाई बनानेवाला। हलवाई।

खाडा—पु० [स० खड्ग, खण्डक, प्रा० खण्डइ, बँ० खाँरा, खाड, मरा० खाडा, प० खण्डा, गु० खाडु] चौडे और तिरछे फलवाली एक प्रकार की छोटी तलवार। खड्ग।

†पु० [स० खड] टुकडा। भाग।

खाडिक—पु०=खाडविक (हलवाई)।

खाँडो—पु० दे० 'षाडव'।

खाँदना—†स० [स० स्कदन] १ दबाना। २ खोदना।

खाँधना*—स० [स० खादन] १ खाना। उदा०— नैन नासिका मुख नही चोरि दधि कौने खाँधौ।—सूर। २ दे० 'खाँदना'।

खाँधा†—वि० [?] टेढा। तिरछा। (राज०) उदा०—खाँधी बाँधे पाघडी मथरी चाले चाल।

खाँप—स्त्री० १ =फाक। २ =टुकडा।

स्त्री० [हि० खाँपना] खाँपने की क्रिया या भाव।

खाँपना†—स० [स० क्षेपन, प्रा० खेपन] १ खोसना। २ अच्छी तरह बैठाकर लगाना। जडना। ३ चारपाई बुनने के समय किसी चीज से ठोककर उसकी बुनावट कसना और घनी करना।

खाँभ*—पु०=खभा।

†पु०=खाम (लिफाफा)।

खाँभना—स० [हि० खाम] लिफाफे मे बद करना।

खाँवाँ—पु०[स० स्कधक] १ गहरी और चौडी खाईं। २ मिट्टी की चहारदीवारी।

पु० [?] सफेद फूलोवाला एक प्रकार का पौधा।

खाँसना—अ० [स० कासन, प्रा० खाँसन] गले मे रुका हुआ कफ या और कोई अटकी हुई चीज निकालने या केवल शब्द करने के लिए झटके से वायु कठ के बाहर निकालना। खाँसी आने या होने का-सा शब्द करना।

खाँसी—स्त्री० [स० कास] १ एक शारीरिक व्यापार जिसमे फेफडो से निकलनेवाली हवा श्वास नाली मे रुकने पर सहसा वेगपूर्वक मुँह के रास्ते बाहर निकलने का प्रयत्न करती है। २ इस प्रकार खाँसने से होनेवाला शब्द। ३ एक रोग जिसमे मनुष्य या पशु बराबर खाँसता रहता है। (कफ, उक्त सभी अर्थों मे)

खाई—स्त्री० [स० खात, पा० खातो, दे प्रा० खाइआ, पा० खाअ, खाइआ, ब० उ० खाइ, सि० खाही, गु० मरा० खाई] १ वह छोटी नहर जो किले आदि के चारो ओर रक्षा के लिए खोदी जाती थी। २ युद्ध क्षेत्र मे खोदे जानेवाले वे लबे गड्ढे जिनमे छिपकर सैनिक शत्रुओ पर गोले-गोलियाँ चलाते है। (ट्रेच)

खाऊ—वि० [हि० खा+ऊ (प्रत्य०)] १ बहुत खानेवाला। पेटू। २ अनुचित रूप से दूसरो का धन लेनेवाला।

पद—खाऊ बीर=दूसरो का माल हडप जानेवाला।

खाक—स्त्री०[फा०] १ धूल। मिट्टी।

पद—खाक का पुतला=मिट्टी से बना हुआ प्राणी अर्थात् मनुष्य। **खाक-पत्थर**=नगण्य अथवा व्यर्थ का सामान।

मुहा०—(किसी की) खाक उडना=कुख्याति या बदनामी होना। **(कही पर) खाक उडना**=पूर्ण विनाश हो जाने पर उसके चिह्न दिखाई देना। **खाक उडाना**=(क) व्यर्थ का काम या परिश्रम करना। (ख) व्यर्थ इधर-उधर मारे मारे फिरना। **खाक छानना**=कुछ ढूँढने के लिए व्यर्थ दूर दूर के चक्कर लगाना। जैसे—नौकरी के लिए उसने सारे शहर की खाक छान डाली है। **(किसी चीज पर) खाक डालना**=सदा के लिए किसी वस्तु को उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर छोड देना अथवा बात को भुला देना। **खाक मे मिलना**=(क) नष्ट या बरबाद होना। (ख) ढह जाना। **खाक हो जाना**=मिट्टी मे मिलकर मिट्टी का रूप धारण कर लेना।

२ भस्म। राख।

मुहा०—खाक करना=(क) बिलकुल जला डालना। (ख) नष्ट करना।

३ परम तुच्छ या हीन वस्तु।

वि० बहुत ही तुच्छ या हेय।

अव्य० कुछ भी नही। नाम को भी नही। जैसे—पढना-लिखना तो तुम खाक जानते हो।

खाकरोब—पु० [फा०] झाडू देनेवाला। चमार या मेहतर।

खाकसार—वि० [फा०] १ खाक, धूल या मिट्टी मे मिला हुआ। २ अपने सम्बन्ध मे दीनता या नम्रता दिखाते हुए, यह सेवक। अकिचन। जैसे—खाकसार हाजिर है।

पु० १ मुसलमानो का एक आधुनिक सघठन जो लोक-सेवा के लिए बना था। २ उक्त सघठन का सदस्य।

खाकसारी—स्त्री० [फा०] खाकसार होने की अवस्था या भाव।

खाकसीर—स्त्री० [फा० खाकशीर] खूबकलाँ नामक ओषधि (एक प्रकार की घास के बीज)।

खाका—पु० [फा० खाक] १ रेखाओ आदि द्वारा बनाया हुआ किसी आकृति या चित्र का आरभिक रूप जिसमे रग आदि भरे जाने को हो। ढाँचा। २ वह कागज जिस पर उक्त प्रकार का, रेखाओ का ढाँचा बना हो। नक्शा। मानचित्र। जैसे—एशिया या हिंदुस्तान का खाका।

मुहा०—(किसी बात या व्यक्ति का) खाका उडाना=उपहास करना। दिल्लगी उडाना। **(किसी चीज का) खाका उतारना**=किसी चीज की सूरत का नक्शा कागज पर खीचना। कच्चा नक्शा बनाना। **खाका झाडना**=चित्रकला मे एक विशेष प्रक्रिया से किसी चित्र की मुख्य रूप-रेखाएँ किसी दूसरे कागज पर ले आना।

३ रेखाओ का ऐसा अकन जो समय-समय पर होनेवाले उतार-चढावो, परिवर्तनो आदि का सूचक होता है। (ग्राफ) जैसे—बुखार का खाका। ४ किसी पत्र, लेख, विधान आदि का वह आरभिक रूप जिसमे अभी कई बाते घटाने-बढाने को होती है। मसौदा। (ड्राफ्ट) ५ वह कागज जिसमे किसी काम के खर्च का अनुमान से ब्योरा लिखा हो। चिट्ठा। तखमीना।

खाकान—पु०[तु०] १ सम्राट्। २ चीन के पुराने सम्राटो की उपाधि।

खाकी—वि० [फा०] १ मिट्टी से सम्बन्ध रखनेवाला। मिट्टी का।

२ खाक अर्थात् मिट्टी के रंग का। भूरा। जैसे—खाकी कपड़ा।
पद—खाकी अंडा=(क) ऐसा अंडा जो अन्दर से सड़ गया हो और जिसमें से बच्चा न निकले। गंदा अंडा। वयंडा। (ख) वर्ण-संकर। दोगला।
३ (भूमि) जिसमें सिंचाई न हुई हो या न होती हो।
पु० १ एक प्रकार के साधु, जो सारे शरीर में राख लगाये रहते हैं।
२ मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय जो खाकी शाह नामक पीर ने चलाया था। ३ खाकी या भूरे रंग के कपड़े की वर्दी जैसी पुलिस और सेना के सिपाही पहनते हैं।
खाख†—स्त्री०=खाक।
खाखरा*—पु० [?] एक तरह का पुराना बाजा।
खाखस†—पु०=खसखस।
खाग†—पु० [सं० खड्ग] तलवार। उदा०—बैरी वाडे बागड़ी सदा रणके खाग।—कविराजा सूर्यमल।
†पु० दे० 'खाँग'।
खागना—अ० [हिं० खाग=काँटा] १ चुभना। गड़ना। २ दे० 'खाँगना'।
अ० [?] साथ लगना। सटना।
स० [?] साथ लगाना। सटाना।
खागीना—पु० [फा० खाग] १ अंडों की बनी हुई तरकारी या सालन। २ अंडा।
खाज—स्त्री० [सं० खर्जु] १ मनुष्यों को होनेवाला खुजली नामक रोग। २ पशुओं विशेषतः कुत्तों को होनेवाला एक संक्रामक रोग जिसमें उनका सारा शरीर खुजलाते-खुजलाते सड़ जाता है और बाल झड़ जाते हैं।
पद—कोढ़ की खाज पहले के कष्ट में आकर मिलनेवाला दूसरा बड़ा कष्ट।
खाजा—पु० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] १ पक्षियों आदि का खाद्य पदार्थ। जैसे—बुलबुल का खाजा। २ मनुष्यों का उत्तम खाद्य पदार्थ। ३ एक प्रकार की मिठाई। ४ एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फलों की गिनती सूखे मेवों में होती है। ५ उक्त वृक्ष का फल।
खाजी*—स्त्री० दे० 'खाजा'।
खाट—स्त्री० [सं० खट्वा, प्रा० खट्टा, सिं० खटोला, खत, प० खट्ट, बँ० खाटुली, गु० मरा० खाट, खाटला] [स्त्री० अल्पा० खटिया, खटोला] पावों, पाटियों आदि का बना हुआ तथा रस्सियों आदि से बुना हुआ एक प्रसिद्ध चौकोर उपकरण जिस पर लोग बिछौना बिछाकर सोते हैं। चारपाई।
मुहा०—(किसी की) खाट कटना=इतना बीमार पड़ना कि उसके मल-मूत्र त्याग के लिए चारपाई की बुनावट काटनी पड़े। **खाट पर पड़ना या खाट से लगना**=इस प्रकार बीमार पड़ना कि खाट से उठने योग्य न रह जाय। **खाट से उतारना**=मरणासन्न व्यक्ति को भूमि पर लेटाना।
खाटा*—वि०=खट्टा।
खाटिका*—स्त्री० [सं०√खट् (चाहना)+इन्,खाटि+कन्—टाप्] अरथी।
खाटिन†—पु० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है।
खाटी—स्त्री०=खाटिका।
खाटो†—वि०=खट्टा।
खाड*—पु० [सं० खात] गड्ढा। गर्त।
खाडव—वि०, पु०=षाडव।
खाडी—स्त्री० [सं० खात् या हिं० खाड] १ गड्ढ। गड्ढा। गर्त। २ समुद्र का वह अंश या भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। उपसागर। (बे)
स्त्री० [हिं० खोह] अरहर का सूखा और बिना फल-पत्ते का पेड़।
स्त्री० [हिं० काढना] किसी चीज में से आखिरी बार निकाला हुआ रंग। (रंगसाज)
खाडू—पु० [हिं० खड या खड़ा] वे लंबी लकड़ियाँ जो दो दीवारों आदि के ऊपर रखी जाती है और जिनके ऊपर खपड़े छाये जाते हैं।
खाडर†—पु० खादर।
खात—पु० [सं० √खन् (खोदना) क्त] १ खोदने का काम। खोदाई। २ खोदी हुई जमीन। गड्ढा। ३ वह गड्ढा, जिसमें भरकर खाद तैयार की जाती है। ४ तालाब। ५ कुआँ।
स्त्री० [?] १ मद्य बनाने के लिए रखा हुआ महुए का ढेर। २ वह स्थान जहाँ मद्य बनाने के लिए उक्त प्रकार से महुआ रखकर गड़ाते हैं।
†वि० गंदा या मैला।
†स्त्री० खाद।
खातक—वि० [सं० √खन्+ण्वुल्—अक] खोदनेवाला।
पु० १ छोटा तालाब। २ खाई। ३ अधमर्ण। ऋणी। कर्जदार।
खातमा—पु० [फा० खात्म] १ 'खतम' होने की अवस्था या भाव। अंत। समाप्ति। २ मृत्यु।
खात-व्यवहार—पु०[ष० त०] गणित का वह विभाग जिसमें गड्ढे, तालाब आदि के क्षेत्रफल निकालने की क्रियाएँ होती है।
खाता—पु० [हिं० खन या सं० क्षत्र शासन?] १ किसी कार्य, विभाग, व्यक्ति आदि के आय-व्यय या लेन-देन का लेखा। २ वह बही जिसमें विभिन्न व्यक्तियों आदि से होनेवाले लेन-देन का ब्यौरेवार हिसाब लिखा जाता है
मुहा०—खाता खोलना बही में किसी का नाम चढ़वाकर उसके साथ होनेवाले लेन-देन का हिसाब शुरू करना।
पद—खाते बाकी=वह रकम जो खाते में किसी के नाम बाकी निकलती हो।
३ मद। विभाग। जैसे खर्च-खाता, धर्म-खाता, माल-खाता।
पु० [सं० खात] अन्न रखने का गड्ढा। बखार।
खाता-बही—स्त्री० [हिं० खाता+बही] वह बही जिसमें विभिन्न मदों या व्यक्तियों के अलग-अलग खाते बने या हिसाब लिखे होते है। (लेजर)
खाति—स्त्री० [सं० √खन्+क्तिन्] खोदाई।
खातिब—पु० [हिं० खाना, फा० रातिब का अनु०] उतना भोजन जितना कोई एक बार में खाता हो।
खातिर—स्त्री० [अ०] १ आव-भगत। सत्कार। २ आदर। सम्मान।
अव्य० वास्ते। लिए।

खातिरखाह—वि० [फा०] जितना या जैसा चाहिए, उतना या वैसा। यथेष्ट।
क्रि० वि० मनोनुकूल। सतोषजनक रूप मे।
खातिरजमा—स्त्री० *[अ०] तसल्ली। सतोष।
क्रि० प्र०—रखना।
खातिरदारी—स्त्री० *[फा०] खातिर अर्थात् आदर-सम्मान करने की क्रिया या भाव।
खातिरी—स्त्री० [फा० खातिर] १ खातिरदारी। आव-भगत। २ इतमीनान। तसल्ली।
†स्त्री० [हि० खाद] हाथ से सीचकर और खाद की सहायता से उपजाई जानेवाली फसल।
खाती—स्त्री० [स० खात] १ खोदी हुई भूमि। गड्ढा। २ छोटा तालाब।
पु० १ जमीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर। २ बढई।
स्त्री०[स० घात] वैर। शत्रुता। उदा०—कान्ह कै बल मो सो करी खाती।—नन्ददास।
खातून—स्त्री० [तु०] तुर्की भाषा मे भले घर की स्त्रियो का सबोधन। बीबी। श्रीमती।
खातेदार—पु० [हि० खाता+फा० दार] वह खेतिहर जिसके नाम पटवारी के खाते मे कोई जमीन जोतने-बोने के लिए चढी हो। (टेन्योर होल्डर)
खात्मा—पु०=खातमा।
खाद—पु० [स०√खाद् (खाना)+घञ्] खाना। भक्षण।
स्त्री० [स० खात, खात्र या खाद्य] १ सडाया हुआ गोबर, पत्ते आदि जो खेत को उपजाऊ बनाने के लिए उसमे डाले जाते है। २ रासायनिक प्रक्रिया से तैयार की हुई और खेतो मे छोडी जानेवाली कोई ऐसी चीज जो उसकी उपज बढावे। (मैन्योर)
क्रि० प्र०—डालना।—देना।
वि० [स० खाद्य] (पदार्थ) जो खाने के योग्य हो।
खादक—वि० [स०√खाद्+ण्वुल्—अक] १ खानेवाला। भक्षक। २ ऋणी।
पु० किसी धातु का वह भस्म जो खाया जाता हो (वैद्यक)।
खादन—पु० [स०√खाद्+ल्युट्—अन] [वि० खादित, खाद्य] १ खाने की क्रिया या भाव। भक्षण। २ दाँत।
खादनीय—वि० [स०√खाद्+अनीयर्] जो खाया जाने को हो अथवा खाने के योग्य हो। खाद्य।
खादर—पु० [हि० खाड] १ नदी के पास की वह नीची भूमि जो बाढ आने पर डूब जाती है। कछार। तराई। २ गढा। ३ चरागाह।
मुहा०—खादर लगना=पशुओ के चरने के लिए खेत मे घास उगना।
खादि—पु० [स०√खाद्+इन्] १ भक्ष्य। खाद्य। २ कवच। ३ दस्ताना।
स्त्री० १ उगलियो मे पहनी जानेवाली अँगूठी। २ हाथो मे पहना जानेवाला कडा। कगन।
स्त्री० [स० छिद्र] दोष। ऐब।
खादित—भू० कृ० [स०√खाद्+क्त] खाया हुआ। भक्षित।
खादिम—पु० [अ०] १ वह जो खिदमत या सेवा करता हो। सेवक। २ मुसलमानो मे दरगाह का अधिकारी और रक्षक।
खादिर—पु० [स० खदिर+अण्] कत्था। खैर।
खादिरसार—पु०=खादिर।
खादी (दिन्)—वि० [स०√खाद्+णिनि] १ खानेवाला। भक्षक। २ रक्षक। ३ कँटीला।
†वि० [हि० खादि=दोष] १ दोष निकालनेवाला। छिद्रान्वेषी। २ दोषो से भरा हुआ।
स्त्री० दे० 'खद्दड'।
खादुक—वि० [स०√खाद्+उकञ्] किसी को कष्ट देने अथवा हानि पहुँचानेवाला। हिसक।
खाद्य—वि० [स०√खाद्+ण्यत्] जो खाया जाने को हो अथवा खाये जाने के योग्य हो। भक्ष्य। भोज्य। (एडिबुल)
पु० १ खाये जानेवाले पदार्थ। जैसे—अन्न, फल आदि। २ भोजन।
खाद्य-अनुभाजन—पु० [ष० त०] खाने की चीजो विशेषत अनाज आदि से सबध रखनेवाला अनुभाजन। (फूड रैशनिंग)
खाद्यान्न—पु० [स० खाद्य-अन्न, कर्म० स०] वे अन्न जो खाने के काम आते हो। जैसे—गेहूँ, चना, जौ, मटर आदि। (फूडग्रेन्स)
खाद्र—पु० [स० खात] गड्ढा।
खाद*—वि० =खाद्य।
†स्त्री०=खाद।
खाधु*—पु० [स० खाद्य] १ खाद्य पदार्थ। २ खाद्यान्न।
खाधुक—वि० [स० खादुक<खाधुक] खानेवाला। उदा०—कहेसि पखि खाधुक मानवा।—जायसी।
पु०=खाधु (खाद्यान्न)।
खाधू—वि०, पु०=खाधुक।
खान—स्त्री० [स० खानि, प्रा० खाणी, ब० खानी, सि० खाणी, का० खाण, गु० मरा० खाण] १ जमीन के अदर खोदा हुआ वह बहुत बडा तथा गहरा गड्ढा, जिसमे से कोयला, चाँदी, ताँबा, सोना आदि खनिज पदार्थ निकाले जाते है। आकर। खदान। (माइन) २ वह स्थान, जहाँ कोई वस्तु अधिकता से होती है। किसी चीज या बात का बहुत बडा आगार। जैसे—यह पुस्तक अनेक ज्ञातव्य विषयो की खान है। ३ खजाना। भडार।
पु० [हि० खाना] १ खाने की क्रिया या भाव। जैसे—खान-पान। २ खाद्य-सामग्री। भोजन।
पु० [तु० खान] [स्त्री० खानम] १ तुर्की के पुराने राजाओ या सरदारो की उपाधि। स्वामी। २ सरदार। ३ मालिक।
स्त्री०[फा० खाना] कोल्हू का वह छेद जिसमे ऊख की गँडेरियाँ या तेलहन भरकर पेरते है। खौ। घर।
खानक—पु० [स० खन् (खोदना)+ण्वुल्—अक] १ खान, जमीन या मिट्टी खोदनेवाला मजदूर। २ मकान बनानेवाला कारीगर या मिस्त्री। राज।
खानकाह—स्त्री०[अ०] मुसलमान फकीरो, साधुओ, अथवा धर्म-प्रचारको के ठहरने या रहने का स्थान। दरगाह। मठ।
खानखानाँ—पु० [फा० खानेखानान] सरदारो का सरदार। बहुत बडा सरदार।

खानखाह—क्रि० वि० दे० 'खाहमखाह'।

खानगाह—स्त्री० खानकाह।

खानगी—वि० [फा०] १ अपने घर या गृहस्थी से सम्बन्ध रखनेवाला। घरू। घरेलू। २ आपस का। निजी।
स्त्री० केवल व्यभिचार के द्वारा धन कमानेवाली वेश्या। कसबी।

खानजादा—पु० [फा०] [स्त्री० खानजादी] १ बहुत बड़े खान या सरदार का लड़का। २ एक प्रकार के क्षत्रिय, जिनके पूर्वज मुसलमान हो गये थे।

खानदान—पु० [फा०] [वि० खानदानी] कुल। घराना। वंश।

खानदानी—वि० [फा०] १ अच्छे और ऊँचे खानदान अर्थात् कुल या वंश का (व्यक्ति)। २ (काम या पेशा) जो किसी खानदान या कुल में बहुत दिनों से होता आया हो। पुश्तैनी। पैतृक। ३ (धन-सम्पत्ति) जो पूर्वजों के समय से अधिकार में हो। जैसे—खानदानी मकान।

खानदेश—पु० [खाँद जंगली जाति + देश] बंबई राज्य का एक प्रदेश, जो सतपुड़ा की पर्वतमाला के दक्षिण में पड़ता है।

खान-पान—पु० [हि० खाना + पीना] १ खाने और पीने की क्रिया, भाव या प्रकार। २ खाने-पीने का ढंग या रीति-रवाज।

खानम—स्त्री० [तु० खान का स्त्री०] १ खान या सरदार की पत्नी। २ ऊँचे कुल की महिला।

खानसामा—पु० [फा०] वह नौकर जो खाने की सामग्री का प्रबंध करता हो। खाना बनानेवाला, रसोइया (मुसल०)।

खाना—स० [सं० खादन, प्रा० खाअन, खान] [प्रे० खिलाना] १ पेट भरने के लिए मुंह में कोई खाद्य वस्तु रखकर उसे चबाना और निगल जाना। भोजन करना। जैसे—रोटी खाना।
पद—**खाना-कमाना**=काम-धंधा करके जीवनयापन या निर्वाह करना।
मुहा०—**खा-पका जाना या खा डालना**=धन या पूँजी खर्च कर डालना। **(किसी को) खाना न पचना**=आराम या चैन न पड़ना। जैसे—बिना मन की बात कहे इस लड़के का खाना नहीं पचता।
२ हिंसक जंतुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना। जैसे—उस बकरी को शेर खा गया।
मुहा०—**खा जाना या कच्चा खा जाना**=मार डालना। प्राण ले लेना। जैसे—जी चाहता है कि इसे कच्चा खा जाऊँ। **खाने दौड़ना**=बहुत अधिक क्रुद्ध होकर ऐसी मुद्रा बनाना कि मानो खा जाने को तैयार हो।
३. विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४ लाक्षणिक अर्थ में (क) किसी से रिश्वत लेना। जैसे—आजकल दफ्तरों के बाबू खूब खाते हैं। (ख) किसी का धन या पूँजी हड़प जाना। जैसे—यारों ने बुढ़िया को खा डाला है। ५. न रहने देना। नष्ट या बरबाद करना। ६ तंग या परेशान करना। जैसे—कान, दिमाग या सिर खाना। ७. अपने आप में अन्तर्भुक्त करना। जैसे—लोटा पाँच सेर घी खा गया। ८. आघात, प्रहार, वेग आदि सहन करना। जैसे—गम, गाली, धक्का या मार खाना।
मुहा०—**मुँह की खाना**=ऐसा आघात सहना कि मुँह सामने करने के योग्य न रह जाय।
पु० १ वह जो कुछ खाया जाय। खाद्य पदार्थ। २ भोजन।
पु० [फा० खान] १ घर। मकान। जैसे—गरीबखाना, यतीमखाना। २ दीवार, अलमारी, मेज आदि में बना हुआ वह अंश या विभाग जिसमें वस्तुएं आदि रखी जाती हैं। ३ छोटा कक्ष या डिब्बा। जैसे—घड़ी या चश्मे का खाना। ४ रेलगाड़ी का डिब्बा।

खाना खराब—वि० [फा०] [संज्ञा खानाखराबी] १ जिसका घर-बार सब नष्ट हो गया हो। जिसके रहने आदि का कहीं ठिकाना न रह गया हो। २ जो दूसरों का घर नष्ट करने या बिगाड़नेवाला हो।

खानाजंगी—स्त्री० [फा०] १ आपस अर्थात् घर के लोगों की लड़ाई। २ किसी देश में होनेवाला आन्तरिक विग्रह।

खानाजाद—वि० [फा०] १ (दास) जो घर में रखी हुई दासी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। २ जो बाल्यावस्था से ही घर में रखकर पाला-पोसा गया हो।
पु० १ गुलाम। दास। २ तुच्छ सेवक।

खानातलाशी—स्त्री० [फा०] चुरा-छिपाकर रखी हुई चीज के लिए किसी के घर की होनेवाली तलाशी। घर की तलाशी।

खाना-दाना—पु० [हि०] भोजन की सामग्री।

खानादारी—स्त्री० [फा०] घर-गृहस्थी के सब काम करने या सँभालने की क्रिया या भाव।

खाना-पीना—पु० [हि० खाना + पीना] १ खाने-पीने का व्यवहार या संबंध। खान-पान। २ बहुत से लोगों के साथ बैठकर खाने-पीने की क्रिया या भाव। ३ खाने-पीने के लिए तैयार की हुई चीजें।

खानापुरी—स्त्री० [हि० खाना + पूरना] चक्र, सारणी आदि के कोठों में यथास्थान अभिप्रेत या उद्दिष्ट शब्द, संख्याएँ आदि भरना या लिखना।

खानाबदोश—वि० [फा०] जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो और इसी लिए जो अपनी गृहस्थी की सब चीजें अपने कन्धे पर लाद कर जगह-जगह घूमता फिरे। यायावर। (नोमेड)

खानाशुमारी—स्त्री० [फा०] किसी गाँव, नगर, बस्ती आदि में बने और बसे हुए घरों या मकानों की गिनती करना।

खानि—स्त्री० [सं० खनि] १ खान, जिसमें से धातुएँ आदि खोदकर निकाली जाती है। २. ऐसा स्थान जहाँ कोई चीज बहुत अधिकता से उत्पन्न होती अथवा पाई जाती हो। ३ बहुत सी चीजों या बातों के इकट्ठे रहने या होने का स्थान। ४. ओर। तरफ। दिशा। ५ ढंग। तरह। प्रकार।

खानिक†—स्त्री० खान या खानि।
वि० [हि० खान] खान से निकलनेवाला। खनिज।

खानिल—पु० [सं० √ खन् + घञ्, खान + इलच्] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला चोर।

खानोदक—पु० [सं० खान-उदक, ब० स०] नारियल का पेड़।

खाप—स्त्री० [?] आघात। वार। उदा०—हलकी-सी खाप कर गया। —वृंदावनलाल वर्मा।

खापगा—स्त्री० [सं० ख—आपगा, ष० त०] आकाश गंगा।

खापट—स्त्री० [?] वह भूमि जिसमें लोहे का अंश अधिक हो।

खापड़=खप्पर।

खापर†—पु० १.=खपड़ा। २.=खापट।

खाब†—पु० [फा० ख्वाब] स्वप्न।

खाबड़-खूबड़ †—वि०=ऊबड़-खाबड़।

खाभा—पु० [?] कोल्हू के नीचे के बरतन मे से तेल निकलाने का मिट्टी का छोटा पात्र।

खाम—पु० [स० स्कम्भ,पा० प्रा० खभ, बँ० खाँबा, उ० खब, गु० मरा० खाँब] १. खभा। स्तम्भ। २ जहाज या नाव का मस्तूल।
पु० [हि० खामना] १ चिट्ठी रखने का लिफाफा। २ सधि। जोड। ३ जोड या सधि पर लगाया जानेवाला टाँका।
†वि० [स० क्षाम] १ कटा-फटा या टूटा-फूटा हुआ। २ क्षीण।
वि० [फा०] १ कच्चा। २ जो दृढ या पुष्ट न हो। ३ जिसे अनुभव न हो। ४ अनुचित और निराधार। जैसे—खाम खयाली।

खामखयाली—स्त्री० [फा०] ऐसी अनुचित धारणा या विचार, जिसका कोई पुष्ट आधार न हो। अकारण या व्यर्थ की धारणा।

खामखाह, खामखाही—क्रि० वि०=खाहमखाह।

खामना—स० [स० स्कभन=मूँदना, रोकना, प्रा० खभन] १ गीली मिट्टी आदि से किसी पात्र का मुँह बद करना। २ गोद लगाकर लिफाफे का मुँह बद करना।

खामी—स्त्री० [फा०] १ खाम या कच्चे होने की अवस्था या भाव। कच्चापन। २ अच्छी तरह पक्व या पुष्ट न होने की अवस्था या भाव। ३ अनुभव, ज्ञान आदि की अपूर्णता। नादानी। ४ कमी। त्रुटि।

खामुशी—स्त्री०=खामोशी।

खामोश—वि० [फा०] १ जो कुछ बोल न रहा हो। चुप। मौन। २. शात।

खामोशी—स्त्री० [फा०] खामोश होने की अवस्था या भाव। मौन। चुप्पी।

खाया—पु० [फा० खाय] १ अडकोष। २ पक्षियो आदि का अडा।

खाया-बरदार—पु० [अ०+फा०] [भाव० खायाबरदारी] अनावश्यक रूप मे और हर समय खुशामद या चापलूसी तथा छोटी-मोटी सेवाएं करता रहनेवाला व्यक्ति।

खार—पु० [स० क्षार, प्रा० खार] १ कुछ विशिष्ट वनस्पतियो आदि को जलाकर अथवा रासायनिक प्रक्रिया से निकाला जानेवाला खारा पदार्थ जो ओषधियो तथा औद्योगिक कार्यों मे प्रयुक्त होता है। क्षार। २ सज्जी। ३ नोनी मिट्टी। कल्लर। रेह। ४ धूल। मिट्टी। ५ भस्म। राख। ६ एक प्रकार की झाडी जिसके अगो को जलाने से खार नामक पदार्थ निकलता है।
पु० [फा० खार] १ काँटा। कटक। २ कुछ पक्षियो के पैरो मे निकलनेवाला काँटा। खाँग। ३ दूसरो की अभिवृद्धि, उन्नति, ऐश्वर्य आदि देखकर मन मे होनेवाला दुख। ४ मन मे दबा रहनेवाला और काँटे की तरह चुभनेवाला गहरा द्वेष।
मुहा०—(किसी से) खार खाना=किसी के प्रति मन मे दुर्भाव या द्वेष रखना और फलत उसे हानि पहुँचाने की ताक मे रहना। **खार गुजरना**=मन मे बुरा लगना। खटकना। **खार निकालना**=मन मे छिपे हुए द्वेष के कारण किसी को कष्ट पहुँचाकर अथवा उसकी हानि करके सन्तुष्ट या सुखी होना।
*पु० [हि० खाल=नीचा स्थान] १ बरसाती नाला। खाल। उदा०—दई न जात खार उतराई, चाहत चढन जहाजा।—सूर।२ पानी का छोटा गड्ढा। डाबर।
†वि० [स० क्षर] १ खरा। २ वास्तविक।
†वि० [स० खर] खराब। बुरा।

खारक†—पु० [स० क्षारक, पा० खारक] छुहारा।

खारदार—वि० [फा०] काँटो से युक्त। कँटीला।
पु० एक प्रकार का सलमा।

खखारवा†—पु० [देश०] जहाज पर काम करनेवाला मजदूर। खलासी।
पु०=खाका।

खारा—वि० [स० क्षार] [स्त्री० खारी] १ (पदार्थ) जिसमे क्षार का अश या गुण हो। २ (जल) जिसमे क्षार मिला या घुला हो। जो स्वाद मे कुछ नमकीन हो। ३ अप्रिय या अरुचिकर।
पु० [स० क्षारिक या खारना] १ घास-फूस आदि बाँधने की जाली। २ वह जाली जिसमे भरकर तोडे हुए आम या दूसरे फल नीचे गिराये जाते है। ३ बडा और चौखूँटा दौरा। खाँचा। झाबा। ४ बाँस का बडा पिंजडा। ५ सरकडे आदि का बना हुआ एक प्रकार का गोल या चौकोर ऊँचा आसन जिस पर पश्चिम मे विवाह के समय वर और कन्या को बैठाते है।
पु० [फा० खार] १ कडा और भारी पत्थर। २ एक प्रकार का कपडा।

खारि—स्त्री० [स० ख-आ√रा (देना)+क—ङीष्, ह्रस्व] १६द्रोण की एक पुरानी तौल।

खारिक†—पु० [स० क्षारक] छुहारा।

खारिज—वि० [अ०] १ जो किसी स्थान, सीमा आदि से बाहर कर दिया अथवा हटा दिया गया हो। निकाला हुआ। बहिष्कृत। २ (प्रार्थना-पत्र आदि) जो अस्वीकृत कर दिया गया हो।
मुहा०—खारिज करना=विचार के अयोग्य मानना। नामजूर करना। (डिस्मिस) (नालिश, दरख्वास्त आदि)।

खारिजा—वि० [अ०] १ खारिज किया या बाहर निकाला हुआ। २ बाहरी। बाह्य। ३ दूसरे राष्ट्रो या विदेशो से सम्बन्ध रखनेवाला।

खारिजी—वि० [अ०] १ बाहरी। बाह्य। २ परराष्ट्र सबधी।
पु० १ इस्लाम का एक सम्प्रदाय जो अली की खिलाफत को न्यायसगत नही मानता और इसी लिए इसके अनुयायी बहिष्कृत समझे जाते है। २ सुन्नी मुसलमानो के लिए उपेक्षासूचक शब्द।

खारिश—स्त्री० [फा०] खुजली (देखे)।

खारी—स्त्री० [स० ख-आ√रा+क—ङीष्] चार अथवा सोलह द्रोण की एक पुरानी तौल।
स्त्री० [हि० खाला] लोना मिट्टी मे से निकाला जानेवाला नमक। खारा नमक।
वि० क्षार या खार से युक्त। खारा।

खारीमाट—पु० [हि० खारी+मा=मटका] नील का रग तैयार करने का एक ढग।

खारुआँ—पु० [स० क्षारक] आल के रग मे रगा हुआ एक प्रकार का मोटा लाल कपडा जिसकी थैलियाँ आदि बनती थी।

खारेजा—पु० [फा० खारिजा] एक प्रकार का जगली कुसुम या बर्रे। बनबर्रे। बनकुसुम।

खारो—वि० दे० 'खारा'।

खार्जूर—वि० [स०खर्जूर+अण्] १ खजूर सम्बन्धी। खजूरी। २ खजूर का बना हुआ।

पु० प्राचीन काल मे खजूर के रस से बननेवाली मदिरा या शराब।

खार्वा—स्त्री० [स० खर्व+अण्—टाप्] त्रेतायुग।

खाल—स्त्री० [स० क्षाल, प्रा० खाल] १ पशुओ आदि के शरीर पर से खीच कर उतारी हुई त्वचा जिस पर बाल या रोए होते है। जैसे—बकरी या शेर की खाल।

मुहा०—(किसी की) खाल उधेडना या खीचना (क) किसी के शरीर पर की खाल खीच कर उतारना। (ख) बेतो आदि से बहुत अधिक मारना। **अपनी खाल मे मस्त रहना** -अपने पास जो कुछ हो उसी से प्रसन्न और सन्तुष्ट रहना।

२. चरसा। मोट। ३ धौकनी। भाथी। ४ मृत शरीर। ५ आवरण।

स्त्री० [स० खात या अ० खाली] १ नदी आदि के किनारे की नीची भूमि। गहराई या नीचाई। ३ समुद्र की खाडी। ४ खाली स्थान। अवकाश। ५ पशुओ आदि के चरने का ऐसा स्थान जिसके बीच मे छोटा ताल भी हो। (कुमाऊँ) कश्मीर मे इसे मर्ग कहते है।

खालफूंका—पु० [हिं० खाल+फूंकना] धौकनी या भाथी चलानेवाला।

खालसा—वि० [अ० खालिस शुद्ध जिसमे किसी प्रकार का मेल न हो] १ जिस पर केवल एक का अधिकार हो किसी दूसरे का साझा न हो। २ (भूमि या सम्पत्ति) जिस पर राज्य या सरकार ने अधिकार कर लिया हो। जैसे—अगरेजो ने झाँसी का राज्य खालसा कर लिया था।

मुहा०—खालसा या खालसे लगना -राज्य या शासन के अधिकार मे चला जाना।

पु० १ सिक्खो का एक सप्रदाय। २ सिक्ख।

वि० [अ० खलास] १ छूटा हुआ। २. मुक्त। मोक्ष-प्राप्त। उदा०—कहैं कबीर ने भये खालसे राम भगति जिन जानी।—कबीर।

खाला—वि० [हिं० खाल या खाली] [स्त्री० खाली] नीचा। निम्न (स्थान)।

पद—ऊँचा-खाला (क) ऊबड-खाबड (स्थल)। (ख) ऊँच-नीच। भला-बुरा।

स्त्री० [अ० खाल] माता की बहन। मौसी।

मुहा०—(किसी काम या बात को) खाला जी का घर समझना -बहुत सहज या सुगम समझना।

खालिक—पु० [अ०] सृष्टि की रचना करनेवाला। ईश्वर। स्रष्टा।

खालिस—वि० [अ०] १. (द्रव्य या पदार्थ) जिसमे कोई दूसरी चीज मिलाई न गई हो। विशुद्ध। जैसे—खालिस दूध, खालिस सोना। २ जिसमे किसी प्रकार का खोट या दोष न हो। जैसे—खालिस लेन-देन का बरताव

खाली—वि० [अ० मि स० खल्ल] १ (पात्र) जिसके अन्दर कोई चीज न हो। रीता। जैसे खाली लोटा, खाली बक्स। २ जिस पर अथवा जिसके ऊपर कुछ या कोई स्थित न हो। जैसे—खाली कुरसी, खाली जगह, खाली मकान। ३ जिसमे आवश्यक या उपयुक्त पदार्थ या वस्तु न हो। जैसे—खाली पेट जिसमे पचाने के लिए अन्न न पडा हो या न रह गया हो। खाली हाथ जिसमे (क) गहना या जेवर (ख) धन या सम्पत्ति (ग) हथियार न हो।

पद—खाली दिन (क) ऐसा दिन जिसमे कोई विशिष्ट कार्य न हो अथवा न हुआ हो। जैसे—रविवार बहुत से लोगो के लिए खाली दिन होता है। (ख) ऐसा दिन जिसमे कुछ भी आय अथवा कार्य न हुआ हो। जैसे—आज का सारा दिन खाली गया।

४ (व्यक्ति) जिसके हाथ मे कोई काम-धधा या रोजगार न हो। जैसे—इधर महीनो से वह खाली बैठा है। ५ (व्यक्ति) जो प्रस्तुत समय मे कोई काम न कर रहा हो या काम पूरा कर के छुट्टी पा चुका हो। जैसे—कल सबेरे जब हम खाली रहे तब आना। ६ जो उस समय उपयोग मे न आ रहा हो। जैसे—यदि चाकू खाली हो तो हमे देना। ७ जो निष्फल या व्यर्थ सिद्ध हुआ हो। जैसे—वार खाली जाना।

मुहा०—खाली देना ऐसा कौशल या क्रिया करना जिसमे किसी का किया हुआ आघात, प्रहार या वार निष्फल हो जाय। साफ बच निकलना। जैसे—वह शत्रुओ के सब वार खाली देता गया।

८ जिससे या जिसमे किसी प्रकार के उद्देश्य या प्रयोजन की सिद्धि न होती हो। जैसे—खाली बाते करने से कुछ नही होता। ९ किसी चीज या बात से बिलकुल रहित या विहीन। जैसे—(क) अब तो यह जगल हिंसक पशुओ से खाली हो गया है। (ख) उनकी कोई बात मतलब से खाली नही होती।

अव्य० बिना किसी को साथ लिये हुए, अकेले। जैसे—(क) खाली तुम्ही आना और किसी को अपने साथ मत लाना। (ख) यह काम खाली तुम्ही कर सकते हो।

पु० ताल देनेवाले बाजा (ढोलक, तबला, मृदग आदि) मे बीच मे पडनेवाला वह ताल जो बिना बाएँ हाथ का आघात किये इसलिए खाली छोड दिया जाता है कि उसके आगे और पीछे के तालो की गिनती ठीक रहे। जैसे—(क) रुद्र ताल १६ तालो का होता है जिसमे ११ आघात और ५ खाली होते है। (ख) लक्ष्मी ताल १८ तालो का होता है जिसमे १५ आघात और ३ खाली होते है।

खालू—पु० [फा०] खाला अर्थात् मौसी का पति। मौसा।

खाले—क्रि० वि० [हि० खाला] नीचे की ओर। उदा०—सीस नाइ खाले कहँ ढरई।—जायसी।

खावा†—स्त्री० [म० ख] १ खाली जगह। अवकाश। २ जहाज मे माल रखने का स्थान। (लश०)

खावाँ—पु० खाँवाँ।

खावास†—पु० -खवास।

खाविंद—पु० [फा०] १ स्त्री का पति। खसम। शौहर। २ मालिक। स्वामी।

खाविंदी—स्त्री० [फा०] १ पति या स्वामी होने की अवस्था या भाव। २ प्रभु या स्वामी की ओर से होनेवाला अनुग्रह या कृपा।

खास—वि० [अ०] १ किसी विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति से सबध रखने-

वाला। 'आम' का विपर्याय। २ जो साधारण से भिन्न हो। विशेष।
पद—खासकर=विशेष रूप से।
३ किसी के पक्ष मे, व्यक्तिगत रूप से होनेवाला। निज का। आत्मीय। जैसे—यह घर खास हमारा है। ४ ठेठ। विशुद्ध।
स्त्री० [अ० कीसो] १ मोटे कपडे की बनी हुई थैली। २ बोरा।

खास कलम—पु० [अ०] निजी पत्र-व्यवहार करने के लिए रखा हुआ मुशी।

खासगी—वि० [अ० खास+गी(प्रत्य०)] १ राजा या मालिक आदि का। २ निज का। निजी।

खासदान—पु० [उर्दू] पान, कत्था आदि रखने का डिब्बा। पानदान।

खास नवीस—पु०=खास कलम।

खास बरदार—पु० [फा०] वह नौकर या सिपाही जो राजा की सवारी के ठीक आगे आगे चलता था।

खास बाजार—पु० [फा०] वह बाजार जो राजा के महल के सामने विशेष रूप से इसलिए लगता था कि राजा वहाँ से अपने लिए आवश्यक वस्तुएँ मोल ले।

खासा—पु० [अ० खास] १ राजाओ, रईसो आदि के लिए विशिष्ट रूप से ओर अलग बननेवाला भोजन। २ राजा की सवारी का घोडा या हाथी।
मुहा०—खासा चुनना=बादशाही दस्तरखान पर अनेक प्रकार के बढिया भोज्य पदार्थ लाकर रखना।
३ एक प्रकार का पतला सूती कपडा। ४ एक प्रकार का मोयनदार पकवान।
वि० [स्त्री० खासी] १ जितना आवश्यक हो उतना। यथेष्ट। जैसे—इधर खासा गरम है। २ अच्छा। भला। ३ सुदर। सुडौल। ४ भरपूर। पूरा।

खासियत—स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति मे होनेवाला कोई विशिष्ट गुण। विशेषता। २ प्रकृति। स्वभाव। ३ प्रभाव। असर।

खासिया—स्त्री० [स० खस] १ असम देश की एक पहाडी। २ उक्त पहाडी मे बसनेवाली एक जगली जाति जो 'खस' भी कहलाती है।

खासियाना—पु० [हि० खासिया पहाडी] एक प्रकार की मँजीठ।

खासी—स्त्री० [अ०] खासे राजा के बाँधने की तलवार, ढाल या बदूक।

खासीयत—स्त्री०=खासियत।

खास्तई—पु० [फा०] १ कबूतर का एक रग। २ इस रग का कबूतर।

खास्सा—पु० [अ० खास्स] १ किसी मे होनेवाला कोई विशेष गुण। २ स्वभाव। ३ आदत। बान।

खाह—अव्य० [फा० ख्वाह] जो इच्छित हो। चाहे। या।

खाहमखाह—क्रि० वि० [फा० ख्वाहम ख्वाह] १ चाहे आवश्यकता अथवा इच्छा हो चाहे न हो। बिना आवश्यकता के और प्राय व्यर्थ। जैसे—तुम खाहमखाह दूसरो के झगडे मे क्यो पडते हो?

खाहा—वि० [फा० ख्वाहाँ] चाह रखने या चाहनेवाला, इच्छुक।

खाहिश—स्त्री० [फा० ख्वाहिश] इच्छा। चाह।

खाहिशमद—वि० [फा०] इच्छुक।

खाहीनखाही†— क्रि० वि० दे० 'खाह-मखाह'।

खिखिर—पु० [स० खिम्√कृ (करना)+क, पृषो० सिद्धि] १ चारपाई का पाया। २ एक प्रकार का गध द्रव्य।

खिग—पु० [फा०] बिलकुल सफेद रग का घोडा। नुकरा।

खिगरी—स्त्री० [देश०] मैदे आदि का बना हुआ पूरी की तरह का एक सूखा पकवान।

खिचना—अ० [हि० खीचना] १ किसी की ओर बलपूर्वक लाया जाना। खीचा जाना। २ किसी के प्रयत्न से किसी ओर जाना या बढना। ३ किसी वस्तु या स्थान मे से बाहर निकाला जाना। ४ किसी आकर्षण अथवा शक्ति के कारण उसकी ओर जाना या बढना। जैसे—चुबक की तरफ लोहा खिचना। ५ किसी के गुण, रूप, सौदर्य आदि के कारण उसकी ओर आकृष्ट होना। ६ प्रलोभन, स्वार्थ आदि के कारण एक पक्ष से दूसरे पक्ष की ओर चलना या जाना। ७ किसी वस्तु के गुण, तत्त्व, सार आदि निकलना या निकाला जाना। ८ भभके आदि से अर्क, शराब आदि तैयार होना। ९ अकित होना या लिखा जाना। जैसे—लकीर खिचना। १० उतरना या बनना। जैसे—चित्र या फोटो खिचना। ११ तनना। १२ माल की खपत होना। खपना। जैसे—माल खिचना।

खिचवा—वि० [हि० खीचना] खीचनेवाला।

खिचवाना—स० [हि० खीचना] खीचने का काम किसी से कराना। किसी को कोई चीज खीचने मे प्रवृत्त करना। जैसे—चित्र या फोटो खिचवाना।

खिचाई—स्त्री० [हि० खीचना] १ खीचने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'खीच'।

खिचाना—स०=खिचवाना।

खिचाव—पु० [हि० खिचना] खीचे जाने अथवा खिंचे हुए होने की अवस्था या भाव।

खिचावट—स्त्री० [हि० खिंचना] १ खीचने की क्रिया। २ खीचने या खिंचे हुए होने की अवस्था या भाव।

खिचाहट—स्त्री०=खिचावट।

खिचिया†—वि०=खिचवा।

खिडाना†—स० [स० क्षिप्त] दानेदार वस्तु को छितराना या बिखेरना। जैसे—चावल या चीनी खिडाना।

खिखिद—पु० [स०] ऊबड-खाबड या बीहड भूमि।
पु०=किष्किधा।

खिचडवार—पु० [हि० खिचडी+वार] मकर सक्राति। (इस दिन खिचडी दान की जाती है)

खिचडा—पु० [हि० खिचडी] कई दालो को मिलाकर बनाई जानेवाली खिचडी।

खिचडी—स्त्री० [स० कृसर, प्रा० खिच्च, ब० खिचरी, उ० खिचुरा, गु० खिच] १ दाल और चावल को एक मे मिलाकर उबालने से बनने वाला भोज्य पदार्थ।
मुहा०—खिचडी पकाना=आपस मे मिलकर चोरी-चोरी कोई परामर्श या सलाह करना। **ढाई चावल की खिचडी अलग पकाना**=सबकी सम्मति के विपरीत अपनी ही बात की पुष्टि करना अथवा अपने विचार के अनुसार काम करना। **खिचडी खाते पहुँचा उतरना**— बहुत अधिक कोमल या नाजुक होना। (परिहास और व्यग्य)

२ विवाह की एक रसम जिसमे दामाद को पहले-पहल घर बुलाकर खिचडी खिलाई जाती है। ३ एक ही मे मिली हुई कई तरह की या बहुत सी वस्तुए। जैसे—खिचडी भाषा। ४ मकर सक्राति। ५ बेरी का फूल। ६ भाट, वेश्या आदि को नाच, गाने आदि मे भाग लेने के लिये दिया जानेवाला पेशगी धन। बयाना। साई।

वि० [स० कृसर] १ आपस मे मिला-जुला। २ जो अपना स्वतत्र अस्तित्व खो चुका हो।

खिचना—अ० खिचना।

खिचवाना—स० खिचवाना।

खिचाव—पु० खिचाव।

खिजना—अ० दे० 'खीजना'।

खिजमत†—स्त्री० खिदमत।

खिजलाना—अ० [हि० खीजना] कोई चीज न मिलने पर या काम न होने पर आतुरतापूर्वक खिन्न और व्याकुल होना। खीजना।

स० किसी को खीजने मे प्रवृत्त करना। दिक या विकल करना।

खिजाँ—स्त्री० [फा०] १ पतझड की ऋतु। फागुन और चैत के दिन। २ अवनति या उतार के दिन।

खिजाना—स० खिजलाना।

खिजाब—पु० [अ०] सफेद बालो को काला या रगीन करने की औषधि। केश-कल्प। औषध के रूप मे प्रस्तुत किया हुआ वह लेप जिसे सिर पर लगाने से सफेद बाल काले हो जाते है।

खिजाबी—वि० [अ०] १ खिजाब सबधी। २ (बाल) जिस पर खिजाब लगा हो।

पु० वह जो सिर पर खिजाब लगाता हो।

खिजालत—स्त्री० [अ०] लाज। लज्जा। शर्मिन्दगी।

खिज्र—पु० [अ०] १ मुसलमानो के विश्वासानुसार एक पैगम्बर जो अमृत पीकर अमर हो गये थे और जो अब भूले-भटके यात्रियो को ठीक रास्ते पर लगानेवाले माने जाते है। २ पथ-प्रदर्शक।

खिझ†—स्त्री० खीझ।

खिझना—अ० खीझना।

खिझाना—स० खिजलाना।

खिझुवर†—वि० [हि० खीझना] जो जरा सी बात पर खिजला या खीज उठता हो। खीजनेवाला।

खिझौना—वि० [हि० खीजना] १ खिजानेवाला। दिक करनेवाला। २ जल्दी खीजनेवाला।

खिड़कना—अ० [हि० खिसकना] चुपचाप कही से टल या हट जाना।

खिड़काना—स० [हि० खिसकना] १ किसी उद्देश्य से किसी को कही से टालना या हटाना। २ आधे-तीहे मूल्य पर चुपचाप बेच डालना।

खिड़की—स्त्री० [स० खट्टाक्किका, प्रा० खड्डकी, खडक्किआ, दे०प्रा० खड्क्की, उ०ब०खिरकी] १. घर, गाडी, जहाज आदि की दीवारो मे बना हुआ वह बडा झरोखा जिसमे से धूप और रोशनी अन्दर आती है, तथा जिसमे से झाँक कर बाहर का दृश्य देखा जाता है। २ उक्त झरोखे मे लकडी, लोहे आदि का बना हुआ दरवाजा जिसके द्वारा झरोखा खुलता तथा बन्द होता है। ३ किले या नगर का चोर दरवाजा। ४ खिडकी की तरह खुला हुआ कोई स्थान। जैसे—खिडकीदार अगरखा या पगडी।

खिडकी बद—वि० [हि० + फा०] (मकान) जो पूरा किराय पर लिया गया हो और जिसमे कोई दूसरा किरायेदार न रहता हो।

खिण—पु० क्षण। (डिगल)

खित—स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी। (डि०)

खिताब—पु० [अ०] १ उपाधि। २ पदवी।

खिताबी—वि० [अ०] खिताब-सबधी। खिताब का।

खित्त—पु० [स० क्षेत्र] १ क्षेत्र। २ खेत। ३ रणस्थल। उदा०—तोअर राऊ पहारि, खित्त अनभग मोट मन—चन्दवरदाई।

खित्ता—पु० [अ० खित्त] १ भूभाग। प्रदेश। २. प्रात।

खित्रिय—पु० क्षत्रिय।

खिदमत—स्त्री० [फा०] टहल। सेवा।

खिदमतगार—पु० [फा०] किसी की छोटी-छोटी और दैनिक सेवाएँ करनेवाला नौकर। टहलुआ।

खिदमतगारी—स्त्री० [फा०] १ खिदमतगार का काम या पद। २ टहल। सेवा।

खिदमती—वि० [फा० खिदमत] १. अच्छी तरह खिदमत या सेवा-टहल करनेवाला। २ अच्छी तरह की जानेवाली खिदमत से सबध रखने या उसके पुरस्कार मे मिलने या होनेवाला। जैसे—खिदमती जागीर।

खिदिर—पु० [स० √खिद् (दैन्य) + किरच्] १ चद्रमा। २ तपस्वी।

खिद्र—पु० [स० √खिद् + रक्] १. रोग। बीमारी। २ गरीबी। दरिद्रता।

खिन—पु० क्षण।

वि० खिन्न।

खिनक*—अव्य० [स० क्षण—एक] क्षण भर। बहुत थोडी देर तक।

खिन्न—वि० [स० √खिद् + क्त] १ (व्यक्ति) जो चिंता, थकावट आदि के कारण कुछ उदास तथा कुछ विकल हो। २ अप्रसन्न। असन्तुष्ट। ३ असहाय। दीन-हीन।

खिपना†—अ० [स० क्षिप्त] १. खपना। २. तल्लीन होना।

खिपाना†—स० खपाना।

खिभिरना†—स० खदेडना। उ०—खोलि खग्ग खिभिरे बली, जनु पाइक खुतार—चन्दवरदाई।

खियानत—स्त्री० खयानत।

खियाना—अ० [सं० क्षीण, पा० खिय, प्रा० खिज्ज, सि० खिजन, म० झिज (णें)] १ रगड खाते रहने अथवा घिसते रहने के कारण किसी वस्तु का क्षीण होना। २. कमजोर या दुर्बल होना।

स० [हि० खाना] खाना खिलाना। भोजन कराना।

खियाल†—पु० ख्याल।

खियावना†—स० खिलाना।

खिर—स्त्री० [देश०] करघे की ढरकी।

खिरका—पु० [अ० खिरक] कथा। गुदडी।

खिरकी—स्त्री० खिडकी।

खिरक्की†—स्त्री० खिडकी।

खिरचा†—पु०=खरका।
खिरद—स्त्री० [फा०] अक्ल। बुद्धि।
खिरदमद—वि० [फा०] बुद्धिमान्।
खिरनी—स्त्री० [स० क्षीरिणी] १ एक प्रकार का ऊँचा छतनार और सदाबहार पेड। २ उक्त वृक्ष का छोटा, पीला, मीठा फल।
खिरमन—पु० [फा०] १ खलियान। २ काट कर रखी हुई फसल।
खिराज—पु० [अ०] १ राज्य द्वारा लिया जानेवाला कर। राजस्व। २ वह धन जो मध्य युग मे बडे राजा अपने अधीनस्थ माडलिको या छोटे राज्यो से लेते थे।
खिराम—पु० [फा०] आनन्दपूर्वक धीरे-धीरे चलने या टहलने की क्रिया या भाव।
खिरामॉ—वि० [फा०] जो सुखपूर्वक, मस्ती से धीरे धीरे चल रहा हो।
खिरिदना—स० [स० कीर्णन] १ सूप मे अनाज रखकर उसे इस प्रकार हिलाना कि खराब दाने नीचे गिर जायँ। २ खुरचना।
खिरिसा—पु० [?] एक प्रकार की मिठाई। उदा०—सोठि लाइकै खिरिसा धरा।—जायसी।
खिरेंटी—स्त्री० [स० खरयष्टिका] बरियारा या बीजबद नामक पौधा। बला।
खिरौरा—पु० [हि० खिरौरी] बडी खिरौरी।
खिरौरी†—स्त्री० [स० खदिरवाटिका] कत्थे को उबाल या पकाकर तैयार की हुई गोल टिकिया।
पु० [हि० खाड+बडा] खॉड का लड्डू।
खिलदरा—वि०=खिलवाडी।
खिलअत—स्त्री० [अ०] पहनने के वे वस्त्र जो बडे राजा या बादशाह की ओर से किसी को सम्मानित करने के लिए दिये जाते थे।
खिलकत—स्त्री० [अ० खल्कत] १ सृष्टि। २ जन-समूह। भीड-भाड।
खिलकौरी†—स्त्री०=खिलवाड।
खिलखिलाना—अ० [अनु०] बहुत प्रसन्न होने पर जोर से हँसना। (खिलखिलाते समय मुँह से खिल खिल शब्द होता है।)
खिलखिलाहट—स्त्री० [हि० खिलखिलाना] १ खिलखिलाने की क्रिया या भाव। २ खिलखिलाने से मुँह से होनेवाला शब्द।
खिलजी—पु० [अ० खिल्ज] अफगानिस्तान की सीमा पर रहनेवाली पठानो की एक जाति।
खिलत—स्त्री०=खिलअत।
खिलना—अ० [स० स्खल] १ कली या फूल का पखुडियाँ खोलना। २ कोई सुखद कार्य या बात होने पर आनदित या प्रसन्न होना। ३ ऐसी आकृति बनाना जिससे प्रसन्नता प्रकट हो। प्रफुल्लित होना। ४ ठीक बैठना। सुन्दर लगना। फबना। जैसे—साडी पर गोट खिल रही है। ५ किसी चीज के सब अगो का फूल की पत्तियो की तरह अलग-अलग हो जाना। जैसे—चावल खिलना। ६ बीच से फटना। दरार पडना। जैसे—पानी भरने से दीवार खिलना। ७ टुकडे टुकडे होना। फूटना। जैसे—पानी पडने से चूना या मिट्टी खिलना।
खिलवत—पु० [अ०] १ ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो। निर्जन या शून्य स्थल। २ ऐसा स्थान जहाँ आपस के या एक दो इष्ट व्यक्तियो के सिवा और कोई न हो। एकान्त स्थल।
खिलवत खाना—पु० [फा०] ऐसा कमरा या घर जिसमे आपस के थोडे से व्यक्तियो के सिवा और कोई न आता-जाता हो।
खिलवाड—पु० [हि० खेल] १ मन बहलाने या समय बिताने के लिए यो ही किया जानेवाला ऐसा काम जो बच्चो के खेल की तरह का हो।
मुहा०—**(किसी काम को) खिलवाड समझना**—बहुत ही सहज या सुगम समझना।
२ मनबहलाव। दिल्लगी। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत ही साधारण रूप से किया हुआ काम।
खिलवाडी—वि० [हि० खेलाडी] जिसका मन खिलवाड मे ही अधिक रमता या लगता हो।
खिलवाना—स० [हि० खिलाना का प्रे०] खिलाने या भोजन कराने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को खिलाने मे प्रवृत्त करना।
स० [हि० खिलाना=प्रफुल्लित करना] खिलने या खिलाने मे प्रवृत्त करना। प्रफुल्लित कराना।
स० [हि० 'खीलना' का प्रे०] खीले या तिनके लगाने का काम किसी से कराना। खीलने मे प्रवृत्त करना।
स० दे० 'खेलवाना'।
खिलवार*—पु० १=खिलवाड। २ =खिलाडी।
खिलाई—स्त्री० [हि० खाना] १ खाने अथवा खिलाने की क्रिया या भाव।
पद—**खिलाई-पिलाई**=खाने-पीने और खिलाने-पिलाने की क्रिया या भाव।
२ खाने या खिलाने का पारिश्रमिक।
स्त्री० [हि० खेलाना] १ बच्चो को खेलाने का काम। २ वह दाई जो बच्चो को खेलाने के लिए नियुक्त की गई हो। धाय।
स्त्री० [हि० खिलना=प्रफुल्लित होना] खिलने या खिलाने (प्रफुल्लित होने या करने) की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
खिलाड—वि०=खिलाडी।
खिलाडी—पु० [हि० खेल+आडी (प्रत्य०)] १ वह जो खेल खेलता हो। खेलाडी। २ खिलवाडी। ३ तरह-तरह के खेल या तमाशे दिखानेवाला व्यक्ति। जैसे—जादूगर, पहलवान सँपेरा आदि।
†पु० [?] एक प्रकार का बैल।
खिलाना—स० [हि० खाना] १ किसी को कोई चीज खाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—मिठाई खिलाना, जहर खिलाना। २ किसी को भोजन कराना। जेवाना। जैसे—ब्राह्मण खिलाना।
स० [हि० खिलाना] किसी को खिलने अर्थात् प्रफुल्लित या विकसित होने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई खिले।
स०=खेलाना। (असिद्ध रूप)
खिलाफ—वि० [अ०] १ (व्यक्ति) जो किसी मत, विचार, व्यक्ति आदि का विरोध करता हो। २ (बात) जो किसी बात, वस्तु या सिद्धात से मेल न खाती हो। विपरीत। ३ उलटा। ४ अन्यथा। अव्य० १ तुलना मे। २ मुकाबले मे। सामने।
खिलाफत—स्त्री० [अ०] १ किसी की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी बनना। २ मुसलमानो मे पैगबर के उत्तराधिकार का पद या स्वत्व। ३ खिलाफ होने अर्थात् विरोध करने की क्रिया या भाव।

खिलायक—स्त्री० [अ० खल्कत] जन-समूह । भीड। उदा०—धाय नही घर, दाय परी जुरि आई खिलायक, आँख बहाऊं ।—केशव ।

खिलाल—स्त्री० [हि० खेल] (ताश आदि के खेल मे) पूरी बाजी की हार ।

खिलोना—पु० [हि० खेल+ओना (प्रत्य०)] १ बच्चों के खेलने के लिए बनाई हुई धातु, मिट्टी आदि की आकृति, चीज या सामग्री । २ बहुत ही साधारण या महत्वहीन वस्तु । ३ किसी के मन बहलाने का साधन या सामग्री ।

पद—(किसी के) हाथ का खिलोना (क) किसी की आज्ञा, संकेत आदि पर ही सब काम करनेवाला व्यक्ति । (ख) ऐसा व्यक्ति जिसका उपयोग केवल दूसरो के मनोविनोद के लिए ही होता हो।

खिलौरी—स्त्री० [हि० खील+भुना हुआ दाना] खरबूजे, बनिये आदि के भुने हुए बीज जो भोजनोपरान्त मुह का स्वाद बदलने के लिए खाये जाते है ।

खिल्ली—स्त्री० [हि० खिलना=मुस्कराना या हँसना] हँसने-हँसाने के लिए किसी को तुच्छ सिद्ध करते हुए कही जानेवाली हास्यास्पद बात ।

मुहा०—(किसी की) खिल्ली उडाना—दूसरो को हँसने-हँसाने के लिए किसी के संबंध मे कोई ऐसी बात कहना जिससे वह कुछ तुच्छ या हेय सिद्ध होता हो ।

स्त्री० [हि० खील=तिनका] १ पान का बीडा जो खील या सीक से खोसा हुआ हो। २ लगे हुए पान का बीडा।

†स्त्री० खील (बडा काटा या कील) ।

खिल्लीबाज—वि० [हि० खिल्ली+फा० बाज] [भाव० खिल्लीबाजी] दूसरो की खिल्ली या दिल्लगी उडानेवाला ।

खिल्लो—वि० [हि० खिलना=प्रसन्न होना] बहुत अधिक या प्राय हँसती रहनेवाली स्त्री के लिए उपहास या व्यग्य का सूचक विशेषण ।

खिवना†—अ० [स० क्षिप्] चमकना । (राज०) उदा०—मारू दीठी अउसकइ, जाणि खिवी घण मझ ।—ढोला मारू ।

खिवाई—स्त्री० खेवाई ।

खिवाही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की ईख ।

खिसकना—अ० [स० कृष्, प्रा० खिसइ, सि० खिसनु, गु० खिसकवूं, खसवू, मरा० खिसणे] १ चुपके अथवा धीरे से दूसरो की दृष्टि बचाते हुए कही से उठकर चल देना । २ चूतड के बल बैठे-बैठे किसी ओर थोडा-सा बढना या हटना । खसकना ।

खिसकाना—स० [हि० खिसकना] १ चुपके अथवा धीरे से किसी की कोई वस्तु उठाकर चल देना । २ किसी वस्तु को खीचकर किसी ओर कुछ हटाना-बढाना ।

खिसना†—अ० खसना ।

खिसलना—अ० =फिसलना ।

खिसलाना—स० 'खिसलना' का प्रे० रूप ।

खिसलाव†—पु० [हि० खिसलना या फिसलना] १ खिसलने या फिसलने की क्रिया या भाव । २ ऐसा चिकना स्थान जिस पर पैर फिसलता हो।

खिसलाहट—स्त्री० [हि० खिसलना या फिसलना] फिसलने या खिसलने की क्रिया या भाव।

खिसाना†—अ० =खिसियाना ।

खिसारा—पु० [अ० खिसार] १ घाटा। टोटा। २ नुकसान। हानि।

†वि० [हि० खिसाना या खीस] १ खिसियाया हुआ। २ जल्दी नाराज हो जानेवाला।

खिसारी—स्त्री० खेसारी ।

खिसिआनपन—पु० [हि० खिसिआना+पन] खिसियाने की क्रिया या भाव।

खिसिआना—वि० [हि० खीस हि० खिसियाना] [स्त्री० खिसिआनी] १ क्रुद्ध। २ अप्रसन्न। रुष्ट। ३ लज्जित।

अ० खिसियाना।

खिसिआहट—स्त्री० खिसिआनपन।

खिसियाना—अ० [हि० खीस=दात] १ लज्जित होकर दात निकाल देना या सिर झुका लेना। २ किसी पर अप्रसन्न या रुष्ट होकर बिगडना। नाराज होना।

खिसी†—स्त्री० [हि० खिसियाना] १ क्रोध। २ अप्रसन्नता। ३. लज्जा। ४ ढिठाई। धृष्टता।

खींच—स्त्री० [हि० खीचना] १ खीचने अथवा खिचे हुए होने की अवस्था या भाव। २ खीच-तान (दे०) । उदा०—अति सोर. सोर सकोर के खीच-बीच नरपति परे ।—रतना० ।

खींच-तान—स्त्री० [हि० खीचना+तानना] १ किसी वस्तु को विभिन्न दिशाओं की ओर विभिन्न पक्षो द्वारा एक साथ खीचकर ले जाने की क्रिया या प्रयास। २ व्यक्तियो का एक दूसरे के विरुद्ध किया जानेवाला उद्योग या प्रयत्न। ३ किसी बात या वाक्य के अर्थ या आशय का बलपूर्वक किसी एक ओर खीचा या ताना जाना। शब्द या वाक्य का जबरदस्ती साधारण से भिन्न कोई दूसरा अर्थ लगाया जाना ।

खींचना—स० [स० कृष्, प्रा० खच, ब० खेचा, प० खैच, गु० खेचवूं, का० खक्षुन, मरा० खेचणे] १ किसी वस्तु को बलपूर्वक अपनी ओर लाना। जैसे—हवा मे से पतग या कुएँ मे से बाल्टी खीचना। २ किसी को अपने साथ लेते हुए आगे बढना। जैसे—घोडा गाडी खीचता है। ३ किसी वस्तु या स्थान मे स्थित कोई दूसरी वस्तु बलपूर्वक बाहर निकालना। जैसे—म्यान से तलवार खीचना। ४ किसी को दूसरे पक्ष मे से अपने पक्ष मे मिलाना। ५ किसी वस्तु मे का तत्त्व, सार या सुगध निकालना। जैसे—इत्र खीचना। ६ भभके से अर्क, शराब आदि चुआना। ७ चूसना। सोखना। जैसे—मक्की की रोटी बहुत घी खीचती है। ८. किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना। अपनी ओर उन्मुख करना। जैसे—इस पुस्तक ने विद्वानों का ध्यान अपनी ओर खीच लिया है। ९ कलम, पेंसिल आदि से अकित या चित्रित करना। जैसे—लकीर खीचना। १० अनुकृति आदि के रूप मे उतारना या बनाना। जैसे—फोटो या चित्र खीचना। ११ कौशलपूर्वक किसी के अधिकार से कोई चीज निकालकर अपने हाथ मे करना। जैसे—किसी से रुपए खीचना। १२ व्यापारिक क्षेत्र मे, खपत या बिक्री का माल अधिक मात्रा या मान मे मँगाना या अपने अधिकार मे करना। जैसे—दूसरे महायुद्ध मे अमेरिका ने ससार का सारा सोना खीच लिया था ।

खींचाखींची—स्त्री० =खीच-तान ।

खींचातान—स्त्री० =खीच-तान ।

खींचातानी—स्त्री०=खीच-तान।

खीखर—पु० [देश०] एक प्रकार का बन-बिलाव। कटारन।

खीच†—स्त्री०=खिचडी। उदा०—करमाबाई को खीच अरोग्यो होइ परसण पावद।—मीराँ।

खीज—स्त्री०=खीझ।

खीजना—अ० = खीझना।

खीझ—स्त्री० [हि० खीझना] १ खीझने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ ऐसी बात, जिससे कोई खीझे। चिढानेवाली बात।
मुहा०—(किसी की) **खीझ निकालना**=किसी को खूब चिढानेवाली कोई बात ढूँढ निकालना या पैदा करना।

खीझना—अ० [स० खिद्यते, प्रा० खिज्जइ] किसी अप्रिय या अरुचिकर कार्य, बात, व्यवहार आदि का प्रतिकार न कर सकने पर उससे खिन्न होकर झुँझलाना।

खीण†—वि० = क्षीण।

खीधा†—स्त्री०=कथा।

खीन*—वि०=क्षीण।

खीनता*†—स्त्री० = क्षीणता।

खीनताई*—स्त्री०=क्षीणता ।

खीप—पु० [देश०] १ एक प्रकार का घना सीधा पेड। २ लज्जालु नाम का पौधा। लजाधुर। ३ गध-प्रसारिणी नाम की लता। गँधैली।

खीमा†—पु० =खेमा।

खीर—स्त्री० [स० क्षीर] दूध मे चावल उबालने तथा चीनी मिलाने से बनने-वाला एक प्रसिद्ध भोज्य पदार्थ।
मुहा०—**खीर चटाना**=पहले-पहल बच्चे को अन्न खिलाना आरम्भ करने के लिए उसके मुँह मे खीर डालना। अन्न-प्राशन करना।
†पु०=क्षीर।

खीर-चटाई—स्त्री० [हि० खीर+चटाई] बच्चे को पहले-पहल अन्न खिलाने के समय खीर चटाने की रसम। अन्न-प्राशन।

खीरमोहन—पु० [हि० खीर+मोहन] गुलाब जामुन के आकार की एक प्रसिद्ध बँगला मिठाई।

खीरा—पु० [स० क्षीरक] ककडी की जाति का एक प्रकार का फल।
मुहा०—(किसी को) **खीरा-ककडी समझना**=बहुत ही तुच्छ या हेय समझना।

खीरी—स्त्री० [स० क्षीर] गाय, भैस आदि मादा चौपायो का वह भाग जिसमे दूध बनता तथा रहता है तथा जिसके निचले भाग मे थन होते है।

खीरोदक—पु० [स० क्षीरोदक] एक प्रकार का पेड।

खील—स्त्री० [स० पा० प्रा० बँ० खील, गु० खिलो, उ० कीडा, मरा० खिड, खिडा] १ खिला या भुना हुआ चावल। लावा। २ चावल को भूनकर तथा चाशनी मे पकाकर जमाई हुई कतली। ३ किसी चीज का बहुत छोटा टुकडा। जैसे—शीशे का गिलास गिरते ही खील-खील हो गया।
†स्त्री० [हि० कील] १ कील। मेख। (दे० 'कील') २ बाँस आदि की पतली सीक जो पत्तो आदि को जोडकर दोना बनाने के काम आती है। ३ मास-कील।
स्त्री० [स० खिल] वह भूमि जो जोती जाने से पहले बहुत दिन परती छोडी गई हो।

खीलना—स० [हि० खील] १ पत्तो मे खील लगाकर दोना, पत्तल आदि बनाना। खील लगाना। २ दे० 'कीलना'।

खीला†—पु० [हि० कील] [स्त्री० खीली] १ बाँस आदि की पतली छोटी सीक। २ बडी और मोटी कील। ३ खूँटा।

खीली—स्त्री०=खिल्ली (पान का बीडा)।

खीवन—स्त्री० [स० क्षावन] मतवालापन। मत्तता।

खीवर*—वि० [स० क्षावन] १ मतवाला। २ वीर। शूर। (डि०)

खीस—स्त्री० [?] १ पशुओ के लबे तथा नुकीले दाँत। खाँग। जैसे—सूअर की खीस। २ खुले हुए और बाहर से दिखाई देनेवाले दाँत।
मुहा०*—**खीस या खीसे काढना या निकालना**=कोई भूल हो जाने पर निर्लज्जतापूर्वक हँसना या दाँत निकालना।
३ लज्जा। शरम।
स्त्री० [देश०] १ नई ब्याई हुई गाय, भैस आदि का १०-१२ दिनो का वह दूध जो पीने योग्य नही होता। पेउस। २ उक्त पशुओ के स्तन के अन्दर की मास-कील।
मुहा०—**खीस निकालना**=नई ब्याई हुई गाय, भैस आदि के थनो मे से मास-कील निकालना।
विशेष—ये मास-कीले गर्भकाल मे थनो मे दूध रुके रहने से बन जाती है।
†वि० [स० किष्क=वध] नष्ट। बरबाद। उदा०—लगे करन मरब-खीसा—तुलसी।
क्रि० वि० निरर्थक। व्यर्थ। उदा०—निठुरा आगे रोइबो आँसु गारिबो-खीस—रहीम।
स्त्री० [हि० खीज] १ अप्रसन्नता। नाराजगी। २ क्रोध। गुस्सा।
स्त्री० [फा० खिसारा] १ नुकसान। हानि। २ घाटा। टोटा। ३ कमी। न्यूनता।

खीसना*—अ० [हि० खीस] नष्ट या बरबाद होना। उदा०—तुम्हरे दास जाहि अघ खीसा। —तुलसी।
स० नष्ट या बरबाद करना।

खीसा—पु० [फा० कीस] [स्त्री० अल्पा० खीसी] १ छोटा थैला। थैली। २ खलीता। जेब। ३ कपडे की वह थैली जिससे नहाने के समय बदन मलकर साफ करते है।
† पु०=खीस।

खीह*—स्त्री०=खीझ।

खीहना†—अ०=खीझना। उदा०—तुही तुही कह गुडुरु खीहा।—जायसी।

खुखणी—स्त्री० [स०] एक प्रकार की वीणा।

खुगाह—पु० [स०] काले रग का घोडा।

खुंटकढवा—पु० [हि० खूँट+काढना] कान की मैल निकालनेवाला व्यक्ति। कनमैलिया।

खुँटाना†—स० [हि० खूँटना] खूँटने का काम किसी से कराना।
अ० खूँटा या तोडा जाना।

खुटिला—पु० [देश०] कान मे पहनने का कर्णफूल। उदा०—मनि कुडल खुँटिला औ खूँटी।—जायसी।

खुंड—पु० [देश०] १ एक प्रकार की मोटी घास। २ पहाड़ी टट्टुओं की एक जाति।
खुंडला—पु० [स० खंडल] १ टूटा-फूटा मकान। २ छोटा झोपड़ा।
खुदकार—पु० [फा० ख्वान्दगार] सेवक। नौकर।
खुंदवाना—स० =खुँदाना।
खुंदाना—स० [हि० खूँदना] १ खूँदने मे प्रवृत्त करना। २ (घोड़ा) कुदाना या कुदाते हुए चलाना।
खुंदिन†—स्त्री० =खूँद।
खुंदी†—स्त्री० खूँद।
खुबी†—स्त्री० खुभी।
खुभी†—स्त्री० [स० कुभ] १ कान मे पहनने का एक गहना। २ दे० 'खुमी'।
स्त्री० [स० स्कभ] खभे के नीचे का वह भाग जो ऊपर के भाग मे कुछ बाहर निकला रहता है। उदा०—खुभी पनां प्रवाली खभ।—प्रिथीराज।
खुआर†—वि० दे० 'ख्वार'।
खुआरी*†—स्त्री० दे० 'ख्वारी'।
खुक्ख—वि० [स० शुष्क] १. जिसके पास कुछ भी धन-सम्पत्ति न हो। परम दरिद्र या निर्धन। २ जिसमे तत्त्व या सार न रह गया हो। खोखला। निस्सार। ३ जो ताश के खेल मे पूरी बाजी हार गया हो।
खुखंड—पु० [देश०] एक प्रकार की राई।
खुखड़ा†—पु० [हिं० खुक्ख] पेड जिसे घुन लगा हो अथवा जिसका गूदा सड गया हो।
पु० [नेपा० खुकुरा] [स्त्री० अल्पा० खुखडी] कटार की तरह का एक प्रकार का बडा छुरा जो प्राय नेपाली लोग रखते हैं।
खुखड़ी—स्त्री० [देश०] १ तकुए पर लपेट कर सूत आदि का बनाया जानेवाला पिंड। कुकडी। २ छोटा खुखडा।
खुखला†—वि० खोखला।
खुखुड़ा†—पु० खुखडा।
खुगीर—पु० दे० 'खूगीर'।
खुचर—स्त्री० [स० कुचर -पराये दोष निकालनेवाला] किसी अच्छी बात में भी झूठ-मूठ का निकाला जानेवाला दोष या की जानेवाली आपत्ति। छिद्रान्वेषण।
क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—लगाना।
खुचुर†—स्त्री० खुचर।
खुजलाना—स० [स० खर्जु, खर्जन] [सज्ञा खुजलाहट, खुजली] शरीर के किसी अग मे खुजली होने पर उस स्थान को नाखूनों अथवा उँगलियों से बार बार मलना या रगड़ना।
†अ० खुजली होना।
खुजलाहट—स्त्री० [हिं० खुजलाना] खुजली होने की अवस्था या भाव।
खुजली—स्त्री० [हिं० खुजलाना] १. शरीर के किसी अग मे रक्त का सचार रुक जाने के कारण होनेवाली सुरसुरी। २. एक चर्मरोग जिसमे शरीर पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं और बहुत अधिक खुजलाहट होती है।
खुजवाना—स० [हिं० खोजना] किसी खोई हुई वस्तु को खोजने मे किसी को प्रवृत्त करना। खोज कराना। खोजवाना।
खुजाई—स्त्री०। हि० खोजना +आई (प्रत्य०)] खोजने या ढूँढने की क्रिया या भाव।
खुजाना†—अ०, स०—खुजलाना।
स० -खुजवाना।
खुज्झा†—पु० खूझा।
खुझडा—पु० खूझा।
खुझरा—पु० [स० कु + हि० जट] १ जमीन पर उभरने अथवा फैलनेवाले पेड़ों की जड़े। २ एक मे गुथे हुए किसी चीज के बहुत से ततु या रेशे। जैसे-नारियल की जटा या रेशम का खुझरा।
खुटक*†—स्त्री० -खुटका।
खुटकना—स० [स० खुड् वा खुड] किसी वस्तु का ऊपरी अश या भाग दाँत या नाखूनों से नोचना या तोडना।
खुटका†—पु० [हि० खटका] ऐसी बात जो मन मे खटका या चिंता उत्पन्न करती हो। खटका।
खुटचाल—स्त्री० [हि० खोटी + चाल] १ दुष्ट उद्देश्य से किया जानेवाला काम या कही जानेवाली बात अथवा किसी को चिढाने या कष्ट पहुँचाने के लिए चली जानेवाली बुरी चाल। खोटा या बुरा चाल-चलन। दुराचार।
खुटचाली*—पु० [हि० खुटचाल + ई (प्रत्य०)] १ खुटचाल चलनेवाला दुष्ट व्यक्ति। २ बुरी चाल चलनेवाला व्यक्ति। दुराचारी।
खुटना†—अ० [स० खुड् या खोट] १ समाप्त होना। खतम होना। २ कम पडना। घटना। ३ टूट कर अलग होना।
†अ० =खुलना। उदा०—निपट बिकट जौलौं जुटे, खुटहि न कपट कपाट। —बिहारी।
खुटपन—पु० [हिं० खोटा + पन, पना (प्रत्य०)] खोटे या दुष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव।
खुटला—पु० [देश०] कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।
खुटाई—स्त्री० -खोटाई।
खुटाना*—अ० [हि० खुटना] समाप्त होना।
खुटिला—पु० [देश०] कान का एक प्रकार का आभूषण।
खुटेरा†—पु० [स० खदिर] खैर का पेड।
खुट्टी†—स्त्री० [खुट से अनु०] तिल और गुड (या चीनी) से बननेवाली एक प्रकार की मिठाई। रेवडी।
स्त्री० =कुट्टी।
खुठमेरा†—पु० [देश०] एक प्रकार का मोटा धान।
खुड्ला—पु० [देश०] वह खानेदार अलमारी या दरबा जिसमे मुर्गे-मुर्गियाँ बन्द की जाती हैं।
खुड्आ—पु० [देश०] वर्षा या जाड़े आदि से बचाव के लिए सिर पर डाला जानेवाला कबल या कोई कपडा। घोघी।
क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।
खुड्डी—स्त्री० [प० खुड्ड विवर] १. वह गड्ढा जिसमे देहाती लोग मल-त्याग करते हैं। २ पाखाने मे पैर रखने के पायदान।
खुड्डी†—स्त्री० =खुड्डी।
खुतका—पु० =कुतका।
खुतबा—पु० [अ० खुत्ब] १. तारीफ। प्रशसा। २ प्रशसात्मक

लेख या कविता। ३ मुसलमानी राज्यो मे नये राजा के सिंहासन पर बैठने की घोषणा।

मुहा०—(किसी के नाम का) **खुतबा पढा जाना**=किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना।

खुत्थ—पु०=खुत्थी।

खुत्थी†—स्त्री० [?] पौधो का वह भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी के ऊपर बचा रह जाता है। खूँटी।

स्त्री० [?] १ गुत्थी। थैली। २ धन-सम्पत्ति। ३ किसी पदार्थ का सार भाग। सत्त।

खुथी—स्त्री०=खुत्थी।

खुद—अव्य० [फा०] स्वय। आप।

पद—**खुद-ब-खुद** (देखे)।

खुदका—पु०=कुतका।

खुदकाश्त—स्त्री० [फा०] ऐसी जमीन जिसे उसका मालिक स्वय जोतता-बोता हो।

खुदकुशी—स्त्री० [फा०] आत्महत्या।

खुदगरज—वि० [फा०] [भाव० खुदगरजी] अपना ही काम या मतलब देखनेवाला। स्वार्थी।

खुदगरजी—स्त्री० [फा०] खुदगरज होने की अवस्था या भाव। स्वार्थ-परायणता।

खुदना—अ० [हिं० खोदना का अ०] १ जमीन आदि का खोदा जाना। जैसे—खान या नहर खुदना। २ खुदने के रूप मे अकित या चिह्नित होना। जैसे—बरतन पर नाम खुदना।

खुद-परस्त—वि० [फा०] [भाव० खुद-परस्ती] वह जो अपने आप को ही सबसे बढकर समझता हो।

खुद-ब-खुद—अव्य० [फा०] आप से आप। अपनी ही इच्छा से। स्वत (बिना किसी की प्रेरणा आदि के)।

खुद-मुख्तार—वि० [फा०] [-भाव० खुद-मुख्तारी] जिस पर किसी दूसरे का प्रभुत्व या शासन न हो। स्वतन्त्र।

खुद-मुख्तारी—स्त्री [फा०] खुदमुख्तार होने की अवस्था या भाव। स्वतन्त्रता।

खुदरा—पु० [फा० खुर्दा, स० क्षुद्र] १ छोटी और साधारण वस्तु। फुटकर चीज। २ किसी पूरी चीज मे के छोटे-छोटे अश, खड या टुकडे। जैसे—दस रुपए के नोट का खुदरा। ३ चीजो की बिक्री का वह प्रकार जिसमे वे इकट्ठी या पूरी नही, बल्कि टुकडे-टुकडे या थोडी-थोडी करके बेची जाती है। 'थोक' का विपर्याय। जैसे—थोक के व्यापारी खुदरा माल नही बेचते।

†वि० १ जो छोटे-छोटे अशो या टुकडो के रूप मे हो। जैसे—खुदरा नोट, खुदरा सौदा। २ थोडा-थोडा करके बिकनेवाला। (रिटेल)

†वि०=खुरदुरा।

खुदराई—स्त्री० [फा०] खुदराय होने की अवस्था या भाव।

खुदराय—वि० [फा०] १ अपनी ही राय या विचार के अनुसार सब काम करनेवाला। दूसरो की राय न मानने या न सुननेवाला। २ स्वेच्छा-चारी। निरकुश।

खुदवाई—स्त्री० [हिं० खुदवाना] १ खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुदवाना—स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम दूसरे से कराना।

खुदा—पु० [फा०] १ परमात्मा। परमेश्वर।

मुहा०—**खुदा-खुदा करके**=बहुत कठिनता से। बडी मुश्किल से। **खुदा लगती कहना**=ऐसी ठीक और सच्ची बात कहना, जिससे ईश्वर प्रसन्न हो।

पद=**खुदा का घर**—मसजिद। जिसमे ईश्वर का निवास माना जाता और उपासना की जाती है। **खुदा की मार**=दैवी प्रकोप। **खुदा-न-ख्वास्ता**=ईश्वर न करे कि ऐसा हो। '(अशुभ बातो के प्रसग मे) जैसे—खुदा-न-ख्वास्ता अगर आप बीमार पड जायँ तो ?

खुदाई—स्त्री०=खोदाई।

वि० [फा० खुदाई] खुदा या ईश्वर की ओर से आने या होनेवाला। ईश्वरीय।

पद—**खुदाई रात**—ऐसी रात जिसमे बराबर जागते रहकर ईश्वर का ध्यान किया जाय।

स्त्री०१, खुदा होने की अवस्था, पद या भाव। ईश्वरता। २ ईश्वर की रची हुई सारी सृष्टि। ३ सृष्टि मे रहनेवाले सभी प्राणी या लोग।

खुदा-परस्त—वि० [फा०] [भाव० खुदापरस्ती] ईश्वर को मानने तथा उसकी उपासना करनेवाला। आस्तिक।

खुदावद—पु० [फा०] १ ईश्वर। २ मालिक। स्वामी।

अव्य० जी हुजूर। हाँ, सरकार। (बडो से बातचीत करने अथवा उन्हे सम्बोधित करने के समय।)

खुदाव—पु० [हिं० खोदना] १ किसी चीज के ऊपर किया हुआ खुदाई का काम। २ किसी चीज के ऊपर आकृति, रूप आदि खुदे होने का ढग।

खुदा-हाफिज—पद [फा०] ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। (विदाई आदि के समय)

खुदी—पु० [फा०] १ 'खुद' का भाव। अहभाव। २ अभिमान। घमड। ३ शेखी।

खुद्दी—स्त्री० [स० क्षुद्र] १ चावल, दाल आदि के बहुत छोटे-छोटे टुकडे। किनकी। २ तरल पदार्थ के नीचे की तलछट।

खुनकी—स्त्री० [फा०] हलकी सरदी। ठढक।

खुनखुना—पु० [अनु०] घुनघुना या झुनझुना नाम का खिलौना।

खुनस—स्त्री० [स० खिन्नमनस्] [वि० खुनसी] क्रोध। गुस्सा।

खुनसाना—अ० [हिं० खुनस] गुस्से या नाराज होकर कुछ कहना या बिगडना।

खुनसी—वि० [हिं० खुनसान।] गुस्सा करनेवाला। क्रोधी।

खुनिस†—स्त्री०=खुनस।

खुफिया—वि० [फा०] छिपकर रहनेवाला अथवा छिपकर काम करनेवाला। गुप्त।

क्रि० वि० गुप्त रूप से। छिपकर। जैसे—खुफिया जाँच करना।

खुफियाखाना—पु० [फा०] वह स्थान जहाँ दुश्चरित्रा स्त्रियाँ धन लेकर व्यभिचार करती हो।

खुफिया पुलिस—स्त्री० [फा० खुफिया+अ० पुलिस] १. पुलिस का वह

विभाग जो गुप्त रूप से अपराधो आदि की जाँच करता है तथा अपराधियो का पता लगाता है। २ उक्त विभाग का कर्मचारी।

खुभना—अ० [स० क्षुभ्] गडना। चुभना।

खुभराना*†—अ० [स० क्षुब्ध] उपद्रव या उत्पात करने के लिए इधर-उधर घूमना।

खुभिया†—स्त्री० = खुभी।

खुभी—स्त्री० [हिं० खुभना] कान मे पहनने का फूल।

खुम—पु० [फा०] शराब रखने का घडा या मटका।

खुमखाना—पु० [फा०] शराबखाना। मदिरालय।

खुमरा—पु० [अ० कुबुर—हजरत अली का एक गुलाम] [भाव० खुमरी] एक प्रकार के मुसलमान फकीर।
पु० [अ० खुमराह] छोटी चटाई।

खुमरी—स्त्री० कुमरी (पडुक पक्षी)।

खुमा—स्त्री० = खुमारी।

खुमान*—वि० [स० आयुष्मान्] बडी आयुवाला। दीर्घजीवी।
पु० शिवाजी महाराज की एक उपाधि।

खुमार—पु० [फा०] १ खुमारी (दे०)। २ आध्यात्मिक या ईश्वरीय प्रेम का नशा या मद।

खुमारी—स्त्री० [अ० खुमार] १ भाँग, शराब आदि का नशा उतरते समय अथवा उतर जाने के बाद की वह स्थिति जिसमे शरीर आलस्य से भरा होता है, आँखे चढी होती है, गला सूखा रहता है और तबीयत कुछ-कुछ बेचैन सी रहती है। २ रात भर जागते रहने से अथवा बहुत अधिक थके रहने के कारण होनेवाली सुस्ती।

खुमी—स्त्री० [अ० कुमा] १. बहुत ही छोटे छोटे उद्भिज्जो या वनस्पतियो का एक वर्ग जिसमे फूल, पत्ते आदि बिलकुल नही होते, केवल एक छोटे डठल के सिरे पर सफेद या मटमैले रग का छाता-सा होता है। गुच्छी, कुकुरमुत्ता आदि वनस्पतियाँ इसी वर्ग के अतर्गत है। (मशरूम) २ दाँतो मे लगवाई जानेवाली सोने की कील या पत्तर। ३ कानो मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. हाथी के दाँतो पर चढाया जानेवाला छल्ला।

खुम्हारि*—स्त्री० = खुमारी।

खुरट—पु० = खुरड।

खुरड—पु० [स० क्षुर खरोचना + अड] घाव के सूखने पर उसके ऊपर जमनेवाली झिल्ली या पपडी।

खुर—पु० [स० √खुर् (काटना) + क, पा० प्रा० खुर, छुर, बँ०, उ० प० गु० खुर, मरा० खूर] १ सीगवाले पशुओ के पैरो का अगला सिरा जो प्राय गोल तथा बीच मे से फटा हुआ होता है। टाप। सुम। २. चारपाई या चौकी के पाये का निचला छोर जो पृथ्वी पर रहता है। ३. नख नामक गध-द्रव्य।

खुरक—स्त्री० [हिं० खुटका] १. खटका। अदेशा। उदा०—सुआ न रहै खुरुक जिअ, अबहि काल सो आउ।—जायसी। २ चिता। सोच।
†स्त्री० = खुजली।
पु० [स० खुर√ कै (चमकना) + क] १ तिल का पेड। २ एक प्रकार का नृत्य।

खुरक राँगा—पु० [हिं खुरक + राँगा] एक प्रकार का नरम और सफेद राँगा जो जल्दी गल जानेवाला होता है। हिरनखुरी राँगा।
विशेष—वैद्यक मे यह भस्म बनाने के लिए अच्छा माना जाता है।

खुरका—पु० [देश०] एक प्रकार की घास।

खुरखुर—पु० [अनु०] वह शब्द जो गले या नाक मे बलगम आदि अटकी या फँसी रहने के कारण सास लेते समय होता है। घरघर शब्द।

खुरखुरा—वि० [स० क्षुर खरोचना] जिसके ऊपरी तल पर ऐसे कण या रवे हो जो छूने या हाथ फेरने मे गडे। 'चिकना' का विपर्याय। खुरदुरा।

खुरखुराना—अ० [हिं० खुरखुर अनु०] १ खुरखुर शब्द होना। जैसे—गला खुरखुराना। २ छूने मे खुरखुरा या ऊबड-खाबड लगना। स० खुरखुर शब्द उत्पन्न करना।

खुरखुराहट—स्त्री० [हिं० खुरखुर] १ खुरखुराने की क्रिया या भाव। खुरखुरे होने की अवस्था या भाव। खुरदरापन। ३ साँस लेने के समय गले में से कफ के कारण होनेवाला खुरखुर शब्द।

खुरचन—स्त्री० [हिं० खुरचना] १ खुरचने की क्रिया या भाव। २ कडाही, तसले आदि मे से पकी या बनी हुई वस्तु निकाल लेने के बाद उसमे बचा तथा चिपका हुआ उस वस्तु का वह अश जो खुरचकर निकाला जाता है। ३ एक विशेष प्रकार से बनाई हुई रबडी जो कडाही मे से खुरचकर निकाली जाती है। ४ किसी वस्तु का बचा-खुचा या अन्तिम अश। जैसे—स्त्रियाँ अपनी अतिम सन्तान को पेट की खुरचन कहती है। ५ वह उपकरण जिससे कडाही, तसले आदि मे से कोई चीज खुरचकर निकाली जाती है। खुरचनी।

खुरचना—स० [स० क्षुरण] १ कडाही, तसले आदि मे चिपका तथा लगा हुआ किसी वस्तु का अश किसी उपकरण अथवा चम्मच आदि से रगडकर निकालना। २ किसी नुकीली वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार रगडना कि वह दूसरी वस्तु कुछ छिल जाय। जैसे—नाखून से मास खुरचना, कील से लकडी खुरचना।

खुरचनी—स्त्री० [हिं० खुरचना] कोई चीज खुरचने का उपकरण या औजार। जैसे—कसेरो या चमारो की खुरचनी।

खुरचाल—स्त्री० [हिं० खोटी + चाल] १ किसी को चिढाने या कष्ट पहुँचाने के लिए चली जानेवाली दुष्टतापूर्ण चाल। २ किसी काम मे व्यर्थ की की जानेवाली आपत्ति या डाली जानेवाली बाधा। ३ दुष्टता। पाजीपन।

खुरचाली—वि० [हिं० खुरचाल] १. जो जान-बूझकर दूसरो को चिढाता अथवा परेशान करता हो। खुरचाल करनेवाला। २ पाजी। दुष्ट।

खुरजी—स्त्री० [फा०] गधे, घोडे, बैल आदि की पीठ पर रखा जाने-वाला एक प्रकार का बडा झोला या थैला जिसमे सामान आदि भरा जाता है।

खुरट—पु० [हिं० खुर] एक रोग जिसमे पशुओ के खुर पक जाते है। खुर पकने का रोग।
†पु० = खुरड।

खुरतार—स्त्री० [हिं० खुर + तार (प्रत्य०)] खुरवाले पशुओ के चलने से होनेवाला शब्द। खुरो या टापो की ध्वनि। उदा०—बज्जहि हय खुरतार, गाल बज्जहि सु उट भव।—चदबरदाई।

खुरथी†—स्त्री० दे० 'कुलथी'। (कदन्न)

खुरदरा—वि० [हिं० खुर+दर अनु०] जिसकी सतह रुक्ष अथवा दानेदार हो। जैसे—खुरदरा कपडा। 'चिकना' का विपर्याय।

खुरदा†—वि०=खुदरा।

खुरदायँ†—पु० [हिं० खुर+ दाना] कटी हुई फसल मे से भूसा और अन्न के दाने अलग अलग करने के लिए बैलो से उसे कुचलवाने या रौदवाने का काम। खुरो के द्वारा होनेवाली दँवाई।

खुरदारी—पु० [फा० खुर+दाद] भालू का जुलाब। (कलदरो की बोली)

खुरपका—पु० [हिं० खुर+पकना] गाय, भैसो आदि के खुर पकने का रोग।

खुरपा—पु० [स० क्षुरप्र, प्रा० खुप्प] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] १ लोहे का मुठियादार एक छोटा उपकरण जिससे जमीन खोदी तथा गोडी जाती है। २ उक्त आकार-प्रकार का घास छीलने का एक छोटा उपकरण।

पद—खुरपा-जाली=घास छीलने और उसका गट्ठर बाँधने के उपकरण।

३ चमारो या मोचियो का वह उपकरण जिससे वे चमडा छीलकर साफ करते है।

खुरफ—पु० [फा० खुरफा] कुलफा नामक साग।

खुरबदी—स्त्री० [फा०] घोडे, बैल आदि के खुरो मे नाल जडने का काम।

खुरमा—पु० [अ० खुर्म] १ छुहारा नामक सूखा फल। २ एक प्रकार का पकवान जो मीठा भी बनता है और नमकीन भी।

खुरयाऊ—पु० [देश०] एक प्रकार का फाग जो बुदेलखड मे गाया जाता है।

खुरली—स्त्री० [स० खुर√ ला(लेना)+क+ङीष्] १ सेना का युद्धाभ्यास। २ अभ्यास करने का स्थल।

स्त्री० [प०] वह नॉद जिसमे पशुओ को चारा खिलाया जाता है।

खुरसीटा†—पु०=खुरपका (रोग)।

खुरहर†—पु० [हिं० खुर+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खुरहरी] १ जमीन पर पडा हुआ गौओ, घोडो आदि के खुरो का चिह्न या निशान। खुर की छाप। २ उक्त प्रकार के चिह्नो से बना हुआ वह जगली मार्ग जिस पर पशु चलते है। ३ पगडडी।

खुरहरा†—वि० [हिं० खुरखुर से अनु०] [स्त्री० खुरहरी] १ जो ऊपर से चिकना न हो। खुरदरा। २ (खाट या पलग) जिस पर बिस्तर न बिछा हो और इसी लिए जिस पर रस्सी या सुतली शरीर मे गडती या चुभती हो।

खुरहा—पु०=खुरपका (पशुओ का रोग)।

खुरहुर†—पु०=खुरहर।

खुरहुरी—[स० क्षुद्रफली > खुद्दहुली > खुरहरी] १ एक प्रकार का फलदार वृक्ष जिसे खेनन घूई आदि भी कहते है। उदा०—नरियर फरेफरी खुरहुरी।— जायसी। २ उक्त वृक्ष का फल।

खुरा—पु० [हिं० खुर] १ खुरपका (दे०)। २ लोहे का वह काँटा जो हल के फाल मे जडा रहता है। ३ वह पक्की चौकोर जमीन जो नालियो या मोरियो के ऊपरी भाग पर पानी आदि गिराने के लिए होती है। (पश्चिम)

खुराई—स्त्री० [हिं० खुर] वह रस्सी जिससे पशुओ के अगले या पिछले दोनो पैर इसलिए बाँध दिये जाते है कि वह भागने न पावे।

खुराक—पु० [फा० खूराक] १ वह जो कुछ खाया जाय। खाद्य पदार्थ। भोजन। जैसे—आदमियो की खुराक अलग होती है, जानवरो की अलग। २ भोजन की उतनी मात्रा जितनी एक बार अथवा एक दिन मे खाई जाय। ३ किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक बार मे लेनी उचित या उपयुक्त हो। जैसे—दवा की खुराक़।

खुराकी—स्त्री० [फा०] १ भोजन आदि की सामग्री। २ भोजन करने अथवा भोजन आदि की सामग्री लेने के लिए दिया जानेवाला धन।

वि० जिसकी खुराक बहुत अधिक हो।

खुराघात—पु० [स० खुर-आघात, तृ० त०] खुर से किया हुआ आघात या प्रहार।

खुराफात—स्त्री० [अ० खुराफात का बहुवचन] १ बहुत ही भद्दी बाते। २ गाली-गलौज।

मुहा०—खुराफात बकना=गदी या बेहूदी बाते कहना।

३ ऐसा काम या बात जिससे किसी दूसरे के काम मे बाधा पडती हो, किसी की परेशानी बढती हो या कोई उपद्रव खडा होता हो।

खुराफाती—वि० [हिं० खुराफात] १ खुराफात-सबधी। २ खुराफात के रूप मे होनेवाला।

पु० वह जो प्राय कुछ न कुछ खुराफात करता रहता हो।

खुरायला—पु० [हिं० खुर+आयल] ऐसा जोता हुआ खेत जिसमे अभी बीज न बोये गये हो।

खुरालिक—पु० [स० खुर-आलि, ष०त०, खुरालि √कै (प्रतीत होना) +क] १ लोहे का तीर। २ तकिया। ३ उस्तरा, कैची आदि रखने की नाइयो की थैली। किसबत।

खुरासान—पु० [फा०] [वि० खुरासानी] फारस देश का एक प्रदेश या भूभाग।

खुरासानी—वि० [फा०] १ खुरासान-सबधी। २ खुरासान प्रदेश मे रहने अथवा होनेवाला।

पु० खुरासान का निवासी।

स्त्री० खुरासान की बोली या भाषा।

खुराही—स्त्री० [हिं० खुर+ फा० राह] १ जमीन पर पडे हुए गौओ, घोडो आदि के खुरो के चिह्नो से बना हुआ मार्ग। २ रास्ते का ऊँचा-नीचापन सूचित करनेवाला एक शब्द। (कहारो की भाषा)

खुरिया—स्त्री० [फा० (आब) खोरा] १ कटोरी। छोटी प्याली। २ घुटने पर की गोल हड्डी। चक्की।

खुरी—स्त्री० [हिं० खुर] १ खुर या टाप का चिह्न या छाप। सुम का निशान।

मुहा०—खुरी करना=(क) चलने के लिए आतुर होने पर घोडे, बैल आदि सुमवाले पशुओ का पैर से जमीन खोदना। (ख) जल्दी मचाना। (व्यग्य)

२ उपद्रव। ३ दुष्टता। पाजीपन।

†स्त्री० [?] बहते हुए पानी की वह जबरदस्त धार जिसके विपरीत नाव न चल सके। (मल्लाह)

खुरुक—स्त्री० दे० 'खुरक'।
खुरुचना—अ०=खुरचना।
खुरुचनी—स्त्री०=खुरचनी।
खुरुहरा—वि०=खुरहरा।
खुरुहरी—स्त्री० दे० 'खुरहुरी'।
खुरू—पु० दे० 'खुरी'।
खुरूक—स्त्री० [देश०] नारियल मे की गरी। (बुदेल०)
खुरैरा†—वि० [स्त्री० खुरैरी] खुरहरा।
खुर्द—वि० [फा०] छोटा। लघु। "कलाँ" का उल्टा।
खुर्दनी—वि० [फा०] खाने योग्य (वस्तु)।
स्त्री० खाई जानेवाली वस्तु। खाद्य पदार्थ।
खुर्दबीन—स्त्री० [फा०] वह यत्र जिसके द्वारा देखने पर छोटी चीजे बडी दिखाई पडती है। सूक्ष्मदर्शक यत्र। (माइक्रोस्कोप)
खुर्दबुर्द—क्रि० वि० [फा०] जो खा-पकाकर समाप्त या बहुत बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया हो।
खुर्दा—भू० कृ० [फा० खुर्द] खाया हुआ। भक्षित।
पु० छोटी-मोटी चीज। साधारण या तुच्छ वस्तु।
वि० दे० 'खुदरा'।
खुर्रम—वि० [फा०] १ ताजा। २ प्रसन्नचित्त। खुश।
खुर्रमगाह—स्त्री० [अ० फा०] राजाओ आदि का शयनागार।
खुर्राट—वि० [देश०] १ बडा-बूढा। वृद्ध। २ बहुत अनुभवी। ३ चालाक तथा चालबाज। धूर्त्त। काइयाँ।
खुर्राटा—पु० दे० 'खर्राटा'।
खुसँद—वि० [फा०] १ जो कोई बात मानने के लिए तैयार हो गया हो। राजी। २ प्रसन्न।
खुलता—वि० [हि० खुलना] १ जो आगे से खुला हुआ हो। जिसके आगे कोई आड न हो। जैसे—खुलता मकान। २ (रग) जो हलका तेज हो और देखने मे भला जान पडता हो।
खुलती—स्त्री० कुलथी।
खुलना—अ० [स० क्षुर (कटना या खुदना, प्रा० खुल्ल, मरा० खुलणे] हिन्दी 'खोलना' का अकर्मक रूप जो भौतिक या मूर्त्त और अभौतिक या अमूर्त्त रूपो मे नीचे लिखे अर्थो मे प्रयुक्त होता है—
भौतिक या मूर्त्त रूपो में—
१ बँधी या बाँधी हुई चीज का बधन इस प्रकार हट जाना कि वह बँधी न रह जाय। जैसे—(क) गाँठ या रस्सी खुलना। (ख) बेडी या हथकडी खुलना। २ चारो और लिपटी या लपेटी हुई चीज का अपने स्थान से अलग किया जाना या होना। जैसे—धोती या पगडी खुलना। ३ शरीर पर धारण की हुई चीज का उतरना या उतारा जाना। जैसे—कमीज या कोट खुलना। ४ जो चीज किसी प्रकार के आवरण आदि के कारण आँखो से ओझल हो, उसके आगे का आवरण इस प्रकार हट जाना कि वह चीज सामने आ जाय। अनावृत होना। जैसे—रग-मच पर का परदा खुलना, संदूक या उसका ढक्कन खुलना। ५ किसी घिरे, छाये या बन्द स्थान के आगे लगे हुए किवाडो या पल्लो का हटकर या हटाये जाने पर इस प्रकार इधर या उधर हो जाना कि बीच में आने-जाने का मार्ग हो जाय। जैसे—(क) किले का फाटक खुलना। (ख) कोठरी या मकान का दरवाजा खुलना। ६ अवरोध, बाधा आदि हटने के फलस्वरूप किसी चीज का सार्वजनिक उपयोग या व्यवहार के लिए सुगम होना। जैसे—प्रदर्शनी खुलना। ७ मोडी, लपेटी या तह की हुई चीज का इस प्रकार विस्तृत किया जाना या होना कि उसके सिरे यथासाध्य दूर तक फैल जायें। जैसे—पढाई के समय पुस्तक खुलना। ८ टाँके, सिलाई आदि के द्वारा जुडी या जोडी हुई चीज का जोड, टाँका या सिलाई टूट या हट जाने के कारण सयोजक अगो का अलग अलग होना। जैसे—(क) चूडी या हार का टाँका खुलना। (ख) जूते की सीअन खुलना। ९ यात्रिक क्रिया या साधन से बद की हुई चीज मे विपरीत क्रिया के फलस्वरूप ऐसी स्थिति होना कि वह बद न रह जाय। जैसे—खबरो, गीतो या भाषणो के सुने जाने के लिए रेडियो खुलना। १०. मरम्मत आदि के लिए यत्रो के कल-पुरजे या कील-काँटो का अलग अलग होना या अपने स्थान से हटाया जाना। जैसे—घडी खुलने पर ही इसके भीतरी दोषो का पता लगेगा। ११ ठहरे या रुके हुए यानो आदि का उद्दिष्ट या गन्तव्य स्थान की ओर चलने या जाने के लिए प्रस्थित होना। जैसे—ठीक समय पर नाव या रेल खुलना। १२ जिसका अगला भाग या मुँह बन्द हो या बन्द किया गया हो, उसका बन्द न रह जाना। जैसे—(क) बोतल का काग खुलना। (ख) खरच करने के लिए रुपयो की थैली खुलना। १३ शरीर के अग या तल मे किसी प्रकार का अवकाश या विवर हो जाना। जैसे—(क) दवा या पुलटिस से फोडे का मुँह खुलना। (ख) लाठी की चोट से किसी का सिर खुलना। १४ रुपए-पैसे आदि के सबध मे, अनावश्यक रूप से व्यय होना अथवा पास से निकल जाना। जैसे—बात की बात मे हमारे तो सौ रुपए खुल गए। १५ अवकाश या वातावरण के सबध मे, उस पर छाये हुए बादलो का छिन्न-भिन्न होकर दूर हट जाना। जैसे—चार दिन की बरसात के बाद आज आसमान खुला है। १६ किसी कार्य या किसी विशिष्ट रूप मे फिर से या नये सिरे से आरम्भ होना या चलना। जैसे—आपस का लेन-देन या व्यवहार खुलना। १७ किसी प्रकार की सस्था का किसी विशिष्ट क्षेत्र मे नया काम करने के लिए परिचालित या स्थापित होना। जैसे—(क) अछूतो या लडकियो के लिए पाठशाला खुलना। १८ नियत समय पर कार्यालयो आदि की ऐसी स्थिति होना कि वहाँ सब लोग आकर अपना अपना काम कर सकें। जैसे—दफ्तर या दूकान खुलना। १९. शरीर के किसी अग का अपने कार्य के लिए उपयुक्त बनना या प्रस्तुत होना। जैसे—खाने के लिए मुँह, अच्छी तरह देखने के लिए आँखें या सुनने के लिए कान खुलना। २० शरीर के किसी अग का कोई अनुचित काम करने के लिए स्वच्छन्द होकर अभ्यस्त होना। जैसे—गालियाँ बकने के लिए जबान या मारने-पीटने के लिए हाथ खुलना।
अभौतिक या अमूर्त्त रूपो मे—
१. अज्ञेय, अस्पष्ट या दुर्बोध बात का ऐसे रूप मे सामने आना या होना कि वह लोगो की समझ मे आ जाय। जैसे—(क) किसी घटना का रहस्य या श्लोक का अर्थ खुलना। २ बातचीत मे किसी के सामने ऐसे रूप मे उपस्थित होना कि कुछ भी छिपा या दबा न रह जाय। जैसे—(क) अफसर के डाँट बताते ही उचक्का उसके सामने खुल गया। (ख) चलो, अच्छा हुआ, अब सब बातें खुल गईं। ३ जो क्रम परम्परा

या परिपाटी किसी प्रकार बद कर दी गई हो या समाप्त हो चुकी हो, उसका फिर से आरम्भ होना। जैसे—(क) बिरादरी मे हुक्का-पानी खुलना। (ख) माफी माँगने पर वेतन या वृत्ति खुलना। ४ भाग्य के सबध मे, कष्ट या विपत्ति के दिन दूर होने पर सुख-सौभाग्य आदि के दिन दिखाई देना। जैसे—यह नई नौकरी उन्हे क्या मिली है कि उनकी तकदीर खुल गई है। ५ किसी प्रकार के अवरोध या बधन से मुक्त और स्वच्छन्द होना।

पद—खुलकर=बिना किसी बाधा के। अच्छी तरह। जैसे—खुलकर भूख लगना या पाखाना होना।

मुहा०—खुलकर खेलना=कलक, लज्जा आदि का ध्यान या विचार छोडकर स्वच्छन्दतापूर्वक सब प्रकार के अनुचित काम करने लगना। ६ देखने मे भला या सुहावना लगना। सुशोभित होना। खिलना। जैसे—इस साडी पर काली गोट खूब खिलेगी।

खुलवा†—पु० [देश०] धातु को गलाकर साँचो मे ढालनेवाला व्यक्ति।

खुलवाना—स० [हि० खोलना] दूसरे को कोई चीज खोलने मे प्रवृत्त करना। खोलने का काम दूसरे से कराना।

खुला—वि० [हि० खोलना] [स्त्री० खुली] १ जो बद या भेडा हुआ न हो। जैसे—खुला दरवाजा। २ जो बँधा न हो। जो बधन से कसा या जकडा न हो। जैसे—खुला कुत्ता या खुली गाय। ३ जिसमे किसी प्रकार की आड, बाधा या रोक न हो। जैसे—खुली सडक, खुली हवा। ४ जो सँकरा न हो। लबा-चौडा। विस्तृत। जैसे—खुला कमरा, खुला मैदान। ५ जो बद या चिपका न हो। जिसकी तह न लगी हो। जैसे—खुली पुस्तक। ६ (मशीन यत्र आदि) जिसका कोई पेच इस प्रकार घुमा दिया गया हो कि वह काम करने लगे। जैसे—खुला रेडियो। ७ जो किसी चीज से ढका या छाया हुआ न हो। जैसे—खुली छत या बरामदा। ८ जो गुप्त या छिपा न हो। साफ। स्पष्ट।

मुहा०—**खुले खजाने**=सबके सामने। स्पष्ट रूप से। **खुले दिल से**=(क) उदारतापूर्वक। (ख) शुद्ध हृदय से। **खुले बदों**=(क) =खुले खजाने। (ख) नि शक होकर। बेधडक। **खुले मैदान**=सबके सामने। खुले खजाने। **खुली हवा**=वह हवा जिसकी गति का अवरोध न होता हो।

खुलाई—स्त्री० [हि० खोलना] १ खुलने, खुलवाने या खोलने की क्रिया या भाव। २ खुलवाने या खोलने का पारिश्रमिक या मजदूरी। ३ चित्रकला मे, चित्र तैयार हो जाने पर मद पड जानेवाली आकार-रेखाओ पर फिर से रग चढा कर उन्हे चमकाना। उन्मीलन। तहरीर।

खुला पल्ला—पु० [हि० खुला+पल्ला] ढोलक, तबला, मृदग आदि बजाने मे दोनो हाथो से एक साथ या केवल बाएँ हाथ से खुली थाप देकर बजाना आरम्भ करना। (सगीत)

खुलासा—वि० [अ० खुलास] १ खुला हुआ। २ विस्तीर्ण। विस्तृत। ३ जिसके आगे कोई अवरोध या रुकावट न हो। ४ (कथन) साफ। स्पष्ट।

पु० सक्षिप्त कथन या विवरण। साराश।

खुलासी—स्त्री० दे० 'खलासी'।

खुलित*—वि० [हि० खुलना] खुला हुआ। उन्मीलित। उदा०—खलित वचन, अध-खुलित दृग, ललित स्वेद, कन जोति।—बिहारी।

खुलेआम—क्रि० वि० [हि० खुलना + फा० आम] खुलकर और सबके सामने। प्रत्यक्ष रूप से।

खुल्ल—वि० [स०] १ छोटा। लघु। जैसे—खुल्लतात=पिता का छोटा भाई, अर्थात् चाचा।

खुल्लम-खुल्ला—क्रि० वि० [हि० खुलना] १ बिना किसी से छिपाये हुए। खुलकर और सबके सामने। २ सर्वसाधारण को सूचित करते हुए।

खुवार†—वि०=ख्वार।

खुवारी†—स्त्री०=ख्वारी।

खुश—वि० [फा०] १ जो अपनी स्थिति तथा परिस्थितियो से पूर्णतया सतुष्ट हो। प्रसन्न। २ जो अपने अथवा किसी के द्वारा किये हुए कार्य से सतोष तथा सुख अनुभव कर रहा हो। आनदित। ३ जो प्रिय, रुचिकर या शुभ हो। सुदर। जैसे—खुशबू, खुशखबरी। ४ अच्छा। उत्तम। जैसे—खुशखत, खुशनवीस।

खुशकिस्मत—वि० [फा०] अच्छी किस्मतवाला। भाग्यवान्।

खुशकिस्मती—स्त्री० [फा०] अच्छी किस्मत। सौभाग्य।

खुशकी—स्त्री०=खुश्की।

खुशखत—वि० [फा०] १ सुन्दर तथा स्पष्ट अक्षरो मे लिखा हुआ। २ सुदर तथा स्पष्ट अक्षर लिखनेवाला।

खुशखबरी—स्त्री० [फा०] प्रसन्न करनेवाला और शुभ समाचार। अच्छी खबर।

खुशदिल—वि० [फा०] १ सदा प्रसन्न रहनेवाला। २ सदा हँसता रहनेवाला।

खुशनवीस—वि० [फा०] (व्यक्ति) जो अच्छे अक्षर खूब बना बनाकर लिखता हो। जिसकी लिखावट सुन्दर तथा स्पष्ट हो।

खुशनवीसी—स्त्री० [फा०] सुन्दर अक्षर लिखने की कला, गुण या भाव।

खुशनसीब—वि० [फा०] [भाव० खुशनसीबी] जिसका नसीब अर्थात् भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

खुशनसीबी—स्त्री० [फा०] खुशनसीब होने की अवस्था या भाव। सौभाग्य।

खुशनुमा—वि० [फा०] जो देखने मे बहुत अच्छा हो। नयनाभिराम। सुन्दर।

खुशबयान—वि० [फा०] [भाव० खुशबयानी] अच्छे ढग से किसी घटना, बात आदि का वर्णन करनेवाला।

खुशबू—स्त्री० [फा०] १ अच्छी गध। सुगध। २ सुगध देनेवाला पदार्थ। सुगधि।

खुशबूदार—वि० [फा०] जिसमे से खुशबू आती या निकलती हो। सुगधित।

खुश-मिजाज—वि० [फा०] १ अच्छे मिजाज या स्वभाववाला। २ सदा हँसता रहनेवाला। प्रसन्न-चित्त। हँसमुख।

खुशरग—वि० [फा०] अच्छे या बढिया रगवाला।

पु० अच्छा और बढिया रग।

खुशहाल—वि० [फा०] [भाव० खुशहाली] घर-गृहस्थी, रहन-सहन आदि के विचार से अच्छी स्थिति मे और सुखी।

खुशहाली—स्त्री० [फा०] खुशहाल होने की अवस्था या भाव।

खुशाब—पु० [फा०] धान के खेत मे उगी हुई घास आदि निराने का एक कश्मीरी ढग।

खुशामद—स्त्री० [फा०] अपना काम निकालने अथवा यो ही किसी को प्रसन्न करने के लिए किसी की की जानेवाली अतिरिक्त या झूठी प्रशसा। चापलूसी।

खुशामदी—वि० [फा० खुशामद+ई (प्रत्य०)] १ खुशामद करनेवाला। चापलूस। २ हलुआ नामक व्यजन। (बुदे०)

खुशामदी टट्टू—पु० [हि० खुशामदी टट्टू] वह जो सदा किसी की खुशामद मे लगा रहता हो।

खुशियाली†—स्त्री० [फा० खुशहाली] १ प्रसन्न तथा सुखी होने की अवस्था। २ कुशलक्षेम।

खुशी—स्त्री० [फा०] १ मन मे होनेवाली सुखद अनुभूति। प्रसन्नता। २ ठगो की भाषा मे उनका कुल्हाडा और झडा जो उनके गिरोह के आगे चलता था।

खुश्क—वि० [स० शुष्क से फा० खुश्क] १ (पदार्थ) जिसमे से जल का अश सूखकर बिलकुल निकल गया हो। सूखा। जैसे—खुश्क जमीन, खुश्क जलवायु। २ जो चिकना न हो अथवा जिसमे चिकनाहट न लगी हो। जैसे—खुश्क रोटी। ३ (वेतन) जो केवल रुपयो के रूप मे मिलता हो और जिसके साथ भोजन आदि न मिलता हो। ४. (व्यक्ति) जिसके हृदय म कोमलता, रसिकता आदि का अभाव हो। रूखे स्वभाव-वाला।

खुश्क-साली—स्त्री० [फा०] ऐसी स्थिति जिसमे ठीक ऋतु मे या समय पर पानी बिलकुल न बरसा हो। अनावृष्टि का वर्ष। सूखा।

खुश्का—पु० [फा० खुश्क से] पानी मे उबालकर पकाया हुआ चावल जिसमे घी आदि का अश न हो। भात।

खुश्की—स्त्री० [फा०] १ खुश्क या सूखे होने की अवस्था या भाव। सूखापन। शुष्कता। २ नीरसता। ३ वृष्टि का अभाव। अवर्षा। सूखा। ४ ऐसी जमीन जो जल से परे या दूर हो। स्थल। ५ पूरी, रोटी आदि बेलने के समय उसकी लोई मे लगाया जानेवाला सूखा आटा। पलेथन। ६. शरीर के अन्दर या बाहर की वह स्थिति जिसमे तरी या स्निग्धता बिलकुल न रह गई हो।

खुसरा—पु० खुसिया।

पु० [प०] नपुसक। हिजडा।

खुसाल—वि० [फा० खुशहाल] प्रसन्न। आनदित।

क्रि० वि० खुशी से। प्रसन्नतापूर्वक।

खुसिया—पु० [अ० खुसिय] अडकोश। फोता।

खुसिया-बरदार—वि० [अ०+फा०] [भाव० खुसिया-बरदारी] किसी को प्रसन्न करने के लिए उसकी छोटी-मोटी सभी प्रकार की सेवाएँ करनेवाला।

खुसिल्लिया†—स्त्री० =खुशियाली।

खुसुरफुसुर—स्त्री० [अनु०] १ कान के पास मुंह ले जाकर बहुत धीमी आवाज मे की जानेवाली बातें। कानाफूसी। २. इस प्रकार दो पक्षो में होनेवाली बातचीत।

क्रि० वि० उक्त प्रकार की बहुत धीमी आवाज से।

खुसूसन्—क्रि० वि० [अ०] खास तौर पर। विशेष रूप से। विशेषत।

खुसूसियत—स्त्री० [अ०] खास खूबी, गुण या विशेषता।

खुस्याल†—वि० क्रि०, वि० दे० 'खुसाल'।

खुहो—स्त्री० [स० खोल्लक] धूप, सर्दी आदि से शरीर को बचाने के लिए सिर तथा शरीर पर विशेष ढग से लपेटी हुई चादर। घुग्घी।

खूँ—पु० [फा०] खून। रक्त।

खूँखार—वि० [फा० खूँख्वार] [भाव० खूँख्वारी] १ खून पीने या पान करनेवाला। हिंसक। २ बहुत बडा क्रूर या निर्दय।

खूँट—पु० [स० खड] १ कपडे आदि का छोर या सिरा। २ किसी ओर का भाग या सिरा। प्रात। ३ ओर। तरफ। दिशा। ४. खड। भाग। ५ भारी, चौकोर या गोल पत्थर जो मकान की मजबूती के लिए कोनो पर लगाया जाता है। ६ देवा-देवताओ को चढाने के लिए बनाई हुई छोटी पूरी। ७ खेतो पर लगनेवाला महसूल।

पु० [देश०] १ घी आदि तौलने की आठ सेर की एक तौल। २ कान मे पहनने का गहना।

स्त्री० [हि० खोट] कान की मैल।

स्त्री० [हि० खुटना समाप्त होना] कोई ऐसी कमी या त्रुटि जिसकी पूर्ति करना आवश्यक हो।

खूँटना—स० [स० खुड ताडना] १ अलग करने के लिए तोडना। खोटना। जैसे—फूल या मेहदी खूँटना। २ दबी हुई चीज या बात ऊपर या सामने लाने के लिए प्रयत्न करना। ३ चिढाने या तग करने के लिए छेड-छाड करना। उदा०—उनको अधिक खूटा जाता था।—वृदावनलाल।

अ० [स०] खतम या समाप्त होना। खुटना। उदा०—खरोई खिसाने खैंचि बसन न खूंटा है।—केशव।

खूँटा—पु० [स० क्षोड] [स्त्री० अल्पा० खूंटी] १ पत्थर, लकडी, लोहे आदि का वह टुकडा जो जमीन मे खडा गाडा गया हो और जिसमे गाय, भैस अथवा खभा, नावा आदि की रस्सी बाधी जाती हो।

मुहा०—खूँटा गाड़ना (क) केंद्र निश्चित या निर्धारित करना। (ख) सीमा या हद बाँधना।

२ रहस्य सम्प्रदाय मे मन, जिसमे वृत्तियाँ बँधी रहती है।

खूँटी—स्त्री० [हि० खूँटा का स्त्री० अल्पा०] १ जमीन आदि मे गाडा जानेवाला छोटा खूंटा। जैसे—खेमे की खूँटी, खडाऊँ की खूँटी। २. खेतो मे खूँटी की भाँति निकले हुए (फसल के) वे डठल जो फसल काट लेने पर बचे रहते हैं। ३ दीवार मे कोई चीज टाँगने, बाँधने, लटकाने आदि के लिए गाडी जानेवाली कील आदि। ४ दाढ़ी पर के बालो के वे छोटे छोटे अश या अकुर जो उस्तरे से दाढ़ी बनाने पर भी बचे रहते हैं।

मुहा०—खूँटी निकालना या लेना=इस प्रकार मूँडना कि बाल त्वचा के बाहर निकला हुआ न रह जाय।

५. नील की फसल एक बार कट जाने पर उसी जगह आप से आप उगनेवाली उसकी दूसरी फसल। दोरेजी। ६. किसी चीज के विस्तार का अतिम अश या भाग। सीमा। हद।

खूँटी उखाड़—पु० [हि० खूँटी+उखाड़ना] घोड़े की एक भौंरी। (कहते

है कि जिस घोडे के शरीर पर यह भौरी होती है, वह खूँटे से बँधे रहने पर बहुत उपद्रव करता है।)

खूँटीगाड—पु० [हि० खूँटी+गाडना] घोडे की एक भौरी। (कहते है कि जिस घोडे के शरीर पर यह भौरी होती है, वह सदा खूँटे से बँधा रहना ही पसद करता है।)

खूँडा—पु० [स० क्षोड=खूँटा] जुलाहो का लोहे का वह पतला छड जिसमे वे नारा लगा कर ताना तानते है।

†वि० दे० 'खोडा'।

खूँडी—स्त्री० [हि० खूँडा] वह पतली लकडी जिसकी सहायता से जुलाहे ताना कसते है।

खूँद—स्त्री० [हि० खूँदना] खडे हुए घोडे के खूँदने अर्थात् जमीन पर बार बार पैर पटकने की क्रिया या भाव।

खूँदना—अ० [स० खडन=तोडना] [भाव० खूँद] १ चचल या तेज घोडो का खडे रहने की दशा मे पैर उठा-उठाकर जमीन पर पटकना। २ जमीन पर पैर इस प्रकार पटकना कि उसका कुछ अश खुद या कट जाय। उदा०—आजु नराएन फिर जग खूँदा।—जायसी। ३ पैरो से कुचलना या रोदना। ४ अव्यवस्थित या तितर-बितर करना।

†अ०=कूदना। उदा०—चढै तो जाइ बारवह खूँदी।—जायसी।

खूँभी†—स्त्री०=खुत्थी।

खूँ-रेजी—स्त्री० [फा०] रक्तपात (दे०)।

खू—स्त्री० [फा०] १ आदत। २ स्वभाव।

खूखी—स्त्री० [देश०] गेरुई नाम का छोटा कीडा जो रबी की फसल को नुकसान पहुँचाता है। कूकी।

खूखू†—पु० [फा० खूक] सूअर।

खूगीर—पु० [फा०] १ घोडे की जीन के नीचे बिछाया जानेवाला ऊनी कपडा। नमदा। २ चारजामा। जीन। ३ रद्दी या व्यर्थ की चीजे या सामान।

मुहा०—खूगीर की भरती=अनावश्यक और व्यर्थ की चीजो या व्यक्तियो का वर्ग या समूह।

खूच—स्त्री० [देश०] जल-डमरू मध्य। (लश०)

खूझा—पु० [स० गुह्य, प्रा० गुज्झ] १ किसी फल, तरकारी आदि का वह रेशेदार अश जो खाये जाने के योग्य न समझकर फेक दिया जाता है। २ सूत, रेशम आदि के ततुओ या धागो का उलझा हुआ पिड जो जल्दी काम मे न आ सकता हो।

खूटना†—अ० [स० खुडन] १ अवरुद्ध होना। रुकना २ बद होना। ३ समाप्त होना। न रह जाना।

स० १ रोकना या रोक-टोक करना। २ बद करना। ३ अत या समाप्ति करना। ४ छेडना।

खूटा—वि० [हि० खोट] १ जिसमे किसी प्रकार की न्यूनता या कमी हो। २ दे० 'खोटा'।

खूद†—पु० [स० क्षुद्र] वह रद्दी अथवा बेकार अश जो किसी वस्तु को छानने अथवा साफ करने पर बच रहता है।

खूदड (दर)—पु०=खूद।

खून—पु० [फा०] १ लाल रग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो मनुष्यो, पशुओ आदि के शरीर मे नाडियो, शिराओ आदि मे से होकर चक्कर लगाता रहता है। रक्त। रुधिर। लहू।

मुहा०—(आँखो मे) खून उतरना=अत्यन्त क्रोध के कारण आँखे लाल हो जाना। **खून उबलना या खौलना**=आवेश मे लानेवाला क्रोध उत्पन्न होना। **(किसी के) खून का प्यासा होना**=किसी की हत्या करने के लिए विकल होकर अवसर ढूँढते रहना। **(किसी के सामने) खून खुश्क होना या सूखना**=किसी से बहुत अधिक डर लगना। **(किसी का) खून पीना**=किसी को बहुत अधिक तग या परेशान करना। बहुत दु खी करना या सताना। **(किसी का) खून बहाना**=किसी का वध या हत्या करना। **(अपना) खून बहाना**=किसी के लिए प्राण दे देना या देने पर उतारू होना। **खून बिगडना**=रक्त का ऐसा विकार होना कि किसी प्रकार का त्वचा सबधी रोग हो जाय। **खून सफेद हो जाना**=मनुष्यत्व, सौजन्य, स्नेह आदि से बिलकुल रहित हो जाना।

पद—खून का जोश=रक्त सबध के कारण होनेवाला मानसिक आवेग। जैसे—लडके के लिए माता-पिता मे या भाई के लिए भाई मे होता है। २ किसी व्यक्ति की इस प्रकार की जानेवाली हत्या कि उसका शरीर लहू-लुहान हो जाय।

मुहा०—खून सिर पर चढना या सवार होना = किसी को मार डालने अथवा कोई अनिष्ट या भीषण कार्य करने पर उतारू होना।

पद—खून खराबा, खून खराबी=मार-काट। रक्तपात।

खून-खराबा—पु० [हि० खून+खराबी] १ लकडियो आदि पर की जानेवाली एक प्रकार की वार्निश। २ दे० 'खून-खराबी'।

खून-खराबी—स्त्री० [हि० खून+खराबी] ऐसा लडाई-झगडा जिसमे शरीर से खून बहने लगे। मार-काट।

खूनी—वि० [फा०] १ खून सबधी। खून का। जैसे—खूनी बवासीर। २ जिसमे से खून झलकता या टपकता हो। खून से भरा हुआ। जैसे—खूनी आँखे। ३ खून के रग जैसा गहरा लाल। जैसे—खूनी रग। ४ (व्यक्ति) जिसने किसी का खून किया हो। हत्यारा। ५ (व्यक्ति) जो हरदम खून-खराबा या मार-काट करने के लिए तैयार रहता हो। बहुत बडा उपद्रवी और दुष्ट। ६ घातक। मारक। जैसे—खूनी वार।

पु० खून की तरह का गहरा लाल रग।

खूब—वि० [फा०] सब प्रकार से अच्छा और उत्तम। बढिया।

अ०य० अच्छी तरह से। भली भाँति। जैसे—खूब बकना, खूब मारना।

खूब कलाँ—पु० [फा०] फारस देश की एक प्रकार की घास जिसके बीज दवा के काम आते है।

खूबडखाबड—वि०=ऊबड-खाबड।

खूबसूरत—वि० [फा०] [भाव० खूबसूरती] जिसकी सूरत अर्थात् आकृति अच्छी हो। जो देखने मे बहुत भला लगता हो। सुन्दर।

खूबसूरती—स्त्री० [फा०] खूबसूरत होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। सौन्दर्य।

खूबानी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बढिया फल। जरदालू।

खूबी—स्त्री० [फा०] १ खूब होने की अवस्था या भाव। अच्छाई। अच्छापन। भलाई। २ गुण। विशेषता।

खूरन—स्त्री० [स० क्षुर हि० खुर] हाथी के पैरो के नाखूनो मे होनेवाला एक रोग।

खूसट—पु० [स० कौशिक] उल्लू।
वि० १ बहुत बड़ा मूर्ख। २ जो रसिक न हो। शुष्कहृदय।
खूसर—वि० खूसट।
खृष्टीय—वि० दे० 'मसीही'।
खेई—स्त्री० [देश०] १ झड़बेरी की सूखी झाड़ी। २ झाड़-झंखाड़।
खेऊ—पु० [देश०] एक प्रकार का जंगली पेड़।
खेखसा—पु० [देश०] परवल की जाति का एक फल जिसकी तरकारी बनती है।
खेचर—वि० [स० खे√चर् (गति)+ट, अलुक्-समास] आकाश में चलने या उड़नेवाला। आकाशचारी।
पु० १ सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह और नक्षत्र जो आकाश मे चलते रहते है। २ देवता। ३ वायु। हवा। ४ आकाशयान। विमान। ५ चिड़िया। पक्षी। ६ बादल। मेघ। ७ भूत-प्रेत, राक्षस, विद्याधर, वेताल आदि देव-योनियां। ८ शिव। ९ पारा। १० कसीस।
खेचरान्न—पु०[स० खेचर-अन्न, कर्म० स०] खिचड़ी।
खेचरी—स्त्री० [स० खेचर+ङीप्] १ आकाश मे उड़ने की शक्ति जो एक सिद्धि मानी जाती है। २ हठयोग की एक मुद्रा जिसमें जबान उलट कर तालू से और दृष्टि दोनो भौंहों के बीच ललाट पर लगाई जाती है। इसे प्रतीकात्मक पद्धति में 'गोमांस भक्षण' भी कहते है। ३ तंत्र मे उंगलियो की एक मुद्रा।
खेचरी गुटिका—स्त्री० [स० व्यस्तपद] तंत्र के अनुसार एक प्रकार की गोली जिसके संबंध मे यह कहा जाता है कि इसे मुँह मे रखने पर आदमी आकाश मे उड़ सकता है।
खेचरी मुद्रा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] १ योग साधन की एक मुद्रा जिसके साधन से मनुष्य को कोई रोग नहीं होता। २ एक प्रकार की मुद्रा जिसमे दोनों हाथों को एक दूसरे पर लपेट लेते है। (तंत्र)
खेजड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।
खेट—पु० [स०√खिट् (डरना)+अच्] १ किसानो की बस्ती। २ छोटा गाँव। ३ घास। ४ तिनका। तृण। ५ घोड़ा। ६ ढाल। ७ छड़ी। लाठी। ८ शरीर की खाल या चमड़ा। ९ कफ। १० एक प्रकार का अस्त्र। ११ आखेट। शिकार।
पु० [खे√अट् (गति)+अच्, पररूप] ग्रह, नक्षत्र आदि।
खेटक—पु०[स० खेट+कन्] १ किसानो की बस्ती। २ छोटा गाँव। ३ ढाल। ४ बलदेव जी की गदा का नाम। ५ आखेट। शिकार।
खेटकी (किन्)—पु० [स० खेटक+इनि] १ वह ब्राह्मण जो भविष्य संबंधी बाते बतलाता हो। भड्डर। २ शिकारी। ३ वधिक।
खेटी (टिन्)—वि० [स०√खिट्+णिनि] १ गाँव मे रहनेवाला (व्यक्ति)। २ कामुक।
खेड़—पु० खेट (गाँव)।
खेड़ना—स० [स० खेटन] १ चलाना। उदा०—खेंति लागे त्रिभुवन पति खेडै।—प्रिथीराज। २ 'खदेड़ना'।
खेड़ा—पु०[स० खेट] १ किसानों की बस्ती। छोटा गाँव। २ कच्चा मकान।
पद—खेड़े की दूब=तुच्छ या रद्दी वस्तु।
पु० [देश०] कबूतरों, चिड़ियों आदि को खिलाया जानेवाला रद्दी अन्न।
खेड़ापति—पु० [हि० खेड़ा+स० पति] गाँव का पुरोहित या मुखिया।
खेड़ी—स्त्री० [देश०] १ वह मांसखंड जो जरायुज जीवो, (जैसे—मनुष्य गाय, भैंस आदि) के नवजात शिशुओं या बच्चो की नाल के दूसरे सिरे मे लगा रहता है। २ मूल धातुओं को गलाने पर उनमे से निकलनेवाली मैल। धातुमैल। (स्लैग) ३ एक प्रकार का बढ़िया लोहा।
खेढ़ा—पु० [फा० खेल, हि० गड़ा] समूह।
खेढ़ी—स्त्री० खेड़ी।
खेत—पु०[स० क्षेत्र] १ वह भू-खंड जो फसल उपजाने के लिए जोता-बोया जाता है।
मुहा०—खेत कमाना=खेत मे खाद आदि डालकर उसे उपजाऊ बनाना। **खेत करना**=जोतने-बोने के लिए भूमि को समतल करना।
२ खेत मे खड़ी हुई फसल।
मुहा०—खेत काटना=खेत में उपजी हुई फसल काटना।
३ वह प्रदेश जहाँ कोई चीज उत्पन्न होती हो। जैसे—अच्छे खेत का घोड़ा। ४ युद्ध क्षेत्र। समर भूमि।
मुहा०—खेत आना=युद्ध में मारा जाना। **(किसी से) खेत करना**=लड़ना। युद्ध करना। उदा०—जंबुक करै केहरि सो खेतू।—कबीर। **खेत माँडना**=युद्ध का आयोजन करना। **खेत बेलना**=युद्ध मे जाना। विजयी होना। **खेत रहना**=युद्ध मे मारा जाना।
५ तलवार का फल। ६ रहस्य संप्रदाय मे, शरीर।
खेत बँट—स्त्री० [हि० खेत+बांटना] खेतो के बँटवारे का वह प्रकार जिसमे हर खेत टुकड़े-टुकड़े करके बांटा जाता है। 'चकबंद' का उलटा।
खेतिया—पु० खेतिहर (किसान)।
खेतिहर—पु०[स० क्षेत्रधर या हि० खेती+हर] जमीन को जोत-बोकर उसमे फसल उपजानेवाला व्यक्ति। किसान। कृषक।
खेती—स्त्री०[हि० खेत+ई० (प्रत्य०)] १ खेत को जोतने-बोने तथा फसल उपजाने की कला तथा काम। २ खेत मे बोई हुई फसल।
खेती पथारी—स्त्री० दे० 'खेतीबारी'।
खेतीबारी—स्त्री० [हि० खेती+बारी=बाग-बगीचा] खेत बोने-जोतने और उससे अन्न उपजाने का काम। कृषिकर्म।
खेती-भूमि—स्त्री० [हि० खेती+स० भूमि] ऐसी भूमि जिस पर खेती होती हो या हो सकती हो। (कल्टिवेबुल लैंड)
खेत्र—पु० क्षेत्र।
खेद—पु०[स०√खिद् (दुःखी होना)+घञ्] १ किसी व्यक्ति द्वारा कोई अपेक्षित काम न करने अथवा कोई काम या बात ठीक तरह से न होने पर मन मे होनेवाला दुःख। जैसे—खेद है कि बार-बार लिखने पर भी आप पत्र का उत्तर नहीं देते। (रिग्रेट) २ परिश्रम आदि के कारण होनेवाली शरीर की शिथिलता। थकावट।
खेदना—स० खदेड़ना।
खेदा—पु० [हि० खेदना] १ जंगली हाथियों के झुंड पकड़ने की वह क्रिया या ढंग जिसमें वे चारों ओर से खेद या खदेड़कर लट्ठों के बनाये हुए एक घेरे के अन्दर लाकर फँसाये या बन्द किये जाते है। २ चीते, शेर आदि हिंसक पशुओ का शिकार करने के लिए उनको उक्त प्रकार

से खदेड और घेर कर किसी निश्चित स्थान पर लाने की क्रिया या ढग। ३ आखेट। शिकार। (क्व०)

खेदाई—स्त्री०[हि० खेदना] खेदने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खेदित—वि० [स० खेद+इतच्] १ जिसे खेद हुआ हो या पहुँचाया गया हो। खिन्न या दुखी। २ थका हुआ। शिथिल।

खेदी (दिन्)—वि०[स०√खिद्+णिनि] १ खेद उत्पन्न करनेवाला। २ थका हुआ। शिथिल।

खेना—स० [स० क्षेपण, प्रा० खेवण] १ डाँडो की सहायता से नाव को चलाने के लिए गति देना। २ जैसे-तैसे या कष्टपूर्वक दिन बिताना। जैसे—रँडापा खेना।

खेप—स्त्री०[स० क्षेप] १ बहुत सी चीजे या आदमी किसी प्रकार हर बार ढो या लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। लदान। जैसे—जब चलते चलते रस्ते मे यह खेप तेरी ढल जावेगी।—नजीर। २ उतनी चीजे या उतने आदमी जितने एक बार उक्त प्रकार की ढुलाई मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जायँ। लदान। जैसे—चार खेप मे सब चीजे वहाँ पहुँच जायँगी।

मुहा०—खेप भरना=कही ले जाने के लिए माल इकट्ठा करके लादना। **खेप हारना**=(क) उक्त प्रकार से ढोया जानेवाला माल गँवाना या नष्ट करना। (ख) एक बार किया हुआ परिश्रम व्यर्थ जाना।

स्त्री० [स० आक्षेप] १ ऐब। दोष। २ खोटा सिक्का।

खेपडी—स्त्री० [स० क्षेपणी] नाव खेने का डाँड। (डि०)

खेपना—स० [हि० खेप] १ कष्टपूर्वक दिन बिताना। २ बरदाश्त करना। सहना।

खेम—पु०=क्षेम।

खेम कल्यानी—स्त्री०=क्षेमकरी।

खेमटा—पु० [देश०] १ सगीत मे बारह मात्राओ का एक ताल। २ उक्त ताल पर गाया जानेवाला गीत। ३ उक्त ताल पर होनेवाला एक प्रकार का नाच।

खेमा—पु०[अ० खीम] १ मोटे कपडे का बना हुआ वह तबू जो बाँसो आदि की सहायता से जमीन पर खडा किया जाता है।

मुहा०—खेमा गाडना=अभियान, यात्रा आदि के समय खेमा खडा करके पडाव डालना।

२ इस प्रकार खडा करके बनाया हुआ स्थायी घर।

खेय—वि० [स० खन् (खोदना)+क्यप्, इत्व] जो खोदा जा सके। पु० १ खाई। २ पुल।

खेर मुतिया—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा शिकारी पक्षी।

खेरवा—प०[हि० खेना] समुद्री मल्लाह।

खेरा—पु०=खेडा (गाँव)।

खेरापति—पु०=खेडापति (गाँव का मुखिया)।

खेरी—स्त्री०[देश०] १ एक प्रकार की घास। २ एक प्रकार का गेहूँ। ३ एक प्रकार का जल-पक्षी।

स्त्री० दे० 'खेडी'।

खेरौरा—पु०दे० 'खिरौरा'।

खेल—पु० [स० केलि] १ समय बिताने तथा मन बहलाने के लिए किया जानेवाला कोई काम।

विशेष—खेल कई दृष्टियो से खेले जाते है। कुछ मनोविनोद के लिए, जैसे—ताश या शतरज का खेल, कुछ व्यायाम के लिए, जैसे—कबड्डी, गेद, तैराई आदि, कुछ दूसरो का मनोविनोद करके धन उपार्जन करने के लिए, जैसे—कठपुतली या जादू का खेल, आदि आदि।

मुहा०—(किसी को) खेल खेलाना=व्यर्थ की बातो मे फँसाकर तग करना। **खेल बिगाडना**= (क) किसी का बना हुआ काम खराब करना। (ख) रग-भग करना।

२ बहुत साधारण या तुच्छ काम। ३ कोई अद्भुत या विचित्र काम। जैसे—कुदरत या भाग्य के खेल।

पु०[?] वह छोटा कुड जिसमे चौपाये पानी पीते है।

खेलक—पु०[हि० खेलना] खिलाडी।

खेलना—अ० [स० खेलन, प्रा० खेलई, अप० खेडण, प० खेडना, मरा० खेडणे, उ० खेलिबा, ब० खेला] १ मन बहलाने या समय बिताने के लिए फुरती से उछलना-कूदना, दौडना-धूपना, हँसना-बोलना और इसी प्रकार की दूसरी हल्की शारीरिक क्रियाएँ करना। जैसे—बच्चो को खेलने के लिए भी कुछ समय मिलना चाहिए।

पद—खेलना-खाना=अच्छी तरह खाना-पीना और निश्चिन्त होकर आनन्द तथा सुख-भोग करना। जैसे —लडकपन की उमर खेलने-खाने के लिए होती है।

२ कोई ऐसा आचरण करना जिसमे कौशल, धूर्तता, फुरती, साहस आदि की आवश्यकता हो। जैसे—किसी के साथ चालाकी खेलना। ३ किसी चीज को तुच्छ या साधारण समझकर अनुचित रूप से अथवा मर्यादा का उल्लघन करते हुए इस प्रकार उसका उपयोग करना अथवा उसके प्रति आचरण करना कि वह दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता या हानिकारक सिद्ध हो सकता हो। खेलवाड या मजाक समझकर और परिणामो का ध्यान छोडकर कोई काम करना। जैसे— आग या पानी से खेलना, जगली जानवरो से खेलना, किसी के मनोभावो से खेलना। उदा०—स्वर्ग जो हाथो को है दूर खेलता उससे भी मन लुब्ध।—दिनकर।

मुहा०—जान या जी पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमे जान जाने की आशका या सभावना हो। जान जोखिम का काम करना। **मुहा०—सिर पर मौत खेलना**=मृत्यु का इतना समीप होना कि जीवित बचने की बहुत ही थोडी सभावना रहे।

४ किसी के साथ ऐसा कौशलपूर्ण आचरण या व्यवहार करना कि वह थककर परास्त या शिथिल हो जाय। जैसे—बिल्ली का चूहे के साथ खेलना अर्थात् बार बार पजे मारकर उसे इधर-उधर दौडाना और परेशान करना। ५ तृप्ति या सुख प्राप्त करने के लिए सहज और स्वाभाविक रूप से इधर-उधर सचार करना या हटते-बढते रहना। क्रीडा करना। जैसे—उसके चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही थी। उदा०—उसके चेहरे पर लाज की लाली उसके सहज गौर वर्ण से खेलती रही।—अमृतलाल नागर। ६ किसी के साथ सभोग करना। (बाजारू)

पद—खेला-खाया (देखे)।

स० १ मन बहलाने या समय बिताने के लिए किसी खेल या खिलवाड मे सम्मिलित होना। जैसे—कबड्डी, गेद, ताश, या शतरज खेलना। २ कौशल दिखाने के लिए कोई अस्त्र या शस्त्र हाथ मे लेकर चालाकी

और फुर्तीसे उसका सचालन करना अथवा प्रयोग या व्यवहार दिखलाना। जैसे—तलवार, पट्टा, बनेठी या लाठी खेलना। ३ नाटक आदि मे योग देते हुए अभिनय करना। जैसे—महाराज प्रताप या सत्य हरिश्चन्द्र खेलना। ४ धन लगाकर हार-जीत की बाजी मे सम्मिलित होना। जैसे—जूआ या सट्टा खेलना।

विशेष—खेलने के उद्देश्य, प्रकार आदि जानने के लिए देखें 'खेल' के अन्तर्गत उसका 'विशेष'।

खेलनि—स्त्री० = खेल।

खेलनी—पु०[स०√खेल् (खेलना)+ल्युट्+अन+ङीप्] शतरज का खिलाडी।
स्त्री० वे चीजें जिनसे कोई खेल खेला जाता हो।

खेलवना—पु०[हि० खेलना] १ पुत्र के जन्म के समय गाये जानेवाले उन गीतों की सज्ञा जिनमे शिशु के रोदन, माता, पिता और परिवार के अन्य लोगो के आनन्दमगल और उस आनन्दमगल के उपलक्ष्य मे किये जानेवाले कार्यो का वर्णन होता है। 'सोहर' से भिन्न। †२ सोहर।

खेलवाड—पु० [हि० खेल+वाड (प्रत्य०)] १ केवल खेल या क्रीडा के रूप मे बच्चों की तरह किया जानेवाला काम। २ बहुत ही तुच्छ या सामान्य काम।

खेलवाडी—वि०[हि० खेल+वार (प्रत्य०)] १ प्राय या सदा खेलवाड मे लगा रहनेवाला। २ दे० 'खिलाडी'।

खेलवाना—स० [हि० खेलना] १ किसी को खेलाने मे प्रवृत्त करना। २ अपने साथ किसी को खेलने देना।

खेलवार—पु०[हि०खेल+वाला] १ खेलनेवाला। खेलाडी। २ शिकारी। उदा०—मानो खेलवार खोली सीस ताज बाज की।—तुलसी।
पु० दे० 'खेलवाड'।

खेला—स्त्री०[स०√खेल् अ-टाप्] १ खेल। २ जादू।

खेलाई—स्त्री०[हि० खेल] १ खेलने अथवा खेलाने की क्रिया या भाव। जैसे—आज कल वहाँ शतरज की खूब खेलाई हो रही है। २ खेलने या खेलाने के बदले मे दिया जानेवाला पारिश्रमिक।
स्त्री० दे० 'खिलाई'।

खेला-खाया—वि० [हि० खेलना+खाना] [स्त्री० खेली-खाई] जिसने किसी के साथ विलासिता या सभोग के सुख का अनुभव और ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

खेलाडी—वि० [हि० खेल+वार (प्रत्य०)] १. प्राय. या बराबर खेलता रहनेवाला। खेलवाडी। जैसे—खेलाडी लडका। २ दुश्चरित्रा या पुश्चली (स्त्री)।
पु० १ खेल मे किसी पक्ष से सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के खेल-तमाशे करने या दिखानेवाला व्यक्ति। जैसे—महुअर या साँप का खेलाडी, गेंद का खेलाडी।

खेलाना—स० [हि० खेलना का प्रे०] १. किसी को खेलने मे प्रवृत्त करना। २ अपने साथ खेल या खेलने मे सम्मिलित करना। ३ तरह-तरह की बातें करके इधर-उधर दौडाते रहना अथवा किसी काम या बात की झूठी आशा मे फँसाये रखना। ४ किसी को त्रस्त, दुःखी या परास्त करने के लिए उसके साथ ऐसा आचरण या व्यवहार करना कि वह बिलकुल विवश और शिथिल हो जाय। जैसे—बिल्ली का चूहे को खेलाना।
मुहा०—खेला-खेलाकर मारना=दौडा-दौडाकर बहुत तग, दुःखी या परेशान करना। उदा०—हनिहौ तोहि खेलाई खेलाई।—तुलसी।

खेलार—पु० खेलवार (खिलाडी)।

खेलि—स्त्री०[स० खे√अल् (गति) इन्] खेल। क्रीडा।
पु० १ पशु- पक्षी आदि जीव-जन्तु। २ सूर्य। ३ तीर। बाण। ४ गीत।

खेलुआ—पु० [हि० खिलना या खिलाना] चमडा रगनेवालो का एक औजार जो थाली की तरह का होता है।

खेलौना—पु० खिलौना।

खव—पु०[देश०] एक प्रकार की घास।

खेवइया—पु० दे० 'खेवैया'।

खेवक—वि० [हि० खेना+क (प्रत्य०)] खेनेवाला। उदा०—जेहि रे नाव ऽरिया औ खेवक बेग पाव सो तीर।—जायसी।
पु० केवट। मल्लाह।

खेवट—पु०[हि० खेत+वट (प्रत्य०)] पटवारियों या लेखपालो का वह लेखा जिसमे यह लिखा रहता है कि किस खेत का कौन-कौन मालिक या पट्टीदार है, उसे कौन जोतता-बोता है और मालगुजारी कितनी है।
पु०—[स० केवट] मल्लाह। माँझी।

खेवटदार—पु०[हि० फा०] खेत मे का पट्टीदार या हिस्सेदार।

खेवटिया—पु० केवट (मल्लाह)।

खेवडा—पु० खेवरा।

खेवडा—पु०[स० क्षपणक, प्रा० खवणअ, हि० खवडा] १ बौद्ध भिक्षु। २ एक प्रकार के तात्रिक साधु।

खेवणी—स्त्री०[स० क्षेपणी] नाव का डाड। (डि०)

खेवनहार—वि० [हि० खेना+हार(प्रत्य०)] १. नाव खेनेवाला। २ खेकर या और किसी प्रकार सकट आदि से पार लगानेवाला।
पु० केवट। मल्लाह।

खेवना—स० खेना।

खेवनाव—पु०[देश०] एक प्रकार का ऊंचा पेड।

खेवरना—स०[हि० खौर] १ खौर अर्थात चदन का टीका लगाना। २ स्त्रियों का चदन, केसर आदि से मुँह चित्रित करना।

खेवरा—पु० [स० क्षपणक प्रा० खवडा] क्षपणक जैन साधु।
पु० दे० 'खेवडा'।

खेवरिया—वि० [हि० खेना] खेनेवाला। खेवक।

खेवरियाना—स० [देश०] एकत्र या जमा करना।

खेवा—पु०[हि० खेना] १. लदी हुई नाव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर खेकर ले जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ उक्त के आधार पर ढो अथवा लादकर कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। खेप। ३ उतनी सामग्री जितनी एक बार मे ढोकर एक स्थान मे दूसरे स्थान पर पहुँचाई जाती हो। ४. कोई काम या उसका कोई अश एक बार मे पूरा करने का अवकाश या समय। जैसे—इस खेवे मे सारा झगडा निपट जायगा। ५. किसी परम्परागत कार्य के विचार से उसके पूर्वकालीन अथवा उत्तरकालीन विभागो मे से कोई एक विभाग। जैसे—पिछले खेवे के शृगारी कवियो ने तो हद कर दी थी।

पु० नाव का डाँड। उदा०—चलै उताइल जिन्ह कर खेवा।—जायसी।

खेवाई—स्त्री० [हिं० खेना] १ नाव खेने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ वह रस्सी जिसमे डाँड नाव से बँधा रहता है।

खेवैया—पु० [हिं० खेना] १ नाव खेकर पार ले जानेवाला व्यक्ति। केवट। मल्लाह। २ किसी प्रकार के सकट से पार लगानेवाला व्यक्ति। जैसे—डगमग डगमग डोले नैया, पार करो तो जानूँ खेवैया।—गीत।

खेस—पु० [फा० खिस] करघे पर बुना हुआ एक प्रकार का मोटा कपडा जो चारपाई आदि पर बिछाया अथवा जाडे मे ओढा जाता है।

खेसर—पु० [स० खे√सृ (गति)+ट अलुक् स०] खच्चर।

खेसारी—स्त्री० [स० कृसर या खजकारि] एक प्रकार का कदन्न। लतरी। दुबिया मटर।

खेह—स्त्री० [स० क्षार, प० खेह] १ धूल-मिट्टी। उदा०—सैतब खेह उडावन झोली।—जायसी।

मुहा० खेह खाना=(क) व्यर्थ समय खोना। (ख) इधर-उधर की ठोकरे खाना। कष्ट भोगना।

२ भस्म। राख।

खेहति*—स्त्री० दे० 'खेह'।

खेहर—स्त्री०=खेवह।

खेहा—पु० [?] बटेर की तरह का एक पक्षी।

खैग—पु० [फा० खिग] घोडा। (डिं०)

खैचना—स०=खीचना।

खैचनी†—स्त्री० [हिं० खीचना] लकडी की वह तख्ती जिस पर तेल लगाकर सिकली किये हुए अस्त्र आदि साफ किये जाते है।

खैचा-खैची—स्त्री०=खीचतान।

खैचातान—स्त्री०=खीचतान।

खैचातानी—स्त्री०=खीचतान।

खैकारा—वि० [स० क्षयकारी] नष्ट या बरबाद करनेवाला। उदा०—अब कुछ ताको सहज सिंगारा। बरनो जग पातक खैकारा।—नददास।

खैनी—स्त्री० [हिं० खाना] सुरती के पत्ते का चूरा जो चूना मिलाकर खाया जाता है।

खैबर—पु० [देश०] भारत और अफगानिस्तान के बीच की एक घाटी या दर्रा।

खैमा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जल-पक्षी।

खैयाम—पु० [अ०] १ खेमा सीनेवाला व्यक्ति। २ फारसी का एक प्रसिद्ध कवि उमर खैयाम।

खैर—पु० [स० खदिर] १ एक प्रकार का बबूल। कथ कीकर। सोनकीकर। २ उक्त वृक्ष की लकडियो के टुकडो को उबालकर निकाला हुआ सार पदार्थ जो पान पर लगाया जाता है। कत्था। ३ भूरे रग का एक प्रकार का पक्षी।

स्त्री० [फा० खैर] कुशल। क्षेम।

अव्य० [फा०] १ ऐसा ही सही। अस्तु। अच्छा। २ कोई चिन्ता नही। देखा जायगा। (उपेक्षा सूचक)

खैर-आफियत—स्त्री० [फा०] कुशल-मगल। कुशल-क्षेम।

खैरखाह—वि० [फा०] [भाव० खैरखाही] भलाई चाहनेवाला। शुभचितक।

खैरखाही—स्त्री० [फा०] शुभचितन। शुभकामना।

खैरबाद—पद [फा०] किसी से बिछुडते समय कहा जानेवाला पद जिसका अर्थ है—कुशलपूर्वक रहो।

खैर भैर—पु० [उत्पत्ति द] १ हल्ला। २ चहल-पहल। रौनक। उदा०—खैर भैर चहुँ ओर मच्यो अति आनद पूरन समाई।—रघुराज।

खैरवाल—पु० [देश०] कोलियार का वृक्ष।

खैरसल्ला—स्त्री० [अ० खैर+सलाह] कुशल-क्षेम। कुशल-मगल।

खैरसार—पु० [स० खदिर-सार] कत्था। खैर।

खैरा—वि० [हिं० खैर] खैर या कत्थे के रग का। कत्थई।

पु० १ उक्त प्रकार का रग। २ कत्थई रग के खुरोवाला बैल। ३ खैरे रग का कोई पक्षी या पशु। ४ धान की फसल का एक रोग।

पु० [देश०] १ तबला बजाने मे एक ताले (ताल) की धुन। २ एक प्रकार की मछली।

खैरात—स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] १ दरिद्रो, भिखमगो आदि को दान रूप मे दिया जानेवाला धन या पदार्थ। २ दान।

खैरात खाना—पु० [अ०+फा०] वह स्थान जहाँ से लोगो को खैरात मिलती हो अथवा मुफ्त मे सबको भोजन-वस्त्र आदि बाँटे जाते हो। या होनेवाला। जैसे—खैराती दवाखाना।

खैराती—वि० [फा०] खैरात के रूप मे अथवा खैरात के धन से चलने

खैराद—पु०=खराद।

खैरियत—स्त्री० [फा०] १ कुशल-क्षेम। राजी-खुशी। २ कल्याण। भलाई।

खैलर—स्त्री० [स० क्ष्वेल] मथानी।

खैला—पु० [स० क्ष्वेड] जवान बछडा जिसे अभी हल आदि मे जोता न गया हो।

स्त्री० [फा० खैल] फूहड स्त्री।

खोइचा—पु० [हिं० खूंट] १ धोती या साडी का अचल। किनारा।

मुहा०—खोइचा देना या भरना=शकुन के रूप मे किसी स्त्री के आँचल मे चावल, गुड आदि देना।

२ वह धन जो लडकी को विदाई के समय माँ-बाप देते है।

खोखना—अ० [खो खो से अनु०] खाँसना।

खोखला—वि०=खोखला।

खोखी—स्त्री०=खाँसी (कास)।

खोखो—पु० [अनु०] खाँसने का शब्द।

खोगा—पु० [देश०] रुकावट। बाधा।

पु०=खोगाह।

खोगाह—पु० [स०] सफेद और भूरे रग का घोडा।

खोगी—स्त्री० [हिं० खोसना का देश०] १ खोसी हुई वस्तु। २ लगे हुए पानो का बँधा हुआ चोघडा।

खोच—स्त्री० [स० कुच] १ किसी नुकीली चीज से कपडे का थोडा-सा फटा हुआ अश। २ दे० 'खरोच'।

स्त्री० [देश०] झोली। उदा०—चातिक चित्त कृपा घनानद चोच की खोच सु क्यो कीर धारयो।—घनानद।

|स्त्री० १ मुट्ठी। २ मुट्ठी भर चीज।
|पु० [स० क्रोच] एक प्रकार का बगला।

खोचन|—स्त्री० [स० कुचन] १ खोचने अर्थात् गडाने या चुभाने की क्रिया या भाव। २ गडने या चुभनेवाली चीज ३ खटकने या चुभनेवाली बात। तीखी बात।उदा०—धिक वै मातु पिता धिक भ्राता देत रहत यो ही खोचन।—सूर।

खोचा—पु० [हि० खोचन] १ वह बास जिसपर पक्षियो को फँसाने के लिए बहेलिये लासा लगाते है। २ वह लकडी जिससे वृक्षो के फल तोडे जाते है। लग्घी। ३ दे० 'खोच'। ४ दे० 'खोचन'।

खोचिया|—पु० [हि० खोची] १ खोची लेनेवाला। (दे० खोची) २ भिखमगा। भिक्षुक।
पु० [हि० खोचा] १ खोचा लगाकर फल तोडनेवाला। २ खोचा लगाकर चिडिया फँसानेवाला, बहेलिया।

खोची—स्त्री० [हि० खोचा] १ सेवको अथवा भिखारियो को दिया जानेवाला अन्न। २ जमीन या मकान का किसी ओर निकला या बढा हुआ कुछ अश या भाग।

खोंट—स्त्री० [हि० खोटना] खोटने का काम।
पु० वह जो खोटा गया हो।
पु० खराट।

खोटना—स० [स० खड] १ पौधो आदि का ऊपरी भाग चुटकी से दबाकर तोडना। २ टुकडे-टुकडे करना।

खोटा—वि० -खोटा।

खोड़र—पु० [स० कोटर] पेड का भीतरी खोखला भाग, जिसमे पशु-पक्षी अपने घर या घोसले बनाते है।

खोड़हा—वि० खोडा।

खोंडा—वि० [स० खड से] जिसका कोई अग टूटा हुआ हो अथवा न हो।
पु० [स्त्री० अल्पा० खोडिया] अन्न रखने का बडा बरतन। कोठिला। (बुन्देल०) उदा०—अन्न की माल खोडिया और बडे भर दूगा अन्न से—। वृन्दावनलाल वर्मा।

खोंसल|—पु० खोता (चिडियो का घोसला)।

खोता—पु० -खोता (घोसला)।

खोंथा—पु०- खोता (घोसला)।

खोप(न)—स्त्री० [हि० खोपना] १ खोपने या चुभने के कारण फटा हुआ अश। चीर। दरार। २ सिलाई मे दूर-दूर पर लगे हुए टाँके। शिलगा। ३ दे० 'खरोच'।
*स्त्री० -कोपल।

खोपना|—स० [अनु०] कोई नुकीली चीज किसी मे गडाना या धँसाना। घोपना।

खोपा—पु० [हि० खोपना] [स्त्री० खोपिया, खोपी] १ हल की वह लकडी जिसमे फाल लगा रहता है। २ छाजन आदि का कोना। ३ भूसा रखने का छप्पर से छाया हुआ गोलाकार स्थान। ४ स्त्रियो के बालो का बँधा हुआ एक प्रकार का जूडा।

खोसना—स० [स० कोश+हि० ना प्रत्य०, गु० खोसवुं, मरा० खोसणे, उ० खोसिबा] एक वस्तु का कुछ अश दूसरी वस्तु मे इस प्रकार डालना, रखना या लगाना कि वह उसमे अटक या फँस जाय। जैसे—(क) कमर मे धोती की लाँग खोसना। (ख) टोपी मे कलगी खोसना।

खोआ|—पु० [स०क्षोद, आ० खोद] दूध का गाढा किया हुआ वह रूप जिसमे चीनी आदि मिलाकर बरफी, पेडे और दूसरी मिठाइयाँ बनाई जाती है। खोया। मावा।

खोइडार—पु० [हि० खोई+आर (प्रत्य०)] वह स्थान जहा रस पेरने के बाद गन्ने की खोई जमा की जाती है।

खोइया|—पु० [देश०] व्रज मे होनेवाला एक प्रकार का नाट्य जो घर से बरात चली जाने पर वर-पक्ष की स्त्रियाँ रात के समय करती है। उसमे वे दूल्हा और दुलहिन बनकर विवाह का नाट्य तथा राम और कृष्ण की लीलाएँ आदि करती है।
स्त्री० दे० 'खोई'।

खोइलर|—स्त्री० [स० क्ष्वेल] वह लकडी जिससे कोल्हू मे पडे हुए गन्ने के टुकडे उलटते-पलटते है।

खोइहा|—पु० [हि० खोई+हा (प्रत्य०)] वह मजदूर जो गन्ने की खोई उठाकर फेंकता है।

खोई—स्त्री० [स० क्षुद्र] १ कोल्हू मे पेरे हुए गन्नो का बचा हुआ रस-विहीन अश। सीठी। २ भाड मे भुने हुए चावल या धान। लाई। लावा। ३ रामदाने की जाति का एक अन्न। ४ सिर पर लबादे की तरह लपेटा हुआ कबल या चादर।

खोकंद—पु० [फा०] तुर्किस्तान या तुर्की का एक प्रसिद्ध नगर।

खोखर|—वि० खोखला।
पु० [?] सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का राग।

खोखरा—पु० [हि० खुख या खोखला] टूटा हुआ जहाज। (लश०)
वि० खोखला।

खोखल|—वि० खोखला।

खोखला—वि० [हि० खुक्ख+ला, गु० खोख, मरा० खोक] १. ऐसी वस्तु जिसका भीतरी अश या भाग निकल गया हो या न रह गया हो। जैसे— खोखला पेड। २ जिसमे तत्त्व या सार न हो। थोथा। निस्सार।
पु० १ खाली और पोली जगह। २ बडा छेद। विवर।

खोखा—पु० [बँ० खोका] [स्त्री० खोखी] बालक। लडका।
पु० [हि० खोखला] १ ऐसी हुडी जिसका रुपया चुकता हो चुका हो। २ वह कागज जिस पर हुडी लिखी जाती है।

खोगीर—पु० -खूगीर।

खोचकिल|—पु० [देश०] चिडियो का घोसला।

खोज—स्त्री० [हि० खोजना] १ किसी खोई या छिपी हुई वस्तु को ढूंढने का काम। २ कोई नई बात, तथ्य आदि का पता लगाने का काम। शोध। ३ किसी व्यक्ति या पशु के चलने से जमीन या मिट्टी पर बननेवाला चिह्न या निशान।
मुहा०—खोज मिटाना वे चिह्न या लक्षण नष्ट करना जिनसे किसी बात या घटना का पता चल सकता हो।
४ उक्त चिह्नो के आधार पर इस बात का पता लगाने का काम कि कोई किस ओर गया है। ५ गाडी के पहिये की लीक।

खोजक*—वि० -खोजी।

खोजडा—पु० [हि० खोज] १ किसी के चलने से जमीन पर बननेवाला चिह्न। २ दे० 'खोज'।

खोजना—स० [स० खुज=चोराना] १ किसी खोई, छिपी अथवा इधर-उधर रखी हुई वस्तु के पता लगाने का प्रयत्न करना। ढूँढना। २ अनुसधान या शोध करना।

खोज-मिटा—वि० [हि० खोज+मिटना] [स्त्री० खोजमिटी] १ जिसके ऐसे चिह्न मिट चुके हो जिनके द्वारा किसी का पता लगाया जा सकता हो। २ एक प्रकार का अभिशाप या गाली। (स्त्रियाँ)

खोजवाना—स० [हि० खोजना] खोजने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को कुछ खोजने मे प्रवृत्त करना।

खोजा—पु० [फा० ख्वाज] १ प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति। २ मुसलमान राजाओ के अन्त पुरो मे रहनेवाला नपुसक सेवक। ३ नौकर। सेवक। ४ बम्बई राज्य मे मुसलमानो का एक सम्प्रदाय।

खोजाना†—स०=खोजवाना।

खोजी *†—वि० [हि० खोज+ई (प्रत्य)०] खोजनेवाला। ढूँढनेवाला। (क्व०)

पु० वह व्यक्ति जो पैरो के चिह्न देखकर चोरो, डाकुओ, पशुओ आदि का पता लगाता हो।

खोजू—वि० पु०=खोजी।

खोट—पु० [स० कूट] १ वह दूषित या निकृष्ट पदार्थ जो किसी दूसरे अच्छे पदार्थ मे लोगो को ठगने के उद्देश्य से मिलाया जाय। जैसे—सुनार ने इस गहने मे कुछ खोट मिलाया है। २ किसी चीज मे या बात मे होनेवाला ऐब या दोष। खोटापन। जैसे—तुम मे यही तो खोट है कि सच बात जल्दी नही बताते। ३ किसी व्यक्ति अथवा कार्य के प्रति मन मे होनेवाली कपट-पूर्ण या दुष्ट धारणा अथवा भाव। मन मे होनेवाली बुरी भावना। जैसे—उस (व्यक्ति) मे अब भी खोट है।

खोटता†—स्त्री०=खोटाई (खोटापन)।

खोटपन—पु०=खोटापन।

खोटा—वि० [स० कूट, प्रा० मरा० गु० कूड, सि० कूड़, सिह० कुलु] [स्त्री० खोटी] १ (वस्तु) जो अपने वास्तविक या शुद्ध रूप मे न हो। जिसमे किसी प्रकार की मिलावट हुई हो। जैसे—खोटा सोना। २ झूठा। नकली। बनावटी। जैसे—खोटा सिक्का। ३ (व्यक्ति) जो जान-बूझकर किसी को कष्ट पहुँचाता या किसी की हानि करता हो। अथवा जिसके मन मे किसी के प्रति वैर हो। जो शुद्ध हृदयवाला न हो। 'खरा' का विपर्याय, उक्त सभी अर्थो मे। ४ खोट से भरा हुआ। खोट युक्त। अनुचित और बुरा। जैसे—खोटी बात।

पद—खोटा खरा=भला-बुरा। उत्तम और निकृष्ट। जैसे—किसी को खोटी-खरी बाते सुनाना= फटकारते हुए अच्छा रास्ता बतलाना।

मुहा०—खोटा खाना=(क) अनिन्दनीय या बुरे उपायो से कमाकर खाना। (ख) अनुचित और बुरा आचरण या व्यवहार करना। **(किसी के साथ) खोटी करना**=खोटापन या दुष्टता करना।

खोटाई—स्त्री० [हि० खोटा+ई (प्रत्य०)] १ खोटे होने की अवस्था या भाव। खोटापन। २ कपट। छल। धोखेबाजी। ३ ऐब। दोष।

खोटाना—अ० दे० 'खुटना' (समाप्त होना)।

खोटापन—पु० [हि० खोटा+पन (प्रत्य०)] खोटे होने की अवस्था, गुण या भाव। खोटाई।

खोटि—स्त्री० [स०√खोट् (खाना)+इन्] दुश्चरित्रा। व्यभिचारिणी।

खोड—स्त्री० [हि० खोट] १ किसी प्रकार का ऐब, दोष या हीनता। जैसे—कष्ट, रोग आदि। २ देवता, पितर, भूत-प्रेत आदि का कोप या बाधा। दैव कोप। ऊपरी फेर। ३ कमी। न्यूनता। उदा०—नाल्ह कहहि जिणि आबइ हो खोडि।—नरपति नाल्ह।

†वि० = खोडा।

खोडर(।)—पु० [स० कोटर] पुराने पेड का खोखला भाग।

खोड़िया †—स्त्री० दे० 'खोरिया'।

खोद†—पु० [हि० खोदना] १ खोदने की क्रिया या भाव। २ खोद-खोदकर बाते पूछने की क्रिया या भाव। ३ जाँच-पडताल।

पद—खोद-विनोद।

पु० [फा० खोद] लडाई के समय सिर पर पहना जानेवाला लोहे का टोप। शिरस्त्राण।

खोदई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड।

खोदना—स० [स०क्षुद्, प्रा०खुद मरा०खोदणे, गुज० खोदवूं, उ०खोदिवा, बँ०खोदा] १ कुदाल आदि से जमीन पर आघात करके गड्ढा बनाना। जैसे—कब्र, कूआँ या नहर खोदना। २ उक्त प्रकार के आघात से कोई चीज तोडना। जैसे-दीवार या मकान खोदना। ३ उक्त प्रकार की क्रिया करके किसी चीज पर जमी, लगी अथवा अदर पडी हुई वस्तु बाहर निकालना। जैसे— खेत मे के पौधे अथवा खान मे के खनिज पदार्थ खोदना। ४ किसी वस्तु पर जमी अथवा लगी हुई मैल निकालना। जैसे—कान या दाँत खोदना। ५ धातु, पत्थर, लकडी आदि पर किसी औजार या उपकरण से कुछ लिखना या बेल-बूटे बनाना। जैसे—बरतनो पर नाम खोदना। ६ किसी के अग मे उँगली, छडी आदि गडाना या उससे दबाना। ७ कोई बात जानने के लिए किसी से तरह-तरह के प्रश्न करना।

मुहा०—खोद-खोदकर पूछना=हर बात पर शका करके बार-बार कुछ और पूछना।

८ उत्तेजित करने या उसकाने का प्रयत्न करना।

खोदनी—स्त्री० [हि० खोदना] खोदने का छोटा औजार। जैसे—कन-खोदनी, दँत-खोदनी।

खोद-बिनोद†—पु० [हि० खोद+बिनोद] १ बहुत छोटी-छोटी बातें तक पूछने का काम। २ छेड-छाड।

खोदवाना—स० [खोदना का प्रे० रूप] किसी को खोदने मे प्रवृत्त करना। खोदने का काम दूसरे से कराना।

खोदाई—स्त्री० [हि० खोदना] १ खोदने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ भूगर्भ-स्थित वस्तुओ को बाहर निकालने के लिए जमीन खोदने की क्रिया या भाव। (एक्स्केवेशन) ३ पत्थर, लकडी, लोहे आदि पर किसी नुकीली चीज से बेल-बूटे बनाने का काम।

खोना—स० [स० क्षेपन] १ कोई वस्तु अनजान मे या भूल से कही इस प्रकार छोड या गिरा देना कि वह खोजने पर जल्दी न मिले। किसी वस्तु से वचित होना। गँवाना। जैसे—ताली, पुस्तक या रुपये खोना। २ असावधानी, दुर्घटना, मृत्यु आदि के कारण बहुत बडी क्षति से

ग्रस्त होना। जैसे—आँखें खोना, जान खोना, मान खोना आदि। ३. असावधानता, प्रमाद आदि के कारण हाथ से यों ही निकल जाने देना। सदुपयोग न कर पाना। जैसे—सुयोग खोना। ४. खराब या बरबाद करना। जैसे—घर की दौलत खोना।

अ० अन्यमनस्क हो जाना। प्रकृतिस्थ न रह जाना। जैसे—हमारा प्रश्न सुनते ही वह तो खो गये।

पद—खोया-सा=(क) अन्यमनस्क, उदास या खिन्न। (ख) घबराया हुआ।

मुहा०—खोया जाना=चकपका जाना। सिटपिटा जाना। हक्का-बक्का होना।

†पुं०=दोना (पत्तों का)।

खोन्चा—पुं० [फा० ख्वान्चा] फेरी लगाकर सौदा बेचनेवालों का वह थाल जिसमें वे फल, मिठाइयाँ आदि रखते हैं।

मुहा०—खोन्चा लगाना=खोन्चे में रखकर गली-गली घूमते हुए सौदा बेचना।

खोपड़ा—पुं० [सं० खर्पर; प्रा० खप्पर; पं० खोप्पा; सिं० खोपो; गु० खोपरूँ; मरा० खोबरें] १. हड्डियों का वह ढाँचा जिसके अन्दर मस्तिष्क सुरक्षित रहता है। (स्कल्) २. मस्तिष्क। ३. सिर। ४. नारियल। ५. नारियल के अन्दर की गरी। ६. भिक्षुओं का दरियाई नारियल का बना हुआ खप्पर।

खोपड़ी—स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।

मुहा०—(किसी की) खोपड़ी खाना या चाटना=बहुत सी बातें कह या पूछकर तंग करना। दिक या परेशान करना। **खोपड़ी खुजलाना**=ऐसा अनुचित या दुष्टतापूर्ण कार्य करना, जिससे मार खाने की नौबत आवे। **(किसी की) खोपड़ी गंजी करना**=सिर पर बहुत प्रहार करना। खूब मारना। **(किसी की) खोपड़ी गढ़ना**=जबरदस्ती या चालाकी से किसी से धन वसूल करना। **खोपड़ी चटकना**=गरमी, पीड़ा, प्यास आदि के कारण जी व्याकुल होना।

३. गोलाकार और बहुत बड़ा ऊपरी आवरण। जैसे—कछुए की खोपड़ी, नारियल की खोपड़ी।

खोपरा†—पुं०=खोपड़ा।

खोपा—पुं० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. मकान का बाहरी कोना। ३. स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकोनी बनावट। ४. गरी का गोला।

खोबा—पुं० [देश०] गच या पलस्तर पीटने की थापी।

खोभ—स्त्री० [हिं० खोभना] खोभने की क्रिया या भाव।

*पुं०=क्षोभ।

खोभना—स० [सं० क्षुभ्] किसी नरम या मुलायम वस्तु में कोई कड़ी तथा नुकीली चीज धँसाना, गड़ाना या चुभाना।

खोभरना—अ० [?] बीच में आकर आड़ा या तिरछा पड़ना।

स०=खोभना।

खोभरा*—पुं० [हिं० खुभना] १. रास्ते में पड़नेवाली वह उभरी हुई चीज जो चुभती हो या जिससे ठोकर लगती हो। उदा०—जैसे कोई पाँवनि पै जार कूँ चढ़ाई लेत ताकूँ तौ न कोऊ काँटे खोभरे को दुःख है।—सुन्दर। २. कूड़ा-करकट।

खोभराना—अ०=खुभराना।

खोभार—पुं० [?] जमीन में खोदा हुआ वह गड्ढा जिसमें कूड़ा-करकट फेंका जाता है।

खोम—पुं० [अ० कौम] १. जाति। २. झुंड। समूह।

पुं० [सं० क्षोभ] किले का बुर्ज।

खोय—स्त्री० [फा० खू] १. आदत। बान। २. प्रकृति। स्वभाव।

खोया—पुं०=खोआ।

खोर—स्त्री० [हिं० खुर] १. बस्तियों की तंग या सँकरी गली। कूचा। २. वह नांद जिसमें चारा डालकर पशुओं को खिलाया जाता है।

स्त्री० [हिं० खोरना] नहाना। स्नान।

वि० [हिं० खोड़ा] जिसका कोई अंग टूट गया हो। उदा०—धनुष-बान सिरान केवीं गरुड़ वाहन खोर।—सूर।

वि० [फा०] एक विशेषण जो शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर खानेवाले का अर्थ देता है। जैसे—आदमखोर, नशाखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर आदि।

पुं० [देश०] बबूल की जाति का एक ऊँचा पेड़।

खोरड़ा†—वि० [?] [स्त्री० खोरड़ी] सफेद केशवाला। उदा०—अब जण होई खोरड़ी, जाए कहा करेस।—ढोला मारू।

खोरना†—अ० [सं० क्षालन] स्नान करना। नहाना।

खोरनी—स्त्री० [हिं० खोरना] वह लकड़ी जिससे भट्ठी या भाड़ में ईंधन झोंका जाता है।

खोरा—पुं० [सं० खुल्ल या खोलक, फा० आबखोरा] [स्त्री० अल्पा० खोरिया] १. छोटा कटोरा या प्याला। २. एक प्रकार का गिलास।

†वि० दे० 'खोड़ा'।

खोराक—स्त्री०=खुराक।

खोराकी—वि० स्त्री०=खुराकी।

खोरि—स्त्री० [हिं० खुर] १. तंग या सँकरी गली। २. छोटी कोठरी। उदा०—खोरिन्ह महँ देखिअ छिटिआने।—जायसी।

स्त्री० [हिं० खोट] १. दोष के रूप में मानी जानेवाली अनुचित और लज्जाजनक बात। २. बुरा काम करने के समय होनेवाला भय या संकोच। उदा०—कत सकुचत निधरक फिरौ रति यौ खोरि तुम्हें न।—बिहारी।

खोरिया†—स्त्री० [?] वह आनन्दोत्सव जो वर पक्ष की स्त्रियाँ बरात घर से चल चुकने पर नाच-गाकर मनाती हैं।

†स्त्री० [हिं० खोरा] १. छोटी कटोरी या गिलास। २. वे बुंदे या सितारे जो स्त्रियाँ अपने मुँह पर शोभा के लिए लगाती हैं।

खोरी—स्त्री० [फा० खूर से हिं० खोर+ई प्रत्य०] खाने की क्रिया या भाव। जैसे—रिश्वतखोरी, हरामखोरी, हवाखोरी आदि।

*स्त्री०=कटोरी।

स्त्री०=खोर (सँकरी गली)।

खोल—पुं० [सं० खोलक] [स्त्री० अल्पा० खोली] १. किसी चीज का ऊपरी आवरण। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का वह ऊपरी प्राकृतिक आवरण जिसके अंदर वे रहते हैं। जैसे—घोंघे, सीपी आदि का खोल। ३. कपड़े का सिला हुआ झोले या थैले-जैसा आवरण जिसमें कोई चीज धूल, मिट्टी, मैल आदि से सुरक्षित रखने के लिए

रखी जाती है। गिलाफ। जैसे—तकिये या लिहाफ का खोल, सारगी या सितार का खोल। ४ मोटे कपडे की बनी हुई दोहरी चादर।
पु० छोटे मृदग की तरह का एक प्रकार का बाजा।
वि० [स०√खोड् (लँगडाना) +अच्, ड=ल] जिसका कोई अग टूटा-फूटा या विकृत हो। विकलाग।
पु० शिरस्त्राण।•खोद।

खोलना—स० [स० क्षुर् (काटना या खोदना), प्रा० खुल्ल, मरा० खोलणे, सि० खोलणु, उ० खोलिबा, बँ० खोल।] हिन्दी 'खुलना' का सकर्मक रूप जो भौतिक या मूर्त्त और अभौतिक या अमूर्त्त रूपो मे नीचे लिखे अर्थो मे प्रयुक्त होता है।

भौतिक या मूर्त्त रूपो मे—१ किसी को जकडने या बाँधनेवाला उपकरण, चीज या तत्त्व इस प्रकार हटाना कि वह बँधा न रह जाय। बधन से मुक्त या रहित करना। जैसे—(क) खूँटे मे बँधी हुई गौ, घोडा या बकरी खोलना। (ख) गठरी या रस्सी की गाँठ खोलना। २ जकडी या लपेटी हुई चीज इस प्रकार अलग या ढीली करना कि वह निकल कर दूर हो जाय। जैसे—कमरबद, पगडी या हथियार खोलना। ३ जडी, जमाई या बैठाई हुई चीज निकाल या हटाकर अलग या दूर करना। जैसे—(क) दरवाजे का पेच खोलना। (ख) बोतल का काग या डाट खोलना। ४ जिसका मुँह बद किया गया हो, उसके मुँह पर का बधन हटाकर उसमे चीजो के आने-जाने का रास्ता करना। जैसे—(क) चिट्ठी निकालने के लिए लिफाफा खोलना। (ख) रुपए निकालने या रखने के लिए तोडा, थैली या बटुआ खोलना। ५ जो प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से बिलकुल बद हो, उसे आघात आदि से काट, चीर या तोडकर खडित करना। जैसे—(क) नश्तर से घाव या फोडे का मुँह खोलना। (ख) पत्थर या लाठी मारकर किसी का सिर खोलना। ६ बद किया या भेडा हुआ जगला या दरवाजा इस प्रकार खीचना या ढकेलना कि बीच मे आने-जाने का मार्ग हो जाय। जैसे—खिडकी या फाटक खोलना। ७ आगे, ऊपर या सामने पडा हुआ आवरण, ढक्कन या परदा इस उद्देश्य से हटाना कि अन्दर, उस पार या नीचे की चीजें अथवा भाग सामने आ जायें। जैसे—(क) पेटी या सदूक खोलना। (ख) मदिर का पट खोलना। (ग) दवा पिलाने या दाँत उखाडने के लिए किसी का मुँह खोलना। ८ मोडी, लपेटी या तह की हुई चीज के सिरे आमने-सामने की दिशाओ मे इस प्रकार फैलाना कि उसका अधिकतर भाग ऊपर या सामने हो जाय। विस्तृत करना। जैसे—(क) पढने के लिए अखबार या किताब खोलना। (ख) बिछाने के लिए चादर या बिस्तर खोलना। ९ टँकी या सिली हुई चीज के टाँके या सिलाई अलग करना, तोडना या हटाना। जैसे—(क) साडी पर टँकी हुई गोट या फीता खोलना। (ख) लिहाफ का अस्तर या पल्ले खोलना। १० शरीर पर धारण की या पहनी हुई चीज उतार या निकाल कर अलग या दूर करना। जैसे—कमीज, कुरता या जूता खोलना। ११ यात्रिक साधन से बद होनेवाली चीज पर ऐसी क्रिया करना कि वह बद न रह जाय। जैसे—(क) ताला या हथकडी खोलना। (ख) पानी निकालने के लिए टकी की टोटी खोलना। १२ यत्रो आदि की मरम्मत या सफाई करने के लिए कल-पुरजे या कील-काँटे निकालकर उसके कुछ या सब अग अलग-अलग करना या बाहर निकालना। जैसे—घडी या बाजा खोलना। १३ ठहराये या रोके हुए यान अथवा सवारी को उद्दिष्ट या गतव्य स्थान की ओर ले जाने के लिए आगे बढाना या चलाना। जैसे—नाव या मोटर खोलना। १४ अवरोध बाधा या रुकावट हटाकर या उसके सबध का कोई कृत्य अथवा घोषणा करके सार्विक उपयोग या व्यवहार के लिए सुगमता या सुभीता करना। जैसे—(क) जन-साधारण के लिए नहर, मदिर या सडक खोलना। (ख) चराई या शिकार के लिए जगल खोलना। (ग) शरीर का विकृत रक्त निकालने के लिए किसी की फसद खोलना। (घ) रोजा खोलना (अर्थात् उपवास या व्रत का अत करके खाना-पीना आरभ करना)। १५ उद्योग, कला, व्यापार, शिक्षा आदि के सबध का कोई नया कार्य आरभ करना या सस्था खडी करना। जैसे—कारखाना, कोठी या पाठशाला खोलना। १६ नित्य नियत समय पर नैमित्तिक रूप से बद की जानेवाली सस्था या स्थान का कार्य फिर से आरभ करने के लिए वहाँ पहुँचना और काम शुरू करना। जैसे—ठीक समय पर दफ्तर या दूकान खोलना। १७ किसी विशिष्ट क्रिया या प्रकार से कोई कार्य आरभ करना या चलाना। जैसे—(क) खबरे या भाषण सुनने के लिए रेडियो खोलना। (ख) लेन-देन के लिए खाता या हिसाब खोलना। १८ शरीर के कुछ विशिष्ट अगो का कार्य आरभ करने के लिए उन्हे उचित या सजग स्थिति मे लाना। जैसे—(क) अच्छी तरह देखने या सुनने के लिए आँखे या कान खोलना। (ख) खाने के लिए मुँह या बोलने के लिए जबान खोलना।

अभौतिक या अमूर्त्त रूपो मे—१ अज्ञेय, अस्पष्ट या दुर्बोध को ज्ञेय, स्पष्ट या सुबोध करना। जैसे—(क) किसी वाक्य या श्लोक का अर्थ या आशय खोलना। (ख) किसी की पोल या भेद खोलना। २ जानकारी के लिए स्पष्ट रूप से सामने रखना। परिचित या विदित कराना। जैसे—किसी के आगे अपना उद्देश्य, विचार या हृदय खोलना।

पद—जी खोलकर=(क) निष्कपट भाव या शुद्ध हृदय से। जैसे—जी खोलकर किसी से बाते करना। (ख) सकीर्णता आदि का भाव या विचार छोडकर। जैसे—जी खोलकर खरचना, गाना या पढाना।

खोलि—स्त्री० [स०√खोल् (गतिहीनता) + इन्] तरकश। तूणीर।

खोलिया—स्त्री० [देश०] बढइयो का एक उपकरण जिससे वे लकडी पर बेल-बूटे आदि खोदते है।

खोली—स्त्री० [हिं० खोल का स्त्री० रूप] १ तकिये आदि का गिलाफ। २ रहने की छोटी कोठरी। (महा०)

खोवा—पु०=खोआ।

खोसडा—पु० [प०] जूता, विशेषत फटा-पुराना जूता।

खोसना*—स० १ दे० 'छीनना'। २ दे० 'खोसना'।

खोह—स्त्री० [स० गोह] १ कदरा। गुफा। २ गहरा गड्ढा। ३ दो पहाडो के बीच का गड्ढा अथवा तग रास्ता। दर्रा। ४ खाई। (पश्चिम)
पु० दे० 'खोडर'।

खोही—स्त्री० [स० खोलक] १ पत्तो की छतरी। २ घोघी।

खौ—स्त्री० [स० खन्] १ खात। गड्ढा। २ वह गहरा गड्ढा, जिसमे किसान अन्न सचित करते है।

खौंचा—पुं० [फा० ख्वान्चा] १. खाने-पीने की चीजें रखने की लकड़ी की पेटी या संदूक। २. दे० 'खोन्चा'।

खौंट—स्त्री० [हिं० खोंटना] १. खोंटने की क्रिया। खरोंच। २. दे० 'खरोंट'।

पुं० खुरंड।

खौंडा†—पुं० [सं० खन्न या खात] १. अनाज रखने का गड्ढा। २. गड्ढा।

खौंदना†—स० १. दे० 'खूँदना'। २. दे० 'खुरचना'।

खौका†—वि० [हिं० खाना] [स्त्री० खौकी] बहुत अधिक खानेवाला।

खौज—पुं० [अ०] गंभीर चिंतन। मनन।

खौड़—पुं० =खौर।

खौफ—पुं० [अ०] [वि० खौफनाक] १. दूरस्थ या संभावित भय। भीति। २. डर। भय। ३. आशंका। खटका।

खौफनाक—वि० [अ०] १. भीति उत्पन्न करनेवाला। २. डरावना। भयानक।

खौर—पुं० [सं० क्षौर] १. मस्तक पर लगाया जानेवाला चंदन का आड़ा धनुषाकार और लहरियेदार तिलक। २. पीतल का वह टुकड़ा जिससे उक्त प्रकार के तिलक में लहरिया बनाया जाता है। ३. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। ४. मछली फँसाने का एक प्रकार का जाल।

खौरना—स० [हिं० खौर] १. चंदन का टीका या तिलक लगाकर उस पर लहरिया बनाना। २. खौर (तिलक) लगाना।

खौरहा—वि० [हिं०खौरा+हा(प्रत्य०)][हिं०खौरही] १.जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। २. जिसे खौरा नामक रोग हुआ हो।

खौरा—पुं० [सं० क्षौर] १. सिर के बाल झड़ने का रोग। गंज। २. कुत्ते, बिल्ली आदि को होनेवाली एक प्रकार की खुजली, जिसमें उनके शरीर के बाल झड़ जाते हैं।

वि० (पशु) जिसे उक्त रोग हुआ हो।

खौरि†—स्त्री० =खौर।

†—स्त्री० =खोरि (तंग गली)।

खौरी—स्त्री० [देश०] सुनारों की बोली में, राख।

मुहा०—खौरी करना=चाँदी या सोना भस्म करके उसकी राख बनाना।

†स्त्री० =खोरि।

†स्त्री० =खोपड़ी।

खौरु†—पुं० [अनु०] बैल या साँड़ के डकारने का शब्द।

खौलना—अ०[सं० क्ष्वेल] आग पर रखे हुए तरल पदार्थ का अधिक गरम होने पर उसमें उबाल आना या बुलबुले उठने लगना।

मुहा०—(किसी का) मिजाज खौलना=आवेश या क्रोध में होना। जैसे—उनकी बातें सुनते ही हमारा मिजाज खौल गया।

खौलाना—स०[हिं० खौलना] १. तरल पदार्थ को इतना अधिक गरम करना कि उसमें उबाल आने लगे। २. (अनुचित या कड़ी बात कह कर) किसी को उत्तप्त और क्रुद्ध करना।

खौहड़†—वि० दे० 'खौहा'।

खौहा—वि० [हिं० खाना] १. बहुत अधिक खानेवाला। पेटू और भुक्खड़। २. दूसरों की कमाई से दिन बितानेवाला।

ख्यात—वि० [सं०√ख्या (वर्णन करना)+क्त] जिसकी जगत् या समाज में ख्याति हो। प्रसिद्ध। मशहूर।

†स्त्री० [सं० ख्याति] वह काव्य-ग्रन्थ जिसमें किसी वीर पुरुष की कृतियों का वर्णन हो।

ख्याति—स्त्री० [सं०√ख्या+क्तिन्] १. प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध या मान्य होने पर जगत् या समाज में होनेवाला नाम। शोहरत। २. अच्छा काम करने पर होनेवाली प्रसिद्धि या बड़ाई। कीर्ति। यश।

ख्यापक—वि० [सं०√ख्या+णिच्+ण्वुल्—अक] १. घोषणा करनेवाला। २. कोई बात विशेषतः अपराध या भूल स्वीकार करनेवाला।

ख्यापन—पुं० [सं०√ख्या+णिच्+ल्युट्—अन] १. घोषणा करना। २. कोई बात विशेषतः भूल या अपराध स्वीकार करना।

ख्याल†—पुं० [अ० खयाल=ध्यान] [वि० ख्याली] १. दे० 'खयाल'। २.केवल खयाल या ध्यान में आ जाने पर मनमाने ढंग से और कौतुक या परिहास के रूप में किसी को खिझाने या चिढ़ाने के लिए किया जानेवाला कोई अनुचित काम। तंग या परेशान करने के लिए किया जानेवाला मजाक। उदा०—(क) यह सुनि सँमिमनि भई बेहाल। जानि पर्यो नहिं हरि कौ ख्याल।—सूर। (ख) मोकों जनि बरजौ जुवती कोउ, देखौ हरि के ख्याल।

मुहा०—(किसी के) ख्याल पड़ना=किसी को चिढ़ाने और तंग करने के लिए उतारू होना या पीछे पड़ना। उदा०—(क) ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरैं मुख लपटायो।—सूर। (ख) ये सब मेरे ख्याल परी हैं, अब हौं बातन लै निरुआरति।—सूर।

†पुं० =खेल (क्रीड़ा)।

ख्यालिया—पुं० [हिं० ख्याल (गीत)] वह गवैया जो ख्याल गाने में निपुण हो।

ख्याली—पुं० [हिं० ख्याल] १. सखी। अजकी। गनकी। २.खेलवाड़ी।

वि० =खयाली।

ख्रिष्टान—पुं० [हिं० ख्रीष्ट] ईसा मसीह के चलाये हुए संप्रदाय का अनुयायी। मसीही।

ख्रिष्टीय—वि० [अं० क्राइस्ट] ईसा मसीह या उनके चलाये हुए धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं० ईसा मसीह के मत का अनुयायी। ईसाई। मसीही।

ख्रीष्ट—पुं० [अं० क्राइस्ट] [वि० ख्रिष्टीय] ईसा मसीह।

ख्वाँ—वि० [फा०] १. पढ़नेवाला। २. कहने या गानेवाला (यौगिक शब्दों के अंत में) जैसे—किस्सा-ख्वाँ, गजल-ख्वाँ।

ख्वाँदा—वि० [फा० ख्वांदः] पढ़ा-लिखा। शिक्षित।

ख्वाजा—पुं० [फा० ख्वाजः] १. घर का मालिक। स्वामी। २. नेता सरदार या हाकिम। ३. बहुत बड़ा त्यागी और पहुँचा हुआ फकीर। महात्मा। ४. दे० 'खोजा'।

ख्वाजासरा—पुं० दे० 'खोजा'।

ख्वान—पुं० [फा०] थाल। परात।

ख्वानपोश—पुं० [फा०] वह कपड़ा जिससे पकवान, मिठाई आदि से भरे थाल ढकते हैं।

ख्वाना†—स० [हि० खाना का प्रे०] खिलाना। उदा०—ख्वाय विष, गृह लाय दीन्हौ तउन पाए जरन।—सूर।

ख्वान्चा—पु० दे० 'खोन्चा'।

ख्वाब—पु० [फा०] १ सोने की अवस्था। नीद। २ वह जो कुछ नीद मे दिखाई पडे। स्वप्न।

ख्वाबगाह—स्त्री० [फा०] सोने का कमरा या स्थान। शयनागार।

ख्वार—वि० [फा०] [भाव० ख्वारी] (व्यक्ति) जो बहुत ही बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट और तिरस्कृत हो चुका हो।

ख्वारी—स्त्री० [फा०] ख्वार होने की अवस्था या भाव। दुर्गत। दुर्दशा।

ख्वास्तगार—वि० [फा०] [भाव० ख्वास्तगारी] चाहने या इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

ख्वास्ता—वि० [फा० ख्वास्त] चाहा हुआ। इच्छित।

ख्वाह—अव्य० [फा०] १ या। अथवा। २ या तो। चाहे।

पद—ख्वाह-म-ख्वाह=(क) चाहे कोई चाहे या न चाहे। जबरदस्ती। (ख) निश्चित रूप से। अवश्य।

ख्वाहाँ—वि० [फा०] १ इच्छा रखनेवाला। इच्छुक। २ चाहनेवाला। प्रेमी।

ख्वाहिश—स्त्री० [फा०] [वि० ख्वाहिशमद] अभिलाषा। इच्छा। चाह।

ख्वाहिशमद—वि० [फा०] ख्वाहिश रखनेवाला। आकाक्षी। इच्छुक।

ख्वेंतर†—पु० [देश०] गोफना। ढेलवाँस। (लश०)

ख्वैना†—स० दे० 'खोना'।

ग

ग

ग—देवनागरी वर्णमाला मे कवर्ग का तीसरा व्यजन जो कठ्य स्पर्शी, अल्प-प्राण तथा सघोष है।

प्रत्य० कुछ शब्दो के अत मे प्रत्यय रूप मे लगकर यह निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) गानेवाला, जैसे—सामग। (ख) चलने या जानेवाला, जैसे—उरग, निम्नग, सर्वग आदि।

पु० [स०√गै (गाना)+क] १ सगीत मे 'गाधार' स्वर का सक्षिप्त रूप और सूचक वर्ण। २ छद शास्त्र मे गुरु मात्रा या उससे युक्त वर्ण का सूचक वर्ण। जैसे—यह दो जगण और ग, ल (अर्थात् गुरु और लघु मात्रा) का छद है। ३ गीत। ४ गणेश। ५ गधर्व।

गग—पु० [स० गङ्गा] एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ९ मात्राएँ और अत मे दो गुरु होते है।

स्त्री०=गगा (नदी)।

गगई—स्त्री० [अनु० गे गे से] मैना की तरह की भूरे रग की एक चिडिया। गलगलिया। सतभइया।

गगका—स्त्री० [स० गगा+कन्–टाप्, अत्व] =गगा।

गगकुरिया—स्त्री० [स० गङ्गा-कूल] एक प्रकार की हल्दी। (उडीसा)

गगतिरिया—स्त्री० [हि० गगा+तीर] दलदलो मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा।

गगन*—पु०=गगन।

गगबरार—पु० [हि०गगा+फा० बरार=बाहर या ऊपर लाया हुआ] किसी नदी की धारा के पीछे हटने से निकल आनेवाली जमीन।

गँगरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास।

गगला—पु० [?] १ एक प्रकार का शलजम। २ एक प्रकार का वृक्ष।

गगशिकस्त—पु० [हि० गगा+फा० शिकस्त=तोडा हुआ] वह भूमि जो नदी की धारा के आगे बढने के कारण जल-मग्न हो गई हो। वह भूमि जिसे बरसात मे नदी काट ले गई हो।

गगाबु—पु० [स० गगा-अबु ष० त०] १ गगाजल। २ पवित्र तथा शुद्ध जल। ३ वर्षा का जल।

गगा—स्त्री० [स० √गम् (जाना)+गन्—टाप्] १ भारतवर्ष की एक प्रधान और पवित्र नदी जो हरिद्वार के ऊपर से निकलकर कलकत्ते के पास बगाल की खाडी मे गिरती है। जाह्नवी। भागीरथी।

मुहा०—गगा नहाना=किसी कर्त्तव्य का पालन करके उससे छुट्टी पाना या निश्चित होना।

२ हठ-योग मे, इडा (नाडी) का दूसरा नाम। ३ रहस्य सप्रदाय मे, मन को शुद्ध करनेवाली पवित्र वाणी।

गगा-गति—स्त्री० [स० त०] १ मृत्यु। २ मृत्यु के उपरात होनेवाली मुक्ति। मोक्ष।

गगा-चिल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] जल-कुक्कुटी। (पक्षी)

गगा-जमनी—वि० [हि० गगा+जमुना] १ गगा और यमुना के मेल की तरह दो तरह का या दो रगो का। जैसे—गगा-जमुनी दाल=(केवटी दाल), गगा-जमुनी साडी। २ सोने और चाँदी अथवा ताँबे और पीतल के मेल से बना हुआ, जैसे—गगा-जमुनी कुरसी या लोटा। ३ सफेद और काला मिला हुआ। ४ अबलक। चितकबरा।

स्त्री० कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गगा-जल—पु० [ष० त०] १ गगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना जाता है। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का बढिया सूती कपडा जिसकी पगडियाँ बनती थी।

गगाजली—स्त्री० [स० गगाजल] शीशे या धातु की सुराहीनुमा लुटिया जिसमे यात्री तीर्थों से पवित्र जल लाते है।

मुहा०—गगाजली उठाना=हाथ मे गगाजली लेकर शपथपूर्वक कोई बात कहना।

पु० भूरे रग का एक प्रकार का गेहूँ।

गंगा जाल—पु० [हि० गगा+जाल] रीहा घास का बना हुआ मछुओ का जाल। (बगाल)

गगा-दत्त—पु० [तृ० त०] भीष्म पितामह का एक नाम।

गगादह—पु०=गगाजली।

गगा-द्वार—पु० [ष० त०] हरिद्वार।

गंगा-धर—पुं० [ष० त०] १. महादेव। शिव। २. समुद्र। ३. वैद्यक में एक प्रकार का रस। ४. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। इसे खंजन और गंगोदक भी कहते हैं।

गंगाधार—पुं० [गंगा√धृ (धारण करना)+अण्] समुद्र।

गंगा-पथ—पुं० [ष० त०] आकाश। (डिं०)

गंगा-पाट—पुं० [हिं० गंगा+पाट] घोड़े की एक भौंरी जो पेट के नीचे होती है।

गंगा-पुजैया—स्त्री०=गंगा-पूजा।

गंगा-पुत्र—पुं० [ष० त०] १. भीष्म। २. पुराणानुसार लेट पिता और तीवरी माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ३. ब्राह्मणों की एक जाति जो पवित्र नदियों के किनारे घाटों पर बैठकर अथवा तीर्थस्थानों में रहकर दान लेती है। ४. उक्त जाति का व्यक्ति।

गंगा-पूजा—स्त्री० [ष० त०] विवाह के बाद की एक रीति जिसमें वर और वधू को किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाकर उनसे पूजा कराई जाती है।

गंगा-यात्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १. मरणासन्न व्यक्ति को मरने के लिए गंगा-तट पर या किसी पवित्र जलाशय के किनारे ले जाने की पुरानी प्रथा। २. मृत्यु। स्वर्गवास।

गंगाराम—पुं० [हिं० गंगा+राम] तोते को संबोधित करने का एक नाम।

गंगाल—पुं० [हिं० गंगा+आलय] पानी रखने का एक प्रकार का बड़ा पात्र। कंडाल।

गंगाला—पुं० [हिं० गंगा+आलय] वह भूमि जहाँ तक गंगा के चढ़ाव का पानी पहुँचता है। कछार।

गंगा-लाभ—पुं० [ष० त०] मृत्यु। स्वर्गवास।

गंगावतरण—पुं० [गंगा-अवतरण, ष० त०] वह अवस्था जिसमें गंगा जी स्वर्ग से उतरकर धरती पर आई थीं। गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।

गंगावतार—पुं० [गंगा-अवतार, ष० त०]=गंगावतरण।

गंगावासी (सिन्)—वि० [सं० गंगा√वस् (बसना)+णिनि] गंगा के तट पर रहनेवाला।

गंगा-सागर—पुं० [मध्य० स०] १. कलकत्ते के पास का वह स्थान जहाँ गंगा नदी समुद्र में मिलती है और जो एक तीर्थ माना जाता है। २. एक प्रकार की बड़ी झारी। ३. खद्दर की छपी हुई आठ-नौ हाथ लंबी जनानी धोती।

गंगा-सुत—पुं० [ष० त०]=गंगा-पुत्र।

गंगिका—स्त्री० [सं० गंगा+कन्+टाप्, इत्व] गंगा नदी।

गँगेऊ†—पुं० [सं० गांगेय] १. भीष्म। २. कार्तिकेय।

गँगेटी—स्त्री० [सं० गंगाटी] दवा के काम आनेवाली एक प्रकार की जड़ी या बूटी।

गंगेय*—वि०, पुं०=गांगेय।

गँगेरन—स्त्री० [सं० गांगेरुकी] नागबला नाम का पौधा।

गँगेरुआ—पुं० [सं० गांगेरुक] एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।

गँगेरू—स्त्री०=गँगेरन।

गंगेश—पुं० [गंगा-ईश, ष० त०] महादेव। शिव।

गंगोझ*—पुं०=गंगोदक।

गंगोत्तरी—स्त्री० [सं० गंगावतार] उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ गंगा नदी ऊँचे पहाड़ों से निकलती है।

गंगोदक—पुं० [गंगा-उदक, ष० त०] १. गंगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना जाता है। २. गंगा-धर वर्ण-वृत्त का दूसरा नाम। दे० 'गंगा-धर'।

गंगोल—पुं० [सं०] गोमेदक मणि।

गँगोटी—स्त्री० [हिं० गंगा+मिट्टी] गंगा के किनारे की मिट्टी या बालू।

गँगोलिया—पुं० [हिं० गंगाल] एक प्रकार का खट्टा नीबू।

गंज—पुं० [सं० कंज या खंज] १. एक रोग जिसमें सिर के बाल सदा के लिए झड़ जाते हैं। खल्वाट। (बाल्डनेस) २. सिर में निकलनेवाली एक प्रकार की फुंसियाँ।

पुं० [फा०] १. खजाना। कोश। २. ढेर। राशि। ३. झुंड। समूह। ४. अनाज रखने का कोठा या खत्ता। ५. पालतू कबूतरों के रहने की अल्मारी। दरबा। ६. मद्य-पात्र। ७. मद्य-शाला। ८. एक प्रकार की लता। ९. अवज्ञा। तिरस्कार। १०. ऐसी चीज जिसके अंदर या साथ बहुत-सी चीजें लगी हुई हों। जैसे—गंज-बाल्टी, गंज-चाकू। ११. कुछ नामों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर ऐसी बस्तियों या बाजारों का वाचक शब्द जहाँ बनिये रहते हों अथवा व्यापार करते हों। जैसे—दारागंज, भारतगंज, पहाड़गंज, महाराजगंज, विश्वेश्वर गंज आदि।

गंज-गुठारा*—पुं०=गंजगोला।

गंजगोला—पुं० [हिं० गंज+गोला] तोप का वह गोला जिसके अंदर छोटी-छोटी बहुत सी गोलियाँ भरी रहती हैं। (लश०)

गंज-चाकू—[हिं० गंज+फा० चाकू] वह चाकू जिसमें फल के अतिरिक्त कैंची, मोचना आदि कई उपकरण एक साथ लगे रहते हैं।

गंजन—पुं० [सं०√गंज्(शब्द)+ल्युट्—अन] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. दुर्गत। दुर्दशा। ३. नष्ट, पददलित, परास्त आदि करने की क्रिया या भाव। ४. संगीत में ताल के आठ मुख्य भेदों में से एक।

वि० [√गंज+णिच्+ल्यु—अन] १. अवज्ञा या तिरस्कार करने-वाला। २. नष्ट करनेवाला।

गँजना—अ० [हिं० गाँज] १. गाँज या ढेर लगना। २. पूरित होना। भरा जाना।

गंजना—स० [सं० गंजन] १. गंजन अर्थात् अपमान या तिरस्कार करना। २. पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट करना। ३. परास्त करना। हराना।

गंजनी—स्त्री० [?] एक प्रकार की घास।

गंजफ़ा—पुं०=गंजीफ़ा।

गंज-बाल्टी—स्त्री० [फा०+हिं०] वह बड़ी बाल्टी जिसके अंदर और साथ कटोरे, कड़ाही, गिलास, थालियाँ आदि भी रहती हैं।

गंजा—पुं० [हिं० गंज] वह जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंज रोग का रोगी।

गंजाई—स्त्री० [हिं० गँजना] गाँज (ढेर या राशि) लगाने की क्रिया या भाव। (डंपिंग)

गंजाना—स० [हिं० गंजना] गाँजने का काम दूसरे से कराना। अच्छी या पूरी तरह से ढेर या राशि लगवाना।

†अ०=गँजना।

गंजिका—स्त्री० [सं०√गंज्+अ—टाप्+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] मदिरालय।

गँजिया—स्त्री० [सं० गंजिका] १. सूत की जालीदार थैली जिसमें रुपया-

पैसा रखते है। २ घास बाँधने का जाल। ३ मिट्टी का एक प्रकार का छोटा बरतन।

गजी—स्त्री० [हि० गज] १ ढेर। राशि। जैसे—अनाज की गजी। २ शकर-कद।

स्त्री० [गर्नसी (स्थान-नाम)] कमीज या कुरते के नीचे पहनी जानेवाली एक प्रकार की छोटी कुरती। बनियाइन।

वि० [हि० गाँजा] गाँजा पीनेवाला। जैसे—गजी यार किसके, दम लगाया, खिसके।—कहा०।

गजीना—पु० [फा० गजीन] खजाना। कोश।

गजीफा—पु० [फा० गजफ] १ ताश की तरह के एक पुराने खेल का उपकरण जिसमे ८ रगो के ९६ पत्ते होते थे। ये पत्ते प्राय लाख और कागज के योग से बनते थे और इन पर ताश के पत्तो की तरह बूटियाँ और तसवीरे होती थी। ताश के पत्ते सभवत इसी के अनुकरण पर बने थे। २ उक्त उपकरण से खेला जानेवाला खेल। ३ ताश की गड्डी ओर उससे खेला जानेवाला खेल।

गँजेडी—वि० [हि० गाँजा+एडी (प्रत्य०)] प्राय या बहुत गाँजा पीनेवाला। गजी।

गटम—पु० [?] ताड-पत्र पर लिखने की लोहे की कलम।

गट्ठिय—वि० [स० ग्रथित] जिसमे गाँठ पडी हुई हो। बाँधा हुआ।

गँठ—स्त्री० [हि० गाँठ] गाँठ का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गँठ-जोडा, गँठ-बधन आदि।

†स्त्री०=गाँठ।

गँठकटा—पु० [हि० गाँठ+काटना] वह व्यक्ति जो दूसरे की गाँठ मे बँधे हुए रुपए-पैसे चोरी से खोल या काटकर निकाल लेता हो। गिरहकट।

गँठ-छोरा—पु० [हि० गाँठ+छोरना=छीनना] १ गठरी छीनकर ले भागनेवाला। उचक्का। २ दे० 'गँठ-कटा'।

गँठ-जोडा—पु० हि० गाँठ+जोडना] गँठ-बधन (दे०)।

गँठ-बधन—पु० [हि० गाँठ+बधन] १ विवाह के समय वर के दुपट्टे के एक छोर को कन्या की चादर के एक छोर से गाँठ लगाकर बाँधने की रीति। २ कोई धार्मिक कृत्य करते समय उक्त प्रकार से पति-पत्नी के पल्लो मे गाँठ लगाने की रीति। ३ लाक्षणिक अर्थ मे दो चीजो, बातो या व्यक्तियो मे होनेवाला घनिष्ठ सग-साथ या सपर्क। ४ गुप्त सधि। साँठ-गाँठ।

गँठिवन—स्त्री०=गठिवन।

गँठुआ—पु० [हि० गाँठ] कपडा बुनते समय टूटे हुए तागो को अथवा नई पाई के तागो को पुराने उतरे हुए कपडे के तागो से जोडने का काम।

गड—पु० [स० √गड (मुख का एक भाग होना)+अच्] १ गाल। कपोल। २ कनपटी। ३ गले मे पहनने का काला धागा। गडा। ४ फोडा। ५ चिह्न। निशान। ६ दाग। ७ गाँठ। ८ गैंडा। ९ मडलाकार चिह्न या लकीर। गराडी। १० नाटक का एक अग जिसमे सहसा प्रश्नोत्तर होने लगते है। ११ ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती के अत के पाँच दड और मूल, मघा, तथा अश्विनी के आरभ के तीन दड। (ज्योतिष)

वि० बहुत बडा या भारी। जैसे—गड मूर्ख, गड शिला आदि।

गडक—पु० [स० गण्ड+कन्] १ गले मे पहनने का गडा या जतर। २ गाँठ। ३ गैंडा। ४ चिह्न। निशान। ५ वह प्रदेश जिसमे से होकर गडकी नदी बहती है। ६ उक्त प्रदेश का निवासी। ७ गडमाला नामक रोग।

स्त्री०=गडकी (नदी)।

गडका—स्त्री० [स० गण्डक+टाप्] बीस वर्णो का एक वर्णवृत्त।

गडकी—स्त्री० [स० गण्डक+ङीष्] १ मादा गैंडा। २ उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो पटने के पास गगा मे मिलती है।

पु० सत्रह मात्राओ का एक ताल। (सगीत)

गडकी-शिला—स्त्री० [ष० त०] भगवान् विष्णु की गोल पत्थर की बनी हुई एक प्रकार की मूर्ति। शालग्राम की बटिया।

गड-गोपालिका—स्त्री० [मध्य० स०] ग्वालिन नाम का कीडा।

गँडतरा†—पु० [हि० गाँड+तर=नीचे] छोटे बच्चो के नीचे का वह कपडा जो इसलिए बिछाया जाता है कि उनका मल-मूत्र बिछावन पर न लगे। गँतरा।

गँडदार—पु० [स० गड या हि० गडासा+फा० दार] १ महावत। हाथीवान। २ दे० 'गडदार'।

गड-दूर्वा—स्त्री० [कर्म० स०] १ गाँडर नामक घास जिसकी जड खस कहलाती है। २ दूब नाम की घास।

गड-देश—पु० [ष० त०] =गड-मडल।

गडनी—स्त्री० [स० गडाली] सरकडे की जाति की एक वनस्पति। सरपोका। सर्पाक्षी। सरहटी।

गड-मडल—पु० [ष० त०] कनपटी। गड-स्थल।

गड-मालक—पु० [ब० स०] कठमाला नामक रोग।

गड-माला—स्त्री० [ब० स०] कठमाला नामक रोग।

गड-मालिका—स्त्री० [ब० स०] लज्जालु लता। लाजवती।

गड-माली (लिन्)—वि० [स० गडमाला+इनि] जिसके गले मे कठ-माला नामक रोग की गिल्टियाँ निकली हुई हो।

गँडरा—पु० [स० गडाली] [स्त्री० गँडरी] १ मूँज की जाति की एक घास। २ एक प्रकार का धान।

गडल*—पु०=गड-स्थल (कनपटी)।

गडली—स्त्री० [स० गण्ड√ली (लीन होना)+क्विप्-ङीष्] छोटी पहाडी।

पु० शिव।

गड-सूचि—स्त्री० [ष० त०] नृत्य मे भाव बतलाने की एक मुद्रा।

गड-स्थल—पु० [ष० त०] [स्त्री० गडस्थली] कनपटी।

गडात—पु० [स० गड-अत, ष० त०] ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती के अत के पाँच या तीन दड तथा मूल, मघा और अश्विनी के अत के तीन दड। (ज्योतिष)

गडा—पु० [स० गडक=गाँठ] १ तागे, रस्सी आदि मे लगाई जानेवाली गाँठ। २ दैविक उपद्रवो, बाधाओ आदि से रक्षित रहने के लिए कलाई या गरदन मे लपेटकर बाँधा जानेवाला मत्र-पूत डोरा या सूत। ३ पशुओ के गले मे बाँधा जानेवाला पट्टा।

पु० [स० गड=चिह्न] आडी, गोल या गोलाकार धारी या रेखा। जैसे—कनखजूरे की पीठ पर का गडा, तोते के गले का गड।

पुं० [?] चीजें गिनने में चार का समूह। जैसे—दो गंडे पैसे या चार गंडे आम।
गंडारि—स्त्री० [गंड-अरि, ष० त०] कचनार।
गंडाली—स्त्री० [सं० गंड√अल् (भूषित करना)+अण्-ङीप्] गाँडर घास।
गँडासा—पुं० [हिं० गंड+आसा (प्रत्य०)] हँसिये की तरह का घास काटने का एक औजार।
गंडिनी—स्त्री० [सं० गंड+इनि—ङीप्] दुर्गा।
गँड़िया†—पुं०=गाड़ू।
गंडीर—पुं० [सं०√गंड्+ईरन्] १. पोई नाम की लता। २. थूहर। सेहुँड़।
गंडीरी—स्त्री० [सं० गंडीर+ङीष्]=गंडीर।
गंडु—पुं० [सं०√गंड्+उन्] १. गाँठ। २. तकिया।
गंडुक*—पुं०=गंडूष।
गंडु-पद—पुं० [ब० स०] फीलपाँव नामक रोग।
गंडू—पुं०=गाड़ू।
गंडूक—पुं०=गंडूष।
गंडू-पद—पुं० [गंडु+ऊङ्, गंडू-पद, ब० स०] केंचुआ।
गंडूल—वि० [सं० गंडू√ला (लेना)+क] १. जिसमें गाँठें हों। गाँठदार। २. झुका हुआ। टेढ़ा।
गंडूष—पुं० [सं०√गंड्+ऊषन्] [स्त्री० गंडूषा] १. हथेली का गड्ढा। चुल्लू। २. पानी से लिया जानेवाला कुल्ला। ३. हाथी के सूँड़ की नोक।
गँडेरी—स्त्री० [सं० गण्ड] १. ईख या गन्ने के छोटे टुकड़े जो कोल्हू में पेरने के लिए काटे जाते हैं। २. चूसने के लिए ईख या गन्ने को छीलकर काटे हुए छोटे टुकड़े। ३. किसी चीज के छोटे लंबोतरे टुकड़े।
गंडोपधान—पुं० [गंड-उपधान ष० त०] गल-तकिया।
गँडोरा—पुं० [सं० गंडोल+ईख] हरी कच्ची खजूर।
गंडोल—पुं० [सं०√गंड्+ओलच्] १. गुड़। २. कच्ची या लाल शक्कर। ३. ईख या गन्ना। ४. कौर। ग्रास।
गंतव्य—वि० [सं०√गम् (जाना)+तव्यत्] १. (स्थान) जहाँ किसी को जाना या पहुँचना हो अथवा जहाँ कोई जाने को हो। २. गम्य।
गंता (तृ)—पुं० [सं०√गम्+तृच्] [स्त्री० गंत्री] वह जो किसी स्थान की ओर जा रहा हो। जानेवाला।
गंतु—पुं० [सं०√गम्+तुन्] १. पथिक। यात्री। २. पथ। मार्ग।
गंत्रिका—स्त्री० [सं० गंत्री+कन्-टाप्, ह्रस्व] बैलगाड़ी।
गंत्री—स्त्री० [सं०√गम्+ष्ट्रन्—ङीप्] १. गाड़ी। २. बैलगाड़ी।
गंद—पुं० [सं० गंध से फा० गन्दः] १. बुरी चीज। २. बुरी बात।
मुहा०—**गंद बकना**=गंदी बातें कहना या गालियाँ देना।
३. दे० 'गंदगी'।
गंदगी—स्त्री० [फा०] १. गंदे होने की अवस्था या भाव। मैलापन। २. खराब, मैली और सड़ी-गली चीजें। ३. गुह। मल। ४. बहुत ही निकृष्ट बातें, विचार या व्यवहार। जैसे—समाज या साहित्य में गंदगी फैलाना बहुत बुरा है। ५. अपवित्रता। अशुद्धता।
गंदना—पुं० [सं० गंधन] १. लहसुन और प्याज की तरह का एक प्रकार का कंद जो तरकारी आदि में डाला जाता है। २. एक प्रकार की घास।
गंदम—पुं० [देश०] [स्त्री० गंदमी] एक प्रकार की चिड़िया।
पुं० [फा० गंदुम] गेहूँ।
गँदला—वि० [हिं० गंदा+ला (प्रत्य०)] १. (जल) जो स्वच्छ या निर्मल न हो। जिसमें धूल-मिट्टी आदि मिली हो। २. मलिन। मैला।
गंदा—वि० [सं० गन्ध से फा० गन्दः] [स्त्री० गंदी] १. धूल, मिट्टी, मैल आदि से युक्त। जैसे—गंदा कपड़ा, गंदा कमरा। २. दूषित या बुरा। निंदनीय। जैसे—गंदा आचरण, गंदे विचार।
गंदापानी—पुं० [फा० गंदा+हिं० पानी] १. मद्य। शराब। २. पुरुष का वीर्य। ३. स्त्री का रज।
गँदीला—पुं० [सं० गंध] एक प्रकार की घास।
गंदुम—पुं० [सं० गोधूम से फा०] [वि० गंदुमी] गेहूँ।
गंदुमी—वि० [फा० गंदुम] १. गेहूँ के रंग का। गेहुँआ। जैसे—गंदुमी कपड़ा। २. गेहूँ या उसके आटे का बना हुआ। जैसे—गंदुमी रोटी।
गंदोलना—स० [फा० गंदा] कोई चीज, विशेषतः पानी गंदा करना।
गंध—स्त्री० [सं०√गंध् (गति)+अच्] १. कुछ विशिष्ट पदार्थों के सूक्ष्म कणों का वायु के साथ मिलकर होनेवाला वह प्रसार जिसका अनुभव या ज्ञान नाक से होता है। वास। (ओडर)
विशेष—हमारे यहाँ गंध को पृथ्वी का गुण माना गया है।
२. सुगंध। ३. वह सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है। ४. बहुत ही हलके रूप में लगनेवाला किसी बात का पता। जैसे—देखो, इस बात की किसी को गंध न लगने पावे। ५. बहुत ही थोड़ा या नाम मात्र का अंश। जैसे—उसमें सौजन्य की गंध भी नहीं है।
गंध-कंदक—पुं० [ब० स०; कप्] कसेरू।
गंधक—स्त्री० [सं० गंध+अच्+कन्] [वि० गंधकी] पीले रंग का और कुछ अप्रिय तथा उग्र गंधवाला एक प्रसिद्ध दह्य खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग रसायन और वैद्यक में होता है।
गंधकवटी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार की गोली या बटी जो पाचक कही गई है।
गंधकारिता—स्त्री० [सं० गंध√कृ (करना)+णिनि√तल्—टाप्, दत्व] वस्त्रों, शरीर आदि में लगाने के लिए सुगंधित द्रव्य तैयार करने की कला या विद्या। (परफ्यूमरी)
गंधकाश्म (न्)—पुं० [सं० गंधक-अश्मन्, कर्म० स०] अपने मूल रूप में खनिज गंधक, (अपनी ज्वलनशीलता के विचार से)। (ब्रिमस्टोन)
गंध-काष्ठ—पुं० [ब० स०] अगर नामक सुगंधित द्रव्य। अगरु।
गंधकी—वि० [गंधक से] १. गंधक के रंग का। हलका पीला। २. गंधक से बना हुआ। जैसे-गंधकी तेजाब।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।
गंध-कुटी—स्त्री० [ष० त०] मंदिर में का वह कमरा या दालान जिसमें बहुत-सी देवमूर्तियाँ रखी हों।
गंध-केलिका—स्त्री० [सं० गंध√केल् (चालन)+ण्वुल्-टाप्, इत्व] कस्तूरी।
गंध-कोकिल—पुं० [मध्य० स०] सुगंध कोकिल नामक गंध द्रव्य।
गंध-गज—पुं० [मध्य० स०] बहुत बड़ा और मस्त हाथी।
गंध-गात—पुं० [सं० गंधगात्र] चंदन। (डिं०)

गध-जल—पु० [मध्य० स०] सुगधित जल या पानी। जैसे—केवडा जल, गुलाब जल आदि।

गध-जात—पु० [ब० स०] तेज-पत्ता।

गधज्ञा—स्त्री० [स० गध√ज्ञा (जानना)+क–टाप्] नासिका। नाक।

गध-तूर्य—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार की तुरही। (बाजा)।

गध-तैल—पु० [मध्य० स०] वह तेल जिसमे किसी पदार्थ के कुछ ऐसे तत्त्व मिले हो जो उस पदार्थ की गध देते हो। गध से युक्त किया हुआ तेल। सुगधित तेल।

गधद—पु० [स० गध√दा (देना)+क] चदन। वि० गध देनेवाला। जिसमे गध हो।

गध-दला—स्त्री० [ब० स०] अजमोदा।

गध-दारु—पु० [मध्य० स०] अगरु। अगर।

गध-द्रव्य—पु० [मध्य० स०] दवाओ मे डालने, शरीर मे लगाने या औषधो मे मिलाने का कोई सुगधित पदार्थ।

गध-धूलि—स्त्री० [ब० स०] कस्तूरी।

गधन—पु० [स०√गध्+ल्युट्—अन] १ उत्साह। २ प्रकाश। ३ वध। ४ सूचना। ५ सोना। उदा०—गधन मूल उपाधि बहु भूखन तन गन जान। —तुलसी।

गध-नाकुली—स्त्री० [मध्य० स०] रास्ना।

गध-नाडी—स्त्री० [मध्य० स०] नाक। नासिका।

गध-नाल— पु० [ष० त०] १ नासिका। नाक। २ नाक का छेद। नथुना।

गध-नालिका—स्त्री० [ष० त०] गधनाल।

गध-नाश—पु० [ब० स०] एक रोग जिसमे सुगध, दुर्गंध आदि का अनुभव करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। (एनोस्मिआ)

गधप—पु० [स० गध√पा (पीना)+क] पितरो का एक वर्ग।

गध-पत्र—पु० [ब० स०] १ सफेद तुलसी। २ बेल। बिल्व। ३ मरुआ।

गधपत्रा—स्त्री० [स० गन्धपत्र+टाप्] कपूर कचरी।

गधपत्री—स्त्री० [स० गन्धपत्र+ङीष्] अजमोदा।

गध-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] सप्तपर्णी।

गध-पलाशी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] हल्दी।

गधपसार, गधपसारी—स्त्री०=गधप्रसारिणी।

गध-पाषाण—पु० [मध्य० स०] गधक।

गध-पिशाचिका—स्त्री० [तृ० त०] सुगधित द्रव्य जलाने पर निकलने-वाला धूआँ।

गध-पुष्प—पु० [मध्य० स०] १ केवडा। २ बेत।

गध-प्रत्यय—पु० [ब० स०] नासिका। नाक।

गध-प्रसारिणी—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का पौधा जिसके दुर्गंधयुक्त पत्ते दवा के काम आते है।

गध-फल—पु० [ब० स०] कपित्थ। कैथ।

गध-फला—स्त्री० [स० गन्धफल+टाप्] प्रियगु।

गंधफली—स्त्री० [स० गधफल+ङीष्] १ प्रियगु। २ चपा।

गधबधु—पु० [स० गध्√बध (बाँधना)+उण्] आम का वृक्ष और उसका फल।

गधबबूल—पु० [स० गध+हि० बबूल] बबूल की जाति का एक छोटा पेड़।

गधबिलाव—पु० [स० गध+हि० बिलाव=बिल्ली] बिल्ली की तरह का एक जगली जतु जिसके अडकोश से एक प्रकार का सुगधित तरल पदार्थ निकलता है। गध-मार्जार।

गधबेन—पु० [स० गधवेणु] रूसा या रोहिष नामक सुगधित घास।

गध-माता (तृ)—स्त्री० [स० ष० त०] पृथ्वी।

गध-माद—पु० [ब० स०] भौरा। भ्रमर।

गधमादन—पु० [स० गध√मद (प्रसन्न होना)+णिच+ल्यु-अन] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो इलावृत और भद्राश्व खड के बीच मे कहा गया है और अपने सुगधित वनो के लिए प्रसिद्ध था। २ एक प्रकार का गध-द्रव्य। ३ भौरा। ४ गधक। ५ रावण का एक नाम।

गधमादनी—स्त्री० [स० गधमादन+ङीप्] १ मद्य। शराब। २ लाक्षा। लाख।

गधमादिनी—स्त्री० [स० गध√मद्+णिच्+णिनि–ङीप्] लाक्षा। लाख।

गध-मार्जार—पु० [मध्य० स०] गधबिलाव। (देखे)

गध-मालती—स्त्री० [तृ० त०] एक प्रकार का गध-द्रव्य।

गध-मासी—स्त्री० [मध्य० स०] जटामासी।

गध-मुड—पु० [स० गध√मुड् (निवारण करना)+णिन्+अन्] एक प्रकार की लता।

गध-मूल—पु० [ब० स०] पान की जड। कुलजन।

गधमूली—स्त्री० [स० गधमूल+ङीष्] कपूर कचरी।

गध-मूषिका—स्त्री० [मध्य० स०] छछूँदर।

गध-मृग—पु० [मध्य स०] वह मृग जिसकी नाभि मे कस्तूरी होती है। कस्तूरी मृग।

गधरब*—पु०=गधर्व।

गध-रस—पु० [ब० स०] सुगधसार नामक गध-द्रव्य।

गध-राज—पु० [ष० त०] १ चदन। २ नख नामक गध-द्रव्य। ३ बेले की जाति का एक पौधा और उसका फूल। मोगरा बेला।

गधराज-गुग्गुल—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का गुग्गुल जिसे जलाने पर वातावरण सुगधित हो जाता है।

गधराजी—स्त्री० [स० गन्धराज+ङीष्] नख नामक गध-द्रव्य।

गधरी†—स्त्री० [स० गधर्व] गधर्व जाति की कन्या या स्त्री।

गधर्व—पु० [स० गध √अर्व् (मारना)+अच्, पररूप] [स० स्त्री० गधर्वी, हि० स्त्री० गधर्विन] १ पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जो स्वर्ग मे गाने-बजाने का काम करते है।

विशेष—यह लोग सोम के रक्षक, रोगो के चिकित्सक, सूर्य के अश्वो के वाहक, स्वर्गीय ज्ञान के प्रकाशक, यम और यमी के जनक आर्य माने जाते है। इनका स्वामी वरुण है।

२ एक आधुनिक जाति जिसकी लडकियाँ गाने-नाचने का काम और वेश्या-वृत्ति करती है। ३ बालिकाओ की वह अवस्था जब उनका यौवन आरम्भ होता और उनके स्वर मे माधुर्य आता है। ४ मृग। हिरन। ५ घोडा। ६ एक शरीर से दूसरे शरीर मे गई हुई आत्मा। ७ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का मानसिक रोग। ८ सगीत मे एक प्रकार का ताल। ९ विधवा स्त्री का दूसरा पति।

गधर्व-तैल—पु० [मध्य० स०] रेडी का तेल।

गधर्व-नगर—पु० [ष० त०] १ नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास

जो कुछ विशिष्ट प्रकार की प्राकृतिक अवस्थाओं में सूर्य की किरणें पड़ने पर आकाश में या स्थल पर भ्रम से दिखाई पड़ता है। २. वेदान्त में, उक्त के आधार पर किसी प्रकार का मिथ्या भ्रम। ३. चंद्रमा के चारों ओर का घेरा या मंडल। ४. संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों में फैली हुई लाली। ५. महाभारत के अनुसार मानसरोवर के पास का एक नगर।

गंधर्व-पुर—पुं० [ष० त०] गंधर्व-नगर।

गंधर्व-रोग—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

गंधर्व-लोक—पुं० [ष० त०] वह जगत् या संसार जिसमें गंधर्व रहते हैं।

गंधर्व-वधू—स्त्री०[ष० त०] एक प्रकार का गंध-द्रव्य जिसे चीड़ा भी कहते हैं।

गंधर्व-विद्या—स्त्री० [ष० त०] गान विद्या। संगीत।

गंधर्व-विवाह—पुं० [मध्य० स०] हिन्दू धर्म-शास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर तथा कन्या अपनी इच्छा से एक दूसरे का वरण करते हैं। (कलियुग में ऐसा विवाह वर्जित है।)

गंधर्व-वेद—पुं० [ष० त०] चार उपवेदों में से एक जिसमें संगीतशास्त्र का विवेचन है।

गंधर्व-संगीत—पुं० [ष० त०] वैदिक युग के मध्य के वे लोक-गीत जिनसे देशी संगीत (आधुनिक लोकगीत) का विकास हुआ है।

गंधर्वा—स्त्री० [सं० गंधर्व+टाप्] दुर्गा का एक नाम।

गंधर्वास्त्र—पुं० [गंधर्व-अस्त्र, मध्य०स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

गंधर्वी—स्त्री० [सं० गंधर्व+ङीप्] १. गंधर्व जाति की स्त्री। २. पुराणानुसार घोड़ों की आदि माता जो सुरभी की पुत्री थी।

वि० गंधर्व-संबंधी। गंधर्वों का। जैसे—गंधर्वी माया या रूप।

गंधर्वोन्माद—पुं० [गंधर्व-उन्माद, मध्य० स०] एक प्रकार का उन्माद।

गंधवती—स्त्री० [सं० गंध+मतुप्, वत्व, ङीप्] १. पृथ्वी। २. मदिरा। ३. वनमल्लिका। ४. मुरा नामक गंध द्रव्य। ५. वरुण की पुरी का नाम। ६. व्यासदेव की माता का एक नाम।

गंधवह—वि० [सं० गंध √वह् (ले जाना)+अच्] १. गंध ले जाने या पहुँचानेवाला। २. सुगंधित।

पुं० १. वायु। हवा। २. नाक, जिससे गंध का ज्ञान होता है। (डिं०)

गंधवाह—पुं०[सं० गंध √वह्+अण्] वायु। हवा।

गंध-सफेदा—पुं०[सं० गंध+हिं० सफेद] १. सफेद छालवाला एक प्रकार का लंबा वृक्ष। (यूकिलिप्टस) २. उक्त वृक्ष के फूलों में से निकलनेवाला एक प्रकार का सुगंधित तेल।

गंध-सार—पुं०[ब० स०] १. चंदन। २. गंधराज नामक बेला। मोगरा। ३. कपूर।

गंधहर—पुं०[सं० गंध√हृ (हरण करना)+अच्] नाक। (डिं०)

गंध-हस्ती—पुं० [मध्य० स०] ऐसा हाथी जिसके कुंभ से मद बहता हो। मदोन्मत्त हाथी।

गंधा—वि० स्त्री०[सं० √गंध+णिच्+अच्—टाप्] गंध से युक्त। (यौ० शब्दों के अंत में) जैसे—रजनी गंधा, मत्स्य गंधा।

गंधाजीव—पुं० [सं० गंध-आ √जीव् (जीना) +अच्] इत्र, तेल आदि बनाने और बेचनेवाला, गंधी।

गंधाज्ञ—वि० [सं० गंध-अज्ञ, ष० त०] [भाव० गंधाज्ञता] १. (व्यक्ति) जिसे गंध का अनुभव न होता हो। २. (व्यक्ति) जो गंधों के प्रकार या स्वरूप न जानता हो। जो यह न बतला सकता हो कि यह गंध किस चीज की या किस प्रकार की है।

गंधाज्ञता—स्त्री० [सं० गंधाज्ञ+तल्—टाप्]=गंध-नाश (दे०)।

गंधाढ्य—वि० [गंध-आढ्य, तृ० त०] जिसमें बहुत अधिक खुशबू या सुगंध हो।

पुं० १. चंदन। २. नारंगी का वृक्ष। ३. एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ४. कई प्रकार के पौधों की संज्ञा।

गंधाना—पुं० [हिं० गंधन] रोला छंद का एक नाम।

अ० [हिं० गंध] किसी पदार्थ में से गंध या महक का फैलना। गंध छोड़ना या देना।

स० गंध या महक फैलाना।

गंधानुवासन—पुं० [गंध-अनुवासन, तृ० त०] किसी चीज को सुगंधि से युक्त करना। सुवासित करना।

गंधाविरोजा—पुं० [हिं० गंध+बिरोजा] चीड़ या साल नामक वृक्ष का गोंद या निर्यास जो प्रायः फोड़े-फुंसियों पर लगाया जाता है। चंद्रस।

गंधाम्ला—स्त्री० [गंध-अम्ल, ब० स०] जंगली नीबू।

गंधार—पुं० [सं० गंध√ऋ (गति)+अण्] १. भारत के उस पश्चिमोत्तर प्रदेश का पुराना नाम जो तक्षशिला से कुनड़ या सिंधाल नदी तक था। २. दे० 'गांधार'।

गंधारी—स्त्री०=गांधारी।

गंधालिका—स्त्री० [सं०] उड़ने तथा डंक मारनेवाले उन छोटे-छोटे कीड़ों का वर्ग जिसमें बर्रें, भौंरे, मधुमक्खियां आदि सम्मिलित हैं। (वास्प)

गंधाली—स्त्री० [सं० गंध-आली, ब० स०] गंधप्रसारिणी लता।

गंधालु—वि० [सं० √गंध्+आलुच्] १. खुशबूदार। २. सुवासित।

गंधाश्म (श्मन्)—पुं० [मध्य० स०] गंधक।

गंधाष्टक—पुं० [गंध-अष्टक, ष० त०] आठ प्रकार के गंधों के मेल से बना हुआ गंध। अष्ट-गंध।

गंधिक—वि० [सं० गंध+ठन्—इक] गंधवाला।

पुं० १. गंधक। २. गंधी।

गंधिनी—स्त्री० [सं० गंध+इनि—ङीप्] मदिरा। शराब।

गँधिया—पुं० [हिं० गंध] १. एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा, जिससे बहुत दुर्गन्ध निकलती है। २. हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा जो धान आदि की फसल में लगता है।

स्त्री० १. गाँधी नाम की बरसाती घास। २. गंध-प्रसारिणी नामक लता।

गंधी—पुं० [सं० गांधिक; प्रा० गांधिअ; गु० पं० बं० गांधी; मरा० गंधे] १. वह जो सुगंधित तेल, इत्र आदि बनाता और बेचता हो। अत्तार। २. गँधिया घास।

स्त्री० १. गँधिया घास। २. गँधिया कीड़ा।

गंधी पतंग—पुं० [सं० व्यस्तपद] धान की बालों में लगनेवाला गँधिया नाम का कीड़ा।

गँधीला*—वि० [हि० गध] १ जिसमे किसी प्रकार की गध हो। २ अप्रिय या बुरी गधवाला। बदबूदार।
†वि०=गँदला।

गधेंद्रिय—स्त्री० [स० गध-इद्रिय, मध्य० स०] सूँघने की इद्रिय। नासिका। नाक।

गधेज—स्त्री० [म० गध] अगिया नाम की घास।

गधेल—पु० [स० गध] एक प्रकार का छोटा वृक्ष या झाड।

गधैला—पु०[हि० गध] [स्त्री० अल्पा० गधैली] १ एक प्रकार की चिडिया। २ गध-प्रसारिणी लता।
वि० जिसमे से दुर्गध आती हो। बदबूदार।

गधोच्छल—वि० [स० गध-उच्छल, तृ० त०] गध से भरा हुआ। जिसमे से खूब गध निकल रही हो। उदा०—वह शोधशक्ति जो गधोच्छल।—निराला।

गधोत्कट—पु० [गध-उत्कट, तृ० त०] दोना। दमनक। (पौधा)
वि० उत्कट गधवाला।

गधोत्तमा—स्त्री० [गध-उत्तमा, तृ० त०] अगूरी शराब।

गधोपजीवी (विन्)—पु० [स० गध-उप√जीव् (जीना) +णिनि] इत्रफरोश। गधी।

गधोपल—पु० [स० गध-उपल, मध्य० स०] गधक।

गधौली†—स्त्री०[स० गध से] कपूर कचरी।

गध्य—वि० [स० गध+यत्] १ गध-सबधी। २ जिसमे गध हो। गध-युक्त।

गध्रप*—पु०=गधर्व।

गभारी—स्त्री० [स०√गम्+भृ (धारण करना)+अण्—ङीप्] एक प्रकार का बडा वृक्ष।

गभीर—वि० [स० गम्+ईरन्, नि० भकार] १ जिसकी गहराई की थाह जल्दी न मिले। गहरा। जैसे—गभीर नद या समुद्र। २ घना। सघन। ३ भारी या विकट। घोर। जैसे—गभीर नाद। ४ (कथन या विषय) जिसे समझने के लिए बहुत सोच-विचार करना पडे। गूढ। जटिल। दुरूह। जैसे—गभीर समस्या। ५ चिंतित या भयभीत करनेवाला। चिंताजनक। जैसे—गभीर स्थिति। ६ (व्यक्ति) जो किसी बात की गहराई तक जाता हो, जल्दी विचलित न होता हो और अपने मन के भाव जल्दी दूसरो पर प्रकट न होने देता हो। शात। धीर।
पु० १ जबीरी नीबू। २ कमल। ३ महादेव। शिव। ४ एक प्रकार का राग। (सगीत)

गंभीरक—वि० [स० गम्भीर+कन] गहरा। गभीर।

गभीरवेदी (दिन्)—पु० [स० गम्भीर√विद् (जानना)+णिनि] ऐसा मस्त हाथी जो साधारण अकुश की चोट की परवा न करे।

गभीरिका—स्त्री० [स० गभीर+कन्—टाप्, इत्व] एक प्रकार की ढोलक।

गँमार†— वि०, पु०=गँवार।

गमित*—वि० [स० गम] १ जिसके पास तक गम या पहुँच हुई हो। २ किसी जानकार द्वारा बतलाया हुआ। जैसे—गुरु गमित ज्ञान।

गँवँ—स्त्री० दे० 'गौं'।

२—८

गँवई—स्त्री० [हि० गाँव] [वि० गँवइयाँ] १ छोटा गाँव। जैसे—गाँव-गँवई के लोग। २ गाँव।
वि० १ गाँव का। गाँव मे रहनेवाला। २ गँवार।
पु० देहाती।

गँवनना*—अ० [स० गमन] गमन करना। जाना।
स०=गँवाना।

गँवना†—अ०=गमन करना।

गँवरदल—वि० [हि० गँवार+दल] गँवारो की तरह का। गँवार के समान। गँवारू।
पु० गँवारो का दल या समूह।

गँवरमसला—पु० [हि० गँवार+अ० मसल] ग्रामीणो या देहातियो मे प्रचलित उक्ति या उनकी कहावत।

गँवहियाँ†—पु० [स० गोघ्न=अतिथि] १ गँवार। देहाती। २ अतिथि। मेहमान।

गँवाऊ—वि० [हि० गँवाना] धन-सपत्ति गँवाने या नष्ट करनेवाला। 'कमाऊ' का विपर्याय।

गँवाना—स० [स० गम] १ कोई चीज असावधानी, उपेक्षा, प्रमाद आदि के कारण व्यर्थ अपने पास से निकल जाने देना। भूल, मूर्खता आदि के कारण किसी उपयोगी या मूल्यवान् वस्तु से वचित होना। खोना। जैसे—(क) जूए या सट्टे मे धन गँवाना। (ख) मेले मे कपडा या छडी गँवाना। २ समय के सम्बन्ध मे, व्यर्थ नष्ट करना या बिताना। जैसे—लडको का खेल-कूद मे समय गँवाना। ३ दूर करना। निकालना। हटाना। उदा०—कहहि गँवाइअ छिनकु स्रम, गँवनब अबहि कि प्रात।—तुलसी।

गँवार—वि० [हि० गाँव+आर (प्रत्य०)] [वि० गँवारी, गँवारू, स्त्री० गँवारिन] १ गाँव मे रहनेवाला (व्यक्ति)। देहाती। २ उक्त कारण से जो शिष्ट, सभ्य तथा सुशिक्षित न हो। असभ्य।* ३ अनजान। अनाडी। जैसे— हम तो इन सब बातो मे गँवार ठहरे।

गँवारता*—स्त्री०=गँवारपन।

गँवारपन—पु० [हि० गँवार+पन (प्रत्य०)] गँवार होने की अवस्था या भाव। देहातीपन।

गँवारी—वि० [हि० गँवार] १ गँवारो की तरह का। ग्राम्य। जैसे—गँवारी पहनावा या बोली। २ दे० 'गँवारू'।
स्त्री० १ गँवारपन। देहातीपन। २ गँवारो की-सी मूर्खता। ३ गाँव की रहनेवाली या गँवार की स्त्री।

गँवारू—वि० [हि० गँवार+ऊ (प्रत्य०)] १ गाँव अथवा गाँव मे रहनेवालो से सबध रखनेवाला अथवा उनके जैसा। जैसे—गँवारू पहनावा, गँवारू चाल आदि। २ शिष्टता, सभ्यता, आदि से रहित।

गँवेली*—स्त्री०=गँवारी (गँवार स्त्री)।

गँस*—पु० [स० ग्रथि] १ मन मे खटकनेवाली बात। २ मन मे छिपा हुआ द्वेष या वैर।* ३ दे० 'गाँसी'। (तीर की)

गँसना*—स० [स० ग्रथन] १ अच्छी तरह कसकर जकडना, बाँधना या लगाना। गाँठना। २ कपडे की बुनावट मे बाने को कसना या दबाना जिसमे बुनावट गफ या घनी हो। ३ कस या ठूँसकर भरना।

अ० १. कसकर जकड़ा या बांधा जाना। २. बुनावट में सूतों का खूब पास पास होना। ३. कसकर या ठसाठस भरा जाना।

गँसीला—वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] गाँस या गाँसी की तरह नुकीला और चुभने या खटकनेवाला।

†वि० दे० 'गसीला'।

गँह—स० [सं० ग्रहण] ग्रहण करना। पकड़ना। उदा०—एकै आस एकै बिसवास प्राण गँहवास।—घनानन्द।

गइंद*—पुं० =गयंद (हाथी)।

गइनाही*—स्त्री० [सं० गहन] १. गहनता। गंभीरता। २. किसी बात या विषय की पूरी जानकारी। गहन ज्ञान।

गइयर—पुं०, स्त्री० =गैयर।

गई—वि० स्त्री० [हिं० गया का स्त्री० रूप] १. जो बीत चुकी हो। बीती हुई। जैसे—गई रात। २. पुरानी। जैसे—गई बात।

मुहा०—गई करना या कर जाना=किसी अनुचित बात के संबंध में यह समझकर चुप हो जाना कि जाने दो, ध्यान मत दो।

गईबहोर—वि० [हिं० गया+बहुरि] १. बिगड़ा हुआ काम या बात बनानेवाला। २. खोई हुई चीज ला देनेवाला।

गउमुख—वि०, पुं० =गोमुख।

गउर†—पुं० =गौर (विचार)।

वि० =गौर (गोरा)।

गउरव*—पुं० =गौरव।

गउव—पुं० [सं० गवय] १. नील गाय। २. गौ। गाय। उदा०—गउव सिंघ रेंगहिं एक बाटा।—जायसी।

गऊ—स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

गऊघाट—पुं० [हिं०] गाय-बैलों आदि के पानी पीने के लिए बनाया हुआ ढालुआँ और बिना सीढ़ियों का घाट।

गकरिया—स्त्री० =गाकरी (लिट्टी)।

गक्खर—पुं० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार।

गगन—पुं० [सं० √गम (जाना)+युच—अन, ग आदेश] १. आकाश। आसमान।

मुहा०—गगन खेलना=नदी आदि के बहते हुए पानी का रह-रहकर उछलना। **(किसी चीज का) गगन होना**=उड़ते-उड़ते बहुत ऊपर आकाश में चले जाना। जैसे—कबूतर या पतंग का गगन होना।

२. आकाशस्थ ईश्वर या देव। उदा०—गगन कटोरहिं जगत बँधाएउ।—जायसी। ३. शून्य स्थान। ४. छप्पय नामक छंद का एक भेद। ५. अबरक। ६. रहस्य संप्रदाय में (क) अंतःकरण या हृदय (ख) ब्रह्म के रहने का स्थान या हृदय रूपी कमल।

गगन-कुसुम—पुं० [मध्य० स०] आकाश-कुसुम। कोई अलौकिक या अवास्तविक वस्तु।

गगनगढ़*—पुं० [सं०+हिं०] बहुत ऊंचा किला या महल।

गगन-गति—वि० [ब० स०] आकाश में चलनेवाला। आकाशचारी।

पुं० १. चन्द्रमा, सूर्य आदि ग्रह। २. देवता। ३. वायु। हवा। ४. पक्षी।

गगन-गिरा—स्त्री० [मध्य० स०] आकाशवाणी।

गगनचर—वि० [सं० गगन√चर (गति)+ट] आकाश में उड़ने या चलनेवाला। आकाशचारी।

पुं० १. ग्रह, नक्षत्र आदि। २. देवता। ३. पक्षी।

गगनचुंबी (बिन्)—वि० [सं० गगन√चुंब् (चूमना)+णिनि] इतना अधिक ऊंचा कि आकाश को चूमता हुआ जान पड़े। बहुत ऊंचा। अभ्रंकष। (स्काई स्क्रैपर)

गगन-धूलि—पुं० [सं० ष० त०] १. कुकुरमुत्ते का एक भेद। २. केतकी या केवड़े पर की सुगंधित धूल।

गगन-ध्वज—पुं० [ष० त०] १. सूर्य। २. बादल। मेघ।

गगन-पति—पुं० [ष० त०] इन्द्र।

गगन-भेड़—स्त्री० [हिं० गगन+भेड़] करांकुल या कूँज नामक जल-पक्षी।

गगनभेदी (दिन्)—वि० [सं० गगन√भिद (फाड़ना)+णिनि] १. आकाश को भेदने या फाड़नेवाला (शब्द या स्वर)। आकाशभेदी। २. बहुत अधिक ऊंचा।

गगन-मंडल—पुं० [ष० त०] १. पृथ्वी के ऊपर का आकाश रूपी घेरा या मंडल। २. हठ-योग की परिभाषा में, ब्रह्माण्ड (सिर में ऊपर की ओर का भीतरी भाग) और ब्रह्म-रंध्र।

गगन-रोमंथ—पुं० [ष० त०] अनहोनी या असंभव बात।

गगनवटी*—पुं० [सं० गगनवर्त्ती] सूर्य। (डिं०)

गगन-वाटिका—स्त्री० [स० त०] वैसी ही असंभव बात जैसी आकाश में वाटिका या बाग-बगीचे के होने की होती है। आकाश-कुसुम।

गगन-वाणी—स्त्री० =आकाशवाणी।

गगन-विहारी (रिन्)—[सं० गगन-वि०√हृ (हरण करना)+णिनि] आकाशचारी। गगनचर।

पुं० १. सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह। २. देवता।

गगन-सिंधु—स्त्री० [ष० त०] आकाश-गंगा।

गगन-स्पर्शन—पुं० [ष० त०] १. वायु। हवा। २. आठ मरुतों में से एक मरुत् का नाम।

गगन-स्पर्शी (शिन्)—वि० [सं० गगन√स्पृश् (छूना)+णिनि] आकाश को स्पर्श करनेवाला। बहुत अधिक ऊँचा।

गगन-स्पृह्(श्)—वि० [सं० गगन√स्पृश्+क्विप्] गगनस्पर्शी।

गगनांगना—स्त्री० [गगन-अंगना, मध्य० स०] अप्सरा।

गगनांबु—पुं० [गगन-अंबु, मध्य० स०] आकाश से गिरा हुआ अर्थात् वर्षा का जल। बरसाती पानी।

गगनाध्वग—वि०, पुं० [गगन-अध्वग, ष० त०] =गगनचर।

गगनानंग—पुं० [गगन-अनंग, स० त०] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पच्चीस मात्राएँ होती हैं।

गगनापगा—स्त्री० [गगन-आपगा, ष० त०] आकाश-गंगा।

गगनेचर—पुं० [अलुक् स०] १. ग्रह, नक्षत्र आदि। २. देवता। ३. चिड़िया। पक्षी।

वि० आकाश में उड़ने या चलनेवाला।

गगनोल्मुक—पुं० [गगन-उल्मुक, ष० त०] मंगलग्रह।

गगरा—पुं० [सं० गर्गर=दही मथने का बर्तन] [स्त्री० अल्पा० गगरी] ताँबे, पीतल आदि का बना हुआ पानी रखने का बड़ा घड़ा। कलसा। गागर।

गगरिया*—स्त्री० =गगरी।

गगरी—स्त्री० [हिं० गगरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा गगरा।

मुहा०—गगरी फोडना=मृतक के दाहकर्म की समाप्ति करना। उदा०—अत की बार गगरिआ फोरी। —कबीर।

गगल—पु० [स० गरल] साँप का जहर। सर्प-विष।

गगली—पु० [देश०] एक प्रकार का अगर या अगरु।

गगोरी—पु० [स० गर्ग] एक प्रकार का छोटा कीडा।

गच—स्त्री० [अनु०] किसी नरम या मुलायम चीज मे किसी कडी, नुकीली या पैनी चीज के धँसने अथवा धँमाने से होनेवाला शब्द। जैसे—कलेजे, तरबूज या लोकी मे गच से छुरी धँसना या धँसाना।

स्त्री० [चीनी कचु, तुर्की गज] १ चूने-सुर्खी का मसाला। २ चूने-सुर्खी से कूटकर बनाई हुई पक्की और साफ-सुथरी जमीन या फर्श। ३ चूने, सुर्खी आदि से दीवारो पर किया हुआ पलस्तर या लेप। ४ साफ-सुथरा तल या सतह। ५ सगजराहत या सिलखडी को फूँककर तैयार किया हुआ चूना। (प्लास्टर ऑफ पेरिस)

वि० बहुत ही चमकीले ओर साफ तलवाला। उदा०—ज्यौ गच कॉच बिलोकि सेन जड छाँह आपने तन की।— तुलसी।

गचकारी—स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] १ चूने, सुर्खी आदि को मिलाकर तैयार किए हुए मसाले से दीवारो का पलस्तर, जमीन का फर्श आदि बनाने का काम। २ उक्त प्रकार की बनावट के लिए गच पीटने का काम।

गचगर—पु० [हिं० गच +फा० गर=बनानेवाला] वह कारीगर या राज जो गच बनाता हो। गच पीटने और बनानेवाला मिस्तरी।

गचगीरी—स्त्री०=गचकारी।

गचना—स० [अनु० गच] १ बहुत अधिक कस या ठूसकर भरना।
†स० दे० 'गाँसना'।

गचपच—वि०=गिचपिच।

गचाका—पु० [हिं० गच से अनु०] गच से गिरने या बोलने का शब्द।
क्रि० वि० १ एकदम से। सहसा। २ पूरी तरह से। भरपूर। (बाजारू)

गच्चा|—पु० [अनु०] १ गड्ढा। गर्त्त। २ जोखिम, हानि आदि की सभावना या उसका स्थल। ३ ऐसा धोखा या भ्रम जिससे भारी हानि हो।

मुहा०—गच्चा खाना=धोखे मे आकर अपनी हानि कर बैठना।

गच्छ—पु०[स० √गम् (जाना)+क्विप्, तुक्, गत्√ छो (काटना)+क] १ पेट। गाछ। २ जैन साधुओ के रहने का मठ। ३ जैन साधु का गुरु-भाई।

गछना*—अ० [स० गच्छ=जाना] चलना। जाना।
स० १ देन, निर्वाह, व्यवहार आदि के लिए अपने ऊपर या जिम्मे लेना। २ चलाना। निभाना।

गजद (दा)*—पु० [स० गजै] हाथी।

गज—पु० [स० √गज् (मत्त होना)+अच्] [स्त्री० गजी] १ हाथी। २ दिग्गज। ३ आठ की सख्या। ४ दीवार के नीचे का पुश्ता। ५ महिषासुर का एक पुत्र। ६ राम की सेना का एक बदर। ७ रहस्य सप्रदाय मे, मन जो हाथी की तरह बलवान् होता है और जल्दी वश मे नही आता।

पु० [फा० गज] १ लबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह, तीन फूट अथवा छत्तीस इच के बराबर होती है। (लकडी नापने का गज अपवाद रूप से दो फुट या चौबीस इच का माना जाता है।) २ उक्त माप का वह उपकरण या साधन जो कपडे, लकडी, लोहे आदि का बना होता है। ३ लोहे का वह छड जिससे पुरानी चाल की बदूको मे बारूद भरते थे। ४ सारगी बजाने की कमानी। ५ पुरानी चाल का एक प्रकार का तीर। ६ वह पतली लकडी जो बैलगाडी के पहिये मे मूँडी से पुट्ठी तक लगाई जाती है। ७ इमारत मे लकडी की वह पटरी जो घोडिया के ऊपर रखी जाती है।

गजअसन*—पु०=गजाशन।

गजइलाही—पु० [फा० गज+इलाही] अकबरी गज जो ४१ अगुल का होता और इमारत के काम मे आता है।

गज-कद—पु० [ब० स०] हस्तिकद।

गजक—पु० [फा० कजक] १ नशीली वस्तु (जैसे—अफीम, भाँग, शराब आदि का सेवन करने के समय मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जानेवाली कोई चटपटी या स्वादिष्ठ चीज। जैसे—कबाब, पापड, समोसा आदि। २ गुड या चीनी का पाग बनाकर और उसमे अन्न के दाने, सूखे मेवे आदि डालकर जमाई जानेवाली एक प्रकार की पपडी। ३ तिल पपडी। ४ जलपान।

विशेष—पूरब मे यह शब्द प्राय स्त्रीलिंग मे बोला जाता है।

गजकरनआलू—पु० [स० गजक-र्णालु] अरुआ नामकी लता जिसमे लबा कद होता है।

गज-कुभ—पु० [ष० त०] हाथी के माथे पर दोनो ओर उठे या उभरे हुए अश।

गज-कुसुम—पु० [ब० स०] नागकेसर।

गज-केसर—पु० [ब० स०] एक प्रकार का बढिया धान।

गज-गति—स्त्री० [ष० त०] १ हाथी की चाल। २ हाथी की-सी मद और मस्त चाल। ३ एक प्रकार का वर्णवृत्त। ४ रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा मे शुक्र की स्थिति वा गति।
वि० हाथी की-सी मस्त चाल चलनेवाला। झूम-झूमकर चलनेवाला।

गज-गती—स्त्री० [फा० गज (नाप)+हिं० गति] कपडो की वह फुटकर बिक्री जो गज के हिसाब से नापकर होती हो। (पूरे थान या थोक की बिक्री से भिन्न)

गज-गमन—पु० [ष० त०] हाथी की-सी मद ओर मस्त चाल।

गजगा—पु० [स० गज से] हाथियो का एक प्रकार का गहना।

गजगामी (मिन्)—वि० [स० गज√गम्+णिनि] [स्त्री० गजगामिनी] हाथी की तरह झूम-झूमकर मस्ती से चलनेवाला।

गजगाह—पु० [स० गज-ग्राह से] हाथी या घोडे पर डाली जानेवाली झूल। पाखर।

गजगौन*—पु०=गजगमन।

गजगौनी—वि० स्त्री०=गजगामिनी। (गजगामी का स्त्री० रूप)

गजगौहर—पु० [हिं० गज+फा० गौहर] गजमोती। गजमुक्ता।

गज-घाव—पु० [स० गज+हिं० घाव] एक प्रकार का हथियार जिससे युद्धक्षेत्र मे हाथियो पर वार किया जाता था।

गज-चर्म (र्मन्)—पु० [ष० त०] १ हाथी का चमडा। २ एक प्रकार का चर्मरोग जिसमे शरीर का चमडा हाथी के चमडे की तरह कडा और खुरदरा हो जाता है।

गज-चिर्भिटा—स्त्री० [मध्य० स०] इंद्रायन।
गज-च्छाया—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग।
गजट—पुं० [अं० गजेट] वह राजकीय सामयिक पत्र जिसमें शासन-संबंधी सूचनाएँ प्रकाशित होती हैं। वार्त्तायिन (दे०)।
गज-ढक्का—स्त्री० [मध्य० स०] हाथी पर रखकर बजाया जानेवाला बड़ा धौंसा।
गजता—स्त्री० [सं० गज+तल्—टाप्] १. हाथी होने की अवस्था या भाव। २. हाथियों का झुंड या समूह।
गज-दंत—पुं० [ष० त०] १. हाथी का दांत। २. एक दांत के ऊपर निकलनेवाला दूसरा दांत। ३. वह पत्थर जो छज्जे का भार संभालने के लिए उसके नीचे लगाया जाता है। ४. दीवार में लगी हुई कपड़े टाँगने की खूँटी। ५. एक प्रकार का घोड़ा। ६. नृत्य में एक प्रकार का भाव प्रकट करने की मुद्रा।
गजदंती—वि० [सं० गजदंत+हिं० ई (प्रत्य०)] हाथी-दांत का बना हुआ। जैसे—गजदंती चूड़ा या चूड़ियां।
गज-दान—पुं० [ष० त०] १. किसी को हाथी दान करके देना। २. हाथी के मस्तक से बहनेवाला दान या मद।
गजधर—पुं० [फा० गज+हिं० धर] मकान बनानेवाला मिस्त्री। राज। मेमार।
गज-नक्र—पुं० [मध्य० स०] गेंडा।
गजनफ़र—पुं० [अ०] शेर। सिंह।
गजनवी—वि० [फा०] १. गजनी नगर का रहनेवाला। जैसे—महमूद गजनवी। २. गजनी नगर से संबंध रखनेवाला।
गजना*—अ० [सं० गर्जन] =गाजना (गरजना)।
गज-नाल—स्त्री० [ब० स०] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप जो हाथी पर रखकर चलाई जाती थी। २. वह बड़ी तोप जिसे हाथी खींचकर ले चलते थे।
गज-नासा—स्त्री० [ष० त०] हाथी की नाक अर्थात् सूँड।
गज-निमीलिका—स्त्री० [ष० त०] कोई चीज या बात देखते हुए भी यह प्रकट करना कि हम नहीं देख रहे हैं। जान-बूझकर अनजान बनना।
गजनी—पुं० [फा० मि० सं० गञ्जन] [स्त्री० गजनवी] अफगानिस्तान के एक नगर का नाम जो महमूद की राजधानी थी।
स्त्री० एक प्रकार की चिकनी मिट्टी। गाजनी।
गज-पति—पुं० [ष० त०] १. बहुत बड़ा हाथी। २. वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों। ३. कलिंग देश के पुराने राजाओं की उपाधि।
गजपाँव—पुं० [हिं० गज+पाँव] एक प्रकार का जलपक्षी।
गजपाय*—पुं० =गजपाल।
गजपाल—पुं० [सं० गज्√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] महावत। हाथीवान।
गज-पिप्पली—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पौधा जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं। गजपीपल।
गजपीपल—पुं० =गज-पिप्पली।
गज-पुट—पुं० [मध्य० स०] धातुओं के फूंकने की एक रीति। (वैद्यक)
गज-पुर—[ष० त०] हस्तिनापुर।
गज-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] नाग-पुष्पी नामक पौधा।
गज-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] शल्लकी या सलई (वृक्ष और उसकी लकड़ी)।
गज-बंध—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी छंद में अक्षरों की योजना इस प्रकार होती है कि वे हाथी के चित्र में बैठाये जा सकते हैं।
गज-बंधन—पुं० [ष० त०] १. हाथी बांधने का खूँटा। २. हाथी बांधने का सिक्कड़।
गजब—पुं० [अ० ग़ज़ब] १. भीषण कोप। बहुत तेज गुस्सा। कोप। प्रकोप।
पद—**गजब इलाही**=ईश्वर का या दैवी कोप।
२. उक्त प्रकार के कोप के कारण पड़नेवाली बहुत बड़ी विपत्ति या संकट।
मुहा०—**(किसी पर) गजब गुजारना**=ऐसा काम करना जिससे किसी पर बहुत अधिक विपत्ति पड़े। उदा०—गजब गुजारत गरीबन की धार पै। —पद्माकर **(किसी पर) गजब ढाना**=किसी के लिए भीषण विपत्ति या संकट उत्पन्न करना।
३. बहुत बड़ा अनिष्ट। अनर्थ। ४. अन्याय। जुल्म।
मुहा०—**गजब ढाना**=अन्याय या जुल्म करना। जैसे—ये आंखें गजब ढाती हैं।
५. बहुत ही अद्भुत या विलक्षण काम या चीज।
पद—**गजब का**=जो गुण, मात्रा आदि के विचार से बहुत बढ़-चढ़कर हो। बहुत अधिक और असाधारण। जैसे—गजब की शोखी।
गज-बाँक—पुं० =गज-बाग।
गज-बाग—पुं० [सं० गज+फा० बाग=लगाम] हाथी को चलाने का अंकुश।
गजबीला—वि० [हिं० गजब] [स्त्री० गजबीली] गजब करने या ढानेवाला।
गजबेली—स्त्री० [सं० गज+वल्ली] कांति-सार लोहा।
गज-भक्षक—पुं० [ब० स०] पीपल।
गज-मणि—उभय० [मध्य० स०] गज-मुक्ता।
गज-मद—पुं० [ष० त०] मत्त हाथी के मस्तक से बहनेवाला दान या मद।
गजमनि—स्त्री० =गज-मणि (गजमुक्ता)।
गज-मुक्ता—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जो हाथी के मस्तक में स्थित माना जाता है। गज-मणि।
गज-मुख—पुं० [ब० स०] वह जिसका मुख हाथी के समान हो, अर्थात् गणेश जी।
गज-मोचन—पुं० [ष० त०] विष्णु का वह रूप जिसे धारण करके उन्होंने ग्राह से एक हाथी का उद्धार किया था।
गजमोती—पुं० [सं० गजमौक्तिक, प्रा० गजमोत्तिअ] गज-मुक्ता।
गज-मौक्तिक—पुं० [मध्य० स०] गज-मुक्ता।
गजर—पुं० [सं० गर्ज० हिं० गरज से वर्ण-विपर्यय] १. प्राचीन काल में, एक एक पहर पर समय-सूचक घंटा या घड़ियाल बजने का शब्द। पागर। २. बहुत तड़के या प्रभात के समय बजनेवाले घंटे या घड़ियाल का शब्द। उदा०—सुबह हुई, गजर बजा, फूल खिले हवा चली। —कोई शायर।
मुहा०—**गजरदम या गजरबजे**=बहुत तड़के या सवेरे।
३. आज-कल चार, आठ और बारह बजने पर उतनी बार घंटा बज चुकने के बाद फिर उतनी ही बार परंतु जल्दी जल्दी फिर उतने ही घंटे बजने का

शब्द। ४. आज कल की घड़ियों में कुछ विशिष्ट यांत्रिक क्रिया से जगाने आदि के लिए घंटी के जल्दी जल्दी और गन-गन करके बजने का शब्द।
पुं० [हिं० गजर बजर=मिला-जुला] लाल और सफेद मिला हुआ गेहूँ।

गज-रथ—पुं० [मध्य० स०] वह रथ जिसे हाथी खींचते हों।

गजर-दम—क्रि० वि० [हिं० गजर+फा० दम] प्रभात के समय। बहुत सबेरे। तड़के।

गजर प्रबंध—पुं० [हिं० गजर+सं० प्रबंध] नाच-गाना आरंभ करने से पहले गाने और बजानेवालों का अपना स्वर और बाजे ठीक करना या मिलाना।

गजर बजर—वि० [अनु०] बिना समझे-बूझे यों ही एक दूसरे के साथ मिलाया या रखा हुआ।
पु० बेमेल चीजों की एक दूसरी में मिलावट।

गजर-भत्ता†—पुं०=गजर भात।

गजरभात—पुं० [हिं० गाजर+भात] गाजर और चावल उबालकर बनाया जानेवाला मीठा भात।

गजरा—पुं० [हिं० गंज=समूह] १. फूलों की घनी गुँथी हुई बड़ी माला। हार। २. उक्त प्रकार की वह छोटी माला जो कलाई पर गहने के रूप में पहनी जाती है। ३. मशरू नामका रेशमी कपड़ा।
पुं० [हिं० गाजर] गाजर के पत्ते जो चौपायों को खिलाये जाते हैं।

गजराज—पुं० [ष० त०] बहुत बड़ा हाथी।

गजरी—स्त्री० [हिं० गजरा] एक गहना जो स्त्रियाँ कलाई में पहनती हैं।
स्त्री० [हिं० गाजर] एक प्रकार की छोटी गाजर।

गजरौट—स्त्री० [हिं० गाजर+औट (प्रत्य०)] गाजर की पत्ती। गजरा।

गजल—स्त्री० [फा० गजल] १. वह कविता जिसमें नायिका के सौंदर्य और उसके प्रति प्रेम का वर्णन हो। २. फारसी और उर्दू में एक प्रकार का पद्य जिसमें दो-दो कड़ियों का एक-एक चरण होता है तथा प्रत्येक दूसरी कड़ी में अनुप्रास होता है।
विशेष—(क) इसके गाने की पद्धति दिल्ली से चली थी। (ख) यह कई प्रकार के हलके रागों और धुनों में गाई जाती है। (ग) एक गजल के विभिन्न चरणों में एक-एक स्वतंत्र भाव होता है।

गजलील—पुं० [ब० स०] ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

गज-वदन—पुं० [ब० स०] गणेश जी।

गजवान†—पुं०=हाथीवान (महावत)।

गज-विलसिता—स्त्री० [ब० स०] एक प्रकार का छंद या वृत्त।

गज-वीथी—स्त्री० [ष० त०] १. हाथियों की पंक्ति। २. शुक्र की गति के विचार से रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रों का वर्ग जिसके बीच से होकर शुक्र चलता है।

गज-व्रज—पुं० [सं० गज√व्रज (गति)+अच्, उप० स०] हाथियों पर चलनेवाली सेना।
वि० हाथी की-सी चालवाला।

गज-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ हाथी बाँधे जाते हों। फीलखाना।

गज-स्नान—पुं० [ष० त०] हाथियों की तरह किया जानेवाला स्नान जिसमें वे नहा चुकने के बाद फिर ढेर सी धूल और मिट्टी उड़ाकर अपना सारा शरीर गंदा कर लेते हैं। फलतः ऐसा काम जो कर चुकने के बाद न करने के समान कर दिया जाय।

गजही—स्त्री० [हिं० गाज=फेन] वह मथानी जिससे कच्चा दूध मथकर मक्खन निकाला जाता है।

गजा*—पुं० [?] वह डंडा जिससे बड़ा ढोल या नगाड़ा बजाया जाता है।

गजाजीव—पुं० [सं० गज-आ√जीव् (जीना)+अप्] वह जिसकी जीविका हाथी पालने अथवा हाथी चलाने से चलती हो।

गजाधर—पुं०=गदाधर।

गजानन—पुं० [गज-आनन, ब० स०] गणेश जी, जिनका मुँह हाथी के समान है।

गजायुर्वेद—पुं० [गज-आयुर्वेद, ष० त०] वह शास्त्र जिसमें हाथियों के रोगों और उनके निदान का विवेचन होता है।

गजारि—पुं० [गज-अरि, ष० त०] १. हाथी का शत्रु अर्थात् शेर। सिंह। २. एक प्रकार का साल वृक्ष।

गजारी*—पुं०=गजारि।

गजारोह—पुं० [सं० गज-आ√रुह (चढ़ना)+अण्] १. हाथी पर चढ़ना। २. महावत।

गजाल—पुं० [देश०] १. एक प्रकार की मछली। २. खूँटा या खूँटी।

गजाशन—पुं० [गज-अशन, ष० त०] पीपल का पेड़।

गजासुर—पुं० [गज-असुर, मध्य० स०] एक दैत्य जिसका वध शिवजी ने किया था।

गजास्य—पुं० [गज-आस्य, ब० स०] गणेश जी।

गजिया—स्त्री० [हिं० गज] तारकशों और बिटाई करनेवालों का एक औजार।

गजी—पुं० [फा० गज़] एक प्रकार का देशी मोटा सस्ता कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम। जैसे—गजी-गाढ़ा पहनना। (अर्थात् देशी, मोटा और सस्ता कपड़ा पहनना)
वि०, पुं० [सं० गज+इनि] गजारोही।
स्त्री० [सं० गज+ ङीष्] हाथी की मादा। हथिनी।

गजेंद्र—पुं० [गज-इंद्र, ष० त०] १. हाथियों का राजा, ऐरावत। २. बहुत बड़ा हाथी। गजराज। ३. पुराणानुसार वह हाथी जिसे जल में ग्राह (घड़ियाल) ने पकड़ लिया था और जिसे भगवान् कृष्ण ने आकर छुड़ाया था।

गजेंद्र-गुरु—पुं० [ष० त०] रुद्रताल का एक भेद। (संगीत)

गज्ज—स्त्री०=गरज (गर्जन)।

गज्जन—पुं० दे० 'गजनी'।

गज्जना*—अ०=गरजना।

गज्जर†—पुं० [अनु०] ऐसी भूमि जिसमें कीचड़ होने के कारण पैर धँसते हों। दलदल।

गज्जल—पुं० [?] अंजीर।

गज्जूह*—पुं० [सं० गज+यूथ] हाथियों का झुंड या दल।

गज्झा†—पुं० [सं० गज्ज=शब्द] तरल पदार्थ में होनेवाले बहुत से छोटे-छोटे बुलबुलों का समूह। गाज। फेन।

मुहा०—गज्झा छोड़ना देना या मारना=मछली का पानी के अंदर से बुलबुले फेंकना।

पुं० [सं० गंज, फा० गंज] १. ढेर। राशि। २. कोश। खजाना। ३. धन-संपत्ति। दौलत।

मुहा०—गज्झा मारना=अनुचित रूप से और एक साथ बहुत-सा धन प्राप्त करना।

४. फायदा। मुनाफा। लाभ। (बाजारू)

गझिन†—वि० [हिं० गंजना] १. घना। सघन। २. गाढ़ा और मोटा (कपड़ा या उसकी बुनावट)।

गट—पुं० [अनु०] किसी तरल पदार्थ को पीते समय गले से होनेवाला शब्द।

पद—गट से=एक दम से। एक बारगी।

पुं० [सं० गण] १. ढेर। राशि। समूह। २. जत्था। झुंड।

गटई†—स्त्री० [सं० कण्ठ या हिं० गट] गरदन। गला।

†स्त्री० १. =गिट्टी। २. =गोटी।

गटकना—अ० [सं० कण्ठ या हिं० गट] कोई चीज इस प्रकार खाना या पीना कि गले से गट शब्द हो।

स० १. कोई चीज खाना, पीना या निगलना। २. हड़पना।

गटकीला—वि० [हिं० गटक+ईला (प्रत्य०)] १. जो गटका जा सके। गटके जाने के योग्य। २. जिसे गटकने को स्वभावतः जी चाहे। उदा०—घर घर मावन गटकीले।—नारायण स्वामी।

गटगट—पुं० [अनु०] तरल पदार्थ को निगलने या पीने के समय गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० गले से उक्त प्रकार का शब्द करते हुए, जल्दी जल्दी और तेजी से। जैसे-गटगट सारी बोतल पी जाना।

गटना†—स०[सं० ग्रन्थन, प्रा० गंठन] १. अच्छी तरह या कस कर पकड़ना। उदा०—अपनी रुचि जितहीं तित खैंचति इंद्रिय ग्राम गटी।—सूर। २. किसी से युक्त या संबद्ध करना। मिलाना या लगाना। ३. गाँठ-बाँधना या लगाना।

अ० किसी से बँधा, मिला या लगा होना। युक्त होना।

गटपट—स्त्री० [अनु०] १. दो व्यक्तियों में होनेवाली घनिष्ठता। २. संभोग। सहवास। ३. विभिन्न वस्तुओं में होनेवाला मेल। मिलावट।

गटर—वि० [?] १. बड़ा। २. अधिक।

गटरमाला—स्त्री० [हिं० गटर+माला] बड़े दानोंवाली माला।

गटा†—पुं० =गट्टा।

गटागट—क्रि० वि०=गटगट।

गटापारचा—पुं० [मलाया देश०] १. एक प्रकार का गोंद। २. उक्त गोंद का वह रूप जो उसे रासायनिक क्रियाओं से स्वच्छ तथा कड़ी करने पर होता है तथा जिससे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

गटी—स्त्री० [सं० ग्रन्थि, पा० गंठि] गाँठ।

स्त्री० =गट (समूह)।

क्रि० वि० [हिं० गट=समूह] बहुत अधिक।

गट्ट—पुं० =गट।

गट्टा—पुं० [सं० ग्रन्थ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ] १. गाँठ। २. हथेली और पँहुचे के बीच का जोड़। कलाई। ३. पैर की नली और तलवे के बीच की गाँठ। ४. नैचे के नीचे की वह गाँठ जहाँ दोनों नयें मिलती हैं और जो फरशी या हुक्के के मुँह पर रहती है। ५. किसी चीज का मोटा और कड़ा बीज। जैसे—कमल-गट्टा। ६. एक प्रकार की देहाती मिठाई।

गट्टी—स्त्री० [देश०] १. जहाज या नाव में पाल बाँधने के खंभे के नीचे की चूल। (लश०) २. नदी का किनारा।

गट्टू†—पुं० [हिं० गट्टा] दस्ता। मुठिया।

गट्ठर—पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठरी] १. बड़े कपड़े में रख, लपेट तथा गाँठ लगाकर बाँधा हुआ रूप। जैसे—धोबी के कपड़ों का गट्ठर। २. रस्सियों आदि से बँधा हुआ सामान। जैसे—घास या लकड़ियों का गट्ठर।

मुहा०—गट्ठर साधना=घुटनों को छाती से लगाकर और ऊपर से हाथ बाँधकर अर्थात् सारे शरीर को गट्ठर का रूप देकर ऊँचाई पर से पानी में कूदना।

गट्ठा—पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. गट्ठर (दे) २. प्याज, लहसुन आदि की गाँठ। ३. जरीब का बीसवाँ भाग जो तीन गज का होता है। कट्ठा।

गट्ठी—स्त्री० १. =गठरी। २. =गाँठ।

गठकटा—वि०=गँठ-कटा।

गठजोड़ा (जोरा)—पुं०=गँठ-जोड़ा (गँठबंधन)।

गठडंड—पुं० [हिं० गड्ढा+डंड] एक प्रकार का डंड। (व्यायाम)

गठन—स्त्री० [सं० घटन] १. गठे हुए होने की अवस्था या भाव। २. वह अवस्था या स्थिति जिसमें किसी वस्तु के विभिन्न अंग या अवयव किसी खास ढंग से बने हुए दिखाई पड़ते हों। बनावट। रचना।

गठना—अ० [हिं० गाँठना] १. दो वस्तुओं का परस्पर मिल कर एक होना। जुड़ना। सटना।

पद—गठा-बदन=हृष्ट-पुष्ट शरीर।

२. मोटी सिलाई होना। बड़े-बड़े टाँके लगना। जैसे—जूता गठना। ३. कपड़ों आदि की बुनावट। ४. गुप्त परामर्श, विचार, षड्यंत्र आदि में सम्मिलित होकर उसके निश्चय से सहमत होना। ५. अच्छी तरह निर्मित होना या बनना। ६. आपस में खूब मेल-मिलाप और साहचर्य होना। ७. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का संभोग होना।

गठबंधन—पुं०=गँठबंधन।

गठरी—स्त्री० [हिं० गट्ठर का स्त्री० और अल्पा०] १. किसी वस्तु अथवा वस्तुओं को कपड़े से चारों ओर से लपेटकर गाँठ बाँधने पर बननेवाला रूप। छोटा गट्ठर।

मुहा०—गठरी बाँधना=(असबाब बाँधकर) यात्रा की तैयारी करना। **(किसी को) गठरी कर देना**=मार-पीटकर या बाँधकर बेकाम कर देना।

२. लाक्षणिक अर्थ में, कमाई या पूँजी। धन। जैसे—घबराओ मत, उस बुढ़िया की गठरी तुम्हीं को मिलेगी।

गठरेवाँ—पुं० [हिं० गाँठ] चौपायों का एक रोग।

गठवाँसी—स्त्री० [हिं० गट्ठा+अंश] कट्ठे वा बिस्वे का बीसवाँ अंश। बिस्वांसी।

गठवाई—स्त्री० [हिं० गाठना] (जूता) गठवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गठवाना—स० [हि० गाठना] १ गठने या गाँठने का काम दूसरे से कराना। २ बडी और मोटी गाँठें लगवाना। जैसे—जूता गठवाना। ३ जोड लगवाना। ४ प्रसग या सभोग कराना।

गठा†—पु०=गट्ठा।

गठाना—स०=गठवाना।
पु० [हि० घुटना] नदी का वह भाग जहाँ घुटने भर जल हो। कम गहरा स्थान। (माँझी)
स०=गठवाना।

गठानी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पुराना देहाती कर।

गठाव—पु० [हि० गठना] गठे होने का भाव। गठन।

गठिआ—स्त्री०=गठिया।

गठित—वि० [हि० गठा] गठा हुआ। (असिद्धरूप)

गठिबध—पु०=गँठबधन।

गठिया—स्त्री० [हि० गाँठ] १ टाट का वह थैला या बोरा जिसमे घोडो, बैलो आदि पर लादने के लिए अनाज भरा जाता है। खुरजी। २ कोरे कपडो आदि की वह बडी गठरी जो बाहर भेजने के लिए बाँधी जाती है। ३. शरीर के अगो की गाँठो या जोडो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे पीडा और सूजन होती है। (रियुमेटिज्म) ४ पौधो या वृक्षो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

गठियाना†—स० [हि० गाँठ] १ किसी वस्तु के दो छोरो अथवा दो विभिन्न वस्तुओ के दो छोरो को जोडने या बाँधने के लिए उनमे गाँठ लगाना। जैसे—टूटे हुए धागे को गठियाना। २ कोई चीज बाँधकर ऊपर से गाँठ लगाना। जैसे—धोती के पल्ले मे पैसे गठियाना।

गठिवन—पु० [स० ग्रथिपर्ण] मँझोले आकार का एक पहाडी पेड जिसकी पत्तियो मे जगह-जगह गाँठे होती है। इसकी कलियाँ औषध के काम आती है।

गठीला—वि० [हि० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमे वहुत-सी गाँठे-पडी हो। गाँठोवाला।
वि० [हि० गठन] १ जिसकी गठन या बनावट अच्छी और सुदर हो। गठा हुआ। । २ हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

गठुआ—पु० [हि० गाँठ] १ कपडे का वह टुकडा जिससे जुलाहे ताने के तागो को गठकर ठस करते है।

गठुवा—पु०=गठुआ।

गठौंद†—स्त्री० [हि० गाँठ+बध] १ गाँठ बाँधने की क्रिया या भाव। २ थाती। धरोहर।

गठौत—स्त्री० [हि० गठना] १ गँठ-बधन। २ मेल-मिलाप या सग-साथ। ३ आपस मे अच्छी तरह सोच-समझकर तै की हुई गुप्त बात। ४ किसी काम या बात की उपयुक्तता।

गठौती—स्त्री०=गठौत।

गडग—पु० [हि० गढ+अग] अस्त्र-शस्त्र, बारूद आदि रखने का स्थान।
पु० [स० गर्व] १ घमड। शेखी। २ आत्म-श्लाघा।

गडगिया†—वि० [हि० गडग] १ डीग मारनेवाला। शेखीबाज। २ बहुत बढ-बढकर बातें करनेवाला।

गड़त—स्त्री० [हि० गाडना] १ अभिचार या टोटके के लिए, मत्र आदि पढकर कोई चीज कही गाडने की क्रिया। २ उक्त प्रकार से गाडी जानेवाली चीज।

गड—पु० [स० √गड् (सीचना)+अच्] १ ओट। आड २ घेरा। मडल। ३ चार-दीवारी। प्राचीर। ४ गड्ढा। ५ खाई।

गडक—पु० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गडकना—अ० [अनु०] गड-गड शब्द होना।
अ० [अ० गर्क] १ डूबना। २ नष्ट होना।
अ०=गरजना।

गडकाना—स० [अनु० गड+क] गड-गड शब्द उत्पन्न करना। गडगडाना।
स०=गरकाना (गरक करना या डुबाना)।

गडक्क†—पु० [अ० गर्क] १ डूबने या डुबाने से होनेवाला शब्द। २ पानी की उतनी गहराई जितने मे आदमी डूब सके।

गडगज—पु०=गरगज।

गडगडा—पु० [गड गड शब्द से अनु०] लबी नली या सटकवाला बडा हुक्का।

गडगडाना—अ० [हि० गडगड] १ गडगड होना। जैसे—हुक्का गडगडाना। २ गरजना।
स० गड-गड शब्द उत्पन्न करना।

गड़गडाहट—स्त्री० [हि० गडगडाना] गडगड रूप मे होने या गडगडाने का शब्द। जैसे—गाडी या बादलो की गडगडाहट।

गड़गडी—स्त्री० [हि० गडगड] एक प्रकार की बडी डुग्गी या छोटा नगाडा।

गडगूदड—पु० [हि० गूदड] चिथडा। लत्ता।

गडच्चा†—पु० 'दे०' 'गच्चा'।

गड़दार—पु० [हि० गँडासा+फा० दार] १ वह व्यक्ति जो मतवाले हाथी को सँभालने के लिए हाथ मे भाला लेकर उसके साथ साथ चलता है।* २ महावत।

गड़ना—अ० [स० गर्त्त, प्रा० गड्ड=गड्ढा] १ हिन्दी 'गाडना' का अकर्मक रूप। २ जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्ढे मे गाडा जाना। जैसे—तार का खभा गडना, कब्र मे मुरदा या लाश गडना।
मुहा०—गडे मुरदे उखाड़ना=पुरानी या बीती हुई बाते फिर से उठाकर उनके सम्बन्ध मे झगडना या तर्क-वितर्क और वाद-विवाद करना।
३ ऊपर से किसी प्रकार का दबाव पडने पर नीचेवाले तल मे धँसना या प्रविष्ट होना।
मुहा०—(लज्जा के मारे) जमीन मे गडना=लज्जा के कारण ऐसी स्थिति मे होना कि मुँह दिखाने या सिर उठाने का साहस न होता हो। जैसे—मै तो उनकी बाते सुनकर लज्जा के मारे जमीन मे गड गया।
४ किसी चीज का कुछ अश जमीन के अन्दर इस प्रकार जमना या स्थापित होना कि वह चीज वहाँ स्थित हो जाय। जैसे—किले पर झडा गडना। ५ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे, कही प्रविष्ट होकर स्थापित या स्थित होना। उदा०—उर मे माखन-चोर गडे। ६ किसी कडी और नुकीली चीज का शरीर के किसी अग मे कुछ छेद करते हुए उसके अन्दर धँसना या पहुँचना। चुभना। जैसे—पैर मे काँटा या हाथ मे सूई गडना। ७ किसी परकीय या बाह्य पदार्थ के शरीर मे आने या होने के कारण उसके दबाव से किसी अग मे पीडा या कष्ट होना। जैसे—भोजन न पचने के कारण पेट गडना, धूल का कण पडने के कारण

आँख गड़ना। ८. लाक्षणिक रूप में किसी अनुचित, अनुपयुक्त या अशोभन बात का मन में कुछ कसक या खटक उत्पन्न करना। खटकना। जैसे—इतने सुन्दर चित्रों के बीच में वह भद्दा चित्र हमें तो गड़ रहा था। ९. आँख या ध्यान के सम्बन्ध में, किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी चीज या बात पर स्थित या स्थिर होना। जमना। जैसे—(क) मेरी आँखें उसके चेहरे पर गड़ी थीं। (ख) सबका ध्यान उसकी बातों पर गड़ा था।

गड़पंख—पुं० [सं० गरुड़+हिं० पंख] १. एक प्रकार की बड़ी चिड़िया। २. लड़कों का एक प्रकार का खेल, जिसमें वे किसी को तंग करने के लिए पक्षी की तरह बनाकर बैठाते हैं।

गड़प—स्त्री० [अनु०] १. पानी, कीचड़ आदि में किसी चीज के सहसा गिरने या डूबने का शब्द। २. किसी वस्तु को बिना चबाये निगल जाने की क्रिया या भाव।

पद—गड़प से=चटपट। तुरन्त।

गड़पना—स० [अनु० गड़प] १. किसी वस्तु को बिना चबाये निगल जाना। जल्दी में खा या निगल लेना। २. किसी की चीज लेकर पचा जाना। अनुचित रूप से दबा बैठना। हड़पना।

गड़प्पा—पुं० [हिं० गाड़] १. बड़ा गड्ढा। २. पशुओं को फँसाने के लिए बनाया हुआ गड्ढा। ३. बहुत बड़े धोखे की जगह।

गड़बड़—वि० [अनु०] १. जिसमें ठीक क्रम, परम्परा, व्यवस्था आदि का अभाव हो। विशृंखल। जैसे—तुम्हारा यह लेखा बहुत गड़बड़ है। २. बिना किसी क्रम, नियम या व्यवस्था के अथवा खराब या भद्दी तरह से आपस में मिला या मिलाया हुआ। जैसे—तुमने अलमारी की सब पुस्तकें गड़बड़ कर दीं। ३. बे-ठिकाने या बे-सिर-पैर का। अंड-बंड। ऊट-पटाँग। जैसे—तुम्हारी इस तरह की गड़बड़ कार्रवाई यहाँ नहीं चलने पायेगी।
पुं० [स्त्री० गड़बड़ी, वि० गड़बड़िया] १. ऐसी अवस्था जिसमें क्रम, नियमितता, व्यवस्था आदि का बहुत अधिक और खटकनेवाला अभाव हो। जैसे—तुम जहाँ पहुँचते हो, वहीं कुछ न कुछ गड़बड़ करते हो। २. असावधानता, भूल, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ कर देने की क्रिया या भाव। ३. उत्पात। उपद्रव।

गड़बड़-घोटाला—पुं० दे० 'गड़बड़ झाला'।

गड़बड़-झाला†—पुं० [अनु०] ऐसा काम, बात या स्थिति जिससे बहुत अधिक गड़बड़ी हो।

गड़बड़ा†—पुं०=गड़प्पा।

गड़बड़ाध्याय—पुं० दे० 'गड़बड़-झाला'।

गड़बड़ाना—अ० [हिं० गड़बड़] १. गड़बड़ी, चक्कर या धोखे में पड़ना। २. क्रम आदि लगाने के समय भूल करना। भ्रम में पड़ना। ३. अस्त-व्यस्त या तितर-बितर होना।
स० १. गड़बड़ी, चक्कर या धोखे में डालना। २. भ्रम में डालना। ३. क्रम आदि के विचार से आगे-पीछे या इधर-उधर करना। ४. अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

गड़बड़िया—वि० [हिं० गड़बड़] १. जो कोई काम ठीक-ठिकाने अथवा व्यवस्थित रूप से न करता हो। क्रम, व्यवस्था आदि बिगाड़नेवाला। गड़बड़ करनेवाला। २. उपद्रव या दंगा करनेवाला। अशांति फैलानेवाला।

गड़बड़ी—स्त्री०=गड़बड़।

गड़रातवा—पुं० [देश० गड़रा=गाढ़ा+हिं० तवा] एक प्रकार का लोहा जो किसी समय मध्यभारत की खानों से निकलता था।

गड़रिया—पुं० दे० 'गड़ेरिया'।

गड़री—पुं०=गड़ेरिया।

गड़रू—पुं० दे० 'गुड़रू'।

गड़-लवण—पुं० [सं० गर्तलवण वा गडलवण] साँभर नमक।

गड़वाँत—स्त्री० [हिं० गाड़ी+बाट] कच्ची सड़क पर बना हुआ गाड़ी के पहियों का चिह्न। लीक।

गड़वा†—पुं० १.=गाड़ा। २.=गड़ुआ।

गड़वात—स्त्री० [हिं० गाड़ना] १. कोई चीज जमीन में गाड़ने की क्रिया। २. गड्ढा खोदने का काम। ३. जमीन पर पड़ा हुआ गाड़ियों के पहियों का निशान।

गड़वाना—स० [हिं० गाड़ना का प्रे० रूप] गाड़ने का काम किसी से कराना। गाड़ने में लगाना।
स० [हिं० गड़ाना] गड़ाने का काम दूसरे से कराना।

गड़हन—पुं० [हिं० जड़हन का अनु० ?] एक प्रकार का धान। उदा०—गड़हन, जड़हन, बड़हन मिला। —जायसी।

गड़हा—पुं० [स्त्री० अल्पा० गड़ही]=गड्ढा।

गड़ा—पुं० [हिं० गड़] कटी हुई फसल के डंठलों का ढेर। गाँज। खरही।
पुं० [गण=समूह] ढेर। राशि।

पद—गड़ा-बँटाई। (देखें)

गड़ाकू—स्त्री० [सं० गल] एक प्रकार की मछली।

गड़ाना—स० [हिं० गड़ना] हिं० गड़ना का स० रूप। चुभाना। कोई नुकीली तथा कड़ी चीज किसी के अंदर धँसाना।
स० दे० 'गड़वाना'।

गड़ाप—पुं० [अनु०] जल में कोई भारी वस्तु गिरने या फेंकने से होने-वाला शब्द।

गड़ापा—पुं०=गड़प्पा।

गड़ा-बँटाई—स्त्री० [हिं० गड़ा=गाँज+बँटाई] फसल की वह बँटाई जिसमें वह दाएँ जाने के पहले डंठलों आदि के सहित बाँटी जाती है। काटकर रखी हुई फसल की बँटाई।

गड़ायत—वि० [हिं० गड़ना] गड़ने, चुभने या धँसनेवाला।

गड़ारी—स्त्री० [सं० गंड=चिह्न] १. मंडलाकार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २. घेरा। मंडल। जैसे—गड़ारीदार पाजामा। ३. वृत्ताकार चिह्न या धारी। आड़ी-तिरछी रेखाएँ। जैसे—रुपए की औंवठ पर की गड़ारियाँ। ४. वह छोटा गोल पहिया जो लोहे के छड़ के चारों ओर घूमता है और जिस पर मोटी रस्सी लगाकर नीचे से भारी चीजें उठाई या ऊपर खींची जाती हैं। घिरनी। (पुली) जैसे—कूएँ की गड़ारी। ५. उक्त के दोनों किनारों के बीच की दबी हुई जगह जिसमें रस्सी रखी जाती है। ६. एक प्रकार की घास।

गड़ारीदार—वि० [हिं० गड़ारी+फा० दार] १. जिस पर गड़ारियाँ अर्थात् गंडे या धारियाँ पड़ी हों। जैसे—गड़ारीदार रुपया, गड़ारीदार कसीदा। २. जिसमें छोटे-छोटे घेरे हों या पड़ते हों। जैसे—गड़ारी-दार पाजामा=चौड़ी मोहरी का पाजामा।

गडावन—पु०[स० गड-लवण] एक प्रकार का नमक।

गडासा—पु०=गँडासा।

गडि—पु० [स० √गड् (मुख का एक देश होना)+इन्] १ बच्चा। बछडा। २ जल्दी न चलनेवाला या मट्ठर बैल।

गडियार—वि०=गरियार।

गडिवारा—पु० [स्त्री० गडिवारिन]=गाडीवान।

गडु—पु० [स० √गड्+उन्] १ रोग के रूप मे शरीर के किसी अग मे उठी हुई गाँठ। जैसे—कूबड, बतौरी आदि। २ गड-माला नामक रोग।
|वि० [हि० गडना] गडने या चुभनेवाला।
|वि०=गुरु (भारी)।

गडुआ—पु० [स० गडु] [स्त्री० अल्पा० गडई वा गडुई] एक प्रकार का टोंटीदार लोटा।

गडुई—स्त्री० [हि० गडुआ का स्त्री० अल्पा० रूप] पानी रखने का छोटा गडुआ। झारी।

गडुक—पु० [स० गडु√कै (प्रतीत होना)+क] टोंटीदार लोटा। गडुआ।

गडुर†—पु० दे० 'गडुल'।
|पु०=गरुड।

गडुल—पु०[स० गडु+ल] वह व्यक्ति जिसका कूबड निकला हो।
वि० कुबडा। कुब्ज।

गडुलना—पु०=गडोलना।

गडुवा|—पु० दे० 'गडुआ'।

गडेर—पु० [स० √गड्+एरक्] बादल। मेघ।

गडेरिया—पु० [स० गड्डरिक, प्रा० गड्डरिअ] [स्त्री० गडेरिन] १ भेडे पालनेवाली एक प्रसिद्ध जाति।
पद—गडेरिया पुराण=गडेरियो की-सी या गँवारू बात-चीत और कथा-कहानियाँ।
२ उक्त जाति का पुरुष। वह जो भेडे चराता या पालता हो। ३ रहस्य सप्रदाय मे, ज्ञान जो मनुष्य को परमात्मा की ओर ले जाता है।

गडेरुआ—पु० [स० गण्डोल=ग्रास] चौपायो का एक रोग।

गडैता—पु० [देश०] खैरे रग का एक प्रकार का लबा साँप जिसकी पीठ पर गडारियाँ होती है।

गडोना|—पु० [?] एक प्रकार का पान। गडौना।
†स०=गडाना (चुभाना)।

गडोल—पु० [स० √गड्+ओलच्] १. ग्रास। कौर। २ गुड।

गडोलना†—पु० [हि० गाडी+ओला, ओलना (प्रत्य०)] बच्चो के खेलने की छोटी गाडी।

गडौना—पु० [हि० गाडना] एक प्रकार का पान जिसे पकाने के लिए जमीन मे गाडकर रखा जाता है।
†पु० [हि० गडना] गडने या चुभनेवाली चीज। जैसे—काँटा।

गड्ड—पु० [स० गण] [स्त्री० गड्डी] १ एक ही तरह या आकार-प्रकार की बहुत-सी वस्तुओ का एक के ऊपर एक रखा हुआ समूह। गज। थाक। जैसे—कागजो या पुस्तको का गड्ड। २ मूल्य, लागत आदि के विचार से एक साथ रहनेवाली छोटी-बडी या कई तरह की चीजो का समूह।
पद—गड्ड मे=छोटी-बडी, महँगी-सस्ती या सब तरह की चीजे एक साथ और एक भाव से लेने पर।
पु०=गड्ढा।

गड्डना†—स०=गाडना। उदा०—को गड्डै खोवेत्तिको, को विलसै करि भेव।—चन्दवरदाई।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—वि० [हि० गड्ड] १ अव्यवस्थित रूप से एक दूसरे मे मिलाया हुआ। २ अड-बड या बेमेल।

गड्डर—पु० [स० √गड्+डर] [स्त्री० गड्डरी, वि० गड्डरिक] १ भेडा। मेष। २ भेड।

गड्डरिक—पु०[स० गड्डर+ठन्—इक] गडेरिया।
वि० भेड-सबधी। भेड का।

गड्डरि (लि) का—स्त्री०[स० गड्डरिक+टाप्] भेडो की पाँत।

गड्डलिका-प्रवाह—पु० [ष० त०] भेडिया-धसान। (दे०)

गड्डरी—पु०=गडेरिया।

गड्डा—पु० [हि० गड्ड] १ किसी चीज की बडी गड्डी। गड्ड। २ आतिशबाजी मे चरखियो आदि मे लगाया जानेवाला पटाखा जो आतिश-बाजी छूटने के समय बहुत जोर का शब्द करता है।
†पु० [देश०] बडी बैलगाडी।
†पु० =गड्ढा।

गड्डाम—वि०[अ० गॉड+डेम इट] [स्त्री० गड्डामी] १ पाजी। लुच्चा। २ नीच।

गड्डी—स्त्री० [हि० गड्ड का स्त्री०] १ प्राय एक ही आकार तथा प्रकार की वस्तुओ का क्रमश ऊपर-तले रखा हुआ समूह। गज। जैसे—नये नोटो की गड्डी, ताश की गड्डी, पान की गड्डी आदि। २ ढेर। समूह। गाँज। जैसे—आमो की गड्डी।

गड्डुक, गड्डूक—पु० [स० गडुक, पृषो० सिद्धि] गडुआ (पात्र)।

गड्ढा—पु० [स० गर्त, प्रा० गड्ड] १ वह जमीन जो प्राकृतिक क्रिया या रूप से आस-पास या चारो ओर की जमीन से बहुत-कुछ गहरी या नीची हो। जमीन मे वह खाली स्थान जिसमे लम्बाई, चौडाई और गहराई हो। जैसे—मिट्टी धँसने के कारण जमीन मे जगह-जगह गड्ढे पड गये थे। २ उक्त प्रकार की वह जमीन जो खोदकर आस-पास की जमीन से गहरी और नीची की गई हो। जैसे—पानी जमा करने के लिए गड्ढा खोदना। ३ किसी तल मे वह अश जो आस-पास के तल से कुछ गहरा या नीचा हो। जैसे—आँखो मे या गालो पर गड्ढे पडना। ४ ऐसी अवस्था या स्थिति जो किसी दृष्टि से विपत्ति लाने, सकट मे डालने या हानि करने-वाली हो। जैसे—अभी क्या है! आगे चलकर इस काम मे ओर भी बडे-बडे गड्ढे मिलेगे।
मुहा०—(किसी के लिए) गड्ढा खोदना=ऐसी स्थिति उत्पन्न करना, जिसमे कोई विपत्ति मे पडे या किसी को सकट का सामना करना पडे। जैसे—जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वह आप गड्ढे मे पडता हे।
गड्ढा पाटना या भरना=विपत्ति या सकट की जो स्थिति उत्पन्न हुई हो उसे दूर करके फिर पहलेवाली और ठीक स्थिति लाना।
५ लाक्षणिक रूप मे उदर। पेट। जैसे—किसी न किसी तरह सबको अपना गड्ढा तो भरना ही पडता हे।

गढ़त—स्त्री० [हि० गढना] १ कोई चीज गढकर तैयार करने या बनाने

की क्रिया या भाव। गढन। (देखें) २ अपने मन से गढकर कही जानेवाली बात। कपोल-कल्पित बात। जैसे—समय पर इनकी अनोखी गढत ने हमे बचा लिया। ३ कुश्ती लडने के तीन प्रकारो मे से एक, जिसमे लडनेवाले पहलवान आपस मे अच्छी तरह गठ या गुथ जाते है। वि० (कथन या विचार) जो वास्तविक न हो, बल्कि यो ही अपने मन से गढकर तैयार किया या बनाया गया हो। कपोल-कल्पित। जैसे—इनकी सब बातें इसी तरह की गढत होती हे।

गढ—पु० [स० गड=खाई] [स्त्री० अल्पा० गढ़ी] १ ऐसा किला जिसके चारो ओर खन्दक या खाई खुदी हो। २ किला। कोट। दुर्ग।
मुहा०—गढ जीतना या तोडना=(क) युद्ध मे किसी किले पर अधिकार प्राप्त करना। (ख) कोई बहुत बडा या विकट काम सपन्न करना। ३ काठ का बडा सन्दूक जिसका उपयोग प्राचीन काल मे युद्ध मे होता था। ४ किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य अथवा व्यक्तियो का केन्द्र अथवा प्रसिद्ध और मुख्य स्थान। बहुत बडा अड्डा। जैसे—(क) यह मुहल्ला तो गुडो या बदमाशो का गढ है। (ख) कलकत्ता और बम्बई पूँजीपतियो के गढ है।

गढ़कप्तान—पु० [हि० गढ+अ० कैप्टेन] गढ या किले का प्रधान अधिकारी।

गढ़त—स्त्री० १ =गढन। २ =गढत।

गढ़न—स्त्री० [हि० गढना] १ गढने या गढे जाने की क्रिया, ढग या भाव। २ बनावट। रचना।

गढना—स० [स० घटन, प्रा० घडन, पश्चिमी हिं० घडना] १ कोई नई चीज बनाने के लिए किसी स्थूल पदार्थ को काट, छील या तराशकर तैयार या दुरुस्त करना। कारीगरी से निर्मित करना या बनाना। जैसे—पत्थर की मूर्ति या चाँदी-सोने के गहने गढना। २ किसी चीज को काट-छाँट या छील-तराशकर सुन्दर और सुडौल रूप मे लाना। जैसे—दरवाजे का पल्ला गढना। ३ परिश्रम या मनोयोग से अच्छी तरह और सुन्दर रूप मे कोई काम करना। जैसे—गढ-गढकर लिखना। ४ अपने मन से कोई कल्पित बात बनाकर अथवा कोई बात नमक मिर्च लगाकर सुन्दर रूप मे उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—गढ-गढकर बाते करना। ५ किसी को ठीक रास्ते पर लाने के लिए खूब मारना पीटना। जैसे—मैं किसी दिन तुम्हे गढकर ठीक करूँगा।
मुहा०—(किसी की) हड्डी-पसली गढ़ना=खूब मारना या पीटना।

गढ़पति—पु० [हिं० गढ+पति] १ गढ का मालिक या स्वामी। राजा। २ गढ का प्रधान अधिकारी।

गढ़वाना—स० [हि० गढना का प्रे०] गढने का काम किसी से कराना।

गढ़वार—पु०=गढवाल।

गढ़वाल—पु० [हिं० गढ + वाला] १ गढ का स्वामी अथवा प्रधान अधिकारी। २ उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग का एक पहाडी भू-खड।

गढ़वै—पु० [स० गढपति] गढ का प्रधान अधिकारी या रक्षक। किलेदार। उदा०—हठ दृढ गढ गढवै सुचलि लीजै सुरँग लगाय।—बिहारी। वि० [हि० गढ+वर्त्ती] आश्रय पाने के लिए सुरक्षित स्थान मे छिपा या पहुँचा हुआ। उदा०—गरम भाजि गढवै भई, तिय-कुच अचल मवासु। —बिहारी।

गढ़ा—पु० [स्त्री० गढ़ी] दे० 'गड्ढा'।

गढाई—स्त्री० [हिं० गढना] गढने की क्रिया, ढग, भाव या मजदूरी।

गढ़ाना—स० [हि० गढना का प्रे० रूप] गढने का काम किसी से कराना। गढवाना।
अ० [हि० गाढ=सकट] अप्रिय, कष्टकर या भारी जान पडना। खलना। गडना। जैसे—तुम्हारी ऐसी ही बाते तो सबको गढाती हे।

गढाव—पु० [हिं० गढना] गढने या गढाने का काम, प्रकार या रूप। गढन।

गढिया—पु० [हि० गढना] वह जो वस्तुओ को गढकर उन्हे सुडौल रूप देता हो।
†स्त्री०=छोटा गड्ढा।

गढ़ी—स्त्री० [हिं० गढ] १ छोटा गढ या किला। २ ऊँचाई पर बनी हुई बडी और मजबूत इमारत। ३ छोटा गड्ढा।

गढीस*—पु०=गढपति।

गढ़ैया—पु०=गढिया (गढनेवाला)।
स्त्री०=गडही (छोटा गड्ढा)।

गढोई*—पु०=गढपति।

गण—पु० [स० √गण् (गिनना) +अच्] १ जत्था। झुड। समूह। २ कोटि। वर्ग। श्रेणी। ३ किसी के आस-पास रहनेवाले व्यक्तियो का वर्ग या समूह। अनुचरो या परिचारको का वर्ग। ४ शिव के परिषद। प्रमथ। ५ चर। दूत। ६ नौकर। सेवक। ७ ऐसे पदार्थो, प्राणियो, व्यक्तियो आदि का समुदाय जिनमे किसी विषय मे समानता हो। कोटि। वर्ग। जैसे—किसी आचार्य के अनुयायियो या शिष्यो का गण। ८ ऐसे आचार्य का निवास-स्थान जो अपने यहा शिष्यो को शिक्षा देता हो। ९ प्राचीन सैनिक-विभाजन मे तीन गुल्मो का वर्ग या समूह। १० नक्षत्रो की तीन कोटियो मे से एक। ११ छन्दशास्त्र मे तीन वर्णो का वर्ग या समूह। जैसे—जगण, तगण, नगण, भगण, यगण, सगण आदि। १२ व्याकरण मे धातुओ और शब्दो के वे समूह जिनमे एक ही तरह से लोप, आगम, वर्ण-विकार आदि बाते होती हो। १३ चोआ नामक गध-द्रव्य। १४ दे० 'गणराज्य'।

गणक—वि० [स० √गण्+णिच्+ण्वुल्—अक] गिनने या गिनती करनेवाला। गणना करनेवाला।
पु० [स्त्री० गणकी] १ गणितज्ञ। २ ज्योतिषी।

गणक-केतु—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का धूमकेतु।

गण-कर्णिका—स्त्री० [स० गण-कर्ण, ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] इद्रवारुणी लता।

गणकार—वि० [स० गण√कृ (करना)+अण्] १ गणो का सचालन करनेवाला। २ गणो मे बाँटने अथवा वर्गीकरण करनेवाला।

गणकी—स्त्री० [स० गणक+ङीष्] ज्योतिषी की पत्नी।

गण-तत्र—पु० [ष० त०] वह राज्य या राष्ट्र जिसकी सत्ता जन-साधारण (विशेषत मतदाताओ या निर्वाचको) मे निहित होती है। (रिपब्लिक)
विशेष—गणतत्र की सरकार जन-साधारण द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियो की बनी होती है जो निर्वाचको या मतदाताओ के प्रति उत्तरदायी होती है।

गण-तत्री (त्रिन्)—वि० [स० गणतत्र +इनि] १ गणतत्र-सबधी।

२ गणतंत्र के सिद्धान्तो को मानने तथा उनमे विश्वास रखनेवाला। (रिपब्लिकन) ३ (देश) जिसमे गणतंत्र हो।

गणदीक्षी (क्षिन्)—पु० [स० गण √दीक्ष् (यज्ञ करना)+णिनि] १ वह पुरोहित जो बहुत-से लोगो की ओर से यज्ञ करता हो। २ वह जिसने गणेश या शिव की दीक्षा ग्रहण की हो।

गण-देवता—पु० [ष० त०] १ समूहचारी देवता। २ वे देवता जो गणो मे विभक्त है अथवा जिनके गण बने है। जैसे—आदित्य, जिनकी सख्या १२ है और इसी लिए जिनका स्वतन्त्र गण है। इसी प्रकार मरुत्, रुद्र आदि भी गण-देवता कहे जाते है।

गण-द्रव्य—पु० [ष० त०] वह सपत्ति जिस पर किसी वर्ग या समुदाय का सामूहिक अधिकार हो।

गण-धर—पु० [ष० त०] जैनो मे एक प्रकार के आचार्य।

गणन—पु० [स० √गण्+ल्युट्—अन] [वि० गणनीय, गणित, गण्य] १ गिनने या गिनती करने की क्रिया या भाव। गिनना। (काउटिंग) २ गिनती।

गणना—स्त्री० [स०√गण्+णिच्+युच्—अन] १ गिनती करने की क्रिया या भाव। गणन। जैसे—आपकी गणना नगर के अच्छे वैद्यो मे होती है। २ किसी प्रदेश, भूभाग या राज्य के जीवो, मनुष्यो आदि की होनेवाली गिनती। (सेन्सस) जैसे—मनुष्य-गणना, पशु-गणना आदि। ३ गिनती। सख्या। ४ केशव के अनुसार एक अलकार जिसमे एक-एक सख्या लेकर उससे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थो का उल्लेख होता है। जैसे—गगा-मग, गगेश-दृग, ग्रीव-रेख, गुण-लेखि। पावक, काल, त्रिशूल, बलि, सध्या तीनि बिसेखि। —केशव। (इसमे वही चीजें गिनाई गई है, जो तीन-तीन होती है।)

गण-नाथ—पु० [ष० त०] १ गणो का नाथ या स्वामी। २ गणेश। ३ शिव।

गण-नायक—पु० [ष० त०] १ गणेश। २ शिव।

गण-नायिका—स्त्री० [ष० त०] दुर्गा।

गणनीय—वि०[स०√गण्+अनीयर्]१ गिनने मे आने के योग्य। गिने जा सकने के लायक। २ जो गिनी जाने को हो। ३ प्रतिष्ठित या मान्य वर्ग मे आ सकने के योग्य।

गणप—पु० [स० गण √पा (रक्षा करना)+क] गणेश।

गण-पति—पु० [ष० त०] १ गण का स्वामी। २ गणेश। ३ शिव।

गण-पर्वत—पु० [ष० त०] शिव के गणो के रहने का पर्वत अर्थात् कैलास।

गण-पाठ—पु० [ष० त०] व्याकरण मे एक ही नियम के अधीन रहनेवाले शब्दो का वर्ग।

गण-पुगव—पु० [स० त०] किसी गण या वर्ग का प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

गण-पूर्त्ति—स्त्री० [ष० त०] किसी सभा, समिति आदि की बैठक के कार्य-सचालन के लिए आवश्यक मानी जानेवाली निर्धारित अल्पतम सदस्यो की उपस्थिति। इयत्ता। (कोरम)

गण-भोजन—पु० [ष० त०] बहुत-से लोगो को एक साथ बैठाकर कराया जानेवाला भोजन। सहभोज।

गण-मुख्य—पु० [ष० त०] गण का प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

गण-राज्य—पु० [ष० त०] १ प्राचीन भारत मे एक प्रकार के राज्य, जिनमे किसी राजा का नही, बल्कि प्रजा के चुने हुए लोगो का शासन होता था। २ दे० 'गण-तन्त्र'।

गण-सख्या—स्त्री० [ष० त०] गणना या गिनती की सूचक सख्या। (कार्डिनल नम्बर) जैसे—एक, दो, तीन, चार आदि।

गणहास—पु० [स० गण√हस् (हँसना)+णिच्+ अण्] एक प्रकार का गध-द्रव्य।

गणाग्रणी—पु० [स० गण-अग्रणी, ष० त०] १ गण का अगुआ या मुखिया। २ गणेश।

गणाचल—पु० [स० अण-अचल, ष० त०] कैलास, जहाँ शिव के गण रहते है। गण-पर्वत।

गणाधिप—पु० [स० गण-अधिप, ष० त०] १ गण या गणो का अधिपति या स्वामी। २ गणेश। ३ जैनी साधुओ का प्रधान या मुखिया।

गणाध्यक्ष—पु० [स० गण-अध्यक्ष, ष० त] १ गणो का अध्यक्ष या स्वामी। २ गणेश। ३ शिव।

गणान्न—पु०[स० गण-अन्न, ष० त०] बहुत-से लोगो के लिए एक साथ बनाया जानेवाला भोजन।

गणि—स्त्री०[स० √गण्√इन्] गणना।

गणिका—स्त्री० [स० गण+ठन्—इक, टाप्] १ रडी। वेश्या। २ साहित्य मे, वह नायिका जो केवल धन के लोभ से लोगो का मनोरजन करती हो। वेश्या नायिका। ३ पुराणानुसार जीवती नाम की एक परम दुराचारिणी वेश्या जो केवल अपने तोते को राम-राम पढाते समय मरने के कारण मोक्ष की अधिकारिणी हुई थी। ४ रहस्य-सप्रदाय मे, माया जो मनुष्यो को अपने जाल मे फँसाये रखती है। ५ गनियारी नामक वृक्ष।

गणि-कारिका—स्त्री० [ष० त०] गनियार का पेड।

गणिकारी—स्त्री० [स० गणि√कृ +अण्—ङीप्] गनियार का पेड।

गणित—पु० [स०√गण्+क्त] वह शास्त्र जिसमे परिमाण, मात्रा, सख्या आदि निश्चित करने की रीतियो का विवेचन होता है। हिसाब। पाटीगणित, बीजगणित और रेखागणित ये तीनो इसी के प्रकार या भेद है। (मैथेमेटिक्स)

गणितज्ञ—वि० [स० गणित√ज्ञा (जानना)+क] १ गणित शास्त्र का ज्ञाता या पडित। २ ज्योतिषी।

गणेरु—पु० [स० √गण्+एरु] कर्णिकार वृक्ष।
स्त्री० १ वेश्या। २ हथिनी।

गणेरुका—स्त्री० [स० गणेरु√कै (शब्द करना)+क—टाप्] १ वेश्या। २ कुटनी। ३ हथिनी।

गणेश—वि० [स० गण-ईश, ष० त०] गणो का मालिक या स्वामी। गणो मे प्रधान।
पु० हिंदुओ के एक प्रसिद्ध देवता जो विद्या के अधिष्ठाता और विघ्नो के विनाशक माने गये है। गणपति। विनायक।
विशेष—इनका मुँह और सिर बिल्कुल हाथी का माना गया है, इसी लिए इन्हे गजानन भी कहते है।

गणेश-कुसुम—पु० [उपमि० स०] लाल कनेर।

गणेश-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] हठ-योग की एक क्रिया, जिससे गुदा के अन्दर का मल साफ करके निकाला जाता है।

गणेश-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] भादो और माघ की शुक्ला चतुर्थियाँ, जिनमे गणेश का पूजन और व्रत होता है।

गणेश चौथ—स्त्री०=गणेश-चतुर्थी।

गणेश-पुराण—पु० [मध्य० स०] एक उपपुराण, जिसमे गणेश का माहात्म्य वर्णित है।

गणेशभूषण—पु० [स० गणेश√भूष् (अलकृत करना)+णिच्+ल्यु—अन] सिदूर।

गण्य—वि० [स० √गण् (गिनना)+यत्] १ गण-सबधी। २ जो गिना जाने को हो या गिना जा सकता हो। ३ जो महत्त्व, योग्यता आदि के विचार से मान्य हो सकता हो। प्रतिष्ठित। जैसे—नगर के सभी गण्यमान्य विद्वान् वहाँ उपस्थित थे।

पद—गण्य-मान्य =प्रतिष्ठित।

गतड†—पु० [स० गताण्ड] [स्त्री० गतडी] हिजडा। नपुसक।

वि० बधिया। (राज०)

गत—भू० कृ० [स० √गम् (जाना)+क्त] १ जो सामने से होता हुआ पीछे चला गया हो। गया या बीता हुआ। जैसे—गत जीवन, गत दिवस। २ जो नष्ट या लुप्त हो चुका हो। जैसे—गत वैभव, गत यौवन। ३ रहित। विहीन। जैसे—गत चेतना, गत ज्ञाति, गत नासिका। ४ जो इस लोक से चला गया हो। मृत। स्वर्गीय। जैसे—गतात्मा।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अत मे लगकर ये अर्थ देता है—(क) सबध रखनेवाला। जैसे—जातिगत, जीवनगत, व्यक्तिगत आदि। और (ख) आया, मिला या लगा हुआ। जैसे—अतर्गत, बहिर्गत आदि।

स्त्री० [स० गति] १ अवस्था। दशा। २ दुर्दशा।

मुहा०—(किसी की) गत बनाना=दुर्दशा करना।

३ रूप। वेष। ४ उपयोग। प्रयोग। ५ विशिष्ट ताल और लय मे बँधे हुए बाजो की धुन या बोल। ६ नाच मे एक विशेष प्रकार की गति अथवा ऐसी गति से युक्त नाच का कोई टुकडा।

मुहा०—गत लेना=नाच मे विशेष प्रकार की गति प्रदर्शित करना।

७ मृतक का क्रिया-कर्म।

गतक—पु० [स० गत+कन्] गति।

गतका—पु० [स० गदा या गदक] १ एक प्रकार का डडा जो हाथ मे लेकर पटा-बनेठी की तरह खेला जाता है। २ उक्त डडा हाथ मे लेकर खेला जानेवाला खेल जिसमे वार करने और रोकने के ढग सिखाये जाते है।

गतकाल—पु० [कर्म० स०] बीता हुआ समय। भूत।

गत-कुल—पु० [ब० स०] वह सपत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो। लावारिस जायदाद या माल।

गत-चेतन—वि० [ब० स०] जिसमे चेतना न रह गई हो। अचेतन।

गत-जीव—वि० [ब० स०] मरा हुआ। मृत।

गत-प्रत्यागता—स्त्री० [कर्म० स०] वह स्त्री जो अपने पति का घर पहले तो अपनी इच्छा से छोडकर चली गई हो और फिर आप से आप कुछ दिनो बाद लौट आई हो। (धर्मशास्त्र)

गत-प्राण—वि० [ब० स०] मरा हुआ। मृत।

गत-प्राय—वि० [सुप्सुपा स०] जो करीब करीब जा या बीत चुका हो। अन्त या समाप्ति के बहुत पास पहुँचा हुआ। जैसे—गत-प्राय रजनी।

गत-भर्तृका—स्त्री० [ब० स०] १ विधवा स्त्री। २ स्त्री, जिसका पति विदेश गया हुआ हो।

गतर—पु० [स० गति] १ अग। २ शारीरिक बल या शक्ति। पौरुष। जैसे—अब हमारा गतर नही चलता। ३ रक्षा या शरण का स्थान।

गत-वय (स्), वयस्क—वि० [ब० स०] जिसका वय बहुत कुछ बीत चुका हो अर्थात् बुड्ढा। वृद्ध।

गत-सग—वि० [ब० स०] उदासीन। विरक्त।

गत-सत्त्व—वि० [ब० स०] १ सारहीन। निःसत्त्व। २ मृत।

गताक—वि० [गत-अक, ब० स०] (व्यक्ति) जो गया-बीता या निकम्मा हो।

पु० [कर्म० स०] सामयिक पत्र का पिछला अर्थात् वर्त्तमान से पहले का अक।

गतात—वि० [गत-अत ब० स०] जिसका अत पास आ गया हो।

गताक्ष—वि० [गत-अक्षि, ब० स०] जिसकी आँखे न रह गई हो अर्थात् अधा।

गतागत—वि० [गत-आगत, द्व० स०] १ गत और आगत। गया और आया हुआ। २ आत्मा का आवागमन अर्थात् जन्म और मरण। ३ साहित्य मे एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे पदो या चरणो की रचना इस प्रकार की जाती है कि उन्हे सीधी तरह पढने से जो अर्थ निकलता है, उलटकर पढने से भी वही अर्थ निकलता है। जैसे—माल बनी बल केशवदास सदा वश केल बनी बलमा।—केशव।

गतागति—स्त्री० [गत-आगति, द्व० स०] १ आना और जाना। २ मरना और फिर जन्म लेना।

गतानुगत—पु० [गत-अनुगत ष० त०] प्रथा का अनुसरण।

गतानुगतिक—वि० [स० गतानुगत+ठक्—इक] १ आख मूँदकर दूसरो का अनुसरण करनेवाला। अधानुयायी। २ पुरातन आदर्श देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला।

गतायात—पु० [स० गत-आयात, द्व० स०] जाना और आना। यातायात।

गतायु (स्)—वि० [स० गत-आयुस्, ब० स०] १ जिसकी आयु समाप्त हो चली हो। २ वृद्ध।

गतार†—स्त्री० [स० गत्री] १ बैल के जुए मे वे दोनो लकडियाँ जो उपरौछी और तरौछी के बीच समानान्तर लगी रहती है। २ वह रस्सी जो जूए मे बँधे हुए बैल के गले के नीचे ले जाकर बाधी जाती है। ३ बोझ बाँधने की रस्सी।

गतार्त्तवा—वि० स्त्री० [स० गत-आर्त्तव, ब० स०] १ (स्त्री०) जिसका रजोदर्शन बन्द हो चुका हो। २ बाँझ। बध्या।

गतार्थ—वि० [स० गत-अर्थ ब० स०] १ (पद या शब्द) जिसका कुछ अर्थ न रह गया हो। २ (पदार्थ) जो काम के योग्य न रह गया हो। ३ (व्यक्ति) जिसके हाथ से अर्थ या धन निकल गया हो। जो अपनी पूँजी गँवाकर निर्धन हो गया हो।

गति—स्त्री० [स०√गम् (जाना)+क्तिन्] १ किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा उसके किसी अग या अवयव के स्पदित या हिलते-डुलते रहने की अवस्था या भाव। (मोशन) २ चलने अथवा चलते हुए अपना काम करते रहने की अवस्था या भाव। जैसे—गाडी या घडी की मन्द गति। ३ अवस्था। दशा। ४ बाना। वेश। ५ पहुँच। पैठ। ६ प्रयत्न

की सीमा। अतिम उपाय। ७ एक-मात्र सहारा या अवलब। उदा०—जाके गति है हनुमान की।—तुलसी। ८ चेष्टा। प्रयत्न। ९ ढग। रीति। १० मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा का दूसरे शरीर मे होनेवाला गमन जैसे—धर्मात्माओ को उत्तम गति प्राप्त होना। ११ मुक्ति। मोक्ष। १२ दे० 'गत' (नृत्य और सगीत की)।

गतिक—पु० [स० गति+कन्] १ चलने की क्रिया या भाव। चाल। २ मार्ग। रास्ता। ३ आश्रय।
वि० १ गति-सबधी। २ भौतिक गति या चाल से सबध रखनेवाला। (डायनामिक)

गति-भग—पु० [ष० त०] कविता-पाठ, सगीत आदि की गति या लय का बीच मे भग या विकृत होना।

गति-भेद—पु० [ष० त०]=गतिभग।

गति-मडल—पु० [ष० त०] नृत्य मे शरीर के विभिन्न अगो की एक प्रकार की मुद्रा।

गतिमान् (मत्)—वि० [स० गति+मतुप्] १ जिसमे गति हो। जो चल अथवा हिल-डुल रहा हो। चलता हुआ। २ जो अपना कार्य ठीक प्रकार से निरतर कर रहा हो।

गतिया†—पु० [हि० गत+इया (प्रत्य०)] सगीत मे गत या लय ठीक रखनेवाला, अर्थात् ढोलक, तबला या मृदग बजानेवाला।

गति-रोध—पु०[स० ष० त०]१ बीच मे कठिनाई या बाधा आ पडने के कारण किसी चलते हुए काम या बात का रुक जाना। २ किसी प्रकार के झगडे या बात-चीत के समय बीच मे उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्ष अपनी-अपनी बातो पर अड जाते है और समझौते का कोई रास्ता निकलता हुआ दिखाई नही देता। (डेडलॉक)

गति-विज्ञान—पु० [ष० त०] विज्ञान का वह अग जिसमे द्रव्यो की गति और उन्हे परिचालित करनेवाली शक्तियो का विवेचन होता है। (डायनामिक्स)

गति-विद्या—स्त्री० [ष० त०]=गति विज्ञान।

गति-विधि—स्त्री०[ष० त०] आचरण-व्यवहार आदि करने अथवा रहने-सहने का रग-ढग। जैसे—सेना की गति-विधि का निरीक्षण करना।

गति-शास्त्र—पु० [ष० त०] =गति-विज्ञान।

गतिशील—वि० [ब० स०] १ चलनेवाला या चलता हुआ। २ आगे की ओर बढनेवाला। उन्नतिशील। ३ जो स्वय चलकर दूसरो को भी चलाता हो।

गति-हीन—वि० [प० त०] १ जिसमे गति न हो। २ ठहरा या रुका हुआ। ३ जिसके लिए कोई गति या उपाय न हो। असहाय और दीन।

गत्त†—स्त्री०=गति।

गत्ता—पु० [स० गात्रक] [स्त्री० गत्ती] कागज के कई तावो या परतो को एक दूसरी पर चिपका कर बनाई हुई दफ्ती।

गत्तालखाता—पु० [स० गर्त्त, प्रा० गत्त+हि० खाता] १ डूबी हुई या गई बीती रकम का खाता या लेखा। बट्टाखाता। २ वह अवस्था जिसमे कोई चीज नष्ट या समाप्त मान ली जाती है और उसके सबध मे आदमी निराश हो जाता है।

गत्थ—स्त्री० दे० 'गथ' (पूँजी)।

गत्यवरोध—पु० [स० गति-अवरोध, ष० त०]=गतिरोध।

गत्वर—वि० [स०√गम्+क्वरप्, मलोप, तुक्] [स्त्री० गत्वरी] १ गति मे रहने या होनेवाला। चलनेवाला या चलता हुआ। गमनशील। २ नष्ट हो जानेवाला। नश्वर।

गत्वरा—स्त्री० [स० गत्वर+टाप्] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव।

गथ—पु० [स० ग्रन्थ, प्रा० गत्थ] १ पास का धन। जमा। २ किसी कार्य या व्यापार मे लगाया जानेवाला धन। पूँजी। ३ धन-सम्पत्ति। माल। ४ गरोह। झुड। ५ समूह।

गथना—स० [स० ग्रथन] १ एक साथ मिलाना। जोडना। २ बाते बनाना।
अ० १ एक साथ मिलाया जाना। मिलकर इकट्ठा या एक होना। २ घुसना। पैठना। ३ दे० 'गुथना'।

गद—पु०[स० √गद्(बोलना)+अच्] १ एक प्रकार का विष या जहर। २ बीमारी। रोग। ३ श्रीकृष्ण के छोटे भाई का नाम। ४ राम की सेना का एक बन्दर। ५ एक असुर का नाम।
पु० [अनु०] किसी मुलायम वस्तु पर किसी कडी वस्तु के आघात से होनेवाला शब्द।

गदका—पु०=गतका।

गदकारा—वि० [अनु० गद+कार (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] १ गुदगुदा और मुलायम। २ मासल।

गदकारी—स्त्री० [फा०] चित्रकला मे चित्र अकित करने से पहले स्थान-स्थान पर रग भरने की क्रिया या भाव। रगामेजी।

गदगद—वि०=गद्गद्।

गदगदा—पु०[देश०] रत्ती नामक पौधा।

गदचाम—पु० [स० गदचर्म] हाथी का एक रोग।

गदन—पु० [स० √गद्+ल्युट्-अन्] १ कथन। २ वर्णन।

गदना—स० [स० गदन] १ कहना। बोलना। २ वर्णन करना।

गदबदा—वि० [अनु०] भरे हुए अथवा दोहरे शरीरवाला। उदा०—नगेतन, गदबदे साँवले, सहज छबीले।—पत।

गदम—पु० [देश०] वह लकडी जो नाव को एक बल पर खडी करने के लिए उसके पेंदे के नीचे लगाई जाती है। आड। थाम।

गदर—पु० [अ०] शासन को उलटने के लिए होनेवाला सैनिक विद्रोह।
पु० [हि० गदराना] गदराने की क्रिया या भाव।
वि० यथेष्ट मात्रा मे सब जगह मिलनेवाला।
पु० [हि० गदकारा] पुष्टि मार्ग के अनुसार एक प्रकार की रूईदार बगलबदी जो जाडे मे ठाकुर जी को पहनाते है।

गदरा—वि०=गद्दर।

गदराना—अ०[अनु०]१ जवानी मे शरीर के अगो का भरकर सुन्दर और सुडौल होना। जैसे—गदराया हुआ बदन। २ फलो आदि का पकने पर होना। ३ आँख का कीचड से भरना। ४ बहुत या अधिक मात्रा मे होना या पाया जाना।

गदला—वि०=गँदला।

गदलाना—स० [हि० गदला] गँदला करना।
अ० गँदला होना।

गदह—पु०=गधा।

गदह पचीसी—स्त्री० दे० 'गधा-पचीसी'।

गदहरा—पु० १ =गधा। २ =गद्दा।

गदहला—पु०=गदहिला।

गदहलोट—स्त्री० [हि० गदहा=गधा+लोटना] १ गधो की तरह जमीन पर इधर-उधर लोटने की क्रिया या भाव। २ कुश्ती का एक दाँव या पेच। ३ दे० 'गधा लोटन'।

गदह हेंचू—पु० दे० 'गधा हेंचू'।

गदहा—वि० [स० गद√हा (त्याग)+क्विप्] गद अर्थात् रोग हरनेवाला।

पु० चिकित्सक। वैद्य।

पु० दे० 'गधा'।

गदहिया—स्त्री०=गधी।

गदहिला—पु० [स० गर्दभी, पा० गद्रभी प्रा० गद्दही] [स्त्री० गदहिली] १ वह गधा जिस पर ईंट, मिट्टी आदि ढोई जाती है। २ एक प्रकार का जहरीला कीडा।

गदातक—पु० [स० गद-अतक, ष० त०] अश्विनीकुमार।

गदांबर—पु० [स० गद-अबर, मध्य० स०] मेघ।

गदा—स्त्री० [स० गद+टाप्] १ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसमे लबे डडे के आगे मोटा गोला लगा होता था। २ उक्त आकार की वह चीज जो कसरत या व्यायाम करने के लिए हाथो से उठाकर शरीर के इधर-उधर घुमाई जाती है। लोढ।

पु० [फा०] १ भिक्षुक। भिखमगा। २ फकीर।

गदाई—वि० [फा० गदा=फकीर +ई० (प्रत्य)] १ तुच्छ। नीच। क्षुद्र। २ रद्दी। वाहियात।

स्त्री० भिखमगा होने की अवस्था या भाव। भिखमगापन।

गदाका—पु० [अनु०] किसी को उठाकर जमीन पर इस प्रकार पटकने की क्रिया जिसमे गद शब्द हो।

वि० गदराये हुए सुडौल शरीरवाला।

गदागद—पु० [स० गद्-आ√गम् (गाना) +ड, गदाग√दैप् (शोध करना)+क] अश्विनी कुमार।

अ०य० [अनु०] १ गद गद शब्द करते हुए। २ एक के बाद एक। लगातार। (मुख्यत आघात या प्रहार के लिए) जैसे— गदागद घूँसे लगना।

गदाग्रज—पु० [स० गद-अग्रज, ष० त०] गद के बडे भाई, श्रीकृष्ण।

गदाग्रणी—पु० [स० गद-अग्रणी, स० त०] क्षय या यक्ष्मा नामक रोग।

गदाधर—वि०[स० गदा√धृ (धारण करना)+अच्] गदा धारण करनेवाला।

पु० विष्णु जिनके हाथ मे गदा रहती है।

गदाराति—पु० [स० गद-अराति, ष० त०] औषध। दवा।

गदाला—पु० [हि० गद्दा] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला गद्दा।

गदावारण—पु० [स०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगे रहते थे।

गदि—स्त्री० [स०√गद् (बोलना)+इन्] उक्ति। कथन।

गदित—भू० कृ० [स० गद्+क्त] कहा हुआ। उक्त। कथित।

गदी (दिन्)—वि० [स० गद+इनि][स्त्री० गदिनी]१. रोगी। बीमार। २. [गदा+इनि] जो गदा लिये हुए हो। गदाधारी।

गदेल—पु०=गदेला।

गदेला—पु० [हि० गद्दा] [स्त्री० अल्पा० गदेली] १ रूई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा गद्दा। २ टाट का वह मोटा गद्दा जो हाथी की पीठ पर बिछाया जाता है।

पु० [?] छोटा लडका। बालक।

गदेली—स्त्री०=गदोरी (हथेली)।

गदोरी†—स्त्री० [हि० गद्दी] हथेली।

गद्गद—वि० [स० √गद्गद् (स्पष्ट न बोलना)+अच्] १ बहुत अधिक प्रेम, श्रद्धा, हर्ष आदि के आवेग से इतना भरा हुआ कि अपने आपको भूल जाय और स्पष्ट बोल न सके। २ (कठ या वाणी) जो उक्त आवेग के कारण अवरुद्ध हो। ३ बहुत अधिक प्रसन्न या हर्षित।

पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी शब्दो का स्पष्ट उच्चारण नही कर सकता अथवा एक एक अक्षर का रुक-रुककर और कई बार मे उच्चारण करता है। हकलाने का रोग।

गद्गदिका—स्त्री० [स० गद्गद+कन्—टाप्, इत्व] हकलाने की क्रिया, भाव या रोग। हकलाहट।

गद्द—पु० [अनु०] १ मुलायम चीज या जगह पर भारी चीज के मारने से होनेवाला शब्द।

मुहा०—(किसी को) गद्द मारना=टोटका या टोना करके किसी पर ऐसा आघात करना कि वह वश मे हो जाय।

२ अधिक भोजन करने अथवा गरिष्ठ वस्तुएँ खाने पर होनेवाला पेट का भारीपन।

मुहा०—(किसी चीज का) गद्द करना=कोई ऐसी वस्तु खा लेना जो जल्दी पच न सकती हो और जिसके फलस्वरूप पेट भारी हो जाता हो।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

गद्दम—पु० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

गद्दर—वि० [अनु० गद्द से] १ जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २ गदराया हुआ।

पु० १ =गदा। २ =गद्दार।

गद्दा—पु० [हि० गद्द से अनु०] १ बिछाने की मोटी रुईदार भारी तोशक। २ वह बिछावन जो हाथी की पीठ पर हौदा कसने से पहले रखकर बाँधा जाता है। ३ घास, रुई आदि मुलायम वस्तुओ का बोझ। ४ किसी मुलायम चीज की मार या ठोकर।

गद्दार—वि० [अ०] जो अपने धर्म, राज्य, शासन, सस्था आदि के विरुद्ध होकर उसे हानि पहुँचाता अथवा पहुँचाना चाहता हो। गदर करनेवाला। बागी। विद्रोही।

गद्दारी—स्त्री० [अ०] गद्दार होने की अवस्था या भाव।

गद्दी—स्त्री० [हि० गद्दा का स्त्री० अल्पा० रूप] १ वह छोटा गद्दा जो ऊँट, घोडे आदि की पीठ पर जीन के नीचे बिछाया जाता है। २. वह छोटा गद्दा जिस पर बैठते या लेटते है। ३ वह स्थान जहाँ पर गद्दी आदि बिछाकर बैठकर कोई काम या व्यवसाय किया जाय। जैसे—कोठीवाल या महाजन की गद्दी। ४ किसी स्थान पर बैठने अथवा किसी पद को सुशोभित करने की अवस्था या भाव। जैसे—(क) राजा की गद्दी। (ख) बाप-दादा की गद्दी। ५ किसी राजवश की पीढ़ी या

आचार्य की शिष्य-परम्परा। जैसे—(क) चार गद्दी के बाद इस वश मे कोई न रहेगा। (ख) यह अमुक गुरु की चौथी गद्दी है। ६ कपडे आदि की कई परतो की वह मुलायम तह जो किसी चीज के ऊपर या नीचे उसे आघात, झटके आदि से बचाने के लिए रखी जाती है। ७ हाथ या पैर की हथेली।

मुहा०—गद्दी लगाना=घोडे को हथेली या कुहनी से मलना।

८ एक प्रकार का मिट्टी का गोल बर्तन जिसमे छीपी रग रखकर छपाई का काम करते है।

पु० [स० गब्दिक] १ चबा के पास का एक पहाडी प्रदेश। २ उक्त प्रदेश के निवासी जो प्राय भेड़-बकरियाँ पालकर जीविका चलाते है। ३ गडेरिया।

गद्दीनशीन—वि० [हिं० गद्दी+फा० नशीन] [भाव० गद्दीनशीनी] १ जो राजगद्दी पर बैठा हो। २ जो किसी की गद्दी पर आकर बैठा हो अर्थात् उत्तराधिकारी।

गद्य—पु० [स०√गद् (बोलना)+यत्] १ बोल चाल की भाषा मे लिखने का वह लेखन प्रकार जिसमे अलकार, मात्रा, वर्ण, लय आदि के बन्धन का विचार नही होता। वचनिका। 'पद्य' का विपर्याय। (प्रोज) २ ऐसी सीधी-सादी बोली या भाषा जिसमे किसी प्रकार की बनावट न हो।

गद्य-काव्य—पु० [कर्म० स०] वह गद्य जिसमे कुछ भाव या भावनाएँ ऐसी कवित्वपूर्ण सुन्दरता से व्यक्त की गई हो कि उसमे काव्य की-सी सवेदन-शीलता तथा सरसता आ जाय।

गद्याणक—पु० [स० गद्याण+कन्] कलिंग देश का एक प्राचीन मान।

गद्यात्मक—वि० [स० गद्य-आत्मन्, ब० स०, कप्] [स्त्री० गद्यात्मिका] १ गद्य के रूप मे लिखा हुआ। २ गद्य-सबधी।

गधा—पु० [स० गर्दभ, प्रा० गद्दह] [स्त्री० गधी] १ घोडे की तरह का पर उससे बहुत छोटा एक प्रसिद्ध चौपाया जिस पर कुम्हार, धोबी आदि बोझ ढोते है। गदहा।

मुहा०—(किसी स्थान पर) गधे से हल चलवाना=पूरी तरह से उजाडना या नष्ट करना। **(किसी को) गधे पर चढ़ाना**=बहुत अधिक अपमानित करना। बदनाम और बेइज्जत करना।

२ गधे की तरह निरा बुद्धिहीन। बहुत बडा बेवकूफ या मूर्ख।

गधागधी—स्त्री० दे० 'गधाहेचू'।

गधापचीसी—[हिं० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमे प्राय कुछ विशेष ज्ञान नही होता और जिसमे ऊल-जलूल काम किये जाते है।

गधापन—पु० [हिं० गदहा+पन (प्रत्य०)] १ गधे होने की अवस्था या भाव। २ मूर्खता। बेवकूफी।

गधालोटन—पु० [हिं० गधा+लोटना] १ थकावट मिटाने के लिए या मस्त होकर गधे का जमीन पर इधर-उधर लोटना। २ वह स्थान जहाँ इस प्रकार गधा लोटा हो। (कहते है कि ऐसे स्थान पर पैर रखने से आदमी मे थकावट आ जाती है।)

गधा हेचू—पु० [हिं० गधा+हेचू (गधे की बोली)] लडको का एक प्रकार का खेल।

गधीला—पु० [देश०] [स्त्री० गधीली] एक जगली जाति।

गधूल—पु० [?] एक प्रकार का फूल।

गधेरा—पु० [हिं० गधा+एरा] गधे का मालिक। जैसे—कुम्हार, धोबी आदि। उदा०—उसी समय गली की मोड से गधेरा आया।—वृदावन लाल।

गन*—पु०=गण।

स्त्री० [अ०] बन्दूक।

गनक*—पु० [स० गणक] ज्योतिषी।

गनकेरुआ—पु० [स० गणकर्णिका] एक प्रकार की घास।

गनगनाना—अ० [अनु० गनगन] १ (शरीर) सरदी के कारण थरथर काँपना। २ शरीर के रोओ का सरदी आदि के कारण खडे होना। रोमाच होना।

गनगौर—स्त्री० [स० गण-गौरी] राजस्थान का एक पर्व जो चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक होता है और जिसमे कन्याएँ तथा स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती है।

गनती†—स्त्री०=गिनती।

गनना—स्त्री०=गणना।

स०=गिनना।

गननाना—अ० [अनु० गनगन] १ किसी स्थान का गनगन शब्द से भर जाना। गूँजना। २ चक्कर लगाना। घूमना।

स० कोई स्थान गनगन शब्द से पूर्ण या युक्त करना।

गननायक—पु० =गणनायक।

गनप—पु० १ =गणप। २ =गणपति।

गनपति—पु०=गणपति।

गनराय—पु० [स० गणराज] गणेश।

गनवर—स्त्री० [?] नरकट नामक घास।

गनाना†—अ० [हिं० गिनना] १ गिना जाना। २ गिनती मे आना।

स०=गिनाना।

गनाल—स्त्री० [स०घननाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की बडी तोप।

गनिक—पु० [स० गणक] ज्योतिषी। उदा०—गनिक होइ जब देखैं, कहै न भेद।—जायसी।

गनिका†—स्त्री०=गणिका।

गनिबी*—अ० [हिं० गिनना का भविष्यत् कालिक व्रज रूप] गिना जायगा। गिनती होगी। उदा०—मूढनि मे गनिबी कि तू हूठ्यो दै इठिलाहिं।—बिहारी।

गनियारी—स्त्री० [स० गणिकारी] रूमी की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।

गनी—वि० [अ० गनी] १ धनवान्। सपन्न। २ बहुत बडा दाता। उदार।

*स्त्री० [हिं० गिनना] गिनती। उदा०—इद्र समान है जाके सेवक वर वापुरे की कहा गनी।—सूर।

स्त्री० [अ०] टाट जिसके बोरे बनते हैं।

गनीम—पु० [अ०] १ दूसरो का माल लूटनेवाला व्यक्ति। लुटेरा। डाकू। २ दुश्मन। वैरी। शत्रु।

गनीमत—स्त्री० [अ०] १ डाके या लूट का माल। २ मुफ्त मे या बिना प्रयास मिलनेवाला धन। ३. बिलकुल प्रतिकूल या विपरीत स्थिति मे भी होनेवाली कोई थोडी-सी सतोषजनक या समाधानकारक बात। जैसे—वह सही सलामत घर लौट आया यही गनीमत है।

मुहा०—**किसी का दम गनीमत होना**=किसी का अस्तित्व विपरीत परिस्थितियों मे भी किसी प्रकार समाधानकारक होना। जैसे—बाबू साहब का भी दम गनीमत।

गनेल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

गनेश*—पु०=गणेश।

*वि० मगलमय। शुभ। उदा०—भा यह समय गनेसू।—तुलसी।

गनौरी—स्त्री० [स० गुन्ना] नागरमोथा।

गन्ना—पु० [स० काण्ड] सरकडे की जाति का एक प्रसिद्ध गाठदार लबा पोधा जिसके मीठे रस मे गुड, चीनी आदि बनाई जाती है। ईख। ऊख।

गन्नी—पु० [अ० गनी] १ पटसन, पाट आदि का बना हुआ टाट जिसके बोरे आदि बनते है। २ सन का बना हुआ एक प्रकार का कपडा।

गप—स्त्री० [स० गल्प०, प्रा० गप्प ब० गप्प, गुज० मरा० ओर प० गप] [वि० गप्पी] १ केवल मन बहलाने के लिए की जानेवाली इधर-उधर की बाते। गपविनोद के लिए की जानेवाली व्यर्थ की बातचीत।

मुहा०—**गप लडाना**=आपस मे इधर-उधर ओर प्राय व्यर्थ की बाते करना।

पद—**गप-शप**=इधर-उधर की बाते। बहुत ही साधारण कोटि का या व्यर्थ का वार्त्तालाप।

२ बिलकुल कपोल-कल्पित ओर झूठी बात, अथवा ऐसी बात जिसका कुछ भी ठीक-ठिकाना न हो।

मुहा०—**गप उडाना** झूठी और व्यर्थ की बात का लोगो मे प्रचार या प्रसार करना।

३ ऐसी अतिरजित बात जिसमे सत्य का अश बहुत ही कम या नाम मात्र का हो।

क्रि० प्र०—हाकना।

४ अपना बडप्पन प्रकट करने के लिए कही जानेवाली बहुत-कुछ अतिरजित या मिथ्या सी बात। डीग।

क्रि० प्र०—मारना।

पु० [अनु०] १ कोई चीज झट से खाने अथवा निगलने की क्रिया अथवा इस क्रिया मे होनेवाला शब्द। जैसे—वह गप से लड्डू निगल गया। २ खाने की क्रिया या भाव। जैसे—मीठा-मीठा गप, कडआ-कडआ थू। ३ कोई नुकीली चीज किसी मुलायम वस्तु मे जल्दी या झटके से धँसाने की क्रिया अथवा इस क्रिया से उत्पन्न होनेवाला शब्द। जैसे—डाक्टर ने गप से बाँह मे सूई चुभा दी।

गपकना—स० [अनु० गप+हिं० करना] १ जल्दी-जल्दी खा या निगल जाना। २ हजम करना। हडपना।

गपछैया—स्त्री० [?] रेगमाही।

गपड चौथ—पु० [हिं० गपोड=बातचीत+चौथ] आपस मे होनेवाली इधर-उधर की या व्यर्थ की बातचीत।

वि० अड-बड। ऊट-पटाग।

गपना—सं० [हिं० गप] १ मन बहलाने अथवा समय बिताने के लिए इधर-उधर की बातचीत करना। गप करना। २ झूठमूठ की अथवा मन-गढत बाते कहना अथवा ऐसी बातो का प्रचार करना।

गपशप—पु० [हिं० गप+शप अनु०] इधर-उधर की अथवा व्यर्थ की बाते।

गपागप—क्रि० वि० [हि० गप=निगलने का शब्द] १ गप गप शब्द करते हुए। जैसे—वह सारी मिठाई गपागप खा गया। २ बहुत जल्दी-जल्दी या चटपट। ३ बहुत अधिक मात्रा या मान मे।

गपिया—वि० [हि० गप]=गप्पी।

गपिहा†—वि०=गप्पी।

गपोड—पु०=गपोडा।

वि०=गप्पी।

गपोडा—पु० [हि० गप+ओडा (प्रत्य०)] १ बहुत अधिक बढा-चढाकर कही हुई बात। २ बिलकुल कपोल-कल्पित ओर मिथ्या बात। बहुत बडी गप।

गपोडिया—वि० [हि० गपोडा] बहुत बढा-चढाकर मन-गढन्त बाते कहनेवाला। गप्पी।

गपोडेबाज—वि०=गप्पी।

गपोडेबाजी—स्त्री० [हि० गपोडा+फा० बाजी] १ झूठ-मूठ की या व्यर्थ की बातो मे समय बिताने की क्रिया या भाव। २ गपबाद।

गप्प—स्त्री० गप।

गप्पी—वि० [हि० गप] बहुत अधिक गप हाकने और व्यर्थ की कपोल-कल्पित बाते कहनेवाला। गपोडिया।

गप्फा—पु० [अनु० गप] १ बहुत बडा कौर या ग्रास। २ सहज मे होनेवाला बहुत बडा आर्थिक लाभ।

गफ—वि० [स० ग्रप्स=गुच्छा] (कपडा) जिसकी बुनावट बहुत ठस हो।

गफलत—स्त्री० [अ०] १ प्रमाद के कारण होनेवाली असावधानी या बेपरवाही। २ अचेत या बेसुध होने की अवस्था या भाव।

गफिलाई—स्त्री० =गफलत।

गफूर—वि० [अ०] १ क्षमा या माफ करनेवाला। दयालु।

गफ्फार—वि० [अ०] बहुत बडा उदार तथा दयालु (ईश्वर या व्यक्ति)।

गबडी†—स्त्री०=कबड्डी।

गबड्डी†—स्त्री० =कबड्डी।

गबदी—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड।

गबद्द—वि० [हि० गावदी] जड। मूर्ख।

गबन—पु० [अ०] किसी अधिकारी अथवा सेवक द्वारा शासन अथवा स्वामी का धन अपने काम मे लाने के लिए अनुचित रूप से तथा चोरी से निकाल या ले लेना।

गबर—पु० [अ० स्कैपर] जहाज मे सब पालो के ऊपर रहनेवाला पाल। (लश०)

गबरगड—वि० [हिं० गोबर+स० गड=मूर्ख] बहुत बडा मूर्ख। जड।

गबरहा—वि० दे० 'गोबरहा'।

गबरा†—वि०=गब्बर (घमडी)।

गबरू—वि० [फा० खूबरू] १ जवान। युवा। २ भोला-भाला।

पु० दूल्हा। पति।

गबरून—पु० [फा० गम्बरून] एक प्रकार का मोटा धारीदार कपडा।

गबीना†—पु० [देश०] कतीरा (गोद)।

गबेजा—पु० दे० 'गवेजा'।

गब्बर—वि० [स० गर्व, पा० गब्ब] १ अभिमानी। घमडी। २. ढीठ। हठी। ३ अडियल। ४ कीमती। बहुमूल्य। ५. धनी। मालदार।

गब्बी†—वि०=गब्बर।

गब्बू†—पु०=गबरू।

गब्र—पु० [फा०] पारस देश का अग्निपूजक मूल निवासी।

गभ—पु० [स०=भग पृषो० सिद्धि] भग।

गभरू—पु०=गबरू।

गभस्ति—पु० [स०√गम् (जाना)+ड, ग√भस् (प्रकाशित करना)+क्तिच्] १ किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ बाँह। बाहु। स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा।

गभस्ति-पाणि—पु० [ब० स०] सूर्य।

गभस्तिमान्—पु० [स० गभस्ति-मतुप्] १ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। २ एक पाताल का नाम।

गभस्ति-हस्त—पु० [ब० स०] सूर्य।

गभार†—वि० [स० गभीर] गहरा।

गभीर—वि०[स० गम् (जाना)+ईरन्, भ आदेश] =गभीर।

गभीरिका—स्त्री० [स० गभीर+टाप् +कन्, ह्रस्व, इत्व] बडा ढोल।

गभुआर†—वि० [स० गर्भ+हिं आर (प्रत्य०)] १ गर्भ या जन्म के समय का (बच्चे के सिर के बाल)। २ (बालक) जिसके सिर के गर्भ या जन्म के बाल कटे न हो। जिसका मुडन न हुआ हो। ३ अनजान। नासमझ।

गभुराना—अ०[स० गह्वर] मान, रोष आदि के कारण धीरे धीरे होठो मे ही कुछ कहना। बडबडाना। बुडबुडाना।

गभुवार—वि०=गभुआर।

गम—पु० [स०√गम्+अप्] १ चलना या जाना। गमन। २ मार्ग। रास्ता। ३ गति। चाल। ४ पहुँच। पैठ।
पु० [अ० गम] १ मन मे होनेवाला गहरा या भारी दु ख।
मुहा०—गम खाना=अपमानित, उत्तेजित, दु खित अथवा पीडित होने पर भी प्रतिकार न करना और शात रहना।
२ शोक। ३ चिता। परवाह। फिक्र।

गमक—वि० [स०√गम्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ गमन करनेवाला। २ जानेवाला। गता। ३ बतलाने या सूचित करनेवाला। सूचक। स्त्री० [अनु० गमगम से] १ महक। सुगध। २ सगीत मे किसी स्वर को अधिक रजक तथा श्रुति मधुर बनाने के लिए उसमे उत्पन्न किया जानेवाला एक विशिष्ट प्रकार का कपन।
विशेष—कभी कभी किसी स्वर को उसके ठीक ऊपर या नीचेवाले स्वर के साथ मिलाकर वेगपूर्वक उच्चारण करने से भी गमक उत्पन्न होती है। सगीतशास्त्र मे इसके ये १५ भेद कहे गये है—तिरिप, स्फुरित, कम्पित, लोच, आन्दोलित, वलि, त्रिभिन्न, कुरुल, आहत, उल्लासित, प्लावित, गुम्फित, मुद्रित, नमित, और मिश्रित।
३ तबले की गभीर परन्तु मधुर आवाज।

गमकना—अ० [हिं० गमक] गमक या महक देना। महकना।

गमकीला†—[हिं० गमक] १ गमक से युक्त। २ सुगधित।

गमखोर—वि० [फा० गमख्वार] [भाव० गमखोरी] दूसरो द्वारा किये गये अत्याचार, अन्याय आदि को चुपचाप सहनेवाला। गम खानेवाला।

गमखोरी—स्त्री० [फा० गमख्वारी] गमखोर होने की अवस्था, गुण या भाव। अत्याचार, अन्याय आदि चुपचाप सहने की प्रवृत्ति।

२—१०

गमगीन—वि० [अ० +फा०] १ दुखी। २ सतप्त।

गमछा—पु०=अँगोछा।

गमत—पु० [स० गमन या गमथ=पथिक] १ रास्ता। मार्ग। २ २ पेशा। व्यवसाय।

गमतखाना—पु० [?] नाव मे का वह नीचेवाला भाग जहाँ नदी का पानी रस कर इकट्ठा होता है। बँधाल। (लश०)

गमतरी—स्त्री०=गमतखाना।

गमथ—पु०[स०√गम्+अथच्] १ मार्ग। राह। २ पथिक। ३ व्यवसाय। व्यापार। ४ आमोद-प्रमोद।

गमन—पु०[स० √गम्+ल्युट्—अन] [वि० गम्य] १ चलना या जाना। २ प्रस्थान या यात्रा करना। ३ मार्ग। रास्ता। ४ यान। सवारी। ५ स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग। जैसे—वेश्या-गमन। ६ वैशेषिक दर्शन के अनुसार किसी वस्तु के क्रमश एक स्थान से दूसरे स्थान को प्राप्त होने का कर्म (पाँच कर्मों मे से एक)।

गमनना—अ० [स० गमन] गमन करना। जाना।

गमन-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने अथवा ले जाने का अधिकार मिलता हो। चालान। रवन्ना।

गमना—अ० [स० गमन] १ गमन करना। जाना। २ खोना। हाथ से निकल जाना। ३ नाव मे पानी रसना। (लश०)

गमनाक—वि० [फा०] १ गम अर्थात् दु ख या शोक उत्पन्न करनेवाला। २ गम या दु ख से पीडित।

गमनागमन—पु० [स० गमन-आगमन द्व० स०] १ जाना और आना। २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने की क्रिया या भाव। यातायात।

गमनीय—वि० [स० +गम्√गम्+अनीयर्] [स्त्री० गमनीया] गमन करने योग्य। गम्य।

गमला—पु० [पुर्त० से] १ नाँद के आकार का मिट्टी, धातु या लकडी का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमे फूल-पत्तियाँ, पौधे आदि लगाये या रखे जाते है। २ चीनी मिट्टी का वह बर्तन जिसमे पाखाना फिरते है। (कमोड)

गमागम—पु० [स० गम-आगम, द्व० स०] आना-जाना। गमनागमन।

गमाना—स०=गँवाना।

गमार†—वि० [स्त्री० गमारी]=गँवार।

गमी—स्त्री०[अ० गम] १ घर या परिवार के किसी आदमी की शोकजनक मृत्यु। २ ऐसी मृत्यु के उपरान्त उसका होनेवाला शोक।

गम्मत†—स्त्री०[स० गमथ] १ हँसी। दिल्लगी। परिहास। विनोद। २ मजेदार घटना या बात। ३ आनन्द, बहार या मौज की स्थिति।

गम्य—वि०[स०√गम् +यत्] [स्त्री० गम्या] १ जिस तक या जिसमे गमन हो सके। जिस तक पहुँचा जा सके। २ जिसके अदर जा या पहुँच सके। जिसके अदर पैठ या प्रवेश हो सके। जैसे—बुद्धि-गम्य। ३ जो पाया या प्राप्त किया जा सके। योग्य। ४ जिसका साधन हो सके। साध्य। ५ जिसके साथ गमन या सभोग किया जा सके।

गम्यता—स्त्री० [स० गम्य+तल्—टाप्] गम्य होने की अवस्था या भाव।

गयद—पु० [स० गजेद्र, प्रा० गयिंद, गरद] १ बडा हाथी। २ दोहे का एक प्रकार या भेद। ३ रहस्य-सप्रदाय मे, ज्ञान।

गय—पु० [स०] १ घर। मकान। २ आकाश। ३ धन। ४ प्राण। ५ पुत्र। बेटा। ६ औलाद। सन्तान। ७ एक असुर, जिसके नाम पर गया नामक तीर्थ बना है। ८ गया नामक तीर्थ। ९ राम की सेना का एक बन्दर।

†पु०=गज (हाथी)।

†स्त्री०=गति।

गय-गमणि*—वि० स्त्री० [स० गजगामिनी] हाथी के समान झूमकर चलनेवाली।

गयण—पु० [स० गगन, प्रा० गयण] आकाश। गगन। उदा०—पखी कवण गयण लगि पहुँचै।—प्रिथीराज।

गयनग—पु० [स० गगन] आकाश। उदा०—गनन गनन गयनग, छलन छक्किय उछरग्गिय।—चदबरदाई।

गयनाल—स्त्री० [हिं० गय+नाल=नली] हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की तोप। गजनाल।

गयल—अ० [हि० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक पूर्वी रूप] गया।

†स्त्री०=गैल (गली)।

गयवली—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड।

गयवा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गय-शिर—पु० [ष० त०] १ आकाश। २ एक पर्वत जो गया मे है। ३ गया तीर्थ।

गया—अ० [स० गत, प्रा० गअ, अप० गअल, गु० गओ, मरा० गेला, प० गिआ, मैं० गेल, बँ० गेलो, सिंह० गिय] [स्त्री० गयी] हिं० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक एक वचन का रूप।

पद—गया गुजरा या गया बीता=(क) जो बहुत ही बुरी हालत मे हो। दुर्दशा-ग्रस्त। (ख) तुच्छ। हीन।

मुहा०—गयी करना=(क) बीती हुई बात पर ध्यान न देना। (ख) छोड देना। जाने देना।

स्त्री० [स० गय+अच्—टाप्] आधुनिक बिहार राज्य का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान, जहाँ पिंडदान आदि करने का माहात्म्य है।

मुहा०—गया करना=गया मे जाकर पिंडदान, श्राद्ध आदि करना।

गयापुर—पु०=गया (बिहार राज्य का एक नगर)।

गयारी—स्त्री० [देश०] किसी काश्तकार के मरने पर लावारिस छोडी हुई जोत।

गयाल†—स्त्री० [देश०] किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी छोडी हुई ऐसी सपत्ति जिसका उत्तराधिकारी कोई न हो।

पु० आसाम मे पाया जानेवाला एक पशु जिसका मास खाया जाता और जिसकी मादा का दूध पिया जाता है।

गयावाल—वि० [हिं० गया+वाल] गया मे रहने या होनेवाला।

पु० गया तीर्थ का पडा या पुरोहित।

गयास—स्त्री० [अ०] १ सहायता। २ मुक्ति। छुटकारा।

गरँऊँ—पु० [देश०] चक्की के चारो ओर बना हुआ मिट्टी का घेरा जिसमे पिसा हुआ आटा आदि गिरता है। उदा०— गरँऊँ चून बिन सागर रीता, बाहु कहे पीसत दिन बीता।—ग्राम्यगीत।

गर—पु० [स० √गृ (लीलना)+अच्] १ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का कडआ और मादक पेय पदार्थ। २ एक प्रकार का रोग। ३ रोग। बीमारी। ४ विष। ५ वत्सनाभ। बछनाग। ६ ज्योतिष मे ग्यारह करणो मे से पाँचवाँ करण।

वि० रोगी।

†पु० [हि० गला] गरदन। गला।

प्रत्य० [स० कर (कर्त्ता) से फा०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अत मे लगकर ये अर्थ देता है—(क) कोई काम करनेवाला अथवा कोई चीज बनानेवाला। जैसे—कारीगर, सिकलीगर, सौदागर आदि। और (ख) किसी से युक्त होने के भाव का सूचक होता है। उदा० —जोई गर, बँसगर, बुझगर भाई।—घाघ।

अव्य० [फा० अगर का सक्षिप्त रूप] अगर। यदि।

गरई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

गरक—वि० [अ० गर्क] १ डूबा हुआ। निमग्न। २ जो नदी आदि मे डूबकर मर गया हो। ३ नष्ट। बरबाद। ४ मग्न। लीन।

गरक़ाब—पु० [फा०] डूबने की क्रिया या भाव। डुबाव।

वि० १ डूबा हुआ। जलमग्न। २ बहुत अधिक लीन या निमग्न।

गरक़ी—स्त्री० [अ०] १ डूबने की क्रिया या भाव। डूबना। डुबाव।

मुहा०—किसी को गरक़ी देना=बहुत अधिक कष्ट या दुख देना।

२ इतना अधिक पानी बरसना या बाढ आना जिससे फसल डूबकर नष्ट हो जाय। बूडा। अतिवृष्टि। ३ पानी मे डूबी हुई जमीन। ४ वह नीची भूमि जो बाढ मे प्राय डूब जाती हो। ५ कोपीन। लँगोटी। ६ गराडी।

गरगज—पु० [हि० गढ+गजग] १ वास्तु मे, वह चोडा और बडा ढालुआ रास्ता जिस पर हाथी आ-जा सकते हो। २ किले का बुर्ज। ३ वह ऊँची भूमि या टीला जहा से शत्रु का पता लगाया जाता है। ४ नाव की छत। ५ फाँसी की टिकठी।

वि० बडा तथा शक्तिशाली। जैसे—गरगज घोडा।

गरगरा†—पु० [अनु०] गराडी। घिरनी। (लश०)

गरगवा—पु० [देश०] १ नर गौरैया। चिडा। २ एक प्रकार की घास।

गरगाब†—पु० वि०=गरकाब।

गर-चे—अव्य० [फा० अगरचे] यद्यपि।

गरज—स्त्री० [स० गर्जन] १ गरजने की क्रिया या भाव। २ बहुत गभीर या घोर शब्द। जैसे—बादल या सिंह की गरज।

स्त्री० [अ०] १ किसी उद्देश्य अथवा प्रयोजन की सिद्धि के लिए मन मे होनेवाली स्वार्थजन्य इच्छा।

मुहा०—(अपनी) गरज गाँठना=अपना स्वार्थ सिद्ध करना।

पद—गरज का बावला=स्वार्थांध।

२ आवश्यकता। जरूरत।

अव्य० १ इतना होने पर। आखिरकार। २ तात्पर्य यह है कि।

गरजन*—पु० [स० गर्जन] गरजने की क्रिया या भाव। गरज।

गरजना—अ० [स० गर्ज्, प्रा० गज्ज, सिं० गाज, गु० गाजवू, प० गज्जणा, मरा० गाज (णे)] १ गभीर तथा घोर शब्द करना। जैसे—बादल

या सिह का गरजना। २ (किसी वस्तु का) चटकना, तडकना या फूटना। जैसे—मोती गरजना।

गरज-मद—वि० [फा०] [भाव० गरजमदी] १ जिसे गरज या आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २ चाहनेवाला। इच्छुक। ३ अपना काम या मतलब निकालनेवाला। स्वार्थी।

गरजी—वि०=गरजमद।

गरजुआ—पु० [हि० गरजना] एक प्रकार की खुमी।

गरजू†—वि०=गरजमद।

गरट—पु० [स० ग्रथ] झुड। समूह। उदा०—गजनि गज्जि गजे गरट, रहे रोहि रण रग।—चदवरदाई।

गरटना—अ० [हि० गरट] (पशुओ का) झुड बनाकर चलना।

गरट्ट†—पु०=गरट।

गरट्टना†—अ०=गरटना।

गरण—पु० [स० √गृ+ल्युट्–अन्] निगलने की क्रिया या भाव।

गरथ—स्त्री०=गथ (धन या पूँजी)।

गरथिना—स०=गूँथना। उदा०—इह करि रुक्न कुडलि करहि गरथि माल पुहुपै घनिय।—चदवरदाई।

गरद—वि० [स० गर √दा (देना) + क] जहर या विष देनेवाला।

पु० जहर। विष।

स्त्री० [फा० गर्द] १ धूल। राख। २ मटमैले रग का एक प्रकार का रेशमी कपडा।

गरदन—स्त्री० [फा०] १ जीवो, प्राणियो आदि के धड और सिर के बीच का अग। ग्रीवा। गला।

मुहा०—गरदन उठाना=विरोध करना। **(तलवार से) गरदन उडाना**=सिर काटना। **गरदन उतारना या काटना**=(क) सिर काटना। (ख) बहुत बडी हानि करना। **(किसी की) गरदन झुकना**=(क) बे-सुध या बेहोश होना। (ख) मर जाना। **(किसी के आगे) गरदन झुकना**=(क) अधीन होना। (ख) लज्जित होना। **(किसी के आगे) गरदन झुकाना**=(क) आत्म-समर्पण करना। (ख) लज्जित होकर सिर नीचा करना। **गरदन ढलकना या ढलना**=मरने के बहुत समीप होना या मर जाना। **(किसी का) गरदन न उठाना**=बीमारी के कारण बिलकुल चुपचाप या बे-सुध पडे रहना। **(किसी की) गरदन नापना**=गरदन से पकडकर किसी को धक्का देते हुए बाहर निकालना। **(अपनी) गरदन पर खून लेना**=हत्या का अपराधी या दोषी बनना। **(अपनी) गरदन पर जूआ रखना**=मुसीबत मोल लेना। **गरदन फँसना**=सकट मे पडना। **गरदन मरोडना**=गला दबाकर किसी को मार डालना। **गरदन मारना**=सिर काटना। **गरदन मे हाथ देना या डालना**=कही से निकाल बाहर करने के लिए गरदन पकडना। गरदनियाँ देना।

२ वह आडी लबी लकडी जो जुलाहो की लपेट के दोनो सिरो पर आडी साली जाती है। साल। ३ गगरा, लोटा आदि बरतनो का गरदन के आकार का ऊपरी गोल भाग।

गरदन-घुमाव—पु० [हि० गरदन+घुमाना] कुश्ती का एक पेच।

गरदन-तोड़—पु० [हि० गरदन+तोडना] कुश्ती का एक दाँव।

गरदन-तोड बुखार—पु० [हि०+फा०] एक प्रकार का सक्रामक और साघातिक ज्वर।

गरदन-बन्द—पु०=गुलूबद।

गरदन-बाँध—पु० [हि० गरदन+बाँधना] कुश्ती का एक पेच।

गरदना—पु० [हि० गरदन] १ मोटी गरदन। २ गरदन पर किया जानेवाला आघात। ३ गरदन पर का मास। (कसाई)

गरदनियाँ—स्त्री० [हि० गरदन+इया (प्रत्य०)] किसी की गरदन को हाथ से पकडकर उसे धक्का देते हुए कही से तिरस्कारपूर्वक बाहर निकालना।

गरदनी—स्त्री० [हि० गरदन] १ सिले हुए कपडे का वह अश जो गले के चारो ओर पडता है। गरेबान। २ गले मे पहनने की हँसली (गहना)। ३ घोडे की पीठ पर डाला जानेवाला कपडा जो एक ओर उसकी गरदन मे बँधा रहता है। ४ कुश्ती मे कोहनी और पहुँचे के बीचवाले अश से विपक्षी की गरदन पर किया जानेवाला आघात। कुदा। घस्सा। रद्दा। ५ कुश्ती का एक पेच। ६ दीवार के ऊपर की कगनी। कारनिस। ७ दे० 'गरदनियाँ'।

गर-दर्प—पु० [ब० स०] भुजग। साँप।

गरदा—पु० [फा० गर्द] हवा के साथ उडनेवाली धूल या मिट्टी।

गरदान—वि० [फा०] १ घूम-फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला। २ एक ही विन्दु या स्थान के चारो ओर घूमनेवाला।

पु० १ शब्दो का रूप साधन। २ वह कबूतर जो घूम-फिर कर पुन अपने स्थान पर आ जाता है। ३ चक्कर। फेर।

गरदानना—स० [फा० गरदान] १ व्याकरण मे किसी शब्द के भिन्न भिन्न विकारी रूप बनाना या बतलाना। २ विस्तारपूर्वक और कई बार समझाकर कोई बात कहना। उद्धरणी करना। ३ ध्यान देना या महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—हम तुम्हे क्या गरदानते है!

गरदी—वि० [हि० गरद] गरद नाम के कपडे की तरह का मटमैला या पीला। टसरी।

पु० उक्त प्रकार का रग। टसरी। (ड्रैब)

गरदुआ—पु० [हि० गरदन] पशुओ को होनेवाला एक प्रकार का ज्वर।

गरधरन—पु० [स० गरलधर] विष को धारण करनेवाला, शिव।

गर-ध्वज—पु० [ब० स०] अभ्रक।

गरना*—अ० [हि० 'गारना' का अ०] १ गारा या निचोडा जाना। निचुडना। २ किसी चीज के निकल जाने पर उससे रहित या हीन होना।

†अ० १=गडना। २=गलना। उदा०—रकत न रहा विरह-तन गरा।—जायसी।

गरनाल—स्त्री० [हि० गर+नली] चौडे मुँह की एक प्रकार की तोप। घननाल।

गर-प्रिय—पु० [ब० स०] शिव।

गरब†—पु० १=गर्व (अभिमान)। २=गर्भ।

गरबई*—स्त्री०=गर्व।

गरब-गहेला—वि० [स० गर्व=अभिमान+स० गृहीत, प्रा० गहिल्ल] [स्त्री० गरब-गहेली] बहुत गर्व करनेवाला। अभिमानी। घमडी।

गरबना*—अ० [स० गर्व] गर्व करना। इतराना। उदा०—कबीर कहा गरबियौ काल गहै रे केस।—कबीर।

गरबा—पु० [देश०] [गुज० गरबा=घडा] एक प्रकार का गुजराती लोक-नृत्य जिसमे बहुत सी स्त्रियाँ कमर या सिर पर घडा रखकर तथा घेरा बनाकर नाचती है।

गरबाना†—अ० [स० गर्व] घमड मे आना। अभिमान करना। शेखी करना।

गरबित*—वि०=गर्वित।

गरबीला—वि० [स० गर्व] जिसे गर्व हो। अभिमानी। घमडी।

गरभ—पु० १ =गर्भ। २ =गर्व।

गरभदान*—पु० १ =गर्भ। २ =गर्भाधान।

गरभाना—अ० [हि० गर्भ] १ गर्भ धारण करना। २ गर्भवती होना। ३ गेहूँ, जौ, धान आदि के पौधो मे बाल लगना।
स० गर्भ धारण कराना।

गरभी*—वि० [स० गर्वी] अभिमानी। घमडी।

गरम—वि० [स० घर्म से फा० गर्म] [क्रि० गरमाना, भाव० गरमाहट, गरमी] १ (पदार्थ) जिसका ताप-मान जीवो या प्राणियो के सहज और स्वाभाविक ताप-मान से कुछ अधिक हो। जैसे—नहाने का गरम पानी, दोपहर की गरम हवा। २ (प्राणी या शरीर) जिसका ताप-मान सहज या स्वाभाविक से कुछ अधिक या ऊपर हो। उस प्रकार का जैसा ज्वर या बुखार मे होता है। जैसे—रोज सध्या को इसका बदन गरम हो जाता है। ३. (शरीर) जिसमे सहज और स्वाभाविक ताप-मान वर्तमान हो। प्रसम ताप-मानवाला। जैसे—शरीर का गरम रहना जीवन का लक्षण है। ४ (पदार्थ) जो अग्नि, धूप आदि के सयोग से जल या तप रहा हो। जिसे छूने से शरीर मे जलन होती हो। जैसे—कडाही (या तवा) गरम है, इसे मत छूना। ५ (पदार्थ) जिसमे विद्युत् की धनात्मक या सहिक धारा प्रवाहित हो रही हो। जैसे—बिजली का गरम तार छूना प्राणियो के लिए घातक होता है। ६ (प्रदेश या भू-भाग) जो विषुवत् रेखा पर या उसके आस-पास स्थित हो और इसी लिए जहाँ गरमी अपेक्षया अधिक पडती हो। जैसे—अरब, चीन, भारत आदि गरम देश है। ७ (औषध या खाद्य पदार्थ) जो शरीर के अदर पहुँचकर उष्णता या ताप उत्पन्न करता हो। जिसकी तासीर या प्रभाव तापकारक हो। जैसे—जायफल, मिर्च, लौग, आदि मसाले गरम होते हैं। ८ (पदार्थ) जो शरीर के ऊपरी भाग पर से शीत का प्रभाव कम करके उसमे हलकी उष्णता या ताप लाता हो। जैसे—जाडे मे सब लोग गरम कपडे पहनते है। ९ (प्रकृति या स्वभाव) जिसमे उग्रता, क्रोध, द्वेष आदि तीव्र बाते अधिक प्रधान तथा प्रबल रहती हो। जैसे—वे गरम मिजाज के आदमी है।
मुहा०—(किसी से) गरम पडना या होना=आवेश या क्रोध मे आकर किसी से लडने-झगडने पर उतारू होना।
१० जो किसी रूप मे उग्र, उत्कट या तीव्र हो अथवा जो किसी कारण से ऐसा हो गया हो। जैसे—तुम्हारी ऐसी ही बातो से हमारा मिजाज गरम हो जाता है। ११ (मादा पशु) जो काम-वासना के वश मे होकर गर्भ धारण करने के लिए उत्सुक या उपयुक्त हो। जैसे—कुतिया या गौ का गरम होना। १२ जिसमे आवेश, उत्साह, तीव्रता आदि बाते यथेष्ट मात्रा मे हो। जिसमे अभी तक किसी प्रकार की मदता, शिथिलता, ह्रास आदि के लक्षण न दिखाई देते हो। जैसे—(क) अभी तुम्हारा खून गरम है, जब बडे होगे, तब तुममे सहनशीलता आवेगी। (ख) अभी यह मामला (या विवाद) इतना गरम है कि इसका निपटारा हो ही नही सकता। १३ (चर्चा या बात) जिसका यथेष्ट प्रचलन हो। जैसे—आज शहर मे एक नई खबर गरम है। १४ बिलकुल तुरत या हाल का। बहुत ही ताजा। जैसे—अभी तो चोट गरम है, कुछ देर बाद दरद बढेगा। १५ (बात-चीत) जिसके प्रसग मे कुछ उग्रता, उत्ते-जना या कटुता आ गई हो। जैसे—ससद मे इस विषय पर खूब गरम बहस हुई थी। १६ (बाजार या भाव) जिसमे खूब चहल-पहल या तेजी हो। जो चलता हुआ या बढती पर हो। जैसे—आज सोने का बाजार गरम है।
मुहा०—(किसी चीज या बात का) बाजार गरम होना=बहुत अधिकता, तीव्रता या प्रबलता होना। जैसे—(क) आज-कल हैजे का बाजार गरम है। (ख) शहरो मे चोरियो का बाजार गरम है।

गरम कपडा—पु० [हि०] शरीर गरम रखनेवाला और जाडे मे पहनने का कपडा। ऊनी अथवा रूईदार कपडा।

गरम पानी—पु० [हि०] १ वीर्य। शुक्र। (बाजारू) २ मदिरा। शराब।

गरम मसाला—पु० [हि०] भोजन मे मिलाई जानेवाली ऐसी चीजे जो उसे चरपरा, पाचक और सुस्वादु बनाती है। जैसे—दालचीनी, धनियाँ, मिर्च, लौग आदि।

गरमाहट—स्त्री० [हि० गरम+आहट (प्रत्य०)] १ गरम होने की अवस्था या भाव। २ कुछ हलकी गरमी। जैसे—कमरे मे अब गरमाहट आई है।

गरमाई†—स्त्री० [फा० गरम से पजाबी] १ गरमी। २ ऐसी वस्तु जिसके उपयोग या सेवन से शारीरिक शक्ति बढती हो। जैसे—जच्चा को गरमाई खिलाओ, तभी वह जल्दी स्वस्थ होगी।

गरमागरम—वि० [हि० गरम+गरम] १ ऐसा गरम जिसमे अभी ठढक बिलकुल न आने पाई हो। काफी गरम। जैसे—गरमागरम चाय या दूध। २ बिलकुल ताजा या तुरत का। जैसे—गरमागरम खबर। ३ उत्तेजना से युक्त। जैसे—गरमागरम बहस।

गरमागरमी—स्त्री० [हि० गरमा+गरम] १ किसी काम मे जल्दी से निब-टाने या समाप्त करने मे होनेवाली तेजी। तत्परता। मुस्तैदी। २ अन-बन या झगडा होने की स्थिति या भाव। ३ आवेशपूर्ण कहा-सुनी।

गरमाना—स० [फा० गर्म, हि० गरम+आना (प्रत्य०)] १ कोई चीज आग पर रखकर उसे साधारण या हलका गरम करना। जैसे—पीने के लिए दूध या खाने के लिए ठडी रोटी गरमाना। २ साधारण उष्णता या ताप से युक्त करना। जैसे—आग तापकर या धूप सेककर हाथ-पैर गरमाना, रजाई ओढकर शरीर गरमाना। ३ ऐसा काम करना या ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे किसी मे कुछ गरमी (आवेश, उत्तेजना, उत्साह, तीव्रता, प्रसन्नता आदि) उत्पन्न हो। जैसे—(क) कोई तीखी बात कहकर किसी आदमी को गरमाना। (ख) शराब पिलाकर भैसे को गरमाना। (ग) कुछ दूर दौडाकर घोडे को गरमाना। (घ) गवैये का आरम्भ मे धीरे-धीरे कुछ समय तक गाकर अपना गला

गरमाना। ४ किसी के जेब, हाथ आदि के सबध मे, उसमे कुछ धन रखकर उसे प्रसन्न या सतुष्ट करना। जैसे—उसने थानेदार (या पेशकार) का जेब (या हाथ) गरमाकर उसे अपने अनुकूल कर लिया।

अ० १ साधारण या हलकी उष्णता अथवा ताप से युक्त होना। गरम होना। जैसे—(क) थोडी देर आँच पर रहने से दूध या पानी का गरमाना। (ख) आग तापने या कबल ओढने से शरीर का गरमाना। २ आवेश, उत्तेजना आदि उग्र अथवा तीव्र मनोभावो से युक्त होना। जैसे—जरा सी बात पर इस तरह गरमाना अच्छा नही होता। ३ किसी आरम्भिक या औपचारिक क्रिया के प्रभाव से किसी प्राणी या उसके किसी अग का तेजी पर आना और ठीक तरह से अपना काम करने के योग्य होना। जैसे—(क) कुछ दूर दौडने से घोडे का गरमाना। (ख) कुछ देर तक धीरे-धीरे गा लेने पर गवैये का गला गरमाना। ४ स्वाभाविक रूप से पशुओ आदि का उमग मे आना और काम-वासना से युक्त होना। जैसे—गौ या घोडे का गरमाना। ५ जेब, हाथ आदि के सबध मे, रुपये पैसे की उत्साह-वर्धक या सुखद प्राप्ति होना। जैसे—आज कई दिन बाद इनका जेब (या हाथ) गरमाया है।

गरमी—स्त्री० [फा०] १ गरम होने की अवस्था, गुण या भाव। जैसे—आग या धूप की गरमी। २ वर्षा से पहले और वसत के बाद की ऋतु। ग्रीष्म काल। जेठ-असाढ के दिन। जैसे—इस साल गरमी मे पहाड पर जाने का विचार है। ३ किसी प्रकार का मानसिक आवेग या उमग। जोश।

मुहा०—(अपनी) गरमी निकालना=मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)। **(किसी की) गरमी निकालना**=ऐसा कार्य करना जिससे किसी का आवेग या क्रोध सदा के लिए अथवा कुछ दिनो के लिए दूर होकर मद या शात पड जाय।

५ दुष्ट मैथुन से जननेद्रिय मे होने वाला एक भीषण रोग। आतशक या फिरग रोग। (सिफलिस) ६ घोडो और हाथियो को होनेवाला एक प्रकार का रोग। ७ दे० 'ताप'।

गरमीदाना—पु० [हिं० गरमी+दाना] अधिक गरमी पडने के कारण शरीर पर निकलनेवाले छोटे-छोटे लाल दाने। अँभौरी। पित्ती।

गररा*—पु० [हिं० गर्रा] घोडो की एक जाति।

गरराना*—अ० [अनु०] घोर या भीषण ध्वनि करना। गरजना।

गररी†—स्त्री० [देश०] किलँहटी या सिरोही नामकी चिडिया।

गरल—पु० [स०√गृ (निगलना)+अलच्] १ जहर। विष। २ बिच्छू, साँप आदि विषैले कीडो का जहर। ३ घास का बँधा हुआ पूला।

गरल-धर—वि० [ष० त०] विष धारण करनेवाला।

पु० १ महादेव। शिव। २ साँप।

गरलारि—पु० [गरल-अरि, ष० त०] मरकत मणि। पन्ना।

गरवा*—पु० [स० गुरु] १ भारी। २ महान्।

पु० दे० 'गला'।

गर-व्रत—पु० [ब० स०] मयूर। मोर।

गरसना—स०=ग्रसना।

गरह†—पु०=ग्रह।

गरहन—पु० [स० गर√हन् (नष्ट करना)+क] काली तुलसी। बबरी।

†पु०=ग्रहण।

गरहर—पु० [हि० गर=गल+हर] वह काठ जो नटखट चौपायो के गले मे बाँधकर लटकाया जाता है। कुदा। ठेकुर।

गरहेडवा—पु० [स० गवेडुका] कसेई। कौडिल्ला। (पक्षी)

गराँ—वि० [फा०] १ भारी। वजनी। २ कठिन। ३ अप्रिय। नागवार। ४ महँगा।

गराडील—वि० [फा० गरा या अ० ग्राड?] १ जो लब-तडग तथा मोटा-ताजा हो। २ बहुत बडा या भारी।

गराँव—स्त्री० [हि० गर=गला] पशुओ के गले मे बाँधी जानेवाली बटी हुई दोहरी रस्सी जिसके एक सिरे पर मुद्धी और दूसरे सिरे पर गाँठ होती है।

गरा†—पु०=गला।

गराऊ†—पु० [स० गुरु, पु० हि० गुरु गरुअ] पुराना अथवा बूढा भेडा। (गँडेरियो की बोली)

गराज—पु० [अ० गैरेज] मोटर गाडी या इसी तरह की और कोई सवारी रखने या रहने का घिरा हुआ स्थान। गिराज।

†स्त्री०=गरज (गर्जन)।

गराडी—स्त्री०=गडारी।

गराना—स० १ दे० 'गलाना'। २ दे० 'गारना'।

गरानी—स्त्री० [फा०] १ भारीपन। गुरुता। २ महँगी। ३ भोजन न पचने के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

†स्त्री०=ग्लानि।

गरामी—वि० [फा०] १ बुजुर्ग। वृद्ध। २ प्रसिद्ध। ३ सम्मानित।

गरारा—वि० [स० गर्व, पु० हिं० गारो+आर(प्रत्य०)] १ अभिमानी। घमडी। २ प्रबल। बलवान्। ३ तेज। प्रचड।

पु० [हि० घेरा] १ पायजामे की ढीली मोहरी। जैसे—गरारेदार पायजामा। २ ढीली मोहरी का पायजामा। ३ खेमा, तबू आदि भरने का बडा थैला।

पु० [अ० गरार, अनु०] १ मुँह मे पानी भरकर गर गर शब्द करके कुल्ली करना। २ चौपायो का एक रोग जिसमे उनके गले मे घुर-घुर शब्द होता है।

गरारी—स्त्री० दे० 'गडारी।'

गराव—पु० [देश०] मध्य युग की एक प्रकार की बडी नाव।

गरावन†—पु०=गडावन।

गरावना†—स० =१ =गडाना। २ =गलाना।

गरावा†—पु० [देश०] ऐसी भूमि जो अधिक उर्वर न हो। कम उपजाऊ जमीन।

गरास—पु०=ग्रास।

गरासना*—स० [स० ग्रास] १ निगलना। २ दे० 'ग्रासना' या 'ग्रसना'।

गरिका—स्त्री० [स० गुरु+णिच्, गर् आदेश गरि+कन्—टाप्] नारियल की गरी।

गरित—वि० [स० +इतच्] १ जहर या विष से युक्त। २ जिसमे विष मिलाया गया हो।

गरिमता*—स्त्री० दे० 'गरिमा'। उदा०—उरजनि नहिन गरिमता तैसी।
—नददास।

गरिमा (मन्)—स्त्री० [स० गुरु+इमनिच्, गर् आदेश] १ गुरुत्व। भारीपन। २ महत्त्व। महिमा। ३ अहकार। घमड। ४ आत्म-श्लाघा। शेखी। ५ आठ सिद्धियो मे से एक, जिसके फल-स्वरूप मनुष्य अपने शरीर का भार जितना चाहे, उतना बढा सकता है।

गरिया—पु० [देश०] दक्षिण ओर मध्यभारत मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

गरियाना†—अ० [हि० गारी=गाली] गालियाँ देना। दुर्वचन कहना।

गरियार—वि० [स० गुरु=भारी] १ (पशु) जो कही बैठ जाने पर जल्दी अपनी जगह से न हिले। फलत मट्ठर या सुस्त। जैसे—गरियार बैल। २ काम-धधा करने मे सुस्त। आलसी। उदा०—ढीह पतोहु धिया गरियार।—घाघ।

गरियारा—पु०=गलियारा।
वि०=गरियार।

गरियालू—पु० [हि० करिया से करियालू] एक प्रकार का काला-नीला रग जो ऊन रगने के काम आता है।
वि० उक्त प्रकार के रग का। काला-नीला।

गरिष्ठ—वि० [स० गुरु+इष्ठन्, गर् आदेश] १ बहुत भारी। २ (खाद्य पदार्थ) जो बहुत कठिनता से या देर मे पचता हो। ३ महत्त्वपूर्ण।
पु० १ एक प्राचीन तीर्थ। २ एक दानव का नाम।

गरी—स्त्री० [स०√गृ (लीलना)+अच्+ङीप्] देवताड।
स्त्री० [स० गुलिका, प्रा० गुडिया] १ नारियल के अदर का वह सफेद मुलायम गूदा जो खाया जाता है। २ किसी कडे बीज के अदर का मुलायम और जमा हुआ गूदा।

गरीब—वि० [अ० गरीब] [स्त्री० गरीबिन गरीबिनी, (क्व०), भाव० गरीबी] १ दीन ओर नम्र। २ दरिद्र। निर्धन। ३ निरुपाय। बेचारा।
पु० ईरानी सगीत मे एक प्रकार का राग।

गरीबखाना—पु० [फा०] (अपनी नम्रता दिखलाने के लिए) इस गरीब (अर्थात् मुझ अकिचन) के रहने का स्थान। मेरा घर।

गरीबनिवाज—वि० [फा० गरीब+नेवाज] दीनो पर दया करने और दु खियो का दु ख दूर करनेवाला। दयालु।

गरीबपरवर—वि० [फा०] गरीबो की परवरिश करनेवाला। गरीबो को पालनेवाला। दीन-पालक।

गरीबी—स्त्री० [अ० गरीब] १ गरीब होने की अवस्था या भाव। २ २ दीनता। नम्रता। ३ दरिद्रता। निर्धनता।

गरीयस्—वि० [स० गुरु+ईयसुन्, गर् आदेश] [स्त्री० गरीयसी] १ बहुत अधिक भारी। २ बहुत प्रबल और महान्। ३ महत्त्वपूर्ण।

गरु*—वि० [स० गुरु] १ भारी। वजनदार। २ गौरवशाली। ३. जिसका स्वभाव गभीर या शात हो। धीर।

गरुअत्त—वि० [स० गुरु] बडा। महान्।

गरुआ†—वि० [स० गुरु] [स्त्री० गरुई] १ भारी। वजनी।
२ अभिमानी। घमडी।
†पु०=गडुआ।

गरुआई—स्त्री० [हि० गरुआ] गुरुता। भारीपन।

गरुआना*—अ० [स० गुरु] भारी या वजनदार होना।
स० भारी करना या बनाना।

गरुड—पु० [स० गरुत्√डी (उडना)+ड, पृषो० तलोप] १ गिद्ध की जाति का एक प्रकार का बहुत बडा पक्षी जो पुराणो मे विष्णु का वाहन कहा गया है। २ सफेद रग का एक प्रकार का जल-पक्षी जिसे पडवा ढेक भी कहते है। ३ प्राचीन भारत की एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ४ गरुड पक्षी के आकार का एक प्रकार का प्रासाद। ५ पुराणानुसार चौदहवे कल्प का नाम। ६ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७ छप्पय छद का एक प्रकार या भेद। ८ नृत्य मे, एक प्रकार की मुद्रा।

गरुडगामी (मिन्)—पु० [स० गरुड√गम् (जाना)+णिनि] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड-घटा—पु० [ष० त०] ठाकुर जी की पूजा मे बजाया जानेवाला वह घटा जिसके ऊपर गरुड की आकृति बनी रहती है।

गरुड-ध्वज—पु० [ब० स०] १ विष्णु। २ प्राचीनकाल के बने हुए ऐसे स्तभ जिनपर गरुड की आकृति होती थी।

गरुड-पक्ष—पु० [ष० त०] नृत्य मे दोनो हाथ कमर पर रखने की एक मुद्रा।

गरुड-पाश—पु० [मध्य० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का फदा जो शत्रु को फँसाने के लिए उसके ऊपर फेका जाता था।

गरुड-पुराण—पु० [मध्य० स०] अठारह पुराणो मे से एक जिसमे यमपुर तथा अनेक प्रकार के नरको का वर्णन है। प्रेत-कर्म का विधान भी इसी मे है।
विशेष—हिन्दुओ मे किसी के मर जाने पर दस दिन तक इसकी कथा सुनने का माहात्म्य है।

गरुड-प्लुत—पु० [ष० त०] नृत्य मे एक प्रकार की मुद्रा।

गरुड-भक्त—पु० [ष० त०] प्राचीन भारत का एक सप्रदाय जो गरुड की उपासना करता था।

गरुड-यान—पु० [ब० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड-रुत—पु० [ष०त०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश नगण, जगण, भगण, जगण, तगण तथा अत मे एक गुरु होता है।

गरुड-व्यूह—पु० [उपमि० स०] प्राचीन भारत मे सैनिक व्यूह-रचना का एक प्रकार जिसमे सेना का मध्य भाग अपेक्षया अधिक विस्तृत रखा जाता था।

गरुड-सिंह—पु० [उपमि० स०] प्राचीन भारतीय वास्तु मे, वह कल्पित सिंह जिसका अगला भाग गरुड के समान तथा पिछला सिंह के समान होता था।

गरुडाक—पु० [गरुड-अक] ब० स०] विष्णु।

गरुडाकित—पु० [गरुड-अकित, उपमि० स०] दे० 'गरुडाश्मा'।

गरुडाग्रज—पु० [गरुड-अग्रज, ष० त०] अरुण, जो गरुड का बडा भाई कहा गया है।

गरुडाश्मा (श्मन्)—पु० [गरुड-अश्मन्, उपमि० स०] पन्ना नामक रत्न।

गरुत्—पु० [स०√गृ (शब्द)+उति] पख। पर।

गरुता†—स्त्री०=गुरुता।

गरुत्मान् (मत्)—पु० [स० गरुत्+मतुप्] १ गरुड। २ पक्षी। ३ अग्नि।

गरुल—पु० [स० गरुड़] गरुड। उदा०—कत गरुल होतहि निरदयी।—जायसी।
गरुवाई†—स्त्री०=गुरुता।
गरुहर†—वि०=गुरु (भारी)।
गरू*—वि०=गुरु।
गरूर—पु० [अ० गरूर] अभिमान। घमड।
गरूरत—स्त्री० =गरूर।
गरूरताई*—स्त्री० =गरूर।
गरूरा*—वि० [फा० गरूर] [स्त्री० गरूरी] १ अभिमानी २ घमडी। पु०=गरूर।
गरेठना†—स०=गरेरना (घेरना)।
गरेठा—वि०=टेढा।
गरेबान—पु० [फा०] किसी सिले हुए कपडे का वह अश जो गले के चारो ओर पडता है।
गरेरना—स०=घेरना (छेकना या रोकना)।
गरेलना†—स०=गरेरना।
गरेरा*—पु०=घेरा।
वि० [स्त्री० गरेरी] (वास्तु रचना) जिसमे घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।
†पु०=गदेला (छोटा लडका)।
गरेरी—स्त्री०=गडारी।
गरेहुआ†—वि० [स० गुरु] १ भारी। २ भीषण। विकट।
गरैयाँ—स्त्री०=गराँव (पशुओ के गले मे बाँधने की रस्सी)।
गरोह—पु० [फा०] झुड। जत्था।
गर्क़—वि० [अ०] १ डूबा हुआ। २ तल्लीन। विचारमग्न।
गर्ग—पु० [स० √गॄ (स्तुति करना)+ग] १ एक वैदिक ऋषि जो आगिरस भरद्वाज के वशज और ऋग्वेद के एक सूक्त के मत्र-द्रष्टा थे। २ ज्योतिष शास्त्र के एक प्राचीन आचार्य। ३ धर्मशास्त्र के प्रवर्त्तक एक प्राचीन ऋषि। ४ बैल। ५ साँड। ६ गगोरी नाम का छोटा कीडा। ७ बिच्छू। ८ केचुआ। ९ एक पर्वत का पुराना नाम। १० ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जिनकी सृष्टि गया मे यज्ञ के लिए हुई थी। ११ सगीत मे, एक प्रकार का ताल।
गर्गर—पु० [स० गर्ग√रा (देना)+क] १ भँवर। २ एक प्रकार का पुराना बाजा। ३ गगरा। गागर। ४ एक प्रकार की मछली।
गर्गरी—स्त्री० [स० गर्गर+ङीष्] १ दही जमाने की मटकी। दहेडी। २ मथानी। ३ गगरी। कलसी।
गर्ज—स्त्री०=गरज।
गर्जक—पु० [स०√गर्ज (गरजना)+ण्वुल्-अक] एक प्रकार की मछली। वि० गरजनेवाला।
गर्जन—पु० [स० √गर्ज्+ल्युट्-अन] १ घोर ध्वनि या भीषण शब्द करने या होने की क्रिया या भाव। गरज।
पद—गर्जन-तर्जन=क्रोध मे आकर जोर-जोर से बोलना और डाँटना-डपटना।
२ शाल की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।
गर्जना—स्त्री०[स०] गर्जन (दे०)।
अ०=गरजना।
गर्जा—स्त्री० [स०√गर्ज्+अङ्—टाप्] बादलो की गरज।
गर्जित—भू० कृ० [स० √गर्ज्+क्त] गरजा हुआ।
गर्डर—पु० [अ०] लोहे का ढला हुआ वह मोटा और लबा छड जो बडी छते आदि पाटने मे शहतीर की जगह लगाया जाता है।
गर्त्त—पु० [स०√गॄ (लीलना)+तन्] १ गड्ढा। गड्हा। २ छेद। ३ दरार। ४ घर। ५ रथ। ६ जलाशय। ७ एक नरक का नाम। ८ एक शब्द जो स्थान-वाचक कुछ नामो मे उत्तर-पद के रूप मे लगता है। जैसे—चक्रगर्त्त, त्रिगर्त्त आदि।
गर्तकी—स्त्री० [स० गर्त+कन्—ङीष्] वह स्थान जहाँ कपडे बुने जाते है।
गर्ता—स्त्री० [स० गर्त+टाप्]१ बिल। २ गुफा।
गर्ताश्रय—पु० [गर्त-आश्रय, ब० स०] बिल मे रहनेवाले जतु। जैसे—चूहा, खरगोश आदि।
गर्तिका—स्त्री० [स० गर्त+ठन्—इक, टाप्] =गर्तकी।
गर्द—स्त्री० [फा०] गरदा। धूल।
मुहा० के लिए देखे 'धूल' के मुहा०।
गर्दखोर—वि० [फा०] (कपडा या उसका रग) जो गर्द या मिट्टी आदि पडने से जल्दी मैला या खराब न होता हो। जैसे—खाकी रग। पु० पैर पोछने का टाट आदि।
गर्दखोरा†—वि०=गर्दखोर।
गर्द-गुबार—पु० [फा०] धूल और मिट्टी जो हवा के साथ उडकर इधर-उधर गिरती है।
गर्दन—स्त्री०=गरदन।
गर्दना—पु० दे० 'गरदना'।
गर्दभग—पु० [हिं० गर्द+भग] एक प्रकार का गाँजा जिसे चूरू चरस भी कहते है।
गर्दभ—पु० [स० √गर्द् (शब्द करना)+अभच्] १ गधा। गदहा। २ सफेद कुमुदनी या कोई। ३ विडग। ४ गदहिला नाम का कीडा।
गर्दभक—पु० [स० गर्दभ+कन्] १ गुबरैला नाम का कीडा। २ एक प्रकार का चर्मरोग।
गर्दभ-याग—पु० [तृ० त०] अवकीर्ण याग।
गर्दभाड—पु० [स० गर्दभ√अम् (जाना)+ड] पलखा या पाकर नामक वृक्ष।
गर्दभा—स्त्री० [स० गर्दभ+टाप्] सफेद कटकारी।
गर्दभिका—स्त्री० [स० गर्दभ+ङीष्+कन्-टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार का रोग जिसमे लाल फुँसियाँ निकलती है। गदहिला।
गर्दभी—स्त्री० [स० गर्दभ+ङीष्] १ गर्दभ की मादा। गधी। २. एक प्रकार का कीडा। ३ अपराजिता लता। ४ सफेद कटकारी। ५ गर्दभिका या गदहिला नामक रोग।
गर्दाबाद—वि० [फा० गर्द+आबाद]१ गर्द या धूल से भरा हुआ। २ टूटा-फूटा। ध्वस्त। ३ उजाड। वीरान। ४ बेसुध। बेहोश।
गर्दालू—पु० [फा० गर्द+आलू] आलूबुखारा।
गर्दिश—स्त्री० [फा०] १ चारो ओर घमने की क्रिया या भाव।

चक्कर। २. विपत्ति या सकट मे डालनेवाला दिनो (या भाग्य) का फेर।

गर्दुआ—पु० =गरदुआ।

गर्दूं—पु० [फा०] १ आकाश। २ गाडी। रथ।

गर्द्ध—पु० [स० गृध् (चाहना)+घञ्] [वि० गर्द्धी, गर्द्धित] १ लालच। लोभ। २ गर्दभाड। पाकर।

गर्द्धित—वि० [स० गर्द्ध+इतच्] लोभ से युक्त। लुब्ध।

गर्द्धी (द्धिन्)—वि० [स० √गृध्+णिनि] [स्त्री० गर्द्धिनी] १ लोभी। २ लुब्ध।

गर्नाल—स्त्री०=गरनाल।

गर्ब—पु०=गर्व।

गर्बा—पु० [?] १ मिट्टी का वह पात्र जो कुछ देवी-देवताओ की पूजा के लिए मगल कलश के रूप मे सजाकर प्रस्थापित किया जाता हे। २ वह गीत जो उक्त पात्र को प्रस्थापित करते समय गाया जाता है। (गुजरात)

गर्बीला—वि०=गर्वीला।

गर्भंड—पु० [गर्भ-अड, ष० त०, पररूप] बहुत बडी या उभरी हुई नाभि।

गर्भ—पुं० [स०√गृ (सीचना)+भन्] १ पेट के अन्दर का भाग। उदर। २ स्तनपायी (मादा) प्राणियो के शरीर का वह भीतरी भाग जिसमे शुक्र और रज के सयोग से नये प्राणी उत्पन्न होते, बढते, पनपते और अत मे जन्म लेते है। गर्भाशय। ३ उक्त के आधार पर मादा स्तनपायी प्राणियो के गर्भवती होने की अवस्था या काल।

मुहा०—**गर्भ गिरना**=गर्भपात होना। **गर्भ रहना**=पेट मे बच्चा आना।

४ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी वस्तु का वह भीतरी भाग जिसमे कोई चीज छिपी या दबी रहती अथवा पनपती, बढती या स्थित रहती हे। जैसे—यह बात तो अभी भविष्य के गर्भ मे ही है। ५ गर्भ मे आनेवाला नया जीव। (क्व०) ६ फलित ज्योतिष मे नये मेघो की उत्पत्ति जिससे वृष्टि का आगम होता है।

गर्भक—प० [स० गर्भ√कै (शब्द)+क] १ पुत्रजीव वृक्ष। पतजिव। २ फूलो का गुच्छा जो बालो मे खोसा जाता है। [गर्भ+कन्] दो रातो और उनके बीच के दिन की अवधि।

गर्भकार—वि० [स० गर्भ√कृ (करना)+अण्] (व्यक्ति) जिसके सपर्क से स्त्री ने गर्भ धारण किया हो।

पु० सामगान का एक प्रकार का भेद।

गर्भ-काल—पु० [ष० त०] १ गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल। ऋतुकाल। २ वह सारा समय जब तक स्त्रियो को गर्भ रहता हो। गर्भ-धारण से प्रसव तक का समय।

गर्भ-केसर—पु० [ष० त०] फूल के बीच मे के वे केसर या सीके जो उसके स्त्रीलिंग अग के रूप मे होते है। उसी के साथ पराग केशर का सपर्क होने पर फल और बीज उत्पन्न होते है। (कार्पेल, पिस्टिल)

गर्भ-कोष—पु० [ष० त०] गर्भाशय।

गर्भ-गृह—पु० [उपमि० स०] १ मकान के मध्य की कोठरी। बीच का घर। २. मन्दिर के बीच की वह कोठरी जिसमे प्रतिमा या मूर्ति रहती है। ३ वह कोठरी जिसमे गर्भवती स्त्री सन्तान प्रसव करती है। सौरी। ४ आँगन।

गर्भघाती (तिन्)—वि० [स० गर्भ√हन् (नष्ट करना)+णिनि] [स्त्री० गर्भघातिनी] गर्भ गिराने या नष्ट करनेवाला।

गर्भ-चलन—पु० [ष० त०] गर्भाशय मे बच्चे का इधर-उधर हिलना-डोलना।

गर्भ-च्युति—स्त्री० [ष० त०] १ प्रसव। २ गर्भपात।

गर्भज—वि० [स० गर्भ√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ जो गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। (अडज, स्वेदज आदि से भिन्न) २ दे० 'जन्म-जात'।

गर्भ-जात—वि० [ष० त०]=गर्भज।

गर्भदश—पु०=सदश।

गर्भद—वि० [स० वृर्भ√दा (देना)+क] गर्भकार।

पु० पुत्रजीव वृक्ष।

गर्भदा—स्त्री० [स० गर्भद+टाप्] सफेद भटकटैया।

गर्भ-दात्री—स्त्री० [ष० त०] =गर्भदा।

गर्भ-दास—पु० [प० त०] [स्त्री० गर्भदासी] दासी का पुत्र, अर्थात् जन्मजात दास। गोला।

गर्भ-दिवस—पु० [च० त०] १ गर्भकाल। २ कार्तिकी पूर्णिमा से लेकर लगभग १९५ दिनो का समय जब कि मेघो के गर्भ मे आने अर्थात् आकाश मे बनने का समय होता है। (बृहत्सहिता)

गर्भ-द्रुत—पु० [ष० त०] वैद्यक मे पारे की शुद्धि के लिए किए जानेवाले सस्कारो मे से तेरहवाँ सस्कार।

गर्भ-द्रुह—वि० [स० गर्भ√द्रुह् (बुराई सोचना)+क्विप्] [स्त्री० गर्भ-द्रुहा] गर्भ का द्रोही, अर्थात् गर्भ न चाहने या उसे नष्ट करनेवाला।

गर्भ-धरा—वि० [ष० त०] गर्भ धारण करनेवाली। गर्भवती।

गर्भ-धारण—पु० [ष० त०] गर्भ मे नया जीव धारण करना। गर्भवती होना।

गर्भ-नाडी—स्त्री० [ष० त०] वह नाडी जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है।

गर्भ-नाल—स्त्री० [ष० त०] १ फूलो के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ केसर होता है। २ दे० 'गर्भ-नाडी'।

गर्भ-निस्रव—पु० [ष० त०] वह झिल्ली जो बच्चे के जन्म लेने पर गर्भ से निकलती हे। आँवल। खेडी।

गर्भ-पत्र—पु० [ष० त०] १ कोपल। गाभा। २ दे० 'गर्भनाल'।

गर्भपाकी (किन्)—पु० [स० गर्भ-पाक, ष० त०, +इनि] साठी धान।

गर्भ-पात—पु० [ष० त०] १ गर्भ का गिरना। पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले गर्भ से निकलकर गिर पडना और व्यर्थ हो जाना। (गर्भ-स्राव से भिन्न, दे० 'गर्भ-स्राव)

गर्भ-पातक—वि० [ष० त०] (औषध या पदार्थ) जिसके प्रयोग या व्यवहार से गर्भपात हो जाय। गर्भ गिरानेवाला।

पु० लाल सहिजन।

गर्भ-पातन—पु० [स० ष० त०] जान-बूझकर पेट या गर्भ का गिराना, जिससे गर्भस्थ जीव मर जाता है। (यह विधिक दृष्टि से अपराध भी है और नैतिक तथा धार्मिक दृष्टि से पाप भी)।

गर्भ-पातिनी—स्त्री० [स० गर्भपातिन्+ङीप्] १. कलिहारी। २ विशल्या नामक ओषधि।

गर्भपाती (तिन्)—वि० [स० गर्भ √पत् (गिरना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० गर्भपातिनी] गर्भपात करने या गिरानेवाला।

गर्भ-भवन—पु० [ष० त०] १ वह कोठरी जिसमे स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सौरी। २ दे० 'गर्भ-गृह'।

गर्भ-मडप—पु० [ष० त०] १ गर्भ-गृह। २ पति और पत्नी का शयनागार।

गर्भ-मास—पु० [ष० त०] वह महीना जिसमे स्त्री ने गर्भ धारण किया हो।

गर्भ-मोक्ष—पु० [ष० त०] प्रसव।

गर्भरा—स्त्री० [स० गर्भ√रा (देना)+क–टाप्] प्राचीन काल की एक प्रकार की बडी नाव।

गर्भवती—स्त्री० [स० गर्भ+मतुप्–वत्व, डीप्] स्त्री, जिसके पेट मे बच्चा हो। गर्भिणी।

गर्भ-वास—पु० [स० त०] १ बच्चे का गर्भाशय मे रहना। २ गर्भाशय।

गर्भ-विज्ञान—पु० [ष० त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि गर्भ मे कलल किस प्रकार बनता है, उसमे जीवन का सचार कैसे होता है और उसकी वृद्धि या विकास किस प्रकार होता है। (एम्ब्रायॉलोजी)

गर्भ-व्याकरण—पु० [ष० त०] आयुर्वेद का वह अग जिसमे बालक के गर्भ मे आने, बढने, जन्म लेने आदि की बातो का विवेचन होता है।

गर्भ-व्यूह—पु० [उपमि० स०] युद्ध मे सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमे सेना अपने सेनापति या रक्षणीय वस्तु को चारो ओर से घेर कर खडी होती और लडती थी।

गर्भ-शकु—पु० [ष० त०] वह सँडसी जिससे मरा हुआ बच्चा गर्भ मे से निकाला जाता था। (फर्सेप्स)

गर्भ-शय्या—स्त्री० [ष० त०] पेट के अदर का वह स्थान जिस पर गर्भ स्थित रहता है।

गर्भ-सधि—स्त्री० [मध्य० स०] नाट्य शास्त्र मे एक प्रकार की सधि। जिस सधि मे उपाय कही दब जाय और खोज करने पर बीज का और भी विकास हो उसे गर्भ-सधि कहते है।—प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र।

गर्भस्थ—वि० [स० गर्भ√स्था (ठहरना)+क] गर्भ मे आया या ठहरा हुआ (बच्चा)।

गर्भ-स्थली—स्त्री० [मयू० स०] गर्भाशय।

गर्भ-स्थापन—पु० [ष० त०] गर्भाशय मे वीर्य पहुँचाकर गर्भ-धारण कराना। (सेमिनेशन)

गर्भ-स्राव—पु० [ष० त०] गर्भ के गिरने या नष्ट होने की वह अवस्था जब कि वह पिंड बनने से पहले बहुत-कुछ तरल रूप मे रहता है। (एबोर्शन)

विशेष—साधारणत तीन-चार महीने तक गर्भ तरल रूप मे रहता है और गर्भ-स्राव होने पर वह रक्त के रूप मे बहकर निकल जाता है। पर इससे अधिक बडे होने पर जब वह पिंड का रूप धारण करके निकलता है, तब उसे गर्भपात कहते है।

गर्भस्रावी (विन्)—वि० [स० गर्भ√स्रु (बहना) + णिच्+णिनि] [स्त्री० गर्भ-स्राविनी] गर्भ-स्राव करने या करानेवाला।

पुं० हिंताल नामक वृक्ष।

गर्भ-हत्या—स्त्री० [ष० त०] गर्भ मे आये हुए जीव या प्राणी को किसी प्रकार नष्ट कर देना या मार डालना।

गर्भांक—पु० [स० गर्भ-अक, उपमि० स०] १ नाटक के अक का एक अश जिसमे केवल एक घटना का दृश्य होता है। २ एक नाटक मे दिखलाया जानेवाला कोई दूसरा नाटक या उसका दृश्य।

गर्भागार—पु० [स० गर्भ-आगार, उपमि० स०] १ गर्भ-गृह। २ आँगन। ३ गर्भाशय।

गर्भाधान—पु० [स० गर्भ-आधान, ष० त०] १ स्त्री के गर्भ या पेट मे पुरुष के वीर्य से जीव या प्राणी की सृष्टि का सूत्रपात। सभोग करके वीर्य गर्भाशय मे स्थित करना या होना। २ गृहसूत्र के अनुसार मनुष्य के सोलहो सस्कारो मे से पहला सस्कार जो उस समय होता है जब स्त्री ऋतुमती होने के उपरान्त शुद्ध होती है।

गर्भारि—पु० [स० गर्भ-अरि, ष० त०] छोटी इलायची।

गर्भाशय—पु० [स० गर्भ-आशय, ष० त०] स्त्रियो या मादा पशुओ के पेट मे वह स्थान जिसमे वीर्य के पहुँचने पर जीव या प्राणी की सृष्टि का सूत्रपात होता है। बच्चेदानी। (यूट्रस)

गर्भिणी—वि० [स० गर्भ+इनि-डीप्] स्त्री या मादा प्राणी जिसे गर्भ हो। गर्भवती। (प्रेगनैन्ट)

स्त्री० १ खिरनी का पेड। २ प्राचीन भारत मे एक प्रकार की बडी नाव जो समुद्रो मे चलती थी।

गर्भित—वि० [स० गर्भ+इतच्] १ जिसने गर्भ धारण किया हो। गर्भ से युक्त। २ जिसके गर्भ अर्थात् भीतरी भाग मे कुछ हो या छिपा हो। जैसे—सारगर्भित कथन। ३ भरा हुआ। पूरित। ४ साहित्यिक रचना का एक दोष जो किसी एक भाव के सूचक वाक्य के अन्तर्गत किसी दूसरे भाव का सूचक कोई और वाक्य भी सम्मिलित किये जाने पर होता है।

गर्भी (र्भिन्)—वि० [स० गर्भ+इनि] १ गर्भवाला। २ गर्भित।

गर्भीला—वि० [स० गर्भ+हिं० ईला (प्रत्य०)] १ जिसके गर्भ अथवा भीतरी भाग मे कोई चीज स्थित हो। २ (रत्न) जिसके अन्दर से आभा निकलती हो।

गर्भोदक—पु० [स० गर्भ-उदक, ब० स०] पुराणानुसार एक समुद्र जिसमे श्रीकृष्ण को शेषशायी महाविष्णु के दर्शन हुए थे।

गर्भोपघात—पु० [स० गर्भ-उपघात, ष० त०] गर्भ-हत्या।

गर्भोपनिषद्—पु० [स० गर्भ-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेद सम्बन्धी एक उपनिषद् जिसमे गर्भ की सृष्टि, अभिवृद्धि, प्रसव आदि का वर्णन है।

गर्म—वि० [फा०] दे० 'गरम'।

गर्रा—वि० [देश०] लाख के रग जैसा। लाखी।

पु० १ लाखी रग। २ लाखी रग का घोडा। ३ लाखी रग का कबूतर।

पु० [अ० गर्र] १ अभिमान। घमड। २ कोई ऐसा उग्र कार्य जो, अपने अभिमान और बल के प्रदर्शन के लिए किया गया हो। ३ सतलज नदी का एक नाम जो उसे बहावलपुर के आस-पास प्राप्त है।

स्त्री०=गराडी। (बुन्देल०) उदा०—गर्रा पै डोरी डार गुइँयाँ अरी डार गुइयाँरी।—लोकगीत।

गर्री—स्त्री० [हि० गरेरना] १ खलिहान मे लगाई हुई डठल की गाँज। २ तागा लपेटने का एक औजार।

गर्व—पु० [स० √गर्व् (अहकार करना)+घञ्] [वि० गर्वित, गर्ववान] १ अपने किसी श्रेष्ठ कार्य, बात, वस्तु, व्यक्ति आदि के सबध मे होनेवाली न्यायोचित अहभावना। जैसे—हमे अपने देश, धर्म तथा सस्कृति पर गर्व है। २ अपनी शक्ति, समर्थता आदि की दृष्टि से मन मे होनेवाली अयुक्तिपूर्ण अहभावना। जैसे—उन्हे अपनी डडेबाजी पर गर्व है। ३ अभिमान। घमड। ४ साहित्य मे वह अवस्था जब मनुष्य अपने किसी गुण या विशेषता के विचार से दूसरो की अपेक्षा अपने को बहुत बढ़ा-चढा समझता है तथा अपने आचरण या व्यवहार से अपनी श्रेष्ठता प्रकट करता है और कभी-कभी अपने उत्कर्ष की भावना से दूसरो की अवज्ञा भी करता है। (इसकी गणना सचारी भावो मे होती है)

गर्वर—वि० [स० √गृ (लीलना)+वरच्] जिसे गर्व हो।

गर्वरी—स्त्री० [स० गर्वर+ङीष्] दुर्गा।

गर्ववत—वि० [स० गर्ववान्] (व्यक्ति) जिसे अपने अथवा अपनी किसी चीज, बात या व्यवहार पर गर्व हो। अभिमानी। घमडी।

गर्वाना—अ० [स० गर्व] स्वय गर्व करना।
स० किसी को गर्वित करना या कराना।

गर्विणी—वि० स्त्री० [स० गर्व+इनि–ङीप्] १ गर्व करनेवाली(स्त्री०)। २ मान करने या रूठनेवाली। मानिनी।

गर्वित—वि० [स०√गर्व् +क्त] [स्त्री० गर्विता] १ गर्व से युक्त। २ गर्व या अभिमान करनेवाला।

गर्विता—स्त्री० [स० गर्वित+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण आदि का अथवा अपने पति या प्रेमी के परम अनुराग का गर्व या घमड होता है।

गर्विष्ठ—वि० [स० गर्व+इष्ठन्] १ जिसे गर्व हो। गर्वीला। २ अभिमानी। घमडी।

गर्वी (विन्)—वि० [स० गर्व+इनि] अभिमानी। घमडी।

गर्वीला—वि० [स० गर्व +हि० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] १ गर्व करनेवाला। गर्व से युक्त। २ अभिमानी।

गर्हण—पु०[स०√गर्ह् (निदा करना)+ल्युट्–अन][वि० गर्हणीय, गर्हित] किसी को बहुत बुरा समझकर की जानेवाली उसकी निन्दा। भर्त्सना।

गर्हणा—स्त्री० [स०√गर्ह्+णिच्+युच् –अन् , टाप्] =गर्हण।

गर्हणीय—वि० [स० √गर्ह्+अनीयर्] जिसका गर्हण या निन्दा करना उचित हो। गर्हण का पात्र (अर्थात् निंदनीय या बुरा)।

गर्हा—स्त्री० [स० गर्ह्+अ–टाप्] गर्हणा। निंदा।

गर्हित—भू० कृ० [स० √गर्ह्+क्त] १ जिसकी गर्हणा या निन्दा की गई हो। २ इतना दूषित या बुरा कि उसे देखने पर मन मे घृणा उत्पन्न होती हो।

गर्ह्य—वि० [स०√गर्ह+ण्यत्]=गर्हणीय।

गलती, गलतीका—स्त्री० [स०√गल् (क्षरण होना)+शतृ–ङीप्+कन्–टाप्][√गल्+शतृ—ङीप्] १ छोटी कलसी। २ छेददार घडा जिसमे से शिवलिंग पर पानी चूता रहता है।

गलंश—पु० दे० 'गलतस'।

गल—पु० [स०√गल् (खाना)+अप्] १ गला। कठ। गरदन। २ एक प्रकार का पुराना बाजा। ३ गडाकू मछली। ४ दाल।
पु० हि० 'गला' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गलफाँसी, गलबहियाँ आदि।

गलई—स्त्री० =गलही।

गल-कबल—पु० [स० स० त०] गाय के गले के नीचे का वह भाग जो लटकता रहता है। झालर। लहर।

गलक—पु० [स० गल+कन्] १ गला। २ गडाकू मछली। ३ मोती। उदा०—गुहे गलक कुतल मँह कैसे।—जायसी।

गलका—पु० [हि० गलना] १ हाथ की उँगलियो के अगले सिरे पर होनेवाला जहरीला फोडा जिसमे हाथ मे टपक पडती है। इसकी गिनती चेचक या माता मे होती है। २ एक प्रकार की चाबुक।

गलकोडा, गलखोडा—पु० [हि० गला+कोडा] १ कुश्ती का एक पेच। २ मालखभ की एक कसरत। ३ एक प्रकार का कोडा या चाबुक।

गलगजन—पु० [हि० गल+गाजना] १ शोर-गुल। २ डीग।

गलगजना—स० [हि० गलगजन] १ जोर जोर से चिल्लाना। शोर-गुल करना। २ डीग हाँकना।

गल-गड—पु० [स० त०] एक प्रकार का रोग जिसमे गले को अवटुका नामक ग्रन्थियो मे सूजन होती है और जो बडी गाँठ के रूप मे बाहर निकल आती है। घेघा। (गायटर)

गलगल—स्त्री० [देश०] १ मैना की जाति की एक चिडिया जो कुछ सुर्खी लिये काले रग की होती है। गिरगोटी। गलगलिया। २ एक प्रकार का बडा खट्टा नीबू जिसका अचार पडता है। ३ चरबी की बत्ती का वह टुकडा जो चलते हुए जहाजो की सीसे की उस नली मे लगा रहता है जिससे समुद्र की गहराई नापी जाती है। (लश०) ४ एक प्रकार का मसाला जो लकडियो को जोडने अथवा उनके छेद बद करने के काम आता है।

गलगला—वि० [हि० गलना या गीला] [स्त्री० गलगली] १ भीगा हुआ। आर्द्र। तर। २ आँसुओ से भरा हुआ (नेत्र)। ३ बहुत ही कोमल या मुलायम।

गलगलाना—अ० [हि० गलना] १ गीला या तर होना। भीगना। २ कठोर पदार्थ का बहुत कोमल हो जाना। ३ (हृदय का) आर्द्र या दयालु होना। मन का कोमल भावो से युक्त होना। ४ हर्षित होना।

गलगाजना—अ० [हि० गाल+गाजना] १ खुशी से गाल बजाना। २ शोर-गुल करना। ३ डीग मारना।

गलगुच्छा—पु०=गलमुच्छा।

गलगुथना—वि० [हि० गाल] जिसका शरीर खूब भरा हुआ और गाल फूले हो। जैसे—गलगुथना बच्चा।

गल-ग्रह—पु० [ष० त०] १ गले मे पडा हुआ कष्टदायक बधन। २ इस रूप मे होनेवाली विपत्ति अथवा सकट। ३ आई हुई वह आपत्ति जो कठिनता से टले। ४ मछली फँसाने का काँटा। ५ गले मे कफ अटकने या रुकने के कारण होनेवाला एक रोग। ६ ज्योतिष के अनुसार कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, अमावस्या और प्रतिपदा।

गलघोटू—वि० [हि० गला+घोटना] गला घोटने या दबानेवाला।

पु० १ ऐसा काम या बात जो गला घोटनेवाली हो। २ व्यर्थ का और कष्टदायक भार।

गलचा—स्त्री० [?] कबोज देश और उसके आस-पास बोली जानेवाली कुछ बोलियो का वर्ग या समूह।

गलछट—स्त्री०=गलफडा।

गलजँदडा—पु० [स० गल+यत्र, प० जदरा] १ वह जो सदा पीछे या साथ लगा रहे। गले का हार। २ गले मे लटकाई जानेवाली कपडे की वह पट्टी जो चोट खाये हुए हाथ को सहारा देने के लिए बाँधी जाती है और जिसकी लपेट मे हाथ या कलाई रहती है।

गलजोड—पु०=गलजोत।

गलजोत—स्त्री० [हि० गला+जोत] १ वह रस्सी जिससे एक बैल का गला दूसरे बैल के गले से बाँधा जाता है। गलजोड। २ गले मे पडा हुआ किसी प्रकार का कष्टदायक बधन। ३ दे० 'गलजँदडा'।

गलझप—पु० [हि० गला+झाँपना] हाथी के गले मे बाँधी जानेवाली लोहे की जजीर।

गलतग—वि० [स० गलित+अग] बेसुध। बेखबर। बेहोश।

गलतस—पु० [स० गलित+वश] १ ऐसी सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न रह गया हो। लावारिस जायदाद। २ ऐसा व्यक्ति जिसकी सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न रह गया हो।

गलत—वि० [अ०] १ (मौखिक या लिखित प्रश्नोत्तर या हिसाब-किताब) जिसमे कलन या गणन सबधी कोई भूल हो अथवा जो नियम या सिद्धान्त की दृष्टि से ठीक न हो। २ (लेख) जो अक्षरी, व्याकरण आदि की दृष्टि से शुद्ध न हो। जिसमे किसी प्रकार की भूल या भूले हो। ३ जो तथ्य के अनुरूप न हो। जो असत्य या झूठ हो। जैसे—तुम गलत कहते हो, मैने कभी ऐसा नही कहा था। ४ जो उचित या विहित न हो। दूषित या बुरा। जैसे—उन्होने गलत रास्ता अपनाया है।

गल-तकिया—पु० [हि० गाल+तकिया] गाल के नीचे रखा जानेवाला एक प्रकार का गोल छोटा तकिया।

गलतनामा—पु०=शुद्धिपत्र।

गलतनी—स्त्री० [हि० गला+तनना] बैल के गेरॉव मे बाँधी जानेवाली रस्सी। पगहा।

गलत-फहमी—स्त्री० [अ० +फा०] किसी की कही हुई बात का अर्थ या आशय कुछ का कुछ समझना। कोई बात समझने मे कुछ धोखा खाना।

गलतॉ—वि०=गलतान।

गलता—पु० [फा० गलतान] १ एक प्रकार का बहुत चमकीला, मोटा कपडा जिसका ताना रेशम का और बाना सूत का होता है। २ दीवार मे बनी हुई कँगनी या छज्जी। कारनिस।

गलताड—पु० [स० ष० त०] जूए या जुआठे की वह खूँटी जो अन्दर की ओर होती है।

गलतान—वि० [फा०] १ लडखडाता या लुढकता हुआ। २ घूमता या चक्कर खाता हुआ।

पु० एक प्रकार का रेशमी कपडा।

गलती—स्त्री० [अ० गलत+ई फा०] १ कलन या गणना सबधी भूल। २ नियम, रीति, व्याकरण, सिद्धान्त, आदि की दृष्टि से होनेवाली कोई भूल। अशुद्धि। ३ ठीक प्रकार से कोई काम न करने, न देखने या न समझने की अवस्था या भाव।

पु० [हि० गलना] अभिषेक-घट जिसमे छिद्र होता है। उदा०—पुन गलती पुजारा, गाडुवा नैव ढालती।

गलथना—पु० [स० गलस्तन, पा० गलत्थन, गलथन] कुछ बकरियो के गले मे लटकता हुआ लबोतरा मास-पिड।

गलथैली—स्त्री० [हि० गाल+थैली] पशुओ विशेषत बदरो के गले के अन्दर थैली के आकार का वह अग जिसमे वे खाने की वस्तु पहले भर लेते है और तब बाद मे धीरे-धीरे निकालकर खाते है।

गलदश्रु—वि० [स० गलत्-अश्रु, ब० स०] जिसके ऑसू बह रहे हो। रोता हुआ।

गलन—पु० [स० √गल्+ल्युट्—अन्] १ गलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी तरल पदार्थ का किसी पात्र मे से चूना या रिसना।

गलनहॉ—पु० [हि० गलना+नहँ=नाखून] १ हाथियो का एक रोग जिसमे उनके नाखून गलगलकर निकलने लगते है। २ वह हाथी जिसे उक्त रोग हो।

गलना—अ० [स० गलन] १ ताप की अधिकता के कारण किसी घन पदार्थ का तरल होना। जैसे—बरफ, मक्खन या सोना गलना। २ किसी तरल पदार्थ मे डाले हुए कडे या घन पदार्थ का कोमल होकर उसमे घुल कर मिल जाना। जैसे—दूध या पानी मे चीनी गलना। ३ आग पर रखकर उबाले या पकाये जाने पर किसी कडी वस्तु का इतना नरम हो जाना कि धीरे से उँगली से दबाने पर वह टूट-फूट या दब जाय। जैसे—तरकारी या दाल गलना।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना=कौशल, प्रयत्न आदि मे सफलता होना। (प्राय नहिक रूप मे प्रयुक्त) जैसे—यहॉ आपकी दाल नही गलेगी, अर्थात् प्रयत्न सफल न होगा।

४ उक्त के आधार पर किसी वस्तु का इतना नरम, (क्षीण या जीर्ण) हो जाना कि छूने भर से फट जाय। जैसे—रखे-रखे कपडा या कागज गलना। ५ शरीर का क्रमश क्षीण होते-होते बहुत ही दुर्बल और निस्सार होना। जैसे—चिन्ता करते करते उनका शरीर गलकर आधा रह गया है। ६ रोग आदि के कारण शरीर के किसी अग का धीरे-धीरे कटकर नष्ट होना। जैसे—कोढ से पैर या हाथ की उँगलियाँ गलना। ७ बहुत अधिक सरदी के कारण ऐसा जान पडना कि पैर या हाथ की उँगलियाँ तरल होकर गिर या बह जायँगी। जैसे—पूस-माघ मे तो यहाँ हाथ-पैर गलने लगते है। ८ इच्छा न होने पर भी व्यर्थ व्यय होना। जैसे—सौ रुपए गल गए। ९ निष्फल अथवा व्यर्थ हो जाना। जैसे—जूए मे दाँव या चौपड के खेल मे मोहरा गलना। १० गड्ढे आदि मे बनाई या रखी हुई चीज का धीरे-धीरे नीचे धँसना या बैठना। जैसे—कूएँ की बनावट मे जमवट गलना। ११ (किसी नक्षत्र का) वर्षा करना। पानी बरसाना। जैसे— गली रेवती जल को नासै।—भड्डरी। १२ समय से पहले स्राव या पतन होना। जैसे—गर्भ गलना।

गलफडा—पु० [फेफडा का अनु०] १ जल मे रहनेवाले जीवो का वह अवयव जिससे वे पानी मे साँस लेते है। (यह स्थल मे रहनेवाले प्राणियो के फेफडे का ही आरभिक रूप है)। २ गाल का चमडा।

गलफरा—पु०=गलफडा।

गलफाँस—स्त्री०=गलफाँसी।

गलफाँसी—स्त्री० [हि० गला+फाँसी] १ गले मे पडी हुई फाँसी या उसका फदा। २ ऐसा बहुत बडा सकट जिससे छुटकारा मिलना बहुत कठिन हो। ३ मालखभ की एक प्रकार की कसरत।

गलफूट—स्त्री० [हि० गाल+फूटना] (क) अड-बड बकने या (ख) नीद मे बड-बडाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

गलफूला—वि० [हि० गाल-फूलना] [स्त्री० गलफूली] जिसके गाल फूले हुए हो।

पु० गले के फूलने या सूजने का एक रोग।

गलफेड—पु० [स० गल-पिंड] गले के आस-पास की गिलटियाँ।

गलबदनी—स्त्री०=गुलूबद (आभूषण)।

गलबदरी—स्त्री० [हि० गलना+बदरी=बादल] शीतकाल की बदली जिसमे हाथ-पाँव गलने लगते है।

गलबली†—पु० [अनु०] १ कोलाहल। २ गडबड।

गलबहियाँ (बाहीं)—स्त्री० [हि० गला+बाँह] दो व्यक्तियो के परस्पर गले मे हाथ डालकर आलिंगन करने की अवस्था या भाव।

गलबा—पु० [अ० गल्ब] अभिभूत करनेवाली प्रबलता। जैसे—नीद का गलबा।

पु०=बलवा (विद्रोह)।

गलमँदरी—स्त्री० [हि० गाल+मुद्रा] १ व्यर्थ की बकवाद। २ दे० 'गल-मुद्रा'।

गलमुच्छा—पु० [हि० गाल+मूछ] गालो पर के वे बाल जो बीच मे ठोढी पर के बाल मूँड दिए जाने पर भी बचाकर रखे और बढाये जाते है।

गलमुद्रा—स्त्री० [स० ष० त०] शिव के पूजन के समय उन्हे प्रसन्न करने के लिए गाल बजाने (अर्थात् गालो की सहायता से विशिष्ट प्रकार का स्वर निकालने) की क्रिया या भाव। गलमँदरी।

गलवाना—स० [हि० 'गलाना' का प्रे० रूप] किसी वस्तु को गलाने का काम दूसरे से कराना। किसी को गलाने मे प्रवृत्त करना।

गल-शुंडी—स्त्री० [स० त०] जीभ की जड के पास की छोटी घटी। कौआ। जीभी।

गल-शोथ—पु० [ष० त०] कुछ रोगो (जैसे—जुकाम, तुदिका, शोथ आदि) के कारण गले के भीतरी भाग मे होनेवाली सूजन और पीडा। (सोर थ्रोट)

गलसिरी—स्त्री० [स० गल-श्री] गले मे पहनने का कठ-श्री नामक गहना।

गलसुआ—पु० [हि० गाल+सूजन] एक रोग जिसमे गाल के नीचे का भाग सूज जाता और उससे पीडा होती है। कनपेडा।

गलसुई—स्त्री० १ दे० 'गल तकिया'। २ दे० 'गलसुआ'।

गल-स्तन—पु० [स० त०] [वि० गलस्तनी] कुछ बकरियो के गले मे लटकनेवाला मास-पिड। गलथना।

गल-स्वर—पु० [ब० स०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

गल-हँड†—पु०=गलगड (रोग)।

गलही—स्त्री० [स० गल+हि० ही (प्रत्य०)] नाव का वह अगला कोना जो गोलाकार और कुछ ऊपर उठा हुआ होता है।

गलाकुर—पु० [स० गल-अकुर, मध्य० स०] एक रोग जिसमे गले के अन्दर का कोआ या घटी सूज जाती है। (टान्सिल)

गला—पु० [स० गल, प्रा० गल, पा० गलो, द्र० गार्, गरोर्, उ० प० ब० गला, गु० गलु०, मरा० गठा, मि० गरो] १ शरीर का वह गोलाकार लबोतर अग जो धड के ऊपर और सिर के नीचे होता है और जिसके अन्दर साँस लेने, स्वरो का उच्चारण करने और खाने-पीने की चीजे पेट तक पहुँचानेवाली नलिकाएँ होती है। गरदन। ग्रीवा। **मुहा०—(अपना या दूसरे का) गला काटना**=छुरी, तलवार या किसी धारदार औजार से काटकर सिर को धड से अलग करना और इस प्रकार मृत्यु का कारण बनना। गरदन काटकर हत्या करना। जैसे—चोरो ने चलते-चलाते बुढिया का गला भी काट डाला। **(किसी का) गला काटना**=किसी का सब-कुछ छीन लेना अथवा इसी प्रकार की और कोई बहुत बडी हानि करना। जैसे—दूसरो का गला काट-काटकर ही तो वे बडे आदमी बने है। **(किसी का) गला घोटना**=गला दबाना (दे० आगे)। **(किसी बात या व्यक्ति से) गला छूटना**=कष्ट, सकट आदि (अथवा त्रस्त करनेवाले व्यक्ति) से पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। जान बचना। पिंड छूटना। जैसे—चलो, इनके आ जाने से हमारा गला छूट गया। **(किसी का) गला जकडना**=कोई बधन लगाकर या बाधा खडी करके किसी को बोलने से बल-पूर्वक रोकना। **(किसी से) गला जोडना**=मैत्री या घनिष्ठ सबध स्थापित करना। गहरा मेल-मिलाप पैदा करना। **(किसी का) गला टीपना या दबाना**=(क) हाथ या हाथो से गला इस प्रकार चारो ओर से दबाना कि उसका दम घुट जाय या साँस रुक जाय और वह मर जाय या मरने को हो जाय। (ख) कोई काम करने या स्वार्थ साधने के लिए जबरदस्ती किसी को विवश करना। अनुचित रूप से बहुत अधिक दबाव डालना। **(किसी का) गला पकडना**=किसी को किसी बात के लिए उत्तरदायी ठहराना। जैसे—यदि इस युक्ति मे हमारा काम न हुआ तो हम तुम्हारा गला पकडेगे। **गला फँसना**=किसी प्रकार के कष्टदायक बधन मे पडना। जैसे—तुम्हारे ही कारण अब इसमे हमारा भी गला फँस गया है। **(किसी का) गला रेतना**=किसी को क्रमश और निर्दयतापूर्वक बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर अथवा उसकी बहुत अधिक हानि करके अपना मतलब निकालना। जैसे—इस तरह दूसरो का गला रेतकर अपना काम निकालना ठीक नही है। **(कोई बात) गले तक आना**=किसी कार्य, बात या व्यापार की इतनी अधिकता होना कि उसका निर्वाह या सहन करना बहुत अधिक कठिन हो जाय। जैसे—जब बात गले तक आ गई, तब मैं भी बिगड खडा हुआ।

विशेष—जब नदी या बाढ का पानी बढता-बढता आदमी के गले तक पहुँच जाता है, तब वह असह्य भी हो जाता है और आदमी अपने जीवन से निराश भी हो जाता है। लाक्षणिक रूप मे यह मुहावरा ऐसी ही स्थिति का सूचक है।

(कोई चीज या बात) गले पड़ना=इच्छा न होते हुए भी जबरदस्ती या भार रूप मे आकर प्राप्त होना। जैसे—यह व्यर्थ का झगडा आकर हमारे गले पडा है। उदा०— गरे परि कौ लागि प्यारी कहैये।

(अपने) गले बाँधना=जान-बूझकर या इच्छापूर्वक अपने साथ या पीछे लगाना। उदा०—लोभ पास जेहि गर न बँधाया। —तुलसी। **(किसी के) गले बाँधना, मढ़ना या लगाना**=किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे कोई चीज देना अथवा कोई भार सौंपना। **(किसी को) गले लगाना**=(क) आलिंगन करना। (ख) अपराध, दोष आदि का विचार छोडकर अपना बनाना। जैसे—उच्च वर्णो के लोगो को चाहिए कि वे हरिजनो को गले लगावे।

पद—गले का ढोलना या हार=ऐसी वस्तु या व्यक्ति जो सदा साथ रखा जाय अथवा रहे। जिसका या जिससे जल्दी साथ न छूटे।

२ शरीर के उक्त अग का वह भीतरी भाग जिसमे खाने, पीने, बोलने, साँस लेने आदि की नालियाँ रहती है। मुँह के अन्दर का वह विवर जिसका सबध पेट, फेफडो आदि से होता है।

मुहा०—गला आना या पडना=गले की घटी मे पीडा या सूजन होना। गलाकुर रोग होना। **गला उठाना या करना**=गले की घटी बढ जाने पर उसे उँगली से दबाकर और उस पर कोई दवा लगाकर उसे ऊपर उठाना। घटी बैठाना। **(किसी चीज का) गला काटना**=चरपरी या तीखी चीज खाने पर उसका गले के भीतरी भाग मे हल्की खुजली, चुन-चुनाहट या जलन पैदा करना। जैसे—जमीकद या सूरन यदि ठीक तरह से न बनाया जाय तो गला काटता है। **गला घुटना**=प्राकृतिक कारणो अथवा अस्वस्थता, रोग आदि के फल-स्वरूप साँस आने-जाने मे बाधा होना। दम घुटना। **गला जकडना**=गले की ऐसी अवस्था होना कि सहज मे कुछ खाया-पिया या बोला न जा सके। **(किसी चीज का) गला पकडना**=कसैली या खट्टी चीज खाने पर गले मे ऐसा विकार या हलकी सूजन होना कि खाने-पीने, बोलने आदि मे कष्ट हो। जैसे—ज्यादा खटाई खाओगे तो गला पकड लेगी। **गला फँसना**=गले के अन्दर किसी चीज का पहुँचकर इस प्रकार अटक फँस, या रुक जाना कि खाने-पीने, बोलने साँस लेने आदि मे कष्ट होने लगे। जैसे—सुपारी खाने से गला फँस गया है। जरा-सा पानी पी ले तो ठीक हो जाय। **(किसी चीज का) गले के नीचे उतरना**=बहुत ही कष्ट से या लाचारी हालत मे किसी चीज का खाया जाना। जैसे—अब तो पानी भी कठिनाई से गले के नीचे उतरता है। **(किसी बात का) गले के नीचे उतरना**=(क) ठीक प्रकार से समझ मे आना। (ख) ग्राह्य, मान्य या स्वीकृत होना। जैसे—उनका उपदेश तुम्हारे गले के नीचे उतरा या नही ?

३ शरीर के उक्त अग का वह अश जिससे बोलने के समय शब्दो आदि का और गाने के समय स्वरो आदि का उच्चारण होता है। स्वर-नाली। जैसे—जब तक गवैये का गला अच्छा न हो तब तक उसके गाने मे रस नही आता।

मुहा०—गला खुलना=गले का इस योग्य होना कि उसमे से अच्छी तरह या ठीक तरह से स्वर निकल सके। **गला गरमाना**=गाने, भाषण देने आदि के समय आरभ मे कुछ देर तक धीरे-धीरे गाने या बोलने के बाद कठ-स्वर का तीव्र या प्रबल होकर पूरी तरह से काम करने के योग्य होना। **गला फटना**=बहुत चिल्लाने, बोलने आदि से अथवा स्वर-नाली मे कोई रोग होने के कारण कठ-स्वर का इस प्रकार विकृत हो जाना कि उससे ठीक, सुरीला और स्पष्ट उच्चारण न हो सके। जैसे—चिल्लाते-चिल्लाते गला फट गया पर तुमने जवाब न दिया। **गला फाडना**=बहुत जोर से चिल्ला-चिल्लाकर बोलना और फलत अपना कठ-स्वर कर्णकटु तथा विकृत करना। जैसे—तुम लाख गला फाडा करो, पर वहाँ तुम्हारी सुनता कौन है ? **गला फिरना**=गाने के समय स्वरो और उनकी श्रुतियो पर बहुत ही सहज मे और सुन्दरतापूर्वक अथवा सुरीलेपन से कठ-स्वर का उच्चरित होना अथवा ऊपर और नीचे के स्वरो पर सरलतापूर्वक आना-जाना। जैसे—हर गिटकिरी, तान, पलटे और फदे पर उसका गला इस तरह फिरता था कि तबीयत खुश हो जाती थी। **गला बैठना**=बहुत अधिक गाने, चिल्लाने, बोलने आदि से अथवा कुछ प्रकृत कारणो या विकारो से कठ स्वर का इतना धीमा या मद पडना कि कठ से होनेवाला शब्दो का उच्चारण सहज मे दूसरो को सुनाई न पडे।

४ कमीज, कुरते, कोट आदि पहनने के कपडो का वह अश जो गरदन पर और उसके चारो ओर रहता है। गेरबान। ५ घडे, लोटे, सुराही आदि पात्रो का वह ऊपरी गोलाकार तग और लबोतरा भाग जो उनके पेट और मुँह के बीच मे पडता है और जिससे होकर उन पात्रो मे चीजे आती-जाती (अर्थात् निकलती या भरी जाती) है। जैसे—गगरे का गला टूट गया है।

गलाऊ—वि० [हि० गलाना] गलानेवाला।

वि० [हि० गलना] जो गल सकता हो। गलनशील।

गलाना—स० [हि० गलना का प्रे० रूप] १ किसी घन या ठोस पदार्थ को इतना अधिक गरम करना या तपाना कि वह तरल हो जाय। जैसे—मक्खन या सोना गलाना। २ कडे और कच्चे अन्नो, तरकारियो आदि को उबाल या पकाकर नरम या मुलायम और खाये जाने के योग्य करना। जैसे-आलू या दाल गलाना। ३ तरल पदार्थ मे किसी क्रिया से कोई विलेय वस्तु घुलाना। जैसे—तेजाब मे चाँदी गलाना। ४ बहुत अधिक चिंता या श्रम करके अपने शरीर को क्षीण और दुर्बल बनाना। जैसे—देश की सेवा मे तन या शरीर गलाना। ५ किसी प्रकार नष्ट या बरबाद करना। ६ ठढक या सरदी का अपनी तीव्रता से हाथ-पैर इतना सुन्न करना कि वे गल कर अलग होते हुए जान पडे। जैसे—हाथ-पैर गलानेवाली सरदी पडना। ७ वास्तु-शास्त्र मे, किसी खडी रचना पर इतना दबाव या बोझ डालना कि वह धीरे-धीरे नीचे धँस कर अदृश्य हो जाय। जैसे—पुल बनाने के लिए कोठी या खभा गलाना।

गलानि—स्त्री०=ग्लानि।

पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

गलार—वि० [हि० गाल] १ बहुत गाल बजानेवाला अर्थात् बकवादी। २ झगडालू।

स्त्री० [?] मैना (पक्षी)।

पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष।

गलारी—स्त्री० [स० गल्प, प्रा० गल्ल] गिलगिलिया नाम की चिडिया। गल-गलिया।

गलावट—स्त्री० [हि० गलाना] १ गलने की क्रिया या भाव। २ गलने के कारण घटने या नष्ट होनेवाला अश। ३ ऐसी वस्तु जो दूसरी वस्तुओ को गलाने मे सहायक होती हो।

गलि—पु० [स० गडि ड को ल] १ बछडा। २ सुस्त बैल।

गलित—वि० [स० √गल्+क्त] १ (पदार्थ) जो पुराना या बासी होने के कारण गल या सड गया हो। गला हुआ। २ (तत्त्व या शरीर) जो पुराना होने के कारण रस, सार आदि से रहित हो गया हो। जैसे—गलित अग, गलित यौवन। ३ पुराने होने के कारण जो खडित और जीर्ण-शीर्ण हो चुका हो। नष्ट-भ्रष्ट। ४ जिसमे गलने-गलाने आदि की प्रवृत्ति हो। जैसे—गलित कुष्ठ। ५ चुआ या चुआया हुआ। ६ जो आवेग, उमग आदि की अधिकता के कारण मत्त होकर अ-वश या आपे से बाहर हो गया हो। उदा०—अति मद-गलित ताल पुल ते गुरु युगल उरोज उतगनि कौ।—सूर।

गलितक—पु० [स० गलित√कै (प्रतीत होना)+क] नृत्य मे एक प्रकार की अग-भगी या मुद्रा।

गलित-कुष्ठ—पु० [कर्म० स] आठ प्रकार के कुष्ठो मे से एक जिसमे रोगी के अग गल-गलकर गिरने लगते है।

गलित-यौवना—वि० स्त्री० [ब० स०] (स्त्री०) जिसका यौवन बीत जाने के कारण बहुत-कुछ नष्ट हो चुका हो।

गलिया—स्त्री० [हि० गली] चक्की के ऊपर के पाट मे का वह छेद जिसमे दलने या पीसने के लिए अनाज डाला जाता है।

वि० [स० गलित] (पशु) जो बहुत ही मट्ठर या सुस्त हो।

गलियारा—पु० [हि० गली+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री अल्पा० गलियारी] १ गली की तरह का लबा, सीधा रास्ता। २ किसी देश मे से होकर जानेवाला वह स्थल-मार्ग जिस पर एकाधिकार किसी दूसरे देश का होता है। (कारिडोर)

गलियारी—पु० [हि० गलियारा] छोटी या तग गली।

गली—स्त्री० [स० गल] १ वह सँकरा मार्ग जिसके दोनो ओर घर आदि बने होते है तथा जिस पर चलकर लोग प्राय घरो को जाते है। (लेन)

पद—गली-कूचा। (दे०)

मुहा०—गली कमाना=गली मे झाड देकर या उसकी नालियो, मोरियो आदि साफ करके जीविका उपार्जित करना। **गली गली मारे फिरना**=(क) व्यर्थ इधर-उधर घूमना। (ख) जीविका के लिए इधर से उधर भटकना। (ग) किसी पदार्थ का चारो ओर अधिकता से मिलना।

२ किसी गली के आस-पास के घरो का समूह, मुहल्लो के नामवाचक रूप मे। जैसे—कचौरी गली, गणेश गली आदि।

गलीचा—पु० [फा० गालीच (कालीन चा=तु० काली या कालीन से)] १ ऊन की बुनी हुई एक प्रकार की मोटी चादर जिस पर लोग बैठते है। २ कँकरीली जमीन। (कहार)

गलीज—वि० [अ०] १ गँदला। मैला। २ अपवित्र। नापाक।

स्त्री० १ कूडा-कर्कट। गदगी। २ मल-मूत्र आदि।

गलीत—वि० [स० गलित] १ गदा या मैला। २ अनुचित या बुरा। ३ दे० 'गलित'।

गलीम*—पु०=गनीम।

गलू—पु० [स०] एक प्रकार का पत्थर जिससे प्राचीन काल मे मद्यपात्र आदि बनते थे।

गलेफ†—पु०=गिलाफ।

गलेबाज—वि० [हि० गला+बाज] [भाव० गलेबाजी] १ जिसका गला बहुत अधिक या तेज चलता हो। बहुत अधिक, जोर से या बढ-बढ कर बाते करनेवाला। २ बहुत सी ताने और पलटे लेनेवाला और गले का काम अच्छी तरह दिखलानेवाला (गवैया)।

गलेबाजी—स्त्री० [हि० गला+बाजी] १ बहुत जोर से या बढ-बढ कर बाते करने की क्रिया या भाव। २ गाते समय बहुत अधिक ताने और पलटे लेना।

गलैचा†—पु०=गलीचा।

गलोना—पु० [देश०] एक प्रकार का कधारी या काबुली सुरमा।

गलौ*—पु० [स० ग्लौ] चद्रमा।

गलौआ—पु० [हि० गाल] बदरो के गालो के अदर की थैली जिसमे वे जल्दी-जल्दी खाने की वस्तुएँ भर लेते है और बाद मे फिर से उसमे से निकालकर चबा-चबा कर खाते है।

वि० [हि० गलाना] १ जो गलाकर फिर से नया बनाया गया हो। २ जो गलाया जाने को हो।

गलौध—पु० [स० त०] एक प्रकार का रोग जिसमे गले के अदर सूजन हो जाती है और साँस लेने मे कठिनता होती है।

गल्प—स्त्री० [स० जल्प वा कल्प] १ मिथ्या प्रलाप। गप्प। २ डीग। शेखी। ३ भावपूर्ण या विचार-प्रधान कोई छोटी घटनात्मक कहानी। ४ मृदग के बारह प्रबधो मे से एक।

गल्यारा—पु० दे० 'गलियारा'।

गल्ल—पु० [स०√गल्+ल] गाल। कपोल।

†स्त्री० [स० गल्प] १ बात। (पजाब) २ शोर। हल्ला।

गल्लई—स्त्री० [अ० गुल, हि० गुल्ला] शोर-गुल।

वि० [हि० गल्ला=अनाज] अनाज या गल्ले के रूप मे होने अथवा दिया-लिया जानेवाला। जैसे—खेत की पैदावार का गल्लई बँटवारा।

गल्लक—पु० [स०√गल्+क्विप्, गल्√ला (लेना)+क] १ मद्य पीने का पात्र। २ एक प्रकार का राल।

गल्लह—पु० [स० गल्ल] ख्याति। प्रसिद्धि। उदा०—बात विनोद वसतरै, सुनी दाहिमी गल्लह।—चदवरदाई।

गल्ला—पु० [फा० गल्ल] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओ का झुड। दल। जैसे—बकरियो या भेडो का गल्ला। २ वह थैली या सदूक जिसमे दूकानदार रोज की बिक्री से आनेवाला धन रखते है। गुल्लक। जैसे—बोहनी न बट्टा, गल्ले मे हाथ। (कहा०)

पु० [अ० गल्ल] १. अनाज। अन्न। २ उतना अन्न जितना चक्की मे पीसने के लिए एक बार डाला जाता है। ३ पेड-पौधो आदि की उपज या पैदावार।

पु० [?] एक प्रकार का बेत जिसे मोला भी कहते है।

गल्लाफरोश—पु० [फा०] अनाज बेचनेवाला व्यापारी।

गल्ली—स्त्री०=गली।

गल्वर्क—पु० [स०√गल्+उन्, गलु-अर्क ब० स०] प्राचीन भारत मे गलू नामक पत्थर का बननेवाला मद्य-पात्र। गलू पत्थर का बना हुआ प्याला।

गल्ह—वि० [स० गल्भ] धृष्ट। ढीठ।

†स्त्री० [स० गल्प] बात।

गल्हाना—स० [हिं० गल्ह] १ बाते करना। २ बहुत बढ-बढकर बाते करना। डीग हाँकना।

गवँ—स्त्री० दे० 'गौ'।

गव—पु० [स० गवय] रामचद्र जी की सेना का एक बन्दर।

गवईस†—पु०=गोरीश (शिव)।

गवक्ख†—पु०=गवाक्ष।

गवन—पु० [स० गमन] १ गमन। जाना। २ गति। चाल। उदा०—छाँडि सुख-धाम अरु गरुड तजि साँवरो पवन के गवन तै अधिक धायो।—सूर। ३ दे० 'गौना'।

गवनचार—पु० [हिं० गवन+चार] विवाह के बाद वधू का पहले-पहल वर के घर जाना। गौना।

गवनना*—अ० [अ० गमन] गमन करना। जाना।

गवना—पु०=गौना।

*अ०=गवनना (जाना)।

गवय—पु० [स०√गु (शब्द करना)+अप्, गव√या (जाना)+क] [स्त्री० गवयी] १ नीलगाय। २ राम की सेना का एक बदर। ३ एक प्रकार का छद जिसके प्रथम चरण मे १९ मात्राएँ होती है और ११ मात्राओ पर विराम होता है। इसका दूसरा चरण आधा दोहा होता हे। ४ तिमिगिल वर्ग का एक स्तनपायी बडा जल-जतु। (डयूगाग)

गवरल†—स्त्री०=गौरी।

गवरि—स्त्री०=गौरी।

गवर्नमेंट—स्त्री० [अ०] १ राज्य का शासन करनेवाली सत्ता। शासन। सरकार। २ उन व्यक्तियो का वर्ग या समूह जो देश का शासन और उसके कार्यो का सचालन करते है।

गवर्नर—पु० [अ०] १ शासन करनेवाला व्यक्ति। शासक। हाकिम। २ किसी प्रदेश या प्रात का वह सबसे बडा अधिकारी जो सम्राट् अथवा केद्रीय शासन की ओर से नियुक्त हुआ हो। आज-कल का राज्यपाल।

गवर्नर-जनरल—पु० [अ०] वह प्रधान शासक जिसके अधीन किसी देश के विभिन्न प्रातो के गवर्नर काम करते है।

गवर्नरी—स्त्री०[अ० गवर्नर+हिं० ई (प्रत्य०)] गर्वनर का काम, पद या शासन।

वि० गवर्नर सबधी। गवनरं का।

गवर्मेंट—स्त्री०=गवर्नमेंट।

गवल—पु० [स० गव√ला (लेना)+क।] जगली भैसा। अरना।

गवष†—पु०=गवाक्ष।

गवहियाँ†—पु० [स० गोघ्न=अतिथि] अतिथि। मेहमान।

वि०, पु०=गँवार।

गवाक्ष—पु० [स० गो-अक्षि, ष० त०] १ दीवारो मे बना हुआ छोटा झरोखा। छोटी खिडकी। २ रामचद्र की सेना का एक बदर।

गवाक्षित—वि० [स० गवाक्ष+इतच्] १ (दीवार) जिसमे गवाक्ष बने हो। २ खिडकीदार (मकान)।

गवाक्षी—स्त्री० [स० गवाक्ष+डीष्] १ इद्रवारुणी। २ अपराजिता।

गवाख*—पु०=गवाक्ष।

गवाची—स्त्री० [स० गो√अञ्च् (गति)+क्विन्—डीष्] मछलियो की एक जाति का वर्ग।

गवाछ†—पु० =गवाक्ष।

गवादन—पु०[स० गो-अदन, ष० त०] गौओ, बैलो, भैसो आदि के खाने की घास या चारा।

गवाधिका—स्त्री० [स० गो-अधि√ कै (प्रतीत होना)+क—टाप्] लाक्षा। लाख।

गवामयन—पु०[स०गवाम्-अयन,अलुक् स०] दस या बारह महीने मे पूरा होनेवाला एक वैदिक यज्ञ।

गवार—वि० [फा०] 'गवारा' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के अत मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—खुशगवार, नागवार आदि।

†स्त्री० दे० 'ग्वार'।

गवारा—वि० [फा०] १ जो अगीकृत या गृहीत करने के योग्य हो। २ पचने या हजम होनेवाला। अनुकूल। रुचिकर। ३ बरदाश्त करने या सहने योग्य। सह्य।

गवारिश—स्त्री० [फा०] ओषधियो का चूर्ण। (इसी का अरबी रूप जबारिश है।)

गवालीक—पु० [स० गो-अलीक, च० त०] वह मिथ्या भाषण जो गौ आदि चौपायो के सबध मे हो। (जैन)

गवाश—वि०, पु० [स० गो√अश् (खाना)+अण्] =गवाशन।

गवाशन—वि० [स० गो√अश्+ल्यु–अन] गौ का मास खानेवाला। गो-भक्षी।

पु० १ चमार। २ चाडाल।

गवास—वि० [स० गवाशन] गौ की हत्या करनेवाला।

पु० कसाई।

स्त्री० [हिं० गाना] गाने की क्षणिक प्रवृत्ति या शौक। जैसे—कभी कभी आपको भी गवास लगती हे।

गवाह—पु० [फा०] १ ऐसा व्यक्ति जिसने कोई घटना स्वय देखी हो अथवा जिसे किसी घटना, तथ्य, बात आदि की ठीक और पूरी जानकारी हो। साक्षी। जैसे—बहुत से लोग इस घटना के गवाह है। २ वह व्यक्ति जो न्यायालय मे अथवा किसी न्यायकर्त्ता के समक्ष अपनी जानकारी बतलावे अथवा तथ्य का सत्यापन या समर्थन करे। साक्षी। ३ वह जो दो पक्षो मे होनेवाले लेन-देन, व्यवहार, समझौते आदि के सचमुच घटित होने के प्रमाण किसी लेख्य पर हस्ताक्षर करे अथवा आवश्यकता होने पर उक्त घटना का सत्यापन या समर्थन करे। (विटनेस, उक्त तीनो अर्थो मे)

गवाही—स्त्री० [फा०] किसी घटना के सबध मे गवाह की कही हुई बात या दिया हुआ बयान। गवाह का कथन। साक्ष्य। (एविडेन्स)

मुहा०—गवाही देना=किसी साक्षी का किसी और से समर्थन करना या उसे ठीक बतलाना **(किसी काम या बात मे) मन गवाही देना**=मन या अत करण का यह कहना कि यह बात ठीक है अथवा ऐसा होना चाहिए या होगा। जैसे—हमारा मन तो गवाही देता है कि वे अवश्य यहाँ आवेंगे।

गविआ†—स्त्री०=गौ। उदा०–बदल बिआएल गविआ बाँझे।—कबीर।

गविष्टि—स्त्री० [स० गवेष्टि] १ इच्छा या कामना। २ लडने-झगडने की इच्छा या प्रवृत्ति।

वि० [ब० स०] जो गौ या गौएँ लेना-चाहता हो।

गविष्ठ—पु० [स० गवि√स्था (ठहरना)+क] सूर्य।

गवीधुक—पु० [स०√गवेधुक, पृषो, सिद्धि] कोडिल्ला नामक पक्षी।
गवीश—पु० [स० गो-ईश, ष० त०] १ गोस्वामी। २ विष्णु। ३ साँड।
गवेंसी*—वि० [स० गवेषण से] गवेषणा या खोज करनेवाला। उदा०—को बर बाँधि गवेसी होई—जायसी।
गवेजा†—स्त्री० [स० गवेषण ?] १ बातचीत। २ वाद-विवाद। बहस।
गवेधु—पु० [स० गवे√धा (धारण करना)+कु, अलुक् स०] कसेई या कौडिल्ला नामक पक्षी।
गवेधुक—पु० [स० गवेधु+कन्] =गवेधु।
गवेरुक—पु० [स० गो√ईर् (गति) +उकञ्] गेरू।
गवेल†—वि० [हि० गाँव] [स्त्री० गवेली] १ गाँव या देहात-सबधी। २ गँवार। देहाती।
गवेश—पु० = गवीश।
गवेष—पु० [स० √गवेष् (ढूँढना)+घञ्] =गवेषण।
गवेषक—वि० [स० √गवेष्+ण्वुल्–अक] गवेषणा करनेवाला।
गवेषण—पु० [स०√गवेष्+ल्युट्—अन] १ खोई हुई गाय को ढूढने का काम। खोजना। २ चाहना। ३ दे० 'गवेषणा'।
गवेषणा—स्त्री० [स०√गवेष्+णिच् +युच्–अन, टाप्] १ गौ पाने की इच्छा करना। २ खोई हुई गौ ढूँढने निकलना। ३ कोई चीज खोजने या ढूँढने का काम। ४ किसी बात या विषय का मूल रूप या वास्तविक स्थिति जानने के लिए उस बात या विषय का किया जानेवाला परिश्रम-पूर्वक अध्ययन और अनुसधान। (रिसर्च)
गवेषित—भू० कृ० [स०√गवेष्+क्त] १ (विषय) जिसके सबध मे गवेषणा हुई हो। २ (कोई नई बात या तथ्य) जिसका अध्ययन, अनुशीलन आदि से पता चला हो।
गवेषी (षिन्)—वि० [स० √गवेष्+णिनि] गवेषण करनेवाला। गवेषक।
गवेसना*—स० [स० गवेषणा] खोजना। ढूढना।
स्त्री०=गवेषणा।
गवेसी—वि०=गवेषी।
गवैहाँ—वि० [हि० गाँव+ऐहा (प्रत्य०)] १ ग्रामीण। देहाती। २ गँवारो की तरह का। देहाती।
गवैया—पु० [हि० गाना] वह जो सगीत-शास्त्र का ज्ञाता हो और उसके अनुसार अच्छा गाता हो। गायक। (म्यूजीशियन)
गव्य—वि० [स० गो+यत्] गौ से उत्पन्न या प्राप्त। जैसे—दूध, दही, घी गोबर, गोमूत्र आदि।
पद—पच-गव्य। (देखे)
पु० १ गौओ का झुड। २ दे० 'पच-गव्य'।
गव्या—स्त्री० [स० गव्य+टाप्] १ गौओ का झुड। २ दो कोस की दूरी या नाप। ३ ज्या। ४ गोरोचन।
गव्यूत—पु०=गव्यूति।
गव्यूति—स्त्री० [स० गो-यूति, ष० त०, अव् आदेश] दो कोस या दो हजार धनुष की दूरी की एक प्राचीन नाप।
गश—पु० [अ० गशी से फा०] किसी प्राणी के सज्ञाहीन होने की अवस्था। बेहोशी। मूर्च्छा।
गश्त—पु० [फा०] सुरक्षा बनाये रखने और अनियन्त्रित बातो का पता लगाने तथा उन्हे रोकने के लिए समय-समय पर किसी अधिकारी का किसी क्षेत्र मे अथवा उसके चारो ओर घूमना।
क्रि० प्र०—लगाना।
गश्तसलामी—स्त्री० [फा० गश्त+अ० सलाम] वह भेट या नजर जो दौरे पर आनेवाले हाकिमो को दी जाती थी।
गश्ती—वि० [फा०] १ चारो ओर गश्त लगानेवाला। जगह-जगह घूमता-फिरता रहनेवाला। जैसे—गश्ती पुलिस। २ जो चारो ओर सभी सबद्ध व्यक्तियो के पास भेजा जाता हो। जैसे—गश्ती चिट्ठी, गश्ती हुक्म।
स्त्री० १ आवारो की तरह चारो ओर चक्कर लगानेवाली स्त्री। २ कुलटा। व्यभिचारिणी।
गस†—स्त्री०=गाँस।
गसना—स० [स० कषण=कसना] १ कस या जकडकर बाँधना। गोथना। २ बुनावट मे बाने के तागो को आपस मे अच्छी तरह मिलाकर बैठाना। ३ दे० 'गसना'।
†स० =ग्रसना।
गसीला—वि० [हि० गसना] [स्त्री० गसीली] १ जकडा या बँधा हुआ। २ गठा हुआ। गठीला। ३ (कपडा) जिसके सूत खूब सटे या मिले हो। गफ।
गस्त†—स्त्री०=गश्त।
गस्सा†—पु० [स० ग्रास, प्रा० गास, गस्स] भोजन का कौर। ग्रास।
मुहा०—गस्सा मारना=जल्दी जल्दी कौर या ग्रास मुँह मे रखना।
गहँडिल†—वि० [हि० गड्ढा] गड्ढे मे का अर्थात् गँदला (पानी)।
गहक†—स्त्री० [हि० गहकना] गहकने की क्रिया या भाव।
गहकना—अ० [स० गद्गद] १ प्रबल चाह या लालसा मे युक्त होना। ललकना। २ आवेश या उमग मे आना।
गहकोड़ा†—पु० =गाहक (दलाल)।
गहक्कना—अ०=गहकना।
गहगच—पु० [अनु०] १ दलदल। २ जजाल। झझट।
गहगड्ड—वि० [स० गह=गहरा +गड्ड–ढेर] १ गहरा या घोर (नशा)। २ इकट्ठा और बहुत अधिक। जैसे—गहगड्ड माल मारना।
गहगह*—वि० =गहगहा।
गहगहा—वि० [स० गद्गद्] १ परम प्रसन्न। प्रफुल्लित। २ उमग से भरा हुआ। ३ धूम-धामवाला। (बाजा)
गहगहाना—अ० [हि० गहगहा] १ बहुत प्रसन्न होना। आनद से फूलना। २ फसल या हरियाली का लहलहाना।
स० बहुत अधिक प्रसन्न या प्रफुल्लित करना।
गहगहे—क्रि० वि० [हि० गहगहा] १ बहुत प्रफुल्लता से। प्रसन्नतापूर्वक। बहुत अच्छी तरह। उदा०—ते बहुरे बोलत गहगहे। २ जोरो से। ३ धूम-धाम से।
गहगौर†—वि० [हि० गहगहा+गौर=गोरा] [स्त्री० गहगौरी] बहुत अधिक प्रसन्नता के कारण जिसका गौर वर्ण खूब खिला हो। उदा०—पूरन जोबन है गहगौरी।—नददास।
गहडोरना—स० [देश०] (पानी) गदा करना।

गहथा†—वि० [स० ग्रस्त] (चद्रमा या सूर्य) जिसे ग्रहण लगा हो। उदा०—गहथा आथा गहथा ऊगे।—भड्डरी।

गहन—वि० [स० गाह (बिलोना) +ल्युट्, ह्रस्व] १ (जलाशय) इतना या ऐसा गहरा जिसकी थाह जल्दी न मिले। जैसे—गहन ताल या दह। २ (स्थान) जिसमे प्रवेश करना बहुत ही कठिन हो। दुर्गम। ३ (बात या विषय) जो जल्दी सबकी समझ मे न आ सके। दुरूह। जैसे—गहन विषय। ४ घना। निबिड। जैसे—गहन वन।

पु० १ गहराई। गहरापन। २ अभेद्य या दुर्गम स्थान। ३ चारो ओर से घिरा या छिपा हुआ स्थान। ४ गुफा। ५ जगल। ६ कष्ट। दु ख। ७ जल। पानी। ८ कलक।

पु० [स० ग्रहण, प्रा० गहण, ग्रहण] [स्त्री० हिं० गहना] १ गहने या पकडने की क्रिया या भाव। २ धारण करने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ३ जिद। टेक। हठ। ४ गहना नामक उपकरण या औजार। ५ पानी बरसने पर धान के खेतो मे की जानेवाली हलकी जोताई।

*वि० (यौ० के अत मे) पकडनेवाला।

†पु० [हिं० गहना] कोई चीज बधक या रेहन रखने की क्रिया या भाव।

†पु० =ग्रहण।

गहनता—स्त्री० [स० गहन+तल्–टाप्] १ गहन होने की अवस्था या भाव। २ दुर्गमता। ३ गभीरता। गहराई।

गहना—स० [वै० स० गृभायति, गृह्णाति, स० ग्रह, प्रा० गिण्हजु, सि० गिन्हणु, उ० धेनू, सिह० गन्नवा, मरा० घेणे] १ हाथ से कसकर या अच्छी तरह से पकडना। जैसे—चरण गहना।

मुहा०*—गह डारना=पकडकर गिरा या दबा देना। उदा०—तन निरबैर भया सब हिन कै, काम क्रोध गहि डारा।—कबीर।

२ धारण करना। जैसे—शस्त्र गहना। ३ ग्रहण करना। जैसे—हठ गहना।

पु० [स० ग्रहण=धारण करना] १ शरीर पर पहनने के अलकार या आभूषण। जेवर।

मुहा०—(कोई चीज) गहने रखना=किसी के पास बधक या रेहन रखना।

२ कुम्हारो का एक औजार जिसका उपयोग घडे आदि बनाने मे होता है। ३ एक प्रकार का उपकरण जिससे खेतो की घास निकाली जाती है।

†स० =गाहना।

गहनि—स्त्री० [हिं० गहना (क्रि०)] १ गहने अर्थात् धारण करने या पकडने की क्रिया या भाव। २ जिद। टेक। हठ।

गहनी—स्त्री० [?] १ मसालो से नाव के छेद आदि बद करने की क्रिया। २ चौपायो का एक रोग जिसमे उनके दाँत हिलने लगते है। ३ गहना नामक उपकरण या औजार।

गहनु*—वि०=गहन।

पु०=ग्रहण।

गहने†—क्रि० वि० [हि० गहना=बधक] बधक या रेहन के रूप मे।

वि० बधक या रेहन रखा हुआ।

गहबर—वि० [स० गह्वर] १ गभीर। गहरा। २ दुर्गम। विकट। ३. घबराया हुआ। उद्विग्न। व्याकुल। ४ बेचैन। विकल। ५ किसी के ध्यान मे इतना मग्न या लीन होना कि आस-पास की बातो की कुछ भी खबर न हो। ६ चटकीला। चमकदार। उदा०—गगा गहबरि पिअरि चढउबै, होरिल जब होइहै हो।—लोकगीत। ७ घना। निविड। उदा०—जँह आवे तम पुज कुज गहबर तरु छाही।—नददास।

गहबरन—स्त्री० [हिं० गहबरना] व्याकुलता। घबराहट।

गहबरना*—अ० [हिं० गहबर] १ घबराना। २ बेचैन या विकल होना। ३ करुणा आदि से जी भर आना।

गहबराना—स० [हि० गहबरना] घबडा देना।

अ०=गहबरना।

गहभरना—स० [हिं० भरना] अच्छी तरह भरना।

गहमह—स्त्री० [अनु०] १ चहल-पहल। रौनक। २ जगमगाहट। उदा०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह—प्रिथीराज।

गहमहना—अ० [हि० गहगहाना] बहुत प्रसन्न होना।

गहमागहम—स्त्री० [हिं० गहमना] चहल-पहल। रौनक।

गहम्मह—वि० [स० गहन] गहरा। उदा०—घटिय सेस दिन रह्यौ सबै भर भीर गहम्मह।—चदवरदाई।

गहर—स्त्री० [?] देर। उदा०—कीजै नगहर बेग मेरौ दुख हर मेरे।—सेनापति।

पु० [स० गह्वर] १ दुर्गम। २ गूढ।

*वि०=गहरा।

*स्त्री० =गहराई।

गहरगूल—वि० [हिं० गहरा] अत्यन्त गहरा।

गहरना—अ० [हि० गहर=देर] देर लगाना। विलब करना।

अ० [अ० कट्टर] १ झगडना। २ कुढना। ३ क्रोध करना।

गहरवार—पु० [गहरिदेव=एक राजा] क्षत्रियो की एक जाति।

गहरा—वि० [स० गभीर, पा० गामीरो, प्रा० गहीर, उ० गहिर, प० गैरा, सिं० गहरो, गु० घेरु, ने० गैरो, मरा० गहिरा] [वि० स्त्री० गहरी] [भाव० गहराई, गहरापन] १ जिसका तल चारो ओर के स्तर या विस्तार से नीचे की ओर अधिक दूरी तक हो। जैसे—गहरा कुआँ, गहरा बरतन, गहरी नदी। २ (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो। गभीर 'उथला' या 'छिछला' का विपर्याय। ३ लाक्षणिक अर्थ मे (विषय या व्यक्ति) जिसकी थाह न मिलती या न लगती हो। गूढ। रहस्यमय। 'ओछा' का विपर्याय।

पद—गहरा पेट=ऐसा हृदय जिसमे छिपी हुई बातो का जल्दी औरो को पता न चले।

मुहा०—गहरे मे चलना=ऐसा आचरण या व्यवहार करना जिसका भेद सहज मे सबको न मालूम हो सके।

४ जो अदर या भीतर की ओर अधिक दूरी तक चला गया हो। जैसे—गहरा मकान। ५ (रग) जो बहुत अधिक चटकीला हो। 'हलका' का विपर्याय। ६ (आँख) जिसमे नीद भरी हो। ७ साधारण की अपेक्षा बहुत अधिक। जैसे—गहरी दोस्ती।

पद–गहरा असामी=धनी या मालदार व्यक्ति। **गहरा हाथ**=(क) भारी आघात। (ख) भारी रकम। **गहरे लोग**=चतुर या सयाने लोग।

मुहा०—गहरी घुटना=(क) घनिष्ठता होना। (ख) गहरी भाँग छनना। **गहरी छनना**=गहरी घुटना।

८ जिसका परिणाम या फल बहुत उग्र या तीव्र हो । जैसे—गहरा नशा, गहरी चोट। ९ विकट।

गहराई—स्त्री० [हि० गहरा+ई० (प्रत्य०)] १ गहरे होने की अवस्था या भाव। गहरापन। २ (विषय आदि की) गभीरता या गहनता। ३ घनता। निबिडता।

गहराना†—अ० [हि० ग्रहण] गहरा होना। उदा०—सन्ध्या का गहराया झुटपुट। भीलो का-सा धरे सिर मुकुट।—पत।

स० गहरा करना। जैसे—कूआँ गहराना।

अ० [स० गह्वर, पु० हि० गभुराना] १ जिद या हठ करना। अडना। २ मान, रोष आदि के कारण होठो मे बुडबुडाना। गभुराना। उदा०—दोऊ अधिकाई भरे, एकै गो गहराइ।—बिहारी।

गहराव†—पु०=गहराई।

गहरु*—स्त्री०=गहर (देर या विलब)।

गहरे†—क्रि० वि० [हि० गहरा] १ अच्छी तरह। २ यथेष्ट।

गहरेबाज—वि० [हि० गहरा+बाज] [भाव० गहरेबाजी] गहरे मे अर्थात् तेजी से चलने या चलानेवाला (एक्का और उसका घोडा)।

गहरेबाजी†—स्त्री० [हि० गहरा+बाजी] एक्के के घोडे की खूब तेज कदम चाल।

गहलौत—पु० [?] राजपूताने के क्षत्रियो का एक वश।

गहवर—पु० [स० गह्वर] १ कदरा। गुफा। २ देवालय। मदिर।

गहवरिया—वि० [स० गह्वर] १ गहरा। २ सघन। उदा०—तरु गहवरिया थिय तरुण।—प्रिथीराज।

गहवा†—पु० [हि० गहना=पकडना] सँडसी।

गहवाना—स० [हि० गहना का प्रे०] किसी से पकडने का काम कराना। पकडवाना। गहाना।

गहवारा—पु० [फा०] १ झूला। २ पालना।

गहव्वर—वि० दे० 'गह्वर'।

गहाई†—स्त्री० [हि० गहना] गहने या गहाने अर्थात् पकडने या पकडवाने की क्रिया या भाव। पकड।

गहागड्ड—वि०=गहगड्ड।

गहागह—वि०=गहगहा।

गहाना—स० [हि० गहना] १ किसी को कुछ गहने या धारण करने मे प्रवृत्त करना। पकडाना। २ (कष्ट, विपत्ति आदि से) ग्रस्त या युक्त कराना।

गहासना*—स०=ग्रसना। उदा०—जौ वदहि पुनि राहु गहासा।—जायसी।

गहिरदेव—पु० [हि० गहिर+देव] काशी के एक राजकुमार जिसे गहरवार लोग अपना आदि पुरुष मानते है।

गहिरा†—वि०=गहरा।

गहिराई†—स्त्री०=गहराई।

गहिराव†—पु०=गहराव।

गहिरो*—वि०=गहरा।

गहिला†—वि० [हि० गहेला] [स्त्री० गहिली] उन्मत्त। पागल।

गहिलाना—स० [स० गाहन से] १. प्रवाहित करना। बहाना। २ धोकर दूर करना या हटाना। उदा०— जल काजल गहिलाइ।—ढोलामारु।

गहिलौत—पु०=गहलौत।

गहीर*—वि०१ =गहरा। २ =गभीर।

गहीला—वि० [हि० गहेला] [स्त्री० गहेली] १ उन्मत्त। पागल। २ अभिमानी। गर्वीला।

गहु†—स्त्री० [म० गह्वर या गँव] तग या सँकरा मार्ग। गली।

गहुआ—पु० [हि० गहना=पकडना] छोटे मुहवाली एक प्रकार की सँडसी।

गहूरी—स्त्री० [हि० गहना] १ किसी चीज को पकडने या पकडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ किसी दूसरे के माल को अपने यहाँ हिफाजत से रखने की मजदूरी।

गहेजुआ†—पु० [देश०] छछूँदर।

गहेलरा†—वि०=गहेला।

गहेला—वि० [हि० गहना=पकडना+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० गहेली] १ कोई चीज ग्रहण या धारण करनेवाला। जैसे—गरब गहेला। २ अभिमानी। गर्वीला। ३ उन्माद रोग से ग्रस्त। पागल। विक्षिप्त। ४ गँवार।

गहैया—वि० [हि० गहना+ऐया (प्रत्य०)] १ गहने या पकडनेवाला। २ अगीकार, स्वीकार या ग्रहण करनेवाला।

गह्वर—पु० [स० √गाह् (छिपाना)=वरच् पृषो० सिद्धि] १ ऐसा अँधेरा और गहरा स्थान जिसके अदर की चीजो या बातो का बाहर से कुछ भी पता न चले। २ दुर्भेद्य और विषम स्थान। ३ छिपने या छिपकर रहने आदि के लिए जमीन मे खुदा या खोदा हुआ कोई अँधेरा और गहरा स्थान। जैसे—गुफा, बिल, विवर आदि। ४ झाडियो या लताओ से घिरा हुआ स्थान। कुज। ५ जगल। वन। ६ बहुत ही गभीर और गूढ बात या विषय। ७ दभ, पाखड या इसी प्रकार की और कोई बात। ८ जल। पानी। ९ रुदन। रोना।

वि० १ दुर्गम। विषम। २ छिपा हुआ। गुप्त। ३ गभीर। गहरा।

गह्वरी—स्त्री० [स० गह्वर+ङीष्] कदरा। गुफा।

गाँकर†—स्त्री० दे० 'गाकरी'।

गाग—वि० [स० गगा+अण्] गगा-सबधी। गगा का।

पु० १ गगा का किनारा या तट। २ भीष्म। ३ कार्त्तिकेय। ४ वर्षा का जल। ५ सोना। स्वर्ण। ६ धतूरा। ७ बडा तालाब। ताल। ८ हिलसा मछली।

*स्त्री०=गगा। उदा०—गाँग जउँन जौ लहिजल तौ लहि अम्मरमाथ।—जायसी।

गाँगट—पु० [स० गाग√अट् (गति)+अच्] केकडा।

गाँगन†—स्त्री० [?] एक प्रकार की फुँसी या छोटा फोडा।

गागायनि—पु० [स० गगा+फिञ्-आयन] १ भीष्म। २ कार्त्तिकेय। ३ एक प्रवरकार ऋषि।

गागी—स्त्री० [स० गाग+ङीप्] दुर्गा।

गागेय—वि० [स० गगा+ढक्-एय] १. गगा-सबधी। २ गगा से उत्पन्न।

पु० १ भीष्म। २ कार्त्तिकेय। ३ सोना। स्वर्ण। ४ धतूरा।

५ कसेरू। ६ हिलमा मछली। ७ दक्षिण भारत के गगवाडी प्रदेश का एक प्राचीन राजवश।

गागेयी—स्त्री० [स० गागेय+ङीष्] हिलसा मछली।

गागेरुक—पु० [स० गाग√ईर् (गति)+कु+क] गोरख इमली का बीज।

गागेरुका—स्त्री० [स० गागेरुक+टाप्] १ नागवल्ली। २ एक प्रकार का क्षुद्र अन्न।

गागेरुकी—स्त्री० [स० गागेरुक+ङीष्] गागेरुका।

गागेष्ठी—स्त्री० [स० गागे√स्था (ठहरना)+क-ङीष्, अलुक् स०] एक प्रकार की लता। कटशर्करा।

गाग्य—वि० [स० गगा+ष्यञ्] १ गगा का। २ गगा मे या गगा से उत्पन्न होनेवाला।

गाँछना†—स०=गूथना।

गाँज—पु० [हिं० गाँजना] १ गाँजने अर्थात् ढेर लगाने की क्रिया या भाव। २ ढेर। राशि। जैसे—भूसे या लकडी का गाँज।

गाँजना—स० [फा० गज] ढेर या राशि लगाना। एक के ऊपर एक रखना या लगाना। जैसे—भूसा गाँजना, लकडी गाँजना।

स० [स० गजन] तोडना-फोडना। नष्ट करना। उदा०—अई चीत गढ ओर सूँ तू गाँजियो न जाय।—बाँकीदास।

गाँजा—पु० [स० गञ्जा, गृज, प्रा० उ० गजा, ब० मरा० गाँजा, सि० गाँजी, गु० गाँजे] १ भाँग की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी मादक सूखी कलियाँ या फूल चिलम मे रखकर तमाकू की तरह पीये जाते है।

गाँठ—स्त्री० [स० ग्रथि, पा० गठि] [वि० गँठीला] १ कपडे, डोरे, रस्सी आदि के सिरो को घुमाकर और एक दूसरे मे फँसाकर कसने या बाँधने से बननेवाला रूप जो आस पास के तलो से कुछ उभरा हुआ, गोलाकार और मोटा होता है। ग्रथि। गिरह। जैसे—कोई चीज बाँधने के लिए रस्सी मे गाँठ लगाना।

मुहा०—गाँठ जोडना या बाँधना=(क) विवाह के समय अथवा उसके बाद कोई धार्मिक शुभ कार्य करने के समय वर और वधू के कपडो के पल्ले या सिरे आपस मे उक्त प्रकार से बाँधना। (ख) परस्पर बहुत ही घनिष्ठ सबध स्थापित करना।

२ डोरे या रस्सी के किसी अश के घूमफिरकर फदा बनाने और उस फदे मे उलझने या फँसने से बननेवाला उक्त प्रकार का रूप। जैसे—इस डोरे या नख मे कई जगह गाँठे पड गई है। ३ कोई चीज बाँधकर अपने पास रखने के लिए कपडे के पल्लो को आपस मे फँसाकर दिया जानेवाला उक्त प्रकार का रूप। ४ उक्त के आधार पर कोई चीज अपने अधिकार मे होने की अवस्था या भाव। उदा०—खोटे राम गाँठ लिअ डोलै महँगी वस्तु मोलावै।—कबीर।

मुहा०—किसी की गाँठ कतरना या काटना= किसी की गाँठ से बँधा हुआ या किसी के पास का धन चालाकी या चोरी से ले लेना। चुरा या ठग कर ले लेना। **(कोई बात) गाँठ बाँधना**=किसी बात पर इस उद्देश्य से पूरा ध्यान देना कि वह सदा बहुत अच्छी तरह याद रहे। जैसे—हमारी बात गाँठ बाँध रखो, किसी समय बहुत काम आवेगी।

पद—गाँठ का=अपने पास का। पल्ले का। जैसे—बात की बात मे गाँठ के दस रुपए खर्च हो गए। **गाँठ का पूरा**=जिसके पास यथेष्ट धन हो। **गाँठ से**=अपने पास से। पल्ले से। जैसे—गाँठ से निकालकर खर्च करना पडे, तब पता चले।

५ किसी चीज की बँधी हुई बडी गठरी। गट्ठर। जैसे—कपडे या रेशम की आज चार गाँठे आई है। ६ वानस्पतिक क्षेत्र मे वृक्षो के काडो, टहनियो आदि मे बीच-बीच मे होनेवाला उभारदार, गोलाकार, मोटा अश या भाग। पर्व। पोर। (बल्ब) जैसे—ईख या बाँस मे होनेवाली गाँठे। ७ उक्त आकार के आधार पर कोई उभारदार, गोलाकार और ठोस चीज या रचना। जैसे—प्याज की गाँठ, हल्दी की गाँठ।

पद—गाँठ-गँठीला (देखे)।

८ शरीर के अगो मे का जोड या सधि-स्थान। जैसे—आज तो हमारी गाँठ-गाँठ मे दरद हो रहा है। ९ उक्त के आधार पर मन मे जमा या बैठा हुआ किसी प्रकार का दुर्भाव, द्वेष या वैर जो पारस्परिक सद्भावना के अभाव का सूचक होता है। उदा०—सावू वही सराहिये जाके हिये न गाँठ।

मुहा०—मन की गाँठ खोलना=मन मे छिपा हुआ दुर्भाव स्पष्टरूप से इसलिए कहना कि आगे के लिए सफाई हो जाय। **मन मे गाँठ पडना**=मन मे दुर्भाव, द्वेष या वैर-विरोध का भाव जमना या बैठना। जैसे—मेरे पिया के जिया मे पड गई गाँठ, कौन जतन से खोलूँ।—स्त्रियो का गीत।

१० किसी प्रकार की उलझन या झगडे-बखेडे की अथवा पेचीदी बात या स्थिति।

मुहा०—गाँठ खुलना=उलझन या झझट दूर होना। पेचीदी समस्या का निराकरण या समाधान होना।

११ कटोरी के आकार का एक प्रकार का घुँघरूदार गहना जो कोहनी के ऊपर पहना जाता है।

गाँठकट—पु० [हिं० गाँठ+काटना] गाँठ काटनेवाला व्यक्ति। गिरहकट।

गाँठ गँठीला—वि० [हिं० गाँठ] जिसमे जगह-जगह कई या बहुत-सी गाँठे पडी हो। जैसे—टूटे से फिर के जुडे तो गाँठ-गँठीला होय। (कहा०)

गाँठगोभी—स्त्री० [हिं० गाँठ+गोभी] गोभी की जाति का एक प्रकार का कद जिसके पत्तो का सपुट गोल और बडी गाँठ के रूप मे होता है और जिसकी तरकारी बनती है।

गाँठदार—वि० [हिं० गाँठ+दार (प्रत्य०)] जिसमे गाँठ या गाँठे पडी हो। जैसे—गाँठदार लकडी।

गाँठना—स० [स० ग्रथन, पा० गठन] १ गाँठ देना, बाँधना या लगाना। २ दो चीजें आपस मे जोडने या मिलाने के लिए डोरी, डोरे आदि से जोडकर गाँठे लगाना या मोटी सिलाई करना। जैसे—जूता गाँठना। ३ किसी को अपनी ओर मिलाने के लिए उसके साथ स्वार्थपूर्ण सबध स्थापित करना। जैसे—यदि उन्हे किसी तरह गाँठ सको तो बहुत काम हो। ४ पर-स्त्री को सभोग के लिए तैयार करना और फलत उसके साथ सभोग करना। ५ अनुचित रूप से कोई काम पूरा या सिद्ध करना। जैसे—अपना मतलब गाँठना। ६ दबोचकर अपने अधिकार या हाथ मे करना। जैसे—बिल्ली आज हमारा एक कबूतर गाँठ ले गई। ७ आघात या वार रोककर उसे विफल करना।

गाँठि*—स्त्री०=गाँठ।

गाँठी—स्त्री० [हिं० गाँठ] १ गाँठ। २ कोहनी पर पहनने का एक गहना।

गाँड—स्त्री० [स० गर्त, प्रा० गड्ड या कन्न० गेराडे=पुरुष की जननेद्रिय ?] १ मल-त्याग करने की इद्रिय। गुदा। गुह्य।

विशेष—यद्यपि इस शब्द के साथ अनेक मुहावरे है पर वे सब अश्लील होने के सिवा अ-साहित्यिक भी है, इसलिए वे छोड दिये गये हे।

२ किसी चीज के नीचे का भाग। तल्ला। पेंदी।

गाँडर—स्त्री० [स० गडाली] एक प्रसिद्ध घास जिसकी जड बहुत सुगधित होती है और खस कहलाती हे। गडदूर्वा।

गाँडा—पु० [स०काड या खड] [स्त्री० गेडी] १ किसी पेड-पोधे आदि का वह निकम्मा अश जो उससे काटकर अलग कर दिया गया हो। जैसे—ईख का गाँडा। २ ईख या ऊख की गँडेरी। ३ ईख। गन्ना। ४ चक्की के चारो ओर का घेरा। मेंडरी।

गांडाली—स्त्री० [स० गाण्ड–आ√ला (लेना)+क–डीष] गाँडर नामक घास।

गाँडी—स्त्री० [स० गड]=गाँडर।

गांडीर—वि० [स० गण्डीर+अण्] गडीर पौधे से प्राप्त या उसका बना हुआ। गडीर का।

गाडीव—पु० [स० गाण्डी=ग्रन्थि+व] १ अर्जुन का वह धनुष जो उसे अग्निदेव से प्राप्त हुआ था। २ धनुष।

गाडीवी (विन्)—पु० [स० गाण्डीव+इनि] १ अर्जुन। २ अर्जुन का वृक्ष।

गाँडू—वि० [हि० गाँड] १ जिसे गाँड मराने की लत हो। गुदा-भजन करानेवाला। २ कायर और निकम्मा।

गाँती—स्त्री० =गाती।

गांतु—वि० [स०√गम् (जाना)+तुन्, वृद्धि] गमन करनेवाला । चलने या जानेवाला।

पु० १ पथिक। बटोही। २ गवैया। गायक।

गांत्री—स्त्री० [स० गन्त्रीड+अण्–डीप्] बैलगाडी।

गाँथना*—स० १=गूँथना। उदा०—मालिनि आउ मौर लै गाँथे।—जायसी। २ =गाँठना।

गांदिनी—स्त्री० [स० गो√दा (देना)+णिनि, पृषो० सिद्धि] १ अक्रूर की माता जो काशिराज की कन्या और श्वफल्क की भार्या थी। २ गगा।

गांदी—स्त्री०=गादिनी।

गांधर्व—वि० [स० गधर्व+अण्] १ गधर्व-सबधी। गधर्व का २ गधर्व जाति या देश का। ३ (मत्र) जिसका देवता गधर्व हो।

पु० १ गान विद्या। सगीत-शास्त्र। २ गधर्व जाति। ३ भारत का एक प्राचीन भाग जिसमे गधर्व लोग रहते थे। ४ हिन्दू धर्मशास्त्रो के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से एक जो पहले गधर्व जाति मे प्रचलित था और जिसमे वर और वधू आपस मे मिलकर स्वेच्छापूर्वक वैवाहिक सबध स्थापित कर लेते थे। प्राचीन भारत मे यह विवाह क्षत्रियो के लिए विहित था, पर कलियुग मे वर्जित है। ५ घोडा।

गाधर्व-वेद—पु० [कर्म० स०] सामवेद का उपवेद जिसमे सामगान के स्वर, लय आदि का विवेचन है। सगीत-शास्त्र ।

गांधर्विक—वि० [स० गन्धर्व+ठक्–इक] १ गधर्व-सबधी। गधर्व का। २ गधर्व विद्या अर्थात् सगीत-शास्त्र का ज्ञाता।

गांधर्वी—स्त्री० [स० गान्धर्व+डीष्] दुर्गा।

गाँधार—वि० [स० गान्ध+ऋ (गति)+अण्] १ गधार देश सबधी। गधार का। २ गधार देश मे रहने या होनेवाला।

पु० १ गधार नामक प्राचीन देश जो पेशावर से कधार तक था। २ उक्त देश का निवासी। ३ सगीत के सात स्वरो मे से तीसरा स्वर। ४ एक प्रकार का षाडव राग जो अद्भुत, करुण और हास्यरस के लिए उपयुक्त कहा गया है। ५ गधरस नामक सुगधित द्रव्य।

गाधार—पु० [कर्म० स०] गाधार नामक राग का दूसरा नाम।

गाधार-भैरव—पु० [कर्म० स०] प्रात समय गाया जानेवाला एक प्रकार का सकर राग।

गांधारि—पु० [स० गन्ध+अण्, गान्ध√ऋ+इन्] दुर्योधन के मामा शकुनि का एक नाम।

गाधारी—स्त्री० [स० गान्धार +इञ्—डीप्] १ गाधार देश की स्त्री। २ धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की माता जो गाधार के राजा सुबल की पुत्री थी। ३ षाडव सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के दूसरे पहर मे गाई जाती है। ४ तत्र तथा हठयोग के अनुसार दाहिनी आँख की एक नाडी। ५ जवासा।

पु० [स० गाधारिन्] १ जैनो के एक शासन देवता। २ गाँजा।

गाधिक—पु० [स० गन्ध+ठक्–इक]१ सुगन्धित द्रव्य बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति। गाँधी। २ गध द्रव्य। सुगधित पदार्थ। ३ दे० 'गाँधी'।

गाँधी—पु० [स० गध से] १ वह जो सुगधित तेल आदि बनाने का काम करता हो। गाँधी। २ गुजराती वैश्यो का एक वर्ग। ३ गँधिया नाम का कीडा। ४ गधिया नाम की घास।

†स्त्री० हीग।

गांधी टोपी—स्त्री० [गाधी (महात्मा)+टोपी] खद्दर की बनी हुई किश्ती नुमा लबोतरी टोपी।

विशेष—महात्मा गाधी ने पहले पहल इस प्रकार की टोपी पहनना आरम्भ किया था। इसलिए उन्ही के नाम पर इसका नाम पडा।

गाधीवाद—पु० [हि० गाधी+स० वाद]महात्मा गाधी की विचारधाराओ पर स्थित वह वाद जिसमे सत्य और अहिसा तथा तप और त्यागपूर्वक अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर होने की व्यवस्था हे। रामराज्य की स्थापना इस वाद का चरम ध्येय हे।

गाभीर्य—पु० [स० गम्भीर+ष्यञ्] गभीर होने की अवस्था, गुण या भाव। गभीरता।

गाँव—पु० [स० ग्राम, पा०, प्रा, गु० गाम, अप० गाँअ, बँ०, उ० गाँ, ने० सि० गाँउँ, मरा० गाँव, गाव] [वि० गँवार, गँवारू] १ खेती-बारी आदि करनेवाले लोगो की छोटी बस्ती जिसमे १०-२० या १००–२०० घर हो। खेडा।

मुहा०—गाँव मारना=गाँव मे पहुँचकर डाका डालना और वहाँ के सब लोगो को लूटना।

२ मनुष्यो की बस्ती। ३ जगह। स्थान। उदा०—एक तुम्हारे ह्वै पिय प्यारे, छाँडि और सब गाँव।—भारतेंदु। ४ बस्ती। ५ रहस्य-सप्रदाय मे, काया या शरीर।

गाँवटी—वि० [हि० गाँव] १ गाँव मे रहने या होनेवाला। गाँव का।

देहाती। उदा०—गाँवटी और जगली जानवरो के चरने से।—वृंदावन लाल वर्मा। २ दे० 'गँवार'।

गाँव-पचायत—स्त्री०=ग्राम पचायत।

गाँव सभा—स्त्री०=ग्राम पचायत।

गाँस—स्त्री० [हि० गासना] १ तीर, बरछी, भाले आदि हथियारो का नुकीला फल। २ उक्त फल का अथवा किसी नुकीली वस्तु (जैसे—काँटा या सूई) का वह टुकडा जो टूटकर घाव के अन्दर रह गया हो और बहुत कष्ट देता हो। ३ किसी के प्रति मन मे बैठा हुआ द्वेष या वैर जो बदला लेने की प्रेरणा करता हो। मनोमालिन्य।

मुहा०—(मन की) गाँस निकालना=शत्रु से बदला चुकाकर अपना मन शात करना।

४ मन मे खटकने या चुभनेवाली बात। उदा०—प्रीतम के उर बीच भये दुलही को विलास मनोज की गासी।—मतिराम। ५ कष्ट या पीडा देनेवाली कोई चीज या बात। ६ किसी प्रकार का बधन या रुकावट।

मुहा०—(किसी को) गाँस मे रखना=अपने अधिकार या वश मे रखना।

७ दे० 'गाँठ'।

गाँसना—स० [हि० गाँस] १ हिन्दी 'गँसना' का सकर्मक रूप। २ छेद करके दो चीजो को एक मे मिलाते हुए अच्छी तरह फँसाना, लगाना या सटाना। ३ किसी चीज मे गाँसी या नुकीली चीज गडाना या धँसाना।

मुहा०—(कोई बात मन मे) गाँसकर रखना=कोई अप्रिय या खटकनेवाली बात अच्छी तरह मन मे जमा या बैठाकर रखना। उदा० —तुम वह बात गाँसि करि राखी, हम कौ गई भुलाई।—सूर। **गाँस गहना**=गाँसकर रखना।

४ अच्छी तरह बाँधकर या रोककर अपने अधिकार, नियत्रण या शासन मे रखना। ५ किसी चीज मे कुछ ठूँस या भरकर रखना। ६ जहाज के पेंदे के छेदो मे उन्हे बन्द करने के लिए मसाला भरना। (लश०)

गाँसी—स्त्री०=गाँस।

गाँहक†—पु०=गाहक।

गाइ (ई)†—स्त्री०=गाय।

गाइन—वि० [हि० गाना] गानेवाला।

पु० गवैया। गायक।

गाउन—पु० [अ०] १ एक प्रकार का लबा ढीला पहनावा जो प्राय योरप, अमेरिका आदि देशो की स्त्रियाँ पहनती है। २ उक्त प्रकार का वह पहनावा जो कुछ विशिष्ट लोगो (जैसे-डाक्टरो, वकीलो, स्नातको आदि) को कोई उच्च परीक्षा पारित करने पर उसके चिह्न-स्वरूप मिलता है।

गाऊघप्प—वि० [हि० खाऊ+गप्प] १ सब कुछ खा-पी जानेवाला। २ दूसरो का माल खा या हडप जानेवाला।

गाकरी†—स्त्री० [स० अगार+कर] आग पर सेकी हुई बाटी या लिट्टी। अगा कडी।

गागर—स्त्री० [स० गर्गर] धातु या मिट्टी का बना हुआ ऊँचे गलेवाला एक प्रकार का घडा।

मुहा०—गागर मे सागर भरना=(क) थोडे स्थान मे बहुत अधिक चीजे भरना। (ख) कोई ऐसी पदावली या वाक्य बोलना या लिखना जिसमे बहुत अधिक भाव भरे हो। (साहित्य)

गागरा†—पु० [स्त्री० गागरी] =गगरा।

गाच—स्त्री० [अ० गाज] १ झीनी बुनावट का एक प्रकार का पतला कपडा। २ फुलवर नाम का रगीन बूटीदार कपडा।

गाछ—पु० [स० गच्छ] १ पेड। वृक्ष। २ उत्तरी बगाल मे होनेवाला एक प्रकार का पान।

†स्त्री०=गाच।

गाछी—स्त्री० [हि० गाछ] १ छोटा पेड। २ छोटा बगीचा। ३ खजूर की नरम कोपल जिसे सुखाकर तरकारी बनाई जाती है।

†स्त्री०=खुरजी।

गाज—स्त्री० [स० गर्ज, प्रा० गज्ज] १ गूँजने की क्रिया, भाव, या शब्द। गर्जन।

पद—गाजा-बाजा=कई तरह के बाजे।

२ बिजली। वज्र।

मुहा०—गाज पडना=बिजली गिरना या वज्रपात होना। **(किसी वस्तु पर) गाज पडना**=पूरी तरह से नष्ट या बरबाद होना। **(किसी व्यक्ति पर) गाज पडना**=बहुत बडी आफत या सकट मे पडना। **गाज मारना**-गाज पडना।

पु० [अनु० गजगज] पानी आदि का फेन। झाग।

स्त्री० [?] काँच की चूडी।

गाजना—अ० [स० गर्जन, पा० गज्जन] १ गर्जन करना। गरजना। २ शोर मचाना। उदा०— जूँ अबर पर इदर गाजा।—ग्राम्य गीत। ३ खूब प्रसन्न होना।

गाजर—स्त्री० [स० गृजन] मूली की जाति का एक प्रसिद्ध मीठा लबोतरा कद जिसका अचार, तरकारी, मुरब्बा आदि बनाये जाते है।

मुहा०—(किसी को) गाजर-मूली समझना=(क) अशक्त या असमर्थ समझना। (ख) तुच्छ या हेय समझना।

गाजा—पु० [फा० गाज] एक प्रकार का चूर्ण या लेप जो स्त्रियाँ सौदर्य बढाने के लिए मुँह पर मलती है।

†पु०=गाँजा। उदा०—गाजा पिये गुरु ज्ञान मिटे।

गाजाधर—पु०=गदाधर।

गाजी—पु० [अ०] १ मुसलमानो मे वह वीर या योद्धा जो धर्म के लिए विधर्मियो से युद्ध करता हो। २ उक्त प्रकार के युद्ध मे प्राण देनेवाला व्यक्ति। ३ बहुत बडा बहादुर या वीर।

गाजीमर्द—पु० [अ०+फा०] १ बहुत बडा योद्धा या वीर। २ घोडा।

गाजीमियाँ—पु० [अ०] महमूद गजनवी का भानजा सालार मसऊद जो बहराइच मे श्रावस्ती के जैन राजा सुहृद्देव के हाथो मारा गया था।

गाटर—पु० [पु० हि० गटई=गला] जुआठे की वह लकडी जिसके इधर उधर बैल जोते जाते है।

पु० [?] खेत का छोटा टुकडा। गाटा।

पु० [अ० गर्डर] लोहे की मोटी और लबी धरन।

गाटा†—पु० [हि० कट्ठा] १ खेत का छोटा टुकडा। छोटा खेत। गाटर। २ बैलो की वह दौनी जो पयाल का चूरा कराने के लिए होती है।

गाड—पु० [स० गर्त, प्रा० गड्ड मिलाओ अ० गार] १ जमीन मे खोदा

या बना हुआ गड्ढा। २ वह गड्ढा जो अनाज भरकर रखने के लिए जमीन मे खोदा जाता है। ३ वह गडढा जिसमे ईख की खोई का बचा हुआ रस निचुडकर इकट्ठा होता है। ४ वह गड्ढा जिसमे पानी भरकर नील भिगोते है। ५ कूएँ का भगाड (देखा)। ६ खेत की मेड।

गाडना—स० [प्रा० गड्डा, बं० गारा, उ० गार, गु० गाडवूँ मरा० गाडणे] १ कोई चीज छिपाने या दबाने के लिए जमीन मे खोदे हुए गड्ढे मे रखना और तब उस पर इस प्रकार मिट्टी आदि डालना या भरना कि वह ऊपर से दिखाई न दे। जैसे—जमीन मे धन गाडना। २ उक्त प्रकार से मृत शरीर जमीन के अदर रखकर मिट्टी आदि से दबाना। दफन करना। दफनाना। जैसे—ईसाइयो और मुसलमानो के मुरदे गाडे जाते है। ३ कोई चीज कही दृढतापूर्वक खडी करने के लिए उसके नीचे का कुछ अश जमीन मे उक्त प्रकार से धँसाना या दबाना। जैसे—खभा, झडा या बाँस गाडना। ४ (खेमा या तबू) खडा करना। ५ किसी नुकीली चीज की नोक या सिर जमीन या दीवार मे इस प्रकार धँसाना या दबाना कि वह जल्दी इधर-उधर न हो सके। जैसे—कील या खूँटी गाडना। ६ दूसरो की दृष्टि से बचाने के लिए अथवा और किसी प्रकार चोरी से अधिक मात्रा मे कोई चीज इस उद्देश्य से छिपाकर अपने पास रखना कि उपयुक्त अवसर आने पर उससे अनुचित लाभ उठाया जा सके। (होर्डिंग)।

गाडर†—स्त्री० [स० गड्डरी वा गड्डरिका] भेड।
 स्त्री० दे० 'गॉडर'।

गाडरू†—पु०=गारुडी।

गाडव—पु० [स० गडु+अण्] बादल। मेघ।

गाड़ा†—पु० [हिं० गाडी] १ बडी गाडी। २ बडी बैलगाडी। ३ बडा छकडा।
 पु० [हिं० गाड] १ जगल का वह गड्ढा जिसमे चोर, डाकू आदि छिपकर बैठते थे। २ दे० 'गाड'।
 मुहा०—गाडे बैठना=(क) किसी की घात मे कही छिपकर बैठना। (ख) चौकी या पहरे पर बैठना।
 पु० [हिं० गाडना] १ हिंदुओ का वह वर्ग जो मुसलमानो के शासन-काल मे डर कर अपने मुरदे गाडने लगा था। २ मुलसमान जो अपने मुरदे जमीन मे गाडते है।

गाडी—स्त्री० [प्रा० गत्तिआ, गाड्डआ, दे०, प्रा० प० गड्डी, गोडइ, उ०बँ० गारी, सि० गाडो, गु० मरा० गाडी] १ पहियो पर जडा या बैठाया हुआ लकडी-लोहे आदि का वह ढाँचा जिसे घोडे, बैल आदि खीचते है और जिस पर सवारियाँ तथा सामान एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाये जाते है। शकट।
 क्रि० प्र०—खीचना।—चलाना।—हाँकना।
 पद—गाड़ी भर=बहुत अधिक। ढेर-सा।
 मुहा०—गाडी जोतना=गाडी चलाने के लिए उसके आगे घोडे या बैल जोतना।
 २. रेलगाडी।

गाडीखाना—पु० [हिं० गाडी+खाना] वह कमरा, घर या स्थान जहाँ गाडियाँ रखी जाती हो।

गाड़ीवान—पु० [हिं० गाडी +अ० मैन का हिं० रूप वान] गाडी चलाने या हाँकनेवाला।

गाढ़—वि० [स०√गाह् (पैठना)+क्त] १ बहुत अधिक। अतिशय। २ दृढ। पक्का। मजबूत। ३ गभीर। गहरा। ४ घना। ५ तेज। प्रबल। ६ कठिन। विकट। ७ दुरूह या दुर्गम।
 स्त्री० कष्ट, विपत्ति या सकट का समय या स्थिति।
 पु० [?] जुलाहो का करघा।

गाढता—स्त्री० [स० गाढ +तल्-टाप्] १ गाढे, गंभीर या गहन होने की अवस्था या भाव। २ कठिनता। दुरूहता।

गाढ़ा—वि० [स० गाढ] [स्त्री० गाढी] १ (पदार्थ) जिसमे तरलता अपेक्षया कम हो। जो अधिक तरल या पतला न हो। जैसे—गाढा दूध, गाढी भाँग (या उसका घोल)।
 मुहा०—गाढ़ी छनना=गाढी भाँग पीयी जाना जिसमे खूब नशा हो।
 २ (रग) जो अधिक गहरा हो। बहुत हलका न हो। जैसे—गाढा लाल, गाढा हरा। ३ (वस्त्र) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हो। ठस बुनावट-वाला और अपेक्षया मोटा। ४ दृढ। पक्का। उदा०—गयो लक गाढौ गहचौ—चदवरददाई। ५ (सबध) जिसमे आत्मीयता, घनिष्ठता आदि की अधिकता हो। जैसे—गाढी दोस्ती।
 मुहा०—(आपस मे) गाढ़ी छनना=(क) घनिष्ठ मित्रता होना। (ख) खूब घुल-मिलकर परामर्श या बाते होना।
 ६ उग्र। प्रचड। जैसे—गाढी शत्रुता। ७ बहुत ही कठिन या विकट। जैसे—गाढे दिन (दे०)। उदा०—तिन्हहि सराप दीन्ह अति-गाढा।—तुलसी। ८ जिसमे बहुत अधिक परिश्रम होता हो या हुआ हो।
 पद—गाढ़े की कमाई—बहुत परिश्रम से कमाया हुआ धन।
 ९ जिसमे कष्ट, सकट आदि की अधिकता हो। जैसे—गर्भवती या प्रसूता के गाढे दिन।
 पु० १ कष्ट, विपत्ति या सकट की अवस्था, प्रसग या समय। जैसे—गाढे मे जल्दी कोई साथ नही देता। २ जुलाहे का बुना हुआ देशी, मोटा सूती कपडा। ३ मस्त हाथी।

गाढ़े†—क्रि० वि० [हिं० गाढा] १ दृढतापूर्वक। २ गहरा रग लिये हुए। ३ कठिनता या सकट के समय मे। उदा०—चोर न लेहि, घटै नहि कबहूँ, गाढे आवत काम।—काष्ठजिह्वास्वामी।

गाणपत—वि० [स० गणपति+अण्] गणपति-सबधी। गणपति का।
 पु० [स० गणपति] गणेश जी की उपासना तथा पूजा करनेवाला एक प्राचीन सप्रदाय।

गाणेश—पु० [स० गणेश+अण्] गणेश का उपासक।
 वि० गणेश सबधी।

गात—पु० [स० गात्र, पा० गत्त] १ देह। शरीर। २ स्त्रियो का यौवन-काल।
 मुहा०—गात उमगना=यौवन का आगमन या आरभ होने पर बालिका के स्तन उभरना।
 ३ पुरुष या स्त्री का गुप्त अग। ४ गर्भ।
 मुहा०—गात से होना=गर्भवती होना।

गातलीन—स्त्री० [अ० गाटलिन] जहाज मे वह डोरी जो मस्तूल के ऊपर एक चरखी मे लगी रहती और रीगिन उठाने मे काम आती है।

गातव्य—वि० [स०√गै (गाना)+तव्यत्] गाने अथवा गाये जाने के योग्य।

गाता (तृ)—वि० [स०√गै+तृच्] गानेवाला।
†—पु०=गत्ता।
गतानुगतिक—वि० [स० गतानुगत+ठक्—इक] गतानुगति या अध अनुसरण के रूप मे होनेवाला।
गाती—स्त्री० [स० गात्री] १ बच्चो को सरदी से बचाने के लिए उनके शरीर पर लपेटकर गले मे बाँधा जानेवाला छोटा कपडा। २ उक्त प्रकार से शरीर के चारो ओर चादर लपेटने का ढग या प्रकार। ३ कपडे का वह टुकडा जो साधु लोग अपने गुप्त अग ढकने के लिए कमर मे लपेट कर उसके दोनो सिरे गले मे बाँधते है।
गातु—पु०[स०√गै+तुन्] १ गाने की क्रिया या भाव। गाना। २ गानेवाला। गायक। ३ गधर्व। ४ कोयल। ५ भौरा। ६ पथिक। बटोही। ७ पृथ्वी।
गात्र—पु० [स०√गम् (जाना)+त्रन्, आकारआदेश] १ देह। शरीर। २ हाथी के अगले पैरो का ऊपरी भाग।
गात्रक—पु० [स० गात्र+कन्] शरीर।
गात्र-भगा—स्त्री० [ब० स० टाप्] केवाँच। कौछ।
गात्र-रुह—पु० [गात्रे√रुह् (जन्म लेना)+क] शरीर के रोऍं। रोम।
गात्रवत्—वि० [स० गात्र+तुप्, वत्व] सुदर शरीरवाला।
गात्र-वर्ण—पु० [मध्य० स०] स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमे सातो स्वरो मे से प्रत्येक का उच्चारण तीन तीन बार किया जाता है। जैसे—सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग आदि।
गात्र-सम्मित—वि० [ब० स०] (गर्भ) जो तीन महीने के ऊपर का होकर शरीर के रूप मे आ गया हो।
गात्रानुलेपनी—स्त्री० [गात्र-अनुलेपनी,ष० त०] अगराग।
गात्रावरण—पु० [स० गात्र-आवण, ष० त०] १ शरीर ढकनेवाली कोई चीज। २ युद्ध के समय शरीर को ढकनेवाले कवच, जिरह-बकतर आदि।
गात्रिका—स्त्री० [स० गात्र+कन्—टाप्, इत्व] शाल की तरह की एक प्रकार की पुरानी चादर।
गाथ—पु० [स०√गा (गाना या स्तुति)+थन् १ गाना। गान। २ प्रशसा। स्तुति। स्तोत्र। ३ कथा। कहानी। ४ विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन।
गाथक—पु० [स० √गा+थकन्] गाथा कहने या लिखनेवाला।
गाथना†—स० [हिं० गथना] १ अच्छी तरह पकडना। २ कसना। जकडना। ३ गूँधना। ४ गूँथना। पिरोना।
गाथा—स्त्री० [स० गाथ+टाप्] १ गीत, विशेषत अपनी रमणीयता के कारण सब तरह के लोगो मे गाया जानेवाला गीत। २ प्राकृत भाषा का एक छद जिसमे उक्त प्रकार के गीत लिखे जाते थे।
विशेष—इन गीतो मे किसी के किए हुए यज्ञो आदि का प्रशसात्मक उल्लेख होता था।
३ परवर्ती काल मे, आर्या छद का एकभेद या रूप जिसमे पाली, प्राकृत आदि मे ऐसी रचनाएँ होती थी, जिनमे ताल, स्वर आदि के नियमो का बधन नही होता था। ४ छोटे-छोटे पद्यो मे बहुत ही सीधे सादे ढग से और विस्तारपूर्वक कही हुई वह प्रभावोत्पादक कथा जिसमे प्राय सच्ची घटनाओ या विशिष्ट तथ्यो का वर्णन होता है। (बैलड) ५, पारसियो तथा बौद्धो के धर्मग्रथो मे की उक्त प्रकार की रचनाएँ। ६ कोई कथा या वृत्तात। ७ किसी की प्रशसा या स्तुति।
गाथाकार—पु० [स० गाथा√कृ (करना)+अण्] १ गाथाएँ रचनेवाला। २ महाकाव्य का रचयिता। ३ गायक।
गाथिक—पु० [स० गाथा+ठक—इक] [स्त्री० गाथिका] =गाथक।
गाथी (थिन्)—पु० [स० गाथा+इनि] सामवेद गानेवाला।
गाद†—स्त्री० [स० गाध=जल के नीचे का तल] १ तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढी चीज। तलछट। २ तेल की कीट। ३ कोई गाढी चीज। जैसे—गोद।
गादड†—वि० [स० कातर या हिं० गीदड] मट्ठर। सुस्त।
पु० १ गीदड। २ कायर। डरपोक। ३ वह बैल जो किसी तरह जल्दी न चलता हो।
स्त्री० [स० गड्डर] भेड।
गादर—वि० [हिं० गदराना] गदराया हुआ।
†पु० दे० 'गादड'।
†पु० [हिं० कादर] वह बैल जो चलता-चलता बैठ जाता हो।
गादा—पु० [स० गाधा=दलदल] १ खेत मे खडी फसल जो अभी पकी न हो। २ उक्त फसल के अध-पके अन्न के दाने। ३ महुए का फल जो पेड से टपका हो। हरा महुआ।
गादी—स्त्री० [हिं० गद्दी] १ छोटी टिकिया के आकार का एक प्रकार का पकवान। २ दे० 'गद्दी'।
गादुर—पु०=चमगादड।
गाध—पु० [स०√गाध् (प्रतिष्ठा)+घञ्] १ स्थान। जगह। २ जल के नीचे का स्थल। तल। ३ नदी का प्रवाह। बहाव। ४ लालच। लोभ।
वि० १ (जलाशय) जो इतना छिछला या कम गहरा हो कि चल या हलकर पार किया जा सके। २ अल्प। थोडा।
गाधा—स्त्री० [स० गाध+टाप्] १ गायत्री स्वरूपा महादेवी। २ बहुत अधिक कष्ट या दुख। उदा०—भव-बाधा गाधा हरन राधा राधा जीय। —सत्यनारायण।
†पु०=गधा।
गाधि—पु० [स०√गाध्+इन्] कुशिक राजा के पुत्र जो विश्वामित्र के पिता थे।
गाधि-पुर—पु० [ष० त०] कान्यकुब्ज। कन्नौज।
गाधेय—पु० [स० गाधि+ढक्—एय] गाधि ऋषि के पुत्र, विश्वामित्र।
गाधेया—स्त्री० [स० गाधेय+टाप्] गाधि ऋषि की कन्या सरस्वती जिसका विवाह ऋचीक से हुआ था।
गान—पु० [स०√गै (गाना)+ल्युट्—अन] वि० गेय, गातव्य] १ गाने की क्रिया या भाव। गाना। २ वह जो गाया जाय। गीत। ३ किसी प्रकार का बखान या वर्णन। जैसे—यशोगान। ४ शब्द। ५ जाना। गमन।
गानगर—पु० [हिं० गान+फा० गर] =गायक।
गानना* स०=गाना। उदा०—नर अरु नारि राम गुन गानहिं।—तुलसी।
गाना—स० [स० गान] १ कविता, गीत आदि के चरणो या पदो का वह क्रमिक, मोहक और सरस उच्चारण जो सुर तालवाले नियमो के अनुसार किसी विशिष्ट लय मे होता है। २ पक्षियो आदि का मधुर स्वर मे बोलना।

कलरव करना। ३ विस्तारपूर्वक किसी विषय की चर्चा या वर्णन करना। (विशेषत कविता या छदो मे)।

मुहा०—अपनी ही गाना=अपनी ही बात कहते चलना (और दूसरे की न सुनना)।

४ प्रशसा या स्तुति करना। ५ आराधना करना। भजना। उदा०—दिन द्वै लेहुँ गोविंदहि गाइ। —सूर।

पु० १ लय, राग आदि मे कविता, पद्य आदि का उच्चारण करने की क्रिया या भाव। २ गाई जानेवाली चीज या रचना। गीत।

गानी (निन्)—वि० [स० गान+इनि] १ गानेवाला। २ गमन करने या जानेवाला।

गाफिल—वि० [अ०] [भाव० गफलत] १ अचेत। बे-सुध। २ असावधान। ३ लापरवाह।

गाब—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जिसका निर्यास नाव के पेदे की लकडियो पर उन्हे सडने-गलने से बचाने के लिए लगाया जाता है।

गाबलीन—स्त्री० [?] जहाज पर पाल चढाने की एक प्रकार की चरखी या गराडी।

गाभ—पु० [स० गर्भ, प्रा० प० गब्भ, सिह० गब, सि० गभु, मरा० गाभ] १ गर्भ, विशेषत मादा पशुओ का गर्भ।

मुहा०—गाभ डालना=(क) मादा पशु का ऐसी क्रिया करना जिससे उसका गर्भ गिर जाय। अपना गर्भ गिराना, =बाहर निकालना या फेकना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, बहुत ही डर जाना (व्यग्य और हास्य)

२ किसी चीज का मध्य भाग। ३ दे० 'गाभा'। ४ बरतन ढालने के लिए वह साँचा जिस पर अभी गोबरी की तह न चढाई गई हो (कसेरे)।

गाभा—पु० [स० गर्भ] १ नया कोमल पत्ता। कल्ला।

मुहा०—गाभा आना=बीच मे से नया पत्ता निकलना। २ पौधो, वृक्षों आदि के डठलो या शाखाओ के अदर का कोमल भाग। ३ लिहाफ, रजाई आदि के फटने पर उनमे से निकलनेवाली रूई। ४ कच्चा अनाज। ५ किसी चीज का भीतरी भाग।

गाभिन—वि० स्त्री० [स० गर्भिणी] (मादा पशु) जिसके पेट मे बच्चा हो। गर्भिणी।

गाभिनी—वि० स्त्री०=गाभिन।

गाम—पु० [स० ग्राम, पा० गाम] गाँव।

गामचा—पु० [फा० गामूच] घोडे के टखने और सुम के बीच का भाग।

गामत—स्त्री० [स० गमन] १ निकलने का मार्ग। निकास। २ छेद। सूराख (लश०)।

गामा—*पु० [स० ग्राम] गँवार। ग्रामीण। उदा०—रामते अधिक नाम करतन जेहि, किये नगर-गत गामो।— तुलसी।

गामिनी—स्त्री० [स०√गम् (जाना)+णिनि–ङीप्] प्राचीन काल की एक प्रकार की बडी नाव जो समुद्रो मे चलती थी।

वि० स्त्री० स० 'गामी' का स्त्री०।

गामी (मिन्)—वि० [स०√गम्+णिनि] [स्त्री० गामिनी] १ गमन करनेवाला। चलने या जानेवाला। जैसे—शीघ्रगामी। २ गमन या सभोग करनेवाला। जैसे—वेश्यागामी।

गामुक—वि० [स०√गम्+उकञ्] जानेवाला। गामी।

गाय—स्त्री० [स० गो, प्रा० पा० गावी, बँ० उ० ने० गाइ, प० गाँ, गु०, मरा० गाय] सीगोवाला एक प्रसिद्ध मादा चौपाया जिसका दूध अत्यत पुष्टिकारक और स्वादिष्ट होता और पीने तथा दही, पनीर, मक्खन आदि बनाने के काम आता है। 'साँड की मादा।

मुहा०—गाय का बछिया तले और बछिया का गाय तले करना=इधर का उधर और उधर का इधर करना। हेरा-फेरी करना।

२ बहुत सीधा-सादा और निरीह व्यक्ति।

३ सत साहित्य मे, (क) आत्मा। (ख) वाणी। (ग) माया।

गायक—पु० [स० गै (गाना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० गायिका] १ वह व्यक्ति जो गीत गाता हो। २ वह जो गीत गाकर अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। ३ प्रशसा या स्तुति करनेवाला व्यक्ति।

गायकवाड—पु० [मरा०] बडौदा के उन पुराने महाराजाओ की उपाधि जो मराठो के उत्तराधिकारी थे।

गायकी—स्त्री० [स० गान] १ गान-विद्या। २ गान विद्या के अनुसार ठीक तरह से गाने की क्रिया या भाव। ३ गान विद्या का पूरा ज्ञान और उसके अनुसार होनेवाला गाना।

गायगोठ—स्त्री० [हिं० गाय+गोठ] वह स्थान जहाँ गोएँ बाँधी या रखी जाती है। गोशाला।

गायण—*पु०=गायन।

गायत—वि० [अ०] १ बहुत अधिक। २ हद दरजे का।

स्त्री० १ किसी वस्तु की अधिकता। २ गरज। मतलब।

गायताल—पु० [हिं० गाय+तल] निकृष्ट या निकम्मा चौपाया।

वि० निकम्मा और निकृष्ट। रद्दी।

गायताल खाता—पु० [हिं०] खाते या बही का वह अश जिसमे ऐसी रकमे लिखी जाती है जिनके वसूल होने की बहुत ही कम आशा होती है।

गायत्र—पु० [स० गायत्√त्रै (रक्षा करना)+क] [स्त्री० गायत्री] गायत्री छद।

गायत्री—पु० [स० गायत्र+ङीष्] १ एक प्रकार का वैदिक छद। २ उक्त छद मे रचित एक प्रसिद्ध वैदिक मत्र जो भारतीय आर्यो मे परम पवित्र माना जाता है। सावित्री। ३ दुर्गा। ४ गगा। ५ छ अक्षरो की एक प्रकार की वर्णिक वृत्ति जिसके कई भेद है। ६ खैर का पेड।

गायन—पु० [स०√गै+ल्युट्–अन] १ गाने की क्रिया या भाव। २ गाई जानेवाली छन्दात्मक रचना। गीत। गान। ३ गवैया। गायक। ४ कार्त्तिकेय।

गायब—वि० [अ०] जो सहसा अन्तर्धान हो गया अथवा परोक्ष मे चला गया हो। जो आँखो से ओझल हो गया हो। लुप्त।

मुहा०—(कोई चीज) गायब करना=चालाकी या चोरी से कोई चीज उठा लेना या हटा लेना।

पद—गायब गुल्ला=जो इस प्रकार अदृश्य या लुप्त हो गया हो कि जल्दी उसका पता न चले।

पु० चौसर, शतरज, आदि खेलने का वह विशिष्ट कौतुकपूर्ण प्रकार जिसमे कोई कुशल खेलाडी स्वय तो आड मे छिपा हुआ बैठा रहता है और दूसरे खेलाडी की चाल का रूप या विवरण सुन कर ही उस चाल के उत्तर मे अपने पक्ष की चाल चलने का आदेश देता है। बिसात, मोहरे आदि मे अलग और दूर रहकर तथा उन्हे बिना देखे खेलने का ढग या प्रकार।

मुहा०—गायब खेलना=उक्त प्रकार से आड मे बैठकर चौसर, शतरज या ऐसा ही कोई खेल (बिना उसके उपकरण देखे) खेलना।

गाय-बगला—पु० [हि०] एक प्रकार का बगला (पक्षी) जो प्राय पशुओ के झुडो के आस-पास मँडराता रहता और उनके शरीर पर के कीडे खाता है। सुरखिया बगला।

गायब-बाज—पु० [अ०+फा०] [भाव० गायब-बाजी] वह खेलाडी जो गायब (चौसर, शतरज आदि) खेलता हो।

गायबाना—क्रि० वि० [अ० गायबान] १ गुप्त रीति से। छिपे छिपे। २ किसी की चोरी से या पीठ पीछे।

गायरौन—पु०=गोरोचन।

गायित्री—स्त्री०=गायत्री।

गायिनी—वि० स्त्री० [स०√गै+णिनि-ङीप्] १ गानेवाली स्त्री। २ वह स्त्री जो गाकर अपनी जीविका का निर्वाह करती हो। ३ एक प्रकार का मात्रिक छद।

गार—पु० [अ० गार] १ नीची जमीन। २ गड्ढा। ३ जगली जानवरो के रहने की माँद। ४ कदरा। गुफा।

वि० [फा०] एक विशेषण जो सयुक्त पदो के अत मे अव्यय की तरह लगकर ये अर्थ देता है—(क) करनेवाला, जैसे—खिदमतगार, गुनहगार, सितमगार। (ख) साधन। जैसे—रोजगार (अर्थात् रोज का साधन)।

स्त्री०=गाली। उदा०—सुनहुँ ब्रज बसि स्रवन मै ब्रज बासिनिन की गार।—नागरीदास।

पु०†=गारा।

गारत—स्त्री० [अ०] लूट-मार।

वि० ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।

गारद—स्त्री० [अ० गार्ड] १ सिपाहियो अथवा सैनिको का वह छोटा दल या दस्ता जो किसी स्थान की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया हो। २ पहरा।

मुहा०—गारद मे रखना=पहरे मे रखना (अपराधियो आदि को)।

गारना—स० [स० गालन] १ निचोडना। २ पानी के साथ घिस या रगडकर किसी चीज का रस या सार भाग निकालना। जैसे—चदन गारना। ३ पानी मे डालकर किसी चीज को गलाना या घुलाना। ४ गिराना, निकालना या बहाना। जैसे—आँसू गारना। उदा०—तुम कटु गरल न गारो।—मैथिलीशरण। ५ निकाल या हटाकर अलग या दूर करना। ६ त्यागना। ७ खोना। गँवाना। ८ क्षीण या नष्ट करना। जैसे—तपस्या करके शरीर गारना। ९ किसी का अभिमान चूर्ण करना। उदा०—द्रौपदी को चीर बढ्यौ दुस्सासनै गारी।—सूर।

गारभेली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जगली फालसे का वृक्ष जो पूर्वी भारत तथा हिमालय की तराई मे होता है।

गारा—पु० [हि० गारना] १ दीवारो आदि की जुडाई करने के लिए मिट्टी को पानी मे सानकर तैयार किया हुआ लसदार घोल। २ उक्त काम के लिए सुर्खी, चूने आदि का तैयार किया हुआ मसाला। ३ मछलियो के खाने का वह चारा जो उन्हे फँसाने के लिए बसी मे लगाया जाता है। उदा०—नेह नीर बसी नयन, बतरस गारौ लाई।—विक्रम सतसई।

वि० १ गीला। तर। २ उदासीन। खिन्न।

मुहा०*—जी गारा करना=किसी की ओर से उदासीन या खिन्न होना।

पु० [अ० गार?] वह नीची भूमि जहाँ वर्षा का पानी जमा होता हो।

पु० [?] दोपहर के समय गाया जानेवाला सकीर्ण जाति का एक राग।

मुहा०—गारा करना=विस्तारपूर्वक और बार-बार कोई बात कहना या सुनाना।

गारा कान्हडा—पु० [देश०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो सध्या समय गाया जाता है।

गारि—स्त्री०=गाली।

गारी*—स्त्री०=गाली।

गारु—*वि० [स० गुरु] भारी।

गारुड—वि० [स० गरुड+अण्] गरुड-सबधी। गरुड का।

पु० १ साँप का विष उतारने का एक प्रकार का मत्र जिसके देवता गरुड कहे गये हैं। २ गरुड के आकार की एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ३ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४ पन्ना या मरकत नामक रत्न। ५ सोना। स्वर्ण। ६ गरुड पुराण।

गारुडि—पु० [स० गरुड+इञ्] १ सगीत मे आठ प्रकार के तालो मे से एक। २ दे० 'गारुडी'।

गारुडिक—पु०=गारुडी।

गारुडी (डिन्)—पु० [स० गारुड+इनि] १ वह व्यक्ति जो साँप का विष मत्र-बल से उतार देता हो। २ मत्र से अथवा और किसी प्रकार साँप पकडने अथवा उसे वश मे करनेवाला व्यक्ति। ३ सँपेरा।

गारुत्मत—पु० [स० गरुत्मत्+अण्] १ मरकत या पन्ना नामक रत्न। २ गरुड का अस्त्र।

गारुरी*—पु०=गारुडी। उदा०—जाँवत गुनी गारुरी आये।—जायसी।

गारो (रौ)—पु० [स० गर्व] १ अभिमान। गर्व। उदा०—क्षुद्र पतित तुम तारि रमापति अब न करौ जिय गारौ।—सूर। २ गौरव। ३ प्रतिष्ठा। मान।

गार्ग—वि० [स० गर्ग+अण्] गर्ग सबधी।

गार्गि—पु० [स० गर्ग+इञ्] गर्ग मुनि का पुत्र या वशज।

गार्गी—स्त्री० [स० गर्ग+यञ्-ङीप्, यलोप] १ गर्ग गोत्र की एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी विदुषी जिसकी कथा वृहदारण्यक उपनिषद् मे है। यह याज्ञवल्क्य की पत्नी थी। २ दुर्गा।

गार्गीय—वि० [स० गर्ग+छञ्-ईय] [वि० स्त्री० गार्गेयी] १ जिसका जन्म गर्ग गोत्र मे हुआ हो। २ गर्ग सबधी।

गार्ग्य—वि० [स० गर्ग+यञ्]=गार्गेय।

पु० एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

गार्जर—पु० [स० गर्जर+अण्] गाजर नामक कद।

गार्ड—पु० [अ०] १ पहरा देनेवाला व्यक्ति। २ रक्षा करनेवाला व्यक्ति। रक्षक। ३ देख-रेख या निगरानी करनेवाला व्यक्ति। निरीक्षक। ४ रेलवे का वह अधिकारी जो रेलगाडी के साथ उसकी देख-रेख और व्यवस्था करने के लिए रहता है।

गार्डन—पु० [अ०] उद्यान। बगीचा।

गार्डन पार्टी—स्त्री० [अ०] उद्यान-गोष्ठी।

गार्दभ—वि० [स० गर्दभ+अण्] गर्दभ-सम्बन्धी। गधे का।

गार्द्ध्य—पु० [सं० गर्द्ध+ष्यञ्] लालच। लोभ।
गार्ध्र—वि० [सं० गृध्र+अण्] गृध्र-संबंधी।
पु० १ लालच। लोभ। २ तीर। बाण।
गार्भ—वि० [सं० गर्भ+अण्] १ गर्भ-संबंधी। गर्भ का। २ गर्भ से उत्पन्न होनेवाला।
पु० वे सब काम जो गर्भ के पोषण, रक्षण आदि के लिए किए जाते हों।
गार्हपत—वि० [सं० गृहपति+अण्] गृहपति संबंधी।
पु० गृहपति का भाव। गृहपतित्व।
गार्हपत्य—वि० [सं० गृहपति+ञ्य] गृहपति-संबंधी।
पु० १ गृहपति होने की अवस्था, पद या भाव। २ दे० 'गार्हपत्याग्नि'।
गार्हपत्याग्नि—स्त्री० [सं० गार्हपत्य-अग्नि, कर्म० स०] छ प्रकार की अग्नियों में पहली ओर प्रधान अग्नि जिसका रक्षण गृहपति का कर्तव्य होता था।
गार्हमेध—पु० [सं० गार्ह, गृह+अण्, गार्ह-मेध, कर्म०स०] गृहस्थ के लिए आवश्यक धार्मिक कृत्य या यज्ञ। पंच महायज्ञ।
गार्हस्थ्य—पु० [सं० गृहस्थ+ष्यञ्] १ गृहस्थ होने की अवस्था या भाव। २ गृहस्थाश्रम। ३ पंच महायज्ञ।
गार्हस्थ्य-विज्ञान—पु० [ष० त०] वह विज्ञान जिसमें घर के काम-काज (जैसे खाना-पकाना, सीना-पिरोना, बच्चे पालना आदि) संबंधी बातें बताई जाती हैं। (डोमेस्टिक सायन्स)
गाल—पु० [सं०, प्रा०, द्र०, प०, गल्ल, उ०, बं०, मरा० गाल, सिं० गलु] १ मुख-विवर और नासिका के दोनों ओर कनपटी तक के बाहरी विस्तार जिनमें जबड़े ढके रहते हैं। कनपटी के आस-पास, नीचे और सामने का अंग। कपोल।
मुहा०—गाल फुलाना=(क) गर्व-सूचक आकृति बनाना। अभिमान प्रकट करना। (ख) मौन रहकर अथवा रूठकर रोष प्रकट करना।
२ उक्त अंगों के बीच का वह भाग जो मुँह के अन्दर होता है और जिससे खाने, पीने, बोलने आदि में सहायता मिलती है।
मुहा०—गाल में चावल भरना या भरे होना=ऐसी स्थिति होना कि जान-बूझकर चुप रहना पड़े अथवा बहुत धीरे-धीरे रुक-रुक कर मुँह से बातें निकलें। (किसी के) गाल में जाना=किसी का कौर या ग्रास बनना। किसी के द्वारा खाया जाना। जैसे—काल (या शेर) के गाल में जाना। गाल में भरना=कोई चीज खाने के लिए मुँह में भरना या रखना।
३ बहुत बढ़-बढ़कर बातें करने की प्रवृत्ति या स्वभाव। मुँहजोरी।
मुहा०—गाल करना=बढ़ बढ़कर या उद्दंडतापूर्वक बातें करना। गाल फुलाकर कोई काम करना=अभिमानपूर्वक कोई काम करना। उदा० —बचन कहहिं सब गाल फुलाई।—तुलसी। गाल बजाना=(क) बहुत बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बातें करना। (ख) डींग मारना। शेखी हाँकना। (ग) शिव के पूजन के समय मुँह में हवा भरकर दोनों गालों पर इस प्रकार हलका आघात करना कि बम बम या ऐसा ही और कुछ शब्द निकले। गाल मारना=गाल बजाना।
४ किसी चीज की उतनी मात्रा, जितनी एक बार में खाने के लिए मुँह में रखी जाय। कौर। ग्रास। जैसे—(क) वह अनमने भाव से चार गाल खाकर चटपट उठ गया। (ख) वह एक-एक पूरी का एक-एक गाल करता थ।।
मुहा०—गाल मारना=ग्रास मुख में रखना। कौर मुँह में डालना।
५ उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए मुट्ठी में डाला जाता है। झींक। ६ किसी चीज का बीचवाला अंग या भाग।
पु० [?] एक प्रकार का तमाखू का पत्ता।
स्त्री०=गाली (पं० और राज०)।
गालगूल—पु० [हिं० गाल+अनु०] इधर-उधर की अनाप-शनाप या व्यर्थ की बातें। गपशप।
गालन—पु० [सं० √गल् (क्षरित होना)+णिच्+ल्युट्] १ गलाने की क्रिया या भाव। २ किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार एक पात्र में से दूसरे पात्र में पहुँचाना या ले जाना कि उसमें की मैल पहलेवाले पात्र में ही रह जाय। (फिल्टरेशन) ३ निचोड़ना।
गालना†—अ० [हिं० गाल] बातें करना। बोलना।
स० गाल में रखकर खाना।
गालबंद—पु० [हिं० गाल+बंद] एक प्रकार का बंधन जिसमें चमड़े के तस्मे को किसी काँटी में फँसाकर अँटकाते हैं। (जहाजी)
गालमसूरी—स्त्री० [हिं०] मध्य युग का एक प्रकार का पकवान। उदा० —दूध बरा उत्तम दधि बाटी, गालमसूरी की रुचि न्यारी।—सूर।
गालव—पु० [सं० √गल् (चुआना या खाना)+घञ्, गाल√वा (गति, गंध)+क] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम जो विश्वामित्र के शिष्य थे। २ पाणिनि से पहले के एक प्राचीन वैयाकरण। ३ एक प्राचीन स्मृतिकार आचार्य। ४ तेंदू का पेड़। ५ लोध का पेड़।
गालव-माता—स्त्री०=गल का (रोग)।
गाला—पु० [हिं० गाल=ग्रास] १ धुनी हुई रूई का पहल जो चरखे पर सूत कातने के लिए बनाया जाता है। पूनी।
पद—रूई का गाला=बहुत उज्ज्वल। प्रकाशमान।
२ रूई का छोटा टुकड़ा जो बहुत हल्का होता और हवा में इधर-उधर उड़ जाता है।
†पु० दे० 'गाल'।
गालित—वि० [सं० √गल+णिच्+क्त] १ गलाया हुआ। २ (तरल पदार्थ) जो एक पात्र में से दूसरे पात्र में इस प्रकार ले जाया गया हो कि उसमें की मैल पहलेवाले पात्र में रह गई हो। ३ निचोड़ा हुआ।
गालिनी—स्त्री० [सं०√गल्+णिच्+णिनि—ङीप्] तंत्र की एक मुद्रा।
गालिब—वि० [अ०] १ जो किसी पर छाया हुआ हो। जिसने किसी पर अधिकार जमा लिया अथवा उसे अभिभूत कर लिया हो। २ विजयी। श्रेष्ठ।
गालिबन्—क्रि० वि० [अ०] संभावना है कि। संभवत।
गालिम—वि० [अ० गालिब] १ जिसने किसी को दबा लिया हो। २. प्रचंड। प्रबल।
गाली—स्त्री० [सं० गालि] १ प्राय क्रुद्ध होने पर किसी को कही जानेवाली कोई ऐसी अश्लील तथा गर्हणीय बात जिसमें किसी के आचरण, प्रतिष्ठा, स्थिति आदि पर अनुचित आक्षेप या आरोप किया गया हो। दुर्वचन।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।—निकालना।—बकना।

२ विवाह आदि शुभ अवसरो पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमे लोगो को परिहास के लिए कलक-सूचक बाते कही जाती है।

गाली-गलौज—स्त्री० [हिं० गाली+गलौज अनु०] दोनो पक्षो का एक दूसरे को गालियाँ देना।

गाली-गुफ्ता—पु०=गाली-गलौज।

गालू—वि० [हिं० गाल०] १ गाल बजानेवाला। बढ-बढकर बाते करनेवाला। २ बकवादी।

गाल्हना—अ०, स०=गालना।

गाव†—स्त्री०=गाय।

पु०=बैल।

गावकुशी—स्त्री० [फा०] गोवध। (दे०)

गावकुस—पु० [स० ग्रीवा=गला+कुश=फल] (घोडे आदि की) लगाम। (डिं०)

गाव-कौहान—पु० [फा०] ऐसा घोडा जिसकी पीठ पर बैल की तरह कूबड निकला हो।

गाव खुर्द—वि० [फा०] १ गायब। लापता। २ नष्ट-भ्रष्ट।

गाव-गिल—स्त्री० [फा०] प्योडी नामक रग।

गावड—स्त्री० [स० ग्रीवा] गला। गर्दन। (डिं०)

गावडी†—स्त्री० १ =गाय। २ =गावड।

गाव-तकिया—पु० [फा०] एक प्रकार का लबा, गोल तथा मोटा तकिया जिसके सहारे प्राय रईस लोग गद्दी पर बैठते है। मसनद।

गावदी—वि० [हिं० गाय+स० धी] १ सीधा-सादा या ना समझ (व्यक्ति)। २ मूर्ख। जड।

गावदुम—वि० [फा०] १ जो गाय की दुम (पूँछ) की तरह एक ओर मोटा और दूसरी ओर बराबर पतला होता गया हो। २ ढालुवाँ।

गावदुमा—वि०=गावदुम।

गावना—स०=गाना।

गाव-पछाड—स्त्री० [हिं० गाव=गरदन+पछाड] कुश्ती का एक पेच जिसमे विपक्षी को गले से पकडकर गिरा दिया जाता है।

गावल—पु० [?] दलाल।

गावलाणि—पु०=गावल्गणि (सजय)।

गावली†—स्त्री०=दलाली।

गावल्गणि—पु० [स० गवल्गण+इञ्] सजय का एक नाम।

गाव-सुम्मा—पु० [हिं० गाव+सुम=खुर] फटे हुए खुरोवाला घोडा।

गावी—स्त्री० [देश०] बडी समुद्री नावो पर का पाल।

गास—पु० [स ग्रास] १ विपत्ति। सकट। २ दु ख। कष्ट।

गासिया—पु० [अ० गाशिय] घोडे की जीन पर बिछाने का कपडा। जीनपोश।

गाह—स्त्री० [स० गाथा] गाथा (दे०)। उदा०—छद प्रबध कवित्त जति साटक गाह दुहत्थ।—चदवरदाई।

पु० [स०√गह (गहना+घञ्] गहनता। गहराई।

पु० [स० ग्राह] १ ग्राहक। २ पकड। ३ ग्राह। मगर।

स्त्री० [फा०] १ कोई विशिष्ट स्थान। जैसे—बदरगाह, शिकारगाह। २ कोई विशिष्ट काल।

गाहक—पु० [स०√गाह (गोता लगाना)+ण्वुल्-अक] अवगाहन करनेवाला।

†पु०=ग्राहक।

मुहा०—(किसी के) जी या प्राण का गाहक होना=किसी की जान लेने पर उतारू होना।

गाहकताई—स्त्री० [स० ग्राहकता] १ ग्राहक होने की अवस्था या भाव। २ कदरदानी। गुण-ग्राहकता।

गाहकी—स्त्री० [हिं० गाहक] १ गाहक। ग्राहक। २ गाहक के हाथ माल बेचने की क्रिया।

गाहटना—स० [स० गाह] १ मथना। बिलोडना। २ नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—रिण गाहटतै राय खलाँ रिण। —प्रिथीराज।

गाहन—पु० [स० ग्रहण] पकडने की क्रिया या भाव। ग्रहण।

पु० [स० √गाह्+ल्युट्—अन] पानी मे पैठकर गोता लगाना।

गाहना—स० [स० अवगाहन] १ पानी मे पैठना या धँसना। २ पानी मे गोता लगाकर थाह लेना। ३ किसी विषय या बात की गहराई की थाह लेना। अवगाहन करना। ४ जल आदि को क्षुब्ध करना। आलोडन करना। ५ अनाज के डठलो को डडे से पीटकर उनके दाने गिराना या झाडना। उदा०—चैत काटा और गाहा नही कि भाँवर पडवा दूँगा। —वृन्दावनलाल। ६ खेत मे हेगा या पाटा चलाना। ७ चलते हुए चक्कर लगाना या दूर तक जाना। ८ कुछ ढूँढने के लिए इधर-उधर दौडना-धूपना और परेशान होना। ९ जहाज की दरारो मे सन आदि भरना। काल-पट्टी करना। (लश०) १० व्यवस्था बिगाडना। गडबडा देना।

गाहा—स्त्री० [स० गाथा, प्रा० गाहा] १ किसी प्रकार का कथात्मक चरित्र-वर्णन। वृत्तान्त। २ आर्या छन्द का दूसरा नाम।

गाहिता (तृ)—वि० [स०√गाह्+तृच्] १ गोता लगाने या स्नान करनेवाला। २ गाहन करनेवाला।

गाहिनी—स्त्री० [स० √गाह्+णिनि—ङीप्] एक प्रकार का विषम वृत्त या छद जिसके चारो चरणो मे क्रम से २२, २०, १८ और १२ मात्राएँ होती है। यह सिहनी छद का बिलकुल उलटा होता है।

गाही—स्त्री० [हिं० गहना=ग्रहण] वस्तुएँ (विशेषत फल आदि) पाँच-पाँच के समूहो मे बाँटकर गिनने का एक मान। जैसे—१० गाही (अर्थात् ५०) आम।

पद—गाही के गाही=बहुत अधिक।

गाहू—स्त्री०=उपगीति (छन्द)।

गाहे-बगाहे—क्रि० वि० [फा०] १ बीच-बीच मे कुछ स्थानो पर। इधर-उधर। २ बीच-बीच मे । थोडे थोडे समय पर। कभी-कभी।

गिंजना—अ० [हिं० गीजना] किसी पदार्थ का हाथ आदि से ठीक प्रकार से व्यवहार या स्पर्श न किये जाने के कारण खराब या कुछ मैला होना। गीजा जाना।

गिंजाई—स्त्री० [हिं० गीजना] गिंजने या गीजे जाने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [स० गुजन] एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा। ग्वालिन। घिनौरी।

गिंडनी—स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसकी छोटी किन्तु लबोतरी पत्तियो का साग बनता है।

गिंडुरी—स्त्री० दे० 'इँडुआ'।

गिंडुवा—पु०=तकिया।

गिंदर—पु० [देश०] फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा।

गिदुक—पु० [स०=गेन्दुक, पृषो० सिद्धि] छोटा गेद।

गिंदौडा (दौरा)—पु० [फा० कद+हि० औडा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० गिंदौडी] चीनी, मिसरी आदि की जमाई हुई गोलाकार मोटी परत।

गियँ†—स्त्री०=ग्रीवा (गला)। उदा०—कचन तार बाँधि गियँ पाती। —जायसी।

गिआन†—पु०=ज्ञान।

गिआस—स्त्री०=गयास।

गिउ†—पु०=ग्रीवा (गला)।

गिगनार—पु०=गगन। उदा०—चाँद चढचो गिगनार, किरत्या ढल रहियाँ जी ढल रहियाँ। —राज० लोकगीत।

गिचपिच—वि० [अनु०] १ (लिखावट या लेख) जो स्पष्ट न हो और सटा-सटाकर लिखा गया हो। २ एक दूसरे मे भद्दी तरह से मिला हुआ।

गिचिर-पिचिर—वि०=गिचपिच।

गिजई—स्त्री० [देश०] १ सलमे के काम का एक प्रकार का तार। २ हाथ मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

गिजगिजा—वि० [अनु०] [स्त्री० गिजगिजी] १ (खाद्यवस्तु) जो मुलायम तथा गीली हो, जो करारी अथवा सूखी न हो। जैसे—गिजगिजा आम, गिजगिजी रोटी। २ गुदगुदा या मासल।

गिजा—स्त्री० [अ०] १ खाद्यपदार्थ। खुराक। २ पौष्टिक भोजन।

गिटकिरी—स्त्री० [अनु०] तान लेने मे विशेष प्रकार से स्वर कँपाना जो बहुत कर्ण-मधुर होता है। (सगीत)
स्त्री०= गिट्टी।

गिटपिट—स्त्री० [अनु०] किसी के मुँह से निकलनेवाले ऐसे शब्द या बाते जो सहसा श्रोताओ की समझ मे न आती हो।
मुहा०—गिटपिट करना=ठीक प्रकार से कोई बात न कह पाना। टूटी-फूटी या अशुद्ध भाषा मे बाते करना।

गिट्टक—स्त्री० [हि० गिट्टा] १ चिलम के नीचे रखने का ककर। चुगल। २ धातु, पत्थर आदि का छोटा टुकडा। गिट्टी। ३. फलो की गुठली। जैसे—आम की गिट्टक। ४ गिटकिरी लेने मे स्वर का वह सबसे छोटा अश जो कठ के एक ही कप से या एक बार मे निकलता है। दाना। (सगीत)

गिट्टा—पु० [स० गिरिज, हि० गेरू+टा (प्रत्य०)] १ चिलम के छेद पर रखा जानेवाला ईंट, पत्थर आदि का छोटा टुकडा। २ ककड, पत्थर आदि का कोई छोटा टुकडा। ३ पैर के तलवे और पिंडली के बीच की मोटी उभरी हुई हड्डी। टखना।

गिट्टी—स्त्री० [हि० गिट्टा] १ ईंट (या पत्थर) को फोडकर उसके किये हुए टुकडो का सामूहिक नाम। २ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकडा। ३ चिलम की गिट्टक। ४ वह फिरकी जिस पर बादले का तार लपेटा जाता है।

गिठुआ—पु० [देश०] जुलाहे का करघा।

गिठुरा—पु०=गेठुरा।

गिडद†—पु० [स० गयद] मतवाला हाथी। उदा०—जघा कदली खभ, गिडद गयवर गति डोलै।—जटमल।

गिड†—पु० [?] सूअर। उदा०—जिण बन भूल न जावता, गैद गिवल गिडराज। —कविराजा सूर्यमल।

गिडगिडाना—अ० [अनु०] अपनी असहाय अथवा दु खद स्थिति की दीनतापूर्वक चर्चा करते हुए सहायता की प्रार्थना करना।

गिडगिडाहट—स्त्री० [हि० गिडगिडाना] १ गिडगिडाने की क्रिया या भाव। २ बहुत गिडगिडाकर की जानेवाली प्रार्थना।

गिड़राज—पु० [स० ग्रहराज] सूर्य। (डि०)

गिड्डा—वि० [देश०] आकार या कद के विचार से ठिगना। नाटा।

गिद—पु० [स० अव्युत्पन्न शब्द] रथपालक देवता।
स्त्री० [देश०] आँख मे का कीचड।

गिद्दा—पु० [हि० गीत] स्त्रियो के गाने के एक प्रकार के गीत। नकटा।
†पु० —गट्टा।

गिद्ध—पु० [स० गृध्र] १ लबी गरदनवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध मासाहारी बडा पक्षी जो शव आदि खाता है। २ बहुत बडा चालाक या धूर्त्त। काइयाँ। ३ एक प्रकार का बडा कनकौआ या पतग। ४ छप्पय छद का एक भेद।

गिद्धराज—पु० [हि० गिद्ध+राज] जटायु।

गिधना*—अ० दे० 'गीधना'।

गिनगिनाना—अ०=गनगनाना।

गिन-तारा—पु० [हि० गिनना+तार] वह चौखटा जिसमे क्षैतिज या बडे बल मे कई ऐसे तार लगे होते है जिनमे छोटी गोलियाँ पिरोई रहती है, और जिनके द्वारा छोटे बच्चो को गिनती सिखाई जाती है। (एबैकस)

गिनती—स्त्री० [हि० गिनना] १ बहुत सी चीजो को एक, दो, तीन करते हुए गिनने की क्रिया या भाव। जैसे—पुस्तको या सिपाहियो की गिनती।
मुहा०—(किसी को) गिनती मे लाना या समझना=आदर करने या महत्त्व देने के योग्य समझना।
पद—गिनती के=सख्या मे बहुत थोडे। जैसे—वर्षा के कारण आज की बैठक मे गिनती के ही कुछ लोग आ सके। **गिनती गिनने या गिनाने के लिये**=नाम मात्र को।
२ तादाद। सख्या। ३ उपस्थिति की जाँच। हाजिरी। ४ एक से सौ तक की अक-माला।

गिनना—स० [स० गणन] १ सख्यासूचक अको का नियमित क्रम से उच्चारण करना। गिनती करना। २ वस्तुओ अथवा उनके समूहों की कुल सख्या जानने के लिए उनकी-नियमित क्रम से गणना करना। जैसे—आम या रुपए गिनना।
पद—गिन-गिनकर=(क) अच्छी और पूरी तरह से। जैसे—गिन-गिनकर मारना या सुनाना। (ख) एक-एक करके और बहुत कठिनता मे। जैसे—गिन-गिनकर दिन बिताना। (ग) बहुत धीरे धीरे और सावधानता से। जैसे—गिन-गिनकर पैर रखना।
३ कुछ महत्त्व का या महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—वह तुम्हे क्या गिनता है। (अर्थात् कुछ नही समझता।)

गिनवाना—स० [हि० गिनना] गिनने का काम दूसरे से कराना।

गिनाना—स० [हि० गिनना का प्रे०] गिनने का काम दूसरे से कराना। गिनवाना।

†अ० गिनती मे आना। गिना जाना।

गिनी—स्त्री० [अं०] १ इगलैड मे प्रचलित एक प्रकार का सोने का सिक्का। २ एक प्रकार की लबी विलायती घास जो मैदानो मे लगाई जाती है।

गिन्ती—स्त्री०=गिनती।

गिन्नी—स्त्री० [हि० घिरनी] १ चक्कर। २ घुमाने या चक्कर खिलाने की क्रिया।

स्त्री०=गिनी।

गिम—स्त्री० [स० ग्रीवा] गरदन। गला। उदा०—गिम सजो लावल मुकुता हारे। —विद्यापति।

गिमटी—स्त्री० [अ० डिमिटी] एक प्रकार का बढिया मजबूत सूती कपडा।

गिय—पु०=गिउ (गला)।

गियान*—पु०=ज्ञान।

गियाह—पु० [स० हय] एक प्रकार का घोडा। घोडो की एक जाति।

गिर्—स्त्री० [स०√गृ (शब्द)+क्विप्] दे० 'गिरा'।

गिरट—पु० [अ० गार्नेट] १ ग्वारनट नाम का बढिया रेशमी कपडा। २ एक प्रकार की देशी मलमल।

गिरथ—पु०=ग्रथ।

गिरदा—वि० [फा० गीर=पकडनेवाला] १ पकडने या पकडकर रखनेवाला। २ फदे मे फँसानेवाला। उदा०—हँस हँस मन मूसि लिया बे बडा गरीब गिरदा है।—आनन्दघन।

गिरम—वि०=भारी। उदा०—तरकस पच गिरम तीर प्रति खतँग तीन सय।—चदवरदाई।

गिर—पु० [स० गिरि से] गिरनार काठियावाड के देश का भैसा।

†पु०=गिरि।

(गिर के यौ० के लिए दे० गिरि के० यौ०)

*स्त्री०=गिरा (वाणी)।

गिरई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

गिरगट—पु०=गिरगिट।

गिरगिट—पु० [स० कृकलास या गलगवि] छिपकली की जाति का एक जतु जो आवश्यकतानुसार अपना रग बदल लेता है।

मुहा०—गिरगिट की तरह रग बदलना=कभी कुछ और कभी कुछ करना, कहना या मानना। एक बात पर स्थिर न रहना।

गिरगिटान—पु०=गिरगिट।

गिरगिट्टी—स्त्री० [?] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी छाल खाकी रग की होती हे।

गिरगिरी—स्त्री० [अनु०] चिकारे या सारगी की तरह का एक प्रकार का खिलौना।

गिरजा—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जो कीडे-मकोडे खाता है। पु० [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयो का प्रार्थना-मदिर।

स्त्री०=गिरिजा।

गिरझण|—पु०=गिद्ध। (राज०) उदा०—कायर केरे मास को गिरझण कबहुँ न खाइ।—जटमल।

गिरद—अव्य०=गिर्द।

गिरदा—पु० [फा० गिर्द] १ घेरा। २ चक्कर। ३ तकिया। ४ हलवाइयो आदि का काठ का बडा थाल। ५ कपडे का वह गोल टुकडा जो हुक्के के नीचे रखा जाता है। ६ गतके का वार रोकने की ढाल। फरी। ७ खजरी, ढोल आदि का मेडरा।

गिरदागिरद—क्रि० वि० =गिर्दागिर्द।

गिरदान—पु० १ =गिरगिट। २ =गरदान।

गिरदाब—पु० [फा० गिर्दाब] पानी का भँवर।

गिरदाली—स्त्री० [फा० गिर्द] लोहारो का एक उपकरण जिससे वे गलाया हुआ लोहा एक स्थान पर समेटते है।

गिरदावर—पु० [फा०] वह अधिकारी जो किसी क्षेत्र मे घूम-घूमकर कामो की जाँच या देख-रेख करता हो।

गिरदावरी—स्त्री० [फा०] गिरदावर का काम या पद।

गिरदीह—क्रि० वि० [फा० गिर्द] आस-पास। इर्द-गिर्द। उदा०—नरनाहाँ वर गढ्ढ, गाह गिरदीह दुअनधर।—चन्दवरदाई।

गिरधर—वि० पु०=गिरिधर।

गिरधारन—पु० दे० 'गिरिधर'।

गिरधारी—पु० दे० 'गिरिधर'।

गिरना—अ० [स० गलन] १ किसी उच्च स्तर या स्थल पर स्थित वस्तु का अचानक तीव्र वेग से जमीन पर आ पडना। जैसे—(क) आकाश से हवाई जहाज या तारा गिरना। (ख) छत पर से लडके का नीचे गिरना। २ किसी ऊँचे स्थान पर बँधी, लगी या लटकती हुई वस्तु का अपने आधार से छूट या टूटकर नीचे के स्थल पर आ पडना। जैसे—(क) पेड से पत्ता या फल गिरना। (ख) कूएँ मे बाल्टी गिरना। ३ जमीन को आधार बनाकर उस पर खडी होने, बैठने अथवा चलनेवाली वस्तु का जमीन पर पड या लेट जाना। जैसे—(क) दीवार या छत गिरना। (ख) कुरसी या मेज गिरना। (ग) चलती हुई गाडी या दौडता हुआ लडका गिरना।

पद—गिरता-पडता या गिर-पडकर=बहुत कठिनाई या मुश्किल से। **गिरा-पड़ा** (देखे)।

४ किसी धारा या प्रवाह का नदी या समुद्र मे मिलना। जैसे—गगा नदी कलकत्ते के पास समुद्र मे गिरती है। ५ किसी उच्च विभाग, श्रेणी, स्थिति आदि मे होने या रहनेवाली वस्तु का अपेक्षया निम्न विभाग, श्रेणी, स्थिति आदि मे आना। नीचे आना। जैसे—तापमान गिरना, पारा गिरना। ६ लाक्षणिक अर्थ मे, प्रसम स्तर या मान्य आदेश से किसी चीज का अवनति या घटाव पर होना। जैसे—चरित्र गिरना। ७ कारोबार कम या ठप्प होना। जैसे— बाजार गिरना। ८ किसी वस्तु के मूल्य मे उतार या कमी होना। जैसे— चीजो का भाव गिरना। १० किसी वस्तु को देखने, लेने आदि के लिए बहुत से व्यक्तियो का एक साथ आ पहुँचना। जैसे—राशन की दूकान पर ग्राहको का गिरना। ११ किसी स्थान पर बहुत अधिक भीड जमने पर एक दूसरे को धक्के लगाना। जैसे—आदमीपर आदमी गिरना। १२ किसी ऐसे रोग का होना जिसके विषय मे लोगो का विश्वास हो कि उसका वेग ऊपर से नीचे को आता है। जैसे—नजला गिरना, फालिज (लकवा) गिरना। १३ सहसा बहुत अधिक मात्रा मे उपस्थित या प्राप्त होना। आ पडना। जैसे—(क) सिर पर विपत्ति का पहाड गिरना। (ख) दिसावर से आकर बाजार मे माल गिरना।

गिरनार—पु० [स० गिरि+हिं० नार=नगर] गुजरात मे स्थित रैवतक नामक एक पर्वत जो जैनियो का तीर्थ है।

गिरनारी, गिरनाली—वि० [हि० गिरनार] गिरनार पर्वत का। गिरनार सम्बन्धी।

पु० गिरनार का निवासी।

गिरफ्त—स्त्री० [फा०] १ कोई चीज अच्छी तरह पकडने की क्रिया या भाव। पकड। २ हथियारो का वह अग जहाँ से वे पकडे जाते है। ३ अपराध, दोष, भूल आदि का पता लगाने का खास ढग या हथकडा।

गिरफ्तार—वि० [फा०] १ जो कोई अपराध या दोष करने के कारण अधिकारियो द्वारा पकडा गया हो। २ कष्ट, सकट आदि मे ग्रस्त या फँसा हुआ।

गिरफ्तारी—स्त्री० [फा०] १ गिरफ्तार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ कोई अभियोग लगने या अपराध करने पर उसके विचार के लिए राज्य द्वारा पकडे जाने की क्रिया, अवस्था या भाव। (अरेस्ट)

गिरबान—पु० [स० ग्रीवा] गर्दन। गला।

†पु०=गरेबान।

गिरबूटी—पु० [स० गिरि+हिं० बूटी] अगूर-शेफा (देखें)।

गिरमिट—पु० [अ० गिमलेट=बडा बरमा] लकडी, लोहे आदि मे छेद करने का बडा बरमा।

पु० [अ० एग्रीमेंट] इकरारनामा। सविदा-पत्र।

गिरमिटिया—पु० [हि० गिरमिट] किसी उपनिवेश मे गया हुआ शर्तबद हिन्दुस्तानी मजदूर।

गिरवर—पु०=गिरिवर।

गिरवान*—पु०=गीर्वाण।

पु० [फा० गरेबान] १ कुरते आदि मे गले का भाग। २ गरदन। गला।

गिरवाना—स० [हि० गिराना] १ किसी को कोई चीज गिराने मे प्रवृत्त करना। २ किसी से तोडने-फोडने या गिराने का काम करवाना। जैसे—मकान या दीवार गिरवाना।

गिरवी—वि० [फा०] १ (चीज) जो गिरो या रेहन रखी गई हो। २ रेहन रखे हुए माल से सबध रखनेवाला। रेहन सबधी।

†स्त्री० गिरो। बधक। रेहन।

गिरवीदार—पु० [फा०] वह व्यक्ति जो दूसरो को रुपए उधार देने के बदले मे उनकी वस्तुएँ अपने पास बधक रखता हो। रेहनदार।

गिरवीनामा—पु० [फा०] वह लेख्य जिसमे गिरो की शर्तें लिखी हो। रेहननामा।

गिरवीपत्र—पु० दे० 'गिरवीनामा'।

गिरस्त†—पु० [स० गृहस्थ] १ पूर्वी उत्तर प्रदेश के मुसलमान जुलाहे (कदाचित् गृहस्थ साधुओं के वशज होने के कारण)। २ दे० 'गृहस्थ'।

गिरस्ती—स्त्री०=गृहस्थी।

गिरह—स्त्री० [स० ग्रह मे फा०] १ कपडे, डोरी आदि के सिरे को एक दूसरे मे फँसाकर बाँधी जानेवाली गाँठ। २ किसी कपडे, धोती आदि के पल्ले मे कोई चीज विशेषत पैसे आदि रखकर तथा लपेटकर लगाई जानेवाली गाँठ जिसे लोग प्राय कमर मे खोसते थे।

पद—गिरहकट (दे०)।

३ खरीता। खीसा। जेब। ४ गाँठ के रूप मे उठा हुआ शरीर के दो अगो का सधि-स्थान। जैसे—जाँघ और टाँग के बीच का घुटने पर का जोड। ५ गज का सोलहवाँ अश या भाग। ६ कलाबाजी। कलैया। ७ कुश्ती का एक दाँव।

पु० गृह। उदा०—गिरह उजाड एक सम लेखो। —कबीर।

गिरहकट—पु० [फा० गिरह=जेब या गाँठ+हिं० काटना] गिरह या गाँठ मे बँधा हुआ धन काटनेवाला व्यक्ति। जेबकतरा।

गिरहथ—पु०=गृहस्थ।

गिरहदार—वि० [फा० गिरह=जेब या गाठ] जिसमे गाठ या गाठे पडी हो। गठीला।

गिरहबाज—पु० [फा०] एक प्रकार का कबूतर जो आकाश मे उडते समय कलैया खाता है।

गिरहर—वि० [हि० गिरना+हर (प्रत्य०)] जो शीघ्र ही गिर पडने को हो। गिराऊ।

गिरही—पु० [स० गृहिन्] १ गृहस्थ। २ देव-दर्शन के लिए आया हुआ यात्री। (पडे और भड्डर)

गिराँ—वि० [फा० गरा] १ जिसका दाम अधिक हो। बहुमूल्य। महँगा। २ भारी। ३. अप्रिय या अरुचिकर।

गिरा—स्त्री० [स√गृ (शब्द)+क्विप्—टाप्] १ वह शक्ति जिसकी सहायता से मनुष्य बाते करता या बोलता है। वाक् शक्ति। २ उक्त शक्ति की देवी, सरस्वती। ३ सरस्वती नदी। ४ जबान। जीभ। ५ कही या बोली हुई बात। ६ बोली या भाषा। जबान। ७ सुन्दर कविता।

गिराज—पु० [अ० गैरेज] मोटर गाडी रखने के लिए बना हुआ कमरा या कोठा।

गिराधव—पु० [स०] ब्रह्मा।

गिराधौ—*पु०=गिराधव।

गिराना—स० [हि० गिरना] १ किसी उच्च स्तर या स्थान पर स्थित वस्तु को बलपूर्वक नीचे उतारना या लाना। जैसे—परदा गिराना। २. किसी आधार पर खडी वस्तु को आघात आदि पहुँचा कर जमीन पर लाना। जैसे—(क) किसी को चबूतरे या कुरसी से नीचे गिराना (ख) रेल की लाइन तोड कर गाडी गिराना। ३ किसी वस्तु या रचना को तोड-फोड कर उसका नाश या ध्वस करना। जैसे—दीवार या मकान गिराना। ४ महत्त्व, मूल्य, शक्ति आदि घटाना या कम करना। जैसे—दाम गिराना। ५ धार्मिक, नैतिक आदि दृष्टियो से निम्न स्तर पर लाना। जैसे—अधिकार के पद ने ही उन्हे इतना गिराया है। ६ प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना। जैसे—नाली मे मोरी का पानी गिराना। ७ किसी चीज को इस प्रकार हाथ से छोड देना कि वह नीचे जा पडे। जैसे—लोटा या दावात गिराना। ८ किसी पात्र मे रखी हुई वस्तु को जमीन पर उँडेलना। जैसे—लोटे मे का पानी या दावात मे की स्याही गिराना। ९ कोई ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसके विषय मे लोगो का यह विश्वास हो कि उसका वेग ऊपर से नीचे की ओर जाता या होता है। जैसे—बहुत अधिक मानसिक चिंता नजला गिराती है। १० उपस्थित करना। सामने ला रखना। जैसे—मकान बनाने के लिए ईंटे या मसाला गिराना। ११ युद्ध या लडाई मे बुरी तरह से घायल करना या मार डालना। जैसे—चार सिपाहियो को तो अकेले उसी ने गिराया था।

गिरानी—स्त्री० [फा०] १ वह स्थिति जिसमे चीजे महँगी हो जाती है। मँहगी। २ अपच आदि के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

गिरा-पडा—वि० [हिं० गिरना+पडना] १ जमीन पर गिरकर पडा हुआ। २ टूटा-फूटा। जीर्ण-शीर्ण। ३ पतित। ४ जिसका कुछ भी महत्त्व या मूल्य न हो।

गिरापति—पु० [स० ष० त०] ब्रह्मा।

गिरापतु—पु० [स० गिरा-पितृ] सरस्वती के पिता। ब्रह्मा।

गिरामी—वि०=गरामी (प्रसिद्ध)।

गिराव—पु० [अ० ग्रेप] तोप का वह गोला जिसमे छोटी छोटी गोलियाँ और छर्रे भी रहते है।
पु०=गिरावट।

गिरावट—स्त्री० [हि० गिरना] १ गिरने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ अध पात। पतन।

गिरावना—स०=गिराना।

गिरास—पु०=ग्रास।

गिरासना†—स०=ग्रसना।

गिरासी—स्त्री० [देश०] गुजरात मे रहनेवाली एक उपद्रवी प्राचीन जाति।

गिराह—पु० [स० ग्राह] ग्राह या मगर नामक जलजतु।

गिरि—पु० [स०√गॄ+कि] १ पर्वत। पहाड। २ दशनामी साधुओ के एक वर्ग की उपाधि। जैसे—स्वामी परमानन्द गिरि। ३ सन्यासियो का एक भेद या वर्ग। ४ पारे का एक दोष जो खानेवाले का शरीर जड कर देता है। ५ आँख का एक रोग जिसमे ढेढर या पुतली फट या फूट जाती है।

गिरि-कटक—पु० [ष० त०] वज्र।

गिरि-कदर—पु० [ष० त०] पहाड की गुफा।

गिरिक—वि० [स० गिरि+कन्] १ गिरि या पर्वत सबधी। गिरि या पर्वत मे होनेवाला। पहाडी।
पु० [स० गिरि√कै (प्रकाशित होना) +क] महादेव। शिव।

गिरि-कदब—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का कदब (वृक्ष)।

गिरि-कदली—स्त्री० [मध्य० स०] पहाडी केला।

गिरि-कर्णिका—स्त्री० [गिरि-कर्ण, ब० स० कप्, टाप्, इत्व] १ पृथ्वी। २ अपराजिता लता। ३ अपामार्ग। चिचड़ा।

गिरि-कर्णी—स्त्री० [गिरि-कर्ण, ब० स० ङीष्] १ अपराजिता या कोयल नाम की लता। २ जवासा।

गिरिका—स्त्री० [स० गिरि+क-टाप्] १ चूहे की मादा। चूही। २ छोटा चूहा। चुहिया।

गिरि-काण—वि० [तृ० त०] जो गिरि नामक नेत्ररोग के कारण काना हो गया हो।

गिरि-कूट—पु० [ष० त०] पहाड की चोटी।

गिरिचर—पु० [स० गिरि√चर् (चलना) +ट] पहाड पर रहने या विचरण करनेवाला।

गिरिज—वि० [स० गिरि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] पहाड पर, पहाड मे या पहाड से उत्पन्न होनेवाला।
पु० १ शिलाजीत। २ लोहा। ३ अबरक। अभ्रक। ४ गेरू। ५ एक प्रकार का पहाडी महुआ।

गिरिजा—स्त्री० [स० गिरिज-टाप्] १ हिमालय की पुत्री, पार्वती। गौरी। २ गगा। ३ पहाडी केला। ४ चमेली। ५ चकोतरा।
पु०=गिरजा (ईसाइयो का प्रार्थना-मदिर)।

गिरिजा-कुमार—पु० [ष० त०] कार्तिकेय।

गिरिजा-पति—पु० [ष० त०] महादेव।

गिरिजा-बीज—पु० [ष० त०] गधक।

गिरिजा-मल—पु० [ष० त०] अभ्रक।

गिरि-जाल—पु० [ष० त०] पर्वत-माला।

गिरिज्वर—पु० [स० गिरि√ज्वर् (रुग्ण होना) +णिच्+अच्] वज्र।

गिरित्र—पु० [स० गिरि√त्रै (रक्षा करना)+क] १ महादेव। शिव। २ समुद्र। सागर।

गिरि-दुर्ग—पु० [स० कर्म० स०] पहाडी किला।

गिरि-दुहिता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गिरि-द्वार—पु० [ष० त०] पहाड की घाटी। दर्रा।

गिरिधर—पु० [ष० त०] गिरि अर्थात् गोवर्धन पर्वत को धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण।

गिरिधरन—पु०=गिरिधर।

गिरि-धातु—पु० [ष० त०] गेरू।

गिरिधारन—पु०=गिरिधर।

गिरिधारी (रिन्)—पु० [स० गिरि√धृ (धारण करना)+णिनि] श्रीकृष्ण।

गिरि-ध्वज—पु० [ब० स०] इद्र।

गिरि-नदिनी—स्त्री० [ष० त०] १ पार्वती। २ गगा। ३ पहाड से निकली हुई नदी।

गिरि-नगर—पु० [स० मध्य० स०] १ गिरनार पर्वत पर बसा हुआ एक नगर जो जैनियो का एक पवित्र तीर्थ है। २ पुराण के अनुसार रैवतक पर्वत।

गिरि-नाथ—पु० [ष० त०] १ महादेव। शिव। २ हिमालय। ३ गोवर्धन पर्वत।

गिरि-नितब—पु० [ष० त०] पहाड की ढाल।

गिरि-पथ—पु० [मध्य० स०] दो पहाडो के बीच का मार्ग। घाटी। दर्रा।

गिरि-पीलु—पु० [ष० त०] फालसा।

गिरिपुष्पक—पु० [गिरि-पुष्प ष० त०, गिरिपुष्प√कै (चमकना)+की] १ पथरफोड नाम का पौधा। २ शिलाजीत।

गिरि-प्रस्थ—पु० [ष० त०] पहाड के ऊपर का चौरस मैदान।

गिरि-प्रिया—स्त्री० [ब० स०] सुरागाय

गिरि-बाधव—पु० [ष० त०] शिव।

गिरिभिद्—पु० [स० गिरि√भिद् (फाडना) +क्विप्] पाषाण भेद।
वि० पहाडो को फोडनेवाला (नद, नदी, झरना आदि)।

गिरिमल्लिका—स्त्री० [गिरि-मल्लि, स० त० + कन्-टाप्] कुटज। कोरैया।

गिरि-मान—पु० [ब० स०] बहुत बडा हाथी।

गिरि-मृत्—स्त्री० [ष० त०] १ पहाडी मिट्टी। २ गेरू।

गिरि-राज—पु० [ष० त०] १ बडा पर्वत। २ हिमालय। ३ गोवर्धन पर्वत। ४ सुमेरु।

गिरि-वर्तिका—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पहाडी हस।

गिरि-व्रज—पु० [ब० स०] १ केकय देश की राजधानी। २ जरासध की राजधानी, राजगृह।

गिरिश—पु० [स० गिरि√शी (सोना)+ड] महादेव। शिव।

गिरिशाल—पु० [स० गिरि√शल् (गति)+अण्] एक प्रकार का बाज पक्षी।

गिरिशालिनी—स्त्री० [स० गिरि√शल्+णिनि-ङीप्] अपराजिता लता।

गिरि-शिखर—पु० [ष० त०] पहाड की चोटी।

गिरि-सभव—पु० [ब० स०] एक प्रकार का पहाडी चूहा।

गिरि-सार—पु० [ष० त०] १ लोहा। २ शिलाजीत। ३ राँगा। ४ मैनाक पर्वत। ५ मलय पर्वत।

गिरि-सुत—पु० [ष० त०] मैनाक पर्वत।

गिरि-सुता—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गिरीद्र—पु० [गिरि-इद्र, ष० त०] १ बहुत बडा पर्वत या पहाड। २ हिमालय। ३ शिव। ४ आठ बडे पर्वतो के आधार पर ८ की सख्या।

गिरी—स्त्री० [हि० गरी] कुछ विशिष्ट फलो के बीजो के अदर का मुलायम गूदा जिसकी गिनती सूखे मेवो मे होती है। जैसे—खरबूजे के बीजो या बादाम की गिरी।

पु०=गिरि।

गिरीश—पु० [गिरि-ईश, ष० त०] १ बहुत बडा पर्वत या पर्वतो का राजा। २ हिमालय पर्वत। ३ सुमेरु पर्वत। ४ कैलास पर्वत। ५ गोवर्धन पर्वत। ६ महादेव। शिव।

गिरेबान—पु०=गरेबान।

गिरेवा—पु० [स० गिरि] १ छोटी पहाडी। टीला। २ पहाड या पहाडी पर की ऊँची चढाई।

गिरेश—पु० [स० गिरा—ईश, ष० त०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु।

गिरैयाँ—स्त्री० [हि० गेरना डालना] बैलो आदि के गले मे बाँधी जानेवाली रस्सी। गेराव। पगहा। उदा०—तिय जानि गिरैयाँ गही बनमाल सुऐंचे लला इंच्यो छावत है।—पद्माकर।

गिरैया†—वि० [हि० गिराना+ऐया (प्रत्य०)] १ गिरानेवाला। २ गिरनेवाला। ३ पतनोन्मुख।

गिरो—पु० [फा०] १ कोई चीज किसी के पास जमानत के रूप मे रखकर उससे रुपया उधार लेना। रेहन। २ दूसरे की कोई चीज जमानत मे रखकर उसके बदले मे रुपए उधार देना। रेहन।

पद—गिरो-गट्ठा=दूसरो की चीजे अपने पास रेहन रखने का व्यवसाय।

वि० (वस्तु) जो रेहन रखी गई हो।

गिरोवर—पु० [स० गिरिवर] पर्वत।

गिर्गिट—पु०=गिरगिट।

गिर्जा—पु० दे० 'गिरजा'।

स्त्री०=गिरिजा।

गिर्जाघर—पु० दे० 'गिरजा'।

गिर्द—अव्य० [फा०] १ आस-पास। २ चारो ओर।

पद—इर्द-गिर्द (देखे)।

पु० किसी चीज की गोलाई या उसकी नाप। घेरा।

गिर्दागिर्द—अव्य० [अव्य०] १. आस-पास। इर्द-गिर्द। २ चारो ओर।

गिर्दाब—पु० [फा०] भँवर।

गिर्दावर—वि० [फा०] चारो ओर घूमनेवाला।

पु० १ वह अधिकारी जो चारो ओर घूम-घूमकर कामो और कर्मचारियो का निरीक्षण करता हो। २ मालविभाग का एक अधिकारी जो पटवारियो के कामो की जाँच करता है।

गिल—पु० [स० गिल् (लीलना)+क] १ मगर नामक जल-जतु। २ जँबीरी नीबू।

वि० निगलने या खानेवाला।

स्त्री० [फा०] १ मिट्टी। २ गीली मिट्टी। ३ गारा।

गिलकार—पु० [फा०] गारे और चूने से इमारत का काम करनेवाला कारीगर। मेमार। राज।

गिलकारी—स्त्री० [फा०] गारे और चूने से इमारत बनाने, विशेषत दीवारो पर पलस्तर लगाने का काम।

गिलकिया—स्त्री० [देश०] नेनुवाँ या घियातोरी नामक तरकारी।

गिलगिल—पु० [स० गिल√गिल्+क] नक्र या नाक नामक जलजन्तु।

गिलगिला—वि० [हि० गीला-गीला] [स्त्री० गिलगिली] १ आर्द्र और कोमल। गीला और नरम। २ करुणा, रोष आदि के कारण रोमाञ्चित। उदा०—कोटरो से गिलगिली घृणा यह झाकती है।—अज्ञेय।

†पु० एक प्रकार का पक्षी।

गिलगिलिया—स्त्री० [अनु०] सिरोही नाम की चिडिया। किलहँटी।

गिलगिली—पु० [देश०] घोडो की एक जाति।

स्त्री० गिलगिलिया या सिरोही नामक चिडिया।

गिलजई—पु० [देश०] अफगानिस्तान की एक वीर जाति।

गिलट—पु० [अ० गिल्ड =सोना चढाना] १ पीतल, लोहे आदि की बनी हुई ऐसी वस्तु जिस पर सोने, चाँदी आदि का पानी चढा हुआ हो। २ उक्त प्रकार से सोने या चाँदी का पानी चढाने की क्रिया या भाव। ३ सफेद रग की एक घटिया धातु।

गिलटी—स्त्री० [स० ग्रथि] १ शरीर के अन्दर जोडो आदि के पास होनेवाली गोल गाँठ जिसमे से कई प्रकार के रस निकलकर शारीरिक व्यापारो मे सहायक होते है। २ रक्त मे विकार होने के कारण शरीर के अन्दर पडनेवाली छोटी गाँठ। ३ एक रोग जिसमे शरीर के विभिन्न अगो मे गाँठे निकल आती है। ४ दे० 'ग्रथि'।

गिलण*—पु०=गिलन।

गिलन—पु० [स०√गिल्+ल्युट्—अन] [वि० गिलित] निगलने की क्रिया या भाव।

† पु०=गैलन।

गिलना—स० [स० गिलन] १ निगलना। २. इस प्रकार छिपा या दबा लेना कि किसी को पता न चले। ३ ग्रसना। उदा०—अद्भुत द्रव्य ससि अहि गिल्यौ, साख सुरग मनावही।—चन्दवरदाई।

गिलबिला—वि० [अनु०] आर्द्र और कोमल। पिलपिला।

गिलबिलाना—अ० [अनु०] अस्पष्ट उच्चारण के कारण बोलने मे गडबडाना।

गिलम—स्त्री० [फा० गिलीम=कबल] १ ऊन का बना हुआ मुलायम और चिकना कालीन। २ बडा और मोटा पर मुलायम गद्दा (बिछाने का)।

† वि० कोमल। नरम। मुलायम।

गिलमाँ—पु० [अ० 'गुलाम' का बहु०] इस्लाम के अनुसार वे सुन्दर बालक जो बहिश्त मे धर्मात्माओ की सेवा और भोग-विलास के लिए रहते है।

गिलमिल—पु० [हिं० गिलम=कोमल] मध्य युग का एक प्रकार का बढिया मुलायम कपडा।

गिलम्मा †—वि० दे० 'गिलम'।
† पु० दे० 'गिलमाँ'।

गिलहरा—पु० [देश०] एक प्रकार का धारीदार, मोटा सूती कपडा। पु० गिलहरी का नर।
†पु०=बेलहरा।

गिलहरी—स्त्री० [स० गिरि=चुहिया] चूहे की तरह का एक प्रसिद्ध छोटा जन्तु जो प्राय घरो और बगीचो मे रहता और पेडो पर चढ सकता है।

गिल-हिकमत—स्त्री० [फा० +अ०] औषध बनाने की कपडौटी नाम की क्रिया। दे० 'कपडौटी'।

गिला—पु० [फा०] १ उपालभ। उलाहना। २ निंदा। शिकायत।

गिलाई—स्त्री०=गिलहरी।

गिलाजत—स्त्री० [अ० गलीज का भाव०] १ गलीज या गदे होने की अवस्था या भाव। गदगी। २ गदी और बुरी चीज। ३ मल। गुह।

गिलान†—स्त्री० [हिं० गीला] गीलापन।
† स्त्री०=ग्लानि। उदा०—लखि दरिद्र विद्वान को जग-जन करै गिलान।—दीन०।

गिलाफ—पु० [अ०] १ कपडे की वह बडी थैली जो तकिये, लिहाफ आदि के ऊपर उनकी रक्षा के लिए चढाई जाती है। खोल। २ तलवार आदि की म्यान। कोष।
† पु० 'लिहाफ' के स्थान पर भूल से प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

गिलाय—स्त्री०=गिलहरी।

गिलायु—पु० [स० गिल+क्यङ्+उ] एक रोग जिसमे गले के अदर गाँठे बँध जाती है। इसमे बहुत पीडा होती है।

गिलावा†—पु० [फा० गिल=मिट्टी+आब=पानी] मिट्टी और पानी का बना हुआ वह गाढा घोल जिससे राज मजदूर दीवारो की चुनाई करते हैं। गारा।

गिलास—पु० [अ० ग्लास] १ पीतल, लोहे, शीशे आदि का बना हुआ पानी पीने का एक प्रसिद्ध लबोतरा छोटा बरतन। २ किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी उक्त पात्र मे समाती हो। जैसे—मैंने तीन गिलास पानी पीया। ३ आलू-बालू या ओलची नाम का पेड जिसका फल बहुत मुलायम और स्वादिष्ट होता है।

गिलित—भू० कृ० [स०√गिल्+क्त] निगला हुआ।

गिलिम—स्त्री०, वि०=गिलम।

गिली—वि० [फा० गिल=मिट्टी] १ मिट्टी से सम्बन्ध रखनेवाला। २ मिट्टी का बना हुआ।
† स्त्री०=गुल्ली।

गिलेफ†—पु०=गिलाफ।

गिलोय—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की कडवी बेल जिसके पत्ते दवा के काम आते है। गुरुच। गुडूची।

२—१४

गिलोल†—स्त्री०=गुलेल। उदा०—लोल है कलोल ते गिलोल से लसत है।—सेनापति।

गिलोला—† पु० दे० 'गुलेला'।

गिलौदाँ†—पु०=गुलैंदा।

गिलौरी—स्त्री० [देश०] लगे हुए पानो का बीडा।
पु० [स० गल्प] १ ज्ञान की बाते। ज्ञान-चर्चा। २ मन-बहलाव के लिए की जानेवाली बातचीत (बाजारू)।

गिलौरीदान—पु० [हिं० गिलौरी+दान] पान रखने का डिब्बा। पानदान।

गिल्टी†—स्त्री०=गिलटी।

गिल्यान†—स्त्री०=ग्लानि।

गिल्ला—पु०=गिला (शिकायत)।
† वि०=गीला।

गिल्ली—स्त्री०=गुल्ली।

गिल्लो†—स्त्री०=गिलहरी।

गिव†—स्त्री० [स० ग्रीवा] गरदन। गला। उदा०—चूरहिं गिव अभरन औहारू।—जायसी।

गिवन†—पु० [?] गैंडा नामक पशु। (राज०)

गिवल†—पु० [?] गैंडा। उदा०–जिणवन भूलन जावता, गैद गिवल गिडराज।—कविराजा सूर्यमल।

गिष्णु—पु० [म०√गा(गाना)+इष्णुच्, आकार का लोप] १ मत्र सस्वर गानेवाला व्यक्ति। २ गवैया। गायक।

गिहथ†—पु० [स० गृहस्थ] [स्त्री० गिहथिन] =गृहस्थ।

गींजना—स० [स० गृजन] किसी कोमल या चिकनी वस्तु को हाथ से दबा, मरोड या मसलकर खराब करना। जैसे—कपडा, फल या फूल गीजना।

गींद†—पु०=गेंद।

गींदवा†—पु० [स० गेडुक] छोटा गोल तकिया। (राज०) उदा०-मुडियाँ मिलसी गीदवो बलेन धणरी बाँह।— कविराजा सूर्यमल।

गींदुआ—पु०=गीदवा।

गींव†—स्त्री० [स० ग्रीवा] गर्दन। गला।

गी (गिर्)—स्त्री० [स०√गॄ (शब्द करना)+क्विप्] १ बोलने की शक्ति। वाणी। २ सरस्वती।

गीउ—स्त्री०=ग्रीवा (गला)।

गीठम—पु० [देश०] एक प्रकार का घटिया गलीचा।

गीड †—पु० [हिं० कीट=मैल] आँख से निकलनेवाला कीचड।

गीत—वि० [स०√गै (गाना)+क्त] गाने के रूप मे आया या लाया हुआ। गाया हुआ।
पु० वह छोटी पद्यात्मक रचना जो केवल गाये जाने के लिए बनी हो।
विशेष—(क) इसमे प्राय एक ही भाव की अभिव्यजना होती है। (ख) इसमे लय तथा स्वर की प्रधानता अन्य पद्यात्मक रचनाओ से अधिक होती है।
२ प्रशसा। बडाई।
मुहा०—(किसी के) गीत गाना=प्रशसा या बडाई करना।
३ कथन। चर्चा।
मुहा०—(अपना) गीत गाना=बराबर अपनी ही बात कहते जाना।

गीतक—पु० [स० गीत+कन्] १ गीत। गाना। २ प्रशसा। बडाई। वि० १ गीत गानेवाला। २ गीत बनानेवाला।

गीतकार—पु० [स० गीत√कृ (करना)+अण्] [भाव० गीतकारिता] वह जो लोगो के गाने के लिए गीत बनाता या लिखता हो।

गीत-क्रम—पु० [ष० त०] १ किसी गीत के स्वरो के उतार-चढाव अर्थात् गाने का क्रम। २ सगीत मे एक प्रकार की तान।

गीत-प्रिय—पु० [ब० स०] शिव।

गीत-प्रिया—स्त्री० [ब० स० टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

गीत-भार—पु० [ष० त०] १ गीत का पहला चरण या पद। टेक। २ उक्त (टेक) के विस्तृत अर्थ मे की हुई ऐसी प्रतिज्ञा जिसका पूरा निर्वाह किया जाय। टेक।

गीता—स्त्री० [स० गीत+टाप्] १ ऐसी छदोबद्ध कथा या वृत्तान्त जो लोगो के गाने के लिए प्रस्तुत किया गया हो। २ किसी का दिया हुआ छन्दोबद्ध ओर ज्ञानमय उपदेश। जैसे—रामगीता, शिवगीता आदि। ३ तारीफ। प्रशसा। उदा०—एक रस एक रूप जाकी गीता सुनियत।—केशव। ४ भगवद्गीता। ५ सकीर्ण राग का एक भेद। ६ छब्बीस मात्राओ का एक छद जिसमे १४ और १२ मात्राओ पर विराम होता है।

गीतातीत—वि० [स० गीत-अतीत, द्वि० त०] १ जो गाया न जा सके। २ जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय। अनिर्वचनीय।

गीतायन—पु० [स० गीत-अयन, ष० त०] गीत के साधन, वीणा, मृदग आदि।

गीति—स्त्री० [स०√गै+क्तिन्] १ गान। गीत। २ आर्या छन्द का एक भेद जिसके विषम चरणो मे १२ और सम चरणो मे १८ मात्राएँ होती है। उद्गाथा। उद्गाहा।

गीतिका—स्त्री० [स० गीति+कन्—टाप्] १ छोटा गीत। २ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ और १० के विराम से २६ मात्राएँ होती है। इसकी तीसरी, १० वी, १७ वी और २४ वी मात्राएँ सदा लघु होती है। ३ एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे, सगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु, गुरु, होते है।

गीति-काव्य—पु० [मध्य० स०] ऐसा काव्य जो मुख्यत गाये जाने के उद्देश्य से ही बना हो।

गीति-नाट्य—पु०=गीति-रूपक।

गीति-रूपक—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का रूपक जो पूरा या बहुत कुछ पद्य मे लिखा होता है। (ऑपेरा)

गीती (तिन्)—वि० [स० गीत+इनि] गाकर पढने या पाठ करनेवाला।

गीत्यार्या—पु० [स० गीति-आर्या, कर्म० स०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ५ नगण और एक लघु होता है। अचल धृति।

गीथा—स्त्री० [स०√गै+थक्—टाप्] १ वाणी। २ गीत।

गीदड़—पु० [स० गृध्र=लुब्ध या फा० गीदी] १ भेडिये या कुत्ते की जाति का एक जानवर जो लोमडी से मिलता-जुलता होता है। यह प्राय उजाड स्थानो और जगलो मे रहता है, और इसका दिखाई देना या बोलना अशुभ माना जाता है। शृगाल। सियार। (जैकाल)

पद—**गीदड़-भभकी** (देखे)।

मुहा०—**किसी स्थान पर गीदड बोलना**=बिलकुल उजाड या निर्जन होना।

२ कायर या डरपोक व्यक्ति।

गीदड-भभकी—स्त्री० [हि०] मन मे डरते हुए ऊपर से दिखावटी साहस अथवा क्रोध या रोष प्रकट करते हुए कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—दिखाना।—देना।

गीदडरुख—पु० [हि० गीदड+रुख=वृक्ष] उत्तरी भारत मे होनेवाला मॅझोले कद का एक पेड।

गीदी—वि० [फा०] १ गीदड सबधी। २ (व्यक्ति) जिसमे शक्ति या साहस न हो। कायर। डरपोक।

गीध—पु० [स० गृध्र] १ गिद्ध नामक प्रसिद्ध मासाहारी पक्षी। गिद्ध। २ लाक्षणिक अर्थ मे बहुत ही चतुर और लालची या लोभी व्यक्ति।

गीधना—अ० [स० गृध्र=लुब्ध] १ गिद्ध की तरह किसी काम, चीज या बात के पीछे पडना। २ बहुत ही बुरी तरह से लोभ करना। उदा०—करि अभिमान विषय रस गीध्यो, स्याम सरन नहि आयो।—सूर। ३ एक बार कोई अनुकूल बात होते देखकर या कुछ लाभ उठाकर बराबर उसकी ताक मे लगे रहना। परचना। उदा०—बीधे मोसो आन के गीधे गीधहि तारि।—बिहारी। ४ किसी से बहुत मेल-जोल रखना।

गीबत—स्त्री० [अ०] १ अनुपस्थिति। गैर हाजिरी। २ किसी की अनुपस्थिति मे उसकी की जानेवाली निन्दा या बुराई। चुगली।

गीर—वि० [फा०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अत मे लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) पकडनेवाला। जैसे—दामनगीर, राहगीर। (ख) अपने अधिकार मे रखनेवाला। जैसे—जहाँगीर।

स्त्री० [स० गिरा] वाणी।

गी-रथ—पु० [स० गिर्-रथ, ब० स०] १ बृहस्पति का एक नाम। २ जीवात्मा।

गीरबान*—पु०=गीर्वाण (देवता)।

गीरवाण, गीरवान—पु०=गीर्वाण।

गीर्ण—वि० [स०√गॄ (शब्द करना)+क्त] १ कथित। कहा हुआ। २ विस्तारपूर्वक बतलाया हुआ। वर्णित। ३ निगला हुआ।

गीर्णि—स्त्री० [स०√गॄ+क्तिन्] १ वर्णन। २ प्रशसा। स्तुति। ३ निगलने की क्रिया या भाव।

गीर्देवी—स्त्री० [गिर्-देवी, ष० त०] सरस्वती। शारदा।

गीर्पति—पु० [गिर्-पति, ष० त०] १ बृहस्पति। २ पडित। विद्वान्।

गीर्भाषा—स्त्री० [गिर्-भाषा, कर्म० स०] दे० 'गीर्वाणी'।

गीर्वाण—पु० [गिर-वाण ब० स०] देवता। सुर।

गीर्वाणी—स्त्री० [गिर्-वाणी, कर्म० स०] देवताओ की भाषा। देवभाषा। सस्कृत।

गीला—वि० [हि० गलना] [स्त्री० गीली] १ जो जल से युक्त हो। भीगा हुआ। तर। नम। जैसे—गीला कपडा, गीली ऑखे। २ जो अभी सूखा न हो। जैसे—गीला रग। ३ जो शराब पिये हुए हो और जिस पर उसका नशा सवार हो।

पु० [?] एक प्रकार की जगली लता।

गीलापन—पु० [हि० गीला+पन (प्रत्य०)] गीले होने की अवस्था या भाव। तरी। नमी।

गीली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड जिसके हीर की लकडी

चिकनी, भारी और मजबूत होती तथा मेज, कुर्सियाँ बनाने के काम मे आती है। बरमी।

गीव—स्त्री० =ग्रीवा (गरदन)।

गीष्पति—पु० [गिर्-पति, ष० त०] १ बृहस्पति। २ पडित। विद्वान्।

गुग†—वि०=गूँगा।

गुँगबहरी—स्त्री० [हि० गूँगा+बहरा] साँप की तरह लबी मछलियो की एक जाति। बरम। बाँबी।

गुंगा†—वि० [स्त्री० गूँगी] =गूँगा।

गुगी—स्त्री० [हि० गूँगा] दो-मुँहा साँप। चुकरैड।

गुँगुआना—अ० [अनु०] १ गूँगे की तरह गूँ गूँ शब्द करना। २ (लकडी का) अच्छी तरह न जलना और बहुत धूआँ देना।

गुंचा—पु० [अ० गुन्च] १ फूल की कली। कोरक। २ आनद-मगल। ३ नाच-रग।

मुहा०—गुचा खिलना=(क) खूब नाच-रग या आनद-मगल होना। (ख) मुख की आकृति आनदपूर्ण और प्रफुल्लित होना। (ग) दे० 'गुल' के अन्तर्गत मुहा० 'गुल खिलना'।

गुची—स्त्री०=घुँघची।

गुज—स्त्री० [स०√गुज् (गूँजना)+घञ्] १ भौरो के गुजन का शब्द। गुजार। २ पक्षियो आदि का कलरव। ३ आनद-ध्वनि।

†स्त्री० [स० गुजा] १ घुँघची। २ सोने के तारो का बना हुआ गले मे पहनने का गोप नामक गहना। उदा०—मुसाहिब जू ने अपने गले का गुज उतारा और पूरन को पहना दिया।—वृन्दावनलाल।

†पु० [?] सलई का पेड।

गुजक—पु० [स०√गुज्+ण्वुल्-अक] एक प्रकार का पौधा।

वि० गुजन करने या गूँजनेवाला।

गुजन—पु० [स०√गुज्+ल्युट्—अन] १ भौरो के गूँजने की क्रिया। २ गूँजने का शब्द। गुजार।

गुँजना—अ० [स० गुजन] गूँज से युक्त होना। गूँजना।

गुजना—अ० [स० गुजन] भौरे का गुजार करना। गुनगुनाना।

गुज-निकेतन— पु० [ष०त०] भौरा। मधुकर।

गुजरना—अ० [हि० गुजार] १ भौरो का गुजन करना। २ (स्थान का) गुजन या मधुर ध्वनि से युक्त होना। ३ गरजना।

गुजल्क—स्त्री० [फा०] १ कपडे आदि की शिकन। सिलवट। २ उलझन की बात। गुत्थी। ३ गाँठ।

स्त्री० [स० गुजा] घुँघची नाम की लता और उसके बीज।

गुजा—स्त्री० [स०√गुञ्ज्+अच्—टाप्] घुँघची नामक लता और उसके बीज। । (दे० 'घुँघची')

गुजार—पु० [स० गुज+हि० आर] भौरो की गूँज। भौरो की भन-भनाहट।

गुजारना—अ० [हि० गुजार] १ भौरो का गुजार करना। २ मधुर ध्वनि उत्पन्न करना।

गुजारित—वि०=गजित।

गुजित—वि० [स०√गुज्+क्त] १ (स्थान) जो भौरो की गुजार से युक्त हो। २ (स्थान) जो गूँज या प्रतिध्वनि से भर गया हो।

गुँजिया—स्त्री० [हि० गूँज=लपेटा हुआ पतला तार] कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुजी (जिन्)—वि० [स० गुज+इनि] गूँजनेवाला।

†स्त्री० =गूँज।

गुटा—पु० [देश०] पानी का छोटा गड्ढा या ताल।

गुठन—पु० [स०√गुठ् (ढकना)+ल्युट्—अन] १ किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु से छिपाने, ढकने, लपेटने आदि की क्रिया या भाव। २ लेप लगाना।

गुठा*—वि० [हि० गठना] १ अच्छी तरह से गठा हुआ। २ जो आकार-प्रकार मे छोटा, परन्तु गठा हुआ हो। ३ नाटा। ठिंगना।

पु० छोटे आकार का एक प्रकार का घोडा। टाँगन।

गुठित—भू० कृ० [स०√गुठ्+क्त]। १ ढका हुआ। २ छिपाया हुआ। ३ लेप किया हुआ। ४ चूर किया या पीता हुआ।

गुड—वि० [स०√गड् (चूर्ण करना)+अच्] चूर किया या पीसा हुआ।

पु० १ चूर्ण। २ फूलो का पराग। ३ मलार राग का एक भेद। ४ कसेरू का पौधा।

गुडई—स्त्री० [हि० गुडा+ई प्रत्य०] गुडे होने की अवस्था, गुण या भाव। गुडापन।

गुडक—पु० [स० गुड+कन्] १ मधुर और मद स्वर। २ धूल। ३ तेल रखने का बरतन। ४ ऐसा आटा जिसमे धूल या मिट्टी मिली हो।

गुंडली†—स्त्री०=कुडली।

गुडा—पु० [स० गडक=गैडा, मि० असमी गुडा=गैडा] [स्त्री० गुडी] अनियन्त्रित रूप से हर जगह उद्दण्डतापूर्वक आचरण या व्यवहार करने-वाला व्यक्ति।

गुडापन—पु० [हि० गुडा+पन (प्रत्य०)] गुडे होने की अवस्था या भाव।

गुडित—भू० कृ० [स० √गुड्+क्त] १ चूर्ण किया या पीसा हुआ। २ धूल मे मिलाया अथवा धूल से ढका हुआ।

गुडीर—वि० [स०√गुड्+ईरन्) १ चूर्ण करने या पीसनेवाला। २ नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

गुँदला—पु० [स० गुडाला] नागरमोथा नाम की घास।

गुँदीला—वि० [हि० गोद+ला] (वृक्ष) जिसका निर्यास गोद के रूप मे होता हो। गोदवाला।

गुंधना—अ० [स० गुध=क्रीडा] १ हि० 'गूँधना' का अ०। गुँधा जाना। २ पानी मे मिलाकर माँडा या साना जाना। ३ तागो, बालो की लटो आदि का गुच्छेदार लडी के रूप मे गूँथा या पिरोया जाना।

†अ० दे० 'गुथना'।

गुँधवाना—स० [हि० गूँधना का प्रे०] गूँधने का काम दूसरे से करवाना। दूसरे को कोई चीज गूँधने मे प्रवृत्त करना।

गुँधाई—स्त्री० [हि० गूँधना] १ गूँधने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गुँधावट—स्त्री० [हि० गूँधना] गूँधने की क्रिया, ढग या भाव।

गुफ—पु० [स० √गुफ् (गूँथना)+घञ्] [वि० गुफित] १ कई चीजो के आपस मे मिलकर उलझने या गुथने की क्रिया, दशा या भाव। २ फूलो का गुच्छा। ३ मूँछ। ४ गल-मुच्छा। ५ कारण माला अलकार का एक नाम।

गुफन—पु० [स०√गुफ्+ल्युट्—अन] [वि० गुफित] १ डोरे, तागे आदि के रूप मे होनेवाली चीजो को आपस मे इस प्रकार उलझाना या फँसाना कि उनका रूप सुदर हो जाय। गूथना। २ डोरे आदि मे पिरोना। जैसे—माला गुफन। ३ भरने का काम। भराई। जैसे—शब्दो का गुफन।

गुफना—स्त्री० [स० √गुफ्+युच्—अन, टाप्] १ गुफन या उसके फल-स्वरूप प्राप्त होनेवाला रूप। २ शब्दो आदि की मधुर ओर सुन्दर योजना।

†स०=गूथना।

गुफित—भू० कृ० [स०√गुफ्+क्त] १ गूँथा हुआ। २ सुन्दरता-पूर्वक एक दूसरे के साथ मिलाया या लगाया हुआ।

गुबज—पु०=गुबद।

गुबद—पु० [फा०] वास्तु-रचना मे वह शिखर जो आधे गोले के आकार का और अदर से पोला हो। गुबज। जैसे—मसजिदो का गुबद।

पद—गुबद की आवाज=प्रतिध्वनि।

गुबदी—वि० [फा०] गुबद की शकल का।

पु० गुबद के आकार का वह गोल खेमा जिसके बीचोबीच एक ही खभा होता है।

गुबा—पु० [फा० गुबद] सिर मे चोट लगने और उसके फल-स्वरूप खून जमने से पडनेवाली गाँठ। गुलमा।

गुभी—स्त्री० [स० गुफ=गुच्छा] वनस्पति का अकुर। गाभ।

स्त्री० [हिं० गून] रस्सी, विशेषत नाव आदि का पाल खीचने की रस्सी। गून।

गुआ—पु० [स० गुवाक] एक तरह की सुपारी।

गुआर—स्त्री०=ग्वार (कुलथी)।

गुआरपाठा—पु० दे० 'ग्वारपाठा'।

गुआरी†—स्त्री०=ग्वार।

गुआलिन—स्त्री० १ =ग्वार (कुलथी)। २ =ग्वालिन।

गुइयाँ—स्त्री०, पु० दे० 'गोइयाँ'।

पु० [हिं० गोहन=साथ] १ वह व्यक्ति जो खेल-कूद मे किसी का साथ देता है। खेल का साथी। २ मित्र।

स्त्री० सखी।

गुगरल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बत्तख।

गुगानी—स्त्री० [देश०] पानी की हलकी हिलोर। खलमली। (लश०)

गुगुलिया†—पु० [अनु०] बदर नचानेवाला व्यक्ति। मदारी।

गुग्गुर—पु०=गुग्गुल।

गुग्गुल—पु० [स०√गुज् (शब्द करना)+क्विप्, गुज्√गुड् (रक्षा करना) +क] १ सलई का पेड जिससे धूप या राल निकलती है। २ राल जो सुगधि के लिए जलाते है। ३ एक प्रकार का बडा कँटीला पेड जो दक्षिण भारत मे होता है।

गुच—पु० [हिं० गोछ] एक प्रकार की भेड। (पजाब)

गुची—स्त्री० [स० गुच्छ] सौ पानो की गड्डी। आधी ढोली।

गुच्ची—स्त्री० [अनु०] १ जमीन में खोदा हुआ वह छोटा लबोतरा गड्ढा जो लड़के गुल्ली-डडा आदि खेलने के लिए बनाते हैं। २ जमीन मे खोदा हुआ कोई छोटा गड्ढा।

वि० बहुत छोटा। जैसे—गुच्ची-सी आँख।

गुच्चीपाला—पु० [हिं० गुच्ची=गड्ढा+पाला=सीमा] एक खेल जिसमे लडके एक छोटा-सा गड्ढा बनाकर उसमे कुछ दूर से कौडिया फेकते हे।

गुच्छ—पु० [स०√गु (शब्द करना)+क्विप्, गुत्=शो (सूक्ष्म करना) +क] १ गुच्छा। २ ऐसा झाड या पौधा जिसमे मोटा तना न हो, केवल पतली टहनियाँ और पत्तियाँ हो। झाडी। ३ बत्तीस लडो का हार। ४ मोतियो की माला। ५ मोर की पूँछ। ६ घास का पूला।

गुच्छक—पु० [स० गुच्छ+कन्] =गुच्छ।

गुच्छ-पत्र—पु० [ब० स०] ताड का पेड।

गुच्छ-पुष्प—पु० [ब० स०] १ अशोक वृक्ष। २ छतिवन। ३ रीठा। ४ धव। धातकी।

गुच्छ-फल—पु० [ब० स०] १ रीठा। २ निर्मली। ३ दमनक। दौना। ४ अगूर। ५ केला। ६ मकोय।

गुच्छल—पु० [स० गुच्छ√अल् (पर्याप्ति)+अच्, पररूप] एक प्रकार की घास।

गुच्छा—पु० [स० गच्छ] १ एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओ का ऐसा समूह जो एक साथ उगा, उपजा या बना हो। जैसे—अगूरो का गुच्छा। २ एक साथ इकट्ठी की हुई एक प्रकार की वस्तुओ का समूह। जैसे—तालियो का गुच्छा। ३ तारो, बालो आदि की उक्त प्रकार की रचना या रूप। झब्बा। फुँदना।

गुच्छातारा—पु० [हिं० गुच्छा+तारा] कचपचिया नाम का तारा-पुज।

गुच्छार्द्ध—पु० [गुच्छ-अर्द्ध, ष० त०] वह हार जिसमे सोलह अथवा चौबीस लड होते है।

गुच्छार्ध—पु०=गुच्छार्द्ध।

गुच्छी—स्त्री० [स० गुच्छ] १ करज। कजा। २ रीठा। ३ खुभी की जाति की एक वनस्पति जो कश्मीर और पजाब मे होती है। और जिसके बीज-कोषो के गुच्छो की तरकारी बनती है।

गुच्छेदार—वि० [हिं० गुच्छा+फा० दार (प्रत्य०)] १ जो गुच्छे या गुच्छो के रूप मे हो। २ जिसमे गुच्छा या गुच्छे लगे हो।

गुज—पु० [देश०] बाँस आदि की वह पतली छोटी फाँक जो दो चीजो को जोडने के लिए उनमे जडी जाती है। बाँस की कील या मेख। (बढई)

गुजर—पु० [फा०] १ किसी विन्दु या स्थान से होते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव। २ काल-क्षेप या जीवन-यापन की दृष्टि से होनेवाला निर्वाह। जैसे—सौ रुपए मे गुजर करना पडता है। ३ आने-जाने, निकलने आदि का द्वार या मार्ग। जैसे—इस कमरे मे हवा का गुजर नही है। ४ पहुँच। पैठ। प्रवेश। जैसे—इतने बडे दरबार मे भला हमारा गुजर कैसे हो सकता है।

पद—गुजर-बसर (देखे)।

गुजरगाह—स्त्री० [फा०] १ किसी के गुजरने अर्थात् आने-जाने का मार्ग या स्थान। २ नदी पार करने का घाट। ३ मार्ग। रास्ता।

गुजरना—अ० [फा० गुजर+ना (प्रत्य०)] १ किसी स्थान से होते हुए आगे बढना। जैसे—यह सडक बनारस से गुजरती है। २ एक स्थिति से होकर दूसरी स्थिति मे पहुँचना।

मुहा०—(किसी का) गुजर जाना=मृत होना। मरना। जैसे—उनके चाचा आज गुजर गये।

३ कोई घटना या बात घटित होना। जैसे—वहाँ तुम पर क्या गुजरी।

मुहा०—किसी पर गुजरना=किसी पर विपत्ति या सकट पडना।

४ व्यतीत होना। बीतना। जैसे—इसी प्रकार कितने ही वर्ष गुजर गये। ५ निर्वाह होना। ६ दूर रहना। बाज आना। जैसे—हम तो ऐसे जीने से गुजरे।

गुजरनामा—पु० [अ०+फा०] वह अधिकार-पत्र जिसकी सहायता से कोई किसी मार्ग से होता हुआ आगे जा सकता है। राहदारी का परवाना। पार-पत्र।

गुजर-बसर—पु० [फा०] कालक्षेप या जीवन-यापन की दृष्टि से होनेवाला निर्वाह। गुजारा।

गुजरबान—पु० [फा०] १ नदी पार करानेवाला, अर्थात् मल्लाह। माँझी। २ वह जो घाट की उतराई या कर उगाहता हो।

गुजरात—पु० [स० गुर्जर-राष्ट्र] [वि० गुजराती] भारतीय सघ के बम्बई राज्य का एक प्रदेश।

गुजराती—वि० [हि० गुजरात] 'गुजरात' प्रदेश मे बनने, होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। जैसे—गुजराती खान-पान, पहनावा या माल। पु० 'गुजरात' प्रदेश का निवासी।

स्त्री० १ गुजरात की भाषा। २ देवनागरी से मिलती हुई वह लिपि जिसमे उक्त भाषा लिखी जाती है। ३ छोटी इलायची।

गुजरान—स्त्री० [फा०] जीवन का निर्वाह और समय का बीतना (खाने पीने, रहने-सहने आदि के विचार से)। जैसे—हमारी भी किसी तरह गुजरान होती ही है।

गुजरानना—स० [हि० गुजर] १ किसी के सामने उपस्थित या पेश करना। जैसे—अरजी या नजर गुजरानना। २ व्यतीत करना। बिताना। जैसे—दिन गुजरानना।

गुजरिया—स्त्री०=गूजरी।

गुजरी—स्त्री० [स० गुर्जर, हि० गूजर] १ कलाई पर पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २ गूजरी नाम की रागिनी। ३ दे० 'गूजरी'।

स्त्री० [हि० गुजरना] मध्य युग मे, दोपहर के बाद सडको के किनारे लगनेवाला छोटा बाजार।

गुजरेटा—पु० [हि० गूजर+एटा=बेटा (प्रत्य०)] [स्त्री० गुजरेटी] १ गूजर का पुत्र या लडका। २ गूजर जाति का पुरुष या व्यक्ति। गूजर। ग्वाला।

गुजश्ता—वि० [फा० गुजश्त] बीते हुए काल से सबध रखनेवाला। गत। भूत।

गुजार—वि० [फा०] गुजारने (अर्थात् करने, देने या सामने लाने) वाला (यौ० के अत मे)। जैसे—खिदमतगुजार, मालगुजार, शुक्रगुजार आदि। पु० वह स्थान जहाँ से होकर लोग गुजरते या आगे बढते हो। जैसे—घाट, रास्ता आदि।

गुजारना—स० [फा० गुजर] १ किसी स्थान से होते हुए आगे बढाना। २ (समय) काटना या बिताना। व्यतीत करना। ३ किसी बडे के सामने उपस्थित, पेश या निवेदन करना। जैसे—अर्ज गुजारना। ४ पालन करना। जैसे—नमाज गुजारना। ४ (कष्ट या विपत्ति) डालना। ढाना। उदा०—गजब गुजारत गरीबन की धार पै।—पद्माकर।

गुजारा—पु० [फा० गुजार] १ गुजरने या गुजारने की क्रिया या भाव। २ गुजर। निर्वाह। ३ जीवन-निर्वाह के लिए मिलनेवाली आर्थिक सहायता या वृत्ति। ४ वह स्थान जहाँ से लोग नाव पर चढकर पार जाते हो अथवा आकर उतरते हो। ५ मार्ग मे पडनेवाला वह स्थान जहाँ कोई अधिकार-पत्र दिखाना या कर देना पडता हो।

गुजारिश—स्त्री० [फा०] निवेदन। प्रार्थना।

गुजारिशनामा—पु० [फा०] निवेदन-पत्र। प्रार्थना-पत्र।

गुजारी—स्त्री० [?] गले मे पहनने का एक प्रकार का हार।

गुजारेदार—पु० [फा०] वह व्यक्ति जिसे जीवन-निर्वाह के लिए गुजारा या वृत्ति मिलती हो।

गुजी†—स्त्री० [?] नथनो मे जमा हुआ सूखा मल। नकटी।

गुजुआ—पु० [देश०] [स्त्री० गूजी, गुजुई] गोबरैला नाम का कीडा।

गुज्जर†—पु० दे० 'गूजर'।

गुज्जरवै*—पु० [स० गुर्ज (पति)] गुजरात का राजा।

गुज्जरी—स्त्री० दे० 'गूजरी'।

गुज्झ*—वि०=गुह्य।

गुज्झना—अ० [हि० गुज्झ] छिपना।

गुज्झा—पु० [स० गुह्यक] १ रेशेदार गूदा। २ रेशो का गुच्छा। ३ बाँस की कील या मेख। गोझा। ४ एक प्रकार की कँटीली घास। वि० [स० गुह्य] छिपा हुआ। गुप्त।

गुझ*—वि०=गुह्य।

गुझबाती*—स्त्री० [स० गुह्य+हि० बात] १ गुप्त या छिपी हुई बात। २ ऐसी बात जिसका अर्थ या रहस्य सहज मे स्पष्ट न होता हो। उदा०—स्याम सनेसो कबहूँ न दीन्हौ जानि बूझ गुझबाती।—मीराँ।

गुझरौट—स्त्री० [हि० गुज्झा] १ साडी का वह भाग जो स्त्रियाँ चुनकर नाभि के पास खोस लेती है। उदा०—कर उठाय घूँघट करत उसरत पट गुझरौट।—बिहारी। २ स्त्रियो की नाभि के आस-पास का भाग। पु० [स० गुह्य-आवर्त] कपडे की शिकन। सिकुडन।

गुझिया—स्त्री० [स० गुह्यक, प्रा० गुज्झआ, गुज्झा] १ एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २ खोए की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।

गुझौट†—पु० दे० 'गुझरौट'।

गुट—पु० [स० गोष्ठ=समूह] १ झुड। यूथ। समूह। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से बनाया हुआ व्यक्तियो का वह छोटा दल जो किसी विशिष्ट पक्ष या मत का पोषण करने के लिए बनाया जाता है। जैसे—अब तो काग्रेस मे भी कई गुट हो गये है।

क्रि० प्र०—बनाना।—बाँधना।

पद—गुटबदी (देखे)।

पु० [अनु०] कबूतरो आदि के बोलने अथवा इसी प्रकार का कोई शब्द।

गुटकना—अ० [अनु०] १ गुटगुट शब्द करना। जैसे—कबूतर का गुटकना, तबले का गुटकना।

अ० दे० 'गटकना' (निगलना)।

स० दे० 'गुटकाना'।

गुटका—पु० [स० गुटिका] [स्त्री० अल्पा० गुटकी] १ बहुत छोटे

आकार में छपी हुई पुस्तक। जैसे—गुटका रामायण। २ कोई गोल ठोस चीज। छोटा गोला। जैसे—लट्टू। ३ गुपचुप नाम की मिठाई। ४ सूखे कत्थे में मिलाए हुए इलायची, लौंग, सुपारी आदि जो मसाले के रूप में पान में मिलाकर अथवा पान के स्थान पर खाई जाती है।

गुटकाना—स० [अनु०] १ 'गुटकना' का स० रूप। गुटकने में प्रवृत्त करना। २ धीरे-धीरे किसी साधन के द्वारा गुट-गुट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—ढोलक या तबला गुटकाना।

गुटकी—स्त्री० [हि० गुटिका] छोटी टिकिया। उदा०—गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्ही ग्यान की गुटकी।—मीरा।

गुटबंदी—स्त्री० [हि० गुट+फा० बंदी] १ कुछ लोगों का आपस में मिलकर अपना एक अलग गुट या दल बनाने की क्रिया या भाव। २ पारस्परिक मत-भेद, राग-द्वेष आदि के कारण किसी संस्था, समुदाय आदि के लोगों का छोटे-छोटे गुट बनाना।

गुटबैंगन—पु० [?] एक प्रकार का कँटीला पौधा।

गुटरगूँ—स्त्री० [अनु०] कबूतरों के गुट-गुट करते हुए बोलने का शब्द।

गुटिका—स्त्री० [स० वर्टिका, पृषो० सिद्धि] १ छोटी गोली या टिकिया। वटिका। वटी। २ योग की एक प्रकार की सिद्धि से प्राप्त होनेवाली वह गोली जिसके सम्बन्ध में यह प्रवाद है कि इसे मुँह में रख लेने पर आदमी जहाँ चाहे वहाँ तत्काल अदृश्य होकर पहुँच सकता है।

गुट्ट—पु०=गुट।

गुट्टा—पु० [हि० गोटी] लाख की बनी हुई वह चौकोर गोटी जिनसे लड़कियाँ खेला करती है।

वि० छोटे कद का। ठिगना। नाटा।

पु० [प०] गेंदे का पौधा और उसका फूल।

गुट्ठल—वि० [हि० गुठली] १ (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २ गुठली के आकार का और कठोर या कड़ा। ३ (बात) जो जल्दी समझ में न आवे। जटिल या दुरूह। ४ (व्यक्ति) जिसकी समझ में जल्दी कोई बात न आती हो। जड़। मूर्ख। उदा०—ग्रंथ गथित गुट्ठल मति मूरखता जुत पंडिता। —रत्ना०।

†पु० १ गुठली की तरह जमी या बँधी हुई गाँठ। (क्व०) २ गिलटी।

गुट्ठा—स्त्री० [हि० गुठली] १ कड़ी और मोटी गाठ। २ परकाटखना।

गुठला—पु० [हि० गुठली] १ बड़ी और मोटी गुठली। २ उक्त आकार-प्रकार की कोई कड़ी चीज। जैसे—शरीर में मास का गुठला।

वि० [हि० कुठ] जिसकी धार ठीक काम करने के योग्य न रह गई हो। कुंद। भोथरा। जैसे—गुठला चाकू, गुठले दाँत।

पु० [स० अंगुस्थल, प्रा० अंगुट्ठल] अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुठलाना—अ० [हि० गुठली] १ गुठली की तरह कड़ा और गोल बनना या होना। जैसे—मास गुठलाना। २ (अस्त्र-शस्त्र की धार का) कुंद या भोथरा होना। ३ खट्टी चीज खाने के बाद दाँतों का और कुछ खाने या चबाने के योग्य न रह जाना।

स० गुठला (कुंद या भोथरा) करना।

गुठली—स्त्री० [स० गुटिका] आम, जामुन आदि फलों के बीच से निकलनेवाला कड़ा तथा बड़ा बीज।

गुड़बा—पु० [हि० गुड़+आँब, आम] गुड़ (अथवा चीनी) में कच्चे आम को पकाकर बनाई जानेवाली एक तरकारी।

गुड़—पु० [स० गुड, गुल, पा० गुलो, प्रा०, प० गुड़ ब०, उ० गुड़, मि० गुड़, गु० गोड, ने० गुलिया, मरा० गुड़] १ ऊख के रस का वह रूप जो उसे पकाकर खूब गाढ़ा करने पर प्राप्त होता है, और जो बाजार में बट्टी, भेली आदि के रूप में मिलता है। जैसे—गुड़ न दे तो गुड़ की सी बात तो कहे। (कहा०)

मुहा०—गुड़ च्यूँटा होना=(क) ऐसा पारस्परिक घनिष्ठ संबंध होना, जैसे गुड़ और च्यूँटे का होता है। (ख) बहुत अधिक अनुरक्त या लीन होना। **गुड़ दिखाकर ढेला मारना**=कुछ लालच देकर फिर ऐसा बरताव करना जिससे कुछ प्राप्त न हो उल्टे कष्ट भोगना पड़े। **कुल्हिया में गुड़ फोड़ना**=इस प्रकार गुप्त रूप से या छिपकर कोई काम करना कि दूसरों को पता न चले। **गूँगे का गुड़ खाना**=दे० 'गूँगा' के अन्तर्गत मुहा०।

पद—गुड़ भरा हँसिया=असमंजस का ऐसा काम जो बहुत अभीष्ट या प्रिय होने पर भी बहुत ही कठिन होने के कारण किया न जा सके।

२ रहस्य संप्रदाय में (क) मन, (ख) ईश्वर का ध्यान, (ग) गुरु का उपदेश।

गुड़क—पु० [स० गुड+कन्] १ गोलाकार पदार्थ। २ गेंद। ३ गुड़। ४ गुड़ में पकाकर तैयार की हुई दवा।

गुड़गुड़—स्त्री० [अनु०] १ वेगपूर्वक जल में से होकर वायु के बाहर निकलने पर होनेवाला शब्द। जैसे—हुक्के की गुड़गुड़, कूएँ या नदी में लोटा डुबोने से होनेवाली गुड़गुड़। २ किसी बंद चीज में हवा के चलने से होनेवाला शब्द। जैसे—पेट में होनेवाली गुड़गुड़।

गुड़गुड़ाना—अ० [अनु०] गुड़गुड़ शब्द होना।

स० गुड़गुड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे—हुक्का गुड़गुड़ाना।

गुड़गुड़ाहट—स्त्री० [हि० गुड़गुड़ाना+हट (प्रत्य०)] गुड़गुड़ शब्द करने या होने की अवस्था या भाव। गुड़गुड़।

गुड़गुड़ी—स्त्री० [हि० गुड़गुड़ाना] १ बार बार गुड़गुड़ शब्द होने की अवस्था या भाव। २ फरशी या और किसी प्रकार का हुक्का जिसमें तमाकू पीने के समय गुड़गुड़ शब्द होता है।

गुड़च—स्त्री० = गुरुच।

गुड़-धनिया—पु० [हि० गुड़+धनियाँ] गुड़ में मिलाये हुए धनिये के बीज जो शुभ अवसरों पर थोड़े-थोड़े खाये-खिलाये जाते हैं।

गुड़धानी—स्त्री० [हि० गुड़+धान] १ भुने हुए गेहूँ को गुड़ में मिलाकर बनाया जानेवाला लड्डू। २ दे० 'गुड़-धनिया'।

गुड़ना—स० [देश०] डंडा इस तरह फेंकना कि वह अपने सिरों के बल पलटे खाते हुए कुछ दूर तक चला जाय।

स० दे० 'गुनना'।

†अ०=बजना। (राज०)

गुड़रु—पु० [स० गरुड] एक प्रकार का पक्षी।

गुडला†—वि० दे० 'गँदला'।

गुडलपण†—पु०=गँदलापन। उदा०—पृथी पक जलि गुडलपण।—प्रिथीराज।

गुड़हर—पु० [हि० गुड़+हर] १ अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

२ एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ और फूल अरहर की तरह के होते है।

गुडहल†—पु०=गुडहर।

गुडा—स्त्री० [स० गुड+टाप्] १ गुटिका। गोली। २ कपास। ३ थूहड।

गुडाकू—पु० [हि० गुड+तमाकू] गुड मिलाकर बनाया हुआ पीने का तमाकू।

गुडाकेश—पु० [स० गुडाका (निद्रा)-ईश, ष० त०] १ शिव। महादेव। २ अर्जुन।

गुडासा—पु० [?] दे एक प्रकार का कीडा।

गुडिया—स्त्री० [हि० गुड्डा का स्त्री० अल्पा० रूप] १ बच्चो के खेलने का एक प्रकार का छोटा खिलौना जो छोटी लडकी के रूप मे कपडे, रबड आदि का बना होता है।

पद—गुडिया सा=बहुत छोटा, परन्तु खूब सजा हुआ। जैसे—गुडिया-सा घर। **गुडियो का खेल**=बहुत ही छोटा और सहज काम।

मुहा०—गुडिया सँवारना=अपने वित्त के अनुसार जैसे-तैसे लडकी का ब्याह करना।

२ कोई सुदर अथवा सजकर रहनेवाली निकम्मी और मूर्ख लडकी।

स्त्री० [हि० गोड=पैर] छोटा पैर (जैसे—बच्चो का)। उदा०—छोटी छोटी गुडियाँ अँगुरियाँ छोटी।—सूर।

गुडिला—पु० [स० गुड, हि० गुड्डा का पुराना रूप] १ मनुष्य की आकृति का पुतला। २ दे० 'गुड्डा'।

गुडी†—स्त्री० [स० गुडिका] १ कोई गोल कडी चीज। गाँठ। गुट्ठी। २ मन मे छिपा हुआ द्वेष। गाँठ।

†स्त्री०=गुड्डी (पतग)।

गुडीला†—वि० [हि० गुड] १ जिसमे गुड मिला हो अथवा जो गुड के योग से बना हो। २ गुड के से स्वादवाला।

गुडुच—स्त्री० =गुरुच।

गुडुरू†—पु० [स० कुडल] १ कोई ऐसी मडलाकार रचना जिसके बीच मे छोटा गड्ढा हो। २ उक्त आकार की वह लकडी या लोहे का टुकडा जिसमे किवाड की चूल बैठाई जाती है। ३ छोटा गड्ढा। ४ एक प्रकार का पक्षी जो प्रात काल मधुर स्वर मे तुही-तुही बोलता है। उदा०—तुही तुही कह गुडुरू खीहा।—जायसी।

गुडुवा—पु० [?] [स्त्री० गुडुई] १ बडी गुडिया। २ दे० 'गुड्डा'।

गुडूची—स्त्री० [स० √गुड्+ऊचट्—ङीप्] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा—पु० [स० गुड=खेलने की गोली] [स्त्री० अल्पा० गुडिया] १ कपडे का बना हुआ पुतला जिसे लडकियाँ खेलती है।

मुहा०—(किसी के नाम का) गुड्डा बनाना या बाँधना=भाँडो, मिरासियो आदि का किसी कजूस को अपमानित या बदनाम करने के लिए उक्त प्रकार का गुड्डा बनाना और गली-गली उसकी निदा करते फिरना।

२ उडाने के लिए पतले कागज की बडी गुड्डी या पतग। ३ केवल देखने भर का, पर वस्तुत अकर्मण्य या निकम्मा व्यक्ति। जैसे—कुसस्कारो के गुड्डे। ४ बडी पतग।

गुड्डी—स्त्री० [स० गुरु—उड्डीन] १ बहुत पतले कागज का वह चौकोर टुकडा जो डोर या नख की सहायता से आकाश मे उडाया जाता है। छोटा कनकौआ या पतग। २ घुटने पर की हड्डी। चक्की।

मुहा०—(किसी की) हड्डी-गुड्डी तोडना=बहुत अधिक मारना-पीटना।

३ चिडियो के डैनो या परो की वह स्थिति जो उडने के कुछ पहले होती है। कुदा। ४ एक प्रकार का छोटा हुक्का। ५ दे० 'गुडिया'।

गुड्डू—पु० [?] एक प्रकार का छोटा कीडा जो धूल मे गोलाकार घर बनाकर रहता है।

गुढना†—अ० [हि० गूढ] छिपना। उदा०—बरुनी बन दृग गढनि मे रही गुढी की लाज।—बिहारी।

अ० [हि० गुण] गुण सीखना या गुणो से युक्त होना। जैसे—तुम पढे तो हो, पर गुढे नही हो।

गुढा†—पु० [स० गूढ] जगल मे चोरो, डाकुओ आदि के छिपने का स्थान।

गुण—पु० [स० √गुण् (आमत्रण)+अच्] १ किसी वस्तु की वह महत्वपूर्ण या विशिष्ट निजी विशेषता जिसके कारण, वह दूसरी वस्तुओ से अलग मानी तथा रखी जाती हो। २ किसी वस्तु का वह तत्त्व जिसके प्रभाव से खराबियाँ या बुराइयाँ दूर होती हो। गुणकारी या लाभदायक तत्त्व। जैसे—औषध का गुण। (क्वालिटी, प्रापर्टी) ३ किसी व्यक्ति की वह प्राकृतिक विशेषता जिसके कारण समाज मे उसकी प्रशसा होती हो अथवा होनी चाहिए।

मुहा०—(किसी का) गुण गाना=किसी के किये हुए उपकार या अच्छे कामो की खूब चर्चा करना। **गुण मानना**=उपकृत होने पर कृतज्ञता प्रकट करना। उदा०— मानूँ रे ननदिया मैं तेरा गुण मानूँ।—गीत।

४ किसी कला, विद्या, शास्त्र आदि मे प्राप्त की जानेवाली निपुणता। प्रवीणता। ५ कला या विद्या। हुनर। ६ प्रकृति के अन्तर्गत मानी जानेवाली तीन प्रकार की वृत्तियाँ जो जीव-जतुओ, मनुष्यो, वनस्पतियो आदि मे पाई जाती है। यथा—सत्त्व, रज और तम।

विशेष—सत्त्व, रज और तम ये तीनो गुण साख्य मे कहे गये है। परन्तु योगशास्त्र मे शम, दम और तितिक्षा ये तीनो गुण कहे गये है।

७ (उक्त वृत्तियो के आधार पर) तीन की सख्या का सूचक शब्द। ८ राजनीति मे, परराष्ट्र के साथ व्यवहार करने के ६ ढग—सधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय। ९ सस्कृत व्याकरण मे 'अ' 'ए' और 'ओ' स्वर। १० साहित्य मे वह तत्त्व जिससे काव्य की शोभा बढती है। जैसे—ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि। ११ प्रकृति। १२ रस्सी या तागा। डोरा। १३ धनुष की डोरी।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो किसी सख्या के अत मे लगकर उसका उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे— द्विगुण, त्रिगुण, चतुर्गुण आदि।

अव्यय के अनुसार। उदा०—इगित जामै समय गुण, बरनहु दूत अलोभ।—केशव।

गुणक—पु० [स० √गुण्+ण्वुल्—अक] १ वह अक जिससे किसी अक को गुणा करे। (मल्टिप्लायर) २ मालाकार। माली।

गुण-कर—वि० [ष० त०] गुणकारी। लाभदायक।

गुणकरी—स्त्री० [स० गुणकर+ङीप्] सबेरे के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जो किसी के मत से भैरव राग की और किसी के मत से हिंडोल राग की भार्या है।

गुणकली—स्त्री० =गुणकरी (रागिनी)।

गुणकार—पु० [स० गुण√कृ (करना) अण्] १ गुणवान्। गुणी। २ सगीतज्ञ। ३ रसोइया। ४ भीमसेन जो अज्ञातवास मे रसोइए का काम करते थे।

गुण-कारक—वि० [ष० त०] गुण करनेवाला। फायदेमद। लाभदायक।

गुणकारी (रिन्)—वि० [स० गुण√कृ+णिनि] =गुणकारक।

गुण-गौरी—स्त्री० [तृ० त०] १ गौरी के समान गुणवाली सौभाग्यवती स्त्री। २ स्त्रियो का एक प्रकार का व्रत और पूजन। गनगौर (देखे)।

गुण-ग्राहक—पु० [ष० त०] १ गुण को परखकर उसका आदर और सम्मान करनेवाला व्यक्ति। कदरदान। २ गुणियो का सम्मान करनेवाला।

गुणग्राही (हिन्)—वि० [स० गुण√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] [स्त्री० गुणग्राहिणी] =गुण-ग्राहक।

गुणघाती (तिन्)—वि० [गुण√हन् (हिंसा) णिनि] गुण न मानकर उलटे अपकार करनेवाला। कृतघ्न।

गुणज—वि० [स० गुण√जन् (उत्पन्न होना)+ड] (अक) जिसका गुणा किसी विशेष दृष्टि या प्रकार से हो सकता हो। (मल्टीपुल) जैसे—सार्वगुणज। (कामन मल्टीपुल्)

गुणज्ञ—वि० [स० गुण√ज्ञा (जानना)+क] १ गुण को जानने और पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २ (व्यक्ति) जिसमे बहुत से गुण हो।

गुण-दोष—पु० [द्व० स०] किसी वस्तु की अच्छी और बुरी बाते। अच्छाइयाँ और बुराइयाँ। (मेरिट्स)

गुण-धर्म—पु० [द्व० स०] किसी पदार्थ मे विशेष रूप से पाया जानेवाला उसका कोई गुण या धर्म। वस्तुगत विशेषता। (प्रापर्टी)

गुणन—पु० [स०√गुण्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० गुण्य, गुणीय, गुणित] १ गणित मे, एक सख्या को दूसरी सख्या से गुणा करना। जरब देना। २ हिसाब करना। गिनना। ३ अनुमान, कल्पना या विचार करना। ४ उद्धरणी करना। रटना। ५ मनन करना। सोचना।

गुणन-फल—पु० [ष० त०] वह सख्या जो एक सख्या को दूसरी सख्या से गुणन करने पर प्राप्त होती है। (प्राडक्ट)

गुणना—स० [स० गुणन] १. गुणन या गुणा करना। जरब देना। २ मन में सोचना, समझना या विचार करना। गुनना।

गुणनिका—स्त्री० [स०√गुण्+युच्—अन+कन्—टाप्] १ नाटक मे पूर्वरग। २ नृत्य की कला या विद्या। ३ रत्न। ४ हार। ५ शून्य।

गुणनीय—वि० [स०√गुण्+अनीयर्] जिसका गुणन या गुणा हो सके अथवा किया जाने को हो।

गुणमै*—पु०=गुणमोती।

वि०=गुणमय।

गुणमोती—पु० [स० गुण-मौक्तिक] एक प्रकार का बहुमूल्य मोती। सर्पमणि या गजमुक्ता की भाँति राजस्थानी साहित्य मे आभा एव सौन्दर्य की दृष्टि से इसका विशेष स्थान है। उदा०—गुणमोती मखतूल गुण।—प्रिथीराज।

गुणवंत—वि० [स० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] (व्यक्ति) जिसमे अनेक अच्छे गुण हो। गुण या गुणो से युक्त। गुणवान्।

गुण-वाचक—वि० [ष० त०] जो किसी चीज या बात का गुण या विशेषता सूचित करता हो। जैसे—गुणवाचक विशेषण, गुणवाचक सज्ञा।

गुण-वाद—पु० [ष० त०] मीमासा मे अर्थवाद का एक भेद।

गुणवान् (वत्)—वि० [स० गुण+मतुप्, वत्व] [स्त्री० गुणवती] (व्यक्ति) जो अनेक प्रकार के गुणो से युक्त हो। गुणी।

गुण-विधि—स्त्री० [ष० त०] मीमासा मे वह विधि जिसमे गुण-कर्म का विधान हो।

गुण-व्रत—पु० [मध्य० स०] जैनियो मे मूलव्रतो की रक्षा करनेवाले तीन व्रत—दिग्व्रत, भोगोपभोगनियम और अनर्थ दड-निषेध।

गुण-सग—पु० [ष० त०] गुणो का पारस्परिक मेल या सामजस्य।

गुण-सागर—वि० [ष० त०] (व्यक्ति) जिसमे बहुत-से अच्छे-अच्छे गुण हो। बहुत बडा गुणी।

पु० एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है।

गुण-हीन—वि० [तृ० त०] जिसमे किसी प्रकार का या कोई गुण अथवा विशेषता न हो।

गुणांक—पु० [गुण-अक, ष० त०] गणित मे वह राशि या सख्या जिससे किसी दूसरी राशि या सख्या (गुण्यक) को गुणा किया जाता है।

गुणा—पु० [स० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित की वह क्रिया जो यह जानने के लिए की जाती है कि किसी अक या सख्या को एक से अधिक बार जोडने पर फल कितना होता है। जरब। (मल्टीप्लिकेशन) जैसे—यदि यह जानना हो कि ८ को लगातार ५ बार जोडने से कितना होता है तो ८ को ५ से गुणा करना पडेगा।

गुणाकर—वि० [गुण-आकर ष० त०] जिसमे अनेक गुण हो। बहुत बडा गुणवान्। गुणो की खान।

गुणाढ्य—वि० [गुण-आढ्य, तृ० त०] बहुत गुणोवाला। गुण-पूर्ण।

पु० पैशाची भाषा के एक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

गुणातीत—वि० [गुण-अतीत, द्वि० त०] १ गुणो से अलिप्त, परे और भिन्न। २ जिसका सत्त्व, रज आदि गुणो से कोई सबध न हो और जो इन सब से परे हो। (परमात्मा या ब्रह्म का एक विशेषण।)

पु० परमात्मा। ब्रह्म।

गुणानुवाद—पु० [गुण-अनुवाद, ष० त०] किसी के अच्छे गुणो की चर्चा या वर्णन। गुण-कथन। तारीफ। प्रशसा।

गुणान्वित—वि० [गुण-अन्वित, तृ० त०] गुणो से युक्त।

गुणालय—वि० [गुण-आलय, ष० त०,] बहुत से गुणोवाला। गुणाकर।

गुणिका—स्त्री० [स०√गुण्+इन्+क—टाप्] शरीर पर होनेवाली गाँठ या सूजन।

गुणित—भू० कृ० [स०√गुण् (आवृत्ति)+क्त] जिसका गुणन किया गया हो। गुणा किया हुआ।

गुणी (णिन्)—वि० [स० गुण+इनि] (व्यक्ति) जिसमे अनेक गुण हों। गुणो से युक्त।

पु० १ कला-कुशल पुरुष। हुनरमद। २ वह जिसमे विशेष या अलौकिक गुण या शक्ति हो। ३ झाड-फूंक करनेवाला ओझा।

गुणीभूत—वि० [स० गुण+च्वि√भू (होना)+क्त] १ मुख्य अर्थ से रहित। २ गौण बना हुआ।

गुणीभूत व्यंग्य—पु० [कर्म० स०] काव्य मे व्यग्य का वह भेद या प्रकार

जिसमे अर्थ या तो रसो आदि का अग होता है या काकु से आक्षिप्त या वाच्यार्थ का उपपादक होता है अथवा अर्थ अस्फुट रहता है। इसमे वाच्यार्थ ही प्रधान रहता है, व्यग्य नही।

गुणेश्वर—पु० [गुण-ईश्वर, ष० त०] १ तीनो गुणो पर प्रभुत्व रखनेवाला। परमेश्वर। ईश्वर। २ चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत—वि० [गुण-उपेत, तृ० त०] १ गुणो से युक्त। २ गुणवान्। गुणी।

गुण्य—पु० [स० गुण+यत्] १ वह सख्या जिसका गुणन करना हो अथवा किया जा सकता हो। २ गुणी।

गुण्याक—पु० [गुण्य-अक कर्म० स०] वह सख्या या राशि जिसे गुणा किया जाय।

गुतेला—पु० [?] एक प्रकार की मछली। बगू।

गुत्ता—पु० [देश०] १ लगान पर खेत जोतने-बोने आदि के लिए खेतिहर को देने का व्यवहार। २ लगान।

गुत्थ—पु० [हि० गुथना] १ हुक्के के नैचे पर लपेटे हुए सूत की वह बुनावट जो चटाई की बुनावट की तरह होती है। २ उक्त प्रकार की बुनावटवाला नैचा।

गुत्थम-गुत्था—पु० [हि० गुथना] १ दो जीवो, पशुओ या व्यक्तियो मे लडाई होते समय की वह स्थिति जिसमे वे एक दूसरे को कसकर दबाये अथवा पकडे होते है और नीचे गिराने या पटकने की चेष्टा करते है। २ उलझाव। फँसाव।

गुत्थी—स्त्री० [हि० गुथना] १ धागे, रस्सी आदि का उलझा हुआ रूप। २ किसी विषय, समस्या आदि का उलझा हुआ ऐसा रूप जिसका सहसा निराकरण न हो सके।

मुहा०—गुत्थी सुलझाना=कठिन समस्या की मीमासा करना। कठिनाइयो से बचने का मार्ग निकालना।

गुत्स—पु० [स० √गुध् (वेष्टित करना)+स, कित्] दे० 'गुच्छ'।

गुथना—अ० [स० गुत्सन, प्रा० गुत्थन] १ धागे, रस्सी आदि के अगो का आपस मे उलझ जाना। २ गूँथा या पिरोया जाना। ३ भद्दी तरह से सीया जाना। ४ लडते समय एक दूसरे को कसकर दबाना या पकडना। पु० गुलेल मे लगी हुई वह रस्सी जिसकी सहायता से ढेला फेका जाता है।

गुथवाना—स० [हि० गूँथना का प्रे०] गूथने का काम दूसरे से करवाना।

गुथुवाँ—वि० [हि० गुथना] १ उलझा हुआ। २ गूथा हुआ।

गुद—स्त्री० [स० √गुद् (खेलना)+क] मल-द्वार। गुदा।

गुदकार—वि०=गुदकारा।

गुदकारा—वि० [हि० गूदा वा गुदार] १ जिसमे गूदा हो। गूदे से भरा हुआ। २ मुलायम और लचीला। गुदगुदा।

गुद-कील—पु० [ष० त०] अर्श या बवासीर नाम का रोग।

गुदगर—वि०=गुदकारा।

गुद-गुदा—वि० [हि० गूदा] [स्त्री० गुदगुदी] १ (गूदेदार वस्तु) जो छूने पर मुलायम तथा भली प्रतीत हो। २ (ऐसी वस्तु) जिसमे कोई मुलायम चीज भरी हुई हो। ३ मासल।

गुदगुदाना—अ० [हि० गुदगुदा] १ किसी के कोमल या मासल अगो को उँगलियो से इस प्रकार खुजलाना या सहलाना कि वह हँसने लगे। गुदगुदी करना। २ विनोद या परिहास के लिए छेडना। ३ किसी के मन मे किसी बात की इच्छा या लालसा उत्पन्न करना।

गुदगुदाहट—स्त्री० [हि० गुदगुदाना+आहट (प्रत्य०)] १ गुदगुदाने की क्रिया या भाव। २ मन मे होनेवाली किसी बात की हलकी इच्छा। ३ दे० 'गुदगुदी'।

गुदगुदी—स्त्री० [हि० गुदगुदाना] १ किसी द्वारा गुदगुदाये जाने से शरीर मे होनेवाली हलकी खुजली या सुरसुरी। २ हलकी इच्छा या वासना। ३ उल्लास। ४ सभोग की इच्छा या कामना।

गुद-ग्रह—पु० [ष० त०] कोष्ठबद्धता का रोग।

गुदडिया—पु० [हि० गूदड] १ गुदडी पहनने या ओढनेवाला। २ गूदड या रद्दी चीजे खरीदकर बेचनेवाला व्यापारी। ३ खेमा, दरी, फर्श आदि चीजे किराये पर देनेवाला व्यापारी।

वि० गुदडी या गूदड सबधी।

गुदडी—स्त्री० [हि० गूथना=मोटी सिलाई करना] १ फटे-पुराने कपडो की कई तहो को एक मे सीकर बनाया हुआ ओढना या बिछावन। २ टूटी-फूटी तथा फटी-पुरानी वस्तुओ की सज्ञा। ३ वह स्थान जहाँ पर फटी-पुरानी तथा टूटी-फूटी वस्तुएँ मिलती हो।

पद—गुदडी बाजार=वह बाजार जिसमे पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुएँ बिकती हो। **गुदडी मे का लाल**=(क) तुच्छ स्थान मे छिपी या दबी हुई उत्तम वस्तु। (ख) ऐसा गुणी जिसके रूप-रग, वेष आदि से उसके गुणी होने का पता न चलता हो।

गुदनहारी—स्त्री०=गोदनहारी।

गुदना—अ० [हि० गोदना का अ०] गोदा जाना।

†पु० दे० 'गोदना'।

गुद-निर्गम—पु० [ष० त०] गुदा से काँच बाहर निकलने का रोग।

गुदनी—स्त्री० दे० 'गोदनी'।

गुद-पाक—पु० [ष० त०] गुदा के पक जाने का रोग।

गुद-भ्रंश—पु० [ष० त०] गुदा से काँच निकलने का रोग।

गुदमा—पु० [देश०] एक प्रकार का मोटा और मुलायम पहाडी कबल।

गुदर*—पु० [फा० गुजर] १ निर्वाह। २ निवदन। प्रार्थना। ३ निवेदन आदि के लिए किसी की सेवा मे होनेवाली उपस्थिति। हाजिरी।

गुदरना*—अ० [फा० गुजर+हि० ना० (प्रत्य०)] १ गुजरना। २ सेवा मे उपस्थित होना। ३ अलग रहना या होना।

स० दे० 'गुदरानना'।

गुदरानना—स० [फा० गुजर+हि० ना (प्रत्य०)] १ किसी के आगे रखना या पेश करना। २ निवेदन करना। ३ भेट करना।

गुदरिया—पु० [देश०] एक प्रकार का नीबू।

स्त्री०=गुदडी।

गुदरी—स्त्री०=गुदडी।

गुदरैन†—स्त्री० [हि० गुदरना] १ याद किये हुए पाठ को दोहराना या सुनाना। २ परीक्षा।

गुदवाना—स० [हि० गोदना] गोदने का काम दूसरे से कराना। गुदाना। जैसे—गोदना गुदवाना।

गुद-स्तंभ—पु० [ष० त०] पेट मे से मल का जल्दी न निकलना। मलावरोध। कब्जियत।

गुदांकुर—पु० [गुद-अंकुर, स० त०] १ गुदा मे निकलनेवाले बवासीर के दाने या मसे। २ बवासीर।

गुदा—स्त्री० [स० गुद] वह इंद्रिय जिससे प्राणी मल त्याग करते है। मलद्वार।

गुदाज—वि० [फा०] १ गदराया हुआ। गुदकारा। २ गूदेदार। ३ मास से भरा हुआ। मासल। मोटे दलवाला। ४ खूब चमकीला और तेज (रग)।

गुदाजरंग—पु० [फा०] चित्रकला मे, खूब चमकीला रंग।

गुदाना—स०=गुदवाना।

गुदाम—पु० दे० 'गोदाम'।

†पु० दे० 'बुताम' (बटन)।

गुदार†—वि० [हिं० गूदा] १ जिसमे अधिक गूदा हो। गूदेदार। २ मासल।

गुदारना*—स० [हिं० गुदरना का स० रूप] १ गुजारना। २ सेवा मे उपस्थित करना। ३ अलग करना। ४ छोड देना। ५ पढकर सुनाना।

गुदारा—पु० [फा० गुजारा] १ नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। २ वह स्थान जहाँ से लोग नाव पर सवार होते या उतरते है।

मुहा०—गुदारे लगना=(क) किनारे लगना। (ख) कार्य पूरा या समाप्त होना।

३ दे० 'गुजारा'।

वि०=गुदार।

गुदियारा†—वि०=गुदकारा।

गुदी—स्त्री० [देश०] नदी के किनारे का वह स्थान जहाँ टूटी-फूटी नावो की मरम्मत होती तथा नई नावे बनाई जाती हैं।

गुदुरी†—स्त्री० [हिं० गदराना] १ मटर की फली। २ मटर तथा चने की फसल मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।

गुदौष्ठ—पु० [गुद-ओष्ठ, ष० त०] गुदा के मुख पर का मास।

गुद्दा†—पु० [देश०] वृक्ष की मोटी डाली।

पु०=गूदा।

पु०=कुदा (लकडी का)।

गुद्दी†—स्त्री० [हिं० गूदा] १ किसी फल के बीज के भीतर का गूदा। गिरी। मगज। २ सिर का पिछला भाग।

मुहा०—आँखें गुद्दी मे होना या चला जाना=ऐसी मानसिक स्थिति होना जिसमे कोई चीज ठीक तरह से दिखाई न दे अथवा कोई बात समझ मे न आवे। (परिहास और व्यंग्य) **गुद्दी से जीभ खींचना**=(क) जबान खीचकर निकाल लेना। (ख) बहुत कडा दंड देना।

पद—गुद्दी की नागिन=गरदन के पीछे बालो की भौंरी जो बहुत अशुभ मानी जाती है।

३ हथेली पर का गुदगुदा मासल अश। गद्दी।

गुन*—पु० [स० गुण] १ गुण। २. ऐसा कार्य जिसे पूरा करने के लिए विशिष्ट गुण या योग्यता अपेक्षित हो। उदा०—काहू नर सो यह गुन होई।—जायसी।

गुनगुना—वि० [अनु०] (व्यक्ति) जो नाक से बोलता हो।

वि० कुनकुना (कदुष्ण)।

गुनगुनाना—अ० [अनु०] १ भौरो का गुन गुन शब्द करना। २ इस प्रकार बोलना कि कुछ स्वर नाक से भी निकले। ३ बहुत धीरे-धीरे और अस्पष्ट रूप मे गाना।

गुनधुन—स्त्री० [हिं० गुनना+धुन] सोच-विचार। चिंतन।

गुनना—अ० [स० गुणन्] १ गुणो आदि से युक्त होना। जैसे—पढना और गुनना। २ मन मे सोच-विचार करना। कुछ समझने के लिए सोचना। ३ किसी को कुछ महत्त्व का समझना। जैसे—वह तुम्हे गुनता है।

स० १. कथन या वर्णन करना। २. गुणा करना।

*पु० गुनी या विचारी हुई बात।

गुनमंत—वि० =गुणवंत।

गुनरखा—पु० =गोनरखा।

गुनवंत†—वि०=गुणवान्।

गुनवान—वि०=गुणवान्।

गुनह—पु० [फा०] 'गुनाह' का सक्षिप्त रूप। जैसे—गुनहगार।

गुनहगार—वि० [फा०] १ जिसने कोई गुनाह किया हो। पापी। २ अपराधी। ३. दोषी।

गुनहगारी—स्त्री० [फा०] गुनहगार होने की अवस्था या भाव।

गुनही†—पु०=गुनहगार।

वि० दे० 'गुनहगार'।

गुना—प्रत्य० [स० गुणन] १ एक प्रत्यय जो सख्यावाचक शब्दो के अंत मे यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि कोई परिमाण, मात्रा या सख्या निरतर कई बार जोडने पर कितनी होती है। जैसे—चौगुना, दस गुना आदि।

पु० गणित मे गुणन करने की क्रिया। गुणन।

†पु० [?] टिकिया के आकार का एक प्रकार का मीठा पकवान।

गुनावन†—पु० [स० गुणन] १ मन मे किसी बात पर सोच-विचार करने की क्रिया या भाव। उदा०—लखत भूप यह साज मनहिं मन करत गुनावन।—रत्ना०। २ आपस मे होनेवाला परामर्श। सलाह-मशविरा।

गुनाह—पु० [फा०] धर्म, विधि, शासन आदि की आज्ञा या मान्यता के विरुद्ध किया हुआ ऐसा आचरण जिसके कारण उसके कर्त्ता को दण्ड का भागी बनना पडता है। अपराध। पाप।

गुनाहगार—पु०=गुनहगार।

गुनाही—वि० [फा० गुनाह] अपराधी या दोषी। गुनहगार।

गुनिया—पु० [हिं० गुणी] वह जिसमे कोई विशिष्ट गुण हो। गुणवान्। गुणी।

स्त्री० [हिं० कोण] १ वह उपकरण या औजार जिससे बढई, राज आदि कोने की सीध नापते है। २ दे० 'कोनिया'।

†पु० [हिं० गून] नाव की गून खीचनेवाला मल्लाह। गुनरखा।

गुनियाला*—वि० [हिं० गुण] गुणोवाला। गुणी। उदा०—प्रीति अडी है तुज्झ से बहु गुनियाला कंत।—कबीर।

गुनी—वि०, पु०=गुणी।

वि० [स० गुण] जिसमे डोरी या रस्सी लगी हो। उदा०—बाँधे बाँधे मोहन गुनी सुनी न ऐसी प्रीति।—घनानंद।

गुनीला—वि० [हिं० गुणी] १ जिसमे गुण हो। गुणवान्। २ गुणन या गुणा करनेवाला। ३ अपने गुणो के द्वारा लाभ पहुँचाने या हित करनेवाला।

गुनोबर—पु० [फा० सनोबर] देवदार या सनोबर की जाति का पेड।

गुन्ना—पु० [अ० गुन्न] अनुस्वार का वह आधा उच्चारण जो हिंदी मे अर्द्ध चद्र से सूचित होता है। जैसे—रवाँ मे नून (अनुस्वार) गुन्ना है।

गुन्नी—स्त्री० [स० गुण, हिं० गून] रस्सी को बटकर बनाया हुआ एक प्रकार का कोडा जिससे व्रज मे होली के अवसर पर लोग एक दूसरे को मारते है।

गुपति—वि०=गुप्त।
स्त्री०=गुप्ति।

गुपचुप—क्रि० वि० [हिं० गुप्त+चुप] बिना किसी से कुछ कहे या बतलाए हुए।
पु० १ गुलाब जामुन की तरह की एक प्रकार की मिठाई। २ लडको का एक खेल जिसमे वे गाल या मुँह फुलाकर धीरे से उस पर मुक्का मारते है। ३ एक प्रकार का खिलौना।

गुपाल*—पु०=गोपाल।

गुपुत*—वि०=गुप्त।

गुप्त—वि० [स०√गुप् (छिपाना, रक्षा करना)+क्त] १ (कार्य या व्यवहार) जो दूसरो की जानकारी से छिपाकर किया जाय। जैसे—गुप्त दान, गुप्त मत्रणा। २ (गुण, वस्तु आदि) जिसके सबध मे लोग परिचित न हो। जैसे—गुप्त मार्ग। ३ जिसे जानना कठिन हो। गूढ। दुरूह। ४ जिसका पता ऊपर से देखने पर न चले। जैसे—गुप्त मार। ५ छिपाकर रखा हुआ। रक्षित।
पु० १ मगध का एक प्राचीन राजवश जिसने सारे उत्तरीय भारत मे अपना साम्राज्य स्थापित किया था। (ई० चौथी-पाँचवी शताब्दी) २ वैश्यो के नाम के साथ लगनेवाला अल्ल। जैसे—कृष्णदास गुप्त।

गुप्तक—वि० [स० गुप्त से] किसी चीज को छिपा तथा सँभालकर रखनेवाला रक्षक।

गुप्त-काशी—स्त्री० [कर्म० स०] हरिद्वार और बदरीनाथ के बीच मे पडनेवाला एक तीर्थ।

गुप्त-चर—पु० [कर्म० स०] १ प्राचीन भारत मे वह व्यक्ति जो गुप्त रूप से दूसरे राज्यो के भेद जानने के लिए इधर-उधर भेजा जाता था। २ जासूस। भेदिया।

गुप्त-दान—पु० [कर्म० स०] ऐसा दान जो अपना नाम, पता और दान की वस्तु का मूल्य, स्वरूप आदि बिना किसी पर प्रकट किये हुए दिया जाय।

गुप्ता—स्त्री० [स० गुप्त+टाप्] १ साहित्य मे, वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष से अपना सबध या सभोग छिपाने का प्रयत्न करती हो। २ रखी हुई स्त्री। रखेली।

गुप्ति—स्त्री० [स०√गुप्+क्तिन्] १ गुप्त रखने अर्थात् छिपाने की क्रिया या भाव। छिपाव। २ रक्षा करने या रक्षित रखने की क्रिया या भाव। ३ तत्र मे गुरु से मत्र लेने के समय का एक सस्कार जो मत्र को गुप्त रखने के उद्देश्य से किया जाता है। ४ कारागार। ५ गुफा। ६ योग का यम नामक अग।

गुप्ती—स्त्री० [स० गुप्त] १ कुछ अस्त्रो मे रहनेवाली वह व्यवस्था जिसमे आघात करनेवाली चीज किसी आवरण मे छिपी रहती है और खटका दबाने पर बाहर निकल आती है। २ वह छडी जिसके अदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार छिपी रहती है।

गुप्तीदार—वि० [हिं० गुप्ती+फा दार (प्रत्य०)] (अस्त्र) जो गुप्ती-वाली प्रक्रिया से बना हो। जैसे—गुप्तीदार कुलग, छडी या फरसा।

गुप्तोत्प्रेक्षा—स्त्री० [स० गुप्त-उत्प्रेक्षा, कर्म० स०] उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद जिसमे 'मानो' 'जानो' आदि सादृश्यवाचक शब्द नही होते। प्रतीय-माना उत्प्रेक्षा।

गुप्फा—पु० [स० गुम्फ] गुच्छा।

गुफा—स्त्री० [स० गुहा] जमीन अथवा पहाड के अदर का गहरा तथा अँधेरा गड्ढा। कदरा।

गुफ्त—वि० [फा०] कहा हुआ।
स्त्री० उक्ति। कथन।

गुफ्तगू—स्त्री० [फा०] दो पक्षो मे होनेवाली साधारण बातचीत। वार्ता-लाप।

गुफ्तार—स्त्री० [फा०] १ बात-चीत। २ बात-चीत करने का ढग।

गुबरैला—पु० [हिं० गोबर+ऐला (प्रत्य०)] सडे या सूखे हुए गोबर मे पडने या रहनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा।

गुबार—पु० [अ०] १ गर्द। धूल।
पद—गर्द-गुबार=हवा मे उडनेवाली धूल और मिट्टी।
२ मन मे रहनेवाला दुर्भाव या मैल।
मुहा०—(मन का) गुबार निकालना=अप्रिय तथा कटु बाते कहकर मन का क्रोध या दु ख कम करना।
३ आँखो की वह अवस्था जिसमे चीजें धुँधली दिखाई देती है।

गुबारा—पु० दे० 'गुब्बारा'।

गुबिंद—पु०=गोविन्द।

गुब्बा—पु० [देश०] रस्सी मे डाला हुआ फदा। (लश०)

गुब्बाड़ा—पु०=गुब्बारा।

गुब्बार—पु० १=गुबार। २ =अफशाँ।

गुब्बारा—पु० [हिं० कुप्पा] १ कागज आदि का बना हुआ वह गोलाकार उपकरण जिसके बीच मे जलता हुआ लत्ता बाँधने से उसके धूएँ के जोर से वह आकाश मे उडने लगता है। २ रबड की बनी हुई एक प्रकार की थैली जिसमे हवा से कोई हलकी गैस भरने से वह हवा मे उडने लगती है। ३ हवा से भरी हुई उक्त आकार की वह थैली जिसकी सहायता से सैनिक लोग हवाई जहाजो पर से जमीन पर उतरते है। छतरी। ४ गोले के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी जो ऊपर आकाश की ओर फेंकने पर फट जाती है।

गुभीला—पु० [हिं० गुह=मल] पेट के अदर का सूखा हुआ मल। गोटा। सुद्दा।

गुम—वि० [फा०] १ जो आँखो के सामने न हो। । छिपा हुआ। अप्रकट। गुप्त। २ जो भूल आदि के कारण हाथ से निकल गया हो और न मिल रहा हो। खोया हुआ। ३ जिसका पता न हो या न लगता हो। ४ जो ख्यात या प्रसिद्ध न हो। जैसे—गुमनाम।
पु० ऐसी वातावरणिक स्थिति जिसमे हवा न चल या न बह रही हो।
पु० [?] समुद्र की खाडी। (लश०)

गुमक—स्त्री०=गमक।

गुमकना—अ० [सं० गम] किसी स्थान मे शब्द का गूजना।
गुमका†—पु० [देश०] डठल या भूसी से दाना अलग करने का काम।
गुमची|—स्त्री०=घुँघची।
गुमजी—स्त्री०=गुमटी।
गुमटा—पु० [सं० गुबा+टा (प्रत्य०)] १ वह गोल सूजन जो माथे या सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमी। २ कोई अर्द्ध-गोलाकार उभार। ३ कपास के डोडे नष्ट करनेवाला एक प्रकार का कीडा।
गुमटी—स्त्री० [फा० गुबद] १ मकान के ऊपरी भाग मे सीढी की छत जो शेष भाग से अधिक ऊपर उठी हुई होती है। २ रेलवे लाइन के किनारे कही-कही बना हुआ वह छोटा गोलाकार और गुबद-नुमा कमरा जिसमे खलासी रहता है।
पु० जहाज या नाव मे का पानी बाहर फेकनेवाला खलासी या मल्लाह।
पु० [हिं० गुमटा का अल्पा० रूप] छोटा गुमटा।
गुमना|—अ० [फा० गुम] गुम हो जाना। खो जाना।
स० गुम करना। खो देना।
गुमनाम—वि० [फा०] १. जिसे या जिसका नाम कोई न जानता हो। अप्रसिद्ध। जैसे—गुमनाम आदमी या बस्ती। २ जिसमे किसी का नाम न लिखा हो। बिना नाम का। जैसे—गुमनाम पत्र, गुमनाम शिकायत।
गुमर—पु० [फा० गुबार] १ अभिमान। घमड। शेखी। २. मन मे छिपा हुआ दुर्भाव या द्वेष। गुबार।
गुमराह—वि० [फा०] [भाव० गुमराही] जो ठीक या सीधा रास्ता भूलकर इधर-उधर चला गया हो। भटका या भूला हुआ। पथ-भ्रष्ट।
गुमराही—स्त्री० [फा०] गुमराह होने की अवस्था या भाव। पथ-भ्रष्टता।
गुम-सुम—वि० [फा० गुम+अनु० सुम] १ जो कुछ भी बोल-चाल न रहा हो। २ जो बिलकुल हिल-डोल न रहा हो।
क्रि० वि० बिलकुल चुप-चाप और बिना किसी को जतलाये हुए।
गुमान—पु० [फा०] १ अनुमान। २ कल्पना। ३ अभिमान। घमड। ४ अनुमान या कल्पना के आधार पर किया जानेवाला सदेह। शक।
गुमाना†—स० [फा० गुम=खोया हुआ] १. गुम करना। खोना। २ हाथ से निकल जाने देना। गँवाना।
अ०=गुमना (गुम होना)।
गुमानी—वि० [हिं० गुमान] गुमान करनेवाला। अभिमानी। घमडी।
गुमावण—वि० [हिं० गुम] १ गुम करने या खोनेवाला। २ खराब या नष्ट करनेवाला। उदा०—काय कलाली छल कियो, सेज गुमावण रग।—कविराजा सूर्यमल।
गुमाश्ता—पु० [फा० गुमाश्त] वह जो किसी बडे व्यापारी या कोठीवाल की ओर से बहीखाता लिखने या माल खरीदने और बेचने का काम करता हो।
गुमाश्तागीरी—स्त्री० [फा०] गुमाश्ते का काम या पद।
गुमिटना†—अ० [सं० गुम्फित] लिपटना।
स० लपेटना।
गुम्मट—पु० १ =गुबद। २ =गुमटा।
गुम्मर†—पु०=गुमटा।
गुम्मा—पु० [देश०] बडी और मोटी ईंट।

वि० [हिं० गुम] बिलकुल गुम-सुम या चुप रहनेवाला। चुप्पा।
गुरँब—पु० -गुडबा। उदा०—औभा अम्रित गुरँब गरेठा।—जायसी।
गुरबा†—पु० दे० 'गुडबा'।
गुरभर*—पु० [हिं० गुडबा] मीठे आम का पेड।
गुर—पु० [सं० गुरुमत्र] १ वह अमोघ साधन या सूत्र जिससे कोई कठिन काम निश्चित रूप से चटपट तथा सरलता से सपन्न होता हो। २ बहुत अच्छी युक्ति।
|पु० [सं० गुण] तीन गुणो के आधार पर तीन की सख्या। (डिं०)
|पु०=गुरु।
पु०=गुड।
गुरखई†—स्त्री० [?] जमीन रेहन रखने का वह प्रकार जिसमे रेहनदार उसकी तीन चौथाई मालगुजारी देता है और एक चौथाई महाजन देता है।
गुरखाई|—स्त्री० = गुरखई।
गुरगा—पु० [सं० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १ गुरु का अनुगामी। चेला। शिष्य। २ टहलुआ। दास। सेवक। ३ अनुचर। ४ जासूस। भेदिया।
गुरगाबी—पु० [फा०] एक प्रकार का देशी जूता।
गुरच—स्त्री० =गुरुच।
गुरचना†—अ० [हिं० गुरुच] सिकुडकर गुरुच की बेल की तरह टेढा-मेढा होना और आपस मे उलझ जाना।
गुरचियाना—अ०=गुरचना।
गुरची†—स्त्री० [हिं० गुरुच] १ सिकुडन। बल। २ डोरे आदि के उलझने या फँसने से पडनेवाली गाँठ या गुत्थी।
गुरचो†—स्त्री० [अनु०] आपस मे धीरे-धीरे होनेवाली बात-चीत। काना-फूसी।
गुरज*—पु० [फा० गुर्ज] १ किसी भवन, मीनार आदि का ऊपरी गोलाकार भाग। गुबज। उदा०—सोभित सुबरन बरन मे उरज गुरज के रूप।—मतिराम। २ एक प्रकार की गदा। गुर्ज।
गुरजा—पु० [देश०] लवा या लोवा नामक पक्षी।
गुरझन*—स्त्री० [सं० अवरुधन, पु० हिं० उरझन] १ पेच की बात। उलझन। २ ग्रथि। गाँठ।
गुरझना|—अ०=उलझना।
गुरझाना|—स०=उलझाना।
गुरुथ—पु० [सं० गुरु+अर्थ] गभीर, बहुत बड़ा या महत्त्वपूर्ण अर्थ।
गुरदा—पु० [फा० गुर्द] १ रीढदार जीवो के पेट के अदर के वे दो अग जो खाये हुए पदार्थों से बननेवाला रक्त साफ करते है और बचे हुए तरल पदार्थ को पेशाब के रूप मे नीचे मूत्राशय मे भेजते हैं। (किडनी) २ साहस। हिम्मत। ३. एक प्रकार की छोटी तोप। ४ लोहे का एक प्रकार का बडा कलछा जिससे पकाते समय गुड चलाया जाता है।
गुरदाह†—पु०=गुरदा (छोटी तोप)।
गुरदिल—पु० [देश०] १. जलाशयो के किनारे रहने तथा मछलियाँ खानेवाला किलकिला की जाति का पक्षी। बदामी। २ कचनार।
गुरना†—अ०=घुलना। उदा०—गुरि गुरि आपु हेराई जौ मुएहु न छाँडै पास।—जायसी।

गुरनियालू—पु० [देश०] जमीकद, रतालू आदि की जाति का एक प्रकार का कद।

गुरबत—स्त्री० [अ०] १ विदेश का निवास। प्रवास। २ यात्रा-काल मे पथिक की दीन स्थिति। निस्सहाय होने की अवस्था। ३ उक्त अवस्था के फलस्वरूप होनेवाली मनुष्य की परवशता तथा विवशता।

गुरबरा—पु० [हि० गुड+बरा] [स्त्री० अल्पा० गुरबरी] १ गुड डालकर पकाया हुआ मीठा बडा। २ गुड के घोल मे डाला हुआ बडा।

गुरबिनी।—स्त्री० [स० गुर्विणी] १ गुरु-पत्नी। २ गर्भवती स्त्री।

गुरमुख—वि० [हि० गुरु+मुख] जिसने गुरु से मत्र लिया हो। दीक्षित।

गुरमुखी—स्त्री० [स० गुरु+मुख+हि० ई (प्रत्य०)] पजाब मे प्रचलित देवनागरी लिपि का वह रूप जिसे सिक्खो के पाँचवे गुरु अर्जुनदेव ने चलाया था।

गुरम्मर—पु० [हि० गुड+अब] १ गुड की तरह मीठे फलोवाला आम का पेड। २ दे० 'गुडबा'।

गुरल—पु० [?] भूरे रग की एक प्रकार की पहाडी बकरी जिसे कश्मीर मे रोम और असम मे छागल कहते है और जिसका मास बहुत स्वादिष्ट होता है।

गुरवनी—स्त्री०=गुर्विणी (गर्भवती)।

गुरवी*—वि० [स० गर्व] अभिमानी। घमडी।

गुरसल—पु० [देश०] किलहँटी या गिलगिलिया नामक पक्षी।

गुरसी†—स्त्री०=गोरसी।

गुरसुम—पु० [देश०] सोनारो की एक प्रकार की छेनी।

गुरहा—पु० [देश०] १ छोटी नावो के अदर की ओर दोनो सिरो पर जडे हुए तख्ते जिनमे से एक पर मल्लाह बैठता है और दूसरे पर सवारियाँ बैठती है। २ एक प्रकार की छोटी मछली।

गुराई†—स्त्री० [?] तोप लादने की गाडी।

स्त्री०=गोराई (गोरापन)। उदा०—साँवरे छैल छुओगे जु मोहि तो गोरे गात गुराई न रैहै।

गुराउ†—पु०=गोरापन।

गुराब—पु० [देश०] १ तोप लादने की गाडी। २ वह नाव जिसमे एक ही मस्तूल हो।

वि० [स० गुरु] १ बहुमूल्य। उदा०—सुनि सौमेस बधाइ दिय, है गै चोर गुराब।—चदवरदाई। २ बडा या भारी।

†पु०=गुराई।

पु० [हि० गुरिया] १ चारा काटने का काम। २ चारा काटने का गँडासा।

गुरायसु*—स्त्री० [स० गुरु+हि० आयसु] गुरुओ या बडे लोगो की आज्ञा या आदेश।

गुरिद†—पु० [फा० गुर्ज] गदा। (क्व०)

गुरिदा—पु० [फा० गोयदा] जासूस। भेदिया।

गुरि—स्त्री०=गुर (युक्ति)।

गुरिग*—स्त्री०=गोरी।

गुरिय*—स्त्री०=गोरी।

गुरिया—स्त्री० [स० गुटिका] १ धातु, लकडी, शीशे आदि का वह छोटा छेददार दाना जिसे माला मे पिरोते है। मनका। २ किसी वस्तु का छोटा अश। टुकडा। ३ मछली के मास का टुकडा।

स्त्री० [देश०] १ दरी बुनने के करघे की वह बडी लकडी जिसमे बैं का बाँस लगा रहता है। झिल्लन। २ पाटे या हेगे की वह रस्सी जो बैलो की गरदन के पास जूए के बीच मे बाँधी जाती है।

गुरिल्ला†—पु०=गोरिल्ला।

गुरीरा*—वि० [हि० गुड+ईरा (प्रत्य०)] १ जिसमे गुड की-सी मिठास हो। २ उत्तम। बढिया।

गुरु—वि० [स०√गृ (उपदेश देना)+कु] १ (वस्तु) जो तौल या भार मे अधिक हो। वजनी। जैसे—गुरु भार। २ अधिक लबाई-चौडाई या विस्तारवाला। ३ (शब्द या स्वर) जिसके उच्चारण या निर्वहण मे किसी नियत मान से दूना समय लगता हो। जैसे—गुरु अक्षर, गुरु मात्रा। ४ महत्त्वपूर्ण। जैसे—गुरु अर्थ। ५ बल, बुद्धि, वय, विद्या आदि मे बडा और फलत आदरणीय या वदनीय। जैसे—गुरु-जन। ६ कठिन। मुश्किल। जैसे—गुरु-कार्य। ७ कठिनता से अथवा देर मे पकने या पचनेवाला। जैसे—गुरु-पाक।

पु० [स्त्री० गुरुआनी] १ विद्या पढाने या कला आदि की शिक्षा देनेवाला आचार्य। शिक्षक। उस्ताद। २ यज्ञोपवीत कराने और गायत्री मत्र का उपदेश देनेवाला आचार्य। ३ देवताओ के आचार्य और शिक्षक बृहस्पति। ४ बृहस्पति नामक ग्रह। ५ पुष्य नक्षत्र जिसका अधिष्ठाता देवता बृहस्पति ग्रह है। ६ छदशास्त्र मे, दो कलाओ या मात्राओवाला अक्षर जिसका चिह्न ऽ है। जैसे—का, दा आदि। ७ सगीत मे, ताल का वह अश जिसमे एक दीर्घ या दो लघु मात्राएँ होती है और जिसका चिह्न ऽ है। ८ ब्रह्मा। ९ विष्णु। १० महेश। शिव। ११ परमेश्वर। १२ द्रोणाचार्य। १३ कोई पूज्य और बडा व्यक्ति। १४ कुछ हठयोगियो के अनुसार शरीर के अन्दर का एक चक्र या कमल जो अष्टकमल से भिन्न और अतिरिक्त है।

गुरुआइन†—स्त्री०=गुरुआनी।

गुरुआई—स्त्री० [स० गुरु+हि० आई (प्रत्य०)] १ गुरु का कार्य, धर्म या पद। २ चालाकी। धूर्त्तता।

गुरुआनी—स्त्री० [स० गुरु+आनी प्रत्य०] १ गुरु की पत्नी। २ विद्या सिखाने अथवा शिक्षा देनेवाली स्त्री। शिक्षिका।

गुरुइ—स्त्री०=गुर्वी (गर्भवती)।

वि०=गुरु (भारी)। उदा०—बिरह गुरुइ खप्पर कै हिया।—जायसी।

गुरु-कुडली—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे वह कुडली या चक्र जिसके द्वारा जन्म-नक्षत्र के अनुसार एक-एक वर्ष के अधिपति ग्रह का निरूपण होता है।

गुरु-कुल—पु० [ष० त०] १ गुरु का घराना या वश। २ गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का वह स्थान जहाँ वह विद्यार्थियो को अपने पास रखकर शिक्षा देता हो। ३ उक्त के अनुकरण पर बननेवाला एक आधुनिक विद्यापीठ जिसमे विद्यार्थियो को प्राचीन सास्कृतिक ढग से शिक्षा देने के सिवा उनसे ब्रह्मचर्य आदि का पालन कराया जाता है।

गुरु-गधर्व—पु० [कर्म० स०] इन्द्रजाल के छ भेदो मे से एक।

गुरु-गम—वि० [स०+हि०] १ गुरु के माध्यम से प्राप्त होनेवाला। जैसे—गुरु-गम ज्ञान। २ गुरु का बतलाया हुआ।

गुरु-गृह—पु० दे० 'गुरु-कुल' २ और ३ ।

गुरुघ्न—पु० [स० गुरु√हन् (हिंसा)+क] गुरु अथवा किसी गुरुजन को मार डालनेवाला व्यक्ति, अर्थात् बहुत बडा पापी।

गुरुच—स्त्री० [स० गुडूची] पेडो पर चढनेवाली एक प्रकार की मोटी लता जो बहुत कडवी होती ओर प्राय ज्वर आदि रोगो मे दी जाती है। गिलोय ।

गुरुच खाप—पु० [?] एक उपकरण या ओजार जिससे बढई लकडी छीलकर गोल करते है।

गुरुचान्द्री—वि० [स० गुरुचन्द्रीय] जो गुरु और चन्द्रमा के योग से होता हो। जैसे—गुरुचान्द्री योग।

गुरु-जन—पु० [कर्म० स०] माता, पिता, आचार्य आदि पूज्य और बडे लोग ।

गुरुडम—पु० [स० गुरु+अ० प्रत्य० डम] दूसरो पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए गुरु बनने का ढोंग रचना।

गुरु-तल्प—पु० [ष० त०] १ गुरु की शय्या। २ गुरु की पत्नी। ३ गुरु (पूज्य ओर बडी) की स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग जो बहुत बडा पाप माना गया हे।

गुरु-तल्पग—पु० [स० गुरुतल्प√गम् (जाना)+ड] गुरुतल्प नामक पाप करनेवाला व्यक्ति।

गुरुतल्पी (ल्पिन्)—पु० [गुरुतल्प+इनि]=गुरु-तल्पग।

गुरुता—स्त्री० [स० गुरु+तल्—टाप्] १ गुरु होने की अवस्था या भाव। २ भारीपन। ३ बडप्पन। महत्ता।

गुरु-ताल—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

गुरु-तोमर—पु० [कर्म० स०] तोमर छद का वह रूप जो उसके प्रत्येक चरण के अन्त मे दो मात्राएँ बढाने मे बनता है।

गुरुत्व—पु० [स० गुरु+त्व] १ गुरु होने की अवस्था या भाव। २ गुरु का कार्य या पद। ३ भारीपन। ४ बडप्पन। महत्त्व। ५ पृथ्वी की वह आकर्षण-शक्ति जो अधर मे के पदार्थों को अपनी ओर अर्थात् नीचे खीचती है। (ग्रैविटी)

गुरुत्व-केन्द्र—पु० [ष० त०] पदार्थ विज्ञान मे किसी पदार्थ के बीच का वह विन्दु जिस पर यदि उस पदार्थ का सारा विस्तार सिमट कर आ जाय तो भी उसके गुरुत्वाकर्षण मे कोई अन्तर न पडे। (सेन्टर ऑफ ग्रैविटी)

गुरुत्व-लम्ब—पु० [ष० त०] किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खीची जानेवाली रेखा।

गुरुत्वाकर्षण—पु० [स० गुरुत्व-आकर्षण ष० त०] भौतिक शास्त्र मे, वह शक्ति जिसके द्वारा कोई पिंड किसी दूसरे पिंड को अपनी ओर आकृष्ट करता है अथवा स्वय उसकी ओर आकृष्ट होता है। पिंडो की एक दूसरे को आकृष्ट करने की वृत्ति। (ग्रैविटेशन)

गुरु-दक्षिणा—स्त्री० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे सारी विद्या पढ चुकने के उपरान्त गुरु को दी जानेवाली उसकी दक्षिणा।

गुरु-दैवत—पु० [ब० स०] पुष्य नक्षत्र।

गुरुद्वारा—पु० [स० गुरु-द्वार] १ आचार्य या गुरु के रहने का स्थान। २ सिक्खो का वह पवित्र मन्दिर जहाँ लोग ग्रन्थसाहब का पाठ करने जाते हैं।

गुरु-पत्रक—पु० [ब० स०] राँगा या बग नामक धातु।

गुरु-पाक—वि० [ब० स०] (खाद्य पदार्थ) जो सहज मे न पकता या न पचता हो। कठिनता से अथवा देर मे पकने या पचनेवाला।

गुरु-पुष्य—पु० [मध्य० स०] बृहस्पति के दिन पुष्य नक्षत्र पडने का योग, जो शुभ कहा गया है।

गुरु-पूर्णिमा—स्त्री० [ष० त०] आषाढ की पूर्णिमा जिस दिन गुरु की पूजा करने का माहात्म्य है।

गुरु-बला—स्त्री० [ब० स०] सकीर्ण राग का एक भेद ।

गुरुबिनी—स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरुभ—पु० [ष० त०] १ पुष्य नक्षत्र। २ मीन राशि। ३ धनु राशि।

गुरुभाई—पु० [स० गुरु+हिं० भाई] दो या दो से अधिक ऐसे व्यक्ति जिन्होने एक ही गुरु से मत्र लिया या शिक्षा पाई हो। एक ही गुरु के शिष्य।

गुरु-मंत्र—पु० [मध्य० स०] १ वह मत्र जो गुरु के द्वारा शिष्य को दीक्षा देने के समय गुप्त रूप से बतलाया जाता है। २ कोई काम करने की सबसे बडी युक्ति जो किसी बहुत बडे अनुभवी ने बतलाई हो।

गुरु-मार—वि० [स० गुरु+हिं० मारना] १ अपने गुरु को दबाकर उसका स्थान स्वय लेनेवाला । (व्यक्ति) २ गुरु को भी दबा या परास्त कर सकनेवाला (उपाय या साधन)। जैसे—गुरु मार विद्या।

गुरु-मुख—वि० [ब० स०] जिसने धार्मिक दृष्टि से किसी गुरु से मत्र लिया या सीखा हो।

गुरुमुखी—स्त्री०=गुरमुखी (लिपि)।

गुरु-रत्न—पु० [कर्म० स०] १ पुष्पराग या पुखराज नामक रत्न। २ गोमेद नामक रत्न।

गुरु-वर—पु० [स० त०] १ बृहस्पति। २ गुरुओ मे श्रेष्ठ व्यक्ति।

गुरु-वार—पु० [ष० त०] सप्ताह का पाँचवाँ दिन जो बुधवार के बाद और शुक्रवार से पहले पडता है। बृहस्पतिवार।

गुरु-वासर—पु० [ष० त०]=गुरुवार।

गुरुवासी (सिन्)—पु० [गुरुवास, स० त०, +इनि] गुरु के घर मे रहकर शिक्षा प्राप्त करनेवाला शिष्य। अतेवासी।

गुरुशिखरी (रिन्)—पु० [मध्य० स०, +इनि] हिमालय, जिसकी चोटी सब पहाडो की चोटियो मे ऊँची है।

गुरु-सिंह—पु० [ब० स०] एक पर्व जो उस समय लगता है जब बृहस्पति ग्रह सिंह राशि पर आता है।

गुरू—पु० [स० गुरु] १ गुरु। आचार्य। २ बहुत बडा धूर्त्त। चालाक।

गुरू घटाल—पु० [हिं० गुरु+घटा] बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

गुरेट—पु० [हिं० गुर, गुड+बेट] एक प्रकार का बेलन जिससे कडाहे मे पकाया जानेवाला ईख का रस चलाया जाता है।

गुरेर—स्त्री० [हिं० गुरेरना]। गुरेरने की क्रिया, ढग या भाव। †स्त्री०=गुलेल।

गुरेरना†—स० [स० गुरु=बडा+हेरना=ताकना] आँखे फाडकर और क्रोधपूर्वक किसी की ओर देखना। घूरना।

गुरेरा—पु० [हिं० गुरेरना] १. किसी को गुरेरने या क्रोधपूर्वक देखने की क्रिया या भाव।

पद—गुरेरा-गुरेरी=एक दूसरे को क्रोधपूर्वक देखना।

२. आमना-सामना । देखा-देखी।

गुर्ज—पु० [फा०] १ गदा नामक पुराना शस्त्र। २ मोटा डडा या सोटा।
†पु०=बुर्ज।

गुर्ज-बरदार—पु० [फा०] गदाधारी सैनिक।

गुर्जमार†—पु० [फा० गुर्ज+हिं० मार] १ हाथ मे लोहे की गदा लेकर चलनेवाले मुसलमान फकीरो का एक सप्रदाय। २ उक्त सप्रदाय का फकीर।

गुर्जर—पु० [स० गुरु√ जृ(जीर्ण होना)+णिच्+अण्] [स्त्री० गुर्जरी]। १ गुजरात देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ उक्त देश मे रहने वाली एक प्राचीन जाति जो अब गूजर कहलाती है।

गुर्जराट—पु० [स० गुर्जर-राष्ट्र] गुजरात देश।

गुर्जरी—स्त्री० [स० गुर्जर+ङीष्] १ गुजरात देश की स्त्री। २ गुर्जर या गूजर जाति की स्त्री। ३ एक रागिनी जो भैरव राग की भार्या कही गई है। गूजरी।

गुर्जी—पु० [?] १ एक प्रकार का कुत्ता।
†स्त्री० १.= बुर्जी। २ = झोपडी।

गुर्द—पु० [फा०] गुर्दिस्तान का निवासी।

गुर्दा†—पु० = गुरदा।

गुर्दिस्तान—पु० [फा०] फारस के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश। आज-कल का कुर्दिस्तान।

गुर्र—वि०, पु० १ =गुर्रा। २ =गर्रा।
स्त्री०=गुर्राहट।

गुर्रा—पु० [अ० गुर्र] १ मुहर्रम महीने की द्वितीया का चाँद। २ छुट्टी का दिन। ३ काम के बीच मे पडनेवाला नागा। ४ अनशन। उपवास। ५ टाल-मटोल। हीला-हवाला।
क्रि० प्र०—बताना।
पु० वि०, लाल और सफेद मिला हुआ।
पु० दे० 'गर्रा'।

गुर्राना—अ० [अनु०] १ गुर्र गुर्र शब्द करना। जैसे—कुत्ते का गुर्राना। २ क्रोध मे आकर कर्कश स्वर मे बोलना। जैसे—आपस मे एक दूसरे पर गुर्राना।

गुर्राहट—स्त्री० [हिं० गुर्राना] गुर्राने की क्रिया या भाव ।

गुर्री—स्त्री० [देश०] भुने हुए जौ।

गुर्वादित्य—पु० [स० गुरु-आदित्य, ब० स०] गुरु अर्थात् बृहस्पति और आदित्य अर्थात् सूर्य का एक साथ एक ही राशि मे होनेवाला गमन। इसे एक प्रकार का योग माना गया है।

गुर्विणी—स्त्री० [स० गुरु+इनि–ङीष्] १ गर्भवती स्त्री। २ गुरु की स्त्री । गुरु-पत्नी।

गुर्वी—स्त्री० [स० गुरु+ङीष्] =गुर्विणी।

गुलच—पु० [स० गुड√अञ्च् (गति)+अण्, शक० पररूप] एक प्रकार का कद।

गुलचा†—पु० = गुरुच।

गुलदाज—पु० = गोलदाज।

गुल— पु० [फा०] १ गुलाब। जैसे—गुलकद, गुलरोगन आदि। २. पुष्प। फूल। जैसे—गुलमेहदी।
मुहा०—गुल कतरना=कोई अनोखा या विलक्षण काम करना या बात कहना। (परिहास और व्यग्य)। **गुल खिलना**=किसी प्रसग मे कोई नई, मजेदार या विलक्षण घटना होना। **गुल खिलाना**=नई, मजेदार या विलक्षण घटना घटित करना।
३ वह गड्ढा जो हँसने के समय कुछ लोगो के गालो मे पडता है और सौदर्यवर्धक माना जाता है। ४ पशुओ के शरीर पर होनेवाला फूल के आकार का रग या गोल दाग। जैसे—कुत्ते या चीते पर का गुल। ५ गरम लोहे से दागकर शरीर पर बनाया जानेवाला उक्त प्रकार का चिह्न या दाग।
मुहा०—गुल खाना=किसी चीज से अपना शरीर उक्त प्रकार से जलाना या दागना जिसमे शरीर पर उस चीज का दाग या निशान बन जाय। जैसे—प्रियतमा की अँगूठी या छल्ले से अपनी छाती या हाथ पर गुल खाना। (उर्दू कविताओ मे प्रयुक्त)
६ दीए की बत्ती का वह अश जो बिलकुल जल जाने पर छोटे से फूल का आकार धारण कर लेता है।
मुहा०—(चिराग) गुल-करना=(चिराग) बुझाना या ठढा करना।
७ जलता हुआ कोयला। अगारा। ८ चिलम पर रखकर पीये जाने-वाले तमाकू का वह रूप जो उसे बिलकुल जल जाने पर प्राप्त होता है। जट्ठा। ९ जूते के तल्ले मे एडी के नीचे पडनेवाला अश जो प्राय पान के आकार का होता है। १० कारचोबी की बनी हुई फूल के आकार की बडी टिकुली जो स्त्रियाँ सुन्दरता के लिए कनपटी पर लगाती है। ११ चूने की वह बडी गोलाकार बिंदी जो सिर मे दर्द होने पर कनपटियो पर लगाते है। १२ कनपटी। १३ एक रग की चीज पर दूसरे रग का बना हुआ कोई गोल निशान। १४ आँख का डेला। (क्व०) १५ एक प्रकार का रगीन या चलता गाना। १६ गोबर मे कोयले का चूरा मिलाकर बनाया हुआ वह गोला जो अगीठियो मे जलाने के लिए बनाया जाता है। १७ युवती और सुदर स्त्री। (बाजारू)
पु० [अ० गुल] शोर। हल्ला। जैसे—लडको का गुल मचाना।
पु० [देश०] १ हलवाई का भट्ठा। २ खेतो मे पानी ले जाने की नाली।

गुल-अजायब—पु० [फा० गुल+अ० अजायब=अजीब का बहु०] १ एक प्रकार का फूलदार पौधा। २ इस पौधे का फूल।

गुल-अब्बास—पु० [फा० गुल+अ० अब्बास] १ एक प्रकार का बरसाती पौधा। २ इस पौधे का पीले या लाल रग का फूल।

गुल-अब्बासी—वि० [फा० गुल+अ० अब्बास+ई (प्रत्य०)] गुल-अब्बास के रग का।
पु० एक प्रकार का रग जो हलका कालापन लिये हुए पीला या लाल होता है।

गुल-अशर्फी—पु० [फा०] १ एक प्रकार का पौधा। २ इस पौध का फूल जो पीला होता है।

गुलउर†—पु०=गुलौर।

गुल-औरग—पु० [फा०] एक प्रकार का गेदा और उसका फूल।

गुलकद—पु० [फा०] चीनी या मिसरी मे मिलाकर और धूप अथवा चाँदनी मे रखकर पकाई हुई गुलाब की पत्तियाँ जो प्राय रेचक होती है और औषध के रूप मे खाई जाती है।

गुलकट—पु० [फा० गुल+हिं० काटना] कपडे पर बेल-बूटे छापने-का एक प्रकार का ठप्पा। (छीपी)

गुलकार—पु० [फा०] [भाव० गुलकारी] बेल-बूटे, फूल आदि बनाने-वाला कारीगर।

गुलकारी—स्त्री० [फा०] तरह-तरह के बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ बनाने का काम। २ किसी चीज पर बनाये हुए बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ।

गुल-केश—पु० [फा० गुल+केश] १ मुर्गकेश नामक पोधा। कलगा। २ उक्त पौधे का फूल।

गुलखैरू—पु० [फा० गुल+खैरू] १ एक प्रकार का पोधा। २ इस पोधे का फूल जो नीले रग का होता है।

गुलगचिया—स्त्री० दे० 'गिलगिलिया'।

गुलगपाडा—पु० [अ० गुल+हि० गप्प] बहुत से लोगो का एक साथ बोलने तथा हँसने से होनेवाला शब्द। शोर-गुल। हो-हल्ला।

गुलगीर—पु० [फा०] वह कैंची जिससे दीए आदि की वत्ती का गुल काटा जाता है। गुल काटने की कैंची।

गुलगुल—वि० = गुलगुला।

गुलगुला—वि० [अनु०] [स्त्री० गुलगुली] कोमल। नरम। मुलायम।
पु० १ गोली के आकार का एक प्रकार का पकवान। २ कनपटी।
†पु० [?] ऊसर मे होनेवाली एक प्रकार की घास।

गुलगुलाना†—स० [हि० गुलगुल] किसी कडी और गूदेदार चीज को दबा-दबाकर मुलायम करना।
अ० नरम या मुलायम पडना। पिचपिचा होना।

गुलगुलिया—पु० [?] मदारी, विशेषत बदर नचानेवाला मदारी।

गुलगुली—स्त्री० [देश०] पहाडी झरनो मे रहनेवाली एक प्रकार की काँटेदार बडी मछली।

गुलगोथना—वि० =गल-गुथना

गुलचना†—स० [हि० गुलचा] गुलचा मारना। हलकी, चपत लगाना।

गुलचमन—पु० [फा०] फूलो का बाग।

गुलचला—पु० [हि० गोला+चलाना] तोप का गोला चलानेवाला। तोपची।

गुलचाँदनी—स्त्री० [फा० गुल+हि० चाँदनी] १ एक प्रकार का पौधा जिसमे फूल लगते है। २ इस पौधे का सफेद फूल जो प्राय रात के समय खिलता है।

गुलचा—पु० [हि० गाल] १ प्रेमपूर्वक किसी के गाल पर लगाई जानेवाली हलकी चपत। २ कोई छोटी, गोल मुलायम चीज।

गुलचाना†*—स० [हि० गुलचा+ना] १ हलकी चपत लगाना। २ आघात करना।

गुलचिआना—स० =गुलचाना।

गुलची—स्त्री० [?] लकडी मे गलता बनाने का बढइयो का एक औजार।

गुलचीन—पु० [?] १ एक प्रकार का बडा वृक्ष जो बारहो महीने फूलता है। २ उक्त वृक्ष का फल जो अन्दर की ओर पीला और बाहर सफेद होता है।

गुल-छर्रा—पु० [हि० गोली+छर्रा] अनुचित रूप से तथा खूब खुलकर किया जानेवाला आनन्द-मगल या भोग-विलास।
क्रि० प्र०—उडाना।

गुलजलील—पु० [फा०] असबर्ग का फूल जिससे रेशम रँगा जाता है।

गुलजार—पु० [फा०] बाग। वाटिका।
वि० १ हरा-भरा। २ सब तरह से भरा-पूरा और सुन्दर। आनद और शोभा से युक्त। जैसे—घर गुलजार होना। ३ जिसमे खूब चहल-पहल और रोनक हो। जैसे—गुलजार शहर।

गुलझटी—स्त्री० [हि० गोल+झट=जमाव] १ तागो आदि के उलझने से पडनेवाली गाँठ। २ मन मे रहनेवाला द्वेष या वैर-भाव। मन की गाँठ। ३ कपडे मे की सिकुडन। सिलवट।

गुलझडी—स्त्री० = गुलझटी।

गुलझरी—स्त्री० =गुलझटी।

गुलतराश—पु० [फा०] १ वह जो कपडे, कागज आदि के टुकडे काटकर उनके फूल बनाता हो। २ वह माली जो पौधे आदि को काट-छाटकर उन्हे गमले, घोडे, हाथी आदि की आकृतियो मे लाता हो। ३ वह नोकर जो दीपको के गुल काटने का काम करता हो। ४ दीए की वत्ती पर का गुल काटने की कैंची। गुलगीर। ५ बढइयो, सगतराशो आदि का वह औजार जिससे लकडी, पत्थर आदि पर बेल-बूटे या फूल-पत्तिया बनाते हे।

गुलता—पु० [हि० गोल] मिट्टी की वह छोटी गोली जो गुलेल मे रखकर चलाई या छोडी जाती हे।

गुलतुर्रा—पु० [फा०] कलगा नाम के पौधे का फूल जो गहरे लाल रग का होता हे। मुर्गकेश। जटाधारी।

गुलथी—स्त्री० =गुलथी।

गुलथी—स्त्री० [हि० गोल+स० अस्थि] १ किसी गाढी चीज की जमी हुई गाँठ या गुठली। २ माँस की जमी हुई गाठ। गिल्टी। ३ दे० 'गुत्थी'।

गुलदस्ता—पु० [फा० गुलदस्त] १ कई प्रकार के फूलो तथा पत्तिया का विशेष क्रम से सजाकर बाँधा हुआ गुच्छा। २ लाक्षणिक अर्थ मे उत्कृष्ट तथा चुनी हुई वस्तुओ का सग्रह या समूह। ३ दे० 'गुलदान'।'

गुल-दाउदी—स्त्री० =गुलदावदी।

गुलदान—पु० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र। फूलदान।

गुलदाना—पु० [फा०] बुदिया नाम की मिठाई जिसके लड्डू भी बनते है।

गुलदार—वि० [फा०] १ (पौधा या वृक्ष) जिसमे फूल लगे हो। २ (कपडा, कागज, पत्थर आदि) जिस पर फूल काढे, लिखे या गोदे हुए हो।
पु० १ वह जानवर जिसके शरीर पर फूल के गोल चिह्न हो। २ एक प्रकार का कसीदा।

गुल-दावदी—स्त्री० [फा० गुल+दाऊदी] एक पौधा और उसके फूल जो गुच्छो मे लगते है।

गुल दुपहरिया—स्त्री० [फा० गुल+हि० दुपहरिया] १ एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का सुगधित फूल जो गहरे लाल रग का होता हे।

गुलदुम—स्त्री० [फा०] बुलबुल।

गुलनरगिस—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की लता।

गुलनार—पु० [फा०] १ अनार का फूल। २ एक प्रकार का अनार जिसमे सुन्दर फूल ही होते है फल नही लगते। ३ एक प्रकार का गहरा लाल रग जो अनार के फूल की तरह का होता हे।

गुलपपड़ी—स्त्री० [फा० गुल+हि० पपडी] सोहन हलुए की तरह की एक प्रकार की मिठाई।

गुलफानूस—पु० [फा०] एक प्रकार का बडा वृक्ष जो शोभा के लिए बगीचो मे लगाया जाता है।

गुल-फाम—वि० [फा०] फूलो के समान रगवाला, अर्थात् परम सुदर।

गुलफिरकी—स्त्री० [फा० गुल+हि० फिरकी] १ एक प्रकार का बडा पौधा जिसमे गुलाबी रग के फूल लगते है। २ उक्त पौधे के फूल।

गुलफुँदना—पु० [हि० गोल+फुँदना] एक प्रकार की घास।

गुलबकावली—स्त्री० [फा० गुल+स० बकावली] १ हल्दी की जाति का एक पौधा जो प्राय दलदलो या नम जमीन मे होता है। २ इस पौधे का लबोतरा फूल जो कई रगो का और बहुत सुगधित होता है। (यह आँखो के रोगो मे उपकारी माना जाता है।)

गुलबक्सर—पु० [फा० गुल+देश० बक्सर] ताश के पत्तो मे खेले जानेवाले नकश नामक खेल की एक बाजी।

गुल-बदन—वि० [फा०] जिसके शरीर की रगत फूल के समान सुदर हो। पु० एक प्रकार का बहुमूल्य रेशमी धारीदार कपडा।

गुलबादला—पु० [फा०] एक प्रकार का पेड जिसके रेशो को बटकर रस्से बनाये जाते है। ऊदल।

गुलबूटा—पु० [फा० गुल+हि० बूटा] (किसी चीज पर) खोदे, छापे, बनाये या लिखे हुए फूल, पत्ते, पौधे आदि।

गुलबेल—स्त्री० [फा० गुल+हि० बेल] एक प्रकार की लता।

गुलमा—पु० [स० गुल्म] [स्त्री० गुलमी] १ चोट लगने के कारण होनेवाली गोल कडी सूजन। २ कीमा भरकर पकाई हुई बकरी की आँत। दुलमा।

†पु० = गुलाम।

गुलमेहदी—स्त्री० [फा० गुल+हि० मेहदी] १ एक प्रकार का छोटा पौधा जिसके तने मे कई रगो के फूल लगते है। २ उक्त पौधे के फूल।

गुलमेख—स्त्री० [फा०] वह कील जिसका ऊपरी सिरा फूल के आकार का गोल और चौडा होता है। फुलिया।

गुलरेज—पु० [फा०] आतिशबाजी मे, वह अनार या फुलझडी जिससे कई प्रकार के फूल झडते है।

गुलरोगन—पु० [फा०+अ०] गुलाब की पत्तियो के योग से बनाया हुआ तेल।

गुललाला—पु० [फा०] १ पोस्ते के पौधे की तरह का एक पौधा। २ इस पौधे का फूल जो गहरे लाल रग का और बहुत सुन्दर होता है।

गुलशकरी—स्त्री० [फा०] १ चीनी और गुलाब के फूल के योग से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। २ दे० 'गँगेरन' (पक्षी)।

गुलशन—पु० [फा०] वह छोटा बगीचा जिसमे अनेक प्रकार के फूल खिले हो। फुलवारी।

गुलशब्बो—पु० [फा०] १ लहसुन से मिलता-जुलता एक प्रकार का छोटा पौधा। २ इस पौधे के सफेद रग के सुगधित फूल जो प्राय रात के समय खिलते है। रजनीगधा। सुगधराज। ३ रात के समय अँधेरे मे खेला जानेवाला एक खेल जिसमे एक दूसरे को चपत लगाते है।

गुलसुम—पु० [फा० गुल+हि० सुमन] सुनारो का एक औजार जिससे वे गहनो पर बेल-बूटे आदि बनाते है।

गुलसौसन—पु० [फा०] १ एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का फूल जो हलके आसमानी रग का होता है।

गुलहजारा—पु० [फा०] एक प्रकार का गुललाला (पौधा और फूल)।

गुलहथी†—स्त्री०=गुलथी।

गुलाब—पु० [फा०] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध कँटीला पौधा जो कभी-कभी लता के रूप मे भी होता है। इसके सुगधित फूल गुलाबी, लाल, पीले, सफेद आदि अनेक रगो के होते है। २ इस पौधे या लता का फूल जो अनेक रगो का, बहुत सुन्दर और बहुत सुगधित होता है। ३ गुलाब-जल।

मुहा०—गुलाब छिड़कना=गुलाब-जल छिडकना।

गुलाब-चश्म—पु० [फा०] एक प्रकार की चिडिया जिसके पैर लाल, चोच काली और बाकी शरीर खैरे रग का होता है।

गुलाब-छिडकाई—स्त्री० [फा० गुलाब+हि० छिडकना] १ विवाह की एक रीति जिसमे वर पक्ष और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे पर गुलाब-जल छिडकते है। २ उक्त रीति के समय मिलनेवाला नेग।

गुलाबजम—पु० [?] एक प्रकार की झाडी जिसकी पत्तियो से एक प्रकार का भूरा रग निकलता है। सोना-फूल।

गुलाब-जल—पु० [फा०+स०] गुलाब के फूलो का भभके से उतारा हुआ सुगधित अरक।

गुलाबजामुन—पु० [फा० गुलाब+हि० जामुन] १ घी मे तली हुई तथा शीरे मे भिगोई हुई खोये की एक प्रसिद्ध मिठाई। २ एक प्रकार का फलदार वृक्ष। ३ उक्त वृक्ष का फल जो बहुत स्वादिष्ट होता है।

गुलाब-तालू—पु० [फा० गुलाब+तालू] वह हाथी, जिसके तालू का रग गुलाबी हो। (ऐसा हाथी बहुत अच्छा समझा जाता है।)

गुलाबपाश—पु० [फा०] झारी के आकार का एक प्रकार का लम्बा पात्र जिसमे गुलाब-जल आदि भरकर शुभ अवसरो पर लोगो पर छिडकते है।

गुलाबपाशी—स्त्री० [फा०] गुलाब-जल छिडकने की क्रिया या भाव।

गुलाब-बाडी—स्त्री० [फा० गुलाब+हि० बाडी] आनद-मगल का वह उत्सव जिसमे आस-पास के स्थान और चीजे गुलाब के फूलो से सजाई गई हो।

गुलाबाँस—पु० =गुल-अब्बास।

गुलाबा—पु० [फा० गुलाब] एक प्रकार का बरतन।

गुलाबी—वि० [फा०] १ गुलाब-सबधी। गुलाब का। २ गुलाब के रग का। ३ गुलाब के फूल की तरह का। ४ गुलाब अथवा गुलाब-जल से सुगधित किया हुआ। ५ बहुत थोडा या हलका। जैसे—गुलाबी नशा, गुलाबी सरदी।

पु० गुलाब के फूल की तरह का रग। (रोज)

स्त्री० १ शराब पीने की प्याली। २ गुलाब की पखडियो से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। ३ एक प्रकार की मैना जो ऋतु-भेद के अनुसार अपना रग बदलती है।

गुलाम—पु० [अ०] १ मोल लिया या खरीदा हुआ नौकर। दास। २ बहुत ही तुच्छ सेवाएँ करनेवाला नोकर। ३ ताश का वह पत्ता जिस पर गुलाम की आकृति बनी रहती है। ४ गजीफे के पत्तो मे, एक प्रकार का रग।

गुलाम-गर्दिश—स्त्री० [अ०+फा०] १ वह छोटी दीवार जो जनानखाने मे अन्दर की ओर सदर दरवाजे के ठीक सामने अथवा ओट या परदे के लिए बनाई जाती है। २ किसी बडी कोठी के आस-पास बने हुए वे

छोटे मकान जिनमे नोकर-चाकर रहते है।

गुलाम-चोर—पु० [अ०+हि०] एक प्रकार का ताश का खेल।

गुलाम-जादा—पु० [अ०+फा०] गुलाम या दास की सन्तान।

गुलाम-माल—पु० [अ०] १ सस्ती या हल्के दरजे की वह चीज जो बहुत दिनो तक काम देती हो। जैसे—मोटा कबल या दरी। २ बहुत थोडे दाम पर खरीदी हुई बढिया चीज।

गुलामी—स्त्री० [अ० गुलाम+ई (प्रत्य०)] १ गुलाम होने की अवस्था या भाव। दासता। २ बहुत ही तुच्छ सेवाएँ। चाकरी। ३ परतत्रता। पराधीनता।

वि० गुलाम-सम्बन्धी। गुलाम या उसकी तरह का। जैसे—गुलामी आदत।

गुलाल—पु० [फा० गुल्लाला] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे होली के दिनो मे हिंदू एक दूसरे पर छिडकते है।

गुलाला—पु० [हि० गुल्ली] महुए के बीज की गिरी या मीगी।

वि० गुली या महुए के बीज से निकाला हुआ।

पु० दे० 'गुल्लाला'।

गुलाली—स्त्री० [हि० गुलाल+ई० (प्रत्य०)] चित्रकारी मे काम आनेवाला गहरे लाल रग का एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी। किरमिजी। (कारमाइन)

गुलिका—स्त्री० [स० गुड+ठन्—इक—टाप्, 'ड' को 'ल'] १ खेलने का छोटा गेद। २ गोली। ३ गुल्ली।

गुलियाना†—स० [स० गिल=निगलना] बाँस आदि के चोगे मे भरकर पशुओ को ओषधि आदि पिलाना। ढरका देना।

स० [हि० गोल] गोले या गोली के रूप मे बनाना या लाना।

गुलिस्ताँ—पु० [फा०] फूलो का बाग। फुलवारी। बाग।

गुली†—स्त्री०=गुल्ली।

गुलुफ†—पु०=गुल्फ।

गुलू—पु० [देश०] १ एक प्रकार का जगली बडा पेड जिसका गोद कतीरा कहलाता है। २ एक प्रकार का बटेर।

स्त्री० एक प्रकार की मछली।

पु० [फा०] १ गरदन। गला। २ कठ-स्वर।

गुलूबंद—पु० [फा०] १ लबी पट्टी के आकार का बना हुआ वह कपडा जो जाडे से बचने के लिए गले मे, कानो तथा सिर पर लपेटा जाता है। २ गले मे पहनने का एक गहना जो लबी पट्टी के आकार का होता है।

गुलूला—पु०=गुलेला।

गुलेंदा—पु० [हि० गोल] महुए का पका हुआ फल। कोलेदा।

गुले—पु० [देश०] उत्तरी भारत का एक प्रकार का छोटा पेड।

गुलेटन—पु० [हि० गोल] सिकलीगरो का मसाला रगडने का छोटा गोल पत्थर।

गुलेनार—पु०=गुलनार (अनार का फूल)।

गुले राना—पु० [फा० गुल+अ० रअन.] १. एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे का सुन्दर फूल जो अन्दर की ओर लाल और बाहर पीला होता है।

गुलेल—स्त्री० [फा० गिलूल] एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जिसमे लगी हुई डोरी की सहायता से मिट्टी की छोटी गोलियाँ दूर तक फेंकी जाती है और जिससे छोटी चिडियाँ आदि मारी जाती हे।

† पु०=गुरुच।

गुलेलची—पु० [हि० गुलेल+ची (प्रत्य०)] वह जो गुलेल चलाने मे अभ्यस्त हो। गुलेल चलानेवाला शिकारी।

गुलेला—पु० [फा० गुलूला] १ मिट्टी की वह गोली जिसको गुलेल से फेककर चिडियो का शिकार किया जाता है। २ दे० 'गुलेल'।

गुलैदा—पु० =गुलेदा।

गुलोह—स्त्री० [फा० गिलोय] गुरुच।

गुलौर—पु० [स० गुल—गुड+हि० औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ रस पकाकर गुड बनाया जाता हो।*

गुलौरा†—पु० = गुलौर।

गुल्ग—पु० [देश०] जलाशयो के किनारे होनेवाली एक प्रकार की लता।

गुल्फ—पु० [स०√गल् (चुआना)+फक्, उन्व] एडी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—पु० [स०√गुड् (वेष्टित करना)+मक्, 'ड' को 'ल'] १ ऐसी वनस्पति जिसकी जड या नीचे का भाग गोल बडी गाँठ के रूप मे होता है और जिसमे से कोमल डठलोवाली अनेक शाखाएँ निकलती है। जैसे-ईख, बाँस आदि। २ पेट मे होनेवाला एक रोग जिसमे वायु के कारण गाँठ-सी पड जाती या गोला-सा बँध जाता है। ३. रोग के रूप मे शरीर के ऊपर बननेवाली किसी प्रकार की गाँठ। ४ प्राचीन भारत मे, सेना की वह टुकडी जिसमे ९ रथ, ९ हाथी, २७ घोडे और ४५ पैदल सैनिक होते थे। ५ किला। दुर्ग।

गुल्म-वात—पु० [ब० स०] तिल्ली या प्लीहा मे होनेवाला एक रोग।

गुल्म-शूल—पु० [ब० स०] पेट मे होनेवाली वह पीडा जो अन्दर गुल्म रोग होने के कारण होती है।

गुल्मी (ल्मिन्)—वि० [स० गुल्म+इनि] [स्त्री० गुल्मिनी] १ गुल्म या गाँठ के रूप मे होनेवाला। २ गुल्म रोग से पीडित।

स्त्री० [स० गुल्म+अच्—ङीष्] १ पेडो या पौधो का झुरमुट। झाडी। २ इलायची का पेड। ३ आँवले का पेड। ४ खेमा। तबू।

गुल्मोदर—पु० [स० गुल्म-उदर, मध्य० स०] दे० 'गुल्मवात'। (रोग)

गुल्लक—स्त्री०=गोलक।

गुल्लर†—पु० = गूलर।

गुल्ला—पु० [अ० गुल या हिन्दी हल्ला का अनु०] शोर। हल्ला। जैसे—हल्ला-गुल्ला।

†पु० [स० गुलिक] १ ईख आदि का कटा हुआ छोटा टुकडा। गँडेरी। २ कालीन, दरी आदि बुनने के करघो मे लगनेवाला बाँस का टुकडा। ३ लकडी का कोई बडा टुकडा। बडी गुल्ली। ४ रूई ओटने की चरखी मे लोहे का वह छड जो उसके खूँटे को इधर-उधर हिलने नही देता। ५. गोटा, पट्ठा, आदि बुननेवालो का एक प्रकार का मोटा डोरा।

पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पहाडी पेड जिसके हीर की लकडी सुगधित, हल्की और भूरे रग की होती है। इसे 'सराय' भी कहते है।

†पु० १ =गुलेला। २ रस-गुल्ला। (बँगला मिठाई)

गुल्लाला—पु० [फा० गुलेलाल] गुललाला नामक पौधा और उसका फूल।

वि० उक्त फूल की तरह का गहरा लाल।

पु० एक प्रकार का गहरा लाल रग। उदा०—जेहि चपक बरनी करै, गुल्लाला रग नैन।—बिहारी।

गुल्ली—स्त्री० [स० गुलिका=गुठली] १ धातु, लकडी आदि का कोई गोलाकार, छोटा लबोतरा टुकडा। जैसे—डडे के साथ खेलने की गुल्ली, छापेखाने मे फरमा कसने की गुल्ली, हथियारो पर का मोरचा खुरचने की गुल्ली। २ उक्त आकार और रूप मे ढाला हुआ धातु का टुकडा। पासा। जैसे—चाँदी या सोने की गुल्ली। ३ मक्के की वह बाल जिसके दाने झाड लिये गये हो। खुखडी। ४ केवडे का फूल जो गोलाकार लबा होता है। ५ ऊख या गन्ने के कटे हुए टुकडे। गँडेरी। ६ मधुमक्खी के छत्ते का वह भाग जिसमे शहद इकट्ठा होता है। ७ फल के अन्दर की गुठली।

क्रि० प्र०—बँधना।

मुहा०—गुल्ली बँधना=युवावस्था मे शरीर के अन्दर वीर्य का एकत्र होकर पुष्ट होना।

८ एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे 'गगा मैना' भी कहते है।

गुल्ली-डडा—पु० [हि०] १ हाथ भर लबा डडा और चार-छ अगुल गोल लबोतरी गुल्ली, जिससे बच्चे खेलते है। २ लडको का एक प्रसिद्ध खेल जिसमे काठ की उक्त गुल्ली डडे से मारकर दूर फेकी जाती है।

मुहा०—गुल्ली-डडा खेलना=खेल-कूद अथवा इधर-उधर के फालतू कामो मे समय नष्ट करना।

गुवा*—पु० दे० 'गुवाक'।

गुवाक—पु० [स०√गु (अव्यक्त शब्द करना)+आक, नि० सिद्धि] सुपारी, विशेषत चिकनी सुपारी।

गुवार†—पु० = ग्वाल।

गुवारपाठा—पु० =ग्वारपाठा।

गुवाल*—पु० =ग्वाल।

गुविंद*—पु० = गोविन्द।

गुष्टि—स्त्री०=गोष्ठी।

गुसल—पु० [अ० गुस्ल] नहाने की क्रिया। स्नान। सारे शरीर से नहाना।

गुसलखाना—पु० [अ० गुस्ल+फा० खान] नहाने-धोने का कमरा या कोठरी। स्नानागार।

गुसाँई—पु०=गोसाँई या गोस्वामी।

गुसा*—पु० = गुस्सा।

गुसैयाँ—पु० =गोसाई।

गुसैल—वि०=गुस्सैल।

गुस्ताख—वि० [फा०] [भाव० गुस्ताखी] (व्यक्ति) जो बडो की आज्ञा को शिरोधार्य न करता हो और उन्हे अनुचित रूप से तथा अशिष्टतापूर्वक उत्तर देता हो। उद्दड। बे-अदब।

गुस्ताखी—स्त्री० [फा०] १ गुस्ताख होने की अवस्था या भाव। धृष्टता। उद्दडता। २ उद्दण्डता का परिचायक कोई कार्य।

गुस्ल—पु० =गुसल।

गुस्लखाना—पु० =गुसलखाना।

गुस्सा—पु० [अ०] १. किसी के द्वारा कोई अनुचित कार्य, विरोध या हानि होने पर मन मे होनेवाली वह उग्र भावना जिसमे उस वस्तु या व्यक्ति को तोडने-फोडने, मारने-पीटने या उसकी किसी प्रकार की हानि करने की इच्छा होती है। क्रोध।

विशेष—इसमे मनुष्य स्वय अपने पर नियत्रण खो बैठता है और कभी-कभी अपनी भी हानि कर बैठता है।

मुहा०—(किसी पर) गुस्सा उतारना=किसी को अपने क्रोध की प्रतिक्रिया का पात्र बनाना। **(किसी पर) गुस्सा चढना**=किसी पर क्रोध आना। **गुस्सा निकालना**=क्रुद्ध होने पर हानि करनेवाले की हानि करना। **गुस्सा पीना**=गुस्सा आने पर भी किसी से कुछ न कहना।

गुस्सैल—वि० [अ० गुस्सा+हि० ऐल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसे स्वभावत बात-बात पर गुस्सा आता हो। क्रोधी।

गुह—पु० [स०√गुह् (रक्षा करना, छिपाना)+क] १. विष्णु। २ कार्तिकेय। ३ गौतम बुद्ध। ४ घोडा। ५ मेढा। ६ कदरा। गुफा। ७. हृदय। ८ माया। ९ शालिपर्णी। सरिवन। १० निषाद जाति का एक नायक जो राम को वनवास के समय मिला था और जिसने उन्हे शृगबेरपुर मे गगा के पार उतारा था। ११ एक प्रकार के बगाली कायस्थो का अल्ल या उपाधि।

पु० [स० गूथ=मैल] गुदा मार्ग से निकलनेवाला मल। पाखाना।

मुहा०—(किसी पर) गुह उछालना=किसी के निदनीय कार्यो का प्रचार करना। **गुह उठाना**= (क) पाखाना साफ करना। (ख) तुच्छ से तुच्छ सेवा करना। **गुह खाना**=बहुत ही बुरा या अनुचित काम करना। **(किसी का) गुह-मूत करना**=बच्चे का पालन-पोषण करना। **(किसी को) गुह मे घसीटना**=बहुत अधिक अपमान या दुर्दशा करना। **गुह मे ढेला फेंकना**=नीच के साथ ऐसा व्यवहार करना जिससे अपना ही अहित या बुराई होती हो। **(किसी को) गुह मे नहलाना**=बहुत अधिक दुर्दशा करना।

वि० [स० गुह्य] रहस्यमय। गूढ। उदा०—बेधि वार मार हवै गो ग्यान गुह गाँसी।—मीराँ।

गुहज्य†—वि० [स० गुह्य] छिपा हुआ। गुप्त। उदा०—गुहज्य नाम अमीरस मीठाजो षोजै सो पावै।—गोरखनाथ।

गुहडा†—पु० [देश०] चौपायो का खुरपका नामक रोग।

गुहना*—स०=गूथना (पिरोना)।

गुहराना†—स०=गोहराना (पुकारना)।

गुहवाना†—स० [हि० गुहना का प्रे०] गुहने या गूँथने का काम कराना। गुँथवाना।

गुह-षष्ठी—स्त्री० [मध्य० स०] अगहन सुदी छठ जो कार्तिकेय की जन्म-तिथि कहा गई है।

गुहाँजनी—स्त्री० [स० गुह्य-अजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुसी। बिलनी। अजनहारी।

गुहा—स्त्री० [स० गुह+टाप्] १ गुफा। कदरा। २ जानवरो के रहने की माँद। चुर। ३ चोरो-डाकुओ के छिपकर रहने की जगह। ४ अत करण। हृदय। ५ बुद्धि। ६ शालपर्णी। ७ वह कल्पित मूल स्थान जहाँ से सारी सृष्टि का उद्भव तथा विकास माना गया है। उदा०—किस गहन गुहा से अति अधीर।—प्रसाद।

गुहाई†—स्त्री० [हि० गुहना] गुहने (गूथने) की क्रिया, भाव या

मजदूरी।

गुहाचर—पु० [स० गुहा√चर् (गति)+ट] ब्रह्म।

गुहाना—स०=गुहवाना।

गुहा-मानव—पु० [स० मध्य० स०] इतिहास पूर्व काल के वे मनुष्य जो पाषाण युग मे पर्वतो आदि की कदराओ मे रहते थे। (केव-मैन)

गुहार—स्त्री०=गोहार।

गुहारना—स० [हि० गुहार] रक्षा या सहायता के लिए पुकार मचाना। उदा०—दीन प्रजा दु ख पाइ आई नृप-द्वार गुहारति।—रत्ना०।

गुहाल†—स्त्री०=गोशाला।

गुहाशय—पु० [स० गुहा√शी (सोना)+अच्] १ बिल या माँद मे रहनेवाला जतु। २ परमात्मा।

गुहिन—पु० [स० √गुह्+इनन्] जगल। वन।

गुहिर†—वि०=गभीर।

गुहेरा—पु० [हि० गुहना=गूथना] गहने आदि गूथने का काम करनेवाला व्यक्ति। पटवा।

†पु० =गोध (जन्तु)।

गुहेरी†—स्त्री० [स० गौधेरिका] गुहाँजनी (बिलनी)।

गुह्य—वि० [स०√गुह्+यत्] १ गुप्त रखने या छिपाये जाने के योग्य। २ (अलौकिक या रहस्यमय बात या वस्तु) जिसका ठीक-ठीक अर्थ या स्वरूप समझना कठिन हो। जिसे जानने या समझने के लिए विशेष आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता हो। (एसोट्रिक) ३ रहस्यमय।

पु० १ छल। कपट। २ भेद। रहस्य। ३ ढोग। ४ शरीर के गुप्त अग। जैसे—गुदा, भग, लिंग आदि। ५ कछुआ। ६ विष्णु। ७ शिव।

गुह्यक—पु० [स०√गुह्+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] किन्नर, गधर्व, यक्ष आदि देवताओ की तरह की एक देव-योनि जो कुबेर की सपत्ति आदि की रक्षा करती है।

गुह्यकेश्वर—पु० [स० गुह्यक-ईश्वर ष० त०] कुबेर।

गुह्य-दीपक—पु० [स० कर्म० स०] जुगनूँ।

गुह्य-द्वार—पु० [स० कर्म० स०] १ मल-द्वार। गुदा। २ चोर-दरवाजा।

गूँ—पु० [फा०] १ रग। जैसे—गुलगूँ=गुलाब के रग का। २ ढग। प्रकार। ३ वर्ग।

गूँगा—वि० [फा० गुँग=जो बोल न सके] [वि० स्त्री० गूँगी] १ (व्यक्ति) जिसकी वाक्-शक्ति ऐसी विकृत हो कि कुछ भी बोल न सके। जैसे—गूँगा लड़का। २ जिसमे मनुष्य की तरह शब्दो का उच्चारण करने की शक्ति न हो। जैसे—पशु-पक्षी गूँगे होते है।

पु० वह जो बोल न सकता हो।

पद—गूँगे का गुड=ऐसी स्थिति जिसमे उसी प्रकार अनुभूति का वर्णन न हो सके, जिस प्रकार गूँगा व्यक्ति गुड खाने पर भी उसकी मिठास का वर्णन नही कर सकता। **गूँगे का सपना**=गूँगे का गुड। **गूँगी पहेली**=वह पहेली जो मुँह से न कही जाय, इशारो मे कही जाय।

मुहा०—गूँगे का गुड खाना=कोई ऐसा अनुभव करना जिसका वर्णन न हो सकता हो।

गूँगी—स्त्री० [हि० गूँगा] पैर मे पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

गूँच—स्त्री० [स० गुञ्ज] गुजा। घुँघची।

गूँछ—स्त्री० [देश०] गहरे पानी मे रहनेवाली एक प्रकार की बडी मछली बूँछ।

गूँज—स्त्री० [स० गुज] १ भौरो का गुनगुन शब्द करना। गुजन। २ मक्खियो के भिनभिनाने का शब्द। ३ किसी तल या सतह से परावर्तित होकर सुनाई पडनेवाला शब्द या ध्वनि। प्रतिध्वनि। ४ किसी स्थान मे होनेवाली किसी बात की विस्तृत चर्चा। धूम। जैसे—शहर मे इस बात की गूँज है। ५ किसी प्रकार के कार्य की प्रतिक्रिया। (ईको) ६ किसी स्थान पर किसी विशिष्ट बात के होने की अधिक या विस्तृत चर्चा। जैसे—आज-कल शहर मे इस बात की बहुत गूँज है। ७ लट्टू मे नीचे की ओर जडी हुई वह लोहे की कील जिस पर लट्टू घूमता है। ८ नथ, बाली आदि मे सुन्दरता के लिए लपेटा हुआ छोटा पतला तार।

गूँजना—अ० [स० गुजन] १ भौरो का गुजारना। गुजन करना। २ मक्खियो का भिनभिनाना। ३ किसी शब्द का किसी तल से टकरा कर फिर से सुनाई पडना। प्रतिध्वनि होना। ४ (किसी चर्चा का) किसी स्थान मे फैलना।

गूँझ—स्त्री०=गूँज।

गूँठ—पु० [हि० गोठा=छोटा, नाटा] एक प्रकार का छोटे कद का पहाडी टट्टू।

गूँथना†—स० = गूथना।

गूँदना—स० = गूँधना।

गूँदा†—पु०= गोदा।

गूँदी—स्त्री० [?] गँधेला नाम का पेड जिसकी जड, छाल और पत्तियाँ औषध के काम मे आती है।

गूँधना—स० [स० गुध=क्रीडा] १ किसी प्रकार के चूर्ण मे थोडा-थोडा पानी (अथवा कोई तरल पदार्थ) मिलाते तथा हाथ से मलते हुए उसे गाढे अवलेह के रूप मे लाना। माँडना। सानना। जैसे—आटा गूँधना। २ दे० 'गूथना'।

गू—पु० = गुह (मल)।

गूगल, गूगुल—पु० = गुग्गुल।

गूजर—पु० [स० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] १ गुर्जर देश मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति। २ अहीर। ग्वाला। ३ क्षत्रियो का एक भेद।

गूजरी—स्त्री० [स० गुर्जरी] १ गूजर जाति की स्त्री। २ ग्वालिन। ३ पैरो मे पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना। ४ गुर्जरी नाम की रागिनी।

गूजी†—स्त्री० [हि० गुजुवा की स्त्री०] काले रग का एक प्रकार का छोटा कीडा।

गूझना†—अ० = छिपना।

स०= छिपाना।

गूझा—पु० [स० गुह्यक, प्रा० गुज्झा] [स्त्री० गुझिया] १ बडी गुझिया (पकवान)। २ मलद्वार। गुदा।

†पु० = गुज्झा (रेशा)।

गूटी—स्त्री० [देश०] १ लीची का पेड लगाने का एक ढग या प्रकार। २ चौपायो का एक रोग।

गूडी—स्त्री० [स० गुहा वा गुह्य] अनाज की बाली मे का वह छोटा गड्ढा जिसमे से दाना निकाल लिया गया हो।

गूढ़—वि० [स०√गुह् (छिपाना) +क्त] १ छिपा हुआ। गुप्त। जैसे—गूढपाद। २ (क्लिष्ट या पेचीदी बात) जिसका अभिप्राय या आशय सहज मे लोग न समझ सकते हो। अर्थ-गर्भित। जटिल। दुरूह। जैसे–गूढ विषय। ३ जिसमे कोई विशेष अभिप्राय छिपा हो। गभीर।
पु० १ स्मृति मे पाँच प्रकार के साक्षियो मे से वह जिसे अर्थी ने प्रत्यर्थी की बात बतला या सुना दी हो। २ गूढोक्ति नामक अलकार। (साहित्य)

गूढचर—पु०=गुप्तचर। उदा०—गूढचर इन्द्रिय अगूढ चोर मारि दै।—देव।
वि० छिपकर घूमने-फिरनेवाला।

गूढ़-चारी (रिन्)—वि०, पु० [स० गूढ√चर् (गति)+णिनि, उप० स०] = गूढचर।

गूढ़ज—पु० [स० गूढ√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] वह पुत्र जिसे पति के घर रहते हुए भी पत्नी ने अपने किसी सवर्ण जार से पैदा किया हो।

गूढ़-जात—पु० [प० त०] =गूढज।

गूढ़-जीवी (विन्)—पु० [स० गूढ√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] वह जिसकी जीविका के साधन का किसी को पता न चले।

गूढ़ता—स्त्री० [स० गूढ+तल्—टाप्] गूढ होने की अवस्था या भाव।

गूढ़त्व—पु० [स० गूढ+त्व] गूढता।

गूढ़-नीड—पु० [ब० स०] खजन पक्षी।

गूढ़-पत्र—पु० [ब० स०] १ करील वृक्ष। २ अकोट वृक्ष। ३ [कर्म० स०] मतदान-पत्र। (बैलट)

गूढ़-पथ—पु० [कर्म० स०] १ छिपा हुआ रास्ता। जैसे—सुरग। २ [ब० स०] अत करण या अतरात्मा।

गूढ़-पद, गूढ़-पाद—पु० [ब० स०] सर्प। साँप।

गूढ़-पुरुष—पु० [कर्म० स०] जासूस। भदिया।

गूढ़-पुष्प—पु० [ब० स०] १ पीपल, बड, गूलर, पाकर इत्यादि वृक्ष जिनमे फूल नही होते अथवा नही दिखाई देते। २ मौलसिरी।

गूढ़-भाषित—पु० [कर्म० स०] ऐसे शब्दो मे कही हुई बात जो सब की समझ मे न आती हो।

गूढ़-मडप—पु० [कर्म० स०] देव मदिर के अन्दर का बरामदा या दालान।

गूढ़-मार्ग—पु० [कर्म० स०] सुरग।

गूढ़-मैथुन—पु० [ब० स०] काक। कौआ।

गूढ़-लेख—पु० [कर्म० स०] लिखने या सवाद भेजने की गुप्त लिपि-प्रणाली। (साइफर)

गूढ़-व्यग्य—पु० [कर्म० स०] काव्य मे एक प्रकार की लक्षणा जिसमे व्यग्य का अभिप्राय जल्दी सब की समझ मे नही आ सकता।

गूढ़-सहिता—स्त्री० [ष० त०] वह सग्रह जिसमे गूढ-लेख के नियमो, सकेतो सिद्धान्तो आदि का विवेचन हो। (साइफर कोड)

गूढ़ाग—पु० [गूढ-अग, कर्म० स०] १ इन्द्रिय, गुदा आदि गुप्त अग। २ [ब० स०] कछुआ।

गूढ़ा†—स्त्री० [स० गूढ] १ ऐसी बात जिसका अर्थ जल्दी सब की समझ मे न आवे। २ पहेली। (राज०)

गूढाशय—पु० [गूढ-आशय, कर्म० स०] =गूढ-पुरुष (जासूस)।

गूढ़ोक्ति—स्त्री० [गूढ-उक्ति, कर्म० स०] १ गूढ कथन या बात। २ साहित्य मे एक अलकार जिसमे कोई व्यग्यपूर्ण बात किसी दूसरे आदमी को सुनाने के लिए किसी उपस्थित आदमी से कही जाती है।

गूढोत्तर—पु० [गूढ-उत्तर कर्म० स०] साहित्य मे उत्तर अलकार का एक भेद जिसमे किसी बात का दिया जानेवाला उत्तर अपने मे कोई और गूढ अर्थ छिपाये होता है।

गूथना—स० [स० ग्रथन] १ डोरे, तागे आदि के रूप की चीजो को समेट कर सुदरतापूर्वक आपस मे बाँधना। जैसे—चोटी या सिर के बाल गूथना। २ बिखरी हुई अथवा कई चीजो को पिरोकर एक मे मिलाना। जैसे—फूलो या मोतियो की माला गूथना। ३ आपस मे जोडने या मिलाने के लिए मोटे-मोटे टाँके लगाना। गाँथना। जैसे—गुदडीगूथ ना।

गूद—स्त्री० [स० गूढ या हिं० गोदना] १ गड्ढा। गर्त्त। २ कम गहरा चिह्न या रेखा।
†पु० = गूदा।

गूदड—पु० [हिं० गूथना] [स्त्री० गुदडी] जीर्ण-शीर्ण या फटा-पुराना कपडा जो काम मे आने के योग्य न रह गया हो।
पद—गूदडशाह या गूदडसाँई=फटे-पुराने कपडे सीकर पहननेवाला साधु।

गूदर†—पु० = गूदड।

गूदा—पु० [स० गुप्त, प्रा० गुत्त] [स्त्री० गूदी] १ फल आदि के अन्दर का कोमल और गुदगुदा सार भाग। जैसे–आम, इमली या नारगी का गूदा। २ किसी चीज के अन्दर का गीला गाढा सार भाग। मज्जा। (पिथ्) ३ किसी चीज को कूटकर तैयार किया हुआ उसका कुछ गीला पिंड या रूप। (पल्प) ४ खोपडी का सार भाग। भेजा। ५ गिरी। मीगी।

गूदेदार—वि० [हिं० गूदा+फा० दार] जिसके अन्दर गूदा रहता हो।

गून—स्त्री० [स० गुण=रस्सी] १ नाव खीचने की रस्सी। २ रीहा नामक घास।

गूना—पु० [फा० गून =रग] एक प्रकार का सुनहला रग जो धातु की बनी चीजो पर चढाया जाता है।

गूनी*—स्त्री०=गोनी।

गूमट†—पु० = गुम्मट।

गूमडा—पु०= गुमडा या गुम्मड।

गूमना†—स० [?] १ गूँधना। माँडना। सानना। २ कुचलना। रोदना।

गूमा—पु० [स० कुभा, गुभा] एक प्रकार का पौधा जिसकी गाँठो पर सफेद फूलो के गुच्छे लगते है। कुभा। द्रोणपुष्पी।

गूरा†—पु०=गुल्ला।

गूल—पु०=गुल्म (सेना का)।

गूलर—पु० [स० उदुबर] १ पीपल, बरगद आदि की जाति का एक बडा पेड जिसकी डालो आदि से एक प्रकार का दूध निकलता है और जिसका फल ओषधि, तरकारी आदि के रूप मे खाया जाता है। उदुबर। २ उक्त वृक्ष का फल।

पद—गूलर का फूल= (क) दुर्लभ वस्तु। (ख) असभव बात। (गूलर मे फूल होता ही नही, इसी आधार पर यह पद बना है।)

मुहा०—गूलर का पेट फडवाना=गुप्त या दबी हुई बात का प्रकट कराना। भेद खुलवाना।

†पु० = मेढक।

गूलर-कबाब—प० [हिं० गूलर+फा० कबाब] एक प्रकार का कबाब जो उबले और पिसे हुए मास से गूलर के फल के आकार का होता या गोलियो के रूप मे बनाया जाता है।

गूलू—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष। पुङ्क।

गूवाक—पु०=गुवाक।

गूषणा—स्त्री० [स० गु√उष् (जलाना)+युच्—अन, टाप्] मोर की पूँछ पर बना हुआ अर्द्धचन्द्र चिह्न। मोर-चद्रिका।

गूह—पु० [स० गूथ] गुह। मल।

मुहा० के लिए दे० 'गुह' के मुहा०।

गूहन—पु० [स०√गूह्+ल्युट्—अन] छिपाने का कार्य।

गूहा छीछी—स्त्री० [हिं० गूह+छीछी] ऐसा गदा झगडा या लडाई जिससे देखने-सुननेवालो तक के मन मे घृणा उत्पन्न होती हो।

गृजन—पु० [स०√गृञ्ज् (शब्द करना)+ल्युट्—अन] १ एक प्रकार का लाल रग का लहसुन। । २ शलजम।

गृत्स—वि० [स०√गृध् (चाहना)+स] चतुर तथा योग्य (व्यक्ति)। मेधावी।

गृधु—वि० [स०√गृध्+कु] कामुक।

पु० कामदेव।

गृध्य—पु० [स०√गृध्+क्यप्] १ इच्छा। कामना। २ लालच। लोभ।

गृध्र—पु० [स०√गृध्+क्रन्] [स्त्री० गृध्री] १ गिद्ध नाम का प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २ जटायु।

वि० लालची। लोभी।

गृध्र-कूट—पु० [ब० स०] राजगृह के पास का एक पर्वत।

गृध्र-व्यूह—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना जो गिद्ध के आकार की होती थी।

गृध्रसी—स्त्री० [स० गृध्र√सो (नष्ट करना)+क-ङीप्] एक वातरोग जिससे कमर, कूल्हो और टाँगो मे दर्द होता है। (स्याटिका)

विशेष—गृध्रस्या एक नाडी का नाम है। कहते है कि उसी मे वात का प्रकोप बढने से यह रोग होता है।

गृध्रस्या—स्त्री० [स० गृध्रसी+यत्–टाप् ?] एक वात-नाडी।

गृध्रिका—स्त्री० [स० गृध्र+ङीष्+कन्—टाप्, ह्रस्व] कश्यप की पुत्री जो गिद्धो की आदि माता थी। (पुराण)

गृम†—स्त्री० [स० ग्रीवा] गला। उदा०—फूटल बलय टूटल गृम-हार। —विद्यापति।

गृष्टि—स्त्री० [स०√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्तिच्, पृषो० सिद्धि] १ वह गाय, जिसे एक ही बच्चा हुआ हो। २ वह स्त्री जिसे एक ही सन्तान हुई हो।

गृह—पु० [स०√ग्रह्+क] १ ईंट, पत्थर, चूने, सीमेंट आदि से बना हुआ वह निवास-स्थान जहाँ कोई व्यक्ति (अथवा परिवार) रहता हो। घर। मकान। जैसे—राजगृह। २ विस्तृत क्षेत्र मे, वह क्षेत्र, शहर या राज्य जिसमे कोई रहता हो। ३ राज्य या राष्ट्र के भीतरी कामो का क्षेत्र। जैसे—गृह-मत्री।

वि० १ (यौ० के आरम्भ मे) घर मे रखकर पाला हुआ जैसे—गृह-कपोत, गृह-दास। २ गृह या घर से सबध रखनेवाला। जैसे—गृह-शास्त्र। ३ देश के भीतरी भाग से सबध रखनेवाला। जैसे—गृह-युद्ध।

गृह-उद्योग—पु० [मध्य० स०] जीविका उपार्जन करने के लिए घर मे बैठकर किये जानेवाले रचनात्मक कार्य। जैसे—करघे से कपडा बुनना, बाँस की खपचियो से टोकरियाँ बनाना, रस्सी बटना आदि आदि।

गृह-कन्या—स्त्री० [ष० त०] घीकुवार। ग्वारपाठा।

गृह-कर्मन्—पु० [ष० त०] घर-गृहस्थी के काम-धन्धे।

गृह-कलह—पु० [स० त०] १ घर के लोगो मे आपस मे होनेवाला झगडा या लडाई। २ किसी देश या राष्ट्र के निवासियो मे आपस मे होनेवाला झगडा या लडाई।

गृह-कार्य—पु० [ष० त०] घर-गृहस्थी के काम-धन्धे।

गृह-कुमारी—स्त्री०=गृहकन्या।

गृह-गोधा—स्त्री० [ष० त०] छिपकली।

गृह-गोधिका—स्त्री० [ष० त०] छिपकली।

गृहज—वि० [स० गृह√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] जो घर मे उत्पन्न हुआ हो।

पु० घर में पैदा होनेवाला दास। गोला।

गृह-जन—पु० [ष० त०] घर मे रहनेवाले आपस के सब लोग। कुटुबी।

गृह-जात—वि० [स० त०] जो घर मे उत्पन्न हुआ हो।

पु० सात प्रकार के दासो मे से वह जो घर मे रखे हुए दास या दासी से उत्पन्न हुआ हो।

गृह-ज्ञानी (निन्)—वि० [स० त०] जिसका सारा ज्ञान घर के अन्दर ही सीमित हो। बाहर का कुछ भी हाल न जाननेवाला। कूप-मडूक।

गृहणी—स्त्री० [स० गृह√नी (ले जाना)+क्विप्, णत्व] १ काँजी। २ प्याज।

†स्त्री० दे० 'गृहिणी'।

गृह-त्याग—पु० [ष० त०] विरक्त होकर और घर छोडकर कही निकल जाना।

गृहत्यागी (गिन्)—वि० [स०गृहत्याग+इनि] जो घर-बार छोडकर और विरक्त होकर गृहस्थाश्रम से निकल आया हो।

गृह-दाह—पु० [ष० त०] १ घर मे आग लगाने या भस्म करने की क्रिया या भाव। २ ऐसा लडाई-झगडा जिससे घर का सब-कुछ नष्ट हो जाय।

गृह-दीर्घिका—स्त्री० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे धवल-गृह के आस-पास की नहर जो राजाओ और रानियों के जल-विहार के लिए बनी होती थी।

गृह-देवता—पु० [ष० त०] घर के भिन्न-भिन्न कार्यों के देवता जिनकी सख्या ४५ कही गई है।

गृह-देवी—स्त्री० [ष० त०] घर की स्वामिनी। गृहिणी।

गृह-नीड़—पु० [ब० स०] गौरैया (पक्षी)।

गृहप—पु० [स० गृह√पा (रक्षा करना)+क, उप० स०] १ घर

का स्वामी। गृहपति। २ चौकीदार। पहरेदार। ३ अग्नि। आग। ४ कुत्ता।

गृह-पति—पु० [ष० त०] [स्त्री० गृहपत्नी] १ वह व्यक्ति जिसके पास घर या मकान हो। घर या मकान का मालिक। २ किसी घर अर्थात् घर मे रहनेवाले परिवार का मुख्य व्यक्ति। ३ अग्नि। आग। ४ कुत्ता।

गृह-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] =गृहिणी।

गृह-पशु—पु० [ष० त०] १ घर मे पाला हुआ पशु। पालतू जानवर। २ कुत्ता।

गृह-पाल—पु० [स० गृह√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ घर की रखवाली करनेवाला चौकीदार। २ कुत्ता।

गृह-पालित—भू० कृ० [स० त०] जो घर मे रखकर पाला-पोसा गया हो। जैसे—गृह-पालित दास या पशु।

गृह-प्रवेश—पु० [स० त०] १ नये बनवाये या खरीदे हुए मकान मे, विधिपूर्वक पूजन आदि करने के उपरात, पहले-पहल बाल-बच्चो सहित उसमे प्रवेश करना। २ उक्त अवसर पर होनेवाला समारोह और धार्मिक कृत्य। वास्तु-पूजन।

गृह-बलि—स्त्री० [मध्य० स०] घर मे ही नित्य दी जानेवाली बलि। वैश्व-देव।

गृह-भूमि—स्त्री० [ष० त० या मध्य० स०] वह भूमि जिस पर मकान बना हो या जो मकान बनाने के लिए उपयुक्त हो। (कृषि भूमि से भिन्न)

गृह-भेद—पु० [ष० त०] घर के लोगो का आपस मे लड-झगडकर एक दूसरे से अलग होना।

गृह-भेदी—(दिन्)—वि० [स० गृह√भिद् (फाडना)+णिनि, उप० स०] घर के लोगो मे आपस मे लडाई-झगडा करानेवाला।

गृह-मत्रालय—पु० [ष० त०] १ वह मत्रालय जिसमे किसी राज्य या राष्ट्र के गृह-सबधी कार्यों की देख-भाल करनेवाले लोग काम करते है। गृहमत्री का कार्यालय। (होममिनिस्टरी) २ उक्त मत्रालय का अधिकारी वर्ग।

गृह-मत्री (त्रिन्)—पु० [ष० त०] राज्य या राष्ट्र के भीतरी मामलो (तथा शाति, रक्षा आदि) की व्यवस्था करनेवाला मत्री। (होम मिनिस्टर)

गृह-मणि—पु० [ष० त०] दीपक। दीया।

गृह-माचिका—स्त्री० [स० गृह√मच् (छिपकर रहना)+ण्वुल्—अक +टाप्, इत्व, उप० स०] चमगादड।

गृह-मृग—पु० [स० त०] कुत्ता।

गृह-मेध—पु० [ष० त०] पच महायज्ञ।

गृह-मेधी (धिन्)—पु० [स० गृहमेध+इनि] १ गृह-मेध करनेवाला। २ गृहस्थ।

गृह-युद्ध—पु० [स० त०] १ घर मे ही आपस के लोगो मे होनेवाला लडाई-झगडा। २ किसी एक ही राज्य या राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशो के निवासियो या राजनीतिक दलो का आपस मे होनेवाला युद्ध। (सिविल वार)

गृह-रक्षक—पु० [ष० त०] १ एक प्रकार का अर्द्ध सैनिक सघटन जो स्वतत्र भारत मे स्थानिक शाति और सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। २ इस सघटन का कोई अधिकारी या सदस्य। (होमगार्ड)

गृह-लक्ष्मी—स्त्री० [ष० त०] घर की स्वामिनी, सती और सुशीला स्त्री।

गृह-वाटिका—स्त्री० [मध्य० स०] घर मे ही लगाया हुआ छोटा बाग।

गृह-वासी (सिन्)—वि० [स० गृह√वस् (बसना)+णिनि, उप० स०] घर बनाकर उसमे रहनेवाला।
पु० गृहस्थ।

गृह-वित्त—पु० [ब० स०] गृह-स्वामी।

गृह-सचिव—पु० [ष० त०] गृह-मत्रालय का प्रधान शासनिक अधिकारी। (होम सेक्रेटरी)

गृह-सज्जा—स्त्री० [ष० त०] घर की सजावट और उसकी सामग्री।

गृहस्त†—पु०=गृहस्थ।

गृहस्थ—पु० [स० गृह√स्था (ठहरना)+क] १ वह जो घर-बार बनाकर उसमे अपने परिवार और बाल-बच्चो के साथ रहता हो। पत्नी और बाल-बच्चोवाला आदमी। घरबारी। २ हिंदू धर्म-शास्त्रो के अनु-सार वह जो ब्रह्मचर्य का पालन समाप्त करके और विवाह करके दूसरे आश्रम मे प्रविष्ट हुआ हो। ज्येष्ठाश्रमी। ३ खेती-बारी आदि से जीविका चलानेवाला व्यक्ति। ४ जुलाहा।

गृहस्थाश्रम—पु० [स० गृहस्थ-आश्रम, ष० त०] हिन्दू धर्मशास्त्रो के अनुसार चार आश्रमो मे से दूसरा आश्रम जिसमे लोग ब्रह्मचर्य के उपरान्त विवाह करके प्रवेश करते थे और स्त्री-पुत्र आदि के साथ रहते और उनका पालन करते थे।

गृहस्थाश्रमी (मिन्)—पु० [स० गृहस्थाश्रम+इनि] गृहस्थाश्रम मे रहनेवाला व्यक्ति।

गृहस्थी—स्त्री० [स० गृहस्थ+हिं० ई० (प्रत्य०)] १ प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि से उसका घर, परिवार के सब लोग और उसमे रहनेवाली जीवन-निर्वाह की सब सामग्री। घर-बार और बाल-बच्चे। २ घर का सब सामान। माल-असबाब। जैसे—इतनी बडी गृहस्थी उठाकर कही ले जाना सहज नही है। ३ खेती-बारी और उससे सबध रखनेवाले काम-धधे। ४ गृहस्थाश्रम। ५ खेती-बारी।

गृह-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] [स्त्री० गृह-स्वामिनी] घर का मालिक जो गृहस्थी के सब लोगो का पालन-पोषण और देख-रेख करता हो।

गृहाक्ष—पु० [स० गृह-अक्षि, ष० त० टच् प्रत्य०] घर मे बनी हुई खिडकी या झरोखा।

गृहागत—भू० कृ० [स० गृह-आगत, द्वि० त०] घर मे आया हुआ।
पु० अतिथि। मेहमान।

गृहाराम—पु० [स० गृह-आराम, मध्य० स०] घर के चारो ओर या सामने लगाया हुआ बाग।

गृहाश्रम—पु० [स० गृह-आश्रम, कर्म० स०] =गृहस्थाश्रम।

गृहाश्रमी (मिन्)—पु० [स० गृहाश्रम+इनि] =गृहस्थाश्रमी।

गृहासक्त—वि० [गृह-आसक्त, स० त०] १ घर से दूर रहने या होने के कारण जो चिंतित तथा दुखी हो। (होम सिक) २. हर दम जिसे घर-गृहस्थी, बाल-बच्चो आदि की चिंता लगी रहती हो।

गृहिणी—स्त्री० [स० गृह+इनि—ङीप्] १ घर की मालकिन जो गृहस्थी के सब कामो की देख-रेख करती हो। २ जोरू। पत्नी। भार्या।

गृही (हिन्)—पु० [स० गृह +इनि] [स्त्री० गृहिणी] १ गृहस्थ। गृह-

स्थाश्रमी। २ दर्शनो आदि के लिए तीर्थ मे आया हुआ व्यक्ति। (पडे और भड्डर)

गृहीत—भू० कृ० [स०√ग्रह् (पकडना)+क्त] [स्त्री० गृहीता] १ जो ग्रहण या प्राप्त किया गया हो। २ लिया, पकडा या रखा हुआ। ३ जिसने कोई चीज धारण की हो। जैसे—गृहीतगर्भा (गर्भवती स्त्री)। ४ जिस पर किसी उग्र मनोविकार का प्रभाव पडा हो। जैसे—गर्व-गृहीत। ५ जाना या समझा हुआ।

गृहीतार्थ—वि० [स० गृहीत-अर्थ, ब० स०] जिसने अर्थ समझ लिया हो। पु० किसी पद या वाक्य का गृहीत या प्रचलित अर्थ।

गृहोद्यान—पु० [स० गृह-उद्यान, म०य० स०] वहुत बडे मकान या महल के सामने या अगल-बगल का बगीचा।

गृहोपकरण—पु० [स० गृह-उपकरण, ष० त०] घर-गृहस्थी के सब सामान।

गृह्य—वि० [स० गृह+यत्] १ घर या घर-बार से सबध रखनेवाला। घर का। २ घर मे किया जाने या होनेवाला। जैसे—गृह्य-कर्म। पु० १ घर मे रहनेवाली अग्नि या आग। २ दीपक। दीआ। उदा०—देखो पतग गृह्य मन रीझा। —जायसी।

वि० [स०√ग्रह् (पकडना)+क्यप्] १ ग्रहण किये जाने के योग्य। जिसे ग्रहण कर सके। २ पकडकर घर मे रखा या पाला हुआ। पालतू।

गृह्यक—वि० [स० गृह्य+कन्] १ जिसने घर मे आकर आश्रय लिया हो। आश्रित। २ जो घर मे रखकर पाला-पोसा गया हो।

गृह्य-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] हिन्दू धर्मशास्त्रो के अनुसार वे सब कर्म जो प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक कर्त्तव्य के रूप मे बतलाये गये है। जैसे—अग्निहोत्र, बलि, १६ सस्कार आदि।

गृह्य-सूत्र—पु० [प० त०] वे विशिष्ट वैदिक ग्रथ जिनमे सब प्रकार के गृह्य-कर्मो, सस्कारो आदि के विधान बतलाये गये है। जैसे—आश्वलायन, कात्यायन अथवा गोभिलीय गृह्य-सूत्र।

गेंगटा—पु० [स० कर्कट] केकडा।

गेंठी—स्त्री० [स० गृष्टि, प्रा० गिट्ठि, गेठ्ठि] वाराही कद।

गेंड़—पु० [स० गोष्ठ] १ डठलो, पत्तियो आदि से बनाया हुआ वह घेरा जिसमे खेतिहर अपना अनाज रखते है। २ घेरा। मडल। ३ ऊख के ऊपर के पत्ते। अगौरा। ४ दे० 'गेड'।

गेंड़ना—स० [हिं० गेड] १ खेतो की सीमा निर्धारित करने के लिए उनके चारो ओर मेड बनाना। २ बाढ आदि लगाकर चारो ओर से घेरना। ३ अन्न रखने के लिए गेड या घेरा बनाना। ४ लकडी के टुकडे काटने के लिए कुल्हाडी से उसके चारो ओर छेव लगाना। ५ दे० 'गेडना'।

गेंड़ली—स्त्री० [स० कुडली] मडलाकार घेरा। कुडली। (साँपो आदि की)

गेंड़ा—पु० [स० काड] १ ईख के ऊपर के पत्ते। अगौरी। २ ईख। गन्ना। ३. ईख के छोटे-छोटे टुकडे। गँडेरी। ४ धातु के टुकडे पीटने की पत्थर की निहाई।

†पु० दे० 'गेडा'।

गेंडु—पु० [स०] कदुक। गेद।

गेंडुआ†—पु० [स० गेदुक=गेद] १ बडा गेंद। २ सिर के नीचे रखने का गोल तकिया।

गेंडुक—पु० [स०=गेदुक, पृषो० सिद्धि] कदुक। गेद।

गेंडुरी—स्त्री० [स० कुडली] १ कपडे या रस्सी का बना हुआ वह गोल मेडरा जिस पर घडा रखते है अथवा जिसे बोझ उठाने के समय सिर पर रखते है। ईडुरी। २ कुडली या फेटा (साँपो आदि का)।

गेंडुली†—स्त्री०=गेडुरी।

गेंती—स्त्री० [?] १ एक प्रकार का छोटा वृक्ष। २ एक प्रकार की कुदाल।

गेंद—पु० [स० पा० गेन्डुक, प्रा० गेन्दुआ, उ० गेण्डु, सि० खेनुरो, प्रा० गेन्दु, चेण्डु, गु०, ने०, मरा० गेद] १ बच्चो के खेलने के लिए कपडे, चमडे रबड, लकडी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध छोटा गोला। २ वह कलबूत जिस पर रखकर टोपियाँ, पगडियाँ आदि बनाई जाती थी। कालिब। ३ तारो आदि का बना हुआ वह गोलाकार घेरा जिसके अन्दर रखकर दीआ जलाते थे।

गेंदई—वि० [हिं० गेदा] १ गेदे से सबध रखनेवाला। गेदे का। २ गेदे के फूल के रग का। पीला।

पु० उक्त प्रकार का पीला रग।

गेंदघर—पु० [हिं० गेद+घर] वह स्थान जहाँ लोग गेद से तरह-तरह के खेल खेलते है।

गेंदतड़ी—स्त्री० [हिं० गेद+तडी=चोट या मार] लडको का एक खेल जिसमे वे एक दूसरे को गेद से मारते है।

गेंदबल्ला—पु० [हिं० गेद+बल्ला] १ गेद और उस पर आघात करने का लकडी का बल्ला। २ गेद, बल्ले तथा यष्टियो से खेला जानेवाला एक प्रसिद्ध खेल जिसमे ग्यारह-ग्यारह खेलाडियो की दो टोलियाँ होती है और एक दूसरी से अधिक दौडे बनाकर विजय प्राप्त करती है। (क्रिकेट)

गेंदवा†—पु० १=गेंडुआ (तकिया)। २=गेद।

गेंदा—पु [हिं० गेद] १ एक प्रकार का छोटा पौधा जिसमे पीले, लाल, नारगी आदि रगो के फूल लगते हैं। २ उक्त पौधे के फूल जिनकी मालाएँ बनती है।

गेंदिया†—स्त्री० [हिं० गेद+ईया (प्रत्य०)] फूलो को मालाओ के नीचे लटकनेवाला फूल-पत्तो आदि का गुच्छा।

गेंदुक*—पु० [स०√गम् (जाना)+ड, ग-इदु कर्म० स०, गेदु+कन्] कन्दुक। गेद।

गेंदुवा—पु०=गेंडुआ।

गेंदौरा†—पु०=गिंदौडा।

गेंवर†—पु० [स० गज-वर] १ हाथी। २ बडा हाथी।

गे†—अव्य० [स० हे] सबोधन का चिह्न। (पूरब)

गेगम—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धारीदार या चारखानेदार कपडा। सीकिया।

गेगला—पु० [?] १ मसूर की जाति का एक प्रकार का जगली पौधा। २ छोटा बच्चा। ३ निर्बुद्धि या मूर्ख व्यक्ति।

गेगलापन—पु० [हिं० गेगला] १ लडकपन। २ मूर्खता।

गेज—पु० [अ०] १ किसी चीज को नापने या मापने का कोई साधन। २ रेल की दोनो पटरियो के बीच का विस्तार जो साधारणत ५६½ इच होता है।

विशेष—मानक गेज ५६½ इंच ही माना जाता है, वैसे छोटे तथा बडे गेजो की भी पटरियाँ होती है।

गेजुनिया†—पु० [देश०] गुलदुपहरिया (पौधा और फूल)।

गेटिस—पु० [अ० गेटर] १ सैनिको आदि के पहनने का कपडे या चमडे का वह आवरण जिससे पिडलियाँ ढकी या बाँधी जाती है। २ कपडे, रबर आदि का वह छोटा तस्मा या पतली पट्टी जिससे पहने हुए मोजे का ऊपरी भाग इसलिए कसा जाता है कि मोजा नीचे न गिरने पावे।

गेड—स्त्री० [हिं० गेडना] गेडने की क्रिया या भाव। २ मडलाकार बनाया हुआ गड्ढा या खीची हुई रेखा। ३ दे० 'गेड'।

गेडना—स० [स० गड=चिह्न] १ किसी चीज को घेरने के लिए उसके चारो ओर गड्ढा, मेड या और किसी प्रकार की रेखा बनाना। २ किसी चीज के चारो ओर घूमना। परिक्रमा करना। ३ रहट चलाने के लिए उसका हत्था पकडकर चारो ओर चक्कर लगाना। ४ दे० 'गेडना'।

गेडी—स्त्री० [स० गड=चिह्न] १ गेडने की क्रिया या भाव। २ लडको का एक खेल जिसमे किसी मडलाकार रेखा के बीच मे लकडी का एक टुकडा रखकर और उस पर आघात करके उसे रेखा से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। ३ उक्त खेल की वह लकडी जो मडलाकार रेखा के बीच मे रखी जाती है।

गेणा†—पु०=गहना या आभूषण। (राज०) उदा०—गेणो तो म्हाँरे माला दोवडी और चन्दन की कुटकी।—मीराँ।

गेदा†—पु० [?] चिडिया का वह छोटा बच्चा जिसके पर अभी तक न निकले हो।

गेन†—पु०=गगन (आकाश)। उदा०—कोपि कन्ह धायौ वली, जनु अग्गि विच्छुटी गेन।—चन्दबरदाई।

गेनुर—स्त्री० दे० 'गोनर'।

गेबा—पु० [देश०] करघे मे, कघी की वे तीलियाँ जिनके बीच मे से ताने के सूत आपस मे उलझने से बचाने के लिए निकाले जाते है।

गेय—वि० [स० √गै (गाना)+यत्] १ गाये जाने के योग्य। २ जो गाया जा सके। जैसे—गेय पद। ३ प्रशसनीय। श्रेष्ठ।

गेरना†—स० [हिं० गिराना का पुराना रूप] १ (गले आदि मे ऊपर से) डालना। उदा०—माला पै लाल गुलाल गुलाब सो गेरि गरे गजरा अलबेलौ।—पद्माकर। २ गिराना।

स० दे० 'गेडना'।

गेरवाँ†—पु० दे० 'गेराँव।'

गेराँई†—स्त्री० =गेराँव।

गेराँव†—पु० [हिं० गर=गला] १ चौपायो के गले मे बाँधी जानेवाली रस्सी। पगहा। २ उक्त रस्सी का वह मडलाकार अश जो चौपायो के गले मे पडा रहता है।

†पु० हिं० 'गाँव' का अनु०। जैसे—गाँव-गेराँव की चीज।

गेरुआ—वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०)] १ गेरू के रग का। मटमैला-पन लिये लाल रग का। २ गेरू-मिट्टी के रग से रगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

पु० १ गेरू से तैयार किया हुआ रग। जोगिया। (मैमन) २ गेरू के रग का एक छोटा कीडा जो फसल की हानि करता है। ३ गेहूँ के पौधो का एक रोग जिससे उनकी पेडी बहुत कमजोर हो जाती है।

गेरुआ बाना—पु० [हिं०] त्यागियो, योगियो अथवा साधु-सन्यासियो का पहनावा जो गेरुए रग का होता है।

गेरुई—स्त्री० [हिं० गेरू] फसल या पौधो को होनेवाला एक रोग जो प्राय उनकी जडो मे एक प्रकार के गेरुए रग के कीडे लगने से उत्पन्न होता है।

गेरुल—पु०=गेंद।

गेरुला†—पु० [?] जूडा या वेणी (स्त्रियो की)।

गेरू—पु० [स० गैरिका, पा० गेरुकम्, प्रा० गेरिअ, गैरुष, प०, ब० गेरी, उ०, गु०, ने० गेरु, सि०, मरा० गेरू] एक प्रसिद्ध खनिज लाल मिट्टी जो प्राय कपडे, दीवारे आदि रगने मे और कभी-कभी दवाओ के काम आती है।

गेला†—वि० [हिं० गेया, या गया (बीता)?] [स्त्री० गेली] १ नासमझ। मूर्ख। २ गया-बीता। तुच्छ। हेय। उदा०—गेली दुनियाँ बावली ज्याँ कूँ राम न भावे।—मीराँ।

गेली—स्त्री० [अ०] छापेखाने मे धातु या लकडी की वह छिछली किश्ती जिस पर छापे के अक्षर जोड या बैठाकर रखे जाते है।

पद—गेली प्रूफ=इस प्रकार उक्त किश्ती मे जोडकर रखे हुए अक्षरो पर से छापा जानेवाला कागज जिस पर बैठाये हुए अक्षरो की भूले ठीक की जाती है।

गेल्हा†—पु० [देश०] तेल रखने का चमडे का बडा कुप्पा। (तेली)

गेवर—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड। गँगवा।

गेसू—पु० [फा०] बालो की लट। जुल्फ।

गेह—पु० [स० ग-ईह, ब० स०] १ रहने की जगह। २ घर। मकान।

गेहनी—स्त्री० [हिं० गेह] १ घर की मालिक स्त्री। गृह-स्वामिनी। गृहिणी। २ पत्नी। भार्या।

गेह-पति—पु० [ष० त०] घर का मालिक। गृहपति।

गेही (हिन्)—पु० [स० गेह+इनि] घर-बार बनाकर उसमे रहनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ। उदा०—गेही सग्रह परिहरै, सग्रह करै विरक्त।—भगवत-रसिक।

गेहुँअन—पु० [हिं० गेहूँ] मटमैले रग का एक प्रकार का बहुत जहरीला फनदार साँप।

गेहुँआ—वि० [हिं० गेहूँ] १ गेहूँ के रग का। हलका बादामी। २ (शरीर का वर्ण) जो न बहुत गोरा हो और न बहुत साँवला।

गेहूँ—पु० [स० गोधूम, पा० गोधूमो, प्रा० गहूअँ, गहूम, प० ग्यूँ, गु० घऊँ-ब० गोम, उ० गहम्, मरा० गहूँ] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी बालो मे लगनेवाले दाने छोटे, लबोतरे बीजो के रूप मे होते है और जिनके आटे या चूर्ण से कचौरी, पूरी, रोटी आदि पकवान बनते है। २ उक्त पौधे के छोटे लबोतरे दाने या बीज।

गेहे-शूर—पु० [स० त०, सप्तमी का अलुक्] वह जो घर मे ही बहादुरी दिखानेवाला हो, बाहरी लोगो के सामने कायर हो।

गैंटा†—पु० [देश०] कुल्हाडी।

गैंडा—पु० [स० गण्डक, पा० गण्डको, प्रा० गण्डअ, गु० गडो, मरा०, गेंडा] भैंसे के आकार का एक प्रसिद्ध शाकाहारी स्तनपायी जगली पशु जिसके थूथने पर एक या दो सीग होते है। प्राचीन काल मे इसके चमडे से ढाले बनाई जाती थी। (रेहाइनोसेरस)

गैती—स्त्री० [देश०] १ जमीन खोदने की कुदाल। २ एक पेड जिसकी लकडी का रग लाल होता है।

गैद—पु० [स० गयद] हाथी। उदा०—जिण बन भूल न जावता, गैद गिनल गिडराज।—कविराजा सूर्यमल।

†पु० =गेंद।

गै*—पु० [स० गज, प्रा० गय] हाथी।

गैगहण—वि० [अनु० गहगहाना] आकाश को गुँजानेवाला (शब्द)। पु० आकाश गुँजानेवाला शब्द। उदा०—होइ वीर हक गैगहण।—प्रिथीराज।

गैति—स्त्री० [स० गज=गय>गै +?] हाथियो का झुड।

स्त्री०=गैती।

गैन—पु० [स० गमन] १ गमन करना। जाना। २ गैल। मार्ग। ३ कदम। पग। उदा०—कबहुँक ठाढे होत टेकि कर चल न सकै इक गैन—सूर।

†पु० =गगन (आकाश)।

†पु०=गयद (हाथी)। उदा०—कोऊ नहि बरजै, जो इनको बनै मत्त जिमि गैन।—भारतेंदु।

गना—पु० [हि० गाय] छोटा और नाटा बैल।

गैनी*—वि० स्त्री०=गामिनी (गामी का स्त्री रूप)। जैसे—गज-गैनी।

गैफल—पु० [?] जहाज के आगे की तरफ का एक छोटा पाल। (लश०)

गैफल कँजा—पु० [?] गैफल नामक पाल को चढाने उतारने की रस्सी। (लश०)

गैब—पु० [अ०] १ वह लोक जो सामने दिखाई न देता हो। अदृश्य लोक। २ परोक्ष।

गैबत—स्त्री० [अ०] किसी के पीठ-पीछे की जानेवाली शिकायत। निन्दा। चुगली।

गैबदाँ—वि० [अ०] [भाव० गैबदानी] ऐसी बातो का जाननेवाला जो प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा न जानी जा सके। परोक्ष की बातो का ज्ञाता।

गैबर—पु० [देश०] लकलक की जाति की एक चिडिया जिसके डैने और पीठ सफेद, दुम काली तथा चोच और पैर लाल होते हैं।

*पु० [स० गजवर] बडा हाथी।

गैबी—वि० [अ० गैब] १ गैब या परोक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला। गैब का। २ छिपा हुआ। गुप्त। ३ किसी अज्ञात देश या स्थान से आया हुआ। ४ बिलकुल नया और अपरिचित।

गैयर*—पु० [स० गजवर] हाथी। बडा हाथी।

वि० [हि० गैया] गौ की तरह सीधे स्वभाववाला। उदा०—मन मतग गैयर हने मनसा भई सिचान।—कबीर।

स्त्री० दे० 'नीलगाय'।

गैया—स्त्री० [स० गो] गाय। गौ।

ग़ैर—वि० [अ०] १ प्रस्तुत से भिन्न। कुछ और या कोई और। जैसे—गैर मौरूसी=मौरूसी से भिन्न। २ अन्य। दूसरा। ३ जिसके साथ आत्मीयता का सबध न हो। जैसे—गैर आदमी, गैरमर्द। ४ दूसरे या दूसरो से सबध रखनेवाला। जैसे—गैर इलाके या गैर मुल्क का।

मुहा०—गैर करना=(क) गैरो या परायो का-सा व्यवहार करना। (ख) वैर-विरोध या शत्रुता करना।

५ कथित से भिन्न होने के कारण ही विपरीत या विरुद्ध। जैसे—गैर जरूरी, गैर मुमकिन, गैर वाजिब, गैर हाजिर आदि।

पु० दे० 'गैयर'।

†स्त्री १ दे० 'गैल'। २ दे० 'घर'।

ग़ैर-आबाद—वि० [अ० +फा०] १ (प्रदेश) जिसमे मनुष्यो की बस्ती न हो। २ (भूमि) जो जोती बोई न गई हो या न जाती हो।

ग़ैर-इसाफी—स्त्री० [अ०] अन्याय।

गै-रखी—स्त्री० [हि० गै=गला+रखी] सुनारो की बोली मे, हँसुली।

ग़ैर-जरूरी—वि० [अ०] अनावश्यक।

ग़ैर-जिम्मेदार—वि० [अ०+फा०] [भाव० गैर-जिम्मेदारी] १ जो जिम्मेदार या जवाबदेह न हो। २ जो अपनी जिम्मेदारी या उत्तर-दायित्व न समझता हो। अनुत्तरदायी।

ग़ैरत—स्त्री० [अ०] मन मे होनेवाली अपने ही सबध मे वह खेदजनक भावना जो कोई अनुचित या अशोभन काम करने पर उत्पन्न होती है या होनी चाहिए। लज्जा। शर्म।

ग़ैरतदार—वि० [अ० +फा०] लज्जाशील।

ग़ैरतमद—वि० =गैरतदार।

ग़ैर-दखीलकार—पु० [अ०+फा०] वह असामी (या खेतिहर) जिसे दखील-कारीवाले अधिकार प्राप्त न हो। (नान्आँकुपेन्सी टेनेन्ट)

ग़ैर-मजरूआ—वि० [अ०] (भूमि) जो जोती-बोई न गई हो या न जाती हो।

ग़ैर-मनकूला—वि० [अ०] (पदार्थ या सम्पत्ति) जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जाया जा सके। अचल। स्थावर।

ग़ैर-मामूली—वि० [अ०] १ नित्य के नियम से भिन्न। २ असाधारण।

ग़ैर-मिसिल—वि० [अ०] १ जो मिसिल मे न हो, बल्कि उसके बाहर हो। २ किसी दूसरे वर्ग या विभाग का। ३ अनुचित। ४ जो उपयुक्त अवसर पर न हो। बे-मौके। ५ अशिष्टतापूर्ण या अश्लील। (परिहास, व्यग्य आदि के सबध मे प्रयुक्त) जैसे—गैरमिसिल दिल्लगी।

ग़ैर-मुनासिब—वि० [अ०] जो मुनासिब अर्थात् उचित न हो। अनुचित।

ग़ैर-मुमकिन—वि० [अ०] जो मुमकिन अर्थात् सभव न हो। असभव।

ग़ैर-मुल्की—वि० [अ०] १ गैर या दूसरे देश का। विदेशी। २ दूसरे राज्यो या राष्ट्रो से सबध रखनेवाला। पर-राष्ट्रीय।

ग़ैर-रस्मी—वि० [अ०+फा०] (कार्य या व्यवहार) जो परपरा, रीति आदि के अनुसार न किया गया हो।

ग़ैर-वसली—स्त्री० [अ०] कच्चे मकानो की छत छाने की वह प्रणाली जिसमे बाँस की पतली कमाचियो को दृढतापूर्वक केवल बुन देते है और उन्हे रस्सियो से नही बाँधते।

ग़ैर-वसूल—वि० [अ०] [भाव० गैर-वसूली] जो वसूल या प्राप्त न हुआ हो, अभी वसूल होने को बाकी हो।

ग़ैर-वाजिब—वि० [अ०] अनुचित। नामुनासिब।

ग़ैर-सरकारी—वि० [अ०] १ जो सरकारी या राजकीय न हो बल्कि,

उससे भिन्न हो। अराजकीय। २ जिसके लिए सरकार उत्तरदायी न हो। (वक्तव्य आदि)

गैर-हाजिर—वि० [अ०] जो हाजिर या उपस्थित न हो। अनुपस्थित।

गैर-हाजिरी—स्त्री० [अ०] हाजिर या उपस्थित न होने की अवस्था या भाव। अनुपस्थिति।

गैरिक—पु० [स० गिरि+ठञ्—इक] १ गेरू। २ सोना। स्वर्ण।
वि० १ गेरू के रग मे रगा हुआ। २ गेरू के रग का।

गैरियत—स्त्री० [अ०] गैर (पराया या भिन्न) होने की अवस्था या भाव।

गैरी—स्त्री० [स०] लागलिका वृक्ष। विषलाँगला।
वि० [?] १ कूडा-करकट भरकर खाद बनाने का गड्ढा। २ खेत से काटकर लाए हुए डठलो आदि का ढेर। खरही।

गैरीयत—स्त्री०=गैरियत।

गैरेय—पु० [स० गिरि+ढक्—एय] शिलाजीत।

गैल—स्त्री० [हिं० गली] १ मार्ग। रास्ता। २ गली।
मुहा०—(किसी को) गैल करना=रास्ते मे जाने के लिए किसी को साथ कर देना। **(किसी की) गैल जाना**=(क) किसी के बतलाये हुए रास्ते पर जाना। अनुकरण या अनुसरण करना। (ख) कोई ऐसा काम करना जिससे किसी का सामना हो या विरोध करना पडे। **(किसी को) गैल बताना**=दे० 'रास्ता' के अतर्गत मुहा०—'(रास्ता बताना'। **(किसी को) गैल लेना**=रास्ते मे चलने के लिए किसी व्यक्ति को अपने साथ लेना।

गैलड—पु० [अ० गैर+हिं० लडका] वह लडका जिसे उसकी माँ अपने साथ लेकर दूसरे पति या यार के यहाँ चली आई हो।

गैलन—पु० [अ०] तरल पदार्थ मापने का एक अँगरेजी मान जो तीन सेर के लगभग होता है।

गैलरी—स्त्री० [अ०] १ सीढियो की तरह ऊपर-नीचे बनी हुई कोई ऐसी रचना जिस पर बहुत-से लोग बैठते या चीजे रखी जाती हो। २ उक्त कार्यों के लिए ऊपर के खड मे बनी हुई कोई समतल रचना।

गैला—पु० [हिं० गैल] १ गाडी के पहियो की लीक। २ बैलगाडियो आदि के चलने का रास्ता। ३ गैल या रास्ते मे चलनेवाला। बटोही। यात्री। उदा०—गैल चलत गैला हूँ मारे घायल पडे गरियाले मे।—ग्राम्य-गीत।
†वि० [हिं० गया] [स्त्री० गैली] गया-बीता। उदा०—गैली दीखे मीराँ बावली, सुपना आल जँजाल।—मीराँ।

गैलारा—पु०=गैला।

गैस—स्त्री० [अ०] १ किसी पदार्थ (या द्रव्य) का प्राकृतिक अथवा रासायनिक क्रिया से बना हुआ वह वायुवत् रूप जो अत्यत प्रसरणशील होता है। २ वह द्रव्य जिसे जलाकर रोशनी की जाती है तथा चीजे गरम की जाती है। ३ बडी लालटेन की तरह का वह उपकरण जिसमे गैस जलाकर रोशनी उत्पन्न की जाती है। ४ पाखाने आदि मे से निकलनेवाली तीव्र गधयुक्त वायु।

गैस-मापी—पु० [अ०+हिं०] गैस के आधान के मुँह पर लगा हुआ वह उपकरण जो गैस बाहर निकलने पर उसका मान या माप बतलाता है। (गैसोमीटर)

गैसा†—वि० [?] [स्त्री० गैसी]=गहरा। उदा०—सुनहु सूर तुम्हरे छिन छिन मति बडी पेट की गैसी हौ।—सूर।

गोइठा†—पु० [स० गो-विष्ठा] १ गाय के गोबर का सूखा हुआ उपला या चिप्पड। गोहरा। २ उपला। गोहरा।

गोंइड—पु० [हिं० गाँव+मेड] १ गाँव की सीमा। २ उक्त सीमा के आस-पास का क्षेत्र या भूमि।

गोंइयाँ†—उभय०=गोइयाँ।

गोई†— स्त्री० [हिं० गोहन] बैलो की जोडी।

गोच†—स्त्री० [स० गोचदना] जोक।

गोछ—स्त्री० [हिं० गलमोछ] १ गलमुच्छा। २ बहुत बडी मूँछ।

गोजना—स० [?] १ भद्दी तरह से मिला-जुलाकर खराब या गदा करना। २ घँघोलना। ३ खोसना।

गोजिया†—स्त्री०=गोभी।

गोटा—पु० [?] एक प्रकार का छोटा पेड।
†पु० दे० 'गोटा'।

गोठ—स्त्री० [स० गोष्ठ] धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

गोठना—स० [स० कुठन] (शस्त्र आदि की) धार या नोक कुठित या भोथरी करना।
स० [स० गोष्ठ] १ चारो ओर रेखा या लकीर बनाकर घेरना। २ पकवान के अदर मसाले, मेवे आदि भरकर उनका मुँह इस प्रकार मोड कर बद करना कि वे मसाले या मेवे बाहर न गिरने पावे।

गोठनी—स्त्री० [हिं० गोठना] लोहे, पीतल का एक छोटा औजार जिससे पकवानो का मुँह गोठते या मोडकर बद करते है।

गोड—पु० [स० गोण्ड] १ एक असभ्य जगली जाति जो प्राय गोडवाना प्रदेश (मध्य भारत) मे रहती थी और अब चारो ओर फैल गई है। २ उक्त जाति का कोई व्यक्ति। ३ वर्षाऋतु मे गाया जानेवाला एक राग।
†पु० [स० गोरणु] १ नाभि के ऊपर का निकला हुआ मास-पिंड। २ वह व्यक्ति जिसका उक्त मास-पिंड असाधारण रूप से बडा या मोटा हो।
पु० [स० गोष्ट] १ गायो के रहने का स्थान। २ लगर के ऊपर का गोलाकार भाग।

गोडरा—पु० [स० कुडल] [स्त्री० गोडरी] १ चरसे या मोट के ऊपर का काठ का घेरा। मेडरा। २ गोल आकार की कोई वस्तु। मेडरा। ३ गोल घेरा। ४ चारो ओर खीची हुई मडलाकार रेखा या लकीर।

गोडरी—स्त्री० [स० कुडली] १ कुडल की तरह की कोई गोलाकार रचना या वस्तु। २ दे० 'इँडुरी'।
स्त्री० [हिं० गोड] गोडवाने की बोली। गोडवानी।

गोडला†—पु०=गोडरा।

गोडवाना—पु० [हिं० गोड] मध्यभारत का वह प्रदेश जिसमे मूलत गोड जाति के लोग रहते थे।

गोडवानी—स्त्री० [हिं० गोडवाना] गोडवाना प्रदेश की बोली।
वि० गोडवाने का।

गोडा—पु० [स० गोष्ठ] १ घेरा हुआ स्थान। बाडा। २ गाँव या ऐसो ही कोई छोटी बस्ती। ३. किसी एक किसान के वे सब खेत या उनका घेरा

जो एक ही स्थान पर एक दूसरे से सटे हुए हो। ४ घर के बीच का आँगन। ५ विवाह के समय की परछन नामक रीति।

मुहा०—गोडा सीजना=दरवाजे पर बरात आने के समय कन्या-पक्ष से कुछ धन निछावर करके बाँटना या लुटाना।

† पु० [?] साल के जगलो मे होनेवाली एक प्रकार की लता।

गोडी—स्त्री० [हि० गोड] गोडवाना प्रदेश मे बोली जानेवाली गोड जाति की बोली। गोडवानी।

गोद—पु० [स० कुदुरु वा हि० गूदा] १ कुछ विशिष्ट पौधो तथा वृक्षो मे से निकलनेवाला चिपचिपा या लसीला तरल निर्यास जो जमकर डलो या दानो के रूप मे हो जाता है। २ उक्त निर्यास को पानी मे घोलकर तैयार किया हुआ वह रूप जिससे कागज आदि चिपकाये जाते है।

स्त्री० दे० 'गोदी'।

गोददानी—स्त्री० [हि० गोद+फा० दान] वह पात्र जिसमे गोद भिगोकर रखा रहे।

गोदनी† —स्त्री० दे० 'गोदी'।

गोदपँजीरी—स्त्री० [हि० गोद+पँजीरी] वह पँजीरी जिसमे गोद भी मिलाया गया हो।

गोंदपाग—पु० [हि० गोद+पाग] गोद और चीनी के मेल से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। पपडी।

गोदरा†—पु०[स० गुद्रा=एक घास] १ गोनरा नामक घास। २ नरम घास या पयाल का बना हुआ एक प्रकार का छोटा आसन।

गोदरी—स्त्री० [स० गुद्रा] १ एक प्रकार की मुलायम लबी घास जो पानी मे होती है। गोनी। २ उक्त घास की बनी हुई चटाई।

गोंदला—पु० [स० गुद्रा] १ नागरमोथा नामक घास की एक जाति। २ गोनरा या गोनी नामक घास।

गोंदा—पु० [हि० गूँधना] १ बुलबुलो को खिलाई जानेवाली गूँधे हुए भूने चने के बेसन की छोटी-छोटी गोलियाँ।

मुहा०—गोंदा दिखाना=(क) बुलबुलो को लडाने के लिए उनके आगे गोदा फेकना। (ख) दो पक्षी मे लडाई लगाना।

२ गीली मिट्टी के वे पिंड जो कच्ची दीवारे बनाने के समय एक पर एक रखे जाते है। गारा। उदा०—उसको मिट्टी के गोदो की ऊँचाई देकर फूस से ढक दिया।—वृन्दावनलाल वर्मा।

गोदी†—स्त्री० [स० गुन्द्रा] एक प्रकार की घास जिसके डठलो से चटाइयाँ बनती हैं। गोदरी।

गोंदीला—वि० [हि० गोद+ईला(प्रत्य०)] [स्त्री० गोदीली] १ (वृक्ष) जिसमे से गोद निकलती हो। २ जिसमे गोद लगी हो। गोद से युक्त।

गोंवडा—पु० [हि० गाँव] गाँव के आस-पास के खेत।

गो—स्त्री० [स०√गम् (जाना)+डो] १ गाय। गौ। २ वृष राशि। ३ वृषभ नामक ओषधि। ४ इद्रिय। ५ वाणी। ६ सरस्वती। ७ जिह्वा। जीभ। ८ प्रकाश या उसकी किरण। उदा०—ब्वात ठौर तजि गो दिसि जाही।—जायसी। ९ देखने की शक्ति। दृष्टि। १० बिजली। ११ पृथ्वी। १२ दिशा। १३ जननी। माता। १४ दूध देनेवाले पशु। जैसे—बकरी, भैस आदि।

पु० [स०] १ बैल। २ शिव का नदी नामक गण। ३ घोड़ा। ४. चद्रमा। ५. शिव। ६ आकाश। ७ स्वर्ग। ८. तीर। बाण। ९ वह जो किसी की प्रशसा करता या यश गाता हो। १० गवैया। गायक। ११ जल। पानी। १२ वज्र। १३ शरीर के रोएँ। रोम। १४ शब्द। १५ नौ की सख्या।

अव्य० [?] सख्यावाचक विशेषणो के साथ प्रयुक्त होनेवाला एक अव्यय जो गिनती पर जोर देने के लिए 'ठो' की तरह आता है। (पूरब) जैसे—चार गो कपडा।

स्त्री० [फा०] गाय। गौ।

पद—गो-कुशी (देखे)।

अव्य० [फा०] यद्यपि।

पद—गो कि=यद्यपि।

वि० [फा०] १ कहने या बोलनेवाला। जैसे—दरोग-गो-झूठ बोलनेवाला। २ बतलाने, समझाने या व्याख्या करनेवाला। जैसे—कानूनगो=नियम या विधान बतलानेवाला।

अ० भूतकालिक 'गया' क्रिया का स्थानिक रूप।

प्रत्य० हि० 'गा' प्रत्यय का स्थानिक रूप। (ब्रज०)

गोअर†—वि० दे० 'गँवार'। उदा०—सखि हे बुझल कान्ह गोअर।—विद्यापति।

†पु०=ग्वाल।

गोइँजी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जिसका मुँह और सिर देखने मे बहुत कुछ एक जैसा लगता है।

गोइँठा—पु० [स० गो+विष्ठा] उपला। गोहरा। कडा।

गोइँठौरा—पु० [हि० गोइँठा+औरा (प्रत्य०)] व्यक्ति जो उपले या गोहरे बनाता तथा बेचता हो।

गोइँड(१) †—पु० [स० गोष्ठ=ग्राम] १ गाँव की सीमा। २ गाँव की सीमा के पास की जमीन। ३ किसी स्थान के आस-पास का प्रदेश।

गोइदा—पु० [फा० गोयन्द] गुप्त रूप से समाचार एकत्र करके किसी के पास पहुँचानेवाला व्यक्ति। गुप्तचर। जासूस। भेदिया।

गोइ*—पु० [?] गेंद।

गोइयाँ—उभय० [हि० गोहनियाँ] बराबर साथ मे रहनेवाला सगी या साथी।

गोइयार—पु० [देश०] खाकी रग का एक प्रकार का पक्षी।

गोई—स्त्री० [फा०] १ कहने की क्रिया या भाव। २ वह जो कुछ कहा जाय। कथन। उक्ति।

स्त्री०=गोइयाँ।

स्त्री० [?] १ रूई की पूनी। २ बैलो की जोडी।

गोऊ†—वि० [हि० गोना+ऊ (प्रत्य०)] १ कोई चीज या बात किसी से छिपानेवाला। २ छीनने या हरण करनेवाला।

गो-कटक—पु० [ष० त०] गोक्षुर। गोखरू।

गो-कन्या—स्त्री० [ष० त०] कामधेनु।

गो-कर—पु० [ब० स०] सूर्य।

गो-कर्ण—वि० [ब० स०] जिसके कान गऊ के कानो की तरह लबे हो।

पु० [ष० त०] १ गौ के कान। २ [ब० स०] खच्चर, जिसके कान गौ के कानो की तरह लबे होते है। ३ एक तरह का हिरन। ४ एक तरह का तीर या बाण। ५ एक प्रकार का साँप जिसके कान की तरह के अग होते है। ६ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध शैव तीर्थ। ७ उक्त

तीर्थ मे स्थापित शिव की मूर्ति। ८ शिव के एक गण का नाम। ९ नाप के लिए, बित्ता। बालिश्त। १० नृत्य मे हाथ की एक प्रकार की मुद्रा।

गोकर्णी—स्त्री० [स० गोकर्ण+ङीष्] मूर्वा या मुरहरी नाम की लता। वि० जिसका आकार या रूप गौ के कान की तरह समकोणिक त्रिभुज की तरह का हो।

गोका—स्त्री० [स० गो+कन्–टाप्] १ छोटी गाय। २ नील गाय। †वि० [हि० गौ+का] गाय का। जैसे—गौ का दूध। (पश्चिम)

गोकिराटी—स्त्री० [स० गोकिरा=वाणी√अट् (गति)+अच्—ङीष्] सारिका (पक्षी)।

गो-कील—पु० [ष० त०] १ हल। २ मूसल।

गो-कुजर—पु० [स० त०] १ खूब मोटा-ताजा और बलिष्ठ बैल या साँड। २ शिव का एक गण।

गोकुंद—स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत की नदियो मे पाई जानेवाली एक प्रकार की मछली।

गो-कुल—पु० [ष० त०] १ गौओ का झुड। गो-समूह। २ गोशाला। ३ मथुरा के पास की वह बस्ती जहाँ नद और यशोदा ने श्रीकृष्ण और बलराम को पाला था।

गोकुल-नाथ—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

गोकुल-पति—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

गोकुलस्थ—पु० [स० गोकुल√स्था (ठहरना)+क] १ वल्लभी गोस्वामियो का एक भेद। २ तैलग ब्राह्मणो का एक भेद।

गो-कुशी—स्त्री० [फा०] गौ का मास खाने के लिए किया जानेवाला गौ का वध। गो-हत्या। गोवध।

गो-कृत—पु० [तृ० त०] गोबर।

गोकोक्ष—पु० [?] जोक नामक कीडा।

गोकोस—पु० [स०गो-क्रोश] १ उतनी दूरी जहाँ तक गाय के रँभाने का शब्द पहुँचता हो। २ छोटा या हलका कोस।

गोक्ष—पु० [स० गो-अक्ष, ष० त० ?] =गोकोक्ष (जोक)।

गो-क्षीर—पु० [ष० त०] गौ का दूध।

गोक्षुर—पु० [ष० त०] १ गौ का खुर। २ गोखरू नामक क्षुप और उसका फल।

गोख†—पु० [स० गवाक्ष] झरोखा। (राज०) उदा०—ऊभी गोख अवेखियौ पेला रौदल सेर।—कविराजा सूर्यमल।

गोखग—पु० [स० गो और खग] पशु और पक्षी।

गोखरू—पु० [स० गोक्षुर] १ एक प्रकार का क्षुप जिसमे चने के बराबर कडे और कँटीले फल लगते है। २ उक्त क्षुप के फल जो दवा के काम आते है। ३ उक्त फलो के आकार के धातु के बने वे कँटीले दाने जो मस्त हाथियो को वश मे करने के लिए उनके रास्ते मे बिछाये जाते है। ये दाने हाथी के पैरो मे चुभकर उन्हे चलने या भागने नही देते। ४ गोटे और बादले से बनाया हुआ उक्त आकार का वह साज जो कपडो मे शोभा के लिए टाँका जाता है। ५ शरीर के किसी अग मे काँटा गडने या कोई रोग होने के कारण बना हुआ कडा गोलाकार उभार। ६ पौधो की बाल। ७ हाथ मे पहनने के कडे के आकार का एक गहना। ८ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोखा—पु० [स० गवाक्ष] झरोखा।

पु० [स० गो से] गौ या बैल का कच्चा चमडा।

गो-खुर—पु० [ष० त०] १ गौ का पैर। २ जमीन पर पडा हुआ गौ के खुरो का निशान।

गोखुरा—पु० [स० गोक्षुर] साँप।

गोगा†—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० गोगी] छोटा काँटा। मेख।

गोगापीर—पु० एक पीर जिसकी पूजा प्राय छोटी जातियो के हिंदू और मुसलमान करते है। (पश्चिम)

गो-गृह—पु० [ष० त०] गोशाला।

गो-ग्रंथि—स्त्री० [मध्य० स०] १ गोबर। २ [ब० स०] गोशाला। ३ [ष० त०] गोजिह्विका नामक ओषधि।

गो-ग्रास—पु० [ष० त०] भोजन का वह थोडा-सा अश जो खाने से पहले गौ को देने के उद्देश्य से निकालकर अलग रख दिया जाता है।

गोघरी—स्त्री० [देश०] गुजरात मे होनेवाली एक प्रकार की कपास।

गो-घात—पु० [स० गो√हन् (हिसा)+अण्, उप० स०] १ दे० 'गोघातक'। २ [ष० त०] गोहत्या।

गो-घातक—पु० [ष० त०] १ गौ की हत्या करनेवाला। २ कसाई।

गो-घाती (तिन्)—पु० [स० गो√हन्+णिनि, उप० स०] =गोघातक।

गो-घृत—पु० [ष० त०] गौ के दूध से तैयार किया हुआ घी।

गो-घोख—पु० [स० गो-घोष] गोशाला। उदा०—घर हट ताल भमर गोघोख।—पृथीराज।

गोघ्न—वि० [स० गो√हन्+क] १ गौ को मारने या उसका वध करनेवाला।

पु० अतिथि या मेहमान जिसके सत्कार के लिए किसी समय गौ का वध करने की प्रथा थी।

गो-चदन—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का चदन।

गोचदना—स्त्री० [स० गोचन्दन+अच्+टाप्] एक प्रकार की जहरीली जोक।

गोचना†—पु० [हि० गेहूँ+चना] ऐसा गेहूँ जिसमे आधे के लगभग चना मिलाया गया हो।

‡स० [?] गति मे बाधक होना। रास्ता रोकना।

गोचनी—स्त्री०=गोचना (गेहूँ और चना)।

गो-चर—वि० [स० गो√चर् (गति)+अच्, उप० स०] जिसका ज्ञान इद्रियो द्वारा हो सके।

पु० १ वे सब चीजे या बाते जिनका ज्ञान इद्रियो से होता अथवा हो सकता हो। उदा०—गो गोचर जहँ लगि मन जाई।—तुलसी। २ गौओ के चरने का स्थान। चरागाह। चरी। (पास्चर लैंड) ३ प्रदेश। प्रात। ४ फलित ज्योतिष मे वह गणना जो मनुष्य की जन्मपत्री के अभाव मे उसके प्रसिद्ध नाम के आधार पर की जाती और वास्तविक से कुछ भिन्न तथा स्थूल होती है।

गोचर-भूमि—स्त्री० [कर्म० स०] गौओ के चरने के लिए छोडी हुई भूमि। चरागाह। चरी। (पास्चर-लैंड)

गोचरी—स्त्री० [स० गोचर से] भिक्षावृत्ति।

‡स्त्री०=गोचर-भूमि।

गोचर्म (र्मन्)—पु० [ष० त०] १ गौ का चमडा। २. जमीन की एक

पुरानी नाप जो २१०० हाथ लबी और इतनी ही चोडी होती थी। चरस। चरसा।

गो-चारक—पु० [ष० त०] वह जो गौएँ चराने का काम करता हो।

गो-चारण—पु० [ष० त०] गौएँ-भैसे आदि चराने का काम।

गो-चारी (रिन्)—पु० [स० गो√चर्+णिच् + णिनि, उप० स०]=गोचारक।

गोची—स्त्री० [स० गो√अच् गति)+क्विप+ ङीष्, नलोप, अलोप] १. एक प्रकार की मछली। २ हिमालय की एक पत्नी का नाम।

गोज—वि० [स० गो√जन् (जन्म लेना)+ड, उप० स०] गौ से उत्पन्न, निकला या बना हुआ।

पु० १ दूध से बना हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। २ एक प्रकार के प्राचीन क्षत्रिय जो राज्याभिषेक के अधिकारी नही होते थे।

पु० [फा०] १ अपानवायु। पाद। २ चिल्गोजा।

गोजई—स्त्री० [हि० गेहूँ+जौ] ऐसा गेहूँ जिसमे आधे के लगभग जौ मिला हुआ हो।

गो-जर—पु० [स त०] बुड्ढा बैल या साँड।

पु० दे० 'कनखजूरा'।

गो-जल—पु० [ष० त०] गो-मूत्र।

गोजा†—पु० [स० गजावन] छोटे पौधो का नया कल्ला।

†पु०=बडी गोजी (छडी या डडा) ।

गोजागरिक—पु० [स० गो =स्वार्थ-जागर =सावधानी, स०त०, गोजागर+ठन्—इक] १ कँटियारी नाम का क्षुप। २ सुख और सौभाग्य।

गोजिया—स्त्री० [स० गोजिह्वा] बनगोभी नाम की घास।

गो-जिह्वा—स्त्री० [स० ष० त०] बनगोभी नामक घास जो औषध के काम आती है।

गोजी†—स्त्री० [स० गजावन] १ पशुओ विशेषत गौओ को हाँकने की लकडी। २ बडी और मोटी लाठी। ३ उक्त लाठियो से खेला जानेवाला वह खेल जिसमे लाठी चलाने और लाठी रोकने का अभ्यास किया जाता है।

गो-जीत—वि० [स० गोजित्] जिसने इद्रियो को जीत लिया हो। जितेद्रिय।

गोज्जल—पु० [स० ?] छोटे जलाशयो मे रहनेवाली एक प्रकार की मछली।

गोझनवट†—स्त्री० [देश०] स्त्रियो की साडी के अचल या पल्ले का उतना अश जो पीठ और सिर पर रहता है।

गोझा—पु० [स० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १ गुझिया नामक पकवान। २ जेब। खलीता। ३ जोक। ४ दे० 'गुज्झा'।

गोट—स्त्री० [स० गोष्ठ] चुनरी, धोती, लिहाफ आदि के किनारो पर सुन्दरता के लिए लगाई जानेवाली कपडे की पट्टी। मगजी।

स्त्री० [स० गोष्ठी] गोष्ठी।

स्त्री० [स० गुटक] गोटी। (दे०)

स्त्री० [स० गोष्ठ] गोठ। गोशाला।

†पु० छोटा गाँव। खेडा।

गोट-बस्ती—स्त्री० [हि० गोट+बस्ती] १ छोटा गाँव। २ छोटी बस्ती।

गोटा—पु० [हि० गोट] १ रुपहले या सुनहले तारो की बनी हुई बडी पट्टी जो गोट के रूप मे सिले हुए कपडो के किनारा पर टाँकी जाती है।

पद—गोटा-पट्ठा। (देखे)

२ भुना हुआ धनिया अथवा उसके बीज। ३ भोजन के बाद खाने के लिए एक मे मिलाये हुए इलायची, खरबूजे, सुपारी आदि के कतरे हुए छोटे-छोटे टुकडे। ४ गरी या नारियल का गोला। ५ पेट के अन्दर का सूखा हुआ मल। कडी।

†पु०=गोला। उदा०—(क) चदा गोटा टीका करि लै सूरा करि लै बाटी।—गोरखनाथ। (ख) औ घूटहि तँह ब्रज के गोटा।—जायसी।

†वि० १ पूरा। समूचा। सारा। २ कुल। सब। (पूरब)

गोटा-पट्ठा—पु० [हि० गोटा+पट्ठा] गोटा और पट्ठा नामक बादले की पट्टियाँ जो कपडो पर प्राय साथ-साथ टाँकी जाती है।

गोटिया-चाल—स्त्री० [हि० गोटी+चाल] वैसी ही दाँव-पेच भरी चाल जैसी चौपड, शतरज आदि की गोट चलने मे चली जाती है। गहरी और छिपी हुई चालबाजी।

गोटी—स्त्री० [स० गुटिका] १ ककड, पत्थर इत्यादि का छोटा टुकडा जिससे लडके कई तरह के खेल खेलते हैं। २ लकडी, हाथीदाँत आदि के बने हुए वे विशिष्ट आकार-प्रकार के टुकडे जिनसे चौपड, शतरज आदि खेलते हैं। नरद। मोहरा। ३ कार्य सिद्ध होने का उपयुक्त अवसर। उदा०—सतरु कोटि जो पाइअ गोटी।—जायसी। ४ कार्य सिद्ध करने के लिए चली जानेवाली चाल या की जानेवाली युक्ति।

मुहा०—गोटी जमना या बैठना=चली हुई चाल या की हुई युक्ति का ठीक बैठना और कार्य सिद्ध होने का निश्चय या सभावना होना। **गोटी लाल होना**=युक्ति ठीक बैठने के कारण कार्य पूरी तरह से सिद्ध होना या पूरा लाभ होना।

५ एक प्रकार का खेल जो ९, १५, १८ या इससे अधिक गोटियो से भूमि पर एक दूसरी को काटती हुई कई आडी और सीधी रेखाएँ बनाकर खेला जाता है।

पद—गोटिया-चाल (देखें)।

गोठ—स्त्री० [स० गोष्ठ, पा०प्रा० गोट्ठ, ब०नै० उ० गोठ, सि० गोठु, गु० गोठो, मरा० गोठा] १ गौएँ बाँधकर रखने का घेरा या स्थान। गोशाला। २ गोष्ठी नामक श्राद्ध। ३ नगर या बस्ती के बाहर किसी रमणीक स्थान मे की जानेवाली वह सैर जिसमे लोग वही भोजन आदि बनाकर खाते और घूमते-फिरते है। (पिकनिक)

गोठा†—पु० [स० गोष्ठी] परामर्श। सलाह।

गोठि—स्त्री० १ =गोठ। २ =गोष्ठी।

गोठिल†—वि० [हि० गुठला] १ जिसमे गुठले पडे हो। गुट्ठल। २ जिसकी धार या नोक मुडकर बेकाम हो गई हो। कुद। भोथरा।

गोड—पु० [स० गम, गो] १ पाँव। पैर। (पूरब)

क्रि० प्र०—दबाना।

मुहा०—(किसी के) गोड पडना या लगना=चरण छूना। प्रणाम करना। **गोड भरना**=पैरो मे आलता या महावर लगाना।

२ टाँग। ३ जहाज के लगर का फाल जिसके सहारे वह जमीन पर टिकता या ठहरता है।

†पु० [?] भडभूँजो की एक जाति।

गोड़इत—पु० [हि० गोईंड+ऐत (प्रत्य०)] १ मध्ययुग मे चिट्ठियाँ

आदि ले जानेवाला हरकारा। २ आज-कल गाँव-देहातो मे पहरा देने-वाला राजकीय चौकीदार।

गोडई—स्त्री० [हिं० गोड+पाई] करघे की वे लकडियाँ जो पाई करने मे पाई के दोनो ओर खडी की जाती है। (जुलाहे)

†स्त्री०=गोडाई।

गोडगाव—पु० [हिं०गोड=पैर +गाव] वह छोटी रस्सी जिसे गिरावँ की तरह बनाकर और पिछाडीवाली रस्सी के सिरो पर बाँधकर घोडे के पिछले पैर मे फँसाते है।

गोडन—पु० [देश०] वह प्रक्रिया जिससे ऐसी मिट्टी से भी नमक बनाया जा सकता है जो नोनी नही होती।

गोडना—स० [हिं० कोडना] फावडे से अखाडे, खेत आदि की मिट्टी इस प्रकार खोदना तथा उसे उलट-पलट करना कि वह पोली, भुरभुरी और मुलायम हो जाय।

गोडली—उभय० [कर्णाटी] वह जो सगीत विशेषत नृत्य मे पारगत हो।

गोडवाँस—पु० [हिं० गोड=पैर+वाँस (प्रत्य०)] पैर विशेषत पशुओ के पैर बाँधने की रस्सी।

गोडवाना—स० [हिं० गोडना का प्रे०] दूसरे को खेत आदि गोडने मे प्रवृत्त करना। गोडने का काम दूसरे से कराना।

गोड-सँकर†—पु० [हिं० गोड+साँकर] पैरो मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोड़-सिहा†—वि० [हिं० गोड+सिहाना=ईर्ष्या करना] सिहाने अर्थात् डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

गोड-हरा—पु० [हिं० गोड+हरा (प्रत्य०)] पैर मे पहनने का कोई गहना। जैसे—कडा, पाजेब आदि।

गोडाँगी†—स्त्री० [हिं० गोड+अगी] १ पायजामा। २ जूता।

गोडा—पु० [हिं० गोड=पैर] पैर और जाँघ के बीच का जोड। घुटना। (पश्चिम)

मुहा०—गोडे थकना=परिश्रम, वृद्धावस्था आदि के कारण बहुत शिथिल होना।

गोडा†—पु० [हिं० गोड=पैर] १ चौकी, तिपाई, पलग आदि का पाया। २ वह रस्सी जिसमे पानी सीचने की दौरी बाँधी जाती है। ३ वृक्ष का थाँवला या थाला।

गोडाई—स्त्री० [हिं० गोडना] गोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गोड़ाना—स० [हिं० गोडना का प्रे०] खेत आदि की गोडाई दूसरे से कराना।

†अ० खेत आदि का गोडा जाना।

गोडा पाई†—स्त्री० [हिं० गोडना+पाई (जुलाहो की)] बार-बार कही आते-जाते रहना।

गोडारी†—स्त्री० [हिं० गोड=पैर+आरी (प्रत्य०)] १ खाट, पलग आदि का वह भाग जिधर पैर रखे जाते है। पैताना। २ जूता।

†स्त्री० [हिं० गोडना ?] तुरत खोदकर निकाली हुई घास।

गोडिया—स्त्री० [हिं० गोड=पैर का अल्पा०] १ छोटा गोडा। २ छोटा पैर।

वि०,पु० [हिं० गोटी ?] तरह तरह की युक्तियाँ लगाने और जोड-तोड बैठानेवाला। काइयाँ। चालाक।

†पु० [?] १ मल्लाह। २ सँपेरा। उदा०—कलपै अकबर काय, गुण पूगीधर गोडिया।—दुरसाजी।

गोडी—स्त्री० [हिं० गोटी] किसी युक्ति के फलस्वरूप उत्पन्न ऐसी स्थिति जिसमे कुछ लाभ की सभावना हो। प्राप्ति का डौल।

मुहा०—गोडी जमना या बैठना=फायदे के लिए जो चाल चली गई हो उसका सफल होना। **गोडी हाथ से जाना**=उक्त प्रकार का प्रयत्न विफल होना।

†स्त्री०=गोड (चरण या पैर)।

मुहा०—(कहीं किसी की) गोडी आना या पडना=किसी का कही आकर उपस्थित होना या पहुँचना।

गोढ—पु०=गोठ (गोशाला)।

गोणी—स्त्री० [स० √गुण् (आवृत्ति)+घञ् ? ङीप्] १ दोहरे टाट का बोरा। २ अनाज आदि की एक पुरानी नाप या तौल। ३ ऐसा पतला कपडा जिसमे कोई चीज छानी जा सके।

गोत—पु० [स० गोत्र] १ गोत्र। २ कुल, परिवार या वश। जैसे—नात का न गोत का, बाँटा माँगे पोत का।—कहा०। ३ समूह। उदा०—मनु कागदि कपोत गोत के उडाये। —रत्ना०।

†स्त्री० [हिं० गोतना] १ गोते या डुबाये जाने की क्रिया या भाव। २ तद्रा। ३ चिता। फिक्र।

गोतम—पु० [स० ब० स०, पृषो० सिद्धि] १ एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि जो अहल्या के पति थे। २ एक मत्रकार ऋषि। ३ दे० 'गौतम'।

गोतमी—स्त्री० [स० गोतम+ङीष्] गोतम ऋषि की पत्नी, अहल्या।

गोता—पु० [अ० गोत] १ गहरे जलाशय मे उतरकर अपने शरीर को जल मे इस प्रकार डुबाना कि बाहर कोई अग न रह जाय। डुबकी।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी को) गोता देना=किसी को जल मे उक्त प्रकार से डुबाना और निकालना।

२ नदी, समुद्र आदि के तल मे पडी हुई चीजे निकालने के लिए उक्त प्रकार से उसके तल तक जाने की क्रिया या भाव। ३ किसी अथाह या बहुत गहरी चीज या बात मे से किसी तत्त्व का पता लगाने का प्रयत्न। जैसे—साहित्य मे गोता लगाना। ४ इस प्रकार कही से अनुपस्थित या गायब हो जाना कि किसी को कुछ पता न चले। जैसे—यह धोबी तो महीने-महीने भर का गोता लगाया करता है। ५ सहसा होनेवाली कोई बहुत बडी भूल। (क्व०)

मुहा०—गोता खाना=(क) कोई बहुत बडी भूल या हानि कर बैठना। (ख) धोखे मे आना। छल मे फँसना।

†पु० [स० गोत्र] समान गोत्र या वश। जैसे—नाते-गोते के लोग।

गोताखोर—पु० [अ०] १ वह जो गहरे पानी मे गोता लगाकर नीचे की चीजे निकाल लाने का व्यवसाय करता हो। (डाइवर) २ जल के अदर गोता लगाकर चलनेवाली डुबकनी नाव। (सब मेरीन)

गोतामार†—पु०=गोताखोर।

गोतिया†—वि० [स० गोत्र] १ गोत्र-सबधी। २ अपने गोत्र का। गोती।

गोती—वि० [स० गोत्रीय] [स्त्री० गोतिन, गोतिनी] (व्यक्ति) जो अपने ही गोत्र का हो।

गोतीत—वि० [गो-अतीत, द्वि० त०] जो इन्द्रियो द्वारा न जाना जा सके। पु० ईश्वर।

गो-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] गोशाला।

गोतीर्थक—पु० [स० गोतीर्थ+कन्] सुश्रुत के अनुसार फोडे आदि चीरने का एक ढग या प्रकार।

गोत्र—पु० [स० गो√त्रै (पालन करना)+क] १ सतति। सतान। २ नाम। सज्ञा। ३ क्षेत्र। ४ वर्ग। समूह। ५ राजा का छत्र। ६ बढती। वृद्धि। ७ धन-सपत्ति। दौलत। ८ पर्वत। पहाड। ९ बधु। भाई। १० कुल। वश। ११ भारतीय आर्यो मे किसी कुल या वश का एक प्रकार का अल्ल या सज्ञा जो किसी पूर्वज अथवा कुल-गुरु ऋषि के नाम पर होती है। वश-नाम। जैसे—काश्यप, शाडिल्य, भारद्वाज आदि गोत्र।

गोत्र-कार—पु० [स० गोत्र√कृ (करना)+अण्, उप० स०] वह ऋषि जो किसी गोत्र के प्रवर्त्तक माने जाते हो।

गोत्रज—वि० [स० गोत्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] १ किसी के गोत्र मे उत्पन्न। २ वे जो एक ही गोत्र म उत्पन्न हुए हो। गोती।

गोत्र-प्रवर्त्तक—वि० [ष० त०] (ऋषि) जो किसी गोत्र के मूल पुरुष माने जाते हो। जैसे—भारद्वाज, वसिष्ठ आदि।

गोत्र-सुता—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गोत्रा—स्त्री० [स० गोत्र+टाप्] १ गौओ का झुड या समूह। २ पृथ्वी।

गोत्री (त्रिन्)—वि० [स० गोत्र+इनि] एक ही अर्थात् समान गोत्र मे उत्पन्न होनेवाले (व्यक्ति)। गोती।

गोत्रोच्चार—पु० [गोत्र-उच्चार, ष० त०], १ विवाह के समय वर और वधू के वश, गोत्र और पूर्वजो आदि का दिया जानेवाला परिचय। २ किसी के पूर्वजो तक को दी जानेवाली गालियाँ। (परिहास और व्यग्य)

गोदत—पु० [ष० त०] गोदती हरताल।

गोदती—स्त्री० [स० गोदन्त+ङीष्] वह कच्ची और सफेद हरताल जो अभी शुद्ध न की गई हो।

गोद—स्त्री० [स० क्रोड] १ बैठे हुए व्यक्ति का सामने का कमर और घुटनो के बीच का भाग जिसमे बच्चो आदि को लिया जाता है। २ खडे हुए मनुष्य का वक्ष स्थल और कमर के बीच का वह स्थान जिस पर बच्चो को बैठाकर हाथ के घेरे से सँभाला जाता है।

पद—गोद का बच्चा=ऐसा छोटा बच्चा जो प्राय गोद मे ही रहता हो।

मुहा०—(किसी को) गोद बैठाना या लेना =किसी को अपना दत्तक पुत्र बनाना।

३ स्त्रियो की साडी का वह भाग जो पेट तथा वक्ष स्थल पर रहता है। अचल।

मुहा०—(किसी के आगे) गोद पसारकर बिनती करना या माँगना = अत्यन्त अधीरता से माँगना या प्रार्थना करना। अपनी असहाय तथा दीन अवस्था बतलाते हुए किसी से किसी बात की प्रार्थना करना। **गोद भरना**=(क) सौभाग्यवती स्त्रियो के अचल मे मगल कामना से नारियल, मिठाई आदि रखना जो शुभ समझा जाता है। (ख) सतान होना। औलाद होना।

४ कोई ऐसा स्थान जहाँ किसी को माँ की गोद का-सा आराम तथा सुख मिले। जैसे—प्रकृति की गोद मे ही आपका लालन-पालन हुआ था।

गोद-गुदाली—पु० [देश०] गूलू नाम का पेड।

गोदनहर—स्त्री० =गोदनहारी।

गोदनहरा—पु० [हि० गोदना+हरा (प्रत्य०)] १ गोदना गोदने का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २ वह व्यक्ति जो माता छापता या टीका (सूई) लगाता हो।

गोदनहारी—स्त्री० [हि० गोदना+हारी (प्रत्य०)] कजड या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदती है।

गोदना—स० [हि० खोदना=गडाना] १ कोई नुकीली तथा कडी चीज निरर्थक किसी कोमल तल मे गडाना या चुभाना। जैसे—चमडे मे सूई गोदना। २ बिल्कुल निरर्थक रूप मे अक्षर, चिह्न आदि बनाना। जैसे—लडका लिखता क्या है, यो ही बैठा-बैठा गोदा करता है। ३ किसी को उत्तेजित या प्रेरित करनेवाली कोई क्रिया करना या बात कहना। ४ चुभती या लगती हुई कोई कडवी या कडी बात कहना। ५ हाथी के मस्तक मे अकुश गडाना।

[स० =गोडना (जमीन)।

पु० १ तिल के आकार का वह विशिष्ट प्रकार का चिह्न या बिदी जो शरीर के किसी अग पर सुन्दरता, पहचान आदि के लिए नील या कोयले के पानी मे डुबाई हुई सूई बार-बार गडाकर बनाई जाती है।

विशेष—ऐसी एक या अनेक बिदियाँ प्राय गाल, कलाई, आदि पर यो ही अथवा कुछ विशिष्ट आकृतियो के रूप मे बनाई जाती है।

२ वह सूई जिसकी सहायता से अनेक प्रकार के रोगो (जैसे—प्लेग, शीतला, हेजा आदि) से रक्षित रखने के लिए कुछ विशिष्ट ओषधियाँ शरीर मे प्रविष्ट की जाती है। सूई। ३ खेत गोडने का कोई उपकरण।

गोदनी—स्त्री० [हि० गोदना] १ कोई ऐसी चीज जिससे गोदा जाय। २ गोदना गोदने की सूई।

गोदर—वि० [हि० गदराना] १ गदराया हुआ। २ पूरी तरह से युवा अवस्था मे आया हुआ।

गोदा—स्त्री० [स० गो√दा (देना)+क—टाप्] १ गोदावरी नदी। २ गायत्री स्वरूपा महादेवी।

पु० [हि० गोदना] चित्रकला मे वे छोटे-छोटे बिन्दु जो आकृतियो आदि के स्थान और रूप-रेखा स्थिर करने के लिए लगाये जाते है।

पु० [?] १ कटवाँसी बाँस। २ वृक्ष की नई डाल या शाखा। ३ गूलर, पीपल, बड आदि के पके हुए फल।

गो-दान—पु० [ष० त०] १ शास्त्रीय विधि से सकल्प करके ब्राह्मण को गौ दान करने की क्रिया जिसका विधान कुछ विशिष्ट शुभ अवसरो पर अथवा प्रायश्चित्त आदि के लिए किया गया है। २ एक धार्मिक सस्कार जो विवाह से पहले ब्राह्मण कुमार को १६ वर्ष, क्षत्रिय को २२ वर्ष और वैश्य को २४ वर्ष की अवस्था मे करना चाहिए। केशात।

गोदाना—स० [हि० गोदना] (गोदना) गोदने का काम किसी से कराना।

गोदाम—पु० [अ० गोडाउन] वह घर या कमरा जहाँ पर बिक्री के लिए खरीदी हुई वस्तुएँ जमा करके रखी जाती है।

गो-दारण—पु० [स० गो√दृ (विदारण)+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] १. जमीन खोदने की कुदाल। २ जमीन जोतने का हल।

गोदावरी—स्त्री० [स० गो√दा (देना)+वनिप्—ङीप्, र] दक्षिण भारत

की एक प्रसिद्ध पवित्र नदी जो नासिक के पास से निकलकर बगाल की खाडी मे गिरती है।

गोदी†—स्त्री०=गोद।

स्त्री० [मरा०] समुद्र का घाट जहाँ से जहाजो पर माल चढाया-उतारा जाता है। (डाक)

पु० [देश०] एक प्रकार का बबूल जो प्राय नहरो के किनारे बाँधो पर लगाया जाता है।

गोदी मजदूर—पु० [मरा०+फा०] जहाजो पर से माल उतारने तथा चढाने का काम करनेवाला मजदूर।

गो-दुह—पु० [स० गो√दुह (दूहना)+क्विप्, उप० स०] १ गौ दुहनेवाला। २ ग्वाला।

गोदूनिका—स्त्री[ब०] बेत की जाति का एक वृक्ष जो पूर्वीय बगाल और आसाम मे बहुत होता है। इसकी टहनियो से चटाइयाँ बनाई जाती है।

गो-दोहन—पु० [ष० त०] गौ का दूध दुहने की क्रिया या भाव।

गोदोहनी—स्त्री० [स० दोहन+ङीप्, गो-दोहनी, ष० त०] वह बरतन जिसमे गौ का दूध दूहा जाता है।

गो-द्रव—पु० [ष० त०] गौ या बैल का मूत्र । गोमूत्र।

गोध—स्त्री० [स० गोधा] छिपकली की तरह का गोह नामक एक जगली जानवर।

गो-धन—पु० [ष० त०] १ गौओ का झुड या समूह । २ [कर्म० स०] गौ या गौओ के रूप मे होनेवाली सपत्ति। ३ [गो-धन=शब्द, ब० स०] चौडे फलवाला एक प्रकार का तीर। ४ जलाशयो के पास रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर भूरा, पैर हरे और चोच लाल होती है।

†पु० =गोवर्धन।

गोधना†—पु०[स० गोधन] भाई दूज के दिन का एक कृत्य जिसमे स्त्रियाँ गोबर से भाई के शत्रु की आकृति बनाकर उसे मूसल से मारती है।

गो-धर—पु० [स० √धृ (धारण)+अच्, गो-धर, ष० त०] पर्वत। पहाड।

गो-धर्म्म—पु० [ष० त०] पशुओ की भाँति पराये पुरुषो या स्त्रियो से सभोग करना।

गोधा—स्त्री० [स० √गुध् (लपेटना)+घ ? टाप्] छिपकली की तरह का एक जगली जानवर। गोह।

गोधा-पदी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ मूसली नाम की ओषधि। २ हसपदी लता।

गोधावती—स्त्री० [स० गोधा+मतुप्, वत्व, ङीप्]=गोधापदी।

गोधिका—स्त्री० [स० √गुध्+ण्वुल्-अक, टाप इत्व] १ छिपकली। २ घडियाल की मादा।

गोधिकात्मज—पु० [गोधिका-आत्मज, ष० त०] गोह की तरह का एक छोटा जानवर।

गोधिया†—स्त्री० दे० 'गोइयाँ'।

गोधी—स्त्री० [स० गोधूम] एक प्रकार का गेहूँ जो दक्षिण मे अधिकता से होता है और जिसकी भूसी जल्दी नही छूटती।

गोधूम—पु० [स०√गुध्+ऊम] १ गेहूँ। २ नारगी।

गोधूमक—पु० [स० गोधूम-क=शिर, ब० स०] गेहुँअन नाम का साँप।

गो-धूलि—स्त्री० [मध्य० स०] १ गौओ के चलने-फिरने या दौडने से उडनेवाली धूल। २ सायकाल का वह समय जब जगल से चरकर लौटती हुई गौओ के खुरो से धूल उडती है और जो शुभ कार्यो के लिए उपयुक्त समझा जाता है।

गोधूली—स्त्री०=गोधूलि।

गो-धेनु—स्त्री० [कर्म० स०] वह गौ जो दूध देती हो और जिसके साथ उसका बच्चा भी हो।

गोध्र—पु० [स० गो√धृ (धारण)+क] पहाड। पर्वत।

गोनद—पु० [स० गो√नन्द् (प्रसन्न होना)+णिच्+अण्] १ कार्तिकेय के एक गण का नाम। २ एक प्राचीन देश।

गोन—स्त्री० [स० गोणी, गु०, ब० गुण, सिं० गूणी, मरा० गोण] १ वह दोहरा बोरा जो अनाज आदि भरकर बैलो की पीठ पर लादा जाता है। २ अनाज आदि भरने का बोरा। ३ कोई बडा थैला। ४ अनाज आदि की एक पुरानी तौल जो १६ मानी (२५६ सेर) की होती थी।

†स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।

†स्त्री० दे० 'गून'।

*पु०=गमन।

गोनर†—पु०=गोनरा।

गोनरखा—पु० [हि० गोन=रस्सी+रखना] १ नाव का वह मस्तूल जिसमे गोन बाँधकर उसे खीचते है। २ उक्त मस्तूल मे रस्सी बाँधकर नाव को खीचनेवाला मल्लाह या मजदूर।

गोनरा—पु० [स० गुद्रा] उत्तरी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की लम्बी घास जो पशुओ के खाने और चटाइयाँ बनाने के काम आती है।

गोनर्द—पु० [स० गो√नर्द् (शब्द)+अच्] १ उत्तर-पश्चिमी भारत का एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतजलि का जन्म हुआ था। २ महादेव। शिव। ३ नागरमोथा। ४ सारस पक्षी।

गोनर्दीय—पु० [स० गोनर्द+छ—ईय] महर्षि पतजलि जो गोनर्द देश के थे।

गो-नस—पु० [स० गो-नासिका, ब० स०, नस आदेश] १ एक प्रकार का साँप। २ वैक्रात मणि।

गोना*—स०[स०गोपन]१ छिपाना। लुकाना। उदा०—होइ मैदान परी अब गोई।—जायसी। २ चुराना। उदा०—नगर नवल कुँवर बर सुदर मारग जात लेत मन गोई।—सूर।

गो-नाथ—पु०[ष० त०] १ गोस्वामी। २ बैल।

गोनास—पु० =गोनस।

गोनिया—स्त्री० [स० कोण, हि० कोना+इया (प्रत्य०)] बढई, लोहार आदि का एक समकोण औजार जिससे वे दीवार, लकडी आदि की सिधाई जाँचते है।

पु० [हि० गोन] वह जो अपनी या बैलो की पीठ पर गोन, अर्थात् बोरा लादकर ढोता हो।

पु० [हि० गोन=रस्सी+इया (प्रत्य०)] रस्सी बाँधकर उससे नाव खीचनेवाला मल्लाह।

गो-निष्यद—पु० [स० नि√स्यन्द् (बहना)+अच् गो-निष्यद, ष० त०] गोमूत्र।

गोप—पु० [स० गो√पा (पालना)+क] १ गौओ का पालन करनेवाला और स्वामी। २ ग्वाला। अहीर। ३ गोशाला का अध्यक्ष। ४

राजा। ५ उपकारक, रक्षक और सहायक। ६ गाँव का मुखिया। ७ बोल या मुर नाम की ओषधि।
पु० [स० गुफ] सिकरी या जजीर की तरह की गले मे पहनने की माला।
गोपक—पु० [स० गोप+कन्] १ गोप जाति का व्यक्ति। २ बहुत से गाँवो का मालिक या सरदार। ३ [√गुप् (रक्षा करना, छिपाना) + ण्वुल्–अक्] रक्षा करनेवाला व्यक्ति।
वि० १ गोपन करने या छिपानेवाला। २ रक्षक।
गोप-ज—वि० [स० गोप√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] [स्त्री० गोपजा] गोप से उत्पन्न।
पु० गोप जाति का पुरुष।
गोपजा—स्त्री० [स० गोपज+टाप्] १ गोप जाति की स्त्री। २ राधिका।
गो-पति—पु० [ष० त०] १ शिव। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ सूर्य। ५ राजा। ६ नौ उपनदो मे से एक। ७ बैल या साँड। ८ ग्वाला। अहीर। ९ ऋषभ नामक ओषधि। १० वह जो बहुत बोलता हो। मुखर। वाचाल।
गो-पथ—पु० [ष० त०] अथर्ववेद का एक ब्राह्मण।
गो-पद—पु० [ष० त०] १ गौओ के रहने का स्थान। २ गो का खुर। ३ गौ के खुरो या पैरो का चिह्न या निशान। ४ गौ के खुर से जमीन मे पडनेवाला गड्ढा। उदा०—गो-पद जल बूडहिं घट जोनी।—तुलसी।
गोप-दल—पु० [गोपद√ला (लेना)+क, उप० स०] सुपारी का पेड।
गोपदी (दिन्)—वि० [स० गोपद+इनि] गाय के खुर के समान बहुत छोटा।
गोपन—पु० [स० √गुप् (रक्षा करना) +ल्युट्—अन] १ छिपाने या लुकाने की क्रिया या भाव। २ कोई बात किसी दूसरे से छिपाकर रखना। दुराव। ३ रक्षा। ४ व्याकुलता। ५ चमक। दीप्ति। ६ डॉट-डपट। भर्त्सना। ७ निंदा। ८ भय। ९ छिपी हुई जगह। उदा० —दोनो सखियाँ मिल गोपन मे करती मर्म निवेदन।—पत। १० तेजपत्ता।
वि० छिपा हुआ। गुप्त। उदा०—मद हास्य से गोपन स्वीकृति देती थी। —पत।
गोपना—स० [स० गोपन] १ छिपाना। २ मन की बात प्रकट न करना।
गोपनीय—वि० [स०√गुप्+अनीयर] १ (वस्तु) जिसे दूसरो से छिपाकर रखना आवश्यक हो। २ (बात या रहस्य) जिसे दूसरो पर प्रकट न करना चाहिए।
गोपयिता (तृ)—वि० [स०√गुप्+णिच्+तृच्] छिपानेवाला।
गोप-राष्ट्र—पु० [मध्य० स०] आधुनिक ग्वालियर का प्राचीन नाम।
गोपागना—स्त्री० [गोप अगना, ष० त०] १ गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ अनतमूल नाम की ओषधि।
गोपा—वि० [स० गोपक से] १ छिपानेवाला। २ जो मन की बात न बतलाता हो अथवा रहस्य प्रकट न करता हो।
स्त्री० [स० गोप+टाप्] १ गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ अहीरिन। ग्वालिन। ३ श्यामा नाम की लता। ४ गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा का दूसरा नाम।
गोपाचल—पु० [स० गोप-अचल, मध्य० स०] १ ग्वालियर के पास के पर्वत का पुराना नाम। २ ग्वालियर।
गोपायक—वि० [स०√गुप्+आय्+ण्वुल्–अक] १ छिपानेवाला। २ रक्षा करनेवाला।
गोपायन—पु० [स०√गुप्+आय्+ल्युट्–अन] १ गोपन। २ रक्षण।
गो-पाल—पु० [स० गो√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण, उप० स०] १ गो का पालक, रक्षक और स्वामी। २ अहीर। ग्वाला। ३ श्रीकृष्ण। ४ मन जो इद्रियो का पालन और रक्षा करता है। ५ राजा। ६ एक प्रकार का छद जिसका प्रत्येक चरण १५ मात्राओ का होता है। इसमे ८ और ७ पर यति होती है।
गो-पालक—पु० [ष० त०] १ गौओ का पालन करनेवाला। गो-पाल। ग्वाला। २ शिव। ३ राजा।
गोपाल-कक्षा—स्त्री० [ष० त०] महाभारत के अनुसार पश्चिम भारत का एक प्राचीन देश।
गोपाल-तापन, गोपाल-तापनीय—पु० [स० √ तप्+णिच्+ल्यु–अन, गोपाल-तापन, ष० त०] [गोपाल-तापनीय=सेव्य, ब० स०] एक उपनिषद् जिसकी टीका शकराचार्य तथा अन्य कई विद्वानो ने की है।
गोपाल-मदिर—पु० [ष० त०] वैष्णवो का वह बडा मन्दिर जिसमे गोपाल जी की मूर्ति रहती है।
गो-पालि—पु० [स० गो √पाल+णिच्+इन्, उप०स०] १ एक प्रवर। २ महादेव। शिव।
गोपालिका—स्त्री० [स० गोपालक+टाप्, इत्व] १ ग्वालिन। अहीरिन। २ सारिवा नाम की ओषधि। ३ ग्वालिन नामक बरसाती कीडा। गिंजाई।
गोपाली—स्त्री० [स० गोपाल+ङीष्] १ गौ पालनेवाली स्त्री। २ कार्तिकेय की एक मातृका।
गोपाष्टमी—स्त्री० [गोप अष्टमी मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी। कहते है कि इसी दिन श्रीकृष्ण ने गोचारण आरभ किया था। इस दिन गोपूजन, गो प्रदक्षिणा आदि का माहात्म्य कहा गया है।
गोपिका—स्त्री० [स० गोपी+कन्-टाप्, ह्रस्व] १. गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ अहीरिन। ग्वालिन।
वि० स्त्री० 'गोपक' का स्त्री०।
गोपिका-मोदी—स्त्री० [स० गोपिका√मुद् (प्रसन्न होना)+णिच्+अण् ङीप्, उप० स०] एक सकर रागिनी जो कामोद और केदारी के योग से बनती है।
गोपित—भू० कृ० [स० √गुप्+णिच्+क्त] १ छिपा या छिपाया हुआ। गुप्त। २ रक्षित।
गोपिनी—स्त्री० [स० गोपी] १ गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ [स०√गुप्+णिनि—ङीप्] श्यामा लता। ३ तान्त्रिको की नग्न पूजा के समय की नायिका।
वि० स्त्री० छिपानेवाली।
गोपिया—स्त्री० [हिं० गोफन] गोफन। ढेलवाँस (दे०)।
गोपी (पिन्)—वि० [स० √गुप्+णिनि] [स्त्री० गोपिनी] १ छिपानेवाला। २ बचाने या रक्षा करनेवाला।
स्त्री० [स० गोप+ङीष्] १. गोप जाति की स्त्री। २ अहीर या

ग्वाले की स्त्री। ३ ब्रज की उक्त जाति की प्रत्येक स्त्री जो श्रीकृष्ण से प्रेम करती थी। ४ [√गुप्+अच्—ङीष्]सारिवा नाम की ओषधि।

गोपी-चदन—पु० [मध्य० स०] द्वारका के सरोवर की वह पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते है (आज कल यह नकली भी बनने लगी है।)

गो-पीत—पु० [स० गो=गोरोचना-पीत, उपमि० स०]एक प्रकार का खजन पक्षी।

गोपीता*—स्त्री०=गोपी।

गोपीथ—पु० [स० गो√पा (पीना, रक्षा करना)+थक्, नि० ईत्व] १ वह सरोवर जहाँ गौएँ जल पीती हो। २ एक प्राचीन तीर्थ। ३ पालन-पोषण या रक्षण। ४ राजा।

गोपी-नाथ—पु० [ष० त०] गोपियो के स्वामी, श्रीकृष्ण।

गो-पुच्छ—पु०[ष० त०]१ गौ की पूँछ। गाय की दुम। २ एक प्रकार का बदर। ३ एक प्रकार का गावदुम हार। ४ एक प्रकार का पुराना बाजा।

गो-पुटा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बडी इलायची।

गो-पुत्र—पु० [ष० त०] १ सूर्य के पुत्र। कर्ण। २ गाय का बछडा।

गोपुर—पु० [स०√गुप् (रक्षा)+उरच्] १ बडे किले, नगर, मदिर आदि का ऊँचा, बडा और मुख्य द्वार। २ बडा दरवाजा। फाटक। ३ गोलोक। स्वर्ग।

गोपेंद्र—पु० [गोप-इद्र, ष० त०] १ गोपो का राजा या स्वामी। २ श्रीकृष्ण।

गोप्ता(प्तृ)—वि० [स०√गुप्+तृच्] १ छिपानेवाला। २ रक्षक।
पु० विष्णु।
स्त्री० गगा।

गोप्य—वि० [स० √गुप्+ण्यत्] १ गुप्त रखने या छिपाने लायक। गोपनीय। २ बचाकर या रक्षित रखे जाने के योग्य। ३ छिपा या बचाकर रखा हुआ। गुप्त।
पु० १ दास। सेवक। २ दासी से उत्पन्न की हुई सतान। ३ कोई चीज रेहन या गिरवी रखने का वह प्रकार जिसमे रेहन रखी हुई चीज के आय-व्यय पर उसके स्वामी का ही अधिकार रहता हो और जिसके पास चीज रेहन रखी जाय वह केवल सूद लेने का अधिकारी हो। दृष्टबधक। ४ [गोपी+यत्] गोपियो का वर्ग या समूह।

गो-प्रचार—पु० [ष० त०] गौओ के घूमने-फिरने और चरने की जगह। चरागाह। चरी।

गो-प्रवेश—पु० [ब० स०] गौओ के चरकर लौटने का समय। सध्या। गोधूलि।

गोफ—पु० [?] गले मे पहनने का सोने का एक प्रकार का गहना।

गो-फण—स्त्री० [स०?]जख्म, फोडे आदि पर बाँधने की एक प्रकार की पट्टी या बधन। (सुश्रुत)

गोफन(ा)—पु० [स० गोफण] छीके की तरह का एक प्रकार का जाल जिसमे भरे हुए छोटे-छोटे ककड,पत्थर उसे रस्सी से बाँधकर घुमाने पर चारो ओर वेग से गिरते है और चोट पहुँचाते है। ढेलवाँस।

गोफा—पु० [स० गुम्फ] १ अरुई, केले, सूरन आदि का नया मुँह-बँधा कल्ला। २ एक हाथ की उँगलियो को दूसरे हाथ की उँगलियो मे फँसाने से बनने वाली मुद्रा।
क्रि० प्र०—जोडना।

गो-बधन—पु० [ष० त०] बधन (रस्सी या साँकल) जिससे गाय बाँधी जाय। उदा०—गोबधन कधन पै धारे फेटा झुकि रह्यो माथ।—हरिश्चन्द्र।

गोबर—पु० [स० गोमय] गाय का मल या विष्ठा जो हिंदुओ मे पवित्र माना जाता और सूख जाने पर ईधन के रूप मे जलाया जाता है।
क्रि० प्र०—पाथना।
मुहा०—गोबर खाना=एक बार अनुपयुक्त ढग से काम करने पर तथा अपनी भूल मालूम होने या सफलता न मिलने पर भी फिर से उपयुक्त ढग से काम न करना।

गोबर-गणेश—वि० [हिं० गोबर+स० गणेश] १ जो आकार-प्रकार या रूप-रग की दृष्टि से बहुत ही भद्दा हो। २ निरा मूर्ख (व्यक्ति)।

गोबर-गिद्धा—पु० [हिं० गोबर+गिद्धा] गिद्ध की जाति का एक पक्षी।

गोबर-धन—पु०=गोवर्धन।

गोबरहारा—पु० [हिं० गोबर+हारा (प्रत्य०)] गोबर उठाने तथा पाथनेवाला व्यक्ति।

गोबराना†—स०[हिं० गोबर+ना (प्रत्य०)]जमीन या दीवार पर गोबर पोतना या लीपना।

गोबरिया—पु० [हिं० गोबर] बछनाग की जाति का एक पहाडी पौधा।

गोबरी—स्त्री० [हिं० गोबर+ई (प्रत्य०)] १ उपला। कडा। गोहरा। २ जमीन या दीवार पर गोबर से की जानेवाली पोताई या लिपाई।
क्रि० प्र०—करना।—फेरना।
स्त्री० [देश०] जहाज के पेंदे का छेद। (लश०)
मुहा०—गोबरी निकालना=जहाज के पेंदे मे छेद करना।

गोबरैला—पु० [हिं० गोबर+ऐला या औला (प्रत्य०)] गोबर मे उत्पन्न होने और रहनेवाला एक छोटा कीडा।

गोबरौरा,गोबरौला†— पु०=गोबरैला।

गोबिया—पु० [देश०] आसाम की पहाडियो मे होनेवाला एक प्रकार का छोटा बाँस।

गोबी†—स्त्री०=गोभी।

गोभ—पु० [स० गुफ वा हिं० गोफा] पौधो का एक रोग जिसमे उनकी जडो मे से नये-नये अकुर निकलने के कारण उनकी बाढ रुक जाती है।

गोभा—स्त्री० [?] १ पानी की तरग। लहर। २. मन की तरग। उमग। उदा०—जसुमति ढोटा ब्रज की सोभा देखि सखि कछु औरै गोभा।—सूर।
पु० दे० 'गाभा'।

गोभिल—पु० [स०] सामवेदीय गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोभी—स्त्री० [स० गोजिह्वा=बन गोभी वा गुफ=गुच्छा] १ एक प्रकार की जगली घास। २ एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे सफेद रग का बडा फूल लगता है और जिसकी तरकारी बनाई जाती है। ३ उक्त पौधे का फूल।

गो-भुज—पु० [स० गो√भुज् पालन करना)+क, उप० स०] राजा।

गो-भृत—पु० [स० गो√भृ (धारण करना)+क्विप् उप० स०] पर्वत। पहाड।

गोमत—पु० [स०] १ सह्याद्रि के अतर्गत एक पहाडी जहाँ गोमती देवी का स्थान है। यह सिद्धपीठ माना जाता हे। २ वह जो कुत्ते पालता और बेचता हो।

गोम—पु० [स० गगन] आकाश। उदा०—मिली सेन दूनो निजरि गज्जे गोम निसान।—चदवरदाई।

स्त्री० [देश०] १ घोडो की नाभि पर होनेवाली एक प्रकार की भँवरी। २ पृथ्वी। (डि०)

गो-मक्षिका—स्त्री० [मध्य० स०] कुकुरमाछी। कुकरोछी।

गोमती—स्त्री० [स० गो+मतुप्–डीप्] १ उत्तर प्रदेश को एक नदी जो सैदपुर के समीप गगा मे मिलती हे। २ बगाल की एक नदी। ३ एक देवी जिसका प्रधान स्थान गोमत पर्वत पर हे। ४ एक वैदिक मत्र। ५ ग्यारह मात्राओ का एक छद।

गोमती-शिला—स्त्री० [मध्य० स०] हिमालय पर की एक चट्टान या पहाडी। **विशेष**—कहते हे कि अर्जुन का शरीर यही पहुँचने पर गला था।

गो-मत्स्य—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार की मछली। (सुश्रुत)

गोमथ—पु० [स० गो√मथ् (बिलोना)+अच्] गोप। ग्वाला।

गोमय—पु० [स० गो+मयट्] गाय का मल या विष्ठा। गोबर।

गोमर—पु० [हिं० गौ+मर (प्रत्य०)=मारनेवाला] १ गौ को मारने-वाला व्यक्ति। २ कसाई। बूचर।

गो-मल—पु० [ष० त०] गोबर।

गो-मांस—पु० [ष० त०] गाय का मास जिसे खाना हिंदू शास्त्रो मे वर्जित है।

गोमा—स्त्री० [देश०] गोमती नदी।

पु० [फा०] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसके फूलो का रस कान की पीडा दूर करता है। २ उक्त वृक्ष का फूल।

गोमाय—पु०=गोमायु।

गोमायु—पु० [स० गो√मा (शब्द करना)+उण्, युक् आगम] १ गीदड। श्रृगाल। २ एक प्रकार का मेढक।

गोमी (मिन्)—पु० [स० गो+मिनि] गीदड (श्रृगाल)।

स्त्री० [?] पृथ्वी। (डि०)

गोमुख—पु० [ष० त०] १ गौ का मुँह। २ [ब० स०] मगर नामक जलजतु। ३ योग मे एक प्रकार का आसन। ४ टेढा-मेढा घर। ५ ऐपन। ६ एक यक्ष का नाम। ७ इद्र के पुत्र जयत का सारथी। ८ नरसिंहा नामक बाजा।

वि० गौ के समान मुँहवाला। जिसका मुंह गौ के मुँह के समान हो। जैसे—गोमुख नाली या शख, गोमुख सधि या सेध।

पद—गोमुख नाहर या व्याघ्र=ऐसा परम क्रूर और हिसक व्यक्ति जो ऊपर से देखने पर गौ के समान निरीह और सीधा-सादा जान पडे।

गो-मुखी—स्त्री० [स० गोमुख+ङीष्] १ कपडे की वह कोणाकार थैली जिसमें हाथ डालकर जप करते समय माला फेरते है। जप-गुथली। २ गगा का उद्गम स्थान जो गौ के मुख के आकार का है। ३ गौ के मुँह के आकार की घोडो की भौरी। ४ चमडे से मढा हुआ एक प्रकार का पुराना बाजा। ५ राढ देश की एक नदी जिसे आज कल गोमुड कहते है।

गो-मूत्र—पु० [ष० त०] गो का मूत्र जो हिन्दुओ मे बहुत पवित्र तथा अनेक रोगो की ओषधि माना गया हे।

गो-मूत्रिका—स्त्री० [स० गोमूत्र+ठन्–इक] १ एक विशेष प्रकार का चित्र-काव्य जो लहरियेदार रेखा के रूप मे होता हे।

विशेष—इस चित्र-काव्य का नाम इसलिए 'गो-मूत्रिका पडा हे कि इसकी पक्तिया प्राय वैसी ही होती हे जैसी गौ या बैल के चलते-चलते जमीन पर मूतने से बनती है।

२ अकन, चित्रण आदि मे लहरियेदार वेल। बैलमुतनी। बरधमुतान। (मिएन्डर) ३ सुगधित बीजोवाली एक प्रकार की घास।

गो-मृग—पु० [मध्य० स०] नील गाय।

गो-मेद—पु० [स० गो√मिद् (चिकना करना)+णिच्+अच्, उप० स०]=गोमेदक।

गोमेदक—पु० [स० गोमेद+कन्] १ एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो कई रगो का होता है। राहुमणि। (जर्कन) २ काकोल नामक विष। ३ पत्रक नाम का साग। ४ कवावचीनी। शीतल-चीनी।

गो-मेध—पु० [स०√ मेध् (हिंसा)+घञ्, गो-मेध, ब० स०] अश्वमेध की तरह का एक यज्ञ जिसमे गौ के मास से हवन किया जाता था और जो कलियुग मे वर्जित है।

गोयँड—स्त्री० [स० गोष्ठ अथवा हि० गाँव+मेड] गाँव के आस-पास की भूमि।

गोयदा—पु०=गोइदा।

गोय*—पु० दे० 'गेद' (खेलने का)।

गोया—अव्य० [फा०] १ जैसे। २ मानो।

गो-यान—पु० [मध्य० स०] वह गाडी जिसे गाय या बैल खीचते हो।

गो-रकु—पु० [तृ० त०] १ वह जो मत्रो का पाठ करता हो। २. दिगम्बर साधु। ३ कैदी। ४ एक प्रकार का जल-पक्षी।

गोर—स्त्री० [फा०] जमीन मे खोदा जानेवाला वह गड्ढा जिसमे मुसल-मान आदि मुर्दा गाडते है। कब्र।

†पु० [अ० गोर] [वि० गोरी] फारस देश का एक पुराना प्रान्त।

†वि० [स० गौर] १ गौर वर्ण का। गोरा। २ सफेद।

गोरका—पु० [देश०] अरैल नाम का वृक्ष।

गो-रक्ष—पु० [स० √रक्ष् (रक्षा करना)+घञ्, गो-रक्ष, ष० त०] १. गौ की रक्षा करने का काम। २ [गो √रक्ष्+अण्, उप० स०] ग्वाला। ३ नेपाल देश का निवासी। गोरखा। ४ नारगी।

गो-रक्षक—वि० [ष० त०] गौओ की रक्षा करनेवाला।

पु० १ गोपाल। २ ग्वाला।

गो-रक्षी (क्षिन्)—वि० [स० गो√रक्ष्+णिनि, उप० स०] [स्त्री० गोर-क्षिणी] गोरक्षक।

गोरख—पु०=गोरखनाथ (योगी)।

गोरख-इमली—स्त्री० [हिं० गोरख+इमली] बहुत बडा और मोटे तने-वाला एक प्रकार का पेड।

गोरख-ककडी—स्त्री० [हिं० गोरख+ककडी] फूट नामक ककडी या फल। गोरखी।

गोरख-डिब्बी—स्त्री० [हिं० गोरख+डिब्बी] पानी का वह कुड या स्रोत जिसमे से गरम अथवा खनिज पदार्थों से युक्त जल निकलता हो।

गोरख-धधा—पु० [हिं० गोरखनाथ+धधा] १ ऐसा कठिन और जटिल काम या बात जिसका निराकरण सहज मे न हो सकता हो। २ ऐसी झझट या बखेडा जिससे जल्दी छुटकारा न हो। ३ कई तारो, कडियो या लकडी के टुकडो का वह समूह या रचना जिसे जोडने या अलग-अलग करने के लिए विशेष बुद्धिबल की आवश्यकता होती है।

विशेष—ये एक प्रकार के खिलौने से होते है।

गोरख-नाथ—पु० [गोरक्षनाथ] ई० १५ वी शताब्दी के एक प्रसिद्ध अवधूत महात्मा और हठयोगी जिनका चलाया हुआ गोरखपथ नामक सप्रदाय है। इन्ही के नाम पर गोरखपुर शहर बसा है।

गोरख-पथ—पु० [हिं० गोरखनाथ+पथ] महात्मा गोरखनाथ द्वारा प्रस्थापित एक पथ या सप्रदाय।

गोरख-पथी—वि० [हिं० गोरखनाथ+पथी] गोरखनाथ के चलाये हुए पथ का अनुयायी।

गोरख-मुडी—स्त्री० [स० मुण्डी] एक प्रकार की घास जिसमे घुण्डी की तरह के छोटे गोल फल लगते है, ये फल रक्तशोधन के लिए बहुत गुणकारी कहे गये हे।

गोरखर—पु० [फा०] गधे की जाति का एक प्रकार का जगली पशु जो गधे से बडा और घोडे से छोटा होता तथा उत्तर-पश्चिमी भारत मे पाया जाता है।

गोरखा—पु० [स० गोरक्ष अथवा हि० गो+रखना] १ नेपाल देश का एक प्रदेश। २ उक्त प्रदेश मे रहनेवाली एक वीर जाति। ३ उक्त जाति का पुरुष।

गोरखाली—स्त्री० [हिं० गोरख] गोरखा नामक जाति और प्रदेश की बोली।

गोरखी—स्त्री०=गोरख-ककडी।

गोर-चकरा—पु० [देश०] सन की जाति का एक जगली पौधा।

गो-रज (स्)—स्त्री० [मध्य० स०] गौओ के चलते समय उनके खुरो से उडनेवाली धूल जो पवित्र मानी गई है।

गोरटा—वि० [हिं० गोरा] [स्त्री० गोरटी] गोरे रगवाला। गोरा।

गोरडा†—वि० [स्त्री० गोरडी]=गोरटा। (राज०) उदा०—तियाँ तिहारी गोरडी, दिन दिन लाख लहाइ।—ढोलामारू।

†पु० [हिं० गोडना] ईख। ऊख। (अवधी)

गोरन—पु० [देश०] १ कुछ नदियो तथा समुद्र के किनारे पर होनेवाला एक प्रकार का पेड जिसकी लकडी का रग लाल होता है। २ उक्त वृक्ष की लकडी जो नावे बनाने के काम आती है। ३ उक्त वृक्ष की छाल जो चमडा सिझाने के काम आती है।

गोर-मदाइन—स्त्री० [?] इद्रधनुष। (बुदेल०)

गोरया—पु० [देश०] अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

गोरल—पु० [देश०] एक प्रकार का जगली बकरा।

†वि० =गोरा (गोर वर्णवाला)।

†स्त्री० गोरी। पार्वती। (राज०) उदा०—म्हाँना गुरु गोविन्द री आण, गोरल ना पूजाँ।—मीराँ।

गो-रव—पु० [ब० स०] केसर।

गोरवा—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसकी छोटी तथा पतली टहनियो से हुक्को के नैचे बनाये जाते है।

गो-रस—पु० [ष० त०] १ गौ का दूध। २ दही। ३ छाछ। मठा। ४ इन्द्रियो के सुख-भोग से मिलनेवाला आनन्द।

गोरसर—पु० [देश०] बाँस के पखो मे डडी के पास लगाई जानेवाली कमाची।

गोरसा—पु० [स० गोरस] [स्त्री० गोरसी] वह बच्चा जो गाय का दूध पीकर पला हो।

गोरसी—स्त्री० [स० गोरस+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार की छोटी अगीठी जिस पर दूध गरम किया जाता है।

गोरा—वि० [स० गौर, प्रा० गोर, ब० उ० प० मरा० गोरा, सि० गोरो, गु० गोरूँ, ने० गोरो] (व्यक्ति) जिसके शरीर का वर्ण बरफ की तरह सफेद और स्वच्छ हो। गौर वर्णवाला।

पद—**गोरा भभूका**=बहुत अधिक गोरा-चिट्टा।

पु० [स्त्री० गोरी] अमेरिका, यूरोप आदि ठढे देशो मे रहनेवाला ऐसा व्यक्ति जिसका वर्ण गौर हो।

पु० [देश०] १ एक प्रकार की कल जिससे नील के कारखाने मे बट्टियाँ काटी जाती है। २ एक प्रकार का नीबू।

गोराई†—स्त्री० [स० गौर +हिं० आई] १ गोरे होने की अवस्था या भाव। गोरापन। २ व्यक्ति का रूप सम्बन्धी सौन्दर्य।

गोराटी—स्त्री० [स० गो०√रट् (रटना)+अण्—ङीप्] मैना पक्षी।

गोराडू—पु० [देश०] ऐसी मिट्टी जिसमे बालू का भी अश हो।

गोरा-पत्थर—पु० [हिं० गोरा+पत्थर] सफेद रग का एक प्रकार का चिकना तथा मुलायम पत्थर। घीया पत्थर। सग-जराहत। (सोप स्टोन)

गोरामूंग—पु० [हिं० गोरा+मूँग] एक प्रकार का जगली मूँग।

गो-राष्ट्र—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत का एक प्रदेश जिसमे अधिकतर गोप जाति के लोग रहते थे।

गोरिल्ला—पु० [अफ्रिका] अफ्रीका के जगलो मे रहनेवाला एक प्रकार का बनमानुस।

गोरी—स्त्री० [स० गौरी] १ वह स्त्री जिसका वर्ण गौर हो। २ रूपवती स्त्री। सुन्दरी।

वि० [अ० गोर देश०] फारस के गोर नामक देश का। जैसे—मुहम्मद गोरी।

गोरू—पु० [स० गोरूप, पा० गोरूप, ब० गरु, उ० ने० गोरू, प० गोरु, मरा० गुरूँ] गौ, बकरी, भैस आदि सीगवाले पालतू पशु। (कैटिल)

पु० [स० गोरुत] दो कोस की दूरी। (राज०)

गोरू-चोर—पु० [हिं० गोरू+चोर] दूसरो की गौएँ, बकरियाँ, भैसे आदि चुरानेवाला व्यक्ति। (ए बैक्टर)

गो-रूप—पु० [ब० स०] महादेव।

गो-रोच—पु० [स० गो√रुच् (दीप्ति)+अच्, उप० स०] हरताल।

गो-रोचन—पु० [मध्य० स०] एक पीला सुगधित द्रव्य जो गौ के पित्ताशय से निकलता और पवित्र माना जाता है।

गो-रोचना—स्त्री० [मध्य० स०] गोरोचन।

गोर्खा—पु०=गोरखा।

गोर्खाली—स्त्री०=गोरखाली।

गोर्द, गोर्ध—पु० [स०√गुर् (उद्यम) +ददन् नि० सिद्धि] मस्तिष्क।

गोलदाज—पु० [फा०] वह व्यक्ति जो तोप मे गोला भरकर चलाता हो।

गोलदाजी—स्त्री० [फा०] तोप से गोले चलाने का काम या कला।

गोलबर—पु०[हि० गोल+अबर]१ वास्तु मे किसी प्रकार की गोलाकार रचना। जैसे—गुबद, नगीचो आदि मे बना हुआ गोल चबूतरा। २ गोलाई। ३ कलबूत जिसपर रखकर जूता, टोपी आदि चीजे सीते हे। (कालिब)

गोल—पु० [स० √गुड् (रक्षण) +अच्, डस्य ल] १ मडलाकार या वृत्ताकार बनावट या रचना। २ गोलाकार पिड। गोला। ३ ज्योतिष मे, गोल यत्र। ४ विधवा का जारज पुत्र। गोलक। ५ मदन या मैनफल नामक वृक्ष। ६ मुर नामक ओषधि। ७ मिट्टी का गोलाकार घडा। ८ दक्षिण-पश्चिमी युरोप के कुछ विशिष्ट भागो का पुराना नाम।

वि० १ जिसकी गोलाई वृत्त के समान हो। (सर्कुलर) जैसे—अँगूठी, पहिया, सूय आदि। २ जो बहुत कुछ वृत्ताकार हो। जैसे—गोल मुँह, गोल मिर। ३ (वस्तु) जिसके बाहरी तल का प्रत्येक विंदु उसके केंद्र से बराबर दूरी पर हो। (स्फेरिकल) जैसे—खेलने का गेद, फेकने का गोला। ४ (वस्तु) जिसकी आकृति बेलन जैसी हो। जैसे—गोल गिलास, गोल पाया।

पु० [स० गोल-योग] उपद्रव। खलबली।

पद—गोल बात—ऐसे रूप मे कही जानेवाली बात जिसका ठीक-ठीक आशय या भाव किसी की समझ मे न आता हो। कई अर्थोवाली बात।

मुहा०—गोल करना—कोई चीज कही से चुपके से हटा देना। गायब करना। **गोल रहना**=बिलकुल चुप रहना। **गोल होना**=कही से चुपचाप हट जाना। खिसक जाना।

पु० हि० 'गोला' का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गोलदाज, गोलबर।

पु० [फा० गोल] १ एक ही जाति के बहुत से पशुओ का समूह। जैसे—भेडो का गाल। २ एक ही प्रकार या वर्ग के बहुत से लोगो का झुड।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पु० [अ०] १ फुटबाल, हाकी आदि खेलने के मैदानो का वह भाग जहाँ एक दल के खेलाडी गेद पहुँचाकर दूसरे दल को हराते है। २ उक्त स्थान मे गेद पहुँचाने की अवस्था या भाव।

गोलक—पु० [स० गोल+कन् वा√गुड्+ण्वुल्—अक,डस्य ल] १ किसी प्रकार का गोल पिड या डला। २ विधवा स्त्री की वह सतान जो उसके जार या यार से उत्पन्न हो। ३ मिट्टी का बहुत बडा घडा। कुडा। ४. फूलो का निकाला हुआ सुगधित सार भाग। ५ आँख का डेला। ६ आँख की पुतली। ७ वह थैली या सदूक जिसमे किसी विशेष कार्य के लिए धन सग्रह किया जाय। गुल्लक। ८ वह थैली या सदूक जिसमे दूकानदार रोज की बिक्री के रुपए-पैसे रखते है। ९ गुबद या उसके आकार की कोई गोल रचना। उदा०—गिर रहा निस्तेज गोलक जलधि मे असहाय।—प्रसाद। १० दे० 'गो-लोक'।

गोल-कलम—स्त्री० [हि० गोल+कलम] एक प्रकार की छेनी जो धातुओ पर नक्काशी करने के काम मे आती है।

गोल-कली—स्त्री० [हि० गोल+कली] एक प्रकार का अगूर और उसकी लता।

गोल-गप्पा—पु० [हि० गोल+अनु० गप] घी, तेल आदि मे तली हुई एक प्रकार की छोटी फुलकी जो खटाई के रस मे डुबा कर खाई जाती है।

वि० (उक्त के आधार पर) जो गोल गप्पे के समान गोलाकार और फूला हुआ हो।

गोल-पजा—पु० [हि० गोल+पजा] पुरानी चाल का वह जूता जिसकी नोक ऊपर की ओर मुडी हुई नही होती थी। मुडा जूता।

गोल-पत्ता—पु० =गोल-फल।

गोल-फल—पु० [देश०] गुलगा नामक ताड (वृक्ष) का फल। [स० ब० स०] मदन वृक्ष।

गोल-मटोल—वि० [हि० गोल+ मटोल (अनु०)] १ बहुत कुछ गोलाकार। २ नाटे कद तथा भारी शरीरवाला। (व्यक्ति)

गोल-माल—पु० [म० गोल (योग)] ऐसी अव्यवस्था या गडबडी जो जान-बूझकर और दुष्ट उद्देश्य से की गई हो।

गोल-मिर्च—स्त्री० [हि० गोल+मरिच] काली मिर्च।

गोल-मुँहाँ—पु० [हि० गोल+मुँह] कसेरो की एक प्रकार की गोल मुँहवाली हथौडी।

गोल-मेज—स्त्री० [हि० गोल+फा० मेज] वह गोल मेज (या मेजो का मडलाकार विन्यास) जिसके चारो ओर बैठकर कुछ दलो या देशो के प्रतिनिधि पूर्ण समानता के भाव से किसी समस्या पर न्यायोचित रूप से ओर सबको सन्तुष्ट करने के उद्देश्य से विचार करे।

गोल-मेथी—स्त्री० [हि० गोल+मोथा] मोथे की जाति का एक पेड जिसके डठलो मे चटाइयाँ बनाई जाती है।

गोल-यत्र—पु० [कर्म० स०] ज्योतिषियो का एक प्रकार का यत्र जिससे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि ग्रहो और नक्षत्रो की गति-विधि, स्थिति, अयन, परिवर्तन आदि का पता लगाते है। और जो प्राचीन भारत मे बाँस की तीलियो आदि से बनता था।

गोल-योग—पु० [कर्म० स०] १ ज्योतिष मे एक योग जो एक ही राशि मे छ या सात ग्रहो के एकत्र होने से होता और बहुत अनिष्टकारक माना जाता है। २ गडबडी। गोल-माल।

गोलर—पु० [देश०] कसेरू।

गोलरा—पु० [देश०] एक प्रकार का लम्बा सुन्दर पेड जिसके हीर की लकडी चमकीली और बहुत कडी होती हे। इसके पत्तो से चमडा सिझाया जाता है और लकडी से नावे, जहाज आदि और खेती के औजार बनाये जाते है।

गोल-विद्या—स्त्री० [ष० त०] ज्योतिष विद्या का वह अग जिसमे आकाशस्थ पिडो और ग्रहो के आकार-विस्तार, ऋतु-परिवर्तन, गति-विधि आदि का विचार तथा विवेचन होता है।

गो-लागूल—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का बदर जिसकी पूँछ गौ की पूँछ की तरह होती है।

गोला—पु० [स० गोल] [स्त्री० गोली] १ गेद की तरह का कोई गोलाकार पिड या वस्तु। २ धागो, रस्सियो आदि को लपेटकर बनाया हुआ उक्त आकार का पिंड। जैसे—डोरी या सूत का गोला। ३ किसी

पिसी हुई वस्तु के चूर्ण को भिगोकर या पानी आदि मे सानकर बनाया जानेवाला पिड। जैसे—आटे या भाँग का गोला। ४ लोहे का वह गोल बडा पिड जिसे व्यायाम करते समय लोग हाथ से उठाकर दूर फेकते है।

मुहा०—गोला उठाना=प्राचीन काल मे अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए जलता हुआ लोहे का गोला इस प्रतिज्ञा से उठाना कि यदि हम निर्दोष है तो हमारा हाथ नही जलेगा।

५ धडाके से फटनेवाला एक प्रकार का रासायनिक विस्फोटक पिड।

पद—गोला बारूद=युद्ध मे शत्रुओ का नाश करनेवाली सामग्री। अस्त्र-शस्त्र आदि। (अम्यूनिशन्स)

६ वास्तु मे, खभे, दीवार आदि के ऊपर की गोलाकार रचना। ७ मिट्टी, काठ आदि का गोलाकार ढाँचा जिसके ऊपर कपडा लपेटकर पगडी तैयार की जाती है। ८ नारियल का वह भाग जो उसके ऊपर की जटा छीलने के बाद बच रहता है। गरी का गोला। ९ कुछ विशिष्ट प्रकार की लकडियो का वह लबा तना या लट्ठा जो छाजन आदि के काम के लिए छतो पर रखा जाता है। १० एक प्रकार का ठोस बाँस जो डडे, छडियाँ आदि बनाने के काम आता है।

मुहा०—गोला लाठी करना=लडको का हाथ पैर बाँधकर दोनो घुटनो के बीच मे डडा डालना। (दुष्टता करने पर दिया जानेवाला एक प्रकार का दड या सजा)

११ पेट मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे थोडी थोडी देर पर पेट के अन्दर नाभि से गले तक वायु का एक गोला आता-जाता हुआ जान पडता है। १२ अनाज, किराने आदि का बडा बाजार या मडी। १३ घास का गट्ठर। १४ जगली कबूतर। १५ कूएँ के ऊपर की गोलाकार जगत। १६ तालाब या नदी के किनारे का घाट। १७ एक प्रकार का बेत जो बहुत लबा और मुलायम होता हे तथा टोकरे आदि बनाने के काम मे आता है।

स्त्री० [स०] १ बच्चो के खेलने का गेद या गोली। २ छोटा घडा या मटकी। ३ गोदावरी नदी। ४ दुर्गा। ५ सखी। सहेली। ६ स्याही। मसि। ७ मैनसिल। ८ मडली।

वि० वृत्त के आकार का गोल।

पु० [अ० गोल=झुड] पशु-पक्षियो आदि का झुड।

पु० [हि० गोली=दासी] गोली (अर्थात् दासी) के गर्भ से उत्पन्न लडका या व्यक्ति।

विशेष—मध्ययुग मे राजपूताने (राजस्थान) मे ऐसे लोगो की अलग जाति या वर्ग ही बन गया था।

पु० [अ० गुलाम] ताश मे का गुलाम नाम का पत्ता।

गोलाई—स्त्री० [हि० गोल+आई (प्रत्य०)] १ किसी वस्तु के गोल होने का भाव या स्थिति। २ किसी गोल वस्तु के किनारे पर का बाहरी गोल घेरा।

गोलाकार—वि० [गोल-आकार ब० स०] जिसकी आकृति गोल हो। गोल आकारवाला। जैसे—गोलाकार चबूतरा।

गोलाधार—वि० [हि० गोला+धार] मूसलाधार। (वर्षा)

गोलाध्याय—पु० [गोल-अध्याय, ब० स०] भास्कराचार्य का एक ग्रथ जिसमे भूगोल और खगोल का वर्णन है।

गोलार्द्ध—पु० [गोल-अर्द्ध, ष० त०] १ किसी प्रकार के गोले का आधा भाग। २ गोल या पृथ्वी का आधा भाग। (हेमिस्फियर)

विशेष—भूमध्य रेखा पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धो मे विभाजित करती है और खमध्य रेखा पृथ्वी को पूर्वी तथा पश्चिमी गोलार्द्धो मे।

३ उक्त किसी आधे भू-भाग का मानचित्र।

गोलासन—पु० [गोल-आसन=क्षेपण, ब० स०] पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप।

गोलियाना†—स० [हि० गोल या गोला] १ कोई चीज गोल करना। गोले के रूप मे बनाना या लाना। २ छोटी-छोटी गोलियाँ बनाना। ३ पशुओ को औषध आदि गोली के रूप मे बनाकर जबरदस्ती खिलाना। ४ जबरदस्ती कोई चीज या बात किसी के गले मे उतारना। ५ कोई चीज कही से गायब करना। गोल करना। उडाना।

गोली—स्त्री० [हि० गोला का स्त्री० और अल्पा०] १ कोई छोटा गोला या गोलाकार पिड। वटिका। जैसे—दवा की गोली, बदूक की गोली, रेशम या सूत की गोली। २ मिट्टी का वह छोटा गोलाकार पिंड जिससे बच्चे कई तरह के खेल खेलते है। ३ उक्त पिडो से खेला जानेवाला खेल। ४ उक्त प्रकार का शीशे का वह गोलाकार या लबोतरा पिड जो तमचो, बदूको आदि से शत्रुओ को मारने अथवा पशु-पक्षियो का शिकार करने के लिए चलाया जाता है।

मुहा०—गोली खाना=बदूक आदि की गोली का आघात सहना। **(किसी काम या व्यक्ति को) गोली मारना**=उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। जैसे—गोली मारो ऐसे नौकर को।

५ किसी प्रकार का घातक वार।

मुहा०—गोली बचाना=किसी सकट वा आपत्ति से धूर्ततापूर्वक अपना बचाव कर लेना।

स्त्री० [?] १ मिट्टी का छोटा घडा। ठिलिया। २ पीले या बादामी रग की गौ। ३ पशुओ का एक प्रकार का रोग।

स्त्री० [स० गोला=सखी] १ मध्य युग मे वह स्त्री जो वधुओ की सहेली के रूप मे उसके साथ ससुराल भेजी जाती थी।

विशेष—ऐसी स्त्रियाँ प्राय दासी वर्ग की होती थी। आगे चलकर राजस्थान आदि मे ऐसी दासियो की एक अलग जाति या वर्ग ही बन गया था, जो पूर्ण रूप से दास ही माना जाने लगा था। भारत मे स्वराज्य होने और सामतशाही का अत होने पर समाज का यह वर्ग भी स्वतन्त्र हो गया।

२ छोटी-मोटी सेवाएँ या टहल करनेवाली दासी।

पु० [अ० गोल] फुटबाल, हाकी आदि का वह खिलाडी जो गोल मे खडा होता है तथा उसमे गेद जाने से रोकता है। (गोलकीपर)

गोलीय—वि० [स० गोल+छ—ईय] १ गोल-सबधी। २ खगोल, भूगोल आदि से सबध रखनेवाला।

गोलैंदा—पु० [देश०] महुए का फल। कोइदा।

गो-लोक—पु० [मध्य० स०] १ विष्णु या कृष्ण का निवास-स्थान जो पुराणानुसार ब्रह्माड मे सब लोको से ऊपर और श्रेष्ठ माना गया है। २ स्वर्ग। ३ व्रजमडल।

गोलोक-वास—पु० [स० त०] परलोक वास। (मृत्यु के लिए आदरार्थक)

गोलोकेश—पु० [गोलोक-ईश, ष० त०] श्री कृष्णचन्द्र।

गोलोचन—पु० =गोरोचन।

गो-लोमी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ सफेद दूब। २ वेश्या।

गोलौआ—पु० [हि० गोल] बाँस आदि का बडा टोकरा।

गो-वध—पु० [स० ष० त०] गो को मार डालना जो हिन्दुओ मे बहुत बडा पाप समझा जाता है।

गोवना*—स० गोना (छिपाना)।

गो-वर्द्धन—पु० [ष० त०] १ गोओ का पालन, रक्षण और वृद्धि करने का काम। २ [गो√वृध् (बढना) +णिच् +ल्यु—अन] वृदावन का एक प्रसिद्ध पर्वत। कहते है अति वर्षा से व्रज की रक्षा करने के लिए श्री कृष्ण ने इसे उगली पर उठा लिया था। ३ उक्त पर्वत के पास की एक बस्ती।

गोवर्धन-धारी (रिन्)—पु० [गोवर्धन√धृ (धारण करना) +णिनि, उप० स०] श्रीकृष्ण।

गोवल—पु० [स० गोबल, ब० स०] गोप। ग्वाला। उदा०—जिम गोवल माहि सोहइ गोव्यद।—नरपतिनाल्ह।

गोविद—पु० [स० गो√विद् (लाभ) +श, नुम्] १ परब्रह्म। परमात्मा। २ तत्त्व शास्त्र ओर वेदान्त का अच्छा ज्ञाता या पडित। ३ गौओ या गोशाला का मालिक। ४ श्रीकृष्ण। ५ बृहस्पति। ६ शकराचार्य के गुरु का नाम।

गोविद-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] फागुन महीने के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि।

गोविद-पद—पु० [ष० त०] मोक्ष। निर्वाण।

गोवि—पु० [स० ?] सकीर्ण राग का एक भेद।

गो-वीथी—स्त्री० [ष० त०] चन्द्रमा के मार्ग का वह अश जिसमे भाद्रपद, रेवती और आश्विनी तथा किसी किसी के मत से हस्त, चित्रा और स्वाती नक्षत्रो का समूह है।

गो-वैद्य—पु० [ष० त०] १ पशुओ की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। २ [उपमि० स०] अनाडी या ना-समझ चिकित्सक। (परिहास)

गो-व्रज—पु० [ष० त०] १ गौओ का झुड या समूह। गोठ। २ गोचर भूमि। चरागाह।

गो-व्रत—पु० [म० त०] गो-हत्या लगने पर उसके प्रायश्चित्त के लिए किया जानेवाला व्रत जिसमे बराबर एक मास तक किसी गौ के पीछे-पीछे घूमना और केवल गौ का दूध पीकर रहने का विधान है।

गोश—पु० [फा०] सुनने की इद्रिय। कान।

गोश-गुजार—वि० [फा०] किसी के कानो तक पहुँचाया हुआ (विवरण या समाचार)।

गोशपेंच—पु० [फा०] कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोशम—पु० दे० 'कोसम'।

गोशमायल—पु० [फा०] मोतियो का वह गुच्छा जो कान के पास पगडी पर लटकाया जाता था।

गोशमाली—स्त्री० [फा०] १ किसी को दड देने के लिए उसके कान उमेठना या मलना। २ चेतावनी मिली हुई भर्त्सना। ताडना।

गोशवारा—पु० [फा०] १ खजक नामक पेड का गोद जो मस्तगी का-सा होता है और मस्तगी ही की जगह काम मे भी लाया जाता है। २ कान मे पहनने का कुडल या बाला। ३ ऐसा बडा मोती जो सीप मे से अकेला ही निकला हो। ४ कलगी। तुर्रा। ५ कलाबत्तू का बुना हुआ पगडी का आँचल जो प्राय झब्बे के रूप मे कान के पास लटकता है। ६ सख्याओ का योग। जोड। ७ वह सक्षिप्त लेखा जिसमे हर मद का आय-व्यय अलग-अलग दिखाया गया हो। ८ पजी, बही आदि मे भिन्न मदो या विभागो का शीर्षक।

गोशा—पु० [फा० गोश] १ अतराल। कोण। कोना। २ एकान्त स्थान। ३ कमान की नोक। धनुष की कोटि। ४ ओर। दिशा।

गोशा-नशीन—वि० [फा०] [भाव० गोशा-नशीनी] घर-गृहस्थी या ससार मे विरक्त होकर एकान्त वास करनेवाला।

गो-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ गौएँ पाली तथा रखी जाती हो। बहुत सी गौओ के रहने का स्थान।

गो-शीर्ष—पु० [ब० स०] १ एक पर्वत का प्राचीन नाम। २ उक्त पर्वत पर होनेवाला चन्दन। ३ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

गो-शृंग—पु० [ब० स०] १ एक प्राचीन ऋषि। २ एक प्राचीन पर्वत। ३ कीकर। बबूल।

गोश्त—पु० [फा०] १ शरीर के अन्दर का मास। २ मारे हुए पशु का मास जो लोग खाते है। जैसे—बकरी या भेड का गोश्त।

गोष्ठ—पु० [स० गो √स्था (ठहरना) +क] १ गौओ के रहने का स्थान। गोशाला। २ [गोष्ठी +अच्] एक ही प्रकार के पशुओ के रहने का स्थान। जैसे—अश्व गोष्ठ। ३ एक प्रकार का प्राचीन श्राद्ध जो बहुत से लोग मिलकर करते थे। ४ परामर्श, सलाह मशविरा। ५ दल। मडली।

गोष्ठ-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ लोग मिल कर परामर्श आदि करते हो। सभा का भवन या स्थल।

गोष्ठागार—पु० [गोष्ठ-आगार, ष० त०] =गोष्ठ-शाला।

गोष्ठी—स्त्री० [स० गोष्ठ +ङीप्] १ छोटा गोष्ठ। २ परिचितो या मित्रो की मडली या समुदाय। ३ औपचारिक रूप से होनेवाली ऐसी बैठक जिसमे किसी विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए मित्र-मडली के सदस्य भाग लेते है। जैसे—उद्यान गोष्ठी, सान्ध्य-गोष्ठी। ४ इस प्रकार होनेवाला विचार-विमर्श। ५ एक प्रकार का एकाकी नाटक जिसमे ५ या ७ स्त्रियाँ और ९ या १० पुरुष हो।

गोष्पद—पु० [स० ष० त० सुट् नि० वा गो√पद् (गति) +अच्] १ गौओ के रहने का स्थान। गोष्ठ। २ वह गड्ढा जो गीली जमीन पर गौ का खुर पडने से बनता है। ३ प्रभास क्षेत्र के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ। ४ दे० 'गोपद'।

गोस—पु० [?] १ एक प्रकार का झाड जिसमे से गोद निकलता है। २ तडका। प्रभात।
पु० [फा० गोश] १ कान। २ जहाज का रुख इस प्रकार कुछ टेढा करना कि उसे ठीक प्रकार से हवा लगे। (लश०)

गोसई—स्त्री० [देश०] कपास के पौधो का एक रोग जिसके कारण उनमे फूल नही लगते।

गोसठ*—स्त्री० =गोष्ठी।

गोसमावल†—पु० =गोशमायल।

गो-सर्ग—पु० [ष० त० वा० ब० स०] वह समय जब गोएं चरने के लिए खोलकर छोडी जाती है, अर्थात् प्रात काल।

गोसली†—स्त्री० दे० 'गोधूलि'।

गोसल्ल—पु० [अ० गुस्ल] स्नान। उदा०—करि गोसल्ल पवित्र होइ चिन्त्यौ रहमानम्।—चंदवरदाई।

गोसव—पु० [स० गो√सू (हिंसा)+अप् (आधारे)] गोमेध-यज्ञ।

गोसहस्री—स्त्री० [गो-सहस्र ष० त०, +अच्-डीष्] ज्येष्ठ और कार्तिक मासो की अमावास्याएँ।

गोसा—पु० [स० गो] उपला। कडा

†पु० =गोशा।

गोसाईं—पु० [स० गोस्वामी] १ उत्तर भारत की एक जाति जो गृहस्थ होने पर भी प्राय गेरुए वस्त्र पहनती है (कदाचित् ऐसे त्यागियो के वशज जो फिर गृहस्थ आश्रम मे आ गये थे)। २ साधु-सन्यासियो और त्यागियो के लिए सम्बोधन। ३ जितेद्रिय। ४ मालिक। स्वामी। ५ ईश्वर। वि० बडा। श्रेष्ठ।

गोसाती—स्त्री० [फा० गोशा] विपरीत दिशा से चलनेवाली हवा जो जहाज के मार्ग मे बाधक होती है। (लश०)

गोसी—स्त्री० [देश०] समुद्र मे चलनेवाली एक प्रकार की नाव जिसमे कई मस्तूल होते है।

गोसी परवान—पु० [देश०] जहाज के मस्तूल मे पाल के ऊपरी छोर को हटाने-बढाने के लिए लगाया जानेवाला धातु का लबा छड।

गो-सुत—पु० [ष० त०] गौ का बच्चा। बछडा।

गो-सूक्त—पु० [स० ष० त०] अथर्ववेद का वह अश जिसमे ब्रह्माण्ड की रचना का गौ के रूप मे वर्णन किया गया है। गोदान के समय इसका पाठ किया जाता है।

गोसैयाँ†—पु० [स० गोस्वामी, हि० गोसाईं] १ गौओ का स्वामी। गोस्वामी। २ मालिक। स्वामी। ३ ईश्वर। प्रभु।

गोस्तना—स्त्री० [ब० स०, टाप्] द्राक्षा। दाख। मुनक्का।

गो-स्तनी—स्त्री० [ब० स० डीष्] दाख। मुनक्का।

गो-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] १ वह जिसने इन्द्रियो को अपने वश मे कर लिया हो। जितेन्द्रिय। २ वैष्णव सप्रदाय मे आचार्यो के वशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी।

गोह—स्त्री० [स० गोधा] छिपकली की जाति का एक बडा जगली (लगभग डेढ फुट लबा) जतु जिसकी फुफकार विषैली होती है।

गोहटा†—पु० [हि० गोह+टा (प्रत्य०)] गोह का बच्चा।

गो-हत्या—स्त्री० [ष०त०] गौ को मार डालना, जो बहुत बडा पाप माना गया है।

गोहन—पु० [?] १ सगी। साथी। २ सग। साथ।

क्रि० वि० सग मे। साथ-साथ। उदा०—औ तोहि गोहन झांझ मँजीरा।—जायसी।

गोहनियाँ†—पु० [हि० गोहन+इया (प्रत्य०)] सगी। साथी।

गोहने—क्रि० वि० [हि० गोहन] साथ मे। सग मिलकर। उदा०—गोहनै गुपाल फिरूँ ऐसी आवत मन मे। —मीराँ।

गोहर—पु० [स० गोधा] बिसखोपरा नामक जतु।

गोहरा—पु० [हि० गो+ईल्ल या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] गोबर पाथ कर धूप मे सुखाया हुआ उसका गोलाकार पिंड जो ईंधन का काम देता है। उपला। कडा।

गोहराना†—अ० [हि० गोहार] १ पुकारना। बुलाना। आवाज देना। २ जोर से चिल्लाना। उदा०—धरु धरु मारु मारु गोहरावहि।—तुलसी।

गोहरौरा—पु० [हि० गोहरी+औरा (प्रत्य०)] १ गोहरो अर्थात् उपलो या कडो का ढेर। २ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार का ढेर लगा रहता है।

गोहलौत—पु० [गोह (नाम)] = गहलौत (क्षत्रियो का वर्ग)।

गोहानी†—स्त्री० दे० 'गोइड'।

गोहार—स्त्री० [स० गो+हार (हरण)] १ प्राचीन भारत मे वह चिल्लाहट या पुकार जो अपनी गौओ के छिन जाने या लुटेरो द्वारा लुट जाने पर मचाई जाती थी। २ कष्ट, सकट, हानि आदि के समय अपनी रक्षा या सहायता के लिए मचाई जानेवाली पुकार।

मुहा०—**गोहार मारना** =सहायता के लिए पुकार मचाना। **गोहार लडना**=पहलवानो आदि का अखाडे मे उतरकर तथा दूसरे पहलवानो आदि को ललकार कर उनसे लडना।

३ चिल्लाकर लोगो को इकट्ठा होने के लिए पुकारना। चिल्लाहट। ४ शोर। हल्ला।

गोहारी†—स्त्री० [हि० गोहार] १ गोहार। २ किसी की क्षति पूरी करने के लिए दिया जानेवाला धन। (लश०) ३ बन्दरगाह मे उचित से अधिक समय तक ठहरने के बदले मे दिया जानेवाला धन। (लश०)

गोही†—स्त्री० [स० गोपन] १ दुराव। छिपाव। २ गुप्त या छिपी हुई बात-चीत।

†स्त्री० [?] फलो की गुठली या बीज।

गोहुवन†—पु० =गेहुँअन (साँप)।

गोहूँ†—पु०=गेहूँ।

गौं—स्त्री० [स० गम्, प्रा० गवँ] १ अपने स्वार्थ या हित के साधन की प्रबल इच्छा। प्रयोजन। मतलब। जैसे—वह अपनी गौं को आवेगा।

पद—**गौं का यार**=मतलबी। स्वार्थी।

मुहा०—**गौं गाँठना या निकालना**= अपना मतलब निकालना। स्वार्थ साधन करना। **गौं पडना**=मतलब होना।

२ प्रयोजन, स्वार्थ आदि सिद्ध होने का उपयुक्त समय। उदा०—समय सयानी कीन्ही जैसी आई गौं परी।—तुलसी।

मुहा०—**गौं ताकना**=स्वार्थ साधने के लिए उपयुक्त अवसर की ताक मे रहना।

३ ढग। ढब। ४ तरह। प्रकार। उदा०—भोग करौ जोई गौं—सूर। ५ पार्श्व। पक्ष।

गौंच†—स्त्री० = कौंछ।

गौंजिक—पु० [स० गुञ्जा+ठक्-इक] १ जौहरी। २ सुनार।

वि० गुजा या घुँघची से सबध रखनेवाला।

गौंट—पु० [?] एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकडी बहुत कडी होती है।

गौंटा†—पु० [हि० गाँव+टा (प्रत्य०)] १ छोटा गाँव। २ गाँव के सब लोगो से लिया जानेवाला चन्दा। बेहरी। ३ गाँव की गली या पगडडी। ४ बरात के घर लौट आने पर गाँव के लोगो को दिया जानेवाला दान।

गौंस†—स्त्री० = गौं।

गौंहाँ†—वि० [हि० गाँव+हा (प्रत्य०)] गाँव का। गाँव-सबंधी।

गौ—स्त्री० [स०गो] १ गाय। गैया। २ रहस्य सप्रदाय मे (क) मन की वृत्ति, (ख) आत्मा और (ग) इद्रियाँ तथा मन।
*अ० हि० 'गया' का स्थानिक रूप। उदा०—अलपै लाभ मूलगो खाई—कबीर।

गौख†—पु० =गौखा (गवाक्ष)।

गौखा†—पु० [स० गवाक्ष] १ छोटी खिडकी। २ आला। ताखा। ३ देहाती मकानो मे दरवाजे के पास का छोटा दालान या बैठक।
पु० [हि० गौ=गाय] १ गाय या बैल का चमडा। २ गावदी। मूर्ख।

गौखी†—स्त्री० [हि० गोखा] १ गाय या बैल की खाल का बना जूता। २ जूता।

गौगा—पु० [अ०] १ शोर। गुल-गपाडा। हल्ला। २ अफवाह। जनश्रुति।

गौचरी—स्त्री० [हि० गौ+चरना] मध्य युग मे, वह कर जो जमीदार अपने खेतो मे गाएँ आदि चरानेवाले किसानो, चरवाहो आदि से वसूल करता था।

गौड—पु० [स०√गुड् (रक्षण)+घञ्] १ वग देश का वह प्राचीन विभाग जो किसी के मत से मध्य बगाल से उडीसा की उत्तरी सीमा तक और किसी के मत से वर्तमान वर्दवान के आस-पास था। २ उक्त देश का निवासी। ३ पुराणानुसार ब्राह्मणो का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत सारस्वत, कान्य-कुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड ये पाँच भेद है और इसी लिए जिन्हे पच गौड भी कहते है। ४ उक्त वर्ग के अन्तर्गत ब्राह्मणो की एक जाति जो दिल्ली के आस-पास तथा राजपूताने मे रहती है। ५ राजपूतो के ३६ कुलो या वर्गों मे से एक। ६ कायस्थो की एक उपजाति। ७ सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है और जो तीसरे पहर तथा सन्ध्या के समय गाया जाता है।

गौड-नट—पु० [ब० स०] गौड और नट के योग से बना हुआ एक सकर राग। (सगीत)

गौड़-पाद—पु० [ब० स०] स्वामी शकराचार्य के गुरु के गुरु का नाम।

गौड़-सारग—पु० [ब० स०] गौड और सारग के योग से बना हुआ एक सकर राग जो दिन के तीसरे पहर मे गाया जाता है।

गौड़िक—वि० [स०गुड+ठक्–इक] १ गुड-सबधी। २ गुड का बना हुआ। ३ जिसमे गुड मिला हुआ हो।
पु० १ ईख। २ गुड से बनी हुई शराब।

गौडिया†—वि०, पु०=गौडीय।

गौड़ी—स्त्री० [स०गुड+अण्-डीप्] १ गुड को सडाकर बनाई हुई शराब। २ काव्य मे एक प्रकार की रीति या वृत्ति जो ओज गुण प्रधान मानी जाती है तथा जिसमे द्वित्व, टवर्गीय, सयुक्त आदि वर्ण तथा लबे-लबे समास अधिक होते है। ३ सध्या के समय तथा रात के पहले पहर मे गाई जानेवाली सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

गौड़ीय—वि० [स० गौड+छ—ईय] १ गौड देश सबधी। गौड देश का। २ (साहित्यिक रचना) जिसमे गौडी वृत्ति के तत्त्व हो।
पु० चैतन्य महाप्रभु का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।
स्त्री० गौड देश की बोली या भाषा।

गौड़ेश्वर—पु० [गौड-ईश्वर, ष० त०] महात्मा कृष्ण चैतन्य जिन्हे गौराग महाप्रभु भी कहते है।

गौण—वि० [स० गुण+अण्] १ जो किसी की तुलना मे महत्त्व, मान आदि के विचार से कुछ घटकर हो। जो प्रधान या मुख्य न हो। २ (शब्द का अर्थ) जो मुख्य या मूल अर्थ से भिन्न हो। लाक्षणिक (अर्थ)। ३ बहुत ही सामान्य रूप से पूरक या सहायक बनने या होनेवाला।

गौण-चान्द्र—पु० [कर्म० स०] वह चाद्र मास जिसका आरभ कृष्ण प्रतिपदा से माना जाता है।

गौणिक—वि० [स० गुण+ठक्—इक] १ गुण-सबधी। गुण या गुणो का। जैसे—पदार्थो की गौणिक समानता। २ सत्त्व, रज और तम इन तीनो गुणो से सबध रखनेवाला। ३ गुणवान्। गुणी।

गौणी—स्त्री० [स० गौण+ङीष्] साहित्य मे अस्सी प्रकार की लक्षणाओं मे से एक जिसमे किसी पद का अर्थ केवल गुण, रूप आदि के सादृश्यवाले (उसके कार्य, कारण या अगागी भाववाले सबध से भिन्न) तत्त्व से निकलता है। जैसे—यदि कहा जाय 'देवदत्त सिह है' तो शब्दार्थ के विचार से ऐसा होना असभव है, पर समझनेवाला लक्षणा के द्वारा इससे यह समझता है कि देवदत्त सिह के समान बलवान् या पराक्रमी है।
वि० स० गौण का स्त्री० रूप। (क्व०)

गौतम—पु० [स० गोतम+अण्] १ गौतम ऋषि के वशज। २ पुराणो आदि के अनुसार एक ऋषि जिन्होने अपनी स्त्री अहल्या को इन्द्र के साथ अनुचित सबध करने के कारण शाप देकर पत्थर की तरह जड कर दिया था और जिसका उद्धार भगवान् श्री रामचन्द्र ने किया था। ३ न्याय-शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और प्रणेता एक ऋषि जो ईसा से प्राय ६०० वर्ष पहले हुए थे। ४ बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक बुद्धदेव का एक नाम। ५ एक स्मृतिकार ऋषि। ६ कृपाचार्य। ७ सप्तर्षि मडल मे का एक तारा। ८ नासिक के पास का वह पर्वत जिसमे गोदावरी नदी निकलती है। ९ क्षत्रियो का एक वश या वर्ग। १० भूमिहारो का एक वश या वर्ग। ११ एक प्रकार का विष।

गौतमी—स्त्री० [स० गौतम+ङीष्] १ गौतम ऋषि की पत्नी, अहल्या। २ कृपाचार्य की स्त्री। ३ गोदावरी नदी। ४ गौतम ऋषि की बनाई हुई स्मृति। ५ दुर्गा।

गौद(ा)—पु० दे० 'घौद'।

गौदान—पु०=गोदान।

गौदुमा—वि०=गावदुम।

गौन—पु० [देश०] खेत मे वह छायादार स्थान जहाँ बैल बाधे जाते है।
†पु०=गाउन।
पु० [स० गमन] १ जाना। २ गति। पैठ। ३ प्रवेश।

गौनई†—स्त्री० [स० गायन] गायन। सगीत।

गौनर्द—पु० [स० गोनर्द+अण्] पतजलि ऋषि जो गोनर्द देश के थे।

गौनहर—स्त्री० =गौनहारी।

गौनहाई†—स्त्री० [हि० गौना+हाई (प्रत्य०)] वह वधू जो गौना होने के बाद ससुराल मे पहले-पहल आई हो।

गौनहार—स्त्री० [हि० गौन+हार (प्रत्य०)] १ वह स्त्री जो दुलहिन का गौना होने पर उसके साथ उसकी ससुराल जाय। २ दे० 'गौन-हारी'।

गौनहारिन—स्त्री० =गौनहारी।

गौनहारी—स्त्री० [हि० गावना=गाना+हारी प्रत्य०] निम्न कोटि की

गानेवाली स्त्रियो का एक वर्ग या समाज। इस वर्ग की स्त्रियाँ प्राय टोली बनाकर गाती और वेश्यावृत्ति भी करती है।

गौना—पु० [स० गमन] विवाह के बाद की एक रसम जिसमे वर अपनी ससुराल से वधू को पहले-पहल अपने साथ अपने घर लाता है। द्विरागमन। मुकलावा।
क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—लाना।
†पु० [स्त्री० गौनी] बारहसिघा।

गौपिक—वि० [स० गोपिका+अण्] गोपी-सबधी।
पु० गोपी का वशज या सतान।

गौपुच्छ—वि० [स० गोपुच्छ+अण्] गाय की पूँछ के समान। गावदुम।

गौप्तेय—पु० [स० गुप्ता+ढक्–एय] गुप्त जाति नामवाले (अर्थात् वैश्य) का पुत्र।

गौमुख—पु०=गोमुख।

गौमुखी—स्त्री०=गोमुखी।

गौमेद—पु०=गोमेद।

गौरड—पु० [स० गौराग] गोरो अर्थात् अगरेजो का देश। विलायत। उदा०—कला कलित गौरड देस के दिव्य बनाए।—रत्नाकर।

गौर—वि० [स० गु (जाना) + र नि० सिद्ध] १ गौर वर्ण का। गोरे रग का। गोरा। २ उज्ज्वल। स्वच्छ। ३ श्वेत। सफेद।
पु० १ सफेद या गोरा रग। २ लाल रग। ३ पीला रग। ४ चद्रमा। ५ सोना। स्वर्ण। ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का बहुत छोटा मान जो तीन सरसो के बराबर होता था। ७ एक प्रकार का हिरन। ८ केसर। ९ धौ का पेड। १० सफेद सरसो। ११ बगाल के प्रसिद्ध वैष्णव महापुरुष चैतन्य महाप्रभु का एक नाम जो उनके शरीर के गौर वर्ण के कारण पडा था। १२ कैलास के उत्तर का एक पर्वत। १३ पद्म केसर। १४ बृहस्पति ग्रह का एक नाम।
स्त्री० [स० गौरी] हिंदुओ मे कही-कही प्रचलित एक प्रथा जिसमे विवाह निश्चित हो जाने पर कन्या के सबधी उसकी पूजा करते है।
पु० [?] ऊँचे कद का एक सुदर शाकाहारी जगली पशु जो भूरे रग का होता है।
†पु० दे० 'गौड'।
पु० [अ०] १ सोच-विचार। चितन। २ खयाल। ध्यान।

गौरक्ष्य—पु० [स० गोरक्ष+ष्यञ्] गोएँ पालने तथा उनकी रक्षा करने का काम। गो-रक्षण।

गौर-ग्रीव—पु० [ब० स०] पुराणानुसार एक देश जो कूर्म्म विभाग के मध्य मे है।

गौर-तलब—वि० [अ०] (विषय) जिस पर विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय।

गौरता—स्त्री० [स० गोर+तल्+टाप्] १ गौर अर्थात् गोरे होने की अवस्था या भाव। गोराई। गोरापन। २ सफेदी।

गौर-मदाइन—पु० [?] इद्रधनुष। (बुदेल०)

गौरव—पु० [स० गुरु+अण्] १ गुरु अर्थात् भारी होने की अवस्था या भाव। गुरुता। भारीपन। २ गुरु अर्थात् बडे होने की अवस्था या भाव। बडप्पन। महत्त्व। ३ आदर। इज्जत। सम्मान। ४ अभ्युत्थान। उत्कर्ष। उन्नति। ५ गभीरता। गहराई।

गौरवा*—पु० [स० गौर, गौरववत्] गौरैया का नर। चिडा पक्षी। उदा०—जाहि बया गहि पिय कठ लवा। करे मेराउ सोई गौरवा।—जायसी।
वि० गौरवयुक्त।

गौरवान्वित—वि० [गौरव-अन्वित, तृ० त०] गौरव या महिमा से युक्त। सम्मानित।

गौरवित—वि० [स० गौरव+इतच्] १ जिसका गौरव हुआ हो। २ जो गौरव से युक्त हो। सम्मानित।

गौर-शाक—पु० [ब० स०] एक प्रकार का महुआ और उसका फल।

गौर-शालि—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का शालि धान्य।

गौर-सुवर्ण—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साग जिसके पत्ते छोटे, सुनहले और सुगधित होते है।

गौराग—पु० [गौर-अग, ब० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ चैतन्य महाप्रभु।
वि० [स्त्री० गौरागी] गोरे अग या शरीरवाला। जैसे—अमेरिका या यूरोप के निवासी।

गौरा—स्त्री० [स० गौर+टाप्] १ गोरे रग की स्त्री। २ पार्वती। गौरी। ३ हल्दी। ४ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

गौरार्द्रक—पु० [गौर-आर्द्रक, कर्म० स०] अफीम, सखिया, कनेर आदि स्थावर विष।

गौरास्य—पु० [गौर-आस्य ब० स०] एक प्रकार का बदर जिसके शरीर का रग काला और मुँह गोरे रग का होता है।

गौराहिक—पु० [गौर-अहि, कर्म० स० +कन्] एक प्रकार का साँप।

गौरि—पु० [स० गौर+इञ्] आगिरस ऋषि।
†स्त्री०=गौरी।

गौरिक—वि० [स० गौर+ठन्—इक] गोरा।
पु० सफेद सरसो।

गौरिका—स्त्री० [स० गौरी+कन्–टाप्, ह्रस्व] आठ वर्ष की कन्या। गौरी।

गौरिया—पु० [?] १ मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का। २ एक प्रकार का मोटा कपडा।
†स्त्री० दे० 'गौरैया'।

गौरिल—पु० [स० गौर+इलच्] १ सफेद सरसो। २ लोहे का चूरा।

गौरी—स्त्री० [स० गौर+ङीष्] १ गोरे रग की स्त्री। २ पार्वती। ३ वरुण की पत्नी। ४ आठ वर्ष की कन्या। ५ तुलसी। ६ मल्लिका। ७ चमेली। ८ हलदी। ९ दारु हल्दी। १० मजीठ। ११ सफेद दूब। १२ सध्या समय गाई जानेवाली सपूर्ण राग की एक रागिनी। १३, चित्रो आदि मे दिखायी जानेवाली उज्ज्वलता या प्रकाश। १४ भारत (अखड) की पश्चिमोत्तर सीमा पर बहनेवाली एक प्राचीन नदी।
स्त्री० दे० 'गौडी'।

गौरी-चदन—पु० [मध्य० स०] लाल चदन।

गौरीज—पु० [स० गौरी√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] १ गौरी के पुत्र, कार्तिकेय और गणेश। २ अभ्रक।
वि० गौरी से उत्पन्न।

गौरी-पुष्प—पु० [ब० स०] प्रियगु नाम का वृक्ष।

गौरी बेंत—पु० [?] एक प्रकार का वेत जिसे पक्का बेत भी कहते हे।

गौरी-ललित—पु० [उपमि० स०] हरताल।

गौरी-शकर—पु० [मध्य० म०] १ शिव का वह रूप जिसमे उनके साथ गौरी अर्थात् पार्वती भी रहती हे। २ हिमालय की एक बहुत ऊँची चोटी।

गौरीश—पु० [गोरी-ईश, ष० त०] शिव।

गौरीसर—पु० [?] हसराज नाम की बूटी। सँमल पत्ती।

गौरुतल्पिक—पु० [स० गुरु-तल्प+ठक्-इक] वह शिष्य जिसका गुरु-पत्नी से अनुचित सबध हो।

गौरैया†—स्त्री० [?] १ काले रग का एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका सिर भूरा ओर गरदन सफेद होती हे। २ हर जगह घरो मे रहनेवाली एक प्रसिद्ध छोटी चिडिया। चिडी।

†पु० मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गौलक्षणिक—पु० [स० गो-लक्षण ष० त०+ठक्-इक] गाय-बैलो के भले-बुरे लक्षण पहचाननेवाला।

गौलना—अ० [?] अनुभूत होना।

गौला—स्त्री० =गौरी (पार्वती)।

गौलिक—पु० [स० गुड+ठक्-इक 'ड' को 'ल'] १ मुष्कक नामक वृक्ष। २ एक प्रकार का लोध।

गौल्मिक—पु० [स० गुल्म+ठक्-इक] सैनिको के गुल्म का नायक।

वि० गुल्म-सबधी।

गौशाला—पु० =गोशाला।

गौश्रृग—पु० [स० गोशृग+अण्] एक प्रकार का साम गान।

गौखी*—स्त्री० [स० गवाक्ष] खिडकी।

गौसम—पु० [हि० कोसम] १ कोसम नामक वृक्ष और उसका फल। २ उक्त पेड की लकडी।

गौहर—पु० [फा०] मोती।

†पु० [स० गोष्ठ] गोशाला। गोठ।

ग्यांबिर—पु० [देश०] कीकर की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकडियो से पपडिया खैर बनाया जाता है।

ग्याति*—स्त्री० १ =ज्ञाति। २ =जाति।

ग्यान†—पु० =ज्ञान।

ग्यारस—स्त्री० [हि० ग्यारह] चाद्र मास के कृष्ण या शुक्ल की ग्यारहवी तिथि। एकादशी।

ग्यारह—वि० [स० एकादशन्, पा० पै० एकादस, एकारस, अर्धमा० एक्कारस, प्रा० अप० एग्गारह, एआरह, गु० अगिआर, सि० यारह, प० ग्यारॉं, ब० उ० एगार] जो गिनती मे दस और एक हो।

पु० उक्त अक की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—११।

ग्रथ—पु० [स०√ ग्रथ् (रचना, बाँधना)+घञ्] १ गाँठ। ग्रथि। २. किताब या पुस्तक जिसके पन्ने या पृष्ठ पहले गाँठ बाँध कर रखे जाते थे। ३ धार्मिक या साहित्यिक दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण बडी पुस्तक। जैसे—गुरु ग्रथ-साहब। ४ गाँठ मे का अर्थात् अपने पास का धन। जमा। पूँजी।

ग्रथ-कर्त्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] ग्रथ या पुस्तक का रचयिता। लेखक।

ग्रथ-कार—पु० [ग्रथ √कृ (करना) √अण् उप० स०] दे० 'ग्रथ-कर्त्ता'।

ग्रथ-चुबक—पु० [ष० त०] वह जो ग्रथो या पुस्तको को यो ही सरसरी तौर पर देख जाता हो, उनमे प्रतिपादित विषयो का अध्ययन न करता हो।

ग्रथ-चुबन—पु० [ष० त०] ग्रथ या पुस्तक यो ही सरसरी तौर पर देख जाना, उसमे प्रतिपादित विषय का ठीक ज्ञान प्राप्त न करना।

ग्रथन—पु० [स०√ग्रथ्+ल्युट्-अन] १ गाँठ लगाकर जोडना, बाँधना या मिलाना। २ गूँथना। ३ ग्रथ या पुस्तक की रचना करना। ग्रथ बनाना।

ग्रथना*—स० =गूथना।

ग्रथ-माला—स्त्री० [ष० त०] एक ही स्थान से समय-समय पर प्रकाशित होनेवाली एक ही प्रकार अथवा वर्ग की अनेक पुस्तको की अवली या श्रृखला।

ग्रथ-सधि—स्त्री० [ष० त०] ग्रथ का कोई विभाग। जैसे—सर्ग, परिच्छेद, अध्याय, अक, पर्व्व आदि।

ग्रथ-साहब—पु० [हि० ग्रथ+साहब] सिक्खो का धर्म-ग्रथ जिसमे नानक, कबीर आदि गुरुओ की वाणियाँ सगृहीत हे।

ग्रथालय—पु० [ग्रथ-आलय, ष० त०] १ वह स्थान जहा पुस्तके रखी जाती हो। २ वह कमरा या घर जिसमे लोगो के पढने के लिए पुस्तके रखी गई हो। पुस्तकालय।

ग्रथावलि (ली)—स्त्री० [ग्रथ-आवलि (ली) ष० त०] ग्रथमाला।

ग्रथि—स्त्री० [स०√ग्रथ्+इन्] १ धागे, रस्मी आदि मे पडने या डाली जानेवाली गाँठ। २ गाँठ के आकार की कोई कडी गोलाकार रचना या वस्तु। ३ वायु आदि के विकार के कारण शरीर के किसी अग मे बननेवाली गाँठ। ४ शरीर के अन्दर कोषाणुओ के योग मे बनी हुई कई प्रकार की गाँठो मे से हर एक।

विशेष—ये ग्रथियाँ शरीर के भिन्न भिन्न भागो मे अनेक आकार-प्रकार की होती है और इनमे से ऐसे तरल तत्त्व या रस निकलते है जो शरीर की रक्षा और वृद्धि के लिए उपयोगी होते या अनुपयोगी तत्त्वो को शरीर के बाहर निकालते है। जैसे—बीज ग्रथि, लस ग्रथि आदि। (दे०) ५ कोई बाँधनेवाली चीज। बधन। ६ आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र मे वे बाते जो मनुष्य को इस ससार के साथ बाँधे रहती है और उसे आध्यात्मिक दिशा मे जाने से रोकती हे। ७ कुटिलता। टेढापन। ८ आलू। ९ पिपरामूल। १० भद्रमुस्तक। ११ ग्रथिपर्णी। गठिवन।

ग्रथिक—पु० [स० ग्रथ+ठन्-इक] १ पिपरामूल। २ ग्रथिपर्णी। गठिवन। ३ गुग्गुल। ४ करील। ५ ज्योतिषी। ६ सहदेव पाण्डव का वह नाम जो उन्होने अज्ञातवास के समय धारण किया था।

ग्रथित—भू० कृ० [स० ग्रथ+इतच्] १ जिसमे गाँठ लगी हो। २ गाँठ लगाकर बाँधा हुआ। ३ गूथा हुआ।

ग्रथि-दूर्व्वा—स्त्री० [मध्य० स०] गाडर दूब।

ग्रथि-पत्र—पु० [ब० स०] चोरक नामक गध-द्रव्य।

ग्रथि-पर्ण—पु० [ब० स०] गठिवन का पेड।

ग्रथिपर्णी—स्त्री० [स० ग्रथिपर्ण+ङीष्] गाडर दूब।

ग्रथि-फल—पु० [ब० स०] १ कैथ का पेड या फल। २ मैनफल।

ग्रथि-बधन—पु० [ष० त०] १ गाँठ बाँधकर अथवा ऐसी ही और किसी क्रिया से दो या अधिक चीजे एक साथ करना या लगाना। २ विवाह के समय वर और कन्या के कपडो के पल्लो को गाँठ देकर आपस मे बाँधने

की क्रिया जो पारस्परिक घनिष्ठ सबध स्थापित करने की सूचक होती है। गँठ-बधन।

ग्रथि-मूल—पु० [ब० स०] ऐसी वनस्पतियाँ जो गाँठो के रूप मे होती है। कद। जैसे—गाजर, मूली, शलजम आदि।

ग्रथि-मोचक—पु० [ष० त०] गिरहकट। जेब-कतरा।

ग्रथिल—वि० [स० ग्रन्थि+लच्] जिसमे गाँठ या गाँठे हो। गाँठदार। पु० १ करील का वृक्ष। २ पिपरामूल। ३ अदरक। आदी। ४ विककत वृक्ष। ५ चौलाई का साग। ६ आलू या ऐसा ही और कोई गोल कद। ७ चोरक नामक गध-द्रव्य।

ग्रथिला—स्त्री० [स० ग्रन्थिल+टाप्] १ गाडर दूब। २ माला दूब। ३ भद्रमुस्तक। भद्रमोथा।

ग्रथीक—पु० [स०=ग्रन्थिक, पृषो० सिद्धि] पिपरामूल।

ग्रस†—पु० [स० ग्रथि=कुटिलता] १ कुटिलता। टेढापन। २ कुटिलता या छल-कपट से भरा हुआ आचरण या व्यवहार। ३ मन मे रखा जानेवाला द्वेष। ४ दे० 'गाँसी'।

ग्रथन—पु० [स० ग्रन्थन] [भू० कृ० ग्रन्थित] १ ग्रथि या गाँठ लगाकर बाँधना। २ ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत करना। रचना। ३ गूथना। पिरोना।

ग्रथित—भू० कृ० [स०√ग्रन्थ् (गूथना)+क्त] १ जिसका ग्रथन हुआ हो। गठा या बँधा हुआ। २ बनाया या रचा हुआ। रचित। ३ गूथा या पिरोया हुआ। ४ जिसमे जमने के कारण गाँठे पड गई हो। ५ दबाया या जीता हुआ।
पु० दे 'अर्बुद'।

ग्रब्ब*—पु०=गर्व।

ग्रसन—पु० [स०√ग्रस् (खाना)+ल्युट्—अन] १ ग्रसने या पकडने की क्रिया या भाव। पकड। २ खाना या निगलना। भक्षण। ३ बुरी तरह से अपने चगुल मे फँसाना। ४ कौर। ग्रास। ५ ग्रहण। ६ फलित ज्योतिष मे दस प्रकार के ग्रहणो मे से एक खड-ग्रहण जिसके फलस्वरूप अभिमानियो का पतन या नाश होता है।

ग्रसना—स० [स० ग्रसन] १ इस प्रकार किसी को पकडना कि वह जल्दी छूटने, निकलने या भागने न पावे। अच्छी तरह से दबाते हुए पकडना। २ काम निकालने के लिए बहुत तग करना या पीछे पडना।

ग्रसपति—पु० [ष० त०?] प्राचीन वास्तु-कला मे मनुष्य के मुख की वे आकृतियाँ जो एक पक्ति मे किसी पत्थर मे खुदी हुई हो।

ग्रसित—भू० कृ०=ग्रस्त।

ग्रसिष्णु—वि० [स०√ग्रस्+इष्णुच्] १ जो ग्रसन करने पर उद्यत हो या उसका अभ्यस्त हो। २ निगलने या हडपनेवाला।
पु० परमात्मा।

ग्रस्त—भू० कृ० [स०√ग्रस्+क्त] १ खाया या निगला हुआ। २ ग्रसा या पकडा हुआ। जेसे—ग्रह-ग्रस्त। ३ कष्ट, रोग आदि से युक्त। पीडित। जैसे—ज्वर-ग्रस्त। ४ किसी के नियत्रण मे आया हुआ।

ग्रस्ता (स्तृ)—वि० [स०√ग्रस्+तृच्] १ ग्रसन करने या पकडनेवाला। २ भक्षक।

ग्रस्तास्त—वि० [स० ग्रस्त-अस्त, कर्म०स०] (चन्द्रमा या सूर्य) जो ग्रहण लगे रहने की दशा मे ही अस्त हो जाय।
पु० ऐसा ग्रहण जो चन्द्रमा या सूर्य के अस्त होने के समय तक न छूटा हो।

ग्रस्ति—स्त्री० [स०√ग्रस्+क्तिन्] १ निगलने की क्रिया या भाव। २ ग्रसने या पकडने की अवस्था, क्रिया या भाव। ग्रास।

ग्रस्तोदय—पु० [ग्रस्त-उदय, ष० त०] ऐसा ग्रहण जिसमे चन्द्रमा या सूर्य ऐसी अवस्था मे उदित हो कि उस पर ग्रहण लगा हुआ हो।

ग्रस्य—वि० [स०√ग्रस्+यत्] १ जिसे खाया या निगला जा सके। २ जिसे ग्रसा जा सके। ग्रस्त होने का पात्र।

ग्रह—पु० [स०√ग्रह् (ग्रहण करना)+अप्] १ ग्रहण करने, पकडने, लेने या वश मे करने की क्रिया या भाव। २ [√ग्रह्+अच्] वह जो किसी को पकडता, वश मे करता या प्रभावित करता हो। ३ वह आकाशस्थ पिड जो किसी सौर जगत् का अग हो और उस जगत् के सूर्य की परिक्रमा करता हो। (प्लैनेट) जैसे—पृथ्वी, बुध, शुक्र आदि।
विशेष—कुछ आकाशस्थ पिडो का नाम ग्रह कदाचित् इसलिए पडा था कि वे मनुष्यो के भाग्यो को वश मे रखने ओर प्रभावित करनेवाले माने जाते थे।
४ हमारे सौर जगत् मे चन्द्रमा, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु जो सूर्य की परिक्रमा करनेवाले पिड माने गये थे और जिनमे स्वय सूर्य को भी सम्मिलित करके नौ ग्रहो की कल्पना की गई थी।
विशेष—आधुनिक ज्योतिषियो ने अनुसधान करके दो-तीन और भी ऐसे छोटे तारो और तारा-पुजो का पता लगाया है जो हमारे सूर्य की परिक्रमा करते है, और इसी लिए जिनकी गिनती ग्रहो मे होने लगी है।
५ उक्त नौ ग्रहो के आधार पर नौ की सख्या का सूचक शब्द। ६ राहु जो ग्रहण के समय चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रसनेवाला माना गया है। ७ बालको को होनेवाले अनेक प्रकार के छोटे-मोटे रोग जो पहले भूत-प्रेत आदि बाधा के फल समझे जाते थे। बाल-ग्रह (देखे)।

ग्रहक—वि० [स० ग्राहक] ग्रहण करनेवाला।
पु० १ ग्राहक। २ कैदी।

ग्रह-कल्लोल—पु० [स० त०] राहु नामक ग्रह।

ग्रह-कुष्माड—पु० [कर्म० स०] एक देव-योनि। (पुराण)

ग्रह-गोचर—पु० [ष० त०] दे० 'गोचर'।

ग्रह-ग्रस्त—भू० कृ० [तृ० त०] जिस पर भूत-प्रेत आदि की बाधा हो।

ग्रह-ग्रामणी—पु० [ष० त०] ग्रहो का स्वामी, सूर्य।

ग्रह-चितक—पु० [ष० त०] ग्रहो की गति, स्थिति आदि का विचार करनेवाला व्यक्ति। ज्योतिषी।

ग्रहण—पु० [स० ग्रह्+ल्युट्—अन] १ पकडने या लेने की क्रिया या भाव। २ कोई बात ठीक समझकर मान लेना। ३ अगीकार या स्वीकार करना। ४ सूर्य या चद्रमा पर क्रमश चद्रमा या पृथ्वी की छाया पडने की वह स्थिति जिसमे उनका कुछ अथवा पूरा बिब अँधेरा या ज्योति-विहीन-सा प्रतीत होने लगता है। (इक्लिप्स) ५ उक्त के आधार पर किसी वस्तु, व्यक्ति आदि की वह स्थिति जिसमे उसकी उज्ज्वलता, महत्त्व, मान आदि पर किसी प्रकार का धब्बा लगा हो। ६ ऐसी वस्तु जिसके कारण किसी की उज्ज्वलता, महत्त्व, मान आदि पर बुरा प्रभाव पडता हो। ७ तात्पर्य। मतलब।

ग्रहणात—पु० [ग्रहण-अत, ष० त०] अध्ययन का समाप्ति पर होना।

ग्रहणा*—स० =गहना (पकडना)।

ग्रहणि, ग्रहणी—स्त्री० [स०√ग्रह्+अनि] [ग्रहणि+ङीष्] १ पक्वाशय और आमाशय के बीच की एक नाडी जो अग्नि या पित्त का प्रधान आधार मानी गयी है। (सुश्रुत) २ उक्त नाडी मे विकार होने के कारण होनेवाली दस्तो की एक बीमारी। सग्रहणी।

ग्रहणीय—वि० [स०√ग्रह्+अनीयर्] १ ग्रहण अर्थात् अगीकार किये जाने के योग्य। २ नियम या विधि के रूप मे माने जाने के योग्य।

ग्रह-दशा—स्त्री० [ष० त०] १ गोचर ग्रहो की स्थिति। २ ज्योतिष के अनुसार ग्रहो के किसी विशिष्ट स्थिति मे होने के फलस्वरूप मनुष्य की होनेवाली अवस्था (प्राय कष्टप्रद या दुखद अवस्था) ३ अभाग्य। दुर्भाग्य।

ग्रह-दाय—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे, किसी की वह आयु जो उसके जन्म लेने के समय के ग्रहो की स्थिति के अनुसार निश्चित की जाती है।

ग्रह-दृष्टि—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे, जन्म-कुडली के विभिन्न घरो मे स्थित ग्रहो का एक दूसरे पर पडनेवाला प्रभाव।

विशेष—शुभ ग्रह की दृष्टि का फल शुभ और अशुभ ग्रह की दृष्टि का फल अशुभ माना जाता है।

ग्रह-द्रुम—पु० [मध्य० स०] काकडासीगी।

ग्रह-नायक—पु० [ष० त०] सूर्य।

ग्रहनाश—पु०[स० ग्रह√नश् (नष्ट होना)+णिच्+अण्, उप०स०] सतिवन नामक पेड।

वि० ग्रहो का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

ग्रहनेमि—पु० [ष० त०] १ चद्रमा। २ चद्रमा के मार्ग का वह भाग जो मूल और मृगशिरा नक्षत्रो के बीच मे पडता है। ३ आकाश। (डि०)

ग्रह-पति—पु० [ष० त०] १ सूर्य। २ शनि। ३ आक या मदार का पौधा।

ग्रह-पीडा—स्त्री० [मध्य० स०] ग्रह-बाधा।

ग्रह-बाधा—स्त्री० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे ग्रहो की क्रूर दृष्टि या स्थिति के कारण होनेवाला भौतिक कष्ट या पीडा।

ग्रह-मर्द—पु० [ष० त०] ग्रह-युद्ध।

ग्रह-मैत्री—स्त्री०[ष० त०] वर और कन्या के ग्रहो के स्वामियो की मित्रता या अनुकूलता जिसका विचार हिन्दुओ मे विवाह के समय किया जाता है। (फलित ज्योतिष)

ग्रह-यज्ञ—पु० [ष० त०] ग्रहो की उग्रता या कोप की शान्ति के लिए किया जानेवाला एक प्रकार का पूजन या यज्ञ।

ग्रह-युति—स्त्री० [स० ष० त०] एक राशि के एक ही अश पर एक ही समय मे दो या कई ग्रहो का एकत्र होना।

ग्रह-युद्ध—पु० [ष० त०] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि या मगल मे से किसी एक ग्रह का चद्रमा के साथ अथवा उक्त ग्रहो मे से किसी दो ग्रहो का एक साथ एक राशि के एक अश पर इस प्रकार एकत्र होना कि उस पर ग्रहण लगा हुआ जान पडे। इसका फल भयकर कहा गया है।

ग्रह-युद्धभ—पु० [ग्रह-युद्ध, ब० स०, ग्रहयुद्ध-भ, कर्म० स०] वह नक्षत्र जिस पर कोई दो ग्रह एक साथ एकत्र हो। ग्रह-युद्ध का केन्द्र।

ग्रह-योग—पु० [ष० त०]=ग्रहयुति।

ग्रह-राज—पु० [ष० त०] १ सूर्य। २ चद्रमा। ३ बृहस्पति।

ग्रह-वर्ष—पु० [मध्य० स०] वह सारा समय जितने मे कोई ग्रह अपने सूर्य को एक परिक्रमा पूरी करता है।

विशेष—ग्रहो की कक्षाओ के अलग-अलग विस्तारो के अनुसार ही यह वर्ष या समय छोटा या बडा होता है।

ग्रह विप्र—पु० [मध्य० स०] बगाल और दक्षिण मे होनेवाले एक प्रकार के ब्राह्मण जो कुछ विशिष्ट क्रियाओ से ग्रहो के शुभाशुभ फल बतलाते है। २ ग्रहो का फल तथा स्थिति बतलानेवाला ब्राह्मण। ३ ज्योतिषी।

ग्रह-वेध—पु० [ष० त०] शास्त्रीय विधि से वेध (देखे) करके ग्रहो की स्थिति आदि का ठीक पता लगाना।

ग्रह-शाति—स्त्री० [ष० त०] १ वह पूजन जो ग्रहो का प्रकोप शात करने के उद्देश्य से किया जाता है। २ ग्रहो का प्रकोप शात होने की अवस्था या भाव।

ग्रह शृगाटक—पु० [ष० त०] बृहत्सहिता के अनुसार ग्रहो का एक प्रकार का योग जिसके फल अवस्थानुसार कभी शुभ और कभी अशुभ होते है।

ग्रह-समागम—पु० [ष० त०] किसी राशि मे चद्रमा के साथ मगल, बुध आदि ग्रहो का योग।

ग्रह-स्वर—पु० [ष०त०]सगीत मे वह स्वर जिससे किसी राग का आरभ होता है।

ग्रहा—स्त्री० गृहिणी। उदा०—सुख्ख धामय तेज दीपक कला, तारुण्य लच्छी ग्रहा।—चन्दबरदाई।

ग्रहागम—पु०[ग्रह-आगम, ष०त०] ग्रहो या भूत-प्रेत आदि की कष्टदायक बाधा होना।

ग्रहाचार्य्य—पु० ग्रहविप्र।

ग्रहाधार—पु० [ग्रह-आधार ष० त०] ध्रुव नक्षत्र।

ग्रहाधीश—पु० [ग्रह-अधीश, ष० त०] सूर्य।

ग्रहामय—पु० [ग्रह-आमय, मध्य० स०] ग्रहो या भूत-प्रेतो की बाधा के कारण होनेवाले रोग। (मिरगी, मूर्च्छा, आदि रोग इसी के अन्तर्गत माने जाते है।)

ग्रहावर्त—पु० [ग्रह-आवर्त ब०स०] जन्मपत्री।

ग्रहाश्रय—पु० [ग्रह-आश्रय, ष० त०] =ग्रहाधार।

ग्रहाह्वय—पु० [स० ग्रह-आ√ह्वे (स्पर्धा)+श] भूताकुश नामक पौधा।

ग्रहिल—वि० [स० ग्रह+इलच्] १ जिसे किसी ने ग्रस्त किया या बुरी तरह मे पकडा हो। २ जो किसी ग्रह या भूत-प्रेत की बाधा से पीडित हो। ३ दुराग्रही। हठी। ४ किसी विषय का अनुरागी या रसिक।

ग्रहीत—वि० दे० 'गृहीत'।

ग्रहीतव्य—वि० [स०√ग्रह्√तव्यत्] दे० 'गृहीतव्य'।

ग्रहीता (तृ)—वि० [स०√ग्रह्+तृच्] दे० 'गृहीता'।

ग्रहोपराग—पु० [ग्रह-उपराग, ष० त०] ग्रहो को लगनेवाला ग्रहण।

ग्रह्य—पु० [स० ग्रह+यत्] एक प्रकार का यज्ञपात्र।

वि० ग्रह-सबधी।

ग्राडील—वि० [अँ० ग्रैड=विशाल] १ ऊँचे कद का। २ लबा, चौडा और ऊँचा। ३ खूब मोटे-ताजे शरीरवाला।

ग्राम—पु० [स०√ग्रस् (खाना)+मन् आत्व] १ मनुष्यो का समूह या उनके रहने का स्थान। आबादी। बस्ती। २ छोटी बस्ती। गाँव। ३ ढेर। राशि। समूह। जैसे—गुण-ग्राम। ४ शिव। ५ षड्ज से निषाद तक क्रम से सातो स्वरो का समूह। सप्तक।
वि० १ गाँव या बस्ती मे रहनेवाला। २ पालतू। जैसे—ग्राम-शूकर। ३ गवाँर। देहाती।

ग्राम-कटक—पु० [ष० त०] वह जो गाँव या बस्ती मे तरह-तरह के उत्पात या उपद्रव करके सब लोगो को कष्ट पहुँचाता या दु खी रखता हो।

ग्राम-कुक्कुट—पु० [ष० त०] पालतू मुरगा।

ग्राम-कूट (क)—पु० [ष० त०] शूद्र।

ग्राम-गीत—पु० [स० मध्य० स०] गाँवो मे गाये जानेवाले गीत। लोक-गीतो के अतर्गत ग्रामगीतो और जगली लोगो के गीतो को सम्मिलित किया या माना जाता है।

ग्राम-गेय—पु० [स० त०] एक प्रकार का साम।
वि० गाँव मे गाया जाने वाला।

ग्राम-घात—पु० [ष० त०] गाँव को लूटना।

ग्राम-चर—वि० [स० ग्राम√चर् (गति)+ट, उप० स०] गाँव मे रहनेवाला।

ग्राम-चर्या—स्त्री० [ष० त०] स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग या सहवास।

ग्राम-चैत्य—पु० [ष० त०] गाँव का पवित्र और पूज्य वृक्ष।

ग्रामज—वि० [स० ग्राम√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] गाँव मे उत्पन्न होनेवाला। ग्राम मे उत्पन्न।

ग्राम-जात—वि० [प० त०] =ग्रामज।

ग्रामणी—पु० [स०ग्राम√नी (ले जाना)+क्विप्, उप० स०] १ गाँव का मालिक। २ गाँव का मुखिया। ३ लोगो का नेता या प्रधान व्यक्ति। ४ विष्णु। ५ यक्ष। ६ नाई। हज्जाम।
स्त्री० १ वेश्या। २ नील का पौधा।

ग्राम-देव—पु० [ष० त०]=ग्राम देवता।

ग्राम-देवता—पु० [ष० त०]गाँव का वह स्थानिक प्रधान देवता जो उसका रक्षक माना जाता है और जिसकी पूजा गाँव के सब लोग करते है।

ग्राम-धर्म—पु० [ष० त०] स्त्री-सभोग। मैथुन।

ग्राम-पचायत—स्त्री० [स०+हि०] गाँव के चुने हुए लोगो की वह पचायत जो गाँव भर के झगडो-बखेडो का निर्णय करतीहै और वहाँ की सब प्रकार से सुव्यवस्था करती हे।

ग्राम-पाल—पु० [स० ग्राम√पाल् (रक्षाकरना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ गाँव का मालिक या स्वामी। २ गाँव का प्रधान अधिकारी ओर रक्षक।

ग्राम-प्रेष्य—पु० [ष० त०] वह जो गाँव के सब लोगो की सेवा करता हो। मनु के अनुसार ऐसा मनुष्य यज्ञ और श्राद्ध आदि कार्यों मे सम्मिलित नही किया जाना चाहिए।

ग्राम-मुख—पु० [ब० स०] गाँव का बाजार। हाट।

ग्राम-मृग—पु० [ष०त०] १ गाँव मे रहनेवाले पशु। २ कुत्ता।

ग्राम-याजक—पु० [ष० त०] वह ब्राह्मण जो ऊँच-नीच सभी तरह के लोगो का पुरोहित हो। (ऐसा व्यक्ति प्राय पतित माना जाता है।)

ग्राम-याजी (जिन्)—पु० [स० ग्राम√यज् (पूजा)+णिच्+णिनि, उप० स०]=ग्राम-याजक।

ग्राम-युद्ध—पु० [ष०त०] गाँव या बस्ती भर मे होनेवाला उपद्रव और मार-पीट।

ग्राम-वल्लभा—स्त्री० [ष० त०] १ वेश्या। रडी। २ पालक का साग।

ग्राम-वासी (सिन्)—वि० [स० ग्राम√वस् (बसना)+णिनि, उप० स०] १ गाँव मे बसने या रहनेवाला। २ पालतू।

ग्राम-सिह—पु० [ष० त०] कुत्ता।

ग्राम-सुधार—पु० [स० ग्राम+हि० सुधार] गाँव के दोष दूर करने तथा सब क्षेत्रो मे उसकी उन्नति करने का काम। गाँव की अवस्था सुधारने का काम। (रूरल अपलिफ्ट)

ग्राम-हासक—पु० [ष०त०] बहनोई, जिससे गाँव भर के सब लोग हँसी-मजाक करते है।

ग्रामाचार—पु० [ग्राम-आचार, ष०त०] किसी गाँव की विशिष्ट प्रथाएँ तथा रीति-रिवाज।

ग्रामाधान—पु० [ग्राम-आधान, ष०त०] आखेट। मृगया। शिकार।

ग्रामाधिप, ग्रामाध्यक्ष—पु० [ग्राम-अधिप, ग्राम अध्यक्ष, ष० त०] गाँव का प्रधान अधिकारी। मुखिया।

ग्रामिक—वि० [स० ग्राम+ठञ्—इक] १ गाँव मे उपजने या होनेवाला। २ ग्रामवासियो से सबधित।
पु० १ गाँव का चुना या माना हुआ प्रधान अथवा मुखिया। २ ग्रामवासी।

ग्रामिणी—स्त्री० [स० ग्राम+इनि—ङीप्] नील का पौधा।

ग्रामी (मिन्)—वि० [स० ग्राम+इनि] १ (व्यक्ति) जो गाँव मे रहता हो। २ ग्राम्य।
पु० १ ग्रामवासी। देहाती। २ गाँव मे रहनेवाले पशु। जैसे—कुत्ता, कौआ, मुरगा आदि।
स्त्री० १ पालक का साग। २ नील का पेड।

ग्रामीय—वि० [स० ग्राम+छ ईय] ग्राम्य।

ग्रामेय—पु० [स० ग्राम+ढक्—एय] ग्रामवासी।
वि० ग्राम्य।

ग्रामेयी—स्त्री० [स० ग्रामेय+ङीष्] वेश्या।

ग्रामेश, ग्रामेश्वर—पु० [स० ग्राम-ईश, ग्राम-ईश्वर, ष०त०] गाँव का प्रधान या मुखिया।

ग्राम्य—वि० [स० ग्राम+यत्] १ गाँव से सबध रखनेवाला। गाँव का। जैसे—ग्राम्य गीत, ग्राम्य-सुधार। २ गाँव मे रहने या पाया जानेवाला। ३ ग्रामवासियो के रीति-रिवाज, स्वभाव, व्यवहार आदि से सबध रखने-वाला। जैसे—ग्राम्य व्यवहार। ४ जो ग्रामवासियो की प्रकृति, स्वभाव, व्यवहार आदि का-सा हो। असभ्य या अरुचिपूर्ण। ५ अश्लील। ६ जिसमे किसी प्रकार का सशोधन या सुधार न हुआ हो। अनगढ और प्रकृत। ७ (जीव या पशु) जो पाला-पोसा और गाँव या बस्ती मे रखा गया हो अथवा रहता आया हो। जैसे—कुत्ता, गधा, गौ आदि ग्राम्य पशु।

पु० १ अनाड़ी। बेवकूफ। मूर्ख। २ मैथुन की एक मुद्रा या रति-बंध। ३ काव्य का एक दोष, जो किसी साहित्यिक रचना में (क) गँवारू शब्दों के प्रयोग अथवा (ख) गँवारू विषयों के वर्णन के कारण उत्पन्न माना गया है। ४ यह शब्दगत और अर्थगत दो प्रकार का होता है। ४ अशिष्ट और अश्लीलतापूर्ण कथन या बात। ५ स्त्री-प्रसंग। मैथुन। ६ मिथुन राशि।

ग्राम्य-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] स्त्री-प्रसंग। मैथुन।

ग्राम्य-कुंकुम—पु० [कर्म०स०] बर्रे का पौधा या फूल। कुसुंभ।

ग्राम्य-देवता—पु० [कर्म० स०] ग्रामदेवता।

ग्राम्य-दोष—पु० [कर्म० स०] काव्य का 'ग्राम्य' नामक दोष। (दे० 'ग्राम्य')

ग्राम्य-धर्म—पु० [ष०त०] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

ग्राम्य-पशु—पु० [कर्म० स०] पालतू जानवर।

ग्राम्य-मृग—पु० [कर्म० स०] कुत्ता।

ग्राम्य-वल्लभा—स्त्री० = ग्राम-वल्लभा।

ग्राम्या—स्त्री०[स० ग्राम्य+टाप्] १ नील का पौधा। २ तुलसी।

ग्राव (न्)—पु०[स०√ग्रस्(भक्षण)+ड ग्र-आ√वन् (सलग्न होना)+विच्] १ पत्थर। २ पहाड़। ३ ओला। ४ बादल।
वि० कठोर। कड़ा।

ग्राव-स्तुत्—पु० [स० ग्राव√स्तु(स्तुति करना)+क्विप्, उप० स०] सोलह ऋत्विजों में से तेरहवाँ ऋत्विज्। अच्छावाक।

ग्रावह—पु० [स० ग्रावा] पत्थर की कील। उदा०—परि पै प्रसन्न पत्तीन करि, तव काढत ग्रावह जुही।—चन्दवरदाई।

ग्राव-हस्त—पु० [ब०स०] यज्ञ करनेवाला वह ऋत्विज् जिसके हाथ में अभिषव का पत्थर रहता है।

ग्रावायण—पु०[स० ग्राव+फक्—आयन] एक प्रवर का नाम।

ग्रास—पु० [स०√ग्रस्+घञ्] १ ग्रसने अर्थात् बुरी तरह से पकड़ने या दबाने की क्रिया या भाव। २ चंद्रमा या सूर्य को लगनेवाले ग्रहण की स्थिति जो उसके ग्रस्त अंश के विचार से कही जाती है। जैसे—खग्रास, सर्व-ग्रास। ३ उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। कौर। निवाला।

ग्रासक—वि० [स०√ग्रस्+ण्वुल्—अक] १ ग्रस्त करने या बुरी तरह से पकड़नेवाला। २ ग्रास के रूप में खाने या मुँह में रखनेवाला। ३ भक्षक। ४ छिपाने या दबानेवाला।

ग्रासना—पु० [स० ग्रास] १ ग्रस्त करना। बुरी तरह से पकड़ना। २ निगलना। ३ कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना।

ग्राह—पु० [स०√ग्रह(पकड़ना)+ण] १ मगर। घड़ियाल। २ भक्त समाज में, वह विशिष्ट मगर जिसके पंजे से भगवान् ने गज को छुड़ाया था। ३ [√ग्रह्+घञ्] चंद्रमा आदि को लगनेवाला ग्रहण। ४ ग्रहण करने, पकड़ने या लेने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ५ ज्ञान। ६ [√ग्रह्+ण] ग्राहक।

ग्राहक—पु०[स०√ग्रह्+ण्वुल्—अक] १ ग्रहण करने या लेनेवाला। २ वह जो मूल्य देकर कोई चीज लेता या लेना चाहता हो। खरीददार। ३ आदरपूर्वक कुछ पाने या लेने की इच्छा या प्रवृत्ति रखनेवाला। जैसे—गुण-ग्राहक। ४ वह औषधि जिसके सेवन से पतला दस्त आना बन्द हो जाय और बँधा पैखाना होने लगे। ५ बाज नामक पक्षी। ६ चौपतिया नामक साग। ७ विष आदि के प्रकोपों की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। विष-वैद्य।
वि० ग्रहण करनेवाला। जैसे—ग्राहक यंत्र।

ग्राहक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] एक वैज्ञानिक उपकरण जो प्रेषक यंत्र द्वारा भेजे गये संदेश ग्रहण करता है। (रिसीवर)

ग्राहना*—स० [स० ग्रहण] १ ग्रहण करना। लेना। उदा०—पै केवल निज नगर माहि प्रचलित मत ग्राह।—रत्ना०। २ ग्रस्त करना। पकड़ना।

ग्राह-मुख—वि० [स० ब० स०] जिसका मुख घड़ियाल का सा हो।

ग्राहिका—स्त्री० [स० ग्राहक+टाप्, इत्व] बिजली का तीसरा बल।

ग्राही (हिन्)—वि० [स०√ग्रह्+णिनि] १ ग्रहण या स्वीकार करने-वाला। लेनेवाला। २ आदरपूर्वक मानने या लेनेवाला। जैसे—गुण-ग्राही। ३ (औषध या खाद्य पदार्थ) जो मल रोकता हो। कब्ज करनेवाला।

ग्राह्य—वि०[स०√ग्रह्+ण्यत्] १ जो ग्रहण किये जाने का हो अथवा किये जाने के योग्य हो। २ जो प्राप्त किया या लिया जा सकता हो। ३ जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो। ४. जिसे इंद्रियाँ देख, सुन, पहचान या समझ सकती हों।

ग्राह्य-व्यक्ति—पु० [कर्म० स०] १ वह प्रमुख व्यक्ति जिसे और लोग या दूसरे देशवाले भी प्रमुख मानें और उसकी बातें या मत ग्रहण कर सकें। २ आधुनिक राजनीति में, विदेशी दूतावास का ऐसा अधिकारी जो अपनी ईमानदारी और सचाई के कारण ग्राह्य हो। (पर्सना ग्रैटा)

ग्रिह—पु० १ दे० 'ग्रह'। २ दे० 'गृह'।

ग्रीक—वि० [अ०] यूनान देश अथवा इसके वासियों से संबंध रखनेवाला। यूनानी।
पु० यूनान देश का निवासी।
स्त्री० यूनान देश की प्राचीन भाषा।

ग्रीखम†—पु० ग्रीष्म।

ग्रीध†—पु० [स० गृध्र] [स्त्री० ग्रीधणी] गीध। उदा०—चारी पल ग्रीधणी चिड।—प्रिथीराज।

ग्रीवा—स्त्री० [स०√गृ (निगलना)+वन्, नि० सिद्धि] सिर और धड़ को जोड़नेवाला अंग। गरदन। गला

ग्रीवी (विन्)—वि० [स० ग्रीवा+इनि] लंबी गरदनवाला।
पु० ऊँट।

ग्रीषम†—पु० = ग्रीष्म।

ग्रीष्म—स्त्री० [स०√ग्रस्+मक् नि० सिद्धि] [वि० ग्रैष्म, ग्रैष्मिक] १ छ ऋतुओं में से दूसरी ऋतु जिसमें बहुत अधिक गरमी पड़ती है। जेठ और आषाढ़ के दिन। २ गरमी। ताप।
वि० उष्ण। गरम।

ग्रीष्म-ऋतु—स्त्री० [ष० त०] गरमी के दिन। जेठ और आषाढ़ के महीने।

ग्रीष्म-काल—पु० = ग्रीष्म ऋतु।

ग्रीष्म-भवा—स्त्री०[स०ग्रीष्म√भू(होना)+अच्—टाप्] नेवारी का फूल।

ग्रीष्मावकाश—पु० [स० ग्रीष्म—अवकाश ष० त०] कुछ विशिष्ट गरम

प्रदेशो मे कडी गरमी के समय होनेवाली छुट्टियाँ। गरमी की छुट्टियाँ। (समर वोकेशन)

ग्रीष्मी—स्त्री० [स० ग्रीष्म+अच्–डीष्] =ग्रीष्मभवा।

ग्रीस—पु० [अ०] [वि० ग्रीक] यूनान देश।

ग्रेन—पु० [अ०] एक पाश्चात्य तौल जो प्राय एक जौ के बराबर होती है।

ग्रेनाइट—पु० [अ०] हलके भूरे रग का एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कडा होता है।

ग्रेह*—पु०=गेह (घर)।

ग्रेही*—पु० [स० गृही] घर-बारवाला अर्थात् ससारी व्यक्ति।

ग्रैजुएट—पु० [अ०] वह जिसने उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त की हो। स्नातक।

ग्रैम—पु० [अ०] एक पाश्चात्य तौल जो लगभग १५½ ग्रेन (या औस के अट्ठाइसवे भाग) के बराबर होती है।

ग्रैवेयक—पु० [स० ग्रीवा+ढकञ्–एय] १ गले मे पहनने का कोई गहना। जैसे—हार, माला, हैकल आदि। २ हाथी के गले मे बाँधी जानेवाली जजीर। ३ जैनो के एक प्रकार के नौ देवता जो लोक पुरुष की गरदन पर स्थित माने गये है।

ग्रैष्म—वि० [स० ग्रीष्म+अण्] १ ग्रीष्म-सबधी। २ ग्रीष्म ऋतु मे होनेवाला। जैसे-ग्रैष्म रोग। ३ ग्रीष्म ऋतु मे बोया जानेवाला।

ग्रैष्मिक—वि० [स० ग्रीष्म+ठञ्–इक] =ग्रैष्म।

ग्लान—वि० [स० √ग्लै (अप्रसन्नता) +क्त] १ ज्वर आदि रोगो से पीडित। बीमार। रोगी। २ थका हुआ। शिथिल। ३ कमजोर। दुर्बल।

*स्त्री० = ग्लानि।

ग्लानि—स्त्री० [स०√ग्लै+क्तिन्] १ मानसिक या शारीरिक शिथिलता। **विशेष**—साहित्य मे यह एक सचारी भाव माना जाता और अनाहार, निद्रा, परिश्रम, प्यास, रोग, सभोग आदि के कारण होता है। इसके अनुभाव है—शिथिलता, निर्बलता, मद गति, कातिहीन दृष्टि आदि आदि।

२ अपने ही किसी कार्य का अनौचित्य मालूम होने पर मन मे होनेवाला खेद या हल्का दु ख। मानसिक खेद।]

ग्लास—पु० दे० 'गिलास'।

ग्लौ—पु० [स०√ग्लै+डौ] १ चद्रमा। २ कपूर। ३ पृथ्वी।

ग्वाँडा†—पु० [स० गुण्ड] १ घेरा। वृत्त। २ घिरा हुआ स्थान। बाडा।

ग्वार—स्त्री० [स० गोराणी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियो की तरकारी और उसकी फलियो मे से निकलनेवाले बीजो की दाल बनती है।

ग्वार-नट—स्त्री० [अ० गारनेट] एक प्रकार का बढिया रगीन रेशमी कपडा।

ग्वार-पाठा—पु० [स० कुमारी-पाठा] घी-कुआँर।

ग्वारी*—स्त्री० दे० 'ग्वार'।

ग्वाल—पु० [स० गोपाल, प्रा० गोवाल, ब० गोयाल, गु० गोवाड, मरा० गवडी, प० गवाल] [स्त्री० ग्वालिन] गौएँ पालने तथा दूध आदि बेचने का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। अहीर।

ग्वाल-ककड़ी—स्त्री० [हिं० ग्वाल+ककडी] एक वनस्पति जिसकी जडे, पत्ते, बीज आदि दवा के काम आते है।

ग्वाल-गीत—पु० [हिं० ग्वाल+गीत] वे गीत जो ग्वाले या चरवाहे पशु चराते समय गाते है। (पैसचोरल साग)

ग्वाल-दाडिम—पु० [हिं० ग्वाल+दाडिम] मालकगनी की जाति का एक छोटा पेड।

ग्वाल-बाल—पु० [हिं० ग्वाल+बाल] १ अहीरो के लडके। २ कृष्ण के बाल-सखा।

ग्वाला—पु० [स० गोपाल, प्रा० गोवाल] १ अहीर। ग्वाल। २ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मुलायम होती है और जिस पर चित्रो आदि की उकेरी या खुदाई होती है।

ग्वालिन—स्त्री० [हिं० ग्वाल] १ ग्वाल जाति की स्त्री। २ ग्वाले की पत्नी। ३ ग्वार नामक पौधा। ४ गिजाई नामक बरसाती कीडा।

ग्वाह*—पु० = गवाह।

ग्वैठना*—स० [स० गुठन, हिं० गुमेठना] १ मरोडना। २ दे० 'गोठना'।

ग्वैठा†—पु० = गोइठा।

ग्वैडा*—पु० [हिं० गाँव + इडा] १ गाँव के आस-पास की भूमि। २ खेत या गाँव की सीमा।

ग्वैडे†—क्रि० वि० [हिं० ग्वैडा] १ गाँव के आस-पास। गाँव के नजदीक।

२ निकट। पास। करीब।

ग्वैयाँ†—स्त्री० दे० 'गोइँयाँ'।

वि० [हिं० गाँव+ऐयाँ (प्रत्य०)] गाँव मे रहने या होनेवाला।

पु० देहाती।

घ

घ—देवनागरी वर्णमाला मे क-वर्ग का चौथा व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कठ्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा सघोष है।

घँगोल†—पु० [देश०] कुमुद। कोई।

घँघरा†—पु० [स्त्री० घँघरी] घघरा।

घँघोना—स०=घँघोलना।

घँघोरना†—स०=घँघोलना।

२—२०

घँघोलना—स० [हिं० पन+घोलना] १ किसी पात्र मे रखे हुए पानी मे हाथ या और कोई चीज डालकर उसे इस प्रकार हिलाना-डुलाना कि उसमे नीचे जमी या बैठी हुई कोई वस्तु पानी मे अच्छी तरह घुल-मिल जाय। २ नदी, नाले आदि के तल की मिट्टी इस प्रकार पैर, लकडी आदि से हिलाना-डुलाना कि वह ऊपर उठकर पानी गँदला कर दे।

घंट—पु० [स० घट] १ घडा । २ पानी का वह घडा जो किसी के मरने पर उसकी आत्मा को जल पहुँचाने के लिए १० या १२ दिनो तक पीपल मे बाँधकर लटकाते है ।

†पु०=घटा ।

घंटक—पु० [स०√घण् (दीप्ति) +क्त+कन्] एक प्रकार का क्षुप ।

घंट धातु—स्त्री० [स० घंटा-धातु] ताँबे और टीन के योग से बनाई जानेवाली एक मिश्र धातु जिससे घंटे आदि बनते हे । (बेल मेटल)

घंटा—पु० [स०√घट् (शब्द करना) +अच्—टाप्] [स्त्री० अल्पा० घंटी] १ घंट धातु का बना हुआ गोलाकार टुकडा जिसे लकडी, लोहे आदि के डडे या हथोडे से पीटने या मारने पर जोर की आवाज होती है ।

विशेष—हमारे यहा इसकी गिनती बाजो मे होती हे और मदिरो मे आरती आदि के समय यह बजाया जाता है ।

मुहा०—(किसी को) घंटे मोरछल से उठाना=किसी वृद्ध का शव बाजे-गाजे और धूम-धाम मे श्मशान पर ले जाना ।

२ उक्त बाजा बजाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

क्रि० प्र०—बजना ।—बजाना ।

३ प्राचीन काल मे पहर-पहर पर घंटा बजाकर समय की दी जानेवाली सूचना । ४ आज-कल दिन-रात का चौबीसवाँ भाग जो ६० मिनट का होता है । ५ कोई काम करने की वह निश्चित अवधि या भोग-काल जो ६० मिनटो या कभी-कभी इससे कुछ कम का होता है । जैसे—स्कूल मे पहले घंटे मे हिसाब सिखाया जाता है और दूसरे घंटे मे हिन्दी पढाई जाती है । ६ उक्त अवधि की घंटा बजाकर दी जानेवाली सूचना । ७ पूर्ण अस्वीकृति, विफलता, व्यर्थता आदि का सूचक निराशाजनक शब्द । ठेगा ।

मुहा०—(किसी को) घंटा दिखाना=ऐसा उत्तर देना या मुद्रा बनाना जिससे कोई अर्थी पूरी तरह से निराश हो जाय । **घंटा हिलाना**=(क) व्यर्थ बैठे रहना । (ख) व्यर्थ का काम करना ।

८ लिगेद्रिय । (बाजारू)

घंटाकरन—पु० [स० घंटाकर्ण] १ बडे पत्तोवाली एक प्रकार की घास । २ दे० 'घंटा कर्ण' ।

घंटा-कर्ण—पु० [ब० स०] शिव का एक प्रसिद्ध उपासक जो कानो मे इसलिए घंटे बाँधे रहता था कि राम या विष्णु का नाम उसके कानो मे न पहुँचने पाये ।

घंटाघर—पु० [हिं० घंटा+घर] वह ऊँची मीनार जिस पर बडी धर्म-घडी लगी रहती है और जिसके घंटे का शब्द दूर तक सुनाई पडता है ।

घंटापथ—पु० [ष० त०] चौडी या बडी सडक । राजमार्ग ।

घंटिक—पु० [स० घंटा+ठन्—इक] घडियाल या मगर । (जल-जन्तु)

घंटिका—स्त्री० [स० घंटा+कन्-टाप् इत्व] १ छोटा घंटा । २ घुँघरू । ३ वे छोटे घडे जो रहट मे बाँधे जाते हैं । क्षुद्र-घंटिका ।

घंटियार—पु० [हिं० घंटी] पशुओ का एक प्रकार का रोग जिसमे उनके गले मे काँटे निकल आते हैं और उनसे कुछ खाया नही जाता ।

घंटी—स्त्री० [स० घंटा] १ घंटे की तरह बजाया जानेवाला धातु का वह उपकरण जो औधे मुँह के अर्ध गोलाकार पात्र की तरह होता है तथा जिसके बीच मे बजाने के लिए कोई धातु का टुकडा (लोलक) बँधा रहता है और जिसके ऊपरी भाग मे डडी होती हे जिसे हाथ मे पकडकर उसे बजाते है । २ कोई ऐसा छोटा उपकरण जिस पर आघात करने से शब्द उत्पन्न होता हो । जैसे—साइकिल या मेज पर की घंटी । ३ उक्त उपकरणो के बजने का शब्द । ४ छोटी लुटिया । ५ घुँघरू । ६ गले का वह बाहरी बीचवाला भाग जिसमे हड्डी कुछ उभरी हुई होती है । ७ गले मे अन्दर को आगे बढा हुआ मास-पिड । कौआ । घाँटी ।

मुहा०—घंटी उठाना या बैठाना=घंटी के बढ या लटक जाने पर कोई दवा लगाकर उसे मलते हुए बैठाना ।

घंटील—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो चारे के काम मे आती और जमीन पर दूर तक फैलती हे ।

घंटु—पु० [स०√घट्+उन्] १ ताप । २ प्रकाश । ३ गजघंटा ।

घई*—स्त्री० [?] १ पानी का भँवर । २ खभे की जगह लगाई जाने-वाली चाड । टेक । थूनी ।

वि० [स० गभीर ?] बहुत अधिक गहरा ।

घउरी—स्त्री० =घौरी ।

घघरबेल—स्त्री० [हिं० घुघराला+बेल] बदाल ।

घघरा—पु० [हिं० घन+घेरा] [स्त्री० अल्पा० घघरी] १ टखनो तक लबा, गोल तथा बडे घेरेवाला एक प्रसिद्ध पहनावा जिसे स्त्रियाँ कमर मे नाडे से बाँधती है । २ वह लहँगा जो स्त्रियाँ धोती के नीचे पहनती है ।

घघराघोर†—पु० [हिं० घँघरा+घोर] १ छुआछूत के विचार का अभाव । २ बहुत अधिक भ्रष्टाचार ।

घघरी—स्त्री० [हिं० घघरा] छोटा घघरा या लहँगा ।

घट—पु० [स०√घट् (शब्द करना) +अच्] १ जल भरकर रखने का बडा बरतन विशेषत मिट्टी का बरतन । कलश । घडा ।

पद—मगल घट=मागलिक अवसर पर जल से भरकर रखा जानेवाला कलश या घडा ।

२ देह । शरीर । ३ अन्त करण । मन ।

मुहा०—घट मे बसना या बैठना=(क) हृदय मे स्थापित होना । मन मे बसना । (ख) ध्यान पर चढा रहना ।

४ कुभ राशि । ५ हाथी का कुभ । ६ २० द्रोण की तौल । ७ किनारा ।

वि० [हिं० घटना] किसी की तुलना मे कुछ घटा हुआ, कम, थोडा या हलका । उदा०—को घट वे वृषभानुजा ये हलधर के बीर—बिहारी ।

घट-कचुकी—स्त्री० [मध्य० स०] तान्त्रिको की एक रीति जिसमे पूजा करनेवाली सब स्त्रियो की कचुकियाँ या चोलियाँ एक घडे मे भर देते हैं, और तब जिस पुरुष के हाथ मे जिस स्त्री की कचुकी या चोली आ जाती है, वह उसी स्त्री के साथ सभोग करता है ।

घटक—वि० [स०√घट्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० घटिका] १ कोई चीज घटित करने, बनाने या रचनेवाला (अश या तत्त्व) । २. कोई घटना या बात घटित या प्रस्तुत करनेवाला (पदार्थ या व्यक्ति) । ३ चतुर । चालाक ।

पु० १ विवाह-सबध स्थिर करानेवाला ब्राह्मण या और कोई व्यक्ति । बरेखिया । २ दलाल । ३ मध्यस्थ । ४ बीच मे पडकर काम

पूरा करानेवाला चतुर व्यक्ति। ५ घडा। ६ बगाल और मिथिला मे एक प्रकार के ब्राह्मण जो सब गोत्रो और परिवारो का लेखा रखते और यह बतलाते है कि अमुक-अमुक पक्षो मे विवाह सबध हो सकता है या नही। ७ वह चीज या बात जो कोई दूसरी चीज या बात घटित करने या बनाने मे मुख्य रूप से अथवा साधन की भाँति सहायक होती है। घटित करनेवाला अश या तत्त्व। (फैक्टर)

घटकना*—स०=टकना।

घट-कर्कट—पु० [स० ?] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

घट-कर्पर—पु० [ष० त०] १ कालिदास के सम-कालीन कवि जिनकी गिनती विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नो मे होती थी। २ घडे आदि का टूटा हुआ अश। ठीकरा।

घटका—पु० [स० घटक=शरीर, अथवा अनु० घर्र-घर्र] मृत्यु होने से पहले की मनुष्य की वह स्थिति जिसमे उसका साँस घर-घर शब्द करता तथा रुक-रुक कर चलता है। घर्रा।

क्रि० प्र०— लगना।

घट-कार—पु० [स० घट√कृ (करना)+अण्, उप० स०] घट अर्थात् घडे बनानेवाला अर्थात् कुम्हार।

घट-घाट*—वि० [हिं० घटना] किसी की अपेक्षा थोडा कम या हलका। घटकर।

घटज—पु० [स० घट√जन् (उत्पन्न होना)+ड,उप०स०] अगस्त्य मुनि, जिनके सबध मे कहा जाता है कि ये घडे मे से उत्पन्न हुए थे।

वि० घट से उत्पन्न।

घटती—स्त्री० [हिं० घटना] १ घटने अथवा कम होने की क्रिया या भाव। घटाव। 'बढती' का विपर्याय। २ उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आने की अवस्था या स्थिति। ३ मात्रा, मान, मूल्य आदि मे घटने या कम होने की अवस्था या भाव।

पद—घटती से=बट्टे से। (देखे 'बट्टा' के अन्तर्गत)

४ अवनति। ह्रास।

मुहा०—घटती का पहरा=अवनति या दुर्दशा के दिन। बुरा जमाना।

५ कमी। न्यूनता।

वि० जिसमे कुछ घटी, कमी या न्यूनता हो। (डेफिशिट) (विशेष दे० 'अववर्त्त')

घट-दासी—स्त्री० [स०√घट्+णिच्+अन्—टाप्, घटा-दासी कर्म०स०] १ नायक और नायिका को एक दूसरे के सन्देश पहुँचानेवाली दूती। २ कुटनी।

घटन—पु० [स०√घट्+ल्युट्–अन] [वि० घटनीय, घटित] १ घटित होने अर्थात् गढे या बनाये जाने की क्रिया या भाव। २ कोई घटना उपस्थित होने या सामने आने की क्रिया या भाव।

घटना—स्त्री० [स०√घट् +णिच्+युच् अन, टाप्] १ ऐसी बात जो घटित हुई अर्थात् अस्तित्व मे आई अथवा प्रत्यक्ष हुई हो। कार्य या क्रिया के रूप मे सामने आनेवाली बात। २ कोई अप्रत्याशित या विलक्षण बात जो हो जाय। वाकया। ३ कोई ऐसी अनिष्टकारक बात जो नियम, विधि, व्यवहार आदि के विरुद्ध हो।

अ० [स० घटन] १ घटित होना। अस्तित्व मे आना। उदा०—घटई तेज बल मुख छवि सोई।—तुलसी। २ कार्य के रूप मे किया जाना। सपन्न होना। बनना। उदा०—कार्य-बचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये।—तुलसी। ३ ठीक आना, उतरना या बैठना। ४ चरितार्थ होना। सिद्ध होना।

†स० १ बनाना। रचना। २ पूरा या सपन्न करना। उदा०—सब विधि काज घटब मैं तोरे।—तुलसी।

अ० [स० घृष्ट, प्रा० घट्ट] १ उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आना। जैसे—(क) नदी का पानी घटना। (ख) किसी का मान या प्रतिष्ठा घटना। २ मात्रा, मान, मूल्य आदि मे कम ठहरना। कम पडना। जैसे—(क) खाने की सामग्री घटना। (ख) पुस्तक का दाम घटना। ३ पूरा न रह जाना। ४ रोगी का अत समय मे मृत्यु के समीप पहुँचना। प्राणवायु का कम होना। ५ मृत होना। मरना। जैसे—उनका चार बरस का लडका परसो घट गया।

घटनाई†—स्त्री० दे० 'घडनई'।

घटना-क्रम—पु० [ष० त०] एक के बाद एक कुछ घटनाएँ होते रहने का क्रम या भाव। घटनाओ का सिलसिला।

घटना-चक्र—पु० [ष० त०] एक के बाद एक अथवा एक के साथ एक करके होनेवाली अनेक प्रकार की घटनाओ का समूह। जैसे—घटना-चक्र ने फिर महायुद्ध की सम्भावना उत्पन्न कर दी।

घटनावली—स्त्री० [घटना-आवली, ष० त०] बहुत-सी घटनाओ का सिलसिला या समूह।

घटना-स्थल—पु० [ष० त०] घटना घटित होने का स्थान। (प्लेस आफ अकरेन्स)

घट-पल्लव—पु०[द्व० स०, घटपल्लव+अच्?] वास्तु शास्त्र मे, वह खभा जिसका सिरा घडे और पल्लव के आकार का बना हो।

घट-बढ—स्त्री० [हिं० घटना+बढना] १ घटने-बढने अर्थात् कम या अधिक होने की अवस्था या भाव। कमी-बेशी। न्यूनाधिक्य। २ उतार-चढाव। परिवर्तन। ३ नृत्य, सगीत आदि मे आवश्यकतानुसार लय घटाने और बढाने की क्रिया या भाव।

वि० कभी अथवा कही कुछ कम और कभी अथवा कही कुछ अधिक।

घट-योनि—पु० [ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घट-राशि—पु० [मध्य० स०] एक द्रोण की नाप जो लगभग सोलह सेर की होती है।

घटवाई—पु० [हिं० घाट+वाई] घाट का कर लेनेवाला अधिकारी।

स्त्री० वह कर जो घाट का अधिकारी यात्रियो आदि से घाट पर उतरने-चढने के बदले वसूल करता है।

स्त्री० [हिं० घटवाना] घटवाने अर्थात् कम कराने की क्रिया, भाव अथवा पारिश्रमिक।

घट-वादन—पु० [ष० त०] सगीत मे मिट्टी का घडा औधा करके उसे तबले की तरह बजाने की क्रिया अथवा विद्या।

घटवाना—स० [हिं० घटना का प्रे०] घटाने या कम करने का काम कराना।

घटवार—पु० [हिं० घाट+पाल या वाला] १ घाट का महसूल लेनेवाला। २ मल्लाह। केवट। ३ घाट का देवता। ४ दे० 'घाटिया'।

घटवारिया—पु०=घटवालिया।

घटवाल—पु० घटवार।

घटवालिया—पु० [हिं० घाट+वाला] १ तीर्थ स्थान, मे दान लेनेवाला

पडा। तीर्थ-पुरोहित। २ नदी आदि के घाट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

घटवाह—पु० [हिं० घाट+वाह (प्रत्य०)] घाट का ठेकेदार जो घाट पर महसूल लेता है।

घटवाही—स्त्री० दे० 'घट्ट-कर'।

घट-संभव—पु० [ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घटहा†—पु० [हिं० घाट+हा (प्रत्य०)] १ घाट का ठेकेदार। घटवाह। २ वह नाव जो घाट पर से सवारिया लेकर दूसरी जगह या उस पार ले जाती है।

वि० [स्त्री० घटही] घाट पर का। घाटवाला।

घटा—स्त्री० [स०√घट्+अड्—टाप्] १ आकाश मे उमडे या छाए हुए घने बादलो की राशि या समूह। मेघमाला। २ ढेर। राशि। ३ झुड। समूह। ४ गोष्ठी। ५ एक प्रकार का ढोल।

घटाई—स्त्री० [हिं० घटना+ई (प्रत्य०)] १ घटने या घटाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ घटे हुए अर्थात् हीन होने की अवस्था या भाव। हीनता। ३ अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाकाश—पु० [घट-आकाश, मध्य०स०] तर्क या न्याय मे घडे के अन्दर का अवकाश अर्थात् खाली स्थान।

घटाग्र—पु० [घट-अग्र, ष० त०] वास्तु विद्या मे खभे के नौ विभागो मे से आठवाँ विभाग।

घटा-टोप—पु० [स० घटा-आटोप, तृ० त०] १ घने बादलो की गहरी और चारो ओर छाई हुई घटा जिससे प्राय बहुत अँधेरा हो जाता है। २ चारो ओर से ढकने के लिए गाडी, पालकी आदि के ऊपर डाला जानेवाला ओहार। ३ चारो ओर से खूब घेरनेवाला दल या समूह।

वि० चारो ओर से पूरी तरह घिरा हुआ। उदा०—घटाटोप करि चहुँ-दिसि घेरी।—तुलसी।

घटा-घूम—स्त्री० [हिं०घटा+घूम] किसी काम या बात की अधिकता के कारण मचनेवाली धूम या हलचल। जैसे—सप्ताह के प्रारम्भ मे व्यापार कुछ ढीला था, बाद को घटा-घूम के कारण बाजार सँभल गया।

घटाना—स० [हिं० घटना (प्रा० घट्ट)] १ हिन्दी 'घटना' क्रिया का स० रूप। २ उच्च स्तर से निम्न स्तर पर लाना। जैसे—मान घटाना। ३ मात्रा, मान, मूल्य आदि मे कमी करना। कम करना। जैसे—दाम घटाना। ४ गणित मे, किसी बडी राशि मे से कोई छोटी राशि निकालना।

स० [हिं० घटना (स० घटन)] १ घटित करना। २ किसी एक बात के तथ्य या तथ्यों का दूसरी बात पर पूरा उतारना या आरोपित करना।

घटाव—पु० [हिं० घटना] १ घटने अर्थात् कम होने की अवस्था या भाव। कमी। २ मात्रा, मान आदि घटने अर्थात् उतरने या कम होने की अवस्था या भाव। 'चढ़ाव' या 'बढाव' का विपर्याय। उतार। ३ अवनति।

पद—घटाव-बढ़ाव=कभी घटने और कभी बढने की अवस्था, क्रिया या भाव।

४ दे० 'घटती'।

घटावना†—स०=घटाना।

घटि—वि० [हिं० घटना] किसी की तुलना मे घटिया या कम।

क्रि० वि०=घटकर।

स्त्री०=घटी (कमी)।

घटिक—पु० [स० घट+ठन्—इक] वह व्यक्ति जो विशिष्ट समयो पर लोगो की जानकारी के लिए घटे बजाता हो।

घटिका—स्त्री० [स०√घट्+णिच्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ समय का मान बतलानेवाला कोई छोटा यत्र। घडी। २ समय का एक मान जो आज-कल के २४ मिनटो के बराबर होता है। ३ [घट+ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] छोटा घडा। गगरी।

घटिका-यंत्र—पु० [ष० त०] =घटी-यत्र।

घटिकावधान—पु० [घटिका-अवधान, ब स०] घडी भर मे ही बहुत से काम एक साथ कर डालने की कला, विद्या अथवा शक्ति।

घटिकाशतक—पु० [ब० स०] १ वह व्यक्ति जो घडी भर मे सौ अर्थात् बहुत से काम कर सकता हो। २ वह जो घडी भर मे सौ श्लोक या पद्य बना सकता हो।

घटित—भू० कृ० [स०√घट्+णिच्+क्त] १ जो घटना के रूप मे उपस्थित या वर्तमान हुआ हो। २ अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतरा हुआ। घटा हुआ। ३ जो गढकर अथवा और किसी रूप मे बनाया गया हो अथवा किसी रूप मे बना हो। निर्मित। रचित।

घटिताई*—स्त्री० [हिं० घटित] घटित होने की अवस्था या भाव।

स्त्री० [हिं० घटना=कम होना] १ कमी। न्यूनता। उदा०—इनहूँ मे घटिताई कीन्ही।—सूर। २ त्रुटि।

घटिया—वि० [हिं० घट+इया (प्रत्य०)] १ जो औरो की तुलना मे घटकर अर्थात् खराब या हीन हो। २ जो गुण, धर्म आदि की दृष्टि से प्रसम या मानक स्तर से घटकर हो। जैसे—घटिया कपडा, घटिया पुस्तक। 'बढ़िया' का विपर्याय। ३ अधम। नीच।

घटियारी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे खवी भी कहते हैं। इसमे अदरक की-सी महक होती है।

घटिहा—वि० [हिं० घात+हा (प्रत्य०)] १ घात या धोखे-बाजी करने-वाला। २ घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। ३ चालाक। धूर्त। ४ दुष्ट और लपट या व्यभिचारी। ५ नीच। वाहियात।

घटी—स्त्री० [स० घट+अच्—ङीष्] १ २४ मिनट का समय। घडी। २ छोटा घडा। गगरी। ३ प्राचीन काल का वह छोटा घडा जिसमे जल भरकर और उसमे छेददार कटोरा रखकर उसमे भरनेवाले पानी के हिसाब से समय का मान स्थिर करते थे। ४ आज-कल समय बतलाने-वाला किसी प्रकार का यत्र। घडी। ५ रहट मे बाँधी जानेवाली छोटी गगरी या हँडिया।

पु० [स० घट+इनि=घटिन्] १ कुभ राशि। २ शिव।

स्त्री० [हिं० घटना] १ घटने अर्थात् कम होने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता। २ घाटा। टोटा। ३ क्षति। नुकसान। हानि। ४ मूल्य, महत्त्व आदि मे होनेवाली कमी। विशेष दे० 'छीज'।

घटी-यंत्र—पु० [ष० त०] १ प्राचीन काल का समय-सूचक यत्र जो छोटे घडे की तरह होता था और जिसमे भरे हुए जल मे डूबनेवाले कटोरे की सहायता से समय का मान स्थिर करते थे। २ रहट। ३ सग्रहणी नामक रोग का एक प्रकार या भेद।

घटूका*—पु० = घटोत्कच।

घटोत्कच—पु० [घट-उत्कच, ब० स०] हिडिंबा के गर्भ से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र जिसे महाभारत के युद्ध मे कर्ण ने मारा था।

घटोद्भव—पु० [घट-उद्भव, ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घटोर*—पु० [स० घटोदर] मेढा। मेष। (डिं०)

घट्ट—पु० [स०√घट्ट् (चलाना)+घञ्] १ घाट। २ वह स्थान जहाँ चुगी या महसूल लिया जाता था।

* पु० =घट।

घट्ट-कर—पु० [मध्य० स०] वह कर जो किसी घाट पर नदी पार करनेवालो से लिया जाता है। (फेरी टोल)

घट्टन—पु० [स० घट्ट+ल्युट्—अन] १ चलाना या हिलाना-डुलाना। २ घोटना। ३ सघटन।

घट्टना—स्त्री० [स०√घट्ट्+युच्—अन टाप्] १ हिलाना-डुलाना। २ रगडना। ३ पेशा। वृत्ति।

घट्टा—पु० १ दे० 'घाटा'। २ दे० 'घट्ठा'।

घट्टित—पु० [स०√घट्ट्+क्त] नृत्य मे पैर चलाने का एक प्रकार जिसमे एडी को जमीन पर दबाकर पजा नीचे-ऊपर हिलाते है।

घट्टी—स्त्री० = घटिका।

घट्ठ—पु० [स० गोष्ठ] परामर्श आदि के लिए होनेवाला जमावडा। (राज०)

घट्ठा—पु० [स० घट्ट] चोट, रगड आदि के कारण शरीर के किसी अग मे होनेवाली कडी, उभारदार गाँठ। जैसे—बरतन माँजने से हाथ मे या लाठी की चोट लगने से सिर पर घट्ठा पड गया।

मुहा०—(किसी काम या बात का) घट्ठा पडना=पूरा पूरा अनुभव और ज्ञान होना।

घड†—स्त्री० [स० घट्ट] सेना। (राज०) उदा०—दाटक अवड दड नह दीधो, दोयण घड सिर दाव दियो।—दुरसाजी।

†स्त्री०=घटा। (राज०)

घडघड—स्त्री० [अनु०] किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला घडघड शब्द।

घड़घडाना—अ० [अनु०] गड़गड या घडघड शब्द होना। गडगडाना। जैसे—गाडी या बादलो का घडघडाना।

स० घडघड शब्द उत्पन्न करना।

घड़घडाहट—स्त्री० [अनु० घडघड] घडघड होने की ध्वनि या भाव।

घड़त—स्त्री० दे० 'गढत'।

घडन—स्त्री० [स० घटन] घडने या गढने की क्रिया, प्रकार या भाव। गढन।

घड़नई—स्त्री० [हिं० घडा+नैया (नाव)] घडो मे बाँस बाँधकर बनाया हुआ वह ढाँचा जिस पर चढकर लोग छोटी-छोटी नदियाँ, नाले पार करते है।

घडना—स० दे० 'गढना'।

घड़नैल†—स्त्री० दे० 'घडनई'।

घडा—पु० [स० घट, पा० घटो, प्रा० घडग, घड, बँ० घरा, सिं० घरो, गु० घडो, मरा० घडा] १ धातु, मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध गोलाकार पात्र जो प्राय पानी भरने या अनाज आदि रखने के काम आता है। कलसा। गगरा।

मुहा०—(किसी पर) घडो पानी पडना=अपनी त्रुटि या भूल सिद्ध होने पर दूसरो के सम्मुख लज्जित होना।

पद—चिकना घड़ा=ऐसा व्यक्ति जो दूसरो द्वारा लज्जित किये जाने पर भी सकुचित न होता हो। बहुत बडा निर्लज्ज।

घडाई—स्त्री० दे० 'गढाई'।

घडाना—स० दे० 'गढाना'।

घडामोड़ा*—वि० [हिं० गढ+मोडना] शूर-वीर। (डिं०)

घडिया—स्त्री० [स० घटिका, हिं० घडी] १ छोटी घडी, कलसी या गगरी। २ मिट्टी के वे छोटे बरतन जो रहट मे बाँधे जाते है। ३ गर्भाशय। बच्चेदानी। ४ शहद का छत्ता। ५ मिट्टी का वह छोटा प्याला जिसमे आँच देने से उसमे धातु की मैल कटकर ऊपर आ जाती है। (सुनार)

घडियाल—पु० [स० घटिकालि, प्रा० घडियालि=घटो का समूह] वह बडा घटा जो पूजा मे या समय की सूचना के लिए बजाया जाता है।

पु० [स० ग्राह?] छिपकली की जाति का, परतु उससे बहुत बडा, भीषण तथा हिंसक एक प्रसिद्ध जलजन्तु जिसकी त्वचा कँटीली होती है और मुँह बहुत अधिक लबा होता है। ग्राह।

घड़ियाली—पु० [हिं० घडियाल] समय की सूचना देने के लिए घडियाल बजानेवाला व्यक्ति।

स्त्री० एक प्रकार का छोटा घडियाल या घटा जो प्राय देव-पूजन के समय बजाया जाता है। विजय-घट।

घडी—स्त्री० [स० घटी] १ काल का एक प्राचीन मान जो दिन-रात का ३२ वाँ भाग और ६० पलो का होता है। आज-कल के हिसाब से यह २४ मिनट का होता है।

पद—घडी घडी=रह-रहकर थोडी देर पर। बार-बार। **घडी पहर**=थोडी-देर। उदा०—घडी पहर बिलबौरे भाई जरता है।—कबीर।

मुहा०। घड़ी या घडियाँ गिनना =(क) बहुत उत्सुकतापूर्वक और समय पर ध्यान रखते हुए किसी बात की प्रतीक्षा करना। (ख) मरने के निकट होना। **(किसी का) घडी सायत पर होना**=ऐसी स्थिति मे होना कि थोडी ही देर मे प्राण निकल जायँगे। मरणासन्न अवस्था।

२ किसी काम या बात के घटित होने का अवसर या समय। जैसे—जब इस काम की घडी आवेगी तब यह आप ही हो जायगा।

मुहा०—घड़ी देना=ज्योतिषी का मुहूर्त या सायत बतलाना।

३ आज-कल, वह प्रसिद्ध छोटा या बडा यत्र जो नियमित रूप से घटा, मिनट आदि अर्थात् समय का ठीक मान बतलाता है। यह यत्र कई प्रकार का होता है। जैसे—जेब घडी, दीवार घडी, धूप घडी आदि। ४ पानी रखने का छोटा घडा।

पद—घडी-दीया (देखें)।

स्त्री० [हिं० घडना] कपडो आदि की लगाई जानेवाली तह।

घड़ी-दीया—पु० [हिं० घडी+दीया=दीपक] हिन्दुओ मे, कर्मकाड का एक कृत्य जो किसी के मरने पर १०, १२ या १३ दिनो तक चलता है। इसमे एक छेददार घडे मे जल भरकर उसे चूने या टपकने के लिए कही रख-दिया जाता है और उसके पास एक दीया रखा जाता है जो दिन-रात जलता रहता है।

घडीसाज—पु० [हिं० घडी+फा० साज] घडियो की मरम्मत करनेवाला कारीगर।

घड़ीसाजी—स्त्री० [हिं० घडी+फा० साजी] घडी (यत्र) की मरम्मत करने का काम।

घडोला—पु० [हि० घडा+ओला (प्रत्य०)] छोटे आकार का घडा। छोटा घडा।

घडौंची—स्त्री० [हि० घडा+ओची (प्रत्य०)] लकडी की बनी हुई वह चौकी या चोखटा जिस पर पानी से भरे हुए घडे रखे जाते है।

घण*—पु० दे० 'घन'।
वि० दे० 'घना'।

घणा*—वि० [स्त्री० घणी] दे० 'घना'।

घत†—पु० [हि० घात] १ दे० 'घात'। २ ठीक और पूरा ढग या रीति। उदा०—मै जानत या व्रत के घत कौ।—सूर।

घतर†—पु० [?] तडका। प्रभात का समय।

घतिया—पु० [हि० घात+इया (प्रत्य०)] १ घात करनेवाला। २ विश्वासघात करनेवाला। धोखेबाज।

घतियाना—स० [हि० घात] १ अपनी घात या दाँव मे लाना। मतलब पर चढाना। २ कोई चीज चुरा, छिपा या दबाकर रख लेना।

घत्ता—पु० [?] अपभ्रश का एक प्रसिद्ध मात्रिक अर्द्धसम छद जिसके विषम चरणो मे १८-१९ और सम चरणो मे १३ मात्राएँ तथा तीन लघु होते है।

घत्तानद—पु० [?] एक मात्रिक अर्द्धसम छद।

घन—पु० [स०√हन् (हिंसा)+अप्, घनादेश] १ मेघ। बादल। २ लोहा। ३ लोहा पीटने का बहुत बडा हथौडा। ४ झुड। समूह। ५ कपूर। ६ अभ्रक। ७ बजाने का बडा घटा। घडियाल। ८ एक प्रकार की सुगधित घास। ९ कफ। श्लेष्मा। १० नृत्य का एक प्रकार या भेद। ११ सगीत मे धातु का ढला हुआ वह बाजा जो केवल ताल देने के काम आता हो। जैसे—झाँझ, मँजीरा आदि। १२ किसी चीज या बात की अधिकता या यथेष्ट मान। जैसे—आनन्द-घन। उदा०—पवन के घन घिरे पडते थे बने मधु अध।—प्रसाद। १३ मुख। (डिं०) १४ गणित मे किसी अक को किसी अक के वर्ग से गुणा करने पर निकलनेवाला गुणनफल। जैसे—४ का घन (४×१६ =) ६४ होगा। १५ पदार्थों के मान का वह रूप जिसमे उनकी लबाई (या ऊँचाई) चौडाई (या गहराई) और मोटाई के कुल विस्तारो का अतर्भाव होता है। १६ ज्यामिति मे वह पदार्थ जिसके छ समान वर्गित पक्ष हो। १७ वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, पदार्थ की तीन स्थितियो मे से एक जिसमे उसके अणु एक साथ इस प्रकार सटे होते है कि वे अलग तथा अकेले क्रियाशील या गतिशील नही हो सकते है।
वि० १ घना (देखे)।
पद—घन का=(क) देखने मे बहुत अधिक घना। जैसे—घन का बादल। (ख) मात्रा या मान मे बहुत अधिक। जैसे—घन की विपत्ति।
२ (पदार्थ) जिसके अणु एक साथ इस प्रकार सटे हुए हो कि वे अलग-अलग क्रियाशील या गतिमान न हो सकते हो। ठस या ठोस ३ भारी। ४ दृढ। पक्का।
* पु०=शत्रुघन। उदा०—रघुनदन बिनु बधु कुअवसर जद्यपि घनु दूसरे हैं।—तुलसी।

घनक*—स्त्री० [स० घन] १ गर्जन। २ गडगडाहट। ३ चोट। प्रहार।

घनकना—अ० [हि० घनक] जोर की आवाज करना। गरजना।
स० चोट या प्रहार करना।

घनकफ—पु० [ष० त०] ओला।

घनकारा*—वि० [हि० घनक] ऊँची आवाज करने या गरजनेवाला।

घन-काल—पु० [ष० त०] वर्षा ऋतु। बरसात।

घन-कोदड—पु० [ष० त०] इन्द्रधनुष।

घन-क्षेत्र—पु० [ष० त०] किसी चीज की गहराई, चौडाई और लबाई का समूचा विस्तार।

घनगरज—स्त्री० [हि० घन+गर्जन] १ बादल के गरजने की ध्वनि। २ खुभी की जाति का एक छोटा पौधा जिसकी तरकारी बनती है। ढिंगरी। ३ एक प्रकार की तोप।

घनघटा—स्त्री० [हि० घन+घटा] बादलो की गहरी या घनी घटा।

घनघनाना—अ० [अनु०] घन घन शब्द होना। घटे की ऐसी ध्वनि निकलना।
स० घन-घन शब्द उत्पन्न करना।

घनघनाहट—स्त्री० [अनु०] घन-घन शब्द निकलने की ध्वनि या भाव।

घनघोर—वि० [हि० घन+घोर] १ बहुत अधिक घना। जैसे—घनघोर बादल। २ भीषण या विकट। जैसे—घनघोर युद्ध। ३ (कलन या गणित) जिसमे लबाई, चौडाई और मोटाई तीनो का योग या विचार हो। (क्यूब)।
पु० १ तुमुलनाद। भीषण ध्वनि। २ बादलो की गरज।

घनचक्कर—पु० [हि० घन+चक्र] १ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदा चचल रहे। बहुत चचल बुद्धि का आदमी। २ बेवकूफ। मूर्ख। ३ वह जो बराबर इधर-उधर व्यर्थ घूमता फिरे। ४ जजाल। झझट। ५ एक प्रकार की आतिशबाजी जो चक्कर के रूप मे होती और बहुत जोर का शब्द करती है। ६ सूरजमुखी (पौधा और फूल)।

घनता—स्त्री० [स० घन+तल्—टाप्] १ घने होने की अवस्था या भाव। घनापन। २ अणुओ आदि की पारस्परिक ठोस गठन। ठोसपन। ३ दृढता। मजबूती। ४ किसी पदार्थ की सारी लबाई, चौडाई और मोटाई का समूह।

घनताल—पु० [स० घनता√अल् (पर्याप्ति) + अच्] १ चातक। पपीहा। २ [घन-ताल, कर्म० स०] करताल की तरह का एक बडा बाजा।

घनतोल—पु० [स० घन√तुल् (तोलना)+अण्, उप० स०] चातक। पपीहा।

घनत्व—पु० [स० घन+त्व] =घनता।

घननाद—पु० [ष० त०] १ बादलो की गरज। २ मेघनाद (रावण का पुत्र)।

घनपति—पु० [ष० त०] मेघो के अधिपति, इन्द्र।

घन-प्रिय—वि० [ब० स० वा ष० त०] बादल जिसे प्रिय हो अथवा जो बादलो का प्रिय हो।
पु० १ मोर। मयूर। २ मोरशिखा नाम की घास।

घन-फल—पु० [ष० त०] १ वह गुणनफल जो किसी सख्या को उसी सख्या से दो बार गुणा करने से निकलता है। घन। २ वह जो किसी ठोस चीज की लबाई, चौडाई और मोटाई (या गहराई) के मानो को एक दूसरे से गुणा करने पर निकलता है।

घनबहेडा—पु० [हि० घन+बहेडा] अमलतास।

घनबान—पु० [हि० घन + बाण] १ एक प्रकार का बाण।

घन-बेला—पु० [हि० घन+बेला] [स्त्री० अल्पा० घन-बेली] एक प्रकार के बेले का पौधा और उसका फूल।

घन-मान—पु० [ष० त०] किसी वस्तु की लबाई, चौडाई और मोटाई का सम्मिलित मान। (क्यूब मेजर)

घन-मूल—पु० [ष० त०] गणित मे किसी घन (राशि) का मूल अक। (क्यूब रूट) जैसे—२७ का घन मूल ३ होता है, क्योकि ३ को ३ से दो बार गुणा करने पर ही २७ होता है।

घन-रस—पु० [ष० त०] १ जल। पानी। २ कपूर। ३ हाथियो का एक रोग जिसमे उनका खून बिगड जाता और नाखून गलने लगते है।

घन-वर्धन—पु० [तृ० त०] [वि० घनवर्धनीय, भाव० घनवर्धनीयता] धातुओ आदि को हथौडे से पीटकर बढाना।

घन-वाह—पु० [घन√वह (ले जाना) +णिच्, +अण् उप० स०] वायु।

घनवाहन—पु० [ब० स०] इन्द्र, जिसका वाहन मेघ माना गया है।

घन-वाही—स्त्री० [हि० घन+वाही (प्रत्य०)] १ किसी चीज को घन या हथौडे से कूटने का काम। घन चलाना। २ वह गड्ढा या स्थान जहाँ खडे होकर घन (हथौडा) चलाया जाता है।

घन-श्याम—वि० [उपमि० स०] जिसका रग बादल के समान श्याम हो। हल्का नीलापन लिये हुए काला।

पु० १ काला बादल। २ श्रीकृष्ण का एक नाम।

घन-सार—पु० [ष० त०] १ कपूर। २ चदन। ३ जल। ४ सुदर बादल। ५ [ब० स०] पारा।

घनहर*—पु० [स० घन=बादल] बादल। मेघ।

घनहस्त—वि० [ब० स०] जो लबाई, चौडाई और मोटाई या गहराई तीनो आयामो मे एक-एक हाथ भर हो।

पु० १ क्षेत्र या पिड जो एक हाथ लबा, एक हाथ चौडा और एक हाथ गहरा या मोटा हो। २ अन्न आदि नापने का एक पुराना मान जो एक हाथ लबा, एक हाथ चौडा और एक हाथ गहरा होता था। खारी। खारिका।

घनाजनी—स्त्री० [घन-अजन, ब० स०, ङीष्] दुर्गा।

घनाते—पु० [घन-अत, ब० स०] वर्षा की समाप्ति पर आनेवाली शरद् ऋतु।

घना—वि० [स० घन] [स्त्री० घनी] १ (वस्तु) जिसके विभिन्न अश, अवयव या कण इस प्रकार आपस मे मिल या सट गये हो कि वह अविभिन्न समूह जान पडे। जैसे—घना कोहरा, घना बादल। २ (अवकाश या स्थान) जिसमे बहुत सी वस्तुएँ सट-सटकर खडी, पडी या रहती हो। जैसे—घना जगल, घना शहर। ३ (वस्त्र आदि) जिसकी बुनावट के ताने-बाने आपस मे खूब सटे हुए हो। गफ। गझिन। ४ जिसमे गाढता या प्रखरता बहुत अधिक हो। जैसे—घना अधकार, घनी नीलिमा। ५ जिसमे आपसदारी या समीपता बहुत अधिक हो। घनिष्ठ। गहरा। जैसे—घना सबध। ६ बहुत अधिक। अतिशय। जैसे—घनी पीडा। जैसे—जिनके लाड बहुतेरे, उनके दुख भी घनेरे। (कहा०)

स्त्री० [स० घन+अच्—टाप्] १ माषपर्णी। २ रुद्रजटा। जटाधारी लता। ३ एक प्रकार का पुराना बाजा।

घनाकर—पु० [घन-आकर, ष०त०] वर्षाऋतु।

घनाक्षरी—स्त्री० [घन-अक्षर, ब० स०, ङीष्] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ३१ वर्ण होते है और अत मे प्राय गुरु वर्ण होता है। इसे कवित्त भी कहते है।

घनागम—पु० [घन-आगम, ष०त०] वर्षाऋतु का आरम्भ।

घनाघन—पु० [स०√हन् (हिंसा) +अच्, नि० सिद्धि] १ देवताओ का राजा, इद्र। २ बरसनेवाला बादल। उदा०—गगन-अगन घनाघन ते सघन तम।—सेनापति। ३ मस्त हाथी।

क्रि० वि० लगातार घन-घन शब्द करते हुए।

घनात्मक—वि० [स० घन-आत्मन्, ब०स०, कप्] १ (पदार्थ) जिसकी लबाई, चौडाई और मोटाई या गहराई बराबर हो। २ (क्षेत्रफल) जो लबाई, चौडाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।

घनात्यय—पु० —[घन-अत्यय, ब०स०]=घनात।

घनानद—पु० [घन-आनद, ब०स०] गद्य काव्य का एक भेद।

घनामय—पु० [घन-आमय, ब०स०] खजूर।

घनाली*—स्त्री० [स० घन-अवली] बादलो की पक्ति या समूह। उदा० —चचला थी चमकी घनाली घहराई थी।—मैथिलीशरण।

घनाश्रय—पु० [घन-आश्रय, ष०त०] आकाश।

घनिष्ठ—वि० [स० घन+इष्ठन्] जिसके साथ बहुत अधिक या घना हेल-मेल, मित्रता, सबध या सहचार हो। जैसे—घनिष्ठ मित्र।

घनिष्ठता—स्त्री० [स० घनिष्ठ+तल–टाप्] १ घनिष्ठ होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वह स्थिति जिसमे दो व्यक्तियो मे पारस्परिक इतना मेल या स्नेह होता है कि वे एक दूसरे के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझने लगते है।

घनीभवन—पु० [स० घन+च्वि ईत्व√भू (होना)+ल्युट्–अन] किसी तरल या द्रव पदार्थ का जमकर गाढा, घना या ठोस होना।

घनीभाव—पु० [स० घन+च्वि, ईत्व√भू+घञ्]=घनीभवन।

घनीभूत —भू० कृ० [स० घन+च्वि, ईत्व, √भू+क्त] १ जो गाढा होकर या जमकर घना हो गया हो। २ जो किसी प्रकार बढ़कर बहुत अधिक या घोर हो गया हो। जैसे—जो घनीभूत पीडा थी।—प्रसाद।

घनेतर—वि० [घन-इतर, प० त०] १ जो घन न हो, बल्कि उससे भिन्न हो। २ तरल।

घनेरा*—वि० [हि० घना] १ मान, सख्या आदि मे बहुत अधिक या बहुत-सा। २ घना।

घनोदधि—पु० [घन-उदधि, ब० स०] एक नरक।

घनोदय—पु० [घन-उदय, ब०स०] वर्षाऋतु का आरम्भ।

घनोपल—पु० [घन-उपल, ष०त०] ओला।

घन्नई*—स्त्री० दे० 'घडनई'।

घपचिआना—अ० [हि० घपची] १ असमजस मे पडकर चकपकाना। चक्कर मे आना। २ व्याकुल होना। घबराना।

स० १ किसी को असमजस या चक्कर मे डालना। २ घबराहट पैदा करना।

घपची—स्त्री० [हिं० घन+पच] वस्तु को पकड रखने के लिए दोनो हाथो के पजो की गठान। दोनो हाथो की मजबूत पकड।
क्रि० प्र०—बाँधना।

घपला—पु० [अनु०] १ बिना क्रम की मिलावट। २ ठीक प्रकार से कोई काम न करने के कारण होनेवाली अव्यवस्था या गडबडी। ३ वह कार्य जिसके कारण कोई गडबडी विशेषत अधिक आर्थिक गडबडी हुई हो। गोल-माल।

घपलेबाज—वि [हिं +फा०] घपला करने की प्रवृत्तिवाला।

घपलेबाजी—स्त्री० [हिं० +फा०] घपला करने की अवस्था, गुण या भाव।

घपुआ†—वि०=घप्पू।

घप्पू†—वि० [अनु०] निरा मूर्ख। निर्बुद्धि।

घबडाना—अ० =घबराना।

घबडाहट—स्त्री०=घबराहट।

घबराना—अ० [स० गह्वर या हि० गडबडाना] १ आशका या भय उत्पन्न होने पर मन मे धुकधुकी होने लगना। डर के कारण हृदय कॉपने लगना। कुछ विकल होना। जैसे—(क) अधिकारी के नाम से ये कर्मचारी घबराते है। (ख) इन बीमारियो से शहरवाले घबरा गये है। २ कोई काम करने से भय आदि के कारण हिचकना। जैसे—थाने जाने से वह न जाने क्यो घबराता है। ३ आश्चर्य आदि के कारण भौचक्का होना। मकपकाना। जैसे—इतने आदमियो को एक साथ देखकर वह घबरा गया। ४ कोई काम करते-करते उससे जी उकता, उचट या ऊब जाना। जैसे—यहाँ रहते-रहते वह घबरा गये है। ५ किसी व्यक्ति, समाचार आदि की प्रतीक्षा करते-करते बहुत अधिक बेचैन या विकल होना। जैसे—आपके समय पर न पहुँचने से सारा घर घबरा रहा था।
स० १ ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि कोई अधीर या विकल होकर यह निश्चय न कर सके कि क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए। २ इतना उद्विग्न करना कि दूर होने या हट जाने को जी चाहने लगे। ३ किसी के मन मे आतुरता और चचलता उत्पन्न करना।

घबराहट—स्त्री० [हिं० घबराना] घबराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

घमका†—पु० [अनु०] १ आघात आदि से उत्पन्न होनेवाला घम् शब्द। २ घूँसा। मुक्का।

घमड—पु० [?] अह भावना का वह अनुचित तथा उग्र रूप जिसमे मनुष्य अपने बुद्धि-बल, सामर्थ्य आदि को बहुत अधिक महत्त्व देता हुआ दूसरो को अपने सामने तुच्छ या नगण्य समझने लगता है। अभिमान। शेखी।
क्रि० प्र०—करना। —टूटना।—होना।

घमडी—वि० [हिं० घमड] [स्त्री० घमडिन] जिसे घमड हो। घमड करनेवाला।

घम—पु० [अनु०] कोमल तल पर कडा आघात लगने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। जैसे—पीठ पर घम से मुक्का लगना।

घमकना—अ० [अनु० घम] १ घम-घम शब्द होना। २ जोर का शब्द करना। गरजना। जैसे—बादलो का घमकना।
स० १ घम-घम शब्द उत्पन्न करना। २ ऐसा आघात करना जिसमे घम शब्द हो। जैसे—मुक्का घमकना।

घमका—पु० [अनु०] १ आघात आदि से उत्पन्न होनेवाला घम शब्द। घमका। २ दे० 'उमस'।

घमकाना*—स० [हिं० घमकना] १ घम-घम शब्द उत्पन्न करना। २ बजाना।

घमखोर†—वि० [हिं० घाम +फा० खोर (खानेवाला)] १ घाम या धूप खानेवाला। २ जो धूप मे रह सके या धूप सह सके।

घमघमा†—पु० [हिं० घाम =धूप] दिन का ऐसा समय जिसमे धूप निकली हो।

घमघमाना—अ० [अनु० घम-घम] घम-घम शब्द होना।
स० [अनु०] घम-घम शब्द उत्पन्न करते हुए कई आघात या प्रहार करना। जैसे—दस-पाँच घूँसे या मुक्के घमघमाना।

घमर—पु० [अनु०] १ नगाडे, ढोल आदि का भारी शब्द। २ गभीर ध्वनि।

घमरा—पु० [स० भृगराज] भृगराज नाम की बूटी। भँगरैया।

घमरौल—स्त्री० [अनु० घम घम] घाल-मेल की ऐसी स्थिति जिसमे किसी चीज या बात का कुछ भी पता न चले। बहुत बडी अव्यवस्था या गडबडी।

घमस—स्त्री० दे० 'घमसा'।

घमसा—पु० [हिं० घाम] १ वर्षा काल की वह गरमी जो हवा न चलने के कारण होती है। उमस। २ घनापन। घनता।

घमसान—वि०, पु०=घमासान।

घमाका—पु० [अनु० घम] भारी आघात से होनेवाला घम शब्द।

घमाघम—क्रि० वि० [अनु०] घम-घम शब्द के साथ। भारी आघात करते हुए। जैसे—उसने घमाघम चार घूँसे लगा दिये।
स्त्री० = घमाघमी।

घमाघमी—स्त्री० [अनु०] १ निरतर घमघम होनेवाली ध्वनि या जोर का शब्द। २ गहरी या भारी मार-पीट। ३ ऐसी भीड-भाड जिसमे खूब धक्कम-धक्का होता हो। ४ धूम-धाम।

घमाना—अ० [हिं० घाम] सरदी से बचने के लिए घाम या धूप मे बैठना। धूप खाना या सेकना।
स० सुखाने आदि के लिए कोई चीज धूप मे रखना। धूप दिखाना।

घमायल—वि० [हिं० घमाना] घाम या धूप की गरमी से पका हुआ (प्राय फलो के लिए)।

घमासान—पु० [अनु० घम+सान (प्रत्य०)] घोर और भीषण मार-काट अथवा युद्ध। गहरी और भारी लडाई।
वि० बहुत ही घोर, भीषण या विकट (उपद्रव या मार-काट)। जैसे—घमासान युद्ध।

घमाह†—पु० [हिं० घाम] ऐसा बैल जो गरमी मे हल जोतने से जल्दी थक जाता हो।

घमौला—वि० [हिं० घाम=धूप] घाम खाया हुआ। घाम से मुरझाया हुआ।

घमूह—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो प्राय करील आदि की झाडियो के पास होती और चारे के काम मे आती है।

घमोई—स्त्री० [देश०] बाँस का एक प्रकार का रोग जिससे बाँस की जडो मे बहुत से पतले और घने अकुर निकलकर उसकी बाढ और

नये कल्लो का निकलना रोक देते है। २ दे० 'घमोय'।

घमोय—स्त्री० [देश०] गोभी की तरह का एक छोटा पौधा जिसके पत्ते कटावदार तथा काँटो से भरे होते है। भडभाड। स्वर्णक्षीरी।

घमौरी—स्त्री०=अँभौरी।

घर—पु०[स० गृहम्, पा०, प्रा० घरम्, उ०, गु० ने०, प०, बँ०, मरा० घर, सि० घरु, कश्म०, सिंह० गर] [वि० घरु, घराऊ, घरेलू] १ ईंट, पत्थर, मिट्टी, लकडी आदि की वह विशिष्ट वास्तु रचना जो प्राय दीवारो से घिरी और छतो से पटी हुई होती है और जिसमे लोग अपने परिवार या बाल-बच्चो के साथ रहते है, और इसी लिए जिसमे गृहस्थी का भाव भी सम्मिलित है। मकान। (हाउस)

मुहा०—घर आँगन हो जाना=घर का टूट-फूटकर खँडहर या मैदान हो जाना। जैसे—ऐसा सुन्दर घर अब आँगन हो गया है। **घर का आँगन होना**=घर या उसमे रहनेवाले परिवार के सुख-सौभाग्य आदि का ऐसा विस्तार या वृद्धि होना जो सब प्रकार से अभीष्ट तथा शुभ हो। **घर-घर के हो जाना**=अपने रहने का घर न होने के कारण कभी किसी के घर और कभी किसी के घर जाकर रहना। इधर-उधर मारे-मारे फिरना। उदा०—तेरे मारे यातुधान भये घर-घर के।—तुलसी। **घर सिर पर उठाना**=बहुत कोलाहल करना या शोर मचाना। हो-हल्ला करना।

२ (क) उक्त प्रकार के भवन या रचना का कोई ऐसा अलग खड या विभाग जिसमे स्वतत्र रूप से कोई परिवार रहता हो। किसी परिवार का निवास-स्थान। (ख) उक्त खड या विभाग मे रहने-वाला परिवार। जैसे—इस मकान के चारो घरो से एक-एक रुपया मिला है। ३ उक्त मे एक साथ रहनेवालो की पूरी सामाजिक इकाई। एक ही मकान या उसके विभाग मे एक साथ रहनेवाले परिवार या रिश्ते-नाते के सब लोग। जैसे—(क) आज घर भर मेला देखने जायगा। (ख) घर के सब प्राणियो को ब्याह का न्योता मिला है। (ग) हैजे मे घर के घर तबाह हो गये।

मुहा०—घर करना=(क) बसने या स्थायी रूप से रहने के लिए अपना निवास स्थान बनाना। जैसे—जगल मे घर करना। (ख) घर-गृहस्थी का ऐसा ठीक और पूरा प्रबध करना कि परिवार के सब लोगो का ठीक तरह से निर्वाह होता रहे। (ग) पुरुष और स्त्री का पति-पत्नी के रूप मे रहकर गृहस्थी चलाना। जैसे—आओ मीता, घर करे, आया सावन मास।—स्त्रियो का गीत। **(किसी काम को) घर का रास्ता समझना**=(क) बहुत ही सरल और सुगम समझना। (ख) सामान्य और सुपरिचित समझना। **घर के घर**=अदर ही अदर और गुप्त रूप से। बिना औरो को या बाहरी लोगो को जतलाये। जैसे—सब झगडे घर के घर तै हो गये। **घर के घर रहना**= लेन-देन, व्यवहार, व्यापार आदि मे ऐसी स्थिति मे रहना कि न तो कुछ आर्थिक लाभ हो और न हानि ही। **(किसी का) घर घालना**=(क) किसी को इस प्रकार नष्ट या बरबाद करना कि उसकी बहुत बडी आर्थिक हानि हो अथवा मान-मर्यादा नष्ट हो जाय। (ख) किसी परिवार मे अशाति, कष्ट, वैमनस्य आदि उत्पन्न करना। **घर चलाना**=घर के व्यय आदि का निर्वाह और प्रबध करना। **घर जमाना**=घर-गृहस्थी की सभी उपयोगी चीजे एकत्र करना जिसमे सब आवश्यकताएँ पूरी होती रहे। **(किसी के) घर तक पहुँचना**=किसी को माँ-बहन तक की गालियाँ देना। **(किसी का) घर देख पाना या देख लेना**=एक बार कही से उद्देश्य-सिद्धि या फल-प्राप्ति हो जाने पर परच जाना और प्राय उसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—अब तो इन्होने घर देख लिया है, नित्य पहुँचा करेगे। **(किसी स्त्री का किसी के) घर पडना**=किसी के घर जाकर पत्नी भाव से रहना। **(दर, लागत या भाव के विचार से कोई चीज) घर पडना**=भाव, लागत, व्यय आदि के विचार से किसी चीज की दर या दाम ज्ञात या स्थिर होना। जैसे—ये मोजे दस रुपये दरजन तो घर पडते है, यदि ग्यारह रुपये दरजन भी न बिके तो हमे क्या बचेगा? (दूकानदार) **(किसी का) घर फोडना**=किसी परिवार मे उपद्रव, कलह या लडाई-झगडा खडा करना जिसमे उस घर के रहनेवाले एक दूसरे से अलग हो जाना चाहे। **(अपना) घर बनाना**=आर्थिक दृष्टि से अपना घर सम्पन्न और सुखी करना। **(किसी का) घर बसना**=विवाह हो जाने और घर मे पत्नी के आ जाने के कारण घर आबाद होना। **(किसी) का) घर बिगाडना**=(क) किसी के घर की समृद्धि नष्ट करना। घर तबाह करना। (ख) घर मे फूट फैलाना। घर के लोगो मे परस्पर लडाई कराना। (ग) किसी की बहू-बेटी को बुरे मार्ग पर ले जाना। **(स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना**=किसी के घर जाकर पत्नी भाव से रहने लगना। **घर बैठे**=बिना कोई विशेष परिश्रम या प्रयास किये। जैसे—अब सारा काम घर बैठे हो जायगा। **(अपना या किसी का) घर भरना**=घर को धन-धान्य से पूर्ण करना। जैसे—इन्होने जन्म भर अपना (या अपने मालिक का) घर भरने के सिवा किया ही क्या है? **(किसी स्त्री को) घर मे डालना**=उपपत्नी या रखेली बनाकर अपने घर मे रख लेना। **घर से**=अपने पास से। पल्ले से। जैसे—हमे तो घर से सौ रुपए निकाल कर देने पडे। **घर सेना**=घर मे चुपचाप और व्यर्थ पडे रहना, बाहर न निकलना। **घर से बाहर पाँव या पैर निकालना**=किसी प्रकार के कुमार्ग या दुष्कर्म मे प्रवृत्त हो काम करना।

पद—घर का=(क) निज का। अपना। जैसे—घर का मकान या बगीचा, घर के लोग। (ख) आपस के लोगो का। जिससे परायो या बाहरवालो का कोई सबध न हो। जैसे—घर का झगडा, घर की पूँजी। (ग) स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी। उदा०—घर के हमारे परदेस को सिधारे याते दया करि बूझीए हम रीति राहवारे की।—कविंद। **घर का अच्छा**=(क) कुल, शील आदि के विचार से श्रेष्ठ। (ख) आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और सुखी। **घर का उजाला**=परिवार, वश आदि की मान-मर्यादा बढानेवाला व्यक्ति। **घर का न घाट का**=जिसके रहने का ठीक-ठिकाना या कोई निश्चित स्थान न हो। जैसे—धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का। (कहा०) **घर का बहादुर, मर्द या शेर**=वह जो अपने घर के अन्दर या घर के लोगो के सामने ही बहादुरी की डीग हाँकता हो, बाहरी लोगो के सामने दब जाता हो। **घर की खेती**=ऐसा काम, चीज या बात जो अपने घर मे आप से आप या अपने साधारण परिश्रम से यथेष्ट परिमाण मे मिल या हो सकती हो। **घर के बाढ़े**=जो अपने घर मे ही रहकर बडा हुआ हो, परन्तु जिसे अभी बाहरवालो के सामने कुछ कर दिखाने का अवसर न मिला हो अथवा ऐसी शक्ति न आई हो। घर ही का बहादुर या शेर। उदा०—द्विज देवता घरहिं के बाढ।—तुलसी। **घर मे**=(क) स्त्री। जोरू। घरवाली।

जैसे—उनके घर मे बीमार है। (ख) पति। स्वामी। जैसे—हमारे घर मे परसो बाहर गये है। (स्त्रियाँ) **घरवाला**—स्त्री के विचार मे उसका पति। जैसे—अपने घरवाले को भी साथ ले आती। **घरवाली**—पति के विचार से, उसकी पत्नी। जैसे—जरा घरवाली से भी पूछ लो। **घर से**=(क) पति के विचार से, उसकी पत्नी। घरवाली। जैसे—उनके घर से भी साथ आई है। (ख) स्त्री के विचार से, उसका पति। घरवाला। **अँधेरे घर का उजाला** (क) वह जिससे किसी छोटे या साधारण घर की मर्यादा, शोभा आदि भी बहुत अधिक बढ जाती हो। (ख) परम रूपवान् या सुन्दर (अथवा सुन्दरी)।

४ किसी परिवार के रहने के स्थान की सब चीजे। गृहस्थी की सब सामग्री। घर का सारा सामान।

मुहा०—घर फूंककर तमाशा देखना-अपना सब कुछ नष्ट करके किसी प्रकार आनन्द लेना या सुख भोगना। (ऐसे अनुचित और निन्दनीय कार्यों के सबध मे प्रयुक्त जो बहुत अधिक व्यय-साध्य हो।)

५ प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, वैभव आदि के विचार से कोई गृहस्थी या परिवार। खानदान। घराना। जैसे—अब भी वहाँ पुराने रईसो के कई घर बचे है। ६ स्थायी रूप से गृहस्थी या परिवार बनाकर रहने के लिए उपयुक्त स्थान। जैसे—लडकी (के विवाह) के लिए कोई अच्छा घर ढूँढना। उदा०—जो घर बर कुल होय अनूपा।—तुलसी। ७ वह स्थान जहाँ रहने पर वैसा ही सुख और सुभीते मिलते हो, जैसा सुख और जितने सुभीते स्वय अपने घर या निवास स्थान मे मिलते है। जैसे—(क) इसे भी आप अपना घर ही समझे। (ख) सब बच्चो को उन्होने सदा घर की तरह रखा था। ८ पशु-पक्षियो आदि के रहने की जगह। जैसे—चूहे जमीन के अन्दर और तोते पेडो पर अपना घर बनाते है। ९ केला, बाँस, मूँज आदि के पौधो का एक जगह और बहुत पास-पास या एक साथ उगा हुआ समूह। झुरमुट। जैसे—उनके बगीचे मे केले के ५-६ घर है। १० वह स्थान जहाँ कोई काम, चीज या बात अधिकता या प्रचुरता से देखने मे आती अथवा होती हो। जैसे—(क) कश्मीर शोभा और सौन्दर्य का घर है। (ख) यहाँ का जगली क्षेत्र मलेरिया (या साँपो) का घर है। (ग) नगर का वह भाग गुडो और बदमाशो का घर है। ११ वह चीज या बात जिससे कोई दूसरी चीज या बात निकलती या पैदा होती हो। जैसे—रोग का घर खाँसी, लडाई का घर हाँसी। (कहा०) १२ वह स्थान जहाँ किसी मनुष्य अथवा उसके पूर्वजो का जन्म, पालन-पोषण आदि हुआ हो। जन्म-भूमि या स्वदेश। जैसे—घर तो उनका पजाब मे था पर वे बहुत दिनो से बगाल मे जाकर बस गये थे। १३ वह स्थान जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त या ठीक हो, अथवा उसके लिए बनाया या रक्षित किया गया हो। जैसे—कल-घर (जिसमे पानी या नल लगा हो), पूजा-घर (जहाँ देवता की मूर्ति और पूजन की सामग्री रहती हो), रसोई घर आदि। १४ वह स्थान जहाँ जनता को कुछ विशिष्ट चीजे या बातें अपने उपयोग या व्यवहार के लिए नियमित रूप से और सुगमतापूर्वक प्राप्त होती हो। जैसे—टिकटघर, रेलघर। १५ वह स्थान जहाँ किसी विशिष्ट प्रकार का उत्पादन कार्य नियमित और व्यवस्थित रूप से होता हो। जैसे—पुतलीघर, बिजलीघर। १६ वह स्थान जहाँ किसी विशिष्ट प्रकार का सार्वजनिक काम करने के लिए अनेक कर्मचारी एकत्र होते हो। जैसे—डाकघर, तारघर। १७ किसी अलमारी, सदूक आदि मे अलग-अलग चीजे रखने के लिए बने हुए चौकोर खाने। जैसे—इस सदूक मे कागज-पत्र, गहने, रुपए पैसे आदि रखने के लिए अलग-अलग घर बने है। १८ कोई चीज रखने का डिब्बा या चोगा। खाना (केस) जैसे—अँगूठी, चश्मे या तलवार का घर। १९ किसी तल पर खडी और बेडी रेखाओ से किए हुए खड या विभाग। कोष्ठ। खाना। जैसे—चौसर या शतरज की बिसात के घर। २० कोई चीज जमाकर बैठने, रखने या लगाने के लिए बना हुआ चौखटा, छेद या स्थान। जैसे—अँगूठी मे नगीने का घर, तसवीर का घर (अर्थात् चौखटा)। २१ आकाश मे क्षितिज के उत्तर दक्षिणी वृत्त के मुख्य बारह विभागो मे से हर एक जो फलित ज्योतिष मे जन्म कुडली बनाने के समय ग्रहो की स्थिति दिखाने के काम आता है। ये विभाग राशि-चक्र के सूचक होते है और इनमे से प्रत्येक मे किसी ग्रह के पहुचने का अलग-अलग प्रकार का प्रभाव या फल माना जाता है। जैसे—चौथा, छठा या नवाँ घर। २२ किसी वस्तु के टिके, ठहरे या रुके रहने की कोई जगह। जैसे—पानी ने छत मे स्थान-स्थान पर घर कर लिया है।

मुहा०—(किसी चीज का कहीं) घर करना=किसी वस्तु का अपने जमने या ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान बनाना। जैसे—दो-चार दिनो मे जूते मे पैर घर कर लेता है। **(किसी चीज का) चित्त या मन मे घर करना**=अपने गुण, रूप आदि के कारण किसी को इतना पसद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। अत्यन्त प्रिय होना।

२३ किसी बात या व्यक्ति का उपयुक्त अथवा नियत स्थान या स्थिति।

मुहा०—(कोई काम या बात) घर तक पहुँचाना पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचाना। जैसे—जो काम हाथ मे लिया है, पहले उसे घर तक पहुँचाओ। **(किसी व्यक्ति को, उसके) घर तक पहुँचाना** -ऐसी स्थिति मे पहुँचाना या ले जाना कि उसका वास्तविक स्वरूप सब लोगो पर प्रकट हो जाय। जैसे—झूठे को उसके घर तक पहुँचाना चाहिए (अर्थात् उसे झूठा सिद्ध कर देना चाहिए)। **(आग या दीया) घर करना**=ठढा करना। बुझाना। (मगल-भाषित)

२४ आघात, प्रहार या वार करने अथवा उससे बचने या उसे रोकने का कोई विशिष्ट ढग या प्रकार। दाँव। पेच। जैसे—वह कुश्ती (तलवार या पटा-बनेठी) के सब घर जानता है।

पद—घर-घाट। (देखे)

मुहा०—(प्रहार मे) घर खाली छोड़ना या देना=वार करते हुए भी आघात या प्रहार न करना, बल्कि जान-बूझकर खाली जाने देना। **(वार का) घर बचाना**=अपने कौशल या चातुरी से प्रहार या वार विफल करना। जैसे—कई घर तो तुम बचा गये, पर इस बार जरा सभलकर रहना।

२५ सगीत मे, किसी तान, बोल या स्वर की नियत और मर्यादित सीमा। जैसे—(क) यह तान ठीक नही आई, जरा फिर से और ठीक घर मे कहो। (ख) यह चिडिया कई घर बोलती है। २६ गुदा या भग। (बाजारू)

घरऊ†—वि०=घराऊ (घरू)।

घर-गृहस्थ—पु० [हिं० घर+स० गृहस्थ] वह व्यक्ति जो अपने परिवार के साथ रहता हो और गृहस्थी के निर्वाह के लिए सब काम-काज करता हो।

घर-गृहस्थी—स्त्री० [हिं० घर+गृहस्थी] १ घर मे रहनेवाले परिवार के सदस्य और उनकी सब वस्तुएँ। जैसे—घर-गृहस्थी यहाँ से उठाकर अब कहाँ जायँ। २ परिवार के लोग।

घरघराना—अ० [अनु० घर घर] [भाव० घरघराहट] कफ के कारण गले से साँस लेते समय घर-घर शब्द निकलना या होना।
स० घर-घर शब्द उत्पन्न करना।

घर-घराना—पु० [हिं० घर+घराना] १ आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियो से सपन्न और प्रतिष्ठित परिवार। २ कुल या वश और उसकी मर्यादा आदि। जैसे—पहले उनका घर-घराना देख लेना तब विवाह की बात करना।

घरघराहट—स्त्री० [अनु० घर्र घर्र] घर-घर शब्द होने की क्रिया या भाव। जैसे—कफ के कारण गले मे होनेवाली घरघराहट।

घर-घाट—पु० [हिं०] १ किसी काम या बात के वे महत्त्वपूर्ण अग या पक्ष जिनकी ठीक और पूरी जानकारी होने पर वह काम या बात अच्छी तरह और सुगमतापूर्वक पूरी या सम्पन्न होती है। जैसे—कुश्ती, चित्रकारी, रोजगार या सगीत के घर-घाट। २ किसी चीज की बनावट के विचार से उसके उतार-चढाव या सुडौल गठन। जैसे—कटार या तलवार का घर-घाट। ३ अपनी विशिष्ट प्रकार की मनोवृत्ति के अनुसार किसी व्यक्ति का कार्य अथवा व्यवहार करने का कौशल, ढग या प्रणाली। जैसे—पहले यह तो समझ लो कि वह किस (या कैसे) घर-घाट का आदमी है। ४ उचित और उपयुक्त स्थिति। ठौर-ठिकाना। जैसे—पहले अपना पेट पालने का तो घर-घाट कर लो, फिर ब्याह भी होता रहेगा।

घर-घालक—वि० [हिं० घर+घालक=घालनेवाला] १ दूसरो का घर घालने या बिगाडनेवाला। २ अपने कुल या वश को कलकित या बरबाद करनेवाला।

घर-घालन†—पु० [हिं० घर+घालना] अपना या दूसरो का घर कलकित या बरबाद करना।
वि०=घर-घालक।

घर-घुसड़—वि०=घर-घुसना।

घर-घुसना—वि० [हिं० घर+घुसना=घुसा रहनेवाला] [स्त्री० वि० घर-घुसनी] (व्यक्ति) जो प्राय घर मे और विशेषत स्त्रियो के पास बैठा रहता हो, बाहर घूमता-फिरता या काम-काज न करता हो अथवा कम करता हो।

घर-घुसा—वि०=घर-घुसना।

घर-चित्ता—पु० [हिं० घर+चीतर] घरो आदि मे रहनेवाला एक प्रकार का साँप।

घर-जँवाई—पु० [हिं० घर+जँवाई=जामाता] वह जँवाई या दामाद जिसे ससुर ने अपने ही घर मे रख लिया हो। ससुराल मे स्थायी रूप से रहनेवाला दामाद। घर-दमाद।

घर-जाया—पु० [हिं० घर+जाया=पैदा] [स्त्री० घर-जायी] गृह-स्वामी की दृष्टि से, उसके घर मे उत्पन्न होनेवाला दासी-पुत्र।

घर-जुगत—स्त्री० [हिं० घर+स० युक्ति] घर-गृहस्थी के सब काम-कम या थोडे खर्च मे अच्छी तरह चलाने की युक्ति या योग्यता।

घर-झँकना†—वि० [हिं० घर+झाँकना] [स्त्री० घर-झँकनी] बारी-बारी से लोगो के घर व्यर्थ जाकर तुरन्त ही लौट आनेवाला।

घरट्ट (क)—पु० [स० √घृ (सीचना)+विच्, घर्√ अट्ट (गति)+अण्, उप० स०] [घरट्ट+कन्] [स्त्री० अल्पा० घरट्टिका] हाथ से चलाई जानेवाली चक्की। जाँता।

घरण (णि)†—स्त्री०=घरनी।

घर-दमाद—पु० =घर-जँवाई।

घरदारी—स्त्री० [हिं० घर+फा० दारी] घर मे रहकर किये जानेवाले गृहस्थी के काम-काज।

घर-दासी—स्त्री० [हिं० घर+स० दासी] १ गृहिणी। २ पत्नी।

घर-द्वार—पु०=घर-बार।

घरद्वारी—स्त्री० १ दे० 'घर-पत्ती'। २ दे० 'घर-बारी'।

घरन—स्त्री० [देश०] पहाडी भेडो की एक जाति। जुँबली।

घरनई†—स्त्री०=घडनई।

घरनाल—स्त्री० [हिं० घोडा+नाली] पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप। रहकला।

घरनी—स्त्री० [स० गृहिणी] १ गृह-स्वामिनी। २ पत्नी। भार्या। जैसे—बिन घरनी घर भूत का डेरा। (कहा०)

घरपत्ती—स्त्री० [हिं० घर+पत्ती=भाग] किसी जातीय या सार्वजनिक कार्य की अभिपूर्ति के लिए सबधित घरो या परिवारो से लिया जानेवाला सहाश। चदा। बेहरी।

घरपरना—पु० [स० घर+परना=बनाना] कच्ची मिट्टी का गोल पिंडा जिस पर ठठेरे घरिया बनाते है।

घर-फोडा—वि० [हिं० घर+फोडना] [स्त्री० वि० घर-फोडी] १ (व्यक्ति) जो दूसरो के घरो मे कलह या विरोध उत्पन्न कराता हो अथवा उसके सदस्यो को आपस मे लडाता हो। २ अपने ही परिवार के सदस्यो से लड-झगड कर उन्हे अलग रहने के लिए विवश करनेवाला।

घर-फोरा†—वि०=घर-फोडा।

घर-बद—वि० [हिं०] १ घर मे बद किया हुआ। २ पूर्णतया अधिकार मे लिया हुआ। जैसे—विद्या किसी की घर बद नही है।

घरबदी—स्त्री० [हिं० घर+बदी=बाँधना] १ अपराधी या अभियुक्त को उसके घर मे ही कैद करने की आज्ञा, क्रिया या भाव। २ चित्रकला मे, अलग-अलग पदार्थ दिखाने के लिए पहले छोटे-छोटे विन्दुओ से उनका स्थान घेरकर उनके विभागो के लिए स्थान नियत करना।

घर-बसा†—पु० [हिं० घर+बसना] [स्त्री० घर-बसी] १ स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी जिसके कारण उसका घर बसा हुआ माना जाता अथवा रहता है। उदा०—एहो घर-बसे, आजु कौन घर बसे हो। —घनानन्द। २ उपपति। यार।

घरबसी—वि०, स्त्री० [हिं० घर+बसना] १ घर बसानेवाली (अर्थात् पत्नी)। २ घर की समृद्धि बढानेवाली। भाग्यवती। ३ उपपत्नी। रखेली।

घर-बार—पु० [हिं० घर+बार=द्वार] १ वह स्थान जहाँ कोई स्थायी रूप से रहता तथा काम-काज करता हो। जैसे—आपका घर-बार कहाँ है? २ घर और घर के सब काम-काज। जैसे—अपना घर-बार अच्छी तरह से देखो। ३ घर-गृहस्थी की सब सामग्री।

घरबारी—पु० [हिं० घर+बार] स्त्री, बाल-बच्चो तथा परिवार के अन्य

सदस्यो के साथ रहने तथा उनका भरण-पोषण करनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ।
घरबैसी†—स्त्री [हिं० घर+बैठना] वह स्त्री जो पत्नी बनाकर घर मे बैठा या रख ली गई हो। उपपत्नी। रखेली।
घरम—पु० [स० घर्म] घाम। धूप।
घरमकर†—पु०=घर्मकर (सूर्य)।
घरयार†—पु० =घडियाल।
घरर-घरर—पु० [अनु०] वह शब्द जो किसी कडी वस्तु को दूसरी कडी वस्तु पर रगडने से होता है। रगड का शब्द।
घररना—स० [अनु० घरर घरर] १ घरर-घरर शब्द उत्पन्न करना। २ किसी कडी चीज को किसी दूसरी कडी चीज पर इस प्रकार रगडना कि वह घरर-घरर शब्द उत्पन्न करने लगे।
अ० घरर-घरर शब्द होना।
घरवात†—स्त्री० [हिं० घर+वात (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का सामान।
घरवाला—पु० [हिं० घर+वाला (प्रत्य०)] १ घर का मालिक। गृह-स्वामी। २ स्त्री की दृष्टि से उसका पति। जैसे—तुम्हारा घरवाला क्या काम करता है?
घरवाली—स्त्री० [हिं० घर+वाली (प्रत्य०)] १ घर की मालकिन। गृह-स्वामिनी। २ पति की दृष्टि से उसकी पत्नी या स्त्री। जैसे—आज-कल आपकी घरवाली शायद कही गई हैं।
घरवाहा—पु०[हिं० घर+वा या वाहा (प्रत्य०)] १ छोटा-मोटा घर। २ घरौदा।
घरसा†—पु० [स० घर्ष]=घिस्सा।
घरहाई†—वि० [हिं० घरहाया का स्त्री० रूप] १ अपने घर अथवा दूसरो के घरो मे झगडा लगाने या फूट डालनेवाली (स्त्री)। २ अपने अथवा दूसरो के घरो की फूट या लडाई-झगडे की बाते इधर-उधर कहनेवाली।
घरहाया—वि० [हिं० घर+घात] [स्त्री० घरहाई] घर मे मत-भेद उत्पन्न करने, फूट डालने या लडाई-झगडा लगानेवाला।
घरांव—पु० [हिं० घर] घर का-सा सबध। मेल-जोल। घनिष्ठता। उदा०—दोनो परिवारो मे इतना घरांव था कि इस सबध का हो जाना कोई आसाधारण बात न थी। —प्रेमचन्द।
घरा†—पु०=घडा।
घराऊ—वि० [हिं० घर+आऊ (प्रत्य०)] घर मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। जैसे—घराऊ कलह।
घराट†—वि० [?] भीषण। विकट।
घराडी—स्त्री० [हिं० घर+आडी (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति और उसके पूर्वज बहुत दिनो से रहते चले आये हो। डीह।
घराती—पु० [हिं० घर+आती (प्रत्य०)] विवाह मे, कन्या पक्ष के लोग। 'बराती' का विपर्यय।
घराना—पु० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] कुल। खानदान। वश। (विशेषत प्रतिष्ठित और सम्पन्न)
घरिआर†—पु०=घडियाल।
घरिआरी—वि०=घडियाली।
घरिणी—स्त्री० [स० घर+इनि—डीप्] घरनी (पत्नी)।
घरियक*—क्रि० वि० [हिं० घरी (घडी)+स० एक] घडी भर। बहुत थोडे समय तक।
घरिया—स्त्री० [हिं० घरा (घडा)+इया (प्रत्य०)] १ छोटा घडा। २ मिट्टी का प्याला या हाँडी। ३ मिट्टी का वह छोटा प्याला जिसमें आँच देने से धातु की मैल कटकर ऊपर आ जाती है। घडिया।
घरियाना†—स० [हिं० घरी] कागज, कपडे आदि की तह लगाना।
घरियार†—पु० = घडियाल।
घरियारी†—पु० = घडियाली (घटा बजानेवाला व्यक्ति)।
घरी—स्त्री० [?] तह। परत।
स्त्री० = घडी।
घरीक†—क्रि० वि० [हिं० घरी+एक] घडी भर अर्थात् बहुत थोडे समय के लिए।
घरुआ†—पु० [हिं० घर+वा (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का अच्छा प्रबध। वि० घर का। घर सबधी।
घरुआदार†—पु० [हिं० घर+फा० दार] [स्त्री० घरुआ-दारिन, भाव० घरुआदारी] १ घर या गृहस्थी का उत्तम प्रबध करनेवाला व्यक्ति। २ वह जो समझ-बूझकर गृहस्थी का खर्च चलाता हो।
घरुआदारी†—स्त्री० [हिं० घर + दारी] घर का उत्तम प्रबध करने का भाव।
घरुवा†—पु० = घरुआ।
घरू—वि० [हिं० घर+ऊ (प्रत्य०)] घर का। १ जिसका सबध स्वय अपने घर या गृहस्थी से हो। घरेलू। २ आपसदारी का। निजी।
घरेला†—वि० = घरेलू।
घरेलू—वि० [हिं० घर+एलू (प्रत्य०)] १ घर का। घर सबधी। जैसे-घरेलू झगडा। २ (कार्य या व्यवहार) जो अपने घर या आपसदारी से सबध रखता हो। निजी। ३ (धधा) जो घर के अदर बैठ कर किया जाय। जैसे—घरेलू उद्योग-धधे। ४ (पशु) जो घर मे रखकर पाला-पोसा गया हो। पालतू।
घरैया†—वि० = घराऊ।
पु० १ अपने घर का आदमी। २ बहुत ही निकट का सबंधी।
घरोप—पु० [हिं० घर+ओप (प्रत्य०)] घर के लोगो का-सा आपसी व्यवहार। घनिष्ठ सबधी।
घरौंदा—पु० [हिं० घर+औंदा (प्रत्य०)] १ छोटा घर। २ कागज, मिट्टी आदि का छोटा घर जिससे बच्चे खेलते है। ३ लाक्षणिक अर्थ मे कोई अस्थायी या नश्वर वस्तु।
घरौना†—पु० दे० 'घरौदा'।
घर्घर—पु० [स० घर्घ√रा (दान)+क] पुरानी चाल का ताल देने का एक प्रकार का बाजा।
पु० [अनु०] किसी भारी चीज के चलने से होनेवाली कर्कश ध्वनि। जैसे—गाडी, चक्की या मशीन की घर्घर।
घर्घरक—पु० [स० घर्घर+कन्] घाघरा नदी।
घर्घरा (री)—स्त्री० [स० घर्घर+टाप्] [घर्घर+डीप्] १ एक प्रकार की वीणा। २ घुँघरूदार करधनी। ३ घुँघरू या छोटी घटी।
घर्म—पु० [स०√घृ (क्षरण)+मक्] १ अग्नि या सूर्य का ताप। गरमी।

२ धूप। ३ गरमी के दिन। ग्रीष्म काल। ४ पसीना। ५ पतीला। ६ एक प्रकार का यज्ञ।

घर्म-विंदु—पु० [ष० त०] पसीना।

घर्मांबु—पु० [घर्म-अबु, ष० त०] पसीना।

घर्मांशु—पु० [घर्म-अशु, ब० स०] सूर्य।

घर्माक्त—वि० [घर्म-अक्त, तृ० त०] पसीने से तर या लथ-पथ।

घर्मार्द्र—वि० [घर्म-आर्द्र तृ० त०] पसीने से लथ-पथ।

घर्मोदक—पु० [धर्म-उदक, ष० त०] पसीना।

घर्रा—पु० [अनु० घरर घरर=घिसने या रगडने का शब्द] १ एक प्रकार का अजन जो आँख आने पर लगाया जाता है। २ गले मे कफ रुकने के कारण होनेवाली घरघराहट।

मुहा०—घर्रा चलना या लगना=मरने के समय गले मे कफ रुकने के कारण साँस का घर-घर करते हुए रुक-रुककर चलना। घुँघुरू बोलना। घटका लगना।

३ जेल के कैदियो को दिया जानेवाला वह कठोर दड जिसमे उन्हे मोट खीचने या कोल्हू पेरने के काम मे लगाया जाता है।

घर्राटा—पु० [अनु० घर्र+आटा (प्रत्य०)] १ घर्र-घर्र का शब्द। २ गहरी नीद के समय कुछ लोगो की नाक मे से निकलनेवाला शब्द। खर्राटा।

मुहा०—घर्राटा मारना या लेना=गहरी नीद मे नाक से घर्र-घर्र शब्द निकालना। गहरी नीद सोना।

घर्रामी—पु० [?] वह राज या मिस्त्री जो छप्पर छाने का काम करता हो। छपरबद।

घर्ष—पु० [स०√घृष् (घिसना)+घञ्] १ रगड। घर्षण। २ टक्कर। ३ सघर्ष। ४ पीसना।

घर्षण—पु० [स०√घृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० घृष्ट] १ रगडने की क्रिया या भाव। घिस्सा। रगड। (फ्रिक्शन) २ लाक्षणिक अर्थ मे, दो व्यक्तियो या विचारधाराओ मे होनेवाला पारस्परिक विरोधजन्य सघर्ष।

घर्षणी—स्त्री० [स० घर्षण+ङीप्] हरिद्रा। हलदी।

घर्षित—भू० कृ० [स०घृष्ट] १ घिसा, पिसा या रगडा हुआ। २ अच्छी तरह माँजा हुआ।

घलना—अ० [हिं० घालना] १ हिं० घालना का अकर्मक रूप। घाला जाना। २ किसी पर शस्त्र या हथियार का चलाया या छोडा जाना। अस्त्र का प्रहार होना। ३ मार-पीट या गहरी लडाई होना।

घलाघल (ली)—स्त्री० [हिं० घलना] १ गहरा आघात-प्रतिघात। २ मार-पीट।

घलुआ† —पु० [हिं० घाल] वह वस्तु जो दुकानदार किसी खरीददार को प्रसन्न करने के लिए तौल से अधिक या सौदे से अतिरिक्त देता है।

वि० घालनेवाला।

पु० दे० 'घोलुआ'।

घवद*—स्त्री० = घौद।

घवरि†—स्त्री० =घौद।

घसकना† —अ० = खिसकना।

घसखुदा—वि० [हिं० घास+खोदना] १ घास खोदनेवाला। २ किसी काम मे घसियारो की तरह बहुत ही अनाडी या मूर्ख।

पु० घसियारा।

घसत—पु० [?] बकरा। (डिं०)

घसना†—स० [स० घसन] खाना। भक्षण करना। (डिं०)

†अ०, स० = घिसना।

घसिटना—अ० हिं० 'घसीटना' का अकर्मक रूप। घसीटा जाना।

घसियारा—पु० [हिं० घास+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घसियारी या घसियारिन] घास खोदकर लाने और बेचनेवाला व्यक्ति।

घसीट—स्त्री० [हिं० घसीटना] १ घसीटने की क्रिया या भाव। २ जल्दी-जल्दी लिखने की क्रिया या भाव। ३ बहुत जल्दी मे और अक्षर आदि घसीट कर लिखी हुई लिखावट। ४ वह पट्टी या फीता जिससे उडते हुए पालो को मस्तूल से बाँधा जाता है।

घसीटना—स० [स० घृष्ट, प्रा० घिस्ट+ना (प्रत्य०)] १ जमीन पर खडी या पडी हुई वस्तु, व्यक्ति आदि को इस प्रकार खीचकर आगे ले चलना कि वह जमीन पर गिरता-पडता तथा जमीन से रगड खाता हुआ खीचनेवाले के पीछे खिचता चला जाय। २ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी व्यक्ति को बलपूर्वक किसी कार्य या व्यापार मे शामिल करना या फँसाना। जैसे—हमे आप ही तो यहाँ घसीट लाये थे। ३ बहुत जल्दी-जल्दी तथा अस्पष्ट लिखावट लिखना।

घसीटा-घसीटी—स्त्री० [हिं० घसीटना] बार-बार इधर-उधर या अपनी ओर घसीटने की क्रिया या भाव।

घस्मर—वि० [स०√घस् (खाना)+क्मरच्] भक्षक। खानेवाला।

पु० वह जिसका ध्यान सदा खाने की ओर ही रहे। पेटू।

घस्सा†—पु० =घिस्सा।

घहनना—अ० = घहनाना।

घहनाना†—अ० [अनु०] १ घटा बजने का शब्द होना। घटे आदि से ध्वनि निकलना। २ जोर की ध्वनि होना। गरजना।

स० उक्त प्रकार की ध्वनि उत्पन्न करना।

घहरना—अ० = घहराना।

घहराना—अ० [अनु०] १ गरजने का-सा भीषण नाद होना। २ वेग-पूर्वक या घोर शब्द करते हुए कही आकर गिरना या पहुँचना। सहसा आ उपस्थित होना। टूट पडना। ३ चारो ओर से आकर घेरना या छाना।

स० १ भीषण शब्द करना। २ घेरना या छाना।

घहरानि†—स्त्री० [हिं० घहराना] १ घहराने की क्रिया या भाव। २ गभीर या घोर शब्द। गरज।

घहरारा*—पु० [हिं० घहराना] [स्त्री० अल्पा० घहरारी] घोर शब्द। गभीर ध्वनि। गरज।

वि० १ घोर शब्द करने या गरजनेवाला। २ घहराकर अथवा जोर से आकर गिरने या पडनेवाला।

घहाना—अ०, स० =घहराना।

घाँ*—स्त्री० [स० ख, या घाट = ओर।] १ दिशा। दिक्। २ ओर। तरफ। ३ जगह। स्थान।

घाँघरा—पु० [स्त्री० घाँघरी] १ =घाघरा। २ =लोबिया (फली)।

घाँघल—स्त्री० [?] बखेडा। झझट। (राज०)

घाँची†—पु० [हिं० घान+ची] तेली। (डिं०)

घाटिक—वि० [सं० घटा+ठक्—इक] घटा या घटी बजानेवाला।
पु० १ स्तुति-पाठक। २ धतूरा।

घाँटी†—स्त्री० [सं० घटिका] १ गले के अंदर की घंटी। कौआ। २ कंठ। गला।

घाँटो—पु० [?] चैती की तरह का एक प्रकार का लोक-गीत जो चैत-बैसाख में गाया जाता है। (पूरब)

घाँह†—स्त्री० = घा (ओर या तरफ)।

घा†—स्त्री० [सं० ख अथवा घाट ओर] १ ओर। तरफ। जैसे—चहुँघा। २ दिशा।

घाइ†—पु० = घाव।
वि० = घायल।

घाइल*—वि० = घायल।

घाईं†—स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १ ओर। तरफ। २ दो चीजों के बीच की जगह। अवकाश। ३ बार। दफा। ४ पानी में का चक्कर। भँवर।
अव्य०—तरह। नाइ। (बुन्देल०)

घाई—स्त्री० [सं० गभस्ति उंगली] १ दो उँगलियों के बीच की संधि। अंटी। २ कोई ऐसा कोना जहाँ दो रेखाएँ आकर मिलती हों। जैसे—पौधे की पेंडी और डाल के बीच की घाई। ३ अँगीठी के ऊपरी सिरे पर का उभार।
स्त्री० [सं० घात] १ आघात। प्रहार। वार। जैसे—बनेठी या सोटे की घाई। २ चोट लगने से होनेवाला घाव। जैसे—कुठार की घाई। ३ चालाकी या धोखे की चाल।
मुहा०—(किसी को) घाइयाँ बताना=धोखा देने के लिए इधर-उधर की बातें करना। झाँसा-पट्टी या दम-बुत्ता देना।
†स्त्री० = गाही।

घाऊ—पु० [सं० घात] १. आघात। चोट। उदा०—यह सुनि परा निसानहि घाऊ।—तुलसी। २ घाव। जखम।

घाऊघप—वि० [हिं० खाऊ+गप वा घप] १ गुप्त रूप से या चुपचाप दूसरों का माल उड़ाने, खाने या हजम करनेवाला। २ सब कुछ खा-पी या फूँक-तापकर नष्ट करनेवाला। ३ बहुत बड़ा चालाक या धूर्त।

घाग—पु० = घाघ।

घागही†—स्त्री० [देश०] पटसन।

घाघ—पु० [?] १ गोंडे के रहनेवाले एक बहुत चतुर और अनुभवी कवि जिसकी कही हुई बहुत-सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध है। ये कहावतें खेती-बारी, ऋतु, काल तथा लग्न, मुहूर्त्त आदि के संबंध में हैं,और देहातों में बहुत प्रचलित हैं। २ बहुत ही अनुभवी, चतुर या धूर्त व्यक्ति। ३ ऐंद्रजालिक। जादूगर। बाजीगर। ४ उल्लू की जाति का एक बड़ा पक्षी।

घाघरा—पु० [सं० घर्घर=क्षुद्रघटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] १ वह चुन्नटदार तथा बड़े घेरेवाला पहनावा जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं और जिससे कमर से एड़ी तक के अंग ढके रहते है। लहँगा। २ एक प्रकार का कबूतर। ३ एक प्रकार का पौधा।
स्त्री० [सं० घर्घर] सरयू नदी का एक स्थानिक नाम।

घाघरापलटन—स्त्री० [हिं०] स्कॉटलैंड देश के पहाड़ी गोरों की सेना जिनका पहनावा कमर से घुटने तक लहँगे की तरह का होता है।

घाघस—पु० [?] १ बटेर की जाति का भूरे रंग का एक पक्षी जिसका मांस खाया जाता है। २ एक प्रकार की मुरगी।
पु० = घाघ (उल्लू की जाति का बड़ा पक्षी)।

घाघी—स्त्री० [सं० घर्घर] मछलियाँ फाँसने का एक प्रकार का बड़ा जाल।

घाट—पु० [सं० घट्ट] १ जलाशय, नदी आदि के तट पर वह स्थान जहाँ लोग विशेष रूप से नहाते, धोते, जल भरते, नावों पर चढ़ते-उतरते, अथवा उन पर सामान आदि लादते-उतारते हों।
मुहा०—घाट नहाना=किसी के मरने पर उदक क्रिया करना। **(नाव का) घाट लगना**=नाव का सवारियाँ चढ़ाने या उतारने, सामान लादने या उतारने के लिए घाट पर पहुँचना या किनारे पर लगना। **(लोगों का) घाट लगना**=नाव द्वारा नदी पार जाने के इच्छुक व्यक्तियों का घाट पर इकट्ठा होना।
२ तालाब, नदी आदि के तट के आस-पास का वह स्थान जहाँ सीढ़ियाँ आदि बनी होती है तथा जिस पर से होकर लोग जल तक पहुँचते है। ३ चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ४ पहाड़। जैसे—पूर्वी घाट। ५ किसी चीज की बनावट में वह अंश जिसमें कुछ चढ़ाव-उतार या गोल रेखा का-सा रूप हो।
पद—घर-घाट। (देखें)
५ कोई काम पूरा होने की जगह या स्थान। ठिकाना।
मुहा०—घाट-घाट का पानी पीना=(क) अनेक स्थानों का देख आना अथवा वहाँ रह आना। (ख) अनेक अथवा तरह-तरह की चीजों के स्वाद लेना अथवा तरह-तरह के काम करना।
६ ओर। तरफ। दिशा। ७ चाल-चलन। रंग-ढंग। ८ तलवार की धार। ९ जौ की गिरी। १०. दुलहिन का लहँगा। ११ रहस्य संप्रदाय में, घट या हृदय।
स्त्री० [हिं० घटिया=बुरा] १ धोखा। छल। कपट। २ कुकर्म। बुराई।
स्त्री० [हिं० घटना] घटने या घटकर होने की अवस्था या भाव।
वि० [हिं० घट] १ कम। थोड़ा। २ घटिया।
क्रि० वि० घटकर।
पु० [सं०√घट्+घञ्+अच्] [स्त्री० घाटी, घाटिका] १ गरदन का पिछला भाग। २ अँगिया में का गला।

घाटना*—अ० = घटना (कम होना)।

घाट-पहल—पु० [हिं०] गढ़ या तराशकर बनाई जानेवाली चीज में उसकी बनावट का उतार-चढ़ाव और पार्श्व जो उसे सुडौल बनाते है। जैसे—इस हीरे का घाट-पहल बहुत बढ़िया है।

घाट-बंदी—स्त्री० [हिं० घाट+बंदी] १ घाट पर नाव लाने-ले जाने अथवा माल आदि चढ़ाने या उतारने का निषेध या रुकावट। (एम्बार्गो)
२ घाट बाँधने अर्थात् बनाने की क्रिया, ढंग, भाव या रूप।

घाटवाल—पु० [हिं० घाट+वाला (प्रत्य०)] १ घाट का अधिकारी, मालिक या स्वामी। २ वह ब्राह्मण जो घाट पर बैठकर स्नान करने वालों से दान-दक्षिणा लेता हो। घाटिया।

घाटा—पु० [हिं० घटना] १ घटने की क्रिया या भाव। २ वह (धन

या सामग्री) जो कुछ घटे या कम पडे। ३ लेन-देन, व्यापार आदि मे होनेवाली आर्थिक हानि। टोटा। नुकसान। (लॉस)
क्रि० प्र०— आना।— उठाना।— खाना।— देना।— पडना।— भरना।—सहना।—होना।
पु० [हि० घाटी] पहाडी मार्ग।

घाटारोह†—पु० [हि० घाट+स० रोध] घाट पर का आवागमन बद करना। घाट पर किसी को आने-जाने, उतरने-चढने न देना। घाट रोकना।

घाटि†—वि० [हि० घटना] कम। न्यून।
क्रि० वि० किसी की तुलना मे कम, थोडा या हलका।
स्त्री० [स० घात] अनुचित और निदनीय कर्म। दुष्कर्म।

घाटिका—स्त्री० [स० घाट+कन्—टाप्, इत्व] गले का पिछला भाग। गरदन।

घाटिया—पु० [हि० घाट+इया (प्रत्य०)] १ वह ब्राह्मण जो घाट पर बैठकर नहानेवालो से दान-दक्षिणा आदि लेता हो। २ घाट का स्वामी।

घाटी—स्त्री० [हि० घाट] १ दो पर्वत-श्रेणियो के बीच का तग या सँकरा मार्ग। २ पर्वतीय प्रदेशो के बीच मे पडनेवाला मैदान। जैसे—कश्मीर की घाटी। ३ चढाव या उतार का पहाडी मार्ग। पहाड की ढाल। ४ वह पत्र जिसमे यह लिखा रहता है कि घाट पर आने या वहाँ से जानेवाले माल का महसूल चुका दिया गया है।
स्त्री० [स० घाटिका] गले का पिछला भाग।

घाटी-मार्ग—पु० [हि० घाट+स० मार्ग] १ पहाडियो के बीच मे नदी की धारा आदि से बना हुआ सकीर्ण पथ। २ दर्रा।

घाटो†—पु० = घाटा।
वि० [हि० घटना] दरिद्र। गरीब।
पु० [हि० घाट] १ एक प्रकार का गीत जो घाट पर पानी भरने के समय स्त्रियाँ गाती थी। २ दे० 'घाँटो'।

घात—पु० [स०√हन् (हिसा)+घञ्, कुत्व, त आदेश] [वि० घाती] १ अस्त्र-शस्त्र अथवा हाथ-पैर आदि से किसी पर की जानेवाली चोट। प्रहार। मार। २ जान से मार डालना। वध। हत्या। जैसे—गोघात। ३ धोखे मे रखकर किया जानेवाला अहित या बुराई। ४ गणित मे किसी सख्या को उसी सख्या से गुणा करने से निकलनेवाला गुणनफल। (पावर)
स्त्री० १. अपना स्वार्थ सिद्ध करने का उपयुक्त अवसर।
मुहा०—**घात ताकना**=उपयुक्त अवसर की ताक मे रहना। **(किसी के) घात पर चढ़ना या घात मे आना**=ऐसी अवस्था मे होना जिससे कोई दूसरा आसानी से अपना मतलब गाँठ सके। **(किसी को) घात मे पाना**= किसी को ऐसी स्थिति मे पाना जिससे कोई स्वार्थ सिद्ध होता हो। **(किसी की) घात मे फिरना, रहना या होना** = किसी को हानि पहुँचाने का अवसर ढूंढते रहना। **(किसी की) घात मे बैठना**=ऐसी जगह छिपकर बैठना जहाँ से किसी पर सहज मे आघात या वार किया जा सके। **घात लगना** = ऐसा इष्ट और उपयुक्त अवसर मिलना जिसमे कोई दुष्ट उद्देश्य या स्वार्थ सहज मे सिद्ध हो सके। **घात लगाना**=कोई काम करने (विशेषत अपना मतलब साधने) की युक्ति निकालना।
२ वह स्थान या स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति ऐसे उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा मे हो जिसमे कोई काम बन या उद्देश्य सिद्ध हो सकता हो।
वि० अमगल या हानि करनेवाला। अशुभ। जैसे—घात तिथि, घात नक्षत्र, घात वार।

घातक—वि० [स०√हन्+ण्वुल्—अक, कुत्व, त आदेश] १ घात या प्रहार करनेवाला। २ मार डालनेवाला। बधिक। ३ कष्ट या हानि पहुँचानेवाला। जैसे—घातक विचार। ४ जिसके कारण या द्वारा कोई मर सकता हो या मर जाय। (फैटल) जैसे—घातक रोग।
पु० १ हिंसक। २ हत्यारा। ३ फलित ज्योतिष मे, वह योग जिसके फलस्वरूप आदमी मर सकता हो। ४ दुश्मन। शत्रु।

घातकी†—वि०, पु० = घातक।

घातन—पु० [स० √हन्+णिच्+ल्युट्—अन, कुत्व, त आदेश] १ घात करने की क्रिया या भाव। २ मारना।

घात-स्थान—पु० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पर प्रहार किया गया हो या होता हो। वध-स्थान।

घाता—पु० [?] १ वह चीज जो ग्राहक को तौल या गिनती के ऊपर दी जाय। घाल। २ कोई काम करते समय बीच मे अनायास होनेवाला लाभ। जैसे—पुस्तक तो वापस मिली ही, तिस पर जलपान मिल गया घाते मे।

घाति—पु० [स० √हन्+क्तिन्, कुत्व, त आदेश] पक्षियो को फँसाना या मारना।
स्त्री० चिडिया फँसाने का जाल।

घातिक—वि० =घातक।

घातिया—वि० = घाती।

घाती (तिन्)—वि० [स०√हन्+णिनि, कुत्व, त आदेश] [स्त्री० घातिनी] १ घात या प्रहार करनेवाला। २ मार डालने या वध करनेवाला। ३ नाश करनेवाला।

घातुक—वि० [स०√हन्+उकञ्, कुत्व, त आदेश] १ घातक। २ हानि करनेवाला। ३ क्रूर। निर्दय।

घात्य—वि० [स०√हन्+ण्यत्, कुत्व, त आदेश] १ जिसका या जिसे घात किया जा सके या किया जाने को हो। २ नष्ट किये या मारे जाने के योग्य।

घान—पु० [स० घना=समूह] १ किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक बार कडाही, कोल्हू, चक्की आदि मे तलने, पेरने, पीसने आदि के लिए डाली जाय। २ उतना अश जितना एक बार मे पकाया, बनाया या तैयार किया जाय। ३ हर बार क्रमश उक्त प्रकार के या ऐसे ही और काम करने की क्रिया या भाव। जैसे—दूसरा या चौथा घान।
मुहा०—**घान उतरना** =उक्त प्रकार से एक बार काम ठीक उतरना या पूरा होना। **घान डालना** =उक्त प्रकार का कोई काम शुरू करना। **घान पडना या लगना**=उक्त प्रकार का कोई काम आरभ होना।
पु० [हि० घन=बडा हथौडा] १ बडा हथौडा। घन। २ बहुत बडा आघात या प्रहार।
*पु० [स० घ्राण] १ सूँघने की क्रिया या भाव। २ गध। बू। उदा०—जहाँ न राति न दिवस है, जहाँ न पौन न घानि।—जायसी।

घाना*—स० [स० घात, प्रा० घाय+ना (प्रत्य०)] १ घात या प्रहार करना। २ नाश या सहार करना।
स० = गहना (पकडना)।

घानी—स्त्री० [हि० घान] १ वह स्थान जहाँ कोई काम करने के लिए एक एक करके घान डाले जाते हों। २ ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू या उसकी जगह। ३ ढेर। राशि ४ दे० 'घान'।

मुहा०—घानी करना=पीसना, पेरना या ऐसा ही और कोई काम करना।

घानी की सवारी—स्त्री० [हि०] मालखभ की एक कसरत जिसमे एक हाथ मे मोगरा पकडकर मालखभ के चारो ओर घानी या कोल्हू की तरह चक्कर लगाते है।

घाप†—स्त्री० [?] बादलो की घटा।

घाम†—पु० [स० घर्म, प्रा० घम्म, पा० गिहन] १ सूर्य का ताप-युक्त प्रकाश। धूप।

मुहा०—घाम खाना=(क) सरदी दूर करने के लिए धूप मे रहना। (ख) धूप के अधिक या तीव्र प्रभाव मे पडना। **घाम लगना**=लू लगना।

२ कष्ट। विपत्ति। सकट।

मुहा०—(कहीं या किसी पर) घाम आना=कठिनाई या सकट आना। **घाम बचाना या बराना**=कष्टदायक बात से बचना।

† ३ पसीना।

घामड़—वि० [हि० घाम] १ (पशु) जो अधिक घाम या धूप लगने के कारण विकल हो गया हो। २ ना-समझ। मूर्ख। † ३ आलसी।

घाम-निधि*—पु० =सूर्य।

घामरी*—स्त्री० [हि० घामडी] १ धूप आदि न सह सकने के कारण होनेवाली विकलता। २ प्रेम के कारण होनेवाली विह्वलता।

घाय†—पु० =घाव।

घायक*—वि० =घातक।

घायल—वि० [हि० घाय] १ जिसे घाव या चोट लगी हो, विशेषत ऐसी चोट लगी हो जिसके कारण उसके शरीर का कोई अग कट या फट गया हो और रक्त बहने लगा हो। जख्मी। २ (व्यक्ति) जिसे किसी के कुव्यवहार से क्लेश हुआ हो। दूसरे के अनुचित व्यवहार से अपने को अपमानित समझनेवाला (व्यक्ति)। ३ जुए मे हारा हुआ (जुआरी)।

पु० कनकौआ या गुड्डी लडाने का एक ढग या प्रकार।

घार†—स्त्री० [स० गर्त्त] पानी के बहाव से कटकर बना हुआ गड्ढा या नाला।

घारी†—स्त्री० दे० 'खरिक'।

घार्षणिक—वि० [स० घर्षण + ठक्—इक] घर्षण-सबधी। घर्षण का।

घाल—पु० [हि० घालना=डालना] १ किसी चीज का वह थोडा-सा अश जो सौदा बिक चुकने पर उचित गिनती या तौल के अतिरिक्त अन्त मे ग्राहक के माँगने पर दुकानदार उसे प्रसन्न रखने के लिए देता है। घलुआ। २ उक्त के आधार पर बहुत ही तुच्छ या हेय पदार्थ।

मुहा०—घाल न गिनना=कुछ भी न समझना। तुच्छ समझना। उदा०—सरग न घालि गनै बैरागा।—जायसी।

३. आघात। प्रहार। उदा०—को न गएउ एहि रिसि कर घाला।—जायसी।

क्रि० वि० बे-फायदा। व्यर्थ।

स्त्री० घालने की क्रिया या भाव। उदा०—तिसकी घाल अजाई जाइ।—कबीर।

घालक—वि० [हि० घालना] [स्त्री० घालिका] १ मारने या वध करनेवाला। २ नाशक। ३ बहुत अधिक अपकार या हानि करनेवाला।

घालकता—स्त्री० [घालक+ता (प्रत्य०)] घालक होने की अवस्था, गुण या भाव।

घालना—स० [प्रा० अप० घल्ल, मरा० घालगें] १ कोई चीज किसी के अन्दर डालना या रखना। उदा०—को अस हाथ सिंह मुख घालै।—जायसी। २ कोई चीज किसी दूसरी चीज पर बैठाना, रखना या लगाना। उदा०—(क) राजकुँवरि घाली वर-माल।—नरपति नाल्ह। (ख) घालि कचपचो टीका सजा।—जायसी। ३ (अस्त्र या शस्त्र किसी पर) चलाना, छोडना या फेकना। ४ कोई कार्य सपन्न या सपादित करना। ५ बुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। बिगाडना। जैसे—किसी का घर घालना। ६ वध या हत्या करना। मार डालना।

घाल-मेल—पु० [हि० घालना+मेलना] १ विभिन्न प्रकार की वस्तुओ की ऐसी मिलावट अथवा विभिन्न बातो का ऐसा सम्मिश्रण जो देखने अथवा सुनने मे भला प्रतीत न होता हो। २. अनुचित सबध। ३. मेल-जोल।

घाव—पु० [स० घात, पा० घातो, प्रा० घाअ, गु० प० घा, सि० घाऊ, मरा० घाव, घाय] १ शरीर के किसी अग पर किसी वस्तु का आघात लगने से होनेवाला कटाव या पडनेवाली दरार। क्षत। जख्म।

मुहा०—घाव खाना=आघात या प्रहार सहने के कारण घायल होना। **घाव पूजना या भरना**=क्षत या घाव मे नया मास भर आने के कारण उसका अच्छा होना।

२ शरीर का वह अग या अश जो कटने-फटने, सडने-गलने आदि के कारण विकृत हो गया हो। ३ मानसिक आघात आदि के कारण होनेवाली मन की दुखपूर्ण स्थिति।

मुहा०—घाव पर नमक छिड़कना=दुखी या पीडित को और अधिक दुख या पीडा पहुँचाना।

घाव-पत्ता—पु० [हि० घाव+पत्ता] एक प्रकार की लता जिसके पत्ते घाव पर बाँधने से घाव जल्दी भरता है।

घावरा—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा सुगधित वृक्ष जिसकी छाल चिकनी और लकडी मजबूत तथा चमकीली होती है।

घावरिया†*—पु० [हि० घाव+वरिया (वाला)] घावो की चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति। जर्राह।

घावा†—वि०=घायल। (राज०)

घास—स्त्री० [स० √घस् (खाना)+घञ्, पा० प्रा० घास, प० घाह, सि० गाहु, गु० घास्, ने० घाँस्, उ० मरा० घास] १ छोटी हरी वनस्पतियो मे से कोई और हर एक जिसके पत्ते चरनेवाले पशु खाते है। तृण।

पद—घास-पात या घास-फूस—(क) तृण और वनस्पति। (ख) कूडा-करकट। **घास-भूसा**=(क) पशुओ का चारा। (ख) व्यर्थ की रद्दी चीजे।

मुहा०—घास काटना, खोदना, गढ़ना या छीलना=तुच्छ या व्यर्थ का काम करना।

२ घास की आकृति के कटे हुए कागज, पन्ना आदि के पतले लबोतरे टुकडे। ३ एक प्रकार का रेशमी कपडा।

घासलेट—पु०[अ० गैस लाइट] १ मिट्टी का तेल। २ तुच्छ या अग्राह्य वस्तु।

घासलेटी—वि०[हिं० घासलेट+ई प्रत्य०] १ हलके किस्म का। साधारण या निम्न कोटि का। २ अश्लील या गदा और रद्दी। जैसे—घासलेटी साहित्य।

घासी† —स्त्री०[हिं० घास] घास। चारा। तृण।
पु० घसियारा।

घाह—स्त्री०[स० ख=ओर] ओर। दिशा। उदा०—उतरि समुद्द अथाह, घाह लका धर धुज्जिय।—चदवरदाई।
स्त्री०=घाई।

घिअ†—पु०=घी।

घिऑड़ा—पु० [हिं० घी+हडा] वह बरतन जिसमे घी रखा जाता हो।

घिआ—स्त्री०=घीया।

घिऊ†—पु०=घी।

घिग्घी—स्त्री०[अनु०] १ अधिक देर तक रोने से थकावट आदि के कारण साँस मे होनेवाली वह रुकावट जिससे आदमी घी-घी शब्द करने लगता है। २ भयभीत होने पर मुँह से ठीक प्रकार से शब्द न निकलने की स्थिति।
क्रि० प्र०—बँधना।

घिघिआना—अ० [हिं० घिग्घी] १ असहाय तथा दीन बनकर करुण स्वर से बार-बार विनती करना। २ चिल्लाना।

घिचपिच—स्त्री० [स० घृष्ट-पिष्ट] १ लिखावट या लेख जिसके अक्षर या शब्द इस प्रकार आपस मे सटे हो कि पाठक सुविधापूर्वक उसे न पढ पाता हो। २ अपेक्षाकृत थोडे मे अत्यधिक वस्तुओ के बिना क्रम से रखे जाने की स्थिति।
वि० अस्पष्ट (लिखावट)।

घिन—स्त्री०[स० घृणा] [क्रि० घिनाना, वि० घिनौना] किसी गदी अथवा गली-सडी वस्तु को देखने पर मन मे होनेवाली अरुचिपूर्ण भावना जिसके फल-स्वरूप मनुष्य उस वस्तु से घबराकर दूर भागना चाहता है। घृणा। नफरत।
क्रि० प्र०—आना।—खाना।—लगना।

घिनावना—वि० [स्त्री० घिनावनि] घिनौना। उदा०—देखत कोइलरि घिनावनि बोलत सोहावनि हो।—ग्रा० गी०।

घिनौची†—स्त्री०=घडौची।

घिनौना†—वि० [हिं० घिन+औना (प्रत्य०)] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने पर मन मे घिन उत्पन्न होती हो। घृणित।

घिनौरी†—स्त्री०[हिं० घिन] ग्वालिन नामक कीडा।

घिन्नी—स्त्री ०=घिरनी।
†स्त्री०=गिन्नी।

घिय†—पु०=घी।

घियॉड़ा—पु० [हि० घी+हँडा] घी रखने का पात्र। घृत-पात्र।

घिया—स्त्री०=घीया।

घियाकश—पु०=घीयाकश।

२—२२

घियातरोई—स्त्री०=घीयातोरी।

घिरत†—पु०=घृत।

घिरना—अ०[स० ग्रहण] १ किसी के घेरे मे आना। जैसे—शेर घिर गया। २ सब दिशाओ से किसी वस्तु द्वारा ढक लिया जाना। जैसे—बादलो से आकाश घिरना। ३ चारो ओर से आकर उपस्थित होना। जैसे—घटाएँ घिरना।

घिरनी—स्त्री०[स० घूर्णन] १ गराडी। चरखी। २ चक्कर। फेरा।
मुहा०—घिरनी खाना=चारो ओर चक्कर लगाना।
३ रस्सी बटने की चरखी। ४ लट्टू नामक खिलौना। ५ दे० 'घिन्नी'।
†स्त्री०=गिनी या गिन्नी। (सोने का अगरेजी सिक्का)
पु० [?] १ किलकिला या कौडियाला नामक जलपक्षी। २ लोटन कबूतर।

घिरवाना—स० [हिं० 'घेरना' का प्रेर०] घेरने का काम किसी से कराना।

घिराई—स्त्री०[हिं० घेरना] १ घेरने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ पशु चराने का काम या पारिश्रमिक।

घिरायँद—स्त्री० =खरायँद (मूत्र की दुर्गन्ध)।

घिराव—पु०[हिं० घेरना] १ घेरने अथवा घेरे जाने की क्रिया या भाव। २ घेरा।

घिरावना*—स० १ दे० 'घिरवाना'। २ दे० 'घेरना'।

घिरित*—पु०= घृत।

घिरिन परेवा-—पु०[हिं० घिरनी+परेवा] गिरहबाज कबूतर।

घिरिया—स्त्री०[हिं० घिरनी] १ शिकार को घेरने के लिए बनाया जानेवाला मनुष्यो का घेरा। २ बहुत असमजस या सकट की स्थिति।

घिरौंची—स्त्री०=घडौची।

घिरौरा†—पु०[देश०] घूस नामक जन्तु का बिल।

घिर्तकाँदो—पु० [?] चम्पारन मे होनेवाला एक प्रकार का जडहन धान। उदा०—घिर्तकाँदो औ कुँवर बेरासू।—जायसी।

घिर्राना†—स०[अनु० घिर घिर] घसीटना। (पु० हिं०)
अ० दे० 'घिघियाना'।

घिर्री—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।
स्त्री०[हिं० घेरा] एक ही घेरे मे बार-बार घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया।
मुहा०—घिर्री खाना=कोई काम पूरा करने के लिए बार-बार कही आना-जाना।
†स्त्री०=घिरनी।

घिव†—पु०=घी।

घिसकना†—अ०=खिसकना।

घिसकाना†—स०=खिसकाना।

घिसघिस—स्त्री०[हिं० घिसना] जान-बूझकर और सुस्ती से किया जानेवाला ऐसा काम जिसमे उचित से बहुत अधिक समय लगे। जैसे—तुम्हारी यह घिस-घिस हमे अच्छी नही लगती।

घिसटना†—अ०[हिं० घसीटना का अ०] १ घसीटा जाना। २ जमीन पर रेंगते या उससे रगड खाते हुए बहुत धीरे-धीरे चलना।

घिसन|—स्त्री०[हि० घिसना] १ घिसने की क्रिया या भाव। २ घिसने के कारण होनेवाली कमी या छीज।

घिसना—स० [स० घर्षण, प्रा० घसण] १ किसी वस्तु को जोर लगाकर किसी दूसरी चीज पर इस प्रकार रगडना कि वह छीजने लगे। जैसे—पत्थर पर चन्दन या बादाम घिसना। २ किसी बरतन आदि पर जमी हुई काई, मैल आदि छुडाने के लिए उस पर कोई चीज मलना, रगडना या लगाना। माजना। ३ सभोग करना।

अ० उपयोग, व्यवहार मे आते-आते अथवा अन्य वस्तुओं से रगड खाते-खाते किसी वस्तु का क्षीण हो जाना। जैसे—लोटा घिस गया है।

घिसपिस|—स्त्री०[अनु०] १ =मेल-जोल। २ =घिस-घिस।

वि० =घिचपिच।

घिसवाना—स०[हि० घिसना का प्रे०] घिसने का काम किसी दूसरे से कराना। रगडवाना।

घिसाई—स्त्री०[हि० घिसना] घिसने या घिसे जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घिसाव—पु० [हि० घिसना] घिसने या घिसे जाने की क्रिया या भाव।

घिसावट—स्त्री० =घिसाव।

घिसिआना|—स० =घसीटना।

घिसियाना|स० =घसीटना।

घिसिर-पिसिर—स्त्री० दे० 'घिस-पिस'।

घिस्ट-पिस्ट—स्त्री० =घिस-पिस।

घिस्समघिस्सा—पु० [अनु०] १ बार-बार घिसने या रगडने की क्रिया। २ बच्चों का एक खेल जिसमे एक दूसरे की डोरी या नख मे डोरी या नख फँसाकर इस प्रकार झटका दिया जाता है कि दूसरे की डोरी या नख टूट जाय। ३ रेल-पेल।

घिस्सा—पु०[हि० घिसना] १ रगड। २ धक्का। ३ टक्कर। ४ चकमा। धोखा। ५ कलाई या कोहनी से गरदन पर किया जानेवाला आघात। (पहलवान) ६ दे० 'घिस्समघिस्सा'।

घींच|—स्त्री०[हि० घीचना वा स० ग्रीव] गरदन। ग्रीवा।

*स्त्री० =खीच।

घींचना*—स० =खीचना।

घी—पु० [स० घृत, पा० घत, प्रा०, उ० घिअ, मरा० गु० ब० घी, प० घ्यो, ने० घिउ] मक्खन को तपाकर बनाया हुआ प्रसिद्ध चिकना पदार्थ जो रोटी आदि पर लगाया और तरकारियो आदि मे डाला जाता है।

मुहा०—घी का कुप्पा लुढ़कना=(क) किसी धनी का गुजर या मर जाना। (ख) बहुत बडी क्षति या हानि होना। **घी का डोरा देना**=परोसी हुई दाल, सब्जी आदि मे ऊपर से धार बाँधकर घी डालना। **घी के कुप्पे से जा लगना**=किसी ऐसे व्यक्ति के पास अथवा किसी ऐसे स्थान पर पहुँचना कि खूब लाभ हो। **घी के चिराग या दीये जलाना**=मनोरथ पूर्ण होने पर खुशी मनाना। **घी खिचडी होना**=परस्पर अत्यधिक घनिष्ठता या मेल-जोल होना। **पाँचो उँगलियाँ घी मे होना**=ऐसी सुखद स्थिति मे होना कि किसी बात की कमी न रह जाय।

घीउ|—पु० =घी।

घीकुआर—पु०[स० घृतकुमारी] ग्वारपाठा।

घीकुवाँर—पु०[स० घृतकुमारी] ग्वारपाठा।

घीया—स्त्री०[हि० घी ?] १ एक प्रसिद्ध लता जिसमे लबोतरे फल लगते है और जिनकी सब्जी बनाई जाती है। लौकी। २ उक्त लता का फल।

घीया-कश—पु०[हि० घीया+कश] पीतल, लोहे आदि का एक प्रसिद्ध दातेदार चौकोर उपकरण जिस पर घीया, पेठा आदि रगडने से उसके छोटे-छोटे टुकडे हो जाते है।

घीया-तोरी—स्त्री० [हि० घीया+तोरी] १ एक प्रसिद्ध लता जिसके छोटे लबोतरे फलो की तरकारी बनाई जाती है। २ उक्त लता के फल।

घीस|—स्त्री० =घूस (जतु)।

घीसना|—स० =घसीटना।

घीसा*—पु० =घिस्सा (रगडा)।

घुँइयाँ—स्त्री० [देश०] अरुई नाम की तरकारी।

घुँघची—स्त्री०[स० गुजा, प्रा० गुचा] १ एक प्रकार की जगली बेल जिसमे लाल-लाल रग के छोटे-छोटे बीज होते है। गुजा। २ उक्त बेल के बीज।

घुँघनी—स्त्री०[अनु०] भिगोकर तला हुआ अन्न (चना, मटर आदि)।

घुँघरारा*—वि० =घुँघराला।

घुँघराला—वि० [हि० घूँघर+वाला] जिसमे कई घुमाव या घूँघर पडे हो। जिसमे छल्ले की तरह के कई बल पडे हो। छल्लेदार (बाल)।

घुँघरू—पु०[अनु० घुन घुन, +स० खवारू] १ पीतल आदि की बनी हुई गोल और पोली गुरिया जिसमे ककड, लोहे आदि का छोटा टुकडा रहता है और जिसके हिलने से घन-घन ध्वनि होती है। २ पैरो मे पहना जानेवाला एक गहना जिसमे छोटे-छोटे अनेक घुँघरू लगे रहते है।

मुहा०—घुँघरू बाँधना=नाचने के लिए तैयार होना।

३ गले का वह घुर-घुर शब्द जो मरते समय कफ छेकने के कारण निकलता है। घुटका।

मुहा०—घुँघरू बोलना=मरने के समय गले से घुर-घुर शब्द निकलना।

घुँघरूदार—वि० [हि० घुँघरू+फा० दार] (आभूषण या बाजा) जिसमे घुँघरू लगे हुए हो।

†वि० =घुँघराला।

घुँघरूबद—स्त्री० [हि० घुँघरू+फा० बद] (पैरो मे घुँघरू बाँधकर) नाचनेवाली वेश्या।

घुँघरू-मोतिया—पु० [हि० घुँघरू+मोतिया] एक प्रकार का मोतिया (पौधा और फूल)।

घुँघ (घु) वारा—वि० दे० 'घुँघराला'।

घुट—पु०[देश०] एक जगली पेड जिसकी छाल और फलियो से चमडा सिझाया जाता है।

घुँटना†—अ०, पु० =घुटना।

घुडी—स्त्री०[स० गुठ से] १ कपडे की बनी हुई छोटी गोली जिसे अगरखे, कुरते आदि का पल्ला बद करने के लिए टाँकते है। कपडे का गोल बटन। गोपक।

क्रि० प्र०—खोलना।—टाँकना।—लगाना।

२ कपडे, सूत आदि का कोई गोलाकार फुँदना जो शोभा के लिए लगाया जाता है। ३ किसी चीज के सिरे पर बनी हुई कोई गोलाकार छोटी आकृति या रचना। जैसे—हाथ मे पहनने के कडे या जोशन की घुडी। ४ द्वेष, राग, वैर आदि के कारण मन मे रहनेवाली गाँठ या दुर्भाव।
मुहा०—जी या मन की घुडी खोलना =मन मे दबी हुई बात कहकर या रोष प्रकट करके दुर्भाव दूर करना।
५ कोई पेचीली बात। ६ धान का अकुर जो खेत कटने पर जड से फूटकर निकलता है। दोहला। ७ एक प्रकार की घास।

घुडीदार—वि० [हि० घुडी+फा० दार] १ (चीज) जिसमे घुडी टँकी, बनी या लगी हो। २ पेचीला।
पु० एक प्रकार की सिलाई जिसमे एक टाँके के बाद दूसरा टाँका फदा डालकर लगाते और जगह-जगह उसे घुडी का रूप देते चलते है।

घुसा†—पु० [देश०] वह लकडी जिसके सहारे जाठ उठाकर कोल्हू मे डालते है।

घुआ—पु०=घूआ।

घुइयाँ†—स्त्री० [?] अरुई या अरवी नामक तरकारी।

घुइरना†—स० १ दे० 'घूरना'। २ दे० 'घुडकना'।

घुइस†—स्त्री०=घूस (जन्तु)।

घुकुआ†—पु० [हि० घूका] तग मुँह की बाँस आदि की टोकरी।

घुग्घी—स्त्री० [?] पडुक या फाख्ता नाम का पक्षी।
†स्त्री०=घोघी।

घुग्घू—पु० [स० घूक] १ उल्लू नामक पक्षी। २ मूर्ख व्यक्ति। ३ मिट्टी का एक प्रकार का खिलौना जो फूँककर बजाया जाता है।

घुघुआ—पु० दे० 'घुग्घू'।

घुघुआना—अ० [हि० घुग्घू] १ उल्लू पक्षी का बोलना। २ उक्त पक्षी की तरह अस्पष्ट स्वर मे बोलना। ३ दे० 'गुर्राना'।

घुघुरी—स्त्री० दे० 'घुँघनी'।
†स्त्री० [हि० घुँघरू] छोटा घुँघरू।

घुघ्घू†—पु०=घुग्घू।

घुटकना†—स० [स० घुट् प्रा० घोट्ट] १ घूँट-घूँट करके कोई तरल पदार्थ पीना। २ दे० 'गुटकना'।

घुटकी—स्त्री० [हि० घुटकना] १ गले की वह नली जिसमे से होकर खाद्य पदार्थ पेट मे जाते है। २ गले मे रुक-रुककर आने-जानेवाला साँस।
मुहा०—घुटकी लगना=मरने के समय रुक-रुककर साँस आना-जाना।

घुटन—स्त्री० [हि० घुटना] १ दम घुटने की-सी अवस्था या भाव। २ ऐसी अवस्था जिसमे कर्तव्य न सूझने पर मन मे बहुत घबराहट होती हो। (सफोकेशन)

घुटना—पु० [स० घुटक, दे० प्रा० गोड्डक, प्रा० गोड्ड, गोड, ब० गोर, उ० गोरो, प० गोड्डा, सिं० गोडो, मरा० घुडगा, गुडगा] १ पैर के बीच का वह जोड जिसके ऊपर जाँघ और नीचे टाँग होती है।
मुहा०—घुटना टेकना=सुस्ताने के लिए घुटनो के बल बैठना। **(किसी के आगे) घुटना या घुटने टेकना**=अपनी अधीनता या पराजय मानकर किसी के आगे सिर झुकाना। **घुटनो (के बल) चलना**=हाथो और घुटनो के बल उस प्रकार धीरे-धीरे खिसकते हुए चलना जिस प्रकार छोटे बच्चे चलते है। **घुटनो मे सिर देना**=(क) सिर नीचा किये चिंतित या उदास होकर बैठना। (ख) लज्जित होना। सिर नीचा करना। **(किसी के) घुटनो से लगकर बैठना** =सदा पास और सटकर बैठे रहना।
२ उक्त गाँठ के आस-पास का स्थान।
अ० [हि० घोटना] १ हि० 'घोटना' क्रिया का अ० रूप। घोटा जाना। २ गले मे साँस का रुकना। जैसे—धूएँ या धूल से दम घुटना। ३ बहुत अधिक मानसिक कष्ट या वेदना के कारण जीवन बिताना कठिन होना।
मुहा०—घुट-घुटकर मरना= बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट भोगते हुए और कठिनता से मरना।
४ किसी चीज का बहुत कस या जकडकर अटकना, फँसना या बद होना। जैसे—डोरी या रस्सी की गाँठ घुटना। उदा०—आन गाँठ घुटि जाय त्यौ, मान गाँठ छुटि जाय।—बिहारी। ५ अच्छी तरह पीसा या मिलाया जाना। खूब पिसना या मिलना। जैसे—(क) भग घुटना। (ख) उबलने के बाद अच्छी तरह गलकर दाल का घुटना।
पद —घुटा हुआ=बहुत ही अनुभवी और चालाक (आदमी)।
६ घिसे जाने पर चिकना होना। ७ आपस मे बहुत ही घनिष्ठ सबध होना। जैसे—आज-कल उन दोनो मे खूब घुटती है। ८ आपस मे गुप्त अथवा घनिष्ठतापूर्ण बाते होना। जैसे—जब मै वहाँ पहुँचा, तब उन दोनो मे खूब घुट रही थी। ९ बार-बार करते रहने से किसी काम या बात का पूरा अभ्यास होना। हाथ बैठना। जैसे—लिखने के समय बच्चो की पट्टी घुटना। १० उस्तरे से बालो का अच्छी तरह मूँडा जाना। जैसे—दाढी घुटना।
स० जकडने, बाँधने आदि के लिए अच्छी तरह कसना। बधन कडा करना। जैसे—घुटकर बाँधना।

घुटनी†—स्त्री० हि० घुटना का स्त्री० अल्पा० रूप।

घुटन्ना—पु० [हि० घुटना] १ घुटनो तक पहुँचनेवाला पायजामा। २ तग मोहरीवाला पायजामा।

घुटरूँ—क्रि० वि० [हि० घुटना] घुटनो के बल, उसी प्रकार घिसटकर जिस प्रकार छोटे बच्चे चलते है।

घुटरू†—पु० [हि० घुटना] छोटा घुटना। बच्चे का घुटना।

घुटवाना—स० [हि० घोटना का प्रे०] १ घोटने का काम दूसरे से कराना। २ दाढी, मूँछ आदि मुँडाना।
स० [हि० घुटना] घुटने दबवाना।

घुटाई—स्त्री० [हि० घुटना या घोटना] १ घोटने या घोटे जाने की क्रिया भाव या मजदूरी। २ खूब रगड-रगडकर किसी चीज को चिकना बनाने का काम। ३ दाढी, मूँछ आदि मूँडने या मुँडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घुटाना—स० [हि० घोटना का प्रे०] ५ घोटने का काम किसी से कराना। २ कोई चीज रगडवाकर चमकीला बनवाना। घटवाना। ३ दाढी, मूँछ आदि मुँडाना।

घुटाला—पु०=घोटाला।

घुट्ठी†—स्त्री०=घुट्टी।

घुटुरुन—पु० [हि० घुटुरु+अन (प्रत्य०)] घुटनो के बल चलने की क्रिया या भाव।

क्रि० वि० घुटनो के बल। घुटरूँ।

घुटुरू†—पु०=घुटरू।

क्रि० वि०=घुटरूँ।

घुटुवा†—पु०=घुटना (पैर का)।

घुट्टा†—पु०=घोटा।

घुट्टी—स्त्री० [हिं० घूंट या घोटना]। देशी दवाओ का एक प्रकार का घोल जो बहुत छोटे बच्चो को उनकी पाचन-शक्ति ठीक करने के लिए पिलाया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—पिलाना।

मुहा०—(कोई चीज या बात) घुट्टी मे पडना=बहुत छोटी अवस्था से ही प्रकृति का अग बनना या स्वभाव बनना। जैसे—कह कर मुकर जाना तो उनकी घुट्टी मे पडा है।

घुड़—पु० [हिं० घोडा] हिन्दी 'घोडा' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—घुड-चढा, घुड-दौड, घुड-मुँहा आदि।

घुड़कना—स० [अनु० घुर घुर] खीझने अथवा क्रुद्ध होने पर खिझाने अथवा क्रोध दिलानेवाले को डाँटते हुए यह कहना कि ऐसा काम मत करो जिससे हम खीझे या क्रुद्ध हो।

घुड़की—स्त्री० [हिं० घुडकना] १ घुडकने की क्रिया या भाव। २ क्रुद्ध होकर अथवा खीझकर डाँटते हुए किसी को कही जानेवाली बात।

पद—बंदर-घुड़की (देखे)।

घुड़चढ़ा—पु० [हिं० घोडा+चढना] १ वह जो घोडे पर चढा हो। घुड सवार। अश्वारोही। २ एक प्रकार का स्वाँग जिसमे घोडे की-सी आकृति बनाकर उसके बीच मे सवार की तरह चलते है।

घुड़चढ़ी—स्त्री० [हिं० घोडा+चढना] १ हिंदुओ मे विवाह की एक रीति जिसमे वर घोडे पर चढ़कर दुल्हिन के घर जाता है। २ गाँवो मे रहनेवाली वेश्या, जो घोडे पर चढकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती हो। ३ घोडे की पीठ पर रख या लादकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी तोप। घुडनाल।

घुड़दौड़—स्त्री० [हिं० घोडा+दौड] १ घोडो की दौड। २ एक प्रतियोगिता जिसमे घोडो को खूब तेज दौडाया जाता है और सबसे तेज दौडनेवाले घोडे (अथवा उसके स्वामी को) पुरस्कृत किया जाता हैं। ३ चलने मे घोडो की तरह की बहुत तेज चाल। ४ एक प्रकार की बडी नाव जिसके अगले भाग पर घोडे का मुँह बना होता है। ५ घुडसवार सेना की कवायद।

क्रि० वि० घोडो की तरह तेजी से आगे बढते या दौडते हुए।

घुड़नाल—स्त्री० [हिं० घोडा+नाल] घोडे की पीठ पर रखकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की पुरानी चाल की छोटी तोप।

घुड़बहली—स्त्री० [हिं० घोड़ा+बहल+ई] एक प्रकार का रथ जिसमे घोडे जुतते हो।

घुड़मक्खी—स्त्री० [हिं० घोडा+मक्खी] भूरे रग की वह मक्खी जो घोडो को काटती है।

घुड़मुँहा—वि० [हिं० घोडा+मुँह] जिसका मुख घोडे की तरह लबा हो। पु० एक कल्पित मनुष्य जाति जिसका धड मनुष्य का-सा और मुँह घोडे का-सा माना गया है।

घुड़ला—पु० [हि० [घोडा+ला (प्रत्य०)] १ बच्चो के खेलने के लिए बनाया हुआ काठ, पत्थर, मिट्टी आदि का छोटा घोडा। २ छोटा घोडा। ३ छोटी रस्सी या सिकडी। (लश०)

घुड़सवार—पु० [हिं० घोडा+सवार] [भाव० घुडसवारी] वह जो घोडे पर सवार हो। अश्वारोही।

घुड़सवारी—स्त्री० [हिं० घोडा+सवारी] घोडे पर सवार होने की क्रिया या भाव।

घुड़सार—स्त्री० =घुडसाल।

घुड़साल—स्त्री० [हिं० घोडा+स० शाला] वह जगह या बाडा जहाँ घोडे बाँधे जाते है। अस्तबल।

घुड़िया—स्त्री० [हिं० घोडी का अल्पा०] बहुत छोटी घोडी। विशेष दे० 'घोडिआ'।

घुड़कना†—स० =घुडकना।

घुण—पु० [स० √ घुण् (घूमना)+क] घुन।

घुण-लिपि—स्त्री० [मध्य० स०]=घुणाक्षर।

घुणाक्षर—पु० [घुण-अक्षर, मध्य० स०] लिखे हुए अक्षरो की तरह के वे चिह्न जो पत्ते, लकडी आदि पर घुन लगने से बन जाते है।

घुणाक्षर-न्याय—पु० [ष०त०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस अवस्था मे होता है जिसमे कोई घटना सयोगवश वैसे ही हो जाती है जैसे लकडी आदि पर घुन लगने से यो ही कुछ अक्षर से बन जाते है।

घुन—पु० [स० घूण, प्रा० मरा० घूण, ब० घुन्, उ० घूण, प० घुण्] १ एक प्रकार का लाल रग का छोटा कीडा जो अनाज के दानो का भीतरी अश खाकर उन्हे खोखला कर देता है। २ सफेद रग का एक प्रकार का छोटा पतला कीडा जो कागज, लकडी आदि खाता है।

मुहा०—घुन लगना= चिन्ता, रोग, शोक आदि के कारण मनुष्य की ऐसी स्थिति होना कि उसका शरीर दिन पर दिन क्षीण होता जाय।

घुनघुना—पु० [अनु०] बच्चों का झुनझुना नामक खिलौना।

घुनना—अ० [स० घुण] १ घुन के द्वारा लकडी आदि का खाया जाना। जैसे—अनाज या लकडी घुनना। २ चिन्ता, रोग आदि के कारण मनुष्य का शरीर दिन पर दिन क्षीण होना।

घुनाक्षरन्याय—पु० =घुणाक्षरन्याय।

घुन्ना—वि० [अनु०] [स्त्री० घुन्नी] (व्यक्ति) जो अपने क्रोध, दु ख, द्वेष आदि के भाव मन मे उपयुक्त अवसर पर किसी से बदला लेने के लिए छिपाये रखता हो।

घुप—वि० [स० कूप या अनु०] गहरा (अँधेरा)। निविड। (अधकार)।

घुमँड़ना†—अ० =घुमडना।

घुमतू—वि० [हिं० घूमना] जो बराबर इधर-उधर यो ही घूमता-फिरता रहता हो।

घुमक†—स्त्री० =घुमड।

घुमक्कड़—वि० [हिं० घूमना+अक्कड (प्रत्य०)] बहुत अधिक घूमनेवाला (व्यक्ति)।

घुमची†—स्त्री० = घुँघची।

घुमटा—पु० [हिं० घूमना+टा (प्रत्य०)] सिर मे चक्कर आने का एक

रोग। इसमे प्राय मनुष्य का सिर चकराने लगता है, उसकी आँखो के सामने अँधेरा छा जाता है और वह गिर पडता है।

क्रि० प्र०—आना।

घुमड़—स्त्री० [हिं० घुमडना] बरसनेवाले बादलो का घेर-घार।

घुमडना—अ० [हिं० घूम+अटना] १ बादलो का उमड-उमड तथा घूम-घूमकर इकट्ठा होना। गहरे बादल छाना। २ इकट्ठा होना। छा जाना।

घुमडी—स्त्री० [हि० घुमडना=घूमना] १ किसी केन्द्र पर स्थिर रहकर चारो ओर फिरने की क्रिया। २ किसी केन्द्र के चारो ओर घूमते रहने की क्रिया। ३ उक्त प्रकार से घूमते रहने के कारण सिर मे आनेवाला चक्कर। ४ एक प्रकार का रोग जिसमे सिर मे चक्कर आते है। ५ पानी का भँवर। ६ चौपायो का घुमनी नामक रोग।

घुमना†—वि० [हिं० घुमना] [स्त्री० घुमनी] १ बराबर घूमता रहनेवाला। २ घुमक्कड।

अ०=घूमना।

घुमनी—स्त्री० [हिं० घूमना] १ पशुओ का एक रोग जिसमे उनके पेट मे पीडा होती है और वे चक्कर खाकर गिर जाते है।

घुमरना—अ० [हिं० घूमना] १ चक्कर खाना। घूमना। २ भ्रम मे पडना।

अ० दे० 'घुमडना'।

घुमराना—अ० =घुमडना।

घुमरी†—स्त्री० =घुमडी।

घुमाँ—पु० [हिं० घूमना] जमीन की एक नाप जो आठ बीघो के बराबर होती है। (पजाब)

घुमाऊ—वि० [हिं० घुमाना] घुमानेवाला।

*पु० दे० 'घुमाव' ४।

घुमाना—स० [हिं० घूमना का स०] १ किसी को घूमने मे प्रवृत्त करना। जैसे—आँखे घुमाना। २ चक्कर या फेरा देना। जैसे—घडी की सूई घुमाना। ३ कुछ दिखाने या सैर कराने के लिए इधर-उधर ले जाना। जैसे—किसी को शहर घुमाना। ४ एक ओर से हटाकर दूसरी ओर ध्यान प्रवृत्त करना या लगाना। ५ एक दिशा से दूसरी दिशा मे ले जाना। ६ वापस करना। लौटाना।

†अ० [हिं० घूम=नीद] शयन करना। सोना।

घुमारा—वि० [हिं० घूमना] १ घूमनेवाला। २ घूमता हुआ।

वि० [हिं० घूम= नीद] १ जिसे नीद आ रही हो। उनीदा। २ मतवाला। मत्त।

घुमाव—पु० [हिं० घुमाना] १ घूमने या घुमाने की क्रिया या भाव। २ वह स्थान या स्थिति जहाँ से कुछ घूमकर किसी ओर जाता हो। जैसे-रास्ते या सडक का घुमाव। ३ किसी बात, वाक्य आदि मे होनेवाला पेचीलापन या जटिलता। चक्कर। फेर।

पद—**घुमाव-फिराव**। (देखे)

४ उतनी भूमि जितनी दिन भर मे एक हल से जोती-जाती हो। ५ दे० 'घुमाँ'।

घुमावदार—वि० [हिं० घुमाव+दार] १ जिसमे कुछ घुमाव हो। २ चक्करदार।

घुमाव-फिराव—पु० [हिं० घूमना-फिरना] १ घूमने या फिरने की क्रिया या भाव। २ बात-चीत या व्यवहार मे होनेवाला ऐसा पेचीलापन या जटिलता जिसमे कुछ कपट या छल भी हो। जैसे-हमे घुमाव-फिराव की बाते अच्छी नही लगती।

घुम्मरना—अ० १ =घुमडना। २ =घूमना।

घुरकना†—अ० =घुडकना।

घुरका—पु० [हिं० घुरघुराना] चौपायो का एक रोग।

घुरकी†—स्त्री० =घुडकी।

घुरघुर—पु० [अनु०] १ बिल्ली, सूअर आदि के गले से तथा साँस लेते समय कफ अटकने के कारण मनुष्य के गले से निकलनेवाला शब्द। २ किसी के कान के पास मुँह ले जाकर बहुत ही धीमे स्वर मे कही जानेवाली बात।

घुरघुरा†—प० [अनु०] गले मे होनेवाला कठमाला नामक रोग।

घुरघुराना—अ० [अनु० घुर घुर] गले से घुर-घुर शब्द निकलना।

स० गले से घुर-घुर शब्द उत्पन्न करना।

घुरघुराहट—स्त्री० [हिं० घुरघुराना] घुर-घुर शब्द निकालने की क्रिया या भाव।

घुरचा†—पु० [देश०] एक प्रकार की चरखी जिससे कपास ओटी जाती है।

घुरण—पु० [स०√घुर (शब्द)+ल्युट्-अन] घुर-घुर शब्द करने की क्रिया या भाव।

घुरना*—अ० [अनु०] घुर-घुर शब्द होना।

स० १ घुर-घुर शब्द करना। उदा०—घुरत परेवा गीवँ उचावा।—जायसी। २ बजना या बोलना। जैसे-—डका या मृदग घुरना। उदा० घुरै नीसाण सोइ घनघोर।—प्रिथीराज।

†अ० =घुलना। उदा०—तब पिय उर घुरि सोयो चहै।—नददास।

अ० [स० घूर्णन] १ घूमना। २ (आँख) झपकना। ३ (झडे आदि का) फहरना। उदा०—घर घर घुरत निसान कहि न जात कछु आज की।—नददास।

घुरबिनिया—स्त्री० [हिं० घूरा+बीनना] कूडे-करकट के ढेर पर से अनाज के दाने आदि चुन या बीनकर एकत्र करने की क्रिया या भाव।

पु० वह जो उक्त प्रकार से दाने आदि एकत्र करके उन्ही से अपना निर्वाह करता हो (अर्थात् परम दरिद्र)।

घुरमना* अ० =घूमना। उदा०—घुरमि घुरमि घायल महि परही।—तुलसी।

घुरला*—स्त्री० [हिं० घुरना= घूमना] लोगो के आने-जाने से बना हुआ मार्ग। कच्चा छोटा रास्ता। पगडडी। उदा०—नेह नेह की बहल मे घुरला जानत नाह।—रसनिधि।

घुरहरी†—स्त्री० दे० 'खुरहरी'।

घुराना—अ० [हिं० घुरना] चारो ओर से आकर छा या भर जाना।

स० शब्द उत्पन्न करना। बजाना।

†स० १ =घुलाना। २ =घुमाना। ३ =फहराना (झडा आदि)।

घुरमना†—अ० =१ घुमडना। २ =घूमना।

घुरहरी†—स्त्री० [हिं० खुर+हर (प्रत्य०)] १ जगल मे पशुओ के

चलने से बना हुआ तग रास्ते का-सा निशान या पगडडी। २ बहुत ही छोटा और पतला या सँकरा रास्ता। पगडडी।

घुर्मित—वि० [स० घूर्णित] घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ।

घुर्राना†—अ० = गुर्राना।

घुर्रूवा—पु० [देश०] जानवरो का एक सक्रामक रोग।

घुलच—पु० [स०√घुर् + क्विप्, घुर्√अञ्च् (गति) + अण्, उप० स०] गवेधु नामक कदन्न।

घुलना—अ० [स० घूर्धन, प्रा० घुलन] १ किसी कडी या ठोस चीज का तरल पदार्थ मे गलकर अच्छी तरह मिल जाना। जल के सयोग से सयोजक अणुओ का अलग-अलग होना। जैसे—दूध या पानी मे चीनी घुलना। २ आच आदि की सहायता मे गलकर, नरम होकर या मुलायम पडकर तरल पदार्थ मे मिल जाना। जैसे—दाल जरा और घुलने दो। ३ किसी मे या किसी के साथ बहुत अच्छी तरह या खूब मिल जाना। जैसे—किसी के साथ आखे घुलना। उदा०—नव पिय उर घुरि सोयो यहँ।—नददास।

मुहा०—(किसी से) घुल घुलकर बातें करना प्रेमपूर्वक खूब मिलकर बाते करना। बहुत घनिष्ठता से बाते करना। **घुल-मिलकर** -बहुत अच्छी तरह मिलकर। बहुत मेल-जोल से।

४. पकने आदि के कारण ठोस न रहकर मुलायम पड जाना। जैसे—ये आम खूब घुल गये है। ५ बुढापे, रोग, शोक आदि के कारण शारीरिक दृष्टि से बहुत ही क्षीण या दुर्बल हो जाना।

मुहा०—घुल-घुलकर मरना =बहुत दिनो तक मानसिक या शारीरिक कष्ट भोगते हुए बहुत क्षीण तथा दुर्बल होकर मरना।

६ जुए मे दाँव का किसी कारण व्यर्थ हो जाना। जैसे—कौडी पर कौडी टिकने से दाँव घुल गया। ७ समय का व्यर्थ हाथ से निकलना या बीतना। जैसे—कचहरी मे जरा-जरा सी बातो मे बरसो घुल जाते है।

घुलवाना—स० [हिं० घुलाना का प्रे०] १ घोलने का काम किसी दूसरे से कराना। २ आँख मे काजल या सुरमा लगवाना।

घुलाना—स० [हिं० घुलना] १ किसी तरल पदार्थ मे कोई कडी या ठोस चीज छोडकर उसे इस प्रकार हिलाना, मिलाना या उबालना कि वह उसमे घुल जाय। २ मुँह मे रखी हुई चीज का रस चूसते हुए उसे खा जाना। ३ गरमी या ताप पहुँचाकर नरम करना। ४ शरीर क्षीण या दुर्बल करना। ५ यत्रणा देना। ६ अपनी ओर प्रवृत्त करने का प्रयत्न करना। ७ (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ८ (काल या समय) बिताना। गुजारना।

घुलावट—स्त्री० [हिं० घुलना] १ घुलने या घुलाने की क्रिया या भाव। २ पारस्परिक स्नेहपूर्ण व्यवहार की घनिष्ठता।

घुवा—पु० = घूआ।

घुसड़ना†—अ० = घुसना।

घुसना—अ० [स० गुध, प० घुसणा, गु० घुसवूँ, ने० घुस्नु, मरा० घुसणे] १ बलपूर्वक और सामने के निषेधक अथवा बाधक तत्त्वो को इधर-उधर हटाते हुए अन्दर जाना, प्रवेश करना या आगे बढना। जैसे—(क) दरवाजा तोडकर (अथवा और किसी प्रकार) किसी के मकान के अन्दर घुसना। (ख) तमाशा देखने के लिए धक्कम-धक्का करते हुए भीड मे घुसना। (ग) पेट मे तलवार या तीर घुसना।

क्रि० प्र०—आना।—जाना—पडना। —बैठना।

पद—घुस-पैठ। (देखे)

मुहा०—(किसी जगह) घुसकर बैठना =(क) आस-पास के लोगो को दबाते या हटाते हुए कही जाकर बैठना। (ख) लोगो की दृष्टि से बचने के लिए आड मे छिपकर बैठना। जैसे—सिपाहियो का नाम सुनते ही वह घर मे घुसकर बैठ गया।

२ अनावश्यक अथवा अनुचित रूप से परन्तु बलपूर्वक या हठात् किसी कार्य या चर्चा मे सम्मिलित होना। जबरदस्ती किसी के बीच मे पडना। जैसे—दूसरो की बातो मे जबरदस्ती घुसने की आदत अच्छी नही। ३ किसी बात या विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए मनोनिवेशपूर्वक उसके अगो-उपागो आदि का अध्ययन या विचार करके उसकी तह तक पहुँचना। जैसे—किसी विषय मे अच्छी तरह घुसे बिना कभी उसका पूरा ज्ञान नही होता। ४ किसी चीज या बात का इस प्रकार पूरी तरह से दबना या दूर होना कि सहसा वह दिखाई न दे। जैसे—मुकदमे की पहली पेशी मे ही उनकी सारी अकड और शेखी घुस गई।

घुस-पैठ—स्त्री० [हिं० घुसना+पैठना] १ घुसने और पैठने की क्रिया या भाव। २ गति। पहुँच। प्रवेश। ३ प्रयत्न करके या बलपूर्वक कही पहुँच कर अपने लिए स्थान बनाने की क्रिया या भाव।

घुसवाना—स० [हिं० घुसाना का प्रे०] घुसने या घुसाने का काम किसी से कराना।

घुसाना—स० [हिं० घुसना] १ हिं० 'घुसना' का स० रूप। किसी को घुसने मे प्रवृत्त करना। २ कोई चीज गडाना, चुभाना या धँसाना। ३ किसी अवकाश या स्थान मे किसी वस्तु या व्यक्ति को ढकेलना, पहुँचाना या प्रविष्ट करना।

घुसेड़ना—स० = घुसाना।

घूँगची†—स्त्री० = घुँघची।

घूँघट—पु० [स० गुठ] १ स्त्रियो की चुदरी, धोती, साडी आदि का वह भाग जिसे वे सिर पर से कुछ नीचे खीचकर अपना मुँह ढँकती है।

क्रि० प्र०—उठाना।—उलटना।—करना। —काढना।—खोलना। —डालना। —निकालना।—मारना।

२ वह दीवार जो बाहरी दरवाजे के सामने इसलिए बनी रहती है जिसमे चौक वा आँगन बाहर से दिखाई न पडे। गुलामगर्दिश। ओट। ३ सैनिक-क्षेत्र मे युद्ध के समय सेना का दबकर किसी ओर मुडना।

मुहा०—घूंघट खाना = (क) सेना का युद्धस्थल से पीछे की ओर अथवा दाहिने-बाएँ मुडना। (ख) किसी चीज का सामने से हटकर इधर-उधर मुडना या लौटना।

घूँघर—पु० [हिं० घुमरना] बालो मे पडा हुआ मरोड। छल्ला।

घूँघरा—पु० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

घूँघरि†—स्त्री० [हिं० घुमडना]? बादलो का समूह। उदा०—घूँघरि दिसनि देखि मय बाढी।—नन्ददास। २ दे० 'घूँघर'।

घूँघरी†—स्त्री० [हिं० घूँघरू] छोटा घुँघरू। नूपुर।

घूँघरू†—पु० = घुँघरू।

घूँचा—पु० = घूँसा।

घूँट—पु० [अनु० घुट घुट=गले के नीचे पानी आदि उतरने का शब्द] १ तरल

पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुँह मे भर कर गले के नीचे उतार दी जाती है।

मुहा०—घूँट लेना=घूँट-घूँट करके या थोडा-थोडा करके पीना।

पु० [स० घूँट] एक प्रकार का पहाडी टट्टू। गुठा। गूँठ।

२ एक प्रकार का झाड या छोटा पेड।

घूंटना—स० [हि० घूंट] पानी या और कोई तरल पदार्थ घूँट-घूँट या थोडा थोडा करके गले के नीचे उतारना।

घूंटा†—पु० [स० गुफ] पैर के बीच का जोड। घुटना।

घूंटी—स्त्री० दे० 'घुट्टी'।

घूँबना—अ० =घूमना। उदा०—महि घूँबिअ पाइअ नहि बारू।—जायसी।

घूँस—स्त्री० = घूस (रिश्वत)।

पु० = घूस (जतु)।

घूंसा—पु० [हि० घिस्सा] १ बँधी हुई मुट्ठी का वह रूप जो किसी को मारने के लिए बनाकर उठाया या ताना जाता है। मुक्का। २ उक्त प्रकार से किया जानेवाला प्रहार।

घूंसेबाज—पु० [हि० घूँसा+फा० बाज] वह खिलाडी जो घूँसेबाजी के खेल मे भाग लेता हो।

घूंसेबाजी—स्त्री० [हि० घूँसा+फा० बाजी] १ आपस मे घूँसो या मुक्को के प्रहार से होनेवाली लडाई। २ एक खेल जिसमे दो खिलाडी एक दूसरे को घूँसे मार कर परास्त करते है।

घूआ—पु० [देश०] १ कॉस, मूंज वा सरकडे आदि का रूई की तरह का फूल जो लबे सीको मे लगता है। २ कीचड, मिट्टी आदि मे होनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा। रेवाँ। ३ दरवाजे के पास का वह छेद जिसमे किवाडे की चूल धँसी रहती है।

घूक—पु० [स० घू √कै (शब्द)+क] [स्त्री० घूकी] उल्लू पक्षी। घुग्घू।

घूक-नादिनी—स्त्री० [घूक √ नद् (शब्द) + णिनि-ङीप्, उप० स०] गगा।

घूका—पु० [हि० घूआ] १ बॉस। बेत। २ मूँज आदि की बनी हुई सँकरे मुँहवाली डलिया।

घूगस†—पु० [देश०] ऊँचा बुर्ज। गरगज।

घूघ—स्त्री० [हि० घोघी] धातु की वह टोपी जो लडाई मे सिर को चोट से बचाने के लिए पहनी जाती है।

पु० [स० घूक] उल्लू।

घूघरा—पु० =घुँघुरू।

घूघस—पु० [?] किले के फाटक से अन्दर जाने के लिए बना हुआ चक्करदार रास्ता। (राज०)

घूघी†—स्त्री० [देश०] १ थैली। २ जेब। खीसा। ३ पडुक या फाख्ता नाम का जल-पक्षी।

घूघू—पु० =घुग्घू।

घूटना†—स० १ =घूँटना। २ =घोटना।

घूठन†—पु० =घुटना।

घूड़ा†—पु० =घूर।

घूनस†—स्त्री० [?] पाग (ब्याह की पगडी) मे लटकनेवाला झब्बा या झालर।

घूना†—वि० =घुन्ना।

घूम—स्त्री० [हि० घूमना] १ घूमने की क्रिया, भाव या स्थिति। घुमाव। २ चक्कर। घेरा। ३ मोड।

स्त्री० [बँ० मिलाओ हि० ऊँघ] १ निद्रा। नीद। (पूरब) उदा०—न इस मोह की घूम से विरो।—मैथिलीशरण। २ नशा।

घूम-घुमारा†—वि० [हि० घूमना] १ घूमता या चक्कर खाता हुआ। २ अलसता, मद आदि से भरा हुआ। उदा०—कृष्ण रसामृत-पान अलस कछु घूम-घुमारे।—नददास।

घूमना—अ० [स० घूर्णन, प्रा० घुम्मइ] १ किसी केंद्र पर स्थित वस्तु का चारो ओर चक्कर लगाना। जैसे—चक्की के पाट, घडी की सूई अथवा रथ के पहियो का घूमना। २ किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु को केंद्र बनाकर उसके चारो ओर चक्कर लगाना। जैसे—चद्रमा पृथ्वी के चारो ओर और पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है। ३ किसी वस्तु का अपने अक्ष या धुरी पर चारो ओर फिरना। जैसे—लट्टू का घूमना। ४ किसी ओर चलते-चलते दाहिने या बाएँ बढना। जैसे—यह रास्ता आगे चलकर दाहिनी ओर घूम गया है। ५ चलते-चलते पीछे की ओर फिरना। लौटना। जैसे—मैने घूमकर देखा तो वह भी मेरे पीछे-पीछे आ रहा था।

मुहा०—(किसी को) घूम घुमाना=टाल-मटोल या हीला-हवाला करते हुए किसी को किसी काम के लिए बार-बार दौडाना।

६ मन बहलाने या सैर करने के लिए इधर-उधर जाना। जैसे—रोज सबेरे वह घूमने निकलता है। ७ अनेक देशो या स्थानो मे सैर-सपाटे के लिए अथवा किसी विशिष्ट उद्देश्य से जाना। जैसे—(क) वे अमेरिका या यूरोप घूम आये है। (ख) गाँव-गाँव घूमकर गाँधी ने सोये भारतीयो को जगाया था। ८ अचानक एक ओर से किसी दूसरी ओर प्रवृत्त होना।

मुहा०—(किसी की ओर) घूम पड़ना=आवेश या क्रोध मे आकर किसी दूसरे से बाते करने लगना। जैसे—उनसे बाते करते-करते वे अचानक मुझ पर घूम पडे।

† ९ किसी चीज का घेर।

पद—घूम-घुमारा। (देखे)

अ० [बँ० घूम =नीद] १ निद्रा मे होना। सोना। २ उन्मत्त या मतवाला होना। ३ तन्मय या लीन होना। उदा०—बिहँसि बुलाय विलोकि उत्त प्रौढ तिया रस घूमि।—बिहारी।

घूमनी—स्त्री० =घुमरी (चक्कर)।

घूमा—पु० [देश०] एक प्रकार का साग जिसमे सफेद फूल लगते है।

घूर—पु० [स० कूट] १ कूडे-करकट का ढेर। २ वह स्थान जहाँ पर उक्त ढेर लगा हो। ३ पोले गहने को भारी करने के लिए उसके अन्दर भरा हुआ बालू, सुहागा आदि। (सुनार)

घूरघार—स्त्री०=घूरा-घारी।

घूरना—अ० [स० घूर्णन] इस प्रकार आँखे निकालकर क्रोधपूर्वक किसी की ओर देखना जिससे वह कोई कार्य करने या न करने को विवश होता हो। जैसे—पिता जी के घूरते ही लडके घर चले आये।

घूरा-घारी—स्त्री० [हि० घूरना+अनु०] १ घूरने की क्रिया या भाव। २ एक दूसरे की ओर देखने अथवा नजर मिलाने का कार्य।

घूर्ण—पु० [स०√ घूर्ण् (चक्कर काटना)+घञ्] १ इधर-उधर घूमना। २ किसी वस्तु के चारो ओर घूमना।

वि० घूमता हुआ।

घूर्णन—पु० [स० √घूर्ण् + ल्युट्—अन] घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव।

घूर्णिका—स्त्री० [स० √घर्ण् + ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] एक प्रकार का वैज्ञानिक यत्र जिसकी सहायता से घूमने या चक्कर लगानेवाले पदार्थो या पिडो के बल, वेग आदि मापे जाते हे। (जाइरोस्टेट)

घूर्णित—वि० [स० √ घूर्ण्+ क्त] घूमा, घूमता या घुमाया हुआ।

घूर्णी (णिन्) —वि० [स० घूर्ण + इनि] घूमनेवाला।

घूर्ण्य—वि० [स० √घूर्ण् + ण्यत्] १ जो घूम सकता या घुमाया जा सकता हो। २ घूमता हुआ।

घूस—स्त्री० [स० गुहाशय = चूहा] चूहे के वर्ग का एक बडा जतु जो प्राय पृथ्वी के अन्दर बिल खोदकर रहता है। घुँइस।

पु० [स० गुह्याशय या हिं० घुसना] १ किसी अधिकारी को कोई अनुचित, अवैध या कर्त्तव्य-विरुद्ध कार्य करने के लिए दिया जानेवाला धन। २ अपना काम जल्दी कराने के लिए किसी अधिकारी को दिया जानेवाला धन जो अवैध या अविधिक होता हे। रिश्वत।

घूस-खोर—वि० [हि० घूस + फा० खोर] [भाव० घूसखोरी] घूस या रिश्वत लेनेवाला रिश्वती।

घृणा—स्त्री० [स० √घृ (सीचना) + नक्—टाप्] [वि० घृणित] १. अनुचित या मर्यादा के विरुद्ध कार्य करनेवाले व्यक्ति अथवा उसके किये हुए कार्य या कृति के प्रति होनेवाली घोर स्वाभाविक अरुचि। जैसे—अश्लील साहित्य से मुझे घृणा है। २ दया।

घृणित—वि० [स० √घृणा +इतच्] देखने-सुनने से जिसके प्रति मन मे घृणा होती या हो सकती हो। घृणा के योग्य। घृण्य।

घृणी (णिन्)—वि० [स० घृणा +इनि] १ घृणा करनेवाला। २ दयालु। ३ दीप्त।

घृण्य—वि० [स० घृणा+यत्] = घृणित।

घृत—पु० [स० √घृ + क्त] १ मक्खन को तपाकर तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध खाद्य द्रव्य। घी। २ पानी।

वि० तर किया या सीचा हुआ।

घृत-कुमारी—स्त्री० [तृ० त०] घी-कुँवार। ग्वार-पाठा।

घृत-धारा—स्त्री० [ष० त०] १ घी की धारा। २ [घृत √धृ (धारण करना) +णिच् + अण्, उप० स०, टाप्] पुराणानुसार कुशद्वीप की एक नदी।

घृत-पूर—पु० [घृत √पूर् (पूर्ण करना) + अप्, उप० स०] घेवर नाम की मिठाई।

घृत-प्रमेह—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र घी के समान चिकना और गाढा होता है।

घृताची—स्त्री० [स० घृत √अच् (गति) +क्विप्, ङीप्] १ स्वर्ग की एक अप्सरा। २ यज्ञ मे आहुति देने का स्रुवा।

घृतान्न —पु० [घृत-अन्न, मध्य० स०] १ घी मे पकाया या तला हुआ अन्न या खाद्य पदार्थ। २ [ब० स०] अग्नि।

घृतार्चि (स्)—पु० [घृत-अर्चिस्, ब० स०] अग्नि।

घृती (तिन्)—वि० [स० घृत+इनि] जिसमे घी पडा हो।

घृतोद—पु० [घृत-उदक, ब० स०, उद आदेश] घी का समुद्र। (पुराण)

घृष्ट—वि० [स० √घृष् (घिसना) +क्त] घिसा या रगड़ा हुआ।

घृष्टि—स्त्री० [स० √घृष् + क्तिन्] १ घिसने या रगडने की क्रिया या भाव। २ सघर्ष। ३ स्पर्धा।

पु० [√घृष्+ क्तिच्] [स्त्री० धृष्टी] सूअर।

घेघ—पु० [देश०] १ एक प्रकार का भोजन जो भुने हुए चने को चावलो मे मिलाकर पकाने से बनता हे।

†पु०=घेघा (रोग)।

घेंघा†—पु०=घेघा।

घेंट†—पु० [हिं० घाँटी] गला। गरदन।

घेंटा—पु० [अनु० घे-घे] [स्त्री० घेटी] सूअर का बच्चा।

घेंटी†—स्त्री० [?] चने की फली जिसके अन्दर बीज रूप से चना होता है।

घेंटुला —पु० [हिं घेटा] [स्त्री० घेटुली या घेटुलिया] सूअर का छोटा बच्चा।

घेंडी—स्त्री० [हि० घी +हडी] मिट्टी की वह हाँडी जिसमे घी रखा जाता है।

घेघा—पु० [देश०] १ गले की नली जिसमे से होकर खाद्य पदार्थ पेट मे पहुँचता है। २ गला। ३ एक प्रकार का रोग जिसमे गले के चारो ओर बहुत अधिक सूजन हो जाती है और मास बढ जाता है।

घेतला—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० घेतली] एक प्रकार का भद्दा जूता जिसका पजा चपटा और मुडा हुआ होता है। (महाराष्ट्र)

घेपना†—स० [देश०] १ हाथ या पैर से रौदकर मिलाना। एक मे लथ-पथ करना। २ खुरचना। ३ स्त्री के साथ प्रसग या सभोग करना। (बाजारू)

घेर—पु० [हिं० घेरना] १ घेरने की क्रिया या भाव। जैसे—घेर-घार। २ चारो ओर से घेरनेवाली चीज का फैलाव या विस्तार। घेरा। मडल। ३ परिधि। घेरा।

घेरघार—स्त्री० [हिं० घेरना] १ चारो ओर से घेरने की क्रिया या भाव। जैसे—बादलो की घेर-घार। २ अपना काम निकालने के लिए किसी को प्राय घेरते रहना और उससे अनुनय-विनय करते रहना। ३ घेरा। फैलाव।

घेरदार—वि० [हिं० घेर+फा० दार] जिसका घेरा या फैलाव अधिक हो। जैसे—घेरदार पायजामा।

घेरना—स० [हिं० घिर्, ब० घेरा, उ० घेरिबा, गु० घेरवूं, मरा० घेरणे] १ किसी वस्तु के चारो ओर पक्ति के रूप मे कोई चीज या कुछ चीजे खडी करना। जैसे—दीवार आदि बनाकर अथवा पेड-पौधे उगाकर कोई स्थान घेरना। २ किसी वस्तु, विंदु आदि के चारो ओर घेरा या वृत्त बनाना। जैसे—लाल स्याही से घेरे हुए शब्दो की वर्तनी अशुद्ध है। ३. रेखाओ आदि की सहायता से किसी क्षेत्र की सीमा निर्धारित करना। ४ आरक्षी (पुलिस) अथवा सेना का इस प्रकार किसी मकान या स्थान के चारो ओर खडे हो जाना कि उस मकान या स्थान से कोई बाहर न निकलने या भागने पावे। छेकना। ५ चारो ओर बिखरी हुई वस्तुओ अथवा चरते हुए पशुओ को एक स्थान पर इकट्ठा करना। ६ किसी वस्तु का चारो ओर से आकर किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार छा जाना कि वह ढक जाय। जैसे—कई दिनो से बादलो ने आकाश घेर रखा है। ७ चारो ओर से बधन या रुकावट मे लाना। जैसे—कष्टो या रोगो

का आकर घेरना। ८ कही बैठ या रुककर कोई स्थान इस प्रकार भरना कि औरो के लिए अवकाश या जगह न रह जाय। जैसे—आगे की सारी कुरसियाँ तो लडको ने घेर रखी हैं। ९ किसी को चारो ओर से बहुत दबाव डालकर, कोई काम करने के लिए विवश करना। जैसे—वे मुझे भी घेरकर वहाँ ले गये। १० बहुत अनुनय, आग्रह या खुशामद करना।

घेरनी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का पक्षी।

घेरा—पु० [हिं० घेरना] १ किसी वस्तु, स्थान आदि को चारो ओर से घेरने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु या वस्तुओ का वह मडलाकार रूप या समूह जो किसी दूसरी वस्तु को चारो ओर से घेरे हुए हो। जैसे—दीवार या बाँसो का घेरा। ३ परिधि तथा परिधि का मान। जैसे—गोपियो के घेरे मे कृष्ण का नृत्य। ४ दीवार, बाढ आदि से घिरा हुआ स्थान। अहाता। (एन्क्लोजर) ५ आरक्षी (पुलिस), सेना आदि के इस प्रकार किसी स्थान को घेरकर खडे होने की स्थिति जिसमे उस स्थान के निवासी उस स्थान से बाहर न निकल सकें अथवा बाहर से उनके पास कोई सहायता न पहुँच सके। जैसे—किले के चारो ओर मराठा सैनिको का घेरा पडा था। ६ पहनने के कपडो मे, शरीर की चौडाई के बल का कुल विस्तार। जैसे—कमीज या कुरते का घेरा। ७ किसी घन पदार्थ की चौडाई और मोटाई का कुल विस्तार। जैसे—इस पेड का घेरा चार हाथ है।

घेराई—स्त्री०=घिराई।

घेरा-बंदी—स्त्री०[हिं० घेरा+फा० बदी] १ किसी के चारो ओर घेरा डालने की क्रिया या भाव। २ आधुनिक राजनीति मे, वह स्थिति जिसमे कुछ राज्य मिलकर किसी दूसरे देश अथवा राज्य के चारो ओर इस उद्देश्य से घेरा बनाते हैं कि वह देश उभरने न पावे अथवा अपना प्रभाव और शक्ति बढा न सके। (एन्सर्किलमेंट)

घेराव—पु०=घिराव।

घेलौना†—पु०=घाल (घलुआ)।

घेवर—पु०[स० घृतपूर, घृतवर, प्रा० घेऊर, घेवर, गु० ने० घेवर, मरा० घीवर] मैदे की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई जिसमे घी बहुत अधिक पडता या लगता है।

घेवरना—स०[?] पोतना। लगाना। उदा०—पुरुखन्ह खरग सभारे चदन घेवरे देह।—जायसी।

घैंटा—पु०=घेटुला।

घैसाहर—स्त्री०[?] फौज। सेना। (डिं०)

घैया—स्त्री० [हि० घी या स० घात] १ गौ के थन से निकली हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पीई जाय। २ ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। ३ वृक्ष के तनो आदि मे रस या स्राव निकालने के लिए उस पर लगाया हुआ क्षत। छेव।

†स्त्री० =घा (ओर)।

घैर—पु०[देश०] १ निन्दामय चर्चा। बदनामी। उदा०—घैर ते डरपि सखी घर लाई।—नददास। २ चुगली। शिकायत। ३ चर्चा।

घैरनी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का कीडा जो दीवारो पर मिट्टी से घर बनाता है।

घैरा, घैरु*—पु०=घैर।

२—२३

घैला†—पु० [स० घट] [स्त्री० अल्पा० घैली] मिट्टी का घडा।

घैहल†—वि०=घायल।

घैहा†—वि० [हिं० घाव] घायल।

घोघ—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

घोंघा—पु० [स० कम्बुक] [स्त्री० घोघी] १ शख की तरह का एक कीडा जो प्राय नदियो, तालाबो आदि मे पाया जाता है। उदा०—भरे समुन्दर घोघा हाथ।—कहा०। २ अनाजो मे छिलके का वह कोश जिसके अन्दर दाना रहता है। ३ निरर्थक या व्यर्थ की वस्तु या व्यक्ति। वि० बेवकूफ। मूर्ख।

पद—घोघा बसत=परम मूर्ख।

घोघिल—पु०[?] लगलग की जाति का एक पक्षी।

घोघी—स्त्री०=घुग्घी।

घोचा—पु०[हिं० गुच्छा] [स्त्री०घोची] १. फलो, फूलो आदि का गुच्छा। घौद। स्तबक। २ ऐसा बैल जिसके सीग मुडकर कानो तक जा पहुँचे हो।

घोची—स्त्री०[हिं० घोंचा] वह गाय जिसके सीग कानो की ओर मुडे हो।

घोचुआ†—पु०=घोसला।

घोचू†—पु०[?] मूर्ख। बेवकूफ।

घोट—पु०[देश०] एक प्रकार का बहुत बडा जगली वृक्ष जिसकी लकडी खेती के औजार बनाने के काम मे आती है।

पु० [हिं० घोटना] १ घोटने की क्रिया या भाव। २ दे० 'घूंट'।

घोटना—स० १ =घूंटना। २ =घोटना

घोटू—वि० [हिं० घोटना+ऊ (प्रत्य०)] घोटने अर्थात् चारो ओर से कसकर दबानेवाला। जैसे—गलाघोटू कानून।

घोपना—स०[अनु० घप] १ गडाना। चुभाना। धँसाना। २ भद्दी और मोटी सिलाई करना। ३ दे० 'घेपना'।

घोसला—पु०[स० कुलाय] १ तिनको, पत्तो आदि की वह कलापूर्ण रचना जिसमे पक्षी रहते तथा अडे देते है। जैसे—बया का घोसला। २ वह आला या ताखा जिसमे पक्षी रहते तथा बच्चे देते हो। जैसे—कबूतर का घोसला। ३ किसी व्यक्ति के रहने का तुच्छ तथा छोटा स्थान।

घोसुआ†—पु०=घोसला।

घोखना—स०[स० घुष] याद रखने के लिए बार-बार पढना या रटना। स्मरण रखने के लिए बार-बार उच्चारण करना। जैसे—पाठ घोखना।

घोखवाना—स०[हिं० घोखना का प्रे०] किसी को घोखने या रटने मे प्रवृत्त करना।

घोगर—पु० [देश०] खरपत नामक पेड।

घोघ†—पु० [देश०] वह जाल, जिसमे बटेर फँसाये जाते है।

घोघा—पु० [देश०] चने आदि की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा।

घोघी†—स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

घोचिल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिडिया।

घोट—पु० [स० घोटक] १ घोडा। २ ऐसा पुरुष, जिसमे घोडे की-सी शक्ति हो। उदा०—काय दहेसइ पोयणी, काय कुँवारा घोट।—ढोला मारू।

पु०[हिं० घोटना] घोटने की क्रिया या भाव।

घोटक—पु० [स०√घुट्(लौटना)+ण्वुल्–अक] घोडा। अश्व।

घोटकारि—पु० [घोटक-अरि ष०त०] भैसा।

घोटना—स०[स० घृष्ट √घृष्, घट्ट्, उ० घोटिबा, प० घोटणा, सि० घोटणू, मरा० घोटणे] १ किसी कडी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर बार-बार इस प्रकार मलना या रगडना कि वह चमकीली या चिकनी हो जाय। जैसे—कपडा या दीवार घोटना। २ पत्थर, लकडी, लोहे आदि के किसी उपकरण से किसी वस्तु को इस प्रकार बार-बार दबाना या रगडना कि वह चूर-चूर या बहुत महीन हो जाय। जैसे—भाँग घोटना, मोती घोटना। ३ किसी का गला इतने जोर से दबाना कि वह मर जाय या उसका दम घुटने अर्थात् रुकने लगे। ४ कुछ सीखने मे किसी बात का अभ्यास या मश्क करना। जैसे—पटिया पर अक्षर घोटना। ५ मुँह जबानी याद करना। जैसे—पाठ घोटना। ६ उस्तरे, आदि से बाल साफ करना। जैसे—दाढी घोटना।

पु०[स्त्री० घोटनी] १ वह वस्तु जिससे कोई चीज घोटी जाय। घोटने का उपकरण। २ लकडी का वह कुदा जो जमीन मे कुछ गडा रहता है और जिस पर रखकर रँगे कपडे घोटे जाते है। (रँगरेज)

घोटवाना—स०[हि० घोटना का प्रे०] रगडवाना। घोटकर चिकना कराना। घोटने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ घोटने मे प्रवृत्त करना। (दे० 'घोटना')

घोटा—पु०[हि० घोटना] १ घोटने, पीसने अथवा रगडने की क्रिया या भाव। २ पत्थर, लकडी, लोहे, शीशे आदि का वह उपकरण जिससे कोई चीज घोटने का काम किया जाय। (बर्निशर) ३ रँगरेजो का एक उपकरण जिसे वह रगे हुए कपडो पर रगडते है जिससे कपडे चमकीले हो जाते हैं। ४ घुटा हुआ चमकीला कपडा। ५ पाठ आदि मुँह जबानी याद करने के लिए उसे बार-बार पढने तथा कहने का काम। जैसे—पाठशाला मे लडके घोटा लगाते है। ६ बाँस आदि का वह चोगा जिससे घोडो, बैलो आदि को ओषधि पिलाई जाती है। ७ नगजडियो का एक औजार जिससे वे डाँक को चमकीला करते है। ८ छूरे से बाल बनाने या बनवाने की क्रिया या भाव। हजामत।

क्रि० प्र०—फिरवाना।

घोटाई—स्त्री० [हि० घोटना+आई (प्रत्य०)] १ घोटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (सभी अर्थों मे) २ चित्रकला मे, पूरी तरह से चित्र अकित हो जाने पर उसे शीशे पर उलटकर उसकी पीठ पर घोटे से रगडना जिससे चित्र मे चमक आ जाय।

घोटा-घोबा—पु०[देश०] रेवद चीनी की जाति का एक पेड जिसमे से एक प्रकार की राल निकलती है जो दवा, रँगाई आदि के काम आती है।

घोटाला—पु० [मरा०] १ किसी काम या बात मे होनेवाली बहुत बडी अव्यवस्था या गडबडी। २ किसी कार्यालय, सस्था आदि के किसी अधिकारी, कर्मचारी द्वारा उसके हिसाब-किताब मे की हुई गडबडी अथवा उसकी सामग्री, धन आदि का किया हुआ दुरुपयोग।

मुहा०—घोटाले मे पड़ना=(क) किसी कार्य या बात का निपटारे या सुलझने की स्थिति मे न होना। (ख) सामग्री, धन आदि का ऐसी स्थिति में होना कि उसका वापस मिलना बहुत कठिन हो।

घोटिका, घोटी—स्त्री०[स० घोटी+कन्–टाप्, ह्रस्व] [√घुट्+अच्–ङीष्] घोडी।

घोटू†—वि० [हि० घोटना] १ घोटनेवाला। २ चारो ओर से कसकर दबानेवाला। जैसे—गल-घोटू नियम।

पु०१ =घोटा। २ =घुटना।

घोड†—पु० दे० 'घुड'।

घोडचढ़ा—पु० दे० 'घुड-चढा'।

घोड-दौड—स्त्री० दे० 'घुड-दौड'।

घोड-मुहाँ—वि० दे० 'घुड-मुहाँ'।

घोडरासन—पु०[हि० घोडा+रासन] रास्ना नामक ओषधि का एक भेद।

घोड़-रोज—पु०[हि० घोडा+रोज] एक प्रकार की नीलगाय जो घोडे की तरह बहुत तेज दौडती है।

घोड़-सन—पु०[हि० घोडा+सन] एक प्रकार का सन।

घोड-सार, घोड़-साल†—स्त्री० दे० 'घुड-साल'।

घोडा—पु०[स० घोटक प्रा० घोडा] [स्त्री० घोडी] १ तेज दौडनेवाला एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया जिस पर लोग सवारी करते है तथा जो गाडियाँ, टाँगे, रथ आदि भी खीचता है।

मुहा०—घोडा उठाना=घोडे को तेज दौडाना। **घोड़ा उलाँगना**=किसी नये घोडे पर पहले-पहल सवारी करना। **घोडा कसना**=सवारी के लिए घोडे पर जीन या चारजामा कसना। **घोडा खोलना**=(क) घोडे का साज या चारजामा उतारना। (ख) घोडे को बन्धन-मुक्त करना। **घोडा छोडना**=(क) किसी के पीछे घोडा दौडाना। (ख) दिग्विजय के लिए अश्वमेध का घोडा छोडना। (ग) घोडे का साज या चारजामा उतारकर उसे चरने के लिए खुला छोडना। **(किसी के पीछे) घोडा डालना**=किसी को पकडने के लिए उसके पीछे तेजी से जाना। **घोडा निकालना**=(क) घोडे को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। (ख) दौड आदि मे घोडे को आगे बढा ले जाना। **घोडे पर चढ़े आना**=अपना काम पूरा कराने के लिए बहुत जल्दी मचाना। **घोड़ा फेरना**=घोडे को दौडाने का अभ्यास कराने के लिए एक वृत्त मे घुमाना। कावा देना। **घोडा बेचकर सोना**=निश्चित या बेफिक्र होकर गहरी नीद सोना।

२ बदूक, मशीन आदि का वह खटका या पेच जो घोडे के मुख के आकार का होता है, और जिसे दबाने से कोई विशिष्ट क्रिया होती है। ३ बच्चो के खेलने का घोडे की आकृति का खिलौना। ४ शतरज मे घोडे की आकृति का एक मोहरा जो २½ घर चलता है। ५ घोडे के मुख के आकार का लकडी, पत्थर आदि का बना हुआ टोटा जो भार सँभालने के लिए छज्जे के नीचे दीवार मे लगाया जाता है। ६ कसरत करने के लिए लकडी का वह मोटा कुदा जो चार पायो पर ठहरा होता है और जिसे लडके दौडकर लाँघते है। ७ दीवार मे लगी हुई कपडे टाँगने की खूँटी।

घोड़ा-करज—पु० [स० घृतकरज] एक प्रकार का करज जो चर्मरोग और बवासीर को ठीक करता है तथा विष-नाशक माना जाता है।

घोड़ा-गाड़ी—स्त्री०[हि० घोडा+गाडी] वह गाडी जिसे घोडा या घोडे खीचते हो।

घोड़ाचोली—स्त्री०[हि० घोडा+चोला=शरीर] वैद्यक की एक प्रसिद्ध ओषधि जो अनेक रोगो को दूर करनेवाली मानी गई है।

घोड़ानस—स्त्री० [हि० घोडा+नस] पिंडली के नीचे और एडी के पीछे की मोटी नस। कूँच। पै।

घोडानीम—स्त्री० [हि० घोड+नीम] बकायन (वृक्ष)।

घोडापलास—पु० [देश०] मालखभ की एक कसरत जिसमे एक हाथ मालखभ पर घुमाकर सामने रखते और दूसरे से मोगरा पकडते है।

घोडा-बच—स्त्री० [हि० घोडा+बच] बच नामक वनस्पति का एक भेद जिसका रग सफेद और गध उग्र होती है।

घोड़ा-बाँस—पु० [हि० घोडा+बाँस] एक प्रकार का बडा और मोटा बाँस।

घोडा-बेल—स्त्री० [हि० घोडा+बेल] एक बेल जिसकी पत्तियाँ एक बालिश्त भर लबे सीको मे लगती है।

घोडिया—स्त्री० [हि० घोडी+इया (प्रत्य०)] १ घोडी। २ छोटी घोडी। ३ दीवार मे कपडा आदि टाँगने के लिए लगाई जानेवाली खूँटी। ४ जुलाहो का एक उपकरण।

घोडी—स्त्री० [हि० घोडा] १ घोडा जाति के पशु की मादा। २ खेल मे वह लडका जिसकी पीठ पर दूसरे लडके चढते है। ३ विवाह की वह रस्म जिसमे वर घोडी पर चढकर कन्या के घर जाता है।

मुहा०—घोडी चढना=विवाह के दिन वर का घोडी पर चढकर कन्या के घर जाना।

४ विवाह के दिनो मे वर-पक्ष मे गाये जानेवाले कुछ विशिष्ट प्रकार के गीत। ५ हाथीदाँत आदि का वह छोटा लबोतरा टुकडा जो तबूरे, सारगी, सितार आदि मे तूँबे के ऊपर लगा हुआ होता है तथा जिस पर उसके तार टिके या ठहरे रहते है। ६ दो जोडी बाँसो मे रस्सी तानकर बनाया हुआ वह ढाँचा जिस पर धोबी गीले कपडे सूखने के लिए फैलाते है। ७ काठ का एक प्रकार का आयताकार ढाँचा (जिसके नीचे चार पाये लगे रहते हैं) जिसे दौड आदि के समय दौडनेवालो के मार्ग मे बाधा उत्पन्न करने के लिए रखा जाता है। (हर्डल) ८ दे० 'घोडिया'।

घोण—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का सितार की तरह का बाजा।

घोणा—स्त्री० [स०√घुण् (घूमना)+अच्–टाप्] १ नाक। (डिं०) २ थूथन।

घोणी (णिन्)—पु० [स० घोण+इनि] शूकर।

घोमस—पु० [?] सामुद्रिक।

घोमसा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

घोर—वि० [स०√हन् (हिसा)√अच्, घुर् आदेश] [स्त्री० घोरा] १ जो आकार, प्रकार, प्रभाव आदि की दृष्टि से विकराल या भीषण हो। डरावना। २ जो मान, मात्रा आदि के विचार से अति तक पहुँचा हुआ हो। जैसे—घोर तपस्या, घोर निद्रा, घोर वर्षा। ३ (स्वर) जो बहुत ही कठोर और भय-उत्पादक हो। जैसे—घोर नाद। ४ बहुत बडा। उदा०—ऊँचे घोर मदिर के अन्दर रहाती है।—भूषण। ५ बहुत ही बुरा। जैसे—घोर पाप। ६ बहुत ही घना या सघन। जैसे—घोर जगल, घोर बियाबान।

क्रि० वि० बहुत अधिक। अत्यन्त।

†पु०=घोडा।

†पु०=घोल।

उभ०=घोष।

स्त्री० [फा० गोर] कब्र। उदा०—सज्यौ घोर हुस्सैन सथ करयो प्रवेश अपान।—चदवरदाई।

घोरना*—अ० [स० घोर] जोर का या भारी शब्द करना। गरजना। स०=घोलना।

घोरमारी—स्त्री० दे० 'महामारी'।

घोरसार*—पु०=घुडसाल।

घोरा—स्त्री० [स० घोर+टाप्] श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रो मे बुध की गति। (ज्योतिष)

पु० [हि० घोडा] १ घोडा। २ खूँटी। ३ टोडा।

घोराघोरी†—क्रि० वि० [स० घोर से अनु०] खूब जोरो से। उदा०—घोरा-घोरी कीन्ह बटोरा।—कबीर।

स्त्री० बहुत अधिक उग्रता, तीव्रता या विकटता।

घोरारा—पु० [देश०] एक प्रकार का गन्ना।

घोरिया†—स्त्री०=घोडिया।

घोरिला†—पु० [हि० घोडी] १ बच्चो के खेलने का मिट्टी का घोडा। २ छोटे आकार का घोडा। ३ दीवार मे लगी हुई खूँटी। उदा०—फूलन के विविध हार घोरिलन ओरमत उदार।—केशव।

घोरी†—स्त्री० १=अघोरी। २=घोडी।

घोल—पु० [स०√घुड् (व्याघात)+घञ्, ड को ल] १ बिना पानी डाले मथा हुआ दही। २ लस्सी। ३ किसी तरल पदार्थ मे कोई दूसरी (तरल अथवा घुलनशील) वस्तु मिलाकर तैयार किया हुआ मिश्रण। (सोल्यूशन)

घोल-दही—पु० [हि० घोलना+दही] मट्ठा।

घोलना—स० [स० घुण्, घोलय, प्रा० घोलेई, ब० घुलान, उ० घोरिबा, प० घोलणा, सिं० घोरणु, गु० घोडवूँ, ने० घोल्नु, मरा० घोलणें] किसी तरल पदार्थ मे कोई अन्य घुलनशील वस्तु मिलाना। जैसे—दूध मे चीनी घोलना।

मुहा०—(कोई चीज) घोल कर पी जाना=किसी चीज का सपूर्णतया अत कर देना। जैसे—तुम तो लज्जा घोल कर पी गये। **घोल पीना**=घोल कर पी जाना।

घोला—पु० [हि० घोलना] १ किसी वस्तु को जल मे घोलकर बनाया हुआ मिश्रण। जैसे—अफीम या भाँग का घोला।

मुहा०—घोले मे डालना=(क) रोक या फँसा रखना। उलझन मे डाल रखना। (ख) किसी काम मे टाल-मटोल करना। **घोले मे पडना**=झझट या बखेडे मे पडना। ऐसे काम मे फँसना जो जल्दी पूरा न हो।

२ वह नाली जिससे खेत सीचने के लिए पानी ले जाते है। बरहा।

घोलुआ (लुवा)†—वि० [हि० घोलना+उवा (प्रत्य०)] घोला हुआ। जो घोल कर बनाया गया हो।

पु० १ सब्जी, मास आदि का रसा या शोरबा। २ पीने की तरल ओषधि। ३ पानी मे कोई चीज (जैसे—अफीम, भाँग, सीमेंट) घोल कर बनाया हुआ मिश्रण। ४ मिट्टी का पुरवा।

घोष—पु० [स०√घुष् (स्तुति आदि)+घञ्] १ अहीरो की बस्ती। आभीर-पल्ली। २ अहीर। ३ गोशाला। ४ छोटी बस्ती। गाँव। ५ बगालियो की एक जाति। ६ शब्द। नाद। ७ जोर से की हुई पुकार। घोर शब्द। गर्जन। ८ किसी विशेष दल, पक्ष या सिद्धान्त की वह पुकार या पद जो जन-साधारण को अपनी ओर आकृष्ट

करने के लिए बनाया जाता है। नारा। (स्लोगान) ९ व्याकरण मे शब्दो के उच्चारण मे होनेवाला एक प्रकार का बाह्य प्रयत्न। ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व और ह का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है। १० ईशान कोण का एक प्राचीन देश। ११ ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

घोषक—पु० [स०√घुष्+ण्वुल्—अक] घोषणा करनेवाला अधिकारी या कर्मचारी।
वि० घोष करनेवाला।

घोषण—पु० [स०√घुष्+ल्युट्—अन] घोषणा करने की क्रिया या भाव।

घोषणा—स्त्री० [स०√घुष् +णिच्+युच्—अन, टाप्] १ जन-साधारण को सुनाकर जोर से कही जानेवाली बात। २ सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा। (प्रोक्लेमेशन) ३ मुनादी। डुग्गी।

घोषणा-पत्र—पु० [ष०त०] १ वह पत्र जिस पर कोई राजाज्ञा लिखी हो। २ वह पत्र जिस पर कोई व्यक्ति किसी बात की सत्यता घोषित करता हो। (प्रोक्लेमेशन)

घोषलता—स्त्री० [स० कर्म० स०] कडई तोरई।

घोषवत्—वि० [स० घोष+मतुप्, व आदेश] (शब्द) जिसमे घोष प्रयत्न-वाले अक्षर अधिक हो।

घोषवती—स्त्री० [स० घोषवत्+ङीप्] वीणा।

घोषा—स्त्री० [स० घोष+टाप्] सौंफ।

घोषाल—पु० [स० घोष] बगाली ब्राह्मणो की एक जाति।

घोसना*—स्त्री० =घोषणा।
स० घोषणा करना।

घोसी—पु० [म० घोष] अहीर या ग्वाला (विशेषत' मुसलमान)।

घौंर (।)—पु० =घौद।

घौद—पु० [देश०] फलो का बडा गुच्छा। गौद। जैसे—केले का घौद।

घौर (।)—पु० =घौद।

घौरी—स्त्री० [फा० घूरी] १ कूडे-कचरे की ढेरी। २ राशि। ढेर। ३ घोदा। उदा०—काहूँ गही केश की घौरी।—जायसी।

घौह (।)—पु० [हिं० घाव] अमरूद, आम आदि का वह फल जिसमे दाग पड गया हो। चुटैल फल।

घ्न—वि० [स० पूर्वपद के साथ] नष्ट करनेवाला (यौ० शब्दो के अत मे) जैसे—कृमिघ्न, पापघ्न।

घ्यूंट†—पु० =घूंट।

घ्यूंटना†—स० =घूंटना।

घ्राण—स्त्री० [स०√घ्रा (सूंघना)+ल्युट्—अन] [वि० घ्रेय] १ सूंघने की इन्द्रिय। नाक। २ सूंघने की शक्ति। ३ सुगध।

घ्राणेन्द्रिय—स्त्री० [घ्राण-इन्द्रिय, ष० त०] सूंघने की इन्द्रिय अर्थात् नाक।

घ्रात—भू० कृ० [स०√घ्रा+क्त] सूंघा हुआ।

घ्रातव्य—वि० [स०√घ्रा+तव्यत्] सूंघे जाने के योग्य।

घ्राता (तृ)—वि० [स०√घ्रा+तृच्] सूंघनेवाला।

घ्राति—स्त्री० [स०√घ्रा+क्तिन्] सूंघने की क्रिया या भाव।

घ्रेय—वि० [स०√घ्रा+यत्] सूंघे जाने के योग्य। जो सुँघा जा सके।

ङ

ङ—व्यजन वर्ण का पाँचवाँ और क-वर्ग का अन्तिम अक्षर या वर्ण। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कठ और नासिका है। इसमे सवार, नाद, घोष और अल्पप्राण नामक प्रयत्न लगते हैं।

च

च—हिन्दी वर्ण- माला का छठा व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्शसघर्षी, अल्पप्राण और अघोष माना गया है।

चंक—वि० [स० चक्र] १ पूरा-पूरा। २ समूचा। सारा। समस्त।
पु० उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के किसानो का एक उत्सव जो फसल कटने पर होता है।

चंकवर—पु० दे० 'चकवँड'।

चंकुर—पु० [स०√चक् (घूमना)+उरच्] १ रथ। यान। २ पेड। वृक्ष।

चंक्रमण—पु० [स० √क्रम् (गति) +यङ्, द्वित्वादि, +ल्युट्—अन] [वि० चक्रमित] १. धीरे-धीरे टहलना। घूमना। सैर करना। २ बहुत अधिक या बार-बार घूमना। ३ घूमने, चलने या सैर करने का स्थान। (बौद्ध)

चंग—वि० [स०√चक् (तृप्त होना)+अच्, नि० सिद्धि] १. दक्ष। कुशल। २. स्वस्थ। तदुरुस्त। ३ सुन्दर।
स्त्री० [फा०] १ डफ की तरह का एक प्रकार का बाजा। २ बडी गुड्डी। पतगा।
मुहा०—(किसी की) चग उमहना या चढ़ना=(क) किसी बात की अधिकता या जोर होना। (ख) किसी व्यक्ति का प्रताप या वैभव बढा हुआ होना। (ग) किसी व्यक्ति की इच्छा पूरी करनेवाली बात होना या ऐसी बात का अच्छा अवसर मिलना। उदा०—त्यो पद्माकर दीन्ह मिलाइ कौ चग चबाइन की उमही है।—पद्माकर। **(किसी को) चग पर चढ़ाना**=कोई काम करने के लिए किसी को बहुत अधिक बढावा देना। मिजाज या हौसला बढाना।
३ बीन, सितार आदि बाजो का ऊँचा या चढा हुआ स्वर। ४ गजीफे के आठ रगो मे से एक। ५ तिब्बत मे होनेवाला एक प्रकार का जौ। ६ भूटान मे बननेवाली एक प्रकार के जौ की शराब।

चंगना—स० [फा० चग या तग] १ कसना। खीचना। २ तग या परेशान करना।

चगबाई—स्त्री० [हिं० चग+बाई] एक वात रोग जिसमे हाथ, पैर आदि जकड जाते है।

चगला—स्त्री० [स०?] एक रागिनो जो मेघराग की पुत्रवधू कही गयी है।

चगा—वि० [स० प्रा० चग, ब० चाना, कन्न०चागु, प० चगा, सिं० चगी, गु० चाँगी, मरा० चाग, चागले] [स्त्री० चगी] १ तदुरुस्त। नीरोग। स्वस्थ। जैसे—रोगी को चगा करना। २ अच्छा। उत्तम। बढिया या श्रेष्ठ। जैसे—चगा खेल, चगा विचार। ३ निर्विकार और पवित्र। शुद्ध। जैसे—मन चगा तो कठौती मे गगा। (कहा०) अव्य० [प०] अच्छा।

चगु—पु० [हिं० चौ=चार+अगु] १ चगुल। (दे०) २ पकड रखने की क्रिया या भाव। पकड। ३ अधिकार। वश।

चगुल—पु०[हिं० चौ=चार+अगुल वा फा० चगाल] १ पक्षियो (जैसे—कौआ, चील आदि) तथा पशुओ (जैसे— चीते, शेर आदि) का टेढा पजा जिससे वे किसी पर प्रहार करते अथवा कोई चीज पकडते है। २ हाथ की उँगलियो को हथेली की ओर कुछ झुकाने पर बननेवाली एक विशिष्ट मुद्रा जो कोई चीज पकडने के समय स्वभावत बन जाती है। जैसे—एक चगुल आटा उठा लाओ। ३ किसी व्यक्ति के प्रभाव अथवा वश मे होने की वह स्थिति जिसमे से निकलना सहज न हो।

मुहा०—(किसी के) चगुल में फँसना =पूरी तरह से किसी के अधिकार या वश मे पडना या होना।

चँगेर—स्त्री०[स० चगेरिका] १ बाँस की खमाचियो की बनी हुई छोटी डलिया जिसमे फल, फूल, मिठाइयाँ आदि रखते है। २ धातु आदि का बना हुआ उक्त प्रकार का पात्र। ३ पानी भरने की चमडे की मशक। पखाल। ४ पालने की तरह की वह टोकरी जिसमे बच्चे लेटाकर झुलाये और सुलाये जाते है।

चँगेरा—पु० [स्त्री० चँगेरी] बडी चँगेर।

चगेरिक—पु० [स०?] [स्त्री० चगेरिका?] बडी चँगेर। टोकरा। डला।

चँगेरी†—स्त्री०=चँगेर।

चँगेल—स्त्री० [देश०] खँडहरो आदि मे होनेवाली एक प्रकार की घास। †स्त्री०=चँगेर।

चँगेली—स्त्री०=चँगेर।

चच—पु०[म० √चच् (हिलना-डुलना)+अच्] पाँच अगुल की एक नाप। †पु०=चचु।

चचत्पुट—पु०[स०√चच्+शतृ, चचत्-पुट, ब०स०] सगीत मे, एक ताल जिसमे पहले दो गुरु, तब एक लघु, फिर एक प्लुत मात्रा होती है।

चँचरी—स्त्री०[देश०] १ पत्थर के ऊपर से होकर बहनेवाला पानी। २ एक प्रकार की चिडिया जो जमीन पर घास के नीचे घोसला बनाती है। ३ अनाज का वह दाना जो कूटने-पीटने पर भी बाल मे लगा रह जाता है। कोसी। भूडरी।

चचरी—स्त्री०[स०√चर् (गति)+यङ्—लुक्, द्वित्वादि,+टक्—ङीप्] १ भौरी। भ्रमरी। २ चार चरणो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, सगण, दो जगण, भगण और तब फिर रगण होता है। ३ छियालिस मात्राओवाला एक प्रकार का छद। ४ चाँचर नामक गीत।

चचरीक—पु० [स० √चर्+ईकन्, नि० सिद्धि] [स्त्री० चचरीकी] भौंरा। भ्रमर।

चचरीकावली—स्त्री० [स० चचरीक-आवली, ष० त०] १ भौरो की अवली, पक्ति या समूह। २ तेरह अक्षरो के एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश यगण, मगण, दो रगण और एक गुरु होता है।

चचल—वि० [स० √चच् (चलना)+अलच्] [स्त्री० चचला, भाव० चचलता] १ जो एक स्थान पर खडा, स्थित या स्थिर न रहकर बराबर इधर-उधर आता-जाता, चलता-फिरता अथवा हिलता-डुलता रहता हो। जैसे—चचल दृग, चचल पवन। २ जिसमे स्थायित्व न हो। ३ (व्यक्ति) जो एक न एक काम, बात आदि मे स्वभावत फँसा या लगा रहता हो। चुलबुला। ४ जो स्थिरचित्त अथवा एकाग्र होकर कोई काम न करता हो। जैसे—चचल बालक। ५ नटखट। शरारती। ६ जो शात न हो। उद्विग्न। विकल। जैसे—चचल हृदय।

पु० १ वायु। हवा। २ उपद्रवी, कामुक या रसिक व्यक्ति।

चचलता—स्त्री० [स० चचल+तल्—टाप्] १ चचल होने की अवस्था या भाव। अस्थिरता। २ चपलता। ३ पाजीपन। शरारत। ४ उद्विग्नता।

चचलताई*—स्त्री० =चचलता।

चचला—स्त्री० [स० चचल+टाप्] १ लक्ष्मी। २ बिजली। विद्युत्। ३ पिप्पली। ४ चार चरणो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण, रगण और लघु होता है।

चचलाई*—स्त्री० = चचलता।

चंचलास्य—पु० [चचल-आस्य, ब० स०] एक प्रकार का गध-द्रव्य।

चचलाहट—स्त्री० = चचलता।

चचली—स्त्री०[स० चचरी, रस्य ल] चचरी नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम।

चचा—स्त्री० [स० चच+टाप्] १ घास-फूस का पुतला जो खेतो मे पक्षियो आदि को डराने के लिए लगाया जाता है। २ बाँस, बेत आदि की बनी हुई चटाई, टोकरी आदि।

चचा-पुरुष—पु० [कर्म० स०] दे० 'चचा' १।

चंचु—पु० [स० √चच्+उन्] १ चेच नाम का साग। २ रेड का पेड। ३ हिरन।

स्त्री० १ पक्षियो की चोच। २ किसी चीज के आगे का नुकीला भाग। (बीक)

चचुका—स्त्री० [स० चचु+कन्—टाप्] चोच।

चचु-पत्र—पु० [ब० स०] चेच नाम का साग।

चचु-पुट—स्त्री० [ष० त०] पक्षियो की चोच।

चचु-प्रवेश—पु० [ष० त०] किसी चीज या बात मे होनेवाला बहुत थोडा ज्ञान, प्रवेश या सम्पर्क।

चचुभृत्—पु० [स०चचु √भृ (भरना) + क्विप्, उप० स०] चिडिया। पक्षी।

चचुमात् (मत)—पु० [स० चचु+मतुप्] पक्षी।

चचुर—वि० [स०√चच्+उरच्] दक्ष। निपुण।

पु० चेच नाम का साग।

चचुल—पु० [स० चचुर, र को ल] हरिवश के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

चचू—स्त्री० [स० चचु+ऊड्] चोच।

चचू-सूची—पु०[ब० स०] हस की जाति का एक पक्षी। बत्तख। कारडव।

चँचोरना—स० = चिचोडना।

चट—वि० [स० चड] चालाकी अथवा धूर्तता से अपना काम निकाल लेनेवाला। बहुत बडा चालाक या धूत।

चड—वि० [स० √चड् (क्रोध करना) + अच्] [स्त्री० चडा] १ बहुत अधिक तेज या प्रखर। बहुत उग्र या तीव्र। २ प्रबल। बलवान्। ३ बहुत कठिन। विकट। ४ उग्र, उद्दत या क्रोधी स्वभाववाला।
पु० १ ताप। गरमी। २ क्रोध। गुस्सा। ३ शिव। ४ कार्तिकेय। ५ यम का एक दूत। ६ एक दैत्य जो दुर्गा के हाथो से मारा गया था। ७ शिव का एक गण। ८ एक भैरव का नाम। ९ विष्णु का एक पारिषद। १० इमली का पेड। ११ राम की सेना का एक बदर। १२ कुबेर के आठ पुत्रो मे से एक जो शिवपूजन के लिए सूँघकर फूल लाया था और इसी पर पिता के शाप से जन्मातर मे कस का भाई हुआ था और कृष्ण के हाथ से मारा गया था।

चडकर—पु० [ब० स०] सूर्य।

चडकौशिक—पु०[कर्म० स०] १ एक मुनि का नाम। २ राजा हरिश्चद्र के चरित्र से सबध रखनेवाला एक प्रसिद्ध नाटक। ३ वह साँप जिसने महावीर स्वामी के दर्शन करके दूसरो को काटना छोड दिया था। (जैन)

चडता—स्त्री० [स० चड+तल–टाप्] चड होने की अवस्था या भाव।

चंडत्व—पु० [स० चड+त्व] =चडता।

चड-दीधिति—पु० [ब० स०] सूर्य।

चंड-नायिका—स्त्री० [कर्म० स०] १ दुर्गा। २ तात्रिको की आठ नायिकाओ मे से एक जो दुर्गा की सखी कही गई है।

चंड-भार्गव—पु० [कर्म० स०] च्यवन वशी एक ऋषि जो महाराज जनमेजय के सर्प-यज्ञ के होता हुए थे।

चंड-मुंड—पु० [द्व० स०] चड और मुड नाम के दो राक्षस जो दुर्गा के हाथो मारे गये थे।

चंड-मुडा—स्त्री० [स० चडमुड+अच्—टाप्] चामुडा देवी।

चडमुडी—स्त्री० [स० चडमुड+अच्—ङीष्] तात्रिको की एक देवी।

चड-रसा—स्त्री० [ब० स०, टाप्]एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और एक यगण होता है। इसी को चौबसा, शशिवदना और पादाकुलक भी कहते हैं।

चड रुद्रिका—स्त्री० [कर्म० स०] तत्र मे एक प्रकार की सिद्धि जो अष्ट नायिकाओ के पूजन से प्राप्त होती है।

चडवती—स्त्री० [स० चड+मतुप्—म=व–ङीप्] १ दुर्गा। २ तात्रिको की आठ नायिकाओ मे से एक।

चंड-वात—पु० [कर्म० स०] कुछ अधिक तेज चलनेवाली वह आँधी जिसके बीच-बीच मे कुछ वर्षा भी होती है। तूफान। (टाइफून)

चंड-वृष्टि-प्रयात—पु० [चड-वृष्टि, कर्म० स०, चडवृष्टि-प्रयात, ष० त०] एक प्रकार का दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण (।।।) और सात रगण (ऽ।ऽ) होते हैं।

चंडांशु—पु० [चड अशु ब० स०] सूर्य।

चडा—स्त्री०[स० चड+टाप्] १ उग्र स्वभाववाली स्त्री। २ तात्रिकों की आठ नायिकाओ मे से एक। ३ केवाच। कौछ। ४ चोर नामक गध द्रव्य। ५ सफेद दूब। ६ सौफ। ७ सोआ नाम का साग। ८ एक प्राचीन नदी।

चडाई*—स्त्री० [स० चड=तेज] १ चडता। २ शीघ्रता। जल्दी। ३ उतावली। ४ प्रबलता। तेजी। ५ अत्याचार। उपद्रव।

चडात—पु० [स० चड √अत् (गति) +अण्, उप० स०] एक प्रकार की सुगधित घास।

चडातक—पु० [स० √अत् +ण्वुल्—अक, चडा-आतक, ष० त०] एक प्रकार की छोटी कुरती या चोली।

चंडाल—वि० [स० √चड् (कोप) +आलञ्] [स्त्री० चडालिन, चडालिनी] =चाडाल।
वि० बहुत ही निकृष्ट तथा नृशस कर्म करनेवाला।
पु० १ एक बहुत निकृष्ट या निम्न जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता तथा ब्राह्मणी माता से मानी जाती है। २ उक्त जाति का पुरुष।

चडाल-कद—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का कद जो कफ-पित्त-नाशक तथा रक्त-शोधक माना जाता है।

चडालता—स्त्री० [स० चडाल+तल्—टाप्] चडाल या चाडाल होने की अवस्था, गुण या भाव।

चडालत्व—पु० [स० चडाल+त्व] =चडालता।

चडाल-पक्षी (क्षिन्)—पु० [कर्म० स०] कौआ।

चडाल-बाल—पु० [हि० चडाल+बाल] कुछ लोगो के माथे पर उगनेवाला वह कडा और मोटा बाल जो अशुभ फलदायक माना जाता है।

चडाल-वल्लकी—स्त्री० = चडाल-वीणा।

चडाल-वीणा—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का चिकारा या तँबूरा।

चडालिका—स्त्री० [स० चडाल+ठन्—इक, टाप्] १ दुर्गा। २ चडाल-वीणा। ३ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ दवा के काम आती है।

चडालिनी—पु० [स० चडाल+इनि—ङीप्] १ चडाल वर्ण की स्त्री। २ बहुत ही दुष्ट और निकृष्ट स्वभाववाली स्त्री। ३ वह दोहा जिसके आरभ मे जगण पडा हो। (अशुभ)

चडावल—पु० [हि० चड+ अवलि] १ सेना के पीछे का भाग। पीछे रहनेवाले सिपाही। 'हरावल' का विपर्याय। २ बहुत बडा योद्धा या वीर। ३ पहरेदार। सतरी।

चँडासा—पु० [हि० चॉड = जल्दी +आसा (प्रत्य०)] किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी।
मुहा०—चँडासा चढ़ाना = (क) बहुत जल्दी मचाना। (ख) कोई ऐसा काम या युक्ति करना जिससे किसी को विवश होकर कोई काम जल्दी करना पडे।

चडाह—पु० [देश०] गाढे की तरह का एक मोटा कपडा।

चडि—स्त्री० [स० √चड्+ इन्] = चडिका।

चडिक—वि० [स० चड+ ठन्—इक] [स्त्री० चडिका] १ कर्कश स्वभाववाला और दुष्ट। २ जिसके लिग के आगे का चमडा कटा हो। जिसका खतना हुआ हो।

चडिक-घट—पु० [चडिका-घटा ब० स०] शिव।

चडिका—स्त्री० [स० चडिक+टाप्] १ दुर्गा का एक रूप। २ बहुत कर्कशा और दुष्ट स्त्री। ३ गायत्री देवी।
वि० कर्कशा, दुष्टा और लडाकी।

चडिमा (मन्)—स्त्री० [स० चड+इमनिच्] १ गरमी। ताप। २ उग्रता। तीव्रता। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ निष्ठुरता। ५ आवेश। जोश।

चडिल—पु० [स० √चड्+इलच्] १ रुद्र। २ बथुआ नामक साग। ३ नापित। हज्जाम।

चडी—स्त्री० [स० चड+डीष्] १ दुर्गा का वह रूप जो उन्होने महिषासुर के वध के लिए धारण किया था। २ बहुत ही उग्र स्वभाववाली, कर्कशा और दुष्टा स्त्री। ३ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश दो नगण, दो सगण और एक गुरु होता है।

चडी-कुसुम—पु० [ब० स०] १ कनेर का वह पौधा जिसमे लाल रग के फूल लगते हो। २ [मध्य० स०] उक्त प्रकार का फूल।

चडी-पति—पु० [ष० त०] शिव।

चडीश—पु० [चडी-ईश, ष० त०] शिव।

चडीसुर—पु० [स० चडीश्वर] एक प्राचीन तीर्थ-स्थल।

चडु—पु० [स० √चड्+उन्] १ चूहा। २ छोटा बदर।

चडू—पु० [स० चड =तीक्ष्ण से ?] अफीम से बनाया हुआ एक प्रकार का अवलेह जो नशे के लिए तमाकू की तरह पीया जाता है।

चडूखाना—पु० [हि० चडू+खाना] वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर चडू पीते है।
पद—चडूखाने की गप= बिलकुल झूठी और बे-सिर-पैर की खबर या गप।

चडूबाज—पु० [हि० चडू+फा० बाज (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो प्राय चडू पीता हो।

चडूल—पु० [देश०] १ मधुर स्वरवाली खाकी रग की एक चिडिया जो झाडियो, पेडो आदि मे सुदर घोसला बनाकर रहती है। २ बहुत बडा बेवकूफ या भद्दा आदमी।

चडेश्वर—पु० [चड-ईश्वर, कर्म० स०] शिव का एक रूप।

चडोग्रा—स्त्री० [चडा-उग्रा, कर्म० स०] दुर्गा का एक रूप या शक्ति।

चडोदरी—स्त्री० [चड-उदर, ब० स० डीष्] एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिए नियत किया था।

चडोल—पु० [स० चन्द्र-दोल] १ हाथी के हौदे की तरह की एक प्रकार की पालकी जिसे चार आदमी उठाते है। २ मिट्टी का एक प्रकार का खिलौना। चौघडा।

चद—पु० [स० √चद (आह्लादित करना) + णिच् +अच्] १ चद्रमा। २ कपूर। ३ पिगल मे रगण का दसवाँ भेद जिसमे दो लघु, एक दीर्घ और तब फिर दो लघु वर्ण होते है। (।।ऽ।।)। जैसे—पुतली-घर। ४ लाहौर के रहनेवाले हिंदी के एक बहुत प्राचीन कवि जो दिल्ली के अतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा मे थे। इनका बनाया हुआ पृथ्वीराज रासो बहुत प्रसिद्ध महाकाव्य है। चदवरदाई।
वि० [फा०] १ गिनती मे थोडा। कुछ। २ कई। जैसे—चद आदमी आने को है।

चदक—पु० [स० √चद् +णिच् + ण्वुल्—अक] १ चद्रमा। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३ चाँद या चाँदा नाम की छोटी मछली। ४ सिर पर पहना जानेवाला एक अर्द्धचद्राकार गहना। ५ उक्त गहने के आकार की कोई रचना जो मालाओ आदि के नीचे शोभा के लिए लगाई जाती है। ६ एक प्रकार की मछली।

चदक-पुष्प—पु० [मध्य० स०] १ लौग। लवग। २ [ष० त०] चद्रकला।

चदण—पु० = चदन।

चद-धर—पु० [स० ष० त० ?] ध्रुपद राग का एक भेद।

चदन—पु० [स० √चद् +णिच् +ल्युट्—अन] १ दक्षिण भारत मे उगनेवाला एक प्रसिद्ध पेड जिसके हीर की लकडी बहुत सुगधित होती है। गधसार। मलयज। श्रीखड। २ उक्त वृक्ष की लकडी। ३ उक्त लकडी को जल मे घिस या रगडकर बनाया हुआ गाढा घोल या लेप जिसका टीका आदि लगाया जाता है।
मुहा०—चदन उतारना= पानी के साथ चदन की लकडी को घिसना जिसमे उसका अश पानी मे घुल जाय। **चदन चढाना** = किसी चीज पर घिसे हुए चदन का लेप करना।
४ गध-प्रसारिणी लता। ५ छप्पय छद के तेरहवे भेद का नाम। ६ एक प्रकार का बडा तोता जो उत्तरीय भारत, मध्य भारत, हिमालय की तराई, काँगडा आदि मे होता है।
वि० १ बहुत ही शीतल और सुगधित। २ उत्कृष्ट। उदा०—बदन तेज त्यौं चदन की रति । भूषण।

चदन-गिरि—पु० [ष० त०] मलय पर्वत।

चदन-गोह—स्त्री० [हि० चदन +गोह] १ चदन के पेड पर रहनेवाली एक प्रकार की गोह। २ छोटी गोह।

चदन-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] चदन से लेपी हुई वह गौ जो सौभाग्यवती स्वर्गीया माता के उद्देश्य से (वृषोत्सर्ग की तरह) खुली छोड दी जाती है।

चदन-पुष्प—पु० [ष० त०] १ चदन का फूल। २ [ब० स०] लौग। लवग।

चदन-यात्रा—स्त्री० [ब० स०] वैशाख सुदी तीज। अक्षय तृतीया।

चदनवती—वि० स्त्री० [स० चदन +मतुप्, वत्व, डोप्] केरल देश की भूमि जहाँ चदन के वृक्ष अधिकता से होते है।

चदन-शारिवा—स्त्री० [उपमि० स०] एक प्रकार की शारिवा या अनत-मूल की लता जिसमे चदन की-सी सुगध होती है।

चदन-सार—पु० [ष० त०] १ पानी के साथ घिसकर तैयार किया हुआ चदन। २ [ब० स०] वज्रक्षार। ३ नौसादर।

चदनहार—पु० = चद्रहार।

चदना—स्त्री० [स० चदन +अच्—टाप्]=चदन-शारिवा।
स० [स० चदन] शरीर मे चदन पोतना या लगाना।
†पु० = चद्रमा।

चदनादि—पु० [चदन-आदि, ब स०] वैद्यक मे चदन, खस, कपूर, बकुची, इलायची आदि पित्तशामक दवाओ का एक वर्ग।

चदनादि-तैल—पु० [ष० त०] वैद्यक मे लाल-चदन के योग से बननेवाला एक प्रसिद्ध तैल जो अनेक रोगो मे शरीर पर मला जाता है।

चदनी—वि० [हि० चदन +ई (प्रत्य०)] १ चदन-सबधी। चदन का।

२ जिसमे चदन की सुगध हो। ३ चदन की लकडी के रग का। कुछ लाली लिये हुए भूरा।

स्त्री० [स० चन्दन +ङीष्] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी।

पु० शिव।

† स्त्री० = चादनी।

चदनीया—स्त्री० [स० √चद् +अनीयर् +टाप्] गोरोचन।

चँदनौटा†—पु० [हि० चदन +औटा (प्रत्य०)] १ वह चकला जिस पर चदन घिसा जाता है। २ एक प्रकार का लहगा। उदा०—चदनौटा खीरोदक फारी।—जायसी।

चँदनौता—पु० =चँदनौटा।

चदबान—पु० [स० चद्रबाण] एक प्रकार का बाण जिसके सिरे पर अर्द्धचद्राकार लोहे की गाँसी वा फल लगा रहता था और जिससे शत्रुओ का सिर काटा जाता था।

चँदराना†—अ० [स० चद्रमा] १ पागल या विक्षिप्त होना जो चद्रमा का प्रभाव माना जाता है। २ जान-बूझकर अनजान बनना।

स० १ (किसी को) झूठा, पागल या मूर्ख बनाना। २ चकमा या धोखा देना।

चँदला—वि० [हि० चाँद =खोपडी] जिसकी चाद के बाल उड या झड गये हो। खल्वाट। गजा।

चँदवा—पु० [स० चन्द्रक] १ एक प्रकार का छोटा मडप जो राजाओ के सिहासन या गद्दी के ऊपर चाँदी, सोने आदि की चार चोबो के सहारे ताना जाता है। चँदोवा। वितान। चदरछत। २ छाया आदि के लिए ताना जानेवाला लबा-चौडा कपडा। ३ किसी चीज के ऊपरी भाग मे लगाया जानेवाला कोई गोल या चौकोर टुकडा। ४ मोर की पूँछ पर की चद्रिका। ५ एक प्रकार की मछली। चाँदा। ६ तालाब मे का वह गहरा गड्ढा जिसमे मछलियाँ फँसाकर पकडी जाती है।

चदसिरी—स्त्री० [स० चद्र श्री] एक प्रकार का बडा गहना जो हाथी के मस्तक पर बाँधा या पहनाया जाता है।

चदा—पु० [स० चन्द्र] चद्रमा। जैसे—चदा मामा दौडि आ। दूध भरी कटोरिया।

पु० [फा० चद] १ किसी परोपकारी अथवा सार्वजनिक कार्य के लिए दो या माँगी जानेवाली व्यक्तिगत आर्थिक सहायता। जैसे—मत्री जी ने अनाथालय के निर्माण के लिए सभी भाइयो से चदा देने की अपील की है। २ वह नियत धन जो किसी अवधि के लिए किसी सस्था को उसके सदस्य आदि बने रहने अथवा किसी पत्र-पत्रिका के ग्राहक बने रहने के लिए देना पडता है। जैसे—इस पत्रिका का वार्षिक चदा ५) है। (सब्सक्रिप्शन, उक्त दोनो अर्थों मे) ३ किसी प्रकार का बीमा कराने पर उसके लिए समय समय पर दिया जानेवाला धन। (प्रीमियम)

चदामामा—पु [हि० चदा =चाँद+मामा] बच्चो को बहलाने का एक प्रिय पद जो उनके लिए चद्रमा का वाचक होता है।

चदावत—पु० [स० चन्द्र] क्षत्रियो की एक जाति।

चदावती—स्त्री० [स० चद्रवती] सगीत मे एक रागिनी जो श्रीराग की सहचरी कही गई है।

चदावल—पु० [फा०] वे सैनिक जो सेना के पीछे रक्षा के लिए चलते हैं। चडावल। 'हरावल' का विपर्याय।

चदिका—स्त्री० = चद्रिका।

चदिनि, चदनी†—स्त्री० [स० चद्रिका] १ चाँदनी। चद्रिका। २ बिछाने की चाँदनी।

चँदिया—स्त्री० [हि० चाँद का अल्पा०] १ सिर का मध्यभाग। खोपडी। चाँद।

मुहा०—चँदिया पर बाल तक न छोड़ना = (क) सिर पर जूते, थप्पड आदि मार-मारकर सिर गजा कर देना। (ख) सर्वस्व छीन या लूट लेना। **चँदिया मूड़ना** =चँदिया पर बाल तक न छोडना।

२ वह छोटी रोटी जो सब के अत मे बचे हुए आटे और पलेथन से बनाई जाती है। ३ तालाब के नीचे का गहरा गड्ढा। ४ चाँदी की छोटी टिकिया।

चदिर—पु० [स० √चद् +किरच्] १ चद्रमा। २ हाथी। ३ पूरक।

चदिरा—स्त्री० [स० चद्रिका] चद्रमा का प्रकाश। ज्योत्स्ना। चाँदनी। उदा०—शरद चदिरा उतर रही धीरे धरती पर।—पत।

चदे—अ०य० [फा०] १ थोडे से। कुछ। २ थोडी देर तक।

चँदेरी—स्त्री० [स० चेदि वा हि० चदेल] राजस्थान के अतर्गत एक प्राचीन नगरी जो शिशुपाल की राजधानी थी।

चँदेरीपति—पु० [हि० चदेरी | स० पति] चदेरी का राजा, शिशुपाल।

चदेल—पु० [स० चेदि से] [स्त्री० चदेलिन] क्षत्रियो की एक जाति या शाखा।

चदेवरी—स्त्री० =चँदेरी। उदा०—प्रोहित चदेधरी पुरी।—प्रिथीराज।

चँदोआ|—पु० =चँदवा।

चँदोवा†—पु० = चँदवा।

चद्र—पु० [स० √चद् +रक्] १ चद्रमा। २ जल। पानी। ३ कपूर। ४ सोना। स्वर्ण। ५ रोचनी नाम का पौधा। ६ पुराणानुसार १८ उपद्वीपो मे से एक। ७ लाल रग का मोती। ८ हीरा। ९ मृगशिरा नक्षत्र। १० नेपाल का एक पर्वत। ११ मोर की पूँछ की चद्रिका। १२ सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जानेवाली बिंदी। १३ हठ योग मे, (क) इडा नाडी। (ख) तालु-मूल मे स्थित वह गाँठ जिसमे से अमृत या सोम नामक रस निकलता है। १४ रहस्य सप्रदाय मे, ज्ञान।

स्त्री० चद्रभागा मे गिरनेवाली एक नदी।

वि० १. आनददायक। २ सुदर। ३ श्रेष्ठ।

चद्रक—पु० [स० चद्र+ कन्] १. चद्रमा। २ चद्रमा की तरह का घेरा या मडल। ३ चद्रिका। चाँदनी। ४ मोर की पूँछ पर की चद्रिका। ५ नाखून। नख। ६ कपूर। ७ सफेद मिर्च। ८. सहिजन। ९ जल। पानी। १० एक प्रकार की मछली। ११ एक राग जो मालकोश का पुत्र कहा गया है।

चंद्रकर—पु० [ष० त०] १ चन्द्रमा की किरण। २ चाँदनी। चद्रिका।

चंद्र-कला—स्त्री० [ष०त०] १ चद्रमा की १६ कलाएँ या भाग जिनके नाम ये हैं—पूषा, यशा, सुमनसा, रति, प्राप्ति, धृति, ऋद्धि, सौम्या, मरीचि, अशुमालिनी, अगिरा, शशिनी, छाया, सपूर्णमडला, तुष्टि और अमृता। २ उक्त कलाओ मे से कोई एक या प्रत्येक। ३ चद्रमा की किरण। ४ माथे पर पहनने का एक गहना। ५ एक प्रकार का छोटा ढोल। ६ एक प्रकार की मछली। वचा। ७ एक प्रकार का सवैया छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण और एक गुरु होता है।

इसका दूसरा नाम सुन्दरी भी है। ८ सगीत मे एक प्रकार का सात-ताला ताल जिसमे तीन गुरु और तीन प्लुत के बाद एक लघु होता है। ९ मोर की पूँछ पर की चद्रिका। १० एक प्रकार की बगला मिठाई।

चद्रकला-धर—पु०[ष०त०] महादेव। शिव।

चद्र-कात—पु०[उपमि० स०] १ एक प्रकार की प्रसिद्ध कल्पित मणि जो लोक प्रवाद के अनुसार चद्रमा की किरणे पडने पर पसीजने लगती है। २ चदन। ३ कुमुद। ४ एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है। ५ लक्ष्मण के पुत्र चद्रकेतु की राजधानी का नाम।

चद्र-कान्ता—स्त्री० [ष०त०] १ चद्रमा की स्त्री। २ रात्रि। रात। ३ मल्ल प्रदेश की एक प्राचीन नगरी। ४ वे वर्ण-वृत्त जिनमे पन्द्रह अक्षर होते हो।

चन्द्र-काति—स्त्री० [ब०स०] १ चाँदी। रजत। २ [ष० त०] चाँदनी। चद्रिका।

चंद्र-काम—पु० [मध्य० स०] तत्र मे वह मानसिक कष्ट या पीडा जो किसी पुरुष को उस समय होती है जब कोई स्त्री उसको वशीभूत करने के लिए मत्र-तत्र आदि का प्रयोग करती है।

चद्रकी (किन्)—वि०[स० चद्रक+इनि] चद्रक से युक्त।
पु० मयूर। मोर।

चंद्र-कुमार—पु०[ष०त०] बुध ग्रह, जो चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

चंद्र-कुल्या—स्त्री०[ष० त०] कश्मीर की एक प्राचीन नदी।

चद्र-कूट—पु०[ष०त०] कामरूप देश का एक पर्वत।

चद्र-केतु—पु०[ब०स०] लक्ष्मण का एक पुत्र, जिसे चद्रकात प्रदेश का राज्य मिला था।

चद्र-क्रीड—पु०[ब०स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

चंद्र-क्षय—पु०[ष०त०] अमावास्या।

चद्र-गिरि—पु०[ष०त०] नैपाल का एक पर्वत जो काठमाडू के पास है।

चंद्र-गुप्त—पु०[तृ०त०] १ चित्रगुप्त। २ मगध देश का प्रथम मौर्यवशी राजा जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र मे थी और जिसने यूनानी राजा सील्यूकस पर विजय प्राप्त करके उसकी कन्या ब्याही थी। समुद्रगुप्त इसी का पुत्र था।

चद्र-गृह—पु०[ष०त०] कर्क राशि।

चद्र-गोल—पु०[कर्म०स०] १ चद्र-मडल। २ चद्रलोक।

चंद्र-ग्रह—पु०=चद्रग्रहण।

चंद्र-ग्रहण—पु०[ष०त०] १ चद्रमा की वह स्थिति जिसमे उसका कुछ या सारा बिब पृथ्वी की छाया पडने के कारण दिखाई नही देता। २ हठयोग की परिभाषा मे वह अवस्था जब प्राण इडा नाडी के द्वारा कुडलिनी मे पहुँचते है।

चंद्र-चचल—पु०[उपमि०स०] खरसा या चद्रक नाम की मछली।

चद्र-चित्र—पु०[ष०त०] वाल्मीकि रामायण मे उल्लिखित एक देश।

चद्र-चूड—पु०[ब०स०] (मस्तक पर चद्रमा धारण करनेवाले) शिव। महादेव।

चद्र-चूडामणि—पु०[ब०स०] १ फलित ज्योतिष मे ग्रहो का एक योग। जब नवम स्थान का स्वामी केन्द्रस्थ हो तब यह योग होता है। २ महादेव।

चद्रज—पु०[स० चद्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप०स०] बुध ग्रह, जो चद्रम का पुत्र माना जाता है।

चद्रजोत—स्त्री०[स० चद्रज्योति] १ ज्योत्स्ना। चाँदनी। २ एक प्रकार की आतिशबाजी।

चद्र-ताल—पु०[मध्य०स०] एक प्रकार का बारहताला ताल जिसे परम भी कहते है। (सगीत)

चद्र-दारा—स्त्री०[ष० त०] चद्रमा की पत्नियाँ।
विशेष—आकाशस्थ २७ नक्षत्र ही जो दक्ष की कन्याएँ कही जाती है, चद्रमा की पत्नियाँ मानी गई हैं।

चद्र-द्युति—स्त्री०[ष० त०] १. चद्रमा का प्रकाश या किरण। चाँदनी। २ चदन वृक्ष की लकडी।

चद्र-धनु (स्)—पु०[मध्य० स०] रात के समय चद्रमा के प्रकाश मे दिखाई देनेवाला इद्रधनुष।

चद्र-धर—वि०[ष० त०] चद्रमा को धारण करनेवाला।
पु० महादेव।

चद्र-पचांग—पु०[मध्य०स०] वह पचाग जिसमे महीनो की तिथियो का आरभ चान्द्रमास के अनुसार अर्थात् प्रतिपदा से होता हो।

चंद्र-पर्णी—स्त्री०[ब० स०, ङीष्] प्रसारिणी लता।

चद्र-पाद—पु०[ष० त०] चद्रमा की किरणे।

चद्र-पाषाण—पु०[मध्य०स०] चद्रकात मणि।

चद्र-पुत्र—पु०[ष०त०] बुध ग्रह, जो पुराणानुसार चद्रमा का पुत्र माना गया है।

चद्र-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] १ चाँदनी। २ सफेद भटकटैया। ३ बकुची।

चद्र-पुरी—स्त्री० [स० चद्र+देश० पूर] गरी के योग से बननेवाली एक प्रकार की बगला मिठाई।

चद्र-प्रभ—वि०[ब०स०] जिसमे चद्रमा की-सी प्रभा या ज्योति हो।
पु०१. जैनो के आठवें तीर्थंकर जो महासेन के पुत्र थे। २ तक्षशिला के एक प्राचीन राजा।

चद्र-प्रभा—स्त्री०[ष०त०] १ चद्रमा की प्रभा। चाँदनी। २ [ब० स०] बकुची नामक ओषधि। ३ वैद्यक की एक प्रसिद्ध गुटिका जो अर्श, भगदर आदि के रोगियो को दी जाती है।

चद्र-प्रासाद—पु०[मध्य० स०] छत के ऊपर का वह कमरा जिसमे बैठकर लोग चाँदनी का आनद लेते हो।

चद्र-बधु—पु०[ष०त०] १ चद्रमा का भाई शख (क्योकि चद्रमा के साथ वह भी समुद्र मे से निकला था)। २ [ब०स०] कुमुद, जो चद्रमा के निकलने पर खिलता है।

चंद्र-बधूटी—स्त्री० =चद्रवधू।

चंद्र-बाण—पु०[मध्य०स०] पुरानी चाल का एक बाण जिसका फल अर्द्ध-चद्राकार होता था।

चद्र-बाला—स्त्री०[ष०त०] १ चद्रमा की पत्नी। २. चद्रमा की किरण। ३ बडी इलायची।

चंद्र-बिब—पु०[ष०त०] दिन के पहले पहर मे गाया जानेवाला सपूर्ण जाति का एक राग जो हिडोल का पुत्र कहा गया है।

चंद्रबोडा— पु०[स० चद्र-बोड्र ?] एक प्रकार का अजगर।

चद्र-भवन—पु०[ष० त०] सगीत मे एक प्रकार का राग।

चद्र-भस्म—पु०[उपमि०स०] कपूर।

चद्र-भा—स्त्री० [ष०त०] १ चद्रमा का प्रकाश। २ [ब०स०] सफेद भटकटैया।

चद्र-भाग—पु०[ष०त०] १ चद्रमा की कला। २ चद्रमा की सोलह कलाओं के आधार पर सोलह की सख्या। ३ [ब०स०] हिमालय पर्वत का वह भाग जिसमे से चन्द्रभागा या चनाब नदी निकलती है।

चद्र-भागा—स्त्री०[स० चद्रभाग+अच्—टाप्] पश्चिमी पजाब (पाकिस्तान) मे बहनेवाली प्रसिद्ध चनाब नदी का पुराना नाम जो उसके चद्रभाग नामक हिमालय के एक शिखर से निकलने के कारण पडा था।

चद्र-भाट—पु०[स०चद्र+हि० भाट] शिव और काली के उपासको का एक सम्प्रदाय।

चद्रभानु—पु०[स०] श्रीकृष्ण की पटरानी सत्यभामा के १० पुत्रो मे से सातवे पुत्र का नाम।

चद्र-भाल—पु०[ब०स०] वह जिसके मस्तक पर चद्रमा हो, अर्थात् महादेव।

चद्र-भास—पु०[ब०स०] तलवार।

चद्र-भूति—स्त्री०[ब०स०] चाँदी।

चद्र-भूषण—पु०[ब०स०] वह जिसका भूषण चद्रमा हो, अर्थात् महादेव।

चद्र-मडल—पु०[ष०त०] चद्रमा का पूरा बिब या मडल।

चद्र-मणि—पु०[मध्य० स०] १ चद्रकात मणि। २ उल्लाला छद का दूसरा नाम।

चद्र-मल्लिका—स्त्री०[मध्य० स०] एक प्रकार की चमेली।

चद्रमस्—पु०[स० चद्र=आह्लाद√मि (मापना)+असुन्, म् आदेश] चद्रमा।

चद्रमा—पु०[स० चद्रमस्] पृथ्वी का एक प्रसिद्ध उपग्रह जो पृथ्वी से २५३०००मील दूर है और जिसका व्यास २१६० मील है तथा जिसके कारण रात के समय पृथ्वी पर चाँदनी या प्रकाश होता है और जो एक चाद्र मास मे पृथ्वी की एक परिक्रमा करता है। चाँद। विधु। शशि।

चंद्र-मात्रा—स्त्री० [ष०त० ?] तालो के १४ भेदो मे से एक। (सगीत)

चद्रमा-ललाट—पु० [हि० चद्रमा+ललाट] शिव, जिनके ललाट पर चद्रमा है।

चंद्रमा-ललाम—पु०[हि० चद्रमा+ललाम=तिलक] महादेव।

चंद्र-माला—स्त्री०[ष०त०] १ २८ मात्राओ का एक छद। २ चद्रहार।

चंद्रमास—पु० =चाद्रमास।

चद्र-मुकुट—पु०[ब०स०] शिव।

चंद्र-मुख—वि०[ब०स०] [स्त्री० चद्रमुखी] चद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।

चंद्र-मौलि—पु०[ब०स०] शिव। महादेव।

चंद्र-रत्न—पु०[मध्य० स०] मोती।

चद्र-रेख (ा)—स्त्री०[ष०त०] १ चद्रमा की कला। २ चद्रमा की किरण। ३ द्वितीया का चद्रमा। ४ बकुची। मठरी। ५ एक प्रकार का गहना। ६ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश यगण, रगण, भगण और दो यगण होते हैं।

चद्र-ललाम—पु०[ब०स०] महादेव। शिव।

चंद्र-लेखा—स्त्री० =चद्र-रेख।

चद्र-लोक—पु०[ष०त०] १ आकाश-मडल का वह क्षेत्र जिसमे चद्रमा रहता है। चद्रमा का लोक २ चन्द्रमा मे स्थित जगत् या ससार।

चद्र-वश—पु०[ष०त०] क्षत्रियो का एक प्राचीन वश जिसके आदि पुरुष राजा पुरूरवा थे।

चद्रवशी (शिन्)—वि०[स०चद्रवश+इनि] १ चद्रवश-सम्बन्धी २ क्षत्रियों के चद्रवश मे जन्म लेनेवाला।

चद्र-वदन—वि० [ब०स०] [स्त्री० चद्रवदनी] चद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला। परम सुन्दर।

चद्र-वधू—स्त्री०[ष०त०] बीरबहूटी।

चद्र-वर्त्म (न्)—पु०[ष०त०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण भगण और सगण (ऽ।ऽ ।।। ऽ।। ।।ऽ) होते है।

चंद्र-वल्लरी—स्त्री०[ष०त०] सोम लता।

चद्र-वल्ली—स्त्री०[ष०त०] १ सोम लता। २ माधवी लता। २ ३ प्रसारिणी नाम की लता।

चंद्रवा—पु० =चँदवा।

चद्र-वार—पु०[ष०त०] सोमवार।

चद्र-विंदु—पु०[मध्य०स०] लिखने मे अर्द्धचद्राकार युक्त वह बिन्दु जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगता है। जैसे—'साँस' मे के ऊपर का ँ।

चंद्र-वेष—पु०[ब०स०] शिव। महादेव।

चंद्र-व्रत—पु०[ष० त०] =चाद्रायण (व्रत)।

चंद्रशाला—स्त्री०[स० चद्र√शाल् (शोभित होना)+अच्—टाप्, उप० स०] १ चाँदनी। चद्रिका। २ छत के ऊपर का वह कमरा जिसमे बैठकर लोग चाँदनी रात का आनन्द लेते हों।

चद्रशालिका—स्त्री०[स० चद्रशाला+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] =चद्रशाला।

चद्र-शिला—स्त्री०[मध्य०स०] चद्रकात मणि।

चद्र-शूर—पु०[स०त०?] हालो या हालम नाम का पौधा। चमुर।

चद्र-शृग—पु०[ष०त०] द्वितीया के चद्रमा के दोनो नुकीले छोर या भाग।

चंद्र-शेखर—पु०[ब०स०] १ महादेव, जिनके मस्तक पर चद्रमा है। २ एक पर्वत का नाम जो अराकान मे है। ३ एक प्राचीन नगर। ४ सगीत मे, एक प्रकार का सात-ताला ताल।

चद्रस†—पु०[देश०] गधा बिरोजा।

चद्र-सुत—पु०[ष०त०] बुध (ग्रह)।

चद्र-हार—पु०[मध्य०स०] एक प्रकार का गले का हार जिसमे अर्द्धचद्राकार धातु के कई टुकडे लगे रहते है और बीच मे पूर्णचन्द्र के आकार का गोल टिकडा बना होता है।

चंद्र-हास—पु०[ब०स०] १ खड्ग। तलवार। २ रावण की तलवार का नाम। ३ [ष०त०] चद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

चद्रहासा—स्त्री०[स०चद्रहास+टाप्] सोमलता।

चद्राकित—पु०[चद्र-अकित, तृ०त०] महादेव। शिव। वि०चद्रमा की आकृति से अकित या युक्त।

चंद्रांशु—पु०[चद्र-अशु, ष०त०] १ चद्रमा की किरण। २ [ब०स०] विष्णु।

चद्रा—स्त्री०[स० चद्र+टाप्] १ छोटी इलायची। २ चँदोआ। ३ गुडूची। गुरुच।

स्त्री०[स० चद्र] मरने के समय से कुछ पहले की वह अवस्था जिसमे आँखो की टकटकी बँध जाती है, गला कफ से रुँध जाता है और बोला नही जाता।

चद्रातप—पु०[चद्र-आतप, ष०त०] १ चाँदनी। चद्रिका। २ [चद्र-आ√तप्+अच्] चँदवा।

चद्रात्मज—पु०[चद्र-आत्मज, ष०त०] बुध ग्रह।

चद्रानन—वि०[चद्र-आनन, ब०स०] [स्त्री० चद्रानना] =चद्रवदन। पु०=कार्त्तिकेय।

चद्रापीड—पु० [चद्र-आपीड, ब०स०] १ शिव। महादेव। २ कश्मीर का एक प्रसिद्ध धर्मात्मा राजा जो प्रतापादित्य का बडा पुत्र था और जो शकाब्द ६०४ मे सिंहासन पर बैठा था।

चद्रायण—पु०=चाद्रायण।

चद्रायतन—पु०[ष० त०] चद्रशाला।

चद्रार्क—पु०[चद्र-अर्क, द्व० स०] १ चद्रमा और सूर्य। २ चाँदी, ताँबे आदि के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु।

चद्रार्द्ध—पु० [चद्र-अर्द्ध, ष० त०] चद्रमा का आधा भाग जो प्राय द्वितीया के दिन दिखाई देनेवाले रूप का होता है। अर्धचद्र।

चद्रार्द्ध-चूडामणि—पु० [ब० स०] महादेव। शिव।

चद्रालोक—पु०[चद्र-आलोक ष० त०] १ चद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। चद्रिका। २ कविवर जयदेव कृत सस्कृत का एक प्रसिद्ध अलकार-ग्रथ।

चद्रावती—स्त्री० [चद्र-आवर्त, ब०स० टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक पद मे ४ नगण पर एक सगण होता है और ८, ७ पर विराम। विराम न होने पर "शशिकला" (मणिगुणशरभ) वृत्त होता है। इसका दूसरा नाम 'मणिगुणनिकर' है।

चद्रावली—स्त्री०[चद्र-आवली ष० त० ?] कृष्ण की सखी एक गोपी जो चद्रभानु की कन्या थी।

चद्रिका—स्त्री० [स० चद्र+ठन्—इक, टाप्] १ चद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २ मोर की पूँछ पर का वह अर्द्धचद्राकार चिह्न जो सुनहले मडल से घिरा होता है। ३ इलायची। ४ चाँदा नाम की मछली। ५ चन्द्रभागा नदी। ६ कनफोडा नाम की घास। ७ चमेली। ८ सफेद भटकटैया। ९ मेथी। १० चसुर या हालम पौधा। ११ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न न, त, त, ग (।।। ।।। ऽऽ। ऽऽ। ऽ) और ७-६ पर यति होती है। १२ एक देवी का नाम। १३ माथे पर पहनने का टीका या बेंदी। १४ स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का मुकुट या शिरोभूषण जिसे चद्रकला भी कहते थे।

चद्रिकातप—पु० [चद्रिका-आतप, मयू० स०] चाँदनी। ज्योत्स्ना।

चद्रिका-द्राव—पु०[ब०स०] चद्रकात मणि।

चद्रिकापायी (यिन्)—पु० [स० चद्रिका√पा(पीना)+णिनि युक्, उप०स०] चकोर पक्षी जो चन्द्रमा से निकलनेवाले अमृत या रस का पीनेवाला कहा गया है।

चद्रिकाभिसारिका—स्त्री० [चद्रिका-अभिसारिका, मध्य० स०]= शुक्लाभिसारिका (नायिका)।

चद्रिकोत्सव—पु०[चद्रिका-उत्सव, मध्य० स०] शरत् पूर्णिमा के दिन होनेवाला एक प्राचीन उत्सव।

चद्रिमा—स्त्री०=चद्रिका।

चद्रिल—पु० [स० चद्र+इलच्] १ शिव। महादेव। २ नाई। हज्जाम। ३ बथुआ नाम का साग।

चद्रेष्टा—स्त्री० [चद्र-इष्टा, ब०स०] कुमुदिनी।

चद्रोदय—पु०[चद्र-उदय, ष० त०] १ चद्रमा के उदित होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ चँदोआ। ३ वैद्यक मे एक रस।

चद्रोपराग—पु०[स० चद्र-उपराग, ष० त०] चद्रमा को लगनेवाला ग्रहण। चद्र-ग्रहण।

चद्रोपल—पु० [चद्र-उपल, मध्य० स०] चद्रकात मणि।

चंद्रौल—पु० [स० चद्र] राजपूतो की एक जाति।

चप—पु०[स०√चप् (गमन)+अच्] १ चपा। २ कचनार।

चपई—वि० [हिं० चपा] चपा के फूल के रग का। पीले रग का।

चपक—पु० [स०√चप्+ण्वुल्-अक] १ चपा। २ चपाकली। ३ चपा केला। ४ साख्य मे एक सिद्धि जिसे रम्यक भी कहते है। ५ सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है।

चपक-माला—पु०[ष० त०] १ चपक के फूलो की माला। २ चपाकली। ३ चार चरणो का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश भगण, मगण, सगण, और गुरु होता है।

चपक-रंभा—स्त्री० [मध्य०स०] चपा केला।

चपकली—स्त्री० =चपाकली।

चपकारण्य—पु० [चपक-अरण्य, मध्य०स०] आधुनिक चम्पारन का पुराना नाम।

चपकालु—पु० [स० चंपक√अल् (भूषित करना)+उण्] जाक या रोटी फल का पेड।

चपकावती—स्त्री० [स० चपक+मतुप्, वत्व, डीप्, दीर्घ] चपापुरी।

चप-कोश—पु० [ब०स०] कटहल।

चपत—वि० [देश०] १ (व्यक्ति) जो बिना किसी से कुछ कहे अथवा अपना पता बतलाये कही चला अथवा भाग गया हो। २ (वस्तु) जो किसी स्थान पर से गायब कर दी गई हो।

चँपना—अ० [स० चप्] १ बोझ पडने पर झुकना या दबना। २ उपकार, लज्जा आदि के कारण किसी के सामने झुकना या दबना। †स०=चाँपना।

चपा—पु०[स० चप+टाप्, प्रा० चपअ, चपय, गु० चाँपुँ, प० चबा, म० चाँफा] [वि० चपई] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसमे उग्र गधवाले पीले लबोतरे फूल लगते हैं। २ उक्त वृक्ष का फूल। ३ बगाल मे होनेवाला एक प्रकार का केला। ४ एक प्रकार का घोडा। ५ एक प्रकार का रेशम का कीडा। ६ एक प्रकार का बहुत बडा सदाबहार पेड जो दक्षिण भारत मे अधिकता से होता है। इसकी लकडी बहुत मजबूत होती और इमारत के काम के सिवा गाडी, पालकी, नाव आदि बनाने के काम मे भी आती है। इसे 'सुलताना चपा' भी कहते है।
स्त्री० अग देश की पुरानी राजधानी का नाम।

चपाकली—स्त्री०[हिं० चपा+कली] गले मे पहनने का एक आभूषण जिसमे चपा की कली के आकार के सोने के टुकडे रेशम के डोरे मे पिरोये हुए रहते हैं।

चंपापुरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] अग देश की पुरानी राजधानी, चपा। कर्णपुरी।

चपारण्य—पु०[स० चपा-अरण्य, मध्य० स०] प्राचीन काल का एक जगल जो उस स्थान पर था जिसे आज-कल चपारन कहते है।

चपावती—स्त्री० [स० चपा+मतुप्, वत्व, ङीप्, दीर्घ] चपा नगरी।

चपू—पु० [स०√चप्+उ]नाटक का वह प्रकार या भेद जिसका कुछ अश गद्य मे हो और कुछ पद्य मे।

चंपेल—पु० [स० चपा-तेल] चमेली अथवा चपा का तेल। (राज०)

चपेली†—स्त्री०=चमेली।

चँपौनी—स्त्री०[हिं० चाँपना] जुलाहो के करघे की भँजनी मे लगी हुई एक पतली लकडी।

चबई—पु०[चबा प्रदेश से] एक प्रकार का गहरा फीरोजी रग जिसमे कुछ नीली झलक होती है। (एज्यूरिअन)

वि० उक्त रग का अथवा उक्त रग मे रगा हुआ।

चबल—स्त्री० [स० चर्मण्वती] १ एक नदी जो विन्ध्य पर्वत से निकलकर इटावे के पास जमुना मे मिली है। २ नहरो आदि के किनारे पर लगी हुई वह लकडी जिससे उनका पानी ऊपर चढाया जाता है। ३ पानी की बाढ।

क्रि० प्र०—आना।—लगाना।

पु० [फा० चबुल] [स्त्री० अल्पा० चबली] १ भीख माँगने का कटोरा या खप्पर। भिक्षापात्र। २. चिलम के ऊपर का ढकना।

पु० [?] तलुए या हथेली मे होनेवाला एक प्रकार का चर्म रोग जिसमे उनका चमडा फटने तथा सडने लगता है।

चबी—स्त्री०[हिं० चाँपना] कागज या मोमजामे का वह तिकोना टुकडा जो कपडो पर रग छापते समय उन स्थानो पर रखा जाता है जहाँ रग चढाना अभीष्ट नही होता। पट्टी। कतरनी।

चबू—पु०[?] १ एक प्रकार का धान जो पहाडो पर बिना सीची जमीन पर चैत मे होता है। २ धातु का बना छोटे मुँहवाला एक प्रकार का लोटा या लुटिया जिससे देवमूर्तियो पर जल चढाते है।

चँबेलिया†—वि०=चमेलिया।

चँबेली†—स्त्री०=चमेली।

चँवर—पु०[स० पा० प्रा० चामर, बँ० चमर, उ० चाअर, प० चौर, मरा० चौरी] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. पशुओ मुख्यत सुरा गाय की पूँछ के लबे बालो का वह गुच्छा जो दस्ते के अगले भाग मे लगा होता है और जिसे देवमूर्तियो, धर्मग्रथो, राजाओ आदि के ऊपर और इधर-उधर इसलिए डुलाया जाता है कि उन पर मक्खियाँ आदि न बैठने पावे।

क्रि० प्र०—डुलाना।—हिलाना।

२. घोड़ो, हाथियो आदि के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी।

चवर ढार—पु० [हिं० चँवर+ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चँवरी—स्त्री० [?] विवाह-मडप। उदा०—चँवरी ही पहिचाणियौ, कँवरी मरणौ कत।—कविराजा सूर्यमल।

स्त्री०=छोटा चँवर।

चंसुर—पु०[स० चद्रशूर] एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते पतले और कटावदार होते हैं। इन पत्तो का साग बनाकर खाया जाता है। हालम। हालो।

चइ—पु०[अनु०] महावतो की बोली का एक आदेश-सूचक शब्द जो हाथी को घूमने के लिए कहा जाता है।

चइत†—पु०=चैत।

चइन†—पु०=चैन।

चई—स्त्री० [स० चव्य] चव्य या चाब नामक वनस्पति।

चउँहान—पु०=चौहान।

चउक—पु० =चौक।

चउकी†—स्त्री०=चौकी।

चउतरा†—पु०=चबूतरा।

चउथा†—वि०, पु०=चौथा।

चउदस†—स्त्री०=चौदस।

चउदह†— वि०=चौदह।

चउपाई†—स्त्री० =चौपाई।

चउपारि—स्त्री० = चौपाल।

चउर†—पु० = चँवर।

चउरा—पु० = चौरा।

चउरास्या—पु० = चौरासिया। उदा०—चउरास्या जे कै बसइ असेस।—नरपति नाल्ह।

चउहट्ट—पु० =चौहट्ट।

चउहान*—पु० = चौहान।

चक—पु० [स० चक्र] १ चक्रवाक (पक्षी)। चकवा। २ २. चक्र नामक अस्त्र। ३ चाक। पहिया। ४ चकई नाम का खिलौना। ५ चक्क (दे०)। ६ जमीन का लबा-चौडा बडा टुकडा।

पद—चकबदी (देखें)।

७ छोटा गाँव। खेडा। ८ करघे की बैसर के कुलवाँसे से लटकती हुई रस्सियो से बँधा हुआ डडा जिसके दोनो छोरो पर से चकडोर नीचे की ओर जाती है। ९ ओर। तरफ। दिशा। उदा०—पवन विचार चक चक्रमन चित्त चढि भूतल अकास भ्रमै घाम जल सीत मे।—केशव। १० अधिकता। ज्यादती। बाहुल्य।

मुहा०—चक बँधना=बराबर अधिकता या वृद्धि होना।

११. अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा०—चक जमना या बैठना=पूरी तरह से अधिकार या प्रभुत्व स्थापित होना।

१२ एक प्रकार का गहना जिसका आकार गोल और उभारदार होता है। (पजाब)

वि० बहुत अधिक। भरपूर। यथेष्ट।

वि० =भौचक।

पु० [स०] साधु।

वि० खल। दुष्ट।

चकई—स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।

स्त्री० [स० चक्र] काठ का एक प्रसिद्ध खिलौना जो लगी हुई डोरी पर ऊपर-नीचे चढता-उतरता है।

वि० चक्र के आकार का। गोल। जैसे—चकई आडू या सेब।

चकचकाना—अ० [देश०] १ किसी तरल पदार्थ का किसी चीज मे रस कर ऊपर या बाहर निकलना। २ भीग जाना। भीगना।

†अ० = चकना (चकित होना)।

चकचकी†—स्त्री० [अनु०] करताल नाम का बाजा।

चकचाना†—अ० [देश०] अधिक प्रकाश मे नेत्रो का चौधियाना।

चकचाल†—स्त्री० [स० चक्र+हिं० चाल] १ चक्र की गति या चाल। २ चक्कर। फेरा। ३ चक्र की तरह घूमते रहने का भाव। ४ पार्थिव आवागमन के चक्र मे पडे या फँसे होने की अवस्था।

चकचाव*—पु० = चकाचौध।

चकचून—वि० [स० चक्र-चूर्ण] १ चूर किया हुआ। चकनाचूर। अच्छी तरह पीस कर बारीक किया हुआ। २ अच्छी तरह तोडा-फोड़ा या चकनाचूर किया हुआ।

चक+चूर—वि० = चकचून।

चकचूरना*—स० [हिं० चक+चूरन] १ बहुत महीन पीसना या छोटे-छोटे टुकडे करना। २ चकनाचूर करना।

चकचोह—स्त्री० = चुहल।

चकचोहा—वि० [हि० चक (=भरपूर)+चोआ (=रस)] [स्त्री० चकचोही] १ रस से खूब भरा हुआ। २ चिकना-चुपडा।
स्त्री० [अनु०] हँसी-ठट्ठा। चुहल।

चकचौंध—स्त्री०=चकाचौध।

चकचौंधना—अ० [स० चक्षु और अध] चकाचौध होना।
स० चकाचौध उत्पन्न करना।

चकचौंह—स्त्री०= चकाचौध।

चका-चौबद—वि० = चाक-चौबद।

चकचौहना—अ० [हिं० चक + चौहना] चाह भरी दृष्टि से देखना। प्रेम-पूर्वक देखना।

चकचौहाँ—वि० [हि० चकचौहना] १ जो नेत्रो को चौधिया देता हो। २ बहुत ही प्रकाशपूर्ण या चमकीला। ३ सुदर। सुहावना।

चकड़बा—पु० = चकरबा।

चक-डोर—पु० [हिं० चकई+डोर] १ चकई, लट्टू आदि घुमाने या नचाने की डोरी। २ जुलाहो के करघे की वह डोरी जिसमे बेसर बँधी रहती है।

चकडोल—स्त्री० [स० चक्र-दोला] एक प्रकार की पुरानी चाल की पालकी। (राज०) उदा०—चकडोल लगै इणि भाँति सुंचाली।—प्रिथीराज।

चकत—स्त्री० [हिं० चकी =दाँतो की पकड] दाँतो से कसकर पकडने की क्रिया या भाव। दाँतो की पकड।
मुहा०—चकत मारना =दाँतो से पकडकर मास आदि नोचना।

चकताई†—पु०=चकत्ता।

चकती—स्त्री० [सं० चक्रवत्] १ कपडे, चमडे, धातु आदि का फाड या काटकर बनाया हुआ गोल या चौकोर टुकडा। २ उक्त प्रकार का कटा हुआ वह टुकडा जो वैसी किसी दूसरी ही चीज की कटी या टूटी हुई जगह पर लगाया जाता है। जैसे—कपडे या परात मे लगाई हुई चकती।
मुहा०—आसमान या बादल मे चकती लगाना = (क) अनहोनी या असभव काम या बात करने का प्रयास करना। (ख) बहुत बढ-चढकर और अपनी शक्ति के बाहर की बाते करना।
३ दुबे भेडे की गोल चक्राकार दुम।

चकत्ता—पु० [स० चक्रवत्ता] १ रक्त-विकार आदि के कारण पडा हुआ शरीर पर बडा गोल दाग। चमडे पर उभरा हुआ धब्बा वा दाग। ददोरा। जैसे—कोढ या दाद होने पर शरीर मे जगह-जगह चकत्ते पड जाते है। २ शरीर मे गडे या गडाये हुए दाँतो का चिह्न या निशान। जैसे—कुत्ते या बदर के काटने से शरीर पर पडनेवाला चकत्ता।
मुहा०—चकत्ता भरना या मारना =दाँतो से काटकर मास निकाल लेना।
पु० [तु० चगताई] १ मुगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वश मे बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह हुए थे। २ उक्त के वश का कोई व्यक्ति। ३ बहुत बडा राजा। महाराज।

चकदार—पु० [हिं० चक +फा० दार (प्रत्य०)] वह जो किसी दूसरे की जमीन पर कुआँ बनवाकर उस जमीन का लगान देता है।

चकना—अ० [स० चक्र=भ्रात] १ चकित या विस्मित होना। भौंचक्का होना। चकराना। २ भयभीत या सशकित होना। ३ चौकना।

चकनाचूर—वि० [हिं० चक =भरपूर+चूर] १ जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे-छोटे टुकडे हो गये हो। चूर-चूर। चूर्णित। २ लाक्षणिक रूप मे, बहुत अधिक थका हुआ। बहुत शिथिल और श्रात।

चकपक—वि० [स० चक्र =भ्रात] चकित। भौचक्का। हक्का-बक्का।
स्त्री० चकित या विस्मित होने की अवस्था या भाव।

चकपकाना—अ० [स० चक्र=भ्रात] १ बहुत अधिक चकित या विस्मित होना। भौचक्का या हक्का-बक्का होना। २ भय या शका से विकल होना। ३ चौकना।

चकफेरी—स्त्री० [स० चक्र, हिं० चक+हिं० फेरी] किसी वृत्त वा मडल के चारो ओर घूमने या फिरने की क्रिया या भाव। परिक्रमा। भँवरी।
क्रि० प्र०—करना।—खाना। —फिरना।—लेना।

चकबंट—स्त्री० [हिं० चक +बाँटना] बहुत से खेतो को कुछ आदमियो मे बाँटने का वह प्रकार जिसमे कई खेतो के चक या समूह प्रत्येक हिस्सेदार को दिये जाते हैं।

चकबंदी—स्त्री० [हिं० चक +फा० बदी] १ भूमि के बहुत बडे खड को छोटे-छोटे चको या भागो मे बाँटने की क्रिया या भाव। २ छोटे-छोटे खेतो को एक मे मिलाकर उनके बडे-बडे चक या विभाग बनाने की क्रिया या भाव। (कन्सोलिडेशन आफ होल्डिंग्स)

चकबक—पु० = चकमक।

चकबस्त—पु० [फा०] १ चको मे बँटा हुआ भूमि खड। २ कश्मीरी ब्राह्मणो का एक भेद या वर्ग।

चकमक—पु० [तु० चकमाक] एक प्रकार का आग्नेय कडा पत्थर जिस पर चोट पडने से आग निकलती है। (फ्लिन्ट)

चकमा—पु० [स० चक्र=भ्रात] १ ऐसा धोखा या भुलावा जो किसी का ध्यान किसी दूसरी ओर आकृष्ट करके दिया जाय। किसी का ध्यान दूसरी ओर रखकर उसे दिया जानेवाले धोखा।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।
२. लडको का एक प्रकार का खेल।
†पु० [?] एक प्रकार का बदर।

चकमाक—पु० = चकमक।

चकमाकी—वि० [तु० चकमक] चकमक का। जिसमे चकमक हो।
स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की बदूक जो चकमक पत्थर के योग से गोली छोडती थी।

चकर—पु० [स० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।
†पु० चक्कर।

चकरबा—पु० [स० चक्रव्यूह] १ ऐसी स्थिति जिसमे यह न सूझे कि क्या करना चाहिए। असमजस की और विकट अवस्था। २ व्यर्थ का झगडा या बखेडा।

चकर-मकर—पु० [स० चक्र+फा० मकर] छल-कपट की बात। धोखे-बाजी।

चकरसी—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत बडा पेड जो बगाल और आसाम मे होता है। इसके हीर की चमकीली और मजबूत लकडी मेज, कुरसी आदि सामान बनाने के काम मे आती है।

चकरा†—पु० [हिं० चक्कर] पानी का भँवर।
† वि० [स्त्री० चकरी] चारो ओर घूमने या चक्कर खानेवाला।
वि० [स्त्री० चकरी] चौडा। विस्तृत।
† पु० = चकला।

चकराना—अ० [स० चक्र] १ सिर का चक्कर खाना। सिर घूमना। २ किसी प्रकार के चक्कर या फेर मे पडना। ३ चारो ओर या इधर-उधर घूमना। भ्रात होना। भटकना। ४ चकित होना।
स० १ चक्कर देना या खिलाना। २ किसी को चक्कर या फेर मे डालना। चकित या स्तभित करना।

चकरानी—स्त्री० [फा० चाकर का स्त्री०] =चाकरानी (दासी)।

चकरिया—वि० [फा० चाकरी+हा (प्रत्य०)] नौकरी-चाकरी करने-वाला।
पु० टहलुआ। सेवक।

चकरिहा—वि० = चकरिया।

चकरी†— स्त्री० [स० चक्री] १ चक्की। २ चक्की का पाट। ३. चक्की के पाट की तरह की कोई गोलाकार चिपटी चीज। ४ लडको के खेलने का चकई नाम का खिलौना। ५ चारो ओर भटकानेवाला चक्कर या फेर। भ्राति। उदा०—यह तौ सूर तिन्है लै सौपौ जिनके मन चकरी।—सूर।

चकरी-गिरह—स्त्री० [जहाजी] अर्गल मे लगी हुई रस्सी की गाँठ जो उसे रोके रहती है। (लश०)

चकल†—पु० [हिं० चक्का] १ किसी पौधे को दूसरी जगह लगाने या खोदकर निकालने की क्रिया या भाव। २ वह मिट्टी जो उक्त प्रकार से पौधे को उखाडकर दूसरी जगह ले जाने पर उसकी जड मे लिपटी रहती है।

चकलई—स्त्री० [हिं० चकला] चकला (चौडा या सपाट) होने की अवस्था या भाव। विस्तार।

चकला—पु० [स० चक्र, हिं० चक, +ला (प्रत्य०)] १ काठ, पत्थर, लोहे आदि का गोलाकार चिकना खड जिस पर पूरी या रोटी बेली जाती है। २ वह भू-भाग जो एक ही तल मे दूर तक फैला हो और जिसमे कई गाँव या बस्तियाँ हो।
पद—चकलेदार (देखे)।
३ व्यभिचार करानेवाली वेश्याओ की बस्ती या मुहल्ला। ४ चक्की।
वि० [स्त्री० चकली] अधिक विस्तारवाला। चौडा। जैसे—चकला मैदान।

चकलाना—स० [हिं० चकल] पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाने के लिए मिट्टी समेत उखाडना। चकल उठाना।
स० [हिं० चकला] चकला अर्थात् चौडा या विस्तृत करना।

चकली—स्त्री० [स० चक्र, हिं० चक्र] १ छोटा चकला जिस पर चदन आदि घिसते है। चौकी। हिरसा। २ गडारी। घिरनी।

चकलेदार—पु० [हिं० चकला +फा० दार] वह अधिकारी जो किसी चकले अर्थात् विस्तृत भू-भाग की मालगुजारी आदि वसूल करता और किसी की ओर से वहाँ की व्यवस्था तथा शासन करता था।

चकल्लस—स्त्री० [?] १. झगडा-बखेडा। २ मित्रो मे होनेवाला हँसी-मजाक या हास-परिहास।

चकवँड—पु० [स० चक्रमर्द] एक प्रकार का जगली बरसाती पौधा जिसकी पत्तियाँ, डठल या तने की ओर नुकीली और सिरे की ओर गोलाई लिये हुए चौडी होती है। पमार। पवाड।
पु० [स० चक्र] मिट्टी का वह छोटा पात्र जिसमे से थोडा-थोडा हाथ से जल निकालकर चक्क पर चढे हुए पात्र को कुम्हार गीला तथा चिकना करता है।

चकवा†—पु० [स० चक्रवाक, पा० चक्कवाको, प्रा० चक्कवाअ, चकाअ, गु० चको, सिं० चकुओ, प० चक्का, सि० सक्का, ने० चखेवा, मरा० चकवा] [स्त्री० चकई] १ एक प्रसिद्ध जल-पक्षी जिसके सबध मे यह कहा जाता है कि यह रात को अपने जोडे से अलग हो जाता है। सुरखाब। २ रहस्य सप्रदाय मे, मन।
पु० [स० चक्र] १ एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसके हीर की लकडी बहुत मजबूत और छाल कुछ स्याही लिये सफेद या भूरी होती है। इसके पत्ते चमडा सिझाने के काम मे आते है। २ जुलाहो की चरखी मे लगी हुई बाँस की छडी। ३ हाथ से दबा-दबाकर बढाई हुई आटे की लोई।

चकवाना†—अ० = चकपकाना।

चकवार†—पु० दे० 'कछुआ'।

चकवाह†—पु० = चकवा।

चकवी—स्त्री० =चकई।

चकवै—पु० १ दे० 'चक्रवर्त्ती'। २ दे० 'चकोर'।

चकसेनी†—स्त्री० [देश०] काकजघा।

चकहा†—पु० [स० चक्र] गाडी आदि का पहिया।
पु० = चकवा।

चकाँड—पु० [हिं० चक +आँड] चिपटा अडकोश।

चका†—पु० [स० चक्र] १ पहिया। २. चक्क।
* पु० = चकवा।

चकाकेवल—स्त्री० [हिं० चकवा, चक्का,] काले रग की मिट्टी जो सूखने पर चिटक जाती और पानी से लसदार होती है। यह कठिनता से जोती जाती है।

चकाचक—स्त्री० [अनु०] तलवार आदि के लगातार शरीर पर पड़ने का शब्द।

क्रि० वि० [अनु०] अच्छी तरह से। अधिक मात्रा में। जैसे—चकाचक खाया था।
वि० १ चटकीला। २ मजेदार। ३ रस आदि में डूबा हुआ। तर। तराबोर।
चकाचौंध—स्त्री० [सं० चक= चमकना+चौ=चारों ओर+अंध] १ किसी वस्तु के अत्यधिक प्रकाशित होने की वह स्थिति जिसमें नेत्र अधिक प्रकाश के कारण उस वस्तु को देख न पाते हों और जल्दी-जल्दी खुलने तथा बंद होने (झपकने) लगते हों। २ उक्त प्रकार की वस्तुओं के देखने से आँखों पर होनेवाला परिणाम।
क्रि० प्र० — लगना। —होना।
चकाचौंधी†—स्त्री० = चकाचौंध।
चकातरी—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।
चकाना†—अ० १ = चकपकाना। २ =चकराना।
चकाबू—पु० [सं० चक्रव्यूह] १ प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसके चारों ओर खड़ा किया जानेवाला सैनिक व्यूह। २ भूल-भुलैयाँ (दे०)।
चकार—पु० [सं० च+कार] १ वर्णमाला में छठा व्यंजन वर्ण जो च है। २ मुँह से निकलनेवाला किसी प्रकार का शब्द। जैसे—उसके मुँह से चकार तक न निकला।
†पु० [हिं० चोर का अनु०] चोर या उचक्का। जैसे—चाईं-चकार चोर और नटखट तोरे बंदे।—तेगअली।
चकावल—स्त्री० [देश०] घोड़े के अगले पैर में गामचे की हड्डी का उभार।
चकासना*—अ० = चमकना।
चकित—वि० [सं० √चक् (भ्रांत होना) +क्त] जो अप्रत्याशित या अद्भुत कार्य, बात या व्यवहार देखकर विकल या विस्मित, सशंकित या स्तब्ध हो गया हो। आश्चर्य में आया या पड़ा हुआ।
चकितवंत*—वि० = चकित।
चकिता—स्त्री० [सं० चकित+टाप्] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।
चकिताई*—स्त्री० [हिं० चकित] चकित होने की अवस्था या भाव।
चकिया†—स्त्री० [सं० चक्रिका] किसी चीज का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। जैसे—पत्थर की चकिया।
चकुंदा†—पु० [सं० चक्रमर्द] चकवँड (दे०)।
चकुरी†—स्त्री० [सं० चक्र] मिट्टी की छोटी हाँड़ी।
चकुला†—पु० [देश०] चिड़िया का बच्चा। चेंटुआ।
चकुलिया—स्त्री० [सं० चक्रकुल्या] एक प्रकार का पौधा।
चकृत†—वि० = चकित।
चकेठ—पु० [सं० चक्र-यष्टि] वह डंडा जिससे कुम्हार चाक घुमाते हैं।
चकेंडी—स्त्री० [सं० चक्रभाण्डिका, प्रा० चक्कहंडिया] चकवँड (दे०)।
चकेव*—पु० = चक्रवाक (चकवा पक्षी)। उदा०—कुच-जुग चकेव चरइ गंगाधारे।—विद्यापति।
चकोट—पु० [हिं० चकोटना] १ चकोटने की क्रिया या भाव। २ गाड़ी के पहिये से जमीन पर पड़नेवाली लकीर।
चकोटना—स० [हिं० चिकोटी] चिकोटी काटना। चुटकी से मांस नोचना।
चकोतरा—पु० [सं० चक्र =गोला] १ एक प्रकार का नीबू की जाति का पेड़ जिसमें खट-मीठे गोल फल लगते हैं। २ उक्त पेड़ का फल जो प्रायः खरबूजे की तरह बड़ा होता है।
चकोता—पु० [हिं० चकत्ता] एक प्रकार का रोग जिसमें घुटने के नीचे छोटी-छोटी फुंसियाँ निकल आती हैं।
चकोर—पु० [सं० √चक् (तृप्त होना) +ओरन्] [स्त्री० चकोरी] १ एक प्रकार का बड़ा तीतर जो नैपाल, पंजाब और अफगानिस्तान के पहाड़ी जंगलों में बहुत मिलता है। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण, एक गुरु और अंत में एक लघु होता है। यह एक प्रकार का सवैया है।
चकोह†—पु० [सं० चक्रवाह] पानी का भँवर।
चकौंड†—पु० =चकवँड।
चकौंध—स्त्री० = चकाचौंध।
चकौटा—पु० [देश०] १ भूमि की लगान का एक पुराना प्रकार। २ ऋण चुकाने के बदले में दिया जानेवाला पशु। मुलवन।
चक्क—पु० [सं० √चक्क् (पीड़ा होना) +अप्] पीड़ा। दर्द।
† वि० भर-पूर। यथेष्ट। जैसे—चक्क माल।
पु० [सं० चक्र] १ चक्रवाक पक्षी। चकवा। २ कुम्हार का चाक। ३ ओर। तरफ। दिशा। ४ दे० 'चक्र'।
चक्कर—पु० [सं० चक्र] १ लकड़ी, लोहे आदि का गोलाकार ढाँचा जो छड़ों, तीलियों आदि द्वारा चक्रनाभि पर कसा रहता है और किसी अक्ष या धुरे को केंद्र बनाकर उसके चारों ओर घूमता तथा यान, रथ आदि को आगे खींचता चलता है। २ उक्त आकार की कोई घूमनेवाली वस्तु। चाक। जैसे—(क) अतिशबाजी का चक्कर। (ख) पानी का चक्कर (भँवर)। (ग) सुदर्शन चक्कर। ३ कोई गोलाकार आकृति। मंडल। घेरा। ४ गोल सड़क या रास्ता। ५ किसी गोलाकार मार्ग के किसी बिंदु से चलकर तथा उसके चारों ओर घूमकर फिर उसी बिंदु पर पहुँचने की क्रिया या भाव। गोलाई में घूमना।
मुहा०—चक्कर काटना =किसी चीज के चारों ओर घूमना। मँडराना।
६ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना और फिर वहाँ से लौटकर आना। जैसे—(क) आज मुझे शहर के चार चक्कर लगाने पड़े हैं। (ख) मैं उनके घर कई चक्कर लगा आया पर वे मिले नहीं।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।
७ रास्ते का घुमाव-फिराव। जैसे—इस रास्ते से बहुत चक्कर पड़ेगा। ८ कोई ऐसी कठिन, पेचीली या झंझट की बात या समस्या जिससे आदमी परेशान या दुःखी होता हो। जैसे—कचहरी के चक्कर में इस भले आदमी को व्यर्थ फँसाया गया है। ९ धोखा। भुलावा।
मुहा०—(किसी के) चक्कर में आना=किसी के फेर में फँसना। धोखा खाना। **(किसी को) चक्कर में डालना** =(क) किसी ऐसे कठिन काम में किसी को फँसाना कि वह परेशान हो जाय। (ख) चकित करना।
१० ऐसी असमंजस की स्थिति जिसमें मनुष्य कुछ सोच या निश्चित न कर पाता हो। ११ पीड़ा, रोग आदि के कारण मस्तिष्क में होनेवाला एक विकार जिसमें व्यक्ति के चारों ओर सामने की चीजें घूमने लगती हैं। घुमटा।
चक्कल—वि० [सं० √चक्क् (पीड़ित होना) +अलन्] गोल। वर्तुल।

चक्कवइ*—वि० = चक्रवर्ती।

चक्कवत*—पु० = चक्रवर्ती (राजा)।

चक्कवा*—पु० = चकवा।

चक्कवै—वि० =चक्रवर्ती। उदा०—अइस चक्कवै राजा चहूं खड भैंहोई। —जायसी।

चक्कस—पु० [फा० चकस] बुलबुल, बाज आदि पक्षियो के बैठने का अड्डा जो प्राय लोहे के छड का बना होता है।

चक्का—पु० [स०चक्रम्, प्रा० पा० चक्क, बं० गु० मरा० चाक, उ० चक, प० चक्क, सि० चकु, ने० चाको] स्त्री० अल्पा० चक्की] १ गाडी, रथ आदि का पहिया। चाक। २ पहिये की तरह की कोई गोलाकार चीज। ३ किसी चीज का गोलाकार जमा हुआ टुकडा। चक्का। जैसे—कत्थे या दही का चक्का। ४ ईंट, पत्थर आदि का टुकडा जो प्राय फेंककर मारा जाता है। ५ ईंट, पत्थर के टुकडो आदि का क्रम से और सजाकर लगाया हुआ ढेर। थाक।

चक्की—स्त्री० [स० चक्री, प्रा० चक्कि] १ आटा पीसने, दाल दलने आदि का वह प्रसिद्ध यत्र जो एक दूसरे पर रखे हुए पत्थर के दो गोलाकार टुकडो के रूप मे होता है और जिनमे से ऊपरवाले पत्थर के घूमने से उसके नीचे डाली हुई चीजे पिसती या दली जाती है। जाँता।

क्रि० प्र०—चलाना।—पीसना।

मुहा०—चक्की पीसना = (क) चक्की मे डालकर गेहूँ आदि पीसना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम का काम निरतर करते रहना।

पद—चक्की का पाट = चक्की के दोनो पत्थरो मे से हर एक। **चक्की की मानी** = (क) चक्की के नीचे के पाटे के बीच मे गडी हुई वह खूँटी जिस पर ऊपर का पाट घूमता है। (ख) ध्रुवतारा। **चलती चक्की** = जगत्। ससार। जैसे—चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।—कबीर।

स्त्री० [स० चक्रिका] १ पैर के घुटने की गोल हड्डी। २ ऊँटो के घुटनो पर का गोल घट्ठा। चाकी। बिजली।

चक्की-रहा—पु० [हि० चक्की + रहाना] चक्की को टाँकी से कूटकर खुरदरी करनेवाला कारीगर।

चक्कू†—पु० = चाकू।

चक्खी—स्त्री० [हि० चखना] १ स्वाद के लिए चखी अर्थात् थोडी-थोडी खाई जानेवाली चटपटी और नमकीन चीज। चाट। जैसे—कचालू, गोलगप्पा आदि। २ कोई नशे की चीज पीने के समय या उसके बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जानेवाली चटपटी या नमकीन चीज। ३ बटेरो को दाना चुगाने की क्रिया।

चक्र—पु० [स० √कृ (करना) +क, नि० द्वित्व] १ गाडी का वर्तुलाकार पहिया। विशेष दे० 'चक्कर'। २ कुम्हार का चाक। ३ कोई वर्तुलाकार चीज। ४ छोटे पहिए के आकार का एक प्राचीन अस्त्र। ५ चक्की। ६ कोल्हू। ७ पानी का भँवर। ८ हवा का बवडर। चक्रवात। ९ दल। समुदाय। १० एक प्रकार का सैनिक-व्यूह। ११ गाँवो, शहरो का समूह। मडल। १२ मडलाकार घेरा। जैसे—राशि-चक्र। १३ ऐसे गोल या चौकोर खाने जो रेखाओ आदि से घिरे हो। जैसे—कुडली चक्र। १४ सामुद्रिक मे हाथ की वह रेखा जो गोलाई मे घूमी हो। १५ समय की वह अवधि जिसमे कुछ निश्चित प्रकार की घटनाएँ आदि क्रमश घटती अथवा अवस्थाएँ बदलती हो और फिर उतने ही समय मे जिनकी पुनरावृत्ति होती हो। (साइकिल) जैसे—अर्थशास्त्र मे व्यापार चक्र। (ट्रेड साइकिल)। १६ फेरा चक्कर। १७ चकवा। १८ तगर का फूल। १९ योग के अनुसार मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर आदि शरीरस्थ कमल या पद्म। २० एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रात भूमि। २१ दिशा। प्रात। २२ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण, तीन नगण और अत मे लघु, गुरु होते है। २३ धोखा। २४ (क) शरीर विज्ञान या दैहिकी के अनुसार जीवधारियो के शरीर के अदर की वह रचना जो ततु-जाल के रूप मे होती और कुछ विशिष्ट प्रक्रियाएँ करती है। (प्लेक्सस) (ख) योग शास्त्र के अनुसार शरीर के उक्त विशिष्ट अग जो आधुनिक विज्ञान-वेत्ताओ के अनुसार कुछ विशिष्ट जीवनरक्षिणी और विकासकारिणी गिल्टियो के आस-पास पडते है। (प्लेक्सस)

विशेष—पहले इनकी सख्या ६ मानी गई थी जिससे 'षट्-चक्र' (दे०) पद बना, पर आगे चलकर हठ-योग मे जब इनकी सख्या आठ मानी गई जिससे ये अष्टचक्र या अष्टकमल (दे०) कहलाने लगे। और भी आगे चलकर कुछ लोगो ने इनमे 'ललना-चक्र' नामक नवाँ और 'गुरु-चक्र' नामक दसवाँ चक्र भी बढा दिया है।

२५ अपना सघटन दृढ करने के लिए राजनीतिक, सामाजिक आदि कार्य करनेवालों का किसी स्थान पर एकत्र होकर विचार-विनिमय, प्रदर्शन आदि करना। जमाव। (रैली) २६ गुप्त रूप से कही आड मे रहकर की जानेवाली कार्रवाई। अभिसधि। जैसे—यह सारा चक्र आप ही का चलाया हुआ है। २७ (सख्या के विचार से) बदूक, राइफल आदि से गोली चलाने की क्रिया। (राउण्ड) जैसे—पुलिस ने चार चक्र गोलियाँ चलाई। २८ धातु का एक विशेष प्रकार का टुकडा जो प्राय सैनिको को कोई वीरता-पूर्ण काम करने पर पदक या तमगे के रूप मे दिया जाता है। जैसे—महावीर चक्र, वीर चक्र आदि।

चक्रक—पु० [स० चक्र √कै (प्रतीत होना) + क) १ नव्य न्याय मे, एक प्रकार का तर्क। २ एक प्रकार का साँप।

वि० पहिये के आकार का। गोलाकार।

चक्र-कारक—पु० [ष० त०] १ नखी नामक गध द्रव्य। २ हाथ के नाखून।

चक्र-कुल्या—स्त्री० [ष० त०] चक्रपर्णी लता। पिठवन।

चक्र-क्रम—पु० [उपमि० स०] कुछ विशिष्ट घटनाओ का कई विशिष्ट अवसरो पर क्रमश तथा बराबर रहने का क्रम। चक्र की तरह बार-बार घूमकर आनेवाला क्रम। (साइक्लिक आर्डर) जैसे—गरमी, बरसात और सरदी का चक्र-क्रम।

चक्र-गज—पु० [स० त०] चकवँड।

चक्र-गति—स्त्री० [ष० त०] १ किसी केंद्र के चारो ओर अथवा अपने ही अक्ष पर चारो ओर घूमने की क्रिया या भाव। २ दे० 'चक्र क्रम'।

चक्र-गर्त—पु० = चक्र-तीर्थ।

चक्र-गुच्छ—पु० [ब० स०] अशोक (वृक्ष)।

चक्र-गोप्ता (प्तृ)—पु० [ष० त०] १ सेनापति। २ राज्य का रक्षक अधिकारी। ३ रथ और उसके चक्र आदि की रक्षा करनेवाला योद्धा।

चक्र-चर—वि० [स० चक्र √चर् (चलना) +ट, उप० स०] चक्कर या चक्र मे चलनेवाला।
पु० तेली।

चक्र-जीवक—पु० [स० चक्र √जीव् (जीना) +ण्वुल्—अक, उप० स०] कुम्हार।

चक्र-जीवी (विन्)—पु० [स० चक्र √जीव्+णिनि, उप० स०] =चक्र-जीवक।

चक्र-ताल—पु० [मध्य० स०] सगीत मे एक प्रकार का चौदह-ताला ताल।

चक्रतीर्थ—पु० [मध्य० स०] १ दक्षिण भारत का वह तीर्थ-स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतो के बीच तुगभद्रा नदी घूमकर बहती है। २ नैमिषारण्य का एक सरोवर।

चक्र-तुड—पु० [ब० स०] गोल मुँहवाली एक प्रकार की मछली।

चक्र-दड—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार की कसरत जिसमे जमीन पर दड करके झट दोनो पैर समेट लेते है और फिर दाहिने पैर को दाहिनी ओर और बाएँ पैर को बाई ओर चक्कर देते हुए पेट के पास लाते है।

चक्र-दती—स्त्री० [ब० स०, डीष्] १ दती वृक्ष। २ जमाल गोटा।

चक्र-दष्ट्र—पु० [ब० स०] सूअर। शूकर।

चक्रधर—वि० [स० चक्र √धृ (धारण) +अच्, उप० स०] चक्र धारण करनेवाला। जिसके पास या हाथ मे चक्र हो।
पु० १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ ऐद्रजालिक। बाजीगर। ४ किसी छोटे भू-भाग का अधिकारी या शासक। ५ साँप। ६ गाँव का पुरोहित। ७ नटराग से मिलता-जुलता षाडव जाति का एक राग जो सध्या समय गाया जाता है।

चक्रधारा—स्त्री० [ष० त०] चक्र की परिधि।

चक्रधारी(रिन्)—वि०, पु० [स० चक्र √धृ (धारण) +णिनि, उप० स०] =चक्रधर।

चक्र-नख—पु० [ब० स०] व्याघ्र नख नामक ओषधि। बघनखा।

चक्र-नदी—स्त्री० [मध्य० स०] गडकी नदी।

चक्र-नाभि—स्त्री० [ष० त०] पहिये का वह मध्य भाग जिसके बीच मे से अक्ष या धुरा होकर जाता है।

चक्र-नाम—पु० [ब० स०] १ माक्षिक धातु। सोनामक्खी। २ चकवा या चक्रवाक पक्षी।

चक्र-नायक—पु० [ष० त०] व्याघ्र नख नाम की ओषधि।

चक्र-नेमि—स्त्री० [ष० त०] पहिये का घेरा या परिधि।

चक्र-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, डीष्] पिठवन।

चक्र-पाणि—पु० [ब० स०] हाथ मे चक्र धारण करनेवाले, विष्णु।

चक्र-पाद—पु० [ब०स०] १ गाडी। रथ। २ हाथी।

चक्र-पादक—पु० चक्रपाद (दे०)।

चक्र-पानि*—पु० =चक्रपाणि।

चक्र-पाल—पु० [स० चक्र √पाल् (रक्षा) +णिच् +अण्, उप० स०] १ वह जो चक्र धारण करे। २ किसी प्रदेश का शासक या सूबेदार। ३ गोल आकृति। वृत्त। ४ सगीत मे शुद्ध राग का एक भेद।

चक्र-पूजा—स्त्री० [स० त०] १ तान्त्रिको की एक प्रकार की पूजा-विधि जिसमे बहुत से उपासक एक चक्र या मडल के रूप मे बैठकर तान्त्रिक क्रियाएँ करते है। २ दे० 'चरकपूजा'।

चक्र-फल—पु० [ब० स०] एक प्राचीन अस्त्र जिसका फल गोलाकार होता था।

चक्र-बध—पु० [ब० स०] कविता-रचना का एक प्रकार जिसमे उसके शब्द खानो मे भरे जाते है।

चक्र-बधु—पु० [ष० त०] १ सूर्य। २ अँगूठी। ३ समूह।

चक्र-बाधव—पु० [ष० त०] चक्र-बधु (दे०)।

चक्र-भृत्—पु० [स० चक्र √भृ (धारण) +क्विप्, उप० स०] १ चक्र नामक अस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति। २ विष्णु।

चक्र-भेदिनी—स्त्री० [स० चक्र √भिद् (विदारण) √णिनि–डीप्, उप० स०] रात्रि। रात।

चक्र-भोग—पु० [ष० त०] ज्योतिष मे ग्रह की वह गति जिसके अनुसार वह एक स्थान से चलकर फिर उसी स्थान पर पहुँचता है।

चक्र-भ्रम—पु० [स० चक्र √भ्रम् (घूमना) +अच्, उप० स०] खराद।

चक्र-भ्रमर—पु० [ब० स०] एक प्रकार का नृत्य।

चक्र-मडल—पु० [ब० स०] एक प्रकार का नृत्य जिसमे नाचनेवाला किसी केद्र के चारो ओर नाचता हुआ घूमता है।

चक्र-मडली (लिन्)—पु० [स० चक्र-मडल उपमि० स०, +इनि] अजगर साँप की एक जाति।

चक्र-मर्द—पु० [स० चक्र √मृद् (मर्दन) +अण, उप० स०] चकवँड।

चक्र-मीमासा—स्त्री० [ष० त०] वैष्णवो की चक्र-मुद्रा धारण करने की विधि।

चक्र-मुख—वि० [ब० स०] गोल मुँहवाला।
पु० सूअर।

चक्र-मुद्रा—पु० [मध्य० स०] शरीर के विभिन्न अगो पर दगवाया या लगवाया जानेवाला चक्र के आकार का चिह्न।

चक्र-यत्र—पु० [उपमि० स०] ज्योतिष सबधी वेध करने का एक प्रकार का यत्र।

चक्र-यान—पु० [मध्य०स०] ऐसी गाडी जिसमे पहिये लगे हो।

चक्र-रद—पु० [ब० स०] सूअर।

चक्र-रिष्टा—स्त्री० [ब० स०] बक। बगला।

चक्र-लक्षणा—स्त्री० [ब० स०] गुरुच या गुडूची नामक लता।

चक्र-लिप्ता—स्त्री० [ष० त०] ज्योतिष मे राशि-चक्र का कलात्मक भाग अर्थात् २१६०० भागो मे से एक भाग।

चक्र-लेखित्र—पु० [मध्य० स० (लेखित्र?)] एक प्रकार का छोटा उपकरण जिसकी लेखनी की नोक पर लगे हुए छोटे से चक्र द्वारा एक विशेष प्रकार के कागज पर बनाये हुए अक्षरो की सहायता से किसी लेख आदि की प्रतिलिपियाँ तैयार की जाती है। (साइक्लोस्टाइल)

चक्र-वर्तिनी—स्त्री० [स० चक्र √वृत् (बरतना) +णिनि, डीप्, उप० स०] १ किसी दल या समूह की अधीश्वरी। २ जनी या पानडी नाम का पौधा जिसकी पत्तियाँ सुगधित होती है।

चक्र-वर्ती (तिन्)—वि० [स० चक्र √वृत् +णिनि, उप० स०] [स्त्री० चक्र-वर्तिनी] (राजा) जिसका राज्य बहुत दूर-दूर तक और विशेषत समुद्र-तट तक फैला हुआ हो। सार्वभौम।
पु० १ ऐसा सम्राट् जो दो समुद्रो के बीच की सारी भूमि पर एकच्छत्र

राज्य करता हो। २ किसी दल का अधिपति। समूह-नायक। ३ बथुआ (साग)।

चक्र-वाक—पु० [स० वाक √वच् (बोलना)+घञ्, ब० स०] [स्त्री० चक्रवाकी] चकवा पक्षी।

चक्रवाड—पु० = चक्रवाल।

चक्र-वात—पु० [स० उपमि० स०] चक्कर खाती हुई बहुत तेज चलनेवाली हवा। बवडर। (व्हर्ल विंड)

चक्रवान् (वत्)—पु० [स० चक्र+मतुप्] पुराणानुसार चौथे समुद्र के बीच मे स्थित माना जानेवाला एक पर्वत जहाँ विष्णु भगवान ने हयग्रीव ओर पचजन नामक दैत्यो को मारकर चक्र और शख दो आयुध प्राप्त किये थे।

चक्रवाल—पु० [स०] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो भूमडल के चारो ओर स्थित तथा प्रकाश और अधकार (दिन-रात) का विभाग करनेवाला माना गया है। लोकालोक पर्वत। २ घेरा। मडल। ३ चद्रमा के चारो ओर दिखाई देनेवाला धुँधले प्रकाश का घेरा या मडल।

चक्र-वृत्ति—स्त्री० [मध्य म०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक भगण, तीन नगण और अत मे लघु-गुरु होते है।

चक्र-वृद्धि—स्त्री० [उपमि० स०] १. ऋण का वह प्रकार जिसमे मूल धन पर ब्याज देने के अतिरिक्त उस ब्याज पर भी ब्याज दिया जाता है जो किसी निश्चित अवधि तक चुकाया नही जाता। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट) २. गाडी आदि का भाडा।

चक्र-व्यूह—पु० [मध्य० स०] १ युद्ध-क्षेत्र मे किसी वस्तु या व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसके चारो ओर असख्य सैनिको का किसी क्रम या सिलसिले से खडे होने की अवस्था या स्थिति। २ सेना का ऐसे ढग से युद्ध-क्षेत्र मे खडा या स्थित होना कि शत्रु उन्हे सरलता से भेद न सके।

चक्र-शल्य—स्त्री० [ब० स०]। सफेद घुँघची। २ काक-तुडी। कौआ, ठोठी।

चक्र-श्रेणी—स्त्री० [ब० स०] मेढासीगी।

चक्र-सज्ञ—पु० [ब० स०] १ वग नामक धातु। राँगा। २ चकवा पक्षी।

चक्र-सवर—स० [स० चक्र-सम्√वृ (रोकना)+अच्, उप० स०] एक बुद्ध का नाम।

चक्र-हस्त—पु० [ब० स०] विष्णु।

चक्राक—पु० [चक्र-अक, ष० त०] विष्णु के चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर के अगो पर दगवाते हैं।

चक्राक-पुच्छ—पु० [ब० स०] १ मोर। २ मोर का पख। उदा०—उन्मुक्त गुच्छ चक्राक-पुच्छ।—निराला।

चक्रांकित—वि० [चक्र-अकित, तृ० त०] १ जिस पर चक्र का चिह्न अकित हो। २ (व्यक्ति) जिसने अपने शरीर पर चक्र का चिह्न दगवाया हो। जिसने चक्र की छाप लीया हो।

पु० वैष्णवो का एक सम्प्रदाय जिस के लोग अपने शरीर पर चक्र का चिह्न दगवाते है।

चक्रांग—पु० [चक्र-अग, ब० स०] १ चकवा पक्षी। २. गाडी या रथ। ३ हस। ४ कुटकी नाम की ओषधि। ५ हिलमोचिका या हुलहुल नाम का साग।

चक्रागा—स्त्री० [स० चक्राग+टाप्] १ काकडासिगी। २ सुदर्शन नाम का पौधा या लता।

चक्रागी—स्त्री० [स० चक्राग+ङीष्] १ कुटकी नाम की ओषधि। २ हस की मादा। हसिनी। ३ हुलहुल नाम का साग। ४ मजीठ। ५ काकडासिगी। ६ मूसाकानी।

चक्रात—पु० [चक्र-अत, ब० स०] गुप्त अभिसधि। षड्यत्र।

चक्रातर—पु० [स० चक्रात √रा (लेना)+क] एक बुद्ध का नाम।

चक्राश—पु० [चक्र अश, ष० त०] १ किसी चक्र का कोई अश। २ चद्रमा के चक्र का ३६० वॉं अश।

चक्रा—स्त्री० [स० चक्र+टाप्] १ नागरमोथा। २ काकडासिगी।

चक्राक—पु० [स० चक्र √अक् (गति)+अच्] [स्त्री० चक्राकी] हस नामक पक्षी।

चक्राकार—वि० [चक्र आकार, ब० स०] चक्र या पहिये के आकार का। मडलाकार।

चक्राट—पु० [स० चक्र √अट् (गति)+अण्, उप० स०] १ साँप पकडनेवाला। २ मदारी। ३ बहुत बडा चालाक या धूर्त्त। ४ सोने का दीनार नाम का सिक्का।

चक्रानुक्रम—पु० [चक्र-अनुक्रम, उपमि० स०] = चक्र-क्रम।

चक्रायुध—पु० [चक्र-आयुध, ब० स०] विष्णु।

चक्रावल—पु० [स०] १ घोडो का एक रोग जिसमे उनके पैरो मे घाव हो जाता है। २ उक्त रोग से होनेवाला घाव।

चक्राह्व—पु० [चक्र-आह्वान, ब० स०] १ चकवा पक्षी। चक्रवाक। २ चकवँड।

चक्रिक—वि० [स० चक्र+ठन्-इक] १ चक्र से युक्त। २ चक्र धारण करनेवाला।

चक्रिका—स्त्री० [स० चक्रिक+टाप्] घुटने की गोल हड्डी। चक्की।

चक्रित†—वि० = चकित।

चक्री (क्रिन्)—पु० [स० चक्र+इनि] १ वह जो चक्र धारण करे। २ विष्णु। ३ गाँव का पुरोहित। ४ कुम्हार। ५ कुडली मारकर बैठनेवाला साँप। ६ चकवा पक्षी। ७ गुप्त-चर। जासूस। ८ तेली। ९ बकरा। १० चकवँड। ११ तिनिश नामक वृक्ष। १२ कौआ। १३ व्याघ्र नख या बघनहाँ नामक गधद्रव्य। १४ गधा। १५ रथ का सवार। रथी। १६ चद्रशेखर के मत मे आर्याछद का २२ वाँ भेद जिसमे ६ गुरु और ४५ लघु होते है। १७ एक प्राचीन वर्णसकर जाति। १८ चक्रवर्ती राजा।

वि० १ (गाडी आदि) जिसमे पहिया लगा हो। २ गोलाकार (वस्तु)। ३ चक्र धारण करनेवाला (व्यक्ति)।

चक्रीय—वि० [स० चक्र+छ—ईय] १ चक्र-सबधी। चक्र का। २ चक्र-क्रम के अनुसार होनेवाला। (साइक्लिक)

चक्रेश्वर—पु० [चक्र-ईश्वर, ष० त०] १ चक्रवर्त्ती। २ तात्रिको मे चक्र के अधिष्ठाता देवता।

चक्रेश्वरी—स्त्री० [स० चक्र-ईश्वरी, ष० त०] जैनो की एक महाविद्या।

चक्ष—पु० [स० √चक्ष् (देखना, बोलना)+अच्] नकली दोस्त। स्वार्थी मित्र।

चक्षण—पु० [स० √चक्ष् +ल्युट्—अन] १ कृपा-दृष्टि। २ अनुग्रह-पूर्ण व्यवहार। ३ बातचीत। कथन। ४ मद्य आदि के साथ खाने की चाट। चक्खी।

चक्षम—पु० [स० √चक्ष् +अम] १ बृहस्पति। २ उपाध्याय।

चक्षा (क्षस्)—पु० [स० √चक्ष् +अस्] १ बृहस्पति। २ आचार्य।

चक्षुःपथ—पु० [ष० त०] १ दृष्टि-पथ। २ क्षितिज।

चक्षुःश्रवा (वस्)—वि० [ब० स०] नेत्रो से सुननेवाला।
पु० साँप।

चक्षु (क्षुस्)—पु० [स० √चक्ष् +उस्] १ देखने की इद्रिय। आँख। नेत्र। २ पश्चिमी एशिया के वक्षु नद (आधुनिक आक्सस नदी) का एक पुराना नाम।

चक्षुरपेत—वि० [चक्षुर्-अपेत, तृ० त०] नेत्रहीन। अधा।

चक्षुरिंद्रिय—स्त्री० [चक्षुर्-इद्रिय, कर्म० स०] देखने की इद्रिय। आँख। नेत्र।

चक्षुर्दर्शनावरण—पु० [चक्षुर्-दर्शन तृ० त०, चक्षुर्दर्शन-आवरण ष० त०] जैन शास्त्र मे वे कर्म जिनके उदय होने से चक्षु द्वारा दिखाई पडने मे बाधा होती है।

चक्षुर्मल—पु० [ष० त०] आँख से निकलनेवाला मल या कीचड।

चक्षुर्वन्य—वि० [तृ० त०] नेत्र रोग से ग्रस्त या पीडित।

चक्षुर्विषय—पु० [ष० त०] १ वे सब चीजे या बाते जो आँख से दिखाई देती है। २ क्षितिज।
वि० जो चक्षुओ का विषय हो।

चक्षुर्हा (हन्)—वि० [स० चक्षुस् √हन् (मारना) +क्विप्, उप० स०] जिसके देखने मात्र से कोई चीज नष्ट हो जाती हो।

चक्षुष्कर्ण—पु० [ब० स०] सर्प। साँप।

चक्षुष्पति—पु० [ष० त०] सूर्य।

चक्षुष्पथ—पु० [ष० त०] १ दृष्टि-पथ। २ क्षितिज।

चक्षुष्मान् (मत्)—वि० [स० चक्षुस् +मतुप्] १ आँखोवाला। २ सुदर आँखोवाला।

चक्षुष्य—वि० [स० चक्षुस् +यत्] १ नेत्र-सबधी। २ जो देखने मे प्रिय लगे। मनोहर। सुदर। ३ जो नेत्रो के लिए हितकर हो। ४ नेत्रो से उत्पन्न होनेवाला।
पु० १ आँखो मे लगाने का अजन या सुरमा। २ केतकी। केवडा। ३ सहिजन। ४ तूतिया।

चक्षुष्या—स्त्री० [स० चक्षुष्य +टाप्] १ सुदर नेत्रोवाली स्त्री। २ वनकुलथी। चाकसू। ३ मेढासीगी।

चक्षुस्—पु० =चक्षु।

चख—पु० [स० चक्षुस्] आँख।
पु० [अनु०] झगडा। तकरार।
पद—चख-चख= कहा-सुनी या बक-झक। झगडा और तकरार।
पु० १ =नीलकठ (पक्षी)। २ =गिलहरी।

चख-चख—स्त्री० [अनु०] १ दो व्यक्तियो या पक्षो मे किसी बात पर होनेवाली कहा-सुनी। झगडा। २ कलह।

चखचौंध†—स्त्री० =चकाचौध।

चखना—स० [प्रा० चक्ख, चड्ड, बँ० चाखा, उ० चाखिबा, प० चक्खणा, मरा० चाखणे] १ किसी खाद्य वस्तु का स्वाद जानने के लिए उसका थोडा-सा अश मुँह मे रखना या खाना। चीखना। २ किसी चीज या बात की साधारण अनुमति प्राप्त करना। जैसे—लडाई का मजा चखना।

चखा—पु० [हिं० चखना] १ चखनेवाला। २ रस का आस्वादन करने-वाला। प्रेमी। रसिक। उदा०—विपिन बिहारी दोउ लसत एक रूप सिंगार। जुगल रस के चखा।—सत्यनारायण।

चखा-चखी—स्त्री० [फा० चख =झगडा] १ जोरो का या बहुत अधिक लडाई-झगडा या तकरार। २ बहुत अधिक वैर-विरोध या लाग-डाँट।

चखाना—स० [हिं० 'चखना' का प्रे०] किसी को कुछ चखने मे प्रवृत्त करना।

चखिया—वि० [फा० चख =झगडा] चख-चख या तकरार करनेवाला। झगडालू।

चखु*—पु० =चक्षु।

चखोडा†—पु० [हिं० चख +ओड] बुरी नजर से बचाने के लिए लगाई जानेवाली काली बिंदी। डिठौना। उदा०—बनि रहे रुचिर चखोडा गाल।—नददास।

चखौती—स्त्री० [हिं० चखना] खाने-पीने की चट-पटी और स्वादिष्ट चीजे।

चगड़—वि० =चघड।

चगताई—पु० [तु०] मध्य एशिया निवासी तुर्को का एक प्रसिद्ध वश जो चगताई खाँ से चला था। बाबर, अकबर, औरगजेब आदि इसी वश के थे।

चगत्ता—पु० दे० 'चगताई'।

चगर—पु० [देश०] १ घोडो की एक जाति। २ एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

चगुनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो प्राय १८ इच लबी होती है।

चघड—वि० [देश०] १ चतुर। चालाक। २ धूर्त।

चचर—स्त्री० [देश०] वह जमीन जो बहुत दिन परती रहने के बाद पहली बार जोती तथा बोई गई हो।

चचरा—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।
†वि० =चचेरा।

चचा—पु० [स० तात] [स्त्री० चची] =चाचा।
मुहा०—(किसी को) चचा बनाना या बनाकर छोडना= उचित दड या प्रतिफल देना। (व्यग्य)

चचिया—वि० उभ० [हिं० चचा] सबध मे चाचा या चाची के स्थान पर पडने या होनेवाला। जैसे—चचिया ससुर चचिया सास अर्थात् पति या पत्नी का चाचा या चाची।

चचींड़ा†—पु० [स० चिचिडा] १ एक प्रकार की लता। २ इस लता के फूल जो तरोई की तरह के होते और तरकारी बनाने के काम आते है। ३ दे० 'चिचडा'।

चचेंडा†—पु० = चचीडा।

चचेरा—वि० [हिं० चचा] [स्त्री० चचेरी] १ चाचा से उत्पन्न। जैसे—चचेरा भाई, चचेरी बहन। २ सबध के विचार से चाचा या चाची के स्थान पर पडने या होनेवाला। चचिया। जैसे—चचेरी सास।

चचोडना—स० [अनु० वा० देश०] दाँत से खीच या दबाकर खाना या रस चूसना। दाँतो से दबा-दबाकर खाना या चूसना। जैसे—आम चचोडना।

चचोडवाना—स० [हि० 'चचोडना' का प्रे०] किसी को चचोडने मे प्रवृत्त करना।

चच्चर—पु० दे० 'चाँचर'।

चच्छु*—पु० = चक्षु।

चच्छुस्रवासी*—पु० [स० चक्षु श्रवस्] सर्प। साँप। उदा०—सो लट भई तेहि चच्छुस्रवासी।—जायसी।

चट—क्रि० वि० [अनु०] १ चट शब्द करते हुए। २ जल्दी से। झट। तुरत।

पद—चट-पट (देखे)।

मुहा०—चट से = बहुत जल्दी। तुरत।

पु० १ वह शब्द जो किसी कडी वस्तु के टूटने पर होता है। जैसे—लकडी या शीशा चट से टूट गया। २ उंगलियो के पोर जोर से खीचने पर अदर की हड्डियो की रगड से होनेवाला शब्द।

क्रि० प्र०—बोलना।

भू० कृ० [हि० चाटना] १ (पदार्थ) जो चाट या खाकर समाप्त कर दिया गया हो। २ (धन) जो भोग आदि के द्वारा नष्ट या समाप्त कर दिया गया हो।

मुहा०—**चट कर जाना** =(क) सब खा जाना। (ख) दूसरे की वस्तु लेकर न देना। दबा रखना। **चट करना** =खाना या निगलना।

पु० [स० चित्र, हि० चित्ती] १ दाग। धब्बा। २ घाव आदि के कारण शरीर पर बना हुआ चिह्न या दाग। ३ चकत्ता। ४ ऐब। दोष। ५ कलक। लाछन।

†पु० [?] पटसन का बना हुआ टाट।

चटक—पु० [स० √चट् (भेदन करना) +क्वुन्—अक] [स्त्री० चटका] १ गौरा पक्षी। गौरैया। चिडा।

पद—चटकाली (देखे)।

२ पिप्पलामूल।

स्त्री० [स० चटुल = सुन्दर] चटकीलापन। चमक-दमक। कांति।

पद—चटक-मटक (देखे)।

३ छापे के कपडो को साफ करने का एक ढग।

वि० चटकीला। चमकीला। जैसे—चटक रग, चटक चाँदनी।

स्त्री० १ फुरतीलापन। तेजी। २ चचलता। शोखी।

वि० १ फुरतीला। तेज। २ चटपटा। चटकारा।

क्रि० वि० चटपट। शीघ्रता से। तुरत।

चटकई†—स्त्री० [हि० चटक] १ चटक होने की अवस्था या भाव। २ चमकीलापन। ३ तेजी। फुरती। ४ जल्दी।

चटकदार—वि० [हि० चटक +फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसमे चटक या चमक-दमक हो। चमकते हुए रगवाला। चमकीला। २. तेज। फुरतीला।

चटकना—अ० [अनु० चट] १ 'चट' शब्द करते हुए टूटना या फूटना। हलकी आवाज के साथ टूटना या तडकना। कड़कना। जैसे—शीशा चटकना। २ किसी बीच मे कही से कुछ कट या फट जाना। हलकी दरार पडना। जैसे—लकडी चटकना। ३ कोयले, लकडी आदि का जलते समय चट-चट शब्द करना। ४ कलियो आदि का चट-चट शब्द करते हुए खिलना। जैसे—गुलाब की कलिया चटकना। ५ चिढकर अप्रसन्न होना या हलका क्रोध दिखलाना। रुष्ट होना। जैसे—तुम तो जरा-सी बात मे चटक जाते हो। ६ आपस मे अनबन या बिगाड होना।

वि० जल्दी चटकने या टूटनेवाला।

पु० तमाचा। थप्पड।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

चटकनी—स्त्री० = सिटकिनी (दरवाजे की)।

चटक-मटक—स्त्री० [हि० चटक +मटक] नाज-नखरे से लोगो को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए शरीर के कुछ अग हिलाने-डुलाने की क्रिया या भाव।

चट-कल—स्त्री० [हि० चट = पटसन +कल (यत्र)] वह कारखाना जहाँ जूट या पटसन की चीजे बनती हो।

चटकवाही†—स्त्री० [हि० चटक + वाही (प्रत्य०)] १ शीघ्रता। जल्दी। २ तेजी। फुरती।

चटका—पु० [हि० चटकना] १ चटकने की क्रिया या भाव। २ मन उचटने का भाव या स्थिति। विराग। ३ तमाचा। थप्पड।

पु० [हि० चाट] १ चरपरा स्वाद। २ सुख या स्वाद मिलने के कारण उत्पन्न होनेवाली लालसा। चसका।

पु० [देश०] हरे चने की डोडी। पपटा।

पु० [स० चित्र, हि० चट्टा] १ दाग। धब्बा। २ शरीर पर पडनेवाला चकत्ता।

†पु० [हि० चट] १ शीघ्रता। जल्दी। २. तेजी। फुरती।

चटकाई*—स्त्री० [हि० चटक +आई (प्रत्य०)] चटकीलापन। उदा०—लगत चित्र सी नदनादि बन की चटकाई।—रत्ना०।

चटकाना—स० [हि० चटकना हि० चटकना का स०] १ किसी को चटकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा करना जिससे कुछ चटके। २ उँगलियो के पोरो को इस प्रकार झटके से खीचना या जोर से दबाना कि उनमे से चट शब्द निकले। ३ किसी चीज से चट चट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—जूतियाँ चटकाना। देखे 'जूती' के अन्तर्गत। ४ चट शब्द उत्पन्न करते हुए कोई चीज तोडना। ५ किसी व्यक्ति को इस प्रकार अप्रसन्न या उद्विग्न करना कि वह कडवी और रूखी बाते करने लगे। ६ किसी के मन मे विरक्ति उत्पन्न करके उसे कही से चले जाने या भगाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—ये लोग नये नौकर को टिकने नही देते, उसे आते ही चटका देते है। ७ चिढाना।

चटकारा—पु० [अनु० चट] १ किसी चटपटी वस्तु के खाते या चाटते समय तालू पर जीभ टकराने से होनेवाला शब्द।

पद—**चटकारे का** = इतना स्वादिष्ठ कि खाने या पीने के समय मुँह से चट चट शब्द होता हो। जैसे—चटकारे की तरकारी या हलुआ।

२ कोई स्वादिष्ठ चीज खाने या पीने के बाद उसके स्वाद की वह स्मृति जो वह चीज फिर से खाने या पीने का चसका उत्पन्न करे।

मुहा०—**चटकारे भरना** = खूब चाट-चाटकर और स्वाद लेते हुए

कोई चीज खाना या पीना। खाने-पीने के समय जीभ से होठ चाटते रहना।
† वि० १ =चटकीला। २ =चटपटा।
वि० [स० चटुल] [स्त्री० चटकारी] चचल। चपल।

चटकारी*—स्त्री० [अनु०] चुटकी, जिसे बजाने पर चट-चट शब्द होता है।
क्रि० प्र०—बजाना।—भरना।

चटकाली—स्त्री० [स० चटक-आली, ष० त०] १ चटको अर्थात् गौरा पक्षियो की पक्ति या समूह। २ चिडियो की पक्ति या समूह।

चटका-शिरा—स्त्री० [ष० त०] पिपरामूल।

चटकाहट—स्त्री० [हिं० चटकना] १ कोई चीज चटकने से उत्पन्न होनेवाला चट शब्द। उदा०—फूलति कली गुलाब की चटकाहट चहुँ-ओर।—बिहारी। २ चटकने या तडकने की क्रिया या भाव।

चटकी—स्त्री० [स० चटक] बुलबुल की तरह की एक चिडिया।
† स्त्री० = चटका।

चटकीला—वि० [हि० चटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] [भाव० चटकीलापन] १ (रग) जो चमकीला और तेज हो। जैसे—चटकीला लाल या हरा। २ (पदार्थ) जिसका रग चमकीला और तेज हो। जैसे—चटकीला कपडा, चटकीली धारियाँ। ३ जिसमे खूब आभा और चमक हो। जैसे—मुख की चटकीली ज्योति या छबि। ४ (खाद्य पदार्थ) जिसमे खूब नमक, मिर्च और मसाले पडे हो। जैसे—चटकीली तरकारी। ५ (बात) जो चित्ताकर्षक तथा सुदर हो। लुभावना। जैसे—चटकीला राग। ६ (पदार्थ) जिसका स्वाद उग्र या तीव्र हो। जैसे—दाल मे नमक कुछ चटकीला है।

चटकीलापन—पु० [हिं० चटकीला +पन (प्रत्य०)] चटकीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

चटकोरा*—पु० [अनु०] एक प्रकार का खिलौना।

चटखना—अ० = चटकना।
पु० =चटकना।

चटखनी†—स्त्री० = चटकनी (सिटकिनी)।

चटखारा—वि०, पु० = चटकारा।

चट-चट—स्त्री० [अनु०] किसी चीज के चटकने या तडकने के समय होनेवाला चट-चट शब्द। जैसे—चट-चट करके छत की कई कडियाँ टूट गई। २ किसी चीज के जलने या फटने के समय होनेवाला चट-चट शब्द। जैसे– लकडियाँ चट चट करती हुई जल रही थी। ३ उँगलियाँ चटकाने पर होनेवाला चट-चट शब्द।
क्रि० वि० चट-चट शब्द उत्पन्न करते हुए।
मुहा०—चट-चट बलैयाँ लेना = प्रिय व्यक्ति (विशेषत बच्चे) को विपत्ति, सकट आदि से बचाने के उद्देश्य से उँगलियाँ चटकाते हुए उसकी मगल-कामना करना। (स्त्रियाँ)

चटचटा—पु० [अनु०] बार-बार होनेवाला चट-चट शब्द।
वि० [स्त्री० चटचटी] जिसमे से बार-बार चट-चट शब्द होता हो। जैसे—चट-चटी लकडी (जलाने की)।

चटचटाना—अ० [हिं० चट चट+आना (प्रत्य०)] १ किसी वस्तु का चट-चट शब्द करना। २ चट-चट शब्द करते हुए किसी वस्तु का टूटना या तडकना। ३ चट-चट शब्द करते हुए जलना।
स० चट-चट शब्द करते हुए कोई काम करना।

चटनी—स्त्री० [हिं० चाटना] १ चाटकर खाई जानेवाली वस्तु। अवलेह। २ आम, इमली, पुदीना आदि खट्टी वस्तुओ मे नमक, मिर्च, धनिया आदि मिलाकर गीला पीसा या घोला हुआ गाढा चरपरा अवलेह जो भोजन का स्वाद तीक्ष्ण करने के लिए उसके साथ खाया जाता है।
मुहा०—(किसी की) चटनी करना या बनाना = (क) पदार्थ आदि तोड-फोडकर चूर-चूर करना। (ख) व्यक्ति आदि को बहुत अधिक मारना। **(किसी चीज का) चटनी होना या हो जाना** = (क) खाद्य पदार्थ का स्वादिष्ठ होने के कारण सब मे इस प्रकार थोडा-थोडा बँट जाना कि कुछ भी बाकी न बचे। (ख) किसी चीज का कम होने के कारण थोडा-थोडा काम मे लगने या बँटने पर कुछ भी बाकी न बचना।
३ काठ का चार-पाँच अगुल लबा एक खिलौना जिसे छोटे बच्चे मुँह मे डालकर चाटते या चूसते है।

चटप—स्त्री० [अनु०] १ आक्रमण। २ मनोवेग की प्रबलता। उदा०—काम स्याम तनु चटप कियौ। –सूर।

चट-पट—क्रि० वि० [अनु०] १ बहुत जल्दी। तुरत। जैसे—चट-पट चले जाओ। २ अपेक्षाकृत बहुत थोडे समय मे। जैसे—काम चट-पट खत्म कर यहाँ चले आना।
वि० [स्त्री० चटपटी] = चटपटा।

चटपटाना†—अ० [हिं० चटपट] जल्दी मचाना।
स० किसी को जल्दी करने मे प्रवृत्त करना।

चटपटी—स्त्री० [हिं० चटपट] १ जल्दी। शीघ्रता। २ उतावली। हडबडी।
क्रि० प्र०—पडना।—मचना।
३ आकुलता। घबराहट। ४ बेचैनी। विकलता। उदा०—मो दृग लागि रूप, दृगन लगी अति चटपटी।—बिहारी। ५ उत्सुकता। छटपटी।
स्त्री० [हिं० चटपटा] खाने की चटपटी चीज। चाट। जैसे—कचालू आदि।

चटर—पु० [अनु०] चट-चट शब्द।

चटर-चटर—स्त्री० [अनु०] खडाऊँ पहनकर चलने से होनेवाली चट-चट की ध्वनि।

चटरजी—पु० [ब० चाटुर्ज्या] बगाली ब्राह्मणो की एक शाखा। चट्टोपाध्याय।

चटरी†—स्त्री० [देश०] १ खेसारी नाम का अन्न। लतरी। २ रबी की फसल के साथ उगनेवाली एक वनस्पति।

चटवाना—स० [हिं० चाटना का प्रे०] किसी को कुछ चाटने मे प्रवृत्त करना। चटाना।

चटशाला—स्त्री० [हिं० चट+स० शाला] छोटे बच्चो की पाठशाला।

चटसार—स्त्री०=चटशाला।

चटसाल—स्त्री०=चटशाला।

चटा—पु०[हिं० चटशाला] चटशाला मे पढनेवाला बालक या विद्यार्थी। उदा०—मनौ मार-चटसार सुढार चटा-से पढही।

चटाई—स्त्री० [स० कट=चटाई?] बाँस आदि खर जाति के डठलो की खपाचियो, ताड आदि के पत्तो का एक दूसरे मे गूँथकर बनाया हुआ लबा आसन या आस्तरण।

स्त्री० [हिं० चाटना] चटाने या चाटने की क्रिया या भाव।

चटाईदार—वि० [हिं० चटाई+फा० दार] जिसकी बुनावट या रचना चटाई की बनावट की तरह हो। जैसे—धोती का चटाईदार किनारा, गले मे पहनने की चटाईदार सिकडी।

चटाक—पु० [अनु०] १ वह शब्द जो दो वस्तुओ के टकराने अथवा किसी वस्तु के गिरने, टूटने आदि से होता है।

क्रि० वि० चट या चटाक शब्द उत्पन्न करते हुए।

पद—चटाक-पटाक=(क) चटाक या चट-चट शब्द के साथ। (ख) बहुत जल्दी। तुरन्त।

२ थप्पड मारने से होनेवाला शब्द।

†पु०=चकत्ता (दाग)।

चटाकर—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड जिसका फल खट्टा होता है।

चटाका—पु०[अनु०] १ लकडी या और किसी कडी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द। २ तीव्रता। प्रबलता।

मुहा०—चटाके का=कडाके का। जोरो का।

३ थप्पड जिसके लगने से चटाक शब्द होता है। (पश्चिम)

क्रि० वि० चट-पट। तुरन्त।

चटाख†—पु०=चटाक।

चटाचट—स्त्री० [अनु०] क्रमश अथवा लगातार टूटती हुई वस्तुओ से होनेवाला चट-चट शब्द।

क्रि० वि० एक पर एक। लगातार। जैसे—उसे चटाचट थप्पड लगे।

चटान†—स्त्री० =चट्टान।

चटाना—स० [हिं० चाटना का प्रे०] १ किसी को कुछ चाटने मे प्रवृत्त करना। जैसे—बच्चे को खीर चटाना। २ थोडा-थोडा खिलाना। जैसे—बच्चे को कुछ चटा दो। ३ घूस या रिश्वत देना। जैसे—कचहरी वालो को कुछ चटाकर अपना काम निकालना। ४ छुरी, तलवार आदि की धार रगडकर या और किसी प्रकार तेज करना। जैसे—चाकू को पत्थर चटाना।

चटापटी—स्त्री० [हिं० चटपट] १ चटपटी। जल्दी। २ ऐसा रोग या महामारी जिसमे लोग चटपट या बहुत जल्दी मर जाते हो।

क्रि० वि०=चट-पट।

चटावन—पु०[हिं० चटाना] १ चटाने की क्रिया या भाव। २ हिंदुओ का एक सस्कार जिसमे छोटे बच्चे के मुँह मे पहले-पहल अन्न लगाया जाता है। अन्नप्राशन।

चटिक—क्रि० वि० [हिं० चट] चटपट। तत्काल। तुरत।

चटिका—स्त्री० [स० चटक+टाप्, इत्व] पिपरामूल।

चटियल—वि०[देश०] (मैदान) जिसमे पेड, पौधे आदि बिलकुल न हो। उजाड और सपाट।

चटिया—पु० [हिं० चटशाला+इया (प्रत्य०)] १ चटशाला मे पढने-वाला अथवा पढा हुआ विद्यार्थी। २ चेला। शिष्य।

चटिहाट—वि०[देश०] १ उजड्ड। २ जड। मूर्ख।

चटी†—स्त्री० १ =चटसार। २ =चट्टी।

चटु—पुं० [स०√चट्० (भेदन करना)+कु] १ खुशामद। चापलूसी। २ उदर। पेट। ३ यतियो, योगियो आदि का आसन।

चटुक—पु० [स० चटु+कन्] काठ का बडा बरतन। कठौता।

चटुकार—वि० [स० चटु√कृ (करना)+अण्, उप० स०] खुशामद करनेवाला।

चटुल—वि० [स० चटु+लच्] १ चचल। चपल। २ सुदर। ३ मधुर-भाषी।

चटुला—स्त्री० [स० चटुल+टाप्] १ बिजली। २ प्राचीन काल का स्त्रियो का एक प्रकार का केश-विन्यास।

चटु-लालस—वि० [ब०स०] (व्यक्ति) जो अपनी खुशामद करवाना चाहता हो। खुशामद-पसन्द।

चटुलित—भू० कृ० [स० चटुल+इतच्] १ हिलाया हुआ। २ बनाया-सँवारा या सजाया हुआ।

चटुल्लोल—वि० [स० चटुल-लोल, कर्म० स० नि० सिद्धि] १ चंचल। २ सुन्दर। ३ मधुर भाषी।

चटैल†—वि०=चटियल।

चटोर—वि० दे० 'चटोरा'।

चटोरपन—पु०=चटोरापन।

चटोरा—वि० [हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० चटोरी] १ जिसे चटपटी चीजे खाने का शौक हो। २ अधिक खाने का लोभी। ३ जो अपनी सपत्ति या पूँजी खा-पका गया हो।

चटोरापन—पु० [हिं० चटोरा+पन (प्रत्य०)] चटोरे होने की अवस्था, गुण या भाव।

चट्ट†—वि० [हिं० चाटना] १ (खाद्य पदार्थ) जिसे अच्छी तरह खा या चाट लिया गया हो। २ (माल) जो खा-पीकर खत्म कर दिया गया हो। ३ जिसका कुछ भी अश न बच रहा हो।

क्रि० वि०=चट।

चट्टा—पु० [स० चेटक=दास] चेला। शिष्य।

पु० [देश०] १ चटियल मैदान। २ चकत्ता। ददोरा। ३ ईंटो, बालू, मिट्टी आदि को गिनने या नापने के लिए उनका लगाया या बनाया हुआ सुव्यवस्थित थाक या ढेर।

पु०[स० कट+चटाई ?] बाँस आदि की लबी चटाई।

चट्टान—स्त्री० [हिं० चट्टा] १ पत्थर का बहुत बडा और विशाल खड। २ किसी वस्तु का बहुत बडा और ठोस टुकडा। जैसे—नमक की चट्टान। ३ ऐसी वस्तु जिसमे चट्टान की-सी दृढता या स्थिरता हो।

चट्टा-बट्टा—पु० [हिं० चट्टू=चाटने का खिलौना+ बट्टा =गोला] १ काठ के खिलौनो का समूह जिसमे चट्टू, झुनझुने, गोले आदि रहते है।

मुहा०—चट्टे-बट्टे लड़ाना=इधर की बाते उधर कहकर लोगो को आपस मे लडाना या उनमे वैर-विरोध उत्पन्न कराना।

२ वे गोले जिन्हे बाजीगर झोले मे से निकालकर लोगो को दिखाते है।

पद—एक ही थैले के चट्टे-बट्टे=एक ही गुट के मनुष्य। एक ही तरह या स्वभाव के लोग।

चट्टी—स्त्री०[हिं० चट्टा या अनु०] टिकान। पडाव। मजिल। (विशेषत पहाडी इलाको मे प्रयुक्त)

स्त्री० [अनु० चट चट] खुली एडी का एक प्रकार का जूता।

स्त्री०[हिं० चाँटा=चपत] १ क्षति। २ जुरमाना। दड।

क्रि० प्र०—भरना।

चट्टू†—वि०=चटोरा।
पु० [अनु०] १ पत्थर का बडा खरल। २ छोटे बच्चो का एक प्रकार का खिलौना जिसे वे प्राय मुँह मे रखकर चाटते या चूसते रहते है। चुसनी।

चड—पु०[अनु०] १ लकडी आदि के टूटने या फटने से होनेवाला शब्द। २ सूखी लकडी के जलने, टूटने आदि से होनेवाला शब्द।

चड़ना†—अ०=चढना। (पजाब और राजस्थान)

चड-बड—स्त्री०[अनु०] निरर्थक प्रलाप। टे-टे। बक-बक।

चडाक—पु० [अनु०] किसी वस्तु के टूटने, फूटने, नोचे जाने पर होनेवाला चड शब्द।

चडी—स्त्री० [स० चरण या हिं० चढना?] उछलकर मारी जानेवाली लात।

चड्डा—पु० [देश०] जघे का ऊपरी भाग।
वि० मूर्ख।

चड्डी—स्त्री० [हिं० चड्डा] एक प्रकार का लँगोट।

चड्ढी—स्त्री० [हि० चढना] बच्चो का एक खेल जिसमे वे एक दूसरे की पीठ पर चढकर सवारी करते है।
मुहा०—चड्ढी गाँठना—सवारी करना। **चड्ढी देना**—हारने पर पीठ पर सवार कराना।

चड्ढो—स्त्री० [हिं० चुड=भग] स्त्रियो के लिए एक प्रकार की गाली जो उनकी दुश्चरित्रता की सूचक होती है।

चढ़त—स्त्री० [हिं० चढाना] वह जो कुछ चढाया (श्रद्धापूर्वक देवी-देवता को भेट किया) गया हो।

चढ़ता—वि० [हिं० चढना] [स्त्री० चढती] १ आरम्भ होकर बढता हुआ। जैसे—चढता दिन। २ जिस की अभिवृद्धि, उन्नति या विकास हो रहा हो। विकासशील। जैसे—चढती जवानी। ३ किसी की तुलना मे अच्छा या बढिया। जैसे—इससे भी चढती धोती लाओ।
†पु० पूरब की दिशा जिधर से सूर्य चढता या निकलता है। (पश्चिम)

चढ़न—स्त्री० [हिं० चढना] १ चढने या चढाने की क्रिया या भाव। चढाई। २ देवताओ पर चढाया हुआ धन आदि। चढावा। चढत।

चढ़नदार—पु० [हि० चढना+फा० दार (प्रत्य०)] वह मनुष्य जिसे व्यापारी गाडी, नाव आदि पर चढाकर माल के साथ उसकी रक्षा के लिए भेजते है। (लश०)

चढ़ना—अ० [स० उच्चलन या चलन, प्रा० उच्चउन, चड्डन] १ केवल पैरो की सहायता से यो ही अथवा हाथो का सहारा लेते हुए ऊपर की ओर बढना। जैसे—(क) आदमियो का पहाड या सीढियो पर चढना। (ख) गिलहरियो या बदरो का पेडो पर चढना। २ कही चलने या जाने के लिए अथवा यो ही किसी चीज, जानवर, सवारी आदि के ऊपर बैठना या स्थित होना। आरोहण करना। जैसे—(क) घोडे, झूले नाव, पालकी या रेल पर चढना। (ख) किसी की गोद अथवा कधे, पीठ, सिर आदि पर चढना। ३ किसी विशिष्ट उद्देश्य से और जान-बूझकर चल या जाकर पहुँचना। जैसे—(क) मुकदमा चलाने के लिए कचहरी चढना। (ख) मार-पीट करने के लिए किसी के घर या दूकान पर चढना। (ग) युद्ध करने के लिए शत्रु के देश पर चढना।
मुहा०—(किसी पर) चढ़ बैठना=किसी को पूरी तरह से अपने अधीन करते हुए विवश कर देना।
४ किसी प्रकार के क्रमिक विकास मे ऊपर की ओर अग्रसर होना या आगे बढना। जैसे—(क) लडको का दरजा चढना। (ख) दिन या वर्ष चढना। (ग) ताप-मापक यत्र का पारा चढना। ५ किसी चीज का मान, मूल्य आदि बढना। जैसे—(क) गाने-बजाने मे स्वर चढना। (ख) बाजार मे चावल या चीनी का दाम (या भाव) चढना।
मुहा०—(किसी की) चढ़ बनना=यथेष्ट प्रभाव, सफलता आदि के कारण किसी का महत्त्व या मान बहुत बढ जाना। जैसे—मत्री हो जाने पर तो अब उनकी और भी चढ बनी है।
६ देवी-देवता आदि के सामने श्रद्धा-भक्ति से निवेदित और समर्पित किया जाना। जैसे—(क) मदिर मे दक्षिणा या मिठाई चढना। (ख) देवी के आगे बकरा या भेडा चढना। ७ किसी प्रकार या रूप से ऊपर की ओर उठना, खिचना, तनना या बढना। जैसे—(क) गुड्डी का आसमान मे चढना। (ख) तालाब या नदी का पानी चढना। (ग) कुरते की आस्तीन या पायजामे का पाँयचा चढना। ८ एक चीज का दूसरी चीज पर टाँका, बैठाया, मढा, रखा या लगाया जाना। स्थापित या स्थित किया जाना। जैसे—(क) साडी पर गोटा-पट्ठा या बेल चढना। (ख) चूल्हे पर कडाही या तवा चढना। (ग) किताब पर जिल्द, तकिये पर गिलाफ या तसवीर पर चौखटा और शीशा चढना। ९ किसी प्रकार की प्रक्रिया से किसी चीज के ऊपरी तल या भाग पर पोता, फैलाया या लगाया जाना। जैसे—(क) कपडे या दरवाजे पर रग चढना। (ख) बिजली की सहायता से चाँदी पर सोना चढना। १० ग्रहो, नक्षत्रो आदि का उदित होकर आकाश मे ऊपर आना या उठना। जैसे—चद्रमा या सूर्य चढना। ११ कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजो की डोरी, तार, बधन आदि का आवश्यकता से अधिक कडा या कसा हुआ होना, जिसके फल-स्वरूप ध्वनि या स्वर अपेक्षया अधिक ऊँचा या तीव्र होता है। जैसे— तबला या सारगी चढना। १२ किसी प्रकार की क्रिया या प्रक्रिया का आरभ, सचार या सपादन होना। जैसे—बुखार चढना, रसोई चढना। १३ कुछ विशिष्ट प्रकार की दशाओ, मनोवेगो आदि का उत्कट या तीव्र रूप धारण करते हुए प्रत्यक्ष या स्पष्ट होना। जैसे—(क) जवानी, नशा या मस्ती चढना। (ख) उमग, गुस्सा, दिमाग, शेखी या शौक चढना। १४ बही-खाते आदि मे नामो, रकमो आदि का यथास्थान अकित होना या लिखा जाना। जैसे—(क) रजिस्टर मे नाम चढना। (ख) बही मे हिसाब चढना।

चढ़वाना—स० [हि० चढाना का प्रे०] १ किसी को कही चढने मे प्रवृत्त करना। २ (माल आदि) चढाने का काम कराना।

चढ़ाई—स्त्री० [हिं० चढना] १ चढने अर्थात् ऊँचे स्थल की ओर जाने की क्रिया या भाव। २ ऐसी भूमि जिसका विस्तार एक ओर से बराबर ऊँचा होता गया हो। ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि। ३ विपक्षी या शत्रु-राज्य अथवा व्यक्ति के अधिक्षेत्र मे पहुँचकर उस पर हठात् किया जानेवाला आक्रमण। ४ दे० 'चढन'।

चढ़ाउ†—पु० =चढाव।

चढ़ा-उतरी—स्त्री० [हिं० चढना+उतरना] १ बार-बार चढने तथा उतरने की क्रिया या भाव। २ दे० 'चढा-ऊपरी'।

चढ़ा-ऊपरी—स्त्री० [हि० चढना + ऊपर] १ आर्थिक क्षेत्र मे, कोई चीज खरीदने के समय उसके खरीददारो का एक दूसरे से बढ-चढकर मूल्य देने को प्रस्तुत होना। २ एक दूसरे से आगे बढने या निकलने का प्रयत्न करना।

चढा-चढ़ी—स्त्री० [हि० चढना] १ बार-बार लोगो के ऊपर चढने की क्रिया या भाव। २ चढा-ऊपरी।

चढ़ान†—स्त्री० [हि० चढना] १ चढने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान जो बराबर ऊपर की ओर उठता या चढता चला गया हो। जैसे-पहाड की चढान।

चढ़ाना—स० [हि० चढना] १ किसी को चढने मे अर्थात् ऊपर की ओर जाने मे प्रवृत्त करना। २ उठाकर किसी चीज को ऊँचाई पर ले जाना। ३ यान, सवारी आदि पर किसी को बैठाना। जैसे—लडके को घोडी पर (विवाह के समय) चढाना। ४ किसी प्रकार के क्रमिक विकास मे ऊपर की ओर अग्रसर करना या बढाना। ५ किसी चीज का मान, मूल्य आदि बढाना।

मुहा०—सिर पर चढ़ाना (दे०)।

६ श्रद्धापूर्वक कोई चीज समर्पित करना। जैसे—भगवान को फल चढाना। ७ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज उच्च स्तर पर पहुँचे। जैसे—(क) आस्तीन चढाना। (ख) गुड्डी या पतग चढ़ाना। ८ कोई चीज या आवरण किसी चीज पर रखना या पहनाना। जैसे—(क) चूल्हे पर कडाही चढाना। (ख) तकिये पर खोली चढाना। ९ लेप आदि पोतना या लगाना। जैसे—दीवारो पर रग चढाना। १० कोई क्रिया, मनोवेग या व्यापार तीव्र करना। जैसे—किसी को गुस्सा चढाना। ११ बही, खाते आदि पर कोई आय या व्यय की मद लिखना। १२ अपने ऊपर या सिर पर लेना। जैसे—कर्ज चढाना।

चढ़ाव—पु० [हि० चढना] १ चढने या चढ़ाने की क्रिया या भाव।

पद—चढ़ाव-उतार = ऊँचा-नीचा स्थान।

२ बराबर आगे या ऊपर की ओर होनेवाली गति। ३ बढती। वृद्धि।

पद—चढ़ाव-उतार= (क) एक ओर मोटे और दूसरी ओर पतले होने का भाव। (ख) उन्नति और अवनति।

४ दर या भाव की तेजी। ५ वह दिशा जिधर से जल-धारा आ रही हो। ६ स्वर का आरोह। ७ काम-वासना। ८ दरी के करघे का वह बाँस जो बुननेवाले के पास रहता है। ९ दे० 'चढ़ावा' १ और २।

चढ़ावा—पु० [हि० चढाना] १ वे आभूषण जो विवाह के समय कन्या को पहनने के लिए वर-पक्ष के घर से आते हैं। २. कन्या को विवाह के समय उक्त आभूषण पहनाने की एक रीति। ३ वे चीजे जो श्रद्धापूर्वक किसी देवता को चढाई जायँ। पुजापा। ४ उत्तेजना। बढ़ावा। ५ टोटके की वह सामग्री जो बीमारी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए किसी चौराहे या गाँव के किनारे रखी जाती है। उतारा।

चढ़ैत—वि० [हि० चढना + ऐत (प्रत्य०)] १ चढनेवाला। २ सवार होनेवाला।

चढ़ैया*—वि० [हि० चढना + ऐया (प्रत्य०)] चढने या चढानेवाला। उदा०—छात्र छत्र को छेम चपरचित चाव-चढैया।—रत्ना०।

चढ़ौआ—पु०—चढ़ापा।

चढ़ौवाँ—वि० [हि० चढ़ाना] १ (पदार्थ) जो चढ़ाया जाता हो। २ (जूता) जिसकी एडी ऊँची या उठी हुई हो।

चण—पु० [स० √चण् (देना) + अच्] चना।

चणक—पु० [स० √चण् + क्वुन्—अक] १ चना। २ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

चणका—स्त्री० [स० चणक + टाप्] तीसी।

चणकात्मज—पु० [स० चणक-आत्मज, ष० त०] चणक के पुत्र, चाणक्य।

चण-द्रुम—पु० [उपमि० स०] १ क्षुद्र गोक्षुर' छोटा गोखरू। २ एक प्रकार का रोग।

चणपत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] रुदती नामक पौधा।

चणिका—स्त्री० [स० चणक + टाप्, इत्व] एक प्रकार की घास जो औषध के काम आती है।

चणिया—पु० [गुज० चणियो] औरतो का छोटा घाघरा।

चतरग†—पु० = चतुरग।

चतर†—वि० = चतुर।

†पु० = छत्र।

चतरना—अ० [हि० छितराना] छितराया जाना।

स० छितराना।

† स० = चितरना।

चतरभग—पु० [स० छत्र-भग] १ बैल के डिल्ले का मास एक ओर लटक जाने की अवस्था, भाव या दोष। २ दे० 'छत्र-भग'।

चतरभौंगा—वि० [हि० चतरभग] (बैल) जिसके डिल्ले का मास एक ओर लटक गया हो।

चतु शाख—वि० [स० चतुर्-शाखा, ब० स०] चार शाखाओवाला।

पु० देह। शरीर।

चतु सीमा (मन्)—स्त्री० [स० चतुर्-सीमन्, ष० त०] किसी क्षेत्र, भवन आदि के चारो ओर की सीमा। चौहद्दी।

चतुरग—वि० [स० चतुर्-अग, ब० स०] [स्त्री० चतुरगिणी] जिसके चार अग हो। चार अगोवाला।

पु० १ सेना के चार अग—हाथी, घोडा रथ और पैदल। २ चतुरगिणी सेना का सेनापति। ३ चतुरगिणी (सेना)। ४ सगीत मे वह गाना जिसमे उसके साधारण बोल के साथ सरगम, तराने और किसी वाद्य (जैसे-तबला, सितार आदि) के बोल भी मिले हो। ५ शतरज का खेल।

चतुरगिणी—स्त्री० [स० चतुर्-अग, कर्म० स० + इनि] ऐसी सेना जिसमे हाथी, घोडे, रथ और पैदल ये चारो अग हो।

चतुरगी—वि० = चतुर। उदा०—चित्रन होर च्यति मनरे चतुरगी नाह।—चन्दवरदाई।

चतुरगुल—पु० [स० चतुर्-अगुल, ब० स०] अमलतास।

चतुरगुला—स्त्री० [स० चतुरगुल + टाप्] शीतल लता।

चतुरता—स्त्री० [स० चतुर्-अत, ब० स०, टाप्] पृथ्वी।

चतुर—वि० [स० √चत् (याचना करना) + उरच्] १ (व्यक्ति) जिसकी बुद्धि प्रखर हो और इसी लिए जो हर काम बहुत समझ-बूझकर तथा जल्दी करता हो। कार्य और व्यवहार मे कुशल। २ अपना मतलब निकाल लेनेवाला। ३ निपुण। दक्ष। ४ चालाक। धूर्त। ५ जिसे बाते बनानी खूब आती हो।

चतुरई—†स्त्री० = चतुराई।

चतुरक—पु० [स० चतुर+कन्] चतुर।

चतुर-क्रम—पु [ब० स०?] सगीत मे ३२ मात्राओ का एक प्रकार का ताल।

चतुरता—स्त्री० [स० चतुर+तल्– टाप्] चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव।

चतुरदसगुन*—पु० = चौदह विद्या। (दे० 'विद्या')

चतुरनीक—पु० [स० चतुर्-अनीक, ब० स०] चतुरानन। ब्रह्मा।

चतुरपन—पु० [हि० चतुर+पन] = चतुरता।

चतुरबीज†—पु० = चतुर्बीज।

चतुरभुज†—पु० = चतुर्भुज।

चतुरमास†—पु० = चतुर्मास।

चतुरमुख†—वि०, पु० चतुर्मुख।

चतुरम्ल—पु० [स० चतुर-अम्ल द्विगुस०] वद्यक मे, अमलबेत, इमली, जबीरी और कागजी नीबू के रसो को मिलाकर बनाया हुआ खट्टा द्रव्य।

चतुरश्र—वि० [स० चतुर्-अश्रि, ब० स०, अच् नि०] चार कोनोवाला।
पु० १ ब्रह्मसतान नामक केतु। २ ज्योतिष मे चौथी या आठवी राशि।

चतुरसम*—पु० = चतुस्सम।

चतुरस्त्र—पु० [स० चतुर-अस्त्रि, ब० स०, अच् नि०] १ सगीत मे, एक प्रकार का तिताला ताल। २ नृत्य मे, हाथ की एक प्रकार की मुद्रा या हस्तक।

चतुरह—पु० [स० चतुर्-अहन्, द्विगुस०, टच्] वे याग जो चार दिनो मे पूरे होते हो।

चतुरा—स्त्री० [हि० चतुर से] नृत्य मे धीरे-धीरे भौह कँपाने की क्रिया।
वि०, पु० = चतुर।

चतुराई—स्त्री० [स० चतुर+हिं० आई (प्रत्य०)] १ चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव। २ होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।

चतुरात्मा—पु० [स० चतुर्-आत्मन् ब० स०] १ ईश्वर। २ विष्णु।

चतुरानन—वि०, पु० [स० चतुर्-आनन, ब० स०] जिसके चार मुँह हो। चार मुखोवाला।
पु० ब्रह्मा।

चतुरापन*—पु० = चतुराई।

चतुराश्रम—पु० [स० चतुर-आश्रम, द्विगुस०] ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास ये चारो आश्रम।

चतुरासीति†—वि० [स० चतुरशीति] चौरासी।

चतुरिंद्रिय—पु० [स० चतुर्-इद्रिय, ब० स०] चार इद्रियोवाले जीव या प्राणी।

चतुरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की पतली लबी नाव जो एक ही पेड के तने को खोदकर बनाई जाती है।

चतुरूषण—पु० [स० चतुर्-ऊषण, द्विगुस०] वैद्यक मे सोठ, मिर्च, पीपल, और पिपरामूल, इन चार उष्ण या गरम पदार्थों का समूह।

चतुर्गति—वि० [स० ब० स०] चार दिशाओ या प्रकारो की गतिवाला।
पु० १ विष्णु। २ ईश्वर। ३ कछुआ।

चतुर्गव—पु० [स० चतुर्-गो, द्विगुस०] वह गाडी जिसे चार बैल मिलकर खीचते हो।

२—२६

चतुर्गुण—वि० [स० द्विगुस०] १ चार गुणोवाला। २ चौपहला। ३ चौगुना।

चतुर्जातक—पु० [स० द्विगुस०] वैद्यक मे, इलायची (फल), दारचीनी (छाल), तेजपत्ता (पत्ता) और नागकेसर (फूल) इन चारो पदार्थों का समूह।

चतुर्थ—वि० [स० चतुर्+डट् थुक् आगम] क्रम या गिनती मे चार की सख्या पर पडनेवाला। चौथा। जैसे—चतुर्थ आश्रम चतुर्थ श्रेणी।
पु० एक प्रकार का चौताला ताल। (सगीत)

चतुर्थक—पु० [स० चतुर्थ+कन्] वह बुखार जो हर चौथे दिन आता हो। चौथिया ज्वर।

चतुर्थ-काल—पु० [कर्म० स०] १ दिन का चौथा पहर। २ सन्ध्या का समय।

चतुर्थ-भाज्—वि० [स० चतुर्थ √भज् (ग्रहण करना)+ण्वि, उप० स०] प्रजा द्वारा उपजाये हुए अन्न आदि मे से कर स्वरूप एक चौथाई अश पानेवाला (अर्थात् राजा)।

चतुर्थांश—पु० [चतुर्थ-अश, कर्म० स०] १ किसी चीज के चार बराबर भागो मे से हर एक। चौथाई। २ [ब० स०] चार अशो या भागो मे से किसी एक अश या भाग का मालिक।

चतुर्थांशी (शिन्)—वि० [स० चतुर्थांश+इनि] चतुर्थांश पानेवाला।

चतुर्थाश्रम—पु० [स० चतुर्थ-आश्रम, कर्म० स०] आश्रमो मे चौथा, अर्थात् सन्यास।

चतुर्थिका—स्त्री० [स० चतुर्थ+कन्, टाप्, इत्व] एक परिमाण जो ४ कर्ष के बराबर होता है। पल।

चतुर्थी—स्त्री० [स० चतुर्थ+ङीप्] १ चाद्रमास के किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २ सस्कृत व्याकरण मे सप्रदान कारक या उसमे लगनेवाली विभक्ति।

चतुर्थी-कर्म (र्मन्)—पु० [मध्य० स०] विवाह के चौथे दिन के कृत्य जिनमे स्थानिक देवता, नदी आदि के पूजन होते है।

चतुर्थी-क्रिया—स्त्री० [मध्य० स०] किसी की मृत्यु के चौथे दिन होनेवाले कृत्य।

चतुर्थी तत्पुरुष—पु० [तृ० त०] तत्पुरुष समास का वह प्रकार या भेद जिसमे चौथी विभक्ति का लोप होता है।

चतुर्दंत—वि० [स० ब० स०] चार दाँतोवाला। जिसके चार दाँत हो।
पु० ऐरावत नामक हाथी जिसके चार दाँत कहे गये है।

चतुर्दंष्ट्र—पु० [स० ब० स०] १. ईश्वर। २ कार्तिकेय की सेना। ३ एक राक्षस का नाम।

चतुर्दश (न्)—वि० [स० मध्य० स०] चौदह।

चतुर्दश-पदी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] पाश्चात्य ढग की एक प्रकार की कविता जिसमे कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार कुल चौदह चरण या पद होते है। (सॉनेट)

चतुर्दशी—स्त्री० [स० चतुर्दशन्+डट्–ङीप्] चाद्रमास के किसी पक्ष की चौदहवी तिथि। चौदस।

चतुर्दिक् (श्)—अव्य० [स० द्विगुस०] चारो दिशाओ मे। चारो ओर।
पु० चारो दिशाएँ।

चतुर्दिश—पु० [स० द्विगुस०] चारो दिशाएँ।

क्रि० वि० चारो ओर से। चारो दिशाओ मे या से।

चतुर्दोल—पु० [स० चतुर् √दुल् (ढोना) +णिच्+घञ्] १ चार डडो का हिँडोला या पालना। २ वह सवारी जिसे चार कहार उठाकर ले चलते हो। ३ चडोल नाम की सवारी।

चतुर्द्वार—पु० [स० ब० स०] वह घर जिसके चारो ओर चार दरवाजे हो।

चतुर्धाम (न्)—पु० [स० द्विगुस०] हिन्दुओ के द्वारका, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी और बदरिकाश्रम ये चार मुख्य तीर्थ या धाम।

चतुर्बाहु—वि० [स० ब० स०] चार बाँहो या भुजाओवाला।

पु० १ महादेव। शिव। २ विष्णु।

चतुर्बीज—पु० [स० द्विगुस०] वैद्यक मे, काला जीरा, अजवाइन, मेथी और हालिम इन चार पदार्थों के दानो या बीजो का समूह।

चतुर्भद्र—पु० [स० द्विगुस०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष इन चारो पदार्थों का समूह।

वि० उक्त चारो पदार्थों से युक्त।

चतुर्भाव—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

चतुर्भुज—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० चतुर्भुजा] १ (व्यक्ति) जिसकी चार भुजाएँ हो। चार भुजाओवाला। २ (ज्यामिति मे वह क्षेत्र) जिसमे चार भुजाएँ या कोण हो। जैसे—सम चतुर्भुज क्षेत्र।

पु० १ विष्णु। २ ज्यामिति मे, चार भुजाओवाला क्षेत्र।

चतुर्भुजा—स्त्री० [स० चतुर्भुज+टाप्] १ गायत्री रूपधारिणी महा-शक्ति। २ दुर्गा की एक चार भुजाओवाली विशिष्ट मूर्त्ति।

चतुर्भुजी—पु० [हिं० चतुर्भुज से] १ एक वैष्णव सप्रदाय जिसके आचार, व्यवहार आदि रामानन्दियो से मिलते-जुलते होते हैं। २ उक्त सप्रदाय का अनुयायी या सदस्य।

वि० चार भुजाओवाला।

चतुर्मास—पु० [स० द्विगुस०] आषाढ मास की शुक्ला एकादशी से कार्तिक-शुक्ला एकादशी तक की अवधि जिनमे विवाह आदि शुभ काम वर्जित है। चौमासा।

चतुर्मुख—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० चतुर्मुखी] जिसके चार मुख हो। चार मुँहोवाला।

क्रि० वि० चारो ओर।

पु० १ ब्रह्मा। २ सगीत मे, एक प्रकार का चौताला ताल। ३ नृत्य मे एक प्रकार की चेष्टा।

चतुर्मुखी—वि० [हिं० चतुर्मुख से] चतुर्मुख।

चतुर्मूर्ति—पु० [स० ब० स०] विराट्, सूत्रात्मा, अव्याकृत और तुरीय इन चारो अवस्थाओ या रूपो मे रहनेवाला, ईश्वर।

चतुर्युग—पु० [स० द्विगुस०] चारो युगो का समूह। चतुर्युगी।

चतुर्युगी—स्त्री० [स० चतुर्युग+ङीप्] सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग इन चारो युगो का समूह। ४३२०००० वर्षों का समय। चौकडी।

चतुर्वक्त्र—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा।

चतुर्वर्ग—पु० [स० द्विगुस०] अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष ये चारो पदार्थ या इनका समूह।

चतुर्वर्ण—पु० [स० द्विगुस०] हिंदुओ के चारो वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वाही (हिन्)—वि० [स० चतुर् √वह् (ढोना) +णिनि, उप० स०] जिसे चार (पशु या व्यक्ति) मिलकर खीचते या वहन करके ले चलते हो।

पु० चार घोडो की गाडी। चौकडी।

चतुर्विंश—वि० [स० चतुर्विंशति+डट्] चौबीसवाँ।

पु० एक दिन मे पूरा होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

चतुर्विंशति—वि० [स० मध्य० स०] चौबीस।

स्त्री० चौबीस का सूचक अक या सख्या।

चतुर्विद्य—वि० [स० ब० स०] १ जिसने चारो वेद पढे हो। २ चारो विद्याओ का ज्ञाता। पडित।

चतुर्विद्या—स्त्री० [स० कर्म० स०] चारा वेदो की विद्या या ज्ञान।

चतुर्विध—वि० [स० ब० स०] १ चार प्रकारो या रूपो का। २ चौतरफा।

क्रि० वि० चार प्रकारो या रूपों मे।

चतुर्वीर—पु० [स० ब० स० ?] चार दिनो मे होनेवाला एक प्रकार का सोमयाग।

चतुर्वेद—पु० [स० ब० स०] १ परमेश्वर। ईश्वर। २ [कर्म० स०] चारो वेद।

वि० [ब० स०] चारो वेदो का ज्ञाता।

चतुर्वेदी (दिन्)—पु० [स० चतुर्वेद+इनि] १ चारो वेदो को जानने-वाला पुरुष। २ ब्राह्मणो का एक भेद या वर्ग।

चतुर्व्यूह—पु० [स० ष० त०] १ चार मनुष्यो अथवा पदार्थों का समूह। जैसे—(क) राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। (ख) कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध। (ग) ससार, ससार का हेतु, मोक्ष और मोक्ष का उपाय। २ विष्णु। ३ योग-शास्त्र। ४ चिकित्सा-शास्त्र।

चतुर्होत्र—पु० [स० ब० स०] १ परमेश्वर। २ विष्णु।

चतुल—वि० [स० √ चत् (गति) + उलच्] स्थापन करनेवाला। स्थापक।

चतुश्चक्र—पु० [स० चतुर्-चक्र, ब० स०] एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार मत्रो के शुभ या अशुभ होने का विचार किया जाता है। (तत्र)

चतुश्चत्वारिंश—वि० [स० चतुश्चत्वारिंशत्+डट्] चौवालीसवाँ।

चतुश्चत्वारिंशत्—स्त्री० [स० चतुर्-चत्वारिंशत् मध्य० स०] चौवालीस की सख्या या अक।

चतुश्चरण—वि० [स० चतुर्-चरण, ब० स०] १ चार पैरोवाला। २ चार भागो या वर्गोंवाला।

पु० चौपाया। पशु।

चतुश्शृंग—वि० [स० चतुर्-शृग, ब० स०] जिसके चार सीग हो। चार सीगोवाला।

पु० कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम। (पुराण)

चतुष्क—वि० [स० चतुर्+कन्] जिसके चार अग या पार्श्व हो। चौपहल।

पु० १ चार वस्तुओ का वर्ग या समूह। २ वास्तु मे एक प्रकार का चौकोर मकान। ३ एक प्रकार की छडी या डडा।

चतुष्कर—पु० [स० चतुर्-कर, ब० स०] वह जतु जिसके चारो पैरो के आगे के भाग हाथ के समान हो। पजेवाले जानवर। जैसे—बदर।

वि० जिसके चार हाथ हो।

चतुष्करी (रिन्)—वि० [स० चतुर्-कर, द्विगुस०, +इनि] =चतुष्कर।

चतुष्कर्ण—वि० [स० चतुर्-कर्ण, ब० स०] (बात) जिसे चार कान अर्थात् दो ही आदमी जानते हो।

चतुष्कर्णी—स्त्री० [स० चतुष्कर्ण+ङीष्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

चतुष्कल—वि० [स० चतुर्-कला, ब० स०] चार कलाओ या मात्राओ-वाला। जिसमे चार कलाएँ या मात्राएँ हो। जैसे—छन्द शास्त्र मे चतुष्कल गण, सगीत मे चतुष्कल ताल।

चतुष्की—स्त्री० [स० चतुष्क+ङीष्] १ एक प्रकार की चौकोर पुष्करिणी। २ मसहरी। ३ चौकी।

चतुष्कोण—वि० [स० चतुर्-कोण, ब० स०] चार कोणोवाला। चौकोर। चौकोना। जैसे—चतुष्कोण क्षेत्र।

पु० ज्यामिति मे, वह क्षेत्र जिसमे चार कोण हो। (क्वाड्रैंगिल)

चतुष्टय—पु० [स० चतुर्+तयप्] १ चार की सख्या। २ चार चीजो का वर्ग या समूह। ३ फलित ज्योतिष मे जन्म-कुडली मे केन्द्र, लग्न, और लग्न से सातवाँ तथा दसवाँ घर या स्थान।

चतुष्टोम—पु० [स० चतुर्-स्तोम, मध्य० स०] १ चार स्तोमवाला एक प्रकार का यज्ञ। २ अश्वमेध यज्ञ का एक अग। ३ वायु। हवा।

चतुष्पथ—पु० [स० चतुर्-पथिन्, ब० स०] १ चौराहा। चौमुहानी। २ ब्राह्मण।

चतुष्पद—वि० [स० चतुर्-पद, ब० स०] १ चार पैरोवाला (जीव या पशु)। २ (पद्य) जिसमे चार चरण या पद हो।

पु० १ चौपाया। २ वैद्यक मे वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक इन चारो का समूह। ३ फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का करण जिसमे जन्म लेनेवाला दुराचारी, दुर्बल और निर्धन होता है। ४ दे० 'चतुष्पदी'।

चतुष्पद-वैकृत—पु० [ष० त०] एक जाति के पशुओ का दूसरी जाति के पशुओ के साथ होनेवाला मैथुन अथवा स्तन-पान।

चतुष्पदा—स्त्री० [स० चतुष्पद+टाप्] चौपैया छद जिसके प्रत्येक चरण मे तीस मात्राएँ होती है।

चतुष्पदी—स्त्री० [स० चतुष्पद+ङीप्] १ चौपाई छद जिसके प्रत्येक चरण मे १५ मात्राएँ और अन्त मे गुरु-लघु होते है। २ ऐसा गीत जिसमे चार चरण या पद हो।

चतुष्पर्णी—स्त्री० [स० चतुर्-पर्ण, ब० स०, ङीष्] १ छोटी अमलोनी। २ सुसना नाम का साग जिसमे चार-चार पत्तियाँ एक साथ होती है।

चतुष्पाटी—स्त्री० [स० चतुर् √पट् (गति)+णिच्+अण्—ङीप्, उप० स०] नदी।

चतुष्पाठी—स्त्री० [स० चतुर्-पाठ, ब० स०, ङीष्] वह विद्यालय जिसमे बच्चो को चारो वेद पढाये जाते है।

चतुष्पाणि—वि० [स० ब० स०] जिसके चार हाथ हो। चार हाथोवाला।

पु० विष्णु।

चतुष्पाद—वि०, पु० [स० चतुर्-पाद, ब० स०] = चतुष्पद।

चतुष्पार्श्व—वि० [स० चतुर्-पार्श्व, ब० स०] चौपहला। चौतरफा।

चतुष्फल—वि० [स० चतुर्-फल, ब० स०] १ जिसमे चार फल हो। २ जिसमे चार पहल या पार्श्व हो। चौपहला।

चतुष्फलक—पु० [स० चतुर्-फल, ब० स०, कप्] ऐसा ठोस पदार्थ जिसमे किसी तल के ऊपर चार त्रिकोणिक तल (जैसे—किसी केलास या रवे मे होते है) हो। (ट्रेट्राहेड्रन)

चतुष्फला—स्त्री० [स० चतुष्फल+टाप्] नागबला नाम की बूटी।

चतुस्तन—वि० [स० चतुर्-स्तन, ब० स०] [स्त्री० चतुस्तनी] चार स्तनोवाला (प्राणी)।

स्त्री० गाय। गौ।

चतुस्ताल—पु० [स० चतुर्-ताल, ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का चौताला ताल।

चतुस्सन—पु० [स० चतुर्-सन्, द्विगुस०] १ सनक, सनत्कुमार, सनदन और सनातन ये चार ऋषि जिनके नामो के आरभ मे 'सन' है। २ विष्णु।

चतुस्सम—पु० [स० चतुर्-सम, ब० स०] १ एक औषध जिसमे लौग, जीरा, अजवाइन और हड बराबर मात्राओ मे मिलाये जाते है। यह पाचक, भेदक और आमशूल नाशक कहा गया है। २ एक मिश्रित गध द्रव्य जिसमे २ भाग कस्तूरी, ४ भाग चदन, ३ भाग कुकुम और ३ भाग कपूर मिला रहता है।

वि० १ जिसमे चार चीजे बराबर मिली हो। २ जो चारो ओर अथवा प्रकार से बराबर हो।

चतुस्सीमा (मन्)—स्त्री० [स० चतुर्-सीमन्, द्विगुस०, डाप्] चौहद्दी।

चतुस्सूत्री—स्त्री० [स० चतुर्-सूत्र, द्विगुस०, ङीष्] व्यासदेव-कृत वेदात के आरम्भिक चार सूत्र जो बहुत कठिन है और जिन पर भाष्यकारो मे बहुत मत-भेद है।

चतुस्सम्प्रदाय—पु० [स० चतुर्-सम्प्रदाय, द्विगुस०] वैष्णवो के ये चार प्रधान सप्रदाय—श्री, माध्व, रुद्र और सनक।

चतूरात्र—पु० [स० चतुर्-रात्रि, द्विगुस० अच्] चार रात्रियो मे समाप्त होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

चत्र-भुज†—वि०, पु० = चतुर्भुज।

चत्वर—पु० [स० √चत् (स्वीकार करना)+ष्वरच्] १ कोई चौकोर टुकडा या स्थान। २ वह स्थान जहाँ चार भिन्न-भिन्न मार्ग आकर मिलते हो। चौमुहानी। चौराहा। ३ वह स्थान जहाँ भिन्न-भिन्न जातियो, देशो आदि के लोग आकर एकत्र होते या मिलते हो। ४ हवन आदि के लिए बनाया हुआ चौतरा या वेदी। ५ चार रथो का समूह।

चत्वर-वासिनी—स्त्री० [स० चत्वर √वस् (रहना)+णिनि—ङीप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

चत्वाल—पु० [स० √चत्+वालञ्] १ हवन आदि के लिए जमीन मे खोदा हुआ चौकोर गड्ढा। होमकुड। २ कुश नामक घास। ३ गर्भ। ४ चबूतरा। चौतरा। ५ वेदी।

चदरा†—पु० दे० 'चादर'।

चदरिया*—स्त्री० =चादर। उदा०—झीनी झीनी बीनी चदरिया।—कबीर।

चदिर—पु० [स० √चन्द् (चमकना)+किरच्] १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ हाथी। ४ साँप।

चद्दर—स्त्री० [फा० चादर] १ ओढने की चादर। २ धातु का लबा-चौडा चौकोर टुकडा या पत्तर। जैसे—पीतल या लोहे की चद्दर। ३ नदी के बहाव मे वह स्थिति जिसमे उसका पानी कुछ दूर तक ऊपर

से देखने पर चादर के समान सम-तल रहता है। ४ एक प्रकार की छोटी तोप।

चनक*—पु०[सं० चणक] चना।

चनकन†—पु०[देश०] शलगम।

चनकना†—अ०=चटकना। उदा०—चनकि गई सीसी गयो छिरकत छनकि गुलाब।—शृं०।

चनखना—अ०[?] चिढ़ना। खफा होना। उदा०—श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी सो प्यारी जब तूं बोलत चनख चनख।—हरिदास।

चनचना—पु०[अनु०] एक प्रकार का कीड़ा जो तमाकू की फसल को हानि पहुँचाता है। झनझना।

चनन†—पु०=चदन।

चनवर*—पु०[?] ग्रास। कौर।

चना—पु०[सं० चण, चणक, प्रा० चणअ, ने० बं० चना, सिं० चणो, उ० गु० प० मरा० चणा] १ चैती की फसल का एक प्रसिद्ध पौधा जो हाथ भर ऊँचा होता है। २ उक्त पौधे के दाने या बीज जिनकी गिनती अनाजो मे होती है। बूट। छोले।

पद—लोहे के चने=बहुत कठिन और परिश्रमसाध्य काम।

चनियारी—स्त्री० [?] एक प्रकार का जल-पक्षी जो साँभर झील के निकट और बरमा मे अधिकता से पाया जाता है। इसके पर बहुत सुन्दर होते है और टोपियो मे लगाने तथा गुलूबद बनाने के काम मे आते हैं। हूरगीला।

चनुअरी—स्त्री०=चनोरी।

चनेठ—पु० [हिं० चना] १ एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ चने की पत्तियो से मिलती-जुलती होती हैं। २ इस घास से बनाया हुआ एक औषध जो पशुओ को कुछ रोगो मे खिलाया जाता है।

चनोरी—स्त्री०[?] वह भेड जिसके सारे शरीर के बाल या रोएँ सफेद हो। (गडेरिया)

चन्नारिन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जगली चिड़िया।

चप—स्त्री०[देश०] कोई घोली हुई वस्तु। घोल। जैसे—चूने का चप।
वि० [फा०] बायाँ। वाम।

पद—चप व रास्त=(क) बाएँ और दाहिने भाग। (ख) बाएँ और दाहिने, दोनो ओर।

स्त्री० [हिं० चाप] चाप। दबाव। उदा०—कौन की है चप तोहि तेरौ और अरि को ?—सेनापति।

चपकन—स्त्री० [हिं० चपकना] १. एक प्रकार का अगा। अँगरखा। २. किवाड, सदूक आदि मे लोहे, पीतल आदि का वह दोहरा साज जिसमे ताला लगाकर बद किया जाता है।

चपकना—अ०=चिपकना।

चपका—पु० [हिं० चपकना] एक प्रकार का कीडा।

चपकाना—स०=चिपकाना।

चप-कुलिश—स्त्री० [तु० चपकलश] १ तलवारो से होनेवाली लडाई। २ अडचन, असमजस या कठिनाई की स्थिति।
क्रि० प्र०—मे पडना।
३ बहुत अधिक भीड़-भाड या रेल-पेल।

चपट—पु० [सं०√चप् (सात्वना देना) +क, चप√अट् (जाना)+ अच्, पररूप] चपत। तमाचा।

चपटना—अ० १ =चिपकना। २ =चिमटना।

चपटा†—वि०[स्त्री० चपटी] =चिपटा।

चपटाना—स० १ =चिपकाना। २ =चिमटाना।

चपटी—स्त्री० [हिं० चपटा] १ एक प्रकार की किलनी जो चौपायो को लगती है। २ हाथ से बजाई जानेवाली ताली। थपोडी। ३ भग। योनि।

मुहा०—चपटी खेलना या लडाना=सभोग की वासना पूरी करने के लिए दो स्त्रियो का परस्पर योनि मिलाकर रगडना। (बाजारू)

चपड़-चपड़—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो कुत्ते, बिल्ली, शेर आदि के पानी पीते समय होता है।
क्रि० वि० उक्त प्रकार का शब्द करते हुए।

चपडा—पु० [हिं० चपटा] १ साफ की हुई लाख का पत्तर। २ किसी चीज का चिप्पड या पत्तर। ३ लाल रग का एक प्रकार का फतिंगा जो गदे और सीडवाले स्थानो मे रहता है। ४ मस्तूल मे बाँधने की रस्सी।

चपड़ी—स्त्री० [हिं० चपटा] १. तख्ती। पटिया। २ दे० 'चिपडी'।

चपत—पु० [सं० चपट] १ वह प्रहार जो मनुष्य अपनी हाथ की उँगलियो तथा हथेली के योग से किसी के सिर पर करता है। २ लाक्षणिक अर्थ मे, आघात या क्षति।
क्रि० प्र०—जडना।—लगना।—लगाना।

चपतगाह—स्त्री०[हिं० चपत+फा० गाह] खोपडी जिस पर चपत लगाया जाता है। (परिहास)

चपतियाना—स० [हिं० चपत] किसी को चपत या चपतें लगाना।

चपती—स्त्री० [हिं० चिपटा] काठ का वह चिपटा छड जिससे लडके पट्टी, कागज आदि पर सीधी लकीरे खीचते है।

चपदस्त—पु० [फा० चप+दस्त] ऐसा घोडा जिसका अगला दाहिना पैर सफेद हो।

चपना—अ० [हिं० चाँप] १ अदर या नीचे की ओर धँसना। २ किसी के सामने लज्जित भाव से चुप रहना और उससे दबना। ३ दबाव पडने से कुचला जाना। ४ चौपट या नष्ट होना। (क्व०)

चपनी—स्त्री० [हिं० चपना] १ छिछली कटोरी। २ बरतनो का ढक्कन। ३ दरियाई नारियल का बना हुआ एक प्रकार का कमडल। ४ वह लकडी जिसमे ताना बाँधकर गडरिये कबल बुनते है। ५ घुटने की हड्डी। चक्की।

चपरकनातिया—वि०=चपर-कनाती।

चपर-कनाती—वि० [हिं० चपर+तु० कनात+ई (प्रत्य०)] बहुत ही तुच्छ कोटि का ऐसा व्यक्ति जो इधर-उधर लोगो की खुशामद और सेवाएँ करके पेट पालता हो।

चपर गट्टू—वि० [हिं० चौपट+गटपट] १ चारो ओर से कसकर पकडा या दबाया हुआ। २. विपत्ति का मारा। अभागा।

चपरना†—अ०[हिं० चुपडना?] १ आपस मे खूब अच्छी तरह मिलना। ओत-प्रोत होना। उदा०—दोउ चपरि ज्यौ तरुवर छाया।—सूर। २ भाग या छूट जाना।

स० दे० 'चुपडना'।

चपरनी†—स्त्री० [देश०] वेश्याओ का गाना। मुजरा। (वेश्याओ की परिभाषा)

चपरा†—वि० [?] कोई बात कहकर या कोई काम करके मुकर जानेवाला। झूठा।
अव्य० १ हठात्। २ जैसे हो, वैसे। ३ ख्वाहमख्वाह।
पु० दे० 'चपडा'।

चपराना—स० [हिं० चपरा] किसी को झूठा बनाना। झुठलाना।

चपरास—स्त्री० [हिं० चपरासी] १ धातु आदि का वह टुकडा जिसे पेटी या परतले मे लगाकर अरदली, चौकीदार, सिपाही आदि पहनते है और जिस पर उनके मालिक, कार्यालय आदि के नाम खुदे या छपे रहते है। २ वह कलम जिससे सुनार मुलम्मा करते है। ३ मालखभ की एक कसरत जो दुबगली के समान होती है। दुबगली मे पीठ पर से बेत आता है और इसमे छाती पर से आता है। ४ आरे आदि के दाँतो का दाहिनी या बाईं ओर होनेवाला झुकाव। (बढइयो की परिभाषा) ५ कुरतो के मोढे पर की चौडी धज्जी या पट्टी।

चपरासी—पु० [फा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना] १ वह नौकर जो चपरास पहनकर अपने मालिक के सामने उसकी छोटी-मोटी सेवाएँ करने के लिए सदा उपस्थित रहता है। अरदली। जैसे—किसी अदालत या हाकिम का चपरासी। २ कार्यालय के कागज-पत्र आदि लाने या ले जानेवाला नौकर।

चपरि†—क्रि० वि० [स० चपल] १ फुरती से। तेजी से। २ जोर से। ३ सहसा। एकबारगी। ४ बलपूर्वक पकड या दबाकर।
उदा०—चपरि चढायौ चाप चद्रमा ललाम कौ।—तुलसी।

चपरी—स्त्री० [हिं० चपटा] खेसारी नाम का कदन्न जिसमे चपटी फलियाँ लगती है।

चपरैला—पु० [देश०] एक प्रकार की घास। कूरी।

चपरौनी†—स्त्री० [हिं० चपटा] लोहारो का एक औजार जिससे बालटू का सिरा पीटकर चौडा किया जाता है।

चपल—वि० [स० √चुप् (रेंगना)+कल, उकारस्य अकार] १ जो गति मे हो। गतिमान्। २ काँपता या हिलता हुआ। ३ अस्थिर। ४ क्षणिक। ५ चुलबुला। ६ चटपट काम करनेवाला, फुरतीला (व्यक्ति)। ७ उतावली करनेवाला। जल्दबाज। ८ चालाक। धूर्त्त।
पु० १ पारा। पारद। २ मछली। ३ चातक। पपीहा। ४ एक प्रकार का पत्थर। ५ चोर नामक गध-द्रव्य। ६ राई। ७ एक प्रकार का चूहा।

चपलक—वि० [स० चपल+कन्] १ अस्थिर। चचल। २. बिना सोचे-समझे काम करनेवाला। अविचारी।

चपलता—स्त्री० [स० चपल+तल्—टाप्] १ चपल होने की अवस्था या भाव। चचलता। २ साहित्य मे वह अवस्था जब किसी प्रकार के अनुराग के कारण आचरण की गम्भीरता या अपनी मर्यादा का ध्यान नही रह जाता। इसकी गिनती सचारी भावो मे होती है। ३ तेजी। फुरती। ४ जल्दी। शीघ्रता। ५ चालाकी। ६ ढिठाई। धृष्टता।

चपलत्व—पु० [स० चपल+त्व] =चपलता।

चपलफाँटा—पु० [स० चपल+हिं० फट्टा=धज्जी] जहाज के फर्स के तख्तो के बीच की खाली जगह मे खडे बल मे बैठाए हुए तख्ते या पच्चड जिनमे मस्तूल फँसे रहते है।

चपलस—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसकी लकडी से सजावट के सामान, चाय के सदूक, नावो के तख्ते आदि बनते है। यह ज्यो-ज्यो पुरानी होती है त्यो-त्यो अधिक कडी और मजबूत होती जाती है।

चपला—स्त्री० [स० चपल+टाप्] १ लक्ष्मी। २ बिजली। विद्युत्। ३ दुश्चरित्रा या पुश्चली स्त्री। ४ पिप्पली। ५ जीभ। जिह्वा। ६ भाँग। विजया। ७ मदिरा। शराब। ८ आर्या छद का वह भेद जिसके पहले गण के अत मे गुरु हो, दूसरा गण जगण हो, तीसरा गण दो गुरुओ का हो, चौथा गण जगण हो, पाँचवे गण का आदि गुरु हो, छठा गण जगण हो, सातवाँ जगण न हो और अत मे गुरु हो। ९ प्राचीन काल की एक प्रकार की नाव जो ४८ हाथ लबी, २४ हाथ चौडी और २४ हाथ ऊँची होती थी और केवल नदियो मे चलती थी।
वि० स० 'चपल' का स्त्री०।
पु० [हिं० चप्पड] जहाज मे लोहे या लकडी की पट्टी जो पतवार के दोनो ओर उसकी रोक के लिए लगाई जाती है। (लश०)

चपलाई*—स्त्री० =चपलता।

चपलान—पु० [हिं० चप्पड] जहाज की गलही के अगल-बगल के कुदे जो धक्के सँभालने के लिए लगाए जाते है। (लश०)

चपलाना—अ० [स० चपल] १ चपलता दिखाना। २ धीरे-धीरे आगे बढना, चलना या हिलना-डोलना।
स० १ किसी को चपल बनाना। २ चलाना-फिराना या हिलाना-डुलाना।

चपली—स्त्री० [हिं० चप्पल+ई (प्रत्य०)] छोटी चप्पल।

चपवाना—स० [हिं० चपना का प्रे०] चपने या चापने का काम किसी से कराना।

चपाक†—क्रि० वि० [अनु०] १ अचानक। २ चटपट।

चपाट—पु० [हिं० चपटा] वह जूता जिसकी एडी उठी न हो। चपौर जूता।

चपाती—स्त्री० [स० चर्पटी, प्रा० चप्पती, ब० चापाती, ग० ने० फा० मरा० चपाती] एक प्रकार की पतली, हलकी और मुलायम हाथो से दबाकर बढाई हुई (चकले पर बेली हुई रोटी से भिन्न) रोटी।
पद—चपाती-सा पेट =ऐसा पेट जो बहुत निकला हुआ न हो। कृशोदर।

चपाती-सुमा—पु० [उ०] चपाती या रोटी की तरह के पतले सुमोवाला घोडा।

चपाना—स० [हिं० चपना] १ किसी को चपने या दबने मे प्रवृत्त करना।
उदा०—मुफलिस को इस जगह भी चपाती है मुफलिसी।—नजीर।
२ एक रस्सी के सिरे को दूसरी रस्सी के सिरे के साथ बटकर जोडना या मिलाना।

चपेकना†—स० =चिपकाना।

चपेट—स्त्री० [स० चप√इट् (गति)+अच्] १ चपेटने की क्रिया, परिणाम या भाव। २ आघात। प्रहार। ३ तमाचा। थप्पड। ४ कठिनाई या सकट की स्थिति।

चपेटना—स० [स० चपेट] १ अचानक आक्रमण, प्रहार आदि करके दबाना या सकट मे डालना। दबोचना। २ उक्त प्रकार की क्रिया

से दवाते हुए पीछे हटाना। जैसे—सिक्खो की सेना चारो ओर से शत्रुओ को चपेटने लगी। ३ क्रोधपूर्वक डराते-धमकाते हुए किसी पर बिगडना।

चपेटा—पु० =चपेट।
वि० [हिं० चपेटना?] दोगला। वर्ण-सकर।

चपेटिका—स्त्री० [स० चपेट+कन्—टाप्, इत्व] तमाचा।

चपेटी—स्त्री० [स० चपेट+ङीप्] भादो सुदी छठ। भाद्रपद की शुक्ला षष्ठी। (इस दिन स्त्रिया सतान की रक्षा के उद्देश्य से पूजन आदि करती है।)

चपेड़†—स्त्री० [स० चपेट] तमाचा। थप्पड।

चपेरना—स० =चपेटना।

चपेहा†—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा और उसका फल।

चपोटसिरीस—पु० [देश०] सिरीस की जाति का एक पेड।

चपोटी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी टोपी।

चपौर—पु० [देश०] १ एक प्रकार का जलपक्षी जिसकी चोच और पैर पीले तथा सिर गर्दन और छाती हलकी भूरी होती है। २ ऐसा जूता जिसकी एडी उठी हुई न हो।

चप्पड़†—पु० =चिप्पड।

चप्पन—पु० [हिं० चपना =दबना] छोटे आकार का छिछला कटोरा।

चप्पल—स्त्री० [चपचप से अनु०] १ खुली एडी का एक प्रसिद्ध जूता जिसमें चमडे आदि की पट्टियाँ तल्ले पर लगी रहती है और जिनमे पैर फँसाये जाते है। २ वह लकडी जिस पर जहाज की पतवार या कोई खभा गडा रहता है। (लश०)

चप्पल सेंहुड़—पु० [हिं० चपटा+सेहुँड] नागफनी।

चप्पा—पु० [स० चतुष्पाद, प्रा० चउप्पाव] १ चतुर्थाश। चौथाई भाग। चौथाई हिस्सा। २ कुछ या थोडा अश। टुकडा। भाग। ३ चार अगुल की नाप। ४ भूमि का बहुत छोटा टुकडा। उदा०—चप्पे जितनी कोठरी और मियाँ मुहल्लेदार। (कहा०)
वि० एक चौथाई। जैसे—चप्पा रोटी।

चप्पी—स्त्री० [हिं० चपना =दबना] सेवा-भाव से धीरे-धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया या भाव। चरण-सेवा। चपी।

चप्पू—पु० [हिं० चाँपना] नाव का वह डाँड जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी

चफाल—पु० [हिं० चौ+फाल] ऐसा भू-खड जिसके चारो ओर कीचड या दलदल हो।

चबक—स्त्री० [अनु०] रह-रहकर उठनेवाला दर्द। चिलक। टीस।
वि० कायर। डरपोक।

चबकना—अ० [अनु०] रह-रहकर दर्द करना। टीसना। चमकना।

चबका†—पु० =चाबुक। उदा०—सहज पलाण पवन करि घोडा, लै लगाम चित चबका।—गोरखनाथ।

चबकी—स्त्री० [हिं० चाबुक] स्त्रियो के केश बाँधने की सूत या ऊन की गुथी हुई रस्सी। चोटी। परांदा।

चबनी हड्डी—स्त्री० [हिं० चाबना+हड्डी] वह हड्डी जो भुरभुरी और पतली हो, और फलत. सहज मे चबाई जा सकती हो।

चबर-चबर—स्त्री० [अनु०] बकवास। उदा०—हमको यह सब चबर-चबर पसद नही है।—वृन्दावनलाल वर्मा।
क्रि० वि० चब-चब शब्द करते हुए।

चबला—पु० [देश०] पशुओ के मुँह मे होनेवाला एक रोग। लाल रोग।

चबवाना—स० [हिं० चबाना का प्रे०] किसी को कुछ चबाने मे प्रवृत्त करना।

चबाई—स्त्री० [हिं० चबाना] चबाने की क्रिया, ढग या भाव।
पु० =चवाई।

चबाना—स० [स० चर्वण] १ खाते समय किसी चीज को दाँतो से बार-बार इस प्रकार दबाते हुए काटना या कुचलना कि वह छोटे-छोटे कणो मे विभक्त हो जाय।
मुहा०—**चबा-चबाकर बातें करना** =बहुत धीरे-धीरे और रुक-रुककर बातें करना। (धूर्तता, बनावट आदि का सूचक)। **चबे को चबाना** =किए हुए काम को फिर-फिर करना। पिष्टपेषण करना।
२ पशुओ आदि का किसी को दाँतो से काटना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, नष्ट करना। जैसे—तुम्हे तो वह चबा डालेगा।

चबारा—पु० =चौबारा।

चबाव*—पुं० =चवाव।

चबूतरा—पु० [स० चतुस्-स्तर (प्र-स्तर), प्रा० चउत्थर, ब० चौतारा, प० चौतरा, गु० चोतरो, ने० चौतारो, मरा० चौथरा] १ मकान के अगले भाग मे बैठने के लिए बनाई हुई खुली, चौकोर और चौरस जगह। चौतरा। २ उक्त प्रकार की कोई बडी रचना जो चारो ओर से खुली हो। चौतरा। ३ मध्ययुग मे कोतवाली या थाने मे का वह स्थान जहाँ कोतवाल या थानेदार बैठकर अभियोग सुनते और दड देते थे।

चबेना—पु० [हिं० चबाना] चबाकर खाने के लिए सूखा भुना हुआ चना अथवा और कोई अन्न। चर्वण। भूँजा।

चबेनी†—स्त्री० [हिं० चबाना] १ जल-पान की सामग्री। २ वह धन या रकम जो जल-पान आदि के लिए दी जाय।

चब्बा—पु० =चौआ।

चब्बू—वि० [हिं० चबाना] १ बहुत चबाने अर्थात् खानेवाला। बहुत अधिक भोजन करनेवाला। २ खा-खरचकर धन नष्ट करनेवाला।

चब्भू—वि० =चब्बू।

चभोा—स्त्री० [हिं० चमक] किसी की गरदन पकडकर उसे जबरदस्ती पानी मे दी जानेवाली डुबकी या गोता।

चभक—स्त्री० [अनु०] १ पानी मे किसी वस्तु के डूबने का शब्द। २ काटने या डक मारने की क्रिया या भाव।

चभच्चा—पु० =चहबच्चा।

चभड़-चभड़—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो कोई वस्तु खाने या पीने के समय मुँह के हिलने आदि से होता है। जैसे—कुत्तो का चभड-चभड पानी पीना।

चभना—अ० [स० चर्वण] १ चाभा या खाया जाना। २ दरेरा खाना। दबना। पिसना। उदा०—मुरयौन मन मुरवान्, चभि भो चूरनु चपि चूरू।—बिहारी।

भाना—स० [हिं० चाभना का प्रे०] १ किसी को चाभने या खाने मे प्रवृत्त करना। २ अच्छी तरह भोजन कराना।
† अ० = चबाना।

भोक—वि० [देश०] बेवकूफ। मूर्ख।

भोरना—स० [हिं० चुभकी] १ तरल पदार्थ मे कोई चीज अच्छी तरह डुबाना। जैसे—घी मे रोटी चभोरना। २ गरदन से पकडकर किसी को गहरे पानी मे गोता देना।

मक—स्त्री० = चमक।

मकना—अ० = चमकना।

मक—स्त्री० [हिं० चमकना] १ चमकने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व जिसके कारण उसमे से प्रकाश निकलता है। जैसे—कपडे, बिजली या सोने की चमक। ३ प्रकाश। रोशनी। ४ आभा। काति। ५ कमर, पीठ आदि मे होनेवाली वह आकस्मिक और क्षणिक पीडा जो अधिक तनाव या बल पडने के कारण होती है। झटका लगने से होनेवाला दर्द। ६ चौकने की क्रिया या भाव। चौक।

मक चाँदनी—स्त्री० [हिं०] वह स्त्री जो हर समय खूब बनी-ठनी रहे और खूब चमकती-मटकती रहे।

मक-दमक—स्त्री० [हिं० चमक + दमक (अनु०)] १ चमकने और दमकने की क्रिया, गुण या भाव। २ तडक-भडक। ठाठ-बाट।

मकदार—वि० [हिं० चमक + फा० दार] जिसमे चमक हो। चमकीला।

मकना—अ० [स० चमत्कृ, प्रा० चमक्केइ, बँ० चकान, उ० चमकिबा, मरा० चमकणे] १ किसी प्रकाशमान वस्तु का इतना अधिक तथा सहसा प्रकाश देना कि उस पर आँखे न ठहर सके। जैसे—बिजली चमकना। २ किसी वस्तु का झिल-मिलाती हुई किरणो के माध्यम से प्रकाश देना। जैसे—आकाश मे तारो का चमकना। ३ किसी चिकने तलवाली वस्तु का प्रकाश मे अधिक उज्ज्वल तथा प्रकाश-पूर्ण भासित होना। जैसे—धूप मे गहना या शीशा चमकना। ४ उक्त प्रकार के प्रकाश का आँखो पर ऐसा प्रभाव पडना कि वे निरन्तर खुली न रह सके। जैसे—धूप मे आँखे चमकना। ५ किसी वस्तु का बहुत ही उत्कृष्ट रूप मे प्रकट या प्रस्तुत होना। जैसे—गला या गाना चमकना। ६ (कार्य, वस्तु आदि का) उन्नति या वृद्धि पर होना। जैसे—रोजगार चमकना। ७ (किसी वस्तु, बात आदि का) अपना उग्र या प्रचड रूप दिखलाना। जैसे—शहर मे हैजा चमकना। ८ कीर्ति, प्रताप, वैभव आदि से युक्त होना। जैसे—भाग्य चमकना। ९ किसी को देखने पर घबराते हुए चौक कर पीछे हटना। बिदकना। जैसे—हाथी को देखकर गौ या घोडे का चमकना। १० साधारण रूप से नाराज होना या बिग-डना। जैसे—गलती तो उन्ही की थी, पर वे चमके हम पर। ११ जल्दी से दूर हो जाना या हट जाना। चपत होना। उदा०—सखा साथ के चमकि गए सब, गह्यौ श्याम कर धाइ।—सूर। १२ नाज-नखरे या हाव-भाव से चेष्टाएँ करना। (स्त्रियाँ) जैसे—तुम तो बातो-बातो मे चमकने लगती हो।
†वि० [स्त्री० चमकनी] १ खूब चमकनेवाला। २. जरा-सी बात मे चिढ या बिगड जानेवाला। ३ अनुचित रूप से नाज-नखरा या हाव-भाव दिखलानेवाला। ४ जल्दी चौकने या बिदकनेवाला। जैसे—चमकता घोडा या बैल।

चमकवाना—स० [चमकाना का प्रे०] १ चमकाने का काम करवाना। २ किसी चीज मे चमक उत्पन्न कराना।

चमकाना—स० [हिं० चमकना का स०] १ काति, दीप्ति या चमक से युक्त करना। ओप या चमक लाना। उज्ज्वल करना। २ चौंकाना। ३ भडकाना। ४ खिझाना। चिढाना। ५ उत्तेजित करके आगे बढाना। जैसे—लडाई के मैदान मे घोडा चमकाना। ६ नखरे से कोई अग जल्दी-जल्दी हिलाना-डुलाना। जैसे—आँखे या उँगलियाँ चमकाना। ७ कीर्ति, वैभव, सफलता आदि से युक्त करना। जैसे—उनके छोट भाई ने आकर उनका रोजगार चमका दिया।

चमकारा—पु० [हिं० चमक] चकाचौध उत्पन्न करनेवाली चमक या प्रकाश।
वि० [स्त्री० चमकारी] खूब चमकनेवाला। चमकता हुआ। चम-कीला। उदा०—अधरबिंब दसनन की सोभा, दुति दामिनि चमकारी। —सूर।

चमकारी†—स्त्री० १ = चमक। २ = चमकी।

चमकी—स्त्री० [हिं० चमक] रुपहले या सुनहले तारो के वे छोटे-छोटे गोल या चौकोर चिपटे टुकडे जो जरदोजी के काम मे लगाये जाते है। सितारे। तारे।

चमकीला—वि० [हिं० चमक + ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे चमक हो। चमकदार। जैसे—चमकीला कपडा, चमकीले तारे।

चमकुल†—वि० [हिं० चमकना] १ चमकीला। २ चटकने-मटकनेवाला। उदा०—बैल मरकहा चमकुल जोय।—घाघ।

चमकौवल—स्त्री० [हिं० चमक + औवल (प्रत्य०)] शरीर के अगो को नखरे से चमकाने-मटकाने की क्रिया या भाव। जैसे—उँगलियो की चम-कौवल।

चमक्को—स्त्री० [हिं० चमकना] १ बहुत अधिक चमकने-मटकनेवाली स्त्री। चचल और निर्लज्ज स्त्री। २ झगडालू स्त्री।

चमगादड़—पु० [स० चर्मचटक] [स्त्री० चमगिदडी] १ केवल रात के समय उडनेवाला एक प्रसिद्ध छोटा जन्तु जिसके चारो पैर झिल्ली-दार होते है और जो दिन मे वृक्षो की डालो आदि मे लटका रहता है। इसकी छोटी बडी अनेक जातियाँ होती है और इसे दिन मे दिखाई नही देता। २ ऐसा व्यक्ति जो अपना कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न रखता हो और केवल स्वार्थ-साधन के लिए कभी इस पक्ष मे और कभी उस पक्ष मे जा मिलता हो। (एक प्रसिद्ध कहानी के आधार पर)

चमचम—स्त्री० [अनु०] एक प्रसिद्ध लबोतरी बगला मिठाई।
वि० [हिं० चमक] खूब चमकता हुआ। चमकीला। दे० 'चमाचम'।
क्रि० वि० खूब चमक-दमक से। दे० 'चमाचम'।

चमचमाना—अ० [हिं० चमक] खूब चम-चम करना या चमकना। प्रकाश-मान होना।
स० ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज खूब चमकने लगे या उसमे से चमक निकलने लगे। जैसे—जूता या तलवार चमचमाना।

चमचा—पु० [तु० चम्च मि० स० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १ कलछी की तरह का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जिसमे अडाकार छोटी कटोरी मे लबी डाँडी लगी होती है, और जिससे कोई चीज उठाकर खाई या पी जाती है। चम्मच। २ जहाज की दरजो मे अलकतरा ढालने

को कलछी। (लश०) ३ नाव मे डाड का चौडा अग्रभाग। हाथा। हलेसा। पगई। ऐंठा। ४ इजन, भट्ठी आदि मे से कोयला निकालने का एक प्रकार का बडा फावडा।† ५ चिमटा।

चमचिच्चड—वि० [हि० चाम +चिचडी] (व्यक्ति) जो चिचडी या किलनी को तरह् किसी मे या किसी से चिपटा रहे। पिड या पीछा न छोडनेवाला।

चमची—स्त्री० [हि० चमचा] १ छोटा चम्मच। २ आचमनी। ३ वह चिपटे और चौडे मुँहवाली सलाई जिससे पान पर कत्था और चूना लगाते है।

चमजुई—स्त्री० [स० चर्मयूका] पशुओ या मनुष्यो के शरीर मे से उत्पन्न होनेवाला एक छोटा कीडा। चिचडी।

वि० स्त्री० = चमचिच्चड।

चमटना†—स० = चिमटना।

चमटा—पु० =चिमटा।

चमडा—पु० [स० चर्म] १ पशुओ और मनुष्यो के सारे शरीर का वह ऊपरी आवरण जिससे मास और नसे ढकी रहती हैं और जिस पर प्राय बाल या रोएँ उगे रहते है। त्वचा। (स्किन) २ मरे हुए पशुओ अथवा पशुओ को मार कर उनकी उतारी हुई खाल को छील तथा सिझाकर औद्योगिक कार्यों के लिए तैयार किया हुआ उसका रूप। (हाइड)

मुहा०—चमडा उधेडना या खींचना = चमडे को शरीर से अलग करना। **चमडा सिझाना** = (क) चमडे को बबूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी मे डाल कर मुलायम करना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, बहुत अधिक मारना या पीटना।

३ छाल। छिलका।

चमडी—स्त्री० [हि० चमडा] चर्म। त्वचा। खाल।

मुहा०—(किसी की) चमड़ी उधेड़ना = इतना अधिक मारना कि शरीर की त्वचा उड जाय और उसमे से खून निकलने लगे।

चमत्करण—पु० [स० चमत् √ कृ (करना) +ल्युट्—अन] चमत्कार करने या होने की क्रिया या भाव।

चमत्कार—पु० [स० चमत् √कृ +घञ्] [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १ कोई ऐसी अनोखी या विलक्षण बात जिसे देखकर सब लोग चौंक पडें और यह न समझ सकें कि यह कैसे हो गई। २ ऐसा अद्भुत काम या बात जो इस लोक मे सहसा न दिखाई देती हो। अलौकिक-सा जान पडनेवाला काम या बात। करामात। जैसे—मृत प्राणी को जीवित कर दिखाना, या जलते हुए अगारो पर दौडना और उन्हे उठा-उठाकर खाने लगना। ३ ऐसी अद्भुत या अनोखी बात जिसे देख या सुनकर मन फडक उठे। जैसे—कविता या कहानी की चमत्कार। ४ आश्चर्य। विस्मय। ५ [चमत् √कृ +अण्] डमरू। ६ अपामार्ग। चिचडा।

चमत्कारक—वि० [स० चमत् √कृ +ण्वुल्—अक] चमत्कार उत्पन्न करनेवाला।

चमत्कारिक—वि० [स० चमत्कार +ठन्—इक] १ चमत्कार-सबधी। २ इतना विलक्षण कि चौंका दे। (मार्वलस) ३ अलौकिक या असभव-सा जान पडनेवाला। (मिरैक्यूलस)

चमत्कारित—भू० कृ० [स० चमत्कार +इतच्] चमत्कृत। विस्मित।

चमत्कारिता—स्त्री० [स० चमत्कारिन् । तल्—टाप्] चमत्कारी होने की अवस्था, गुण या भाव। चमत्कारपन।

चमत्कारी (रिन्)—वि० [स० चमत् √कृ (करना) +णिनि] [स्त्री० चमत्कारिणी] १ (वस्तु) जिसमे चमत्कार हो। जिसमे कुछ विलक्षणता हो। अद्भुत। २ चमत्कार उत्पन्न करनेवाला। ३ चमत्कार दिखानेवाला (व्यक्ति)। करामाती।

चमत्कृत—भू० कृ० [स० चमत् √कृ +क्त] जो किसी प्रकार का चमत्कार या विलक्षण बात देखकर चौक पडा हो। चकित। विस्मित। उदा०—इतना न चमत्कृत हो बाले! अपने मन का उपचार करो।—प्रसाद।

चमत्कृति—स्त्री० [स० चमत् √कृ +क्तिन्] १ चमत्कृत होने की अवस्था या भाव। २ चमत्कार।

चमन—पु० [फा०] १ फूल-पत्तो आदि से भरी हुई हरी क्यारी। २ फुलवारी। छोटा बगीचा। ३ ऐसी गुलजार जगह् जहाँ खूब रौनक हो।

चमन-बंदी—स्त्री० [फा०] क्यारिया आदि बनाकर बाग लगाने या सजाने की कला या क्रिया।

चमर—पु० [स० √चम् (खाना) +अरच्] १ सुरा गाय। २ सुरा गाय की पूँछ का बना हुआ चँवर। चामर। ३ किसी प्रकार का चँवर। ४ एक दैत्य का नाम।

वि० [हि० चमार] हि० 'चमार' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो मे लगने के पहले प्राप्त होता है और जो तुच्छ या हीन का वाचक होता है। जैसे—चमर चलाकी, चमर रग आदि।

चमरक—पु० [स० चमर +कन्] मधुमक्खी।

चमरख—स्त्री० [हि० चाम +रक्षा] चरखे मे लगी हुई चमडे, मूँज आदि की वह चकती जिसमे तकला पहनाया जाता है।

चमरखा—पु० [स० चर्मकशा] एक प्रकार की सुगधित जड जो उबटन आदि मे पडती है।

चमर-गिद्ध—पु० [हि०] एक प्रकार का बडा गिद्ध।

चमर-चलाक†—वि० [हि० चमार +फा० चालाक] बहुत ही तुच्छ या हीन प्रकार का चतुर या चालाक।

चमर-चलाकी—स्त्री० [हि०] चमारो की-सी तुच्छ या हीन चालाकी या धूर्त्तता।

चमर-जुलाहा—पु० [हि० चमार +जुलाहा] हिंदू जुलाहा। कोरी। (मुसलमानो की दृष्टि से, उपेक्षा-सूचक पद)।

चमर-पुच्छ—वि० [ब० स०] (पशु) जिसकी पूँछ चँवर की तरह् हो या चँवर बनाने के काम आ सकती हो।

पु० १ चँवर। २ गिलहरी। ३ लोमडी।

चमर-बंकुलिया†—स्त्री० = चमर-बगली।

चमर-बगली—स्त्री० [हि० चमार +बगला] बगले की जाति की काले रग की एक चिडिया।

चमर-रग—वि० [हि०] (व्यक्ति) जिसकी रग या स्वभाव चमारो का-सा तुच्छ या हीन हो।

स्त्री० चमारो की-सी तुच्छ या हीन प्रकृति, प्रवृत्ति या स्वभाव।

चमर-शिखा—स्त्री० [उपमि० स०] घोडो के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी।

चमरस—पु० [हिं० चाम] चमडे के जूते की रगड से ैर मे होनेवाला घाव।

चमरा खारी—पु० [हिं० चमार+खारी] खारी नमक।

चमरावत—स्त्री० [हिं० चमार] चमडे के मोट आदि बनाने की मजदूरी जो काश्तकारो या जमीदारो से चमारो को मिलती है।

चमरिक—पु० [सं० चमर+ठन्—इक] कचनार का पेड।

चमरिया†—वि० [हिं० चमार] चमारो का-सा तुच्छ। हीन।

चमरिया सेम—पु० [हिं०] एक प्रकार की सेम। सेम का एक भेद।

चमरी—स्त्री० [सं० चमर+ङीष्] १ सुरा गाय। २ चँवर। ३ पौधो की मजरी।

चमरू—पु० [देश०] १ चमडा। २ खाल। ३ चरसा। (लश०)

चमरौर—पु० [देश०] एक प्रकार का बडा पेड जिसकी छाया बहुत घनी होती है।

चमरौट—स्त्री० [हिं० चमार+औट (प्रत्य०)] खेत फसल आदि का वह भाग जो चमारो को उनकी सेवाओ के बदले मे दिया जाता है।

चमरौधा—पु० दे० 'चमौआ'

चमला—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चमली] भीख माँगने का ठीकरा। भिक्षा-पात्र।

चमस—पु० [सं० √चम् (खाना)+असच्] [स्त्री० अल्पा० चमसी] १ सोम-पान करने का यज्ञ-पात्र जो पलाश आदि की लकडी का बनता और चम्मच के आकर का होता था। २ कलछा या कलछी। ३ पापड। ४ लड्डू। ५ उडद का आटा। धुआँस। ६ एक प्राचीन ऋषि। ७ नौ योगीश्वरो मे से एक योगीश्वर का नाम।

चमसा—पु० [सं० चमस] चमचा। चम्मच।
†पु० = चौमासा।

चमसी—स्त्री० [सं० चमस+ङीष्] १ चम्मच के आकार का लकडी का एक यज्ञ-पात्र। २ उडद, मसूर मूँग आदि का आटा या पीठी।

चमाऊ—पु० [सं० चामर] चामर। चँवर।
†पु० दे० चमौआ'।

चमाक*—स्त्री० = चमक।

चमाचम—वि० [हिं० चमकना का अनु०] इतना अधिक साफ और स्वच्छ कि चम-चम करता हुआ चमकता हो।

चमार—पु०[सं० चर्मकार, प्रा० चम्मारअ, बँ० चामार, उ० ने० चमार, सिं० चमारु, सिंह० सोम्मारु, प० चम्यार, मरा० चाभार]१ एक जाति जो चमडे के जूते, मोट आदि बनाती तथा उनकी मरम्मत करती है। २ एक जाति जो गलियो आदि मे झाड़ू देती है। ३ उक्त जातियो का पुरुष। ४ नीच प्रकृतिवाला आदमी।

चमारनी—स्त्री० = चमारी।

चमारिन—स्त्री० = चमारी।

चमारी—स्त्री० [हिं० चमार] १ चमार जाति की स्त्री। २ गलियो मे और सडको पर झाड देनेवाली स्त्री। ३ चमार का काम या पेशा। ४ चमारो की-सी वृत्ति या स्वभाव।
वि० १ चमार-सबधी। चमार का। २ चमारो की तरह का।
स्त्री० [?] कमल का वह फूल जिसमे कमलगट्टे के जीरे खराब हो जाते है।

चमिधारी—स्त्री० [देश०] पद्म काठ।

चमीकर—पु० [सं०] प्राचीन काल की एक खान जिससे सोना निकलता था। (इसी से सोने को चामीकर कहते है।)

चमू—स्त्री० [सं० √चम् (नष्ट करना)+णिच्+ऊ] १ सेना। फौज। २ प्राचीन भारत मे सेना का वह विभाग जिसमे ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घुड-सवार और ३६४५ पैदल सैनिक होते थे। ३ कफन। ४ कब्र।

चमूकन—पु० [देश०] एक प्रकार की किलनी जो चौपायो के शरीर मे चिपटी रहती है।

चमू-चर—पु० [सं० चमू√चर् (चलना)+ट] १ सिपाही। सैनिक। २ सेनापति।

चमू-नाथ—पु० [ष० त०] = चमूपति।

चमू-नायक—पु० [ष० त०] = चमूपति।

चमू-पति—पु० [ष० त०] सेनापति। सेनानायक।

चमूरु—पु० [सं० √चम् (खाना)+ऊरु] एक प्रकार का हिरन।

चमू-हर—पु० [सं० चमू√हृ (हरण करना)+अच्, उप० स०] महादेव। शिव।

चमेलिया—वि० [हिं०] १ चमेली के फूल की तरह का ऐसा सफेद (रग) जिसमे कुछ पीली झलक हो। (लैवेंडर) २ चमेली की गध से युक्त।
पु० हलका पीलापन लिये सफेद रग।

चमेली—स्त्री० [सं० चपावेल्ली, बँ० ने० चमेली, प० मरा० सिं० चँबेली, गु० चँपेली] १ एक प्रसिद्ध लता जिसमे पीलापन लिये सफेद रग के छोटे-छोटे सुगधित फूल लगते है। २ उक्त लता का फल।
पद—चमेली का जाल = एक प्रकार के कसीदे का काम।
३ नदी या समुद्र की ऊँची लहर की वह थपेड जिससे नावे आदि डगमगाने लगती और कभी-कभी डूब जाती है।

चमोई—स्त्री० [देश०] सिक्किम, भूटान आदि प्रदेशो मे होनेवाला एक पेड जिसकी छाल से कागज बनाया जाता है। इसे धनकोटा, सतपूरा, सतबरसा इत्यादि भी कहते है।

चमोटा—पु० [सं० चर्मपट्ट] [स्त्री० अल्पा० चमोटी] १ नरम चमडे का वह टुकडा जिस पर नाई छूरे को उसकी धार तेज करने के लिए बार-बार रगडते है। २ बडी चमोटी। कोडा।

चमोटी—स्त्री० [हिं० चमोट] १ चाबुक। कोडा। २ पतली छडी। कमची। बेत। ३ वह चमडा जो बेडियो के भीतरी भाग मे इसलिए लगाया जाता है कि पैरो मे लोहे की रगड न लगे। ४ चमडे का बना छोटा चमोटा। ५ चमडे का वह पट्टा जिसकी सहायता से खराद का चक्कर खीचा जाता है।

चमौआ—पु० [हिं० चाम] वह देशी जूता जिसका तला चमडे से सीया गया हो। चमरौधा।

चम्मच—पु० [फा० मिलाओ, म० चमस्] बडा चमचा जिससे खाने-पीने की चीजे चलाई तथा निकाली जाती है।

चम्मल—पु० = चमला (भिक्षापात्र)।

चम्मोरानी—पु० [देश०] बच्चो का एक प्रकार का खेल। सात समुदर।

चय—पु० [सं० √चि (बटोरना)+अच्] १ ढेर। राशि। समूह। २ टीला। ढूह। ३ किला। गढ। ४ किले या शहर की चार-दीवारी।

परकोटा। फसील। ५ इमारत या दीवार की नींव। बुनियाद। ६ चबूतरा। चौतरा। ७ चौकी या ऐसा ही और कोई ऊँचा आसन। ८ बहुत ही मनोहर और हरा-भरा स्थान। ९ वैद्यक मे कफ, पित्त या वात का विकृत होकर इकट्ठा होना। १० यज्ञ के लिए अग्नि का चयन जो एक सस्कार के रूप मे होता है।

चयक—वि० [स० चायक] चयन करनेवाला।

चयन—पु०[स० √चि +ल्युट्—अन] १ आवश्यकता, रुचि आदि के अनुसार बहुत-सी वस्तुओ मे से कोई एक या कई वस्तुएँ चुन या छाँटकर अलग निकालने की क्रिया या भाव। जैसे—गुलदस्ते के लिए फूलो अथवा सग्रहालय के लिए पुस्तको का चयन करना। २ इस प्रकार चुनी हुई वस्तुओ का समूह। सकलन। ३ यज्ञ के लिए अग्नि का एक सस्कार।

चयनक—पु० [हिं० चयन से] चुने हुए व्यक्तियो का वह वर्ग या समूह जिसमे से कोई एक या कई व्यक्ति किसी विशेष कार्य के सपादन या सचालन के लिए किसी उच्च अधिकारी या सस्था द्वारा नियत किये जाते है। नामिका। (पैनेल)

चयन-शील—वि० [ब० स०] जो चयन करने या सग्रह करने के काम मे लगा हो या लगा रहता हो।

चयना—स० [स० चयन] चयन करना। इकट्ठा करना। उदा०—रजनी गत बासर मृग तृष्ना रसहरि कौन चयौ।—सूर।

चयनिका—स्त्री०[स० चयन +कन् +टाप्—इत्व] १ चुनी हुई कविताओ, कहानियो, लेखो या ऐसी ही और चीजो या बातो आदि का सग्रह। २ पत्र-पत्रिकाओ आदि का वह विभाग या स्तभ जिसमे दूसरी पत्र-पत्रिकाओ से ली हुई अच्छी टिप्पणियाँ, लेख या उनके साराश रहते है।

चयनीय—वि० [स०√चि+अनीयर्] जो चयन किये या चुने जाने के योग्य हो।

चयित—भू० कृ० [स० चित] १ चयन किया या चुना हुआ। २ चुनकर इकट्ठा किया हुआ।

चरद—पु० [फा० चरिंद] चरनेवाले जीव या प्राणी। जैसे—गौ, घोडे, बैल आदि।

चर—वि० [स०√ चर् (गमन) +अच्] १ जो इधर-उधर चलता-फिरता हो। जैसे—चर जीव या प्राणी। २ जो विचरण करता रहता हो। विचरण करनेवाला। जैसे—खेचर, जलचर, निशिचर आदि। ३ जो अपने स्थान से इधर-उधर हटता-बढता रहता हो। जैसे—चर नक्षत्र या राशि। ४ खाने या चरनेवाला।

पु० १ वह व्यक्ति जो राज्य या राष्ट्र की ओर से देश-विदेश की बातो का छिपकर पता लगाने के लिये नियुक्त हो। गूढ पुरुष। जासूस। २ वह जो किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए कही भेजा जाय। दूत। ३ ज्योतिष मे देशातर जिसकी सहायता से दिन-मान निकाला जाता है। ४ खजन या खँडरिच नाम का पक्षी। ५ कौडी। ६ कौडियो या पासे से खेला जानेवाला जूआ। ७ मगल ग्रह। ८ मगलवार। ९ मेष,वृष, मिथुन आदि राशियाँ। १० कीचड या दलदल। ११ वह जमीन जो नदी के साथ बहकर आनेवाली मिट्टी जमने से बनी हो। १२ वह गड्ढा जिसमे बरसात का पानी इकट्ठा हो। १३ नदी के बीच में बना हुआ बालू का टापू या मैदान। १४ नदी का किनारा जहाँ पानी कम हो। (लश०) १५ नाव या जहाज मे एक गूढे (बाहर की ओर निकला हुआ आडा शहतीर) से दूसरे गूढे तक की लबाई या स्थान। (लश०) १६ वायु। हवा।

पु० [अनु०] कपडे, कागज आदि के फटने से होनेवाला शब्द।

चरई—स्त्री० [स० चारिका] जुलाहो का वह स्थान जहाँ ताने के सूत छोटे तागो से बाँधे जाते है।

स्त्री० दे० 'चरनी'।

चरक—पु० [स० चर+कन्] १ दूत। चर। २ गुप्तचर। जासूस। भेदिया। ३ पथिक। यात्री। ४ वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य जो शेष नाग के अवतार कहे गये है और जिनका 'चरक-सहिता' नामक ग्रन्थ बहुत प्रामाणिक है। ५ उक्त चरक 'सहिता नामक' ग्रन्थ। ६ बौद्धो का एक सप्रदाय। ७ भिखमगा। भिक्षुक।

स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।

†पु० [स० चक्र] सफेद कोढ का दाग। फूल।

†पु० = चटक।

चरकटा—पु० [हिं० चारा+काटना] १ चारा काटनेवाला व्यक्ति। २ अयोग्य या हीन बुद्धिवाला व्यक्ति।

चरकना*—अ० = चिटकना।

चरकसहिता—स्त्री० [स० मध्य० स०] चरक मुनि द्वारा रचित एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ।

चरका—पु० [फा० चरक] १ हलके हाथ मे किया हुआ वार या घाव या जखम। २ धातु के गरम टुकडे से दागने के कारण शरीर पर पडा हुआ चिह्न। ३ नुकसान। हानि। ४ चकमा। धोखा।

पु० [देश०] मडआ नाम का कदन्न।

चर-काल—पु० [कर्म० स०] १ ज्योतिष के अनुसार समय का कुछ विशिष्ट अश जिसका काम दिन-मान स्थिर करने मे पडता है। २ उतना समय जितना किसी ग्रह को एक अश से दूसरे अश तक जाने या पहुँचने मे लगता है।

चरकी—स्त्री० [स० चरक+ङीष्] एक प्रकार की जहरीली मछली।

चरख—पु० [फा० चर्ख मि० स० चक्र] १ पहिए के आकार का अथवा इसी प्रकार का और कोई घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। २ खराद। ३ कलाबत्तू, रेशम आदि लपेटने का चरखा। ४ कुम्हार का चाक। ५ गोफन। ढेलवाँस। ६ तोप लादकर ले चलने की गाडी।

पु० [फा० चरग] १ लकडबग्घा नाम का जगली हिंसक पशु। २ बाज की तरह की एक शिकारी चिडिया।

चरख कश—पु० [फा० चर्खकश] खराद या चरख की डोरी या पट्टा खीचनेवाला व्यक्ति।

चरखडी—स्त्री० [हिं० चरख] एक प्रकार का दरवाजा।

चरखपूजा—स्त्री० [स० चक्र-पूजा] कुछ जगली जातियो की एक प्रकार की शिव-पूजा जो चैत की सक्राति को होती थी। इसमे किसी खम्भे पर बरछा लगाकर लोग गाते, बजाते और नाचते हुए चक्कर लगाते थे और बरछे से अपनी जीभ या शरीर छेदते थे। कहते है कि इसी दिन बाण नामक शैव राजा ने अपना रक्त चढाकर शिव को प्रसन्न किया था जिसकी स्मृति मे यह पूजा होती थी, जो ब्रिटिश शासन-काल मे बद कर दी गई।

चरखा—पु० [फा० चरखी मि० स० चक्र] [स्त्री० अल्पा० चरखी] १ पहिए के आकार का अथवा इसी प्रकार का कोई और घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। जैसे--कुएँ से पानी निकालने का चरखा। २ लकडी का वह प्रसिद्ध छोटा यत्र जिससे ऊन, रेशम, सूत आदि कातते है। रहट। ३ ऊख का रँस पेरने की लोहे की कल। ४ तारकशो का तार खीचने का यत्र। ५ सूत लपेट कर उसकी पेचक या लच्छी बनाने का यत्र। ६ किसी प्रकार की गराडी या घिरनी। ७ बडी या बेडौल पहियोवाली गाडी। ८ रेशम की लच्छी खोलने का 'डडा' नामक उपकरण। ९. गाडी का वह ढाँचा जिसमे नया घोडा जोतकर सधाया और सिखाया जाता है। खड-खडिया। १० बुढापे के कारण जर्जर और शिथिल व्यक्ति। ११. झझट से भरा हुआ और प्राय व्यर्थ का लबा-चौडा काम। (व्यग्य) १२. कुश्ती मे नीचे पडे हुए विपक्षी को चित करने का एक पेच। १३ रहस्य सप्रदाय मे, चित्त।

चरखी—स्त्री० [हि० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १ पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २ गोलाकार घूमनेवाला किसी प्रकार का छोटा उपकरण। जैसे—कपास ओटने या सूत लपेटने की चरखी, रस्सी बटने की चरखी, कुएँ से पानी निकालने की चरखी। ३ कुम्हार का चाक ४ चक्कर की तरह गोलाकार घूमनेवाली एक प्रकार की आतिशबाजी। ५ मटमैले रग की एक प्रकार की चिडिया जिसे 'सत-बहिनी' भी कहते है।

चरग—पु० [फा० चरग] १ एक प्रकार की शिकारी चिडिया। २ लकड-बग्घा।

चर-गृह, चर गेह—पु० [मध्य० स०] =चर-राशि।

चरचना—स० [स० चर्चन] १ शरीर मे चदन आदि पोतना या लगाना। २ किसी चीज पर कुछ पोतना। लेप लगाना। ३ अनुमान, कल्पना आदि से कुछ समझना या सोचना। ताडना या लखना। ४ चर्चा या जिक्र करना।५ पहचानना।

स० [स० अर्चन] अर्चन या पूजा करना।

चरचरा†—वि० [अनु०] [स्त्री० चरचरी] १ = चरपरा। (राज०) उदा०—लूँब सरीसी प्यारी चरचरी जी म्हाँरा राज।—लोक-गीत। २ =चिडचिडा।

पु० खाकी रग की एक चिडिया जिसके शरीर पर धारियाँ होती है।

चरचराटा†—पु० [अनु०] दबदबा। रोबदाब। उदा०—अब तो सब तरफ अँगरेजो का चरचराटा है।—वृदावनलाल वर्मा।

चरचराना—अ० [अनु० चरचर] १ चर-चर शब्द करते हुए गिरना, टूटना या जलना। २ घाव के आस-पास का चमडा तनने और सूखने के कारण उसमे हलकी पीडा होना। चर्राना। ३ दे० 'चर्राना'।

स० चर चर शब्द करते हुए कोई चीज गिराना या तोडना।

चरचराहट—स्त्री० [हि० चरचराना+हट (प्रत्य०)] १. चरचराने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के गिरने या टूटने से होनेवाला चर-चर शब्द।

चरचा—स्त्री० = चर्चा।

विशेष—उर्दूवाले इसके आकारान्त होने के कारण भूल से इसे पुलिग मानते है।

चरचारी†—वि० [हि० चरचा] १ चर्चा चलानेवाला। २ दूसरो की निदात्मक चर्चा करनेवाला।

चरचित*—भू० कृ० = चर्चित।

चरज--पु० [फा० चरग] चरख नामक शिकारी चिडिया।

†पु०= आचरज।

चरजना—अ० [स० चर्चन] १ धोखा या भुलावा देना। बहकाना। २ अनुमान या कल्पना करना।

चरट—पु० [स० √चर् (चलना)+अटच्] खजन।

चरण—पु० [स० √चर् (चलना)+ल्युट्—अन] १ किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के पाँव या पैर के लिए आदर-सूचक शब्द। जैसे—(क) हमारा धन्य भाग जो आज यहाँ आपके चरण पधारे है। (ख) बडो की चरण-पादुका पूजना या चरण-सेवा करना।

मुहा०—(किसी के) चरण छूना = बहुत आदरपूर्वक चरण छूते हुए दडवत् या प्रणाम करना। **(कहीं-कहीं) चरण देना**=पैर रखना। **(कहीं किसी के) चरण पड़ना** =पदार्पण या शुभागमन होना। **(किसी के) चरण लेना**=चरण छूकर प्रणाम करना। **(किसी के) चरणो पडना**= चरणो पर सिर रखकर प्रणाम करना।

२ बडो या महापुरुषो का सान्निध्य या सामीप्य। जैसे—भगवान् के चरण छोडकर वह कही जाना नही चाहते। ३ किसी चीज विशेषत काल, मान आदि का चौथाई भाग। जैसे—यह बीसवी सदी का तीसरा चरण है। ४ छद, पद्य, श्लोक आदि का चौथा भाग अथवा कोई एक पूरी पक्ति। ५ नदी का वह भाग जो तटवर्ती पहाडी गुफा या गड्ढे तक चला गया हो। ६ घूमने-फिरने या सैर करने की जगह। ७ जड। मूल। ८ गोत्र। ९ क्रम। सिलसिला। १० आचार-व्यवहार। ११ चद्रमा, सूर्य आदि की किरण। १२ कोई काम पूरा करने के लिए की जानेवाली सब क्रियाएँ। अनुष्ठान। १३ गमन। जाना। १४ पशुओ आदि का चारा चरना। १५ भक्षण करना। खाना। १६ वेद की कोई शाखा। जैसे—कठ, कौथुम आदि चरण। १७ किसी जाति, वर्ग या सप्रदाय के लिए विहित कर्म। १८ आधार। सहारा। १९ खभा।

चरण-कमल—पु० [उपमि० स०] कमलो के समान सुन्दर चरण। (आदर-सूचक)

चरणकरणानुयोग—पु० [चरण-करण, ष० त०, चरणकरण-अनुयोग, ब० स०] जन साहित्य मे, ऐसा ग्रन्थ जिसमे किसी के चरित्र का बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से विचार या व्याख्या की गई हो।

चरण-गुप्त—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसके कई भेद होते है। इसमे कोष्ठक बनाकर उनमे कविता के चरणो या पक्तियो के अक्षर भरे जाते है।

चरण-ग्रंथि—स्त्री० [ष० त०] पैरो मे नीचे की ओर की गाँठ। गुल्फ। टखना।

चरण-चिह्न—पु० [ष० त०] १ पैरो के तलुए की रेखा या लकीरे। २ बालू, मिट्टी आदि पर पडे हुए किसी के पैरो के चिह्न या निशान जिन्हे देखकर किसी का अनुकरण या अनुसरण किया जाता है। ३ धातु, पत्थर आदि की बनाई हुई देवताओ आदि के चरणो की आकृति जो प्राय पूजी जाती है।

चरण-तल—पु० [ष० त०] पैर का तलुआ।

चरण-दास—पु० [ष० त०] १ चरणो की सेवा करनेवाला दास या सेवक। २ दिल्ली के एक महात्मा साधु जो जाति के धूसर बनिये थे। इनका जन्म सवत १७६० मे और शरीरात स० १८३९ मे हुआ था। इनके चलाये हुए सम्प्रदाय के साधु चरणदासी साधु कहलाते है। ३ जूता। (परिहास)

चरण-दासी—वि० स्त्री० [ष० त०] चरणो की सेवा करनेवाली (दासी या स्त्री)।

स्त्री० १ पत्नी। भार्या। २ जूता।

वि० चरण-दास सबधी।

पु० महात्मा चरणदास के चलाये हुए सम्प्रदाय का अनुयायी।

चरण-न्यास—पु० =चरण-चिह्न।

चरणप—पु० स० चरण √पा (रक्षा करना) +क, उप० स०] पेड। वृक्ष।

चरण-पर्व (न्)—पु० [ष० त०] गुल्फ। टखना।

चरण-पादुका—स्त्री० [ष० त०] १ खडाऊँ। पाँवडी। २ धातु, पत्थर आदि की बनी हुई किसी देवी-देवता या महापुरुष के चरणो की आकृति जिसकी पूजा होती है।

चरण-पीठ—पु० [ष० त०] = चरण-पादुका।

चरण-युग (ल)—पु० [ष० त०] किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के दोनो चरण या पैर।

चरण-रज (स्)—स्त्री० [ष० त०] किसी पूज्य व्यक्ति के चरणो की धूल जो बहुत पवित्र समझी जाती है।

चरण-शुश्रूषा—स्त्री० = चरण-सेवा।

चरण-सेवा—स्त्री० [ष० त०] किसी पूज्य व्यक्ति के पैर दबाकर की जाने वाली सेवा।

चरण-सेवी (विन्)—पु० [स० चरण √सेव् (सेवा करना) +णिनि, उप० स०] १ वह जो किसी की चरण-सेवा करता हो। २ दास। सेवक।

चरणा—स्त्री० [स० चरण +अच्+टाप] एक रोग जिसमे मैथुन के समय स्त्रियो का रज बहुत जल्दी स्खलित हो जाता है।

†पु० [?] काछा।

†क्रि० प्र०—काछना।

चरणाक्ष—पु० [चरण-अक्षि, ब० स०] अक्षपाद या गौतम ऋषि का एक नाम।

चरणाद्रि—पु० [चरण-अद्रि, ब० स०] १ विध्य पर्वत की एक शिला (चुनार नगरी के समीप) जिस पर बने चरण-चिह्न को हिंदू बुद्धदेव का और मुसलमान जिसे 'कदमे रसूल' बतलाते है। २ उत्तर प्रदेश का चुनार नामक स्थान।

चरणानति—स्त्री० [चरण-आनति, स० त०] किसी बडे के चरणो पर झुकना, गिरना या पडना।

चरणानुग—वि० [चरण-अनुग, ष० त०] १ किसी के चरणो या पद-चिह्नो का अनुगमन करनेवाला व्यक्ति। अनुगामी। २ अनुयायी। ३ शरणागत।

चरणामृत—पु० [स० चरण-अमृत, ष० त०] वह पानी जिससे किसी देवता या महात्मा के चरण धोये गये हो और इसी लिए जो अमृत के समान पूज्य समझ कर पिया जाता हो। २ दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण जिसमे लक्ष्मी, शालिग्राम आदि को स्नान कराया जाता है और जो उक्त जल की भाँति पवित्र समझकर पिया जाता है। पचामृत।

मुहा०—चरणामृत लेना = (क) चरणामृत पीना। (ख) बहुत ही थाडी मात्रा मे कोई तरल पदार्थ पीना।

चरणायुध—पु० [चरण-आयुध, ब० स०] मुरगा जो अपने पैरो के पजो से लडता है।

चरणार्द्ध—वि० [चरण-अर्द्ध ष० त०] चरण अर्थात् चतुर्थांश का आधा (भाग)।

पु० १ किसी चीज का आठवा भाग। २ किसी कविता या पद्य के चरण का आधा भाग।

चरणि—पु० [स० √चर् (चलना) +अनि] मनुष्य।

वि० गमन करने या चलनेवाला। चर।

चरणोदक—पु० [चरण-उदक, ष० त०] चरणामृत। (दे०)

चरणोपधान—पु० [चरण-उपधान ष० त०] १ वह चीज जिस पर पैर रखे जायँ। २ पाँवदान।

चरत—पु० [हि० बरत (व्रत) का अनु० अथवा हि० चरना से] १ व्रत या उपवास के दिन व्रत न रखकर या उपवास न करके सब कुछ खाना-पीना। २ ऐसा दिन जिसमे मनुष्य नियमित रूप से अन्न आदि खाता-पीता हो।

चरता—स्त्री० [स० चर +तल्—टाप्] चर होने की अवस्था या भाव। पृथ्वी।

चरतिरिया †—स्त्री० [देश०] मिरजापुर जिले मे होनेवाली एक प्रकार की कपास।

चरती—पु० [हि० चरत] व्यक्ति, जिसने व्रत न रखा हो। व्रत के दिन भी नियमित रूप से अन्न आदि खानेवाला।

चरत्व—पु० [स० चर +त्व] चर होने की अवस्था या भाव। चरता।

चरथ—वि० [स० √चर (चलना) +अथ)] चलनेवाला। चर। जगम।

चरदास—स्त्री० [?] मथुरा जिले मे होनेवाली एक प्रकार की घटिया कपास।

चर-द्रव्य—पु० [कर्म० स०] वह सपत्ति जिसका स्थान-परिवर्त्तन हो सकता हो। जैसे—गहने, पशु आदि।

चरनंग—पु० [स० चरण-अग] चरण। पैर। उदा०—चरनग बीर तल्ल बज्जइय, सबर जोर जम दढ्ढ कसि।—चन्दबरदाई।

चरन †—पु० दे० 'चरण'। ('चरन' के यौ० के लिए दे० 'चरण' के यौ०)

†स्त्री० [?] कौडी।

चर-नक्षत्र—पु० [कर्म० स०] स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण और धनिष्ठा आदि कुछ विशिष्ट नक्षत्र जिनकी सख्या भिन्न-भिन्न आचार्यों के मत से अलग-अलग है।

चरनचर*—पु० [स० चरणचर] पैदल चलनेवाला दूत या सिपाही।

चरनदासी—स्त्री० = चरण-दासी।

चरन-धरन*—पु० [स० चरण +हि० धरना] खडाऊँ। उदा०—चरन धरन तब राजै लीन्हा।— जायसी।

चरनबरदार—पु० [स० चरण +फा० बरदार] वह नौकर जो बडे आदमियो को जूते पहनाता, उतारता, लाता, ले जाता तथा यथास्थान रखता हो।

चरना—अ० [स० पा० चरति, प्रा० चरइ, बँ० चरा, उ० चरिबा; प०

चरना, सि० चरणु, गु० चरवूं, ने० चर्नु, मरा० चरणे, मि० फा० चरीदन] १ पशुओ का घास आदि खाने के लिए खेतो और मैदानो मे फिरना। जैसे—मैदान मे गौएँ चर रही है।

मुहा०—अक्ल का चरने जाना =दे० 'अक्ल' के मुहा।

२ इधर-उधर घूमना-फिरना या चलना। विचरण करना।

स० १ पशुओ का खेतो आदि मे उगी हुई घास, पौधे आदि खाना। जैसे—घोडे घास चर रहे है। २ (व्यक्तियो का) अभद्रतापूर्वक तथा जल्दी-जल्दी खाना।

पु० [?] काछा।

क्रि० प्र०—काछना।

३ सुनारो का वह औजार जिससे वे नक्काशी करते समय सीधी लकीरे बनाते है।

चरनायुध †—पु० = चरणायुध।

चरनि*—स्त्री० [स० चर =गमन] चाल। गति।

चरनी*—स्त्री० [हि० चरना] १ पशुओ के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २ वह नाँद या बडा पात्र अथवा पात्र के आकार की रचना जिसमे पशुओ को चारा खिलाया जाता है। ३ पशुओ के खाने की घास आदि। चारा।

चरन्नी†—स्त्री० [हि० चार+आना] = चवन्नी।

चरपट—पु० [स० चर्पट] १ चपत। तमाचा। थप्पड। २ उचक्का। उदा०—चरपटचोर धूर्त गँठिछोरा।—जायसी। ३ चर्पट नामक छद।

चरपर †—वि० = चरपरा।

चरपरा—वि० [अनु०] [वि० स्त्री० चरपरी] (खाद्य पदार्थ) जिसमे खटाई, मिर्च आदि कुछ अधिक मात्रा मे मिली हो और इसी लिए जो स्वाद मे कुछ तीखी हो।

वि० [स० चपल] चुस्त। तेज। फुरतीला।

चरपराना—अ० [हि० चरचर] घाव मे खुश्की के कारण तनाव होना और उसके फलस्वरूप पीडा होना।

अ० [हि० चरपर] चरपरी वस्तु खाने पर मुँह मे हलकी जलन होना।

चरपराहट—स्त्री० [हि० चरपरा] १ चरपरा होने की अवस्था, भाव या स्वाद। २ घाव आदि की चरचराहट। ३ ईर्ष्या। डाह।

चरफराना—अ० १ = चरपराना। २ = छटपटाना।

चरब—वि० [फा० चर्ब] तेज। तीखा।

चरब जबान—वि० [फा० चर्ब-जबान] [भाव० चरब-जबानी] १ प्राय कठोर और तीखी बाते कहनेवाला। कटु-भाषी। २ बहुत बढबढकर बाते करनेवाला। वाचाल। ३ बिना सोचे-समझे बहुत अधिक या तेज बोलनेवाला।

चरबन—पु० =चर्बना।

चरबाँक—वि० [फा० चर्ब =तेज] १ चतुर। चालाक। होशियार। २ निडर। निर्भय। ३ आचार, व्यवहार, स्वभाव आदि के विचार से उद्दड तेज या शोख। ४ चचल। चुलबुला। जैसे—चरबाँक आँखे।

चरबा—पु० [फा० चर्ब] १ लेखे, हिसाब आदि का लिखा हुआ पूर्व रूप। खाका। २ अनुलिपि। नकल। ३ चित्रकला मे वह पतला पारदर्शी कागज जिसकी सहायता से चित्रो की छाप ली जाती है।

क्रि० प्र०—उतारना।

चरबाई—वि० = चरबाँक।

चरबाना—स० [स० चर्म] ढोल पर चमडा मढाना।

चरबी—स्त्री० [फा०] प्राणियो के शरीर मे रहनेवाला सफेद या हलके पीले रग का गाढा, चिकना तथा लसीला पदार्थ।

मुहा०—(शरीर पर) चरबी चढ़ना = मोटा होना। **(आँखो मे) चरबी छाना** = अभिमान या मद मे अधा होना।

चरी—पु० [कर्म० स०] चर ग्रह या राशि।

चर-भवन—पु० [मध्य० स०] =चर राशि।

चरम—वि० [स० √चर् (चलना) +अमच्] १ अतिम सीमा तक पहुँचा हुआ। हद दरजे का। जैसे—चरम पथ। २ सबसे अधिक या आगे बढा हुआ। जैसे—चरम गति। ३ अतिम। आखिरी। जैसे—चरम अवस्था (=वृद्धावस्था)। ४ पश्चिमी।

पु० १ पश्चिम दिशा। २ वृद्धावस्था। ३ अत। ४ उपन्यास, कहानी, नाटक आदि मे का वह अश या अवस्था जहाँ पर कथा की धारा अधिकतम ऊँचाई पर पहुँचती है। (क्लाइमैक्स)

* पु० = चर्म।

चरम-काल—पु० [कर्म० स०] मृत्यु का समय।

चरम-गिरि—पु० [कर्म० स०] अस्ताचल।

चरम-पथ—पु० [स० चरम +हि० पथ] वह विचार-धारा जो यह प्रतिपादित करती है कि समाज को अस्वस्थ बनानेवाले तत्त्वो को सारी शक्ति से और शीघ्रतापूर्वक दूर या नष्ट कर देना चाहिए। (ऐक्स्ट्रीमिज्म)

चरम-पथी—पु० [हि० चरमपथ से] वह जो इस बात का पक्षपाती हो कि सामाजिक दोषो को बलपूर्वक और शीघ्रता से दूर या नष्ट कर देना चाहिए। (एक्स्ट्रीमिस्ट)

चरम-पत्र—पु० [कर्म० स०] अपनी सपत्ति के उत्तराधिकार, व्यवस्था आदि के सबध मे अतिम अवस्था मे लिखा जानेवाला पत्र या लेख। दित्सा-पत्र। वसीयतनामा। (विल)

चरमर—पु० [अनु०] कसी या तनी हुई चीमड चीज के दबने या मुडने से होनेवाला शब्द। जैसे—चलने मे जूते का चरमर बोलना।

चरमरा—वि० [अनु०] चरमर शब्द करनेवाला। जिससे चरमर शब्द निकले। जैसे—चरमरा जूता।

पु० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे तकडी भी कहते है।

चरमराना—अ० [हि० चरमर] चरमर शब्द होना।

स०—चरमर शब्द उत्पन्न करना।

चरमवती—स्त्री० [स० चर्मण्वती] चबल नदी।

चरम-वय (स्)—वि० [ब० स०] १ अधिक अवस्थावाला (व्यक्ति)। २ पुराना।

चर-मूर्ति—स्त्री० [कर्म० स०] देवता की वह मूर्ति या विग्रह जो किसी एक जगह स्थापित न हो, बल्कि आवश्यकता के अनुसार एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखी जा सकती हो।

चर-राशि—स्त्री० [मध्य० स०] मेष, कर्क, तुला और मकर ये चार राशियाँ जो चर मानी गई है। (ज्योतिष)

चरलीता—पु० [देश०] एक प्रकार की काष्ठौषधि।

चरवाँक—वि० = चरबाँक।

चरवा—पु० [देश०] एक प्रकार का बढिया मुलायम चारा जो बारहो महीने अधिकता से उत्पन्न होता है। कही-कही यह गौओ-भैसो को उनका दूध बढाने के लिए दिया जाता है। धम्मन।

चरवाई—स्त्री० [हिं० चरवाना] पशु चरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चरवाना—स० [हिं० चराना का प्रे०] चराने का काम किसी से कराना। पशु चराने का काम दूसरे से कराना।

चरवाहा—पु० [हिं० चरना + वाहा = वाहक] वह व्यक्ति जो दूसरो के पशुओ को चराकर अपनी जीविका चलाता हो।

चरवाही—स्त्री० [स० चर + हिं० वाही] १ पशु चराने का काम, भाव या मजदूरी। २ उलटी-सीधी या निर्लज्जता से भरी बाते कर के दूसरो को उपेक्षापूर्वक धोखे मे रखना। उदा०—चरवाही जानो करो बे-परवाही बात।—राम सतसई।

चरवी—स्त्री० [स० चर] कहारो का एक साकेतिक शब्द जो इस बात का सूचक होता है कि रास्ते मे आगे गाडी, एक्का आदि है।

चरवैया—वि० [हिं० चरना] १ चरनेवाला। २ चरानेवाला।
पु० चरवाहा।

चरव्य—वि० [स० चरु + यत] जिसका या जिससे चरु बनाया जा सके।

चरस—स्त्री० [स० चर्य या रस ?] १ गाँजे के पौधो के डठलो पर से उतारा हुआ एक प्रकार का हरा या हलका पीला गोद या चेप जो प्राय मोम की तरह का होता है और जिसे लोग गाँजे या तमाकू की तरह पीते है। नशे मे यह प्राय गाँजे के समान ही होता है।
पु० [फा० चर्ज] आसाम मे अधिकता से होनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका मास बहुत स्वादिष्ठ होता है। इसे वनमोर या चीनी-मोर भी कहते है।
†पु० दे० 'चरसा'।

चरसा—पु० [स० चर्म्म] १ भैस या बैल आदि के चमडे का बना हुआ वह बडा थैला जिसकी सहायता से खेत सीचने के लिए कूएँ से पानी निकाला जाता है। पुर। मोट। २ चमडे का बना हुआ कोई बडा थैला। ३ जमीन की एक नाप जो प्राय २००० हाथ लबी और इतनी ही चौडी होती थी। गो-चर्म।
† पु० = चरस (पक्षी)।

चरसिया—पु० = चरसी (चरस पीनेवाला)।

चरसी—पु० [हिं० चरस + ई (प्रत्य०)] १ वह जो चरस की सहायता से कूएँ से पानी निकालकर खेत सीचता हो। मोट खीचनेवाला। २ वह जो गाँजे, तमाकू आदि की तरह चरस पीता हो।

चरही—स्त्री० दे० 'चरनी'।

चराई—स्त्री० [हिं० चरना] १ चरने की क्रिया या भाव। २ पशु आदि चराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चराऊ—पु० [हिं० चरना] पशुओ के चराने का स्थान। चरी।

चराक—पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।
* पु० = चिराग।

चराग—पु० = चिराग।

चरागाह—पु० [फा०] पशुओ के चरने का स्थान, जहाँ प्राय घास आदि उगी रहती है। चरनी। चरी।

चराचर—वि० [चर-अचर, द्व० स०] चर और अचर। जड और चेतन। स्थावर और जगम।
पु० १ ससार। २ ससार मे रहनेवाले सभी जीव और पदार्थ। ३ कौडी।

चराचर-गुरु—पु० [ष० त०] १ ब्रह्मा। २ ईश्वर।

चरान—पु० [हिं० चर = दल दल] समुद्र के किनारे की वह दल-दल जिसमे से नमक निकाला जाता है।
स्त्री० चरने या चराने की क्रिया या भाव।
† पु० = चरागाह।

चराना—स० [हिं० चरना] १ पशुओ को खेतो या खुले मैदानो मे लाकर वहाँ उगी हुई घास खाने या चरने मे उन्हे प्रवृत्त करना। जैसे—गौ-भैस चराना। २ किसी के साथ इस प्रकार का चातुर्यपूर्ण आचरण या व्यवहार करना कि मानो वह पशु के समान अबोध हो। जैसे—वाह! अब तो तुम भी हमे चराने लगे।

चराव—पु० [स० चर] पशुओ के चरने का स्थान। चरनी। चरागाह।

चरावना†—स० = चराना।

चरावर—स्त्री० [चरचर से अनु०] व्यर्थ की बाते। बकवाद।

चरिंद—पु० = चरिंदा।

चरिंदा—पु० [फा० चरिन्द] चरनेवाला जीव या प्राणी। पशु। हैवान। जैसे—गाय भैस बैल आदि।

चरि—पु० [स० चर + इनि] जानवर। पशु।

चरित—पु० [स० √चर् (चलना) + क्त] १ आचरण और व्यवहार या रहन-सहन। २ किसी के जीवन की घटनाओ का उल्लेख या विवरण। जीवन-चरित्र। ३ किसी के किए हुए अनुचित या निदनीय काम। करतूत। करनी। (व्यग्य) जैसे—इनके चरित्र सुने तो दग रह जाएँगे।

चरित-कार—पु० [ष० त०] = चरित-लेखक।

चरित-नायक—पु० [ष० त०] वह व्यक्ति जिसके जीवन की घटनाओ के आधार पर कोई पुस्तक या जीवनी लिखी गई हो।

चरित्र-लेखक—पु० [ष० त०] किसी के जीवन की घटनाएँ या जीवन-चरित्र लिखनेवाला लेखक।

चरितवान्—वि० दे० 'चरित्रवान्'।

चरितव्य—वि० [स० √चर् + तव्यत्] (कार्य या व्यवहार) जो करने या आचरण के रूप मे लाये जाने के योग्य हो।

चरितार्थ—वि० [चरित-अर्थ, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसका अर्थ, अभिप्राय या उद्देश्य पूरा या सिद्ध हो चुका हो। कृतकार्य। कृतार्थ। जैसे—भगवान की भक्ति मे लगकर वे चरितार्थ हो गए। २ (बात या विषय) जिसके अस्तित्व का उद्देश्य पूरा या सिद्ध हो गया हो। जैसे—अपना जीवन चरितार्थ करना। ३ (उक्ति या कथन) जो अपने ठीक-ठीक अर्थ मे पूरा उतरता या घटित होता हो। जैसे—आपकी उस दिन की भविष्यद्वाणी आज चरितार्थ हो गई।

चरितार्थता—स्त्री० [स० चरितार्थ + तल्—टाप्] चरितार्थ या कृतार्थ होने की अवस्था या भाव।

चरित्तर†—पु० [स० चरित्र] छलपूर्ण अनुचित आचरण या व्यवहार जैसे—तिरिया-चरित्तर।

चरित्र—पु० [स०√चर्+इत्र] १ वे सब बाते जो आचरण, व्यवहार आदि के रूप मे की जायँ। किया या किये हुए काम। कार्य-कलाप। २ अच्छा आचरण या चाल-चलन। सदाचार। जैसे—चरित्रवान्। ३ जीवन मे किये हुए कार्यों का विवरण। जीवन-चरित। जीवनी। ४ कहानी, नाटक आदि मे कोई पात्र। ५ कोई महान् अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति। ६ स्वभाव। ७ छलपूर्ण अनुचित आचरण और व्यवहार। करतूत। चरित्र। (व्यग्य) ८ कर्त्तव्य। ९ शील। स्वभाव। १० चलने की क्रिया या भाव। ११ पग। पाँव। पैर।

चरित्र-नायक—पु०=चरितनायक।

चरित्र-पजी—स्त्री० दे० 'आचरण-पजी'।

चरित्र-बंधक—पु० [ष० त०] १ मैत्रीपूर्ण तथा सद्व्यवहार करने की प्रतिज्ञा। २ वह चीज जो किसी के पास कुछ शर्त्तो के साथ बधक या रेहन रखी जाय। ३ उक्त प्रकार से बधक या रेहन रखने की प्रणाली।

चरित्रवान् (वत्)—वि०[स० चरित्र+मतुप्] [स्त्री० चरित्रवती] (व्यक्ति) जिसका चरित्र सद् हो। सदाचारी।

चरित्र-हीन—वि० [तृ० त०] (व्यक्ति) जिसका आचरण या चाल-चलन बहुत ही खराब या निन्दनीय हो। बदचलन।

चरित्रा—स्त्री० [स० चरित्र+टाप्] इमली का पेड।

चरिष्णु—वि० [स०√चर्+इष्णुच्] चलनेवाला। चर। जगम।

चरी—स्त्री० [हिं० चरना] १ वह जमीन जो किसानो को अपने पशुओ के चारे के लिए जमीदार से बिना लगान मिलती है। २ वह प्रथा जिसके अनुसार किसान उक्त प्रकार से जमीदार से जमीन लेता है। ३ वह स्थान जो पशुओ के चरने के लिए खुला छोडा जाता है। चरागाह। ४ छोटी ज्वार के हरे पेड जो पशुओ के चारे के काम आते है। कडबी।
स्त्री० [स० चर=दूत] १ सदेशा ले जानेवाली स्त्री। दूती। २ दासी। नौकरानी।

चरीद—पु० [फा० चरिद या हि० चरना] खाने या चरने के लिए निकला हुआ जगली पशु। (शिकारी)

चरु—पु० [स० √चर्+उ] [वि० चरव्य] १ हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न। हविष्यान्न। हव्यान्न । २ वह पात्र जिसमे उक्त अन्न पकाया जाता है। ३ यज्ञ। ४ ऐसा भात जिसमे से माँड न निकाला गया हो। ५ पशुओ के चरने की जगह। चरी । चरागाह। ६ वह महसूल जो पशुओ के चरने की जमीन पर लगता है। ७ बादल। मेघ।

चरुआ†—पु०[स० चरु] [स्त्री० अल्पा० चरुई] चौडे मुँहवाला मिट्टी का वह बरतन जिसमे प्रसूता स्त्री के लिए औषध मिला जल पकाया जाता है।

चरुका- स्त्री०[स० चरु+कन्–टाप्] एक प्रकार का धान। चरक।

चरुखला†—पु० [हिं०-चरखा, प० चरखला] सूत कातने का छोटा चरखा।

चरुचेली (लिन्)—पु० [स० चरु-चेल, उपमि०स०,+इनि] शिव।

चरु-पात्र—पु० [ष०त०] वह पात्र जिसमे यज्ञ आदि के लिए हविष्यान्न रखा या पकाया जाता है।

चरु-व्रण—पु०[ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ (पकवान) जिस पर चित्र बनाये जाते थे।

चरु-स्थाली—स्त्री ०[ष० त०] =चरु-पात्र।

चरू—पु० दे० 'चरु'।
स्त्री० दे० 'चरी'।

चरेर—वि०=चरेरा।

चरेरा—वि० [चरचर से अनु०] [स्त्री० चरेरी] १ कडा और खुरदरा। २ कर्कश।
पु० [देश०] हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती और इमारत के काम मे आती है।

चरेरू—पु० [हिं० चरना] चरनेवाला पशु।

चरेली—स्त्री०[?] ब्राह्मी बूटी।

चरैया—पु० [हिं० चरना] १ चरानेवाला। २ चरनेवाला।
†स्त्री० चिडिया।

चरैला—पु० [हिं० चार+ऐल=चूल्हे का मुँह] एक प्रकार का चार मुँहोवाला चूल्हा जिस पर एक साथ चार चीजे पकाई जा सकती हैं।
पु० [?] चिडियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल।

चरोखर—स्त्री० [हिं० चारा+खर] १ पशुओ के चरने की जगह। चरी। चरागाह। २ मिट्टी आदि की वह रचना जिसमे नाँद बैठाई जाती है।

चरोतर—पु० [स० चिरोत्तर] वह भूमि जो किसी मनुष्य को जीवन भर भोगने के लिए दी गई हो।

चरौआ—पु०[हिं० चराना] १ पशुओ के चरने का स्थान। चरी। २ चरवाहा।

चर्क—पु०[देश०] जहाज का मार्ग। रूस। (लश०)

चर्ख†—पु०=चरख।

चर्खकश—पु० [फा०] खराद की डोरी या पट्टा खीचने या चरख चलानेवाला।

चर्खा†—पु०=चरखा।

चर्खी†—स्त्री०=चरखी।

चर्च—पु०[अ०] १ वह मदिर जिसमे मसीही प्रार्थना करते है। गिरजा। २ मसीही धर्म की कोई शाखा या सप्रदाय।
पु०=चर्चन।

चर्चक—वि० [स०√चर्च् (बोलना)+ण्वुल्–अक] चर्चा करनेवाला।

चर्चन—पु० [स० √ चर्च्+ल्युट्–अन] १ चर्चा करने की क्रिया या भाव। २ चर्चा । ३ लेप लगाना। लेपन।

चर्चर—वि० [स०√चर्च्+अरन्] गमनशील। चलनेवाला। चर।

चर्चरिका—स्त्री० [स० चर्चरी+कन्–टाप्—ह्रस्व] नाटक मे वह गीत जो दर्शको के मनोरजन के लिए दो अको के बीच मे अर्थात् ऐसे समय मे होता है जब कि रगमच पर अभिनय नही होता।

चर्चरी—स्त्री० [स० चर्चर+ङीष्] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, सगण, दो जगण, भगण और तब फिर रगण (र, स, ज,ज, भ, र) होता है। २ वसत या होली के दिनों मे गाया जानेवाला चाँचर नामक गीत। ३ होली की धम-धाम और हुल्लड। ४ ताली बजने या बजाने का शब्द। ५ ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत) ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ७ आमोद-प्रमोद के समय की जानेवाली क्रीडा। ८ नाच-गाना। ९ दे० 'चर्चरिका'।

चर्चरीक—पु० [स०√चर्च् (ताडना)+ईकन् नि० सिद्धि] १ महाकाल भैरव। २ साग-भाजी। तरकारी। ३ सिर के बाल गूँथना या बनाना। केश-विन्यास।

चर्चस—पु० [स०√चर्च्+असुन्] कुबेर की नो निधियो मे से एक।

चर्चा—स्त्री० [स०√चर्च्+णिच+अङ्–टाप्] १ किसी विषय पर या व्यक्ति के सबध मे होनेवाली बात-चीत। जिक्र। वार्तालाप। २ बहुत-से लोगो मे फैली हुई ऐसी बात जिसके सबध मे प्राय सभी लोग कुछ न कुछ कहते हो। ३ किसी प्रकार का कथन या उल्लेख। ४ विचारपूर्वक किसी बात के सब पक्षो पर होनेवाला विचार। जैसे—आज की गोष्ठी मे इन्ही विषयो पर चर्चा हो सकती है। ५ किवदती। अफवाह। ६ किसी चीज के ऊपर कोई गाढी चीज पोतना लगाना या लेपना। लेपन। ७ गायत्री रूपा महादेवी। ८ दुर्गा।

चर्चिक—वि० [स० चर्चा+ठन्–इक] वेद आदि जाननेवाला।

चर्चिका—स्त्री० [स० चर्चा+कन्—टाप्, इत्व] १ चर्चा। जिक्र। २ दुर्गा। ३ एक प्रकार का सेम।

चर्चित—भू० कृ० [स०√चर्च्+क्त] १ चर्चा के रूप मे आया हुआ। २ जिसकी चर्चा की गई हो या हुई हो ३ जो लेप के रूप मे ऊपर से पोता या लगाया गया हो। जैसे—चदनचर्चित ललाट या शरीर।

चर्नाक—पु० दे० 'चरणाद्रि'।

चर्पट—पु० [स० √चृप् (उद्दीप्त करना) +अटन्] १ हाथ की खुली हुई हथेली। २ उक्त प्रकार की हथेली से लगाया हुआ तमाचा या थप्पड। वि० बहुत अधिक। विपुल।

चर्पटा—स्त्री० [स० चर्पट+टाप्] भादो सुदी छठ।

चर्पटी—स्त्री० [स० चर्पट+ङीप्] एक प्रकार की चपाती या रोटी।

चर्परा—वि० =चरपरा।

चर्बजबान—वि०[फा०] बहुत अधिक और तेजी से बोलनेवाला।

चर्बण—पु० =चर्वण।

चर्बित—भू० कृ० =चर्वित।

चर्बी—स्त्री० =चरबी।

चर्भट—पु० [स०√चर्+क्विप्, √भट् (पालना) +अच्, चर्-भट, कर्म० स०] ककडी।

चर्भटी—स्त्री० [स० चर्भट+१, ङीष्] चर्चरी गीत। २ चर्चा। ३ आनन्द के समय की जानेवाली क्रीडा। ४ आनन्दध्वनि।

चर्म (न्)—पु० [स०√चर्+मनिन्] १ शरीर पर का चमडा। २ ढाल जो पहले चमडे की बनती थी।

चर्म-करड—पु० [ष० त०] चमडे का बडा कुप्पा जिसके सहारे नदी पार करते थे। (कौ०)

कर्म-करण—पु० [ष० त०] चमडे की चीजे बनाने का काम।

चर्म-करी—स्त्री० [स० चर्मन्√कृ (करना) +ट–ङीप्, उप० स०] १ एक प्रकार का गध-द्रव्य। २ मासरोहिणी नाम की लता।

चर्म-कशा—स्त्री० [स०=चर्मकषा, पृषो० सिद्धि] १ एक प्रकार का गध द्रव्य। चमरखा। २ मासरोहिणी लता। ३ सातला नाम का थूहड।

चर्मकषा—स्त्री० [स० चर्मन् √कष् (खरोचना)+अच्–टाप्] चर्म-कशा।

चर्मकार—पु०[स० चर्मन्√कृ+अण्, उप०स०] [स्त्री० चर्मकारी] चमडे का काम करने अर्थात् चमडे की चीजे बनानेवाला व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्तियो की जाति। चमार।

चर्म-कारक—पु०[ष० त०]=चर्मकार।

चर्मकारी—स्त्री० =चर्म-कार्य।

चर्म-कार्य—पु०[ष० त०] चमडे की चीजे बनाने का कार्य या पेशा।

चर्म-कील—पु० [स० त०] १ बवासीर नामक रोग। २ एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर पर मास की कीले सी निकल आती और बहुत कष्ट देती है। न्यच्छ।

चर्म-कूप—पु०[ष० त०] चमडे का कुप्पा।

चर्म-ग्रीव—पु०[ब० स०] शिव का एक अनुचर।

चर्म-घटिका—स्त्री० [ष० त०] जोक।

चर्मचक्षु (स्)—पु० [ष० त०] चमडे की बनी हुई ऊपरी आखे (अतश्चक्षु या ज्ञान चक्षु से भिन्न)। जैसे—खाली चर्म-चक्षुओ से देखने पर ईश्वर नही दिखाई देगा।

चर्म-चटका, चर्मचटी—स्त्री० [तृ० त०] [चर्मन्√अट्+अच्–ङीप्] चमगादड।

चर्म-चित्रक—पु० [ष० त०] श्वेत कुष्ठ नामक रोग।

चर्म-चेल—पु० [मध्य०स०] वह चमडा जो उलटकर कपडे की तरह ओढा या पहना गया हो।

चर्मज—वि० [स० चर्मन्√जन् (उत्पत्ति)+ड, उप०स०] चर्म या चमडे से उत्पन्न होनेवाला।

पु० १ रोआँ। रोम। २ खून। रक्त। लहू।

चर्मण्वती—स्त्री० [स० चर्मन्+मतुप्–ङीप्] १ चबल नदी जो विध्याचल पर्वत से निकलकर इटावे के पास यमुना से मिलती है। शिवनद। २ केले का पेड।

चर्म-तरग—पु० [स० त०] शरीर के चमडे पर पडी हुई झर्री।

चर्म-दड—पु०[मध्य०स०] चमडे का बना हुआ कोडा या चाबुक।

चर्म-दल—पु० [स० चर्मन्√दल् (विदीर्ण करना)+णिच्+अण्, उप०स] एक प्रकार का कोढ जिसमे पहले किसी स्थान पर बहुत-सी फुंसियाँ हो जाती है और तब वहाँ का चमडा फट जाता है।

चर्म-दूषिका—स्त्री० [ष० त०] दाद नामक रोग।

चर्म-दृष्टि—स्त्री० [ष० त०] चर्म-चक्षुओ की अर्थात् साधारण दृष्टि। आँख। (ज्ञान-दृष्टि से भिन्न)

चर्म-देहा—पु०[ब० स०] मशक के ढग का एक प्रकार का पुराना बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

चर्म-द्रुम—पु० [मध्य० स०] भोजपत्र का पेड।

चर्म-नालिका—स्त्री० [ष० त०] चमडे का कोडा या चाबुक।

चर्म-नासिका—स्त्री० =चर्म-नालिका।

चर्म-पट्टिका—स्त्री० [ष० त०] चमोटी।

चर्म-पत्रा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] चमगादड।

चर्म-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्]=चर्म-पत्रा।

चर्म-पादुका—स्त्री०[मध्य० स०] चमडे का बना हुआ जूता।

चर्म-पीड़िका—स्त्री०[ष० त०] एक प्रकार की शीतला (रोग)।

चर्म-पुट—पु०[मध्य० स०] चमडे का कुप्पा या थैला।

चर्म-पुटक—पु० [स० चर्म-पुट+कन्]=चर्म-पुट।
चर्म-प्रभेदिका—स्त्री० [ष०त०] चमडा काटने का सुतारी नामक औजार।
चर्म-बंध—पु० [ष० त०] १ चमडे का तस्मा या पट्टी। २ चमडे का कोडा या चाबुक।
चर्म-मडल—पु० [मध्य०स०] एक प्राचीन देश का नाम। (महाभारत)
चर्म-मसूरिका—स्त्री० [मध्य०स०] मसूरिका रोग का एक भेद जिसमे रोगी के शरीर मे छोटी-छोटी फुसियाँ या छाले निकल आते है।
चर्म-मुडा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] दुर्गा।
चर्म-मुद्रा—स्त्री० [मध्य०स०] १ तत्र मे एक प्रकार की मुद्रा। २ चमडे का सिक्का।
चर्म-यष्टि—स्त्री० [मध्य०स०] चमडे का कोडा या चाबुक।
चर्म-रगा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] एक प्रकार की लता जिसे आवर्त्तकी और भगवद्वल्ली भी कहते है।
चर्मरी—स्त्री० [स० चर्मन्√रा (दाने)+क-ङीष्] एक प्रकार की लता जिसका फल बहुत विषैला होता है।
चर्मरु—पु०[स० चर्मन्√रा +कु] =चमार।
चर्म-वश—पु० [ब०स०]प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।
चर्म-वसन—पु० [ब०स०] महादेव। शिव।
चर्म-वाद्य —पु०[मध्य०स०]ढोल, नगाडा आदि ऐसे बाजे जिन पर चमडा मढा होता है।
चर्म-वृक्ष —पु० [मध्य०स०] भोजपत्र का पेड।
चर्म-सभवा—स्त्री०[ब०स०] इलायची।
चर्मसार—पु०[ष०त०] वैद्यक मे, खाये हुए पदार्थों से शरीर के अदर बननेवाला रस।
चर्मांत—पु०[चर्मन्-अत, ब०स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यत्र जिसका व्यवहार चीर-फाड आदि मे होता था।
चर्माख्य—पु०[चर्मन्-आख्या, ब०स०] कुष्ठ रोग का एक प्रकार या भेद।
चर्मानला—स्त्री० [स०] प्राचीन काल की एक नदी।
चर्मानुरजन—पु० [चर्मन्-अनुरजन, ष०त०] बदन पर लगाने का सिंदूर की तरह का एक द्रव्य।
चर्मार—पु० [स० चर्मन्√ऋ (गति)+अण्, उप० स०] चर्मकार। चमार।
चर्मिक—पु०[स०चर्मन्+ठन्—इक]हाथ मे ढाल लेकर लडनेवाला योद्धा।
चर्मी (मिन्)—पु० [स० चर्मन्+इनि, टिलोप]=चर्मिक।
चर्य्य—वि० [स√चर् (चलना) +यत्] १ जो चरण अर्थात् आचरण के रूप मे किये जाने के योग्य हो। २ कर्त्तव्य।
चर्य्या—स्त्री० [स० चर्य्य+टाप्] १ वह जो किया जाय। आचरण। जैसे—व्रतचर्य्या, दिनचर्य्या आदि। २ आचरण। चाल-चलन। ३ काम-धधा। ४ जीविका या वृत्ति। ५ सेवा। ६ धर्मशास्त्र के अनुसार विहित काम करना और निषिद्ध काम न करना। ७ भोजन करना। खाना। ८ चलना। गमन।
चर्राना—अ०[अनु०] १ लकडी आदि का टूटने या तडकने के समय चर चर शब्द होना। २ घाव के सूखने के समय होनेवाले तनाव के कारण हलकी पीडा होना। ३ शरीर मे चुनचुनाहट या हलकी जलन होना। ४ किसी कार्य, बात, वस्तु आदि की प्रबल इच्छा होना। जैसे—किसी काम या बात का शौक चर्राना।
चर्री—स्त्री० [हिं० चर्राना] ऐसी लगती हुई बात जिससे किसी के मर्म पर आघात होता हो।
चर्वण—पु० [स०√चर्व् (चबाना)+ल्युट्-अन] [वि० चर्व्य] १ किसी चीज को मुँह मे रखकर दाँतो से बराबर कुचलने की क्रिया। चबाना। २ चबाकर खाई जानेवाली चीज। ३ भुना हुआ अन्न। चबेना। दाना।
चर्वित—भू०कृ०[स० √चर्व्+क्त] १ चाबा या चबाया हुआ। २ खाया हुआ। भक्षित।
चर्वित-चर्वण—पु०[ष० त०] किसी किये हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।
चर्वित-पात्र—पु० [ष० त०] उगालदान। पीकदान।
चर्विल—पु०[अ०] गाजर की तरह की एक पाश्चात्य तरकारी जो कुआर-कातिक मे क्यारियो मे बोई जाती है।
चर्व्य—वि०[स०√चर्व्+ण्यत्] १ चबाये जाने के योग्य। २ जो चबाकर खाया जाय।
चर्षणि—पु० [स०√कृष् (लिखना)+अनिच्, च आदेश] आदमी। मनुष्य।
चर्षणी—स्त्री० [स० चर्षणि+ङीष्] १ मानव जाति। २ कुलटा स्त्री।
चर्स—स्त्री० =चरस।
चलता—वि० [हिं० चलना] १ चलता हुआ। चलता रहनेवाला। २ चलनेवाला।
चलदरी—स्त्री०=चलनदरी।
चल—वि०[स०चल् (जाना)+अच्] १ जो चल रहा हो, चलता हो या चल सकता हो। जैसे—चल-चित्र। २ चलता या हिलता-डुलता रहनेवाला। जैसे—चल चचु। ३ अस्थिर। चचल। ४ जो एक स्थान से उठाकर या हटाकर दूसरे स्थान पर रखा या लाया जा सके। (मूवेबुल) जैसे—चल सपत्ति। ५ नश्वर।
पु० [√चल्+णिच्+अप्] १ काँपने, चलने या हिलने की क्रिया या भाव। २ पारा। ३ महादेव। शिव। ४ विष्णु। ५ ऐब। दोष। ६ चूक। भूल। ७ कपट। छल। धोखा। ८ दोहा छद का एक भेद जिसमे ११ गुरु और २६ लघु मात्राएँ होती है। ९ नृत्य मे अग की वह चेष्टा जिसमे हाथ के इशारे से किसी को अपनी ओर बुलाया जाता है। १० नृत्य मे शोक, चिंता, परिश्रम या उत्कठा दिखलाने के लिए गहरा साँस लेना। ११ गणित मे वह राशि जिसके कई मान या मूल्य हो। १२ उक्त राशि का प्रतीक चिह्न। (वेरिएब्ल, उक्त दोनो अर्थो मे)
चलक—पु० [स० चल+कन्] १ माल। असबाब। २ दे० 'चल' ११ तथा १२।
चलकना†—अ०=चिलकना।
चल-कर्ण—वि०[ब०स०] जिसके कान सदा हिलते रहते हो।
पु०१ हाथी। २ ज्योतिष मे, पृथ्वी से ग्रहो का प्रसम अन्तर।
चलका—पु०[देश०] एक प्रकार की नाव।

चल-केतु—पु० [कर्म० स०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का पुच्छलतारा जिसके उदय से अकाल या दुर्भिक्ष पडता है।

चल-चचु—पु० [ब०स०] जिसकी चोच हिलती रहती हो अर्थात् चकोर।

चल-चलाव—पु० [हिं० चलना+चलाव (अनु०)] १ कही से चलने अथवा चल पडने की क्रिया, तैयारी या भाव। चलाचली। २ मृत्यु। उदा०—दुनियाँ है चल-चलाव का रस्ता, सभल के चल।—कोई शायर।

चलचा—पु० [देश०] ढाक। पलास।

चल-चाल—वि० [ब० स०] चलविचल। चचल। अस्थिर।

चल-चित्त—वि० [ब०स०] (व्यक्ति) जिसका मन कही या किसी निश्चय पर टिकता या लगता न हो। चचल चित्तवाला।

चल-चित्र—पु० [कर्म० स०] १ भा या छाया चित्रो का वह अनुक्रम जो इतनी तेजी से परदे पर विक्षेपित किया जाता है कि दृष्टि-भ्रम के कारण उनमे दिखाई देनेवाली वस्तुएँ, व्यक्ति आदि चलते-फिरते नजर आते है। २ छाया या भाचित्रित कथा या कहानी। (मूवी)

चल-चित्रण—पु० [ष० त०] भा या छाया-चित्रण के द्वारा चल-चित्र तैयार करना। (फिल्मिग)

चल-चित्रित—वि० [स० चलचित्र+णिच्+क्त] चल-चित्र के रूप मे तैयार किया हुआ। (फिल्म्ड)

चल-चूक—स्त्री० [स० चल=चवल] धोखा। छल। कपट।

चलता—स्त्री० [स० चल+तल्–टाप्] १ चल अर्थात् गतिमान् या गतिशील होने की अवस्था या भाव। २ अस्थिरता। चचलता।

वि० [हिं० चलना] [स्त्री० चलती] १ जो चल रहा हो। जो गति मे हो। जैसे—चलती गाडी मे से मत उतरो।

मुहा०—**(किसी को) चलता करना**=जैसे-तैसे दूर करना या हटाना। पीछा छुडाने के लिए रवाना करना। जैसे—मैंने दो-चार बाते करके उन्हे चलता किया। **(कोई काम) चलता करना**=जैसे-तैसे निपटाना या पूरा करना। जैसे—कई काम तो आज मैने यो ही चलते किये। **(किसी व्यक्ति का) चलता या चलते बनना या होना**=चुपचाप खिसक या हट जाना। जैसे—झगडा बढता हुआ देखकर मैं तो वहाँ से चलता बना। **चलते-फिरते नजर आना**=चलता या चलते बनना। जैसे—अब आप यहाँ से चलते-फिरते नजर आइए।

२ जो प्रचलन या व्यवहार में बराबर आ रहा हो। जैसे—चलता माल, चलता सिक्का। ३ जिस पर से होकर लोग बराबर आते-जाते रहते हैं। जैसे—चलता रास्ता। ४ जो ठीक प्रकार से काम करने की स्थिति मे हो। जैसे—चलती मशीन, चलती घडी। ५ जिसका अथवा जहाँ पर काम-काज या कारोबार ठीक प्रकार से चल रहा हो। जैसे—चलती दूकान, चलती वकालत। ६ जिसका क्रम बराबर चलता रहता हो। जैसे—चलता खाता (दे०)। ७ जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से जा अथवा ले जाया जा सकता हो। जैसे—चलता पुस्तकालय, चलता सिनेमा। ८ (व्यक्ति) जो अधिक चतुर या होशियार हो। धूर्त। जैसे—चलता पुरजा (दे०)। ९ (कार्य या वस्तु) जिसे करने अथवा बनाने मे विशेष योग्यता अपेक्षित न हो। जैसे—ऐसे चलते काम तो यहाँ नित्य आया करते है।

पद—चलता गाना। (देखें)

१० जिसमे समस्त अगो या ब्योरे की बातो पर विशेष ध्यान न दिया गया हो या न दिया जाय। काम-चलाऊ। जैसे—किसी काम या किताब को चलती निगाह से देखना। ११ जो अपने अत या समाप्ति के पास तक पहुँच रहा हो। जैसे—चलती अर्थात् ढलती उमर।

पद—चलता समय या समाँ। (देखें)

पु० [हिं० चलना] १ उलटा नाम का पकवान जो पिसी हुई दाल या बेसन से रोटी के रूप मे पकाया जाता है। २ रास्ते मे वह स्थान जहाँ फिसलन और कीचड बहुत अधिक हो।

पु० [देश०] १ एक प्रकार का बहुत बडा सदाबहार वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है और पानी मे भी जल्दी गलती-सडती नही है। २ उक्त वृक्ष का फल जो तरकारी बनाने और यो भी खाने के काम आता है। ३ कवच।

†पु०=चिलता (कवच)।

चलता खाता—पु० [हिं० पद] लेन-देन का ऐसा हिसाब जिसका क्रम बराबर चलता या बना रहता हो, बीच मे बद न होता हो। (करेण्ट एकाउण्ट)

चलता गाना—पु० [हिं०] ऐसा गाना जो शुद्ध राग-रागिनियो के अन्तर्गत न हो पर जिसका प्रचार सर्व-साधारण मे हो। जैसे—गजल, दादरा, लावनी आदि।

चलता छप्पर—पु० [हिं० पद] छाता। (फकीरो की भाषा)

चलता पुरजा—पु० [हिं० पद] व्यवहार-कुशल व्यक्ति। चालाक या चुस्त व्यक्ति।

चलता लेखा—पु०=चलता खाता।

चलता समय—पु०=चलता समाँ।

चलता समाँ—पु० [हिं०] जीवन का अतिम भाग या समय। वृद्धावस्था।

चलती—स्त्री० [हिं० चलना] कोई कार्य करने या करा सकने का अधिकार। उदा०—आज-कल उस दरबार मे उनकी बडी चलती है।

वि० हिं० 'चलता' का स्त्री० रूप।

चलतू—वि० [हिं० चलना] १ दे० 'चलता'। २ (भूमि) जो जोती-बोई जाती हो।

चलदंग—पु० [ब०स०] झीगा मछली।

चल-दल—पु० [ब०स०] पीपल का वृक्ष।

चलन—पु० [स०√चल्+ल्युट्–अन] १ गति। चाल। २ कपन। ३ चरण। पैर। ४ हिरन। ५ ज्योतिष मे विषुवत् की वह गति जिससे दिन और रात दोनो बराबर रहते है। ६ नृत्य मे एक प्रकार की चेष्टा या मुद्रा।

पु० [हिं० चलना] १ चलने की अवस्था, क्रिया या भाव। गति। चाल। २ प्रचलित रहने की अवस्था या भाव। प्रचलन। जैसे—कपडे या सिक्के का चलन। ३ आचार-व्यवहार आदि से सबध रखने वाली प्रथा। रीति। रवाज। ४ अच्छा आचरण या व्यवहार। जैसे—जो चलन से रहेगा, उसे कभी कोई कष्ट न होगा।

चलन-कलन—पु० [तृ० त०] ज्योतिष मे एक प्रकार का गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन-रात के घटने-बढने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनदरी—स्त्री० [हिं० चलन+दरी] वह स्थान जहाँ यात्रियो को पुण्यार्थ जल पिलाया जाता हो। पौसरा।

चलन-समीकरण—पु०[ष० त०] गणित मे एक प्रकार की क्रिया। दे० 'समीकरण'।

चलनसार—वि० [हि० चलन+सार (प्रत्य०)] १ जिसका उपयोग, न या व्यवहार बराबर हो रहा हो। जैसे—चलनसार सिक्का। २ जो बहुत दिनो तक चल सके अर्थात् काम मे आ सके। जैसे—चलनसार धोती।

चलनहार†—वि०[हि० चलना+हार (प्रत्य०)] १ जो अभी चलने को उद्यत या प्रस्तुत हो। २ जो अभी चल रहा हो। चलनेवाला। ३ दे० 'चलनसार'।

चलना—अ० [स० चलन] १ पैरो की सहायता से जीव-जतुओ का एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए आगे बढना। जैसे—आदमियो या घोडो का चलना।

मुहा०—चल देना=(क) कोई स्थान छोडकर वहाँ से दूर होना या हट जाना। (ख) बिना कहे-सुने या चुपके से खिसक या हट जाना। जैसे—वह लडका मेरे सब कपडे लेकर चल दिया। **चल पड़ना**=चलना आरभ करना। जैसे—सबेरा होते ही यात्री चल पडे।

२ पहियो आदि की सहायता से अथवा और किसी प्रकार किसी ओर अग्रसर होना या बढना। जैसे—गाडी या जहाज का चलना, मछली या साँप का चलना। ३ किसी प्रकार की गति से युक्त होकर आगे बढना। गति मे होना। जैसे—आँधी या हवा चलना, ग्रहो या नक्षत्रो का चलना। ४ किसी प्रकार की गति से युक्त होकर या हिलते-डोलते हुए कोई कार्य सपन्न या सपादित करना। जैसे—घडी, नाडी या यत्र चलना। ५ कोई काम करते हुए उसमे आगे की ओर बढना। उन्नति करना। अग्रसर होना।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) चल निकलना=किसी काम या बात मे तत्परतापूर्वक लगे रहकर औरो से कुछ आगे बढना या उन्नति करना। जैसे—थोडे ही दिनो मे वह सस्कृत पढने (या दस्तकारी सीखने) मे चल निकलेगा। **(किसी काम या बात का) चल निकलना**=उन्नति, वृद्धि आदि के मार्ग पर आगे बढना। जैसे—रोजगार (या वकालत) चल निकलना।

६ उचित या साधारण गति से क्रियाशील रहना। सक्रिय रहना या होना। जैसे—(क) लिखने मे कलम चलना। (ख) कारखाना या दूकान चलना। (ग) बिना कही अटके या रुके बराबर बढते चलना। ७ किसी कार्य, बात या स्थिति का उचित रूप से निर्वाह या वहन होना। काम निकलना या होता रहना। जैसे—(क) इतने रुपयो से काम नही चलेगा। (ख) यह लडका चौथे दरजे मे चल जायगा।

मुहा०—पेट चलना=खाने-पीने का सुभीता होता रहना। जीविका-निर्वाह होना। जैसे—इसी मकान के किराये से उनका पेट चलता है।

८ किसी चीज का ठीक तरह से उपयोग या व्यवहार मे आते रहना। बराबर काम देते रहना। जैसे—(क) यह कपडा तो अभी बरसो चलेगा। (ख) बुढापे के कारण अब उनका शरीर नही चलता। (ग) पाकिस्तानी नोट और रुपए भारत मे नही चलते। ९ शरीर के किसी अग का अपने कार्य मे प्रवृत्त या रत होना। जैसे—जबान या मुँह चलना अर्थात् जबान या मुँह से बाते निकलना, मुँह चलना अर्थात् मुँह से खाने या चबाने की क्रिया होना, हाथ चलना अर्थात् हाथ के द्वारा किसी पर प्रहार होना। १० किसी काम या बात का आरभ होना। छिडना। जैसे—किसी की चर्चा या जिक्र चलना, कोई प्रसग या बात चलना, कोई नई प्रथा या रीति चलना। ११ प्रहार के उद्देश्य से अस्त्र-शस्त्र आदि का प्रयोग या व्यवहार होना। जैसे—गोली, तलवार या लाठी चलना। १२ उक्त के आधार पर, लाक्षणिक रूप मे आपस मे वैर-विरोध या वैमनस्य का व्यवहार होना। जैसे—आज-कल दोनो भाइयो मे खूब चल रही है। १३ तरल पदार्थ का अपने आधान या पात्र मे से होते हुए आगे बढते या बहते रहना। जैसे—पानी गिरने या बरसने पर पनाला या मोरी चलना। १४ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे शरीर के किसी अग मे से तरल पदार्थ का असाधारण या विकृत रूप मे बाहर निकलना या निकलते रहना। जैसे—पेट चलना अर्थात् दस्त के रूप मे पेट मे से निरतर बहुत सा मल निकलना, पेट और मुँह चलना अर्थात् लगातार बहुत से दस्त और कै होना। १५ मार्ग या रास्ते के सबध मे, ऊपर से लोगो का आना-जाना होना। जैसे—(क) यह सडक रात भर चलती है। (ख) यह गली सबेरे से चलने लगती है। (ग) यह जल-मार्ग आज-कल नही चलता। १६ किसी क्रम या परपरा का बराबर आगे बढते रहना या जारी रहना। जैसे—किसी का नाम या वश चलना। उदा०—रघुकुल रीति सदा चलि आई।—तुलसी। १७ मन का किसी प्रकार की वासना से युक्त होकर किसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—खाने-पीने की किसी चीज पर मन चलना। १८ अधिकार, युक्ति वश, शक्ति आदि के सबध मे अपना ठीक और पूरा काम करना अथवा परिणाम या फल दिखाना। जैसे—जब तक हमारी (युक्ति या शक्ति) चलेगी, तब तक हम उन्हे ऐसा नही करने देगे।

मुहा०—(किसी की) कुछ चलना=किसी का कुछ अधिकार या वश अथवा उपाय या कौशल सफल या सार्थक होना। जैसे—किसी की कुछ नही चलती कि जब तकदीर फिरती है।—कोई शायर।

१९ किसी लिखावट या लेख का ठीक तरह से पढा जाना और समझ मे आना। जैसे—उनका लिखा हुआ पत्र या लेख यहाँ किसी से नही चलता (पढा जाता)। २० खाने या पीने के समय किसी पदार्थ का ठीक तरह से गले के नीचे उतरना। खाया, निगला या पीया जाना। जैसे—(क) पेट बहुत भर गया है, अब एक भी पूरी (या रोटी) नही चलेगी। (ख) ले लो अभी दो लड्डू तो और चल ही जायँगे। २१ खाने-पीने की चीजे परोसने के समय अलग-अलग चीजो का क्रम से सामने आना या रखा जाना। जैसे—पहले पूरी-तरकारी और तब मिठाई चलनी चाहिए। २२ लोगो के साथ अच्छा और मेल-जोल का आचरण या व्यवहार करना। जैसे—ससार (या समाज) मे सबसे मिलकर चलना चाहिए। २३ आज्ञा, आदेश, उदाहरण आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करना। जैसे—सदा बडो की आज्ञा और उपदेश के अनुसार अथवा उनके दिखलाये या बतलाये हुए मार्ग पर चलना चाहिए। २४ किसी प्रकार के कपट, चालाकी या धूर्तता का आचरण या व्यवहार करना। जैसे—हम देखते है कि आज-कल तुम हमसे भी चलने लगे हो। २५ किसी काम या चीज का अपने उचित, चलित या नियत क्रम, मार्ग या स्थिति से इधर-उधर या विचलित होना जो दोष, विकार आदि का सूचक होता है। जैसे—(क) ऐसा जान पडता है कि छत (या दीवार) भी दो-चार दिन मे चली जायगी। (ख) उनका आधा खेत तो इस बरसात मे गगा मे चला गया।

मुहा०—(किसी चीज का) चल जाना=किसी चीज का कट-फट, टूट-फूट या गल-सडकर अथवा और किसी प्रकार खराब या विकृत हो जाना। जैसे—(क) थान मे से टुकडा फाडने के समय कपडे का चल जाना अर्थात् सीधा न फटकर इधर-उधर या तिरछा फट जाना। (ख) कढी, दाल या भात का चल जाना अर्थात् बासी होने के कारण सडने लगना। (ग) अगरखा या कुरता चल जाना अर्थात् किसी जगह से कट, फट या मसक जाना। (घ) किसी का दिमाग या मस्तिष्क चल जाना अर्थात् कुछ-कुछ पागल या विक्षिप्त-सा हो जाना। जैसे--जान पडता है कि इस लडके का दिमाग कुछ चल गया है। २६ इस लोक से प्रस्थान करना। काल के मुँह मे जाना। मर जाना। जैसे—सबको एक न एक दिन चलना है।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) चल बसना= मर जाना। स्वर्गवासी होना। जैसे—आज मोहन के पिता चल बसे।

२७ नष्ट या समाप्त होना।

मुहा०—(किसी चीज का) चला जाना =नष्ट या समाप्त हो जाना। न रह जाना। जैसे—उनके आने से मेरी भूख और प्यास चली जाती है।

स० १ कुछ विशिष्ट खेलो मे किसी चीज के द्वारा अपनी बारी से चलने की-सी क्रिया करना। आगे बढाना या रखना अथवा सामने लाना। जैसे—(क) चौसर की गोटी, ताश का पत्ता या शतरज का मोहरा चलना। (ख) घोडा या हाथी चलना, बादशाह या बेगम चलना। २ किसी प्रकार की चाल, तरकीब या युक्ति को क्रियात्मक रूप देना। जैसे—(क) आपस मे तरह-तरह की चाले चलना। (ख) नित्य नई तरकीब चलना।

पु० [हिं० चलनी] १ बडी चलनी या छलनी। २ चलनी की तरह का लोहे का वह बडा कलछा या पौना जिससे उबलते हुए ऊख के रस पर का फेन या मैल उठाते है। ३ हलवाइयो का उक्त प्रकार का वह उपकरण जिससे चाशनी या शीरे पर की मैल उठाई जाती है।

चलनि*—स्त्री० = चलन।

चलनिका—स्त्री० [स० चलनी+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ स्त्रियो के पहनने का घाघरा। २ झालर।

चलनी—स्त्री० = छलनी।

स्त्री० [स० √चल्+ल्युट्—अन, ङीप्] = चलनिका।

चलनौस—पु० [हिं० चालना+औस (प्रत्य०)] किसी वस्तु मे का वह अश जो उसे चालने या छानने पर चलनी मे बच रहता है। चालन। चोकर।

चलनौसन—पु० = चलनौस।

चलपत †—पु० = चलपत्र।

चल-पत्र—पु० [ब० स०] पीपल का पेड, जिसके पत्ते हरदम कुछ न कुछ हिलते रहते है।

चलबाँक—वि० [हिं० चलना+बाँका] तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी।

†वि० =चरबाँक।

चलबिचल—वि० = चल-विचल।

चल-मित्र—पु० [कर्म० स०] वह मित्र (राजा) जो सदा साथ न दे सके।

चल-मुद्रा—स्त्री० [कर्म० स०] वह मुद्रा जिसका चलन किसी देश मे सब जगह समान रूप से होता हो। (करेन्सी)

चल-रेखा—स्त्री० [कर्म० स०] चचल रेखा अर्थात् तरग।

चलवत—पु० [स० चल+हिं० वत] पैदल सिपाही। प्यादा।

चलवाना—स० [हिं० चलाना का प्रे०] १ चलने का काम दूसरे से कराना। २ किसी को कोई चीज चलाने मे प्रवृत्त करना।

चल-विचल—वि० [स० कर्म० स०] १ अपने स्थान से हटा हुआ। २ अस्थिर। चचल। ३ अस्त-व्यस्त।

चलवया—पु० [हिं० चलना] १ चलनेवाला। २ चलानेवाला।

चल-सपत्ति—स्त्री० [कर्म० स०] ऐसी सपत्ति जो एक स्थान से आसानी से हटाई-बढाई जा सकती हो। (मूवेबुल प्रापर्टी)

चला—स्त्री० [स० √चल्+अच्—टाप्] १ बिजली। दामिनी। २ पृथ्वी। ३ लक्ष्मी। ४ पीपल। ५ शिलारस नामक गध-द्रव्य।

†पु० =चाला।

चलाऊ—वि० [हिं० चलना] १ जैसे-तैसे काम चलानेवाला। जैसे--काम-चलाऊ पुस्तक। २ अधिक समय तक टिकने या ठहरनेवाला।

चलाक—वि०=चालाक।

चलाकी—स्त्री०=चालाकी।

चलाका—स्त्री० [स० चला = बिजली] बिजली। दामिनी। विद्युत्।

चलाचल—वि० [स० √चल्+अच्, द्वित्व] चचल। चपल।

स्त्री० [हिं० चलना] १ चलाचली। २ गति।

चलाचली—स्त्री० [हिं० चलना] १ चलने की क्रिया या भाव। २ कही से चलने के समय की जानेवाली तैयारी। ३ प्रस्थान। ४ एक के बाद दूसरे का भी जाना।

चलातक—पु० [चल-आतक, ब० स०] एक वातरोग जिसके कुप्रभाव से हाथ-पाँव आदि काँपने लगते है। राशा।

चलान—स्त्री० [हिं० चलना] १ चलने या चलाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ व्यापारिक क्षेत्र मे कोई चीज या माल कही भेजे जाने या रवाना करने की क्रिया या भाव। जैसे--अनाज या रूई की चलान। ३ उक्त प्रकार से कही से चलकर आई हुई चीज या माल। जैसे--नई चलान का कपडा। ४ अभियुक्त को पकडकर न्यायालय मे विचार के लिए भेजे जाने की क्रिया या भाव। जैसे—चोर या जुआरी की चलान होना। ५ वह कागज जिसमे सूचना के लिए भेजी हुई चीजो की सूची, विवरण आदि लिखे रहते है। रवन्ना।

चलानदार—पु० [हिं० चलान+फा० दार] वह व्यक्ति जो माल की चलान रक्षा के लिए उसके साथ जाता है।

चलाना—स० [हिं० चलना का स०] १ हिन्दी 'चलना' क्रिया का सकर्मक रूप। किसी को चलाने मे प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई चले। जैसे—लडके को पैदल चलाना। २ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई यान या सवारी किसी ओर आगे बढे। जैसे—गाडी, नाव, मोटर या रेल चलाना। ३ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई यत्र ठीक तरह से अपना काम करने लगे। जैसे--घडी, मशीन, रेडियो या हलचलाना। ४ किसी प्रकार की या किसी रूप मे गति देना। इधर-उधर करते हुए हिलाना-डुलाना। जैसे—चूल्हे पर चढाई हुई तरकारी या दाल चलाना। ५ किसी के आचरण, गति-विधि, व्यवहार आदि की देख-रेख रखते हुए

उसके सब व्यापार सचालित करना। जैसे—लडको को जैसे चलाओगे, वैसे ही वे चलेंगे। ६ उक्त प्रकार या रूप से किसी का सचालन करते हुए उसे अपने साथ निर्वाह के योग्य बनाना। कुछ करने के लिए उपयुक्त बनाना। जैसे—(क) इस लडके को हम छठे दरजे मे चला ले जायँगे। (ख) ऐसे गँवार नौकर को भी आप चला ही ले गये। ७ उचित अथवा साधारण रूप से किसी काम, चीज या बात को क्रियाशील या सक्रिय रखना। ऐसी व्यवस्था करना जिससे कोई काम अच्छी तरह से चलता रहे। जैसे—कार्यालय, कोठी या पाठशाला चलाना। ८ किसी स्थिति का निर्वाह या उत्तरदायित्व का वहन करना। जैसे—(क) वह गृहस्थी के सब काम अच्छी तरह चला लेता है। (ख) इस महँगी मे लोगो के लिए गृहस्थी चलाना बहुत कठिन हो रहा है।

मुहा०—(अपना या किसी का) पेट चलाना =भोजन आदि के व्यय का निर्वाह करना। जीविका चलाना। जैसे—पहले तुम अपना पेट तो चला लो, तब ब्याह की बात सोचना। **(कोई काम या बात) चलाये चलना** =किसी प्रकार निर्वाह करते चलना। जैसे—अभी तो हम जैसे-तैसे चलाये चलते हैं।

९ कौशल, योग्यता तथा तत्परतापूर्वक कोई काम करना। जैसे—शासन चलाना। १० किसी चीज को बराबर उपयोग या व्यवहार मे लाते रहना। जैसे—यह कबल तो वह दस बरस चलावेगा। ११ शरीर के किसी अग को उसके किसी नियमित कार्य मे प्रवृत्त या रत करना। जैसे—(क) मुँह चलाना, अर्थात् भोजन करना या खाना। (ख) हाथ चलाना अर्थात् ठीक तरह सक्रिय रहकर पूरा काम करना। १२ शरीर के किसी अग को किसी असाधारण रूप मे अथवा कुछ उग्र प्रकार से प्रयुक्त या सक्रिय करना। जैसे—(क) जबान चलाना, अर्थात् बहुत बढ-बढकर या उद्दडतापूर्ण बाते करना। (ख) किसी पर हाथ चलाना अर्थात् उसे थप्पड या मुक्का मार बैठना। १३ प्रहार करने के लिए अस्त्र-शस्त्र या किसी और साधन से काम लेना। जैसे—(क) तलवार, तीर या तोप चलाना। (ख) डडा या लाठी चलाना। (ग) घूँसा या लात चलाना। १४ तत्र-मत्र आदि के प्रयोग से कोई ऐसी क्रिया सपादित करना कि जिससे किसी का कोई अनिष्ट हो अथवा वह कोई उद्दिष्ट कार्य करने मे प्रवृत्त हो। जैसे—मत्र-बल से कटोरा या कौडी चलाना।

मुहा०—(किसी पर) मूठ चलाना =मुट्ठी मे भरी या रखी हुई कोई चीज अभिमत्रित करके किसी के नाम पर या किसी के उद्देश्य से कही फेंकना।

१५ भेजने की प्रेरणा करना। भेजवाना। उदा०— ..जलभाजन सब दिये चलाई।—तुलसी। १६ तरल पदार्थ इतनी अधिकता से गिराना या डालना कि वह बहने लगे। जैसे—(क) पानी गिराकर मोरी चलाना। (ख) खून की नदियाँ चलाना अर्थात् बहाना। १७ ऐसी क्रिया करना जिससे शरीर के अदर से कोई तरल पदार्थ अधिक मात्रा मे बाहर निकलने लगे। जैसे—इस दवा की एक पुडिया ही तुम्हारा पेट चला देगी। १८ किसी काम या बात का आरभ करना। शुरू करना। छेडना। जैसे—किसी की चर्चा, जिक्र या प्रसग चलाना।

मुहा०—किसी की चलाना =किसी के अधिकार, प्रभुत्व, शक्ति आदि की चर्चा या प्रसग छेडना। जैसे—उनकी क्या चलाते हो, वे तो बहुत कुछ कर सकते है।

१९ कोई नया नियम, प्रथा, रीति आदि प्रचलित करना। जारी करना। जैसे—नया कानून या नया धर्म चलाना। २० किसी क्रम, परपरा आदि का निर्वाह करना या उसे बराबर बनाये रखना। जैसे—पूर्वजो या बडो का नाम चलाना। २१ किसी प्रकार की कामना या वासना के वश मे होकर अपने मन को उसी के अनुसार प्रवृत्त करना। जैसे—दूसरो के अधिकार या वैभव पर मन चलाना ठीक नही। २२ अस्पष्ट लिखावट पढने का प्रयत्न करना। जैसे—हमसे तो यह चिट्ठी नही चलती, जरा तुम्ही चलाकर देखो। २३ खाने-पीने की चीजे परोसने के लिए लोगो के सामने लाना। जैसे—पहले नमकीन चला लो, तब मिठाई चलाना। २४ सामाजिक रीति-व्यवहार आदि का ठीक तरह से आचरण या पालन करना। जैसे—हम तो बराबर उसी तरह से उनके साथ चलाते है, आगे उनकी इच्छा। २५ दूसरो को अपनी आज्ञा, आदेश आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करने मे प्रवृत्त करना अथवा ऐसा करने के लिए जोर देना। जैसे—आपसवालो पर इस तरह हुकुम मत चलाया करो। २६ कपडे आदि के सबध मे अनुचित रूप स या बुरी तरह ऐसी क्रिया करना कि वे कही इधर-उधर से कुछ फट जायँ। जैसे—(क) इस खीचातानी मे तुमने हमारी कमीज चला दी। (ख) जल्दी मे टुकडा फाडने के समय तुमने यह कपडा चला दिया। २७ खोटे या जाली सिक्को के सबध मे, कोई देन चुकाने के लिए धोखे से किसी को दे देना। जैसे—वह खोटी अठन्नी नौकर ने बाजार मे चला दी। २८ विधिक क्षेत्रो मे, कोई अभियोग किसी न्यायालय मे कार्रवाई या विचार के लिए उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—किसी पर मुकदमा चलाना।

चलानी—वि० [हिं० चलान] १. दूसरे स्थान से बिकने के लिए आया हुआ। जैसे—चलानी आम, चलानी परवल। २ चलान सबधी। जैसे—चलानी मुकदमा।

स्त्री० बिक्री के लिए माल बाहर भेजने का काम या व्यवसाय।

चलायमान—वि० [स० चल+क्यङ्+शानच्] १ चलनेवाला। जो चलता हो। २ चचल। ३ विचलित।

चलार्थ—पु० [स० चल-अर्थ, कर्म०स०] वह धन विशेषत मुद्रा जिसका प्रयोग या व्यवहार निरतर होता रहता हो। (करेंसी)

चलार्थ-पत्र—पु० [ष० त०]=चल-पत्र।

चलाव—पु० [हिं० चलना] १ चलने की क्रिया या भाव। २ प्रयाण। पयान। ३ चलावा (गौना)।

चलावना†—स०=चलाना।

चलावा—पु० [हिं० चलाना] १ रीति। रस्म। रिवाज। २ द्विरागमन। गौना। ३ गाँव मे सक्रामक रोग फैलने पर उसके उपचार के लिए किया जानेवाला उतारा। चलौआ।

चलासन—पु० [चल-आसन, कर्म०स०] सामयिक व्रत मे आसन बदलना जो बौद्धो मे एक दोष माना गया है।

चलि—पु० [स०√चल्+इन्] १ आवरण। २ अँगरखा।

चलित—वि० [सं०√चल्+क्त] १ अस्थिर। चलायमान। २ जो चल रहा हो। चलता हुआ। जैसे—चलित ग्रह। ३ जो चलन मे हो। (करेट) जैसे—चलित प्रथा। ४ जिसका प्रचलन या व्यवहार प्राय सब जगह या सब लोगो मे होता हो। (यूजुअल)

पु० नृत्य मे एक प्रकार की चेष्टा जिसमे ठुड्डी की गति से क्रोध या क्षोभ प्रकट हो।

चलित-ग्रह—पु०[कर्म०स०] ज्योतिष मे वह ग्रह जिसमे भोग का आरम्भ हो चुका हो।

चलित्र—पु०[स०?]अपनी ही शक्ति से चलनेवाला इजन।(लोकोमोटिव)

चलुक—पु० [स०√चल्+उन् +कन्] १ चुल्लू भर पानी। २ एक छोटा पात्र।

चलैया—पु० [हिं० चलना] चलनेवाला।

चलोर्मि—स्त्री० [स० चल+ऊर्मि, कर्म०स०] चलती या आगे बढती हुई लहर।

चलौना—पु०[हिं० चलाना] १ दूध, तरकारी आदि चलाने का लकडी का एक उपकरण या डडा। २ वह लकडी का टुकडा जिससे चरखा चलाया जाता है।

चलौवा—पु०=चलावा।

वि०=चलाऊ ।

चल्ली—स्त्री० [देश०]तकले पर लपेटा हुआ सूत या ऊन आदि। कुकडी।

चल्हवा—पु०=चेल्हा (मछली)।

चव—वि०=चौ।

पु० १ =चौ। २ =चव्य।

चवदसु—*वि०=चौदह।

स्त्री० =चौदस (चतुर्दशी)।

चवना—अ०[स० च्यवन] चूना। टपकना।

स० चुआना या टपकाना। उदा०—लता विटप माँगे मधु चवही। —तुलसी।

चवन्नी—स्त्री० [हिं० चौ(चार का अल्पा०) +आना+ई (प्रत्य०)] एक सिक्का जिसका मूल्य २५ नये पैसे अथवा पुराने चार आने के बराबर होता है।

चवर—पु०=चँवर।

चवरा—पु०[स० चवल] लोबिया।

†पु०=चौरा।

चवर्ग—पु०[ष० त०] [वि० चवर्गीय] नागरी वर्णमाला के च से ञ तक के अक्षरो का समूह।

चवल—पु० [स √चर्व् (चबाना)+अलच् पृषो०] लोबिया।

चवा—स्त्री० [स० चौ+वात] चारो ओर से एक साथ चलनेवाली वायु। उदा०—सुणि सुन्दरि, सच्चउ चवा ।—ढोलामारू।

चवाइन—स्त्री० 'चवाई' का स्त्री० रूप। उदा०—जदपि चवाइन चीकनी चलति चहूँ दिसि सैन।—बिहारी।

चवाई—वि० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] १ बदनामी की चर्चा फैलानेवाला। कलकसूचक प्रवाद फैलानेवाला। २ दूसरो की बुराई करनेवाला। निंदक।

स्त्री० १ चारो ओर फैली हुई निदा। २ झूठी अफवाह या खबर ।

चवाउ†—पु०=चवाव।

चवायनि—स्त्री०= चवाइन।

चवालीस—वि०=चौवालीस।

चवाव—पु० [हिं० चौवाई] १ चारो ओर फैलनेवाली चर्चा। प्रवाद। अफवाह। २ उक्त प्रकार की निन्दा।

चवि—स्त्री० [स०√चर्व् (चबाना)+इन्, पृषो० सिद्धि]=चविका।

चविक—पु० [स० चवि+कन्] एक प्रकार का पेड।

चविका—स्त्री० [स० चविक+टाप्] चव्य नाम की ओषधि।

चवैया—पु०=चवाई।

चव्य (का)—पु० [स०√चर्व+ण्यत्, पृषो० चव्य+कन्—टाप्] चाब नाम की ओषधि। दे० 'चाब'।

चव्यजा—स्त्री०[स० चव्य√जन्(उत्पत्ति)+ड—टाप्] गजपीपल।

चव्या—स्त्री०[स० चव्य+टाप्]=चव्य।

चशक—स्त्री०[हिं० चसका] किसी विशिष्ट अवसर पर साहबो के यहाँ से बावर्चियो को मिलनेवाला भोजन।

चशम—स्त्री०=चश्म।

चशमा—पु० =चश्मा।

चश्म—स्त्री०[फा०] १ आँख। नयन। नेत्र। २ आँख की तरह का कोई छेद या रचना।

पद—चश्म बद्दूर=इसे बुरी नजर न लगे।(कोई अच्छी या सुन्दर चीज देखने पर)

चश्मक—स्त्री० [फा० चश्म] १ आँखो से किया जानेवाला इशारा या सकेत। २ मनमुटाव। वैमनस्य। ३ ऐनक। चश्मा।

चश्मदीद—वि० [फा०] १ जो आँखो से देखा हुआ हो। प्रत्यक्ष देखा हुआ। २ प्रत्यक्षदर्शी। जैसे—चश्मदीद गवाह।

चश्मदीद गवाह—पु० [फा०] वह साक्षी जो अपनी आँखो से देखी हुई घटना कहे। वह गवाह जो चश्मदीद माजरा (आँखो देखी घटना) बयान करे।

चश्मनुमाई—स्त्री०[फा०] आँखे दिखा या निकालकर किसी को डराना। भयभीत करना।

चश्मपोशी—स्त्री०[फा०]जान-बूझकर किसी अनुचित बात को टाल जाना। उपेक्षा करना।

चश्मा—पु० [फा० चश्म] १ जल-स्रोत। सोता।२ आँखो पर लगाया जानेवाला धातु आदि का एक प्रकार का प्रसिद्ध ढाँचा या कमानी जिसमे लगे हुए शीशो की सहायता से वस्तुएँ अधिक स्पष्ट दिखाई पडती हैं। क्रि० प्र—लगाना।

चष—पु० [स० चक्षुस्] नेत्र। आँख।

चषक—पु० [स०√चष् (पीना)+क्वुन्—अक] १ वह पात्र जिसमे ढालकर शराब पी जाती है। शराब पीने का प्याला। २ मधु।

चषचोल—पु०[हिं० चष+चोल=वस्त्र] आँख पर की पलक।

चषण—पु० [स०√चष् (खाना)+ल्युट्—अन] १ भोजन करना। खाना। २ वध करना। मार डालना। ३ क्षय या नाश करना।

चषाल—पु० [स०√चष्(बाँधना) आलच्] लकडी की वह गराडी जो यज्ञ के खभे मे लगी रहती थी और जिसमे बलि-पशु की रस्सी बाँधी जाती थी।

चस—स्त्री० [अनु०] गोटे आदि की पतली धारी जो मगजी के आगे पहने जानेवाले वस्त्रो मे लगाई जाती है।

चसक—स्त्री० [अनु०] १ हलका दर्द या पीडा। कसक। टीस। २ गोटे आदि की वह पतली गोट जो मगजी के आगे लगाई जाती है।

पु०=चषक ।

चसकना—अ०[हिं० चसक] शरीर के किसी अग मे रह-रहकर हल्की पीडा होना। टीस उठना।

चसका—पु०=चस्का।

चसकी—स्त्री० दे० 'चसका'।

चसना—अ०[सं० चषण] १ प्राण त्यागना। मर जाना। २ ठगा जाना।

अ०[हिं० चाशनी] १ दो चीजो का आपस मे चिपक, लग या सट जाना। २ कपडे आदि का खिंचने पर फट या मसक जाना।

चसम—पु० [देश०] रेशम के तागो मे निकला हुआ निरर्थक अश। स्त्री०=चश्म।

चसमा†—पु०=चश्मा।

चस्का—पु०[स० चषण] १ किसी काम या बात से होनेवाली तृप्ति या मिलनेवाले सुख के कारण फिर-फिर वैसी ही तृप्ति या सुख पाने के लिए मन मे होनेवाली लालसापूर्ण प्रवृत्ति या मनोवृत्ति। चाट। जैसे—जूए या शराब का चस्का, गाना सुनने या बाते करने का चस्का। २ उक्त प्रकार की प्रवृत्ति का वह पुष्ट रूप जो आदत या बान बन गया हो। लत। क्रि० प्र०—पडना।—लगना।—लगाना।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग मुख्यत ऐसे ही कामो या बातो के सबध मे होता है जो लोक मे या तो कुछ बुरी या प्राय अनावश्यक और व्यर्थ की समझी जाती है। साधारणत भगवद्भक्ति का चस्का' या 'साहित्य- सेवा का चस्का' सरीखे प्रयोग देखने-सुनने मे नही आते।

चस्पॉ—वि० [फा०] १ गोद, लेई, सरेस आदि की सहायता से किसी पर चिपकाया, लगाया या सटाया हुआ। २ किसी के साथ अच्छी तरह चिपका या लगा हुआ।

चस्म†—स्त्री०=चश्म।

चस्सी—स्त्री०[देश०] हथेली या पैर के तलुए मे होनेवाली सुरसुराहट या हलकी खुजली।

चह—पु०[स० चय] १ नदी के किनारे बनाया हुआ वह चबूतरा जिस पर चढकर मनुष्य, पशु आदि नाव पर जाते है। पाट। २ नदी पार करने के लिए बनाया हुआ पीपे आदि का अस्थायी पुल।

स्त्री०[फा० चाह] गड्ढा।

चहक—स्त्री०[हिं० चहकना] १ चहकने की क्रिया या भाव। २ चिडियो का चहचह शब्द।

†पु० दे० 'चहला'।

चहकना—अ०[अनु०] १ कुछ पक्षियो का प्रसन्न होकर चहचह शब्द करना। जैसे—चिडियो का चहकना। चहचहाना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, उमग मे आकर प्रसन्नतापूर्वक खूब बोलना या बढ-बढकर या अधिक बाते करना। (परिहास और व्यग्य)

चहका—पु०[देश०] १ लकडी, जिसका कुछ अश जल रहा हो। जलती हुई लकडी। लुआठी। लूका।

क्रि० प्र०—लगाना।

२ बनेठी।

पु०[स० चय] ईंट या पत्थर का बना हुआ फर्श।

†पु० दे० 'चहला'।

चहकार—स्त्री०[हिं० चहकना+कार (प्रत्य०)] चिडियो के चहकने का शब्द।

चहकारना†—अ०=चहकना।

चहचहा—पु०[हिं० चहचहाना] १ चहचहाने की क्रिया या भाव। चहक। २ खूब जोरो से होनेवाला हँसी-ठट्ठा।

वि० १ आनद या प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला २। तुरन्त का। ताजा।

चहचहाना—अ० [अनु०] कुछ पक्षियो का उमग मे आकर या प्रसन्न होकर चहचह शब्द करना। चहकना।

चहचहाहट—स्त्री० [हिं० चहचहाना+हट(प्रत्य०)] चहचहाने या चहकने की क्रिया या भाव।

चहटा—पु० [देश०] १ कीचड। पक। २ दलदल।

चहता—वि०[स्त्री० चहती] =चहेता (दे०)।

चहनना—स० [हिं० चहलना] १ कुचलना। चहलना। रौदना। २ अच्छी तरह मिलाना। मिश्रित करना। ३ खूब जी भरकर या अच्छी तरह खाना।

चहना†—अ०=चाहना।

चहनि*—स्त्री० [हिं० चाहना=देखना] १ देखने की क्रिया या भाव। २ दृष्टि। नजर।

†स्त्री०=चाह (अभिलाषा)।

चह-बच्चा—पु० [फा० चाह=कुआँ+बच्चा] १ पानी, विशेषत गदा या मैला पानी भरने का छोटा गड्ढा या हौज। २ वह गड्ढा जो गाड या छिपाकर धन रखने के लिए बनाया गया हो।

चहर†—वि० [हिं० चाह या चाहना] जो चाहा जा सके, अर्थात् उत्तम, वाछनीय या श्रेष्ठ।

वि०[चहचह से अनु०] १ चपल। चुलबुला। २ तीखा। तेज। स्त्री० १ जोर की ध्वनियाँ या शब्द। २ शोर-गुल। हो-हल्ला। ३ उत्पात।

स्त्री०[हिं० चहल] आनन्दोत्सव। धूम-धाम।

स्त्री०[हि० चहरना] चहचहानेवाली चिडिया।

पद—चहर की बाजी=चिडियो का-सा खेल। [illegible] तुच्छ काम या बात। उदा०—यो ससार चहर की बाजी, साँझ पडयाँ उठ जासी।—मीराँ।

चहरना†—अ०[हिं० चहचह या चहर] १ चहचह शब्द करना। २ आनदित होना।

स० [?] १ कुचलना। २ खूब अच्छी तरह खाना।

चहराना—स०[हिं० चहरना का स०] किसी को चहरने मे प्रवृत्त करना। अ० १ =चहरना। २ =चर्राना। ३ =चहकना।

चहरुम—वि० दे०'चहारुम'।

चहल—स्त्री०[हिं० चहलना या चहला] १ चहलने की क्रिया या भाव। २ आनन्द मनाने की क्रिया या भाव।

पद—चहल-पहल। (देखे)

३ कीचड। ४ दलदल। ५ कीचड से भरी हुई वह जमीन जिसमे हल से जोताई करने की आवश्यकता न पडती हो।

वि० १ अच्छा। बढिया। २ चटकीला। तेज। ३ चचल। चुलबुला।

चहल-कदमी—स्त्री०[हिं० चहल+फा० कदम] सुखपूर्वक तथा धीरे-धीरे चलने की क्रिया या भाव।

चहलना—स०[देश०] पैरो से कुचलना या रौदना।
अ० धीरे-धीरे अथवा मस्ती से चलना या सैर करना। टहलना।

चहल-पहल—स्त्री० [हिं० चहल+पहल, अनु०] १ किसी स्थान पर किसी कारण से बहुत से लोगो के आते-जाते रहने की अवस्था या भाव। रौनक। २ उक्त के कारण होनेवाला आनन्दोत्सव। धूम-धाम।
क्रि० प्र०—मचना।

चहला—पु० [स० चिकिल] १ कीचड। २ कीचड से भरी हुई जमीन। दलदल। उदा०—इक भीजे चहले परे, बूडे-बहे हजार।—बिहारी।

चहली—स्त्री० [देश०] कूएँ मे से पानी खीचने की चरखी। गराडी। घिरनी।

चहलुम†—पु०=चेहलुम।

चहवारा—वि०[हिं० चहना+वारा (वाला)] चहचहानेवाला।
पु० पक्षी।

चहा†—पु०[?] चितकबरे रग का एक प्रकार का पक्षी जो कीचड मे के कीडे-मकोडे खाता है और जिसका मास बहुत स्वादिष्ट माना जाता है।

चहार—वि०[फा०] तीन और एक। चार।
पु० चार की सख्या अथवा उसका सूचक अक।

चहार-चद—वि०[फा०] चार गुना। चौगुना।

चहारदीवारी—स्त्री०[फा०] किसी मैदान या स्थान को चारो ओर से घेरने के लिए बनाई जानेवाली दीवार या दीवारे। प्राचीर।

चहार-यारी—पु०[फा०] मुसलमानो का शीया सम्प्रदाय जो मुहम्मद साहब के चारो यारो या साथियो का भक्त और समर्थक है।

चहारशबा—पु०[फा० चहारशब] बुधवार।

चहारुम—वि०[फा०] चौथाई।
पु० चौथाई अश या भाग। चतुर्थांश।

चहियत—अव्य०=चाहिए। (ब्रज)

चही-चहा—पु० [हिं० चाहना=देखना] परस्पर देखने की क्रिया या भाव।

चहुँ*—वि०[हि० चौ=चार] चारो। जैसे—चहुँ ओर।

चहुँक†—स्त्री०=चिहुँक।

चहुँकना†—अ०=चौकना।

चहुँटना*—अ०=चिहुँकना।
स० [?] चोट पहुँचाना।

चहुँटी—स्त्री०[?] चुटकी।

चहु-मुखा—वि०=चौमुखा।

चहुरा—पु०=चौधरा।
वि०=चौहरा।

चहुरी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा बरतन।

चहुवान—पु०=चौहान।

चहूँ—वि०=चहुँ० (चारो)।

चहूँटना—अ०=चिमटना।

चहेटना—स०[?] १. किसी चीज को दबा या निचोडकर उसका रस या सार निकालना। गारना। २ खदेडना। भगाना। ३ दे०'चपेटना'।

चहेता—वि०[हिं० चाहना+एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे कोई बहुत अधिक चाहता हो। । प्रिय। जैसे—चहेता लडका, चहेती स्त्री।

चहेल—स्त्री०[हिं० चहला] १ चहला। कीचड। २ दलदल।

चहोडना—स०[?] १ चारो ओर से अच्छी तरह दबाते हुए पीटना या मारना। उदा०—हड ब्रह्मड चहोडिया मानू बेस्या अत।—गोरखनाथ। २ पौधो को एक जगह से उखाडकर दूसरी जगह लगाना। रोपना। ३ देख-भाल कर अपने अधिकार मे लेना। सँभालना। सहेजना। ४ उपस्थित या वर्तमान करना। ५ कर दिखाना। ६ अच्छी तरह से कोई काम करना।

चहोडा—पु० [हिं० चहोडना] जडहन धान, जो चहोड या रोपकर तैयार किया जाता है।

चहोरना—स०=चहोडना।

चहोरा—पु०=चहोडा।

चाँइयाँ—पु०[हिं० चाँई=एक जाति] १ लोगो की चीजे उठा या चुरा ले जानेवाला। उचक्का। २ बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

चाँई—पु०[?]१ नैपाल की एक जगली जाति, जो किसी समय डाके डाला करती थी। २ दे० 'चाँइयाँ'।
स्त्री०[?]१ एक रोग जिसमे सिर मे बहुत-सी फुसियाँ निकल आती है, जिनसे बाल झड जाते हैं। २ उक्त प्रकार की फुसियाँ।
वि० जिसके सिर के बाल झड गये हो। गजा।

चाँई चूँई—स्त्री०[?] सिर मे होनेवाली एक प्रकार की छोटी फुसियाँ जिनसे बाल गिर जाते है।

चाँक—पु०[हि० चौ=चार+अक=चिह्न] १ काठ की वह थापी जिस पर कुछ चिह्न खुदे होते है और जिससे खलिहान मे अन्न की राशि के चारो ओर निशान लगाये जाते है। २ उक्त प्रकार से लगाया हुआ चिह्न या निशान। ३ टोटके के लिए शरीर के किसी पीडित स्थान के चारो ओर खीचा जानेवाला घेरा। गोठ।

चाँकना—स०[हिं० चाँक] १ खलियान मे अनाज की राशि के चारो ओर मिट्टी, राख, ठप्पे आदि से निशान लगाना। चाकना। २ रेखा खीचकर सीमा निर्धारित करना। ३ पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।

चाँका—पु० १ दे० 'चाँक'। २ दे० 'चक्का'।

चाँगज—पु०[देश०] एक प्रकार का तिब्बती बकरा।

चाँगला—वि०[मरा० स० चग से] [स्त्री० चाँगली] १ अच्छा। बढिया। २ स्वस्थ। तदुरुस्त। ३ हृष्ट-पुष्ट। तगडा। ४ चतुर। चालाक।
पु० घोडो का एक प्रकार का रग।

चाँगेरी—स्त्री०[स०] अमलोनी नाम का साग।

चाँच*—स्त्री०=चोच। (राज०) उदा०—चाँच कटाऊँ पपइयारे।—मीराँ।

चाँचर—स्त्री०[स० चर्चरी] १ वसन्त ऋतु मे गाया जानेवाला एक राग। जिसके अन्तर्गत होली, पलग, लेद आदि गाने होते है। चर्चरी। २ परती छोडी हुई जमीन। ३ एक प्रकार की मटियार जमीन। ४ कच्चे मकानो के दरवाजे पर लगाई जानेवाली टट्टी।
†पु०[देश०] सालपान नामक क्षुप।

चाँचरि—स्त्री०=चाँचर।

चाँचल्य—पु० [स० चचल+ष्यञ्] चचल होने की अवस्था, गुण या भाव। चचलता।

चाँचिया—पु० [?] १ एक छोटी जाति जो चोरी, डाके आदि से निर्वाह करती है। २ चोर। ३ उचक्का। ४ डाकू। लुटेरा। ५ बहुत बडा धूर्त्त व्यक्ति। काँइयाँ।

वि० [हिं० चाँई ?] चोरो, डाकुओ आदि का। जैसे—चाँचिया जहाज।

चाँचियागिरी—स्त्री० [हिं० चाँचिया+फा० गीरी (प्रत्य०)] चाँचिया लोगो का काम या व्यवसाय। चोरी करने या डाके डालने का धधा।

चाँचिया जहाज—पु० [हि० चाँई ?] समुद्री डाकुओ का जहाज।

चाँची—पु०=चाँचिया।

चाँचु†—स्त्री०=चोच।

चाँट—पु० [हिं० छीटा] १ हवा मे उडते हुए जल-कणो का प्रवाह जो तूफान आने पर समुद्र मे उठता है। (लश०)

मुहा०—चाँट मारना=जहाज के बाहरी किनारे के तख्तो पर या पाल पर पानी छिडकना। (यह पानी इसलिए छिडका जाता है जिसमे तख्ते धूप के प्रभाव से चटक न जायँ और पाल कुछ भारी हो जाय।)

चाँटा—पु० [हिं० चिमटना] [स्त्री० चाँटी] च्यूँटा। चीटा।

पु० [अनु०] हथेली तथा हाथ की उँगलियो से किसी के गाल पर किया जानेवाला प्रहार। तमाचा। थप्पड।

क्रि० प्र०—जडना।—मारना।—लगाना।

चाँटी—स्त्री० [हि० चाँटा] १ च्यूँटी। चीटी। २ मध्य युग मे कारीगरो पर लगनेवाला एक प्रकार का कर। ३ तबले की सजाफदार मगजी जिस पर तबला बजाते समय तर्जनी उँगली से आघात किया जाता है। ४ तबले के उक्त अश पर तर्जनी उँगली से किया जानेवाला आघात। ५ उक्त आघात के कारण होनेवाली मधुर ध्वनि या शब्द।

चाँड—वि० [स० चड] १ उग्र। तीव्र। प्रबल। २ बलवान्। शक्तिशाली। ३ उद्दड। उद्धत। ४ किसी की तुलना मे बढकर। श्रेष्ठ। ५ अघाया हुआ। तृप्त। सतुष्ट। ६ चतुर। चालाक।

स्त्री० [स० चड=प्रबल] १ वह वस्तु या रचना जो किसी दूसरी वस्तु विशेषत छत या दीवार को गिरने या ढहने से रोकने के लिए लगाई या बनाई जाती है। टेक। थूनी।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२ ऐसी प्रबल आवश्यकता या कामना जिसकी पूर्त्ति तत्काल होने की अभिलाषा हो। ३ उक्त प्रकार की आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए मन मे होनेवाली आकुलता या बेचैनी।

मुहा०—चाँड सरना=उक्त प्रकार की आवश्यकता पूरी हो जाना अथवा उस आवश्यकता की पूर्त्ति होने पर मन की आकुलता या बेचैनी दूर होना।

४ तीव्रता। प्रबलता। ५ किसी ओर से पडनेवाला ऐसा दबाव जिसके फलस्वरूप किसी को विवश होकर कोई उद्दिष्ट कार्य करना पडे। जैसे—जब तक चाँड नही लगाओगे, तब तक वह तुम्हारा काम नही करेगा।

चाँडना—स० [हि० चाँड] १ चाँड या टेक लगाना। २ खोदकर उखाडना या गिराना। ३ खोदकर गहरा करना। ४ नष्ट-भ्रष्ट करना। उजाडना। ५ कसना या दबाना। उदा०—माया लोभ मोह है चाँडे, काल नदी की धार।—तुलसी।

चाडाल—पु० [स० चण्डाल+अण्] [स्त्री० चाडाली, चाडालिनी] १ एक प्राचीन अन्त्यज, नीच और बर्बर जाति। पुक्कस। मातग। श्वपच। २ बहुत ही दुष्ट, नीच और पतित व्यक्ति। (गाली)

चाडालिका—स्त्री० [स० चण्डाल+वुञ्–अक, चाडालक+टाप्, इत्व] १ चडालवीणा। २ दुर्गा। ३ एक प्रकार का पौधा।

चाडालिनी—स्त्री० [स० चाडाल+इनि–ङीप्] एक देवी।

चाडाली—स्त्री० [स० चाडाल+ङीष्] १ चाडाल जाति की स्त्री। २ [हि०] चाडाल होने की अवस्था, गुण या भाव। ३ चाडाल का कार्य।

चाँड़िला—वि० [स० चड] [स्त्री० चाँडिली] १ उग्र। प्रचड। २ उद्धत। नटखट। शोख। ३ बहुत अधिक।

चाँडी†—स्त्री०=चोगी या कीप।

चाडू†—पु०=चडू।

चाँढा—पु० [हि० चाँड] जहाज के दो तख्तो के बीच का जोड। (लश०)

चाँद—पु० [स० चद्र, पा० प्रा० प० चद, उ० ब० गु० ने० चाँद, सिं० चडु चद्रु, मरा० चाँद, चाँदोबा] १ चद्रमा।

मुहा०—चाँद का खेत करना=चद्रमा के निकलने के समय उसकी आभा का चारो ओर फैलना। **चाँद चढना**=चद्रमा का ऊपर आना या उदय होना। **चाँद पर थूकना**=ऐसा अनुचित और निन्दनीय कार्य करना जिसका परिणाम उल्टे कर्त्ता पर पडे। जैसे—किसी ऐसे महात्मा पर कलक लगाना जिसके फल-स्वरूप स्वय अपमानित होना पडे। (ऊपर की ओर थूकने से अपने ही मुँह पर थूक पडती है। इसी से यह मुहा० बना है) **चाँद पर धूल डालना**=किसी निर्दोष अथवा परम पवित्र पर कलक लगाना।

पद—चाँद का कुडल या मडल=बहुत हल्की बदली पर प्रकाश पडने के कारण चद्रमा के चारो ओर दिखायी देनेवाला वृत्त या घेरा। **चाँद का टुकड़ा**=परम सुन्दर वस्तु या व्यक्ति। **चाँद दीखे**=शुक्ल पक्ष की द्वितीया के बाद। जैसे—चाँद दीखे आना तुम्हे काम दे दिया जायगा। **चाँद-सा मुखडा**=अत्यन्त सुन्दर मुख। **आज किधर चाँद निकला** ?=(क) आज कैसे दिखाई पडे ? (ख) [illegible] नई बात कैसे हुई ? (जब कोई मनुष्य बहुत दिनो पर दिखाई पडता है तब उससे कहा जाता है)।

२ चाद्रमास। महीना। जैसे—आज एक चाँद बाद आप दिखाई पडे है। ३ मुसलमानी मास गणना के अनुसार महीने का पहला दिन जो उनके हिसाब से शुक्ल पक्ष की द्वितीया को आरम्भ होता है। जैसे—चाँद के चाँद तनख्वाह मिलना। ४ द्वितीया के चद्रमा के आकार का एक गहना। ५ चद्रमा के आकार-प्रकार का कोई अर्द्ध-गोलाकार अथवा मडलाकार धातु-खड या रचना। जैसे—ढाल पर का चाँद, चाँदमारी मे निशाना साधने का चाँद, लप की चिमनी के पीछे उसका प्रकाश प्रत्यावर्त्तित करने के लिए लगाया जानेवाला चाँद। ६ घोडे के माथे पर की एक प्रकार की भौरी। ७ भालू की गरदन के नीचे का सफेद बालोवाला घेरा। (कलदर) ८ सिर पर पहना जानेवाला चद्रमा के आकार का मडलाकार ताज। ९ पशुओ के मस्तक पर का गोलाकार सफेद या किसी भिन्न रग का दाग या फूल। १० कलाई पर गोदा जानेवाला मडलाकार गोदना।

स्त्री० १ खोपडी का सबसे ऊँचा और मध्य भाग। २ खोपडी।

मुहा०—चाँद पर बाल न छोडना=(क) सिर पर इतना मारना कि बाल झड जायँ। (ख) सब कुछ ले लेना, कुछ बाकी न छोडना।

चाँद-तारा—स्त्री०[हि० चाँद+तारा] १ एक प्रकार की बढिया मलमल जिस पर चाँद और तारो के आकार की बूटियाँ बनी होती थी। २ एक प्रकार का कनकौआ या पतग जिस पर उक्त प्रकार की आकृतियाँ बनी होती है।

चाँदना—पु०[हि० चाँद+ना (प्रत्य०)] १ उजाला। प्रकाश। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना।

मुहा०—(किसी जगह) चाँदना कर देना=सब कुछ उडा ले जाना। कुछ भी बाकी न छोडना। जैसे—चोरो ने घर पर चाँदना कर दिया।

चांदनिक—वि० [स० चन्दन+ठक्-इक] १ चदन का। चदन-सबधी। २ चदन मे होने, रहने अथवा उससे बननेवाला। ३ जिसमे चदन की महक हो। चदन से सुवासित।

चाँदनी—स्त्री० [स० चद्र>चद्रण, दे० प्रा० चदिण, प्रा० चद्ण, बँ०, उ० चादनी, गु० चादरणु, मरा० चादणे] १ चाँद का प्रकाश। रात के समय होनेवाला चद्रमा का उजाला या प्रकाश। कौमुदी। चद्रिका। ज्योत्स्ना।

क्रि० प्र०—खिलना।—छिटकना।—फैलना।—बिछना।

मुहा०—चाँदनी मारना=(क) लोक-प्रवाद के अनुसार चाँदनी का बुरा प्रभाव पडने के कारण घाव या जख्म का अच्छा न होना। (ख) चाँदनी पडने या लगने के कारण घोडो को एक प्रकार का आकस्मिक रोग होना।

पद—चाँदनी रात=वह रात जिसमे चद्रमा का प्रकाश चारो ओर फैला हो। शुक्ल पक्ष की रात्रि। **चार दिन की चाँदनी**=अस्थायी या क्षणिक वैभव या सुख। स्त्री० [हि० चदनी] १ बिछाने की बडी सफेद चादर। सफेद फर्श। **विशेष**—कहते है कि पहले नूरजहाँ ने अपने महल मे चदन के रग का एक फर्श बनवाया था, उसी से यह शब्द 'बिछाने की चादर' के अर्थ मे चल पडा।

२ छत ~~पर या~~ ऊपर की ओर तानने का कपडा। छतगीर। ३ गुल-चाँदनी नाम का पौधा और उसका फूल।

चाँद-बाला—पु० [हि० चाँद+बाला (कान मे पहनने की बडी बाली)] कान मे पहनने का एक प्रकार का बाला जिसके नीचे का भाग अर्द्धचन्द्राकार होता है।

चाँदमारी—स्त्री०[हि० चाँद+मारना] १ कपडे, तख्ते, दीवार आदि पर बने हुए चद्र-चिह्नो पर तीर, बन्दूक आदि से निशाने लगाने की अभ्यासात्मक क्रिया। २ वह मैदान जहाँ उक्त प्रकार की क्रिया होती है।

चाँदला—वि०[हि० चाँद] १ (दूज के चद्रमा के समान) टेढा। वक्र। २ जिसके सिर के बाल झड गये हो। चँदला। गजा।

चाँद-सूरज—पु०[हि० चाँद+सूरज] एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ चोटी मे गूँधकर पहनती है।

चाँदा—पु०[हि० चाँद] १ चाँदमारी के मैदान मे वह स्थान जहाँ से दूरबीन लगाई जाती है। २ वह पटरा जिस पर निशाना लगाने या अभ्यास करने के लिए छोटे-छोटे चिह्न बने रहते है। ३ खेत, भूमि आदि की नाप मे वह केन्द्र-स्थल जहाँ से दूरी की नाप लेकर हद बाँधी जाती है। ४ छप्पर का पाखा जो प्राय चन्द्राकार होता है। ५ ज्यामिति मे, धातु, प्लास्टिक, सीग आदि का अर्द्ध-वृत्ताकार एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे कोण आदि नापे जाते है। (प्रोट्रेक्टर)

चाँदी—स्त्री०[हि० चाँदनी] १ एक प्रसिद्ध सफेद चमकीली कीमती धातु जो अपेक्षया नरम होती है और जिसके गहने, बरतन, सिक्के आदि बनते है। इसका गुरुत्व सोने के गुरुत्व का आधा होता है। इससे कई एक ऐसे क्षार बनाये जाते है जिन पर प्रकाश का प्रभाव बहुत विलक्षण पडता है। रजत। रौप्य।

मुहा०—चाँदी कर डालना या कर देना=जलाकर राख कर डालना। (गाँजे, तमाकू आदि की भरी हुई चिलम के सबध मे प्रयुक्त।)

२ चाँदी के सिक्को के आधार पर, धन-सपत्ति। दौलत।

मुहा०—चाँदी बरसना=खूब आमदनी होना। **चाँदी काटना**=प्राय अनुचित रूप से खूब रुपया पैदा करना। खूब धन कमाना। **चाँदी की ऐनक लगाना**=घूस या रिश्वत लेकर ही किसी का काम करना। जैसे—हमारे तहसीलदार साहब चाँदी की ऐनक लगाते है। **(किसी की) चाँदी होना**=बहुत अधिक आय या आर्थिक लाभ होना।

पद—चाँदी का जूता=वह धन जो किसी को अपने अनुकूल या वश मे करने को दिया जाता है। घूस या रिश्वत के रूप मे दिया जानेवाला धन। **चाँदी का पहरा**=आर्थिक दृष्टि से पूर्णता, सुख-समृद्धि के दिन।

३ खोपडी का मध्य भाग। चाँद। चँदिया।

मुहा०—चाँदी खुलवाना=चाँद के ऊपर के बाल मुडाना।

४ एक प्रकार की छोटी मछली। ५ चूने की सफेदी। (क्व०) ६ सफेद रग अथवा सफेद रग की कोई वस्तु। ७ जल जाने पर किसी चीज की होनेवाली सफेद राख। जैसे—तमाकू जलकर चाँदी हो गया।

चान्द्र—वि०[स० चन्द्र+अण्] चद्रमा-सबधी। चद्रमा का। जैसे—चान्द्र मास, चान्द्रवत्सर।

पु० १ चान्द्रायण व्रत। २ चद्रकात मणि। ३ मृगशिरा नक्षत्र। ४ पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ५ अदरक। आदी।

चान्द्रक—पु० [स० चान्द्र√कै (प्रतीत होना)+क] सोठ।

चान्द्र-पुर—पु०[कर्म०स०] बृहत्सहिता के अनुसार एक नगर जिसमे एक प्रसिद्ध शिवमूर्ति होने का उल्लेख है।

चान्द्रमस—वि०[स० चन्द्रमस्+अण्] चद्रमा सबधी।

पु० मृगशिरा नक्षत्र।

चान्द्रमसायन—पु०[स० चान्द्रमसायनि, पृषो० सिद्धि] बुध ग्रह।

चान्द्रमसायनि—पु०[स० चद्रमस्+फिञ्-आयन] बुध ग्रह।

चान्द्रमसी—स्त्री० [स० चान्द्रमस+ङीप्] बृहस्पति की पत्नी का नाम।

चान्द्र-मास—पु० [कर्म० स०] वह मास जो चद्रमा की गति के अनुसार निश्चित होता है। उतना काल जितना चद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने मे लगता है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक का समय।

चान्द्र-वत्सर—पु०[कर्म०स०] =चान्द्रवर्ष।

चान्द्र-वर्ष—पु०[कर्म०स०] बारह चान्द्र मासो का समय। (यह सौर वर्ष से लगभग १० दिन छोटा है।)

चाद्रव्रतिक—वि० [स० चान्द्रव्रत+ठन्–इक] चाद्रायण व्रत करनेवाला।
पु० राजा।

चाद्रायण—पु०[चद्र-अयन, ब-स०, णत्व, दीर्घ] [वि० चाद्रायणिक] १ महीने भर का एक व्रत जिसमे चद्रमा के घटने-बढने के अनुसार आहार के कौर या ग्रास घटाने-बढाने पडते है। २ २१ मात्राओ का एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ११ और १० पर यति होती है। पहले विराम पर जगण और दूसरे पर रगण होना आवश्यक होता है।

चाद्रायणिक—वि०[स० चान्द्रायण+ठञ्–इक] चाद्रायण व्रत करनेवाला।

चाद्रि—पु०[स० चन्द्र+इञ्] बुध ग्रह।

चाद्री—स्त्री०[स० चान्द्र+ङीप] १ चद्रमा की स्त्री। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३ सफेद भटकटैया।
वि०=चाद्र।

चाँप—पु०, स्त्री०=चाप। (दे०)
पु० [हिं० चपा] चपा का फूल।

चाँपना—स०=चापना।

चापिला—स्त्री०[स०√चम्प्+अङ्+इलच्–टाप्] एक प्राचीन नदी। (कदाचित् आधुनिक चबल।)

चापेय—पु०[स० चम्पा+ढक्–एय] १ चपक। २ नागकेसर। ३ किंजल्क। ४ सुवर्ण। ५ धतूरा।

चापेयक—पु०[स० चाम्पेय+कन्] किजल्क। केसर।

चाँयँचाँयँ—स्त्री०[अनु०] व्यर्थ की बाते। बकवाद।

चाँवँ चाँवँ—स्त्री० =चाँयँ चाँयँ।

चाँवर†—पु०=चावल।
†स्त्री०=चँवर।

चा†—विभ० [मरा० चा (विभक्ति)] [स्त्री० ची] का (विभक्ति)। उदा०—देस-देस चा देसपति।—प्रिथीराज।
स्त्री०=चाप।

चाइ*—पु०=चाव।

चाइँ†—पु०=चाँई।

चाउ†—पु०=चाव।

चाउर†—पु०=चावल।

चाऊ—पु०[देश०] ऊँट या बकरे का (के) बाल। (पहाडी बोली)

चाक—पु० [स० चक्र, प्रा० चक्क] १ किसी प्रकार का चक्कर या घूमने वाली गोलाकार चीज। २ वह गोल पत्थर जो एक कील पर घूमता है और जिस पर मिट्टी का लोदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते है। कुलाल चक्र। ३ गाडी, रथ आदि का पहिया। ४ कूएँ से पानी खीचने की गराडी। चरखी। ५ मिट्टी का वह गोलाकार छोटा पात्र जिसमे मिसरी के कूजे जमाये जाते है। ६ खलिहान मे अन्न की राशि पर लगाया जानेवाला चिह्न या छाप। थापा। ७ हथियारो पर सान रखने या उनकी धार तेज करने का चक्कर। ८ मिट्टी का वह थक्का या लोदा जो कूएँ से पानी निकालने की ढेकली के दूसरे सिरे पर जमाया रहता है। ९. मिट्टी का वह बरतन जिससे पकाने के लिए ऊख का रस कडाहे मे डालते है। १० किसी प्रकार का मडलाकार चिह्न या रेखा।
पु० [फा०] १ फटी या फाडी हुई चीज के बीच मे पडी हुई दरार या सधि। फटा हुआ अश या भाग। २ आस्तीन की खुली हुई मोहरी।
वि० फटा या फाडा हुआ। जैसे–दामन या सीना चाक करना।
वि० [तु०] १ हृष्ट-पुष्ट। २ दृढ। पक्का। मजबूत।
पद—चाक-चौबद। (देखे)
स्त्री० [अ० चॉक] खरिया मिट्टी। दुद्धी।

चाकचक—वि० [स० चाकचक्य] १ चारो ओर से सुरक्षित। २ दृढ। मजबूत। ३ दे० 'चाक-चौबद'।

चाकचक्य—स्त्री० [स० √चक् (तृप्ति) +अच +द्वित्व, चकचक+ष्यञ्] १ चमक-दमक। २ चकाचौध। ३ सुदरता। ४ शोभा।

चाकचिक्य—पु० [स०=चाकचक्य, पृषो० सिद्धि] १ चमक। २ चकाचौध।

चाक-चौबद—वि० [तु०+फा०] १ चारो ओर से ठीक और दुरुस्त। २ हर तरह से काम के लायक। ३ चुस्त। फुरतीला।

चाकट—पु० [देश०] हाथ मे पहनने का एक प्रकार का कडा।

चाकदिल—पु० [फा०] एक प्रकार का बुलबुल (पक्षी)।

चाकना—स० [हिं० चाक = चक्र] १ किसी ढेर या वस्तु को घेरने के लिए उसके चारो ओर विशेषत वृत्ताकार रेखा खीचना। २ उक्त के आधार पर सीमा निर्धारित करने के लिए रेखा खीचना। ३ खलिहान मे पडे हुए अन्न की राशि पर चिह्न या निशान लगाना, जिसमे से यदि कोई कुछ चुरा ले जाय तो पता लग जाय। ४ पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।
†स० [फा० चाक] चाक करना। फाडना।

चाकर—पु० [फा०] [स्त्री० चाकरानी] १ दास। भृत्य। २ नौकर। सेवक। उदा०—म्हॉने चाकर राखो जी।—मीराँ।

चाकरनी†—स्त्री० = चाकरानी।

चाकरानी—स्त्री० [हिं० चाकर का स्त्री०] दासी। नौकरानी।

चाकरी—स्त्री० [फा०] १ चाकर का काम, पद या भाव। २ नौकरी। ३ टहल। सेवा।
क्रि० प्र०—बजाना।

चाकल†—वि० = चकला (चौडा)।

चाकलेट—पु० [अ० चॉकलेट] एक प्रकार की पाश्चात्य मिठाई।

चाकसू—पु० [स० चक्षुष्या] १ निर्मली या बनकुलथी का पौधा। २ उक्त पौधे के बीज जिनका चूर्ण आँख के कुछ रोगो मे उपयोगी होता है।

चाका—पु० १ =चाक। २ = चक्का (पहिया)।

चाकी—स्त्री० [स० चक्र] बिजली। वज्र।
क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।
स्त्री० [हिं० चक्की या फा० चाक?] पटे या बनेठी का एक प्रकार का आवात या वार जो सिर पर किया जाता है।
†स्त्री० = चक्की।

चाकू—पु० [तु०] तरकारी, फल आदि चीजे काटने, छीलने आदि के काम आनेवाला लोहे का धारदार एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जो लकडी आदि के दस्ते मे जडा होता है। छुरी।

चाक्र—वि० [स० चक्र+अण्] १ चक्र या पहिये से सबध रखनेवाला। २ जिसकी आकृति चक्र या पहिये जैसी हो। ३ जो चक्रो या पहियो की सहायता से चलता हो। ४ (युद्ध) जो चक्रो की सहायता से हो।

चाक्रायण—पु० [स० चक्र+फञ्—आयन] चक्र नामक ऋषि के वशधर।

चाक्रिक—पु० [स० चक्र+ठक्—इक] १ दूसरो की स्तुति गानेवाला। चारण। भाट। २ वह जो किसी प्रकार का चक्र चलाकर जीविका निर्वाह करता हो। जैसे—कुम्हार, गाडीवान, तेली आदि। ३ सहचर। साथी। वि० १ चक्र के आकार का। गोलाकार। २ चक्र-सबधी। ३ किसी चक्र या मडली मे रहने या होनेवाला।

चाक्रिका—स्त्री० [स० चाक्रिक+टाप्] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

चाक्रेय—वि० [स० चक्र+ढञ्—एय] चक्र-सबधी। चक्र का।

चाक्षुष—वि० [स० चक्षुस्+अण] १ चक्षु-सबधी। २ जो चक्षुओ या नेत्रो से जाना या देखा जा सके। जिसका बोध आँखो से होता हो।

पु० १ न्याय मे वह प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध आँखो से होता या हो सकता हो। २ पुराणानुसार छठे मन्वतर का नाम। ३ स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम।

चाक्षुष-यज्ञ—पु० [स० कर्म० स०] अच्छी, मनोरजक और सुदर चीजो, दृश्य आदि देखकर आँखे तृप्त करने की क्रिया। जैसे—अभिनय, नृत्य आदि देखना।

चाख—पु० [स० चाष] नीलकठ (पक्षी)।

चाखना†—स० = चखना।

चाखुर†—स्त्री० [देश०] खेतो आदि को निराकर निकाली हुई घास।

†स्त्री० [स० चिकुर] गिलहरी।

चाचपुट—पु० [स०] सगीत मे, ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक।

चाचर—पु० [स० चर्च =घायल करना] युद्धस्थल। रण-भूमि। (राज०) उदा०—चोटियाली कूदै चौसठि चाचरि।—प्रिथीराज।

स्त्री० = चाँचर (होली के गीत)।

चाचरि—स्त्री० = चाँचर।

चाचरी—स्त्री० [स० चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा—पु० [स० तात] [स्त्री० चाची] १ पिता का छोटा भाई। २ प्रौढ या वृद्ध आदमी के लिए सबोधन का एक शब्द। जैसे—चाचा नेहरू।

चाट—स्त्री० [हि० चाटना] १ चाटने की क्रिया या भाव। २ वह चटपटी चीज जो प्राय चरपरे और तीखे स्वाद के लिए ही चाटी या खाई जाती है। जैसे—कचालू, गोलगप्पा, दही का बडा आदि। ३ उक्त प्रकार की चीजे खाने की इच्छा या कामना। ४ उक्त प्रकार की चीजो से मिलनेवाले स्वाद के फल-स्वरूप पडनेवाली आदत या लत जो बार-बार वैसी चीजे खाने या पाने की इच्छा उत्पन्न करती या शौक लगाती है। जैसे—अफीम या मिठाई की चाट।

मुहा०—(किसी को) चाट पर लगाना = किसी को किसी चीज या बात का चस्का या स्वाद लगाकर उसका अभ्यस्त करना।

५ किसी प्रकार की प्रबल इच्छा या गहरी चाह। लोलुपता। जैसे—तुम्हे तो बस रुपये की चाट लगी है। ६ बुरी आदत। लत।

क्रि० प्र०—लगना।

पु० [स० √चट् (भेदन करना)+णिच्+अच्] १ वह जो किसी का विश्वासपात्र बनकर उसका धन हरण करे। ठग। २ उचक्का। उठाईगीरा।

चाटना—स० [स० चष्ट, दे प्रा० चट्ट, प्रा० चट्टई, बँ० चाटा, उ० चाटिबा, प० चट्टना, सि० चटणु, गु० चाटवूँ, ने० चाटनु, मरा० चाटणे] १ खाने की कोई गाढी या लसीली चीज मुँह मे ले जाने के लिए जबान से समेट कर उठाना। जैसे—हथेली पर रखा हुआ घी या शहद चाटना। २ उँगली से उक्त प्रकार की कोई चीज उठाकर जीभ पर रखना या लगाना। जैसे—चटनी या दवा चाटना। ३ कोई वस्तु अधिक मात्रा मे तथा लोलुपतापूर्वक खाना। जैसे—तुम्हे तो खीर अच्छी नही लगी, तुम्हारा भाई तो चाट-चाटकर खा गया है। ४ धन, सपत्ति आदि खा-पकाकर नष्ट करना। जैसे—लाखो रुपये की सपत्ति वह दो वर्षों मे चाट गया। ५ पशुओ का प्रेमपूर्वक किसी के शरीर पर बराबर जीभ फेरना। जैसे—कुत्ते का अपने पिल्ले या मालिक का हाथ चाटना।

मुहा०—चूमना चाटना = बार-बार प्रेमपूर्वक चुबन करना।

६ कीडो का किसी वस्तु को खा जाना। जैसे—ऊनी कपडे कीडे चाट गये।

चाटपुट—पु० दे० 'चाचपुट'।

चाटा—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चाटी] १ वह बरतन जिसमे कोल्हू का पेरा हुआ रस इकट्ठा होता है। नाँद। २ मिट्टी का बडा और मोटे दल का मटका। जैसे—अचार या आटे का चाटा (या चाटी)।

चाटी—पु० [हि० चटशाला मे का चट] चेला। शिष्य। जैसे—चेले-चाटी।

स्त्री० [हि० चाटा] मिट्टी का एक प्रकार का मटका। छोटा चाटा।

चाटु—पु० [स० √चट् (भेदन करना)+अ ुण्] १ बहुत ही प्रिय और मीठी बात। मधुर वचन। २ किसी बडे को केवल प्रसन्न करने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिसमे उसकी कुछ प्रशसा या बडाई हो। खुशामद। चापलूसी।

चाटुक—पु० [स० चाटु+कन्] मीठी बात।

चाटुकार—पु० [स० चाटु √कृ (करना)+अण्, उप० स०] १ खुशामद करनेवाला व्यक्ति। चापलूस। २ सोने के तार मे पिरोई हुई मोतियो की माला।

चाटुकारी—स्त्री० [स० चाटुकार+हि० (प्रत्य०)] झूठी प्रशसा या खुशामद करने का काम। चापलूसी। चाटु।

चाटुता—स्त्री० [स० चाटु] खुशामद। चापलूसी।

चाटु-पटु—वि० [स० त०] १ चाटुकार। खुशामदी। २ भड। भाँड।

चाटु-लोल—वि० [स० त०] चाटुकार।

चाटूक्ति—स्त्री० [चाटु-उक्ति, कर्म० स०] चाटुता से भरी हुई बात। खुशामद या चापलूसी की बात।

चाड़†—स्त्री० = चाँड।

†स्त्री० = चढाई।

चाडना—स० = चाँडना। उदा०—कुचगिरि चढि अति थकित ह्वै चली डीठि मुख-चाड। —बिहारी।

चाडिला—वि० = चाँडिला (चाँड)।

चाडी†—स्त्री० [स० चाटु] किसी की अनुपस्थिति मे पीठ पीछे की जानेवाली निंदा। चुगली।

क्रि० प्र०—खाना।

चाडू—पु० = चाटुकार। उदा०—मान करत रिस माने चाडू।—जायसी।

चाढ़—स्त्री० [हि० चाह से] १ इच्छा। चाह। २ अनुराग। प्रेम।

†स्त्री० [हि० चढना] चढाई।

चाढ़ना—स० १ =चढना। २ =चढाना।

चाढ़ा—वि० [हि० चढना या चढाना] १ ऊपर चढा या चढाया हुआ। २ जिसकी प्रतिष्ठा या मर्यादा बहुत बढाई गई हो।
वि० [हि० चाँड] १ प्रिय। प्यारा। २ प्रेमी।
पु० दे० 'चाँढी'।

चाढी—पु० [हि० चाढ] १ चाहने वाला। इच्छुक। २ किसी पर आसक्त होने या प्रेम करनेवाला। अनुरक्त। प्रेमी। उदा०—देखत ही जुस्याम भए चाढी।—सूर।

चाणक—पु० [स० चाणक्य] १ चालाकी। होशियारी। २ धूर्त्तता। चालबाजी। उदा०–साच का सबद सोना की रेख निगुरा कौ चाणक सगुरा कौ उपदेस।—गोरखनाथ।

चाणक्य—पु० [स० चणक+ष्यञ्] १ वह जो चणक ऋषि के वश या गोत्र का हो। २ अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और चद्रगुप्त मौर्य के प्रधान मत्री विष्णुगुप्त (कौटिल्य) का एक नाम।

चाणूर—पु० [स०√चण् (शब्द करना)+ऊरण] कस का एक मल्ल जो कृष्ण के हाथो मारा गया था।

चातक—पु० [स० √चत् (माँगना)+णवुल्–अक] [स्त्री० चातकी] १ पपीहा पक्षी जो वर्षा-काल मे बहुत बोलता है। विशेष दे० 'पपीहा'। २ रहस्य सप्रदाय मे, मन।
* वि० =याचक।

चातकनी*—स्त्री० =चातकी।

चातकानन्दन—पु०[स० चातक-आ √नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु—अन] १ वर्षा काल। २ बादल। मेघ।

चातर—पु० [हि० चादर ?] मछली पकडने का बडा जाल। २ षड्यत्र।
वि० =चातुर (चतुर)।

चातुर—वि० [स० चतुर+अण्] जो आँखो से दिखाई दे। नेत्र-गोचर।
पु० [चतुर्+अण्] १ चार पहियो की गाडी। २ मसनद।
वि० [स० चतुर] १ चतुर। होशियार। २ चालाक। धूर्त्त। ३ खुशामदी। चापलूस। (क्व०)

चातुरई*—स्त्री० =चतुराई।

चातुरक—वि०, पु० [स० चातुर+कन्] =चातुर।

चातुरक्ष—पु० [स० चतुरक्ष+अण्] १ चार पासो का खेल। २ छोटा गोल तकिया।

चातुरता—स्त्री० =चतुरता।

चातुरिक—पु० [स० चातुरी+ठक्—इक] सारथी। रथवान।

चातुरी—स्त्री० [स० चतुर+ष्यञ्–ङीष्, यलोप] १ चतुरता। व्यवहार-दक्षता। होशियारी। २ चालाकी। धूर्त्तता। ३ निपुणता।

चातुर्थक—वि० [स० चतुर्थ+ठक्—क] हर चौथे दिन आने, घटने या होनेवाला। चौथिया।
पु० चौथिया ज्वर।

चातुर्थिक—वि० [स० चतुर्थ+ठक्–इक] =चातुर्थक।

चातुर्दश—पु० [स० चतुर्दशी+अण्] राक्षस।
वि०
१ चतुर्दशी सबधी। २ जो चतुर्दशी को उत्पन्न हुआ हो।

चातुर्भद्र(क)—पु० [स० चतुर्भद्र+अण्] १ चारो पदार्थ, यथा—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। २ वैद्यक मे, ये चार ओषधियाँ—नागर मोथा, पीपल (पिप्पली), अतीस और काकडासिंगी। कोई-कोई चक्रदत्त के अनुसार इन चार चीजो को भी चातुर्भद्र कहते है—जायफल, पुष्कर-मूल, काकडा सिगी और पीपल।

चातुर्महाराजिक—पु० [स० चतुर्महाराजिक+अण्] १ विष्णु। २ गौतम बुद्ध का एक नाम।

चातुर्मास—वि०[स० चतुर्मास+अण्] १ चार महीनो मे सपन्न होनेवाला। २ चार महीनो का।

चातुर्मासिक—वि० [स० चतुर्मास+ठक्—इक] चार महीनो मे होने-वाला (यज्ञ, कर्म आदि)।

चातुर्मासी—स्त्री० [स० चतुर्मास+अण्–ङीप्] पूर्णमासी।
वि० [हि०] चौमासे का।

चातुर्मास्य—पु० [स० चतुर्मास+ण्य] १ चार महीनो मे होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। २ वर्षा ऋतु के चार महीनो मे होनेवाला एक प्रकार का पौराणिक व्रत। चौमासा।

चातुर्य्य—पु० [स० चतुर+ष्यञ्] =चतुरता।

चातुर्वर्ण्य—पु० [स० चतुर्वर्ण+ष्यञ्] १ हिंदुओ के ये चारो वर्ण,—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। २ चारो वर्णो के पालन के लिए विहित धर्म। जैसे—ब्राह्मण का धर्म यजन, याजन, दान, अध्यापन, अध्ययन और प्रतिग्रह, क्षत्रिय का धर्म बाहुबल से प्रजा-पालन आदि।
वि० चारो वर्णो मे होने अथवा उनसे सबध रखनेवाला।

चातुर्विद्य—वि० [स० चतुर्विद्या+ष्यञ्] चारो वेदो का ज्ञाता।
पु० चारो वेद।

चातुर्होत्र—पु० [स० चतुर्होतृ+अण्] [वि० चातुर्होत्रिय] चार होताओ द्वारा सपन्न होनेवाला यज्ञ।

चात्र—पु०[स०√चाय् (देखना)+ष्ट्रन्] अग्नि-मथन यत्र का एक अवयव जो बारह अगुल लबा और खैर की लकडी का होता था।

चात्रण—पु०=चात्र।

चात्रिक—पु०=चातक। उदा०—चात्रिक भइउ कहत पिउ पिऊ।—जायसी।

चात्वाल—पु० [स०√चत् (याचना)+ वालञ्] १ हवन-कुड। २ वेदी। ३ कुश। दर्भ। ४ गड्ढा।

चादर—स्त्री०[फा०] १ कपडे का वह आयताकार टुकडा जिसे सोते समय लोग नीचे बिछाते अथवा ऊपर ओढते है। २ उक्त आकार-प्रकार का वह टुकडा जिसे स्त्रियाँ धड पर लपेटती तथा उसके कुछ अश से सिर ढकती है, और जो प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि का सूचक होता है।
मुहा०—(किसी का) चादर उतारना=अपमानित या अप्रतिष्ठित करना। नष्ट करना। **चादर रहना**=कुल या परिवार की मर्यादा रक्षित रहना। प्रतिष्ठा का बना रहना। **चादर से बाहर पर फैलाना**=अपनी बिसात, योग्यता या शक्ति से अधिक काम या व्यय करना। **चादर हिलाना**=युद्ध मे शत्रुओ से घिरे हुए सैनिको का आत्म-समर्पण का सकेत करने के लिए कपडा हिलाना। युद्ध रोकने का झडा दिखाना।
३ स्त्रियो के ओढने का उक्त प्रकार का कपडा जो उनके सधवा या सौभाग्यवती होने का सूचक होता है।

मुहा०—(किसी स्त्री को) चादर ओढाना=किसी विधवा स्त्री को पत्नी बनाकर अपने घर मे रखना।

४ किसी धातु का बहुत बडा आयताकार और पतला पत्तर। जैसे—टीन, पीतल या शीशे की चादर। ५ ऊपर से गिरते या बहते हुए पानी की वह धारा जिसकी चौडाई अधिक और मोटाई कम हो। ६ बढी हुई नदी के वेगपूर्ण प्रवाह मे स्थान-स्थान पर पानी का वह फैलाव जो बिलकुल समतल होता है और जिसमे भँवर या हिलोरा नही होता। ७ फूलो आदि की बनी हुई वह लबी-चौडी और चौकोर रचना जो चँदोए, चादर आदि के रूप मे किसी धार्मिक या पूज्य स्थान पर चढाई जाती है। (मुसलमान) जैसे—किसी मजार पर चादर चढाना। ८ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे यथेष्ट लबाई और चौडाई मे फुल-झडियाँ झडती है। झरना।

चादर छिपौवल—स्त्री० [हिं०] लडको का एक खेल जिसमे वे किसी लडके के ऊपर चादर डालकर लडको से उसका नाम पूछते है। जो लडका ठीक नाम बता देता है, वह चादर से ढके हुए लडके को स्त्री बनाकर ले जाता है।

चादरा—पु०[हि० चादर] पुरुषो के ओढने-बिछाने की बडी चादर।

चानक†—क्रि० वि०=अचानक।

पु०=चाणक्य।

चानणा†—पु०=चाँदना (प्रकाश)।

चानन†—पु० १ =चाँदना। २ =चदन।

चानस†—पु० [अ० चास] ताश का एक प्रकार का खेल।

चाप—पु०[स० चप+अण्] १ धनुष। २ ज्यामिति मे वृत्त की परिधि का कोई भाग। (आर्क) ३ मेहराब।

स्त्री० [हि० चापना=दबाना] १ चापने की क्रिया या भाव। दाब। २ पैरो की आहट।

पु० [अ० चॉप] आलू, बेसन आदि की बनी तथा घी आदि मे तली हुई नमकीन टिकिया।

चापक—पु०[स० चाप से] धनुष की डोरी। उदा०—क्रीडत गिलोल जब लालकर, मन जानि चापक सुमन।—चन्दवरदाई।

चाप-कर्ण—पु०[प० त०] ज्यामिति मे वह सरल रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गई हो। जीवा। (कॉर्ड)

चाप-जरीब—पु०[हि० चाप+अ०जरीब] जमीन की लबाई की एक नाप या मान।

चापट—स्त्री०[हि० चिपटना] १ चोकर। २ भूसी।

†वि०=चौपट।

चापड—वि० [स० चिपिट, हि० चिपटा, चपटा] १ जो दबकर चिपटा हो गया हो। २ जो कुचले जाने के कारण जमीन के बराबर हो गया हो। ३ सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट । चौपट।

पु० वह कडी जमीन जो अच्छी तरह जोती न गई हो। जैसे—मत बो चापड, उजडैगा टापर।—खेतिहरो की कहावत।

चाप-दड—पु०[उपमि०स०] वह डडा जिसमे कोई वस्तु आगे की ओर ढकेली जाय।

चापना—स० [स० चप्, प्रा० चप्पइ, बँ० चापा, उ० चापुआ, गु० चापवूँ मरा० चॉपणे] ऊपर से जोर लगाकर भार या रखकर दबाना। चाँपना २ छाती से लगाकर दबाना। आलिगन करते समय किसी को दबाना।

चापर†—वि०=चापड।

चापल—पु०[स० चपल+अण्] चचलता। चपलता।

वि० चचल। चपल।

चापलता—स्त्री०=चपलता।

चापलूस—वि० [फा०] [भाव० चापलूसी] जो किसी के सामने उसकी आवश्यकता से अधिक या झूठी प्रशसा करे। खुशामदी। चाटुकार।

चापलूसी—स्त्री० [फा०] वह झूठी प्रशसा जो केवल दूसरो को प्रसन्न और अनुकूल करने के लिए की जाय। झूठी बडाई या प्रशसा से भरी बात। खुशामद। चाटुता।

चापी (पिन्)—पु० [स० चाप+इनि] १ वह जो हाथ मे चाप अर्थात् धनुष रखता हो। धनुर्धर। २ शिव। ३ धनु राशि।

चापू—पु०[देश०] हिमालय के आस-पास के प्रदेशो मे होनेवाली एक प्रकार की छोटी बकरी जिसके बाल बहुत लबे और मुलायम होते और कबल आदि बनाने के काम आते है।

चाफद—पु०[हिं० चौ=चार+फदा] मछलियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल।

चाब—स्त्री० [स० चव्य] १ गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकडी और जड औषध के काम मे आती है। इसकी लकडी और जड से कपडे आदि रँगने के लिए एक प्रकार का पीला रग निकाला जाता है। २ उक्त पौधे के छोटे गोल फल जो औषध के रूप मे काम आते है।

स्त्री० [हिं० चाबना] १ चाबने की क्रिया या भाव। २ डाढ। चौभड। ३ कुछ स्थानो मे घर मे बच्चा होने के समय का एक उत्सव या रीति।

स्त्री०[स० चतु] १ चार की सख्या। (डि०) २ कपडा। वस्त्र। (डिं०)

†पु० [स० चप] एक प्रकार का बाँस।

चाबन†—पु०=चबेना।

चाबना—स० [स० चर्वण, प्रा० चब्बण] १ दाँतो से कोई कडी चीज खाते समय दबाना। चबाना। जैसे—कुत्ते का हड्डी चाबना। २ खूब पेट भरकर भोजन करना। ३ अनुचित रूप से किसी का धन खाते चलना।

चाबस—अव्य० दे० 'शाबाश'।

चाबी—स्त्री०[हिं० चाप=दबाव, पुर्त्त० चेव] १ धातु आदि का वह उपकरण जिससे ताला खोला तथा बद किया जाता है। कुजी। ताली। २ किसी यत्र मे लगा हुआ वह अग जिसे घुमाकर उसकी कमानी इसलिए कसी जाती है कि वह यत्र चलता रहे या चलने लगे। जैसे—घडी या बाजे की चाबी।

क्रि० प्र० —देना।—भरना।

३ कोई ऐसा पच्चड जिसे दो जुडी हुई वस्तुओ की सधि मे ठोक देने से जोड दृढ होता हो।

क्रि० प्र०—भरना।

४ कोई ऐसी युक्ति या साधन जिसके प्रयोग से किसी को कुछ करने मे प्रवृत्त किया जा सके। जैसे—उनकी चाबी तो हमारे हाथ मे है।

चाबुक—पु० [फा०] १ चमडे, रस्सी आदि को बटकर बनाया हुआ कोडा जिसका प्रयोग किसी को मारने के लिए होता है। छोटा, पतला कोडा। जैसे—भले घोडे को एक चाबुक बहुत है।

पद—चाबुक सवार। (देखे)

२ लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसी बात जिससे कोई कार्य करने की उत्तेजना उत्पन्न हो।

चाबुक-सवार—पु० [फा०] [भाव० चाबुक-सवारी] घोडे पर सवार होकर उसे विविध प्रकार की चाले सिखाने अथवा उसकी चाल दुरुस्त करने-वाला व्यक्ति।

चाबुक-सवारी—स्त्री० [फा०] चाबुक सवार का काम, पद या पेशा।

चाभ—स्त्री० दे० 'चाब'।

चाभना—स०=चाबना।

चाभा—पु० [हि० चाबना] बैलो का एक रोग जिसमे उनकी जीभ पर काँटे उभड आते है और उनसे कुछ खाया या चबाया नही जाता।

चाभी—स्त्री०=चाबी।

चाम—पु० [स० चर्म] चमडा। खाल। उदा०—मानवता की मूर्त्ति गढोगे तुम सँवार कर चाम।—पत।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=(क) चमडे के सिक्के चलाना। (ख) अपने प्रताप, बल, वैभव आदि से उसी प्रकार जबरदस्ती अनोखे और असाधारण कार्य करना, जिस प्रकार निजाम नामक भिश्ती ने हुमायूँ को डूबने से बचाकर फल-स्वरूप थोडे समय के लिए राज्याधिकार प्राप्त करके चमडे के सिक्के चलाये थे। (ग) व्यभिचार से धन कमाना। (बाजारू)

चाम-चोरी—स्त्री० [हि० चाम+चोरी] गुप्त रूप से किया जानेवाला पर-स्त्री-गमन।

चामडी—स्त्री०=चमडी।

चामर—पु० [स० चमरी+अण्] १ चँवर। मोरछल। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते है।

चामर-ग्राह—पु० [स० चामर√ग्रह् (ग्रहण करना)+अण्, उप० स०] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चामर-ग्राहिक—पु० [स० चामरग्राहिन्+कन्]=चामर-ग्राह।

चामर-ग्राही (हिन्)—पु० [स० चामर√ग्रह्+णिनि, उप०स०]=चामर-ग्राह।

चामर पुष्प—पु० [ब०स०] १ सुपारी का पेड। २ आम का पेड। ३ केतकी। ४ काँस।

चामर-व्यजन—पु० [ष० त०] चँवर। मोरछल।

चामरिक—पु० [स चामर+ठन्—इक] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चामरी—स्त्री० [स० कामर+अच्+ङीप्] सुरागाय।

चामिल—स्त्री० दे० 'चबल'।

चामीकर—पु० [स० चमीकर+अण्] १ सोना। स्वर्ण। २ कनक। धतूरा।

वि० [चामीकर+अण्] १ सोने का बना हुआ। २. सोने की तरह का। सुनहला।

चामीकराचल—पु० [चामीकर-अचल, ष० त०] सुमेरु पर्वत।

चामुडा—स्त्री० [स० चमू√ला (आदान)+क, पृषो० सिद्धि] एक देवी जिन्होने शुभ-निशुभ के चड और मुड नामक दो सेनापति दैत्यो का वध किया था। कापालिनी। भैरवी।

चाम्य—पु० [स०√चम् (खाना)+ण्यत्] खाद्य पदार्थ।

चाय—स्त्री० [चीनी चा] १ एक प्रसिद्ध पौधा या झाड जिसकी पत्तियाँ १०-१२ अगुल लबी, ३-४ अगुल चौडी और दोनो सिरो पर नुकीली होती है। २ उक्त पौधे की सुगधित और सुखाई हुई पत्तियाँ जिन्हे उबालकर पीने की चाल अब ससार भर मे फैल गई है। ३ उक्त पत्तियो का उबालकर तैयार किया हुआ पेय जिसमे चीनी, दूध आदि भी मिलाया जाता है।

†पु०=चाव (चाह)। उदा०—मौन बदन उर चाय।—नागरीदास।

चायक—पु० [स० √चि (चयन करना) ण्वुल्—अक] चुननेवाला। चयन करनेवाला।

वि० [हि० चाय=चाव या चाह] चाहने या प्रेम करनेवाला।

चायदान—पु० [हि० चाय+फा० दान] करवे की आकृति का एक प्रकार का चीनी-मिट्टी या धातु का एक प्रसिद्ध पात्र जिसमे चाय का गरम पानी रक्खा जाता है।

चायदानी—स्त्री०=चायदान।

चाय-पानी—पु० [हि० पद] ऐसा जल-पान जिसके साथ पेय रूप मे चाय भी हो।

चार—वि० [स० चत्वारि, प्रा० चत्तार, चत्तारी, चत्तारो, अप० उ० बँ० मि० चारि, गु० प० मरा० चार] १ जो गिनती मे तीन से एक अधिक हो। दो का दूना। तीन और एक। जैसे—चार घोडो की गाडी।

मुहा०—(किसी से) चार आँखें करना=किसी के सामने होकर उसकी ओर देखना। आँखें मिलाना। **(किसी चीज मे) चार चाँद लगना**= प्रतिष्ठा, शोभा, सौदर्य आदि चौगुनी होना या बहुत बढ जाना। **चार पगडी करना**=जहाज का लगर डालना। जहाज ठहराना। (लश०) **चार पाँच करना**= इधर-उधर की बाते या हीला-हवाला करना। **चारो खाने चित गिरना**=(क) इस प्रकार चित गिरना जिससे हाथ-पाँव फैल जायँ। (ख) पूरी तरह से या सब प्रकार से ऐसा परास्त होना कि फिर कुछ भी करने योग्य न हो। **चारो फूटना**=चारो आँखे (दो हिये की और दो ऊपर की) फूटना अर्थात् इतना दुर्बुद्धि या मत्त होना कि बुरा-भला कुछ दिखाई न दे।

पद—चार गुरदेवाला=बहादुर और साहसी। जीवटवाला। **चारो ओर**=सभी ओर। हर तरफ। **चारो धाम**=हिंदुओ के ये चारो बडे तीर्थ या पुण्य धाम—जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारका, और बदरिकाश्रम। **चारो पदार्थ**=हिन्दुओ मे ये चारो काम्य पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। **चारो मग्ज** =हकीमी नुमखो मे, इन चारो चीजो के बीजो की गिरियाँ—ककडी, कद्दू, खरबूजा और खीरा।

२ कई एक। बहुत से। अनेक। जैसे—चार आदमी जो कहे, वह मान लेना चाहिए।

मुहा०—चार के कधो पर चढना या चलना=मर कर अरथी आदि पर चढना और कुछ लोगो की सहायता मे कब्रिस्तान या श्मशान की ओर जाना।

३ गिनती मे कुछ कम या थोडे। कतिपय। कुछ। जैसे—(क) चार

बाते उन्होने कही तो चार मने भी सुनाई। (ख) अभी चार दिन की तो बात है कि वे यहाँ आकर नौकर हुए है।

पद—चार-तार=थोडे से अच्छे कपडे और गहने। जैसे—जब से मियाँ का रोजगार चला है, तब से बीबी के पास चार-तार दिखाई देने लगे है, नही तो पहले क्या था। (स्त्रियाँ) **चार दिन की चाँदनी**=थोडे समय तक ठहरनेवाला वैभव या सुख-भोग। जैसे—उनकी यह सारी रईसी बस चार दिन की चाँदनी है। **चार पैसे**=थोडा धन। कुछ रुपया-पैसा। उदा०—जब पास मे चार पैसे रहेगे, तभी नाते-रिश्ते के लोग पूछेगे। पु० चार का सूचक अक या सख्या। चार का अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४।

*†वि०=चारु।

पु०[स०√चर् (चलना)+घञ्। चर+अण् (अर्थानुसार ज्ञातव्य)] [भू० कृ० चारित, वि० चारी] १ चलने की क्रिया या भाव। गति। चाल। २ आचार। ३ रसम। रीति। जैसे—द्वारचारी। ४ कारागार। जेलखाना। ५ गुप्तचर। जासूस। ६ दास। सेवक। ७ भोजन करना। खाना। भक्षण। ८ चिरौजी। पियाल। ९ वह विष जो पशु-पक्षियो आदि को फँसाने या मारने के लिए बनाया जाता है।

चार आइना—पु०[फा० चार+आइन=लोह] एक प्रकार का कवच या बकतर जिसमे लोहे की चार पटरियाँ जडी रहती है जिनमे से एक छाती पर, एक पीठ पर और दो दोनो बगलो मे (भुजाओ के नीचे) रहती हैं।

चारक—पु० [स० √चर्+णिच्+ण्वुल्-अक। चार+कन्। √चर्+ण्वुल्-अक (अर्थानुसार ज्ञातव्य)] १ चलाने या सचार करानेवाला। सचारक। २ गति। चाल। ३ गाय-भैस चरानेवाला। चरवाहा। ४ चिरौजी। पियाल। ५ गुप्त-चर। जासूस। ६ सहचर। साथी। ७ घुडसवार। ८ वह ब्रह्मचारी या ब्राह्मण जो बराबर इधर-उधर घूमता-फिरता रहे। ९ आदमी। मनुष्य। १० चरक ऋषि का ग्रथ या सिद्धान्त। ११ वह कारागार जिसमे अभियुक्त तब तक रखा जाता है, जब तक उसके अभियोग का निर्णय न हो जाय। हवालात।

चार-कर्म (न्)—पु०[ष० त०] चर अर्थात् जासूस का काम। जासूसी। (एस्पायनेज)

चारकाने—पु० बहु०[हिं० चार+काना=मात्रा] चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना—पु०[फा० चारखान] १ आडी और खडी धारियो या रेखाओ की ऐसी रचना जिसमे बीच-बीच मे चौकोर खाने पडते हो। २ वह कपडा जिसमे उक्त प्रकार के चौकोर खाने बने हो।

चारग-मारग—पु०[स० चार+मार्ग] आचरण और व्यवहार की धूर्त्तता। चालबाजी और ढग।

चार-चक्षु (स्)—पु०[ब० स०]राजा, जो अपने चरो या जासूसो के द्वारा सब बाते देखता है।

चार-चश्म—वि०[फा०] [भाव० चार-चश्मी] १ निर्लज्ज। बेहया। २ जिसमे शील, सौजन्य आदि का अभाव हो। बेमुरौवत। ३ कृतघ्न। नमक-हराम।

चारज—पु० दे० 'चार्ज'।

चारजामा—पु०[फा० चारजाम]चमडे या कपडे का वह टुकडा जो सवारी करने से पहले घोडे की पीठ पर कसा जाता है। जीन।

चारटा—स्त्री० [स०√चर् (चलना)+णिच्+अटन्—टाप्] पद्मचारिणी वृक्ष। भूम्यामलकी।

चारटिका—स्त्री०[स०√चर्+णिच्+अटन्—ङीष्+कन्—टाप्, ह्रस्व] नली नामक गध-द्रव्य।

चारटी—स्त्री० [स० √चर्+णिच्+अटन्-ङीष्]=चारटा।

चारण—पु० [स०√चर् (चलना)+णिच्+ल्यु—अन] १ एक जाति जो मध्ययुग मे राजाओ के दरबार मे उनकी तथा उनके पूर्वजो की कीर्ति या यश का वर्णन गाकर करती थी। वदीजन। भाट। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३ वह जो बराबर इधर-उधर घूमता रहता हो।

चार-तूल—पु०[स०त०] चँवर।

चारदा†—पु०[हिं० चार+दा (प्रत्य०)] १ चौपाया। २ कुम्हारो की बोली मे उनका गधा।

चारदीवारी—स्त्री०[फा०] १ सुरक्षा अथवा सीमा निर्धारण की दृष्टि से किसी मकान या स्थान के चारो ओर बनाई जानेवाली ऊँची दीवार। २ नगर के चारो ओर का परकोटा। प्राचीर। शहर-पनाह।

चारन†—पु०=चारण।

चारना†—स० १=चराना। २=चलाना।

चार-ना-चार—क्रि० वि० [फा०] विवश होकर। मजबूर या लाचार होकर।

चार-पथ—पु०[ब०स०] राज-मार्ग।

चारपाई—स्त्री०[हिं० चार+पाया] चार पायोवाला वह प्रसिद्ध उपकरण जो बीच मे बाध, सुतली, निवाड आदि से बुना रहता है और जिस पर लोग सोते है। छोटा पलग। खाट।

पद—चारपाई का कान=चारपाई का वह अग जो उसके टेढे हो जाने के कारण एक ओर ऊपर उठ आया हो।

मुहा०—चारपाई धरना, पकडना या लेना=(क) चारपाई पर लेटना। (ख) इतना बीमार होना कि चारपाई से उठ न सके। अत्यन्त रुग्ण होना। **चारपाई पर पड़ना**=चारपाई पकडना। **चारपाई सेना**=रोग आदि के कारण अधिक समय तक चारपाई पर पडे रहना। **चारपाई से पीठ लगना**=चारपाई पकडना। **चारपाई से लगना**=चारपाई पकडना।

चारपाया—पु०[फा० चारपाय] चार पैरोवाला पशु। चौपाया।

चार-पाल—पु०[स० चार√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण्] गुप्तचर। जासूस।

चार-पुरुष—पु०[कर्म०स०] गुप्त-चर। भेदिया।

चार-प्रचार—पु०[ष०त०] किसी काम के लिए जासूस नियुक्त करना। (प्राचीन भारतीय राजतत्र)

चार-बद—पु०[फा०] १ शरीर के अग या अवयव। २ शरीर के अगो की गाँठे या जोड।

चार-बाग—पु०[फा०] १ चौकोर बगीचा। २ ऐसा बाग या बगीचा जिसमे फलोवाले वृक्ष हो। ३ एक प्रकार का बडा रूमाल या शाल जिसके चारो बराबर भाग अलग-अलग रगो के और अलग-अलग प्रकार के बेल-बूटो से युक्त होते है।

चार-बालिश—पु०[फा०] एक प्रकार का बडा गोल तकिया। मसनद।

चार-भट—पु०[स० त०] वीर सैनिक।

चार-मेख—स्त्री०[हि० +फा०] मध्ययुग का एक प्रकार का दड या सजा जिसमे अपराधी को जमीन पर लेटाकर उसके दोनो हाथ और दोनो पैर चार खूँटो से बाँध दिये जाते थे।

चारयारी—स्त्री०[हि० चार+फा० यार] १ चार मित्रो का दोस्ताना। २ चार मित्रो की गोष्ठी या मडली। ३ मुसलमानो मे सुन्नियो का वह सप्रदाय जो मुहम्मद के चार मित्रो और सहायको (अबूबकर, उमर, उस्मान और अली) को खलीफा मानता है। ३ मुसलमानी शासनकाल का चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर मुहम्मद साहब के उक्त चारो मित्रो या साथियो के नाम अकित है। और जिसका प्रचार कई तरह के टोने-टोटको के लिए होता है।

चारवा—पु०=चौपाया।

चार-वायु—स्त्री०[मध्य०स०] गरम हवा। लू।

चारातरित—पु०[स० चार-अतरित तृ० त०] गुप्तचर।

चारा—पु०[हि० चरना] १ गाय, बैल आदि पशुओ के खाने के लिए दी जानेवाली, पत्ती, घास आदि। २ चिडियो, मछलियो आदि को फँसाने अथवा जीवित रखने के लिए खिलाई जानेवाली वस्तु। ३ निकृष्ट भोजन। (व्यग्य) ४ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी को फँसाने अथवा अपना काम निकालने के लिए दूसरे को दिया जानेवाला प्रलोभन। क्रि० प्र०—डालना।—फकना।

पु०[फा० चार] १ इलाज। २ उपाय। ३ युक्ति।

चाराजोई—स्त्री० [फा०] दूसरे से पहुँची हुई या पहुँचनेवाली हानि के प्रतिकार या बचाव के लिए न्यायालय या हाकिम से की जानेवाली याचना। नालिश। फरियाद। जैसे—अदालत से चाराजोई करना।

चारायण—पु०[स० चर+फक्—आयन] काम-शास्त्र के एक आचार्य।

चारासाज—वि०[फा० चार साज] [भाव० चारासाजी] विपत्ति के समय सहायता देकर दूसरे का काम बनानेवाला।

चारि—वि०, पु०=चार।

चारिका—स्त्री०[स० चारक+टाप् ...] सेविका। दासी।

चारिटी—स्त्री०=चारटी।

चारिणी—स्त्री०[स० √चर्+णिच् ... —ङीप्] करुणी वृक्ष।

वि० स० चारी (चारिन्) का स्त्री० रूप। जैसे—ब्रह्मचारिणी, व्रत-चारिणी।

स्त्री० [हि० चारण] चारण जाति की स्त्री।

चारित—भू० कृ० [स०√चर्+णिच+क्त] १ जो चलाया गया हो। चलाया हुआ। गतिमान किया हुआ। २ भभके आदि से उतारा या खीचा हुआ। जैसे—चारित आसव।

पु० आरा (लकडी चीरने का)।

†पु०=चारा (पशुओ का भोजन)।

चारितार्थ्य—पु०[स०चरितार्थ+ष्यञ्] चरितार्थ होने की अवस्था या भाव। चरितार्थता।

चारित्र—पु०[स० चरित्र+अण्] १ किसी कुल या वश मे परम्परा से चला आया हुआ आचार-व्यवहार। कुल की रीति। २ अच्छा चाल-चलन। सदाचार। ३ रीति-व्यवहार। ५ मरुत् गणो मे से एक। ४ स्त्री का पातिव्रत या सतीत्व। ६ सन्यास। (जैन)

चारित्रवती—स्त्री०[स० चारित्र+मतुप्, वत्व, ङीप्] योग मे एक प्रकार की समाधि।

चारित्र-विनय—पु०[तृ०त०] आचरण या चरित्र द्वारा नम्र और विनीत भाव-प्रदर्शन। शिष्टाचार। नम्रता।

चारित्रा—स्त्री०[स० चारित्र+अच्—टाप्] इमली।

चारित्रिक—वि० [स० चरित्र+ठक्—इक] १ चरित्र-सबधी। २ अच्छे चरित्रवाला।

चारित्रिकता—स्त्री०[स० चारित्रिक+तल्—टाप्] १ अच्छा चरित्र। २ चरित्र-चित्रण की कला या कौशल।

चारित्री (त्रिन्)—वि०[स० चारित्र+इनि] अच्छे चरित्रवाला। सदा-चारी।

चारित्र्य—पु०[स० चरित्र+ष्यञ्] चरित्र। आचरण।

चारिम—वि० १ =चौथा। उदा०—जामिनि चारिम पहर पाओल।—विद्यापति। २ =चारो।

चारी (रिन्)—वि०[स० (पूर्वपद के साथ होने पर)√चर् (चलना)+णिनि] एक विशेषण जो समस्त पदो के अत मे लग कर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) चलने या विचरण करनेवाला। जैसे—व्योम-चारी। (ख) कोई विशिष्ट आचरण या क्रिया करनेवाला। जैसे—व्यभिचारी। (ग) पालन करनेवाला। जैसे—ब्रह्मचारी, व्रतचारी।

पु० १ पैदल चलनेवाला सिपाही। २ साहित्य मे, सचारी भाव। ३ नृत्य मे एक प्रकार की क्रिया।

चारु—वि०[स√चर् (चलना)+उण्] आकर्षक और मनोहर। सुन्दर।

पु०१ बृहस्पति। २ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३ कुकुम। केसर।

चारुक—पु० [स० चारु+कन्] सरपत के बीज जो दवा के काम आते है।

चारु-केशरा—स्त्री०[ब० स०] १ नागरमोथा। २ सेवती का फूल।

चारु-गर्भ—पु०[ब० स०] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारु-गुप्त—पु०[कर्म० स०] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारु-चित्र—पु०[ब० स०?] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चारुता—स्त्री०[स० चारु+तल्—टाप्] चारु होने की अवस्था, गुण या भाव। मनोहरता। सुन्दरता।

चारुत्व—पु०[स० चारु+त्व] चारुता।

चारु-दर्शन—वि०[ब० स०] [स्त्री० चारु-दर्शना] जो देखने मे बहुत सुदर हो। रूपवान्।

चारुदेष्ण—पु०[स०] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र जिन्होने निकुभ आदि दैत्यो के साथ युद्ध किया था। (हरिवश)

चारु-धामा—स्त्री०[ब० स०] इद्र की पत्नी, शची।

चारु-धारा—स्त्री०[ब० स०] इद्र की पत्नी, शची।

चारु-धिष्ण—पु०[स०] ग्यारहवे मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक।

चारु-नालक—पु०[ब० स०, कप्] कोकनद। लाल कमल।

चारु-नेत्र—वि०[ब० स०] [स्त्री० चारुनेत्रा] सुन्दर नेत्रोवाला।

पु० एक प्रकार का हिरन।

चारु-पर्णी—स्त्री०[ब० स०,ङीष्] प्रसारिणी लता। गधपसार।

चारु-पुट—पु०[ब० स०] ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

चारु-फला—स्त्री०[ब० स०, टाप्] अगूर या दाख की लता।

चारु-लोचन—वि० [ब०स०] [स्त्री० चारु-लोचना] सुन्दर नेत्रोवाला। पु० एक प्रकार का हिरन।

चारु-वर्धना—स्त्री० [स० चारु√वृध् (वृद्धि करना)+णिच्+ल्युट-अन—टाप्] सुन्दर स्त्री। सुन्दरी।

चारु-शिला—स्त्री० [कर्म०स०] एक प्रकार का रत्न।

चारु-शील—वि० [ब०स०] [स्त्री० चारु-शीला] उत्तम शील या स्वभाव-वाला।

चारु-सार—पु० [कर्म०स०] सोना। स्वर्ण।

चारुहासिनी—स्त्री० [स० चारुहासिन्+ङीप्] १ सुन्दर रूप से हँसने-वाली स्त्री। २ वैताली नामक छद का एक प्रकार या भेद।

चारुहासी (सिन्)—वि० [स० चारु√हस् (हँसना)+णिनि] [स्त्री० चारुहासिनी] १ सुदर रूप से हँसनेवाला। मनोहर मुसकानवाला। २ जो हँसता हुआ सुन्दर तथा भला जान पडे। पु० वैताली छद का एक भेद।

चारेक्षण—पु० [स० चार-ईक्षण, ब०स०] राजा।

चारोली†—स्त्री० [देश०] फलो आदि की गुठली।

चार्या—स्त्री० [स०] प्राचीन भारत मे एक प्रकार की सडक जो छ हाथ चौडी होती थी।

चार्चिक—वि० [स० चर्चा+ठक्—इक] वेद-पाठ मे कुशल।

चार्चिक्य—पु० [स० चर्चिका+ष्यञ्] १ शरीर मे अगराग का लेपन। २ अगराग। ३ वेद-पाठ-सबधी कौशल या निपुणता।

चार्ज—पु० [अ०] १ किसी काम या पद का भार। कार्य-भार। २ रक्षण आदि के लिए की जानेवाली देख-रेख। ३ किसी पर लगाया जानेवाला अभियोग। ४ किसी कार्य या सेवा का पारिश्रमिक। परिव्यय। ५ एक-दम से किया जानेवाला आक्रमण।

चार्टर—पु० [अ०] १ वह लेख जिसमे शासन की ओर से किसी को कोई स्वत्व या अधिकार देने की बात लिखी रहती है। सनद। अधिकार-पत्र। २ कुछ शर्त्तो पर जहाज या और कोई बडी सवारी किराये पर देना या लेना।

चार्म—वि० [स० चर्मन्+अण्] १ चर्म-सबधी। २ चमडे का बना हुआ। ३ चमडे से मढा हुआ।

चार्मिक—वि० [स० चर्मन्+ठक्-इक] चमडे से बना हुआ।

चार्य—पु० [स० चर+ष्यञ्] १ चर होने की अवस्था या भाव। चरता। २ दूतत्व। ३ जासूसी। ४ [√चर्+ण्यत्] एक प्राचीन वर्ण सकर जाति। (व्रात्य वैश्य की सवर्णा स्त्री से उत्पन्न)

चार्वाक—पु० [स० चारु-वाक, ब०स०, पृषो० सिद्धि०] १ एक प्रसिद्ध अनीश्वरवादी और नास्तिक विद्वान्। बार्हस्पत्य। (चार्वाक दर्शन के रचयिता) २ उक्त विद्वान् द्वारा चलाया हुआ मत या दर्शन जो 'लोकायत' कहलाता है। चार्वाक दर्शन। ३ एक राक्षस जिसने कौरवो के मारे जाने पर ब्राह्मण वेश मे युधिष्ठिर की राजसभा मे जाकर उनको राज्य के लोभ से भाई-बन्धुओ को मारने के लिए धिक्कारा था और जो उस सभा के ब्राह्मणो के हाथो मारा गया था।

चार्वाक-दर्शन—पु० [मध्य०स०] चार्वाक नामक प्रसिद्ध विद्वान् का बनाया हुआ दर्शन-ग्रन्थ जिसमे ईश्वर, पर-लोक, पुनर्जन्म और वेदो के मत का खडन किया गया है।

चार्वाक-मत—पु० [ष०त०] चार्वाक का चलाया हुआ मत या सप्रदाय।

चार्वी—स्त्री० [स० चारु+ङीप्] १ बुद्धि। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३ चमक। दीप्ति। ४ सुन्दर स्त्री। सुन्दरी। ५ कुबेर की पत्नी का नाम। ६ दारु हल्दी।

चाल—स्त्री० [हि० चलना या स० चार] १ चलने की क्रिया या भाव। गति। २ वह अवस्था या क्रिया जिसमे कोई जीव या पदार्थ किसी दिशा मे अथवा किसी रेखा पर बराबर अपना स्थान बदलता हुआ क्रमश आगे बढता रहता है। चलने, दौडने आदि के समय निरतर आगे बढते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—चलते या दौडते आदमी की चाल, डाक या सवारी गाडी की चाल। ३ पैर उठाने और रखने के ढग के विचार से किसी के आगे बढते रहने का प्रकार, मुद्रा या रूप। जैसे—(क) खरीदने से पहले घोडे की चाल देखी जाती है। (ख) वह झूमती (या लडखडाती) हुई चाल से चला आ रहा था। ४ गति मे लगनेवाले समय के विचार से, चलने की क्रिया या भाव। जैसे—कछुए या च्यूँटी की चाल। ५ किसी आदमी या चीज के चलते रहने की दशा मे उसकी गति-विधि आदि की सूचक ध्वनि या शब्द। आहट।

मुहा०—(किसी की) चाल मिलना=किसी के गतिमान होने, चलने-फिरने आदि की आहट, ध्वनि या शब्द सुनाई पडना। जैसे—(क) आज तो पिछवाडेवाले मकान मे कुछ आदमियो की चाल मिल रही है, अर्थात् ऐसा जान पडता है कि उसमे कुछ लोग आकर ठहरे है। (ख) सन्ध्या हो जाने पर जगल मे पशु-पक्षियो की चाल नही मिलती।

६ बहुत से आदमियो या जीवो के चलने-फिरने के कारण होनेवाली चहल-पहल, धूम-धाम, हलचल या हो-हल्ला। जैसे—कूच की आज्ञा मिलते (या नगाडा बजते) ही सारी छावनी मे चाल पड गई।

क्रि० प्र०—पडना।

७ फलित ज्योतिष के अनुसार अथवा और किसी प्रकार के सुभीते के विचार से कही से चलने या प्रस्थान करने के लिए स्थिर किया हुआ दिन, मुहूर्त्त या समय। चाला। उदा०—पोथी काढि गवन दिन देखे, कौन दिवस है चाला।—जायसी। ८ किसी पदार्थ (जैसे—यत्र आदि) अथवा उसके किसी अग की वह अवस्था जिसमे वह बराबर इधर-उधर आता-जाता, घूमता या हिलता-डोलता रहता है। जैसे—इजन के पुरजो की चाल, घडी के लगर की चाल। ९ तत्परता, वेग आदि के विचार से किसी काम या बात के होते रहने की अवस्था या गति। जैसे—(क) आज-कल कार्यालय (या ग्रथ-सम्पादन) का काम बहुत धीमी चाल से हो रहा है। (ख) इमारत (या नहर) के काम की चाल अब तेज होनी चाहिए। १० किसी चीज की बनावट, रचना, रूप आदि का ढग या प्रकार। ढब। तर्ज। जैसे—नई चाल का कुरता या टोपी, नई चाल की थाली या लोटा। ११ कोई काम करने का ढग, प्रकार या युक्ति। जैसे—अब उसे किसी और चाल से समझाना पडेगा। १२ ऐसा ढग, तरकीब या युक्ति जिसमे कुछ विशिष्ट कौशल भी मिला हो। विशिष्ट प्रकार का उपाय। तरकीब। जैसे—अब तो किसी चाल से यहाँ से अपना छुटकारा कराना चाहिए। १३ किसी को धोखा देने या बहकाने के लिए की जानेवाली चालाकी से भरी तरकीब या युक्ति। जैसे—हम तुम्हारी चाल समझते है।

मुहा०—(किसी से) चाल चलना=किसी को धोखा देने या भ्रम मे रखने

की तरकीब या युक्ति करना। जैसे—तुम कही चाल चलने से बाज नही आते। **(किसी की) चाल मे आना या फँसना**=किसी के धोखे या बहकावे मे आना। जैसे—वह सीधा आदमी तुम्हारी चाल मे आ गया।
पद—चाल-बाज, चालबाजी। (देखे स्वतन्त्र पद)।
१४ किसी काम, चीज या बात के चलनसार या प्रचलित रहने की अवस्था या भाव। जैसे—आज-कल इस तरह के गहनो (या साडियो) की चाल नही है। १४ नैतिक दृष्टि से आचरण, व्यवहार आदि करने का ढग, प्रकार या स्वरूप। जैसे—(क) तुम अपने लडके की चाल सुधारो। (ख) यदि तुम्हारी यही चाल रही तो तुम्हारा कही ठिकाना न लगेगा।
पद—चाल-चलन, चाल-ढाल। (देखे स्वतन्त्र पद)
१६ चौसर, ताश, शतरज आदि खेलो मे अपना दाँव या बारी आने पर गोटी, पत्ता, मोहरा आदि आगे बढाने या सामने लाने की क्रिया। जैसे—(क) हमारी चाल हो चुकी, अब तुम्हारी चाल है। (ख) तुम्हारी इस चाल ने सारी बाजी का रुख पलट दिया। १७ मुद्रणकला मे, छापने के लिए यथा-स्थान बैठाये हुए अक्षरो के सबध मे वह स्थिति, जब बीच मे कोई नया पद, वाक्य या शब्द घटाये-बढाये जाने के कारण कुछ अक्षरो या शब्दो के आगे-पीछे खिसकाने या हटाने-बढाने की आवश्यकता होती है। १८ यत्रो के पुरजो के सबध मे, वह स्थिति जिसमे वे किसी त्रुटि या दोष के कारण कुछ आगे-पीछे या इधर-उधर हट-बढकर चलते है और इसी लिए या तो कुछ खड-खड करते या यत्र के ठीक तरह से चलने मे बाधक होते है। जैसे- -इस आगेवाले चक्कर (या पहिये) मे कुछ चाल आ गई है।
स्त्री० [हिं० चालना = छानना] छलनी आदि मे रखकर कोई चीज चालने या छानने की क्रिया, ढग या भाव।
पु० [स०√चल् (चलना) +ण, णिच्+अच् वा] १ घर के ऊपर का छप्पर या छाजन। २ छत। पाटन। ३ स्वर्णचूड पक्षी। ४ आज-कल बडे नगरो मे वह बहुत बडा मकान जो गरीबो अथवा साधारण स्थिति के लोगो को किराये पर देने के लिए बनता है। जैसे—बम्बई मे उसने सारी उमर एक ही चाल मे रहकर बिता दी।

चालक—वि० [स०√चल् (चलना) +णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० चालिका] १ चलानेवाला। जो चलाता हो। २ चलने के लिए प्रेरित करनेवाला। जैसे—चालक शक्ति। ३ चालबाज। धूर्त्त। उदा०—घर घालक, चालक, कलहप्रिय कहियत् परम परमारथी।—तुलसी।
पु० १ वह व्यक्ति जो यानो, इजनो आदि को गतिमान करता हो। २ सवाहक (दे०)। ३ वह हाथी जो अकुश का दबाव या नियत्रण न माने। उद्दड और नटखट हाथी। ४ नृत्य मे भाव बताने और सुदरता लाने के लिए हाथ हिलाने की क्रिया।

चालकुड—पु० [स०] चिल्का नाम की झील जो उडीसा मे है।

चाल-चलन—पु० [हिं० चाल+चलन] नैतिक दृष्टि से देखा जानेवाला आचरण या व्यवहार। चरित्र। मनुष्य के आचरण और व्यवहार करने का ढग जिसका मूल्याकन नैतिक दृष्टि से किया जाता है।

चाल-ढाल—स्त्री० [हिं० चाल+ढाल] १ किसी व्यक्ति के चलने-फिरने का ढग या मुद्रा। रग-ढग। २ किसी व्यक्ति का ऊपरी आचरण और व्यवहार। ३ किसी चीज की बनावट या रचना का ढग या प्रकार। ४ चाल-चलन।

चालणी—स्त्री० = चलनी (छलनी)।

चालन—पु० [स०√चल् (चलना) +णिच्+ल्युट्+अन] १ चलाने की क्रिया या भाव। परिचालन। २ चलने की क्रिया या भाव। गति। ३ चलनी। छाननी।
पु० [हिं० चालना] १ भूसी या चोकर जो आटा चालने के बाद बच रहता है। २ बडी चलनी।

चालनहार—वि० [हिं० चालन+हार (प्रत्य०)] १ चलानेवाला। २ ले जाने या ले चलनेवाला।
वि० [हिं० चलना] चलनेवाला।

चालना—स० [स० चालन] १ किसी को चलने मे प्रवृत्त करना। चलाना। २ हिलाना-डुलाना। ३ एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ४ बहू को उसके मैके से बिदा कराके लाना। उदा०—पाखहू न बीत्यो चालि आयो हमे पीहर ते।—शिवराम। ५ कार्य या उसके भार का निर्वाह या वहन करना। परिचालन करना। उदा०—चालत सब राज-काज आयसु अनुभरत।—तुलसी। ६ चर्चा या प्रसग उठाना। ७ आटे को छलनी मे रखकर इधर-उधर हिलाना जिसमे महीन आटा नीचे गिर जाय और भूसी या चोकर छलनी मे ऊपर रह जाय। छानना। ८ बहुत-सी चीजो मे से छाँटकर कोई अच्छी चीज अलग करना या निकालना। उदा०—जाति, वर्ण, सस्कृति समाज से मूल व्यक्ति को फिर से चालो।—पत।
अ० = चलना।
पद—चालन हार। (देखे)
पु० [स्त्री० चालनी] चलना (बडी चलनी)।

चालनीय—वि० [स०√चल् (चलना) +णिच् +अनीयर्] चलाये या हिलाये जाने के योग्य। जो चलाया या हिलाया-डुलाया जा सके।

चालबाज—वि० [हिं० चाल+फा० बाज़] [भाव० चालबाजी] स्वार्थ साधन के लिए व्यवहार आदि मे कपट या छल से भरी हुई चाले चलनेवाला। धूर्त्तता से अपना काम निकाल लेनेवाला।

चालबाजी—स्त्री० [हिं० चालबाज] १ चालबाज होने की अवस्था या भाव। २ व्यवहार आदि मे छल-पूर्ण चाले चलने की क्रिया या भाव। चालाकी। छल। धोखेबाजी।

चाला—पु० [हिं० चाल] १ चलने या प्रस्थान करने की क्रिया या भाव। २ दुल्हिन का पहली बार अपने मायके से ससुराल अथवा ससुराल से मायके जाने की क्रिया। उदा०—चाले की बाते चली सुनत सखिन के टोला।—बिहारी। ३ वह दिन या समय जो किसी दिशा मे रवाना होने के लिए शुभ समझा जाता है। जैसे-रविवार को पश्चिम का चाला नही है बल्कि सोमवार को है। ४ एक प्रकार का औपचारिक कृत्य जो मृतक की षोडशी आदि हो जाने पर रात के समय किया जाता है। ५ दे० 'चलौआ'।

चालाक—वि० [फा०] [भाव० चालाकी] १ कौशलपूर्ण ढग से कोई काम करनेवाला। होशियार। २ व्यवहार-कुशल। सूझ-बूझ वाला। समझदार। ३ चालबाज। धूर्त्त।

चालाकी—स्त्री० [फा०] १ चालाक होने की अवस्था या भाव। चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। २ चालबाजी। धूर्त्तता।
मुहा०—चालाकी खेलना = धूर्तता पूर्ण चाल चलना।
३ कौशल या होशियारी से मिली हुई युक्ति।

चालान—पु० = चलान। (देखे)

चालानदार—पु० =चलानदार।

चालिया—पु० [हिं० चाल+इया (प्रत्य०)] धूर्त्तता-पूर्ण चाले चलनेवाला। चालबाज।

चालिस—वि० = चालीस।

चाली—वि० [हिं० चाल] १ चालबाज। २ नटखट। पाजी। ३ चचल।

†पु० [?] केंचुआ।

†स्त्री० [हिं० चाल = छाजन] १ नाव के ऊपर का छप्पर या छाजन। २ घोडे की जीन।

†पु० [हिं० चलाना] व्यक्तियो का वह दल जो अपने काम से अलग कर दिया या हटा दिया गया हो।

चालीस—वि० [स० चत्वारिशत्, पा० चत्तालीस] जो गिनती मे तीस से दस अधिक हो। जैसे—चालीस दिन।

पु० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४०।

चालीसवाँ—वि० [हिं० चालीस] गिनती मे जिसका स्थान उनतालीसवे के बाद पडता हो। जो क्रम मे ४० के अक या सख्या पर पडता हो।

पु० मुसलमानो का एक कृत्य जो किसी के मर जाने के चालीसवे दिन किया जाता है। चहलुम।

चालीस-सेरा—वि० [हिं० चालीस+सेर] १ (घी) विशुद्ध या अमिश्रित। २ निरा मूर्ख। (व्यक्ति)

चालीसा—पु० [हिं० चालीस] [स्त्री० चालीसी] १ चालीस वस्तुओ का समूह। जैसे—चालीसा चूरन (जिसमे चालीस चीजे पडती है।) २ चालीस पदो का सकलन या समूह। जैसे—हनुमान-चालीसा। ३ चालीस दिनो का समय। चिल्ला। ४ मृत्यु के चालीसवे दिन होनेवाला कृत्य। चालीसवाँ। (मुसल०)

चालुक्य—पु० [?] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रतापी राजवश जिसने ईसवी ५वी शताब्दी से ईसवी १२वी शताब्दी तक राज्य किया था।

चालू—वि० [हिं० चलना] १ जो चल रहा हो। जो ठीक प्रकार से काम कर रहा हो। जैसे—चालू घडी। २ जो चलन या रिवाज मे हो। प्रचलित। जैसे—चालू प्रथा, चालू सिक्का। ३ जो प्रयोग या कार्य रूप मे लाया जा रहा हो। ४ चलता हुआ। चालाक। जैसे—चालू आदमी।

†पु० = चाला।

चाल्य—वि० [स० √चल् (चलना)+णिच्+यत्] जो चलाया जा सके। चालनीय।

चाल्ह—स्त्री० = चेल्हा (मछली)।

चाल्ही—स्त्री० [हिं० चलाना ?] नाव मे वह स्थान जहाँ मल्लाह बैठकर नाव खेता या चलाता है।

चाँय चाँय—[अनु०] चिडियो का या चिडियो का सा शोर।

चावंड—पु० = चामुड।

चाव—पु० [हिं० चाह] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति होनेवाली अनुरागजन्य और स्नेहपूर्ण ऐसी अभिलाषा या लालसा जिसमे यथेष्ट उत्कठा भी मिली हो। अरमान। उदा०—चित्र केतु पृथ्वीपति राव। सुत हित भयो तासु हिय चाव।—सूर।

मुहा०—चाव निकालना =अभिलाषाएँ या लालसाएँ जी खोलकर पूरी करना।

२ अनुराग। प्रीति। स्नेह। ३ उत्कठा। ४ प्रिय या प्रेम-पात्र के साथ किया जानेवाला लाड-प्यार। दुलार। उदा०—बिछुडे सजन मिलाय दे, मै कर लूँ मन के चाव।—गीत।

पद—चाव-चोचले = नाज-नखरे।

५ उत्साह और उमग से भरा हुआ आनद।

चावडा—पु० [?] १ एक प्रकार के राजपूत। चावण। २ खत्रियो की एक उपजाति या वर्ग।

चावड़ी—स्त्री० [देश०] यात्रियो के टिकने या ठहरने का स्थान। पडाव।

चावण—पु० [देश०] गुजरात का एक प्रसिद्ध और प्राचीन राजपूत वश जिसने कई शताब्दियो तक गुजरात मे राज्य किया था। इस वश की राजधानी अन्हिलवाडा मे थी। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय सोमनाथ चावण राजा के ही अधिकार मे था।

चावना*—स०=चाहना।

चावर+—पु०=चावल।

चावल—पु० [स० तडुल?] १ धान के बीजो के अन्दर के दाने जिनकी गिनती प्रसिद्ध अन्नो मे है।

विशेष—इनका उबाला या पकाया हुआ रूप ही भात कहलाता है।

मुहा०—चावल चबवाना = जिन लोगो पर कोई चीज चुराने का सदेह हो, उन्हे जादू-टोने के रूप मे इस उद्देश्य से कच्चे चावल चबवाना कि जो चोर होगा उसके मुँह से थूकने पर खून निकलेगा।

२ उबाला या पकाया हुआ चावल। भात। ३ बीजो के छोटे दाने जो किसी प्रकार खाने के काम मे आवे। जैसे—तिन्नी या साँवे के चावल। ४ लगभग एक चावल की तौल जो रत्ती के आठवे भाग के रूप मे मानी जाती है।

पद—चावल भर = (क) रत्ती के आठवे भाग के बराबर। (ख) बहुत ही थोडा।

चाशनी—स्त्री० [फा०] १ खाने से पहले चखकर देखी जानेवाली चीज या उसका कोई अश। खाने की चीज का नमूना। २ गुड, चीनी, मिसरी आदि के घोल को पकाकर गाढा किया हुआ वह रूप जिसमे दवाएँ, पकवान, मिठाइयाँ आदि पागी जाती है। शीरा।

मुहा०—चाशनी देखना = शीरा पकाने के समय यह देखना कि चाशनी ठीक तरह से तैयार हो गई है या नही।

३ किसी चीज का वह थोडा-सा अश जो किसी दूसरी चीज मे उसका स्वाद बढाने के लिए मिलाया जाय। जैसे—पीने के तमाकू मे मिलाई हुई खमीर की चाशनी। ४ किसी चीज या बात का ऐसा आनद, मजा या स्वाद जो उस बात के प्रति लालसा उत्पन्न करे। चस्का। जैसे—जब तुम्हे अफीम (या शराब) की चाशनी मिल गई है, तब तुम उसे जल्दी नही छोडोगे। ५. चाँदी, सोने आदि का वह थोडा-सा अश जो सुनारो को गहने बनाने के लिए देने से पहले इसलिए अपने पास रख लिया जाता है कि जब गहना बन जाय तब उससे मिलाकर देखा जा सके कि सुनार ने उसमे किसी तरह का खोट तो नही मिलाया है।

चाशनीगीर—पु० [फा०] वह कर्मचारी जो नवाबो और बादशाहो के यहाँ उनके खाद्य पदार्थ पहले चखकर देखने के लिए नियुक्त होता था।

चाष—पु० [स० √चष् (खाना)+णिच्+अच्] १ नीलकठ पक्षी। २ चाहा नामक पक्षी।
†पु० =चक्षु (नेत्र)।

चास—स्त्री० [हिं० चासा] १ खेत जोतने की क्रिया या भाव। जोताई। २ जोता हुआ खेत।
स्त्री० [फा० चाशनी] किसी चीज की जाँच या परख के लिए उसमे से निकाला हुआ कुछ अश। चाशनी।

चासना—अ० [हिं० चास] जोतना।

चासनी—स्त्री० =चाशनी।

चासा—पु० [देश०] १ उडीसा की एक जाति जो खेती-बारी करती है। २ किसान। खेतिहर। ३. हल चलाने या जोतनेवाला। हलवाहा।

चाह—स्त्री० [स० उत्साह, प्रा० उच्छाह] १ वह मनोवेग जो मनुष्य को कोई ऐसी वस्तु प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है जिससे उसे सतोष या सुख मिल सकता हो। जैसे—मुझे आपके दर्शनो की चाह थी। २ प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी को चाहने की अवस्था या भाव। अनुराग। प्रेम। जैसे—दिल को तुम्हारी ही चाह है। ३ चाहे जाने की अवस्था या भाव। आवश्यकता। गरज। जरूरत। जैसे—जिसकी यहाँ चाह है, उसकी वहाँ भी चाह है। ४ इस बात की जानकारी या परिचय कि किसे किस चीज की आवश्यकता या चाह है। उदा०—सब की चाह लेइ दिन राती।—जायसी। ५ दे० 'चाव'।
पु० [फा०] कूआँ। कूप।
†स्त्री०=चाय।
*स्त्री० [हिं० चाल=आहट] १ खबर। समाचार। उदा०—को सिंहल पहुँचावै चाहा।—जायसी। २ टोह। ३ गुप्त भेद। रहस्य।

चाहक—वि० [हिं० चाहना] १ चाहनेवाला। २ अनुराग या प्रेम करनेवाला।

चाहत—स्त्री० [हिं० चाहना] किसी को अनुराग तथा उत्कठापूर्वक चाहने की अवस्था, क्रिया या भाव। चाह। प्रेम।

चाहना—स० [हिं० चाह] १ ऐसी वस्तु की प्राप्ति अथवा ऐसे कार्य या बात की सिद्धि की इच्छा करना जिससे सतोष या सुख मिल सकता हो। जैसे—कौन नही चाहता कि मैं धनी हो जाऊँ। २ किसी से कोई चीज लेने या कोई कार्य कर देने की विनयपूर्ण प्रार्थना करना। जैसे—हम तो आपकी की कृपा-दृष्टि चाहते है। ३ अधिकार या अनधिकारपूर्वक किसी का या किसी से कुछ लेने की उत्कट या उग्र इच्छा व्यक्त करना। जैसे—मेरा भाई तो मेरी जान लेना चाहता है। ४ अनुराग, प्रेम या स्नेह-पूर्वक किसी व्यक्ति को अपने पास और सुख से रखने की अभिलाषा या कामना करना। जैसे—माता अपने छोटे पुत्र को बहुत चाहती है। ५ शृगारिक क्षेत्र मे, स्त्री के मन मे किसी पुरुष के प्रति अथवा प्रति-क्रमात् कामवासना से युक्त अनुराग या प्रेम का भाव होना। जैसे—राजा अपनी छोटी रानी को सब से अधिक चाहता था। ६ अनुराग, चाह या प्रेम से युक्त होकर किसी की ओर ताकना या देखना। जोहना। उदा०—अली अली की ओट ह्वै चली भली बिधि चाहि।—बिहारी। ७ साधारण रूप से देखना। दृष्टिपात करना। उदा०—चालिया चदाणी मग चाहि।—प्रिथीराज।
स्त्री० चाहने की अवस्था या भाव। जैसे—आप की चाहना तो यहाँ भी है।

चाहा—पु० [स० चाष] एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका सारा शरीर फूलदार और पीठ सुनहरी होती है। लोग मास के लिए इसका शिकार करते हैं। यह कई प्रकार का होता है। जैसे-चाहा करमाठी =गर्दन सफेद बाकी सब अग काले। चाहा चुक्का =चोच और पैर लाल, बाकी सब अग खाकी, चाहा लमगोडा =लबी और चितकबरी चोच वाला।
†पु० [हिं० चाहना] [स्त्री० चाही] वह जिसे चाहा या जिससे प्रेम किया जाय। चहेता। प्रिय।

चाहि*—अव्य० [स० चैव =और भी?] बनिस्बत। से। किसी की तुलना मे अधिक या बढकर। उदा०—कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा।—तुलसी।

चाहिए—अव्य० [हिं० चाहना] १ आवश्यकता या जरूरत है। जैसे—हमे वह पुस्तक चाहिए। २ उचित, मुनासिब या वाजिब है। जैसे—आगे से तुमको सँभलकर चलना चाहिए।

चाही—वि० [फा० चाह =कूआँ] (खेत) जो कुएँ के पानी से सीचा जाता हो।

चाहे—अव्य० [हिं० चाहना] १ 'यदि जी चाहे' का सक्षिप्त रूप। यदि जी चाहे। यदि मन मे आवे। जैसे-(क) चाहे यहाँ रहो, चाहे वहाँ। (ख) जो चाहे सो करो। २ दो मे से किसी एक वरण करने के प्रसग मे, जो इच्छा हो। जो चाहते हो। जैसे—चाहे कपडा ले लो, चाहे रुपया। ३ जो कुछ हो सकता हो, वह सब, या उनमे से कुछ। जैसे—चाहे जो हो, तुम वहाँ जरूर जाओ।

चिआँ—पु० =चीयाँ (इमली का बीज)।

चिउँटा—पु० =च्यूँटा। (देखे)

चिउँटी—स्त्री० =च्यूँटी। (देखे)

चिकारा—पु० =चिकारा।

चिगट—पु० [स०] [स्त्री० अल्पा० चिगटी] झीगा मछली।

चिगड़ा—पु० [स० चिंगट] झीगा (मछली)।

चिगना—पु० [स० चिगट?] १ मुरगी आदि का छोटा बच्चा। २ छोटा बच्चा।

चिगारी—स्त्री० =चिनगारी।

चिगुड़ना—अ० [हिं० सिकुडना] १ सूखने आदि के कारण ऊपरी तल मे झुर्रियाँ या शिकन पडना। जैसे—शरीर का चमडा चिंगुडना। २ एक ही स्थिति मे रहने अथवा तनाव या दबाव पडने और फलत खून का दौरा रुकने के कारण नसो आदि का इस प्रकार तनना या सिकुडना कि वह अग सहसा उठाया या फैलाया न जा सके। ३ सकुचित होना। सिकुडना। जैसे—कपडा चिगुडना।

चिगुडा—पु० [हिं० चिगुडना] बहुत देर तक एक स्थिति मे रहने के कारण किसी अग के चिगुडने की स्थिति जिसमे वह अग फैलाने से जल्दी न फैले।
क्रि० प्र०—लगना।
पु० [?] एक प्रकार का बगला।

चिगुरना—अ० =चिगुडना।

चिंगुरा—पु० =चिगुडा।

चिंगुला—पु०[देश०] १ बच्चा। बालक। २ पक्षियो आदि का बच्चा।

चिंघाड—स्त्री०[स० चीत्कार] १ हाथी के बहुत जोर से चिल्लाने या बोलने का शब्द। २ किसी के सहसा उत्तेजित होकर बहुत जोर से चिल्लाने की ध्वनि या शब्द। (क्व०)

चिंघाडना—अ० [स० चीत्कार] १ हाथी का बहुत जोर से चिल्लाना या बोलना। २ उक्त प्रकार से सहसा जोर की ध्वनि या शब्द करना। चिल्लाना। चीखना।

चिंघाना—अ०=चिघाडना।

चिंचा—स्त्री० [स० चिम्√चि (चयन)+ड–टाप्] १ इमली। २ इमली का बीज। चीआँ।

चिंचाटक—पु० [स० चिचा√अट् (गमनादि+)ण्वुल्–अक] चेच नामक साग।

चिंचाम्ल—पु०[स० चिचा-अम्ल, उपमि०स०] चूका नामक साग।

चिंचिका—स्त्री०[स० चिचा+कन्–टाप्, ह्रस्व, इत्व] घुँघची। गुजा।

चिंचिनी—स्त्री०[स०] १ इमली का पेड। २ इमली की फली।

चिंची—स्त्री०[स० चिच+ङीष्] गुजा। घुँघची।

चिंचोटक—पु० [स० चिचाटक, पृषो० सिद्धि] चेच नाम का साग।

चिंजा—पु० [स० चिरजीव] [स्त्री० चिंजी] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लडका। ३ जीव-जतुओ का छोटा बच्चा।

चिंड—पु०[स०] नृत्य का एक प्रकार या भेद।

चिंत—स्त्री० १=चिंतन। २=चिंता।

चिंतक—वि० [स०√चित् (सोचना-विचारना)+णिच्+ण्वुल्–अक] १ चिंतन या मनन करनेवाला। २ चिता करनेवाला। ३ चाहने तथा सोचनेवाला। जैसे—शुभचिंतक।

चिंतन—पु०[स०√चित्+णिच्+ल्युट्–अन] [वि० चिंतनीय, चिंतित, चिंत्य] १ कोई बात समझने या सोचने के लिए मन मे बार-बार किया जानेवाला उसका ध्यान या विचार। मन ही मन किया जानेवाला विवेचन। गौर। जैसे—यह विषय अच्छी तरह चिंतन करने के योग्य है। २ किसी वस्तु या विषय का स्वरूप जानने या समझने के लिए मन मे रह-रहकर होनेवाला उसका ध्यान या स्मरण। जैसे—ईश्वर चिंतन मे समय बिताना।

चिंतना—स्त्री० [स०√चित्+णिच्+युच्–अन, टाप्] १ चिंतन करने की क्रिया या भाव। चिंतन। २ चिंता। फिक्र। ३ सोच-विचार। *स० १ किसी का चिंतन या ध्यान करना। २ किसी बात की चिंता या फिक्र करना। ३ किसी विषय का विचार करना। गौर करना। सोचना-समझना।

चिंतनीय—वि०[स√चित्+णिच्+अनीयर्] १ जिसका चिंतन किया जा सके या हो सके। जो चिंतन का विषय हो सके। २ जिसके सबध मे चिंता, फिक्र या सोच करना आवश्यक अथवा उचित हो। जो चिंता का विषय हो। जैसे—रोगी की दशा चिंतनीय है।

चिंतवन*—पु०=चिंतन।

चिंता—स्त्री०[स०√चित्+णिच्+अङ्–टाप्] १ चिंतन करने का कार्य या भाव। किसी बात या विचार का मन मे होनेवाला ध्यान या स्मरण। मन मे उठने और कुछ समय तक बनी रहनेवाली भावना। २ मन को विकल करने या विचलित रखनेवाली वह भावना जो कोई कष्ट या सकट उपस्थित होने या सामने आने पर उसका निवारण करने या उससे बचने के उपाय सोचने के सबध मे होती है। फिक्र। सोच। (वरी)

विशेष—साहित्य मे तैंतीस सचारी भावो मे से एक जिसके विभाव धन-हानि, वस्तु का अपहरण, निर्धनता आदि और अनुभाव उच्छ्वास, चिंतन, दुर्बलता, नत मुख होना आदि कहे गये है। और इसे वियोग की दस दशाओ मे दूसरा स्थान दिया गया है।

३ किसी बात के महत्त्व का विचार। परवाह। (सदा नहिक रूप मे) जैसे—तुम्हे इसकी क्या चिंता है!

मुहा०—(किसी बात की) चिंता लगना=चिंता का बराबर बना रहना। जैसे—तुम्हे तो दिन-रात खाने की चिंता लगी रहती है।

पद—कुछ चिंता नहीं=कुछ परवाह नही। खटके की कोई बात नही है। चिंता मत करो।

४ कोई ऐसी बात या विषय जिसके लिए चिंतन या फिक्र की जाती हो या की जानी चाहिए।

चिंताकुल—वि० [चिंता-आकुल, तृ०त०] चिंता से आकुल या उद्विग्न।

चिंता-जनक—वि०[ष०त०] १ चिंता उत्पन्न करनेवाला। जिसके कारण मन मे चिंता हो। २ जिसकी अवस्था गभीर या शोचनीय हो।

चिंतातुर—वि०[चिंता-आतुर,तृ०त०] चिंता से उद्विग्न या घबराया हुआ।

चिंतापर—वि०[चिंता-पर, ब०स०] जो चिंतन या चिंता मे लगा हुआ या लीन हो।

चिंता-मणि—पु०[स०त०] १ एक प्रसिद्ध कल्पित मणि या रत्न जिसके सबध मे कहा जाता है कि जिसके पास यह रहता है, उसकी सब आवश्यकताएँ आप से आप और तुरत पूरी हो जाती है। २ कोई ऐसी चीज या तत्त्व जो किसी विषय की सभी आवश्यकताएँ और इच्छाएँ पूरी कर दे। ३ ब्रह्मा। ४ परमात्मा। ५ सरस्वती का एक मत्र जो लडके की जीभ पर इसलिए लिखा जाता है कि उसे खूब विद्या आवे। ६ एक बुद्ध का नाम। ७ घोडे के गले की एक भौरी जो शुभ मानी जाती है। ८ वह घोडा जिसके गले मे उक्त भौरी हो। ९ फलित ज्योतिष मे यात्रा का एक योग। १० वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो अभ्रक, गधक, पारे आदि के योग से बनता है। ११ पुराणानुसार एक गणेश जिन्होने कपिल के यहाँ जन्म लेकर महाबाहु नामक दैत्य से उस चितामणि रत्न का उद्धार किया था जो उसने कपिल से छीन लिया था।

चिंता-वेश्म (न्)—पु०[ष०त०] गोष्ठी, मत्रणा, विचार आदि करने का स्थान। मत्रणागृह।

चिंता-शील—वि०[ब०स०] १ जो किसी बात की प्राय या बहुत चिंता करता रहता हो २ दे० 'चिंतन'-शील'।

चिंति—पु० [स०] १ एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

चिंतित—भू०कृ० [स०√चित्+क्त] जो चिंता से विकल हो रहा हो। जिसे किसी बात की चिंता या फिक्र हो रही हो। चितायुक्त।

चिंतिति—स्त्री०[स०√चित्+क्तिन्] चिंता।

चिंतीडी—स्त्री०[स०=तितिडी, पृषो० सिद्धि] इमली।

चिंत्य—वि०[स० चित्+ण्यत्] १ जिसके सबध मे चिंता करना आवश्यक या उचित हो। २ दे० 'चिंतनीय'।

चिंदी—स्त्री० [देश०] किसी चीज का बहुत ही छोटा टुकडा या धज्जी।

मुहा०—चिंदी चिंदी करना=किसी चीज को ऐसा तोडना-फोडना या

चीरना-फाडना कि उसके टुकडे-टुकडे हो जायँ। धज्जियो के रूप मे लाना।

हिंदी की चिंदी निकालना=बहुत ही सूक्ष्म परन्तु व्यर्थ का तर्क करना या दोष निकालना।

चिंपा—पु०[देश०] एक प्रकार का काला कीडा जो ज्वार, बाजरे, अरहर और तमाखू की फसल मे लगकर उसे खा जाता है।

चिंपाजी—पु०[अ० शिपैंजी] अफ्रीका मे होनेवाला एक प्रकार का बनमानुष जिसकी आकृति मनुष्य से बहुत मिलती-जुलती होती है। इसके सारे शरीर पर काले, घने और मोटे बाल होते है। यह प्राय झुड बनाकर रहता है।

चिउँटा—पु०=च्यूँटा। (देखे)

चिउँटी—स्त्री०=च्यूँटी। (देखे)

चिउडा—पु०=चिडवा। (देखे)

चिउरा—पु०=चिडवा।

चिउली—स्त्री०[देश०] १ महुए की जाति का एक जगली पेड जिसमें से एक प्रकार का तेल निकलता है जो मक्खन की तरह जम जाता है। और इसी लिए जो कही-कही घी मे मिलाया जाता है। २ एक प्रकार का रगीन रेशमी कपडा।

स्त्री०[स० चिपिट, प्रा० चिविड, चिविल] चिकनी सुपारी।

चिक—स्त्री०[तु० चिक] बाँस या सरकडे की तीलियो का बना हुआ झँझरीदार परदा। चिलमन।

पु० मास बेचनेवाला कसाई। बूचड।

स्त्री०[अनु०] कमर, पीठ आदि मे बल पडने के कारण सहसा उत्पन्न होनेवाला दर्द या चिलक।

पु०=चेक (देयादेश)।

चिकट—वि०=चिक्कट।

चिकटना—अ० [हिं० चिकट] चिक्कट से युक्त होना। मैल जमने के कारण चिपचिपा होना।

चिकटा—वि०=चिक्कट।

चिकडी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है। इस लकडी की कघियाँ बहुत अच्छी बनती है।

चिकन—पु०[फा०] एक प्रकार का सूती कपडा जिस पर सूई और डोरे से कढे हुए उभारदार फूल या बूटियाँ बनी होती है।

चिकनकारी—स्त्री० [फा०] कपडे पर सूई-डोरे की सहायता से उभारदार फूल, बूटियाँ आदि काढने या बनाने की कला या काम।

चिकनगर—पु०[फा०] चिकन का काम करनेवाला कारीगर।

चिकनदोज—पु० =चिकनगर।

चिकना—वि०[स० चिक्कण, प्रा० चिक्कण्ण, गु० चिकोणु, मरा० चिक्कण] [वि० स्त्री० चिकनी] १ जिसका ऊपरी तल जरा भी ऊबड-खाबड या खुरदरा न हो, बल्कि इतना समतल हो कि उँगली या हाथ फेरने से कही उभार न जान पडे। जैसे—चिकना पत्थर, चिकनी लकडी। २ जिसका ऊपरी तल बहुत ही कोमल और बिलकुल सम हो। जिस पर पैर या हाथ बिना किसी बाधा या रुकावट के आगे बढता या फिसलता जाय। जैसे—चिकनी जमीन, चिकनी मलमल। ३ जिसका ऊपरी तल या रूप बना सँवारकर बहुत ही मोहक और स्वच्छ किया गया हो। जैसे—तुम्हारा यह चिकना मुँह देखकर ही कोई तुम्हे नौकरी नही देगा।

मुहा०—चिकने घडे पर पानी पडना=अच्छी बातो का उसी प्रकार व्यर्थ सिद्ध होना जिस प्रकार चिकने घडे पर पानी पडना इसलिए व्यर्थ सिद्ध होता है कि वह पानी तुरत बहकर नीचे चला जाता है।

पद—चिकना घडा=(क) वह जिस पर उपदेश, दड आदि का कुछ भी प्रभाव न पडता हो, फलत. निर्लज्ज या लापरवाह। (उक्त मुहावरे के आधार पर) **चिकना-चुपडा**=(क) घी, तेल आदि लगाकर अच्छी तरह चिकना और साफ किया हुआ। (ख) अच्छी तरह सजाया हुआ। (ग) ऊपर से देखने पर बहुत अच्छा जान पडने या प्रिय लगनेवाला। जैसे—चिकनी-चुपडी बाते।

४ जिस पर घी, चरबी, तेल या ऐसा ही और कोई स्निग्ध पदार्थ चुपडा या लगा हो। जिसका खुरदरापन या रुखाई किसी प्रकार दूर कर दी गई हो। ५ जिसका ऊपरी रूप केवल दिखाने के विचार से सँवारकर सुन्दर बनाया गया हो।

मुहा०—चिकना देखकर फिसल पड़ना=केवल वैभव, सजावट, सौंदर्य आदि देखकर मोहित होना। केवल ऊपरी रूप देखकर रीझना।

६ केवल दूसरो को प्रसन्न करने के लिए चिकनी-चुपडी अर्थात् मीठी और सुन्दर बाते कहनेवाला। खुशामदी। चाटुकार। ७ अनुराग, प्रेम या स्नेह करनेवाला। (क्व०)

पु० घी, चरबी, तेल आदि चिकने पदार्थ। जैसे—इसमे चिकना बहुत अधिक पडा है।

चिकनाई—स्त्री०[हिं० चिकना+ई (प्रत्य०)] १ चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २ मन, व्यवहार आदि की सरसता या स्निग्धता। ३ घी, तेल आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाना—स०[हिं० चिकना] १ खुरदरापन दूर करके ऊपरी तल चिकना, सम या साफ करना। २ घी, तेल या और कोई चिकना पदार्थ लगा कर रूखापन दूर करना। ३ किसी प्रकार साफ और स्वच्छ करना या बनाना-सँवारना। ४ केवल अनुरक्त या प्रसन्न करने के लिए मीठी बाते कहना। ५ कोई बिगडी हुई बात बनाने के लिए बनावटी बाते कहना।

अ० १ चिकना होना। २ चिकने पदार्थ से युक्त होकर स्निग्ध बनना। ३ शरीर मे कुछ चरबी भरने और ऊपर से सँवारे-सजाये जाने के कारण डील-डौल या रूप-रग अच्छा निकलना या बनना। जैसे—जब से उनका रोजगार चला है, तब से बहुत कुछ चिकना गये है। ४ अनुराग, स्नेह आदि से युक्त होना। उदा०—ज्यो ज्यो रुख रूखो करति त्यो त्यो चित चिकनाय।—बिहारी।

चिकनापन—पु०[हिं० चिकना+पन (प्रत्य०)] चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनाई। चिकनाहट।

चिकनावट†—स्त्री०[हिं० चिकना] १ चिकनी-चुपडी बाते कहने की अवस्था या भाव। २ बिगडा हुआ काम बनाने के लिए मीठी बाते कहने की क्रिया या भाव। जैसे—तुम्हारी यह चिकनावट हमे अच्छी नही लगती। ३ दे० 'चिकनाहट'।

चिकनाहट—स्त्री०[हिं० चिकना+हट (प्रत्य०)] चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनापन।

चिकनिया—वि०[हिं० चिकना] (व्यक्ति) जो प्राय या सदा तेल-फुलेल आदि लगाकर और खूब बन-ठनकर रहता हो। छैला और बाँका। सज-

धजवाला और सुन्दर। उदा०—सूरदास प्रभु तजी कामरी अब हरि भए चिकनियाँ।—सूर।

चिकनी मिट्टी—स्त्री० [हिं० चिकनी+मिट्टी] १ एक प्रकार की लसदार मिट्टी जो सिर मलने आदि के काम मे आती है। करैली मिट्टी। २ पीले या सफेद रग की वह लसीली मिट्टी जो हाथ धोने तथा जमीन, दीवार आदि लीपने-पोतने के काम आती है।

चिकनी सुपारी—स्त्री० [स० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई बढिया सुपारी जो चिपटी और अधिक स्वादिष्ट होती है। चिकनी डली।

चिकर—पु० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपडा।

चिकरना—अ० [स० चीत्कार, प्रा० चीक्कार, चिम्कार] १ चीत्कार करना। जोर से चिल्लाना। २ चिघाडना।

चिकवा—पु० [देश०] १ एक प्रकार का टसर। २ उक्त टसर का बना हुआ कपडा। चिकट।

†पु०=चिक (कसाई)।

चिकार—पु० [स० चीत्कार, प्रा० चिक्कार] १ चीत्कार। चिल्लाहट। क्रि० प्र०—पडना।—मचना।—मचाना।

२ चिघाड।

चिकारना—अ० [हिं० चिकार] १ चीत्कार करना। चिल्लाना। २ हाथी का चिघाडना।

चिकारा—पु० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १ सारगी की तरह का एक बाजा जो घोडे के बालो की कमानी से बजाया जाता है। २ [स्त्री० चिकारी] हिरन की जाति का एक जानवर जो बहुत तेज दौडता है और अपनी बडी तथा सुन्दर आँखो के लिए प्रसिद्ध है। इसके स्वादिष्ट मास के लिए इसका शिकार किया जाता है। छिकरी। छिगार।

चिकारी—स्त्री० [हिं० चिकारा] १ छोटा चिकारा। २ मच्छर की तरह का एक फतिगा।

†स्त्री० =चीत्कार।

चिकित—पु० [स० √कित् (ज्ञाने)+यङ—लुक्, द्वित्वादि, +अच्] एक ऋषि का नाम।

चिकितायन—पु० [स० चिकित+फक्—आयन] चिकित ऋषि के वशज।

चिकित्सक—पु० [स० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +ण्वुल्—अक] रोगो की चिकित्सा करनेवाला, वैद्य।

चिकित्सन—पु० [स० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +ल्युट्—अन] चिकित्सा करना।

चिकित्सन-प्रमाणक—पु० [ष० त०] वह प्रमाण-पत्र जिसमे चिकित्सक किसी की अवस्था या अस्वस्थता को प्रमाणित करता है। (मेडिकल सर्टिफिकेट)

चिकित्सा—स्त्री० [स० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] १ वे सब उपाय और कार्य जो किसी रोगी का रोग दूर कर उसे स्वस्थ बनाने के लिए किये जाते है। इलाज। (ट्रीटमेंट) २ वैद्य का काम या व्यवसाय। ३ उक्त की कोई विशिष्ट प्रणाली या ढग। (थेरैपी) जैसे—जल-चिकित्सा, विद्युत् चिकित्सा।

चिकित्सालय—पु० [चिकित्सा-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ रोगियो की चिकित्सा की जाती है। अस्पताल। दवाखाना।

चिकित्सावकाश—पु० [चिकित्सा-अवकाश, च० त०] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के लिए मिलती है। (मेडिकल लीव)

चिकित्सा-शास्त्र—पु० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमे अनेक प्रकार के रोगो के लक्षणो और उनकी चिकित्साओ का विवेचन होता है। (मेडिकल सायन्स)

चिकित्सित—भू० कृ० [स० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +क्त] जिसकी चिकित्सा या दवा की गई हो। जिसका इलाज किया गया हो।

पु० एक प्राचीन ऋषि का नाम।

चिकित्सु—पु० [स० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +उ] चिकित्सक।

चिकित्स्य—वि० [स० √कित् +सन् द्वित्वादि, +यत्] १ (रोग) जिसे दूर किया जा सके। २ (रोगी) जिसे स्वस्थ बनाया जा सके। (क्योरेबुल, उक्त दोनो अर्थो मे)

चिकिन—वि० [स० नि=नत नासिका+इनच्, चिक् आदेश] चिपटी नाकवाला।

पु०=चिकन।

चिकिल—पु० [स० √चि (चयन)+ इलच् क् आगम] कीचड। पक।

चिकीर्षक—वि० [स० √कृ (करना)+सन्, द्वित्वादि, +ण्वुल्—अक] (व्यक्ति) जो कोई कार्य करने के लिए इच्छुक हो।

चिकीर्षा—स्त्री० [स० √कृ+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] [वि० चिकीर्षित, चिकीर्ष्य] कुछ या कोई काम करने अथवा कोई काम जानने की इच्छा।

चिकुटी†—स्त्री०=चिकोटी।

चिकुर—पु० [स० चि√कुर् (शब्द करना)+क] १ सिर के बाल। केश। २ पर्वत। पहाड। ३ रेगकर चलनेवाले जतु। सरीसृप। ४ एक प्रकार का पक्षी। ५ एक प्रकार का वृक्ष। ६ छछूंदर। ७ गिलहरी।

वि० चचल। चपल।

चिकुर-पक्ष—पु० [ष० त०] १ सिर के सँवारे और सजाये हुए बाल। २ बालो की लट। ज़ुल्फ।

चिकुर-भार—पु० [ष० त०]=चिकुर-पक्ष।

चिकुर-हस्त—पु० [ष० त०] =चिकुर-पक्ष।

चिकुला—पु० [स० चिकुर] १ चिकुर नामक पक्षी का बच्चा। २ चिडिया का बच्चा।

चिकूर—पु० [स० चिकुर, नि०-दीर्घ]=चिकुर (केश)।

चिकोटी—स्त्री० [अनु०] हाथ की चुटकी की वह मुद्रा जिससे किसी के शरीर का थोडा-सा मास पकडकर (उसे पीडित अथवा कभी सचेत करने के लिए) दबाया जाता है। चुटकी।

चिक्क—वि० [स० चिक्√क (शब्द करना)+कृ] चिपटी नाकवाला।

पु० छछूंदर।

पु०=चिक (कसाई)।

स्त्री०=चिक (तीलियो का झँझरीदार परदा)।

चिक्कट—वि० [स० चिक्लिद] १ चिकनाहट और मैल से भरा हुआ। जिस पर तेल आदि की मैल जमी हो। बहुत गदा और मैला। २ चिप-चिपा। लसीला।

†पु०[?]१ एक प्रकार का टसर या रेशमी कपडा। २ वे कपडे जो भाई अपनी बहन को उसकी सतान के विवाह के समय देता है।

चिक्कण—वि० [स० चित्√कण् (शब्द करना)+क] चिकना।
पु० १ सुपारी का पेड और फल। २ हरीतकी। हर्रे। ३ आयुर्वेद मे पाक बनाने के समय उसके नीचे की आँच की एक अवस्था।

चिक्कणा—स्त्री०[स० चिक्कण+टाप्]=चिक्कणी।

चिक्कणी—स्त्री०[स० चिक्कण+ङीष्] १ सुपारी। २ हड। हर्रे।

चिक्कन—वि०=चिकना।

चिक्करना—अ० [स० चीत्कार] चीत्कार करना। जोर से चिल्लाना।

चिक्कस—पु० [स०√चिक्क् (पीसना)+असच्] १ जौ का आटा अथवा जौ के आटे का बना हुआ भोजन। २ तेल और हल्दी के योग से बनाया हुआ जौ के आटे का उबटन जो प्राय यज्ञोपवीत के समय वटु के शरीर पर मला जाता है।
पु०[देश०] लोहे, पीतल आदि के छड का बना हुआ वह अड्डा जिस पर तोते, बाज, बुलबुल आदि पक्षी बैठाये जाते है।

चिक्का—स्त्री०[स०√चिक्क्+अच्–टाप्] सुपारी।
पु०=चिक्किर (चूहा)।
†पु०=चक्का।

चिक्कार—पु०=चीत्कार।

चिक्किर—पु०[स०√चिक्क्+इरच्] १ एक प्रकार का जहरीला चूहा जिसके काटने से सूजन होती है। २ गिलहरी।

चिक्लिद—पु० [स०√क्लिद् (गीला करना)+यङ्—लुक्, द्वित्वादि,+अच्] १ आर्द्रता। नमी। २ चद्रमा।

चिखना†—पु० [हि० चखना] मद्यपान के समय चखी या खाई जानेवाली चटपटी चीज। चाट।
†स०=चखना।

चिखर—पु०[स० चिकुर या चिक्क ?] चने का छिलका या भूसी। चने की कराई।

चिखल्ल—पु०[स०]१ कीचड। २ दलदल।

चिखुरन—स्त्री०[स० चिकुर ?] पौधो आदि के आस-पास आप से आप उग आनेवाली घास।

चिखुरना—स०[हि० चिखुरन] पौधो आदि के आस-पास उगी हुई घास को निकालना।

चिखुरा—पु० [स० चिक्किर या चिकुर] [स्त्री० चिखुरी] नर गिलहरी। गिलहरा।

चिखुराई—स्त्री०[हि०चिखुराना] चिखुरने अर्थात् पौधो आदि के आस-पास उगी हुई घास को उखाडने तथा निकालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
स्त्री०[हि० चीखना=चखना] चखने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

चिखुरी—स्त्री०[हि० चिखुरा] गिलहरी।

चिखौनी—स्त्री०[हि० चीखना] १ चखने या स्वाद देखने की क्रिया या भाव। २ मद्य आदि के साथ चखकर खाई जानेवाली चीज। चाट।

चिग—स्त्री०=चिक (बाँस की तीलियो का झँझरीदार परदा)।

चिचड़ा—पु० [स० चिचिड] १ डेढ, दो हाथ ऊँचा एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसकी डालो मे थोडी-थोडी दूर पर गाँठे होती है। इसकी जड, पत्तियाँ आदि दवा के काम आती है। इसके फल ककडी की तरह के होते और तरकारी के काम आते है। २ अपामार्ग। ३ पशुओ के शरीर मे चिमटकर उनका खून पीनेवाला एक प्रसिद्ध कीडा। किलनी।

चिचडी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा कीडा जो गाय, बैल आदि पशुओ के विभिन्न अगो मे चिपका रहता और उनका खून पीता है। किलनी।

चिचान—पु०[स०सचान] बाज पक्षी।

चिचावना†—अ०=चिल्लाना।

चिचिंगा—पु०=चचीडा।

चिचिंडा—पु०=चचीडा।

चिचियाना—अ०[अनु० ची ची] [भाव० चिचियाहट] बार-बार जोर से चिल्लाना।

चिचियाहट—स्त्री०=चिल्लाहट।

चिचुकना—अ०=चुचुकना।

चिचेडा—पु०=चचीडा।

चिचोडना—स०=चचोडना।

चिचोडवाना—स०=चचोडवाना।

चिच्छक्ति—स्त्री०[स० चिद्-शक्ति, कर्म०स०] चेतना-शक्ति।

चिच्छल—पु०[स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

चिजारा—पु०[?] मकान बनानेवाला कारीगर। मेमार। राज।

चिज्जड—वि०[स० चिद्-जड, कर्म० स०] जो कुछ अशो मे चेतन और कुछ अशो मे जड हो।

चिट—स्त्री०[हि० चिट्ठी से?] १ कागज का वह छोटा टुकडा जिस पर कोई बात लिखी जाय। छोटा पत्र। रुक्का। २ कागज, कपडे आदि का फटा हुआ कोई छोटा लबा टुकडा। धज्जी।

चिटक—वि०=चिक्कट या चीकट (बहुत गदा और मैला)।

चिटकना—अ० [अनु० चिट चिट+ना (प्रत्य०)] १ कडे तलवाले पदार्थ का चिट शब्द करते हुए टूटना अथवा उसमे पतली दरार पडना। जैसे—लालटेन की चिमनी चिटकना। २ लकडी का जलते समय चिट चिट शब्द करते हुए चिगारियाँ छोडना। ३ चिट शब्द करते हुए खिलना। जैसे—कलियो का चिटकना। ४ अपनी इच्छा के अनुसार कोई कार्य न होते देख अथवा अपने विरुद्ध कोई कार्य या बात होते देखकर सहसा कुछ बिगड खडे होना। ५ चिढना।

चिटकनी—स्त्री०=सिटकिनी।

चिटका—पु०=चिता।

चिटकाना—स० [अनु०]१ किसी चीज को चिटखने मे प्रवृत्त करना। २ किसी व्यक्ति को खिझाना या चिढाना।

चिटनवीस—पु०[हि० चिट+फा० नवीस] मध्ययुग मे दक्षिण भारतीय दरबारो आदि मे चिट्ठी-पत्री या हिसाब-किताब लिखनेवाला कर्मचारी। मुहर्रिर। लेखक।

चिटनीस—पु०=चिटनवीस।

चिटी—स्त्री० [स०√चिट् (प्रेरणा)+क–ङीष्] चाडाल वेष धारिणी योगिनी, जिसकी उपासना वशीकरण के लिए की जाती है। (तत्रशास्त्र)

चिट्की—स्त्री०=चुटकी।

चिट्ट—स्त्री०=चिट।

चिट्टा—वि०[स० सित, प्रा० चित] [स्त्री० चिट्टी] जिसका रग या वर्ण सफेद हो। जैसे—कपडा धोने से चिट्टा हो जाता है।

पु० १ कुछ विशेष प्रकार की मछलियो के ऊपर का सीप के आकार का बहुत सफेद छिलका या पपडी जिससे रेशम के लिए माँडी तैयार की जाती है। २ रुपया (दलालो की बोली)।

पु०[चटचट शब्द से अनु०?] वह उत्तेजना जो किसी को कोई ऐसा काम करने के लिए दी जाय जिसमे उसकी हानि या हँसी हो। झूठा बढावा। क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—चिट्टा लडाना=उक्त प्रकार की उत्तेजना देकर किसी को कुछ अनुचित काम करने मे प्रवृत्त करना।

चिट्ठा—पु० [हि० चिट्ठी का पु० रूप] १ आय-व्यय या लेन-देन का वह हिसाब जो मुख्यत एक ही कागज पर लिखा गया हो। उदा०—दिया चिट्ठा चाकरी चुकाई।—कबीर।

मुहा०—चिट्ठा बाँटना=(क) दैनिक मजदूरी पर काम करनेवाले मजदूरो की मजदूरी चुकाना। जैसे—अब मगल के दिन चिट्ठा बँटेगा। (ख) चिट्ठे पर लिखे हुए आदमियो को अन्न या रसद बाँटना। **चिट्ठा बाँधना**=आय-व्यय आदि का लेखा तैयार करना।

२ वह कागज जिसपर नियमित रूप से किसी निश्चित अवधि के आय-व्यय आदि का मोटा हिसाब लिखा रहता है और जिससे यह पता चलता है कि इस काम मे कितना आर्थिक लाभ या हानि हुई। जैसे—कोठी या दूकान का छमाही या सालाना चिट्ठा। ३ वह कागज जिस पर प्राप्त या प्राप्य धनराशि का विवरण लिखा रहता है।

मुहा०—चिट्ठा उतारना (क) चिट्ठा तैयार करना या बनाना। (ख) चिट्ठे पर लिखी हुई रकम वसूल करना। (ग) लोगो से रकम वसूल करते हुए चिट्ठे पर क्रमश लिखते या लिखाते चलना।

४ किसी प्रकार के काम मे लगनेवाले धन का विवरण। खरच के मदो की सूची। जैसे—ब्याह का चिट्ठा, मकान की मरम्मत का चिट्ठा। ५ किसी काम या बात का पूरा ब्योरा या विस्तृत विवरण।

पद—कच्चा चिट्ठा=(क) आय-व्यय आदि का वह आरभिक विवरण जो अभी पूरी तरह से जँचा न हो अथवा ठीक और पक्का न माना जा सकता हो। जैसे—पहले कच्चा चिट्ठा तैयार कर लो, तब रोकड पर चढाना। (ख) किसी आदमी के आचरण, व्यवहार आदि का अथवा घटना के सबध की ऐसी बातो का विवरण जो अभी तक पूरी तरह से सबके सामने न आया हो अथवा जिसमे कुछ ऐसी बाते हो जो अनुचित होने के कारण साधारणत सब लोगो के सामने आने योग्य न हो। जैसे—अब तुम चुपचाप बैठे रहो नही तो वह तुम्हारा सारा कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देगा।

क्रि० प्र०—खोलना।

चिट्ठी—स्त्री०[स० चिट् (?) चिट्टीका-चिट्टी, फा० चिट, उ० बँ० मरा० सि० चिठी, प० चिट्ठी] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जानेवाला कागज का वह टुकडा जिस पर सूचना आदि के लिए कुछ समाचार लिखे हो। खत। पत्र। २ मध्य युग मे किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसमे किसी को कुछ रुपए देने का आग्रह या आदेश होता था।

मुहा०—(किसी के नाम) चिट्ठी करना=किसी के नाम इस आशय का पत्र लिखना कि अमुक व्यक्ति या पत्र-वाहक को हमारे हिसाब मे इतने रुपए दे दो। **(किसी की) चिट्ठी भरना**=(क) किसी के लिखे हुए पत्र के अनुसार किसी को कुछ रुपए देना। (ख) किसी प्रकार की विवशता के कारण किसी दूसरे का ऋण, देन आदि चुकाना या और किसी तरह का खरच करना। जैसे—नानी खसम करे, दोहता चिट्ठी भरे।—कहा०।

३ कागज का कोई ऐसा छोटा टुकडा या पुरजा जिस पर कुछ लिखा हो। जैसे—निमत्रण या ब्राह्मण भोजन की चिट्ठी। ४ वह कागज या पत्र जिस पर कही भेजे जानेवाले माल की तालिका, मूल्य, विवरण आदि लिखे रहते है। ५ वह क्रियात्मक प्रणाली जिसके अनुसार कुछ नाम या किसी समस्या के नहिक और सहिक सूचक सकेत कागज के छोटे-छोटे टुकडो पर अलग-अलग लिखकर उन कागजो की छोटी गोलियाँ बनाई जाती है, और तब उनमे से कोई गोली उठाकर यह निश्चय किया जाता है कि अमुक काम कौन करे, अमुक चीज किसे मिले अथवा अमुक काम किया जाना चाहिए या नही। गोटी। (बैलट) क्रि० प्र०—उठाना।—डालना।—निकलना।—पडना।

चिट्ठी-पत्री—स्त्री०[हि० चिट्ठी+पत्री] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जानेवाला खत। पत्र। २ आपस मे चिट्ठियाँ या पत्र भेजने-मँगाने आदि का व्यवहार। पत्र-व्यवहार। पत्रालाप। (कारेस्पान्डेन्स)

चिट्ठीरसाँ—पु०[हि०चिट्ठी+फा० रसाँ] डाकखाने मे आई हुई चिट्ठियाँ बाँटनेवाला कर्मचारी। डाकिया।

चिड—स्त्री०[स० चटक] चिडिया। पक्षी। उदा०—चारौ पल ग्रीधणी चिड।—प्रिथीराज।

स्त्री०=चिढ।

चिडचिडा—वि० [हि० चिडचिडाना] [स्त्री० चिडचिडी] १ (व्यक्ति) जो बिना किसी बात के अथवा बहुत ही साधारण बात से चिढकर बिगड खडा होता हो। बात-बात पर क्रुद्ध हो जानेवाला। जैसे— रुपए-पैसे की तगी से वे चिडचिडे हो गये है। २ (स्वभाव) जिसमे चिडचिडापन हो। ३ जो चिड चिड या चिट चिट शब्द करता हुआ जलता हो। जैसे—चिड चिड लकडी।

पु०[अनु०] भूरे रग का एक प्रकार का छोटा पक्षी।

†पु०=चिचडा।

चिडचिडाना—अ०[अनु०] [भाव० चिडचिडाहट] १ (व्यक्ति के सबध मे) जरा-सी बात से चिढकर क्रोध-भरी बाते कहना। नाराज होना। बिगड बैठना। २ (काठ या जलावन के सबध मे) जलने या जलाने पर चिड चिड शब्द होना। ३ (पदार्थ के सबध मे) ऊपरी तल का सूख कर जगह-जगह से थोडा बहुत उखड या फट जाना। जैसे—चमडे का पट्टा या जूता चिडचिडाना।

स० किसी व्यक्ति को इस प्रकार अप्रसन्न या रुष्ट करना कि वह चिढ या बिगडकर उलटी-सीधी बाते कहने लगे। जैसे—तुमने तो आते ही उन्हे चिडचिडा दिया।

चिडचिडाहट—स्त्री० [हि० चिडचिडाना+हट (प्रत्य०)] १ चिडचिडाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

चिडवा—पु० [स० चिपिट] हरे भिगोये या कुछ उबाले हुए धान को भाड मे भूनकर और फिर कूटकर बनाया हुआ उसका चिपटा दाना। चिउडा।

चिडा—पु० [हि० चिडी का पु०] गौरा या गौरैया पक्षी का नर।

चिडाना—स० दे० 'चिढाना'।

चिडारा—पु० [देश०] नीची जमीन का खेत जिसमे जडहन बोया जाता है। डबरी।

चिडिया—स्त्री० [स० चटिका, प्रा० चडिआ या स० चिरि=तोता] १ वह जीव जो पखो या परो की सहायता से आकाश मे उडता है। पक्षी।
मुहा०—चिडिया के छिनाले में पकडा जाना=अकारण झझट मे पडना या फँसना।
२ गौरैया।
पद—चिडिया का दूध=ऐसी चीज जो वास्तव मे उसी प्रकार न होती हो, जिस प्रकार चिडियो का दूध नही होता। **चिडिया-नोचन**=ऐसी स्थिति जिसमे चारो ओर से लोग उसी प्रकार तग या परेशान करते हो, जैसे—चिडिया के पर नोचे जाते है।
३ ऐसा मालदार असामी जिससे कुछ धन ऐंठा या ठगा जा सकता हो। ४ कोई युवती और सुदर परन्तु कुछ दुश्चरित्रा स्त्री। (बाजारू)
पद—सोने की चिडिया=(क) बहुत बडा और मालदार असामी। (ख) बहुत रूपवती या सुदरी स्त्री।
५ काठ का वह डडा जिसके ऊपर दोनो ओर निकला हुआ कुछ लबोतरा अश होता है और जो किसी चीज के नीचे बैसाखी की तरह टेक या सहारे के लिए लगाया जाता है। जैसे—डोली या पालकी रोकने के समय उसके डडो के नीचे लगाई जानेवाली चिडिया। ६ उक्त आकार का लोहे का वह टुकडा जो तराजू की डाँडी के ऊपर और नीचे लगा रहता है। ७ अँगिया, कुरती आदि मे लगे हुए वे गोलाकार टुकडे जिनमे स्त्रियो के स्तन रहते है। कटोरी। ८ पायजामे, लहँगे आदि का वह ऊपरी नलाकार अश जिसमे इजारबद या नाला डाला जाता है। नेफा। ९ ताश के चार रगो मे से एक रग जो काला और प्राय पक्षी के आकार का होता है। चिडी। (शेष तीन रग हुकुम, पान और ईंट कहलाते है।) १० एक प्रकार की सिलाई जिसमे पहले कपडे के दोनो पल्ले सीकर तब सिलाई की ओरवाले उनके दोनो सिरो को अलग-अलग उन्ही पल्लो पर उलट कर इस प्रकार बखिया कर देते है कि एक प्रकार की बेल-सी बन जाती है।

चिडियाखाना—पु० = चिडिया-घर।

चिडिया-घर—पु० [हि० पद] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी आदि जन-साधारण को प्रदर्शित करने के लिए एकत्र करके रखे जाते है। चिडिया-खाना। (जू)

चिडिया-चुनमुन—पु० [हि० चिडिया+अनु०] चिडिया और उनकी तरह के दूसरे छोटे जीव-जतु।

चिडिहार—पु० [हि० चिडिया+हार (प्रत्य०)] चिडिया पकडनेवाला व्यक्ति। बहेलिया।

चिडी—स्त्री० [हि० चिडिया] १ चिडिया। पक्षी। पखेरू। २ ताश का चिडिया नामक रग।

चिडीमार—पु० [हि० चिडी+मारना] चिडिया पकडने या फँसानेवाला। बहेलिया।

चिढ—स्त्री० [हि० चिढना] १ चिढने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी विशिष्ट काम या बात के प्रति होनेवाली वह मनोवृत्ति जिसमे वह चिढता (अर्थात् अप्रसन्न होता या खीझता) हो। किसी के प्रति होनेवाला रोषपूर्ण विराग। जैसे—मुझे चालबाजी और झूठ से बहुत चिढ है। ३ किसी के सबध मे ढूँढकर निकाली या बनाई हुई वह बात जिससे वह बहुत चिढता हो। जैसे—उनकी चिढ 'करेला' थी। अर्थात् करेला कहने या दिखाने पर वे बहुत चिढते थे।
मुहा०—(किसी की) चिढ निकालना=किसी को चिढाने के लिए कोई खास बात ढूँढ निकालना। जैसे—जब वह सिरके के नाम से बहुत चिढने लगे तो लोगो ने उनके लिए सिरके की चिढ निकाली।

चिढकना†—अ० = चिढना।

चिढकाना†—स० = चिढाना।

चिढ़ना—अ० [हि० चिडचिडाना] १ कोई अप्रिय या अरुचिकर घटना देख या बात सुनकर दु खी तथा क्रुद्ध होना। जैसे—(क) वे पैसे के नाम पर चिढ जाते है। (ख) उन्हे स्त्री जाति से चिढ है। २ वैर-विरोध आदि के कारण किसी का नाम अथवा उसका कार्य या बात सुनना या देखना न पसद करना। जैसे—वह तुम्हारे नाम से चिढता है।

चिढ़वाना—स० [हि० चिढाना का प्रे०] किसी को दूसरे से चिढाने का काम कराना।

चिढाना—स० [हि० चिढना] १ जान-बूझकर कोई ऐसा काम करना या बात कहना जिससे कोई चिढे और नाराज हो। अप्रसन्न और खिन्न करना। खिझाना। जैसे—तुम तो मेरा नाम लेकर उन्हे और भी चिढाते हो। २ किसी को अप्रसन्न या खिन्न करने के लिए उसी की तरह की कोई चेष्टा करना या मुद्रा बनाना। नकल उतारना।
मुहा०—(किसी का) मुँह चिढ़ाना=उपहास करने के लिए उपेक्षापूर्वक किसी के बोलने, हँसने आदि अथवा मुख की आकृति का विद्रूपित अनुकरण करना। बहुत बिगाडकर वैसा ही मुँह बनाना जैसा किसी दूसरे का हो। जैसे—रास्ते मे लडके बुढिया को मुँह चिढाते थे।
३ किसी का उपहास करके उसे अप्रसन्न और खिन्न करने के लिए बार-बार कोई काम करना या बात कहना। जैसे—अब तो घर के लडके भी उन्हे चिढाने लगे है।

चिढौनी—स्त्री० [हि० चिढाना] ऐसी बात जो किसी को केवल चिढाने के लिए प्राय बार-बार कही जाती हो। छेड।

चित्—स्त्री० [स० √चित् (ज्ञाने)+क्विप्] १ सोची, विचारी या अनुभूत की हुई कोई बात। विचार। अनुभूति। २ चेतना। ज्ञान। ३ चित्त की वृत्ति। ४ हृदय। मन। ५ आत्मा। ६ ब्रह्म। ७ रामानुजाचार्य के अनुसार तीन पदार्थो मे से एक जो ज्ञान-स्वरूप, नित्य, निर्मल, और भोक्ता कहा गया है। ८ अग्नि।
प्रत्य० सस्कृत का एक अनिश्चयवाचक प्रत्यय जो क, किम् आदि सर्वनाम शब्दो मे लगता है। जैसे—कदाचित्, कश्चित्, किंचित् आदि।

चित—वि० [स० √चि (चयन करना)+क्त] १ चुनकर इकट्ठा किया हुआ। ढेर के रूप मे लगाया हुआ। २ ढका हुआ। आच्छादित।
वि० [स० चित्र] इस प्रकार जमीन पर लबा पडा हुआ कि पीठ या

पीछे की ओर के सब अग जमीन से लगे हो और छाती, पेट, मुँह आदि ऊपर हो। पीठ के बल सीधा पडा हुआ। 'औधा' या 'पट' का विपर्याय।
विशेष—प्राचीन काल मे चित्र प्राय कपडो पर बनाये जाते थे, इसी लिए उन्हे चित्र-पट कहते थे। जिस ओर चित्र बना रहता था उस ओर का भाग चित्र कहलाता था, और उसके विपरीत नीचेवाला भाग पट (कपडा) कहलाता था। इसी चित्र-पट मे के चित्र और पट शब्द से विशेषण रूप मे 'चित' और 'पट' शब्द बने हैं।
मुहा०—(किसी को) चित करना = कुश्ती मे पछाडकर जमीन पर सीधा पटकना जो हराने का सूचक होता है। **चित होना**=बेसुध होकर या और किसी प्रकार सीधे पड जाना। जैसे—इतनी भाँग मे तो तुम चित हो जाओगे।
पद—चारो खाने (या शाने) चित = (क) हाथ-पैर फैलाये बिलकुल पीठ के बल पडा हुआ। (ख) लाक्षणिक रूप मे, पूरी तरह से परास्त या हारा हुआ।
क्रि० वि० पीठ के बल। जैसे—चित गिरना या लेटना।
पु० [हि० चितवन] चितवन। दृष्टि। नजर।
†पु० = चित्र।

चितउन*—स्त्री० = चितवन।

चितउर*—पु० १. दे० 'चित्तौर'। २ दे० चित्त'।

चितकबरा—वि० [स० चित्र+कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] १ सफेद रग पर काले, लाल या पीले दागोवाला। २ रग-बिरगा। कबरा। चितला। शबल। जैसे—चितकबरा कबूतर, चितकबरी बिल्ली।
पु० उक्त प्रकार का रग या वर्ण।

चितकाबर—वि० = चितकबरा।

चितकूट*—पु० =चित्रकूट।

चितगुपति—पु० = चित्रगुप्त।

चित-चोर—पु० [हि० चित+चोर] चित्त को चुराने अर्थात् मोहित करने या लुभानेवाला। बलपूर्वक अपनी ओर अनुरक्त और मुग्ध कर लेने-वाला। परम आकर्षक और मनोहर (व्यक्ति)।

चित-पट—पु० [हि० चित+पट] १ बाजी लगाकर खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल जिसमे किसी फेकी हुई वस्तु (जैसे—सिक्का आदि) के चित या पट पडने पर हार या जीत मानी जाती है। २ मल्ल-युद्ध। कुश्ती। (क्व०)

चित-बाहु—पु० [हि० चित+बाहु] तलवार चलाने के ३२ प्रकारो या हाथो मे से एक।

चित-भग—पु० [हि० चित+भग] १ वह अवस्था जिसमे मनुष्य का चित्त या मन एकाग्र और स्वस्थ न रह सके। मानस शाति मे होने-वाली बाधा। २ किसी ओर से मन उचटने पर होनेवाली उदासी और विकलता। ३ चेतना, ज्ञान, बुद्धि आदि का ठिकाने न रहना।

चितरना—स० [स० चित्र] १ चित्रित करना। चित्र बनाना। २ बेल-बूटो आदि की तरह की आकृतियाँ बनाना। जैसे—आड चितरना= किसी रग या चमकीली चीज से मस्तक या मुख पर बेल-बूटो आदि की आकृतियाँ बनाना। ३ ठीक ढग से लगाना। जैसे—काजल चितरना।

चितरवा—पु० दे० 'चितरोख'।

चितरा†—पु० = चीतल (देखे)।

चितराला—पु० [स० चित्र] एक प्रकार का छोटा जतु या पशु जो छोटे-छोटे झुडो मे रहता और प्राय पेडो पर चढकर गिलहरियाँ, चिडियाँ आदि खाता है

चितरोख†—पु० [स० चित्रक] लाल रग की एक प्रकार की छोटी सुदर चिडिया जिसकी चोच और पीठ काली तथा पैर कुछ लाल होते है।

चितला—वि० [स० चित्रल] चितकबरा। रग-बिरगा।
पु० १ एक प्रकार का खरबूजा जिसके छिलके पर चित्तियाँ होती है। २ एक प्रकार की बडी मछली जिसकी पीठ उभारदार होती है और जिसके शरीर से यथेष्ट चरबी निकलती है जो खाने और जलाने के काम आती है।

चितवन—स्त्री० [हि० चितवना] १ किसी की ओर प्रेमपूर्वक या स्नेहपूर्वक देखने की अवस्था, ढग या भाव। २ दृष्टि। निगाह।

चितवना—स० [स० चित् =ध्यानपूर्वक देखना] १ अनुराग या स्नेहपूर्वक किसी की ओर देखना। उदा०—जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत इक बार।—बिहारी। २ यो ही या जल्दी मे देख जाना। उदा०—फिरि चितवा पाछै प्रभु देखा।—तुलसी।

चितवनि—स्त्री०=चितवन।

चितवाना—स० [हि० चितवना का प्रे०] किसी को चितवने (देखने) मे प्रवृत्त करना।

चितसारी—स्त्री० दे० 'चित्रसारी'।

चिता—स्त्री० [स० √चि (चयन करना)+क्त—टाप्] १ क्रम से चुनकर रखी या सजाई हुई लकडियो का वह ढेर जिस पर मृत शरीर जलाये जाते है। चिति। चित्या। चैत्य।
मुहा०—चिता चुनना या सजाना=शव-दाह के लिए लकडियाँ क्रम से सजाकर रखना। चिता तैयार करना। **चिता पर चढ़ना** =मरने पर जलाये जाने के लिए चिता पर रखा जाना। **(स्त्री का) चिता पर चढना** = पति के शव के साथ उसकी चिता पर जलने के लिए जाकर बैठना।
२ श्मशान। मरघट।

चिताउनी†—स्त्री० १ = चेतावनी। २ = चितवन।

चिताना—स०= चेताना (देखे)।
अ० [स० चित्रण] चित्रित होना। उदा०—लता सुमन पशु पच्छि चित्र सौ चारु चिताए।— रत्नाकर।
स० चित्रित करना।

चिता-प्रताप—पु० [ष० त०] जीते जी चिता पर रखकर जला देने का दड।

चिता-भूमि—स्त्री० [ष० त०] मरघट। श्मशान।

चितारना—स० [स० चितन] १ चित्त या मन मे लाना। किसी ओर चित्त या ध्यान देना। उदा०—युगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारै।—कबीर। २ ध्यान मे लाना। याद करना। उदा०—रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारयौ।—मीराँ।
†स०=चितरना।

चितारी—पु०=चितेरा।

चितारोहण—पु० [चिता-आरोहण, स० त०] १ चिता पर जल मरने के उद्देश्य से चढकर बैठना। २ विधवा स्त्री का सती होने के लिए अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना।

चितावनी—स्त्री० = चेतावनी।

चिता-साधन—पु० [स० त०] चिता के पास या श्मशान पर बैठकर इष्ट-सिद्धि के लिए मत्र आदि जपना। (तत्र)

चिति—स्त्री० [स० √चि (चयन करना) +क्तिन्] १ चुनकर लगाने या सजाने की क्रिया या भाव। २ चिता। ३ ढेर। राशि। ४ अग्नि का एक प्रकार का वैदिक सस्कार। ५ यज्ञ मे वेदी बनाने की ईंटो का एक सस्कार। ६ चेतनता। ७ दुर्गा।

चितिका—स्त्री० [स० चिति √कै (शब्द करना) +क–टाप्] १ करधनी। मेखला। २ दे० 'चिति'।

चितिया—वि० [हि० चित्ती] जिस पर चित्तियाँ या दाग पडे हो। चित्तीदार। जैसे—चितिया साँप, चितिया हिरन।

चितिया गुड—पु० [हि०] खजूर की चीनी की जूसी से जमाया हुआ गुड।

चिति-व्यवहार—पु० [ष० त०] गणित की वह क्रिया जिसके द्वारा किसी दीवार या मकान मे लगनेवाली ईंटो आदि की सख्या जानी जाती है।

चितु†—पु० = चित्त।

चितेरा—पु० [स० चित्रकार, गु० चितारो, प० चितेरा, सिह० सितिएर] [स्त्री० चितेरिन, चितेरी] वह जो चित्र अकित करने या बनाने का काम करता हो। चित्रकार। मुसौवर।

चितेला—पु० = चितेरा।

चितैना—स० = चितवना।

चितौन—स्त्री० = चितवन।

चितौना—स० = चितवना।

चितौनि (नी)—स्त्री० = चितवन।

चित्कार—पु० = चीत्कार।

चित्त—पु० [स० √चित् (ज्ञान करना)+क्त] १ अत करण की चार वृत्तियो मे से एक जो अतरिंद्रिय के रूप मे मानी गई है और जिसके द्वारा धारण, भावना आदि की क्रियाएँ सम्पन्न होती है। जी। दिल।

मुहा०—चित्त उचटना = किसी काम, बात या स्थान से जी विरक्त होना या हटना। दिल को भला न लगना। **चित्त करना** = जी चाहना। इच्छा होना। जैसे—उनसे मिलने को मेरा चित्त नही करता। **चित्त चढ़ना**=दे० "चित्त पर चढना'। **चित्त चिहुँटना**=प्रेमासक्त होने के कारण मन मे कष्टदायक स्मृति होना। उदा०—नहि अन्हाय नहि जाय घर चित चिहुँट्यो तकि तीर।—बिहारी। **चित्त चुराना**=मन को मोहित करना। **चित्त देना**=ध्यान देना। मन लगाना। उदा०—चित्त दै सुनो हमारी बात।—सूर। **चित्त धरना**= (क) किसी बात पर ध्यान देना। मन लगाना। (ख) कोई बात या विचार मन मे लाना। उदा०—हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ—सूर। **चित्त पर चढना** = (क) मन मे बसने के कारण बार-बार ध्यान मे आना। (ख) स्मृति जाग्रत होना। याद आना या पडना। **चित्त बँटना** =एक बात या विषय की ओर ध्यान रहने की दशा मे कुछ समय के लिए दूसरी ओर ध्यान जाना जो बाधा के रूप मे हो जाता है। **चित्त मे जमना, धँसना या बैठना** = अच्छी तरह हृदयगम होना। दृढ निश्चय के रूप मे मन मे बैठना। **चित्त मे होना या चित्त होना**= इच्छा होना। जी चाहना। **चित्त लगना**= किसी काम या बात मे मन की वृत्ति लगना। ध्यान लगना। जैसे—चित्त लगाकर काम किया करो। **चित्त से उतरना**=(क) ध्यान मे न रहना। भूल जाना। जैसे—वह बात हमारे चित्त से उतर गई थी। (ख) पहले की तरह आदरणीय या प्रिय न रह जाना। जैसे—अब तो वह हमारे चित्त से उतर गया है। **चित्त से न टलना** =ध्यान मे बराबर बना रहना। न भूलना।

२ नृत्य मे, शृगारिक प्रसगो मे अनुराग, प्रसन्नता आदि प्रकट करनेवाली चितवन या दृष्टि।

† वि० चित।

चित्तक—पु० दे० 'चित्रक'।

चित्त-कलित—वि० [स० त०] १ मन मे जिसकी आशा या ध्यान किया गया हो। २ प्रत्याशित।

चित्त-गर्भ—वि० [स० चित्त √गर्भ् (ग्रहण करना) +अच्, उप० स०] मनोहर। सुदर।

चित्त-चारी (रिन्)—वि०[स० चित्त√चर् (चलना)+णिनि, उप० स०] दूसरो की इच्छा के अनुसार आचरण करने या चलनेवाला।

चित्त-चौर—पु० [ष० त०] = चित्त-चोर।

चित्तज—वि० [स० चित्त √जन् (उत्पन्न होना) +ड, उप० स०] चित्त या मन से उत्पन्न।

पु० १ प्रेम। २ कामदेव।

चित्त-जन्मा (न्मन्)—पु० [ब० स०] कामदेव।

चित्तज्ञ—वि० [स० चित्त √ज्ञा (जानना) +क उप० स०] दूसरो के चित्र या मन की बाते जाननेवाला।

चित्त-निवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] इच्छा, कष्ट, भावना आदि से होनेवाला चित्त का छुटकारा या निवृत्ति। मन की शाति, सतोष और सुख।

चित्त-प्रसादन—पु० [ष० त०] योग मे चित्त का एक सस्कार जो करुणा, मैत्री, हर्ष आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा होता है। जैसे—किसी को सुखी देखकर प्रसन्न होना, दु खी के प्रति करुणा दिखाना, पुण्य के प्रति हर्ष और पाप के प्रति उपेक्षा करना। इस से चित्त मे सात्त्विक वृत्ति का प्रादुर्भाव होता है।

चित्त-भग—पु० [ब० स०] बदरिकाश्रम के समीप स्थित एक पर्वत श्रेणी।

चित्त-भू— पु० [स० चित्त √भू (होना) +क्विप्, उप० स०] १ प्रेम। २ कामदेव।

चित्त-भूमि—स्त्री० [ष० त०] योग-साधन के समय होनेवाली चित्त की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ या वृत्तियाँ जिनमे से कुछ तो अनुकूल और कुछ बाधक होती है। मुख्यत क्षिप्त, मूल, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ये पाँच चित्त-भूमियाँ मानी गई है जिनमे से अन्तिम दो योग-साधन के लिए अनुकूल होती है।

चित्त-भेद—पु० [ष० त०] १ मन की अस्थिरता और चचलता। २ दृष्टिकोणो या विचारो मे होनेवाला भेद।

चित्त-भ्रम—पु० [ष० त०] १ मन मे होनेवाला किसी प्रकार का भ्रम या भ्राति। २. [ब० स०] उन्माद। पागलपन।

चित्त-भ्राति—स्त्री० [ष० त०] =चित्त-भ्रम।

चित्त-योनि—पु० [ब० स०] कामदेव।

चित्तर†—पु० = चित्र।

चित्तर-सारी*—स्त्री० = चित्रशाला।

चित्तरा†—स्त्री० = चित्रा (नक्षत्र)।

चित्तल—पु० =चीतल। (मृग)।

चित्तवान् (वत्)—वि० [स० चित्त+मतुप्, म =व] [स्त्री० चित्तवती] जिसके चित्त मे सदा अच्छी बाते रहती हो।

चित्त-विक्षेप—पु० [ष० त०] १ चित्त का एकाग्र न हो पाना या न रह जाना। चित्त का स्थिर न रहना। २ चित्त की अस्थिरता या चचलता।

चित्त-विद्—पु० [स० चित्त√विद् (जानना) + क्विप्, उप० स०] १ वह जो दूसरो के चित्त की बात जानता हो। २ वह जो चित्त या मन के सब भेद और रहस्य जानता हो।

चित्त-विप्लव—पु० [ब० स०] उन्माद। पागलपन।

चित्त-विभ्रंश—पु० [ब० स०] =चित्त-भ्रम।

चित्त-विभ्रम—पु० =चित्त-भ्रम।

चित्त-विश्लेषण—पु० [ष० त०] मनोविश्लेषण। (दे०)

चित्त-वृत्ति—स्त्री० [ष० त०] १ चित्त की गति। चित्त की अवस्था। २ अभिरुचि। झुकाव।

चित्त-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] बुरे विचारो को मन से हटाकर अच्छी बातो की ओर ध्यान देना जिससे चित्त निर्मल तथा शुद्ध हो जाय।

चित्त-हारी (रिन्)—वि० [स० चित्त√हृ (हरण करना)+णिनि, उप० स०] चित्त हरण करनेवाला, अर्थात् आकर्षक। मनोहर।

चित्ताकर्षक—वि० [स० चित्त-आकर्षक, ष० त०] जो चित्त को अपनी ओर आकृष्ट करता हो। मोहित करने या लुभानेवाला।

चित्तापहारक—वि० [स० चित्त-अपहारक ष० त०] =चित्तहारी।

चित्ताभोग—पु० [स० चित्त आभोग, ष० त०] १ पूर्ण चेतनता। २ किसी विषय के प्रति मन की आसक्ति।

चित्तासग—पु० [स० चित्त-आसंग] अनुराग। प्रेम।

चित्ति—स्त्री० [स०√चित् (ज्ञान होना)+क्तिन्] १ चित्त की वह वृत्ति जो मनुष्य को सोचने-विचारने मे प्रवृत्त या समर्थ करती है। २ ख्याति। प्रसिद्धि। ३ आस्था। श्रद्धा। ४ कर्म। कार्य। ५ ५ उद्देश्य। लक्ष्य। ६ अथर्व ऋषि की पत्नी का नाम।

चित्ती—स्त्री० [स० चित्र, प्रा० चित्त] १ किसी एक रगवाली वस्तु पर दूसरे रग का लगा हुआ चिह्न या दाग।

मुहा०—(रोटी पर) चित्ती पड़ना = रोटी सेकते समय उसपर छोटे-छोटे काले दाग पडना।

२ वे छोटे-छोटे चिह्न आदि जो वस्त्रो पर काढे या छापे जाते है। ३ मादा लाल। मुनिया। ४ एक प्रकार का साँप। चीतल। (दे०)

स्त्री० [हिं० चित =सफेद दाग] एक ओर स कुछ रगडा हुआ इमली का चिआँ जिससे छोटे लडके जूआ खेलते है।

चित्तोद्रेक—पु० [स० चित्त-उद्रेक, ष० त०] गर्व। घमड।

चित्तौर—पु० [स० चित्रकूट, प्रा० चित्त ऊड, चितउड] राजपूताने का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ किसी समय महाराणा प्रताप की राजधानी थी।

चित्य—वि० [स० √चि (चयन) +क्यप्, तुक् आगम] १ इकट्ठा किये या चुने जाने के योग्य। २ जो इकट्ठा किया या चुना जा सके। ३ चिता सबधी।

पु० १ चिता। २ अग्नि।

चित्र—पु० [स० √चित्र् (लिखना) +अच्] १ चदन आदि से शरीर के किसी अग विशेषत मस्तक पर बनाया जानेवाला चिह्न। तिलक। २ कलम, कूची, पेसिल आदि की सहायता से कपडे, कागज, दीवार या किसी चिपटे तलवाली वस्तु पर बनाई हुई किसी वस्तु या व्यक्ति की आकृति।

क्रि० प्र०—उतारना। —बनाना।—लिखना।

३ यत्र की सहायता से खीचा या छापा जानेवाला चित्र। जैसे—कैमरे का चित्र (फोटो) या समाचार-पत्रो मे प्रकाशित होनेवाले चित्र। ४ कल्पना करने या सोचने पर मानसिक चक्षुओ के सामने आनेवाली आकृति या रूप। मानसिक चित्र। ५ चित्र-काव्य। (दे०) ६ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसका प्रत्येक चरण समानिका वृत्त के दो चरणो के योग से बनता है। ७ काव्य के तीन अगो मे से एक जिसमे व्यग्य की प्रधानता नही होती। अलकार। ८ चित्रगुप्त। ९ एक यम का नाम। १० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक। ११ रेड का पेड। १२ अशोक वृक्ष। १३ चित्रक। चीता। १४ एक प्रकार का कोढ जिसमे शरीर मे सफेद चित्तियाँ या दाग पड जाते है।

वि० १ रग-बिरगा। कई रगो का। २ चित-कबरा। ३ अनेक प्रकार का। कई तरह का। ४ अद्भुत। विचित्र। विलक्षण। ५ प्राय बदलता रहनेवाला या तरह-तरह के रग बदलनेवाला। ६ चित्र की तरह सब प्रकार से ठीक, दुरुस्त और सुदर।

चित्र-कठ—पु० [ब० स०] कबूतर।

चित्र-कबल—पु० [कर्म० स०] १ कालीन, दरी या इसी तरह की और कोई रगीन बुनावटवाला कपडा। २ हाथी की झूल।

चित्रक—पु० [स० चित्र +कन्] १ मस्तक पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक। २ चीता नामक पेड। ३ चीता नाम का जतु। ४ रेड का पेड। ५ चिरायता। ६ मुचकुद का पेड। ७ चित्रकार। ८ बहादुर। शूर-वीर।

चित्र-कर—पु० [स० चित्र √कृ (करना)+ट, उप० स०] १ एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति विश्वकर्मा पुरुष और शूद्रा स्त्री से कही गई है। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३ तिनिश का पेड। ४. चित्रकार।

चित्र-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] चित्रकारी।

चित्रकर्मी (र्मिन्)—पु० [स० चित्रकर्म +इनि] १ चित्रकार। मुसौवर। २ अदभुत या विलक्षण काम करनेवाला व्यक्ति। ३ तिनिश का पेड।

चित्र-कला—स्त्री० [ष० त०] चित्र अकित करने की क्रिया, ढग, भाव या विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्र-काय—पु० [ब० स०] चीता। (जतु)

चित्र-कार—पु० [स० चित्र √कृ (करना) +अण् उप० स०] वह व्यक्ति जो चित्र अकित करने की कला मे दक्ष हो। चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी—स्त्री० [हिं० चित्र +कारी] १ चित्र बनाने की कला या विद्या। २ चित्रकार का काम, पद या भाव। ३ बनाये हुए चित्र।

चित्र-काव्य—पु० [मध्य० स०] वह आलकारिक काव्य जिसके चरणो की रचना ऐसी युक्ति से की गई हो कि वे चरण किसी विशिष्ट क्रम से लिखे जाने पर कमल, खडग, घोडे, रथ, हाथी आदि के चित्रो के समान बन जाते हो। (इसकी गणना अधम प्रकार के काव्यो मे होती है।)

चित्र-कुष्ठ—पु० [मध्य० स०] सफेद कोढ।

चित्र-कूट—पु० [स० ब० स०] १ उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वन-वास के समय राम-लक्ष्मण और सीता ने बहुत दिनो तक निवास किया था। यह बाँदा जिले मे है और इसके नीचे पयोष्णी नदी बहती है। २ हिमवत् खड के अनुसार हिमालय की एक चोटी का नाम। ३ राजस्थान के चित्तौर नगर का पुराना नाम।

चित्र-कृत्—पु० [स० चित्र √कृ (करना) +क्विप्, तुक्, उप० स०] १ चित्र कार। २ तिनिश का पेड।
वि० अद्भुत। विलक्षण।

चित्र-केतु—पु० [ब० स०] १ वह जिसकी पताका चित्रित या रग-बिरगी हो। २ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम। (भागवत) ३ वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ४ गरुड के एक पुत्र का नाम। ५ शूरसेन का एक पौराणिक राजा जिसे नारद ने मत्र का उपदेश दिया था।

चित्र-कोण—पु० [ब० स०] १ कुटकी। २ काली कपास।

चित्र-गध—पु० [ब० स०] हरताल।

चित्रगुप्त—पु० [ब० स०] पुराणानुसार चौदह यमराजो मे से एक जो प्राणियो के पाप और पुण्य का लेखा रखनेवाले कहे गये है।

चित्र-घटा—स्त्री० [ब० स०] एक देवी जो नौ दुर्गाओ मे से एक है।

चित्र-जल्प—पु० [कर्म० स०] साहित्य मे ऐसी बाते जो मान करने-वाली नायिका अथवा रूठा हुआ नायक एक दूसरेसे कहते है। (इसके दस भेद कहे गये है।)

चित्र-जात—पु० =चित्र योग।

चित्रण—पु० [स० √चित्र +णिच्+ल्युट्—अन] १ चित्र अकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। २ चित्र मे रग भरने का भाव। ३ किसी घटना, भाव, वस्तु, व्यक्ति आदि का विशद तथा सजीव रूप से शब्दो मे किया जानेवाला वर्णन। जैसे-चरित्र-चित्रण।

चित्र-तडुल—पु० [ब० स०] वायविडग।

चित्र-तल—पु० [ष० त०] वह तल या सतह जिस पर चित्र अकित हो। जैसे—कपडा, कागज, काठ, पत्थर आदि।

चित्र-ताल—पु० [कर्म० स०] सगीत मे एक प्रकार का चौताला ताल।

चित्र-तैल—पु० [कर्म० स०] अडी या रेडी का तेल।

चित्र-त्वक् (च्)—पु० [ब० स०] भोज-पत्र।

चित्र-दडक—पु० [ब० स०, कप्] जमीकद। सूरन।

चित्र-देव—पु० [कर्म० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

चित्र-देवी—स्त्री० [कर्म० स०] १ एक प्रकार की देवी या शक्ति। २ महेन्द्रवारुणी लता।

चित्र-धर्मा (र्म)—पु० [ब० स०, अनिच्] महाभारत मे उल्लिखित एक दैत्य।

चित्र-धाम—पु० [कर्म० स०] यज्ञादि मे पृथ्वी पर बनाया जानेवाला एक चौखूंटा चक्र जिसके खाने भिन्न-भिन्न रगो से भरे जाते है। सर्वतोभद्र चक्र।

चित्रना—स० [स० चित्र +हि० ना (प्रत्य०)] १ चित्र आदि बनाना। २ चित्रो मे रग भरना। ३ किसी तल पर बेल-बूटे आदि बनाना। ४ शोभा के लिए मुँह पर चमकी आदि लगाना।

चित्र-नेत्रा—स्त्री० [ब० स० टाप्] मैना पक्षी।

चित्र-पक्ष—पु० [ब० स०] तीतर पक्षी।

चित्र-पट—पु० [ष० त०] १ वह पट (वस्त्र) जिस पर प्राचीन भारत मे चित्र बनता था। २ कपडे या चमडे पर बना हुआ वह चित्र जो लपेट कर रखा जा सकता हो और आवश्यकता पडने पर दीवार आदि पर टाँगा जा सकता हो। ३ कोई ऐसा तल (जैसे-कागज, काठ, पत्थर, हाथी दाँत आदि) जिस पर चित्र बना या अकित हुआ हो। ४ चल-चित्र। (दे०)

चित्र-पटी—स्त्री० [ष० त०] छोटा चित्र-पट।

चित्र-पत्र—पु० [ब० स०] आँख की पुतली के पीछे का वह परदा जिस पर देखी जानेवाली वस्तुओ का प्रतिबिब पडता है।
वि० रग-बिरगे और विचित्र पत्तो या परोवाला।

चित्र-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] १ कपित्थपर्णी वृक्ष। २ द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्र-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] जल-पिप्पली।

चित्र-पथा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] प्रभास तीर्थ के अतर्गत ब्रह्मकुड के पास की एक छोटी नदी जो अब सूख चली है।

चित्र-पदा—पु० [ब० स०, टाप्] १ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २ भगण और २ गुरु होते है। २ मैना पक्षी। ३ लजालू या लज्जावती लता। छूई-मूई।

चित्र-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ मजीठ। २ कनफोडा नाम की लता। ३ जल-पिप्पली। ४ द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्र-पादा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] मैना पक्षी।

चित्र-पिच्छक—पु [ब० स०] मयूर। मोर।

चित्र-पुख—पु [ब० स०] बाण। तीर।

चित्र-पुट—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का छ ताला ताल।

चित्र-पुत्री—स्त्री० [मध्य० स०] कपडे, लकडी आदि की बनी हुई गुडिया।

चित्रपुष्प—पु० [ब० स०] शर जाति की एक घास जिसे राम-शर कहते है।

चित्र-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] आमडा।

चित्र-पृष्ठ—पु० [ब० स०] गौरैया पक्षी।

चित्र-फल—पु० [ब० स०] १ चितला मछली। २ तरबूज।

चित्र-फलक—पु० [ष० त०] काठ, पत्थर, हाथी-दाँत आदि की वह तख्ती या पटिया जिस पर चित्र बना हो।

चित्रफला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १ ककडी। २ बैगन। ३ भट-कटैया। ४ लिगिनी नाम की लता। ५ महेन्द्र वारुणी लता। ६ फलुई नाम की मछली।

चित्र-बर्ह—पु० [ब० स०] १ मोर। मयूर। २ गरुड के एक पुत्र का नाम।

चित्रभानु—पु० [ब० स०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ चीते का पेड। ४ आक। मदार। ५ भैरव का एक नाम। ६ अश्विनीकुमार। ७ साठ सवत्सरो के अतर्गत सोलहवे वर्ष का नाम। ८ अर्जुन की पत्नी चित्रागदा के पिता जो मणिपुर मे राज्य करते थे।

चित्र-भेषजा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] कठगूलर। कठूमर।

चित्र-भोग—पु० [ब० स०] राजा का वह सहायक और शुभ-चितक जो समय पर अनेक प्रकार के पदार्थो तथा गाडी, घोडे आदि से उसकी सहा-यता करे। (कौ०)

चित्र-मच—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

चित्र-मडप—पु० [ब० स०] १ अश्विनीकुमार। २ अर्जुन की पत्नी

चित्रांगदा के पिता का नाम।

चित्र-मंडल—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साँप।

चित्र-मति—वि० [ब० स०] विचित्र या विलक्षण बुद्धिवाला।

चित्र-मद—पु० [तृ० त०] नाटक में किसी स्त्री का अपने पति या प्रेमी का अभिनय या चित्र देखकर मस्त होना और उसके प्रति अपने अनुराग का भाव दिखलाना।

चित्र-मृग—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का चितकबरा हिरन जिसकी पीठ पर सफेद सफेद-चित्तियाँ होती है। चीतल।

चित्र-मेखल—पु० [ब० स०] मयूर। मोर।

चित्र-योग—पु० [कर्म० स०] ६४ कलाओ मे से एक जिसके द्वारा बुड्ढे को जवान या जवान को बुड्ढा बनाया जाता था।

चित्र-योधी (धिन्)—वि०[स० चित्र√युध् (युद्ध करना)+णिनि, उप०-स०] असाधारण और विलक्षण योद्धा। अद्भुत ढग से युद्ध करनेवाला। पु० १ अर्जुन। २ अर्जुन वृक्ष।

चित्र-रथ—पु० [ब० स०] १ सूर्य। २ कुबेर का सखा एक गधर्व, अगारपर्ण। ३ गद के एक पुत्र और श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम। ४ गधर्वों के एक राजा का नाम जो कश्यप ऋषि का पुत्र था।

चित्ररथा—स्त्री० [स० चित्ररथ+टाप्] महाभारत मे वर्णित एक नदी।

चित्र-रश्मि—पु० [ब० स] ४९ मरुतो मे से एक।

चित्र-रेखा—स्त्री० [ब० स०] बाणासुर की कन्या ऊषा की एक सखी का नाम।

चित्र-रेफ—पु० [ब० स०] १ भागवत के अनुसार शाकद्वीप के राजा प्रियव्रत के पुत्र मेधातिथि के सात पुत्रो मे से एक। २ उक्त के नाम पर प्रसिद्ध एक वर्ष अर्थात् भूखड।

चित्रल—वि० [स० चित्र√ला (लेना)+क] चितकबरा। रग-बिरगा। चितला।

चित्र-लता—स्त्री० [कर्म० स०] मँजीठ।

चित्रला—स्त्री० [स० चित्रल+टाप्] गोरख इमली।

चित्र-लिखित—भू० कृ० [उपमि० स०]१ जो चित्र की तरह सुन्दर बनाकर या सजा-सँवार कर लिखा गया हो। २ जो लिखे हुए चित्र की तरह निश्चल हो गया हो।

चित्र-लिपि—स्त्री० [मध्य स०] वह लिपि जिसमे अक्षरो या वर्णो की जगह वस्तुओ और क्रियाओ के चित्र बनाकर उनके द्वारा भाव व्यक्त किये जाते है। (पिक्टोग्राफी) जैसे—चीन की प्राचीन लिपि।

चित्र-लेखक—पु० [ष० त०] चित्रकार।

चित्र-लेखन—पु० [ष० त०] १ कलम, कूँची आदि की सहायता से चित्र अकित करना। २ बहुत बनाकर और सुन्दर अक्षर लिखना।

चित्र-लेखनी—स्त्री० [ष० त०] चित्र अकित करने की कलम। कूँची।

चित्र-लेखा—स्त्री० [ब० स०] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १ भगण १ मगण १ नगण और ३ यगण होते है। २ बाणासुर की कन्या ऊषा की एक सखी जो चित्र बनाने मे बहुत निपुण थी। ३ एक अप्सरा का नाम। ४ [ष० त०] चित्र बनाने की कलम या कूँची।

चित्र-लोचना—स्त्री० [ब० स०] मैना पक्षी।

चित्रवत*—पु०=चित्रकार।

चित्रवत्—वि० [स० चित्र+वति] उसी प्रकार गति-रहित और स्तब्ध जिस प्रकार चित्र होता है। (ला०)

चित्रवती—स्त्री० [स० चित्र+मतुप्, वत्व,+ङीप्] गाधार स्वर की एक मूर्च्छना। (सगीत)

चित्रवदाल—पु० [स० आल, आ√अल् (पर्याप्ति)+अच्, चित्रवत्-आल, कर्म स०] पाठीन मत्स्य। पहिना मछली।

चित्र-वन—पु० [कर्म स०] गडकी नदी के किनारे का पुराण-प्रसिद्ध एक वन।

चित्र-वर्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्र-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] १ विचित्र नामक लता। २ महेन्द्र वारुणी।

चित्र-वहा—स्त्री० [स० चित्र√वह् (ढोना)+अच्—टाप्] महाभारत के अनुसार एक नदी।

चित्र-वाण—पु० [ब० स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्र-विचित्र—वि० [द्व० स०] १ जिसमे कई रग हो। रग-बिरगा। २ जिसके कई रूप या प्रकार हो। ३ विलक्षण। ४ बेल-बूटेदार। ५ नक्काशी-दार।

चित्र-विद्या—स्त्री० [ष० त०] चित्र बनाने की विद्या। चित्रकारी। चित्रकला।

चित्र-विन्यास—पु० [ष० त०] चित्रकारी।

चित्र-वीर्य्य—वि०[ब० स०] विचित्र और बहुत बडा बलवान् या वीर। पु० लाल रेड।

चित्र-शार्दूल—पु० [कर्म स०] चीता नामक हिसक पशु।

चित्र-शाला—स्त्री० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ चित्र बनते हो या विक्रयार्थ रखे जाते हो। २ वह स्थान जहाँ प्रदर्शन के लिए बहुत-से चित्र रखे रहते हो। ३ वह कमरा जिसमे बहुत-से चित्र टँगे या लगे हो। (पिक्चर गैलरी) ४ मध्य युग मे दपति के रहने और सोने का कमरा। (राज०)

चित्र-शालिका—स्त्री०=चित्र-शाला।

चित्र-शिखडिज—पु० [स० चित्र-शिखडिन्√जन् (उत्पत्ति)+ड, उप० स०] बृहस्पति।

चित्र-शिखडी (डिन्)—पु०[स० चित्र-शिखड कर्म स०, +इनि] मरीचि, अगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ ये सातो ऋषि। सप्तर्षि।

चित्र-शिर (स्)—पु० [स० ब० स०] १ एक गधर्व का नाम। २ मल-मूत्र के विकार से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का विष। (सुश्रुत)

चित्र-शिल्पी (ल्पिन्)—पु० [ष० त०] चित्रकार।

चित्र-सग—पु० [ब० स०] १६ अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त।

चित्र-सभा—स्त्री०=चित्र-शाला।

चित्र-सर्प—पु० [कर्म० स०] चीतल साँप।

चित्र-सामग्री—स्त्री० [ष० त०] चित्र अकित करने की सामग्री। जैसे—रग, तूलिका, कागज, कपडा आदि।

चित्र-सारी—स्त्री० [स० चित्र-शाला] १ चित्र अकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। २ चित्रशाला। ३ राजाओ के भोग-विलास और शयन का कमरा जिसमे अनेक सुदर चित्र लगे रहते थे। ४ स्त्रियो की वह ओढनी जिस पर सलमे-सितारे का काम हुआ हो।

चित्र-सेन—पु० [ब० स०] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ एक गधर्व का नाम। ३ पुरुवशी राजा परीक्षित के एक पुत्र। ४ पुराणानुसार शबरासुर का एक पुत्र।

चित्रस्थ—वि० [स० चित्र√स्था (ठहरना)+क] १ चित्र मे अकित किया हुआ। २ चित्र मे अकित व्यक्ति के समान निश्चल या स्तब्ध।

चित्र-हस्त—पु० [ब० स०] तलवार या और कोई हथियार चलाने का एक विशिष्ट ढग या हाथ।

चित्राकन—पु० [चित्र-अकन, ष० त०][भू० कृ० चित्राकित] चित्र अकित करने या हाथ से तसवीर बनाने का काम। आलेख्य कर्म। (पेन्टिंग)

चित्राकित—भू० कृ० [स० चित्र-अकित स० त०] जो चित्र के रूप मे या चित्र मे अकित किया गया हो। चित्रित।

चित्राग—वि० [चित्र-अग, ब० स] जिसके अग पर चित्तियाँ, धारियाँ, चिह्न आदि हो।

पु० १ चित्रक या चीता नाम का पेड। २ चीतल साँप। ३ ३ ईंगुर। सिंदूर। ४ हरताल।

चित्रागद—पु० [चित्र-अगद, ब० स०] १ सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न राजा शातनु के एक पुत्र और विचित्रवीर्य्य के छोटे भाई। २ पुराणानुसार एक गधर्व। ३ महाभारत के अनुसार दशार्ण के एक राजा।

चित्रागदा—स्त्री० [स० चित्रागद+टाप्] १ मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या जो अर्जुन को ब्याही थी। और जो बभ्रुवाहन की माता थी। २ रावण की एक पत्नी जिसके गर्भ से वीरबाहु का जन्म हुआ था।

चित्रागी—स्त्री० [स० चित्राग+ङीष्] १ मँजीठ। २ कनखजूरा।

चित्रा—स्त्री० [स०√चित्र्+अच्-टाप्] १ सत्ताइस नक्षत्रो मे से चौदहवाँ नक्षत्र जिसमे तीन तारे है। इसमे गृह-प्रवेश, गृहारभ, और यानो, वाहनो आदि का व्यवहार शुभ कहा गया है। २ मूषिकपर्णी या मूसाकानी लता। ३ ककडी, खीरा आदि फल। ४ दती वृक्ष। ५ गाँडर नामक घास। ६ मँजीठ। ७ बायबिडग। ८ अजवायन। ९ चितकबरी गाय। १० एक अप्सरा का नाम। ११ सुभद्रा का एक नाम। १२ एक प्राचीन नदी। १३ एक प्रकार की रागिनी जो भैरव राग की पत्नी कही गई है। १४ सगीत मे एक प्रकार की मूर्च्छना। १५ एक प्रकार का पुराना बाजा। १६ पद्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसमे पहले तीन नगण, फिर दो यगण होते है। १७ एक प्रकार की चौपाई जिसके प्रत्येक चरण मे सोलह मात्राएँ होती है और अत मे एक गुरु होता है। इसकी पाँचवी, आठवी और नवी मात्रा लघु तथा अतिम मात्रा गुरु होती है।

चित्राक्ष—पु० [चित्र-अक्षि, ब० स०, षच्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वि० [स्त्री० चित्राक्षी] विचित्र और सुदर आँखोवाला।

चित्राक्षी—स्त्री० [स० चित्राक्ष+ङीष्] मैना पक्षी।

चित्राटीर—पु० [स० चित्रा√अट् (गति)+ईरच्] १ चद्रमा। २ शिव का घटाकर्ण नामक अनुचर।

चित्रादित्य—पु० [चित्र-आदित्य, मध्य० स०] प्रभास क्षेत्र मे चित्रगुप्त की स्थापित सूर्य्य की मूर्ति। (स्कद पुराण)

चित्राधार—पु० [चित्र-आधार, ष० त०] कोरे पन्नो की नत्थी की हुई वह पुस्तक जिसमे आग्रहण, चित्र, रेखा-चित्र आदि लगाये जाते है। (एलबम)

चित्रान्न—पु० [चित्र-अन्न, कर्म० स०] बकरी के दूध मे पकाया और बकरी के कान के रक्त मे रगा हुआ जौ और चावल। (कर्मकाड)

चित्रायस—पु० [चित्र-अयस्, कर्म० स०, टच्] इस्पात। (लोहा)

चित्रायुध—पु० [चित्र-आयुध, कर्म० स०] १ विलक्षण अस्त्र। २ [ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

वि० जिसके पास विचित्र या विलक्षण अस्त्र-शस्त्र हो।

चित्रार—पु०=चित्रकार। उदा०—किरि कठचीत्र पूतली निज करि चीत्रारै लागी चित्रण—प्रिथीराज।

चित्राल—पु० [?] कश्मीर के पश्चिम का एक पहाडी प्रदेश। चितराल।

चित्रालय—पु० [चित्र-आलय, ष० त०] चित्रशाला। (दे०)

चित्रावसु—स्त्री० [स०] तारो से शोभित रात।

चित्रा-विरली—स्त्री० [स०] एक प्रकार का पुराना कामदार कपडा जो आज-कल की जामदानी की तरह का होता था।

चित्राश्व—पु० [चित्र-अश्व, ब० स०] सत्यवान् का एक नाम।

चित्रिक—पु० [स० चैत्र+क, पृषो० सिद्धि] चैत का महीना। चैत्र मास।

चित्रिणी—स्त्री० [स० चित्र+इनि-ङीप्] कामशास्त्र तथा साहित्य मे चार प्रकार की नायिकाओ या स्त्रियो मे वह नायिका जो अनेक प्रकार की कलाओ तथा बनाव-सिंगार करने मे निपुण हो।

चित्रित—भू० कृ० [स०√चित्र्+क्त] १ चित्र के रूप मे खीचा या दिखाया हुआ। २ जिसका रग-रूप चित्र मे दिखाया गया हो। ३ जिस पर चित्तियाँ, बेल-बूटे आदि बने हो। ४ जिसका चित्रण हुआ हो। ५ जो शब्दो मे बहुत ही सुन्दर रूप से लिखा गया हो।

चित्री (त्रिन्)—वि० [स० चित्र+इनि] १, चितकबरा। २ चित्रित।

चित्रीकरण—पु० [स० चित्र+च्वि०, ईत्व-दीर्घ,√कृ (करना)+ल्युट् अन] १ विभिन्न वर्णों से रग भरकर चित्रित करना। २ चित्र के रूप मे लाना या उपस्थित करना। ३ सजाना।

चित्रेश—पु० [चित्रा-ईश, ष० त०] चित्रा नक्षत्र के पति चद्रमा।

चित्रोक्ति—स्त्री० [चित्रा-उक्ति, कर्म स०] १ आकाश। २ अलकृत भाषा मे कही हुई बात। ३ सुन्दर अलकारो से युक्त उक्ति या कविता।

चित्रोत्तर—पु० [चित्र-उत्तर, ब० स०] साहित्य मे उत्तर अलकार का एक भेद जिसमे प्रश्न ऐसे विचित्र ढग से रखे जाते है कि उन्ही के शब्दो मे उनके उत्तर भी रहते है अथवा कई प्रश्नो का एक ही उत्तर भी रहता है। जैसे—'मुग्धा तियकी केलि रुचि कोन भौन मे होय?' मे का उत्तर 'कोन भौन' अर्थात् 'भवन का कोना' है।

चित्रोत्पला—स्त्री० [चित्र-उत्पल, ब० स०] उडीसा की एक नदी जिसे आज-कल चितरतला कहते है। २ पुराणानुसार ऋक्षपाद पर्वत से निकली हुई एक नदी।

चित्र्य—वि० [स०√चित्र्+ण्यत्] १ पूज्य। २ चुनने या चयन किये जाने के योग्य। ३ जिसे चित्र के रूप मे लाया जा सके। ४ जो चित्र के रूप मे अकित किये जाने के लिए उपयुक्त हो।

चिथड़ा—पु० [हि० चीथना=दाँत से फाडना] १ पुराने तथा घिसे हुए कपडे का फटा या फाडा हुआ ऐसा छोटा टुकडा जो किसी काम न आ सकता हो। २ बहुत पुराना, फटा हुआ और मैला कपडा।

पद—चिथड़ा-गुदडा=फटे-पुराने और रद्दी कपडे।

मुहा०—चिथडा लपेटना=फटा-पुराना कपडा पहनना।

वि० बहुत फटा हुआ। जैसे—चिथडा कपडा।

चिथाड़ना—स० [स० चीर्ण] १ चादर के रूप की वस्तुओ को फाडकर टुकडे-टुकडे करना। धज्जी-धज्जी करना। २ किसी को खूब खरी-खोटी सुनाकर अपमानित करना। धज्जियाँ उडाना। डाँटना।

चिद†—पु०=चित्।

चिदाकाश—पु० [स० चित्-आकाश, उपमि० स०] आकाश के समान निर्लिप्त और सब का आधार भूत ब्रह्म। परब्रह्म।

चिदात्मक—वि० [स० चित्-आत्मन्, ब० स०, कप्] चेतना से युक्त।

चिदात्मा (त्मन्)—पु० [चित्-आत्मन् ब० स०] १ चैतन्य स्वरूप परब्रह्म। २ चेतना शक्ति।

चिदानद—पु० [स० चित्-आनद, कर्म० स०] चैतन्य और आनन्दमय पर ब्रह्म।

चिदाभास—पु० [स० चित्-आभास, ष० त०] १ आत्मा के चैतन्य स्वरूप पर पडनेवाला ब्रह्म का आभास या प्रतिबिब। २ जीवात्मा।

चिदालोक—पु० [स० चित्-आलोक ष० त०] सदा बना रहनेवाला आत्मा का प्रकाश। शाश्वत प्रकाश।

चिद्घन—वि० [स० चित्√हन्+अप्, घन आदेश] जिसमे चेतना शक्ति हो। चेतना से युक्त। उदा०—श्री वृदावन चिद्घन कछु छवि बरनि न जाई।——नददास।

पु० ब्रह्म।

चिद्रूप—वि० [स० चित्-रूप, ब० स०] १ शुद्ध चैतन्य रूप, चिन्मय। २ परम ज्ञानी। ३ अच्छे स्वभाववाला।

पु० चैतन्य-स्वरूप। परब्रह्म।

चिद्विलास—पु० [स० चित्-विलास, ष० त०] १ चैतन्य-स्वरूप ईश्वर की माया। २ शकराचार्य के एक प्रसिद्ध शिष्य।

चिन—पु० [देश०] १ एक प्रकार का बहुत बडा सदाबहार पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती और इमारतो मे लगती है। २ एक प्रकार की घास जो चौपायो के खाने के लिए सुखाकर भी रखी जा सकती है।

चिनक—स्त्री० [हि० चिनगी] १ जलन लिये हुए हलकी स्थानिक पीडा। चुनचुनाहट। जैसे—पेशाब करने के समय मूत्रनाली मे होने वाली चिनक। २ चिनगारी।

चिनग—स्त्री०=चिनक।

चिनगटा—पु०=चिथडा।

चिनगारी—स्त्री० [स० चूर्ण, हि० चुन+अगार] १ जलती हुई वस्तु से निकलकर अलग होनेवाला आग का छोटा कण जो उडकर इधर-उधर जाता या जा सकता हो।

मुहा०—(किसी की) आँखो से चिनगारी छूटना=अत्यधिक क्रुद्ध होने पर आँखो का लाल हो जाना। **चिनगारी छोडना**=ऐसा काम करना या बात कहना जिससे बहुत बडा उपद्रव या लडाई खडी हो।

२. दो कडी वस्तुओ की रगड से उत्पन्न होनेवाला आग का कण। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसा छोटा कार्य या बात जिसका प्रभाव आगे चलकर बहुत उग्र तथा भीषण हो सकता है।

चिनगी—स्त्री०=चिनगारी।

पु० बाजीगरो और मदारियो के साथ रहनेवाला वह छोटा लडका जो अनेक प्रकार के कौशलपूर्ण खेल दिखलाता है।

चिनत्ती—स्त्री० [हि० चेना] चेना नामक कदन्न के आटे की रोटी।

चिनना*—स०=चुनना।

चिनाई दौड—स्त्री० [चिनाई ?+दौड] जहाज की घुमाव-फिराव की चाल। (लश०)

चिनाना—स०=चुनवाना।

चिनाब—स्त्री० [स० चन्द्रभागा] पजाब की एक प्रसिद्ध नदी। चद्रभागा नामक नदी।

चिनार—पु० [?] एक प्रकार का बडा वृक्ष।

चिनिग—पु० [?] बटेर की जाति का एक पक्षी जो रूप-रग मे घाघस जैसा किंतु उससे कुछ छोटा होता है।

चिनिया—वि० [चीन देश से] १ चीन देश मे उपजने, बनने या होनेवाला। जैसे—चिनिया केला। २ जिसका सबध चीन देश से हो। चीन सबधी।

पु० एक प्रकार का रेशमी कपडा।

वि० [हि० चीनी] १ चीनी का बना हुआ। २ जिसमे चीनी मिली हुई हो। ३ चीनी के रग या स्वाद का।

चिनिया केला—पु० [हि० चिनिया+केला] भारत के पूर्वी प्रदेशो मे होनेवाला छोटी जाति का एक केला जिसका स्वाद चीनी की तरह मीठा होता है।

चिनिया घोडा—पु० [हि० चीन या चीनी] वह घोडा जिसके पैर सफेद रग के और शरीर का अधिकाश लाल ओर कुछ भाग सफेद होता है।

चिनिया बत—पु० [हि० चिनिया+बत] बत्तख की तरह की एक चिडिया।

चिनिया बदाम—पु० [हि० चीन+बादाम] मूँगफली।

चिनियारी—स्त्री० [स० चुचु ?] सुसना का साग।

चिनिया बेगम—स्त्री० [हि० चिनिया+बेगम] अफीम। (परिहास)

चिनौटिया—वि० [हि० चिनना=चुनना] १ जिससे चुनट पडी हुई हो। २ चुना हुआ।

चिनौटिया चीर—पु० [हि०+सं०] चुँदरी या चूनरी नाम का कपडा। उदा०—पहिरै चीर चिनौटिया, चटक, चौगुनी होति।—बिहारी।

चिनौती—स्त्री०=चुनौती।

चिन्न—पु० [स० चणक] चना।

चिन्मय—पु० [स० चित्+मयट्] पूर्ण तथा विशुद्ध ज्ञानमय।

पु० परमात्मा।

चिन्ह—पु०=चिह्न। (अशुद्ध रूप)

चिन्हना†—अ०=चीन्हना (पहचानना)।

चिन्हवाना—स० [हि० 'चीन्हना का प्रे०] किसी को कुछ चीन्हने (पहचानने) मे प्रवृत्त करना।

चिन्हाना—स० [हि० चीन्हना का प्रे०] पहचान या परिचय कराना। चीन्हने या पहचानने मे प्रवृत्त करना।

चिन्हानी—स्त्री० [हि० चिह्न] १ निशानी। यादगार। २ पहचान। ३ रेखा आदि के रूप मे लगाया हुआ चिह्न या निशान।

चिन्हार—वि० [स० चिह्न] १ जिसे कोई चीन्हता अर्थात् पहचानता हो। २ जान-पहचान का। परिचित।

चिन्हारना—स० [स० चिह्न] चिह्नित करना। निशान लगाना।

चिन्हारी—स्त्री० [हि० चिह्न] १ जान-पहचान। परिचय। २ चिह्नानी। पु० १ व्यक्ति जिससे जान-पहचान या परिचय हो। परिचित। २ चिह्न। निशान।

चिन्हित—भू० कृ०=चिह्नित। (अशुद्ध रूप)

चिपकना—अ० [अनु० चिपचिप] १ एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ बीच मे कोई लसदार वस्तु होने के कारण लग या सट जाना। जुड जाना। जैसे—आँखे चिपकना। २ दो वस्तुओ का तल से तल मिलकर इस प्रकार एक होना कि बीच मे अवकाश न रह जाय। जैसे—दरवाजा चिपकना। ३ व्यक्तियो का पास-पास या सटकर बैठना। जैसे—दूर बैठो, चिपको मत। ४ किसी वस्तु या बात का कसकर पकड लेना । जैसे—लता का खभे से चिपकना। ५ किसी व्यक्ति से प्रगाढ प्रेम स्थापित करना और उसके पास या साथ रहना। ६ लीन या रत रहना। जैसे—बच्चे खेल मे चिपके रहते है।

चिपकाना—स० [हि० चिपकना] १ किसी लसीली वस्तु की सहायता से दो वस्तुओ के तल परस्पर इस प्रकार जोडना कि वे जल्दी अलग न हो सके। श्लिष्ट करना। जैसे—लिफाफे पर टिकट चिपकाना। २ अच्छी तरह आलिगन करना। गले लगाना। लिपटाना। ३ किसी काम-धधे या नौकरी मे लगाना। (बोल-चाल) जैसे—इस लडके को भी कही चिपका दो।

चिपचिप—स्त्री० [अनु०] १ वह अनुभूति जो किसी रसदार वस्तु को छूने से होती है। २ लसदार वस्तु को बार-बार छूते और उस पर से उँगली या हाथ हटाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चिपचिपा—वि० [हि० चिपचिप] [स्त्री० चिपचिपी] (पदार्थ) जो गाढा तथा लसदार होने के कारण वस्त्र, शरीर आदि से छूए जाने पर उससे चिपक जाता हो। जैसे—किवाड पर लगा हुआ चिपचिपा रग।

चिपचिपाना—अ० [हि० चिपचिप] किसी गाढी तथा लसीली वस्तु का चिपचिप शब्द करना या किसी वस्तु से छूए जाने पर उससे चिपक जाना। जैसे—गोद या चाशनी का चिपचिपाना।
स० किसी चीज को चिपचिपा करना या बनाना।

चिपचिपाहट—स्त्री० [हि० चिपचिपा] चिपचिपाने अथवा चिपचिपे होने की अवस्था, गुण या भाव। लसीलापन। लस। लसी।

चिपट—वि० [स० नि+पटच्, चि आदेश] चिपटी नाकवाला।
पु० चिडवा।

चिपटना—अ० [स० चिपिट=चिपटा] १ इस प्रकार जुडना कि जल्दी अलग न हो सके। चिपकना। सटना। जैसे—लता या पेड से चिपटना। २ दे० 'चिमटना'।

चिपटा—वि० [स० चर्पट, दे प्रा० चाप्टो, बँ० चाप्टी, उ० चेप्टी, गु० चापट, चपट्, ने० चेप्टो, मरा० चापट] [स्त्री० चिपटी] १ जिसके ऊपरी तल मे आवश्यक अथवा उचित उभार न हो। जिसकी सतह बहुत कुछ दबी हुई या सम हो। जैसे—चिपटी नाक, चिपटी सुपारी।

चिपटाना—स० [हि० चिपटना] १ चिपकाना। सटाना। २ आलिगन करना। लिपटाना।

चिपटी—स्त्री० [हि० चिपटा] १ कान मे पहनने की एक प्रकार की बाली। २ भग। योनि। (बाजारू)
मुहा०—**चिपटी खेलना या लडाना**=कामातुर अथवा दुश्चरित्रा स्त्रियो का आपस मे भग या योनि रगडना। (बाजारू)
वि० हि० 'चिटा' का स्त्री० रूप।

चिपडा—वि० [हि० चीपडा] जिसकी आँख मे अधिक चीपड रहता हो। पु० [स्त्री० चिपड] जलाने के लिए सुखाए हुए गोबर के बडे पिंड। उपला। कडा। गोइठा।

चिपड़ी—स्त्री० [हि० चिप्पड] छोटा चिपडा या कडा। उपली। गोइठी।

चिपिट—वि० [स०√चि (चयन)+पिटच्] चिपटा।
पु० १ चिडवा। २ चिपटी नाकवाला व्यक्ति। ३ आँख मे उँगली लगने, दबने आदि के कारण दृष्टि मे होनेवाला वह क्षणिक विकार जिससे चीजे अपने स्थान से कुछ ऊपर-नीचे हटी हुई या एक ही जगह दो दिखाई देती है।

चिपिट-नासिक—पु० [ब० स०] १ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो कैलाश पर्वत के उत्तर कहा गया है। २ तातार या मगोल देश जहाँ के निवासियो की नाक चिपटी होती है। ३ उक्त देश का निवासी।
वि० चिपटी नाकवाला।

चिपीटक—पु० [स०=चिपिट+कन् पृषो० सिद्धि] चिडवा।

चिपुआ†—पु० [देश०] चेल्हवा या चेल्हा मछली।

चिप्प—पु० [स०√चिक्क् (पीडा देना)+अच्, क्क् को प्प् आदेश] एक रोग जिसमे उँगलियो के नाखूनो के नीचे तथा आस-पास का मॉस गलने या पकने लगता है।

चिप्पक—वि० [हि० चिपकना] १ चिपका या दबा हुआ। २ चिपटा। ३ बहुत ही दुबला-पतला।

चिप्पड—पु० [स० चिपिट] [स्त्री० चिप्पी] १ वह छोटा चिपटा टुकडा जो किसी चीज के सूख जाने पर उसके ऊपरी तल मे से कुछ अलग हो रहा हो या निकल चला हो। जैसे—जलाने की लकडी के ऊपर का चिप्पड। २ ऊपर से लगाया या सटाया जानेवाला कोई चिपटा खड। जैसे—इसका छेद बद करने के लिए ऊपर से एक चिप्पड लगा दो।

चिप्पिका—स्त्री० [स० चिप्प+कन्—टाप्, इत्व] १ बृहत्सहिता के अनुसार एक रात्रिचर जतु। २ एक प्रकार की चिडिया।

चिप्पी—स्त्री० [हि० चिप्पड] १ छोटा चिप्पड जो ऊपर से चिपकाया, लगाया या सटाया जाय। जैसे—कागज की चिप्पी। २ वह बटखरा जिससे तौलकर सब को बराबर-बराबर अनाज या रसद बाँटी जाती है। ३ उक्त प्रकार से बाँटा जानेवाला अनाज या रसद। सीधा। (साधुओ की परिभाषा)
†स्त्री०=चिपडी।

चिबि—स्त्री० दे० 'चिवि'।

चिबिल्ला—वि० दे० 'चिलबिल्ला'।

चिबिल्लापन—पु०=चिलबिल्लापन।

चिबुक—पु० दे० 'चिवुक'।

चिमगादड—पु०=चमगादड।

चिमटना—अ० [म० स्तिम्, प्रा० तिम, चिम्, बँ० चिमटा, उ० चिमुटबा, मरा० चिवटणे] १ किसी जीव का दूसरे जीव या पदार्थ को अच्छी तरह पकडकर उसके साथ लग या सट जाना। जैसे—(क) बच्चे का माँ के गले से चिमटना। (ख) गुड से च्यूँटो का चिमटना। २ स्वाथ

साधन के लिए बुरी तरह से किसी को ग्रसना या पकडना। जैसे—मुफ्तखोरो का किसी रईस से चिमटना। ३ बहुत बुरी तरह से किसी के पीछे पडना और जल्दी उसका पिंड न छोडना। जैसे—भिखमगो का यात्रियो से चिमटना। ४ चिपकना। सटना।

चिमटवाना—स० [हि० चिमटना का प्रे०] दूसरे से चिमटाने का काम कराना। किसी को चिमटने या चिमटाने मे प्रवृत्त करना।

चिमटा—पु० [हि०चिमटना] [स्त्री० चिमटी] (हाथ की सुरक्षा के लिए) पीतल, लोहे आदि धातुओ का बना हुआ वह लबा उपकरण जिसमे आगे की ओर दो लबी फलियाँ होती है और जिनसे पकडकर चीजे उठाई या रखी जाती है। दस्त पनाह। जैसे—रसोई घर मे कोयला उठाने या तवा पकडने का चिमटा, साँप पकडने का चिमटा।

चिमटाना—स० [हि० चिमटना] १ किसी को चिमटने मे प्रवृत्त करना। २ आलिंगन करना। गले लगाना। लिपटाना।

चिमटी—स्त्री० [हि० चिमटा] कई प्रकार के कारीगरो के काम का वह छोटा उपकरण जो चिमटे के आकार-प्रकार का होता है और जिससे वे छोटी-छोटी चीजे उठाते, जमाते या रखते है। जैसे—लोहारो, सुनारो या हज्जामो की चिमटी।

चिमड़ा—वि०=चीमड।

चिमन—पु०=चमन। (बगीचा)

चिमनी—स्त्री० [अ०] १ भवनो, यत्रो आदि मे ऊपर की ओर ऊँची उठी हुई वह गोलाकार नली जिसके द्वारा नीचे का धूआँ ऊपर उठकर बाहर निकलता है। जैसे—बिजलीघर की चिमनी, रेल के इजन की चिमनी। २ लपो आदि मे शीशे की वह गोलाकार नली जिससे धूआँ ऊपर जाता है और नीचे की ओर प्रकाश फैलता है।

चिमिक—पु० [स०√चि (चयन)+मिक्, चिमि+कन्] तोता।

चिमीट—स्त्री० [हि० चिमटना] १ चिमटने की क्रिया या भाव। २ २ चिमटने के कारण पडनेवाला दबाव या भार। उदा०—इनको लक्कड की चिमीट मे भूमि से सटा हुआ कर दो। —वृदावनलाल वर्मा।

चिमोटा—पु०=चमोटा।

चिमोटी—स्त्री० १ =चिमटी। २ =चमोटी।

चिरंजीव—वि० [स० चिरम्√जीव् (जीना)+अच्] १ बहुत दिनो तक जीवित रहनेवाला। २ अमर।

अव्य० छोटो के लिए एक आशीर्वादात्मक विशेषण या सबोधन जिसका अर्थ होता है—बहुत दिनो तक जीवित रहो।

पु० १ पुत्र। बेटा। जैसे—हमारे भाई साहब के चिरजीव आज यहाँ आनेवाले है। २ पुराणो के अनुसार अश्वत्थामा, कृपाचार्य, परशुराम, बलि, विभीषण, व्यास और हनुमान जो सदा जीवित रहनेवाले माने जाते है। ३ विष्णु। ४ कौआ।

चिरजीवी (विन्)—वि० [स० चिरम्√जीव्+णिनि] =चिरजीवी।

चिरटी—स्त्री० [स० चिर√अट् (गति)+अच्, डीप्, पृषो० मुम्] १ वह सयानी लडकी जो पिता के घर रहती हो। २ युवती।

चिरतन—वि० [स० चिरम्+ट्यु—अन, तुट् आगम] जो बहुत दिनो से चला आ रहा हो। पुरातन। पुराना।

चिर—वि० [स०√चि (चयन करना)+रक्] १. जो बहुत दिनो से चला आ रहा हो या बहुत दिनो तक चलता रहे। दीर्घ काल-व्यापी। जैसे—चिरायु=अधिक काल तक बनी रहनेवाली आयु, चिरस्थायी=बहुत दिनो तक बना रहनेवाला। २ दीर्घ या बहुत। (समय)

पु० देर। विलब।

क्रि० वि० बहुत दिनो तक।

पु० तीन मात्राओ का वह गण जिसका पहला वर्ण लघु हो।

चिरई—स्त्री० = चिडिया। (पूरब)

चिरक—स्त्री० [हि० चिरकना] बहुत जोर लगाने पर होनेवाला जरा-सा पाखाना। मल-कण।

चिरक ढाँस—स्त्री० [हि० चिरकना+ढाँसना] १ कुकरखाँसी। ढाँसी। २ वह अवस्था जिसमे मनुष्य प्राय कुछ न कुछ रोगी बना रहता है। ३ नित्य होता रहनेवाला या प्राय बना रहनेवाला झगडा।

चिरकना—अ० [अनु०] बहुत कष्ट से और थोडा थोडा मल-त्याग करना। (कोष्ठ-बद्धता का लक्षण)

चिरकार—वि० [स० चिर√कृ (करना)+अण्] हर काम मे बहुत देर लगानेवाला। दीर्घ सूत्री।

चिरकारिक—वि० [स० चिरकारिन्+कन्] = चिरकार।

चिरकारी (रिन्)—वि० [स० चिर√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० चिरकारिणी] चिरकार। (दे०)

चिर-काल—पु० [कर्म० स०] [वि० चिरकालिक] दीर्घकाल। बहुत समय। जैसे—चिरकाल से ऐसा ही होता चला आ रहा है।

चिरकालिक—वि० [स० चिर-काल+ठन्—इक] १ बहुत दिनो से चला आता हुआ। पुराना। २ बहुत दिनो तक बना रहनेवाला।

चिरकालीन—वि० [स० चिरकाल+ख—ईन] =चिरकालिक।

चिरकीन—वि० [फा०] १ कोष्ठबद्धता के कारण थोडा-थोडा मल-त्याग करनेवाला। २ बहुत अधिक कुत्सित, गदा या मैला।

चिरकुट—पु० [हि० चिरना+कुटना] फटा-पुराना कपडा। चिथडा।

चिर-कुमार—वि० [च० त०] [स्त्री० चिरकुमारी] सदा कुमार अर्थात् ब्रह्मचारी बना रहनेवाला। विवाह न करनेवाला।

चिर-क्रिय—वि० [ब० स०] काम मे देर लगानेवाला। दीर्घ सूत्री।

चिरक्रियता—स्त्री० [स० चिरक्रिय+तल्—टाप्] चिर-क्रिय होने की अवस्था या भाव। दीर्घसूत्रता।

चिरचना—अ० =चिडचिडाना।

चिरचिटा—पु० [स० चिंचिडा] १ चिंचडा। अपामार्ग। २ एक प्रकार की बहुत ऊँची या बडी घास जो चौपाये खाते है।

चिरचिरा†—वि० =चिडचिडा।

पु० दे० 'चिचडा'।

चिरजीवक—वि० [स० चिर√जीव् (जीना)+ण्वुल्—अक] बहुत दिनो तक जीवित रहनेवाला। चिरजीवी।

पु० जीवक नामक वृक्ष।

चिर-जीवन—पु० [मध्य० स०] सदा बना रहनेवाला जीवन। अमर जीवन।

चिरजीवी (विन्)—वि० [स० चिर√जीव्+णिनि] १ अधिक या बहुत दिनो तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। २ सदा जीवित रहनेवाला। अमर। ३ सदा बना रहनेवाला। शाश्वत।

पु० १ विष्णु। २ मार्कंडेय ऋषि। ३ कौआ। ४ जीवक वृक्ष। ५

सेमर का वृक्ष। ६ अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गये हैं।

चिरता†—पु० =चिलता (कवच)।

चिर-तिक्त—पु० [ब० स०] चिरायता।

चिर-तुषार-रेखा—स्त्री० [मध्य० स०] पहाडो आदि की ऊँचाई का वह स्तर जिसके ऊपर सदा बरफ जमा रहता है। (स्नोलाइन)

चिरना—अ० [स० चीर्ण, हि० चीरना] १ किसी वस्तु का किसी दूसरी धारदार वस्तु द्वारा चीरा जाना। छोटे-छोटे टुकडो मे आरे, चाकू आदि के द्वारा विभक्त होना। २ किसी सीध मे फटना या फाडा जाना। जैसे—चाकू से उँगली चिरना।

†पु० वह औजार जिससे कोई चीज चीरी जाती हो। जैसे—कसेरो, कुम्हारो या सुनारो का चिरना।

चिर-निद्रा—स्त्री० [च० त०] मृत्यु।

चिर-नूतन—वि० [च० त०] बहुत दिनो तक या सदा नया बना रहनेवाला।

चिर-परिचित—वि० [तृ० त०] जिससे बहुत दिनो से परिचय या जान-पहचान हो।

चिरपाकी (किन्)—वि० [स० चिर √पच् (पकना) +णिनि] १ बहुत देर मे पकनेवाला। २ बहुत देर मे पचनेवाला।

पु० कपित्थ। कैथ।

चिरपुष्प—पु० [ब० स०] बकुल। मौलसिरी।

चिर-प्रतीक्षित—वि० [तृ० त०] जिसकी बहुत दिनो से प्रतीक्षा की जा रही हो।

चिर-प्रसिद्ध—वि० [तृ० त०] जो बहुत दिनो से प्रसिद्ध या मशहूर हो।

चिरबत्ती—वि० [हि० चिरना +बत्ती] (कपडा) जो चिर या फटकर इतने छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे हो गया हो कि दीए की बत्ती बनाने के सिवा और किसी काम मे न आ सकता हो। चिथडे-चिथडे किया हुआ।

चिर-बिल्व—पु० [स० चिर √बिल् (ढकना) +वन्] करज वृक्ष। कजा।

चिरम—स्त्री० [स० चिर्मटी] गुजा। घुँघची।

चिरमिटी—स्त्री० [हि० चिरम] गुजा। घुँघची।

चिरमी—स्त्री० =चिरमिटी।

चिर-मेही (हिन्)—पु० [स० चिर √मिह (मूत्र करना) +णिनि] गधा, जो बहुत देर तक पेशाब करता रहता है।

चिर-रोगी (गिन्)—वि० [तृ० त०] १ जो बहुत दिनो से बीमार चला आ रहा हो। २ सदा रोगी बना रहनेवाला।

चिरला—पु० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाडी।

चिरवल—पु० [स० चिरबिल्व या चिरबल्ली] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड की छाल से कपडे रँगने के लिए सुदर लाल रग निकलता है।

चिरवाई—स्त्री० [हि० चिरवाना] चिरवाने का काम, भाव या मजदूरी।

स्त्री० [स० चिर +वाही ?] पानी बरसने पर खेतो मे होनेवाली पहली जोताई।

चिरवादार†—पु० [चिरवा ?+फा० दार] [स्त्री० चिरवा दारिन] साईस।

चिरवाना—स० [हि० चीरना का प्रे०] चीरने का काम दूसरे मे कराना।

चिर-विस्मृत—वि० [तृ० त०] जिसे लोग बहुत दिनो से भूल चुके हो।

चिर-वीर्य—पु० [ब० स०] लाल रेड का वृक्ष।

चिर-शत्रु—वि० [कर्म० स०] [भाव० चिर-शत्रुता] १ पुराना दुश्मन। २ सदा दुश्मन या शत्रु बना रहनेवाला।

चिर-शांति—स्त्री० [च० त०] १ मृत्यु। २ मुक्ति। मोक्ष।

चिर-संगी (गिन्)—वि० [कर्म० स०] बहुत दिनो का या पुराना सगी (साथी)।

चिर-समाधि—स्त्री० [कर्म० स०] ऐसी समाधि जिसका कभी अत न हो अर्थात् मृत्यु।

चिरस्थ—वि० [स० चिर √स्था (ठहरना) +क] चिरस्थायी।

चिरस्थायी (यिन्)—वि० [स० चिर √स्था +णिनि] बहुत दिनो तक बना रहनेवाला। जैसे—चिरस्थायी आदेश।

चिर-स्मरणीय—वि० [स० कर्म० स०] जिसे लोग बहुत दिनो तक याद या स्मरण करते रहे। जो जल्दी भुलाया या भूला न जा सके। (पूजनीयता, महत्त्व आदि का सूचक)

चिरहँटा—पु० [हि० चिडी +हता] चिडीमार। बहेलिया।

चिरहुला—पु० [?] [स्त्री० चिरहुली] १ चिडा। २ पक्षी।

चिराँदा—वि० [अनु० चिर चिर=लकडी आदि के जलने का शब्द] **थोडी**-थोडी बात पर बिगड बैठनेवाला। चिडचिडा।

चिराइता—पु० = चिरायता।

चिराइन—स्त्री० = चिरायँध।

चिराई—स्त्री० [हि० चीरना] चीरने या चीरे जाने का काम, भाव या मजदूरी।

चिराक—पु० = चिराग।

चिराग—पु० [फा० चिराग] दीपक। दीआ।

मुहा०—चिराग का हँसना=दीये की बत्ती से फूल (अर्थात् चिनगारियाँ) झडना। **चिराग को हाथ देना**=चिराग बुझाना। **चिराग गुल होना** =(क) दीये का बुझ जाना। (ख) रौनक या शोभा का नष्ट हो जाना। (ग) परिवार या वश मे कोई न बच रहना। **चिराग ठंढा करना** =दीया बुझाना। **चिराग तले अँधेरा होना**=ऐसे स्थान या स्थिति मे खराबी या बुराई होना जहाँ साधारणत वह किसी प्रकार न होता या न हो सकता हो। जैसे—हाकिम के सामने रिश्वत लेना, उदार धनी के सबधी का भूखो मरना आदि। **चिराग बढ़ाना**=चिराग बुझाना। दीया ठढा करना। **चिराग मे बत्ती पड़ना** = सध्या हो जाने पर दीया जलना। **चिराग लेकर ढूँढ़ना**=बहुत अधिक प्रयत्नपूर्वक ढूँढना। **चिराग से चिराग जलना**= एक से दूसरे का उपकार, लाभ या हित होना। **चिराग से फूल झडना** = चिराग की जली हुई बत्ती से चिनगारियाँ निकलना या गिरना।

पद—चिराग जले = अँधेरा होने पर। सध्या समय। **चिराग बत्ती का वक्त**= सध्या का समय जब दीआ जलाया जाता है।

कहा०—चिराग गुल, पगडी गायब =मौका मिलते ही धन का उडा लिया जाना।

चिराग-गुल—पु० [फा०] १ युद्ध आदि के समय वह सकट की स्थिति जिसमे शत्रुओ के आक्रमण से लोग या तो रोशनी नही करते या अपने घर से रोशनी बाहर नही आने देते। २ युद्धाभ्यास के समय नगर मे बत्तियाँ न जलाने से उत्पन्न होनेवाली स्थिति। (ब्लैक आउट)

चिराग-दान—पु० [अ०] वह आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीयट। शमादान।

चिरागी—स्त्री० [अ०] १ किसी स्थान पर दीया-बत्ती करने अर्थात् नित्य और नियमित रूप से दीया जलाते रहने का व्यय। २ किसी पवित्र स्थान पर उक्त प्रकार के व्यय-निर्वाह के लिए चढाई जानेवाली भेट। ३ वह पुरस्कार जो जुए के अड्डे पर दीया जलाने और सफाई करनेवाले व्यक्ति को जीतनेवाले जुआरियो से मिलता है।

चिराटिका—स्त्री० [स० चिर √अट्+ण्वुल्–अक-टाप्, इत्व] १ सफेद पुनर्नवा। २ चिरायता।

चिरातन—वि० [स० चिर+तनप्, दीर्घ] १ पुरातन। पुराना। २ फटा हुआ। जीर्ण-शीर्ण।

चिरातिक्त—पु० =चिरतिक्त।

चिराद्—पु० [स० चिर √अत् (गति)+क्विप्] गरुड।

चिराद—पु० [स० चिराद् ?] बत्तक की जाति की एक बडी चिडिया जिसका माँस खाने मे स्वादिष्ठ होता है।

चिरान †—वि०=चिराना (पुराना)।

चिराना—स० [हि० चीरना] चीरने का काम किसी से कराना। फडवाना। जैसे—लकडी चिराना।

वि० [स० चिरतन] १ पुराना। प्राचीन। २ जीर्ण-शीर्ण। जैसे—पुराने-चिराने कपडे।

चिरायँध—स्त्री० [स० चर्म+गध] १ वह दुर्गंध जो चरबी, चमडे, बाल, माँस आदि के जलने से फैलती है। २ किसी के सबध मे बहुत बुरी तरह से फैलनेवाली बदनामी।

चिरायता—पु० [स० चिरतिक्त] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ और छाल बहुत कडवी होती और वैद्यक मे ज्वर नाशक तथा रक्तशोधक मानी जाती है। इसकी छोटी-बडी अनेक जातियाँ होती है, जैसे—कलपनाथ, गीमा, शिलारस आदि। किरातक। चिरतिक्त। भूनिब।

चिरायु (स्)—वि० [स० चिर-आयुस् ब० स०] जिसकी आयु लबी हो। दीर्घायु।

चिरारी †—स्त्री० [स० चार] चिरौजी।

चिराव—पु० [हि० चिरना] १ चीरने या चीरे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ चिरने या चीरे जाने के कारण होनेवाला क्षत या घाव।

चिरिंटिका, चिरिंटी—स्त्री० =चिरटी।

चिरि—पु० [स० √चि (चयन करना)+रिक्] तोता।

†स्त्री० =चिडिया।

चिरिका—स्त्री० [स० चिरि+कन्–टाप्] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

चिरिया†—स्त्री० =चिडिया।

चिरिहार*—पु० [हि० चिडिया+हार (प्रत्य०)] चिडीमार। उदा०—कत चिरिहार ढुकत लै लासा।—जायसी।

चिरी†—स्त्री० =चिडी (चिडिया)।

चिरु—पु० [स० चि+रुक्] कधे और बाँह का जोड। मोढा।

चिरैता†—पु० चिरायता।

चिरैया—स्त्री० [हि० चिडिया] १. पक्षी। २ पुष्य नक्षत्र।

चिरोटा—पु० =चिडा (गौरैया पक्षी)।

चिरौंजी—स्त्री० [स० चार+बीज] पयार या पयाल नामक वृक्ष के फलो के बीच की गिरी जो खाने मे बहुत स्वादिष्ठ होती है और मेवो मे गिनी जाती तथा पकवानो और मिठाइयो मे पडती है।

चिरौरी—स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती।

चिर्क—पु० [फा०] १ गदगी। २ गुह। मल। ३ पीब। मवाद।

चिर्मटी—स्त्री० [स० चिर √भट् (पालना)+अच्, पृषो० सिद्धि] ककडी।

चिर्म—पु० [फा० मि० स० चर्म] चमडा।

चिर्री—स्त्री० [स० चिरिका=एक अस्त्र] बिजली। वज्र।

क्रि० प्र०— गिरना।—पडना।

चिलक—स्त्री० [हि० चिलकना] १ सहसा दिखाई देनेवाली और क्षणिक काति या चमक। उदा०—चिलक चोधि मे रूप-ठग हाँसी फाँसी डारि।—बिहारी। २ सहसा अथवा रह-रहकर कुछ समय के लिए उठनेवाली क्षणिक पीडा। टीस। चमक।

†पु० =तिलक (पौधा)।

चिलकना—अ० [हि० चिल्ली=बिजली या अनु०] १ रह-रहकर चमकना। चमचमाना। उदा०—सब ठाठ इसी चिलकी से देखे है चिलकते।—नजीर। २ रह-रहकर दरद या पीडा होना। जैसे—उठने-बैठने मे कमर या पीठ चिलकना।

चिलका †—पु० [?] नवजात शिशु।

†पु० =चिलकी (रुपया)।

†स्त्री० उडीसा की एक प्रसिद्ध बडी झील।

चिलकाई*—स्त्री० [हि० चिलक+आई (प्रत्य०)] १ चमक। उदा०—कै मेधनि सो सुचि चचला की चिलकाई।—रत्नाकर। २ उतार-चढाव। ३ उत्तेजना।

वि० चमकीला।

चिलकाना—स० [हि० चिलक] १ चिलकने या चमकने मे प्रवृत्त करना। जैसे—माँज या रगडकर गहने या बरतन चिलकाना। २ चमकाना।

चिलकी †—स्त्री० [हि० चिलकना] १ चाँदी का रुपया, विशेषत नया रुपया जो चमकता हो। उदा०—सब ठाठ इसी चिलकी से देखे है चिलकते।—नजीर। २ एक प्रकार का रेशमी कपडा। उदा०—चिलकी चिक्कन चाह चीर चीनी जापानी।—रत्नाकर।

वि० चमकीला।

चिलगोजा—पु० [फा०] चीड या सनोबर का छोटा, लबोतरा फल जिसके अदर मीठी और स्वादिष्ट गिरी होती है और इसी लिए जिसकी गिनती मेवो मे होती है।

चिलचिल—पु० [हि० चिलकना] अभ्रक। अबरक। भोडल।

वि० चमकीला।

चिलचिलाना—अ०=चिलकना (चमकना)।

स०=चमकाना।

चिलडा—पु० [देश०] पिसी हुई दाल, बेसन आदि की बनी हुई पूरी या रोटी के आकार का पकवान। उलटा। चीला।

चिलता—पु० [फा० चिलत] एक प्रकार का कवच या बकतर।

चिलबिल—पु० [स० चिलबिल्व] १ एक प्रकार का बडा जगली पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है और खेती के औजार बनाने के काम मे आती है। २ एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसकी सफेद जड से वर के लिए मुकुट, मौर आदि बनते है।

चिलबिला—वि० [सं० चल+बल] [स्त्री० चिलबिल्ली] चचल। चपल। नटखट।

चिलबिल्ला—वि०=चिलबिला।

चिलम—स्त्री० [फा०] मिट्टी का कटोरीके आकार का नलीदार एक प्रसिद्ध पात्र जिसमे गाँजा, चरस या तमाकू तथा आग रखकर यो ही अथवा हुक्के की नली पर लगाकर पीया जाता है।

क्रि० प्र०—पीना।

मुहा०—चिलम चढाना या भरना=चिलम पर तमाकू (गाँजा आदि) ओर आग रखकर उसे पीने के लिए तैयार करना। **(किसी की) चिलमे चढाना या भरना**=किसी की तुच्छ मे तुच्छ सेवाएँ करना।

चिलम-गर्दी—स्त्री० [फा०] हुक्के मे वह लबी बाँस की नली जो चूल और जामिन से मिली होती है। इस पर चिलम रखी जाती है। (नैचाबन्द)

चिलम चट—वि० [फा० चिलम+हि० चाटना] १ वह जो चिलम पीने का बहुत व्यसनी हो। २ वह जो इस प्रकार कसकर चिलम पीता हो कि फिर वह दूसरे के पीने योग्य न रह जाय।

चिलमची—स्त्री० [फा०] देग के आकार का एक बरतन जिसके किनारे चारो ओर थाली की तरह दूर तक फैले होते है। इसमे लोग हाथ धोते और कुल्ली आदि करते है।

चिलमन—स्त्री० [फा०] बाँस की फट्टियो आदि का परदा जो खिडकियो, दरवाजो आदि के आगे लटकाया जाता है। चिक।

चिलम-पोश—पु० [फा०] धातु का झँझरीदार गहरा ढक्कन जो चिलम पर इसलिए रखा जाता है कि उसमे से चिनगारियाँ उडकर इधर-उधर न गिरे।

चिलम-बरदार—पु० [फा०] चिलम भरकर हुक्का पिलानेवाला सेवक।

चिलमिलिका —स्त्री० [सं० चिर√मिल्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ गले मे पहनने की एक प्रकार की माला। २ खद्योत। जुगनूँ। ३ बिजली।

चिलमीलिका—स्त्री०=चिलमिलिका।

चिलवाँस—पु [हि० चिडिया] चिडिया फँसाने का एक प्रकार का फदा।

चिलसी—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का सुरती का पत्ता जो कश्मीर मे होता है। २ दे० 'चिलबाँस'।

चिलहुल†—पु० [सं० चिल] एक प्रकार की छोटी मछली।

चिलिम†—स्त्री०=चिलम।

चिलिया—स्त्री० [सं०चिल] चिलहुल मछली।

चिलुआ†—स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

चिल्काउर—स्त्री० [?] प्रसूता स्त्री। जच्चा।

चिल्लका —स्त्री० [सं०/चिल्ल √का (शब्द करना)+क टाप्] झींगुर।

चिल्लड†—पु०=चीलर (कीडा)।

चिल्ल-पों—स्त्री० [हि० चिल्लाना+अनु० पो] १ सकट पडने पर होनेवाली दीनतापूर्ण चिल्लाहट। जैसे—कुत्ते आदि मार पडने पर करते है। २ चिल्लाहट। शोर-गुल। जैसे—इस घर मे रोज चिल्लपो होती रहती है।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

चिल्लभक्ष्या —स्त्री० [ष० त०] नख या नखी नामक गध द्रव्य।

चिल्लवाँस—स्त्री० [हि० चिल्लाना] कष्ट, रोग आदि के समय बच्चो का चिल्लाना।

चिल्लवाना—स० [हि० चिल्लाना का प्रे०] किसी को चिल्लाने मे प्रवृत्त करना।

चिल्ला—पु० [फा० चिल्ल] १ किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियत किये हुए ४० दिन जिनमे बहुत-सी बातो का बचाव और बहुत -से नियमो का पालन करना पडता है। जैसे—(क) प्रसूता के सबध मे प्रसव के दिन से ४० दिनो का समय। (ख) किसी की मृत्यु होने पर ४० दिनो तक मनाया जानेवाला शोक। (ग) व्रत आदि के पालन के लिए ४० दिनो का समय।

मुहा०—चिल्ला खीचना या बाँधना=४० दिनो तक धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट प्रकार के व्रतों का आचरण या पालन करना।

२ सौर धनुमास के अतिम १५ दिनो और मकर मास के आरभिक २५ दिनों का समय जिसमे बहुत कडी सरदी पडती है।

पद—चिल्ले का जाडा या सरदी=बहुत कडा जाडा या तेज सरदी।

पु० [?] १ कमान या धनुष की डोरी। पनचिका।

क्रि० प्र०—उतारना। —चढाना।

२ पगडी का वह पल्ला या सिरा जिस पर कलाबत्तू का काम बना हो। ३ एक प्रकार का जगली पेड। ४ चीला या उलटा नाम का पकवान।

चिल्लाना—अ० [हि० चीत्कार] १ अधिक जोर से तीखे स्वर मे मुँह से कोई शब्द बार-बार कहना। जैसे—वह पगला दिन भर गलियो मे राम राम चिल्लाता फिरता है। २ किसी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए गला फाडकर कुछ कहना। जैसे—इस मिथ्या दोष के लगाये जाने पर वह चिल्लाकर बोल उठे। ३ अस्पष्ट तथा कर्णकटु शब्द या ध्वनि करना। शोर या हल्ला करना। जैसे—गली मे कुत्ते चिल्ला रहे थे।

चिल्लाभ—पु० [सं० चिल्ल-आ√भा (प्रतीत होना)+क] १ छोटी-छोटी चोरियाँ करनेवाला व्यक्ति। २ गिरहकट।

चिल्लाहट—स्त्री० [हि० चिल्लाना] १ चिल्लाने की क्रिया या भाव। ऊँचे तथा अस्पष्ट शब्दो मे किया हुआ उच्चारण। २ शोर-गुल। हो-हल्ला।

क्रि० प्र०—मचना। —मचाना।

चिल्लिका—स्त्री० [सं० चिल्ल+इनि+कन्, टाप्√] १ दोनो भौहो के बीच का स्थान। २ छोटी पत्तियोवाला एक प्रकार का बथुआ नामक साग। ३ झिल्ली नामक कीडा।

चिल्ली—स्त्री० [सं० चिल्लि+ङीष्] १ झिल्ली नाम का कीडा। २ लोध। ३ बथुआ का साग। ४ एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी खाकी छाल पर सफेद चित्तियाँ होती है।

स्त्री० [सं० चिरिका=एक प्रकार का अस्त्र] १ एक प्रकार का भीषण अस्त्र। चिर्री। २ बिजली। वज्र।

चिल्हवाँस*—पु०=चिलवाँस।

चिल्हवाडा—पु० [हि० चील] लडको का एक खेल जो पेडो पर चढकर खेला जाता है। गिलहर।

चिल्ही†—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चिल्होर—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चिवि—स्त्री० [स०√चीव् (ढँकना)+इनि, पृषो० सिद्धि] चिबुक। ठोढी।

चिविट—पु० [स० चिपिट, पृषो० सिद्धि] चिडवा।

चिविल्लिका—स्त्री० [स० चिविल्ल+कन्+टाप्, इत्व] एक प्रकार का क्षुप।

चिवुक—पु० [स०√चीव्+उ, +कन्] १ चिबुक। ठुड्डी। ठोढी। २ मुचकुद का पेड।

चिहकार*—पु० १ =चीत्कार। २ =चहचहा (पक्षियो का)।

चिहल—स्त्री०=चहल (आनद)।

चिहाना—अ० [?] चकित होना।

चिहार—स्त्री० दे० 'चिवाड'।

चिहुँक—स्त्री० [हिं० चिहुँकना] १ चिहुँकने अर्थात् चौकने की अवस्था या भाव। २ ऐसी आशका या बात जिससे कोई चौकता हो।

चिहुँकना—अ० [स० चमत्कृ, प्रा० चवँकि] चौकना। (देखे)

चिहुँटना—स० [स० चिपिट, हिं० चिमटना] १ चुटकी से किसी के शरीर का माँस इस प्रकार पकडना जिसमे कुछ पीडा हो। चिकोटी या चुटकी काटना। २ लाक्षणिक रूप मे उक्त प्रकार की ऐसी क्रिया करना जिससे किसी को मर्म-भेदी कष्ट या पीडा हो। जैसे—किसी का चित्त या मन चिहुँटना। ३ अच्छी तरह से किसी को पकडकर दबा या दबोच लेना, जैसा आलिगन आदि के समय होता है। ४ चिपटना। लिपटना।

चिहुँटनी—स्त्री० [चिहुँटना]१ चिहुँटने अर्थात् चिकोटी काटने की क्रिया या भाव। २ चिहुँटी। चुटकी।

स्त्री० [देश०] गुजा। घुँघची।

चिहु—वि० दे० 'चहुँ'। उदा०—लगन लिद्धिअनु जासु, नाम चिहु चक्क चलायप।—चदवरदाई।

चिहुर—पु० [स० चिकुर] सिर के बाल। उदा०—(क) चिहुरे जल लागौ चुवण। —प्रिथीराज। (ख) कटि अति-सात चिउर की नाईं। —जायसी।

चिहुरार†—पु०=चिहुर। उदा०—लबोजा चिहुरार भार जघना विघना घनानासिनी।—चदवरदाई।

चिहूँटना—स०=चिहुँटना। उदा०—चतुरनारि चित अधिक चिहूँटी। —जायसी।

चिह्न—पु० [स०√चिह्न (निशान लगाना)+अच्] १ ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाले कोई विकार-सूचक शारीरिक निशान। जैसे—आघात या प्रहार का चिह्न। २ कोई विकार-सूचक निशान। दाग। धब्बा। ३ किसी वस्तु आदि पर अकित वह विशेष शब्द, बात या छाप जिससे उस वस्तु के निर्माता या निर्माणशाला का ज्ञान होता है। ४ किसी चीज के सपर्क, सघर्ष या दाब से पडा हुआ निशान। जैसे—चरण चिह्न। ५ कोई ऐसी आरभिक छोटी बात जो किसी भावी बात या घटना की सूचक हो। लक्षण। ६ किसी चीज या बात का पता देनेवाला कोई तत्त्व। ७ झडा । पताका।

चिह्नकारी (रिन्)—वि० [स० चिह्न√कृ (करना) +णिनि] १ चिह्न या निशान करने, बनाने या लगानेवाला। २ घाव करनेवाला। ३ वध-करनेवाला। ४ भयानक। भीषण।

चिह्नधारिणी—स्त्री०। [स० चिह्न√धृ (धारण करना)+णिनि-ङीप्] श्यामा लता। कालीसर।

चिह्नित—भू० कृ० [स० चिह्न+क्त] पहचान के लिए जिस पर चिह्न लगाया गया हो।

चीं—स्त्री० [अनु०] १ चिडियो के बोलने का शब्द। २ कष्ट या पीडा के समय किसी दीन के मुँह से निकलनेवाला उक्त प्रकार का शब्द।

मुहा०—चीं बोलना=असमर्थता और दीनता के सूचक लक्षण दिखाना।

चींचख—स्त्री० [अनु०] चिल्लाहट। उदा०—उल्लुओ की चीचख सोना को नही सुहाती थी।—वृदावनलाल वर्मा।

चीं-चपड—स्त्री० [अनु०] वह हल्का प्रतिवाद या विरोध जो किसी बडे या सबल के सामने किया जाय। जैसे—उसने बिना ची-चपड किये सारा अत्याचार सह लिया।

चीं-चीं—स्त्री० [अनु०] १ पक्षियो अथवा छोटे बच्चो का बहुत ही कोमल और दीनता-सूचक शब्द। २ धीमे स्वर मे की जानेवाली बाते।

चींटवा—पु०=चीटा (च्यूँटा)।

चींटा—पु० [स्त्री० चीटी]=च्यूँटा।

चींतना*—स० [स० चित्रण] अकित या चित्रित करना। चित्र बनाना या लिखना। चित्रना।

अ०=चीतना।

चींथना—स०=चीथना।

चीक—स्त्री०=चीख।

†पु०=चिक (बूचड)।

†पु०=कीच (कीचड)।

चीकट—पु०, वि०=चिक्कट।

पु० [हिं० कीचड?] १ मटियार भूमि। २ कीचड।

पु०=चिकट (रेशमी कपडा)।

चीकड†—पु०=कीचड।

चीकन—वि०=चिकना।

चीकना—अ० [स० चीत्कार] १ पीडा या कष्ट आदि के कारण जोर से चिल्लाना। चीत्कार करना। चीखना। २ बहुत जोर से चिल्लाकर कुछ कहना या बोलना। ३ बहुत जोर से कर्णकटु शब्द करना। जैसे—कुत्तो का चीकना।

वि० [स्त्री० चीकनी]=चिकना।

चीकर—पु० [देश०] कूएँ के ऊपर का वह स्थान जिसमे मोट या चरस आदि से निकाला हुआ पानी गिराया जाता है।

चीख—स्त्री० [अनु०] १ तीव्र और कर्णकटु ध्वनि। जैसे—इजन की चीख। २ भय अथवा अधिक पीडा या व्यथा के कारण निकलनेवाली उच्च या तीव्र ध्वनि या शब्द। जैसे—बच्चे की चीख निकल गई।

मुहा०—चीख मारना=कष्ट या पीडा के समय जोर से चिल्लाना।

चीखना—स०=चखना (खाने की चीज)।

अ०=चीकना (चिल्लना)।

चीख-पुकार—स्त्री० [हिं०] कष्ट के समय रक्षा, सहायता आदि के लिए चिल्लाकर मचाई जानेवाली पुकार।

चीखर (ल)—पु० [हिं० चीकड (कीचड)] १ कीच। कीचड। २ गारा। (डिं०)

चीज—स्त्री० [फा० चीज] १ दैनिक उपयोग या व्यवहार मे काम आनेवाला कोई भौतिक पदार्थ। जैसे—बाजार से कई चीजे लानी है। २ किसी कला-कृति, रचना, वस्तु आदि का कोई अग या अवयव। जैसे—इस मशीन मे कोई चीज खराब जरूर है। ३ कोई उपयोगी, निराली या महत्त्वपूर्ण वस्तु। जैसे—यह भी तो कोई चीज है। ४ स्त्रियो की बोल-चाल मे कोई आभूषण। जैसे—उनसे कई बार कहा है कि लडकी को कोई चीज बनवा दे। ५ कोई उत्कृष्ट, महत्त्वपूर्ण या विचारणीय बात। जैसे—इस लेख की कई चीजे समझने और समझाने की है। ६ सगीत, साहित्य आदि मे कोई विशिष्ट कृति। जैसे—उन्होने कई चीजे सुनाई।

चीठ—स्त्री० [हिं० चीकड=कीचड] गदगी। मैल।

चीठा—पु०=चिट्ठा।

चीठी—स्त्री०=चिट्ठी।

चीड—पु० [देश०] १ एक प्रकार का देशी लोहा। २ चमडा छीलकर साफ करने की क्रिया। (मोची)

पु०=चीढ।

चीडा—स्त्री० [स० चिड-टाप्-दीर्घ पृषो०] चीढ नामक पेड।

चीढ़—पु० [स० चीडा] एक प्रसिद्ध बडा पेड जिसकी चिकनी और नरम लकडी इमारत और सदूक आदि बनाने के काम आती है। इस लकडी मे तेल का अश अधिक होता है जो निकाला जाता और ताडपीन के तेल के नाम से बिकता है। गधा बिरोजा इसी पेड का गोद है। इसके कुछ अशो का प्रयोग औषध, गध-द्रव्य आदि के रूप मे भी होता है।

†पु०=चीड (लोहा)।

चीत—पु० [स०√चि (चयन करना)+क्त-दीर्घ पृषो०] सीसा नामक धातु।

*पु०=चित्त।

†पु०=चित्रा (नक्षत्र)।

चीतकार†- पु० १=चीतकार। २ =चित्रकार।

चीतना—स० [स० चेत][वि० चीता] १ मन मे किसी प्रकार की भावना या सोच-विचार करना। सोचना। जैसे—किसी का बुरा या भला चीतना। २ याद या स्मरण करना। जैसे—विरह मे प्रिय को चीतना। अ० होश मे आना। चेतना।

स० [स० चित्रण] चित्र अकित या चित्रित करना।

चीतर—पु० दे० 'चीतल'।

चीतल—पु० [स० चित्रल] १ एक प्रकार का बारहसिघा जिसका चमडा चित्तीदार और बहुत सुन्दर होता है। यह जलाशयो के पास झुड मे रहता है और मास के लिए इसका शिकार किया जाता है। २ एक प्रकार का चित्तीदार बडा साँप या छोटा अजगर जो खरगोश, बिल्ली आदि छोटे जतुओ पर निर्वाह करता है। ३ एक प्रकार का पुराना सिक्का।

चीता—पु० [स० चित्रक, पा० चित्रो, चित्तो, प्रा० चित्तअ, बँ० चिता, गु० सिं० चित्रो, मरा० चित्ता] १ बिल्ली, शेर आदि की जाति का एक प्रसिद्ध बडा हिंसक जतु जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं। इसकी कमर पतली होती है और गरदन पर अयाल या बाल नही होते। इसकी सहायता से कुछ लोग हिरनो आदि का शिकार भी करते हैं। २ एक प्रकार का बडा क्षुप जिसकी पत्तियाँ जामुन की पत्तियो से मिलती-जुलती होती है। इसकी कई जातियाँ हैं जिनमे भिन्न-भिन्न रगो के सुगधित फूल लगते है। इसकी छाल और जड ओषधि के काम मे आती है।

पु० [स० चित्त] १ चित्त। मन। हृदय। दिल। २ चेतना। सज्ञा। होश-हवास।

वि० [हि० चेतना] [स्त्री० चीता] मन मे विचारा या सोचा हुआ। जैसे—मन-चीती बात होना।

चीतावती—स्त्री० [स० चेत्] यादगार। स्मारक चिह्न।

चीत्कार—पु० [स० चीत्√कृ (करना)+अण्] १ खूब जोर से चिल्लाने की क्रिया, भाव या शब्द। चिल्लाहट। २ घोर दुख या सकट मे पडने पर मुँह से अनायास निकलनेवाली बात या शब्द।

चीथडा—पु०=चिथडा (देखे)।

चीथना—स० [स० चीर्ण] १ टुकडे-टुकडे करना। फाडना। २ दाँतो से कुचलना।

चीथरा—पु०=चिथडा।

चीद—वि० [फा०] चुना या छाँटा हुआ।

चीन—पु० [स० √चि+नक् दीर्घ, चीन+अण्-लुक] १ झडी। पताका। २ सीसा नामक धातु। नाग। ३ तागा। सूत। ४ एक प्रकार का रेशमी कपडा। ५ एक प्रकार का हिरन। ६ एक प्रकार की ईख या ऊख। ७ एक प्रकार का साँवाँ (कदन्न)।

पु०[√चि+नक्, दीर्घ] १ दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक प्रसिद्ध विशाल देश। २ उक्त देश का निवासी।

†पु० १ =चिह्न (निशान)। २ =चुनन।

चीनक—पु० [स० चीन+कन्] १ चीनी कपूर। २ चेना नामक कदन्न। ३ कगनी नामक कदन्न।

चीन-कर्पूर—पु० [मध्य० स०] चीनी कपूर।

चीन की दीवार—स्त्री० [चीन देश+फा० दीवार] १ चीन के उत्तरी भाग मे प्राय १५०० मील लबी एक दीवार जो प्राय दो हजार वर्ष पहले बनी थी और जिसकी गिनती ससार के सात आश्चर्यजनक वस्तुओ मे होती है। २ कोई बहुत बडी अडचन या बाधा।

चीनज—पु० [स० चीन√जन्+ड] एक प्रकार का इस्पात या लोहा जो चीन से आता था।

वि० चीन देश मे उत्पन्न होनेवाला।

चीनना†—स० =चीन्हना (पहचानना)।

चीन-पिष्ट—पु० [ष० त० स०] १ सीसा नामक धातु। २ सिदूर। ३ इस्पात (लोहा)।

चीनवंग—पु० [मध्य० स०] सीसा नामक धातु।

चीन-वास(स्)—पु० [मध्य० स०] चीन देश का बना हुआ एक प्रकार का रेशमी कपडा।

चीनाशुक—पु० [चीन-अशुक, मध्य० स०] १ एक प्रकार का लाल ऊनी कपडा जो पहले चीन से आता था। २ एक प्रकार का रेशमी कपडा।

चीना—पु० [हि० चीन] चीन देश का वासी।

पु० [स० चिह्न] एक प्रकार का कबूतर जिसके शरीर पर काले या लाल दाग या फूल होते है।
वि० चीन देश का। जैसे--चीना कपूर।
†पु०=चेना (कदन्न)।
चीनाक—पु० [स० चीन√अक् (गति)+अण्] चीनी कपूर।
चीना ककडी—स्त्री० [हि०] एक प्रकार की छोटी ककडी।
चीनाचदन—पु० [हि० पद] एक प्रकार का पक्षी जिसके पीले शरीर पर काली धारियाँ होती है और जिसका स्वर मनोहर होता है। यह प्राय पाला जाता है।
चीनाबादाम—पु०[हि० चीन+फा० बादाम] चिनिया बादाम। मूँगफली।
चीनिया—वि० [देश०] चीन देश का। चीन देश-सबधी।
चीनी—स्त्री० [चीन (देश)+ई (प्रत्य०)] सफेद रग का एक प्रसिद्ध मीठा चूर्ण जो ईख, चुकदर, खजूर, आदि कई पदार्थो के मीठे रस को उबाल और गाढा करके बनाया जाता है। इसका व्यवहार प्राय मिठाइयाँ बनाने और पीने के लिए दूध या पानी आदि मीठा करने मे होता है।
वि० चीन देश-सबधी। चीन देश का। जैसे—चीनी भाषा, चीनी मिट्टी।
पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा।
चीनी कपूर—पु० [हि०] एक प्रकार का कपूर जो पहले चीन देश से आता था।
चीनी कबाब—स्त्री० दे० 'कबाब चीनी'।
चीनी-चपा—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा बढिया केला। चिनिया केला।
चीनी मिट्टी—स्त्री० [हि०] एक प्रकार की मिट्टी जो पहले-पहल चीन के एक पहाड से निकली थी और अब अन्य देशो मे भी कही-कही पाई जाती है। इस पर पालिश बहुत अच्छी होती है, इसी लिए इससे खिलौने, गुलदान और छोटे बरतन बनाए जाते है।
चीनी मोर—पु० [हि० चीनी+मोर] सोहन चिडिया की जाति का एक पक्षी जिसका माँस बहुत स्वादिष्ट होता है।
चीन्ह—पु० दे० 'चिह्न' (अशुद्ध रूप)
चीन्हना—स० [स० चिह्न] किसी ऐसी वस्तु या व्यक्ति को पहचान लेना जिसे पहले कभी देखा हो।
चीन्हा—पु० दे० 'चिह्न'।
पु०=परिचय (जान-पहचान)।
चीप—स्त्री० [देश०] वह लकडी जो जूते के कलबूत मे सब से पीछे भरी या चढाई जाती है। (मोची)
†स्त्री०=चिप्पड।
†स्त्री०=चेप।
चीपड—पु० [हि० कीचड] १ आँख मे से निकलनेवाली सफेद रग की लसदार मैल। आँख का कीचड। २ दे० 'चिप्पड'।
चीमड़—वि० [हि० चमडा] १ (वस्तु) जो चमडे की तरह कडी हो तथा लचीली न हो। २ (व्यक्ति) जो जल्दी किसी बात या व्यक्ति का पीछा न छोडता हो। किसी बात या व्यक्ति के पीछे पडा रहनेवाला। ३ (व्यक्ति) जिससे जल्दी पैसा वसूल न किया जा सकता हो।

चीयाँ—पु० [स० चिचा] इमली का बीज।
चीया*—पु०=चित्र। उदा०—अदेषि देषिबा देषि बिचारिबा आदि सिहि राषिबा चीया। —गोरखनाथ।
चीर—पु० [√चि (ढकना)+क्रन्, दीर्घ] १ कपडा। वस्त्र। २ आजकल थान, धोती आदि मे लबाई के बल का वह अतिम छोर या सिरा जिसमे बनावट कुछ भिन्न प्रकार की अथवा हलकी होती है। ३ कपडे, कागज आदि का कम चौडा और अधिक लबा टुकडा। धज्जी। ४ पुराने कपडे का टुकडा। चिथडा। लत्ता। ५ योगियो, साधुओ आदि और विशेषत बौद्ध भिक्षुओ के पहनने का कपडा। ६ पेड की छाल। ७ गौ का थन। ८ मोतियो की वह माला जिसमे चार लड हो। ९ एक प्रकार का बडा पक्षी जिसकी लबी दुम बहुत सुदर होती है। यह प्राय 'चीर चीर' शब्द करता है। १० धूप या सरल का पेड। ११ सीसा नामक धातु। १२ छप्पर या छाजन का अगला भाग। मँगरा। मथौत।
पु० [हि० चीरना] १ चीरने की क्रिया या भाव।
पद—चीर-फाड़=(क) चीरने या फाडने का भाव या क्रिया। (ख) शल्य-चिकित्सा।
२ चीर कर बनाई हुई दरार या सधि। शिगाफ। ३ रेखा। लकीर। ४ कुश्ती का एक दाँव या पेच जिसमे विपक्षी के दोनो हाथ एक दूसरे से बिलकुल अलग और बहुत दूर करके उसे नीचे गिराया जाता है।
चीरक—पु० [स० चीर+कन्] १ कागज के किसी टुकडे पर लिखी हुई कोई सार्वजनिक घोषणा। २ लिखने का एक ढग। ३ लेख्य। ४ मुट्ठे की तरह गोलाकार लपेटा हुआ लबा कागज। खर्रा। (रोल, स्क्रोल)
चीर-चरम*—पु० [स० चीर+चर्म] हिरन आदि की खाल जो ओढी और बिछाई जाय। जैसे-बाघबर, मृग-छाला आदि।
चीरना—स० [स० चीर्णन] १ किसी चीज को एक जगह या सिरे से दूसरी जगह या सिरे तक सीध मे किसी धारदार उपकरण द्वारा काट या फाडकर अलग या टुकडे करना। जैसे—कपडा, फोडा या लकडी चीरना। २ कही से कोई चीज निकाल लेना।
मुहा०—माल चीरना=अनुचित रूप से बहुत अधिक आर्थिक लाभ करना।
३ किसी बडी चीज या तल के अश इधर-उधर करते हुए आगे बढने के लिए मार्ग निकालना या रास्ता बनाना। जैसे—(क) पानी चीरते हुए नाव का आगे बढना। (ख) भीड चीर कर सबके आगे पहुँचना।
चीरनिवसन—पु० [स०] १ पुराणानुसार एक देश जो कूर्म विभाग के ईशान कोण मे है। २ उक्त देश का निवासी।
चीर-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०] चेच नाम का साग।
चीर-परिग्रह—पु०, वि० [ब० स]=चीर-वासा।
चीर-पर्ण—पु० [ब० स] साल नामक वृक्ष।
चीर-फाड़—स्त्री० [हि० चीर+फाड] १ चीरने और फाडने की क्रिया या भाव। २ नश्तर आदि से फोडे चीरने का काम। शल्य-चिकित्सा। ३ बहुत ही अनुचित रूप से किया जानेवाला किसी साहित्यिक कृति, तथ्य, वाद आदि का विश्लेषण।
चीरल्लि—पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।
चीरवासा (सस्)—पु० [स० चीरवासस] १ शिव। महादेव। २ यक्ष।

वि० जो चीर (छाल या वल्कल) ओढता या पहनता हो।

चीर-हरण—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण की एक प्रसिद्ध लीला जो इस अनुश्रुति के आधार पर है कि एक बार यमुना मे नहाती हुई गोपियो के चीर या वस्त्र लेकर वे वृक्ष के ऊपर जा बैठे थे।

चीरा—पु० [स० चीर] १ एक प्रकार का लहरिएदार रगीन कपडा जो पगडी बनाने के काम मे आता है। २ उक्त प्रकार के कपडे की बनी या बँधी हुई पगडी।

पु० [हिं० चीरना] १ चीरने की क्रिया या भाव। २- चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

मुहा०—चीरा उतारना या तोडना=कुमारी के साथ पहले-पहल सभोग या समागम करना। (बाजारू)

३ गाँव की सीमा सूचक खभा या पत्थर।

चीरा बद—पु० [हि० चीरा=पगडी+फा० बद] वह कारीगर जो लोगो के लिए चीरे बाँधकर तैयार करता हो।

वि० (कुमारी या बालिका) जिसके साथ अभी तक किसी पुरुष ने सभोग या समागम न किया हो। (बाजारू)

चीरा बदी—स्त्री० [हि० चीरा=पगडी का कपडा+फा० बदी] १ चीरा (पगडी) बनाने या बाँधने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की बुनावट जो पगडी बनाने के लिए ताश के कपडे पर कारचोबी के साथ की जाती है।

चीरि—स्त्री० [स० चि+क्रि, दीर्घ] १ आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी। २ धोती आदि की लाँग। ३ झीगुर।

चीरिका—स्त्री० [स० चीरि√कै (शब्द करना)+क-टाप्] झीगुर। झिल्ली।

चीरिणी—स्त्री० [स० चीर+इनि-ङीप्] बदरिकाश्रम के निकट की एक प्राचीन नदी जिसके तट पर वैवस्वत मनु ने तस्पया की थी। (महाभारत)

चीरित—भू० कृ० [स० चीर+इतच्] फटा हुआ (केवल समास मे)।

चीरितच्छदा—स्त्री० [चीरित-छद, ब० स०, टाप्] पालक का साग।

चीरी (रिन्)—वि० [स० चीर+इनि] १ वल्कलधारी। २ चिथडे लपटनेवाला।

पु० १ झिल्ली। झीगुर। २ एक प्रकार की छोटी मछली।

†स्त्री०=चिडी (पक्षी)।

†स्त्री० दे० 'चीढ'।

स्त्री० [स० चीर] चिट्ठी। पत्र। उदा०—सात बरस पेहलो रह्यो चीरी जणहन मोकल्यं कोई।—नरपति नाल्ह।

चीरी-वाक—पु० [स० ष० स] एक प्रकार का कीडा।

चीरु*—पु०=चीर।

चीरुक—पु० [स० ची√रु (शब्द करना) +क] एक प्रकार का फल जो वैद्यक मे रुचिकर और कफ-पित्त वर्द्धक माना गया है।

चीरू—पु० [स० चीर] १ एक प्रकार का लाल रग का सूत। २ चीर। कपडा।

चीरेवाला—पु० [हि०] १ घोडो आदि की चीर-फाड करनेवाला हकीम। जर्राह। २ चिकित्सक। (मुसल० स्त्रियाँ)

चीर्ण—वि० [स०√चर् (चलना)+नक् पृषो० ईत्व] चिरा या चीरा हुआ।

चीर्ण-पर्ण—पु० [ब० स०] १ नीम का पेड। २ खजूर का पेड।

चील—स्त्री० [स० चिल्ल] गिद्ध और बाज आदि की जाति की बहुत तेज उडने तथा झपट्टा मारकर चीजे छीन ले जानेवाली एक बडी चिडिया जो ससार के प्राय सभी गरम देशो मे पाई जाती है।

पद—चील का मूत=कोई दुर्लभ वस्तु।

चील-झपट्टा—पु० [हिं० चील+झपटना] १ चील की तरह एकाएक झपटकर किसी से कोई चीज छीन कर ले भागना। २ बच्चो का एक खेल जिसमे वे एक दूसरे के सिर पर धौल लगाते है।

चीलड़—पु०=चीलर।

चीलर—पु० [देश०] पहने जानेवाले गदे कपडो अथवा कुछ पशुओ के शरीर मे पडनेवाला एक प्रकार का सफेद रग का छोटा कीडा।

चीला†—पु०=चिल्ला (पकवान)।

चीलिका—स्त्री० [स०√ला (लेना)+क—टाप्, इत्व] झिल्ली। झीगुर।

चीलू—पु० [देश०] आडू की तरह का एक प्रकार का पहाडी फल।

चील्लक—पु० [स० ची√लक्क् (शब्द करना)+अच् पृषो० सिद्धि] झिल्ली। झीगुर।

चील्ह†—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चील्हर—पु०=चीलर (कीडा)।

चील्ही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का टोटका जो स्त्रियाँ बालको के कल्याणार्थ करती है।

चीवर—पु० [स० चि (चयन करना) +ष्वरच्, नि० सिद्धि] १ भिक्षुओ, योगियो, सन्यासियो आदि के पहनने का फटा-पुराना कपडा। २ बौद्ध भिक्षुओ का गैरिक उत्तरीय वस्त्र या चादर।

चीवरी (रिन्)—पु० [स० चीवर+इनि] १ चीवर पहननेवाला। बौद्ध भिक्षु। २ भिक्षुक। भिखमगा।

चीस*—स्त्री० १ =टीस। २ =चीख। उदा०—हसति भागि कै चीसा मारै।—कबीर।

चीसना—अ०=चीखना। उदा०—परिभख्खन रख्खिसन, कुइक चीसन मुख सासन।—चन्दवरदाई।

चीह*—स्त्री०=चीख (चीत्कार)। उदा०—मोर सोर कोकिलनि रोर, चीह पप्पहि पुकारत।—चन्दवरदाई।

चुंगना†—स०= चुगना।

चुंगल—पु० दे० 'चगुल'।

चुंगली—स्त्री० [देश०] नाक मे पहनने की एक प्रकार की नथ, जिसे 'समथा' भी कहते है।

चुंगवाना—स०=चुगवाना।

चुंगा†—पु० दे० 'चोगा'।

चुंगाना—स०=चुगाना।

चुंगी—स्त्री० [हिं० चुगल या चगुल] १ चुगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज। २ मध्य युग मे वह कर जो पैंठो, बाजारो या मडियो मे आकर अन्न, फल आदि बेचनेवालो से उनकी विक्रय वस्तुओ आदि मे से एक-एक चुगल या चगुल भरकर लिया जाता था। ३ आज-कल नगरपालि-

काओ, जिला मडलो आदि मे उक्त कर का वह विकसित रूप जो बाहर से आनेवाले पदार्थो पर नगद धन के रूप मे लगता है। (ऑक्ट्रॉय, अतिम दोनो अर्थो के लिए)

चुगी-कचहरी—स्त्री०[हिं० पद] नगरपालिका आदि का प्रधान कार्यालय जहाँ और काम होने के सिवा चुगी भी वसूल की जाती है।

चुगीकर—पु०[हिं०] १ नगर की सीमा पर का वह स्थान जहाँ नगरपालिका आदि का चुगी वसूल करने का काम होता है। २ दे० 'चुगीकचहरी'।

चुंघाना—स०[हिं० चुसाना] माता का बच्चे को अपना स्तन अथवा पशुओ का अपने बच्चो को थन चूसने मे प्रवृत्त करना। चुसाकर बच्चे को दूध पिलाना।

स०=चुगाना।

चुंच—स्त्री०=चोच।

चुचरी—स्त्री० [स० चुच√रा (लेना)+क डीप्] वह जूआ जो इमली के चीओ से खेला जाय।

चुचली—स्त्री०=चुचरी।

चुंचु—पु०[स०√चच् (हिलना)+उ, पृपो० उत्व] १ छछूँदर। २ एक प्राचीन सकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहिक माता और ब्राह्मण पिता से कही गई है। ३ चिनियारी नाम का पौधा।

चुचुक—पु०[स० चुचु+कन्] बृहत्सहिता के अनुसार नैर्ऋत्य कोण का एक देश।

चुंचुल—पु०[स०] विश्वामित्र का एक पुत्र जो सगीत शास्त्र का बहुत बडा पडित था।

चुंटली—स्त्री०[देश०] घुँघची। गुजा।

चुटा—पु०=चुडा।

चुडा—पु०[स० चुडि+अच्-टाप्] [स्त्री० अल्पा० चुडी] कूआँ। कूप।

पु० =चोडा।

चुंडित—वि०[हिं० चुडी=शिखा] चुडी या शिखावाला। शिखाधारी।

चुडी—स्त्री०=चुदी (शिखा)।

चुंदरी—स्त्री०=चुनरी।

चुंदरीगर—पु०[हिं० चूंदरी+फा० गर] वह रँगरेज जो रँगकर चुनरी तैयार करता हो।

चुदी—स्त्री०[स०√चुद् (प्रेरणा देना)+अच्-डीप्-निया० सिद्ध] कुटनी। दूती।

स्त्री० [स० चडा ?] हिंदू पुरुषो के सिर पर की चुटिया। चोटी। शिखा।

चुंधलाना†—अ०=चौधियाना।

अ०=चोधराना।

चुंधा—वि०[हिं० चौ=चार+अध] [स्त्री० चुधी] १ (जीव) जिसे कुछ दिखाई न देता हो। अधा। २ अपेक्षाकृत बहुत छोटी आँखोवाला।

चुंधियाना—अ०=चौंधियाना।

चुब—पु०[स०√चुम्ब ('चूमना)+घञ्] चुबन।

चुबक—वि०[स०√चुम्ब+ण्वुल्-अक] १ चुबन करनेवाला। २ कामुक। ३ धूर्त्त। ४ जो ग्रंथो को ध्यानपूर्वक पूरा न पढता हो, बल्कि इधर-उधर से कुछ देखकर छोड देता हो।

पु० १ वह फदा जो कूएँ से पानी भरने के समय घडे के गले मे फँसाया जाता है। फाँस। २ एक प्रकार का पत्थर जो लोहे आदि के छोटे-छोटे टुकडो को अपनी ओर खीच लेता है। ३ लोहे आदि का बनाया हुआ वह कृत्रिम उपकरण जिसमे उक्त पत्थर के गुणो का आरोपण किया गया हो तथा जो लोहे, निकिल आदि के टुकडो को अपनी ओर खीच लेता हो। (मेगनेट) ४ लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो किसी को अपनी ओर आकृष्ट करता हो।

चुबकत्व—पु०[स० चुम्बक+त्व] चुम्बक पत्थर का गुण या भाव।

चुबकीय—वि० [स० चुबक+छ—ईय] १ चुबक-सबधी। २ जिसमे चुबक या उसका गुण हो।

चुबना—स०=चूमना।

चुबा—पु० दे० 'सुबा'। (लश०)

पु०=चुम्मा।

चुबित—भू० कृ० [स०√चुब+क्त] १ जिसका चुबन किया गया हो। चूमा हुआ। २ किसी के साथ थोडा स्पर्श करता हुआ।

चुबी—वि०[स०√चुब+णिनि] १ चूमनेवाला। २ जो किसी को छूता या स्पर्श करता हुआ हो। बहुत ऊँचा। जैसे—गगन-चुबी पर्वत या प्रासाद।

चुंभना—स०=चूमना।

चुअना†—अ० दे० 'चूना'।

†वि० [स्त्री० चुअनी] जो चूता हो। चूनेवाला। जैसे—चुअना लोटा।

चुआ—पु०[हिं० चौआ=चौपाया] चार पैरोवाला पशु। चौपाया।

पु०[?]१ हड्डी की नली के अन्दर का गाढा लसीला पदार्थ। गूदा। मज्जा। २ एक प्रकार का पहाडी गेहूँ। ३ दे० 'चौआ'।

चुआई—स्त्री०[हिं० चुआना] १ चुआने या टपकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ गौ-भैंस आदि दुहने या दुहाने का काम या पारिश्रमिक।

चुआक—पु०[हिं० चूना=टपकना] वह छेद जिसमे से पानी चूता (अथवा जहाज के अन्दर आता) हो। (लश०)

चुआना—स० [हिं० चूनाटपकना] १ किसी तरल पदार्थ को चूने या टपकने मे प्रवृत्त करना। बूँद-बूँद गिराना या टपकाना। २ भभके आदि की सहायता से अरक, आसव,आदि तैयार करना। जैसे—शराब चुआना। ३ अच्छी तरह परिष्कृत करके सयम और सावधानी से थोडा-थोडा प्रस्तुत करना या किसी के सामने लाना। उदा०—वेष सु बनाई सुचि बचन कहै चुआइ जाई तौन जरनि धरनि धन धाम की।—तुलसी।

स० दे० 'दुहाना'।

चुआब†—स्त्री०=चुआन।

चुकदर—पु०[फा०] गाजर, शलजम आदि की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा कद जो लाल रग का होता और तरकारी बनाने के काम आता है। इसके रस से एक प्रकार की चीनी भी बनती है।

चुक†—पु०=चूक।

चुकचुकाना—अ०[हिं० चूना=टपकना] तरल पदार्थ का किसी पात्र या तल मे होनेवाले छोटे छेद के मार्ग से सूक्ष्म कणो के रूप मे बाहर निकलना। पसीजना। जैसे—थप्पड लगने पर गाल से खून चुकचुकाना।

चुकचुहिया—स्त्री०[देश०] १ एक प्रकार की छोटी चिडिया जो बहुत

तडके बोलने लगती है। २ बच्चो का एक प्रकार का खिलौना जिसे दबाने या हिलाने से चूँचूँ शब्द होता है।

चुकट—पु०[हि० चुटका] १ चगुल। २ चुटकी।

चुकटी†—स्त्री०=चुटकी।

चुकता—वि०[हि० चुकना] १ (ऋण या देना) जो चुका दिया गया हो। २ (हिसाब) जिसमे लेना और देना दोनो बराबर हो गये हो।

चुकती—वि०=चुकता।

चुकना—अ०[स० च्यव, चुक्क, प्रा० चुक्कइ, उ० चुकाइबा, प० चुक्कणा, सिं० चुकणु, गु० चुकवूँ, मरा० चुकणे] १ (काम या बात का) पूरा या समाप्त होना। बाकी न रहना। २ (पदार्थ का) कम होते होते नि शेष या समाप्त होना। जैसे—घर मे आटा चुक गया। ३ (ऋण या देन का) पूरा-पूरा परिशोध होना। देना बाकी न रहना। जैसे—उनका हिसाब तो कभी का चुक गया। ४ (झगडा या बखेडा) तै हो जाना। निपटना। जैसे—चलो, आज यह झगडा भी चुका। ५ एक सयोज्य क्रिया जो मुख्य क्रिया की समाप्ति की सूचक होती है। जैसे—खेल चुकना, लड चुकना आदि। ६ दे० 'कूकना'।
†अ०=चूकना। उदा०—चुकइन घात मार मुठ भेरी।—तुलसी।

चुकरी—स्त्री०[देश०] रेवद चीनी।

चुकरंड—पु०[देश०] दो-मुँहा साँप जिसे गूँगी भी कहते है।

चुकवाना—स०[हि० चुकाना का प्रे०] किसी को कुछ चुकाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—कर्ज या झगडा चुकवाना।

चुकाई—स्त्री०[हि० चुकता] चुकने या चुकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुकाना—स०[हि० चुकना का स०] १ किसी से लिया हुआ धन पूरा-पूरा वापस करना। जैसे—ऋण चुकाना। २ किसी की हुई हानि को पूरा करना। क्षति-पूर्ति करना। जैसे—रेल दुर्घटना मे मरनेवाले व्यक्ति-के परिवारो को दो दो हजार रुपए सरकार ने चुकाए है। ३ झगडा या विवाद तै करना। निपटाना।

चुकाव—पु०[हि० चुकना] चुकने या चुकाये जाने की क्रिया या भाव।

चुकावरा†—पु०[हि० चुकाना] ऋण, देन आदि चुकाने की क्रिया या भाव। (बुन्देल०)

चुकिया—स्त्री०[देश०] तेलियो की घानी मे पानी देने का छोटा बरतन। कुल्हिया।

चुकौता†—पु०[हि० चुकाना+औता(प्रत्य०)] १ चुकाने की क्रिया या भाव। २ रुपया चुकता पाने के समय लिखी जानेवाली पावती। रसीद।

चुकौती—स्त्री०=चुकौता।

चुक्क—पु०=चूक(खटाई)। उदा०—चुक्क लाइकै रीधे भाँटा।—जायसी।

चुक्कड—पु०[?] पानी, शराब आदि पीने का मिट्टी का गोल छोटा बरतन। कुल्हड। पुरवा।

चुक्का—पु० १ दे० 'चूक'। (खटाई) २ दे० 'चुक्कड'।

चुक्कार—पु०[स०√चुक्क (पीडा देना)+अच्] चुक्क-आ√रा(लेना)+क] गरजने की क्रिया या भाव। गर्जन। गरज।

चुक्की—स्त्री०[हि० चूकना] १ चूक। भूल। २ छल। धोखा।

चुक्कीमाली—स्त्री०[?] मुडे हुए घुटनो को पीठ के सहारे अगौछे से कुछ ढीला बाँधकर बैठने का एक ढग। (देहाती)

चुक्र—पु०[स०√चक्र(तृप्त करना)+रक्, उत्व] १ चूक नाम की खटाई। चुक। महाम्ल। २ चूका नाम का खट्टा साग। ३ अमलबेत। ४ काँजी। सधान।

चुक्रक—पु०[स० चुक्र+कम्] चूक नाम का साग।

चुक्र-फल—पु०[ब० स०] इमली।

चुक्र-वास्तुक—पु०[उपमि०स०] अमलोनी नाम का साग।

चुक्र-वेधक—पु०[ष०त०] एक प्रकार की काँजो।

चुक्रा—स्त्री० [स० चुक्र+टाप्] १ अमलोनी नाम का साग। २ इमली।

चुक्राम्ल—पु०[स० चुक्र-अम्ल, उपमि० स०] १ चूक नाम की खटाई। २ चूका नाम का साग।

चुक्राम्ला—स्त्री० [चुक्र-अम्ल, ब० स० टाप्] अमलोनी नाम का साग।

चुक्रिका—स्त्री० [स० चुक्र+ठन्—इक+टाप] १ अमलोनी नाम का साग। नोनिया। २ इमली।

चुक्रिमा (मन्)—स्त्री०[स० चुक्र+इमनिच्] खट्टापन। खटाई। खटास।

चुक्षा—स्त्री०[स० √चष् (वध करना)+स० बाहु० पृषो०] हिंसा।

चुखाना—स०[स० चूषण] १ गौ, भैंस आदि दुहने के समय थन से दूध उतारने के लिए पहले उसके बछडे को थोडा-सा अश पिलाना। २ कोई चीज या उसका स्वाद चखाना। ३ दे० 'चुसाना'।

चुगद—पु० [फा०] १ उल्लू पक्षी। २ उल्लू की जाति का डुडुल नामक पक्षी।
वि० बहुत बडा बेवकूफ। महामूर्ख।

चुगना—स० [स० चयन] पक्षियो आदि का अपनी चोच से अनाज के कण, कीडे-मकोडे आदि उठा-उठाकर खाना।

चुगल—पु०[फा०] १ चुगलखोर। २ तमाकू आदि पीने के समय चिलम के छेद पर रखा जानेवाला ककड। गिट्टक।

चुगलखोर—पु०[फा०] किसी की परोक्ष मे उसकी हानि करने के उद्देश्य से दूसरो के सम्मुख बुराई करनेवाला।

चुगलखोरी—स्त्री०[फा०] किसी की हानि करने के उद्देश्य से परोक्ष मे उसकी निन्दा करने की क्रिया या भाव। चुगलखोर का काम।

चुगलस—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की लकडी।

चुगलाना—स० दे० 'चुभलाना'।

चुगली—स्त्री०[फा०] किसी की हानि करने के उद्देश्य से परोक्ष मे दूसरो से की जानेवाली उसकी निंदा या शिकायत। पीठ पीछे की जानेवाली बुराई या लगाया जानेवाला अभियोग।
मुहा०—(किसी की) चुगली खाना=किसी के परोक्ष मे दूसरो से की जानेवाली उसकी अभियोगात्मक निंदा।

चुगा—पु०[हि० चुगना] अन्न के वे दाने आदि जो चिडियो के आगे चुगने के लिए डाले जाते है। चिडियो का चारा। उदा०—कपट-चुगौ दै फिरि निपट करौ बुरी।—घनानद।
†पु०=चोगा (पहनावा)।

चुगाई—स्त्री०[हि० चुगाना+ई(प्रत्य०)] चुगने या चुगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुगाना—स० [हि० चुगना] चिडियो को चुगने मे प्रवृत्त करना। अनाज के कण इस प्रकार बिखेरना कि चिडियाँ चुगने लगे।

चुगुल†—पु०=चुगलखोर।

चुगुलखोरी—स्त्री०=चुगलखोरी।

चुगुली—स्त्री०=चुगली।

चुग्गा—पु० १ =चुगा। २ चोगा।

चुग्घी—स्त्री० [देश०] १ चखने की थोडी-सी वस्तु। २ चसका। चाट।

चुचकना—अ०[स० शुष्क] १ इस प्रकार सूखना कि ऊपरी या बाहरी तल पर झुर्रियाँ पड जायँ। सूखकर सिकुडना। जैसे—आम या चेहरा चुचकना। २ मुरझा जाना।

चुचकारना—स०=चुमकारना।

चुचकारी—स्त्री०[अनु०] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव। चुमकार। पुचकार।

चुचाना†—अ० दे०'चुकचुकाना'।

चुचि—स्त्री०[स०] स्तन।

चुचु—पु०[स० चञ्चु] चेंच नाम का साग।

चुचुआना—अ० दे० 'चुकचुकाना'।

चुचुक—पु०[स० चुचु√कै (शब्द करना)+क] १ कुच या स्तन के सिरे या नोक पर का भाग जो गोल घुडी का-सा होता है। ढिपनी। २ दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी।

चुचुकना—अ० [स० शुष्क+ना (प्रत्य०)] १ अधिक ताप आदि के कारण किसी वस्तु का सूख जाना। २ फल आदि का इतना अधिक सूख जाना कि उसमे का रस उड जाय।

अ०=चुचकना।

चुचुकारना†—स० दे० 'चुमकारना'।

चुच्चु—पु०[स०] पालक की तरह का एक प्रकार का साग। चौपतिया।

चुटक—स्त्री०[हि० चुटकना] १ चुटकने की क्रिया या भाव। २ चुटकी। ३ एक प्रकार का कोडा जिसका प्रयोग घोडो को चलाना सिखाने के लिए होता है।

पु० [?] एक प्रकार का कालीन या गलीचा।

चुटकना—स० [हि० चुटकी] १ चुटकी से पकडकर कोई चीज उखाडना या तोडना। जैसे—पत्तियाँ, फूल या साग चुटकना। २ चुटकी से पकडकर शरीर का कुछ अश जोर से दबाना। चिकोटी काटना। ३ साँप का किसी को काटना। ४ कोडा मारना। चाबुक चलाना। अ० १ चुटकी बजाना। २ चुट चुट शब्द करना। उदा०—करै चाह सौं चुटकि कै खरे उडौहै मैन।—बिहारी।

चुटकला†—पु०=चुटकुला।

चुटका—पु०[हि० चुटकी] १ बडी चुटकी। २ उतनी चीज जो चुटकी मे आवे। जैसे—चुटका भर आटा।

चुटकी—स्त्री०[चुट चुट शब्द से अनु०] १ कोई वस्तु उठाने, दबाने, पकडने आदि के लिए अथवा कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए अँगूठे के सिरे से तर्जनी का सिरा मिलाने की मुद्रा या स्थिति। जैसे—गौ, भैंस दुहने या पत्तो का दोना बनाने के लिए चुटकी से काम लेना।

मुहा०—चुटकी बैठना=चुटकी की सहायता से किये जानेवाले काम का ठीक और पूरा अभ्यास होना। जैसे—जब चुटकी बैठ जायगी, तब दोने ठीक बनने लगेंगे। **चुटकी लगाना**=(क) कोई चीज उठाने, खीचने, तोडने, दबाने, पकडने आदि के लिए अँगूठे और तर्जनी की उक्त प्रकार की मुद्रा से काम लेना। जैसे—(क) उचक्के ने चुटकी लगाकर उसके जेब से नोट निकाल लिये। (ख) पत्तो को मोडकर दोना बनाने के लिए चुटकी लगाना। (ग) चुनरी आदि रगने के समय जगह-जगह से कपडे के कुछ अश पकडकर डोरी-तागे से इस प्रकार बाँधना कि उतने अश पर रग न बढने पावे।

२ किसी के शरीर मे पीडा उत्पन्न करने अथवा उसका ध्यान किसी बात की ओर आकृष्ट करने के लिए अँगूठे और तर्जनी से उसके शरीर का थोडा-सा चमडा पकड कर दबाने की क्रिया या भाव। चिकोटी। जैसे—(क) उसने ऐसे जोर से चुटकी काटी कि चमडा लाल हो गया।

क्रि० प्र०—काटना।

मुहा०—चुटकी भरना=उक्त प्रकार की मुद्रा से किसी के शरीर का चमडा पकडकर दबाना। चिकोटी या चुटकी काटना।

३ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे किसी को मार्मिक कष्ट पहुँचाने, लज्जित करने या हास्यास्पद बनाने के लिए कही हुई कोई चुभती या लगती हुई व्यग्यपूर्ण उक्ति या बात। जैसे—अपने भाषण मे वे मत्रियो पर भी चुटकियाँ लेते चलते थे।

क्रि० प्र०—लेना।

मुहा०—(किसी को) चुटकियो में उडाना=किसी को बहुत ही तुच्छ या हीन समझते हुए और बहुत सहज मे नगण्य और हास्यास्पद ठहराना या सिद्ध करना। जैसे—पडित जी को तो उन्होने चुटकियो मे ही उडा दिया।

४ किसी चीज को उठाने या देने के लिए अँगूठे, तर्जनी और मध्यमा उँगलियो के अगले सिरो को मिलाने की मुद्रा या स्थिति।

पद—चुटकी भर=किसी चीज का उतना अश जितना उक्त प्रकार की पकड मे आता हो अर्थात् बहुत थोडा। जैसे—भिखमगे को चुटकी भर आटा दे दो।

मुहा०—चुटकी माँगना=उक्त प्रकार से थोडा-थोडा अन्न घर-घर भीख के रूप मे माँगते फिरना।

५ चुमकारने, पुचकारने अथवा अपनी ओर किसी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए अँगूठे और मध्यमा के सिरो को मिलाकर इस प्रकार जोर से चटकाने की क्रिया जिससे चुट शब्द होता है। जैसे—चुटकी बजाकर तोते को पढाना या बच्चे को बुलाना।

क्रि० प्र०—बजाना।

मुहा०—चुटकी देना=अँगूठे और तर्जनी की उक्त प्रकार की मुद्रा से चुट-चुट शब्द उत्पन्न करना। चुटकी बजौना। उदा०—सो मूरति तू अपने आँगन दै दै चुटकी नचाई।—सूर। **(किसी की) चुटकी या चुटकियों पर कोई काम करना**=बहुत ही थोडे या सामान्य सकेत पर कोई काम ठीक या पूरा करना। जैसे—हमारा पुराना नौकर तो चुटकियो पर सब काम करता था। **चुटकी या चुटकियो मे**=उतने ही थोडे समय मे जितना चुटकी या चुटकियाँ बजाने मे लगता है, अर्थात् बहुत जल्दी या शीघ्र। जैसे—घबराते क्यो हो, सब काम चुटकियो मे हुआ जाता है।

६ धातु आदि का बना हुआ वह उपकरण जो देखने मे चुटकी की पकड़

के आकार का होता है और जिससे कपडे, कागज आदि पकडकर इसलिए दबाये जाते है कि वे इधर-उधर उडने या बिखरने न पावे। (इस पर पहले हाथ की उँगलियो की-सी आकृति बनी रहती थी, इसी लिए इसे पजा' भी कहते है)। ७ जरदोजी के काम मे गोटे, लचके आदि को बीच-बीच मे मोडते हुए बनाया जानेवाला लहरियेदार और सुदर रूप जो कई प्रकार का होता है। जैसे—उस ओढनी पर किश्तीनुमा चुटकी बनी थी। ८ एक प्रकार का गुलबदन या मशरू जिसमे उक्त प्रकार का कटावदार काम होता है। ९ पैर की उँगलियो मे पहना जानेवाला एक प्रकार का चौडा छल्ला। १० कपडे की छपाई और रगाई का एक प्रकार का पुराना ढग जिसमे बीच-बीच मे कपडे का कुछ अश दबाकर रग से अलग रखा जाता था। ११ दरी की बुनावट मे ताने के सूत। १२ बदूक का वह खटका जिसे दबाने से गोली चलती है। बदूक का घोडा। (लश०) १३ पेच कसने और खोलने, बोतल का काग निकालने आदि का पेचकस। (क्व०)

चुटकुला—पु०[हिं० चुटकी] १ कोई ऐसी चमत्कारपूर्ण और विलक्षण उक्ति, कहानी आदि जिसे सुनकर सब लोग प्रसन्न हो जायँ या हँस पडे। हँसी-विनोद की कोई बढिया और मजेदार बात।

मुहा०—चुटकुला छेडना=कोई ऐसी अनोखी बात कहना जिससे लोगो को कौतूहल हो और वे उसकी चर्चा करने लगे या उसके सम्बन्ध मे आपस मे कुछ झगडा या विवाद करने लगे।

२ दवा का कोई ऐसा छोटा और सहज अनुयोग या नुस्खा जो बहुत गुण-कारक सिद्ध होता हो। लटका।

चुटफुट—वि०[अनु०] १ इधर-उधर फैला या बिखरा हुआ, परन्तु छोटा और बहुत साधारण। जैसे—घर का चुट-फुट सामान। २ जो सब जगह न होकर कभी थोडा यहाँ और कभी थोडा वहाँ होता हो। जैसे—नगर मे हैजे से चुट-फुट मौते होने लगी है।

स्त्री० इधर-उधर फैली हुई फुटकर और मामूली चीजे।

चुटला—पु०[हिं० चोटी] १ एक प्रकार का गहना जो सिर पर चोटी या वेणी के ऊपर पहना जाता है। २ सिर के बालो की वेणी या जूडा।

वि० दे० 'चुटीला'।

चुटाना—अ० [हिं० चोट] चोट खाना। घायल होना।

चुटिया—स्त्री०[हिं० चोट.] १ सिर के बालो की वह लट जो हिन्दू पुरुष सिर के बीचोबीच रखते है। शिखा। चुदी। चोटी।

विशेष—विस्तृत विवरण और मुहा० के लिए देखे 'चोटी'।

२ चोरो या ठगो का सरदार।

चुटियाना—स०[हिं० चोट] १ घायल या जख्मी करना। चोट पहुँचाना। २ जीव-जन्तुओ का किसी को काट या डसकर घायल करना।

चुटिला—पु०=चुटला।

चुटीलना—स०[हिं० चोट] चोट पहुँचाना।

चुटीला—वि०[हिं० चोट+ईला (प्रत्य०)] १ चोट खाया हुआ। जिसे घाव या चोट लगी हो। २ चोट करनेवाला (जन्तु)।

वि०[हिं० चोटी] १ चोटी पर का या सिरे का सब से अच्छा और बढकर। २ ठाठ-बाटवाला। भडकीला।

पु०=चुटला।

चुटुकी—स्त्री०=चुटकी।

चुटैल—वि०[हिं० चोट] १ जो चोट खाकर घायल हुआ हो। जिसे चोट लगी हो। जैसे—इस मार-पीट मे चार आदमी चुटैल हुए है। २ आक्रमण या चोट करनेवाला। (क्व०)

चुट्टना—स० दे० 'चुनना'। (राज०) उदा०—कली न चुट्टई आइ।—ढोलामारू।

चुट्टा—पु०[हिं० चोटी] बडी और भारी चोटी या उसका बना हुआ जूडा। चुटला।

चुड़—स्त्री० दे० 'चुड्ड'।

चुडला—पु०[स्त्री० अल्पा० चुडली]=चूडा (हाथ मे पहनने का)।

चुडाव—पु०[देश०] एक जगली जाति।

चुडिया—स्त्री०=चूडी।

चुडिहारा—पु०[हिं० चूडी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० चुडिहारिन] १ स्त्रियो के पहनने की चूडियाँ बनानेवाला। २ चूडियाँ बेचनेवाला व्यक्ति।

चुडक्का—पु०[हिं० चिडिया] लाल की तरह की एक छोटी चिडिया जिसकी चोच और पैर काले, पीठ मटमैली तथा पूँछ कुछ लबी होती है। चिडुक्का।

चुड़ैल—स्त्री०[स० चूडा या हिं० चुड्ड?] १ भूत की स्त्री। भूतनी। डायन। पिशाचिनी। २ बहुत ही क्रूर या दुष्ट स्वभाववाली स्त्री। ३ बहुत ही कुरूप और घृणित स्त्री।

चुड्ड—स्त्री०[स० च्युत=भग] भग। योनि। (पश्चिम)

चुड्डो—स्त्री० [हिं० चुड्ड] स्त्रियो को दी जानेवाली एक गारी। छिनाल स्त्री।

चुत—पु०[स०√चुत् (बहना)+क] गुदद्वार।

चुत्यल—वि०[हिं० चुहल] ठठोल। मसखरा।

वि०=चुत्या।

चुत्या—पु०[हिं० चोथना=नोचना] वह बटेर जिसे लडाई मे दूसरे बटेर ने घायल किया हो, और उसके पर आदि चोथ या नोच लिये हो।

वि० चोथा या नोचा-बकोटा हुआ।

चुदक्कड़—वि०[हिं० चोदना] बहुत अधिक चोदनेवाला। अत्यन्त कामी।

चुदना—अ० [हिं० चोदना] स्त्री का पुरुष के द्वारा चोदा जाना।

चुदवाई—स्त्री०[हिं० चुदवाना] चुदवाने की क्रिया, भाव या पुरस्कार।

चुदवाना—अ, स० दे० 'चुदाना'।

चुदवास—स्त्री०[हिं० चुदवाना+आस (प्रत्य०)] स्त्री की सभोग कराने की इच्छा। मैथुन कराने की कामना।

चुदवैया—पु०[हिं० चोदना+वैया (प्रत्य०)] स्त्री के साथ प्रसग करने या सभोग करनेवाला।

चुदाई—स्त्री०[हिं० चोदना] १ चोदने की क्रिया या भाव। स्त्री-प्रसग। मैथुन। २ उक्त क्रिया के बदले मे लिया या दिया जानेवाला धन।

चुदाना—अ०[हिं० चोदने का प्रे०] स्त्री का पुरुष से प्रसग या सभोग कराना।

चुदास—स्त्री०[हिं० चोदना+आस (प्रत्य०)] स्त्री-प्रसग करने की प्रबल इच्छा या कामना।

चुदासा—पु०[हिं० चोदना] [स्त्री० चुदासी] वह पुरुष जिसे स्त्री-प्रसग करने की प्रबल इच्छा या कामना हो।

चुदौवल—स्त्री० [हिं० चोदना] स्त्री के साथ पुरुष के प्रसग या सभोग करने की क्रिया या भाव।

चुन—पु० [स० चूर्ण, हिं० चून] १ गेहूँ, जौ आदि का आटा। २ चूर्ण। बुकनी।

चुनचुना—पु० [अनु०] पेट मे उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के सफेद रग के लबोतरे कीडे जो मलद्वार से मल के साथ बाहर निकलते है।

मुहा०—चुनचुना लगना=चुभती या लगती हुई बात सुनने पर बहुत बुरा लगना।

वि० [देश०] जिसके स्पर्श करने से हलकी जलन होती हो।

क्रि० प्र०—लगना।

चुनचुनाना—अ० [अनु०] [भाव० चुनचुनाहट, चुनचुनी] १ शरीर के किसी अग मे रह-रहकर हलकी खुजली और जलन-सी होना। जैसे—घाव चुनचुनाना। २ कोई तीक्ष्ण वस्तु खाने अथवा किसी अग से उसका स्पर्श होने पर हलकी जलन होना। जैसे—सूरन खाने से गला अथवा राई का लेप करने से किसी अग का चुनचुनाना। ३ लडको का धीरे-धीरे ची-ची शब्द करते हुए रोना। (क्व०)

चुनचुनाहट—स्त्री०=चुनचुनी।

चुनचुनी—स्त्री० [हिं० चुनचुनाना] १ चुनचुनाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ हलकी जलन।

स्त्री० दे० 'चुलचुली'।

चुनट—स्त्री० दे० 'चुनना'।

चुनत†—स्त्री०=चुनट (चुनन)।

चुनन—स्त्री० [हिं० चुनना] १ चुनने की क्रिया या भाव। २ अनाज मे का वह रद्दी अश जो उसमे से चुनकर अलग किया जाता है। जैसे—सेर भर दाल मे से आधा पाव चुनन निकली है। ३ कपडे को जगह-जगह से मोड या दबा कर उसमे सुदरता लाने के लिए डाली या बनायी जानेवाली परते। कपडे मे डाला जानेवाला बल या शिकने। जैसे—साडी की चुनन। ४ कुरते, दुपट्टे आदि मे चुटकी से चुनकर या इमली के चीएँ से रगडकर डाली या बनाई जानेवाली छोटी-छोटी रेखाएँ या शिकने जो देखने मे सुदर जान पडती है।

चुननदार—वि० [हिं० चुनन+फा० दार] जिसमे चुनन पडी हो। जो चुना गया हो।

चुनना—स० [स चयन] १ बहुत-सी चीजो मे से अपनी आवश्यकता, इच्छा, रुचि आदि के अनुसार अच्छी या काम की चीजें छाँटकर अलग करना। जैसे—(क) पढने के लिए किताब या पहनने के लिए कपडा चुनना। (ख) चुन-चुनकर गालियाँ देना। २ आज-कल राजनीतिक क्षेत्र मे, कई उम्मीदवारो मे से किसी को अपने प्रतिनिधि के रूप मे निर्वाचित करना। जैसे—नगरपालिका या राज-सभा के लिए सदस्य चुनना। ३ कही पडी या रखी हुई छोटी चीजे उठाना या लेना। जैसे—कबूतरो या मुर्गियो का जमीन पर पडे हुए दाने चुनना। चुगना। ४ पौधो मे लगे हुए फूलो आदि के सम्बन्ध मे, उँगलियो या चुटकी से तोडकर इकट्ठा करना। जैसे—माली का कलियाँ या फूल चुनना। ५ एक मे मिली हुई कई तरह की चीजो मे से अच्छी और काम की चीजे एक ओर करना और फालतू या रद्दी चीजे अलग करना। जैसे—चावल या दाल चुनना, अर्थात् उसमे मिले हुए कदन्न, ककडियाँ आदि उठा-उठाकर अलग करना या फेकना। ६ किसी स्थान पर बहुत-सी चीजे क्रम से और सजाकर यथा-स्थान रखना। जैसे—अलमारी मे किताबे चुनना, मेज पर खाना चुनना। ७ दीवारो की जुडाई मे क्रम से और ठीक तरह से ईंटे, पत्थर आदि बैठाना या लगाना। जैसे—इस कमरे की दीवारे चुनने मे ही दस दिन लग गये।

मुहा०—(किसी को) दीवार मे चुनना=मध्य युग मे किसी को प्राण-दड देने के लिए कही खडा करके उसके आस-पास या चारो ओर ईंट-पत्थर आदि की दीवार या दीवारे बनाना, जिसमे दम घुटने के कारण अभियुक्त उसी मे मर जाय।

८ उँगलियो की चुटकी, इमली के बडे चीएँ आदि की सहायता से कपडे मे सुदरता लाने के लिए उसे बहुत ही थोडी-थोडी दूर पर दबाते तथा मोडते हुए उसमे छोटी-छोटी शिकने या सिकुडने डालना या बनाना। जैसे—कुरता चुनना। ९ हाथ की चारो उँगलियो की सहायता से कपडे को बार-बार इधर-उधर घुमाते या ले जाते हुए उसकी तीन-चार अगुल चौडी तहे लगाना। जैसे—दुपट्टा या धोती चुनकर खूँटी पर टाँगना या रखना।

चुनरिया†—स्त्री०=चूनरी।

चुनरी—स्त्री० [हिं० चुनना] १ पुरानी चाल का एक प्रकार का रगीन विशेषत लाल रग का कपडा जिसके बीच मे थोडी-थोडी दूर पर सफेद अथवा किसी दूसरे रग की बुँदकियाँ होती थी। इस कपडे का उपयोग स्त्रियाँ साडी के रूप मे भी और चादर के रूप मे भी करती थी। २ चुन्नी नामक रत्न का छोटा टुकडा।

चुनवट—स्त्री०=चुनट।

चुनवाँ—वि० [हिं० चुनना] १ चुना हुआ। २ अच्छा। बढिया।

पु० [हिं० चुन्नी या चुन्नू (लडको का नाम)] [स्त्री० चुनियाँ] १ वह छोटा लडका जो अभी काम सीखता हो। २ बालक। लडका।

चुनवाना—स० [हिं० चुनना का प्रे०] चुनने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को चुनने मे प्रवृत्त कराना।

चुनाँ—वि० [फा०] इस प्रकार का। ऐसा। 'केवल यौ० मे प्रयुक्त। जैसे—चुनाँच, चुनाँ-चुनी आदि।

चुनाँ, चुनी—स्त्री० [फा०] १ किसी के आदेश, कथन आदि के सबध मे यह कहना या पूछना कि ऐसा क्यो होना चाहिए अथवा इसका औचित्य क्या है। २ व्यर्थ की आपत्ति या विरोध। जैसे—अब चुनाँ-चुनी मत करो, हम जो कहते है, वह करो।

चुनांचे—अव्य० [फा० चुनन्‌च] इसलिए। अत।

चुनाई—स्त्री० [हिं० चुनना] १ चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ कोई चीज चुनने का ढग, प्रणाली या स्वरूप। जैसे—इस दीवार की चुनाई कुछ टेढी हुई है।

चुनाखा—पु० [हिं० चूडी+नख] वृत्त बनाने का कपास या परकार।

चुनाना—स०=चुनवाना।

चुनाव—पु० [हिं० चुनना] १ चुनने की क्रिया या भाव। २ बहुत-सी वस्तुओ आदि मे से अपनी रुचि, पसन्द, विवेक आदि के अनुसार कोई चीज अगीकार, ग्रहण करने या ले लेने का कार्य। जैसे—शिक्षा अधिकारी पुरस्कार के लिए पुस्तको का चुनाव करेगे। ३ किसी पद के लिए

कई उम्मीदवारो मे से किसी एक को मतो या बहुमत के आधार पर अपना प्रतिनिधि चुनने का कार्य या व्यापार।

मुहा०—चुनाव लड़ना=निर्वाचन मे उम्मीदवार के रूप मे खडे होना।

४ वह चीज, बात या वस्तु जो आवश्यकता, रुचि आदि के अनुसार चुनी जाय। जैसे—यह भी तो आप ही का चुनाव है।

चुनावट—स्त्री०=चुनट।

चुनाव याचिका—स्त्री० [हि० पद] विधिक क्षेत्र मे, वह याचिका या आवेदन-पत्र जो किसी विशिष्ट न्यायालय मे इस आधार पर तथा इस उद्देश्य से किया जाता है कि प्रतिनिधि रूप मे अमुक सदस्य का चुनाव अवैध रूप से हुआ है, अत यह चुनाव रद्द किया जाय। (इलेक्शन पेटिशन)

चुनिंदा—वि० [हि० चुनना+फा० इदा (प्रत्य०)] १ चुना या छँटा हुआ। २ अच्छा। श्रेष्ठ। ३ गण्य-मान्य या प्रतिष्ठित।

चुनिया गोद—पु०[हि० चूना+गोद]ढाक या पलास का गोद। कमरकस।

चुनी—स्त्री०[स० चूर्णी]१ मोटे अन्न, दाल, आदि का पीसा हुआ आटा या चूर्ण जो प्राय गरीब लोग खाते है।

पद—चुनी-भूसी। (देखे)

†स्त्री०=चुन्नी।

चुनी भूसी—स्त्री० [हि०] मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण, चोकर आदि।

चुनैटी†—स्त्री०=चुनौटी।

चुनौटिया—पु० [हि० चुनौटी] एक प्रकार का खैरा या कारेजी रग जो आकिलखानी रग से कुछ अधिक काला होता है।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

चुनौटी—स्त्री०[हि० चूना+औटी (प्रत्य०)] वह छोटी डिबिया जिसमे पान, सुरती आदि के साथ खाने के लिए गीला चूना रखा जाता है।

चुनौती—स्त्री०[हि० चुनना या चुनाव]१ किसी को ललकारते हुए उससे यह कहना कि या तो तुम हमारी बात मान लो या यदि अपनी बात पर दृढ रहना चाहते हो तो हमसे लड-झगडकर या वाद-विवाद आदि के द्वारा निपटारा कर लो। अपना कथन या पक्ष पुष्ट या सिद्ध करने अथवा अपनी बात मनवाने के लिए किसी को उत्तेजित करते हुए आकर सामना करने के लिए कहना। प्रचारणा। २ इस प्रकार कही हुई बात।

क्रि० प्र०—देना।

†स्त्री०=चुनट (चुनन)।

चुन्नट†—स्त्री०=चुनट।

चुन्नन—स्त्री०=चुनन।

चुन्ना—पु० दे० 'चूना'।

स० दे० 'चुनना'।

पु०[मुन्ना का अनु०] छोटे बच्चो को प्यार से बुलाने का शब्द।

चुन्नी—स्त्री० [स० चूर्णी]१ किसी प्रकार के रत्न विशेषत मानिक का बहुत छोटा टुकडा या नग। २ सुनहले-रुपहले सितारे जो स्त्रियाँ शोभा के लिए कपोलो और मस्तक पर लगाती है। चमकी।

मुहा०—चुन्नी रचना=मस्तक और कपोलो पर सितारे या चमकी लगाना।

३ अनाज के दानो का चूरा या छोटे-छोटे टुकडे। ४ लकडी को आरे से चीरने पर निकलनेवाला उसका चूरा या बुरादा। कुनाई। ५ एक प्रकार का छोटा कीडा।

चुप—वि०[स० चुप्, उ० बँ० चुप, प० चुप्प, सि० चुपु, गु०, मरा० चुप] १ जो कुछ भी बोल न रहा हो। जिसके मुँह से कोई बात या शब्द न निकल रहा हो। मौन। जैसे—सब लोग चुप थे।

पद—चुप-चाप। (देखे)

मुहा०—चुप नाधना, मारना, लगाना या साधना=बोलने का अवसर या आवश्यकता होने पर भी जान-बूझकर कुछ न बोलना और चुप रहना। उदा०—गुस्सा चुप नाध के निकालते हैं।—इन्शाउल्ला।

२ (यौ० के आरभ मे) इस प्रकार चुपचाप और चोरी से काम करनेवाला कि औरो को पता न लगे। जैसे—चुप छिनाल।

स्त्री० बिलकुल चुप रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुप्पी। मौन। जैसे—(क) सबसे भली चुप। (ख) एक चुप सौ बातो को हराती है।

स्त्री०[?] पक्के लोहे की वह तलवार जिसे टूटने से बचाने के लिए ऊपर से कच्चा लोहा लगा रहता है।

चुपका—वि०[हि० चुप] [स्त्री० चुपकी] १ जो बिलकुल चुप हो। मौन।

मुहा०—चुपके से=(क) बिना कुछ भी कहे-सुने। बिलकुल चुपचाप। जैसे—चुपके से हमारे रुपए चुका दो। (ख) इस प्रकार जिसमे किसी को कुछ भी पता न चले। जैसे—वह किताब उठाकर चुपके से चलता बना।

२ दे० 'चुप्पा'।

पु० बिलकुल चुप रहने की अवस्था या भाव। चुप्पी। मौन।

क्रि० प्र०—साधना।

पु० [?] एक प्रकार का चाहा पक्षी जिसकी चोच नुकीली और लबी होती है।

चुपकाना—स०[हि० चुपका]१ चुप या मौन कराना। २ बोलने से रोकना।

चुपकी†—स्त्री०=चुप्पी।

चुपचाप—अव्य० [हि०चुप+अनु० चाप] १ बिना कुछ भी कहे-सुने। बिलकुल चुप या मौन रहकर। जैसे—वह चुप-चाप यहाँ से उठकर चला गया। २ इस प्रकार छिपे-छिपे या धीरे से कि किसी को पता तक न लगे। जैसे—घर मे लोगो के जागते ही चोर चुपचाप निकल भागा। ३ बिना कोई उद्योग या प्रयत्न किये। जैसे—यो चुपचाप बैठे रहना ठीक नही है। ४ धीर और शात भाव से। जैसे—यह लडका चुपचाप बैठना तो जानता ही नही।

चुपचुप=अव्य० दे० 'चुपचाप'।

चुप-चुपाते†—अव्य० वि०=चुपचाप।

चुपछिनाल—स्त्री० [हि० पद] छिपे-छिपे व्यभिचार करनेवाली स्त्री। वि० चुप-चाप अथवा छिपे-छिपे सब प्रकार के दुष्कर्म करनेवाला।

चुपड़ना—स०[हि० चिपचिपा] १ किसी वस्तु के तल पर किसी गाढे चिकने पदार्थ का हलका लेप करना। जैसे—रोटी पर घी या सिर पर तेल चुपडना। २ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार की बात का किसी पर आरोप करना या भार रखना। जैसे—सब दोष हमारे ही सिर चुपड़ते चलो। ३ कोई बिगडी हुई बात बनाने के लिए चिकनी-चुपडी या चापलूसी की बाते करना।

चुपडा—वि०[हिं० चुपडना] [स्त्री० चुपडी] जिसकी आँखो मे बहुत कीचड हो। कीचड से भरी आँखोवाला।

चुपरना—स०=चुपडना।

चुपरी आलू—पु०=रतालू (पिंडालू)।

चुपाना—अ० [हि० चुप] चुप हो जाना। मौन रहना। न बोलना। स० किसी को चुप या मौन कराना। उदा०—मै आज चुपा आई चातक।—महादेवी।

चुप्पा—वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] १ बहुत कम बोलनेवाला। जो किसी बात का जल्दी कोई उत्तर न दे। २ जो अपने मन का भाव सहसा दूसरो पर प्रकट न होने दे। मन की बात मन मे ही रखनेवाला। घुन्ना।

चुप्पी—स्त्री०[हि० चुप]बिलकुल चुप रहने की अवस्था या भाव। मौन।

क्रि० प्र०—लगाना।—साधना।

चुबलाना—स०=चुभलाना।

चुभकना—अ० [अनु०]पानी मे डूबते हुए चुभ-चुभ शब्द करते हुए गोता खाना। बार-बार डूबना-उतराना।

चुभकाना—स०[अनु०] पानी मे डुबाकर इस प्रकार बार-बार गोते देना कि मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकलने लगे।

चुभकी—स्त्री०[अनु० चुभ-चुभ] १ चुभकने की क्रिया या भाव। २ गोता। डुबकी।

चुभन—स्त्री०[हिं० चुभन]१ चुभने की क्रिया या भाव। २ किसी के चुभने के कारण होनेवाली टीस या पीडा।

चुभना—अ०[अनु०] १ दाब पडने पर किसी नुकीली चीज का सिरा अदर घुसना या धँसना। जैसे—पैर मे काँटा या हाथ मे सूई चुभना। २ कोई बात मन को उसी प्रकार कष्टदायक जान पडना जिस प्रकार किसी चीज का चुभना कष्टदायक होता है। जैसे—हँसी मे कही हुई उसकी वह बात भी मेरे कलेजे (या मन) मे चुभ गई। ३ उक्त कथन आदि का मन मे प्रविष्ट होकर अच्छी तरह स्थित होना। ४ किसी चीज या बात का अपने गुण, रूप आदि के कारण मन मे घर करना। उदा०—टरति न टारे यह छबि मन मे चुभी।—सूर।

चुभर चुभर—अव्य० वि० [अनु०] इस प्रकार कि मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकले। जैसे-कुत्ता चुभर चुभर पानी पीता है।

चुभलाना—स०[अनु०] मुँह मे कोई खाद्य पदार्थ रखकर उसे जीभ से बार-बार हिलाकर इधर-उधर करना और इस प्रकार उसका रस चूसना या स्वाद लेना।

चुभवाना—स०[हिं० चुभना का प्रे०] किसी को कुछ चुभाने मे प्रवृत्त करना।

चुभाना—स०[हिं० चुभना का प्रे०] ऐसी क्रिया करना जिससे नुकीली चीज या उसका सिरा अन्दर धँसे। गडाना। जैसे—किसी के शरीर मे काँटा या सूई चुभाना।

चुभीला*—वि०[हिं० चुभना]१. जो शरीर मे चुभता हो अर्थात् नुकीला। २ जो मन मे खटकता हो। ३ जो मन मे बरबस घर कर लेता हो, अर्थात् मनोहर या मोहक।

चुभोना†—स०=चुभाना।

चुभौना—वि०=चुभीला।

चुमकार—स्त्री०[हिं० चूमना+कार]१ चुमकारने की क्रिया या भाव। पुचकार। २ किसी को चूमने के समय मुँह से निकलनेवाला चुम शब्द।

चुमकारना—स० [हि० चुमकार] किसी को अनुरक्त, आकृष्ट या शात करने के लिए चूमने का-सा चुम चुम शब्द मुँह से निकालते हुए उससे दुलार या प्रेम करना। पुचकारना। जैसे—घोडे या बच्चे को चुमकारना।

चुमकारी—स्त्री०=चुमकार।

चुमवाना—स०[हिं० चूमना का प्रे०] किसी को कुछ चूमने मे प्रवृत्त करना। चुबन कराना।

चुमाना—स०[हिं० चूमना]चूमने मे प्रवृत्त करना।

चुम्मक†—पु०=चुबक।

चुम्मा—पु० [हिं० चूमना]किसी को, विशेषत प्रिय को चूमने की क्रिया। चुबन।

पद—चुम्मा-चाटी। (देखे)

चुम्मा-चाटी—स्त्री०[हिं० चूमना+चाटना]किसी को बार-बार चूमने और उसके अगो को चाटने या उन पर मुँह रखने की क्रिया या भाव।

चुर—वि० [√चुर् (चुराना)+क]चोरी करनेवाला।

†वि०[स० प्रचुर]बहुत अधिक या ज्यादा।

पु० १ जगली हिंसक पशुओ के रहने का गड्ढा। माँद। २ कुछ लोगो के मिलकर बैठने का स्थान। उदा०—घाट, बाट, चौपार, चुर, देवल, हाट, मसान।-भगवतरसिक।

पु०[अनु०]कडी चीजो, सूखे पत्तो आदि के दबकर टूटने से होनेवाला चुर शब्द।

चुरकट—वि० १=चिरकुट। २=चुरकुट।

चुरकना—अ० [अनु० चुर चुर] १ चूर-चूर होना। २ चटकना, दरकना या फटना।

†अ०=चुरगना।

चुरकी†—स्त्री०[हिं० चोटी] सिर पर की चुटिया। चोटी। शिखा।

चुरकुट—वि० [हिं० चूर+कूटना]१ चकनाचूर या चूर-चूर किया हुआ। चूर्णित। २ घबराया, डरा या सहमा हुआ। उदा०—कुरकुट सुनि चुरकुट भइ बाला।—नददास।

चुरकुस—वि०[हिं० चूर] जो चूर-चूर हुआ या किया गया हो। चकनाचूर। पु० चूर्ण। बुकनी।

चुरगना—अ०[चुर चुर से अनु०]१ प्रसन्न या मगन होकर बाते बोलना या मुँह से शब्द निकालना। जैसे—चिडियो का चुरगना। २ किसी व्यक्ति का मगन होकर अपने सबध मे कुछ बढ-बढकर परन्तु धीरे-धीरे बाते करना। जैसे—आज चुपचाप मोहन का चुरगना सुनो।

चुरगम—स्त्री०[हिं० चुरगना]१ आनद या मगन होकर की जानेवाली बाते। २ आपस मे बहुत धीरे-धीरे की जानेवाली बाते। काना-फूसी। जैसे—उन लोगो की आपस मे खूब चुरगम हो रही थी।

चुरचुरा—वि०[अनु०]१ (खाद्य वस्तु) जिसे खाने पर मुँह से चुर चुर शब्द निकले। खस्ता। जैसे—चुरचुरा पापड। २ (वस्तु) जो टूटते समय चुरचुर शब्द करती हो।

चुरचुराना—अ० [अनु०] १ चुरचुर शब्द उत्पन्न होना या निकलना।

२. (किसी वस्तु का) चुर-चुर शब्द करते हुए चूरचूर या टुकडे-टुकडे होना।

स० १. चुरचुर शब्द उत्पन्न करना या निकालना। २ इस प्रकार चूर करना या तोडना कि चुर चुर शब्द होने लगे।

चुरट—पु०=चुरुट।

चुरना†—अ०[स० चूर=जलना, पकना] १ खाद्य पदार्थ का आँच पर पकना विशेषत खौलते हुए पानी मे उबलकर पकना। जैसे—चावल या दालचुरना। २ आपस मे धीरे-धीरे गुप्त या रहस्यपूर्ण बाते होना।

†अ० चोरी जाना। चुराया जाना।

†पु०=चुनचुना (कीडा)।

चुरमुर—पु० [अनु०] करारी, कुरकुरी या खरी वस्तु के टूटने का शब्द। जैसे—भुने हुए चने या सूखी पत्तियो का चुरमुर बोलना।

†वि०=चुरमुरा।

चुरमुरा—वि० [अनु०] (वस्तु) जो दबाये या तोडे जाने पर चुरमुर शब्द करे। करारा।

चुरमुराना—अ० [अनु०] चुरमुर शब्द करते हुए चूर होना।

स० चुरमुर शब्द करते हुए चूर करना या तोडना।

चुरवाना—स०[हिं०चुराना=पकाना] चुरने अर्थात् उबलने और पकने मे प्रवृत्त करना।

स०[हिं० चुराना=चोरी करना]चुराने या चोरी करने मे प्रवृत्त करना। चोरी कराना।

चुरस—स्त्री० [देश०] दबने, मुडने आदि के कारण पडनेवाली शिकन। सिकुडन।

पु०=चुरुट।

चुरा†—पु०=चूरा।

†—पु०=चूडा।

चुराई—स्त्री०[हिं० चुरना] चुरने अर्थात उबलने की क्रिया या भाव।

स्त्री०[हिं० चुराना] चुराने की क्रिया या भाव।

चुराना—स०[स० चुर=चोरी करना] १ किसी की कोई वस्तु बिना उसकी अनुमति के तथा छलपूर्वक कही से उठाकर अपने उपयोग के लिए ले जाना। चोरी करना। जैसे—किसी की कलम या किताब चुराना। २ किसी दूसरे का कोई भाव, विचार आदि अपना बनाकर कहना या लिखना। छलपूर्वक अपना बना लेना। ३ इस प्रकार बरबस अपने अधिकार या वश मे कर लेना कि सहसा किसी को पता न चले। जैसे—किसी का चित्त या मन चुराना। ४ किसी वस्तु को इस प्रकार सुरक्षित रखना कि कोई उसे देखने न पावे। छिपाकर रखना। जैसे—गाय का अपने थन मे दूध चुराना। ५ भय, सकोच आदि के कारण कोई चीज या बात दबा रखना और दूसरो के सम्मुख न लाना अथवा उन्हे न बतलाना। जैसे-(क) रमणी का आँखे चुराना। (ख) मित्रो से विवाह का समाचार चुराना। ६ आवश्यकता पडने पर ठीक या पूरा प्रयोग न करना। जैसे—काम करने से जी चुराना।

स०[हिं० चुरना का स०] किसी तरल पदार्थ को उबालकर अच्छी तरह गरम करते हुए पकाना। चुरने मे प्रवृत्त करना। जैसे—हाँडी मे चावल या दाल चुराना।

चुरिला—पु०=चुडिला।

चुरिहारा†—पु०=चुडिहारा।

चुरी—स्त्री०[स०]छोटा कूआँ।

†स्त्री०=चूडी।

चुरुट—पु० [अ० शेरूट—चेरूट] तबाकू के पत्तो के चूरे की बनाई हुई बडी बत्ती जिसका धूआँ लोग पीते है। सिगार।

चुरू—पु०=चुल्लू। उदा०—एक चुरू रस भरै न हिया।—जायसी।

चुरैल—स्त्री०=चुडैल।

चुर्ट—पु०=चुरुट।

चुर्स†—पु०=चुरुट।

†स्त्री०=चुरस।

चुल—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना से] १ शरीर के किसी अग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट। खुजली। २ प्रसग या सभोग की प्रबल इच्छा या कामना। काम-वासना। ३ किसी प्रकार की प्रबल इच्छा, कामना या वासना।

क्रि० प्र०—उठना।—मिटना।—मिटाना।

†स्त्री०=चुर (माँद)। उदा०—तेंदुओ के आकार स्पष्ट दिखलाई पडने लगे उनकी चुल भी दिखलाई पडी।—वृंदावनलाल वर्मा।

चुलका—स्त्री०=चुलुका।

चुलचुलाना—अ०[अनु०] १ शरीर के किसी अग मे ऐसी हलकी जलन या सुरसुरी होना कि उसे खुजलाने को जी चाहे। हलकी खुजली होना। २ प्रसग या सभोग की प्रबल कामना होना। ३ चचलतापूर्वक इधर-उधर हाथ-पैर करना या चीजे हटाना-बढाना। चिलबिल्लापन करना।

चुलचुलाहट—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] चुलचुलाने की क्रिया या भाव।

चुलचुली—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] १ शरीर मे होनेवाली हलकी खुजली। २ काम-वासना। चुल।

चुलबुल—स्त्री०[स० चल और बल] १ चुलबुलाने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुलबुलाहट। २ चचलता। चपलता।

चुलबुला—वि०[हिं० चुलबुलाना] [स्त्री० चुलबुली] १ उमग के कारण जिसके अग बहुत अधिक हिलते-डोलते रहते हो। चचल। चपल। २ दुष्ट। नटखट। पाजी।

चुलबुलाना—अ० [स० चल=चचल अथवा अनु०] १ उमग, यौवन आदि के कारण बार-बार अग हिलाना-डुलाना। चुलबुल करना। २

२ चचलता या चपलता दिखलाना।

चुलबुलापन—पु० [हिं० चुलबुला+पन (प्रत्य०)] १ चुलबुले होने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुलबुलाहट। २ चचलता। चपलता। शोखी।

चुलबुलाहट—स्त्री०=चुलबुलापन।

चुलबुलिया—वि०=चुलबुला।

चुलहाई—वि०[हिं० चुलहाया का स्त्री०] (स्त्री) जिसमे काम या सभोग की वासना अधिक हो।

स्त्री० छिनाल। पुश्चली।

चुलहाया—वि० [हिं० चुल+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० चुलहाई] जिसमे काम-वासना की अधिकता या प्रबलता हो।

चुलाना—स० =चुआना।

चुलाव—पु० [हि० चुलाना=चुआना] चुलाने अर्थात् चुआने की क्रिया या भाव।

पु० [हि० पुलाव का अनु०] पुलाव की तरह पकाये हुए ऐसे चावल जिनमे मास न पडा हो।

चुलियाला—पु० [?] एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १३ और १६ के विश्राम से २९ मात्राएँ होती है। इसके अत मे एक जगण और एक लघु होता है। दोहे के अत मे एक जगण और एक लघु जोडने से यह छद बनता है। कोई इसके दो और कोई चार पद मानते है। जो दो पद मानते है वे दोहे के अत मे एक जगण और एक लघु रखते है। जो चार पद मानते हैं, वे दोहे के अत मे एक यगण रखते है।

चुली†—स्त्री०[हि० चुल्लू] १ धार्मिक दृष्टि से कोई चीज दान करने के लिए हथेली मे जल लेकर किया जानेवाला सकल्प। २ दे० 'चुल्लू'।

चुलुक—पु० [स० चुल्(ऊँचा होना) +उकक् बा०] १ उतना जल जितने मे उडद का दाना डूब जाय। २ बहुत अधिक कीचड या दलदल। ३ हाथ मे पानी लेने के लिए हथेली का बनाया हुआ चुल्लू। ४ एक प्रकार का पुराना बरतन जिससे अनाज आदि नापते थे। ५ एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

चुलुका—स्त्री०[स० चुलुक+टाप्] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

चुलुपा—स्त्री० [स० चुलु√पा (रक्षा करना)+क-टाप्] बकरी।

चुलूक*—पु०=चुल्लू।

चुल्ल—वि०[स० क्लिन्न+लच्, चुल् आदेश] जिसकी आँखो मे कीचड भरा हो।

स्त्री०=चुल।

चुल्लक—पु०[स० चुल्ल+कन्] चुल्लू।

चुल्लकी—स्त्री० [स०√चुल्ल् (क्रीडा करना) + ण्वुल्-अक + ङीष्] शिशुमार या सूँस नामक जल-जतु।

चुल्ला—पु०[स० चूडा=वलय] जुलाहो के करघे मे का काँच का छोटा छल्ला।

वि०=चुल्ली (चचल और दुष्ट)।

चुल्लि—स्त्री०[स०√चुल्ल्+इनि]१ चूल्हा। २ चिता।

चुल्ली—वि०[हि० चुल] १ चुलबुला। चचल। २ चिलबिल्ला। नटखट। पाजी।

स्त्री० [स० चुल्लि+ङीष्]=चुल्लि।

†स्त्री०=चुली।

चुल्लू—पु० [स० चुलुक] १ उँगलियो को अदर की ओर कुछ मोडकर गहरी की हुई हथेली जिसमे भरकर पानी आदि पी सके। २ उतनी वस्तु जितनी हाथ की उक्त मुद्रा मे आती है।

पद—चुल्लू-भर=उतना कम या थोडा (तरल पदार्थ) जितना एक बार चुल्लू मे आता हो।

मुहा०—चुल्लू चुल्लू साधना=थोडा-थोडा करके किसी प्रकार का अभ्यास, सग्रह या साधन करना। **चुल्लू भर पानी मे डूब मरना**=बहुत ही लज्जाजनक स्थिति मे आना, पडना या होना। किसी को मुँह दिखाने या जीवित रहने के योग्य न रह जाना। (तिरस्कार सूचक) जैसे—ऐसा काम (या बात) करने से तो चुल्लू भर पानी मे डूब मरना ज्यादा अच्छा है। **(किसी का) चुल्लू भर लहू पीना**=बदला चुकाने के लिए उसी तरह किसी को मार कर उसका रक्त पीना जिस प्रकार भीम ने दुशासन का लहू पीया था। **चुल्लू मे उल्लू होना**=बहुत थोडी सी नशे की चीज। जैसे—भाँग या शराब पीते ही बेसुध होना। **चुल्लुओ रोना**=बहुत अधिक आँसू बहाना। बहुत रोना। **(किसी का) चुल्लुओ लहू पीना**=(क) चुल्लू भर लहू पीना। (ख) बहुत अधिक तग या दुखी करना। बहुत सताना।

चुल्हौना†—पु०=चूल्हा।

चुवना—अ०=चूना।

वि०=चूना।

चुवा—पु० दे० 'चुआ'।

चुवाना—स०=चुआना।

चुसकी—स्त्री०=चुस्की।

चुसना—अ० [हि० चूसना का अ०] १ चूसा जाना। २ चूसे जाने के कारण रस या सार भाग से रहित होना। ३ सोखा जाना। ४ लाक्षणिक अर्थ मे दूसरो द्वारा किसी का शोषण किया जाना। धन-धान्य, बल-वीर्य आदि से रहित हो जाना।

†पु० [स्त्री० अल्पा० चुसनी] बडी चुसनी।

चुसनी—स्त्री०[हि० चूसना] १ चूसने की क्रिया या भाव। २ बच्चो का एक खिलौना जिसे वे मुँह मे रखकर चूसते है। ३ बच्चो को दूध पिलाने की शीशी।

चुसवाना—स०[हि० चूसना का प्रे०] १ किसी को कुछ चूसने मे प्रवृत्त करना। चुसाना। २ दूसरो से अपना शोषण करवाते जाना।

चुसाई—स्त्री०[हि० चूसना] १ चूसने या चूसे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ चूसने या चुसाने का पारिश्रमिक।

चुसाना—स०[हि० चूसना का प्रे०]चूसने का काम किसी और से कराना। किसी को कुछ चूसने मे प्रवृत्त करना। चुसवाना।

चुसौअल—स्त्री०[हि० चूसना] अधिक मात्रा या मान मे अथवा परस्पर चूसने और चुसाने की क्रिया या भाव।

चुसौवल—स्त्री०=चुसौअल।

चुस्की—स्त्री०[हि० चूसना] १ होठो से कोई तरल पदार्थ थोडा-थोडा या धीरे-धीरे सुडकने की क्रिया या भाव। २ तरल पदार्थ का उतना थोडा अश जितना एक बार मे चूस या सुडककर पीया जाय। जैसे—एक चुस्की तो और ले लो।

क्रि० प्र०—लगाना।—लेना।

३ मद्य पीने का पात्र। (राज०)

चुस्त—वि०[फा०] १ (पहनावा) जो खूब कसा हुआ हो। जो कही से कुछ भी ढीला न हो। यथा-स्थान ठीक और पूरा बैठनेवाला। जैसे—चुस्त अगा या पाजामा। २ (व्यक्ति) जिसमे किसी प्रकार का आलस्य या शिथिलता न हो। फुर्तीला।

पद—चुस्त-चालाक=हर काम या बात मे ठीक या पूरा और होशियार।

३ जिसमे किसी प्रकार का अभाव या त्रुटि न हो। जो उपयोगिता, औचित्य आदि के विचार से अच्छे और ऊँचे स्तर पर हो। जैसे—चुस्त बन्दिश या लिखावट। ४ दृढ। पक्का। मजबूत।

पु० [?] जहाज का वह भाग जो अन्दर की ओर झुका या दबा हो। मूढ। (लश०)

चुस्ता—पु०[स० चुस्त=मासपिंड विशेष] बकरी के बच्चे का आमाशय जिसमे पीया हुआ दूध भरा रहता है।

चुस्ती—स्त्री०[फा०] १ चुस्त होने की अवस्था या भाव। २ काम करने मे दिखाई देनेवाली तेजी या फुरती। ३ कसे हुए या तग होने की अवस्था या भाव। कसावट। ४ पक्कापन। प्रौढता। ५ दृढता। मजबूती।

चुहँटी†—स्त्री०=चुटकी।

चुहचाहट—स्त्री०=चहचहा।

चुहचुहा—वि०[हिं० चुहचुहाना] [स्त्री० चुहचुही]=चुहचुहाता।

चुहचुहाता—वि०[हि० चुहचुहाना] जिसमे चटक तथा रसीलापन हो। रगीला और रसीला। जैसे—चुहचुहाता पद।

चुहचुहाना—अ० [अनु०] रस से इतना अधिक ओत-प्रोत या भरा हुआ होना कि उसमे से रस टपकता हुआ जान पडे।

†अ०=चहचहाना (पक्षियो का)।

चुहचुही—स्त्री०[अनु०]काले रग की एक प्रकार की छोटी चिडिया। फुलसुँघनी।

चुहट—स्त्री०[हिं० चुहटना] १ चुहटने की क्रिया या भाव। २ कसक। पीडा।

चुहटना—स० [अनु०]१ चिकोटी काटना। २ पैरो से रौदना। ३ कुचलना। मसलना।

अ० चिमटना।

चुहटनी†—स्त्री०[?] गुजा। करजनी।

चुहडा—पु० [देश०] [स्त्री० चुहडी] १ भगी। मेहतर। २ चमार। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत ही निकृष्ट और नीच व्यक्ति।

चुहना†—स०=चूसना।

चुहल—स्त्री०[अनु० चुहचुह=चिडियो की बोली] मनोरजन के लिए आपस मे होनेवाली रस और विनोद की बात-चीत। हलकी हँसी-दिल्लगी।

चुहलपन—पु०=चुहलबाजी।

चुहलबाज—वि०[हि० चुहल+फा० बाज (प्रत्य०)] जो बीच-बीच मे हलकी हँसी-दिल्लगी की बाते भी कहता चलता हो। चुहल करने-वाला। विनोदशील।

चुहलबाजी—स्त्री०[हिं० चुहल+फा० बाजी] बार-बार या रह-रहकर चुहल करने की क्रिया या भाव।

चुहिया—स्त्री०[हिं० चूहा का स्त्री० अल्पा०] १ मादा चूहा। चूही। २ छोटा चूहा। चूहे का बच्चा।

चुहिल—वि०[हिं० चुहचुहाना] १ रमणीक। सुन्दर । २ (स्थान) जहाँ चहल-पहल या रौनक हो।

चुहिली—स्त्री०[देश०] चिकनी सुपारी।

चुहुँटना*—स०[अनु०] १ चिकोटी काटना। २ तोडने, दबाने आदि के लिए चुटकी से कसकर पकडना।

वि० [स्त्री० चुहुँटनी] १ चिकोटी काटनेवाला। २ कसकर पकडने और दबानेवाला।

अ० [हि० चिमटना] चिपकना।

वि०[स्त्री० चुहुँटनी] चिपकनेवाला।

चुहुकना—स०[स० चूष] बछडे आदि का भैंस, गाय आदि का स्तन-पान करना। चूसना।

चुहुटना—स०=चुहुँटना।

चुहुटनी—स्त्री०[देश०]गुजा।

चूँ—स्त्री०[अनु०] १ छोटी चिडियो या उनके बच्चो के बोलने का शब्द। २ आपत्ति, विरोध आदि के रूप मे डरते या सहमते हुए कही जाने-वाली कोई छोटी या हलकी बात। जैसे—वहाँ उसने चूँ तक नही की, सब रुपए चुपचाप चुका दिए।

मुहा०—चूँ-चिरा करना=आपत्ति या विरोध मे डरते या सहमते हुए कुछ कहना।

अ० [फा०] किस कारण से। क्यो।

पद—चूँकि (देखे)।

चूँकि—अव्य० [फा०] कारण यह है कि। क्योकि।

चूँच—†स्त्री०=चोच।

चूँची—स्त्री०=चूची।

चूँचूँ—स्त्री०[अनु०] १ छोटी चिडियो या उनके बच्चो के बोलने का शब्द। २ विरोध मे धीरे से कही हुई कोई बात।

पु० एक प्रकार का खिलौना जिसे दबाने से चूँ चूँ शब्द निकलता है।

चूँटना—स०[हिं० चुटकी या चुटकना] तोडने या दबाने के लिए चुटकी से पकडना। उदा०—मन लुटिगो लोटनि चढत चूँटत ऊँचे फूल। —बिहारी।

चूँदरी†— स्त्री०=चुनरी।

चूँदी—स्त्री०=चुदी।

चूअरी—स्त्री०[देश०] जरदालू नामक फल। खूबानी।

चूऊ—पु०[देश०] पहाडी प्रदेशो मे बननेवाला एक प्रकार का बढिया महीन ऊनी कपडा।

चूक—स्त्री०[हि० चूकना] १ चूकने की क्रिया या भाव। २ अनजान मे असावधानी से अथवा प्रमाद, विस्मृति आदि के कारण होनेवाली कोई गलती या भूल। उदा०—छमहू चूक अनजानत केरी।—तुलसी। ३ वह अक्षर, शब्द, पद, वाक्य आदि जो कहने, पढने-लिखने आदि के समय अनजान मे अथवा असावधानी , जल्दी या विस्मृति के कारण छूट जाता है। (ओमिशन) ४ छल-कपट। धोखा-फरेब। उदा०—अहौ हरि बलि सो चूक करी। —परमानददास। ५ छोटा छेद या दरार।

पु०[स० चुक्र] १ किसी खट्टे फल विशेषत नीबू के रस से बनी एक प्रकार की बहुत तेज खटाई। २ एक प्रकार का खट्टा साग।

चूकना—अ०[स० च्युत कृत] १ भूल करना। २ कहने, पढने, लिखने आदि के समय कोई अक्षर, शब्द, पद, बात आदि प्राय असावधानी या विस्मृति के कारण छोड देना। जैसा होना चाहिए उससे भिन्न कुछ और कर या कह जाना। ३ किसी लक्ष्य पर ठीक प्रकार से सधान न कर पाना। निशाना या वार खाली जाना। ४ असावधानी ,उपेक्षा आदि के कारण किसी सुअवसर का सदुपयोग करने से रह जाना। ठीक समय पर लाभ न उठा पाना। ५ न रह जाना। समाप्त होना। चुकना। उदा०—सतगुरू मिलै अँधेरा चूकै ।—कबीर।

चूका—पु०[स० चुक्र] चूक नामक खट्टा साग।

चूची—स्त्री०[स० चूचुक] १ स्तन का अगला भाग अथवा उसके ऊपर की घुडी। २ कुच। स्तन।

मुहा०—चूची पीना=स्तन मे मुँह लगाकर उसमे का दूध पीना।

चूचुक—पु०[स०√चूष् (पीना) +उक्र वाहु० ष=च] कुच के ऊपर की अगली काली घुडी। चूची की ढेपी।

चूछना†—स०=चूसना।

चूजा—पु०[फा० चूज़] १ मुर्गी का बच्चा। २ छोटी उमर का सुदर लडका या लडकी (सभोग की दृष्टि से)। (बाजारू)

चूड—पु०[स०चूडा] १ चोटी। शिखा । २ पक्षियो आदि के सिर पर की कलगी या चोटी। ३ वास्तु रचना मे, खभे आदि का ऊपरी भाग। ४ पहाड की चोटी। ५ छोटा कूआँ। ६ शखचूड दैत्य का एक नाम।

चूडक—पु० [स० चूडा+कन्, ह्रस्व] कूआँ।

चूड़ांत—वि०[स० चूडा-अन्त, ब० स०] १ जो चरम सीमा या पराकाष्ठा तक पहुँचा हो। २ बहुत अधिक। अत्यन्त।

पु०[ष० त०]चूडा या शिखर का अन्तिम और ऊपरी भाग।

चूडा—पु०[स०√चुल्(ऊँचा होना)+अड्, दीर्घ (नि०), ल को ड, प्रा० चूड, चूडक (भुजा भरण) गु० चूडो, सि० चूरो, मरा० चुडा] १ सिर के बालो की चोटी। शिखर। २ पक्षियो आदि के सिर पर की चोटी। ३ किसी चीज का सबसे ऊँचा और ऊपरी भाग। ४ मस्तक। सिर। ५ कूआँ। ६ घुँघची। ७. प्रधान या मुख्य व्यक्ति। ८ हाथ मे पहनी जानेवाली एक प्रकार की चूडियाँ जो प्राय हाथी दाँत की बनती और विवाह के समय कन्या को पहनाई जाती है। ९ हाथ मे पहनने का कगन या कडा। १० दे० 'चूडा करण'।

पु० १ दे० 'चूहडा' २ दे० चिडवा'।

चूड़ा-करण—पु०[ष० त०] हिंदुओ के १६ सस्कारो मे से एक, जिसमे बालक का सिर पहले-पहल मूँडा जाता है। मुडन।

चूड़ा-कर्म (न्)—पु०[ष० त०]=चूडाकरण।

चूड़ा-मणि—पु०[मध्य० स०] १ सिर पर पहनने का एक गहना। शीशफूल। बीज। २ वह जो अपने कुल, वर्ग आदि मे सब से बढकर या श्रेष्ठ हो। ३ गुजा। घुँघची।

चूडाम्ल—पु०[चूडा-अम्ल, ब० स] इमली।

चूडार—वि० [स० चूडाऋ (गति) √+अण्] १ चूडा से युक्त। चूडावाला। २ (बालक) जिसके सिर पर चुदी या चोटी हो। ३ (पशु या पक्षी)। जिसके सिर पर कलगी हो।

चूडाल—वि०[स० चूडा+लच्] चूडायुक्त।

पु० सिर।

चूडाला—स्त्री०[स० चूडाल+टाप्] १ सफेद घुँघची। २ नागरमोथा। ३ एक प्रकार की निर्विषी (वनस्पति)।

चूड़िया—पु० [हिं० चूडी+इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का धारीदार कपडा।

चूड़ी—स्त्री० [दे प्रा० चूड, ब० उ० चुरी, गु० पं० चूडी, सिं० चूरी, ने० चूरि, भेरा० चूडा] १ स्त्रियो का एक प्रसिद्ध वृत्ताकार गहना जो धातु, लाख, शीशे, सीग आदि का बनता है और जो स्त्रियाँ हाथ मे शोभा के लिए और प्राय सौभाग्य-सूचक चिह्न के रूप मे पहनती है।

मुहा०—चूडियाँ ठढी करना या बढ़ाना=(क) बदलने के लिए चूडियाँ उतारना। (ख) विधवा होने पर चूडियाँ तोड डालना। **चूडियाँ पहनना**=स्त्रियो का-सा आचरण या व्यवहार करना। (कायरता सूचक व्यग्य) जैसे—तुम्हे तो चूडियाँ पहनकर घर मे बैठना चाहिए था। **(किसी पर या किसी के नाम की) चूडियाँ पहनना**=स्त्री का किसी को अपना उपपति बना लेना और उसके वशवर्त्ती होकर रहना। **(किसी स्त्री को) चूडियाँ पहनाना**=(क) विधवा स्त्री का विवाह करना। (ख) विधवा स्त्री को पत्नी बनाकर अपने घर मे रखना।

२ उक्त आकार-प्रकार की वे वृत्ताकार रेखाएँ जो किसी चीज मे उसके विभाग नियत करने के लिए बनाई जाती है। जैसे—कल के किसी पुरजे या पेच की चूडियाँ, मेहराब की चूडियाँ। ३ फोनोग्राफ नामक बाजे का वह उपकरण जो पहले नल के आकार का होता था और जिन पर उक्त प्रकार की रेखाएँ बनी होती थी इसी के योग से उक्त बाजा बजता था, क्योकि वैज्ञानिक क्रिया से इसी पर कही जानेवाली बात या सुनाई पडनेवाला गीत अकित होता था। ४ उक्त के आधार पर और उक्त प्रकार का काम देनेवाला तवे की तरह का वह उपकरण जो आजकल ग्रामोफोन नामक बाजे पर रखकर बजाया जाता है। ५ रेशम फेरनेवालो का एक उपकरण जो मोटे कडे के आकार का होता है। यह छत मे बँधा रहता है और इसके दोनो सिरो पर दो तकलियाँ होती है जिनमे से एक पर उलझा हुआ और दूसरी पर साफ किया हुआ तथा सुलझा हुआ रेशम रहता है।

चूडीदार—वि० [चूडी+फा० दार] जिसमे बहुत-सी चूडी के आकार की वृत्ताकार रेखाएँ या धारियाँ पडी हो या पडती हो। जैसे—चूडीदार पायजामा।

चूड़ीदार पायजामा—पु०[हिं० चूडीदार+पायजामा] तग और लबी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा जिसे पहनने पर टखने पर चूडी के आकार की वृत्ताकार अनेक धारियाँ या रेखाएँ बन जाती है।

चूडो—पु० १ दे० 'चुहडा'। २ दे० 'चूडा'।

चूत—पु०[स०√चूष् (चूसना)+क पृषो० षलोप] आम का पेड।

स्त्री०[स० च्युति=भग] स्त्रियो की भग। योनि।

चूतक—पु०[स० चूत+कन्] आम का पेड।

चूतड़—पु० [हिं० चूत+तल] मनुष्य के शरीर का वह मासल भाग जो अर्द्ध गोलाकार रूप मे जाँघ, कमर के नीचे पीछे की ओर होता है।

मुहा०—चूतड दिखाना—कठिन समय पर भाग खडे होना। पीठ दिखाना। **(अपना) चूतड पीटना या बजाना**=ओछेपन से बहुत प्रसन्नता प्रदर्शित करना।

चूतर†—पु०=चूतड।

चूतिया—वि०[हिं० चूत्+इया (प्रत्य०)] १, बिलकुल नासमझ या मूर्ख। २ चूत-सबधी । जैसे—चूतिया चक्कर।

क्रि० प्र०—फँसाना।—बनाना।

चूतिया चक्कर—वि०=चूतिया।

पु० बिलकुल व्यर्थ की झझट, झगडा या प्रपच।

चूतिया पंथी—स्त्री०[हिं० चूतिया+पथी] मूर्खता। बेवकूफी।

चूतिया शहीद—पु०[हि०+फा०] बहुत बडा मूर्ख।

चून—पु० [स० चूर्ण[१ गेहूँ, जौ आदि का आटा। २ चूरा। चूर्ण। जैसे—लोह चून=लोहे का चूरा।
पु० [?] पश्चिमी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का बडा थूहर।
†पु०=चूना।

चूनर—स्त्री०=चूनरी।

चूनरी—स्त्री०[हि० चुनना] वह रगीन बुदकियोवाला महीन-पतला कपडा जिसे स्त्रिया चादर के रूप मे कधो पर रखती है और जिससे सिर तथा सारा शरीर ढकती है।

चूना—पु०[स० चूर्ण, पा० प्रा० चुण्ण, दे० प्रा० चुणओ, उ० बँ० चून चुना, सि० चुनु, गु० चुनो, मरा० चुना] कुछ विशिष्ट प्रकार के ककड-पत्थरो, शख, सीप आदि को फूँककर बनाया जानेवाला एक प्रसिद्ध तीक्ष्ण और दाहक क्षार जिसका उपयोग दीवारो पर सफेदी करने, पान -सुरती के साथ खाने और दवाओ आदि मे डालने के लिए होता है।
मुहा०—चूना छूना या फेरना=चूने को पानी मे घोलकर दीवारो पर उन्हे सफेद करने के लिए लगाना। **(किसी को) चूना लगाना**=दाँव-पेच, छल-कपट आदि के व्यवहार मे किसी को बुरी तरह से परास्त करना। नीचा दिखाना।
अ०[स०च्यवन] १ किसी आधान या पात्र मे रखे हुए तरल पदार्थ का किसी छेद या सन्धि मे से होकर बाहर निकलना। जैसे—घडा या बाल्टी चूना। २ भीगे हुए वस्त्र आदि मे से जल आदि का निकलना या बह चलना ३ घाव मे से रक्त निकल कर टपकना। ४ किसी वस्तु का ऊपरी आधार छोडकर नीचे आ गिरना। जैसे—पेड मे से फल चूना। ५ किसी चीज मे ऐसा छेद या दराज हो जाना जिससे कोई द्रव पदार्थ बूँद-बूँद करके नीचे गिरने लगे। जैसे—छत चूना, लोटा चूना। ६ स्त्री का गर्भ-पात या गर्भ-स्राव होना।
वि०[स्त्री० चूनी] जिसमे किसी चीज के चूने योग्य छेद या दरज हो। जैसे—चूना घडा, चूनी छत।

चूनादानी—स्त्री०=चूनेदानी।

चूनी—स्त्री०[स० चूर्णिका] १ गेहूँ, चावल आदि का छोटा कण। कनी।
पद—चूनी-भूसी=मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण।
२ चुन्नी। ३ बिदी पर लगाये जानेवाले सितारे। चमकी। उदा०—तिलक सवारि जो चूनी रची।—जायसी।

चूनेदानी—स्त्री०[हि० चूना+फा० दान] पान या सुरती के साथ खाने के लिए चूना रखने की छोटी डिबिया। चुनौटी।

चुनौटी†—स्त्री०=चूनेदानी।

चूमना—स०[स० चुब् पा० चुब, प्रा० चुम्ब, ब० चुचा, उ० चुबिबा, गु० चुमवूँ, सि० चुमनु] १ आदर, प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी प्रिय या स्नेह-भाजन व्यक्ति (या वस्तु) के किसी अग को होठो से स्पर्श कर कुछ चूसने की-सी क्रिया करना। जैसे—बच्चे या स्त्री का मुँह चूमना।
मुहा०—(कोई चीज) चूमकर छोड देना=अपने वश या सामर्थ्य के बाहर का काम या बात देखकर अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के विचार से उस काम या बात के प्रति अपना आदर-भाव प्रकट करते हुए उससे अलग या दूर होना। जैसे—जब भारी पत्थर दिखाई पडे तो उसे (न उठा सकने के कारण) चूमकर छोड देना चाहिए। (कहा०) **(किसी को) चूमना चाटना**=(बच्चे आदिको) बार-बार चूमना और उसका दुलार करना।
२ हिन्दुओ मे विवाह से पहले वर के भिन्न-भिन्न अगो से हरी दूब का स्पर्श कराके उस दूब पर होठ रखते हुए उक्त प्रकार की क्रिया करना।

चूमा—पु०[स० चुम्बन, हि० चूमना] चूमने की क्रिया। चुवन। चुम्मा।
पद—चूमा-चाटी (देखे)।

चूमा-चाटी—पु०[हि० चूमना+चाटना] प्रेम या स्नेह प्रकट करने के लिए बार-बार चूमने की क्रिया या भाव। (बाजारू)

चूर—वि०[स० चूर्ण] १ बहुत अधिक और बार-बार काटे, कूटे या तोडे-फोडे जाने के कारण बहुत ही छोटे-छोटे खडो या टुकडो मे बँटा हुआ। जैसे—काँच की प्याली जमीन पर गिरते ही चूर हो गई। २ जो थकावट, परिश्रम आदि के कारण अत्यन्त शिथिल हो गया हो। जैसे—दिन भर काम करते-करते सन्ध्या को हम थककर चूर हो जाते है। ३ जो किसी काम या बात मे इतना अधिक तन्मय या लीन हो जाता हो कि उसे किसी और काम या बात का ध्यान ही न रह गया हो। जैसे—बाते करने मे चूर। ४ आवेश, उमग आदि के कारण किसी भाव या विषय मे बेसुध। जैसे—(क) घमड मे चूर। (ख) नशे मे चूर।

चूरण—पु०=चूरन।
वि०=चूर्ण।

चूरन—पु०[स० चूर्ण] खूब महीन पीसी हुई पाचक ओषधियो की बुकनी। चूर्ण।

चूरनहार—पु० [स० चूर्णहार] चिकने, मोटे तथा लबे पत्तोवाली एक जगली बेल, जिसके पत्ते दवा के काम आते है।

चूरना—स० [स० चूर्ण] १ चूर करना। टुकडे-टुकडे करना। २ तोड-फोड कर नष्ट करना।
†स०=चुराना। उदा०—तुम्ह अँब रॉड लीन्ह का चूरी।—जायसी।

चूरमा—पु०[स० चूर्ण] रोटी को घी मे गूँध तथा भूनकर और चीनी मिलाकर बनाया जानेवाला व्यजन।

चूरमूर—पु०[देश०] जौ या गेहूँ की वे खूँटियाँ जो फसल कट जाने पर खेत मे बची रह जाती है।

चूरा—पु०[स० चूर्ण] १ किसी चीज के टूटे-फूटे या घिसे-पिसे बहुत छोटे-छोटे टुकडे। जैसे—शीशे का चूरा। २ काठ, धातु आदि को चीरने-रेतने आदि पर उसमे से निकले हुए छोटे-छोटे कण। बुरादा। जैसे—लकडी या लोहे का चूरा।
वि०=चूर (देखे)।
पु०[स० चूड]१ पैर या हाथ मे पहनने का कडा। २ दे० 'चूडी'।
†पु०=चिडवा।

चूरामणि—वि०, पु०=चूडामणि।

चूरी—स्त्री०[स० चूर्ण] १ बहुत महीन चूरा या चूर्ण। बुकनी। २ पूरी, रोटी आदि को चूर-चूर करके घी और चीनी मिलाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। चूरमा।

†स्त्री०=चूडी।

चूरू—पु०[हि० चूर]गाँजे के मादा पेडो से निकाली हुई एक प्रकार की चरस जो कुछ घटिया समझी जाती है।

चूर्ण—पु०[स०√चूर्ण् (चूर्ण करना)+अप्] १ किसी चीज के वे बहुत छोटे-छोटे कण जो उसे बहुत अधिक कूटने, पीसने, रेतने आदि से बनते है। चूरा। बुकनी। सफूफ। २ वैद्यक मे, औषधो आदि का वह पिसा हुआ रूप जो खाने, छिडकने आदि के काम मे आता है। बुकनी। ३ विशिष्ट रूप से उक्त प्रकार से तैयार की हुई कोई ऐसी दवा जो पाचक हो। जैसे—हिंगाष्टक चूर्ण। ४ अबीर। ५ गर्दा। धूल। ६ चूना। ७ कौडी।

वि० १ तोड-फोड या काट-चीर कर बहुत छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे लाया हुआ। चूर किया हुआ। २ सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट या शक्ति-हीन किया हुआ। जैसे—किसी का गर्व या शक्ति चूर्ण करना।

चूर्णक—पु०[स० चूर्ण+कन्] १ सत्तू। सतुआ। २ एक प्रकार का शालि धान्य। ३ एक प्रकार का वृक्ष। ४ साहित्य मे ऐसी गद्य रचना जिसमे छोटे-छोटे तथा मधुर शब्द और पद होते है।

चूर्ण-कार—वि० [स० चूर्ण√कृ (करना)+अण्, उप० स०] चूर्ण करने-वाला।

पु० १ आटा पीसने और बेचनेवाला व्यापारी। २ पराशर के अनु-सार एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति पुड्रक पुरुष और नट स्त्री से कही गई है।

चूर्ण-कुंतल—पु० [कर्म स०] गुँथे हुए बाल। लट। जुल्फ।

चूर्ण-खड—पु०[स० च० त०] ककड।

चूर्णन—पु०[स०√चूर्ण्+ल्युट्-अन] चूर्ण करना। किसी सूखी वस्तु को कूट अथवा पीसकर उसे चूर्ण का रूप देना।

चूर्ण-पारद—पु०[एक० त० स०] शिगरफ।

चूर्ण-योग—पु०[ष० त० स०] पीसकर एक मे मिलाए हुए बहुत से सुगधित पदार्थ।

चूर्णशाकाक—पु०[स० चूर्ण-शाक, उपमि० स०, √अक+अण्, उप० स०] गौर सुवर्ण नामक साग।

चूर्ण-हार—पु० [ष० त०] चूरनहार नाम की बेल।

चूर्णा—स्त्री०[स० चूर्ण+टाप्] आर्या छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे १८ गुरु और २१ लघु होते हैं।

चूर्णि—स्त्री०[स०√चूर्ण+इन्] १ पतजलि मुनि का रचा हुआ भाष्य। २ कौडी। ३ सौ कौडियो का समूह।

चूर्णिका—स्त्री० [स० चूर्ण+ठन्-इक+टाप्] १ सत्तू। सतुआ। २ किसी बहुत कठिन ग्रथ की किसी टीका या भाष्य जिससे उसके सब प्रसग या स्थल स्पष्ट हो जायँ। ३ प्राचीन साहित्य मे, गद्य की एक शैली।

चूर्णि-कृत्—पु०[स० चूर्णि√कृ (करना)+क्विप्, उप० स०] १ भाष्यकार। २ महाभाष्यकार पतजलि मुनि की एक उपाधि।

चूर्णित—भू० कृ० [स०√चूर्ण+क्त] १ जिसे कूट अथवा पीसकर चूर्ण का रूप दिया गया हो। २ अच्छी तरह तोडा-फोडा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

चूर्णि-दासी—स्त्री०[मध्य० स०] चक्की पीसनेवाली। पिसनहारी।

चूर्णी—स्त्री०[स० चूर्णि+ङीष्] १ कार्षापण नामक पुराना सिक्का। २ कपर्दिका। कौडी। ३ एक प्राचीन नदी का नाम ४ दे० 'चूर्णिका'।

चूर्मा†—पु०=चूरमा।

चूल—पु० [स०+चुल् (ऊँचा होना)+क, पृषो० दीर्घ चर+क, र=ल पृषो०] १ चोटी। शिखा। २ सिर के बाल। ३ पशुओ आदि के शरीर पर के बाल।

†पु० [?] एक प्रकार का थूहड।

†पु०=चून।

स्त्री०[देश०] १ किसी आधार पर इधर-उधर घूमनेवाली चीज के वे ऊपर और नीचे के नुकीले, पतले सिरे जो किसी छेद या गड्ढे मे जमाये या फँसाये रहते है और जिनके सहारे वह चीज इधर-उधर घूमती है। (पिवॉट) जैसे—किवाड के पल्ले की चूल। २ वह मुख्य आधार जिसके सहारे कोई काम चलता या कोई चीज ठहरी रहती हो।

मुहा०—(किसी की) चूलें ढीली करना=बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर या परिश्रम करके उसे बहुत कुछ त्रस्त, पराभूत या शिथिल करना।

चूलक—पु० [स० चूल+कन्] १ हाथी की कनपटी। २ हाथी के कान की मैल। ३ खभे का ऊपरी भाग। चूडा। ४ किसी घटना या बात की परोक्ष रूप मे मिलनेवाली सूचना।

चूलदान—पु० [स० चुल्लि-आधान] १ पाकशाला। रसोईघर। २ बैठने या चीजे आदि रखने के लिए सीढीनुमा बना हुआ स्थान। (गैलरी)

चूला—स्त्री०[स० चूग=उ=ल] १ चोटी। शिखा। २ बालाखाने का कमरा। ३ चद्रशाला।

चूलिक—पु०[स०√चुल् (उन्नत होना)+ण्वुल्-अक नि० इत्व] मैदे की पतली पूरी। लूची। लुचुई।

चूलिका—स्त्री०[स० चूलक+टाप्, इत्व] १ चूलक। २ नाटक मे वह स्थिति जिसमे किसी घटना की सूचना नेपथ्य से पात्रो द्वारा दी जाती है।

चूलिकोपनिषद्—स्त्री० [स० चूलिका-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेदीय एक उपनिषद् का नाम।

चूल्हा—पु०[स० चुल्लि ब० उ० चुल्ली चुला, बि० चूल्ह, प० चुल्ह, गु० चूलो, ने० चुलि, सि० चल्ही, मरा० चूल] [स्त्री० अल्पा० चूल्ही] मिट्टी, लोहे आदि का वह प्रसिद्ध उपकरण जिसमे चीजे पकाने या गरम करने के लिए कोयले, लकडियाँ आदि जलाई जाती है।

मुहा०—चूल्हा जलना=भोजन या रसोई बनना। जैसे—आज दो दिन बाद उनके घर चूल्हा जला है। **चूल्हा झोकना या फूँकना**=भोजन बनाने के लिए चूल्हे मे आग सुलगाना। **चूल्हा न्यौतना**=किसी के घर के सब लोगो को भोजन का निमत्रण देना। **चूल्हे मे जाना**=(क) नष्ट-भ्रष्ट होना। (ख) किसी के विनाश की ओर से उपेक्षा दिखाने के लिए प्रयुक्त होनेवाला पद। जैसे—हमारी तरफ से वह चूल्हे मे जाय। **चूल्हे मे झोकना या डालना**=बहुत ही उपेक्ष्य, तुच्छ या नगण्य समझना। **चूल्हे में पड़ना**=दे० 'चूल्हे मे जाना'। **चूल्हे से निकलकर भाड मे आना या पडना**=छोटी विपत्ति से निकल कर बडी विपत्ति मे फँसना।

चूषण—पु०[स०+चूष् (चूसना)+ल्युट्-अन] [वि० चूषणीय, चूष्य] चूसने की क्रिया या भाव।

चूषणीय—वि०[स०+चूष्√अनीयर्] जो चूसा जा सके। चूसे जाने के योग्य।

चूषा—स्त्री०[स०√चूष्+क, टाप्] हाथी की कमर मे बाँधा जानेवाला चमड़े का पट्टा।

चूष्य—वि०[स०√चूष्+ण्यत्] १ जो चूसा जा सकता हो। २ जो चूसा जाने को हो।

चूसना—स० [स० चूषण] १ किसी वस्तु विशेषत किसी फल को मुँह और होठो से लगाकर उसका रस अन्दर खीचना। जैसे—आम चूसना, अँगूठा चूसना। २ किसी वस्तु को मुँह मे डालकर तथा उसे दाँतो से दबाकर उसमे से निकलनेवाला रस पीना। जैसे—गडेरी चूसना। ३ किसी वस्तु को मुँह मे रखकर तथा जीभ से चाटते हुए उसका रस लेना। जैसे—दवा की गोली मुँह मे रखकर चूसना। ४ बच्चे का माता के स्तन का दूध पीना। ५ किसी आर्द्र अथवा गीली वस्तु मे की आर्द्रता सोख लेना। जैसे—सोखते ने सारी स्याही चूस ली है। ६ बलपूर्वक अथवा अनुचित रूप से, किसी का सत्त्व या सर्वस्व छीन, निकाल या हडप लेना। जैसे—इसे खुशामदियो ने चूस डाला है।

मुहा०—(किसी को) चूस डालना या लेना=किसी का धन खा-पका या हडपकर उसे कगाल या निर्धन कर देना।

चूहड†—पु०=चूहडा।

चूहडा†—पु०[?] [स्त्री० चूहडी] १ भगी या मेहतर। चाडाल। २ बहुत ही गदा तथा तुच्छ व्यक्ति।

चूहर—पु०=चूहडा।

चूहरी—स्त्री०=चुडिहारिन।

चूहा—पु०[फा० चुवा, बँ० चुया, उ० चुआ, प० चूहा, सि० चूहो, गु० चुवो, ने० चुहा, मरा० चुवा] [स्त्री० अल्पा० चूहिया, चूही] लबी पूछ तथा चार पैरोवाला एक प्रसिद्ध छोटा घरेलू जन्तु जो अनाज, कपडे आदि कुतरकर खा जाता है।

चूहा-दती—स्त्री०[हि० चूहा+दाँत] चाँदी या सोने की बनी हुई एक प्रकार की पहुँची जिसे स्त्रियाँ पहनती है। इसके दाँत चूहे के दाँत जैसे लबे और नुकीले होते है जो रेशम या सूत मे पिरोये रहते है।

चूहादान—पु०[हि० चूहा+फा० दान]=चूहेदानी।

चूहेदानी—स्त्री०[हि०] चूहे पकडने या फँसाने का एक प्रकार का पिंजडा।

चें—स्त्री०[अनु०] चिडियो का शब्द।

पद—चें चें=(क) व्यर्थ की बकवाद। (ख) रोने, चिल्लाने आदि का शब्द।

मुहा०—चें बोलना=ची बोलना। (दे०)

चेंगडा—पु०[अनु०] [स्त्री० चिगडी] छोटा बच्चा। शिशु।

चेंगा—पु० दे० "चेगडा"।

स्त्री० दे० 'चेनगा'।

चेंगी—स्त्री० [देश०] गाडियो मे चमडे की वह चकती अथवा सन का घेरा जिसे पैजनी और पहिए के बीच मे इसलिए पहना देते है जिससे दोनो एक दूसरे से रगड न खायँ।

चेंघी†—स्त्री०=चेगी।

चेंच—पु०[स० चचु] एक प्रकार का बरसाती साग।

चेंचर—वि०[चे चे से अनु०] चे चे करनेवाला। बकवादी।

चेंचुआ—पु०[चे चे से अनु०]चातक का बच्चा।

चेंचुला—पु० [देश०] एक प्रकार का पकवान जिसमे आटे को पूरी की तरह पतला बेलकर गोठते और चौखूँटा बनाकर कुछ दबा देते है फिर घी आदि मे तल लेते है।

चेंटियारी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का बहुत बडा जल-पक्षी जिसके पैर और चोच लबी होती है और जिसका शिकार किया जाता है।

चेंटी—स्त्री०=च्यूँटी।

चेंटुआ—पु०[हि० चिडिया] चिडिया का बच्चा।

चेंडा—पु०=चेगडा।

चेंथरी—स्त्री०[?] मस्तक का ऊपरी भाग। उदा०—अक्कल चेथरी मे चढ गई।—वृदावनलाल वर्मा।

चेंधी—स्त्री०=चेगी।

चेंपु—पु०=चेप। उदा०—दृग खजन गहि लै गयौ चितवन चेपु लगाय।—बिहारी।

चेंयें—स्त्री०[अनु०] १ चिल्लाहट। व्यर्थ की बकवाद। २ डरते या सहमते हुए कही जानेवाली बात।

चेंफ†—पु०[देश०] ऊख का छिलका।

चेउरी—स्त्री०[हि० जेवडी=रस्सी] कुम्हार का वह डोरा जिससे वह चाक पर तैयार किये हुए पात्र आदि को काटकर उतारता है।

चेक—पु०[अ०] १ आडी और बेडी पडी हुई धारियाँ। चारखाना। २ दे० 'धनादेश'।

चेकित—पु० [स० कित् (ज्ञान)+यङ्-लुक्+अच्] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ बहुत बडा ज्ञानी।

चेकितान—पु० [स०√कित्+यङ्—लुक्+चानश्] १ महादेव। शिव। २ बहुत बडा ज्ञानी। ३ केकय देश का एक राजकुमार जो महाभारत मे पाडवो की ओर से लडा था।

चेचक—स्त्री० [फा०] शीतला या माता नामक रोग।

चेचकरू—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसके मुँह पर चेचक के दाग हो।

चेजा—पु० [हि० छेद ?] सुराख । छेद।

चेजारा—पु०[?] दीवारो की चुनाई का काम करनेवाला व्यक्ति। राज।

चेट—पु० [स०√चिट् (प्रेरणा)+अच्] [स्त्री० चेटी, चेटिका] १ दूसरो की छोटी-मोटी सेवाएँ करनेवाला। टहलुआ। २ पति। स्वामी। ३ दुराचारिणी स्त्रियो को पुरुषो मे मिलानेवाला दलाल। ४ भाँड। ५ एक प्रकार की मछली।

†वि० दे० 'कनौडा'।

चेटक—पु०[स०√चिट्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० चेटकनी, चेटकी] १ दास या सेवक, विशेषत वह दास या सेवक जो किसी विशिष्ट काम मे लगाया गया हो। २ दूत। ३ इद्रजाल। जादूगरी। ४ हास्य रस का खेल या तमाशा। ५ चस्का। ६ फुरती। जल्दी। ७ चटक-मटक।

चेटकनी—स्त्री०[स० चेटक का स्त्री० रूप] गोली। दासी।

चेटका—स्त्री०[स० चिता] १ शव जलाने की चिता । २ मरघट। श्मशान।

चेटकी (किन्)—पु०[स० चेटक+इनि] १ चेटक या जादू के खेल

दिखानेवाला। जादूगर। इद्रजाली। २ तरह-तरह के कौतुक करने-वाला। कौतुकी।

स्त्री० 'चेटक' का स्त्री० रूप। दासी।

चेटवा—स्त्री० दे० 'तुरमुती'।

पु०=चेटुआ।

चेटिका—स्त्री०[स० चेटक+टाप्,इत्व] सेविका। दासी।

चेटिकी—स्त्री०[स० चेटी+कन्-ङीष्, ह्रस्व] चेटिका।

चेटिया—पु० [स० चेटक] १ चेला। शिष्य। उदा०—सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरि पद चितलाई।—सूर। २ दास। नौकर।

चेटी—स्त्री०[स० चेट+ङीष्] दासी। नौकरानी।

चेटुवा—पु०=चेटुआ।

चेड़—पु०[स०√चिड् (प्रेरणा करना)+अच्] चेट। चेटक।

चेडक—पु०=चेटक।

चेडिका—स्त्री०=चेटिका।

चेडी—स्त्री०=चेटी।

चेत्—अव्य०[स०√चित् (जानना)+विच्-लुक्] १ ऐसा हुआ तो। ऐसी अवस्था या परिस्थिति मे। अगर। २ कदाचित्।

चेत (स्)—पु०[स०√चित्+असुन्] १ चित्त की मुख्य वृत्ति, चेतना। होश। २ ज्ञान। बोध। ३ सावधानी। होशियारी। ४ याद। स्मृति। ५ चित्त। मन।

चेतक—वि०[स०√चित्+णिच्+ण्वुल्-अक] १ सचेत करनेवाला। २ चेतन।

पु० १ महाराणा प्रताप का प्रसिद्ध और परम-प्रिय घोडा जो हल्दी-घाटी की लडाई मे मारा गया था। २ दे० 'सचेतक'।

पु०=चेटक।

चेतकी—स्त्री०[स० चेतक+ङीष्] १ एक विशिष्ट प्रकार की हड या हर्रे जिस पर तीन धारियाँ होती है। २ हड। हर्रे। ३ चमेली का पौधा। ४ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

चेतत—स्त्री० दे० 'चेतना'।

चेतन—पु०[स०√चित् (जानना)+ल्यु-अन] १ आत्मा। २ जीव। प्राणी। ३ आदमी। मनुष्य। ४ परमात्मा।

वि० जिसमे चेतना या ज्ञान हो। चेतनायुक्त। 'जड' का विपर्याय। जैसे—जीव, जन्तु आदि।

चेतनकी—स्त्री० [स० चेतन√कृ (करना)+ड-ङीष्] हरीतकी। हड।

चेतनता—स्त्री०[स० चेतन+तल्—टाप्] १ चेतन होने की अवस्था गुण, धर्म या भाव। चैतन्य। सज्ञानता। २ सजीवता।

चेतनत्व—पु०[स० चेतन+त्व]=चेतनता।

चेतना—स्त्री० [स०√चित्+युच्—अन, टाप्] १ मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक (अनुभूतियो, भावो, विचारो आदि) और बाह्य (घटनाओ) तत्त्वो या बातो का अनुभव या भान होता है। होश-हवास। २ बुद्धि। समझ। ३ मनोवृत्ति, विशेषत ज्ञानमूलक मनोवृत्ति। ४ याद। स्मृति।

अ० [हि० चेत] १ सज्ञा से युक्त होना। होश मे आना। उदा०—नैन पसारि चेत धन चेती।—जायसी। २ ऐसी स्थिति मे होना कि बुरे परिणामो या बातो से बचकर अच्छी बातो की ओर प्रवृत्त हो सके। ३ सावधान या होशियार होना। ४ सोच-समझकर किसी बात की ओर ध्यान देना।

स० विचारना। समझना। जैसे—किसी का बुरा या भला चेतना।

चेतनीय—वि०[स०√चित्+अनीय] जो चेतन करने या जानने योग्य हो। चेतन का अधिकारी या पात्र।

चेतनीया—स्त्री०[स० चेतना+छ—ईय, टाप्] ऋद्धि नाम की ओषधि।

चेतन्य—पु०=चैतन्य।

चेतवनि*—स्त्री० १ =चेतावनी। २ =चितवन।

चेतव्य—वि०[स०√चि (चयन करना)√तव्यत्] जो चयन या सग्रह किये जाने के योग्य हो। सग्राह्य।

चेता—वि०[स० चेतस्] (यौ० शब्दो के अन्त मे) जिसे चेतना हो। चित्तवाला। जैसे—दृढ चेता।

†पु० १ चेतना। सज्ञा। होश। २ याद। स्मृति।

क्रि० प्र०--भूलना।—रहना।

चेताना—स० [हि० चेतना का स०] १ किसी का किसी विस्मृत बात की ओर ध्यान दिलाना। २ उपदेश देना। ३ चेतावनी देना। साव-धान करना। ४ (आग) जलाना या सुलगाना। (पू०)

चेतावनी—स्त्री० [हि० चेत+आवनी (प्रत्य०)] १ किसी को चेताने या सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात। २ भविष्य मे पुन आज्ञा, आदेश, कर्त्तव्य आदि का पालन न करने अथवा ठीक प्रकार से पालन न करने पर किसी के विरुद्ध की जानेवाली कार्रवाई की पहले से दी जानेवाली आदेशात्मक और आधिकारिक सूचना। (वार्निंग) ३ उपदेश। शिक्षा।

चेतिका—स्त्री०[स० चिति] चिता।

चेतुरग†—पु०[देश०] एक प्रकार की चिडिया।

चेतोजन्मा (न्मन्)—पु०[स० चेतस्-जन्मन्, ब० स०] कामदेव।

चेतोभव—पु०[स० चेतस्-भव, ब० स०] कामदेव।

चेतोभू—पु०[स० चेतस्+भू (होना)+क्विप्] कामदेव।

चेतोविकार—पु०[स० चेतस्-विकार, ष० त०] चित्त सबधी विकार।

चेतोहर—वि०[स० चेतस्√हृ (हरण करना)+अच्] चेतना हरने या नष्ट करनेवाला।

चेतौनी†—स्त्री०=चेतावनी।

चेत्य—वि०[स०√चित् (जानना)+ण्यत्] १ जो चेतना का विषय हो। २ जो जाना जा सके। ३ स्तुत्य।

चेदि—पु०[स०] १ आधुनिक चँदेरी के आस-पास का एक प्राचीन जनपद। शिशुपाल यही का राजा था। इसे त्रैपुरी और चैद्य भी कहते थे। २ उक्त जनपद का राजा। ३ उक्त जनपद का निवासी। ४ कौशिक मुनि के पुत्र का नाम।

चेदिक—पु०=चेदि (दे०)।

चेदि-राज—पु०[ष० त०] १ चेदि देश का राजा। २ शिशुपाल, जो चेदि देश का राजा था। ३ एक वसु जिन्हे इन्द्र से एक विमान मिला था। ये जमीन पर नही चलते थे और उसी विमान पर घूमा करते थे, इसीलिए इन्हे 'उपरिचर' भी कहते है।

चेन—स्त्री०[अ०] एक मे गुँथी हुई छोटी-छोटी कडियो की लचीली माला या शृखला। जजीर। सिकडी। जैसे—गले मे पहनने की चेन।

चेनआ†—पु०=चेना।

चेनगा—स्त्री०=चेगा (मछली)।

चेनवा (वा)—पु०=चेना (साग)।

चेना—पु०[स० चणक] १ सॉवे की जाति का एक मोटा अन्न जिसके दाने छोटे-छोटे और सुन्दर होते है। २ चेच नाम का साग।

पु०=चीना कपूर।

चेप—पु०[हि० चिप-चिपा का भाव०] १ गाढा, चिपचिपा और लसदार रस। लसीला पदार्थ। जैसे—किसी फल या वृक्ष का चेप, चेचक नामक रोग का चेप। २ चिडियो को फँसाने के लिए फैलाया या बिछाया जानेवाला लासा।

पु० दे० 'चाव' (ओषधि)।

चेपदार—वि०[हि० चेप+फा० दार] (पदार्थ) जो चिपचिपा या लसदार हो। जिसमे चेप हो। लसीला।

चेपना—स०[हि० चेपना] १ किसी वस्तु पर चेप लगाना। २ चेप लगाकर चिपकाना या सटाना।

चेपाग—पु०[देश०] नेपाल देश की एक जाति।

चेबुला—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड जिसकी छाल से चमडा सिझाया और रग बनाया जाता है।

चेय—वि० [स० चि+यत्] चयन किये जाने के योग्य। जिसका चयन किया जा सके या होने को हो।

स्त्री० वह अग्नि जो धार्मिक-विधि-पूर्वक चयन की या लाई गई हो।

चेर—पु०=चेरा (चेला)।

चेरना—पु० [हि० चीरना ?] नक्काशो की एक प्रकार की छेनी जिससे वे काठ, धातु, पत्थर आदि पर सीधी रेखा खीचते है।

चेरा—पु० [स० चेटक, प्रा० चेडा] [स्त्री० चेरी, भाव० चेराई] १ चेला। शिष्य। २ नौकर। सेवक। ३ गुलाम। दास।

†पु० [?] एक प्रकार का गलीचा जो मोटे ऊन का बुना हुआ होता है।

चेराई—स्त्री० [हि० चेरा+ई (प्रत्य०)] चेरा (अर्थात् चेला अथवा दास) होने की अवस्था या भाव।

चेरायता†—पु०=चिरायता।

चेरि—स्त्री०=चेरी।

चेरी—स्त्री० [स० चेटी] हि० 'चेरा' (चेला, दास या सेवक) का स्त्री०।

चेरु—वि० [स०√चि (चयन)+रु बा०] १ जिसे सग्रह करने का अभ्यास हो। २ सग्रह करनेवाला।

चेरुआ—पु० [देश०] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो सत्तू सानकर और पानी मे उबालकर बनाया जाता है।

चेरुई†—स्त्री० [देश०] घडे के आकार का एक प्रकार का मिट्टी का बडा बरतन।

चेरू—स्त्री० [?] १ एक प्रकार की जगली जाति जो मिरजापुर जिले तथा दक्षिण भारत मे पाई जाती है। २ उत्तरी भारत के पर्वतो मे रहनेवाला एक प्रकार का हिरन।

चेल—पु० [स०√चिल् (पहनना)+घञ्] कपडा। वस्त्र।

वि० (समासात मे) अधम।

चेलक—पु० [स०] वैदिक काल के एक मुनि।

चेलकाई†—स्त्री०=चेलहाई।

चेल-गगा—स्त्री० [उपमि० स०] गोकर्ण (आधुनिक मालाबार) प्रदेश की एक नदी।

चेल-प्रक्षालक—वि० [ष० त०] कपडे धोनेवाला।

पु० धोबी।

चेलवा†—स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

†पु०=चेला।

चेलहाई—स्त्री० [हिं० चेला+हाई (प्रत्य०)] १ चेलो का समूह। शिष्य वर्ग। २ धार्मिक गुरुओ का चारो ओर घूम-घूमकर अपने चेले बनाने अथवा चेलो से भेट, पूजा आदि लेने की प्रणाली या प्रथा।

चेला—पु० [स० चेट, दे प्रा० चेल्ल, चिल्ल] [स्त्री० चेलिन, चेली] १ वह जिसने किसी गुरु से शिक्षा पाई हो। २ वह जो धार्मिक दृष्टि से किसी से उपदेश या गुरु-मत्र लेकर उसका शिष्य बना हो। ३ वह जो किसी को आदर्श या पूज्य मानकर उसके आचरणो, सिद्धान्तो आदि का अनुकरण करता हो। शिष्य।

पद—चेले-चाटी=अनुयायियो, चेलो आदि का वर्ग या समूह।

पु० [देश०] एक प्रकार का साँप जो बगाल मे अधिकता से पाया जाता है।

स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

चेलान—पु० [स०] तरबूज की लता।

†पु० [हि० चेला] चेलो का वर्ग।

चेलाल†—पु०=चेलान (तरबूज की लता)।

चेलाशक—पु० [चेल—आशक, ष० त०]=चैलाशक।

चेलिका—स्त्री० [स० चेल+कन्—टाप्, इत्व] १ एक प्रकार का रेशमी कपडा। चिउली। २ चोली।

चेलिकाई†—स्त्री०=चेलहाई।

चेलिन, चेली—स्त्री० हि० 'चेला' का स्त्री० रूप।

चेलुक—पु० [स०√चेल् (चलना)+उक] बौद्ध भिक्षुओ का एक वर्ग।

चेल्हवा—स्त्री०=चेल्हा।

चेल्हा—स्त्री० [स० चिल=मछली] एक प्रकार की छोटी मछली।

चेवारी—पु० [देश०] दक्षिण भारत का एक प्रकार का बाँस जिसकी खमाचियो से चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाई जाती है।

चेवी—स्त्री० [स० चेव—ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (सगीत)

चेषटा*—स्त्री० दे० 'चेष्टा'।

चेष्टक—वि० [स०√चेष्टा (चेष्टा करना)+ ण्वुल्—अक] चेष्टा करनेवाला।

पु० काम-शास्त्र मे एक प्रकार का आसन या रति-बध।

चेष्टन—पु० [स०√चेष्ट् (इच्छा करना)+ल्युट्—अन] चेष्टा करने की क्रिया या भाव।

चेष्टा—स्त्री० [स०√चेष्ट्+अङ्—टाप्] १ इधर-उधर हाथ-पैर हिलाना। हिलना-डोलना। २ मन मे कोई भाव या विचार उत्पन्न होने पर बाह्य आकृति या शरीर पर होनेवाली उसकी प्रतिक्रिया। मन का भाव सूचित करनेवाली अग-भगी या शारीरिक व्यापार। ३ मन का भाव प्रकट करनेवाली मुख की आकृति।

मुहा०—चेष्टा बिगडना=मरने से कुछ पहले आकृति या चेहरा बिगड जाना।

४ वह शारीरिक आयास या व्यापार जो कोई उद्देश्य या काम पूरा करने के लिये किया जाय। कोशिश। प्रयत्न। ५ उक्त के आधार पर साहित्य मे वह क्रिया या प्रयत्न जो प्रिय को अनुरक्त करने के लिए उसके प्रति किया जाय। जैसे—प्रिय को देखकर आँखे नचाना, हँसना आदि। ६ काम। कार्य। ७ परिश्रम। मेहनत। ८ इच्छा। कामना।

चेष्टा-नाश—पु० [ष० त०] सृष्टि का अत। प्रलय।

चेष्टा-बल—पु० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे, ग्रहो का किसी विशिष्ट गति या स्थिति के अनुसार अधिक बलवान हो जाना। जैसे—उत्तरायण मे सूर्य या वक्रगामी मगल।

चेष्टित—भू० कृ० [स०√चेष्ट् (चेष्टा करना) +क्त] (काम या व्यापार) जिसके लिए चेष्टा या प्रयत्न हुआ हो।

चेस—पु० [अ०] १ लोहे का वह चौखट जिसमे मुद्रण के लिए जोडे हुए टाइप कसे जाते है। २ शतरज का खेल।

चेहरई—वि० [हि० चेहरा] हलका गुलाबी (रग)।

स्त्री० १ चित्र या मूर्ति आदि मे चेहरे की रगत या बनावट। २ चित्रकला मे चेहरे मे ऐसे रग भरना जिससे आकृति सजीव-सी जान पडे। ३ ऐसा रग जो चेहरे की रगत ठीक तरह से दिखानेवाला हो।

चेहरा—पु० [फा० चहर] १ काली खोपडी और गरदन के बीच का वह अगला गोलाकार भाग जिसमे मुँह, आँख, नाक आदि रहते है। मुखडा। वदन। २ आकृति शकल।

मुहा०—चेहरा उतरना=कष्ट, चिन्ता, रोग, लज्जा आदि के कारण मुख की आकृति का तेज या श्री से रहित या हीन हो जाना। **चेहरा तमतमाना**=क्रोध, ताप आदि के कारण चेहरे का लाल हो जाना। **चेहरा बिगाडना**=इतना अधिक मारना कि सूरत न पहचानी जाय। **(किसी का) चेहरा भाँपना**=शकल-सूरत देखकर किसी के मन का भाव ताड लेना। **चेहरा होना**=मुसलमानी शासन काल मे, लोगो का सेना मे नाम लिखाना या भरती होना।

३ कागज, मिट्टी, धातु आदि का बना हुआ किसी देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि मे चेहरे के ऊपर बाँधा या पहना जाता है।

मुहा०—चेहरा उठाना=नियमपूर्वक पूजन आदि के उपरात किसी देवी या देवता का चेहरा अपने मुँह पर बाँधना या लगाना। जैसे—काली या हनुमान का चेहरा उठाना।

४ किसी चीज का अगला या सामने का भाग।

चेहल—वि० [फा०] चालीस।

स्त्री०=चहल।

चेहलुम—पु० [फा०] १ मुसलमानो मे किसी की मृत्यु के उपरान्त का चालीसवाँ दिन। २ उक्त दिन होनेवाला धार्मिक कृत्य। ३ मुहर्रम मे ताजिया दफन होने के दिन से चालीसवाँ दिन, और उस दिन होनेवाला कृत्य।

चेहाना†—अ० [?] चकित या विस्मित होना।

चटी†—स्त्री०=च्यूँटी।

चैं—पु० [स० चय] ढेर। राशि। समूह।

विभ० [?] १ से। २ के। उदा०—देवाधिदेव चैं लाधं दूवैं। —प्रिथीराज।

चैक—पु०=चेक।

चैकित—पु० [स० चिकित +अण] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

चैकितान—वि० [स० चेकितान+अण्] चेकितान के वश मे उत्पन्न। चेकितान का वशज।

चैकित्य—पु० [स० चैकित+य्] वह जो चैकित ऋषि के गोत्र का हो।

चैत—पु० [स० चैत्र] [वि० चैती] वह चाद्र मास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पडे। फागुन के बादवाला महीना।

†पु० दे० 'चैती' (गीत)।

चैतन्य—पु० [स० चेतन+ष्यञ्] १ चेतन आत्मा। २ न्याय दर्शन के अनुसार प्राणियो मे होनेवाला ज्ञान। ३ चेतन होने का भाव। चेतनता। ४ ब्रह्म। ५ परमात्मा। ६ निसर्ग। प्रकृति। ७ बगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त श्रीकृष्ण चैतन्य जो गौराग महाप्रभु भी कहे जाते है।

वि० १ जिसमे चेतना या चेतन-शक्ति हो। सचेत। सचेतन। २ जो अपना ठीक और पूरा काम करने और सब बाते सोचने-समझने की स्थिति मे हो।

चैतन्यता—स्त्री० [स० चैतन्य+तल्—टाप्] चैतन्य। (दे०)

चैतन्य-भैरवी—स्त्री० [कर्म० स०] १ तात्रिको की एक देवी। २ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

चैता—पु० [स० चित्रित] काले रग का एक प्रकार का पक्षी।

पु० [हि० चैत] चैत मास मे गाये जानेवाले एक प्रकार के लोक-गीत जिनकी प्रत्येक पक्ति के आरभ मे 'रामा' और अत मे 'हो रामा' विशेष रूप से लगता है। जब वाद्य के साथ गाया जाता है तब इसे झलकुटिया कहते है। (उत्तर प्रदेश)

चैतावर—पु० [हि० चैता] बिहार मे चैत मास मे गाये जानेवाले लोक-गीत।

चैती—वि० [हि० चैत महीना] १ चैत-सबधी। चैत का। २ चैत महीने मे होनेवाला। जैसे—चैती गुलाब, चैती फसल।

स्त्री० १ वह फसल जो चैत मे तैयार होती और काटी जाती है। रबी। २ चैत-बैसाख मे गाया जानेवाला एक प्रकार का पूरबी चलता गाना। ३ चैत मे बोया जानेवाला जमुआ नील। ४ बत्तख की जाति की एक प्रकार की चिडिया जो प्राय चैत-बैसाख मे मैदानो मे दिखाई देती है।

चैती गौरी—स्त्री० [स० चैत्र-गौडी] चैत के महीने मे प्राय सध्या समय गाई जानेवाली षाडव सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

चैतुआ—पु० [हि० चैत महीना] चैत मे रबी की फसल काटनेवाला मजदूर।

चैत्त—वि० [स० चित्त+अण्] चित्त-सबधी। चित्त का।

पु० बौद्ध दर्शन मे विज्ञान स्कध को छोडकर शेष सब स्कध।

चैत्य—वि० [स० चित्या+अण्] चिता-सबधी। चिता का।

पु० १ घर। मकान। २ देवालय। मदिर। ३ किसी देवी-देवता के नाम पर अथवा किसी की मृत्यु या शव-दाह के स्थान पर बना हुआ भवन या चबूतरा। ४ यज्ञ-शाला। ५ गौतम बुद्ध की मूर्ति। ६ बौद्ध भिक्षुओ के रहने का मठ या विहार। ७ **बौद्ध**

भिक्षु । ८ गाँव की सीमा पर के वृक्ष। ९ पीपल । १० बेल। ११ चिता ।

चैत्यक—पु० [स० चैत्य√कै (प्रतीत होना)+क] १ अश्वत्थ। पीपल। २. राजगृह के पास का एक पुराना पर्वत ।

चैत्यतरु—पु० [कर्म० स०] १ अश्वत्थ। पीपल। २ गाँव या बस्ती का पूज्य या पवित्र बडा वृक्ष।

चैत्य-द्रुम—पु० [कर्म० स०] १ पीपल का पेड। २ अशोक का पेड।

चैत्यपाल—पु० [स० चैत्य√पाल् (रक्षा करना) +णिच्+अच्] चैत्य (घर, चबूतरे, मन्दिर आदि का) अधिकारी, प्रबधक या रक्षक।

चैत्य-मुख—पु० [ब० स०] कमडल ।

चैत्य-यज्ञ—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

चैत्य-वंदन—पु० [ष० त०] १ जैन या बौद्ध देवता। २ जैन या बौद्ध मदिर ।

चैत्य-वृक्ष—पु०=चैत्य-तरु।

चैत्य-स्थान—पु० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ बुद्धदेव की मूर्ति स्थापित हो। २ कोई पवित्र स्थान ।

चैत्र—पु० [स०√चि (चयन)+ष्ट्रन्,+अण्] १ वह महीना जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पडे। चैत। २ पुराणानुसार चित्रा नक्षत्र के गर्भ से उत्पन्न बुधग्रह का एक पुत्र जो सातो द्वीपो का स्वामी कहा गया है। ३ पुराणानुसार सात वर्ष पर्वतो मे से एक। ४ चैत्य। ५ बौद्ध भिक्षु। ६ यज्ञ-भूमि। ७ देवालय। मदिर।

वि० चित्रा नक्षत्र-सबधी । चित्रा नक्षत्र का ।

चैत्रक—पु० [स० चैत्र+कन्] चैत्र मास । चैत।

चैत्र-गौडी—स्त्री० [मध्य० स०] ओडव जाति की एक रागिनी जो चैत्र मास मे सध्या समय अथवा रात के पहले पहर मे गाई जाती है। कुछ लोग इसे श्रीराग की पुत्र-वधू मानते हैं।

चैत्र-मख—पु० [ष० त०] चैत मास के उत्सव जो प्राय मदन-सबधी होते है।

चैत्र-रथ—पु० [स० चित्ररथ+अण्] १ पुराणानुसार कुबेर का वह उपवन या बगीचा जो चित्ररथ ने बनाया था। २ एक प्राचीन ऋषि।

चैत्र-रथ्य—पु० [स० चैत्ररथ+ष्यञ्] =चैत्ररथ।

चैत्रवती—स्त्री० [स० चैत्र+मतुप्—डीष्, तत्व] एक पौराणिक नदी। (हरिवश पुराण)

चैत्रसखा—पु० [ष० त०] कामदेव ।

चैत्रावली—स्त्री० [स० चैत्र—आ√वृ (वरण करना) +णिच् +अच्—डीष्, लत्व] १ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी। २ चैत्र मास की पूर्णिमा।

चैत्रि—पु० [चैत्री+इञ्] चैत मास । चैत्र ।

चैत्रिक—पु० [चैत्र+ठक्—इक] चैत्र। चैत।

चैत्री—स्त्री० [स० चित्रा+अण्—डीष्] चैत मास की पूर्णिमा ।

चैदिक—वि० [स० चेदि+ठञ्—इक] चेदि (प्रदेश, उसके निवासी अथवा उसके राज से) सबध रखनेवाला ।

चैद्य—पु० [स० चेदि+ष्यञ्] शिशुपाल ।

वि० चेदि-सबधी । चेदि का ।

चैन—पुं० [स० शयन] १ कष्ट, थकावट, विकलता आदि का अत होने पर मिलनेवाला आराम या सुख। २ किसी प्रकार की झझट, दायित्व, भार आदि से छुटकारा होने पर मिलनेवाली मानसिक शाति।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना ।

३ आनद और सुख का भोग।

मुहा०—चैन उड़ाना=आनद करना । खूब अच्छी तरह और मनमाने ढग से आराम या सुख भोगना । आनद-मगल करना। **चैन पड़ना**=कष्ट, चिन्ता, विकलता आदि का अन्त होने पर शान्ति का अनुभूत होना । **चैन से कटना**=आनद और सुख से समय बीतना ।

पु० [स० चैलक ?] एक छोटी जाति।

चैपला—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी ।

चैयाँ—स्त्री० [?] बाँह । (ब्रज०)

चैराही†—वि० दे० 'चेहरई' (रग) ।

चैल—पु० [स० चेल+अण्] १ कपडा। वस्त्र। २ पहनने का कपडा। पोशाक।

चैलक—पु० [स० चैल+कन्] एक प्राचीन वर्ण सकर जाति जो शूद्र पिता और क्षत्रिया माता से उत्पन्न मानी जाती है।

चैला—पु० [चीरना-छीलना] कुल्हाडी से चीरी हुई लकडी का बडा टुकडा जो जलाने के काम मे आता है।

चैलाशक—पु० [स० चैल—आशक, ष० त०] कपडो मे लगनेवाले कीडो को खानेवाला एक छोटा कीडा।

चैलिक—पु० [स० चैल+ठक्—इक] कपडे का टुकडा।

चैली—स्त्री० [हि० चैला का स्त्री० अल्पा० रूप] १ रँदने पर निकलनेवाले लकडी के पतले-पतले टुकडे जो जलाने के काम आते है। २ गरमी के कारण नाक से निकलनेवाला जमे हुए खून का थक्का ।

चैलेंज—पु० [अ०] लडाई-भिडाई, सघर्ष आदि के लिए ललकारने की क्रिया या भाव । ललकार।

चोक—स्त्री० [?] वह चिह्न जो दाँत गडाते हुए चूमने के समय किसी के गाल पर पड जाता है ।

चोकना—स० [हि० चोका] १ स्तन से मुँह लगा कर दूध पीना। २ पानी पीना ।

चोकर†—पु०=चोकर ।

चोका†—पु० [देश०] चूसने की क्रिया या भाव।

मुहा०—चोका-पीना=बच्चो का माँ का स्तन-पान करना ।

चोखना†—स०=चोखना ।

चोगा—पु० [स० चतुर अगुलि ? बँ० चुगी, उ० चुगा] [स्त्री० अल्पा० चोगी] १ बाँस का वह खोखला टुकडा जिसका मुँह तो ऊपर से खुला हो और पेदा नीचेवाली गाँठ के कारण बद हो। २ टीन, बाँस आदि की वह नली जिसमे कागज-पत्र रखे जाते है।

चोगी—स्त्री० [हि० चोगा का स्त्री० अल्पा०] भाथी मे की वह नली जिससे होकर हवा निकलती है ।

चोच—स्त्री० [स० चचु] १ पक्षियो के मुँह का नुकीला और प्राय लबोतरा भाग जिसमे उनके जबडो पर सीग की तरह का कडा आवरण रहता है । जैसे—कबूतर, चील या तोते की चोच। २ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा व्यक्ति या उसका मुँह जो कोई अनुचित, असगत या विरुद्ध बात कहने को हो या कहता हो।

मुहा०—चोच बद करना या कराना=भय आदि के कारण स्वय चुप हो जाना अथवा भय दिखाकर किसी को कुछ कहने से रोकना ।

(किसी से दो-दो) चोच होना=कुछ हलकी कहा-सुनी या झडप हो जाना।

चोंचला—पु०=चोचला।

चोटना—स० [हिं० चिकोटी या अनु०] हाथ की चुटकी से कोई चीज तोडना। जैसे—फूल चोटना।

चोटली—स्त्री० [?] सफेद घुंघची।

चोंडा—पु० [स० चूडा] १ स्त्रियो के सिर के बाल। झोटा। २ मस्तक। सिर।

पद—(किसी के) चोडे पर चढ़कर=किसी की परवाह न करते हुए उसके सामने होकर। सिर पर चढ कर। जैसे—हमे जो कुछ करना होगा, वह हम उनके चोडे पर चढकर करेगे। (स्त्रियाँ)

पु० [स० चूडा] वह कच्चा कुआँ जिससे खेती की सिंचाई की जाती है।

चोडी—स्त्री० [हिं० चोडा = सिर ?] स्त्रियो के पहनने की साडी।

चोथ—पु० [अनु०] परिमाण के विचार से उतना गोबर जितना एक बार मे गाय, भैस आदि ने किया या गिराया हो।

स्त्री० [हिं० चोथना] चोथने की क्रिया या भाव।

चोथना—स० [अनु०] १ किसी चीज मे से उसका कुछ अश बुरी तरह से काट, नोच या बकोटकर निकालना। २ लाक्षणिक रूप मे किसी का धन बुरी तरह से और जबरदस्ती उससे लेना।

चोंधना—स० [अनु०] १ पक्षियो का दाने चुगना। २ दे० 'चुंधना'।

चोंधर—वि० [स० चक्षुरध्र] १ बहुत छोटी आँखोवाला (व्यक्ति या पशु)। २ जिसे अपेक्षया बहुत कम दिखाई देता हो। ३ बेवकूफ। मूर्ख। (अवज्ञा और हास्य मे)

चोंप—पु०=चोप।

स्त्री०=चोब।

चोंपी† —स्त्री०=चेप।

चोंहका†—पु० [स० चूषण] १ गाय, बकरी, भैस आदि को दुहने से पहले उनके बच्चो को चुसाया जानेवाला दूध। २ इस प्रकार दूध चुसाने की क्रिया या भाव। ३ होठ लगाकर किसी प्रकार का रस चूसने की क्रिया या भाव।

चोआ—पु० [हिं० चुआना=टपकाना] १ चुआकर गिराई, निकाली या रखी हुई चीज। २ वह छोटा और हलका दाँव जो जुआरी लोग किसी दूसरे जुआरी के दाँव पर उसके साथ मिलकर हार-जीत के लिए लगाते है। ३ वह ककड पत्थर जो तराजू के पल्ले या बटखरे की कमी पूरी करने के लिए पल्ले पर रखा जाता है। ४ अनेक प्रकार के सुगधित पदार्थों को पकाकर निकाला हुआ रस जिसकी गिनती गन्ध द्रव्यो मे होती है। ५ दे० 'चोटा'।

चोइँ—स्त्री० [देश०] १ मछली आदि कुछ जल-जतुओ की त्वचा पर होनेवाला गोल चितकबरा तथा चमकीला छिलका। २ दाल आदि का छिलका।

चोई—स्त्री०=चोई।

चोक—पु० [स०√कुच् (रोकना)+क्विप्, क=च, पृषो०, चुक—अच्] भडभाँड या सत्यानासी नामक पौधे की जड जो दवा के काम आती है।

चोकर—पु० [हिं० चून=आटा+कराई=छिलका] गेहूँ, जौ आदि के आटे को छानने पर उसमे से बचनेवाला छिलके का अश जो दरदरा तथा मोटे कणो के रूप मे होता है।

चोका—पु० दे० 'चोहका'। उदा०—चोका लाई अधर रस लेही।—जायसी।

वि० [स्त्री० चोकी]=चोखा। उदा०—चोकी मेरी देह, तन सँजोग कोइ लाल कौ।—सेनापति।

चोकी—स्त्री०=चौकी।

चोक्ष—वि० [स०√चक्ष् (प्रशस्त होना) +घञ्,—पृषो० सिद्धि] १ पवित्र। शुद्ध। २ चतुर। दक्ष। ३ तीक्ष्ण। तेज। ४ प्रशसित।

चोख—पु० [हिं० चोखा] चोखे अर्थात् प्रखर होने की अवस्था या भाव। चोखापन।

वि०=चोखा।

†पु० [स० चक्षु] आँख। (बगाल)

चोखना—स० [स० चूषण] प्राणियो विशेषत पशुओ का अपनी माता के थन मे मुँह लगाकर उसका दूध पीना। उदा०—नियरावनि चोखनि मन ही मे झुकि बछियान छबीली।—ललित किशोरी।

चोखनि, चोखनी—स्त्री० [हिं० चोखना] चोखने अर्थात स्तन-पान करने की क्रिया या भाव।

चोखा—वि० [स०, चोक्ष, पा० प्रा० चोख, मरा० गु० ब० चोख, आ उ० प० चोखा] १ तेज या पैनी धारवाला। जैसे—चोखा चाकू। २ जिसमे किसी प्रकार का खोट या मिलावट न हो। जैसे—चोखा घी, चोखा सोना। ३ व्यवहार आदि मे खरा और साफ। जैसे—चोखा असामी। ४ औरो की तुलना मे बहुत अच्छा या बढकर। जैसे—इस मामले मे तो तुम्ही सब से चोखे रहे। ५ सब प्रकार से अच्छा और ठीक। उदा०—चला बिमान तहाँ ते चोखा।—तुलसी। †६ मात्रा, मान आदि मे अधिक।

पु० [?] १ एक प्रकार का चटपटा व्यजन या सालन जो आलू या बैंगन को उबाल या भूनकर बनाया जाता है। भरता। भुरता। २ पकाया हुआ चावल। भात। (राज०)

चोखाई—स्त्री० [हिं० चोखना] चोखने या चोखाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। चुसाई।

†स्त्री०=चोखापन।

चोखाना—स० [हिं० चोखना] १ बछडो आदि को चोखने अर्थात् स्तन-पान करने मे प्रवृत्त करना। २ स्तन-पान कराना।

†३ दूध दुहना। ४ धार चोखी या तेज करना। जैसे—चाकू चोखाना।

†अ० १ चोखा अर्थात् स्तन-पान किया जाना। २ दूहा जाना। ३ धार का चोखा या तेज किया जाना।

चोगर—पु० [फा० चुगद] उल्लू की-सी आँखोवाला घोडा।

चोगा—पु० [तु० चुगड] एक प्रकार का पहनावा जो घुटनो तक लबा और ढीला-ढाला होता है। लबादा।

चोगान—पु०=चौगान।

चोच—पु० [स०√कुच् (रोकना) +अच्, पृषो० क=च] १ छाल। २ चमडा। त्वचा। ३ तेजपत्ता। ४ दालचीनी। ५ नारियल। ६ कदली-फल। केला।

चोचक—पु० [सं० चोच+कन्] छाल। वल्कल।

चोचलहाई—स्त्री० [हिं० चोचला+हाई (प्रत्य०)] (स्त्री) जो चोचले करती या दिखाती हो।

चोचला—पु० [अनु०] १ अल्हडपन या जवानी की उमग मे किसी को खिझाने, रिझाने आदि के उद्देश्य से दिखाई जानेवाली ऐसी अग-भगी, कही या की जानेवाली बात या किया जाने वाला व्यवहार जिसकी गिनती निकृष्ट प्रकार के हाव-भावो मे होती है। नखरा।

मुहा०—चोचले दिखाना या बघारना=दूसरो को खिझाने, रिझाने आदि के लिए ऐसी अग-भगी, हाव-भाव दिखलाना अथवा चेष्टा या बात करना जो प्रिय या रुचिकर न लगे। जैसे—चोचले मत बघारो, सीधी तरह से बाते करो।

२ ऐसा कार्य जो अपनी आन-बान दिखाकर किसी को विशेष रूप से प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। जैसे—ये सब अमीरो के चोचले है।

चोज—पु० [सं० चोद्य ?] १ किसी चुटीली उक्ति या बात मे का वह चमत्कारपूर्ण अश या तत्त्व जिससे लोग प्रसन्न और मुग्ध हो जायँ। अनूठी, सुन्दर और हास्य की बात। २ ऐसी बात जिसमे उक्त प्रकार का चमत्कारपूर्ण तत्त्व दिखाई देता हो।

पद—चोज का=अनोखा, दुष्प्राप्य और बढिया। **उदा०—**चोज के चदन खोज खुले जहँ ओछे उरोज रहे उर मे घिसि। —देव।

चोट—स्त्री० [सं० चुट=काटना] १ किसी धारदार वस्तु के प्रबल या वेगपूर्ण आघात से शरीर के किसी अग के कट, फट अथवा छिल जाने से होनेवाला घाव। जैसे—तलवार या पत्थर की चोट। २ अस्त्र-शस्त्र आदि के द्वारा किसी जीव पर किया जानेवाला लक्ष्य-भेदन या वार का आघात।

मुहा०—चोट खाली जाना=आघात या वार का चूक जाना। वार खाली जाना **(किसी की) चोट बचाना**=किसी के आघात या प्रहार को युक्ति से विफल करना। **(आपस मे) चोटें चलना**=दोनो पक्षो का एक दूसरे पर मौखिक रूप से आघात या वार करना।

३ गिरने-पडने, टकराने, ठोकर खाने अथवा किसी वस्तु के शरीर पर आ गिरने से होनेवाला बाहरी या भीतरी घाव, विकृति या सूजन।

मुहा०—चोट उभरना=किसी ऐसी पुरानी चोट मे फिर से पीडा, सूजन आदि उत्पन्न होना जो बीच मे अच्छी या ठीक हो गई हो। **चोट खाना**=किसी आघात या प्रहार के फल-स्वरूप कष्टदायक या विकृतिकारक परिणाम, प्रभाव या फल से युक्त होना।

४ किसी हिंसक जतु या पशु द्वारा किया हुआ आघात, वार या प्रहार जो घातक भी हो सकता है। जैसे—शेर या साप छेडने पर अवश्य चोट करते है। ५ कोई ठोस चीज तोडने, फोडने या चिपटी करने के लिए उस पर किया जानेवाला किसी भारी औजार का आघात। जैसे—पत्थर या लोहे पर की जानेवाली घन या हथौडे की चोट। ६ लाक्षणिक रूप मे, (क) किसी का कोई ऐसा कथन जिससे कोई अपने को अपमानित या लज्जित समझने लगे। (ख) कोई ऐसी घटना जिससे किसी की कोई बहुत बडी क्षति या हानि हुई हो अथवा (ग) अनिष्ट आदि के कारण होनेवाला कष्ट जिसके परिणाम-स्वरूप मनुष्य चिंतित, दुखी या विकल होता हो। ७ कपट या छलपूर्वक किया जानेवाला कोई ऐसा काम या बात जिससे किसी का कुछ अनिष्ट हो। दगा। धोखा। विश्वासघात। जैसे—तुमने बहुत बुरे समय मे मेरा साथ छोड कर मुझ पर चोट की है। ८ आक्रमण, आघात, प्रहार आदि के रूप मे होनेवाले कामो या बातो के सबध मे प्रत्येक बार होनेवाली उक्त प्रकार की क्रिया। जैसे—एक चोट कुश्ती, दो चोट दगा-फसाद, चार चोट लडाई-झगडा आदि। ९ वह जो किसी की तुलना मे बराबरी या मुकाबले का ठहरता या सिद्ध होता हो। उदा०—उज्ज्वल, अखड खड सातएँ महल महामडल चबारो चदमडल की चोट ही।—देव।

मुहा०—(किसी की) चोट का=तुलना या बराबरी का। जोड या मुकाबले का।

चोटइल†—वि०=चुटैल।

चोटना-पोटना*—स० [हिं० चोटी-पोटी] १ रूठे हुए को मनाना। २ फुसलाना।

अ० खशामद अथवा चापलूसी की बाते करना।

चोटहा†—वि० [हिं० चोट+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० चोटही] १ जिस पर चोट का निशान हो। २ (व्यक्ति या जीव-जतु) जिसे चोट लगी हो। ३ (अग) जिस पर चोट का दाग या निशान बना हुआ हो। ४ चोट करनेवाला।

चोटा—पु० [हिं० चोआ] गुड से चीनी बनाते समय उसे छानने पर निकला हुआ गुड का पसेव। चोआ। माठ।

चोटाना†—अ० [हिं० चोट] चोट से युक्त होना। चोट खाना। †स० चोट या प्रहार करना।

चोटा-पोटा—वि० [?] [स्त्री० चोटी-पोटी] खुशामद से भरा हुआ (कथन)। चिकनी-चुपडी (बात-चीत)। उदा०—हमसो सदा दुरावति सो यह बात कहत मुख चोटी-पोटी।—सूर।

चोटार—वि०[हिं० चोट+आर (प्रत्य०)] १ (जीव) जो चोट करता या कर सकता हो। २ चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना—अ० [हिं० चोट] चोट पहुँचाना। चुटैल करना।

चोटिका—स्त्री० [सं०√चट (घेरदार) + अण्-ङीप्-कन्-टाप्] लहँगा।

चोटिया—स्त्री०=चुटिया (चोटी)।

चोटियाना—स० [हिं० चोटी] १ मारने पीटने आदि के लिए किसी की चोटी या सिर के बाल हाथ से पकडना। २ किसी को इस प्रकार पकडकर तग करना या दबाना कि मानो उसकी चोटी अपने हाथ मे आ गई हो।

अ० [हिं० चोटी] स्त्रियो का चोटी करना या वेणी बाँधना।

चोटियाला†—वि० [हिं० चोटी] [स्त्री० चोटियाली] सिर पर के बडे-बडे बालोवाला। उदा०—चोटियाली कूदै चौसठि चाचरि।—प्रिथीराज।

पु० पिशाच, प्रेत, भूत आदि।

चोटी—स्त्री० [सं० चूडा ? प्रा० प० चोटी, गु० मरा० चोटी, चोटली] १ स्त्रियो के सिर के वे बडे और लबे बाल जो कई प्रकार से लट या लटो के रूप मे गूँथे रहते है। वेणी।

मुहा०—चोटी करना=स्त्रियो का सिर के बाल गूथ और सँवारकर उनकी लट या वेणी बनाना।

२ हिन्दू पुरुषो मे सिर के ऊपर पिछले भाग के मध्य मे थोडे से

बचाकर रखे हुए वे लबे बाल जो हिन्दुत्व का एक मुख्य चिह्न होता है। चुदी। शिखा।

पद—चोटीवाला। (देखे)

मुहा०—चोटी कटाना=सिर मुँडाकर साधु-सन्यासी या ससार-त्यागी होना। **(किसी के नीचे) चोटी दबना**=ऐसी स्थिति मे होना कि किसी से दबकर रहना पडे। जैसे— जब तक उनके नीचे तुम्हारी चोटी दबी है, तब तक तुम उनके विरुद्ध नही जा सकते। **(किसी की) चोटी (किसी के) हाथ मे होना**=किसी का किसी दूसरे के अधीन या वश मे होना। जैसे—उनकी चोटी तो हमारे हाथ मे है। वे हम से बचकर कहाँ जायँगे। **चोटी रखना**=सिर के पिछले मध्य भाग मे थोडे से बाल आस-पास के बालो से अलग रखकर बढाना जो हिन्दुत्व का चिह्न है। शिखा धारण करना।

३ प्राय काले धागो या सूतो का वह लबा लच्छा जो स्त्रियाँ अपने सिर के बालो के साथ गूँथकर उन्हे बाँधने और अपनी चोटी लबी तथा सुन्दर बनाकर दिखाने के काम मे लाती है। ४ पान के आकार का वह गहना जो स्त्रियाँ सिर के बालो की जूडे मे खोसती या अपनी चोटी के नीचे लटकाती है। ५ कुछ विशिष्ट पक्षियो के सिर पर ऊपर उठे हुए कुछ लबे पर या बाल। कलगी। जैसे—मुरगे या मोर की चोटी। ६ किसी बडी या भारी चीज का सब से ऊँचा और ऊपरी भाग। जैसे—पहाड या महल की चोटी। ७ किसी चीज का किसी ओर निकला हुआ कुछ नुकीला और लबा सिरा। जैसे—नीलम, पन्ने या हीरे की चोटी। ८ किसी प्रकार के उतार-चढाव या ऊपरी मोड का सब से ऊँचा और ऊपरी अश या भाग। जैसे—पूस-माघ मे गेहूँ का भाव चोटी पर पहुँच जाता है।

पद—चोटी का=अपने वर्ग मे सब से अच्छा, बढकर या श्रेष्ठ। सर्वोत्तम। जैसे—चोटी का ग्रन्थ, चोटी का पडित या विद्वान्।

चोटीवाला—पु० [हि०] जिन, प्रेत या भूत जिसके सबध मे यह प्रवाद है कि उसकी चोटी बहुत लबी होती है। (स्त्रियाँ)

विशेष—प्राय स्त्रियाँ भूत-प्रेत आदि से बहुत डरती है और उनका नाम तक नही लेना चाहती, इसलिए वे इसी नाम से उसकी चर्चा करती है।

चोट्टा†—पु० [हि० चोर] [स्त्री० चोट्टी, भाव० चोट्टापन] वह व्यक्ति जो छोटी-मोटी चीजे दूसरो के घरो से उनकी नजरे बचाकर उठा लाता हो। छोटे दरजे का चोर।

चोड़—पु० [स०√चुड् (सवरण करना)+अच्] १ उत्तरीय वस्त्र। २ चोल देश।

चोडक—पु० [स० चोड+कन्] पहनने का एक कपडा।

चोडा—पु० [स० चोड+टाप्] बडी गोरखमुडी।

चोडी—स्त्री० [स० चोड+डीष्] स्त्रियो के पहनने की साडी।

चोढ़†—पु० [?] उत्साह। उमग।

चोतक—पु० [स० चुत् (टपकना)+ण्वुल्—अक] १ दालचीनी। २ छाल। वल्कल।

चोथ—पु०=चोथ।

†स्त्री०=चौथ। (गुजरात)

चोथना† स०=चोथना।

चोद—पु० [स०√चुद् (प्रेरणा करना)+णिच्)+अच्] १ चाबुक। २ ऐसी लबी लकडी जिसके सिरे पर नुकीला लोहा लगा हो।

चोदक—वि० [स०√चुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] चोदना या प्रेरणा करनेवाला।

चोदना—स्त्री०[स० √चुद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ वह वाक्य जिसमे कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २ प्रेरणा। ३ प्रयत्न।

स० पुरुष का स्त्री के साथ सभोग करना। स्त्री-प्रसग करना।

चोदू—पु०[हि० चोदना] चोदने अर्थात् प्रसग या सभोग करनेवाला।

चोद्दू†—वि०[हि० चोदना]=चूतिया। (राज०)

चोद्य—वि०[स०√चुद्+णिच्+यत्] जो चोदना या प्रेरणा का उपयुक्त पात्र या विषय हो।

पु०१ प्रश्न। सवाल। २ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद मे पूर्व पक्ष।

चोप—पु०[हि० चाव] १ उत्साह और उमग से भरी हुई कामना या वासना। चाव।

क्रि० प्र०—चढना।

२ उत्साह या उमग बढानेवाला काम, चीज या बात। ३ उत्तेजना। बढावा।

क्रि० प्र०—देना।

पु०[हि० चूना=टपकना] कच्चे आम के ऊपरी भाग का वह रस जो शरीर मे लगने पर खुजली, जलन, फुन्सी आदि उत्पन्न करता है।

†स्त्री०[फा० चोब] १ दे० 'चोब'। २ डके पर लकडी से किया जानेवाला आघात। डके की चोट। ३ इस प्रकार उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चोपदार†—पु०=चोबदार।

चोपी—वि०[हि० चोप] १ जिसे किसी बात का बहुत अधिक चाव या चाह हो। २ जिसमे विशेष उत्साह या उमग हो।

स्त्री०=चेप (लसीला पदार्थ)। जैसे—आम की चोपी।

चोब—स्त्री०[फा०] १ शामियाना खडा करने का बडा खभा या बाँस। २ वह पतली लकडी या खमाची जिससे नगाडे पर आघात किया जाता है। ३ मोटा डडा विशेषत वह मोटा डडा जिस पर सोने या चाँदी का पत्तर चढा या लगा हो।

चोबकारी—स्त्री०[फा०] जरदोजी।

चोबचीनी—स्त्री०[फा० चोब+हि० चीनी (चीन देश का)] चीन देश मे होनेवाली एक लता जिसकी जड औषध के काम आती है।

चोबदार—पु०[फा०] [भाव० चोबदारी] वह दरबान या नौकर जिसके हाथ मे चोब (मोटा डडा) रहता हो।

चोबदारी—स्त्री०[फा०] चोबदार का काम या पद।

चोबा—पु०[फा० चोब] १ उबाले हुए चावल। भात। २ दे० 'चोब'।

†पु०=चौबे। (पजाब)

चोबी—वि०[फा०] लकडी का बना हुआ। जैसे—चोबी इमारत या मकान।

चोभ—स्त्री०[हि० चुभना] १ चुभने की क्रिया या भाव। २ चुभनेवाली कोई वस्तु या बात।

चोभना—स०=चुभाना।

चोभा—पु०[हि०चोभना] १ चोभने या चुभाने की क्रिया या भाव। २ लोहे की सूइयोवाला वह दस्ता जिससे मुरब्बा बनाने के लिए आँवला, आम, पेठे के टुकडे आदि कोचे जाते है। ३ दवाओ की बँधी हुई वह पोटली जिससे पीडित अग मुख्यत आँख सेकी जाती है। भाथा। ४ उक्त पोटली से शरीर का कोई पीडित अग सेकने की क्रिया या भाव।

चोभाकारी—स्त्री०[हि० चोभना+फा० कारी=काम] पत्थरो, रत्नो आदि का किसी चीज पर होनेवाला ऐसा जडाव जो किसी तल मे चुभा या धँसाकर कुछ उभारदार रूप मे बनाया गया हो।

चोभाना†—स० = चुभाना।

चोम—स्त्री०[अ० जोम] १ उमग। जोश। २ गर्व। घमड। (राज०)

चोया†—पु० = चोआ।

चोर—पु०[स०√चुर (चुराना)+णिच्+अच, प्रा०, पा०, गुज०, प० बँ०, मरा०, चोर, सि० चोरु, सिह० होर] १ वह जो लोगो की आँख बचाकर दूसरो की कोई चीज अपने उपयोग के लिए उठा ले जाता या रख लेता हो। बिना किसी को जतलाये हुए पराई चीज लेकर उस पर अपना अधिकार या स्वामित्व स्थापित करनेवाला व्यक्ति। चुराने या चोरी करनेवाला। तस्कर। जैसे—(क) चोर उनके घर मे घुस कर सब माल-असबाब उठा ले गये। (ख) आजकल नगर मे चोरो का ऐसा दल आया है जो मकान किराये पर लेकर आस-पास की दूकानो या मकानो मे चोरी करता है।

मुहा०—(कहीं या किसी के घर) चोर पडना =चोर या चोरो का आकर बहुत-सी चीजे चुरा ले जाना।

कहा०—चोर के घर (या चोर पर) मोर पडना=(क) एक चोर के घर पहुँचकर दूसरे चोर का चीजे चुराना या चोरी करना। (ख) किसी दुष्ट या धूर्त्त के साथ उससे भी बडे दुष्ट या धूर्त्त के द्वारा दुष्टता या धूर्त्तता का व्यवहार होना।

२ लडको के खेल मे, वह लडका जो अपना दाँव हार जाता है, और इसीलिए दूसरे लडके जिससे कोई दौड-धूप या परिश्रम का काम कराके अपना दाँव लेते या बदला चुकाते है।

विशेष—ऐसे लडके को प्राय किसी दूसरे लडके को छूकर चोर बनाना या अपनी पीठ पर चढाकर कुछ दूर पहुँचाना या ले जाना पडता है।

३ क्षत या घाव के सबध मे, वह दूषित और विषाक्त अश, तत्त्व या विकार जो किसी प्रकार अन्दर या नीचे छिपा या दबा रह गया हो और आगे चलकर दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता हो। जैसे—इस घाव का मुँह ऊपर से तो बद हो गया है, पर अभी इसके अन्दर चोर है। (आशय यह कि इसका मुँह फिर से खुलकर दूषित अश या विकार निकलना चाहिए) ४ किसी तल मे वह थोडा-सा या सूक्ष्म अश जो ठीक तरह से बनने, भरने आदि से छूट गया हो, और इसीलिए जो दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता या दोष माना जाता हो। जैसे—(क) जब छत बनने मे कही चोर रह जाता है, तभी वह चूती या टपकती है। (ख) मेहदी हाथ मे ठीक तरह से नही लगी है, कई जगह चोर रह गया है। ५ ताश, गजीफे आदि के खेलो मे, वह हलका पत्ता जो किसी खिलाडी के हाथ मे इसलिए रुका रहता है कि इसे चलने पर उसकी हार की सम्भावना होती है।

२—३६

पद—गुलाम चोर=ताश का एक विशिष्ट खेल जिसमे कोई एक पत्ता चोर बनाकर अलग कर दिया जाता है। खेल के अत मे जिसके हाथ मे उस पत्ते के जोड का दूसरा पत्ता बच रहता है, वही खिलाडी चोर कहलाता है।

६ लाक्षणिक रूप मे, मन मे उत्पन्न होने या रहनेवाला कोई अनुचित और कपटपूर्ण उद्देश्य, भाव या विचार। जैसे—यदि तुम उनसे मिलकर सब बातो का निपटारा नही करना चाहते तो तुम्हारे मन मे जरूर कोई चोर है। ७ चोरक नाम का गध द्रव्य। ८ रहस्य सप्रदाय मे, (क) काम, क्रोध, मोह आदि विकार। (ख) मृत्यु।

वि० (क) समस्त पदो मे उत्तर पद के रूप मे और व्यक्तियो के सबध मे—१ किसी की कोई चीज चुरानेवाला। चोरी करनेवाला। जैसे—किताब चोर, जूता-चोर। २ किसी प्रकार कुछ चुराने, छिपाने, दबा रखने या सामने न करनेवाला। जैसे—मुँहचोर=जल्दी किसी को मुँह न दिखानेवाला। ३ कर्त्तव्यपालन, कष्ट, परिश्रम आदि से अपने आप को बचानेवाला। (ख) समस्त पदो मे पूर्वपद के रूप मे पदार्थो आदि के सबध मे—१ जो इस प्रकार आड मे छिपा हुआ हो कि ऊपर या बाहर से देखने पर जल्दी दिखाई न दे, जिसका सब लोगो को सहसा पता न चलता हो या जिसे साधारण लोग न जानते हो। जैसे—अलमारी या सदूक मे का चोर-खाना या चोर-ताला, किसी बडी बस्ती मे की चोर गली, किसी तख्ते मे का चोर छेद, किसी बडे मकान मे का चोर दरवाजा या चोर सीढ़ी आदि। २ (स्थान) जहाँ या जिसमे कोई ऐसा काम या बात होती हो जो सबके सामने या खुले आम न हो सकती हो, बल्कि चुरा-छिपाकर की जाती हो। जैसे—चोरबाजार, चोर महल आदि। ३ (तल या स्थान) जो ऊपर से देखने पर तो बिलकुल ठीक और पक्का जान पडे, परन्तु जिसके नीचे कुछ पोलापन हो और इसीलिए जो थोड़ा-सा भार पड़ने पर या सहज मे दब अथवा धँस सकता हो। जैसे—चोर जमीन, चोर बालू या चोर मिट्टी आदि। ४ शरीर या उसके किसी अग के सबध मे, जिसकी क्रिया, शक्ति, स्वरूप आदि का बाहर से देखने पर अनुमान न हो सकता हो या पूरा पता न चलता हो। जैसे—चोर थन, चोर पेट, चोर बदन आदि। ५ अनाज के दानो के सबध मे, जो साधारण से बहुत अधिक कडा हो और इसलिए कूटने-पीसने आदि पर भी ज्यो का त्यो बचा या बना रहता हो और टूटता या पिसता न हो। जैसे—चोर ऊडद, चोर मटर, चोर मूँग आदि।

चोर-कटक—पु० [कर्म०स०] चोरक नाम का गध द्रव्य।

चोरक—पु०[स० चोर+कन] १ एक प्रकार का गठिवन जिसकी गणना गध द्रव्यो मे होती है। २ असबरग जिसकी गिनती गध द्रव्यो मे होती है।

चोरकट—पु०[हि० चोर+कट=काटनेवाला] उचक्का। चोट्टा।

चोरखाना—पद पु०[हि०] अलमारी, सदूक आदि मे का ऐसा छिपा हुआ खाना, घर या विभाग जो ऊपर से देखने पर सहसा न दिखाई देता हो।

चोर खिड़की—स्त्री०[हि०] छोटा चोर दरवाजा। (दे० 'चोर दरवाजा')

चोर-गणेश—पु० [कर्म० स०] तान्त्रिको के एक गणेश जिनके विषय मे कहा जाता है कि यदि जप करने के समय हाथ की उँगलियो मे सधि रह जाय, तो वे उसका फल चुरा या हरण कर लेते है।

चोरगली—स्त्री०[हिं०] १ नगर या बस्ती की वह छोटी और तग गली जिसका पता सब लोगो को न हो। २ पाजामे का वह भाग जो दोनो जाँघो के बीच मे पडता है।

चोर-चकार—पु०[हिं० चोर+अनु० चकार] १ चोर। २ उचक्का। चोट्टा।

चोर-चमार—वि०[हिं०] [भाव० चोरी-चमारी] (व्यक्ति) जो चोरी आदि निन्दनीय तथा निकृष्ट काम करता हो।

चोर-छेद—पद पु०[हिं०] दो चीजो के बीच का बहुत छोटा और छिपा हुआ अवकाश। सधि। दरज।

चोर-जमीन—स्त्री०[हिं० चोर+जमीन] ऐसी जमीन जो ऊपर से देखने मे तो ठस या पक्की जान पडे, पर नीचे से पोली हो और जो भार पडते ही नीचे धँस या दब जाय।

चोरटा†—वि० [हिं० चोर+टा (प्रत्य०)] [स्त्री० चोरटी] १ चोरी करने या चुरानेवाला। उदा०—लिये जाति चित चोरटी वह गोरटी नारि।—बिहारी। २ दे० 'चोट्टा'।

पु० चोर।

चोर-ताला—पु० [हिं०] ऐसा ताला जो ऊपर से सहसा दिखाई न देता हो, अथवा साधारण से भिन्न और किसी विशिष्ट युक्ति से खुलता हो।

चोर-थन— पु०[हिं०] गौओ-भैसो का ऐसा थन जिसके अदर दूध बचा रह जाता या बचा रह सकता हो।

वि०[हिं०] (गौ, बकरी या भैस) जो अपने बच्चे के लिए थन मे कुछ दूध चुरा या बचा रखे, दुही जाने पर पूरा या सारा दूध न दे।

चोर-दत—पु०[हिं०] वह दाँत जो बत्तीस दाँतो के अतिरिक्त निकलता और निकलने के समय बहुत कष्ट देता है।

चोर-दरवाजा—पु०[हिं०] किसी महल या बडे मकान मे प्राय पिछवाडे की ओर का वह छोटा दरवाजा जो आड मे हो और जिसका पता सब लोगो को न हो।

चोर-द्वार—पु०=चोर-दरवाजा।

चोरना*—स०=चुराना।

चोर-पट्टा—पु०[हिं० चोर+पाट=सन] एक प्रकार का जहरीला पौधा जिसके पत्तो और डठलो पर बहुत जहरीले रोएँ होते है जो शरीर मे लगने से सूजन पैदा करते है। क्षूरत।

चोर-पहरा—पु०[हिं० चोर=गुप्त+पहरा] पहरे का वह प्रकार जिसमे पहरेदार या तो छिपे रहते हैं अथवा भेष बदल कर पता लगाने के लिए घूमते-फिरते रहते है।

चोर-पुष्प—पु०=चुरपुष्पी।

चोर-पुष्पिका—स्त्री०[चोरपुष्पी+कन्—टाप्, ह्रस्व]=चोर-पुष्पी।

चोर-पुष्पी—स्त्री० [ब०स०, ङीष्] एक प्रकार का क्षुप जिसमे आसमानी रग के फूल लगते है। अधाहुली। शखाहुली।

चोर-पेट—पु०[हिं०] १ स्त्रियो का ऐसा पेट जिसमे गर्भ की स्थिति का ऊपर से देखने पर जल्दी पता न चले। २ ऐसा छोटा उदर या पेट जिसमे साधारण से बहुत अधिक भोजन समा सकता या समाता हो। ३ किसी चीज के अन्दर का कोई ऐसा गुप्त विभाग या स्थान जो ऊपर से दिखाई न दे।

चोर-पैर—पु०[हिं०] ऐसे पैर जिनके चलने की आहट न मिले या शब्द न सुनाई पडे। उदा०—ऐसा ही मोर के चोर पैर आला के ने उन्हे पाया।—अज्ञेय।

चोर-बत्ती—पद स्त्री०[हिं०] हाथ मे रखने की बिजली की वह बत्ती जो खटका या बटन दबाने पर ही जलती है।

चोर-बदन—पद पु०[हिं०] ऐसा बदन या शरीर जो देखने मे विशेष हृष्ट-पुष्ट न होने पर भी यथेष्ट बलवान् या शक्तिशाली हो।

चोर-बदन—वि०[हिं०] (मनुष्य या व्यक्ति) जो देखने मे दुबला-पतला या सामान्य जान पडने पर भी अपेक्षया अधिक बलवान् या शक्तिशाली हो।

चोर-बाजार—पु०[हिं०] [भाव० चोर बाजारी] व्यापार का वह क्षेत्र जिसमे नियत्रित अथवा राशन मे मिलनेवाली चीजे चोरी से और अधिक ऊँचे मूल्य पर खरीदी और बेची जाती है।

चोर-बाजारी—स्त्री०[हिं०] नियत्रित अथवा राशन मे मिलनेवाली वस्तुएँ खुले बाजार मे और उचित मूल्य पर न बेचकर चोरी से और अधिक दाम पर बेचने की क्रिया, प्रकार या भाव।

चोर-बालू—पु०[हिं० चोर+बालू] वह बालू या रेत जिसके नीचे दलदल, धँसाव या पोलापन हो।

चोर-महल—पु०[हिं०] १ राजाओ, रईसो आदि का ऐसा महल या मकान जिसमे वे अपनी रखेली स्त्री या स्त्रियाँ रखते थे। २ घर के अन्दर का वह छिपा हुआ छोटा कमरा जो साधारणत लोगो की दृष्टि मे न आता हो।

चोर-मिहीचनी—स्त्री०[हिं० चोर+मीचना=बद करना] आँख मिचौली नाम का खेल।

चोर-रास्ता—पु०[हिं०] वह छिपा हुआ मार्ग जिसका जन-साधारण को पता न हो। चोरगली।

चोर-सीढ़ी—स्त्री०[हिं०] किसी बडे मकान या महल मे वह छोटी और सँकरी सीढी जो कही आड मे हो और जिसका पता सब लोगो को न हो।

चोर-स्नायु—पु०[ष०त०] कौवा ठोठी। काकतुडी।

चोर-हटिया—पु०[हिं० चोर+हटिया] चोरो से अथवा चोरी का माल खरीदनेवाला दूकानदार।

चोर-हुली—स्त्री०=चोर-पुष्पी।

चोरा—स्त्री०[स० चोर+अच्-टाप्]=चोर-पुष्पी।

चोराख्य—पु०[स० चोर-आख्या, ब०स०]=चोर-पुष्पी।

चोराना—स०=चुराना।

चोरिका—स्त्री०[स० चोर+ठन्—इक, टाप्] चुराने का काम। चोरी।

चोरित—भ०कृ० [स०√चुर् (चुराना)+णिच्+क्त] चुराया हुआ।

चोरिला—पु०[स०?] एक प्रकार का बढिया चारा जिसके दाने या बीज कभी-कभी गरीब लोग अनाज की तरह खाते है।

चोरी—स्त्री०[हिं० चोर] १ चुराने या चोरी करने की क्रिया या भाव। २ दूसरो से कोई बात चुराने या छिपाने की क्रिया या भाव। जैसे—खुदा की गर नही चोरी की तो फिर बन्दे की क्या चोरी।—कोई शायर।

चोरी-चोरी—क्रि० वि० [हिं० चोरी] १ धीरे-धीरे। २ चुपके-चुपके। ३ बिना किसी को कहे या बतलाये। जैसे—(क) उन्होने चोरी-चोरी विवाह कर लिया। (ख) आप चोरी-चोरी चले गये, मुझसे मिले तक नही।

चोल—पु०[स० √चुल् (ऊँचाई)+घञ्] १ दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश जो आधुनिक तजौर, त्रिचनापल्ली आदि के आस-पास और दक्षिणी मैसूर तक विस्तृत था। २ उक्त देश का निवासी। ३ स्त्रियो के पहनने की चोली। ४ मजीठ। ५ कवच। जिरह-बक्तर। ६ छाल। वल्कल।
वि० लाल (रग)।

चोलक—पु०[स० चोल+कन्]=चोल।

चोलकी (किन्)—पु०[स० चोलक+इनि] १ बाँस का कल्ला। २ नारगी का पेड। ३ करील का पेड। ४ हाथ की कलाई या पहुँचा।

चोल-खड—पु०[मध्य० स०] कपडे का वह टुकडा जो प्राय साडियो के साथ (अथवा अलग भी) इसलिए बुना जाता है कि उससे चोली या कुरती बन सके।

चोलन—स्त्री०[स० चोल+क्विप्+ल्यु—अन]=चोलकी।

चोलना—स०[?] थोडीमात्रा मे कोई चीज खाना।
मुहा०—मुँह चोलना=नाममात्र के लिए कुछ या थोडा-सा खा लेना। †पु०=चोला।

चोल-रग—पु०[स० चोल=मजीठ+रग] मजीठ का रग जो पक्का लाल होता है।

चोल-सुपारी—स्त्री०[स० चोल+हि० सुपारी] चोल देश की बढिया सुपारी।

चोला—पु०[स० चोडक, चोलक, प्रा० चोलअ, पा० चोलो, प० चोल्ला, सिं० चोलो] [स्त्री० अल्पा० चोली] १ एक प्रकार का बहुत लबा और घेरदार पहनावा जो प्राय साधु-सत आदि पहनते है। २ वह सिला हुआ नया कपडा जो कुछ रसम करने के बाद छोटे बच्चो को पहले-पहल पहनाया जाता है।
मुहा०—चोला पडना=कुछ धार्मिक और सामाजिक कृत्यो के बाद छोटे बच्चे को पहले-पहल सिला हुआ नया कपडा पहनाया जाना।
३ छोटे बच्चे को पहले-पहल सिला हुआ नया कपडा पहनाने की रसम या रीति। ४ तन। बदन। शरीर। जैसे—चोला मगन रहे। (आशीर्वाद।)
मुहा०—चोला छोडना=दूसरा और नया जन्म या शरीर धारण करने के लिए यह शरीर छोडना। जैसे—स्वामी जी ने अस्सी वर्ष की आयु भोग कर चोला छोडा था। **चोला बदलना**=(क) एक शरीर छोडकर दूसरा नया शरीर धारण करना। (ख) एक रूप या वेष छोडकर दूसरा रूप या वेष धारण करना। जैसे—आज तो आप चोला बदल कर आये है।

चोली—स्त्री०[स०चोल+ङीष्, हि० चोला] १ स्त्रियो का वह मध्य-युगीन पहनावा जिससे उनका वक्ष-स्थल ढका रहता था, और जिसमे नीचे की ओर लगी हुई तनियाँ या बद पीठ की ओर खीचकर बाँधे जाते थे। २ आज-कल उक्त पहनावे का वह सुधरा हुआ रूप जो स्त्रियाँ स्तनो को ढलने से बचाने के लिए कुरती आदि के नीचे पहनती है। ३ अँगरखे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमे बद लगे रहते है। ४ साधु-सतो आदि के पहनने का कुछ छोटा चोला।
पद—चोली दामन का साथ=वैसा ही अभिन्न, घनिष्ठ और सदा बना रहने-वाला साथ जैसे अँगरखे के उक्त ऊपरी भाग तथा दामन या नीचेवाले भाग मे होता है। जैसे—रिश्तेदारो मे तो आपस मे चोली दामन का साथ होता है।
स्त्री० [?] तमोलियो की पान रखने की डलिया या दौरी।

चोली-मार्ग—पु०[मध्य० स०] वाम मार्ग का वह भेद या सप्रदाय जिसमे उपासिकाओ की चोलियाँ एक बरतन मे ढककर रख दी जाती है, और तब निकालने पर जिस स्त्री की चोली जिस उपासक के हाथ मे आती है, उसी के साथ वह सभोग करता है।

चोल्ला—पु०=चोला।

चोवा—पु०=चोआ (दे०)।

चोष—पु०[स०√चि (चयन)+ड, च-उष, कर्म० स०] पार्श्व या बगल मे जलन होने का एक रोग। (भाव प्रकाश)

चोषक—वि०[स०√चूष (चूसना)+ण्वुल्—अक, आर्ष० गुण] चोषण करने अर्थात् चूसनेवाला।

चोषण—पु०[स०√चूष्+ल्युट्-अन्, आर्ष० गुण] चूसने की क्रिया या भाव। चूसना।

चोषना*—स०[स० चोषण] चूसना।

चोष्य—वि०[स०√चूष्+ण्यत्, आर्ष०] १ जो चूसा जा सके। २ जो चूसा जाने को हो।

चोसर—स्त्री०=चौसर।

चोसा—पु० [देश०] वह रेती जिससे लकडी को रगड या रेतकर समतल किया जाता है।

चोस्क—पु०[स०] १ अच्छी जाति का घोडा। २ सिधुवार वृक्ष।

चोहट†—पु०=चौहट्टा (बाजार)।

चोहान†—पु०=चौहान।

चौं†—अव्य०[हिं० क्यो] क्यो। किसलिए। उदा०—झुकि जा बदरिया बरस चौं न जाय। (व्रज का लोक गीत)

चौंक—स्त्री०[हिं० चौंकना] चौंकने की क्रिया या भाव।

चौंकडा†—पु०[देश०] करील का पौधा।

चौंकना—अ० [?] १ एकाएक किसी प्रकार की आहट, ध्वनि या शब्द सुनकर कुछ उत्तेजित तथा विकल हो उठना। २ सहसा कोई भयभीत करनेवाली बात सुनकर अथवा वस्तु या व्यक्ति को देखकर घबरा जाना। ३ स्वप्न मे कोई विलक्षण या भीषण बात, वस्तु आदि देखने पर एका-एक घबराकर जाग उठना। ४ किसी प्रकार की अहित सबधी अप्रत्याशित सूचना मिलने पर चौकन्ना या सतर्क होना। ५ आशका, भय आदि से सहमना या काँपने लगना। ६ बिदकना। भडकना। जैसे—चलते-चलते घोडे का चौकना।

चौंकाना—स०[हिं० चौकना] १ कोई ऐसा काम करना या बात कहना जिसे सहसा देख अथवा सुनकर कोई चौक उठे। २ सभावित अहित, क्षति या हानि की सूचना किसी को देना और उसे उससे बचने के लिए सतर्क तथा सावधान करना। ३ भडकाना।

चौंचा—पु०[हिं० चौ+फा० चह] सिंचाई के लिए पानी एकत्र करने का गड्ढा।

चौंटना*—स०[हिं० चुटकी] हाथ की चुटकी से फूल आदि तोडना। चोटना।

चौंटली†—स्त्री० [स० चूडाला या श्वेतोच्चटा] सफेद घुँघची। श्वेत चिरभिट्टी।

चौंडा--पु०[स० चुडा] १ वह स्थान जहाँ मोट का पानी गिराया जाता है। २ दे० 'चोडा'।
पु०=चोडा (स्त्रियो के सिर के बाल)।

चौंतरा—पु०=चबूतरा।

चौंतिस—वि०[स० चतुस्त्रिंशत्, प्रा० चत्तुत्तिसो, पा० चउतीसो] जो गिनती मे तीस और चार हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—३४।

चौंतिसवाँ—वि० [हि० चौतिस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे चौतिस के स्थान पर पडनेवाला।

चौंतीस—वि०, पु०=चौतिस।

चौंध—स्त्री०[स०√चक्=चमकना या चौं=चारो ओर+अध] प्रखर और प्राय क्षणिक प्रकाश की वह स्थिति जिसे नेत्र सहसा सहन नही कर पाते और इसीलिए क्षण भर के लिए मुँद जाते है। कौंध। चकाचौध।

चौंधना*—अ०[हि० चौध] किसी वस्तु का क्षणिक किन्तु प्रखर प्रकाश से युक्त होना। कौधना। चमकना।

चौंधियाना—अ०[हि० चौध] नेत्रो का, किसी वस्तु के चौधने पर स्वत पलके झपकने लगना (जिसके कारण कोई चीज ठीक प्रकार से सुझाई नही पडती)
स० ऐसा काम करना जिससे किसी की आँखे प्रकाश के कारण क्षण भर के लिए झपक या मुँद जायँ। किसी की आँखो मे चौध उत्पन्न करना।

चौंधियारी—स्त्री० दे० 'कस्तूरी'।

चौंधी—स्त्री०=चौध।

चौंबक—वि०[स० चुम्बक+अण्] १ चुबक-सम्बन्धी। चुबक का। चुबकीय। २ चुबक मे युक्त। जिसमे चुबक मिला या लगा हो।

चौंर—पु०[स० चामर ?] १ पिंगल मे मगण के पहले भेद (ऽ) की सज्ञा। २ भडभाँड या सत्यानाशी नामक पौधे की जड।
†पु० १=चँवर (देखे०)। २ झालर। ३ किसी चीज का गुच्छा।

चौंरगाय—स्त्री०[हि० चौर+स० गो] सुरागाय।

चौंरा—पु०[स० चुड=गड्ढा] १ वह गड्ढा जिसमे सुरक्षा के लिए अन्न गाडा जाता है। २ 'चौंडा'।

चौंराना—स०[हि० चौर+आना (प्रत्य०)] १ किसी के ऊपर या चारो ओर चँवर डुलाना। चँवर करना। २ जमीन पर झाड देना या लगाना।

चौंरी—स्त्री०[हि० चौर+ई (प्रत्य०)] १ छोटा चँवर। चँवरी। २ रेशम या सूत का वह लच्छा जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल बाँधती हैं। चोटी। ३ किसी चीज के आगे लटकनेवाला फुँदना। ४ सफेद पूँछवाली गाय। ५ सुरागाय।

चौंवालिस—वि०,पु०=चौवालिस।

चौंसठ—वि०[स० चतुःषष्टि, प्रा० चउसट्ठि] जो गिनती मे साठ से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६४।

चौंसठवाँ—वि०[हि० चौसठ+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे चौसठ के स्थान पर पडनेवाला।

चौंह—पु०[देश०] गलफडा।

चौंही—स्त्री०[देश०] हल मे की एक लकडी। परिहारी।

चौ—वि०[स० चतु प्रा० चउ] चार का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे लगने से प्राप्त होता है। जैसे—चौकोना, चौखडा, चौगुना आदि।
पु०मोती आदि तौलने का एक बहुत छोटा मान। जैसे—यह मोती तौल मे चार चौ है।
†विभ० सम्बन्ध-कारक की विभक्ति, का या की। (राज०) उदा०—बालकति करि हस चौ बालक।—प्रिथीराज।

चौअन—वि०, पु०=चौवन।

चौआ--पु०[स० चतुष्पाद] गाय, बैल, भैस आदि पशु। चौपाया।
वि०[हि० चौ=चार] जिसमे चार हो। चार से युक्त।
पु० १ हाथ की चार उँगलियो का समूह। २ चौडे बल मे अँगूठे को छोड बाकी चार उँगलियो का विस्तार जो नाप का एक मान है। ३ हाथ की उक्त चार उँगलियो को सटाकर उन पर लपेटा हुआ तागा। ४ ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूटियाँ हो। जैसे—पान का चौआ।

चौआई—स्त्री०= चौवाई।

चौआना†—अ०[हि० चौकना] १ चकित या विस्मित होना। चकपकाना। २ चौकना। ३ चौकन्ना या सतर्क होना।

चौक--पु०[स० चतुष्क, प्रा० चउक्क, गु० प० बँ० मरा० चौक, उ० चौका, सिं० चउकु, चौको] १ कोई ऐसी चौकोर जमीन जो ऊपर से बिलकुल खुली हो। २ मकान के अदर का चारो ओर से घिरा और ऊपर से खुला स्थान। आँगन। सहन। जैसे—इस मकान मे दो चौक है। ३ कोई ऐसा चौकोर तल जो चारो ओर से सीमित, परन्तु ऊपर से खुला हो। जैसे--यज्ञ की वेदी। ४ उक्त के आधार पर कर्मकाड मे या मागलिक अवसरो पर अबीर, आटे, गुलाल आदि से बनाई जानेवाली वह विशिष्ट आकृति जिसमे बहुत से खाने या घर और रेखाएँ या लकीरे बनी रहती है।
मुहा०—चौक पूरना=अबीर, आटे आदि से उक्त प्रकार की आकृति बनाना। ५ चौसर खेलने की बिसात जो प्राय उक्त आकार-प्रकार की होती है। ६ नगर या बस्ती का वह चौकोर मध्यभाग जो कुछ दूर तक बिलकुल खुले मैदान की तरह रहता है। ७ उक्त के आस-पास या चारो ओर के बाजार और मकान जो एक महल्ले के रूप मे होते है। ८ मकानो के सबध मे प्रयुक्त होनेवाला सख्या-सूचक शब्द। अदद। जैसे—शहर मे उनके तीन चौक मकान हैं। ९ चौमुहानी। चौराहा। १० चार चीजो या बातो का समूह। जैसे—दाँतो का चौक=ठीक सामने के (दो ऊपर के और दो नीचे के) चार दाँत। उदा०—दसन चौक बैठे जनु हीरा।—जायसी।
पद—चारों चौक=(क) चारो ओर या चारो कोनो से। (ख) हर तरह से बिलकुल ठीक, पक्का या बढिया। उदा०—पुनि सोरहो सिंगार जस चारिहु चउक (चौक) कुलीन।—जायसी।
११ स्त्रियो के गर्भ-धारण के आठवे महीने होनेवाला सीमत.कर्म नामक सस्कार। अठमासा। अठवाँसा।

चौक गोभी—स्त्री० [हि० गोभी] एक प्रकार की गोभी।

चौकठ†—पु०=चौखट।

चौकठा†--पु०=चौखटा।

चौकड़—वि० [हि० चौ+स० कला=अग, भाग] अच्छा। बढिया। (बाजारू) जैसे—चौकड माल।

चौकड़याऊ--पु०[?] बुदेलखड मे होली के दिनो मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

चौकड़ा—पु०[हि० चौ+कडा] १ कान मे पहनने की बाली जिसमे दो-दो मोती हो। २ फसल मे का चौथा भाग जो जमीदार का होता है। ३ दे० 'चौघडा'।

चौकडी—स्त्री०[हि० चौक (चार चीजो का समूह) का स्त्री०] १ एक मे बँधी या लगी हुई एक ही तरह की चार चीजो का वर्ग या समूह। जैसे—घोडो, दाँतो या मोतियो की चौकडी।

पद—चडाल चौकडी=चार अथवा चार के लगभग गुडो, बदमाशो या लुच्चो का वर्ग या समूह।

२ वह गाडी जिसके आगे चार घोडे या बैल अथवा ऐसे ही और पशु जुतकर खीचते हो। ३ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमे चार-चार चौकोर खड एक साथ पिरोये या लगे रहते है। ४ कालमान की सूचना के लिए चार युगो का समूह। चतुर्युगी। ५ बैठने का वह ढग या प्रकार जिसमे दोनो पैरो और दोनो जाँघो के नीचेवाले भाग जमीन पर समतल रूप से लगे रहते है। पलथी। पालथी।

मुहा०—चौकड़ी मारकर बैठना=उक्त प्रकार से आसन या जमीन पर बैठना।

६ चारपाई की वह बुनावट जिसमे चार-चार डोरियाँ इकट्ठी और एक साथ बुनी जाती है। ७ हिरन की वह चाल या दौड जिसमे वह चारो पैर एक साथ जमीन पर उठाकर कूदता या छलाँग मारता हुआ आगे बढता है।

क्रि० प्र०--भरना।

मुहा०—(किसी की) चौकडी भूल जाना=तेजी से आगे बढते रहने की दशा मे सहसा बाधा, विपत्ति आदि आने पर इतना घबडा जाना कि यह समझ मे न आवे कि अब क्या उपाय करना चाहिए अथवा कैसे आगे बढना चाहिए।

८ वास्तु-रचना मे, मदिर की चौकी या मडप का वह ऊपरी भाग या शिखर जो प्राय चार खभो पर स्थित रहता है।

चौकनिकास—पु०[हि० चौक+निकास] चौक (बाजार) मे बैठनेवाले दूकानदार से लिया जानेवाला कर।

चौकन्ना—वि०[हि० चौ=चारो ओर+कान] १ (जीव) जो कान लगाकर चारो ओर की आहट लेता रहे। जैसे—चौकन्ना कुत्ता। २ (व्यक्ति) जो चारो ओर होनेवाले कार्यो या बातो विशेषत अपने विरुद्ध होनेवाले कार्यो या बातो का ध्यान रखता हो। ३ हर तरह से किसी प्रकार की विपत्ति, सकट आदि का सामना करने को प्रस्तुत। (एलर्ट) ४ जो सतर्क या सावधान रहता हो। जैसे—चौकन्ने कान, चौकन्नी आँखे। ५ चौंका हुआ। सशकित।

चौकरी†—स्त्री०=चौकडी।

चौकल--पु०[स०] पिंगल मे चार मात्राओ के समूह की सज्ञा। इसके पाँच भेद है। यथा—(ऽऽ, ।।ऽ, ।ऽ।, ऽ।। और ।।।)

चौकस—वि० [हि० चौ=चार+कस=कसा हुआ] [भाव० चौकसी] १ चारो ओर से अच्छी तरह कसा हुआ। २ जो अपनी अथवा किसी की रक्षा के लिए पूर्णत सचेत हो। चौकसी करनेवाला। ३ ठीक। दुरुस्त। जैसे—चौकस माल।

चौकसाई—स्त्री०=चौकसी।

चौकसी—स्त्री०[हि० चौकस+ई(प्रत्य०)] १ चौकस होने की अवस्था या भाव। २ किसी की रक्षा के लिए उस पर सूक्ष्म दृष्टि रखने का कार्य या भाव।

चौका—पु० [स० चतुष्क, प्रा० चउक्क, हि० चौक] १ एक ही तरह की चार चीजो का वर्ग या समूह। जैसे—अँगौछो का चौका (एक साथ बुने हुए चार अँगोछे), दाँतो का चौका (अगले दो ऊपरी और दो नीचे के दाँत), मोतियो का चौका (एक साथ पिरोये हुए चार मोती)। २ एक प्रकार का जगली बकरा जिसके चार सीग होते है। चौसिघा। ३ ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूटियाँ होती है। चौआ। जैसे—पान या हुकुम का चौका। ४ किसी प्रकार चौकोर कटा हुआ ठोस, बडा और भारी टुकडा। जैसे—पत्थर या लकडी का चौका। ५ एक प्रकार की चौकोर ईंट। ६ पत्थर या लकडी का वह गोलाकार टुकडा जिस पर रोटी बेलते है। चकला। ७ रसोई बनाने और बैठकर भोजन करने का स्थान जो पहले प्राय चौकोर हुआ करता था। रसोई बनाने से पहले और भोजन कर चुकने के बाद उक्त को धो-पोछकर अथवा गोबर मिट्टी आदि से लीप-पोतकर की जानेवाली सफाई।

क्रि० प्र०--करना।--लगाना।

पद—चौका-बरतन=रसोई बनने और भोजन होने के बाद चौका धोकर साफ करने और बरतन माँज-धोकर रखने का काम। जैसे--वह मजदूरनी चार घरो का चौका-बरतन करती है।

९ किसी स्थान को पवित्र और शुद्ध करने के विचार से गोबर, मिट्टी आदि से पोतने या लीपने की क्रिया या भाव। जैसे—आज यही पूजन (या हवन) होगा, इसलिए यहाँ जरा चौका लगा दो।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—चौका देना, फेरना या लगाना=किसी काम या बात को बुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। (परिहास और व्यग्य) जैसे-तुमने जरा सी भूल करके बने-बनाये काम पर चौका फेर या लगा दिया। उदा०—कियो तीन तेरह सबै चौका चौका लाय।—भारतेदु।

पद—चौके की राँड=वह स्त्री जो विवाह के कुछ दिन बाद ही विधवा हो गई हो।

१० सिर के पिछले भाग मे बाँधा जानेवाला चौक या सीसफूल नाम का अर्ध गोलाकार गहना। ११ एक प्रकार का मोटा कपडा जो मकानो के चौक मे (या फर्श पर) बिछाया जाता है। १२ एक प्रकार का पात्र या बरतन जिसमे अलग-अलग तरह की चीजे (जैसे-नमक, मिर्च, मसाले या साग, भाजी, रायता आदि) रखने के लिए अलग-अलग कटोरे या खाने बने होते हैं। चौघडा।

चौका-विधि—स्त्री० [हि० चौका+स० विधि] कबीर-पथियो की एक शाखा मे प्रचलित एक कर्मकाडीय विधान जिसमे कुछ निश्चित तिथियो या वारो को दिन भर उपवास करके रात को आटे के बनाये हुए चतुर्भुज क्षेत्र की पूजा होती है।

चौकिया सोहागा—पु० [हि० चौकी+सोहागा] छोटे-छोटे टुकडो मे कटा हुआ सोहागा जो औषध के लिए विशेष उपयुक्त होता है।

चौकी—स्त्री० [स० चतुष्किका, प्रा० चौक्किआ, गु० चोकी, ने० चौकि, उ० प०, ब०, मरा०, सि०, चौकी] १ लकडी, धातु या पत्थर का वह (छोटा या बडा) आयताकार आसन जो चार पावो पर कसा या जडा रहता है। २ मदिर के मडप के नीचे की चौकोर भूमि। ३ किसी पवित्र आसन पर विराजमान किसी देवी, देवता या महा पुरुष को चढाई जानेवाली भेट।

मुहा०—चौकी भरना=किसी देवी या देवता के दर्शनो का मन्नत पूरी करने के लिए उक्त प्रकार के किसी स्थान पर जाना और वहाँ पूजा करके कुछ भेट चढाना।

४ कुरसी। (क्व०) ५ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमे कई छोटे-छोटे चौकोर खड एक साथ पिरोये रहते है। जगनी। पटरी। ६ वह स्थान जहाँ पहरेदार चौकी बिछा कर बैठते या विश्राम करते हो। ७ पहरा। रखवाली।

क्रि० प्र०—बैठना या बैठाना।

८ नगर के बाहरी भाग मे का वह स्थान जहाँ कुछ अधिकारी या कर्मचारी व्यवस्था, सुरक्षा आदि के लिए नियत रहते हो। जैसे—चुगी, पुलिस या सेना की चौकी।

मुहा०—चौकी जाना=दुराचारिणी या पुश्चली स्त्रियो का सभोग कराने तथा धन कमाने के लिए उक्त किसी स्थान पर जाना। **चौकी भरना**=अपनी बारी आने पर घूम-घूमकर पहरा देना। ९ रक्षा आदि के लिए किया जानेवाला जादू या टोना। १० उक्त के आधार पर, रास्ते मे पैदल यात्रियो के ठहरने का स्थान। अड्डा। पडाव। ११ खेत की पैदावार बढाने के लिए उसमे इस उद्देश्य से रात भर भेड-बकरियो को रखवाना कि वही वे मल-मूत्र त्यागे। १२ तेलियो के कोल्हू की एक विशिष्ट लकडी। १३ पूरी, रोटी आदि बेलने का गोलाकार चकला। १४ शहनाई और उसके साथ बजनेवाले बाजे। रोशनचौकी। जैसे—आज तो उनके दरवाजे पर चौकी बैठी (या हो रही) है। १५ रोशनचौकीवालो के द्वारा एक बैठक मे बजाई जानेवाली चीजे (गीत या धुन)। जैसे-एक चौकी और बजा दो तो तुम्हारी छुट्टी हो जाय।

क्रि० प्र०—बजाना।

१६ प्रासादो, मदिरो का प्रवेशद्वार जहाँ या जिसके ऊपर शहनाई बजानेवाले बैठते है।

चौकी-घर—पु०[हिं० चौकी=पहरा+घर] वह छोटा-सा छाया हुआ स्थान जहाँ चौकीदार पहरा देने के समय धूप, वर्षा आदि से बचने के लिए खडा रहता है।

चौकीदार पु० [हिं० चौकी+फा० दार] १ किसी स्थान पर चौकी-पहरे का काम करनेवाला कर्मचारी। २ राज्य द्वारा नियुक्त पुलिस विभाग का एक निम्न कर्मचारी जो गाँव-देहात मे पहरा देता है। ३ जुलाहो का का वह खूँटा जिसमे भाँज की डोरी फँसा या बाँधकर रखते हैं।

चौकीदारी स्त्री० [हिं०] १ चौकीदार का काम। रखवाली। २ चौकीदार का पद। ३ गाँव-देहातो मे लगनेवाला वह कर जो चौकीदार का वेतन देने के लिए लगाया जाता है।

चौकी-दौड—स्त्री० [हि०] कई दलो मे प्रतियोगिता के रूप मे होनेवाली एक प्रकार की दौड जिसमे दल के हर आदमी को थोडी-थोडी दूर पर बनी हुई चौकियो पर नये दौडाक को प्रतीक रूप मे एक डडा सौपना पडता है। (रिलेरेस)

चौकुर—पु० [हि० चौ=चार+कुरा] खेत की फसल बाँटने का वह प्रकार जिसमे एक हिस्सा जमीदार को और तीन हिस्सा काश्तकार को मिलता है।

चौकोन, चौकोना—वि० [स० चतुष्कोण, प्रा० चउक्कोण] [स्त्री० चौकोनी] १ जिसके या जिसमे चार कोण हो। २ चार कोनोवाला। चौखूँटा।

चौकोर—वि० [स० चतुष्कोण, प्रा० चउक्कोण चउक्कोड,] १ (वस्तु या क्षेत्र) जिसके चारो पार्श्व बराबर हो। २ दे० सम 'चतुर्भुज'। ३ हर तरह से ठीक और दुरुस्त।

पु० क्षत्रियो की एक शाखा।

चौक्ष—वि० [स० चुक्षा+ण] १ निर्मल। स्वच्छ। २ प्रिय या लुभावना। ३ चोखा।

चौखड, चौखडा—वि० [हि० चौ (चार)+स० खण्ड] १ जिसके चार खण्ड या विभाग हो। २ जो चार खण्डो मे विभक्त हो।

पु० १ चार खण्डो या तल्लोवाला मकान। २ उक्त मकान का सबसे ऊपर वाला अर्थात् चौथा खड या तल्ला। ३ वह मकान जिसमे चार चौक हो। (क्व०)

चौखट—स्त्री० [हिं० चौ=चार+काठ] १ चार लकडियो का वह चौकोना ढाँचा जो दरवाजे के पल्ले कसने के लिए दीवार मे लगाया जाता है। २ उक्त ढाँचे की ऊपर या नीचेवाली लकडी। जैसे—चौखट से सिर (या पैर) मे चोट लगी है।

चौखटा—पु० [हिं० चौखट] १ चौखट के आकार का वह चौकोर छोटा ढाँचा जो चित्र, शीशे आदि के चारो ओर उसकी सुरक्षा तथा शोभा के लिए मढा जाता है। २ उक्त प्रकार का कोई चौकोर वस्त्र जिसके बीच का भाग किसी विशिष्ट कार्य के लिए खाली रहता है।

चौखना—वि० [हिं० चौखड] चौखडा या चौमजिला (मकान)।

चौखा—पु० [हिं० चौ+खाई] वह स्थान जहाँ पर चार गाँवो की सीमाएँ मिलती हो।

चौखाना†—वि०, पु०=चारखाना।

चौखानि—स्त्री० [हिं० चौ=चार+खानि=(जाति या प्रकार)] अडज, पिंडज, स्वेदज और उद्भिज ये चार प्रकार के जीव।

चौखूंट—पु० [हिं० चौ+खूँट] १ चारो दिशाएँ। २ सारी पृथ्वी मडल।

क्रि० वि० १ चारो ओर। २ सब ओर।

वि०=चौखूँटा।

चौखूँटा—वि० [हिं० चौ+खूँट] जिसमे चार कोने हो। चतुष्कोण। चौकोर।

चौगड़ा—पु० [हिं० चौ+गोड=पैर] १ खरगोश। खरहा। २ चौघडा।

वि० चार पैरोवाला। (पशु)

चौगड्डा—पु० [हिं० चौ+गड्डबड्ड=मेल] १ चार चीजो का वर्ग या

समूह। २ वह गाँव जहाँ चार गाँवो की सीमाएँ मिली हो। चौहद्दी। चौसिहा। चौखा।

चौगड्डी—स्त्री० [हिं० चौ+गड्ढा] जानवर फँसाने का बाँस की फट्टियो का चौकोर ढाँचा।

चौगान—पु० [फा०] १ गेद-बल्ले का एक प्रकार का पुराना खेल जो आज-कल के हाकी खेल से बहुत कुछ मिलता-जुलता होता था। यह खेल घोडो पर चढकर भी खेला जाता था। २ वह मैदान जिसमे उक्त खेल खेला जाता था। ३ उक्त खेल खेलने का बल्ला जिसका अगला भाग कुछ झुका हुआ होता था। ४ नगाडा बजाने की लकडी। ५ किसी प्रकार की प्रतियोगिता का स्थान।

चौगानी—स्त्री० [फा० चौगान?] हुक्के के ढाँचे की वह सीधी नली जिससे धुआँ खीचा जाता है। निगाली।

वि० चौगान-सम्बन्धी।

चौगिर्द—क्रि० वि० [हिं० चौ+फा० गिर्द=तरफ] (किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के) चारो ओर। चारो तरफ।

चौगुन, चौगुना—वि० [स० चतुर्गुण, प्रा० चउगुण] [स्त्री० चौगुनी] मान या मात्रा मे जितनी कोई वस्तु, शक्ति आदि हो उस जैसी चार वस्तुओ या शक्तियोवाला। जैसे--शारीरिक क्षमता मे वह आप से चौगुने तो है ही।

मुहा०—(किसी का मन) चौगुना होना—बहुत अधिक उत्साह या प्रसन्नता बढना।

चौगून—स्त्री० [हिं० चौगुना] १ चौगुना होने का भाव। २ गाना या बजाना आरम्भ करते समय जिस गति से गाया या बजाया जाता है, अन्त मे उससे चौगुनी गति मे और चौथाई समय मे उसे गाने या बजाने का प्रकार।

चौगोडा—वि० [हिं० चौ+गोड=पैर] चार पैरोवाला। जिसके चार गोड हो अर्थात् पशु।

चौगोडिया—स्त्री० [हिं० चौ+गोड=पैर] १ वह ऊँची चौकी जिस पर चढने के लिए उसके पाँवो मे सीढियो सदृश डडे लगे हो। २ चिडियो को फँसाने का बाँस की तीलियो का एक प्रकार का ढाँचा।

चौगोशा—पु० [हिं० चौ+फा० गोशा] एक प्रकार की चौखूँटी तश्तरी जिसमे मेवे, मिठाइयाँ आदि रखकर कही भेजते है।

चौगोशिया—वि० [हिं० चौ=चार+फा० गोशा=कोना] चार कोनोवाला। जिसमे चार कोने या सिरे हो।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की टोपी जो चार तिकोने टुकडो को सीकर बनाई जाती थी।

पु० तुरकी घोडा।

चौघड—पु० [हिं० चौ=चार+दाढ] दोनो जबडो के चारो सिरो पर होनेवाले एक-एक चिपटे तथा चौडे दाँतो की सामूहिक सज्ञा। चौभड।

चौघडा—पु० [हिं० चौ=चार+घर=खाना] १ वह डिब्बा या बरतन जिसमे अलग-अलग कामो के लिए चार अलग-अलग खाने या घर बने हो। जैसे—नमक, मिर्च आदि रखने या तरकारी-भाजी आदि परोसने का चौघडा, दीवाली मे मिठाइयाँ, धान का लावा आदि रखने का चौघडा। २ वह दीवट जिसमे चारो ओर जलाने के लिए चार दीये या बत्तियाँ रखी जाती है। ३ पत्ते मे खोसकर एक साथ बाँधे हुए पान के चार बीडे। जैसे—दो चौघडे पान लेते आना। ४ चौडोल नाम का बाजा। ५ बडी जाति की गुजराती (या छोटी) इलायची जो प्राय चौकोर सी होती है।

चौघड़िया—वि० [हिं० चौ=चार+घडी+इया (प्रत्य०)] चार घडियो का। चार घडी-सम्बन्धी। जैसे—चौघडिया मुहूर्त्त निकालनेवाला।

स्त्री० [हिं० चौ+गोडा] एक प्रकार की ऊँचे पाँवो किन्तु छोटे आसनवाली चौकी जिस पर खडे होकर दीवारो आदि पर चूना आदि छुआ जाता है।

चौघडिया मुहूर्त—पु० हि० चौघडिया+स० मुहूर्त्त] वह मुहूर्त्त जो कोई आकस्मिक किन्तु [illegible] व्यक कार्य या यात्रा करने के लिए एक दो दिन के अन्दर ही निकाला जाता है। और जो दो-चार घडी तक ही रहता है।

चौघडी—वि० [हि० चौ+घेरा] जिसकी अथवा जिसमे चार तहे या परते हो।

चौघर†—वि० [देश०] घोडो की सपाट चाल। चौफाल। पोइयाँ। सरपट।

पु० दे० 'चौघड'।

चौघरा—पु०=चौघडा।

चौघोडी—स्त्री० [हिं० चौ+घोडा] वह गाडी जिसमे चार घोडे जोते जाते हो। चौकडी।

चौचद– पु० [हिं० चौथ+चद वा चबाव+चड] १ कलक-सूचक चर्चा। अपवाद। बदनामी। २ शोर। हल्ला। ३ क्रीडा।

चौचदहाई– वि० स्त्री० [हिं० चौचद+हाई (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसे दूसरो की निदा करने का व्यसन हो।

चौज—वि० [हिं० चोज?] सुन्दर। अच्छा। उदा०—सूणिबाई बचन तै कह्या चौज।—नरपतिनाल्ह।

पु० दे० 'चोज'।

चौजुगी– स्त्री० [हिं० चौ+स० युग] चार युगो का काल।

वि० चारो युगो मे होने अथवा उन सबसे सबध रखनेवाला।

स्त्री० सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग इन चारो युगो का समूह।

चौठी—स्त्री० [स० चतुर्थ] लबनी (ताडी का बर्तन) का चतुर्थाश।

चौड– प० [स० चूडा+अण्] चूडाकरण सस्कार।

†वि०=चौपट।

चौड़-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] चूडाकर्म। मुडन।

चौड़ा—वि० [स० चृद् (?) चतर् (चडर>] चडड), दे० प्रा० चाऊड, ब उ० प० चौडा, गु० चोड़ूँ मरा० चौडे] [स्त्री० चौडी, भाव० चौडाई] १ जिसके दोनो पार्श्वों के बीच मे अधिक विस्तार हो। लबाई के बल मे नही, बल्कि उसके विपरीत बल मे अधिक विस्तृत। जैसे—चौडी नहर। २ जो सँकरा न हो बल्कि खुलता हो। जैसे—चौडी गली।

पु० [स० चुरा] अनाज रखने का गड्ढा।

चौडाई—स्त्री० [हिं० चौडा+ई (प्रत्य०)] १ चौडे होने की अवस्था या भाव। २ वह मान जिससे यह पता चलता हो कि कोई वस्तु कितनी चौडी है। जैसे—कपडे की चौडाई दो गज है।

चौडान—स्त्री० [हिं० चौडा+आन (प्रत्य०)] चौडाई। (दे०)

चौड़ाना—स० [हि० चौडा] १ चौडा करना। फैलाना। २ व्यर्थ का विस्तार करना। जैसे—बात चौडाना।
अ० चौडा होना। उदा०—नद चौडात चले आगै नित आवै।—रत्नाकर।

चौडाव—पु०=चौडाई। (दे०)

चौडे—क्रि० वि०[हि० चौडा] खुले आम। सब के सामने। उदा०—कोई कहै छाने कोई कहै चौडे लियोरी बजता ढोल।—मीराँ।

चौडोल—पु० १ दे० 'चदोल' (सवारी)। २ दे० 'चौघडा' (बाजा)।

चौतगा—पु० [हि० चौ+तागा] वह डोरा जिसमे चार तागे एक साथ बटे गये हो।

चौतनिया—स्त्री०=चौतनी।

चौतनी—स्त्री० [हि० चौ=चार+तनी=बद] १ पुरानी चाल की बच्चो की टोपी जिसमे चार तनियाँ या बद लगते थे। २ अगिया। चोली।

चौतरका—पु० [हि० चौ+तडक=लकडी, धरन] एक प्रकार का खेमा या तबू।

चौतरा—पु० [हि० चौ (चार)+तार] सारगी की तरह का एक बाजा जिसमे चार तार लगे होते है।
†वि० चार तारोवाला।
पु०=चबूतरा।

चौतरिया—स्त्री० [हि० चौतरा] छोटा चबूतरा।
वि० चार तारोवाला।

चौतही—स्त्री० [हि० चौ=चार+तह] एक प्रकार का मोटा और बहुत लबा खेस जो चार तह करके ओढा-बिछाया जाता है। चौतरा।

चौतार—पु० [स० चतुष्पद] चौपाया। उदा०—प्यडै होइ तौ पद की आसा, बनि निपजै चौतार।—गोरखनाथ।

चौताल—पु० [हि० चौ+ताल] १ मृदग बजाने का एक ताल जिसमे चार आघात और दो खाली होते है। २ उक्त ताल पर गाया जानेवाला कोई गीत।

चौताला—पु० [हि० चौताल] सगीत मे वह ताल जिसमे चार ताल होते हैं।

चौताली—स्त्री० [देश०] कपास के पौधे की कली जिसमे से रूई निकलती है। ढेढी। डोडा।

चौतुका—वि० [हि० चौ+तुक] जिसमे चार तुक हो।
पु० एक प्रकार का छन्द जिसके चारो चरणो मे अनुप्रास होते अथवा तुक मिलते हैं।

चौथ—स्त्री० [स० चतुर्थी, प्रा० चउत्थि, हि० चउथि] १ चौथाई अश या भाग। चतुर्थांश। २ मराठी शासन काल का एक प्रकार का कर जो अधीनस्थ भू-खडो से उनकी आय के चतुर्थांश के रूप मे लिया जाता था। ३ चाद्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।
पद—चौथ का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चद्रमा जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि इसे देखने से झूठा कलक लगता है।
†वि०=चौथा।

चौथपन—पु० [हि० चौथा+पन] १ मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था। सन्यास आश्रम मे रहने का समय। २ बुढापा। वृद्धावस्था।

चौथा—वि० [स० चतुर्थ, प्रा० चउत्थ] [स्त्री० चौथी] क्रम या गिनती मे चार की जगह पडनेवाला।
पु० कुछ बिरादरियो मे मृतक की मृत्यु के चौथे दिन होनेवाला एक सामाजिक कृत्य जिसमे आपस-दारी के लोग एकत्र होकर मृतक के पुत्र अथवा विधवा को कुछ धन या वस्त्र देते है।

चौथाई—पु० [हि० चौथा+ई (प्रत्य०)] किसी वस्तु के चार सम अशो या भागो मे से कोई एक अश या भाग। चौथा भाग।

चौथि—स्त्री०=चौथ।

चौथिआई—पु०=चौथाई।

चौथिया—पु० [हि० चौथा] १ हर चौथे दिन अर्थात तीन-तीन दिन के अन्तर पर आनेवाला ज्वर। २ वह व्यक्ति जो किसी व्यवसाय, सपत्ति आदि के चौथे हिस्से का मालिक हो। चौथे हिस्से का हकदार।

चौथी—स्त्री० [हि० चौथा] १ हिन्दुओ मे विवाह के चौथे दिन होनेवाली एक रसम जिसमे वर और कन्या के हाथ के कगन खोले जाते है।
पद—चौथी का जोड़ा=वस्त्रो का वह कुलक जो वर के घर से कन्या के लिए चौथी के दिन आता है।
मुहा०—चौथी खेलना=चौथी के दिन दूल्हा-दुलहिन का एक दूसरे के ऊपर मेवे, फल आदि फेकना। **चौथी छूटना**=चौथी के दिन वर-कन्या के हाथो के कगन खुलना।
२ फसल का चौथाई अश जो पहले जमीदार को मिला करता था।

चौथैया—पु० [हि० चौथाई] चौथाई भाग। चतुर्थांश।
स्त्री एक प्रकार की छोटी नाव।

चौदता—वि० [स० चतुर्दंत] [स्त्री० चौदती] १ चार दाँतोवाला। जिसके चार दाँत हो। २ (पशु) जिसके अभी चार ही दाँत निकले हो, फलत जिसकी जवानी अभी आरभ होने लगी हो। ३ छोटी उमर का और अल्हड।
पु० एक प्रकार का हाथी।

चौदती—स्त्री० [हि० चौदता] १ नव-यौवन के समय का अल्हडपन। २ ढिठाई। धृष्टता। ३ अक्खडपन। उद्दडता।

चौदश†—स्त्री०=चौदस।

चौदस—स्त्री० [स० चतुर्दशी, प्रा० चउद्दशि] चाद्रमास के कृष्ण या शुक्ल पक्षो की चौदहवी तिथि। चतुर्दशी।

चौदह—वि० [स० चतुर्दश, प्रा० चउद्दश, अप० पा० चउद्दह] जो गिनती मे दस से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१४।

चौदहवाँ—वि० [हि० चौदह+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे चौदह के स्थान पर पडनेवाला।
पद—चौदहवीं रात का चाँद—(क) शुक्ल पक्ष की चौदस की रात का चाँद। (ख) बहुत ही सुन्दर व्यक्ति।

चौदाँत—वि० [हि० चौ=चार+दाँत] (दो हाथी) जिनके दाँत लडने के लिए आपस मे आमने-सामने आकर मिल गये हो।
पु० हाथियो की लडाई।

चौदाँवा—वि० [हि० चौ=चार+दाँव] जिसमे चार दाँव एक साथ लगते हो।
पु० जूए का वह खेल जिसमे चार दाँव एक साथ लगाये जाते हो।

चौदा†—पु०=चौना।

चौदानिया—स्त्री०=चौदानी।

चौदानी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+दाना+ई (प्रत्य०)] १ कान मे पहनने की एक प्रकार की बाली जिसमे चार पत्तियाँ लगी रहती है। २ कान की वह बाली जिसमे चार मोती पिरोये रहते है।

चौदायनि—पु० [स०] एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

चौदौंआ, चौदौंवाँ —वि०, पु०=चौदांवा।

चौधराई—स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी होने की अवस्था, काम या पद। चौधरीपन।

चौधरात—स्त्री० [हिं० चौधरी] १ चौधराना। २ चौधराई।

चौधराना—पु० [हिं० चौधरी] १ चौधरी का काम या पद। २ चौधरी का अधिकार या हक।

चौधरानी—स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी की स्त्री।

चौधरी—पु० [स० चतु+धर (=धरनेवाला)] [स्त्री० चौधरानी, चौधराइन] १ किसी वर्ग, सप्रदाय या समाज का प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। मुखिया। २ लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो अगुआ होकर हर काम मे हाथ डालता हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्राय सभी जातियो और वर्गों मे कुछ लोग चौधरी बना या मान लिये जाते थे, जो आपस के झगडो का निपटारा करते थे।

चौधारी*—स्त्री० [हिं० चौ=चार+धारा] एक रग का कपडा जिस पर दूसरे रगो की आडी तथा बेडी धारियाँ या रेखाएँ छपी या बनी हुई हो।

चौना—पु० [स० च्यवन] वह ढालुआँ स्थान जिस पर चरस या मोट का पानी उँडेला जाता है।

चौनावा—वि० [हिं० चौ+नाव (रेखा)] [स्त्री० चौनावी] (शस्त्र आदि का वह फल) जिस पर चार नावे अर्थात् खाँचे या लबे गड्ढे बने हो। जैसे—चौनावा खड्ग, चौनावी तलवार।

चौप†—पु०=चोप।

चौपई—स्त्री० [स० चतुष्परी] १५ मात्राओ का एक प्रकार का छद जिसके चरणो के अन्त मे एक-एक गुरु और एक-एक लघु होता है।

चौपखा†—पु० [हिं० चौ=चार+स० पक्ष, हि० पाख] १ चारो ओर के पाखे या दीवारे। २ चहारदीवारी। परिखा।

चौपग—पु० [हिं० चौ+पग] वह जिसके चार पैर हो। चौपाया।

चौपट—वि० [हिं० चौ=चार+पट=किवाडा, या हिं० चापट] १ चारो ओर से खुला हुआ, और फलत अरक्षित। जैसे—घर के सब दरवाजे चौपट खुले छोडकर चल दिये। २ (कार्य या वस्तु) जो नष्ट-भ्रष्ट हो गई हो। जैसे—उन्होने सारा खेल (या मकान) चौपट कर दिया। ३ (व्यक्ति) जो बुरे सग-साथ के कारण बुरी आदतें सीखकर बिलकुल बिगड गया या भ्रष्ट हो चुका हो।

चौपट चरण—पु० [हिं० चौपट+स० चरण] वह व्यक्ति जिसके कही पहुँचने अथवा किसी काम मे हाथ-लगाने पर सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाता हो। (परिहास और व्यग्य)

चौपटहा, चौपटा—वि० [हिं० चौपट+हा (प्रत्य०)] १ किया-धरा काम चौपट करनेवाला। २ तोड-फोड या नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

चौपड—स्त्री० [स० चतुष्पट, प्रा० चउप्पट] १ चौसर (खेल और बिसात)।

मुहा०—चौपड मँडना, मढना या माँडना=चौपड खेलने के लिए बिसात बिछाना।

२ खाट, पलग आदि की बुनावट का वह प्रकार जिसमे चौसर की आकृति बनी होती है। ३ मन्दिर, महल आदि के आँगन की उक्त प्रकार की बनावट। जैसे—मन्दिर के चौपड मे भाले गडवाये। —वृन्दावनलाल वर्मा।

चौपत—वि० [हिं० चौ=चार+परत] १ चार तहो या परतो मे लगाया या लपेटा हुआ। २ जिसकी या जिसमे चार तहे हो।

पु० [?] पत्थर का वह टुकडा जिसकी कील पर कुम्हार का चाक रखा रहता है।

चौपतना, चौपताना—स० [हिं० चौपात] १ किसी चीज विशेषत. कपडे आदि की चार तहे लगाना। २ लपेटकर तह लगाना।

चौपतिया—वि० [हिं० चौ+पत्ती] १ चार पत्तोवाला। जिसमे चार पत्ते हो। २ जिसमे चार पत्तियाँ एक साथ दिखाई गई हो। जैसे—चौपतिया फूल, चौपतिया कसीदा।

स्त्री० १ कसीदे, चित्रकला आदि मे, ऐसी बूटी जिसमे चार पत्तियाँ बनी हो। २ एक प्रकार का साग। ३ एक प्रकार की घास जो गेहूँ की खेती को हानि पहुँचाती है।

चौपथ—पु० [स० चतुष्पथ] १ चौराहा। चौमुहानी। २ वह पत्थर जिसकी कील पर कुम्हार का चाक रहता है।

चौपद (१)—पु० [स० चतुष्पद] १ चार पैरोवाला पशु। चौपाया। २ एक प्रकार का छद। चतुष्पद।

चौपया—पु०=चौपाया।

चौपर—स्त्री०=चौपड।

चौपरतना—स०=चौपतना।

चौपल—पु०=चौपथ।

चौपहरा—वि० [हिं० चौ=चार+पहर] [स्त्री० चौपहरी] १ चार पहर का। चार पहर-सबधी। २ चार-चार पहरो के अतर पर होनेवाला। ३ चारो पहर अर्थात् हर समय (दिन भर या रात भर) होता रहनेवाला। जैसे—चौपहरी नौबत बजना।

चौपहल—वि० [हिं० चौ+फा० पहलू, स० फलक] जिसके या जिसमे चार पहल या पार्श्व हो। जिसमे लबाई, चौडाई और मोटाई हो। वर्गात्मक।

चौपहला—पु०=चौपाल (डोला)।

वि०=चौपहल।

चौपहलू†—वि०=चौपहल।

चौपहिया—वि० [हिं० चौ+पहिया] चार पहियोवाला। जिसमे चार पहिये हो। जैसे—रेल-गाडी का चौपहिया डिब्बा।

पु० चार पहियोवाली गाडी।

चौपहिलू†—वि०=चौपहल।

चौपा†—पु०=चौपाया।

चौपाई—स्त्री० [स० चतुष्पदी] चार चरणो का एक प्रसिद्ध मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती है।

†स्त्री० चारपाई।

चौपाड़†—पु०=चौपाल।

चौपाया—पु० [स० चतुष्पाद, चतुष्पदी, प्रा० चौप्पअ, चउपाइया, बँ० उ० चौपाया, सिं० चौपाई, गु० चोपाई] ऐसा पशु जो चारो (दो अगले और दो पिछले) पैरो से चलता हो। जैसे—गाय, घोडा, हिरन आदि।
वि० जिसमे चार पाये या पावे हो।

चौपार†—स्त्री०=चौपाल। उदा०—सब चौपारिन्ह चदन खभा।—जायसी।

चौपाल—पु० [हिं० चौबार] १ ऊपर से छाया हुआ और चारो ओर से खुलता स्थान जहा देहात के लोग बैठकर बात-चीत, विचार-विमर्श आदि करते है। २ छायादार बडा चबूतरा। ३ देहाती मकानो के आगे का दालान या बरामदा। ४ एक प्रकार की पालकी जो ऊपर से छायादार पर चारो ओर से खुली हुई होती है।

चौपुरा—पु० [हिं० चौ=चार+पुर=चरस+आ (प्रत्य०)] वह बडा कूआँ जिस पर एक साथ चार पुर या मोट चलते अथवा चल सकते हो।

चौपेजी—वि० [हिं० चौ (चार)+अ० पेज] १ चार पृष्ठोवाला। २ (पुस्तको आदि की छपाई मे कागज) जिसके पूरे ताव को दो बार मोडकर चार सम पृष्ठो मे विभक्त किया गया हो। (क्वार्टो)

चौपैया—पु० [स० चतुष्पदी] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३० मात्राएँ और अन्त मे गुरु होत। है।

चौफला—वि० [हिं० चौ+फल] चाकू या ऐसा ही और कोई धारदार (अस्त्र) जिसमे चार फल लगे हो।

चौफुलिया—वि० [हिं० चार+फूल] १ (पौधा) जिसमे चार फूल एक साथ निकलते हो। २ (अकन, चित्रण या रचना) जिसमे चार फूल एक-साथ बने या बनाये गये हो।

चौफेर—क्रि० वि० [हिं० चौ+फेर] चारो ओर। चारो तरफ।
वि० चार ओर फेरा या मोडा हुआ।

चौफेरी—स्त्री० [हिं० चौ+फेरा] १ चारो ओर लगाई जानेवाली फेरी। परिक्रमा। २ मुग्दर भाँजने का एक विशिष्ट प्रकार।
क्रि० वि० चारो ओर।

चौबदी—स्त्री० [हिं० चौ+बदी] १ कोई चीज चारो ओर से बाँधने की क्रिया या भाव। जैसे—पल्ले की चौबदी। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का पहनावा जिसके दोनो तरफ दो-दो बद लगते है। बगल-बदी। ३ घोडे के चारो सुमो मे नाल जडने की क्रिया।

चौबंसा—पु० [स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक नगण और एक यगण रहता है।

चौबगला—पु० [हिं०] १ कुरती, अगे आदि मे दोनो ओर बगल के नीचे और कली के ऊपर पडनेवाला भाग।
क्रि० वि० चारो ओर।
वि० [स्त्री० चौबगली] जिसमे चार बगले या पार्श्व हो।

चौबगली—स्त्री० [हिं० चौ+अ० बगल] बगलबदी नाम का पह-नावा।

चौबच्चा†—पु०=चहबच्चा।

चौबरदी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+बर्द] वह गाडी जिसमे चार बरद या बैल जुते या जुतते हो।

चौबरसी—स्त्री० [हिं० चौ+बरसी] १ वह उत्सव या कृत्य जो किसी घटना के चौथे बरस होता हो। २ हिंदुओ मे किसी मृतक की मरण तिथि से चौथे वर्ष होनेवाला श्राद्ध।

चौबरा—पु० [हिं० चौ=चार+बखरा] जमीदार को मिलनेवाला फसल मे का चौथाई अश।

चौबा—पु० [स्त्री० चौबाइन]=चौबे।

चौबाई—स्त्री० [हिं० चौ+बाई=हवा] १ चारो ओर से बहनेवाली हवा। २ चारो ओर फैलनेवाली खबर या होनेवाली धूम-धाम। ३ चारो ओर फैलनेवाली निन्दा या बदनामी।

चौबाछा—पु० [हिं० चौ=चार+बाछना=कर या चदा वसूल करना] मुगल शासन-काल मे पाग (प्रति मनुष्य), ताग (प्रति बालक), कूरी (प्रति घर) और पूँछी (प्रति चौपाया) के हिसाब से लगनेवाला एक कर।

चौबार†—पु०=चौबारा।

चौबारा—पु० [हिं० चौ (चार)+बार (द्वार)] १ वह कमरा जिसमे चार विशेषत चारो ओर एक-एक दरवाजा हो। २ मकान के ऊपरी तल्ले पर का कमरा जिसके चारो ओर प्राय दरवाजे होते हैं।
क्रि० वि० चौथी बार। जैसे—वे चौबारा भी आ सकते है।

चौबाहा†—वि० [हिं० चौ+बाहना (जोतना)] (खेत) जो बोने से पहले चार बार जोता गया हो।
पु० चार बार खेत जोतने की क्रिया या भाव।

चौबिस—वि०=चौबीस।

चौबीस—वि० [स० चतुर्विशति, प्रा० चउवीस, चव्वीस, सिं० चोवीह, प० चौबी,] जो गिनती मे बीस से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२४।

चौबीसवाँ—वि० [हिं० चौबीस+वाँ] क्रम या गिनती मे चौबीस के स्थान पर पडनेवाला।

चौबे—पु० [स० चतुर्वेदी, प्रा० चउब्बेदी] [स्त्री० चौबाइन] व्रज-मडल मे रहनेवाले चतुर्वेदी ब्राह्मण।

चौबोला—पु० [हिं० चौ+बोल] १५ मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त मे लघु-गुरु होता है।

चौभड़—स्त्री०=चौघड। (दे०)

चौभी—स्त्री० [हिं० चोभना] हल मे की वह लकडी जिसमे फाल जडा होता है।

चौमजिला—वि० [हिं० चौ=चार+फा० मजिल] (भवन) जिसमे चार मजिलें या तल्ले हो। चार खडोवाला।

चौमसिया—वि० [हिं० चौमासा+इया (प्रत्य०)] १ चौमासे से सबध रखनेवाला। चौमासे का। २ चौमासे मे होनेवाला।

चौमहला—वि० [हिं० चौ+महल] चार खडो या तल्लोवाला। चौम-जिला (मकान)।

चौ-माप—स्त्री० [हिं० चौ (=चार)+स० माप] कोई चीज नापने के ये चार अग—लबाई, चौडाई, ऊँचाई तथा काल या इन चारो का समन्वित रूप। चारो आयाम। विशेष दे० 'आयाम'।

चौ-मापी—वि० [हिं० चौ-माप] चार आयामोवाला। उदा०—वीर मुझे वितरण करना है चौमापी धरती अम्बर को।—बच्चन।

चौमार्ग—पु० [स० चतुर्मार्ग] चौरस्ता। चौमुहानी।

चौमास—पु०=चौमासा।

चौमासा—पु० [स० चतुर्मास] १ वर्षाऋतु के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, और आश्विन। चातुर्मास। २ उक्त ऋतु मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। ३ किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने का कृत्य या उत्सव।
वि० १ चातुर्मास मे होनेवाला। २ चार महीनो मे होनेवाला।
वि० पु० दे० 'चौमसिया' (तौल)।

चौमासी—स्त्री० [हिं० चौमासा+ई (प्रत्य०)] बरसात मे गाया जानेवाला एक प्रकार का श्रृगारिक गीत।
वि०=चौमासा।

चौमुख—क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] चारो ओर। चारो तरफ।
वि०=चौमुखा।

चौमुखा—वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] [स्त्री० चौमुखी] १ जिसके चारो ओर चार मुख हो। जैसे—चौमुखा दीया।
मुहा०—चौमुखा दीया जलाना=दीवाला निकालना। दिवालिया बनना।
२ जो चारो अथवा सब ओर उन्मुक्त या प्रवृत्त हो। जैसे—चौमुखी लडाई।

चौमुहानी—स्त्री० [हि० चौ=चार+फा० मुहाना] वह स्थान जहाँ से चारो ओर चार रास्ते जाते हो। चौरस्ता। चौराहा।

चौमेंडा—पु० [हि० चौ=चार+मेड+आ (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ पर चार खेतो की मेडे या सीमाएँ मिलती हो।

चौमेखा—वि० [हिं० चौ=चार+मेख] जिसमे चार मेखे या कीले हो। चार मेखोवाला।
पु० प्राचीन काल का एक कठोर दड जिसमे अपराधी के प्राण लेने के लिए उसको जमीन पर चित लेटाकर उसकी हथेलियो और तलुए जमीन मे मेखो से इस प्रकार ठोक देते थे कि वह उठ-बैठ या हिल-डोल नही सकता था।

चौरग—वि० [हिं० चौ=चार+रग] १ चार रगोवाला। चौरगा। २ चारो ओर समान रूप से होनेवाला। ३ सब प्रकार से एक-जैसा। ४ तलवार से ठीक, पूरा या साफ कटा हुआ।
पु० तलवार चलाने का वह ढग या प्रकार जिसमे कडी से कडी अथवा भारी से भारी चीज एक ही हाथ से ठीक और पूरी कट जाती अथवा मुश्किल से मुश्किल वार एक ही हाथ मे पूरा उतरता या सफल होता है।

चौरगा—वि० [हिं० चौ+रग] [स्त्री० चौरगी] चार रगोवाला।

चौरगिया—पु० [हिं० चौ+रग] मालखभ की एक प्रकार की कसरत।

चौर—पु० [स० चुरा+ण] १ दूसरो की चीजे चुरानेवाला। चोर। २. चोर नामक गध द्रव्य। ३ चोर-पुष्पी।
पु० [स० चुडा ?] वह गड्ढा या ताल जिसमे बरसाती पानी इकट्ठा होता हो। खादर।

चौरई†—स्त्री०=चौराई।

चौर-चार—स्त्री० [?] चहल-पहल। (बुन्देल०) उदा०—बडी चौर-चार होगी।—वृन्दावनलाल वर्मा।

चौरठ, चौरठा†—पु०=चौरेठा।

चौरस—वि० [स० चतुरस्र, प्रा० चउरस] १ जो चारो ओर से एक रस हो। सब तरफ से एक-जैसा। २ (स्थल) जिसके सब बिंदु एक समान ऊँचाई के हो। ३ जिसका ऊपरी तल सम हो, कही पर ऊँचा-नीचा या ऊबड-खाबड न हो। जैसे—चौरस जमीन। ४ चौपहल।
पु० १. ठठेरो का एक औजार जिससे वे बरतनो का तल खुरचकर चौरस या सम करते है। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और एक यगण होता है। इसको 'तनुमध्या' भी कहते हैं।

चौरसा—वि० [हिं० चौ+रस] जिसमे चार प्रकार के रस या स्वाद हो। चार रसोवाला।
पु० १ चार रुपए भर का बाट। २ मन्दिर मे ठाकुर या देवता की शय्या पर बिछाने की चादर।

चौरसाई—स्त्री० [हिं० चौरसाना] १ जमीन आदि चौरस करने या होने की अवस्था या भाव। चौरसपन। २ जमीन चौरस करने की पारिश्रमिक या मजदूरी।

चौरसाना—स० [हिं० चौरस] चौरस करना। बराबर करना। किसी वस्तु का तल चौरस या सम करना या बनाना।

चौरसी—स्त्री० [हिं० चौरस] १ बाँह पर पहनने का एक प्रकार का चौकोर गहना। २ अन्न रखने का कोठा या बखार।

चौरस्ता—पु० [हिं० चौ+फा० रास्ता] वह स्थान जहाँ पर चार रास्ते मिलते हो अथवा चार ओर रास्ते जाते हो। चौराहा।

चौरहा†—पु०=चौराहा।

चौरा—पु० [स० चतुर, प्रा० चउर] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १ चबूतरा। बेदी। २ चबूतरे या वेदी के रूप मे बनी हुई वास्तु-रचना जिसमे किसी देवी-देवता, भूत-प्रेत, अथवा मृत साधु-सन्त या सती-साध्वी का निवास माना जाता है और इसी लिए जिसकी पूजा की जाती है।
†पु० [स० चामर] सफेद पूँछवाला बैल।
†पु० [?] बोडा या लोबिया नाम की फली।
स्त्री० [स० चुरा+ण—टाप्] गायत्री का एक नाम।

चौराई—स्त्री० [?] १ एक प्रकार का साग। चौलाई।
मुहा०—चौराई बाँटना=उदारतापूर्वक कोई चीज चारो ओर देते या दिखाते फिरना। (बाजारू)
२ एक प्रकार की चिडिया जिसके डैने चितकबरे, पूँछ ऊपर से लाल और नीचे से सफेद, गला मटमैले रग का और चोच तथा पैर पीले रग के होते है। ३ एक रीति जिसमे किसी व्यक्ति को निमत्रण देते समय उसके घर के द्वार पर हल्दी मे रगे हुए चावल रखे या छिडके जाते हैं।

चौरानबे—वि० [स० चतुर्नवति, प्रा० चउण्णवइ] जो गिनती या सख्या मे नब्बे से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९४।

चौरानयन—पु० [स० चौर्य-आनयन] कर, दड आदि से बचने के लिए कोई चीज चोरी से या छिपाकर एक देश या स्थान से दूसरे देश या स्थान मे ले आना या ले जाना। (स्मगलिंग) जैसे—भारत और पाक की सीमा पर होनेवाला चौरानयन।

चौराष्टक—पु० [स० चौर—अष्टक, ब० स०] षाडव जाति का एक सकर राग जो सबेरे के समय गाया जाता है।

चौरासी—वि० [स० चतुरशीति, प्रा० चउरासीइ] जो गिनती या सख्या मे अस्सी से चार अधिक हो।
पु० १ उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८४।
मुहा०—चौरासी मे पडना या भरमना=बार-बार जनमना और मरना। चौरासी लाख योनियो मे एक-एक रूप छोडकर और हर बार दूसरा रूप धारण कर आना-जाना। इस लोक मे आत्मा का बार-बार आना-जाना।
२ घुँघरुओ का वह गुच्छा जो नाचते समय पैर मे पहनते है। ३ छोटा घुँघरू। ४ पत्थर काटने की एक प्रकार की टाँकी। ५ बढइयो की एक प्रकार की रुखानी।

चौराहा—पु० [हिं० चौ=चार+राह=रास्ता] वह स्थान जहाँ चारो ओर से आनेवाले मार्ग मिलते हो अथवा चारो दिशाओ को मार्ग जाते हो। चौमुहानी। चौरस्ता।

चौरिंदी *वि०=चउरिंदी।

चौरी—स्त्री० [स० चोर+ङीष्] १ चुराने की क्रिया या भाव। चोरी। २ गायत्री देवी का एक नाम।
स्त्री० [हिं० चौरा का स्त्री० रूप] १ छोटा चबूतरा। २ विवाह मडप।
स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का पेड जिसकी छाल से रग बनता और चमडा सिझाया जाता है। २ एक प्रकार का पेड जो हिमालय मे होता है और जिसकी छाल दवा के काम मे आती है।
स्त्री० [स० चाभर] छोटा चँवर।

चौरेठा—पु० [हिं० चाउर (=चावल)+पीठा] चावल को महीन पीस-कर बनाया जानेवाला चूर्ण जो कई प्रकार के पकवान बनाने के काम आता है।

चौर्य—पु० [स० चोर+ष्यञ्] १ चोर होने की अवस्था या भाव। २ चीजे चुराने की क्रिया या भाव। चोरी।
पु०=चोल (देश)।

चौर्य-रत—पु० [मध्य० स०] गुप्त मैथुन।

चौर्य-वृत्ति—स्त्री० [मध्य० स०] १ दूसरो का माल चुराते रहने का स्वभाव। २ चुराये हुए माल से जीविका चलाना।

चौल-कर्म (न्)—पु० [स०चौल=चौड+कर्मन्, कर्म० स०] चूडाकर्म। मुडन।

चौ-लडा—वि० [हिं० चौ+लड] [स्त्री० चौ-लडी] जिसमे चार लड या मालाएँ हो। जैसे—चौ-लडा झुमका या हार।

चौला—पु० [देश०] एक लता और उसके बीज। बोडा। लोबिया।

चौलाई—स्त्री० [?] १ एक पौधा जिसका साग खाया जाता है। उदा०—चौलाई लाल्हा अरु पोई। मध्य मेलि निबुआन निचोई।—सूर। २ छोटी-छोटी पत्तियोवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्तो का साग बनाया जाता है। ३ इस पौधे के पत्ते जिनका साग बनता है।

चौलावा—पु० [हिं० चौ+लाना=लगाना] वह बडा कूआँ जिसमे एक साथ चार मोट चल सके।

चौलि—पु० [स० चौल+इञ्] एक प्राचीन ऋषि।

चौलुक्य—पु० [स० चुलुक+यञ्] १ चुलुक ऋषि के वशज। २ दे० 'चालुक्य'।

चौली—पु० [देश०] बोडा या लोबिया नाम की फली।

चौवन—वि० [स० चतुपञ्चाशत्, पा० चतुपञ्जासो, प्रा० चउवराण] जो गिनती या सख्या मे पचास से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५४।

चौवा—पु० =चौआ।

चौवाई—स्त्री०=चौबाई।

चौवालीस—वि० [स० चतुश्चत्वारिंशत्, पा० चतुचत्तालीसति, प्रा० चउव्वालीसइ] जो गिनती या सख्या मे चालीस से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—४४।

चौस—पु० [हिं० चौ=चार+स (प्रत्य०)] १ वह खेत जो चार बार जोता गया हो। २ खेत को चौथी बार जोतने की क्रिया। चौथी जोताई।
पु० चूर्ण। बुकनी।

चौसठ—वि० दे० 'चौसठ'।

चौसठ-घडी—पद [हिं०] सारा दिन। दिन और रात। आठो पहर। जैसे—चौसठ घडी रोना ही बदा है।

चौसर—पु० [हिं० चौ=चार+सर=बाजी अथवा चतुस्सरि] १ एक प्रकार का खेल जो बिसात पर चार रगो की चार-चार गोटियो और तीन पासो से खेला जाता है। चौपड। नर्दबाजी। २ उक्त खेल की बिसात। ३ चार लडोवाला हार। ४ खेल मे लगातार चार बार होनेवाली जीत। चार सरो की जीत। ५ ताश के नकश नामक खेल मे किसी खिलाडी के हाथ मे एक साथ तीन तसवीरे आना जिससे चौगुनी जीत होती है।

चौसरी—स्त्री०=चौसर।

चौसल्ला—पु० [हिं० चौ =चार+सालना] १ चौकोर जमीन पर विशेषत आँगन की चारो दीवारो पर लबाई के बल रखे हुए चार शहतीर जिन पर इमारत खडी की जाती है। २ उक्त शहतीरो के ऊपर बनी हुई इमारत।

चौसिंगा—वि० [हिं० चौ =चार +सीग] चार सीगोवाला। पु० एक प्रकार का हिरन जिसके चार सीग होते है।

चौसिंघा—वि०, पु०=चौसिंगा।
पु०=चौसिंहा।

चौसिंहा—पु० [हिं० चौ=चार+सीव=सीमा] वह स्थान जहाँ चार गाँवो की सीमाएँ मिलती हो।

चौहट, चौहट्ट—पु०=चौहट्टा।

चौहट्टा—पु० [हिं० चौ =चार+हाट] १ वह स्थान जिसके चारो ओर हाट या दुकाने हो। २ उक्त प्रकार का बाजार। ३ चौरस्ता। चौमुहानी।

चौहड़†—पु०=चौघड (दे०)।

चौहत्तर—वि० [स० चतु सप्तति, प्रा० चौहत्तरि] जो गिनती या सख्या मे सत्तर से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७४।

चौहद्दी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+हद=सीमा] १ किसी क्षेत्र या

स्थान के चारो ओर (पूरब, पच्छिम, उत्तर और दक्खिन) की सीमा। जैसे—खेत या मकान की चौहद्दी २ किसी मकान या जमीन के चारो ओर पडनेवाले मकानो, जमीनो, सडको आदि का विस्तृत विवरण ।

स्त्री० [सं० चातुर्भद्र, प्रा० चाउहद्द+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का अवलेह जो जायफल, पिप्पली, काकडासिंगी और पुष्करमूल को पीसकर शहद मे मिलाने से बनता है।

चौहरा—वि० [हिं० चौ=चार+हर (प्रत्य०)] [स्त्री० चौहरी] १ जिसमे चार तहे या परते हो। जैसे--चौहरा कपडा। २ चौगुना। पु० १ एक मे बँधी हुई एक ही प्रकार की चार चीजे। जैसे--पानो का चौहरा। २. दे० 'चौघडा।'

चौहलका—पु० [चौ=चार+फा० हल्क =घेरा ?] गलीचे की एक प्रकार की बुनावट।

चौहान—पु० [हिं० चौ=चार+भुजा] अग्निकुल के अतर्गत क्षत्रियो की एक प्रसिद्ध शाखा जो प्राय उत्तर भारत मे निवास करती है।

चौहें†—क्रि० वि० [देश०] चारो ओर। चारो तरफ।

च्यंतना*--अ० [सं० चिंतन] १ चिंतन करना। २ चिंता करना।

च्यतामनि—स्त्री० १ दे० 'चेतावनी'। २ दे० 'चितामणि।'

च्यवन—पु० [स०√च्यु (टपकना) +ल्युट्—अन] १ बूँद-बूँद करके चूना या टपकना। २ [√च्यु+ल्यु—अन] एक प्राचीन ऋषि जो भृगु के पुत्र थे।

च्यवन-प्राश—पु० [स० मध्य० स०] वैद्यक मे आँवले के रस से बना हुआ एक प्रकार का अवलेह। कहते है कि यह अवलेह पहले-पहल अश्विनी कुमारो ने च्यवन ऋषि का वृद्धत्व और अधत्व दूर करने के लिए बनाया था।

च्यारि—वि०=चार। उदा०—च्यारि प्रकार पिष्पि बन-वारन।—चदवरदाई।

च्यावन—पु० [स०√च्यु+णिच्+ल्युट्—अन] १ चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव। २ निकाल देना।

च्युत—वि० [स०√च्यु+क्त] [भाव० च्युति] १ ऊपर से गिरा, चूआ, झडा या टपका हुआ। २ अपने उचित या नियत स्थान से उतर, गिर या हटकर नीचे आया हुआ। गिरा हुआ। पतित। जैसे—पद-च्युत। ३ औचित्य की सीमा से हटकर अनौचित्य की सीमा मे आया हुआ। जैसे—कर्तव्य-च्युत। ४ नष्ट-भ्रष्ट।

च्युत-मध्यम—पु० [ब० स०] सगीत मे दो श्रुतियो का एक विकृत स्वर जो पीति नामक श्रुति से आरभ होता है।

च्युत-षड्ज—पु० [ब० स०] सगीत मे दो श्रुतियो का एक विकृत स्वर जो मदा नामक श्रुति से आरभ होता है।

च्युत-सस्कारता—स्त्री० [स० च्युत्-सस्कार ब० स०,+तल्—टाप्] १ सस्कार से च्युत होने की अवस्था या भाव। २ साहित्य मे काव्य या रचना का वह दोष जो व्याकरण-विरुद्ध पदविन्यास करने पर होता है। साहित्यिक रचना का व्याकरण-सबधी दोष।

च्युत-सस्कृति—स्त्री० [कर्म०स०]=च्युत-सस्कारता।

च्युतात्मा (त्मन्)—वि० [स० च्युत—आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा या विचार औचित्य और मर्यादा की सीमा से गिरे हुए या पतित हो।

च्युताधिकार—वि० [स० च्युत—अधिकार, ब० स०] अपने अधिकार, पद आदि से हटा या हटाया हुआ।

च्युति—स्त्री० [स०√च्यु+क्तिन्] १ च्युत होने अर्थात् ऊपर से गिरने, चूने, झडने या टपकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ अपने स्थान से हट जाने विशेषत नीचे आ जाने का भाव। पतन। ३ तत्परतापूर्वक कोई काम न करने की स्थिति। जैसे—कर्तव्य-च्युति। ४ अभाव। कमी। ५ गुदा। मलद्वार। ६ भग। योनि।

च्युप—पु० [स०√च्यु+प कित्] मुख। चेहरा।

च्यटा—पु० [अल्पा० च्यूँटी] च्यूँटी की जाति और प्रकार का, किन्तु आकार मे उससे बडा कीडा।

च्यूँटी—स्त्री० [हिं० चिमटना] एक प्रकार का बहुत छोटा कीडा जो गुड, चीनी आदि या मीठी और रमवाली चीजे खाता है और जमीन आदि मे गड्ढा करके तथा उसी मे अपना घर बनाकर रहता है।

मुहा०—च्यूँटी की चाल चलना=बहुत धीरे-धीरे और प्राय रुक-रुक कर चलना। **च्यूँटी के पर निकलना**=मृत्यु या विनाश का समय समीप आना।

च्यूडा—=चिडवा।

च्यूत—पु० [स०√च्युत्, पृषो० दीर्घ] आम का पेड और फल।

च्योत—पु० [स०=च्युत, पृषो०गुण] च्युत होने की क्रिया या भाव। च्युति।

छ

छ—देवनागरी वर्ण-माला के चवर्ग का दूसरा व्यजन जो उच्चारण की दृष्टि से तालव्य, अघोष, महाप्राण और स्पष्ट है। कभी-कभी इसका प्रयोग ६ सख्या के सूचक के रूप मे होता है।

छग*—पु० [हिं० उछग] गोद।

छगा—वि० [हिं० छ +उँगली] [स्त्री० छगी] जिसके हाथ मे (पाँच की जगह) छ उँगलियाँ हो।

छँगुनियाँ*—स्त्री०=छँगुली।

छँगुलिया†—स्त्री०=छँगुली।

छँगुली†—स्त्री० [हिं० छोटी+उँगली)] हाथ की सबसे छोटी उँगली।

छगू—पु०= छगा।

छँछला†—पु० [अनु०] छन छन शब्द (नूपुरो आदि का)।

छछाल—स्त्री० [?+हिं० उछाल] छोटी धारा। फव्वारा। उदा०—रायजादी घर-अगणइ छुटे पेट, छुटे पेट छछाल।—ढोला मारू।

छँछौरी—स्त्री० =छछौरी।

छंट—क्रि० वि० [हिं० झट ?] शीघ्र। जल्दी। उदा०—कहै सखी सूँतीर लै रावल छट उनय।—जटमल।

छँटना—अ०[हि० छाँटना] १. किसी वस्तु अथवा उसके किसी अश का कटकर अलग होना। जैसे—सिर के बाल या पेड की डाल छँटना। २ किसी का अपने वर्ग या समूह से अलग होना। जैसे—दल मे से चार आदमियो का छँटना। ३ किसी वस्तु मे से अतिरिक्त, अनावश्यक या फालतू अश निकलकर अलग होना। जैसे—कार्यालय से कर्मचारियो का छँटना। ४ छिन्न-भिन्न या तितर-बितर होना। जैसे—बादल छँटना, भीड छँटना। ५ किसी क्रिया के फल-स्वरूप कम होना या नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे—आँख की लाली छँटना, कपडे की मैल छँटना। ६ चुन कर अच्छी वस्तुएँ अलग रखी जाना। जैसे—ये अनार छँटे हुए हैं।

पद—छँटा हुआ=चालाक या धूर्त्त (व्यक्ति)।

७ आकार या मोटाई मे कम होना। क्षीण होना।

छँटनी—स्त्री०[हि० छाँटना] १ छाँटने या छाँटे जाने की क्रिया या भाव। छँटाई। २ किसी काम या कार्यालय मे लगे हुए आवश्यकता से अधिक कर्मचारियो या कार्यकर्त्ताओ को निकालकर अलग करने या सेवा से हटाने का काम। (रिट्रेन्चमेंट)

छँटवाना—स०[हि० छाँटना का प्रे० रूप] छाँटने का काम दूसरे से कराना।

छँटाई—स्त्री०[हि० छाँटना] १ छाँटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'छँटनी'।

छँटाना†—स०=छँटवाना।

छँटाव—पु०[हि० छाँटना] छाँटने की क्रिया या भाव। छँटाई।

छँटुआ†—वि०[हि० छाँटना] १ छाँटकर निकाला हुआ। (पदार्थ) २ जिसमे से अच्छी वस्तुएँ छाँटकर निकाल ली गई हो। बचा-खुचा या रद्दी। जैसे—छँटुआ माल।

छँटैल—वि०[हि० छाँटना] १ छँटुआ। (दे०) २ (व्यक्ति) जो बहुत ही धूर्त्त हो। छँटा हुआ।

छँटौनी†—स्त्री०=छँटनी।

छंडना*—स०[हि० छोडना] छोडना। छोड देना। उदा०—इमि रसाल गुन गरुब, वधि वसुधा महि छडहि।—चदवरदाई।

स०[हि० छडना] १ किसी चीज का रद्दी अश निकालने के लिए उसे कूटना। जैसे—ओखली मे धान छड़ना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना।

छंड़ाना*—स०[हि० छुडाना] १ मुक्त कराना। २ छीन लेना।

†स०[हि० छडना का प्रे० रूप] छडने का काम दूसरे से कराना।

छंडुआ†—वि०[हि० छाडना] १ छोडा हुआ। त्यागा हुआ। २ मुक्त किया हुआ।

छंदःशास्त्र—पु०[ष० त०] वह शास्त्र जिसमे विभिन्न छदो के रूप और लक्षण बतलाये जाते है।

छंद—पु०[स०√छद् (प्रसन्न करना)+घञ्] १ अभिलाषा। इच्छा। २ अभिप्राय। मतलब। ३ उपाय। तरकीब। युक्ति। ४ तरह-तरह के रूप धारण करने की क्रिया या भाव। ५ कपट। छल। ६ सघात। समूह। ७ गाँठ। बधन।

पु०[स० छदस् (√छद्+असुन्)] १ मात्राओ या वर्णों का कोई निश्चित मान जिसके अनुसार किसी पद्य के चरण लिखे जाते है। आकार, विस्तार आदि के विचार से वे रूप या साँचे जिनमे पद्यात्मक रचना बनती है। (मीटर)

विशेष—हमारे यहाँ छद दो प्रकार के होते है—मात्रिक और वर्णिक। मात्रिक छद को मात्रा-वृत्त और जाति छद तथा वर्णिक को वर्ण-वृत्त भी कहते है।

२ वह साहित्यिक पद्यात्मक रचना जो किसी छद के नियमो के अनुसार लिखी गई हो। ३ विवाह के समय वर द्वारा कन्या पक्षवालो को सुनाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी कविता। ४ वेद। ५ मनमाना आचरण। स्वेच्छाचार।

पु०[स० छदक] कलाई पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।

छदक—पु०[स० √छद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ वासुदेव। २ गौतम बुद्ध का सारथी।

वि० रक्षा करनेवाला।

छंदना—अ०[हि० छद] १ छद बनाना। २ किसी छद मे कविता करना। ३ कविता करना। उदा०—दुख-प्रद उभय बीच कुछ छदूँ।—निराला।

अ०[हि० छाँदना का अ० रूप] छाँदा अर्थात् बाँधा जाना। जैसे—गधे या घोडे का पैर छदना।

छँदरना†—स०[स० छद] धोखा देना। छलना।

छंदवासी (सिन्)—वि०[स० छद√वस् (रहना)+णिनि] [स्त्री० छदवासिनी] उच्छृखलतापूर्ण और मनमाना आचरण करनेवाला।

छदा—वि०[हि० छानना] [स्त्री० छँदी] चरने के लिए छोडा हुआ (पशु) जिसके दोनो पैर बँधे हुए हो।

छंदानुवृत्ति—स्त्री०[छद-अनुवृत्ति तृ० त०] किसी को किसी छल या बहाने से प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

छंदित—भू० कृ०[स०√छद+क्त] प्रसन्न किया हुआ।

छंदोगति—स्त्री०[स० छदस्-गति, ष०त०] किसी छद मे शब्दो आदि की वह योजना जिसके द्वारा उसके पढने मे एक विशेष प्रकार की गति या लय का अनुभव हो।

छंदोदोष—पु०[स० छदस्+दोष, ष० त०] छद मे निश्चित मात्राओ या वर्णों से अधिक या कम मात्राएँ या वर्ण होने का दोष। (छदशास्त्र)

छंदोबद्ध—वि०[स० छदस्-बद्ध स०त०] (साहित्यिक रचना) जो किसी छद या पद्य के रूप मे हो। छद या पद्य के रूप मे बँधा या रचा हुआ (कथन या लेख)। (मीट्रिकल)

छंदोभंग—पु०[स० छदस्-भग, ष०त०] छद-रचना मे छद शास्त्र के नियमो के पालन की वह त्रुटि जिससे उसमे ठीक गति या लय का अभाव होता है अथवा ठीक स्थान पर यति या विराम नही होता।

छः—वि०[स० षट्, पा० प्रा० छ, अप० चह, ब० छय, ओ० छअ, प० छे, ल्हा० छे, छी, ने० सिं० गु० छ, सिंह० स० सय, ह, हय, मरा० सहा] जो गिनती मे पाँच से एक अधिक हो।

पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६।

छई—स्त्री०[हि० छाना] सतान। औलाद। उदा०—अब की छई की निराली बाते।—कहा०।

†स्त्री०=क्षय (रोग)।

छउँड़ा†—वि०[स्त्री० छउँडी]=छौडा (छोकरा)।

छउनी†—स्त्री० =छावनी।

छकड़ा—पु०[स शकट] [स्त्री० अल्पा० छकडी] माल ढोने की वह छोटी गाडी जिसे आदमी या बैल खीचते हो।

छकड़ी—स्त्री०[हिं० छ] १ छ का समूह। २. वह पालकी जिसे छ कहार उठाते है।

छकना—अ०[स० चकन] [भाव० छाक] १ किसी प्रकार की यथेष्ट प्राप्ति से पूर्ण सतुष्ट होना। २. कौशल, चातुरी आदि मे परास्त होना। हारना।

स० कोई चीज इतनी मात्रा मे खाना या पीना कि पूरी तृप्ति हो जाय। जैसे—प्रसाद या भोजन छकना।

अ० [स० चक्र=भ्रात] १ चकराना। २ भ्रम मे पडकर परेशान होना।

छकाछक—क्रि० वि०[हिं० छकना] १ पूरी तरह से। भरपूर। २ भली-भाँति।

वि० १ पूर्ण रूप से तृप्त। २. नशे मे भरा हुआ।

छकाना—स०[हिं० छकना] १. किसी को कुछ देकर पूरी तरह से तृप्त या सतुष्ट करना। २ किसी को अच्छी तरह खिला-पिलाकर तृप्त करना। जैसे—ब्राह्मणो को हलुआ-पूरी छकाना। ३ किसी को किसी प्रयत्न या प्रयास मे परास्त या विफल करने के लिए कौशल, छल आदि से दु खी और शिथिल करना।

छकित—वि०[हिं० छकना] छका हुआ।

†वि०=चकित।

छकीला*—वि०[हिं० छकना] १ छकनेवाला। जी भरकर कोई चीज खाने या पीनेवाला। २ छका हुआ। तृप्त। उदा०—रगनि ढरीले हौ छकीले मद-मोह तें।—घनानद। ३ मस्त। ४ नशे मे चूर।

छकौहाँ—वि०[हिं० छकना] १ छकनेवाला। २ छकानेवाला।

छक्करा—पु०[हिं० छक्का-पजा या छल] छल-कपट। दाँव-पेच।

†पु०=छकडा।

छक्कवै*—पु०[स० चक्रवर्ती] चक्रवर्ती। उदा०—अनगपाल छक्कवै, बुद्धि जो इसी उकिल्लिय।—चदवरदाई।

छक्का—पु०[स० षड्क, प्रा० छक्को] १ छ का समूह। २ छ अगो या अवयवोवाली वस्तु। ३ चौसर के खेल मे पासे का वह पहल जिस पर छ बिंदियाँ होती है।

पद—छक्का-पजा=दाँव-पेच।

मुहा०—(किसी का या के) छक्का या छक्के छूटना=प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि मे पूरी तरह से परास्त या विफल होकर निरुपाय और हताश होना। **छक्का पजा भूलना**=परास्त या विफल होकर ऐसी स्थिति मे होना कि कोई और युक्ति सूझ न पडे।

४ सोलही के खेल मे वह स्थिति जिसमे छ कौडियाँ चित पडे। ५ ताश का वह पत्ता जिस पर छ बूटियाँ होती हैं।

छक्का-पंजा—पु०[हिं० छक्का+पजा] दाँव-पेच। छल-कपट।

छक्केबाज—वि०[हिं० छक्का+फा० बाज] [भाव० छक्केबाजी] बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

छगडा†—पु०[स० छागल] बकरा।

†पु०=छकडा।

छगन—पु० [स० छगट=एक छोटी मछली] छोटा बच्चा। छोटा बालक।

छगन-मगन—पु०[हिं० छगन+स० मग्न] छोटे-छोटे हँसते-खेलते हुए प्यारे बच्चे।

छगना†अ०=छकना।

†स०=छकना।

छगरा—पु०[स० छागल] [स्त्री० छगरी] बकरा।

छगलात्री(त्रिन्)—पु०[स० छगलात्र+इनि ब०स०] भेडिया।

छगुनिया, छगुनी†—स्त्री०=छँगुली।

छ-गोडा—वि० [हिं० छ +गोड=पैर] [स्त्री० छ-गोडी] जिसके छ पैर हो। छ पैरोवाला।

पु० मकडा (जतु)।

छग्गर—पु०[स० शकट] बोझ ढोने की पुरानी चाल की गाडी या ठेला जिसे आदमी खीचते या ठेलते है। सग्गड।

छछद—वि०[स० स्वच्छन्द] १ मुक्त। स्वतन्त्र २ स्वच्छन्दता-पूर्वक आचरण करतेवाला। उदा०—छछद मुक्ता भै भ्रमपार।—गोरखनाथ।

† पु०=छल-छद।

छछार*—पु०[?] उछले हुए जल-कण। छीटा उदा०--छिछकै छछारे छिति अधिक उछार के।—सेनापति।

छछिआ†—स्त्री०=छछिया।

छछिया—स्त्री०[हिं० छाछ] छाछ नापने या रखने का एक प्रकार का मिट्टी का छोटा पात्र।

छछूँदर—पु०[स० छुच्छुदर] १ चूहे की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु जिसके शरीर से बहुत दुर्गंध निकलती है। २ पश्चिमी भारत मे गले मे पहना जानेवाला एक प्रकार का ताबीज। ३ एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी जो छोडे जाने पर छू छू शब्द करती है। ४ जगह-जगह छोटे-छोटे उत्पात या उपद्रव करनेवाला व्यक्ति।

छछेड़—पु०[हिं० छाछ] घी गरम करने पर उसमे से निकलनेवाला छाछ का अश।

छछौरी—स्त्री०[हिं० छाँछ+बरी] एक व्यजन जो छाँछ मे बरी डालकर बनाया जाता है।

छजना*—अ०[हिं० सजना] सुशोभित होना। सुन्दर जान पडना।

छजली—स्त्री०[हिं० छज्जा] १ छोटा और पतला छज्जा। २ छज्जे के आकार की वह वास्तु-रचना जो प्राय दीवार के ऊपरी भाग मे कुछ आगे या बाहर की ओर निकली हुई होती है। (कारनिस)

छज्जा—पु०[स० छाद्य, हिं० छाजन] १ दीवार से बाहर निकली या बढी हुई छत का भाग। २ ओलती। ओरी।

छज्जू—वि०[हिं० छीजना] छीजा या फटा हुआ (नया कपडा)। (दलाल)

छटकी—स्त्री०[हिं०छटाँक] छटाँक भर तौल का बटखरा।

वि० बहुत छोटा और हलका।

छटकना—अ०[हिं० छूटना]१ आघात, दाब आदि पडने पर अपने स्थान से उछलकर वेगपूर्वक किसी चीज का कुछ दूर जा गिरना। जैसे—मुट्ठी मे से रुपए छटकना। २ बधन या वश मे से निकल जाना।

जैसे—गाय का छटकना। ३ उछलना। कूदना। ४ वर्ग, समूह आदि मे से अलग या दूर रहना या हो जाना। ५ पकड, बधन आदि से निकलने या बचने का प्रयत्न करना।

छटकाना—स० [हिं० छटकना] झटके से किसी चीज को दूर गिराना या फेकना। छटकने मे प्रवृत्त करना।

छटपटाना—अ० [अनु०] [भाव० छटपटी] १ बहुत अधिक पीडा के कारण हाथ-पैर आदि पटकना। जैसे—दरद के कारण मछली की तरह छटपटाना। २ बहुत अधिक दु खी होने के कारण बेचैन या व्यग्र होना। ३ किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए बहुत अधिक चिंतित और व्यग्र होना।

छटपटी—स्त्री० [हिं० छटपटाना] १ छटपटाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ घबराहट। ३ मन मे होनेवाली आतुरता या आकुलता।

छटाँक—स्त्री० [स० षट्+टक, 7छटक7छटाँक] १ एक तौल जो ५ तोले अर्थात् सेर के १६वे भाग के बराबर होती है। २ उक्त तौल का बटखरा।

छटा—स्त्री० [स०] वह विशिष्ट शोभा या सौन्दर्य जो दूर तक फैलती और देखनेवालो पर यथेष्ट प्रभाव डाल कर उन्हे मुग्ध करती हो। जैसे—वर्षाऋतु मे पर्वत की छटा, देव-मदिर मे मूर्ति की छटा।

छटुआ†—वि० [हिं० छँटना] छाँटकर अलग किया या निकाला हुआ, फलत निकम्मा या रद्दी।

छट्ठी--स्त्री०=छठी।

छठवाँ—वि० [स्त्री० छठवी] छठा।

छठा—वि० [स० षष्ठ, हिं० छ] [स्त्री० छठी] गिनती मे छ के स्थान पर पडनेवाला।

पद—छठे-छमासे=दो, चार, छ महीनो पर एक-आध बार। साल मे एक-दो बार, फलत कभी-कभी।

छठी—स्त्री० [हिं० छठा का स्त्री०] १ चाद्र मास के कृष्ण या शुक्ल पक्ष की छठवी तिथि। २. बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाला एक कृत्य जो उत्सव के रूप मे होता है।

मुहा०—छठी का दूध याद आना=ऐसी कठिन या विकट स्थिति मे पडना कि बुद्धि ठिकाने न रहे।

छड़—पु० [स० शर] [स्त्री० अल्पा० छडी] किसी धातु का गोल या चौकोर लबा पतला टुकडा।

छड़ना—स० [स० चट] १ अनाज के दाने कूटकर उनकी भूसी अलग करना या छडना। जैसे—जौ या धान छडना। २ खूब पीटना या मारना। (परिहास)

छड़ा—पु० [हिं० छड] १. पैर मे पहनने का एक प्रकार का गहना। २ मोतियो की लडी। ३. हाथ का पजा। (राज०)

वि० [हिं० छाँडना] [स्त्री० छडी] अकेला। एकाकी। जैसे—छडी सवारी।

पु० नौजवान आदमी जिसका अभी विवाह न हुआ हो अथवा जिसके साथ घर-गृहस्थी न हो।

छड़ाना†—स०=छुडाना।

छड़िया—वि० [हिं० छडी] जिसके हाथ मे छडी हो।

पु० दरबान जिसके हाथ मे प्राय मोटा डडा रहता है। ड्योढीदार।

छड़ी—स्त्री० [हिं० छड] १ वह सीधी पतली लकडी जिसे लोग सहारे के लिए हाथ मे लेकर चलते है। २ उक्त प्रकार की पतली छोटी डडी या लकडी जिस पर फूल-पत्तियाँ बँधी रहती है और जो शोभा के लिए कही रखी या लगाई जाती है। ३ किसी की कब्र या मजार पर लगाई जानेवाली झडी। ४ कपडे आदि मे बनी हुई सीधी धारी या रेखा।

छड़ीदार—पु० =चोबदार।

छड़ीबरदार—पु० =चोबदार।

छड़ीला—पु०=छरीला।

छड़ी सवारी--स्त्री० [हिं०] ऐसा व्यक्ति जो कही अकेला जा रहा हो। वह जिसके साथ और कोई न हो। (परिहास और व्यग्य)

छत—स्त्री० [स० छत्र] १ वह वास्तु-रचना जिससे कमरा ढका होता है। पाटन। २ उक्त रचना का ऊपरी या निचला तल या भाग। जैसे—(क) छत पर मिट्टी डालना। (ख) छत मे झाड-फानूस टाँगना। ३ किसी चीज को ऊपर से ढकनेवाला भाग।

पु [स० क्षत] घाव। व्रण।

वि०=क्षत।

क्रि० वि० [स० सत्] रहते हुए। आछत।

छतगीर--पु० [हिं० छत+फा० गीर] १ कमरे मे ऊपरवाली छत के साथ प्राय उसे ढकने के लिए तथा तानी जानेवाली चाँदनी । २ पलग के पायो से बाँधकर खडे किये हुए बाँसो आदि पर तानी जानेवाली चाँदनी।

छतगीरी—स्त्री०=छतगीर।

छतना--स० [हिं० छत] छत डालना या बनाना। कमरा या घर छाना।

अ० छाया जाना। छत आदि से युक्त होना।

अ० [स० क्षत] घाव होना।

अ० [स० सत्] वर्त्तमान रहना।

अ० [?] अदृश्य होना।

पु० [हिं० छाता] बडे-बडे पत्तो का बनाया हुआ छाता।

छतनार--वि० [हिं०छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] (वृक्ष) जिसकी शाखाएँ छत्र की तरह चारो ओर दूर तक फैली हुई हो।

छतराना--अ० [स० छत्रक] १ छत्रक या खुमी की तरह चारो ओर फैलना। जैसे—दाद छतराना। २ अधिक विस्तार से युक्त होना। जैसे—घाव छतराना।

छतरी—स्त्री० [स० छत्र] १ चारो ओर से खुले हुए स्थान के ऊपर का मडप। २ किसी पूज्य व्यक्ति का समाधि-स्थल जिसके ऊपर मडप बना हुआ हो। ३ कबूतरो के बैठने के लिए बाँस की पट्टियो का टट्टर। ४ खुम। ५ दे० 'छाता'। ६ एक प्रकार का बहुत बडा छाता जिसकी सहायता से हवाई जहाज पर से कूदकर सैनिक नीचे उतरते हैं। (पैराशूट)

पद—छतरी फौज=छतरियो के सहारे हवाई जहाजो से उतरनेवाली सेना।

छतलोट—स्त्री० [हिं० छत+लोटना] छत पर पेट के बल लेटकर इधर-उधर लोटते हुए की जानेवाली कसरत या व्यायाम।

छतवत*—वि० [स० क्षत+वत] जिसे क्षत या घाव लगा हो। घायल।

छतॉं†—क्रि० वि० [हि० आछत का एक प्रातिक रूप] विद्यमानता मे। रहते हुए। उदा०—देह छतॉं तुम मिलहु कृपा करि आरतिवत कबीर।—कबीर।

छता†—पु० १ =छाता। २ =छत्ता।

छति†—स्त्री० =क्षति।

छतिया—स्त्री० =छाती।

छतियाना—अ० [हिं० छाती] १ छाती से लगाना। २ छाती पर या उसके पास लाना या लाकर रखना। जैसे—गोली चलाने के लिए बदूक छतियाना।

छतिवन—पु० [स० छत्रपर्ण] एक प्रकार का बडा पेड जिसके कुछ अग दवा के काम आते है ।

छतीस*—पु० [स० क्षितीश] राजा। उदा०—और दसा परहरौ छतीस।—गोरखनाथ।

छतीसा—वि० [हिं० छत्तीस] [स्त्री० छतीसी] १ बहुत ही चतुर। चालाक। २. ढोगी। उदा०—आए हौ पठाए वा छतीसे छलिया के इतै।—रत्नाकर। ३ व्यभिचारी।

छतुरी†—स्त्री० =छतरी।

छतौना†—पु० =छाता।

छत्त†—स्त्री० =छत।

छत्तर—पु० १ दे० 'छत्र'। २. दे० 'अन्नसत्र'।

छत्ता—पु [स० छत्र] १ छाता। छतरी। २ राजा का छत्र। ३ गली आदि की ऊपरी छत। ४ बर्रे, मधुमक्खियो आदि द्वारा निर्मित मोम की वह रचना जिसमे वे स्वय रहती, अडे देती तथा शहद जमा करती है। ५ वह पौधा या वृक्ष जिसकी शाखाएँ छितरी या फैली हुई हो। ६ कमल का बीजकोश।

छत्ति—स्त्री० [स० छत्र] चमडे का वह कुप्पा जिस पर बैठकर प्राचीन काल मे लोग नदी पार करते थे।

छत्ती†—स्त्री० =छत्ति।

पु० =क्षत्रिय।

छत्तीस—[स० षट्त्रिंशत्, प्रा०, छत्तीसती, छत्तीसम्, बँ० सात्रीस, ओ० छत्रीस, प० छत्ती, सिं० छत्रीह, गु० छत्रीस, ने० छत्तिस् मरा० छत्तीस) जो गिनती मे तीस से छ अधिक हो।

पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३६।

छत्तीसगढ़—पु० [हिं० छत्तीस+स० गढ] आधुनिक मध्यप्रदेश का एक विभाग।

छत्तीसगढ़ी—स्त्री० [हिं० छत्तीसगढ] छत्तीसगढ की बोली।

छत्तीसा—वि० [स्त्री० छत्तीसी, भाव० छत्तीसापन]=छतीसा।

छत्तेदार—वि० [हिं० छत्ता+ फा० दार] १ जिसके ऊपर छत्र या छत्ता हो। २ मधुमक्खियो के छत्ते के आकार का।

छत्र—पु० [स छद् (ढकना) णिच्+ष्ट्रन] १ छतरी। २ राजाओ या राज-सिहासन के ऊपर लगाया जानेवाला बडा छाता। ३ कुकुर-मुत्ता। ४ एक विष। ५. गुरु का दोषगोपन।

पु० [स० सत्र] वह स्थान जहॉं गरीबो या दीन-दुखियो को धर्मार्थ भोजन कराया जाता है।

२—३८

छत्रक—पु० [स० छत्र√कै (मालूम पडना)+क] १ एक प्रकार का छोटा उद्भिज जिसका निचला भाग छडी की तरह पतला होता है और जिसका ऊपरी भाग खुले हुए छाते की तरह फैला हुआ होता है। खुमी। (फगस) २ कुकुरमुत्ता। ३ तालमखाने की जाति का एक पौधा। ४ कौडिल्ला (पक्षी)। ५ मण्डप। ६. [छत्र+कन्] छत्ता।

छत्रकायमान—वि० [स० छत्रक+क्यङ्+शानच्] छत्रक के रूप मे होने या फैलनेवाला। (फगेटिव)

छत्र-चक्र—पु० [मध्य०स०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिससे शुभ-अशुभ फल जाने जाते है।

छत्र-छॉंह†—स्त्री० =छत्र-छाया।

छत्र-छाया—स्त्री० [ष० त०] छाया, ऐसा आश्रय जो छाते की तरह सुरक्षित रखनेवाला और सुखद हो। सरक्षण।

छत्र-धनी*—पु० =छत्रधारी।

छत्र-धर—पु० [छत्र√धृ (धारण)+अच्] १ वह राजा जो छत्र लगाता हो। २ राजा के ऊपर छत्र लगानेवाला सेवक।

छत्रधारी (रिन्)—वि० [स० छत्र√धृ+णिनि] छत्र-धर।

छत्रप*—पु० =क्षत्रप।

छत्रपति—पु० [ष० त०] बहुत बडा राजा।

छत्रपन —पु० [स० छत्रिय+पन (प्रत्य०)] क्षत्रियत्व।

छत्र-बध—पु० [ब०स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमे कविता के अक्षर विशिष्ट प्रकार से सजाने से छत्र या छाते की आकृति बन जाती है।

छत्र-भग—पु० [ष०त०] १ राजा का नाश या मृत्यु। २ ज्योतिष का एक योग, जो राजा या उसके शासन के नाश का सूचक माना जाता है। ३ अराजकता।

छत्राक—पु० [स० छत्र+टाप्, छत्रा√कै+क] कुकुरमुत्ते, खुमी आदि की जाति के उद्भिजो की सामूहिक सज्ञा।

छत्रिक—पु० [स० छत्र+ठन्-इक] छत्र धारण करनेवाला राजा।

छत्री (त्रिन्)—वि० [स० छत्र+इनि] छत्रयुक्त।

पु० =क्षत्रिय।

छदब—पु० [स० छद्म] १ छल। २ बहाना।

छद—पु० [√छद्+अच्] १ ढकनेवाली चीज। आवरण। २ खाल। ३ छाल। ४ खोल। गिलाफ। ५ पत्ता। ६ चिडिया का पख।

छद-पत्र—पु० [ब० स०] १ भोजपत्र। २ तेजपात।

छदन—पु० [√छद् ल्युट्—अन्] छद। (दे०)

छदाम—पु० [हिं० छ +दाम] सिक्के का एक मान जो छ दामो अर्थात् पुराने पैसे के चौथाई भाग के बराबर होता था।

छद्दर†—पु० [हिं० छ +दर ?] वह बैल जिसके मुँह मे छ दाँत हो।

छद्दिय*—पु० [स० क्षुधा] भूख। उदा०—मरत कालु चलि सथ्य ,घाम घामन अरु छद्दिय।—चदवरदाई।

छद्म (न्)—पु० [√छद्+मनिन्] १ किसी चीज पर आवरण डालकर उसे ढकना या छिपाना। २. वह आवरण जिससे कोई चीज ढकी या छिपाई जाती है। जैसे—मकान की छत या छाजन। ३ किसी वस्तु या व्यक्ति का वास्तविक बाह्य रूप इस प्रकार कृत्रिम प्रसाधनो,

वस्त्रों आदि से छिपाना या बदलना जिससे उसे कोई पहचान न सके। ऐसा रूप प्रायः किसी को छलने या धोखा देने अथवा दूसरे का मनोरंजन करने के लिए धारण किया जाता है। ४ छल। धोखा।

छद्म-तापस—पु०[मध्य०स०] वह व्यक्ति जिसने दूसरों को ठगने के लिए अपना साधुओं का-सा वेश बनाया हो।

छद्म-वेश—पु० [मध्य०स०] दूसरों को छलने या धोखा देने या मन-बहलाव के लिए बनाया हुआ कृत्रिम वेश।

छद्मवेशी (शिन्)—वि० [स० छद्मवेश+इनि] १ जिसने छद्मवेश धारण किया हो। २ जो प्रायः छद्मवेश धारण करके दूसरों को छलता, धोखा देता अथवा उनका मनोरंजन करता हो।

छद्मी (द्मिन्)—वि० [स० छद्म+इनि] [स्त्री० छद्मिनी] १ छद्मवेशी। २ छली।

छन—पु० [स० क्षण, प्रा० पा० छण, प० खिण, गु० खण, सिं० खुणु] १ क्षण। (दे०) २ पर्व का समय। पुण्यकाल।

†पु० [हिं० छद] हाथों में पहनने का छद नामक गहना।

पु० [अनु०] १ तपे हुए धातु के पात्र पर ठढा तरल पदार्थ पडने या छिडकने से होनेवाला शब्द। २ कडकडाते हुए घी या तेल में किसी वस्तु के तले जाने पर होनेवाला शब्द। ३ घुँघरू या पायल के बजने से होनेवाला शब्द।

छनक—स्त्री० [हिं० छनकना] १ छन-छन शब्द। झनकार। जैसे—घुँघरुओं की छनक। २ छन-छन शब्द होने की अवस्था या भाव।

क्रि० वि० [स० क्षण+एक] क्षण भर।

वि० [स० क्षणिक] १ क्षणिक। क्षणभगुर। २ (व्यक्ति) जो क्षण-क्षण में अपना मत या विचार बदल देता हो। उदा०—छाके है अयान मद छिति के छनक छुद्र।—केशव।

छनकना—अ० [अनु० छन छन] छन-छन शब्द होना। जैसे—घुँघरू का छनकना।

अ० [अनु०] चौकना। भडकना।

†पु० दे० 'झुनझुना'।

छनक-मनक—स्त्री० [हिं० छनक+अनु०] १ वह शब्द जो पहने हुए गहनों के आपस में टकराने से उत्पन्न होता है। २ सक। नखरा।

छनकाना—स० [हिं० छनकना] १. पानी को उबाल तथा खौलाकर उसका परिमाण कम करना। २ तपे हुए पात्र में कोई द्रव पदार्थ डाल कर उसे गरम करना। ३ भडकाना। चौंकाना।

स० १. कोई चीज बजाते हुए उसमें से छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २. झुनझुना बजाना।

छनछनाना—अ० [अनु०] १ तपी हुई धातु पर जल-कण छोडने से छन-छन शब्द होना। २ खौलते हुए घी या तेल में तलने के लिए कोई वस्तु छोडने पर छन-छन शब्द होना। ३ क्रुद्ध होना।

स० १. छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २ कुपित या क्रुद्ध करना।

छन-छवि—स्त्री० [स० क्षण+छवि] बिजली।

छनदा*—स्त्री०=क्षणदा (रात्रि)।

छनन-मनन—पु० [अनु०] १. घुँघरुओं आदि के बजने से होनेवाला छन-छन शब्द। २ वह शब्द जो खौलते हुए घी या तेल में किसी तली जानेवाली वस्तु को छोडने से उत्पन्न होता है।

छनना—अ० [स० क्षरण] १ चलनी या छलनी अथवा किसी महीन कपडे में से किसी चूर्ण (जैसे—आटा), छोटे कणों या दानोंवाली वस्तु (जैसे—गेहूँ) अथवा द्रव पदार्थ (जैसे—भाँग) का छाना जाना। २ उक्त के आधार पर किसी नशीले तरल पदार्थ विशेषत भाँग का पीसा, छाना या पीया जाना। ३ उक्त के आधार पर आपस में गूढ वार्त्तालाप या घनिष्ठ सबध होना।

मुहा०—(आपस में) गहरी छनना=गूढ वार्त्तालाप या मेल-जोल होना।

४ उक्त क्रिया से किसी वस्तु या द्रव पदार्थ का अनावश्यक या अनुपयोगी अंश अलग होना। ५ किसी चीज का छोटे-छोटे छेदों में से होकर आना या निकलना। जैसे—पेड के पत्तों के बीच से चाँदनी का छनकर आना। ६ किसी आवरण में से किसी चीज का भासित होना या झलक दिखाना। जैसे—घूँघट में से सौंदर्य का छनकर निकलना। ७ छेदों से युक्त होना। जैसे—तीरों के घावों से शरीर छनना। ८ किसी अभियोग, झगडे या विषय की पूरी तथा सही बातों का पता चलना। जैसे—मामला छनना। ९ किसी प्रकार के जाल या धोखे में फँसना। उदा०—घात मैं लगे है ये बिसाखी सबै, इनके अनोखे छल-छदनि छनौ नही।—रत्नाकर।

अ० [हिं० छानना का अ० रूप] १ कडकडाते घी या तेल में खाद्य वस्तुओं का तला जाना। छाना जाना। जैसे—पूरी या बुँदिया छनना। २ इस प्रकार तली हुई चीजों का खाया जाना। जैसे—चलो! वहाँ पूरी-कचौरी छनेगी और खीर उडेगी।

अ० [स० आछन्न] १ आच्छादित होना। घिरा होना। २ लिपटा या लपेटा हुआ होना। उदा०—मनो धनी के नेह की बनी छनी पट लाज।—बिहारी।

छनभगु*—वि०=क्षण भगुर।

छनभर* क्रि० वि०=क्षण भर।

छनवाना*—स० [हिं० छानना का प्रे० रूप] छानने का काम दूसरे से कराना।

छनिक*—वि०=क्षणिक।

छन्न*—पु० १=छन। २=क्षण।

वि० १=आच्छन्न। २=छिन्न।

छन्ना—पु० [हिं० छानना] १ वह कपडा जिससे कोई चीज छानी जाय। २ चलनी। छलनी। ३ छोटा कटोरा।

छप—स्त्री० [अनु०] १ किसी तरल पदार्थ (जैसे—जल) अथवा किसी गाढे तरल पदार्थ (जैसे—कीचड) में किसी चीज के आ गिरने से होनेवाला शब्द। २ जोर से छीटा पडने का शब्द।

छपकना—स० [हिं० छप (अनु०)] किसी चीज से आघात करना। मारना।

छपका—पु० [हिं० छपकना] १ बाँस आदि की कमाची। २ पतली छडी।

पु० [अनु०] १ कोई चीज कीचड, जल आदि में फेककर उसे उछालने की क्रिया या भाव। २ पानी आदि का छीटा। ३ कीचड या पानी के छीटे का कपडे आदि पर पडा हुआ धब्बा। ४ लकडी के सदूक के ढक्कन में की वह पटरी जिसमें जजीर लगी रहती है।

पु० सिर पर पहनने का एक आभूषण।

छपछप—स्त्री० [अनु०] धारा के किसी चीज से बार-बार टकराने से अथवा किसी चीज को बार-बार धारा मे फेकने से होनेवाला शब्द।

छपछपाना—अ० [हि० छपछप] छप-छप शब्द होना।
स० छप-छप शब्द उत्पन्न करना।

छपटना—अ० [स० चिपिट] १ चिपकना। २ आलिगित होना।

छपटाना—स० [हि० छपटना] १ चिपकाना। २ आलिगन करना। छाती से लगाना। उदा०—छिति-पति उमगि उठाइ छोहि छाती छपटायौ—रत्नाकर।

छपद—पु० [स० षट्पद] भौरा। भ्रमर।

छपन*—वि० [हि० छिपना] छिपा हुआ।
पु० [स० क्षपण] नाश। सहार।

छपनहार—वि० [हि० छपन+हारा (प्रत्य०)] नाश या सहार करनेवाला।

छपना—अ० [हि० छापना] १ ठप्पे, साँचे आदि की छाप से युक्त होना। ठप्पे या साँचे से चिह्नित होना। जैसे—धोती छपना। २ कागज, पुस्तक आदि का छपकर तैयार होना। मुद्रित होना। जैसे—कोश छपना ३ किसी कृति, घटना आदि का प्रकाशित होना। जैसे—कविता, लेख या समाचार छपना। ४ छापे मे सीसे के बैठाए हुए अक्षरो का अकित, चिह्नित या मुद्रित होना।
†अ०=छिपना।

छपरखट—स्त्री० [हि० छप्पर+खाट] वह पलग जिसके ऊपर डडो के सहारे कपडा तना हो।

छपर खाट—स्त्री०=छपरखट।

छपर छपर—स्त्री०=छपछप।
क्रि० वि० छपछप करते हुए।

छपरबद—वि०, पु० छप्परबद।

छपरबदी—स्त्री०=छप्परबदी।

छपरा†—पु० [हि० छप्पर] १ छप्पर। २. बाँस का टोकरा जो पत्तो से मढा होता है तथा जिसमे तमोली पान रखते है।

छपरिया—स्त्री०=छपरी।

छपरिहाना†—अ० [हि० छप्पर] १ छप्पर का गिरना या टूटना। २ छप्पर से गिरना या गिरकर टूटना।

छपरी†—स्त्री० [हि० छप्पर का अल्पा० रूप] १ छोटा छप्पर। २ झोपडी (जिसका छोटा-सा छप्पर होता है)।

छपवाई†—स्त्री०=छपाई।

छपवाना†—स०=छपाना।

छपवैया—वि० [हि० छापना] छापनेवाला।

छपही†—स्त्री० [देश०] उँगलियो मे पहनने का एक गहना।

छपा*—स्त्री० [स० क्षपा] १ रात्रि। २ हलदी।

छपाई—स्त्री० [हि० छापना] छपने या छापने की क्रिया, ढग, भाव या पारिश्रमिक।

छपाकर*—पु० [स० क्षपाकर] १ चद्रमा। २ कपूर।

छपाका—पुं० [अनु० छपछप] १ कीचड, पानी आदि मे कोई चीज फेकने से होनेवाला छप शब्द। २ धारा के किसी चीज के टकराने से होनेवाला शब्द। ३ छीटा।

छपाना—स० [हि० छापना] १ छापने (दे० 'छापना') का काम दूसरे से कराना। २ शीतला का टीका लगवाना।
†स०=छिपाना। उदा०—उठि रेनु रवि गयउ छपाई।—तुलसी।
†अ०=[अनु० छप छप] खेत का सीचा जाना।

छपानाथ—पु० [स० क्षपानाथ] चद्रमा।

छपाव†—पु०=छिपाव।

छप्पन—वि० [स० षट्पचाशत्, प्रा० छप्पणम्, छप्पण] जो गिनती मे पचास से छ अधिक हो।
पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—५६।

छप्पन-भोग—पु० [हि० छप्पन+स० भोग] छप्पन प्रकार के व्यजन। तरह-तरह की खाद्य वस्तुएँ।

छप्पय—पु० [स० षट्पद] छ चरणोवाला एक मात्रिक छद, जिसके पहले चरण मे रोला के और फिर दो चरण उल्लाला के होते है।

छप्पर—पु० [स० छत्वर, प्रा० छप्पर, बँ० छापर, ओ० छपर, प० ल्हा छप्पर, सिं० छरु, गु० छाप्रो, ने० छाप्रो, मरा० छप्पर] १ कच्चे मकानो, झोपडियो आदि की वह छाजन जो बाँसो, लकडियो तथा फूस की बनी होती है।
मुहा०—(किसी पर) छप्पर टूट पडना=एकाएक कोई विपत्ति या सकट आ पडना। **(किसी को) छप्पर पर रखना**=नगण्य समझना। **(किसी को) छप्पर फाड़कर देना**=अनायास और बहुत अधिक देना।
२ झोपडी या मकान जिसकी छाजन फूस आदि की हो। ३ किसी प्रकार का आवरण जो रक्षा आदि के लिए ऊपर लगाया जाय। जैसे—नाव पर का छप्पर।

छब*—स्त्री० [स० छवि] छवि। सौदर्य।

छबड़ा—पु० [हि० छबडी का पु० रूप] बडी छबडी।

छबड़ी—स्त्री० [प० छाबडी] १ खोचा। (दे०) २ टोकरी। डलिया।

छब-तखत—स्त्री० [हि० छबि+अ० तकतीअ] शरीर की सुदर बनावट।

छबना*—अ० [हि० छबि] १ छवि या सौदर्य से युक्त होना। सुशोभित होना। उदा०—उझकि-उझकि पद कजनि के पजनि पै पेखि पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगि।—रत्नाकर। २ किसी चीज का किसी स्थान पर लगकर ठहर जाना। जैसे—गाल पर कालिख छबना। (बुदेल०)

छबि—स्त्री० [स० छवि] छवि। सौदर्य।
स्त्री० [अ० शबीह] १ ऐसा चित्र या तस्वीर जिसमे किसी व्यक्ति के मुख की आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई गई हो। २ चित्र।

छबीना—पु० [देश०] पडाव। उदा०—आध मील चलने के उपरान्त वह अग्रेजी छबीने के पास पहुँचा।—वृदावनलाल वर्मा।

छबीला—वि० [स० प्रा० छवि, दे० प्रा० छाइल्लो, गु० छबिलो, प० छबीला, मरा० छबिला] [स्त्री० छबीली] १ (व्यक्ति) जो छबि से युक्त हो। सुदर। २ जो बन-ठन कर रहता हो। छैला। बाँका।

छबुंदा—पु० [हि० छ+बुदा] काले रग का एक प्रकार का छोटा जहरीला कीडा जिसकी पीठ पर सफेद रग की ६ बुदकियाँ होती हैं।

छब्बीस--वि० [स० षट्विंशति] जो गिनती मे बीस से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--२६।

छब्बीसी--स्त्री० [हिं० छब्बीस] फलो आदि की गिनती का एक प्रकार जिसमे २६ गाहियो (अर्थात् १३० दानो) का सैकडा माना जाता है।

छम*--वि०=क्षम।
स्त्री० [अनु०] घुँघरू या पायल के बजने का शब्द।

छमक--स्त्री० [हिं० छमकना] छमकने की क्रिया या भाव।

छमकना--अ० [हिं० छम (अनु०)] १ घुँघरुओ आदि के बजने का शब्द होना। २ आभूषणो की झकार होना। ३ स्त्रियो का गहने पहन कर अथवा यो ही इठलाते या चमकते-मटकते हुए इधर-उधर आना-जाना।
†स०=छौकना।
†अ०=छौंकना।

छमछम--स्त्री० [अनु०] १ पैरो मे पहने हुए गहनो, घुँघरुओ, पायलो आदि के बजने से होनेवाला शब्द। २ जोर से पानी बरसने का शब्द।
क्रि० वि० १ छमछम शब्द करते हुए। २ इठलाते या चमकते-मटकते हुए।

छमछमाना--अ० [अनु०] १ छमछम शब्द उत्पन्न होना। २ चमकना।
स० छमछम शब्द उत्पन्न करना।

छमता*--स्त्री०=क्षमता।

छमना--स० [स० क्षमन्] क्षमा करना। माफ करना।

छमवाना*--स० [हिं० छमना का प्रे० रूप] १ किसी को क्षमा करने मे प्रवृत्त करना। २ अपने आपको क्षमा या माफ करवाना।

छमाई*--स्त्री० [हिं० छमा] क्षमा।

छमाछम--क्रि० वि० [अनु०] छमछम शब्द करते हुए।

छमाना*--स० [हिं० छमना का प्रे० रूप] १ क्षमा कराना। २ सहन कराना। उदा०--कौ लगि जीव छमावै छपा मै छपाकर की छबि छाई रहैरी।--देव।

छमाशी--स्त्री० [हिं० छ+माशा] छ माशे की तौल का बाट।

छमासी--स्त्री० [हिं० छ+स० मास] वह श्राद्ध जो किसी व्यक्ति के मरने के छ महीने बाद किया जाता है। छमाही।

छमाही--स्त्री० [हिं० छ +माह] १ छ महीनो का समय। २ छ महीनो बाद मिलनेवाली अनुवृत्ति। ३ दे० 'छमासी'।
वि० हर छ महीने पर होनेवाला।

छमिच्छा*--स्त्री० १ =समीक्षा। २ =समस्या।

छमुख--वि० [हिं० छ +स० मुख] जिसके छ मुख हो।
पु० षडानन।

छय--पु० [स० क्षय] क्षय। नाश।

छयना--अ० [हिं० छय] १ क्षय होना। २ क्षीण होना।
स० क्षय करना। उदा०--ह्वै कै काई जल कौ छयौ।--सूर।
अ०=छाना।
स०=छाना।

छयल (ल्ल)*--वि०=छैला।

छयासठ--वि०, पु०=छियासठ।

छर*--पु०=छल।
पु०=क्षर।
वि० [स० क्षर] भारी। जैसे--छरभार=भारी बोझ।

छरकना†--अ० [अनु० छरछर] किसी पदार्थ का कभी तल या धरातल को स्पर्श करते हुए और कभी वेग से उछलते हुए आगे बढना।
*अ०=छटकना।
†अ०=छलकना।
†अ०=छिटकना।

छरकायल--वि०=छरकीला।

छरकीला--वि० [हिं० छडी] १ दुबला-पतला। २ बहुत लबा।

छरछद*--पु०=छलछद।

छरछराना†--अ० [स० क्षार] [भाव० छरछराहट] घाव मे चुनचुनाहट या जलन होना।
स० चुनचुनाहट या जलन उत्पन्न करना।

छरद--स्त्री० [स० छर्दि] कै। वमन।
मुहा०--छिया छरद करना=दे० 'छिया' के अतर्गत मुहा०।

छरन--वि० [हिं० छरना=छलना] [स्त्री० छरनि] छलनेवाला।
पु०=क्षरण।

छरना†--स० [स० क्षरण] सूप मे अनाज आदि छाँटना या फटकना।
अ० १ अनाज आदि का छाँटा या फटका जाना। २ दूर होना। न रह जाना। ३ तरल पदार्थ का कही से निकलकर धीरे-धीरे बहना। चूना। टपकना। रसना।
*स०=छलना।
*स०=छडना।
स्त्री०=छलना।

छरबर*--पु०=छलबल।

छरहटा--पु० [स० छलहट्ट] १ ऐसा स्थान जहाँ लोग छले या ठगे जाते है। छल का बाजार। २ इन्द्रजाल। उदा०--कतहुँ छरहटा पेखन लावा।--जायसी।

छरहरा--वि० [हिं० छड+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी, भाव० छरहरापन] १ जो शारीरिक दृष्टि से इकहरे शरीर का हो। जिसमे मोटाई सामान्यत बहुत कम हो। दुबला-पतला। २ चुस्त। फुरतीला।
†वि० [हिं० छल+हारा] बहुरुपिया।

छरा--पु० [स० शर, हिं० छड] १ माला या हार का लड। २ इजारबद। ३ छर्रा।

छरिंदा--वि०=छरीदा।

छरी--स्त्री०=छडी।
† वि०=छली।
*स्त्री० [स० अप्सरा, हिं० अपछरी] अप्सरा।

छरीदा*--वि० [अ० जरीद] १ अकेला। २ (यात्रा के समय) जिसके पास असबाब या माल न हो।

छरीला--पु० [स० शैलेय] एक सुगधित वनस्पति।
पु० [?] बकरा।

छरोरा†--पु० [स० क्षर] वह घाव या खरोच जो शरीर के छिलने से बनती हो।

छर्द—पु० [स०√छर्द् (वमन करना)+घञ्] कै। वमन।

छर्दिका—स्त्री० [√छर्द्+णिच्+ण्वुल्—अक,—टाप्, इत्व] १. कै। वमन। २ विष्णुक्राता लता।

छर्दिका-घ्न—पु० [छर्दिका√हन् (मारना)+टक्] बकाइन। महानिंबा।

छर्रा—पु० [अनु० छरछर] १ पत्थर आदि का छोटा टुकडा। २ ककड का छोटा टुकडा जो घुँघरू की कटोरी मे बद रहता हे आर जो घुँघरू के हिलाए जाने पर शब्द करता है। ३ बदूक, राइफल के द्वारा छोडी जानेवाली किसी धातु की गोली अथवा उसका कोई कण।

मुहा०—छर्रा पिलाना=बदूक या राइफल मे छर्रे भरना।

छलक, छलग†—स्त्री० =छलाँग।

छल—पु० [स०√छो (काटना) +कलच्, पृषो० सिद्धि पा० प्रा छल, ब० छल, आ० छड, प० छल, गु० छड, ने० छल० मरा० सड] १ कपट, कौशल, धूर्त्तता आदि से युक्त वह व्यवहार जो अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को धोखे मे रखकर, बहकाकर या वास्तविकता छिपाकर उसके साथ किया जाता है। २ बहाना। मिस। ३ धूर्त्तता। ४ कपट। ५ धोखेबाजी। ६ शत्रु पर युद्ध के नियम के विरुद्ध वार करना। ७ शास्त्रार्थ मे, प्रतिपक्षी के कथन का उसके अभिप्राय से भिन्न कोई दूसरा अर्थ करना।

छलक—स्त्री० [हि० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव।

छलकन*—स्त्री० [हि० छलकना] १ छलक। २ वह अश जो छलक कर गिरे।

छलकना—अ० [स० क्षल्] १ किसी तरल पदार्थ का अपने आधान या पात्र मे पूरी तरह से भर जाने पर उमडकर इधर-उधर गिरना या गिरने को होना। जैसे—आँखो मे आँसू छलकना। २ किसी पात्र मे रखे हुए तरल पदार्थ का (पात्र के हिलने पर) झटके से उछलकर पात्र से बाहर गिरना। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज का किसी बात से पूरी तरह से भर जाने या युक्त होने पर चारो ओर फूटना या फैला हुआ दिखाई पडना। जैसे—आँखो या हृदय से स्नेह छलकना।

छल-कपट—पु० [द्व० स०] धूर्त्ततापूर्ण आचरण या व्यवहार। धोखेबाजी।

छलकाना—स० हि० 'छलकना' का स० रूप।

छल-छद—पु० [द्व० स०] दूसरे को छलने के लिए किया जानेवाला छलपूर्ण व्यवहार। चालबाजी।

छलछदी (दिन्)—वि० [स० छलछद+इनि] चालबाज।

छलछलाना—अ०=छलकना।

छल-छाया—स्त्री० [ष० त०] माया। कपट-जाल।

छल-छिद्र—पु० [द्व० स०] कपट या छलपूर्ण व्यवहार।

छलछिद्री (दिन्)—वि० [स० छलछिद्र+इनि] कपटी। धूर्त्त।

छलन—पु० [स० छल+णिच्+ल्युट्—अन] छलने की क्रिया या भाव।

छलना—स्त्री० [स० छल+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ किसी को छलने अर्थात् धोखा देने की क्रिया या भाव। २ वह काम, चीज या बात जिसका उद्देश्य ही दूसरो को छलना या धोखा देना हो। जैसे—यह सारी सृष्टि ही छलना है।

स० [स० छलन] १ छलपूर्ण आचरण या व्यवहार करना। धोखा देना। भुलावे मे डालना। २ अपने गुण, रूप आदि का ऐसा प्रदर्शन करना कि उसकी आड़ मे किसी का कुछ हर लिया जाय।

छलनी—स्त्री० [स० क्षरण] १ आटा आदि छानने का छेदोवाला या जालीदार छोटा उपकरण। चलनी।

मुहा०—छलनी मे डालकर छाज उडाना=छोटी बात को बडी करना।

२ ऐसी चीज जिसमे उक्त प्रकार के बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। जैसे—काँटो मे चलते-चलते पाँव छलनी हो गये।

छल-बल—पु० [द्व० स०] वे कपटपूर्ण ढग या व्यवहार जिनसे किसी की खुशामद करके, धोखा देकर अथवा दबाव डालकर अपना काम निकाला जाता है।

छलबल—स्त्री० [अनु०] १ चटक-मटक। २ शोभा।

छलमलना*—अ०=छलकना।

छलमलाना*—अ०=छलकना।

स०=छलकाना।

छलहाया—वि० [स० छल+हि० हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० छलहाई] छल करने या छलनेवाला। छली। छलिया।

छलाँग—स्त्री० [हि० छाल=उछाल+अग] एक स्थान से खडे-खडे वेगपूर्वक उछलकर दूसरे स्थान पर जा खडे होने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र० —भरना।

मुहा०—छलाँगें मारना=(क) बहुत तेजी से चलना। (ख) जल्दी-जल्दी उन्नति करते हुए ऊँचे पद पर पहुँचना।

छलाँगना—अ० [हि० छलाँग] छलाँगे भरते हुए आगे बढना।

छला†—पु०=छल्ला।

छलाई*—स्त्री०=छल।

छलाना—स० [हि० छलना का प्रे० रूप] छलने का काम दूसरे से कराना।

अ० छला जाना। धोखे मे आना।

छलावरण—पु० [स० छल—आवरण ष० त०] [वि० छलावृत्त] १ वास्तविक बात या रूप छिपाने के लिए ऊपर से उसे कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे मे पड जायँ। २ युद्ध-क्षेत्र मे अपनी तोपो, मोरचो आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षो की डालियो, पत्तियो आदि से ढकना। (कैमोफ्लेज)

छलावा—पु० [हि० छल] १ भूत-प्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २ दलदल या जगलो मे रह-रहकर दिखाई पडनेवाला वह प्रकाश जो मृत शरीरो की हड्डियो मे छिपे हुए फासफोरस के जल उठने से उत्पन्न होता है।

विशेष—इसी को लोग अगिया वैताल या उल्कामुख (प्रेत के मुख से निकलनेवाली आग) भी कहते हैं।

मुहा०—छलावा खेलना=अगिया वैताल का इधर-उधर दिखाई पडना।

छलिक—पु० [स० छल+ठन्—इक] रूपक का एक प्रकार।

छलित—वि० [स० छल+णिच्+क्त] जो छला या ठगा गया हो।

छलिया—वि० [स० छल] दूसरो को छलनेवाला। छलपूर्ण आचरण या व्यवहार करनेवाला।

छली (लिन्)—वि० [स० छल+इनि] छलिया।

छलौरी—स्त्री० [हि० छाला] एक रोग जिसमे उँगलियो के नाखूनो के नीचे का मास सडने लगता है और उसमे छाले पड जाते हैं।

छल्ला—पु० [स० छल्ली=लता] १ किसी धातु अथवा किसी पदार्थ

की बनी हुई अँगूठी के आकार की कोई गोलाकार रचना । २ उक्त की तरह की कोई गोलाकार आकृति। जैसे—बालो का छल्ला। ३ वह गोलाकार रचना या घेरा जो हुक्के के नेचे मे कलाबत्तू आदि के तारो का बना होता है। ४ किसी प्रकार का गोल घेरा या मडल।

छल्लि—स्त्री० [स० छद√ला (लेना)+कि] १ छाल । २ लता। ३ सतति।

छल्ली—स्त्री० [स० छल्लि+डीष्] १ छाला। २ लता। ३ वृक्षो की टहनियो आदि से बनी हुई दौरी या झाबा। ४ अनाज के बोरो की पक्ति या क्रम से लगा हुआ ढेर। ५ मक्के की बाल। भुट्टा। (पश्चिम)

छल्लेदार—वि० [हि० छल्ला+फा० दार] मडलाकार घेरे या चिह्नो-वाला। जिसकी आकृति छल्ले की तरह घेरदार हो। जैसे--छल्लेदार बाल ।

छव†—वि०=छ ।

छवक्क—वि० [हि० छकना] छका हुआ। तृप्त।

छवा†—पु०=छावा (शावक)।
पु० [देश०] पैर की ऐडी।

छवाई—स्त्री० [हि० छाना] छाने या छवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

छवाना—स० [हि० छाना का प्रे० रूप] छाने का काम दूसरे से कराना ।

छवि—स्त्री० [स०√छो (छेदन) +किन्] छबि। (दे०)

छवैया†—वि० [हि० छाना] छवाने या छानेवाला। छाने या छवाने का काम करनेवाला ।

छहर—स्त्री० [हि० छहरना] बिखरने की क्रिया या भाव।

छहरना—अ० [स० क्षरण] छितराना। बिखरना। उदा०—मोती की फुहार सी छहरे--पत।

छहराना†—स० [हि० छहरना] छितराना । बिखेरना ।
†अ०=छहरना।

छहरीला†—वि० [हि० छहरना] [स्त्री० छहरीली] छितराने या बिखरनेवाला।

छहियाँ†—स्त्री०=छाँह ।

छही—स्त्री० [देश०] वह मादा पक्षी विशेषत कबूतरी जो अन्य पक्षियो को बहकाकर अपने अड्डे पर या दल मे लाये ।

छाँ*—स्त्री०=छाँह ।

छाँउं*—स्त्री०=छाँह।

छाँक—पु० [फा० चाक] खड। भाग।
†स्त्री० =छाक।

छाँगना—स० [स० छिन्न] १ छिन्न या अलग करना । २ कुल्हाडी आदि से पेड आदि की शाखा। काटना।

छाँगुर—पु० [हि० छ +अगुल] वह व्यक्ति जिसके हाथ मे छ उँग-लियाँ हो।

छाँछ—स्त्री० [हि० छाछ] १.=छाछ। २ छाछ रखने का एक पात्र। छछिया ।

छाँछी†—स्त्री० [हि० छाँछ] छाछ रखने का छोटा पात्र। छछिया।

छाँट—स्त्री० [हि० छाँटना] १ छाँटने की क्रिया या भाव। २ छाँट कर अलग की हुई निकम्मी वस्तु या रद्दी अश। ३ दे० 'छँटनी'।
†स्त्री० [स० छर्दि] कै। वमन।

छाँट-छिडका†—पु० [हि० छीटा+छिडकना] बूँदा-बाँदी । हलकी वर्षा।

छाँटना—स्त्री०=छाँट।

छाँटना—स० [स० छर्द्, प्रा० छड्, २ स० शत् > शात > छाट, उस, श्वठ, दे प्रा० छाण्ट, ब० छाटा, ओ० छाटिबा, प० छाटणा, गु० छाटवू, मराठी छाट (णे)] १ आगे की ओर निकला या बढा हुआ (फलत अनावश्यक और फालतू अश) काटकर अलग करना। जैसे--पेड की शाखाएँ या सिर के बाल छाँटना। २ कूट-फटक कर अनाज की भूसी अलग करना। ३ गदी या दूषित वस्तु किसी चीज मे से निकालना। साफ करना। जैसे—मैल छाँटना। ४ कै करना। वमन करना। ५ किसी वस्तु को कतरकर विशेष आकार या रूप देना। जैसे--मलमल के टुकडे मे से कुर्ता छाँटना। ६ कुल सामग्री मे से उपयुक्त वस्तुएँ चुनकर अपने काम के लि अलग कर लेना। जैसे—पुस्तके छाँटना। ७ लेख आदि मे का वाछनीय अश ले लेना और अवाछनीय अश काट या छोड देना।

पद—काटना-छाँटना। (दे०)

८ अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। जानकारी बघारना। जैसे--अग्रेजी छाँटना, कानून छाँटना।

छाँटा—पु० [हि० छाटना] १ छाँटने की क्रिया या भाव। २ किसी को छल से किसी मडली, सभा अथवा उसकी सदस्यता से अलग करना। क्रि० प्र०--देना ।

छाँडना†—स०=छोडना।

छाँद—स्त्री० [स० छद=बधन] १ चौपायो के पैरो मे बाँधी जानेवाली रस्सी। २ छाँदने की क्रिया या भाव।

छाँदना—स० [हि० छाँद+ना (प्रत्य०)] १ रस्सी से बाँधना। जैसे—असबाब बाँधना-छाँदना। २ चौपायो के पिछले दोनो पैरो को सटाकर रस्सी से बाँधना जिससे वह दूर जाने या भागने न पावे।

छांदसीय—वि० [स० छन्दस्+अण्+छ--ईय] (वह) जो छदशास्त्र का ज्ञाता हो।

छाँदा—पु० [हि०छाँदना] वह भोजन जो ज्योनार, भडारे आदि से कपडे आदि मे बाँधकर लाया जाय। परोसा। जैसे—ब्राह्मणो को भोजन कराने के बाद एक-एक छाँदा भी दिया गया था।

छादोग्य—पु० [स० छन्दोग+ञ्य] एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो सामवेद का अग है और जिसमे सृष्टि की उत्पत्ति, यज्ञो के विधान तथा अनेक प्रकार के उपदेश है।

छाँधना†—स०=छाँदना।

छाँव—स्त्री० =छाँह।

छाँवडा—पु०=छौना।

छाँह†—स्त्री० [स० छाया, पा० छाय, प्रा० छाआ, छाहा, का० छाय, उ० छाइ, प० छाँ, सि० छाव, गु० छाँइ, मराठी सावली] १ दे० 'छाया'। २ दे० 'प्रतिबिंब'। ३ ऊपर से छाया हुआ स्थान। ४. शरण ।

मुहा०—छाँह न छूने देना=किसी को पास या समीप न आने देना। ५ भूत-प्रेत आदि का प्रभाव

मुहा०—छाँह बचाना=बहुत दूर या परे रहना।

छाँहगीर—पु० [हिं० छाँह+फा० गीर] १ राजछत्र। २ चँदोआ (दे०)। ३ दर्पण।

छाई†—स्त्री० [सं० क्षार] १ राख। २ जले हुए पत्थर के कोयले के वे छोटे-छोटे कण जिनमे चूना मिलाकर जुडाई के लिए गारा बनाया जाता है।

छाउँ†—स्त्री०=छाया।

छाउर*—पु० [सं० क्षार] राख।

छाक—स्त्री० [हिं० छकना] १ छकने की क्रिया या भाव। २ वह भोजन जो दोपहर के समय खेत पर काम करनेवाले व्यक्ति के लिए भेजा जाता है। दोपहर का कलेवा। ३ शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीजे। चाट। ४ नशा। मद। उदा०—दिन छिनदा छाकी रहत छुटत न बिनु छबि छाकु।—बिहारी। ५ नशीली चीज। मादक पदार्थ। उदा०—आठहू पहर की छाक पीवै।—कबीर। ६ मत्तता। मस्ती।

छाकना—अ० [हिं० छकना] १ तृप्त होना। छकना। २ भर जाना। उदा०—कियो हुमुकि हुकार छोभि त्रिभुवन भय छाक्यौ।—रत्नाकर। ३ चकित होना।

अ० छकना। धोखा खाना।

छाकु—पु० [हिं० छाक] मद्य। मदिरा।

छाग—पु० [√छो (काटना) +गन्] १ बकरा। २ बकरी का दूध। ३ पुरोडाश। ४ मेष राशि।

वि० बकरा-सबधी। बकरे का।

छागभोजी (जिन्)—वि० [छाग√भुज् (खाना+णिनि] बकरे का मास खानेवाला।

पु० भेडिया।

छागमय—पु० [सं० छाग+मयट्] कार्तिकेय का छठा मुख।

छाग-मुख—पु० [ब० स०] १ कार्तिकेय। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

छागर—पु० [सं० छागल] बकरा। उदा०—छागर मेढा बड औ छोटे।—जायसी।

छाग-रथ—पु० [ब० स०] अग्नि।

छागल—पु० [सं० छगल+अण्] बकरा।

स्त्री० पानी भरने के लिए बनाई हुई चमडे की मशक। डोल।

स्त्री० [पश्तो] पैर मे पहनने का एक गहना।

छाग-वाहन—पु० [ब० स०] अग्नि।

छागिका—स्त्री० [सं० छागी+कन्, टाप्, ह्रस्व] बकरी।

छागी—स्त्री० [सं० छाग+ङीष्] बकरी।

छाच्छार—वि० [सं० साक्षात्] मूर्तिमान। साकार। उदा०—रानी का है छाच्छार दर्गा है।

छाछ—स्त्री० [सं० छच्छिका] दही का वह घोल जिसमे से मक्खन मथकर निकाल लिया गया हो। मट्ठा।

छाछरी*—स्त्री० [?] मछली।

छाछठ—वि० [सं० षट्षष्ठि] जो गिनती या सख्या मे साठ से छः अधिक हो।

पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६६।

छाछी†—स्त्री०=छाछ।

छाज—पु० [सं० छाद] १ सरकडो, सीको आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे अनाज फटका जाता है। सूप। २ छप्पर। ३ छज्जा।

पु० [हिं० छजना] १ छजने की क्रिया या भाव। २ किसी को छलने या ठगने के लिए बनाया जानेवाला रूप। स्वाँग ३ सजावट। ४ वेष-भूषा।

छाजन—स्त्री० [सं० छादन] १ छाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। छवाई। २ छप्पर। ३ घर के ऊपर की बनावट जो छत के रूप मे और छाया के लिए होती है। ४ त्वचा का एक रोग जिसमे जलन होती है।

पु० कपडा। वस्त्र।

पु० [हिं० छजना] छलने या ठगने के लिए धारण किया जानेवाला वेश।

छाजना—अ० [हिं० छजना] १ सुदर जान पडना। २ सुशोभित होना। फबना।

स० १ सुदर बनाना। सजाना। २ सुशोभित करना।

छाडना*—स०=छोडना।

छात—स्त्री०=छत।

पु० १.=छत्र। उदा०—का कहँ बोलि सौहँभा, पातसाहि कर छात।—जायसी। २ छाता।

छाता—पु० [सं० छत्रकम्, पा० छत्तकम् सि० छट्रु, उ० छाता, मराठी छत्र] १ कपडे का वह प्रसिद्ध आच्छादन जो छडी मे लगी हुई तीलियो पर कपडा आदि चढाकर बनाया जाता है और जिसे धूप, वर्षा आदि से रक्षित रहने के लिए सिर के ऊपर खोल या तानकर चलते है। २ उक्त आकार की कोई वानस्पतिक रचना। छत्ता। जैसे—खुमी का छाता। ३ दे० 'छतरी'।

छाती—स्त्री० [सं० छादिन् छाने या छाया करनेवाला] १ जीवो के शरीर का सामनेवाला वह भाग जो पेट और गरदन के बीच स्थित होता है। वक्षस्थल। २ मनुष्य के शरीर का उक्त भाग, जिसमे स्त्री जाति मे स्तन होते है।

मुहा०—छाती जलना=अपच के कारण उक्त अश के भीतरी भागो मे जलन होना। **छाती पीटना**=बहुत दुःखी या शोकमग्न होने पर छाती पर हथेली से बार-बार आघात करना। **छाती लगाना**=आलिगन करना।

३ स्त्रियो का स्तन।

मुहा०—छाती छुड़ाना=ऐसी क्रिया करना जिससे शिशुओ के स्तन-पान करने का अभ्यास छूटे। **छाती पिलाना**=स्त्री का सतान को अपना दूध पिलाना।

४ मन। हृदय।

मुहा०—छाती उमडना=प्रसन्नता से फूले न समाना। **छाती जलना**=कोई कष्टदायक घटना या बात होने पर सतप्त होना। **छाती जुड़ाना**

या ठंडी होना=अभिलाषा पूर्ण होने पर मन का शान्त होना। **छाती पत्थर की करना**=अपने हृदय को इतना कडा करना या बनाना कि उस पर किसी दुःख का प्रभाव न पडे। **(किसी की) छाती पर कोदो या मूँग दलना**=किसी के सामने जान-बूझकर ऐसा आचरण या काम करना जिससे उसका दिल दुखता हो। **छाती पर पत्थर रखना**=दुःखी या शोकमग्न होने पर अपने दिल को कडा करना। **छाती पर साँप फिरना या लोटना** (क) कलेजा दहल जाना। (ख) ईर्ष्या के कारण व्यथित होना। **छाती फटना**=बहुत अधिक असह्य दुःख या वेदना होना। **छाती भर आना**=हृदय गद्गद् हो जाना।

५ जीवट। साहस। हिम्मत।

छात्र--पु० [स० छत्र+ण] [स्त्री० छात्रा] १ विद्यार्थी। २ शिष्य। वि० १ छात्र-सबधी। २ गुरु या बडे पर छत्र लगाकर उसके पीछे-पीछे चलनेवाला।

छात्रवृत्ति--स्त्री० [ष० त०] निर्धन तथा योग्य छात्रो को विद्याध्ययन करने अथवा किसी विषय मे अनुसधान करने के लिए कुछ समय तक नियमित रूप से दी जानेवाली आर्थिक सहायता। (स्कालरशिप)

छात्रालय--पु० [स० छात्र-आलय ष०त०]=छात्रावास।

छात्रावास--पु०[स० छात्र-आवास ष०त०] वह स्थान जहाँ बहुत से छात्र निवास करते हो। छात्रो के रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)

छाद--पु०[स०√छद् (छाना)+णिच्+घञ्] १ छत। २ छप्पर।

छादक--वि०[स०√छद्+णिच्+ण्वुल्-अक] आच्छादित करने या छानेवाला।

छादन--पु०[स०√छद्+णिच्+ल्युट्-अन] [वि० छादित] १ छाने या ढकने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जिससे कुछ छाया या ढका जाय। आच्छादन। आवरण। ३ छिपाव। दुराव। ४ कपडा। ५ चादर। दुपट्टा।

छादित--भू०कृ० [स०√छद्=णिच्+क्त] ऊपर छाया हुआ। उदा०--तुहिन वाष्प के सुरग जलद से छादित, इन्दु रश्मि के इन्द्र जाल से स्पर्शित।--पत।

छादिनी--स्त्री०[स०√छद्+णिच्+णिनि-ङीष्] १ चमडा। २ खाल।

छाद्मिक--वि०[स० छद्मन्+ठक्-इक] १. (व्यक्ति) जो छद्मवेश धारण किये हो। बहुरुपिया। २ ढोंगी। मक्कार।

छान--स्त्री०[स० छादन] छप्पर। छाजन।

स्त्री०[हिं० छानना] छानने की क्रिया या भाव।

पद--छान-बीन (दे०)।

स्त्री० [स० छद या हिं० छाँद] चौपायो के पैरो मे बाँधी जानेवाली रस्सी।

छानना--स०[स० चालन] १ (क) चलनी या छाननी मे कोई चीज डालकर उसे (चलनी को) बार-बार इस प्रकार हिलाना कि उस चीज के मोटे कण चलनी मे बचे रहे और महीन कण नीचे गिर पडे। जैसे--गेहूँ छानना। (ख) कपडे के ऊपर चूर्ण या बुकनी रखकर उसे ऊपर से हाथ आदि से इस प्रकार चलाना कि उसमे का महीन अश नीचे छनकर गिर पडे। कपडछान करना। (ग) किसी तरल पदार्थ को चलनी या वस्त्र से से इस प्रकार निकालना कि उसमे मिले या पड़े हुए मोटे कण ऊपर रह जायँ। जैसे--चाय या दूध छानना। (घ) उक्त के आधार पर पिसी या घुली हुई भाँग के सबध मे उक्त क्रिया करना।

मुहा०--भाँग छानना=भाँग पीस तथा घोलकर पीना।

विशेष--कुछ लोग इसी के आधार पर शराब के साथ 'छानना' क्रिया का प्रयोग करते है जो ठीक नही है।

२ ऐसी रासायनिक क्रिया करना जिससे एक धातु मे मिला हुआ दूसरी धातु का अश अलग हो जाय। जैसे--तेजाब मे सोना छानना। ३ कोई चीज ढूँढने के लिए सब जगह या सब चीजे अच्छी तरह देखना-भालना। जैसे--(क) सारा घर या शहर छानना। (ख) पूरी रामायण या महाभारत छानना।

छाननी--स्त्री०=चलनी।

छान-बीन--स्त्री० [हिं० छानना+बीनना] १ छानने या बीनने की क्रिया या भाव। २ अनुसधान। जाँच-पडताल।

छाना--स०[स० छादनक, पा० छाद] १ छाया के लिए किसी स्थान पर कोई आवरण डालकर या कोई रचना खडी कर उसे ढकना। जैसे--छाजन छाना। २ छाया करने के लिए किसी स्थान से कुछ ऊपर कोई वस्त्र तानना या फैलाना। ३ आवास के प्रसग मे, निर्मित करना। जैसे--घर या झोपडी छाना।

अ०१ किसी चीज या बात का इस प्रकार चारो ओर फैल जाना कि अपने क्षेत्र मे हर जगह वही दिखाई दे। जैसे--अधकार छाना, बादल छाना, रोब छाना। २ डेरा डाल कर या जमकर कही रहना। उदा०--जोगिया जी छाइ रह्या परदेश।--मीराँ।

छानि*--स्त्री०=छानी।

छानी--स्त्री०[हिं० छाना] घास-फूस की छाजन।

मुहा०--(किसी की) छानी छवाना=ऐसी व्यवस्था करना कि कोई सुरक्षित रूप से रह सके।

वि० छिपा हुआ। गुप्त।

छाने-छाने*--क्रि० वि० [हिं० छाना] चुपके से। छिपे-छिपे।

छाप--स्त्री०[हिं० छापना] १ छापने की क्रिया या भाव। २ वह ठप्पा या साँचा जिससे कोई चीज छापी जाय। ३ छापने से बननेवाला विशिष्टता सूचक कोई चित्र या चिह्न। जैसे--वैष्णवो के अगो पर गरम धातु से अकित शख, चक्र आदि का चिह्न। ४ ऐसी अँगूठी जिस पर छापने के लिए कोई अक या चिह्न बना हो। मुद्रा। ५ अँगूठी (पश्चिम)। ६ कविता के अन्त मे रहनेवाला कवि का उपनाम। ७ किसी प्रकार के विशिष्ट प्रभाव के फलस्वरूप दिखाई देनेवाला चिह्न या बात। जैसे--इस कवि पर ब्रजभाषा की छाप स्पष्ट दिखाई पडती है। ८ किसी कथन, घटना, दृश्य आदि के प्रभावशाली होने या ठीक जान पडने के कारण मन पर पडनेवाला उसका प्रभाव।

छापना--स०[हिं० छाप] १ ठप्पे आदि पर रग या स्याही लगाकर उसे किसी वस्तु पर इस प्रकार दबाना कि ठप्पे पर बनी हुई आकृति उस वस्तु पर छप या बन जाय। २ यत्रो की सहायता से अक्षर, चित्र आदि मुद्रित करना। ३ पुस्तक, लेख, समाचार-पत्र आदि प्रकाशित करना। ४ किसी तल पर काला कागज रख कर उस पर इस प्रकार चित्र बनाना या कुछ लिखना कि उस तल पर उस कागज की सहायता से चिह्न बन जायँ।

स०=छोपना। उदा०--सब मुख कजनि खिलत सोक पाला परि छाप्यौ।--रत्नाकर।

छापा--पु०[हि० छापना] १ धातु अथवा लकडी का वह टुकडा जिस पर फूल-पत्ती आदि खुदी रहती है और जिस पर रग या स्याही लगाकर उसकी छाप किसी तल पर लगाई जाती है। ठप्पा। २ उक्त उपकरण की छाप। ३ विष्णु के आयुधो के वे चिह्न जो भक्त लोग तप्त मुद्रा से अपने शरीर पर अकित कराते है।उदा०--जप माला छापे तिलक ।--बिहारी। ४ मोहर, मुद्रा और उसकी छाप। ५ मगल अवसरो पर हथेली और पाँचो उँगलियो का वह चिह्न जो हल्दी आदि की सहायता से दीवारो आदि पर लगाया जाता है। ६ पुस्तके, समाचार-पत्र आदि छापने की कला या यत्र। ७ शत्रु या शिकार पर अचानक किया जानेवाला हमला।

क्रि० प्र०--डालना।--मारना।

८ किसी की तलाशी लेने के लिए और कुछ विशिष्ट वस्तुएँ पकडने के लिए पुलिस का अचानक या अप्रत्याशित रूप से कही पहुँचकर सब चीजे देखना-भालना।

क्रि-प्र०--मारना।

छापा-खाना--पु०[हि०छापना+फा० खान] वह सस्थान जहाँ यत्रो आदि की सहायता से छपाई का काम होता हो। मुद्रणालय। (प्रिटिंग प्रेस)

छापामार--वि०[हि० छापा+मारना] अचानक किसी पर आक्रमण करनेवाला। छापा मारनेवाला।

छापामारी--स्त्री०[हि० छापामार] छापा मारने की क्रिया या भाव।

छाब†--पु०[देश०] घुटना।

छाबड--पु०[हि० छाबडी] बडी छाबडी। उदा०--मिणधर छाबड माय, पडै न राणप्रतापसी।--दुरसाजी।

छाबडी--स्त्री०[हि० छाबा] वह टोकरी या थाल जिसमे खाने-पीने की चीजे रखकर बेची जाती है। खोचा।

छाबा†--पु०=झाबा।

छाम†--वि०=छाँह।

वि०=क्षाम।

छामोदर*--वि०[स्त्री० छामोदरी]=क्षामोदर।

छाय†--स्त्री०=छाया।

छायल--स्त्री०[?] स्त्रियो की एक प्रकार की कुरती।

छायाक--पु०[स० छाया-अक ब०स०] चद्रमा।

छाया--स्त्री०[स०√ छो (काटना)+य--टाप्] १ वह अधकार या अधकारपूर्ण वातावरण जो किसी स्थान (अवकाश) मे प्रकाश की किरणे किसी बीच मे पडनेवाली आड या आवरण के कारण न पहुँच सकने पर उत्पन्न होता है। २ ऐसा स्थान जहाँ उक्त प्रकार का अध-कार या अधकारपूर्ण वातावरण हो। ३ ऊपर या सामने रहनेवाली वह चीज जो धूप, वर्षा, शीत आदि से बचाती है। ४ वह अधकारपूर्ण आकृति जो किसी स्थान पर प्रकाश की किरणे न पहुँच सकने पर बनती है और यह उस वस्तु की आकृति जैसी होती है जो प्रकाश की किरणो को किसी स्थान पर नही पहुँचने देती। परछाई। प्रतिबिब। ५ प्राय किसी के पीछे या साथ टोह, रक्षा आदि के लिए लगा रहनेवाला व्यक्ति। ६ किसी वस्तु के अनुकरण पर बनी हुई और कुछ-कुछ वैसी ही जान पडनेवाली पर कम महत्त्व की चीज। प्रतिकृति। अनुहार। ७ ऐसी तत्त्वहीन या निस्सार बात या पदार्थ जो किसी वास्तविक या महत्त्वपूर्ण बात या पदार्थ की भद्दी नकल भर हो। व्यर्थ की निकम्मी और भ्रामक प्रतिकृति। ८ किसी बात या पदार्थ का बहुत ही क्षीण या नाम-मात्र का अवशेष जो उस मूल बात या पदार्थ का आभास देता हो। ९ चित्र का वह अश जहाँ पर किसी अश की छाया पडने के कारण अपेक्षाकृत कुछ अधिक कालापन आ गया हो। (शेड) १० भूत-प्रेत आदि के कारण होनेवाली बाधा। ११ काति। दीप्ति। १२ एक रागिनी। १३ दुर्गा। १४ सूर्य की पत्नी। १५ आर्या छद का एक भेद।

छाया-कर--पु० [छाया √ कृ (करना)+अच्] किसी के पीछे छतरी लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

छाया-गणित--पु०[मध्य०स०] गणित की वह प्रक्रिया जिससे उनकी छाया के सहारे ग्रहो की गति-विधि आदि जानी जाती है।

छाया-गत--वि० दे० 'पार्श्वगत'।

छाया-ग्रह--पु०[छाया √ग्रह् (ग्रहण)+अच्] आईना। शीशा।

छाया-ग्राहिणी--स्त्री०[स० छायाग्राहिन्+ङीप्] सिंहिका (दे०) नामक राक्षसी।

छाया-ग्राही--(हिन्) वि० [स० छाया√ग्रह +णिनि] [स्त्री० छाया-ग्राहिणी] किसी की छाया के आधार पर ही उसे ग्रहण कर लेने या पकडनेवाला।

छाया-चित्र--पु०[मध्य० स०] १ वह चित्र जो विशेष प्रकार से निर्मित कागज या शीशे पर किसी वस्तु की छाया मात्र पडने से उतर आता है। २ उक्त प्रतिबिम्ब को छापने से बननेवाला चित्र। (फोटो)

छाया-चित्रण--पु०[ष०त०] वह कला या क्रिया जिससे किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब एक प्रकार के शीशे पर ले लिया जाता है और उसके द्वारा एक विशेष प्रकार के कागज पर उसका चित्र छापा जाता है। (फोटोग्राफी)

छाया-तनय--पु०[ष०त०] शनि।

छाया-दान--पु०[मध्य०स०] एक प्रकार का दान जिसमे ग्रहजन्य अरिष्टो की शाति के लिए काँसे की कटोरी मे घी या तेल भरकर पहले उसमे अपनी छाया देखी जाती है और तब उस पात्र का घी या तेल दक्षिणा सहित किसी को दे दिया जाता है।

छाया-नट--पु०[ब०स०] षाडव सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो रात के पहले पहर मे गाया जाता है।

छाया नाटय--पु०[स०] पुतलियो का एक प्रकार का नाटक जिसमे चमडे की पुतलियाँ और पुतले बनाकर उन्हे कठपुतलियो की तरह इस प्रकार नचाया और उनसे अभिनय कराया जाता था कि उनकी छाया आगे पडे हुए उस पर्दे पर पडती जो दर्शको के सामने होता था।

विशेष--इसका आरम्भ चीन मे और विकास भारत मे हुआ था जहाँ से यह भारत और अरब होता हुआ अफ्रीका और यूरोप मे पहुँचा था। यही आधुनिक चलचित्रो का मूल रूप माना गया है।

छाया-पथ--पु०[मध्य०स०] असख्य नक्षत्रो का विशिष्ट समूह जो हमे उत्तर-दक्षिण फैला हुआ दिखाई देता है। आकाशगगा। (गैलैक्सी)

विशेष--वस्तुत महाशून्य मे ऐसे अनेक छाया-पथ जगह-जगह फैले

हुए है और हमारी पृथ्वी तथा सौर मडल इसी प्रकार के एक छाया-पथ के अतर्गत है।

छायापाती (तिन्)--पु०[स० छाया√ पत् (गिरना)+णिनि] सूर्य।

छायापात्र--पु०[ष० त०] वह छोटा पात्र जिसमे घी या तेल भर कर छाया-दर्शन किया जाता है।

छाया-पुरुष--पु०[मध्य०स०] हठ योग की एक साधना के फलस्वरूप द्रष्टा को आकाश मे दिखाई पडनेवाली निजी छाया रूपी आकृति।

छायाभ (ा)--वि०[स० छाया-आभा ब०स०] १ जो छाया से युक्त हो। २ जिस पर छाया पडी हो।

स्त्री० अधकार और प्रकाश। उदा०--यह छायाभा है अविच्छिन्न यह आँख मिचौनी चिर सुन्दर।--पत।

छायामय--वि०[स० छाया+मयट्] छाया से युक्त।

छायामान--पु०[ब०स०] चद्रमा।

छाया-मित्र--पु०[ष०त०] छतरी।

छाया-मूर्ति--स्त्री०[मध्य०स०] छाया पडने से बनी हुई आकृति या रूप।

छाया-मृगधर--पु० [छाया-मृग मध्य०स०, छायामृग-धर ष०त०] चद्रमा।

छाया-यत्र--पु० [मध्य०स०] धूप-घडी।

छाया-लोक--पु० [मध्य ० स०] अदृश्य जगत्। इस लोक से परे माना जानेवाला वह लोक जो दिखाई न देता हो।

छाया-वाद--पु० [ष०त०] आधुनिक साहित्य मे आत्म अभिव्यक्ति का वह नया ढग या उससे सबध रखनेवाला सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी सौंदर्यमय प्रतीक की कल्पना करके ध्वनि, लक्षणा आदि के द्वारा उसके सबध मे अपनी अनुभूति या आतरिक भाव प्रकट किए जाते हैं।

छायावादी (दिन्)--वि०[स० छायावाद+इनि] १ छायावाद सबधी (रचना)। २ छायावाद के सिद्धान्त माननेवाला या उसका अनुसरण करनेवाला (व्यक्ति)।

छाया-सुत--पु० [ष० त०]शनि।

छार†--पु० [स० क्षार] १ जली हुई वस्तु का वह अश जो भस्म या राख हो गया हो। २ खारा नमक।

छारना*--स० [हिं० छार] १ पूरी तरह से जलाकर राख करना। २. चौपट या नष्ट करना।

छारा*--पु०=छाला।

छाल*--स्त्री० [स०पा०, प्रा० छल्ली] वृक्षो आदि के तने पर का कड़ा, खुरदरा और मोटा छिलका।

*पु० चिट्ठी या पत्र (जो पहले छाल पर लिखा जाता था)।

पु० छाला। चर्म। उदा०--बैठ सिघ छाला होइ तपा।--जायसी।

†स्त्री०=उछाल (पश्चिम)।

छालक*--वि० [स० क्षालक] [स्त्री०छालिका] धोने या धोकर साफ करनेवाला। उदा०--त्रिपथ गासि पुन्य रासि पाद-छालिका।--तुलसी।

छालटी--स्त्री०[हिं० छाल] एक प्रकार का कपडा जो अलसी आदि के रेशो से बनाया जाता है।

छालित--भू० कृ०[स० प्रक्षालित] धोया अथवा धोकर साफ किया हुआ।

छालिया*--वि० [स० स्थाली] एक प्रकार की छिछली तथा छोटी कटोरी।

पु० [?] १. सुपारी के कटे हुए छोटे-छोटे टुकडे। २ बादाम, पिस्ते आदि के एक मे मिले हुए छोटे टुकड़े।

छाली*--पु०=छागल (बकरी)।

छाँव--स्त्री०=छाँह।

छावना†--स०= छाना।

छावनी--स्त्री०[हिं० छाना]१ छप्पर आदि छाने की क्रिया या भाव। २. छप्पर। ३. डेरा। पडाव।

मुहा०--छावनी छाना=मार्ग मे डेरा लगाना। अस्थायी रूप से कही परदेश मे जाकर रहना।

४ शहर का वह भाग जहाँ सैनिक रहते हो। सैनिको की बस्ती। (कैन्टूनमेंट)

छाहरि--स्त्री०[हिं० छाँह] छाया। उदा०--आपनि छाहरि तेज न पास। --विद्यापति।

छिउँकी--स्त्री० [हिं० च्यूँटी] [पु० छिउका]१ एक प्रकार की भूरे रग की च्यूँटी। २ एक प्रकार का कीडा।

†स्त्री०=चिकोटी।

छिकना--अ०=छिकना।

छिकोरा--पु०[देश०] एक वन्य पशु।

छिछ--पु० [अनु०] १ फुहारा। फव्वारा। उदा०--ऊँच छिछ ऊछलै अति।--प्रिथीराज। २ छीटा।

†वि० =छूँछा।

छिछना--स०[स० इच्छ] चाहना। इच्छा करना।

छि--अव्य०[अनु०] अश्रद्धा,घृणा, तिरस्कार आदि का सूचक एक शब्द। जैसे--छि तुम भी ऐसा करने लगे।

छिअ--वि०=छ (सख्या)।

छिउकी--स्त्री०=छिउँकी।

छिउल--पु०[स० शाल्मलि?] टेसू। पलाश।

छिकना--अ० [हिं० छेंकना] १ (स्थान आदि का) घेरा जाना। २ मार्ग मे अवरुद्ध किया या रोक लिया जाना। ३ (खाते मे नाम पड़ी हुई रकम का वसूल होने पर) काटा या रद्द किया जाना।

छिकनी--स्त्री० [स० छिक्कनी] नकछिकनी नाम की एक बूटी।

छिकरा--पु०=चिकारा।

छिकुला†--पु०=छिलका।

छिक्कनी--स्त्री० [स० छिक्√कन् (शब्दकरना)+अप ङीष्] नकछिकनी नाम की बूटी।

छिक्का--स्त्री० [स० छिक्√कै (शब्द करना)+क--टाप्] छीक।

†पु०=छीका।

छिगार†--पु०=चिकारा।

छिगुनी--स्त्री०[सं० क्षुद्र+हिं० उँगली] हाथ या पैर की सब से छोटी उँगली। कानी उँगली।

छिगुली†--स्त्री० छिगुनी।

छिच्छ*--पु०=छीटा।

छिछकारना--स०=छिडकना।

छिछडा—पु०=छीछडा।
छिछडी--स्त्री०[हिं० छिछडा] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का आवरण।
छिछला--वि०[स० उच्छल] [स्त्री० छिछली] १ जिसमे गहराई न हो। कम गहरा। जैसे--छिछला पात्र। २ (जलाशय) जो कम गहरा हो और इसी लिए जिसमे जल थोडी मात्रा मे रहता हो। ३ तुच्छ (बात या स्वभाव)।
छिछिल--वि०=छिछला।
छिछोरा—वि०[हिं० छिछला] [स्त्री० छिछोरी, भाव० छिछोरापन] (व्यक्ति) जो स्वभाव से गभीर न हो।
छिजना†--अ०=छीजना।
छिटकना—अ०[स० क्षिप्ति] १ किसी पदार्थ के कणो का इधर-उधर बिखरना। २ =छिडकना।
स०=छिटकाना।
छिटकाना--स०[हिं० छिटकना] किसी पदार्थ के कणो को चारो ओर डालना, फेकना या बिखेरना। जैसे—अन्न या बालू छिटकाना।
छिटकी†—स्त्री०[हिं० छीटा] कोई चीज छिटकने के कारण पडा हुआ उसका कण या चिह्न।
छिट-फुट —क्रि० वि०[हिं० छिटकना+अनु०] १ कुछ यहाँ कुछ वहाँ। थोडा यहाँ थोडा वहाँ। २ कही-कही। चुट-फुट।
वि० गिनती या मान मे कम।
छिटवा†--पु०[स० शिक्य] टोकरा।
छिड़कना—स० [हिं० छीटना] १ जल या कोई तरल पदार्थ को इस प्रकार फेकना कि उसके छीटे बिखर कर चारो ओर पडें। जैसे—आग या जमीन पर पानी छिडकना, अभ्यागतो पर गुलाब-जल छिडकना। २=छिटकना।
छिडका†—पु०=छिडकाव।
छिडकाई--स्त्री०[हिं० छिडकना] १ छिडकने का कार्य या भाव। २ छिडकने का पारिश्रमिक या पुरस्कार। जैसे—गुलाब छिडकाई।
छिडकाव—पु०[हिं० छिडकना] जल या कोई तरल पदार्थ छिडकने की क्रिया या भाव।
छिड़ना—अ०[हिं० छेडना] १ छेडा जाना। जैसे-बात छिडना, राग-छिडना। २ आरभ होना। जैसे—युद्ध छिडना।
छिण*--पु०=क्षण।
छित*—वि०[स० सित] सफेद।
छितनी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की छिछली या कम गहरी टोकरी।
छितराना—अ०, स०=छितराना।
छितर-बितर—वि०=तितर-बितर।
छितरा—वि०[हिं०छितराना] छितराया हुआ।
छितराना—अ०[स० क्षिप्त+करण] १ किसी वस्तु के कणो या छोटे-छोटे टुकडो का चारो ओर बिखरना। २ थोडे से पशुओ, व्यक्तियो, वस्तुओ आदि का विस्तृत भू-भाग मे फैलना। जैसे—यहूदी सारे ससार मे छितरे हुए है।
स० १ किसी वस्तु के कणो को चारो ओर गिराना, फेंकना या बिखेरना। २ दूर-दूर या विरल करना। जैसे—किताबे छितराना। ३ व्यक्तियो, पशुओ आदि को तितर-बितर करना।
छितराव—पु०[हिं० छितराना] छितरे या छितराए हुए होने की अवस्था या भाव।
छितव*—स्त्री०=क्षिति।
छिताई—स्त्री०[स० क्षिति] देवगिरि के राजा की पुत्री।
छिति*—स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी। भूमि।
छितिकंत, छितिनाथ, छितिपाल—पु० [हिं० छिति+स० कत, नाथ या पाल] राजा।
छितिरुह—पु०[हिं० छिति+स० रुह] वृक्ष।
छितीस*—पु०[स० क्षितीश] राजा।
छित्ति—स्त्री० [स०√छिद् (छेदना)+क्तिन्] काटने अथवा छेदने की क्रिया या भाव।
छिदक—पु०[स०√छिद् (छेदना)+क्वुन्—अक] १ वज्र। २ हीरा।
छिदना—अ० [हिं० छेदना] १ नुकीली वस्तु के धँसने या धँसाये जाने के कारण किसी वस्तु मे आर-पार छेद होना। जैसे—कान या नाक छिदना। २ सुराख होना। छेदा जाना। जैसे—तीर से शरीर छिदना। ३ घायल होना। ४ चुभना। धँसना।
छिदवाई—स्त्री०[हिं० छिदवाना] १ छेदने की क्रिया या भाव। २ छेदने का पारिश्रमिक या मजदूरी।
छिदवाना—स०[हिं० छेदना का प्रे० रूप] [भाव० छिदवाई] छेद या सुराख करवाना।
छिदाना—स०=छिदवाना।
छिदि—स्त्री०[√छिद् (काटना)+इन्] १ काटने या छेदने की क्रिया या भाव। २ कुल्हाडी। ३ वज्र।
छिदिर—पु०[स०√छिद्+किरच्] १ कुल्हाडी। २ तलवार। ३ अग्नि। ४ रस्सी।
छिद्र—पु०[√छिद्+रक्] १ किसी वस्तु के बीच मे का दोनो ओर से खुला हुआ छोटा भाग।छेद। जैसे—कपडे या चलनी मे का छिद्र। २ किसी घन या ठोस वस्तु मे का वह गहरा स्थान जिसमे उस वस्तु का कुछ अश निकाल लिया गया हो। जैसे—जमीन, दीवार या फल मे का छिद्र। ३ किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति मे होनेवाली कोई त्रुटि या दोष। जैसे—छिद्रान्वेषण।
छिद्र-कर्ण—वि०[ब० स०] जिसके कान छिदे या बिंधे हुए हो।
छिद्रदर्शी (शिन्)--पु०[छिद्र√दृश् (देखना)+णिनि] व्यक्ति, जो दूसरो के कार्यों मे त्रुटियाँ या दोष ही ढूँढता हो।
छिद्र-पिप्पली—स्त्री०[मध्य० स०] गजपिप्पली।
छिद्र-वैदेही—स्त्री०[मध्य० स०] गजपिप्पली।
छिद्रातर्—पु०[स० छिद्र-अतर् ब० स०] १ सरकडा। २ नरकुल।
छिद्राश—पु० [स० छिद्र-अश ब० स०] सरकडा।
छिद्रात्मा (त्मन्)--पु०[स० छिद्र-आत्मन् ब० स०] छिद्रान्वेषी।
छिद्रान्वेषण—पु० [स० छिद्र-अन्वेषण ष० त०] किसी कार्य, बात या व्यक्ति मे से त्रुटियाँ या दोष ढूँढने का काम।
छिद्रान्वेषी (षिन्)—पु०[स० छिद्र-अनु√इष् (गति+णिनि] वह जो छिद्रान्वेषण करता हो। दूसरो के कार्यों मे से त्रुटियाँ या दोष खोजने-वाला।
छिन*—पु०=क्षण।

छिनक—पु०[हि० छिन+एक] एक क्षण।
क्रि० वि० क्षण भर। थोडी देर।

छिनकना—स०[हि० छिडकना]नाक मे से इस प्रकार जोर से हवा निकालना कि उसमे रुका हुआ मल बाहर निकल पडे। सिनकना।

छिनकु--पु०, क्रि० वि०=छिनक।

छिनकुरना—अ०[हि० छिनकु+करना] १ एक क्षण रुकना। २ रुकना। ३ विलब करना।

छिनछबि—वि०[हि० छिन+छबि] जिसकी छबि क्षणिक या अस्थायी हो।
स्त्री० बिजली। विद्युत्।

छिनदा—स्त्री०[स० क्षणदा] रात।

छिनना—अ०[हि० छीनना] (किसी अधिकार, वस्तु आदि का किसी से) छीना जाना। जैसे—धन छिनना।

छिनभग—वि०[स० क्षणभगुर]१ जो क्षण मे नष्ट हो जाने को हो। क्षणिक। २ नश्वर।

छिनरा†—वि०=छिनाल।

छिनवाना—स०[हि० छीनना का प्रे० रूप] किसी को किसी दूसरे से कोई चीज छीनने मे प्रवृत्त करना। छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना—अ०[हि० छिनना] छीन लिया जाना।
स० छीनना।

छिनाल—वि०[स० छिन्ना] (स्त्री) जिसका सबध बहुत से पर-पुरुषो से हो।
स्त्री० पुश्चली। व्यभिचारिणी स्त्री।

छिनाला—पु०[हि० छिनाल] पर-पुरुष या पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित सबध या सहवास। व्यभिचार।

छिनौछवि*—स्त्री०[हि० छिनछवि] बिजली।

छिन्न—वि०[स०√छिद् (छेदना)+क्त] १ (किसी वस्तु का वह अश) जो मूल वस्तु से कटकर अलग हुआ हो। २ (वस्तु) जिसमे का कोई अश या भाग काट लिया गया हो अथवा कट कर अलग हो गया हो। खडित। ३ जो किसी के साथ लगा हुआ न हो। किसी से अलग। ४ नष्ट किया हुआ। ५ क्षीण। ६ थका हुआ। क्लात।

छिन्नक—वि०[स० छिन्न+कन्] जिसका कुछ भाग कटकर अलग हो गया हो।
पु०ज्यामिति मे, किसी कोण या कोणाकार गढे हुए घन पदार्थ का वह बचा हुआ भाग जो उसका ऊपरी अश तल के समानान्तर धरातल पर से काट लेने के बाद बच रहे। (फ्रस्टम)

छिन्न-धान्य—वि०[ब० स०] (शत्रुओ द्वारा घिरी हुई वह सेना) जिसके पास धान्य न पहुँच सकता हो।

छिन्न-नास—वि०[ब० स०] जिसकी नाक कटी हुई हो। नकटा।

छिन्न-नासिक—वि०[ब० स०] कटी हुई नाकवाला। नकटा।

छिन्न-पत्री—स्त्री[ब० स०] पाठा।

छिन्न-पुष्प—पु०[ब० स०] पुन्नाग की जाति का वृक्ष। तिलक।

छिन्न-बंधन—वि०[ब० स०] जिसके बधन खोल या काट दिये गये हो। मुक्त।

छिन्न-भिन्न—वि०[द्व० स०] १ (वस्तु) जिसके अग अथवा अश कट-फट या टूट-फूट कर इधर-उधर बिखर गये हो। २ तितर-बितर। बिखरा या छितराया हुआ।

छिन्न-मस्त (क)—वि०[ब० स०] जिसका सिर कट गया हो।

छिन्न-मस्तका—स्त्री०[ब० स०, टाप्] दस महाविद्याओ मे से एक देवी जिसके सबध मे कहा जाता है कि वह अपना सिर हथेली पर रखती है और गले मे से निकलती हुई रक्त धारा पीती है।

छिन्न-मस्ता—स्त्री०[ब० स०, टाप्]=छिन्न-मस्तका।

छिन्न-मूल—वि० [ब० स०] जो जड से उखाड या काट दिया गया हो।

छिन्न-रुह—पु०[छिन्न√रुह् (उगना)+क] तिलक नामक वृक्ष।

छिन्न-रुहा—स्त्री०[छिन्नरुह+टाप्] गुर्च। गुडुची।

छिन्न-वेशिका—स्त्री०[छिन्न-वेश ब० स०, कन्-टाप्, इत्व] पाठा।

छिन्न-व्रण—पु०[कर्म०स०] चोट, हथियार आदि से शरीर मे होनेवाला घाव।

छिन्न-श्वास—पु०[कर्म० स०] एक प्रकार का श्वास रोग।

छिन्नात्र—पु०[स० छिन्न-अत्र ब० स] एक प्रकार का उदर रोग।

छिन्ना—स्त्री० [स० छिन्न+टाप्] १ गुर्च। २ व्यभिचारिणी स्त्री। छिनाल।

छिन्नाधार—वि०[छिन्न+आधार ब० स०] १ जिसका आधार कट या टूट चुका हो। उदा०—पात हत लतिका वह सुकुमार पडी है छिन्नाधार।—पत। २ निस्सहाय।

छिपकली—स्त्री०[स० शेप(=दुम) या रोप्यवान्] एक प्रसिद्ध चार पैरो और लबी दुमवाला सरी-सृप जो दीवारो तथा छतो पर रेंगता है और कीडे-मकोडे पकडकर खाता है।

छिपना—अ० [स० क्षिप्=डालना] १ दूसरो की दृष्टि से ओझल होने के लिए किसी आड के पीछे खडे होना अथवा किसी गुप्त स्थान मे चले जाना। जैसे—चोर आलमारी के पीछे छिप गया था। २ किसी चीज का इस प्रकार ढका जाना कि वह दृश्य न रहे। जैसे—वस्त्र से अग छिपना, बादलो मे सूर्य छिपना। ३ किसी ऐसे स्थान या स्थिति मे होना कि दूसरो को जल्दी उसका पता न लग सके। जैसे—वे छिपे-छिपे चाले चलते है। ४ जो प्रकट या प्रत्यक्ष न हो। ५ अस्त होना। जैसे—दिन छिपना।

छिपाठी—स्त्री०[?] किनारे का भाग।

छिपाना—स०[हि० छिपना] १ दूसरो की दृष्टि से बचाकर अथवा उनकी दृष्टि से बचाने के लिए किसी (जीव या वस्तु) को आड या गुप्त स्थान मे रखना। जैसे—यह चित्र मैने सदूक मे छिपा दिया था। २ किसी वस्तु या शरीर के किसी अग को वस्त्र आदि से ढाँकना। ३ किसी बात की किसी को जानकारी न कराना अथवा न होने देना। जैसे—भेद छिपाना।

छिपाव—पु०[हि० छिपाना] छिपने या छिपाने की क्रिया या भाव। दुराव।

छिपिया—पु० [?] दर्जी। उदा०—अँगिया जो उघडी हरेलाल की छिपिया को नइआँ।
पु०=छीपी।
स्त्री०[हि० छीपा] छोटा छीपा या डलिया।

छिपी—पु०=छीपी।

छिपे-छिपे--क्रि० वि०[हि० छिपना] इस प्रकार गुप्त रूप से कि दूसरो को पता न चले।

छिप्र--क्रि० वि०=क्षिप्र।

छिमता†--स्त्री०=क्षमता।
स्त्री०=क्षमा।

छियना--अ०[हि० छीजना] क्षीण होना। उदा०--काम दभ मद श्रवण छिया है।--निराला।

छिया--स्त्री०[हि० छी] गुह। मल।
मुहा०--छिया छरद करना=गुह और वमन की तरह घृणित समझकर दूर हटाना। उदा०--जो छिया छरद करि सकल सतति तजी तासौ मै मूढ-मति प्रीति ठानी।--सूर।
†स्त्री०[?] युवती।

छियाज--पु०[हि० ब्याज का अनु०] ब्याज की रकम पर भी जोडा जाने वाला ब्याज। कटुआँ ब्याज।

छियानबे--वि०[स० षण्णवति] जो गिनती मे नब्बे से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या--९६।

छियालीस--वि०[स० षट्चत्वारिशत्, प्रा० छायालीसम्] जो गिनती मे चालीस से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या--४६।

छियासठ--वि०[स० षट्षष्टि, प्रा० छसठि, छवठ्ठिम्] जो साठ से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या--६६।

छियासी--वि०[स० षडशीति, या छडसीति, प्रा० छडसीईअँ] जो सख्या मे अस्सी से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या--८६।

छिरकना†--स०=छिडकना।

छिरना*--अ०=छिलना।
*अ०=छिडना।
*स०=छीलना।

छिरिआना--अ० दे० 'छिटकना'। उदा०--उघसल केस कुसुम छिरिआयल।--विद्यापति।

छिलक--पु०[स० तिलक] तिलक नामक वृक्ष।

छिलकना†--स०=छिडकना।

छिलका--पु०[स० छिल्लक] वह आवरण जिसके अन्तर्गत फल का सार भाग रहता है। फल की त्वचा। जैसे--केले या सेब का छिलका।

छिलन--स्त्री०[हि० छिलना] १ छिलने या छीलने की क्रिया या भाव। २ शरीर के किसी अग की त्वचा रगड आदि के कारण छिल जाने से होनेवाला घाव।

छिलना--अ०[हि० छीलना] १ फलो आदि का छिलका उतारा जाना। २ वृक्ष आदि की छाल उतारी जाना। ३ पशु आदि की खाल मासल भाग पर से उतारी जाना। ४ शरीर के किसी अग मे रगड लगने से त्वचा का उतर जाना।

छिलवाना--स०[हि० छीलना का प्रे० रूप] छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिलाई--स्त्री०[हि० छीलना] छिलने या छीलने की क्रिया या भाव। छीलने की मजदूरी।

छिलाना--स०[हि० छीलना का प्रे०] छीलने का काम दूसरे से कराना।
†अ०=छिलना।

छिल्लड†--पु०=छिलका।

छीक--स्त्री०[स० छिक्का] १ शरीर का एक प्राकृतिक व्यापार जिसमे श्वास की वायु अकस्मात् नाक और गले से एक साथ ही एक विशिष्ट प्रकार का शब्द करती हुई निकलती है। २ उक्त शारीरिक व्यापार से होनेवाला शब्द।

छींकना--अ०[हि० छीक] सहसा जोर से नाक और मुँह मे से इस प्रकार साँस फेकना कि जोर का शब्द हो।

छींका--पु०[स० शिक्य, प्रा० सिक्का] १ दीवार की खूँटी अथवा छत मे की कडी मे टाँगा या लटकाया जानेवाला तारो या रस्सियो का वह उपकरण जिसमे खाने, पीने आदि की रखी हुई वस्तुएँ चूहो, बिल्लियो, बच्चो आदि से सुरक्षित रहती हैं।
मुहा०--बिल्ली के भाग से छींका टूटना=सयोग से कोई अभीष्ट या वाछित घटना घटित होना।
२ बैलो के मुँह पर बाँधी जानेवाली रस्सियो की जाली। ३ झूला। (क्व०)

छींट--स्त्री०[स० क्षिप्त, हि० छीटना] १ पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ का किसी तल से टकराने पर उडनेवाला छोटा जल-कण या बूँद। २ किसी वस्तु, वस्त्र, शरीर आदि पर उक्त जल-कण या बूँद पडने से होनेवाला दाग या धब्बा। ३ एक प्रकार का वह कपडा जिस पर छापकर बेल-बूटे या फूल पत्तियाँ बनाई गई हो। ४ चित्र कला मे, चित्रो मे बनाये जानेवाले बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ।

छींटना--स०=छितराना।
स०=छिडकना।

छींटा--पु०[सक्षिप्त हि० छीटना] १ झटके से उछली या उछाली हुई जल अथवा द्रव पदार्थ की बूँदे। जैसे--(क) मुँह पर पानी का छीटा देना। (ख) कीचड मे पत्थर फेकने से छीटे उडना। २ उक्त बूँदो के वस्त्र आदि पर पडने से होनेवाला धब्बा। ३ हलकी वृष्टि। ४ मुट्ठी मे बीज भरकर एक बार मे खेत मे बिखेरने की प्रक्रिया। ५ बोआई का वह ढग जिसमे बीज खेत मे छीटे जाते हैं। ६ चडू या मदक की एक मात्रा। दम। ७ किसी को खिन्न या लज्जित करने के लिए कही जानेवाली चुभती हुई व्यग्यपूर्ण बात।

छींबी--स्त्री० [स० शिम्बी] १ पौधे की फली जिसमे बीज रहते हैं। २ मटर की फली। ३ पशुओ विशेषत: गाय, बकरी, भैंस आदि के थन मे का फली के आकार का वह अश जो नीचे लटकता रहता है और जिसे खीच तथा दबाकर दूध निकाला जाता है।

छी--अव्य०[अनु०] घृणा, तिरस्कर, धिक्कार, आदि का सूचक एक अव्यय।
मुहा०--छी छी करना=घृणा करना।
स्त्री०[अनु०] छिया। गूह।

छीअना*--स०=छूना।

छीआ--स्त्री०=छिया।

छीआ-बीआ--वि० [अनु०]छिन्न-भिन्न।

छीका--पु०=छींका।

छीछ--वि०[स० क्षीण] क्षीण। दुर्बल। उदा०--लाज की आचनि या चित राचन नाच नचाई हौ नेह न छीछै।--देव।

छीछड़ा--पुं०[स० छुच्छ, प्रा०, तुच्छ] १ कटे हुए मास का रद्दी टुकडा। २. पशुओ की अँतडी का वह भाग जिसमे मल भरा होता है।

छीछना--अ० [स० क्षीण] क्षीण होना।

छीछल†--वि०=छिछला।

छीछा--वि०[स्त्री० छी छी]=छिछला।

छीछालेदर--स्त्री०[हिं० छीछी] बुरी तरह से की हुई दुर्गति।

छीज--स्त्री०[हिं० छीजना] १ किसी वस्तु मे का वह अश जो नष्ट हो गया हो। २ कमी। घाटा। हानि।

छीजना--अ०[स० क्षीण] १ उपयोग, व्यवहार आदि मे आते रहने अथवा पुराने पडने के कारण किसी चीज का क्षीण होना या घिस जाना। २ उपयोग मे आ जाने अथवा व्यय हो जाने के कारण किसी चीज का कम होना। ३ हानि होना। उदा०--लकापति-तिय कहति पियसो या मैं कछू न छीजौ।--सूर। ४ नष्ट होना।

छीट†--स्त्री०=छींट।

छीटा†--पु० [सं० शिक्य, हिं० छीका] [स्त्री० अल्पा० छिटनी] १ बाँस की खमाचियो या किसी अन्य वृक्ष की पतली टहनियो का बना हुआ टोकरा। २ चिलमन। चिक।

छीड़--स्त्री० [स० क्षीण] मनुष्यो के जमघट का अभाव। 'भीड' का विपर्याय।

छींण--वि० [स० क्षीण] क्षीण। दुर्बल।
वि०[स० छिन्न, प्रा० छिण्ण] टूटा हुआ। उदा०--छीणे जाणि छछोहा छूटा।--प्रिथीराज।

छीत (ति)†--स्त्री०[व्रज० छीना=छूना] १ छूने या स्पर्श करने की क्रिया या भाव। २ सपर्क। सबध। उदा०--सो करु सूर जेहि भाँति रहै पति जनि बल बाँधि बढावहु छीति।--सूर।
†स्त्री०=छीज।

छीदा--वि०[स० क्षीण] जो घना या सघन न हो। उदा०--माहिली माँड़ली छीदा होइ।--नृपपतिनाल्ह।
वि०[स० छिद्र] जिसमे बहुत से छेद हो।

छीन*--वि०=क्षीण।

छीन-झपट--स्त्री०[हिं० छीनना+झपटना] किसी से अथवा आपस मे एक दूसरे से कुछ छीनने के लिए झपटने की क्रिया या भाव।

छीनना--स०[स० छिन्न, प्रा० छिण्ण, ब० छिना, सिं० छिनो, छिनणु, गु० छिनवूं, मराठी छिण (णे)] १ छिन्न करना। काटकर अलग करना। २ किसी के हाथ से कोई वस्तु बलात् ले लेना। ३ अनुचित रूप से किसी की वस्तु अपने अधिकार मे कर लेना। ४ किसी को दिया हुआ अधिकार, सुविधा आदि वापस ले लेना। ५ दे० 'रेहना'।

छीना†--स०=छूना। (व्रज)

छीना खसोटी--स्त्री०=छीन-झपट।

छीना-छीनी--स्त्री०=छीन-झपट।

छीना-झपटी--स्त्री०=छीन-झपट।

छीप*--स्त्री०[हि० छाप] १ मुद्रण का चिह्न। छाप। २ चिह्न। ३ दाग। ४ एक प्रकार का चर्म रोग।
वि०[स० क्षिप्र] तेज। वेगवान्।

छीपा--पु०[?][स्त्री० अल्पा० छीपी] १ बाँस आदि की खमाचियो का टोकरा। २ थाली।

छीपी--पु०[हि० छापा] [स्त्री० छीपनी, छीपिनी] १ वह व्यक्ति जो कपडो पर बेल-बूटे आदि छापने का काम करता हो। २ दरजी। (बुदेल०)

छीबर--स्त्री०[स० चीवर] १ छीट नामक कपडा। २ एक प्रकार की चुनरी। उदा०--हा हा हमारी सौ साँची कहौ वह कौन ही छोहरी छीवर वारी।--देव।

छीमर†--स्त्री०=छीबर।

छीमी--†स्त्री०=छीबी।

छीया--पु०[अनु० छी] गूह। विष्ठा।

छीर--पु०=क्षीर।
पु०[स० चीर] १ दे० 'चीर'। २ कपडे की लम्बाईवाले सिरे का किनारा। ३ उक्त किनारे पर की पट्टी या धारी।

छीरज--पु०[स० क्षीरज] १ चन्द्रमा। २ दही।

छीरधि--पु०=क्षीरधि (समुद्र)।

छीरप--पु०[स० क्षीरप] दूध-पीता बच्चा। शिशु।
वि० दूध पीनेवाला।

छीर-फेन--पु०[स० क्षीर(=दूध)+फेन] दूध पर की मलाई।

छीर-सागर--पु०=क्षीर-सागर।

छीलक*--पु०=छिलका।

छीलन--स्त्री०[हि० छीलना] १ छीलने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु के वे छोटे टुकडे जो उसे छीलने पर निकलते है। (शेविंग्स)

छीलना--अ०[प्रा० छोल्लइ, पु० हि० छोलना] १ किसी चीज के ऊपर जमा या सटा हुआ आवरण, तह या परत खीचकर उससे अलग करना। जैसे--(क) फल के ऊपर का छिलका छीलना। (ख) पेड पर की छाल छीलना।(ग) प्याज छीलना। २ उगी या जमी हुई चीज को काट, खुरच या नोचकर निकालना या हटाना। जैसे--(क) घास छीलना। (ख) भुथरे उस्तरे से दाढी छीलना। (ग) रदे से लकडी छीलना।

छीलर--पु०[हि० छिछला] पानी से भरा हुआ छोटा गड्ढा।
वि० छिछला।

छीव*--पु०=क्षीव।

छीवना*--स०=छीना(छूना)।

छीवर†--स्त्री०=छीबर।

छुँगनी†--स्त्री०=छँगुली।

छुँगली*--स्त्री०=छँगुली।

छुआई--स्त्री०[हि० छूना] छूने या छुआने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। जैसे--मकान की चूना छुआई।

छुआना†--स०=छुलाना।

छुई-मुई--स्त्री०=छूई-मूई (पौधा)।

छुगनूँ†--पु०=घुँघरू।

छुच्छा--वि०[स्त्री० छुच्छी]=छूँछा।

छुच्छी--स्त्री०[हि० छूछा] १ कोई छोटी नली। जैसे–दीये मे की छुच्छी, जिसके अदर कपडे की बत्ती रहती है। २ कान या नाक मे पहनने के फूल या लौग का वह पूरक अश जो बहुत छोटी पतली नली के रूप मे होता है और जिसमे फूल या लौग के नीचे की कील घुमा या धँसाकर जमाई या बैठाई जाती है। ३ कीप, जिसकी सहायता से बोतलो मे तेल डाला जाता है।

छुच्छू--वि०[हि० छूछा] १ मूर्ख। २ तुच्छ।

छुछमछली--स्त्री०[स० सूक्ष्म, पु० हि० छूछम+मछली] मेढक आदि कई छोटे जल-जतुओ के बच्चो का वह आरभिक रूप जो बहुत-कुछ लबी पूँछवाले कीडे अथवा मछली के बच्चे जैसा होता है। (टेडपोल)

छुछहँड--स्त्री० [हि० छूछा+हाडी] १ वह हाँडी जिसमे से पकाई हुई खाद्य वस्तु निकाल ली गई हो। २ खाली हाँडी।

छुछूदर--स्त्री०=छछूँदर।

छुट--अव्य०[हि० छूटना] छोडकर। अतिरिक्त। सिवा। जैसे—जिसमे हिंदी छुट और किसी बोली का पुट न हो।--इशाउल्ला खाँ।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ यौगिक शब्दो के अत मे लगकर अनियत्रित आचरण करनेवाले का सूचक होता है। जैसे—बत-छुट, हथ-छुट आदि करनेवाला वि०हि० छोटा का लघु रूप जो उसे यौगिक शब्दो मे प्राप्त होता है। जैसे—छुट-भैया।

छुटकना†--अ०=छूटना (छोडा जाना)।

छुटकाना*--स०=छुडाना

छुटकारा--पु०[हि० छूटना] १ छूटने अथवा छुडाये जाने अर्थात् मुक्त होने या मुक्त किये या कराये जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। मुक्ति। जैसे—कारागार से छुटकारा पाना या मिलना। २ किसी प्रकार की विपत्ति, सकट आदि से सकुशल बच निकलने का भाव। जैसे—कष्टो से छुटकारा पाना या मिलना।

छुटना†--अ०=छूटना।

छुटपन--पु०[हि० छोटा+पन] १ छोटे होने की अवस्था या भाव। छोटाई। २ बचपन। लडकपन।

छुट-फुट--वि०[हि० छूटा+फूटा] १ मूल अग से कटकर छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे इधर-उधर फैला हुआ। २ जो थोडा-थोडा करके कभी कही और कभी कही घटित हो। चुट-फुट। (स्पोरडिक) जैसे-छुट-फुट मुठभेड, छुट-फुट वर्षा आदि।

छुटभैया--पु०[हि० छोटा+भैया] व्यक्ति जिसकी गिनती बडे आदमियो मे न होकर छोटे या साधारण आदमियो मे होती हो। बडो की तुलना मे अपेक्षया निम्न स्थिति का व्यक्ति।

छुटलना*--अ०=छूटना।

छुटाना†--स०=छुडाना।

छुटौती--स्त्री०=छूट।

छुट्टा--वि०[हि० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] १ (वह) जो बधन से मुक्त होकर स्वतत्रतापूर्वक विचरण कर रहा हो। २ (जतु या जीव) जो अपने दल, वर्ग से निकल कर अलग हो गया हो। जैसे—छुट्टा कबूतर, छुट्टा बन्दर। ३ एकाकी। अकेला। ४ फुटकर।

पु० छोटे सिक्के। रेजगारी।

छुट्टी--स्त्री०[हि० छूटना] १ छूटने या छोडे जाने की क्रिया या भाव। छुटकारा। जैसे—चलो, इस काम से भी छुट्टी मिली। २ कोई काम कर चुकने के उपरान्त अथवा कुछ निश्चित समय तक काम करने के उपरान्त मिलनेवाला अवकाश। जैसे—भोजन करने के लिए दस मिनट की छुट्टी मिलती है। ३ वह दिन जिसमे नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नही होते। जैसे—होली की दो दिन की छुट्टी मिलती है। ४ वह दिन जिसमे काम पर से अनुपस्थित रहने की स्वीकृति मिल गई हो। जैसे—विवाह मे चलने के लिए दो दिन की छुट्टी लेनी पडेगी। ५ कही से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनुमति या आज्ञा।

छुडाई--स्त्री०[हि० छोडना] छोडने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। स्त्री०[हि० छुडाना] छुडाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

छुडाना--स०[हि० छोडना] १ बधन, बाधा आदि से मुक्त कराना। उन्मुक्त या स्वतत्र कराना। जैसे—जेल से कैदी छुडाना। २ जकड, पकड आदि से अलग या रहित करना। जैसे—पल्ला या हाथ छुडाना। ३ डोरे, रस्सी आदि मे का उलझाव दूर करना। जैसे—गाँठ छुडाना। ४ देन चुकाकर अथवा और किसी प्रकार से अपनी वस्तु वापस लेना। जैसे—(क) ऋण चुकाकर धरोहर छुडाना। (ख) दड भरकर काजी हौज से गाय छुडाना। ५ किसी को सेवा से अलग करना। नौकरी से हटाना। ६ किसी के साथ चिपकी, सटी या लगी हुई वस्तु अथवा उसका कोई अश अलग करना। जैसे—(क) लिफाफे पर से टिकट छुडाना। (ख) कपडे पर का दाग या धब्बा छुडाना। ७ (देय धन मे) कुछ कमी कराना। जैसे—सौ रुपयो मे से दस रुपए तो तुमने छुडा ही लिये। ८ किसी प्रकार की क्रिया, प्रवृत्ति आदि से रक्षित या रहित करना। जैसे—(क) बालक की पढाई छुडाना। (ख) किसी का अभ्यास या आदत छुडाना। (ग) हाथा-बाही करने वाले लोगो को छुडाना।

स०=छुडवाना। जैसे—आतिशबाजी छुडाना।

छुडैया--वि०[हि० छुडाना+ऐया (प्रत्य०)] बधन से छुडाने या मुक्त करानेवाला।

स्त्री० १ छोडने की क्रिया या भाव। २ गुड्डी उडानेवाले की सहायता के लिए उसकी गुड्डी को कुछ दूर ले जाकर इस प्रकार उसे हवा मे छोडना कि उडानेवाला उसे सहज मे उडा सके।

क्रि० प्र०—देना।

छुतहा--वि०[हि०छूत+हा (प्रत्य०)] १ (रोग) जो छूत से फैलता या बढता हो। छूतवाला। सक्रामक। २ जो किसी प्रकार की छूत लगने के कारण अस्पृश्य हो गया हो। ३ जिसे किसी कारण से छूना निषिद्ध हो।

छुतिहर†--वि०=छुतहा।

छुतिहा--वि०=छुतहा।

छुद्र--*वि०=क्षुद्र।

छुद्रघटिका--स्त्री०=क्षुद्रघटिका।

छुद्रावली--स्त्री०=क्षुद्रघटिका।

छुधा†--स्त्री०=क्षुधा।

छुधावत†—वि०[स० क्षुधा+हिं० वत (प्रत्य०)] जिसे भूख लगी हो। भूखा।

छुधित*—वि०[स० क्षुधित] भूखा।

छुन्य†—वि०=शून्य।

छुप*—पु०=क्षुप।

छुपना†—अ०=छिपना।

छुभित*—वि०=क्षुब्ध।

छुभिराना*—अ०[स० क्षोभ] क्षुब्ध होना।

छुलरधार†—स्त्री०[स० क्षुरधार] १ छुरे की धार। २ किसी हथियार की तेज धार।
वि० तेज धारवाला (अस्त्र)।

छुरहँडी—स्त्री०[स० क्षुर भाडिक] वह आधान या पात्र जिसमे नाई उस्तरा, कैंची आदि रखते है। किस्बत।

छुरा—पु० [स० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १ लबे फलवाला बडा चाकू। २ बाल मूँडनेवाला उस्तरा।

छुरिका—स्त्री० [स०√छुर (काटना)+कुन्-अक-इत्व-टाप्] छुरी।

छुरित—पु० [स०] लास्य नृत्य का वह प्रकार जिसमे नायक और नायिका परस्पर आलिगन, चुबन आदि भी करते चलते है।

छुरी—स्त्री० [स० क्षुरिका] लबे फलवाला एक प्रकार का चाकू।
मुहा०—(किसी पर) छुरी चलाना या फेरना=जान-बूझकर ऐसा काम करना जिससे किसी की बहुत बडी हानि हो।

छुलकना—अ०=छुलछुलाना।

छुलछुलाना—अ० [अनु०] थोडा-थोडा करके मूतना।

छुलाना—स० [स० हिं० छूना] स्पर्श कराना।

छुवना†—स०=छूना।

छुवाना—स०=छुलाना।

छुहना—अ० [हिं० छूना] १ छूआ जाना। २ किसी तरल पदार्थ से लेपा या पोता जाना। उदा०—त्यौ त्यौ छुही गुलाब सै छतिया अति सियराति।—बिहारी।
†स०=छूना।

छुहारा—पु० [?] खजूर की जाति का एक सूखा मेवा।

छुही—स्त्री० [हिं० छूना] खडिया नाम की सफेद मिट्टी।

छूंछा—वि०=छूछा।

छूंटा—पु० [देश०] एक प्रकार का गहना जो काले काँच की गुरियो का बना होता है।

छू—पु० [अनु०] मत्र पढकर फूंक मारने का शब्द। जैसे—दन्त-डाक छू। मियाँ की माई का मूई की भू।—भारतेन्दु।
मुहा०—छू-मतर होना=चपत होना। गायब होना।

छूआछूत—स्त्री० [हिं० छूना+छूत] १ अछूत अर्थात् अस्पृश्य को न छूने या उससे अपने को न छुलाने की भावना या विचार। २ धार्मिक या सामाजिक दृष्टि से अस्पृश्य वस्तुओ या व्यक्तियो से छूए जाने का भाव। ३ बच्चो का एक खेल, जिसमे किसी एक लडके को दूसरे लडको को छूना पडता है।

छूई-मूई—पु० [हिं० छूना+मूना=मरना] लजालू या लज्जावती नाम का पौधा जो स्पर्श किये जाने पर अपनी पत्तियाँ सिकोड लेता है।

छूछा—वि० [हिं० तुच्छ] १ (पात्र) जिसमे कुछ भी न हो। खाली। २ (व्यक्ति) जिसके पास या हाथ मे धन, हथियार आदि कुछ न हो। जैसे—छूछे हाथ चला आया हूँ। ३ तत्त्वहीन। नि सार।

छूछम†—वि० [स० सूक्ष्म] १ सूक्ष्म। २ अल्प। थोडा। थोडी मात्रा का।

छूट—स्त्री० [हिं० छूटना] १ छूटने अर्थात् बधन आदि से मुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—बच्चो को मिलनेवाली खेलने की छूट। २ नियम, बधन मर्यादा आदि से मिली हुई स्वतत्रता। जैसे—(क) दिल्लगी मे होनेवाली छूट अर्थात् ऐसी स्थिति जिसमे मर्यादा, शिष्टता, श्लीलता आदि का ध्यान न रखा जाता हो। (ख) पटा, बनेठी, बाक आदि खेलो मे की छूट अर्थात् वह स्थिति जिसमे खिलाडी अपने विपक्षी के जिस अग पर चाहे चोट कर सकता है। ३ वह रियायत या सुविधा जिसके कारण किसी को कोई कर्तव्य या दायित्त्व पूरा न करने पर भी दड का भागी नही समझा जाता है। ४ देय धन चुकाने मे किसी कारण से मिलनेवाली वह सुविधा जिसमे उसका कुछ अश नही देना पडता। ५ असावधानता, जल्दी आदि के कारण कार्य के किसी अग पर ध्यान न जाने अथवा उसके छूट या रह जाने की अवस्था या भाव। ६ मालखभ की एक कसरत। ७ स्त्री-पुरुष का सबध त्याग। ८ परिहास के समय अशिष्ट, अश्लील आदि बातो का किया जानेवाला प्रयोग। (बोलचाल)

छूटना—अ० [स० छुट्ट या आच्छोहन] १ बधन आदि से मुक्त होकर स्वतत्र होना। जैसे—(क) कैदियो का छूटना। (ख) सासारिक आवागमन या जन्म-मरण से छूटना। २ जकड, पकड आदि से रहित होकर अलग या दूर होना। जैसे—हाथ मे पकडा हुआ गिलास या शीशा छूटना (अर्थात् नीचे गिर पडना)। ३ द्रव पदार्थ का बधन टूटने या हटने पर धारा के रूप मे वेगपूर्वक आगे बढना। जैसे—रक्त की धारा छूटना। ४ द्रव पदार्थ का किसी चीज मे से रस-रसकर निकलना। जैसे—(क) शरीर मे से पसीना छूटना। (ख) पकाते समय तरकारी मे से पानी छूटना। ५ निर्दोष सिद्ध होने पर अभियोग, आरोप आदि की क्रियाओ से मुक्त या रहित होना। बरी होना। जैसे—अदालत से अभियुक्त का छूटना। ६ व्यवहार, सग-साथ से अलग या विमुक्त होना। वियोग होना। बिछुडना। जैसे—(क) नौकरी के कारण घर छूटना। (ख) लडाई-झगडे के कारण भाई-बधु या मित्र छूटना। ७ देन आदि चुकाये जाने पर अथवा और किसी प्रकार से किसी दूसरे के हाथ गई हुई वस्तु का वापस मिलना। जैसे—(क) बधक रखा हुआ मकान छूटना। (ख) वयस्क होने पर अभिभावक के हाथ से सपत्ति छूटना। ८ किसी स्थान पर जमे या लगे हुए तत्त्व या पदार्थ का किसी प्रकार अलग या दूर होना। जैसे—(क) कागज पर लगा हुआ टिकट छूटना। (ख) कपडे पर लगा हुआ दाग या मैल छूटना। (ग) दीवार पर लगा हुआ रग छूटना। ९ यात्रिक, रासायनिक आदि क्रियाओ से चलनेवाली चीजो के सबध मे, पकड या, रोक से निकलकर वेगपूर्वक किसी ओर बढना या किसी व्यापार मे प्रवृत्त होना। जैसे—आतिशबाजी, गोली, तीर या फुहारा छूटना। १० आगे बढते या चलते समय मार्ग मे किसी का पीछे पड या रह जाना। जैसे—(क) यात्रियो मे से किसी का पीछे छूटना। (ख)

किसी की दूकान या कोई बाजार पीछे छूटना। ११ किसी यान आदि का गतव्य स्थान के लिए चल पडना। प्रस्थान या यात्रा आरभ करना। जैसे—गाडी या जहाज छूटना। १२ अनुसधान करने या टोह लेने के लिए किसी के पीछे लगना या लगाया जाना। जैसे—उनके पीछे जासूस छूटे है। १३ शारीरिक विकार का दूर होना अथवा न रह जाना। जैसे—खाँसी या बुखार छूटना। १४ कुछ विशिष्ट मानसिक या शारीरिक क्रियाओ के सबध मे, अस्तित्व, गति, व्यवहार व्यापार आदि से रहित होना। जैसे—(क) रोगी की नाडी या प्राण छूटना। (ख) भय या साहस छूटना। (ग) अभ्यास या आदत छूटना। १५ काम-धधे से अलग किया जाना या होना। जैसे—नौकरी या रोजगार छूटना। १६ कष्ट, विपत्ति, बाधा, विघ्न आदि से मुक्त या रहित होना। जैसे—(क) झगडे-बखेडे या मुकदमेबाजी से जान छूटना। १७ औचित्य, मर्यादा आदि का इस प्रकार अतिक्रमण या उल्लघन होना कि उसके फल-स्वरूप कोई अनुचित या निन्दनीय कार्य या व्यापार घटित हो। जैसे—(क) बात-चीत करने मे जबान छूटना। (ख) क्रोध मे किसी पर हाथ छूटना। १८ कथन, लेख आदि के प्रसग मे, आवश्यक या उपयुक्त पद, वाक्य या विषय यथा-स्थान आने से रह जाना। जैसे—(क) भाषण मे कोई प्रसग छूटना। (ख) प्रतिलिपि करने मे अक्षर, पद या वाक्य छूटना। १९ किसी चीज का भूल से कही रह जाना या न लाया जाना। जैसे—न जाने मेरा छाता कहाँ छूट गया है। २० उपयोग, व्यवहार आदि मे आने से बचा या रह जाना। जैसे—(क) थाली मे जूठन छूटना (ख)। प्रश्न-पत्र मे का कोई प्रश्न छूटना। २१ नियम, व्रत आदि का भग होना। जैसे—रोजा छूटना। २२ सयोग के लिए नर का मादा की ओर प्रवृत्त होना या उस पर आसन जमाना। जैसे—घोडी पर घोडा छूटना।

छूटा—स्त्री० [हि० छूटना] एक प्रकार की बरछी।
वि०=छुट्टा।

छूत—स्त्री० [स० युप्ति, प्रा० छुट्टी] १ छूने की क्रिया या भाव।
मुहा०—छूत छुडाना=पीछा छुडाने या नाम-मात्र के लिए यो ही अवज्ञापूर्वक कोई काम करना।
२ ऐसा निषिद्ध ससर्ग जिससे रोग आदि का सचार होता हो। ३ गदी अथवा घृणित वस्तु का ससर्ग। ४ धार्मिक क्षेत्र मे अपवित्र होने अथवा अपवित्र वस्तु छूने पर लगनेवाला दोष। ५ यह धारणा कि अमुक वस्तु या व्यक्ति छूने अथवा उससे छुए जाने पर हम अपवित्र हो जायँगे। ६ व्यक्ति पर पडनेवाली भूत-प्रेत आदि की छाया या उससे होनेवाली बाधा।
मुहा०—छूत झाड़ना=प्रेत बाधा दूर करना।

छूत-छात—स्त्री० [हि० छूत+अनु० छात] स्पृश्य और अस्पृश्य का भाव। छुआछूत।

छूना—स० [स० चुपति, प्रा० छुवइ] १ उँगलियो या हाथ से किसी वस्तु या व्यक्ति को अथवा उसके तल का कोई अश स्पर्श करना।
मुहा०—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।
२ शरीर के किसी अग का अथवा पहने हुए किसी वस्त्र का किसी से लगना या स्पर्श करना। जैसे—तुम्हे चमार ने छू दिया है। ३ दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना। जैसे—चावल छूकर भिखमगे को बाँटना। ४ ऐसा काम करना जिससे किसी चीज मे गति उत्पन्न हो। जैसे—हृदय के तार छूना। ५ किसी विषय के सबध मे कुछ कहना या लिखना। जैसे—इस विषय को भी उन्होने छुआ है। ६ लीपना। पोतना। जैसे—कमरा छूना।

छेंक—स्त्री० [हि० छेकना] १ छेकने की क्रिया या भाव। २ रोक।
†पु०=छेद।

छेंकन—स्त्री० [हि० छेकना] १ छेकने की क्रिया या भाव। २ वास्तु-कला मे, मकान आदि बनाने से पहले उसके भूमि-तल के सबध मे यह निश्चय या स्थिर करना कि आँगन, कोठरियाँ, बैठक, रसोई आदि विभाग कहाँ-कहाँ रहेगे। जैसे—इस मकान की छेकन बहुत अच्छी हुई है।

छेंकना—स० [हि० छद] १ स्थान घेरना। २ विभाग आदि करने के लिए लकीरो से अवकाश घेरना। ३ जानेवाले के सामने खडे होकर उसे जाने से रोकना। ४ किसी का मार्ग अवरुद्ध करना। मिटाना। ५ किसी के नाम लिखी हुई चीज या रकम लौट आने पर काट कर रद्द करना।

छेक†—पु०=छेद। (पश्चिम)
पु० [स०√छो (काटना)+डेकन्] १ पालतू पशु-पक्षी। २ शब्दालकार का एक भेद। छेकानुप्रास।
वि० १ पालतू। २ नागरिक।

छेकानुप्रास—पु० [स० छेक-अनुप्रास कर्म० स०] कवित्त मे एक प्रकार का अनुप्रास जिसमे एक ही चरण मे दो या अधिक वर्णों की आवत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेकापह्नुति—स्त्री० [स० छेक-अपह्नुति ष० त० ?] साहित्य मे अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे किसी से कही जानेवाली कोई भेद की बात किसी तीसरे या अनभीष्ट व्यक्ति के सुन लेने पर कोई दूसरी बात बनाकर वह भेद छिपाने का उल्लेख होता है। 'कह मुकरी' या मुकरी मे यही अलकार होता है।

छेकोक्ति—स्त्री० [स० छेक-उक्ति ष० त०] साहित्य मे एक अलकार जिसमे कोई बात सिद्ध करने के लिए उसके साथ किसी लोकोक्ति या कहावत का भी उल्लेख किया जाता है।

छेड—स्त्री० [हि० छेडना] १ छेडने की क्रिया या भाव। २ ऐसा शब्द, पद या बात जिसके कहने से कोई चिढ जाता हो। चिढानेवाली बात। ३ दे० 'चिढौनी'। ४ झगडा। ५ किसी कार्य का आरभ या श्री गणेश। ६ अपनी ओर से कोई ऐसी बात आरभ करना कि उसका उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर आता हो। पहल। उदा०—हम तो चुपचाप बैठे थे, छेड तो तुम्ही ने की।
मुहा०—छेड निकालना=उक्त प्रकार से कोई ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लडाई-झगडा या वैर-विरोध खडा हो सकता हो।

छेडखानी—स्त्री०=छेड-छाड।

छेडछाड़—स्त्री० [हि० छेडना+अनु०] १ किसी को तग करने के लिए छेडने की क्रिया या भाव। २ अनुचित रूप से किसी के प्रति आरभ किया जानेवाला व्यवहार।

छेड़ना—स० [स० छिंदन या हि० छेड] १ इस प्रकार छूना या स्पर्श

करना कि उसके फल-स्वरूप कोई क्रिया या व्यापार घटित हो। जैसे--बीन या सितार के तार छेडना। २ जीव-जन्तुओ आदि को इस प्रकार स्पर्श करना या उन्हे तग करना जिससे वे क्षुब्ध होकर आक्रमण कर सकते हो। जैसे--कुत्ते, साँड या साँप को छेडना। ३ व्यक्ति को चिढाने या तग करने के लिए हँसी-ठट्ठे के रूप मे कोई ऐसी बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे वह चिढ या दुःखी होकर प्रतिकार कर सकता हो। जैसे--पागल, बच्चे या स्त्री को छेडना। ४ किसी को तग करने के लिए उसके काम मे अडगा लगाना या बाधा खडी करना। ५ किसी चीज को अकारण या व्यर्थ मे छूना जिससे उसमे विकार उत्पन्न हो सकता हो। जैसे--घाव या उसमे बँधी पट्टी को छेडना। ६ किसी को कोई ऐसी बात (छेड) बार-बार कहना जिससे कोई चिढता हो। जैसे--उसे सब बुड्ढू मियाँ कह कर छेडते हैं। ७ कोई कार्य या बात आरभ करना। जैसे--मकान की मरम्मत छेडना। ८ सगीत मे गीत, वाद्य आदि कलापूर्ण ढग से आरभ करना। ९ चिकित्सा के क्षेत्र मे, फोडा बहाने के लिए नश्तर से उसका मुँह खोलना।

†स०=छेतना (छेदना)।

छेड़वाना--स०[हिं० छेडना का प्रे० रूप]छेडने का काम दूसरे से करवाना।

छेड़ी--=स्त्री० [?] छोटी और तग गली। (बुदेल०)

स्त्री०=छेरी (बकरी)।

छेत*--पु० [स० छेद] १ अलग होने की क्रिया या भाव। पार्थक्य। २ वियोग। ३ छेद।

छेतना† स०=छेदना।

स० [?] १ ठोक-पीटकर कोई चीज तैयार करना या बनाना। जैसे--चाँदी की गुल्ली से कडा छेतना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना या प्रहार करना। जैसे--किसी का मुँह छेतना।

छेति*--स्त्री० [स० छेदन] बाधा।

छेत्ता (तृ)--वि० [स०√छिद् (काटना)+तृच्] छेद करने या छेदनेवाला।

छेत्र--पु० १. =क्षेत्र। २ =सत्र (अन्नसत्र)।

छेद--पु० [स०√छिद्+घञ्] १ काटने, छेदने या विभक्त करने की क्रिया या भाव। जैसे--उच्छेद, विच्छेद। २ बकरे आदि मारने की 'झटका' नाम की क्रिया। उदा०--कतहूँ मिस मिल कनहूँ छेद।--कबीर। ३ विनाश। बरबादी।

पुं० [स० छिद्र] १ किसी वस्तु मे का दोनो का दोनो ओर से खुला हुआ छोटा अश। छिद्र। सुराख। जैसे--चलनी मे का छेद, कपडे मे का छेद। २ किसी घन या ठोस वस्तु मे का वह गहरा स्थान जिसमे से उस वस्तु का कुछ अश निकाल लिया गया हो। जैसे--जमीन या दीवार मे का छेद। ३ विवर। बिल। ४ दोष। दूषण।

छेदक--वि० [स० छिद्+ण्वुल्--अक] छेदनेवाला।

छेदन--पु० [स०√छिद्+ल्युट्--अन] छेदने की क्रिया या भाव।

छेदनहार--वि० [हिं० छेदना+हार (प्रत्य०)] १ छेदनेवाला। २ काटनेवाला। ३ नष्ट करने या मिटानेवाला।

छेदना--स० [स० छेदन] १ किसी तल मे नुकीली वस्तु धँसाकर उसमे छेद या सुराख करना। २ शरीर मे क्षत या घाव करना। जैसे--तीरो से किसी का शरीर छेदना। ३ छिन्न करना। काटना।

छेदनीय--वि० [स०√छिद्+अनीयर्] जिसका छेदन हो सकता हो या किया जाने को हो।

छेदि--वि०[स० छिद्+इनि]छेद करनेवाला।

पु० बढई।

छेदिका--स्त्री० [स० छेदक+टाप् इत्व] १ छेदन करनेवाली चीज या रेखा। २. ज्यामिति मे वह रेखा जो किसी वक्र रेखा को दो या अधिक भागो मे काटती हो। (सिकैन्ट)

छेदित--भू० कृ० [स० छेद+इतच्] १ जिसमे छेद किया गया हो। छेदा हुआ। २ कटा या काटा हुआ।

छेना--पु० [स० छिन्न] फटे या फाडे हुए दूध का वह गाढा अश जो उसका पानी निकाल देने पर बच रहता है।

छेनी--स्त्री० [हिं० छेदना] धातु, पत्थर आदि काटने का चौडे फलवाला एक प्रसिद्ध उपकरण। टाँकी।

छेम*--पु०=क्षेम।

छेमकरी*--स्त्री०[स० क्षेमकरी] सफेद चील।

छेर†--स्त्री०=छेरी (बकरी)।

छेरना†--अ० [स० क्षरण] बार-बार पतला मल त्याग करना।

*स०=छेडना।

छेरवा--पु०=छुहारा।

छेरा--पु० [हिं० छेरना] पतला मल। पतला दस्त।

†पु० [स्त्री० छेरी] १ बच्चा। २ बकरा।

छेरी--स्त्री० [स० छेलिका] बकरी।

छेलक--पु० [स०√छो (काटना)+डेलकन्] बकरा।

छेलरा--पु०=छैला।

छेव--पु० [स० क्षेप] १ किसी वस्तु के तल का कुछ अश काटने या छीलने की क्रिया या भाव। २ कुछ विशिष्ट वृक्षो का रस निकालने के लिए उनके तने का कुछ अश काटने या छीलने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०--लगाना।

३ प्रहार। वार। ४ चोट। घाव। ५ नाश। ६ मृत्यु। ७ विपत्ति। सकट। ८ कपटपूर्ण व्यवहार।

छेवना--स० [हिं० छेव] १ किसी चीज मे छेव लगाना। २ आघात, प्रहार या वार करना। ३. चोट पहुँचाना। ४ कष्ट आदि झेलना या सहना। जैसे--अपने जी पर छेवना (अर्थात् मन ही मन कष्ट सहना या दुःखी होना।) उदा०--जो अस कोई जिय पर छेवा।--जायसी। ५ फेकना।

स्त्री० ताडी, जो ताड के वृक्ष मे छेव लगाकर निकाली जाती है।

स० [हिं० छेदना] १ काटना। २ चिह्न लगाना।

छेवला--पु० [?] पलाश का वृक्ष। (बुदेल०)

छेवा--पु० [हिं० छेव] १ छीलने, काटने आदि का काम। २ काटने, छीलने आदि से पडा हुआ निशान। ३ महाजनी बहीखाते मे वह चिह्न जो कही से लौटी हुई चीज या रकम के लेख पर यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि अब वह प्राप्य नही रह गई। ४. पानी का तेज बहाव। (मल्लाह)

†पु०=छेद।
छेह*—पु० [हिं० छेव] १ दे० 'छेव'। २ ध्वस। नाश। ३ वियोग। विच्छेद। ४ परम्परा का भग। ५ अत। समाप्ति।
वि० १ खडित। २ न्यून।
*स्त्री०=खेद।
छेहर†—स्त्री०=छाया।
छेहरा—पु०=छेह।
छैं†—वि०=छ।
*पु०=क्षय।
छैंविक—पु० [स० छेद+ठञ्-इक] बेत।
छैना—अ० [स० क्षय] १ क्षय होना। २ क्षीण होना।
स० १ नष्ट करना। २ क्षीण करना।
पु० [छन छन से अनु०] छोटी झाँझ (बाजा)।
छैया—पु० [हिं० छवना] बच्चा।
वि० [हिं० छाना] छानेवाला।
छैल—स्त्री० [हिं० छैलाना] छैलने या छैलाने की क्रिया या भाव। लडकों की-सी मचल या हठ।
*पु०=छैला।
छैलचिकनिया—पु०=छैला।
छैल छबीला—पु०=छैला।
छैलना*—अ०=छैलाना।
छैला—पु० [स० छविल्ल, प्रा० छइल्ल] बहुत बन-ठनकर रहनेवाला नवयुवक।
छैलाना—अ० [हिं० छैला] लडको का कोई काम करने या कोई चीज पाने के लिए मचलना और हठ करना। उदा०—कोउ छेकत छैलात देखि कहुँ मजु खिलौना।—रत्नाकर।
स० किसी को छैलाने या हठ करने मे प्रवृत्त करना।
छोच†—पु०=शौच।
छोड़ा*—पु० [स० क्ष्वे] [स्त्री० अल्पा० छोडी] मथानी।
छोआ†—पु० दे० 'खोई'।
छोई†—स्त्री० [स० क्षोद] १ दे० 'खोई'। २ निस्सार वस्तु। रद्दी चीज। उदा०—आन ब्रतै मानै सब छोई।—श्री भट्ट
छोकरा—पु० [स० शावक+रा, प्रा० छावक+रा, दे प्रा० छाक्कर] [स्त्री० छोकरी] लडका। बालक। (उपेक्षा सूचक)
छोछा†—वि० [स्त्री० छोछी] दे० 'छूछा'।
छोट†—वि०=छोटा।
छोटा—वि० [स० क्षुद्र+ट, दे० प्रा० छोट्ट] मान, विस्तार आदि मे अपेक्षया कम या थोडा। जैसे—(क) छोटा पेड, छोटा मकान। २ जिसकी अवस्था या उमर किसी की तुलना मे कम हो। थोडे वय का। जैसे—छोटा भाई, छोटा लडका। ३ प्रतिष्ठा, मान आदि मे औरो से घटकर होनेवाला। तुच्छ। हीन। जैसे—छोटा काम, छोटी जाति, छोटी बात।
छोटाई—स्त्री० [हिं० छोटा+ई (प्रत्य०)] छोटे होने की अवस्था या भाव। छोटापन।
छोटापन—पु० [हिं० छोटा+पन] छोटाई।
छोटिका—स्त्री० [स०√छुट् (काटना)+ण्वुल्-अक, टाप्, इत्व] चुटकी।
छोटी (टिन्)—पु० [स०√छुट्+णिनि] मछुआ।
छोटी इलायची—स्त्री० [हिं०] छोटे आकार की एक प्रकार की इलायची जिसका छिलका पीलापन लिये सफेद होता है।
छोड—अव्य०[हिं० छोडकर का सक्षिप्त रूप] छोडकर। अतिरिक्त। सिवाय। जैसे—तुम्हे छोड और कोई ऐसा नही कहता।
छोडना—स० [स० छोड] १ बधन से मुक्त करना। स्वतत्र करना। जैसे—कैदियो को छोडना। २ अभियोग, आरोप आदि से मुक्त करना। जैसे—अदालत ने उन्हे छोड दिया है। ३ कोई काम, चीज या बात कुछ समय के लिए अथवा सदा के लिए न करने का निश्चय करना। त्याग देना अथवा सबध विच्छेद करना। परित्याग करना। जैसे—(क) आज-कल हमने अन्न खाना छोड दिया है। (ख) उसने अब कलकत्ता छोड दिया है। (ग) उन्होने अपनी पत्नी को छोड दिया है। ४ कथन, लेख आदि के प्रसग मे, कोई आवश्यक अक्षर, पद या वाक्य का उपयोग या व्यवहार न करना अथवा न लिखना। ५ कोई चीज जान-बूझकर या भूल से कही रख देना या रहने देना। जैसे—(क) वह अपना सामान यही छोड गये है। (ख) कोई अपनी छडी यही छोड गया है। ६ उत्तराधिकार आदि के रूप मे किसी के लिए कुछ बचा या बाकी रहने देना। जैसे—पिता का पुत्र के लिए ऋण या सपत्ति छोडना। ७ अवशिष्ट या बाकी रहने देना। जैसे—आज का काम कल पर छोडना। ८ कोई चीज किसी मे अथवा किसी पर डालना। जैसे—(क) पत्र-पेटी मे पत्र छोडना। (ख) जलते अगारो पर पानी छोडना। (ग) खेत मे खाद छोडना। ९ किसी वस्तु पर से अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। जैसे—मकान छोडना। १० कोई चीज किसी से उदारतापूर्वक या रियायत करते हुए न लेना। जैसे—मूलधन लेकर ब्याज छोडना। ११ उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक जाने देना। ध्यान न देना। जैसे—ये सब बाते छोडो, इनमे क्या रखा है। १२ कोई ऐसी यात्रिक या रासायनिक क्रिया करना जिससे कोई चीज गति मे आ जाय या अपना कार्य करने लगे। जैसे—(क) अग्निवाण या उपग्रह छोडना। (ख) तोप, बदूक, मोटर छोडना। १३ अनुसधान या पीछा करने के लिए किसी को गुप्त रूप से नियुक्त करना। जैसे—उनका पता लगाने के लिए कई आदमी छोडे गये। है। १४ कोई ऐसा कार्य या व्यापार करना जिससे किसी चीज या बात का उपयुक्त परिणाम या फल निकले, उसका कोई प्रभाव पडे अथवा स्पष्ट रूप से सामने आवे। जैसे—(क) तान छोडना। (ख) फुलझडी या शगूफा छोडना। १५ आश्रय के रूप मे रहनेवाली चीज का अपने ऊपर टिकी, ठहरी या लगी हुई चीज को अपने से अलग या दूर करना। जैसे—(क) पेड की छाल छोडना। (ख) खभे का छत या दीवार छोडना। १६ कर्त्तव्य, कार्य आदि का निर्वाह या पालन न करना। जैसे—तुम आधा काम करते हो और आधा छोड देते हो।
छोडवाना—स० [हिं० छोडना का प्रे० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से करवाना। छुडवाना।
छोत†—स्त्री०=छूत।

छोतरा—पु० [?] १ छिलका। २ अफीम।
छोना- ०, स०=छूना।
छोनि प*—पु०=क्षोणिप।
छोनिय*—स्त्री०=क्षोणी (पृथ्वी)।
छोनी—स्त्री०=क्षोणी (पृथ्वी)।
छोप—स्त्री० [हिं० छोपना] १ छोपने की क्रिया या भाव। २ छोपा हुआ अश। छोपकर जमाई या लगाई हुई तह।
छोपना—स० [स० क्षेपण] १ बहुत गाढी वस्तु या सानी हुई वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर थोपना या लगाना। २ ढकना। ३ दबोचना।
छोभ†—पु०=क्षोभ।
छोभन—पु०=क्षोभ।
छोभना*—अ०, स० [स० क्षोभ] क्षुब्ध होना या करना।
छोभित—वि०=क्षोभित।
छोम—वि० [स० क्षोभ] १ चिकना। २ कोमल।
छोर—पु० [हिं० ओर का अनु०] किसी वस्तु के किनारे या सिरे पर का अश, भाग या विस्तार। अतिम सिरा।
*पु०=छोरा।
छोरटा—पु० [स्त्री० छोरटी]=छोर।
छोरना—स० [स० छोरण] १ गाँठ आदि खोलना। २ पहने हुए वस्त्र उतारला। उदा०—कोउ ऐठति तन तोरि छोरि अगिया कोउ पैठति।—रत्नाकर। ३ किसी की चीज बलात् लेना। छीनना।
*स०=छोडना।
छोलग—पु० [स० छुर+अञ्च्-रू ल्] नीबू।
छोलना†—स० [हिं० छीलना का पुराना रूप] १ छीलना। २ अनावश्यक और फालतू रूप से अधिक योग्यता दिखाना। छाँटना। उदा०—जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुराई छोलत हौ।—सूर।
पु० वह उपकरण जिससे कोई चीज छीली जाय।
छोला—पु० [हिं० छोलना] १ छोलने या छीलने का काम करनेवाला व्यक्ति। २ चना।
छोह—पु० [स० क्षोभ] १ प्रेम। स्नेह। २ अनुग्रह। दया।
छोहगर†—वि० [हिं० छोह] छोह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।
छोहना—अ० [हिं० छोह=प्रेम+ना (प्रत्य०)] १ प्रेम या स्नेह करना। उदा०—छितिपति उमगि उठाइ छोहि छाती छपटायौ।—रत्ना० २ विचलित या क्षुब्ध होना।
छोहर† (ा)—पु० [स्त्री० छोहरिया, छोहरी] छोकरा। लडका।
छोहाना*—अ०=छोहना।
छोहारा†—पु०=छुहारा।
छोहिनी*—स्त्री०=अक्षौहिणी।
छोही*—वि० [हिं० छोह] १ प्रेम करनेवाला। २ अनुग्रह या दया करनेवाला।
छौंक—स्त्री० [हिं० छौकना] १ छौकने की क्रिया या भाव। बघार। २ वह मसाला जिससे तरकारी, दाल आदि छौकी जाती है। तडका। बघार।
छौंकन†—स्त्री०=छौक।
छौंकना—स० [अनु० छँव छँत्र] दाल, तरकारी को सुगधित या सोधा करने के लिए उसमे जीरे, मिर्च, हीग आदि से मिला हुआ कडकडाता घी या तेल छोडना। बघारना। (स्पाइसिंग)
अ० [अनु० या स० चतुष्क] १ शिकार को पकडने के लिए हिंसक जतु का अकस्मात् उछलकर आगे बढना। जैसे—बकरी पर शेर का छौकना। २ आक्रमण या वार करने के लिए अचानक उछलकर आगे बढना।
छौंक-बघार—स्त्री० [हिं०] १ दाल, तरकारी आदि छौकने की क्रिया या भाव। २ किसी बात मे उसे आकर्षक या रोचक बनाने के लिए अपनी ओर से कुछ बाते मिलाकर कहना।
छौंडा—पु० [स० शकटा, हिं० छोकरा] [स्त्री० छौंडी] लडका। बालक।
पु० [स० चुडा] अनाज रखने का गड्ढा।
छौना—पु० [स० शाव, पा० छाप, प्रा० छाव] १ पशु का बच्चा। जैसे—मृग-छौना। २ बच्चा। बालक।
छौर†—पु०=क्षौर।
छौलदारी—स्त्री० [हिं० छौल?+फा० दारी] एक प्रकार का छोटा खेमा। रावटी।
छ्वाना*—स०=छुलाना।

ज

ज

ज—चवर्ग का तीसरा अक्षर जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्श, सघर्षी अल्प प्राण, सघोष व्यजन है।
प्रत्य० यह प्रत्यय-रूप मे कुछ शब्दो के अत मे लगकर 'मे उत्पन्न' या 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है। जैसे—जलज, देशज, पित्तज आदि।
पु० 'जगण' का सक्षिप्त रूप। (छद शास्त्र)
अव्य० ही। भी। तो। (डिं०) उदा०—तिणि तिणि हीज ब्राह्मण तणै।—प्रिथीराज।
जकशन—पु०=जक्शन।
जक्शन—पु० [अ०] वह रेलवे स्टेशन जहाँ दो से अधिक दिशाओ से गाडियाँ आती-जाती हो। (जक्शन)
जग—स्त्री० [फा०] सशस्त्र सैनिको की लडाई। युद्ध।
पु० [फा० जग] १ लोहे पर जमनेवाली वह मैल या विकृत अश जो लोहे मे वायु और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है। मोरचा। २ अफ्रीका का जगबार या जजीबार नामक प्रदेश।
स्त्री० [अ० जक] एक प्रकार की बहुत बडी नाव।
जंगआवर—वि० [फा०] लडाका। योद्धा।

जगजू—वि० [फा०] युद्ध करने की इच्छा रखनेवाला (व्यक्ति)।

जगबार—पु० [फा० जग+बार] पूर्वी अफ्रीका का एक प्रदेश। जजीबार।

जगम—वि० [√गम् (जाना) +यड्—लुक्, द्वित्वादि+अच्] १ जो एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाता हो या जा सकता हो। २ चलनेवाले प्राणियो से उत्पन्न होने या उनसे सबध रखनेवाला। जैसे—जगम विष=कीडे-मकोडो, पशु-पक्षियो आदि के शरीर से निकलनेवाला विष। ३ जिसे एक स्थान से उठा या हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता हो।

पु० १, लिंगायत शैव सप्रदाय के गुरुओ की उपाधि। २ एक प्रकार के साधु।

जगम-गुल्म—पु० [कर्म० स०] पैदल चलनेवाले सिपाहियो का दस्ता।

जँगरा—पु० [देश०] कुछ वनस्पतियो के डठल। जैसे—मूँग का जँगरा।

पु० [हिं० जाँगर] शारीरिक बल।

जँगरैत—वि० [हिं० जाँगर] [स्त्री० जँगरैतिन] (व्यक्ति) जो कोई काम करने मे अपनी पूरी शारीरिक शक्ति लगाता हो। जाँगरवाला। परिश्रमी।

जगल—पु० [स०√गल् (भक्षण) +यड्+अच्, नि० सिद्धि] १ जल-शून्य भूमि। रेगिस्तान। २ वह स्थान जहाँ बहुत से वृक्ष तथा वनस्पतियाँ आप से आप उग आई हो। वन।

पद—जगल में मगल=सूने स्थल मे होनेवाली चहल-पहल।

मुहा०—जगल जाना=शौच के लिए मैदान मे जाना। टट्टी जाना।

३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह स्थान जहाँ पर बहुत-सी वस्तुएँ ऐसे अव्यवस्थित रूप मे रखी हुई हो कि जल्दी किसी वस्तु का पता न लगे। ४ मास।

जगल-जलेबी—स्त्री० [स० जगल+हिं० जलेबी] १ काँटेदार जगली पौधा, जिसमे जलेबी की तरह फल लगते है। २ गू की लेंडी। (परिहास)

जगल बाडी—स्त्री० [हिं० जगल+बाडी] एक प्रकार की बढिया मलमल।

जगला—पु० [पुर्त० जेगिला] १ बरामदे, छज्जे आदि के किनारे-किनारे खडी की हुई वह रचना जिसमे एक पक्ति मे लकडी या लोहे के छड लगे होते है। २ खिडकी का वह चौखट जिसमे लोहे के छड लगे हुए हो। ३ खिडकी। ४ वह चित्रण या नक्काशी जिसमे एक दूसरे को काटती हुई बेले आदि बनी हो। जैसे—जगले की साडी।

पु० [स० जागल्य] १ सगीत के बारह मुकामो मे से एक। २ एक राग का नाम। ३ एक प्रकार की मछली जो बगाल की नदियो मे बहुतायत से होती है। ४ वनस्पतियो के डठल।

जगली—वि० [स० जगल] १ जगल मे उगने, उपजने या होनेवाला। २ (वह वनस्पति) जो आप से आप उग आई हो। ३ जगल मे रहनेवाला। जैसे—जगली चिडियाँ, जगली जातियाँ। ४ जो घरेलू या पालतू न हो। जैसे—जगली कुत्ता। ५ जगल मे रहनेवाले पशुओ, व्यक्तियो जैसा (आचरण, स्वभाव)। जैसे—जगली आदत। ६ असभ्य तथा असस्कृत। गँवार। ७ मूर्ख। ८ (प्रदेश) जिसमे जगल हो।

पु० १ जगल मे रहनेवाला व्यक्ति। २ असभ्य या अशिष्ट व्यक्ति।

जगली बादाम—पु० [हिं० जगली+बादाम] १ कतीले की जाति का एक पेड जिसके फलो के बीज को भूनकर खाया या उबालकर तेल निकाला जाता है। २ हर्रे की जाति का एक पेड जिसकी छाल से चमडा सिझाया जाता है और बीजो से तेल निकाला जाता है। हिंदी-बादाम।

जगली रेंड़†—पु०=बन रेंड।

जगा—पु० [फा० जगूला] घुँघरू का दाना।

जगार—पु० [फा०] [वि० जगारी] १ ताँबे का कसाव। तूतिया। २ एक प्रकार का नीला रग जो ताबे को सिरके मे भिगोकर निकाला जाता है। ३ आज-कल कुछ नई प्रक्रियाओ से बनाया हुआ उक्त प्रकार का रग।

जंगारी—वि० [फा० जगार] जगार अर्थात् नीले रगवाला। नीला।

जगाल—पु०=जगार।

†पु० [फा० जग] जग। मोरचा।

जंगाली†—वि०=जगारी।

पु० [हिं० जगार] नीले रग का एक प्रकार का रेशमी कपडा।

जगाली पट्टी†—स्त्री० [हिं० जगारी+पट्टी] फोडे-फुसियो पर लगाई जानेवाली गधे-बिरोजे की पट्टी।

जगी—वि० [फा०] १ जग अर्थात् युद्ध सबधी। २ युद्ध मे भाग लेनेवाला अथवा युद्ध मे काम आनेवाला। सामरिक। ३ सेना सबधी। सैनिक। ४ बहुत बडा। दीर्घ काय। ५ लडने-झगडनेवाला। झगडालू।

पु० [देश०] घडा। (कहार)

जगी लाट—पु० [हिं०] आज-कल किसी देश का प्रधान सेनापति।

जगीहड—स्त्री० [फा० जगी+हड] काली हड। छोटी हड।

जगुल—पु० [स०√गम् (जाना) +यड—लुक्+डुल् बा०] जहर। विष।

जगेला—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसे चौरी, मामरी या रूही भी कहते है।

जगैं—स्त्री० [स० जघा] एक प्रकार की करधनी जिसमे घुँघरू लगे रहते हैं और जिसे नाच के समय अहीर, धोबी आदि कमर मे बाँधते हैं।

जघ*—स्त्री०=जघा।

†पु०=जाँघिया।

जघा—स्त्री० [√हन् (जाना) √यड्—लुक्+अच्, टाप्] १ पैर का घुटने और पेडू के बीच का भाग। २ एक प्रकार का जूता। ३ कैंची का दस्ता जिसमे फल और दस्ताने लगे रहते हैं।

जंघा-त्राण—पु० [ष० त०] एक प्रकार का कवच जो जाँघ पर बाँधा जाता था।

जंघाफार—पु० [हिं० जघा+फारना] रास्ते मे पडनेवाली खाई। (कहार)

जघा-बन्धु—पु० [ब० स०] एक ऋषि का नाम

जंघामथानी—स्त्री० [स० जघा+हिं० मथानी] १ छिनाल स्त्री। पुश्चली। २ वेश्या।

जघार—पु० [हिं० जघा+आर] जाँघ पर होनेवाला एक प्रकार का फोडा।

जंघा-रथ—पुं० [ब० स०] १ एक प्राचीन ऋषि। २ उक्त ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष।

जंघारा—पुं० [देश०] राजपूतो की एक जाति।

जंघारि—पुं० [सं० ब० स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

जंघाल—पुं० [सं० जघा+लच्] १ धावन। धावक। दूत। २ मृग।

जंघिल—वि० [सं० जघा+इलच्] १ तेज दौडनेवाला। २ फुर्तीला।

जँचना—अ० [हिं० जाँचना] १ जाँचा जाना। जाँचा-परखा जाना। जैसे—हिसाब जँचना। २ जाँच मे ठीक या पूरा उतरना। ३ जान पडना। प्रतीत होना। ४ भला जान पडना।

जँचा—वि० [हिं० जँचना] १ जाँचा हुआ। सुपरीक्षित। २ जो ठीक प्रकार से जाँच करने मे अभ्यस्त हो। ३ जाँच करते-करते जिसे किसी बात का अभ्यास हो गया हो। जैसे—जँचा हाथ।

पद—जँचा-तुला=ठीक ठीक।

जज—अव्य० [?] जो।

स्त्री० [सं० यज्ञ] बरात। (पजाब)

जज-घर—पुं० [हिं० जज+घर] १ बरात को ठहराने का स्थान। २ वह स्थान जहाँ पर बराते आकर ठहरती हो।

जजपूक—पुं० [सं०√जप् (जपना)+यङ्+ऊक] मद स्वर मे जप करनेवाला व्यक्ति।

जजबील—स्त्री० [अ०] सोठ।

जजर (ल)*—वि० =जर्जर।

जंजाल—पुं० [हिं० जग+जाल] [वि० जजालिया] १ सासारिक व्यापार जिसमे मनुष्य फँसा रहता है। मनुष्य को ईश्वर या भगवद् भजन से विमुख करने तथा उसका ध्यान अपनी ओर लगाये रखनेवाली बात। माया। २ प्रपच। झझट। बखेडा। ३ उलझन। ४ पानी का भँवर। ५ पुराने ढग की एक प्रकार की पलीतेदार बडी बदूक। ६ चौडे मुँहवाली एक प्रकार की पुरानी चाल की तोप। ७ मछलियाँ पकडने का बडा जाल।

जंजालिया—वि० [हिं० जजाल+इया (प्रत्य०)]=जजाली।

जंजाली—वि० [हिं० जजाल+ई (प्रत्य०)] १ जो जजाल मे फँसा हो। सासारिक बधनो मे पडा हुआ। २ झगडा-बखेडा करनेवाला।

स्त्री० [देश०] वह रस्सी और घिरनी जिससे नावो का पाल चढाया और उतारा जाता है।

जंजीर—स्त्री० [फा०] १ धातु की बहुत-सी कडियो को एक दूसरे मे पहनाकर बनाई जानेवाली लडी। साँकल। २ साँकल की तरह का बना हुआ गले मे पहनने का एक आभूषण। सिकडी। ३ कैदियो के पावो मे बाँधी जानेवाली लोहे की शृखला। ४ किवाडे के पल्ले बद करने की सिकडी। साँकल। ५ लाक्षणिक अर्थ मे, वह बात जो आगे-पीछे की घटनाओ को जोडती या मिलाती है। शृखला।

जंजीरा—पुं० [हिं० जजीर] १ कसीदे के काम मे, कपडे आदि पर काढी या निकाली हुई जजीर की बनावट। लहरिया। २ लहरियेदार कपडा। उदा०—जनि बाँधो जजीरे की पाग नजर तोहे लगि जायगी।—गीत।

जंजीरी—वि० [हिं० जजीर] १. गले मे पहनने की सिकडी। २ हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।

वि० जिसमे जजीर या सिकडी लगी हो।

जट†—पुं० [अं० ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट] [भाव० जटी] जिला मजिस्ट्रेट का सहायक अधिकारी।

जटी—स्त्री० [हिं० जट] ज्वाइट मजिस्ट्रेट होने की अवस्था, भाव या पद।

जड—पुं० [देश०] एक जगली पेड जिसकी फलियो का अचार डाला जाता है। सागर।

जतर—पुं० [सं० यत्र] १ दे० 'यत्र'। २ गले आदि मे पहनने का धातु का वह छोटा आधान जिसके अदर मत्र या टोटके की कोई वस्तु रहती है। तावीज। ३ जतर-मतर। ४ यत्र, जिससे तेल या आसव आदि तैयार किया जाता है। ५ वाद्य यत्र। बाजा।

जंतर-मतर—पुं० [सं० यत्र-मत्र] १ भूत-बाधा आदि उतारने अथवा किसी पर भूत-बाधा आदि लाने का मत्र। टोटका। २ वेधशाला, जहाँ पर नक्षत्रो आदि की गति-विधि देखी जाती है।

जतरा—स्त्री० [सं० यत्री] वह रस्सी जो गाडी के ढाँचे पर कसी, तानी या बाँधी जाती है।

जतरी—स्त्री० [सं० यत्र] सोनारो का एक उपकरण जिसमे से वे तार खीचकर पतले तथा लबे करते हैं। २ पचाग। तिथिपत्र। (उर्दू) ३ जादूगर। ४ बाजा बजानेवाला।

जंतसर—पुं० [हिं० जाँता+सर (प्रत्य०)] वह गीत जिन्हे जाँता अर्थात् चक्की पीसते समय स्त्रियाँ गाती हैं।

जंतसार—स्त्री० [हिं० जाँता+सार=शाल] वह स्थान जहाँ पर जाँता गाडा हो।

जता—पुं० [सं० यत्र] [स्त्री० जती, जतरी] १ यत्र। कल। २ सुनारो का तार खीचने का उपकरण।

वि० [सं० यतृ] १ यत्रणा देनेवाला। २ दड देनेवाला।

जंताना—अ० [हिं० जाँता] १ (अन्न आदि का) जाँते मे पीसा जाना। २ भीड मे चारो ओर से इस प्रकार दबना जैसे जाँते मे दाने पिसते है।

जती—स्त्री० [हिं० जता] सुनारो का तार खीचने का छोटा जता।

स्त्री० [सं० जनयित्री] जननी। माता।

जंतु—पुं० [सं०√जन् (प्रादुर्भाव) +तुन्] १ वह जिसने जन्म लिया हो। २ शारीरिक दृष्टि से साधारण या छोटे आकार-प्रकार के पशु, कीडे-मकोडे आदि। जैसे—चूहा, मछली, साँप आदि।

जतुका—स्त्री० [सं० जतु√क (प्रकाश करना) +क—टाप्] लाख। लाक्षा।

जतुघ्न—वि० [सं० जतु√हन् (मारना)+टक्] (औषध या पदार्थ) जतुओ को नष्ट करनेवाला।

पुं० १ बायबिडग। २. हीग।

जतुघ्नी—स्त्री० [सं० जतुघ्न+ङीष्] बायबिडग।

जतु-नाशक—पुं० [ष० त०] हीग।

वि० जतुओं या कीडो का नाशक।

जतु-फल—पुं० [ब० स०] गूलर।

जतुमारी (रिन्)—पुं० [सं० जतु√मृ (मरना)+णिच्+णिनि] जँबीरी नीबू।

वि०=जंतुघ्न।

जतुला—स्त्री० [स० जतु√ला (लेना)+क—टाप्] काँस नामक घास।

जतु-विज्ञान—पु०=जीव-विज्ञान।

जतु-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के पशु-पक्षी और जीव-जतु प्रदर्शन के लिए रखे गये हो। चिडियाघर।

जतुहन—वि०=जतुघ्न।

जंतेत—पु० [हिं० जाँता] वह व्यक्ति जो जाँता अर्थात् चक्की पीसकर अपनी जीविका उपार्जन करता हो।

जत्र—पु० [स० यत्र] १ यत्र (दे०)। २ ताला।

जत्रना*—स० [हिं० जत्र] १ जत्र अर्थात् ताला लगना। २ बाँध या रोक (दे०) रखना।

स० स्त्री० [स० यत्रणा] १ यत्रणा देना। दुख देना। २ दड देना।

जत्र-मत्र—पु०=जतर-मतर।

जत्रा—स्त्री०=जतरा।

जत्रित—वि० [स० यत्रित] १ यत्र द्वारा बाँधा या रोका हुआ। २ जो किसी के वश मे हो। पर-वश।

जत्री—पु० [स० यत्रिन्] वीणा आदि बजानेवाला। बाजा बजानेवाला व्यक्ति।

*पु० [स० यत्र] बाजा।

†स्त्री०=जतरी।

जद—पु० [स० छन्दस् का ईरानी रूप] पारसियो का प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ जो जरतुश्त की रचना है। (पहले लोग इसे भूल से उक्त ग्रथ की भाषा का नाम समझते थे जो वास्तव मे अवेस्ता है)

जदरा- -पु० [स० यत्र] ताला। (पश्चिम)

†पु०=जाँता।

जधाला—स्त्री० [स०] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो १२८ हाथ लम्बी, १६ हाथ चौडी और १२ हाथ ऊँची होती थी।

जप—पु० [स० जल्प ?] शाति। उदा०—जप जीव नही आवतौ जाणे। —प्रिथीराज।

जपती—पु० [स० जाया-पति द्व० स०, जम् आदेश] दपती।

जपना*—स० [हिं० जपना, स० जल्पन] १ कहना। बोलना। उदा०—यो कवि भूषण जपत है लखि सपति को अलका-पति लाजै। —भूषण। २ बकना। बकवाद करना।

अ०=झपना (कूदना)।

जब—पु० [स०√जम्ब्+घञ्] कीचड।

जबाल—पु० [स० जब—आ√ला (लेना)+क] १ कीचड। २ मिट्टी। ३ पानी मे होनेवाली एक घास। ४ केवडे का फूल।

जबाला—स्त्री० [स० जबाल+टाप्] केतकी का पौधा।

जंबालिनी—स्त्री० [स० जबाल+इनि- ङीप्] नदी।

जबीर—पु० [स०√जम् (खाना)+ईरन्—बुक्] जँबीरी नीबू (दे०)।

स्त्री० [अ० जबीर] मुँह से बजाने की पुरानी चाल की एक सीटी।

जबीरी नीबू—पु० [स० जबीर] एक प्रकार का बडा नीबू जिसका रस बहुत खट्टा होता है।

जंबील—स्त्री० [फा०] फकीरो, साधुओ, सन्यासियो आदि की किसी कपडे के चारो कोनो को गाँठ लगाकर बनाई हुई थैली जिसमे वे भिक्षा से मिली हुई वस्तुएँ रखते है।

जबु—पु० [स० √जबू पृषो० ह्रस्व] जामुन का पेड और उसका फल।

जबुक—पु० [स० जबु+कन्] १ बडा जामुन। फरेदा। २ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ३ केवडा। ४ गीदड। ५ वरुण। ६ स्कद का एक अनुचर।

जबु-खड—पु० दे० 'जबूद्वीप'।

जबु-द्वीप—पु०=जबूद्वीप।

जबु-प्रस्थ—पु०=जबूप्रस्थ (दे०)।

जबुमती—स्त्री० [स० जबुमत+ङीष्] एक अप्सरा का नाम।

जबुमान् (मत्)—पु० [स० जबु+मतुप्] १ पहाड। २ जाबवान नामक एक वानर।

जंबुमाली (लिन्)—पु० [स० जबु-माला ष० त०, इनि ?] एक राक्षस का नाम।

जबुर†—पु०=जबूर।

जबुल—पु० [स० जबु√ला (लेना)+क] जबूल। (दे०)

जबू—पु० [स० जबु+ऊङ्]=जबु। (दे०)

जबूका—स्त्री० [स० जबू√(प्रतीत होना)+क-टाप्] किशमिश।

जबू-खड—पु० [मध्य० स०] जबूद्वीप।

जबू-दीप—पु०=जबूद्वीप।

जबू-द्वीप—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक जिसमे भारतवर्ष की भी स्थिति मानी गई है।

जबूनद—पु०=जबू-नदी।

जबू-नदी—स्त्री० [मध्य० स०] ब्रह्म लोक से निकली हुई सात नदियो मे से एक जिसके सबध मे यह कहा जाता है कि यह जामुन के पेडो से चूने वाले जामुनो के रस से निकलती है।

जबू-प्रस्थ—पु० [ब० स०] वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक नगर का नाम।

जंबूर—पु० [अ० जन बूर] १ बर्रे। भिड। २ शहद की मक्खी। ३ पुरानी चाल की एक तोप।

†पु०=जबूरा।

जबूरक—स्त्री० [फा० जबूर] १ एक प्रकार की छोटी तोप। २ तोप रखने की गाडी। ३ भँवर कली।

जबूरखाना—पु० [अ० जनबूर+फा० खान] भिड या शहद की मक्खियो का छत्ता।

जंबूरची—पु० [अ० जबूर+फा० ची (प्रत्य०) १ तोपची। २ सिपाही।

जबूरा—पु० [फा० जबूर] १ एक प्रकार की छोटी तोप। २ तोप लादने की गाडी। ३ भँवर कली (दे०)। ४ सँडसी या चिमटी की तरह का एक उपकरण जिससे कारीगर चीजो को ऐठते, दबाते या घुमाते हैं। ५ मस्तूल पर आडा बँधा रहनेवाला डडा।

जबूरी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का जालीदार कपडा।

जबूल—पु० [स० जबू√ला (लेना)+क] १ जामुन का वृक्ष और उसका फल। २ केवडा।

जबू-वनज—पु० [जबू-वन मध्य० स०, जबूवन√जन (उत्पत्ति)+ड] श्वेत जपापुष्प। सफेद गुडहुल का फूल।

जभ—पु०[√जँभ (भक्षण, जमुहाई)+घञ्] १ दाढ। २ जवडा। ३ जँभाई। ४ तरकश। ५ जँबीरी नीबू। ६ [√जभ+अच्] महिषासुर का पिता जिसका वध इद्र ने किया था।

जंभक—पु० [स०√जभ्+णिच्+ण्वुल्-अक] १ जँबीरी नीबू। २ शिव। ३ एक राजा।

वि० १ जिसके सेवन से जँभाई आती हो। २ हिंसक। ३ [जभ् (सभोग)+ण्वुल्-अक] कामुक।

जंभका—स्त्री०[स० जभा+कन्-टाप्, ह्रस्व] जँभाई।

जभन—पु०[स०√जभ्+ल्युट्-अन] १ भक्षण। २ रति। ३ जँभाई।

जभ-भेदी (दिन्)—पु० [स० जभ√भिद् (विदारण)+णिनि] इद्र।

जभ-रिपु—पु०[ष० त०] इद्र।

जंभा—स्त्री०[स० √जभ्+णिच्√अ-टाप्] जँभाई।

जँभाई—स्त्री०[स० जृम्भा] एक शारीरिक व्यापार जिसमे मनुष्य गहरा साँस लेने के लिए पूरा मुँह खोलता है।

विशेष—यह व्यापार थकावट या नीद के आने का सूचक होता है।

क्रि० प्र०-आना।—लेना।

जँभाना—अ०[स० जृम्भण] पूरा मुँह खोलकर गहरा साँस लेना। जँभाई लेना।

जभाराति—पु०[स० जभ-अराति ष०त०] जभारि। (दे०)

जभारि—पु०[स०-जभ-अरि ष० त०] १ इद्र। २ विष्णु। ३ अग्नि। ४ वज्र।

जंभिका—स्त्री०[स० जभा+कन्+टाप, इत्व] जभा।

जभी—(भिन्)पु० [स०√जभ्+णिच्+णिनि] दे० 'जबीरी'।

जभीर—पु०[स०√जभ्+ईरन्] दे० 'जबीरी'।

जभीरी—पु० दे० 'जबीरी नीबू'।

जंभूरा†—पु०=जबूरा।

जँवाई—पु०[स० जामातृ] दामाद।

जखना*—अ०[हिं० झखना] पछताना। पश्चात्ताप करना।

जँहड़ना†—अ०, स०=जहँडना।

जइसे*—अव्य०[हिं० जैसे] जिस प्रकार। जैसे।

जई—स्त्री०[हिं० जौ] १ एक प्रसिद्ध मोटा अन्न जिसका पौधा जौ के पौधे से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है। २ उक्त अन्न का पौधा। ३ जौ का छोटा अकुर जो मगल-द्रव्य माना जाता है। ४ किसी पौधे का नया कल्ला। अकुर। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधो, वृक्षो, लताओ आदि मे लगनेवाले वे फूल जिनके मूल मे बतिया (फल का आरभिक रूप) होता है।

वि० [हिं० जयी] विजयी।

जईफ—वि०[अ० जईफ] [स्त्री० जईफा, भाव० जईफी] बुड्ढा। बूढा। वृद्ध।

जईफी—पु०[फा०, जईफी] जईफ अर्थात् वृद्ध होने की अवस्था या भाव। बुढापा। वृद्धावस्था।

जउँना*—स्त्री०=जमुना।

जउवा†—पु०=जौ। (पूरब) उदा०—जउवा मे फूटेला बालि।—लोकगीत।

जऊ—अव्य० [हिं० जो+ऊ] यद्यपि। अगरचे। उदा०—(क) कहै रतनाकर धरैना मृगछाला अरु धूरि हू परै भी जऊ अग छिलि जाइयौ।-रत्ना०। (ख) लाल है प्रबाल फूले देखत बिसाल जऊ।-सेनापति।

जकद—स्त्री० [फा० जकद] उछाल। छलाग।

जकदना—अ० [हिं० जकद] १ उछाल भरना। छलाग लगाना। २ २ टूट पडना।

जकदनि—स्त्री०[हिं० जकद] १ उछलने-कूदने की क्रिया या भाव। २ दौड-धूप। ३ उलझन।

जक—स्त्री० [अ० जक] १ पराजय। हार। २ हानि।

स्त्री० [हिं० झक] १ जिद। हठ।

मुहा०—जक पकडना=जिद करना। हठ करना। उदा०—अधम समूह उधारन कारन तुम जिय जक पकरी।—सूर।

२ धुन। रट। स्त्री०[?] १ आराम। सुख। २ मन की स्थिरता। शान्ति। चैन। उदा०—जक न परति चकरी भई फिरि आवत फिरि जाति।—बिहारी। *पु० [स० यक्ष] १ यज्ञ। २ कजूस आदमी।

जकड़—स्त्री० [हिं० जकडना] १ जकडने की क्रिया, ढग या भाव। २ जकडे अर्थात् चारो ओर से दृढ बधन मे होने की अवस्था या स्थिति।

जकड़ना—स० [स० युक्त+करण] १. इस प्रकार किसी चीज को कसकर दबाते हुए बाँधना कि वह हिल-डुल न सके। २ इस प्रकार से नियम, बधन आदि बनाना या लागू करना कि उनसे बच सकना किसी का सभव न हो।

अ० १ जकडा जाना। चारो ओर से कसकर बाँधा जाना। २ नियमो, बधनो आदि से इस प्रकार घिरना कि छुटकारा या बचत न हो सकती हो। ३ शीत आदि के कोप से शरीर अथवा शरीर के किसी अग का इस प्रकार कस, ऐठ या तन जाना कि वह हिल-डुल न सके। जैसे—गठिया के रोग से घुटने जकडना।

जकडबद—वि० [हिं० जकड+फा० बद] जिसे अच्छी तरह जकडकर बाँध लिया गया हो। किसी की जकड मे आया हुआ।

जकना*—अ० [हिं० जक] [वि० जकित] १ भौचक्का होना। चकित या स्तभित होना। उदा०—दीन से रहै सत जन सो, रूप मे नैना जके।—अलबेली अली। २ व्यर्थ बोलना। बकना। ३ रटना।

जकर—पु० [अ०] १ पुरुषेद्रिय। लिंग। २ नर। ३ फौलाद।

जकरना*—स०, अ०=जकडना।

जकाजक*—पु०[अनु०] जोरो की लडाई। घोर युद्ध।

क्रि० वि० खूब जोरो से। वेग-पूर्वक।

जकात—स्त्री०[अ० जकात] १ इस्लाम मे विहित आय का वह चालीसवाँ भाग जो दान-धर्म मे देना आवश्यक कहा गया है। २ दान। खैरात। ३ कर। महसूल।

जकाती—वि०[अ० जकात] कर या महसूल उगाहनेवाला। जगाती।

जकित*—वि०=चकित।

जकी—वि०[हिं० जक] १ जिद्दी। हठी। २ चकित। स्तभित। उदा०—चकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलति नीठि।—बीसलदेव।

जकुट—पु० [स० ज√कुट् (कौटिल्य)+क] १ मलयाचल। २ कुत्ता। ३ बैंगन के पौधे मे लगनेवाला फूल।

जक्की—स्त्री० [देश०] बुलबुलो की एक जाति।

वि० दे०'झक्की'।

जक्त*—पु०=जगत्।
जक्ष—पु०=यक्ष।
जक्षण—पु० [स०√जक्ष् (भक्षण करना)+ल्युट्-अन] १ भक्षण। २ भोजन। खाना।
जक्ष्म—पु०=यक्ष्म।
जक्ष्मा†—पु०=यक्ष्मा (तपेदिक)।
जखन—अव्य०=जब। (पूरब)
जखनी*—स्त्री०=यक्षिणी (यक्ष की पत्नी)।
†स्त्री०=यखनी। (दे०)
जखम—पु० [फा० ज़ख्म] १ आघात आदि के कारण शरीर मे लगनेवाली ऐसी चोट जिसमे त्वचा कट, फट या छिल जाती है और रक्त बहने लगता है। घाव। जैसे—ईट सिर पर गिर पडने से यह जखम हुआ है। २ फोडा आदि फटने से होनेवाला घाव। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी के द्वारा किया हुआ वह आघात या अपकार जिससे मनुष्य सदा दुखी रहता हो।
मुहा०—जखम पर नमक छिडकना=ऐसा काम करना जिससे दुखी व्यक्ति और भी अधिक दुखी हो। **जख्म ताजा या हरा होना**=किसी के द्वारा किया हुआ अपकार स्मरण हो आना।
जखमी—वि०[फा० ज़ख्मी] जिसे जखम या घाव हुआ हो। घायल।
जखीरा—पु०[अ० ज़खीर] १ ढेर। राशि। २ कोष। ३ वह प्रदेश जहाँ कोई वस्तु बहुतायत से प्राप्त होती है। जैसे-पजाब गेहूँ का जखीरा है। ४ वह स्थान जहाँ पौधे, बीज आदि बिकते हो।
जखेड़ा†—पु०=जखीरा।
पु० हिं० बखेडा का अनु०।
जखैया—पु० [स० यक्ष]एक कल्पित भूत जिसके सबध मे यह कहा जाता है कि वह लोगो को यो ही बहुत कष्ट देता है।
जख्ख*—पु० [स्त्री० जख्खनी] =यक्ष। उदा०—सहस जख्ख भक्खनिय, मनह अचले चल बद्दिय।—चदबरदायी।
जख्म—पु०=जखम।
जग—पु०[स० जगत्] १ जगत्। ससार। २ चेतन सृष्टि।
*पु०=यज्ञ।
जगकर—पु०[स०] ब्रह्मा।
जगकारन—पु०[हिं० जग+कारन] परमेश्वर जो जगत्कर्ता माना जाता है।
जगच्चक्षु—पु०[स० जगत्-चक्षुस् ष० त०] सूर्य।
जगजग (1)—वि०[हिं० जगजगाना=जगमगाना] जगमगाता हुआ।
जगजगा—पु०[जगमग से] किसी चमकीली धातु का पतला पत्तर जिसके कटे हुए छोटे-छोटे टुकडे टिकुली, ताजिए आदि मे लगाये जाते हैं।
जगजगाना†—अ०=जगमगाना।
†स०=जगमगाना।
जग-जीवन—पु०[स० जगज्जीवन] ईश्वर। परमात्मा।
जगजोनि—पु०[स० जगद्योनि] ब्रह्मा।
जगज्जनी—स्त्री०[स० जगत्-जननी ष० त०] १ जगदबा। २ परमेश्वरी। ३ सीता।

जगज्जयी (यिन्)—वि० [स० जगत्-जयी ष० त०] जग को जिसने जीत लिया हो। विश्वविजयी।
जगझप—पु०[स० ?] युद्ध-क्षेत्र मे बजाया जानेवाला एक प्रकार का ढोल।
जगड्वाल—पु०[स०?] व्यर्थ का आडबर या बखेडा।
जगण—पु०[ष० त०] छद शास्त्र मे, तीन ऐसे अक्षरो के समूह की सज्ञा जिसका पहला अक्षर लघु, दूसरा गुरु और तीसरा लघु हो। इसका साकेतिक चिह्न ।ऽ। है।
जगत्—वि०[स०√गम् (जाना)√क्विप्, द्वित्व, तुगागम] १ जागता हुआ। चेतन। २ जो चलता-फिरता हो।
पु० १ पृथ्वी का वह अश या भाग जिसमे जीव या प्राणी चलते-फिरते या रहते हो। चेतन सृष्टि। २ किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य-क्षेत्र अथवा उसमे रहनेवाले जीवो, पिंडो आदि का वर्ग या समूह। जैसे—नारी जगत्, सौर जगत्, हिन्दी जगत् आदि। ३ इस पृथ्वी के निवासी। जैसे—जगत् तो मेरी हँसी उडाने पर तुला हुआ है। ४ ससार। दुनिया। जैसे—यह जगत् और उसके सब जजाल झूठे हैं।
जगत—स्त्री०[स० जगति=घर की कुरसी] कूएँ के ऊपर चारो ओर बना हुआ वह चबूतरा जिस पर खडे होकर उसमे से पानी खीचा जाता है।
पु०=जगत्। (दे०)
जगत-जननि—स्त्री०=जगज्जनी।
जगतसेठ—पु०[स० जगत्श्रेष्ठी] वह महाजन या सेठ जो किसी नगर या बस्ती मे और उसके चारो ओर दूर-दूर तक सब से बडा माना जाता हो।
जगतारण—वि० [स० जगत्-तारण] १ ससार को तारनेवाला। २ ससार की रक्षा करनेवाला।
जगति—स्त्री०[स० जगत्] द्वारिका।
जगती—स्त्री० [स०√गम्+अति—ङीप्] १ जगत्। २ पृथ्वी। ३ जीवन। ४ एक वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे बारह अक्षर होते है। ५ बारह अक्षरो के छदो की सज्ञा।
जगती-चर—वि०[जगती√चर् (चलना)+ट] जगत् मे विचरण करनेवाला।
पु० मनुष्य।
जगती-जानि—पु०[जगती-जाया ब० स०, नि०-आदेश] राजा।
जगती-तल—पु०[ष० त०] १ धरती। पृथ्वी। २ ससार।
जगती-धर—पु०[ष० त०] पर्वत।
जगती-पति—पु० [ष० त०] राजा।
जगती-भर्ता (र्तृ)—पु०[ष त०] राजा।
जगती-रुह—पु० [स० जगती√रुह् (उगना)+क] वृक्ष।
जगत्प्राण—पु०[जगत्-प्राण ष० त०] १ ससार को जीवित रखनेवाले तत्त्व। २ ईश्वर।
जगत्साक्षी (क्षिन्)—पु०[जगत्-साक्षिन् ष० त०] सूर्य।
जगत्सेतु—पु०[जगत्-सेतु ष० त०] परमेश्वर।
जगदतक—पु०[जगत्-अतक ष० त०] १ वह जो जगत् का नाश करता हो। मृत्यु। २ यमराज। ३ शिव।
जगदबा—स्त्री०[जगत्-अबा ष० त०] दुर्गा।
जगदबिका—स्त्री०[जगत्-अबिका ष० त०] दुर्गा।

जगदात्मा (त्मन्)—पु०[जगत्-आत्मन् ष० त०] १ ईश्वर। २ वायु।
जगदादि—पु०[जगत्-आदि ष० त०] १ ब्रह्मा। २ परमेश्वर।
जगदाधार—पु०[जगत्-आधार ष० त०] १ परमेश्वर। २ वायु। वि० जगत् का आधार।
जगदानन्द—पु०[जगत्-आनद ष० त०] परमेश्वर।
जगदायु (स्)—पु०[जगत्-आयुस् ष० त०] वायु।
जगदीश—पु०[जगत्-ईश ष० त०] १ ईश्वर। परमेश्वर। २ विष्णु। जगन्नाथ।
जगदीश्वर—पु०[जगत्-ईश्वर] ईश्वर। परमेश्वर।
जगदीश्वरी—स्त्री०[जगत्-ईश्वरी ष० त०] भगवती।
जगदीस—पु०=जगदीश।
जगद्गुरु—पु०[जगत्-गुरु ष० त०] १ परमेश्वर। २ शिव। ३ नारद। ४ वह महान व्यक्ति जिसे सब लोग गुरु के समान पूज्य मानते हो। जैसे—जगद्गुरु शकराचार्य। ५ शकराचार्य की गद्दी के अधिकारी महत की उपाधि।
जगद्गौरी—स्त्री०[स० त०] १ दुर्गा। २ नागो की बहन मनसादेवी, जिसका विवाह जरत्कारु ऋषि से हुआ था।
जगद्दीप—पु०[जगत्-दीप ष० त०] १ ईश्वर। २ महादेव।
जगद्धाता (तृ)—पु० [जगत्-धातृ ष० त०] [स्त्री० जगद्धात्री] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। शकर।
जगद्धात्री—स्त्री०[जगत्-धात्री ष० त०] १ दुर्गा। २ सरस्वती।
जगद्बल—पु०[जगत्-बल ब० स०] वायु। हवा
जगद्योनि—पु० [जगत्-योनि ष० त०] १ शिव। २ विष्णु। ३ ब्रह्मा। ४ परमेश्वर। ५ पृथ्वी।
जगद्वद्य—वि०[जगत्-वद्य ष० त०] १ जिसकी वदना जगत् करता हो। २ जिसकी वदना जगत् को करनी चाहिए।
जगद्वहा—स्त्री०[स० जगत्√वह् (ढोना)+अ-टाप्] पृथ्वी।
जगद्विख्यात—वि० [जगत्-विख्यात स० त०] जिसकी ख्याति जगत् मे हो।
जगद्विनाश—पु०[जगत्-विनाश ब० स०] प्रलयकाल।
जगन*—पु०[स० यज्ञाग्नि] १ यज्ञ की अग्नि। २ यज्ञस्थल। उदा०--जो वै जाँ गृहि गृहि जगन जागवैं। --प्रिथीराज। स्त्री०[हिं० जागना] जागने की क्रिया या भाव। पु०=जगण।
जगनक—पु०[देश०] महोबे के राजा परमाल के दरबार का एक प्रसिद्ध कवि।
जगना†—अ०[स० जागरण] १ जाग्रत होना। जागना। २ अग्नि, दीप-शिखा आदि का प्रज्वलित होना। जैसे—ज्योति जगना।
जगनी—स्त्री०[?] १ एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे के बीज जिनका तेल निकाला जाता है।
जगनु—पु०[स० जगन्नु] १ अग्नि। २ कीडा। ३ जतु। पु०=जुगनूँ।
जगन्नाथ—पु० [जगत्-नाथ ष० त०] १ जगत् के नाथ, ईश्वर। २ विष्णु। ३ उडीसा प्रदेश की पुरी नगरी के एक प्रसिद्ध देवता।
जगन्नाथ-क्षेत्र—पु०[ष० त०] उडीसा प्रदेश की पुरी नामक नगरी जो एक तीर्थस्थल है। जगन्नाथपुरी।
जगन्नाथ-धाम (न्)—पु०[ष० त०] जगन्नाथपुरी।
जगन्नियता (तृ)—पु०[जगत्-नियतृ ष० त०] वह जो जगत् का नियत्रण करता हो। ईश्वर।
जगन्निवास—पु०[जगत्-निवास ष० त०] ईश्वर। परमेश्वर।
जगन्नु—पु० [स० जगत्√नम् (नम होना)+डु] १ अग्नि। २ कीडा। ३ जतु।
जगन्मगल—पु०[जगत्-मगल ब० स०] काली का एक कवच।
जगन्मय—पु०[स० जगत्+मयट्] विष्णु।
जगन्मयी—स्त्री०[स० जगन्मय+ङीप्] १ लक्ष्मी। २ वह शक्ति जो जगत् का सचालन करती है।
जगन्माता (तृ)—स्त्री०[जगत्-मातृ ष० त०] दुर्गा।
जगन्मोहिनी—स्त्री०[जगत्-मोहिनी ष० त०] १ दुर्गा। २ महामाया।
जगबद*—वि०[स० जगत् वद्य] जगत् जिसकी वदना करे। जगद्वद्य।
जगमग, जगमगा—वि० [अनु०] १ जगमगाता हुआ। २ चमकदार।
जगमगाना—अ० [अनु० जग-मग] [भाव० जगमगाहट] किसी चीज पर प्रकाश पडने से उसका चमकने लगना। जगमग करना। जैसे—बिजली की रोशनी मे पडाल जगमगा रहा था। स० प्रकाश आदि से प्रज्वलित करना या चमकाना।
जगमगाहट—स्त्री०[हिं० जगमग] जगमगाने की अवस्था या भाव।
जगर—पु०[स०√जागृ (जागना)+अच् पृषो० सिद्ध] कवच।
जगरन*—पु०=जागरण।
जगरनाथ—पु०=जगन्नाथ।
जगरमगर—वि०=जगमग।
जगरा—स्त्री०[स० शर्करा] खजूर के रस से बनी हुई खाड या चीनी।
जगल—पु० [स०√जन् (उत्पत्ति)+ड √गल्+अच्, ज-गल, कर्म० स०] १ पीठी से बना हुआ मद्य जिसे पृष्टी भी कहते है। २ शराब की सीठी। कल्क। ३ मदन वृक्ष। मैनी। ४ कवच। ५ गोमय। गोबर। वि० धूर्त। चालाक।
जगवाना—स०[हिं० जगाना का प्रे० रूप] किसी को जगाने मे प्रवृत्त करना। जगाने का काम दूसरे से कराना।
जगसूर—पु० [स०जगत्-सूर] राजा। उदा०—बिनती कीन्ह घालि गिउ पागा, ए जगसूर सीउ मोहि लागा—जायसी।
जगसेन—स्त्री०[हिं० जग+?] ससार-प्रसिद्ध। उदा०—स्यामि समुँद मोर निरमल, रतनसेनि जगसेनि।—जायसी।
जगहँसाई—स्त्री०[हिं० जग+हँसना] लोगो का किसी पर उसके कोई मर्यादा विरुद्ध काम करने पर हँसना। जगत् मे होनेवाली बदनामी।
जगह—स्त्री० [फा० जायगाह] १ कोई विशिष्ट भू-भाग या उसका विस्तार। स्थान। २ बीच मे होनेवाला अवकाश या विस्तार। ३ वह पद या स्थान जहाँ पर कोई काम करता हो। जैसे—इस समय कार्यालय मे कोई जगह खाली नही है। ४ अवसर। मौका। जैसे—हर बात अपनी जगह पर अच्छी मालूम होती है।
जगहर†—स्त्री०[हिं० जगना] जागते रहने की अवस्था या भाव। वि० जागता हुआ। जागनेवाला।
जगाजोति*—स्त्री०=जगमगाहट।
जगात†—पु०=जकात।

जगाती†—पु० [अ० जकात=कर] १ कर उगाहने की क्रिया या भाव। २. कर उगाहनेवाला अधिकारी। उदा०—काहै कौ कर माँगतौ बिरह जगाती आइ।—रसनिधि।

जगाना—स० [हिं० जगाना] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई जाग उठे। जागने मे प्रवृत्त करना। २ सचेत या सावधान करना या जागरूक करना। ३ तत्र, मत्र आदि के प्रसग मे, किसी अलौकिक या दैवी शक्ति को जाग्रत करके अपने अनुकूल करने का प्रयत्न करना। जैसे—अलख जगाना, जादू जगाना। ४ धूमिल या मद्धिम चीज को उज्ज्वल और स्पष्ट करना।

जगार—स्त्री० [हिं० जागना] जागरण। जाग्रति।

जगी—स्त्री० [देश०] मोर की जाति की एक प्रसिद्ध बडी चिडिया जिसका शिकार किया जाता है।

जगीत†—स्त्री०=जगत (कूएँ के ऊपर का चबूतरा)।

जगीर†—स्त्री०=जागीर।

जगीला*—वि० [हिं० जागना] [स्त्री० जगीली] १ जागता हुआ। जागा हुआ। २ जागने के कारण थका तथा आलस्य से भरा हुआ।

जगुरि—पु० [स०√गृ (निगलना)+किन्, द्वित्व, उत्व] जगम।

जगैया—वि० [हिं० जगाना] जगानेवाला।

जगौहाँ—वि० [हिं० जागना] १ बराबर जागता रहनेवाला। २ दूसरो को जगाने का प्रयत्न करता रहनेवाला।

जग्ग†—पु० [हिं० जग] जगत्।
*पु० [स० यज्ञ] यज्ञ।
†पु०=जग।

जग्य—पु०=यज्ञ।

जग्युपवीत†—पु०=यज्ञोपवीत।

जग्मि—पु० [स०√गम् (जाना)+कि, द्वित्व] वायु। हवा।
वि० जिसमे गति हो। गतिमान। गतिशील।

जघन—पु० [√हन् (मारना)+अच्, द्वित्व] १ पेडू। (विशेषत स्त्रियो का)। २ चूतड। ३ जघा। जाँघ। ४ सेना का पिछला भाग।

जघन-कूप—पु० [ष० त०] चूतड के ऊपर का गड्ढा।

जघनकूपक—पु० [जघनकूप√कै (शब्द करना)+क] जघन-कूप। (दे०)।

जघन-चपला—स्त्री० [ब० स०] १ दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा। २ वह स्त्री जो बहुत तेजी से नाचती हो। ३ आर्या छद का एक भेद जिसका कोई पूर्वार्द्ध आर्या छद का और उत्तरार्द्ध चपला छद का होता है।

जघनी (निन्)—वि० [स० जघन+इनि] जिसके नितब बडे-बडे हो।

जघन्य—वि० [स० जघन+यत्] [भाव० जघन्यता] १ अतिम सीमा पर का। चरम। २ बहुत ही निंदनीय और बुरा। गर्हित। ३ क्षुद्र। नीच।
पु० १ नीच जाति का व्यक्ति। २ पीठ पर का पुट्ठे के पास का भाग।

जघन्यज—पु० [स० जघन्य√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ शूद्र। २ अत्यज।

जघन्य-भ—पु० [कर्म० स०] आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा ये छ नक्षत्र।

जघ्नि—पु० [स०√हन् (मारना)+किन्, द्वित्व] १ वह जो वध करता हो। २ वध करने का अस्त्र।

जघ्नु—वि० [स०√हन्+कु, द्वित्व] वध करनेवाला।

जघ्रि—पु० [स०√घ्रा (सूँघना)+कि, द्वित्व] सूँघनेवाला।

जचगी—स्त्री० [फा०] १ प्रसव। २ प्रसूतावस्था।

जचना—अ०=जँचना।

जचा—स्त्री०=जच्चा।

जच्चा—स्त्री० [फा० जच्च] वह स्त्री जिसको हाल ही में बच्चा हुआ हो। प्रसूता।

जच्चा-खाना—पु० [फा० जच खाना] सूतिका-गृह। सौरी।

जच्छ*—पु०=यक्ष।

जच्छपति*—पु०=यक्षपति।

जच्छेस*—पु०=यक्षेश्वर।

जज—पु० [स०√जज् (युद्ध करना)+अच्] योद्धा।
पु० [अ०] न्यायाधीश (दे०)।

जजना*—स० [स० यजन] १ आदर करना। २ पूजना।

जजमनिका—स्त्री० [हिं० जजमान] पुरोहिताई।

जजमान—पु०=यजमान।

जजमानी—स्त्री० [स० यजमान] १ यजमान होने की अवस्था, पद या भाव। २ ऐसी वृत्ति जो यजमानो के कृत्य कराने से चलती हो।

जजा—स्त्री० [अ० जज़ा] १ बदला। प्रतिफल। २ परलोक मे मिलनेवाला अच्छा या बुरा फल।

जजाति*—पु०=ययाति।

जजित—पु० [स० यज्ञ] यज्ञकर्ता। उदा०—सुकरि कमडल बारि, जजित आह्वान थान दिया।—चदवरदाई।

जजिमान—पु०=यजमान।

जजिया—पु० [अ० जज़िय] १ दड। २ मुसलमानी राज्य-काल मे अन्य धर्मवालो पर लगनेवाला एक प्रकार का कर।

जजी—स्त्री० [हिं० जज+ई (प्रत्य०)] १ जज होने की अवस्था, पद या भाव। २ जज की कचहरी।

जजीरा—पु० [अ० जज़ीर] द्वीप।

जजीरानुमा—[पु० अ०] प्रायद्वीप।

जज्ज—पु०=जज (न्यायाधीश)।

जज्ञ*—पु०=यज्ञ।

जज्ब—वि० [अ० जज़्ब] १ जो सोख लिया गया हो। शोषित। २ जो हडप लिया गया हो।

जज्बा—पु० [अ० जज़्बा] १ भाव। भावना। २ जोश। ३ रोष।

जझर—पु० [हिं० झरना] लोहे की चद्दर का तिकोना टुकडा जो उसमे से तवे काटने के बाद बच रहता है।

जट—पु० [?] एक प्रकार का गोदना जो झाड के आकार का होता है।
पु० [हिं० जाट] १ पजाब मे खेती-बारी करनेवाली एक जाति। २ कृषक। किसान।

जटना—स० [स० जटन या हिं० जाट] धोखा देकर किसी की कोई चीज ले लेना। ठगना।
†स०=जडना।

जटल—स्त्री० [स० जटिल] व्यर्थ और झूठ-मूठ की बात। गप। बकवास।

मुहा०—जटल काफिये उड़ाना या मलाना=बेसिर-पैर की और व्यर्थ की बाते करना।

जटा—स्त्री०[√जट् (परस्पर सलग्न होना)+अच्—टाप्] १. सिर के लबे तथा आपस मे गुथे और लिपटे हुए बालो की ऐसी लट जो कभी चिकनाई या सुलझाई न गई हो। जैसे—ऋषि-मुनियो या साधुओ की जटा। २ बालो जैसी किसी वस्तु का चिपका हुआ रूप। जैसे—नारियल की जटा। ३ पेड-पौधो की जडो के आपस मे गुथे हुए पतले-पतले रेशो या सूतो का समूह। झकरा। ४ जटामासी। ५ जूट। पाट। ६ केवाँच। ७ वेद-पाठ का एक प्रकार जिसमे मत्र के दो या तीन पदो को क्रमानुसार पूर्व और उत्तरपद पहले पृथक् पृथक् और फिर मिलाकर दो बार पढे जाते है। ८ शतावर। ९. बालछड।

जटा-चीर—पु०[ब० स०] शिव।

जटा-जूट—पु०[ष० त०] जटा को लपेटकर बनाया जानेवाला जूडा।

जटा-ज्वाल—पु०[ब०स०] दीया।

जटा-टक—पु०[ब०स०] शिव।

जटाटीर—पु०[स० जटा√अट् (प्राप्त होना)+ईरन्] शिव।

जटा-धर—वि०[ष०त०]=जटाधारी।

जटा-धारी (रिन्)—वि०[स० जटा√धृ (रखना)+णिनि] जिसके सिर पर जटा हो।

पु० १ शिव। २ ऐसा साधु, जिसके सिर पर जटा हो। ३ मरसे की जाति का एक पौधा।

जटाना—अ० [हिं० जटना] धोखे मे आकर ठगा जाना।

जटा-पटल—पु०[ब०स०] वेदपाठ का एक जटिल क्रम।

जटामासी—स्त्री० [जटा√मन् (जानना)+स, दीर्घ, ङीष्] औषध के काम आनेवाली एक प्रकार की सुगधित वनस्पति। बालछड।

जटा-माली (लिन्)—पु० [जटा-माला, ष०त० +इनि] शिव।

जटामासी—स्त्री०=जटा-मासी।

जटायु—पु०[स० जटा√या (गति)+कु] एक प्रसिद्ध गिद्ध जिसने सीता को हरण करके ले जाते हुए रावण से ुद्ध किया था और जो उसी के हाथो मारा गया था। यह सूर्य के सारथी अरुण का पुत्र था जो उसकी श्येनी नामक पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

जटाल—वि०[स० जटा+लच्] जटा से युक्त। जटावाला।

पु० [स०] १ वट वृक्ष। बरगद। २ कचूर। ३ मुष्कक। मोरवा। ४ गुग्गुल।

जटाला—स्त्री०[स० जटाल+टाप्] जटामासी।

जटाव—स्त्री० [देश०] कुम्हारो की बोली मे वह मिट्टी जिससे वे बरतन आदि बनाते है।

पु०[हिं० जटना] जटने या जटे जाने अर्थात् ठगने या ठगे जाने की क्रिया या भाव।

जटावती—स्त्री०[स० जटा+ मतुप्, वत्व, ङीप्] जटामासी।

जटा-वल्ली—स्त्री० [उपमि०स०] १ रुद्र जटा। शकर जटा। २ गधमासी नाम की वनस्पति।

जटासुर—पु०[जटा-असुर मध्य०स०] १ एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध भीम ने उस समय किया था जब वह ब्राह्मण वेश धारण करके द्रौपदी को हर कर ले जा रहा था। २ एक प्राचीन देश।

जटित—भू०कृ० [स०√जट् (जुडना)+क्त +इतच्] जडा हुआ। जैसे—रत्नजटित मुकुट या सिंहासन।

जटियल—वि०[स० जटिल] निकम्मा। रद्दी।

जटिल—वि० [स० जटा+इलच्] १ जटावाला। जटाधारी। २ (व्यक्ति) जिसके सिर पर जटा हो। ३ (कार्य) जो इतना अधिक उलझा हुआ हो कि सरलता से सपन्न न किया जा सके। ४ (बात) जो इतनी पेचीली हो कि जल्दी समझ मे न आ सके। ५ क्रूर।

पु० १ शिव। २ जटामासी। ३ ब्रह्मचारी। ४ सिह।

जटिलक—पु०[स० जटिल+कन्] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ उक्त ऋषि के वशज।

जटिलता—स्त्री०[स० जटिल+तल्—टाप्] जटिल होने की अवस्था, गुण या भाव।

जटिला—स्त्री०[स० जटिल+टाप्] १ ब्रह्मचारिणी। २ जटामासी। ३ पिप्पली। पीपल। ४ वचा। बच। ५ दोना। ६ एक ऋषि-कन्या जिसका विवाह सात ऋषि पुत्रो से हुआ था। (महाभारत)

जटी (टिन्)—वि०[स० जटा+इनि] जटाधारी।

पु०१ शिव। २ बरगद।

स्त्री०[√जट्√इन्—ङीष्]=जटामासी।

जटुल—पु०[स०√जट्+उलच्] १ त्वचा पर का काला प्राकृतिक दाग। लच्छन। २ शरीर के अगो मे होनेवाले चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार (स्थल भेद के कारण) शुभ या अशुभ फलदायक माने जाते हैं।

जट्टा—पु०[हिं० जाट] एक प्रसिद्ध खेतिहर जाति। उदा०—ब्रज के गूजर जट्टा।—भगवत रसिक।

जठर—पु० [√जन् (उत्पन्न होना)+अर, ठ आदेश] १ पेट। २ पेट का भीतरी भाग। ३ किसी वस्तु का भीतरी भाग। ४ एक उदर रोग जिसमे पेट फूलने लगता है और भूख बन्द हो जाती है। ५ शरीर। ६ एक पर्वत। (पुराण)

वि० १ जो कठोर, कडा या दृढ हो। २ पुराना। ३ वृद्ध। ४ बँधा या बाँधा हुआ।

जठर-गद—पु०[ष०त०] आँत मे होनेवाला विकार।

जठर ज्वाला—स्त्री० [ष०त०] १ पेट मे लगनेवाली भूख अथवा इस भूख से होनेवाला कष्ट। २ शूल। (दे०)

जठराग्नि—स्त्री०[जठर-अग्नि, मध्य०स०] जठर या पेट के अदर का वह शारीरिक ताप जिससे खाया हुआ अन्न पचता है।

जठराजि*—स्त्री०=जठराग्नि।

जठरानल—पु०[जठर-अनल मध्य०स०]=जठराग्नि। (दे०)

जठरामय—पु०[जठर-आमय] १ अतिसार रोग। २ जलोदर (रोग)।

जठारि*—पु० [देश०] पाला। उदा०—पूस मास जठारि पडत बा, जस कुठार के घाई।—ग्रा० गीत।

जठेरा—वि०[हिं० जेठ,स० ज्येष्ठ] [स्त्री० जठेरी] जो अवस्था मे किसी से अपेक्षाकृत बडा हो। जेठा।

जड़—वि० [√जल् (जमना)+अच्, ड आदेश] १ जिसमे जीवन न हो। निर्जीव। २ जिसमे चेतना-शक्ति न हो। अचेतन। ३ जिसमे कुछ भी बुद्धि या ज्ञान विशेषत व्यावहारिक बुद्धि या ज्ञान न हो।

४ वेद पढने मे असमर्थ। ५ ठढा। ६ ठढ आदि से ठिठुरा हुआ। स्त्री०[स० जटा] १ पेड-पौधो आदि का नीचेवाला वह मूल भाग जो जमीन के अन्दर रहता है और जो जमीन मे से रस खीचकर उन पेड-पौधो का पोषण और वृद्धि करता है। मूल।

मुहा०—(किसी की) जड उखाडना, काटना या खोदना=(क) ऐसा काम करना जिससे कोई फिर उभड या पनप न सके। (ख) किसी की बहुत बडी हानि करना। **(किसी की) जड जमना**=ठीक प्रकार से चल या बढ सकने की स्थिति मे हो जाना। **जड़ जमाना**=ऐसा काम या प्रयास करना जिससे कोई किसी स्थान पर टिककर अपने कार्य मे सफलतापूर्वक अग्रसर होता जाय। **(किसी की) जड (मे) लगना**=किसी की बहुत बडी हानि करने मे प्रयत्नशील होना। उदा०—सउतिनि जर लागल हो रामा।—ग्रा० गीत। **जड़ो मे तेल या पानी देना**=समूल नाश करने का प्रयत्न करना या कुचक्र रचना।

२ नीव। आधार-स्थल। जैसे—आपको पहले सस्था की जड मजबूत करनी चाहिए। ३ किसी चीज का बिलकुल नीचेवाला भाग। जैसे—नाखून को जड से मत काटो। ४ वह भाग या स्थल जिसमे कोई चीज गडी या फँसी हुई हो। जैसे—दाँत या बाल को जड से निकालो। ५ किसी कार्य का मूल कारण या प्रेरक। जैसे—चलो, इस झगडे की जड ही कट गई।

जड आमला—पु० [हिं० जड+आमला] भुँइ आँवला।

जडकना—अ० [हिं० जड] जड के समान हो जाना। निश्चल या स्तब्ध होना।

जड-काला—पु० [हिं० जाडा+स० काल] जाडे का समय। सरदी के दिन।

जड-जगत्—पु० [कर्म०स०] ऐसा जगत् जो जड के रूप मे हो। पाँच भौतिक पदार्थों की समष्टि। जड-प्रकृति।

जड़ता—स्त्री० [स० जड+तल्—टाप्] १ जड (अर्थात् निर्जीव, अचेतन या मूर्ख) होने की अवस्था, गुण या भाव। २ साहित्य मे एक सचारी भाव और पूर्वराग की दस दशाओ मे से एक जो ऐसी अवस्था का सूचक है जिसमे मनुष्य आश्चर्य या भय के कारण इतना अधिक स्तब्ध हो जाता है कि उसे अपने कर्त्तव्य की ही सुध नही रहती।

जडताई*—स्त्री०=जडता।

जडत्व—पु०[स० जड√त्व]=जडता।

जडना—स०[स० जटन] १ किसी चीज को किसी दूसरी चीज के तल मे ठोक या धँसाकर इस प्रकार जमाना या बैठाना कि वह अपने स्थान से इधर-उधर न हो सके। जड जमाते हुए कही कुछ बैठाना या लगाना। जैसे—तख्ते या दीवार मे कील जडना। २ किसी प्रकार के अवकाश मे कोई चीज इस प्रकार जमाकर बैठाना कि वह अपने स्थान से इधर-उधर न हो सके। जैसे—अँगूठी मे नगीना जडना, दीवार बनाते समय उसमे खिडकी या दरवाजे की चौखट जडना। ३ जोर से आघात या प्रहार करना। जैसे—थप्पड, मुक्का या लाठी जडना। ४ किसी के सबध मे कोई बात किसी दूसरे से चोरी से कहना। चुगली खाना। लगाना। जैसे—(क) उन्होने सब बाते भाई साहब से जड दी। (ख) किसी ने तुम्हे जड दिया है इसलिए तुम ऐसी बाते करते हो।

जड़-पदार्थ—पु० [कर्म०स०] अचेतन पदार्थ।

जड-प्रकृति—स्त्री०[कर्म०स०] जड-जगत्। (दे०)

जड-भरत—पु० [उपमि० स०] आगरिस गोत्री एक ब्राह्मण जो ससार की आसक्ति से बचने के लिए जडवत् रहते थे, इसलिए जड भरत कहलाते थे।

जड-वाद—पु०[ष०त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार चेतन आत्मा का अस्तित्व नही माना जाता और सब कुछ जडता का ही विकार माना जाता है।

जडवादी (दिन्)—वि० [स० जडवाद+इनि] जडवाद का अनुयायी या समर्थक।

जडवाना—स०[हिं० जडना का प्रे० रूप] जडने का काम दूसरे से कराना।

जड-विज्ञान—पु०[ष०त०]=पदार्थ विज्ञान।

जडवी—स्त्री०[हिं० जड] धान का वह छोटा पौधा जिसे जमे अभी थोडे ही दिन हुए हो।

जडहन—पु०[हिं० जड+हनन=गाडना] वह धान जिसके पौधे को एक जगह से उखाडकर दूसरी जगह पर रोपा जाता है।

जडा—स्त्री०[स० जड +णिच्+अच्—टाप्]१ भुईआमला। २ केवाँच। कौछ।

जडाई—स्त्री०[हिं० जडना] जडने की क्रिया, भाव या मजदूरी। *स्त्री०=जडता।

जड़ाऊ—वि०[हिं० जडना] (वह आभूषण) जिसमे नग, मोती, रत्न आदि जडे हुए हो।

जड़ान—स्त्री०[हिं० जडना] जडे जाने की क्रिया या भाव।

जडाना—स०=जडवाना।

†अ० जडा जाना।

अ० [हिं० जाडा] सरदी से ठिठुरना। उदा०—नगन जडाती ते अब नगन जडाती है।—भूषण।

जडाव—पु०[हिं० जडना] जडने या जडे जाने की क्रिया, ढग या भाव।

जडावट—स्त्री०=जडाव।

जडावर—पु०[हिं० जाडा] १ जाडे मे पहनने के वस्त्र। २ वे वस्त्र जो किसी कर्मचारी को अथवा नौकर, मजदूर आदि को पहनने के लिए जाडे के दिनो मे दिये जाते हैं।

जडावर्त—पु० [स० जड-आवर्त्त ष०त०] दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रो मे अज्ञान का आवर्त्त या चक्कर।

जडावल†—पु०=जडावर।

जड़ित—वि० [स० जटित] १ जडा हुआ। २ जकडा हुआ। (असिद्ध प्रयोग)

जड़िमा—स्त्री० [स० जड+इमनिच्] १ जडता। जडत्व। २ ऐसी अवस्था जिसमे मनुष्य इस प्रकार जडवत् हो जाता है कि उसे भले-बुरे, सुख-दु ख या हानि-लाभ का ज्ञान ही नही होने पाता।

जडिया—पु०[हिं० जडता] वह सुनार जो गहनो पर नगीने आदि जडने का काम करता हो। कुदनसाज।

जडी—स्त्री०[हिं० जड] किसी वनस्पति की वह जड जो औषध के रूप मे काम आती हो।

जड़ी-बूटी—स्त्री० [हिं०] औषध के काम आनेवाली जगली वनस्पतियाँ और उनकी जड़े।

जडीभूत—वि० [स०जड+च्वि√भू (होना)+क्त, दीर्घ] जो जड अथवा जड के समान अचेतन हो गया हो। जिसमे हिलने-डुलने की शक्ति न रह गई हो।

जडीला—वि०[हिं० जड+ईला (प्रत्य०)] जिसमे जड हो। जड से युक्त।

जड़आ—पु०[हिं० जडना] पैर के अँगूठे में पहनने का एक आभूषण।

जडूल—पु०[स० जटुल] त्वचा पर का काला दाग। लच्छन।

जड़ैया—स्त्री०[हिं० जडा+ऐया (प्रत्य०)] वह ज्वर जिसके आने के समय जाडा लगता हो। जूडी। मलेरिया।

†वि०=जडिया (=जडनेवाले)।

जढ़†—वि०[भाव० जढता]=जड।

†स्त्री०=जड़।

जढ़ाना—अ०=जडाना।

जण—पु० =जन।

जत—वि०[स० यत्] जितना। जिस मात्रा का।

क्रि० वि० जिस मात्रा मे।

पु०[स० यति] ढोलक, तबले आदि मे, एक प्रकार का ठेका या ताल।

स्त्री०=यति (कविता की)।

जतन†—पु०=यत्न।

जतनी—वि० [स० यत्नी] १ यत्न करनेवाला। २ चालाक या धूर्त।

स्त्री०[स०यत्न?] सूत कातने के चर्खे की वह रस्सी जो उसकी चरखी के पखो पर बँधी रहती है।

जतलाना—स०=जताना।

जतसर—पु०=जँतसर।

जताना—स०[स० ज्ञाप्त] १ किसी को किसी बात की जानकारी कराना। ज्ञात कराना। बतलाना। २ पूर्व सूचना देना। सचेत करने के लिए पहले से सूचना देना। चेताना।

जतारा—पु०[स० जाति] कुल। जाति। वश।

जति*—पु०=यति।

वि०[स०√जित्] जीतनेवाला।

जती—पु०=यति।

जतु—पु०[स०√जन् (उत्पन्न होना)+उ, त आदेश] १ वृक्ष मे से निकलनेवाला गोद। २ लाक्षा। लाख। ३ शिलाजीत।

जतुक—पु० [स० जतु √कै (प्रतीत होना)+क] १ हीग। २ लाख। ३ त्वचा पर का काला चिह्न। लच्छन।

जतुका—स्त्री० [स० जतुक+टाप्] १. पहाडी नामक लता जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं। २ चमगादड। ३ लाक्षा। लाख।

जतुकारी—स्त्री०[स० जतुक√ऋ (गमनादि)+अण्—ङीष्] पपडी नामक लता।

जतु-कृष्णा—स्त्री०[उपमि०स०] जतुका या पपडी नामक लता।

जतु-गृह—पु०[मध्य०स०] १ घास-फूस की झोपडी। २ लाख का वह घर जो वारणावत मे दुर्योधन ने पाडवो के रहने के लिए बनवाया था।

जतुनी—स्त्री०[स० जतु√नी (पहुँचाना)+क्विप्] चमगादड़।

जतु-पुत्रक—पु० [स० जतु-पुत्र मध्य०स०, √कै (प्रतीत होना)+क] १ शतरज का मोहरा। २ चौसर की गोटी।

जतु-रस—पु०[ष०त०] राख से बनाया जानेवाला लाल रग जिसे स्त्रियाँ पैरो, हाथो आदि पर लगाती हैं। अलक्तक। आलता। महावर।

जतूका—स्त्री०[स० जतुका, नि० दीर्घ] जतुका। (दे०)

जतेक*—क्रि० वि० [स० यत् या हिं० जितना+एक] जिस मात्रा मे। वि० जितना।

जत—पु०=जगत्।

*पु०=यति।

जत्था—पु० [स० यूथ] एक ही वर्ग, विचार या सप्रदाय के लोगो का समूह जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी विशिष्ट उद्देश्य से जाता हो। जैसे—यात्रियो का जत्था, स्वय-सेवको का जत्था।

जत्र—*क्रि० वि०=यत्र।

जत्रानी—स्त्री०[?] रुहेलखड मे बसी हुई जाटो की एक जाति।

जत्रु—पु०[स०√जन् (उत्पत्ति)+रु, त आदेश] धड के ऊपरी भाग मे गले के नीचे और छाती के ऊपर दोनो ओर की अर्द्ध-चद्राकार हड्डियाँ। हँसली।

जत्रुक—पु०[स० जत्रु+कन्]=जत्रु।

जत्वश्मक—पु०[स० जतु-अश्मन्, मध्य० स०,+कन्] शिलाजीत।

जथा*—अव्य०=यथा।

स्त्री०[हिं० गथ] पूँजी। धन।

स्त्री०[स यूथ हिं० जत्था] मडली।

जथारथ—वि०=यथार्थ।

जद—अव्य०[स० यदा] १ जिस समय। २ जब कभी। ३ यदि।

स्त्री० [फा० ज़द] १ आघात। चोट। २ लक्ष्य। निशाना। ३ हानि। नुकसान।

जदनी—वि०[फा०] मारने योग्य। वाध्य।

स्त्री० मारने की क्रिया या भाव।

जदपि*—अव्य०=यद्यपि।

जदबद—पु०=जद्दबद्द।

जदल—पु०[अ०] युद्ध। लडाई।

जदवर, जदवार—पु० [अ० जडदवार] निर्विषी नामक ओषधि। निर्विसी।

जदा—वि०[फा० ज़दा] १ जिस पर किसी प्रकार का आघात हुआ हो। २ पीडित।

जदि*—अव्य०=यदि। २=जब।

जदीद—वि०[अ०] १ नया। नवीन। २ आधुनिक। हाल का।

जदु*—पु०=यदु।

जदुकुल*—पु०=यदुकुल।

जदुपति*—पु०[स० यदुपति] श्रीकृष्ण।

जदुपाल—पु०[स० यदुपाल] श्रीकृष्ण।

जदुपुर—पु०=यदुपुर (मथुरा)।

जदुबसी*—पु०=यदुवशी।

जदुबीर*—पु०=यदुवीर।

जदुराई*—पु०[स० यदुराज] श्रीकृष्णचद्र।

जदुराज—पु०[स० यदुराज] श्रीकृष्णचद्र।

जदुराम—पु०[स० यदुराम] यदुकुल के राम। बलदेव।

जदुराय—पु०[स० यदुराज] श्रीकृष्णचद्र।

जदुवर*—पु०[स० यदुवर] श्रीकृष्णचद्र।

जदुवीर—पु०=यदुवीर।

जद्द—पु०[अ०] १ दादा। पितामह। २ पूर्वज। वि०[अ० ज्यादा] अधिक। ज्यादा। वि०[फा० जद।] प्रचड। प्रबल। अव्य०[स० यदि] १ जब। २ जब कभी।

जद्दपि*—अव्य०=यद्यपि।

जद्दबद्द—पु०[स० यत्+अवद्य] अकथनीय या अश्लील बात।

जद्दव—पु०[स० यादव] श्रीकृष्ण। उ०—का चहुआनि कित्ति, जेपि जद्दव रस चगी।—चदवरदाई।

जद्दी—वि०[अ०] (वह अधिकार या सपत्ति) जो बाप-दादाओ से उत्तराधिकार मे मिलती हो। बाप-दादाओ के समय से चला आनेवाला। स्त्री० कोशिश। प्रयत्न।

जद्दौ—पु०[स० यादव] यादववशी राजा।

जनगम—पु०[स० जन√गम् (जाना)+ खच्, मुम् आगम] चाडाल।

जन—पु०[स०√जन्(उत्पन्न होना)+अच्] १ लोक। लोग। २ प्रजा। ३ सेवक। जन। ४ अनुयायी। अनुचर। ५ समुदाय। समूह। ६ सात लोको मे से पाँचवाँ लोक।
अव्य०=जनि (नही)।

जन-आंदोलन—पु० [ष० त०] वह आदोलन जिसमे जनता अथवा बहुत से लोग भाग ले।

जनक—वि०[√जन्+णिच्+ण्वुल्—अक]जननेवाला। जन्म देनेवाला। पु० १ पिता। २ मिथिला के एक राजवश की उपाधि। ३ मिथिला के राजा जिनकी सीता कन्या थी। ४ शबरासुर का चौथा पुत्र। ५ एक वृक्ष का नाम।

जनक-तनया—स्त्री० [ष० त०] सीता।

जनकता—स्त्री० [स० जनक+तल्-टाप्] जनक होने की अवस्था या भाव।

जनक-नंदिनी—स्त्री०[ष० त०] सीता।

जनक-पुर—पु०[ष० त०] मिथिला की राजधानी।

जनक-सुता—स्त्री०[ष० त०] सीता।

जनकात्मजा—स्त्री०[जनक-आत्मजा ष० त०] सीता।

जन-कारी (रिन्)—पु० [जन√कृ (बिखेरना)+णिनि, उप० स०] अलक्तक। अलक्तका। अलता।

जनकौर—पु०[हिं० जनक+औरा (प्रत्य०)] १ जनकपुर। २ राजा जनक के वशज।

जनखा—पु० [फा० जन्ख] १ वह व्यक्ति जिसके कार्य-व्यापार या हाव-भाव औरतो जैसे हो। २ वह व्यक्ति जिसमे किसी प्रकार के शारीरिक विकार के कारण बच्चे उत्पन्न करने की शक्ति न हो। नपुसक।

जन-गणना—स्त्री०[ष० त०] किसी देश या राज्य के समस्त जनो अर्थात् निवासियो की गणना। वह कार्य जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इस देश मे कुल कितने व्यक्ति रहते हैं।

जनगी—स्त्री०[देश०] मछली।

जनघर—पु०[स० जन-गृह] मडप। (डिं०)

जन-चक्षु (स्)—पु०[ष० त०] सूर्य।

जन-चर्चा—स्त्री०[स० त०] वह बात जिसकी चर्चा सब लोग करते या कर रहे हो। सर्वसाधारण मे फैली हुई बात। जनश्रुति।

जन-जागरण—पु०[ष० त०] जनता के जागरूक होने की स्थिति या भाव।

जन-जाति—स्त्री०[ष० त०] जगलो, पहाडो आदि पर रहनेवाली ऐसी असभ्य जाति या लोगो का वर्ग जो साधारणत एक ही पूर्वज के वशज होते है और जिनका प्राय एक ही पेशा, एक-जैसे विचार और एक जैसी रहन-सहन होती है।

जनडी†—स्त्री०[स० जननी] माँ। माता। (स्त्रियाँ)

जन-तंत्र—पु० [ष० त०] वह शासन प्रणाली जिसमे देश या राज्य का शासन जनता द्वारा स्वय अथवा जनता के प्रतिनिधियो द्वारा होता हो।

जनता—स्त्री०[स० जन+तल्-टाप] १ जन का भाव। २ किसी देश या राज्य मे रहनेवाले कुल व्यक्तियो की सज्ञा। प्रजा। जन-साधारण।

जन-त्रा—स्त्री०[जन√त्रै (रक्षा करना)+क] छाता।

जनथोरी—स्त्री०[देश०] कुकडबेल। बदाल।

जन-देव—पु०[ष० त०] १ राजा। २ महाभारत मे वर्णित मिथिला का एक राजा।

जन-धन—पु०[द्व० स०] मनुष्य और उसकी सपत्ति।

जनधा—पु०[स० जन√धा (रखना)+क्विप्] अग्नि। आग।

जनन—पु०[स०√जन् (उत्पत्ति)+ल्युट्-अन] १ जनने अर्थात् सतान को जन्म देने की क्रिया या भाव। २ उत्पत्ति। ३ आविर्भाव। ४ [√जन्+णिच्+ल्यु-अन] पिता। ५ कुल। वश। ६ ईश्वर।

जनन-गति—स्त्री०[ष० त०] किसी एक वर्ष मे किसी एक स्थान पर बसे हुए एक हजार व्यक्तियो के पीछे जन्मे हुए बच्चो की सख्या। (बर्थरेट)

जनना—स०[स० जनन] जन्म देकर बच्चो को अस्तित्व मे लाना। जन्म देना। प्रसव करना।

जननाशौच—पु०[स० जनन-अशौच तृ० त०] वह अशौच जो घर मे बच्चे के जन्म लेने पर लगता है। वृद्धि।

जननि—स्त्री०=जननी।

जननिर्देश—पु० [स०] आधुनिक राजनीति मे, जनता के प्रतिनिधियो, विधान सभाओ आदि के निश्चयो या प्रस्तावित कार्यों आदि के सबध मे की जानेवाली वह व्यवस्था जिसके अनुसार यह जाना जाता है कि मत-दाता वर्ग उस बात के पक्ष मे है या नही। (रेफरेण्डम)

जननी—स्त्री०[स०√जन्+अनि-ङीष्]जन्म देने वाली स्त्री। माँ। माता।

जननेंद्रिय—स्त्री०[स० जनन-इद्रिय ष० त०] वह इद्रिय जो जनने (जैसे-योनि) या जनाने (जैसे-लिंग) का काम करती हो।

जन-पद—पु०[ब० स०] [वि० जान-पद, जानपदिक, जनपदीय] १ मनुष्यो से बसा हुआ स्थान। बस्ती। २ किसी राज्य की वह समस्त भूमि जिसमे केवल राजधानी का क्षेत्र सम्मिलित न हो। राजधानी के अतिरिक्त बाकी सारा राज्य। ३ किसी देश का वह अश या भाग जिसमे एक ही तरह की बोली बोलनेवाले लोग बसते हो। सूबा।

जनपद-कल्याणी—स्त्री० [ष० त०] वेश्या।

जनपदी (दिन्)—पु० [स० जनपद+इनि] जन-पद का शासक।

जनपदीय—वि० [स० जनपद+छ—ईय] जनपद-सबधी। जनपद का।

जन-पाल—पु० [जन√पल् (पालन करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ मनुष्यो का पालन करनेवाला व्यक्ति। २ राजा। ३ सेवक।

जन-प्रवाद—पु०[स० त०] जनता मे फैली हुई कोई बात।

जन-प्रिय—वि०[ष० त०] [भाव० जनप्रियता] १ (व्यक्ति) जो जनता को प्रिय हो। जैसे—जनप्रिय नेता। २ (बात आदि) जिसे जन-साधारण उचित या वाछनीय समझते हो। जैसे—जनप्रिय विचार या सिद्धात। ३ धनिया। ४ सहिंजन का पेड।

जन-प्रिया—स्त्री०[ष० त०] हुलहुल का साग।

जनबगुल—पु०[स० जन+हिं० बगुला] बगुलो की एक जाति।

जनम*—पु०[स० जन्म] १ जन्म। २ जीवन-काल। आयु। जिदगी।
मुहा०—जनम गँवाना या घालना=व्यर्थ जीवन नष्ट करना। उदा०—देखत जनम आपनो घालै। —कबीर। **जनम हारना**=(क) व्यर्थ सारा जीवन बिताना। (ख) जन्म भर किसी का दास होकर रहने की प्रतिज्ञा करना।

जनमघूँटी—स्त्री०[हिं० जनम+घूँटी] वह घूँटी जो बच्चो को जन्म लेने के बाद कुछ दिनो तक दी जाती है।
मुहा० (किसी बात का) जन्म-घूँटी मे पड़ना=जन्म से ही (किसी बात का) अभ्यास या चसका होना।

जनम-जला—वि०[हिं० जनम+जलना] [स्त्री० जनम जली] अभागा। भाग्यहीन।

जन-मत—पु०[ष० त०] १ आधुनिक राजनीति मे किसी विशिष्ट प्रदेश या स्थान के वयस्क निवासियो का वह मत जो किसी प्रकार की सधि या सार्वराष्ट्रीय सस्था के निर्णय के अनुसार यह जानने के लिए लिया जाता है कि वे लोग किस अथवा किस के राज्य या शासन मे रहना चाहते है। (प्लेबिसाइट) २ दे० 'लोकमत'।

जनमधरती—†स्त्री०=जन्मभमि।

जनमना—अ०[स० जन्म] १ जन्म लेकर अस्तित्व मे आना। २ खेल मे मरे हुए व्यक्ति का या मरी हुई गोटी का फिर से खेल मे सम्मिलित होने के योग्य होना।
स० सतान को जन्म देना। प्रसव करना।

जनमपत्री†—स्त्री०=जन्मपत्री।

जन-मरक—पु०[ष० त०] वह बीमारी या रोग जिससे बहुत से लोग मरते हो। महामारी।

जन-मर्यादा—स्त्री०[ष० त०] लौकिक आचार या रीति।

जनमसँघाती—वि०[हिं० जनम+सघाती] १ जिसका साथ जन्म से ही रहा हो। २ जो जन्म भर साथ रहे।
पु० मित्र। घनिष्ठ मित्र।

जनमाना—स०[हिं० जनम] १ प्रसूता को प्रसव कार्य मे सहायता देना। २=जनमना।

जनमारो*—पु०=जन्म।

जन-मुरीद—वि०[फा० जन मुरीद] (व्यक्ति) जो अपनी पत्नी का अधभक्त हो। पत्नी का गुलाम।

जनमेजय—पु [स० जन√एज् (कँपाना)+णिच्+खश्, मुम्]=जन्मेजय।

जन-यात्रा—स्त्री०[स० ष० त०] बहुत से लोगो का मिल-जुलकर प्रदर्शन आदि के लिए शहर के प्रमुख कूचो, बाजारो आदि मे से होकर जाना। जलूस।

जनयिता (तृ)—पु० [स०√जन् (उत्पत्ति)+णिच्+तृच्] [स्त्री० जनयित्री] पिता। बाप।

जन-रजन—वि० [ष० त०] जनता का रजन करनेवाला।

जनरल—पु० [अ०] सेना का एक बहुत बडा अधिकारी। सेनानायक। सेना-पति।

जन-रव—पु०[ष० त०] १ लोगो का कोलाहल। शोर। २ [स० त०] अफवाह। जनश्रुति।

जनवरी—स्त्री०[अ० जनअरी] ईसवी सन् का पहला महीना।

जन-वल्लभ—पु०[ष० त०] श्वेत रोहित का पेड। सफेद रोहिडा।
वि० जनता का प्यारा। जन-प्रिय।

जनवाई—स्त्री०[हिं० जनवाना] १ जनवाने अर्थात् प्रसव मे सहायक होने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ दे० 'जनाई'।

जन-वाद—पु० जनरव। (दे०)

जनवाना—स० [हिं० 'जनना' का प्रे० रूप] [भाव० जनवाई] जनने अर्थात् प्रसव करने मे सहायक होना।
स० [हिं० 'जानना' का प्रे० रूप] जानने या ज्ञान प्राप्त करने मे सहायक होना। ज्ञात या विदित कराना। जनाना। (दे०)

जन-वास—पु० [ष० त०] १ मनुष्यो के बसने या रहने का स्थान। २=जनवासा।

जनवासा—पु०[स० जनवास] वह स्थान जहाँ पर बराती ठहरते या ठहराये जाते है। बरातियो के ठहरने की जगह।

जन-शून्य—वि०[तृ० त०] सुनसान। निर्जन।

जन-श्रुत—वि०[स० त०] १ जिसके सबध मे लोगो ने सुना हो। २ प्रसिद्ध।

जन-श्रुति—स्त्री०[ष० त०] १ वह बात जिसे लोग परपरा से सुनते चले आये हो। २ अफवाह।

जन-सख्या—स्त्री०[ष० त०] १ किसी प्रदेश, राज्य या स्थान पर बसे हुए कुल लोग। २ उक्त बसे हुए लोगो की सख्या।

जन-साधारण—पु०[कर्म० स०] १ जनता। २ समाज का कोई एक व्यक्ति।

जन-सेवक—पु०[ष० त०] १ वह जो जन-साधारण या जनता की सेवा के काम करता हो। २ दे० 'लोक-सेवक'।

जन-सेवा—स्त्री०[ष० त०] ऐसे काम जो जन-साधारण या जनता के उपकार या हित के लिए हो। (पब्लिक सर्विस)

जन-स्थान—पु०[ष० त०] दडकारण्य। दडकवन।

जन-हरण—पु०[ष० त०] एक दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीस लघु और एक गुरु होता है।

जन-हित—पु० [ष० त०] १ जनता या जन-साधारण का हित। २ जनता के हित का काम।

जन-हीन—वि०[तृ० त०] निर्जन।

जनात—पु०[जन-अत] १ वह स्थान जहाँ मनुष्य न रहते हो। २ वह प्रदेश जिसकी सीमा निश्चित हो। ३ यम।
वि० मनुष्यो का अत या नाश करनेवाला।

जनातिक—पु०[जन-अतिक ष० त०] नाटक मे, ऐसी सांकेतिक बात-चीत जिसका आशय औरो की समझ मे न आता हो।
जना—स्त्री० [सं०√जन्+णिच्+अ—टाप्] १ उत्पत्ति। पैदाइश। २ माहिष्मती के राजा नीलध्वज की स्त्री।
पु०=जन (आदमी)।
जनाई—स्त्री० [हिं० जनना] १ जनाने अर्थात् प्रसव कराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ प्रसव मे सहायक होनेवाली दाई।
स्त्री० [हिं० जनाना=जतलाना] किसी बात का परिचय या परिज्ञान कराने की क्रिया या भाव।
जनाउ*—पु०=जनाव।
जनाकीर्ण—वि०[जन-आकीर्ण तृ० त०] १ (प्रदेश) जिसमे बहुत अधिक व्यक्ति बसे हुए हो। घनी बस्तीवाला। २ (स्थान) जो मनुष्यो से भरा हुआ हो।
जनाचार—पु०[जन-आचार ष० त०] लोकाचार।
जनाजा—पु०[अ० जनाज] १. शव। २ अरथी या वह सदूक जिसमे मुसलमान लोग शव रखकर कब्रिस्तान ले जाते है।
जनाती—पु[हिं० बराती का अनु० ?] विवाह के अवसर पर कन्या-पक्ष के लोग। घराती।
जनाधिनाथ—पु०[जन-अधिनाथ ष० त०] जनाधिप।
जनाधिप—पु०[जन-अधिप ष० त०] १ राजा। २ विष्णु।
जनानखाना—पु० [फा० जनान खान] घर या महल का वह भीतरी भाग जिसमे औरते या रानियाँ रहती है।
जनाना—स० [सं० ज्ञापय, जानाय, प्रा० जाणावेइ] किसी घटना, चीज या बात की जानकारी किसी को कराना। अवगत कराना।
स० [सं० जनन, हिं० जनना]प्रसवकाल मे गर्भिणी की सहायता करना। प्रसव कराना।
वि०[फा० जनान] [स्त्री० जनानी, भाव० जनानापन] १ स्त्रियो का-सा आचरण अथवा उन जैसे हाव-भाव दिखलानेवाला (व्यक्ति)। २ स्त्रियो का-सा। ३ केवल स्त्रियो मे चलने या होनेवाला। जैसे—जनानी धोती।
पु० १ हीजडा। नपुसक। २ अतपुर।
स्त्री० पत्नी। जोरू।
जनानापन—पु०[फा० जनान +हिं० पन (प्रत्य०)] स्त्री होने की अवस्था, गुण या भाव। स्त्रीत्व।
जनानी—स्त्री०[हिं० जनाना] १ स्त्री। २ पत्नी। जोरू।
जनाब—पु०[अ०] महाशय। महोदय।
जनाब-आली—पु०[अ०] मान्य महोदय।
जनाबा—स्त्री०[अ०] श्रीमती।
जनारदन—पु०[सं० जनार्दन] विष्णु।
जनार्दन—पु० [सं० जन√अर्द् (पीडित करना)+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु।
जनाव—पु०[हिं० जनाना=जतलाना] जनाने अर्थात् जानकारी कराने की क्रिया या भाव।
पु०[हिं० जनाना=प्रसव कराना] प्रसव करने या कराने की क्रिया या भाव।

जनावर—पु०=जानवर।
जनाशन—वि० [सं० जन√अश् (खाना)+ल्यु—अन] मनुष्यो को भक्षण करनेवाला।
पु० भेडिया।
जनाश्रम—पु० [जन-आश्रम ष० त०] वह आश्रम या स्थान जिसमे मनुष्य जाकर कुछ समय के लिए रहते हो। जैसे—धर्मशाला, सराय आदि।
जनाश्रय—पु०[जन-आश्रय ष० त०] १ घर। मकान। २ धर्मशाला। ३ सराय। ४ किसी विशेष कार्य के लिए बनाया हुआ मडप।
जनि—स्त्री० [सं० जन्+इन्] १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २ नारी। स्त्री। ३ पत्नी। ४ माता।
अव्य० मत। नही। उदा०—नहँ तहँ जनि छिन छोह न छाँडिये। —तुलसी।
स्त्री०=जनी।
जनिक—वि०[सं० जनक] १ जन्म देनेवाला। २ उत्पादक।
जनिका—स्त्री०[हिं० जनाना] पहेली। बुझौवल।
स्त्री० [सं० जनि+कन्—टाप्]=जनि। (दे०)
जनित—वि० [सं०√जन्+णिच्+क्त] १ जन्मा या उपजा हुआ। २ जना हुआ। ३ किसी के कारण या फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाला। जैसे—रोगजनित दुर्बलता।
जनिता (तृ)—पु० [सं०√जन्+णिच्+तृच्, णिलोपनि०] वह जो किसी को जनाये अर्थात जन्म दे। जनक। पिता।
जनित्र—पु० [सं० जनि+त्रल्] जन्म-स्थान।
जनित्री—स्त्री०[सं० जनितृ+ङीप्] वह जो किसी को जन्म दे। माँ। माता।
जनित्व—पु० [सं०√जन्+णिच्+इत्वन्] [स्त्री० जनित्वा=माता] पिता।
जनियाँ*—स्त्री०=जानी।
जनी—स्त्री०[सं० जनि+ङीष्] १ प्रकृति, जो सब को उत्पन्न करनेवाली मानी गई है। २ माता। ३ स्त्री। ४ बेटी। ५ दासी।
वि० स्त्री० जिसे जना गया हो। पैदा की हुई।
जनु—स्त्री०[सं०√जन्+उ] जन्म। उत्पत्ति।
*अव्य०[हिं० जानना] मानो।
जनुक—अव्य०[हिं० जनु] जैसे। कि।
जनू—स्त्री०[सं० जनु+ऊङ्] जन्म।
जनून—पु०[अ० जुनून] पागलपन। उन्माद।
जनूनी—वि०[अ०] पागल।
जनूब—पु०[अ०] दक्षिण (दिशा)।
जनूबी—वि०[अ० जनूब] दक्षिण दिशा का। दक्षिणी।
जनेंद्र—पु० [सं० जन-इंद्र ष० त०] राजा।
जनेऊ—पु०[सं० यज्ञोपवीत] १ हिन्दुओ मे बालको का यज्ञोपवीत नामक सस्कार। २ सूत के धागे की वह तेहरी माला जो उक्त सस्कार के समय गले मे पहनाई जाती है। यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र।
जनेत—स्त्री० [सं० जन+एत (प्रत्य०)] बरात। उदा०—जम से बुरी जनेत।—कहा०।
जनेता—पु० [सं० जनयिता] पिता। बाप। (डिं०)

जनेरा—पु० [हिं० ज्वार] बाजरे की एक जाति।

जनेव—पु०=जनेऊ।

जनेवा—पु० [हिं० जनेऊ] १ किसी चीज के चारो ओर जनेऊ की तरह पडी हुई धारी या लकीर। २ एक प्रकार की घास। ३ तलवार का वह वार जो कधे पर पडकर तिरछे बल (दूसरी ओर) कमर तक काट करे।

जनेश—पु० [स० जन-ईश ष० त०] १ ईश्वर। २ राजा।

जनेष्टा—स्त्री० [स० जन-इष्टा ष० त०] १ हल्दी। २ चमेली का पेड। ३ पपडी। ४ एक औषधि।

जनैया—वि० [हिं० जनना+ऐया (प्रत्य०)] जानने या जनानेवाला। जो स्वय जानता हो अथवा किसी को कुछ जतलाता हो।

जनो—पु०=जनेऊ।

अव्य० [हिं० जनु] मानो।

जनोपयोगी (गिन्)—वि० [स० जन-उपयोगिन् ष० त०] जन-साधारण के लिए उपयोगी।

जनौ—अव्य० [हिं० जानना] मानो।

जनौघ—पु० [स० जन-ओघ ष० त०] मनुष्यो का समूह। भीड।

जन्नत—पु० [अ०] १ उद्यान। बाग। २ मुसलमानो के अनुसार स्वर्ग।

जन्नती—वि० [अ०] १ जन्नत मे होने या रहनेवाला। २ स्वर्गीय।

जन्म (न्)—पु० [स० √जन् (उत्पत्ति)+मनिन्] १ गर्भ से निकलकर जीवन धारण करने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति। पैदाइश। २ अस्तित्व मे आना। आविर्भाव। जैसे—नये विचार जन्म लेते हैं। ३ जीवन। जिन्दगी। ४ जीवन-काल। आयु। जैसे—जन्म भर वह पछताता रहा।

जन्मअष्टमी—स्त्री०=जन्माष्टमी।

जन्म-कील—पु० [ष० त०] विष्णु।

जन्म-कुण्डली—स्त्री० [ष० त०] १ फलित ज्योतिष मे, वह चक्र जिसमे जन्मकाल के ग्रहो की स्थिति बताई गई हो। † २ दे० 'जन्मपत्री।'

जन्म-कृत्—पु० [स० जन्म√कृ (करना)+क्विप्, तुक् आगम] जनक। पिता।

जन्म-क्षेत्र—पु० [ष० त०] जन्मस्थान। जन्मभूमि।

जन्म-गत—वि० [तृ० त०] जन्म से ही साथ लगा रहने या होनेवाला।

जन्म-ग्रहण—पु० [ष० त०] गर्भ से निकलकर जीवन प्राप्त करने की क्रिया या भाव।

जन्म-तिथि—स्त्री० [ष० त०] जन्म-दिन।

जन्मतुआ—वि० [हिं० जन्म+तुआ (प्रत्य०)] [स्त्री० जन्मतुई] (बच्चा) जिसको जन्म लिए अभी थोडे ही दिन हुए हो। शिशु।

जन्म-दिन—पु० [ष० त०] १ वह दिन जिसमे किसी ने जन्म लिया हो। किसी के जीवन धारण करने का दिन। २ तिथि, तारीख आदि के विचार से प्रति वर्ष पडनेवाला किसी के जन्म लेने का दिन जो प्राय उत्सव के रूप मे मनाया जाता है। वर्ष गाँठ। (बर्थ डे)

जन्म-दिवस—पु० [ष० त०] जन्म-दिन। (दे०)

जन्म-नक्षत्र—पु० [ष० त०] वह नक्षत्र जिसके भोग-काल मे किसी का जन्म हुआ हो।

जन्मना—अ० [स० जन्म+हिं० ना(प्रत्य०)] १ जन्म होना। जन्मग्रहण करना। पैदा होना। २ अस्तित्व मे आना।

स० १ जन्म देना। प्रसव करना। २ अस्तित्व मे लाना।

अव्य० जन्म के विचार से। जन्म की दृष्टि से। जैसे—जन्मना जाति मानना।

जन्म-पजी—स्त्री० [ष० त०] वह पजी जिसमे जन्म लेनेवाले बच्चो का जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम आदि लिखा जाता है। (बर्थ रजिस्टर)

जन्म-पति—पु० [ष० त०] १ कुण्डली मे जन्म राशि का मालिक। २ जन्म लग्न का स्वामी।

जन्म-पत्र—पु०=जन्मपत्री।

जन्म-पत्रिका—स्त्री०=जन्म-पत्री।

जन्म-पत्री—स्त्री० [ष० त०] १ वह पत्र या खर्रा जिसमे किसी के जन्म-काल के समय के ग्रहो की स्थिति, उनकी दशा, अतर्दशा आदि और उनके फलो आदि का उल्लेख होता है। (हारस्कोप) २ किसी घटना या कार्य का आदि से अन्त तक का सारा विवरण।

जन्म-पादप—पु० [ष० त०] वश वृक्ष। शजरा।

जन्म-प्रतिष्ठा—स्त्री० [तृ० त०] १ माता। माँ। २ जन्म होने का स्थान।

जन्म-प्रमाणक—पु० [स०] वह प्रमाण-पत्र जिसमे किसी व्यक्ति के जन्म-काल, जन्मतिथि, जन्म-स्थान आदि का आधिकारिक विवरण होता है। (बर्थ सर्टिफिकेट)

जन्म-भूमि—स्त्री० [ष० त०] वह देश या राज्य (अथवा सकुचित अर्थ मे नगर या ग्राम) जिसमे किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-भृत्—पु० [स० जन्म√भृ (भरण)+क्विप्, तुक् आगम] जीव। प्राणी।

जन्म-योग—पु० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे, ग्रहो की वह स्थिति जो इस बात की सूचक होती है कि अमुक अवसर या समय पर घर मे सतान का जन्म होगा।

जन्म-राशि—स्त्री० [ष० त०] वह राशि जिसमे किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-वर्त्म (न्)—पु० [ष० त०] योनि। भग।

जन्म-विधवा—स्त्री० [तृ० त०] अक्षत योनि। बाल-विधवा।

जन्म-सिद्ध—वि० [तृ० त०] जिसकी सिद्धि या प्राप्ति जन्म से ही होती या मानी जाती हो। जैसे—जन्म-सिद्ध अधिकार।

जन्म-स्थान—पु० [ष० त०] १ जन्मभूमि। २ माता का गर्भ। ३ कुडली मे वह स्थान जिसमे जन्म समय के ग्रहो का उल्लेख होता है।

जन्मांतर—पु० [जन्म-अतर मयू० स०] एक बार मरने के बाद होनेवाला दूसरा जन्म।

जन्मांध—वि० [जन्म-अध तृ० त०] जो जन्म से ही अधा हो।

जन्मा—पु० [स० जन्मन्] समस्तपदो के अत मे, वह जिसका जन्म हुआ हो। जैसे—अग्र जन्मा, नेत्र जन्मा आदि।

वि० जन्मा हुआ। जो पैदा हुआ हो।

जन्माधिप—पु० [जन्म-अधिप ष० त०] १ शिव का एक नाम। २ जन्म राशि का स्वामी। ३ जन्म लग्न का स्वामी।

जन्माना—स० [हि० जन्मना] जन्म देना।

जन्माष्टमी—स्त्री० [जन्म-अष्टमी ष० त०] भाद्रपद की कृष्णाष्टमी। **विशेष**—भगवान कृष्ण का जन्म इसी अष्टमी की रात्रि मे हुआ था।

जन्मास्पद—पु० [जन्म-आस्पद ष० त०] जन्मभूमि। जन्मस्थान।

जन्मी (न्मिन्)—पु० [स० जन्म+इनि] प्राणी। जीव।
वि० जन्मा हुआ।

जन्मेजय—पु० [स० जनमेजय] १ विष्णु। २ एक प्रसिद्ध राजा जो हस्तिनापुर के महाराज परीक्षित का पुत्र था।
विशेष—इसी राजा ने तक्षक नाग से अपने पिता का बदला लिया था और एक नागमेध यज्ञ किया था।

जन्मेश—पु० [जन्म-ईश ष० त०] फलित ज्योतिष मे, वह ग्रह जो किसी की जन्म-राशि का स्वामी हो।

जन्मोत्सव—पु० [जन्म-उत्सव ष० त०] १ किसी के जन्म के समय होनेवाला उत्सव। २ किसी के जन्म-दिन के स्मरण मे होनेवाला उत्सव।

जन्य—वि० [स० जन+यत्, √जन् (उत्पत्ति)+ण्यत्] [भाव० जन्यता] १ जिसका सबध जन अर्थात् मनुष्य से हो। जन-सबधी। २ जिसे मनुष्य ने उत्पन्न किया हो। ३ किसी जाति, देश या राष्ट्र से सबध रखनेवाला। जातीय, देशीय या राष्ट्रीय। ४ किसी चीज से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—विचारजन्य।
पु० १ साधारण मनुष्य। २ राष्ट्र। ३ पुत्र। ४ पिता। ५ जन्म। ६ किंवदती। ७ लडाई। ८ बाजार। ९ विवाह के समय दूल्हे के साथ जानेवाला बालक। सहबाला।

जन्यता—स्त्री० [स० जन्य+तल्—टाप्] जन्म होने की अवस्था या भाव।

जन्या—स्त्री० [स० जन्य+टाप्] १ माता की सखी। २ वधू की सहेली। ३ वधू।

जन्यु—पु० [स० जन+युच्] १ जीव। प्राणी। २ अग्नि। ३ ब्रह्मा।

जप—पु० [स०√जप् (जपना)+अप्] १ जपने या जाप करने की क्रिया या भाव। २ वह शब्द, पद या वाक्य जिसका उच्चारण भक्तिपूर्वक बार-बार किया जाय। ३ पूजा, सध्या आदि मे मत्रो का सख्या-पूर्वक पाठ करना। जप करने मे मत्र की सख्या का ध्यान रखना पडता है, इसलिए जप मे माला की भी आवश्यकता होती है।

जपजी—पु० [हि० जप] सिक्खो का प्रसिद्ध ग्रथ जिसका वे प्राय पाठ करते है।

जपतप—पु० [हि० जप+तप] सध्या, पूजा, और पाठ आदि। पूजा-पाठ।

जपता—स्त्री० [स० जप+तल्-टाप्)] जपने की क्रिया या भाव।

जपन—पु० [स०√जप्+ल्युट्-अन] जपने की क्रिया या भाव। जप।

जपना—स० [स० जपन] १ धार्मिक फल-प्राप्ति के लिए किसी शब्द, पद, वाक्य आदि को भक्ति या श्रद्धापूर्वक बार-बार कहना। २ पूजा, सध्या, यज्ञ आदि करते समय सख्यानुसार मन ही मन उच्चारण करना। ३ यज्ञ करना। ४ किसी की कोई चीज हजम करना। हडपना। (बाजारू)

जपनी—स्त्री० [हि० जपना] १ माला जिसे जप करते समय फेरा जाता है। जप करने की माला। २ वह थैली जिसमे माला और हाथ डाल-कर जप किया जाता है। गुप्ती। गोमुखी। ३ जपने की क्रिया या भाव। (क्व०) ४ बार-बार कोई बात बहुत आग्रहपूर्वक कहना। रट।

जपनीय—वि० [स०√जप्+अनीयर्] जिसको जपना चाहिए। जपे जाने योग्य।

जप-माला—स्त्री० [स० मध्य० स०] वह माला जो जप करने के समय फेरी जाती है। जपनी।

जपा—स्त्री० [स०√जप्+अच्-टाप्] जवा। अडहुल।
पु० [स० जप] जप करनेवाला व्यक्ति। उदा०—तपा जपा सब आसन मारे।—जायसी।

जपाना†—स० [हि० 'जपना' का प्रे० रूप] दूसरे से जप कराना।

जपालक्त—पु० [जपा-अलक्त उपमि० स०] एक प्रकार का अलक्तक जो गहरे लाल रग का होता है।

जपिया*—वि०=जपी।

जपी—वि० [हि० जपना+ई (प्रत्य०)] जप करनेवाला।

जप्त—वि०=जब्त।

जप्तव्य—वि० [स०+जप्+तव्यत्] जपे जाने के योग्य। जपनीय।

जप्ती—स्त्री०=जब्ती।

जप्य—वि० [स०√जप्+ण्यत्] जपे जाने के योग्य।

जफर—पु० [फा० जफर] तावीज, यत्र आदि बनाने की कला या काम। पु० [अ०] विजय।

जफा—स्त्री० [फा०] १ अन्यायपूर्ण कार्य या व्यवहार। २ अत्याचार।

जफाकश—वि० [फा०] १ अन्यायपूर्ण व्यवहार या अत्याचार सहन करनेवाला। सहनशील। २ परिश्रमी।

जफीरी—स्त्री० [अ०] १ सीटी अथवा उससे किया जानेवाला शब्द। २ मुँह मे दो उँगलियाँ रखकर बजाई जानेवाली सीटी। ३ एक प्रकार की कपास।

जफील—स्त्री०=जफीरी।

जफीलना—अ० [हि० जफील] सीटी बजाना। सीटी देना।

जब—अव्य० [स० यावत्] १ जिस समय। जिस वक्त (इस अर्थ मे इसका नित्य सबधी 'तब' है)। जैसे—जब सबेरा होता है तब अध-कार आप से आप नष्ट हो जाता है। २ जिस अवस्था मे। जिस दशा या हालत मे। (इस अर्थ मे इसका नित्य सबधी 'तो' है)। जैसे—जब उन्हे क्रोध चढता है तो उनका चेहरा लाल हो जाता है।
पद—**जब कभी**=किसी समय। **जब जब**=जिस जिस समय। **जब तब**=कभी-कभी। जैसे—वहाँ जब-तब ही जाना होता है। **जब देखो तब**=प्राय। अक्सर। जैसे—जब देखो तब तुम खेलते ही रहते हो। **जब होता है तब**=अक्सर। प्राय।

जबडा—पु० [स० जभ] मुँह मे की उन दो (एक ऊपर तथा एक नीचे) हड्डियो मे से हर एक जिसमे दाँत जमे या जडे रहते हैं।
पद—**जबड़े की तान**=गवैयो की एक प्रकार की तान (हलक की तान से भिन्न) जो साधारण या निम्न कोटि की मानी जाती है।

जबर—वि० [अ० जबर] १ बलवान। बली। २ पक्का। दृढ। मजबूत।
जबरई—स्त्री० [हिं० जबर] १ जबरदस्ती। २ ज्यादती।
जबर-जग जबरदस्त,—वि० [फा०] १ बहुत बडा या बलवान। २ उच्च। श्रेष्ठ।
वि०=जबरदस्त।
जबरदस्त—वि० [फा०] [भाव०, जबरदस्ती] १ (व्यक्ति) जो बहुत अधिक शक्तिशाली हो तथा स्वभाव से कडा हो। जैसे—वह जबरदस्त हाकिम है। २ (वस्तु) जो बहुत ही दृढ या मजबूत हो। ३ (कार्य) जो बहुत अधिक कठिन हो। जैसे—जबरदस्त सवाल।
जबरदस्ती—स्त्री० [फा०] १ जबरदस्त या शक्तिशाली होने की अवस्था या भाव। २ कोई ऐसा कार्य या व्यवहार जो बलपूर्वक तथा कडाई के साथ किसी के प्रति किया गया हो। जैसे—यह सरासर आपकी जबरदस्ती है।
अव्य० १ बलपूर्वक। जैसे—वे जबरदस्ती अदर घुस आये। २ दबाव पडने पर। जैसे—जबरदस्ती खाना पडा।
जबरन्—अव्य० [अ० जब्रन] बलात्। जबरदस्ती। बलपूर्वक।
जबरा—पु० [अ० जेब्रा] घोडे की तरह का एक जगली जानवर जिसके सारे शरीर पर लबी-लबी सुन्दर काली धारियाँ होती है।
† वि०=जबर।
जबरूत—स्त्री० [अ०] १ महत्ता। २ वैभव। ३ ऊपर के नौ लोको मे से तीसरा। (मुसल०)
जबल—पु० [अ०] पहाड।
जबह—पु० [अ०] १ गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। २ मुसलमानो मे मत्र पढते हुए पशु-पक्षियो आदि का गला रेतकर काटना।
जबहा—पु० [?] जीवट। साहस।
जबाँ—स्त्री०=जबान।
जबान—स्त्री० [फा०] [वि० जबानी] १ मुँह के अन्दर का वह लचीला लबोतरा चिपटा अग, जिसके द्वारा चीजो का स्वाद लिया जाता है, मुँह मे डाली हुई चीजे गले के नीचे उतारी जाती है तथा ध्वनियो का उच्चारण किया जाता है। जीभ।
मुहावरे (क) स्वाद सबधी (कोई चीज) जबान पर रखना=किसी वस्तु का स्वाद चखना। थोडी मात्रा मे कोई चीज खाना। **जबान बिगड़ना**=(क) बीमारी आदि के कारण मुँह का स्वाद खराब होना। (ख) अच्छी-अच्छी, विशेषत चटपटी चीजे खाने का चस्का लगना।
मुहावरे (ख) उच्चारण सबंधी, (किसी की) जबान खींचना या खींच लेना=कोई अनुचित या विरुद्ध बात कहनेवाले को कठोर दड देना। **(किसी की) जबान खुलना**=(क) बहुत समय तक चुप रहने पर किसी का कुछ कहना आरभ करना। (ख) अनुचित या उद्दडतापूर्ण बाते कहने का अभ्यास पडना या होना। **(किसी की) जबान घिस जाना या घिसना**=कोई बात कहते कहते हार जाना। **जबान चलना**=हर समय कुछ न कुछ कहते या बोलते रहना। **जबान चलाना**=(क) जल्दी-जल्दी बाते कहना। (ख) अनुचित बात कहना। **जबान चलाने की रोटी खाना**=केवल लोगो की खुशामद करके जीविका चलाना। **(बच्चे की) जबान टूटना**=छोटे बच्चे की जबान का ऐसी स्थिति मे आना कि वह कठिन शब्दो या सयुक्त वर्णो का उच्चारण कर सके। **जबान डालना**=किसी से किसी प्रकार की प्रार्थना या याचना करना। **(किसी की) जबान थामना या पकड़ना**=कहते हुए को कोई बात कहने से रोकना। **(कोई बात) जबान पर आना**=भूली हुई कोई बात अथवा अवसर के अनुकूल कोई बात याद आना। **जबान पर चढना**=कठस्थ होना। **जबान पर रखना**=सदा स्मरण रखना। जैसे—यह गाली तो उनकी जबान पर रखी रहती है। **जबान पर लाना**=चर्चा या बात कहना। **जबान पर होना**=स्मरण रहना। याद होना। **(किसी की) जबान बद करना**=किसी प्रकार किसी को कुछ कहने से रोकना। **जबान बद होना**=कुछ न कहने को विशेषत उत्तर न देने को विवश होना। **जबान बंदी करना**=किसी की कही हुई बात को उसी के शब्दो मे लिख लेना। **जबान बिगडना**=मुँह से अपशब्द निकलने का अभ्यास होना। **जबान मे लगाम न होना**=अशिष्टता या धृष्टतापूर्वक अनुचित या कठोर बाते कहने का अभ्यास होना। **जबान रोकना**=(क) कुछ कहते-कहते रुक जाना। (ख) किसी को कुछ कहने से रोकना। **जबान सभालना**=मुँह से अनुचित या अशिष्ट शब्द न निकलने देना। **जबान हिलाना**=बहुत दबते हुए कुछ कहना।
२ किसी को दिया हुआ वचन।
मुहा०—जबान देना=कोई काम करने का किसी को वचन देना। **जबान बदलना**=कही हुई बात या दिये हुए वचन से पीछे हट जाना। मुकर जाना। **जबान हारना**=वचन देना।
३ भाषा। बोल-चाल।
जबानदराज—वि० [फा०] [भाव० जबानदराजी] अशिष्टता या धृष्टतापूर्वक बडो से बाते करनेवाला। न कहने योग्य बाते भी बढ-बढकर कहनेवाला।
जबानबदी—स्त्री० [फा०] १ किसी घटना के सबध मे लिखी जानेवाली किसी साक्षी की गवाही। २ मौन। चुप्पी। ३ चुप रहने की आज्ञा।
जबानी—वि० [फा०] १ जबान-सबधी। २ जो केवल जबान से कहा गया हो। मौखिक। ३ जो कहा तो गया हो परन्तु जिसका आचरण या व्यवहार न किया गया हो। जैसे—जबानी जमा-खरच।
जबाला—स्त्री० [स०] छादोग्य उपनिषद् के अनुसार सत्यकाम जाबाल ऋषि की माता का नाम जो एक दासी थी।
जबून—वि० [तु०] १ खराब। बुरा। २ निकृष्ट। निकम्मा।
जब्त—वि० [अ०] १ दबाया या रोका हुआ। जैसे—गुस्सा जब्त करना। २ (वह वैयक्तिक सपत्ति) जो किसी अपराध के दडस्वरूप शासन द्वारा किसी से छीन ली गई हो।
क्रि० प्र०—करना।
जब्ती—स्त्री० [अ० जब्त] जब्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
जब्भा†—पु०=जबहा।
जब्र—वि०=जबर।
जब्रन—अव्य० =जबरन्।
जब्री—वि० [अ०] जबरदस्ती या बलात् किया हुआ।
जभन—पु० [स० यभन] मैथुन। स्त्री-प्रसग।
जम—पु०=यम।
जमक†—पु०=यमक।
जमकना*—अ०=चमकना।

जमकात*—स्त्री०=जमकातर (यम का खाँडा)। उदा०—बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जम केरी।—जायसी।

जमकातर—पु०[सं० यम+हिं० कातर] भवँर।

स्त्री०[सं० यम+कर्त्तरी] १ यम का खाँडा। २ एक प्रकार की तलवार। खाँडा।

जमकाना*—स०[हिं० जमकना का सकर्मक रूप] चमकाना।

जमघट—पु० [हिं० जमना+घट] किसी स्थान पर विशेष काम से आये हुए लोगो की भीड।

जमघटा†—पु०=जमघट।

जमघट्ट†—पु०=जमघट।

जमज*—वि०=यमज।

जमजम—अव्य०[सं० जन्म, पु० हिं० जमना=जन्म लेना] ऐसे आवश्यक और शुभ रूप मे जिसका सब लोग हार्दिक स्वागत करे। जैसे—आप हमारे यहाँ आवे और जमजम आवे।

जम-जाई*—स्त्री०[सं० यम+जाया] मृत्यु। मौत।

जमजोहरा—पु०[देश०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

जमडा*—पु० [हिं० जन्मना] वह जो जन्म दे। पिता। उदा०—अपने जमडा जमडी को छोडा बिलकता।—सॉपा।

जमडाढ़—स्त्री०[सं० यम+हिं० डाढ] शरीर मे भोकने का कटारी की तरह का एक हथियार जिसकी नोक आगे की ओर झुकी हुई होती है।

जमण—स्त्री०=जमुना।

जमदग्नि—पु० [सं०] एक ऋषि जो भृगुवंशी ऋचीक के पुत्र थे तथा जिनकी गणना सप्तर्षियो मे होती है।

जमदढ़—स्त्री०=जम-डाढ।

जम-दिसा*—स्त्री० [सं० यम+दिशा] वह दिशा जिसमे यम का निवास माना जाता है। दक्षिण दिशा।

जमधर†—पु०=जमडाढ।

जमन*—पु० [सं० यवन] [स्त्री० जमनी] १ यवन। २ मुसलमान।

पु०=जमाना।

स्त्री०=यमुना (नदी)।

जमना—अ०[सं० यमन=जकडना, मि० अ० जमा] १ किसी तरल पदार्थ का अधिक शीत के कारण ठोस रूप धारण करना। जैसे—पानी जमना। २ उक्त प्रकार से ठोस रूप धारण किये हुए किसी पर स्थित होना। जैसे—(क) पहाडो पर बरफ जमना। (ख) दीवार पर रग जमना। ३ किसी प्रकार का किसी तरल पदार्थ मे विकार उत्पन्न किये जाने पर उसका ठोस रूप धारण करना। जैसे—दही जमना। ४ दृढतापूर्वक स्थित होना। जैसे—धाक जमना। ५ हाथ से काम करने का पूरा अभ्यास होना। जैसे—लिखने मे हाथ जमना। ६ किसी कार्य का बहुत ही अच्छे तथा प्रभावशाली रूप मे निर्वाह होना। जैसे—खेल या गाना जमना। ७ किसी काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना। जैसे—रोजगार जमना। ८ एकत्र होना। जमा होना। जैसे—भीड जमना। ९ अच्छा प्रहार होना। खूब चोट पडना। जैसे—थप्पड या लाठी जमना। १० घोडे का ठुमक-ठुमककर चलना।

अ०[सं० जन्म+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न होना। उगना। जैसे—(क) जमीन पर घास या पौधा जमना। (ख) सिर पर बाल जमना।

पु०[हिं० जमना=उत्पन्न होना] वह घास जो पहली बरसात के बाद खेतो मे उगती है।

स्त्री०=यमुना।

जमनिका—स्त्री०[सं० जवनिका] १ जवनिका। परदा। २ काई।

जमनोत्तरी—स्त्री० [सं० यमनोत्तरी] हिमालय मे वह स्थान जहाँ से यमुना निकलती है।

जमनौता—पु०[अ० जमानत+औता (प्रत्य०)] वह धन जो अपनी जमानत करने के बदले मे जमानत करनेवाले को दिया जाता है।

जमनौती—स्त्री०=जमनौता।

जमराण*—पु०=यमराज।

जमरूद—पु०[?]जामुन की तरह का एक प्रकार का छोटा लबोतरा तथा सफेद फल।

जमरूल—पु०=जमरूद।

जमवट—स्त्री०[सं० जम्बु पट्ट] जामुन की लकडी का वह गोल चक्कर या पहिया जो कूआँ बनाने मे भगाड मे रखा जाता है और जिसके ऊपर कोठी की जोडाई होती है।

जमवार*—पु० [सं० यमद्वार] यम का द्वार। न्याय-सभा। उदा०—सिंहल द्वीप भए औतारू। जबूद्वीप जाइ जमवारू।—जायसी।

जमशेद—पु०[ईरा०] ईरान का एक प्राचीन राजा जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि इसके पास एक ऐसा प्याला था जिसमे ससार मे होनेवाली घटनाएँ, बाते आदि दिखाई देती थी।

जमहूर—पु०[अ०] १ जन-समूह। २ राष्ट्र।

जमहूरियत—स्त्री०[अ०]=लोकतत्र।

जमहूरी—वि०[अ०] प्रजातात्रिक।

जमाँ—पु०[अ०] 'जमाना' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के अत मे प्राप्त होता है। जैसे—खलीलुलजमाँ, रुस्तमेजमाँ आदि।

जमा—वि०[अ० जमऽ] १ बचा अथवा जोडकर रखा हुआ (धन)। जैसे—दो वर्षों मे मैंने केवल सौ रुपये मुश्किल से जमा किए है।

पद—कुल जमा=सब मिलाकर। कुल। जैसे—कुल जमा वहाँ दस आदमी आये थे।

२ देन अथवा पावने के रूप मे दिया अथवा प्राप्त होनेवाला (धन)। जैसे—(क) सदस्यो का चदा जमा हो गया है। (ख) २० रुपया इनका गेहूँ मद्दे जमा कर लो। ३ (धन आदि) सुरक्षा के लिए किसी के पास अमानत रूप मे रखा हुआ। जैसे—बैंक मे रुपये जमा करना। ४ किसी खाते के आय पक्ष मे लिखा हुआ।

स्त्री०[अ०] १ मूलधन। पूँजी। २ धन। रुपया-पैसा।

मुहा०—जमा मारना=अनुचित रीति से किसी का धन हजम कर लेना।

३ भूमिकर। मालगुजारी। ४ जोड (गणित)। ५ खाते या बही का वह भाग या कोष्ठक जिसमे प्राप्त हुए धन का ब्योरा दिया जाता है। ६ व्याकरण मे किसी शब्द का बहुवचन रूप। जैसे—खबर की जमा अखबार है।

जमाई†—पु०[सं० जामातृ] जँवाई।

स्त्री०[हिं० जमाना] जमाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जमाखर्च—पु०[फा० जमा+खर्च] २ आय और व्यय। २. आय और व्यय का हिसाब और मद।

मुहा०—जमा-खर्च करना=किसी के यहाँ से आई हुई रकम जमा करके उसके नाम पडी हुई रकम का हिसाब पूरा करना।

जमाजथा—स्त्री०[हिं० जमा+गथ=पूँजी]धन-सपत्ति। नगदी और माल।

जमात—स्त्री०[अ० जमाअत] १ कक्षा (विद्यार्थियो की)। २ समुदाय या सघ (व्यक्तियो का)। ३ गरोह।

जमादार—पु० [फा०] भाव० जमादारी] छोटे कर्मचारियो के कार्यो का निरीक्षक एक अधिकारी। जैसे—सेना या सिपाहियो का जमादार, भगियो या मजदूरो का जमादार।

जमादारी—स्त्री०[अ०] जमादार का कार्य या पद।

जमान—पु०[फा० जामिन] जमानतदार।

जमानत—स्त्री०[अ०] १ जिम्मेदारी। २ वह जिम्मेदारी जो इस रूप मे ली जाती है कि यदि कोई व्यक्ति विशेष समय पर कोई काम नही करेगा तो उसका दण्ड या हरजाना हम देगे। जैसे—अदालत ने एक हजार की जमानत पर इसे छोडने को कहा है। ३ वह धन जो किसी की जिम्मेदारी लेते समय किसी अधिकारी के पास जमा किया जाता है।

जमानतनामा—पु०[अ०जमानत+फा० नामा] वह लिखा हुआ कागज जो जमानतदार जमानत के प्रमाण मे लिखकर देता है।

जमानती—पु०[अ० जमानत+ई(प्रत्य०)] जमानत करनेवाला व्यक्ति। वह जो जमानत करे। जामिन। जिम्मेदार।

वि० १ जमानत सबधी। २ जो जमानत के रूप मे हो।

जमाना—स०[हिं० जमना का स० रूप।] १ किसी तरल पदार्थ को शीत पहुँचाकर अथवा और किसी प्रक्रिया से ठोस बनाना। जैसे—दही या बरफ जमाना। २ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दृढतापूर्वक स्थित करना या बैठाना। जैसे—दीवार पर पत्थर जमाना। ३ अच्छी तरह चलने के योग्य बनाना। जैसे—रोजगार या वकालत जमाना। ४ ऐसे ढग से कोई काम करना कि वह यथेष्ट प्रभावशाली सिद्ध हो। जैसे—खेल या महफिल जमाना। ५ कोई काम अच्छी तरह कर सकने की योग्यता प्राप्त करने के लिए बराबर उसका अभ्यास या सपादन करना। जैसे—लिखने मे हाथ जमाना। ७ अच्छी तरह या ज़ोर लगाकर प्रहार करना। जैसे—थप्पड या मुक्का जमाना।

पु०[अ० ज़मान] १ काल। समय।

पद—जमाने की गर्दिश=समय का फेर।

मुहा०—(किसी का) जमाना बदलना या पलटना=किसी की अवस्था या स्थिति बदल जाना।

२ सौभाग्य का समय। जैसे—उनका भी जमाना था। ३ सारी सृष्टि। ससार।

मुहा०—जमाना देखना=ससार की गति-विधियाँ देखना। **जमाना देखे होना**=ससार की गति-विधियो का ज्ञान होना। अनुभवी होना।

पद—जमाने भर का=ससार मे जितना हो सकता हो उतना सब। बहुत अधिक। जैसे—उन्हे तो जमाने भर का सुख चाहिए।

४ ससार के लोग। जैसे—जमाना जो चाहे सो कहे आप किसी की नही सुनेगे।

जमानासाज—वि० [फा०] [भाव० जमानासाजी] १ (व्यक्ति) जो समय विशेष के अनुकूल अपने को ढाल सके। २ विभिन्न परिस्थितियो मे विभिन्न रूप धारण करनेवाला।

जमाबदी—स्त्री०[अ०+फा०] पटवारी का वह खाता जिसमे असामियो के नाम, उनसे मिलनेवाले लगान की रकमे आदि लिखी जाती है।

जमामार—वि०[हिं० जमा+मारना] दूसरो की सपत्ति अनुचित रूप से ले लेनेवाला।

जमाल—पु० [अ०] १ बहुत सुन्दर रूप। २ सौदर्य। खूबसूरती।

जमालगोटा—पु०[स०जयपाल]एक पौधा जिसका बीज बहुत अधिक रेचक होता है। जयपाल। दतीफल।

जमाली—वि०[अ०] सुन्दर रूपवाला।

जमाव—पु० [हिं० जमाना] १ एक स्थान पर बहुत-सी चीजो या व्यक्तियो के इकट्ठे होने की अवस्था या भाव। २ जमने, जमाने या जमे हुए होने की अवस्था या भाव।

जमावट—स्त्री०[हिं० जमाना] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।

जमावडा—पु०[हिं० जमना=एकत्र होना] एक स्थान पर इकट्ठे होनेवाले व्यक्तियो का समूह।

जमींकद—पु०[फा० जमीन+कद] सूरन। ओल।

जमींदार—पु०[फा०] जमीन का मालिक। भूमि का स्वामी। विशेषत वह व्यक्ति जो किसानो को लगान पर अपनी जमीन जोतने-बोने को देता है।

जमींदारा†—पु०=जमीदार।

जमींदारी—स्त्री०[फा०] १ जमीदार होने की अवस्था, भाव या पद। २ जमीदार की वह भूमि जिसका लगान वह उन काश्तकारो से वसूल करता है जिसे वे जोतते-बोते हैं।

विशेष—अब इस प्रथा का प्राय अत हो चुका है।

जमीदोज—वि०[फा०] १ जमीन से मिला या सटा हुआ। २ जो जमीन पर गिरा या ढा कर उसके बराबर कर दिया गया हो। ३ भूगर्भ मे स्थित।

जमी—स्त्री०[स० यमी] यम की बहन। यमी।

वि०[स० यमिन्] यम या सयमपूर्वक रहनेवाला।

जमीन—स्त्री०[फा०]१ सौर जगत् का वह उपग्रह जिसमे हम लोग रहते है। पृथ्वी। २ उक्त उपग्रह का ठोस तल (समुद्र से भिन्न) धरातल।

पद—जमीन आसमान का फरक=बहुत बडा तथा स्पष्ट अतर या भेद। **जमीन का गज**—व्यक्ति जो सदा इधर-उधर घूमता-फिरता रहता हो।

मुहा०—जमीन आसमान एक करना=किसी काम के लिए बहुत अधिक प्रयत्न करना। **जमीन आसमान के कुलाबे मिलाना**=(क) शेखी बघारना। लबी-चौडी हाँकना। डीग मारना। (ख) तोड-जोड मिलाना। चालाकी करना। **जमीन का पैरो तले से निकल या सरक जाना**=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि होश-हवाश ठिकाने न रहे। **जमीन चूमने लगना**=जमीन पर पट गिरना। **(किसी को)] जमीन दिखाना**=जमीन पर गिराना या पटकना। बुरी तरह से पराजित या परास्त करना। **जमीन पर पैर न रखना**=अकडकर अथवा बडप्पन दिखाते हुए कोई काम करना। ऐठ या शेखी दिखलाना। **जमीन पर पैर न पडना**= बहुत अभिमान होना।

३ उक्त के आधार पर, ठोस तल अर्थात् धरातल का कोई कोई अश या भाग। जैसे—ऊँची या नीची जमीन।

मुहा०—जमीन पकड़ना=किसी स्थान पर जमकर बैठना।

४ वह आधार या सतह जिस पर बेल-बूटे आदि कढे, छपे या बने हुए हो। जैसे—इस धोती की जमीन सफेद और धारियाँ पीली है। ५ वह सामग्री जिसका उपयोग किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने मे आधार रूप से किया जाय। जैसे—अतर खीचने मे चदन की जमीन, फुलेल मे मिट्टी के तेल की जमीन। ६ चित्र बनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल। आधार पृष्ठ।

मुहा०—जमीन बाँधना=अस्तर या मसाला लगाकर चित्र आदि बनाने के लिए सतह तैयार करना।

७ किसी कार्य के लिए पहले से निश्चित की हुई प्रणाली। उपक्रम। आयोजन।

मुहा०—जमीन बाँधना=कोई काम करने से पहले उसकी प्रणाली निश्चित करना।

जमीनी—वि०[फा०] जमीन-सबधी। जमीन का।

जमीमा—पु०[अ० जमीम] परिशिष्ट। (दे०)

जमीर—पु०[अ० जमीर] १ मन। हृदय। २ अन्तःकरण। ३ विवेक।

जमील—वि० [अ०] [स्त्री० जमीला] जमाल अर्थात सौन्दर्य से युक्त। सुन्दर।

जमुआ†—पु० [हिं० जामुन] जामुन का पेड और उसका फल।

जमुआर—पु०[हिं० जमुआ+आर (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ जामुन के बहुत से पेड हो।

जमुकना—अ०[?] आगे बढकर या बढते हुए किसी के साथ लगना।

जमुण*—स्त्री०[स० यमुना] यमुना नदी।

जमुना†—स्त्री०=यमुना।

जमुनियाँ†—वि०[हिं० जामुन] जामुन के रग का।

पु० उक्त प्रकार का रग।

जमुरका—पु०[फा० जबूर] १ कुलाबा। २ एक प्रकार की छोटी तोप।

जमुरी—स्त्री०[फा० जबूर] १ एक प्रकार की छोटी चिमटी या सँडसी। २ घोडो के नाखून काटने का एक उपकरण।

जमुर्रद—पु०[अ० जमुर्रद] पन्ना नामक रत्न।

जमुर्रदी—वि०[फा० जमुर्रदीन] जमुर्रद अर्थात् पन्ने के रग का। नीलापन लिये हुए हरे रग का।

पु० नीलापन लिये हुए हरा रग।

जमुवाँ—पु०[हिं० जमुआ] जामुन का रग। जामुनी।

पु०=जामुन।

जमुहाना*—अ०[हिं० जम्हाना] जम्हाई लेना। जँभाई लेना।

जमूरक†—पु०[फा० जबूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।

जमूरा—पु० =जमूरक।

जमेती*—स्त्री०=दमयती।

जमैयत—स्त्री०[अ०] परिषद्। सस्था।

जमैयतुलउलेमा—स्त्री०[अ०] आलिमो अर्थात् विद्वानो की परिषद् या सस्था।

जमोगी—पु० [हिं० जमोगना] १ जमोगने की क्रिया या भाव। २ ऋण चुकाने की एक प्रथा जिसके अनुसार ऋण लेनेवाला स्वय ऋण नही चुकाता बल्कि ऋण चुकाने का भार किसी दूसरे पर डाल देता है। ३ चित्रकला मे, बेल-बूटे आदि एक दूसरे से नियत दूरी और अपने-अपने ठीक स्थान पर बैठाने की क्रिया या भाव।

जमोगदार—पु०[हिं० जमोग+फा० दार] वह व्यक्ति जो ऋणी का रुपया चुकाता हो। वह जिसने किसी दूसरे का ऋण चुकाने का भार अपने ऊपर लिया हो।

जमोगना—स०[?] १ आय-व्यय या हिसाब-किताब की जाँच करना। २ व्याज को मलधन मे जोडना। ३ अपने उत्तरदायित्व विशेषत लिए हुए ऋण या देन का भार दूसरे को सौपकर उससे ऋण चुकाने की स्वीकृति दिला देना। सरेखना। ३ किसी बात का दूसरे व्यक्ति से समर्थन कराना।

जमोगवाना—स०[हिं० जमोगना] जमोगने का काम किसी दूसरे से कराना। सरेखवाना।

जमौआ†—वि० [हिं०जमाना] बुनकर नही, बल्कि जमा कर बनाया हुआ। जैसे—जमौआ कबल, जमौआ बनात।

जम्मु*—पु०१ =यम। २ =जन्म।

जम्हाई—स्त्री०=जँभाई।

जम्हाना†—अ०=जँभाना।

जयत—वि०[स०√जि (जीतना)+झच्—अन्त] [स्त्री० जयती] १ जय प्राप्त करनेवाला। विजयी। २ तरह-तरह के भेस बनाने वाला। बहुरुपिया।

पु० १ रुद्र। २ कार्त्तिकेय, इद्र के पुत्र, धर्म के पुत्र, अक्रूर के पिता, दशरथ के मत्री आदि लोगो का नाम। ३ सगीत मे ध्रुवक जाति का एक ताल। ४ फलित ज्योतिष मे एक योग जिसमे युद्ध के समय यात्रा करने पर विजय निश्चित मानी जाती है।

जयत-पुर—पु०[मध्य०स०] एक प्राचीन नगर जिसकी स्थापना निमिराज ने की थी और जिसका अवस्थान गौतम ऋषि के आश्रम के निकट था।

जयतिका—स्त्री०[स० जयती+कन्—टाप्, ह्रस्व]=जयती।

जयती—वि० [स०√जि (जीतना) +शतृ—ङीप्] विजय प्राप्त करने-वाली। विजयिनी।

स्त्री०१ वह स्त्री जिसने विजय प्राप्त की हो। २ दुर्गा। ३ पार्वती। ४ ध्वजा। ५ हल्दी। ६ अरणी और जैत नामक पेडो की सज्ञा। ७ बैजती का पौधा। ८ ज्योतिष का एक योग जो श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की आधी रात के समय रोहिणी नक्षत्र पडने पर होता है। ९ जन्माष्टमी। १० जौ के छोटे पौधे जो ब्राह्मण अपने यजमान को मगल द्रव्य के रूप मे विजयादशमी के दिन भेट करता है। ११ किसी महापुरुष की जन्म-तिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव। १२ किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने की वार्षिक तिथि पर होने-वाला उत्सव। जैसे—स्वर्ण या हीरक जयती।

जय—स्त्री०[स० जि+अच्] किसी बहुत बडे कार्य मे मिलनेवाली महत्त्व-पूर्ण विजय या सफलता।

पद—जय गोपाल=भेट होने पर पारस्परिक अभिवादन के लिए कहा जानेवाला एक पद।

मुहा०—जय बोलना या मनाना=विजय, सफलता आदि की कामना करना।

पु०१. विष्णु के एक पार्षद का नाम। २ 'महाभारत' नामक महाकाव्य

का पुराना नाम। ३ सगीत मे एक प्रकार का ताल। ४ ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के प्रौष्ठपद नामक युग का तीसरा वर्ष। ५ युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट् के यहाँ अज्ञातवास कर रहे थे। ६ जयती नामक पेड। ७ लाभ। ८ अयन। मार्ग। ९ वशीकरण। १० एक नाग। ११ दसवे मन्वन्तर के एक ऋषि।

जय-ककण—पु०[मध्य०स०] विजय का सूचक ककण जो प्राचीन काल मे विजयी को पहनाया जाता था।

जयक—वि०[स० जय+कन्] जीतनेवाला। विजयी।

जयकरी—स्त्री०[स० जय√कृ (करना)+ट—ङीप् ?] चौपाई नामक छद का दूसरा नाम।

जय-कार—पु०[ष०त०] १ किसी की 'जय' कहने की क्रिया या भाव। २ वह पद या वाक्य जिसमे किसी की जय कही जाय। जैसे—बोलेगा सो निहाल सत् श्री अकाल।

जय-कोलाहल—पु०[ब०स०] पासे का एक प्राचीन खेल।

जय खाता—पु०[हिं० जय=लाभ+खाता] वह बही जिसमे बनिये प्रतिदिन होनेवाले लाभ का हिसाब लिखते है।

जय-घोष—पु०[ष०त०] जोर से कही जानेवाली किसी की जय।

जय-चिह्न—पु०[ष०त०] १ कोई ऐसा चिह्न या सकेत जो किसी प्रकार की जीत का सूचक हो। जैसे—आखेट, युद्ध आदि मे प्राप्त की हुई और अपने पास स्मृति के रूप मे रखी जानेवाली कोई चीज। २ खेल, प्रतियोगिता आदि मे विजयी को मिलनेवाली कोई ऐसी चीज जो स्मारक के रूप मे पास रखी जाय। (ट्राफी)

जय जयकार—स्त्री०[हिं०] सामूहिक रूप से किसी की बार-बार जय कहने की क्रिया या भाव।

जयजयवंती—स्त्री० [हिं०] रात के दूसरे पहर मे गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसे कुछ लोग मेघराज की भार्या और कुछ लोग मालकोश की सहचरी बताते है।

जय-जीव—पु०[हिं० जय+जी] एक प्रकार का अभिवादन जिसका अर्थ है कि तुम्हारी जय हो और तुम चिरजीवी होओ।

जय-ढक—पु०=जयढक्का।

जय-ढक्का—स्त्री०[मध्य०स०] युद्ध मे जीत होने पर बजाया जानेवाला बाजा।

जय-ताल—पु०[मध्य०स०] सगीत मे एक ताल का नाम।

जयति—पु०[स० जयत्] एक सकर राग जिसे कुछ लोग गौरी और ललित तथा कुछ लोग पूरिया और कल्याण के योग से बना हुआ मानते है।

जयति-श्री—स्त्री०[हिं०] एक रागिनी जिसे दीपक राग की भार्या कहा गया है।

जयती—स्त्री०=जयति।

जयत्कल्याण—पु०[स०] रात के पहले पहर मे गाया जानेवाला सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो कल्याण और जयति-श्री के योग से बनता है।

जयत्सेन—पु० [स० जयन्ती-सेना ब०स०] नकुल का वह नाम जो उसने स्वय विराट् नगर मे अज्ञातवास करते समय अपने लिए रखा था।

जय-दुंदुभी—स्त्री०[मध्य०स०] जीत होने पर बजाया जानेवाला डका।

जय-दुर्गा—स्त्री०[कर्म०स०] दुर्गा की एक मूर्ति। (तत्र)

जयदेव—पु०[स०] सस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो 'गीत गोविंद' के रचयिता थे।

जयद्बल—पु०[स०जयत्-बल ब०स०] सहदेव का वह नाम जो उसने स्वय विराट् नगर मे अज्ञातवास करते समय अपने लिये रखा था।

जयद्रथ—पु०[स० जयत्-रथ ब०स०] महाभारत मे वर्णित एक राजा जिसने अभिमन्यु को मारा था और जिसका वध अर्जुन ने किया था।

जय-ध्वज—पु०[मध्य० स०] विजय पताका।

जयना*—स० [स० जयन्] जय प्राप्त करना। जीतना।

जयनी—स्त्री०[स०√जि+ल्युट्—अन, ङीप्] इन्द्र की कन्या का नाम।

जय-पत्र—पु०[मध्य०स०] १ वह पत्र जो प्राचीन काल मे पराजित राजा विजयी राजा को अपनी पराजय स्वीकार करते हुए लिखकर देते थे। २ न्यायालय द्वारा किसी व्यक्ति को दिया हुआ वह पत्र जिसमे उसकी मुकदमे मे होनेवाली जीत का उल्लेख होता है।

जय-पत्री—स्त्री०[मध्य०स०] जावित्री।

जय-पाल—पु० [जय√पाल् (रक्षा करना)+अण्] १ जमालगोटा। २ विष्णु। ३ राजा।

जय-पुत्रक—पु०[मध्य०स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का पासा।

जय-प्रिय—पु०[ब०स०] १ राजा विराट् के भाई का नाम। २ ताल का एक भेद।

जयफर—पु०=जायफल। उदा०—जयफर, लौग सुपारि छोहारा। मिरिच होइ जो सहै न झारा।—जायसी।

जय-मगल—पु०[ब०स०] १ वह हाथी जिस पर विजयी राजा सवारी करता था। २ सगीत मे एक प्रकार का ताल।

जय-मल्लार—पु०[स०] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सभी शुद्ध स्वर लगते हैं।

जय-माल—स्त्री०=जय-माला।

जय-माला—स्त्री०[मध्य०स०] १ विजेता को पहनाई जानेवाली माला। २ विवाह के समय फूलो आदि की वह माला जो कन्या अपने भावी पति के गले मे डालती है।

जय-यज्ञ—पु०[मध्य०स०] अश्वमेध यज्ञ।

जयरात—पु०[स०] महाभारत मे वर्णित कलिंग देश का एक राजकुमार जो युद्ध मे भीम के हाथो मारा गया था।

जय-लक्ष्मी—स्त्री०[मध्य०स०] जय-श्री। विजय-श्री।

जय-लेख—पु०=जय-पत्र। (दे०)

जय-वाहिनी—स्त्री०[ष०त०] इद्राणी। शची।

जयशाल—पु०[स०] यादव वश के प्रसिद्ध राजा जिन्होने जैसलमेर नगर बसाया था।

जय-शृग—पु०[मध्य०स०] जय-ध्वनि करनेवाला। नरसिंघा।

जय-श्री—स्त्री० [ष०त०] १ विजय। २ विजय की अधिष्ठात्री देवी। ३ सध्या के समय गाई जानेवाली सपूर्ण राग की एक रागिनी।

जय-स्तभ—पु० [मध्य०स०] वह स्तम्भ या बहुत ऊँची वास्तु-रचना जो किसी देश पर विजय होने की स्मृति मे बनाई जाती है।

जया—स्त्री०[स०√जि (जीतना)+अच्—टाप्] १ दुर्गा, दुर्गा की सहचरी तथा पार्वती जी का नाम। २ अरणी, जयती तथा शमी के वृक्षो की सज्ञा। ३ अडहुल का फूल। ४ हरी दूब। ५ हरीतकी। हड।

६ भाँग। ७ पताका। ८ सोलह मातृकाओ मे से एक। ९ माघ शुक्ला एकादशी। १० कृष्ण तथा शुक्ल पक्षो की तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथियाँ।
वि० स्त्री०*जय दिलानेवाली।

जयादित्य—पु०[स०] काश्मीर के एक प्राचीन राजा जो 'काशिकावृत्ति' के कर्त्ता माने जाते है।

जया-द्वय—स्त्री०[ष०त०] जयती और हड।

जयानीक—पु० [स०] १ राजा द्रुपद के एक पुत्र का नाम। २ राजा विराट् के भाई का नाम।

जयावती—स्त्री०[स० जया+मतुप, व.व-ङीप्] १ कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। २ सकर जाति की एक रागिनी।

जयावह—वि०[स० जय-आ√वह् (पहुँचाना)+अच्] जय दिलानेवाला।

जयाश्व—पु०[स०] राजा विराट् के एक भाई का नाम।

जयिष्णु—वि० [स०√जि (जीतना)+इष्णुच्] १ जय दिलानेवाला। विजय प्राप्त करनेवाला। २ जो बराबर जीतता रहता हो।

जयी (यिन्)—वि० [स०√जि (जीतना)+इनि] जिसकी जय अर्थात् विजय हुई हो।
†स्त्री०=जई।

जयेंद्र—पु०[स०] काश्मीर के राजा विजय के एक पुत्र का नाम।

जयेती—स्त्री०[स०] एक सकर रागिनी।

जयोल्लास—पु०[जय-उल्लास, ष०त०]जय अर्थात्, विजय मिलने पर होनेवाला उल्लास।

जय्य—वि० [स०√जि+यत्] जो जीता जा सकता हो। जीते जाने के योग्य।

जरड—वि०[स०] १ क्षीण। २ वृद्ध।

जरत—पु० [स०√जॄ (जीर्ण होना)+झच्-अत] १ अधिक अवस्थावाला व्यक्ति। २ भैसा।

जर—पु० [स०√जॄ+अप्] १ जीर्ण या नष्ट होने की अवस्था या भाव। २ वह कर्म जिससे शुभाशुभ कर्मो का क्षय होता है।
वि०[√जॄ+अच्] १ वृद्ध होनेवाला। २ क्षीण या वृद्ध करनेवाला।
पु०[म० जरा] जरा। वृद्धावस्था।
†पु०=ज्वर।
पु०[फा० जर] १ सोना। २ धन।
पु० [हिं० जड] जड।
पु० [देश०] एक प्रकार की समुद्री सेवार।

जरई—स्त्री० [स० जीरक] १ बोये हुए बीज मे से निकलनेवाला नया अकुर। २ जौ या धान् के छोटे अकुर जो विशिष्ट अवसरो पर मगल-कामना प्रकट करने के लिए भेट किये जाते है।

जर-कबर—पु० [फा० जरी+हिं० कबल] वह आवरण या ओढना जिस पर जरी का काम बना हो। उदा०—जुरा जर कबर सो पहिरायो। केशव।

जरक—स्त्री०=झलक।

जरकटी—स्त्री०[देश०] एक शिकारी चिडिया।

जरकस—वि०[फा० जरकश] (वस्त्र) जिस पर जरी का काम हुआ हो।
पु० जरी का काम।

जरकसी—वि०=जरकस।

जरकान—पु०[अ०] गोमेद नामक रत्न।

जर-खरीद—वि०[फा०] धन देकर खरीदा हुआ। क्रीत।

जरखेज—वि०[फा०] [भाव० जरखेजी] (भूमि) जिसमे फसल अधिक मात्रा मे होती हो। उपजाऊ।

जरगह, जरगा—पु०=जिरगा।

जरछार—वि०[हिं० जरना+स० क्षार] १ जो जलकर राख हो गया हो। २ नष्ट।

जरज—पु०[देश०] एक प्रकार का कद।

जरजर—वि०=जर्जर।

जरजरना—अ०[हिं० जरजर] जर्जर होना या जीर्ण-शीर्ण होना।

जरठ—वि०[स० √जॄ—अठच्] १ बुड्ढा। वृद्ध। २ जीर्ण। ३ कठिन। कठोर। ४ कर्कश। ५ निर्दय। ६ जिसका रग कुछ पीलापन लिये हुए सफेद हो।
पु० बुढापा।

जरठाई*—स्त्री०[स० जरठ+हिं० आई (प्रत्य०)] बुढापा।

जरडा—स्त्री०[√जॄ(बुढापा)+प्यड-ङीष्] एक प्रकार की घास।

जरण—पु० [स०√जॄ+णिच्+ल्यु—अन] १ हीग। २ जीरा। ३ काला नमक। ४ कासमर्द। कसौजा। ५ बुढापा। ६ दस प्रकार के ग्रहणो मे से वह जिसमे पश्चिम से मोक्ष होना आरम्भ होता है।
वि० जीर्ण। पुराना।

जरण-द्रुम—पु०[कर्म०स०] १. साखू का वृक्ष। २ सागौन।

जरणा—स्त्री०[स० जरण+टाप्] १ काला जीरा। २ वृद्धावस्था। ३ स्तुति। ४ मोक्ष।

जरत्—वि०[स०√जॄ+अतृन] [स्त्री० जरती] १ बुड्ढा। वृद्ध। २ क्षीण। ३ पुराना।

जरतार—पु०[फा० जर+हिं० तार] जरी अर्थात् सोने, चाँदी आदि के वे तार जिनसे कपडो पर बेल-बूटे आदि बनाये जाते है।

जरतारा†—वि० [हिं० जरतार] [स्त्री० जरतारी] (वस्त्र) जिस पर जरी का काम हुआ हो।

जरतारी—स्त्री०[हिं० जरतार] जरी से बना हुआ बेल-बूटो का काम।

जरतिका—स्त्री०[स० जरती+कन्—टाप्, ह्रस्व] बूढी स्त्री।

जरती—स्त्री०[स० जरत्+ङीप्]=जरतिका।

जरतुवा—वि०[हिं० जलना] दूसरे की अच्छाई या समृद्धि को देखकर मन ही मन कुढने या जलनेवाला।

जर तुश्त—पु०=जरदुश्त।

जरत्कर्ण—पु०[स०] एक वैदिक ऋषि।

जरत्कारु—पु०[स०] एक ऋषि जिन्होने वासुकि नाग की कन्या मनसा से विवाह किया था।
स्त्री० उक्त ऋषि की पत्नी मनसा का दूसरा नाम।

जरद—वि०[फा० जर्द] पीले रग का।

जरद अछी—स्त्री०[हिं० जरद+अछी] काली अछी की तरह की एक झाडी।

जरदक—पु०[फा० जर्दक] जरदा या पीलू नाम का पक्षी।

जरदष्टि—वि०[स०]१ वृद्ध। २ बुड्ढा। दीर्घजीवी।

स्त्री०१. बुढ़ापा। २. दीर्घ जीवन।

जरदा—पु०[फा० जरद] १ विशेष प्रकार से पकाये हुए मीठे पीले चावल। २ पान के साथ खाने के लिए विशेष प्रकार से बनाई हुए मसालेदार सुगधित सुरती जो प्राय पीले रग की और कभी-कभी काले या लाल रग की भी होती है। ३ पीले रग का घोडा।

पु०[स० जरदक] एक प्रकार का पक्षी जिसकी कनपटी तथा पैर पीले होते हैं। पीलू।

जर-दार—वि०[फा०] [भाव० जरदारी] १ (व्यक्ति) जिसके पास जर अर्थात् धन हो। २ अमीर। धनवान।

जरदालू—पु०[फा० जरद+आलू] खूबानी।

जरदी—स्त्री०[फा०]१. जरद अर्थात् पीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

मुहा०—(किसी पर) जरदी छाना=रोग आदि के कारण किसी के शरीर का रग पीला पडना।

२ अडे मे से निकलनेवाला पीला अश।

जरदुश्त—पु०[फा० मि० स० जरदष्टि=दीर्घजीवी, वृद्ध] फारस का एक प्रसिद्ध विद्वान् जिसका जन्म ईसा से छ सौ वर्ष पूर्व हुआ था।

जरदोज—पु०[फा० जरदोज] [भाव० जरदोजी] वह व्यक्ति जो सोने, चाँदी आदि की तारो से कपडो पर बेल-बूटे बनाता हो। जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोजी—स्त्री०[फा० जरदोजी]१ सोने, चाँदी आदि के तारो से वस्त्रो आदि पर बेल-बूटे बनाने का काम। २ उक्त प्रकार का बना हुआ काम। वि० (कपडा) जिस पर उक्त प्रकार का काम बना हो।

जरद्गव—पु०[स० जरत्-गो कर्म० स०, टच्] १ बुड्ढा बैल। २ बृहत्सहिता के अनुसार एक वीथी जिसमे विशाखा और अनुराधा नक्षत्र है।

जरद्विष—पु०[स०] जल।

जरन*—स्त्री०=जलन।

जरना*—अ०=जलना।

†स०=जडना।

जरनि*—स्त्री०[हिं० जलन] जलन। उदा०—हृदय की कबहुँ न जरनि घटी।—सूर।

जरनिशाँ—पु०[फा० जरनिशाँ] लोहे पर सोने, चाँदी आदि से की जानेवाली पच्चीकारी।

जरनैल—पु० =जनरल (सेनापति)।

जरब—स्त्री०[अ० जर्ब]१ आघात। चोट। प्रहार। २ तबले, मृदग आदि पर किया जानेवाला आघात। चॉटी। ३. गुणा। ४. कपडे आदि पर काढी या छापी हुई बेल।

जर-बफ्त—पु०[फा० जरबफत] वह रेशमी कपडा जिस पर कलाबत्तू का काम हुआ हो।

जर-बफ्ती—वि०[फा० जरबफती]१ जर बफ्त सबधी। २ (कपडा) जिस पर जरबफ्त का काम हुआ हो।

जर-बाफ—पु०[फा०] वह व्यक्ति जो कपडे पर जरबफ्त का काम करता हो।

जरबाफी—वि०[फा०] जर-बफ्त या जरबाफ सबधी।

स्त्री० कपडे आदि पर कलाबत्तू से बेल-बूटे आदि काढने की क्रिया या भाव।

जरबीला—वि०[फा० जरब] चमक-दमकवाला। भडकीला।

जरम—पु०=जन्म। उदा०—कहुँ सुख राखै की दुख रहु कस जरम निबाहु।—जायसी।

जरमन—पु०[अ०] यूरोप के जर्मनी नामक देश का नागरिक या निवासी। स्त्री० उक्त देश की भाषा।

वि० १ जरमनी देश मे होने या रहनेवाला। २ जरमन देश-सबधी।

जरमनसिलवर—पु०[अ०] एक चमकीली मिश्र धातु जो जस्ते, ताँबे, निकल आदि के योग से बनाई जाती है।

जरमनी—पु०[अ०] यूरोप का एक प्रसिद्ध राज्य।

जरमुआ—वि०[हिं० जरना+मुअना=मरना] [स्त्री० जरमुई] ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण जलनेवाला।

जरर—पु० [अ० जरर] १ नुकसान। हानि। २ आघात। चोट। ३ विपत्ति।

जरल†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास। सेवाती।

*स्त्री०=जलन।

जरवारा†—वि० [फा० जर(=धन)+हिं० वारा (वाला)] [स्त्री० जरवारी] १. जिसके पास जर अर्थात् धन हो। २ अमीर। धनी।

जरस—पु०[देश०] समुद्र मे होनेवाली एक प्रकार की घास।

जरांकुश—पु०[स० ज्वराकुश] एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ सुगधित होती हैं।

जरा—स्त्री०[स०√जृ (वृद्ध होना)+अङ्—टाप्] १ वृद्ध होने की अवस्था। बुढापा। वृद्धावस्था। २ बुढापे मे होनेवाली कमजोरी। ३ काल की कन्या का नाम। (पुराण)

पु० एक व्याध जिसके वाण से कृष्ण जी देवलोक सिधारे थे।

वि०[अ० जर्र] मान या मात्रा मे थोडा। अल्प। कम।

पद—जरा-सा=(क) बहुत ही कम। नही के बराबर। जैसे—जरा सा चूर्ण खा लो। (ख) तुच्छ या हेय। जैसे—जरा सी बात।

अव्य० किसी काम या बात की अल्पता, तुच्छता, सामान्यता आदि पर जोर देने के लिए प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—(क) जरा तुम भी चले चलो। (ख) जरा कलम उठा दो।

जराअत—स्त्री०[अ० जिराअत] [वि० जराअती] खेती-बारी।

जराऊ†—वि०[हिं० जडाऊ] जिसमे नगीने जडे हो। उदा०—पाँवरि कबक जराऊ पाऊँ। दीन्हि असीस आइ तेहि ठाऊँ।—जायसी।

जरा-कुमार—पु०[ष०त०] जरासध।

जरा-ग्रस्त—वि०[तृ० त०] जो जरा से पीडित हो। वृद्धावस्था के कारण कमजोर तथा शिथिल।

जरा-जीर्ण—वि०[तृ०त०] जो पुराना अथवा वृद्ध होने के कारण जर्जर हो गया हो। जरा से जर्जर।

जरातुर—वि०[जरा-आतुर तृ० त०] जरा-ग्रस्त। बूढा।

जराद—पु० [स० जरा√अद् (खाना)+अण् ?] टिड्डी।

जराना—स०=जलाना।

स०=जडाना।

जरा-पुष्ट—पु०[तृ० त०] जरासध।

जराफत—स्त्री० [अ० ज़राफत] जरीफ अर्थात् हँसोड होने की अवस्था या भाव। मसखरापन।

जराफा—पु०[अ०जुर्राफ] ऊँट की तरह का लबी गरदन तथा लबी टाँगोवाला एक पशु।

जराभीत—वि०[तृ०त०] वृद्धावस्था से डरनेवाला।
पु० कामदेव।

जरायम—पु०[अ० 'जुर्म' का बहु०] अनेक प्रकार के अपराध।

जरायम पेशा—वि०[अ० जरायम+फा० पेश] (वह) जो अनेक प्रकार के अपराधो के द्वारा ही जीविका चलाता हो। अपराधशील।

जरायु—पु०[स० जरा√इ (गति)+ञुण्] १ वह झिल्ली जिसमे माता के गर्भ से निकलते समय बच्चा लिपटा हुआ होता है। आँवल। खेडी। २ गर्भाशय। ३. योनि।

जरायुज—पु०[स० जरायु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] वह प्राणी जो माता के गर्भ मे से निकलते समय खेडी मे लिपटा हुआ होता है। पिंडज।

जराव—वि०=जडाऊ।
पु०=जडाव।

जरा-शोष—पु०[मध्य०स०] वृद्धावस्था मे होनेवाला एक शोष रोग।

जरा-सध—पु०[ब०स०] मगध का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा जो कस का श्वसुर था।

जरा-सुत—पु०[ष० त०] जरासध।

जराह†—पु०=जर्राह।

जरिणी—स्त्री० [स० जरा+इनि—ङीप् ?] अधिक अवस्थावाली स्त्री। बुढिया।

जरित—वि०[स० जरा+इतच्] बुड्ढा।
*वि०=जटित।

जरिमा(मन्)—स्त्री० [स० जरा+इमनिच्] जरा। बुढापा। वृद्धावस्था।

जरिया—पु०[अ० ज़रीअऽ] १ सबध। लगाव। २. कारण। हेतु। ३ साधन।
पद—के जरिये=द्वारा।
†वि०[हिं० जडना] जडनेवाला।
†वि०[हिं० जलना] १ जला हुआ। २ जलाने से बननेवाला। जैसे—जरिया नमक।

जरिश्क—पु०[फा० जरिश्क] दारुहल्दी।

जरी (रिन्)—वि०[स० जरा+इनि] बुड्ढा। वृद्ध।
†स्त्री० जडी।
स्त्री० [फा०]१ बादले से बुना हुआ ताश नामक कपडा। २ सोने के वे तार जिनसे कपडो पर बेल-बूटे आदि बनाये जाते है।

जरीनाल—स्त्री०[?] वह स्थान जहाँ पर ईंटे और रोडे पडे हो।

जरीफ—वि०[अ० ज़रीफ] १ परिहास-प्रिय। २ हँसोड।

जरीब—स्त्री०[फा०]१. खेत या जमीन नापने की एक प्रकार की जजीर या डोरी जो लगभग ६० गज लबी होती है।
क्रि० प्र०—डालना।
२. डडा। लाठी।

जरीबकश—पु०[फा०] जरीब खीचने अर्थात् जरीब से जमीन नापनेवाला व्यक्ति।

जरी-बाफ—पु०[फा० जरीबाफ] जरी के काम के कपडे आदि बुननेवाला कारीगर।

जरीमाना†—पु०=जुरमाना।

जरीया—पु० =जरिया।

जरूथ—पु०[स०√जॄ (जीर्ण होना)+ऊथन्] गोश्त। मास।

जरूर—अव्य० वि०[अ०] अवश्य। अवश्यमेव।

जरूरत—स्त्री०[अ० ज़रूरत] १ आवश्यकता। २ प्रयोजन।

जरूरी—वि०[फा० ज़रूरी]१ जिसके बिना किसी का काम ठीक प्रकार से न चले। जैसे—रोगी को नीद आना जरूरी है। २ जिसका होना या घटित होना रुकने को न हो। जैसे—मृत्यु जरूरी है। ३ प्रस्तुत परिस्थितियो मे जो किया ही जाना चाहिए। जैसे—उन पर मुकदमा चलाना जरूरी है। ४. जो तुरन्त किया जाने को हो। जैसे—एक जरूरी काम आ गया है।

जरोल—पु०[देश०] आसाम और नीलगिरि के पहाडो पर होनेवाला एक पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है।

जरौट†—वि०[हिं० जडना] जडाऊ।

जर्कबर्क—वि० [फा०] चमक-दमकवाला। चमकीला।

जर्कान—पु०=जरकान।

जर्जर—वि०[स०√जर्ज् (झिडकना)+अरन्] १. (वस्तु) जो पुरानी हो जाने के कारण या अधिक उपयोग मे आने के कारण कमजोर तथा बेकाम हो चली हो। जैसे—जर्जर मकान या जर्जर वस्त्र। २ लाक्षणिक अर्थ मे कोई चीज या बात जिसका महत्त्व या मान पुराने पडने के कारण बहुत ही कम हो गया हो। जैसे—ये साहित्यिक परम्पराएँ अब जर्जर हो चुकी हैं। ३ खडित। टूटा-फूटा। ४ वृद्ध। बुड्ढा।
पु० छरीला। पत्थर फूल।

जर्जरानना—स्त्री० [स० जर्जर-आनन ब०स०] कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

जर्जरित—वि०[स० जर्जर+णिच् +क्त] जर्जर किया हुआ।

जर्ण—पु०[स०√जॄ+नन्] १. चद्रमा। २ वृक्ष।

जर्त्त—पु०[√जन् (उत्पत्ति)+त, र आदेश] १ हाथी। २ योनि।

जर्त्तिक—पु०[स०√जॄ+तिकन्] १ प्राचीन वाहीक देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी।

जर्तिल—पु० [स०√जॄ+विच्<जर्—तिल, कर्म०स०] जगली तिल। वन तिलवा।

जर्त्तु—पु०[स०√जन्+तु, र आदेश]=जर्त्त।

जर्द—वि०[फा० ज़र्द] पीले रगवाला। पीला। जरद।

जर्दा—पु०=जरदा।

जर्दालू—पु०=जरदालू।

जर्दी—स्त्री० [फा०]=जरदी।

जर्दोज—पु०[भाव० जर्दोजी]=जरदोज। (दे०)

जर्रा—पु०[अ० जर्र] १ किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकडा। अणु। कण। २ धूल आदि का कण विशेषत वह कण जो प्रकाश मे उडता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है। रेणु। ३ तौल मे एक जौ का सौवाँ भाग।

जर्रार—वि० [अ०] [भाव० जर्रारी] बहादुर। वीर।

जर्राह—पु०[अ०] [भाव० जर्राही] वह चिकित्सक जो विकृत अगो की शल्य-चिकित्सा करता हो। चीर-फाड करनेवाला व्यक्ति।

जर्राही—स्त्री०[अ०] जर्राह का काम या पेशा।

जर्वर—पु०[स०] नागो के एक पुरोहित।

जर्तिल—पु० [स० जर्तिल पृषो० सिद्धि] जगली तिल। जर्त्तिल।

जलग—पु०[स० जल√गम् (जाना)+ड, मुम्] महाकाल नामक लता।

जलगम—पु०[स० जल√गम्+खच्, मुम्] चाडाल।

जलधर—पु०[स० जल√धृ (धारण)+खच्, मुम्] १ एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका जन्म समुद्र से माना जाता है, और जिसका वध विष्णु ने किया था। २ नाथपथी एक सिद्ध।
पु०=जलोदर (रोग)।

जलबल—पु०[स०] १ नदी। २ अजन।

जल—पु०[√जल (जीवन देना)+अच्] १ गध तथा स्वाद से रहित वह प्रसिद्ध सफेद तरल पदार्थ जो बादल वर्षा के रूप मे पृथ्वी पर गिराते है। और जिससे झीले, नदियाँ, समुद्र आदि बनते है। पानी। २ उशीर। खस। ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र। ४ जन्म कुडली मे का चौथा घर। ५ सुगधवाला। ६ तेल। उदा०—मेरे अतरतम के दीपक वे क्या जल बिन जल न सकेगे।—नरेद्र। ७ एक प्रकार का दिव्य (परीक्षा)। ८ रहस्य सम्प्रदाय मे, (क) माया। (ख) शरीर। (ग) ससार।

जल-अलि—पु० [ष० त०] १ पानी का भँवर। २ पानी पर तैरने-वाला काले रग का एक छोटा कीडा। भौरा।

जलई—स्त्री० [?] एक प्रकार की कील या काँटा जिसके दोनो ओर अँकुडे होते है।

जल-कटक—पु० [स० त०] १ सिंघाडा। २ कुभी।

जल-कडु—पु० [मध्य० स०] पैरो मे होनेवाली वह खुजली जो उनके जल मे भीगते रहने के कारण उत्पन्न होती है।

जल-कद—पु० [मध्य० स०] १ केला। २ काँदा नामक गुल्म।

जलक—पु० [स० जल√कै (प्रकाशित होना) +क] १. शख। २ कौडी।

जल-कपि—पु० [स० त०] सूँस नामक जल-जतु।

जल-कपोत—पु० [मध्य० स०] जलाशयो के किनारे रहनेवाली एक चिडिया।

जल-करक—पु० [मध्य० स०] १ नारियल। २ कमल। ३ शख। ४ तरग। लहर। ५. बादल।

जल-कर—पु० [मध्य० स०] १ वह कर जो किसानो को नहर से सिंचाई के लिए जल लेने के बदले मे देना पडता है। २ जलाशयो मे होनेवाले पदार्थ। जैसे—कमल गट्टा, मछली, सिंघाडा आदि। ३ उक्त प्रकार के पदार्थो पर लगनेवाला कर।

जल-कल—स्त्री० [स० जल+हिं० कल] १. वह यत्र जिसकी सहायता से नलो द्वारा किसी नगर के घर-घर मे पानी पहुँचाया जाता है। २. उक्त कार्य की व्यवस्था करनेवाला विभाग।

जल-कल्क—पु० [ष० त०] १ कीचड। २ सेवार। ३ काई।

जल-कल्मष—पु० [ष० त०] हलाहल।

जल-कांक्ष—पु० [जल√कांक्ष् (चाहना) +अण्] हाथी।

जल-कांक्षी (क्षिन्)—पु० [जल√कांक्ष्+णिनि] हाथी।

जल-काँच—पु० [स० जल+हिं० काँच] १ काँच का वह बडा पात्र जिसमे इसलिए जल भरकर रखते है कि उसमे मछलियाँ, वनस्पतियाँ आदि रह सके। २ एक प्रकार का यत्र जो ऐसी बालटी के रूप मे होता है जिसके पेंदे मे शीशा लगा रहता है और जिसकी सहायता से जल के अदर की चीजे देखी जाती है। (वाटर ग्लास)

जल-कांत—पु० [ष० त०] १ वायु। २ वरुण।

जल-कांतार—पु० [ब० स०] वरुण।

जल-काक—पु० [स० त०] जल-कौआ नामक पक्षी।

जल-कामुक—पु० [ष० त०] कुटुबिनी नामक वृक्ष।

जलकिनार—पु० [हिं० जल+किनारा] एक प्रकार का रेशमी कपडा।

जल-किराट—पु० [जल-किर स० त०,√अट् (गति) +अच्] ग्राह। घडियाल।

जल-कुतल—पु० [ष० त०] सेवार।

जलकुभी—स्त्री० [हिं० जल+कुभी] कुभी।

जल-कुक्कुट—पु० [स० त०] मुरगाबी नामक पक्षी।

जल-कुक्कुभ—पु० [स० त०] एक जल-पक्षी।

जल-कुब्जक—पु० [जल-कुब्ज स० त०, √कै (प्रतीत होना)+क] १ सेवार। २ काई।

जल-कूपी—स्त्री० [ष० त०] १ तालाब। २ भँवर।

जल-कूर्म—पु० [स० त०] सूँस नामक जल-जतु।

जल-केतु—पु० [ष० त०] एक पुच्छल तारे का नाम।

जल-केलि—स्त्री० [स० त०] जलाशय मे नहाते या तैरते समय की जानेवाली क्रीडाएँ।

जल-केश—पु० [ष० त०] सेवार।

जलकौआ—पु० [हिं० जल+कौआ] काले रग का एक प्रसिद्ध जल-पक्षी जिसकी गर्दन सफेद और चोच भूरे रग की होती है।

जल-क्रिया—स्त्री० [मध्य० स०] तर्पण।

जल-क्रीडा—स्त्री० [स० त०] जलाशय मे नहाते समय की जानेवाली क्रीडा। जल विहार।

जल-खग—पु० [ष० त०] जलाशयो के किनारे रहनेवाला एक पक्षी।

जलखर—पु० [हिं० जाल] [स्त्री० अल्पा० जलखरी] धागो या रस्सियो की बनी हुई वह बडी जाली जिसमे फल आदि रखकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाये जाते है।

जलखावा†—पु० [स० जल+हिं० खाना] जलपान। कलेवा।

जल-गर्द—पु० [स० त०] जल मे रहनेवाला साँप। डेडहा।

जल-गर्भ—पु० [मध्य० स०] बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य आनद का पूर्व जन्म का नाम।
वि० [ब० स०] जिसके गर्भ मे जल हो। पानी बरसानेवाला (बादल)।

जलगभ*—वि०=जल-गर्भ।

जलगुल्म—पु० [ष० त०] १ पानी मे का भँवर। २ कछुआ। ३ ऐसा प्रदेश जिसमे जल की कमी हो।

जल-घडी—स्त्री० [स० जल+हिं० घडी] समय का बोध करानेवाला एक प्राचीन यत्र।
विशेष—एक विशेष प्रकार की कटोरी को जिस मे एक छोटा-सा छेद

होता था, पानी से भरी हुई नाँद मे छोडा जाता है और इसमे भरे जानेवाले जल के परिमाण से समय का ज्ञान होता था।

जलघुमर†—पु० [हिं० जल+घूमना] पानी का भँवर। जलावत। चक्कर।

जल-चत्वर—पु० [तृ० त०] वह भू-भाग जहाँ जल की कमी हो।

जल-चर—पु० [जल√चर् (चलना)+ट] जल मे रहनेवाले जीव-जतु।

जलचरी—स्त्री० [जलचर+ङीप्] मछली।

जल-चादर—स्त्री० [स० जल+हिं० चादर] ऊँचे स्थान मे चादर के रूप मे गिरनेवाला जल का चौडा प्रवाह। झरना।

जल-चारी (रिन्)—पु० [जल√चर् +णिनि] जल मे रहनेवाला जीव।

जल-चिह्न—पु० [ष० त०] १ एक जल-जतु। कुभीर। नाक। २ वह चिह्न या रेखा जो यह सूचित करने के लिए बनाई जाती है कि नदी की बाढ आदि का पानी कब कितना ऊँचा पहुँचना या पहुँचा था। ३ कागज बनाने के समय एक विशिष्ट प्रक्रिया से बनाया जानेवाला वह चिह्न जो उसकी किसी विशिष्टता का सूचक होता है और जो कागज को केवल प्रकाश के सामने रखने पर दिखाई देता है। (वाटर मार्क)

जलचौलाई†—स्त्री०=चौलाई।

जल-जन्तु—पु० [प० त०] जल मे रहनेवाले जीव या प्राणी।

जलजन्तुका—स्त्री० [स० जलजतु+कन्—टाप्] जोंक।

जलजबुका—स्त्री० [स० जल—जबु मध्य० स०,+कन्—टाप्] जल-जामुन नामक पेड और उसका फल।

जलज—वि० [स० जल√जन् (उत्पत्ति) +ड] जल मे से उत्पन्न होनेवाला।

पु० १ कमल। २ जल-जतु। ३ मोती। ४ शख।

जल-जन्य—पु० [तृ० त०] कमल।

जलजला—पु० [अ० ज़ल ज़ल] भूकप। भूडोल।

जल-जात—वि० [स० त०] जो जल मे उत्पन्न हो। जलज।

पु० कमल।

जलजामुन—पु० [स० जल+हिं० जामुन] १ नदियो के किनारे होनेवाला एक प्रकार का जगली जामुन का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष का फल।

जलजासन—पु० [जलज—आसन ब० स०] वह जिसका आसन कमल हो अर्थात् ब्रह्मा।

जल-जिह्न—पु० [ब० स०] घडियाल।

जल-जीवी (विन्)—पु० [जल√जीव् (जीना)+णिनि] मछुआ।

जल-डमरूमध्य—पु० [स०] भगोल मे जल की वह पतली जलधारा जो दो बडे समुद्रो को मिलाती हो।

जल-डिब—पु० [स० त०] घोघा।

जलण*—स्त्री० [स० ज्वलन] अग्नि।

जल-तरग—पु० [ष० त०] १ जल से भरी हुई कटोरियो का वर्ग या समूह जिस पर अलग-अलग आघात कर के सातो स्वर निकाले जाते है। २ उक्त कटोरियो पर आघात करने से होनेवाली ध्वनि या शब्द।

जल-तरोई—स्त्री० [हि० जल+तरोई] मछली। (व्यग्य और हास्य)

जल-ताडन—पु० [प० त०] जल पर आघात करने के समान व्यर्थ का काम करना।

जल-तापिक—पु० [स० जलतापिन्+कन्] एक प्रकार की बडी समुद्री मछली।

जल-तापी (पिन्)—पु० [स० जल√तप् (तपना) +णिनि] =जल-तापिक।

जलताल—पु० [स० जल+तल्—टाप्, जलता√अल् (पूरा होना) +अच्] सलई का पेड ओर उसकी लकडी।

जल-तिक्तिका—स्त्री० [मध्य० स०] सलई का पेड ओर उसकी लकडी।

जलत्रा—स्त्री० [जल√त्रा (बचाना)+क —टाप्] छाता।

जल-त्रास—पु० [तृ० त०] जलातक। (दे०)

जलथभ—पु० [स० जलस्तभन] १ जल की धारा को बाँधने या रोकने की क्रिया या भाव। २ दे० 'जलस्तभ'।

जलद—वि० [जल√दा (देना) +क] जल देनेवाला।

पु० १ बादल। २ वगज, जो पितरो को जल देते है।

जलद-काल—पु० [ष० त०] वर्षाऋतु।

जलद-क्षय—पु० [ब० स०] शरद ऋतु।

जलदर्दुर—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का पुराना बाजा।

जल-दस्यु—पु० [मध्य० स०] [भाव० जलदस्युता] वह जो समुद्री जहाजो के यात्रियो आदि का सामान लूटता हो।

जलदागम—पु० [स० जलद—आगम, ब० स०] वर्षाकाल।

जल-दान—पु० [ष० त०] तर्पण।

जलदाभ—पु० [स० जलद—आभा ब० स०] वह जिसकी आभा बादल के रग जैसी हो।

जल-दाशन—पु० [स० जलद—अशन, ष० त०] साखू का पेड और उसकी लकडी।

जल-दुर्ग—पु० [मध्य० स०] वह दुर्ग जो किसी झील, नदी, समुद्र आदि से घिरा हुआ हो।

जल-देव—पु० [ब० स०] १ पूर्वाषाढा नामक नक्षत्र। २ [ष० त०] वरुण।

जल-देवता—पु० [स० ष० त०] वरुण।

जलदोदो—पु० [?] जलाशयो मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके शरीर से स्पर्श होने पर खुजली उत्पन्न होती है।

जल-द्रव्य—पु० [मध्य० स०] जल मे उत्पन्न होनेवाली वस्तुएँ। जैसे—मुक्ता, शख आदि।

जल-धर—पु० [√धृ (धारण)+अच्—धर, जल-धर ष० त०] १ बादल। २ समुद्र। ३ जलाशय।

जलधर-केदारा—पु० [स० जलधर+हिं० केदारा] मेघ और केदारा के योग से बननेवाला एक सकर राग।

जलधर-माला—स्त्री० [प० त०] १ बादलो की श्रेणी या समूह। २ बारह वर्णो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक मगण, एक भगण, एक सगण, और एक यगण होता है।

जलधरी—स्त्री० [स० जलधर+ङीष्] धातु, पत्थर आदि का बना हुआ वह आधान जिसके बीच मे शिवलिंग स्थापित किया जाता है और जो

तीन ओर से गोलाकार होता है और एक ओर से लबोतरा। अर्घा।

जलधार—पु० [स० जल√धृ(रखना) +णिच्+अण्] शाक द्वीप का एक पर्वत।

स्त्री० [स० जल+धारा] जल की धारा।

जल-धारा—स्त्री० [ष० त०] १ जल की वह राशि जो पृथ्वी पर बह रही हो। जल का प्रवाह। २ एक प्रकार की तपस्या जिसमे ध्यान-मग्न तपस्वी पर धारा के रूप मे जल कुछ समय तक छोडा जाता है।

जलधारी (रिन्)—वि० [स० जल√धृ +णिनि] [स्त्री०जलधारिणी] जलधारण करनेवाला।

पु० मेघ। बादल।

जलधि—पु० [स० जल√धा +कि] १ समुद्र। २ दस शख की सूचक सख्या की सज्ञा। ३ महापद्म।

जलधिगा—स्त्री०[स० जलधि√गम् (जाना) +ड—टाप्] १ लक्ष्मी। २ नदी।

जलधिज—पु० [स० जलधि√जन् (उत्पत्ति)+ड] चद्रमा।

जल-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] एक कल्पित गाय। (पुराण)

जलन—स्त्री० [हि० जलना] १ जलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ शरीर के किसी अग के जलने पर उसमे होनेवाली कष्टकारक चुन-चुनाहट या पीडा। ३ शरीर मे अथवा उसके किसी अग मे किसी प्रकार का रोग या विकार होने के कारण होनेवाली कष्टकारक चुन-चुनाहट। जैसे—खुजली के कारण शरीर मे जलन होना। ४ किसी की उन्नति, वैभव, सुख आदि देखकर ईर्ष्या और द्वेष के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट।

जलनकुल—पु० [स० स० त०] ऊदबिलाव।

जलना—अ० [स० ज्वलन] १ आग का सयोग या सपर्क होने पर किसी वस्तु का ऐसी स्थिति मे होना कि उसमे से (क) लपट (जैसे—कोयला जलना) (ख) प्रकाश (जैसे—दीया जलना) (ग) ताप (जैसे—कडाही या तावा जलना) (घ) धूआँ (जैसे—गीली लकडी जलने पर) आदि उत्पन्न होने या निकलने लगे।

विशेष—प्रयोग की दृष्टि से 'जलना' का क्षेत्र बहुत व्यापक है। हमारे यहाँ स्वय आग भी जलती है, आग की भट्ठी या चूल्हा भी जलता है, भट्ठी या चूल्हे मे का इँधन भी जलता है, इस ईधन पर पकाई जानेवाली वस्तु भी जलती है और स्वय वह पात्र भी जलता है जिसमे कोई चीज पकाई जाती है। इसी प्रकार दीया भी जलता है, उसमे का तेल भी जलता है और उसमे की बत्ती भी जलती है।

पद—जलती आग=भयावह या सकट-पूर्ण वातावरण या स्थिति।

मुहा०—जलती आग मे कूदना=जान-बूझकर अपनी जान जोखिम मे या विशेष सकट की स्थिति मे डालना।

२ उक्त के आधार पर किसी वस्तु का आग से सयोग या सपर्क होने पर जलकर भस्म हो जाना। जैसे—घर या शव जलना। ३ किसी विशिष्ट प्रक्रिया से किसी वस्तु के साथ अग्नि का ऐसा सयोग होना कि उस वस्तु को कोई दूसरा या नया रूप प्राप्त हो। ४ शरीर के किसी अग का अग्नि या ताप के कारण विकृत अवस्था को प्राप्त होना। जैसे—(क) रोटी पकाते समय तवे से हाथ जलना। (ख) गरम बालू पर चलते समय पैर जलना। (ग) गरम दूध पीने से मुँह जलना।

मुहा०—जले पर नमक छिड़कना=ऐसा काम करना जिससे दुखिया का दुख और अधिक बढे।

५ पेड-पौधो के सबध मे, अधिक ताप के प्रभाव के कारण मुरझा या सूख जाना। जैसे—इस भीषण गरमी मे खेत के खेत जल गये है। ६ (आतरिक ताप) के कारण शरीर का बहुत अधिक तप जाना। जैसे—ज्वर के कारण शरीर जलना। ७ किसी प्रकार की भौतिक या रासायनिक प्रक्रिया के कारण किसी वस्तु के विशिष्ट गुणो का नष्ट होना। जैसे—(क) बिजली का तार जलना। (ख) तेजाब की बूँद पडने पर कपडा जलना। ८ लाक्षणिक अर्थ मे, ईर्ष्या, क्रोध, राग-द्वेष आदि के कारण बहुत अधिक उत्तप्त होना।

मुहा०—जली कटी सुनाना=ईर्ष्या या क्रोध आदि के कारण बहुत सी कटु बाते कहना। **जल मरना**=ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण बहुत अधिक दुखी होना।

जल-नाथ—पु० [ष० त०] १ इद्र। २ वरुण। ३ समुद्र।

जल-निधि—पु० [ष० त०] १ समुद्र। २ चार की सख्या की सूचक सज्ञा।

जल-निवास—पु० [स० त०] वह झोपडी या छोटा मकान जो कुछ देशो के जगली लोग बडी झील के छिछले भाग मे खभो पर अपने रहने के लिए बनाते है। (लेक ड्वेलिंग)

जलनीम—स्त्री० [स० जल निब] जलाशयो की दलदली भूमि मे उपजनेवाली एक प्रकार की लोनिया।

जलनीलिका—स्त्री० [स०जलनीली+कन्—टाप्, ह्रस्व] सेवार।

जलनीली—स्त्री०[स० जल√निल्(नीला करना)+णिच्+अण्—ङीष्] सेवार।

जलपक*—वि०=जल्पक।

जल-पक्षी (क्षिन्)—पु०[मध्य०स०]वे पक्षी जो जलाशयो के समीप रहते तथा उनमे की मछलियाँ पकडकर खाते है।

जल-पति—पु० [ष० त०] १ वरुण। २ समुद्र। ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र।

जल-पथ—पु० [ष० त०] १ दे० 'जलमार्ग'। २ नहर।

जलपना†—अ० [स० जल्पन] १ निरर्थक या व्यर्थ की बाते कहना। बकना। उदा०—धाए बुद्धि विरुद्ध क्रुद्ध जलपत दुर्भाषा।—रत्ना०। २ लबी चौडी हाँकना। डीग मारना।

जल-परी—स्त्री०[स० जल+फा० परी] एक कल्पित जल-जतु जिसका कमर से ऊपरी भाग स्त्रियो का-सा और नीचे का भाग मछलियो का-सा माना जाता है। (मर्मेड)

जलपाई—स्त्री०[देश०] रुद्राक्ष की जाति का एक पेड और उसका फल।

जलपाटल—पु०[स० जल और पटल] काजल।

जल-पान—पु०[स० जल और पान] भोजन से पहले या बाद मे (प्राय प्रातःकाल और सायकाल) किया जानेवाला हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जल-पारावत—पु० [स०त०] जलाशयो के किनारे रहनेवाली जल-कपोत नामक चिडिया।

जल-पिंड—पु०[ष० त०] अग्नि] आग।

जल-पिप्पलिका—स्त्री० [मध्य स०] जलपीपल।
जल-पिप्पली—स्त्री० [मध्य० स०] जलपीपल नामक ओषधि।
जल-पिप्पिका—स्त्री० [ष० त०] मछली।
जल-पीपल—स्त्री० [स० जलपिप्पली] १ पीपल की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड जो खडे या स्थिर पानी मे होता है। २ उक्त पेड की फली जो पाचक होती है और ओषधि के काम आती है।
जल-पुष्प—पु० [मध्य० स०] १ जलाशयो मे उत्पन्न होनेवाले फूलो की सज्ञा। २ लज्जावती की जाति का एक पौधा जो प्राय दलदलो मे होता है।
जल-पृष्ठ-जा—स्त्री० [स०जल-पृष्ठ ष० त०, √जन् (उत्पत्ति)+ड–टाप्] सेवार।
जल-प्रदान—पु० [ष० त०] जल देने विशेषत तर्पण करते समय पितरो आदि को जल देने की क्रिया या भाव।
जल-प्रपा—पु० [ष० त०] पौसरा। प्याऊ।
जल-प्रपात—पु० [ष० त०] १ पहाडो आदि मे बहुत ऊँचाई से गिरनेवाला पानी का प्राकृतिक झरना। प्रपात। (वाटर फाल) २ वह स्थान या ऊँचा पहाड जहाँ पर से जल की धारा नीचे गिरती हो।
जल-प्रवाह—पु० [ष० त०] १ कोई चीज जल मे प्रवाहित करने अर्थात् बहाने की क्रिया या भाव। २ जल की धारा के किसी ओर बहने की क्रिया, गति या भाव।
जल-प्रागण—पु० [ष० त०] समुद्र का उतना भाग जितने पर उसके तट पर स्थित राज्य का अधिकार समझा जाता है। (टेरिटोरियल वाटर्स) **विशेष**—अतर्राष्ट्रीय विधान के अनुसार यह क्षेत्र तट से तीन मील की दूरी तक होता है। पर अब कुछ राष्ट्र इसे १२ मील तक रखना चाहते है।
जल-प्रात—पु० [ष० त०] जलाशय के आस-पास का प्रदेश।
जल-प्राय—वि० [ब० स०] (ऐसा भू-भाग) जिसमे जलाशय अर्थात् ताल, नदियाँ, नहरे आदि बहुत अधिक हो।
जल-प्रिय—पु० [ष० स०] १ मछली। २ चातक। पपीहा।
जलप्लव—पु० [स० जल √प्लु (कूदना)+अच्] ऊदबिलाव।
जल-प्लावन—पु० [ष० त०] १ ऐसी भीषण बाढ जिसमे चारो ओर बहुत दूर-दूर तक जल ही जल दिखाई देता हो और धरातल उक्त बाढ के फलस्वरूप पानी से ढक जाता हो। २ एक प्रकार का प्रलय जिसमे सब देश डूब जाते है। (पुराण)
जल-फल—पु० [मध्य० स०] सिघाडा।
जलबध—पु० [स० जल √बध (बाधना)+अच्] मछली।
जल-बधक—वि० [ष० त०] जल को बाँधनेवाला।
पु० बाँध।
जल-बधु—पु० [ब० स०] मछली।
जल-बम—पु० [स० जल+अ० बाम्ब] जल मे छोडा जानेवाला एक प्रकार का रासायनिक विस्फोटक गोला जो आस-पास के जहाजो, पनडुब्बियो आदि को नष्ट कर देता है।
जलबालक—पु० [स० जल √बल् (जिलाना)+णिच्+ण्वुल्—अक] बिंध्याचल पर्वत।
जल-बाला—स्त्री० [ष० त०] बिजली। उदा०—जलबाला न समाइ जलदि।—प्रिथीराज।
जल-बालिका—स्त्री० [ष० त०] बिजली। विद्युत्।
जल-बिंब—पु० [ष० त०] पानी का बुलबुला। बुल्ला।
जल-बिडाल—पु० [स० त०] ऊदबिलाव।
जल-बिल्व—पु० [मध्य० स०] १ केकडा। २ वह प्रदेश जहाँ जल की कमी हो।
जल-बुद्बुद—पु० [ष० त०] पानी का बुलबुला। बुल्ला।
जलबेंत—पु० [स० जलवेत्र] जलाशयो या दलदल मे लता के रूप मे उपजनेवाला एक प्रकार का बेत का पौधा जिसके छिलको से कुर्सियाँ आदि बुनी जाती है।
जल-ब्राह्मी—स्त्री० [म० त०] हुरहुर का साग।
जल-भँगरा—पु० [स० जल+हिं० भँगरा] जलाशयो मे होनेवाला एक प्रकार का भँगरा।
जल भालू—पु० [हिं० जल+भाल] सील की जाति का आठ-दस हाथ लबा एक समुद्री जनु जिसके सारे शरीर पर बडे-बडे बाल होते हैं।
जलभू—पु० [स० जल √भू (होना)+क्विप्] १ मेघ। २ एक प्रकार का कपूर। ३ जलचौलाई।
स्त्री० जल-प्राय भूमि। कछ।
जल-भूषण—पु० [ष० त०] वायु। हवा।
जलभृत्—पु० [स० जल √भृ (धारण)+क्विप्] १ बादल। मेघ। २ वह पात्र, जिसमे जल रखा जाता हो। ३ एक प्रकार का कपूर।
जल-भौंरा—पु० [स० जल+हिं० भौरा] काले रग का एक प्रसिद्ध छोटा कीडा जो जल के ऊपरी स्तर पर चलता, दौडता या तैरता रहता है। भौतुआ।
जल-मडल—पु० [ब० स०] एक प्रकार की बडी विषैली मकडी जिसके स्पर्श से कभी-कभी मनुष्य मर जाता है। चिरैयाबुदकर।
जल-मडूक—पु० [उपमि० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।
जलम†—पु०=जन्म।
जल-मद्गु—पु० [उपमि० स०] कौडिल्ला (पक्षी)।
जल-मधूक—पु० [मध्य० स०] जल-महुआ।
जलमय—पु० [स० जल+मयट्] १ चद्रमा। २ शिव की एक मूर्त्ति।
जल-मल—पु० [ष० त०] झाग। फेन।
जल-मसि—पु० [तृ० त०] १ बादल। मेघ। २ एक प्रकार का कपूर।
जल-महुआ—पु० [स० जलमधूक] जलाशयो के समीप होनेवाला एक प्रकार का महुआ (पेड) और उसका फल।
जल-मातृका—स्त्री० [मध्य० स०] जल मे रहनेवाली सात देवियो—मत्सी, कूर्मी, वाराही, दर्दुरी, मकरी, जलूका और जतुका मे से कोई एक। (पुराण)
जल-मानुष—पु० [मध्य० स०] [स्त्री० जलमानुषी] दे० 'जल-परी'।
जल-मापक—पु० [ष० त०] घडी के आकार का वह यत्र जो जल आदि मे से निकले हुए जल का मान बतलाता है। (हाइड्रो मीटर)
जल-माया—स्त्री० [ष० त०] मृग-तृष्णा।
जल-मार्ग—पु० [ष० त०] नहर, नदी, समुद्र आदि मे का वह मार्ग या

रास्ता जिससे जहाज, नावे आदि आती-जाती रहती है। (वाटरवेज़)

जल-मार्जार—पु०[ष० त०] ऊदबिलाव।

जलमुच्—पु०[स० जल√मुच् (छोडना)+क्विप्] १ बादल। मेघ। २ एक प्रकार का कपूर।

जल-मुलेठी—स्त्री० [स० जलयष्टी] जलाशय मे होनेवाली एक प्रकार की मुलेठी।

जल-मूर्ति—पु०[ब० स०] शिव।

जलमूर्तिका—स्त्री०[स० जल-मूर्ति ष० त०, +कन्-टाप्] ओला। करका

जलमोद—पु०[स० जल√मुद् (प्रसन्न होना)+ णिच्+अण्] खस।।

जल-यत्र—पु०[ष० त०] १ वह उपकरण जिससे कूएँ आदि से पानी ऊपर उठाकर नलो की सहायता से दूर-दूर तक पहुचाया जाता है। २ फुहारा। ३ जलघडी।

जल-यात्रा—स्त्री०[मध्य० स०] १ नदी, समुद्र आदि के द्वारा होनेवाली यात्रा। २ अभिषेक आदि के समय पवित्र जल लाने के लिए कही जाना। ३ ज्येष्ठ की पूर्णिमा को होनेवाला वैष्णवो का एक उत्सव जिसमे विष्णु की मूर्त्ति को ठडे जल से स्नान कराया जाता है। ४ राजपूताने मे कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को मनाया जानेवाला एक उत्सव।

जल-यान—पु०[ष०त०] वह यान या सवारी जो जल मे चलती हो। जैसे—जहाज, नाव आदि।

जल-रक—पु०[स० स० त०] बगुला।

जल-रकु—पु०[स० स० त०] बनमुर्गी।

जल-रग—पु० [मध्य० स०] १ चित्र-कला मे, तैल-रग से भिन्न वह रग जो जल और गोद आदि के योग से तैयार किया जाता है। (वाटर-कलर) २ उक्त प्रकार के रगो से चित्र अकित करने की प्रणाली। ३ उक्त प्रकार के रगो से अकित चित्र।

जलरज—पु०[स० जल√रज् (अनुरक्त होना)+ अच्] बगुलो की एक जाति।

जल-रड—पु०[ष० त०] १ भवँर। २ जलकण। ३ साँप।

जल-रस—पु०[मध्य०] नमक।

जल-राशि—पु०[ष० त०] १ अथाह जल। २ समुद्र। ३ ज्योतिष मे, कर्क, मकर, कुभ और मीन राशियाँ।

जल-रुद्ध—वि०[तृ० त०] १ जल से घिरा या रुँधा हुआ। २ इतना कडा या ठोस (पदार्थ) कि उसके छेदो मे जल का प्रवेश न हो सकता हो। (वाटर टाइट)

जल-रुह—वि०[स० जल√रुह् (उगना)+क] जल मे उत्पन्न होनेवाला।

पु० जल मे उत्पन्न होनेवाली वनस्पतियो तथा उनके फल-फूलो आदि की सज्ञा। जैसे–कमल, सिंघाडा आदि।

जल-रूप—पु०[ब० स०] ज्योतिष मे, मकर राशि।

जल-लता—स्त्री०[स० त०] तरग। लहर।

जल-लोहित—पु०[ब० स० ?] एक राक्षस का नाम।

जल-वर्त—पु०[ष० त०] १ एक प्रकार के मेघ। २ जलावर्त।

जल-वल्कल—पु०[ष० त०] जलकुभी।

जल-वल्ली—स्त्री०[मध्य० स०] सिंघाडा।

जलवाना—स० [हिं० जलाना का प्रे० रूप] जलाने का काम किसी दूसरे से कराना।

जल-वानीर—पु०[मध्य० स०] जलबेत।

जल-वायस—पु०[स० त०] कौडिल्ला (पक्षी)।

जल-वायु—पु०[द्व० स०] किसी प्रदेश की प्राकृतिक या वातावरणिक स्थिति जिसका विशेष प्रभाव जीवो, जतुओ, वनस्पतियो आदि की उपज, विकास तथा स्वास्थ्य पर पडता है। (क्लाइमेट)

जल-वायुयान—पु०[ष० त०] वह वायुयान जो समुद्र या बडे जलाशयो के तल पर भी उतर सकता और फिर वही से उडकर आकाश मे भी जा सकता हो। (हाइड्रो प्लेन)

जल-वाष्प—पु०[ष० त०] पानी की वह भाप जो वेग से किसी चमकीले पदार्थ पर डाल कर ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के काम मे लाई जाती है। (वाटरगैस)

जल-वास—पु०[स० त०] १ जल मे वास करने अर्थात् रहने की क्रिया या भाव। २ साँस रोककर तथा पानी मे डुबकी लगाकर बैठने की क्रिया या साधना। उदा०—कुशल बली है जलवास की कला मे भी। मैथलीशरण। ३ [ब० स०] खस। ४ [जल√वस्] विष्णुकद।

जलवाह—पु०[स० जल√वह् (ढोना)+अण्] मेघ।

जलविंदुजा—स्त्री०[स० जल-विंदु ष० त०,√जन् (उत्पत्ति)+ड—टाप्] एक प्रकार की रेचक ओषधि।

जल-विषुव—पु०[मध्य० स०] ज्योतिष मे वह योग या स्थिति जब सूर्य कन्या राशि से तुला राशि मे सक्रमण करता है।

जल-विश्लेषण—पु०[ष० त०] जल के सयोजक तत्त्वो को अलग-अलग करने की क्रिया या भाव। (हाइड्रोलिसिस)

जल-वीर्य—पु०[ब० स०] भरत के एक पुत्र का नाम।

जल-वृश्चिक—पु०[स० त०] झींगा मछली।

जल-वेतस—पु०[मध्य० स०] जलबेत।

जल-वैकृत—पु०[ष० त०] जलाशयो, नदियो आदि के सबध मे होनेवाली कुछ अनोखी और असाधारण बाते जो भावी दैवी उत्पात आदि की सूचक होती है। जैसे—नदी का अपने स्थान से हटना, जलाशयो का अचानक सूख जाना आदि आदि।

जल-व्याघ्र—पु० [स० त०] [स्त्री० जल-व्याघ्री] सील की जाति का एक हिंसक जल-जतु।

जल-व्याल—पु०[मध्य० स०] पानी मे रहनेवाला साँप।

जल-शयन—पु०[ब० स०] विष्णु।

जलशायी (यिन्)—पु० [जल√शी (शयन करना)+णिनि] विष्णु।

जलशुंडी—स्त्री०=जलस्तभ।

जल-शूक—पु०[स० त०] सेवार।

जल-शूकर—पु०[ष० त०] कुभीर नाक नामक जल-जतु।

जल-सघात—पु०[ष० त०] जल-राशि।

जल-सत्रास—पु०=जलातक।

जल-सध—पु०[ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

जल-सस्कार—पु०[स० त०] १ स्नान करना। नहाना। २. धोना। ३. शव को नदी आदि मे प्रवाहित करना।

जल-समाधि—स्त्री०[स० त०] १ जल मे डूबकर प्राण देना। २ जल मे डुबाया या प्रवाहित किया जाना।

जल-समुद्र—पु०[मध्य० स०] सात समुद्रो मे से अतिम समुद्र। (पुराण)

जल-सर्पिणी—स्त्री० [स० त०] जोक।

जलसा—पु०[अ०] १ दे० 'उत्सव' तथा 'समारोह'। २ दे० 'अधिवेशन'।

जलसाईं—पु०[हिं० जलाना] मुरदे जलाने का स्थान। मरघट।

जलसिंह—पु०[स० त०] [स्त्री० जलसिंही] सील की जाति का एक प्रकार का बडा तथा हिंसक जल-जतु।

जलसिरस—पु०[स० जलशिरीष] जलाशयो मे पैदा होनेवाला एक प्रकार का सिरस का वृक्ष।

जलसीप—स्त्री०[स० जलशुक्ति] वह सीप जिसके अदर मोती हो।

जलसीम—स्त्री०[स० जल+ शिबा] जल की सेम अर्थात् मछली।

जल-सूचि—पु० [स० त०] १ सूँस। २ बडा कछुआ। ३ जोक। ४ जल मे होनेवाला एक पौधा। ५ सिंघाडा। ६ कौआ। ७ कौआ नामक मछली।

जल-सूत—पु०[स० त०] नहरुआ (रोग)।

जल-सेना—स्त्री०[मध्य० स०] किसी राष्ट्र की वह सेना (वायु तथा स्थल-सेना से भिन्न) जो समुद्र-तटो की शत्रुओ से रक्षा करती तथा समुद्र मे पहुँचकर विपक्षियो के जहाजो से युद्ध करती है। (नेवी)

जल-सेनी—पु०[स०] एक प्रकार की मछली।

जल-स्तभ—पु० [ष० त०] एक प्राकृतिक घटना जिसमे जलाशय या समुद्र मे आकाश से बादल झुक पडते है और जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तभ का रूप धारण कर लेता है। सूँडी। (वाटर स्पाउट)

जल-स्तभन—पु० [ष० त०] मत्रो आदि की शक्ति से जल की गति या प्रवाह रोकना या बद करना।

जलस्था—स्त्री०[स० जल√स्था (रहना)+क-टाप्] गडदूर्वा।

जलहर†—वि०=जलहल।
पु०=जलधर।

जल-हरण—पु० [ष० त०] मुक्तक दडक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ वर्ण होते है और आठ, आठ, नौ और फिर सात पर यति होती है।

जलहरी—स्त्री०=जलधरी।

जलहल†—वि०[हिं० जल] जल से भरा हुआ। जलमय।
†पु० १=जलाशय।
२=सागर

जल-हस्ती (स्तिन्)—पु०[स०-त०] सील की जाति का एक स्तनपायी जल-जतु।

जलहार—पु०[स० जल√हृ (हरण)+अण्] [स्त्री० जलहारी] पानी भरनेवाला मजदूर। पनिहारा।

जलहालम—पु० [स० जल+हालम ?] जलाशयो के किनारे होनेवाला एक प्रकार का हालम वृक्ष।

जल-हास—पु०[ष० त०] समुद्र-फेन।

जल-होम—पु[स० त०]हवन का एक प्रकार जिसमे जल मे ही आहुति दी जाती है।

२-४४

जलांक—पु०[स० जल-अंक, ष० त०] [वि० जलांकित] जल-चिह्न। (दे०)

जलांकन—पु०[स० जल-अकन, ष० त०] जलांक या जल-चिह्न अकित करने की क्रिया या भाव।

जलांचल—पु० [स० जल-अचल ष० त०] पानी की नहर।

जलांजल—पु० [स० जल√अज् (व्याप्त करना)+अलच्] १ सेवार। २ सोता। स्रोत।

जलांजलि—स्त्री०[स० जल-अजलि, मध्य० स०] १ जल से भरी अजुली। २ तर्पण के समय पितरो आदि को दी जानेवाली जल की अजुलि।

जलांटक—पु०[स० जल√अट् (घूमना)+ण्वुल्—अक] मगर।

जलांतक—पु० [स० जल-अतक ब० स०, कप्] १ सात समुद्रो मे से एक। २ श्री कृष्ण का एक पुत्र जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। (हरिवश)

जलांबिका—स्त्री०[स० जल-अबिका ष० त०] कूआँ। कूप।

जलाऊ—वि० [हिं० जलाना+आऊ (प्रत्य०)] १ जलानेवाला। २ (वह) जो जलाया जाय या जलाये जाने को हो। जैसे—जलाऊ लकडी।

जलाक—स्त्री०[हिं० जलाना] १ पेट की जलन। २ तेज धूप की लपट। ३ लू।

जलाकर—पु०[स० जल-आकर ष० त०] वह स्थान जहाँ बहुत अधिक जल हो। जलाशय। जैसे—नदी, समुद्र आदि।

जलाकांक्ष—पु०[स० जल-आ√काङ्क्ष, (चाहना) +अण् ब० स०] हाथी।

जलाका—स्त्री० [स० जल-आ√का (जाहिर होना)+क-टाप्] जोक।

जलाक्षी—स्त्री० [स० जल√अक्ष् (व्याप्त होना)+अच्-ङीष्] जलपीपल। जलपिप्पली।

जलाखु—पु०[स० जल-आखु] ऊदबिलाव (जतु)।

जलाजल†—वि०=झलाझल।
†पु०=झलाझल।

जलाटन—पु०[स० जल√अट् (घूमना)+ल्यु—अन] सफेद चील।

जलाटनी—स्त्री०[स० जलाटन+ङीप्] जोक।

जलाटीन—पु०=जेलाटीन।

जलातंक—पु०[स० जल-आतक, प० त०] १ जल से लगनेवाला भय। २ पागल कुत्तो, गीदडो आदि के काटने से होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे मनुष्य को जल देखने भर से बहुत अधिक डर लगता है। (हाइड्रोफोबिया)

जलातन—वि०[हिं० जलना+तन] १ जिसका तन जला हो अर्थात् बहुत अधिक दुखी या सतप्त। २ क्रोधी। ३ ईर्ष्यालु।
पु० कष्ट देने की क्रिया या भाव। जैसे—इतना जलातन करोगे तो मैं चला जाऊँगा।

जलात्मिका—स्त्री०[स० जल-आत्मन् ब० स०, कप्, टाप्, इत्व ब० स०] १ जोक। २ कूआँ।

जलात्यय—पु०[स० जल-अत्यय, ब० स०] शरत्काल।

जलाद†—पु०=जल्लाद।

जलाधार—पु०[स० जल-आधार, ष० त०] जलाशय।

जलाधिदैवत—पु० [स० जल-अधिदैवत, ष० त०] १ वरुण। २ पूर्वाषाढा नक्षत्र।

जलाधिप—पु०[स० जल-अधिप, ष० त०] १ वरुण। २ ज्योतिष मे, वह ग्रह जो किसी विशिष्ट सवत्सर मे जल का अधिपति होता है।

जलाना—स०[हिं० जलना क्रिया का स० रूप] १ आग के सयोग से किसी चीज को जलने मे प्रवृत्त करना। प्रज्वलित करना।

विशेष—कोई चीज या तो (क) ताप उत्पन्न करने के लिए जलाई जाती है, जैसे—ईधन जलाना, या (ख) प्रकाश उत्पन्न करने के लिए, जैसे—लालटेन जलाना, अथवा (ग) नष्ट या भस्म करने के लिए, जैसे—मकान या शहर जलाना।

२ आज-कल उक्त क्रियाएँ आग के अतिरिक्त कुछ दूसरी प्रक्रियाओ से भी की जाती हैं। जैसे— बिजली की बत्ती या लट्टू जलाना। ३ ऐसा काम करना जिससे अधिक ताप लगने के कारण कोई चीज जलकर विकृत दशा को प्राप्त हो जाय। जैसे—तरकारी या रोटी जलाना। ३ किसी पदार्थ को आग पर रखकर इस प्रकार गरम करना कि उसका कुछ अश भाप के रूप मे उड जाय। जैसे—दूध मे का पानी जलाना। ४ कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थों के सयोग से ऐसी क्रिया करना जिससे कोई तल निर्जीव या विकृत हो जाय। जैसे—क्षार या तेजाब से कपडा या फोडा-फुसी जलाना। ५ किसी को ऐसी चुभती हुई बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे कोई बहुत अधिक मन ही मन दुःखी हो। ६ ऐसा काम करना जिससे किसी के मन मे ईर्ष्या-जन्य कष्ट उत्पन्न हो।

जलापा—पु० [हिं० जलना+आपा (प्रत्य०)] बराबर बहुत समय तक मन ही मन जलते रहने की अवस्था या भाव।

जलापात—पु०[जल-आपात, ष० त०] जलप्रपात (दे०)।

जलायुका—स्त्री०[जल-आयुस्, ब० स०, कप्, पृषो० सलोप] जोक।

जलार्क—पु०[जल-अर्क, मध्य० स०] जल मे दिखाई पडनेवाला सूर्य का प्रतिबिब।

जलार्णव—पु०[जल-अर्णव, मध्य० स०] १ जल-समुद्र। २ बरसात। वर्षाकाल।

जलार्द्र—वि०[जल-आर्द्र, तृ० त०] पानी मे या से भीगा हुआ। गीला।

जलार्द्रा—स्त्री०[स० जालार्द्र+टाप्] १ गीला वस्त्र। २ भीगा पखा।

जलाल—पु०[अ०] १ तेज। प्रकाश। २ प्रताप। महिमा। ३ वैभव और सपन्नता।

जलाली—वि०[अ० जलाल] तेज या प्रकाश से युक्त।

जलालु—पु०[जल-आलु, मध्य० स०] जमीकद। सूरन।

जलालुक—पु०[स० जलालु√कै (जाहिर होना)+उक] कमल की जड। भसीड।

जलालुका—स्त्री०[स० जल√अल् (जाना)+उक-टाप्] जोक।

जलाव—पु०[हिं० जलना+आव (प्रत्य०)]१ जलने या जलाने की क्रिया या भाव। २ जलने के कारण कम होनेवाला अश। ३ खमीर। ४ पतला शीरा।

जलावतन—वि०[अ०] [स्त्री० जलावतनी] देश या राज्य से निर्वासित।

जलावतनी—स्त्री०[अ०] देश-द्रोह आदि के अभियोग मे किसी को देश छोडकर विदेश चले जाने की दी जानेवाली आज्ञा या दड। निर्वासन। देश निकाला।

जलावतार—पु०[जल-अवतार, ष० त०] नाव आदि पर से उतरने का घाट।

जलावन—पु०[हिं० जलाना] १ जलाने की वस्तुएँ। ईधन। २ किसी वस्तु का वह अश जो जलकर विकृत या नष्ट हो गया हो।

जलावर्त्त—पु०[जल-आवर्त्त, ष० त०] पानी का भँवर।

जलाशय—पु०[जल-आशय, ष० त०] १ वह स्थल (प्राय गहरा स्थल) जिसमे जल भरा हो। जैसे—गड्ढा, झील, नदी, नहर आदि। २ खस। उशीर। ३ सिंघाडा। ४ लामज्जक नामक तृण।

जलाशया—स्त्री०[स० जलाशय+टाप्] नागरमोथा।

जलाश्रय—पु०[जल-आश्रय ब० स० १ दीर्घनाल या वृत्तगुड नामक तृण। २ सिंघाडा।

जलाश्रया—स्त्री०[स० जलाश्रय+टाप्] शूली घास।

जलाष्ठीला—स्त्री०[जल-अष्ठीला, तृ० त०] बहुत बडा तथा चौकोर तालाब।

जलासुका—स्त्री०[जल-असु, ब० स०, कप्-टाप्] जोक।

जलाहल—वि० [हिं० जलाजल अथवा स० जलस्थल] जल से भरा हुआ। जलमय। उदा०—जगत जलाहल होइ कुलाहल त्रिभुवन व्यापै।—रत्ना०।

जलाह्वय—पु०[स० जल-आह्वय, ब० स०] १ कमल। २ कुईं। कुमुद।

जलिका—स्त्री०[स० जल+ठन्-इक-टाप्] जोक।

जलिया†—पु०[स० जल] केवट। मल्लाह।

जलीय—वि० [स० जल+छ—ईय] १ जल-सबधी। जल का। जैसे—जलीय क्षेत्र। २ जल मे उपजने, रहने या होनेवाला। जैसे—जलीय जतु। ३ जिसमे जल का अश हो।

जलीय-क्षेत्र—पु०[कर्म० स०] दे० 'जल-प्रागण'।

जलील—वि० [अ०] [भाव० जलाल] पूज्य या महान (व्यक्ति)। वि० [अ० ज़लील] [भाव० जिल्लत] १ जिसका अपमान हुआ हो। अपमानित। २ जो अपमानित किये जाने पर भी हठ वश वही काम करता हो। ३ तुच्छ। नीच।

जलुका—स्त्री०[स०√जल् (तेज होना)+उक–टाप्] जोक।

जलू—स्त्री०[स० जलौका] जोक।

जलूका—स्त्री०[जल-ओक, ब० स०, पृषो० सिद्धि] जोक।

जलूस—पु०[अ० जुलूस] १ गलियो, बाजारो, सडको आदि पर प्रचार, प्रदर्शन आदि के लिए निकलनेवाला व्यक्तियो का समूह।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।

२ बहुत ही ठाठ-बाट या सजावट की अवस्था या स्थान। उदा०—बैठी जमन जलूस करि फरस फबी सुखयान।—विक्रम सतसई।

जलूसी—वि०[अ० जुलूस] १ जलूस सबधी। जलूस का। २ (सन या सवत्) जिसका आरभ किसी राजा के सिंहासन पर बैठने के दिन से हुआ हो।

जलेंद्र—पु०[जल-इद्र, ष० त०] १ वरुण। २ महासागर।

जलेंधन—पु०[जल-इधन, ब० स०] बडवाग्नि।

जलेचर—वि०[स० जले√चर् (चलना)+ट] जलचर।

जलेच्छया—पु० [स० जल √इ (गति)+क्विप्, √शी (सोना)+अच्, टाप्] जलाशय मे होनेवाला हाथी सूँड नामक पौधा।

जलेज—पु० [स० जले √जन् (उत्पत्ति)+ड] कमल।

जलेतन—वि० [हिं० जलना+तन] १ जिसे बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचा हो। २ ईर्ष्या, द्रोह आदि के कारण बहुत अधिक दु खी या सतप्त। ३ क्रुद्ध।

जलेबा—पु० [हिं० जलेबी] बडी जलेबी।

जलेबी—स्त्री० [देश०] १ घी मे तलकर शीरे मे पगाई हुई मैदे की कुडलाकार एक प्रसिद्ध मिठाई। २ बरियारे की जाति का एक पौधा जिसमे पीले रग के फूल लगते है। ३ एक प्रकार की छोटी अतिशबाजी। †४ घेरा। लपेट।

जलेभ—पु० [जल-इभ, मध्य० स०] जलहस्ती नामक जल-जतु।

जलेरुहा—स्त्री० [स० जले √रुह (उगना)+क—टाप्] सूरजमुखी नाम का पौधा और उसका फूल।

जलेला—स्त्री० [स० जले √ला (लेना)+क—टाप्] एक मातृका जो कार्त्तिकेय की अनुचरी कही गई है।

जलेवाह—पु० [स० जले √वाह् (प्रयत्न)+अण्] गोताखोर। पनडुब्बा।

जलेशय—पु० [स० जले √शी (शयन करना)+अच्] १ मछली। २ विष्णु।

जलेश्वर—पु० [जल-ईश्वर, ष० त०] १ वरुण। २ समुद्र।

जलोका—स्त्री० [जल-ओक ब० स०, पृषो० सिद्धि] जोक।

जलोच्छ्वास—पु० [जल-उच्छ्वास ष० त०] जलाशय मे उठनेवाली वह बडी लहर जो तट की भूमि को भी स्पर्श करती है।

जलोत्सर्ग—पु० [जल-उत्सर्ग, ष० त०] पुराणानुसार ताल, कूआँ या बावली आदि का विवाह।

जलोदर—पु० [जल-उदर ब० स०] एक रोग जिसमे पेट मे पानी जमा होने लगता है और उसके फलस्वरूप पेट फूलने लगता है।

जलोद्धतिगति—स्त्री० [जल-उद्धति, ष० त०, जलउद्धति-गति, ब० स०] बारह अक्षरो की एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश जगण, सगण, जगण और सगण होता है।

जलोद्भवा—स्त्री० [जल-उद्भव, ब० स०, टाप्] १ गुदला नाम की घास। २ छोटी ब्राह्मी।

जलोद्भूता—स्त्री० [जल-उद्भूता, स० त०] गुदला नामक घास।

जलोन्माद—पु० [जल-उन्माद, ब० स०] शिव का एक अनुचर।

जलोरगी—स्त्री० [जल-उरगी, स०त०] जोक।

जलौकस—पु० [जल-ओकस्, कर्म० स०,+अच्] जोक।

जलौका—स्त्री० [जल-ओक, ब० स०, टाप्] जोक।

जल्द—अव्य० [अ०] जल्दी। (दे०)

जल्दबाज—वि० [फा०] [भाव० जल्दबाजी] (किसी काम मे) आवश्यकता से अधिक जल्दी करनेवाला। हर काम या बात मे जल्दी मचानेवाला।

जल्दबाजी—स्त्री० [फा०] जल्दबाज होने की अवस्था या भाव। आवश्यक या उचित से अधिक जल्दी या शीघ्रता करना।

जल्दी—स्त्री० [अ०] तीव्र गति से आगे बढने या कोई काम करने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—हर काम मे जल्दी करना ठीक नही। अव्य० १ शीघ्रता से। जैसे—जल्दी चलो। २ आनेवाले थोडे समय मे। जैसे—अभी जल्दी पानी नही बरसेगा। ३ सहज मे। सुगमता से। जैसे—यह बात जल्दी तुम्हारी समझ मे न आयगी।

जल्प—पु० [स० √जल्प् (कहना)+घञ्] १ कथन। २ बकवाद। प्रलाप। ३ ऐसा तर्क-वितर्क या विवाद जिसमे औचित्य, न्याय, सत्य आदि का विचार छोडकर केवल अपनी बात ठीक सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाय। ४ सोलह पदार्थो मे से एक पदार्थ। (न्याय)

जल्पक—वि० [स० √जल्प्+ण्वुल्—अक] १ कहनेवाला। २ बकवादी। वाचाल। ३ झूठ-मूठ तर्क-वितर्क करनेवाला।

जल्पन—पु० [स० √जल्प्+ल्युट्—अन] १ जल्प करने की क्रिया या भाव। २ डीग।

जल्पना—अ० [स० जल्पन] १ कहना। बोलना। २ व्यर्थ मे या बे-फायदा बोलना। बकवाद करना। ३ व्यर्थ मे तर्क-वितर्क करना। ४ डीग मारना।

जल्पाक—वि० [स० √जल्प्+षाकन्]=जल्पक।

जल्पित—भू० कृ० [स० √जल्प्+क्त] १ कहा हुआ। २ बका हुआ। ३ मनगढत और मिथ्या (बात)।

जल्ला—पु० [स० जल] १ झील। (लश०) २ ताल। ३ हौज। ४ वह स्थान जहाँ जल अधिक होता या ठहरता हो।

जल्लाद—पु० [अ०] १ मुस्लिम शासन-काल मे, राज्य द्वारा नियुक्त वह कर्मचारी जो दडित अपराधी का किसी तेज धारवाले अस्त्र से सिर काटता था। २ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत बडा क्रूर तथा निर्दय (व्यक्ति)।

जल्वा—पु० [अ० जल्व] १ प्रकाश। तेज। २ शोभा। सौदर्य।

जल्सा—पु०=जलसा।

जल्होर†—पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

जव—पु० [स० √जु (जाना)+अप्] १ वेग। तेजी। २ जल्दी। शीघ्रता।
वि० १ [√जु+अच्] १ वेगवान्। २ जल्दी या शीघ्रता करनेवाला।
पु०=जौ।

जवन—वि० [स० √जु (जाना)+ल्यु—अन] [स्त्री० जवनी] तेज। वेगवान्।
पु० [√जु+ल्युट्] वेग।
पु०=यवन।

जवनाल—पु०=यवनाल।

जवनिका—स्त्री०=यवनिका।

जवनिमा (मन्)—स्त्री० [स० जवन+इमनिच्] वेग।

जवनी—स्त्री० [स० जवन+ङीप्] १ अजवायन। २ वेग। तेजी।
स्त्री०=यवनी (यवन जाति की स्त्री)।

जवस्—पु० [स० √जु+असुन्] वेग।

जवस—पु० [स० √जु+असच्] घास।

जवाँ—वि० [फा०] जवान का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे प्राप्त होता है। जैसे—जवाँमर्द।

जवाँमर्द—पु० [फा०] [भाव० जवाँमर्दी] १ नौजवान आदमी। २ वीर पुरुष। बहादुर।

जवाँमर्दी—स्त्री० [फा०] १ जवान अर्थात् युवा होने की अवस्था या भाव। २ बहादुरी। वीरता।

जवा—स्त्री० [स०√जु (प्राप्त होना)+अच्-टाप्] अडहुल। जपा।
पु० [स० यव] १ जौ के आकार का दाना। २ लहसुन का दाना। ३ एक प्रकार की सिलाई।

जवाइन†—स्त्री०=अजवायन।

जवाई†—स्त्री०[हि० जाना] १ जाने की क्रिया या भाव। गमन। २ वह धन जो किसी को कही जाने पर उपहार या पारिश्रमिक के रूप मे दिया जाय।
†पु०=जँवाई (दामाद)।

जवा-कुसुम—पु० [मध्य० स०] अडहुल का फूल।

जवाखार—पु० [स० यवक्षार] वैद्यक मे जौ के क्षार से बनाया जानेवाला एक प्रकार का नमक।

जवाड़ी—स्त्री० [हि० जौ+आडी (प्रत्य०)] गेहूँ मे मिले हुए जौ के दाने।

जवादानी†—स्त्री० [हि० जौ+दानी] गले मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण। चपाकली।

जवादि—पु० [अ० जब्बाद, ज़बाद] कस्तूरी की तरह का एक प्रकार का सुगधित द्रव्य जो गध-मार्जार की नाभि मे से निकलता है।

जवाधिक—पु० [स० जव-अधिक, ब० स०] बहुत तेज चलनेवाला घोडा।

जवान—वि० [फा०] [भाव० जवानी] १ युवा। तरुण। २ (व्यक्ति) जो तरुण अवस्था प्राप्त कर चुका हो। बचपन और प्रौढता के बीच की अवस्थावाला। ३ वीर।
पद—जवान-जहान=पूर्ण यौवन प्राप्त। जैसे—जवान-जहान लडकी।
पु० १ वीर पुरुष। २ पुलिस या सेना का सिपाही।

जवानी—स्त्री० [फा०] जवान होने की अवस्था या भाव। तरुणाई। यौवन।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढना।—ढलना।
पद—उठती या चढती जवानी=वह अवस्था जिसमे किसी का यौवन-काल आरभ हो रहा हो।
मुहा०—उतरती या ढलती जवानी=यौवन-काल समाप्त होने का समय।
स्त्री० [स०] अजवायन।

जवाब—पु० [अ०] [वि० जवाबी] १ वह बात जो किसी के प्रश्न, अभियोग, तर्क आदि के सबध मे उसके समाधान के लिए कही जाय। उत्तर। जैसे—पत्र का जवाब दिया गया है।
मुहा०—जवाब तलब करना=अधिकारपूर्वक किसी से उसके अनुचित या अवैधानिक आचरण या व्यवहार का कारण पूछना।
२. ऐसा कार्य जो बदला चुकाने के लिए किया जाय। जैसे—उन्होने थप्पड का जवाब मुक्के से या ईंट का जवाब पत्थर से दिया है। ३ किसी वस्तु के जोड की कोई दूसरी वस्तु। जैसे—(क) ताजमहल का जवाब देनेवाली रचना ससार मे नही है। (ख) वह ऐसा लुच्चा है जिसका जवाब नही। (ग) यह कगूरा उस कगूरे का जवाब है। ४ नहिक या नकारात्मक आदेश या उत्तर। जैसे—उन्हे नौकरी से जवाब मिल गया है।

जवाबदारी—स्त्री०=जवाबदेही।

जवाबदावा—पु० [अ०] वह लिखित पत्र जो वादी के अभियोग या कथन के उत्तर मे प्रतिवादी की ओर से न्यायालय मे उपस्थित किया जाता है।

जवाबदेह—वि० [फा०] (व्यक्ति) जिस पर किसी कार्य का पूरा उत्तर-दायित्व हो। दायी।

जवाबदेही—स्त्री० [फा०] जवाबदेह होने की अवस्था या भाव। उत्तर-दायित्व।

जवाब सवाल—पु० [अ० जवाब+सवाल] १ किसी द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नो का दिया जानेवाला उत्तर। प्रश्न और उत्तर। २ वाद-विवाद।

जवाबी—वि० [फा० जवाब] १ जवाब सबधी। २ जिसका जवाब दिया जाने को हो। ३ जो किसी के जवाब के रूप मे हो। जैसे—जवाबी कगूरा।

जवार—पु० [अ०] १ आस-पास का स्थान। २ पडोस। ३ मार्ग। रास्ता।
*पु०=जवाल।
†स्त्री०=ज्वार।

जवारा—पु० [हि० जौ] १ जौ के नये निकले हुए अकुर। २ नवरात्र की नवमी को होनेवाला एक उत्सव जिसमे लोग दल बाँधकर जौ के अकुर प्रवाह करने के लिए निकलते है।

जवारी—स्त्री० [हि० जव] १ एक प्रकार की माला जिसमे जौ, छुहारे, तालमखाने के बीज आदि गूँथे जाते है। २ ऊन या रेशम का वह धागा जो तबूरे के तार के नीचे उस अश पर लपेटा जाता है जो घोडी पर रहता है।
पद—जवारीदार गला=सगीत मे ऐसा गला जिससे गाने के समय उसी के साथ कप या छाया के रूप मे उस स्वर की बहुत महीन या हलकी रेखा भी सुनाई पडती है।
३ जवारा।

जवाल—पु० [अ० ज़वाल] १ अवनति। उतार। ह्रास। २ आफत। झझट।
मुहा०—जवाल मे डालना=सकट मे फँसाना। **जवाल मे पडना**=आफत या सकट मे पडना।

जवाशीर—पु० [फा० गावशीर] एक प्रकार का गधा बिरोजा।

जवास (ा)—पु० [स० यवासक, प्रा० यवासअ] एक प्रकार का कँटीला क्षुप जिसके कई अग औषध के रूप मे काम आते है।

जवाह†—पु० [?] प्रवाल नामक रोग।

जवाहड़—स्त्री० [हि० जवा=दाना+हड] एक प्रकार की छोटी हड।

जवाहर—पु० [अ० जौहर का बहु० रूप] रत्न। मणि।

जवाहर खाना—पु० [अ० जवाहर+फा० खान] वह स्थान जहाँ पर जवाहर अर्थात् रत्न आदि रखे जायँ।

जवाहरात—पु० [अ० जवाहर का बहुवचन रूप] अनेक प्रकार की मणियो या रत्नो का सग्रह या समूह।

जवाहिर—पु०=जवाहर।

जवाहिरात—पु०=जवाहरात।

जवाही—वि० [हि० जवाह] जवाह अर्थात् प्रवाल रोग से पीडित।

जवी (जविन्)—वि० [स० जव+इनि] वेगवान्। तेज।
पु० १ घोडा। २ ऊँट।

जवीय (स्)—वि० [स० जव+ईयसुन्] बहुत तेज। वेगवान्।

जवैया†—वि० [हि० जाना+ऐया (प्रत्य०)] प्रस्थान करने या रवाना होनेवाला। जानेवाला। उदा०—बरसत मे कोऊ घर सो न निकसत तुमही अनोखे बिदेस जवैया।—कोई कवि।

जशन—पु० [फा० मि० स० यजन] १ बहुत धूमधाम से मनाया जानेवाला कोई धार्मिक या सामाजिक उत्सव। आनन्दोत्सव। जलसा। २ बडी महफिलो के अन्त मे होनेवाला वह नृत्य जिसमे सब नर्त्तकियाँ या वेश्याएँ एक साथ मिलकर नाचती और गाती हो।

जष्ट*—स्त्री०=यष्टि।

जस—वि०=जैसा।
पद—जस का तस=ज्यो का त्यो। जैसा था वैसा ही। उदा०—जस दूलहा तस बनी बराता।—तुलसी।
क्रि० वि०=जैसे।
†पु०=यश।

जसद—पु० [स० जस√दा (देना)+क] जस्ता।

जसन†—पु०=जशन।

जसवै*—स्त्री०=यशोदा।

जसामत—स्त्री० [अ० जिस्म का भाव० रूप] शारीरिक स्थूलता। मोटापा।

जसीम—वि० [अ० जिस्म का वि०] स्थूल आकारवाला। भारी भरकम।

जसु—पु० [स०√जस् (छोडना आदि)+उ] १ अस्त्र। हथियार। २ अशक्तता। ३ थकावट।
†पु०=जस (यश)।
†सर्व० [स० यस्य प्रा० जस्स] जिसका।
*स्त्री०=यशोदा।

जसुरि—पु० [स०√जस्+उरिन्] वज्र।

जसूंद—पु० [देश०] एक वृक्ष जिसके रेशो को बटकर रस्से बनाये जाते है। नताउल।

जसोदा†—स्त्री०=यशोदा।

जसोमति—स्त्री०=यशोदा।

जसोवा*—स्त्री०=यशोदा।

जसोवै—स्त्री०=यशोदा।

जस्त—पु०=जस्ता (धातु)।
स्त्री० [फा०] छलाँग। चौकडी।

जस्तई—वि० [हि० जस्ता] १ जस्ते का बना हुआ। २ जस्ते के रग का। खाकी।
पु० उक्त प्रकार का रग जो प्राय मटमैला होता है।

जस्ता—पु० [स० जसद] १ कुछ मटमैले रग की एक प्रसिद्ध धातु। २ कपडो मे, बुनावट के सूतो का इधर-उधर हट जाने के कारण दिखाई देनेवाला झीनापन।

जहँ†—अव्य०=जहाँ।

जहँड़ना†—अ० [स० जहन, हि० जँहडना] १ घाटा उठाना। २ धोखे मे आना। ठगा जाना। ३. निष्फल या व्यर्थ होना। उदा०—ई जग तो जहँडे गया, भया जोग ना भोग।—कबीर।
स० धोखा देना। ठगना।

जहँडाना—अ०, स०=जहँडना।

जहक—वि० [स०√हा (त्याग)+कन्, द्वित्वादि] त्याग करनेवाला।
स्त्री० [हि० जहकना] जहकने की क्रिया या भाव।

जहकना†—अ० [हि० झकना] १ चिढना। २ कुढना। ३ बढ-बढकर बाते करना।

जहका—स्त्री० [स० जहक-टाप्] कटास, नेवले आदि की तरह का एक जन्तु।

जहटना—स०=जटना (ठगना)।

जहत्—पु० [स०√हा (त्याग)+शतृ, द्वित्वादि] परित्याग।

जहत्-लक्षणा—स्त्री० [ब० स०] साहित्य मे लक्षणा का एक भेद जिसमे पद या वाक्य अपना वाच्यार्थ छोडकर सामीप्य-सबध से किसी और अर्थ का बोध कराता है। जैसे—'हमारा घर गगा पार है' का अर्थ होगा हमारा घर गगा के किनारे है।

जहत्-स्वार्था—स्त्री० [ब० स०]=जहद जहल्लक्षणा।

जहतिया—पु० [हि० जगात+कर] वह जो कर उगाहता या वसूल करता हो। जगाती।

जहद—स्त्री० [अ०] १ उद्योग। प्रयत्न। २ परिश्रम। मेहनत।

जहदजहल्लक्षणा—स्त्री० [स० जहत्-अजहत्-लक्षणा, ब० स०] लक्षणा का वह भेद जिसमे वक्ता के शब्दो से निकलनेवाले कई अर्थो या आशयो मे से केवल एक विशिष्ट और सबद्ध अर्थ या आशय ग्रहण किया जाता है।

जहदना—अ० [हि० जहदा] १ कीचड होना। २ शिथिल होना।

जहदा—पु० [?] १ कीचड। २ दलदल।

जहन्नम—पु०=जहन्नुम।

जहना*†—स० [स० जहन] १ छोडना। त्यागना। २ नष्ट करना।

जहन्नुम—पु० [अ०] मुसलमानो के अनुसार नरक। २ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा स्थान जहाँ बहुत कष्ट भुगतना पडे।

जहन्नुमी—वि० [फा०] १ नरक-सबधी। २ नरक मे जाने या वास करनेवाला। नारकीय।

जहमत—स्त्री० [अ० जहमत] [वि० जहमती] १ आपत्ति। विपत्ति। २ झझट। बखेडा।
मुहा०—जहमत उठाना=कष्ट उठाना। विपत्ति भोगना।

जहर—स्त्री० [फा० जह्र] १ ऐसी वस्तु जिसका सेवन या स्पर्श करने पर जीवन के लिए घातक परिणाम होता या हो सकता हो। विष।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।—पीना।
२ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसा अप्रिय, कटु या दोषपूर्ण कार्य या बात जिससे कोई बहुत अधिक दु खी या सतप्त होता हो।
पद—जहर का बुझाया हुआ=(क) (व्यक्ति) जो बहुत अधिक उपद्रवी तथा दुष्ट हो। (ख) (कथन या वचन) जो बहुत ही अप्रिय और कटु हो। (ग) (अस्त्रो के सबध मे) जिसे किसी विषाक्त घोल या तरल पदार्थ मे इस उद्देश्य से डुबा लिया गया हो कि उससे प्रहार करने पर उस विष का प्रभाव आहत व्यक्ति के सारे शरीर मे फैलकर अत मे

उसके प्राण ले ले। जैसे—बहुत-सी जगली जातियाँ जहर मे बुझाए हुए तीर चलाती है। **जहर की गाँठ**=दे० 'विष की गाँठ'।

मुहा०—जहर उगलना=बहुत ही कटु, चुभती या लगती हुई बाते कहना। **(कोई चीज या बात) जहर कर देना**=अत्यन्त अप्रिय या कटु अथवा प्राय असभव कर देना। जैसे—तुमने झगडा करके खाना पीना जहर कर दिया है। **जहर का घूँट पीना**=बहुत ही अप्रिय बात सुनकर भी चुपचाप सहन कर लेना। **जहर मार करना**=अनिच्छा, अरुचि या भूख न होने पर भी जबरदस्ती खाना।

वि० १ विषाक्त। २ घातक। ३ बहुत ही कडुआ।

जहरगत—स्त्री० [हिं० जहर?+स० गति] घूँघट काढकर नाचने का एक प्रकार।

जहरदार—वि० [फा०] जिसमे जहर हो। जहरीला। विषाक्त।

जहरबाद—पु० [फा०] एक प्रकार का फोडा जिसमे उत्पन्न होनेवाले जहर के कारण मनुष्य के प्राण सकट मे पड जाते है।

जहरमोहरा—पु० [फा० जहर मुहरा] एक प्रकार का पत्थर जिसमे जहरीला तत्त्व सोख लेने फलत जहर के प्रभाव से किसी को मुक्त करने की शक्ति होती है।

जहरी—वि० [हिं० जहर] जिसमे जहर हो। विषैला।

जहरीला—वि० [हिं० जहर+ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे जहर भरा या मिला हो। विषैला। २ बहुत अधिक अप्रिय या कटु बाते कहनेवाला। ३ बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। ४ बहुत अधिक अप्रिय। कटु।

जहल*—स्त्री० [अ०] [भाव० जहालत] अज्ञान। मूर्खता।

स्त्री० [?] ताप।

जहल्लक्षणा—स्त्री० [स० जहत्-लक्षणा, ब० स०]=जहदजहल्लक्षणा।

जहाँ—अव्य० [स० यत्र, पा० यत्थ, प्रा० जह] जिस स्थान पर। जिस जगह। जैसे—जहाँ गये वहीं के हो गये।

पद—जहाँ का तहाँ=जिस स्थान पर कोई चीज है या थी उसी स्थान पर। जैसे—गिलास जहाँ का तहाँ रख देना। **जहाँ-तहाँ**=इधर-उधर। किसी जगह। जैसे—उनके दूत जहाँ-तहाँ फैले हुए थे।

पु० [फा० जहान] लोक। ससार।

जहाँगीर—वि० [फा०] [भाव० जहाँगीरी] ससार को अपने अधिकार मे रखनेवाला।

जहाँगीरी—स्त्री० [फा०] हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक गहना जिसके आगे पाँचो उँगलियो मे पहनने के लिए पाँच अँगूठियाँ लगी रहती है।

जहाँदीद (1)—वि० [फा०] जिसने ससार को देखा-परखा हो। अनुभवी।

जहाँपनाह—वि० [फा०] ससार की रक्षा करनेवाला।

पु० १ ईश्वर। २ राजा।

जहा—स्त्री० [स०] गोरखमुडी।

जहाज—पु० [अ० जहाज] १ समुद्रो मे चलनेवाली बहुत बडी नाव।

पद—जहाज का पंछी=ऐसा व्यक्ति जिसका आधार या आश्रय एक ही व्यक्ति या स्थान हो। एक को छोडकर जिसका और कही ठिकाना न लगे।

२ दे० 'जलयान'। ३ दे० 'वायुयान'।

विशेष—जो पक्षी कही से जहाज पर आ बैठता है, वह जहाज के बीच समुद्र मे पहुँच जाने पर इधर-उधर कही आश्रय नही पाता और चारो ओर से घूम-फिर कर उसी जहाज पर आ बैठने के लिए विवश होता है। इसी आधार पर यह पद बना है।

जहाजी—वि० [अ०] १ जहाज या जहाजो पर बनने, रहने या होनेवाला।

पद—जहाजी कौआ=(क) जहाज के अन्तर्गत जहाज का पछी। (ख) बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

२ जहाज के कर्मचारियो से सबध रखनेवाला।

पु० १ जहाज का कर्मचारी। खलासी। २ जहाज पर यात्रा करनेवाला व्यक्ति।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

जहाजी सुपारी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की सुपारी जो साधारण सुपारी से कुछ बडी होती है।

जहाद—पु० [अ० जिहाद] धर्म की सुरक्षा अथवा अपने सहधर्मियो के लिए किया जानेवाला युद्ध। (मुसलमान)

जहादी—वि० [हिं० जहाद] जहाद-सबधी। जहाद का।

पु० वह व्यक्ति जो जहाद मे सम्मिलित होता हो।

जहान—पु० [फा०] जगत। लोक। ससार।

जहानक—पु० [स० √हा (त्याग)+शानच्, द्वित्वादि+कन्] प्रलय।

जहालत—स्त्री० [अ०] १ अज्ञान। २ मर्खता।

जहिया*—वि० [स० यद्+हिं० हिया] १ जिस समय। जब। २ जिस दिन।

जहीं†—क्रि० वि० [स० यत्र, पा० यत्थ] [हिं० जहाँ+ही (प्रत्य०)] जिस स्थान पर ही। जहाँ ही।

विशेष—तही और वही इसके नित्य सबधी है। जैसे—जही देखो तही या वही लोग यही चर्चा कर रहे थे।

†अव्य० ज्यो ही।

जहीन—वि० [अ० जहीन] १ हर बात को जल्दी सीख या समझ लेनेवाला। २ समझदार। बुद्धिमान्।

जहु—पु० [स० √हा+उण्, द्वित्वादि] सतान।

जहूर—पु० [अ० जहूर] जाहिर अर्थात् प्रकट करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। प्रकाश मे आना या होना।

जहूरा†—पुं० [अ० जहूर] १ प्रताप। २ अभिव्यक्ति। ३ दृश्य। ४ ठाठ-बाट।

जहेज—पु०=दहेज।

जह्नु—पु० [स० √हा (छोडना)+नु, द्वित्वादि] १ विष्णु। २ एक ऋषि जिन्होने गगा नदी का पान कर लिया था और फिर राजा भगीरथ के प्रार्थना करने पर उसे कान के रास्ते से बाहर निकाल दिया था।

जह्नु-तनया—स्त्री० [ष० त०] गगा नदी।

जह्नु-नदिनी—स्त्री० [ष० त०] गगा नदी।

जह्नु-सप्तमी—स्त्री [ष० त०] दे० 'गगा सप्तमी'।

जह्नु-सुता—स्त्री० [ष० त०] गगा।

जह्र—पु० [फा० जह्र] जहर।

जाँ—अव्य० [स० यत्र] जहाँ। उदा—जो वै जाँ गृहि गृहि जगन जागवै। —प्रिथीराज।

स्त्री०=जान।

वि० [फा० जा] उचित। वाजिब।
जाँउन†—पु०=जामुन।
जाँग—पु० [देश०] घोडो की एक जाति।
†स्त्री०=जाँघ।
जाँगडा—पु० [देश०] प्राचीन काल मे राजाओ का यश गानेवाला। भाट या बदी।
जाँगर—पु० [हिं० जान या जाँघ] १ देह। शरीर।
क्रि० प्र०—चलना।
२ शरीर का बल विशेषत कोई काम करते समय उसमे लगनेवाला बल। पौरुष।
पद—जाँगरचोर। (दे०)
पु० [देश०] ऐसा डठल जिसमे से अन्न झाड या निकाल लिया गया हो। उदा०—तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौज सपदा अकेलि चाकि राखी रासि जाँगर जहान भो।—तुलसी।
जाँगरचोर—पु० [हिं० जाँगर+चोर] वह व्यक्ति जो आलस्य आदि के कारण जान-बूझकर अपनी पूरी शक्ति किसी काम मे न लगाता हो।
जाँगरा*—पु०=जाँगडा (भाट)।
जांगल—पु० [स० जगल+अण्] १ ऐसा ऊसर तथा निर्जन प्रदेश जिसमे वर्षा कम होने तथा गरमी अधिक पडने के कारण वनस्पतिया, वृक्ष आदि बहुत थोडे हो। २ उक्त प्रदेश मे रहने तथा होनेवाला जीव या वस्तु। जैसे—जल, लकडी, हिरन आदि। ३ हिरन आदि पशुओ का मास। ४ तीतर।
वि० १ जगल-सबधी। २ जगली या वन्य अर्थात् जो पालतू न हो।
जांगलि—पु० [स० जगल+इञ्] जागलिक।
जागलिक—वि० [स० जगल+ठक्–इक] १ जगल-सबधी। २ जगली।
पु० [जागली+ठन्–इक] १ साँप पकडनेवाला व्यक्ति। २ साँप के काट खाने पर चढनेवाले विष उतारने या दूर करनेवाला। गारुडी।
जागली—स्त्री० [स० जागल+ङीप्] केवाँच। कौछ।
जाँगलू—वि० [स० जागल] १ जगल सबधी। २ जगली। ३. अशिष्ट और असभ्य। उजड्ड।
जाँगी—पु० [?] नगाडा।
जांगुल—पु० [स० जगुल+अण्] १ तोरी नामक पौधा और उसकी फली। २ विष।
जागुलि (क)—वि०, पु० [स० जगुल+इञ्]=जागलिक।
जांगुली—स्त्री० [स० जागुल+ङीप्] वह विद्या या मत्र-शक्ति जिसके द्वारा विष के प्रभाव को दूर किया जाता है।
जाँघ—स्त्री० [स० जघा=पिंडली] मनुष्यो और चौपायो के घुटने और कमर के बीच का अग।
मुहा०—(अपनी) जाँघ उघाड़ना या नगी करना=अपनी बदनामी या कलक की बात स्वय करना। उदा०—करियै कहा लाज मरियै जब अपनी जाँघ उघारी।— सूर।
पद—जाँघ का कीड़ा=बहुत ही तुच्छ और हीन व्यक्ति।
जाँघा—पु० [देश०] १ हल। (पूरब) २ कूएँ पर बना हुआ गडारी रखने का खभा। ३ वह धुरा जिसमे उक्त गडारी पहनाई जाती है।
जाघिक—वि० [स० जघा+ठन्–इक] १ जाघ-सबधी। २ बहुत तेज चलनेवाला।
पु० १ ऐसा जीव जो बहुत तेज चलता हो। जैसे—ऊँट, हिरन, हरकारा आदि। २ मृगो की एक जाति। श्रीकारी जाति के मृग।
जाँघिया—पु० [हिं० जाँघ+इया (प्रत्य०)] १ कमर मे पहना जानेवाला एक प्रकार का सिला हुआ छोटा पहनावा जिससे दोनो चूतड और जाँघे ढकी जाती हैं। २ मालखभ की एक प्रकार की कसरत।
जाँघिल—वि० [स० जघा+इलच्] बहुत तेज दौडनेवाला।
वि० [हिं० जाँघ] चलने मे जिसका पैर कुछ लचकता हो। (पशु)
स्त्री० [देश०] खाकी या मटमैले रग की एक शिकारी चिडिया।
जाँच—स्त्री० [हिं० जाँचना] १ जाँचने की क्रिया या भाव। (क) वस्तु के सबध मे, उसकी शुद्धता या उसमे के शुद्ध अश का किसी प्रक्रिया से पता लगाना। (ख) बात के सबध मे, उसकी सत्यता का पता लगाना। (ग) घटना आदि के सबध मे, उसके घटित होने के कारण का पता लगाना। (घ) कार्य के औचित्य या अनौचित्य का पता लगाना। (ङ) व्यक्ति के सबध मे, उसकी कार्य कुशलता, योग्यता, स्थिति आदि का पता लगाना। २ अनुसधान या छान-बीन करने का काम। ३ पूछ-ताछ।
जाँचक* —पु० दे० 'याचक'।
वि० [हिं० जाँचना] जाँचनेवाला।
*वि०=याचक।
जाँचकता—स्त्री० [हिं० जाँचक+ता (प्रत्य०)] जाँचक होने की अवस्था या भाव।
जाँचना—स० [स० याचन] १ किसी प्रक्रिया, प्रयोग आदि द्वारा (क) किसी वस्तु की प्रामाणिकता, शुद्धता आदि का पता लगाना, जैसे—घी, तेल या दूध जाँचना। (ख) किसी मिश्रण के सयोजक तत्त्वो अथवा उसमे मिली हुई अन्य वस्तुओ का पता लगाना। जैसे—खून, थूक या पेशाब जाँचना। २ किसी बात, सिद्धात आदि की उपयुक्तता, सत्यता का पता लगाना। जैसे—कवित्त की परिभाषा जाँचना। ३ घटना आदि के घटित होने के कारणो का पता लगाना। ४ किसी कृत्य या क्रिया के औचित्य, अनौचित्य अथवा ठीक होने या न होने का पता लगाना। जैसे—हिसाब जाँचना। ५ किसी की शारीरिक या मानसिक कार्य-कुशलता, योग्यता, समर्थता, स्थिति आदि का पता लगाना। जैसे—(क) डाक्टर का रोगी को जाँचना। (ख) सेना मे भरती करने से पहले रग-रूटो को जाँचना। ६ अनुसधान या छान-बीन करना। ७ पूछ-ताछ करना। ८ याचना करना। माँगना।
*स० [स० यातना] १ यातना या कष्ट देना। २ नष्ट करना। उदा०—ह्वै गई छान छपाकर की छबि जामिनि जोन्ह मनौ जम जाँची।—देव।
जाँजरा*—वि० [स० जर्ज्जर] जीर्ण-शीर्ण। जर्जर।
जाँझ (ा)—पु० [स० झझा] वह गहरी वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी चल रही हो।
जाँट—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड। रोया।
जाँत—पु०=जाँता।
जांतव—वि० [स० जतु+अण्] १ जीव-जतुओ से सम्बन्धित। २ जीव-जतुओ से उत्पन्न होने या मिलनेवाला। जैसे—जातव विष।

जांतविक—वि०[स० जतु+ठक्—इक]=जातव।

जाँता—पु०[स० यत्रम्, पा० यन्तम्, प्रा० जन्तम्, बँ० जात, जाति, सिं० जण्डु, मरा० जाते] १ गेहूँ, आदि पीसने की हाथ से चलाई जानेवाली पत्थर की बडी चक्की जो प्राय किसी स्थान पर गाड दी जाती है। २ सोनारो, तारकशो आदि का जती नामक औजार।

जाँपना*—स०[? अथवा हिंदी चाँपना का अनु०] चाँपना। दबाना।

जाँपनाह—पु०=जहाँपनाह।

जाँब†—पु०[स० जाँबव] जामुन का वृक्ष और उसका फल।

जाँबव—पु०[स० जबू+अण्]१ जामुन का वृक्ष और उसका फल।
वि० १ जामुन सबधी। २ जामुन के रस से बना हुआ। जैसे—शराब, सिरका आदि।

जाँबवत—पु०=जाँबवान्।

जाबवक—पु०[जबू+वुञ्—अक]=जाबव।

जाबवती—स्त्री०[स० जाबवत्+अण्—डीप्] १ द्वापर युग के जाबवान की वह कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था। २ नागदौनी।

जाँबवान् (वत्)—पु०[स०] राम की सेना का एक रीछ जो राजा सुग्रीव का मत्री था।

जाँबवि—पु० [स०जबू०+इञ्] वज्र।
स्त्री० जाबवती।

जाबवौष्ठ—पु०[स० जाबव-ओष्ठ ब०स०] दे० 'जाबोष्ठ'।

जाँ-बाज—वि०[फा०] [भाव० जाँबाजी] प्राणो की बाजी लगानेवाला। प्राण तक देने को तैयार रहनेवाला।

जाबीर—पु०[स० जबीर+अण्] जबीरी नीबू।

जाबील—पु०[स०] घुटने पर की गोल हड्डी। चक्की।

जाँबु—पु०=जामुन।

जाबुक—वि०[स० जबुक+अण्] जबुक अर्थात् सियार सबधी।

जाबुमाली (लिन्)—पु०[स०] एक राक्षस जिसका वध हनुमान् जी ने अशोक वाटिका मे किया था।

जाबुवत्—पु०=जाबवान्।

जाबुवान—पु०=जाबवान्।

जाबू—पु०=जबू (द्वीप)।

जाबूनद—पु०[स० जबू-नदी+अण्] १ धतूरा। २ सोना।

जांबोष्ठ—पु०[स० जाबवौष्ठ] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसकी सहायता से फोडो आदि को जलाया या दागा जाता था। (शल्य-चिकित्सा)

जाँय†—क्रि० वि०[फा० बेजा] व्यर्थ। बे-फायदे। उदा०—भरतहि दोसु देइ को जायँ।—तुलसी।

जाँर—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड।

जाँवत—वि०[स० यावत्] १ सब। २ जितना। उदा०—जाँवत गरब गहीलि हुति।—जायसी।
अव्य०=यावत्।

जाँवर*—पु०[हिं० जाना] गमन। जाना।

जा—स्त्री० [स०√जन् (उत्पत्ति)+ड—टाप्] १ माँ। माता। २ देवरानी।
वि० स्त्री० समस्त पदो के अत मे, उत्पन्न होनेवाली। जैसे—गिरिजा, जनकजा।
सर्व० [हिं० जो] जिस।
वि०[फा०] उचित। मुनासिब।
पद—जा-बेजा=उचित और अनुचित।
स्त्री०[फा०] जगह। स्थान।

जाइ—वि०[हिं० जाना] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बे-फायदा।
क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदे।
वि० [फा० जा] उचित।
†वि०[स० यानि] जितना।
*सर्व०[स० यत्] जिसको।

जाइफर (फल)—पु०=जायफल।

जाइस†—पु०=जायस।

जाई—स्त्री०[हिं० जाया (वि०) का स्त्री० रूप] कन्या। पुत्री।
स्त्री०=जाही (पौधा और फूल)।

जाईदा—वि०[फा० जाइद] समस्त पदो के अन्त मे, उत्पन्न या पैदा किया हुआ। जना या जाया हुआ। जात। जैसे—नवाब जाईदा=नवाब का पैदा किया हुआ।

जाउक—पु०=जावक (अलता)।

जाउर†—स्त्री०[हिं० चाउर=चावल।] खीर।

जाउरि†—स्त्री०=जाउर। (खीर)

जाएँ—क्रि० वि० =जाँय।

जाएल†—वि०[देश०] (खेत) जो दो बार जोता गया हो।
पु० दो बार जोता हुआ खेत।
वि०[अ० ज़ायल] १ नष्ट-भ्रष्ट। २ जो व्यर्थ हो गया हो।

जाएस†—पु० =जायस।

जाक*—पु०[स० यक्ष] यक्ष।
स्त्री०[हिं० जकना] जकने की क्रिया या भाव।

जाकट†—स्त्री०=जाकेट।

जाकड़—पु०[हिं० जाकर] १ कोई चीज इस शर्त पर लेना कि यदि पसद न आई तो वापस कर दी जायगी। २ उक्त शर्त पर दी या ली जानेवाली वस्तु।

जाकड़-बही—स्त्री० [हिं० जाकड+बही] वह बही जिसमे दूकानदार जाकड दी जानेवाली वस्तुओ का विवरण आदि लिखता है।

जाकिट—स्त्री०=जाकेट।

जाकिर—वि०[अ० ज़ाकिर] जिक्र अर्थात् उल्लेख, चर्चा या वर्णन करनेवाला।

जाकेट—स्त्री० [अ० जैकेट] सदरी की तरह का एक आधुनिक पहनावा।

जाखन†—स्त्री०[देश०] जमवट (दे०)।=जमवट (कूएँ मे की)।

जाखिनी—स्त्री०=यक्षिणी।

जाग—पु०[स० यज्ञ] यज्ञ।
स्त्री०[हिं० जगह] १ जगह। स्थान। २ गृह। घर।
स्त्री०[हिं० जागना] जागने अथवा जागते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव।
†पु०=जामन।
पु०[देश०] बिलकुल काले रंग का कबूतर।

जागत—पु०[स० जगती+अण्] जगती छद।

जागता—वि०[हिं० जागना] [स्त्री० जागती] १ जागा हुआ। २ जो जाग रहा हो। ३ सतर्क। सावधान। ४ जो अपने अस्तित्व, शक्ति आदि का पूरा और स्पष्ट परिचय या प्रमाण दे रहा हो। जैसे—जागती कला, जागता जादू।

जागतिक—वि०[स० जगत्+ठञ्—इक]१ जगत्-सम्बन्धी। जगत का। २ जगत् या ससार मे रहने या होनेवाला।

जागती-कला—स्त्री० [हिं० जागती+स० कला] देवी-देवता आदि का ऐसा प्रभाव जो स्पष्ट दिखाई देता हुआ माना जाता हो।

जागती जोत—स्त्री० [हिं० जागना+स० ज्योति] १ कोई देवीय चमत्कार। २ दीपक। दीया।

जागना—अ०[स० जागरण] १ सोकर उठना। नीद खुलने पर चेतन होना। २ जागता हुआ होना। निद्रारहित होना। ३ सजग या साव-धान होना। ४ प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से अपने अस्तित्व, प्रभाव आदि का प्रमाण दे सकने की अवस्था मे होना। ५ देवी-देवताओ का अपना प्रभाव दिखलाना। ६ उत्तेजित होना। ७ विख्यात होना। ८ (आग का) अच्छी तरह जलना।

जागनौल—स्त्री०[देश०] प्राचीन काल का एक अस्त्र।

जागबलिक†—पु०=याज्ञवल्क्य।

जागर—पु०[स०√जागृ (जागना)+घञ्]१ जागरण। जागने की क्रिया। २ वह स्थिति जिसमे अत करण की सब वृत्तियाँ जाग्रत अवस्था मे होती है। ३ कवच।

जागरक—वि०[स०√जागृ+ण्वुल्—अक] १ जागता हुआ। २ जागने-वाला।

जागरण—पु०[स० √जागृ+ल्युट्—अन] [वि० जागरित]१ जागते रहने की अवस्था या भाव।२ किसी उत्सव, पर्व आदि की रात को जागते रहने का भाव। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह अवस्था जिसमे किसी जाति, देश, समाज आदि को अपनी वास्तविक परिस्थितियो और उनके कारणो का ज्ञान हो जाता है और वह अपनी उन्नति तथा रक्षा करने के लिए सचेष्ट हो जाता है।

जागरन— पु०=जागरण।

जागरा—स्त्री०[स०√जागृ+अच्-टाप्] जागरण।

जागरित—वि०[स०√जागृ+क्त] १ जाग्रत या जागता हुआ। २ (वह अवस्था) जिसमे मनुष्य को इद्रियो द्वारा सब प्रकार के व्यवहारो और कार्यो का अनुभव और ज्ञान होता हो। (साख्य)

जागरू†—पु०[देश०]१ दाँयी हुई फसल मे का वह अश जिसमे भूसा और कुछ अन्न-कण भी मिले हुए हो। २ भूसा।

जागरूक—वि०[स०√जागृ+ऊक]१ (व्यक्ति) जो जाग्रत अवस्था मे हो। २ (वह) जो अच्छी तरह सावधान होकर सब ओर निगाह या ध्यान रखता हो। (विजिलेन्ट)

पु० पहरेदार।

जागरूप—वि०[हिं० जागना+स० रूप] जिसका रूप बहुत ही प्रत्यक्ष और स्पष्ट हो।

जागर्ति—स्त्री०[स०√जागृ+क्तिन्]१ जाग्रत होने की अवस्था या भाव। २ जागरण। ३. चेतनता।

जागर्या—स्त्री०[स√जागृ+यक्—टाप्] जागरण।

जागा—पु०[हिं० जागना] किसी धार्मिक उपलक्ष्य मे रात भर जागते रहने की क्रिया या भाव।

स्त्री०=जगह।

जागी†—पु०[स० यज्ञ] भाट।

जागीर—स्त्री०[फा०] वह भूमि जो मध्ययुग मे राजाओ, बादशाहो आदि की ओर से बडे बडे लोगो को विशिष्ट सेवाओ के उपलक्ष्य मे सदा के लिए दी जाती थी।

जागीरदार—पु० [फा०] वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक।

जागीरी†—स्त्री०[फा० जागीर+ई (प्रत्य०)] १ जागीरदार होने की अवस्था, पद या भाव। २ रईसी।

वि० जागीर सबधी। जैसे—जागीरी आमदनी।

जागुड—पु०[स० जगुड+अण्] १ केसर। २ एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी।

जागृति—स्त्री०[स०√जागृ+क्तिन्]=जाग्रति।

जागृवि—पु०[स० √जागृ+क्विन्]१ राजा। २ आग।

वि०=जाग्रत।

जाग्रत्—वि०[स०√जागृ+शतृ] १ जागता हुआ। २ सचेत। सावधान। ३ जो अपने दूषित वातावरण को बदलने और अपनी उन्नति तथा रक्षा करने के लिए तत्पर हो चुका हो। ४ प्रकाशमान।

पु० दर्शनशास्त्र मे, जीव या मनुष्य की वह अवस्था जिसमे उसे सब बातो का परिज्ञान होता हो और वह अपनी इद्रियो के सब विषयो का भोग-कर सकता हो।

जाग्रति—स्त्री०[स० जागृति] १ जाग्रत होने की अवस्था या भाव। २ जागते रहने की क्रिया। जागरण।

जाघनी—स्त्री०[स० जघन+अण्—ङीप्] जघा। जाँघ।

जाचक—वि०, पु०=याचक (माँगनेवाला या भिखमगा)।

जाचकता†* —स्त्री०=याचकता।

जाचना*—स० [स० याचन] याचना करना। माँगना।

†स०=जाँचना।

जाजम—स्त्री० दे० 'जाजिम'।

जाज मलार—पु०[देश०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

जाजरा—वि०[सं० जर्जर] [वि० स्त्री० जाजरी]१ बहुत पुराना। जर्जर। जैसे—जाजरा शरीर। २ जिसमे बहुत से छेद हो। जैसे—जाजरी नाव।

जाजरी—पु०[देश०] चिडीमार। बहेलिया।

जाजरूर—पु०[फा० जा+अ० जरूर] वह विशिष्ट स्थान जहाँ पर टट्टी की जाय। मल-त्याग करने का स्थान । पाखाना।

जाजल—पु०[स०] अथर्ववेद की एक शाखा।

जाजलि—पु०[स०] एक प्रवर-प्रवर्त्तक ऋषि।

जाजात†— स्त्री०=जायदाद।

जाजिब—वि०[फा० जाजिब]१ (तरल पदार्थ) जज्ब करने या सोखने-वाला । २. अपनी ओर खीचनेवाला। आकर्षक।

जाजिम—स्त्री० [तु० जाजम] १ फर्श आदि पर बिछाई जानेवाली छपी हुई चादर। २ बिछाने की कोई चादर। ३ कालीन।

जाजी (जिन्)—पु० [स०√जज् (युद्ध)+णिनि] योद्धा।

जाजुलित—वि० =जाज्वलित। 'जाज्वलित'

जाज्वलित—वि० (स०)—चमकता हुआ। प्रकाशमान।

जाज्वल्य—वि०=जाज्वल्यमान।

जाज्वल्यमान—वि० [स०√ज्वल् (दीप्ति)+यङ्, द्वित्व, +शानच्] १ खूब चमकता हुआ या प्रकाशमान्। २ खूब अच्छी तरह सब को दिखाई देनेवाला। ३ तेजपूर्ण।

जाट—पु० [?] १ भारत की एक प्रसिद्ध जाति जो समस्त पजाब, सिंध, राजपूताना और उत्तर प्रदेश के कुछ भागो मे रहती और मुख्यत खेती-बारी करती है। २ खेती-बारी करनेवाला व्यक्ति। कृषक। ३ एक प्रकार का चलता गाना।

वि० उजड्ड। गँवार। उदा०—ऐसे कुमति जाट सूरज कौ प्रभु बिनु कोउ न धात्र।—सूर।

पु०=जाठ।

जाटालि—स्त्री० [स०] पलाश की जाति का मोरवा नामक पेड।

जाटालिका—स्त्री० [स०] कार्त्तिकेय की एक मातृका।

जाटिकायन—पु० [स०] अथर्ववेद के एक ऋषि।

जाटू—स्त्री० [हिं० जाट] करनाल, रोहतक, हिसार, आदि के जाटो की बोली। बाँगड़ू। हरियानी।

जाठ—पु० [स० यष्टि] १ लकडी का वह मोटा तथा लबोत्तरा लट्ठा जो कोल्हू की कूँडी मे लगा रहता है और जिसकी दाब से ऊख की गँडेरियो मे से रस अथवा तिलहन मे से तेल निकलता है। २ उक्त के आधार पर लकडी का कोई मोटा तथा लबोतरा लट्ठा, विशेषत तालाब आदि के बीच मे गडा हुआ।

जाठर—वि० [स० जठर+अण्] जठर अर्थात् पेट-सबधी। जठर का। जैसे—जाठर अग्नि या रोग।

पु० १ जठर। पेट। २ उदर या पेट को वह अग्नि जिसकी सहायता से भोजन पचता है। जठराग्नि। ३ क्षुधा। भूख। ४ सतति। सतान।

जाठराग्नि—स्त्री०=जठराग्नि।

जाठरानल—पु०=जठराग्नि।

जाठि—स्त्री०=जाठ।

जाड—पु० [स० जाडच] जडता।

वि० बहुत अधिक। अत्यन्त।

†पुं०=जाडा।

जाडा—पु० [स० जड] १. छ ऋतुओ मे से एक जो हमारे यहाँ मुख्यत पूस-माघ मे पडती है और जिसमे तापमान अन्य ऋतुओ की अपेक्षा बहुत कम हो जाता है और अधिकतर जीव इसके फलस्वरूप ठिठुरने लगते है। शीतकाल। २ शीत। सरदी।

जाडच—पु० [स० जड+ष्यञ्] जड होने की दशा या भाव। जडता।

जाडचारि—पु० [स० जाड्य-अरि, ष० त०] जभीरी नीबू।

जाणगर—वि० [हिं० जान+फा० गर] जानकार। जाननेवाला। (राजस्थान)

जाणि—अव्य० [स० ज्ञान] जानो। मानो। जैसे—उदा०—छीणे जाणि छछोहा छूटा।—प्रिथीराज।

जाणिक—अव्य० [स० ज्ञान] जानो। मानो। उदा०—जाणिक रोहणीड तप्पइ सूर।—नरपतिनाल्ह।

जात—वि० [स०√जन् (उत्पत्ति) +क्त] १ जिसने जन्म लिया हो। उत्पन्न। जैसे—नवजात। २ यौगिक के आरम्भ मे, (क) जिसमे या जिसे कुछ उत्पन्न हुआ हो। जैसे— जात-दत=जिसके दाँत निकल आये हो, (ख) जिसने कुछ उत्पन्न किया हो। जैसे—जात-पुत्रा=. जिसने पुत्र जन्माया हो। ३ यौगिक के अत मे, जो किसी मे या किसी से उत्पन्न हुआ हो। जैसे—जल-जात=जल मे या जल से उत्पन्न। ४. जन्म से सबध रखनेवाला। जैसे—जातकर्म। (दे०) ५ जो घटना के रूप मे हुआ हो। घटित। ६ एकत्र किया हुआ। सगृहीत। ७ प्रकट। व्यक्त। ८ उत्तम। श्रेष्ठ।

पु० १ पुत्र। बेटा। २ चार प्रकार की सतानो मे से वह, जिसमे प्रधानत उसकी माता के से गुण हो। ३ जीव। प्राणी। ४ वर्ग। ५ समूह।

स्त्री० [स० जाति से फा० जात] १ व्यक्तित्व। जैसे—किसी की जात से फायदा उटाना। २ देह।

†स्त्री०=जाति।

जातक—पु० [स० जात+कन्] [†स्त्री० जातकी] १ नवजात शिशु। २ बच्चा। बालक। ३ फलित ज्योतिष मे, फल कहने का वह प्रकार जिसमे जन्म-कुडली देखकर उसके आधार पर भविष्य की सब बाते बतलाई जाती है। ४ बौद्धो मे भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मो की कथाएँ या कहानियाँ जो ५००से ऊपर है। ५ बौद्ध भिक्षु। ६ बेत। ७ हीग का वृक्ष।

जात-कर्म(न्)—पु० [स०] हिंदुओ मे, बालक के जन्म के समय होनेवाला एक सस्कार।

जात-कलाप—पु० [ब०स०] मोर।

जात-क्रिया—स्त्री० [ष०त०] जातकर्म। (दे०)

जात-दत—वि० [ब०स०] (बच्चा) जिसके दाँत निकल आये हो।

जात-दोष—वि० [ब०स०] दोषी।

जातना†—स्त्री०=यातना।

स०=जाँतना=दबाते हुए पीसना।

जात-पक्ष—वि० [ब०स०] जिसमे से पर निकले हो।

पु० पक्षी।

जात-पाँत—स्त्री० [स० जाति+पक्ति] जातियो और उपजातियो से सबध रखनेवाले विभाग।

जातमात्र—वि० [स० जात+मात्रच्] हाल का जन्मा हुआ।

जात-मृत—वि० [कर्म०स०] जो जन्मते ही मर गया हो।

जातरा†—स्त्री०=यात्रा।

जात-रूप—वि० [ब० स०] रूपवान्। सुन्दर।

पु० [जात+रूपप्] १ सोना। स्वर्ण। २ धतूरा।

जात-वेद (स्)—पु० [ब०स०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ परमेश्वर। ४. चीता नामक वृक्ष। चित्रक।

जातवेदसी—स्त्री० [जातवेदस्+ङीष्] दुर्गा।

जात-वेश्म (न्)—पु०[ष०त०] १ वह कमरा, कोठरी या घर जिसमे बालक जन्मा हो। सौरी। सूतिकागार।

जाता—स्त्री०[स० जात+टाप्] कन्या। पुत्री। बेटी।
वि० स्त्री०, स० जात (विशेषण) का स्त्री०।
†पु०=जाँता।

जाति—स्त्री० [स०√जन् (उत्पत्ति)+क्तिन्] १ जन्म। पैदाइश। २ हिंदुओ मे, समाज के उन मुख्य चार विभागो मे से हर एक जिसमे जन्म लेने पर मनुष्य को जीविका निर्वाह करने के लिए विशिष्ट कार्य-क्षेत्र अपनाने का विधान है। वर्ण। विशेष दे० 'वर्ण'। ३ उक्त मे से हर एक बहुत से छोटे-छोटे विभाग और उपविभाग। जैसे—पाडेय, शुक्ल, लोहार, सोनार आदि। ४ किसी राष्ट्र (या राष्ट्रो) के वे निवासी जिनकी नसल एक हो। जैसे—अगरेज जाति, हिंदू जाति।
विशेष—ऐसी जातियो के सदस्यो की शारीरिक बनावट, उनके स्वभाव, परम्पराएँ, विचारधाराएँ भी प्राय एक-सी होती है। जैसे—आर्य, मगोल या हब्शी जातियाँ।
५ पदार्थो या जीव-जतुओ की आकृति, गुण, धर्म आदि की समानता के विचार से किया हुआ विभाग। कोटि। वर्ग। (जेनस) जैसे—पशु जाति, पक्षी जाति। ६ उक्त मे के छोटे-छोटे विभाग और उप-विभाग। जैसे—घोडे या हिरन की जाति का पशु। ७ कुल। वश। ८ गोत्र। ९ तर्कशास्त्र और न्यायदर्शन मे, किसी हेतु का वह अनुपयुक्त खडन या उत्तर जो तथ्य के आधार पर नही, बल्कि केवल साधर्म्य या वैधर्म्य के आधार पर हो। १० मात्रिक छद। ११ छोटा आँवला, चमेली, जायफल, जावित्री आदि पौधो की सज्ञा। ११ मालती नामक लता और उसका फूल।

जाति-कर्म (न्)—पु०[ष० त०] जातकर्म।

जाति-कोश (ष)—पु०[ष० त०] जायफल।

जाति-कोशी (षी)—स्त्री०[जातिकोश +ङीष्] जावित्री।

जातिच्युत—वि०[तृ०त०] (व्यक्ति) जिसके साथ किसी (उसी की) जाति के लोगो ने व्यवहार करना छोड दिया हो।

जातित्व—पु०[स० जाति+त्व] जातीयता।

जातिधर्म—पु०[ष०त०] १. वे सब कार्य, गुण या बाते जो किसी जाति मे समान रूप से होती है। २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का अपना अपना अथवा अपनी अपनी जाति के प्रति होनेवाला विशिष्ट कर्त्तव्य।

जाति-पत्र—पु०[ष०त०] जावित्री।

जाति-पत्री—स्त्री०[ष० त०] जावित्री।

जाति-पर्ण—पु०[ष०त०] जावित्री।

जाति-पाँति—स्त्री०दे० 'जात-पाँत'।

जाति-फल—पु०[मध्य०स०] जायफल।

जाति-ब्राह्मण—पु०[तृ० त०] वह ब्राह्मण जिसका केवल जन्म किसी ब्राह्मण कुल मे हुआ हो परन्तु अपने जाति-धर्म का पालन न करता हो।

जाति-भ्रश—पु०[ष०त०] जाति भ्रष्टता।

जातिभ्रशकर—पु०[स० जातिभ्रश√कृ (करना)+ट] मनु के अनुसार नौ प्रकार के पापो मे से एक जिसमे मनुष्य अपनी जाति, आश्रम आदि से भ्रष्ट हो जाता है।

जाति-भ्रष्ट—वि०[तृ०त०] जाति-च्युत।

जाति-लक्षण—पु०[ष०त०] किसी जाति मे विशिष्ट रूप से पाये जानेवाले चिह्न या लक्षण।

जाति-वाचक—वि०[ष० त०] १ जाति बतानेवाला। २ जाति के हर सदस्य का समान रूप से सूचक। जैसे—जातिवाचक सज्ञा।

जाति-वाद—पु०[ष०त०] [वि० जातिवादी] यह विचार-धारा या सिद्धान्त कि हमारी अथवा अमुक जाति और सब जातियो की तुलना मे श्रेष्ठ है। (रेशियलिज्म)

जाति-विद्वेष—पु०[तृ०त०] जाति वैर।

जाति-वैर—पु०[तृ०त०] एक जाति के जीवो का दूसरी जाति के जीवो के प्रति होनेवाला प्राकृतिक या वशगत वैर।

जाति-शस्य—पु०[ष०त०] जायफल।

जाति-शास्त्र—पु० [ष०त०] वह शास्त्र जिसमे मनुष्यो की जातियो के विभागो, पारस्परिक सबधो, जातीय गुणो आदि का विवेचन होता है। (एन्थालोजी)

जाति-सकर—पु०[ष०त०] दोगला। वर्णसकर।

जाति-सार—पु०[ष०त०] जायफल।

जाति-स्मर—पु०[ष०त०] वह अवस्था जिसमे मनुष्य को अपने पूर्वजन्म की बाते याद आती या रहती है।

जाति-स्वभाव—पु०[ष०त०] एक अलकार जिसमे आकृति और गुण का वर्णन किया जाता है।

जाति-हीन—वि०[तृ०त०] नीच जाति का।

जाती—स्त्री०[स०√जन् (उत्पत्ति)+क्तिच्—ङीष्] १ चमेली। २ मालती। ३ जायफल। ४ छोटा आँवला।
†पु०[?] हाथी। (डि०)
†स्त्री०=जाति।
वि०[स० जातीय से फा० जाती] १ स्वय अपना। निजी। २ व्यक्तिगत।

जाती-कोश (ष)—पु०[ष० त०] जायफल।

जाती-पत्री—स्त्री०[ष० त०] जावित्री।

जातीपूग—पु०[ष० त०] जायफल।

जाती-फल—पु०[मध्य० स०] जायफल।

जातीय—वि०[स० जाति+छ—ईय] १ जाति-सबधी। जाति का। २ जाति मे होनेवाला। ३ सारी जाति अर्थात् राष्ट्र या समाज का। (नैशनल)

जातीयता—स्त्री० [स० जातीय+तल्—टाप्] १ जाति का भाव। २ किसी जाति के आदर्शो, गुणो, मान्यताओ, विचारधाराओ आदि की सामूहिक सज्ञा। जैसे—प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जातीयता का अभिमान होना चाहिए।

जाती-रस—पु०[ब०स०] बोल नामक गध द्रव्य।

जातु—अव्य०[स०√जन्+क्तुन् पृषो० सिद्धि] कदाचित्।

जातु-क—पु०[जातु=निंदित क=जल ब०स०] हीग।

जातुज—पु०[स० जातु√जन्+ड] गर्भिणी की इच्छा। दोहद।

जातु-धान—पु०[जातु=निंदित+धान=सामीप्य ब०स०] असुर। राक्षस।

जातुष—वि०[स० जतु+अण्, षुक् आगम] १ लाख-सबधी। २ लाख का बना हुआ।

जातू—पु०[स० ज√तुर्व् (मारना)+क्विप्, दीर्घ] वज्र।

जातूकर्ण—पु०[स०] हरिवंश के अनुसार एक उपस्मृतिकार ऋषि जिनका जन्म अट्ठाइसवे द्वापर मे हुआ था। (हरिवंश)

जातेष्टि—स्त्री०[स० जात-इष्टि ष०त०] जातकर्म।

जातोक्ष—वि०[जात-उक्षन कर्म०स०, टच् (वह बैल) जिसे छोटी अवस्था मे ही बधिया किया गया हो।

जात्यंध—वि०[स० जाति-अंध तृ०त०] (जीव) जो जन्म से ही अंधा हो।

जात्य—वि०[स० जाति+यत्]१ किसी की दृष्टि मे, जो उसी की जाति का हो। नातेदार। सजातीय। जैसे—जात्य भाई। २ जो अच्छे कुल या जाति मे उत्पन्न हुआ हो। कुलीन। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। ४ सुन्दर। सुरूप।

जात्यारोह—पु०[स० जात्य-आरोह, कर्म०स०]खगोल के अक्षाश की गिनती में वह दूरी जो मेष से पूर्व की ओर प्रथम अंश से ली जाती है।

जात्यासन—पु०[स० जात्य-आसन, कर्म०स०] तान्त्रिक साधना में, एक विशिष्ट आसन जिसमे हाथ और पैर साथ-साथ जमीन पर रखते हुए चला जाता है।

जात्रा†—स्त्री०=यात्रा।

जात्री—†पु०=यात्री।

जाथका—स्त्री०[स० जूथिका] ढेर। राशि।

जादव†—पु० [स० यादव] यादव। यदुवंशी।

जादव-पति—पु० [स० यादवपति] श्रीकृष्णचन्द्र।

जादसपति, (ती)—पु० [स० यादसापति] जल-जंतुओ के स्वामी। वरुण।

जादा†—वि०=ज्यादा।

वि० [स० जात से फा० जाद] [स्त्री० जादी] जो किसी से उत्पन्न हुआ हो। उत्पन्न। जात। जैसे—नवाबजादा, साहबजादा।

जादुई†—वि०[हिं० जादू] जादू का। जादू संबंधी।

जादू—पु०[फा०]१ वह क्रिया या विद्या जिसकी सहायता से किसी दैवी शक्ति (जैसे—आत्मा, देवता भूत-प्रेत आदि) का आराधन किया जाता है और उसी के द्वारा कोई अभिप्रेत कार्य संपन्न कराया जाता है। जैसे—लडकी पर किसी ने जादू कर दिया है।

पद—जादू टोना=तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेतो आदि के द्वारा कोई काम कराने की क्रिया या भाव।

२ बुद्धि के कौशल और हाथ की सफाई से दिखाया जानेवाला कोई ऐसा खेल जिसका रहस्य न समझने के कारण लोग उसे अलौकिक कृत्य समझे। ३ किसी वस्तु मे का वह गुण या शक्ति जिसके कारण उस वस्तु की ओर लोग बरबस आकृष्ट हो जाते हो। जैसे—इनकी आँखो मे भी जादू है। ४ उक्त गुण या शक्ति का किसी पर पडनेवाला प्रभाव। क्रि० प्र०—डालना।

मुहा०—जादू जगाना=ऐसा कार्य या प्रयोग करना कि लोगो को जादू का-सा प्रभाव दिखाई दे। **जादू जमाना**=किसी पर प्रभाव डालकर उसे पूरी तरह अपने वश मे करना।

पु०=यदु।

जादूगर—पु०[फा०] [स्त्री० जादूगरनी] १. जादू के खेल दिखानेवाले व्यक्ति। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसा व्यक्ति जो आश्चर्यजनक रीति से कोई कठिन या विलक्षण कार्य कर दिखलाता हो।

जादूगरी—स्त्री०[फा०] १ जादूगर का काम, पेशा या वृत्ति। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई बहुत ही अद्भुत तथा विलक्षण काम जो अलौकिक-सा जान पडता हो।

जादूनजर—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसकी आँखो मे जादू हो। बहुत ही सुन्दर तथा लुभावनी आँखोवाला।

जादौ† —वि०,पु०=यादव (यदुवंशी)।

जादौराय*—पु० [स० यादव]=यादवराय (श्रीकृष्ण)।

जान—स्त्री०[फा०]१ वह प्राकृतिक गुण या तत्त्व जिसके द्वारा मनुष्य जीव-जंतु, पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ आदि जीवित रहती तथा अपने सब काम (जैसे—खाना-पीना, फलना-फूलना, अपने वर्ग का अभिवर्धन आदि) अच्छी तरह करती चलती है। जीवन। प्राण।

पद—जान का गाहक=(क) ऐसा व्यक्ति जो किसी की जान लेने अथवा उसका अंत कर देने पर उतारू हो। (ख) बहुत दिक, तंग या परेशान करनेवाला व्यक्ति। **जान का लागू**=दे० 'जान का गाहक'। **जान जोखिम या जान जोखो**=ऐसा काम या बात जिसमे जान जाने या मरने का डर हो।

मुहा०—(किसी में) जान आना=किसी मरती हुई या बेदम वस्तु का फिर से सक्रिय और स्वस्थ होना। **(जान मे) जान आना**=धैर्य तथा स्थिरता होना। **जान के लाले पडना**=ऐसे संकट मे फँसना कि जान बचना कठिन हो जाय। प्राण संकट मे पडना। **(किसी की) जान को रोना**=ऐसे व्यक्ति को कोसना जिसके कारण बहुत दुःख उठाना पडा हो। **(किसी की) जान खाना**=बार-बार दिक या परेशान करना। **जान खोना**=प्राण गवाँना। **(किसी काम से) जान चुराना**=परिश्रम का काम करने से कतराना या भागना। जी चुराना। **जान छुडाना**=झंझट या संकट से पीछा छुडाना या छुटकारा पाने का प्रयत्न करना। **जान छूटना**=झंझट या संकट से छुटकारा मिलना। **जान जाना**=प्राण निकलना। मरना। **जान तोडकर**=बहुत अधिक परिश्रम करके। **जान दूभर होना**=जीवन-यापन मे बहुत अधिक कष्ट होना। जीना कठिन होना। **(अपनी) जान देना**=(क) प्राण-त्यागना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम करना। **(किसी पर) जान देना**=(क) प्यार करना। बहुत अधिक प्रेम या स्नेह करना। (ख) जान निछावर करना। **(किसी वस्तु के पीछे या लिए) जान देना**=किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए बहुत अधिक व्यग्र होना। **(अपनी जान को) जान न समझना**=किसी बहुत बडे काम की सिद्धि मे अपने प्राणो तक को संकट मे डालना। **(दूसरे की जान को) जान न समझना**=किसी के साथ बहुत ही निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार करना। **जान निकलना** =(क) प्राण निकलना। मरना। (ख) किसी से बहुत अधिक भयभीत होना। जैसे—वहाँ जाने पर अथवा उनके सामने होने पर उसकी जान निकलती है। **(किसी मे) जान पड़ना**=(क) मृत शरीर मे प्राणो का फिर से संचार होना। (ख) फिर से प्रफुल्लित, प्रसन्न तथा स्वस्थ होना। **(किसी की) जान पर आ बनना**=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना जिससे जीवित रहना बहुत कठिन जान पडता हो। **(अपनी) जान पर खेलना**=(क) प्राणो को संकट मे डालकर जोखिम का काम करना।

(ख) (किसी के लिए) वीरतापूर्वक जान देना। **जान पर नौबत आना**=जान पर आ बनना। (दे०) **जान बचाना**=(क) प्राण रक्षा करना। (ख) पीछा छुडाना। **(किसी की) जान मारना या लेना**=(क) बध या हत्या करना। (ख) अधिक कष्ट देना या सताना। **जान सूखना**=चिता, भय आदि के कारण निर्जीव-सा होना। **जान से जाना**=प्राण गवाँना। मर जाना। **जान से मारना**=वध या हत्या करना। **जान से हाथ धोना**=जान से जाना। (देखे) **जान हलाकान करना**=बहुत अधिक दुःखी और परेशान करना (या होना)।

२ शारीरिक बल या सामर्थ्य। ३ कोई ऐसी चीज या बात जो किसी दूसरी चीज या बात को सजीव या सार्थक करती अथवा उसे यथेष्ट प्रभावशाली तथा सबल बनाती हो। मूल तत्त्व। सार भाग। जैसे—यही पक्ति तो इस कविता की जान है। ४ लाक्षणिक रूप मे, वह चीज जिसके कारण किसी दूसरी वस्तु की महत्ता या शोभा बहुत अधिक बढ जाती हो।

मुहा०—(किसी चीज मे) जान आना=बहुत अधिक शोभा बढाना। जैसे—चित्र टाँगने से इस कमरे मे जान आ गई है।

वि० प्रिय। उदा०—जान महा सहजे रिझवार।—आनदघन।

स्त्री० [स० ज्ञान] १ जानकारी। परिचय। परिज्ञान।

पद—जान-पहचान=परिचय। **जान मे**=ध्यान या जानकारी मे।

२ ख्याल। समझ।

वि० जाननेवाला। जानकार।

†पु० १ यान। २ जानु।

जानकार—वि० [हि० जानना+कार (प्रत्य०)] १ जाननेवाला। अभिज्ञ। २ परिचित। ३ किसी बात या विषय मे कुशल या उसका अच्छा ज्ञाता।

जानकारी—स्त्री० [हिं० जानकार] जानकार होने की अवस्था, गुण या भाव।

जानकी—स्त्री० [स० जनक+अण्—ङीप्] जनक की पुत्री, सीता।

जानकी-जानि—पु० [स० जानकी-जाया ब० स०, नि आदेश] श्री रामचद्र।

जानकी-नाथ—पु० [ष० त०] श्री रामचद्र।

जानकी-रमण—पु० [ष० त०] श्री रामचद्र।

जानकी रवन—पु० दे० 'जानकी रमण'।

जानदार—वि० [फा०] १ जिसमे जान हो। सजीव। जीवधारी। २ जिसमे जीवनी-शक्ति हो। प्रबल। शक्तिशाली। जैसे—जानदार पौधा। ३ बहुत ही महत्त्वपूर्ण। जैसे—जानदार बात।

पु० प्राणी।

जाननहार*—पु० [हिं० जानना+हार (प्रत्य०)] जाननेवाला। ज्ञाता।

जानना—स० [स० ज्ञान] १ किसी बात, वस्तु, विषय आदि के सबध की वस्तु-स्थिति का ज्ञान होना। जैसे—(क) किसी का घर या पता जानना। (ख) अँगरेजी या हिदी जानना।

पद—जान बूझकर=अच्छी तरह समझते हुए और इच्छापूर्वक।

मुहा०—जान कर अनजान बनना=किसी बात के विषय मे जानकारी रखते हुए भी किसी को चिढाने, धोखा देने या अपना मतलब निकालने के लिए अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना। **जान रखना**=सचेत तथा सावधान रहना। जैसे—जान रखो, ईट का जवाब पत्थर से मिलेगा।

२ परिचय या सूचना पाना।

पद—जानकर=सूचना मिलने पर। जैसे—आप के पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप काशी पधार रहे है।

३ इस बात की जानकारी तथा समर्थता होना कि कोई काम कैसे किया जाता है। जैसे—वह इजन या मोटर चलाना जानता है। ४ किसी क्रिया, बात आदि की सत्यता पर विश्वास होना। जैसे—मै जानता हूँ कि पिता जी ऐसे कामो से अवश्य असतुष्ट होगे। ५ मनोभाव के सबध मे, (क) भाँप लेना। जैसे—मेरे बिना कुछ कहे ही वह मेरे आतरिक भाव जान लेता है। (ख) अनुभूत करना। जैसे—वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे।—नरसी मेहता।

जानपद—वि० [स० जनपद+अण्] १ जनपद सबधी। जनपद का।

पु० १ जनपद। प्रदेश। २ जनपद का निवासी। जन। ३ जमीन पर लगनेवाला कर। मालगुजारी। ४ मिताक्षरा के अनुसार लेख्य (दस्तावेज) के दो भेदो मे एक जो प्रजावर्ग के पारस्परिक व्यवहार के सबध मे होता है।

जानपदी—स्त्री० [स० जानपद+ङीप्] १ वृत्ति। २ महाभारत मे एक अप्सरा जिसने इन्द्र के कहने के अनुसार शरद्वान ऋषि की तपस्या भग की थी।

जानपना*†—पु० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] १ जानकार होने का भाव। २. चतुराई। बुद्धिमत्ता।

जानपनी*—स्त्री०=जानपना।

जान-पहचान—स्त्री० हिं० [हिं० जानना+पहचानना] आपस मे एक दूसरे को जानने तथा पहचानने की क्रिया, अवस्था या भाव (केवल व्यक्तियो के सबध मे प्रयुक्त।

विशेष—दो व्यक्तियो मे जान-पहचान होने के लिए यह आवश्यक है कि उनमे परस्पर प्रत्यक्ष परिचय हुआ हो और कई बार बात-चीत भी हुई हो।

जान-पहचानी—वि० [हिं० जान-पहचान] (व्यक्ति) जिससे जान-पहचान हो। परिचित।

जान-बख्शी—स्त्री० [फा०] १ प्राण-दड जिसे दिया जा सकता हो उसे कृपाकर छोड देने की क्रिया या भाव। २ किसी को दिया जानेवाला ऐसा आश्वासन या वचन कि तुम्हे प्राण-दड नही दिया जायगा।

जान-बीमा—पु० [फा० जान+अ० बीमा] वह सविधा या व्यवस्था जिसमे बीमा करनेवाला कुछ निश्चित समय के अनतर बीमा करानेवाले को अथवा उसकी मृत्यु हो जाने पर उसके उत्तराधिकारी को कुछ निश्चित धन देता है।

विशेष—बीमा करानेवाले को भी सविधा के अनुसार कुछ धन किस्तो के रूप मे कुछ समय तक देना पडता है।

जानमनि*—पु० [हिं० जान+स० मणि] बहुत बडा ज्ञानी या विद्वान्।

जा-नमाज—पु० [फा० जा (=जगह) +अ० नमाज] वह छोटी जाजिम या दरी जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज पढते है।

जानराय—पु० [हिं० जान+राय] बहुत बडा जानकार या ज्ञानी पुरुष।

जानवर—पु० [फा०] १ वह जिसमे जान या प्राण हो। प्राणी। २ मनुष्य से भिन्न, चलने-फिरने, उडने या तैरनेवाले अन्य जीव। जैसे--समुद्र मे हजारो प्रकार के जानवर होते है। ३ उक्त जीवो मे से विशेषत वे जीव जिनके चार पैर हो। चौपाया पशु। जैसे—वह जानवर चराने गया है। ४ लाक्षणिक अर्थ मे, कम अक्लवाला, उजड्ड या गँवार आदमी। ५ पशुओ का-सा आचरण या व्यवहार करनेवाला।

जा-नशीन—पु० [फा०] [भाव० जा-नशीनी] १ किसी दूसरे के स्थान पर विशेषत किसी अधिकारी के न रहने या हट जाने पर उसके पद या स्थान पर बैठनेवाला व्यक्ति। उत्तराधिकारी।

जानहार†--वि० [हिं० जाना+हारा (प्रत्य०)] १ जानेवाला। २ जो हाथ से निकल जाने को हो। ३ जो नष्ट होने को हो।

वि० [हिं० जानना+हार (प्रत्य०)] जाननेवाला।

जानहु*--अव्य० [हिं० जानना] जानो। मानो।

जानाँ—स्त्री० [फा० 'जान' का बहु०] प्रेमपात्र। प्रेयसी।

जाना--अ० [स० या, प्रा० जा+हिं० प्र० ना] १ एक स्थान से चलकर अथवा और किसी प्रकार की गति मे होकर दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए आगे या उसकी ओर बढना। गमन या प्रस्थान करना। जैसे—(क) अपने मित्र के घर जाना। (ख) रेल पर बैठकर कलकत्ते अथवा हवाई जहाज पर बैठकर अमेरिका जाना।

मुहा०—(कहीं) जा पडना=अचानक कही पहुँचना या उपस्थित होना।

२ किसी उद्देश्य की सिद्धि या कार्य की पूर्ति के लिए कही प्रस्थान करना। जैसे--लडके का कही खेलने या पढने जाना। (ख) कर्मचारी का अधिकारी के पास जाना। (ग) सेना का युद्ध पर जाना। ३ यानो आदि के सबध मे, अथवा उनसे भेजी जानेवाली चीजो के सबध मे, नियत या नियमित रूप से यात्रा आरभ करना। जैसे—(क) यहाँ से रोज सन्ध्या को एक नाव या मोटर जाती है। (ख) हजारो रुपये के बरतन बाहर जाते है। ४ भौतिक या यान्त्रिक प्रक्रियाओ से होनेवाले कामो या बातो के सबध मे, किसी प्रकार के वाहक साधन के द्वारा प्रसारित या प्रेषित होना। जैसे—(क) अब अनेक स्थानो से हिंदी मे भी तार जाने लगे है। (ख) अब तो रेडियो से सब जगह खबरे जाने लगी हैं। (ग) हवा चलने पर इस फूल की सुगध बहुत दूर तक जाती है। ५ तरल पदार्थ का आधार या पात्र मे से निकलना, बहना या रसना। जैसे—आँखो से पानी जाना, फोडा से मवाद जाना, गले या नाक से खून जाना। ६ रेखा आदि के रूप मे होनेवाली कृतियो, रचनाओ आदि के सबध मे, एक बिंदु या स्थान से दूसरे बिंदु या स्थान तक विस्तृत रहना या होना। जैसे—यह गली उनके मकान तक अथवा यह सडक दिल्ली से अमृतसर तक जाती है। ७ मन, विचार आदि के सबध मे, किसी की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—किसी काम, बात या व्यक्ति की ओर ध्यान या मन जाना।

मुहा०—किसी बात पर या किसी की बात पर जाना=महत्त्वपूर्ण समझकर उसकी ओर ध्यान देना। जैसे—आप इनकी बातो पर न जायँ, ये तो यो ही बकते रहते है।

८ किसी स्थान से किसी चीज का उठाने या हटाने पर वर्तमान न रहना। जैसे—मेज पर से घडी चोरी जाना, घर से माल या सामान जाना। ९ किसी के अधिकार, कार्यक्षेत्र, वश आदि से निकलना या बाहर होना। जैसे—(क) मुकदमेबाजी मे उनके दोनो मकान गये। (ख) हमारी घडी जायगी तो तुम्हे दाम देना पडेगा।

मुहा०—जाने देना=(क) अधिकार, नियम आदि शिथिल रखकर किसी को प्रस्थान आदि की अनुमति देना। जैसे—लडको को खेलने-कूदने के लिए भी जाने दिया करो। (ख) किसी को उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर उसकी चिंता या विचार न करना अथवा उस पर ध्यान न देना। जैसे—अब लडाई-झगडे की बाते जाने दो, और काम की बाते करो।

१० कही या किसी से छूटकर अलग होना या रहना। जैसे—(क) घर से बीमारी या रोग जाना। (ख) किसी की नौकरी या यजमानी जाना। ११ न रह जाना। नष्ट होना। जैसे—आँखो की ज्योति जाना।

पद—गया गुजरा या गया बीता=जो बहुत कुछ नष्ट या विकृत हो चुका हो।

मुहा०—क्या जाता है=कुछ चिंता नही। कोई हानि नही है। जैसे—हमारा क्या जाता है, वह जो चाहे सो करे।

१२ मरना। जैसे—(क) उसके माँ-बाप तो पहले ही जा चुके थे। (ख) जो आया है, वह जायगा ही। १३ काल या समय व्यतीत होना। गुजरना। बीतना। जैसे—इस महीने मे भी चार दिन जा चुके है। १४ बेचा जाना या बिकना। जैसे—यह मकान दस हजार रुपए से कम मे नही जायगा।

विशेष—'जाना' क्रिया प्राय दूसरी क्रियाओ के साथ सयोज्य क्रिया के रूप मे प्रयुक्त होकर कई प्रकार के अर्थ देता या भाव सूचित करता है। यथा—(क) मुख्य क्रिया की पूर्णता या समाप्ति। जैसे—बन जाना, मर जाना, मिट जाना, हो जाना। (ख) कुछ जल्दी या सहज मे, परन्तु पूरी तरह से। जैसे—खा जाना, निगल जाना, समझ जाना। (ग) कोई कठिन, बडा या महत्त्वपूर्ण कार्य कौशलपूर्वक कर डालना। जैसे—(क) आप भी कभी-कभी बहुत-कुछ कह जाते है। (ख) वह भी बहुत-कुछ कर जायँगे।

जानि—स्त्री० [स० जाया] स्त्री। भार्या।

वि० [स० ज्ञानी] जानकार। उदा०—सेनापति देखत ही जानि सब जानि गई।—सेनापति।

अव्य० तुल्य। समान। उदा०—वाणी पाणि सुवानि जानि दधिजा हसा रसा आसनी।—चदवरदायी।

जानिब—स्त्री० [अ०] ओर। तरफ। दिशा।

जानिबदार—वि० [फा०] [भाव० जानिबदारी] तरफदारी या पक्षपात करनेवाला।

जानिबदारी—स्त्री० [फा०] विवाद आदि मे, किसी का पक्ष लेने की क्रिया या भाव। तरफदारी करना।

जानी—वि० [फा०] १ जान या प्राणो से सबध रखनेवाला। जैसे—जानी दुश्मन। २ जान या प्राणो के समान परम प्रिय। जैसे—जानी दोस्त या जानी मित्र।

स्त्री० [फा० जान] परमप्रिय स्त्री।

जानु—पु० [स०√ जन्+ञुण्] १ टाँग के बीच का जोड। घुटना।
स्त्री० [फा० जान] परमप्रिय स्त्री।
२ उक्त जोड तथा उसके आस-पास का स्थान। जैसे—जानु मे दर्द होता है। ३ जघा। रान।

जानु-पाणि—क्रि० वि० [द्व० स०] घुटनो और हाथो से। घुटनो और हाथो के बल।

जानुपानि—क्रि० वि०=जानु-पाणि।

जानुवाँ—पु० [स० जानु] पशुओ विशेषत हाथियो को होनेवाला एक रोग जिसमे उनके घुटनो मे पीडा होती है तथा जिसमे कभी-कभी घुटनो की हड्डियाँ उभर भी आती है।

जानु-विजानु—पु० [स०] तलवार चलाने का एक ढग।

जानू—पु० [स० जानु से फा० जानू] जघा। जाँघ।

जाने—अव्य० [हि० न जाने] ज्ञान या जानकारी नही कि। मालूम नही कि। उदा०—जाने किसकी दौलत हूँ मैं—दिनकर।
पद—न जाने=नही जानता हूँ कि।

जानो†—अव्य० [हि० जानना] १ ऐसा या इस प्रकार प्रतीत या भासित होता है कि। २ इस प्रकार जान या समझ लो कि।

जान्य—पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि। (हरिवश)

जाप—पु० [स०√जप् (जप करना) +घञ्] इष्ट देवता के नाम, मत्र आदि का बार-बार उच्चारण। जप। (दे०)
†स्त्री०=जय-माला। (बव०)
स्त्री० [स० जप] नाम, मत्र आदि जपने की माला। जप-माला। उदा०—बिरह भभूत जटा बैरागी। छाला काँध जाप कँठ लागी। जायसी।

जापक—वि० [स०√जप्+ण्वुल्—अक] जाप करने या जपनेवाला।

जापन—पु० [स०√जप् +णिच्—ल्युट्—अन] १ जपने की क्रिया या भाव। २ जप।

जापना—अ० [स० ज्ञपन] जान पडना। मालूम होना। उदा०—अनमिल आखर अरथ न जापू।—तुलसी।
स०=जपना।

जापा—पु० [स० जनन] १ स्त्री का सतान उत्पन्न करना। प्रसव। २ प्रसूतिका-गृह। सौरी।

जापान—पु० [हि०] १ एशिया के पूर्वी समुद्र-तट पर के कई द्वीपो की सामूहिक सज्ञा। २ उक्त द्वीपो का राष्ट्र।

जापानी—वि० [हि० जापान (देश)] १ जापान देश का। जापान सबधी। २ जापान मे बनने या होनेवाला।
पु० जापान देश का निवासी।
स्त्री० जापान देश की भाषा।

जापी (पिन्)—वि० [स०√जप्+णिनि] जाप या जप करनेवाला।

जाप्य—वि० [स०√जप् +ण्यत्] १ जप करने या जपने योग्य। २ जो जपा जाने को हो।

जाफ†—स्त्री० [अ० जोफ] १ दुर्बलता, रोग आदि के कारण होनेवाली बेहोशी। मूर्च्छा। २ घुमटा। चक्कर।

जाफत—स्त्री० [अ० जियाफत] बन्धु-बान्धवो, मित्रो आदि को दिया जानेवाला प्रीति-भोज। दावत।

जाफरान—पु० [अ० जाफरान] [वि० जाफरानी] १ केसर २ अफगानिस्तान मे रहनेवाली एक तातारी जाति।

जाफरानी—वि० [अ०] १ जिसमे जाफरान या केसर पडा हो। केसरिया। २ जाफरान या केसर के रग का पीला। केसरिया।

जाफरानी ताँबा—पु० [हि०] एक प्रकार का बढिया ताँबा जिसका रग केसर की तरह पीला होता है।

जाफरी—स्त्री० [अ० जअफर] १ बाँसो अथवा उसकी खपचियो की बनी हुई टट्टी अथवा परदा। २ एक प्रकार का गेदा (पौधा और उसका फूल)।

जाब†—पु०=जवाब।

जा-बजा—क्रि० वि० [फा०] जगह-जगह पर। बहुत-सी जगहो मे।

जाबडा†—पु०=जबडा।

जाबता†—पु०=जाब्ता।

जाबर†—वि० [?] बुड्ढा। वृद्ध। (डि०)
†पु०=जावर।

जाबाल—पु० [स० जबाला+अण्] सत्यकाम नामक एक वैदिक ऋषि।

जाबालि—पु० [स० जबाला+इञ्] महाराज दशरथ के एक मत्री का नाम जो उनके गुरु भी थे।

जाबित—वि० [अ० जाबित] जब्त करनेवाला।

जाबिर—वि० [फा०] १ (वह) जो जबर हो। जबरदस्ती करनेवाला। २ अत्याचारी। ३ उग्र। प्रचड।

जाब्ता—पु० [अ० ज़ाब्त] १ नियम। २ कानून। विधान। जैसे—जाब्ता दीवानी या जाब्ता फौजदारी (अर्थात् आर्थिक व्यवहार से या दडनीय अपराधो से सबध रखनेवाला विधान)। ३ प्रबध। व्यवस्था।

जाम†—पु० [स० जम्बू] १ जामुन का पेड या फल। २ एक प्रकार का वृक्ष जिसमे छोटे मीठे फल लगते है। ३ उक्त वृक्ष का फल।
†पु० जिमि (जिस प्रकार या ज्यो ही)। उदा०—जाम हड्ड पल कटे, ताम बाँधत वीर दम।—चद्रबरदाई।
पु०=याम। (पहर)
पु० [फा०] १ एक विशिष्ट प्रकार का कटोरा या प्याला जो प्राय मद्य पीने के काम आता था। २ मद्य पीने का पात्र।
मुहा०—जाम चलना=शराब का दौर शुरू होना।
पु० [अनु० झम=जल्दी] जहाज की दौड। (लश०)
वि० [अ० जैम, मि० हि० जमना] अधिकता, दबाव आदि के कारण चारो ओर से कसे या दबे होने के कारण अपने स्थान पर अडा या रुका हुआ। जैसे—काँटा या कील जाम होना, रास्ता जाम होना।

जामगिरी—स्त्री० [?] बदूक का पलीता।

जामगी—स्त्री०=जामगिरी।

जामण†—पु० [स० जन्मन्] १ जन्म। उदा०—छूटा जामण मरण सू, भवसागर तिरियाह।—बाँकीदास २ दे० 'जामन'।

जामदग्न्य—पु० [स० जमदग्नि+य्यञ्] जमदग्नि ऋषि के पुत्र, परशु-राम।

जामदानी—पु० [फा० जाम दानी] १ पहनने के कपडे रखने की पेटी या बक्स। २ वह पेटी जिसमे बच्चे अपने खिलौने आदि रखते है।

३ कपडो पर होनेवाला एक प्रकार का कसीदे का काम या कढाई। ४ एक प्रकार की मलमल जिस पर उक्त प्रकार का काम होता था।

जामन—पु० [हि० जमाना] वह खट्टा दही जो दूध को जमाने के लिए उसमे छोडा जाता है।
†पु०=जामुन।
†पु० [हि० जन्मना] जन्म लेने की क्रिया या भाव।

जामना—अ०=जमना।
स०=जन्मना।

जामनी—स्त्री० [स० यामिनी] रात।
†वि०=यवनी (यवनो का)।

जामबेतुआ—पु० [हि० जाम+बेत] १ बाँसो की एक जाति। २ उक्त जाति का बाँस।

जामल—पु०=रुद्रयामल।

जामवत—पु०=जाबवान्।

जामा—पु० [फा० जाम] १ पहनने का वह सिला हुआ कपडा जिससे गला, छाती, पीठ तथा पेट ढका रहे।
मुहा०—जामे से बाहर होना=इतना अधिक क्रुद्ध होना कि अपनी मर्यादा का ध्यान न रह जाय।
२ घुटने तक लम्बा एक विशेष प्रकार का पहनावा जिसमे कमर के नीचे का भाग घेरदार होता है और जो प्राय विवाह के समय वर को पहनाया जाता है।

जामात—पु०=जमायत।

जामाता (तृ)—पु० [स० जाया√मा (मान करना)+तृच्] १ सबध मे वह व्यक्ति जिसके साथ किसी ने अपनी कन्या का विवाह किया हो। दामाद। २ हुलहुल का पौधा।

जामातु*—पु०=जामाता।

जामा मसजिद—स्त्री० [अ०] नगर की सब से बडी और मुख्य मसजिद जिसमे सब मुसलमान पहुँचकर नमाज पढते हो।

जामि—स्त्री० [स०√जम्+(खाना) इञ्] १ बहन। भगिनी। २ कन्या। लडकी। ३ पुत्री। बेटी। ४ पुत्र-वधू। ५ अपने कुल, गोत्र या परिवार की स्त्री। ६ अच्छे कुल की स्त्री। महिला।

जामिक—पु० [स० यामिक] १ पहरा देनेवाला २ रक्षक। रखवाला।

जामिन—पु० [अ०] १. वह व्यक्ति जो अभियुक्त की जमानत करे। २ वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के कार्य करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले।
पु० [हि०जमाना] वह छोटी लकडी या लकडी का टुकडा जो नैचे की दोनो नलियो को अलग रखने के लिए चिलमगर्दे और चूल के बीच मे बाँधा जाता है।

जामित्र—पु० [स० जायामित्र] जन्म-कुडली मे लग्न से सातवाँ स्थान जिसका विचार विवाह के समय इस दृष्टि से होता है कि भावी जाया या पत्नी से कितना और कैसा सुख-दुख मिलेगा।

जामित्र-वेध—पु० [ष० त०] ज्योतिष का एक अशुभ योग जो लग्न से सातवे स्थान मे सूर्य, शनि या मगल होने पर होता है। यह भावी पत्नी से प्राप्त होनेवाले सुख मे बाधक होता है।

जामिनदार—पु० [अ० जामिन+फा० दार] जमानत करनेवाला। जमानतदार।

जामिनी—स्त्री०=यामिनी।
†स्त्री०=जमानत।

जामी—स्त्री० १ दे० 'यामी'। २ दे० 'जामि'।
†पु० [स० जन्म] जन्म देनेवाला अर्थात् पिता। बाप। (डिं०)

जामुन—पु० [स० जबु] १ गरम देशो मे होनेवाला एक सदा बहार पेड जिसके गोल, छोटे, काले फल कसैलापन लिये मीठे होते है। २ उक्त वृक्ष के फल जो खाने और सिरका बनाने के काम आते हैं।

जामुनी—वि० [हि० जामुन] १ जामुन का वृक्ष अथवा उसके फल से बनने, होने या सबध रखनेवाला। जैसे—जामुनी लकडी, जामुनी सिरका। २ जामुन के रग का। कुछ नीलापन लिये हुए काले रग का। पु० जामुन के फल की तरह का नीलापन लिये काला रग।

जामेय—पु० [स० जामि+ढञ्—एय] बहन का लडका। भाजा।

जामेवार—पु० [देश०] १ एक प्रकार का दुशाला जिस पर बेल-बूटे कढे रहते है। २ उक्त प्रकार की छपी हुई छीट।

जायँ†—क्रि० वि०=जाँय (व्यर्थ)।

जाय*—वि० [फा० जा=ठीक] उचित। वाजिब।
वि० [अ० जाय=नष्ट] निष्फल। व्यर्थ।
क्रि० वि० व्यर्थ।
स्त्री० [देश०] भूने हुए चने और उडद की पकाई हुई दाल।

जायक—पु० [स०√जि (जीतना) +ण्वुल्—अक] पीला चदन।

जायका—पु० [अ० जायक] किसी वस्तु का वह गुण जिसके कारण वह खाई जाने पर प्रिय लगती या रुचिकर होती है। स्वाद।

जायकेदार—वि० [अ० जायक+फा० दार] (खाद्य-पदार्थ) जिसमे अच्छा जायका या स्वाद हो। स्वादिष्ठ।

जायचा—पु० [फा० जायच] जन्म-कुडली।

जायज—वि० [अ० जायज़] १ जो नियम, विधान आदि के अनुसार ठीक हो। वैध। २ उचित। मुनासिब। वाजिब।

जायजरूर—पु० [फा० जा+अ० जरूर] वह स्थान जहाँ लोग पाखाना फिरते हो। टट्टी। शौचालय।

जायजा—पु० [अ० जायज] १ जाँच-पडताल। २ किये हुए कामो का दिया या लिया जानेवाला विवरण। कैफियत।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
३ नित्य और नियमित रूप से लिखाई जानेवाली उपस्थिति। हाजिरी।

जायद—वि० [फा० जायद] १ अधिक। ज्यादा। २ अतिरिक्त।

जायदाद—स्त्री० [फा०] १ वह वस्तु अथवा वस्तुएँ जो किसी के निजी अधिकार मे हो अथवा जिनपर कोई निजी अधिकार जतलाता हो। जैसे—हमारी जायदाद का उपभोग हमारे शत्रु करे, यह हमे सह्य नही हो सकता। २ उक्त के आधार पर विशेषत वह वस्तु या वस्तुएँ जिन्हे उपभोग करने, बेचने आदि का पूरा अधिकार किसी को न्यायत. प्राप्त होता है।

जाय नमाज—स्त्री०=जा-नमाज।

जायपत्री—स्त्री०=जावित्री।

जायफर—पु०=जायफल।

जायफल—पु० [स० जातीफल] एक प्रकार का सुगधित फल जो औषध और मसाले के काम आता है।

जायरी—पु० [देश०] नदियो के किनारे की पथरीली भूमि मे होनेवाली एक प्रकार की लता।

जायल—वि० [फा०] जिसका नाश हो गया हो। जो नष्ट हो चुका हो। विनष्ट।

जायस—पु० [देश०] उत्तर प्रदेश के बरेली जिले मे का एक गाँव। (मलिक मुहम्मद जायसी की जन्म-भूमि)

जायसवाल—पु० [हि० जायस] १ जायस नामक गाँव मे अथवा उसके आस-पास रहनेवाला व्यक्ति। २ कुरमियो, कलवारो आदि का एक वर्ग।

जायसी—वि० [हि० जायस] १ जायस गाँव मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। २ जायस गाँव मे रहनेवाला (व्यक्ति)।

जाया—स्त्री० [स०√जन् (उत्पत्ति) +यक्,--आत्व,--टाप्] १ विवाहिता स्त्री, विशेषत ऐसी स्त्री जो किसी बालक को जन्म दे चुकी हो। २ जोरू। पत्नी। ३ जन्म कुडली मे लग्न से सातवाँ स्थान जहाँ से पत्नी के सबध मे गणना या विचार किया जाता है।
पु० [हिं० जाना=जन्म देना] १ वह जो प्रसव कर के उत्पन्न किया गया हो। २ पुत्र। बेटा।
वि० [अ० जाय] जो उपयोग या उपभोग मे ठीक प्रकार से न लाया गया हो और फलत यो ही नष्ट हो गया हो।

जायाघ्न—पु० [स० जाया√हन् (मारना) +टक्] १ फलित ज्योतिष मे एक योग जो पत्नी के जीवन के लिए घातक माना जाता है। २ व्यक्ति, जिसकी कुडली मे उक्त योग हो। ३ शरीर मे का तिल।

जायाजीव—पु० [स० जाया—आजीव, ब० स०] १ वह जो अपनी पत्नी से व्यभिचार अथवा और कोई काम करा के अपनी जीविका चलाता हो। २ बगला पक्षी।

जायानुजीवी (विन्)—पु० [स० जाया--अनु√जीव् (जीना)+णिनि] =जायाजीव।

जायी (यिन्)--पु० [स०√जि (जीतना) + णिनि] सगीत मे एक ताल।

जायु—पु० [स०√जि+उण्] औषध। दवा।
वि० जीतनेवाला। जेता।

जार—पु० [स०√जॄ (जीर्ण होना)+घञ्] १ किसी स्त्री के विचार से, वह पर-पुरुष जिसके साथ उसका अनुचित सबध हो। उपपति। यार।
†पु०=यार (मित्र)।
†वि० [हिं० जलाना] जलाने, नष्ट करने या मारनेवाला।
पु० जलने की क्रिया या भाव।
†पु०=जाल।
पु० [फा० ज़ार] स्थान। जैसे—गुलजार, सब्जजार।
पु० [लै० सीज़र] रूस के पुराने बादशाहो की उपाधि।

जारक—वि० [स०√जॄ+ण्वुल्—अक] १ जलानेवाला। २ क्षीण या नष्ट करनेवाला। ३ पाचक।

जार-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] छिनाला। व्यभिचार।

जारज—पु० [स० जार√जन्+ड] वह बालक जो किसी स्त्री के उप-पति के योग से उत्पन्न हुआ हो।

जार-जन्मा (न्मन्)—वि० [ब० स०] जारज।

जारज-योग—पु० [मध्य स०] फलित ज्योतिष मे एक योग जिसमे उत्पन्न होनेवाला बालक जारज समझा जाता है।

जार-जात—वि० [तृ० त०] स्त्री के उपपति या जार से उत्पन्न। जारज।

जारजेट—स्त्री० [अ० जार्जेट] एक प्रकार का बढिया महीन कपडा।

जारण—पु० [स०√जॄ+णिच्+ल्युट्-अन] १ जलाने की क्रिया, भाव या विधि। २ पारे की भस्म बनाने के समय होनेवाली एक क्रिया या सस्कार।

जारणी—स्त्री० [स० जारण+ङीष्] सफेद जीरा।

जारदवी—स्त्री० [स० जरद्गव+अण्-ङीप्] ज्योतिष मे एक वीथी का नाम जिसमे वराहमिहिर के अनुसार श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा और विष्णु पुराण के अनुसार विशाखा, अनुराधा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र है।

जारन—पु० [स० जारण] १ जलाने की क्रिया या भाव। २ जलाने की लकडी। ईंधन। जलावन।

जारना—स०=जलाना।

जार-भरा—स्त्री० [जार√भृ (पोषण करना)+अच्-टाप्] अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से सबध रखनेवाली स्त्री।

जारा†—पु०=जाला।

जारिणी—स्त्री० [स० जार+इनि--ङीप्] वह स्त्री जो किसी अन्य पुरुष से प्रेम करती हो।

जारी—वि० [अ०] १ जिसका चलन या प्रचलन बराबर हो रहा हो। जो चल रहा हो। जैसे--कार-बार या रोजगार जारी रहना। २ जिसका प्रवाह या बहाव बराबर हो रहा हो। प्रवाहित। जैसे—गले से कफ या खून जारी होना। ३ (नियम आदि) जो इस समय लागू हो। जैसे—अध्यादेश आज ही जारी होगा।
पु० [अ० ज़ारी=रोना] मुहर्रम मे ताजियो के सामने गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।
स्त्री० [स० जार+ई (प्रत्य०)] पर-स्त्री गमन। जार-कर्म। जैसे—चोरी-जारी करना।
पु० [देश०] झरबेरी का पौधा।

जारुत्य—पु०=जारूथ्य।

जारुथी—स्त्री० [स० जरुथ+अण्-ङीप्] एक प्राचीन नगरी। (हरिवश)

जारुधि—पु० [स० जारु√धा (रखना)+कि] एक पर्वत का नाम।

जारूथ्य—पु० [स० जरूथ+यञ्] वह अश्वमेध जिसमे तिगुनी दक्षिणा दी जाय।

जारोब—स्त्री० [फा०] झाडू। बुहारी।

जारोब कश—पु० [फा०] झाडू देने या लगानेवाला व्यक्ति।

जार्य्यक—पु० [स०√जॄ (जीर्ण होना)+ण्यत्+कन्] मृगो की एक जाति।

जालधर—पु० [स०] १ एक प्राचीन ऋषि। २ जलधर नामक दैत्य।

जालधरी विद्या—स्त्री० [स० जालधर+अण्-ङीप्, जालधरी और विद्या व्यस्त पद] इन्द्र-जाल।

जाल—पु० [स०√जल् (धात)+ण, बँ०प०जाल्, सिं० जारु, गु० जाडू,

मरा० जाडे] [स्त्री० अल्पा० जाली] १ धागे, सुतली आदि की बुनी हुई वह छेदोवाली रचना जो चिड़ियाँ, मछलियाँ आदि फँसाने के काम आती है।

मुहा०—जाल डालना या फेंकना=मछलियाँ आदि पकडने के लिए जलाशय या नदी मे जाल छोडना। **जाल फैलाना या बिछाना**= चिड़ियो, पशु-पक्षियो आदि को फँसाने के लिए जाल लगाना।

२ उक्त के आधार पर छेदोवाली कोई रचना जिसमे कोई चीज फँसती या फँसाई जाती हो। जैसे—मकडी का जाल (जाला)। ३ बुनी या बनाई हुई कोई छेदोवाली रचना। जैसे—टेनिस या फुटबाल के खेल मे खभो मे बाँधा जानेवाला जाल। ४ झरोखा। ५ जाल की तरह का ततुओ, रेशो आदि का उलझा हुआ रूप। जैसे—जटा या जडो का जाल। ६ रेखा या रेखाओ के आकार की वस्तुओ के एक दूसरे को काटते हुए मिलने से बननेवाला उक्त प्रकार का रूप। जैसे—(क) किसी देश मे बिछा हुआ नदियो का जाल। (ख) साडी मे बना हुआ जरदोजी के तारो का जाल। ७ आपस मे गुथी हुई तथा दूर तक फैली हुई चीजो का विस्तार या समूह। जैसे—पथ जाल। ८ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसी युक्ति जिसके कारण कोई दूसरा व्यक्ति प्राय असावधानता के कारण धोखा खाता हो। जैसे—तुम्हारे जाल मे वे भी फँस जायँगे।

मुहा०—(बातों के सबंध में) जाल बिछाना या फैलाना=कोई ऐसी युक्ति निकालना जिससे कोई दूसरा व्यक्ति धोखा खा जाय। **(व्यक्ति के सबंध में) जाल बिछाना**=स्थान-स्थान पर किसी को पकडने के लिए व्यक्ति खडे करना।

९ इद्र-जाल। १० अभिमान। घमड। ११ वनस्पतियो आदि को जलाकर तैयार किया हुआ क्षार। खार। १२ कदब का वृक्ष। १३. फूल की कली।† १४ पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप।

पु० [अ० जअल मि० स० जाल] [वि० जाली] १ कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी वास्तविक वस्तु का तैयार किया हुआ नकली रूप। २ विधिक क्षेत्र मे, ऐसे पत्र, लेख आदि जो वास्तविक न होने पर भी वास्तविक के रूप मे उपस्थित करना। (फोरजरी)

जालक—पु० [स०√जल् (सवरण)+घञ्,√कै (प्रतीत होना)+क] १ चिड़ियाँ, मछलियाँ आदि फँसाने का जाल। २ घास, भूसा आदि बाँधने का जाल। ३ झुड। समूह। ४ कली। ५ झरोखा। ६ केला। कदली। ७ चिडियो का घोसला। ८ अभिमान। घमड। ९ गले मे पहनने का मोतियो का एक गहना।

जाल-कारक—पु० [ष० त०] मकडा।

जालकि—पु० [स०] १ जाल लगाकर पशु-पक्षी या मछलियो पकडनेवाला व्यक्ति। २ बाज। ३ मकडा। ४ जादूगर।

जालकिनी—स्त्री० [स० जालक+इनि-डीप्] भेडी। मेषी।

जालकिरच—स्त्री० [हिं० जाल+किरच] वह पेटी जिसके ऊपर परतला लगा हो और नीचे तलवार लटकती हो।

जालकी (किन्)—पु० [स० जालक+इनि] बादल। मेघ।

जाल-कीट—पु० [ब० स०] १ मकडी। २ [मध्य० स०] मकडी के जाल मे फँसा हुआ कीडा।

जाल-गर्दभ—पु० [मध्य० स०] एक क्षुद्र रोग जिसमे शरीर मे सूजन, ज्वर आदि होते हैं। (सुश्रुत)।

जाल-जीवी (विन्)—पु० [स० जाल√जीव् (जीना)+णिनि] मछुआ। धीवर।

जालदार—वि० [हिं० जाल+फा० दार] १ जिसमे जाल की तरह बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। जालीदार। २ (वस्त्र) जिस पर धागो अथवा जरदोजी आदि के तारो का जाल बुना हुआ हो। जैसे—जालदार साडी।

जालना†—स०=जलाना।

जाल-पाद—पु० [ब० स०] १ हस। २ एक प्राचीन देश। ३ ऐसा जतु या पक्षी जिसके पैर जालीदार झिल्ली से ढके हो। जैसे—चमगादड, बत्तख आदि।

जाल-प्राया—स्त्री० [ब० स०] कवच। जिरह-बकतर।

जालबंद—पु० [हिं० जाल+फा० बद] एक प्रकार का गलीचा जिस पर कढी हुई बहुत-सी लताओ, बेल-बूटो आदि के एक दूसरे को काटने के कारण जाल-सा बन जाता है।

जाल-बर्बुरक—पु [मध्य० स०] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड।

जाल-रध्र—पु० [ब० स०] जालीदार खिडकी। झरोखा।

जालव—पु० [स०] एक दैत्य जिसका वध बलदेव जी ने किया था। (पुराण)

जालसाज—पु० [अ० जअल+फा० साज़] ऐसा व्यक्ति जो धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए किसी असल चीज की जगह वैसी ही नकली चीज तैयार करता हो।

जालसाजी—स्त्री० [फा०] १ जाल साज होने की अवस्था या भाव। २ जालसाज का वह काम जो जाल के रूप मे हो।

जाला—पु० [स० जाल] [स्त्री० अल्पा० जाली] १ घास भूसा आदि बाँधने की बडी जाली। २ बहुत से ततुओ का वह विस्तार जो मकडी अपना शिकार फँसाने के लिए दीवारो के कोनो आदि मे बनाती है। ३ आँख का एक रोग जिसमे अदर की ओर मैल के बहुत से ततु इधर-उधर फैल कर दृष्टि मे बाधक होते है। ४ सरपत की जाति की एक घास जिससे चीनी साफ की जाती है। ५ पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का घडा।

†पु०=जाल।

*स्त्री०=ज्वाला।

जालाक्ष—पु० [स० जाल-अक्षि ब० स०, षच्] झरोखा। गवाक्ष।

जालिक—पु० [स० जाल+ठन्-इक] १ वह जो रस्सियो आदि का जाल बनाता या बुनता हो। २ वह जो जाल मे जीव-जतु फँसाता हो। बहेलिया। ३ बाजीगर। इद्रजालिक। ४ मकडी। (डिं०)

जालिका—स्त्री० [स० जाल+ठन्-इक, टाप्] १ जाली। २ पाश। फदा। ३ विधवा स्त्री। ४ मकडी। ५ कवच या जिरह-बक्तर। ६ लोहा। ७ झुड। समूह।

जालिनी—स्त्री० [स० जाल-इनि-डीप्] १ कद्दू, घीया, तरोई आदि फल जिनकी तरकारी बनती है। २ परवल की लता। ३ चित्रशाला। ४ प्रमेह के रोगियो को होनेवाला एक रोग जिसमे मासल अगो मे फुन्सियाँ होती है।

जालिनी-फल—पु० [ष० त०] तरोई। घीया।

जालिम—वि० [अ०] जुल्म अर्थात् अत्याचार करनेवाला। अत्याचारी।

जालिमाना—वि०[अ०] अत्याचार-सबधी। अत्याचारपूर्ण।

जालिया—पु०[अ० जअल=फरेब+इया (प्रत्य०)] वह जो नकली दस्तावेज आदि बनाकर जालसाजी करता हो और इस प्रकार दूसरो की सम्पत्ति छीनता हो। जालसाज।
†पु० [हिं० जाल+इया (प्रत्य०)] वह जो जाल मे जीव-जतु फँसाकर जीविका चलाता हो।

जाली—स्त्री०[हिं० जाल] १ कोई ऐसी रचना जिसमे प्रायः नियत और नियमित रूप से थोडी दूर पर छेद या कटाव हो। जैसे—दीवार मे बनी हुई सीमेंट की जाली। २ एक प्रकार का कपडा जिसमे उक्त प्रकार के बहुत छोटे-छोटे छेद होते है। ३ कच्चे आम के अदर का ततुजाल। ४ वह क्षेत्र जिसका पानी ढलकर किसी नदी मे मिलता हो। ढलान। (कैचमेंट एरिया) ५ दे०-'रध्र' (किले का)। ६ कुट्टी या चारा काटने का गडाँसा। ७ डोरियो आदि की वह जालदार रचना जिसमे घास-भूसा आदि बाँधते हैं।
वि० जो जाल रचकर धोखा देने के लिए बनाया गया हो। झूठा और नकली या बनावटी। जैसे--जाली दस्तावेज, जाली सिक्का।

जालीदार—वि० [देश०] (रचना)जिसमे जाली कटी या बनी हो।

जाल्म—वि० [स०√जल् (दूर करना)+णिच्+म] १ नीच। २ मूर्ख।

जाल्मक—वि०[स० जाल्म+कन्] १ घृणित। २ नीच।

जाव†—पु०=जवाब।

जावक—पु०[स० यावक] १ अलता। अलक्तक। २ मेहदी।

जावत—अव्य०=यावत्।

जावन—पु०=जामन।

जावन्य—पु०[स० जवन+ष्यञ्] १ तेजी। वेग। २ जल्दी। शीघ्रता।

जावर†—पु०[?] १ ऊख के रस मे पकाई हुई एक प्रकार की खीर। २ कद्दू के टुकडो के साथ पकाया हुआ चावल।

जावा—पु० [हिं० जामन या जमना] वह मसाला जिससे शराब चुआई जाती है। पॉस। बेसवार।

जावित्री—स्त्री०[स० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगधित छिलका जो दवा, मसाले आदि के काम आता है।

जाषक—पु०[स०√जस् (छोडना)+ण्वुल्-अक, पृषो० षत्व] पीला चदन।

जाषिणी—यक्षिणी।

जासु—सर्व०[हिं० जो] १ जिसको। जिसे। २ जिसका।

जासू—पु०[देश०] वे पान जो मदक बनाने के लिए अफीम मे मिलाये जाते है।
*सर्व०=जासु।

जासूस—पु०[अ०] वह व्यक्ति, जो प्राय छिपकर अपराधियो, प्रतिपक्षियो आदि की कारररवाइयो का पता लगाता हो। गुप्तचर। भेदिया।

जासूसी—स्त्री०[अ०] १ जासूस होने की अवस्था या भाव। २ जासूस का काम, पद या विद्या।
वि० १ जासूस सबधी। २ (साहित्य मे उपन्यास, कहानी आदि) जिसमे जासूसो की कारगुजारियो का उल्लेख हो।

जासौं—अव्य०[हिं० जासु] १ जिसकी ओर। २ जिस ओर।
उदा०--जासौं वै हेरहिं चख नारी।। बाँक नैन जनु हनहिं कटारी।
—जायसी।
सर्व० जिसको।

जास्ती—वि०=ज्यादा।
स्त्री०=ज्यादती।

जास्पति—पु० [स० जाया-पति ष० त०, नि० सिद्धि।] जामाता। दामाद।

जाह—पु० [फा०] १ पद। पदवी। २ वैभव। ३ गौरव। मर्यादा।

जाहक—पु० [स०√दह् (चमकना)+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] १ गिरगिट। २ जोक। ३ घोघा। ४ बिस्तर। बिछौना।

जाहर पीर--पु०[फा० ज़हर+पीर] १४ वी शताब्दी के पजाब के एक प्रसिद्ध सत जो विषवैद्य भी थे। पजाब तथा मारवाड मे अब भी नाग-पचमी के दिन इनकी धूमधाम से पूजा की जाती है।

जाहि—स्त्री०[स० जाति] मालती नामक लता और उसका फूल।

जाहिद—पु०[अ०] ऐसा व्यक्ति जो सासारिक प्रपचो, बखेडो, बुराइयो आदि से दूर रहकर ईश्वर का ध्यान करता हो।

जाहिर—वि०[अ०]जो स्पष्ट रूप से सबके सामने हो। २ प्रकट। ज्ञात। विदित।

जाहिरदारी—स्त्री०[अ०] केवल ऊपर से दिखाने के लिए (शुद्ध हृदय से नही) किया जानेवाला सद्व्यवहार। दिखौआ शिष्टाचार।

जाहिरा—क्रि० वि०[अ०] ऊपर से देखने पर।
वि० ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला।

जाहिरी—वि०[अ०] १ जो जाहिर हो। २ ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला। ३ ऊपरी। दिखौआ। बनावटी।

जाहिल—वि०[अ०] जो न तो पढा-लिखा हो और न समझदार हो। निरा अशिक्षित और मूर्ख।

जाहिली—स्त्री०[अ०] जाहिल होने की अवस्था या भाव। मूर्खता।

जाही—स्त्री० [स० जाती] १ चमेली की जाति का एक पौधा। २ उक्त पौधे के छोटे सुगधित फूल। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे से उक्त प्रकार के फूल छूटते है।

जाहूत—पु०[अ० लाहूत का अनु०]ऊपर के नौ लोको मे से अतिम या नवाँ लोक। (मुसल०)

जाह्नवी—स्त्री०[स० जह्नु+अण्-ङीप्] जह्नु ऋषि की पुत्री। गगा।

जिंगिनी—स्त्री०[√जिग् (गति)+णिनि—ङीप्] जिगिन का पेड।

जिंगी—स्त्री० [स०√जिग्+अच् ङीष्] मजीठ।

जिंद—पु०=जिन (भूत-प्रेत)।
स्त्री०=जद(फारस की पुरानी भाषा)।
†स्त्री०=जिंदगी। (पजाब)

जिंदगानी—स्त्री०[फा०] जिंदगी।

जिंदगी—स्त्री०[फा०] १ जीवित रहने की अवस्था। जीवन। २ पूरी आयु या जीवन-काल।
मुहा०—जिंदगी के दिन पूरे करना=जैसे-तैसे या बहुत कष्ट से जीवन बिताना।
३ निश्चित और प्रसन्न रहने की मनोवृत्ति।

जिंदा—वि०[फा० ज़िंद] १ जिसमे जीवन या प्राण हो। जीवित।

२ जिसमे जीवनी-शक्ति हो। सक्रिय और सचेष्ट। ३ प्रफुल्ल। हरा-भरा।

पद—जिन्दाबाद=अमर हो। सदा जीवित रहे।

जिंदादिल—वि० [फा०] [भाव० जिंदादिली] १ (व्यक्ति) जो सदा प्रसन्न रहता हो। हँसमुख। २ उत्साही।

जिंदु—स्त्री०=जिंदगी।

जिंवाना†—स०=जिमाना।

जिंस—स्त्री०[फा० जिन्स] १ चीज। पदार्थ। २ गेहूँ, चावल आदि अनाज। ३ जीवो, पदार्थों आदि की जाति, प्रकार या वर्ग।

जिंसवार—पु०[फा०] पटवारियो या लेखपालो का वह कागज जिसमे वे परताल के समय खेत मे बोई हुई फसल का नाम लिखते है।

जिंसी लगान—पु०[हि० जिंस+लगान] १ पकी हुई फसल का वह अश जो जमीदार या सरकार की ओर से लगान के रूप मे लिया जाय। २ जिंस के रूप मे लगान उगाहने की प्रथा।

जिअना†—पु०[स० जीवन] १ जीवन। २ जल। अ०=जीना (जीवित रहना)।

जिआ—स्त्री० पु०=जिया।

जिआना†—स० १=जिलाना। २=पालना।

जिउ†—पु०=जीव।

जिउका†—स्त्री० दे० 'जीविका'।

जिउकिया—पु०[स० जीविका] किसी विशिष्ट कार्य से जीविका निर्वाह करनेवाला व्यापारी, विशेषत जगलो और पहाडो से चीजे लाकर नगरो मे बेचनेवाला व्यापारी।

जिउतिया—स्त्री० =जीवित-पुत्रिका (व्रत)।

जिउलेवा†—वि० [स० जीव+हि० लेना] जीवन या प्राण लेनेवाला। प्राण-घातक।

जिकड़ी—स्त्री०[देश०] व्रज मे गाये जानेवाले एक तरह के गीत जिनमे दो दल मे प्राय होड बद कर एक दूसरे के प्रश्नो का उत्तर देते है।

जिकिर†—पु०=जिक्र।

जिक्र—पु०[अ०जिक्र] १ किसी घटना या विषय का विवेचनात्मक वर्णन। चर्चा। २ भाषण, लेख आदि मे होनेवाला किसी असबद्ध या गौण घटना या विषय का उल्लेख। सक्षिप्त कथन। ३ परमात्मा के नाम का स्मरण। (सूफी सप्रदाय)

जिगन—स्त्री०=जिगिन।

जिगर—पु०[स० यकृत् से फा०] १ कलेजा। यकृत्। २ साहस। हिम्मत। ३ चित्त। मन। ४ किसी चीज का वह भीतरी अश जिसमे उसका सार भाग रहता हो। जैसे—इमारती लकडी का जिगर।

जिगर कीड़ा—पु०[फा० जिगर+हि० कीडा] १ भेडो आदि का एक रोग जिसमे उनके कलेजे मे कीडे पड जाते है। २ उक्त रोग का कीडा।

जिगरा†—पु०[हि० जिगर] वह मनोभाव जिसके कारण मनुष्य बिना भय-भीत हुए बहुत बड़ा और प्राय विकट काम करने के लिए उद्यत होता है।

जिगरी—वि० [फा०] १ जिगर-सबधी। जिगर का। २ आतरिक और हार्दिक। जैसे—जिगरी बात। ३ अभिन्न हृदय। घनिष्ठ। जैसे—जिगरी दोस्त।

जिगिन—स्त्री० [स० जिंगनी] एक प्रकार का जगली पेड।

जिगीषा—स्त्री० [स० √जि (जीतना)+सन् द्वित्वादि, +अ—टाप्] १ किसी पर विजय प्राप्त करने अथवा किसी को अधीन या वशीभूत करने की इच्छा। २ लडने-भिडने या युद्ध करने की इच्छा। ३ उद्योग। प्रयत्न।

जिगीषु—वि० [स०√जि+सन्, द्वित्वादि,+उ] १ (व्यक्ति) जिसमे जिगीषा हो। विजय का इच्छुक। २ युद्ध करने या चाहनेवाला। युयुत्सु।

जिगुरन—पु० [देश०] चकोरो की एक जाति।

जिघासक—वि० [स०√हन् (मारना)+सन्, द्वित्वादि√ण्वुल्—अक] (व्यक्ति) जो किसी का वध करना चाहता हो।

जिघासा—स्त्री० [स०√हन्+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] वध करने की इच्छा।

जिघासु—वि० [स०√हन्+सन्, द्वित्वादि, +उ]=जिघासक।

जिघ्र—वि०[स०√घ्रा (सूँघना)+श, जिघ्र आदेश] १ सूँघनेवाला। २ शका या सदेह करनेवाला।

जिच—स्त्री०[फा० जिच्च] १ शतरज के खेल मे वह स्थिति जिसमे बादशाह की शह तो न लगे पर उसके चलने के लिए कोई घर न रह जाय। २ उक्त के आधार पर प्रतियोगिता, विवाद मे उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्ष अपनी-अपनी बात पर अडे रहे और समझौते आदि के लिए आगे कोई रास्ता न दिखाई देता हो। (डेड-लॉक)

जिजिया—स्त्री०=जीजी। †पु०=जजिया (मुसलमानी कर)।

जिजीविषा—स्त्री० [स०√जीव् (जीना)+सन्, द्वित्वादि,+अ—टाप्] जीने की इच्छा।

जिजीविषु—वि०[स०√जीव्+सन् द्वित्वादि,+उ] जो अधिक समय तक जीवित रहना चाहता हो।

जिज्ञासा—स्त्री० [स०√ज्ञा (जानना)+सन् द्वित्वादि, +अ—टाप्] १ मनुष्य की वह इच्छा या भावना जिसके कारण वह नई तथा अद्भुत चीजो, बातो आदि के सबध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त होता है। २ जानने अथवा जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी से कुछ पूछना।

जिज्ञासित—भू० कृ०[स०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि,+क्त] (वस्तु या विषय) जिसके सबध मे किसी से जिज्ञासा की गई हो। पूछा हुआ।

जिज्ञासु—वि०[स०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि,+उ] १ जिज्ञासा करनेवाला। २ (वह) जो किसी विषय के सबध मे नई बातो का पता लगा रहा हो।

जिज्ञासू—वि०=जिज्ञासु।

जिज्ञास्य—वि० [स०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि, +ण्यत्] १ जिसके सबध मे जिज्ञासा की जाय। २ जिज्ञासा किये जाने के योग्य।

जिठाई†—स्त्री०=जेठाई।

जिठानी—स्त्री०=जेठानी।

जित्—वि०[स० (पूर्व पद रहने पर) √जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] यौगिक शब्दो मे, जिसने किसी को जीत लिया हो। जैसे—इंद्र-जित् (जिसने इद्र को जीता हो)। पु० जीत। विजय।

क्रि० वि० जिस ओर। जिधर।

जितना—वि० [स० इयत् अथवा हि० जिस+तना (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० जितनी] जिस मान, मात्रा या सख्या मे हो या हो सकता हो। जैसे—(क) जितना धन चाहो लुटा दो। (ख) जितने लडके आये है उनमे मिठाई बाँट दो।

क्रि० वि० जिस मात्रा या परिमाण मे। जैसे—जितना चाहो उतना बोलो। स०=जीतना।

जित-मन्यु—वि० [ब०स०] जिसने क्रोध आदि मनोविकारो को जीत लिया हो।

जितरा†—पु० [हि० जिता] वह कृषक जो किसी दूसरे कृषक की मजदूरी करने के बदले उससे हल, बैल आदि लेकर अपने खेत जोतता हो।

जित-लोक—वि० [ब० स०] (वह) जिसने स्वर्ग को जीत लिया हो।

जितवना*—स० [हि०-जताना का पुराना रूप] जतलाना। परिचित कराना। उदा० -जितवत जितवत हित हिए किये तिरीछे नैन। बिहारी। स०=जिताना (जीत कराना)।

जितवाना—स० [हि० जीतना का प्रे० रूप] दूसरे की जीत कराना।

जितवार†—वि० [हि० जीतना] १ जीतनेवाला। विजेता। २ जितेद्रिय।

जितवैया†—वि० [हि० जीतना +वैया] जीतने या विजय प्राप्त करनेवाला।

जित-शत्रु—वि० [ब० स०] जिसने शत्रु पर विजय पाई हो।

जित-स्वर्ग—वि० [ब० स०] जिसने स्वर्ग को जीत लिया हो।

जिता†—वि०=जितना।

पु० [हि० जोतना] वह सहायता जो किसान लोग परस्पर जोताई, बोआई आदि के समय करते है।

जिताक्ष—वि० [जित-अक्ष, ब० स०] जितेद्रिय।

जिताक्षर—वि० [जित-अक्षर, ब० स०] अच्छी तरह पढने-लिखनेवाला।

जितात्मा (त्मन्)—वि० [जित-आत्मन् ब० स०] जितेन्द्रिय।

जिताना—स० [हि० जीतना का प्रे० रूप] १ ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा जीत जाय। २ कुछ जीतने मे किसी की सहायता करना।

जितार†—वि० [स० जित्वर] १ जीतनेवाला। विजेता। २ प्रबल। बलवान। ३ भारी। वजनी। (क्व०)

जितारि—वि० [जित-अरि, ब० स०] १ शत्रुओ को जीतनेवाला। २ काम, क्रोध आदि मनोविकारो को जीतनेवाला।

पु० गौतम बुद्ध का एक नाम।

जिताष्टमी—स्त्री० [स० जिता-अष्टमी, कर्म० स०] आश्विन कृष्ण अष्टमी जिस दिन हिन्दू स्त्रियाँ अपने पुत्रो के कल्याण के लिए उपासना, व्रत आदि करती हैं। जीवित-पुत्रिका।

जिति--स्त्री० [स०√जि (जितना)+क्तिन्] १ जीत। विजय। २ प्राप्ति। लाभ।

जितुम—पु० [यू० डिडुमाई] मिथुन राशि।

जितेंद्रिय—वि० [जित-इद्रिय, ब० स०] जिसने अपनी इद्रियो पर विजय प्राप्त कर ली हो। अर्थात् उन्हे अपने वश मे कर लिया हो।

जितै*—क्रि० वि० [स० यत्र, प्रा० यत्त] जिस ओर। जिस दिशा मे। जिधर।

जितैया*—वि० [हि० जीतना+ऐया (प्रत्य०)] जीतनेवाला।

जितो†—क्रि० वि० [हि० जिस] जितना।

जित्तम—पु० [यू० डिडुमाइ] मिथुन राशि।

जित्य—पु० [स०√जि+क्यप्, तुक्] [स्त्री० जित्या] १ एक प्रकार का बडा हल। २ पाटा। हेगा।

जित्या—स्त्री० [स० जित्य+टाप्] १ विजय। २ प्राप्ति। लाभ। ३ हल और उसका फाल।

जित्वर—वि० [स०√जि+क्वरप्, तुक्] वह जिसे विजय मिली हो। जीतनेवाला। विजयी।

जित्वरी—स्त्री० [स० जित्वर+ङीप्] काशी पुरी का एक प्राचीन नाम।

जिद—स्त्री० [अ० ज़िद] [वि० जिद्दी] १ अपनी बात किसी से पूरी कराने के लिए उस पर अडे रहने और दूसरे की बात न मानने की अवस्था या भाव। हठ। २ अनुचित रूप से किसी बात के लिए किया जानेवाला आग्रह या हठ। दुराग्रह।

क्रि० प्र०—करना।—चढना।—ठानना।—पकडना।—बाँधना।

जिदियाना—अ० [हि० जिद] जिद करना।

स० किसी को जिद करने मे प्रवृत्त करना।

जिद्द†—स्त्री०=जिद।

जिद्दन्—क्रि० वि० [अ०] जिद अर्थात् दुराग्रह या हठ करते हुए।

जिद्दी—वि० [फा०] वह जो बहुत अधिक जिद (दुराग्रह या हठ) करता हो और दूसरो की बात न मानता हो। दुराग्रही।

जिधर—क्रि० वि० [हि० जिस्+धर (प्रत्य०)] जिस ओर। जिस तरफ। जैसे—जिधर जी चाहे, उधर चले जाओ।

पद—जिधर-तिधर=अधिकतर स्थानो मे। जहाँ-तहाँ।

जिन—पु० [स०√जि+नक्] १ विष्णु। २ सूर्य। ३ गौतम बुद्ध। ४ जैनो के एक तीर्थंकर।

वि० १ जयी। २ राग-द्वेष आदि को जीतनेवाला। ३ बहुत बुड्ढा।

वि० सर्व० हि० 'जिस' का विभक्ति युक्त बहु-वचन रूप। जैसे--जिन (लोगो) को चलना हो, वे यहाँ आ जायँ।

पु० [फा०] भूत-प्रेत।

जिनगी†—स्त्री०=जिंदगी।

जिनस†—पु०=जिंस।

जिना—पु० [अ० ज़िना] पर-पुरुष या पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित-सबध। छिनाला। व्यभिचार।

जिनाकार—वि० [अ० जिना+फा० कार] [भाव० जिनाकारी] पर-स्त्री गमन करनेवाला।

जिना-बिल-जब्र—पु० [अ०] पर-स्त्री से बलात् किया जानेवाला सभोग जो विधिक दृष्टि से बहुत बडा अपराध है। बलात्कार।

जिनि—अव्य० [हि० जनि] मत। नही।

जिनिस—स्त्री०=जिंस।

जिनिसवार—पु०=जिसवार।

जिनेंद्र—पु० [जिन-इद्र, ष० त०] १ एक बुद्ध। २ एक जैन सत।

जिन्नात—पु० [अ० 'जिन' का बहु० रूप] भूत-प्रेत आदि।

जिन्नी—वि० [अ०] जिन या भूत सबधी।

पु० वह व्यक्ति जिसके वश मे कोई जिन या भूत हो।

जिन्स—स्त्री०=जिंस ।
जिन्ह्†—सर्व०=जिन ।
पु०=जिन (भूत-प्रेत) ।
जिप्सी—पु० [ई० जिप्ट (मिस्र देश)] १ भारतीय मूल से उत्पन्न एक यायावर जाति जो पहले मिस्र देश मे रहती थी और जो अब ससार के अनेक भागो मे फैल गई है। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
जिबह्*—पु०=जबह् ।
जिब्भा†—स्त्री०=जिह्वा (जीभ)।
जिब्रील—पु० [अ० जिब्रईल] इस्लाम मे, एक देव-दूत ।
जिभला†—वि० [हिं० जीभ+ला (प्रत्य०)] चटोरा।
जिमखाना—पु० [अ० जिमनास्टिक मे का जिम+फा० खान] वह सार्व-जनिक स्थान जहाँ तरह-तरह के खेलाडी इकट्ठे होकर व्यायाम करते और शारीरिक श्रम के खेल खेलते हो।
जिमाना—स० [हिं० जीमना का स० रूप] भोजन कराना। खिलाना ।
जिमि—क्रि० वि० [हिं० जिस+इमि (प्रत्य०)] जिस प्रकार से। जैसे।
जिमित—पु० [स०√जिम् (खाना) +क्त] भोजन ।
जिमीदार—पु०=जमीदार ।
जिम्मा—पु० [अ० जिम्म] १ किसी वस्तु के सरक्षण का भार। २ कोई कार्य सपादित करने या कराने का भार । ३ किसी प्रकार के परिणाम या फल की जवाबदेही । उत्तरदायित्व।
जिम्मादार (वार)—पु० [भाव० जिम्मादारी (वारी)] जिम्मेदार ।
जिम्मेदार—पु० [फा०] वह जिस पर किसी कार्य, वस्तु अथवा और किसी बात की जवाबदेही हो ।
जिम्मेदारी—स्त्री० [फा०] जिम्मेदार होने की अवस्था या भाव ।
जिम्मेवार—वि० [भाव० जिम्मेवारी]=जिम्मेदार ।
जिय†—पु० [स० जीत] जी। चित्त। मन ।
जियन†—पु० =जीवन।
जिय-बधा*—वि० [स० जीव+वध] जीवो को वधने या उनकी हत्या करनेवाला। हत्यारा।
पु० जल्लाद ।
जियरा*—पु० [हिं० जी] मन। हृदय ।
जिया—स्त्री० [हिं० जी या जिलाना] दूध पिलानेवाली दाई। (मुसल० स्त्रियाँ)
पु०=जी (मन)।
जिया जंतु†—पु०=जीव-जतु ।
जियादा—वि० [भाव० जियादती] =ज्यादा ।
जियान†—पु० [अ०] १ नुकसान। हानि। २ आर्थिक हानि। घाटा।
जियाना†—स०=जिलाना। (पूरब)
जिया पोता—पु०=पुत्र जीवा (पेड)।
जियाफत—स्त्री० [अ०] १ आतिथ्य। मेहमानदारी । २ दावत। भोज।
जियारत—स्त्री० [अ० जियारत] मुसलमानो मे, किसी महापुरुष अथवा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ की जानेवाली यात्रा ।
जियारतगाह—पु० [जियारत+फा० गाह] १ धार्मिक दृष्टि से वह पवित्र और पूज्य स्थान जहाँ लोग दर्शन, पूजन आदि के लिए जाते हो।
जियारती—वि० [फा० जियारती] १ जियारत (दर्शन, पूजन आदि) से सबध रखनेवाला। २ जियारत करने के लिए कहीं जानेवाला।
जियारी†—स्त्री० [हिं० जिय=जीव] १ जीवन । जिंदगी। २ जीविका। ३ जीवट। साहस। हिम्मत।
जिरगा—पु० [फा० जिरग] १ दल। मडली । २ पठानो आदि मे किसी एक ही कुल, परिवार आदि के ऐसे लोगो का समूह जो प्राय एक ही क्षेत्र या स्थान मे रहते हो। ३ उक्त प्रकार के लोगो की सामूहिक सभा या सम्मेलन ।
जिरण—पु० [स०√जिर् (हिंसा करना) +ल्युट्--अन्] जीरा ।
जिरह्—पु० [अ० जुरह] १ व्यर्थ मे किया जानेवाला तर्क। २ न्यायालय मे, किसी की कही हुई बातो की सत्यता की जाँच के लिए की जानेवाली पूछ-ताछ।
स्त्री० [फा० जिरह] लोहे की कडियो का बना हुआ एक प्रकार का जाल जिसे युद्ध के समय छाती पर पहना जाता था।
जिरही—वि० [हिं० जिरह] (योद्धा) जिसने जिरह पहना हो।
जिराअत—स्त्री० [अ० ज़िराअत] खेती। कृषि।
क्रि० प्र०—करना।
पद—जिराअत पेशा=किसान । खेतिहर ।
जिराफा—पु० [अ० जेराफ] अफ्रीका के जगलो मे रहनेवाला हिरन की जाति का एक पशु ।
जिरायत—स्त्री०=जिराअत।
जिरिया—पु० [हिं० जीरा] एक प्रकार का धान जिसमे से निकलनेवाले चावल जीरे के समान छोटे तथा पतले होते है।
जिला—स्त्री० [अ०] १ अच्छी तरह साफ करके खूब चमकाने की क्रिया या भाव। २ उक्त प्रकार से उत्पन्न की हुई चमक-दमक । ओप ।
क्रि० प्र०—करना।—देना।
पु० [अ० ज़िलऽ] १ प्रदेश । प्रात । २ आज-कल किसी राज्य का वह छोटा विभाग जो किसी एक प्रधान अधिकारी (कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर) की देख-रेख मे हो और जिसमे कई तहसीले हो। ३ किसी इलाके या प्रदेश का कोई छोटा विभाग । ४ किसी बात या विषय की वह निश्चित सीमा जिसका उल्लघन अनुचित माना जाता हो। जैसे—जिले की दिल्लगी=शिष्ट-सम्मत परिहास ('छूट की दिल्लगी' से भिन्न)।
जिलाकार—पु० [अ० जिला+फा० कार] धातुओ को माँजकर तथा रोगन आदि के द्वारा उन्हे चमकानेवाला कारीगर ।
जिला-जज—पु० [अ० ज़िला+अ० जज] न्यायालय मे, वह अधिकारी जिसे जिले भर के दीवानी और फौजदारी मुकदमो की अपीले सुनने का अधिकार होता है।
जिलाट—पु० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का चमडे का बाजा।
जिलादार—पु०=जिलेदार ।
जिलादारी—स्त्री०=जिलेदारी ।
जिलाना—स० [हिं० जीना का स०] १ मृत शरीर को फिर से जीवित करना। जीवन डालना या देना। २ मरते हुए को मरने से बचाना।

३ ऐसा उपाय, प्रयत्न या व्यवस्था करना जिसमे कोई अच्छी तरह जीवित रह सके। ४ (पशु-पक्षी आदि) पालना-पोसना। ५ धातु की भस्म को फिर से धातु के रूप मे परिवर्तित करना। (कल्पित)

जिला बोर्ड—पु० [अ० ज़िला+अ० बोर्ड] वह अर्द्ध सरकारी सस्था जिसे किसी जिले की जनता चुनती है और जो स्थानीय प्रशासन तथा लोक-सेवा सबधी कार्य करती है।

जिलासाज—पु० [फा०] धातुओ के बरतनो, हथियारो आदि पर ओप चढानेवाला कारीगर।

जिलाह्*—वि० [अ० जल्लाद ?] अत्याचारी।

जिलेदार—पु०[फा०]मध्य युग मे, बडे जमींदारो या छोटे राजाओ का वह अधिकारी जो किसी छोटे भू-भाग या जिले की देख-रेख करता और वहाँ से कर, लगान आदि वसूल करता था।

जिलेदारी—स्त्री० [फा०] जिलेदार का काम, पद या भाव।

जिलेबी†—स्त्री०=जलेबी।

जिल्द—स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १ शरीर के ऊपर की खाल या चमडा। त्वचा। २ कागज, चमडे आदि से मढी हुई वह दफ्ती जो किसी पुस्तक के ऊपर और नीचे उसके पृष्ठो की रक्षा के लिए लगाई जाती है।

क्रि० प्र०—चढाना।—बाँधना।—मढना।

३ पुस्तक की प्रति। ४ पुस्तक का ऐसा खड जो अलग भाग के रूप मे हो। भाग।

जिल्दगर—पु० [फा०] जिल्द बद।

जिल्दबंद—पु० [फा०] पुस्तको पर जिल्दे बाँधनेवाला कारीगर।

जिल्दबंदी—स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जिल्दसाज—पु० [फा०] [भाव० जिल्दसाजी] जिल्द बाँधनेवाला व्यक्ति। जिल्दबद।

जिल्दसाजी—स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने का काम या पेशा।

जिल्दी—वि० [अ०] त्वचा सबधी। जैसे—जिल्दी-बीमारी।

जिल्लत—स्त्री० [अ०] अपमानित, तिरस्कृत और तुच्छ या दुर्दशा-ग्रस्त होने की अवस्था या भाव। दुर्गति।

क्रि० प्र०—उठाना।

जिल्ली—पु०[देश०] बाँसो की एक जाति।

जिल्होर—पु० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

जिव†—पु०=जीव।

जिवड़ा—पु० [स० जीव] प्राण। उदा०—स्याम बिना जिवडो मुरझावे।—मीराँ।

जिवडी—स्त्री० [स० जीव] शरीर। उदा०—जो इहाँ परि पालै जिवडी।—प्रिथीराज।

जिवाँना†—स० १ =जिमाना। २ =जिलाना।

जिवाजिव—पु० [स०=जीवञ्जीव, पृषो० सिद्धि] चकोर (पक्षी)।

जिवाना*—स० १ =जिलाना। २ =जिमाना।

जिष्णु—वि० [स०√ जि(जीतना) +ग्स्नु] विजय प्राप्त करनेवाला। जेता। विजयी।

पु० १ विष्णु। २ सूर्य। ३ इद्र। ४ वसु। ५ अर्जुन।

जिस—वि० [स० य, यस्] हिंदी विशेषण 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति से युक्त विशेष्य के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—जिस व्यक्ति को, जिस जीवन का, जिस नौकर ने, जिस कमरे मे आदि।

सर्व० हिं० सर्वनाम 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—जिसने, जिससे, जिस पर, जिसमे, जिसको आदि।

पद—जिसका तिसका=किसी निश्चित व्यक्ति का नही। चाहे किसी व्यक्ति का। जैसे—सारी सपत्ति जिसकी तिसकी हो जायगी।

जिसिम—पु०=जिस्म (शरीर)।

जिस्ट—वि० [?] १ बडा। २ भारी। उदा०—जग्य जिस्ट उचिष्ट करै, कातर कृत हारिय।—चन्दवरदाई।

जिस्ता—पु० १=जस्ता। २=दस्ता।

जिस्म—पु० [फा०] [वि० जिस्मानी] १ देह। बदन। शरीर। २ स्त्री या पुरुष का गुप्त अग। भग या लिंग। (क्व०)।

जिस्मानी—वि० [फा०] जिस्म या शरीर से सबध रखने या उसमे होनेवाला। शारीरिक।

जिस्मी—वि०=जिस्मानी।

जिह—स्त्री० [फा०, स० ज्या] धनुष का चिल्ला। ज्या।

वि०, सर्व०=जिस। उदा०—जिह जिह बिधि रीझे हरी सोई बिधि कीजे हो।—मीराँ।

जिहन—पु० [अ० जिहन]=जेहन (बुद्धि)।

जिहाद—पु० [अ०] [वि० जिहादी] १ धार्मिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया जानेवाला युद्ध। २ वह युद्ध जो मध्य-युग मे मुसलमान अपने धार्मिक प्रचार करने के लिए दूसरे धर्मावलम्बियो से करते थे।

मुहा०—जिहाद का झंडा खड़ा करना=मजहब के नाम पर लडाई छेडना।

जिहादी—वि० [अ०] १ जिहाद-सबधी। २ जिहाद करनेवाला।

जिहानक—पु० [स०√हा (गति)+शानच्, +कन्] प्रलय।

जिहालत—स्त्री०=जहालत (मूर्खता)।

जिहासा—स्त्री० [स०√हा (त्यागना) +सन् द्वित्वादि+अ—टाप्] त्याग की इच्छा।

जिहासु—वि० [स०√हा +सन्, द्वित्वादि+उ] त्याग की इच्छा रखनेवाला।

जिहीर्षा—स्त्री० [स०√हृ(हरण करना)+सन्। द्वित्वादि+अ—टाप्] हरने या हरण करने की इच्छा।

जिहीर्षु—वि० [स० √हृ+सन् द्वित्वादि,+—उ] हरण करने की इच्छा या कामना करनेवाला।

जिह्म—वि० [स०√हा (त्याग)+मन्, सन्वद्भाव, द्वित्वादि] १ टेढा। वक्र। २ क्रूर। निर्दय। ३ कपटी। छली। ४ दुष्ट। पाजी। ५ खिन्न। दुखी। ६ धीमा। मद।

पु० १ अधर्म। २ तगर का फूल।

जिह्मग—वि० [स० जिह्म√गम् (जाना) +ड] १ टेढी-तिरछी चाल चलनेवाला। २ धीमी चाल से चलनेवाला। ३ चालबाज। धूर्त्त।

पु० सर्प। साँप।

जिह्म-गति—वि० [ब० स०] जिसकी गति या चाल टेढी हो। टेढा चलनेवाला।

पु० साँप ।

जिह्मगामी (मिन्)—वि० [स० जिह्म√गम्+णिनि] [स्त्री० जिह्म-गामिनी]=जिह्मग ।

जिह्मता—स्त्री० [स० जिह्म+तल्—टाप्] १ टेढापन। वक्रता । २ धीमापन । मदता । ३ कुटिलता। ४ दुष्टता। ५ धूर्त्तता।

जिह्माक्ष—वि० [जिह्म-अक्षि] टेढी या तिरछी आँखवाला । ऐंचा या भेगा ।

जिह्मित—वि० [स०जिह्म+इतच्] १ टेढा। २ घूमा हुआ। ३ चकित। विस्मित ।

जिह्मीकृत—वि० [स० जिह्म+च्वि√कृ (करना) +क्त, दीर्घ] झुकाया या टेढा किया हुआ ।

जिह्वक—पु० [स० √ह्वे (बुलाना)+ड, द्वित्वादि,+कन्] एक प्रकार का सन्निपात रोग जिसमे रोगी से स्पष्ट बोला नही जाता और उसकी जीभ लडखडाती है । इसके रोगी प्राय गूगे या बहरे हो जाते है ।

जिह्वल—वि० [स० जिह्व√ला (लेना) +क] चटोरा ।

जिह्वा—स्त्री० [स०√लिह् (चाटना)+व, नि० सिद्धि] १ जीभ। २ आग की लपट ।

जिह्वाग्र—पु० [जिह्वा--अग्र, ष० त०] जीभ का अगला भाग । वि० (कथन, बात या विषय) जो जीभ के अगले भाग पर अर्थात् हर समय उपस्थित या प्रस्तुत रहे । जैसे--सारी गीता उन्हे जिह्वाग्र है।

जिह्वाच्छेद—पु० [ष० त०] वह दड जिसमे किसी की जीभ काट ली जाती है।

जिह्वाजप— वि० [तृ० त०] एक प्रकार का जप जिसमे केवल जीभ हिले।

जिह्वाप—वि० [स० जिह्वा√पा (पीना) +क] जीभ से जल पीनेवाला। जैसे--कुत्ता, गदहा, घोडा आदि।

जिह्वामूलीय—वि० [स० जिह्वा—मूल ष० त०, +छ—ईय] १ जो जिह्वा के मूल से सबध रखता या उसमे होता हो। २ (व्याकरण मे उच्चारण की दृष्टि से वर्ण) जिसका उच्चारण जीभ के मूल या बिलकुल पिछले भाग से होता है । जैसे—यदि क या ख से पहले विसर्ग हो तो क या ख का उच्चारण (जैसे—दु ख मे के 'ख' का उच्चारण) जिह्वा-मूलीय हो जाता है ।

जिह्वा-रव—पु० [ब० स०] पक्षी ।

जिह्वा-रोग—पु० [ष० त०] जीभ मे होनेवाले रोग जो सुश्रुत मे ५ प्रकार के माने गये है।

जिह्वालिह—पु० [जिह्वा√लिह् (चाटना) +क्विप्] कुत्ता ।

जिह्विका—स्त्री० [स० जिह्वा+ठन्—इक, टाप्] जीभी।

जिह्वोल्लेखनी—स्त्री० [जिह्वा—उल्लेखनी, ष० त०] जीभी।

जींगन† —पु०=जुगनू ।

जी—पु० [स० जीव] चित्त, मन, हृदय, विशेषत इनका वह पक्ष या रूप जिसमे इच्छा, कामना, दु ख-सुख, प्रवृत्ति, सकल्प-विकल्प, साहस आदि का अवस्थान होता है ।

विशेष—'जी' हमारे शारीरिक अस्तित्व, रुचि, विचार आदि सभी का प्रतिनिधित्व करता या प्रतीक होता है, और इसी लिए अनेक अवसरो पर कलेजा, चित्त, जान, मन, हृदय आदि से सबद्ध कुछ मुहावरे भी 'जी' के साथ चलते और प्राय उसी प्रकार के अर्थ देते है। जैसे—जी या मन उदास या दु खी होना, जी या मन फिर जाना, जी या चित्त चाहना, जी या मन करना या चाहना, जी या मन का बुखार निकालना आदि।

पद—जी का=जीवटवाला। साहसी । हिम्मती। **जी चला**=मन-चला। (देखे) **जी जानता है**=हृदय ही अनुभव करता है, कहा नही जा सकता है । **जी से** =चित्त या मन लगाकर। पूरी तरह से ध्यान देते हुए ।

मुहा०—जी अच्छा होना=शारीरिक आरोग्य के फल-स्वरूप चित्त शात, सुखी और स्वस्थ होना । **(किसी व्यक्ति पर) जी आना**= श्रृगारिक दृष्टि से, मन मे किसी के प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न होना। **जी उकताना या उचटना** =किसी काम, बात या स्थान से प्रवृत्ति या मन हटना और विकलता या विरक्ति होना। **जी कॉपना**=मन ही मन बहुत अधिक भय होना । **जी उड जाना**=आशका, भय आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। धैर्य और होश-हवास जाता रहना । **जी करता या चाहना**=कुछ करने, पाने आदि की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **(किसी बात से) जी कॉपना**=बहुत अधिक दुर्भावना या भय होना। बहुत डर लगना । **जी का बुखार निकालना**=कुछ कठोर बाते कहकर मन मे दबा हुआ कष्ट या सताप दूर या हल्का करना । **जी का बोझ हल्का होना**=इच्छा पूरी होने, खटका या चिंता दूर होने आदि पर मन निश्चित और स्वस्थ होना। **जी की जी मे रहना**=अभिलाषा, कामना अथवा ऐसी ही और कोई बात पूरी न होना और मन मे ही रह जाना। **जी की निकालना**=(क) मन मे दबी हुई कटु या कठोर बात मुँह से कहकर जी हल्का करना । (ख) जी की उमग, वासना या हौसला पूरा करना । **जी की पडना**=प्राण बचाना कठिन हो जाना । **(किसी के) जी को जी समझना**=दूसरे को क्लेश न पहुँचाना दूसरे पर दया करना । **जी को मार कर रखना**=प्रवृत्ति, वासना आदि को दबा या रोककर रखना। **(कोई.बात) जी को लगना**=(क) चिता आदि का मन मे घर करना या स्थायी होना। (ख) मन पर पूरा प्रभाव डालना। जैसे—उनकी बात हमारे जी मे लग गई। **(किसी के) जी को लगना**=किसी के पीछे पडना। किसी को सुख से न रहने देना। जैसे—यह लडका तो खिलौनो के लिए जी को लग जाता है। **जी खटकना**=मन मे कुछ आशका या खटका होना। **(किसी से) जी खट्टा होना**=किसी की ओर से (कष्ट पहुँचने पर) चित्त या मन मे विरक्ति उत्पन्न होना। **जी खपाना**=बहुत अधिक परिश्रम या सिर-पच्ची करना। **जी खरा-खोटा होना**=मन कभी स्थिर और कभी चचल होना। यह निश्चय न कर पाना कि अमुक अच्छा काम करे या अमुक बुरा काम। **जी खोलकर**=(क) खूब अच्छी या पूरी तरह से और शुद्ध हृदय से। यथेच्छ। जैसे—जी खोलकर दान देना या बाते करना। **जी गिरा जाना**=जी बैठा जाना । **जी घबराना**=मन मे विकलता, व्यग्रता आदि उत्पन्न होना। **(किसी चीज पर) जी चलना**=कुछ पाने या लेने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **जी चाहना**=इच्छा या कामना होना। **जी चुराना**=कोई काम करने से बचने के लिए इधर-उधर हटना या होना। **जी छूटना**=(क) मन मे उत्साह, साहस आदि न रह जाना । (ख) पिंड या पीछा छूटना । छुटकारा मिलना । जैसे—चलो, इस झगडे से तो जी छूटा । **जी छोटा करना**=(क)

निराश या विफल होने पर उदास या खिन्न होना। (ख) उदारता के भावो से रहित या सकीर्णता के विचारो से युक्त होना। **जी छोडना**=हृदय की दृढता या साहस खोना। हिम्मत हारना। **जी छोडकर भागना**=अपने बचाव या रक्षा के लिए पूरी शक्ति से दूर निकल जाने का प्रयत्न करना। **जी जलना**=चित्त बहुत ही दु खी और सतप्त होना। मन मे बहुत अधिक कष्ट या सताप होना। **(किसी का) जी जलाना**=किसी को बहुत अधिक दु खी और सतप्त करना।

मुहा०—(किसी काम मे) जी जान लडाना या जी जान से लगना=किसी कार्य या प्रयत्न मे अपनी सारी शक्ति लगा देना। **(कोई काम या बात) जी जान को या जी जान से लगना**=किसी काम या बात की इतनी अधिक चिंता होना कि हर समय उसका ध्यान बना रहे या उसकी सिद्धि का प्रयत्न होता रहे। **(किसी ओर) जी टँगा या लगा रहना**=हर समय चिंता बनी रहना और ध्यान लगा रहना। **जी टूट जाना**=उत्साह भग हो जाना। नैराश्य होना। **जी ठढा होना**=अभिलाषा पूरी होने से चित्त शात और सतुष्ट होना। प्रसन्नता होना। **(किसी मे) जी डालना**=(क) मृत शरीर मे प्राणो का सचार करना। (ख) किसी के मन मे आशा, उत्साह, बल आदि का सचार करना। **(किसी के) जी मे जी डालना**=प्रेम, सौहार्द आदि दिखाकर किसी को अपनी ओर अनुरक्त करना। **जी डूबना या ढहा जाना**=चिंता, निराशा, व्याकुलता आदि के कारण बहुत ही शिथिल और हतोत्साह होना। **जी दहलना**=मन मे कुछ भय का सचार होना। **जी दुखना**=मन मे कष्ट या दु ख होना। **(किसी के लिए) जी देना**=किसी पर जीवन या प्राण निछावर करना। **जी दौड़ना** =कुछ करने या पाने के लिए मन का प्रवृत्त होना। **जी धँसा जाना** =दे० 'जी बैठा जाना।' **जी धक धक करना या धडकना**=भय या आशका से चित्त का स्थिर न रहना और उसमे धडकन होना। **जी निकलना** =प्राणो के निकलने की-सी अनुभूति या कष्ट होना। (व्यग्य) जैसे—रुपया खरच करते हुए तो इनका जी निकलता है। **जी निढाल होना**=दु ख, चिंता शिथिलता आदि के कारण चित्त ठिकाने न रहना। **(किसी से) जी पक जाना**=बहुत दु खी या सतप्त होने के कारण बहुत अधिक उदासीनता या विरक्ति हो जाना। **जी पकड़ा जाना**=खुटका, विपत्ति आदि बात सुन या सभावना देखकर मन मे बहुत चिंता और विकलता होना। **जी पर आ बनना**=किसी घटना या बात के कारण ऐसी स्थिति होना कि प्राणो पर सकट आ जाय और फलत सुख शान्ति का अत हो जाय। **जी पर खेलना**=कोई विकट काम पूरा करने के लिए अपने प्राणो की बाजी लगा देना। अपना जीवन सकट मे डालना। **(किसी से)जी फट जाना**=किसी से बहुत दु खी होने के कारण पूरी तरह से विरक्त हो जाना। **(किसी की ओर से) जी फिर जाना**=चित्त का उदासीन, खिन्न और विरक्त हो जाना। **(किसी से) जी फीका होना**=किसी के साथ होनेवाले व्यवहार या सबध मे पहले की-सी सरसता न रह जाना। **जी बँटना**=(क) मन लगाकर कोई काम करते रहने की दशा मे किसी बाधा के कारण चित्त या ध्यान इधर-उधर होना। (ख) दे० 'जी बहलना'। **(किसी ओर अपना) जी बढ़ाना**=अपना ध्यान, मन या विचार किसी ओर प्रवृत्त करना। **(किसी का) जी बढ़ाना**=प्रोत्साहित करना। बढावा देना। **जी बहलना**=ऐसा काम या बात करना जिससे खिन्न, चिंतित या दु खी मन कुछ समय के लिए प्रसन्न हो और खेद, चिंता या दु ख न रह जाय अथवा कम हो जाय। **जी बिगडना या बुरा होना**=(क) उदासीनता खिन्नता या विरक्ति होना। (ख) कै या उलटी करने को जी चाहना। मिचली होना। (ग) मन मे कोई अनुचित या बुरा भाव उत्पन्न होना। **जी बैठा जाना**=आशका, चिंता, दुर्बलता आदि के कारण आतरिक शक्ति या साहस का बहुत ही क्षीण होने लगना। **जी भर आना**=करुणा आदि के कारण मन का द्रवित होना। **जी भरकर**=जितना जी चाहे उतना। मनमाना। यथेष्ट। **(किसी काम, चीज या बात की ओर से) जी भर जाना**=(क) कटु अनुभव होने के कारण प्रवृत्ति न रह जाना। (ख) भोग आदि की अधिकता के कारण मन मे पहले का सा अनुराग या उत्साह न रह जाना। **(अपना जी) भरना**=सदेह आदि दूर करके आश्वस्त, निश्चित या सतुष्ट होना। **(किसी का) जी भरना**= किसी की शका, सदेह आदि दूर करके उसका पूरा समाधान करना। **जी भरभराना**=करुणा आदि के कारण हलका सा रोमाच होना। **जी भारी होना**=रोग आदि के आगमन से कुछ पहले मन मे अस्वस्थता का बोध होना। **जी भिटकना**=घृणा का अनुभव होने के कारण मन मे विरक्ति होना। **जी मलमलाना**=विवशता की दशा मे मन मे खेद और पछतावा होना। **जी मारना**=कामना, वासना आदि का दमन करना। **जी मिचलाना या मितलाना**=उलटी या कै करने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **(किसी से) जी मिलना**=प्रकृति, व्यवहार आदि की अनुकूलता दिखाई देने पर परस्पर प्रीति और सद्भाव उत्पन्न होना। **जी मे आना**=किसी काम या बात की इच्छा, कामना या प्रवृत्ति होना। जैसे—जो हमारे जी मे आयेगा, वह हम करेगे। **जी मे चुभना, गडना या घर करना**=बहुत ही प्रिय और सुखद होने के कारण मन मे अपने लिए विशिष्ट स्थान बनाना। **जी मे जी आना**=चिंता भय आदि का कारण दूर होने पर मन निश्चिन्त और शात होना। **जी मे जी डालना**=चिंता, भय आदि का कारण दूर करके आश्वस्त और निश्चित करना। **(कोई बात) जी मे धरना**=किसी बात या विचार को अपने मन मे स्थान देना और उसके अनुसार आचरण करने का निश्चय करना। **(कोई बात) जी मे बैठना**=बिलकुल उचित या ठीक जान पडना। मन पर पूरा प्रभाव होना। **(कोई बात) जी मे रखना**=अपने मन मे छिपा या दबाकर रखना। जल्दी किसी पर प्रकट न होने देना। **(किसी का) जी रखना**=इसलिए किसी का अनुरोध या आग्रह मान लेना कि वह अपने मन मे दु खी या हताश न हो। **(किसी काम मे) जी लगना**=अनुकूल, रुचिकर आदि जान पडने के कारण यथेष्ट रूप से तत्पर या सलग्न होना। काम मे अच्छी तरह चित्त लगाना। **(किसी व्यक्ति से) जी लगना**=अनुराग या प्रेम होना। **(किसी ओर) जी लगा रहना** =चिंता आदि के कारण बराबर ध्यान लगा रहना। **जी लरजना**= दे० 'जी काँपना'। **जी ललचाना** =कुछ पाने के लिए मन मे बहुत अधिक लालच या लोभ होना। **(किसी का) जी लुभाना**=किसी को मोहित करके अपनी ओर आकृष्ट करना। **(किसी का) जी लेना**=(क) बातो ही बातो मे किसी की इच्छा, प्रवृत्ति या विचार का पता लगाने का प्रयत्न करना। (ख) जीवन या प्राण लेना। **जी सन्न होना**=बहुत अधिक घबराहट, चिंता आदि के कारण स्तब्ध हो जाना। **जी से उतर जाना**=कटु अनुभव होने या दोष आदि दिखाई देने पर

किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुराग नष्ट हो जाना। **जी से जाना**=जीवन या प्राण गवाँना। मरना। **(किसी व्यक्ति या वस्तु से) जी हट जाना**=पहले का-सा अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाने के कारण उदासीनता या विरक्ति होना। **जी हवा हो जाना**=भय या आशका आदि के कारण चित्त ठिकाने न रह जाना। होश-हवाश गुम हो जाना। **(किसी का) जी हाथ मे करना, रखना या लेना**=किसी को अपने अनुकूल या वश मे करना या रखना। **जी हारना**=उत्साह, साहस आदि से रहित या हीन हो जाना। हिम्मत हारना। **जी हिलना**=(क) मन मे करुणा, दया आदि का आविर्भाव होना। (ख) दे० 'जी दहलना'। **जी ही मे जी जलना**=ईर्ष्या, क्रोध, दुर्भाव आदि के कारण मन ही मन बहुत दुखी होना।

अव्य० १ धार्मिक स्थानो, मान्य व्यक्तियो आदि के अल्लो और नामो के पीछे लगनेवाला आदर-सूचक अव्यय। जैसे—गया जी, गाँधी जी, शुक्ल जी आदि। २ किसी के द्वारा बुलाये जाने पर उत्तर मे कहा जानेवाला एक आदर-सूचक शब्द। जैसे—जी, शहर जा रहा हूँ। ३ किसी मान्य व्यक्ति के आदेश, कथन आदि के उत्तर मे सहमति, स्वीकृति आदि जतलानेवाला अव्यय। जैसे—जी, ऐसी ही होगा।

जीअ*—पु० =जीव।
अव्य०=जी।

जीअन—पु०=जीवन।

जीउ—पु०=जीव।

जीकाद—पु० [अ० जीकाद] हिजरी सन् के ग्यारहवे महीने का नाम।

जीगन*—पु०=जुगनूँ।

जीगा—पु० [तु०] कलगी। तुर्रा।

जीजना*—अ०=जीना (जीवित रहना)।

जीजा—पु० [हिं० जीजी] भाई (या बहन) की दृष्टि मे उसकी किसी बहन का पति। बहनोई।

जीजी—स्त्री० [स० देवी, हि० देई, दीदी] भाई (या बहन) की दृष्टि मे, उसकी बडी बहन।

जीजूराना—पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

जीट—स्त्री० [हिं० सीटना] डीग।

जीण*—पु०=जीवन।

जीत—स्त्री० [स० जिति] १ युद्ध मे, जीतने की अवस्था या भाव। विजय। २ उक्त के आधार पर, किसी प्रतियोगिता, मुडभेड, शर्त आदि मे मिलनेवाली या होनेवाली सफलता। ३ लाभ।
स्त्री० [?] जहाज मे पाल का बुताम या बटन। (लश०)

जीतना—स० [हिं० जीत+ना (प्रत्य०)] १ युद्ध मे शत्रु को हराकर विजय प्राप्त करना। विजयी होना। २ किसी प्रतियोगिता, मुठभेड, शर्त मे सफल होना। जैसे—दौड जीतना। ३ उक्त के आधार पर तथा जीत के उपलक्ष्य मे कोई चीज प्राप्त करना। जैसे—देश जीतना, दौड मे सफल होने पर पुस्तक या पुरस्कार जीतना।

जीता—वि० [हिं० जीना] १ जिसमे अभी जीवन या प्राण हो। जिन्दा। जीवित। २ तौल, नाप आदि के प्रसग मे, जो आवश्यक या उचित से थोडा अधिक या बढा हुआ हो। जिंदा।

जीतालू—पु० [स० आलू] अरारोट।

जीता लोहा—पु० [हिं० जीना+लोहा] चुबक।

जीति—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता जिसका मोटा तना धनुष की डोरी के रूप मे काम मे लाया जाता था।

जीन—पु० [फा० ज़ीन] १ घोडे आदि की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। काठी। २ कजावा। पलान। ३ एक प्रकार का बढिया, मजबूत तथा मोटा सूती कपडा।
वि०=जीर्ण।

जीनत—स्त्री० [फा० जीनत] १ शोभा। २ सजावट।

जीनपोश—पु० [फा० ज़ीन पोश] जीन पर बिछाया जानेवाला कपडा।

जीनपोशी—स्त्री०=जीनपोश।

जीन सवारी—स्त्री० [देश०] घोडे की पीठ पर जान रखकर की जानेवाली सवारी।

जीनसाज—पु० [फा०] [भाव० जीनसाजी] घोडो की जीने बनानेवाला कारीगर।

जीना—अ० [स० जीवति, प्रा० जिअइ, जीअन्त, मरा० जिणे] १ जीवित रहना। काया या शरीर मे प्राण रहना।
मुहा०—जीती मक्खी निगलना=जान-बूझकर कोई अनुचित और घृणित कार्य करना। **जीते जी मरना**=बहुत अधिक कष्ट भोगना। **जीना भारी हो जाना**=जीवन बहुत अधिक दुखमय हो जाना।
पद—जीता जागता=जीवित और सक्रिय। भला-चगा। स्वस्थ। **जीते जी**=जीवनकाल मे। जीवित अवस्था मे।
२ जीवन या जिन्दगी के दिन बिताना। ३ अभीष्ट फल या वस्तु प्राप्त होने पर बहुत अधिक प्रसन्न या प्रफुल्लित होना।
*वि० [स्त्री० जीनी] १ =जीर्ण। २ =झीना।
पु० [फा ज़ीन] सीढी।

जीपना*—स० [स० जिति] जीतना। उदा०—हल जीपिस्यै जू वाहिस्यइ हाथ।—प्रिथीराज।

जीभ—स्त्री० [स० जिह्वा, जिह्विका, प्रा० जिब्भा, जिब्भया, जैन प्रा० जिब्भा, जीहा] १ मुँह मे तालु के नीचे का वह चिपटा, लबा तथा लचीला टुकडा जिससे रसो का आस्वादन और ध्वनियो का उच्चारण किया जाता है। जबान। रसना।
पद—छोटी जीभ=गले के अदर की घटी। कौआ। गलशुडी।
मुहा०—जीभ करना=ढिठाई से जवाब देना। **जीभ खोलना**=कुछ कहना। **जीभ चलना**=(क) विभिन्न वस्तुओ के स्वाद लेने की इच्छा होना। (ख) बहुत उग्र या कटु बाते कहना। **जीभ निकालना**=दड देने के लिए जीभ उखाडना या काट लेना। **(किसी की) जीभ पकडना**=(क) किसी को कोई बात कहने न देना। किसी को विवश करना कि वह कोई विशिष्ट बात न कहे। (ख) किसी को उसकी कही हुई बात के पालन के लिए विवश करना। **जीभ हिलाना** =मुँह से कुछ कहना। **(किसी की) जीभ के नीचे जीभ होना**=किसी का अपने सुभीते के अनुसार कई तरह की बाते कहना। अपने कथन या वचन का ध्यान न रखना।
२ जीभ के आकार की कोई चिपटी तथा लबोतरी वस्तु। जैसे—निब।

जीभा—पु० [हिं० जीभ] १ जीभ के आकार की कोई बडी वस्तु। जैसे—कोल्हू का पच्चर। २ एक रोग जिसमे चौपायो की जीभ के काँटे कुछ

सूज तथा बढ जाते है और जिसके कारण उन्हे कुछ खाने मे बहुत कष्ट होता है। ३ एक रोग जिसमे बैलो की आँख के आगे का मास बढकर लटकने लगता है।

जीभी—स्त्री०[हिं० जीभ] १ धातु आदि का बना हुआ वह पतला धनुषाकार पत्तर जिससे जीभ पर जमी हुई मैल उतारी या छीली जाती है। २ मैल साफ करने के लिए जीभ छीलने की क्रिया। ३ कलम की निब। ४ छोटी जीभ। गलशुडी।

जीमट—पु०[स० जीमूत=पोषण करनेवाला] पेड, पौधे आदि की टहनी या धड मे का गूदा।

जीमणवार—स्त्री० =ज्यौनार।

जीमना—स०[स० जेमन] कही बैठकर अच्छी तरह भोजन करना।

जीमूत—पु०[स०√जि (जीतना)+क्त, मूट्, दीर्घ]१ पर्वत। पहाड। २ बादल। मेघ। ३ नागरमोथा। ४ देव-ताड नामक वृक्ष। ५ घोषा नाम की लता। ६ शाल्मलि द्वीप के एक वर्ष का नाम। ७ इन्द्र। ८ सूर्य। ९ विराट् की सभा का एक मल्ल। १० एक प्रकार का दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और ग्यारह रगण होते है।

वि० जीवित रखने या पोषण करनेवाला।

जीमूत-कूट—पु०[ब०स०] पर्वत।

जीमूत-केतु—पु०[ब०स०] शिव।

जीमूत मुक्ता—स्त्री०[मध्य०स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति बादलो से मानी गयी है।

जीमूत मूल—पु०[ब०स०] गवमूली।

जीमूत वाहन—पु०[स०]इद्र।

जीमूतवाही (हिन्)—पु० [स० जीमूत√वह् (ले जाना)+णिनि] धूआँ।

जीय†—पु० =जीव।

जीयट†—पु०=जीवट।

जीयति†—स्त्री०[हि० जीना] जीवन। जिदगी।

जीयदान—पु०=जीव-दान।

जीर—पु०[स०√जु (गति)+रक्, ई आदेश]१ जीरा। २ फूलो का केसर। ३ तलवार।

वि० जल्दी या तेज चलनेवाला।

पु०[फा० जिरह] जिरह। कवच।

*वि०=जीर्ण।

जीरक—पु०[स० जीर+कन्] जीरा।

जीरण (रन)—वि०=जीर्ण।

जीरना*—अ०[स० जीर्ण]१ जीर्ण या पुराना होना। उदा०—वह हाले वह जीरई साकर सग निवेदि।—कबीर।

२ कुम्हलाना। मुरझाना। ३ फटना।

जीरह—पु०=जिरह।

जीरा—पु०[स० जीरक]१ एक पौधा जिसके सुगधित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम मे लाये जाते है। २ उक्त पौधे के सुखाये या सूखे हुए फूल। ३ उक्त आकार की कोई छोटी महीन लबी चीज। ४ फूलो का केसर।

जीरिका—स्त्री०[स० √जृ (जीर्ण होना)—रिक, ई आदेश,+कन्—टाप्] वशपत्री नामक घास।

जीरी—पु०[हिं० जीरा]१ फूलो आदि का छोटा कण। २ एक प्रकार का अगहनी धान। ३ काली जीरी।

जीरोपटन—पु०[देश०] एक पौधा और उसका फूल।

जीर्ण—वि०[स०√जृ+क्त, ईत्व, नत्व] [स्त्री० जीर्णा] १ जो बहुत पुराना होने के कारण इतना कट-फट या टूट-फूट गया हो कि ठीक तरह से काम मे न आ सकता हो। जैसे—जीर्ण दुर्ग, जीर्ण वस्त्र। २ (व्यक्ति) जो बुड्ढा होने के कारण जर्जर और शिथिल हो गया हो। ३ बहुत दिनो का पुराना। जैसे—जीर्ण रोग। ४ जो पुराना होने के कारण अपना महत्त्व गँवा चुका हो। जैसे—जीर्ण विचार। ५ पेट मे पहुँचकर अच्छी तरह पचा हुआ। पचित या पाचित। जैसे—जीर्ण अन्न।

जीर्णक—वि०[स० जीर्ण+कन्]=जीर्ण।

जीर्ण-ज्वर—पु०[कर्म० स०] वैद्यक मे, वह ज्वर जो २१ या अधिक दिनो तक आता हो। पुराना बुखार।

जीर्णता—स्त्री०[स० जीर्ण+तल्—टाप्] १ जीर्ण होने की अवस्था या भाव। २ बुढापा।

जीर्ण-दारु—पु०[ब०स०] वृद्धदारक वृक्ष। विधारा।

जीर्ण-पत्र—पु०[ब०स०] कदब का पेड।

जीर्ण-वज्र—पु०[कर्म०स०] वैक्रात मणि।

जीर्णा—स्त्री०[स० जीर्ण+टाप्] काली जीरी।

जीर्णि—स्त्री०[स० जृ+क्तिन्, ईत्व, नत्व] १ जीर्णता। २ पाचन।

जीर्णोद्धार—पु०[स० जीर्ण-उद्धार, ष०त०] किसी पुरानी वास्तु-रचना का फिर से होनेवाला उद्धार, सुधार या मरम्मत। टूटी-फूटी इमारत या चीज फिर से ठीक और दुरुस्त करना।

जील—स्त्री०[फा० जीर]१ धीमा या हलका शब्द। २ सगीत मे, नीचा या मध्यम स्वर। ३ तबले आदि मे का बाँया (बाजा)।

जीला†—वि०[स० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १ झीना। पतला। २. बारीक। महीन।

जीलानी—पु०[अ०] एक प्रकार का लाल रग।

वि० उक्त प्रकार का, लाल।

जीवजीव—पु० [स० जीव√जीव् (जीना)+णिच्,+खच्, मुम्+] १ चकोर पक्षी। २ एक वृक्ष का नाम।

जीवत—पु० [स०√जीव्+झ—अन्त] १ जीवनी शक्ति। प्राण। २ औषध। दवा। ३ जीव नाम का साग।

वि० जिसमे प्राण हो। जीता जागता। जीवित।

जीवतक—पु०[स० जीवत+कन्] जीव शाक।

जीवंतिका—स्त्री०[स० जीवन+कन्—टाप्, इत्व]१ वह वनस्पति जो दूसरे वृक्षो पर रहकर और उन्ही के शरीर से रस चूसकर फैलती या बढती हो। बदा। बाँदा। २ गुडूची। गुरुच। ३ जीव नामक साग। ४ जीवती लता। ५ एक प्रकार की पीली हर्रे। ५ शमी वृक्ष।

जीवती—स्त्री० [स० जीवत+ङीष्] १ एक प्रकार की लता जिसकी टहनियो मे दूध होता है और जिसकी पत्तियाँ दवा के काम मे आती है।

२ एक प्रकार की पीली हर्रे। ३ गुडूची। गुरुच। ४ परगाछा। बाँदा। ५ शमी वृक्ष।

जीव—पु०[स०√जीव+घञ्] १ वह जिसमे चेतना और जीवन या प्राण हो और जो अपनी इच्छा के अनुसार खा-पी और हिल-डुल सकता हो। जीवधारी। प्राणी। २ प्राणियो मे रहनेवाला चेतन तत्त्व। जीवात्मा। ३ जान। प्राण। ४ विष्णु। ५ बृहस्पति। ६ आश्लेषा नक्षत्र। ७ बकायन का पेड।

जीवक—पु०[स० जीव+कन्]१ जीवधारी। प्राणी। २ [√जीव्+णिच्+ण्वुल्—अक] बौद्ध क्षपणक या भिक्षु। ३ सूद-व्याज से जीविका निर्वाह करनेवाला व्यक्ति। महाजन। ४ मनुष्य के वे सब कार्य जो सामूहिक रूप मे उसकी उन्नति या अवनति के सूचक होते हैं। (केरियर) ५ सँपेरा। ६ नौकर। सेवक। ७ पीतसाल नामक वृक्ष। ८ वैद्यक मे अष्ट-वर्ग के अन्तर्गत एक प्रकार का कद जो कामोद्दीपक और बलवर्द्धक कहा गया है।

जीवजीव—पु०[स०=जीवञ्जीव पृषो० सिद्धि] चकोर पक्षी।

जीवट—पु०[स० जीवक]हृदय की वह दृढता जिसके कारण मनुष्य साहसिक कार्यो मे निर्भय होकर प्रवृत्त होता है। दम। साहस। हिम्मत।

जीवडा—पु०[स० जीव] १ जीव, विशेषत तुच्छ जीव। २ जीवन। ३ जीवट। ४ धोबी, नाई आदि को उनकी सेवाओ के बदले दिया जानेवाला अनाज।

जीवत्—वि०[√जीव्+शतृ]=जीवित। (मुख्यत यौगिक पदो के आरम्भ मे, जैसे—जीवत्पति=सधवा स्त्री)

जीवति*—स्त्री० [स० जीवत्] जीविका।

जीवत्तोका—स्त्री०[जीवत-तोक ब०स०] वह स्त्री जिसके बच्चे जीते हो।

जीवत्पति—स्त्री०[ब० स०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा या सौभाग्यवती स्त्री।

जीवत्पितृक—पु० [ब० स० कप्] वह जिसका पिता जीवित हो।

जीवत्पुत्रिका—वि० [जीवत्-पुत्र ब० स०,+कन्—टाप् इत्व] (स्त्री) जिसका पुत्र या जिसके पुत्र जीवित हो अर्थात् वर्तमान हो।

जीवत्पुत्रिका-व्रत—पु०[स०] आश्विन कृष्ण अष्टमी को होनेवाला स्त्रियो का एक व्रत जो वे अपनी सन्तान के कल्याण की कामना से करती है।

जीवथ—पु० [स०√जीव्+अथ]१ जीवनी-शक्ति। प्राण। २ बादल। मेघ। ३ मोर। ४ कछुआ।

वि०१ दीर्घ-जीवी। २ धर्म-निष्ठ।

जीवद—वि० [स० जीव√दा (देना)+क] जीवन या प्राण देनेवाला।

पु०१ वैद्य। २ जीवक पौधा। ३ जीवती। ४ शत्रु।

जीव-दया— स्त्री०[स० त०] जीवो पर उनके जीवन की रक्षा के विचार से की जानेवाली दया।

जीव-दान—पु०[ष० त०]१ वश मे आये हुए अपराधी या शत्रु को बिना उसके प्राण लिये छोड देना। २ किसी मरते हुए प्राणी की रक्षा करके उसे मरने से बचाना।

जीवद्भर्तृका—स्त्री० [स० जीवत्-भर्तृ ब० स० कप्-टाप्]=जीवत्पति।

जीवद्वत्सा—वि० स्त्री०[स० जीवत्-वत्स, ब०स०] जिसका पुत्र जीवित हो।

जीव-धन—पु० [ब० स०] वह जो जीवो अर्थात् पशु-पक्षियो आदि को रखकर उनसे जीविका चलाता हो। वह जिसके लिए जीव या जानवर ही धन हो।

वि० जो किसी के जीवन का धन या सर्वस्व हो। परमप्रिय। जीवन-धन।

जीव-धातु—स्त्री०[ष० त०] कुछ विशिष्ट रासायनिक तत्त्वो से बना हुआ वह पारदर्शक स्वच्छ तत्त्व या धातु जिसमे जीवनी-शक्ति होती है और जो आधुनिक विज्ञान मे जीवो, जतुओ, वनस्पतियो आदि के भौतिक स्वरूप का मूल आधार माना जाता है। (प्रोटो प्लाज्म)

जीव-धानी—स्त्री०[ष०त०] वह आधार जिस पर जीव रहते है। पृथ्वी।

जीवधारी (रिन्)—वि०[स० जीव√धृ(धारण)+णिनि] (वह) जिसमे जीव अर्थात् जीवनीशक्ति हो। जीव-युक्त।

पु० प्राणी।

जीवन—पु०[स०√जीव्+ल्युट्—अन] [वि० जीवित] १ वह नैसर्गिक शक्ति जो प्राणियो, वृक्षो आदि को अगो और उपागो से युक्त करके सक्रिय और सचेष्ट बनाती है और जिसके फलस्वरूप वे अपना भरण-पोषण करते हुए अपने वश की वृद्धि करते है। आत्मा या प्राणो से पिंड या शरीर से युक्त रहने की दशा या भाव। जान। प्राण।

विशेष—आधुनिक विज्ञान के मत से वह विशिष्ट प्रकार की क्रियाशीलता है जो समस्त जीव-जतुओ, पेड-पौधो और मानव जाति मे पाई जाती है। इसके ये मुख्य पाँच लक्षण माने गये है--गतिशीलता, अनुभूति या सवेदन, आत्मपोषण, आत्म-वर्धन और प्रजनन। जब तक भौतिक तत्त्वो से बने हुए पिड या शरीर मे आत्मा या प्राण रहते है, तब तक वह चेतन और जीवित रहता है। इसकी विपरीत दशा मे वह नष्ट हो जाता या मर जाता है। जिन पदार्थो मे आत्मा या प्राण होते ही नही, वे अचेतन और निर्जीव कहलाते है।

२ किसी विशिष्ट रूप या शरीर मे आत्मा के बने रहने की सारी अवधि या समय। जिंदगी। जैसे--अमर या शाश्वत जीवन, पार्थिव या भौतिक जीवन। ३ किसी वस्तु या व्यक्ति के आदि से अन्त तक अथवा जन्म से मरण तक की सारी अवधि या समय। जैसे--(क) इस प्रकार के भवनो (या मदिरो) का जीवन कई सौ वर्षो का होता है। (ख) बहुत से कीडो-मकोडो का जीवन कुछ घटो या (दिनो) का होता है। ४ भौतिक शरीर मे प्राणो के बने रहने की अवस्था या दशा। जैसे--(क) हमारे लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न है। (ख) डूबे हुए बच्चे को तुरत जल से निकाल कर उसमे फिर से जीवन लाया गया। ५ किसी प्राणी के अस्तित्व काल का वह विशिष्ट अग, अश या पक्ष जिसमे वह किसी विशेष प्रकार से या विशेष रूप मे रहकर अपने दिन बिताता हो। जैसे—(क) आध्यात्मिक या वैवाहिक जीवन। (ख) ग्राम्य, नागरिक, सभ्य या सैनिक जीवन। (ग) दरिद्रता या पराधीनता का जीवन। ६ किसी विशिष्ट प्रकार के क्रिया-कलाप, व्यवसाय या व्यापार मे बिताई जानेवाली कोई अवधि या उसका कोई अश। जैसे—(क) खेल-कूद या भोग-विलास का जीवन। (ख) बढइयो, लोहारो या सुनारो का जीवन। ७ वह तत्त्व, पदार्थ या शक्ति जो किसी दूसरे तत्त्व, पदार्थ या व्यक्ति का अस्तित्व बनाये रखने के लिए अनिवार्य अथवा उसे सुखमय रखने के लिए परम आवश्यक हो। जैसे--जल (या वायु) ही सब प्राणियो का जीवन है। ८ उक्त के आधार पर, कोई परम प्रिय वस्तु या व्यक्ति। उदा०--जीवन मूरि हमारी अली यह कौन कह्यौ तोहि नद-लला है।--बलबीर। ९ वह जिससे किसी को

कुछ करने या अपना अस्तित्व बनाये रखने की पूरी प्रेरणा या शक्ति प्राप्त होती हो। जान। प्राण। जैसे--आप ही तो इस सस्था के जीवन है। १० वह तत्त्व या बात जिसके वर्तमान होने पर किसी दूसरे तत्त्व या बात मे यथेष्ट ऊर्जा, ओज आदि अथवा यथेष्ट वाछित प्रभाव उत्पन्न करने या फल दिखाने की शक्ति दिखाई देती है। जैसे--किसी जाति, दल या सघटन मे दिखाई देनेवाला जीवन। ११ वायु। हवा। १२ जल। पानी। १३ नवनीत। मक्खन। १४ हड्डियो के अन्दर का गूदा। मज्जा। १५ जीविका निर्वाह का साधन। वृत्ति। १६ पुत्र। बेटा। १७ परमात्मा। परमेश्वर। १८ जीवक नामक ओषधि। वि० परम प्रिया। बहुत प्यारा।

जीवनक—पु० [स० जीवन+कन्] १ आहार। २ अन्न।

जीवन-कारण—पु०[ष०त०] न्याय-दर्शन मे जीव या प्राणी के वे कृत्य या प्रयत्न जो बिना इच्छा, द्वेष आदि के आप से आप और प्राकृतिक रूप से बराबर होते रहते है। जैसे--श्वास, प्रश्वास आदि।

जीवन-चरित—पु०[ष०त०]१ सारे जीवन मे किसी के किये हुए कार्यो आदि का विवरण। २ वह पुस्तक जिस मे किसी के जीवन के मुख्य-मुख्य कार्यों का विवरण हो।

जीवन-चरित्र—पु०=जीवन-चरित।

जीवन-धन—वि०[ष०त०]१ जो किसी के जीवन का धन अर्थात् सर्वस्व हो। परम प्रिय। २ प्राणाधार। प्राण-प्रिय।

जीवन-नौका—स्त्री० [ष० त०] वह छोटी नौका जो बडे जहाजो पर इसलिए रखी रहती है कि जब जहाज डूबने लगे तब लोग उस पर सवार होकर अपनी जान बचा सकें। (लाइफ-बोट)

जीवन-प्रभा—स्त्री० [ष० त०] आत्मा।

जीवन-प्रमाणक—पु०[ष०त०] इस बात का प्रमाण कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था अथवा इस समय जीवित है। (लाइफ-सर्टिफिकेट)

जीवन-बूटी—स्त्री०[स० जीवन+हि० बूटी]१ वह कल्पित जडी या बूटी जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को जिला देती है। सजीवनी। २ लाक्षणिक अर्थ मे, वह चीज जो किसी के जीवन का आधार हो। ३ प्राण-प्रिय वस्तु।

जीवनमूरि—स्त्री०=जीवन-बूटी।

जीवन-वृत्त—पु०[ष० त०] १ जीवन-चरित। जीवनी। २ किसी जीव या प्राणी के आदि से अत तक की सब घटनाओ या बातो का वर्णन या इतिहास। (लाइफ-हिस्ट्री)

जीवन-वृत्तात—पु० [ष० त०] जीवन-वृत्त।

जीवनवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] जीविका। रोजी।

जीवन-सग्राम—पु० =जीवन-सघर्ष।

जीवन-सघर्ष—पु०[ष० त०] प्रतिकूल परिस्थितियो मे जीवित बने रहने या जीविका उपार्जन करने के लिए किया जानेवाला विकट प्रयत्न या प्रयास। (स्ट्रगल फार एक्जिस्टेन्स)

जीवन-हेतु—पु० [ष० त०] जीविका। रोजी।

जीवनात—पु०[जीवन-अत, ष० त०] जीवन का अत अर्थात् मृत्यु।

जीवना—स्त्री० [स०√जीव्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ महौषध। २ जीवती लता।

†अ०=जीना (जीवित रहना)।

†स०=जीमना (भोजन करना)।

जीवनाघात—पु० [स० जीवन-आघात, ब० स०] विष।

जीवनावास—वि० [स० जीवन-आवास, ब० स०] जल मे रहनेवाला। पु० १ वरुण। २ देह। शरीर।

जीवनार्ह—पु०[स० जीवन-अर्ह, ष०त०] १ अन्न। २ दूध।

जीवनि—वि० [स० जीवनी]१ (ऐसी ओषधि या वस्तु) जो किसी को जीवित रखने मे विशिष्ट रूप से समर्थ हो। २ अत्यन्त प्रिय (वस्तु या व्यक्ति)।

स्त्री०१ सजीवनी बूटी। २ काकोली। ३ तिक्त जीवती। डोडी। ४ मेदा नाम की ओषधि।

स्त्री०=जीवनी।

जीवनी—स्त्री० [स० जीवन+ङीप्] १ काकोली। २ जीवती। ३ महामेदा। ४ डोडी। तिक्त जीवती।

स्त्री०=जीवन-चरित।

जीवनीय—वि० [स०√जीव्+अनीयर्] १ जो जीवित रखने या रहने योग्य हो। जी सकनेवाला। २ जीवन या जीवनीशक्ति प्रदान करनेवाला। ३ अपनी जीविका आप चलानेवाला।

पु०१ जल। पानी। २ जयती वृक्ष। ३ दूध। (डि०)।

जीवनीय-गण—पु०[ष० त०] वैद्यक मे बलकारक औषधो का एक वर्ग जिसके अतर्गत अष्टवर्ग पर्णिनी, जीवती, मधूक और जीवन नामक वनस्पतियाँ है।

जीवनीया—स्त्री० [स० जीवनीय+टाप्] जीवती नामक लता।

जीवनेत्री—स्त्री०[स० जीव√नी (ढोना)+तृच्—ङीप] सैंहली वृक्ष।

जीवनोपाय—पु०[स० जीवन-उपाय ष०त०] जीवन के निर्वाह और रक्षा का उपाय या साधन। जीविका। रोजी।

जीवनौषध—स्त्री० [जीवन-औषध, ष० त०] वह औषध जिससे मरता हुआ प्राणी जी जाय। जीवन बूटी। सजीवनी।

जीवन्मुक्त—वि० [स०√जीव्+शतृ, जीवत्-मुक्त कर्म० स०] [भाव० जीवन्मुक्ति] (जीव) जिसने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो और इसीलिए जो आवागमन के बधन से मुक्त हो गया हो।

जीवन्मुक्ति—स्त्री० [स० जीवत्-मुक्ति, ष० त०] जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव।

जीवन्मृत—वि०[स० जीवत्-मृत, कर्म०स०] (अधम प्राणी) जो जीवित होने पर भी मरे हुए के समान हो।

जीव-न्यास—पु० [ष० त०] मूर्तियो की प्राण-प्रतिष्ठा करते समय कहा जानेवाला एक मन्त्र।

जीव-पति—पु० [ष० त०] धर्मराज।

जीव-पत्नी—स्त्री० [ब० स०] स्त्री, जिसका पति जीवित हो। सधवा।

जीव-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] जीवती नामक लता।

जीव-पुत्र—पु०[ब० स०] [स्त्री० जीवपुत्रा] वह जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवपुत्रक—पु०[स० जीवपुत्र+कन्] १ जिया-पोता या पुत्रजीव नामक वृक्ष। २ इगुदी का पेड। हिंगोट।

जीव-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बडी जीवती।

जीव-प्रभा—स्त्री० [ष० त०] आत्मा। रूह।

जीव-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] हरीतकी। हर्रे।

जीवबद*—पु०=जीवबधु।

जीव-बन्धु—पु०[ष०त०] गुल दुपहरिया या बधूक नामक पौधा और उसका फूल।

जीव-भद्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] जीवती नामक लता।

जीव-मातृका—स्त्री०[ष० त०] १ वे सात देवियाँ जो जीवो का कल्याण, पालन आदि माता के समान करती है।

विशेष—ये सात देवियाँ है– कुमारी, धनदा, नदा, विमला, मगला, बला और पद्मा।

२ उक्त देवियो मे से हर एक।

जीव-याज—पु०[तृ० त०] वह यज्ञ जिसमे पशुओ की बलि दी जाती हो।

जीव-योनि—स्त्री० [कर्म० स०] १ सजीव सृष्टि। २ [ष० त०] जीव-जतु का वर्ग या समूह।

पु० वह जीव या प्राणी जो इद्रियो के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता हो।

जीव-रक्त—पु०[मध्य० स०] रजस्वला स्त्री की योनि से जानेवाला रक्त।

जीवरा*—पु०=जीव।

जीवरी†—स्त्री०=जीवन।

जीवला—स्त्री० [स० जीव√ला (लेना)+क—टाप्] सिह-पिप्पली।

जीव-लोक—पु०[ष० त०] वह लोक जिसमे जीव रहते हो। भू-लोक।

जीव-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] क्षीर काकोली (पौधा)।

जीव-विज्ञान—पु०[ष०त०] वह विज्ञान जिसमे जीवो की उत्पत्ति, विकास, शारीरिक रचना तथा उनके रहन-सहन के सबध मे विचार किया जाता है। इसी विज्ञान की शाखाओ के रूप मे, वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान, आकारिकी आदि की गिनती होती है। (बायलॉजी)

जीव-वृत्ति—स्त्री०[ष० त०] १ जीव की वृत्ति अर्थात् गुण, धर्म और व्यापार। २ [कर्म० स०] जीव-जतुओ का पालन-पोषण करके चलाई जानेवाली जीविका।

जीव-शाक—पु०[कर्म०स०] मलाया मे बहुतायत से पाया जानेवाला एक प्रकार का साग। सुसना।

जीव-शुक्ला—स्त्री० [कर्म० स०] क्षीर काकोली (पौधा)।

जीव-सक्रमण—पु० [ष० त०] जीव का एक योनि से दूसरी योनि अथवा एक शरीर से दूसरे शरीर मे जाना।

जीव-साधन—पु० [ष० त०] धान।

जीव-सुत—पु०[ष०त०] [स्त्री० जीव-सुता] वह जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवसू—स्त्री०[स० जीव√सू (प्रसव) क्विप्] वह स्त्री जिसकी सन्तान जीवित हो।

जीव-स्थान—पु०[ष०त०] हृदय, जिसमे जीव निवास करता है।

जीव-हत्या—स्त्री० [ष० त०] १ जीवो को मारने की क्रिया या भाव। २ धार्मिक दृष्टि से वह पाप जो जीवो को मारने से लगता है।

जीव-हिसा—स्त्री०[ष०त०] जीव-हत्या।

जीवातक—वि०[जीव-अतक, ष०त०] जीव या प्राण अथवा जीवो या प्राणियो का अन्त या नाश करनेवाला।

पु०१ यमराज। २ वधिक। ३ बहेलिया। व्याध।

जीवा—स्त्री०[स०√जीव्+णिच्+अच्—टाप्] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक जानेवाली सीधी रेखा। ज्या। २ धनुष की डोरी। ३ जीवती नामक लता। ४ बच। बचा। ५ जमीन। भूमि। ६ जीविका। ७ जीवन।

जीवाजून—स्त्री० =जीव-योनि।

जीवाणु—पु०[जीव-अणु, ष० त०] १ सेन्द्रिय जीवो का वह मूल और बहुत सूक्ष्म रूप जो विकसित होकर नये जीव का रूप धारण करता है। २ जीवनी-शक्ति से युक्त ऐसे अणु जो प्राय अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते है। (जर्म)

जीवातु—पु०[स०√जीव्+आतु] वह ओषधि जिससे प्राणो की रक्षा होती हो। प्राण-दान करनेवाली ओषधि।

जीवातुमत्—पु०[स० जीवातु+मतुप] आयुष्काम यज्ञ के एक देवता जिनसे आयुवृद्धि की प्रार्थना की जाती है।

जीवात्मा (त्मन्)—पु०[जीव-आत्मन्, ष० त०] १ जीव या प्राणियो मे रहनेवाली आत्मा। वह शक्ति जिसके कारण प्राणी जीवित रहते है। †२ हृदय। जैसे—किसी की जीवात्मा नही दुखानी चाहिए।

जीवादान—पु०[जीव-आदान, ष० त०] बेहोशी। मूर्च्छा।

जीवाधार—पु० [जीव-आधार, ष०त०] हृदय, जो आत्मा का आधार या आश्रय माना जाता है।

जीवानुज—पु०[जीव-अनुज, ष०त०]गर्गाचार्य मुनि जो बृहस्पति के वशज और किसी के मत से बृहस्पति के भाई कहे जाते है।

जीवावशेष—पु० [जीव-अवशेष, ष० त०]=जीवाश्म।

जीवाश्म (न्)—पु० [जीव-अश्मन्, ष० त०] बहुत प्राचीन काल के जीव-जतुओ, वनस्पतियो आदि के वे अवशिष्ट रूप जो जमीन की खोदाई करने पर निकलते है। जीवावशेष। पुराजीव। (फासिल)

जीवाश्म-विज्ञान—पु० [ष०त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्राचीन युगो मे कहाँ-कहाँ और किस प्रकार के जीव होते थे। पुराजैविकी। (पेलिएन्टालोजी)

जीवास्तिकाय—पु० [जीव-अस्तिकाय, ष० त०] जैन दर्शन के अनुसार विशिष्ट कर्म करने और उनके फल भोगनेवाले जीवो का एक वर्ग।

जीविका—स्त्री०[स०√जीव्+अ+कन्—टाप, इत्व] वह काम-धधा, पेशा या वृत्ति जिसके द्वारा मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए धन तथा अन्य आवश्यक पदार्थ मिलते हो।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—लगना।—लगाना।

जीवित—वि०[स०√जीव्+क्त] १ जिसे फिर से जीवन या प्राण मिले हो। २ जो अभी जी रहा हो। जिसमे जीवन या प्राण हो। ३ (पदार्थ) जिसकी क्रियात्मक शक्ति काम कर रही हो या वर्त्तमान हो।(एलाइव) जैसे—जीवित कारतूस, बिजली का जीवित तार।

पु० १ जीवन। २ जीवन-काल।

जीवित-काल—पु० [ष० त०] जीवित रहने का पूरा या सारा समय। आयु। उमर।

जीवित-नाथ—पु० [ष० त०] पति।

जीवितव्य—वि० [स०√जीव+तव्यत्] जीवित रखने या रहने योग्य।

जीवितातक—पु० [जीवित-अतक, ष० त०] शिव।

जीवितेश—पु०[जीवित-ईश, ष०त०]१ जीवन का स्वामी। २ यम। ३ इन्द्र। ४ सूर्य। ५ इडा और पिंगला नाडियाँ।

वि० प्राणो से भी बढकर प्रिय। प्राणाधार।

जीवी (विन्)—वि० [स० जीव+इनि] १ जीनेवाला। २ किसी विशिष्ट प्रकार की जीविका से अपना निर्वाह करनेवाला। जैसे--श्रम-जीवी शस्त्र-जीवी।

जीवेश—पु०[* जीव-ईश, ष० त०] १ जीव या जीवो का स्वामी। ईश्वर। २ प्रियतम।

जीवोपाधि—स्त्री० [स० जीव-उपाधि] जीव की ये तीन उपाधियाँ या अवस्थाएँ--स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत।

जीसो†--वि०=जैसा।

जीस्त—स्त्री० [फा० जीस्त] जीवन।

जीह*—स्त्री० [स० जिह्वा] जीभ।

जीहि*—स्त्री०=जीह।

जुंई—स्त्री०=जुई।

जुग—पु०[स०√जुग् (त्यागना)+अच्] विधारा नामक वृक्ष।

जुगित—वि० [स०√जुग्+क्त] १ परित्यक्त। २ नीच या शूद्र जाति का।

जुडी†—स्त्री०=जुन्हरी।

जुदर—पु०[?]बदर का बच्चा। (कलदर)

जुबली—स्त्री०[हि० दुबा] एक प्रकार की पहाडी भेड।

जुबिश—स्त्री०[फा०] १ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। गति। २ अपने स्थान से थोडा हटकर इधर-उधर होने की क्रिया या भाव।
मुहा०—जुबिश खाना=किसी पदार्थ का अपने स्थान से थोडा हटकर इधर-उधर होना।

जु—अव्य० १ =जो। २ =ज्यो। ३=जी।

जुअ—अव्य०[?]अलग। (दूर या पृथक्)। उदा०--बक्खर पक्खर टुट्टि, टुट्टि हय खड परिय जुअ।--चदवरदाई।

जुअती†—स्त्री०=युवती।

जुअना†—स०=जोवना (देखना)। उदा०—बिरदैत दमित आजान भुअ, उर किवार वर वज्र जुअ।--चदवरदाई।

जुअलि—वि०[स० युगल] दो। उदा०--जुअलि नालि तसु गरभ जेहवी। --प्रिथीराज।

जुआँ—स्त्री०=जूँ।

जुआँरी†—स्त्री०[हि० जूँ] बहुत छोटी जूँ (कीडा) या उसका बच्चा। †स्त्री०=ज्वार।

जुआ†—पु०=जूआ।

जुआठा—पु० दे० 'जूआ' (हल का)।

जुआनी†—स्त्री०=जवानी।

जुआर†—स्त्री०=ज्वार।

जुआर दासी—स्त्री०[?] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

जुआर भाटा†—पु०=ज्वारभाटा।

जुआरा—पु०[हि० जोतार] वह भूखड जिसे एक जोडी बैल एक दिन मे जोत सकते हो।

जुआरी—पु०[हि० जुआ] वह व्यक्ति जिसे जुआ खेलने का व्यसन हो।

जुआल*—स्त्री०=ज्वाला।

जुइना—पु०[स० यूनि=बधन या जोड] घास, फूस आदि को बटकर बनाई जानेवाली रस्सी।

जुई—स्त्री०[हि० जूँ] १ बहुत छोटी जूँ (कीडा) या उसका बच्चा। २ मटर, सेम आदि की फलियो मे लगनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा।

जुई—स्त्री०[?]लबा पतला पात्र जिससे हवन करते समय अग्नि मे घी छोडा जाता है। स्रुवा।

जुक्तिय*—स्त्री०=युक्ति।

जुकाम—पु०[अ०] सरदी-गरमी के योग से होनेवाला वह रोग जिसमे नाक से कफ मिला हुआ पानी निकलता और सिर भारी जान पडता है। प्रतिश्याय सरदी। (कोल्ड)
मुहा०—मेढकी को भी जुकाम होना=किसी छोटे व्यक्ति का भी बडे बनने या बडप्पन दिखलाने के लिए बडे आदमियो का अनुकरण, बराबरी या रीस करना।

जुकिहारा—पु० [हि० जोक] [स्त्री० जुकिहारी] जोक लगानेवाला। उदा०—जुकिहारी जौवन लिए हाथ फिरै रस हेत। --रहीम।

जुकुट—पु०[स०]१ कुत्ता। २ मलय पर्वत।

जुगतै—वि०=जाग्रत। उदा०—जानि जुगतै जम लै करण प्रथीपुर अन्त। --रासो।

जुग—पु०[स० युग्म]१ एक ही तरह की दो चीजो का जोडा। जोड। युग्म।
मुहा०--जुग टूटना या फूटना=प्रायः साथ रहनेवाली दो वस्तुओ या व्यक्तियो का किसी प्रकार एक दूसरे से अलग हो जाना। **जुग बैठना या मिलना**=एक ही तरह की दो वस्तुओ या व्यक्तियो का घनिष्ठ सपर्क या सग-साथ होना।
२ चौसर के खेल मे दो गोटियो का एक ही घर मे एक साथ बैठने की अवस्था।
विशेष—ऐसी गोटियो मे से कोई गोटी तब तक मारी नही जा सकती, जब तक वे दोनो एक दूसरी से अलग या आगे-पीछे न हो जायँ।
३ करघे मे का वह डोरा जो ताने के सूतो को अलग-अलग रखने के लिए होता है।
पद† पु०=युग (काल-विभाग)।

जुगजुग—अव्य० [हि० जुग] अनेक युगो अर्थात् बहुत दिनो तक। जैसे—बच्चा तुम जुग-जुग जीओ (आशीष)।

जुगजुगाना—अ०[हि० जगना=प्रज्वलित होना] १ रह-रहकर थोडा थोडा चमकना। टिमटिमाना। २ अपने अस्तित्व का परिचय या प्रमाण देते रहना। ३ नया जीवन पाकर हीन दशा से कुछ अच्छी दशा मे आना। उभरना।

जुगजुगी—स्त्री०[हि० जुगजुगाना] १ शकरखोरा नाम की चिडिया। २ गले मे पहनने का एक आभूषण। जुगनूँ।

जुगत—स्त्री०[स० युक्ति] [कर्त्ता जुगती] १ बहुत सोच-समझकर किया जानेवाला उपाय। तरकीब। युक्ति। २ आचार व्यवहार आदि मे दिखाई देनेवाला कौशल। जैसे-खूब जुगत से गृहस्थी चलाना।

जुगती—पु०[हि० जगत] १ व्यक्ति जो समझ-बूझकर कोई विकट काम करने का उत्तम उपाय निकाले। २ किफायत से घर-गृहस्थी का खरच चलानेवाला व्यक्ति।
स्त्री०=जुगत (युक्ति)।

जुगनी—स्त्री=जुगनूँ।
जुगनूँ—पु०[हिं० जुगजुगाना] १ एक प्रसिद्ध कीडा जिसका पिछला भाग रात मे खूब चमकता है। खद्योत। २ पान के पत्ते के आकार का गले का एक गहना। जुगजुगी। रामनामी। ३ गले मे पहनने के गहनो मे नीचे लटकनेवाला खड। (पेन्डेन्ट)
जुगम—वि०=युग्म।
जुगराफिया—पु०[अ०] भूगोल।
जुगल—वि०=युगल।
जुगलिया—पु०[?] जैन कथाओ के अनुसार वह कल्पित प्राणी जिसके ४०९६ बाल मिलकर आज कल के मनुष्यो के एक बाल के बराबर हो।
जुगवना—स० [स० योग+अवना (प्रत्य०)] यत्न अथवा युक्तिपूर्वक थोड़ा-थोडा इकट्ठा करके और सँभाल कर रखना। युक्तिपूर्वक बचाकर रखना।
जुगाड—पु० [स० योग, हिं० जुगवना] १ कोई आवश्यक वस्तु कही से लाकर उपस्थित करना। २ कोई कठिन कार्य सिद्ध करने की युक्ति। क्रि० प्र०—बैठाना।
जुगादरी—वि०[स० युगादि से] बहुत पुराना।
जुगादि—*पु०[स० युगादि] १ युग का आरभिक समय। २ बहुत पुराना समय।
जुगाना—स०=जुगवना।
जुगार†—स्त्री०=जुगाली।
जुगारना—अ०=जुगालना।
जुगालना—अ० [स० उद्गिलन=उगलना] सीगवाले पशुओ (जैसे—गाय भैस, बकरी आदि), का जुगाली या पागुर करना।
जुगाली—स्त्री० [हिं० जुगालना] सीगवाले पशुओ का जल्दी-जल्दी खाये या निगले हुए चारे को गले से थोडा निकालकर फिर से अच्छी तरह चबाना। पागुर।
जुगुत, जुगुति—स्त्री०=जुगत।
जुगुप्सक—वि० [स०√गुप् (निंदा करना)+सन्, द्वित्वादि,+ण्वुल्-अक] दूसरे की व्यर्थ मे निंदा करनेवाला। निंदक।
जुगुप्सन—पु०[स०√गुप्+सन्, द्वित्वादि+ल्युट्-अन] [वि० जुगुप्सु, जुगुप्सित] जुगुप्सा या निंदा करना।
जुगुप्सा—स्त्री० [स०√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+अ—टाप्] १ दूसरो की की जानेवाली निंदा या बुराई। २ उपेक्षापूर्वक की जानेवाली घृणा। ३ योग शास्त्र के अनुसार अपने शरीर तथा ससार के लोगो के प्रति होनेवाली वह घृणा जो मन के परम शुद्ध हो जाने पर होती है।
जुगुप्सित—भू० कृ० [स०√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+क्त] १ जिसकी जुगुप्सा हुई हो। निंदक। २ घृणित।
जुगुप्सु—वि० [स०√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+उ] बुराई करनेवाला। निंदक।
जुगुल†—वि०=युगल।
जुग्ग—पु०=युग।
जुग्गिनवै*—पु० [स० योगिनी+पति] दिल्ली का राजा पृथ्वीराज।
जुग्गिनी—स्त्री० [स० योगिनी] योगिनीपुर। दिल्ली।
जुज—पु० [फा० मि० स० युज] १ अश। भाग। २ छपे हुए कागज के जुडे हुए ८ या १६ पृष्ठो का समूह। एक फारम।
जुजबन्दी—स्त्री०[फा०] पुस्तको की सिलाई का वह प्रकार जिसमे प्रत्येक फरमा एक ओर तो अलग-अलग और दूसरी ओर बाकी सब फरमो के साथ मिलाकर भी सीया जाता है। (दफ्तरी)
जुजवी—वि०[फा०] १ जो जुज या बहुत छोटे अश के रूप मे अथवा बहुत थोडी मात्रा मे किसी के अतर्गत हो। २ बहुत कम।
जुजीठल†—पु०=युधिष्ठिर।
जुज्झ*—स्त्री०[?] १ जूझने की क्रिया या भाव। जूझ। २ युद्ध। लडाई।
जुझवाना*—स०[हिं० जूझना का प्रे०] किसी को जूझने मे प्रवृत्त करना।
जुझाऊ—वि०[हिं० जूझ+आऊ (प्रत्य०)] १ प्राय जूझता या लडता रहनेवाला। लडाका। २ युद्ध या लडाई के उपयोग मे आनेवाला। युद्ध-सबधी। जैसे—जुझाऊ जहाज।
जुझाना—स०=जुझवाना।
जुझार—वि०[हिं० जुज्झ+आर (प्रत्य०)] योद्धा। लडाका। पु० युद्ध। लडाई। उदा०—का जानसि कस होइ जुझारा। —जायसी।
जुझारू—वि०, पु०=जुझार।
जुझ्झ—पु०[स० युद्ध] १ जूझने की क्रिया या भाव। जूझ। २ युद्ध। लडाई।
जुट—पु०[हिं० जुटना] १ एक ही तरह की दो चीजो का जोडा। जुग। २ एक साथ काम आनेवाली कई वस्तुओ का समूह। जोडा। जैसे—कपडो या गहनो का जुट। ३ किसी के जोड या मुकाबले की कोई दूसरी चीज। जोडा। ४ एक साथ बँधी या लगी हुई चीजो का एक वर्ग या समूह जो प्राय गुच्छे के रूप मे हो। ५ जत्था। दल। मडली। ६ दे० 'जुग'।
जुटक—पु०[स०√जुट् (मिलना)+क+कन्] १ जटा। २ कबरी। जूडा।
जुटना—अ० [स० युक्त, प्रा० जुत्त+ना (प्रत्य०)] १ एक चीज का दूसरी चीज के बिलकुल पास पहुँचकर उससे लगना या सटना। जुडना। जैसे—इमारत मे पत्थर के पास पत्थर जुटना। २ इस प्रकार पास या समीप होना कि बीच मे बहुत ही थोडा अवकाश रह जाय। ३ किसी काम मे जी लगाकर योग देना। जैसे—तुम भी आकर जुट जाओ तो काम जल्दी हो जाय। ४ एक या अनेक प्रकार की चीजो, व्यक्तियो आदि का एक जगह इकट्ठा होना। जैसे—(क) धन या पत्थर, लकडी आदि जुटना। (ख) तमाशा देखने के लिए भीड जुटना। ५ किसी प्रकार प्राप्त या हस्तगत होना। मयस्सर होना। ६ स्त्री का पुरुष से अथवा पुरुष का स्त्री से प्रसग या सभोग करना। (बाजारू)
जुटला—वि०[हिं० जूट] [स्त्री० जुटली] लबे-लबे बालो की लटोवाला। पु०[अल्पा० जुटली] लबे लबे बालो की लटा। जटाजूट।
जुटाना—स०[हिं० जुटना] १ जुटने या एकत्र होने मे प्रवृत्त करना। २ इकट्ठा करना। ३ बहुत पास लाकर मिलाना या सटाना।
जुटाव—पु०[हिं० जुटना] जुटाने की क्रिया या भाव।

जुटिका—स्त्री०[स० जुटक+टाप्,—इत्व] १ चोटी। शिखा। २ बालो का जूडा। ३ गुच्छा। ४ एक प्रकार का कपूर।

जुट्टा—वि० [हिं० जुटना=मिलना] [स्त्री० जुट्टी] आपस मे मिले या सटे हुए (पदार्थ)। जैसे—जुट्टी भौहे।

पु०[स्त्री० अल्पा० जुट्टी] १ घास, डठलो आदि का बडा पूला। २ दे० 'जुट्टी'।

जुट्टी—स्त्री०[हिं० जुटना] १ घास, डठलो आदि का पूला। २ ऐसे डठलो, पत्तो आदि का कल्ला जो आरम्भ मे प्राय एक मे मिले या सटे हुए रहते है। ३ एक दूसरी पर रखी हुई एक ही तरह की चीजो की गड्डी या थाक। ४ बेसन मे लपेट कर तले हुए पत्ते या साग।

जुठारना—स० [हिं० जूठा] १ खाने-पीने की चीज कुछ खा या पीकर जूठी करना। जैसे—कुत्ते का दूध जुठारना। २ नाम मात्र के लिए थोडा-सा खाकर बाकी छोड देना। जैसे—थाली जुठारना। ३ नाम मात्र के लिए या बहुत थोडा-सा खाना, जैसे—मुँह जुठारना।

जुठिहारा—पु०[हिं० जूठा+हारा] [स्त्री० जुठिहारी] दूसरो का जूठा खानेवाला।

जुठैल*—वि०[स० जुष्ठ+ऐल]जूठा। उच्छिष्ट। उदा०—कातिक राति जगी जम जोइ जुठैल जठेरि सुजठ की जेणी।—देव।

जठौली—स्त्री०[देश०] झुड मे रहनेवाली हलके बादामी रग की एक चिडिया जिसके पैर छोटे, शरीर कुछ चौडा तथा चिपटा होता है। इसके नर का सिर भूरा होता है

जुडगी—वि०[हिं० जुडना+अग] जिसके साथ अग और अगीवाला सबध हो। बहुत ही निकट का सबधी।

जुडना—अ०[हिं० जोडना का अ०] १ हिंदी 'जोडना' का अकर्मक रूप। जोडा जाना। २ दो या अधिक वस्तुओ का आपस मे इस प्रकार मिलना कि एक का कोई भाग या अग दूसरे के साथ दृढतापूर्वक लगा या सटा रहे। दृढतापूर्वक सबद्ध, सश्लिष्ट या सयुक्त होना। जैसे—सरेस से कुरसी के पाये जुडना।

सयो० क्रि०—जाना।

३ सगृहीत या सचित होकर एक स्थान पर एकत्र होना। जुटना। जैसे—किसी के पास धन जुडना। ४ किसी प्रकार उपलब्ध, प्राप्त या हस्तगत होना। मयस्सर होना। जैसे— हमे ऐसे कपडे भला कहाँ जुडेगे। ५ गाडी, घोडे, बैल आदि के सबध मे, जोता जाना। जुतना। जैसे—इस गाडी मे दो घोडे जुडते है। ६ किसी प्रकार के कठिन या श्रमसाध्य कार्य मे किसी व्यक्ति या कुछ व्यक्तियो का योग देने के लिए सम्मिलित होना। ७ दे० 'जुटना'।

जुड़पित्ती—स्त्री०[हिं० जूड+पित्त] शीत और पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे सारे शरीर मे बडे-बडे चकत्ते पड जाते हैं और उनमे खुजली या जलन होती है।

जुड़वाँ—वि०[हिं० जुडना] १ (बच्चे) जो एक साथ जुडे हुए जन्मे हो। २ (बच्चे) जिनका जन्म एक ही समय मे कुछ आगे-पीछे हुआ हो। ३ (कोई ऐसे दो या अधिक पदार्थ) जो आपस मे एक साथ जुडे, लगे या सटे हो। जैसे—जुडवाँ केले या फलियाँ।

जुड़वाई—स्त्री०[हिं० जुडवाना] जुडवाने या जोड लगवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जुडवाना—स० [हिं० जुडाना=ठढा होना] ठढा या शीतल करना। २ किसी सतप्त को शात, सतुष्ट या सुखी करना।

स०[हिं० जोडना का प्रे०] १ जोड-बैठवाना, मिलवाना या लगवाना। २ जुडाना

जुड़ाई†—स्त्री०=जोडाई।

स्त्री०[हिं० जुडाना] १ ठढे या शीतल होने की क्रिया या भाव। ठढक। शीतलता। २ तृप्ति।

स्त्री०=जुडवाई।

जुडाना—स०[हिं० जुडना का स०] १ जुडने या जोडने मे प्रवृत्त करना। २ फलित ज्योतिष के अनुसार योग और फल का मिलान करना। जैसे—जन्म पत्र जुडाना अर्थात् वर और कन्या के ग्रहो का मिलान कराके यह जानना कि दोनो का वैवाहिक सबध कैसा होगा।

अ०[हिं० जाडा, पु० हिं० जूड=ठढा] १ ठढा या शीतल होना। २ शात और सुखी होना। जैसे—किसी को देखकर कलेजा जुडाना। ३ तृप्त होना।

स० ठढा या शीतल करना। २ शात और सुखी करना।

जुडावना†—स०=जुडाना।

जुड़िया†—वि०, पु०=जुडवाँ।

जुत†—वि०=युक्त।

जुतना—अ०[स० युक्त, प्रा० जुत्त] १ घोडे, बैल आदि का गाडी मे जोता जाना। २. खेत आदि का जोता जाना। ३ जी लगाकर किसी ऐसे काम मे सम्मिलित होना जिसमे बहुत अधिक परिश्रम करना पडता हो। जैसे—वह दिन भर काम मे जुता रहता है।

जुतवाना—स०[हिं० जोतना का प्रे०] १ जोतने का काम किसी दूसरे से कराना। २ ऐसा काम करना जिससे कुछ (जैसे-खेत) या कोई (जैसे-घोडा या बैल) जोता जाय।

जुताई†—स्त्री०[हिं० जोतना] जुतने या जोते जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जुताना†—स०=जुतवाना।

+अ०=जुतना।

जुतिऔवल—स्त्री० [हिं० जूता] ऐसी लडाई जिसमे दोनो पक्ष एक दूसरे पर जूतो से प्रहार करते हो। जूतो से होनेवाली लडाई।

जुतियाना—स० [हिं० जूता+इयाना (प्रत्य०)] १ जूतो से किसी पर प्रहार करना। २ किसी को बहुत अधिक खरी-खोटी सुनाकर अपमानित तथा लज्जित करना।

जुत्थ†—पु०=यूथ।

जुथौली—स्त्री०=जुठौली।

जुदा—वि०[फा०] [स्त्री० जुदी (क्व०)] १ किसी से दूर हटा या बिछुडा हुआ। अलग। पृथक्। जैसे—माँ का बेटी से जुदा होना। २ आकार, गुण, महत्त्व, रग-रूप आदि की दृष्टि से भिन्न प्रकार का। भिन्न। जैसे—यह बात जुदा है कि आप भी जायँगे या नही।

जुदाई—स्त्री०[फा०] १ जुदा या भिन्न होने की अवस्था या भाव। भिन्नता। २ जुदा या पृथक् होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। ३ प्रेमियो, मित्रो आदि का पारस्परिक वियोग। बिछोह।

जुद्ध†—पु०=युद्ध।

जुधवान—पु०[स० युद्ध] १ युद्ध करनेवाला। योद्धा। उदा०—जग्गेय जुधवान, कुभेनय कक लकाय।-वद वरदाई। २ जो युद्ध कर रहा हो। लडता हुआ।

जुन†—स्त्री०१ =जून (काल या समय)। २ ='योनि'।

जुनब्बा†—स्त्री० [अ० जुनूब=दक्षिण] [स्त्री० अल्पा० जुनब्बी] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

जुनरी—स्त्री०=जुन्हरी (ज्वार)।

जुनून—पु०[फा०] उन्माद। पागलपन।

जुनूनी—वि०[अ०] उन्मत्त। पागल।

जुनूब—पु०=जनूब। (दक्षिण)।

जुन्हरी—स्त्री०[स० यवनाल] ज्वार नाम का अन्न।

जुन्हाई—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्हा, हिं० जोन्ही+ऐया] १ चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २ चन्द्रमा।

जुन्हैया†—स्त्री०=जुन्हाई।

जुफ्त—पु०[फा०] १ जोडा। २ सम सख्या।

जुब-राज†—पु०=युवराज।

जुबाद—पु०[अ०] एक प्रकार का तरल गध द्रव्य जो गध मार्जार या मुश्क बिलाव के अडकोश से निकलता है।

जुबान†—स्त्री०=जबान।

जुबानी†—वि०=जबानी।

जुमकना†—अ०[हिं० जमना या स०युग्म] १ दृढ़तापूर्वक किसी जगह खडे रहना। डटना। २ पास या समीप आना। ३ इकट्ठा होना।

जुमना—स०[?] खेत मे उगी या पडी हुई झाडियो को जलाकर उनकी खाद बनाना।
पु० खाद बनाने की उक्त क्रिया।

जुमला—वि०[फा० जुम्ल] कुल। पूरा। सब।
पु० वाक्य।

जुमा—पु०[अ० जुमऽ] शुक्रवार।

जुमा मसजिद—स्त्री०[अ०]जामा मस्जिद।

जुमिल—पु०[?] एक प्रकार का घोडा।

जुमिल्ला—पु० [?] करघे की लपेटन की बाईं ओर गडा रहनेवाला खूँटा।

जुमुकना—अ०=जुमकना।

जुमेरात—स्त्री०[अ०] गुरुवार। बृहस्पतिवार।

जुम्मा—पु०[अ० जुमा] शुक्रवार।
†पु०=जिम्मा।

जुयांग—पु०[?] सिंह भूमि के पास पाई जानेवाली एक जगली जाति जो कोलो से मिलती-जुलती है।

जुर*—पु०[स० ज्वर] ज्वर। बुखार। उदा०—बासर रैनि नाँव लै बोलत भयो बिरह जुर कारो।—सूर।

जुरअत—स्त्री०[फा०] साहस। हिम्मत।

जुरझना†—अ०, स०=झुलसना।

जुरझरी†—स्त्री०=झुरझुरी।

जुरना*—अ० [हिं० जुडना का पुराना रूप] १ एक मे मिलना। जुडना। २ अँगडाई लेना। उदा०—झुकि झुकि झपकौ है पलनु फिरि फिरि जुरि जमुहाई।—बिहारी।
अ०=जुडाना (ठढा होना)।

जुरबाना†—पु०=जुरमाना।

जुरमाना—पु०[फा० जुर्मान] १ किसी अपराध के फल-स्वरूप न्यायालय द्वारा अभियुक्त का दिया जानेवाला अर्थ-दड। २ किसी प्रकार की चूक, त्रुटि या भूल करने पर किसी अधिकारी द्वारा दिया जानेवाला अर्थ दड। जैसे—पुस्तकालय मे १५ दिन के अदर पुस्तक न लौटाने पर एक आना रोज जुरमाना लगता है। ३ वह धन जो किसी प्रकार का अपराध, दोष या भूल करने पर दड-स्वरूप देना पडता है।

जुरा*†—स्त्री० [स० जरा] १ बुढापा। वृद्धावस्था। २ मृत्यु।

जुराना—अ०, स०=जुडाना।

जुराफा—पु०[अ० जुर्राफ] ऊँट की तरह का पद्रह-सोलह फुट ऊँचा अफ्रीका का एक जगली पशु जो ससार का सबसे ऊँचा प्राणी माना जाता है। कहते है कि मादा से विछोह होते ही नर की मृत्यु हो जाती है।

जुरावना*—अ०, स०=जुडाना।

जुरी†—स्त्री०=जूडी।

जुरूर—क्रि० वि०=जरूर।

जुर्म—पु०[अ०] १ ऐसा अनुचित कार्य जो विधिक दृष्टि से दडनीय हो। अपराध। २ कोई ऐसा दोष या भूल जिसके लिए दड मिल सकता हो।

जुर्माना†—पु०=जुरमाना।

जुर्रत—स्त्री०[अ० जुरअत] साहस।

जुर्रा—पु०[फा० जुर्र] बाज नामक पक्षी मे का नर।

जुर्राब—स्त्री०[तु०] धागो आदि का बुना हुआ पैरो का एक प्रसिद्ध पहनावा। मोजा।

जुल—पु०[स० छल ?] [वि० जुलबाज] कोई ऐसी बात जो किसी को धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए कही गई हो।
क्रि० प्र०—देना।—मे आना।

जुलकरन—पु०[अ० जुलकरनैन] सुप्रसिद्ध यूनानी बादशाह सिकदर की एक उपाधि।

जुलकरनैन—पु०=जुलकरन।

जुलकर्न—पु०=जुलकरन।

जुलना—स०[हिं० मिलना का अनु० या हिं० जुडना] १ मेल-मिलाप करना या रखना। जैसे—मित्रो से मिलना-जुलना। (केवल 'मिलना' के साथ प्रयुक्त)

जुलफ—स्त्री०[अ० जुल्फ] बालो की लट।

जुलफिकार—पु०[अ० जुलफिकार] अली (मुसलमानो के चौथे खलीफा) की तलवार का नाम।

जुलबाज—वि०[हिं० जुल+फा० बाज] [भाव० जुलबाजी] दूसरो को जुल देनेवाला। धोखेबाज।

जुलम†—पु०=जुल्म (अत्याचार)।

जुलहा†—पु०=जुलाहा।

जुलाई—वि०[हिं० जुल+आई (प्रत्य०)] जुल देनेवाला। धोखेबाज। उदा०—घाती, कुटिल, ढीठ अतिक्रोधी, कपटी कुमति जुलाई।—सूर। स्त्री०=जूलाई (अँगरेजी का सातवाँ महीना)।

जुलाब—पु०[फा० गुलाब, अ० जुल्लाब] १ रेचन। दस्त। २ दस्त लानेवाली दवा। रेचक औषध।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
मुहा०—जुलाब पचना=रेचक औषध खाने पर भी उसका प्रभाव या फल न होना।
३ किसी से कुछ व्यय कराने की तरकीब या युक्ति। (बाजारू)

जुलाहा—पु०[फा० जौलाह] १ करघे पर कपडा बुननेवाला शिल्पी। कोरी। ततुवाय। २ कपड़ा बुननेवालो की एक विशिष्ट जाति। ३ योग साधना मे साधक। ४ पानी पर तैरनेवाला एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा।

जुलुफ—स्त्री०[अ० जुल्फ] बालो की लट।

जुलुम—पु०=जुल्म (अत्याचार)।

जुलूस—पु०[अ०] १ सिंहासनारोहण। २ दे० 'जलूस'।

जुलोक—पु०[स० द्युलोक] स्वर्ग।

जुल्फ—स्त्री०[फा० जुल्फ] सिर के वे लबे बाल जो पीछे या इधर-उधर लटो के रूप मे लटकते रहते हैं।

जुल्फी—स्त्री०=जुल्फ।

जुल्म—पु०[अ०] १ किसी प्रबल या शक्तिशाली व्यक्ति का अनीति या अन्यायपूर्ण ऐसा कार्य जिससे असहायो, दुर्बलो तथा निरीहो को कष्ट होता हो। अत्याचार। २ कोई कठोर आचरण या व्यवहार। जैसे—शरीर के साथ जुल्म मत करो।
मुहा०—जुल्म ढाना=(क) कोई बहुत बडा अत्याचार करना। (ख) कोई अद्भुत या विलक्षण काम कर दिखाना।

जुल्मत—स्त्री०[अ० जुल्मत] अधकार।

जुल्मात—पु०[अ० जुल्मत का बहु० रूप] १ अधकार। २ कुछ विशिष्ट अधकारपूर्ण स्थान। जैसे—स्त्रियो का गर्भाशय, समुद्र का बिलकुल नीचेवाला भाग।

जुल्मी—वि० [अ० जुल्मी] १ जुल्म अर्थात् अत्याचार करनेवाला। २ बहुत अधिक उग्र, तीव्र या विकट। प्रचड। प्रबल।

जुल्लाब—पु०=जुलाब।

जुव†—पु०=युवक।

जुवजन—पु०[स० युवा+जन] नवजवान आदमी। उदा०—मनु जग-जुवजन जीतन एकहि बिधिना रची।बनाय—भारतेन्दु।

जुवती†—स्त्री०=युवती।

जुवराज*—पु०=युवराज।

जुवा—वि०=युवा।
पु०=जूआ।

जुवान†—पु०=जवान।

जुवानी†—स्त्री०=जवानी।

जुवार—स्त्री०=ज्वार।

जुवारी—पु०=जुआरी।

जुविराज*—पु०=युवराज।

जुष्ट—वि०[स०√जुष् (प्रीति, सेवा)+क्त] १ प्रसन्न। २ सेवित। ३ जूठा।
पु० जूठन।

जुष्य—वि०[स०√जुष्+क्यप्] १ पूज्य। २ सेव्य।

जुस्तजू—स्त्री०[फा०] खोज। तलाश।

जुहाना†—स०[स० यूथ, प्रा० जूह+आना (प्रत्य०)] १ एकत्र करना। जुटाना। २ वास्तु-रचना मे एक पत्थर या लकडी को ठीक तरह से दूसरे पत्थर या लकडी पर या उसके साथ जमाना या बैठाना। (बढई और राज) ३ चित्र मे प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियो को यथा-स्थान बैठाना। सयोजन करना।

जुहार—स्त्री०[स० अवहार=युद्ध का रुकना या बद होना?] १ राजपूतो मे प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन। २ अभिवादन। प्रणाम। †स्त्री०=ज्वार।

जुहारना—अ०[हिं० जुहार] अभिवादन या प्रणाम करना। उदा०—मत्री, मित्र कलत्र पुत्र सब आइ जुहार्यो।-? स० [जीवहार] किसी से कुछ सहायता माँगना। किसी का एहसान लेना।

जुहावना—स०=जुहाना।

जुही—स्त्री० [स० यूथी]=जूही (एक पौधा और उसका सुगधित फूल)।

जुहुराण—वि०[स० √हुर्च्छ् (कुटिलता)+सन्, द्वित्वादि, आनच्, सन-लुक् छलोप] कुटिल।
पु० चद्रमा।

जुहुवान—पु०[स०√हु (देना, लेना)+कानच्] १ अग्नि। आग। २ पेड। वृक्ष। ३ क्रूर या निष्ठुर आदमी।

जुहू—पु०[स०√हु+क्विप्] १ पलाश की लकडी का बना हुआ एक प्रकार का अर्द्ध चद्राकार यज्ञ-पात्र। २ पूर्व दिशा।

जुहूर—पु० [अ० जहूर] प्रकट या प्रत्यक्ष होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

जुहू-राण—पु०[स० जुहू√रण् (शब्द करना)+अण्] १ अग्नि। २ अध्वर्यु। ३ चद्रमा।

जुहू-वाण—पु०[स० जुहू√वण् (शब्द करना)+अण्] दे० 'जुहूराण'।

जुहूवान् (वत्)—पु०[स० जुहू+मतुप्] अग्नि।

जुहोता—पु०=होता।

जूं—स्त्री० [स० यूका, पा० ऊका] काले रंग का एक बहुत छोटा स्वेदज कीडा जो सिर के बालो मे पड़ जाता है। (लाउस)
क्रि० प्र०—पडना।
पद-जूं की चाल=बहुत ही धीमी चाल।
मुहा०—(किसी के) कानो पर जूं तक न रेंगना=किसी के कुछ कहने-सुनने पर भी उसका नाम मात्र को भी परिणाम या फल न होना।
†पु० [स० युज, प्रा० जुआ] जूआ (गाडी या हल का)। उदा०—जू सहरी भ्रूह नयण मृग जूता।—प्रिथीराज।

जूंठ†—स्त्री०=जूठन।

जूंठन—स्त्री०=जूठन।

जूंड़िहा—पु०[हिं० झुड] वह बैल जो झुड मे सबके आगे चलता हो।

जूंदन—पु०[देश०] [स्त्री० जूंदनी] बदर। (मदारी)

जूंमुंहाँ—वि० [हिं० जूं+मुंह] (वह व्यक्ति) जो देखने मे सीधा-सादा होने पर भी वास्तव मे बहुत बडा धूर्त हो।

जू—स्त्री०[स०√जू (गमनादि)+क्विप्] १ सरस्वती। २ वायु-मडल। ३ घोडे, बैल आदि पशुओ के मस्तक पर का टीका।
†अव्य०=जो।
अव्य०†=जी।

जूआ—पु०[स० युग] १ गाडी, हल आदि के आगे की वह लकडी जो जोते जानेवाले पशुओ के कधे पर रखी तथा बाँधी जाती है। २ चक्की मे की वह लकडी जिसे पकडकर उसे चलाया जाता है। मूठ।
पु०[स० द्यूत, प्रा० जूअ] १ वह खेल जिसमे हार या जीत होने पर कुछ निश्चित या नियत धन विपक्षी से लिया या उसे दिया जाता है। २ इस प्रकार धन लगाकर खेल खेलने की क्रिया या भाव। ३ कोई ऐसा जोखिम का काम जिसमे हानि और लाभ दोनो अनिश्चित होते है।

जूआ-खाना—पु०[हिं० जूआ+फा० खान] वह घर या स्थान जहाँ बैठकर लोग जूआ खेलते हो।

जूआघर—पु०=जूआ-खाना।

जूआ-चोर—पु० [हिं० जूआ+चोर] [भाव० जूआ-चोरी] बहुत बडा ठग या धूर्त्त।

जूक—पु०[यूना० ज्यूकस] तुला राशि।

जूजू—पु०[अनु०] एक कल्पित जीव जिसका नाम लेकर छोटे बच्चो को डराया जाता है। हौआ।

जूझ—स्त्री०[हिं० जूझना] १ जूझने की क्रिया या भाव। २ युद्ध। लडाई।

जूझना—अ०[स० युद्ध वा हिं० जूझ] १ शारीरिक बल लगाते हुए किसी से लडना। उठा-पटक और हाथा-बाही करना। जैसे—योद्धाओ का आपस मे जूझना। २ शारीरिक बल लगाते हुए कोई प्रयत्न करना। जैसे—कुरसी या मेज से जूझना। ३ व्यर्थ ही बहुत अधिक तकरार या हुज्जत करना।

जूट—पु० [स०√जूट् (मिलना)+अच्] १ सिर के उलझे हुए और घने तथा बडे बालो की लट या उन्हे लपेटकर बाँधा हुआ जूडा। जैसे—सिर पर जटा-जूट रखना। २ शिव की जटा।
पु० [अ०] पटसन।

जूटना—स० [हिं० जुटना का स० रूप] जुटाना।

जूटि*—स्त्री०[स० जुट्] १ जोडी। २ मेल। ३ सधि।

जूठ—वि०=जूठा।
स्त्री०=जूठन।

जूठन—स्त्री० [हिं० जूठा] १ वह खाद्य पदार्थ जो किसी ने जूठे छोडे हो। किसी के खाने-पीने से बची हुई जूठी वस्तु।
मुहा०—(किसी के यहाँ) जूठन गिराना=किसी के यहाँ निमन्त्रित होकर भोजन करना। जैसे—प्रार्थना है कि आज सध्या को मेरे यहाँ आकर जूठन गिराइये।
२ वह पदार्थ जो किसी दूसरे के द्वारा एक या अनेक बार काम मे लाया जा चुका हो और जिसमे किसी प्रकार की नवलता या नवीनता न रह गई हो।

जूठा—वि० [स० जुष्ठ, प्रा० जुट्ठ] १ (खाद्य पदार्थ) जो किसी के खाने-पीने के बाद बच रहा हो। उच्छिष्ट। २ (खाद्य पदार्थ) जिसे किसी ने मुँह लगाकर या उसमे का कुछ अश खा-पीकर अपवित्र या अशुद्ध कर दिया हो। जैसे—कुत्ते या बिल्ली का जूठा भोजन। ३ (पात्र या साधन) जिसके द्वारा अथवा जिसमे कुछ खाया-पीया गया हो। जैसे—जूठा बरतन, जूठा हाथ। ४ (कथन या विषय) जिसका किसी ने पहले उपभोग, प्रयोग या व्यवहार कर लिया हो और इसीलिए जिसमे कोई चमत्कार या नवलता न रह गई हो। जैसे—दूसरो की जूठी उक्ति।
पु०=जूठन।

जूड़—वि० [स० जड] [क्रि० जुडवाना, जुडाना] ठढा। शीतल।
पु०=जूडा।

जूड़न—पु० [देश०] कुछ कालापन लिये खैरे रग का एक प्रकार का बडा पहाडी बिच्छू।

जूड़ना—अ०=जुडना।

जूड़ा—पु० [स० जूट] १ सिर के बडे-बडे बालो को लपेटकर गोलाकार बाँधने या गाँठ लगाने से बननेवाला रूप। २ चोटी। कलगी। ३ मूँज आदि का पूला।

जूडी—स्त्री० [हिं० जूड] जाडा देकर आनेवाला ज्वर। विषम ज्वर। शीत ज्वर।

जूण*—स्त्री०=योनि।

जूत—पु० [हिं० जूता] १ जूता। २ बडा और भारी या मोटा जूता।

जूता—पु० [स० युक्त, प्रा० जुत्त] १ ककड, काँटे, कीचड, मिट्टी आदि से पैरो की रक्षा करने के लिए उनमे पहने जानेवाले उपकरण की जोडी जो चमडे, टाट, रबर आदि की बनी होती है। उपानह। जोडा।
विशेष—(क) हमारे देश मे इसकी गिनती बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ चीजो मे होती है और इससे मारना बहुत ही अपमान-जनक और तिरस्कार सूचक होता है। (ख) मुहावरो आदि मे इसका प्रयोग एक-वचन मे भी होता है और बहुवचन मे भी।
मुहा०—(आपस में) जूता उछलना=(क) आपस मे जूतो से मार-पीट होना। (ख) आपस मे बहुत ही निकृष्ट प्रकार की कहा-सुनी और थुक्का-फजीहत होना। **(किसी पर) जूता उछालना**=किसी के सबध मे बहुत ही अपमान-जनक बाते कहना। **(किसी का) जूता उठाना**=बहुत ही तुच्छ या हीन बनकर छोटी-छोटी सेवाएँ तक करना। **(किसी पर) जूता उठाना**=जूते से आघात या प्रहार करने पर उद्यत होना। **जूता खाना**=(क) जूतो की मार खाना। (ख) बहुत ही बुरी तरह से अपमानित और तिरस्कृत होना। **जूता घुमाना**=जूता चलाना। (देखे) **(आपस मे) जूता चलना**=(क) आपस मे जूतो से मार-पीट होना। (ख) आपस मे बहुत बुरी तरह से कहा-सुनी या थुक्का-फजीहत होना। **जूता चलाना**=छोटे-मोटे चोर का पता लगाने के लिए वह टोना या तात्रिक उपचार करना जिसमे जूता चारो तरफ घूमता रहता है, पर चोर का नाम लेने पर ठहर या रुक जाता है। **(किसी पर) जूता चलाना**=किसी को मारने के लिए उस पर जूता फेकना। **(किसी का) जूता चाटना**=स्वार्थवश बहुत ही दीन-हीन बनकर किसी की खुशामद और तुच्छ सेवाओ मे लगे रहना। **(किसी को) जूता देना**=जूते से प्रहार करना। **(किसी पर) जूता पडना**=बहुत ही बुरी तरह से अपमानित, तिरस्कृत या लाछित होना। **जूता मारना**=बहुत ही बुरी तरह से अप-

मानित या तिरस्कृत करना। **(किसी पर) जूता पड़ना या बैठना**=बहुत ही अपमान-जनक या तिरस्कार-सूचक व्यवहार होना। **(किसी पर) जूता लगना**=जूता पड़ना। (देखे ऊपर) **(पैर मे) जूता लगना**=पैर मे जूते की रगड के कारण घाव होना **(आपस में) जूतो दाल बँटना**=बहुत ही बुरी तरह से या नीचो की तरह लडाई-झगडा होना। **(किसी के साथ) जूतो से आना**=मारने के लिए तैयार होना। **(किसी के साथ) जूतो से बात करना**=(क) जूतो से मारना। (ख) बहुत ही बुरी तरह से अपमानित और तिरस्कृत करना। अत्यन्त अनादरपूर्ण व्यवहार करना।

२ ऐसा व्यय जो बहुत ही बुरे आघात या प्रहार के रूप मे हो। जैसे—इनके फेर मे सौ रुपये का जूता तुम्हे भी लगा (अर्थात् तुम्हे भी व्यर्थ सौ रुपए खर्च करने पडे)।

पद—चाँदी का जूता=घूस आदि के रूप मे धन का ऐसा व्यय जो किसी को दबाकर अपने अनुकूल या वश मे करने के लिए हो। नगद रिश्वत। जैसे—चाँदी का जूता तुम्हे भी ठीक या (सीधा) कर देगा।

जूताखोर—वि० [हिं० जूता+फा० खोर] जो बार-बार अपमानित और तिरस्कृत होने पर भी निंदनीय आचरण या व्यवहार न छोडता हो। परम निर्लज्ज और हीन।

जूति—पु० [स०√जू (वेग)+क्तिन्] वेग। तेजी।

जूतिका—स्त्री० [स० जूति√कै (प्रकाशित होना)+क–टाप्] एक तरह का कपूर।

जूतिया—पु०=जीवत्पुत्रिका (व्रत)।

जूती—स्त्री० [हिं० जूता] १ स्त्रियो के पहनने का जूता जो अपेक्षया कुछ छोटा और हलका होता है।

विशेष—इससे सबद्ध अधिकतर मुहावरे मुख्यत स्त्रियो मे ही चलते है।

मुहा०—जूतियाँ चटकाना=व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना या मारे-मारे फिरना। **(किसी की) जूतियाँ सीधी करना**=बहुत ही तुच्छ और हीन बनकर किसी की छोटी-छोटी सेवाएँ तक करना। **(किसी को) जूती की नोक पर मारना**=बहुत ही उपेक्ष्य, तुच्छ या हेय समझना। **जूती के बराबर**=बहुत ही तुच्छ, नगण्य या महत्त्वहीन। **(किसी की) जूती के बराबर न होना**=किसी की तुलना मे बिलकुल तुच्छ या नगण्य होना। **(किसी को) जूती पर रखकर रोटी देना**=किसी को बहुत ही तुच्छ और हीन ठहराते हुए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना।

जूतीकारी—स्त्री० [हिं० जूती+कार] लगातार जूतो की मार। (परिहास) जैसे—जब तक इसकी जूतीकारी न होगी तब तक यह सीधा न होगा।

जूतीखोर—वि०=जूताखोर।

जूतीछिपाई—स्त्री० [हिं० जूती+छिपाना] १ विवाह के समय की एक रसम जिसमे बधू की बहने और सहेलियाँ वर को तग करने के लिए उसके जूते कही छिपाकर रख देती है। २ उक्त रसम के बाद वह धन या नेग जो जूता चुरानेवाली लडकियो को दिया जाता है।

जूती-पैजार—स्त्री० [हिं० जूती+फा० पैज़ार] १ आपस मे होनेवाली जूतो की मार-पीट। २ बहुत ही बुरी तरह से या नीच लोगो की तरह होनेवाली कहा-सुनी या लडाई झगडा।

जूथ—पु०=यूथ।

जूथका—स्त्री०=यूथिका (जूही)।

जूथिक—स्त्री०=यूथिका (जूही)।

जून—पु० [स० द्युवन्=सूर्य] समय। बेला।

पु० [स० जूर्ण] तिनका। तृण।

पु० [अ०] ईसवी सन् का छठा महीना।

†स्त्री० [स० योनि] योनि। जैसे—कुत्ते-बिल्ली की जून पाना।

जूना—पु० [स० जूर्ण=एक तृण] १ घास-फूस आदि बटकर बनाई हुई रस्सी जो बोझ आदि बाँधने के काम आती है। २ घास-फूस आदि का पूला।

†वि० [स० जीर्ण] १ पुराना। २ बुड्ढा। वृद्ध।

पु० [देश०] १ एक प्रकार का पौधा जो प्राय बागो मे शोभा के लिए लगाया जाता है। २ उक्त पौधे का पीले रग का सुन्दर फूल।

जूप†—पु० [स० द्यूत, प्रा० जूव] १ जूआ (खेल)। २. विवाह के उपरान्त वर और वधू को खेलाया जानेवाला जूए का एक खेल।

पु० [स० यूप] खभा। स्तम्भ। उदा०—कित गए वे सब भूप जूप लारे बजमारे।—नददास।

जूमना—अ० [अ० जमा] इकट्ठा होना। जुटना।

†स० इकट्ठा करना। जुटाना।

जूर—पु० [हिं० जुरना] १ जोडकर रखी हुई चीजो का समूह। सचय। २ ढेर। राशि।

जूरना†—स०=जोडना।

स० [हिं० जूरी] एक पर एक रखकर गड्डियाँ या थाक लगाना।

जूरा†—पु० [स० यून] [स्त्री० अल्पा० जूरी] घास या पत्तो का पूला। जुट्टी।

पु०=जूडा।

जूर्ण—पु० [स०√जूर् (बढना)+क्त] एक प्रकार का तृण।

जूर्णि—स्त्री० [स० ज्वर् (रोग)+नि] १ तेजी। वेग। २ देह। शरीर। ३ स्त्रियो का एक रोग।

वि० १ वेगवान्। तेज। २ गला हुआ। द्रवित। ३ तपानेवाला। ४ प्रशसा या स्तुति करनेवाला। ५ खुशामदी।

पु० १ सूर्य। २ ब्रह्मा। ३ क्रोध। गुस्सा।

जूर्ति—स्त्री० [स०√ज्वर्+क्तिन्] ज्वर।

जूलाई—स्त्री० [अ०] अगरेजी सन् का सातवाँ महीना।

जूव—वि० [स० युवा] नौजवान। युवक।

स्त्री०=युवती।

जूषण—पु० [स०√जूष् (सेवा करना)+ल्युट्–अन] १ धाय का पेड, जो फूलो के लिए लगाया जाता है। २ उक्त पेड का फूल।

जूस—पु० [स० जूष्] १ तरकारी, दाल आदि उबालने पर उसका वह पानी या रसा जो प्राय दुर्बल रोगियो को पथ्य के रूप मे दिया जाता है। २ रोगी को दिया जानेवाला पथ्य या बहुत हलका पेय पदार्थ। ३ तरकारियो आदि का झोल या रसा। शोरबा। ४. पके हुए फल का निचोडा हुआ रस।

वि० [फा० जुफ्त, मि० स० युक्त] जो गिनती या सख्या मे युग्म या सम

ठहरे। ताक या विषम का विपर्याय। जैसे—२, ४, १०, २० सब गिनती के विचार से जूस और ३, ५, ११, १९ ताक है।

जूस ताक—पु० [हि० जूस+फा० ताक] एक प्रकार का जूआ जिसमे, मुट्ठी मे कौडियाँ भरकर विपक्षी से पूछा जाता है कि इनकी सख्या सम है या विषम।

जूसी—स्त्री० [हि० जूस] ऊख के रस को उबालकर गाढा करते समय उसमे से निकलने वाली गाढी तल-छट। चोटा।

जूह—पु० [स० यूथ, प्रा० जूह] १ झुड। २ समूह।

जूहर—पु०=जौहर।

जूही—स्त्री० [स० यूथी] १ चमेली की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूलो की गध भीनी तथा मधुर होती है। २ उक्त पौधे का फूल।

जृंभ—पु० [स०√जृभ् (जभाई लेना)+घञ्] १ जँभाई। २ आलस्य।

जृंभक—वि० [स०√जृम्भ्+ण्वुल्-अक] जँभाई लेनेवाला।
पु० १ रुद्र या शिव का एक गण। २ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। (कहते हैं कि इसके चलने पर विपक्षी योद्धाओ को जँभाइयाँ आने लगती थी और वे सो जाते थे।)

जृभण—पु० [स०√जृम्भ्+ल्युट्-अन] जँभाई लेना।

जृंभमान—वि० [स०√जृम्भ्+शानच्] १ जो जँभाई ले रहा हो। जँभाइयाँ लेता हुआ। २ चमकता हुआ। प्रकाशमान्।

जृंभा—स्त्री० [स०√जृभ्+अ-टाप्] १ जँभाई। २ आलस्य। ३ साहित्य मे, एक सात्विक अनुभाव जो आलस्य से उत्पन्न माना गया है।

जृंभिका—स्त्री० [स० जृभा+कन्+टाप्, इत्व] १ जृम्भा। जँभाई। २ आलस्य। ३ एक रोग जिसमे रोगी को प्राय जँभाई आती रहती हैं और वह धीरे-धीरे शिथिल होता जाता है।

जृंभी (भिन्)—वि० [स०√जृभ्+णिनि] १ जम्हाई लेनेवाला। २. विकसित होनेवाला।

जेंगना*—पु०=जुगनूँ।

जेंगरा—पु० [देश०] वह कटा हुआ डठल जिसमे से अनाज के दाने निकाल लिए गए हो।

जेंताक—पु० [स०] एक प्रक्रिया जिसके द्वारा रोगी को शरीर मे इसलिए गरमाहट पहुँचाई जाती है कि उसे पसीना आये और उसके साथ ही रोग के कीटाणु आदि भी निकल जायँ।

जेंना*—स०=जीमना (भोजन करना)।

जेंवन†—पु० [हि० जेवना] १ जीमने अर्थात् भोजन करने की क्रिया या भाव। २ खाने के लिए बनी या परोसी हुई सामग्री। भोज्य पदार्थ।

जेंवना—स० [स० जेमन] भोजन करना। जीमना।
पु०=जेंवन (भोज्य पदार्थ)।

जेंवनार—स्त्री०=ज्योनार।

जेंवाना—स० [हि० जेवना] अच्छी तरह से भोजन कराना। जिमाना।

जे—सर्व० [स० यै] १ =जो। २ ='जो' का बहु० रूप।
अव्य० जो। यदि। (भोजपुरी)।

जेइ—सर्व० १ =जो। २ =जिसने।

जेउँ*—क्रि० वि० [स० य+इव] ज्यो। जिस प्रकार। उदा०—आपु करै सब भेस मुहमद चादर ओट जेउँ।—जायसी।

जेऊ†—सर्व०=जो।

जेकर—सर्व० [हि० जे=जो+कर=का] जिसका।

जेकरा—सर्व०=जेकर (जिसका)।

जेज*—पु० [देश०] देर। विलम्ब। उदा०—हजरत गढ कीजे हलो, करो जेज किण कज्ज।—बाँकीदास।

जेट—स्त्री० [स० यूथ] १ ढेर। समूह। २ एक पर एक करके रखी हुई एक तरह की चीजो की तही। थाक। जैसे—कसोरो या हँडियो की जेट, पूरियो या रोटियो की जेट।
†स्त्री० [?] क्रोड। गोद।

जेटी—स्त्री० [अ०] समुद्र तट पर बना हुआ वह स्थान जहाँ पर से जहाजो पर माल लादा तथा उतारा जाता है। गोदी।

जेठस—पु० [हि० जेठ (ज्येष्ठ)+अस (अश)] १ पैतृक सपत्ति मे होनेवाला बडे भाई का अश। २ उक्त अश प्राप्त करने का बडे भाई का अधिकार।

जेठंसी—स्त्री०=जेठस।

जेठ—वि० [स० ज्येष्ठ, प्रा०-जिट्ठ, गु० प० जेठ, सिं० जेठु, का० झेठु, प० ब० और मरा० जेठ] १ बडा। २ मुख्य। ३ उत्तम।
पु० * [स्त्री० जेठानी] १ पति का बडा भाई। २ वैशाख और आषाढ के बीच का महीना।

जेठरा—वि०=जेठा।

जेठरैत—पु० [हि० जेठा+अ० रैत] १ गाँव मे सब से बडा या सयाना आदमी। २ गाँव का मुखिया।
वि० जेठा। बडा।

जेठवा—वि० [हि० जेठ] १ जेठ—सबधी। २ जेठ मे होनेवाला।
पु० एक प्रकार की बढ़िया कपास जो जेठ मास मे तैयार होती है। झुलवा।

जेठा—वि० [स० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] [भाव० जेठाई] १ अवस्था या वय मे औरो से बडा। जैसे—जेठा लडका। २ अपेक्षया अच्छा या बढ़िया। ३ सब के अन्त मे और सब से बढकर आने या होनेवाला। जैसे—कपडे की रँगाई मे जेठा रग।

जेठाई—स्त्री० [हि० जेठा] १ जेठ होने की अवस्था या भाव। जेठापन। २ बडप्पन। महत्त्व।

जेठानी—स्त्री० [हि० जेठ] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से, उसके पति के बडे भाई की स्त्री।

जेठी—वि० [हि० जेठ+ई (प्रत्य०)] १ जेठ-सबधी। जेठ मास का। २ जेठ मास मे होनेवाला। जैसे—जेठी धान। ३ हि० 'जेठा' का स्त्री० रूप।
स्त्री० १ जेठ मास का शेषाश जिसमे अगली फसल के लिए जमीन जोती जाती है। २ जेठ मे होनेवाली एक प्रकार की कपास। ३ जेठ मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

जेठी-मधु—स्त्री० [स० यष्टिमधु] मुलेठी।

जेठुआ—वि० [हि० जेठ] १ =जेठा। २ दे० 'जेठी'।

जेठौत (ा)†—पु० [स० ज्येष्ठ+पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ अर्थात् पति के बडे भाई का पुत्र।

जेणि—सर्व० [स० येन] जिसने। उदा०—आरभ मैं कियो जेणि उपायौ। —प्रिथीराज।

जेतवार†— वि०=जैतवार (जीतनेवाला)।

जेतव्य—वि० [स०√जि (जीतना)+तव्यत्] १ जीते जाने के योग्य। २ जो जीता जा सके।

जेता (तृ)—वि० [स०√जि+तृच्] जिसे जय या विजय प्राप्त हुई हो। जीतनेवाला। विजयी।

पु० विष्णु।

†वि०, क्रि० वि० [स्त्री० जेती]=जितना।

जेतार—वि० [स० जित्वर] जीतनेवाला। जेता।

जेतिक—क्रि० वि० [हिं० जितना] जितना।

जेन-केन—क्रि० वि०=येन-केन (जैसे-तैसे)।

जेना† —स०=जीमना।

†वि०=जितना।

जेन्यावसु—पु० [स०√जि या√जन् (उत्पत्ति)+णिच्+डेन्य,+वसु, ब० स०] १ इन्द्र। २ अग्नि।

जेब—पु० [फा०] कमीज, कुरते, कोट आदि मे प्राय अन्दर की ओर लगी हुई वह थैली जिसमे छोटी-मोटी चीजे रखी जाती हैं। खीसा।

स्त्री० [फा० जेब] १ शोभा। फबन। २ प्रोत्साहन। बढावा। (क्व०)

कि० प्र०—देना।—पाना।

†अव्य०=जिमि।

जेबकट†—पु०=जेबकतरा।

जेबकतरा—पु० [हिं० जेब+कतरना] वह व्यक्ति जो दूसरो के जेब काट कर उनमे से रुपये-पैसे निकाल लेता हो।

जेब खरच—पु० [हिं०] वह धन जो निजी या वैयक्तिक (पारिवारिक से भिन्न) आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए व्यय किया जाता हो, अथवा किसी को मिलता हो।

जेबघडी—स्त्री० [फा० जेब+हिं० घडी] जेब मे रखी जानेवाली चिपटी गोल घडी।

जेबदार—वि० [फा०] शोभा से युक्त। सुन्दर।

जेबरा† —पु०=जेबरा (पशु)।

जेबा—पु० [?] जिरह बख्तर। कवच। उदा०—जेबा खोलि राग सो मढे। लेजिम घालि इराकिन्ह चढे।—जायसी।

† पु०=जेब।

वि० [फा० जेबा] शोभाजनक।

जेबी—वि० [फा०] १ जो साधारणत जेब मे रखा जाता हो या रहता हो। जैसे—जेबी घडी, जेबी रूमाल। २ जो इतना छोटा हो कि जेब मे रखा जा सके। जैसे—किताब का जेबी सस्करण।

जेम—अव्य०=जिमि (जैसे)।

जेमन—पु० [सं०√जिम् (भक्षण)+ल्युट्-अन] १ भोजन करना। जीमना। २ ज्योनार।

जेय—वि० [स०√जि (जीतना)+यत्] जीते जाने के योग्य। जो जीता जा सके।

वि० [स० जय] जीतनेवाला। जेता। उदा०—अदेव देव जेय भीत रक्षमान लेखिए।—केशव।

जेर—वि० [फा० जेर] [भाव० जेरबारी] १ नीचे आया या लाया हुआ। २ पराजित। परास्त। ३ अधिकार या वश मे किया हुआ। ४ जिसे बहुत तग या परेशान किया गया हो।

क्रि० वि० नीचे। तले।

पु० [?] सुन्दर वन मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

स्त्री० दे० 'ऑवल' (खेडी)।

जेरना*—स० [हिं० जेर] १ पराजित करना। २ अधिकार या वश मे करना। ३ तग या परेशान करना।

जेरपाई—स्त्री० [फा०] १ स्त्रियो की जूती। २ जूता।

जेरबंद—पु० [फा०] घोडे के साज की मोहरी मे लगा हुआ तस्मा जिसका दूसरा सिरा तग मे बाँधा जाता है।

जेर-बार—वि० [फा० जेरबार] [भाव० जेरबारी] १ विपत्ति, सकट आदि से दबा हुआ। २ व्यय आदि के भार से दबा हुआ।

जेरी—स्त्री० [?] १ चरवाहो के हाथ मे रहनेवाला डडा या लाठी। २ खेती-बारी का एक उपकरण।

स्त्री० [फा० जेर=नीचे] तग या परेशान होने की अवस्था या भाव।

जेल—पु० [अ०] वह घिरा हुआ स्थान जिसमे राज्य द्वारा दडित अपराधी कुछ समय तक दड भोगने के लिए बद करके रखे जाते है।

क्रि० प्र० —काटना।—भोगना।

†स्त्री० [फा० जेर] परेशानी।

जेलखाना—पु० [अ० जेल+फा० खान] वह इमारत जिसमे अपराधी दड भोगने के लिए बद करके रखे जाते है। कारागार।

जेलर—पु० [अ०] जेल का अधिकारी या प्रबधक।

जेलाटीन—स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बढिया गधहीन और पारदर्शक सरेस जो हलके पीले रग का होता है और जिसका प्रयोग औषधो, छाया-चित्रो और रासायनिक प्रक्रियाओ मे होता है।

जेली—स्त्री० [हिं० जेरी] घास या भूसा इकट्ठा करने का एक उपकरण। पाँचा।

जेवडी— स्त्री०=जेवरी।

जेवना†— स०=जीमना।

जेवनार—स्त्री० [हिं० जेवना] बहुत से लोगो का प्राय किसी विशिष्ट अवसर पर एक साथ बैठकर खाना। प्रीति-भोज। दावत।

जेवर—पु० [फा० जेवर] आभूषण। गहना।

पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

†स्त्री०=जेवरी।

जेवरा—पु०=ज्योरा।

पु० [हिं० जेवरी] मोटा रस्सा।

जेवरात—पु० [फा० 'जेवर' का बहु० रूप] बहुत से आभूषण।

जेवरी—स्त्री० [स० जीवा] रस्सी।

जेवाँ—पु० [हिं० जेवना] भोजन। उदा०—बिनु ससि सूरहि भाव न जेवाँ।—जायसी।

जेष्ठ—पु० [स० ज्येष्ठ] जेठ या ज्येष्ठ मास।

वि० अवस्था या वय मे बडा। जेठा।

पु०=जेठ (सभी अर्थो मे)।

जेष्ठा—स्त्री० [स० ज्येष्ठा]=ज्येष्ठा।

जेसिड पतग—पु० [?] कपास की पत्तियो मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा जिसके पर शरीर के दोनो ओर छप्पर की तरह लटके होते है।

जेह—स्त्री० [स० ज्या से फा० जिह्=चिल्ला] १ धनुष की डोरी मे का वह अश जो खीचकर आँख के पास लाया जाता है तथा निशाने की सीध मे रखा जाता है। चिल्ला। २ दीवार के नीचेवाले भाग मे होनेवाला पलस्तर जो साधारणत कुछ अधिक मोटा होता है।

क्रि० प्र०—उतारना।—निकालना।

जेहड—स्त्री० [हि० जेट+घट] एक के ऊपर एक करके रखे हुए जल से भरे घडे।

जेहडि—अव्य० [?] १ ज्योही। २ जैसे ही। (डि०)

जेहन—पु० [अ० जेहन] [वि० जहीन] समझने-बूझने की योग्यता या शक्ति। धारणा-शक्ति। बुद्धि।

जेहनदार—वि०=जहीन (तीक्ष्ण बुद्धिवाला)।

जेहर—स्त्री० [?] पैर मे पहनने की पाजेब।

जेहरि—स्त्री०=जेहर (पाजेब)।

जेहल—स्त्री० [फा० जिहल] [वि० जेहली] १ बेवकूफी। मूर्खता। २ हठ। जिद।

†पु०=जेल।

जेहलखाना†—पु०=जेलखाना।

जेहली†—वि०[फा० जिहल] जो कोई बात समझाने-बुझाने पर जल्दी न समझता हो।

जेहवा—क्रि० वि०[स्त्री० जेहवी]=जैसा।

जेहा—क्रि० वि० [स्त्री० जेही]=जैसा।

जेहि*—सर्व० [स० यस्] १ जिसको। जिसे। २ जिससे।

जैता—पु० [स० जयती] जैत का पेड।

जै†—स्त्री०=जय।

†वि०=जितने।

जैकरी†—पु०=जयकरी।

जैकार†—स्त्री०=जयकार।

जैगीषव्य—पु० [स० जिगीषु+यञ्] एक मुनि जो योग शास्त्र के वेत्ता थे।

जैजैकार†—स्त्री०=जयजयकार।

जैजैवती—स्त्री० [स० जयजयवती] प्रात काल गाई जानेवाली भैरव राग की एक रागिनी।

जैढक—पु० [स० जय+हि० ढक्का] एक प्रकार का बडा ढोल। जगी ढोल।

जैत—स्त्री० [स० जिति] जीत। जय। विजय।

पु० [स० जयती] अगस्त की तरह का एक पेड।

†पु०=जैतून।

जैतपत्र†—पु० [स० जितिपत्र] जयपत्र।

जैतवार—वि० [स० जित्वर] जीतनेवाला। विजयी। उदा०—सूर सरदार जैतवार दिगपालन कौ —सेनापति।

जैतश्री—स्त्री० [स० जितिश्री] एक रागिनी।

जैती—स्त्री० [स० जयतिका] एक तरह की घास।

जैतू—पु० [अ०] जैतून का तेल।

जैतून—पु० [अ०] १ एक सदाबहार पेड जिसके फल दवा के काम आते है। २ उक्त वृक्ष के फल अथवा उनका तेल जो दवा के काम आता है।

जैत्र—पु० [स० जेतृ+अण्] [स्त्री० जैत्री] १ विजेता। विजयी। २ पारा। ३ औषध। दवा।

जैत्री—स्त्री० [स० जैत्र+ङीप्] जैत का पेड। जयती।

जैन—पु० [स० जिन+अण्] १ भारत का एक प्रसिद्ध अनीश्वरवादी धार्मिक सप्रदाय जिसका प्रवर्त्तन महावीर स्वामी ने बुद्ध के समय मे किया था। २ उक्त धार्मिक सप्रदाय का व्यक्ति।

जैनी—वि० [हि० जैन] १ जैन धर्म-सबधी। २ जैनियो का।

पु० जैन धर्म को माननेवाला व्यक्ति। जैन-धर्मावलबी।

जैनु—पु० [हि० जेवना] आहार। भोजन।

जैन्य—वि० [स० जैन+यत्] जैन सबधी।

जैपत्र†—पु०=जयपत्र।

जैफर†—पु०=जायफल।

जैबो†—अ०=जाना।

जैमगल—पु० [स० जयमगल] १ एक तरह का वृक्ष। जयमगल। २. राजा की सवारी का हाथी।

जैमाल(ा)†—स्त्री०=जयमाल।

जैमिनि—पु०[स०] एक ऋषि जो महर्षि वेद व्यास के शिष्य तथा जो पूर्व मीमासा के रचयिता थे।

जैमिनीय—वि० [स० जैमिनि+छ—ईय] १ जैमिनी सम्बन्धी। २ जैमिनी द्वारा बनाया हुआ। जैमिनीकृत।

जैयद—वि० [अ० जद्द=बहुत बडा] १ बहुत बडा या भारी। २ प्रचड। प्रबल। ३ घोर। विकट।

जैल—पु० [अ०] १ पहनने के कपडे का अगला भाग। आगा। दामन। २ नीचे की ओर का अश या स्थान। ३. किसी मद, विभाग या शीर्षक के अतर्गत आनेवाली बाते। ४ इलाका। भू-भाग।

जैलदार—पु० [अ० जैल+फा० दार] मुसलिम शासन-काल मे किसी इलाके का प्रधान शासनिक अधिकारी।

जैव—वि० [स० जीव+अण्] १ जीव-सबधी। जीव का। २. जीवो से उत्पन्न होने, निकलने, बनने या मिलनेवाला। ३ बृहस्पति-सबधी।

पु० १ बृहस्पति के क्षेत्र मे पडनेवाली धनु राशि और मीन राशि। २ पुष्य नक्षत्र।

जैवातृक—पु० [स०√जीव् (जीना)+णिच्+आतृ+कन्] १ कपूर। २ चद्रमा। ३ औषधि। दवा।

वि० बडी उमरवाला। दीर्घायु।

जैवेय—पु० [स० जीव+ढक्-एय] बृहस्पति के पुत्र कच।

जैस*—वि०=जैसा।

जैसवार†—पु०=जायसवाल।

जैसा—वि० [स० यादृश, प्रा० जारिस, पैशा० जइस्सो] [स्त्री० जैसी] १ जिस आकार-प्रकार या रूप-रग का। जिस तरह का।

पद—जैसा का तैसा=जिस रूप मे पहले था, वैसा ही। **जैसे को तैसा**=(क) जोड या मुकाबले का। (ख) पूरी शक्ति से जवाब देने या सामना

करनेवाला। जैसा उपयुक्त या समीचीन हो। जैसा होना चाहिए या होता हो।

मुहा०—(किसी की) जैसी की तैसी करना=किसी की शेखी दूर करके उसे फिर पूर्व अवस्था या रूप मे कर दिखाना। (उपेक्षा और तिरस्कार-सूचक)

२ समान। सदृश। ३. जितना। (क्व०)

जैसे—अव्य० [हिं० जैसा] १ जिस तरह से। जिस प्रकार।

पद—जैसे-जैसे=जिस क्रम से। ज्यो-ज्यो। **जैसे-तैसे**—(क) बहुत ही साधारण और तुच्छ रूप मे। किसी प्रकार। जैसे—वह तो जैसे-तैसे काम-चलता करता है। (ख) बहुत कुछ कठिनता से। जैसे—जैसे-तैसे यह झगडा भी खतम हुआ। **जैसे बने वैसे**=जिस प्रकार सभव हो। जिस तरह हो सके।

२ उदाहरणार्थ। यथा।

जैसो—वि०=जैसा।

जोक—स्त्री० [स० जलौका] १ पानी मे रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीडा जो अन्य जीवो के शरीर मे चिपक कर उनका रक्त चूसता है।

क्रि० प्र०—लगवाना।—लगना।

२ ऐसा व्यक्ति जो अपना काम निकालने के लिए बुरी तरह से पीछे पडता हो। ३ सेवार की बनी हुई चीनी साफ करने की एक प्रकार की चलनी या छाननी।

जोंकी—स्त्री० [हिं० जोक] १ जोक नाम का कीडा। २ वह जलन जो पशुओ के पेट मे पानी के साथ जोक उतर जाने के कारण होती है। ३ पानी मे रहनेवाला एक प्रकार का लाल कीडा। ४ लोहे का एक प्रकार का काँटा जो दो तख्तो या पत्थरो को मजबूती के साथ जोडने के काम मे आता है। ५ चित्र कला मे ऐसी फदेदार या लहरिएदार बेल जो देखने मे जोक की तरह जान पडती हो।

जोग—पु० [√जुग् (वर्जन) +अप्, पृषो० सिद्धि] अगर या अगरु नाम की सुगधित लकडी।

जोगट—पु० [स०√जुग् +अटन्] गर्भिणी स्त्री की इच्छा। दोहद।

जो जो—अव्य०=ज्यो-ज्यो।

जो तो—अव्य०=ज्यो-त्यो।

जोदरी—स्त्री०=जोधरी (ज्वार)।

जोधरा—पु० [हिं० जोधरी] बडे दानोवाली ज्वार।

जोधरी—स्त्री० [स० जूर्ण] एक तरह की ज्वार जिसके दाने अपेक्षया कुछ छोटे होते है।

जोधैया*—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना] चद्रमा की चाँदनी। चद्रिका।

जो—सर्व० [स० यत्, प्रा० जो, गु० सि० प० व० जे, मरा० जो] एक सबधवाचक सर्वनाम जिसका प्रयोग पहले कही हुई किसी बात अथवा पहले आई हुई सज्ञा, सर्वनाम या पद के सबध मे कुछ और कहने से पहले किया जाता है। जैसे—वही कविता सुनाइये जो आपने उस दिन सुनाई थी।

वि० किसी अज्ञात या अनिश्चित बात का सूचक विशेषण। जैसे—(क) जो बात कहनी हो कह डालो। (ख) जो चाहो सो करो।

अव्य० [स० यद्] यदि। अगर। (पु० हिं०)

जोअना†—स०=जोवना (देखना)।

जोइ—स्त्री० [स० जाया] पत्नी। भार्या। स्त्री।

†स्त्री० [?] बडा खेमा या तबू। (डिं०)

सर्व०=जो।

जोइगर†—पु० [हिं० जोइ+फा० गर] वह जिसकी पत्नी जीवित या वर्त्तमान हो।

जोइनि—स्त्री० [स० योनि] १ योनि। २ खान।

जोइसी†—पु०=ज्योतिषी।

जोई—स्त्री० [स० जाया] पत्नी। स्त्री०। उदा०—तुमहि पुरुष हमही तोर जोई।—कबीर।

अव्य०=जो ही।

स्त्री० [फा०] १ ढूंढने की क्रिया या भाव। जैसे—ऐबजोई। २ अनुकूल, प्रसन्न या सन्तुष्ट रखने की क्रिया या भाव। जैसे—दिल-जोई।

जोउ—सर्व०, अव्य०=जो।

जोक†—स्त्री०=जोक।

जोख—स्त्री० [हिं० जोखना] जोखने अर्थात् तौल या वजन करने की क्रिया या भाव।

जोखता—स्त्री०=योषिता (पत्नी)।

जोखना—स० [स० जोषण] १ तौलना। वजन करना। २ किसी बात पर मन ही मन अच्छी तरह विचार करके उसका ऊँच-नीच या भला-बुरा समझना।

जोखम†—स्त्री०=जोखिम।

जोखा—पु० [हिं० जोखना] १ जोखने अर्थात् तौलने की क्रिया या भाव। २ अच्छी तरह समझ कर ठीक करने की क्रिया या भाव। जैसे—लेखा-जोखा।

स्त्री० [स० योषा] स्त्री।

जोखाई—स्त्री० [हिं० जोखना] जोखने या तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोखिउँ*—स्त्री०=जोखिम।

जोखिता*—स्त्री० [स० योषिता] पत्नी। स्त्री।

जोखिम—स्त्री० [स० जोषण]. [वि० जोखिमी] १ ऐसी स्थिति जिसमे लाभ या हित की सभावना तो हो, पर साथ ही अहित, सकट या हानि की सभावना भी कम न हो। जैसे—जिस काम मे जोखिम हो, उसमे बहुत सोच-समझकर हाथ डालना चाहिए।

क्रि० प्र०—उठाना।—मे डालना या पडना।—सहना।

पद—जान-जोखिम=ऐसी स्थिति जिसमे प्राण छूट जाने की सभावना हो।

जोखिम धनी-सिर=एक पद जिसका प्रयोग व्यापारिक क्षेत्रो मे माल बेचने या भेजने के समय लिखा-पढी मे यह सूचित करने के लिए होता है कि यदि रास्ते मे हानि होगी तो उसका जिम्मेदार खरीदने-वाला होगा। (ओनर्स रिस्क)

२ अर्थ-शास्त्र मे, ऐसा काम जिसके लिए बहुत अधिक धन-शक्ति तथा साहस की अपेक्षा हो, फिर भी जिसकी सिद्धि अनिश्चित हो। झोकी। (देखें) ३ कोई ऐसा बहुमूल्य पदार्थ जिसके नष्ट होने या हारे जाने की सभावना हो। जैसे—जोखिम (गहने, धन आदि) साथ मे ले चलना ठीक नही है।

जोखिमी—वि० [हि० जोखम] जिसमे कोई जोखिम हो या हो सकती हो। जिसमे बहुत कुछ अहित, सकट या हानि की सभावना हो। जोखिम का। जैसे—जोखिमी काम, जोखिमी माल।

जोखुआ—पु० [हि० जोखना+उआ (प्रत्य०)] माल जोखने या तौलनेवाला। बया।
वि० जोखा या तौला हुआ। जैसे—जोखुआ अनाज।

जोखुवा—पु०=जोखुआ।

जोखों—स्त्री०=जोखिम।

जोगंधर—पु० [स० योगधर] शत्रु के अस्त्रो से आत्म-रक्षा करने की एक प्राचीन युक्ति।

जोग—पु० [स० योग] १ एक प्रकार के गीत जो कन्या और वर दोनो पक्षो मे विवाह से पहले गाये जाते है, जिनमे प्राय वैवाहिक विधियो का वर्णन होता है। २ जादू। टोना। (पूरब)
मुहा०—जोग करना=जादू या टोना करना।
३ दे० 'योग'। ४ दे० 'जोड'।
वि०=योग्य।
अव्य० पुरानी चाल की चिट्ठी-पत्रियो मे, के लिए। को। जैसे—पत्री भाई किशनचन्द्र जोग लिखा काशी से—।

जोगडा—पु० [हि० जोगी+डा (प्रत्य०)] १ जोगी (उपेक्षा-सूचक)। २ बना हुआ जोगी। नकली या बनावटी योगी।

जोगता†—स्त्री०=योग्यता।

जोगन†—स्त्री०=जोगिन।

जोगनिया—स्त्री०=जोगिनिया।

जोगनैर—पु० [स० योगिनीपुर] दिल्ली। उदा०—जोगनैर जोतिग कहै, प्रभुसु होइ प्रथुराव।—चदवरदाई।

जोगमाया†—स्त्री०=योगमाया।

जोगवना—स० [स० योग+अवना (प्रत्य०)] १ योगियो का योगाभ्यास करना। २ उक्त के आधार पर कोई कठिन काम परिश्रम तथा यत्नपूर्वक करना। ३ यत्नपूर्वक कोई चीज सम्हाल कर रखना। ४ एकत्र या सचित करना। ५ किसी का आदर या सम्मान करने के लिए उसकी अच्छी-बुरी सभी तरह की बाते मानना, सहना और सुनना। ६ पूरा करना। ७ परखना। ८ प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोगवाट†—पु०=जोगौटा।

जोगसाधन—पु० [स० योगसाधन] १ तपस्या। २ परिश्रमपूर्वक किया जानेवाला कोई काम।

जोगा—वि० [स० योग्य] किसी काम के लिए उपयुक्त, योग्य या लायक। यौ० के अन्त मे। (स्त्रियाँ) जैसे—मरने-जोगा।
पु० [देश०] अफीम छानने पर उसमे से निकलनेवाली मैल। खूदड।

जोगाड़†—पु०=जुगाड।

जोगानल—स्त्री० [स० योगानल] वह अग्नि, जो योगबल से उत्पन्न की गई हो।

जोगिंद—पु० १.=योगीन्द्र। २ महादेव। (डि०)

जोगि†—स्त्री०=योगिन।

जोगिणी—स्त्री०=योगिनी।

जोगिन—स्त्री० [स० योगिनी] १ योग साधनेवाली विरक्त स्त्री। २ जोगियो या योगियो की तरह आचार-विचार, गेरुए वस्त्र पहनने और नियम, व्रत आदि का पालन करते हुए सयमपूर्वक रहनेवाली स्त्री, विशेषत किसी प्रकार के आराधन या प्रेम से युक्त उक्त प्रकार की स्त्री। ३ एक प्रकार की रण देवी। ४ पिशाचिनी। ५ एक प्रकार का झाडीदार पौधा जिसमे नीले रग के फूल लगते है। ६ दे० 'योगिनी'।

जोगिनिया—स्त्री० [हि० जोगिन]=जोगिन।
पु० १ एक प्रकार का बढिया अगहनी धान जिसका चावल कई वर्ष तक ठहरता है। २ एक प्रकार का आम।

जोगिनी—स्त्री०=जोगिन।

जोगिया—वि० [हि० जोगी+इया (प्रत्य०)] १ जोगी सबधी। जोगी का। जैसे—जोगिया भेस। २ योगियो के वस्त्रो के रग का। मटमैलापन लिये लाल। गेरुआ। गैरिक। जैसे—जोगिया कपडा।
पु० १ गेरू के रग की तरह का एक प्रकार का लाल रग जो कुछ मटमैलापन लिये हुए रहता है। २ जोगीडा। ३ जोगी। ४ सपूर्ण जाति का एक राग जो प्रात काल गाया जाता है।

जोगींद्र—पु०=योगीद्र।

जोगी—पु० [स० योगी] १ नाथ-पथी जगम शैव साधु। २ इस वर्ग के कुछ गृहस्थ जो प्राय सारगी पर भजन गाकर भीख माँगते है। ३. सपूर्ण जाति का एक राग जो प्रात काल गाया जाता है। जोगिया राग। ४ रहस्य सप्रदाय मे, मन। ५ दे० 'योगी'।

जोगीडा—पु० [हि० जोगी+डा (प्रत्य०)] १ होली के दिनो मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गँवारू गाना। २ उक्त गीत गाने-बजानेवाला व्यक्ति अथवा व्यक्तियो का दल।

जोगीश्वर†—पु०=योगेश्वर।

जोगेश्वर—पु०=योगेश्वर।

जोगोटा†—वि०=जोगडा।

जोगौटा—पु० [स० योगपट्ट] १ जोगी। २ योगियो की वह चादर जिसे वे योग-साधना करते समय सिर से पैर तक ओढते है। ३ जोगियो की झोली।

जोग्य†—वि० [भाव० जोग्यता] योग्य।

जोजन†—पु०=योजन।

जोट—पु० [स० योटक] १ जोडा। जोडी। २ सगी। साथी। ३ झुड। ४ समूह। उदा०—बाहर जुन्हाई जगी जोतिन की जोट ही।—देव।
वि० बराबरी का।

जोटा—पु० [स० योटक] १ दो चीजो का जोडा। २ सगी। साथी। ३ पशुओ की पीठ पर लादा जानेवाला दोहरा थैला या बोरा। गोन। ४ दे० 'जोडा'।
वि० [स्त्री० जोटी] १ बराबरी का। २ साथ रहने या होनेवाला।

जोटिंग—पु० [स० जोट√इग् (प्रकाशित करना)+अच्, पृषो०] शकर। शिव।

जोटी†—स्त्री०=जोडी।

जोड़—पु० [स० जुड] १ जुडने या जुडे हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दो वस्तुओ का आपस मे इस प्रकार जुडा, मिला या सटा होना कि वे या तो एक हो जायँ या देखने मे एक जान पडे। ३ वह सधि

या स्थान जहाँ दो या अधिक चीजे आपस मे मिली या सटी हुई हो। जैसे—हड्डियो का जोड, पहुँचे और बाँह का जोड, तख्तो या पत्थरो मे का जोड।
क्रि० प्र०—उखडना।—बैठाना।—लगाना।
४ वह अग या अश जो किसी दूसरी चीज के साथ जोडा या उसमे लगाया गया हो। ५ दो या अधिक चीजो को आपस मे जोडने या मिलाने पर उनके सधि स्थान मे दिखाई देनेवाला चिह्न या लक्षण। जैसे—कुरसी के हत्थे मे का जोड साफ दिखाई पडता है।
पद—जोड़-तोड़। (दे०)
६ ऐसा मिलान या सयोग जो उपयुक्त, तुल्य अथवा सुदर जान पडे। जैसे—उन दोनो पहलवानो का जोड तो अच्छा है। ७ उक्त के आधार पर होनेवाली बराबरी। गुण, धर्म आदि के विचार से होनेवाली समानता। जैसे—उस लडके के साथ तुम्हारा क्या जोड है।
क्रि० प्र०—बैठाना।—मिलाना।
८ एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम मे आनेवाली दो या अधिक चीजे। जैसे—एक जोड कपडा (अर्थात् कुरता, टोपी और धोती अथवा कमीज या कोट, टोपी और पाजामा) भी साथ रख लो। ९ दे० 'जोडा'। १० गणित मे, दो या दो से अधिक अको, सख्याओ आदि के जुडे हुए होने या जोडने की क्रिया, अवस्था या भाव। ११ इस प्रकार जोडने से प्राप्त होनेवाली सख्या। †१२ धन आदि का सग्रह।
जोड़ती—स्त्री० [हिं० जोड+ती (प्रत्य०)] जोड (गणित का)।
जोड़-तोड़—पु० [हिं०] १ कभी जोडने और कभी तोडने की क्रिया या भाव। २ कौशल या धूर्त्तता से की जानेवाली ऐसी युक्तियाँ जिनसे कही कोई क्रम या परम्परा जुडती और कही टूटती हो। कार्य-साधन के लिए चालाकी और दाँव-पेच से मिली हुई कार्रवाई।
क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।
जोड़न†—स्त्री० [हिं० जोडना] १ जोडने की क्रिया या भाव। २ वह दही या और कोई खट्टा पदार्थ जो दूध मे उसे जमाकर दही बनाने के लिए मिलाया जाता है। जामन।
जोड़ना—स० [स० √जुड्, हिं० जोड+ना (प्रत्य०)] १ दो या अधिक चीजो को किसी क्रिया या युक्ति से आपस मे इस प्रकार साथ बैठाना, लगाना या सटाना कि वे या तो एक हो जायँ या एक के समान काम दें और जान पडे। अच्छी तरह दृढतापूर्वक किसी के साथ मिलाना। जैसे—लकडी के तख्ते और पाये जोड कर कुरसी या मेज बनाना, कपडे के टुकडे जोड कर कुरता या चादर बनाना, लेई से फटे हुए कागज या पुस्तक के पन्न जोडना। २ किसी चीज मे का टूटा हुआ अग या अश उसमे फिर से इस प्रकार जडना, बैठाना या लगाना कि वह चीज फिर से पूरी हो जाय और पहले की तरह काम देने लगे। जैसे—पैर या हाथ की टूटी हुई हड्डी जोडना। ३ किसी चीज के भिन्न-भिन्न या सयोजक अगो को इस प्रकार क्रम से यथा-स्थान बैठाना, रखना या लगाना कि वह चीज पूरी तैयार होकर अपना काम करने लगे। जैसे—घडी के पुरजे या छापे के अक्षर जोडना, दीवार बनाने के लिए ईंटे, पत्थर आदि (मसाले से) जोडना। ४ पहले से जो कुछ रहा हो अथवा मूलत जो कुछ हो, उसमे अपनी ओर से कुछ और मिलाना या लगाना। वृद्धि करना। बढाना। जैसे—उसने वहाँ का हाल कहते समय अपनी तरफ से भी कई बाते जोड दी थी। ५ एक ही तरह की बहुत-सी चीजे इकट्ठी करके एक केन्द्र मे लाना या एक स्थान पर रखना। एकत्र या सगृहीत करना। जैसे—धन-सपत्ति जोडना, सग्रहालय के लिए चित्र, पुस्तके, मूर्तियाँ आदि जोडना। उदा०—कौडी-कौडी माया जोडी, जोड जमी मे धरता है। ६ गणित मे दो या अधिक सख्याओ का योग-फल प्रस्तुत करना। मीजान लगाना। ७ लिखना-पढना सीखने अथवा साहित्यिक रचना का अभ्यास करने के लिए अक्षर, पद, वाक्य आदि उपयुक्त क्रम से बैठाना, रखना या लिखना। जैसे—अक्षर जोड कर शब्द बनाना, शब्द जोडकर कविता का चरण या पक्ति बनाना। ८ किसी के साथ किसी प्रकार का सबध स्थापित करना। जैसे—किसी के साथ नाता या मित्रता जोडना। ९ अग्नि, दीपक आदि के सबध मे, जलनेवाली चीज के साथ अग्नि का सयोग कराना। जैसे—रसोई बनाने के लिए आग जोडना, प्रकाश करने के लिए दीआ जोडना। १० गाडी, हल आदि के सबध मे, घोडे या बैल लाकर आगे बाँधना। जोतना। (क्व०) जैसे—तुरत रथ जोडा गया और वे चल पडे।
जोड़ला†—वि०=जुडवाँ।
जोड़वाँ†—वि०=जुडवाँ।
जोड़वाई—स्त्री० [हिं० जोडवाना] जोडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
जोड़वाना—स० [हिं० जोडना का प्रे०] जोडने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ जोडने मे प्रवृत्त करना।
जोड़ा—पु० [हिं० जोडना] [स्त्री० जोडी] १ प्राय एक साथ रहने, साथ-साथ काम आने या साथ रहने पर उपयुक्त जान पडनेवाले दो पदार्थ या व्यक्ति। जोडी। युग्म। जैसे—धोतियो का जोडा, हाथ मे पहनने के कडो या पहुँचियो का जोडा।
क्रि० प्र०—मिलाना।—लगाना।
२ एक साथ पहने जानेवाले दो या अधिक कपडे। जोड।
पद—जोड़ा-जामा। (दे०)
३ एक ही प्रकार के जीवो, पशु-पक्षियो आदि के नर और मादा का युग्म। जैसे—वर और कन्या का जोडा, शेर और शेरनी का जोडा, बिच्छुओ और साँपो का जोडा।
मुहा०—जोड़ा खाना=पशु-पक्षियो का मैथुन या सभोग करना।
४ दोनो पैरो मे पहनने के दोनो जूते। ५ वह जो किसी दूसरे की बराबरी या समता का हो। जोड। ६ दे० 'जोड'।
जोड़ाई—स्त्री० [हिं० जोडना+आई (प्रत्य०)] १ जोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दीवार बनाने के समय क्रम से ईंटे रखने या लगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
जोड़ा-जामा—पु० [हिं० जोडा+फा० जाम] १ विवाह के समय वर के पहनने के सब कपडे जो प्राय उसकी ससुराल से आते हैं। २ पहनने के वे कपडे जो राजाओ आदि से लोगो को पुरस्कार-स्वरूप मिलते थे। खिलअत।
जोड़ासंदेस—पु० [देश०] छेने की एक बँगला मिठाई।
जोड़ी—स्त्री० [हिं० जोडा] १ एक ही आकार-प्रकार, गुण और धर्मवाली दो चीजे। जैसे—मुगदरो की जोडी। २ सग-साथ रहनेवाले दो जीवो विशेषत एक ही जाति के एक नर और एक मादा (जीवो) की सामूहिक सज्ञा। जैसे—बैलो की जोडी, भैसो की जोडी। ३ वह गाडी जिसे दो घोडे या दो बैल खीचते हैं। जैसे—पहले के रईस जोडी पर निकला

करते थे। ४ एक साथ रहनेवाले दो मुग्दर जो कसरत करने के समय दोनो हाथो मे पकड कर घुगाये जाते हे।

क्रि० प्र०—भाँजना।

५ एक मे बँधी हुई कटोरियो के तरह की वे दोनो चीजे जो गाने-बजाने के समय ताल देने के काम आती है। मजीरा।

क्रि० प्र०—बजाना।

६ दे० 'जोड'।

जोडी की बैठक स्त्री० [हिं० जोडी=मुग्दर+बैठक=कसरत] वह बैठको (कसरत) जो मुदग्रो की जोडी पर हाथ टेक कर की जाती है।

जोडीदार—पु० [हिं० जोडी+फा० दार] वह जो किसी के साथ उसकी बराबरी का होकर रहता हो।

वि० मुकाबले का।

जोडीवाल—पु० [हिं० जोडी+वाला (प्रत्य०)] १ गाने-बजानेवालो के साथ जोडी या मजीरा बजानेवाला। २ दे० 'जोडीदार'।

जोडआ—पु० [हिं० जोडा+उआ (प्रत्य०)] पैर मे पहनने का चाँदी का एक प्रकार का सिकडीदार गहना।

†वि०=जुडवाँ।

जोड —स्त्री०=जोरू।

जोत—स्त्री० [हिं० जोतना] १ जोतने की क्रिया या भाव। २ वह विशिष्ट अधिकार जो किसी असामी को कोई जमीन जोतने-बोने पर उसके सबध मे प्राप्त होता है।

क्रि० प्र०—लगना।

३ उतनी भूमि जितनी एक असामी को जोतने-बोने आदि के लिए मिली हो अथवा उसके अधिकार मे हो। ४ चमडे आदि की वे लबी पट्टियाँ या रस्सियाँ जो घोडो, बैलो आदि के पार्श्वो मे उनकी गरदन से एक्के, गाडी, हल तक इस लिए बँधी रहती है कि उन पशुओ के चलने से वह चीज भी चलने लगे जिसमे वे बँधे रहते है। ५ वह रस्सी जिससे तराजू की डडी से बँधे हुए उसके पल्ले लटकते रहते है।

†स्त्री० [स० ज्योति] १ ज्योति। २ शरीर मे रहनेवाली आत्मा जो परमात्मा की ज्योति के रूप मे मानी जाती है।

मुहा०—जोत मे जोत समाना=आत्मा का शरीर मे से निकलकर परमात्मा के साथ मिल जाना। उदा०—इक मुरछा गत सी आय गई और जोत मे जोत समाय गई।—नजीर।

३ देवी-देवता आदि के सामने जलाया जानेवाला घी का दीआ। ४. चित्रकला मे, चेहरे के चारो ओर दिखाया जानेवाला प्रभा-मडल।

जोतखी—पु०=ज्योतिषी।

जोतगी—पु०=ज्योतिषी।

जोतदार—पु० [हिं० जोत+दार] वह असामी जो दूसरे की भूमि पर खेती-बारी करता हो।

जोतना—स० [स० योजन या युक्त, प्रा० जुत्त+ना] १ कोई चीज घुमाने या चलाने के लिए उसके आगे कोई पशु लाकर बाँधना। जैसे—एक्के, गाडी आदि मे घोडा (या घोडे) अथवा कोल्हू, मोट, रथ आदि मे बैल जोतना।

विशेष—इस क्रिया का प्रयोग स्वय उन यानो के सबध मे भी होता है जिनके आगे पशु बाँधे जाते है (जैसे—एक्का, गाडी या रथ जोतना) और उन पशुओ के सबध मे भी होता है जो उनके आगे बाँधे जाते है (जैसे —घोडा या बैल जोतना)।

२ उक्त के आधार पर किसी को जबरदस्ती या विवश करके किसी काम मे लगाना। जैसे—शिक्षक ने लडको को भी उस काम मे जोत दिया। ३ खेत को बोये जाने के योग्य बनाने के लिए उसमे हल चलाना। ४ एक दम से, ऊपर से या कही से कोई चीज या बात लाकर उसी का क्रम चलाने लगना। जैसे—तुम अपनी ही जोतते रहोगे या दूसरे किसी को भी कुछ करने (या कहने) दोगे।

जोतनी—स्त्री० [हिं० जोतना] जुए मे लगी हुई वह रस्सी जो जोते जाने-वाले पशु के गले मे बाँधी जाती है।

जोतसी†—पु० =ज्योतिषी।

जोतात—स्त्री० [हिं० जोतना] खेत की मिट्टी की ऊपरी तह।

जोता—पु० [हिं० जोतना] १ जुआँठे मे बँधी हुई वह रस्सी जिसमे बैलो की गरदन फँसाई जाती है। २ करघे मे दोनो ओर बँधी हुई वह रस्सियाँ जो ताने के दोनो सिरो पर सूतो को यथास्थान रखने के लिए बँधी रहती है। ३ वह बडी धरन या शहतीर जो खभो या उनकी पक्तियो पर इसलिए रखते है कि उसके ऊपर और इमारत उठाई जा सके।

†वि० जोतनेवाला (यौ० के अत मे)। जैसे—हल-जोता=हल जोतने-वाला।

†पु०=किसान (खेतिहर)।

जोताई—स्त्री० [हिं० जोतना+आई (प्रत्य०)] जोते जाने या जोतने की अवस्था, क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोतात†—स्त्री०=जोतात।

जोताना—स० [हिं० जोतना का प्रे० रूप] जोतने का काम किसी दूसरे से कराना।

जोति—स्त्री० [स० ज्योति] १ किसी देवी-देवता के सामने जलाया जाने-वाला दीया। जोत।

क्रि० प्र०—जलाना।

२ दे० 'ज्योति'।

†स्त्री० [हिं० जोतना] ऐसी भूमि जो जोती-बोई जाती हो या जोती-बोई जा सकती हो।

जोतिक†—पु०=ज्योतिषी।

जोतिख†—पु०=ज्योतिष।

जोतिखी†—पु०=ज्योतिषी।

जोतिर्लिंग†—पु०=ज्योतिर्लिंग।

जोतिवत*—वि० [स० ज्योतिवान्] १ ज्योति अर्थात् प्रकाश से युक्त। प्रकाशमान्। २ चमकदार।

जोतिष†—पु०=ज्योतिष।

जोतिषी†—पु०=ज्योतिषी।

जोतिस†—पु०=ज्योतिष।

जोतिहा—पु० [हिं० जोतना+हा (प्रत्य०)] १ खेत जोतनेवाला मजदूर। २ कृषक। खेतिहर।

जोती—स्त्री० [हिं० जोतना या जोत] १ घोडे, बैल आदि की लगाम। रास। २ चक्की मे की वह रस्सी जो उसके बीचवाली कीली और

हत्थे मे बँधी रहती है। ३ वह रस्सी जो खेत सीचने की दौरी मे बँधी रहती है। ४ वह रस्सी जिससे तराजू के पल्ले बँधे रहते है।
†स्त्री०=ज्योति।

जोत्स्ना†—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

जोध—पु०=योद्धा।

जोधन—स्त्री०[स० योग+धन] वह रस्सी जिससे जूए के ऊपर और नीचे-वाले भाग आपस मे बँधे रहते है।

जोधा—पु०=योद्धा।

जोधार†—पु०[हिं० जोधा] योद्धा।

जोन†—स्त्री०=योनि।

जोनरी—स्त्री०=जोन्हरी (ज्वार)।

जोना†—स० [हिं० जोवना] १ देखना। २ प्रतीक्षा करना। बाट देखना।

जोनि†—स्त्री०=योनि।

जोन्ह—स्त्री०[स० ज्योत्स्ना] चद्रमा की चाँदनी। चद्रिका। ज्योत्स्ना।

जोन्हरी—स्त्री०[?]=जोवरी (ज्वार)।

जोन्हाई—स्त्री०[स० ज्योत्स्ना]=जोन्ह।

जोन्हार—पु०=जोवरी (ज्वार)।

जोन्हि—स्त्री०=जुन्हाई (चाँदनी)।

जोप—पु०=यूप (यज्ञ का)।

जोपै—अव्य० [हिं०जो+पर] १ अगर। यदि। २ यद्यपि।

जोफ—पु०[अ०]१ वृद्धावस्था। बुढापा। २ शारीरिक दुर्बलता। कमजोरी। जैसे—जिगर, दिमाग या मेदे का जोफ।

जोबन—पु०[स०]१ युवा होने की अवस्था या भाव। यौवन। २ युवा-वस्था मे होनेवाली तेज, लावण्य और सौन्दर्य मिश्रित शारीरिक गठन। जैसे—पेड या पौधे मे जोबन आना।
मुहा०— जोबन पर आना=पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त करना।
३ युवा स्त्रियो मे स्पष्ट दिखाई देनेवाला आकर्षक और मोहक रूप या रोनक। सौन्दर्य।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढना।—ढलना।
मुहा०—(किसी का) जोबन लूटना=किसी स्त्री के साथ भोग-विलास करना। (बाजारू)
४ स्त्रियो के कुच। स्तन। ५ एक प्रकार का पौधा और उसका फल।

जोबना—स०=जोवना।
†पु०=जोबन।

जोम—पु० [अ० ज़ोम] १ उमग। उत्साह। २ आवेश। जोश। ३ शक्ति आदि का अभिमान। घमड।
क्रि० प्र०—दिखाना।
४ तीक्ष्णता। तीव्रता।
†पु०[?]१ झुड। २ समूह।

जोय—स्त्री०[स० जाया]१ जोरू। पत्नी। २ औरत। स्त्री।
†सर्व०१ =जो। २ =जिस।

जोयण—पु०=योजन।

जोयना—स०[स० ज्योति]आग, दीया आदि जलाना। उदा०—दीपक जोय कहा करूँ सजनि पिय परदेश रहावे।—मीराँ।
स०=जोवना (देखना)।

जोयसी†—पु०=ज्योतिषी।

जोर—पु०[फा० जोर][वि० जोरदार, जोरावर]१ शरीर का बल या शक्ति। ताकत।
मुहा०—(किसी चीज पर) जोर डालना या देना=शरीर का भार आश्रित या स्थिर करना।
२ शारीरिक बल या शक्ति के फल-स्वरूप दिखाई देनेवाला उत्साह, तेज, दृढता, सामर्थ्य आदि। ओज।
मुहा०—किसी काम के लिए जोर करना, बाँधना मारना या लगाना=विशेष शक्ति लगाकर प्रयत्न करना। जैसे—तुम लाख जोर मारो पर होगा कुछ नहीं।
३ आर्थिक, मानसिक, शारीरिक या और किसी प्रकार की योग्यता या सामर्थ्य। जैसे—धन का जोर, विद्या का जोर आदि। ४ कोई ऐसी क्रियात्मक प्रबल शक्ति जो अपना गुण, प्रभाव या फल स्पष्ट दिखाती हो। जैसे—दवा, नशे या बीमारी का जोर।
मुहा०—जोर करना या बाँधना=उग्र, उत्कट या विकट रूप धारण करना। जैसे—शहर मे आजकल हैजे ने जोर बाँधा है।
५ अति, वेग आदि के रूप मे दिखाई देनेवाली क्रिया की प्रबलता। जैसे—नदी मे पानी के बहाव का जोर, आँधी या तूफान के समय हवा का जोर।
पद—जोरो का=बहुत उग्र, प्रबल या विकट। जैसे—जोरो की वर्षा।
६ किसी कृति मे दिखाई देनेवाली रचना-कौशल, विशिष्ट दक्षता या योग्यता अथवा आकर्षक, उत्साहवर्द्धक या मनोरजक तत्त्व। ओज। दम। जैसे—कलम, कविता या कहानी का जोर। ७ अनुभूति, आग्रह, तर्क आदि मे दिखाई देनेवाला बल या शक्ति। जैसे—किसी बात पर दिया जानेवाला जोर, खून या मुहब्बत का जोर। ८ उत्कर्ष, प्रबलता, वृद्धि आदि की ओर होनेवाली प्रवृत्ति।
मुहा०—जोर मे आना या जोरो पर होना=जल्दी-जल्दी बढना या तेज होना। जैसे—(क) अब यह पेड जोरो मे आया है, अगले साल खूब फलेगा। (ख) आज-कल शहरो मे चोरियाँ और देहातो मे डाके खूब जोरो पर है।
९ ऐसा आधार या साधन जिससे किसी को कुछ विशेष बल या साहस प्राप्त हो। सहारा। जैसे—उनकी यह सारी उछल-कूद राजकीय अधिकारियो के जोर पर है। १० अधिकार। वश। जैसे—आप पर हमारा कोई जोर तो है नही। ११ कसरत। व्यायाम। जैसे—अखाडे मे लडके जोर करने जाते है। १२ किसी अग से अधिक अथवा अनुचित रूप से काम लिए जाने के फलस्वरूप होनेवाला हानिकारक परिणाम या प्रभाव। जैसे—आँखो या आँतो पर जोर पडना। १३ शतरज के खेल मे, वह स्थिति जिसमे किसी मोहरे को मुफ्त मे या व्यर्थ मारे जाने से रोकने के लिए कोई और मोहरा भी किसी तरफ लगा रहता है। जैसे—घोडे पर हाथी का जोर है, हमारा घोडा मारोगे तो तुम्हारा वजीर मरेगा।
मुहा०—जोर पहुँचाना=उक्त के आधार पर ऐसा काम करना जिससे किसी पर दबाव या प्रभाव पडे। जैसे—अफसर या हाकिम पर जोर पहुँचाना।
क्रि० वि० अपने कार्य, फल आदि के विचार से असाधारण तेज या बहुत

अधिक। काफी। खूब। जैसे--चना जोर गरम। उदा०--तौ मै बहुत कठोर जोर इन चने चबाये।--दीनदयालगिरि।

*पु०=जोड (जोडी या युग्म)।

जोरई—स्त्री०[हिं० जोड]१ एक ही मे बँधे हुए दो बाँस जिसके सिरे पर मोटी रस्सी का फदा लगा रहता है। २ हरे रग का एक प्रकार का कीडा।

जोरदार—वि० [फा०] १ (व्यक्ति) जिसमे जोर अर्थात् बल हो। २ (बात) जो तत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली हो।

जोरन†—स्त्री०=जोडन (देखे)।

जोरना—स०१=जोडना। २ =जोतना।

जोर शोर—पु०[फा०]किसी काम को पूरा करने के लिए लगाया जानेवाला जोर और दिखाया जानेवाला उत्साह तथा प्रयास।

जोरा†—पु०=जोडा।

जोराजोर†—पु०=जोर शोर।

जोरा जोरी—स्त्री०[फा० जोर]किसी से हठात् कुछ लेने या छीन लेने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। जबरदस्ती।

क्रि० वि० बलपूर्वक। बलात्।

जोरावर—वि० [फा०] १ बलवान। २ जबरदस्त। शक्तिशाली।

जोरावरी—स्त्री० [फा०] १ जोरावर या बलवान होने की अवस्था, गुण या भाव। २ जबरदस्ती। धीगा-धीगी।

जोरिल्ला—पु० [देश०] एक प्रकार का गध बिलाव।

जोरी†—स्त्री० १=जोरावरी। २=जोडी।

जोरू—स्त्री० [हिं० जोडा] पत्नी। भार्या। स्त्री।

पद—जोरू का गुलाम=ऐसा व्यक्ति जो पत्नी के वश मे रहकर उसके कहे अनुसार चलता हो। स्त्री-भगत। **जोरू-जाँता**—पत्नी, घर-गृहस्थी और बाल-बच्चे।

जोल†—पु० [?] झुड। समूह।

†पु० =जोर। (क्व०)

जोलाह=†—पु०=जुलाहा।

जोलाहल—स्त्री०=ज्वाला।

जोलाहा†—पु०=जुलाहा।

जोली—वि० [हिं० जोडी] १ वह जिसके साथ बहुत मेल-जोल हो। सगी। साथी। २ बराबरी का। समवयस्क। ३ प्राय साथ रहनेवाला। जैसे—हम-जोली।

स्त्री० [हिं० झोली] १ जाली या किरमिच का बना हुआ एक प्रकार का बिस्तर जिसके दोनो सिरो पर अदवान की तरह कई रस्सियाँ होती है और जो वृक्षो आदि मे लटकाकर काम मे लाया जाता है। २ वह रस्सी जो जहाजो के पाल चढाने-उतारने के काम मे आती है। (लश०) ३ रस्सो के सिरो को बाँधने के लिए उनमे लगाई जानेवाली एक प्रकार की गाँठ।

जोलो*—पु०[?]अतर। फरक।

जोवण*—पु०=यौवन।

जोवना—स०[स० जुषण=सेवन]१ ध्यानपूर्वक देखना। २ प्रतीक्षा करना। जोहना। ३ तलाश करना। ढूंढना।

जोवारी—स्त्री०[देश०] मैना पक्षी की एक जाति।

जोश—पु०[फा०]१ आँच या गरमी के कारण द्रव-पदार्थ मे आनेवाला उफान। उबाल।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

२ वह मनोवेग जिसके कारण मनुष्य अकर्मण्यता, आलस्य या तटस्थता छोडकर किसी कार्य मे आवेश, उत्साह या तत्परतापूर्वक अग्रसर या प्रवृत्त होता है।

क्रि० प्र०—आना।—दिलाना।

पद—खून का जोश=प्रेम का वह वेग जो अपने कुल, परिवार या वश के किसी मनुष्य के प्रति हो। जैसे—वह उसके खून का जोश ही था जिससे वह अपने लडके (या भाई) को बचाने के लिए जलते हुए मकान मे घुस गया था। **जोश-खरोश**=बहुत उत्सुकतापूर्ण आवेश या मनोवेग।

जोशन—पु०[फा०] १ बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। २ कवच। जिरहबक्तर। (क्व०)

जोशाँदा—पु०[फा०]१ ओषधियो, जडी-बूटियो आदि को उबालकर बनाया हुआ काढा। २ एक मे मिली हुई वे सब ओषधियाँ जिनका काढा बनाया जाता है। जैसे—जोशाँदे की पुडिया।

जोशी—पु०=जोषी।

जोशीला—वि०[फा० जोश+ईला (प्रत्य०)]१ (व्यक्ति) जो जोश मे हो अथवा जिसे बहुत जल्दी जोश आ जाता हो। २ जोश मे आकर अथवा दूसरो को जोश मे लाने के लिए कहा या किया हुआ। जैसे—जोशीला भाषण।

जोष—पु०[स०√जुष्(प्रेम करना)+घञ्] १ प्रीति। प्रेम। २ आराम। सुख। ३ सेवा।

*स्त्री०[स० योषा] १ पत्नी। भार्या। २ नारी। स्त्री।

*स्त्री०=जोख।

जोषक—पु०[स०√जुष्+ण्वुल्-अक] सेवक।

जोषण—पु०[स०√जुष्+ल्युट्-अन] १ प्रेम। प्रीति। २ सेवा।

जोषा—स्त्री०[स० जोष+टाप्] नारी। स्त्री।

जोषिका—स्त्री०[स० जोषक+टाप्, इत्व] १ स्त्री। २ कलियो का गुच्छा।

जोषिता—स्त्री०[स०=योषिता, पृषो० य को ज] औरत। नारी। स्त्री।

जोषी—पु० [स० ज्योतिषी] १ गुजराती, महाराष्ट्र आदि ब्राह्मणो की एक जाति का अल्ल। २. दे० 'ज्योतिषी'।

जोस†—पु०=जोश।

जोसीडा—पु०[स० ज्योतिषी] पुरोहित। उदा०—जोसिडा ने लाख बधाई रे।—मीराँ।

जोह—स्त्री०[हिं० जोहना] १ जोहने की क्रिया या भाव। २ खोज। तलाश। ३ प्रतीक्षा। ४ कृपापूर्ण दृष्टि। कृपा-दृष्टि।

जोहड—पु०[देश०] कच्चा तालाब।

जोहन—स्त्री०[हिं० जोहना] जोहने की क्रिया या भाव। दे० 'जोह'।

जोहना—स० [स० जुषण=सेवन] १ अच्छी तरह ध्यानपूर्वक देखना २ कुछ ढूँढने या पाने के लिए इधर-उधर देखना। तलाश करना। ढूँढना। ३ प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोहर†—पु०=जोहड।
पु०=जौहर।
जोहार†—स्त्री०[स० जुषण=सेवन] मुख्यत क्षत्रियो मे प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन या नमस्कार।
†पु०=जौहर।
जोहारना—अ० [हि०] प्रणाम या नमस्कार करना। अभिवादन करना।
जौं—अव्य०[स० यदि] जो। यदि।
†अव्य०=ज्यो।
जौंकना—स०[अनु० झाँव-झाँव] १ रोष जतलाते हुए ऊँचे स्वर मे बोलना। २ एकाएक बहुत जोर से चिल्ला या बोल उठना।
जौंची—स्त्री०[देश०] एक रोग जिसमे पौधो की बाले (जैसे—गेहूँ, चने आदि की बाले) काली पड कर मुरझा जाती है।
जौंड—स्त्री०=जेवडी (रस्सी)।
जौंडा†—पु०=जौरा।
जौंरा—पु०=जौरा।
जौंरा भौंरा—पु०[हि० भुइँहरा] १ किले या राजमहल का वह तहखाना जिसमे प्राचीन काल मे राजे, नवाब आदि सुरक्षा की दृष्टि से सोना-चाँदी, हीरे-मोती रखते थे।२ एक साथ जन्म लेनेवाले दो बालक। ३ प्राय या बराबर साथ रहनेवाले दो व्यक्ति।
जौंरे—क्रि० वि०[फा० जवार] निकट। समीप।
जौ—पु०[स० यव] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानो या बीजो को पीसकर बनाया हुआ चूर्ण रोटी बनाने के काम आता है।
विशेष—यह पौधा गेहूँ के पौधे से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है।
२ उक्त पौधे का दाना या बीज जो गेहूँ के दाने की अपेक्षा कुछ बडा तथा लबोतरा होता है। ३ ६ राई की एक तौल। ४ एक पौधा जिसकी लचीली टहनियो से टोकरे आदि बनते है। मध्य एशिया के प्राचीन खडहरो मे इसकी बनी हुई टट्टियाँ भी पाई गई है।
*अव्य० १=जो (अगर या यदि)। २=जब।
सर्व०=जो।
जौक—पु०[तु०जूक=सेना] १ सेना। फौज। २ गोल। झुड। ३ जत्था मडली। ४ पक्ति। श्रेणी।
पु०[अ० जौक] किसी वस्तु या वस्तु से प्राप्त होनेवाला आनद या सुख।
पद-जौक शौक=आनद, उत्साह और प्रसन्नता।
जौ केराई—स्त्री०[हि० जौ+केराव] केराव या मटर के साथ मिला हुआ जौ।
जौख†—पु०=जौक।
जौगढवा—पु०[जौगढ=कोई प्रदेश] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।
जौचनी—स्त्री० [हि० जौ+चना] एक मे मिले हुए जौ तथा चने के दाने या बीज।
जौजा—स्त्री० [अ० जौज] जोरू। पत्नी।
जौजियत—स्त्री०[फा० जौजियत] जौजा अर्थात् जोरू या पत्नी होने की अवस्था या भाव।
जौतुक—पु०=यौतुक (दहेज)।
जौधिक—पु० [स० यौधिक] तलवार चलाने का एक ढग, प्रकार या हाथ।
जौन—सर्व०[स० य हि० जो] जो।
वि०=जो।
पु०=यवन।
स्त्री०=योनि।
जौनाल—स्त्री० [स० यव+नाल] १ जौ के पौधे का डठल और बाल। २ वह भूमि जिसमे जौ बोया जाता हो। ३ ऐसी भूमि जिसमे रबी की कोई सफल होती हो।
जौन्ह†—स्त्री०=जोन्ह (चाँदनी)।
जौपै—अव्य०[हि० जौ+पै=पर] अगर। यदि।
जौबति†—स्त्री०=युवती।
जौबन†—पु०=जोबन।
जौम†—पु०=जोम (ताकत)।
जौर—पु० [फा०] अत्याचार। जुल्म।
जौरा—पु०[हि० जूरा] वह अनाज जो गाँवो मे नाई, बारी आदि पौनियो को उनके काम के बदले मे प्रति वर्ष दिया जाता है।
†पु०[हि० जेवडी] बडा रस्सा।
†पु०=यमराज।
जौलाई† स्त्री०=जूलाई (महीना)।
जौलाय—वि० [?] बारह। (दलाल)
जौशन—पु०=जोशन।
जौहड†—पु० [पहलवी आबे-जोहर=पवित्र-जल] १ वह गड्ढा जिसमे बरसाती जल जमा होता हो। २ छोटा ताल।
जौहर—पु०[फा० गौहर का अरबी रूप] १ कोई बहुमूल्य पत्थर। जैसे—नीलम, पन्ना, हीरा आदि। २ किसी बात, वस्तु या व्यक्ति मे निहित वे तात्त्विक और मौलिक बाते जो उसके गुणो, दोषो, विशेषताओ, त्रुटियो आदि की परिचायक या सूचक होती है। जैसे—आदमी का जौहर विकट परिस्थितियो मे, बहादुरो का जौहर लडाई के मैदान मे अथवा सोने का जौहर उसे तपाने पर खुलते हैं।
क्रि० प्र०—खुलना।
३ उक्त के आधार पर लोहे के धारदार औजारो, हथियारो आदि के सबध मे विशिष्ट प्रकार के वे चिह्न या धारियाँ जो लोहे की उत्तमता की सूचक होती हैं। जैसे—तलवार या कटार का जौहर। ४ उत्तमता। श्रेष्ठता।
पु०[स० जीव-हर] १ मध्य-युग मे राजपूत स्त्रियो की एक प्रथा जिसमे गढ या नगर के शत्रुओ से घिर जाने और अपने पक्ष की हार निश्चित होने पर वे एक साथ इस उद्देश्य से जलती चिता मे कूद पडती थी कि विजयी शत्रु हमारा अपमान तथा हम पर अत्याचार न करने पावे। २ उक्त उद्देश्य से बनाई हुई बहुत बडी चिता।
क्रि० प्र०—सँजोना।—सजाना।
३ आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए की जानेवाली आत्म-हत्या।
पु०=जौहड।
जौहरी—पु०[फा०] १ हीरा, लाल आदि बहुमूल्य रत्न परखने और बेचनेवाला व्यापारी। २ किसी काम, चीज या बात के गुण-दोष

आदि अच्छी तरह जानने और समझने वाला व्यक्ति। पारखी। जैसे—शब्दो का जौहरी।

ज्ञ—ज और ञ के योग से बना हुआ एक अक्षर जिसका उच्चारण हिंदी मे ग्य, मराठी मे 'द्न्य' और गुजराती मे 'ग्न' होता है।

पु०[स०√ज्ञा (जाना)+क] १ ज्ञानी पुरुष। २ ब्रह्म। ३ बुध नामक ग्रह। ४ मगल ग्रह। ५ ज्ञान। बोध।

वि० जाननेवाला। ज्ञाता। (शब्दो के अन्त मे) जैसे—गणितज्ञ, दैवज्ञ, शास्त्रज्ञ आदि।

ज्ञपित—वि० [स०√ज्ञा+णिच्+क्त, पुक्] १ जाना हुआ। ज्ञात। २ दूसरो को जतलाया या बतलाया हुआ। ४ तृप्त या सन्तुष्ट किया हुआ ५ मारा हुआ। हत। ६ (शस्त्र) चोखा या तेज किया हुआ। ७ प्रशसित या स्तुत।

ज्ञप्ति—स्त्री०[स०√ज्ञप् (जानना)+क्तिन्] १ कोई बात जानने या जनाने की क्रिया या भाव। २ जानी या जनाई हुई बात। ३ बुद्धि ४ मार डालना। मारण। ५ तुष्टि या तृप्ति। ६ प्रशसा। स्तुति। ७ जलाना।

ज्ञ-वार—पु०[स० ष० त०] बुधवार।

ज्ञा—स्त्री०[स० ज्ञ+टाप्] ज्ञान। जानकारी।

ज्ञात—भू० कृ० [स०√ज्ञा+क्त] जिसके विषय मे सब बाते मालूम हो। विदित। जाना हुआ।

पु०=ज्ञान।

ज्ञात-नंदन—पु०[स० ज्ञात√नद् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्यु—अन] जैनो के तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञात-यौवना—स्त्री०[ब० स०] साहित्य मे वह मुग्धा नायिका जिसे अपने तारुण्य या यौवन के आगमन का स्पष्ट रूप से आभास या भान होने लगा हो।

ज्ञातव्य—वि०[स०√ज्ञा+तव्यत्] १ जानने के योग्य (कोई महत्त्व पूर्ण बात)। २ जो जाना जा सके। बोध गम्य। ३ जो दूसरो को जतलाया जाने को हो।

ज्ञाता (तृ)—वि०[स०√ज्ञा+तृच्] [स्त्री० ज्ञात्री] जिससे किसी बात, विषय आदि का पूरा ज्ञान हो। जानकार।

ज्ञाति—पु०[स०√ज्ञा+क्तिच्] एक ही गोत्र या वश मे उत्पन्न मनुष्य। गोती। भाई-बधु। बाधव।

स्त्री०=जाति।

ज्ञाति-पुत्र—पु० [ष० त०] १ गोत्रज का पुत्र। २ जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञातृत्व—पु०[स० ज्ञातृ+त्व] अभिज्ञता। जानकारी।

ज्ञान—पु०[स०√ज्ञा+ल्युट्—अन] १ चेतन अवस्थाओ मे इद्रियो आदि के द्वारा बाहरी वस्तुओ, विषयो आदि का मन को होनेवाला परिचय या बोध। मन मे होनेवाली वह धारणा या भावना जो चीजो या बातो को देखने, समझने, सुनने आदि से होती है।

विशेष—न्यायदर्शन मे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चारो प्रमाणो को ज्ञान का मूल कारण या स्रोत माना गया है।

२ लोक-व्यवहार मे, शरीर की वह चेतना-शक्ति जिसके द्वारा जीवो, प्राणियो आदि को अपनी आवश्यकताओ और स्थितियो के अनुसार अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ और सब बातो की जानकारी या परिचय होता है। कुछ जानने, समझने आदि की योग्यता, वृत्ति या शक्ति। जैसे—(क) वनस्पतियो आदि मे भी इतना ज्ञान होता है कि वे गरमी, सरदी और दिन-रात का अनुभव करते है। (ख) उसकी चेष्टाओ से पता चलता था कि मरते समय तक उसका ज्ञान बना रहा।

विशेष—प्राणि-विज्ञान के अनुसार, हमारे सारे शरीर मे स्नायविक ततुओ का जो जाल फैला हुआ है, उसी की कुछ क्रियाओ से हमे सब बातो और विषयो का ज्ञान होता है। चेतना की दृष्टि से उक्त ततु-जाल का केन्द्र हमारे मस्तिष्क मे है, जहाँ सारा ज्ञान पहुँचकर एकत्र होता और हमसे सब प्रकार के काम कराता है।

३ किसी बात या विषय के सबध मे होनेवाली वह तथ्यपूर्ण, वास्तविक और सगत जानकारी या परिचय जो अध्ययन, अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग आदि के द्वारा प्राप्त होता है। जैसे—किसी कला, भाषा या विद्या का ज्ञान। ४ आध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्रो मे, आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक सबध, वास्तविक स्वरूप आदि और भौतिक जगत ससार की अनित्यता, नश्वरता आदि से सबध की होनेवाली अनुभूति, जानकारी या परिचय जो आवागमन के बधन से छुडाकर मुक्ति या मोक्ष देनेवाला माना गया है। तत्त्व-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान।

मुहा०—ज्ञान छाँटना या बघारना=अनावश्यक रूप से, बहुत बढ-बढकर और केवल अपनी जानकारी या पाडित्य दिखाने के उद्देश्य से ज्ञान सबधी तरह-तरह की बातें कहना।

ज्ञान-काड—पु०[ष० त०] वेद के तीन काडो या विभागो मे से एक जिसमे जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सबधो, स्वरूपो आदि पर विचार किया गया है।

ज्ञान-कृत—वि० [तृ० त०] (कार्य, व्यापार या पाप) जो ज्ञान रहते अर्थात् जान-बूझकर तथा सचेत अवस्था मे किया गया हो।

ज्ञान-गम्य—वि०[तृ० त०] (विषय) जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हो।

ज्ञान-गोचर—वि०[ष० त०] जो ज्ञान के द्वारा जाना जा सके।

ज्ञान-चक्षु (स्)—पु० [ष० त०] १ अतर्दृष्टि। २ बहुत बडा विद्वान्।

ज्ञानत (तस्)—क्रि० वि० [स० ज्ञान+तस्] ज्ञान रहने या होने की दशा मे। जान-बूझकर।

ज्ञानद—वि० [स० ज्ञान√दा (देना)+क] [स्त्री० ज्ञानदा] ज्ञान कराने या देनेवाला।

पु० गुरु।

ज्ञान-दा—स्त्री०[स० ज्ञानद+टाप्] सरस्वती।

ज्ञान-दाता (तृ)—वि० [ष० त०] ज्ञान कराने या देनेवाला।

पु० गुरु।

ज्ञान-दात्री—स्त्री०[ष० त०] सरस्वती।

ज्ञान-पति—पु०[ष० त०] १ परमेश्वर। २ गुरु।

ज्ञान-पिपासु—वि०[ष० त०] जो ज्ञान अर्थात् किसी विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता हो। ज्ञान का जिज्ञासु।

ज्ञान-प्रभ—पु०[ब० स०] एक तथागत का नाम।

ज्ञानमय—वि० [स० ज्ञान+मयट्] ज्ञान से युक्त। ज्ञान से भरा हुआ। पु० ईश्वर।

ज्ञान-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] राम की पूजा की एक मुद्रा। (तत्रसार)

ज्ञान-मूढ़—पु० [मध्य०स०] वह जो ज्ञानी होने पर भी मूढो या मूर्खो का-सा आचरण या व्यवहार करता हो।

ज्ञान-यज्ञ—पु० [तृ० त०] आत्मा और परमात्मा के अ-भेद का पूरा ज्ञान प्राप्त करके अपने आपको पूर्ण रूप से ईश्वर मे लीन कर देने की क्रिया या भाव।

ज्ञान-योग—पु० [कर्म०स०] वह योग या साधन जिसमे परमात्मा या ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य मोक्ष का अधिकारी बनता है।

ज्ञानवान् (वत्)—वि० [स० ज्ञान+मतुप्, वत्व] १ जिसे बहुत-सी बातो, विषयो आदि की जानकारी हो। २ योग्य तथा समझदार। ३ आत्मा और परमात्मा के अभेद का ज्ञाता।

ज्ञान-साधन—पु० [ष० त०] १ इद्रियाँ जिनकी सहायता से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। २ किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न।

ज्ञानाजन—पु० [ज्ञान-अजन, कर्म० स०] ब्रह्मज्ञान।

ज्ञानाकर—पु० [ज्ञान-आकर, ष०त०] बुद्ध।

ज्ञानाकार—पु० [ज्ञान-आकार, ष० त०] गौतम बुद्ध।

ज्ञानालय—पु० [ज्ञान-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ ज्ञान सबधी चर्चा या विवेचन हो और ज्ञान का लोक मे प्रचार होता हो। (इन्स्टिट्यूट)

ज्ञानावरण—पु० [ज्ञान-आवरण, ष० त०] १ वह चीज या परदा जो ज्ञान की प्राप्ति मे बाधक हो। २ वह पाप जिसका उदय होने पर ज्ञान प्राप्त नही होता।

ज्ञानावरणीयकर्म (र्मन्)—पु० [ज्ञान-आवरणीय, ष० त०, ज्ञानावरणीय कर्मन्, कर्म० म०]=ज्ञानावरण।

ज्ञानाश्रयी—वि० [स०] १ ज्ञान पर आश्रित। २ ज्ञान-सबधी।

ज्ञानाश्रयी शाखा—स्त्री० [स०] १ आध्यात्म एव धार्मिक साधना आदि मे एक प्रवृत्ति जिसमे भक्त भगवान् को ज्ञान द्वारा प्राप्त करने के सिद्धात का समर्थक होता है। २ हिन्दी साहित्य के इतिहास मे भक्तिकाल की एक धारा।

ज्ञानासन—पु० [ज्ञान-आसन, मध्य० स०] योग की सिद्धि का एक आसन।

ज्ञानी (निन्)—वि० [स० ज्ञान+इनि] १ जिसे ज्ञान या जानकारी हो। २ योग्य तथा समझदार।
पु० १ वह जिसे आत्म और ब्रह्म के स्वरूप का ठीक-ठीक ज्ञान हो चुका हो। ब्रह्मज्ञानी। २ चार प्रकार के भक्तो मे से एक जो सब बातो का ज्ञान रखकर भक्ति करता और इसी लिए सब मे श्रेष्ठ माना जाता है।

ज्ञानेंद्रिय—स्त्री० [ज्ञान-इद्रिय, मध्य० स०] आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँच इद्रियाँ जिनसे भौतिक विषयो का ज्ञान होता है।

ज्ञानोदय—पु० [ज्ञान-उदय, ष० त०] किसी प्रकार के ज्ञान का (मन मे) होनेवाला उदय।

ज्ञापक—वि० [स०√ज्ञा+णिच्+ण्वुल्-अक] १ ज्ञान प्राप्त करानेवाला। २ जतलाने, बतलाने या परिचय देनेवाला। व्यजक या सूचक (तत्त्व या बात)।

ज्ञापन—पु० [स०√ज्ञा+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० ज्ञापित, वि० ज्ञाप्य] कोई बात किसी को जतलाने, बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव।

ज्ञापित—भू० कृ० [स०√ज्ञा+णिच्+क्त] जिसकी जानकारी किसी को कराई जा चुकी हो। जतलाया या बतलाया हुआ।

ज्ञाप्य—वि० [स०√ज्ञा+णिच्+यत्] जिसका ज्ञान प्राप्त किया या कराया जा सकता हो।

ज्ञेय—वि० [स०√ज्ञा+यत्] १ जिसे जानना आवश्यक या कर्त्तव्य हो। जानने योग्य। २ जो जाना जा सके।

ज्या—स्त्री० [स०√ज्या (जीर्ण होना)+अङ-टाप्] १ धनुष की डोरी। २ वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अथवा किसी वृत्त के व्यास तक गई हो। ३ किसी वृत्त का व्यास। ४ माता। माँ। ५ पृथ्वी।

ज्यादती—स्त्री० [फा०] १ ज्यादा अर्थात् अधिक होने की अवस्था या भाव। अधिकता। २ अतिरिक्त होने की अवस्था या भाव। अतिरेक। ३ आवश्यक से अधिक अथवा अनावश्यक रूप से किया हुआ कडा या कठोर व्यवहार। अत्याचार।

ज्यादा—वि० [फा० ज़ियाद] मान या मात्रा मे आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। अधिक। बहुत। जैसे-किसी को ज्यादा बात नही कहनी चाहिए।

ज्यान*—पु० [फा० जियान] घाटा। नुकसान। हानि।
पु०=ज्ञान।

ज्याना*—स० [हिं० जिलाना] १ जीवित करना। प्राण डालना। जिलाना। २ जीवित रखना। ३ (पशु-पक्षी आदि) पालना-पोसना। उदा०—सुक सारिका जानकी ज्याए।—तुलसी।

ज्याफत—स्त्री० [अ० ज़ियाफत] १ दावत। भोज। २ आतिथ्य-सत्कार।

ज्या-मिति—स्त्री० [ब० स०] गणित का वह विभाग जिसमे पिडो की नाप-जोख, रेखा, कोण, तल आदि का विचार किया जाता है। रेखा-गणित। (ज्यामेट्री)

ज्यारना—स०=ज्याना (जिलाना)।

ज्यारा*—वि० [हिं० ज्याना] १ जीवन-दान देनेवाला। २ जिलाने अर्थात् पालने-पोसनेवाला।

ज्यारी—स्त्री० [हिं० जी=जीवट] १ कडे जी या दिलवाला। २ साहसी। हिम्मती।

ज्यावना†—स०=जिलाना।

ज्युति—स्त्री०=ज्योति।

ज्यूं—अव्य०=ज्यो।

ज्येष्ठ—वि० [स० वृद्ध+इष्ठन्, ज्य आदेश] [स्त्री० ज्येष्ठा] १ अवस्था मे जो अपने वर्ग के अन्य जीवो से सब से बडा हो। जैसे—ज्येष्ठ पुत्र। २ अधिक अवस्थावाला। वृद्ध। बुड्ढा। ३ जो किसी से पद, मर्यादा आदि की दृष्टि से ऊँचा या बढकर हो।
पु० १ ग्रीष्म ऋतु का वह महीना जो बैसाख के बाद और असाढ से पहले पडता है। २ फलित ज्योतिष मे वह वर्ष जिसमें बृहस्पति का उदय ज्येष्ठा नक्षत्र मे हो। ३ एक प्रकार का सामगान।

४ परमात्मा। परमेश्वर। ५ जीवनी-शक्ति। प्राण।

ज्येष्ठक—पु०[स० ज्येष्ठ+कन्] किसी नगर का प्रधान अधिकारी। (प्राचीन भारत)

ज्येष्ठता—स्त्री०[स० ज्येष्ठ+तल्-टाप्] १ ज्येष्ठ होने की अवस्था या भाव। २ बडप्पन। श्रेष्ठता।

ज्येष्ठ-बला—स्त्री०[मध्य० स०] सहदेई नाम की वनस्पति।

ज्येष्ठ-साम (मन्)—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रकार का साम। आरण्यक साम।

ज्येष्ठसामग—पु०[स० ज्येष्ठसामन्√गै (गाना)+क] आरण्यक साम पढनेवाला।

ज्येष्ठाबु—पु०[स० ज्येष्ठ-अबु, कर्म० स०] वह पानी जिसमे चावल धोये गये हो। चावलो की धोवन।

ज्येष्ठा—स्त्री०[स० ज्येष्ठ+टाप्] १ २७ नक्षत्रो मे से अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारो से मिलकर बना और कुडल के आकार का है। २ किसी व्यक्ति की कई पत्नियो मे से वह जो उसे सब से अधिक प्रिय हो। ३ हाथ की उँगलियो मे बीच की उँगली जो और सब उँगलियो मे बडी होती है। ४ गगा नदी। ५ पुराणानुसार अ-लक्ष्मी जो समुद्र मथने के समय लक्ष्मी से पहले निकली थी। ६ छिपकली।

ज्येष्ठाश्रम—पु० [स० ज्येष्ठ-आश्रम, कर्म० स०] गृहस्थाश्रम जो शेष सब आश्रमो का पालक होने के कारण उनमे बडा माना गया है।

ज्येष्ठाश्रमी (मिन्)—पु० [स० कर्म० स०] गृहस्थाश्रम मे रहनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ।

ज्येष्ठी—स्त्री० [स० ज्येष्ठ+डीष्] छिपकली।

ज्यो—अव्य० [स० य +इव] १ जिस तरह। जिस प्रकार। जैसे—उदा०—ज्यो मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी।—तुलसी।

पद—ज्यों का त्यो=(क) जैसा पहले हो, या रहा है, वैसा ही या उसी रूप मे। जैसे—वह ज्यो का त्यो नकल करके ले आया। (ख) जिसके पूर्व रूप के सबध मे कुछ भी काम न हुआ हो। जैसे—सारा ग्रथ ज्यो का त्यो पडा है। (ग) जिसमे कुछ भी अन्तर, परिवर्त्तन या फेर-बदल न हो या न किया जाय। जैसे—वह समूचा पेड ज्यो का त्यो उखाड लाओ। **ज्यो ज्यों**=जिस क्रम से। जिस मात्रा या मान मे। जितना। (वाक्य-रचना मे इसका नित्य सबधी त्यो त्यो होता है) जैसे—ज्यो ज्यो वह सयाना होता गया, त्यो त्यो वह स्वय अपने सब काम देखने और करने लगा। उदा०—ज्यो ज्यो भीजै कामरी त्यो त्यो गरुई होय। **ज्यो त्यो**=(क) कठिनाइयो और झझटो के रहते हुए भी किसी न किसी प्रकार। सहज मे या अच्छी तरह नही। जैसे—ज्यो त्यो ब्याह के कामो से छुट्टी पाई। (ख) जी न चाहते हुए भी। अनिच्छा या अरुचिपूर्वक। जैसे—ज्यो त्यो उनसे भी मेल हो गया। (ग) जिस प्रकार हो सके। जैसे—ज्यो त्यो सबको बुलवाओ। **ज्यो ही**=ठीक उसी क्षण या समय, जब कोई पहला काम पूरा हुआ हो। कोई काम होते ही ठीक उसी वक्त (इस अर्थ मे 'त्यो ही' इसका नित्य-सबधी होता है।) जैसे—ज्यो ही मैं घर से निकला, त्यो ही पानी बरसने लगा, (अथवा, आपका सँदेसा मिला)।

२ किसी के ढग, प्रकार या रूप से। किसी के अनुकरण पर। उदा०—भीम तैरते समय मगर ज्यो डुबकी साधे आते।—मैथलीशरण।

३ ठीक किसी दूसरे की तरह। किसी के तुल्य या समान। उदा०—प्रिय न था विदुर ज्यो जिसे अनय।—मैथलीशरण।

ज्योति शास्त्र—पु० [ज्योतिस्-शास्त्र, ष०त०] ज्योतिष। (देखे)

ज्योति शिखा—स्त्री० [ज्योतिस्-शिखा, ष० त०] १ जलती हुई लपट या लौ। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके चरण के पहले दल मे ३२ लघु और दूसरे दल मे १६ गुरु वर्ण होते है।

ज्योति सर—वि० [ज्योतिस्√सृ (गति)+ट, उप० स०] ज्योति मे चलने या सरकनेवाला। उदा०—पहले का-सा उन्नत विशाल ज्योति सर।—निराला।

ज्योति (तिस्)—स्त्री० [स०√द्युत् (प्रकाश)+इसुन्, ज आदेश] १ वह चमक और प्रकाश जो किसी चीज के जलने से उत्पन्न होता है। जैसे—अग्नि, दीपक या बिजली की ज्योति।

मुहा०—ज्योति जगाना या जलाना=किसी देवी देवता के पूजन के समय घी का दीया जलाना। २ कही से निकलनेवाला उज्ज्वल और चमकीला प्रकाश। जैसे—किसी महापुरुष की आँखो या मुखडे की ज्योति। ३ अग्नि। ४ ब्रह्म। ५ सूर्य। ६ विष्णु। ७ नक्षत्र। ८ आँख की पुतली के बीच का काला विन्दु। तिल। ९ दृष्टि। नजर। १० मेथी। ११ सगीत मे अष्ट-ताल का एक भेद।

ज्योतिक—पु०=ज्यौतिषी।

ज्योतित—वि० [स० द्योलित] १ ज्योति के रूप मे आया या लाया हुआ। २ ज्योति या प्रकाश से युक्त किया हुआ।

ज्योतिमान—वि०=ज्योतिष्मान्।

ज्योतिरिंग—पु० [स० ज्योतिस्√इग् (गमनादि)+अच्] जुगनूँ।

ज्योतिरिंगण—पु० [स० ज्योतिस्√इग्+ल्यु-अन] जुगनूँ।

ज्योतिर्बीज—पु० [ज्योतिस्-बीज, ब०स०] जुगनूँ।

ज्योतिर्मंडल—पु० [ज्योतिस्-मडल, ष० त०] आकाशस्थ तारो, नक्षत्रो आदि का मडल या लोक।

ज्योतिर्मय—वि० [स० ज्योतिस्+मयट्] बहुत अधिक ज्योति से युक्त। जगमगाता हुआ। परम प्रकाशमान्।

ज्योतिर्लिंग—पु० [ज्योतिस्-लिग, मध्य० स०] १ महादेव। शिव। २ शिव के मुख्य १२ लिंग जो भारत के भिन्न-भिन्न भागो मे स्थापित हैं।

ज्योतिर्लोक—पु० [ज्योतिस्-लोक, ष० त०] १ ध्रुव लोक जो काल-वक्र का प्रवर्त्तक माना गया है। २ उक्त लोक के अधिष्ठाता देवता, विष्णु। ३ परमात्मा। परमेश्वर।

ज्योतिर्विद्—पु० [स० ज्योतिस्√विद् (जानना)+क्विप्] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—स्त्री० [ज्योतिस्-विद्या ष० त०] ज्योतिष।

ज्योतिर्हस्ता—स्त्री० [ज्योतिस्+हस्त ब० स०] दुर्गा।

ज्योतिश्चक्र—पु० [ज्योतिस्-चक्र मध्य० स०] ग्रहो, नक्षत्रो, राशियो आदि का चक्र या मडल।

ज्योतिश्चुंबी (बिन्)—वि० [स०ज्योतिस्√ चुब् (चूमना)+णिनि] [स्त्री० ज्योतिश्चुबिनी] आकाशस्थ ज्योति को चूमने अर्थात् उसके बहुत पास तक पहुँचनेवाला, अर्थात् बहुत ऊँचा। गगनचुबी। उदा०—ज्योतिश्चुबिनी कलश-मधुकर छाया मे।—निराला।

ज्योतिश्छाया—स्त्री० [ज्योतिस्-छाया मध्य० स०] १ ज्योति अथवा

प्रकाश से युक्त छाया। २ ज्योति अथवा प्रकाश मे पडनेवाली छाया। उदा०--ज्योतिश्छाय केश-मुख वाली।—निराला।

ज्योतिष—पु० [स० ज्योतिस्+अच्] १ एक प्रसिद्ध विद्या या शास्त्र जिसमे इस बात का विचार होता है कि आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र आदि पिंड कितनी दूरी पर है, कितने दिनो मे किन मार्गो से चक्कर लगाते हैं, उनके कितने प्रकार के वर्ग या विभाग है आदि आदि।

विशेष—बहुत दिनो से इस शास्त्र के मुख्य दो विभाग चले आ रहे है—गणित और फलित। गणित ज्योतिष मे पहले प्राय उन्ही बातो का अनुसधान होता था जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। प्राचीन भारत मे इस शास्त्र की गणना छ वेदागो के अन्तर्गत होती थी। आज-कल पाश्चात्य ज्योतिष मे इस बात का भी विचार होने लगा है कि आकाशस्थ पिंडो की उत्पत्ति या जन्म किस प्रकार होता है, वे किन-किन तत्त्वो के बने हुए होते है और वे हमारी पृथ्वी से भी और आपस मे एक दूसरे से भी कितनी दूरी पर स्थित है।

२ आज-कल लोक-व्यवहार मे उक्त विद्या या शास्त्र का वह पक्ष या विभाग जिसमे इस बात का विचार होता है कि इस पृथ्वी के निवासियो, प्रदेशो आदि पर हमारे सौर जगत् के भिन्न-भिन्न ग्रहो, नक्षत्रो, राशियो आदि की स्थितियो पर कैसे-कैसे भौतिक प्रभाव पडते है। इसी आधार पर अनेक प्रकार के भविष्य कथन भी होते हैं और अनेक प्रकार के कार्यों के लिए शुभाशुभ मुहूर्त्त या समय भी बतलाये जाते है। ३ प्राचीन भारत मे अस्त्रो आदि का एक प्रकार का मारक या रोक जिससे शत्रुओ के चलाये हुए अस्त्र निष्फल किये जाते थे।

ज्योतिषिक—वि० [स० ज्योतिस्+ठक्-इक] ज्योतिष सबधी। ज्योतिष का। पु०=ज्योतिषी।

ज्योतिषी (षिन्)—पु० [स० ज्योतिष+इनि] १ ज्योतिष शास्त्र का जानने-वाला विद्वान्। दैवज्ञ। गणक। २ आज-कल मुख्यत फलित ज्योतिष का ज्ञाता या पडित जो ग्रहो की गति-विधि आदि के आधार पर भविष्यद्वाणी करता और पर्व, मुहूर्त्त आदि का समय स्थिर करता हो। स्त्री० [स० ज्योतिष+ङीष्] तारा।

ज्योतिष्क—पु० [स० ज्योतिष्√कै (प्रकाशित होना)+क] १ ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि आकाश मे रहनेवाले पिंड जो रात के समय चमकते हुए दिखाई देते है। २ जैनो के अनुसार एक प्रकार के देवता जिनमे आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र और सूर्य, चन्द्रमा आदि भी है। ३ मेरु पर्वत की एक चोटी का नाम। ४ चित्रक वृक्ष। चीता। ५ मेथी। ६ गनियारी।

ज्योतिष्का—स्त्री० [स० ज्योतिष्क+टाप्] मालकगनी।

ज्योतिष्टोम—पु० [ज्योतिस्-स्तोम, ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ जिसमे १६ ऋत्विक् होते थे।

ज्योतिष्ना†—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

ज्योतिष्पथ—पु० [ज्योतिस्-पथिन्, ष० त०] आकाश।

ज्योतिष्पुज—पु० [ज्योतिस्-पुज, ष० त०] आकाशस्थ ग्रहो, नक्षत्रो आदि का समूह।

ज्योतिष्मती—स्त्री० [स० ज्योतिस्+मतुप्-ङीप्] १ रात्रि। रात। २ एक प्रकार का वैदिक छद। ३ एक प्राचीन नदी। ४ एक प्रकार का पुराना बाजा। ५ मालकगनी।

ज्योतिष्मान् (मत्)—वि० [स० ज्योतिस्+मतुप्] १ जिसमे ज्योति हो। ज्योतिवाला। २ खूब चमकता हुआ। प्रकाशमान्। पु० १ सूर्य। २ प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। (पुराण)

ज्योतीरथ—पु० [ज्योतिस्-रथ, ब० स०] ध्रुव।

ज्योतीरस—पु० [ज्योतिस्-रस, द्व० स०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

ज्योत्स्ना—स्त्री० [स० ज्योतिस्+न, इलोप नि०] १ चद्रमा का प्रकाश। २ पृथ्वी पर छिटका या फैला हुआ उक्त प्रकाश। चाँदनी। ३ शुक्ल पक्ष की या चाँदनी रात। ४ सौंफ।

ज्योत्स्नाकाली—स्त्री० [स०] वरुण के पुत्र पुष्कर की पत्नी जो सोम की कन्या थी।

ज्योत्स्ना-प्रिय—पु० [ब० स०] चकोर।

ज्योत्स्ना-वृक्ष—पु० [ष० त०] दीपाधार। दीवट।

ज्योत्स्निका—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना+कन्+टाप्, इत्व]=ज्योत्स्ना।

ज्योत्स्नी—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

ज्योत्स्नेश—पु० [ज्योत्स्ना-ईश, ष० त०] चद्रमा।

ज्योनार—स्त्री० [स० जेमन=भोजन] १ पका हुआ भोजन। रसोई। २ बहुत से लोगो को बुलाकर एक साथ कराया जानेवाला भोजन। भोज। दावत।

मुहा०—ज्योनार बैठना=आये हुए लोगो का भोजन करने बैठना। **ज्योनार लगाना**=आये हुए लोगो के लिए खाने-पीने की चीजे परोसना।

ज्योरा—पु० [स० जीव=जीविका] गाँवो मे, चमारो, नाइयो आदि को उनकी सेवाओ के बदले दिया जानेवाला अन्न।

ज्योरी—स्त्री० [स० जीवा] डोरी। रस्सी।

ज्योहत—वि० [स० जीव+हत] जिसने जीव की हत्या की हो। पु० १ =आत्म-हत्या। २ =जौहर।

ज्यौं—क्रि० वि०=ज्यो।

ज्यौ*—पु० [स० जीव] १ आत्मा। जीव। उदा०—तनमाया ज्यौ ब्रह्म कहावत सूर सुमिलि बिगरी।—सूर। २ जीवन। प्राण। उदा०—बदी बदी ज्यौ लेत हैं, ए बदरा बदराह।—बिहारी। ३ जी। मन।

अव्य० [स० यदि] जो। यदि।

ज्यौतिष—वि० [स० ज्योतिष+अण्] ज्योतिष-सबधी। पु०=ज्योतिष।

ज्यौतिषिक—पु० [स० ज्योतिष+ठक्—इक] ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नी—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना+अण्-ङीप्] पूर्णिमा की रात।

ज्यौनार—स्त्री०=ज्योनार।

ज्यौरा—पु०=ज्योरा।

ज्यौहर—पु०=जौहर

ज्वर—पु० [स० √ज्वर् (जीर्ण होना)+घञ्] १ अनेक प्रकार के शारीरिक विकारो के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे शरीर का ताप-मान प्रसम या साधारण से बहुत-कुछ बढ जाता है और जिसके फल-स्वरूप नाडी की गति बहुत तीव्र हो जाती है और कभी-कभी मनुष्य बकने झकने लगता या अचेत हो जाता है। ताप। बुखार।

क्रि०प्र०—आना।—चढना।—होना।

२ ऐसी स्थिति जिसमे अशान्ति, आवेग, उत्तेजना, मानसिक चचलता

आदि बाते बहुत बढी हुई हो। जैसे--युद्ध भी देशो और राष्ट्रो को चढनेवाला ज्वर-ही समझना चाहिए।

ज्वर-कुटुंब—पु० [ष० त०] ज्वर के फलस्वरूप या साथ-साथ होनेवाले दूसरे उपद्रव। जैसे--शारीरिक शिथिलता, अधिक प्यास, भोजन के प्रति अरुचि, सिर मे दरद आदि आदि।

ज्वरघ्न—वि० [स० ज्वर√हन् (नाश) +टक्] जिससे ज्वर का अन्त या नाश होता हो।

पु० १ गुडुच। २ बथुआ नामक साग।

ज्वर-हन्त्री—स्त्री० [ष० त०] मजीठ।

ज्वरांकुश—पु० [ज्वर-अकुश, ष० त०] १ कुश की जाति की एक घास जिसकी जड मे नीबू की-सी सुगध होती है। २ वैद्यक मे ज्वर की एक दवा जो गधक, पारे आदि के योग से बनती है।

ज्वरांगी—स्त्री० [स० ज्वर√अग् (गति)+अच्-ङीष्] भद्रदती नामक पौधा।

ज्वरांतक—वि० [ज्वर-अतक, ष० त०] ज्वर का अन्त या नाश करनेवाला।

पु० १ चिरायता। २ अमलतास।

ज्वरांश—पु० [ज्वर-अश, ष० त०] मद या हलका ज्वर जैसा प्राय जुकाम आदि के साथ होता है और जो कभी-कभी दूसरे रोग के आगमन का सूचक माना जाता है। हरारत।

ज्वरा—स्त्री० [स० जरा] १ बुढापा। २ मृत्यु।

ज्वरापह—स्त्री० [स० ज्वर-अप√हन् (मारना) +ड] बेलपत्री।

ज्वरार्त्त—वि० [ज्वर-आर्त्त, तृ० त०] ज्वर से पीडित।

ज्वरित—वि० [स० ज्वर+इतच्] जिसे ज्वर या बुखार चढा हुआ हो।

ज्वरी (रिन्)—वि० [स० ज्वर+इनि] ज्वर से पीडित।

ज्वर्रा†—पु०=जुर्रा (पक्षी)।

ज्वलत—वि० [स० ज्वलत्] १ जलता और चमकता हुआ। देदीप्यमान। २ बहुत अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। जैसे—ज्वलत उदाहरण या प्रमाण।

ज्वल—पु० [स०√ज्वल् (दीप्ति)+अच्] १ ज्वाला। अग्नि। २ दीप्ति। प्रकाश।

ज्वलका—स्त्री० [स०√ज्वल्+ण्वुल-अक, टाप्] आग की लपट। अग्निशिखा।

ज्वलन—पु० [स०√ज्वल्+ल्युट्—अन] १ कोई चीज जलने की क्रिया या भाव। दहन। जलना। २. जलन। दाह। ३ [√ज्वल्+युच्—अन] अग्नि। आग। ४ आग की लपट। लौ। ५ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

ज्वलनांक—पु० [ज्वलन-अक, ष० त०] तीव्र तापमान की वह मात्रा या स्थिति जो किसी चीज को जला देने मे समर्थ होती है। (बर्निंग प्वाइंट)

ज्वलनांत—पु० [ज्वलन-अत, ब० स०] एक बौद्ध का नाम।

ज्वलनाश्मा (श्मन्)—पु० [ज्वलन-अश्मन्, कर्म० स०] सूर्यकात मणि।

ज्वलित—भू० कृ० [स०√ज्वल्+क्त] १ जलता या जलाया हुआ। २ जला हुआ। दग्ध। ३. खूब चमकता हुआ। ४ स्पष्ट रूप से सामने दिखाई देनेवाला।

ज्वलिनी—स्त्री० [स० ज्वल+इनि+ङीप्] मूर्वा लता। मरोड़फली।

ज्वलिनी सीमा—स्त्री० [स० व्यस्त पद] दो गाँवो के बीच की वह सीमा जो ऊँचे पेड लगाकर बनाई गई हो।

ज्वान†—वि० [भाव० ज्वानी] =जवान।

ज्वाब—पु०=जवाब।

ज्वार—स्त्री० [स० यवनाल, यवाकार वा जूर्ण] १ एक प्रसिद्ध पौधा और उसके दाने या बीज जिनकी गिनती अनाजो मे होती है। २ समुद्र, उससे सबद्ध नदियो की वह स्थिति जब कि उनमे ऊँची-ऊँची तरगे उठ रही हो। 'भाटा' का विपर्याय।

विशेष—चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण के फलस्वरूप दिन-रात मे एक बार बहुत ऊँची-ऊँची लहरे उठती है जिसे ज्वार कहते है और दूसरी बार यह लहरे बिलकुल थम जाती है जिससे सबद्ध नदियो का पानी बहुत उतर या घट जाता है। इसी को भाटा कहते है। अमावास्या और पूर्णिमा के दिन ज्वार का रूप बहुत ही उग्र या प्रबल होता है।

*स्त्री०=ज्वाला।

ज्वार भाटा—पु० [हि० ज्वार+भाटा] समुद्र मे लहरो का वेगपूर्वक बहुत ऊँचे उठना और बराबर नीचे गिरना।

ज्वारी†—पु०=जुआरी।

ज्वाल—पु० [स०√ज्वल् (दीप्ति)+ण वा घञ्]=ज्वाला।

ज्वालक—वि० [स०√ज्वल्+णिच्+ण्वुल्-अक] जलाने या प्रज्वलित करनेवाला।

पु० दीपक, लप आदि का वह भाग जो बत्ती के जलनेवाले अश के नीचे रहता है और जिसके कारण दीप-शिखा बत्ती के नीचेवाले अश तक नही पहुँचने पाती। (बर्नर)

ज्वालमाली (लिन्)—पु० [स० ज्वाल-माला ष० त० +इनि] सूर्य।

ज्वाला—स्त्री० [स० ज्वाल+टाप्] १ आग की लपट या लौ। अग्निशिखा। २ ताप, विष आदि के प्रभाव से जान पडनेवाली बहुत अधिक गर्मी। ३ कष्ट, दु ख आदि के कारण मन मे होनेवाली पीडा। सताप। ४ तक्षक की एक कन्या जिसका विवाह ऋक्ष से हुआ था।

ज्वाला-जिह्वा—पु० [ब० स०] १ अग्नि। आग। २ एक प्रकार का चित्रक या चीता (वृक्ष)।

ज्वाला-देवी—स्त्री० [मध्य० स०] कॉगडे के पास की एक देवी जिसका स्थान सिद्ध पीठो मे माना जाता है।

ज्वाला-मालिनी—स्त्री० [स० ज्वाला-माला, ष० त०, +इनि—ङीप्] तत्र के अनुसार एक देवी।

ज्वाला-मुखी—पु० [ब० स०, ङीष्] पृथ्वी तल के कुछ विशिष्ट स्थानो और मुख्यत पर्वतो मे होनेवाले मुख के आकार के बडे-बडे गड्ढे जिनमे से कभी आग की लपटे, कभी गली हुई धातुएँ, पत्थर आदि और कभी धूएँ या राख के बादल निकलते हैं।

विशेष—ऐसे गड्ढे जल और स्थल दोनो मे होते है। जिन पर्वतो की चोटियो पर ऐसे गड्ढे होते है उन्हे ज्वालामुखी पर्वत कहते है।

ज्वाला हलदी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की हलदी जिससे चीजे रगी जाती हैं।

ज्वाली (लिन्)—वि० [स० ज्वाल+इनि] ज्वालायुक्त।

पु० शिव।

ज्वैना†—स०=जोवना।

झ

झ—देवनागरी वर्णमाला मे च वर्ग का चौथा अक्षर जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्श सघर्षी, महाप्राण तथा सघोष व्यजन है।

झं—पु० [अव्यक्त ध्वनि] १ धातु के किसी पात्र पर आघात होने से उसमे से निकलनेवाला शब्द। २ हाथी की चिंघाड।

झकना—अ० दे० 'झीखना'।

झकाड†+पु०=झखाड।

झकार—स्त्री० [स० झन्-कार, ब० स०] १ धातु के किसी पात्र पर आघात लगने पर कुछ समय तक उसमे से बराबर निकलता रहनेवाला झनझन शब्द। झनकार। २ कुछ कीडो के बोलने का झन झन शब्द। जैसे—झिल्ली या झींगुर की झकार।

झकारना—स० [स० झकार] धातु के किसी टुकडे का पात्र पर इस प्रकार आघात करना कि वह झन झन शब्द करने लगे।
अ० झन झन शब्द उत्पन्न होना।

झकारिणी—स्त्री० [स० झकार+इनि-ङीप्] गगा।

झँकिया—स्त्री० [हि० झाँकना] १ छोटी खिडकी। झरोखा। २ झँझरी। जाली।

झकृत—भू० कृ० [स०-झन् √कृ (करना)+क्त] जिसमे से झकार निकली या उत्पन्न हुई हो।

झकृता—स्त्री० [स० झकृत+टाप्] तारा देवी।

झकृति—स्त्री० [स० झन्√कृ (करना)+क्तिन्] झकार।

झँकोर†पु०=झकोरा।

झँकोरना†—अ०=झकोरना।

झँकोलना†—अ०=झकोरना।

झँकोला†—पु०=झकोरा।

झंखना—अ० १ दे० 'झीखना'। २ दे० 'झाँकना'।

झंखर†—पु०=झखाड।

झखाट†—वि०=झखाड।

झखाड़—पु० [हि० झाड का अनु०] १ काँटेदार अथवा और प्रकार के जगली घने पौधे या उनका समूह। २ व्यर्थ के कूडे-करकट का ढेर।
वि० (वृक्ष) जिसके पत्ते झड गये हो।

झँगरा†—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० झँगरी] बाँस की खपचियो का बना हुआ जालीदार बडा टोकरा।

झगा†—पु०=झगा।

झगिया†—स्त्री०=झँगुली।

झँगुला—पु० [हि० झगा] [स्त्री० अल्पा० झँगुलिया, झँगुली] बच्चो के पहनने का छोटा कुरता।

झँगुली—स्त्री० [हि० झँगुला का स्त्री०] छोटा झँगुला।

झगूला—पु० [स्त्री० अल्पा० झँगूली]=झँगुला।

झजोड़ना—स०=झझोडना।

झझ†—स्त्री० १ दे० 'झाँझ'। २ दे० 'झझा'।

झंझट—स्त्री० [अनु०] ऐसा काम या बात जिसके साधन मे कई प्रकार की छोटी-मोटी कठिनाइयाँ हो और जिसके लिए विशेष परिश्रम या प्रयत्न करना पडे। बखेडा।

झझटी—वि० [हि० झझट] १ (काय या बात) जिसे सपादन करने मे अनेक प्रकार की झझटे खडी होती हो। २ (व्यक्ति) जो हर बात को उलझाता तथा उसे झगडे का रूप देता हो। ३ झगडालू।

झंझन—पु० [स०] झकार।

झझनाना—अ० [हि० झन झन] झन झन शब्द उत्पन्न होना।
स० झन झन शब्द उत्पन्न करना।

झझर—स्त्री० [स० अलिजर] मिट्टी का जल रखने का एक छोटा पात्र।
†वि०=झँझरा।

झँझरा—पु० [हि०] मिट्टी का छोटे-छोटे छेदोवाला वह ढकना जिससे खौलता हुआ दूध ढका जाता है।
वि० [स्त्री० झँझरी] १ जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। २ बहुत ही झीना या महीन (कपडा)।

झझरि—वि० [स० जर्जर] जर्जर। क्षत-विक्षत।
स्त्री०=झँझरी।

झँझरी—स्त्री० [हि० झर झर से अनु०] १ किसी चीज मे बने हुए बहुत से छोटे-छोटे छेदो का समूह। जाली। २ दीवारो आदि की जालीदार खिडकी या झरोखा। ३ लोहे के चूल्हे की वह जाली जिस पर जलते हुए कोयले रहते है। ४ छेद। सुराख। ५ आटा छानने की चलनी। छाननी। ६ लोहे का जालीदार पौना। झरना। ७ एक प्रकार की जल-क्रीडा जिसमे छोटी नावो पर बैठकर उन्हे चक्कर देते है।

झँझरीदार—वि० [हि० झँझरी+फा० दार] जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद पास-पास बने हुए हो।

झझा—स्त्री० [स० झम्√झट् (इकट्ठा होना)+ड-टाप्] १ वह तेज आँधी जिसके साथ पानी भी जोरो से बरसता हो। २ अधड। आँधी।
†वि० तेज। प्रचड।
†स्त्री०=झाँझ।

झझानिल—पु० [स० झझा-अनिल, मध्य० स०] १ प्रचड वायु। आँधी। २ ऐसी आँधी जिसके साथ पानी भी बरसे।

झझा-मरुत्—पु०=झझानिल।

झझार—पु० [स० झझा] आग की ऊँची तथा बडी लपट।

झझावात—पु०=झझानिल।

झझी—स्त्री० [देश०] १ फूटी कौडी। २ दलालो को दलाली मे मिलनेवाली रकम। (दलाल)

झझोड़ना—स० [स० झर्झन] किसी चीज को अच्छी तरह पकडकर जोर-जोर से तथा बार-बार झटकना या हिलाना जिससे वह टूट-फूट जाय या बेदम हो जाय। झकझोरना। जैसे—बिल्ली का कबूतर या चूहे को झँझोडना।

झँझोरा—पु० [देश०] कचनार का पेड।

झँझोटी, झँझौटी†—स्त्री०=झिझौटी।

झड—स्त्री० [स० जट] छोटे बालको के जन्म-काल के सिर के बाल।

बच्चो के मुडन से पहले के बाल जो प्राय कटवाये न जाने के कारण बडे बडे हो जाते है।

मुहा०—झड उतारना=बच्चे का मुडन-सस्कार करना।

†पु०=जड (करील का वृक्ष)।

झडा†—पु०[स० ध्वज+दड, पा० धजोदड, प्रा० झपअड, गु०,सि० झडो, मरा० झेडा] [स्त्री० अल्पा० झडी] १ डडे के सिर पर लगा हुआ कपड का वह आयताकार या तिकोना टुकडा जिस पर कुछ विशिष्ट चिह्न बने होते है तथा जो किसी जाति, दल, राष्ट्र, सप्रदाय या समाज का प्रतीक चिह्न होता तथा जो भवनो, मदिरो आदि पर फहराया जाता है। ध्वजा। पताका।

मुहा०—(किसी बात का) झडा खडा करना=इस रूप मे कोई नया काम आरभ करना कि और लोग भी आकर उसमे सम्मिलित हो तथा उसके अनुयायी बने। जैसे—विद्रोह का झडा खडा करना। **(किसी स्थान पर) झडा गाड़ना**=किसी स्थान पर अधिकार कर लेने के उपरात वहाँ अपना झडा लगाना, जो विजय का सूचक होता है। **झडा फहराना**= झडा गाडना। **(किसी के) झडे तले आना**=किसी की अधीनता स्वीकार करना तथा उसी के पक्ष मे सम्मिलित होना या उसका अनुयायी बनना।

पद—झडे तले की दोस्ती=बहुत ही साधारण या आकस्मिक रूप से होनेवाली जान-पहचान।

२ उक्त झडे का प्रतीक कागज का वह छोटा टुकडा जिस पर किसी राष्ट्र, सप्रदाय आदि के चिह्न बने होते है। (फ्लेग)

पद—झडा दिवस (दे०)।

पु०[स० जयत]ज्वार, बाजरे आदि पौधे के ऊपर का नर-फूल। जीरा।

झंडा दिवस—पु० [हिं० झडा+स० दिवस] किसी विशिष्ट आदोलन या लोकोपकारी कार्य से लोगो को परिचित कराने और उनकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए मनाया जानेवाला कोई विशिष्ट दिन जिसमे स्वयसेवक लोग प्रतीक रूप मे छोटे-छोटे झडे बेचते और बडे-बडे झडे घरो, दूकानो आदि पर लगाते है। (फ्लेग डे)

झडी—स्त्री० [हिं० झडा का स्त्री० अल्पा० रूप] कपडे, कागज आदि का बना हुआ बहुत छोटा झडा जिसका व्यवहार प्राय दीवारो पर सजावट आदि के लिए लगाने और सेना आदि मे सकेत करने के लिए होता है।

पद—लाल झडी=किसी प्रकार के अनिष्ट या सकट की सूचना देनेवाला पदार्थ या सकेत।

झडीदार—वि० [हिं० झडी+फा० दार] जिसमे झडी लगी हो।

झंडूलना†—पु० दे० 'झँडूला'।

झंडूला—वि० [हिं० झड+ऊला (प्रत्य०)] १ (बालक) जिसके सिर पर जन्म-काल के बाल अभी तक वर्त्तमान हो। जिसका अभी तक मुडन-सस्कार न हुआ हो। २ (सिर के बाल) जो गर्भ-काल से ही चले आ रहे हो और अभी तक मूँडे न गये हो। ३ घनी डालियो और पत्तियो-वाला। सघन (वृक्ष)।

पु० १ वह बालक जिसके सिर पर अभी तक गर्भ के बाल हो। २ गर्भ-समय से चले आये हुए बाल जो अभी तक मूँडे न गये हो। ३ घनी डालियो और पत्तियोवाला वृक्ष।

†४.=झुड।

झडोत्तोलन—पु० [हि० झडा+उत्तोलन] झडा फहराने की क्रिया या रस्म। ध्वजोत्तलन। (असिद्ध रूप)

झप—पु०[स० झम्√पत् (गिरना)+ड] १ उछलने की क्रिया या भाव। उछाल। २ कूदने की क्रिया या भाव। कुदान।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।

३ बहुत शीघ्रता से होनेवाली उन्नति या वृद्धि।

पु०=झाँप।

झँपकना—अ० १ =झपकना। २ =झँपना।

झँपकी†—स्त्री०=झपकी।

झंपताल† —पु०=झपताल।

झँपना—अ० [स० झप] १ उछलना। २ कूदना। ३ झपटना। ४ एकदम से आ पहुँचना। टूट पडना। ५ झेपना। ६ पलको का गिरना या बद होना। ७ आड मे होना। छिपना। ८ सो जाना। उदा०—वृक्ष मानो व्यर्थ बाट निहार। झँप उठे है झीम, झुक, थक, हार।—मैथिलीशरण।

स० १ आड़ मे करना। छिपाना। २ ढकना। ३ बन्द करना। मूँदना।

झँपरिया† —स्त्री०=झँपरी।

झँपरी—स्त्री० [हिं० झापना=ढकना] वह कपडा जो डोली या पालकी के ऊपर डाला जाता है। ओहार।

झपा† —पु० १ दे० 'झब्बा'। २ दे० 'बाल' (अनाज की)।

झपाक—पु० [स० झप√अक् (जाना)+अण्] [स्त्री० झपाकी] बदर।

झँपान—पु० [स० झप] पहाडो पर सवारी के काम आनेवाली एक प्रकार की खटोली।

झंपारु—पु० [स० झप-आ√रा (लेना)+डु] बदर।

झपित—भू० कृ० [स० झप] १ ढका हुआ। २ छिपा हुआ।

झँपिया—स्त्री० [हिं० झाँपा] छोटा झाँपा।

झपी (पिन्)—पु० [स० झप+इनि] बदर।

झँपोला—पु० [हिं० झाँपा+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] १ छोटा झाँपा। २ पिटारा।

झब—पु० [देश०] गुच्छा (प्राय फलो का गुच्छा)।

झँवकार† —वि० [हिं० झाँवला=काला] झाँवे के रग का। कुछ-कुछ काला।

झँवन—स्त्री० [हिं० झँवाना] १ झँवाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी चीज का वह अश जो झँवाने या किंचित् जल जाने के कारण कम हो जाय। जैसे—मशीन मे पीसे जाने पर गेहूँ या आटे की झँवन।

झँवराना—अ० [हिं० झाँवर] १ झाँवला या कुछ काला पडना। २ कुम्हलाना। मुरझाना।

स० १ झाँवला या कुछ-कुछ काला करना। २ कुम्हलाने या मुरझाने मे प्रवृत्त करना।

झँवा†—पु०=झाँवाँ।

झँवाना—अ० [हिं० झाँवाँ] १ ताप आदि के प्रभाव से झाँवे के रग का हो जाना। कुछ काला या झाँवला हो जाना। जैसे—धूप से शरीर का

रग झँवाना। २ अग्नि का जलते-जलते बुझने को होना। आँच धीमी या मन्द पडना। ३ जलने, सूखने आदि के कारण किसी चीज का कुछ अश कम होना या घट जाना। ४ कुम्हलाना। मुरझाना। ५ निर्जीव या बेदम होना। उदा०—मुरछित अवनी परी झँवाई।—तुलसी। ६ शरीर के किसी अग का झाँवे से रगड कर साफ किया जाना। ७ झेपना। स० १ ताप आदि के प्रभाव से किसी चीज को झाँवे के रग का अर्थात् झाँवला या कुछ-कुछ काला कर देना। २ ऐसा करना कि आग धीमी या मद पडकर बुझने लगे। ३ जला या सुखाकर किसी चीज का कुछ अश कम करना या घटाना। ४ कुम्हलाने या मुरझाने मे प्रवृत्त करना। ५ शरीर का कोई अश साफ करने के लिए उसे झाँवे से रगडना। ६ निर्जीव या बेदम करना। ७ लज्जित या शर्मिंदा करना।

झँवावना†—स० [हिं० झँवाना] झँवाने का काम किसी दूसरे से कराना।

झँवेला†—वि० [हिं० झाँवाँ+ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० झँवली] १ जो जलकर झाँवे के रग का हो गया हो। झँवाया हुआ। २ झाँवे के रग का। कुछ-कुछ काला। ३ झावे से रगडा हुआ।

झँसना—अ० [अनु०] १ शरीर के किसी अग मे तेल या और कोई चीज कोई प्रभाव उत्पन्न करने के लिए बार-बार रगडते हुए मलना। जैसे—सिर मे तेल झँसना, पैरो के तलुओ मे कद्दू या फूल की कटोरी झँसना। २ झाँसा देकर किसी से कुछ धन वसूल करना। तिकडम से किसी की कोई चीज ले लेना।

झइ*—स्त्री०=झाईं।

झउवा—पु०=झाबा।

झक—स्त्री० [अनु०] १ मन की वह वृत्ति जिसके फलस्वरूप मनुष्य बिना समझे-बूझे और प्राय हठवश किसी काम मे प्रवृत्त होता है। इसकी गिनती कुछ हलके पागलपन मे होती है।
क्रि० प्र०—चढ़ना।—लगना।—सवार होना।
२ दुर्गंध या बू। जैसे—सडी तरकारी की झक।
वि० [हिं० झकाझक] १ स्वच्छ तथा उज्ज्वल। २ चमकदार। चमकीला।
†स्त्री०=झख।

झककेतु*—पु०=झषकेतु।

झकझक—स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की तकरार या हुज्जत। किचकिच।

झकझका—वि० [हिं० झकझक] १ जो बिलकुल साफ या स्वच्छ हो। उज्ज्वल। जैसे—झकझका कुरता। २ जिसमे ओप या चमक हो। चमकीला।

झकझकाहट—स्त्री० [अनु०] ओप। चमक।

झकझोर—पु० [अनु०] १ झकझोरने की क्रिया या भाव। २ हवा का झकोरा या झोका। ३ झटका।
वि० १ झकझोरा हुआ। २ जिसमे किसी तरह का झोका या गति की तीव्रता हो। तीव्र। तेज।

झकझोरना—स० [अनु०] १ किसी चीज या जीव को उठा या पकड़कर इस प्रकार झटकना या जोर-जोर से हिलाना कि वह टूट-फूट जाय या बेदम हो जाय। २ पेड या उसकी शाखा को इस प्रकार हिलाना कि उसके पत्ते या फल नीचे गिर पडे।

झकझोरा—पु० [अनु०] झटका। धक्का।

झकझोलना—स०=झकझोरना।

झकड†—पु०=झक्कड।

झकडी†—स्त्री० [देश०] वह बरतन जिसमे दूध दूहा जाता है।

झकना अ० हिं० बकना का अनु०।
अ० [हिं० झख+ना (प्रत्य०)] झख मारना।

झकर†—पु०=झक्कड।

झका*—वि०=झक।

झकाझक—वि० [अनु०] १ स्वच्छ तथा उज्ज्वल। २ चमकीला।

झकुरना—अ० [?] उदास होना। (बुदेल)

झकुराना†—अ० [हिं० झकोरा] झकोरा लेना। झूमना।
स० झकोरा देना। हिलाना।

झकूटा—पु० [?] छोटा पेड। क्षुप।

झकोर*—स्त्री० [अनु०] झकोरने की क्रिया या भाव।
स्त्री०=झकोरा (हवा का झोका)।

झकोरना—अ० [अनु०] हवा का झोका मारना।
†स०=झकझोरना।

झकोरा—पु० [अनु०] हवा का झोका।

झकोलना—स० [?] १ डालना। २ मिलाना।

झकोला†—पु०=झकोरा।

झकोला—पु० [हिं० झोका] १ हवा का झोका। २ तेज हवा के कारण उठनेवाली पानी की लहर।
वि० जिसमे कुछ भी कसाव या तनाव न हो। ढीला-ढाला। उदा०—चारपाई बिलकुल झकोला थी।—वृन्दावनलाल।

झक्क—वि०, स्त्री० =झक।

झक्कड़— पु० [अनु०] तेज आँधी। अधड।
क्रि० प्र०—उठना।—चलना।
पु० दे० 'झक्की'।

झक्का—पु० [अनु०] १ हवा का तेज झोका। २ तेज आँधी। झक्कड। (लश०)

झक्की—वि० [हिं० झक] जिसे किसी बात की झक या सनक हो। नासमझी से और केवल हठ-वश किसी काम मे लगा रहनेवाला। सनकी।

झक्खड†—पु०=झक्कड।

झक्खना*—अ०=झीखना।

झख—स्त्री० [हिं० झीखना] १ झीखने की क्रिया या भाव।
मुहा०—झख मारना=(क) ऐसा तुच्छ और व्यर्थ का काम करना जिसमे विफलता निश्चित हो, अथवा जिसका कुछ भी परिणाम या फल न हो सकता हो। (उपेक्षा और तिरस्कार-सूचक)। जैसे—आप भी वहाँ झख मारने गये थे। (ख) बहुत ही विवशता की दशा मे झीखना। जैसे—तुम्हे भी झख मार कर वहाँ जाना पडेगा।
विशेष—कुछ लोग 'झख' को स० झष से व्युत्पन्न मानकर उक्त मुहावरे का अर्थ करते है मछली मारने की तरह का व्यर्थ-सा काम बहुत-सा समय लगाकर और चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करते हुए पूरा करना। पर वह व्युत्पत्ति ठीक नही जान पडती।
†स्त्री० [स० झष] मछली। उदा०—झखौ बिलखि दुरि जात जल लखि जलजात लजात।—बिहारी।

झखकेतु—पु०=झषकेतु।
झखना*—अ०=झीखना।
झखनिकेत—पु०=झषनिकेत।
झखराज†—पु०=झषराज।
झखलगन*—पु०=झखलग्न।
झखिया†—स्त्री०=झखी।
झखी*—स्त्री०[स० झष] मछली।
झगड़ना—अ० [हि० झकझक से अनु०] अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए दो व्यक्तियो या पक्षो का आवेश या क्रोध मे आकर आपस मे कुछ कहा-सुनी करना। झगडा करना।
झगड़ा—पु०[हि० झगडना का भाव०]१ दो पक्षो मे होनेवाली ऐसी कहा-सुनी या विवाद जिसमे प्रत्येक अपना पक्ष ठीक बतलाता हुआ दूसरे को अन्यायी या दोषी ठहराता है। २ वह चीज या बात जिसके कारण लोग आपस मे लडते हो। ३ मुकदमा।
झगडालू—वि०[हि० झगडा+आलू (प्रत्य०)]जो प्राय दूसरो से झगडा किया करता हो।
झगडी*—वि०=झगडालू।
†स्त्री०=झगडा।
झगर—पु०[देश०]एक प्रकार की चिडिया।
झगरना†—अ०=झगडना।
झगरा†—पु०=झगडा।
झगराऊ†—वि०=झगडालू।
झगरी†—स्त्री०=झगडी।
झगला —पु०=झगा।
झगा—पु०[?]१ छोटे बच्चो के पहनने का एक प्रकार का ढीला-ढाला छोटा कुरता। उदा०—सीस पगा न झगा तन पै, प्रभु जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।—नरोत्तम। २ ढीला कुरता।
झगुलिया—स्त्री०=झगुली।
झगुली*—स्त्री०[हि० झगा का अल्पा०] झगा।
झज्झर—स्त्री०=झझर।
झज्झी—स्त्री०=झझी।
झझक—स्त्री० [हि० झझकना] १ झझकने की क्रिया या भाव। २ क्रोध मे आकर पागलो की तरह या झुँझलाते हुए बिगड खडे होने की अवस्था या भाव। ३ कभी-कभी होनेवाला पागल का सा हलका दौरा। जैसे—जब कभी इन्हे झझक आ जाती है तब ये इसी तरह बकते हैं। ४ किसी पदार्थ मे से रह-रहकर निकलनेवाली हल्की दुर्गन्ध। जैसे—इस नल मे से कभी-कभी कुछ झझक आती है।
क्रि० प्र०—आना।—निकलना।
†स्त्री०=झिझक।
झझकन*†—स्त्री०=झझक।
झझकना—अ० [अनु०] १ झझक मे आकर अर्थात् झक या सनक मे आकर बिगड खडे होना। २ दे० 'झिझकना'।
झझकाना—स० [हि०झझकना का प्रे०]किसी को झझकने मे प्रवृत्त करना। चौंकाना।
स० [हि० झिझकरना] झिझकने मे प्रवृत्त करना।
झझकार—स्त्री०[झझकारना] १ झझकारने की क्रिया या भाव। २ दे०'झझक'।
झझकारना—स० [अनु०] १ डाँटना। डपटना। २ तुच्छ समझकर दुरदुराना।
झझिया—स्त्री०=झिझिया।
झट—अ०य० [स० झटिति]१ बहुत तेजी या फुरती से। २ चट-पट। तत्काल। तुरन्त।
झटकना—स०[स० झट्ट]१ इस प्रकार किसी चीज को एकाएक जोर से हिलाना कि वह गिर पडे। झटका देना। २ धोखा देकर अथवा जबर-दस्ती किसी की कोई चीज ले लेना।
अ० चिंता, रोग आदि के कारण बहुत अधिक अशक्त या दुर्बल होना।
झटका—पु०[हि० झटकना]१ झटकने की क्रिया या भाव। २ ऐसा आघात या हलकी ठोकर जिससे गति सहसा रुक जाय और इधर उधर हटना या गिरना पडे। हलका धक्का। झोका। (जर्क) ३ आपत्ति, रोग, शोक आदि का ऐसा आघात जो बहुत कुछ निकम्मा कर दे। ४ मास खाने के लिए पशु-पक्षी आदि काटने का वह प्रकार (जबह या हलालवाले प्रकार से भिन्न) जिसमे हथियार के एक ही आघात से गरदन काट देते है।
झटकारना—स०[हि० झटकना] जोर से झटका देना। जैसे—कपडा झट-कारना।
झटपट—अव्य० [हि० झट+अनु० पट]अति शीघ्र । तुरत ही। फौरन।
झटा—स्त्री०[स०√झट्+अच्—टाप्]भू-आँवला।
झटाका—क्रि० वि०=झडाका।
झटास†—स्त्री०[हि० झडी] बौछार।
झटि—स्त्री०[स०√झट्+इन्]झाड। झाडी।
झटिका—स्त्री०[?] तेज हवा।
झटिति†—क्रि० वि० [स०√झट्+क्विप्,√इ+क्तिन्] १ झट से। चटपट। तुरत। २ बिना कुछ सोचे-समझे और तुरन्त।
झट्ट†—क्रि० वि० =झट।
झड—स्त्री०=झडी।
झडकना—स०=झिडकना।
झडक्का†—पु०=झडाका।
झडझडाना—स०[अनु०]१ झड झड शब्द उत्पन्न करना। २ झड झड शब्द करते हुए कुछ गिराना, फेकना या हटाना। झटकारना। ३ झँझोडना। ४ झिडकना।
अ०१ झडझड शब्द होना। २ झड झड शब्द करते हुए गिरना।
झडन—स्त्री०[हि० झडना]१ झडने की क्रिया या भाव। २ झडने या झाडने से निकलनेवाली चीज। ३ दलाली, मुनाफे, सूद आदि के रूप मे मिलनेवाली रकम जो किये हुए परिश्रम या लगाई हुई पूँजी मे से झडी या निकली हुई होती है।
झडना—अ०[स० क्षरण]१ किसी चीज मे से उसके छोटे-छोटे अंगो या अशो का टूट-टूटकर गिरना। जैसे—पेड मे से पत्तियाँ झडना। २ ऊपर पडे हुए बहुत छोटे छोटे कणो का अलग होकर गिरना। जैसे—

कपडे या शरीर पर की धूल झडना। ३ वीर्य का स्खलित होना। (बाजारू)

अ०[हि० झाडना का अ०]झाडा या साफ किया जाना।

झड़प—स्त्री०[अनु०]१ झडपने की क्रिया या भाव। २ दो जीवो या प्राणियो मे कुछ समय के लिए होनेवाली ऐसी छोटी लडाई जिसमे वे एक दूसरे पर रह-रहकर झपटते हो। ३ दो व्यक्तियो मे उक्त प्रकार से होने वाली कहा-सुनी। आवेश और क्रोध के वश मे होकर की जाने वाली अप्रिय, आक्षेपपूर्ण और कटु बात-चीत।

झड़पना—अ०[अनु०]आवेश और क्रोधपूर्वक किसी पर आक्रमण करना। टूट पडना।

स० उक्त प्रकार से आक्रमण करके किसी से कुछ छीन लेना। जैसे—लडके के हाथ से बदर ने अमरूद झडप लिया।

झड़पा-झड़पी—स्त्री०[अनु०] १ झडप। २ गुत्थमगुत्था। हाथापाई।

झड़पाना —स०[हि० झडपना]१ दो जीवो विशेषत पक्षियो को झडपने या झपटने मे प्रवृत्त करना। २ दूसरो को लडने-झगडने मे प्रवृत्त करना।

झड़बेरी—स्त्री०[हि० झाड+बेर]१ जगली बेर का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष का फल।

पद—झड-बेरी का काँटा=ऐसा व्यक्ति जो सदा उलझने या लडने-भिडने को तैयार रहता हो और जिससे जल्दी पीछा छुडाना कठिन हो।

झड़बैरी†—स्त्री०=झड-बेरी।

झड़वाई—स्त्री०[हि० झडवाना] झाडने या झडवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

झड़वाना—स० [हि० झाडना का प्रे० रूप] १ झाडने का काम दूसरे से कराना। २ नजर या भूत-प्रेत आदि लगने पर ओझे से झाड-फूँक कराना।

झड़ाई—स्त्री०[हि० झाडना] झाडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=झडवाई।

स्त्री०[हि० झडना] झडने की क्रिया या भाव।

झड़ाक—पु०, क्रि० वि०=झडाका।

झड़ाका—क्रि० वि०[अनु०] बहुत जल्दी से। चटपट। झट से।

†पु०=झडप।

झड़ाझड़—क्रि० वि०[अनु०] १ बराबर एक के बाद एक। निरतर। लगातार। २ बहुत जल्दी जल्दी या तेजी से।

झड़ी—स्त्री०[हि० झडना]१ झडने की क्रिया या भाव। २ कुछ समय तक लगातार झडते रहने की क्रिया या भाव। २ ऐसी वर्षा जो लगातार अधिक समय तक होती रहे। जैसे—तीन दिन से पानी की झडी लगी है। ४ लगातार एक पर एक होती रहनेवाली क्रिया या बात। जैसे—गालियो की झडी, प्रश्नो की झडी।

क्रि० प्र०—बँधना।—लगना।

५ ताले के अदर का वह खटका जो चाबी के आघात से हटता-बढता रहता है और जिसके कारण ताला खुलता और बद होता है।

झड़ूला—वि०=झडूला।

झण-झण—पु० [स० अव्यक्त शब्द]झनझन शब्द।

झड़त्कार—पु०[स० झणत् (=अव्यक्त शब्द)-कार ब०स०] झनकार।

२—५१

झन— स्त्री० [अनु०]धातु के किसी पटल या पात्र पर आघात होने से उसमे से निकलनेवाला शब्द।

झनक—स्त्री०[अनु०]झन झन शब्द।

झनकना—अ०[अनु०]१ धातु के किसी पटल या पात्र पर आघात होने पर उसमे से झन झन शब्द निकलना। २ कुछ क्रुद्ध और बहुत दुखी होकर बडबडाते रहना। बकना-झकना। ३ झीखना। ४ आवेश तथा क्रोध मे आकर हाथ-पाँव पटकना।

झनक-मनक—स्त्री०[अनु]१ पहने हुए गहनो की एक दूसरे से टकराने पर होनेवाली झकार। २ घुँघरुओ के बजने का शब्द।

झनकवात—स्त्री०[अनु० झनक+स० वात] घोडो को होनेवाला एक वात रोग जिसमे उनकी टागो मे एक प्रकार की कँपकपी होती है।

झनकार—स्त्री०=झकार।

झनकारना†—अ०,स०=झकारना।

झनझन—स्त्री०[अनु०] झनझन शब्द। झकार।

झनझना—पु०[देश०]तमाखू मे लगनेवाला एक कीडा जो उसकी नसो मे छेद कर देता है। चनचना।

वि० झनझन शब्द करनेवाला।

झनझनाना—अ०[अनु०]१ झनझन शब्द होना। २ दे० 'झनझना'।

स० झनझन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झनझनाहट—स्त्री०[अनु०]१ झनझन शब्द होने की अवस्था, क्रिया या भाव। झकार। २. दे० 'झुनझुनी'।

झनझोरा—पु०[देश०] एक प्रकर का पेड।

झननन—पु०[अनु०] घुँघरू या पायल के बजने से होनेवाला शब्द।

झननाना—अ०[हि० झननन] झन झन शब्द होना।

स० झन झन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झनवाँ—पु०[देश०]एक प्रकार का धान।

झनस—पु०[?] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमडा मढा हुआ होता था।

झनाझन—स्त्री०[अनु०] झनझन शब्द। झकार।

क्रि० वि० झन झन शब्द करते हुए।

झनिया†—वि०=झीना।

झन्नाना†—अ०=झनझनाना।

झन्नाहट—स्त्री०=झनझनाहट।

झप—स्त्री०[स० झप या हि० झपना] एकाएक किसी चीज के ऊँचाई पर से गिर पडने की अवस्था या भाव।

मुहा०—(गुड्डी या पतग का) झप खाना=उडती हुई गुड्डी या पतग का एकाएक पेंदे के बल नीचे गिर पडना।

क्रि० वि० जल्दी से। झटपट।

झपक—स्त्री०[हि० झपकना]१ झपकने अर्थात् बार-बार पलके खोलने और बद करने की क्रिया या भाव। २ एक बार पलक गिरने मे लगनेवाला समय। ३ झपकी।

झपकना—अ०[स० झप]१ पलके गिरना। २ पलको का उठना और गिरना या खुलना और बद होना। ३ झपकी लेना। ऊँघना।

स०=झपकाना।

†अ०=झेपना।

†अ०=झपटना।

झपका—पु०[अनु०]हवा का झोका। (लश०)

झपकाना—स०[अनु०]१ पलके गिराना। २ पलके उठा तथा गिराकर आँखे खोलना और बद करना।

झपकी—स्त्री०[हि० झपकना] १ झपकने या झपकाने की क्रिया या भाव। २ वह नीद जो पलके गिरने से आरम्भ होती है और कुछ ही क्षणो बाद पलके खुल जाने के कारण टूट जाती हो। हलकी नीद।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।—लेना।

स्त्री०[अनु०]१ वह कपडा जिससे अनाज ओसाते है। २ धोखा।

झपकौहाँ*—वि० [हि० झपना] [स्त्री० झपकौही] बार बार या रह-रहकर झपकनेवाला या झपकता हुआ। (आलस्य, तद्रा, निद्रा आदि के आगमन का सूचक) जैसे—झपकौहे नयन, झपकौही पलके।

झपट—स्त्री०[स० झप]१ झपटने अर्थात् तेजी से आगे बढकर किसी पर आक्रमण करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'झडप'।

झपटना—अ०[स० झप=कूदना] १ वेगपूर्वक किसी की ओर बढना। २ किसी को पकडने अथवा किसी के हाथ से कोई चीज छीन लेने के लिए उस पर वेगपूर्वक आक्रमण करना। जैसे—बिल्ली का चूहे पर झपटना। चील का मास पर झपटना।

स० झपटकर या तेजी से बढकर कोई चीज ले लेना।

झपटान†—स्त्री०=झपट।

झपटाना—स० [हि० झपटना का प्रे० रूप] किसी को झपटने मे प्रवृत्त करना। जैसे—कुत्ते को बिल्ली पर झपटाना।

झपट्ट†—स्त्री०=झपट।

झपट्टा—पु० [हि० झपट] १ झपटने की क्रिया या भाव। झपट। २ किसी से कुछ सहसा छीन लेने के लिए उस पर किया जानेवाला आक्रमण।

क्रि० प्र०—मारना।

पद—चील झपट्टा =चील की तरह किसी पर झपटकर कोई चीज छीन लेने की क्रिया या भाव।

झपडियाना—अ०[हि० झापड+इयाना (प्रत्य०)]लगातार कई झापड या थप्पड लगाना।

झपताल—पु०[देश०] सगीत मे पाच मात्राओ का एक ताल।

झपना—अ०[हि० झपकना]१ पलक गिरना। २ किसी वस्तु का ऊपर से नीचे की ओर एकाएक आना। जैसे—गुड्डी या पतग का झपना।

†अ०=झेपना।

पु०[स्त्री० अल्पा० झपनी]किसी पात्र का ढकना।

झपनी†—स्त्री० [हि० झाँपना=ढकना] १ वह जिससे कोई चीज ढकी जाय। ढकना। ढक्कन। २ छोटी ढक्कनदार पिटारी।

झपलैया†—स्त्री०[हि० झँपोला] छोटी टोकरी।

झपवाना—स०[हि० झपाना का प्रे० रूप] किसी को झपाने अर्थात् पलके मूँदने मे प्रवृत्त करना।

झपस—स्त्री०[हि० झपसना] १ झपसने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ मार्ग मे बाधक होनेवाले पेड की झुकी हुई डाल। (कहार)

झपसट†—स्त्री० [अनु०] छल। धोखे-बाजी। जैसे—तुम तो अपना काम झपसट मे ही निकाल लेते हो।

झपसना—अ०[हि० झँपना+ढँकना] पेड-पौधो, लताओ आदि का खूब अच्छी तरह चारो ओर फैलना।

झपाका—पु०[हि० झप] जल्दी। शीघ्रता।

क्रि० वि० बहुत जल्दी या तेजी से। चटपट। तुरन्त।

झपाट†—क्रि० वि०=झटपट।

झपाटा†—पु०=झपट्टा।

झपाना—स०[हि० झपना]१ पलके गिराना या मूँदना। झपकाना। २ झुकाना।

अ०=झेपना (लज्जित होना)।

स० ऐसा काम करना जिससे कोई झेपे। लज्जित करना।

झपाव—पु०[देश०] घास काटने का एक उपकरण।

झपित—वि०[हि० झपना]१ झपा या मुँदा हुआ। २ जो झप या झपक रहा हो। बार बार बन्द होता हुआ। ३ झेपा हुआ। लज्जित।

झपिया—स्त्री०[देश०]१ गले मे पहनने का पुरानी चाल का हँसुली के आकार का एक गहना जिसके बीच मे कोई नग जडा होता है। २ पिटारी।

झपेट†—स्त्री०[हि० झपेटना] १ झपेटने की क्रिया या भाव। २ झपेटे जाने की अवस्था या भाव।

झपेटना—स०[हि० झपटना] १ सहसा आक्रमण करना। झपटना। २ झपटकर किसी से कुछ छीन अथवा किसी को पकड या दबोच लेना।

झपेटा—पु० [हि० झपेटना] १ झपेटे जाने या किसी की झपट मे आने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—भूत-प्रेत के झपेटे मे आना या पडना। २ हवा का झोका। झकोरा। ३ दे० 'झपट'। ४ दे० 'झिडकी'।

झपोला—पु०[स्त्री० झपोली]=झँपोला (छोटी टोकरी)।

झप्पड़†—पु०=झापड।

झप्पर†—पु० झापड।

झप्पान†—पु०=झँपान (एक प्रकार की पालकी या सवारी)।

झप्पानी—पु०[हि० झप्पान] झप्पान अर्थात् पालकी उठानेवाला आदमी।

झब-झबी —स्त्री० [देश०] कान मे पहनने का एक प्रकार का तिकोना गहना।

झबड़ा†—वि०=झबरा।

झबधरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो गेहूँ की फसल के लिए हानिकारक होती है।

झबरा—वि०[अनु०] [स्त्री० झबरी] (पशु) जिसके अगो या शरीर मे बडे-बडे बाल हो। जैसे—झबरा कुत्ता, झबरी बिल्ली।

†पु०=भालू। (कलदर)

झबरीला†—वि०[स्त्री० झबरीली]=झबरा।

झबरैरा—वि० =झबरीला (झबरा)।

झबा†—पु०=झब्बा।

झबार†—पु० दे० 'झगड़ा'।

झबिया—स्त्री०[हि० झब्बा का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा झब्बा। छोटा फुँदना। २ बहुत छोटी कटोरियो के आकार के वे छोटे-छोटे टुकडे जो शोभा के लिए जोशन, बाजूबद आदि गहनो मे लगाए जाते है।

स्त्री०[हिं० झाबा का स्त्री० अल्पा०] छोटा झाबा।

झबुआ†—वि०=झबरा।

झबूंकना—अ०१ =चमकना। २ =चौकना।

झब्बा—पु०[अनु०] १ धागे के छोटे-छोटे टुकडो को बीच मे एक साथ बाँधकर बनाया जानेवाला गुच्छा या फुँदना जो कपडो, गहनो आदि मे शोभा के लिए लगाया जाता है। २ गुच्छा।

झमक—स्त्री०[हिं० झमकना]१ झमकने की क्रिया या भाव। २. झम झम के रूप मे होनेवाला शब्द। ३ तीव्र उजाला या प्रकाश। ४ ठसक। नखरा। (क्व०)

झमकड़ा†—पु०=झमक।

झमकना—अ० [अनु० झमझम]१ रह-रहकर परन्तु तेजी से चमकना। २ झमझम शब्द होना। ३ झमझम शब्द करते हुए चलना-फिरना या उछलना-कूदना। ४ अकड, ऐठ या ठसक दिखाना। ५ अधिक मात्रा या तीव्र रूप मे उपस्थित होना। छाना। जैसे—आँखो मे नीद झमकना।

स०=झमकाना।

झमकाना—स०[हिं० झमकना का स० रूप]१ ऐसा काम करना जिससे कोई चीज खूब झमके या अपनी चमक-दमक दिखलावे। जैसे—कपडे, गहने या हथियार झमकाना। २. झमझम शब्द उत्पन्न करना।

झमकारा—वि० [हिं० झमझम] १ झमकनेवाला। २ (बादल) जो बरसने को हो।

झमकीला†—वि०[हिं० झमकना+इला(प्रत्य०)] १ चमकीला। २ अकड या ऐंठ दिखानेवाला।

झमक्का†—पु०=झमाका।

झमझम—स्त्री०[अनु०]१ घुँघरुओ आदि के बजने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २ छोटी छोटी बूदो की वर्षा का शब्द। ३ चमक-दमक।

वि०१ झमझम शब्द करता हुआ। जैसे—झमझम पानी बरसना। २ खूब चमकता या दमकता हुआ।

क्रि० वि० १ झमझम शब्द करते हुए। जैसे—पानी का झमझम बरसना। २ दे० 'झमाझम'।

झमझमाना—अ०[अनु०]१ झमझम शब्द होना। २ खूब चमक-दमक से युक्त होना। चमचमाना।

स०१ झमझम शब्द उत्पन्न करना। २ चमक-दमक से युक्त करना। ३ चमक-दमक दिखलाना। जैसे—कपडे या गहने झमझमाना।

झमझमाहट—स्त्री०[अनु०]१ झमझम शब्द होने की अवस्था या भाव। २ खूब चमकते हुए होने की अवस्था या भाव।

झमना—अ०[अनु०]१ पलको आदि का गिरना। झपकना। २ किसी के आगे नम्रतापूर्वक झुकना। ३ चारो ओर से आकर एकत्र होना। ४ दे० 'झमाना'।

झमाका—पु०[अनु०]१ किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला झमझम शब्द। जैसे—गहनो या घुँघरुओ का झमाका। २ ठसक। नखरा। (क्व०)

क्रि० वि०१ झमझम शब्द करते हुए। २ झट से। चटपट। तुरन्त।

झमाझम—क्रि० वि०[अनु०]१. झमझम शब्द करते हुए। जैसे—पानी झमाझम बरस रहा था। २ चमचमाते हुए। काति या दमक के साथ। जैसे—रेशमी कपडो का झमाझम चमकना।

वि०१ झमाझम शब्द करता हुआ। २. खूब चमकता-दमकता हुआ।

झमाट†—पु०=झुरमुट।

झमाना—अ०[अनु०]१ पलको का गिरना या झपकना। २ कुठित या लज्जित होना। (पूरब)

स० कुछ या कोई चीज झमने मे प्रवृत्त करना।

अ०[हिं० झाम=झुड] इकट्ठा होना। एकत्र होना।

अ०, स०=झँवाना।

झमूरा—वि०[?](पशु) जिसके सारे शरीर पर घने और लबे बाल हो। झबरा।

पु०१ घने और घुँघराले बालोवाला छोटा सुन्दर बच्चा। २ नटो और बाजीगरो के साथ रहनेवाला लडका जो प्राय अनेक प्रकार के करतब या खेल दिखलाता है। ३ भालू। (कलदर और मदारी)

झमेला—पु०[अनु० झाँव झाँव]१ कोई ऐसी पेचीली बात जिसमे दोनो पक्ष आपस मे झाँव-झाँव करते हो। २ ऐसी झझट या बखेडा जिसका निपटारा सहज मे न हो सकता हो। ३ ऐसा काम जिसके सपादन मे अनेक प्रकार की विपत्तियाँ खडी होती हो। बखेडा। ४ अव्यवस्थित या विश्रृखल जन-समूह। बहुत से लोगो की भीड-भाड। (क्व०)

झमेलिया—पु०[हिं० झमेला+इया (प्रत्य०)]१ वह जो जान-बूझकर और प्राय झमेला खडा किया करता हो। २ झगडा करनेवाला व्यक्ति।

झर—स्त्री०[स०√झृ (झरना)+अच्]१ पानी का झरना। निर्झर। सोता। २ समूह। ३ तेजी। वेग। ३ पानी की (या और किसी चीज की) लगातार होनेवाली झडी। ४ आग की लपट। ५ दे०'झडी'।

स्त्री० [हिं० झाल का पुराना रूप]१ ज्वाला। जलना। २ गरमी। ताप। उदा०—नैक न झुरसी बिरह-झर नेह लता कुम्हलाति।—बिहारी।

झरक†—स्त्री०=झलक।

झरकना—अ०१ =झिडकना। २ झनखना।

झरझर—स्त्री०[अनु०] तेज हवा के चलने से अथवा उसके किसी चीज के टकराने से होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० झरझर शब्द करते हुए।

झरझराना—अ०[हिं० झरझर]१ झरझर शब्द होना। २ झरझर शब्द करते हुए किसी चीज का चलना, जलना या बहना।

स० इस प्रकार किसी चीज को गिराना कि वह झरझर शब्द करे।

झरन—स्त्री०[हिं० झरना]१ झरने की क्रिया या भाव। २ झर कर निकलनेवाली या निकली हुई चीज। ३ दे० 'झेडन'।

झरना—पु०[स० झर][स्त्री० अल्पा० झरनी]१ पहाडो आदि मे ऊँचे स्थान से नीचे गिरनेवाला जल-प्रवाह। २ लगातार बहनेवाली पानी की कोई प्राकृतिक छोटी जल-धारा। चश्मा। सोता। ३ कपडो की बुनाई का वह प्रकार जिसमे थोडी-थोडी दूर पर दूसरे रग के सूत इस प्रकार लगाये जाते है जो देखने मे धाराओ के समान जान पडते है। जैसे—झरने की साडी।

वि० झरनेवाला।

अ० ऊँचे स्थान से पानी या और किसी चीज का लगातार नीचे गिरना।

पु०[स० क्षरण][स्त्री० अल्पा० झरनी]१ अनाज छानने की एक प्रकार

की बड़ी छलनी। २ लबी डडी की एक झँझरीदार चिपटी कलछी। पौना।
†अ०=झडना।

झरनी—स्त्री० हिं० 'झरना' का स्त्री० अल्पा० रूप।

झरप†—स्त्री० [अनु०] १ =झडप। २ =झकोरा। ३ =तेजी। वेग। ४ =चाँड। टेक। ५ चिक। चिलमन। ६ झरोखा।

झरपना—अ०, स०=झड़पना।
अ० [अनु०] बौछार मारना।

झरपेटा†—पु०=झपेटा।

झरफ *—स्त्री०=झरिफ (चिलमन)।

झरबेर†—पु०=झड-बेरी।

झरबैरी†—स्त्री०=झड-बेरी।

झरवाना†—स०=झडवाना।

झरसना*—अ०[अनु०]१ झुलसना। २ मुरझाना।
स०१. झुलसना। २ मुरझाने या सूखने मे प्रवृत्त करना।

झरहरना†—अ०=झरझराना।

झरहरा†—वि०=झँझरा।

झरहराना† स०=झरझराना।

झरहिल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिडिया।

झरा—पु०[देश०] एक प्रकार का धान।

झराझर—क्रि० वि०[अनु०] १ झरझर शब्द करते हुए। २ निरतर। लगातार। ३ जल्दी-जल्दी या वेगपूर्वक।

झरापना†—अ०=झरपना (झडपना)।

झराबोर—पु०, वि०=झलाबोर।

झरार—वि० [हिं० झाल] झालदार । चरपरा।

झराहर—पु०[स० ज्वालाधर] सूर्य।

झरि—स्त्री०=झडी।
अव्य०[?] १ बिलकुल। २ कुल। सब।
पु०=झार।

झरिफ*—पु०[हिं० झरप] १ चिक। चिलमन। २ परदा।

झरी—स्त्री०[हिं० झरना]१ पानी का झरना। सोता। चश्मा। २ वह धन जो हाट या बाजार मे बैठकर सौदा बेचनेवाले छोटे दूकानदारो से नित्य प्रति कर के रूप मे उगाहा जाता है। ३ दो तख्तो, पत्थरो आदि के बीच मे पडनेवाला थोडा-सा अवकाश। दरज। ४ दे० 'झडी'।

झरुआ—पु०[देश०] एक प्रकार की घास।

झरोखा—पु०[अनु० झरझर=वायु बहने का शब्द+ओख=गावाक्ष] १ दीवार मे बनी हुई जालीदार छोटी खिडकी। २ खिडकी।

झर्झर—पु०[स० झर्झ√ रा (दान)+क] १ एक प्रकार का पुराना बाजा जिस पर चमडा मढा हुआ होता था। २ झाँझ। ३ पैर मे पहनने की झाँझन। ४ कलियुग। ५ एक प्राचीन नद। ६ रसोई मे काम आनेवाला झरना नामक उपकरण। पौना।

झर्झरक—पु०[स० झर्झर+कन्] कलियुग।

झर्झरा—स्त्री०[स० झर्झर+टाप्] १ तारादेवी का एक नाम। २ रडी। वेश्या।

झर्झरावती—स्त्री०[स० झर्झरा+मतुप्, वत्व, डीप्] १ गगा । २ कटसरैया (क्षुप)।

झर्झरिका—स्त्री०[स० झर्झरा+कन्, टाप्, इत्व] तारादेवी।

झर्झरी (रिन्)—पु०[स० झर्झर+इनि] शिव।
स्त्री०[स० झर्झर+ङीष्] झाँझ नामक बाजा।

झर्झरीक—पु०[स० झर्झर+ईकन्] १ देश। २ देह। शरीर। ३ चित्र। तस्वीर।

झर्प†—स्त्री०=झडप।

झर्रा—पु०[देश०] १ एक प्रकार की छोटी चिडिया। २ बया नामक पक्षी।

झर्राटा—पु०[अनु०] कपडा फटने अथवा फाडे जाने पर होनेवाला शब्द।
†क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

झर्रैया—पु० [देश०] बया (पक्षी)।

झल—पु०[हिं० झार, स० झल=ताप] १ स्वाद आदि की तीक्ष्णता। झाल। २ जलन। ताप। दाह। ३ काम-वासना। सभोग की प्रबल इच्छा। ४ किसी बात की प्रबल कामना या इच्छा। ५ क्रोध। गुस्सा। ६ झक। सनक। ७ उन्माद। पागलपन। ८ दल। ९ राशि। समूह।

झलक—स्त्री० [स० झल्लिका=चमक] १ झलकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ ऐसा क्षणिक दर्शन या प्रत्यक्षीकरण जिसमे किसी चीज के रूप-रग, आकार-प्रकार आदि का पूरा-पूरा ज्ञान तो न हो, पर उसका कुछ आभास अवश्य मिल जाय। ३ ऐसा दृश्य जिससे किसी चीज का सक्षिप्त परिचय मात्र मिलता हो। ४ चित्रकला मे, वह आभा या रगत जो किसी समूचे चित्र मे व्याप्त हो। ५ चमक। प्रभा।

झलकदार—वि०[हिं० झलक+फा० दार] जिसमे आभा या चमक हो। चमकीला।

झलकना—अ०[हिं० झलक+ना (प्रत्य०)] १ इस प्रकार किसी के सामने एकाएक कुछ ही क्षणो के लिए उपस्थित होना और तुरत ही अतर्धान या अदृश्य हो जाना कि उसके आकार-प्रकार, रूप-रग आदि का ठीक और पूरा भान न हो पाये। २ लाक्षणिक अर्थ मे किसी बात आदि का आभास मात्र मिलना। जैसे—उसकी बात से झलकता था कि पुस्तक उसी ने चुराई है। ३ चमकना।

झलकनि†—स्त्री०=झलक।

झलका—पु०[स० ज्वल=जलना] छाला। फफोला। उदा०—झलका झलकत पायन ऐसे।—तुलसी।

झलकाना—स०[हिं० झलकना का स० रूप] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज झलके या कुछ चमकती हुई थोडी देर के लिए सामने आये। २ चमकाना। ३ बात-चीत, व्यवहार आदि मे कोई अभिप्राय या आशय बहुत ही अस्पष्ट या कुछ छिपे हुए रूप मे लक्षित कराना। आभास देना। दरसाना।

झलकी—स्त्री०[हिं० झलक] १ आकाशवाणी रेडियो से प्रसारित होनेवाली एक प्रकार की बहुत छोटी नाटिका जिसके अगो को परस्पर सम्बद्ध करने के लिए व्याख्यात्मक छोटी वार्त्ता भी होती है। इनमे दैनिक जीवन की सामान्य घटनाओ का उल्लेख होता है। (आधुनिक) २ =झलक।

झलझल—स्त्री०[स० झलज्झल] चमक-दमक, विशेषत गहनो की चमक-दमक।
वि० खूब चमकता-दमकता हुआ।
क्रि० वि० १ चमक-दमक से। २ तीव्र आभा या प्रकाश से युक्त होकर। जैसे—गहनो का झलझल चमकना।

झलझलाना—अ०[अनु०] खूब चमकना।
स० खूब चमकाना।

झलझलाहट—स्त्री०[हिं० झल झल +आहट (प्रत्य०)] झलझलाने अर्थात् चमकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

झलना—स० [हिं० झलझल (हिलना) से अनु०] १ हवा करने के लिए पखा या और कोई चीज बार-बार चलाना या हिलाना-डुलाना। २ धक्का देकर आगे बढाना। ढकेलना।
अ० किसी चीज के अगले भाग का इधर-उधर हिलना-डोलना। (क्व०)
स०=झेलना। (देखें)
अ०[हिं० झल्ला=पागल ?] शेखी बघारना। डीग हाँकना।
अ०[हिं० झालना का अ०] धातु आदि की चीजो का झाला या टाँके से जोडा जाना।

झलमल—स्त्री०[स० ज्वल=दीप्ति] १ अँधेरे के बीच मे रह-रहकर होने वाला मध्यम या हल्का प्रकाश। २ अधकार। अँधेरा। ३ चमक-दमक।
वि० १ जिसमे अधकार के साथ कुछ-कुछ प्रकाश भी हो। २ चमकीला।

झलमला†—वि०=झिलमिला।

झलमलाना—अ०[हिं० झलमल] १ रह-रहकर चमकना। चमचमाना। २ (दीपक का) रह-रहकर कभी तीव्र और कभी मद प्रकाश देना।
स० १ रह-रहकर चमकाना। २ ऐसी क्रिया करना जिससे कभी कुछ तीव्र और कभी कुछ मद प्रकाश निकले।

झलरा† पु०=झालर(पकवान)।

झलराना—स०[हिं० झालर] १ झालर के रूप मे बनाना। झालर का रूप देना। २ झालर टाँकना या लगाना।
अ० झालर के रूप मे या यो ही फैलकर छाना या छितराना।

झलरी—स्त्री०[स० झल√रा+ड-ङीष्] १ हुडुक नाम का बाजा। २ झाँझ।

झलवाना—स०[हिं० झलना] झलने का काम दूसरे से कराना। जैसे—पखा झलवाना।
स०[हिं० झालना] झालने का काम दूसरे से कराना।

झलहल—वि०[अनु० झलाझल] चमकदार।
पु०=झलमल।
क्रि० वि०=झल झल।

झलहाया—वि०[हिं० झल] [स्त्री० [झलहाई] १ जिसे किसी प्रकार की झल या सनक हो। २ डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

झला—स्त्री०[स०] आतप। धूप।
पु०[हिं० झड] १ हलकी वर्षा। २ ढेर। राशि। ३ झुड। दल।
पु०[हिं० झलना] पखा जो झला जाता है।
स्त्री०=झालर।

झलाई—स्त्री० [हिं० झालना] कडी धातुओ को मुलायम धातुओ के टाँके से जोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (सोल्डरिंग)

झलाऊ—वि०[हिं० झोल?] १ जिसमे झोल हो। झोलदार। २ ढीला-ढाला।

झलाझल—वि० [अनु०] [भाव० झलाझली] बहुत अधिक चमक-दमक वाला। चमकता हुआ।
क्रि० वि० चमकते हुए। प्रकाश के साथ।
पु० एक प्रकार का झकीला कपडा।

झलाझली—स्त्री० [अनु०] झलझल या बहुत अधिक चमकीले होने की अवस्था या भाव।
वि०, क्रि० वि०=झलाझल।
स्त्री०[हिं० झलना]पखे आदि का बराबर झला और झलवाया जाना।

झलाना—स०[हि० झलना] झलने का काम दूसरे से कराना। झलवाना।

झलाबोर—पु० [हिं० झलझल=चमक] १ जरी आदि के बने हुए दुपट्टो या साडियो का आँचल। २ कोई ऐसी चीज जिस पर कारचोबी या जरी का काम किया हुआ हो। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी। ४ चमक- दमक। ५ कँटीली झाडी।
वि० खूब चमक-दमकवाला।

झलामल†—स्त्री, वि०=झलमल।

झलारा—वि० [हिं० झाल] [स्त्री० झलारी] बहुत ही तीक्ष्ण स्वाद-वाला। झालदार।

झलाहा—वि०[हिं० झाल] [स्त्री० झलाही] १ बहुत तीक्ष्ण स्वाद-वाला। झालदार। २ ईर्ष्या या डाह करनेवाला। ३ बहुत ही उग्र या कठोर स्वभाववाला। उदा०—मैं अपने बनडे से पानी भराऊँ, ननदी झलाही को क्या है मलोला।—स्त्रियो का गीत।

झलि—स्त्री०[स०] एक तरह की सुपारी।

झल्ल—पु०[स०√झर्च्छ्+क्विप्√ला+क] १ वह जिसके वैदिक सस्कार न हुए हो। व्रात्य। २ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ३ भाँड। विदूषक। ४ हुडुक नाम का बाजा। पटह। ५ आग की लपट। ज्वाला।
स्त्री०[हिं० झल्ला] झल्ले होने की अवस्था या भाव। पागलपन। सनक।

झल्ल-कठ—पु० [ब०स०] कबूतर।

झल्लक—पु०[स० झल्ल+कन्] १ काँसे का बना हुआ करताल। झाँझ। २. मँजीरा।

झल्लकी—स्त्री०[स० झल्लक+ङीष्]=झल्लक।

झल्लना†—अ०[हिं० झल्ल] १ बावला या पागल होना। २ क्रुद्ध होना। ३ डीग मारना।
†स०=झलना।

झल्लरा—स्त्री०[√झर्च्छ्+अरन्, पृषो० सिद्धि] १ पुरानी चाल का चमडे से मढा हुआ एक बाजा। हुडुक। २ झाँझ। ३ पसीना। स्वेद। ४ घुँघराले बाल। ५ शुद्धता।

झल्लरी—स्त्री०[स० झल्लर+ङीष्]=झल्लरा।

झल्ला—पु०[देश०] [स्त्री० झल्ली] १ बहुत बडा टोकरा। झाबा। २ वर्षा की ऐसी झडी जिसके साथ तेज हवा भी हो। झझा। ३ तमाकू के पत्तो पर उभरनेवाले चकत्ते या दाने।

वि०[हिं० झल्लाना] [स्त्री० झल्ली] कम बुद्धि होने के कारण पागलो जैसा आचरण करनेवाला। सिडी।
वि०[हिं० झाल] [स्त्री० झल्ली] बहुत ही तरल या पतला। जैसे—झल्ली दाल, तरकारी का झल्ला रसा।
झल्लाना—अ०[हिं० झल] १ क्रुद्ध होकर या खीझकर बहुत ही तीक्ष्ण स्वर मे बोलना। २ बिगडते हुए बोलना।
स० किसी को खिजलाने या खीझने मे प्रवृत्त करना।
झल्लिका—स्त्री०[स० झल्ली√कै (प्रकाश करना)+क, पृषो० सिद्धि] १ शरीर पोछने का कपडा। अँगोछा। २. शरीर को मलकर पोछने पर निकलनेवाली मैल। ३ चमक। दीप्ति। ४ सूर्य की किरणो का तेज या प्रकाश।
झल्ली—स्त्री०[स० झल्ल+डीष्] एक प्रकार का चमडे से मढा हुआ छोटा बाजा।
वि० हिं० 'झल्ला' का स्त्री० रूप।
झल्लीवाला—पु० [हिं० झल्ली] [स्त्री० झल्लीवाली] वह व्यक्ति जो टोकरे मे बोझ रखकर ढोता हो।
झल्लीषक—पु०[स०] एक तरह का नृत्य।
झवर†—पु०[हिं० झगडा] झगडा।
झवारि†—स्त्री०=झवर(झगडा)।
झष—पु०[स०√झष् (मारना)+अच्] १ मछली। २ मगर। ३ मकर राशि। ४ मीन राशि। ५ ताप। ६ बन।
†स्त्री०=झख।
झष-केतु(केतन)—पु० [ब० स०] कामदेव। मदन।
झष-ध्वज—पु०[ब० स०] कामदेव।
झषना†—अ० [हिं० झख] १ झख मारना। २ दे० 'झीखना'।
झष-निकेत—पु०[ष० त०] वह स्थान जहाँ मछलियाँ रहती हो। जैसे—जलाशय, समुद्र आदि।
झष-राज—पु०[ष० त०] मकर या मगर नामक जल-जन्तु।
झषाक—पु०[झष-अक, ब० स०] कामदेव। मदन।
झषा†—स्त्री०[स०√झष्+अच्-टाप्] नागबला। गुलसकरी।
झषाशन—पु०[स० झष√अश् (भक्षण)+ल्यु-अन] सूँस (जल-जतु)।
झषोदरी—स्त्री०[झष-उदर, ब० स०, डीष्] व्यास की माता मत्स्यगधा का एक नाम।
झसना†—स०=झँसना।
झहँगी—वि०[फा० जगी] १ जग अर्थात् युद्ध-सबधी। २ युद्ध मे काम आनेवाला। ३ बहुत बडा। (राज०)
झहनना*—अ०[अनु०] १ झन झन शब्द होना। २ झल्लाना। ३ शरीर के रोएँ खडे होना। रोमाच होना। ४ चकित या स्तब्ध होना। सन्नाटे मे आना। सकपका जाना।
स०=झहनाना।
झहनाना—स०[हिं० झहनना का सकर्मक] १ झनझन शब्द उत्पन्न करना। २ किसी प्रकार किसी के शरीर मे रोमाच उत्पन्न करना। ३ ऐसा काम करना जिससे कोई चकित हो जाय या सन्नाटे मे आ जाय।
झहरना—अ० [अनु०] १ झर झर शब्द होना। जैसे—हवा से पत्तो का झहरना। २ हिलते-डुलते रहना। ३ सामने आना। उपस्थित होना। ४ शिथिल या ढीला होना। ५ दुखी होना।
अ० १.=झल्लाना। २ =झरना।
झहराना—स० [हिं० झहरना] किसी को झहरने मे प्रवृत्त करना।
अ०=झहरना।
झाँई—स्त्री० [स० छाया] १ छाया। परछाई। उदा०—जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।—बिहारी। २ अधकार। अँधेरा। ३. छल। धोखा।
मुहा०—झाँई देना या बताना=बाते बनाकर धोखा देना।
४ रक्त-विकार से मुँह पर पडनेवाले काले धब्बे। ५ किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग। ६. आभा। झलक।
झाँई-झप्पा†—पु०=झाँसा।
झाँई-माँई—स्त्री०[अनु०] बहुत छोटे बच्चो का एक खेल जिसमे वे कुछ गाते हुए घूमते और झूमते है।
मुहा०—(कोई चीज) झाँई माँई हो जाना=गायब, गुम या लुप्त हो जाना।
झाँक—स्त्री०[हिं० झाँकना] १ झाँकने की क्रिया या भाव। २ झलक।
स्त्री०[?] आग। अग्नि। उदा०—नई गोरी नये बालमा नई होरी की झाँक।—बुदेल० लो० गी०।
†पु०=चीतल (जगली हिरन)।
झाँकना—अ०[स० अध्यक्ष, प्रा० अज्झक्ख] १ नीचे की ओर की चीज देखने के लिए गरदन झुकाकर तथा आँखे नीची करके उसकी ओर ताकना। देखने के लिए झुकना। जैसे—खिडकी मे से या छत पर से झाँकना। २ आड मे से दाहिने या बाएँ कुछ झुककर या किसी सधि मे से टोह लेने के लिए देखना। ३ कोई काम करने के लिए उसकी ओर प्रवृत्त होना। उदा०—यही ठीक है धनुष छोडकर कोडा झाँको।—मैथिलीशरण।
झाँकनी—स्त्री०=झाँकी।
झाँकर†—पु०=झखाड।
झाँका—पु० [हिं० झाँकना] झरोखा, जिसमे से झाँककर देखते है।
पु०=खाँचा(रहठे आदि का दौरा)।
झाँकी—स्त्री० [हिं० झाँकना] १ झाँकने की क्रिया या भाव। २ किसी पूज्य या प्रिय वस्तु या व्यक्ति का सुखद अवलोकन। दर्शन। ३ सहसा कुछ देर के लिए एक बार दिखाई पडने या सामने आने की क्रिया या भाव। (ग्लास) ४ कोई मनोहर या सुदर दृश्य। ५ किसी बात का किया जानेवाला सक्षिप्त परिचय या परिज्ञान। जैसे—कश्मीर और बुदेलखड की झाँकी। ६ छोटी खिडकी।
झाँकृत—पु०[स० झकृत+अण्] १ पैरो मे पहनने का झाँझन नामक आभूषण। २ झनझन करने या झरने का शब्द।
झाँख—पु०[देश०] जगली हिरनो की एक जाति।
झाँखना*—अ०=झीखना।
झाँखर—पु०[हिं० झखाड] १ अरहर की वे खूँटियाँ जो फसल काटने के बाद खेत मे रह जाती है। २. झाड-झखाड।
वि० १ जिसके सारे तल मे बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। २ ढीली बुनावटवाला।

झाँगला—वि०[देश०] ढीला-ढाला (कपडा)।
पु० एक प्रकार का ढीला-ढाला कुरता। झगा।

झाँगा†—पु०[?] चितकबरे रग का एक छोटा कीडा जो गोभी, सरसो आदि के पत्तो मे लगकर उन्हे खाता या उनका रस चूसता है।
पु०=झगा (बच्चो का कुरता)।

झाँजन—स्त्री०=झाँझन।

झाँझ—स्त्री०[स० झर्झर] [स्त्री० अल्पा० झाँझडी] १ काँसे, पीतल आदि के मोटे पत्तर की बनी हुई एक प्रकार की कम उभारदार कटोरियो का जोडा जो पूजन आदि के समय एक दूसरी पर आघात करके बजाई जाती है। छैना।
क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।
२ क्रोध। गुस्सा। ३ किसी दूषित मनोविकार का आवेग। ४ पाजीपन। शरारत।
क्रि० प्र०—उतरना।—चढना।—निकलना।
५ ऐसा जलाशय जिसका जल सूख गया हो।
†स्त्री०=झाँझन।

झाँझडी*—स्त्री० १ =छोटी झाँझी। २ =झाँझन (पैर मे पहनने का गहना)।

झाँझन*—स्त्री०[अनु०] चाँदी आदि का बना हुआ नक्काशीदार कडा जिसे स्त्रियाँ पैरो मे पहनती है और जिससे झनझन शब्द निकलता है। पैंजनी। पायल।

झाँझर†—स्त्री०[अनु०] १ झाँझन। पैंजनी नाम का गहना जो पैर मे पहना जाता है। २ आटा आदि छानने की छाननी।
वि०[स० जर्जर] १ झँझरा। २ जर्जर। ३ बहुत ही खिन्न और दुखी। कष्ट या दुख से क्षीण या जर्जर। (पूरब) उदा०—एक हम झाँझरि हरि बिनु हो, पीतम मेल त्यागी।—स्त्रियो का गीत।

झाँझरी—स्त्री०[देश०] १ झाँझ नाम का बाजा। झाल। २ झाँझन या पैंजनी नाम का पैर मे पहनने का गहना।

झाँझा—पु०[हिं० झझारा] १ फसल के पत्ते आदि खा जानेवाले कुछ छोटे कीडो का एक वर्ग। २ वह बडा पौना जिससे कडाही मे सेव (नमकीन पकवान) छाना या गिराया जाता है। ३ घी मे भूनकर चीनी के साथ मिलाई हुई भाँग की पत्तियाँ जो यो ही फाँक ली जाती है।
पु० १ झझट या बखेडे की बात। २ तकरार। हुज्जत।
पु०=बडी झाँझ।

झाँझिया—पु० [हिं० झाँझ+इया (प्रत्य०)] वह जो झाँझ बजाता हो।

झाँझी—स्त्री० [हिं० झँझरी] १ एक उत्सव जिसमे बालिकाएँ रात के समय झँझरीदार हाँडी मे दीपक रखकर गीत गाती हुई घर-घर जाती और वहाँ से पैसे या अनाज पाती हैं। २ उक्त अवसर या उत्सव पर गाये जानेवाले गीत।

झाँट—स्त्री०[स० जट, हिं० झड=बाल] १ पुरुष या स्त्री की जननेद्रिय पर के बाल। उपस्थ पर के बाल। शष्प। श्मश्रु। २ बहुत ही तुच्छ और निकम्मी चीज।
पद—झाँट की झँटुल्ली=बहुत ही तुच्छ या हीन।

झाँटा†—पु०[देश०] झझट।
पु०=झाडू। (पूरब)

झाँटि†—स्त्री०=झाँट।

झाँप—स्त्री०[हिं० झाँपना] १ वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज झाँपी या ढकी जाती हो। ऊपरी आवरण। जैसे—पिटारी की झाँप। २ वास्तु कला मे, खिडकी, दरवाजे आदि के ऊपर दीवार से बाहर निकली हुई वह रचना जो धूप, वर्षा के जल आदि को कमरे के अन्दर आने मे रुकावट उत्पन्न करती है। (शेड) ३ परदा। ४ टट्टी। ५ मस्तूल का झुकाव। ६ कान का एक आभूषण। ७ घोडे को गले मे पहनाई जानेवाली एक प्रकार की हुमेल या हैकल।
स्त्री०=झपकी।
†स्त्री०=उछल-कूद।

झाँपना—स०[स० उत्थापन, हिं० ढाँपना] १ ऊपर से आवरण डाल कर ढाँकना। ढकना। २ मलना। रगडना। उदा०—फिरि फिरि झाँपति है कहा रुचिर चरन के रग।—मतिराम। ३ पकडकर दबाना या दबोचना।
अ०=झेपना।

झाँपा—पु०[हिं० झाँपना] [स्त्री० झाँपी] १ वह बडी टोकरी या दौरी जिससे दही, दूध आदि ढाँके जाते है। २ मूँज की बनी हुई एक प्रकार की बडी पिटारी।
†स्त्री०=झपकी।

झाँपो—स्त्री०[देश] १ खजन पक्षी। २ दुश्चरित्रा या पुश्चली स्त्री। (गाली)

झाँवना—स०[हिं० झाँवा+ना (प्रत्य०)] झाँवे से रगडकर (हाथ-पैर आदि) धोना।
स०, अ०=झँवाना।

झाँवर—पु०[?] वह नीची भूमि जिसमे वर्षा का पानी अधिक मात्रा मे रुकने के कारण मोटा अन्न अधिकता से उपजता हो। २ धान के लिए उपयुक्त नीची भूमि।
वि०[हिं० झाँवला] [स्त्री० झाँवली] १ झाँवे के रग का। काला। २ मलिन। मैला। ३ कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। ४ धीमा। मद। ५ सुस्त।

झाँवली—स्त्री०[हिं० झाँई] १ बहुत ही थोडे समय के लिए या एकाध क्षण कुछ दिखाई पडने की अवस्था या भाव। २ झलक। ३ आँख के कोने से देखने की अवस्था या भाव। कनखी।
मुहा०—झाँवली देना=आँख हिलाकर हलका-सा सकेत करना।

झाँवाँ—पु०[स० झामक] १ भट्ठे मे पकी हुई वह ईंट जो अधिक ताप लगने के कारण काली पड गई हो और कुछ टेढी भी हो गई हो। २ उक्त जली हुई ईट का टुकडा जिसमे प्राय छोटे-छोटे छेद होते है तथा जिसका प्रयोग चीजो पर से दाग छुडाने और विशेषत पाँवो पर जमी हुई मैल रगडकर छुडाने के लिए होता है।

झाँसना—स० [हिं० झाँसा] झाँसा या धोखा देना। २ झाँसा या धोखा देकर किसी से कुछ ले लेना। झँसना।

झाँसा—पु०[स० अध्यास=मिथ्या ज्ञान, प्रा० अज्झास] १ किसी से कुछ झँसने या वसूल करने के लिए उसे समझाई जानेवाली उलटी-

सीधी बात। २ अपने काम निकालने के लिए कही जानेवाली कोई छलपूर्ण बात।

क्रि० प्र०—देना।—बताना।—मे आना।

पद—झाँसा—पट्टी। (देखें)

झाँसा-पट्टी—स्त्री०[हि०] किसी को छल-कपट की बातो मे फुसलाकर दिया जानेवाला धोखा।

झाँसिया—पु०[हि० झाँसा+इया (प्रत्य०)] वह जो लोगो को झाँसा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता हो।

झाँसी—पु०[देश०] तमाखू, दाल आदि की फसल मे लगनेवाला एक प्रकार का गुबरैला कीडा।

झाँसू—पु०[हि० झाँसा] झाँसिया। (दे०)

झा—पु०[स० उपाध्याय, प्रा० उज्झाओ, हि० ओझा] १ मैथिल ब्राह्मणो की एक उपाधि। २ गुजराती ब्राह्मणो की एक उपाधि।

झाँई—स्त्री०=झाँई।

झाऊ—पु०[स० झावुक] मोर पखी की जाति का एक पोधा जिसकी पत्तियाँ औषध के काम आती है।

झाग—पु०[हि० गाज] १ किसी तरल पदार्थ को फेटने आदि पर उसमे से निकलनेवाले तथा एक मे मिले हुए असख्य बुलबुलो का समूह। फेन। जैसे—तेल या दूध की झाग। २ रोग आदि के कारण मुँह मे से निकलनेवाली वह थूक जिसमे बहुत अधिक बुलबुले हो।

क्रि० प्र०—उठना।—छूटना।—छोडना।—निकासना।—फेकना।

झागड़†—पु०=झगडा।

झागना†—अ०[हि० झाग] झाग या फेन निकलना।

स० झाग या फेन उत्पन्न करना।

झाझ†—स्त्री०=झाँझ।

†पु०=जहाज।

झाझन—स्त्री०=झाँझन।

पु०=झाऊ (पेड)।

झाझा†—वि० [स० दग्ध?] [स्त्री० झाझी] १ जला हुआ। दग्ध। २ गहरा-गाढा या तेज। जैसे—झाझा नशा।

झाट—पु०[स० √झट् (शीघ्रता)+घञ्] १ कुज। २ झाडी। ३. घाव को धोकर साफ करना।

झाटक-पट—पु०[हि० झटपट?] एक प्रकार की ताजीम जो राजपूताने के राज-दरबारो मे अधिक प्रतिष्ठित सरदारो को मिला करती थी।

झाटल—पु०[स० झाट√ला (लेना)+क] एक प्रकार का पेड जिसके बडे-बडे पत्ते होते है और फल घटियो के समान लटकते है। आक की तरह इसकी शाखाओ से भी दूध निकलता है।

झाटा†—स्त्री०[स०√झट्+णिच्+अच्—टाप्] १ जूही। २ भुई आँवला।

झाटास्त्रक—पु०[स० झाट-अस्त्र, ब०स०] तरबूज।

झाटिका—स्त्री०[स० झाट+कन्—टाप्, इत्व] भुईं आँवला।

झाटी—स्त्री०=झाटिका।

झाड़—पु०[स० झाट] [स्त्री० अल्पा० झाडी] ऐसे छोटे पेडो या पौधो का वर्ग जिनकी पतली-पतली शाखाएँ आपस मे उलझी हुई और जमीन से थोडी ही ऊँचाई पर छितरी या फैली हुई रहती है।

पद—झाड का काँटा=ऐसा झगडालू या हुज्जती आदमी जिससे पीछा छुडाना कठिन हो। झाड-झखाड। (देखे स्वतत्र शब्द)

२ उक्त झाड की तरह का एक प्रकार का अनेक शाखाओवाला दीये, मोमबत्तियाँ आदि जलाने का शीशे का बहुत बडा आधान जो कमरे की छत मे शोभा के लिए लटकाया जाता है। ३ उक्त आकार या रूप की एक प्रकार की आतिशबाजी। ४ उक्त आकार या रूप का छीपियो का एक प्रकार का छापा। ५ एक प्रकार की समुद्री घास। जरस। जार। ६ एक ही तरह की बहुत-सी छोटी-बडी चीजो का बडा गुच्छा या लच्छा।

स्त्री०[हि० झाडना] १ झाडने की क्रिया या भाव। २ झाडने पर निकलने वाली धूल आदि। झाडन। ३ मत्र आदि पढकर किसी की प्रेत-बाधा, रोग आदि दूर करने का काम।

पद—झाड-फूंक। (देखें)

४ क्रोधपूर्वक डाँटकर कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—देना।—पडना।—बताना।—सुनाना।

५ कुश्ती मे विपक्षी के किसी अग को दिया जानेवाला झटका।

झाड़खड—पु०=झारखड।

झाड़-झखाड़—पु०[हि० झाड+झखाड] १ काँटेदार झाडियो का समूह। २ व्यर्थ के पेड-पौधो का समूह। निकम्मी, रद्दी और व्यर्थ की चीजो, विशेषत काठ-कबाड का लगा हुआ ढेर।

झाड़दार—वि०[हि० झाड+फा० दार] १ (पौधा या वृक्ष) जिसमे बहुत-सी घनी डालियाँ लगती हो। घना। सघन। २ काँटेदार। कटीला। ३ जिस पर झाडो अर्थात् पेड-पौधो की आकृतियाँ बनी हो। पु० १ एक प्रकार का कसीदा जिसमे पौधो और बेल-बूटो की आकृतियाँ कढी होती है। २ उक्त प्रकार के बेल-बूटोवाला कालीन या गलीचा।

झाड़न—स्त्री०[हि० झाडना] १ झाडने पर निकलनेवाली धूल अथवा रद्दी चीजे या उनके टुकडे। २ वह कपडा जिससे अलमारियो, कुरसियो, चौकियो दरवाजो आदि पर पडी हुई धूल आदि झाडी और पोछी जाती है।

झाडना—स०[स० झर्च=आघात करना] १ कोई चीज उठाकर उसे इस प्रकार झटका देना कि उस पर पडी या लगी हुई फालतू और रद्दी चीजे दूर जा गिरे। जैसे—चाँदनी या दरी झाडना। २ झाडू, झाडन आदि की सहायता से किसी चीज के ऊपर पडी हुई धूल आदि साफ करना। जैसे—कमरे का फरश झाडना। ३ ऐसा आघात करना कि कही लगी या सटी हुई चीज या चीजे कटकर या टूटकर अलग हो जायँ या नीचे गिर पडे। जैसे—पेड मे से आम या इमली झाडना। ४ डरा धमका कर या और किसी युक्ति से कुछ धन वसूल करना या रकम ऐठना। झटकना। जैसे—जरा-सी बात मे पुलिस ने दो सौ रुपए झाड लिये। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार के शस्त्र इस प्रकार चारो ओर घुमाते हुए चलाना कि कोई पास आने का साहस न करे। जैसे—तलवार, पटा या लाठी झाडना। ६ जोर का आघात या प्रहार करना। जैसे—थप्पड या मुक्का झाडना। (क्व०) ७ पक्षियो का कुछ विशिष्ट ऋतुओ मे, प्रकृत रूप से अपने पुराने पख या पर गिराना जिसमे उनके स्थान पर फिर से नये पख या पर निकले।

जैसे—यह पक्षी ग्रीष्मऋतु मे अपने पुराने पख झाडता है।८ कघी फेर कर सिर के बाल साफ करना। ९ सभोग या समागम करके वीर्य-पात करना। (बाजारू) १० तत्र-मत्र आदि का ऐसा प्रयोग करना कि किसी का कोई रोग अथवा उस (व्यक्ति) पर चढा हुआ प्रेत या भूत उतर जाय। जैसे—ओझा लोग देहातियो को भूत-प्रेत झाडने के नाम पर खूब ठगते है। ११ किसी की अकड, ऐंठ या शेखी दूर करनेवाली कडी-कडी बाते सुनाना। फटकारना। जैसे—आज मैने उन्हे ऐसा झाडा कि वे ठढे हो गये। उदा०—ऐसे वचन कहूँगी इनते, चतुराई इनकी मै झारति।—सूर। १२ अपनी योग्यता दिखाकर धाक जमाने के लिए किसी भाषा या विषय मे बहुत सी उलटी-सीधी बाते कह जाना। जैसे—देहातियो के सामने अँगरेजी या कानून झाडना, मूर्खो के सामने वेदात झाडना।

झाड-फानूस—पु० [हिं० झाड+फा० फानूस] शीशे के झाड, हाँडियाँ आदि जो छत पर टाँगी जाती हे तथा जिनमे दीये, मोमबत्तियाँ आदि जलाई जाती है।

झाड-फूंक—स्त्री० [हिं० झाडना+फूंकना] मत्र-बल के द्वारा किसी का रोग या प्रेत-बाधा दूर करने की क्रिया या भाव।

झाड बुहार—स्त्री० [हिं० झाडना+बुहारना] कूडा-करकट, धूल आदि झाडने की क्रिया या भाव।

झाडा†—पु० [हिं० झाडना] १ भूत-प्रेत की बाधा, रोग आदि दूर करने के लिए की जानेवाली झाड-फूंक या मत्रोपचार। २ किसी के पहने हुए कपडे आदि झाडकर ली जानेवाली तलाशी। ३ पाखाना फिरने या मल त्याग करने की क्रिया।

क्रि० प्र०—फिरना (हगना)।

४ मल-त्याग करने की कोठरी। पाखाना। शौचालय। ५ गुह। मल। ६ दे० 'झाला' (सितार का)।

झाडी—स्त्री० [हिं० झाड] १ हिं० झाड का स्त्री० अल्पा० रूप। छोटा झाड। २ बहुत से छोटे-छोटे झाडो या पेड-पौधो का झुरमुट।

स्त्री० [हिं० झाडना] सूअर के बालो की बनी हुई कूची। बलौछी।

झाडीदार—वि० [हिं० झाडी+फा० दार] १ आकार, रूप आदि के विचार से झाडी की तरह का। छोटे झाड का-सा। २ काँटेदार। कँटीला। ३ (स्थान) जहाँ पर बहुत सी झाडियाँ हो। ४ दे० 'झाड-दार'।

झाड़ू—पु० [हिं० झाडना] १ लबी सीको आदि का वह मुट्ठा जिससे फर्श पर पडा हुआ कूडा-करकट, धूल आदि साफ करते है।

क्रि० प्र०—**देना**।—लगाना।

मुहा०—झाड़ू देना=(क) झाडू की सहायता से जमीन या फर्श पर का कूडा-करकट साफ करना। (ख) इस प्रकार सब कुछ नष्ट करना कि कुछ भी बाकी न रह जाय। **झाडू फिरना**=ऐसा अपव्यय या नाश होना कि कुछ भी बाकी न बच रहे। **झाड़ू फेरना**=पूरी तरह नाश करके कुछ भी बाकी न रहने देना। पूरा सफाया करना। **(किसी को) झाड़ू मारना**=बहुत ही उपेक्षा तथा तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। (स्त्रियाँ) जैसे—झाडू मारो ऐसे धोबी (या नौकर) को।

२ दुमदार सितारा। पुच्छलतारा। धूम-केतु।

झाडूदुमा—पु० [हिं० झाड+फा० दुम] हाथी, जिसकी दुम के बाल झाडू के अगले भाग की तरह छितरे या फैले हुए हो। ऐसा हाथी ऐबी माना जाता है।

झाडबरदार—पु० [हिं० झाड+फा० बरदार] [भाव० झाड बरदारी] १ वह सेवक जो घर मे झाड लगाता हो। २ गलियो मे और सडको पर झाडू देनेवाला मेहतर।

झाडवाला—पु० [हिं० झाड+वाला (प्रत्य०)] झाडू देने या लगाने-वाला व्यक्ति। झाडबरदार।

झाण—पु० [स० ध्यान] हठ-योग मे, एक प्रकार की साधना जिसमे पच महाभूतो का ध्यान करके उन्हे ऊपर की ओर प्रवृत्त किया जाता था, और इसके लिए शरीर के अन्दर के पाँच चक्रो का भी ध्यान किया जाता था। (बौद्ध)

झापड—पु० [?] थप्पड। तमाचा।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

झाबड-झल्ला—वि० [हिं०] बहुत अधिक ढीला-ढाला।

झाबर—पु० [?] दलदली भूमि।

†पु०=झाबा।

†वि०=झबरा।

झाबा—पु० [हिं० झाँपना=ढाँकना] [स्त्री० अल्पा० झाबी] १ रहठे का बना हुआ बडा टोकरा या दौरा। खाँचा। २ घी, तेल आदि रखने का चमडे का वह कुप्पा जिसमे टोटी भी लगी रहती है। ३ चमडे का एक प्रकार का बडा थाल। सफरा। (पश्चिम) ४ शीशे का बडा झाड जो रोशनी के लिए छत मे लटकाया जाता है।

†पु०=झब्बा।

झाम*—पु० [देश०] १ गुच्छा। २ समूह। ३ झब्बा। तुर्रा। ४ मिट्टी खोदने की एक प्रकार की कुदाल। ५ एक प्रकार का बडा यत्र जो नदियो आदि के तल की मिट्टी खोदने के काम आता है। ६ डाँट-फटकार। ७ घुडकी। ८ कपट। छल। धोखा।

झामक—पु० [स० झम् (खाना)+ण्वुल्-अक] जली हुई ईंट। झाँवाँ।

झामर—पु० [स० झाम√रा (देना)+क] १ टेकुआ रगडने की सान। सिल्ली। २ पैजनी की तरह का पैर मे पहनने का एक गहना।

झामर-झूमर—पु० [अनु०] ऐसी चीज या बात जिसमे ऊपरी आडबर, झझटे या बखेडे तो बहुत से हो परन्तु जिसमे तत्त्व या सार कुछ भी न हो। उदा०—दुनिया झामर-झूमर उलझी सत्तमान के बकरा लाये, कान पकड सिर काटा।—कबीर।

झामरा—वि० [हिं० झाँवला?] १ झाँवे के रग का। झाँवला। २ मलिन। उदा०—सामरि हे झामरि तोर देह।—विद्यापति।

झामा—वि०=झाँवला।

पु०=झाँवाँ।

झामी†—वि० [हिं० झाम=धोखा] धोखा देनेवाला। धोखेबाज।

स्त्री० [अनु०] १ झन् झन् शब्द। झनकार। २ सुनसान जगह मे तेज हवा चलने पर होनेवाला शब्द जो प्राय डरावना होता है।

झार†—वि० [स० सर्व, प्रा० सारो, हिं० सारा] १ आदि से अन्त तक का सब। कुल। पूरा। समस्त। सारा। २ जिसमे कुछ भी मिलावट न हो। खालिस।

पु० ˚ झुड। दल। २ समूह।
अव्य० १ केवल। निपट। निरा। २ एक दम से। एक सिरे से।
स्त्री० [हिं० झाल] १ स्वाद मे चरपरे या तीखे होने की अवस्था या भाव। झाल। २ आग की लपट। ज्वाला। ३ जलन। ताप। ४ ईर्ष्या के कारण होनेवाला मनस्ताप। डाह।
पु० [हिं० झरना] रसोई का झरना या पौना नामक उपकरण।
पु० [?] एक प्रकार का पेड।
झारखड—पु० [हिं० झार स०+खड] १ उजाड जगह। २ जगल। ३ बिहार राज्य के एक छोटे भू-भाग का नाम। ४ एक पर्वत जो वैद्यनाथ धाम से जगन्नाथ पुरी तक विस्तृत है।
झारन—स्त्री०=झाडन।
झारना—स०=झाडना।
झारा—पु० [हिं० झार] बहुत पतली घुली हुई भाँग।
पु० [हिं० झारना] १ अनाज फटकने का सूप। २ अनाज छानने का झरना। ३ पटा, बनेठी, लाठी आदि चलाने की कला या विद्या।
†पु०=झाडा।
झारि†—स्त्री०=झार।
झारी—स्त्री० [हिं० झरना] १ लबी गरदनवाली एक प्रकार की टोटीदार लुटिया जिससे जल बँधी हुई धार के रूप मे निकलता है। २ पानी मे अमचूर, जीरा, नमक आदि मिलाकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का स्वादिष्ठ पेय।
†स्त्री०=झाडी।
*स्त्री० [हिं० झार] समष्टि। समूह। उदा०—गई जहाँ सुर नर मुनि झारी।—तुलसी।
*क्रि० वि० एक दम से। एक सिरे से।
झारू—पु०=झाड।
झार्झर—पु० [स० झर्झर+अण्] हुडुक या ढोल बजानेवाला व्यक्ति।
झाल—स्त्री० [स० झालि =आम का पना या पन्ना] १ गध, स्वाद आदि की तीव्रता। जैसे—मिर्च, राई आदि की झाल। २ स्वाद का चरपरापन या तीक्ष्णता। जैसे—तरकारी या दाल की झाल, आम या इमली के पन्ने की झाल।
स्त्री० [हिं० झालना] १ झालने (अर्थात् धातु की चीजो को टाँका लगाकर जोडने) की क्रिया या भाव। २ धातु की चीजो का वह अश जिसमे उक्त प्रकार का टाँका लगा हो।
स्त्री० [स० ज्वाल] १ जलन। ताप। दाह। २ लपट। लौ। ३. उत्कट या प्रबल काम-वासना। ४ मन की तरग। मौज। (क्व०)
पु० [स० झल्लक] काँसे आदि की बनी हुई बडी झाँझ।
स्त्री० [हिं० झडी] १ (वर्षा की) झडी। २ बादल के कारण होनेवाला अँधेरा।
झालड़—स्त्री०=झालर।
झालना—स० [?] [भाव० झलाई] १ धातु की बनी हुई चीजो के भिन्न-भिन्न अगो को टाँका लगाकर उन्हे आपस मे जोडना। २ किसी पात्र का मुँह धातु का टाँका लगाकर चारो ओर से अच्छी तरह बद करना। जैसे—गगा जल से भरी हुई लुटिया झालना। ३ पेय पदार्थों की बोतलें आदि बरफ या शोरे मे रखकर खूब ठढी करना।
†स० १ =झेलना। (सहना)। २ =झलना। (ग्रहण या धारण करना)।
झालर—स्त्री० [स० झल्लरी] १ किसी विस्तार मे उसके एक या कई सिरो पर शोभा या सजावट के लिए टाँका, बनाया या लगाया जानेवाला लहरियेदार किनारा या हाशिया। जैसे—तकिये, पखे या परदे मे लगी हुई झालर, सायबान मे लगाई जानेवाली झालर। २ वास्तु-रचना मे पत्थर, लकडी आदि को गढ या तराशकर प्रस्तुत की जानेवाली उक्त प्रकार की बनावट। जैसे—दरवाजे के पल्ले या मेहराब मे की झालर। ३ उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी लटकती हुई चीज जो प्राय हिलती रहती हो। जैसे—गौ या बैल के गले की झालर। ४ किनारा। छोर। सिरा। (क्व०) ५ एक प्रकार का बहुत बडा छैना या झाँझ जो पूजा आदि के समय देवताओ के सामने बजाते है।
†पु०=झलरा (पकवान)। उदा०—झालर माँडे आए पोई।—जायसी।
झालरदार—वि० [हिं० झालर+फा० दार] जिसमे झालर टँकी, बनी या लगी हो।
झालरना—अ० [हिं० झालर+ना (प्रत्य०)] १ झालर का हिलना या हवा मे लहराना। २ हवा मे किसी वस्तु का लहराना। ३ (पेड-पौधो का) शाखाओ, पत्तियो, फूलो आदि से युक्त या सपन्न होना। उदा०—नित नित होति हरी हरी खरी झालरति जाति।—बिहारी।
झालरा†—पु० [हिं० झालर] एक प्रकार का रुपहला हार। हुमेल।
पु० [?] कुछ विशिष्ट प्रकार का बना हुआ चौकोर और बडा कूआँ। बावली।
झाला—पु० [देश०] १ गुजरात, मारवाड आदि प्रदेशो मे बसी हुई एक राजपूत जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३ सितार आदि बजाने मे उत्पन्न होनेवाली एक विशेष प्रकार की कलात्मक झकार।
झालि—स्त्री० [स०] एक प्रकार की काँजी जो कच्चे आम को पीसकर और उसमे राई, नमक आदि मिलाकर बनाई जाती है। झारी।
†स्त्री०=झाल (वर्षा की झडी)।
झावँ झावँ—पु०=झाँवँ झाँवँ।
झावर—वि०=झाबर (झबरा)।
झावु—पु० [स० झा√वा (गति)+डु] झाऊ। (एक क्षुप)
झावुक—पु० [स० झावु+कन्] झाऊ।
झिकार†—पु० [?] बारहसिंघा।
झिंगन—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जिसकी पत्तियो से लाल रग बनता है।
†पु०[?] सारस्वत ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।
झिंगनी†—स्त्री०=खर-तरोई।
झिंगवा—स्त्री० [स० चिंगट] एक प्रकार की छोटी मछली जिसके अगले और पिछले दोनो भागो पर बाल होते है।
झिंगाक—पु० [स०√लिंग् (गमनादि)+आकन्, पृषो० सिद्धि] तरोई। तोरी।
झिंगारना†—अ० [हिं० झींगुर] झींगुर का बोलना या शब्द करना।
स० उक्त प्रकार का शब्द उत्पन्न करना।
झिंगिन —पु०=जुगनूँ।

झिंगिनी—स्त्री० [स०√लिग्+इनि, पृषो० सिद्धि] एक जगली पेड जिसके फल बेर के समान छोटे-छोटे और सफेद रग के फूल होते है जो औषध के काम आते है।

झिंगी†—स्त्री०=झिंगिनी।

झिंगुला—पु० [स्त्री० अल्पा० झिगुली] झगा (बच्चो का)।

झिंझा†—वि० [?] [स्त्री० झिझी] चिपटी नाकवाला।

झिंझिम—पु० [स० झिम्√झम्+अच्, पृषो० सिद्धि] ऐसा वन जिसमे आग लगी हो।

झिंझिया†—स्त्री०=झाँझी।

झिंझिरिष्टा—स्त्री० [स०] झिंझिरोटा।

झिंझिरोटा—पु० [स० झिंझिरिष्टा] एक प्रकार का क्षुप।

झिंझी—स्त्री० [स०] झीगुर। झिल्ली।
†स्त्री०=झझी या झज्झी।

झिंझोटी—स्त्री० [देश०] दिन के चौथे पहर मे गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

झिंटी—स्त्री० [स० झिम्√रट् (रटना)+अच्-ङीष्, पृषो० सिद्धि।] कटसरैया। पियाबासा।

झिगडना*—अ०=झगडना।

झिगडा†—पु०=झगडा।

झिझक†—स्त्री० [हिं० झिझकना] झिझकने की क्रिया या भाव।
†स्त्री० दे० 'झझक'।

झिझकना†—अ० [अनु०] [भाव० झिझक] भय, लज्जा, सकोच आदि के कारण कुछ कहने या करने से आनाकानी करना, पीछे हटना या रुकना।
†अ० दे० 'झझकना'।

झिझकार†—स्त्री०=झझकार।

झिझकारना†—स०=झझकारना।

झिटकारना†—स०=झटकारना।

झिडक†—स्त्री० [हिं० झिडकना] १ झिडकने की क्रिया या भाव। २ =झिडकी।

झिडकना—स० [हिं० झटकना या झाडना] १ पुरानी हिन्दी मे झटका देकर या झटकारते हुए दूर करना या हटाना। उदा०—कोटि सुर को दड आभा झिरकि डारै वारि।—सूर। २ आज-कल किसी के अनुचित आचरण या व्यवहार से क्रुद्ध या रुष्ट होकर उसे तिरस्कारपूर्वक बिगड-कर कोई कठोर बात कहना।

झिडकी—स्त्री० [हिं० झिडकना] १ झिडकने की क्रिया या भाव। झिडक। २ क्रोध मे आकर या बिगडते हुए किसी अधीनस्थ या छोटे व्यक्ति से कही हुई वह बात जिसमे उसके अनुचित कामो के प्रति असन्तोष या रोष प्रकट किया गया हो और जिसमे आगे से सचेत रखने का उद्देश्य भी निहित हो।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।—सुनना।

झिडझिडाना†—अ० [भाव० झिडझिडाहट]=चिडचिडाना।

झिनवा—पु० [देश०] एक प्रकार का बढिया धान जिसके चावल बारीक होते हैं।
वि०=झीना।

झिपना†—अ०=झेपना।

झिपाना—स० [हिं० 'झेपना' का स० रूप] किसी को झेंपने मे प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

झिमकना†—अ०=झमकना।

झिमिटना—अ० [अनु०] एकत्र होना। उदा०—झिमिट जाते हैं जहाँ जो लोग ।—मैथिलीशरण।

झिर†—स्त्री०=झिरी।

झिरकना†—स०=झिडकना।

झिरझिर—क्रि० वि० [अनु०] १ थोडा-थोडा करके और मन्द गति से। धीरे-धीरे। जैसे—झिरझिर झरना (पानी का सोता) बहना। २ उक्त प्रकार से और झिरझिर शब्द करते हुए। जैसे—झिरझिर हवा बहना।

झिरझिरा†—वि०=झीना।

झिरझिराना†—अ०=झिडझिडाना (चिडचिडाना)।

झिरना—पु० [हिं० झरना] १ झरना। २ झिरी।
अ०=झरना।

झिरहर†—वि०=झीना।

झिरा†—स्त्री० [हिं० झरना=रसकर निकलना] आमदनी। आय।

झिराना—अ०, स०=झुराना।

झिरिका—स्त्री० [स०] झीगुर।

झिरिया†—स्त्री० [हिं० झरना] छोटा झरना।

झिरी—स्त्री० [हिं० झरना] १ वह छोटा छेद या सधि जिसमे से कोई चीज धीरे-धीरे निकल या बह जाय। दरज। २ वह गड्ढा जिसमे आस-पास का पानी झिर-झिरकर इकट्ठा होता है। ३ किसी बडे जलाशय के आस-पास का वह छोटा झरना या सोता जिसमे से पानी झिर या रसकर निकलता हो। ४ तुषार। पाला। ५ ऐसी फसल जो पाला पडने से खराब हो गई हो।

झिरीका—स्त्री० [स० झिरी√कै (शब्द)+क—टाप्] झीगुर।

झिर्री†—स्त्री० [हिं० झरना या झिरी] वह छोटा गड्ढा जो नाली आदि का पानी रोकने के लिए खोदा जाता है। घेरुआ।

झिलँगा—वि० [हिं० ढीला+अग] १ ढीले अगोवाला। २. झीनी बुनावटवाला। उदा०—झिलँगा खटिया बातल देह।—घाघ। ३ दुबला-पतला।
पु० १ वह छोटी, हलकी खाट जिसकी बुनावट दूर दूर या विरल हो। २ ऐसी टूटी-फूटी और पुरानी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड गई हो।
†पु०=झीगा (मछली)।

झिलना—अ० [हिं० झेलना] १ हिं० 'झेलना' का अ० रूप। झेला या सहा जाना। २ कष्ट सहते और जोर लगाते हुए अन्दर घुसना, धँसना या पैठना। उदा०—वाणी की वीणा-ध्वनि सी भर उठी शून्य मे झिल-कर।—प्रसाद। ३ कष्ट सहते हुए अपनी कामना या वासना पूरी करना। ४ तृप्त होना। अघाना। ५ किसी काम या बात मे पूरी तरह से तन्मय या लीन होना।
†पु० [स० झिल्ली] झीगुर।

झिलम—स्त्री० [हिं० झिलमिला] युद्ध के समय पहने जानेवाले टोप मे

पीछे की ओर लगी हुई सिकडियो की वह झालर जो गरदन पर लटकी रहती थी।

झिलमटोप—पु०=झिलम।

झिलमा—पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

झिलमिल—स्त्री० [स० ज्वल्+झला] १ सन्ध्या या सबेरे की वह स्थिति जब कि कुछ-कुछ अधकार भी हो और कुछ-कुछ प्रकाश भी, और जिसमे चीजे साफ न दिखाई देती हो। झिलमिला। २ प्रकाश की किरणो या लौ के हिलते रहने की वह स्थिति जिसमे कभी तो कुछ अँधेरा हो जाता हो और कभी-कभी कुछ उजाला। ३ किसी चमकीली चीज की वह स्थिति जिसमे रह-रहकर प्रकाश की किरणे दिखाई देती या निकलती हो। जैसे—पानी की झिलमिल। ४ पुरानी चाल की एक प्रकार की बहुत बढिया मलमल जिसकी प्रायः साडियाँ बनती थी।
वि०=झिलमिला।

झिलमिला—वि० [स०√ज्वल्+झला] १ (समय) जिसमे न तो पूरा अधकार ही हो और न पूरा प्रकाश ही। मिला-जुला थोडा अँधेरा और थोडा उजाला। २ (प्रकाश) जो हिलते रहने के कारण रह-रहकर चमकता हो और फिर बीच-बीच मे आँखो से ओझल हो जाता हो। रह-रहकर चमकनेवाला। ३ (आवरण) जिसमे जगह-जगह बहुत-से छोटे-छोटे अवकाश या छेद हो और इसी लिए जिसके कारण कही तो प्रकाश आ जाता हो और कही अँधेरा बना रहता हो। ४ जिसका कुछ-कुछ आभास तो मिलता हो, फिर भी जो पूरी तरह से स्पष्ट न हो।
पु०=झिलमिल।

झिलमिलाना—अ० [अनु०] [भाव० झिलमिलाहट, झिलमिली] हिलते रहने के कारण रह-रहकर चमकना। जैसे—लौ का झिलमिलाना।
स० किसी चमकीली चीज को इस प्रकार थोडा-थोडा हिलाना कि उसमे से रह-रहकर प्रकाश या उसकी किरणे निकले।

झिलमिलाहट—स्त्री० [अनु०] झिलमिलाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

झिलमिली—स्त्री० [हि० झिलमिल] १ बेडे बल मे एक दूसरी पर जडी या बैठाई हुई पटरियो का वह ढाँचा जो किवाडो के पल्लो के कुछ भागो मे इसलिए जडा रहता है कि खडे बल मे लगी हुई लकडी के सहारे आवश्यकतानुसार प्रकाश, वायु आदि के आने के लिए कुछ अवकाश निकाला जा सके। खडखडिया।
क्रि० प्र०—उठाना।—खोलना।—गिराना। —चढाना।
२ चिक। चिलमन। ३ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ झिलमिलाहट।

झिलवाना—स० [हि० 'झेलना' का प्रे० रूप] किसी को कुछ झेलने मे प्रवृत्त करना।

झिली† —स्त्री०=झीगुर।

झिल्ल—पु० [स०] छोटे-छोटे पत्तोवाला एक पौधा जिसमे लाल रग के फूल लगते है।

झिल्लड़—वि० [हिं० झिल्ला] (वह कपडा) जिसकी बुनावट दूर दूर पर हो। पतला और झँझरा। झीना। 'गफ' का विपर्याय।

झिल्लन—स्त्री० [देश०] दरी बुनने के करघे की वह लकडी जिसमे बय का बाँस लगा रहता है। गुरिया।

झिल्ला †—वि० [अनु०] [स्त्री० झिल्ली] १ पतला। बारीक। महीन। २ दे० 'झिल्लड'।

झिल्लि—स्त्री० [स० झिर्√लिश् (गमनादि)+डि] १ एक प्रकार का बाजा। २ झीगुर।

झिल्लिका—स्त्री० [स० झिल्लि+कन्–टाप्] १ झीगुर। २ झिल्ली। २ झीगुर की झनकार। ३ सूर्य का प्रकाश।

झिल्ली—स्त्री० [स० झिल्लि+ङीष्] झीगुर।
स्त्री० [?] १ किसी चीज के ऊपर या चारो ओर प्राकृतिक रूप से लगा या लिपटा हुआ बहुत ही पतला और पारदर्शक आवरण। जैसे—गर्भस्थ शिशु के चारो ओर लिपटी हुई झिल्ली, आँख, त्वचा अथवा फेफडे के ऊपर की झिल्ली। २ फलो आदि के ऊपर का उक्त प्रकार का बहुत पतला छिलका। जैसे—अगूर या जामुन पर की झिल्ली। ३ आँख का जाला नामक रोग।

झिल्लीक—पु० [स० झिल्ली+कन्] झीगुर।

झिल्लीका —स्त्री० [स० झिल्लीक+टाप्] झीगुर।

झिल्लीदार—वि० [हि० झिल्ली+फा० दार] जिसमे या जिसके ऊपर झिल्ली हो। झिल्ली से युक्त।

झीक—स्त्री०=झीका।

झींकना†—स० [?] १ पटकना। २ फेकना। ३ मडित या सज्जित करना।
अ० १ मडित या सज्जित होना। उदा०—आनद-कद चन्द्र के ऊपर तो तारा-गण झीके।—लोक-गीत। २ दे० 'झीखना'।

झींका—पु० [देश०] पीसे जानेवाले अन्न की उतनी मात्रा जितनी एक बार चक्की मे डाली जाती है।

झीख—स्त्री०=झीख।

झींखना—अ०=झीखना।

झींगट—पु० [देश०] मल्लाह। माँझी। (लश०)

झीगन—पु० [देश०] मोटे तने तथा कम शाखाओवाला मँझोले कद का एक पेड।

झीगा—पु० [स० चिंगट] १ एक प्रकार की छोटी मछली जो प्राय नदियो और जलाशयो मे पाई जाती है। इसका मास खाने मे बहुत स्वादिष्ट होता है। २ एक प्रकार का बढिया अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है। ३ कपास की फसल मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।

झींगुर—पु० [झी+कर से अनु०] एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा जो झी झी शब्द करने के लिए प्रसिद्ध है।

झींझना†—अ० [अनु०] झुँझलाना।

झींझी—पु०=झाँझी।

झींटना†—अ०=झीखना।

झीपना—अ०=झेपना।
स० दे० 'ढकना'।

झींवर†—पु०=झीवर (मल्लाह)।

झींसी—स्त्री० [अनु० या हिं० झीना=बहुत महीन] ऐसी हलकी वर्षा जिसमे पानी बहुत ही छोटी-छोटी या महीन बूँदो के रूप मे बरसता हो
क्रि० प्र०—पडना।

झीका—पु० [स० शिक्य] छीका। सिकहर।
झीख—स्त्री० [हिं० झीखना] झीखने की अवस्था, क्रिया या भाव।
झीखना—अ० [अनु०] मानसिक कष्ट, चिता आदि से व्यथित होकर बहुत ही दु खी भाव से रह-रहकर और समय-कुसमय उसकी चर्चा करते रहना। कुढ-कुढ कर अपना दुखडा रोते रहना।
पु० वह कथन या बात जो उक्त प्रकार से कुढ-कुढकर कही जाती हो।
झीझा†—वि० [स्त्री० झीझी]=झीना।
†वि० [?] धीमा। मन्द।
झीठ†—वि०=झूठ। (ब्रज)
झीडना*—अ० [अनु०] १ बलपूर्वक प्रविष्ट होना। घुसना। २ धँसना।
झीणा†—वि०=झीना।
झीत—पु० [?] जहाज के पाल मे लगा हुआ बटन। (लश०)
झीन†—वि०=झीना।
झीना—वि० [स० क्षीण] [स्त्री० झीनी] १ क्षीण शरीरवाला। दुबला-पतला। २ पतला। बारीक। महीन। ३ (कपडा) जिसके ताने तथा बाने के सूतो की बुनावट ठस न होकर विरल हो। उदा०—झीनी झीनी बीनी चदरिया।—कबीर।
मुहा०—झीना ओढ़ाना=चित्रकला मे आकृतियो पर ऐसा झीना या पतला वस्त्र अकित करना कि नीचे के अग दिखाई दे।
४ (रचना) जिसके दोनो बल के डोरे, तार आदि अपेक्षया एक दूसरे से दूर या विरल हो। जैसे—खाट या पलग की झीनी बुनावट। ५ जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। झँझरा। ६ धीमा। मद।
झीनासारी†—पु० [?] एक प्रकार का धान और उसका चावल।
झीमना†—अ० [अनु०] १ झूमना। उदा०—नवनील कुज है झीम रहे कुसुमो की कथा न बद हुई।—प्रसाद। २ ऊँघना।
झीमर—पु०=झीवर (मल्लाह)।
झीमस†—स्त्री० [हिं० झीमना] ऊँघ। झपकी।
झीरिका—स्त्री० [स०] झीगुर।
झीरुका—स्त्री० [स०] झीगुर।
झील—स्त्री० [स० क्षीर=जल] १ वह बहुत बडा प्राकृतिक जलाशय जिसमे पानी रुका रहता हो। बहुत बडा ताल। २ उक्त प्रकार का कोई कृत्रिम छोटा जलाशय।
स्त्री० [?] झोका।
झीलना—स०=झेलना।
झीलम†—स्त्री०=झिलम।
झीलर—पु० [हिं० झील] छोटी झील। ताल।
झीली—स्त्री० [हिं० झिल्ली] १ दही, दूध आदि के ऊपर की मलाई। २ दे० 'झिल्ली'।
झीवर—पु० [स० धीवर] मल्लाह। माँझी।
झुँकवाई†—स्त्री०=झोकवाई।
झुँकवाना†—स०=झोकवाना।
झुँकाई†—स्त्री०=झोकवाई।
झुँगना†—पु०=जुगनूँ।
झुँगरा—पु० [देश०] साँवाँ (कदन्न)।
झुँझना†—पु० [हिं० झुनझुना] १ घर मे बालक के जन्म लेने पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमे शिशु के झुनझुना बजाने या उससे खेलने का उल्लेख होता है। २ दे० 'झुनझुना'।
झुँझलाना—अ० [अनु०] [भाव० झुँझलाहट] इस प्रकार कुछ क्रुद्ध तथा व्यथित होकर कोई बात कहना जिससे अप्रसन्नता, असतोष या असहमति सूचित होती हो।
झुँझलाहट—स्त्री० [हिं० झुँझलाना] झुँझलाने की अवस्था, क्रिया या भाव।
झुट—पु० [स०√झुट् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि] झाडी।
झुड—पु० [स० यूथ, प्रा० जूट] १ एक ही जाति या वर्ग के बहुत से पक्षियो, पशुओ आदि के एक स्थान पर एकत्र रहने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—कबूतरो या हिरनो का झुड।
मुहा०—झुड मे रहना=पशु-पक्षियो का अकेले नही, बल्कि अपने वर्ग के अन्य जीवो के साथ मिलकर रहना।
२ व्यक्तियो का समूह।
झुडी—स्त्री० [?] १ पौधो का ऊपरी भाग काट लेने पर नीचे बची रह जानेवाली उसकी जड या खूँटी। २ वह कुलाबा जिसमे चिलमन या परदा टाँगा जाता है।
झुकझोरना†—स०=झकझोरना।
झुकना—अ० [स० युज्=किसी ओर प्रवृत्त होना] १ किसी ऊर्ध्व या खडे बल मे रहनेवाली चीज के ऊपरी भाग का कुछ टेढा होकर किसी दिशा या पार्श्व मे कुछ नीचे की ओर आना या होना।—जैसे—(क) पढने-लिखने के समय आदमी की गरदन या सिर झुकना। (ख) बरसात मे पानी भरने के कारण मकान की दीवार या बरामदा झुकना। २ क्षैतिज या बेडे बल मे रहनेवाली अथवा सीधी चीज का कोई अश या सिरा नीचे की ओर आना, मुडना या होना। जैसे—(क) लकडी की धरन का बीच मे झुकना। (ख) लोहे के छड का एक या दोनो सिरे झुकना। ३ बोझ, भार आदि के कारण किसी चीज का अपनी प्रसम और स्वाभाविक अवस्था या स्थिति से हटकर कुछ नीचे की ओर आना या प्रवृत्त होना। जैसे—फलो के भार से वृक्ष की डालियाँ झुकना। ४ आकाशस्थ ग्रहो, नक्षत्रो आदि की अपनी पूरी ऊँचाई तक पहुँच चुकने के बाद क्षितिज की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—चद्रमा या सूर्य का (अस्तमित होने के समय या उससे पहले) झुकना। ५ दुर्बलता, रोग, वार्धक्य, शिथिलता आदि के कारण शरीर के किसी ऐसे अग का कुछ नीचे की ओर आना या प्रवृत्त होना जो साधारणत खडा या सीधा रहता हो अथवा जिसे खडा या सीधा रहना चाहिए। जैसे—(क) नशे या लज्जा से आँखे या सिर झुकना। (ख) बुढापे मे कमर या गरदन झुकना। ६ उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए थोडा आगे बढते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—किसी के चरण छूने या कोई चीज उठाने के लिए झुकना। ७ प्रतियोगिता, बैर, विरोध आदि के प्रसगो मे प्रतिपक्षी की प्रबलता या महत्ता मानते हुए उसके सामने दबना अथवा नम्र भाव से आचरण या व्यवहार करना। अभिमान, बल आदि का प्रदर्शन छोडकर विनीत और सरल होना। जैसे—(क) युद्ध मे शत्रु के सामने झुकना। (ख) लडाई-झगडे मे भाइयो के आगे झुकना। ८ आवेश, क्रोध आदि से युक्त होकर कठोर बाते कहने या रोष प्रकट करने के लिए किसी की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—पहले तो वे अपने भाई से उलझ रहे थे फिर मेरी ओर (या मुझ पर) झुक पड़े। उदा०—(क)

नहिं जान्यौ बियोग सो रोग है आगे झुकी। तब हौ तेहि सो तरजी।—तुलसी। (ख) तऊ लाज आई झुकत खरे लजौहे देखि।—बिहारी। ९ विशेष ध्यान देते हुए किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होकर कुछ करने लगना। जैसे—आज-कल वह इतिहास छोडकर दर्शन (या वेदात) की ओर झुके है।

झुकमुख—पु० दे० 'झुट-पुटा'।

झुकरना†—अ० [अनु०] १ =झुँझलाना। २ =झुकराना।

झुकराना†—अ० [हिं० झोका] वायु, वेग आदि के कारण इधर-उधर झुकना। झोके खाना।

झुकवाई—स्त्री० [हिं० झुकवाना] झुकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकवाना—स० [हिं० झुकाना का प्रे० रूप] १ किसी को झुकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के द्वारा ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा झुके। स० दे० 'झोकवाना'।

झुकाई—स्त्री० [हिं० झुकाना] झुकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकाना—स० [हिं० झुकना का स०] १ किसी खडी या सीधी चीज का कोई अश या तल किसी प्रकार कुछ नीचे की ओर लाना। ऐसा काम करना जिससे कुछ झुके। नीचे की ओर प्रवृत्त करना। जैसे—दबाकर लकडी या ठोक-पीटकर लोहे का छड झुकाना। २ जो चीज ऊँचाई पर अथवा ऊपर हो उसे या उसका कोई अश नीचे की ओर लाना। जैसे—राजा या सेनापति की मृत्यु होने पर किले का झडा झुकाना। ३ अपना कोई अग किसी ओर कुछ नीचे करना या ले जाना। जैसे—किसी के सामने आँखे या सिर झुकाना, किसी ओर कधा, पैर या हाथ झुकाना। ४ किसी को किसी प्रकार दबाते हुए अथवा उसका अभिमान, विरोध, हठ आदि दूर करते हुए उसे नम्र या विनीत बनाना। जैसे—उदारता अथवा कौशल से विरोधी को अपने सामने झुकाना। ५ उक्त के आधार पर बैरी या शत्रु को पराजित या परास्त करना। ६ कुछ बल प्रयोग करते हुए किसी को किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त करना या उसमे लगाना। जैसे—लडका तो अभी पढना चाहता था, पर पिता ने उसे नौकरी (या रोजगार) मे झुका दिया। ७ कोई चीज या बात किसी ओर अग्रसर या प्रवृत्त करना। जैसे—आप लोगो ने आपस के लडाई-झगडे (या हँसी-मजाक) की बात लाकर मुझ पर झुका दी। ८ प्राय या सदा खडी अथवा सीधी रहनेवाली चीज कुछ टेढी करके किसी ओर नत या प्रवृत्त करना। जैसे—बीमारी या बुढापे ने उसकी कमर झुका दी।

झुकामुकी(मुखी)—स्त्री०=झुकमुख (झुटपुटा)।

झुकार—पु० [हिं० झकोरा] हवा का झोका। झकोरा।

झुकाव—पु० [हिं० झुकना] १ झुकने की क्रिया या भाव। २ झुके हुए होने की अवस्था या भाव। ३ किसी विशेष कार्य या विषय की ओर होनेवाली सामान्य से कुछ आगे बढी हुई प्रवृत्ति जिसके कारण वह कार्य या विषय अपेक्षया अधिक प्रिय और रुचिकर होता है। जैसे—गणित की ओर इस लडके का शुरू से ही झुकाव है।

झुकावट—स्त्री०=झुकाव।

झुगिया†—स्त्री०=झुग्गी।

झुग्गी—स्त्री० [?] १ फकीरो, साधुओ आदि के रहने की झोपडी। २. कोई बहुत छोटा मकान।

झुझकावना—स०=जुझाना (जूझने मे प्रवत्त करना)।

झुझझ*—पु०=युद्ध।

झुट-पुटा—पु० [अनु०] सूर्योदय होने से कुछ पहले और सूर्यास्त होने के कुछ बाद का वह समय जिसमे प्रकाश धुँधला होने के कारण चीजे स्पष्ट रूप से नही दिखाई देती।

झुटलाना†—स०=झुठलाना।

झुटालना†—स०=जुठारना (जूठा करना)।

झुट्टग—वि० [हिं० झोटा] जिसके सिर पर बहुत बडा या भारी झोटा हो।

झुट्ठल—वि० [हिं० झूठ] झूठा।
क्रि० वि० झूठ-मूठ। व्यर्थ मे।

झुट्ठा†—वि०=झूठा।

झुठकाना—स० [हिं० झूठ] झूठ-मूठ कोई बात कह कर किसी को धोखे या भ्रम मे डालना।

झुठलाना—स० [हिं० झूठ+लाना (प्रत्य०)] १ किसी को झूठा ठहराना या सिद्ध करना। जैसे—तुम तो अपनी बातो से सच्चो को भी झुठला देते हो। २ झूठ-मूठ कोई बात कहकर किसी को धोखे या भ्रम मे डालना। जैसे—खेल मे बच्चो को झुठलाना।

झुठाई†—स्त्री० [हिं० झूठ+आई (प्रत्य०)] झूठे होने की अवस्था या भाव। झूठापन। मिथ्यात्व।

झुठाना—स० [हिं० झूठ+आना (प्रत्य०)] १ (किसी विषय या बात को) झूठा सिद्ध करना। २ झुठलाना।

झुठामूठी†—क्रि० वि० =झूठ-मूठ।

झुठालना†—स०=झुठलाना।

झुन्—स्त्री०=झुनझुनी।

झुनक—पु० [अनु०] घुँघरुओ या नूपुरो के बजने का शब्द।

झुनकना—अ० [अनु० झुनझुन शब्द निकलना या होना।
स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।
†पु०=झुनझुना (खिलौना)।

झुनका—पु० [?] छल। धोखा।

झुनकारा—वि० [स्त्री० झुनकारी]=झीना।

झुनझुन—स्त्री० [अनु०] घुँघरुओ आदि के बजने से होनेवाला शब्द।

झुनझुना—पु० [हिं० झुनझुन] बच्चो के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।

झुनझुनाना—अ० [अनु०] १ झुनझुन शब्द निकलना या होना। २ शरीर के किसी अग मे झुनझुनी होना।
स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झुनझुनियाँ—स्त्री० [अनु०] १ पैरो मे पहनने का एक गहना जिसके घुँघरुओ से झुनझुन शब्द निकलता है। २ अपराधियो के पैरो मे पहनाई जानेवाली बेडी। ३ सनई का पौधा। ४ दे० 'झुनझुनी'।

झुनझुनी—स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] शरीर के किसी अग विशेषत हाथ या पैर की वह अस्थायी या क्षणिक अवस्था जिसमे रक्त का सचार रुकने के कारण उस अग मे कुछ देर तक हलकी चुनचुनाहट और कुछ सनसनी-सी होती है।
क्रि० प्र०—चढना।

झुनी†—स्त्री० [देश०] जलाने की पतली लकडी।

झुपझुपी†—स्त्री०=झुबझुबी।

झुपरी†—स्त्री०=झोपडी।
झुप्पा—पु०=झब्बा।
झुबझुबी—स्त्री०[अनु०] कानो मे पहनने का एक आभूषण। झुपझुपी।
झुमका—पु०[प्रा० झुम्म+अक्क (प्रत्य०)] १ कानो मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण जो नीचे लटकता रहता है। २ एक प्रकार का पौधा जिसमे उक्त आभूषण के आकार के फूल लगते है। ३ इस पौधे का फूल। ४ उक्त गहने या फूल के आकार का गुच्छा।
झुमना†—वि०[हिं० झूमना] जो प्राय या बराबर झूमता रहता हो। जिसकी प्रवृत्ति झूमने या झूमते रहने की हो।
पु० वह बैल जो बँधा रहने पर प्राय झूमता रहता हो। (ऐसा बैल ऐबी या बुरा समझा जाता है)
अ०=झूमना।
झुमरा†—पु०[देश०] एक प्रकार का बहुत बडा हथौडा।
झुमरि—स्त्री०[स०] एक रागिनी।
झुमरी—स्त्री०[देश०]छत, दीवार का पलस्तर आदि पीटने की काठ की छोटी मुँगरी।
झुमाऊ—वि०=झुमना।
झुमाना—स०[हिं०झूमना का स०रूप] किसी को झूमने मे प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई झूमने लगे।
झुमिरना†—अ०=झूमना।
झुरकुट—वि०[अनु०] १ मुरझाया या सूखा हुआ। २ कृश और क्षीण शरीरवाला। दुबला-पतला।
झुरकुटिया—पु०[देश०] एक प्रकार का बढ़िया पक्का लोहा जिसे खेडी भी कहते है।
वि०=झुरकुट।
झुरकुन†—पु० [हिं० झड+कण]१ झडी हुई चीज। झडना। २ किसी चीज के बहुत छोटे-छोटे टुकडे। चूर।
झुरझुरी—स्त्री०[अनु०]शरीर मे होनेवाली कुछ हलकी कँपकँपी, विशेषत वह कँपकपी जो जूडी या शीत-ज्वर चढने के समय होती है।
झुरना—अ०[स० क्षर, प्रा० झूरइ, या स० ज्वल्]१ किसी विकट चिंता या दु ख के कारण मन ही मन इतना अधिक सतप्त तथा विकल रहना कि शरीर धीरे-धीरे सूखता जाय। अन्दर ही अन्दर दु खी रहकर अपना शरीर घुलाना। २ सूखना। ३ कुम्हलाना। मुरझाना।
झुरमुट—पु०[स० झुट=झाडी]१ पास-पास उगी तथा एक दूसरी से उलझी हुई घनी झाडियो का समूह। २ बहुत से लोगो का समूह।
मुहा०—झुरमुट मारना=बहुत से लोगो का घेरा बनाकर खडे होना। जैसे—जगह-जगह सिपाही झुरमुट मार कर लड रहे है।
३ बच्चो का एक खेल जिसमे वे घेरा बनाकर नाचते है। ४ चादर से सिर, मुँह तथा सारा शरीर के लपेटे हुए होने की अवस्था। ५ उक्त प्रकार से कोई ओढना ओढने या लपेटने का ढग या प्रकार।
झुरवन—स्त्री०[हिं० झुरना]१ झुरने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी चीज के झुरने अर्थात् सूखने के कारण उसमे होनेवाली कमी या छीज।
झुरवाना—स०[हिं० झुराना]१ ऐसा काम करना जिससे कोई मन ही मन चिंतित और दु खी होकर सूखता चला जाय। किसी को झुरने मे प्रवृत्त करना। २ कोई चीज धूप आदि मे रखकर या और किसी प्रकार सुखाना।
झुरसना†—अ, स०=झुलसना।
झुरसाना†—स०=झुलसाना।
झुरहुरी—स्त्री०=झुरझुरी (कँपकँपी)।
झुराना—स० [हिं० झुरना] १ किसी को झुरने मे प्रवृत्त करना। २ सुखाना।
†अ०१ =झुरना। २ =सूखना।
झुरावन—स्त्री०[हिं० झुरना+वन (प्रत्य०)]=झुरवन।
झुर्री—स्त्री०[हिं० झुरना]१ वृद्धावस्था मे शरीर के दुर्बल और शुष्क हो जाने पर त्वचा पर पडनेवाली शिकन। २ किसी वस्तु के सूखने पर उसके चिकने या सपाट ऊपरी आवरण या तल पर पडनेवाली शिकन। जैसे—सूखे हुए आम या परवल पर झुर्री।
झुलका†—पु०=झुनझुना। (खिलौना)।
झुलना—पु०=झुल्ला (स्त्रियो का पहनावा)।
वि०, पु०= झूलना।
झुलनी—स्त्री० [हिं० झूलना]१ नाक मे पहनने की नथ मे लटकता रहनेवाला मोतियो का छोटा गुच्छा। २ झूमर (गहना)।
झुलनी बौर—पु०[देश०] धान की बाल। (कहार)
झुलमुला†—वि०[स्त्री० झुलमुली]=झिलमिला।
झुलमुलाना—अ०[?]१ झिलमिलाना। २ सिर मे चक्कर आने के कारण लडखडाना।
झुलमुली†—स्त्री०=१ झिलमिली। २ =झालर।
झुलवा†—पु० दे० 'जेठवा'।
पु०=झूला।
झुलवाना—स०['झुलाना' का प्रे० रूप]किसी को झुलाने का काम किसी दूसरे से कराना।
झुलस—स्त्री०=झुलसन।
झुलसन—स्त्री० [हिं० झुलसना] १ झुलसने की क्रिया या भाव। २ झुलसे हुए होने की अवस्था या भाव। ३ ऐसी गरमी या ताप जिससे शरीर झुलस जाय।
झुलसना—अ०[स०√ज्वल्]१ आग की लपट से सहसा स्पर्श होने पर किसी अग की त्वचा का कुछ-कुछ जल जाने के कारण काला पड जाना। जैसे—रोटी पकाते समय हाथ झुलसना। २ अत्यधिक ताप या गरमी के कारण किसी वस्तु के ऊपरी या बाहरी तल का सूखकर काला पड जाना। जैसे—लू से पौधो के पत्ते या शरीर झुलसना।
स० किसी वस्तु को इस प्रकार जलाना या तप्त करना कि उसके ऊपरी आवरण या त्वचा का रग काला पड जाय। जैसे—जलती हुई लकडी से किसी का मुँह झुलसना।
झुलसवाना—स०[हिं० 'झुलसाना का प्रे०रूप]कोई चीज झुलसने का काम किसी दूसरे से कराना।
झुलसाना—स०१ =झुलसना। २ =झुलसवाना।
† अ०=झुलसना।
झुलाना—स०[हिं० झूलना का स०]१ टँगी या लटकी हुई चीज को बार-बार इधर-उधर हिलाना। जैसे—पालना झुलाना। २ ऐसी क्रिया

करना जिससे कोई झूलने लगे। जैसे—बच्चे को झुलाना। ३ किसी काम या बात के लिए किसी को बराबर आसरा देते रहना या प्रतीक्षा मे रखना (परन्तु वह काम या बात पूरी न करना)। जैसे—यह सुनार तो चीज बनाकर देने मे महीनो झुलाता है।

झुलावना—स०=झुलाना।

झुलावनि†—स्त्री०[हि० झुलाना]झुलाने की क्रिया, ढग या भाव।

झुलुआ†—पु०[हि० झूला]छोटा झूला।

झुलौआ†—वि०=झूलना।

†पु०१ =झूला। २ =झुल्ला।

झुल्ला—पु०[देश०] स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का कुरता।

†पु०=झूला।

झुहिरना—अ०[?]लादा जाना। लदना।

झुहिराना—स०[हि० झुहिरना] लादना।

अ०=झुहिरना।

झूंक†—स्त्री०१ =झोक। २ =झोका।

झूंकना†—स०=झोकना।

अ०=झीखना।

झूंका†—पु०=झोका।

झूंखना†—अ०=झीखना।

झूंझल†—स्त्री०=झुँझलाहट।

झूंटा—पु०[हि० झोका] झूले पर चढकर तथा उसे झुलाकर एक बार आगे जाने और फिर उसी स्थान पर लौट आने की क्रिया या भाव। पेग।

†वि० झूठा।

झूंठ†—पु०=झूठ।

वि०=झूठा।

झूंठा†—वि०१ =झूठा। २ =जूठा।

झूंठी—स्त्री०[?]वे डठल जो नील के पौधो की डालियो को सडाने पर बच रहते हैं।

झूंपडा†—पु०=झोपडा।

झूंबना—अ०=झूमना।

झूंसना†—स०=झँसना (धोखा देकर लेना)।

अ०, स०=झुलसना।

झूंसा—पु०[देश०] एक तरह की घास।

झूकटी—स्त्री०[देश०] झाडी।

झूझ†—पु०=जूझ।

झूझना†—अ०=जूझना।

झूट—पु०=झूठ।

झूटना—पु०[?]कानो मे पहनने का झुमका।

झूठ—पुं०[स० अयुक्त, प्रा० अजुत] ऐसा कथन या बात जो वस्तुत यथार्थ या सत्य न हो फिर भी जो यथार्थ या सत्य के रूप मे कही गई हो।

पद—झूठ का पुतला=बहुत बडा झूठा आदमी। **झूठ की पोट**=सरासर झूठी बात।

मुहा०—झूठ का पुल बाँधना=बराबर एक पर एक झूठ बोलते चलना। **झूठ सच जोडना**=किसी सच्ची बात मे अपनी ओर से भी झूठी बाते मिलाकर कहना।

वि०=झूठा।

†स्त्री०=जूठ।

झूठन—स्त्री०[?] ऐसी भूमि जिसमे दो फसले पैदा होती हो। दु-फसली जमीन।

†स्त्री०=जूठन।

झूठ-मूठ—अव्य० [हि० झूठ ।अनु० मूठ] १ बिना किसी वास्तविक या सत्य आधार के। झूठ ही। जैसे—झूठमूठ किसी को दौडाना। २ यो ही या व्यर्थ किसी को बहकाने या बहलाने के लिए।

झूठा—वि०[हि० झूठ][स्त्री० झूठी]१ (कथन) जो सत्य न हो, बल्कि उसके विपरीत हो। वास्तव से अन्यथा या भिन्न। मिथ्या। जैसे—झूठा बयान, झूठी शिकायत। २ (व्यक्ति) जो उक्त प्रकार की बात कहता हो या जिसने उक्त प्रकार की बात कही हो। जैसे—झूठा गवाह। ३ (व्यक्ति) जो वास्तव मे विश्वसनीय ओर सत्यनिष्ठ न हो, पर स्वार्थ साधन के लिए अपने आपको विश्वसनीय ओर सत्य-निष्ठ बतलाता हो या सिद्ध करना चाहता हो। जैसे—झूठा मित्र। ४ (स्थिति) जिसमे उक्त प्रकार की विश्वसनीयता और सत्यनिष्ठा का अभाव हो। जैसे—झूठी दोस्ती, झूठी मुहब्बत। ५ (पदार्थ) जो नकली या बनावटी होने पर भी देखने मे असल की तरह जान पडता हो और असल की जगह काम देने के लिए बनाया गया हो। जो केवल दिखाने और धोखा देने भर को हो। जैसे—झूठा गहना, झूठा ताला, झूठा सिक्का।

मुहा०—(किसी चीज का) झूठा पड़ना=खराब हो जाने या बिगड जाने के कारण जो ऊपर से देखने मे तो ज्यो का त्यो हो, पर ठीक या पूरा काम न दे सकता हो। जैसे—(क) उसका बायाँ हाथ झूठा पड गया है। (ख) इस कल के कई पुरजे झूठे पड गये है।

६ (तथ्य या पदार्थ) जो अपेक्षया या तुलनात्मक दृष्टि से बहुत घटकर, तथ्यहीन या निरर्थक-सा हो। जैसे—इसके सामने तुम्हारे (क) सब व्यवहार या (ख) सब कपडे झूठे है।

†वि० दे०'जूठा'।

झूठो—अव्य० [हि० झूठा]१ केवल किसी को बहकाने भर के लिए। झूठ-मूठ। यो ही। २ सिर्फ कहने भर के लिए। नाम मात्र को। जैसे—उन्होने झूठो भी मुझसे साथ चलने को नही कहा।

झूणि—पु०[स०] १ एक तरह की सुपारी। २ एक प्रकार का अपशकुन।

झूना†—वि०=झीना।

झूबना†—अ०=झूमना।

झूम—स्त्री० [हि० झूमना] १ झूमने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—होती थी प्रकट एक झूम पद पद से।—मैथिलीशरण। २ ऊँघने की अवस्था या भाव।

झूमक—पु० [हि झूमना] १ देहाती स्त्रियो का एक प्रकार का नाच जिसमे वे दल बाँधकर और झूम-झूमकर नाचती है। झुमकरा। झूमर। २ इस नृत्य के साथ गाये जानेवाले गीत। ३ विवाह आदि मागलिक अवसरों पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। ४ चादर, साडी आदि से टाँकी जानेवाली वह झालर जिसमे मोतियो आदि के छोटे-छोटे गुच्छे या झुमके लटकते रहते है। ५ झुमका।

झूमक साडी—स्त्री० [हि० झूमक+साडी] वह साडी जिसमे झूमक अर्थात् ऐसी झालर लगी हो जिसमे मोतियो के गुच्छे आदि टँके हुए हो।

झूमका—पु० १ =झूमक। २ =झुमका।

झूमड†—पु०=झूमर।

झूमड़ झामड़—पु० [हि० झूमड] व्यर्थ का प्रपच। आडबर।

झूमडा—पु०=झूमरा।

झूमना—अ० [स० झप=कूदना] १ किसी चीज के अगले भाग या ऊपरी सिरे का बार-बार या रह-रहकर आगे-पीछे और इधर-उधर झुकते और उठते या हिलते-डुलते रहना। कुछ झोका खाते हुए कभी किसी ओर और कभी किसी ओर हलकी गति मे होना। जैसे—हवा के झोके से पेडो की डालियो का झूमना। २ नशे या नीद के कारण अथवा प्रसन्नता और मस्ती मे आने पर किसी जीव या प्राणी के धड और सिर मे उक्त प्रकार की हलकी गति होना। जैसे—(क) बहुत सुन्दर गीत, भजन या व्याख्यान सुनकर श्रोताओ का झूमना। (ख) मस्ती मे आकर साँप या हाथी का झूमना। ३ एक जगह इकट्ठे होकर कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होते रहना। जैसे—आकाश मे बादलो का झूमना।

झूमर—पु० [हि० झूमना] १ सिर पर पहनने का एक गहना जिसमे एक या कई लडो मे आगे की ओर एक छोटी पटरी-सी बनी होती है जो सिर की गति-विधि के अनुसार इधर-उधर झूमती या लहराती रहती है। २ कान मे पहनने का झुमका। ३ पूरब मे, देहाती स्त्रियो का एक प्रकार का नाच जिसमे वे घेरा बाँधकर झूमती हुई नाचती है। ४ उक्त नाच के साथ गाये जानेवाले गीत। ५ विवाह आदि मागलिक अवसरो पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जो प्राय उक्त प्रकार से नाचते हुए गाये जाते है। ६ होली के दिनो मे गाये जानेवाले झूमक नामक गीत। ७ एक ही तरह की बहुत-सी चीजो का ऐसा समूह कि उनके कारण एक गोल घेरा-सा बन जाय। जमघटा। जैसे—नावो का झूमर।

†पु०=झूमड।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

८ एक प्रकार की मोगरी जिससे गाडीवान आदि अपनी गाडियो की मरम्मत करते है। ९ काठ का एक प्रकार का खिलौना जिसमे एक गोले या डडे के साथ छोटी-छोटी गोलियाँ बँधी रहती है। १० दे० 'झूमरा' (ताल)।

झूमरा—पु० [हि० झूमर] चौदह मात्राओ का एक ताल।

झूमरि†—स्त्री०=झूमर।

झूमरी—स्त्री० [देश०] शालक राग के पाँच भेदो मे से एक।

झूर†—वि० [स० जुष्ट] जूठा।

स्त्री० [हि० झूरना] १ झुरने की क्रिया या भाव। २ उग्र मनस्ताप। जलन। दाह।

वि०=झूरा (सूखा)।

वि०=झूठा।

क्रि० वि०=झूठ-मूठ।

झूरना†—अ०=झुरना।

स०=झुराना।

झूरा—वि० [हि० झूर] १ सूखा। शुष्क। उदा०—काठहु चाहि अधिक सो झूरा।—जायसी। २ रस-हीन। नीरस। ३ जिसके साथ और कुछ या कोई न हो। अकेला। ४ (व्यजन) जिसके साथ भोजन आदि न मिलता हो। विशेष दे० 'सूखा'।

पु० १ ऐसा स्थान जहाँ जल का अभाव हो। २ ऐसा समय जिसमे वृष्टि का अभाव हो। सूखा। ३ कमी। न्यूनता। विशेष दे० 'सूखा'।

क्रि० प्र०—पडना।

झूरि—स्त्री०=झूर।

झूरै—क्रि० वि० [हि० झूर] १ बिना किसी अर्थ या प्रयोजन के। यो ही। व्यर्थ। २ बिना किसी और उपकरण या सामग्री के। खाली।

†क्रि० वि०=झूठमूठ।

झूल—स्त्री० [हि० झूलना] १ झूलने की क्रिया या भाव। २ वह चौकोर कपडा जो प्राय शोभा के लिए घोडो, बैलो, हाथियो आदि की पीठ पर डाला जाता है और जो दाहिने-बाएँ झूलता या लटकता रहता है।

मुहा०—गधे पर झूल पडना=बहुत ही अयोग्य या कुपात्र पर कोई बहुत अच्छा अलकरण या आवरण पडना।

३ वह कपडा जो पहनने पर ढीला-ढाला, भद्दा या भोडा जान पडे। (व्यग्य) जैसे—किसी का ढीला-ढाला कोट देखकर कहना—यह झूल आपको कहाँ से मिल गई।

†पु०=झूला।

झूल-दड—पु० [हि० झूलना+स० दड] एक प्रकार का व्यायाम जिसमे बारी-बारी से बैठक और झूलते हुए दड किया जाता है।

झूलन†—स्त्री० [हि० झूलना] झूलने की क्रिया या भाव। झूल।

पु० १ सावन के महीने मे ठाकुरो, देवताओ आदि के सबध मे होनेवाला वह उत्सव जिसमे उनकी मूर्तियाँ हिंडोले मे बैठाकर झुलाई जाती है और उनके सामने नृत्य, गीत आदि होते है। हिडोला। २ उक्त अवसर पर अथवा सावन-भादो मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

झूलना—अ० [स० झुल्, प्रा० झुलइ, झुल्ल, उ० झुलिबा, गु० झूलवूँ, मरा० झुलणे, सि० झुलणु] १ किसी आधार या सहारे पर लटकी हुई चीज का रह-रहकर आगे-पीछे या इधर-उधर लहराना अथवा हिलना-डोलना। जैसे—टँगा हुआ परदा या उसमे बँधी हुई डोरी का झूलना, पेडो मे लगे हुए फलो का झूलना। २ झूले पर बैठकर पेग लेना या बार-बार आगे बढना और पीछे हटना। ३ किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि की आशा अथवा प्रतीक्षा मे बार-बार किसी के यहाँ आना-जाना, अथवा अनिश्चित दशा मे पडे रहना। जैसे—किसी कार्यालय मे नौकरी पाने की आशा मे झूलना।

स० झूले पर बैठकर पेग लेते हुए उसका आनन्द या सुख भोगना। जैसे—बरसात मे लडके-लडकियाँ दिन भर झूला झूलती रहती हैं।

वि० [स्त्री० झूलनी] (पदार्थ) जो रह-रहकर इधर-उधर हिलता-डोलता हो। झूलता रहनेवाला या झूलता हुआ। जैसे—पहाडी झरने या नदी पर बना हुआ झूलना पुल।

पु० १ मात्रिक सम दडक छदो का एक भेद या वर्ग जिसे प्राकृत मे झुल्लण कहते थे। इसके प्रत्येक चरण मे ३७ मात्राएँ और पहली तथा दूसरी १०मात्राओ के बाद यति या विश्राम होता है। यतियो पर तुक मिलना और अन्त मे यगण होना आवश्यक है। २ एक प्रकार का

वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे स, ज, ज, भ, र, स और लघु होता है। रूप-माला के प्रत्येक चरण के आरभ मे दो लघु रखने से भी यह छंद बन जाता है। इसमे १२ और ७ वर्णो पर यति होती है। इसे मणि-माल भी कहते है। ३ दे० 'झूला'।

झूलनी बगली—स्त्री० [हि० झूलना+बगली] बगली की तरह की मुगदर की एक प्रकार की कसरत।

झूलनी बैठक—स्त्री० [हि० झूलना+बैठक=कसरत] एक प्रकार की कसरत जिसमे बैठक करके पैर को हाथी के सूँड की तरह झुलाया जाता है।

झूलरि†—स्त्री० [हि० झूलना] झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला—पु० [स० दोल या हि० झूलना] १ पेड की डाल, छत या किसी और ऊँचे स्थान मे बाँधकर लटकाई हुई दोहरी या चौहरी जजीरे या रस्सियाँ जिन पर तख्ता, पीढा या और कोई आसन लगाकर लोग खडे होकर या बैठकर आनन्द और मनोविनोद के लिए झूलते है।

क्रि०—प्र०—झूलना।—डालना।—पडना।

२ जगली या पहाडी नदियाँ और नाले पार करने के लिए उनके दोनो किनारो पर किसी ऊँचे खभो, चट्टानो या पेडो की डालो पर रस्से बाँधकर बनाया जानेवाला वह पुल जिसका बीचवाला भाग अधर मे लटकता और इसी लिए प्राय इधर उधर झूलता रहता है। झूलना पुल। जैसे—लछमन झूला। ३ यात्रा आदि मे काम आनेवाला वह बिस्तर जिसके दोनो सिरे दो ओर रस्सियो से वृक्षो की डालो आदि मे बाँध देते है और जो उक्त प्रकार से बीच मे झूलता या लटकता रहता है। ४ हवा का ऐसा झटका या झोका जिससे चीजे इधर-उधर झूलने या हिलने-डोलने लगें। (क्व०) ५ दे० 'झूल'।

†पु० [?] तरबूज।

†पु०=झुल्ला (स्त्रियो का पहनावा)।

झूलि—स्त्री० १ =झूल। २ =झूली।

झूली—स्त्री० [हिं० झूलना] १ वह कपडा जिससे हवा करके अन्न ओसाया जाता है। २ ऐसा बिस्तर जिसके दोनो सिरे दोनो ओर किसी ऊँची चीज या जगह मे बँधे हो और जिसका बीचवाला भाग झूलता रहता हो। (दे० 'झूला' के अन्तर्गत)

झूसा—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जिसे चौपाये बहुत चाव से खाते है। गुलगुला। पलजी।

झेंपना—अ० [?] कोई लगती हुई बात सुनकर लज्जित भाव से सिर झुकाना या आँखे नीची करना। कुछ लज्जित होना।

सयो० क्रि०—जाना।

झेंपू—वि० [हिं० झेंपना] जो साधारण-सी बात होने पर भी लज्जित भाव से सिर या आँखें झुकाकर चुप रह जाता हो। प्राय झेंप जानेवाला।

झेपना—अ०=झेंपना।

झेपू—वि०=झेंपू।

झेर†—स्त्री० [?] १ झगडा। बखेडा। २ उलझन। पेच। ३ देर। विलब।

झेरना†—स० १ =छेडना (आरभ करना)। २ =झेलना।

झेरा†—पु० [?] १ गिरा या ढहा हुआ कूआँ। २ गड्ढा।

पु०=झेर।

झेल—स्त्री० [हि० झेलना] १ झेलने की क्रिया या भाव। २ हलका और सुखद आघात, धक्का या हिलोरा। ३ तैरने के समय पानी हटाने के लिए हाथ-पैर चलाने की क्रिया या भाव।

†स्त्री०=झेर (देर)।

झेलना—स० [म० √जल्=घेरकर फँसाना ?] १ कठिन या विकट परिस्थिति आने या प्रसग पडने पर उससे पार पाने के लिए धैर्य और साहस पूर्वक तत्सबधी कष्ट सहना। विपत्तियो आदि से न घबराते हुए या उनकी परवाह न करते हुए उन्हे बरदाश्त या सहन करना। जैसे—(क) इतने बडे परिवार का पालन करने मे उन्हे बडे-बडे कुष्ट झेलने पडे। (ख) यहाँ तक आने मे हमे रास्ते मे कमर और छाती तक पानी झेलना पडा। २ लाक्षणिक रूप मे, शुभ और सुखद परिस्थितियो का आनन्द लेते हुए भोग करना। उदा०—बाल केलि को विशद परम सुख, सुख समुद्र नृप झेलत।—सूर। ३ उचित ध्यान देते हुए ग्राह्य या मान्य करना। कोई बात सुनकर मान लेना। उदा०—पायन आनि परे तो परे रहे, केतो करी मनुहार न झेली।—मतिराम। ४ (कोई चीज या बात) हजम करना। पचाना।

झेलनी—स्त्री० [हि० झेलना] वह जजीर जो गहनो आदि मे उनका भार सँभालने अथवा उन्हे यथास्थान ठहराये रखने के लिए उनमे लगी रहती है और जिसका दूसरा सिरा ऊपर कही अटकाया या खोसा जाता है। जैसे—नथ या बाली की झेलनी।

झेली—स्त्री० [हि० झेलना] प्रसव के समय प्रसूता स्त्री को विशेष प्रकार से हिलाने-डुलाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।

झोक—स्त्री० [स० जूटक (जटा)] १ झोकने की क्रिया या भाव। २ सहसा किसी बात की ओर वेगपूर्वक झुक पडने अथवा मन के प्रवृत्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—झोक मे आकर कोई काम कर बैठना। ३ नशे, मनोविकार, रोग आदि की अवस्था मे सहसा मन मे होनेवाली वह प्रवृत्ति जिसमे भले-बुरे का ज्ञान अथवा ध्यान न रह जाता हो। जैसे—पागलपन (या बीमारी) की झोक मे वह दिन भर बकता-झकता रहा। ४ किसी कार्य मे होनेवाली ऐसी तल्लीनता जिसमे कुछ प्रमाद या भूल हो जाने की सभावना बनी रहती हो अथवा औचित्य की सीमा का उल्लघन हो सकता हो। जैसे—(क) लिखने की झोक मे कलम से कुछ ऐसी बाते भी निकल गई जो नही आनी चाहिए थी। (ख) पहली ही झोक मे उसने आधा काम निपटा डाला। ५ गति की ऐसी तीव्रता या वेग जो सहसा रुक न सकता हो अथवा जिसे सँभालना प्राय कठिन होता हो। जैसे—(क) मोटर इतनी झोक से जा रही थी कि चालक उसे ढाल पर रोक न सका। (ख) नीद की झोक मे वह पलग से गिरता-गिरता बच गया। ६ किसी चीज के यो ही अथवा वेगपूर्वक किसी ओर झुकने की क्रिया, प्रवृत्ति या भाव। जैसे—(क) नदी के बहाव की किनारे पर पडनेवाली झोक। (ख) तराजू की डडी या पलडे मे होनेवाली झोक (पासग की सूचक)।

मुहा०—झोंक मारना=कौशल या वेगपूर्वक तराजू का आगेवाला पलडा इस प्रकार आगे झुकाना कि देखनेवाला समझ ले कि चीज तौल मे पूरी हो गई। डाँडी मारना।

७ उक्त प्रकार के झुकाव, नति या प्रवृत्ति के कारण किसी ओर अथवा

किसी चीज पर पडनेवाला बोझ या भार।—जैसे—दीवार (या बरामदे) की सारी झोक इसी खमे पर पडती है।

पद—नोक-झोक। (देखे)

८ बैलगाडी मे वे दोनो लट्ठे जो दोनो ओर उसका झुकाव या भार रोकने के लिए लगे रहते है। ९ दे० 'झोका'। १० दे० 'झोकी'।

झोकदार—वि० [हि० झोक+दार (प्रत्य०)] (वास्तु कला मे, ऐसी रचना) जो सम रेखा के नीचे की ओर झुकी हुई हो। जैसे—झोकदार छज्जा।

झोकना—स० [हि० झोक] १ झोक या वेग से एक चीज किसी दूसरी चीज मे गिराना, डालना या फेकना। जैसे—(क) इजन मे कोयला, भट्ठी मे लकडी या भाड मे झाड-झखाड झोकना। (ख) लडके को कूएँ मे झोकना।

मुहा०—भाड झोकना =दे० 'भाड' के मुहावरे।

२ ढकेलते या धक्का देते हुए अथवा बलपूर्वक किसी अनिष्ट, अप्रिय अथवा कष्टप्रद स्थिति की ओर अग्रसर करना। जान-बूझकर विपत्ति या सकट मे डालना या फँसाना। जैसे—तुम तो मजे मे घर बैठे रहे, और मुझे तुमने इस झझट (मुकदमेबाजी, लडाई-झगडे आदि) मे झोक दिया। ३ किसी प्रकार का कार्य या भार जबरदस्ती किसी पर रखना या लादना। जैसे—यह काम भी तुमने मुझ पर ही झोक दिया। ४ धन आदि के सबध मे बिना परिणाम आदि का विशेष विचार किये आवश्यकता से कही अधिक व्यय करना। जैसे—अमेरिका आज-कल अरबो रुपए ससार के पिछडे हुए देशो मे झोक रहा है।

झोकवा†—पु० [हि० झोकना] १ वह जो कही कोई चीज झोकते रहने की सेवा पर नियुक्त हो। २ भट्ठे, भाड आदि मे ईधन झोकनेवाला व्यक्ति।

झोंकवाई—स्त्री० [हि० झोकना] १ झोकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ =झोकाई।

झोकवाना†—स० [हि० झोकना का प्रे०] झोकने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ झोकने मे प्रवृत्त करना।

झोका—पु० [हि० झोक] १ शात या स्तब्ध वातावरण मे थोडे समय के लिए सहसा वेगपूर्वक चलनेवाली वायुलहरी। २ थोडे समय के लिए परन्तु सहसा तथा वेगपूर्वक होनेवाली वर्षा। ३ पानी की लहर। हिलोरा। ४ थोडे समय के लिए परन्तु सहसा आनेवाली नीद। ५ वेगपूर्वक चलनेवाली वस्तु का लगनेवाला आघात या झटका। ६ वेगपूर्वक इधर-उधर झुकने या हिलने की क्रिया या भाव। ७ उक्त प्रकार के हिलने-डोलने के कारण लगनेवाला आघात, झटका या धक्का। ८ किसी प्रकार के उत्कर्ष आदि मे दिखाई देनेवाली अनोखी असाधारणता या विशेषता। उदा०—कटि लहँगा लीलो बन्यो झोको जो देखि मन मोहै।—सूर। ९ कुश्ती का एक पेच जिसमे विपक्षी की बाँह के नीचे से हाथ ले जाकर उसके कन्धे पर रखते और तब उसे झटके या झोके से नीचे गिरा देते है।

झोकाई—स्त्री० [हि० झोकना] १ झोकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोकिया†—पु०=झोकवा।

झोकी—स्त्री० [हि० झोका] १ ऐसी स्थिति जिसमे अनिष्ट, सकट, हानि आदि की विशेष आशका या सभावना हो। जोखिम। २ ऐसा साहसपूर्ण कार-बार या लेन-देन जिसमे लाभ और हानि दोनो की बराबर बराबर सभावना हो। (व्यापारी)

क्रि० प्र०—उठाना।—लेना।—सहना।

३ उत्तरदायित्व। जवाबदेही।

झोंझ†—पु० [देश०] १ पक्षियो का घोसला। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के पक्षियो के गले मे लटकनेवाली मास की थैली या झालर। जैसे—गिद्ध का झोझ। ३ उदर। पेट। ४ कोलाहल। हल्ला। ५ खुजली। चुल।

मुहा०—झोझ मारना=किसी अनिष्ट या अनुचित बात की कामना या वासना होना।

झोझल—स्त्री०=झुँझल (झुँझलाहट)।

झोट—पु० [स० झुट] १ झाडी। २ झाडियो या पौधो का झुरमुट। ३ घास-फूस आदि का पूला। जूरी। ४ झुड। समूह।

†पु०=झोटा।

झोटा—पु० [स० जूट] [स्त्री० अल्पा० झोटी] १ सिर पर के बढे हुए लबे-लबे बालो का समूह। उदा०—लगे घसीटन धरि धरि झोटी।—तुलसी।

पद—झोटा-झोटी=ऐसी लडाई जिसमे दोनो पक्ष एक दूसरे का झोटा ही पकडकर खीचते हो। **झोटी-झोटा**=झोटा-झोटी।

२ पतली और लबी वस्तुओ का इतना बडा समूह जो एक बार हाथ मे आ सके।

पु०=झूँटा (पेग)।

पु० [हि० ढोटा] १ भैसा। २ भैस का बच्चा। पडवा।

झोपडा—पु० [स० झोप्प या झोम्य] [स्त्री० अल्पा० झोपडी] गाँव, जगल आदि मे बना हुआ वह छोटा घर जिसकी दीवारे मिट्टी की और छाजन घास-फूस आदि की होती है। कुटी। पर्णशाला।

झोपडी—स्त्री० [हि० झोपडा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा झोपडा।

झोपा—पु० [हि० झब्बा] १ झब्बा। फुँदना। २ गुच्छा।

झोकना—स०=झोकना।

झोकवाना—स० [भाव० झोकवाई] झोकवाना।

झोका—पु०=झोका।

झोझ—पु०=झोझ।

झोझर—पु० [अनु०]=ओझर।

झोझरू—पु० [देश०] एक प्रकार की घास।

झोझा—वि० [हि० झोझ=पेट] जिसका पेट फूला तथा बढा हुआ हो। तोदवाला।

झोटिंग—वि० [हि० झोटा] जिसके सिर पर झोटा अर्थात् लबे-लबे बाल हो। झोटेवाला।

पु०=झोटा।

झोड—पु० [स०] सुपारी का वृक्ष।

झोड़ी†—स्त्री०=झोली।

झोपड़ा—पु० [स्त्री० अल्पा० झोपडी]=झोपडा।

झोर†—पु०=झोल।

झोरई†—वि० [हि० झोल] (तरकारी) जिसमे झोल, रसा या शोरबा हो। रसेदार।

स्त्री० रसेदार तरकारी।

झोरना†—स० [सं० दोलन या हिं० झकझोरना] १ सहसा जोर से हिलाकर गति मे लाना। २ इस प्रकार किसी चीज को हिलाना या झटकारना कि उस पर पडी या लगी हुई दूसरी चीजे गिर जायँ। ३ झकझोरना। ४ बलपूर्वक या धोखे से धन ऐंठना। ५ अच्छी तरह तृप्त होकर खाना। ६ इकट्ठा या एकत्र करना।

झोरा†—पु० [स्त्री० अल्पा० झोरी]=झोला।

पु० [?] गुच्छा। झब्बा।

झोरि†—स्त्री०=झोली।

झोरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की रोटी।

†स्त्री०=झोली।

झोल—पु० [हिं० झूलना या झूला] १ ताने जानेवाले कपडो का वह अश या भाग जो उचित कसाव या तनाव के अभाव मे किसी ओर कुछ झुका, दबा या फूला रहता है। जैसे—छत मे टँगी हुई चादर या शामियाने मे का झोल। २ पहनने के कपडो मे उक्त प्रकार का ढीला-ढाला अश जो प्राय कटाई-सिलाई आदि के दोषो के कारण होता है। जैसे—कमीज, कुरते या कोट मे का झोल। ३ ओढे या बाँधे जानेवाले कपडो का आँचल, पल्ला या सिरा जो किसी ओर झूलता या लटकता रहता है। जैसे—पगडी या साडी का झोल। ४ झिल्ली की वह थैली जिसमे गर्भ से निकलने के समय अडे या बच्चे बद या लिपटे रहते है।

मुहा०—झोल बैठाना=सेने के लिए मुरगी के नीचे अडे रखना।

५ खिडकियो, दरवाजो आदि मे टाँगने का परदा। ६ किसी प्रकार की खडी की हुई आड या ओट। ७ तरकारियो आदि मे का रसा या शोरबा जिसमे उनके टुकडे झूलते या इधर-उधर हिलते हुए दिखाई देते है। ८ उक्त प्रकार की अथवा कढी की तरह की खाने या पीने की कोई चीज। जैसे—आम या इमली का झोल। ९ भात मे से निकाली हुई पीच। माँड। १० धातु की चीजो पर किया जानेवाला गिलट या मुलम्मा।

क्रि० प्र०—चढाना।—फेरना।

११ हाथी की वह दोषपूर्ण चाल जिसमे वह कुछ इधर-उधर झूलता हुआ-सा चलता है। १२ किसी प्रकार की कमी, त्रुटि या दोष। उदा०—कैधो तुम पावन प्रभु नाही, कै कछु मो मैं झोलो।—सूर। १३ झझट, धोखे या बखेडे की बात। जैसे—यह सब झोल है, पहले हमारा रुपया चुकाकर तब और कोई बात करो। १४ चूक। भूल।

पद—झोल-झाल। (देखे)

वि० १ जिसमे उचित कसाव या तनाव न हो। २ निकम्मा और व्यर्थ का अथवा निस्सार। ३ दूषित। बुरा।

पु० [हिं० झाल] १ जलन। दाह। २ भस्म। राख। उदा०—तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उडावा झोल। —जायसी।

झोल-झाल—पु० [हिं० झोल+अनु० झाल] १ कपडो मे का झोल। २. निकम्मी या व्यर्थ की चीज या बात।

वि० १ ढीला-ढाला। २ निकम्मा या व्यर्थ। ३ दूषित। बुरा।

झोलदार—वि० [हिं० झोल+फा० दार] १ (तरकारी) जिसमे झोल अर्थात् रसा हो। रसेदार। २ (धातु) जिस पर मुलम्मा हुआ हो। ३ (वस्त्र) जिसमे झोल पड़ता हो।

झोलना—स० [सं० ज्वलन] १ तपाना या जलाना। २ सतप्त या दुखी करना।

स० १ दे० 'झुलाना'। २ दे० 'झकझोरना'।

†अ० दे० 'झूलना'।

झोला—पु० [हिं० झूलना या झोली] [स्त्री० अल्पा० झोली] १ कपडे आदि की सिली हुई एक प्रकार की प्रसिद्ध लबोतरी थैली जिसके मुँह पर डोरी या तनी उसे पकडने या लटकाने के लिए लगी रहती है। थैला। २ कपडे का सिला हुआ आवरण। खोली। जैसे—बदूक का झोला। ३ साधुओ के पहनने का ढीला-ढाला कुरता। ४ वात रोग के कारण होनेवाला एक प्रकार का पक्षाघात जिसमे हाथ या पैर निष्प्राण होकर झूलने लगते है।

क्रि० प्र०—मारना।

५ पाले, लू आदि के कारण पेडो के कुम्हला या सूख जाने का एक रोग। ६ आघात। धक्का। ७ झोका। झकोरा। उदा०—कोई खाहिं पवन कर झोला।—जायसी। ८ पाल की रस्सी को ढीला करने की क्रिया। ९ इशारा। सकेत।

झोलिहारा—पु० [हिं० झोली+हारा (प्रत्य०)] १ वह जो गले या हाथ मे अथवा कधे पर झोली लटकाकर चलता हो। २. कहार।

झोली—स्त्री० [प्रा० झोल्लिअ] १ छोटा झोला। थैली। २ ओढे या पहने हुए कपडे का पेट पर पडनेवाला वह अश जिसे दोनो हाथो से फैलाकर उसमे कोई चीज ग्रहण की जाती है। जैसे—फकीर अपनी झोली मे रोटियाँ रखता जाता था।

क्रि० प्र०—फैलाना।

मुहा०—झोली डालना=भिक्षा ग्रहण करने के लिए झोली फैलाना। **(किसी की) झोली भरना**=देवी, देवता आदि का प्रसाद किसी की झोली मे डालना। (मगल सूचक)

३ वह कपडा जिसकी सहायता से अनाज ओसाया या बरसाया जाता है। ४ घास-भूसा आदि बाँधने का बडा जाल। ५ चीजे फँसाने के लिए बनाया जानेवाला रस्सियो का एक प्रकार का फदा। ६ चरसा। मोट। ७ एक प्रकार का सफरी बिस्तर। विशेष दे० 'झूला' के अन्तर्गत।

स्त्री० [सं० ज्वाल या झाला] राख। भस्म।

मुहा०—झोली बुझाना=(क) कार्य का सपादन या बात की सिद्धि हो जाने के उपरान्त किसी का उसे करने का ढोग रचना। (ख) निराश होकर या व्यर्थ बैठना।

झौंझट†—स्त्री०=झझट।

झौंद†—पु०=झोझ (पेट)।

झौंर†—पु०=झौर।

झौंरना†—स०=झौरना।

अ० [?] गूँजना। गुजारना।

झौंरा†—पु०=झौर।

झौंराना—अ०, स०=झँवाना।

†अ०=झूमना।

स० झूमने मे प्रवृत्त करना।

झौंसना†—स०=झुलसना।

झौआ†—पु० [हि० झाबा] [स्त्री० अल्पा० झौनी] मिट्टी आदि ढोने का खाँचा।

झौड—स्त्री० [हि० झाँव झाँव से अनु०] १ कहा-सुनी। २ हुज्जत। ३ डाँट-फटकार। ४ झझट। बखेडा।

झौनी†—स्त्री० [देश०] टोकरी। दौरी।
स्त्री० हि० 'झोआ' का स्त्री अल्पा० रूप। छोटा खाँचा।

झौर—पु० [?] १ फूलो आदि का गुच्छा। उदा०—माधुरी झौरनि फूलनि भौरनि बौरनि बौरनि बेली बची है।—देव। २ सूत आदि का झब्बा। ३ झुड। समूह। उदा०—कहै रत्नाकर गुवालिनि की झौरि झौरि दौरि दौरि नन्द पौरि आवन तबै लगी।—रत्नाकर। ४ झुमका नाम का गहना।
†स्त्री०=झौड (कहा-सुनी, तकरार आदि)।

झौरना—स० [प्रा० झोडण] १ दबाने के लिए झपट कर पकडना। २ छोप लेना।
स० [हि० झौर+ना (प्रत्य०)] झुड बनाना।

झौरा—पु० १ =झौर। २ =झौड।

झौरे—क्रि० वि० [हि० धौरे] १ समीप। पास। निकट। २ सग। साथ।

झौवा†—पु०=झौआ।

झौहाना—अ० [अनु०] क्रुद्ध होकर झल्लाते हुए बोलना।

ञ

ञ—देवनागरी वर्ण-माला का दसवाँ व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, अनुनासिक, अल्प-प्राण यथा सघोष है।

ट

ट—देवनागरी वर्ण-माला का ग्यारहवाँ व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा अघोष है।
पु० [स०√टल् (उपद्रव करना)+ड] १ नारियल का खोपडा २ वामन। बौना। ३ किसी चीज का चौथाई भाग। चतुर्थांश। ४ आवाज। शब्द।

टक—पु० [स०√टक् (बाँधना, कसना आदि)+घञ्] १ प्राचीन भारत मे चाँदी की एक तौल जो प्राय चार मासे के बराबर होती थी। २ उक्त तौल का बटखरा या बाट जिसके भार के हिसाब से टकसाल मे सिक्के ढाले जाते थे। ३ उक्त तौल का चाँदी का एक पुराना सिक्का। ४ मोती की एक तौल जो लगभग २१ रत्ती की होती थी। ५ पत्थर काटने और गढने की टाँकी। ६ कुदाल। फरसा। फावडा। ७ कुल्हाडी। ८ तलवार। ९ तलवार की म्यान। १०. टाँग। पैर। ११ अभिमान। घमड। १२ क्रोध। गुस्सा। १३ सुहागा। १४ पहाड का खड्ड। १५ नीला कैथ। १६ बेल की तरह का एक प्रकार का कँटीला पेड और उसका फल। १७ सम्पूर्ण जाति का एक सकर राग जो रात के समय गाया जाता है।
पु० [अ० टैंक] १ तालाब। २ पानी रखने का बडा हौज। ३ स्थल पर चलनेवाला एक युद्धयान जिस पर तोपे चढी रहती है।

टकक—पु० [स० टक+कन्] १ सिक्का, विशेषत चाँदी का ऐसा सिक्का जिस पर छाप आदि लगी हुई हो। २ कुदाल।
पु० [स० टकण से] आज-कल वह व्यक्ति जो टकण यत्र पर चिट्ठी-पत्री आदि छापता हो। (टाइपिस्ट)

टकक-शाला—स्त्री० [ष० त०] धातुओ के सिक्के ढालने का कारखाना। टकसाल।

टकटीक—पु० [स० ब० स०] महादेव। शिव।

टकण—पु० [स०√टक्+ल्यु—अन, णत्व] १ टाँकी से कोई चीज काटने, गढने, तोडने आदि का काम। २ टाँका या जोड लगाने का काम। ३ दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। ४ उक्त देश मे होनेवाला एक प्रकार का घोडा। ५ सुहागा। सिक्के ढालने तथा उन पर चित्र, चिह्न आदि की छाप लगाने की क्रिया या भाव। ६ आज-कल टकण-यत्र पर चिट्ठी-पत्री आदि छापने का काम। (टाइपराइटिंग)

टकण-यत्र—पु० [ष० त०] आज-कल छापे की एक प्रकार की छोटी कल जिसमे अलग-अलग पत्तियो पर अक्षर खुदे होते है और उन पत्तियो को जोर से दबाने पर वे अक्षर ऊपर लगे हुए कागज पर छपते चलते है। इससे प्राय चिट्ठियाँ, छोटे लेख आदि छापे जाते है। (टाइपराइटर)

टकना—अ० [हि० टाँकना का अ० रूप] १ टाँका जाना। २ कपडे आदि के टुकडो के जोड पर सूई-धागे से टाँका लगाया जाना। ३ टाँका लगने के कारण कपडे के एक टुकडे का दूसरे टुकडे के साथ अथवा किसी चीज का कपडे पर अटकाया जाना। जैसे—साडी मे बेल या कमीज मे बटन टकना। ४ धातुखडो या पात्रो का टाँके के योग से जोडा जाना। ५ टाँकी आदि के द्वारा चक्की, सिल आदि का रेहा जाना। ६ स्मरण रखने के लिए सक्षिप्त रूप मे कही लिखा जाना। जैसे—खाते मे रकम टँकना। ७ अनुचित रूप से हडप लिया जाना।

टक-पति—पु० [ष० त०] टक-शाला अर्थात् टकसाल का प्रधान अधिकारी।

टंक-मार—स्त्री० [अ० टैंक+हि० मारना] एक प्रकार की बहुत बडी तोप जिसका उपयोग टैंको पर मढी हुई इस्पात की मोटी चादरे तोडने मे होता है।

टकवान् (वत्)—पु० [स० टक+मतुप्] वाल्मीकि-रामायण मे वर्णित एक पर्वत।

टँकवाना—स० [हि० टाँकना का प्रे० रूप] १ टाँकने का काम दूसरे से कराना। टँकाना। २ टाँका लगवाना। ३ स्मरण रखने के लिए लिखवाना। †४ (सिक्का) परखवाना। जँचवाना। ५ खिलाना। ६ लाभ कराना। (दलाल)

टकशाला—स्त्री० [ष० त०] टक अर्थात् सिक्के ढालने तथा उन पर अक, चित्र, चिह्न आदि छापने का कारखाना। टकसाल।

टका—स्त्री० [स०√टक्+अच्—टाप्] १ तारादेवी का एक नाम। २ जाँघ। रान। ३ सपूर्ण जाति की एक रागिनी।
पु० [स० टक] १ टक नाम की पुरानी तौल। २ टका नाम का ताँबे का पुराना सिक्का।
†पु० [देश०] एक प्रकार का गन्ना। टनका।

टँकाई—स्त्री० [हि० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टकानक—पु० [स० टक√अन् (प्रदीप्त करना)+ण्वुल्—अक] शहतूत।

टँकाना—स० [हि० टाँकना का प्रे० रूप]=टँकवाना।

टंकार—स्त्री० [स० टम्√कृ (करना)+अण्] १ धनुष की प्रत्यचा (डोरी) को तानकर सहसा ढीला छोडने पर टन-टन होनेवाली कर्कश ध्वनि। २ धातु-खड, विशेषत धातु के कसे या तने हुए तार पर आघात लगने से होनेवाला टन टन शब्द। टनाका। ३ तर्जनी या मध्यमा उँगली का नाखून अँगूठे से दबाकर वह उँगली झटके से छोडते हुए इस प्रकार किसी चीज पर आघात करना कि उससे टन का शब्द हो। ४ चिल्लाहट। ५ ख्याति। ६ कुख्याति। ७ आश्चर्य। अचरज।

टकारना—स० [स० टकार] १ धनुष की प्रत्यचा (डोरी) को तानकर सहसा ढीला छोडना जिससे वह टन-टन शब्द करने लगे। २ टन-टन शब्द उत्पन्न करना।

टकारी (रिन्)—वि० [स० टकार+इनि] टकार उत्पन्न करनेवाला।
स्त्री० [स० टक√ऋ (गति)+अण्—ङीप्] लबोतरी पत्तियोवाला एक प्रकार का वृक्ष जिसमे कई रगो के फूल लगते है और जिसके कुछ अग औषध के काम आते है।

टकिका—स्त्री० [स० टकक+टाप्, इत्व] लोहे की वह छोटी टाँकी जिससे चक्की, सिल आदि रेती जाती है।

टकी—स्त्री० [अ० टैंक, मि० स० टक=गड्ढा] १ गारे-चूने-ईंट, पत्थर, लोहे आदि का वह चौकोर आधान जिसमे पानी भर कर रखा जाता है। कुड। हौज। २ पानी रखने का एक प्रकार का बरतन।
स्त्री० [?] एक प्रकार की रागिनी।
†स्त्री०=पक्ति।

टँकुआ†—वि० [हि० टाँकना] [स्त्री० टँकुई] (वस्त्र) जिस पर कोई चीज टाँकी गई हो। जैसे—टँकुआ दुपट्टा। टँकुई साडी।

टकोर†—स्त्री०=टकार।

टकोरना†—स०=टकारना।

टंकौरी—स्त्री० [स०√टक] टक अर्थात् सिक्के आदि तौलने की छोटी तुला। तराजू।
विशेष—प्राचीन काल मे सिक्को को तौलकर देखा जाता था कि कही इसमे धातु की मात्रा कम या अधिक तो नही है।

टग—पु० [स० टक√पृषो० सिद्धि] १ टाँग। २ कुल्हाडी। ३ कुदाल। फरसा। ४. सुहागा। ५ चार मासे की एक तौल। टक।

टँगड़ी—स्त्री०=टाँग। (टँगडी के मुहा० के लिए दे० 'टाँग' के मुहा०)।

टंगण—पु० [स० टकण, पृषो० सिद्धि] सोहागा।

टँगना—अ० [स० टकण] १ टाँगा जाना। २ किसी चीज का ऊपरी भाग किसी ऊँचे आधार के साथ या स्थान पर इस प्रकार अटकाया, जडा, बाँधा या लगाया जाना कि वह चीज उसी के सहारे टिकी या ठहरी रहे। ३ फाँसी पर चढाया जाना।
पु० १ दो खूँटियो आदि मे बेडे बल मे बँधा हुआ तार, बाँस, रस्सी आदि जिस पर वस्त्र आदि टाँगे जाते है। २ उक्त काम के लिए लकडी का बनाया हुआ एक प्रकार का ऊँचा चौखटा।

टँगरी†—स्त्री०=टँगडी (टाँग)।

टँगवाना—स० [हि० टाँगना का प्रे० रूप] किसी को कुछ टाँगने मे प्रवृत्त करना।

टँगा†—पु० [देश०] मूँज।

टँगाना—स०=टँगवाना।
अ०=टँगना।

टँगारी†—स्त्री० [स० टग] कुल्हाडी।

टगिनी—स्त्री० [स०√टक् (गलाना आदि)+णिनि, पृषो० सिद्धि] पाठा।

टच—वि० [स० चड, हि० चट] १ बहुत बडा कजूस या कृपण। २ बहुत बडा चालाक या धूर्त्त। उदा०—पायो जानि जगत मे सब कपटी कुटिल कलिजुगी टचु।—हरिवश। ३ निष्ठुर।
वि० दे० 'टिचन'।

टट-घट—पु० [अनु० टन-टन+स० घटा] १ पूजा-पाठ का भारी आडबर या आडबरपूर्ण सामग्री। २ फालतू, रद्दी या व्यर्थ की चीजे।

टटा—पु० [अनु० टन-टन] १ ऐसा व्यर्थ का उपद्रव, झगडा या बखेडा जिसमे बहुत-सी पेचीदी बाते हो। सारहीन लडाई या वैर-विरोध।
क्रि० प्र०—मचाना।
२ निकम्मी, रद्दी या व्यर्थ की चीजें या विस्तार।

टडर—पु०=टेंडर।

टडल—पु०=टडैल।
†पु०=टेंडर।

टँडिया—स्त्री० [स० ताड] बाँह पर पहनने का टाँड नामक गहना।

टँडुलिया—स्त्री० [देश०] बन-चौलाई।

टडैल—पु० [अ० टेंडर] १ मजदूरो का सरदार। २ हृष्ट-पुष्ट जवान।

टसरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की वीणा।

टँसहा†—पु० [हि० टाँस+हा (प्रत्य०)] वह बैल जिसकी टाँग की नसे सिकुड गई हो और जो इसी कारण लँगडा कर चलता हो।

टई†—स्त्री० १ =टही (थाक)। २ =टहल।

टक—स्त्री० [स० टक=बाँधना वा स० त्राटक] अनुराग, आश्चर्य, प्रतीक्षा आदि के कारण किसी ओर मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से देखते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। नजर गडाकर लगातार किसी ओर देखते रहना। टकटकी।
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—लगना।—लगाना।
मुहा०—टक-टक देखना=विवशता की दशा मे स्थिर दृष्टि से देखते रहना। **टक लगाना**=आसरा देखते रहना। दृष्टि लगाकर ध्यानपूर्वक किसी ओर देखते रहना।
स्त्री० [?] चीजे या बोझ तौलने का बडा तराजू।

टकटका†—पु०=टकटकी।

टकटकाना†—स० [हिं० टक] टकटकी लगाकर किसी ओर देखना। स्थिर दृष्टि किए हुए किसी ओर देखते रहना।
स० [अ०] टक-टक शब्द उत्पन्न करना।
अ० टक-टक शब्द होना।

टकटकी—स्त्री० [हिं० टक या स० त्राटकी] टक लगाकर, मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से किसी ओर देखते रहने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—लगना।—लगाना।

टकटोना—स०=टकटोरना। उदा०—सबै देस टकटोये।—नागरीदास।

टकटोरना†—स० [हिं० टकटकी] अन्धकार आदि मे किसी चीज के आकार, रूप आदि का पता लगाने के लिए उसे जगह-जगह से छूकर देखना। टटोलना।

टकटोलना—स० [अनु०]=टकटोरना।

टकटोहन†—पु० [हिं० टकटोना] टटोलने की क्रिया या भाव।

टकटोहना†—स०=टकटोरना।

टकतंत्री—स्त्री० [स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का सितार की तरह का बाजा।

टकना—पु० दे० 'टखना'।
अ०=टँकना।

टकबीडा—पु० [देश०] प्राचीन काल मे मगल तथा शुभ अवसरो पर प्रजा द्वारा जमीदार को दी जानेवाली भेट।

टकराना—अ० [हिं० टक्कर] १ विपरीत दिशाओ मे वेगपूर्वक आगे बढने-वाली दो वस्तुओ, व्यक्तियो आदि अथवा उनके अगले भागो या सिरो का आपस मे इस प्रकार भिडना या जोर से लगना कि उनमे से किसी एक अथवा दोनो को भारी आघात लगे। जैसे—बाइसिकिलो या मोटरो का टकराना। २ किसी दिशा मे चलती या बढती हुई वस्तु का मार्ग मे खडी किसी बडी या भारी चीज से सहसा तथा जोर से जा लगना अथवा आघात करना। जैसे—किनारे से लहरो का टकराना। ३ किसी के मार्ग मे बाधक होना अथवा किसी का मुकाबला या सामना करने के लिए उसके मार्ग मे आना या पडना। सघर्ष होना। जैसे—जो हमसे टकरा-येगा चूर-चूर हो जायगा। ४ इधर-उधर मारे-मारे फिरना। टक्करे खाना।
स० एक चीज पर दूसरी चीज मारना।
स० दो चीजो के अगले भागो या सिरो को एक दूसरे से इस प्रकार जोर से भिडाना कि उनमे मे एक या दोनो को चोट लगे या उनकी कोई विशेष हानि हो। आपस मे टक्कर खिलाना या लगाना।

टकरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड।

टकसरा—पु० [देश०] भारत के पूर्वी प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का बाँस।

टकसार†—स्त्री०=टकसाल।

टकसाल—स्त्री० [स० टकशाला] [वि० टकसाली] १ प्राचीन भारत मे वह कारखाना जहाँ पैसे, रुपए आदि के सिक्के ढलते थे। २ आज-कल वह स्थान जहाँ आधुनिक यत्रो से ठप्पो आदि की सहायता से रुपए, पैसे आदि के सिक्के तैयार किये या बनाये जाते है। ३ लाक्षणिक रूप मे, वह स्थान जहाँ मानक चीजे बनती हो।
मुहा०—टकसाल चढाना=(क) प्राचीन भारत मे खरे-खोटे की परख के लिए सिक्को का टकसाल मे पहुँचना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज का ऐसे स्थान मे पहुँचना जहाँ उसकी बुराई-भलाई की परख हो सके। (ग) दुष्कर्मो आदि मे पराकाष्ठा या पूर्णता तक पहुँचना। (परि-हास और व्यग्य)
पद—टकसाल-बाहर=(चीज या बात) जो ठीक, प्रामाणिक या मानक न मानी जाती हो। जैसे—इस प्रकार के प्रयोग आधुनिक भाषा मे टकसाल बाहर माने जाते है। ४ वह चीज या बात जो सब प्रकार से ठीक, निर्दोष, प्रामाणिक या मानक मानी जाती हो। उदा०—सार शब्द टकसार (ल) है, हिरदय माँहि बिबेक।—कबीर।

टकसाली—वि० [हिं० टकसाल] १ टकसाल-सबधी। टकसाल का। २ टकसाल मे ढला या बना हुआ। ३ उतना ही प्रामाणिक और लोक-मान्य जितना टकसाल मे ढाला हुआ असली सिक्का होता है। सब तरह से चलनसार, ठीक और मान्य। शिष्ट-सम्मत। जैसे—बा० बालमुकुद गुप्त की भाषा टकसाली होती थी। ४ सब प्रकार से परीक्षित और प्रामाणिक। जैसे—आप की हर बात टकसाली होती है।
पु० मध्य युग मे टकसाल या सिक्के ढालनेवाले विभाग का प्रधान अधि-कारी।

टकहा†—पु०=टका।
वि०=टकाहा।

टकहाया—वि० [स्त्री० टकहाई]=टकाहा।

टका—पु० [स० टक] १ प्राचीन भारत मे चाँदी का एक सिक्का जो प्राय आज-कल के एक रुपये के बराबर होता था। २ उक्त के आधार पर वैद्यक मे तीन तोले की तौल। ३ अँगरेजी शासन मे ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसे मूल्य का होता था। अधन्ना।
पद—टका भर=बहुत ही अल्प या थोडी मात्रा मे। जैसे—टका भर घी दे दो। **टका सा**=बहुत ही छोटा, तुच्छ, थोडा या हीन। जैसे—टके-सी जान, और इतना गुमान। **टके गज की चाल**=(क) बहुत ही मद्धिम या सामान्य अथवा पुराने ढग की चाल-ढाल या रहन-सहन। जैसे—वह तो जनम भर वही टके गज की चाल चलते रहे। (ख) बहुत ही धीमी गति या सुस्त चाल। जैसे—छोटी लाइन की गाडियाँ तो बस वही टके गज की चाल चलती है।
मुहा०—टका-सा जवाब देना=उसी प्रकार तिरस्कारपूर्वक और नका-रात्मक उत्तर देना जैसे किसी भिक्षुक के आगे टका फेका जाता था। इनकार करते हुए साफ जवाब देना। **टका-सा मुँह लेकर रह जाना**= अपमानित या तिरस्कृत होने पर लज्जित भाव से चुप रह जाना।
४ धन-सम्पत्ति। रुपया-पैसा। ५ गढवाल के पहाडी इलाको की एक तौल जो प्राय सवा सेर के लगभग होती है।

टकाई—वि०, स्त्री०=टकहाई (टकहाया का स्त्री० रूप)।
स्त्री०=टकासी।

टकातोप—स्त्री० [देश०] समुद्री जहाजो पर की एक प्रकार की छोटी तोप।

टकाना†—स०=टँकवाना।

टकानी—स्त्री०=टेकानी।

टकासी—स्त्री० [हिं० टका] १ एक रुपये पर प्रतिमास दो पैसे का सूद

या ब्याज देने-लेने का एक ढग। २ मध्य युग मे व्यक्ति पीछे एक टके के हिसाब से लगनेवाला कर या चदा।
स्त्री०=टकहाई।

टकाहा†—वि०[हिं० टका] [स्त्री० टकाही] टके-टके पर बिकने या मिलनेवाला, अर्थात् बहुत ही तुच्छ या हीन। जैसे—टकाहा कपडा, टकाही रडी।

टकाही—वि० हिं० 'टकाहा' का स्त्री० रूप।
स्त्री० बहुत ही निम्न कोटि की वेश्या या दुश्चरित्रा स्त्री।
†स्त्री दे० 'टकासी'।

टकी†—स्त्री०=टकटकी।

टकुआ—पु०[स० तर्कुक, प्रा० तक्कुअ] [स्त्री० अल्पा० टकुई, टकुली] १ चरखे मे का तकला। (देखे) २ कई प्रकार के छोटे अँकुसीदार या टेढे औजारो की सज्ञा। जैसे— बिनौले निकालने का टकुआ, मोची का टकुआ।

टकुली—स्त्री०[हिं० टकुआ] १ छोटा टकुआ। २ नक्काशी करनेवालो का एक औजार।
स्त्री० [?] सिरिस की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।

टकूचना—स०[हिं० टॉकना=खाना] खाना। (दलाल)

टकैट—वि०=टकैत।

टकैत—वि०[हिं० टक+ऐत (प्रत्य०)] जिसके पास टके हो अर्थात् धनी। धनवान।

टकोर—स्त्री०[स० टकार] १ धनुष की डोरी खीचने से होनेवाला शब्द। टकार। २ नगाडे पर होनेवाला आघात। ३ आघात। ठेस।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
४ शरीर के किसी विकारग्रस्त विशेषत सूजे हुए अग पर दवा की पोटली को बार-बार गरम करके उससे किया जानेवाला हलका सेक। ५ खट्टी या चरपरी चीज खाने से दाँतो या मसूडो मे होनेवाली चुनचुनी या टीस। ६ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसी बात जिससे दु खी व्यक्ति और अधिक दु खी होता हो। (पश्चिम)

टकोरना—स०[हिं० टकोर] १ टकोर या हलका सेक करना। २ हलका आघात लगाना। जैसे—डका बजाने के लिए उसे टकोरना। ३ ठेस लगाना। ४ ऐसी बात कहना जिससे दु खी व्यक्ति और अधिक दु खी हो।

टकोरा—पु०[स० टकार] १ डके की चोट। २ आघात। ठेस।

टकोरी†—स्त्री०[स० टकार] हलकी चोट या आघात।

टकौना†—पु०=टका।

टकौरी—स्त्री०[सं० टक] सोना, चाँदी आदि तौलने का पुरानी चाल का एक प्रकार का काँटा या तराजू।
स्त्री०१ =टकासो। २ =टकहाई।

टक्क—पु०[√टक् (बाँधना)+कक्, पृषो० सिद्धि] १. वाहीक जाति का आदमी। २ कजूस व्यक्ति।

टक्क-देश—पु०[स० मध्य० स०] चनाब और ब्यास नदियो के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

टक्कदेशीय—वि०[स० टक्कदेश+छ—ईय] १ टक्क देश का। २ टक्क देश मे होनेवाला।
पु० बथुआ नामक साग।

टक्कर—स्त्री०[प्रा०] १ दो या अधिक चीजो के आपस मे टकराने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ एक ही सीध मे, परन्तु दो विपरीत दिशाओ मे वेगपूर्वक आगे बढने या चलनेवाली दो वस्तुओ, व्यक्तियो आदि के अगले भाग या सिरे के सहसा एक दूसरे से टकराने या भिडने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—रेल-गाडियो की टक्कर। ३ बल-परीक्षा, मनोविनोद, व्यायाम आदि के लिए दो प्राणियो के आपस मे मस्तक या सिर से एक दूसरे पर आघात करने या धक्का देने की क्रिया या भाव। जैसे—मेढो या लडको मे होनेवाली टक्कर।
क्रि० प्र०—लडना।—लडाना।
४ वेगपूर्वक आगे बढने के समय किसी वस्तु या व्यक्ति के अगले या ऊपरी भाग का मार्ग मे पडनेवाली किसी बडी या भारी चीज के साथ इस प्रकार लगनेवाली ठोकर या होनेवाली भिडन्त कि उनमे से किसी एक अथवा दोनो को किसी प्रकार की आघात लगे। जैसे—अँधेरे मे चलते समय खभे या दीवार से लगनेवाली टक्कर।
मुहा०—इधर-उधर टक्करें खाना या मारना=जगह-जगह मारे-मारे फिरना। दुर्दशा भोगते हुए कभी कही और कभी कही आना-जाना।
५ बराबर के दो पक्षो मे होनेवाला ऐसा मुकाबला या सामना जिसमे दोनो एक दूसरे को गिराना या दबाना चाहते हो या उन्हे हानि पहुँचाना चाहते हो। जैसे—दो देशो या विचारधाराओ मे होनेवाली टक्कर।
पद—टक्कर का=जोड, बराबरी या मुकाबले का। जैसे—भगवद्गीता या रामचरित्मानस की टक्कर की पुस्तक विश्व-साहित्य मे मिलना दुर्लभ है।
मुहा०—(किसी से) टक्कर लेना=बराबरी या मुकाबला करना। जैसे—यह घोडा दौड मे रेलगाडी से टक्कर लेता है।
६ घाटा। हानि। (क्व०)

टखना—पु०[स० टक=टॉग] १ पिडली और एडी के बीच की दोनो ओर उभरी हुई हड्डी। २ उक्त हड्डी के आस-पास का भाग।

टग†—स्त्री०=टकटकी।

टगटगाना†—स०=टकटकाना।

टगण—पु०[स० मध्य० स०] साहित्य शास्त्र मे, छ मात्राओ के गणो की सामूहिक सज्ञा।

टगर—पु०[अनु०]१ टकण। सोहागा। २ भोग-विलास के लिए की जानेवाली क्रीडा। ३ तगर का वृक्ष।

टगरगोड़ा—पु० [?] कौडियो से खेला जानेवाला एक खेल।

टगरना†—अ० १ =टघरना (पिघलना)। २ खिसकना।

टगरा†—वि०[स० टेरक] ऐचा-ताना। भेगा।

टघरना—अ० दे० 'पिघलना'।

टघराना—स०=पिघलाना।

टघार—पु०[हिं० टघरना] १ टघरने अर्थात् पिघलने की क्रिया या भाव। २ किसी जमी हुई चीज के टघरने या पिघलने पर उसकी बहनेवाली धार।

टचटच—स्त्री०[अनु०] आग के जलने का शब्द।

टचना—अ०[अनु० टचटच से] आग का जलना।

टचनी—स्त्री०[स० टक] बरतनो पर नक्काशी करने का कसेरो का एक उपकरण।

टट*—पु०[स०] तट। उदा०—आएउँ भागि समुद टट।—जायसी।

टटका—वि०[स० तत्काल] [भाव० टटकाई, स्त्री० टटकी] १ (फलो आदि के सबध मे) जो अभी-अभी (खेत, पौधे आदि से तोडकर) लाया गया हो, फलत जो बासी न हो। ताजा। जैसे—टटका आम, टटकी तरकारी। २ (समाचार) जिसकी सूचना अब या अभी मिली हो। ताजा। जैसे—टटकी खबर। ३ नया।

टटकाई*—स्त्री०[हि० टटका] टटके या ताजे होने की अवस्था या भाव। ताजापन।

टटड़ी†—स्त्री०=टटरी।

टटरी†—स्त्री० १=टट्टी। २=ठठरी।

टटरूँ—पु०[अनु०] पेडुकी (चिडिया)।

टटल-बटल—वि०[अनु०] ऊटपटाँग।

पु० अगड-खगड। काठ-कबाड।

टटाना†—अ० [हि० ठाँठ] शुष्क होना। सूखना। २ खुश्की, थकावट आदि के कारण शरीर या उसके अगो मे हलकी पीडा होना। ३ भूख आदि से विकल होना।

स० १ सुखाना। २ भूखे रखकर विकल करना।

टटावक—पु०[?] काला टीका। उदा०—मोर चन्द सिर अस कछु लौनौ। मानहु अली टटावक टौनौ।—नन्ददास।

टटावली—स्त्री०[स० टिटिट्भ] कुररी या टिटिहरी नाम की चिडिया।

टटिया†—स्त्री०=टट्टी।

टटियाना†—अ०, स०=टटाना।

टटोबा—पु०[अनु०] १ चारो ओर घूमनेवाला चक्कर या चरखी। २ घिरनी। ३ चारो ओर घूमने या चक्कर खाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

४ दे० 'टिटिंबा'।

टटीरी—स्त्री०=टिटिहरी (चिडिया)।

टटुआ†—पु०[स्त्री० टटुई]=टट्टू।

†पु० दे० 'टेटुआ'।

टटोना†—स०=टटोलना।

टटोरना†—स०=टटोलना।

टटोल—स्त्री०[हि० टटोलना] टटोलने की क्रिया, ढग या भाव।

टटोलना—स०[स० तुला से अनु०] १ अन्धकार मे अथवा स्पष्ट दिखाई न देने पर किसी चीज के आकार-प्रकार, रूप-रग आदि का पता लगाने के लिए उसके अगो आदि पर उँगलियाँ या हाथ फेरना।

२ किसी आवरण मे रखी हुई वस्तु का अनुमान करने के लिए उसे बाहर से छूना, दबाना या हिलाना। जैसे—किसी का जेब टटोलना। ३ ठीक पता न चलने पर अन्दाज से इधर-उधर ढूँढना या तलाश करना। ४ किसी का आशय या विचार जानने अथवा उसके मन की थाह लेने के लिए उससे जिज्ञासात्मक बात-चीत करना। ५ जाँचने, परखने आदि के लिए किसी प्रकार की ऊपरी या बाहरी क्रिया करना।

टटोहना*—स०=टटोलना।

टट्टड़†—पु०=टट्टर।

टट्टनी—स्त्री०[स० टट्ट√नी (ढोना)+ड—डीष्] छिपकली।

टट्टर—पु०[स० तट=ऊँचा किनारा या स० स्थाता=जो खडा हो] गाँवो, देहातो आदि के कच्चे मकानो मे दरवाजे के स्थान पर मार्ग अवरुद्ध करने के लिए लगाया जानेवाला बाँस की फट्टियो का चौकोर जालीदार ढाँचा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

पु०[स० टट्ट√रा (देना)+क] भेरी का शब्द।

टट्टरी—स्त्री०[स०टट्टर+डीष्] १ ढोल, नगाडे आदि के बजने का शब्द। २ लबा या विस्तृत कथन या विवरण। ३ हँसी-मजाक। ठट्ठा।

टट्टा—पु० [स० तट=ऊँचा किनारा या स० स्थाता=जो खडा हो]। [स्त्री० टट्टी] १ टट्टर। बडी टट्टी। २ लकडी का तख्ता या पल्ला। ३ अडकोश। (पजाब)

टट्टी—स्त्री०[स० तटी=ऊँचा किनारा या स० स्थायी] १ तिनको, तीलियो आदि को आपस मे फँसा या बाँधकर तैयार किया हुआ परदा। जैसे—खस की टट्टी। २ टट्टर। ३ आड या ओट के लिए सामने खडा किया हुआ वह आवरण या परदा जो प्राय वृक्षो की डालियो, बाँसो आदि से बनाया जाता है।

पद—**धोखे की टट्टी**=(क) ऐसा आवरण या परदा जो लोगो को धोखे मे रखकर अपना काम निकालने के लिए खडा किया जाय। (ख) ऐसी चीज या बात जो ऊपर से देखने पर कुछ और जान पडे, परन्तु जिसके अन्दर कुछ और ही हो।

मुहा०—**टट्टी की आड (या ओट) से शिकार खेलना**=स्वय आड मे रहकर या छिपकर किसी पर आघात या वार करना अथवा किसी प्रकार के स्वार्थ-साधन का प्रयत्न करना।। **टट्टी मे छेद करना**=ढकने या परदा करनेवाली चीज मे ऐसा अवकाश निकालना जिससे बाहरवालो को अन्दर की चीजो या बातो का पता लगने लगे। **टट्टी लगाना**=ऐसा आवरण या परदा खडा करना जिसके अन्दर लुक-छिप कर कोई काम किया जा सके।

४ बाँस की फट्टियो आदि का वह ढाँचा जो बेले आदि चढाने के लिए खडा किया जाता है। जैसे—अगूर की टट्टी। ५ वे तख्ते या पटरियाँ जिन पर नकली पेड-पौधे आदि बनाकर रखे या लगाये जाते है और जो शोभा के लिए जुलूसो, बरातो आदि के साथ ले जाये जाते है। ६. किसी प्रकार की आड या ओट करने के लिए बनाई जानेवाली छोटी, पतली दीवार। ७ चारो ओर उक्त प्रकार का दीवारो से घेरा हुआ वह स्थान जो केवल शौच आदि के लिए नियत हो। पाखाना।

मुहा०—**टट्टी जाना**—मल-मूत्र आदि का विसर्जन करने के लिए उक्त प्रकार के स्थान मे अथवा खेत आदि मे जाना।

८ मल। गूह। पाखाना। ९ चिक। चिलमन। १० कोई पतली, चौकोर या लबी-चौडी रचना।

पद—**टट्टी का शीशा**=बहुत ही पतले दल का और साधारण शीशा, जैसा तसवीरो, दरवाजो आदि की चौखट मे लगाया जाता है।

टट्टर—पु०[स० टट्ट√रा (देना)+क] नगाडे का शब्द।

टट्टू—पु०[अनु०] [स्त्री० टटुआनी, टटुई] १ छोटे या नाटे कद का घोडा। टाँगन।

पद—**भाडे का टट्टू**=ऐसा व्यक्ति जो अपने पद, मर्यादा, विवेक आदि का ध्यान छोडकर पैसे के लालच से दूसरो का काम करता हो अथवा उनकी बातो का समर्थन करता हो।

मुहा०—टट्टू पार होना=काम पूरा होना। प्रयोजन सिद्ध हो जाना। २ पुरुष की लिंगेंद्रिय। (बाजारू)

टट्डा—पु०=टाड (गहना)।

टठिया—स्त्री० [?] १. एक प्रकार की भाँग जो राजपूताने मे होती है।

स्त्री०=टाड (बाँह मे पहनने का गहना)।

†स्त्री०=टट्टी।

टडिया†—स्त्री०=टाड (गहना)।

टण—पु०=टना।

टन—पु० [अनु०] घटा बजने का शब्द। टकार।

वि० नशे आदि मे चूर। बेसुध। टन्न।

पु० [अ०] एक प्रकार की पाश्चात्य तौल जो लगभग २७॥ मन के बराबर होती है।

टनकना—अ० [अनु० टन] १ टन टन शब्द होना। २ गरमी, धूप आदि के कारण सिर मे धमक या पीडा होना।

टनटन—स्त्री० [अनु०] घटा बजने का शब्द।

टनटनाना—स० [हिं० टनटन] घंटे पर आघात करके उसमे से 'टनटन' शब्द उत्पन्न करना। जैसे—घटा टनटनाना।

अ० किसी चीज मे से टन-टन शब्द निकलना या होना।

टनमन—पु० [स० तत्र मत्र] जादू-टोना। तत्र-मत्र।

वि०=टनमना।

टनमना—वि० [स० तन्मनस्] १ सब प्रकार से नीरोग और स्वस्थ। २ प्रसन्न-चित्त और मगन। 'अनमना' का विपर्याय।

टना—पु० [स० तुड] १ स्त्रियो की योनि मे का वह निकला हुआ मास का टुकडा जो दोनो किनारो के बीच मे होता है। टिगा। २ भग। योनि।

टनाका†—पु० [अनु० टन] १ घटा बजने का शब्द। जोर से होनेवाला टन शब्द। २ कुछ समय तक टनटन शब्द बजते या होते रहने की अवस्था या भाव।

वि० उभ्य० बहुत उग्र, तीव्र या विकट। जैसे—टनाका धूप या सरदी।

टनाटन—स्त्री० [अनु०] लगातार घटा बजने के कारण होनेवाला टन-टन शब्द।

क्रि० वि० १ टनटन शब्द करते हुए। २ अच्छी तथा ठीक अवस्था मे। जैसे—वहाँ वे टनाटन है।

टनी—स्त्री०=टना।

टनेल—स्त्री० [अ० टनल] पहाड के बीच मे से अथवा नदी के नीचे से बनायी हुई। सुरग।

टप—स्त्री० [अनु०] १ वर्षा अथवा किसी तरल पदार्थ की बूँद पृथ्वी तल पर अथवा धातुओ आदि पर गिरने से होनेवाला शब्द। २ एकाएक किसी भारी चीज के जमीन पर गिरने से होनेवाला शब्द। जैसे—जामुनो का टप-टप पेड से गिरना।

मुहा०—टप से=एकाएक या सहसा। जैसे—वह वहाँ पर टप से आ पहुँचा।

स्त्री०=टोप (बूँद)।

पु० [अ० टेब ?] १ गाडियो आदि के ऊपर छाया के लिए बनाया हुआ आच्छादन। जैसे—गाडी का टप। २ लटकनेवाले लप के ऊपर की छतरी।

पु० [अ० टब] टीन आदि का बना हुआ चौडे मुँह का पानी रखने का बडा पात्र।

पु० [देश०] कान मे पहनने का एक प्रकार का फूल।

पु० [अ० ट्यूब] जहाजो की गति का पता लगाने का एक उपकरण। (लश०)

पु० [हिं० ठप्पा] एक औजार जिससे डिबरी का पेच घुमावदार बनाया जाता है।

टपक—स्त्री० [हिं० टपकना] १ टपकने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के ऊपर से गिरने पर होनेवाला टपटप शब्द। ३ शरीर के किसी अग मे मवाद आदि अथवा और कोई विकार उत्पन्न होने के कारण रह-रह कर होनेवाला हलका दरद या पीडा। टीस।

टपकन—स्त्री०=टपक।

टपकना—अ० [स० √टिप् या अनु०] १ किसी चीज मे से बूँद बूँद करके किसी तरल पदार्थ का धरातल पर टपटप शब्द करते हुए गिरना। जैसे—(क) छत मे से वर्षा का पानी टपकना। (ख) आम मे से रस टपकना। २ (फलो आदि का पेड से टूटकर) ऊपर से सहसा नीचे गिरना। जैसे—अमरूद या जामुन टपकना। ३ (व्यक्तियो का) सहसा कही आ पहुँचना। जैसे—इतने मे न जाने वह कहाँ से टपक पडा। ४ कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ५ शरीर के किसी अग मे मवाद भरा होने के कारण रह-रह कर पीडा होना। ६ फोडे मे से मवाद का निकलना। ७ (हृदय का) झट आकर्षित होना। लुभा जाना। मोहित हो जाना। ८ स्त्री का सभोग की ओर प्रवृत्त होना। ढल पडना। (बाजारू) ९ युद्ध मे घायल होकर गिरना।

टपकवाना—स० हिं० 'टपकाना' का प्रे० रूप।

टपका—पु० [हिं० टपकना] १ टप-टप शब्द करते हुए बूँदो के गिरने की अवस्था या भाव। २ उक्त प्रकार से गिर, चू या रसकर निकली हुई चीज। रसाव। ३ ऐसा फल जो पककर या हवा के झोके से जमीन पर गिरा हो। जैसे—टपका आम। ४ चौपायो के खुर मे होनेवाला एक रोग जिसमे टपक या टीस होती है। ५ दे० 'टपक'।

टपका-टपकी—स्त्री० [हिं० टपकना] १ बार-बार या रह-रह कर कभी इधर और कभी उधर कुछ टपकने की क्रिया या भाव। जैसे—आम या जामुन की टपका-टपकी। २ रह-रहकर होनेवाली बूँदा-बाँदी या हलकी वर्षा। ३ लाक्षणिक रूप मे महामारी आदि के प्रकोप से होनेवाली छुट-पुट मौते।

क्रि० प्र०—लगना।

टपकाना—स० [हिं० टपकना] १ कोई चीज रह-रहकर बूँदो या छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे कही गिराना। २ भभके आदि के द्वारा अरक, आसव आदि तैयार करना। चुआना।

टपकाव—पु० [हिं० टपकना] टपकने अथवा टपकाने की क्रिया या भाव।

टपकी—स्त्री० [हिं० टपकना] १ टपकने की क्रिया या भाव। २ अचानक होनेवाली मृत्यु।

मुहा०—टपकी पड़े=नष्ट या बरबाद हो जाय। (बोल-चाल)

टपना—अ० [हिं० टापना] १ बिना कुछ खाये-पिये अथवा किसी प्रकार की प्राप्ति या फल-सिद्धि के यो ही चुप-चाप कष्ट सहते हुए समय बिताना। जैसे—(क) बिना कुछ खाये-पीये सबेरे से टप रहे है। (ख)

ये तो महीनो से नौकरी की आशा मे यहाँ बैठे हुए टप रहे है। २ पशु-पक्षियो आदि का जोडा खाना या सभोग करना। ३ उछलना। कूदना। स० १ उछल या कूदकर किसी चीज को लाँघते हुए उसके पार जाना। (पश्चिम) जैसे—दीवार या मुँडेरा टपना। २ आच्छादित करना। ढकना। तोपना। (क्व०)

टपनामा—पु०[हिं० टिप्पन] वह रजिस्टर जिसमे समुद्री जहाजो पर तूफानो आदि का लेखा रखा जाता है।

टपमाल—पु०[अ० टापमाल] जहाजो पर काम आनेवाला लोहे का भारी घन।

टपरना†—स० [अनु०] दीवार मे, मसाला भरने से पहले उसके फर्श की दरज़ो को कुछ खोदकर चौडी या बडी करना जिससे उनमे मसाला अच्छी तरह से भरा जा सके।

टपरा†—पु०[स्त्री० अल्पा० टपरी] =टप्पर।

टपरियाना†—अ०=टपरना।

टपाटप—क्रि० वि० [अनु० टप टप] १ टप टप शब्द करते हुए। जैसे—टपाटप आँसू गिरना। २ निरन्तर। लगातार। ३ चटपट। तुरन्त। जैसे—टपाटप काम निपटाना।

टपाना—स०[हिं० टपना का स०] १ किसी को टपने (अर्थात् निराश भाव से कष्टपूर्वक समय बिताने) मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिसमे किसी को टपना पडे। २ पशु-पक्षियो आदि को जोडा खिलाना या सभोग कराना। ३. कूदने-फाँदने या लाँघने मे प्रवृत्त करना। जैसे—नाले पर से घोडा टपाना। (पश्चिम)

टपाल—स्त्री० [तेलगु तप्पालु] भेजी जानेवाली चिट्ठी-पत्री आदि। डाक। (महाराष्ट्र)

टप्पर†—पु०[?] १. झोपडा। २ छप्पर। ३ बिछाने का टाट।

मुहा०—टप्पर उलटना=दे० 'टाट' के अन्तर्गत मुहा० '**टाट उलटना**'।

टप्पा—पु०[हिं० टाप या फा० तप्पा] १. उतनी दूरी या फासला जितना कोई चीज उछाली, कुदाई या फेकी जाने पर एक बार मे पार करे। जैसे—गेद या गोली का टप्पा।

मुहा०—टप्पा खाना=किसी फेकी हुई वस्तु का बीच मे गिरकर जमीन से छू जाना और फिर उछलकर आगे बढना।

२ उछाल। फलाँग। ३ दो चीजो या स्थानो के बीच की दूरी या फासला। ४ जमीन का छोटा टुकडा। ५ टिकने का स्थान। पडाव। ६ डाक-घर। ७ वह बेडा जिसमे पाल लगी हो। ८ बडी या मोटी सीयन। ९ एक प्रकार का पजाबी लोकगीत, जिसकी तीन-तीन पक्तियो मे स्वतत्र भाव सँजोये हुए होते हैं।

विशेष—इसका आरभ पजाब के सारबानो से हुआ था।

१० एक प्रकार का पक्का गाना जिसमे गले से स्वरो के बहुत छोटे-छोटे टुकडे या दाने एक विशेष प्रकार से निकाले जाते है।

विशेष—इसका प्रचलन लखनऊ के गुलाम नबी शोरी ने किया था।

११ सगीत मे एक प्रकार का ठेका जो तिलवाडा ताल पर बजाया जाता है। १२ एक प्रकार का हुक या काँटा।

टब—पुं०[अ० टब] पानी रखने का एक प्रकार का खुले मुँह का चौडा और बडा बरतन।

†पु० दे० 'टप' (कान मे पहनने का गहना)।

टब्बर†—पु०[?] कुटुब। परिवार। (पजाब)

टमकी—स्त्री०[स० टकार] डुगडुगी नाम का बाजा।

टमटम—स्त्री०[अ० टैंडेम] एक प्रकार की ऊँची और बडी दो पहियोवाली घोडा-गाडी।

टमटी—स्त्री०[देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बरतन।

टमस—स्त्री०[स० तमसा] टौंस नदी। तमसा।

टमाटर—पु०[अ० टमैटो] १ बैंगन की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे लाल रग के गोल-गोल फल लगते है। २ उक्त फल जिनकी तरकारी बनाई जाती है।

टमुकी—स्त्री०=टमकी।

टर—स्त्री०[अनु] १ तीव्र तथा कर्कश ध्वनि। जैसे—मेढक का टर-टर बोलना। २ ऊँचे स्वर मे कही हुई कोई बात।

मुहा०—टर-टर करना या लगाना=हठपूर्वक बढ-बढकर बोलते चलना।

३ अविनीत आचरण या चेष्टा। उद्दडता। ४ जिद। हठ। ५ मुसलमानो का, एक त्यौहार।

टरकना—अ०=टलना।

अ०[अनु०] १ टर-टर शब्द होना। २ टर-टर या व्यर्थ की बकवाद करना।

टरकनी†—स्त्री०[देश०]खेत की (विशेषत ऊख के खेत की) की जाने वाली दुबारा सिचाई।

टरकाना—स०=टालना।

टरकी—स्त्री०[अनु० टर्क टर्क से] मुरगे की जाति का एक प्रकार का पक्षी जो अनेक देशो मे मुरगो की तरह पाला जाता है।

विशेष—यह पक्षी मूलत उत्तरी अमेरिका का है, और टरकी (तुर्क) देश से इसका कोई सबध नही है। यह टर्क-टर्क शब्द करता है, इसी से इसका यह नाम पडा है।

टरकुल—वि०[हिं० टरकाना] बहुत ही साधारण या घटिया। निकम्मा।

टरखल—वि०[?] बुड्ढा। (घृणासूचक)

टरगी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।

टरटराना—स०[हिं० टर] १ टर-टर शब्द करना। २ धृष्टतापूर्वक बहुत अधिक या बढ़-बढ कर तथा जोर से बोलना।

टरना†—अ०=टलना।

पु०[देश०] तेली के कोल्हू की वह रस्सी जो ढेका और कतरी से बँधी होती है।

टरनि†—स्त्री०[हिं० टरना] टलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

टराना†—अ०=टरना (टलना)।

स०=टारना (टालना)।

टर्र टर्र—स्त्री०[अनु०] १ मेढक का तीव्र तथा कर्कश शब्द। २ उद्दण्डतापूर्वक ऊँचे स्वर मे बढ-बढकर कही जानेवाली बाते जिनसे लडाई-झगडा छिड सकता हो।

टर्रा—वि०[अनु० टर टर] १ (व्यक्ति) जो उद्दण्डतापूर्वक ऊँचे स्वर मे बढ-बढकर बाते करता हो। कटुवादी। २ जो जरा-सी बात पर लडने को तैयार हो जाय। ३. कठोर तथा कर्णकटु (शब्द)।

टर्राना—अ०[अनु० टर] ऐसी उद्दण्डतापूर्ण और घमडभरी बाते करना जिनसे झगडा या लड़ाई हो सकती हो।

टर्रापन—पु० [हिं० टर्रा] उद्दडतापूर्वक घमड-भरी बाते करने का ढग या भाव।

टर्रू—पु० [हिं० टर-टर] १ बहुत टर-टर करने अर्थात् अनावश्यक रूप से बकने या बोलनेवाला व्यक्ति। २ बहुत ही कठोर और रूखे स्वभाव का ऐसा व्यक्ति जो जरा सी बात पर भी लडने को तैयार हो जाता हो। टर्रा आदमी। ३ मेढक। ४ कौआ या भौरा नामक खिलौना जिसे घुमाने से मेढक की तरह का टर-टर शब्द होता है।

टलन—पु० [स० √टल् (बेचैन होना)+ल्युट्–अन] घबडाहट। विह्वलता। स्त्री० [हिं० टलना] टलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

टलना—अ० [स० टलन=विचलित होना] १ हिं० 'टालना' का अ० रूप। किसी चीज का अपने स्थान से कुछ खिसकना, सरकना या हटना। २ किसी काम से आए हुए व्यक्ति का बिना अपना काम पूरा किये चले जाना या हट जाना। जैसे—आज तो वह जैसे-तैसे टल गया, कल देखा जायगा। किसी अनिष्ट घटना या स्थिति का किसी प्रकार घटित होने से रुक जाना या कुछ समय के लिए स्थगित हो जाना। जैसे—चलो यह बला भी टली। ४ किसी काम का अपने पूर्व निश्चित समय पर न होकर स्थगित होना। जैसे—मुकदमे की तारीख टलना। ५ किसी के अनुरोध, आग्रह, आदेश, निश्चय आदि का पालन न होना। किसी की बात का न माना जाना। जैसे—उनकी आज्ञा टल नही सकती। ६ अपने कार्य, निश्चय, विचार आदि छोडना या उनसे हटना। जैसे—यह लडका इतनी मार खाता है, पर अपनी आदतो (या शरारतो) से किसी तरह नही टलता। ७ बहुत कठिनता से या जैसे-तैसे समय बिताना। जैसे—आज का दिन तो किसी तरह टाले नही टलता।

टलमल—वि० [हिं० टलना+अनु०] हिलता हुआ। चचल।

टलवा†—पु० [देश०] बैल।

टलहा†—वि० [देश०] [स्त्री० टलही] १ निकम्मा। रद्दी। २ जिसमे रद्दी चीजो की मिलावट हो। खोटा। जैसे—टलही चाँदी।

टलाटली—स्त्री०=टाल-मटोल।

टलाना—स० हिं० 'टालना' का प्रे० रूप।

टलुआ—वि० [हिं० टाल] टाल-सबधी।
पु० टाल का स्वामी।

टल्ला†—पु० [अनु०] १ ठोकर। २ धक्का।
मुहा०—टल्ले मारना=व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना।
३ टाल-मटोल।

टल्ली—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसे 'टोली' भी कहते है।

टल्लेनवीसी—स्त्री० [हिं० टल्ला+फा० नवीसी] १ टाल-मटोल। बहानेबाजी। २ निकम्मे या निठल्ले होने की अवस्था या भाव। ३ बहुत छोटे, व्यर्थ के या इधर-उधर के काम।

टल्लो†—स्त्री० [स० पल्लव] छोटी हरी टहनी। जैसे—आम का टल्लो।

ट-वर्ग—पु० [ष० त०] वर्णमाला के ट ठ ड ढ और ण इन पाँच व्यजनो का समूह।

टवाई—स्त्री० [स० अटन=घूमना] १ भ्रमण। २ व्यर्थ का घूमना-फिरना।

टस—स्त्री० [अनु०] १ किसी भारी चीज के खिसकने का शब्द। २ जोर लगाये जाने पर भी भारी चीज के अपने स्थान से न हिलने की अवस्था या भाव।
मुहा०—टस से मस न होना=(क) भारी चीज का अपने स्थान से न हिलना। (ख) समझाने-बुझाने आदि पर भी अपनी अड या बात न छोडना।

टसक—स्त्री० [हिं० टसकना] १ टसकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ टीस।

टसकना—अ० [स० तस=ढकेलना+करण] १ अपने स्थान से थोडा खिसकना या हटना। २ निश्चिय, विचार आदि से थोडा इधर-उधर या विचलित होना। ३ रह-रहकर हलकी पीडा होना। टीस उठना। ४ फलो आदि का पककर गदराना।
अ० [हिं० टसुआ=आँसू] धीरे धीरे-रोते हुए आँसू बहाना। बिसूरना।

टसकाना—स० [हिं० टसकना] १ खिसकाना। हटाना। २ विचलित करना। ३ आँसू बहाना।

टसना†—अ० [अनु० टस] खीच पडने के कारण कपडे आदि का फटना, मसकना या दरकना।

टसर—पु० [स० त्रसर] १ मटमैले, पीले रग का एक प्रकार का रेशम। २ उक्त रेशम से बुना हुआ कपडा।

टसरी—वि० [हिं० टसर] टसर के रग का। मटमैला और पीला। गरदी।
पु० उक्त प्रकार का रग। गरदी।

टसुआ†—पु० [हिं० अँसुआ (आँसू) का अनु०] अश्रु। आँसू।
क्रि० प्र०—बहाना।

टहक—स्त्री० [हिं० टहकना] १ टहकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ शरीर के अगो मे रह-रहकर दरद होने की अवस्था या भाव।

टहकना—अ० [अनु०] १ रह-रहकर शरीर के अगो मे दरद होना। २ पिघलना। ३ टक-टक शब्द करना।

टहकाना—स० [हिं० टहकना का स० रूप] पिघलाना।

टहटहा—वि० [हिं० टहटहाना] १ हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २ टटका। ताजा।

टहटहाना—अ० =लहलहाना।

टहना—पु० [हिं० टहनी] बहुत बडी तथा मोटी टहनी।

टहनी—स्त्री० [स० तनु] वृक्ष की शाखा। डाल। डाली।

टहरकट्ठा†—पु० [हिं० ठहर+काठ] काठ का वह टुकडा जिस पर तकले से उतारा हुआ सूत लपेटा जाता है।

टहरना†—अ०=टहलना।

टहल—स्त्री० [हिं० टहलना] १ टहलने की क्रिया या भाव। २ किसी को शारीरिक सुख पहुँचाने के लिए की जानेवाली उसकी छोटी या निम्न कोटि की सेवा। खिदमत। जैसे—पैर या सिर दबाना, बदन मे तेल मलना आदि।

टहलना—अ० [स० तत्+चलन =चलना] केवल जी बहलाने, स्वास्थ्य ठीक रखने, हवा खाने आदि के उद्देश्य से धीरे-धीरे इधर-उधर चलना-फिरना या कही जाना।
मुहा०—(कहीं से) टहल जाना=किसी जगह से चुपचाप या धीरे से खिसक या हट जाना। चल देना।

टहलनी—स्त्री० [हिं० टहलुआ का स्त्री० रूप] १ टहल करनेवाली दासी। सेविका। २ मजदूरनी।
†स्त्री० [?] दीए की बत्ती उसकाने की छोटी लकडी या सीक।

टहलाना—स० [हिं० टहलना] १ किसी को टहलने मे प्रवृत्त करना। मनोविनोद, स्वास्थ्य-रक्षा आदि के लिए धीरे-धीरे चलाना या घुमाना-फिराना। २ चिकनी-चुपडी बातो मे फँसाकर किसी को अपने साथ कही ले जाना।

टहलुआ—पु० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] टहल या सेवा करनेवाला व्यक्ति।

टहलुई—स्त्री० [हिं० टहलुवा का स्त्री० रूप] =टहलनी।

टहलुवा†—पु०=टहलुआ।

टहलू†—पु० =टहलुआ।

टही†—स्त्री० [हिं० तह या तही] १ एक पर एक करके रखी हुई चीजो का ढेर या थाक। २ कोई उद्देश्य पूरा करने या काम निकालने के लिए की जाने वाली छोटी-मोटी युक्ति।
क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—लगाना।

टहुआटारी†—स्त्री० [देश०] दुष्ट उद्देश्य से एक की बात दूसरो से कहने की क्रिया या भाव। चुगलखोरी।

टहूकडा—पु० [अनु०] १ कोयल के बोलने का शब्द। २ ऊँट के बोलने का शब्द।
पु०—टहूका।

टहूका—पु० [हिं० ठक या ठहाका] १ पहेली। २ चमत्कारपूर्ण या हास्य रस की छोटी कहानी या बात। चुटकुला।
†पु०—टहूकडा।

टहोका—पु० [हिं० ठोकर] १ हाथ या पैर से किया हुआ बहुत हलका आघात। २ लाक्षणिक रूप मे, मन पर लगनेवाला हलका आघात या ठेस।

टाँक—स्त्री० [स० टक] १ तीन या चार मासे की एक पुरानी तौल। २ प्राय २५ सेर का एक पुराना बाट जिसकी सहायता से धनुष की शक्ति की परीक्षा की जाती थी। ३ अश। भाग। हिस्सा।
स्त्री० [हिं० टाँकना] १ टाँकने की क्रिया या भाव। २ लिखावट या लेख। ३ लिखने की कलम का अगला भाग या सिरा।
स्त्री० [हिं० आँकना] मान, मूल्य आदि का अनुमान। कूत।

टाँकना—स० [स० टकण=बाँधना] १ सूई, डोरे आदि से सीकर कोई चीज कपडो पर लगाना। जैसे—साडी पर बेल या सलमा-सितारे टाँकना, कमीज या कोट मे बटन टाँकना। २ दो चीजो को आपस मे जोडने, मिलाने आदि के लिए किसी प्रकार उनमे टाँका (देखे) लगाना। ३ किसी क्रिया से कोई चीज किसी दूसरी चीज के साथ अटकाना या लगाना। ४ चक्की, सिल आदि को टाँकी से रेहना। ५ आरी, रेती आदि के दाँत किसी क्रिया से चोखे, तेज या नुकीले करना। ६ स्मरण रखने के लिए अथवा हिसाब ठीक रखने के लिए कोई बात या रकम कही लिखना। जैसे—(क) जाँकड दिया हुआ माल बही पर टाँकना, कापी पर किसी का पता टाँकना। ७ लिखित रूप मे कोई चीज, या बात किसी के सामने उपस्थित करना। (क्व०) ८ भोजन करना। खाना। जैसे—वह सारी मलाई टाँक गया। ९ किसी प्रकार के लेन-देन मे, बीच मे से कुछ रकम निकाल या हथिया लेना। (दलाल) जैसे—मकान की बिक्री मे सौ रुपये वह भी टाँक गया।

टाकर—पु० [स० टक+अण्, टाक√रा (देना)+क] १ व्यभिचारी। २ कामुक या विषयी व्यक्ति।

टाँकली—स्त्री० [स० ढक्का] पुरानी चाल का एक तरह का बडा ढोल।
स्त्री० [देश०] वह गराडी या घिरनी जिसकी सहायता से जहाज के पाल लपेटे जाते है। (लश०)

टाँका—पु० [हिं० टाँकना] १ हाथ की सिलाई मे, धागे आदि की वह सीयन जो एक बार सूई को एक स्थान से गडाकर दूसरे स्थान पर निकालने से बनती है। जैसे—(क) इस लिहाफ मे टाँके बहुत दूर-दूर पर लगे है। (ख) उसके घाव मे चार टाँके लगे है। २ उक्त प्रकार से जोडी, टाँकी या लगाई हुई चीजो का वह अश जहाँ जोड दिखाई पडता हो। ३ सूई, तागे आदि से की हुई सिलाई या ऊपर से दिखाई देनेवाले उसके चिह्न। सीवन। ४ उक्त प्रकार से टाँक लगाकर जोडा जानेवाला टुकडा। चकती। थिगली। ५ कडी धातुओ को आपस मे जोडने या सटाने के लिए उनके बीच मे मुलायम धातु या मसाले से लगाया हुआ जोड। जैसे—इस थाली (या लोटे) का टाँका बहुत कमजोर है।
मुहा०—(किसी के) टाँके उघडना=बहुत ही दुर्गत या दुर्दशा होना। जैसे—इस मुकदमे मे उनके टाँके उघड गये।
६ धातुएँ जोडने का मसाला।
पु० [स० टक=गड्ढा या अ० टैक] [स्त्री० अल्पा० टकी टाँकी] १ पानी आदि भरकर रखने के लिए वह आधान जो चारो ओर छोटी दीवारे खडी करके बनाया जाता है। चहबच्चा। हौज। २ पानी रखने का बडा गोलाकार बरतन। कडाल। लोहे की बडी छेनी या टाँकी। ३. दे० 'टाँकी'।

टाँकाटूक—वि० [हिं० टाँक+तौल] तौल मे ठीक-ठीक। वजन मे पूरा-पूरा। (दूकानदार)

टाकार—पु० =टकार।

टाँकी—स्त्री० [स० टक] १ दो चीजो को जोडनेवाला छोटा टाँका। २ छेनी की तरह का सगतराशो का एक औजार जिससे पत्थर काटे और तोडे जाते है।
मुहा०—(किसी चीज पर) टाँकी बजना=टाँकी का आघात होना।
३ फलो आदि मे से काटकर निकाला हुआ कुछ गोलाकार अश, अथवा इस प्रकार काटने से उनमे बननेवाला छेद या सूराख जिससे उनकी भीतरी स्थिति का पता चलता है। ४ गरमी। सूजाक आदि रोगो के कारण शरीर मे होनेवाला घाव या व्रण। ५ एक प्रकार का फोडा। डुबल। ६ आरी का नुकीला दाँत या दाँता।
†स्त्री० दे० (टकी)।

टाँकीबद—वि० [हिं० टाँकी=फा० बद] (वस्तु या रचना) जिसके विभिन्न अगो को टाँके लगाकर जोडा गया हो। जैसे—टाँकीबद जोडाई, टाँकीबद इमारत।

टाँग—स्त्री० [स० टग] १ मनुष्य के शरीर का चूतड और एडी के बीच का अग जिसमे रान, घुटना, पिंडली, टखना आदि अवयव सम्मिलित है।

विशेष—कभी कभी टाँग से घुटने और एडी के बीच के अग मात्र का बोध होता है।

मुहा०—(किसी काम या बात मे) टाँग अड़ाना=किसी काम मे प्राय अनावश्यक रूप से और केवल अपना अधिकार या जानकारी दिखलाने के लिए हस्तक्षेप करना। **(किसी की) टाँग तले से या नीचे से निकलना**=नीचा देखना, अपनी छोटाई या हार मान लेना।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग ऐसी ही अवस्था मे होता है जब कि वक्ता को अपने कथन या पक्ष की प्रामाणिकता सिद्ध करनी होती है और किसी दूसरे को इसके विपरीत चुनौती देनी होती है।

(किसी की) टाँग तोड़ना=पगु बनाना। नष्ट-भ्रष्ट करना। जैसे—भाषा की तो आपने टाँग तोड दी है। **(किसी की) टाँग से टाँग बाँध कर बैठना**= किसी के पास बैठ रहना अथवा उसे अपने पास से न हटने देना। **टाँगें पसार कर सोना**=निश्चित होकर सोना।

पद—टाँग बराबर=बहुत छोटा।

२ कुश्ती का एक पेच जिसमे विपक्षी की टाँग मे टाँग अडाकर उसे चित गिराते हैं। ३ चतुर्थांश। चौथाई भाग। चहारुम। (दलाल)

टाँगन—पु० [स० तुरगम] छोटे कद का घोडा। टट्टू।

टाँगना—स० [हिं० टँगना का स०] १ किसी चीज को किसी ऊँचे स्थान पर इस प्रकार अटकाना, बाँधना या लगाना कि वह बिना आधार के अधर मे खडी, झूलती या लटकती रहे। जैसे—(क) रस्सी पर कपडे या खूँटी मे छीका टाँगना। (ख) दीवार पर घडी या चित्र टाँगना। २ छीके आदि पर कोई चीज सुरक्षा के लिए रखना। जैसे—दही, दूध या तरकारी टाँगना। ३ फासी पर चढाना या लटकाना।

विशेष—'टाँगना' मे मुख्य भाव किसी चीज के ऊपरी भाग को कही लगाने का और 'लटकाना' मे चीज के नीचवाले भाग के झूलते या लटकते रहने का है।

टाँगा—पु० [स० टग] [स्त्री० अल्पा० टाँगी] बडी कुल्हाडी।
पु० [हिं० टाँगन ?] दो ऊँचे पहियोवाली एक प्रकार की गाडी जिसमे एक घोडा जोता जाता है।

टाँगानोचन—स्त्री० [हिं० टाँग+नोचना] खीचा-खीची। खीचा-तानी।

टाँगी†—स्त्री० [हिं० टाँगा] कुल्हाडी।

टाँगुन—स्त्री० [देश०] बाजरे की तरह का एक कदन्न जिसे उबालकर गरीब लोग खाते है।

टाँघन†—पु०=टाँगन।

टाँच—स्त्री० [हिं० टाँचना] १ टाँचने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज मे लगाया जानेवाला टाँका। ३ कही टाँककर लगाई हुई वस्तु। ४ किसी चीज को काट या छीलकर ठीक करने की क्रिया या भाव। ५ किसी चीज मे से काटकर निकाला हुआ अश। ६ ऐसी उक्ति या कथन जिसके फलस्वरूप किसी का बना या होता हुआ काम बिगड जाय या न होने पाये।

क्रि० प्र०—मारना।

टाँचना—स० [हिं० टाँकना] १ टाँका लगाना। टाँकना। २ काट या छीलकर किसी चीज को कोई रूप देना। ३ किसी चीज मे से काटकर कुछ अश निकाल लेना। ४ कोई उलटी-सीधी बात कहकर किसी के बनते या होते हुए काम मे बाधा खडी करना। टाँच मारना।

टाँची—स्त्री० [स० टक=रुपया] रुपए रखने की एक प्रकार की पतली लबी थैली। बसनी।
स्त्री० टाँच।

टाँचु†—स्त्री० =टाँच।

टाँट—स्त्री० [?] सिर का ऊपरी भाग। खोपडी।

मुहा०—टाँट के बाल तक उड जाना—बहुत अधिक दुर्दशा होना। **टाँट खुजलाना (अकर्मक)**—दुर्दशा कराने या मार खाने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **टाँट खुजलाना (सकर्मक)**—दुर्दशा होने पर लज्जित भाव से पछताना। **टाँट गजी होना**—टाँट के बाल तक उड जाना। (देखें ऊपर)

टाँटर†—स्त्री०=टाँट।

टाटा—वि०=टाठा (हृष्ट-पुष्ट)।
वि० =टाठा (सूखा हुआ)।

टाँठ†—वि० =टाँठा।

टाँठा—वि० [अनु० ठन-ठन या स० स्थाणु] जो पक या सूखकर कडा और नीरस हो गया हो।
वि०=टाठा।

टाँड़—स्त्री० [हिं० स्थाणु या हिं० टाँडा ?] १ चीजे रखने के लिए दो दीवारो या आलमारी के बीच मे बेडे बल मे लगा हुआ लकडी का तख्ता या पत्थर। २ लकडी के खभो या पायो से युक्त वह रचना जिसमे सामान रखने के लिए बेडे बल मे कुछ तख्ते लगे हुए होते है। (रैक) ३ लकडी आदि के खभो पर बनी हुई कोई छोटी रचना। जैसे—मचान। ४ बाँस का पोला डडा जो हल मे जुडा रहता है और जिसके ऊपरी सिरे पर लकडी का कटोरेनुमा टुकडा सबद्ध रहता है। ५ गुल्ली-डडे के खेल मे डडे से गुल्ली पर किया जानेवाला आघात।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।
६ ककरीली मिट्टी।
पु० १ =टाँडा। २ टाल (ढेर या राशि)।
स्त्री० =टाड।

टाँड़ा—पु० [हिं० टाँड=समूह] १ चौपायो का वह झुड या दल जिस पर व्यापारी लोग माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाते थे। २ उक्त प्रकार से माल कही ले जाने या कही से लाने की क्रिया अथवा व्यवस्था। ३ उक्त प्रकार से लादकर लाया या ले जाया जानेवाला माल।
क्रि० प्र०—लादना।
४ पैदल यात्रियो, बजारो, व्यापारियो आदि के दलो का कूच या प्रस्थान। ५ उक्त प्रकार के लोगो का जत्था या दल। उदा०—लीजे बेगि निबेरि सूर प्रभु यह पतितन को टाँडो।—सूर। ६ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के यात्री अथवा जगली यायावर जातियो के लोग कुछ समय के लिए ठहरते या अस्थायी रूप से घर बनाकर अथवा पडाव डालकर रहते है। जैसे—आज-कल कजरो का टाँडा पडा है। ७ कुटुब। परिवार।
पु० [स० टँड, हिं० टुड] एक प्रकार का हरा कीडा जो गन्ने आदि की जड़ो मे लगकर फसल को हानि पहुँचाता है।

क्रि० प्र०—लगना।

टाँड़ी†—स्त्री० =टिड्डी।

टाँय-टाँय—स्त्री० [अनु०] कर्कश स्वर मे कही जानेवाली व्यर्थ की बात। बक-बक।

मुहा०—टाँय टाँय फिस होना—बहुत ही लम्बी-चौडी बातो के बाद भी उनका कोई परिणाम या फल न निकलना।

टाँस—स्त्री० [हि० टाँसना] १ हाथ या पैर के मुडने या मोडे जाने पर उसमे होनेवाला तनाव। २ उक्त तनाव के फलस्वरूप होनेवाली पीडा।

टाँसना—स० [?] किसी का हाथ या पैर मरोडकर उसमे तनाव उत्पन्न करना।

अ० तनाव उत्पन्न होने के फलस्वरूप अग मे पीडा होना।

स० १ =टाँचना। २ =टाँकना।

टा—स्त्री० [स० ट—टाप] १ पृथ्वी। २ शपथ।

टाइटिल—स्त्री० [अ०] १ आवरण-पत्र। २ उपाधि। ३ लेख आदि का शीर्षक। शीर्ष-नाम।

टाइप—पु० [अ०] धातु या लकडी का वह टुकडा, जिसके एक सिरे पर कोई अक्षर या चिह्न खुदा रहता है।

विशेष—इन्ही टुकडो को जोडकर पुस्तके, समाचार-पत्र आदि छापे जाते है।

टाइप राइटर—पु० दे० 'टकण यत्र'।

टाइपिस्ट—पु० दे० 'टकक'।

टाइफायड—पु० [अ०] एक प्रकार का रोग जिसमे ज्वर किसी निश्चित अवधि मे उतरता है। मियादी बुखार।

टाइफोन—पु० दे० 'तूफान'।

टाइम—पु० [अ०] समय।

टाइम-टेबुल—पु० दे० 'समय सारिणी'।

टाइम पीस—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी घडी जिसे मेज आदि पर रखा जाता है। (बाँधी या लटकाई जानेवाली घडियो से भिन्न)

टाई—स्त्री० [अ०] १ अँगरेजी पहनावे के अन्तर्गत विशेष ढग से सिली हुई कपडे की वह पट्टी जिसे गले मे कमीज के कालर के ऊपर बाँधा जाता है और जिसके दोनो सिरे सामने लटकते रहते है। २ प्रतियोगिता आदि मे होनेवाली जिच्च। ३ जहाज के ऊपर के पाल की वह रस्सी जिसकी मुद्धी मस्तूल के छेदो मे लगाई जाती है।

टाउन—पु० [अँ०] दे० 'नगर'।

टाउन-हाल—पु० [अ०] किसी नगर का वह सार्वजनिक भवन जिसमे बडी-बडी सभाओ के अधिवेशन आदि होते हो।

टाकरी—पु०=टाकरी (लिपि)।

टाकरी—स्त्री० [टक्क देश] टक्क देश अर्थात् चनाब और व्यास नदियो के बीच के प्रदेश मे प्रचलित एक प्रकार की लिपि जो देवनागरी वर्णमाला का ही एक लेखन-प्रकार है।

टाकू†—पु०=तकला।

टाट—पु० [अनु०] १ पटुए, सन आदि की डोरियो से बुनकर तैयार की हुई मोटे कपडे की तरह की वह रचना जो प्राय बिछाने, परदो आदि के रूप मे टाँगने और बाहर भेजा जानेवाला माल बाँधने आदि के काम आती है।

पद—टाट मे मूँज का बखिया=एक भद्दी चीज जो सजावट मे लगी हुई दूसरी भद्दी चीज। **टाट मे पाट का बखिया**=एक भद्दी चीज की सजावट मे लगी हुई दूसरी बढिया चीज।

२ एक ही बिरादरी के वे सब लोग जो मध्ययुग मे पचायतो आदि के समय एक ही टाट पर बैठा करते थे। ३ उक्त के आधार पर कोई उप-जाति या बिरादरी।

पद—टाट बाहर=जो किसी उप-जाति या बिरादरी से निकाला या बहिष्कृत किया हुआ हो।

४ महाजनो, साहूकारो आदि के बैठने की गद्दी और उसके आस-पास का बिछावन जो एक टाट के ऊपर बिछा हुआ होता है, और जिस पर बैठकर वे रोजगार या लेन-देन करते है। जैसे—अपने टाट पर बैठकर किया जानेवाला सौदा अच्छा होता है।

मुहा०—(महाजन या साहूकार का) टाट उलटना=दिवालिया बनकर पावनेदारो का भुगतान बद कर देना। जैसे—लक्षणो से तो ऐसा जान पडता है कि दस-पाँच दिन मे वह टाट उलट देगा।

५ टाट की वह थैली जिसमे एक हजार रुपये आते है। ६ महाजनी बोलचाल मे एक हजार रुपये। जैसे—इस मुकदमे मे चार टाट लग गये।

†वि० [अ० टाइट] अच्छी तरह कसा, बैठाया या जमाया हुआ। (लश०)

टाटक†—वि०=टटका।

टाटबाफी जूता—पु० [फा० तारबाफी] कामदार जूता।

टाटर†—पु० १ =टट्टर। २ =टाँट (खोपडी)।

टाटिका†—स्त्री०=टट्टी।

टाटी†—स्त्री०=टट्टी।

टाठ†—पु० [स० स्थाली] [स्त्री० अल्पा० टाठी] १ बडी थाली। थाल। २ बटुआ या बटलोई नाम का बरतन।

टाठा—वि० [स० दृढाग] [स्त्री० टाठी] १ मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ उग्र। विकट।

वि०=टाँठा (सूखा हुआ)।

टाड—स्त्री० [स० ताड] भुजाओ पर पहनने का एक प्रकार का चौडी पट्टीवाला बाजूबद।

†स्त्री०=टाँड।

टाडर—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

टाड़ा—पु० [देश०] १ मिट्टी का तेल रखने का एक प्रकार का बरतन। २ लकडियो मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।

टान—स्त्री० [स० तान=फैलाव, खिचाव] १ तनाव। खिंचाव। २ आकर्षण। ३ छापे के यत्र मे, कागज हर बार छापे जाने का भाव। ४ सारगी, सितार आदि के परदो पर उँगली रखकर उसे इस प्रकार खीचना कि क्रमात् कई स्वर या उनकी श्रुतियाँ निकलती चले। ५ साँप के दाँत लगने का एक प्रकार जिससे दाँत कुछ दूर तक खरोच डालता हुआ बाहर निकलता है।

स्त्री०=टाँड।

टानना—स० [हि० टान+ना (प्रत्य०)] १ तानना। २ खीचना। ३ छापे के यत्र मे, कागज लगाकर कुछ छापना।

टाप—स्त्री० [स० स्तप्] १ गधे और घोडे के पैर का वह निचला भाग जिसमे खुर होता है और जमीन पर पडता है। २ उक्त भाग के जमीन पर पडने से होनेवाला शब्द। ३ खभे, पाए आदि का जमीन से लगा रहनेवाला अश। ४ वह खाँचा जिसकी सहायता से तालाबो आदि मे से मछलियाँ पकडी जाती है। ५ वह खाँचा जिसके नीचे मुरगियाँ बन्द करके रखी जाती है।

टापड़—पु० [हि० टप्पा] ऊसर मैदान।

टापदार—वि० [हि० टाप+फा० दार] जिसके ऊपर या नीचे का छोर कुछ फैला हुआ और चौडा हो। जैसे—टापदार पाया।

टापना—अ० [हि० टाप+ना (प्रत्य०)] घोडो का इस प्रकार पैर पटकना जिससे टप-टप शब्द हो। खूँद करना।

†अ०=टपना।

टापर(ा)—पु० [देश०] १ ओढने का मोटा कपडा। चादर। २ टट्टू, टाँघन या ऐसे ही किसी और चौपाये की सवारी। ३ तिरपाल। ४ झोपडा।

टापा—पु० [हि० टापना] १ भूमि का वह विस्तार जिसे टापकर पार करने मे कुछ समय लगता हो। टप्पा। २ ऊसर या बजर मैदान। ३ चलने के समय भरा जानेवाला डग।

मुहा०—टापा देना या भरना=लबे-लबे डग बढाते हुए आगे बढना या चलते बनना। उदा०—रामनाम जाने नही,आयेटापा दीन।—कबीर।

४ व्यर्थ की उछल-कूद। ५ चीजे ढकने का एक प्रकार का टोकरा। ६ वह खाँचा या टोकरा जिसमे मुरगियाँ आदि बन्द करके रखी जाती है। ७ खाँचे या टोकरे की तरह का वह ढाँचा जो बहुत-सी मछलियाँ एक साथ पकडने या फँसाने के काम आता है।

टापू—पु० [हि० टापा या टप्पा=ऐसा स्थान जहाँ टाप या लाँघकर जाना पडे] १ स्थल का वह भाग जो चारो ओर जल से घिरा हो। द्वीप। २ दे० 'टापा'।

टाबर—पु० [पजाबी टब्बर] १ बाल-बच्चे। सन्तान। (राज०) २ परिवार।

पु० [?] छोटा जलाशय या झील।

टाबू—पु० [देश०] पशुओ के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली।

टामक—पु० [अनु०] १ डुग्गी का शब्द। २ डुग्गी।

टामन—पु० [स० तत्र] तत्रविधि। टोटका।

टामी—पु० [अ० टॉमी] सेना का साधारण विशेषत गोरा सिपाही।

टार—पु० [स० टा√ऋ (गति)+अण्] १ घोडा। २ लौडा। ३ कुटना। दलाल।

†पु० टाल।

टारकोल—पु० [अ०] अलकतरा।

टारन—पु० [हि० टारना] १ टारन अर्थात् टालने की क्रिया या भाव। २ वह उपकरण जिससे कोई चीज टाल या हटाकर एक जगह इकट्ठी की जाती है। ३ वह लकडी जिससे कोल्हू मे की गँडेरियाँ चलाई जाती है।

वि० टालने, हटाने या दूर करनेवाला।

टारना—स०=टालना।

टारपीडो—पु० [अ०] समुद्री जहाजो को नष्ट करने के लिए जल मे छोडा जानेवाला एक प्रकार का लबोतरा गोला।

टाल—पु० [स० अट्टाल, हि० अटाला] १ एक दूसरी पर लादकर रखी हुई बहुत-सी चीजो का ऊँचा और बडा ढेर। अबार। अटाला। राशि। जैसे—पत्थरो या लकडियो का टाल। २ पयाल, भूसे, लकडी आदि की दूकान जहाँ इन चीजो का उक्त प्रकार का ढेर लगा रहता है।

पु० [देश०] १ गौओ, बैलो आदि के गले मे बाँधा जानेवाला एक प्रकार का घटा। २ बैल-गाडी के पहिए का किनारा।

पु० [हि० टालना] १ किसी काम या बात के लिए किसी को टालने की क्रिया या भाव। हीला-हवाला।

पद—टाल-मटोल। (देखे)

मुहा०—टाल मारना=कोई चीज तौलने के समय कोई ऐसी चालाकी या युक्ति करना कि वह चीज तौल मे पूरी न होने पावे।

पु० [स० टार=अप्राकृतिक सभोग करानेवाला लडका] व्यभिचार के लिए स्त्री और पुरुष को आपस मे मिलानेवाला व्यक्ति। औरतो का दलाल। कुटना।

टाल-टूल—स्त्री०=टाल-मटोल।

टालना—स० [हि० टलना] १ किसी को उसके स्थान से खिसकाना या हटाना। २ अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को किसी बहाने से अपने सामने से दूर करना या हटाना। जैसे—जब वह शराब पीने बैठता था, तब लडको को अपने कमरे से टाल देता था। ३ किसी उद्देश्य से आये हुए व्यक्ति का उद्देश्य पूरा न करके किसी बहाने से उसे कुछ समय के लिए दूर कर देना या हटा देना। टरकाना। जैसे—जब उससे रुपए माँगने जाओ, तब किसी न किसी बहाने से हमे वह टाल देता है। ४ अनिष्ट घटना या स्थिति से किसी को रक्षित रखने अथवा स्वय रक्षित रहने के लिए किसी युक्ति से उसे घटित न होने देना या दूर करना। जैसे—(क) किसी की विपत्ति या सकट टालना। (ख) अपने मन मे आया हुआ बुरा विचार टालना। ५ कोई काम अपने पूर्व-निश्चित समय पर न करके उसे किसी और समय के लिए छोड रखना। जैसे—परीक्षा या विवाह की तिथि टालना। ६ जो काम अभी किया जाने को हो, उसे किसी और समय के लिए छोड रखना। जैसे—इस तरह हर काम टालने की आदत छोड दो।

मुहा०—(कोई काम या बात) किसी पर टालना=स्वय कोई काम या बात न करके यह कह देना कि इसे अमुक व्यक्ति कर सकता है या करेगा। जैसे—तुम तो अपना सारा काम मुझ पर टाल दिया करते हो।

७ किसी के अनुरोध, आज्ञा, परामर्श आदि की उपेक्षा करना या उस पर उचित ध्यान न देना। जैसे—आप की बात मै किसी तरह टाल नही सकता। ८ कोई अनुचित काम या बात होती हुई देखकर भी उसकी उपेक्षा करना या उस पर ध्यान न देना। तरह दे जाना। बचा जाना। जैसे—अब तक तुम्हारे सब दुर्व्यवहार हम टालते आये है, पर आगे के लिए तुम्हे सावधान रहना चाहिए। ९ बहुत कठिनता से समय व्यतीत करना। ज्यो-त्यो करके वक्त बिताना। उदा०—राम बियोग असोक बिटप तर सीय निमेष कलप सम टारति।—तुलसी।

टाल-मटाल—स्त्री० =टाल-मटोल।

टालम-टाल—वि० [हि० टाला=आधा] (धन, सम्पत्ति) जिसका आधा

भाग एक व्यक्ति के हिस्से मे और आधा भाग किसी दूसरे व्यक्ति के हिस्से मे आया हो या आने को हो। आधा-आधा। (दलाल) जैसे—यह रकम हम लोग आपस मे टालम-टाल बाँट लेगे।

टाल-मटूल—पुं०=टाल-मटोल।

टाल-मटोल—स्त्री०[हिं० टालना मे का टाल+अनु० मटोल]१ सामने आया हुआ काम तुरत पूरा न करके उसे बार-बार दूसरे समय के लिए टालते रहने की क्रिया या भाव। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से आये हुए व्यक्ति का काम पूरा न करके उसे बार-बार टालते रहने की क्रिया या भाव।

टाला—वि०[हिं० टाली] आधा। (दलाल)

टाली—स्त्री०[देश० टलटल से अनु०] १ गाय, बैल आदि के गले मे बाँधने की घटी। २ बहुत चचल बछिया या छोटी गौ। ३ एक प्रकार का बाजा।

स्त्री०[देश०] आठ आने का सिक्का। अठन्नी। (दलाल)

पु०[देश०] शीशम का पेड और उसकी लकडी। (पश्चिम)

टाल्हा—पु०=टाली (शीशम)।

टाहली†—पु० =टहलुआ।

टिटिनिका—स्त्री०[स०]१ जल सिरिस का पेड। दाढौन। २ जोक।

टिंड—स्त्री०[देश०] रहट मे लगा हुआ मिट्टी, धातु आदि का वह पात्र जिसके द्वारा कूएँ का पानी सिचाई के लिए ऊपर खीचा तथा बाहर निकाला जाता है। (पश्चिम)

पु०[?] घुटा या मुँडा हुआ सिर। (परिहास और व्यग्य)

स्त्री०=टिडा।

टिंडर—स्त्री०=टिंड।

टिंडसी—स्त्री०=टिंडा।

टिंडा—पु० [स० टिंडिश]१ एक लता जिसके छोटे गोल फलो की तरकारी बनाई जाती है। २ उक्त लता का फल। डेडसी।

टिंडी—स्त्री०[देश०]१ हल की मुठिया। २ वह खूँटा जिसे पकडकर चक्की का पाट घुमाया या चलाया जाता है।

टिक—स्त्री०[अनु०]किसी यत्र विशेषत घडी के चलने से होनेवाला शब्द। टिकटिक।

पु० आटे आदि का टिक्कर या लिट्टी नाम का पकवान।

टिकई—वि०[हिं० टीका] जिसमे या जिस पर टीका लगा हुआ हो अथवा टीके के आकार के चिह्न बने हुए हो।

स्त्री० वह गाय जिसके माथे पर दूसरे रग के ऐसे बाल होते है जो लगाये हुए टीके की तरह जान पडते है।

टिकट—पु०[अ०]कागज, दफ्ती आदि का कुछ विशिष्ट चिह्नो से युक्त वह छोटा टुकडा जो कुछ निश्चित मूल्य पर बिकता और खरीदनेवाले को कोई विशिष्ट कार्य करने, कही आने-जाने या कुछ भेजने-मँगाने आदि का अधिकारी बनाता है अथवा इस बात का प्रमाण-पत्र होता है कि खरीदनेवाले ने देन चुकाकर कोई काम करने का अधिकार प्राप्त कर लिया है। जैसे—डाक, रेल या सिनेमा का टिकट।

†पु० दे०'टैक्स'।

टिकट-घर—पु०[अ०+हिं०] वह स्थान जहाँ कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए टिकट बिकते हो। जैसे—रेलवे या सिनेमा का टिकट-घर।

२—५५

टिकटिक—स्त्री०[अनु०]१ घोडे, बैल आदि हाँकने के लिए क्रिया जानेवाला टिकटिक शब्द। २ घडी के चलते रहने की दशा मे उसमे होनेवाला शब्द।

टिकटिकी—स्त्री० [अनु०] १ भूरापन लिये लाल रग की एक प्रकार की चिडिया। २ दे० 'टिकठी'।

टिकठी—स्त्री०[स० त्रिकाष्ठ या हिं० तीन+काठ] १ मध्ययुग मे लकडियो का वह ढाँचा जिसमे अपराधियो के हाथ-पैर उन्हे मारने-पीटने के समय बाँध या जकड दिये जाते थे। २ उक्त प्रकार का वह चौखटा या ढाँचा जिसमे फाँसी पानेवाले अपराधियो को खडा करके उनके गले मे फाँसी का फदा लगाया जाता है। ३ मृत शरीर या शव को श्मशान तक ले जाने के लिए बनाया जानेवाला बाँसो, लकडियो आदि का ढाँचा। अरथी। ४ जुलाहो का वह ढाँचा जिस पर वे कलफ या माँडी लगाने के लिए कपडा फैलाते है। ५ दे० 'तिपाई'।

टिकडा—पु०[हिं० टिकिया][स्त्री० अल्पा० टिकडी]१ किसी चीज का छोटा विशेषत चिपटा गोल टुकडा। २ गले मे पहने जानेवाले आभूषणो मे लटकता रहनेवाला धातु का वह गोल खड जिसमे नग आदि जडे रहते है। ३ जडाऊ गहनो मे बना हुआ उक्त आकार-प्रकार का विभाग। ४ आँच पर सेककर पकाई हुई छोटी चिपटी मोटी रोटी।

क्रि० प्र०—लगाना।

५ प्रसूता स्त्रियो को खिलाई जानेवाली वह रोटी जिसके आटे मे अजवाइन, सोठ आदि मसाले मिले रहते है।

टिकडी—स्त्री०[हिं० टिकडा] आँच पर सेककर पकाई हुई छोटी चिपटी रोटी। टिकडा।

टिकना—अ० [स० टिक]१ किसी आधार पर ठीक प्रकार से खडा या स्थित होना। जैसे—(क) चौकी पर मोमबत्ती का टिकना। (ख) छडी की नोक पर तश्तरी का टिकना। २ यात्रा के समय विश्राम के लिए बीच मे कही ठहरना या रुकना। जैसे—धर्मशाला मे यात्रियो का टिकना। ३ प्रवास मे किसी के यहाँ अतिथि के रूप मे ठहरना। ४ कुछ समय के लिए अस्तित्व मे बने रहना। जैसे—प्रथा का टिकना। ५ किसी चीज का ठीक या प्रसम स्थिति मे बने रहना फलत दूषित या विकृत न होना। जैसे—(क) गरमी की अपेक्षा सरदी मे पकाई या पकी हुई चीजे अधिक टिकती है। (ख) यह कपडा या जूता अधिक टिकेगा। ६ (ध्यान आदि के सबध मे) केद्रित होना। जैसे—ध्यान टिकना। ७ किसी घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल मे जमना।

टिकरी—स्त्री०[हिं० टिकिया]१ एक नमकीन पकवान जो बेसन और मैदे की टिकियो को एक मे बेलकर और घी मे तलकर बनाया जाता है। २ टिकिया। ३ सिर पर पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ हलके काले या मटमैले रग का एक प्रकार का बडा जल-पक्षी।

†स्त्री०=टोकरी (छोटा टीला)।

टिकली—स्त्री०[हिं० टीका] १ काँच, पन्नी आदि का छोटा टुकडा जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २ टीका नामक आभूषण।

स्त्री०[हिं० टिकिया]छोटी टिकिया।

स्त्री०=तकली।

टिकसा†—पु० =१ टिकट। २ =टैक्स (कर)।

टिकसार†—वि० =टिकाऊ।

टिका†—पु०=टीका।
टिकाई†—पु०=टिकैत।
टिकाऊ—वि०[हि० टिकना] (चीज) जो अधिक समय तक टिके अर्थात् उपयोग या व्यवहार मे आती रहे या आ सके। जैसे—टिकाऊ कपडा।
टिकान—स्त्री०[हि० टिकना] १ टिकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह स्थान जहाँ पर कोई टिके या बराबर टिकता हो। ३ दे० 'टेकान'।
टिकाना—स० [हि० टिकना] १ किसी आधार पर किसी चीज को खडा करना या ठहराना। टिकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के टिकने अर्थात् कुछ समय तक ठहरने या रहने की व्यवस्था करना। ३ किसी को कही टिकने या रहने देना। जैसे—बरात धर्मशाला मे टिकाई जायगी। ४ किसी को अपने यहाँ अतिथि रूप मे ठहराना या रखना। ५ सहारे पैर खडा करना। ६ सहारा देना। ७ चुप-चाप या धीरे-से किसी के हाथ मे कोई चीज दे देना। (दलाल)
टिकानी—स्त्री०[हि० टिकाना] छकडा गाडी की वे दोनो लकडियाँ जिनमे रस्सी से पैंजनी बँधी होती है।
टिकाव—पु०[हि० टिकना] १ टिके हुए होने की अवस्था या भाव। २ स्थिरता। ३ टिकने का स्थान। ४ पडाव।
टिकिया—स्त्री०[स० वटिका] १ कोई गोलाकार चिपटी कडी तथा छोटी वस्तु। जैसे—दवा या स्याही की टिकिया। २ कोयले की बुकनी से बना हुआ वह गोल टुकडा जिसे सुलगाकर तमाखू पीते है। ३ उक्त आकार की एक मिठाई। ४ बाटी। लिट्टी। ५ बरतन के साँचे का ऊपरी भाग जिसका सिरा बाहर निकला रहता है।
स्त्री०[हि० टीका]१ माथा। ललाट। २ माथे पर लगी हुई बिंदी। ३ =टिक्की।
टिकुरा†—पु०[देश०] टीला। भीटा।
पु०=टिकडा।
टिकुरी—स्त्री०=टिकली (तकली)।
†स्त्री०=दे० 'निसोथ'।
टिकुला—पु०[स्त्री०टिकुली]=टीका (माथे पर का)।
†पु०=टिकोरा (छोटा कच्चा आम)।
टिकुली†—स्त्री०=टिकली।
टिकुवा†—पु०=टेकुआ (तकला)।
टिकैत—पु०[हि० टीका+ऐत (प्रत्य०)]१ राजा का वह पुत्र जो उसके बाद राजतिलक का अधिकारी हो। राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २ अधिष्ठाता। ३ जिसके मस्तक पर नेतृत्व का तिलक लगाया गया हो, अर्थात् सरदार।
टिकोर†—स्त्री०=टकोर।
टिकोरा†—पु०[हि० टिकिया] आम का कच्चा छोटा फल।
टिकोला†—पु०=टिकोरा।
टिक्क†—पु० [हि० टिकिया] १ बडी टिकिया। २ आग पर सेकी हुई मोटी रोटी।
टिक्का—पु० १ =टिकडा। २ =टीका। ३ टिकैत (पश्चिम)।
पु०[देश०] मूँगफली की फसल मे होनेवाला एक रोग।
टिक्की†—स्त्री०[हि० टिकिया] १ छोटी टिकिया। २ छोटी पूरी या रोटी। ३ ताश के पत्ते पर की बूटी। बुँदकी। ४ सकेत आदि के लिए किसी रग की वह बिंदी जो उँगली के पोर से लगाई जाती है।
टिखटी—स्त्री०=टिकठी।
टिघलना—अ०=पिघलना।
टिघलाना†—स०=पिघलाना।
टिचन—वि०[अ० अटेशन] १ जो हर तरह से बिलकुल ठीक या दुरुस्त हो। २ किसी काम के लिए तैयार या लैस। प्रस्तुत।
टिट*—स्त्री० [हि० टेक] जिद। हठ।
टिटकारना—स०[अनु०] [भाव० टिटकारी] टिकटिक शब्द करते हुए घोडो आदि को हाँकना।
टिटकारी—स्त्री०[हि० टिटकारना] १ टिक-टिक शब्द करते हुए पशुओ को हाँकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ मुँह से निकलनेवाला टिकटिक शब्द।
क्रि० प्र०—देना।
टिटिंबा—पु०[अ० ततिम्म =परिशिष्ट]१ व्यर्थ का बखेडा। २ आडबर। ढकोसला।
टिटिभी—स्त्री०=टिटिहरी।
टिटिह=पु०=टिटिहा।
टिटिहरी—स्त्री०[स० टिट्टिभ] जलाशयो के समीप रहनेवाली एक छोटी चिडिया जिसके सिर, गले तथा सीने पर के बाल काले रग के, पीठ तथा डैने भूरे रग के, और निचला भाग सफेद होता है। कुररी।
विशेष—यह अपना घोसला नही बनाती बल्कि बालू मे ही अडे देती है।
टिटिहा—पु०[?] नर टिटिहरी।
टिटिहारोर—पु०[हि० टिटिहा+रोर] १ टिटिहरी के बोलने का शब्द। २ टिटिहरियो की तरह की असयत और निरर्थक चिल्लाहट, पुकार या हल्ला-गुल्ला।
टिट्टिभ—पु०[टिट्टि√भण् (शब्द करना)+ड] [स्त्री० टिटिट्भा, टिटिभी] १ कुररी या टिटिहरी नामक पक्षी। २ टिड्डी।
टिड्डा—पु०[स० टिटिट्भ] एक प्रकार का उडनेवाला बडा फतिगा।
टिड्डी—स्त्री०[स० टिटिट्भ] १ दल बाँधकर उडनेवाला एक प्रकार का बडा फतिगा जो फसलो को नष्ट कर देता है। २ घरो मे रहनेवाला एक छोटा कीडा जो कपडो आदि को खाता है।
टिढ़-बिढगा—वि०[हि० टेढा+बेढगा] जो सीधा या सुडोल न हो। टेढा-मेढा।
टिन—पु०=टीन।
टिप—स्त्री०[हि० टीपना] वह अवस्था जिसमे साँप के काटने पर विष रक्त मे प्रविष्ट हो चुका हो।
टिपकना†—अ०=टपकना।
टिपका†—पु०=टपका।
टिपटिप—स्त्री० [अनु०] १ जल की बूँदे गिरने से होनेवाला शब्द। २ छोटी-छोटी बूँदो के रूप मे होनेवाली थोडी या हलकी वर्षा।
क्रि० वि० टिप-टिप शब्द करते हुए। जैसे—टिप-टिप पानी बरसना।
टिपवाना—स०[हि० टीपना का प्रे० रूप] टीपने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को टीपने मे प्रवृत्त करना।

टिपाई—स्त्री०[हिं० टीपना] १ टीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ चित्रकला मे, आकृतियो आदि की आरभिक रूपरेखा अकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। ३ दे० 'टीप'।

टिपारा—पु०[हिं० तीन+फा० पार =टुकडा]पुरानी चाल की एक प्रकार की तिकोनी टोपी जो मुसलमान फकीर पहना करते थे।
†पु०=पिटारा।

टिपुर—पु०=टिपोर।

टिपोर†—पु० [देश०] १ अभिमान। घमड। २ आडबर। पाखड।

टिप्पणी—स्त्री०[स०√टिप् (प्रेरणा)+क्विप्, टिप√पन् (स्तुति)+अच्—ङीष्, णत्व]१ स्मरण रखने के लिए कोई बात टीपने या सक्षिप्त रूप मे लिख रखने की क्रिया। २ उक्त प्रकार से लिखा हुआ लेख। ३ जन्म-पत्री। ४ किसी के सबध मे प्रकट किया जानेवाला सक्षिप्त विचार। उप-कथन। ४ आज-कल पत्रिकाओ, पुस्तको आदि मे किसी शब्द, पद या वाक्य के सबध मे कुछ नवीन तथ्य, तर्क या मत उपस्थित करने के लिए लिखा जानेवाला छोटा लेख। ५ समाचार पत्रो मे सपादक की ओर से किसी घटना के सबध मे लिखा हुआ छोटा लेख। (अग्र-लेख से भिन्न)

टिप्पन—पु०[स० टिप्पणी] १ टीका। २ व्याख्या। ३ जन्मपत्री।

टिप्पनी—स्त्री०=टिप्पणी।

टिप्पस†—स्त्री०[देश०] अपना काम या मतलब निकालने के लिए की जानेवाली छोटी-मोटी युक्ति।
क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—भिडाना।—लगाना।

टिप्पी—स्त्री०=टिक्की।

टिफिन—पु०[अ०] दोपहर के समय किया जानेवाला जलपान।

टिबरी†—स्त्री०[देश०] पहाड की छोटी चोटी।

टिमकी†—स्त्री०[अनु०] १ छोटा-मोटा बरतन। २ बच्चे का पेट।

टिमटिमाना—अ०[स० तिम=ठढा होना] १ किसी चीज मे से रह-रहकर मद या हलका प्रकाश निकलना। जैसे—जुगनूँ, तारे या दिये का टिमटिमाना। २ (दिये की लौ का) बुझने से कुछ पहले रह-रहकर कुछ प्रकाश देना।

टिमाक—स्त्री०[देश०] १ बनाव-सिंगार। २ ठसक।

टिमिला—पु०[देश०] [स्त्री० टिमिली] छोकरा। लडका।

टिम्मा†—वि० [देश०] छोटे डील-डौलवाला। ठेगना। नाटा।

टिर—स्त्री०=टर।

टिरफिस—स्त्री०[हिं० टिर+फिस] १ बहुत ही तुच्छ कोटि का प्रतिवाद या विरोध। २ व्यर्थ का टर्रापन।

टिर्रा†—वि०=टर्रा।

टिर्राना†—अ०=टर्राना।

टिलटिलाना†—अ०[अनु०] [भाव० टिलटिली] पतला दस्त करना या फिरना।

टिलटिली—स्त्री०[अनु०] १ पतला दस्त फिरने की क्रिया या भाव। †२ पतला दस्त।

टिलवा—पु०[देश०] १ लकडी का टेढा-मेढा छोटा टुकडा। कुदा। २ नाटे कद का आदमी। ३ खुशामदी या चापलूस व्यक्ति।

टिलिया†—स्त्री० [देश०] १ छोटी मुर्गी। २ मुर्गी का बच्चा।

टिली-लिली—स्त्री०[अनु०] बच्चो की आपस मे एक दूसरे को चिढाने की वह क्रिया जिसमे वे टिली-लिली करते हुए अपनी मध्यमा उँगली नचाते है।

टिलेहू—पु०[देश०] नेवलो की जाति का एक जतु जिसके शरीर से बहुत अधिक दुर्गंध निकलती है।

टिलोरिया†—स्त्री०[देश०] मुरगी का बच्चा।
स्त्री०=टिलिया।

टिल्ला—पु०[हिं० ठेलना] १ चोट। २ धक्का।
वि०=निठल्ला।

टिल्लेनवीसी—स्त्री०[हिं० टिल्ला=फा० नवीसी] १ निकृष्ट या निम्न कोटि की सेवा। २ निठल्लापन। ३ टाल-मटोल। बहानेबाजी।
क्रि० प्र० —करना।

टिसुआ†—पु०[स० अश्रु] आँसू। (पश्चिम)

टिहुक—स्त्री०=ठिठक।

टिहुकना—अ०=ठिठकना।

टिहुकना—अ० १ =ठिठकना। २ चौकना।

टिहुनी†—स्त्री०[स० घुट, हिं० घुटना] १ घुटना। २ कोहनी।

टिहूक—स्त्री०[हिं० टिहुकना] टिहुकने (अर्थात् १ ठिठकने, और २ चौकने) की अवस्था, क्रिया या भाव।

टिहूकना—अ०=टिहुकना।

टींड—स्त्री०=टिंड (रहट की)।
पु०=टिंडा।

टींडसी—स्त्री०[स० टिडिश]=टिंडा।

टींड़ा—पु०[देश०] १ जाँता घुमाने का खूँटा। २ जाँते का जुआ।
पु०=टिंडा।

टींड़ी—स्त्री०=टिड्डी।

टीक—स्त्री०[स० तिलक] १ गले मे पहनने का एक आभूषण। २ माथे पर पहनने का टीका नामक आभूषण।

टीकठ†—पु०[हिं० टिकना] रीढ की हड्डी।

टीकन—स्त्री० =टेकन।

टीकना†—स०[हिं० टीका] १ टीका या तिलक लगाना।
२ सकेत के लिए टिक्की या बिंदी लगाना।

टीका—पु०[स० टीक=चलना] १ धार्मिक हिंदुओ मे वह साप्रदायिक चिह्न जो केसर, चदन, रोली आदि से मुख्यत मस्तक पर और गौणत छाती, बाँह आदि पर लगाया जाता है। तिलक। २ विवाह स्थिर करने के समय का वह कृत्य जिसमे कन्या-पक्ष से वर को केसर का तिलक लगाकर कुछ धन, मिठाई आदि देते है। तिलक। ३ कुछ विशिष्ट धार्मिक सस्कारो के अवसर पर सबधियो के यहाँ दी या भेजी जानेवाली मिठाई, धन आदि। (टीका लगाने का औपचारिक लक्षण)
क्रि० प्र०—चढना।—चढाना।—भेजना।
४ किसी नये राजा के राजसिंहासन पर बैठने के समय का वह कृत्य जिसमे पुरोहित उसके मस्तक पर तिलक लगाकर नियमत या विधानत उसे सिंहासन का अधिकारी नियत या स्थिर करता है। ५ वह राजकुमार जो राजा के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी होने को हो या जिसे टीका लगने को हो। टिकैत। ६. दोनो भौहो या ललाट के बीच का वह

मध्य भाग जहाँ उक्त प्रकार का चिह्न लगाया जाता है। ७ पशुओ के मतस्क या ललाट का उक्त भाग। जैसे—घोडे या बैल का टीका। ८ वह जो किसी कुल, वर्ग, समाज, समूह आदि मे सबसे बढकर या मुख्य माना जाता हो। शिरोमणि। ९ आधिपत्य, प्रधानता आदि का चिह्न या लक्षण। जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर कोई टीका है जिससे तुम्हारी ही बात मानी जाय ?

पद—टीके का=सब से बढकर। अच्छा। उत्तम।

१० मध्य युग मे धन आदि के रूप मे वह भेट जो असामी या प्रजा-वर्ग के लोग किसी बडे जमीदार या राजा को कुछ विशिष्ट मागलिक अवसरो पर देते थे। ११ माथे या ललाट पर पहना जानेवाला एक प्रकार का लबोतरा गहना। १२ किसी प्रकार का लबोतरा चिह्न या निशान। १३ आज-कल कुछ विशिष्ट रोगो का वह चेप या रस जो रासायनिक प्रक्रिया से प्रस्तुत करके प्राणियो के शरीर मे सूइयो आदि से इसलिए प्रविष्ट किया जाता है कि प्राणी उस रोग से रक्षित रहे। जैसे—चेचक, प्लेग या हैजे का टीका।

स्त्री०[स०] किसी ग्रथ, पद या वाक्य का अर्थ स्पष्ट करनेवाला कथन या लेख। अर्थ का विवरण। विवृति। व्याख्या। जैसे—(क) महाभारत या रामायण की टीका। (ख) किसी के उपदेश या गूढ बात की टीका।

टीकाकार—पु०[स० टीका√कृ (करना)+अण्] १ वह जो किसी कठिन या दुर्बोध ग्रथ की टीका करता हो। २ गूढ शब्दो, पदो, वाक्यो आदि की सुबोध भाषा मे व्याख्या लिखनेवाला व्यक्ति।

टीका-टिप्पणी—स्त्री०[स० व्यस्त शब्द] कोई प्रसग छिडने या बात सामने आने पर उसके गुणो, दोषो आदि के सबध मे प्रकट किये जानेवाले विचार।

टीकी†—स्त्री०[हि० टीका] १ टिकुली। २ टिकिया। ३ बिंदी। ४ पुरुषो की चुटिया। चोटी। शिखा।

टीकुर†—पु०[देश०] १ ऊँची भूमि। २ जलाशयो के तट की ऊँची सूखी भूमि। ३ जगल। वन।

टीटा—पु०[देश०] स्त्रियो की योनि मे का वह ऊँचा मास-पिड जो दोनो भगोष्ठो के बीच निकला रहता है। टना।

टीडी†—स्त्री०=टिड्डी।

टीन—पु०[अ० टिन] १ राँगा। २ राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर जिससे कनस्तर, डिब्बे आदि बनाये जाते है। ३ टीन की चद्दर का बना हुआ कनस्तर या डिब्बा।

टीप—स्त्री०[हि० टीपना, मि० अ० टिप] १ टीपने की क्रिया या भाव। २ धीरे-धीरे ठोकने, पीटने या दबाने की क्रिया या भाव। जैसे—गच, छत या दीवार के पलस्तर पर होनेवाली टीप। ३ ईटो की बनी हुई दीवार, फरश आदि पर पलस्तर न करके केवल उसकी दरजो, सधियो मे मसाला भरकर उन्हे बद करने की क्रिया या भाव। ४ जोर की ध्वनि या शब्द। ५ सगीत मे, किसी एक स्वर पर बहुत जोर देते हुए कुछ देर तक किया जानेवाला उसका ऐसा उच्चारण जिसकी तीव्रता बराबर बढती चलती हो।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—टीप लड़ाना=ऊँचे स्वर मे या गले का पूरा जोर लगाते हुए कोई चीज गाना।

६ पानी मिला हुआ वह दूध जिससे चीनी या शीरा बनाने के समय उसकी मैल साफ की जाती है। ७ हाथी के शरीर पर औषध का किया जानेवाला लेप। ८ सेना की टुकडी या दल। ९ गजीफे के खेल मे विपक्षी के एक पत्ते को अपने दो पत्तो से मारने की क्रिया। १० स्मरण रखने के लिए सक्षेप मे लिखी हुई सक्षिप्त बात या उसका मुख्य अश। ११ सूचना, व्याख्या या आलोचना के रूप मे लिखी हुई कोई बात। (नोट) १२ वह कागज जिस पर दोनो पक्षो की ओर से लेन-देन, व्यवहार आदि से सबध रखनेवाला कोई निश्चय या उसकी शरते लिखी रहती है। दस्तावेज। लेख्य। १३ वह कागज जिस पर किसी को निश्चित समय पर कुछ धन देने का आदेश या प्रतिज्ञा लिखी हो। जैसे—चेक, हुडी आदि। १४ जन्म-पत्री। टीपन।

वि० बहुत अच्छा या बढिया।

टीपटाप—स्त्री [अनु०] १ टीप करने अर्थात दरजो या दरारो मे मसाला भरने का काम। २ दे० 'टीम-टाम'।

टीपन—स्त्री०[हि० टीपना] ककड, काँटे आदि के चुभने के कारण पडने-वाली गाँठ या घट्ठा।

स्त्री०=टीप (जन्म-पत्री)।

टीपना—स० [स० टेपन=फेकना] १ उँगलियो या हथेलियो से दबाना। जैसे—किसी के पैर या हाथ टीपना। २ कोई चीज ठीक तरह से बनाने या सुन्दर रूप देने के लिए उस पर धीरे-धीरे हलका आघात या प्रहार करना। जैसे—गच या पलस्तर टीपना। ३ ईटो की बनी हुई दीवार, फरश आदि पर सीमेट आदि का पलस्तर न करके उसकी दरजो या सधियो को बद करने के लिए उनमे मसाला भरना। ४ हलके हाथो से लेप आदि लगाना। ५ गाने के समय किसी स्वर को बहुत खीचते हुए और पूरी शक्ति लगाकर उसका उच्चारण करना। ६ गजी के खेल मे अपने दो पत्तो से विपक्षी का एक पत्ता मारना।

स०[म० टिप्पनी] १ याद रखने के लिए कुछ लिख या टाँक लेना। २ अकित करना। निशान लगाना। उदा०—कुकुम चदन चारु चून ऐपन सौ टीपे।—रत्ना०।

टीबा—पु०[हि० टीला] [स्त्री० टिबरी, टीबी] टीला।

टीम—स्त्री०[अ०] किसी खेल, प्रतियोगिता मे सम्मिलित होनेवाले एक पक्ष के सब लोग। टोली।

टीम-टाम—स्त्री०[देश०] १ ऊपरी बनाव-सिगार या सजावट। २ ठाट-बाट। तडक-भडक। ३ व्यर्थ का आडबर।

टीला—पु०[स० अष्ठीला] १ छोटी पहाडी की तरह उभडा तथा ऊँचा उठा हुआ भूखड। ढूह। २ मिट्टी का वह ऊँचा ढेर जो प्राकृतिक रूप से बना हो। २ छोटी पहाडी।

† पु०[देश०] एक जल-पक्षी।

टीस—स्त्री०[देश०] १ सहसा तथा रह-रहकर उठनेवाली वह पीडा जो शरीर का भीतरी भाग चीरती हुई-सी जान पडे। हूल।

क्रि० प्र०—उठना।—मारना।

२ दुश्मनी। बैर। शत्रुता। (पूरब)

†स्त्री०[अ० स्टिच] पुस्तको की सिलाई का वह प्रकार जिसमे उसके फरमे पहले अलग-अलग और तब एक साथ सीये जाते है।

टीसना—अ०[हि० टीस] शरीर के किसी अग मे रह-रहकर ऐसी तीव्र

पीडा होना जो शरीर के उस अग को अदर से चीरती हुई-सी जान पडे।

टीसा—पु० [देश०] खैरे रग का एक शिकारी पक्षी जिसके डैने भूरे होते है।

टुँगना—स०=टूँगना।

टुँच—वि० [स० तुच्छ] १ क्षुद्र। तुच्छ। २ दे० 'टुच्चा'।
स्त्री० बहुत ही थोडा धन या पूँजी।

टुटा—वि०=टुडा।

टुंटुक—पु० [स० टुटु√कै (शब्द)+क] १ सोना पाठा। २ काला खैर।

टुटुका—स्त्री० [स० टुटुक+टाप्] पाठा।

टुड(ा)—वि० [स० तुड] [स्त्री० टुडी] १ (वृक्ष) जिसकी डाले या पत्तियाँ कट, गिर या झड गई हो। २ (व्यक्ति) जिसका एक या दोनो हाथ कटे हुए हो। ३ (पशु) जिसका एक या दोनो सीग कटकर या और किसी प्रकार गिर गये हो। ४ (चीज) जिसका कोई अग खडित हो।
पु० १ ठूँठ वृक्ष। २ लूला। ३ पशु जिसका एक सीग टूट चुका हो। ४ एक काल्पनिक प्रेत जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि वह रात के समय अपना कटा हुआ सिर हथेली पर रखकर तथा घोडे पर सवार होकर निकलता है।

टुडी—स्त्री० [स० तुडि] नाभि। ढोढी।
स्त्री० [?] बाँह। मुश्क।
मुहा०—टुडियाँ कसना या बाँधना=दे० 'मुश्क' के अन्तर्गत 'मुश्के कसना या बाँधना'।

टुइँयाँ—पु० [देश०] १ तोतो या सुग्गो की एक जाति। २ उक्त जाति का तोता जिसकी चोच पीले रग की और गरदन बैंगनी होती है। यह अपेक्षाकृत छोटे आकार का होता है।
वि० १ बहुत छोटा। २ बहुत ठिगना या नाटा।

टुक—वि० [स० स्तोक=थोडा] थोडा। जरा-सा।
क्रि० वि० जरा। तनिक।
पु० टुकडा। उदा०—इक टुक कपडे पर तेहिं जनि अजि छुडाओ।—रत्ना०।

टुक-टुक—अव्य०=टुकुर-टुकुर। जैसे—लोग टुक-टुक देखते रहे।—राहुल।

टुकड—पु० हि० 'टुकडा' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—टुकडगदा, टुकडतोड आदि।

टुकडगदा—पु० [हि० टुकडा+फा० गदा=भिखमगा] १ रोटी के टुकडे घर-घर से माँगकर निर्वाह करनेवाला भिखारी। २ वह व्यक्ति जो दूसरो के टुकडो पर पलता हो।
वि० १ बहुत ही तुच्छ और हीन (व्यक्ति)। २ परम दरिद्र। ३ कगाल।

टुकडगदाई—स्त्री० [हि० टुकडा+फा० गदाई=भिखमगापन] घर-घर से रोटी के टुकडे भीख माँगने की क्रिया या भाव। भिखारीपन।
वि०, पु०=टुकडगदा।

टुकडतोड—पु० [हि० टुकडा+तोडना] वह निठल्ला व्यक्ति जो दूसरो के दिये हुए टुकडे खाकर दिन बिताता हो।

टुकडा—पु० [स० त्रोटक या स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकडी] १ किसी वस्तु का वह छोटा अश या भाग जो मूल वस्तु से कट, फट या टूटकर अलग हो गया हो। जैसे—(क) कपडे या कागज का टुकडा। (ख) बादल का टुकडा। (ग) ईट या पत्थर का टुकडा।
मुहा०—(किसी चीज के) टुकडे उडाना=किसी चीज को इस प्रकार काटना, तोडना या फोडना कि उसके बहुत से छोटे-छोटे टुकडे हो जायँ।
२ रोटी आदि मे से काट या तोडकर निकाला हुआ अश या भाग।
मुहा०—टुकडा या टुकडे माँगना=घर-घर घूमकर भिक्षा के रूप मे रोटी का टुकडा माँगना। **टुकडा-तोड या टुकड़ा-सा जवाब देना** =बहुत ही रुखाई से इन्कार करना या साफ जवाब देना। **(किसी के) टुकडे तोडना**=बहुत ही दीन-हीन बनकर किसी के दिये हुए रूखे-सूखे भोजन से निर्वाह करना। दीन रूप मे आश्रित बनकर दिन बिताना या रहना। **(किसी के) टुकड़ो पर पडना या पलना**=(किसी के) टुकडे तोडना।
३ जमीन का वह अश जो मूल से नदी, पहाड, मेड आदि बीच मे पडने या बनने के कारण अलग हो गया हो। जैसे—खेत के इस टुकडे मे खरबूज और उस टुकडे मे तरबूज बोया गया है। ४ किसी कृति या रचना का कोई विशिष्ट अश, खड या भाग। जैसे—कविता, गीत या शेर का टुकडा।

टुकडी—स्त्री० [हि० टुकडा] १ छोटा टुकडा। जैसे—नमक या मिसरी की टुकडी। २ छोटे-छोटे खडो या टुकडो मे काटी या बनाई हुई चीज। जैसे—चार टुकडी मिठाई। ३ कुछ विशिष्ट प्रकार के प्राणियो अथवा कोई विशिष्ट कार्य करनेवाले लोगो का छोटा दल, वर्ग या समुदाय। जैसे—(क) कबूतरो की टुकडी। (ख) ठगो, डाकुओ या सैनिको की टुकडी। ४ कपडे का वह टुकडा जो स्त्रियाँ महीन साडी पहनने से पहले कमर मे लपेट लेती है। ५ कार्तिक-स्नान का मेला जिसमे लोग छोटे-छोटे दलो के रूप मे जाया करते थे।

टुकनी†—स्त्री०=टोकनी (टोकरी)।

टुकरी†—स्त्री० [?] सल्लम की तरह का एक प्रकार का मोटा कपडा।
†स्त्री०=टुकडी।

टुकुर-टुकुर—अव्य० [अनु०] ललचाई हुई नजर से या विवशता की दशा मे।
मुहा०—टुकुर टुकुर देखना=ललचाई हुई नजरो से या विवशता की दशा मे किसी की ओर चुपचाप टक लगाकर देखना।

टुक्कड (र)†—पु० [स० स्तोक] रोटी का टुकडा। (पजाब) उदा०—वह पायेगी सदा दया का टुक्कड।—कोई कवि।

टुक्का—पु० [हि० टूक] १ किसी चीज का बहुत छोटा अश।
मुहा०—टुक्का-सा जवाब देना=साफ इनकार करना। कोरा जवाब देना। **टुक्का-सा मुँह लेकर रह जाना**=लज्जित होकर चुप रह जाना।
२ किसी वस्तु का चौथाई अश।

टुघलाना—अ०=चुभलाना।

टुच्चा—वि० [स० तुच्छ] [स्त्री० टुच्ची] १ (व्यक्ति) जो बहुत ही निम्न या हीन विचारो का या क्षुद्र प्रकृतिवाला हो। २ (कथन) जो अनुचित तथा ओछा या हेय हो। जैसे—टुच्ची बात। ३ जो देखने मे बहुत ही तुच्छ या हेय जान पडता हो। ४ (पहनने का कपडा) जिसकी ऊँचाई, लबाई या घेरा उचित या साधारण से कम हो। टुच्ची कमीज, टुच्चा पाजामा।

टुटका†—पु०=टोटका।
टुटनी—स्त्री० [हि० टोटी] झारी या गडुवे की पतली नली। छोटी टोटी।
टुटपुजिया—वि० [हिं० टूटना+पूँजी] (व्यक्ति) जिसके पास बहुत ही थोडी पूँजी हो।
टुटरूँ—स्त्री० [अनु० टुटरूँटूँ] छोटी पडुकी।
टुटरूँ-टूँ—स्त्री० [अनु०] पडुकी के बोलने का शब्द। पेडुकी या फाख्ता की बोली।
वि० १ अकेला। २ बहुत कम। थोडा। ३ क्षीण-काय। दुबला-पतला। ४ तुच्छ। हीन।
टुटहा† —पु० [देश०] एक तरह की चिडिया।
वि० [हि० टूटना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० टुटही] १ टूटा हुआ। २ जो अपनी जाति, पक्ति या वर्ग से छूटकर अलग हो गया हो।
टुटिहल—वि० [हिं० टूटना] १ जो टूटा-फूटा हो अथवा टूटने-फूटने की अवस्था मे हो। जर्जर। २ कमजोर। दुर्बल। ३ टुटपुजिया।
टुटुका—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का नगाडा।
टुटुहा—पुं०=टुटहा।
टुटेला†—वि०=टुटहा।
टुडी†—स्त्री० [स० तुडि] नाभि।
स्त्री०=टुकडी।
टुनका† —पु० [देश०] एक रोग जिसमे मूत्र जल्दी-जल्दी होता और उसके साथ वीर्य भी गिरता है।
टुनकी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फतिगा।
टुनगा†—पु० [स० तनु=पतला+अग्र=अगला] [स्त्री० टुनगी] १ डाल या टहनी का सिरा या अगला भाग। २ टहनी।
टुनटुना †—पु० [देश०] मैदे आदि का एक नमकीन पकवान।
टुनहाया—पु० [हि० टोना] [स्त्री० टुनहाई] टोना करनेवाला व्यक्ति। टोनहा।
टुनाका—स्त्री० [स०] तालमूली। मुसली।
टुनियाँ—स्त्री० [स० तुड] एक प्रकार का मिट्टी का छोटा पात्र जिसमे टोटी भी लगी होती है।
टुनिहाया—पु० [स्त्री० टुनिहाई]=टुनहाया।
टुन्ना—पु० [स० तुड] वह नाल जिसमे फल लगते तथा लटकते है। जैसे—कद्दू या कमल का टुन्ना।
टुपकना†—अ० [अनु०] १ धीरे से ऊपरी भाग काटना या कुतरना। २ जीव-जन्तुओ का चुपचाप या धीरे से किसी को काटना या डक मारना। ३ धीरे से या बहुत ही सीधे-सादे बनकर कोई ऐसी छोटी-सी बात कहना जो किसी का अनिष्ट कर सकती या किसी को कुछ हानि पहुँचा सकती हो।
टुबी+—स्त्री० [हि० डूबना] गोता। डुबकी। (पश्चिम)
टुमकना—अ०=टुपकना।
टुम्मा—पु० [देश०] कच्ची रसीद।
टुरा—पु० [देश०] [स्त्री० टुरिन, टुरिया] बच्चा। लडका।
टुर्रा—पु० [?] १ किसी चीज का जमा हुआ या ठोस टुकडा या डला। जैसे—मिसरी का टुर्रा। २ ज्वार, बाजरे आदि मोटे अन्नो का बडा दाना।

टुलकना—अ०=ढुलकना।
टुलकाना†—स०=ढुलकाना।
टुलडा—पु० [देश०] भारत के पूर्वी प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का बाँस।
टुसकना—अ०=टसकना।
टूँ—स्त्री० [अनु०] पादने पर होनेवाला शब्द।
टूँक—पु०=टूक।
टूँगना—स० [हिं० टुनगा] १ (चौपायो का) टहनी के सिरे की कोमल पत्तियो को दाँत से काटना। कुतरना। २ थोडा-थोडा करके और धीरे-धीरे खाना। (व्यग्य)
टूँगा—वि० [स० तुग] ऊँचा। उदा०—तहाँ एक परबत हा टूँगा।—जायसी।
टूँड—पु० [स० तुड] [स्त्री० अल्पा० टूँडी] १ मक्खी, मच्छड आदि के मुँह पर का रोआँ जो नली के समान लबा होता है तथा जिसके द्वारा वे किसी चीज का रस चूसते अथवा उसे छूकर उसका पता लगाते है। २ गेहूँ, जौ आदि की बालो मे आगे या ऊपर की ओर निकला हुआ उक्त प्रकार का पतला लबा अश। सीगुर। ३ कन्दो, फलो आदि का अगला नुकीला और पतला भाग। जैसे—गाजर, बैगन या मूली की टूँड। ४ किसी चीज की पतली, लबी नोक। ५ ढोढी। नाभि।
टूक†—पु० [स० स्तोक] १ खड। टुकडा।
मुहा०—दो टूक जवाब देना=थोडे मे तथा स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर देना। साफ इनकार करना।
२ कपडे का थान। (बजाज) जैसे—दस टूक मलमल पाँच टूक मारकीन।
टूकर†—पु०=टुक्कड।
टूका†—पु० [हिं० टूक] १ टुकडा। २ भिक्षा। भीख। ३ किसी चीज का चौथाई अश या भाग।
टूकी†—स्त्री० [हि० टूक] १ खड। टुकडा। २ पहनने की अँगिया मे मुलकट के ऊपर लगनेवाला कपडे का टुकडा।
टूक्यो*—पु० [?] भालू। (डिं०)
टूगर—वि० [?] अनाथ।
टूट†—स्त्री० [स० त्रुट्, हिं० टूटना] १ टूटने की क्रिया या भाव। २ कटने, टूटने आदि पर निकला हुआ अश या भाग। खड। ३ ऐसी स्थिति जिसमे बीच का कोई अश कटा या टूटा हुआ हो। ४ क्रम के निर्वाह के प्रसग मे कही बीच मे होनेवाला थोडा-सा अभाव या छूट। जैसे—किसी कविता या लेख मे की टूट। ५ कमी। त्रुटि। ६ घाटा। टोटा।
टूटन—स्त्री० [हिं० टूटना] १ टूटने की क्रिया, भाव या स्थिति। टूट। २ टूटी हुई चीज के टुकडे।
टूटना—अ० [स०√त्रुट्, हिं० तोडना का अ०] १ किसी चीज के अग, अश या अवयव का कटकर अपने मूल से अलग हो जाना। जैसे—पेड की डाल या उसमे लगा हुआ फल टूटना। २ किसी चीज का इस प्रकार खडित या भग्न होना कि उसके दो या बहुत से टुकडे हो जायँ। जैसे—घन की चोट से पत्थर टूटना। ३ किसी चीज के इस प्रकार खड या टुकडे होना कि वह काम मे आने योग्य अथवा अपने पूर्व रूप मे न रह

जाय। जैसे—(क) छत, दीवार या मकान टूटना। (ख) गिलास, थाली या लोटा टूटना। (ग) तालाब या नदी का बाँध टूटना।
पद—टूटा-फूटा=(क) जो खडित या भग्न होने के कारण अपने पूर्व रूप मे न रह गया हो अथवा ठीक तरह से काम न दे सके। जैसे—टूटी-फूटी घडी, टूटा-फूटा मकान। (ख) जो नियम, विधान आदि की दृष्टि से अधूरा या असगत हो अथवा ठीक या समीचीन न जान पडे। जैसे—बच्चो का टूटी-फूटी बाते करना या बोली बोलना। (ग) इतर भाषा-भाषियो का टूटी-फूटी हिंदी लिखना।
४ आघात आदि के कारण किसी चीज का कही बीच मे से इस प्रकार कुछ खडित होना कि उसमे कुछ अवकाश, दरज या लकीर पड जाय। जैसे—(क) पैर या हाथ की हड्डी टूटना। (ख) टक्कर लगने से आरसी या घडी का शीशा टूटना। ५ अपने दल, पक्ष, वर्ग, समाज आदि से किसी प्रकार अलग या दूर हो जाना अथवा निकल जाना। अलगाव या पार्थक्य हो जाना। जैसे—(क) कबूतर का अपने झुड से टूटना। (ख) मुकदमे का गवाह टूटना। (ग) जाति या बिरादरी से टूटना (अर्थात् अलग होना या निकाला जाना)। ६ किसी प्रकार के निश्चित या परम्परागत सपर्क या सबध का अत या विच्छेद होना। पहले का-सा लगाव या व्यवहार न रह जाना। जैसे—(क) नाता या रिश्ता टूटना। (ख) आपस की सधि, सविदा या समझौता टूटना। ७ किसी चलते हुए कार्य या व्यवहार का इस प्रकार अन्त या समाप्त हो जाना कि उसकी सब क्रियाएँ बिलकुल बन्द हो जायँ। जैसे—(क) कोठी, पाठशाला, महकमा या सस्था टूटना। (ख) दल, मडली या सघटन टूटना। (ग) पदाधिकार की जगह या पद टूटना (समाप्त हो जाना)। ८ किसी प्रकार के क्रम, निश्चय या परम्परा का अन्त होना अथवा उसमे किसी प्रकार की बाधा या व्यतिक्रम होना। जैसे—(क) खाँसते-खाँसते (या हिचकियाँ लेते लेते) उसका दम टूट गया। (ख) पद्रह दिन बाद अब बुखार टूटा है। (ग) बकवाद बद करो, हमारा ध्यान टूटता है। (घ) उनका मौन (या व्रत) टूट गया। ९ किसी पदार्थ के किसी अश या भाग का कही इस प्रकार दब या रुक जाना कि वह काम मे न आ सके या मिल न सके। घटकर या और किसी प्रकार नही के बराबर हो जाना। जैसे—(क) गरमी मे कूओ का पानी टूटना। (ख) लेन-देन या व्यवहार मे सौ-पचास रुपए टूटना (कम मिलना)। १० किसी प्रकार के तत्त्व या शक्ति मे इस प्रकार कमी या ह्रास होना कि पहले की-सी सबल और स्वस्थ स्थिति न रह जाय अथवा बहुत कुछ नष्ट हो जाय। जैसे—(क) रोग से शरीर टूटना अर्थात् बहुत कृश या दुर्बल होना। (ख) बाजार गिरने से महाजन या व्यापारी का टूटना अर्थात् बहुत कुछ निर्धन हो जाना। (ग) युद्ध के कारण देशो या राष्ट्रो का बल टूटना। ११ किसी प्रकार की अनिष्ट, अप्रिय, बाधक या विपरीत घटना अथवा परिस्थिति के कारण किसी मनोदशा या स्थिति का अपने पहले के सबल और स्वस्थ रूप मे न रह जाना। जैसे—उत्साह, दिल या हिम्मत टूटना।
सयो० क्रि०—जाना (उक्त सभी अर्थों मे)।
१२ दुर्बलता, रोग, शिथिलता, श्रम आदि के कारण शरीर के अगो का इस प्रकार पीडा से युक्त होना कि वे अपनी जगह से अलग होते या हटते हुए से जान पडे। जैसे—ज्वर आने या बहुत अधिक परिश्रम करने पर शरीर या उसके अग-अग टूटना। १३ किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार से बहुत से लोगो का एक साथ दल बाँधकर अथवा प्राय एक ही समय मे कही जाना या पहुँचना। जैसे—(क) डाकुओ का यात्रियो पर (अथवा सैनिको का शत्रु के नगर पर) टूटना। (ख) मेला देखने के लिए (या राशन की दूकान पर) लोगो का टूटना।
सयो० क्रि०—पडना।
१४ पूरे वेग या शक्ति से किसी ओर अथवा किसी काम मे प्रवृत्त होना या लगना। जुटना। जैसे—भुक्खडो का भोजन पर टूटना।
सयो० क्रि०—पडना।
१५ किसी चीज का प्राय अनायास और बहुत अधिक मात्रा या मान मे आने लगना या प्राप्त होना। जैसे—दौलत तो उनके घर मानो टूटी पडती है।
सयो० क्रि०—पडना।
पद—टूटकर या टूट-टूटकर=बहुत अधिक मात्रा या मान मे। जैसे—टूटकर पानी बरसना (अर्थात् मूसलधार वर्षा होना)।
१६ युद्ध के प्रसग मे, किले या गढ के सबध मे, शत्रु के आक्रमण से ध्वस्त या नष्ट होकर आक्रमणकारियो या विरोधियो के हाथ मे चला जाना। जैसे—मुगलो के शासन-काल मे एक-एक करके राजपूताने के बहुत से गढ टूट गये।
सयो० क्रि०—जाना।
१७ प्रतियोगिता, होड आदि के प्रसग मे, पहले के किसी कीर्तिमान या सीमा का किसी नये कृत्य या कौशल से उल्लघित होना या पीछे छूट जाना। जैसे—इस बार के सर्वराष्ट्रीय खेलो की प्रतियोगिता मे कई क्षेत्रो के पुराने कीर्ति-मान टूट गये और उनके स्थान पर नये कीर्ति-मान स्थापित हुए है।
सयो० क्रि०—जाना।
१८ आर्थिक, व्यापारिक आदि प्रसगो मे, किसी चल-पत्र, देयादेश या सिक्के का नगद धन या छोटे सिक्को के रूप मे परिवर्त्तित होना। भुनना। जैसे—नोट, रुपया या हुडी टूटना।
सयो० क्रि०—जाना।
टूठना—अ०, स० =तूठना
टूठनि—स्त्री० [हिं० टूठना] तुष्टि। सतोष।
टूनरोटी†—स्त्री० [अ० टाउन-ड्यूटी] चुगी।
टूना†—पु०=टोना।
टूम—स्त्री० [अनु० टुन टुन] १ आभूषण। गहना।
पद—टूम-छल्ला=छोटे-छोटे गहने।
२ बनाव-सिगार। सजावट।
पद—टूम-टाम=बढिया कपडे, गहने आदि, अथवा सजावट और शृगार की सामग्री।
३ धनी या सुन्दर स्त्री जिसके प्रति लोगो के मन मे लोभ उत्पन्न होता हो। ४ बहुत ही चतुर या चालाक या छँटा हुआ आदमी जिससे सहसा कोई पार न पा सकता हो। ५ चेतावनी, सकेत आदि के रूप मे किया जानेवाला बहुत हलका आघात या दिया जानेवाला झटका। जसे—कबूतरो को छतरी पर से टूम देकर उडाना।
क्रि० प्र०—देना।
६ ताने के रूप मे कही हुई कोई व्यग्यपूर्ण बात। (क्व०)

टूमना†—स० [अनु०] १ झटका या धक्का देना। २ व्यग्यपूर्ण बात कहना। ताना देना।

टूरनामेंट—स्त्री० दे० 'चक्र-स्पर्धा'।

टूल—पु० [अ० स्टूल] एक प्रकार की छोटी तिपाई।

टूस—पु०=तूस।

टूसा†—पु० [स० तुष] १ मदार का फल। २ पाकर का फूल। ३ ततु। रेशा। ४ खड। टुकडा।

टूसी†—स्त्री० [हि० टूसा] बिना खिला फूल। कली।

टें—स्त्री० [अनु०] १ तोते की बोली। २ कर्कश या तीखा स्वर।

पद—टें टें=व्यर्थ की बकवाद।

मुहा०—टें बोलना या होना=चट-पट मर जाना।

टेंकी—स्त्री० [स०] १ सगीत मे शुद्ध जाति का एक प्रकार का राग। २. एक प्रकार का नृत्य।

टेंगड—स्त्री०=टेंगर।

टेंगन—स्त्री०=टेंगर।

टेंगनि—स्त्री०=टेंगर।

टेंगर—स्त्री० [स० तुड=एक प्रकार की मछली] एक प्रकार की मछली जिसकी रीढ मे केवल एक काँटा होता है।

टेंघुना†—पु०=घुटना।

टेंघुनी—स्त्री० १ =टेंघुना। २ =कोहनी।

टेंचन†—पु० [हि० टेक] चाँड। थूनी।

टेंट—स्त्री० [?] कमर मे पडनेवाली धोती की वह लपेट जिसमे रुपये, पैसे आदि भी रखे जाते है।

मुहा०—टेंट मे कुछ होना=पास मे कुछ रुपया-पैसा होना।

स्त्री० [स० तुड] १ कपास की ढोढ। २ करील का फल। ३ भीतरी घाव।

टेंटर†—पु०=ढेंढर।

टेंटा—पु० [देश०] बगुले की जाति का चितकबरे रग का एक बडा पक्षी।

टेंटार—पु०=टेंटा।

टेंटिहा†—पु० [?] क्षत्रियो की एक शाखा।

वि०=टेंटी।

टेंटी—स्त्री० [देश०] १ करील नामक पौधा और उसका फल। कचडा। उदा०—फेंट किसी टेंटिन पै मेवन कौ क्यो स्वाद बिसार्‌यौ।—भारतेन्दु।

वि० [अनु० टें टें] जिद्दी और झगडालू।

टेंटुवा—पु० [देश०] १ गरदन। २ अँगूठा।

टेंटू*—स्त्री० [स० टुटुक] सोनापाठा।

वि०=टेंटी।

टेंटें—स्त्री० [अनु०] १ तोते के बोलने का शब्द। २ बार बार होनेवाला कोई कर्कश या तीखा स्वर। ३ व्यर्थ की बकवाद या बात-चीत।

टेंठा—वि० [?] [स्त्री० टेंठी] चचल।

टेंड† —स्त्री०=टिंड।

टेंडर—पु० [अ०] किसी काम या सेवा का ठेका लेने से पहले उपस्थित किया जानेवाला वह पत्र जिसमे लिखा रहता है कि हम अमुक अमुक काम इतने दिनो के अन्दर और इतने रुपये लेकर पूरा कर देगे।

पु०=ढेंडर (आँख का रोग)।

टेंडसी†—स्त्री०=डेंडसी (टिंडा)।

टेउ*—स्त्री०=टेव।

टेउकन—स्त्री०=टेकन।

टेउकी†—स्त्री०=टेवकी (साधुओ की अधारी)।

टेक—स्त्री० [हि० टेकना] १ टेकने की क्रिया या भाव। २ वह बडी लकडी या ऐसी ही और कोई चीज जो किसी दूसरी बडी या भारी चीज को गिरने, लुढकने आदि से बचाने तथा रोकने के लिए अथवा किसी प्रकार के सहारे के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। चाँड। थूनी। जैसे—छत के नीचे या दीवार के पार्श्व मे लगाई जानेवाली टेक।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

३ कोई ऐसी चीज जो उठने-बैठने आदि के समय सहारा देती हों। जैसे—टेक लगाकर बैठना=तकिये, दीवार आदि के सहारे पीठ टेककर बैठना। ४ साधुओ की अधारी। टेवकी। ५ अवलब। आश्रय। सहारा। ६ टीला। टेकरी। जैसे—राम-टेक। ७ आग्रह, प्रतिज्ञा, हठ आदि की कोई ऐसी बात जिस पर आदमी दृढतापूर्वक अडा रहे और जल्दी इधर-उधर न हो।

मुहा०—टेक गहना=टेक पकडना। (देखे नीचे) **टेक निभाना**=अपनी की हुई प्रतिज्ञा या हठ पूरा करना। **टेक पकडना**=अपनी कही हुई बात पूरी करने या कराने के लिए जिद या हठ करना। **टेक रहना**=कही हुई बात या जिद पूरी होना। टेक का निर्वाह होना।

८ वह बात जो अभ्यास पड जाने के कारण कोई मनुष्य अवश्य या प्राय करता हो। आदत। टेव। बान।

क्रि० प्र०—पडना।

९ गीत के आरभ का वह पद जो प्राय शेष पदो से छोटा होता और हर पद के बाद दोहराया जाता है। १० स्थल का वह नुकीला, लबोतरा भाग जो जल मे कुछ दूर तक चला गया हो। (लश०)

टेकडी—स्त्री०=टेकरी (छोटी पहाडी)।

टेकन—स्त्री० [हि० टेकना] वह बडी लकडी या ऐसी ही और कोई चीज जो किसी दूसरी बडी या भारी चीज को गिरने, लुढकने आदि से बचाने तथा रोकने के लिए अथवा किसी प्रकार के सहारे के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। चाँड। थूनी।

टेकना—स० [हि० टिकना का स० रूप] १ किसी चीज को किसी दूसरी चीज के सहारे खडा करना, बैठाना या लेटाना। टिकाना। ठहराना। २ किसी चीज को गिरने, लुढकने आदि से बचाने के लिए उसके नीचे या बगल मे टेक लगाना। ३ थकावट, दुर्बलता, शिथिलता आदि के समय सीधे खडे रहने, चलने-फिरने या बैठ सकने के योग्य न रहने पर उठने-बैठने आदि मे सहारे के लिए शरीर के बोझ का कुछ अश किसी चीज पर डालना या स्थित करना। जैसे—उठते समय दीवार टेकना, चलते समय किसी का कधा टेकना। बैठते समय लकडी टेकना।

मुहा०—(किसी के आगे) घुटने टेकना=हार मानकर अधीनता सूचित करना। **माथा टेकना** =दडवत करना। नमस्कार या प्रणाम करना।

४ अपनी टेक या हठ पर दृढ रहना। ५ टेक ग्रहण करना। दृढ प्रतिज्ञा या हठ करना। जैसे—आज तो तुमने यह नई टेक टेकी है।

†पु० [देश०] एक प्रकार का जगली धान।

टेकनी—स्त्री०=टेकन।

टेकरा—पु० [हि० टेक] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] १ प्राकृतिक रूप से ऊँची उठी हुई भूमि या छोटी-सी पहाडी। टीला। (देखे)
†पु०=टिकरा।

टेकरी—स्त्री० [हि० टेकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटी-सी पहाडी। टीला।

टेकला*—स्त्री० [हि० टेक] १ मन मे ठानी हुई बात। टेक। सकल्प। २ धुन। रट।
पु० [?] [स्त्री० टेकली] एक उपकरण जिससे चीजे उठाई तथा गिराई जाती है।

टेकान—स्त्री० [हि० टेकना] १ टेकने या टेके जाने की अवस्था या भाव। २ वह चीज जो किसी दूसरी चीज के साथ उसे सहारा देने के लिए लगाई जाती है। टेक। चाँड। ३ वह ऊँचा चबूतरा जहाँ बोझ ढोनेवाले मजदूर बोझ रखकर थोडी देर के लिए सुस्ताते है। ४ वह स्थान जहाँ से जुआरियो को जूए के अड्डे का पता मिलता है।

टेकाना—स० [हि० टेकना का स०] १ किसी चीज को सहारा देने के लिए उसके साथ कोई दूसरी चीज खडी करना या लगाना। २ किसी भारी चीज का कुछ अश किसी आधार पर स्थित करना। ३ चुप-चाप या धीरे से कोई चीज किसी को थमाना या देना। (दलाल)

टेकानी†—स्त्री० [हि० टेकाना] १ वह चीज जो किसी को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे या बगल मे लगाई जाय। टेक। २ बैल-गाडी का जूआ। ३ वह कील जो पहिये को धुरे मे पहनाने पर इसलिए जडी जाती है कि वह बाहर निकलकर गिर न जाय।

टेकी—वि० [हि० टेक] १ अपनी टेक या प्रतिज्ञा या हठ पर अडा रहनेवाला। २ जिद्दी।

टेकुआ†—पु०=तकला।
†पु०=टेकानी।

टेकुरा—पु० [देश०] पान।

टेकुरी—स्त्री० [स० तर्कु, हि० टेकुआ] १ रस्सी बटने या सूत कातने की तकली। २ चरखे मे का तकला। ३ चमडा सीने का सूआ या सूजा। ४ सुनारो का एक औजार जिससे सोने आदि के तार खीचकर उनमे फदा लगाया जाता है। ५ सगतराशो का एक औजार जिससे मूर्तियो आदि का तल चिकना किया जाता है। ६ जुलाहो की बाँस की वह फिरकी जिसकी नोक मे रेशम के डोरे अटकाये या फँसाये जाते है।

टेघरना†—अ० दे० 'पिघलना'।

टेटका† —पु० [स० ताटक] कानो मे पहनने का एक लटकौआ आभूषण। लोलक।

टेढ़—स्त्री० [हि० टेढा] १ टेढापन। वक्रता। २ बात-चीत या व्यवहार मे दिखाई देनेवाला लडाकापन।
मुहा०—टेढ की लेना=जहाँ सीधी तरह की बात होनी चाहिए वहाँ भी ऐठ या लडाई-झगडे की बात करना।
†वि०=टेढा। उदा०—टेढ जानि सका सब काहू।—तुलसी।

टेढ़ बिडगा—*वि०=टिढ-बिडगा।

टेढ़ा—वि० [स० त्रेधा, मरा० तेडा, सि० टेडो, पु० हि० टेढ] [स्त्री० टेढी, भाव टेढाई] १ जो लबाई के बल मे किसी एक सीध मे न गया हो, बल्कि बीच मे कही इधर-उधर कुछ घूम या मुड गया हो। वक्र। 'सीधा' का विपर्याय। जैसे—टेढा बाँस, टेढी लकीर। २ जिसकी क्रिया, गति या मार्ग मे किसी प्रकार की कुटिलता या वक्रता आ गई हो। जैसे—टेढी आँख या चितवन। ३ जिसमे सरलता, सुगमता आदि का बहुत कुछ अभाव हो। जैसे—टेढा रास्ता। ४ जिसमे अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ, विकटताएँ आदि हो। जो सहज मे ठीक या सपन्न न हो सकता हो। जैसे— टेढा काम, टेढा मुकदमा, टेढी समस्या।
पद—टेढ़ी खीर=बहुत ही कठिन या विकट काम। जैसे—चद्रमा या मगल तक पहुँचना टेढी खीर है।
विशेष—यह पद उस कहानी के आधार पर बना है, जिसमे किसी अधे ब्राह्मण को खीर का परिचय कराने के लिए पहले उसके सफेद होने का और फिर सफेदी का बोध कराने के लिए बगले का उल्लेख किया गया था और अत मे बगले का बोध कराने के लिए उसके आगे हाथ टेढा करके रखा गया था, जिसे टटोलकर उसने कहा था कि खीर तो टेढी होती है। वह मेरे गले मे अटक जायगी।
५ व्यावहारिक दृष्टि से जिसमे उग्रता, उद्दडता, कठोरता आदि हो, फलत जिसमे कोमलता, नम्रता, शिष्टता आदि का बहुत-कुछ अभाव हो। जैसे—टेढा आदमी, टेढा स्वभाव।
मुहा०—(किसी को) टेढ़ी आँख से देखना=वैर-विरोध, शत्रुता आदि के भाव से देखना। **(किसी से) टेढ़े पड़ना या होना**=क्रुद्ध या रुष्ट होकर कठोरतापूर्ण बाते कहना या लडने-झगडने को तैयार होना। **टेढ़े-टेढ़े चलना**=इतरा या ऐठ कर चलना।
पद—टेढ़ी-सीधी बातें=ऐसी बाते जिनमे से कुछ तो ठीक या सीधे ढग से और कुछ क्रुद्ध या रुष्ट होकर कही गई हो। जैसे—उस दिन वे अकारण ही मुझे बहुत-सी टेढी-सीधी बाते सुना गये।

टेढ़ाई—स्त्री० [हि० टेढा] =टेढापन।

टेढ़ापन—पु० [हि० टेढा+पन (प्रत्य०)] टेढे होने की अवस्था या भाव।

टेढ़ा-मेढ़ा—वि० [हि० टेढा+अनु० मेढा अथवा हि० बेडा] [स्त्री० टेढी-मेढी] १ (वस्तु) जिसमे बहुत अधिक घुमाव-फिराव या मोड हो। २ (कार्य) जो कठिन या मुश्किल हो।

टेढ़े, टेढ़े मेढ़े—क्रि० वि० [हि० टेढा] सीधी तरह से नही, बल्कि टेढेपन या घुमाव-फिराव के साथ।
मुहा०—टेढ़े टेढे चलना=सरल या सीधा व्यवहार न करके छल-कपट या लडाई-झगडे की बात करना।

टेना—स० [देश०] १ धार तेज करने के निमित्त अस्त्र आदि को पत्थर पर रगडना। २ धार चोखी या तेज करना। ३ मूँछो के बालो मे बल डालकर उन्हे खडा या तना रखने के लिए उमेठना।

टेनिस—पु० [अ०] गेद का एक विदेशी खेल। टेनिस।

टेनी† —स्त्री० [देश०] १ कानी अर्थात् सबसे छोटी उँगली।
मुहा०—टेनी मारना=कोई चीज तौलने के समय तराजू की डडी मे कानी उँगली से इस प्रकार सहारा लगाना कि चीज उचित से कम तौली जाय।
२ एक प्रकार की छोटी चिडिया।

टेपारा—पु०=टिपारा।

टेबुल—पु० [अ०] १ मेज। २ सारिणी। (दे०)
टेम—स्त्री० [हि० टिमटिमाना] दीप-शिखा। दीये की लौ या ज्योति। पु०=टाइम (समय)।
टेमन—पु० [देश०] १ साँपो की एक जाति। २ उक्त जाति का साँप।
टेमा†—पु० [देश०] चारे की छोटी अँटिया।
टेर—स्त्री० [स० तार=सगीत मे ऊँचा स्वर] १ टेरने की क्रिया या भाव। २ किसी को बुलाने के लिए ऊँचे स्वर से की जानेवाली पुकार। ३ सगीत मे वह ऊँचा स्वर जिसका उच्चारण एक साथ निरन्तर कुछ समय के लिए किया जाय। ४ गुजर। निर्वाह।
टेरक—वि० [स० केकर, पृषो० सिद्ध] ऐंचाताना। भेगा।
टेरना—स० [हि० टर+ना (प्रत्य०)] १ किसी को अपने पास बुलाने के लिए कुछ ऊँचे स्वर से या चिल्लाकर पुकारना। २ किसी प्रकार के सकेत के रूप मे या यो ही ऊँचा स्वर निकालना। जैसे—मुरली या वशी टेरना।
स० [?] १ (काम, बात या समय) टालना। २ (किसी व्यक्ति को) टरकाना।
टेरवा—पु० [देश०] हुक्के की वह नली जिस पर चिलम रखी जाती है।
टेरा—पु० [?] १ अकोल का पेड। २ पेड का तना या धड। ३ पेड की डाल या शाखा।
†वि० दे० 'भेगा'।
टेराकोटा—पु० [अ०] मृण्मूर्ति। (दे०)
टेरी—स्त्री० [देश०] १ पतली शाखा। टहनी। २ कुती या बखेरी नाम का पौधा जिसकी कलियाँ चमडा सिझाने के काम आती है। ३ बक्कम की फली। ४ दरी की बुनाई मे काम आनेवाला एक प्रकार का सूजा।
टेरो—स्त्री० [देश०] एक तरह की सरसो। उलटी।
टेलिग्राफ—पु० [अ०]=दूरलेख।
टेलिग्राम—पु० [अ०]=दूरलेख।
टेलिपैथी—स्त्री० [अ०]=दूरबोध।
टेलि-प्रिंटर—पु० [अ०]=दूर मुद्रक।
टेलि-प्रिंटिंग—पु० [अ०]=दूरमुद्रण।
टेलिफोन—पु० [अ०]=दूरभाषक।
टेलिविजन—पु० [अ०]=दूरदर्शन।
टेलिस्कोप—पु० [अ०]=दूरवीक्षक।
टेली—स्त्री० [देश०] मझोले आकार का एक पेड जिसकी लकडी का रग लाल होता है।
टेव—स्त्री० [हिं० टेक] आदत। बान।
क्रि० प्र०—पडना।—लगना।
टेवकी—स्त्री० [हिं० टेवकन, टेकन] १ किसी चीज को गिरने से बचाने या सहारा देने के लिए उसके नीचे लगाई जानेवाली छोटी पतली लकडी। टेक। २ जुलाहो की वह लकडी जो ताने के सूतो को जमीन पर गिरने से बचाने के लिए उनके नीचे लगाई जाती है। ३ नाव मे सबसे ऊपर-वाला पाल जो प्राय सबसे छोटा होता है।
टेवना†—स०=टैंना (अस्त्र की धार रगड कर तेज करना)।
टेवा—पु० [स० टिप्पन] १ जन्मपत्री। जन्मकुडली। २ लग्न-पत्री जिसमे विवाह सम्बन्धी भिन्न-भिन्न कृत्यो का समय लिखा रहता है।
टेवैया†—वि० [हि० टेवना] १ टेने (टेवने) अर्थात् अस्त्रो आदि की धारे रगडकर तेज करनेवाला। २ मूँछ के बाल टेनें अर्थात् उमेठने-वाला।
टेसुआ†—पु०=टेसू।
टेसू—पु० [स० किशुक] १ पलाश का फूल। २ शारदीय नवरात्र का एक उत्सव जिसमे लडके गाते हुए घर-घर जाते और वहाँ से पैसे या अनाज पाते है। (इसी अवसर पर इस प्रकार का लडकियो का जो उत्सव होता है वह 'झाँझी' कहलाता है।) ३ इस उत्सव पर गाये जानेवाले गीत।
टेहला†—पु० [देश०] विवाह के समय होनेवाली अनेक छोटी रस्मो मे से कोई एक या हर एक।
टेहुना—पु०=घुटना।
टेहुनी†—स्त्री०=कोहनी।
टैंक—पु० [अ०] १ तालाब। २ स्थल पर चलनेवाला एक प्रकार का बडा युद्धयान जिस पर तोपे लगी होती है।
टैंटी—स्त्री०, वि०=टेंटी।
टैया—स्त्री० [देश०] चित्ती कौडी।
वि० छोटा या नाटा होने पर भी हृष्ट-पुष्ट।
टैक्स—पु० [अ०] १ =कर। २ =शुल्क।
टैक्सी—स्त्री० [अ०] किराये पर चलनेवाली छोटी मोटरगाडी (निजी मोटरगाडी से भिन्न)।
टैन—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास जिससे चमडा सिझाया जाता है।
टैना†—पु० [देश०] वह पुतला या हाँडी जिसे खेत मे इसलिए खडा किया या टाँगा जाता है कि पशु-पक्षी उससे भयभीत हो और फलत फसल की क्षति न करने पावे।
टैनी†—स्त्री० [देश०] भेडो का झुड।
†स्त्री०=टहनी।
टैरा†—पु० [स्त्री० टैरी]=टेरा।
टोंक†—स्त्री०=टोक।
पु०=टोका (सिरा)।
टोका†—पु०=टोका।
टोंगा†—पु०=टाँगा।
टोंगू—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके रेशो से रस्सियाँ बनती है।
टोंच—स्त्री० [हि० टोचना] १ टोचने की क्रिया या भाव। २ सिलाई का टाँका। सीयन।
टोंचना—स० [स० टकन] १ सिलाई करना। सीना। २ गडाना। चुभाना।
टोंट—स्त्री० [स० तुड] चोच।
टोंटरी†—स्त्री०=टोटी।
टोंटा—पु० [स० तुड] [स्त्री० अल्पा० टोटी] १ कोई ऐसी खोखली, गोलाकार लबी चीज जो नोक की तरह आगे निकली हो। जैसे—बाँस का टोटा, आतिशबाजी का टोटा। २ बन्दूक की गोली का ऊपरी आवरण। कारतूस। ३ कच्चे देहाती मकानो मे छाजन के नीचे लगाई जानेवाली लकडी की घोडिया।

टोंटी—स्त्री० [स० तुड] १. किसी पात्र या नल मे आगे की ओर लगा हुआ वह छोटा मुँह जिसमे से होकर कोई तरल पदार्थ गिरता या निकलता है। (टैंप) २ सूअर आदि पशुओ का थूथन।

टोंस—स्त्री०=टौंस (तमसा नदी)।

टोआ—स्त्री० [?] आम के वृक्ष के आरभिक अकुर जो कुछ समय बाद मजरी का रूप धारण करते है। डाभ।

पु० [हिं० टोना=छूकर देखना] जहाज या नाव का वह मल्लाह जो आगे की ओर बैठकर पानी की गहराई नापता या थाह लेता चलता हो।

टोइयाँ—पु० [देश०] एक तरह का छोटे आकार का तोता जिसकी चोच पीले रग की तथा गला और सिर बैंगनी रग का होता है।

टोई† —स्त्री० [देश०] उँगली का खड। पोर।

टोक—स्त्री० [स० स्तोक या हिं० टोकना] १ टोकने की क्रिया या भाव। २ वह प्रश्नात्मक छोटी बात जो किसी को कुछ करने या कहने से टोक या रोककर बीच मे कही या पूछी जाती है। साधारणत ऐसी बात कुछ बाधक या विघ्नकारक समझी जाती है।

मुहा०—**किसी की टोक में आना**=किसी के टोकने पर उसके अनिष्ट-कारक प्रभाव मे पडना। **टोक लगना**=किसी के बीच मे टोकने पर उसका कुछ अनिष्टकारक या विघ्नकारक प्रभाव पडना। जैसे—(क) तुम्हारी टोक लग गई, इसी से वहाँ जाने पर हमारा काम नही हुआ। (ख) बच्चे को किसी की टोक लगी है, इसी से वह बीमार हो गया।

पद—**टोक-टाक**=किसी को कोई काम करते देखकर उसके सबध मे किये जानेवाले छोटे-मोटे प्रश्न जो साधारणत लोक मे उस काम के लिए बाधक लक्षण या अपशकुन समझे जाते है।

३ बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर।

†पु०=टोका (सिरा)।

टोकना—स० [हिं० टोक+ना (प्रत्य०)] १ वक्ता के बोलते समय बीच मे ही श्रोता का उसे कोई बात कहने से रोकना अथवा किसी बात के सबध मे अपनी शका प्रकट करना।

विशेष—साधारणत लोक मे इस प्रकार के प्रश्न अपशकुन के रूप मे माने जाते है।

२ किसी को कोई काम करते हुए देखकर अथवा कोई काम करने के लिए प्रस्तुत देखकर उसे वह काम न करने के लिए अथवा उसे ठीक तरह से करने के लिए कहना। ३ लडने आदि के लिए आह्वान करना।

पु० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकनी] १ टोकरा। २ एक प्रकार का हडा।

टोकनी—स्त्री० [हिं० टोकना] १ पानी रखने का चौडे मुँह का एक प्रकार का बडा बरतन। २ बडी देगची या बटलोई।

†स्त्री०=टोकरी।

टोकरा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकरी] बाँस की खमाचियो या तीलियो अथवा बेत, सरकडे आदि का बना हुआ खुले तथा चौडे मुँहवाला बडा आधान। खाँचा। झाबा।

टोकरिया†—स्त्री० [हिं० टोकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] टोकरी।

टोकरी†—स्त्री० [हिं० टोकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा टोकरा।

स्त्री०=टोकनी।

टोकवा†—पु० [देश०] उत्पाती या उपद्रवी लड़का।

टोकसी†—स्त्री० [देश०] नारियल की आधी खोपडी।

पु० [देश०] एक तरह का कीडा जो उर्द की फसल को हानि पहुँचाता है।

टोका†—पु० [हि० टूक] १ किसी चीज का किनारा या सिरा। जैसे—डोरे या धागे का टोका। २ कपडे आदि का कोना या पल्ला। ३ नोक। ४ स्थल का वह भाग जो कुछ दूर तक जल मे चला गया हो।

पु० [हि० टूक] १ चारा काटने का गँडासा नामक उपकरण। (पश्चिम) २ चारा काटने की कल या यत्र।

टोकारा—पु० [हि० टोक] १ वह बात जो किसी को टोकने अथवा टोक कर कुछ याद दिलाने या सचेत करने के लिए कही जाय। २ उक्त उद्देश्य से किया जानेवाला कोई सकेत। उदा०—उसने उँगली से उसके गाल पर टोकारा दिया।—नागार्जुन।

क्रि० प्र०—देना।

टोट—स्त्री० [हि० टूट] १ टोटा। कमी। २ घाटा। हानि।

टोटक—पु०=टोटका।

टोटक-हाया—पु० [हिं० टोटका+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० टोटक-हाई] वह व्यक्ति जो टोटका या टोना करता हो।

टोटका—पु० [स० तात्रिक से] तात्रिक प्रयोगो के अतर्गत, वह छोटा उपचार या औपचारिक कृत्य जो कष्ट, बाधा, रोग आदि दूर करने या इनसे बचने-बचाने अथवा इसी प्रकार के दूसरे उद्देश्य सिद्ध करने के लिए यह समझकर किया जाता है कि इसमे कुछ अलौकिक या दैवी शक्ति होती है अथवा यह कुछ विलक्षण चमत्कार या प्रभाव दिखाता है।

विशेष—टोटका बहुधा औपचारिक कृत्य के रूप मे ही होता है, और इसमे मत्रो आदि का प्रयोग नही होता। रोगी के सिर पर से उतारा उतारकर चौमुहानी या किसी विशिष्ट स्थान पर रखना, वर्षा कराने अथवा रोकने के लिए नगे होकर कोई कृत्य करना, नजर या भूत-प्रेत का प्रभाव या कोई रोग दूर करने के लिए कुछ चीजे जलाना, अपने बच्चे को जीवित या नीरोग रखने के लिए दूसरो के बच्चो के कपडे फाडकर कही गाडना आदि छोटे-मोटे कृत्य टोटको के वर्ग मे आते है।

मुहा०—**(किसी के यहाँ) टोटका करने आना**=बहुत ही थोडी देर के लिए या केवल नाम करने के लिए आना। (स्त्रियो का परिहास और व्यग्य) जैसे—तुम तो आते ही इस प्रकार उठकर चलने लगी कि मानों टोटका करने के लिए आई थी। (साधारणत जब और जहाँ कोई टोटका किया जाता है, तब टोटका करनेवाला व्यक्ति प्राय तुरत वहाँ से हट जाता है।)

†पु० दे० 'टोना'।

टोटके-हाया—पु० [स्त्री० टोटके-हाई]=टोटक-हाया।

टोटल—पु० [अ०] सख्याओ का जोड या योग। मीजान।

मुहा०—**टोटल मिलाना**=आय-व्यय आदि के ठीक होने की जाँच या मिलान करना।

टोटा—पु० [स० √त्रुट्, हिं० टूटना] १ लेन-देन, व्यवहार आदि मे होने वाली आर्थिक क्षति। घाटा। हानि। २. खटकनेवाला अभाव या कमी। जैसे—आज-कल बाजार मे गेहूँ का टोटा है। ३ किसी वस्तु का कोई छोटा अश या खड। टुकडा। जैसे—कपडे का टोटा। ४. एक प्रकार की छोटी गरम चद्दर जिसे स्त्रियाँ ओढ़ती है। (पश्चिम)

टोडा—पु० [स० तुड] देहाती कच्चे मकानो मे छाजन के नीचे बाहर की ओर लगाई जानेवाली काठ की घोडिया। टोटा।

टोडिक—पु० [हि० टोड] वह जिसे सदा पेट भरने की चिन्ता रहे। पेटू। उदा०—टोडिक ह्वै घनआनन्द डाँटत काटत क्यौ नहिं दीनता सो दिन। —घनानन्द।

टोडिस†—वि० [?] उत्पाती। उपद्रवी।

टोड़ी—स्त्री० [स० त्रोटकी] १ प्रात काल गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। २ सगीत मे चार मात्राओ का एक ताल।

पु० [अ०] नीच प्रकृति का मनुष्य। खुशामदी तथा कमीना व्यक्ति।

टोनहा†—वि० [हि० टोना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० टोनही] टोना करनेवाला।

टोनहाई—स्त्री० [हि० टोना+हाई (प्रत्य०)] टोना-टोटका करने की क्रिया या भाव।

स्त्री० हि० 'टोनहाया' का स्त्री०।

टोनहाया—वि० [स्त्री० टोनाहाई] =टोनहा।

टोना—पु० [हि० टोटका या तत्र] १ वह टोटका या छोटा-मोटा तान्त्रिक उपचार जो प्राय किसी को अनुरक्त या वशीभूत करने, मूढ बनाकर अपना काम निकालने या सहज मे अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कुछ मत्र पढकर किया जाता है।

क्रि० प्र०—चलाना।—डालना।—पढना।—मारना।

२ विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत जिसके हर चरण या पद मे 'टोना' शब्द आता है, और जिसका मुख्य उद्देश्य वर-वधू को परस्पर अनुरक्त करना और उनके अनुराग को दूसरो की नजर या बुरी दृष्टि से बचाना होता है।

स० [हि० टोहना] किसी चीज के रूप आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस पर उँगलियाँ या हथेली रखना। जानने या समझने के लिए छूना या छूकर देखना। टटोलना।

†पु० [?] एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

टोप—पु० [हि० तोपना=ढाँकना] १ बडी टोपी। २ युद्ध मे सिर पर पहना जानेवाला खोद। शिरस्त्राण। ३ अगुश्ताना। ४ खोली। गिलाफ।

†स्त्री० [अनु०] पानी की बूँद।

टोपन—पु० [देश०] टोकरा।

टोपरा†—पु० =टोकरा।

टोपरी†—स्त्री० =टोकरी।

टोपही—स्त्री० [हि० टोप] बरतन ढालने के साँचे का ऊपरी भाग जो कटोरे के आकार का होता है।

टोपा—पु० [हि० तोपना] १ बडी टोपी। २ टोकरा। दौरा। ३ काठ का एक पात्र जिसमे भरकर अनाज आदि नापे (तौले) जाते थे और जिसमे लगभग सवा सेर अन्न आता था। (पजाब)

†पु० =तोपा (सिलाई का)।

पु० [हि० तोपना] टोकरा।

टोपी—स्त्री० [स० √स्तुभ्√स्तूप्; दे० प्रा० टिपिआ, टोप्पर] १ सिर पर रखने का एक विशिष्ट प्रकार का हलका पहनावा जो लबोतरा, तिकोना, चौकोर या ऐसे ही किसी और रूप का होता है। जैसे—गाधी या तुर्की टोपी।

क्रि० प्र०—पहनना।—रखना।—लगाना।

मुहा०—(किसी की) टोपी उछालना=किसी को सबके सामने अपमानित या बेइज्जत करना। **(किसी से) टोपी बदलना**=भाई भाई का-सा सबध जोडना।

२ राजमुकुट। ताज।

मुहा०—टोपी बदलना=राज्य के एक राजा या शासक के न रह जाने पर उसके स्थान पर दूसरे राजा या शासक का आना या बैठना।

३ टोपी के आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु जिससे प्राय कोई चीज ढकी जाती है। जैसे—चिलम ढकने की टोपी। ४ बोतल आदि का मुँह बद करने का धातु का ढक्कन। ५ टोपी के आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे बदूक पर चढा कर घोडा गिराने से आग पैदा होती है। ६ दरजी का वह चौडा छल्ला जिसे वह हाथ से सिलाई आदि करते समय उँगली मे पहन लेता है। अगुश्ताना। ७ वह थैली जो कुछ जानवरो के मुँह पर इसलिए चढाई या बाँधी जाती है कि वे किसी को काट न सके अथवा कुछ खाने न पावे। ८ लिंग का अग्रभाग।

टोपीदार—वि० [हि० टोपी+फा० दार] टोपी से युक्त। जिस पर टोपी लगी हो।

टोपीवाला—पु० [हि० टोपी] वह जो कुछ विशिष्ट प्रकार की या बडी टोपी पहनता हो।

विशेष—मध्ययुग मे अहमदशाह और नादिरशाह के सिपाही एक विशिष्ट प्रकार की लाल टोपी पहनने के कारण और परवर्त्ती काल मे युरोप के निवासी हैट पहनने के कारण 'टोपीवाले' कहे जाते थे।

टोभ†—पु० [हि० डोभ] टाँका।

टोया†—पु० [स० तोय] गड्ढा। (पश्चिम)

टोर—स्त्री० [देश०] १ वह पानी जो घोले हुए क्षार मे से नमक निकाल लेने पर बच रहता है और जिसे उबाल तथा छानकर शोरा निकाला जाता है। २ कटार।

टोरना—स० [?] १ इधर-उधर करना, फिराना या हटाना। जैसे—लज्जित होकर आँखे टोरना। २ दे० 'तोडना'।

पु० [देश०] सूत तौलने का जुलाहो का तराजू।

टोरा†—पु० [स० तोक] [स्त्री० टोरी] लडका।

†पु० =टोडा।

टोरी†—स्त्री० =टोडी (रागिनी)।

टोर्रा†—पु० =टुर्रा।

टोल—पु० [स० चटशाला?] १ पाठशाला। २ मध्ययुग मे वह बडी पाठशाला जिसमे कोई बहुत बडा पडित अपने शिष्यो को दर्शन, न्याय, व्याकरण आदि की ऊँची शिक्षा दिया करता था। (बगाल)

पु० [?] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

†स्त्री० दे० 'टोली'।

पु० दे० 'टोला' (महल्ला)।

पु० [अ०] किसी विशिष्ट मार्ग पर चलने के समय यात्रियो पर लगनेवाला मार्ग-कर।

टोला—पु० [हि० टोली का पु०] १ किसी बस्ती का कोई विशिष्ट विभाग

जो किसी स्वतत्र नाम से प्रसिद्ध हो। मुहल्ला। जैसे—महाजनी टोला।
२ ईट-पत्थर आदि का बडा तथा भारी टुकडा।
पु०[देश०]१ गुल्ली पर किया जानेवाला डडे का आघात या चोट।
२ उँगली मोडकर उसकी हड्डी से किया जानेवाला आघात।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।
२ बेत आदि की चोट का निशान।
क्रि० प्र०—पडना।
३ बडी कौडी। कौडा।

टोली—स्त्री०[स० टोलिका=घेरा बाडा]१ किसी बस्ती का कोई ऐसा छोटा विभाग जो किसी विशिष्ट नाम से प्रसिद्ध हो। छोटा टोला या मुहल्ला। जैसे—ग्वाल टोली। २ जीव-जन्तु या प्राणियो का झुड। जैसे—बदरो की टोली। ३ मनुष्यो का दल या मडली। जैसे—यात्रियो की टोली। ४ पत्थर की चौकोर पटिया। बडी सिल। ५ पूर्वी हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का बाँस जिसे 'नाल' भी कहते है।

टोली धनवा—पु०[हि० टोली+धान] एक तरह की घास जिसके पत्ते धान के पत्तो जैसे होते है।

टोवना†—स०=टोना। उदा०—जोबन रतन कहाँ भुँइ टोवा।—जायसी।

टोवा—पु०=टोआ।

टोह—स्त्री०[हि० टोहना]१ टोहने अर्थात् टटोलने या टोने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।—लगना।
२ किसी अज्ञात बात का लगनेवाला कुछ पता। अधेरे मे छिपी या दबी हुई बात की होनेवाली थोडी बहुत जानकारी। थाह।

टोहना—स०[हि० टोह]१ किसी अज्ञात बात की टोह लेना या पता लगाना। थाह लेना। २ जानने के लिए कुछ छूकर देखना।

टोहा-टाई—स्त्री०[हि० टोह] बार-बार टोहने या टोह लेने की क्रिया या भाव।

टोहिया—वि०=टोही।

टोहियाना†—स०=टोहना।

टोही—वि०[हि० टोह] खोज या टोह लेने या पता लगानेवाला।
पु० जासूस।

टौंस—स्त्री०[स० तमसा]१ एक छोटी नदी जो अयोध्या के पश्चिम से निकलकर बेतिया के पास गगा मे मिलती है। २ विन्ध्य-प्रदेश की एक नदी जो रीवाँ की ओर से आकर प्रयाग के पूर्व सिरसा के पास गगा मे मिलती है। ३ टेहरी और देहरादून के पास की एक नदी जो जमुना मे मिलती है।

टौनहाल—पु०=टाउनहाल।

टौर†—स्त्री०[हि० टौरना]१ टौरने की क्रिया या भाव। २ किसी बात की होनेवाली जानकारी या लगनेवाला पता। उदा०—बैठी रही अभिमान सौ टाह टौर नहि पायौ।—सूर। ३ घात। दाव। ४ उपयुक्त अवसर।

टौरना—स० [हि० टेरना ?] १ जाँच करना। परखना। २ पता लगाना।

टौरिया—स्त्री०=टेकरी।

ट्योझा—पु०[देश०] व्यर्थ का झगडा या बखेडा।

ट्रक—पु०[अ०] टीन की चद्दर का बडा सदूक।

ट्रक—स्त्री०[अ०]माल ढोनेवाली एक प्रकार की बडी मोटर-गाडी।

ट्रस्ट—पु०[अ०]न्यास। (दे०)

ट्रस्टी—पु०[अ०] न्यासी। (दे०)

ट्राम—स्त्री०[अ०]कुछ नगरो की सडको पर बिछी हुई पटरियो पर बिजली की सहायता से चलनेवाली एक प्रकार की छोटी गाडी।

ट्रेडमार्क—पु०[अ०]किसी वस्तु पर अकित वह विशेष चिह्न जो यह सूचित करता है कि इस वस्तु का निर्माता अमुक व्यक्ति या सस्था है।

ट्रेडिल मशीन—स्त्री०[अ०] छापे की छोटी मशीन।

ट्रेन—स्त्री०[अ०] रेलगाडी।

ट्रेनिंग—स्त्री०[अ०] दे०'प्रशिक्षण'।

ट्रौली—स्त्री०[अ०]१ रेल की पटरियो पर चलनेवाली ठेला-गाडी। २ ठेला गाडी।

ठ

ठ—देवनागरी वर्णमाला का बारहवाँ तथा टवर्ग का दूसरा व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा अघोष है।
पु०[स० पृषो० सिद्धि]१ शिव। २ महाध्वनि। ३ चद्रमडल। ४ मडल। ५ शून्य। ६ वह वस्तु जिसका ग्रहण इद्रियो से हो सकता हो।

ठठ—वि०[स० स्थाणु]१ (पेड) जिसकी डाले तथा पत्तियाँ सूख और झड गई हो। २ (गाय या भैस) जिसका दूध सूख गया हो। ३ (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी धन न रह गया हो। निर्धन।

ठठस†—स्त्री०[स० डिडिश] टिंडा। ढेढसी।

ठंठार—वि०[हि० ठठ]१ (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी न हो या न रह गया हो। २ (पात्र) खाली। रीता।

ठठी—स्त्री०[हि० ठठ] ज्वार, मूँग आदि की वह बाल जिसमे पीट लेने के बाद भी कुछ दाने लगे रह गये हो।
वि०=ठठ।

ठंड†—स्त्री०=ठढ (सरदी)।

ठंडई—स्त्री०=ठढाई।

ठंडक—स्त्री०=ठढक।

ठंडा—वि०=ठढा।

ठंडाई—स्त्री०=ठढाई।

ठढ—स्त्री० [हिं० ठढा] १ तापमान अधिक गिर जाने के कारण ऋतु या वातावरण की बढ़ी हुई वह शीतलता जो कुछ अप्रिय और कष्टकर जान पड़े। शीत। सर्दी।
क्रि० प्र०—पडना।—लगना।
२ उक्त शीतलता की होनेवाली अनुभूति या प्रभाव। जैसे—बच्चे को ठढ लग गई है।

ठढई—स्त्री०=ठढाई।

ठढक—स्त्री० [हिं० ठढा] १ वातावरण की ऐसी स्थिति जिसमे हलकी ठढ हो। । ऐसी हलकी ठढ जो प्रिय और सुखद हो। २ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार की अभीष्ट सिद्ध होने पर मन मे होनेवाली तृप्ति या सन्तोष। जैसे—हमाशरे सौ रुपये खरच करा दिये, अब तो तुम्हे ठढक पडी न। ३ उत्पात, उपद्रव, रोग आदि का शमन होने पर मन मे होनेवाली तृप्ति या सन्तोष।
क्रि० प्र०—पडना।

ठढा†—वि० [स० स्तब्ध, प्रा० थड्ड, मरा० थड, गु० थडु] [स्त्री० ठढी] १ जिसमे किसी प्रकार की और कुछ भी उष्णता या ताप न हो जिसका तापमान प्रसम स्तर से निश्चित रूप से नीचा हो। 'गरम' का विपर्याय। जसे—ठढा पानी। २ जिसमे कष्टदायक गरमी या प्रखर ताप का अभाव हो और इसी लिए जो प्रिय, वाछित या सुखद हो। जैसे—ठढा दिन।
पद०—ठढे-ठढे=ऐसे समय में जब गरमी या धूप न हो अथवा होने पर भी अधिक कष्टदायक न हो। जैसे—पैदल यात्री प्राय कुछ रात रहते ही उठकर चल पडते हैं और ठढे-ठढे अगले पडाव पर पहुँच जाते है।
३ (पदार्थ) जो पूरी तरह से जल चुकने पर अथवा बीच मे ही बिलकुल बुझ चुका हो। जो गरम या जलता हुआ न रह गया हो। जैसे—आग या चूल्हा ठढा करना या होना।
पद—ठढी आग। (देखे)
विशेष—कुछ विशिष्ट प्रसगो मे 'ठढा करना' का प्रयोग मगल-भाषित के रूप मे कई विशिष्ट प्रकार के अर्थ और भाव सूचित करने के लिए होता है। इसी आधार पर 'ठढा करना' के योग से कई मुहावरे बन गये हैं। (देखे नीचे)
मुहा०—कडाही ठढी करना=किसी शुभ कार्य के अवसर पर सब पकवान, मिठाइयाँ आदि बन चुकने पर सब के अत मे बाँटने के लिए थोडा-सा हलुआ बनाना और तब चूल्हा या भट्ठी बुझाना। **चूडियाँ ठंढी करना**==नई चूडियाँ पहनने के समय पुरानी चूडियाँ उतारना या तोडना। **चूल्हा ठढा करना**=चूल्हा बुझाना। **ताजिया ठढा करना**=मुहर्रम के दस दिन बीत जाने पर विधिपूर्वक ताजिया गाडना। **दीया ठढा करना**=दीया बुझाना। **माता या शीतला ठंढी करना**=रोगी के शरीर पर चेचक या शीतला का प्रकोप शात हो जाने पर शीतला देवी की पूजा करना। **मूर्त्ति (या उसके पूजन की सामग्री) ठंढी करना**=पूजन की समाप्ति पर विधि और सम्मानपूर्वक मूर्ति या पूजा की सामग्री जलाशय, नदी आदि मे डालना या बहाना।
४ (शरीर) जिसमे आवश्यक या उचित ताप न रह गया हो। जिसमे उतनी गरमी न रह गई हो, जितनी साधारणत. रहनी चाहिए या होती है। जैसे—मरने से कुछ पहले हाथ-पैर ठढे हो जाते हैं। ५ (शरीर का तापमान) जो मानव-शरीर के प्रसम तापमान से कम या घटकर हो, और फलत कष्टदायक तथा चिताजनक या रोग का सूचक हो। जैसे—सन्ध्या-सबेरे इस लडके के हाथ-पैर बिलकुल ठढे हो जाते हैं। ६ जिसकी उष्णता या ताप बहुत घट गया हो अथवा कम होता हुआ बिलकुल निकल गया हो। जो गरम न रह गया हो। जैसे—ठढा भात, ठढी रोटी। ७ (पदार्थ) जो गरमी या ताप की अनुभूति या विकलता कम करने मे सहायक हो। जैसे—ठढे कपडे, ठढे पेय पदार्थ। ८ (औषध या खाद्य पदार्थ) जो शरीर के अन्दर पहुँचकर कुछ ठढक लाता या शीतलता उत्पन्न करता हो। जैसे—ठढी दवा, ठढे फल। ९ (व्यक्ति) जिसमे आवेश, उत्तेजना, क्रोध, चचलता, दुर्भाव आदि उग्र या तीव्र मनोविकारो का पूरा या बहुत-कुछ अभाव हो। गभीर, धीर और शात। जैसे—ठढे मिजाज का आदमी, ठढे होकर किसी बात पर विचार करना।
मुहा०—(किसी को) ठढा करना=किसी का आवेश, क्रोध, चचलता आदि दूर करके उसे प्रकृतिस्थ और शात करना।
१० (व्यक्ति) जो सब तरह से निश्चिन्त, सन्तुष्ट और सुखी हो। जिसे किसी बात का कष्ट या दुख न हो।
पद—ठढी रहो=सधवा स्त्रियो के लिए आशीर्वाद का पद जिसका आशय होता है—धन और सन्तान का सुख भोगती हुई सौभाग्यवती बनी रहो। (स्त्रियाँ)
११ (व्यक्ति) जो अपना उद्देश्य सिद्ध हो जाने या कामना पूरी हो जाने के कारण तृप्त या सन्तुष्ट हो गया हो। जैसे—जब तक हमारे सौ दो सौ रुपये खरच न करा लोगे, तब तक तुम ठढे नहीं होगे। १२ (व्यक्ति) जिसमे उद्यम, क्रिया-शीलता, तत्परता, प्रबलता आदि का बहुत-कुछ या बिलकुल अभाव अथवा ह्रास हो गया हो। जैसे—(क) खरी-खरी बाते सुनते ही वे ठढे पड (या हो) जाते है। (ख) इस मुकदमे ने उन्हे ठढा कर दिया है।
पद—ठढा साँस। (देखे स्वतन्त्र शब्द)
१३ (व्यक्ति) जिसमे काम की उमग या सभोग-शक्ति बिलकुल न हो या बहुत ही कम हो। जैसे—लडका तो देखने मे बिलकुल ठढा मालूम पडता है, इसका विवाह व्यर्थ किया जा रहा है। १४ (आवेग या उत्साह) जो केवल ऊपरी, दिखौआ या बनावटी हो।
पद—ठढी गरमी। (देखे स्वतन्त्र शब्द)
१५ (कार्य या क्रिया) जिसमे ऊपर से देखने पर वे दुष्परिणाम, दोष या विकार न दिखाई देते हो जो साधारण अवस्थाओ मे दिखाई देते, रहते या होते है।
पद—ठढा युद्ध, ठढी आग, ठढी मार, ठढी मिट्टी। (देखे अलग-अलग स्वतन्त्र शब्द)
मुहा०—ठढे कलेजे, ठढे ठढे या ठढे पेटो=बिना किसी प्रकार का प्रतिवाद या विरोध किये। चुपचाप या धीर और शात भाव से। जैसे—अब आप ठढे कलेजे (ठढे ठढे या ठढे पेटो) हमारा हिसाब चुकता करके यह झगडा खतम कीजिए।
१६ जो या तो मर गया हो, या मरे हुए के समान जड, निश्चेष्ट या निष्क्रिय हो गया हो। जैसे—पहली लाठी लगते ही वह गिर कर ठढा हो गया। १७ (कार्य या स्थान) जिसमे नित्य का-सा व्यवहार या

व्यापार न हो रहा हो, बल्कि जो बहुत-कुछ मदा या हलका पड गया हो। जैसे—युद्ध की सम्भावना न रह जाने (अथवा बाहर से माल आने की आशा होने) पर किसी चीज का बाजार ठढा पडना या होना। १८ जिसमे किसी तरह की खराबी या बुराई न हो।

मुहा०—(किसी काम या बात से) ठढा गरम न देखना=यह न देखना या समझना कि यह काम अच्छा, उचित अथवा लाभदायक है या नही। ऊँच-नीच या बुरा-भला न देखना या न समझना।

१९ (पदार्थ) जिसमे अग्नि, विद्युत् आदि का सयोग न हो अथवा इनका काम किसी और तरह से चलाया जाता हो। जैसे—ठढा तार, ठढा मुलम्मा।

ठढाई—स्त्री०[हि० ठढा] १ एक मे मिले हुए कासनी, सौफ, गुलाब की पत्तियो और ककडी, खरबूजे आदि के बीज। २ उक्त पत्तियो तथा बीजो का वह मिश्रण जो प्राय गरमी के दिनो मे घोट और घोलकर शरबत के रूप मे बनाया तथा पीया जाता है। ३ दे० 'ठढक'।

ठढा मुलम्मा—पु०[हि० ठढा+अ० मुलम्मा।] कुछ विशिष्ट धातुओ पर सोने या चाँदी का पानी चढाने की वह रीति जिसमे उक्त धातुओ को गरम नही करना पडता। इस प्रकार किया हुआ मुलम्मा।

ठढा युद्ध—पु०[हि०+स०] राजनीतिक क्षेत्रो मे एक दूसरे के प्रति चली जानेवाली ऐसी चाले या दाँव-पेच जिसमे शस्त्रास्त्रो का प्रयोग न होने पर भी परिणाम या फल वैसा ही त्रासकारक और भीषण होता है जैसा शस्त्रास्त्रो से होनेवाले प्रत्यक्ष युद्ध का होता है। (कोल्ड वार)

ठढा साँस—पु०[हि०] बहुत खीचकर लिया जानेवाला वह साँस जो बहुत अधिक दु ख, निराशा, विफलता आदि के समय प्राकृतिक रूप से निकलता है। गहरा साँस। जैसे—चुनाव मे अपनी हार का समाचार सुनने पर वे केवल ठढा साँस लेकर रह गये।

ठढी—वि० हि० ठढा का स्त्री० रूप।

स्त्री० १ चेचक या शीतला नामक रोग। (प्राय बहुवचन रूप मे प्रयुक्त) जसे—बच्चे को ठढियाँ निकली है।

क्रि० प्र०—निकलना।

मुहा०—ठढी ढलना=शीतल नामक रोग के वेग का उतार या कमी होना।

२ दे० 'ठढ'। ३ दे० 'ठढक'।

ठढी आग—स्त्री० [हि०] १ बरफ। हिम। २ तुषार। पाला। ३ ऐसी धूर्ततापूर्ण चाल जिससे किसी को अन्दर ही अन्दर बहुत अधिक कष्ट या सताप हो, या उसकी कोई बहुत बडी हानि हो। जैसे—उस दुष्ट (या नीच) को तो ठढी आग से जलाना (या मारना) चाहिए।

ठढी गरमी—स्त्री० [हि०] ऐसा उत्साह, प्रेम या सद्भाव जो वास्तविक या हार्दिक न हो, केवल ऊपर से दिखाने या नाम करने के लिए हो। जैसे—उनकी वह ठढी गरमी देखकर मुझे तो अन्दर ही अन्दर हँसी आ रही थी।

ठढी मार—स्त्री०[हि०] ऐसा प्रहार या मार जिसमे ऊपर से देखने पर चोट के निशान तो न दिखाई दे, पर भीतरी अगो पर अधिक या गहरी चोट आवे। जैसे—जेलो और थानो मे लोगो पर अक्सर ठढी मार पडती है।

ठढी मिट्टी—स्त्री०[हि०] ऐसा शारीरिक सघटन जिसमे जवानी के लक्षण अधिक दिनो तक बने रहे और बुढापे की झलक अपेक्षया देर मे आवे।

ठई—स्त्री०[हि० ठाँवँ] १ अवस्था। दशा। २ स्थिति।

ठउर†—पु०=ठौर।

ठक—स्त्री०[अनु०] आघात करने या ठोकने से होनेवाला ठक शब्द। वि० सन्नाटे मे आया हुआ। भौचक्का। स्तब्ध।

पु० चडूबाजो की सलाई या सूजा जिसमे अफीम का किवाम लगाकर सेकते है।

ठक-ठक—स्त्री०[अनु०] १ बार-बार आघात करने से होनेवाला शब्द। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कहा-सुनी या तू-तू मै-मैं।

ठकठकाना—स० [अनु० ठक-ठक] १ ठक-ठक शब्द उत्पन्न करना। २ अच्छी तरह या खूब पीटना।

अ० ठक-ठक शब्द होना।

ठकठकिया—वि०[अनु० ठक-ठक] १ ठक-ठक शब्द उत्पन्न करनेवाला। २ जो स्वभावत दूसरो से लडता-झगडता रहता हो।

ठकठेन†—स्त्री०[अनु० ठक+हि० ठानना] अड। जिद। हठ।

ठकठौआ—पु० [अनु०] १ एक प्रकार का करताल। २ वह जो उक्त करताल बजाकर भीख माँगता हो। ३ एक प्रकार की छोटी नाव।

ठकना—अ०[अनु०] सहारा लगाकर बैठना। टिकना। उदा०—ठकि गो पीय पलँगिया आलस पाई।—रहीम।

स०=टेकना।

ठकमुर्री—स्त्री० [हि० ठग+मूरि] १ वह स्थिति जिसमे आदमी बहुत अधिक चकित या भौचक्का होकर स्तब्ध रह जाय। जैसे—उसे देखकर हमे तो ठकमुर्री लग गई।

क्रि० प्र०—लगना।

२ दे० 'ठगमूरि'।

ठकार—पु०[स० ठ+कार] 'ठ' अक्षर।

ठकुआ—पु०=ठोकवा (पकवान)।

ठकुरई†—स्त्री०=ठकुराई।

ठकुरसुहाती—स्त्री० [हि० ठाकुर=स्वामी+सुहाना] स्वामी अथवा किसी बडे व्यक्ति को प्रसन्न करने या रखने के लिए कही जानेवाली खुशामद भरी बात।

ठकुराइत—स्त्री०=ठकुरायत।

ठकुराइन—स्त्री०=ठकुरानी।

ठकुराइस†—स्त्री०=ठकुरायत।

ठकुराई—स्त्री०[हि० ठाकुर] १ ठाकुर होने की अवस्था या भाव। २ ठाकुरो का-सा आधिपत्य, प्रभुत्व या स्वामित्व। ३ वह प्रदेश या भू-भाग जो किसी ठाकुर के अधिकार मे या अधीन हो। ४ ठाकुरो की-सी प्रतिष्ठा या महत्त्व। उदा०—हरि के जन की अति ठकुराई।—सूर। ५ बडप्पन। महत्त्व।

†पु० ठाकुर। राजपूत क्षत्रिय।

ठकुराना—पु०[हि० ठाकुर] गाँव या बस्ती का विभाग जिसमे अधिकतर ठाकुर या क्षत्रिय रहते हो।

ठकुरानी—स्त्री०[हि० ठाकुर] १ ठाकुर या राजपूत जाति की स्त्री। २ ठाकुर अर्थात् राजा या सरदार की पत्नी। ३ मालकिन। स्वामिनी।

ठकुराय—पु०[हि० ठाकुर] ठाकुरो या राजपूत क्षत्रियो की एक जाति या वर्ग।

ठकुरायत—स्त्री०[हि० ठाकुर] १ ठाकुर (अधिपति, प्रभु, आदि) होने की अवस्था, पद या भाव। २ किसी ठाकुर (अधिपति आदि) का अधीनस्थ प्रदेश या भू-भाग।

ठकोरी—स्त्री० [हि० ठेकना+औरी (प्रत्य०)] वह लकडी या छडी जिसके सहारे अथवा जिसे टेकता हुआ कोई चलता हो।

ठक्क—पु०[स०] व्यापारी।

ठक्कर—स्त्री०=टक्कर।

ठक्कुर—पु०[स०] ठाकुर। देवता। पूज्य प्रतिमा।

ठग—पु०[स० स्थग] [स्त्री० ठगनी, ठगिन, भाव० ठगी] १ वह जो धोखा देकर दूसरो का धन ले लेता हो। जैसे—आज-कल तरह-तरह के ठग चारो ओर घूमते रहते है। २ मध्य युग मे, वह व्यक्ति जो भोले-भाले लोगो पर अपना विश्वास जमा लेता था और धोखे से उन्हे कोई जहरीली या नशीली जडी-बूटी या मिठाई खिलाकर और उनका माल-असबाब लेकर चम्पत होता था।

विशेष—आरभ मे प्राय इक्के-दुक्के लोग ही ठग होते थे। वे जो जहरीली या नशीली, जडी-बूटियाँ या मिठाइयाँ लोगो को खिलाते थे, उन्हे जन-साधारण ठग-मूरि या ठग-मोदक कहते थे। बाद मे मुख्यत अगरेजी शासन के आरभिक काल मे ये लोग बडे-बडे दल बनाकर घूमने लगे थे, और प्राय यात्रियो, व्यापारियो आदि के दलो के साथ स्वय भी यात्री या व्यापारी बनकर दो-चार दिन यात्रा करते थे। जब कही जगल या सुनसान मैदान मे उन्हे अवसर मिलता था, तब वे उन यात्रियो या व्यापारियो के गले कुछ विशिष्ट प्रक्रिया से घोटकर उन्हे मार डालते और उनकी लाशे वही गाडकर और माल लूटकर आगे बढ जाते थे। इनमे हिंदू और मुसलमान दोनो होते थे और ये काली की उपासना करते थे।

३ आज-कल अधिक प्राप्ति या लाभ के लिए अपनी चीज या सेवा के बदले मे उचित से अधिक दाम या धन वसूल करनेवाला व्यक्ति। जैसे—यह दूकानदार बहुत बडा ठग है।

ठगई†—स्त्री० [हि० ठग+ई(प्रत्य०)] १ ठग का काम या भाव। ठगी। २ कपट। छल। धोखा।

ठगण—पु०[ष० त०] छदशास्त्र मे, पाँच मात्राओ का एक गण।

ठगना—स० [हि० ठग+ना (प्रत्य०)] १ किसी से उसकी कोई चीज छल या धोखे से लेना। २ क्रय-विक्रय मे अधिक लाभ करने के लिए किसी से लिए हुए धन के अनुपात मे उचित से कम या रद्दी चीज देना। जैसे—यह दुकानदार ग्राहको को बहुत ठगता है।

पद—ठगा-सा—ऐसा हक्का-बक्का कि मानो किसी ने उसे ठग लिया हो।

३ किसी को धोखे मे रखकर उसके उद्देश्य की सिद्धि या सकल्प की पूर्ति से वचित करना। जैसे—मुझे मेरे ही मित्रो ने ठगा। ४ किसी प्रकार का छल या धूर्त्तता का व्यवहार करना। ५ पूरी तरह से अनुरक्त या मोहित करके अपना वशवर्त्ती बनाना।

†अ० १ =ठगाना। २ =चकित होना।

ठगनी—स्त्री०[हि० ठग] १ ठग की पत्नी। २ दूसरो को ठगने या धोखा देनेवाली स्त्री। छली या धूर्त्त स्त्री। ३ कुटनी। ४ धार्मिक क्षेत्रो मे माया (सासारिक) का एक नाम।

ठग-पना—पु०[हि० ठग+पन] १ दूसरो को ठगने की क्रिया या भाव। ठगी। २ चालबाजी। धूर्त्तता।

ठग-मूरि—स्त्री०[हि० ठग+मूरि] वह नशीली जडी जिसे खिलाकर ठग पथिको को बेहोश करते और उनका धन लूट लेते थे।

ठग-मूरी—स्त्री०=ठग-मूरि।

ठग-मोदक—पु०[हि० ठग+स० मोदक] वह मोदक या लड्डू जिसमे कुछ नशीली चीजे होती थी, और जिसे ठग लोग भोले-भाले यात्रियो को खिलाकर बेहोश कर देते और तब उनका माल लूट लेते थे।

ठग-लाड़ू—पु०=ठग-मोदक।

ठगवाना—स०[हि० ठगना का प्रे०] किसी को ठगने मे किसी दूसरे को प्रवृत्त करना। ठगे जाने मे प्रवर्त्तक या सहायक होना।

ठग-विद्या—स्त्री०[हि० ठग+विद्या] लोगो को ठगने की कला या विद्या।

ठगहाई†—स्त्री०[हि० ठग] =ठगपना।

ठगहारी†—स्त्री० [हि० ठग+हारी (प्रत्य०)] ठगपना। ठगई।

ठगाई†—स्त्री०[हि० ठग+आई (प्रत्य०)] ठगी।

ठगाठगी—स्त्री०[हि० ठग] धोखेबाजी। वचकता।

ठगाना†—अ० [हि० ठगना] १ किसी ठग के द्वारा ठगा जाना। २ किसी धूर्त्त व्यापारी के फेर मे पडकर और उचित से अधिक मूल्य देकर धन गँवाना। ३ अपना धन अथवा और कोई चीज किसी अविश्वासी को दे या सौप बैठना। ४ अनुरक्त होना।

ठगाही†—स्त्री०=ठगी।

ठगिन—स्त्री०=ठगनी।

ठगिनी—स्त्री०=ठगनी।

ठगिया—पु०=ठग।

ठगी—स्त्री०[हि० ठग] १ किसी को ठगने की क्रिया या भाव। २ ठगो का काम या पेशा। ३ चालबाजी। धूर्त्तता। ४ मध्य युग की एक प्रथा जिसमे ठग लोग भोले-भाले यात्रियो को विष आदि के प्रभाव से मूर्छित करके अथवा उनकी हत्या करके उनका धन छीन लेते थे। ५ मोहित करनेवाला जादू या बात। उदा०—ठगी लगी तिहारिऐ सु आप लौ निहारिऐ।—आनन्दघन।

ठगोरी—स्त्री०[हि० ठग-मूरि] १ ठगने की क्रिया, भाव या विद्या। २ ठगे जाने का भाव या परिणाम। उदा०—चोरन गए स्याम अँग सोभा उत सिर परी ठगोरी।—सूर। ३ ऐसी चीज या बात जिससे किसी को ठगा या धोखा दिया जाय। उदा०—जोग ठगोरी ब्रज न बिकै है।—सूर। ४ टोना। जादू। ५ मिथ्या भ्रम। माया। ६ सुध-बुध भुलानेवाली अवस्था, बात या शक्ति। उदा०—जानहु लाई काहु ठगोरी।—जायसी।

मुहा०—(किसी पर) ठगोरी डालना या लगाना=(क) मोहित करके अथवा और किसी प्रकार विश्वास जमाकर अपने वश मे कर लेना। बहकाकर धोखे मे रखना।

ठट—पु० १ =ठट्ठ। २ =ठाठ।

ठटई—वि०, स्त्री०=ठठई।

ठटकारी†—स्त्री०=ठठकारी।

ठटकीला†—वि०=ठठकीला।

ठटना—अ०, स०=ठठना।

ठटनि†—स्त्री०=ठठनि।

ठटया—पु०[देश०] एक तरह का जगली जानवर।

ठटरी—स्त्री०=ठठरी।

ठटा—पु०=ठठ्ठ (झुड)। उदा०—जबहि आइ जुरिहै वह ठटा।—जायसी।
†पु०=ठठ्ठा

ठटिया†—स्त्री०=ठठिया(भाँग)।

ठट्ठ—पु०१ =ठठ्ठ। २ =ठाठ।

ठट्ठी—स्त्री०=ठठरी।

ठट्ठ—पु०=ठठ्ठ

ठट्ठा—पु०=ठठ्ठा।

ठठ—पु०१ =ठठ्ठ। २ =ठाठ।

ठठई—वि०[हिं० ठठ्ठा] हँसी-ठठ्ठा करनेवाला।
†स्त्री०=ठठ्ठा।

ठठकना†—अ०=ठिठकना।

ठठकान†—स्त्री०=ठिठकान।

ठठकारी†—स्त्री०[हिं० ठाठ+फा० कारी] वह टट्टी जिसकी आड मे शिकार किया जाता है।

ठठना—अ०[हिं० ठाठ] १ खडा या स्थित रहना या होना। २ किसी चीज का अदर घुसकर ठहर या रुक जाना। अडना। ३ निश्चित होना। ४ ठाठ से युक्त होना। सुसज्जित होना।
स० १ खडा या स्थित करना। ठहराना। २ निश्चित करना। ३ सुसज्जित करना। सजाना। ४ बनाना। रचना।
स०[हि० ठठ] 'ठठ' अर्थात् दल या समूह बनाना।

ठठनि—स्त्री० [हिं० ठाठ] १ ठठने की क्रिया या भाव। २ ठाठ। सजावट। ३ बनावट। रचना।

ठठरी†—स्त्री०[हिं० ठाठ] १ मनुष्य या पशु के शरीर मे की हड्डियो का पूरा ढाँचा। ककाल। २ किसी कृति या रचना का ढाँचा। ३ अरथी, जिस पर मुरदा ले जाया जाता है। ४ घास, भूसा आदि बाँधने का जाल।

ठठवा†—पुं०[हिं० टाट] एक तरह का मोटा कपडा। इकतारा। लमगजा।

ठठा†—पु०=ठठ्ठा।

ठठाना—स०[अनु० ठक-ठक] १ आघात करना। २ खूब अच्छी तरह किसी को मारना-पीटना।
अ०[हिं० ठठ्ठा या अनु० ठह-ठह= हँसने का शब्द] इस प्रकार खूब जी खोलकर हँसना कि मुँह से ठह-ठह या इसी प्रकार का कोई और शब्द स्वत निकलने लगे।
अ०[हिं० ठाठ] कोई चीज या बात खूब ठाठ से, अच्छी तरह या बहुत अधिक होना। उदा०—चारो ओर छाई हुई ठठाती हुई अव्यवस्था के बीच से उसे हटाने के लिए उसे खीचने लगा।—अज्ञेय।

ठठिया—स्त्री०[देश०] राजस्थान के कुछ भागो मे होनेवाली एक प्रकार की भाँग।

ठठियार—पु०[देश०] चौपायो को चरानेवाला चरवाहा। (नैपाल-तराई)

२—५७

ठठियाना—स०[हिं० ठठना] १ सुसज्जित करना।* २ किसी से सब-कुछ लेकर उसे कगाल या निर्धन करना।

ठठियारा†—वि०[हिं० ठठियाना] जिसके पास कुछ भी न रह गया हो।
उदा०—तस सिगार सब लीन्हेसि, मोहि कीन्हेसि ठठियारि।—जायसी।

ठठिरिन—स्त्री० [हिं० 'ठठेरा' का स्त्री० रूप] ठठेरिन।

ठठुकना†—अ०=ठिठकना।

ठठेर-मजारिका—दे० 'ठठेरा' के अतर्गत पद 'ठठेरे की बिल्ली'।

ठठेरा—पु० [अनु० ठन-ठन] [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] १ वह कारीगर जो ताँबे, पीतल आदि के बरतन बनाता हो। †२ उक्त प्रकार के बरतन बेचनेवाला दूकानदार।
पद—ठठेरे-ठठेरे बदलाई=ऐसे दो आदमियो के बीच का व्यवहार जो चालाकी, धूर्त्तता, बल आदि मे एक दूसरे से कम न हो। **ठठेरे की बिल्ली**=ऐसा व्यक्ति जो कोई अरुचिकर या विकट काम देखते-देखते या सुनते-सुनते उसका अभ्यस्त हो गया हो।
३ एक प्रकार की चिडिया जिसके बोलने पर ऐसा जान पडता है कि कोई ठठेरा ताँबा या पीतल पीटकर उसके बरतन बना रहा है।
पु०[हिं० ठाँठ] ज्वार, बाजरे आदि का डठल।

ठठेरिन—स्त्री०[हिं० 'ठठेरा' का स्त्री० रूप] ठठेरे की स्त्री। ठठेरी।

ठठेरी—स्त्री०[हिं० ठठेरा] १ ठठेरे की स्त्री। २ ठठेरे का काम या व्यवसाय।
वि० ठेरो का। ठठेरो से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—ठठेरी बाजार।

ठठोल—वि०[हिं० ठठोली] ठठोली करनेवाला। हँसोड।
पु०=ठठोली।

ठठोली—स्त्री०[हिं० ठठ्ठा] किसी को हँसी का पात्र या हास्यास्पद बनाने के लिए उसके सबध मे कही जानेवाली कोई कुतूहलजनक तथा व्यग्यपूर्ण परतु हँसी की बात।

ठठ्ठ—पु०[स० तट, हिं० टट्ठी या सं० स्थाता] १ एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओ का समूह। २ बहुत से लोगो का जमावडा या भीड-भाड। उदा०—पिये भट्ट के ठठ्ठ अस गुजरातिन के वृन्द।—भारतेन्दु।

ठठ्ठा—पु०[हिं० ठठाना] १ वह परिहास या हँसी-दिल्लगी जो कुतूहल-जनक या विलक्षण बातो के आधार पर केवल मनोविनोद के लिए होती है। (बैन्टर) २ परिहास। हँसी-मजाक।
क्रि० प्र०—उडाना।—करना।

ठडकना†—अ०=ठिठकना।

ठडा†—वि०=खडा।

ठडिया—पु०[हिं० ठाड] एक प्रकार का खडी निगालीवाला हुक्के का नैचा।

ठड्डा—पु०[हिं० ठडा] १ पीठ के बीच की खडी हड्डी। रीढ। २ गुड्डी या पतग मे खडे बल मे लगनेवाली कमाची। ३ ढड्ढा। ढाँचा।

ठढ़ा—अ०, स०=ठठना।
वि०[सं० स्थातृ] खडा।

ठढ़िय—स्त्री०[हिं० ठाढ=खडा] काठ की ऊँची तथा बडी ऊखल।

ठढ़ियाना†—स०[हिं० ठढा=खडा] खडा करना।

अ० खडा होना।

ठढ़ई†—स्त्री०=ठढिया।

ठढ्ढा—वि०=ठढा (खडा)।

पु०=ठड्डा। (देखे)

ठन—स्त्री०[अनु०] किसी धातु खड अथवा धातु के किसी पात्र पर आघात लगने से होनेवाला शब्द।

ठनक—स्त्री० [अनु० ठन-ठन] १ बार-बार ठन-ठन होने का शब्द। जैसे—(क) धातुखड पर आघात करने से होनेवाली ठनक। (ख) ढोल, तबले, मृदग आदि के बजने से होनेवाली ठनक। २ रह-रहकर उठने या होनेवाली पीडा। टीस।

ठनकना—अ०[अनु० ठन-ठन] १ ठन-ठन शब्द होना। जैसे—गिरने से पीतल या लोटा ठनकना। २ ढोल, तबले, मृदग आदि ऐसे बाजे बजना जिनमे बीच-बीच मे ठन-ठन शब्द होता हो। जैसे—तबला ठनकना।

मुहा०—तबला ठनकना=नाच-गाना होना।

३ रह-रहकर आघात पडने की-सी पीडा होना। जैसे—माथा ठनकना।

मुहा०—माथा ठनकना=सहसा किसी बात या व्यक्ति के सबध मे मन मे कुछ आशका या सदेह उत्पन्न होना। जैसे—उसका रग-ढग देखकर पहले ही मेरा माथा ठनका था।

ठनका—पु०[हिं० ठनक] १ दे० 'ठनक'। २ गरजता हुआ बादल। उदा०—भादो रैन भयावनी अधो गरजै औ घहराय। लवका लौके ठनका ठनकै, छति दरद उठ जाय।—गीत।

ठनकाना—स०[हिं० 'ठनकना' का स०] १ इस प्रकार आघात करना जिससे कोई चीज ठन-ठन शब्द करने लगे। जैसे—परखने के लिए रुपया ठनकाना। २ ढोल, तबला आदि ऐसे बाजे बजाना, जिनमे से ठन-ठन शब्द निकलता है।

ठनकार—स्त्री०[अनु०] 'ठन' की तरह का शब्द। ठनक।

ठनगन—स्त्री०[अनु० ठन-ठन] उपर्युक्त दाता से अपना अधिकार जतलाते हुए कुछ पाने या लेने के लिए बार-बार किया जानेवाला आग्रह या हठ। जैसे—मागलिक अवसरो पर नाई आदि नेगी अपने नेग के लिए यजमानो से ठनगन करते ही है।

ठन-ठन—स्त्री०[अनु०] १ ठन-ठन शब्द। ठनक। २ दे० 'ठन-गन'।

ठन-ठन गोपाल—वि० [अनु० ठन-ठन+गोपाल=कोई व्यक्ति] १ (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी धन न हो या न रह गया हो। २ (वस्तु) जिसमे कुछ भी सार न हो।

पु० रुपये-पैसे का अभाव।

ठनठनाना—स०[अनु०] ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना।

अ० ठन-ठन शब्द उत्पन्न होना।

ठनना—अ०[हिं० ठानना] १ (किसी कार्य या व्यापार का) तत्परतापूर्वक या जोर-शोर से आरम्भ होना या किया जाना। जैसे—युद्ध ठनना। २ (विचार या सकल्प का मन मे) निर्धारित या पक्का होना। जसे—अब तो तुम्हारे मन मे उनसे लडने की ठन गई है। ३ (व्यक्ति आदि का) तत्परतापूर्वक किसी कार्य या व्यापार मे लगने को उद्यत होना। ४ किसी विशिष्ट रूप मे दृढतापूर्वक सामने आकर उपस्थित होना। उदा०—दुलरी कल कोकिला कठ बनी, मृग खजन अजन भाँति ठनी।—केशव।

ठनठनाना†—अ०=ढनमनाना।

ठनाका—पु०[अनु० ठन] १ जोर से तथा सहसा होनेवाली ठन-ठन ध्वनि। २ कुछ समय तक निरतर होती रहनेवाली ठन-ठन ध्वनि।

ठनाठन—क्रि० वि०[अनु० ठन-ठन] १ ठन-ठन शब्द करते हुए। जैसे—घटा ठनाठन बज रहा था। २ टनाटन।

ठप—वि०[अनु०] १ (कार्य या व्यापार) जो पूरी तरह से बन्द हो गया हो। जैसे—घोर वर्षा के कारण आज दिन भर सब काम ठप रहे। २ (पदार्थ) जो खुला न हो या खोला न गया हो, अथवा जिसका उपयोग न हो रहा हो। जैसे—(क) पुस्तक ठप होना। (ख) बाजे या यत्र का ठप पडा रहना।

पु० १ खुली पुस्तक सहसा बन्द करने से होनेवाला शब्द। २ ठपने अर्थात् बन्द करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

ठपका—पु०[हिं० ठप] १ ठप शब्द। २ खुली पुस्तक बद करने की क्रिया। ३ आघात। धक्का।

ठपना—स०[हिं० ठप] १ कोई चीज इस प्रकार बन्द करना कि ठप शब्द हो। २ कोई कार्य या व्यापार बन्द करना। ३ कोई चीज बन्द करके कही रखना।

ठप्पा—पु०[ठप से अनु०] १ धातु, लकडी आदि का वह टुकडा जिस पर चित्र, चिह्न आदि खुदे रहते है और जिससे कपडो आदि पर रग या स्याही की सहायता से छाप लगाई जाती है। जैसे—कपडे छापने या सिक्के बनाने का ठप्पा। २ उक्त उपकरण से लगी या लगाई हुई छाप। ३ एक प्रकार का चौडा नकाशीदार गोटा जो ठप्पे से दबाकर बनाया जाता है। ४ वह साँचा जिससे उक्त प्रकार के उभारदार बेल-बूटे बनाये जाते है।

ठमक—स्त्री०[हिं० ठमकना] १ ठमकने की अवस्था, क्रिया या भाव। †२ दे० 'ठुमक'।

ठमकना—अ०[स० स्तम्भ, हिं० थम+करना] १ चलते-चलते सहसा कुछ रुकना। ठिठकना। (प्राय आशका, भय आदि के कारण, अथवा हाव-भाव दिखलाने के लिए) २ दे० 'ठुमकना'।

अ०[अनु०] किसी चीज मे से ठम-ठम शब्द निकलना।

ठमकाना—स०[हिं० ठमकना] १ कोई ऐसी बात कहना जिससे किसी के मन मे शका या सदेह उत्पन्न हो जाय और वह चलता-चलता या कोई काम करता करता रुक जाय। २ ठसक दिखलाते हुए अगो का सचालन करना। ३ ठम-ठम शब्द उत्पन्न करना।

ठमकारना†—स०=ठमकाना।

ठयऊ*—पु०=ठौर।

ठयना†—स० [स० स्थापन, प्रा० ठावन] १ स्थापित करना। ठहराना, बैठाना या स्थित करना। २ प्रयुक्त करना। लगाना। ३. दे० 'ठानना'।

अ० १ स्थापित या स्थित होना। २ प्रयुक्त होना। लगना। ३ दे० 'ठनना'।

ठरगजी—स्त्री०[?] बहनोई की बहन। बहन की ननद। (ब्रज)

ठरना—अ०[हिं० ठार=बहुत ठढा] १ बहुत अधिक सरदी के कारण ठिठुरना। २ बहुत अधिक जाडा या सरदी पडना।

ठरमरुआ—वि०[हिं० ठार=पाला+मरुआ=मरा हुआ] १ जो अधिक

सरदी के कारण अकड या ठिठुर कर मर गया हो या मरे हुए के समान हो गया हो। २ (फसल) जिसे पाला मार गया हो।

ठराना—स० [हिं० ठरना] किसी को सरदी से ठरने मे प्रवृत्त करना।
†अ०=ठरना।

ठरुआ†—वि० [हिं० ठार]=ठरमरुआ।

ठर्रा—पु० [हिं० ठडा=खडा] १ बटा हुआ मोटा डोरा या सूत जिसमे प्राय कुछ अकड या ऐठ रहती है। २ महुए के फलो के रस से बनी हुई एक प्रकार की देशी शराब। ३ अधपकी बडी ईंट। ४ एक तरह का भद्दा जूता। ५ बेडौल तथा भद्दा मोती। ६ अगिया या चोली का बद। तनी।

ठर्री—स्त्री० [देश०] १ बिना अकुर का धान का बीज जो छितराकर बोया जाता है। २ ऐसे धान की बोआई।

ठलाना*—स० [?] १ गिराना। २ निकलवाना।

ठवन—स्त्री० [स० स्थापन] १ किसी ऐसी विशिष्ट अवस्था मे होने का भाव या ढग जिससे शरीर के अगो से कलापूर्ण सौदर्य प्रकट होने लगे। २ किसी विशिष्ट भाव की अभिव्यक्ति के लिए बनाई हुई मुद्रा। ३ खडे होने, बैठने आदि की कोई विशिष्ट मुद्रा। (पोज)

ठवना—स०=ठयना।

ठवनि†—स्त्री०=ठवन।

ठवनी†—स्त्री०=ठवन।

ठवर†—पु०=ठौर।

ठस—वि० [स० स्थास्नु] १ (पदार्थ) जो बहुत ही कडा या ठोस और फलत. दृढ या मजबूत हो। जैसे—ठस मकान। २ (वस्त्र) जिसके ताने और बाने के सूत परस्पर इस प्रकार सटे हुए हो कि उनमे विरलता न दिखाई पडे। ३ (बुनावट) जो उक्त प्रकार की हो। ४ जो इतना अधिक भारी हो कि अपने स्थान से हिलाये जाने पर भी जल्दी न हिले। ५ (सिक्का) जो खनकाने पर ठीक ध्वनि न दे। ६ (व्यक्ति) जो बहुत कजूस हो और जल्दी पैसा खरच करनेवाला न हो। ७ आलसी। सुस्त। ८ जिद्दी। हठी।
वि० गभीर। उदा०—परतु वातावरण बिलकुल ठस जान पडा।—वृदावनलाल वर्मा।

ठसक—स्त्री० [हिं० ठस] १ बडप्पन, योग्यता आदि दिखलाने के उद्देश्य से की जानेवाली साधारण से भिन्न कोई शारीरिक चेष्टा। २. नखरा। ३ अभिमान। गर्व।

ठसकदार—वि० [हिं० ठसक+फा० दार] १ (व्यक्ति) जिसमे ठसक हो। अपना बडप्पन या योग्यता प्रदर्शित करने के लिए कोई विशिष्ट शारीरिक चेष्टा करनेवाला। २ घमडी।

ठसका†—पु०=ठसक।
पु० [अनु०] १ एक तरह की सूखी खाँसी। २ धक्का।

ठसाठस—वि० [हिं० ठस] (अवकाश) जो इतना अधिक भर गया हो कि उसमे और अधिक समाई न हो सकती हो। जैसे—यात्रियो से रेल का डिब्बा ठसाठस था।
क्रि० वि० ऐसी अवस्था मे जिसमे और अधिक भरने, रखने आदि के लिए अवकाश न बच रहा हो।

ठस्सा—पु० [अनु०] १ एक प्रकार की छोटी रुखानी जिससे धातुओ पर नक्काशी की जाती है। २ दे० 'ठसक'।
†पु०=ठवन।

ठहक—स्त्री० [अनु०] नगाडे, मृदग आदि का शब्द।

ठहना—अ० [अनु०] १ घोडे का हिनहिनाना। २ घटे आदि का शब्द होना।
अ० [स० सस्थापन] १ बनाना। सँवारना। २ रक्षा करना। बचाना। उदा०—द्रुपद-सुता की हरि जू लाज ठही।—सूर।
†अ०=ठहरना।

ठहर—पु० [स० स्थल] १ जगह। स्थान। २ रसोईघर। चौका। ३ रसोईघर को गोबर आदि से लीपने-पोतने का काम।
क्रि० प्र०—देना।
४ अवसर। मौका।

ठहरना—अ० [हिं० ठहर] १ चलते-चलते किसी स्थान पर रुकना। गति से रहित होकर स्थित होना। जैसे—डाक-गाडी इस छोटे स्टेशन पर भी ठहरती है। २ किसी स्थान पर विश्राम करने अथवा थोडे समय के लिए रहने के लिए रुकना। टिकना। जैसे—अगली बार यहाँ आने पर हम लोग आप ही के यहाँ ठहरेगे। ३ किसी स्थान पर किसी की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना या रुके रहना। जसे—अदालत का फैसला सुनने के लिए हम ठहरे हुए हैं। ४ कुछ समय तक किसी विशिष्ट अवस्था या स्थिति मे बने रहना। जैसे—(क) दूध या दही का ठहरना। (ख) इनका बुखार १००° पर ठहरा रहता है। ५ किसी विशिष्ट स्थिति मे खडा रहना, फलत किसी ओर न झुकना या नीचे न गिरना। जैसे—अधर मे योगी या आकाश मे पतग का ठहरना। ६ किसी विशिष्ट आधार पर स्थित होना। जैसे—यह छत चारो खभो पर ठहरी है। ७ किसी प्रकार की क्रिया, चेष्टा या व्यापार से रहित या हीन होना। जैसे—(क) हवा या वर्षा का ठहरना। (ख) खाँसी या बुखार ठहरना। ८ किसी अशात या उद्विग्न स्थिति का फिर से प्रसम या शात होना। जैसे—अब कुछ तबीयत ठहरी है। ९ घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का थिराना। १० निश्चित या पक्का होना। जैसे—(क) दर, भाव या मूल्य ठहरना। (ख) सौदा ठहरना। ११ गर्भ रहना। १२ किसी विशिष्ट स्थिति मे होना। (केवल जोर देने के लिए) जैसे—(क) तुम तो भाई ठहरे। (ख) आप तो रईस ठहरे।

ठहराई—स्त्री० [हिं० ठहराना] १ ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ अधिकार। कब्जा। (क्व०)

ठहराउ†—पु०=ठहराव।

ठहराऊ—वि० [हिं० ठहरना] १ ठहरने या ठहरानेवाला। २ टिकाऊ।

ठहराना—स० [हिं० ठहरना का स०] १ ठहराने मे प्रवृत्त करना। २ किसी चलती हुई चीज को रोककर किसी स्थान पर खडा या स्थित करना। जैसे—गाडी या नाव ठहराना। २ किसी को किसी आधार पर इस प्रकार खडा या स्थित करना कि वह इधर-उधर होने या हिलने न पावे। जैसे—ऊँगली पर छडी ठहराना। ४ किसी प्रकार के आधार पर दृढतापूर्वक स्थापित करना। जैसे—खभो पर छत ठहराना। ५ किसी को अतिथि के रूप मे अपने यहाँ अथवा और कही ठहरने या

कुछ समय तक रखने अथवा रहने की व्यवस्था करना। जैसे—(क) मित्र को अपने यहाँ ठहराना। (ख) धर्मशाला मे बरात ठहराना। ६ किसी चलते या होते हुए काम को बद करना या रोकना। ७ कोई काम चीज या बात इस प्रकार निश्चित करना, कराना कि सहसा उसमे कोई परिवर्तन न हो सके। जैसे—(क) लडकी या लडके का ब्याह ठहराना। (ख) किराये की गाडी या मोटर ठहराना। ८ किसी चीज को नीचे गिरने से रोकने के लिए कोई आड या टेक लगाना।

ठहराव—पु०[हिं० ठहरना+आव (प्रत्य०)]१ ठहरने, ठहराने या ठहरे हुए होने की अवस्था या भाव। २ वह स्थिति जिसमे किसी प्रकार की अशाति, उपद्रव, चचलता आदि न हो। स्थिरता। ३ दो पक्षो मे क्रय-विक्रय, विवाद आदि निपटाने के सबध मे होनेवाला निश्चय। ४ दे०'ठहरौनी'।

ठहर†—पु०=ठहर।

ठहरौनी—स्त्री०[हिं० ठहराना]१ दो पक्षो मे होनेवाला वह निश्चय जिसके अनुसार एक पक्ष दूसरे पक्ष को निश्चित धन आदि समय-समय पर देता है। २ विवाह के अवसर पर दहेज आदि के लेन-देन का करार या निश्चय। ३ =ठहराव।

ठहाका†—पु०[अनु०]१ ठठाकर या जोर से हँसने का शब्द। २ जोर की हँसी।

वि० चटपट। तुरत।

ठहिया—स्त्री०[हिं० ठाँव] ठाँव। जगह।

ठाँ—स्त्री० १ =ठाँव। २ =ठाँय।

ठाँई—स्त्री०[हिं० ठाँव] जगह। स्थान।

वि० निकट। पास।

†अ०य० १. किसी के प्रति। २. किसी से।

ठाँउँ†—पु०=ठाँव।

अव्य०=ठाँव।

ठाँठ—वि०[स० स्थाणु (ठूँठा पेड) वा ठन-ठन से अनु०]१ जिसका रस सूख गया हो। नीरस। शुष्क। २ (गौ या भैंस) जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो। जिसके स्तनो मे दूध न रह गया हो।

ठाँठर*—पु० दे० 'ठठरी'।

पु०[स० स्थान, प्रा० ठान] जगह। स्थान।

ठाँय—स्त्री०[अनु०] बदूक के चलने या ऐसी ही और कोई क्रिया होने का शब्द।

अव्य० निकट। पास। समीप।

ठाँय-ठाँय—स्त्री०[अनु०]१ लगातार बदूक से गोलियाँ छोडते चलने से होनेवाला शब्द। २ ऐसा झगडा या टटा जिसमे व्यर्थ की बहुत-सी बक-बक हो।

ठाँव—पु०[स० स्थान, प्रा० ठान]१ स्थान। जगह। २ ठिकाना।

ठाँसना—अ०[हिं० खाँसना का अनु०] ठन-ठन शब्द करते हुए खाँसना।

स०=ठूसना।

ठाँह (ँ)—स्त्री०=ठाँव।

ठाई—स्त्री०=ठाँव।

ठाउ—पु०=ठाँव।

ठाक—स्त्री०[हिं० ठाकना] ठाकने अर्थात् रोकने या मना करने की क्रिया या भाव।

पु० हिं० 'ठीक' का निरर्थक अनुकरण। जैसे—ठीक-ठाक करना।

ठाकना†—पु०[स० स्था] कोई ऐसा काम करने से रोकना जिसका परिणाम या प्रभाव प्राय बुरा होता हो। मना करना। जैसे—बच्चे को गाली देने से ठाकना।

ठाकुर—पु०[स० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी]१ देवमूर्ति, विशेषकर विष्णु या उनके अवतारो की प्रतिमा। देवता। २. ईश्वर। भगवान। ३ मालिक। स्वामी। ४ किसी भूखड का स्वामी। ५ नायक। सरदार। ६ गाँव का जमीदार या मुखिया। ७ पूज्य व्यक्ति। ८ क्षत्रियो की एक उपाधि। ९ नाइयो के लिए एक सबोधन।

ठाकुरद्वारा—पु०[हिं० ठाकुर+स० द्वार]१ देवालय। मदिर। जैसे—माई का ठाकुरद्वारा। २ सिक्खो का गुरुद्वारा।

ठाकुरप्रसाद—पु०[हिं०]१ देवता को भोग लगाई हुई वस्तु। नैवेद्य। २ भादो मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

ठाकुरबाड़ी†—स्त्री०=ठाकुरद्वारा।

ठाकुर-सेवा—स्त्री०[हिं० ठाकुर+स० सेवा]१ देवता का पूजन और सेवा। २ देवता के भोग-राग के लिए मदिर के नाम अर्पित की हुई सपत्ति।

ठाकुरी—स्त्री०[हिं० ठाकुर+ई (प्रत्य०)]१ ठाकुर होने की अवस्था, पद या भाव। २ वह प्रदेश जो किसी ठाकुर के अधिकार मे हो। ३ शासन। ४ प्रधानता। ५ महत्त्व।

ठाट—पु०=ठाठ।

ठाटना—स०=ठाठना।

ठाट बदी—स्त्री०=ठाठ-बदी।

ठाट-बाट—पु०=ठाठ-बाट।

ठाटर—पु०=ठाठर।

ठाटी†—स्त्री०=ठठ्ठ(समूह)।

ठाठ—पु०[स० स्थातृ= खडा होनेवाला]१ बाँसो, लकडियो आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसके आधार पर कोई रचना तैयार या पूरी की जाती है। जैसे—छप्पर या नाव का ठाठ।

क्रि० प्र०—खडा करना।—बनाना।

पद—ठाठ बदी=नवठट। (देखे)

२ किसी प्रकार की लबी-चौडी बनावट या रचना। जैसे—कालीन या दरी बुनने का ठाठ, अर्थात् करघा और उसके साथ की दूसरी आवश्यक सामग्री। ३ ऐसी बनावट या रचना जो तडक-भडक, वैभव, शोभा, सजावट आदि दिखाने के उद्देश्य से तैयार की या बनाई जाय। आडबर। ४. तडक-भडकवाला। वेश-विन्यास।

मुहा०—ठाठ पर रह जाना=उद्देश्य सिद्ध करने मे विफल होकर ज्यो का त्यो रह जाना। **ठाठ बदलना**=(क) नया रूप धारण करने के लिए वेश बदलना। (ख) बल, महत्ता, श्रेष्ठता आदि दिखाने या स्थापित करने के लिए नया रूप धारण करना। जैसे—पहले तो वह सीधी तरह से बाते करता था, पर आज तो उसने अपना ठाठ ही बदल दिया। **ठाठ माँजना**=ठाठ बदलना।

५ तडक-भडकवाला ढग, प्रकार या शैली।

मुहा०—ठाठ से बिताना या रहना=बहुत अच्छी तरह, चैन या सुख से रहना या समय बिताना।

६ कोई काम करने का आयोजन, तैयारी, युक्ति या व्यवस्था। जैसे—(क) अब यहाँ कही ठहरने या रहने का ठाठ करना चाहिए। (ख) यह सब अपना मतलब निकालने का ठाठ है। उदा०—यह ठाठ तुझी ने बाँधा है, यह रग तुझी ने रच्चा है। —नजीर।

क्रि० प्र०—बाँधना।

७, कुश्ती या पटेबाजी मे खडे होने या वार करने का ढग। पैंतरा।

मुहा०—ठाठ बदलना=पुराना पैंतरा छोडकर नये पैंतरे से खडे होना या वार करना। **ठाठ बाँधना**=प्रतिपक्षी पर वार करने के लिए पैंतरे से खडे होना।

८ सगीत मे ऐसे क्रमिक सात स्वरो का वर्ग जो किसी विशेष प्रचलित तथा प्रसिद्ध अथवा शास्त्रीय महत्त्व के राग मे लगता हो। जैसे—भैरवी का ठाठ। ९ कबूतरो, मुरगो आदि का प्रसन्न होकर पर फडफडाने की अवस्था या ढग।

मुहा०—ठाठ मारना=उक्त पक्षियो का प्रसन्न होकर पर फडफडाना।

पु०[हिं० ठट्ठ]१ झुड, दल या समूह। ठट्ठ। जैसे—घोडो या हाथियो का ठाठ। २ अधिकता। बहुतायत। ३. बैल या साँड की गरदन पर का डिल्ला।

ठाठना—स०[हिं० ठाठ]१ ठाठ खडा करना या बनाना। २ सजाना। ३ किसी कार्य के अनुष्ठान या आरम्भ का उपक्रम करना।

अ० १ ठाठ का खडा होना या बनना। २ सजना। ३ कार्य आदि का अनुष्ठान या आरभ होना।

ठाठ-बदी—स्त्री० [हिं० ठाठ+फ़ा० बदी] १. किसी प्रकार का ठाठ अर्थात् ढाँचा खडा करने या बाँधने की क्रिया अथवा भाव। जैसे—छाजन या नाव की ठाठ-बदी। २ आयोजन। तैयारी।

ठाठ-बाट—स्त्री० [हिं० ठाठ+अनु० बाट]१ आडबर, तडक-भडक तथा विलासपूर्ण आयोजन या प्रदर्शन। जैसे—वे ठाठ-बाट से रहते या ठाठ-बाट से बाजार निकलते है। २ सज-धज। सजावट।

ठाठर—पु०=ठाठ।

ठाढ़—वि०=ठाढा। उदा०—ठाढ करत है कारन तबही।—तुलसी।

ठाढ़ा—वि०[स० स्थातृ=जो खडा हो] [स्त्री० ठाढी]१ जो सीधा खडा हो। दडायमान। २. जो अपने पूर्व या मूलरूप मे वर्तमान या स्थित हो। उदा०—गाढै ठाढै कुचनु ठिलि पिय हिय को ठहराइ।—बिहारी।

मुहा०—ठाढ़ा देना=किसी चीज को यत्नपूर्वक सँभालकर ज्यो का त्यो रखना।

३ (अनाज का दाना) जो कूटा या पीसा न गया हो, बल्कि ज्यो का त्यो अपने मूल रूप मे हो। जैसे— ठाढा गेहूँ या चना। ४. हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ५ जो खडे बल मे हो या सीधा ऊपर की ओर गया हो। ६. जो सामने आकर उपस्थित या प्रस्तुत हुआ हो। वर्तमान।

ठाढ़ेश्वरी—पु०[हिं० ठाढा+स० ईश्वर+ई (प्रत्य०)] साधुओ का एक वर्ग जो रात-दिन खडा रहता है।

विशेष—ये साधु या तो चलते-फिरते रहते है या खडे रहते हैं, बैठते या लेटते बिलकुल नही।

ठादर—पु०[देश०] झगडा।

ठान—स्त्री०[हिं० ठानना]१ ठानने की क्रिया या भाव। २ किसी काम को करने के सबध मे किया हुआ दृढ निश्चय या हठ। ३ निश्चय या हठ-पूर्वक ठाना या आरभ किया हुआ कार्य।

ठानना—स०[स० अनुष्ठान]१ कोई काम तत्परता और दृढतापूर्वक आरभ करना। जैसे—युद्ध ठानना। २ कोई काम करने के लिए दृढ निश्चय या सकल्प करना। ३ पक्का करना। ठहराना।

ठाना—स०=ठानना।

स०[?] नष्ट करना। उदा०—लाज की और कहा कहि केशव जो सुनिये गुण ते सब ठाए।—केशव।

†पु०=थाना।

ठाम†—पु०[स० धामन् या स्थान]१ जगह। स्थान। २ ठवन। मुद्रा। ३ शरीर की गठन। अँगलेट।

ठायँ—स्त्री०[अनु०]बदूक आदि के चलने से होनेवाला शब्द। ठाँय स्त्री०=ठाँव।

ठार—वि०[स० स्थावर] बहुत अधिक ठढा।

पु०१ कडा जाडा। गहरी सरदी। २ पाला। हिम।

ठाल—वि०=ठाला।

पु०=ठाला।

ठाला—पु०[हिं० निठल्ला] [स्त्री० ठाली] १ (व्यक्ति) जो कुछ भी काम-धधा न करता हो। निठल्ला।

मुहा०—ठाला बताना या ठाली देना=(वास्तविक काम न करके) व्यर्थ इधर-उधर की बाते करना या बताना।

पु०१ व्यापार की ऐसी स्थिति जिसमे विशेष बिक्री-बट्टा न होता हो। जैसे—आज तो बाजार मे ठाला है। २ किसी बात या वस्तु का होनेवाला प्रत्यक्ष और विशेष अभाव। जैसे—रुपए-पैसे या बुद्धि का ठाला।

ठालिनी—स्त्री०[स०] करधनी।

ठावँ—पु०=ठाँव।

ठावण—पु०[स० स्थान]१ स्थान। जगह। २ ठिकाना।

ठावना—स०=ठानना।

ठासा—पु०[हिं० ठाँसना] लोहारो का एक उपकरण जिससे वे तग जगह मे लोटे की कोर निकालते और उभारते हैं।

†पु०=ठाह (सगीत का)।

ठाह†—स्त्री०[हिं० स्थान]१ जगह। स्थान। २ ठिकाना। ३ थाह। पता। उदा०—बैठी रही अभिमान सौं ठाह ठौर नहिं पायौ।—सूर।

स्त्री०[हिं० ठाहना]१ दृढ निश्चय। सकल्प। २ हठ।

स्त्री०[हिं० ठहरना या ठहराव] सगीत मे, राग-रागिनी गाने या वाद्य बजाने का वह ढग या प्रकार जिसमे गाने-बजाने मे अपेक्षया अधिक समय लगाया जाता है। विलबित। 'द्रुत' का विपर्याय।

ठाहना—स०=ठानना।

ठाहर—पु०=ठहर (ठौर)।

ठाहरना†—अ०=ठहरना।

ठाहरु—पु०=ठाहर (ठौर)।

ठहरूपक—पु० [स० स्थान+रूपक] सात मात्राओ का मृदग का एक ताल जो आडा-चौताल से मिलता-जुलता होता है।

ठाही—स्त्री०=ठाँवँ (जगह)।

ठिंगना—वि० [?] [स्त्री० ठिंगनी] (व्यक्ति) जो ऊँचाई मे सामान्य स्तर से अधिक कम हो। छोटे कदवाला।

ठिक—स्त्री० [हिं० टिकिया] धातु की चद्दर का कटा हुआ छोटा टुकडा जो जोड आदि लगाने के काम आता है। थिगली। चकती।

वि०=ठीक।

स्त्री०=स्थिरता।

ठिक-ठान*—पु०=ठौर-ठिकाना।

ठिकठैन*—वि० [हिं० ठीक+ठयना] १ ठीक। २ सुन्दर।

स्त्री० १ ठीक या उत्तम व्यवस्था। २ आयोजन।

ठिकडा†—पु० [स्त्री० ठिकडी]=ठीकरा।

ठिकना†—अ० १=टिकना। २ किसी स्थान पर जमकर बैठना। (दलाल) ३ ठिठकना।

ठिकरा†—पु० [स्त्री० ठिकुरी]=ठीकरा।

ठिकरौर—वि० [हिं० ठीकरा] ठीकरो से युक्त।

पु० ऐसा स्थान जहाँ बहुत से ठीकरे पडे हुए हो।

ठिकाई—स्त्री० [हिं० ठीक] १ ठीक होने की अवस्था या भाव। २ पाल के यथास्थान जमकर ठीक बैठने की अवस्था या भाव। (लश०)

ठिकान—स्त्री० [हिं० ठिकना] ठिकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

†पु०=ठिकाना।

ठिकाना—पु० [हिं० टिकान या टिथान] १ टिकने अर्थात् ठहरने का उपयुक्त स्थान। २ वह जगह जहाँ कुछ या कोई टिक, ठहर या रह सके। जैसे—पहले तो इनके लिए कोई ठिकाना ढूँढना चाहिए। ३ अवलब, आश्रय, सहारे आदि का उपयुक्त या काम-चलाऊ द्वार, साधन या स्थान। जैसे—कोई नौकरी मिले तो यहाँ रहने का ठिकाना हो जाय।

क्रि० प्र०—निकलना।—मिलना।—लगना।

४ टिकने, ठहरने या रहने की नियत, निश्चित या स्थिर स्थान। जैसे—पहले इनका पता-ठिकाना तो पूछ लो। ५ किसी चीज या बात का वह उचित या उपयुक्त स्थान जहाँ उसे रहना या होना चाहिए।

क्रि० प्र०—मिलना।—लगना।

मुहा०—**(किसी चीज, बात या व्यक्ति का) ठिकाने आना**=जहाँ रहना या होना चाहिए, वहाँ आना या पहुँचना। जैसे—(क) जब ठोकर खाओगे, तब अक्ल ठिकाने आवेगी अर्थात् जैसी होनी चाहिए, वैसी हो जायगी। (ख) इतना समझाने पर अब आप ठिकाने आये है, अर्थात् मूल तत्त्व या वास्तविक तथ्य की बात अथवा विचार तक पहुँचे है। **(कोई काम या बात) ठिकाने पहुँचाना या लगाना**=उचित रूप से पूरा या समाप्त करना। जैसे—जो काम हाथ मे लिया है, उसे पहले ठिकाने पहुँचाओ (या लगाओ)। **(कोई काम या उसके लिए किया जानेवाला परिश्रम) ठिकाने लगना**=सफल या सार्थक होना। जैसे—आपका काम हो जाय तो सारी मेहनत ठिकाने लगे। **(कोई चीज) ठिकाने लगाना**=(क) उपयोग या व्यवहार करके सफल या सार्थक करना। जैसे—जितना भोजन बनाकर रखा है, वह सब ठिकाने लगाओ। (ख) दुरुपयोग करके नष्ट या समाप्त करना। (व्यग्य) जैसे—कुछ ही दिनो मे उसने बाप-दादा की सारी कमाई ठिकाने लगा दी। **(किसी व्यक्ति को) ठिकाने पहुँचाना या लगाना**=किसी प्रकार मार डालना या समाप्त कर देना। जैसे—महीनो से जो लोग उसके पीछे पडे थे, उन्होने उसे ठिकाने लगाया अर्थात् मार डाला।

पद—ठिकाने की बात=ऐसी बात जो हर तरह से उचित या न्यायसगत हो।

६ राजा की ओर से सरदार को मिली हुई जागीर। (राजस्थान) ७ किसी कथन या बात की प्रामाणिकता या विश्वसनीयता। जैसे—इनकी बातो का कोई ठिकाना नही। ८ अस्तित्व, आधार आदि की दृढता या पुष्टता। जैसे—इनके जीवन का अब कोई ठिकाना नही। ९ चरम सीमा या आखिरी हद। अत। पार। जैसे—उसकी नीचता का कोई ठिकाना नही।

स० १ टिकने, ठहरने या स्थिर होने मे प्रवृत्त करना अथवा सहायक होना। २ गुप्त रूप से या छिपाकर दबा रखना या ले लेना। हथियाना। (दलाल) जैसे—एक रुपया उसने धीरे से उठाकर कमर (या जेब) मे ठिका लिया। ३ किसी स्त्री को गुप्त रूप से उपपत्नी बनाकर रख लेना। (बाजारू) जैसे—उसने दो औरते ठिकाई हुई हैं।

ठिकानेदार—पु० [हिं० ठिकाना+फा० दार] किसी ठिकाने या जागीर का स्वामी। (राजस्थान)

ठिकियाना—स० [हिं० ठीक+इयाना (प्रत्य०)] ठीक करना।

ठिठक—स्त्री० [हिं० ठिठकना] १ ठिठकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ सकोच।

ठिठकना—अ० [स० स्थित+करण] १ आशका, भय आदि की कोई बात देखकर चलते-चलते एकबारगी ठहर या रुक जाना। सकोच-वश या सहमकर आगे बढने या कोई काम करने से रुकना। जैसे—शेर की गन्ध आते ही घोडा ठिठक गया। २ चकित या स्तम्भित होकर रुकना। ठक रह जाना।

ठिठकान—स्त्री०=ठिठक।

ठिठरना—अ०=ठिठुरना।

ठिठुरना—अ० [स० स्थित या ठार से अनु०] शरीर अथवा उसके किसी अग का बहुत अधिक सरदी लगने के कारण काँपना या स्तब्ध होना। जैसे—सरदी से पैर या हाथ ठिठुरना।

ठिठोली—स्त्री०=ठठोली।

ठिनकना—अ० [अनु०] १ बच्चो का रह-रहकर रोने का-सा शब्द निकालना। ठुनकना। २ नखरा दिखाते हुए मचलना। ३ ठनकना। जैसे—तबला ठिनकना।

ठिया†—पु०=ठीहा।

ठिर—स्त्री० [स० स्थिर वा स्तब्ध] १ ठिठरने (ठिठुरने) की अवस्था, क्रिया या भाव। २ शीत। सरदी। पाला।

ठिरना—अ० १=ठिठुरना। २ ठरना।

ठिलना—अ० [हिं० ठेलना का अ० रूप] १ किसी चीज का ठेला जाना। ढकेले जाने पर किसी दिशा मे आगे की ओर बढना। जैसे—मोटर या गाडी का ठिलना। २ दबाव पडने या आघात होने पर किसी चीज का किसी दूसरी चीज मे धँसना।

ठिलाठिल—स्त्री०=ठेलमठेल।

ठिलिया—स्त्री० [हिं० 'ठिल्ल' का स्त्री० अल्पा०] पानी रखने की मिट्टी की गगरी।

ठिलुआ—वि० [हि० ठिलना] जो ठिलता हो अथवा ठेला जाता हो। वि०†=निठल्ला।

ठिल्ला—पु० [स० स्थाली, प्रा० ठाली=हाँडी] मिट्टी की बडी ठिलिया या गगरी।

ठिल्ली—स्त्री०=ठिलिया।

ठिल्ही—स्त्री०=ठिलिया।

ठिहार—वि० [स० स्थिर] १ विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय। २ ठीक। ३ निश्चित।

ठिहारी—स्त्री० [हिं० ठिहार] १ ठहराव। स्थिति। २ निश्चय। ३ विश्वास।

ठीक—वि० [हि० ठिकाना] १ जो अपने ठिकाने अर्थात् उचित या उपयुक्त स्थान पर हो। जो मुनासिब जगह पर हो। जैसे—यह तस्वीर यही ठीक रहेगी। २ जो अपने स्थान पर अच्छी या पूरी तरह से आता, बैठता या लगता हो। जैसे—यह कुरता तुम्हे ठीक होगा। ३ जो क्रम, परम्परा, व्यवस्था आदि के विचार से वैसा ही हो जैसा होना चाहिए। जैसे—अलमारी मे सब चीजे फिर से ठीक करके रखो। ४ जो नियम, नीति, प्रकृति, न्याय आदि की दृष्टि से उचित, उपयुक्त या सगत हो। जैसा होता हो या होना चाहिए, बिलकुल वैसा। जैसे—ठीक रास्ता, ठीक व्यवहार। ५ जो तर्क, वास्तविकता आदि के विचार से यथातथ्य या यथार्थ हो। जो मिथ्या न हो। जैसे—आखिर आप की ही बात ठीक निकली। ६ जो बहुत-कुछ या हर तरह से अनुकूल अथवा सुभीते का हो। जैसे—ठहरने के लिए यही जगह ठीक होगी। ७ जिसमे किसी प्रकार की अशुद्धि, चूक या भूल न हो। जैसे—(क) इन प्रश्नो के हमे ठीक उत्तर मिलने चाहिएँ। (ख) यह हिसाब गलत है, इसे ठीक करो। ८ जिसमे कोई कोर-कसर, खराबी, दोष या विकार न हो। जैसे—(क) आज तरकारी ठीक बनी है। (ख) मशीन ठीक है। ९ जो अच्छी, प्रसन्न या स्वस्थ दशा मे हो। जैसे—आज-कल उनकी तबीयत बिलकुल ठीक है। १० जो हर तरह से वैसा ही हो, जैसा होता है या होना चाहिए। जैसे—यह घी (या तेल) ठीक नही है। ११ जो कुछ भी आगे-पीछे, इधर-उधर अथवा घट-बढकर न हो। जैसे—(क) गाडी ठीक चार बजे जाती है। (ख) यह कपडा ठीक वैसा ही है, जैसा तुम चाहते थे। १२ नियत, निश्चित या स्थिर किया हुआ। ठहराया या पक्का किया हुआ। जैसे—(क) वे लडकी का ब्याह ठीक करने गये हैं। १३ (व्यक्ति) जो हर तरह से नीतिमान, न्यायज्ञ, प्रामाणिक, विश्वसनीय या सद्गुणी हो। जैसे—हमे यह आदमी ठीक नही मालूम होता। १४ (व्यक्ति) जिसका आचरण या व्यवहार वैसा ही हो, जैसा होना चाहिए। जो कोई अनुचित, निंदनीय या प्रतिकूल काम न करता हो। जैसे—इधर अनेक प्रकार के कष्ट भोगकर वह बिलकुल ठीक हो गया है।

पु० 'ठीक' अर्थात् निश्चित या स्थिर होने की अवस्था या भाव। जैसे—उनके आने का कोई ठीक नही है।

क्रि० वि० १ उचित प्रकार या रीति से। जैसे—घडी ठीक चल रही है। २ अवधि, सीमा आदि के विचार से नियत समय पर। जैसे—ठीक साल भर बाद वह वापस आया। ३ ठहरे हुए या नियत होने की अवस्था या भाव। ठहराव। जैसे—पहले रहने का तो ठीक हो जाय, तब और बाते होती रहेगी। ४ अको, सख्या ओ आदि का जोड। योग। मीजान। जैसे—इन रकमो का ठीक लगाओ।

क्रि० प्र०—देना।—निकालना।—लगाना।

ठीक-ठाक—वि० [हिं० ठीक+अनु० ठाक] जो बिलकुल ठीक अवस्था मे हो। पु० १ ठीक होने की अवस्था या भाव। जैसे—गाँव पर सब ठीक-ठाक है। २ निश्चय।

ठीकडा—पु०=ठीकरा।

ठीकरा—पु० [हि० टुकडा] [स्त्री० अल्पा० ठीकरी] १ मिट्टी के टूटे-फूटे बरतन का कोई बडा टुकडा।

मुहा०—(किसी के सिर) ठीकरा फूटना=व्यर्थ किसी बात के लिए कलक लगना। **ठीकरा समझना**=तुच्छ, निरर्थक या व्यर्थ समझना।

२ प्राचीन काल के मिट्टी के बरतन का वह टुकडा जो कही से खुदाई मे निकलता है और जो इतिहास तथा पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व का होता है। (पॉट-शर्ड) ३ भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। भिक्षा-पात्र। ४ तुच्छ वस्तु। ५ रुपया। (साधु)

ठीकरी—स्त्री० [हि० ठीकरा का अल्पा० स्त्री०] १ छोटा ठीकरा। २ तुच्छ या निकम्मी वस्तु। ३ चिलम के ऊपर रखा जानेवाला मिट्टी का तवा। ४ स्त्रियो की योनि का उभरा हुआ तल। उपस्थ।

ठीका—पु० [हि० ठीक] १ आपस मे ठीक करके तै की हुई ऐसी बात जिसमे कोई काम करने-कराने और उसका पारिश्रमिक (वेतन से भिन्न) लेने-देने का निश्चय हुआ हो। जैसे—पुल या मकान बनाने का ठीका। (कॉन्ट्रैक्ट) २ कुछ काल के लिए कोई सम्पत्ति या किसी व्यापार का अधिकार इस शर्त पर किसी को देना या किसी से लेना कि उसकी आय, देख-रेख आदि की व्यवस्था ठीक तरह से होती रहेगी। जैसे—अफीम, गाँजे या शराब का ठीका। ३ अफीम, गाँजे, भाँग, शराब आदि की दूकान जो प्राय ठीके पर ली जाती है। ४ उत्तरदायित्व। जिम्मेदारी। जैसे—हमने तुम्हे नौकरी दिलाने का ठीका नही लिया है।

ठीका-पत्र—पु० [हिं० ठीका+स० पत्र] वह पत्र या लेख्य जिसमे किसी के ठीके के सबध की ऐसी बाते या शर्ते लिखी हो जिनका पालन दोनो पक्षो के लिए आवश्यक हो। सविदा-पत्र। (कॉन्ट्रैक्ट डीड)

ठीका-भेंट—स्त्री० [हिं० ठीका+स० भेंट] वह धन जो ठीका लेनेवाला उस व्यक्ति को भेंट-स्वरूप देता है जिससे वह कोई ठीका लेता है।

ठीकुरी—स्त्री०=ठीकरी।

ठीकेदार—पु० [हिं० ठीका+फा० दार] वह व्यक्ति जो ठीके पर दूसरो के काम करता या करवाता हो। ठीका लेनेवाला व्यक्ति। (कन्ट्रैक्टर)

ठीठा—पु०=ठेठा।

ठीठी—स्त्री० [अनु०] अशिष्टतापूर्वक और तुच्छ भाव से ठी-ठी शब्द करते हुए हँसने का शब्द। जैसे—हरदम हाहा ठीठी करनी ठीक नही।

ठीलना—स०=ठेलना।

ठीवन*—पु० [स० ष्ठीवन] १ थूक। २ खखार। ३ कफ।

ठीहँ—स्त्री० [अनु०] घोडे के हिनहिनाने का शब्द।

ठीहा—पु० [ठाह से अनु] १ लकडी का वह गोलाकार या चौकोर छोटा टुकडा जो जमीन मे गडा या धँसा रहता है तथा जिस पर रखकर चरी

आदि काटी जाती है। २ बढइयो, लोहारो आदि का वह कुदा जिस पर वे लकडी या लोहा रखकर छीलते या पीटते है। ३ किसी चीज को लुढकने या हिलने-डोलने से बचाने के लिए उसके इधर-उधर या नीचे रखा जानेवाला ईंट, पत्थर, लकडी आदि का टुकडा। जैसे—गाडी के पहिये के नीचे रखा जानेवाला ठीहा। ४ लकडी का वह ढाँचा जिसमे फँसाकर बढई लकडी चीरते है। ५ वह कुछ ऊँचा स्थान जिस पर बैठकर छोटे दूकानदार सौदा बेचते है। ६ गाँव, बगीचे आदि की सीमा या हद जो पहले पत्थर या लट्ठा गाडकर सूचित की जाती थी। ७ उक्त प्रकार का गाडा हुआ पत्थर या लट्ठा। ८ चाँड। थूनी।

ठुड—पु०=ठुठ।

ठुक—स्त्री०[हिं० ठुकना] १ ठुकने की अवस्था, क्रिया या भाव। ठोक। २ रुपये-पैसे का व्यर्थ मे होनेवाला व्यय। जैसे—उन्हे दस रुपये की ठुक लग गई।

ठुकना—अ०[हिं० ठोकना का अ०] १ ठोका जाना। २ आघात या प्रहार लगना। ३ आर्थिक हानि या व्यर्थ व्यय होना। जैसे—व्यर्थ सौ रुपये ठुके। ४ जबरदस्ती आगे बढना।

मुहा०—ठुक ठुक कर लड़ना=जबरदस्ती लडना। उदा०—दिन-दिन दैन उरहनौ आवै ठुकि-ठुकि करत लरैया।—सूर।

५ परास्त होना।

ठुकराना—स०[हिं० ठोकर] १ पैर, विशेषत पैर के पजे से ठोकर लगाना। २ (व्यक्ति आदि को) उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दूर करना या हटाना। ३ (प्रस्ताव, सुझाव आदि) अवज्ञा या उपेक्षापूर्वक न मानना।

ठुकवाना—स०[हिं० ठोकना का प्रे० रूप] १ ठोकने का काम दूसरे से कराना। २ मार खिलवाना। पिटवाना। ३ स्त्री का पर-पुरुष से सभोग कराना। (बाजारू)

ठुड्डी—स्त्री०[हिं० ठडा=खडा] किसी अन्न का वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। ठुर्री। जैसे—कमलगट्टे, मक्के या मखाने की ठुडडी।

†स्त्री०=ठोढी।

ठुनकना—स०[ठुन से अनु०]१ किसी प्रकार ठुन शब्द उत्पन्न करना। २ ठोकना।

अ०[हिं० ठिनकना] बच्चो का अथवा बच्चो की तरह रुक-रुककर रोना।

ठुनका—पु०[हिं० ठुनकाना] तर्जनी या मध्यमा (उँगली) की नोक से किया जानेवाला वेगपूर्वक आघात।

ठुनकाना—स०[ठुन-ठुन से अनु०]१ ठुन-ठुन शब्द उत्पन्न करना। २ तर्जनी या मध्यमा की नोक से किसी चीज पर इस प्रकार आघात करना कि ठुन शब्द उत्पन्न हो।

स०[हिं० ठुनकना] ठुनकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई ठुनके। ठिनकाना।

ठुन-ठुन—पु०[अनु०]१ धातु के बरतन या टुकडो के बजने का शब्द। २ बच्चो आदि के रुक-रुककर और ठुन-ठुन करते हुए रोने का शब्द। जैसे—यह लडकी हरदम ठुन-ठुन लगाये रहता है, अर्थात् प्राय रोता रहता है।

ठुमक—स्त्री०[हिं० ठुमकना]१ ठुमकने की क्रिया या भाव। २ बच्चो, युवती स्त्रियो की ऐसी आकर्षक और लुभावनी चाल जिसमे वे कुछ ठिठकती या रुकती हुई चलती है। ठसक-भरी चाल।

ठुमकना—अ०[अनु०]१ बच्चे का उमग मे आकर धीरे-धीरे पैर पटकते तथा इठलाते हुए चलना। उदा०—ठुमुक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनिया।—तुलसी। २ नाच मे, इस प्रकार धीरे-धीरे पैर पटकते हुए आगे बढना कि पैर के घुँघरू बजते रहे।

ठुमका—पु०[अनु०] [स्त्री० ठुमकी] धीरे से किया जानेवाला आघात या दिया जानेवाला झटका। जैसे—पतग उडाने के समय उसे ठुमका देना।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

†वि० [स्त्री० ठुमकी] दे० 'ठिगना'।

ठुमकारना—स०[हिं० ठुमका] (पतग की डोरी को) ठुमका देना।

ठुमकी—स्त्री०[देश०]१ ठुमककर चलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ धीरे से किया जानेवाला आघात। थपकी। ३ दे० 'ठुमका'। ४ एक प्रकार की छोटी खरी पूरी (पकवान)।

ठुमरी—स्त्री० [अनु०] १ एक प्रकार का चलता गाना जिसमे एक स्थायी और एक अतरा होता है।

विशेष—ठुमरी कई हलके रागो और तरह-तरह की धुनो मे गाई जाती है। इसका विकास लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के दरबार मे हुआ था।

२ उडती खबर। अफवाह।

क्रि० प्र०—उडना।

ठुरियाना†—अ० =ठिठुरना।

ठुर्री—स्त्री०=ठुड्डी।

ठुसकना—अ०[अनु०]१ ठुस-ठुस शब्द करते हुए रोना। ठुन-ठुन करना। २ ठुस शब्द करते हुए पादना।

ठुसकी—स्त्री० [अनु०] १ ठुस शब्द करते हुए पादने की क्रिया। २ हलका पाद जिसमे ठुस शब्द हो।

ठुसना—अ०[हिं० ठूसना]१ किसी चीज का किसी आधान मे ठूस-ठूसकर भरा जाना। २ अन्न या भोजन का पेट भर कर खाया जाना। (उपेक्षा)

ठुसवाना—स०[हिं० ठूसना का प्रे०] ठूसने का काम किसी और से कराना।

ठुसाना—स० [हिं० ठूसना] १ किसी को ठूसने मे प्रवृत्त करना। २ भोजन कराना। खिलाना। (उपेक्षासूचक)

ठूँग—स्त्री०=ठोग।

ठूँगना—स०=टूँगना।

ठूँगा—पुं०=ठोगा।

ठूँठ—पु०[स० स्थाणु]१ वह वृक्ष जिसका धड ही बच रहा हो तथा जिसकी टहनियाँ टूट गई हो। २ कटा हुआ हाथ। टूँट। ठड। ३ कटे हुए हाथवाला व्यक्ति। ४ ज्वार, बाजरे, ईख आदि की फसलो मे लगनेवाला एक तरह का कीडा।

ठूँठा—वि०[हिं० ठूँठ] [स्त्री० ठूँठी] १ (पेड) जो शाखाओ से रहित हो गया हो। २ (व्यक्ति) जिसका हाथ कटा हुआ हो। लुज। ३ खाली। रिक्त। ४ थोथा। निस्सार।

ठूँठिया†—वि०[हिं० ठूँठ]१ लूला-लँगडा। २ नपुसक। हिजडा।

ठूठी—स्त्री० [हि० ठूंठ] फसल काट लिए जाने के बाद पौधे की जड के पास रह जानेवाले ज्वार, बाजरे, अरहर आदि के डठल। खूँटी।

ठूंसना—स०=ठूसना।

ठूंसा—पु० [हिं० घूँसा से अनु०] घूँसा।

†पु०=ठोसा।

ठूलू—पु० [देश०] पटवो की वह टेढी कील जिस पर वे लोग गहने आदि अटकाकर गूँथते है।

ठूसना—स० [हि० ठस] १ खूब अच्छी तरह कसकर दबाते हुए कोई चीज किसी अवकाश या आधान मे भरना। २ जबरदस्ती कोई चीज किसी मे डालना या भरना। ३ खूब कसकर और बुरी तरह मे खाना या पेट भरना। (व्यग्य)

ठेंगना†—वि०=ठिगना (नाटे कद का)।

ठेंगा—पु० [हि० हेठ+अग या अँगूठा] १ किसी को उसकी विफलता पर चिढाने या लज्जित करने के लिए दिखाया जानेवाला दाहिने हाथ का अँगूठा।

क्रि० प्र०—दिखाना।

पद—ठेंगे से=हमारी बला से। हमे कुछ चिन्ता या परवाह नही है। (बाजारू)

मुहा०—ठेंगा बजना=लज्जाजनक विफलता होना।

२ लिगेंद्रिय। (अशिष्ट) ३ डडा। सोटा। उदा०—जम का ठेगा बुरा है ओहु नहि सहिआ जाई।—कबीर।

मुहा०—ठेंगा बजाना=लाठियो से मार-पीट होना।

४ मध्ययुग मे, बिक्री के माल पर लिया जानेवाला महसूल। चुगी।

ठेंगुर—पु० [हि० ठेंगा=सोटा] वह डडा या लकडी का टुकडा जो उच्छृखल पशुओ के गले मे इसलिए बाँधा जाता है कि वे भाग कर दूर न जाने पावे।

ठेंघा—पु०=टेक।

ठेंठ—वि०=ठेठ।

ठेंठा—पु० [हि० ठूँठ या ठूँठी] सूखा डठल। उदा०—राजो एक मजूर से बैलो के लिए जोन्हरी का ठेठा कटवा रही थी।—प्रसाद।

ठेंठी—स्त्री० [देश०] १ कान की मैल। २ वह कपडा या रूई जो कान के भीतरी छेद या मुँह पर इसलिए लगाई जाती है कि बाहर का जोर का शब्द भी न सुनाई पडे। ३ बोतल, शीशी आदि का मुँह बद करने के लिए उसके ऊपर लगाया जानेवाला काग या डाट।

क्रि० प्र०—लगाना।

ठेंपी†—स्त्री०=ठेठी।

ठेक—स्त्री० [हि० ठेकना] १ ठेकने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज को ठेकने या उसके नीचे सहारा देने के लिए लगाई जानेवाली चीज। टेक। जैसे—मटके या हडे के नीचे टेक लगाना। ३ चाँड। टेक। ४ किसी वस्तु को कसने के लिए उसके बीच मे ठोकी जानेवाली चीज। पच्चर। ५ पाग का तल या पेंदा। टट्टियो आदि से घिरा हुआ वह स्थान जिसमे अनाज भरकर रखा जाता है। ६ अनाज रखने के लिए टट्टियो आदि से घेरकर बनाया हुआ स्थान।

ठेकना—स० [हि० टेक] १ किसी चीज पर शरीर का बोझ डालते या रखते हुए उसका सहारा लेना। २ किसी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे टेक या सहारा लगाना।

स० [अनु०] छापे या ठप्पे से अकित करना।

ठेकवा बाँस—पु० [देश०] बगाल, आसाम आदि प्रदेशो मे होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

ठेका—पु० [हि० ठेकना] १ ठेकने अर्थात् टिकने-टिकाने या ठहरने-ठहराने की जगह। २ वह वस्तु जिसकी ठेक लगाई जाय। ठेकनेवाली वस्तु। अड्डा। ३ हलका आघात। थपेडा। जैसे—लहरो का ठेका। ४ तबले के साथ का वह दूसरा बाजा जो बाई ओर रहता और बाएँ हाथ से बजाया जाता है। डुग्गी। ५ तबला या ढोल बजाने की वह रीति जिसमे पूरे बोल न निकाले जायँ, केवल ताल दिया जाय। यह प्राय डुग्गी या बाएँ पर बजाया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—बजाना।

मुहा०—घोडे का ठेका भरना=घोडे का रह-रहकर जमीन पर टाप या पैर पटकना।

६ सगीत मे, कौवाली नाम का ताल।

†पु० दे० 'ठीका'।

ठेकाई—स्त्री० [हि० ठेकना] ठेकना या ठेकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ठेकाना—स० [हि० ठेकना का प्रे० रूप] किसी चीज को ठिकने या ठेकने मे प्रवृत्त करना। वि० दे० 'ठिकाना'।

†पु०=ठिकाना।

ठेकी—स्त्री० [हि० ठेक] १ टेक। सहारा। २. चाँड। थूनी।

ठेकेदार†—पु०=ठीकेदार।

ठेगडी*—पु० [देश०] कुत्ता। (डि०)

ठेगना†—स० १ =ठेकना। २ =ठाकना (मना करना)।

ठेगनी—स्त्री०=टेकनी।

ठेघना†—स०=ठेगना (ठेकना)।

ठेघनी—स्त्री०=ठेगनी (टेकनी)।

ठेघा —पु०=ठेका (टेक)।

ठेघुना—पु०=ठेहुना (घटना)।

ठेठ—वि० [देश०] १ जो अपने विशुद्ध मूलरूप मे हो। जिसमे कृत्रिमता, बनावट या किसी तरह की मिलावट न हो। प्ररूपी। (टिपिकल) जैसे—ठेठ बनारसी (=विशिष्ट रूप से बनारस का ही, अर्थात और कही का नही)। २ जिसमे किसी प्रकार की भूल, सदेह आदि के लिए अवकाश न हो। जैसे—उन्हे ठेठ घर तक पहुँचा आओ।

पु० आदि। आरभ। शुरू। जैसे—अब सारा काम ठेठ से करना चाहिए।

ठेठर—पु०=थिएटर।

ठेप—स्त्री० [देश०] सोने, चाँदी का ऐसा टुकडा जो अटी मे आ सके। (सुनार)

क्रि० प्र०—चढाना।—लगाना।

†पु० [स० दीप ?] दीआ। दीपक।

ठेपी—स्त्री० १ ठेठी। २ छोटा ढक्कन।

ठेल—स्त्री० [हि० ठेलना] ठेलने की क्रिया या भाव।

ठेल-ठाल—स्त्री०=ठेल।

ठेलना—स०[हि० टालना] १ किसी भारी चीज के पीछे बल लगाकर उसे आगे खिसकाना या बढाना।

मुहा०—(कोई काम) ठेले चलना=जैसे-तैसे काम चलाये चलना। किसी प्रकार निबाहते चलना।

२ अपना भार या दायित्व अपने ऊपर से हटाते हुए किसी दूसरे की ओर बढाना।

*अ० बल-प्रयोग या जबरदस्ती करना। उदा०—ताही पै ठगावै ठेलि जाही को ठगतु है।—केशव।

ठेलम-ठेल—स्त्री०[हि० ठेलना से] बार-बार बहुत से लोगो का आपस मे एक दूसरे को ठेलने या धक्के देने की क्रिया या भाव।

क्रि० वि० एक दूसरे को ठेलते हुए।

ठेला—पु०[हि० ठेलना] १ ठेलने की क्रिया या भाव। २ माल ढोने की एक तरह की दो या तीन पहियोवाली छोटी गाडी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते है। ३ उक्त प्रकार की चार पहियोवाली छोटी गाडी जो केवल रेल की पटरियो पर चलती है। ट्रॉली। ४ छिछली नदियो मे चलनेवाली एक तरह की कम गहरी नाव। ५ धक्का। ६ भीड-भाड।

ठेलाठेल—स्त्री०=ठेलमठेल।

ठेवका—पु०[हि० ठेवना या स०थापक] वह स्थान जहाँ मोट का पानी खेत सीचते समय गिराया जाता है। चवना।

ठेवकी—स्त्री०=ठेक।

ठेस—स्त्री०[देश०]१ ऐसा हलका आघात जिससे किसी चीज या व्यक्ति की थोडी-बहुत या सामान्य हानि हो। जैसे—ठेस लगने से शीशा टूट गया। २ किसी प्रकार के अपकृत्य के फलस्वरूप होनेवाला कुछ या सामान्य मानसिक कष्ट। जैसे—आपके व्यवहार से मेरे मन को ठेस लगी है। ३ किसी तत्त्व पर होनेवाला आघात। जैसे—किसी की प्रतिष्ठा या मान को ठेस लगना।

क्रि० प्र०—पहुँचना।—पहुँचाना।—लगना।—लगाना।

४ आश्रय। सहारा। ढासना। जैसे—तकिये पर ठेस लगाकर बैठना।

ठेसना—अ०[हिं० ठेस] आश्रय या सहारा लेना। ठेस लगाकर बैठना।

†स०=ठूसना।

ठेसमठेस—क्रि० वि०[हिं० ठेस] सब पाल एक साथ खोले हुए (जहाज का चलना)। (लश०)

ठेहरी—स्त्री०[देश०] जमीन मे गडा हुआ लकडी का वह टुकडा जिसपर दरवाजे (पुरानी चाल के एक प्रकार के दरवाजे) की चूल घूमती है।

ठेहुका†—पु०[हि० ठेक]वह पशु जिसके चलते समय पिछले दोनो पैरो के घुटने आपस मे टकराते हो।

ठेहुना†—पु० [स० अष्ठीवान्] घुटना।

ठेहुनी†—स्त्री०[हिं० ठेहुना] कोहनी।

ठैकर—पु०[देश०] एक प्रकार का खट्टा फल जिससे पीला रग बनाया जाता है।

ठैन†—स्त्री०=ठवन।

ठैयाँ—स्त्री०=ठाँव।

ठैरना†—अ०=ठहरना

ठैराई—स्त्री०=ठहराई।

ठैराना—स०=ठहराना।

ठैल-पैल†—स्त्री०=ठेलपेल।

ठोक—स्त्री०=ठोक।

ठोकना†—स०=ठोकना।

ठोग—स्त्री०[स० तुड]१ चोच। २ चोच की मार। ३ उँगली की नोक से किया जानेवाला आघात।

ठोगना—स०[हिं० ठोग]१ ठोग या चोच मारना। २ उँगली की नोक से आघात करना।

ठोगा—पु०[देश०] कागज की एक प्रकार की थैली जिसमे दूकानदार सूखा चीजे डालकर ग्राहको को देते है।

ठोचना†—स०=ठोगना।

ठोठ—पु०[स० ओष्ठ] होठ।

पु०=ठोठ।

ठोठा—पु०[देश०] ज्वार, बाजरे आदि को हानि पहुँचानेवाला एक तरह का कीडा।

ठोठी—स्त्री०[स० तुड] १ चने के दाने का कोश या खोल। २ पोस्ते की ढोढी या ढेढी।

ठो†—अव्य०[स० स्था] सख्यासूचक शब्दो के साथ लगनेवाला एक अव्यय जो उनकी इकाइयो या मान पर जोर देता है। जैसे—एक ठो, दो ठो, दस ठो, बीस ठो आदि।

ठोक—स्त्री०[हि० ठोकना] १ ठोकने की क्रिया या भाव। आघात। प्रहार। २ वह लकडी जिससे ठोक लगाकर दरी की बुनावट ठस की जाती है। ३ अन्न के दानो, फलो आदि पर कीडे-मकोडो के दश या पक्षियो की चोच से लगा हुआ आघात या उसका चिह्न।

ठोकचा—पु०[देश०] आम की गुठली का ऊपरी कडा आवरण। खोल।

ठोकना—स०[अनु० ठक-ठक से]१ किसी चीज को किसी दूसरी चीज के अन्दर गडाने, जमाने, धँसाने, बैठाने आदि के लिए उसके पिछले भाग पर हथौडे आदि से जोर से आघात करना। जैसे—जमीन मे खूँटा या दीवार मे कील ठोकना। २ किसी छेद या दरज मे उक्त प्रकार का आघात करते हुए कोई चीज धँसाना या बैठाना। जैसे—चूल मे पच्चर ठोकना। ३ किसी चीज के विभिन्न सयोजक अगो को यथास्थान बैठाने के लिए उन पर किसी प्रकार आघात करना। जैसे—(क) खाट या चौखट ठोकना। (ख) किसी के पैरो मे बेडियाँ या हाथो मे हथकडियाँ ठोकना। ४ कोई विशिष्ट प्रकार का कार्य सम्पादित करने के लिए किसी चीज पर ऐसा आघात करना कि वह कुछ दबे भी और उसमे से कुछ शब्द भी निकले। जैसे—पहलवानो का ताल ठोकना। (ग) पकाने के लिए बाटी या रोटी ठोकना।

मुहा०—(किसी की) पीठ ठोकना=(क)कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशसा करते हुए उत्साहित करना, उसकाना या बढावा देना। जैसे—तुम्हारे ही पीठ ठोकने से तो वह मुकदमेबाज़ी पर उतारू हुआ है।

५ किसी चीज की दृढता, प्रामाणिकता आदि की परीक्षा करने के लिए कोई आवश्यक या उपयुक्त क्रिया करना।

मुहा०—ठोकना-ठठाना या ठोकना-बजाना=हर तरह से जाँचकर देखना कि यह ठीक है या नही। जैसे—ठोक-बजा कर सौदा करना।

६ अधिकार या बलपूर्वक अभियोग आदि उपस्थित करना। जैसे—किसी पर दावा या नालिश ठोकना। ७ अच्छी तरह पीटना या मारना। जसे—जब तक यह लड़का ठोका नहीं जायगा तब तक सीधा नहीं होगा।

ठोकर—स्त्री०[हि० ठुकना या ठोकना] १ किसी चीज के ठुकने अर्थात टकराने आदि से लगनेवाला ऐसा आघात जिससे कुछ टूटने-फूटने या हानि पहुँचाने की आशका या सभावना हो। जैसे—यह तसवीर (या शीशा) सँभालकर ले जाना, रास्ते मे कही ठोकर न लगने पावे।

क्रि० प्र०—लगना।

२ वह आघात जो चलते समय रास्ते मे पडी हुई किसी उभरी हुई कडी चीज से मुख्यत पैर मे लगता हो। जैसे—चलते समय ईट, ककड या पत्थर से लगनेवाली ठोकर।

क्रि० प्र०—खाना।—लगना।

३ मार्ग मे पडी हुई कोई ऐसी (उक्त प्रकार की) चीज जिससे पैरो को आघात लगता या लग सकता हो। जैसे—अँधेरे मे उधर मत जाया करो, रास्ते मे कई जगह ठोकरे है। ४ नगे पैर के अगले भाग अथवा पहने हुए जूते की नोक या पजे से किसी वस्तु या व्यक्ति पर किया जानेवाला आघात। जैसे—नौकर या भिखमगे को ठोकर लगाना या ठोकरो से मारना।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी की) ठोकरो पर पडे रहना=बहुत ही दीन-हीन बनकर और सब तरह की दुर्दशाएँ भोगते हुए किसी के आश्रित बने रहना।

५ कुश्ती का एक दाँव-पेच जिसमे विपक्षी को पैर से कुछ विशिष्ट प्रकार की ठोकर लगाकर नीचे गिराया जाता है। ६ लाक्षणिक रूप मे लोक-व्यवहार मे किसी प्रकार का ऐसा कडा या भारी आघात जो बहुत-कुछ अनिष्ट या हानि करनेवाला सिद्ध हो। जैसे—उन्होने अपने जीवन मे कई बार ठोकरे खाई है, इसलिए अब उनकी बुद्धि बहुत-कुछ ठिकाने आ गई है।

क्रि० प्र०।—खाना।—लगाना।

मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाते फिरना=इधर-उधर अपमानित होते हुए और दुख भोगते हुए घमना। दुर्दशा-ग्रस्त होकर मारे-मारे फिरना।

ठोकरी—स्त्री०[देश०] ऐसी गाय जिसे ब्याये कुछ या कई मास हो चुके हो और इसी लिए जिसका दूध गाढा तथा मीठा हो गया हो।

ठोकवा†—पु०[हि० ठोकना] गुना नाम का मीठा पकवान।

ठोका†—पु०[देश०] हाथ मे पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का गहना।

ठोट—वि०[हि० ठूँठ] १ तत्वहीन। २ मूर्ख।

ठोठ†—पु०=ठूँठ।

†वि०=ठूँठा।

ठोठरा—वि०[हि० ठूँठ?] [स्त्री० ठोठरी] भीतर से खाली खोखला। पोला।

ठोडी—स्त्री०=ठोढी।

ठोढ़ी—स्त्री०[स० तुड] चेहरे का निचला सामनेवाला भाग जो आगे की ओर कुछ झुका हुआ होता है। ठुड्डी। चिबुक। (चिन्)

मुहा०—(किसी की) ठोढी पकडना=प्रेमपूर्वक या अनुनय-विनय करते हुए किसी की ठोढी छूना या दबाना।

ठोढी-तारा—पु०[हि०] स्त्री की ठुड्डी पर का गोदना या तिल।

ठोप†—पु०[अनु० टप-टप] जल-कण। पानी की बूँद।

ठोर—पु०[देश०] एक प्रकार का मीठा पकवान जो मैदे की मोयनदार पूरी को घी मे तलने और चाशनी मे पकाने से बनता है। वल्लभ-सप्रदाय के मदिरो मे प्राय इसका भोग लगता है।

पु०[स० तुड] पक्षियो की चोच।

ठोला—पु०[देश०] रेशम फेरनेवालो की वह चौकोर छोटी पटरी जिसमे लकडी का खूँटा लगा रहता है।

ठोली—स्त्री०[देश०] उपपत्नी के रूप मे रखी हुई स्त्री। रखेल। (पूरब)

ठोस—वि० [हि० ठस] १ (पदार्थ) जिसकी रचना मे अन्दर कही खोखला-पन न हो, और इसलिए जो बहुत कडा, ठस और पक्का हो। जैसे—धातुएँ, पत्थर और लकडियाँ अपने प्राकृतिक या मूल रूप मे सदा ठोस होती है। २ (रचना) जिसके अन्दर न तो किसी प्रकार का पोलापन हो और न पोलेपन की पूर्ति के लिए किसी प्रकार का भराव हो। जैसे—चाँदी या सोने का ठोस कडा या ठोस मूर्ति। ३ (तत्त्व या विषय) जिसमे भर-पूर तथ्य, पुष्टता, या सारभूत बाते हो और इसी लिए जिसमे यथेष्ट उपयोगिता, दृढता, प्रामाणिकता, मान्यता आदि गुण वर्तमान हो। जैसे—उनकी सारी पुस्तक ोस विचारो से भरी पडी है। ४ जिसका कोई ठीक, दृश्य या मूर्त्त रूप सामने हो। जिसमे अव्यावहारिक, असगत या सारहीन बातो की अधिकता या प्रधानता न हो। जैसे—जब तक कोई ठोस प्रस्ताव या सुझाव सामने न आवे, तब तक इस विषय पर विचार नही हो सकता। ५ (व्यक्ति) जिसके पास या जिसमे कुछ आधार-भूत तथा दृढ तत्त्व या बाते हो, और इसी लिए जिसे प्रामाणिक या विश्वसनीय माना जा सकता हो। जैसे—ठोस आसामी, ठोस महाजन।

ठोसना—स०[हि० ठाँसना या ठूसना?] १ धक्का देते हुए आघात या प्रहार करना। २ किसी को जलाने या कुढाने के लिए बहुत कठोर या लगती हुई बात कहना। ठोसा देना।

ठोसा—पु०[हि० ठोसना] १ वह आघात या प्रहार जो किसी को धक्के देते हुए किया जाय। २ वह व्यग्यपूर्ण बात जो किसी को कुढाने या जलाने के लिए कही जाय। उदा०—इक हरि के दरसन बिनु मरियत, अरु कुब्जा के ठोसनि।—सूर। ३ कुढाने या चिढाने के लिए दिखाया जानेवाला हाथ का अँगूठा। ठेगा।

ठोहर—पु०[हि० निठोहर] १ अकाल। २ मँहगी।

ठौका—पु०=ठेवका।

ठौनि*—स्त्री०=ठवनि।

ठौर—पु०[स० स्थान, प्रा० ठान, हि० ठाँव+र(प्रत्य०)] १ जगह। स्थान।

पद—ठौर-कुठौर=अच्छी और बुरी जगह। उचित तथा अनुचित स्थान।

मुहा०—ठौर न आना=किसी ठिकाने पर न पहुँचना, या न लगना। **(किसी को) ठौर रखना**=जिस स्थान पर कोई हो उसे वही ढेर कर देना अर्थात् मार डालना। **ठौर रहना**=कही पडे रहना।

२ अवसर। मौका।

ठ्यापा†—वि०[देश०] [स्त्री० ठ्यापी] उपद्रवी। शरारती।

ड

ड—नागरी वर्णमाला का १३वाँ व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा सघोष व्यजन है। जब इसके नीचे बिन्दी लगती है तब इसके उच्चारण मे विशेष अन्तर होता है। जैसे—लडका, लडी आदि मे का ड। ड मूर्द्धन्य, उत्क्षिप्त, अल्पप्राण तथा सघोष व्यजन है।

पु०[स०√डी (उडना)+ड] १ शब्द। २ बडवाग्नि। ३ शिव। ४ एक प्रकार का नगाडा। ५ भय।

डक—पु०[स० दश, प्रा० डक्क, दे० प्रा० डक, उ० डकिवा, गु० मरा० डख, प० डक] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के कीडो और जन्तुओ का वह कडा नुकीला काँटे के आकार का अग जो प्राय उनके पिछले भाग मे होता है तथा जिसे वे दूसरे जीवो या प्राणियो के शरीर मे गडा या धँसाकर कुछ विष प्रविष्ट करते है। और जिसके फलस्वरूप या तो प्राणियो को जलन या पीडा होती है और या वे मर जाते है। जैसे—बर्रे या बिच्छू का डक। २ कुछ कीडे-मकोडो के मुँह पर का वह लबा पतला अग जिसे वे किसी चीज मे उसका रस चूसने के लिए गडाते है।

क्रि० प्र०—मारना।

३ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसी खटकने या चुभनेवाली बात जो राग-द्वेष से भरी हो और किसी को बहुत अधिक कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से कही जाय। ४ देशी कलम का वह अगला भाग जिससे लिखा जाता है। उदा०—सूखि लागि स्याही लेखनी कै नेकु डक लागै।—रत्नाकर। ५ पाश्चात्य ढग की कलमो की जीभ जो धातु की बनी हुई और बहुत नुकीली होती है। (निब)

†पु०[हि० डका] पूरा एकाधिपत्य। जैसे—इस स्थान पर हमारा ही डक है।

डकदार—वि० [हि० डक+फा० दार] (कीडा) जिसमे डक हो। डकवाला।

डकना—स०[हि० डका] १ डका बजाना। २ डके की तरह का घोर शब्द उत्पन्न करना।

अ० गरजना।

डका—पु०[टक या ढक्का=दुदुभि का शब्द] १ बडी नाद के आकार का धातु, मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध बाजा जिसके मुँह पर चमडा मढा होता है।। दमामा।

मुहा०—(कोई बात) डके की चोट कहना=खुल्लमखुल्ला, दृढतापूर्वक और सबको सुनाकर कहना। **(किसी बात का) डका पीटना**=चारो ओर सबसे खुलेआम कहते फिरना। **डका देना**=डका बजाकर सैनिको को सावधान होने या कूच करने की सूचना देना। **(कही किसी का) डका बजाना**=एकाधिपत्य या पूर्ण अधिकार होने की सबको सूचना मिलना। **डका बजाना**=एकत्र होने के लिए डका देना।

२ मुरगो मे होनेवाली लडाई।

मुहा०—डका डालना=मुरगो को आपस मे लडाना।

पु०[अ० डॉक] समुद्र के किनारे जहाजो के ठहरने का पक्का घाट।

डका-निशान—पु०[हि० डका+निशान=झडा] राजाओ की सवारी के आगे बजानेवाला डका और उसके साथ चलनेवाला झडा।

डकिनी—स्त्री०=डाकिनी।

डकिनी-बदोबस्त—पु०=दवामी बन्दोबस्त।

डँकियाना—स०[हि० डक+आना (प्रत्य०)] १ डक से चोट करना। २ डक मारना या लगाना।

अ०[हि० डाँकना] १ कोई स्थान डाँकने अर्थात् पार करने के लिए चलना। २ चलकर आना या पहुँचना।

डकी—स्त्री०[देश०] १ कुश्ती का एक दाव। २ मालखभ की एक कसरत।

वि०[हि० डक] डकवाला (जतु)।

डँकीला†—वि० [हि० डक+ईला (प्रत्य०)] (जतु) जिसके शरीर मे डकवाला अग होता हो। डकदार।

डकुर—पु० [हि० डका] पुरानी चाल का एक तरह का ताल देने का बाजा।

डँकौरी†—स्त्री० [हि० डक+औरी (प्रत्य०)] बर्रे। भिड।

डख†—पु०=ढख।

डग—वि०[देश०] जो पूरा पका न हो। अधपका।

पु०=पहर। (पश्चिम)

डगम—पु०[देश०] एक तरह का वृक्ष।

डगर—पु०[देश०] चौपाया। पशु।

वि० पशुओ की तरह निर्बुद्धि या मूर्ख।

डँगरा†—पु०[स० दशागुल] खरबूजा।

वि० दे० 'डाँगर'।

डँगरी—स्त्री०[हि० डँगरा] १ लबी ककडी। २ हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का मोटा बेत।

स्त्री० हि० 'डाँगर' का स्त्री०। उदा०—डाइन डँगरी नरन चबावत।—गोपाल।

डँगवारा—पु०[हि० डगर=चौपाया] किसानो मे होनेवाला डगरो (बैलो आदि) का पारस्परिक लेन-देन, व्यवहार या सहायता।

डगू-ज्वर—पु०[अ०] एक तरह का ज्वर जिसमे शरीर जकड सा जाता है।

डँगोरी—स्त्री०[देश०] १ डाँग। लाठी। २. वह लाठी जिसे वृद्ध लोग टेकते हुए चलते है। जैसे—अधे की डँगोरी।

डँठरी†—स्त्री०[हि० डठल] छोटा तथा पतला डठल।

डठल—पु०[स० दड] कुछ विशिष्ट छोटी वनस्पतियो, पौधो आदि का धड जो पतला और कुछ लबा होता है। जैसे—अरहर या चौलाई का डठल।

डठी†—स्त्री० [स० दड] १ डठल। २ किसी चीज मे लगा हुआ कोई लबा अश।

डड—पु०[स० दड] १ डडा। सोटा। २ बाहु-दड। बाँह। भुजा। ३ एक प्रकार का प्रसिद्ध भारतीय व्यायाम जो मुख्य रूप से बाँहो को पुष्ट और सबल करने के लिए जमीन पर पेट के बल झुककर बाँहो के सहारे बार-बार कुछ ऊपर उठने के रूप मे होता है।

क्रि० प्र०—करना।—पेलना।

मुहा०—डड पेलना=खूब मौज से समय बिताना। जैसे—बाप इतनी दौलत छोड गये है, इसलिए बेटा दिन-भर खूब डड पेलता है।

पद—डड-पेल। (देखे)

४ अपराध आदि के लिए मिलनेवाला दड। सजा। ५ जुरमाना।
क्रि० प्र०—भोगना।

६ किसी की हानि के बदले मे उसकी पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन या रकम।

मुहा०—(किसी पर) डड डालना=किसी पर क्षति-पूर्ति का भार डालना। **डड भरना**=किसी की किसी प्रकार की हानि होने पर उसकी पूर्ति के लिए या बदले मे अपने पास से धन देना। जैसे—उनकी कलम खो जाने से हमे १०) डड भरने पडे है।

७ समय का 'दड' नामक बहुत छोटा मान। ८ दे० 'दड'।

डडक—पु०=दडक।

डँडका†—पु०[हि० डडा]सीढो का डडा।

डडकारन*—पु०=दण्डकारण्य।

डडना—स०[हि० डं", स० दड]१ दडित करना। दड या सजा देना। २ जुरमाना लगाना।

डड-पेल—पु०[हि० डड पेलना] १ वह जो डड पेलता हो। डड करनेवाला व्यक्ति अर्थात् तन्दुरुस्त और हट्टा-कट्टा। २ वह जो खूब मौज-मस्ती करता और आनन्द लेता हो।

डडल—स्त्री०[देश०] बगाल, बरमा आदि की नदियो मे मिलनेवाली एक तरह की लबी मछली।

डुडवत्*—पु०=दडवत्।

डँडवारा†—पु०[हि० डाँड=खेत की मेड+वारा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० डँडवारी] किसी खुले स्थान को किसी ओर से घेरने के लिए उठाई जानेवाली ऊँची दीवार।

क्रि० प्र०—उठाना।

मुहा०—डडवारा खीचना=डँडवारा उठाना या खडा करना।

पु०[हिं० दक्खिन+वारा(प्रत्य०)] दक्षिण दिशा की वायु। दखिनैया।

क्रि० प्र०—चलना।

डँडवारी—स्त्री०[हि० डँडवारा का स्त्री०] छोटा डँडवारा।

डँडवी—पु० [हि० डड=दड] वह अधिकारी जो दड दे अथवा जिसमे दड देने की क्षमता हो।

डँडवै—पु० =डँडवी। उदा०—डडवै डॉड दीन्ह जहँ ताईं, आइ सो डँडवत कीन्ह सबाई।—जायसी।

डँडहरा†—पु०[हि० डडा]१ वह पतली, गोल लबोतरी लकडी जो दरवाजो को खुलने से रोकने के लिए अदर से लगाई जाती है। २ दरवाजो को बद करने के लिए उनमे लगाया जानेवाला लोहे आदि का वह उपकरण जिसमे ताला आदि भी लगता है।

डँडहरो—स्त्री०[देश०] एक तरह की छोटी मछली।

डँडहिया—पु०[हि०डडा] वह डडा जिसकी सहायता से बैलो की पोठ पर लदे दो बोरे फँसाए रहते है।

डडा—पु०[हिं० दड] १ पेड की शाखा, बॉस आदि का टुकडा, विशेषत सीधा और लबा सूखा तथा छीला और गढा हुआ टुकडा। जैसे—गुल्ली के साथ खेलने का डडा।

विशेष—डडे की लबाई अपेक्षया अधिक होती है और मोटाई तथा चौडाई कम।

मुहा०—डडा चलाना=डडे से किसी पर आघात या प्रहार करना। **डडे के जोर से**=डड या बाहुबल के आधार पर। जैसे—आप तो डडे के जोर से सब काम कराना चाहते है।

२ कुछ विशिष्ट प्रकार से गढकर बनाये हुए उक्त प्रकार के छोटे टुकडो का जोडा जो प्राय खेलो मे एक दूसरे पर आघात करके बजाने के काम आता है। ३ उक्त प्रकार के लकडी के टुकडो को बजाते हुए खेले जानेवाले कई प्रकार के खेल।

क्रि० प्र०—खेलना।

मुहा०—डडे बजाते फिरना=व्यर्थ या यो ही इधर-उधर घूमते रहना। कुछ काम न करके केवल घूम-घूमकर समय बिताना।

४ लकडी की सीढी मे के छोटे-छोटे खडो मे से हर एक जिस पर पैर रख कर ऊपर चढा जाता है। ५ किसी पदार्थ का अपेक्षाकृत कम चौडा तथा कम मोटा परन्तु अधिक लबा टुकडा। जैसे—साबुन का डडा।

†पु०=डाँड (सीमा पर की छोटी दीवार या मेड)।

क्रि० प्र०—उठाना।—खीचना।

डडा-डोली—स्त्री०[हि० डडा+डोली]=डोली-डडा (खेल)।

डडा-बेडी—स्त्री०[हि०] बेडियाँ और उनके साथ लगा रहनेवाला लोहे का डडा जो विकट कैदियो को इसलिए पहनाया जाता है कि वे बैठ न सके।

डडा-मुर्री—स्त्री० दे० 'पेचक' (चित्रकला की बेल)।

डडाल—पु०[हिं० डडा] दुदुभी। नगारा।

डँडिया—स्त्री०[हि० डाँडी=रेखा]१ पुरानी चाल की वह साडी जिसमे डाँडो या लबी लकीरो के रूप मे गोटा-पट्टा टँका होता था। २ गेहूँ, जौ आदि की बालो की लबी सीक।

पु०[हि० डाँडा=सीमा-रेखा] वह व्यक्ति जो सीमा पर रहकर कर या महसूल उगाहने का काम करता हो।

डँडियाना—स०[हि० डाँडी]१ किसी कपडे के दो या अधिक पाटो को सी कर जोडना। दो कपडो की लबाई के किनारो को एक मे सीना। २ साडी मे गोटे आदि टाँककर डडे अर्थात् लकीरे बनाना।

डँड़ियारा गोला—पु० [हि० डडा+गोला] दोहरे सिरे का लबा (तोप का) गोला। लठिया। (लश०)

डडी—स्त्री०[हि० डडा का स्त्री० अल्पा०] १ लकडी या धातु का गढा हुआ कोई छोटा, पतला, लबा टुकडा जो कई प्रकार के उपकरणो मे प्राय उन्हे पकडकर चलाने, रखने, हिलाने आदि के काम मे आता है। जैसे—कलछी, छाते या पखे की डडी। २ धातु या लकडी का उक्त प्रकार का वह लबा टुकडा जिसके दोनो सिरो पर तराजू के पलडे बँधे रहते है।

मुहा०—डडी मारना=तराजू की डडी इस प्रकार चालाकी से कुछ दबाते हुए पकडना कि तौली जानेवाली चीज उचित मान से कुछ कम रहे। जैसे—यह बनिया डडी मारकर लोगो को ठगता है।

३ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधो का वह बडा और लबा डठल जिसके सिरे पर बडे और भारी पत्ते या फूल लगते है। जैसे—कमल की डडी। ४ पेड-पौधो मे की वह छोटी पतली सीक जिसमे पत्तियाँ और छोटे फूल लगते है। जैसे—गुलाब या गेदे की डडी। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार के गहनो मे उक्त आकार-प्रकार का लगा हुआ वह छोटा पतला टुकडा जिसके सहारे वे गहने शरीर के अग पर अटकाये, खोसे या फँसाये जाते है। जैसे—आरसी या सीसफूल की डडी। ६ झपान या डाँडी नाम की

पहाडी सवारी। ७ पुरुष की लिंगेन्द्रिय। (बाजारू) वि० [हि० डड=हड ?] आपस मे लडाई-झगडा करानेवाला।
पु०=दडी (दडधारण करनेवाला सन्यासी)।
*वि०[स० द्वद्व] चुगलखोर।

डँड़ीर—स्त्री०[हि० डाँडी] सीधी लकीर।

डंडूरना—अ०[?] हवा का धूल से भर जाना।

डँड़ोरना—स०=ढूँढना।

डंडौत—पु०=दडवत्।

डंबर—पु०[स०]१ आडबर। २ विस्तार। ३ बहुत बडा समूह या झुड। उदा०—डका के दिए तैं दल डबर उमडचो।—भूषण। ४ एक तरह का चँदवा।
पद—मेघ-डबर=बडा शामियाना। दल-बादल। **अबर-डबर**=वह लाली जो सध्या समय आकाश मे दिखाई देती है।

डंबेल—पु०[अ०]१ लोहे का एक तरह का छोटा किंतु भारी उपकरण जिसे हाथो मे उठाकर कुछ विशेष कसरते की जाती है। २ वह कसरत जो उक्त उपकरण की सहायता से की जाती है।

डमरिय—पु०[स० डमरू+धारी] शिव। उदा०—डमरिय डहकि बिज्जुल लहकि, खग कढयौ सोमेसजा।—चदबरदाई।

डँवरुआ—पु० [स० डमरू] एक तरह का वात रोग जिसमे शरीर के विभिन्न जोडो मे पीडा तथा सूजन होती है। गठिया।

डँवरुआ-साल—पु०[स० डमरू+हि० सालना] किसी धातु या लकडी के दो टुकडो को परस्पर जोडने का एक विशेष ढग जिसमे एक टुकडे को एक ओर से चोडा और दूसरी ओर से पतला काटते है और दूसरे टुकडे मे उसी काट की नाप से गड्ढा करते है और उस कटे हुए अश को उसी गड्ढे मे बैठा देते है।

डँवरू—पु०=डमरू।

डँवाँडोल†—वि०=डाँवाँडोल।

डस—पु०[स० दश]१ गहरा और तेज डक मारनेवाला एक प्रकार का बडा मच्छर। डाँस। २ दे० 'दश'।

डँसना†—स०=डसना।

डऊ—वि०[हि० डील?]१ लबा-चौडा तथा हृष्ट-पुष्ट (व्यक्ति)। २ पशुओ की तरह निर्बुद्धि और मूर्ख।

डक—पु०[अ० डाक]१ एक प्रकार का गफ कपडा जिससे जहाजो की पाले बनाई जाती है। २ एक प्रकार का मोटा कपडा जो कमीज, कोट आदि के कफ, कालर आदि मे लगाया जाता है।
पु०[अ० डेक] जहाज की ऊपरी छत।

डकइत†—पु०=डकैत।

डकई—पु० [ढाका नगर]१ केले की एक जाति। २ उक्त जाति का केला।
†पु०=१ डाका। २ डकैती।

डकरना—अ०[अनु०]१ बैल, भैसे आदि का बोलना। २ डकार लेना।

डकरा—पु० [देश०] ताल सूखने पर उसके तले की वह मिट्टी जिसमे अधिक गरमी के कारण दरारे पड जाती है।

डकराना†—अ०=डकरना।
†स० डकरने मे प्रवृत्त करना।

डकवाहा†—पु०=डाकिया।

डकार—पु०[स० डक्क=पुकार]१ वह शारीरिक व्यापार जिसमे पेट भरने पर उसके अन्दर की हवा एकाएक शब्द करती हुई मुँह के रास्ते बाहर निकलती है। २ उक्त हवा के मुँह से निकलते समय होनेवाला शब्द।
मुहा०—डकार तक न लेना=किसी का धन इस प्रकार हजम कर जाना कि किसी को खबर तक न लगे।
३ बाघ, सिह आदि की गरज। दहाड।
क्रि० प्र०—लेना।

डकारना—अ०[हि० डकार+ना (प्रत्य०)] १ डकार लेना। २ दे० 'डकरना'।
स० किसी का धन या माल लेकर पचा जाना। हजम कर जाना।

डकैत—पु०[हि० डाक+ऐत (प्रत्य०)] वह डाकू जो प्राय डाके डाला करता हो।

डकैती—स्त्री०[हि० डकैत]१ डकैत का काम। २ डाका। ३ व्यापारिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रो मे, किसी की चीज या धन बलपूर्वक अपने अधिकार या हाथ मे कर लेना।

डकोटा—पु०[अ०] एक प्रकार का बडा वायुयान।

डकौत—पु०[देश०] भड्डर। भड्डरी। (दे०)

डक्क—पु०[स० डक्कारी] वीणा। उदा०—भरै पत्र जोगिनी डक्क नारद्द बजावै।—चदबरदाई।

डक्कारी—स्त्री०[स०] चडाल वीणा।

डग—पु०[डाँकना या अनु०] १ चलते या दौडते समय एक पैर को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।—भरना।—मारना।
२ उतना अवकाश या दूरी जितनी चलते या दौडते समय एक पैर एक बार उठाकर फिर रखने मे पार की जाती है।

डगक*—पु०[हि० डग+एक] एक या दो डग। एक या दो कदम। उदा०—डगकु डगति सी चलि ठठुठि चितई चली निहारि।—बिहारी।

डगडगाना†—अ०, स०=डगमगाना।

डगड़ी*—स्त्री०=डगरी। उदा०—डगडी गडती गड जाय मही।—निराला।

डगडोलना†—अ०, स०=डगमगाना।

डगडौर†—वि०[हि० डग+डोलना]=डाँवाँडोल।

डगण—पु०[स० मध्य०स०] पिंगल मे एक गण जिसमे चार मात्राएँ होती है।

डगना—अ०[हि० डग+ना (प्रत्य०)]१ डग भरना। कदम या पैर उठाकर चलना। २ डगमगाना। ३ अपने स्थान से इधर-उधर होना। हिलना। ४ चूक या भूल करना।
†अ०=डिगना।

डग-मग—वि० [हि० डग (कदम)+मग (मार्ग, अनु०)] १ मार्ग मे अर्थात् चलते समय जिसके कदम लडखडा रहे हो। २ जो बहुत अधिक हिल-डुल रहा हो। ३ (व्यक्ति) जो विचलित हो गया हो और इसी लिए कोई ठीक निश्चय न कर पाता हो।

पु० डगमगाने या अस्थिर रहने की अवस्था या भाव। उदा०—डगमग छाँडि दे मन बौरा।—कबीर।

डगमगना†—अ०=डगमगाना।

डगमगाना—अ०[हिं० डगमग+ना (प्रत्य०)]१ चलते समय मार्ग मे कदमो का ठीक प्रकार से न पडना। २ इस प्रकार हिलना-डुलना कि पैर ठीक प्रकार से न पडे। ३ (नाव आदि का) बहुत जोर से इधर-उधर हिलना-डुलना। ४ विचलित होना।

स०१ ऐसा काम करना जिससे कोई डगमग करने लगे। २ विचलित करना।

डगर—स्त्री०[हिं० डग=कदम] १ मार्ग। रास्ता। २ गाँव-देहात का छोटा और तग रास्ता।

डगरना†—अ०[हिं० डगर] डगर या रास्ता चलना।

डगरा—पु०[देश०][स्त्री० अल्पा० डगरी] बाँस की फट्टियो का बना हुआ छिछला बरतन। छाबडा। डलरा।

†पु०=डगर (रास्ता)।

डगराना—अ०=डगरना।

स० रास्ते पर चलाना या लगाना।

डगरिया†—स्त्री०[हिं० डगर का स्त्री० रूप] छोटा और तग रास्ता।

डगरी—स्त्री०=डगर।

डगा—पु०[हिं० डागा] वह लकडी जिससे डुग्गी बजाई जाती है। डाग।

†पु०=डग्गा।

डगाना†—स०=डिगाना।

डग्गर—पु०[स० तर्क्षु] भेडिये की तरह का एक मासाहारी हिंसक पशु।

वि० दे० 'डाँगर'।

डग्गा—पु०[हिं० डग] पतली और लबी टाँगोवाला दुबला घोडा।

†पु०=डगा।

डच—पु०[अ०] हालैण्ड का निवासी।

वि० हालैंड का। हालैंड-सबधी।

डट—पु०[देश०] निशाना।

डटना—अ०[हिं० डाट]१ किसी स्थान पर विशेषत उसकी सुरक्षा के लिए साहसपूर्वक खडे रहना। जैसे—युद्ध-भूमि मे सनिक डटे हुए थे।

पद—डटकर=(क) दृढता तथा साहसपूर्वक और सारा बल लगाकर। जैसे—ग्रामीणो ने चोरो का डटकर मुकाबला किया। (ख) अच्छी तरह। जैसे—उन्होने डटकर खाया।

†२ मार्ग मे किसी चीज के बाधक होने पर रुकना। जैसे—नदी की बालू पर चलती हुई नाव का डटना।

†३ ठहरना। रुकना। जैसे—गाडी का डटना। (व्रज)

*४ सुशोभित होना। भला लगना। उदा०—लटकि लटकि लटकतु चलतु डटतु मुकुट की छाँह।—बिहारी।

†स०[स० दृष्टि या हिं० डीठ] देखना।

डटाई—स्त्री०[हिं० डटाना]१ डटे हुए होने की अवस्था या भाव। २ डटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

डटाना—स०[हिं० डटना]१ डटने मे प्रवृत्त करना। २ ठहराना। रोकना। ३ एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना या भिडाना।

डट्टा—पु०[हिं० डाटना]१ हुक्के का नेचा। टेरुआ। २ वह ठप्पा जिससे छीट छापते है। साँचा। ३ दे० 'डाट'।

डडकना†—अ० [अनु०] १ जोर से शब्द उत्पन्न होना। २ बजना।

स० १ जोर से शब्द उत्पन्न करना। २ बजाना।

डडही—स्त्री०[देश०] एक तरह की मछली।

डडा†—पु०[?] बाँह पर पहनने का टाड नाम का गहना।

डड्ढार(ा)—वि०=डढार।

डढ़न*—स्त्री०[स० दग्ध, प्रा० डड्ढ] जलन। ताप।

डढना—अ०[हिं० डढन] १ जलना। तपना। २ बहुत दु खी या सन्तप्त होना।

डढ़ाना—स०[हिं० डढना]१ जलाना। २ बहुत दु खी या सतप्त करना।

डढार†—वि०=डढारा।

डढ़ारा—वि०[हिं० डाढ]१ डाढवाला। २ डाढी या दाढीवाला। ३ जिसकी डाढी या दाढी के बाल बहुत बडे या लबे हो। बडी और लबी दाढीवाला। ४ बहुत बलवान और साहसी।

डढ़ियल†—वि०=दढियल (दाढीवाला)।

डढ़ुआ†—पु०[स० दृढ] मोट मे मजबूती के लिए लगाया जानेवाला बर्रे, गेहूँ, चने आदि का तेल।

डढ्ढ—वि०[स० दग्ध]१ जला हुआ। २ तप्त। ३ बहुत दु खी और सतप्त।

डढ्ढ़ना—स०[स० दग्ध, प्रा० डड्ढ+ना (प्रत्य०)]१ जलाना। तपाना। २ बहुत दु खी और सतप्त करना।

डढ्योरा†—वि०=डढारा (दाढीवाला)।

डपट—स्त्री० [स० दर्प] १ डपटने की क्रिया या भाव। २ किसी को डाँटते-डपटते हुए कही जानेवाली कोई बात।

स्त्री० [हिं० रपट] १ खूब तेजी से आगे बढते रहने की क्रिया या भाव। २ घोडे की तेज चाल।

डपटना—स० [हिं० डपट] आज्ञा, आदेश आदि का न पालन करने पर, ठीक प्रकार से काम न करने पर अथवा अनधिकार या अनुचित चेष्टा करने पर किसी को दबाने के लिए क्रोधपूर्वक कटु बाते कहना।

अ० [हिं० रपटना] तेज दौडना।

डपोर-सख—पु० [अनु० डपोर=बडा+सख] १ ऐसा व्यक्ति जो बाते तो लबी-चौडी हाँकता हो पर करता कुछ भी न हो। २ डील-डौल का बडा, पर मूर्ख।

डप्पू—वि० [देश०] लबे-चौडे आकारवाला।

डफ—पु० [अ० दफ] १ एक तरह का बाजा जिस पर चमडा मढा हुआ होता है। २ लावनी गानेवालो का एक तरह का बाजा। चग।

डफर—पु० [अ० ड्राफ्टर] जहाज का एक तरफ का पाल।

डफला—पु० [अ० दफ] डफ नामक बाजा।

पु० [?] असम देश की एक जगली जाति।

डफली—स्त्री० [अ० दफ] छोटा डफ। खजरी।

कहा०—अपनी अपनी डफली अपना-अपना राग=वह स्थिति जिसमे किसी विषय पर सब लोगो के परस्पर विभिन्न मत हो।

डफार†—स्त्री० [अनु०] १ डफ के बजने का शब्द। २ गला फाडकर रोने-चिल्लाने से होनेवाला शब्द।

डफारना—अ० [अनु०] गला फाडकर चिल्लाना या रोना।

डफालची—पु०=डफाली।

डफाली—पु० [हिं० डफ] १ डफ बजानेवाला व्यक्ति। २ मुसलमानो का एक वर्ग जो डफ बजाने का पेशा करता है।

डफोरना—अ०=डफारना।

डब—पु० [हिं० डब्बा] १ कमर पर पहनी हुई धोती, लुगी आदि का पल्ला जिसमे रुपए-पैसे आदि लपेटकर रखे जाते है।

मुहा०—(कोई चीज) डब करना=(क) कमर मे खोसकर या और किसी प्रकार अपने अधिकार या हाथ मे करना। (ख) किसी को अपने अधीन या वश मे करना। **डब पकडकर कुछ कराना**=जोर से कुछ काम कराना। जैसे—रुपया कैसे नहीं देगा, डब पकडकर लूँगा।

२ जेब। ३ थैला। ४ वह चमडा जिससे कुप्पे बनाये जाते है।

डबकना—स० [हिं० डब] दबा या पीटकर कटोरी या कटोरे की तरह गहरा करना।

अ० १ शरीर के किसी अग मे टीस या रह-रहकर दरद होना। २ लँगडाकर चलना।

अ० [?] आँखो मे आँसू भर आना। डबडबाना।

डबकौहा—वि० [अनु०] [स्त्री० डबकौही] (नेत्र) जिसमे आँसू उतर या भर आये हो। डबडबाता हुआ।

डबडबाना—अ० [अनु०] (नेत्रो का) अश्रुपूर्ण होना। आँसुओ से भर आना।

डबरा—पु० [स० दभ्र=समुद्र या झील] [स्त्री० अल्पा० डबरी] १ गदे पानी का छिछला लबा गड्ढा। २ वह खेत जिसमे आस-पास का पानी आकर जमा होता हो और इसी लिए जो जडहन धान बोने के लिए उपयुक्त हो। ३ खेत का वह कोना जो जोताई मे यो ही या बिना जोता हुआ छूट गया हो।

डबरी—स्त्री० [हिं० डबरा] छोटा गड्ढा या ताल।

†स्त्री० दे० 'ढिबरी'।

डबल—वि० [अ०] १ दोहरा। २ दो-गुना। दूना।

पु० एक पैसे का ताँबे का पुराना सिक्का।

डबल रोटी—स्त्री० [अ० डबल+हिं० रोटी] खमीर उठाकर पकाई हुई एक प्रकार की बडी और मोटी रोटी। पाव रोटी।

डबला—पु० [देश०] मिट्टी का पुरवा। कुल्हड।

डबा†—पु०=डिब्बा।

डबिया†—स्त्री०=डिबिया (डिब्बी)।

डबिरना†—स० [देश०] भेडो को खेत से बाहर निकालना। (गडेरिये)

डबी—स्त्री०=डिब्बी।

डबुलिया†—स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोट पुरवा। कुल्हिया।

डबोना—स०=डुबाना।

डब्ब†—पु०=ढब।

डब्बल—पु०=डबल।

डब्बा—पु०=डिब्बा।

डब्बू—पु० [हिं० डिब्बा] खाने की चीजे रखने का एक प्रकार का डिब्बा या ढकनेदार कटोरा। कटोरदान।

डभकना†—अ० [अनु०] १ जल मे इस प्रकार बार-बार डूबना-उतराना कि डभ-डभ शब्द हो। २ इतना भर जाना कि बाहर निकलने लगे। छलकना। उदा०—बदन पियर जल डभकहि नैना।—जायसी। ३ जी भरकर कुछ खाना या पीना।

डभका—पु० [देश०] १ कुछ-कुछ भुना हुआ चना, मटर आदि। कोहरा। २ कूएँ का ताजा या तुरत का निकाला हुआ पानी।

डभकाना—स० [?] कोई चीज इस प्रकार पानी मे डुबाना कि डभ-डभ शब्द हो।

डभकौहा—वि० [अ०] [स्त्री० डभकौही] डभ-डभ शब्द करता हुआ। २ इतना भरा हुआ कि छलकने लगे। डबडबाता हुआ। जैसे—(आँसुओ से भरी हुई) डभकौही आँखे।

डभकौरी—स्त्री०=डुभकौरी।

डम—पु० [स० ड=भीति√मा (मापना)+क] पुराणानुसार लेट पिता और चाडाल माता से उत्पन्न एक वर्ण सकर जाति।

डमर—पु० [स० ड=त्रास+मर=मृत्यु, तृ० त०] १ दो गाँवो के बीच मे होनेवाली लडाई। २ उत्पात। उपद्रव। ३ हलचल। ४ भगदड।

डमरु—पु० [स० डम√ऋ (प्राप्ति)+कु] १ हाथ से हिलाकर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बीच मे पतला होता है और जिसके दोनो सिरे अधिक बडे तथा चौडे होते है और जिन पर चमडा मढा होता है।

विशेष—इसके बीच मे गाँठदार दो रस्सियाँ लगी रहती है जो चमडे पर आघात करती है जिससे शब्द उत्पन्न होता है।

२ उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी वस्तु जिसका बीचवाला भाग पतला और दोनो सिरे चौडे या मोटे हो। दे० 'डमरू-मध्य'। ३ दडक वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ लघुवर्ण होते है।

डमरुआ—पु० [स० डमरु] घेघा नामक रोग।

डमरुका—स्त्री० [स० डमरु+कन्—टाप्] हाथ की एक तरह की तान्त्रिक मुद्रा।

डमरु-मध्य—पु० [ब० स०] १ कोई ऐसा पदार्थ जिसका मध्य भाग डमरु के मध्य भाग की तरह पतला हो और दोनो सिरे अधिक चोडे, बडे या विस्तृत हो। जैसे—भूगोल मे जल-डमरु-मध्य, स्थल-डमरु मध्य। २ स्थल का वह पतला या सँकरा खड जिसके दोनो ओर लबे-चौडे भूखड हो। दे० 'स्थल-डमरु-मध्य'।

डमरु-यत्र—पु० [उपमि० स०] दो हँडियो के मुँह जोडकर बनाया जानेवाला एक उपकरण जिसका उपयोग धातुओ, ओषधो आदि के रस फूँकने मे होता है। (वैद्यक)

डमरू—पु० दे० 'डमरु'।

डयन—पु० [स० डी (उडना) +ल्युट्—अन] १. हवा मे उडने की क्रिया या भाव। उडान। २ पालकी।

पु० =डैना (पख)।

डर—पु० [स० दर] १ मन का वह क्षोभ या विकलता पूर्ण अनुभूति जो किसी प्रकार के उपस्थित या भावी कष्ट, विपत्ति, सकट आदि की आशका से होती है। २ किसी बडे या श्रद्धेय व्यक्ति से कुछ कहने अथवा उसके समक्ष उपस्थित होने के सबध मे होनेवाला सकोच। जैसे—दादा

से कुछ कहने मे डर लगता है। ३ भविष्य के सम्बन्ध मे किसी चिंता के कारण होनेवाली बेचैनी। आशका। जैसे—हमे डर है कि कही लडका खो न जाय। ४ वह चीज या बात जिससे कोई डरे अथवा किसी को डराया जाय। जैसे—बच्चे को मारना नही चाहिए, उसके लिए तो आँख का डर काफी है।

डर-डबर†—पु०=मेघ।

डरना—अ० [हिं० डर से] १ किसी उपस्थित या भावी कष्ट, विपत्ति, सकट आदि की आशका से क्षुब्ध तथा विकल होना। जैसे—बीमारी या मौत से डरना। २ सकोचपूर्वक कुछ करने या कहने से पीछे हटना। जैसे—कचहरी जाने से डरना। उदा०—जेहि तेहि भाँति डरो रहौ, परो रहौ दरबार।—बिहारी। ३ किसी चिंता के कारण बेचैन होना।

सयो० क्रि०—जाना।

*अ० [हिं० डलना] १=डलना (डाला जाना)। २ पडा रहना।

डरपना†—अ०=डरना।

डरपाना†—स०=डराना।

डरपोक—वि० [हिं० डरना+पोकना] जो (साहस के अभाव के कारण) बहुत जल्दी डर जाता हो। भीरु।

डरपोकना—वि०=डरपोक।

डरवाना—स०=डलवाना।

†स०=डराना।

डरा†—पु० [स्त्री० डरी] =डला। उदा०—छिनकु छ्वाइ छबि गुर-डरी छलै छबीलै छैल।—बिहारी।

डराकू†—वि०=डरपोक।

डरा-डरी†—स्त्री० [हिं० डर] बार-बार मन मे होनेवाला डर या भय।

डराना—स० [हिं० डरना] ऐसा काम करना जिससे कोई डर जाय। किसी के मन मे डर उत्पन्न करना।

†अ०=डरना।

डरापना*—वि०=डरावना।

स०=डरपाना (डराना)।

डरावना—वि० [हिं० डर+आवना (प्रत्य०)] [स्त्री० डरावनी] (चीज या बात) जो दूसरे के मन मे डर उत्पन्न करे। भय-कारक। जैसे—डरावनी आँखे, डरावनी रात।

†स०=डराना।

डरावा—पु० [हिं० डराना] १ ऐसी बात जो किसी को डराने या भयभीत करने के लिए कही जाय।

क्रि० प्र०—दिखाना।

२ पक्षियो आदि को डराकर फलदार वृक्षो, फसल आदि से दूर रखने के लिए बनाई जानेवाली विकराल आकृति।

डराहुक†—वि०=डरपोक।

डरिया†—स्त्री०=डलिया।

†स्त्री०=छोटी डार या डाल।

डरीला†—वि० [हिं० डार] जिसमे, डारे (डालें या शाखाएँ) हो। जैसे—डरीला पेड।

† वि०=डरपोक। जैसे—डरीला स्वभाव।

२—५९

डरैला—वि० [हिं० डर] १ डरानेवाला। डरावना। २ डरपोक।

डल—स्त्री० [स० तल्ल] १ झील। २ कश्मीर की एक प्रसिद्ध बहुत बडी झील का नाम।

†पु०=डला।

डलई†—स्त्री०=डलिया

डलक—पु० [स०] बडी डलिया।

डलना—अ० [हिं० डालना का अ० रूप] १ किसी आधान या पात्र में किसी चीज का गिराया, छोडा या रखा जाना। डाला जाना। पडना। २ किसी आधार या तल पर किसी चीज का गिराया या छोडा जाना। जैसे—बालो मे तेल डलना। ३ किसी चीज का दिया, रखा या सौंपा जाना। जैसे—(क) चिडियो को दाना डलना। (ख) शस्त्र या हथियार डलना। ४ किसी कार्य या बात का किसी के जिम्मे किया जाना। पडना। जैसे—किसी के सिर कोई भार डलना। ५ पहना या पहनाया जाना। ६ किसी चीज का लटकाया जाना। ७ लगना या लगाया जाना। ८ घुसाया या घुसेडा जाना। ९ किसी चीज के ऊपर उसको ढकने के उद्देश्य से कुछ ओढाया, पसारा या फैलाया जाना। १० अकित होना या किया जाना।

डलवा†—पु०=डला (बडी डलिया)।

डलवाना—स० [हिं० 'डालना' का प्रे०] डालने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ डालने मे प्रवृत्त करना।

डला—पु० [स० दल] [स्त्री० अल्पा० डली] किसी जमी हुई या ठोस चीज का टुकडा। जैसे—नमक या मिश्री का डला, पत्थर या मिट्टी का डला।

पु० [स० डलक] [स्त्री० अल्पा० डलिया] बाँस, बेत आदि की पतली फट्टियो या कमचियो से बनाया हुआ बडा आधान या पात्र जो प्राय थाल के आकार का होता है।

डलिया—स्त्री० [हिं० डला का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा डला या टोकरा। दौरी। २ एक प्रकार की तश्तरी।

डली—स्त्री० [हिं० डला का स्त्री० रूप] १ छोटा टुकडा या ढेला। खड। जैसे—नमक की डली। २ सुपारी।

स्त्री०=डलिया ('डला' का अल्पा० रूप)।

डल्लक—पु० [स०] बाँसो आदि का डला या दौरा।

डल्ला†—पु०=डला।

डवँरू—पु०=डमरु।

डवरा—पु० [?] एक तरह का कटोरा।

डवित्थ—पु० [स०] काठ का बना हुआ हिरन (खिलौना)।

डस—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की शराब। २ वह डोरी जिसमे तराजू के पलडे बँधे रहते है। ३ कपडे के थान का वह छोर जिसमे ताने-बाने के पूरे तागे नही कसे रहते। छीर। दसी।

†स्त्री०=डसन।

डसन—स्त्री० [हिं० डसना] १ डसने की क्रिया या भाव। २ डसने या डक मारने का ढग।

डसना—स० [स० दशन] १ किसी जहरीले कीडे का किसी को इस प्रकार काटना कि उसके शरीर मे जहर का प्रवेश हो जाय। जैसे—साँप का डसना। २ डक मारना।

डसवाना—स०=डसाना।
डसा†—पु० [सं० दश] डाढ। चौभड।
डसाना†—स० [हि० डसना का प्रे०] किसी को डसने मे प्रवृत्त करना।
†स० [हि० डासना] बिछौना बिछाना। उदा०—जागे पुनि न डसैहौ।—तुलसी।
डसी†—स्त्री० [?] १ पहचान कराने के लिए रखी या दी जानेवाली चीज। निशानी। २ याद कराने के लिए दी जानेवाली चीज। निशानी।
†स्त्री० दे० 'दसी'।
डस्टर—पु० [अ०] कुरसी, मेज, दरवाजो आदि की धूल झाडने का कपडा। झाडन।
डहँक—वि० [?] पाँच और एक। छ। (दलाल)
डहँक्षिलाय—वि० [?] सोलह। (दलाल)
डहकन—स्त्री० [हि० डहकना] डहकने की क्रिया या भाव।
†वि० जितना चाहिए उतना। भर-पूर। यथेष्ट।
डहकना—अ० [हि० डह-डह से] १ कलियो, फूलो आदि का विकसित होना। फूलना। २ शोभा से युक्त होकर अच्छी तरह चारो ओर फैलना। जैसे—पूर्णिमा की रात मे चाँदनी डहकना। ३ हुकार भरते हुए गरजना। ४ डह-डह शब्द करते हुए जोर से रोना। ५ किसी प्रकार के धोखे या लालच मे पडकर कष्ट या हानि उठाना। ठगा जाना।
स० १ छल या धोखा करना। भुलावे मे रखकर मूर्ख बनाना। २ ललचाकर भी न देना।
अ० [देश०] छितराना। फैलाना।
डहकाना—अ० [हि० डहकना] किसी के धोखे या भुलावे मे आकर कुछ गवाँना या अपनी हानि करना। ठगा जाना।
स० १ किसी को धोखे मे रखकर अपना लाभ करना। डहकना। (क्व०) २ कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर भी न देना।
डहडहा—वि० [डह-डह से अनु०] [स्त्री० डहडही] १ (पौधा) जो हरा-भरा हो। जो सूखा या मुरझाया हुआ न हो। २ (व्यक्ति) जो खूब प्रसन्न हो। ३ टटका। ताजा।
डहडहाट*—स्त्री० [हि० डहडहा] १ डहडहे होने की अवस्था या भाव। २ हरियाली। ३ प्रसन्नता।
डहडहाना—अ० [हि० डहडहा] १ हराभरा होना। लहलहाना। २ आनदित या प्रफुल्लित होना।
स० १ लहलहा या हरा-भरा करना। जैसे—एक ही वर्षा ने पेड, पौधो को डहडहा दिया। २ आनन्दित या प्रफुल्लित करना।
डहडहाव—पु०=डहडहाट।
डहन—पु० [सं० उड्डयन=उडना] डैना। पख। पर।
†पु०=दहन।
†स्त्री०=डाह। (क्व०)
डहना—अ० [सं० दहन] १ जलना। भस्म होना। २ कुढना। चिढना।
स० १ भस्म करना। जलाना। २ किसी के मन मे कुढन या डाह उत्पन्न करना। डाहना।
†पु०=डैना (पख या पर)।
डहर—स्त्री० [हि० डगर] १ पथ। मार्ग। रास्ता। २ आकाश-गगा।
डहरना—अ० [हि० डहर] १ रास्ता चलना। २ टहलना।
डहराना—स०=चलाना।
डहरिया†—स्त्री० १=डेहरी। २ दहलीज।
डहार*—पु० [हि० डाहना] १ ईर्ष्या करनेवाला व्यक्ति। ईर्ष्यालु। २ दुख देने या सतप्त करनेवाला व्यक्ति। ३ ऐसी घटना या बात जिससे कोई दुखी या सतप्त होता हो।
डहुडहु—पु० [सं० डहु-डहु, √दह् (जलाना)+कु, निपा० सिद्ध] १ लकुच। २ बडहर।
डाँक—स्त्री० [हि० दमक, दवँक] ताँबे या चाँदी का कागज की तरह का वह पतला पत्तर जो नगीनो के नीचे उनकी चमक बढाने के लिए लगाया जाता है।
स्त्री० [हि० डाँकना] १ डाँकने या लाँघने की क्रिया या भाव। २ कै। वमन।
†स्त्री०=डाक।
†पु० १=डक। २=डका।
डाँकना—स० [सं० √तक से] १ रास्ते मे पडी हुई किसी चीज अथवा होनेवाले किसी गड्ढे को कूदते हुए लाँघना। २ (खेल मे) किसी रोक को दौडते तथा कूदते हुए पार करना। जैसे—रस्सी डाँकना। ३ बीच का कुछ अश छोडते हुए उसके आगे या पार जाना।
अ० [हि० डाँक] वमन करना। उलटी करना।
डाँग†—स्त्री० [सं० टक] १ किसी चीज का ऊपरी बडा या भारी भाग। २ पहाड की ऊँची चोटी। ३ पहाडी। ४ जगल। वन। ५ उछल-कूद। ६ छलाँग। फलाँग। ७ कोई उद्देश्य सिद्ध होने का अवसर या सुयोग जिसकी प्रतीक्षा मे रहा जाय। ताक। (बुन्देल०) उदा०—सागर सिंह इसी डाँग मे है।—वृन्दावनलाल। ८ बहुत बडा डडा या लाठी। सोटा। (पश्चिम)
डाँगर—वि० [?] १ इतना दुबला-पतला कि शरीर की हड्डियाँ तक दिखाई दे। २ बेवकूफ। मूर्ख।
पु० १ चौपाया। ढगर। २ मरा हुआ पशु या उसकी लाश। (पूरब) ३ एक प्रकार की छोटी जाति।
डाँगा—पु० [सं० दडक] १ जहाज के मस्तूल मे रस्सियो को फैलाने के लिए आडी लगी हुई धरन। २ लगर के बीच का मोटा छड। (लश०)
डाँट—स्त्री० [सं० दान्ति=दमन, वश] १ किसी को डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। २ क्रोध मे आकर कही जानेवाली ऐसी कडी बात जो भविष्य मे किसी को सचेत रखने के लिए कही जाय।
क्रि० प्र०—बताना।
३ उक्त प्रकार की बाते करते हुए किसी की उच्छृखलता, उद्दडता आदि नियत्रित रखने के लिए उसके साथ किया जानेवाला आतकपूर्ण व्यवहार। जैसे—लडको को डाँट मे रखना।
क्रि० प्र०—मानना।
मुहा०—किसी को डाँट मे रखना=वश या शासन मे रखना।

डाँटना—स० [हिं० डाँट से] क्रोध मे आकर किसी दोषी को कोई कडी बात ऊँचे स्वर मे कहना।
स० क्रि० —देना।

डाँठ—पु० [स० दड] डठल।

डाँड़—पु० [स० दडक, प्रा० दडअ] १ लडकी का डडा विशेषत सीधा डडा। जैसे—झडे का बाँस, छत की धरन आदि। २ किसी चीज मे उसे चलाने, पकडने आदि के लिये लगा हुआ डडा। दस्ता। हत्था। ३ नाव खेने का डाँड। ४ गदका। ५ कोई ऐसी चीज जो एक सीध मे चली गई हो। जैसे—रेखा, मेड, रीढ की हड्डी आदि। ६ करघे मे वह ऊँची लकडी जिसमे ऊरी फँसाई जाती है। ७ ऊँचा स्थान। ८ समुद्र का ढालुआँ रेतीला किनारा। ९ सीमा। हद। १० वह मैदान जिसमे का जगल कट गया हो। ११ कमर। १२ क्षति-पूर्ति के रूप मे दिया जानेवाला धन या वस्तु। दड। १३ अर्थ-दड। जुरमाना। १४ दे० 'कट्ठा' (लम्बाई का मान)।

डाँड़ना—स० [हिं० डाँड+ना (प्रत्य०)] अर्थ-दड से दडित करना। जुरमाना करना।
†स०=डाँटना।

डाँडर—पु० [हिं० डाँठ] बाजरे की फसल कट जाने पर खेत मे बची रह जानेवाली उसकी खूँटी।

डाँडा—पु० [हिं० डाँड] १ डडा। २ वह बडा डडा जिसके आगे चप्पू लगा रहता है और जिसकी सहायता से नाव खेते या चलाते है। डाँडा। ३ सीमा। हद।
पद—डाँडा मेंड़ा=। (देखे) **होली का डाँडा**= लकडियो और घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली की रात को जलाने के लिए पहले से ही अपने गाँव या मुहल्ले की सीमा पर इकट्ठा किया जाता है।
४ समुद्र का ढालुआँ रेतीला किनारा। (लश०)

डाँडा-मेंडा—पु० [हिं० डाँड+मेड] १ खेत, गाँव आदि की वह सीमा या हद जिस पर डाँडा या मेड बनी हो। २ ऐसी स्थिति जिसमे न तो विशेष आर्थिक लाभ ही हो और न विशेष हानि ही। जैसे—हम तो समझते थे कि इस सौदे मे बहुत घाटा होगा, पर चलो, डाँडे-मेडे रह गये। ३ बीच की ऐसी स्थिति जिसमे आपस के लडाई-झगडे का उतना ही अवकाश या सभावना हो जितना अवकाश खेतो या डाँडो का साथ-साथ या एक ही जगह पडने से होता है।

डाँडा-मेंडी—स्त्री०=डाँडा-मेडा।

डाँडा-सहेल—पु० [देश०] साँपो की एक जाति।

डाँडी—स्त्री० [हिं० डाँड] १ पतली लबी लकडी। २ वृक्ष आदि की पतली लबी शाखा। टहनी। ३ पौधो का वह लबा डठल जिसमे फूल, फल आदि लगते है। ४ व्यवहार मे लाये जानेवाले उपकरणो का वह पतला लबोतरा अश, जिसे पकडकर उस उपकरण को चलाया या हिलाया-डुलाया जाता है। जैसे—कलछी या पखे की डाँडी। ५ तराजू की डडी। ६ हिंडोले मे की वे चारो लकडियाँ या डोरी की लडे जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है। ७ डडे मे बँधी हुई एक तरह की झोली के आकार की पहाडी सवारी। झप्पान। ८ जुलाहो की वह लकडी जो चरखी की थवनी मे डाली जाती है। ९ शहनाई का वह निचला भाग जिसमे से हवा बाहर निकलती है। १० सीधी रेखा। ११ मर्यादा। १२ चिडियो के बैठने का अड्डा। उदा० —औ सोनहा सोने की डाँडी।—जायसी। १३ अनवट नामक गहने का वह भाग जो दूसरी और तीसरी उँगलियो के बीच मे रहता है और उसे घूमने से रोकता है।
पु० १ डाँड खेनेवाला आदमी। (लश०) २ सुस्त आदमी।

डाँढ़री—स्त्री० [स० दग्ध, हिं० डाढा] मटर की भुनी हुई फली।

डाँबरा—पु० [स० डिंब] [स्त्री० डाँबरी] लडका। बेटा। पुत्र।

डाँबरू—पु० [हिं० डाँबरा] १ लडका। पुत्र। २ बाघ का बच्चा।
†पु०=डमरु।

डाँबू—पु० [देश०] दलदल मे होनेवाला एक तरह का नरकट।

डाँभना†—स०=दागना।

डाँरी†—स्त्री०=डोली।

डाँवरा—पु० [स्त्री० डाँवरी] =डाँबरा।

डाँवाँ-डोल—वि० [डाँवाँ (अनु०)+हिं० डोलना] १ साधारणतया अचल या स्थिर रहनेवाली वस्तु के सबध मे, जो सहसा किसी आघात के फलस्वरूप इधर-उधर हिलने-डुलने लगे। जैसे—हिलोर के कारण नाव या भूकप के कारण पृथ्वी का डाँवाँडोल होना। २ व्यक्ति अथवा उसके चित्त के सबध मे, जो अधिक चिंतित या भावुक होने के कारण किसी निश्चय तक न पहुँच पाता हो। ३ स्थिति के सबध मे, जिसमे दो विभिन्न पक्षो मे सतुलन न होने के कारण किसी परिणाम का ठीक-ठीक अनुमान न होता हो। जैसे—व्यापार का डाँवाँडोल होना।

डांशपाहिड—पु० [देश०] सगीत मे रुद्रताल के ग्यारह भेदो मे से एक जिसमे ५ आघात के पश्चात् एक-एक शून्य होता है।

डाँस—पु० [स० दश] १ बडा मच्छर। दश। २ एक तरह की मक्खी जो पशुओ को काटती तथा उन्हे तग करती है। ३ कुकरौछी।

डाँसर—पु० [देश०] इमली का बीज। चीयाँ।

डा—पु० [अनु०] सितार का एक बोल। उदा०—डा डिड डा डा डा डा डा।

डाइन—स्त्री० [स० डाकिनी] १ भूत-प्रेत योनि की स्त्री। भूतनी। २ वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से कोई मर जाता हो या बीमार पड जाता हो। टोनहाई। ३ कुरूपा और डरावनी स्त्री। ४ बहुत ही दुष्ट प्रभाववाली तथा क्रूर स्त्री।

डाक—स्त्री० [हिं० डाँकना] १ डाँकने की क्रिया या भाव। २ सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमे हर पडाव पर बराबर जानवर या यान आदि बदले जाते हो।
मुहा०—डाक बैठाना=शीघ्र यात्रा के लिए स्थान-स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना। **डाक लगना**=(क) शीघ्र सवाद पहुँचाने या यात्रा करने के लिए मार्ग मे स्थान-स्थान पर आदमियो या सवारियो का प्रबन्ध होना। (ख) किसी चीज के आने या जाने का क्रम बराबर चलता रहना। **डाक लगाना**=डाक बैठाना।
३ पत्रो, बडलो आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने की सरकारी व्यवस्था। ४ उक्त व्यवस्था द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने या पहुँचाया जानेवाला पत्र या सामग्री।
स्त्री० [अनु०] कै। वमन।
स्त्री० [स० डक्क या ब० डाकिबा] १ पुकार। २ नीलाम की बोली।

पु०[अ०] बदरगाह का वह विशिष्ट अश जहाँ जहाजो पर का माल लादा-उतारा जाता है। गोदी।

डाक-खाना—पु०[हिं० डाक+फा० खान] वह सरकारी कार्यालय या उसका भवन जो डाक द्वारा चिट्ठियाँ आदि बाहर भेजवाने तथा बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ आदि बँटवाने की व्यवस्था करता है।

डाक-गाडी—स्त्री०[हिं०] वह रेल-गाडी जो साधारण गाडियो से बहुत तेज चलती है, केवल बडे-बडे स्टेशनो पर रुकती है तथा जिसमे डाक लाने ले जाने की भी व्यवस्था होती है।

डाकघर—पु०=डाकखाना।

डाक-चौकी—स्त्री०[हिं०] १ प्राचीन तथा मध्य काल मे वह स्थान जहाँ कई स्थानो या प्रदेशो के हरकारे चिट्ठियाँ लाते थे तथा अन्य स्थानो से आई हुई चिट्ठियाँ छाँटकर ले जाते थे। २ वह स्थान जहाँ डाक के घोडे, सवारियाँ आदि आगे जाने के लिए बदली जाती थी।

डाकना—स०[हिं० डाँकना] फाँदना। लाँघना।
अ० कै करना। वमन करना।
†स०[हिं० डाक] १ पुकारना। २ नीलाम के समय दाम की बोली बोलना।

डाक-बँगला—पु०[हिं०] वह सरकारी भवन जो मुख्य रूप से दौरे पर जानेवाले सरकारी अधिकारियो के ठहरने के लिए बने होते है।

डाक-महसूल—पु०[हिं० डाक+अ० महसूल] डाक के द्वारा कोई चीज भेजने का महसूल।

डाकर—पु०[देश०] १ सूखे हुए तालो की चिटखी तथा सूखी मिट्टी। †२ कडी किंतु उपजाऊ भूमि।

डाक-व्यय—पु०[हिं० डाक+स० व्यय]वह व्यय जो डाक द्वारा कोई चीज भेजने पर करना पडता हो। डाक-महसूल।

डाका—पु०[हिं० डाकना=कूदना वा स० दस्यु] दल-बल-सहित बल-पूर्वक तथा डरा-धमकाकर लूट-मार करने के लिए किया जानेवाला धावा।
क्रि० प्र०—पडना।—मारना।

डाकाजनी—स्त्री०[हिं० डाका+फा० जनी] डाके डालने का काम।

डाकिन—स्त्री०=डाकिनी।

डाकिनी—स्त्री० [स०ड (त्रास) √अक् (वक्रगति)+णिनि—ङीप्] १ एक पिशाची या देवी जो काली के गणो मे समझी जाती है। २ भूत या प्रेत योनि की स्त्री।

डाकिया—पु०[हिं० डाक+इया (प्रत्य०)] वह सरकारी कर्मचारी जो घर-घर डाक द्वारा आई हुई चिट्ठियाँ आदि पहुँचाने का काम करता है।

डाकी—स्त्री०[हिं० डाक] वमन। कै।
वि० [?] १ बहुत अधिक खानेवाला। २ प्रचड।

डाकू—पु०[हिं० डाकना या स० दस्यु] वह व्यक्ति जो दूसरो के यहाँ पहुँचकर और उन्हे डरा-धमकाकर या मार-पीटकर उनसे अवैध रूप से धन छीन लेता हो।

डाकोर—पु०[स० ठक्कुर, हिं० ठाकुर] १ ठाकुर। देवता। २ विष्णु भगवान। (गुजराती)

डाक्टर—पु०[अ०] १ किसी विद्या या विषय का आचार्य या पूर्ण पडित। २ उक्त प्रकार के आचार्य या पूर्ण पडित की उपाधि। ३. लोक-व्यवहार मे वह व्यक्ति जो पाश्चात्य शैली से रोगियो की चिकित्सा करता हो। ४ वह व्यक्ति जिसे उक्त प्रकार की उपाधि मिली हो।

डाक्टरी—स्त्री० [अ० डाक्टर+ई (प्रत्य०)] १ डाक्टर होने की अवस्था, पद या भाव। २ डाक्टर का काम या पेशा। ३ पाश्चात्य ढग की चिकित्सा-प्रणाली या उसका शास्त्र।

डाक्तर—पु०=डाक्टर।

डाख†—पु०=ढाक (पलाश)।

डाग—स्त्री०[स० दडक] डुग्गी, ढोल, नगाडा आदि बजाने की लकडी।
मुहा०—डाग देना=डुग्गी,नगाडे आदि पर चोट लगाकर उनसे शब्द उत्पन्न करना।

डागरि—स्त्री०=डगर।

डागा—पु०=डाग।

डागुर—पु०[देश०] जाटो की एक जाति या वर्ग।

डाच—पु० [?] मुँह। मुख। उदा०—बबक्कत डाच कितेकन बैन। मनो बड बक्कर टक्कर मैन।—कविराजा सूर्यमल।

डाट—स्त्री०[स० दान्ति] १ दीवार या ऐसी ही किसी और चीज को गिरने से बचाने या रोकने के लिए सामने या बेडे बल मे लगाई जानेवाली चाँड या रोक। २ किसी चीज का छेद या मुँह बन्द करने के लिए उसमे कसकर जमाई, बैठाई या लगाई जानेवाली वस्तु। ३ वह ईंट या पत्थर जो मेहराब के बीचो-बीच दोनो ओर की ईंटो आदि को यथा-स्थान दृढतापूर्वक जमाये रखने के लिए लगाया जाता है।
क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।
४ मेहराब बनाने का वह प्रकार जिसमे दोनो ओर अर्ध-गोलाकार रूप मे ईंटे जोडी या बैठाई जाती है।
†स्त्री० दे० 'डाँट'।

डाटना—स०[हिं० डाट+ना (प्रत्य०)] १ दीवार आदि को गिरने से रोकने के लिए उसमे डाट लगाना। टेक लगाना। २ किसी चीज का छेद या मुँह डाट लगाकर बद करना। ३ एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु अच्छी तरह जमाकर बैठाना या स्थिर करना। जैसे—किसी की ओर निगाह डाटना। ४ कोई चीज अदर घुसाने या धँसाने के लिए उस पर भरपूर दबाव डालना। ५ कसकर ठूसना, दबाना या भरना। ६ खूब अच्छी तरह पेट भरकर कोई चीज खाना। (व्यग्य) ७ ठाठ से या शान दिखलाने के लिए कपडे, गहने आदि पहनना। जैसे—अँगरखा या अँगूठी डाटना। (व्यग्य)
अ० १ डटकर सामने बैठना। २ ठाठ या वेष बनाना।
स० दे० 'डाँटना'।

डाड़ना—स० दे० 'डाँडना'।
अ० दे० 'दहाडना'।

डाढ़†—स्त्री०=दाढ।

डाढ़ना†—स०[स० दग्ध,प्रा०डड्ढ+ना (प्रत्य०)]=दाहना(जलाना)।

डाढ़ा—पु० [स० दग्ध प्रा० डड्ढ] १ दावानल। वन की आग। २ अग्नि। आग। ३ जलन। ताप। ४ दे० 'दाह'।
†पु०=दाढा (बडी दाढी)।

डाढ़ी†—स्त्री०=दाढी। (देखे)

डाढ़ीजार†—पु० दे० 'दारी-जार'।

डाण†—पु०=डाँड (दड या अर्थ-दड)।

डाब†—स्त्री०=डाभ।

डाबक—वि०=डाभक।

डाबर—पु०[स० दभ्र=समुद्र या झील] १ वह गड्ढा या नीची जमीन जिसमे आस-पास का पानी विशेषत बरसाती पानी आकर जमा होता हो। झाँवर। ऐसी जमीन धान के लिए उपयुक्त होती है। २ छोटा तालाब। ३ गदा या मैला पानी। ४ चिलमची नामक पात्र जिसमे हाथ-मुँह धोने का पानी रहता है।
†वि० १ गँदला। २ मटमैला।
पु० डावरा।

डाबर-नैनी—वि० [हिं०] बडी-बडी और सुदर आँखोवाली (स्त्री)।

डाबा†—पु०[स्त्री० डाबी] =डिब्बा।

डाबी—स्त्री०[?] १ फसल का दसवाँ अश जो मजदूरी के रूप मे काटने-वाले मजदूर को दिया जाता है। २ कटी हुई घास, पुआल आदि का पूला।
†स्त्री०=डिबिया।

डाभ—स्त्री०[स० दर्भ] १ ऊसर भूमि मे होनेवाली एक तरह की घास। २ कुश। दर्भ। ३ आम के वृक्ष के वे आरभिक अकुर जो कुछ समय बाद मजरी के रूप मे आते है। टोस। मौर। ४ आम की ढेपनी या मुँह से निकलनेवाला तीखा रस। चोप। उदा०—जो लहि अबहि डाभ न होई।—जायसी। ५ कच्चा नारियल जिसके अन्दर का पानी बहुत गुणकारक और स्वादिष्ट होने के कारण पीया जाता है।
†पु०[हिं० डब=कमर] कमर मे बाँधा जानेवाला परताला।

डाभक†—वि० [अनु० डभक-डभक से अनु०] कूएँ से तुरत का निकाला हुआ। ताजा। जैसे—डाभक पानी।

डाभर—पु०=डाबर(बरसाती पानी का गड्ढा)।

डाम—पु०=दाम।

डामचा—पु०[देश०] वह मचान जिस पर बैठकर जगली पशु-पक्षियो से फसल की रक्षा की जाती है।

डामर—पु०[स०] १ शिव-प्रणीत माना जानेवाला एक तत्र, जिसके छ भेद है—योग डामर, शिव डामर, दुर्गा डामर, सारस्वत डामर, ब्रह्म डामर और गधर्व डामर। २ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का चक्र जिसके द्वारा दुर्ग के शुभाशुभ फल जाने जाते थे। ३ धूम-धाम। ४ आडबर। ५ ठाठ-बाट। ६ हलचल। ७ चमत्कार। ८ उन-चास क्षेत्रपाल भैरवो मे से एक भैरव का नाम। ९ साल वृक्ष का गोद। राल। १० दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का सफेद गोद। ११ एक प्रकार की छोटी मधु-मक्खी। १२ उक्त छोटी मधु-मक्खियो के छत्ते से निकलनेवाला एक प्रकार का गोद या राल। १३ अलकतरा।
†पु० दे० 'डामल'।
पु०=डाबर (बरसाती पानी का गड्ढा)। उदा०—यह सच है कि मनो-हर बोला तुम उथले पानी के डामर।—पन्त।

डामल—पु०[अ० दायमुल्दब्स] १ सदा के लिए बदी बनाकर रखने की सजा। २ अपराधियो को दिया जानेवाला देश-निकाले का दड।

डामाडोल—वि०=डाँवाँडोल।

डामिल—पु०=डामल।

डायँ डायँ—क्रि० वि०[अनु०] बिना किसी काम या प्रयोजन के। व्यर्थ। जैसे—दिन भर डायँ-डायँ घूमते रहना।

डायन—स्त्री०=डाइन।

डायरी—स्त्री०[अ०] दैनिकी।

डार†—स्त्री०=डाल।
स्त्री०[स० डलक] डलिया।

डारना†—स०=डालना।

डारा—पु०[हिं० डाल] १ वह रस्सी जिस पर कपडे लटकाये या सुखाये जाते है। २ किसी प्रकार का आधार या आश्रय। सहारा।
मुहा०—(किसी के) डारे लगना=किसी के सहारे पर चलना या होना।
उदा०—सौंधे के डारे लगी, अली, चली सँग जाइ।—बिहारी।

डारियास—पु०[देश०] बाबून बदर की एक जाति।

डारी—स्त्री०=डार।

डाल—स्त्री०[स० दारु=लकडी] १ पेड-पौधे आदि के तने मे से निकला हुआ बडा अग जिसमे फल, फूल आदि लगते है। टहनी। शाखा।
पद—डाल का टूटा=(क) डाल से पककर गिरा हुआ (फल)। (ख) बिलकुल तुरत या हाल का। बिलकुल नया आया हुआ। ताजा। जैसे—डाल का टूटा हुआ स्नातक। (ग) जिसे अभी तक विशेष अनुभव या ज्ञान न हुआ हो। (घ) अनोखा। विलक्षण। **डाल का पका**=(फल) जो पेड की डाल मे लगे रहने की दशा मे पका हो। उससे उतारकर पाल मे न पकाया गया हो।
२ किसी चीज मे से निकली हुई उक्त आकार-प्रकार की कोई शाखा। जैसे—झाड या फानूस की डाल जिसमे गिलास लगाये जाते है। ३ तलवार का फल जो शाखा के रूप मे आगे की ओर निकला रहता है। ४ मध्य भारत और मारवाड मे पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।
स्त्री० [स० डलक, हिं० डला] १ फल-फूल आदि रखने की डलिया। चँगेरी। २ वे कपडे, गहने, फल आदि जो विवाह के समय किश्तियो, चँगरो आदि मे सजाकर लडकीवालो के यहाँ वधू के लिए भेजे जाते है।

डालना—स०[हिं० तलन] १ किसी आधान या पात्र मे कोई चीज कुछ ऊँचाई से गिराना, छोडना, फेकना या रखना। जैसे—(क) गिलास मे पानी डालना (ख) कडाही मे घी डालना। २ किसी आधान या पात्र मे कोई चीज प्राय सुरक्षा के उद्देश्य से भरना या रखना। जैसे—(क) झोले मे पुस्तके या बोरे मे गेहूँ डालना। (ख) सदूक मे कपडे डालना। (ग) कैदी को जेल मे डालना। ३ कोई चीज किसी आधार या तल पर गिराना, छोडना या फेकना। जैसे—(क) पेड की जड मे पानी डालना। (ख) सिर या बालो मे तेल डालना। ४ कोई चीज किसी को देने या सौपने के उद्देश्य से उसके आगे रखना या गिराना। जैसे—(क) विजयी के आगे हथियार डालना। (ख) कुत्ते या बिजली को रोटी डालना। ५ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई काम या बात किसी के जिम्मे करना। जैसे—किसी पर खरच या काम का बोझ डालना। ६ कोई चीज किसी को पहनाना। जैसे—(क) हाथ मे चूँडियाँ या पैर मे जूता डालना। (ख) कन्या का वर के गले मे जय-माल

डालना। ७ कोई चीज किसी पर से या किसी मे लटकाना। जैसे—(क) पेड की डाली जर झूला डालना। (ख) पानी निकालने के लिए कूएँ मे बाल्टी डालना। ८ कोई चीज किसी मे लगाना। जैसे—आँखो मे काजल या सुरमा डालना। ९ घुसाना। घुसेडना। १० किसी चीज को ढकने के लिए उसके ऊपर कोई दूसरी चीज फैलाना। जैसे—(क) सिर पर चादर डालना। (ख) आग पर पानी या राखी डालना। ११ वस्त्र आदि फैलाना। जैसे—(क) बिछे हुए गद्दे पर चादर डालना। (ख) टगने पर सूखने के लिए गीली धोती डालना। १२ (स्त्री को रखेली के रूप मे) घर मे रख लेना। १३ परित्याग करना। १४ पशुओ के सम्बन्ध मे गर्भपात करना। १५ किसी मद या विभाग मे सम्मिलित करना। जैसे—खाते मे किसी के नाम रकम डालना।

विशेष—सयोज्य क्रिया के रूप मे 'डालना' कुछ सकर्मक क्रियाओ के साथ लगकर यह सूचित करता है कि कर्त्ता वह काम या क्रिया पूरी तरह से समाप्त करके उससे अलग या निवृत्त हो चुका है अथवा वह काम या चीज उसने अपने से बिलकुल अलग या दूर कर दी है। जैसे—खा डालना, दे डालना, बेच डालना, मार डालना आदि।

डालर—पु०[अ०] एक अमेरिकन सिक्का जो भारतीय ३ रुपयो से कुछ अधिक मूल्य का होता है।

डाला†—पु०[हिं० डला] बडी चँगेर या डलिया।

डाला छठ—स्त्री०[हिं०] कार्तिक शुक्ला छठ, जिस दिन बडी चँगेर मे फल आदि रखकर उदित होते हुए सूर्य की पूजा की जाती है।

डालिम—पु०=दाडिम (अनार)।

डाली—स्त्री०[हिं० डाला या डला] १ छोटा डला या डाला। डलिया। २ वह डलिया जिसमे कोई चीज विशेषत फल, फूल, मिठाइयाँ आदि रखकर किसी के यहाँ उपहार या भेंट स्वरूप भेजी जाती हैं। ३ उक्त प्रकार से भेजा जानेवाला उपहार या भेंट।

क्रि० प्र०—भेजना।—लगाना।

४ दाँई हुई फसल का अनाज हवा मे उडाकर भूसे से अलग करने की क्रिया या भाव। ओसाने या बरसाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

स्त्री०[हिं० डाल] वृक्ष की छोटी या पतली टहनी।

डावँ†—पु०[हिं० दाँव का पुराना रूप] १ दाँव। बाजी। २ अवसर। मौका। उदा०—राम भगति बिनु जम कौ डाव।—कबीर।

डावड़ा—पु०[देश०] पिठवन। पृश्नपर्णी।

पु०[स्त्री० डावडी] =डावरा (लडका)।

डावरा—पु०[स० डिंब ?] [स्त्री० डावरी] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लडका।

डास—पु०[देश०] चमारो का एक औजार जिससे वे चमडे का निचला भाग खुरचकर साफ करते है।

डासन—पु०[स० दर्भ, हिं०डाभ+आसन] १ वह चीज जिसे बिछाकर उसके ऊपर बैठा जाय। २ बिछौना। ३ शय्या।

पु०[हिं० डसना] वह जो डसे अर्थात् सर्प। उदा०—डासन डासन भयउ पियारी।—जायसी।

डासना—स० दे० 'बिछाना'।

स०=डसना।

डासनी—स्त्री०[हिं० डासन] चारपाई। शय्या।

डाह—स्त्री०[स० दाह] १ मन मे होनेवाली वह जलन जो ईर्ष्याजन्य हो। २ ईर्ष्या। (देखें)

डाहना—स० [स० दाहन] १ किसी के मन मे डाह उत्पन्न करके उसे दुखी करना। २ बहुत अधिक कष्ट देना या दुखी करना। दाहना।

डाहुक—पु०[देश०] टिटिहरी की तरह का एक जल-पक्षी।

डिंगर—पु०[स० डगर+पृषो० सिद्ध] १ मोटा आदमी। २ दुष्ट या नीच प्रकृति का आदमी। ३ गुलाम। दास।

पु० दे० 'ठिगुरा'।

डिंगल—स्त्री०[?] मध्ययुग मे राजस्थान मे बोली जानेवाली एक भाषा जिसमे यथेष्ट साहित्य मिलता है।

वि०[स० डिंगर] दूषित और नीच।

डिंगसा—पु०[देश०] एक तरह का चीड (वृक्ष)।

डिंडस—पु० [स० टिडिश] टिंडा। डेडसी।

डिंडिभ—पु०[स०] जल मे रहनेवाला साँप। डेडहा।

डिंडिम—पु०[स० डिंडि√मा (मापना)+क] १ पुरानी चाल की एक प्रकार की डुग्गी। २ करौंदे की झाडी और उसका फल।

डिंडिमी—स्त्री०=डिंडिम।

डिंडिर—पु०[स०=हिंडिर, पृषो० सिद्धि] १ समुद्र फेन। २ पानी की झाग।

डिंडिर-मोदक—पु०[स० उपमि० स०] १ गाजर। २ लहसुन।

डिंडिश—पु०[स०] टिंडा। डेडसी।

डिंब—पु०[स०√डिंब् (प्रेरणा)+घञ्] १ भयभीत होकर मचाई जानेवाली पुकार। २ दगा। फसाद। ३ कोलाहल। शोर। ४ तिल्ली। प्लीहा। ५ फुफ्फुस। फेफडा। ६ गेद। ७ पक्षियो, मछलियो आदि का अडा। ८ स्त्री के गर्भ की वह आरभिक अवस्था जिसमे जीव केवल अडे के रूप मे रहता है। ९ गर्भाशय।

डिंब-युद्ध—पु०[मध्य० स०] लोगो मे होनेवाली आपसी मार-पीट या लडाई। (सैनिक युद्ध से भिन्न)

डिंबाशय—पु०[स०] स्त्री जाति के जीवो मे वह भीतरी अग जिसमे डिंब रहता या उत्पन्न होता है।

डिंबाहव—पु०[डिंब-आहव, मध्य० स०]=डिंब-युद्ध।

डिंबिका—स्त्री० [स०√डिंब्+ण्वुल्-अक् टाप्, इत्व] १ मदमाती स्त्री। मस्त औरत। २ श्योनाक। सोनापाढा।

डिंभ—पु०[स०√डिंभ् (प्रेरणा)+अच्] १ छोटा बच्चा। २ छौना। शावक। ३ मूर्ख। ४ एक प्रकार का उदर रोग।

†पु०=दभ।

डिंभक—पु०[स० डिंभ+कन्]छोटा बच्चा।

डिंभचक्र—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का तान्त्रिक चक्र जिसकी सहायता से शुभाशुभ फल जाने जाते है।

डिंभिया—वि०[स० दभ, हिं० डिंभ] १ पाखडी। २ घमडी।

डिकामाली—स्त्री०[देश०] एक तरह का पेड जिसका गोंद ओषधि के रूप मे काम मे लाया जाता है।

डिक्करी—स्त्री०[स० डिक्क√रा (देना)+ क—ङीप्] युवती।

डिक्की—स्त्री० [हिं० धक्का] १ मेढे द्वारा किया जानेवाला सीगो से आघात। २ आक्रमण। ३ वार।

डिक्री—स्त्री० दे० 'डिगरी'।

डिगना—अ० [हिं० डग] १ डग का चलते समय ठीक प्रकार से न पडना। २ इधर-उधर होना। हिलना-डुलना। ३ निश्चय, विचार आदि से इधर-उधर होना। विचलित होना। †४ गिरना। (पश्चिम)

डिगमिगाना—अ०=डगमगाना।

डिगरी—स्त्री० [अ० डिक्री] १ किसी अधिकारी की दी हुई आज्ञा या किया हुआ निर्णय। २ लोक व्यवहार मे, दीवानी न्यायालय का वह निर्णय या फैसला जिसमे यह कहा जाता है कि अमुक पक्ष दूसरे पक्ष से इतना धन पाने अथवा अमुक सम्पत्ति लेने का अधिकारी है।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

पद—डिगरीदार। (देखे)

मुहा०—डिगरी जारी करना=अदालत के फैसले के मुताबिक किसी जायदाद पर कब्जा करने या प्रतिपक्षी से प्राप्य धन प्राप्त करने की विधिक प्रक्रिया करना या कराना। **डिगरी देना**=दीवानी न्यायालय का किसी के पक्ष मे यह निर्णय करना कि इसे प्रतिपक्षी से अमुक सम्पत्ति या इतना धन मिले।

पद—जर डिगरी=वह रकम जिसके सम्बन्ध मे किसी को दीवानी न्यायालय से डिगरी मिली हो।

स्त्री० [अ०] १ किसी प्रकार के क्रम या शृखला मे का कोई निश्चित विभाग। अश। कला। जैसे—ज्वर (या तापमान) १०२ डिगरी है। २ विश्वविद्यालय की वह उपाधि या प्रमाण-पत्र जो इस बात का सूचक होता है कि अमुक व्यक्ति अमुक सज्ञावाली उच्च परीक्षा मे उत्तीर्ण हो चुका है।

डिगरीदार—पु० [अ० डिक्री+फा० दार] वह व्यक्ति जिसके पक्ष मे दीवानी अदालत की डिगरी हुई हो।

डिगलाना†—स०=डिगाना।

†अ० १ =डिगना। २ =डगमगाना। उदा०—डिगत पानि डिगुलात गिरि लखि सब ब्रज बे-हाल।—बिहारी।

डिगवा—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

डिगाना—स० [हिं० डिगना का स०] १ ऐसा काम करना जिससे कोई डिगे। किसी को डिगने मे प्रवृत्त करना। विचलित करना। २ किसी को अपने वचन, स्थान आदि से हटाकर इधर-उधर करना। ३ ऐसा काम करना जिससे किसी का आसन या पद डगमगाने या हिलने-डुलने लगे।

सयो० क्रि०—देना।

डिग्गी—स्त्री० [स० दीर्घिका, बँग० दीघी=बावली या तालाब] छोटा तालाब। पोखरा। जैसे—लाल डिग्गी।

स्त्री० [हिं० डिगना?] साहस। हिम्मत।

†स्त्री० दे० 'डुग्गी'।

डिठार—वि० [हिं० डीठ=नजर] जिसकी डीठ या दृष्टि ठीक और पूरा काम करती हो। जिसे अच्छी तरह दिखाई देता हो।

डिठियार (ा)—वि०=डिठार।

डिठोहरी—स्त्री० [हिं० डिठी+हरना] एक प्रसिद्ध जगली वृक्ष जिसके फल के बीज को तागे मे पिरो कर बच्चो के गले मे उन्हे नजर से बचाने के लिए डाला जाता है।

डिठौना—पु० [हिं० डीठ] बच्चो के माथे पर उन्हे कुदृष्टि से बचाने के लिए लगाई जानेवाली काली बिंदी।

डिड़ई—पु० [देश०] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

डिडका—स्त्री० [स० डिड+कन्-टाप्] मुँहासा।

डिडकारी*—स्त्री० [हिं० ढाड] ढाड मारकर रोने की क्रिया।

डिड़वा—पु०=डिडई।

डिड़सी—स्त्री०=डेडसी।

डिडिका—स्त्री० [स०] एक रोग जिसमे युवावस्था मे ही सिर के बाल सफेद होने लगते है।

डिढ़†—वि०=दृढ (पक्का)।

डिढ़ाना*—स० [हिं० डिढ] १ दृढ अर्थात् पक्का या मजबूत करना। २ विचार आदि निश्चित करना। ठानना।

†अ० दृढ अर्थात् पक्का या मजबूत होना।

डिढ़्या—स्त्री० [स० तृष्णा] १ ऐसी उत्कट तृष्णा या लोभ जिसकी जल्दी तृप्ति न होती हो। २ लोभ-पूर्ण दृष्टि। लालच भरी निगाह।

डित्थ—पु० [स०] १ काठ का बना हुआ हाथी। २ ऐसा व्यक्ति जिसमे कुछ उत्कृष्ट और विशिष्ट लक्षण हो।

डिपटी—पु० [अ०] १ नायब। २ किसी बडे अधिकारी का अधीनस्थ और मुख्य सहायक अधिकारी।

डिपार्टमेंट—पु० [स०]=विभाग।

डिपो—स्त्री० [अ०] गोदाम।

डिबिया—स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा डिब्बा।

डिबिया टँगड़ी—स्त्री० [?] कुश्ती का एक पेच जो उस समय किया जाता है जब जोड (विपक्षी) कमर पर होता है और उसका दाहिना हाथ कमर पर लिपटा होता है।

डिब्बा—पु० [स० डिब=गोला] [स्त्री० अल्पा० डिबिया, डिब्बी] १ टीन, लकडी आदि का बना हुआ ढक्कनदार छोटा आधान। २ रेलगाड़ी मे की कोई एक गाडी। जैसे—माल या सवारी गाडी का डिब्बा।

डिभगना†—स० [देश०] १ किसी को अपनी ओर आकृष्ट या मोहित करना। २ छलना। ठगना।

†अ० १ =डगमगाना। २ =डिगना।

डिम—पु० [स०] एक प्रकार का रूपक या नाटक जिसमे इद्रजाल, क्रोध, लडाई आदि के दृश्य होते हैं।

डिमडिमी—स्त्री०=डुग्गी।

डिमाई—स्त्री० [अ०] छापे जानेवाले कागजो की कई नापो मे से एक जिसमे कागज की लबाई साढे बाईस इच और चौडाई साढे सत्रह इच होती है।

डिमोक्रेसी—स्त्री० [अ०] लोक-तत्र। (दे०)

डिला—पु० [देश०] गीली भूमि मे होनेवाली एक तरह की घास।

पु० [स० दल] ऊन का लच्छा।

डिलिवरी—स्त्री० [अ०] डाक, रेल आदि विभागो मे बाहर से आई हुई

चिट्ठियाँ या पारसल ऐसे लोगो को दिया जाना जो उन्हे पाने या लेने के अधिकारी हो।

डिल्ला—पु० [स०] १ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ और अत मे भगण होता है। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण (।।S) होते है। इसे तिलका, तिल्ला और तिल्लाना भी कहते है।

पु० [स० डेल्ल] बैलो के कधे पर का उभरा हुआ मोटा भाग। कुब्बा। ककुत्थ।

डिसमिस—वि० [अ० डिस्मिस्ड] १ (मुकदमा) जो खारिज कर दिया गया हो। २ (व्यक्ति) जो नौकरी, पद या सेवा से हटा दिया गया हो।

डिहरी—स्त्री० [देश०] १. कालीनो या गलीचो की बुनावट मे लगनेवाली ६००० गाँठो का एक मान जिसके अनुसार उनका मूल्य निर्धारित किया जाता है। २ अनाज भरकर रखने का मिट्टी का एक प्रकार का ऊँचा और बडा पात्र।

डिहुला—पु० [हि० डीह=गाँव] [स्त्री० डिहुली] (गाँव मे साथ रहनेवाला)। सगी। सखा। साथी। (मिथिला)

डींग—स्त्री० [स०डीन] १ अपने बल, योग्यता, साहस आदि के सम्बन्ध मे अभिमानपूर्वक बहुत बढा-चढाकर कही जानेवाली बात। सीट। (ब्रेग, ब्रेवेडो)

क्रि० प्र०—मारना। —हाँकना।

मुहा०—डीग की लेना=बहुत बढ-बढकर डीग भरी बाते कहना।

डींभू—पु० [?] बरें। भिड। (राज०)

डीक—स्त्री० [देश०] आँखो का जाला नामक रोग।

डीकरा*—पु० [स० डिभक] [स्त्री० डीकरी] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लडका।

डीठ—स्त्री० [स० दृष्टि] १ दृष्टि। नजर। निगाह।

मुहा०—(किसी की) डीठ बाँधना=जादू, मत्र आदि के बल से ऐसी अवस्था उत्पन्न करना कि किसी को कुछ का कुछ दिखाई पडे। (अन्य मुहावरो के लिए देखे आँख, नजर और निगाह के मुहा०)

२ देखने की शक्ति। ३ अतर्दृष्टि। ज्ञान-चक्षु। ४ ऐसी दृष्टि जो किसी अच्छी चीज पर पडकर उसकी अच्छाई या गुण नष्ट अथवा कम कर दे। नजर।

मुहा०—(किसी को) डीठ लगना=नजर लगना।

डीठना†—अ० [हि० डीठ+ना (प्रत्य०)] दृष्टिगोचर होना। दिखाई पडना।

स०=देखना।

डीठ-बध—पु० [स० दृष्टिबध] १ ऐसी माया या जादू जिससे सामने की घटना या चीज के बदले कोई और ही घटना या चीज दिखाई दे। इद्र जाल। नजरबदी। २ वह जो उक्त प्रकार का इद्रजाल या माया प्रत्यक्ष रूप मे दिखाता हो। नजर-बदी।

डीठि—स्त्री०=डीठ।

डीठि-मूठि†—स्त्री० [हि० डीठि+मूठ] किसी को मुग्ध या मोहित करने के लिए मत्र पढते हुए मोहक दृष्टि से देखने की क्रिया या भाव।

डीन—पु० [स०√डी (उडना)+क्त] १ चिडियो आदि की उडान। २ चिडियो की एक विशिष्ट प्रकार की उडान। ३ उडने से होनेवाला शब्द।

डीनक—वि० [स० डायक] उडनेवाला।

डीबी—स्त्री० [?] १ शक्ति। २ कुडलिनी।

†स्त्री०=डिबिया।

डीबुआ†—पु०=ढेउआ (पैसा)।

डीम (ी)—पु०=ढेला।

डीमडाम†—स्त्री०=टीम-टाम।

डील—पु० [?] १ जीव-जन्तुओ, मनुष्यो आदि के शरीर की ऊँचाई, लबाई-चौडाई या विस्तार।

पद—डील-डौल। (देखे)

२ सख्या के विचार से प्राणियो, व्यक्तियो आदि के शरीर का वाचक शब्द। जैसे—चार डील बैल। ३ व्यक्तित्व। जैसे—जितने डील, उतनी बाते।

डील-डौल—पु० [हि०] १ बनावट या रचना के विचार से जीव-जतुओ, प्राणियो आदि के शरीर का विस्तार। २ देह। शरीर।

डीला—पु० [देश०] एक प्रकार का नरकट जो पश्चिमोत्तर भारत मे होता है।

पु०=डिल्ला।

डीली*—स्त्री०=दिल्ली (नगरी)।

डीह—पु० [हि०] १ आबादी। बस्ती। २ छोटा गाँव। ३ उजडे हुए गाँव का भग्नावशेष। उदा०—ढहकर जैसे बन रहा डीह।—प्रसाद। ४ टीला। ५ वह स्थान जहाँ ग्राम-देवता का पूजन होता है। ६ पूर्वजो का निवास-स्थान।

डीहदारी—स्त्री० [हि० डीह+फा० दारी] एक प्रकार का हक जो उन जमीदारो को मिलता था जो अपनी जमीन बेच डालते थे।

डुग†—पु० [स० तुग=ऊँचा] १ ढेर। राशि। २ टीला।

डुड†—पु० [स० दड] १ पेड की ऐसी सूखी डाल जिसमे पत्ते आदि न हो। २ दे० 'ठूँठ'।

डुडु—पु०=डुडुभ।

डुडुभ—पु० [स० डुडु√भा (प्रतीत होना)+क] जल मे रहनेवाला एक तरह का साँप जिसमे बहुत कम विष होता है। डेडहा साँप।

डुडुल—पु० [स० डुडु√ला (लेना)+क] छोटा उल्लू।

डुब—पु० [स०] डोम (जाति)।

डुंबर—पु० [स० डुब] १ आडबर। २ डबर।

डुक—पु० [अनु०] घूँसा। मुक्का।

डुकरिया†—स्त्री०=डोकरी (डोकरा का स्त्री०)।

डुकिया—स्त्री०=डोकी (काठ आदि का तेल रखने का छोटा प्याला)।

डुकियाना—स० [हि० डुक] १ घूँसे मारना। २ खूब मारना।

डुक्कर†—पु० [स० दुष्कर] कठिन या मुश्किल काम।

डुगडुगाना—स० [अनु०] चमडा मढे बाजे को लकडी से बजाकर डुगडुग शब्द उत्पन्न करना।

अ० उक्त प्रकार से डुग डुग शब्द उत्पन्न होना।

डुगडुगी—स्त्री० [अनु०] चमडा मढा हुआ। एक प्रकार का छोटा बाजा जिससे डुग डुग शब्द निकलता है। डुग्गी। डोडी।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

मुहा०—डुगडुगी फेरना=डुगडुगी बजाते हुए चारो ओर सब को सार्वजनिक रूप से कोई सूचना देना। मुनादी करना।

डुगा—पु०=डगा (नगाडा बजाने का डडा)। उदा०—किछु कहि तबल दइ डुगा।—जायसी।

डुगी—स्त्री०=डुगडुगी।

डुग्गी—स्त्री०=डुगडुगी।

डुडा†—पु० [स० दादुर] मेढक।

डुडका—पु० [देश०] धान की फसल मे होनेवाला एक रोग।

डुड़हा—पु० [हिं० डांड] खेत मे की दो नालियो (बरहो) के बीच की मेड।

डुपटना†—स० [हिं० दो+पट] १ कपडा या और कुछ दोहरा करना। दो परत करना। २ चुनना। चुनियाना।

डुपट्टा—पु०=दुपट्टा।

डुबकी—स्त्री० [हिं० डूबना] १ जल मे प्रविष्ट होने की ऐसी क्रिया कि सारे अग जल मे छिप जायँ। २ जल मे एक स्थान से गोता लगाकर दूसरे स्थान पर निकलने की क्रिया या भाव। ३ पानी मे दिया या लगाया जानेवाला गोता। ४ बीच मे अचानक या अनियमित रूप से होनेवाली अनुपस्थिति या गैरहाजिरी।

मुहा०—डुबकी मारना या लगाना=बीच मे अचानक कुछ समय के लिए अनुपस्थित या गायब हो जाना। जैसे—यह दूधवाला प्राय कई-कई दिनो की डुबकी लगा जाता है।

डुबडुभी—स्त्री०=दुदुभी। उदा०—बाजा बाजइ डुबडुभी।—नरपति नाल्ह।

डुबवाना—स०[हिं० डुबाना का प्रे०] किसी को कुछ डुबाने मे प्रवृत्त करना। डुबाने का काम किसी से कराना।

डुबाना—स० [हिं० डूबना का स०] १ ऐसा काम करना जिससे कोई चीज डूब जाय। जैसे—नाव या पत्थर डुबाना। २ जीव को इस प्रकार जल या जलाशय मे प्रविष्ट करना या कोई ऐसी क्रिया करना जिस के फलस्वरूप वह डूबकर मर जाय। ३ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसा काम करना जिससे कोई चीज नष्ट या समाप्त हो जाय अथवा उस पर गहरा आघात लगे। जैसे—घर, धन या प्रतिष्ठा डुबाना।

डुबाव—पु० [हिं० डूबना] १ डूबने या डुबाने की क्रिया या भाव। २ पानी की इतनी गहराई जिसमे कुछ या कोई डूब जाय। जैसे—आदमी भर का डुबाव, हाथी का डुबाव।

डुबोना†—स०=डुबाना।

डुब्बा—पु०[हिं०डूबना] वह जो कूएँ, नदी आदि मे डुबकी लगाकर उसके तल की चीजे निकालने का काम करता हो। पनडुब्बा।

डुब्बी—स्त्री० १.=डुबकी। २=पनडुब्बी (नाव)।

डुभकौरी—स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की धूप आदि मे सुखाई हुई बरी जिसे पीठी ही के झोल मे डालकर पकाया जाता है।

डुमई—स्त्री [देश०] नदी, समुद्र आदि के किनारे की गीली और नीची भूमि मे होनेवाला एक प्रकार का चावल।

डुलना—अ० [हिं० डोलना] १ किसी स्थान पर जमी, बैठी या लगी हुई अथवा किसी अवस्था मे स्थित किसी चीज का थोडा-बहुत इधर-उधर होना। जैसे—यह पत्थर अभी तक अपने स्थान से डुला नही।

पद—हिलना-डुलना। (देखे)

२ किसी चीज का किसी उद्देश्य से बार-बार हिलाया जाना। ढुरना। जैसे—चँवर या पखा डुलना।

डुलाना—स० [हिं० डोलना का स०] १ किसी को डोलने अर्थात् अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होने मे प्रवृत्त करना। २ कोई पदार्थ बार-बार गति मे लाना या हिलाना। चलाना। जैसे—चँवर या पखा डुलाना। ३ किसी प्राणी को चलने-फिरने मे प्रवृत्त करना। घुमाना या टहलाना। ४ किसी का मन चचल, चलायमान या विचलित करना। जैसे—किसी का चित्त या मन डुलाना।

डुलि—स्त्री० [स० दुलि, पृषो० सिद्धि] कछुई। कच्छपी।

डुलिका—स्त्री० [स० डुलि√कै (प्रतीत होना)+क—टाप्] खजन की तरह की एक चिडिया।

डुली—स्त्री० [स० डुलि+ङीष्] चिल्ली नाम का साग। लाल पत्ते का बथुआ।

डूंगर—पु० [फा० दाग] [स्त्री० अल्पा० डूँगरी] १ छोटी पहाडी। २ टीला। ३ ककड-पत्थर और मिट्टी आदि का ऊँचा या बडा ढेर। ढूह। भीटा।

डूंगरफल—पु० [हिं० डूंगर+फल] बदाल या देवदाली का फल जो बहुत कडुआ होता है।

डूंगरी—स्त्री० [हिं० डूंगर का स्त्री० अल्पा०] छोटी सी पहाडी।

डूंगा—पु० [स० द्रोण] १ चम्मच। चमचा। २ एक ही काठ मे से खोद कर बनाई हुई नाव। (लश०) ३ गोले के रूप मे लपेटा हुआ रस्सा।

पु० १.=डोगा। २=डूंगर।

स्त्री० [?] सगीत मे २४ शोभाओ मे से एक।

डूंजा†—स्त्री० [देश०] आँधी। तेज हवा। (डिं०)

डूंडा—वि० [हिं० टुडा] १ (पशु) जिसका एक सीग टूट गया हो और एक ही बच रहा हो। २ हर तरह से दुर्दशाग्रस्त या नष्ट-भ्रष्ट। उदा०—कुछ दिनो मे हरा-भरा बगाल डूंडा हो गया।—निराला।

डूक—स्त्री० [देश०] पशुओ के फेफडे मे होनेवाला एक रोग।

स्त्री० [हिं० डूकना] डूकने अर्थात् चूकने की क्रिया या भाव। चूक।

डूकना†—स० [स० त्रुटि+करण] गलती या भूल करना। चूकना।

डूब—स्त्री० [हिं० डूबना] १ डूबने की क्रिया या भाव। २. डुबकी। गोता।

डूबना—अ० [डुब डुब से-अनु०] १ जल या तरल पदार्थ मे व्यक्ति अथवा किसी चीज का इस प्रकार स्थित होना कि उसका कोई अग या अश उससे बाहर न निकला रहे। जल मे पूरी तरह से समाना। जैसे—समुद्र मे जहाज डूबना, नदी की बाढ से खेत डूबना। २ जीवो के सबध मे, जल मे इस प्रकार समाना कि प्राण निकल जायँ। जैसे—उनका लडका तालाब मे डूब गया था।

मुहा०—डूब मरना=निंदनीय आचरण करने के कारण मुँह दिखाने के योग्य न रह जाना। जैसे—तुम्हारे लिए यह डूब मरने की बात है।

३ उक्त के आधार पर नष्ट होना। जैसे—घर, नाम या रकम डूबना।

मुहा०—डूबा नाम उछालना=फिर से प्रतिष्ठा प्राप्त करना।

४ ग्रह, नक्षत्रो आदि के सबध मे, अस्त होना या क्षितिज के नीचे हो जाना। जैसे—सूर्य या तारो का डूबना। ५ दिन का पूरी तरह से अत

या समाप्ति तक पहुँचना। ६ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी कार्य या व्यापार मे मग्न या लीन होना। जैसे-प्रेम या भक्ति मे डूबना।

मुहा०—डूबना उतराना=रह-रहकर चिता मे मग्न होना।

७ दुःख, निराशा, रोग आदि के कारण हृदय का बैठा जाना। ऐसा जान पडना कि हृदय मे अब शक्ति नही रह गई और वह अपना काम अभी बद कर देगा।

डेंडसी—स्त्री० [स० टिडिश] १ ककडी की तरह की एक लता जिसमे छोटे गोल फल लगते है। २ उक्त लता के फल जिनकी तरकारी बनती है। टिडा।

डेडढ़ा†—वि०=ड्योढा।

डेडढ़ी†—स्त्री०=ड्योढी।

डेक—पु० [अ०] लकडी के तख्तो आदि की बनी हुई जहाज की पाटन।

पु० [?] बकायन। महानिब।

डेग—पु० १ दे० 'देग'। २ दे० 'डग'।

डेगची†—स्त्री०=देगची।

डेडरा—पु० [स० डुडुभ] मेढक।

डेड़हा—पु० [स० डुडुभ] जलाशयो मे रहनेवाले और अल्प विषैले साँपो की सज्ञा।

डेढ़—वि० [स० अध्यर्द्ध, प्रा० डिवड्ढ] मान, मात्रा, सख्या आदि की किसी एक इकाई और उसकी आधी इकाई के योग का सूचक विशेषण। जैसे—डेढ गज, डेढ दिन, डेढ सेर आदि।

मुहा०—डेढ़ ईंट की जुदा मसजिद बनाना=अक्खडपन के कारण सब से अलग काम करना या रहना। **डेढ़ चावल की खिचड़ी पकना**=अपना तुच्छ या अमान्य विचार या कार्य सबसे अलग रखना या चलाना। **(किसी का) डेढ़ चुल्लू लहू पीना**=बहुत ही कठोर दड देना। (क्रोध-सूचक उक्ति)

पद—डेढ़ गाँठ=धागे, डोरी आदि की लगाई जानेवाली एक पूरी और उसके ऊपर एक आधी गाँठ जो आवश्यकता पडने पर बहुत सहज मे खोली जा सकती है।

डेढ़ खम्मन—स्त्री० [हिं० डेढ+फा० खम] एक प्रकार की गोल रुखानी।

डेढ़ खम्मा—पु [हिं० डेढ+फा० खम=टेढा] हुक्के का एक प्रकार का नैचा जिसमे कुलफी नही होती।

डेढ़-गोशी—पु० [हिं० डेढ+फा० =गोशी] मध्य युग मे एक प्रकार का बहुत छोटा पर मजबूत जहाज।

डेढ़ा—वि०=ड्योढा।

पु०=ड्योढा (पहाडा)।

डेढ़िया—पु० [देश०] सुगधित पत्तोवाला एक प्रकार का ऊँचा पेड जो दारजिलिंग, सिकिम, भूटान आदि मे पाया जाता है।

स्त्री० [हिं० डेढ] १ स्त्रियो की चादर या धोती का आँचल। (पूरब) २ दे० 'डेढी'।

डेढ़ी—स्त्री० [हिं० डेढ] वह लेन-देन या व्यवहार जिसमे उधार ली हुई वस्तु डेढ गुनी मात्रा मे चुकानी या वापस करनी पडती है।

डेपूटेशन—पु० [अ०] किसी वर्ग या समुदाय का वह प्रतिनिधि मडल जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से कही जाता या भेजा जाता है। शिष्ट-मडल।

डेबरा†—वि० [हिं० डेरा=बायाँ] [स्त्री० डेबरी] (व्यक्ति) जो अधिकतर काम अपने बाएँ हाथ से ही करता हो।

डेबरी†—स्त्री० [देश०] खेत का वह कोना जो जोतने मे छूट जाता है। कोतर।

स्त्री०=ढिबरी।

डेमरेज—पु० [अ०] १ वह हरजाना जो माल भेजने या मँगानेवाले को उस दशा मे देना पडता है जब वह नियत समय के अन्दर जहाज, रेल, गाडी आदि पर अपना माल न लादे अथवा उस पर से उतार न ले जाय। २ आज-कल भारतीय रेलो मे, वह हरजाना जो रेलद्वारा माल मँगाने वालो को उस दशा मे देना पडता है जब कि वह नियत समय के अन्दर आया हुआ पारसल या माल न छुडा ले।

डेयरी—पु० [अ०] वह स्थान जहाँ दूध देनेवाले पशुओ को पाला जाता तथा उनका दूध, मक्खन आदि बेचा जाता है।

डेर—पु०=डर (भय)।

डेरा—पु० [?] १ पैदल यात्रा आदि के समय अस्थायी रूप से बीच मे ठहरने का स्थान। टिकान। पडाव। २ छाया आदि का प्रबध करके अस्थायी रूप से ठहरने के लिए किया जानेवाला आयोजन या व्यवस्था।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पडना।

पद—डेरा-डडा। (देखे)

मुहा०—डेरा डालना=(क) किसी स्थान पर अस्थायी रूप से ठहरने की व्यवस्था करना। (ख) कही जाकर इस प्रकार ठहर या बैठ जाना कि जल्दी उठाने या चलने का ध्यान ही न रहे।

३ ठहरने या रहने का स्थान। निवास स्थान। जैसे—उनका डेरा यहाँ से बहुत दूर है। ४ विशिष्ट रूप से वह स्थान जहाँ गाने-नाचने आदि का पेशा करनेवालो का दल या मडली रहती हो। जैसे—भाँडो या रडियो का डेरा। ५ खेमा। तबू। शामियाना। ६ शात और स्थिर रहने की अवस्था या भाव। उदा०—हृदै नहि डेरा सुधि खान की न पान की।—हठी।

पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा जगली पेड जिसकी लकडी सजावट के सामान बनाने के काम मे आती है। इसकी छाल और जड साँप काटने पर पिलाई जाती है। धरोली।

वि० [?] [स्त्री० डेरी]। बायाँ 'दाहिने' का उलटा। जैसे—डेरा हाथ।

डेरा-डडा—पु० [हिं०] वह खेमा, तबू या कनात तथा उसके साथ की रस्सियाँ, डडे, खूँटे आदि जिनके योग से डेरा तैयार किया या बनाया जाता है। डेरा डालने की आवश्यक सामग्री।

क्रि० प्र०—उखाडना।—उठाना। हटाना।

डेराना†—अ०=डरना।

†स०=डराना।

डेरी—स्त्री० [अ०]=डेयरी।

डेल—पु० [हिं० डला] १ बडी डलिया या झाबा, विशेषत ऐसा झाबा जिसमे बहेलिए फँसाई हुई चिडियाँ आदि बन्द करके रखते हैं। २ चिडियाँ फँसाने का जाल या झाबा। ३ मिट्टी का ढेला।

पु० [स० डुडुल] उल्लू पक्षी।

पु० [देश०] १ कटहल की तरह का एक बडा और ऊँचा पेड जिसकी

हीर की लकडी चमकदार और मजबूत होती है। २ वह भूमि जो जोत कर रबी की फसल के लिए खाली छोड दी जाय।

डेलटा—पु० [अ०] नदी के मुहाने का वह भू-भाग जिसमे नदी कई शाखाओ मे बँटकर समुद्र मे गिरती है।

विशेष—ऐसा भूभाग नदी द्वारा लाई हुई मिट्टी, रेत आदि से बन जाता और प्राय तिकोना-सा होता है।

डेला—पु० [स० दल] १ आँख मे का वह सफेद उभरा हुआ भाग जिसमे पुतली रहती है। आँख का कोआ। २ =ढेला।

पु० दे० 'ठेगुर'।

डेलिगेट—पु० [अ०] किसी शासन-सस्था आदि का वह प्रतिनिधि जो किसी प्रकार का अधिकार देकर कही भेजा जाता हो।

डेलिया—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसका फूल लाल और पीला होता है।

डेली†—स्त्री०=डलिया।

वि० [अ०] दैनिक।

डेवढ़—पु० [हि० ड्योढा] किसी उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि की ऐसी स्थिति जो विशेष युक्ति से उत्पन्न की गई हो।

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

वि०=ड्योढा।

डेवढ़ना—अ० [हि० डेवढ] १ डेढ गुना या ड्योढा होना। २ आँच पर पकने के समय रोटी का फूलकर बहुत-कुछ डेढ परतो के रूप मे होना।

स० १ डेढ गुना या ड्योढा करना। २ कपडे, कागज आदि को कई परतो मे मोडना। ३ रोटी पकाते समय उसे आँच पर इस प्रकार फुलाना कि मानो वह डेढ परतो की हो जाय।

डेवढ़ा—वि०, पु०=ड्योढा।

डेवढ़ी—स्त्री० १ =ड्योढी। २ =डेढी।

डेस्क—पु० [अ०] एक प्रकार की खानेदार छोटी चौकी जिस पर कागज, पुस्तक आदि रखकर लिखन-पढने का काम करते है।

डेहरी—स्त्री० [स० देहली] १ दीवार मे लगे हुए दरवाजे के चौखट की निचली लकडी और उसके आस-पास की जमीन। दहलीज। २ मूल निवास-स्थान।

स्त्री० [?] अनाज रखने का एक प्रकार का मिट्टी का छोटा बरतन।

डेहल—पु० [स० देहली] डेहरी। दहलीज।

डैगना—पु० [हि० डग] नटखट पशुओ के गले मे बाँधा जानेवाला बाँस या लकडी का डडा। ठेगुर।

डैन*—पु०='डैना'।

डैना—पु० [स० डड्डयन=उडना] १ चिडियो के दोनो ओर के वे अग जिनमे पर निकले होते है और जिन्हे फडफडाते हुए वे हवा मे उडते हैं। पक्ष। पखा। २ नाव खेने का डडा। डाँडा।

डैम—पु० [अ०] एक प्रकार की परम तिरस्कार-सूचक (अँगरेजी) गाली।

डैरूँ—पु०=डमरू।

डैश—स्त्री० [अ०] लिखते समय दो पदो, वाक्यो आदि के बीच मे खीची जानेवाली लबी बेडी रेखा। 'हाइफन' से कुछ बडा और उससे भिन्न, जिसका रूप यह है—।

डोंका†—पु०=घोघा।

डोंगर†—पु०=डुंगर (टीला)।

डोंगा†—पु० [स० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० डोंगी] १ बिना पाल की नाव। २ बडी नाव।

मुहा०—डोंगा पार होना=दे० 'बेडा' के अन्तर्गत 'बेडा पार होना' (मुहा०)।

डोंगी—स्त्री० [स० द्रोणी, पा०, प्रा० डोणी] १ एक प्रकार की छोटी खुली नाव। २ वह बरतन जिसमे लोहार तपा हुआ लोहा बुझाते है।

डोंड़ा—पु० [स० डड] १ बडी इलायची। २ दे० 'टोटा'। ३ दे० 'डोडा'।

डोंडी—स्त्री० १ =डोडी (डोडा का स्त्री० अल्पा०) २ =टोटी। ३ = डौंडी।

डोंब—पु०=डोम।

डोंबी—स्त्री० दे० 'बगाली' (बौद्ध तात्रिक साधना की वृत्ति)।

डोई—स्त्री० [हि० डोकी] १ लकडी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी कलछी। २ मालपूए की तरह की एक प्रकार की छोटी मीठी रोटी।

डोई फोडिया—पु० [हि० डोई+फोडना] १ एक प्रकार के साधु जो अपनी बात मनवाने के लिए पत्थर पर सिर तक पटकने लगते है। २ बहुत बडा दुराग्रही।

डोक—पु० [देश०] खजूर जो पककर पीली हो गई हो।

डोकर—पु०=डोकरा।

डोकरडो†—पु०=डोकरा।

डोकरा—पु० [स० दुष्कर, प्रा० डुक्कर?] [स्त्री० डोकरिया, डोकरी] १ बुड्ढा आदमी। २ पिता या दादा (जो बहुत बुड्ढा हो गया हो)।

डोकरिया†—स्त्री० [हि० 'डोकरा' का स्त्री० रूप] डोकरी।

डोकरी—स्त्री० [हि० डोकरा] १ बुड्ढी स्त्री। २ वृद्धा माता या दादी। ३ औरत। स्त्री। ४ कन्या। पुत्री। (क्व०)

डोका—पु० [स० द्रोणक] [स्त्री० अल्पा० डोकी] १ तेल, उबटन आदि रखने का लकडी का बना हुआ पुरानी चाल का कटोरा। २ पशुओ के खाने के लिए सूखे डठल।

डोगर—पु०=डूँगर।

†पु०=डोगरा।

डोगरा—पु० [हि० डोगर?] १ काँगडे, जम्मू आदि प्रदेशो मे बसी हुई एक प्रसिद्ध जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

डोगरी—स्त्री० [हि० डोगरा] डोगरे लोगो की बोली जो पजाबी की एक विभाषा है और 'टाकरी' लिपि मे लिखी जाती है।

डोडहथी—स्त्री० [हि० डाँडा+हाथ] तलवार। (डि०)

डोडहा†—पु०=डेडहा।

डोडा—पु० [देश०] [स्त्री० डोडी] कुछ विशिष्ट पौधो की बडी कली जिसमे उस पौधे के फल या बीज रहते है। बौडी। जैसे—पोस्ते या सेमल का डोडा।

डोड़ी—स्त्री० [हि० डोडा का स्त्री० अल्पा० रूप] १ छोटी डोडी। २. एक लता जो औषध के काम मे आती है।

डोडो—पु० [अ०] एक प्रकार की चिडिया जिसका वश अब समाप्त हो गया है। और इधर तीन सो वर्षो से कही देखी नही गई।

डोब—पु० [हिं० डुबना] किसी तरल पदार्थ मे कोई चीज डुबाने की क्रिया या भाव। जैसे—रगते समय कपडे को कई डोब देने चाहिए।
†पु०=डोम।

डोबना—स०=डुबाना।

डोभरी—स्त्री० [देश०] ताजा महुआ।

डोम—पु० [स०] [स्त्री डोमिनी, डोमनी] १ हिंदुओ मे एक अस्पृश्य जाति जो सारे उत्तरीय भारत मे पाई जाती है। २ इस जाति के लोग जो श्मशान पर रहकर मृतको के शवो के लिए आग देते है और पशुओ की लाशे उठाकर ले जाते है। २ गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति। मीरासी।

डोमकौआ—पु० [हिं० डोम+कौआ] गहरे काले रग का एक प्रकार का बडा कौआ।

डोमड़ा—पु० [हिं० डोम+डा (प्रत्य०)] डोम जाति का व्यक्ति। (उपेक्षा सूचक)

डोम-तमौटा—पु० [देश०] एक पहाडी जाति जो पीतल, ताँबे आदि का काम करती है।

डोमनी—स्त्री० [हिं० डोम] १ डोम जाति की स्त्री। २ गदे तथा घृणित काम करनेवाली स्त्री। ३ गाने-बजाने का पेशा करनेवाली डोम जाति की स्त्री।

डोमा—पु० [देश०] एक तरह का साँप।

डोमिन—स्त्री०=डोमनी।

डोर—स्त्री० [स० दोष√रा+ड, पृषो० सिद्धि] १ सूतो आदि का बटा हुआ पतला मजबूत मोटा तार।
मुहा०—डोर भरना=कपडे का किनारा कुछ मोडकर उसके अन्दर डोर रखना और तब उसे ऊपर से सीना।
२ गुड्डी, पतग आदि उडाने का वह तागा जिस पर माँझा लगा होता है। ३ किसी प्रकार का ऐसा क्रम जो तागे की तरह निरतर बहुत दूर तक चला गया हो। सूत्र।
मुहा०—(किसी को) डोर पर लगाना या लाना=(क) ठीक रास्ते पर लाकर प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल करना। (ख) परचाना। **(किसी की) डोर मजबूत होना**=जीवन का सूत्र दृढ होना। दीर्घ-जीवी होना। **(किसी पर) डोर होना**=किसी के प्रेम-सूत्र मे बँधकर प्राय उसके पीछे या साथ लगे फिरना।
४. आसरा। सहारा।

डोरक—पु० [स० डोर+कन्] डोरा। तागा। सूत्र।

डोरना—अ० [हिं० डोर] किसी की डोर या सहारे पर उसके साथ या पीछे चलना। उदा०—बैनन बचक ताई रची रति नैनन के सँग डोलति डोरी।—केशव।

डोरही—स्त्री० [देश०] बडी भटकटैया।

डोरा—पु० [स० डोरक] १ रूई, सन, रेशम आदि के सूतो का बटकर बनाया हुआ वह पतला धागा जो प्राय कपडे आदि सीने और छोटी-मोटी चीजे बाँधने के काम आता है। मोटा तागा। २ कोई ऐसी धारी, रेखा या लकीर जो उक्त खड की तरह दूर तक चली गई हो। जैसे—(क) कपडो की बुनावट मे अलग से धारियाँ या लहरिया दिखाने के लिए डाला जानेवाला डोरा। (ख) आँखो मे काजल या सुरमे का डोरा। ३ उक्त के आधार पर कोई गोलाकार पतली लबी धारी या रेखा। जैसे—भोजन के समय रसोई परोस चुकने पर दाल, भात आदि मे तपे हुए घी का दिया जानेवाला डोरा। ४ कोई ऐसा तथ्य या बात जिसका अनुसरण करने पर किसी घटना के रहस्य का पता लग सके या अनुसधान मे किसी प्रकार की सहायता मिले। सुराग। सूत्र। ५ आँखो की वे बहुत महीन लाल नसे जो साधारणत मनुष्यो की आँखो मे उस समय दिखाई देती है जब वे सोकर उठते या नशे, प्रेम आदि की उमग मे होते है। ६ उक्त के आधार पर प्रेम या स्नेह का बधन या सूत्र।
मुहा०—(किसी का) डोरा लगना=किसी के प्रेम-सूत्र के बन्धन मे पडना। **(किसी पर) डोरे डालना**=किसी को अपने प्रेम-पाश मे बाँधने के लिए उसके साथ बहुत ही मधुर या मृदुल आचरण अथवा व्यवहार करना।
७ नृत्य मे गरदन हिलाने की वह अवस्था जिसमे वह बहुत कुछ हवा मे लहराते हुए डोरे या सूत की तरह कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होती हो। ८ कलछी की तरह वह बरतन जिस मे नीचे बडा कटोरा और ऊपर खडे बल मे काठ का कुछ मोटा दस्ता या हत्था लगा होता है और इसी से कडाही मे से जलता हुआ घी, दूध, शीरा आदि निकालते है। ९ रहस्य सप्रदाय मे, श्वास या साँस।
पु० [हिं० ढोड] पोस्ते आदि का डोडा।

डोरिया—पु० [हिं० डोरा] १ एक प्रकार का सूती कपडा जिसकी बुनावट मे बीच-बीच मे कुछ मोटे डोरे या सूत होते है। २ कोई ऐसा कपडा जिसमे थोडी-थोडी दूर पर लबी धारियाँ हो। ३ जुलाहो का वह सहकारी लडका जो आवश्यकतानुसार डोरे उठाने का काम करता है।
पु० [हिं० डोर=सीधा क्रम या डोरियाना] एक पुरानी छोटी जाति जो राजाओ के शिकारी कुत्तो की देख-रेख करती और उन्ही कुत्तो की सहायता से शिकार का पता लगाती या पीछा करती थी।
पु० [?] एक प्रकार का बगला जो ऋतु के अनुसार अपने शरीर का रग बदलता है।

डोरियाना—स० [हिं० डोरी+आना (प्रत्य०)] १ डोरी से युक्त करना। २ (पशुओ को) डोरी से बाँधना या बाँधकर साथ ले चलना। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी को अपना अनुयायी और वशवर्ती बनाना।

डोरिहार—पु० [हिं० डोरी+हारा] [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा (गहने गूथनेवाला)।

डोरी—स्त्री० [हिं० डोरा] १ रूई, सन आदि के डोरो या तागो को बटकर बनाया हुआ वह बहुत लबा और डोरे या तागे से कुछ मोटा खड जो चीजे बाँधने आदि के काम मे आता है। रस्सी। जैसे—कूएँ से पानी निकालने या गठरी बाँधने की डोरी। २ कलाबत्तू रेशम आदि की उक्त प्रकार की वह रचना जो प्राय शोभा के लिए कपडो पर टाँकी या लगाई जाती है। ३ वे रस्सियाँ या रस्से जो जुलूसो, सवारियो आदि के आगे दोनो ओर कुछ दूरी तक लोग इसलिए लेकर चलते है कि आगे का बीचवाला रास्ता भीड-भाड से साफ रहे।
क्रि० प्र०—लगाना।—ले चलना।

४ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार का आकर्षण, पाश या बन्धन। जैसे—आखिर यमराज की डोरी से कब तक बचे रहोगे?

मुहा०—(किसी की) डोरी खींचना=किसी प्रकार के आकर्षण के द्वारा अपने पास बुलाना। जैसे—जब भगवती को दर्शन देना होगा, तब वे आप ही डोरी खीचेगी। **डोरी ढीली छोड़ना**=चौकसी या देख-रेख कम करना। थोडी-बहुत स्वतत्रता देना। जैसे—जहाँ डोरी ढीली छोडी कि बच्चा बिगडा। **(किसी की) डोरी लगना**=किसी की ओर बराबर ध्यान बँधा या लगा रहना जिसमे किसी प्रकार का आकर्षण हो। जैसे—अब तो घर की डोरी लगी है अर्थात् जल्दी घर पहुँचने की चिन्ता है।

५ कडाही आदि मे से खौलती हुई या गरम चीजे निकालने के लिए वह कटोरी जिसके ऊपर खडे बल मे मूठ लगी रहती है।

डोरी-डडा—पु० [हिं०] चित्र-कला मे, चित्र के हाशिए पर चारो ओर होनेवाला एक प्रकार का अकन जो फदेदार जालो के रूप मे होता है।

डोरे*—क्रि० वि० [हिं० डोर] किसी के सग। साथ-साथ।

डोल—पु० [स० दोल, हिं० डोलना] [स्त्री० अल्पा० डोलची] १ डोलने की क्रिया या भाव। जैसे—कुछ हिल-डोल किया करो। २ कोई हिलने-डुलनेवाली वस्तु। जैसे—झूला, पालना आदि। ३ डोली नाम की सवारी। ४ धार्मिक उत्सवो के समय निकलनेवाली चौकियाँ या विमान जिन पर देव मूर्तियाँ या अनेक प्रकार के दृश्य रहते थे। ५ लोहे का चौडे मुँहवाला एक प्रकार का बरतन जिसके द्वारा कूएँ से पानी खीचा जाता है। ६ जहाज का मस्तूल। (लश०)

वि० [हिं० डोलना] १ हिलता-डुलता हुआ। २ अस्थिर। चचल।

स्त्री० एक प्रकार की काली उपजाऊ मिट्टी।

डोलक—पु० [स०] ताल देने का एक प्रकार का पुराना बाजा।

डोलची—स्त्री० [हिं० डोल+ची (प्रत्य०)] १ छोटी डोल (पानी रखने का बरतन)। २ डोल के आकार की एक प्रकार की छोटी टोकरी।

डोल-डाल—पु० [हिं० डोलना+डाल अनु०] १ चलने-फिरने, हिलने-डुलने आदि की क्रिया या भाव। २ गाँव-देहातो मे, शौच आदि के लिए बाहर खेत या जगल मे जाने की क्रिया। (बुन्देल०)

डोलना—अ० [स० दोलन] १ किसी चीज का इधर-उधर आना-जाना या हिलना। जैसे—भूकप से पृथ्वी का डोलना। २ लटकती हुई चीज का इधर से उधर और उधर से इधर आते-जाते रहना। जैसे—घडी के लगर का डोलना। ३ किसी चीज के बने रहने की स्थिति मे अस्थिरता तथा शका होना। अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना। जैसे—आसन या सिहासन डोलना। ४ व्यक्ति अथवा उसके मन का किसी दूसरे मत या विचार की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होने लगना। मन का चलायमान या विचलित होना। ५ घूमना, चलना या टहलना।

पद—डोलना फिरना=इधर-उधर घूमना। चलना या टहलना।

६ कही से दूर चले जाना या हट जाना।

†स०=डुलाना।

†पु०=डोला (सवारी)।

डोलरी†—स्त्री० [हिं० डोल] खाट। चारपाई।

डोला—पु० [स० दोल यो दोलप] [स्त्री० अल्पा० डोली] १ पालकी की तरह की एक प्रसिद्ध चौकोर छाई हुई सवारी जिसे कहार उठाकर ले चलते है और जिस पर प्राय वधू बैठकर पहले-पहल ससुराल जाती है।

मुहा०—(किसी को) डोला देना=डोले पर बैठाकर अपनी कन्या को इस उद्देश्य से वर-पक्ष के घर भेजना कि वही वर के अभिभावक वर के साथ उसका विवाह कर लें।

विशेष—प्राय मध्य युग मे ऐसे लोग अपनी कन्या को डोले पर बैठा कर रईसो, राजाओ या सरदारो के यहाँ भेजते थे जिनके यहाँ या तो बडे आदमियो की बरात आ नही सकती थी या जो उन बडे आदमियो की बरात का उचित आदर-सत्कार करने मे असमर्थ होते थे। इसी लिए डोला भेजना एक प्रकार की अधीनता या हीनता का सूचक होता है।

मुहा० (किसी के) चोडे या सिर पर (किसी का) डोला उछलना=किसी स्त्री के सामने उसके पति का दूसरा विवाह करना और जलाने के लिए उसकी सौत लाकर बैठाना।

२ झूले को दिया जानेवाला झोका। पेग।

डोलाना—स० दे० 'डुलाना'।

डोला यत्र—पु० =दोला यत्र।

डोलियाना—स० [हिं० डोली+आना (प्रत्य०)] १ किसी को डोली मे बैठाकर कही ले जाना। २ वधू को डोली मे बैठाकर ससुराल भेजना। ३ कोई चीज चुपके से लेकर चल देना। (बाजारू)

अ० चपत होना। खिसक जाना।

डोली—स्त्री० [हिं० डोला] १ छोटा डोला (सवारी) जिसे दो कहार कधो पर लेकर चलते हैं।

मुहा०—डोली करना=(क) किसी को जैसे-तैसे दूर करना या हटाना। (ख) कोई चीज चुपके से उठाकर चल देना।

पद—डोली-डडा। (देखें)

२ हिंदुओ की एक प्रथा या रस्म जिसमे विवाह के उपरान्त वधू को डोली या किसी दूसरी सवारी मे बैठाकर वर पक्षवाले ले जाते है।

३ रहस्य सप्रदाय मे, शरीर।

डोली-डडा—पु० [हिं०] लडको का एक खेल जिसमे दो लडके अपनी बाँहो को मिलाकर उन्हे चौकी-का रूप देते और उस पर किसी तीसरे छोटे लडके को बैठाकर, 'डोली-डडा पालकी', कहकर इधर-उधर घुमाते है।

डोलू—स्त्री० [देश०] १ एक ओषधि जिसे रेवद चीनी भी कहते है। २ पूरबी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

†वि० [हिं० डोलना] जो चुपके से कुछ लेकर चपत हो गया हो। (बाजारू) जैसे—किताब लेकर डोलू हो गया।

डोसा—पु० [?] उलटे या चिलडे की तरह का एक दक्षिण भारतीय पकवान जो पीसे तथा खमीर उठाये हुए चावल तथा उडद की दाल से बनता है।

डोह†—पु०=द्रोह।

डोहरा†—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० डोहरी] काठ का एक प्रकार का बरतन जिससे कोल्हू मे से रस निकाला जाता है।

डोही—स्त्री० दे० 'डोई'।

डौंडाना†—अ० [हिं० डावाँडोल] १ डाँवाडोल रहना। २ विचलित होना। घबराना।

स० १ डाँवाँडोल करना। २ विकल या विचलित करना।

डौंडी—स्त्री० [सं० डिंडिम] १ डुग्गी नाम का छोटा बाजा जिसे बजाकर लोगो को कोई बात जतलाने के लिए घोषणा की जाती है।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

मुहा०—डौंडी देना=(क) ढोल बजाकर सर्वसाधारण को सूचित करना। मुनादी करना। (ख) कोई बात चारो ओर लोगो से कहते फिरना। **डौंडी बजना**=(क) घोषणा होना। (ख) दुहाई फिरना। (ग) किसी का तेज और प्रताप सब पर प्रकट होना।

२ डौंडी पीटकर की जानेवाली घोषणा।

डौरा—पु० [देश०] एक प्रकार की घास जिसमे साँवाँ की तरह के परन्तु खाने मे कडुए दाने होते है।

डौरू†—पु०=डमरू।

डौआ—पु० [हिं० डोई] बडी डोई।

डौकी—स्त्री० [?] पडुकी।

डौर*—पु० १=डौल। २=डोर।

डौल—पु० [हिं० डील का अनु०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति की वह बाहरी आकृति या स्वरूप जो उसकी विशिष्ट प्रकार की रचना—शैली, अगो और उपागो के सघटन आदि के आधार पर जानी जाती या स्थिर होती है। बनावट का ढग या रचना का प्रकार। जैसे—(क) आदमी या औरत का डील-डौल। (ख) नये डौल की थाली या लोटा। २ किसी प्रकार की बनावट या रचना का आरम्भिक ढाँचा या रूप। ठाठ।

क्रि० प्र०—डालना।

३ चित्रो और मूर्तियो के अवयवो मे दिखाई पडनेवाली गोलाई, उभार और गहराई जिससे उनमे सुदरता आती है।

मुहा०—(कोई चीज) डौल पर लाना=सुदर आकार या रूप मे प्रस्तुत करना। अच्छे या सुदर रूप मे लाना।

४ कोई काम करने का अच्छा ढग या प्रकार। सलीका। जैसे—ये सब पुस्तके डौल से लगाकर अलमारी मे रख दो। ५ उपाय। युक्ति।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) डौल पर लाना=युक्ति से अनुकूल बनाना। ऐसा उपाय करना जिससे कोई मतलब निकाला या उद्देश्य सिद्ध किया जा सके। जसे—मै तो समझा कर हार गया, अब तुम्ही उन्हे डौल पर ला सकते हो।

पद—डौल-डाल। (देखे)

मुहा०—(किसी काम का) डौल बाँधना या लगाना=उपाय या युक्ति करना। जैसे—कही से कुछ कपडो का डौल लगाओ।

६. रग-ढग। तौर-तरीका। लक्षण। ७ आशा या सभावना। रग-ढग। जैसे—अभी तो दो-चार दिन वर्षा का डौल नही दिखाई देता। ८ जमीन के बन्दोबस्त मे जमा या लगान का अनुमान।

क्रि० प्र०—लगाना।

९ खेतो की मेड। डाँड।

डौल डाल—पु० [हिं० डौल] किसी काम का उपाय या युक्ति। ब्योत।

डौलदार—वि० [हिं० डौल+फा० दार (प्रत्य०)] अच्छे डौलवाला। सुडौल।

डौलना†—स० [हिं० डौलना] १ किसी रचना को सुडौल बनाना। २ डौल या बनावट का ढग निकालना।

अ० डौल या उपाय निकालना। युक्ति निकालना।

डौलियाना—स० [हिं० डौल+इयाना (प्रत्य०)] १ काट-छाँटकर किसी ठीक आकार का बनाना। गढकर डौल या रूप दुरुस्त करना। २ अपना प्रयोजन सिद्ध करने केलिए किसी व्यक्ति को डौल या ढग पर लाना मीठी-मीठी बाते करके अपने अनुकूल बनाना।

डौवर—पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जिसका धड सफेद, दुम काली और चोच लाल रग की होती है।

डौवा—पु०=डौआ (बडी डोई)।

ड्यूटी—स्त्री० [अ०] १ ऐसा काम जिसे करना नैतिक, धार्मिक, विधिक आदि दृष्टियो से आवश्यक हो। कर्तव्य। २ वह काम जिसे पूरा करने के लिए कोई नियुक्त किया गया हो। ३ विदेशो से आनेवाले तथा विदेश भेजे जानेवाले माल पर लगनेवाला कर या शुल्क।

ड्योढ़ा—वि० [हिं० डेढ] [स्त्री० ड्योढी] एक पूरा और उसके साथ मिला या लगा हुआ उसका आधा। डेढ-गुना। जैसे—इस साल हर चीज का दाम पर साल से ड्योढा हो गया है।

पद—ड्योढ़ी गाँठ=रस्सी आदि मे दी जानेवाली वह गाँठ जिसमे एक पूरी गाँठ के बाद उसके ऊपर दूसरी गाँठ या फदा इस प्रकार लगाया जाता है कि रस्सी का एक सिरा खीचते ही गाँठ तुरत खुल जायँ।

पु० १ एक प्रकार का पहाडा जिममे क्रम से अको की डेढ गुनी सख्या बतलाई जाती है। जैसे—एक ड्योढे डेढ, दो ड्योढे तीन, तीन ड्योढे साढे चार आदि। २ गाने का वह प्रकार जिसमे स्वर साधारण से ड्योढे ऊँचे कर दिये जाते है। ३ ऐसा तग रास्ता जिसके एक किनारे पर गड्ढा या ढाल हो। (कहार)

ड्योढ़ी—स्त्री० [स० देहली] १ किसी भवन या मकान के मुख्य प्रवेश-द्वार के आस-पास की भूमि या स्थान।

पद—ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान। (देखे)

२ उक्त प्रवेश-द्वार के अन्दर का वह स्थान जिस पर प्राय पाटन होती है। पौरी।

मुहा०—(किसी की) ड्योढ़ी खुलना=राजाओ आदि के यहाँ दरबार मे आने-जाने की अनुमति या आज्ञा मिलना। **(किसी की) ड्योढ़ी बंद होना**=किसी व्यक्ति के लिए राजा के यहाँ आने-जाने की मनाही या निषेध होना। **(किसी के यहाँ) ड्योढ़ी लगना**=ड्योढी पर ऐसा द्वारपाल बैठना जो बिना आज्ञा पाये लोगो को अन्दर न जाने दे।

ड्योढ़ीदार—पु० [हिं० ड्योढी+फा०दार (प्रत्य०)] वह नौकर या सिपाही जो बडे आदमियो के मकान की ड्योढी पर रखवाली आदि के लिए रहता है। दरबान। द्वारपाल।

ड्योढ़ीवान—पु०=ड्योढीदार।

ड्रम—पु० [अ०] १ ढोल। नगाडा। २. ढोल के आकार का बडा पात्र। पीपा।

ड्राइवर—पु० [अ०] वह व्यक्ति जो यत्रो से चलनेवाला यान चलाता हो।

जैसे—इंजन-ड्राइवर, मोटर ड्राइवर आदि।

ड्राम—पु० [अ०] तीन माशे के बराबर की एक अगरेजी तौल।

ड्रामा—पु० [अ०] नाटक।

ड्रिल—स्त्री० [अ०] बच्चो, सिपाहियो आदि के समूह को एक साथ कराया जानेवाला शारीरिक व्यायाम जिसके साथ उन्हे क्रम-बद्ध रूप से चलने-फिरने आदि की शिक्षा भी मिलती है।

ढ

ढ—हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यजन वर्ण जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा सघोष व्यजन है। इसका एक रूप ढ़ भी है जो मूर्द्धन्य उत्क्षिप्त, महाप्राण, सघोष व्यजन है। पु० [स० ढौक् (गति) +ड] १ बडा ढोल। २ कुत्ता। ३ कुत्ते की दुम। ४ ध्वनि। नाद। ५ साँप।

ढँकना†—स०=ढकना।
पु०=ढकना (ढक्कन)।

ढकी†—स्त्री०=ढक्कन।

ढँकुली†—स्त्री० दे० 'ढेकी'।

ढख—पु० [स० आषाढक या हिं० ढाक] १ ढाक या पलाश का पौधा। २ वह स्थान जहाँ पलाश के बहुत-से पौधे हो।

ढग—पु० [स० तग (तगन)] १ कोई काम करने की रीति, विशेषत ऐसी रीति जिसके अनुसार प्राय कोई काम किया जाता या होता हो। जैसे—उनके उठने-बैठने या चलने-फिरने का ढग निराला है। २ कोई काम करने या रचना प्रस्तुत करने की प्रचलित तथा व्यवस्थित शैली। जैसे—साडी पर जाल बनाने का ढग भी वह जानता है। ३ किसी चीज की बनावट या रचना का वह विशिष्ट प्रकार जिससे उसका स्वरूप स्थिर होता है। जैसे—आज-कल इस ढग के कपडे नही चलते। ४ भेद-विभेद आदि के विचार से स्थिर होनेवाला प्रकार।

पद—ढग का=(क) अच्छे और उपयुक्त प्रकार का। जैसे—कोई ढग की नौकरी तो पहले मिले। (ख) कार्य-व्यवहार आदि मे कुशल या चतुर। जैसे—कोई ढग का नौकर रखो।

५ किसी चीज की बनावट या रचना का प्रकार जिससे उसका स्वरूप स्थिर होता है। जैसे—आज-कल इस ढग के कपडो का चलन नही है। ६ अभिप्राय या कार्य सिद्ध करने का उपाय या युक्ति। तरकीब। जैसे—किसी ढग से अपनी रकम निकाल लेनी चाहिए।

क्रि० प्र०—निकालना।

मुहा०—(किसी के) ढग पर चढ़ना=किसी की तरकीब या युक्ति के फेर मे पडकर उसके उद्देश्य-साधन मे अनुकूल होकर सहायक बनना। **(किसी को) ढग पर लाना**=अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिए किसी को अपने अनुकूल करना या बनाना। किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना जिससे कुछ मतलब निकले।

७ अभिप्राय या कार्य सिद्ध करने के लिए धारण किया जानेवाला ऐसा रूप जो केवल दूसरो को धोखे में रखने के लिए हो। जैसे—यह लडका मिठाई खाने के लिए तरह-तरह के ढग रचता है।

क्रि० प्र०—रचना।—साधना।

८ ऐसा आचरण, बरताव या व्यवहार जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए उपयुक्त या पात्र बनाता हो। जैसे—यह सब तो जाति (या देश) के चौपट होने का ढग है।

मुहा०—ढग बरतना=पारस्परिक व्यवहार मे ठीक तरह से आचरण करना। जैसे—जरा ढग बरतना सीखो।

९ कोई ऐसी अवस्था या स्थिति जो किसी विशिष्ट बात की सूचक हो। चिह्न। लक्षण। जैसे—अभी पानी बरसने का कोई ढग नही दिखाई देता।

पद—रग-ढग=स्वरूप और कार्य-प्रणाली। जैसे—इस कार्यालय का रग-ढग कुछ अच्छा नही जान पडता।

ढग-उजाड—पु० [हिं० ढग+उजाड] कुछ घोडो की दुम के नीचे होनेवाली भौरी जो अशुभ मानी जाती है।

ढँगलाना†—स० [?] लुढकाना।
अ०=लुढकना।

ढगी—वि० [हिं० ढग] १ (व्यक्ति) जो ढग से कोई काम करता हो। २ बहुत बडा चालबाज या धूर्त्त (व्यक्ति)। ३ दे० 'ढोंगी'।

ढँढरच—स्त्री० [हिं० ढग+रचना] ढकोसला।

ढढस—पु० दे० 'ढँढरच'।

ढढार—वि० [हिं० ढग?] जिसे कोई ढग न आता हो। अकुशल तथा मूर्ख।

ढँढोर—पु० [अनु० धायँ धायँ] १ आग की लपट। २ लगूर।
†पु०=ढँढोरा।

ढँढोरची—पु० [हिं० ढँढोर+फा० ची (प्रत्य०)] ढँढोरा फेरनेवाला। डुग डुगी बजाकर घोषणा करनेवाला। ढँढोरिया।

ढँढोरना—स० [हिं० ढँढोरा] १ ढँढोरा पीटना या बजाना। २ ढँढोरा फेरना। मुनादी कराना।
†स० [हिं० ढूँढना] तलाश करना। उदा०—सारद उपमा सकल ढँढोरी—तुलसी।

ढँढोरा—पु० [अनु० ढम+ढोल] १ वह ढोल जो जन-साधारण को किसी बात की सूचना देने या सार्वजनिक रूप से घोषणा करने के समय बजाया जाता है। डुगडुगी। डुग्गी। डौडी।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

२ ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा। मुनादी।

मुहा०—ढँढोरा फेरना=(क) किसी बात की सूचना सबको ढोल बजाकर देना। जैसे—लडके के खोने पर उन्होने ढँढोरा फिरवाया था। (ख) किसी बात की सूचना सब को देते फिरना। जैसे—घर की बातो का ढँढोरा नही फेरा जाता।

ढँढोरिया—पु०=ढँढोरची।

ढँढोलना—स०=ढँढोरना (ढूँढना)।

ढँपना—अ० [हिं० ढाँपना का अ०] किसी प्रकार की आड में या आवरण के नीचे होने के कारण आँखो से ओझल होना। ढाँपा जाना।

†स०=ढकना ।
†पु०=ढकना (ढक्कन) ।

ढई—स्त्री० [हिं० ढहना=गिराना] १ ढह या गिर पड़ने की अवस्था या भाव। २ किसी स्थान पर इस प्रकार बैठना कि जल्दी उठने का ध्यान ही न आवे।

मुहा०—(कहीं या किसी के यहाँ) ढई देना=(क) जमकर बैठ जाना और जल्दी उठने का नाम न लेना। (ख) धरना देना।

ढकई—वि०, पु०=ढाकई।

ढकना—स० [स० स्थग, प्रा० ढक्क, ढकण] १ किसी चीज के ऊपर या सामने कोई ऐसी आड या आवरण खडा करना कि वह चीज ऊपर या बाहर से दिखाई न पडे अथवा सुरक्षित रहे। जैसे—(क) देगची को कटोरी या ढक्कन से ढकना। (ख) कपडे से दूध या मलाई ढकना। २ ओढे या पहने हुए वस्त्र से शरीर का कोई अग छिपाना। जैसे—घूँघट से मुँह ढकना अथवा चादर से छाती ढकना। ३ किसी चीज के ऊपर किसी दूसरी बात का आकर उसे आड मे करना। जैसे—बादलो का आसमान को ढकना। ४ लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा उपाय करना जिससे दूसरे के सामने दूषित बात या रूप न प्रकट होने पाये। जैसे—किसी की इज्जत या ऐब ढकना।

अ० आड, आवरण आदि के कारण ऐसी स्थिति मे होना कि ऊपर या बाहर से दिखाई न दे अथवा वातावरण आदि के प्रभाव से रक्षित रहे। जैसे—कपडे या कागज से ढकी हुई मिठाई।

पु० [स्त्री० अल्पा० ढकनी] वह चीज या रचना जिससे कोई चीज ढकी जाती हो। ढक्कन। जैसे—डिब्बे या सन्दूक का ढकना।

ढकनियाँ—स्त्री०=ढकनी।

ढकनी—स्त्री० [हिं० ढकना] १ छोटा ढकना या ढक्कन। २ फूल के आकार का एक प्रकार का छोटा गोदना।

ढक-पेडरू—पु० [देश०] एक तरह की चिड़िया।

ढका—पु० [स० आढक] १ तीन सेर की एक तौल। २ उक्त तौल का बटखरा या बाट।

†पु० [अ० डॉक] जहाजो के ठहरने का घाट। (लश०)

†पु० [अनु०] जोर से लगाई जानेवाली टक्कर या दिया जानेवाला धक्का।

†पु०=ढक्का (बडा ढोल)।

ढकिलाँ—स्त्री० [हिं० ढकेलना] १ एक दूसरे को ढकेलने की क्रिया या भाव। २ आक्रमण। चढाई।

ढकेलना—स० [हिं० धक्का] १ किसी भारी चीज या यान को पीछे से इस प्रकार धक्का देना कि वह आगे बढे या चले। २ किसी व्यक्ति अथवा किसी चीज को इस प्रकार धक्का देना कि वह गिर या लुढक पडे। जैसे—(क) आदमी का बच्चे को ढकेलना। (ख) पहाड पर से पत्थर ढकेलना। ३ अनादरपूर्वक धक्का देते हुए किसी को कही से बाहर निकालना। ४ किसी को किसी ओर बढने मे प्रवृत्त या विवश करना। जैसे—भीड को आगे या पीछे ढकेलना। ५ कोई काम जैसे-तैसे आगे बढाना या चलाना। ६ किसी को इस प्रकार बुरी तरह से दूर करना या हटाना कि वह हीन स्थिति मे पहुँचे। जैसे—लडकी का ब्याह क्या किया है किसी तरह उसे घर से ढकेला है। ७ भोजन करना। खाना। (व्यग्य)। ८ किसी के साथ प्रसग या सभोग करना। (बाजारू)

ढकेला-ढकेली—स्त्री० [हिं० ढकेलना] आपस मे एक दूसरे को बार-बार ढकेलने या धक्के देने की क्रिया या भाव।

ढकोरना†—स०=ढकेलना। (पूरब)

ढकोसना—स० [ढक-ढक से अनु०] एक बारगी या भुखमरो की तरह कोई चीज बहुत अधिक खाना या पीना। भकोसना।

ढकोसला—पु० [हिं० ढग+स० कौशल] १ दूसरो को धोखा देकर अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए धारण किया या बनाया हुआ झूठा रूप। आडबर। २ एक प्रकार की कविता जिसमे कई अन-मेल या असगत बाते एक साथ कही जाती है। उदा०—भादो पक्की पीपली, झड-झड पडे कपास। बी मेहतरानी दाल पकाओगी या नगा ही सो रहूँ। —खुसरो।

ढक्क—पु० [स०] एक प्राचीन देश का नाम। (कदाचित् आधुनिक ढाका के आस-पास का प्रदेश)

ढक्कन—पु० [हिं० ढकना] किसी आधान का वह अग जो उसके मुँह पर उसे बद करने के लिए रखा या कसा जाता है। जैसे—डिब्बे या देगची का ढक्कन, टोकरी या सदूक का ढक्कन।

विशेष—कुछ आधानो के ढक्कन उनके साथ लगे होते है, और कुछ के अलग होते है।

ढक्का—स्त्री० [स० ढक्√कै (शब्द) +क—टाप्] [स्त्री० अल्पा० ढक्की] १ बडा ढोल। २ डका। नगाडा।

†पु० दे० 'धक्का'।

ढक्कारी—स्त्री० [स० ढक्√कृ (करना)+अण्—ङीप्] तारा देवी।

ढक्की—स्त्री० [हिं० ढाल] १ पहाडी प्रदेशो मे वह स्थान जहाँ से ऊपर की ओर चढना पडता है। (पश्चिम) २ ढालुआँ भू-भाग।

ढगण—पु० [मध्य० स०] पिंगल मे तीन मात्राओ का एक गण।

ढचर—पु० [हिं० ढाँचा] १ कोई काम करने या चीज बनाने से पहले खडा या तैयार किया जानेवाला उसका ढाँचा।

क्रि० प्र०—बाँधना।

क्रि० प्र०—फैलाना।—रचना।

२ आडबर। ढकोसला। ढोग। ३ व्यर्थ का जजाल या झझट।

वि० बहुत ही क्षीण, जर्जर या दुबला-पतला।

ढटींगड़ (र)—वि० [स० डिंगर] १ बडे डील-डौल वाला। ढीग। २ खूब मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। ३ देखने मे अच्छा, पर वस्तुत निकम्मा या व्यर्थ का।

ढटींगडा (रा)—पु०=ढटीगड।

ढट्ठाँ—पु० [स्त्री० अल्पा० ढट्ठी] १=ढाटा। २=ढड्ढा ३=डट्टा (डाट)।

ढट्ठी—स्त्री० [हिं० डाढ] १ छोट ढाटा। २ कपडे की वह चौडी पट्टी जिससे दाढी बाँधी जाती है।

ढड्ढा—वि० [हिं० ठाठ] बहुत से व्यर्थ केअगो या बातो से युक्त होने के कारण जिसका आकार या रूप व्यर्थ बहुत बढ गया हो।

पु० १ बाँसो आदि की वह रचना जिस पर खडे होकर राज, मिस्त्री आदि ऊँची दीवारें आदि बनाते है। २ किसी वस्तु या रचना के अगो की वह

स्थूल योजना जो उसके आरभ मे की जाती है और जो उसके भावी रूप की परिचायक होती है। ठाठ। ढाँचा। ३ कोई ऐसी बहुत बडी या विस्तृत चीज जिसके बहुत-से अश फालतू या व्यर्थ के हो। ४ व्यर्थ का आडबर या ठाठ-बाट।

ढड्ढो—स्त्री० [हि० ढड्ढा] १ वह बहुत बुड्ढी स्त्री जिसके शरीर मे हड्डियो का ढाँचा ही रह गया हो। २ मटमैले रग की एक चिडिया जो बहुत शोर करती और प्राय अपने वर्ग की दूसरी चिडियो से लडती रहती है। चरखी।

ढनमनाना†—अ० [अनु०] लुढकना।
स०=लुढकाना।

ढप—पु०=डफ।

ढपना—पु० [हि० ढाँपना] ढकने की वस्तु। ढक्कन।
स०=ढकना (ढाँकना)।

ढपरी—स्त्री० [हि० ढाँपना] १ ढाँपने या ढकने की कोई छोटी चीज। २ अगीठी ढकने का ढक्कन। (चूडीवाले)

ढपला†—पु० [स्त्री० ढपली] =डफला।

ढप्पू—वि० [देश०] १ बहुत बडा, परन्तु प्राय निकम्मा या व्यर्थ का।

ढफ—पु०=डफ (बाजा)।

ढब—पु० [स० धव ?] १ कोई काम ठीक प्रकार से सपादित करने की क्रिया-प्रणाली या रीति। २ ठीक प्रकार से कोई काम सपादित करने का गुण या योग्यता।
पद—ढब का=(व्यक्ति) जो ठीक प्रकार से काम करता हो। जैसे—कोई ढब का नौकर मिले तो रख लिया जायगा।
३ बनावट, रचना आदि का कोई विशिष्ट प्रकार। ४ उपाय। युक्ति।
मुहा०—ढब पर चढ़ाना, लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार फुसलाना कि उससे अपना काम निकाला जा सके।
५ प्रकृति। स्वभाव। ६ आदत। बान।

ढबका†—पु० [हि० ढब] उपाय। तरकीब।

ढबरा†—वि०=ढाबर।

ढबरी—=स्त्री०=ढिबरी।

ढबीला†—वि० [हि० ढब] [स्त्री० ढबीली] १ (वस्तु) जो अच्छे रूप-रग या प्रकार की हो तथा काम मे आने योग्य हो। ढब का। २ (व्यक्ति) जो ठीक ढग से काम करता हो।

ढबुआ†—पु०=ढेउआ (पैसा)।
पु० [देश०] खेत की मचान की छाजन।

ढबैला—वि० [हि० ढाबर] (पानी) जिसमे मिट्टी और कीचड मिला हुआ हो।
†वि०=ढबीला।

ढमकना—अ० [अनु०] ढम ढम शब्द उत्पन्न होना।
स०=ढमकाना।

ढमकाना—स० [हि० ढमकना] ढम ढम शब्द उत्पन्न करना। उदा०—कोउ उमग सौ सग सग ढोलक ढमकावत—रत्ना०।

ढमढम—पु० [अनु०] ढोल, नगाडे आदि के बजने का शब्द।
क्रि० वि० ढम-ढम शब्द करते हुए।

२—६१

ढमलाना†—स०=लुढ़काना।
अ०=लुढकना।

ढयना—अ०=ढहना (गिरना)।

ढरक†—स्त्री० [हि० ढरकना] १ ढरकने की क्रिया या भाव। २ दयालुता। ३ अनुरक्ति। ४ प्रवृत्ति।

ढरकना—अ० [हि० ढार] १ ढलकना। २ लेटना।

ढरका†—पु०=ढलका।

ढरकाना—स०=ढलकाना।

ढरकी—स्त्री० [हि० ढरकना] करघे मे छोटे खाने की तरह का वह अग जिसमे बाने का सूत रहता है और जिसके दाहिने-बाएँ आते-जाते रहने से ताने मे बाने का सूत भरता है।

ढरकीरा—वि० [हि० ढरकना] ढलने या ढलकनेवाला।

ढरना—अ०=ढलना।

ढरनि—स्त्री० [हि० ढरना] १ ढलने या ढरने की क्रिया या भाव। ढाल। २ बार-बार इधर-उधर प्रवृत्त होने अथवा हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। ३ किसी पर अनुरक्त या किसी ओर प्रवृत्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ४ किसी की दीन-हीन दशा पर मन के द्रवित होने की अवस्था या भाव। ५ नीचे की ओर गिरने या पतित होने की क्रिया या भाव। पतन।

ढरहरना—अ० [हि० ढरना या ढलना] १ ढाला जाना। उँडेला जाना। २ पूरी तरह से भरा जाना। ३ खिसकना या लुढकना। ४ किसी ओर झुकना या ढलना।

ढरहरा—वि० [हि० ढार+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० ढरहरी] १ ढलने, बहने या लुढकनेवाला। २ ढालुआँ। ३ किसी ओर प्रवृत्त होनेवाला।

ढरहरी—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का पकवान। २ पकौडी।
†स्त्री० [हि०=ढलना] ढालुई जमीन। ढाल।

ढराई†—स्त्री०=ढलाई।

ढराना—स० [?] १ दे० 'ढलाना' या 'ढलवाना'। २ दे० 'ढलकाना'।

ढरारा—वि० [हि० ढार] [स्त्री० ढरारी] १ किसी ओर ढलने या बहनेवाला। २ ढालुआँ। ३ जल्दी इधर-उधर लुढकनेवाला। ४ किसी की ओर प्रवृत्त होनेवाला। ५ सहज मे किसी के साथ अनुराग या स्नेह करनेवाला। उदा०—नीके अनियारे अति चपल ढरारे प्यारे ...।—सेनापति।

ढरियाना†—स० [हि० ढारना] १ ढालना। २ ढलकाना।

ढरैया—वि०, पु०=ढलैया।

ढर्रा—पु० [हि० ढरना=ढलना] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के ढरने (ढलने) या किसी ओर प्रवृत्त होने का प्रकार, मार्ग या रूप। २ कोई काम करने की निश्चित या बँधी हुई पद्धति, प्रणाली या शैली।
मुहा०—ढर्रे पर आना या लगना=कार्य-सिद्धि के लिए अनुकूल, ठीक ढग या रास्ते पर आना। जैसे—अब तो वह बहुत-कुछ ढर्रे पर आ चला है।
३ उपाय। तदबीर। युक्ति। ४ आचार, व्यवहार आदि का प्रकार या रूप। जैसे—उसका यह ढर्रा तो ठीक नही है।

ढलकना—अ० [हि० ढलना] १ पानी या और किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर प्रवृत होना या बहना। ढलना। जैसे—आँखो से आँसू

ढलकना। २ लुढकना। ३ नीचे की ओर प्रवृत्त होना। ४ किसी पर अनुरक्त होना। विशेष दे० 'ढलना'।

ढलका—पु० [हि० ढलकना] १ आँख का एक रोग जिसमे आँख से बराबर पानी बहा करता है। २ बाँस का वह चोगा या नली जिसकी सहायता से चौपायो के गले के नीचे दवा उतारी या ढलकाई जाती है।

ढलकाना—स० [हि० ढलकना का स०] १ पानी या और किसी द्रव पदार्थ को ढलकने मे प्रवृत्त करना। २ नीचे की ओर प्रवृत्त करना। ३ लुढकाना।
सयो० क्रि०—देना।

ढलकी†—स्त्री०=ढरकी।

ढलना—अ० [हि० ढालना का अ०] १ द्रव पदार्थ का नीचे की ओर गिरना या गिराया जाना। जैसे—बोतल की दवा गिलास मे ढलना। २ साँचे मे किसी पिघले हुए पदार्थ का, उसे कोई विशेष आकार-प्रकार देने के लिए उँडेला या डाला जाना। ३ उक्त प्रकार से पिघले हुए पदार्थ का साँचे मे जम या ठढा होकर ठोस रूप धारण करना। जैसे—मूर्ति ढलना। ४ अवनति या ह्रास अथवा अत या समाप्ति की ओर बढना। जैसे—उमर या जवानी ढलना, दिन ढलना। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि के सबध मे, अस्त होने पर आना। जैसे—चाँद या सूर्य का ढलना।
पद—ढलती फिरती छाँह=ऐसी स्थिति जो कभी बिगडती और कभी सुधरती हो।
६ समय का बीतने को होना। जैसे—अवधि ढलना। ७ दया, प्रेम आदि के वश मे होकर किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त होना। जसे—भगवान का भक्तो पर ढलना। ८ विशिष्ट रूप से केवल मद्य के सबध मे, पीने के लिए पात्र मे उँडेला जाना। जैसे—बोतल या शराब ढलना। ९ लुढकना। १० दे० 'ढुलना'।

ढलमल—वि० [अनु०] जो कभी इधर और कभी उधर प्रवृत्त होता या लुढकता हो। ढुलमुल।

ढलवाँ—वि० [हि० ढालना] १ जो साँचे मे ढालकर बनाया गया हो। ढाला हुआ। २ दे० 'ढालुआँ।'

ढलवाना—स० [हि० ढालना का प्रे०] ढालने का काम किसी और से कराना। किसी को कुछ ढालने मे प्रवृत्त करना।

ढलाई—स्त्री० [हि० ढालना] १ ढालने की क्रिया या भाव। २ पिघली हुई धातु को साँचे मे ढालकर बरतन, मूर्त्तियाँ आदि बनाने की क्रिया, भाव और मजदूरी। ३ ढलान। (दे०)

ढलान—स्त्री० [हि० ढलना] १ ढलने या ढालने की क्रिया या भाव। २ कोई ऐसा भू-खड जो चिपटा और समतल न हो, बल्कि तिरछा हो, अर्थात् जिसमे नीचे की ओर ढाल हो। ३ ऐसा ढालुआँ स्थान जहाँ से वर्षा का पानी ढलकर किसी नदी मे मिलता हो।

ढलाना—स०=ढलवाना।

ढलाव—पु० [हि० ढालना+आव (प्रत्य०)] ढलने या ढालने की क्रिया, ढग या भाव।

ढलुआँ—वि०=ढलवाँ।

ढलैत—पु० [हि० ढाल] प्राचीन काल मे, वह योद्धा जो ढाल बाँधे रहता था।

ढलैया†—वि० [हि० ढालना] ढालनेवाला।
पु० वह कारीगर जो गलाई हुई धातुओ को ढालकर कोई चीज बनाता हो।

ढवरी—स्त्री० [हि० ढलना] १ ढलने अर्थात् किसी ओर प्रवृत्त होने अथवा किसी पर अनुरक्त होने की अवस्था या भाव। २ निरतर किसी की ओर बना रहनेवाला ध्यान। लगन। लौ।

ढसक—स्त्री० [अनु० ढस ढस] सूखी खाँसी। ढाँसी।

ढहना—अ० [स० ध्वसन] १ इमारत, भवन आदि का टूट-फूटकर जमीन पर गिरना। २ पूर्णत नष्ट या समाप्त होना।
सयो० क्रि०—जाना।—पडना।

ढहरना*—अ०=ढलना। उदा०—पै उठि लहर समूह नैकुँ इत उत नहि ढहरै।—रत्ना०।

ढहरा†—पु० [?] १ जगल। वन। २ खुली और नीची भूमि। (राज०)

ढहराना†—स० [अनु०] १ ढरकाना। २ ढाना। ३ सूप मे अनाज रखकर फटकना।

ढहरी—स्त्री० [स० देहली] डेहरी। दहलीज।
†स्त्री० [?] मिट्टी का घडा या मटका।

ढहवाना—स० [हि० ढहाना का प्रे०] ढाने का काम दूसरे से कराना। गिरवाना। ढहाना।

ढहाना—स०=ढहवाना।

ढाँक—पु० [हि० ढाँकना ?] कुश्ती का एक पेच।
†पु०=ढाक (पलाश)।

ढाँकना—स०=ढकना।

ढाँखा—पु० [हि० ढाक] ढाक या पलाश का जगल। उदा०—जावत जग साखा बन ढाँखा।—जायसी।

ढाँगा—वि० दे० 'ढालुआँ'।

ढाँच—पु०=ढाँचा।

ढाँचा—पु० [स० स्थाता] १ कोई वस्तु या रचना बनाते समय उसके विभिन्न मुख्य अगो को जोड या बाँधकर खडा किया हुआ वह आरभिक या स्थूल रूप जिस पर बाकी सारी रचना प्रस्तुत होती है। जैसे—मकान का ढाँचा, कुरसी का ढाँचा। २ कोई ऐसी रचना जिसमे कोई दूसरी चीज जडी, बैठाई या लगाई जाती हो। ३ ग्रथ, लेख, नक्शे आदि का आरभिक तथा आधारिक रूप। ४ ठठरी। पजर। ५ गठन। बनावट।

ढाँपना—स०=ढकना (ढाँकना)।

ढाँस—स्त्री० [अनु०] १ ढाँसने की क्रिया या भाव। दे० 'ढाँसी'।

ढाँसना—अ० [हि० ढाँस] इस प्रकार बार-बार खाँसना कि गले से वैसा ही ढाँ ढाँ शब्द निकले जैसा प्राय कुत्तो के खाँसने के समय निकलता है।

ढाँसी—स्त्री० [अनु०] एक प्रकार की सूखी खाँसी जिसमे लगातार कुछ समय तक गले से उसी प्रकार का ढाँ ढाँ शब्द निकलता है जैसा कुत्तो के खाँसने पर होता है।

ढाई—वि० [स० अर्द्ध—द्वितीय, प्रा० अड्ढाइय, पु० हि० अढाई] १ (इकाई या मान) जिसमे दो पूरे के साथ आधा और मिला हुआ हो।

जैसे—ढाई गज कपडा, ढाई सेर चीनी, ढाई रुपए। २ जो गिनती मे दो से आधा अधिक हो। जैसे—ढाई बजे की गाडी।

मुहा०—(किसी को) ढाई घडी की आना=अचानक और चटपट मौत आना। (स्त्रियो का कोसना) जैसे—तुझे ढाई घडी की आवे।

पद—ढाई दिनो की बादशाहत=(क) थोडे समय का ऐश्वर्य या सुख-भोग। (ख) किसी के विवाह के समय के दो-तीन दिन।

स्त्री० [हिं० ढाना] १ लडको का एक खेल जो कौडियो से खेला जाता है। २ उक्त खेल खेलने की कौडियाँ।

ढाक—पु० [स० आषाढक=पलाश] पलाश का पेड। छिउला। छीउल।

पद—ढाक के तीन पात=(क) ऐसा तुच्छ या हीन रूप या स्थिति जो सहायक सी बनी रहे और जिसमे जल्दी कोई परिवर्तन होता हुआ न दिखाई दे। (ख) बहुत ही निर्धन, मूर्ख या हठी होने की अवस्था या भाव।

†पु०=ढक्का (बडा ढोल)।

ढाकई—वि० [हिं० ढाका नगर]। ढाके का। जैसे—ढाकई नाव, ढाकई साडी। पु० ढाके की तरफ होने वाला एक प्रकार का केला।

ढाकना—स०=ढकना (ढाँकना)।

ढाक-पाटन—पु० [ढाका नगर] एक प्रकार की बढिया मलमल जिसकी बुनावट मे फूल या बूटियाँ बनी होती थी।

ढाकेवाल—वि०=ढाकई। जैसे—ढाकेवाल पटैला।

ढाटा—पु० [हिं० ढाढ] १ कपडे की वह चौडी पट्टी जिससे दाढी बाँधी जाती है। २ वह पगडी जिसका एक फेटा या वल गालो और दाढी पर भी लपेटा जाता है। ३ वह कपडा जो मुरदे के कफन पर उसका मुँह बँधा रखने के लिए बाँधा जाता है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

ढाड—स्त्री० [अनु०] १ दहाड। २ दाढ। ३ ढाह (चिल्ला कर रोना)।

मुहा०—ढाह मारकर रोना=खूब जोर से चिल्लाते हुए रोना।

ढाडना†—अ०=दहाडना।

ढाडी—पु०=ढाढी।

ढाढ—स्त्री०=ढाड।

ढाढ़ना†—स० १ दे० 'डाढना'। २ दे० 'दहाडना'।

ढाढ़स—पु०=ढारस।

ढाढ़िन—स्त्री० [हिं०] 'ढाढी' का स्त्री० रूप।

ढाढ़ी—पु० [देश०] [स्त्री० ढाढिन] १ गाने-बजानेवालो की एक जाति या वर्ग जो मगल-अवसरो पर बधाइयाँ आदि गाती है। २ मुसलमान गवैयो की एक जाति या वर्ग जो प्राय अच्छे सगीतज्ञ होते है।

ढाढ़ौन—पु० [स० डिंडिणी] जल-सिरिस का पेड।

ढाना—स० [स० ध्वसन, हिं० ढाहना] १ कोई ऊँची उठी या बनी हुई इमारत या रचना तोड-फोडकर गिराना। जैसे—दीवार या मकान ढाना। २ किसी प्रकार बे-काम करके जमीन पर गिराना। जैसे—कुश्ती मे प्रतिपक्षी को या लडाई मे शत्रु को ढाना। ३ कोई विकट बात उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—गजब ढाना।

सयो० क्रि०—देना।

†४ मिटाना। (पश्चिम)

ढापना—स०=ढाँपना (ढकना)।

ढाब—पु० [हिं० डाबर] छोटा ताल। तलैया।

ढाबर—वि०, पु०=डाबर।

ढाबा—पु० [देश०] १ ओलती। २ जाल। ३ परछत्ती। मियानी। ४ वह स्थान जहाँ पकी हुई कच्ची रसोई बिकती या दाम लेकर लोगो को खिलाई जाती हो।

†पु०=धाबा।

ढामक—पु० [अनु०] ढोल, नगाडे आदि के बजने का शब्द।

ढामना†—पु० [देश०] एक प्रकार का साँप।

ढामरा—स्त्री० [स० ढाम√रा (देना)+क-टाप्] मादा हस। हसी।

ढार—पु० [स० धार] १ पथ। मार्ग। रास्ता। २ ढग। प्रकार। ३ ढाँचा। ४ वस्तुएँ ढालने का साँचा। ५ साँचे मे ढाली हुई वस्तु। ६ रचना। बनावट। ७ दे० 'ढरनि'।

†स्त्री० १ कान मे पहनने का बिरिया नाम का गहना। २ हाथ मे पहनने की पिछेले।

†स्त्री०=ढाल।

ढारना—†स० १=ढालना। २=डालना।

ढारस—पु० [स० धृष् या दाढ्र्य?] १ किसी दुखी, निराश या हतोत्साह व्यक्ति के प्रति कही जानेवाली ऐसी आशामय बात जिससे उसके मन मे फिर से कुछ उत्साह या धैर्य का सचार हो। आश्वासन।

क्रि० प्र०—देना।—बँधाना।

२ कष्ट, विपत्ति आदि के समय भी मन मे बना रहनेवाला साहस या हिम्मत। ३ मन या विचार की दृढता। (क्व०)

ढारा—वि० [हिं० ढारना] ढारने अर्थात् ढालनेवाला। उदा०—रखेउ छात चँवर औ ढारा।—जायसी।

ढाल—स्त्री० [स०√ढौक् (चलाना)+अच्, पृषो०सिद्धि] चमडे, धातु आदि का बना हुआ वह गोलाकार उपकरण जिसे युद्ध-क्षेत्र मे सैनिक लोग तलवार, भाले आदि का वार रोकने के लिए अपने बाँए हाथ मे रखते थे। चर्म। फलक।

मुहा०—ढाल-तलवार बाँधना=वीरो का-सा वेश धारण करके योद्धा बनना।

स्त्री० [स० धार] किसी भूखड का ऐसा तल जो क्षितिज के समतल न हो बल्कि तिरछा या नीचे की ओर झुका हुआ हो।

स्त्री० [हिं० ढालना] १ ढालने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह प्रकार या रूप जिसमे कोई चीज ढली या ढालकर बनी हो। ३ रग-ढग। तौर-तरीका।

पद—चाल-ढाल। (देखे)

४ चन्दे, प्राप्य धन आदि की उगाही। (पश्चिम)

ढालना—स० [स० ध्वल्, प्रा० ढाल, डल्ल, गु० ढालवूं, मरा० ढालणे, सिं० ढारराड] १ कोई द्रव पदार्थ धार बाँधकर किसी पात्र मे या यो ही कही गिराना या डालना। उँडेलना। जैसे—(क) गिलास मे दूध ढालना। (ख) हडे का पानी जमीन पर ढालना। २ कोई चीज बनाने के लिए गली या पिघली हुई धातु किसी साँचे मे उँडेलना या गिराना। जैसे—पीतल के खिलौने या लोहे के कल-पुरजे ढालना। ३ पीने के लिए बोतल मे से गिलास आदि मे शराब उलटना या गिराना ४ मद्य-पान करना। शराब पीना। जैसे—आज-कल मित्र-मडली मे

वह भी ढालने लगे है। ५ व्यग्य, हास्य आदि के रूप मे कही हुई बात किसी दूसरे व्यक्ति पर लगाना या उसकी ओर प्रवृत्त करना। जैसे—साधारण हँसी की बात भी तुम मुझ पर ही ढालने लगते हो। ६ दाम लेकर कोई चीज बेचना। (दलाल) जैसे—वे अपने दोनो मकान ढाल रहे है। ७ प्राप्य धन, चन्दा आदि उगाहना। (पजाब)

ढालवाँ—वि०=ढालुआँ।

ढालिया—पु०[हिं० ढालना] वह कारीगर जो साँचो मे चीजे ढालकर बनाता हो।
पु०[हिं० ढाल] वह योद्धा जो अपने पास ढाल (रक्षा का उपकरण) रखता हो।

ढाली (लिन्)—पु०[स० ढाल+इनि]वह सैनिक जो ढाल धारण किये हो।

ढालुआँ—वि०[हिं० ढाल] [स्त्री० ढालुई] १ (तल या स्तर)जो बराबर आगे की ओर नीचा होता गया हो। जिसमे ढाल अर्थात् आगे की ओर बराबर उतार हो। जैसे—पहाड का ढालवाँ किनारा।
वि०[हिं० ढालना] (पदार्थ) जो साँचे आदि मे ढालकर बनाया गया हो। जैसे—ढालवाँ लोटा।

ढालू—वि०[हिं० ढालना=बेचना] जो कोई चीज बेचने को हो। (दलाल)
वि०=ढालुआँ (तल)।

ढावना†—स०=ढाना (गिरना)।

ढास†—पु०[स० दस्यु]१ ठग। २ लुटेरा। ३ डाकू।
स्त्री० [हिं० ढासना] १ ढासना लगाने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—लगाना।
२ वह चीज जिसपर ढासना लगाकर बैठा जाय।

ढासना—पु०[स० धा=धारण करना+आसन] वह तकिया या और कोई ऊँची खडी वस्तु जिस पर टेक लगाकर कही बैठा जाता है। जैसे—दीवार का ढासना लगाकर बैठना।

ढाहना†—स०=ढाना (गिराना)।

ढाहा†—पु०[हिं० ढाहना]नदी का ऊँचा किनारा (जिसके आगे की मिट्टी ढह गई हो)।

ढिंढोरना—स०[हिं० ढिंढोरा] ढिंढोरा पीटना या फेरना।
स०[हिं० ढूँढना] १ तलाश करना। ढूँढना। २ बिलोडना। मथना।

ढिंढोरा—पु०[अनु० ढम+ढोल] १ वह डुग्गी या ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सार्वजनिक घोषणा की जाती है।
मुहा०—ढिंढोरा पीटना या बजाना=ढोल बजाकर किसी बात की सूचना सर्वसाधारण को देना। मुनादी करना। **ढिंढोरा फेरना**=(क) ढिंढोरा बजवाकर चारो ओर सूचना दिलवाना। मुनादी कराना। (ख) किसी घटना या बात की सूचना बहुत से लोगो को देना।
२ उक्त प्रकार से की हुई घोषणा या सब को दी जानेवाली सूचना।

ढिकचन†—पु०[देश०] एक प्रकार का गन्ना।

ढिकुली—स्त्री०=ढेकली।

ढिग—क्रि० वि०[स० दिक्=ओर] पास। समीप। निकट। नजदीक।
स्त्री० १ नजदीकी। सामीप्य। २ जलाशय का किनारा या तट। ३. छोर। सिरा। ४ चादर, धोती आदि का किनारा। पाड़।

ढिठई*—स्त्री०=ढिठाई (धृष्टता)।

ढिठाई—स्त्री०[हिं० ढीठ+आई (प्रत्य०)] १ ढीठ अर्थात् धृष्ट होने की अवस्था या भाव। धृष्टता। २ बडो के सामने लज्जा छोडकर दुस्साहसपूर्वक किया जानेवाला कोई अनुचित,अशोभन या उद्दडतापूर्ण आचरण या व्यवहार। ३ ऐसा साहस जो उचित या उपयुक्त न हो अथवा जिसके फल-स्वरूप कोई हानि हो सकती हो।

ढिपनी—स्त्री०[देश०] १ पत्ते, फल, फूल आदि का वह भाग जो गोल छेद या मुँह के आकार का होता है और जहाँ से वह टहनी या डाल के साथ जुडा रहता तथा तोडकर अलग किया जाता है। २ उक्त छेद या मुँह का वह रूप जो वानस्पतिक रस के जमने से उभरी हुई घुडी के आकार का हो जाता है। जैसे—आम, जामुन, या लीची की ढिपनी। ३ स्तन का अग्र भाग।

ढिपुनी†—स्त्री०=ढिपनी।

ढिबरी—स्त्री०[स० डिब्ब या हिं० ढपना] १ टीन, मिट्टी, शीशे आदि की वह कुप्पी जिसके मुँह पर चोंगी लगी रहती है।
विशेष—कुप्पी मे मिट्टी का तेल और चोंगी मे बत्ती डालकर यह प्रकाश करने के लिए जलाई जाती है।
२ बरतन बनाने के साँचे मे सबसे नीचे का वह भाग जिसकी सहायता से ऊपर के दोनो खड कसे जाते है। ३ किसी चीज मे कसे हुए पेच को हिलने-डुलने से रोकने के लिए उसके मुँह पर लगाया जानेवाला चूडीदार छल्ला। ४ चमडे या मूँज की वह चकती जो चरखे मे इस लिए लगाई जाती है कि तकला घिरने न पावे।

ढिमका—सर्व०[हिं० अमका-अमुका, स० अमुक का अनु०] [स्त्री० ढिमकी] अमुक। फलाना।
पद—अमका ढिमका=कोई अज्ञात, तुच्छ या सामान्य (पदार्थ या व्यक्ति)।

ढिमराऊ—वि०[हिं० ढीमर] ढीमर या धीवर जाति का।
पु० वे विशिष्ट प्रकार के गीत जो ढीमर या धीवर जाति के लोग गाते है।

ढिमरिया†—वि०[हिं० ढीमर] ढीमर या धीवर सबधी।
स्त्री० ढीमर या धीवर जाति की स्त्री।

ढिलढिला—वि०[हिं० ढीला] १ ढीला-ढाला। २ (रस या रसा) जो बहुत गाढ़ा न हो, बल्कि कुछ पतला हो।

ढिलाई—स्त्री०[हिं० ढीला+आई (प्रत्यय०)]१ ढीले होने की अवस्था या भाव। ढील। २ नियत्रण, रुकावट आदि मे होनेवाली कमी या शिथिलता। ३ कार्य, प्रबध आदि मे होनेवाली शिथिलता। सुस्ती।

ढिलाना—स०[हिं० ढीलना का प्रे०] किसी को कुछ ढीलने या ढीला करने मे प्रवृत्त करना।

ढिल्लड़—वि०[हिं० ढीला] जो ढिलाई या बहुत सुस्ती से काम करता हो। शिथिलतापूर्वक काम करनेवाला। मट्ठर। सुस्त।

ढिल्ली—स्त्री०=दिल्ली (नगरी)।

ढिल्ली वै—पु०=दिल्लीपति। उदा०—ढिल्ली वै स्वपनत ज्ञात कह्यि प्रगट विप्याय।—चदवरदाई।

ढिसरना†—अ०[स० ध्वसन]१ फिसल पडना। २ सरककर कुछ आगे बढना। ३. उन्मुख या प्रवृत्त होना। ४ फलो का कुछ-कुछ पकना।

ढींगर†—पु०[स० डिगर] १ लबा-चौडा तथा मोटा ताजा आदमी। २ पत्नी की दृष्टि से उसका पति। ३ उपपति।

ढींढ़—पु०=ढीढा।

ढींढ़स—पु०[स० टिंडिश] डेडसी। टिडा।

ढींढ़ा†—पु०[स० ढुढि=लबोदर, गणेश] १ बडा, भारी या निकला हुआ पेट।

मुहा०—ढीढा फूलना=पेट मे बच्चा होने पर (स्त्री का) पेट बढना या निकलना।

२ गर्भ। हमल।

मुहा०—ढीढा गिरना=गर्भपात होना।

ढीगे*—क्रि० वि०=ढिग (पास)।

ढीच†—पु०[?] १ सफेद चील। २ कूबड। (राज०)

ढीट†—वि०=ढीठ (धृष्ट)।

ढीठ—वि०[स० धृष्ट] [भाव० ढिठाई] १ जो जल्दी किसी से डरता न हो और जो भय या सकट के समय भी अपने स्थान या हठ पर अडा रहता हो। जैसे—शहरो के बन्दर बहुत ढीठ होते है। २ जो प्राय ऐसे अवसरो पर भी सकोच न करता हो जहाँ बडो की मान-मर्यादा का ध्यान रखना आवश्यक हो। जैसे—स्त्रियो को इतना ढीठ नही होना चाहिए। ३ जो जान-बूझ कर और हठ-वश ही बडो की आज्ञा पालन न करता हो या उनका निषेध न मानता हो। जैसे—यह लडका दिन-पर-दिन बहुत ढीठ होता जा रहा है। ४ साहसी। हिम्मतवर।

ढीठता—स्त्री०[हि० ढीठ+ता (प्रत्य०)] ढीठ होने की अवस्था, गुण या भाव। ढिठाई। धृष्टता। (असिद्ध रूप)

ढीठा†—वि०=ढीठ।

ढीठ्यौ*—स्त्री० [हिं० ढीठ] धृष्टता। ढिठाई। उदा०—त्यौ त्यौ अति मीठी लगति ज्यो-ज्यो ढीठ्यौ देइ।—बिहारी।

ढीम—पु०[देश०] १ पत्थर का बडा टुकडा। पत्थर या ढोका। २ मिट्टी आदि का बडा डला।

ढीमडो*—पु०[देश०] कूँआ। (डि०)

ढीमर—पु०[स० धीवर] १ मल्लाह। २ कहारो की एक जाति।

ढीमा—पु०=ढीम।

ढील—स्त्री०[हिं० ढीला] १ ढीले होने की अवस्था, गुण या भाव। तनाव का अभाव। २ नियत्रण, रुकावट आदि मे किसी के साथ की जानेवाली ढिलाई शिथिलता।

क्रि० प्र०—देना।

३ विलब। देर।

वि०=ढीला।

स्त्री०[देश०] सिर के बालो मे पडनेवाला एक प्रसिद्ध छोटा कीडा। जूँ।

ढीलना—स०[हि० ढीला] १ किसी कसी हुई चीज को ढीला करना या छोडना। ऐसा काम करना जिससे कसाव या तनाव दूर होता हो। २ पकडी हुई रस्सी आदि इस प्रकार ढीली छोडना जिसमे वह बराबर आगे की ओर बढती जाय। जैसे—पतग की डोर ढीलना। ३ नियत्रण, रुकावट आदि मे शिथिलता करना। ४ बधन मुक्त करना। छोड देना। ५ देर या विलब करना। ६ किसी गाढे द्रव मे पानी मिलाकर पतला करना। ७ किसी को किसी ओर ले जाना। (क्व०) जैसे—पूरब की तरफ बैल ढीलना।

ढीला—वि०[स० शिथिल, प्रा० सिढिल, ढिला] [स्त्री० ढीली, भाव० ढिलाई] १ बन्धन जिसमे आवश्यक या उचित कसाव न आने पाया हो। जैसे—ढीली गाँठ, ढीली मुट्ठी। २ पदार्थ जो कसकर बाँधा न गया हो। जैसे—ढीली धोती, ढीली पगडी। ३ जिसमे उचित कसाव-खिंचाव या तनाव का अभाव हो। जैसे—ढीली चारपाई, ढीली रस्सी, ढीली लगाम।

मुहा०—(किसी को) ढीला छोडना=आवश्यक अथवा उचित अकुश नियत्रण या दबाव न रखना। बहुत-कुछ स्वतत्रता दे रखना। जैसे—तुमने लडके को ढीला छोड रखा है, इसी लिए वह बिगडता जा रहा है।

४ जो अपने स्थान पर अच्छी तरह या ठीक जमा या बैठा न हो। जैसे—ढीला ढक्कन, ढीला पेच। ५ जो नाप आदि के विचार से आवश्यकता से अधिक गहरा, चौडा या लबा हो। जैसे—ढीला कुरता, ढीला जूता।

६ जिसमे उतना गाढापन या घनता न हो जितनी होनी चाहिए। जैसे—ढीली चाशनी, ढीली दाल या तरकारी। ७ मद। मद्धिम।

पद—ढीली आँख=धीमी परन्तु मधुर चितवन या दृष्टि।

८ आलसी। मठ्ठर। सुस्त। जैसे—ढीला नौकर। ९ जो अपने कर्त्तव्य-पालन, प्रयत्न, विचार, सकल्प आदि मे यथेष्ठ दृढ न रहता हो। जैसे—ढीला अफसर, ढीला मालिक। १० जिसका आवेश, क्रोध या और कोई मनोविकार मन्द पड गया हो या पडने लगा हो। जैसे—बात-चीत या व्यवहार मे किसी के साथ ढीला पडना।

क्रि० प्र०—पडना।

११ जिसमे काम का वेग या स्त्री-प्रसग की शक्ति उचित या स्वाभाविक से बहुत कम हो।

ढीलापन—पु० [हिं० ढीला+पन (प्रत्य०)] ढीले होने की अवस्था या भाव। ढिलाई। शिथिलता।

ढीह†—पु० १ =ढूह (ऊँचा टीला)। २ =डीह।

ढुंढ†—पु०[हिं० ढूँढना] १ चाईं। उचक्का। २ ठग। लुटेरा।

ढुढन—पु०[स०√ढुढ् (खोजना)+ल्युट्-अन] ढूँढने की क्रिया या भाव।

ढुढपाणि*—पु०[स० दडपाणि] १ दडपाणि। भैरव। २ शिव का एक गण।

ढुढा—स्त्री०[स०] राक्षस हिरण्य कश्यप की एक बहन जो प्रह्लाद को जलाने के निमित्त उसे गोद मे लेकर आग मे बैठी थी। भगवान शिव का यह वर 'कि तुम आग मे नही जलोगी', प्राप्त होने पर भी विष्णु भगवान की कृपा से यह जलकर भस्म हो गई थी।

ढुढि—पु० [स०√ढुढ्+इन्] गणेश का एक नाम। ढुढिराज। ये ५६ विनायको मे से एक है।

ढुढित—वि०[स०√ढुढ् (खोजना)+क्त] ढूँढा हुआ।

ढुढिराज—पु०[स०] ढूढि नामक गणेश।

ढुढी—स्त्री०[देश०] बाँह

मुहा०—ढुढियाँ चढाना=मुश्के बाँधना।

ढुढ़ी†—स्त्री०=ढोढी।

ढुकना—अ० [स० ढुक्क, प्रा० ढुक्कइ] १ अन्दर प्रवेश करना, विशेषत झुक या छिपकर अथवा सिर झुकाकर प्रवेश करना। २ किसी के पास या समीप पहुँचना। ३ टोह लेने के लिए आड मे छिपना। ४ किसी पर टूट पडना। धावा करना।

ढुकास†—स्त्री० [अनु० ढुक-ढुक] बहुत तृषित होने पर जल्दी-जल्दी बहुत सा जल पीने की प्रबल इच्छा। कडी या तेज प्यास।

क्रि० प्र०—लगना।

ढुक्का—पु०=ढूका।

ढुच्चा†—पु० [अनु०] घूँसा। मुक्का।

ढुटौना†—पु०=ढोटा (लडका)।

ढुनमुनिया—स्त्री० [हिं० ढनमनाना] १ बराबर लुढकते हुए या बार-बार कलाबाजी खाते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव। २. स्त्रियो का घेरा बाँधकर नाचते हुए कजली गाना।

ढुर—अव्य०=धुर (ठिकाने तक)।

ढुरकना†—अ० [हिं० ढार] १ लुढकना। २ झुकना। ३ प्रवृत्त होना। ४ अनुकूल या प्रसन्न होना।

ढुरकी—स्त्री० [हिं० ढुरकना] ढुरकने की क्रिया या भाव।

स्त्री०=ढरकी (करघे की)।

ढुर-ढुर—वि० [?] १ साफ-सुथरा। २ चिकना।

ढुरन—स्त्री० [हिं० ढुरना] ढुरने की अवस्था, क्रिया या भाव।

ढुरना—अ० [हिं० ढार] १ नीचे की ओर प्रवृत्त होना। ढलना। २ किसी ओर अथवा किसी पर अनुरक्त या कृपालु होना। अनुकूल या प्रसन्न होना। ३ कभी इधर और कभी उधर गिरना, झुकना या लुढकना जैसे—किसी के सिर पर चँवर ढुरना। ४ ढुलकना। लुढकना। ५ ढलकना।

ढुरहरी—स्त्री० [हिं० ढुरना] १ बार-बार इधर-उधर, ढुरने या हिलने-डोलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ नथ मे लगी हुई सोने के गोल दानो, मोतियो आदि की पक्ति जो प्राय इधर-उधर लुढकती रहती है। ३ ढुर्री। पगडडी।

ढुराना—स० [हिं० ढुरना का स०] १ ढुरने अर्थात् नीचे की ओर गिरने जाने आदि मे प्रवृत्त करना। ढलकाना। २ बार बार इधर, उधर हिलने-डोलने मे प्रवृत्त करना। जैसे—चँवर ढुराना। ३ लुढकाना।

ढुरावना—स०=ढुराना।

ढुरुआ—पु० [हिं० ढुरना] गोल मटर। केराव मटर।

ढुरुकना*—अ०=ढुलकना।

ढुर्री—स्त्री० [हिं० ढुरना] खेतो जगलो, पहाडो आदि मे का वह पतला रास्ता जो लोगो के चलते रहने या आने-जाने से आप से आप रेखा के रूप मे बन जाता है। पगडडी।

ढुलकना—अ० [हिं० ढुरना या ढलना] १ द्रव पदार्थ का नीचे की ओर प्रवृत्त होना। २ बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना। लुढकना। ३ किसी पर अनुरक्त या प्रसन्न होना। ४ दे० 'ढलना'।

ढुलकाना—स० [हिं० ढुलकना का स०] १ किसी चीज को ढुलकने मे प्रवृत्त करना। २ लुढकाना।

ढुलढुल—वि० [हिं० ढुलना=ढुलकना] जो बराबर लुढकता रहता हो।

ढुलना—अ० [हिं० ढोना का अ०] एक स्थान से उठाकर किसी भारी चीज या चीजो का दूसरे स्थान पर पहुँचाया, रखा या लाया जाना। ढोया जाना। जैसे—असबाब या माल का ढुलना।

†अ० १ =ढुलकना (सभी अर्थो मे)। २ =डुलना (चँवर आदि का)।

ढुलमुल—वि० [हिं० ढुलना मे का ढुल+अनु० मुल] १ (पदार्थ) जो किसी स्थान पर स्थिर न रहने के कारण बराबर हिलता-डुलता रहे। २. (व्यक्ति) जो विचारो की दृढता या निश्चय के अभाव मे किसी बात के दोनो पक्षो मे से कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर प्रवृत्त होता हो। जिसमे किसी बात या विषय के सबध मे अतिम निर्णय करने की समर्थता न हो। जैसे—ढुलमुल-यकीन=जल्दी हर बात पर अथवा कभी एक बात पर और कभी दूसरी बात पर विश्वास कर लेनेवाला।

ढुलवाई—स्त्री० [हिं० ढुलवाना] ढुलवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढुलवाना—स० [हिं० ढोना का प्रे०] किसी को कुछ ढोने मे प्रवृत्त करना। ढोने का काम किसी दूसरे से कराना।

ढुलाई—स्त्री० [हिं० ढोना या ढुलवाना] १ ढोने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'ढुलवाई'।

ढुलाना—स० [हिं० ढोना का प्रे०] कोई चीज ढोने का काम किसी से कराना। ढुलवाना। जैसे—असबाब ढुलाना।

†स० १ नीचे की ओर गिराना, बहाना या लाना। ढलकाना। २ किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त कराना, अनुकूल या प्रसन्न कराना। ३ लुढकाना। ४ इधर-उधर चलाना-फिराना या लाना-ले जाना। ५ लेप आदि के रूप मे किसी चीज पर पोतना या लगाना। ६. डुलाना। (दे०)

ढुलुआ—पु० [देश०] खजूर की बनी हुई चीनी।

ढुवारा†—पु० [देश०] घुन (कीडा)।

ढूँकना—अ०=ढुकना।

ढूँका†—पु०=ढूका।

ढूँढ—स्त्री० [हिं० ढूँढना] ढूँढने की क्रिया या भाव। खोज।

ढूँढना—स० [स० ढुढ] किसी छिपी या खोई हुई अथवा इधर-उधर पडी हुई या आँखो से ओझल वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने के लिए इधर-उधर देखना-भालना। जैसे—आलमारी मे से किताब ढूँढना। (ख) किसी वकील का घर या डाक्टर की दूकान ढूँढना।

ढूँढला—स्त्री० [स० ढुढा] हिरण्य कश्यप की बहन ढुँढा।

ढूकडा†—अव्य० [स० ढौक] पास। समीप। (राज०) उदा०—साल्ह महलहूँ ढूकडा ढाठी डेरउ लीध।—ढोला मारू।

ढूका—पु० [हिं० ढुकना] १ ढुकने या प्रविष्ट होने की क्रिया या भाव। २ किसी की बात सुनने या रग-ढग देखने के लिए आड मे छिप या लुककर बैठना।

मुहा०—ढूका देना या लगाना=छिप या लुककर किसी की बात-चीत सुनना या रग-ढग देखना। **(किसी के) ढूके लगाना**=ढूका लगाना। (देखे ऊपर)

ढूढ़िया—पु० [देश०] एक तरह के श्वेताम्बर जैन साधु जो मुँह पर पट्टी बाँधे रहते है।

ढूल*—पु०=ढोल। उदा०—असष सारहली बाजइ ढूल।—नरपतिनाल्ह।

ढूलड़ी†—स्त्री० [?] गुडिया। (डि०) उदा०—राजकुँमारि ढूलड़ी रमाति।—प्रिथीराज।

ढूसर—पु० [देश०] वैश्यो का एक वर्ग जो आज-कल प्राय 'भार्गव' नाम से प्रसिद्ध हो रहा है।

ढूसा†—पु० [अनु०] कुश्ती के समय नीचे गिरे या पट पडे हुए पहलवान की गरदन पर कलाई और कोहनी के बीच की हड्डी से बार बार रगडते हुए किया जानेवाला आघात। रद्दा।

ढूह†—पु० [स० स्तूप] १ ढेर। अटाला। २ टीला। भीटा। ३ सीमा आदि का सूचक मिट्टी का छोटा, ऊँचा ढेर।

ढूहा—पु०=ढूह।

ढेंक—स्त्री० [स० ढेक] लबी गरदनवाला एक प्रकार का जलपक्षी।

ढेंकली—स्त्री० [हि० ढेक=लबी गरदनवाली एक चिडिया] १ चावल निकालने के लिए धान कूटने का एक प्रसिद्ध यत्र जो लबी मोटी लकडी का बना होता और जो बार बार पैर से दबाकर चलाया जाता है। ढेकी।

मुहा०—(किसी को) ढेंकली मे डालना=ऐसी अवस्था मे रखना जिसमे बहुत कष्ट या सकट हो।

२ सिचाई आदि के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक यत्र जिसमे एक ढाँचे पर बधे ऊँचे बाँस के सिरे पर पानी भरने के लिए कोई पात्र विशेषत डोल बधा रहता है। ३ कपडे जोडने के लिए एक प्रकार की आडी सिलाई।

क्रि० प्र०—मारना।

४ अरक, असव आदि खीचने का वक-तुड नामक यत्र। ५ सिर नीचे करके सारे शरीर को उलटकर दूसरी ओर ले जाने की क्रिया। कलाबाजी। कलैया।

क्रि० प्र०—खाना।

ढेंका—पु० [हि० ढेक=पक्षी] १ कोल्हू मे का वह बाँस जो जाट के सिरे से कतरी तक लगा रहता है। २ दे० 'ढेकली'।

ढेंकिका—स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य।

ढेंकिया—स्त्री० [हि० ढेकी] सिलाई मे, कपडे काटने का एक ढग या काट जिसके फलस्वरूप किसी कपडे की लबाई एक तिहाई घट जाती है और चौडाई एक तिहाई बढ जाती है।

ढेंकी—स्त्री० [स०] नृत्य का एक प्रकार।

स्त्री०=ढेकली।

ढेंकुर—पु० [स्त्री० ढेकुरी] दे० 'ढेकली'।

ढेंकुला†—पु०=बडी ढेकली।

ढेंकुली—स्त्री०=ढेकली।

ढेंटी—स्त्री० [देश०] –धव का पेड।

ढेंढ़†—पु० [देश०] १ हिन्दुओ मे एक जाति जिसकी गिनती अन्त्यजो मे होती थी। २ कौआ।

वि० जिसे कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। जड।

†पु०=डोडा (वनस्पतियो का)।

ढेंढर—पु० [हि० टेटर] १ एक रोग जिसमे आँख के डेले पर मास निकल आता है। २ इस प्रकार आँख के डेले पर उभरा या निकला हुआ मास।

ढेंढवा—पु० [देश०] लगूर।

ढेंढा†—पु० १ =ढेढ। २ =ढेढवा।

ढेंढ़ी—स्त्री० [हि० ढेढा] १ कपास पोस्ते आदि की डोडी। २ कान मे पहनने का एक गहना।

ढेंप—स्त्री०=ढेपनी (ढिपनी)।

ढेंपनी—स्त्री०=ढिपनी।

ढेउआ†—पु० [स० ढेब्बुका] पैसा नाम का ताँबे का सिक्का।

ढेऊ†—पु० [देश०] पानी की तरग। लहर।

ढेक—स्त्री० =ढेक (जल-पक्षी)।

ढेकुला—पु० =ढेकुला (बडी ढेकली)।

ढेड—पु०=ढेढ।

ढेडस—स्त्री०=डेडसी।

ढेपुनी†—स्त्री०=ढिपनी।

ढेबरी—स्त्री०=ढिबरी।

ढेबुआ—पु०=ढेउआ (पैसा)।

ढेबुक—पु०=ढेउआ (पैसा)।

ढेम मौज—स्त्री० [देश० ढेऊ+फा० मौज] ऊँची या बडी लहर।

ढेर—पु० [हि० धरना ?] [स्त्री० अल्पा० ढेरी] एक स्थान पर विशेषत एक दूसरी पर रखी हुई बहुत सी वस्तुओ का ऊँचा समूह।

विशेष—ढेर सदा निर्जीव पदार्थो का होता है।

मुहा०—ढेर करना =किसी को मारकर इस प्रकार गिरा देना कि वह निर्जीव पदार्थ का ढेर या राशि जान पडे अथवा हो जाय।

पद—ढेर-सा=मान, मात्रा आदि मे अधिक या बहुत। **जैसे—ढेर-सा**, रुपया।

ढेरना†—पु० [देश०] सूत या रस्सी बटने की फिरकी।

ढेरा—†पु० [देश०] १ सुतली बटने की फिरकी जो परस्पर काटती हुई दो आडी लकडियो के बीच मे एक खडा डडा जडकर बनाई जाती है। २ लकडी का वह घेरा जो मोट के मुँह पर लगा होता है। ३ चकई नाम का खिलौना। ४ अकोल वृक्ष।

†पु०=ढेला।

पु० [?] सिहोर नामक वृक्ष। उदा०—हैसि मकोई ढाँक औ **ढेरा**।—नूर मुहम्मद।

ढेरा ढोक—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।

ढेरी—स्त्री० [हि० ढेर] छोटा ढेर। जैसे—आमो की ढेरी।

ढेल—पु०=ढेला।

ढेलवाँस—स्त्री० [हि० ढेला+स० पाश] एक प्रकार की जालीदार थैली जिसके एक सिरे पर लबी रस्सी बधी रहती है।

विशेष—थैली मे बहुत से छोटे-मोटे ककड पत्थर भरे जाते है और तब उस रस्सी से पकडकर उसे चारो ओर आकाश मे घुमाया जाता है जिससे ककड पत्थर चुट-फुट इधर-उधर गिरकर आघात करते है।

ढेला—पु० [स० दल, हि० डला] १ किसी जमी हुई चीज का कडा और ठोस छोटा टुकडा जिसका आकार या रूप नियमित न हो और जो हाथ मे उठाया जा सके। जैसे—मिट्टी या पत्थर का ढेला, गुड या नमक का ढेला। २ अवध मे होनेवाला एक तरह का धान। उदा०—मधुकर ढेलाजीरा सारी।—जायसी।

ढेला चौथ—स्त्री० [हि० ढेला+चौथ] भादो सुदी चौथ जिस दिन चद्रमा देख लेने पर उसके कलकात्मक दोष से बचने के लिए आस-पास के मकानो पर ढेले फेके जाते और गालियाँ सुनी जाती है।

ढेवुका—स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक सिक्का जो एक पैसे के मूल्य के बराबर होता था।

ढेक†—पु० [?] मेढक।

ढेकली—स्त्री०=ढेकली।

ढैचा—पु० [देश०] १ चकवँड की तरह का एक पेड जिसकी छाल से रस्सियाँ बनाई जाती है। जयती। २ सन या पटवे के डठल जिससे प्राय भीटा छाया जाता है।

†पु०=ढोचा (पहाडा)।

ढैया—स्त्री० [हिं० ढाई] १ ढाई सेर का बाट। २ ढाई सेर की तौल। ३ ढाई गुने का पहाडा। ढौचा। ४ फलित ज्योतिष मे, शनि का भोग-काल जो ढाई पहर, ढाई दिन, ढाई महीने, ढाई वर्ष आदि का होता है।

ढोक—स्त्री०=ढोक (मछली)।

ढोंकना—स० [अनु०] कोई चीज अधिक मात्रा मे और जल्दी जल्दी पीना। (व्यग्य)

ढोका—पु० [देश०] १ किसी चीज का ठोस, कडा तथा बडा टुकडा। बडा ढेला। जैसे—पत्थर या मिट्टी का ढोका। २ वह बाँस जो कोल्हू मे जाट के सिरे से लेकर कोल्हू तक बँधा रहता है। ३ दो ढोली अर्थात् ४०० पानो के मान की सज्ञा।

ढोंग—पु० [हिं० ढग] दूसरो की दया, सहानुभूति आदि प्राप्त करने के लिए खडा किया हुआ ढकोसला या रचा हुआ पाखड।

ढोंगधतूर—पु० [हिं० ढोग+धूर्त्त] १ ऐसा व्यक्ति जो ढोग रचकर अपना काम निकाल लेता हो। २ धूर्त्त विद्या।

ढोंग-बाज—वि०=ढोंगी।

ढोंग-बाजी—स्त्री० [हिं० ढोग+फा० बाजी] झूठ-मूठ ढोग रचने की क्रिया या भाव।

ढोंगी—वि० [हिं० ढोग] ढोग रचनेवाला झूठा आडबर खडा करनेवाला। (व्यक्ति)

ढोटा—पु०=ढोटा।

ढोढ़—पु० [स० तुड] १ कपास, पोस्ते आदि की कली। २ कली।

ढोढी—स्त्री० [हिं० ढोढ] १ नाभि। धुन्नी। २ कली। डोडी।

ढोक—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली जो १२ इच लबी होती है। ढेरी। ढोक।

ढोका—पु०=ढोका।

ढोटा—पु० [हिं० ढोटी का पु०] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लडका।

ढोटी—स्त्री० [सं० दुहितृ] १ पुत्री। बेटी। २ बालिका। लडकी।

ढोटौना—पु०=ढोटा।

ढोड†—पु० [देश०] ऊँट। (डि०)

ढोना—स० [स० वोढ=वहन करना, ले जाना, आद्यत विपर्यय—ढोव] १ पीठ या सिर पर रखकर या हाथ मे लटकाकर कोई भारी चीज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—मजदूरो का माल ढोना। २ पशु, यान आदि पर लादकर भारी चीजे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—गधो पर ईंटें ढोना। ट्रक या बैलगाडी पर अनाज या माल ढोना। ३ कही से बहुत-सी सपत्ति आदि अनुचित रूप से उठाकर ले जाना। ४ विपत्ति, कष्ट आदि मे निर्वाह करना।

ढोर—पु० [हिं० ढुरना] गाय, बैल आदि पशु। चौपाया।

स्त्री० [हिं० ढुरना] १ ढुरने की क्रिया या भाव। २ अगो आदि का कोमलतापूर्ण और मोहक सचालन। नजाकत की दशा। उदा०—कोमल चरन कौल नटवर ढोर मोर, पोर-पोर छोरै छवि कोटिन अनग की। —भारतेन्दु।

ढोरना†—स० [हिं० ढारना] १ ढालना। ढरकाना। २ लुढकाना। ३ हिलाना-डुलाना। ४ (अपने या किसी के) पीछे या साथ चलने मे प्रवृत्त करना। पीछे लगाना।

अ० १ जमीन पर लोटना या लुढकना। २ किसी का अनुयायी बनकर उसके पीछे या साथ चलना।

ढोरा—पु०=ढोर।

ढोरी—स्त्री० [हिं० ढोरना] १ ढोरने का भाव। २ उत्कट अभिलाषा। ३ धुन। लगन। उदा०—ढोरी लाई सुनन की कहि गोरी मुसकात। —बिहारी।

ढोल—पु० [स० ढक्का√ला (लेना)+क, पृषो० सिद्धि, मि० फा० दुहुल] १ एक प्रकार का लबोतरा बाजा जिसके दोनो ओर चमडा मढा होता है।

मुहा०—(किसी बात का) ढोल पीटना या बजाना=कोई बात खुले आम सबसे कहते फिरना। २ कान की वह झिल्ली या परदा जिसपर वायु का आघात पडने से शब्द का ज्ञान होता है।

ढोलक—स्त्री० [स० ढोल+कन्] एक तरह का छोटा ढोल। ढोलकी।

ढोलकिया—पु० [हिं० ढोलक] ढोल बजानेवाला व्यक्ति।

ढोलकी—स्त्री०=ढोलक।

ढोल-ढमक्का—पु० [हिं० ढोल+अनु० ढमक्का] १ ढोल और उसके साथ बजनेवाले कई तरह के बाजे। २ व्यर्थ का बहुत अधिक आडबर।

ढोलन—पु० [हिं० ढोला] १ दूल्हा। २ पति।

ढोलना—पु० [हिं० ढोल] ढोलक के आकार का एक तरह का छोटा जतर जिसे तागे मे पिरोकर गले मे पहना जाता है।

स० १ =ढालना। २ =ढोरना या डोलाना।

ढोलनी—स्त्री० [स० ढोलन] बच्चो का छोटा झूला। पालना।

ढोलवाई—स्त्री० दे० 'ढुलवाई'।

ढोला—पु० [हिं० ढोल] १ सडी हुई वनस्पतियो, शरीरो आदि मे पडनेवाला एक तरह का सफेद छोट कीडा। २ हद या सीमा का निशाना। ३ देह। शरीर।

†पु० [स० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह] १ वर। दूल्हा। २ पति। ३. प्रियतम। ४ विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। (पश्चिम) ५ कलवाहा वश के राजा नल के पुत्र का नाम जिसका प्रेम मारवणी पूगल के राजा पिंगल की कन्या मारू से हुआ था। इनकी प्रेम गाथा अति प्रसिद्ध है।

ढोलिनी—स्त्री० [हिं० ढोलिया का स्त्री० रूप] ढोल बजानेवाली।

ढोलिया—पु० [हिं० ढोल] [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला व्यक्ति।

ढोली—स्त्री० [हिं० ढोल] दो सौ पानो की गड्डी या थाक।

†स्त्री०=ठठोली।

ढोव—पु० [हिं० ढोवना (ढोना)] १ ढोने की क्रिया या भाव। २ ढोकर ले जाई जानेवाली चीज। ३ प्राचीन काल मे, वह भेट जो राजा को

सरदार लोग मगल अवसरो पर देते थे और जो मात्रा, मान आदि की अधिकता के कारण ढोकर ले जाई जाती थी।

ढोवना†—स०=ढोना।

ढोवा—पु०[हिं० ढोना]१ ढोये जाने की क्रिया या भाव। ढुलाई। २ माल ढोनेवाला व्यक्ति। ३ दूसरो का माल या सपत्ति अनुचित रूप से उठाकर ले जाना। लूट। †४ =ढोव।

ढोवाई†—स्त्री०=ढुलाई।

ढोहना*—स०१ =ढोना। २ =ढूँढना।

ढौंचा—पु० [स० अर्द्ध प्रा० अट्ठ=हिं० चार] साढे चार का पहाडा।

ढौंसना—अ०[हिं० धौंस से अनु०,] आनद ध्वनि करना।

ढौकन—पु०[स०√ढौक् (गमनादि)+ल्युट्—अन]१ घूसप। रिश्वत। २ उपहार। भेट।

ढौकना—स०[देश०] तरल पदार्थ जल्दी-जल्दी और बहुत अधिक पीना। (व्यग्य)

ढौरना†—स०[हिं० ढाल] इधर-उधर घुमाना। ढुराना।

ढौरा—वि० [स० धवल] [स्त्री० ढौरी] १ सफेद। २ साफ स्वच्छ।

ढौरी*—स्त्री०[हिं०] धुन। लगन।

स्त्री०[हिं० ढरना] ढग। तरीका।

ण

ण—देवनागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, अनुनासिक, अल्पप्राण तथा सघोष व्यजन है।

पु०[स० √नख् (गति)+ड, पृषो० सिद्धि]१ आभूषण। गहना। २ ज्ञान। ३ निर्णय। फैसला। ४ वह स्थान जहाँ पीने का पानी रखा जाता हो। ५ दान। ६ शिव का एक नाम। ७ बुद्ध का एक नाम। ८ पिगल मे नगण का सक्षिप्त रूप।

वि० गुणो आदि से रहित या शून्य।

ण-गण—पु०[मध्य०स०] छन्द शास्त्र मे, दो मात्राओ का एक मात्रिक गण। इसके ये दो रूप होते हैं—(क)श्री (ऽ) और(ख) हरि (।।)।

त

त—देवनागरी वर्णमाला का १६वाँ और तवर्ग का पहला व्यजन जो उच्चारण तथा भाषाविज्ञान की दृष्टि से दत्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा अघोष होता है। छन्दशास्त्र मे यह तगण का सक्षिप्त रूप माना जाता है और कविता मे यह 'तो' का अर्थ देता है। उदा०—नाहिंत मौन रहब दिन राती।—तुलसी।

पु०[स० √तक् (हँसना)+ड]१ पुण्य। २ रत्न। ३ अमृत। ४ बुद्ध का नाम। ५ स्तन। ६ गोद। ७ गर्भाशय। ८ नाव। ९ योद्धा। १० बर्बर ११ शठ। १२ म्लेच्छ। १३ चोर। १४ झूठ। १५ दुम। पूँछ।

*क्रि० वि०=तो।

तँई—अव्य०=तई।

तक—पु० [स० √तक् (कष्ट से जीना)+अच्] १ दुखी जीवन। २ प्रिय के वियोग से होनेवाला कष्ट या दुख। ३ डर। भय। ४ पत्थर की टाँकी। ५ पहनने के कपडे।

तकन—पु०[स०√तक्+ल्युट्—अन] कष्टमय जीवन व्यतीत करना।

तकारी—स्त्री०=टँगारी (कुल्हाडी)।

तग—वि०[फा०]१ जिसमे आवश्यक या उचित चौडाई या विस्तार का अभाव या कमी हो। सँकरा। सकीर्ण। जैसे—तग कमरा, तग गली। २ (पहनने की चीज) जिसमे कष्टदायक कसावट या सकीर्णता हो। आवश्यकता से अधिक कसा हुआ और कुछ छोटा जैसे—तग कुरता, तग जूता। ३ (व्यक्ति) जो किसी बात से बहुत चिन्तित और दुखी या पीडित हो रहा हो। परेशान। हैरान। जैसे—(क) लडका सब को बहुत तग करता है। (ख) महीनो से उसे बुखार ने तग कर रखा है। ४. (काम या बात) जिसमे आवश्यक या उचित विस्तार के लिए यथेष्ट अवकाश न हो। जैसे—आज-कल उनका हाथ बहुत तग है, अर्थात् उनके हाथ मे काम चलाने योग्य धन नही है। ५ (मन या हृदय) जिसमे उदारता, सहृदयता आदि का अभाव हो। जैसे—वह बहुत तग दिल का आदमी है, उससे सहायता की कोई आशा नही रखनी चाहिए।

पु०वह तस्मा जिससे घोडो की पीठपर जीन या साज कसकर (उसके पेट के नीचे से) बाँधा जाता है।

पु०[?] १ टाट का बोरा। २ धन-सपत्ति। ३ ज्ञान। उदा० —आवत जात दोऊ विधि लूटै सर्व तगहरि लीन्हो हो।—कबीर।

तगदस्त—वि०[फा०] [भाव० तग-दस्ती]१ कृपण। २ धनहीन। ३ जिसके हाथ मे अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए यथेष्ट धन न हो।

तगदस्ती—स्त्री० [फा०] १ कृपणता। कजूसी। २ आर्थिक कष्ट या सकट।

तगहाल—वि०[फा०+अ०] [भाव० तग-हाली]१ कष्ट विपत्ति या या सकट मे पडा हुआ। २ आर्थिक कष्ट या सकट मे पडा हुआ। ३ रोग-ग्रस्त। बीमार।

तगहाली—स्त्री०[फा०+अ०]तगहाल होने की अवस्था या भाव।

तगा—पु०[?]१ एक प्रकार का पेड। २ ताबे का एक छोटा सिक्का जो प्राय दो पैसे मूल्य का होता था। टका।

तंगिया—स्त्री०[फा० तग]१ छोटा तंग या तस्मा। २ पहनने के कपडो मे लगाई जानेवाली तनी। बन्द। जैसे—अँगिया या मिरजई की तंगिया।

तगी—स्त्री०[फा०]१ तग होने की अवस्था या भाव। सकीर्णता। २ विपत्ति या सकट मे पडकर चिंतित और दु खी होने की अवस्था या भाव। ३ आर्थिक सकट। धन आदि का अभाव। ४ ऐसी अवस्था जिसमे किसी चीज की पूर्ति की अपेक्षा माँग अधिक होने के कारण उसका यथेष्ट मात्रा मे उपलब्ध होना सभव न हो। जैसे—शहर मे वर्षो से पानी की तगी है।

तजेब—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बढिया महीन मलमल।

तड—पु० [स०√तड् (मारण)+अच्] एक प्राचीन ऋषि का नाम। पु०[स० ताडव] नाच। नृत्य।

तडक—पु०[स०√तड्(नृत्य)+ण्वुल्—अक]१ खजन पक्षी। २ फेन। ३ वृक्ष का तना या धड। ४ साहित्य मे, ऐसी पदावली जिसमे समासो की अधिकता हो। ५ बहुरूपिया।

तडव—पु०=ताडव।

तडा—स्त्री०[स०√तड्+अच्—टाप्] वध। हत्या।

तडि—पु०[स०√तड्+इन् (बा०)] एक वैदिक ऋषि।

तडु—पु०[स० √तड्+उन्]महादेव जी के नदिकेश्वर।

तडुरण—पु०[स०]१ चावल का पानी। २ कीडा-मकोडा।

तडुरीण—पु०[स० तडा+उरच्+ख—ईन]१ चावल की धोवन। २ छोटे-मोटे कीडे या फतिगे। ३ बर्बर व्यक्ति। ४ वज्र मूर्ख।

तंडुल—पु० [स०√तड्+उलच्] १ चावल । २ बायविडग। ३ चौलाई का साग। ४ हीरे की एक पुरानी तौल जो सरसो के बराबर होती थी।

तडुल-जल—पु०[मध्य०स०] वह पानी जिसमे चावल भिगोया अथवा पकाया गया हो। वैद्यक मे यह बल-वर्द्धक तथा सहज मे पचनेवाला माना जाता है।

तंडुलाबु—पु० [स० तडुल-अबु, मध्य०स०]१ तडुल-जल। २ पके हुए चावल की माँड। पीच।

तडुला—स्त्री०[स०√तड्+उलच्—टाप्]१ बायबिडग। २ ककही या कघी नाम का पौधा।

तंडुलिया—स्त्री०[स० तडुली] चौलाई (साग)।

तंडुली—स्त्री० [स० तडुल+डीष्] १ एक प्रकार की ककडी। २ चौलाई का साग। ३ यव-तिक्ता लता।

तंडुलीक—पु०[स० तडुली√कै (प्रतीत होना)+क] चौलाई का साग।

तंडुलीय—पु०[स० तडुल+छ—ईय]चौलाई का साग। वि० तडुल-सबधी।

तडुलीयक—पु० [स० तण्डुलीय + क(स्वार्थ)] १ बायबिडग। २ चौलाई का साग।

तंडुलीयिका—स्त्री०[स० तडुलीय+कन्—टाप्, इत्व]बायबिडग।

तडुलु—पु०[स०=तडुल, पृषो० उत्व] बायबिडग।

तंडुलेर (रक)—पु० [स० तडुल+ढ—एय] चौलाई का साग।

तंडुलोत्थ—पु०[स० तडुल-उद्√स्था (ठहरना)+क]=तडुल-जल।

तंडुलोदक—पु०[स० तडुल-उदक, ष०त०]=तडुल-जल।

तडुलौघ—पु०[स० तडुल-ओघ, ष०त०] एक प्रकार का बाँस।

तत†—पु०[स० ततु] १ ततु। ताँत। २ निरन्तर चलता रहनेवाला क्रम। ३ सूत्र। ४ किसी बात के लिए मन मे होनेवाली ऐसी उतावली जो लगन या लौ की सूचक हो। ५ प्रबल इच्छा या कामना। ६ अधीनता। वश।

क्रि० प्र०—लगना।

७ दे० 'ततु'।

पु०[स० तत्र]१ ऐसा बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगे होते है। जैसे—बीन, सितार आदि। २ क्रिया। ३ तत्र-शास्त्र। ४ किसी के अधीन या वशवर्ती होना।

वि० जो तौल मे ठीक या बराबर हो।

†पु०=तत्त्व।

तत-मंत—पु०=तत्र-मत्र।

तंतरी*—पु०, वि०=तत्री।

तति—स्त्री०[स० √तन् (विस्तार)+क्तिच्]१ डोरी, तात अथवा इसी तरह की कोई और वस्तु। २ कतार। पक्ति। ३ विस्तार। ४ गाय। गौ। ५ बुनकर। जुलाहा।

तंतिपाल—पु०[स० तति√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] १ सहदेव का वह नाम जिससे वह अज्ञातवास के समय विराट के यहाँ प्रसिद्ध थे। २ गौओ का पालन और रक्षा करनेवाला व्यक्ति।

ततिसर†—पु०[स० तत्री स्वर] ऐसे बाजे, जिसमे बजाने के लिए तार लगे हो। जैसे—सारगी, सितार आदि।

तंतु—पु०[स०√तन्(विस्तार)+तुन्]१ ऊन, रेशम, सूत आदि का बटा हुआ डोरा। तागा। २ सूत की तरह के वे पतले, लबे रेशे जिनके योग से प्राणियो, वनस्पतियो आदि के भिन्न-भिन्न अग बने होते हैं। ३ धातु का वह विशिष्ट प्रकार का बहुत ही महीन तार जो बिजली के लट्टुओ, निर्वात नलियो आदि मे लगा रहता है और जो विद्युतधारा से तपकर चमकने और प्रकाश देने लगता है। **(फिलामेन्ट)**। ४ पौधो का वह पतला अग जो आस-पास की टहनियो आदि से लगकर चक्कर खाता हुआ उनका आश्रय लेता है। ५ मकडी का छाता।

पद—ततु कीट। (दे०)

६ चमडे की बटी हुई डोरी। ताँत। ७ अष्ट-पाद जाति की मछली जो बहुत ही घातक और हिसक होती है। ८ फैलाव। विस्तार। ९ बाल-बच्चे। औलाद। सतान। १० किसी प्रकार की परम्परा। निरतर चलनेवाला क्रम। जैसे—वश या यज्ञ का ततु।

*पु०=तत्र।

तंतुक—पु० [स० ततु√कै (प्रतीत होना)+क] १ सरसो। २ रस्सी।

ततुका—स्त्री०[स० ततुक +टाप्]नाडी।

ततुकाष्ठ—पु०[मध्य०स०] जुलाहो की एक प्रकार की लकडी या ब्रुश जिससे ताना साफ किया जाता है। तूली।

तंतुकी—स्त्री०[स० ततुक+डीष्] नाडी।

तंतुकीट—पु०[मध्य०स०]१ मकडी। २ रेशम का कीडा।

तंतु-जाल—पु०[ष०त०] शरीर के अन्दर जाल के रूप मे फैली हुई नसे। (वैद्यक)।

तंतुण, तंतुन—पु०[स०√तन्+तुनन्] 'मगर' नामक जल-जतु।

तंतु-नाग—पु०[उपमि०स०] मगर नामक जल-जतु।
ततु-नाभ—पु०[ब०स०, अच्] मकडा।
ततु-निर्यास—पु०[ब० स०] ताड का वृक्ष।
ततु-पर्व (न्)—पु० [ब०स०] तागा अर्थात् राखी बाँधने का पर्व। रक्षा-बधन।
ततुभ—पु०[स० ततु√भा (प्रकाशित होना)+क]१ सरसो। २ गौ का बच्चा। बछडा।
तंतुमत्—पु०=ततुमान्।
ततुमान् (मत्)—पु०[स० ततु +मतुप्] अग्नि। आग।
तंतुर—पु०[स० ततु+र] कमल की जड। भसीड। मृणाल।
ततुल—पु०[स० ततु√ल्च्] मृणाल। कमलनाल।
ततुवादक—पु० [स० ष०त०] वह व्यक्ति जो तारवाले बाजे (जैसे—सारगी, सितार आदि) बजाता हो।
ततुवाप—पु०[स० ततु√वप् (बुनना) +अण्] दे० 'ततुवाय'।
ततुवाय—पु० [स०ततु√वेञ् (बुनना)+अण्] १ कपडे बुननेवाला। जुलाहा। ताँती। बुनकर। २ मकडी।
ततुविग्रह—स्त्री०[ब०स०]केले का पेड।
ततु-शाला—स्त्री०[मध्य०स०]१ वह स्थान जहाँ ततु बनाये जाते हो। २ वह स्थान जहाँ कपडे बुने जाते हो।
ततु-सार—पु०[ब०स०] सुपारी का पेड।
तत्र—पु०[स०√तन् (विस्तार)+ष्ट्रन्]१ डोरा या सूत। ततु। २ चमडे की डोरी। ताँत। ३ जुलाहा। ४ कपडे बुनने की सामग्री। ५ कपडा। वस्त्र। ६ काम। कार्य। ७ प्रबध। व्यवस्था। ८ कारण। वजह। ९ उपाय। युक्ति। १० दल। समूह। ११ आनन्द। प्रसन्नता। १२ घर। मकान। १३ धन-सम्पत्ति। १४ कोटि। वर्ग। श्रेणी। १५ उद्देश्य। १६ कुल। वश। १७ कसम। शपथ। १८ कायदा। नियम। १९ सजावट। २० औषध। दवा। २१ प्रमाण। सबूत। २२ अधिकार। स्वत्व। २३ अधीनता। परवशता। २४. निश्चित सिद्धान्त। २५ वह पद जिस पर रहकर किसी कर्त्तव्य का पालन किया जाता है। २६ ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था जिसके अनुसार घर-गृहस्थी, राज्य, समाज आदि का नियत्रण और सचालन किया जाता है। २७ राज्य और उसके अन्तर्गत काम करनेवाले सभी राजकीय कर्मचारी। २८ व्यवस्था,शासन आदि करने की कोई निश्चित या विशिष्ट प्रणाली या रीति। जैसे—हिन्दू राज-तत्र, पाश्चात्य समाज-तत्र। ३० हिन्दुओ का प्रसिद्ध शास्त्र जो शिव-प्रोक्त कहा जाता है और जिसमे शिव तथा शक्ति की उपासना, पूजन आदि के द्वारा कुछ प्रकार की क्रियाओ और मत्रो से अनेक प्रकार के लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्य सिद्ध करने के विधान है।
विशेष—इस शास्त्र का मुख्य सिद्धान्त यह है कि कलियुग मे वैदिक मत्रो, यज्ञो आदि का नही, बल्कि तात्रिक उपासना, विधि और यत्र-मत्रो का ही अनुष्ठान होना चाहिए। सब प्रकार के अभिचार, झाड-फूँक पुरश्चरण, भैरवी चक्र-पूजन, उच्चाटन, मारण, मोहन आदि षट्कर्म इसी तत्रशास्त्र के अन्तर्गत आते है। यह मुख्यत शाक्तों का प्रधान शास्त्र है और इसके मत्र प्राय एकाक्षरी और अर्थहीन होते है। बौद्धो ने हिन्दुओ से यह शास्त्र लेकर चीन तथा तिब्बत मे इसका विशेष प्रचार तथा विकास किया था। आधुनिक विद्वान् इसे डेढ दो हजार वर्षो से अधिक पुराना नही मानते।
तत्रक—पु०[स० तत्र+कन्] नया कपडा।
तत्रकार—पु०[स०] बाजा बजानेवाला।
तत्रण—पु०[स०√तत्र् (शासन करना)+ल्युट्-अन] १ किसी को अपने तत्र या शासन मे रखना। २ तत्र के अनुसार चलना या चलाना।
तत्रता—स्त्री०[स०तत्र+तल्-टाप्] १ किसी तत्र के अनुसार होने-होनेवाली व्यवस्था। २ ऐसी योग्यता या स्थिति जिसमे एक काम करने पर उसके साथ ओर भी कई काम आपसे आप हो जाँय।
तंत्रधारक—पु० [ष० त०] यज्ञ आदि कार्यों मे वह व्यक्ति जो कर्म-काड की पुस्तक लेकर याज्ञिक आदि के साथ बैठता हो।
तंत्र-मत्र—पु० [द्व० स०] तत्र शास्त्र के विधानो के अनुसार किये जाने वाले अभिचार, पुरचरण आदि कृत्य।
तत्र-युक्ति—स्त्री० [ष० त०] सुश्रुत सहिता के अनुसार वह युक्ति जिसके द्वारा किसी वाक्य का आशय समझा जाय। ये २८ प्रकार की कही गई है।
तंत्रवाप—पु० [स० तत्र √वप् (बुनना)+अण्] १ ततुवाय। ताती। २ मकडी।
तत्रवाय—पु० [स० तत्र√वेञ् (बुनना)+अण्] १ ततुवाय। ताँती। जुलाहा। २ मकडी। ३ ताँत।
तंत्रसस्था—स्त्री० [स० ष० त०] वह सस्था जो तत्र अर्थात् शासन करती हो।
तंत्रस्कद—पु० [स०] ज्योतिष शास्त्र का वह अग जिसमे गणित के द्वारा ग्रहो की गति आदि का निरूपण होता है। गणित ज्योतिष।
तत्रस्थिति—स्त्री० [ष० त०] राज्य के शासन की प्रणाली।
तत्र-होम—पु० [तृ० त०] तत्र शास्त्र के अनुसार होनेवाला होम।
तंत्रा—स्त्री० [स०√तत्र्+अ+टाप्] तद्रा।
तंत्रायी (यिन्)—पु० [स० तत्र√इ (गति)+णिनि] सूर्य।
तंत्रि—स्त्री० [स० √तत्र्+इ] १. तत्री। २. तद्रा।
तंत्रिका—स्त्री० [स० तत्री+कन्-टाप्, ह्रस्व] १ गुडूची। गुरुच। २ ताँत।
तंत्रिपाल—पु० [स० तत्रि√पाल्+णिच्+अण्] ततिपाल। (दे०)
तत्रि-पालक—पु० [स० ष० त०] जयद्रथ का एक नाम।
तंत्री—पु० [स० तत्र+ङीष्] १ वह जो बाजो आदि की सहायता से गाने-बजाने का काम करता हो। २ गवैया। सगीतज्ञ। ३ सैनिक।
वि० १ तत्र-सम्बन्धी। २ जिसमे पतार लगे हो। ३ तत्र-शास्त्र का अनुयायी। ४ जो किसी तत्र के अधीन हो। ५ परवश। पराधीन।
स्त्री० [स०√तन्त्र्+ई] १ बीन, सितार आदि बाजो मे लगा हुआ तार। २ ऐसे बाजे जिनमे बजाने के लिए तार लगे हो। ३ ताँत। ४ डोरी। रस्सी। ५ शरीर के अन्दर की नस। ६ वीणा। बीन। ७ एक प्राचीन नदी का नाम। ८ गुड्ची। गुरूच।
तत्री-मुख—पु० [ब० स०] तत्र मे हाथ की एक मुद्रा।

तदरा—स्त्री० =तद्रा।
तदान—पु० [पश्तो] क्वेटा (पाकिस्तान) के आस-पास के प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का अगूर।
तदिही—स्त्री० =तदेही।
तदुआ—पु० [देश०] ऊसर जमीन मे होनेवाली एक तरह की घास।
तदुरुस्त—वि० [फा०] १ जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ हो। नीरोग। २ जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो।
तदुरुस्ती—स्त्री० [फा०] १ तदुरुस्त या स्वस्थ होने की अवस्था या भाव। २ शारिरिक स्थिति। स्वास्थ्य।
तदुल—पु० =तडुल।
तदुलीयक—पु० [स० तण्डुलीयक] चौलाई का साग।
तंदूर—पु० [फा० तनूर] मिट्टी मे घास, मूँज आदि मिलाकर बनाई हुई रोटियाँ पकाने की एक प्रकार की भट्ठी जिसकी ऊँची गोलाकार दीवार के भीतरी भाग मे आटे की लोई को हाथ से चिपटाकर के चिपकाया जाता है।
तदूरी—पु० [हि० तदूर] छोटा तदूर।
वि० १ तदूर-सबधी। २ तदूर मे पका हुआ। जैसे—तदूरी रोटी।
पु० [देश०] एक तरह का बढिया रेशम जिसका रग पीला होता है।
तदेही—स्त्री० [फा० तनदिही] १ कोई काम करने के लिए खूब मन लगाकर किया जानेवाला परिश्रम या प्रयत्न। २ ताकीद। ३ तल्लीनता।
तद्रवाप, तद्रवाय—पु० [स० तन्त्रवाप, तन्त्रवाय, पृषो० सिद्धि] तंतुवाय। बुनकर।
तद्रा—स्त्री० [स० √तन्द्र् (अवसाद)+अ-टाप्] १ हलकी नीद। २ दुर्बलता, रोग, विष आदि के प्रभाव के कारण होनेवाली वह स्थिति जिसमे मनुष्य या पशु-पक्षी को हलकी नीद-सी आ जाती है और वह प्राय निश्चेतन अवस्था मे कुछ समय तक पडा रहता है।
तद्राल—वि० [स०] १ जो तंद्रा मे पडा हुआ हो। २ =तद्रालु।
तद्रालस—पु० [स० तद्रा-आलस्य] वह आलस्य या शिथिलता जो तद्रा के फलस्वरूप होती है। उदा०—निस्तब्ध मौन था अखिल लोपक तद्रालस का वह विजन प्रान्त।—प्रसाद।
तंद्रालु—वि० [स० तत्√द्रा (निन्दित गति)+आलुच्] जिसे तद्रा आ रही हो।
तंद्रि—स्त्री० [स० √तद्+क्रिन] =तद्रा।
तंद्रिक—वि० [स० तद्रा+ठन्-इक] १. तद्रा-सबधी। २ (रोग) जिसमे तद्रा भी आती हो।
पु०=तद्रिक ज्वर।
तद्रिक-ज्वर—पु० [कर्म० स०] एक तरह का सक्रामक ज्वर जिसमे रोगी प्राय तद्रा की अवस्था मे पडा रहता है। (टाइफस)
तंद्रिक-सन्निपात—पु० [कर्म० स०] वैद्यक मे, एक तरह का सन्निपात जिसमे ज्वर बहुत तेजी से बढता है, दम फूलने लगता, दस्त आने लगते हैं, प्यास अधिक लगने लगती है तथा जीभ काली पड जाती है। इसकी अवधि साधारणत. २५ दिनो की कही गई है।
तद्रिका—स्त्री० [स० तद्रि+कन्-टाप्] तद्रा।
तद्रिता—स्त्री० [स० तद्रिन्+तल्-टाप्] तद्रा मे पडे हुए होने की अवस्था या भाव।
तद्रिल—वि० [स० तद्रा+इलच्] १ तद्रा-सबधी। २ तद्रालु।
तद्री—स्त्री० [स० तद्रि+ङीष्] १ तद्रा। २ भृकुटी। भौह।
वि० [तद्रा+इनि] १ थका हुआ। शिथिल। २ मट्ठर। सुस्त।
तबा—स्त्री० [स०√तम्ब् (जाना)+अच्-टाप] गौ। गाय।
पु० [फा० तबान] [स्त्री० अल्पा० तबी] ढीली मोहरीवाला एक तरह का पाजामा।
तंबाकू—पु० = तमाकू।
तबिया—वि० [हि० ताँबा+इया (प्रत्य)०] ताबे का बना हुआ।
पु० १ ताँबे या पीतल का बना हुआ तरकारी आदि बनाने का चौड़े मुँहवाला एक तरह का पात्र। ताबिया। २ तसला।
तँबियाना—अ० [हि० ताँबा] १ किसी पदार्थ का ताबे के रग का हो जाना। पीला पडना। जैसे—आँखे ताबियाना। २ खाद्य पदार्थ का कुछ समय तक ताँबे के बरतन मे रखे रहने पर ताँबे की गध और स्वाद से युक्त होना। जैसे—तरकारी या दही ताबियाना।
तंबीर—पु० [स०√तब् (जाना)+ईरन् (बा०)] ज्योतिष का एक योग।
तंबीह—स्त्री० [अ०] १ किसी की भलाई के लिए अथवा भविष्य मे होनेवाले किसी अपकार या अहित मे सावधान रहने के लिए उसे कही जानेवाली बात या दी जानेवाली सूचना। २ दड। सजा।
तंबू—पु० [हि० तनना] १ मोटे कपडे, टाट आदि को बाँसो, खूँटो, रस्सियो आदि की सहायता से तानकर बनाया हुआ अस्थायी आश्रय स्थान। खेमा।
क्रि० प्र०—खडा करना।—तानना।
२ एक तरह की मछली।
तबूर—पु० [फा०] एक तरह का छोटा ढोल।
पु० =तबूरा।
तबूरची—पु० [फा० तबूर+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तबूरा बजाता हो।
तबूरा—पु० [हि० तानपूरा] सितार की तरह का तीन तारोवाला एक बाजा जो स्वर मे सहायता देने के लिए बजाया जाता है। तानपूरा।
तंबूरातोप—स्त्री० [हि० तबूरा+तोप] एक तरह की तबूरे के आकार की बडी तोप।
तबूल†—पु० = ताबूल।
तबेरण—पु० [?] हाथी। (डि०)
तंबोरा—पु० १ दे० 'तंबोली'। २ दे० 'तबूरा'।
तबोल—पु० [स० ताम्बूल] पान। उदा०—मुख तबोल रँग धारहि रसा।—जायसी।
†पु० = तमोल।
तबोलिन—स्त्री० 'तँबोली' का स्त्री० रूप।
तँबोलिया—स्त्री० [स० तबूल+हि० इया (प्रत्य०)] एक तरह की पान के आकार की मछली।
पु० = तबोली।

तँबोली—पु० [हिं० तबोल +ई (प्रत्य०)] वह जो पान लगाकर बेचता हो। पान का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। तमोली।

तंभ—पु० =स्तभ।

तभन—पु० =स्तभन।

तभावती—स्त्री० [स०] रात के दूसरे पहर मे गाई जानेवाली सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

तभोर—पु० [स० ताबूल] पान।

तमोर—पु० =तभोर (पान)।

तँवार—स्त्री० [हिं० ताव] १ थकावट, रोग आदि के कारण सिर मे आनेवाला चक्कर। घुमटा। २ ज्वराश। हरारत।

तँवयरी—स्त्री० =तँवार।

तअज्जुब—पु० [अ०] किसी अनोखी, अप्रत्याशित या विलक्षण घटना, बात, व्यवहार आदि का मूल या रहस्यपूर्ण कारण समझ मे न आने पर उत्पन्न होनेवाला मनोविकार। आश्चर्य।

तअम्मुल—पु० [अ०] १ सोच-विचार। २ सोच-विचार के कारण किसी काम मे लगनेवाली देर। बिलम्ब। ३ धैर्य। सब्र।

तअल्लुक—पु० [अ०] लगाव। सबध।

तअल्लुका—पु० [अ०] वह बहुत से गाँव जो किसी एक जमीदार के अधिकार मे होते थे।

पद—अतल्लुकेदार।

तअल्लुकेदार—पु० [अ०] तअल्लुक +फा० दार] वह जो किसी बडे तअलुल्के या इलाके का अधिकारी या स्वामी हो।

तअल्लुकेदारी—स्त्री० [अ० तअल्लुक +फा० दारी] १ तअल्लुकेदार होने की अवस्था या भाव। २ वह सारी भूमि या क्षेत्र जो किसी तअल्लुकेदार के अधिकार मे हो।

तअस्सुब—पु० [अ०] [वि० तअस्सुबी] वह असहनशील और पक्षपातपूर्ण मनोवृत्ति जो पराई जातियो, धर्मों, व्यक्तियो अथवा उनके आचार, विचारो आदि के साथ उचित और न्यायपूर्ण व्यवहार नही करने देती और जिसके फलस्वरूप मनुष्य उन्हे उपेक्षा, घृणा, भय, सदेह आदि की दृष्टि से देखता है।

तइँ—सर्व०=तँ (तू)।

तइनात—वि० =तैनात।

तइसा—वि० =तैसा।

तईं—अव्य० [स० तनु] १ एक अव्यय जिसका प्रयोग व्यक्तियो के सम्बन्ध मे 'को' 'प्रति' या 'सम्बन्ध मे' के अर्थ मे होता है। जैसे—आपके तईं=आपको या आपके प्रति अथवा सम्बन्ध मे। अपने तईं=अपने प्रति या अपने सम्बन्ध मे। २ लिए। वास्ते।

तई—स्त्री० [हिं० तवा या तवाँ का स्त्री०] थाली के आकार की एक प्रकार की छिछली कडाही जिसमे प्राय जलेबी और माल-पुआ बनाया जाता है।

अव्य० [स० तदा] उस समय। तब। (राज०) उदा०—कहौ तई करुणा मैं केसव।—प्रिथीराज।

तउ*—अव्य० [स० तत] १ उस समय। तब। २ उस प्रकार। त्यो। ३ से। प्रति। उदा०—तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू।—तुलसी। ४ तो।

तऊं†—अव्य० [हि० तब+ऊ (प्रत्य०)] तिस पर भी। तो भी। तथापि।

तक—अव्य० [स० अत+क] सज्ञाओ अथवा सज्ञाओ के समान प्रयुक्त होनेवाले शब्दो के साथ लगकर अवधि, सीमा आदि का अन्तिम या अधिकतम छोर सूचित करनेवाला एक सबध सूचक अव्यय। जैसे—(क) आखिर आप कहाँ तक (सीमा) जायँगे। (ख) आप कब तक (अवधि) आयँगे।

स्त्री० [प० तकडी] १ तराजू। २ तराजू का पल्ला। हि० स्त्री० [हि० ताकना] १ ताकने की क्रिया या भाव। २ टकटकी। टक।

तकडा†—वि० = तगडा।

तकडी—स्त्री० [देश०] एक तरह की बारहमासी घास जो रेतीली जमीन मे होती है। इसे घोडे चाव से खाते है। चरमरा। हैन।

†स्त्री० =तराजू। (पजाब)

तकदमा—पु० [अ० तकद्दुम] अटकल। अनुमान। कूत।

तकदीर—स्त्री० [अ०] [वि० तकदीरी] वह प्राकृतिक या लोकोत्तर शक्ति जो घटित होनेवाली बातो को पहले ही निश्चित कर देती है। किस्मत। भाग्य। उदा०—तकदीर मे लिखा था पिजरे का आबोदाना। —इकबाल।

पद—तकदीरवर।

तकदीरवर—वि० [अ० तकदीर+फा० वर] जिसकी तकदीर या भाग्य बहुत अच्छा हो। भाग्यवान्।

तकदीरी—वि० [अ०] तकदीर या भाग्य-सबधी। जैसे—यह सब तकदीरी खेल या मामला है।

स्त्री० [हिं०ताकना] तकने ताकने या, तकन की क्रिया या भाव।

तकना*—स० [हिं० ताकना] १ ताकना। देखना। २ आश्रय, सहायता आदि पाने के लिए किसी की ओर देखना। जैसे—अकाल मे प्रजा राजा की ओर तकती है। ३ किसी की ओर बुरी दृष्टि या भाव से देखना। जैसे—किसी की बहू-बेटी को तकना अच्छा नही है। ४ आसरा देखना। प्रतीक्षा करना। शरण लेना।

पु० वह व्यक्ति जो बुरी दृष्टि से दूसरो विशेषत पराई स्त्रियो की ओर ताकता रहता हो।

तकबीर—स्त्री० [अ०] ईश्वर और उसके कार्यो तथा देनो की हार्दिक प्रशसा या स्तुति।

तकब्बुर—पु० [अ०] [वि० तकब्बरी] अभिमान। घमड।

तकमा—पु० १ दे० 'तुकमा'। २ दे० 'तमगा'।

तकमील—स्त्री० [अ०] किसी काम के पूरे होने की अवस्था या भाव। पूर्णता।

तकर-मल्ही—स्त्री० [देश०] भेडो के शरीर से ऊन काटने की एक तरह की हँसिया। (गढवाल)

तकरार—स्त्री० [अ०] १ ऐसी कहा-सुनी जो अपना-अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए कुछ उग्रता या कटुतापूर्वक हो। विवाद। हुज्जत। २ साधारण झगडा या लडाई।

पु० १ धान का वह खेत जो फसल काटने के बाद फिर खाद देकर जोता गया हो। २ वह खेत जिसमे गेहूँ, चना, जौ आदि एक साथ बोये गये हो।

तकरारी—वि० [अ०] १ तकरार-संबंधी। २ तकरार करने वाला। झगड़ालू।

तकरीब—स्त्री० [अ०] १ पास होने की अवस्था या भाव। समीपता। २ किसी कार्य या विषय का उपलक्ष्य। ३ विवाह आदि शुभ अवसरों पर होनेवाला उत्सव।

तकरीबन्—अव्य० [अ०] करीब-करीब। प्राय। लगभग। जैसे—कचहरी यहाँ से तकरीबन् दो मील है।

तकरीर—स्त्री० [अ०][वि० तकरीरी] १ बाते करना या कहना। बात-चीत। २ भाषण। वक्तृता।

तकरीरी—वि० [अ० तकरीर] १ तकरीर के रूप मे होनेवाला। तकरीर-संबंधी। २ जिसमे कुछ कहने-सुनने की जगह हो। विवाद-ग्रस्त। ३. जबानी। मौखिक।

तकर्रुरी—स्त्री० [अ०] किसी पद या स्थान पर नियुक्त या मुकर्रर होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तकला—पु० [स० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १ लोहे की वह सलाई जो सूत कातने के चरखे मे लगी होती है और जिस पर कता हुआ सूत लिपटता चलता है। टेकुआ। २ टेकुरी की वह सलाई जिस पर बटा हुआ कलाबत्तू लपेटा जाता है। ३ वह सलाई जिसकी सहायता से सुनार सिकडी के गोल दाने बनाते है। ४ रस्सी बटने की टेकुरी।

मुहा०— (किसी के) तकले का बल निकालना=किसी की अकड़, पाजीपन या शेखी दूर करना।

तकली—स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक प्रकार का छोटा यत्र जिसमे काठ के एक लट्टू मे छोटा-सा तकला या सूजा लगा रहता है।

तकलीफ—स्त्री० [अ०] १ कष्ट। दु ख। पीडा। जैसे—(क) उनकी ऐसी बातो से हमे तकलीफ होती है। (ख) इस तरह उठाने से बच्चे को तकलीफ होती होगी। २ विपत्ति। सकट। जैसे—सब पर कभी न कभी तकलीफ आती ही है। ३ बीमारी। रोग। जैसे—खाँसी या बुखार की तकलीफ।

विशेष—औपचारिक रूप से इस शब्द का प्रयोग ऐसे अवसरो पर भी होता है जहाँ किसी को किसी दूसरे के अनुरोध-स्वरूप कोई कार्य या परिश्रम करना पडता है। जैसे—आप ही तकलीफ करके यहाँ आ जाँय।

तकल्लुफ—पु० [अ०] ऐसा शिष्टाचार जो केवल सौजन्य का परिचय देने के लिए किया जाय।

पद—तकल्लुफ का=बहुत अच्छा या बढिया।

तकवाना—स० [हिं० ताकना का प्रे०] [भाव तकवाही] किसी को ताकने मे प्रवृत्त करना।

तकसना†—अ०=ताकना (देखना)।

तकसी—स्त्री० [?] १ नाश। २ दुर्दशा।

तकसीम—स्त्री० [अ०] १ बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। जैसे—बच्चो मे पुस्तकें या मिठाइयाँ तकसीम करना। २ गणित मे किसी सख्या को भाग देने की क्रिया। भाग।

क्रि० प्र०—करना।

तकसीर—स्त्री० [अ०] १. अपराध। कसूर। २ चूक। भूल।

तकाई—स्त्री० [हिं० ताकना+ई० (प्रत्य०)] १ तकने या ताकने की क्रिया ढग या भाव। २ दूसरो को कुछ दिखलाने की क्रिया या भाव।

तकाजा—पु० [अ० तकाज़ =इच्छा, कामना] १ किसी आवश्यकता, प्रवृत्ति, स्थिति आदि के फलस्वरूप प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से होनेवाला कोई कार्य या परिणाम अथवा आन्तरिक प्रेरणा। जैसे—लडको का बहुत अधिक उछल-कूद या पाजीपन करना उनकी उमर का तकाजा है। २ वह बात जो किसी से कोई काम करने, कराने या अपना प्राप्य प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे स्मरण कराने और जल्दी करने के लिए कही या कहलाई जाती है। तगादा। जैसे—इनकी किताब दे आओ, कई बार उनका तकाजा आ चुका है।

तकान—स्त्री० १ =तकाई। †२ =थकान।

तकाना—स० [हिं० ताकना का प्रे०] किसी को कुछ तकने या ताकने मे प्रवृत्त करना। दिखाना।

तकाव—पु० [हिं० तकना+आव (प्रत्य०)] तकने या ताकने की क्रिया ढग या भाव।

तकावी—स्त्री० [अ०] वह धन जो जमीदार, राजा या सरकार की ओर से गरीब खेतिहरो को खेती के औजार बनवाने, बीज खरीदने या कूएँ आदि बनवाने के लिए अथवा किसी विशिष्ट सकट से पार पाने के लिए ऋण के रूप मे दिया जाता है।

तकिया—पु० [फा०] १ एक प्रकार की बडी मुँह-बद थैली जिसमे रूई आदि भरी हुई होती है और जिसे सोते समय सिर के नीचे लगाया जाता है। बालिश। २ पत्थर की वह पटिया जो छज्जे मे रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है। मुतक्का। ३ आश्रय या विश्राम स्थान। ४ कब्रिस्तान के पास का वह स्थान जहाँ कोई फकीर रहता हो। ५ आश्रय। सहारा। ६ चारजामा। (क्व०)

तकिया कलाम—पु० दे० 'सखुन तकिया'।

तकियादार—पु० [फा०] मुसलमानी कब्रिस्तान अथवा किसी पीर या फकीर की समाधि पर रहनेवाला प्रधान अधिकारी।

तकिल—पु० [स०√तक् (हँसना)+इलच्] १ धूर्त। २ औषध। दवा।

तकिला—स्त्री० [स० तकिल+टाप्] औषध। दवा।

तकुआ†—पु० १ =तकला। २ =तकना (ताकनेवाला)।

तकैया†—वि० [हिं० ताकना +ऐया (प्रत्य०)] ताकनेवाला।

तकोली†—स्त्री० [देश०] शीशम की जाति का एक तरह का बडा वृक्ष। वि० दे० 'पस्सी'।

तक्कर†—वि० दे० 'तगडा'।

तक्की†—स्त्री० [हिं० ताकना] किसी ओर ताकते रहने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

तक्मा (क्मन्)-स्त्री० [स० √तक्+मनिन्] बसत या शीतला नामक रोग।

†पु० १ दे० 'तुकमा'। २ दे० 'तमगा'।

तक्र—पु० [स०√तच् (सकुचित करना)+रक्] १ छाछ। मट्ठा। २ शहतूत के पेड का एक रोग।

तक्र-कूर्चिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ फटा हुआ दूध। २. फटे हुए दूध मे से निकलनेवाला पदार्थ। छेना।

तक्र-पिंड—पु० [स० मध्य० स०] छेना।

तक्रभिद्—पु० [स० तक्र√भिद् (फाडना)+क्विप्] एक तरह का कँटीला पेड। कैथ।

तक्र-प्रमेह—पु० [मध्य० स०] एक रोग जिसमे मूत्र छाछ की तरह गाढा और सफेद होता है।

तक्र-मास—पु० [मध्य० स०] मास का रसा। यखनी।

तक्रवामन—पु० [स० तक्र√वम् (वमन करना)+णिच्+ल्युट्—अन] नागरग।

तक्र-सधान—पु० [स० मध्य० स०] सौ टके भर छाछ मे एक एक टके भर साभर नमक, राई और हल्दी का चूर्ण डालकर बनाई जानेवाली काँजी। (वैद्यक)

तक्र-सार—पु० [स० ष० त०] मट्ठे मे से निकलनेवाला सार तत्त्व। नवनीत। मक्खन।

तक्राट—पु० [स० तक्र√अट् (चलना)+अच्] मथानी।

तक्रार—स्त्री०=तकरार।

तक्रारिष्ट—पु० [स० तक्र-अरिष्ट, मध्य० स०] एक प्रकार का अरिष्ट जो मट्ठे मे हड और आँवले आदि का चूर्ण मिलाकर बनाया जाता है। (वैद्यक)

तक्राह्वा—स्त्री० [स० तक्र—आह्वा, ब० स०] एक प्रकार का क्षुप।

तक्वा (क्वन्)—पु० [स०√तक् (गति)+वनिप्] १ चोर। २ शिकारी चिडिया।

तक्ष—पु० [स० √तक्ष् (काटना, छीलना)+घञ्] १ पतला करने की क्रिया या भाव। २ रामचन्द्र के भाई भरत का बडा पुत्र जिसने तक्षशिला नामकी नगरी बसाई थी।

तक्षक—पु० [स०√तक्ष्+ण्वुल्—अक] १ पुराणानुसार पाताल के आठ नागो मे से एक जो कश्यप का पुत्र था और कद्रु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। राजा परीक्षित की मृत्यु इसी के काटने से हुई थी। २ सर्प। साँप। ३ विश्वकर्मा। ४ बढई। ५ सूत्रधार। ६ नाग नामक वायु जो दस वायुओ मे से एक है। ७ एक प्रकार का पेड। ८ प्राचीन काल की एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति सूत्रिक पिता और ब्रह्मणी माता से कही गई है।

वि० १ तक्षण करनेवाला। २ काटने या छेदनेवाला।

तक्षण—पु० [स०√तक्ष्+ल्युट्—अन] १ लकडी काट, छील या रँदकर ठीक और सुडौल करने का काम। २ उक्त काम करनेवाला कारीगर। बढई। ३ पत्थर, लकडी आदि मे बेल-बूटे या उनसे मूर्तियाँ बनाने का काम।

तक्षणी—स्त्री० [स० तक्षण+ङीप्] बढ़इयो का रदा नाम का औजार।

तक्ष-शिला—स्त्री० [ब० स०] भरत के पुत्र तक्ष की बसाई हुई नगरी और बाद मे पूर्वी गान्धार की राजधानी जिसके खँडहर रावलपिंडी के पास खोदकर निकाले गये है।

तक्षा (क्षन्)—पु० [स०√तक्ष्+कनिन्] बढई।

तखडी†—स्त्री० =तकडी (तराजू)।

तखता—पु०=तख्ता।

तखफीफ—स्त्री० [अ०] खफीफ अर्थात् कम या हल्का करने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता।

तखमीनन—क्रि० वि० [अ०] अदाज से। अटकल से। अनुमानत।

तखमीना—पु० [अ० तख्मीन] मात्रा, मान आदि की कल्पना करने के लिए अको सख्याओ आदि के सबध मे किया जानेवाला अनुमान या लगाई जानेवाली अटकल। अदाज।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

तखरी†—स्त्री० =तकडी।

तखलिया—पु० [अ० तख्लिय] एकात या निर्जन स्थान।

तखल्लुस—पु० [अ०] वह उपनाम जिसका प्रयोग कोई कवि या लेखक अपनी रचनाओ मे अपने नाम के स्थान पर करता है।

तखान—पु० [स० तक्षण] बढाई।

तखिहा†—पु० [अ० ताक] ऐसा बैल जिसकी एक आँख एक रग की और दूसरी आँख दूसरे रग की हो।

तखीत†—स्त्री० [अ० तहकीक] १ तलाशी। २ जाँच। तहकीकात।

तखैयुल—पु० [अ०] खयाल करने की क्रिया, भाव या शक्ति। ध्यान।

तख्त—पु० [फा०] १ राजसिहासन।

मुहा०—तख्त उलटना=एक राजा या शासक को गद्दी से हटाकर उसके स्थान पर दूसरे को बैठना।

२ तख्तो की बनी हुई बडी चौकी।

पद—तख्त की रात=वधू की सुहाग-रात।

तख्तगाह—स्त्री० [फा०] राजधानी।

तख्त ताऊस—पु० [फा०+अ०] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य और जडाऊ सिहासन जो भारत के मुगल सम्राट् शाहजहाँ ने बनवाया था और जिसे सन् १७३९ मे नादिरशाह लूट ले गया था।

तख्त-नशीन—वि० [फा०] जो राजसिहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ।

तख्त-नशीनी—स्त्री० [फा०] राजा का पहले-पहल अधिकार पाकर राज-सिहासन पर बैठना। राज्यारोहण।

तख्तपोश—पु० [फा०] १ तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ काठ की बडी चौकी। तख्त।

तख्तबदी—स्त्री० [फा०+अ०] १ तख्तो की बनी हुई दीवार जो प्राय कमरो मे आड, विभाग आदि के लिए खड़ी की जाती है। २ उक्त प्रकार की दीवार खडी करने की क्रिया।

तख्तरवाँ—पु० [फा०] १ वह तख्त जिस पर बादशाह सवार होकर निकला करते थे। हवादार। २ वह बडी चौकी जिस पर जलूस, बरात आदि के चलने के समय नाच-गाना होता चलता था। ३ उडन-खटोला।

तख्ता—पु० [फा० तख्त] १ लकडी का आयताकार या चौकोर बडा तथा समतल टुकडा।

मुहा०—तख्ता हो जाना=अकड, ऐंठ या सूखकर काठ के समान कडा, जड या निश्चेष्ट हो जाना।

२ लकडी का उक्त आकार-प्रकार का वह टुकडा जिस पर कुछ लिखा जाता है अथवा सूचनाएँ आदि चिपकाई जाती है। ३ बैठने, सोने आदि के लिए बनी हुई काठ की बडी चौकी। तख्त।

मुहा०—किसी का तख्ता उलटना=(क) बना बनाया काम बिगाडना। (ख) किसी प्रकार का प्रबन्ध या व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट करना।

४ शव ले जाने की अरथी। टिकटी। ५ खेतो मे, बगीचो आदि मे की क्यारी। ६ कागज का बडा और लबा-चौडा टुकडा। ताव।

तख्ता-गरदन—पु०[फा०] वह घोड़ा जिसकी गरदन बहुत मोटी हो, और इसी लिए लगाम खीचने पर भी जल्दी मुड़ती न हो।

तख्ता-पुल—पु०[फा० तख्ता+पुल] लकड़ी का वह पुल जो काठ की पटरियाँ जड़कर या बिछाकर बनाया जाता है।

तख्ती—स्त्री०[फा० तख्त] १ छोटा तख्ता। पटरी। २ काठ की वह छोटी पटरी जिसपर बच्चे अक्षर लिखने का अभ्यास करते है। पटिया।

तख्मीना—पु०=तखमीना।

तगड़ा—वि०[स० त्वक्ष, तृक्ष, प्रा० तग्ग, तग्ग, पा० तज्जे] [स्त्री० तगडी]१ जो शारीरिक दृष्टि से बलवान और हृष्ट-पुष्ट हो। मजबूत और हट्टा-कट्टा। २ अच्छा बडा और भारी। ३ (पक्ष) जो किसी दृष्टि से दूसरे से अधिक प्रबल या सशक्त हो।

तगड़ी—स्त्री० हिं० तगडा का स्त्री० रूप।
स्त्री०=तकडी।

त-गण—पु० [मध्य० स०] छद शास्त्र मे, उन तीन वर्णो का समूह जिसके पहले दो वर्ण गुरु हो और अतिम लघु हो (ऽऽ।)।

तगदमा†—पु०=तकदमा।

तगना—अ०[हिं० तागना का अ०]तागो से भरा जाना या युक्त होना। तागा जाना।

तगनी—स्त्री०[हिं० तागना] (रुईदार कपडे) तागने की क्रिया या भाव। तगाई।

तग-पहनी—स्त्री०[हिं० तागा+पहनना] जुलाहो का एक औजार जिससे टूटा हुआ सूत जोडा जाता है।

तगमा—पु० दे० 'तमगा'।

तगर—पु०[स० ष०त०]१ प्राय नदियो के किनारे होनेवाला एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसकी सुगधित लकडी से तेल निकाला जाता है। २ इस वृक्ष की जड जिसकी गिनती गध-द्रव्यो मे होती है। ३ मदन नामक वृक्ष। मैनफल। ४ एक प्रकार की शहद की मक्खी।

तगला†—पु०[हिं० तकला] तकला। २ सरकडे का वह छड जिससे जुलाहे ताने के सूत ठीक करते या मिलाते हैं।

तगसा—पु०[देश०]वह लकडी जिससे ऊन पीटकर मुलायम और साफ किया जाता है।

तगा—पु०[?]एक जाति जो रुहेलखड मे बसती है। इस जाति के लोग अपने आपको ब्राह्मण कहते है।
†पु०=तगा।

तगाई—स्त्री०[हिं० तागना]१ तागने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ तागो से भरे जाने या युक्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—रजाई या लिहाफ की तगाई।

तगाड़—पु०=तगार।

तगाड़ा—पु०=तगारा।

तगादा—पु०[अ० तकाज़ा] वह कथन या बात जो किसी से कोई काम करने या कराने या उससे अपना प्राप्य धन अथवा पदार्थ प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे याद दिलाने और जल्दी करने के लिए कही या कहलाई जाती है। तकाजा। जैसे—(क) किरायेदार से किराये के रुपयो का तगादा करना। (ख) छापेखाने से किताब जल्दी छापने का तगादा करना।

तगाना—स०[हिं० तागना का प्रे०]तागने का काम कराना। तागने मे किसी को प्रवृत्त करना।

तगाफुल—पु०[अ०] ध्यान न देना। उपेक्षा। गफलत।

तगार—पु०[फा०] [स्त्री० अल्पा० तगारी]१ मिट्टी का बडा कूँडा या नाँद। २ वह गड्ढा या छोटा घेरा जिसमे इमारत के काम के लिए ईंटे भिगोई जाती है अथवा चूने, सुरखी आदि का गारा बनाया जाता है। ३ वह तसला जिसमे गारा या मसाला भरकर राज मिस्तरियो के पास ईंटो की जोडाई आदि करने के लिए पहुँचाया जाता है। ४ दे० 'तगारा'।

तगारा—पु० [फा० तगार=बडा कूँआ या नाँद] [स्त्री० अल्पा० तगारी] १ मिट्टी की वह नाद जिसका उपयोग हलवाई लोग मिठाइयाँ आदि बनाने मे करते है। २ तरकारी, दाल आदि पकाने का पीतल का एक प्रकार का बडा बरतन।

तगियाना—स०=तागना।

तगीर*—पु० [अ० तगय्युर] बदलने की अवस्था, क्रिया या भाव। परिवर्तन।

तगीरी—स्त्री०[अ० तग़ैयुर]=तगीर (परिवर्तन)।

तग्य†—पु०=तज्ञ।

तघार—पु०=तगार।

तचना—अ०[हिं० तपना]१ तप्त होना। तपना। २ मन ही मन बहुत दुखी या सतप्त होना। जलना। उदा०—तरफराति तमकति तचति सुसुकति सूखत जाति।—पद्माकर।
स० दे० 'तचाना'।

तचा†—स्त्री०=त्वचा।

तचाना—स० [हिं० तपाना] १ तप्त करना। तपाना। २ बहुत अधिक मानसिक कष्ट देना। सतप्त करना। जलाना।

तचित*—वि० [हिं० तचना] १ तपा हुआ। तप्त। २ जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा या पहुँचाया गया हो। सतप्त।

तच्छ†—पु०=तक्ष।

तच्छक—पु०=तक्षक।

तच्छना—स०[स० तक्षण]१ विदीर्ण करना। फाडना। उदा०—तीर तुपक तरवारि, तच्छि निकरैं उर औरणि। —चन्दवरदाई। २ नष्ट करना। ३ काटकर टुकडे करना।

तच्छप—पु०=तक्षक।

तच्छिनु*—क्रि० वि०[स० तत्क्षण] उसी समय। तत्काल।
†वि०=तीक्ष्ण। (क्व०)

तज—पु० [स० त्वच्] १ तमाल और दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड जिसके पत्ते 'तेज पत्ता' कहलाते है। २ इस पेड की सुगधित छाल जो औषध के काम आती है।

तजकिरा—पु०[अ० तज़किर] चर्चा। जिक्र।
क्रि० प्र०—करना।—चलाना।—छेडना।

तजगिरी—स्त्री०[फा० तेजगरी] सिकलीगरो की दो अगुल चौडी और

प्राय डेढ बालिश्त लबी लोहे की पटरी जिसपर तेल गिराकर रदा तेज करते है।

तजन†—पु०[स० त्यजन,√त्यज् (त्यागना)+ल्युट्—अन्] तजने की क्रिया या भाव।

पु० [फा० ताजियान] आघात करने का कोडा या चाबुक।

तजना—स०[स० त्यजन]सदा के लिए त्याग या छोड देना। परित्याग करना।

तजम्मुल—पु०[अ०]१ शृगार। सजावट। २ शोभा। शान-शौकत।

तजरबा—पु० [अ० तज्रिब] १ अनुभव। २ परीक्षण। प्रयोग।

तजरबाकार—पु० [अ० तज्रिब +फा० कार]अनुभवी।

तजरबाकारी—स्त्री०[अ० तज्रिबः+फा० कारी] तजरबे से होनेवाली जानकारी या ज्ञान। अनुभव।

तजरुबा —पु०=तजरबा।

तजरुबाकार—पु०=तरजबाकार।

तजरुबाकारी —स्त्री०=तजरबाकारी।

तजवीज—स्त्री०[अ०तज्वीज] १ किसी कार्य के सपादन के सबध मे सोच-कर सम्मति के रूप मे कही जानेवाली बात। २ निर्णय। फैसला। ३ प्रबध। व्यवस्था। ४ तरकीब। युक्ति।

तजवीज-सानी—स्त्री० [अ०] १ किसी अदालत से स्वय उसके निर्णय पर फिर से विचार करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना या दिया जानेवाला आवेदन-पत्र। २ उक्त प्रकार से की हुई प्रार्थना पर फिर से होनेवाला विचार।

तजिया—स्त्री०[?]बहुत छोटा तराजू। काँटा।

तज्जनित—वि०[स० तद्-जनित,तृ० त०] उसके द्वारा उत्पन्न किया हुआ।

तज्जातीय—वि०[स० तद्-जाति कर्म०स०, तज्जाति+छ—ईय] उस जाति से सबध रखनेवाला।

तज्वी—स्त्री०[स० त √जु (गति)+क्विप्+डीष्] हिंगुपत्री।

तज्ञ—वि०[स० त√ज्ञा (जानना)+क]१ तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २ ज्ञानी। ३ अच्छा जानकार।

तटक—पु०[स० ताटक]कर्णफूल नामक कान का आभूषण।

तट—पु० [स०√तट् (ऊँचा होना)+अच्] १ ढालुईं जमीन। ढाल। २ आकाश। ३ क्षितिज। ४ खेत। ५ भूमिखड। प्रात। ६ स्थल का वह भाग जो जलाशय के किसी पार्श्व से ठीक मिला या सटा हो। ७ शिव का एक नाम।

क्रि० वि० निकट। पास।

तटक—पु०[स० तट+कन्] नदी आदि का किनारा। तट।

तटका—वि०=टटका।

तटग—पु० [स०=तडाग, पृषो० सिद्धि] तडाग।

तटनी*—स्त्री०=तटिनी (नदी)।

तटवर्ती—वि०[स०]जलाशय, झील, नदी आदि के तट से सबध रखने या उस पर होनेवाला। (राइपेरियन)

तटस्थ—वि०[स० तट √स्था (ठहरना)+क] [भाव० तटस्थता] १ तीर पर रहनेवाला। किनारे पर रहनेवाला। २ पास रहनेवाला। समीपवर्ती। ३ विरोध, विवाद आदि के प्रसगो मे दोनो दलो से अलग और दूर रहनेवाला। किसी का पक्ष न लेनेवाला। उदासीन। निरपेक्ष।

पु० किसी वस्तु का वह लक्षण जो उसके स्वरूप के आधार पर नही, बल्कि उसके गुण और धर्म के आधार पर बतलाया जाता है।

तटस्थता—स्त्री०[स०] १ तटस्थ रहने या होने की अवस्था या भाव। २ लडने-झगडने या वैर-विरोध रखनेवाले पक्षो से अलग रहने की अवस्था या भाव। ३ आधुनिक राजनीति मे (क) किसी देश या राज्य की वह स्थिति जिसमे वह दूसरे राज्यो के युद्ध मे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नही होता, बल्कि बिलकुल अलग रहता है। (ख) किसी प्रदेश या स्थान के सबध मे सधि द्वारा निश्चित वह स्थिति जिससे सधि करनेवाले राज्य आपस मे युद्ध छिडने पर भी उस प्रदेश या स्थान का न तो उपयोग ही कर सकते है और न उस पर आक्रमण ही कर सकते है। (न्यूट्रैलिटी)

तटाक—पु० [स० तट√अक् (गति) +अण्] तडाग। तालाब।

तटाकिनी—स्त्री०[स० तटाक+इनि—ङीप्] बडा तालाब।

तटाघात—पु०[स० तट-आघात, स०त०] पशुओ का अपने सीगो या दातो से जमीन खोदना। खूँद।

तटिनी—स्त्री०[स० तट+इनि+ङीप्] नदी। दरिया।

तटी—स्त्री०[स० तट+ङीष्]१ नदी का किनारा। कूल। तट। तीर। २ नदी। ३ घाटी। ४ तराई।

तट्य—वि०[स० तट+यत्]१ तट-सबधी। २ तट पर बसने, रहने या होनेवाला।

पु० शिव।

तठ†—अव्य० [स० तत्र] उस जगह या स्थान पर। वहाँ। उदा०—काढ काढ तलवार तरल ताछन तठ आये।—केशव।

तड—पु०[स० तट]१ किसी बिरादरी या वर्ग मे से निकला हुआ कोई दल, वर्ग या विभाग। जैसे—आज-कल हमारी बिरादरी मे दो तड हो गये है।

पद—तड-बदी।

२ सूखी भूमि। स्थल। (लश०)

पु०[अनु०] किसी चीज के टूटने, फटने, फूटने अथवा उस पर अघात लगने से होनेवाला शब्द। जैसे—भूनते समय भुट्टे के दानो का तड-तड शब्द करना।

पद—तड़ातड़।(दे०)

३ थप्पड। (दलाल)

क्रि० प्र०—जडना।—जमाना।—देना।—लगाना।

४ आमदनी या लाभ का आयोजन या उपक्रम। (दलाल)

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।

तडक—स्त्री०[हि० तडकना] १ तडकने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के तडकने के कारण उस पर पडा हुआ चिह्न जो प्राय सीधी धारी के रूप मे होता है। ३ चमकने की क्रिया या भाव।

पद—तडक-भडक।

४ घरो की छाजन मे वह बडी लकडी जो दीवार और बँडेर पर रखी जाती है और जिस पर दासे रखकर छप्पर या छाजन डालते हैं।

तडकना—अ०[स०√त्रुट् या अनु० तड]१ किसी चीज का तड शब्द करते

हुए टूटना, फटना या फूटना। चटकना। जैसे—(क) चिमनी या शीशा तडकना। (ख) भूनते समय मक्के के दाने तडकना। २ किसी चीज के सूखने आदि के कारण उसका ऊपरी तल फटना। दरार पडना। ३ जोर का 'तड' शब्द होना। ४ क्रोधपूर्ण व्यवहार करना। बिगडना। ५ दे० 'तडपना' (उछलना)।

स०[हिं० तडका=छौक] दाल, तरकारी आदि को सुगधित करने के लिए उसमे तडका देना या लगाना। छौकना। बघारना।

तडक-भडक—स्त्री०[अनु०]अपना बल, योग्यता, वैभव आदि दिखाने के लिए की जानेवाली ऊपरी बाहरी सजावट। (पाप) जैसे—तडक-भडक से सवारी निकालना।

तडका—पु०[हिं० तडकना]१ दिन निकलने का समय, जिसमे रात्रि का अन्धकार घटने लगता है और कुछ-कुछ प्रकाश होने लगता है।

मुहा०—(किसी बात का) तड़का होना=(क) पूर्ण रूप से अभाव होना। जैसे—पूंजी निकल जाने से घर मे तडका हो गया। **(किसी व्यक्ति का) तडका होना**=आघात, प्रहार आदि के कारण होश-हवास गुम हो जाना।

२ खाने-पीने की चीजो को तडकने या छौकने की क्रिया या भाव। बघार। ३ वह मसाला जिससे दाल आदि तडकी जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

तडकाना—स०[हिं० तडकना का स० रूप]१ किसी वस्तु को इस तरह से तोडना जिससे 'तड' शब्द हो। २ सुखाकर बीच से फाडना। ३ जोर का शब्द उत्पन्न करना। ४ क्रोध दिलाना या खिजाना। चटकाना।

तडकीला†—वि० [हिं० तडकना+ईला (प्रत्य०)] १ तडक-भडक वाला। भडकीला। २ चमकीला। ३ फुरतीला। ४ सहज मे तडक या टूट जानेवाला।

तड़क्का†—पु०[अनु० तड] जोर से होनेवाला 'तड' शब्द।

क्रि० वि० चटपट। तुरत।

तड़ग—पु०[स०]तडाग। तालाब।

तडतडाना—अ०[अनु० तड-तड] [भाव० तडतडाहट] तड-तड शब्द करते हुए किसी चीज का चटकना, टूटना, फटना या फटना।

स० इस प्रकार आघात करना कि तड-तड शब्द हो। जैसे—दस-पाच थप्पड तडतडाना।

तड़तडाहट—स्त्री० [हिं० तडतडाना] तड-तड शब्द होने की क्रिया या भाव। २ तड-तड होनेवाला शब्द।

तड़ता*—स्त्री०[स० तडित्] बिजली। विद्युत्। (डि०)

तड़प—स्त्री०[हिं०तडपना] १. तडपने की अवस्था, क्रिया या भाव। छटपटाहट। २ सहसा कुछ समय के लिए उत्पन्न होनेवाली चमक। भडक। जैसे—पन्ने या हीरे की तडप।

तडपदार—वि० [हिं० तडप+फा० दार] चमकीला। भडकीला।

तड़पन—स्त्री०=तडप।

तड़पना—अ०[स० तप] १ असह्य शारीरिक पीडा होने पर छटपटाना। जैसे—दरद के मारे तडपना। २. कोई काम करने के लिए आवश्यकता से अधिक अधीर या बेचैन होना। जैसे—किसी से मिलने या कुछ कहने के लिए तडपना। ३ आवेश के कारण सहसा जोरो से बोलने लगना। ४ जोर से उछलना। जैसे—शेर का तडपना।

तडपाना—स० [हिं० तडपना का स० रूप] [प्रे० क्रि० तडपवाना] १ किसी को बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट देकर तडपने मे प्रवृत्त करना। २ किसी को दिखाने के लिए बार-बार चमकाना। जैसे—अँगूठी या उसका हीरा तडपाना। ३ तडपने या उछलने मे प्रवृत्त करना। जैसे—पटाके की आवाज करके शेर को तडपाना।

तडफड—स्त्री०=तडप।

तडफडाना—अ०=तडपना।

स०=तडपाना।

तडफना—अ०=तडपना।

तडबन्दी—स्त्री० [हिं० तड+फा० बदी] १ किसी बिरादरी, समाज आदि के अन्तर्गत कोई दूसरा दल या गुट बनाना। २ गुटबदी।

तडाक—पु० [स० √तड् +आक] तडाग। तालाब। स्त्री०=तड (शब्द)।

क्रि० वि० १ तडतड शब्द करते हुए। २ जल्दी-जल्दी। चटपट। ३ निरतर। लगातार।

तडाका—पु [अनु०] किसी चीज के चिटकने, टूटने फटने या फूटने से होनेवाला तड शब्द।

क्रि० वि० चट-पट। तुरत।

तडाग—पु [स०√तड्+आग] १ तालाब। २ हिरन फँसाने का फदा।

तडागना*—अ० [अनु०] १ डीग मारना। २ उछल-कूद मचाना। ३ प्रयत्न करना।

तडागी—स्त्री० [स० तडाग] १ करधनी। २ कटि। कमर।

तडाघात—पु०=तटाघात।

तडातड—क्रि० वि० [अनु०] १ तड-तड शब्द करते हुए। जैसे—तडातड थप्पड लगाना। २ जल्दी जल्दी और निरतर। लगातार। जैसे—तडातड जवाब देना।

तडातडी—स्त्री०[हिं० तड तड]१ किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी। २ उतावलापन। व्यग्रता।

तडाना—स० [हिं० ताडना का प्रे० रूप] किसी को कुछ ताडने मे प्रवृत्त करना।

तडावा—स्त्री० [हिं० तडना=दिखाना] १ वह रूप जो किसी को अपना बल, वैभव आदि तडाने के लिए बनाया या धारण किया जाता है। २ धोखा।

तडि—स्त्री० [स०√तड्+इन्] १ आघात। २ वह चीज जिससे आघात किया जाय।

तडिता—स्त्री० =तडित्।

*स्त्री०=तडित (बिजली)।

तडित्—स्त्री० [स०√तड्+णिच्+इत्, णिलुक्] आकाश मे बादलो के टकराने से होनेवाला क्षणिक परन्तु चकाचौध उत्पन्न करनेवाला प्रकाश। बिजली।

तडित्-रक्षक—पु० [प० त०] ऊँचे मकानो आदि पर लगाया जानेवाला एक उपकरण जो बिजली के गिरने पर उसके प्रभाव को नष्ट करता है तथा मकानो आदि की सुरक्षा (उसके कु-परिणाम से) करता है। (लाइटनिंग एरेस्टर)

तडित्कुमार—पु०[स० ष०त०] जैनो के एक देवता जो भुवनपति देवगण मे से है।

तडित्पति—पु०[स० ष०त०] बादल। मेघ।

तडित्प्रभा—स्त्री०[स० ब०स०] कार्त्तिकेय की एक मातृका।

तडित्वान् (त्वत्)—पु०[स० तडित्+मतुप्] १ नागरमोथा। २ बादल। मेघ।

तडिद्गर्भ—पु०[स० ब०स०] बादल। मेघ।

तडिद्दाम (मन्)—[स०ष०त०]बिजली कौंधने के समय दिखाई पडनेवाली उसके प्रकाश की रेखा। विद्युल्लता।

तडिन्मय—वि०[स० तडित्+मयट्] जो बिजली के समान कौंधता हो।

तडिपाना*—अ०=तडपना।

स०=तडपाना।

तडिल्लता—स्त्री० [स० तडित्-लता, ष० त०] बिजली की वह रेखा जो लता के समान टेढी तिरछी हो तथा जिसमे बहुत सी रेखाएँ हो। विद्युल्लता।

तडिल्लेखा—स्त्री०[स० तडित्-लेखा] बिजली की रेखा।

तडी—स्त्री०[तड शब्द से अनु०]१ चपत। थप्पड।

क्रि० प्र०—जडना।—जमाना।—देना।—लगाना।

२ किसी को ठगने के लिए किया जानेवाला छल। धोखा। (दलाल)

क्रि० प्र०—देना।—बताना।

३ बहाना। ४ तडातडी।

तडीत*—स्त्री०=तडित् (बिजली)।

तण—अव्य० [स० तनु] की ओर। की तरफ।

तणई—स्त्री०[स० तनया] कन्या। उदा०—भोज तणई नउँतई मील्यौ। —नरपति नाल्ह।

तणक्कना—अ०[अनु०]तण तण शब्द होना।

स० तण तण शब्द उत्पन्न करना।

तणतु*—पु० १ =ततु। २ =तत्री।

तणर्मांट—पु० [?] मुसलमान। (डिं०)

तणी—स्त्री० =तनी।

अव्य० [स० तनु] १ की ओर। की तरफ। २ प्रति। सम्मुख।

†अव्य०= तनिक।

तणु*—पु० = तनु।

तणौ—अव्य० [स० तनु] की ओर। तरफ।

तत्—पु० [स० √तन् (विस्तार)+क्विप्] १ ब्रह्म या परमात्मा का एक नाम। २ वायु। हवा।

सर्व० १ वही या वह। २ उस या उसी। जैसे—तत्सबधी, तत्काल, तत्क्षण।

तत—पु० [स०√तन्+क्त] १ वायु। हवा। २ लबाई चौडाई। फैलाव। विस्तार। ३ पिता। बाप। ४ पुत्र। बेटा। ५ [√तन्+तन्] वे बाजे जिनमे बजाने के लिए तार लगे होते है। तत्री। जैसे—बीन, सितार आदि।

†पु० = तत्त्व।

†वि० = तप्त।

†सर्व० [स० तत्] वह। जैसे—तत्-छन =उस समय।

ततकार—स्त्री० [हि० तत+कार] तत्तायई।? (दे०)

†अव्य०=तत्काल।

ततकाल—अव्य० =तत्काल।

ततखन—अव्य०=तत्क्षण।

ततछन*—अव्य०=तत्क्षण।

तततायेई—स्त्री० [अनु०] =तत्ताथेई (नाच के बोल)।

तत-पत्री—पु० [स० ब० स०, ङीष्] केले का पेड।

ततपर—वि० =तत्पर।

ततबाउ*—पु०=ततुवाय।

ततबीर†—स्त्री०= तदबीर।

ततरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड।

ततसार*—स्त्री० [स० तप्तशाला] वह स्थान जहाँ कोई चीज तपाई जाती है।

ततहँडा—पु० [स० तप्त+हि० हाँडी] [स्त्री० अल्प० ततहँडी] मिट्टी की बडी हाँडी जिसमे नहाने आदि के लिए पानी गरम किया जाता है।

तताई*—स्त्री० [हि० तत्ता] १ तत्ते अर्थात् गरम होने की अवस्था या भाव। २ उग्रता। प्रचडता।

ततामह—पु० [स० तत+ डामह] पितामह।

ततारना—स० [हि० तत्ता=गरम] १ गरम जल से धोना। २ किसी चीज पर जल आदि की धार गिराना या छोडना।

तति—स्त्री० [स० √तन् (विस्तार)+क्तिन्] १ श्रेणी। ताँता। २ समूह। ३ लबाई-चौडाई। फैलाव। विस्तार।

वि० लबाचौडा या फैला हुआ। विस्तृत।

ततु†—पु० =तत्त्व।

ततुबाऊ†—पु० =ततुवाय।

ततुरि—वि० [स० √तुर्व् (मारना)+कि,पृषो० सिद्धि] १ हिंसा करनेवाला। हिंसक। २ उबारने या तारनेवाला। उद्धारक।

ततैया—स्त्री० [स० तिक्त] १ बर्रे। भिड। २ एक प्रकार की छोटी पतली मिर्च जो बहुत कडवी होती है।

वि० १ बहुत तेज या तीखा। तीक्ष्ण। ३ बहुत अधिक चपल और तीव्र बुद्धिवाला।

ततोधिक—वि० [स० ततस्-अधिक, प० त०] १ उससे अधिक। २ उससे बढकर।

तत्काल—अव्य० [स० कर्म० स०] फौरन। उसी समय। उसी क्षण।

तत्कालीन—वि० [स० तत्काल+ख–ईन] १ उस समय का। २ उन दिनो का।

तत्क्षण—अव्य० [स० कर्म० स०] उसी क्षण। तुरन्त।

तत्त†—पु० = तत्त्व।

तत्तत्—सर्व० [स० द्व० स०] उन उन। जैसे—इनमे से कुछ शब्दो की व्याख्या तत्तत् शास्त्रो मे की गई है।

तत्ता*—वि० [स० तप्त] [स्त्री० तत्ती] १ जो छूने मे अधिक गरम लगे। अधिक तपा हुआ। गरम। जैसे—तत्ता दूध या तत्ती कडाही।

पद—तत्ता तवा=गरम मिजाजवाला व्यक्ति।

२ तेजगतिवाला। उदा०—दिन महि तत्ते हयनि तजि महि मडे अति घाइ।—चदवरदाई।

तत्ताथेई—स्त्री० [अनु०] नाच के समय जमीन पर पैर पडने के शब्द जो नाच के बोल कहे जाते है।

तत्तिम्मा—पु० [अ० तत्तिम] १ परिशिष्ट। २ क्रोड पत्र।

तत्तोथबो—पु० [हि० तत्ता=गरम+थामना] १ लडाई-झगडा रोकने के लिए दोनो पक्षो को समझा-बुझाकर शान्त करने की क्रिया या भाव। बीच-बचाव। २ बार-बार आशा दिलाते हुए किसी को उग्र रूप धारण करने से रोक रखने की क्रिया या भाव। बहलावा। जैसे-पावनेदारो को तत्तो-थबो करके टाल चलना।

तत्त्व—पु० [स० तत्+त्व] १ आकाश, अग्नि, जल, थल और पवन ये पाँच गुण (अथवा इनमे से हर एक) जो प्राचीन भारतीय विचारधारा के अनुसार किसी पदार्थ को अस्तित्त्व मे लाते है और जो जगत् या सृष्टि के मूल कारण कहे जाते है।

विशेष—साख्य मे तत्त्वो की सख्या २५ मानी गई है।

२ आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार कोई ऐसा पदार्थ जिसमे दूसरे पदार्थो का कुछ भी अश या मेल न पाया जाता हो, अर्थात् जो सब प्रकार से अमिश्र और विशुद्ध हो। (एलिमेन्ट)

विशेष—पाश्चात्य वज्ञानिको ने अब तक १०० से ऊपर ऐसे तत्त्व ढूँढ निकाले है जो अमिश्र और विशुद्ध रूप मे मिलते है।

३ कोई मूल, मौलिक या वास्तविक आधार, गुण या बात। सार वस्तु। ४ ईश्वर। ५ यथार्थता।

तत्त्वज्ञ—पु० [स० तत्त्व√ज्ञा (जानना)+क] १ वह जो ईश्वर या ब्रह्म को जानता हो। तत्त्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २ किसी बात या विषय का तत्त्व जानने या समझने वाला व्यक्ति। ३ दार्शनिक।

तत्त्वज्ञान—पु० [ष० त०] आत्मा, परमात्मा तथा उसकी सृष्टि के सबध मे होनेवाला सच्चा या यथार्थ ज्ञान जो मोक्ष का कारण माना गया है। ब्रह्मज्ञान।

तत्त्वज्ञानी (निन्)—पु० [स० तत्त्वज्ञान+इनि] तत्त्वज्ञ। (दे०)

तत्त्वतः—अव्य० [स०] तत्त्व या सार-भूत गुण के विचार से। यथार्थत वस्तुत।

तत्त्वता—स्त्री० [स० तत्त्व+तल-टाप्] १ तत्त्व होने की अवस्था, गुण या भाव। २ यथार्थता। वास्तविकता।

तत्त्वदर्श—पु० [स० तत्त्व√दृश् (देखना)+अण्] १ तत्त्वज्ञ। २ सावर्णि मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

तत्त्वदर्शी (शिन्)—पु० [स० तत्त्व√दृश+णिनि] १ तत्त्वज्ञ। २ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

तत्त्व-दृष्टि—स्त्री० [मध्य० स०] १ वह दृष्टि जो किसी बात के मूल-कारण या गुण का पता लगाती या उस तक पहुँचती हो। २ दिव्य दृष्टि।

तत्त्व-न्यास—पु० [मध्य० स०] तत्र के अनुसार विष्णु पूजा मे एक अग न्यास जो सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

तत्त्व-भाव—पु० [ष० त०] प्रकृति। स्वभाव।

तत्त्वभाषी (षिन्)—पु० [स० तत्त्व√भाष् (कहना)+णिनि] वह व्यक्ति जो यथार्थ या सच्ची बात कहता हो। यथार्थ भाषी।

तत्त्वमसि—पद [स० तत्-त्वम्-असि, व्यस्त पद] वेदान्त का एक प्रसिद्ध वाक्य जिसका अर्थ है, तू वही अर्थात् ब्रह्म है।

तत्त्व-रश्मि—पु० [ष० त०] तत्र के अनुसार स्त्री देवता का बीज। वधू बीज।

तत्त्ववाद—पु० [स० ष० त०] १ दर्शन-शास्त्र सबधी विचार। २ किसी प्रकार की दार्शनिक विचार-प्रणाली या मत-निरूपण का ढग। (फिलासिफिकल सिस्टम)

तत्त्ववादी (दिन)—पु० [स० तत्त्व√वद्+णिनि] जो तत्त्ववाद का ज्ञाता और समर्थक हो।

वि० १ तत्त्ववाद सबधी। तत्त्वकी। २ सच्ची और साफ बात कहने-वाला।

तत्त्वविद्—पु० [स० तत्त्व√विद् (जानना)+क्विप्] १ तत्त्वज्ञ। (दे०) २ परमात्मा।

तत्त्व-विद्या—स्त्री० [ष० त०] दर्शन शास्त्र।

तत्त्व-वेत्ता (त्तृ)—पु० [ष० त०] १ जिसे तत्त्व का ज्ञान हो। तत्त्वविद्। २ दार्शनिक।

तत्त्व-शास्त्र—पु० [स० ष० त०] दर्शन-शास्त्र।

तत्त्वावधान—पु० [स० तत्त्व-अवधान, ष० त०] किसी काम के ऊपर होनेवाली देख-रेख या निरीक्षण।

तत्त्वावधायक—पु० [स० तत्त्व-अवधायक, ष० त०] देख-रेख या निरी-क्षण करनेवाला।

तत्थ†—वि० [स० तत्त्व] मुख्य। प्रधान।

†पु० = तथ्य।

तत्पत्री—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] १ केले का पेड। २ वशपत्री नाम की घास।

तत्पद—पु० [स० कर्म० स०] परमपद। निर्वाण।

तत्पदार्थ—पु० [स० तत्पद-अर्थ, ष० त०] सृष्टि-कर्त्ता। पर-मात्मा।

तत्पर—वि० [स० ब० स०] [भाव० तत्परता] १ जो कोई काम करने के लिए तैयार हो। उद्यत। मुस्तैद। २. जो किसी काम मे मनोयोगपूर्वक लगा हुआ हो या लगने को हो। ३ दक्ष। निपुण। होशियार। ४ चतुर। चालाक।

पु० समय का एक बहुत छोटा मान जो एक निमेष का तीसवाँ भाग होता है।

तत्परता—स्त्री० [स० तत्पर+तल्-टाप्] १ तत्पर होने की अवस्था, गुण या भाव। सन्नद्धता। मुस्तैदी। २ मनोयोगपूर्वक काम करने का भाव। जैसे—उन्होने यह काम पूरी तत्परता से किया है। ३ दक्षता। निपुणता। ४ चालाकी।

तत्पश्चात्—अव्य० [स० ष० त०] उसके बाद। अनतर।

तत्पुरुष—पु० [स० कर्म० स०] १ ईश्वर। परमेश्वर। २ एक रुद्र का नाम। ३ एक कल्प या बडे काल विभाग का नाम। ४. सस्कृत व्याकरण मे एक प्रकार का समास जिसके अनुसार दो सज्ञाओ के बीच की विभक्ति लुप्त हो जाती है, और जिसमे दूसरा पद प्रधान होकर यह सूचित करता है कि वह पहले पद का कार्य या परिणाम है अथवा उस पहले पद 'से' ही सम्बन्ध रखता अथवा उस 'मे' ही होता है। जैसे—

ईश्वर दत्त=ईश्वर का दिया हुआ, देश-भक्ति=देश की भक्ति, ऋण मुक्त=ऋण से मुक्त, निशाचर=निशा मे विचरण करनेवाला।

विशेष—व्याकरण में यह समास दो प्रकार का माना गया है—व्यधिकरण और समानाधिकरण और इसके विग्रह मे कर्त्ता तथा सबोधन कारको को छोडकर शेष सभी कारको की विभक्तियाँ लगती है।

तत्प्रतिरूपक व्यवहार—पु० [स० तत्-प्रतिरूपक ष० त०, तत्प्रतिरूपक-व्यवहार, कर्म० स०] जैनियो के मत से एक अतिचार जो बेची जानेवाली खालिस वस्तुओ मे मिलावट करने से होता है।

तत्फल—पुं० [स० तत्√फल् (फलना)+अच्] १ कूट नामक औषध। कुट। २ बेर का फल। ३ नीला कमल। ४ चोर नामक गध-द्रव्य।

तत्र—अव्य० [स० तत् +त्रल्] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

तत्रक—पु० [देश०] एक तरह का पेड जिसकी पत्तियो आदि से चमडा सिझाया जाता है।

तत्रत्य—वि० [स० तत्र+त्यप्] वहाँ रहनेवाला।

तत्रभवान् (वत्)—पु० [स० पूज्य अर्थ मे नित्य० स०] माननीय। पूज्य श्रेष्ठ।

तत्रापि—अव्य० [स० तत्र-अपि, द्व० स०] तथापि। तोभी।

तत्सबधी (धिन्)—वि० [स० ष० त०] उससे सबध रखनेवाला।

तत्सम—पु० [स० तृ० त०] किसी भाषा का वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा मे अपने मूल रूप मे (बिना विकृत हुए) चलता हो।' 'तद्भव' से भिन्न। जैसे—हिन्दी मे प्रयुक्त होनेवाले कृपा, महत्व, सेवा आदि सस्कृत के और खराब, मिजाज, हाजिर आदि अरबी-फारसी के शब्द तत्सम रूप मे ही चलते है।

तत्सामयिक—वि० [स० ष० त०] उस समय का।

तथा—अव्य० [स० तद्+थाल्] १ दो चीजो, बातो आदि मे योग या सगति स्थापित करनेवाला एक योजक अव्यय। और। जैसे—कृष्ण तथा राम दोनो गये। २ किसी के अनुरूप या अनुसार। वैसा ही। जैसे—यथा नाम, तथा गुण।

पु० १ सत्य। २ निश्चय। ३ समता। समानता। ४ सीमा। हद।

†स्त्री० =तत्थ या तथ्य। (क्व०)

तथा-कथित—वि० [स० तृ० त०] जो इस नाम से अथवा इस रूप मे कहा जाता हो अथवा प्रसिद्ध हो, परन्तु जिसका ऐसा होना विवादास्पद अथवा सदिग्ध हो। जैसे—देश के तथा-कथित नेता=ऐसे लोग जो अपने आपको 'नेता' कहते है अथवा जिन्हे लोग 'नेता' कहते है फिर भी वक्ता को जिनके 'नेता' होने मे सदेह है।

तथा-कथ्य—वि० दे० 'तथा-कथित'।

तथागत—पु० [स० तथा=सत्य+गत=ज्ञान, ब० स०] बुद्ध का एक नाम।

तथाता—स्त्री० [स० तथा+तल्-टाप्] १ 'तथा' का भाव। २ दार्शनिक क्षेत्रो मे जो वस्तु वास्तव मे जैसी हो उसका ठीक वैसा ही निरूपण। (विश्व के समस्त धर्मों का यही नित्य और स्थायी तत्त्व या मूल धर्म है)।

तथापि—अव्य० [स० तथा-अपि, द्व० स०] तो भी। तिस पर भी। फिर भी।

तथाराज—पु० [स० तथा√राज् (शोभित होना)+अच्] बुद्ध का एक नाम।

तथास्तु—पद [स० तथा अस्तु—व्यस्त पद] (जैसा कहते हो) वैसा ही हो। एवमस्तु (आशीर्वाद, शुभ-कामना आदि का सूचक)।

तथैव—अव्य० [स० तथा-एव, द्व० स०] उसी प्रकार का। वैसा ही। यथैव का नित्य-सबधी। उदा०—तथैव मैं हूँ मलिन, यथैव तू।—हरिऔध। २ उसी प्रकार। वैसे ही।

तथोक्त—वि० [स० तथा-उक्त, तृ० त०] १ उस प्रकार कहा हुआ। २ तथा-कथित। (दे०)

तथ्य†—पु० [स० तथ्य] १ यथार्थ बात। २ तथ्य। ३ रहस्य।

†अव्य० [स० तत्त] उस जगह। वहाँ।

तथ्यु—अव्य० [स० तथापि ?] तो भी। तथापि। (राज०)

तथ्यै†—वि०=तथैव।

तथ्य—पु० [स० तथा+यत्] १ यथार्थता। सत्यता। २ वास्तविकता या मूल कारण। ३ कोई ऐसी घटना बात या सबध जो वस्तुत अस्तित्व मे हो।

तथ्यक—वि० [स० ताथ्यिक] तथ्य-सबधी।

तथ्यभाषी (षिन्)—वि० [स० तथ्य√भाष् (बोलना) +णिनि] तथ्यपूर्ण और वास्तविक बात कहनेवाला।

तथ्यवादी (दिन)—वि० [स० तथ्य√वद् (बोलना)+णिनि] =तथ्य भाषी।

तद्—वि० [स०√तन् (फैलना)+क्विप्] वह।

क्रि० वि० [स० तदा] उस समय। तब। (पश्चिम)

तदतर—अव्य०= [स० तदनतर] उसके बाद।

तदनत†—अव्य०=तदनतर।

तदनतर—अव्य० [स० तद्-अनतर, ष० त०] उसके उपरान्त। उसके पीछे या बाद।

तदनन्यत्व—पु० [स० तद्-अनन्यत्व, ष० त०] वेदात के अनुसार कार्य और कारण मे होनेवाली एकता।

तदनु—अव्य० [स० तद्-अनु, ष० त०] १ उसके पीछे। उसके अनुसार। ३ उसी तरह। उसी प्रकार।

तदनुकूल—वि० [स० तद्-अनुकूल, ष० त०] उसके अनुकूल।

तदनुकूलत—अव्य० [स० तदनुकूल+तस्] उसके अनुकूल भाव या विचार से।

तदनुरूप—वि० [स० तद्-अनुरूप, ष० त०] उसी के रूप का। उसी के जैसा या समान।

तदनुसार—अव्य० [स० तद्-अनुसार, ष० त०] उसी के अनुसार। वि० उसके अनुसार होनेवाला।

तदन्यबाधितार्थ—पु० [स० तदन्य प० त०, बाधितार्थ कर्म० स०, तदन्य-बाधितार्थ कर्म० स०] नव्य न्याय मे तर्क के पाच प्रकारो मे से एक।

तदपि—अव्य० [स० तद्-अपि, द्व० स०] तो भी। तिस पर भी। तथापि।

तदबीर—स्त्री० [अ०] १ विचारपर्वक निकाली या सोची हुई युक्ति। २ काम करने या निकालने का कोई ढग। उपाय।

तदर्थ—अव्य० [स० तद्-अर्थ, ष० त०] उसके वास्ते।

तदर्थ समिति—स्त्री० [तद्-अर्थ, ब० स०, तदर्थ-समिति, कर्म० स०]

किसी विशिष्ट कार्य के सपादन के लिए बनी हुई समिति। (एड-हॉक कमिटी।)

तदर्थी—वि० = तदर्थीय।

तदर्थीय—वि० [स० तदर्थ+छ—ईय] उसके अर्थ जैसा अर्थ रखनेवाला। समानार्थक। समानक।

तदा—अव्य० [स० तद्+दा] उस समय। तब।

तदाकार—वि० [स० तद्-आकार, ब० स०] १ उसी के आकार का। २ जो किसी के आकार या रूप मे मिलकर उसी के समान हो गया हो। ३ तन्मय। तल्लीन।

तदारुक—पु० [अ०] १ खोई हुई चीज या भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुघटना आदि के सम्बन्ध मे की जानेवाली जाँच।२ किसी दुर्घटना को रोकने या उससे बचने के लिए पहले से किया जानेवाला उपाय या प्रबन्ध। ३ दड। सजा।

तदि—अव्य० [स० तदा] तब। उदा०—किरि नी पापौ तदि निकुटी। —प्रिथीराज।

तदीय—सर्व० [स० तद्+छ—ईय] १ उसका। २ उससे सबधित।

तदुपरात—अव्य० [स० तद्-उपरात, ष० त०] उसके उपरात। उसके पीछे या बाद।

तद्गत—वि० [स० द्वि० त०] १ उससे सबध रखनेवाला। उसके सबध का। २ उसमे अन्तर्युक्त या व्याप्त।

तद्गुण—पु० [स० ब० स०] साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जिसमे एक वस्तु के अपने समीप की किसी दूसरी वस्तु का कोई गुण ग्रहण करने का वर्णन होता है।

तद्देशीय—वि० [स० तद्देश, कर्म० स०,+छ—ईय] उस देश का।

तद्धन—पु० [स० ब० स०] कजूस। कृपण।

तद्धर्म (न्)—वि० [स० ब० स०] उस धर्म का।

तद्धित—पु० [स० च० त०] १ व्याकरण मे, वे प्रत्यय जो विशेषण शब्दो मे लगकर उन्हे सज्ञाएँ और सज्ञाओ मे लगकर उन्हे विशेषण का रूप देते है। २ उक्त प्रकार के प्रत्यय लगने से बननेवाले शब्द रूप या उनके रूप।

तद्बल—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का बाण।

तद्भव—पु० [स० ब० स०] किसी भाषा मे चलनेवाला वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा के किसी शब्द का विकृत रूप हो। जैसे—'काम' स० के 'कर्म्म' शब्द का तद्भव है।

तद्यपि—अव्य० [स० तदापि] तथापि।

तद्रूप—वि० [स० ब० स०] [भाव० तद्रूपता] उसी के रूप का। वैसा ही।
पु० साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे उपमेय को उपमान से पृथक् मानते हुए भी उसे उपमान का दूसरा रूप और उसके कार्य का कर्ता बतलाया जाता है।

तद्रूपता—स्त्री० [स० तद्रूप+तल्—टाप्] तद्रूप होने की अवस्था या भाव।

तद्वत्—वि० [स० तद्+वति] उसके समान। उसी के जैसा।
अव्य० उसी की तरह।

तधी†—अव्य० [स० तदा] तभी। (क्व०)

तन—पु० [स० तनु] १ जीव का स्थूल ढाँचा। देह। शरीर।
मुहा०—तन कसना=तपस्या के द्वारा अपने आपको सहनशील बनाना। **तन तोडना**=(क) अँगडाई लेना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम कराना। **तन देना**=ध्यान देना। **तन मन मारना**=इद्रियो को वश मे रखना। **(किसी के) तन लगना**=(क) किसी के उपयोग मे आना। (ख) किसी के प्रति परिणाम होना या प्रभाव पडना। जैसे—जिसके तन लगती है वही जानता है।
२ स्त्री की मूत्रेद्रिय। भग।
मुहा०—(किसी को) तन दिखाना=किसी के साथ प्रसग या सभोग करना। जैसे—वेश्याएँ सौ आदमियो को तन दिखाती है।
*अव्य० [स० तनु] ओर। तरफ।

तनक—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की रागिनी जिसे कोई कोई मेघ राग की रागिनी मानते है।
स्त्री० [हि० तिनगना] १ तनने या रुष्ट होने की क्रिया या भाव।
†वि० =तनिक।

तनकना*—अ०=तिनकना।

तनकीद—स्त्री० [अ०] आलोचना। समीक्षा। २ परख। पहचान।

तनकीह—स्त्री० [अ०] १ कोई मूल कारण या तथ्य जानने या निकलने के लिए किसी से की जानेवाली पूछ-ताछ। २ आज-कल विधिक क्षेत्रो मे, दीवानी मुकदमो आदि के सम्बन्ध मे दोनो पक्षो के कथन और उत्तर के आधार पर न्यायालय का यह निश्चित करना कि मुख्यत् कौन-कौन सी बाते विचारणीय है।

तनखाह—स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन। (दे०)

तनखाहदार—पु० [फा०] वेतन लेकर काम करनेवाला व्यक्ति। वेतन-भोगी।

तनख्वाह—स्त्री०=तनखाह (वेतन)।

तनगना†—अ०=तिनकना।

तनजीम—स्त्री० [अ० तन्जीम] अपने दल वर्ग, समाज आदि के लोगो को एकत्र तथा सघटित करना। सघटन।

तन-तनहा—अव्य० [हि० तन+फा० तनहा] केवल अपना शरीर लेकर। अकेले ही। जैसे—वह तन-तनहा ही घर से निकल पडा।

तनतना—पु० [अ० तन्तन] १ रोब-दाब। दबदबा। २ आतक। ३ आवेश मे आकर प्रकट किया जानेवाला क्रोध गुस्सा।
क्रि० प्र०—दिखाना।

तनतनाना—अ० [हि० तनना] बहुत तन या खिचकर अपनी शान दिखाते हुए क्रोध प्रकट करना।

तनत्राण†—पु०=तनुत्राण।

तनदिही—स्त्री०=तदेही।

तनधर—वि० [हि० तन+स० धर] शरीरधारी। शरीरवाला।

तनना—अ० [हि० तानना का अ० रूप] १ ताना जाना। २ किसी चीज का इस प्रकार खीचा जाना या ऐसी स्थिति मे होना कि उसमे पडे हुए झोल, बल, सिकुडने आदि निकल जायँ। जैसे—रस्सी तनना। ३ किसी स्थान को आच्छादित करने के लिए उसके ऊपर किसी चीज का खीचकर फैलाया जाना। जैसे—चँदोआ या चाँदनी तनना। ४ किसी रचना का रस्सियो आदि की सहायता से खीचकर खडी

किया या बाँधा जाना। जैसे—खेमा तनना। ५ खिचाव से युक्त होकर किसी एक पार्श्व मे होना। जैसे—भौहे तनना। ६ लाक्षणिक अर्थ मे व्यक्ति का क्रोध या हठपूर्वक अपने पक्ष या बात पर अडे रहना और किसी की ओर उन्मुख या प्रवृत्त न होना। ७ आघात करने के लिए किसी चीज का उठाया जाना। जसे—दोनो ओर से लाठियाँ तन गईं।

तनपात—पु०=तनुपात (मृत्यु)।

तनपोषक—वि०[हिं० तन+स० पोषक] जो अपने ही तन या शरीर का ध्यान रखे अर्थात् स्वार्थी।

तनबाल—पु० [स०] १ एक प्राचीन देश। (महाभारत) २ उक्त देश का निवासी।

तनमय†—वि०=तन्मय।

तनमात्रा†—स्त्री० दे० 'तन्मात्रा'।

तनमानसा—स्त्री० [स० ?] ज्ञान की सात भूमिकाओ मे तीसरी भूमिका।

तनय—पु० [स०√तन् (फैलाना) +कयन्] [स्त्री० तनया] १ पुत्र। बेटा। २ ज्योतिष मे जन्म लग्न से पाँचवाँ स्थान जिसके आधार पर यह जाना जाता है कि कितने पुत्र या लडके-बाले होगे।

तनया—स्त्री०[स० तनय+टाप्] १ पुत्री। बेटी। लडकी। २ पिण्वन नाम की लता।

तनराग—पु०=तनुराग।

तनरुह—पु०=तनुरुह (रोआ)।

तनवाना—स० [हिं० 'तानना' का प्रे० रूप] किसी को कुछ तानने मे प्रवृत्त करना। तानने का काम किसी और से कराना।

तनवाल—पु० [देश०] वैश्यो की एक उपजाति।

तनसल—पु० [देश०] स्फटिक पत्थर। बिल्लौर।

तनसीख—स्त्री० [अ०] १ नष्ट करना। मिटाना। २ निरर्थक रद्द या व्यर्थ करना। मिटाना।

तनसुख—पु० [हिं० तन+सुख] एक प्रकार की फूलदार बढिया महीन मलमल।

तनहा—वि०[फा०] [भाव० तनहाई] (व्यक्ति) जिसके साथ और कोई व्यक्ति न हो।
अव्य० बिना किसी सगी या साथी के।

तनहाई—स्त्री० [फा०] १ तनहा अर्थात् अकेले होने की अवस्था। २ एकान्त या निर्जन स्थान।

तना—पु० [फा०] पेड-पौधो का जमीन से ऊपर निकला हुआ वह मोटा भाग जिसके ऊपरी सिरे पर डालियाँ निकली होती हैं। धड।
*अव्य० वि० दे० 'तनु'।

तनाई—स्त्री० [हिं० तानना] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाऊ*—पु०=तनाव।

तनाकु—क्रि० वि०=तनिक।

तनाजा—पु० [अ० तनाज] १ दो पक्षो मे कुछ समय तक बराबर चलता रहनेवाला झगडा। २ वैर। शत्रुता।

तनाना—स० [हिं० तनना का प्रे०] कोई चीज किसी को तानने मे प्रवृत करना। तनवाना।

तनाब—स्त्री० [अ० तिनाब] १ वह डोरी या रस्सी जिससे खेमे या तब् के बास आदि खीचकर खूँटो से बाँधे जाते है। २ बाजीगरो का वह रस्सा जिसपर चलकर वे तरह तरह के करतब दिखते है। ३ वह डोरी या रस्सी जिसपर धोबी कपडे सुखाने के लिए टागते है। ४ डोरी। रस्सी।

तनाय*—पु०=तनाव।

तनाव†—पु० [हिं० तनना] १ तने अर्थात् कसे या खिचे हुए होने की अवस्था या भाव। २ राग-द्वेष आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह स्थिति जिसमे दोनो पक्ष एक दूसरे की ओर प्रवृत्त नही होते।
स्त्री० दे० 'तनाब'।

तनासुख—पु० [अ०] इस लोक मे आत्मा का होनेवाला आवागमन या बार बार शरीर धारण।

तनि*—अव्य०[स० तनु] और। तरफ।
पु० [स० तनु] शरीर। देह। उदा०—बधिया तनि सरवरि वेस वधती।—प्रिथीराज।
†क्रि० वि०=तनिक।

तनिक—वि० [स० तनु=अल्प] १ जो अल्प मात्रा या मान मे हो। जरा-सा। थोडा। २ छोटा-सा।
अव्य० कुछ। जरा। टुक। जैसे—तनिक देर हो गई।

तनिका—स्त्री० [स० √तन् (विस्तार) +इन्+कन्—टाप्, इत्व] किसी वस्त्र, पात्र आदि मे लगी हुई वह डोरी जिससे कोई चीज कसकर बाँधी जाती है। तनी। बद।

तनिमा (मन्)—स्त्री० [स० तनु+इमनिच्] १ शारीरिक कृशता। दुबलापन। २ सुकुमारता। नजाकत।
पु० जिगर। यकृत।

तनिया†—स्त्री० [हिं० तनी] १ कौपीन। लँगोटी। २ काछा। जाँघिया। ३ चोली। ४ दे० 'तनी'।

तनिष्ठ—वि० [स० तनु+इष्ठन्] जो शारीरिक दृष्टि से दुबला हो। कृश।

तनिस†—पु० [स० तृष या हिं० तिनका ?] पुआल। उदा०—तनिस बिछा के जब हम सोथन गाती बाध चार हाथ ओ।—लोकगीत।

तनी—स्त्री० [स० तनिका] १ कुरती, चोली, मिरजई आदि मे लगी हुई वह डोरी जिससे पहनी हुई कुरती या चोली या मिरजई कसी जाती है। २ कोई चीज कसने या बाँधने के लिए किसी चीज मे लगी हुई डोरी। जैसे—तकिये या थैली की तनी। ३ दे० 'तनिया'।
†वि०, अव्य०=तनिक।

तनीदार—वि० [हिं० तनी+फा० दार] जिसमे तनी या बद लगे हो।

तनु—वि० [स०√तन् (विस्तार) +उन्] १ दुबला-पतला। कृश। २ अल्प। थोडा। ३ कोमल। सुकुमार। ४ अच्छा। बढिया। ५ तुच्छ। ६ छिछला।
पु० १ देह। शरीर २ शरीर की खाल या चमडा। त्वचा। ३ ज्योतिष मे जन्म-कुडली मे का जन्म-स्थान।
स्त्री० १ औरत। स्त्री। २ केचुली। ३ योग मे अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश इन चारो क्लेशो का एक भेद जिसमे चित्त मे क्लेश की अवस्थिति तो होती है पर साधन या सामग्री आदि के कारण उसकी अनुभूति या परिणाम नही होता।

क्रि० वि० [स० तनु] ओर। तरफ। उदा०—बिहँसे करुना ऐन चितै जानकी लखन तनु।—तुलसी।

तनुक*—क्रि० वि०=तनिक।

पु०=तनु।

तनु-कूप—पु० [स० ष० त०] त्वचा मे होनेवाला सूक्ष्म छेद (जिसमे से पसीना आदि निकलता है।

तनुकेशी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] सुन्दर बालोवाली स्त्री।

तनु-क्षीर—पु० [स० ब० स०] आमड़े का वृक्ष।

तनु-गृह—पु० [स०] अश्विनी नक्षत्र।

तनुच्छद—पु०[स० तनु√छद् (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] १ कवच। २ वस्त्र।

तनुच्छाय—पु० [स० ब० स०] बबूल का पेड।

तनुज—पु०[स० तनु√जन् (पैदा होना)+ड] [स्त्री० तनुजा] १ बेटा। पुत्र। २ रोआँ। ३ जन्म-कुडली मे लग्न से पचवाँ स्थान जहाँ से पुत्र भाव देखा जाता है।

तनुजा—स्त्री० [स० तनुज+टाप्] कन्या। पुत्री। बेटी।

तनुता—स्त्री० [स० तनु+तल्—टाप्] १ तनु अर्थात् दुबले-पतले होने की अवस्था या भाव। २ सुकुमारता। ३. छोटाई। ४ तुच्छता। ५ अल्पता। ६ छिछलापन।

तनु-ताप—पु० [ष०त०] १ शारीरिक ताप। २ मन को कष्ट देनेवाली बात। दुख। व्यथा।

तनुत्र—पु० [स० तनु√त्रै (रक्षा करना)+क] =तनुत्राण।

तनु-त्राण—पु० [ष० त०] १ वह चीज जो शरीर की रक्षा करे। २ कवच। बकतर।

तनुत्रान—पु०=तनुत्राण।

तनु-त्वच्—वि० [ब० स०] जिसकी त्वचा पतली हो।

स्त्री० छोटी अरणी।

तनुधारी (रिन्)—वि० [स० तनु√धृ (धारण करना)+णिनि] तनु अर्थात् शरीर धारण करनेवाला। शरीरधारी।

तनु-पत्र—पु० [ब० स०] गोंदी का पेड। इगुदी।

तनु-पात—पु० [ष० त०] शरीर का गिर अर्थात् मर जाना। मृत्यु।

तनु-प्रकाश—वि० [कर्म० स०] धुँधले या मद प्रकाशवाला।

तनु-बीज—वि० [ब० स०] जिसके बीज छोटे हो।

पु० राजबेर।

तनुभव—पु० [स० तनु√भू (होना)+अच्] [स्त्री० तनुभवा] पुत्र। बेटा।

तनु-भूमि—स्त्री० [कर्म० स०] बौद्ध श्रावको के जीवन की एक अवस्था।

तनुभृत—वि० [स० तनु√भृ (धारण)+क्विप्] देहधारी।

तनु-मध्य—वि० [ब० स०] [स्त्री० तनुमध्या] पतली कमरवाला।

तनु-मध्या—स्त्री० [ब० स०, टाप्] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. एक एक तगण और एक एक यगण होता है।

तनु-रस—पु० [ष० त०] पसीना। स्वेद।

तनु-राग—पु० [ब० स०] १ केसर, कस्तूरी, चदन, कपूर आदि को मिलाकर बनाया हुआ एक सुगधित उबटन। बटना। २ केसर, कस्तूरी, चदन, कपूर आदि सुगधित द्रव्य।

तनुरुह—पु० [स० तनु√रुह (उगना)+क] १ रोआँ। २ पख। पर। ३ पुत्र। बेटा।

तनुल—वि० [स०√तन् (विस्तार)+उलच्] फैला या फैलाया हुआ।

तनुवात—पु० [ब० स०] १ ऊँचे स्थानो पर की वह पतली हवा जिसमे श्वास लेना कठिन होता है। २ ऐसा स्थान जहाँ उक्त प्रकार की वायु हो। ३ जैनियो के अनुसार एक प्रकार का नरक।

तनुवार—पु० [स० तनु√वृ (ढकना)+अण्] कवच।

तनु-वीज—पु०=तनुबीज।

तनु-व्रण—पु० [ब० स०] बल्मीक रोग। फील-पाँव।

तनु-शिरा (रस्)—वि० [ब० स०] छोटे सिरवाला।

पु० एक प्रकार का छद।

तनु-सचारिणी—स्त्री० [स० तनु-सम्√चर् (गति)+णिनि—ङीप्] १ युवा स्त्री। २ दस वर्ष की बालिका।

तनु-सर—पु० [स० तनु√सृ (गति)+अच्] पसीना। स्वेद।

तनु-ह्रद—पु० [ष० त०] गुदा।

तनू—पु० [स०√तन् (विस्तार)+ऊ] १ शरीर। २ व्यक्ति। ३ शरीर का कोई अवयव। ४ पुत्र। बेटा। ५ प्रजापति।

स्त्री० गाय। गौ।

तनूकरण—पु० [स० तनु+च्वि, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० तनूकृत] किसी चीज को जल मे घोलकर या मिलाकर उसकी घनता, तीव्रता आदि कम करना। (डाइल्यूशन)

तनूज—वि० [स० तनू√जन् (पैदा होना)+ड] [स्त्री० तनूजा] तन से उत्पन्न। शरीर से उद्भूत।

पु० १ बेटा। पुत्र। २ पख। पर।

तनूजा*—स्त्री०[स० तनूज+टाप्]बेटी। पुत्री।

तनूताप—पु० =तनुताप।

तनूनप—पु०[स० तनु-ऊन, ष०त०, तनून√पा (रक्षा)+क]घी। घृत।

तनूनपात्, तनूनपाद्—पु० [स० तनून√पत् (गिरना)+णिच्+क्विप्] १ चीते का वृक्ष। चीता। चित्रक। २ अग्नि। आग। ३ घी। घृत। ४ नवनीत। मक्खन।

तनूपा—पु०[स० तनू√पा+क्विप्] जठराग्नि।

तनू-पान—पु० [ष० त०] अगरक्षक।

तनू-पृष्ठ—पु०[ब०स०] एक तरह का सोमयज्ञ जिसमे सोमपान किया जाता था।

तनूर†—पु०=तदूर।

तनूरुह—पु०[स० तनू√रुह (उगना)+क]=तनुरुह।

तने†—अव्य० [स० तन] की ओर। की तरफ। उदा०—राम तने रग राची।—मीराँ।

तनेना—वि०[हि० तनना+एना (प्रत्य०)] [स्त्री० तनेनी] १ तना या खिचा हुआ। २ टेढा। तिरछा। ३. (व्यक्ति) जो तनकर क्रोधपूर्वक बाते करता हो। ४ रुष्ट।

तनै*—पु०= तनय।

*अव्य०=तने (की ओर)।

तनैना—वि०=तनेना।

तनैया*—वि० [हि० तानना+ऐया (प्रत्य०)] ताननेवाला।

†स्त्री०[स० तनया] कन्या। बेटी। पुत्री।
स्त्री०=तनी।

तनैला—पु०[देश०] एक तरह के सफेद रग के सुगधित फूलवाला छोटा वृक्ष।

तनोआ†—पु०[हि० तानना] १ वह कपडा जो छाया आदि के लिए ताना जाता है। २ चँदोआ।

तनोज—वि०, पु०=तनूज।

तनोरुहा†—पु०=तनुरुह।

तनोवा—पु०=तनोआ।

तन्दुरुस्त—वि० [फा०]=तदुरुस्त।

तन्दुरुस्ती—स्त्री०=तदुरुस्ती।

तन्ना—पु०[हि० तानना]१ बुनाई करते समय लबे बल मे ताना हुआ सूत। २ वह जिससे कोई चीज तानी जाय।

तन्नाना—अ०१ =तनना। २ =तनकना।

तन्नि—स्त्री०[स० तत्√नी (ले जाना)+डि (बा०)] १ पिठवन। २ कश्मीर की चन्द्र-कुल्या नदी का एक नाम।

तन्नी—स्त्री०[स० तनिका, हि० तनी]१ तनी विशेषत वह डोरी जिससे तराजू की डडी मे पलडा लटकाया जाता है। २ लोहे की मैल खुरचने की एक तरह की अँकुसी। ३ वह रस्सी जिसकी सहायता से पाल चढाया जाता है। ४ व्यापारी जहाज का एक अधिकारी जो व्यापार सबधी कार्य करता है।
†पु० दे० 'तरनी'।

तन्मनस्क—वि०[स० तत्-मनस् ब०स०, कप्] तन्मय। तल्लीन।

तन्मय—वि०[स० तद्+मयट्][भाव० तन्मयता] १ उस (पूर्वोक्त) से बना हुआ। २ जो दत्तचित होकर कोई काम कर रहा हो। किसी कार्य या व्यापार मे खोया हुआ। मग्न। लवलीन।

तन्मयता—स्त्री०[स० तन्मय+तल्—टाप्] तन्मय होने की अवस्था, गुण या भाव।

तन्मयासक्ति—स्त्री० [स० तन्मयी-आसक्ति, कर्म०स०] भगवान के प्रति होनेवाला वह दिव्य प्रेम जिसमे मनुष्य अपनी सत्ता भूल जाता है।

तन्मात्र—वि०[स० तद्+मात्रच्] बहुत थोडी मात्रा का।
पु० पचभूतो का मूल सूक्ष्म रूप।

तन्मात्रा—स्त्री०=तन्मात्र।

तन्मूलक—वि० [स० तद्-मूल, ब०स०, कप्] उस (पूर्वोक्त) से निकला हुआ। तज्जन्य।

तन्य—वि०[स० तान्य] [भाव० तन्यता]१ जो खीचा या ताना जा सके। २ (पदार्थ) जो खीच, तान या पीटकर बढाया या लबा किया जा सके, और ऐसा करने पर भी बीच मे से कही टूटे-फूटे नही। जैसे—धातुएँ तन्य होती है और उनके तार या पत्तर बनाये जा सकते है। (डक्टाइल)

तन्यक—वि० तन्य। (दे०)

तन्यता—स्त्री०[स० तान्यता]१ तन्य होने की अवस्था या भाव। २ वस्तुओ का वह गुण जिससे वे खीचने, तानने या पीटने पर बिना बीच मे से टूटे, बढकर लबी हो सकती है। (डक्टिलिटी)

तन्यतु—पु०[स०√तन्(फैलाना)+यतुच्]१ वायु। हवा। २ रात। रात्रि। ३ गर्जन। ४ एक प्रकार का पुराना बाजा।

तन्वग—वि०[स० तनु-अग, ब०स०][स्त्री० तन्वगी] सुकुमार अगोवाला। कोमलाग।

तन्वगी—स्त्री०[स० तन्वग+ङीष्] सुकुमार अगोवाली स्त्री।

तन्वि—स्त्री०[स०]१ चन्द्रकुल्या नदी का एक नाम जो कश्मीर मे है। २ तन्वगी।

तन्विनी—स्त्री०=तन्वगी।

तन्वी—वि०[स० तनु+ङीष्] दुबले-पतले शरीर या कोमल अगोवाली।
स्त्री० १ सुकुमार अगोवाली स्त्री। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक-एक भगण, तगण, नगण और अत मे यगण होता है।

तपकर—पु०[स० तपस्√कृ (करना)+ट] तपस्वी।

तपकृश—वि० [स० तृ० त०] तपस्या के फलस्वरूप जिसका शरीर क्षीण या कृश हो गया हो।

तपभूत—वि०[स०तृ० त०] जिसने तपस्या के द्वारा आत्मशुद्धि कर ली हो।

तपःसाध्य—वि०[स० तृ०त०] जिसका साधन तपस्या से होता या हो सकता हो।

तपःसुत—पु० [स०] युधिष्ठिर।

तपःस्थल—पु०[स० ष०त०] तप करने का स्थान। तपोवन।

तपस्थली—स्त्री० [स० ष० त०] काशी।

तप (स्)—पु०[स०√तप्(शरीर को कष्ट देना)+असुन्] १ स्वेच्छा से शारीरिक कष्ट सहते हुए इन्द्रियो तथा मन को वश मे रखना और यम, नियम आदि का पालन करना। शरीर को तपाना। तपस्या। २ किये हुए अपराध या पाप के प्रायश्चित्त स्वरूप स्वेच्छा से किया जानेवाला ऐसा कठोर आचरण जिससे शरीर को कष्ट होता हो। तपस्या। ३ अग्नि। आग। ४ गरमी। ताप। ५ गरमी के दिन। ग्रीष्म ऋतु। ६ ज्वर। बुखार। ७ एक कल्प का नाम। ८ माघ नाम का महीना। ९ ज्योतिष मे, लग्न से नवाँ स्थान। १० दे० 'तपोलोक'।

तपकना*—अ० [हि० टपकना या तमकना] १ (छाती या हृदय का) रह-रहकर धडकना। २ चमकना। ३ दे० 'टपकना'।

तपचाक—पु०[देश०] तुर्की (देश) का एक तरह का घोडा।

तपडी—स्त्री०[देश०]१ छोटा टीला। ढूह। २ एक प्रकार का वृक्ष जिसमे जाडे मे लाल रग के फल लगते है। ३ उक्त वृक्ष का फल।

तपत†—स्त्री०=तपन। उदा०—मेरे मन की तपत बुझाई।—कबीर।

तपती—स्त्री०[स०]छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की कन्या। (महाभारत)

तपन—वि०[स०√तप्+ल्यु—अन] १ तपनेवाला। २ कष्ट या दुख देनेवाला।
पु०१ सूर्य। २ सूर्यकातमणि। ३ एक प्रकार की अग्नि। ४ धूप। ५ साहित्य मे वे कष्टसूचक शारीरिक व्यापार जो प्रिय के वियोग मे स्वाभाविक रूप से होते है। ६ एक नरक जिसमे ताप की बहुत अधिकता कही गई है। ७ अरनी, भिलावाँ, मदार आदि वृक्षो की सज्ञा।
स्त्री०[हि० तपना] १ तपे हुए होने की अवस्था या भाव। २ किसी

चीज के तपे हुए होने की वह स्थिति जिसमे अधिक ताप की अनुभूति होती है। तपिश। जैसे—कमरे मे तपन है।

तपन-कर—पु० [ष० त०] सूर्य की किरण। रश्मि।

तपनच्छद—पु० [ब०स०] मदार का पेड।

तपन-तनय—पु० [ष०त०] सूर्य का पुत्र।

विशेष—कर्ण, यम, शनि, सुग्रीव, आदि सूर्य के पुत्र माने गये है।

तपन-तनया—स्त्री० [ष०त०] १ सूर्य की पुत्री, यमुना नदी। २ शमी वृक्ष।

तपन-मणि—पु० [मध्य०स०] सूर्यकात मणि।

तपनाशु—पु० [स० तपन-अशु, ष०त०] सूर्य की किरण। रश्मि।

तपना—अ० [स० तपन] १ अधिक ताप से युक्त होना। तप्त होना। जैसे—तदूर या तवा तपना। २ तप या तपस्या करना। ३ मन ही मन बहुत अधिक कष्ट या दुःख भोगना। सतप्त होना। उदा०—निरखि सहचरी को अति तपनौ, कहा लगी तब अपनौ सपनौ।—नददास। ४ लोगो पर आतक फैलाते हुए अपने तेज या प्रभुत्व का सिक्का जमाना। जैसे—वह कोतवाल अपने समय मे बहुत तपा था। ५ केवल शान दिखाने के लिए आवश्यकता से अधिक प्राय व्यर्थ के कामो मे धन व्यय करना। जैसे—बाप के मरने पर कजूस रईसो के लडके खूब तपते है। ६ किसी काम मे निरतर लगे रहकर उसके लिए बहुत कष्ट भोगना। जैसे—आप तपे हुए देश-सेवी है।

अ० [स० तप्] तपस्या करना। उदा०—पहुँचे आनि तुरत तपति भूपति जिहि कानन।—रत्नाकर।

तपनाराधन—पु० [स० तपन-आराधन] तपस्या।

तपनि*—स्त्री०=तपन।

तपनी†—स्त्री० [हि० तपना] १ वह स्थान जहाँ आग जलाकर तापी जाती है। कौडा। अलाव।

क्रि० प्र०—तापना।

२ तप। तपस्या। ३ तपन।

स्त्री० [स० तपन+ङीष्] १ गोदावरी नदी। २ पाठा लता।

तपनीय—पु० [स०√तप्+अनीयर्] सोना।

वि० तपने या तपाने के योग्य।

तपनीयक—पु० [स० तपनीय+कन्]=तपनीय।

तपनेष्ट—पु० [तपन-इष्ट ष० त०] ताँबा।

तपनोपल—पु० [तपन-उपल मध्य० स०] सूर्यकात मणि।

तपभूमि—स्त्री०=तपोभूमि।

तपराशि—पु०=तपोराशि।

तपरितु—स्त्री० [हि० तपना+स० ऋतु] गरमी का मौसम।

तपलोक—पु० =तपोलोक।

तपवाना—स० [हि० तपाना का प्रे०] १ तपने या तपाने का काम दूसरे से कराना। २ किसी को बहुत अधिक और व्यर्थ व्यय करने मे प्रवृत्त करना।

तपवृद्ध—वि०=तपोवृद्ध।

तपशील—वि० [स० तप शील] तपस्या करनेवाला।

तपश्चरण—पु० [स० तपस्-चरण, ष०त०] तप। तपस्या।

तपश्चर्या—स्त्री० [स० तपस्-चर्या, ष०त०] तपस्या। तप।

तपस—पु० [स०√तप्+असच्] १ चद्रमा। २ सूर्य। ३ चिडिया। पक्षी।

†पु०=तपस्वी।

†स्त्री०=तपस्या।

तपसा—स्त्री० [स० तपस्या] १ तपस्या। तप। २ ताप्ती नदी का दूसरा नाम।

तपसाली—पु० [स० तप शालिन्] तपस्वी।

तपसी—पु० [तपस्वी] तपस्वी।

स्त्री० [स० तपस्या मत्स्य] बगाल की खाडी मे होनेवाली एक प्रकार की छोटी मछली।

तपसोमूर्ति—पु० [स० अलुक् स०] बारहवे मन्वतर के चोथे सावर्णि के सप्तर्षियो मे से एक। (हरिवश)

तपस्तक्ष—पु० [स० तपस्√तक्ष् (क्षीणकरना)+अण्] इद्र।

तपस्पति—पु० [स० ष०त०] विष्णु।

तपस्य—पु० [स० तपस्+यत्] १ तप। तपस्या। २ तापस मनु के दस पुत्रो मे से एक। ३ फाल्गुन का महीना। ४ कुद का फूल।

तपस्या—स्त्री० [स० तपस्+क्यङ+अ—टाप्] १ मन की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति के उद्देश्य से किये जानेवाले वे कठोर और कष्ट-दायक आचरण तथा नियम पालन जो एकात मे रहकर किए जाते है। तप। २ ब्रह्मचर्य। ३ अपराध, पाप आदि के प्रायश्चित स्वरूप किया जानेवाला ऐसा आचरण जिससे शरीर को कष्ट हो। ४ इतजीर या प्रतीक्षा।

स्त्री०=तपसी (मछली)।

तपस्वत्—पु० [स० तपस्+मतुप्, वत्व] तपस्वी।

तपस्विता—स्त्री० [स० तपस्विन्+तल्—टाप्] तपस्वी होने की अवस्था, गुण या भाव।

तपस्विनी—स्त्री० [स० तपस्विन्+ङीप] १ तपस्या करनेवाली स्त्री। २ तपस्वी की पत्नी। ३ पतिव्रता और सती स्त्री। ४ वह स्त्री जो पति के मरने पर केवल सन्तान के पालन-पोषण के विचार से सती न हो और ब्रह्मचर्यपूर्वक शेष जीवन बितावे। ५ गोरखमुडी। ६ कुटकी नाम की वनस्पति। ७ जटामासी।

तपस्वि-पत्र—पु० [स० ब०स०] दौने का पौधा। दमनक।

तपस्वी (स्विन्)—पु० [स० तपस्+विनि] [स्त्री० तपस्विनी] १ वह जो बराबर तपस्या करता रहता हो। तपी। २ तपसी (मछली)। ३ तपसोमूर्ति का एक नाम। ४ घीकुआँर।

वि० दीन-हीन और दया का पात्र।

तपा*—पु० [हि० तप] तपस्वी।

तपाक—पु० [फा०] १ आवेश। जोश। २ व्यावहारिक क्षेत्र मे किसी के प्रति दिखाया जानेवाला उत्साह और प्रेम। जैसे—वे बहुत तपाक से मुझसे मिले थे।

मुहा०—तपाक बदलना=आवेश मे आकर क्रोधपूर्ण व्यवहार करना। नाराज होना। बिगडना।

३ तेजी। वेग।

तपात्यय—पु० [स० तप-अत्यय, ब०स०] (ग्रीष्म ऋतु के अन्त मे आनेवाला) वर्षाकाल। बरसात।

तपानल—पु०[स० तप-अनल, मध्य०स०]१ तप की अग्नि अर्थात् तपस्या करने के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाला कष्ट। २ उक्त प्रकार से प्राप्त होनेवाला तेज।

तपाना—स०[हि० तपना] १ ताप से युक्त करके खूब गरम करना। जैसे—आग मे रखकर लोहा तपाना।

विशेष—कुछ विशिष्ट धातुओ को तपाकर उनकी शुद्धता भी परखी जाती है। जैसे—सोना या चाँदी तपाना।

२ आग पर रखकर पकाना या पिघलाना। जैसे—घी तपाना। ३ तप करके अपने शरीर को अनेक प्रकार के कष्ट देना। ४ किसी को दुःखी या सतप्त करना।

तपारी—पु०=तपस्वी। उदा०—दीर्घ तपारी देषि श्राप दीनो कुपि ताम।—चदवरदाई।

तपावत—पु०[हि० ताप+वत (प्रत्य०)]तपस्वी।

तपाव—पु०[हि० तपना+आव(प्रत्य०)]१ तपने या तपे हुए होने की अवस्था या भाव। २ तपाने की क्रिया या भाव। ३ ताप। गरमी।

तपित*—भू० कृ० [स० तप्त] १ ताप से युक्त किया हुआ। तपाया हुआ। २ तपा हुआ।

तपिया—पु०[देश०]एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ औषध के काम मे आती है।

†पु०=तपस्वी।

तपिश—स्त्री०[स० तप से फा०]१ किसी चीज के तपने के फलस्वरूप फैलनेवाला ताप। जैसे—जमीन की तपिश। २ बहुत बढा हुआ ताप। ३ ग्रीष्म ऋतु मे होनेवाली तपन।

तपी—पु०[हि० तप+ई (प्रत्य०)]१ तपस्वी। २ सूर्य।

तपु(पुस्)—वि० [स०√तप्(दाह)+उस्]१ तपा हुआ। उष्ण। गरम। २ तपाने या गरम करनेवाला।

पु०१ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ दुश्मन। शत्रु।

तपुरग्र—वि०[स० तपुस्-अग्र, ब०स०] [स्त्री० तपुरग्रा] जिसका अगला भाग तपा या तपाया हुआ हो।

तपुरग्रा—स्त्री०[स० तपुरग्र+टाप्] बरछी या भाला।

तपेदिक—पु०[फा० तप+अ० दिक] एक प्रसिद्ध सक्रामक रोग जिसमे रोगी को खाँसी और बुखार दीर्घकाल तक बना रहता है और जिसके फल-स्वरूप उसके फेफडे सड जाते हैं। क्षय। यक्ष्मा।

तपेला—पु०[हि० तपाना][स्त्री० अल्पा० तपेली]१ पानी गरम करने का एक प्रकार का बडा पात्र। उदा०—तन मन कीन्हे बिरगाहि के तपेला है —रत्नाकर। २ बडी भट्ठी। भट्ठा।

तपेस्या*—स्त्री०=तपस्या।

तपोज—वि०[स० तपस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड]१ जो तप के फलस्वरूप या प्रभाव से उत्पन्न हुआ हो। २ अग्नि से उत्पन्न।

तपोजा—स्त्री०[स० तपोज+टाप्]जल। पानी।

तपोडी—स्त्री०[देश०] काठ का एक प्रकार का बरतन। (लश०)

†स्त्री०[प० थपोडी] करतल-ध्वनि। ताली।

तपोदान—पु०[स० तपस्-दान, ब०स०] महाभारत मे वर्णित एक तीर्थ-स्थल।

तपोद्युति—पु०[स० तपस्-द्युति, ब०स०] बारहवे मन्वतर के एक ऋषि।

तपोधन—पु०[स० तपस्-धन, ब०स०]१ वह जिसका सारा धन या सर्वस्व तप या तपस्या ही हो, अर्थात बहुत बडा तपस्वी। २ दौने का पौधा।

तपोधना—स्त्री०[स० तपोधन+टाप्] गोरखमुडी।

तपोधर्म—पु०[स० तपस्-धर्म, ब०स०] तपस्वी।

तपोधाम (न्)—पु०[स० तपस्-धामन्, ष०त०]१ तप या तपस्या करने के लिए उपयुक्त स्थान। २ एक प्राचीन तीर्थ।

तपोधृति—पु० [स० तपस्-धृति, ब०स०] बारहवे मन्वन्तर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि।

तपोनिधि—पु०[स० तपस्-निधि, ब०स०] १ तप की निधि अर्थात् बहुत बडा तपस्वी। २ वह जो उक्त निधि का स्वामी हो, अर्थात् बहुत बड़ा तपस्वी।

तपोनिष्ठ—वि०[स० तपस्-निष्ठा, ब० स०] सदा तप या तपस्या पर निष्ठा रखकर उसमे लगा रहनेवाला।

पु० तपस्वी।

तपोबन*—पु०=तपोवन।

तपोबल—पु०[स० तपस्-बल, मध्य०स०]तप या तपस्या करने के फल-स्वरूप प्राप्त होनेवाला तेज या शक्ति।

तपोभग—पु०[स० तपस्-भग, ष०त०] बाधा, विघ्न, आदि के फलस्वरूप तप या तपस्या का बीच मे ही भग होना।

तपोभूमि—स्त्री०[स० तपस्-भूमि, ष०त०]१ ऐसी भूमि या स्थान जहाँ तपस्या होती हो, अथवा जो तपस्या के लिए सब प्रकार से उपयुक्त हो। २ वह भूमि या देश जिसमे बहुत से तपस्वियो ने तपस्या की हो।

तपोमय—पु०[स० तपस्+मयट्]=ईश्वर।

तपोमूर्ति—पु०[स० तपस्-मूर्ति, ष०त०]१ वह जो मूर्तिमान् तप या तपस्वी हो अर्थात् बहुत बडा तपस्वी। २ परमात्मा। परमेश्वर। ३ बारहवे मन्वतर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियो मे से एक। (पुराण)

तपोमूल—पु०[स० तपस्-मूल, ब०स०] तापस मनु के पुत्र का नाम।

तपोरति—पु०[स० तपस्-रति, ब०स०]१ तपस्वी। २ तापस मनु के एक पुत्र का नाम।

तपोरवि—पु०[स० तपस्-रवि, तृ० त०] बारहवे मन्वतर के चौथे सावर्णि के समय के सप्तर्षियो मे से एक। (पुराण)

तपोराज—पु०[स० तपस्-राजन्, ष०त०] चद्रमा।

तपोराशि—पु०[स० तपस्-राशि, ष०त०] बहुत बडा तपस्वी।

तपोलोक—पु० [स० तपस्-लोक, मध्य० स०] पुराणानुसार ऊपर के सात लोको मे से छठा लोक जो जन-लोक के बाद और सत्य-लोक के पहले पडता है।

तपोवट—पु०[स० तपस्-वट, ष० त०] प्राचीन भारत के मध्य मे स्थित एक देश। ब्रह्मावर्त्त देश।

तपोवन—पु०[स० तपस्-वन ष० त०]वह वन या आश्रम जिसमे बहुत से तपस्वी तपस्या करते हो।

तपोवरणा†—वि०[स० तपोवारणी] तप से च्युत करनेवाली। उदा०—रे असुन्दर, सुघर घर तू, एक तेरी तपोवरणा !—निराला।

तपोवृद्ध—वि०[स० तपस्,वृद्ध तृ०त०] तपस्या मे बढ़ा-चढ़ा।

पु० बढा-चढा तपस्वी।

तपोव्रत—पु०[स० तपस्-व्रत, ष०त०] १ तपस्या-सबधी व्रत। २ [ब०स०] वह जिसने उक्त व्रत धारण किया हो।

तपोऽशन—पु०[स० तपस्, अशन ब०स०] तापस मनु के पुत्र तपस्य।

तपौनी—स्त्री०[हिं० तपाना]१ तपाकर ठीक करने या उपयुक्त बनाने की क्रिया या भाव। २ मध्ययुग मे ठगो की एक रसम जिसमे लूट-मार, हत्या आदि कर चुकने के बाद देवी की पूजा करके सब ठगो को प्रसाद रूप मे गुड बाँटा जाता था।

मुहा०—(किसी को) तपौनी का गुड खिलाना=किसी नये आदमी को दीक्षित करके अथवा और कोई रसम करके अपनी मडली या वर्ग मे मिलाना। (परिहास)

३ दे० 'तपनी'।

तप्त—वि०[स०√तप् (दाह)+क्त] १ (पदार्थ) जो तपा या तपाया हुआ हो। गरम। २ (व्यक्ति) जिसने खूब तपस्या की हो। ३ जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा हो। परम दुखी। ४ आवेश आदि के कारण विकल।

तप्तक—पु०[स० तप्त+कन्] कडाही।

तप्तकुड—पु०[कर्म०स०] वह जलाशय जिसका जल प्राकृतिक रूप से ही गरम रहता हो।

तप्तकुभ—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक जिसमे जीवो को तपे हुए तेल के कडाहो मे फेका जाता है।

तप्त-कच्छ्—पु०[ब०स०] एक व्रत जिसमे बराबर तीन दिन तक गरम पानी, गरम दूध या गरम घी पीया जाता है और गरम श्वास बराबर निकाला जाता है।

तप्त-पाषाण—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्त-बालुक—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्तमाष—पु०[ब० स०] प्राचीन काल की एक परीक्षा जिसमे तपे हुए तेल मे अभियुक्त के हाथ की उँगलियाँ डलवाकर यह देखा जाता था कि वह अपराधी या दोषी है या नही। यदि उसकी उँगलियाँ जल जाती थी तो वह अपराधी समझा जाता था ओर यदि उँगलियाँ नही जलती थी तो वह निर्दोष माना जाता था।

तप्त-मुद्रा—पु०[कर्म०स०] वह चिह्न जो वैष्णव-सप्रदाय के लोग धातुओ के गरम ठप्पे से शरीर पर दगवाते है।

तप्त-रूपक—पु०[कर्म०स०] तपाई हुई (और फलत साफ) चाँदी।

तप्त-शूर्मी—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक जिसमे जीवो को लोहे के गरम खभो का आलिगन करना पडता है।

तप्त-सुरा-कुड—पु०[स० तप्त-सुरा, कर्म० स०, तप्त-सुरा-कुड, ब० स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्ता (प्तृ)—वि०[स०√तप् (दाह)+तृच्] तप्त करनेवाला।

तप्ताभरण—पु०[स० तप्त-आभरण, ष०त०] तपाये हुए (फलत शुद्ध) सोने का बना हुआ गहना।

तप्तायन—पु० =तप्तायनी।

तप्तायनी—स्त्री०[स० तप्त-अयनी, ष०त०] पृथ्वी, जो दुखी प्राणियो का निवास-स्थान मानी गयी है।

तप्ति—स्त्री०[स०√तप्+क्तिन्] तप्त होने की अवस्था, गुण या भाव। ताप। गरमी।

तप्प†—पु०=तप।

तप्य—वि० [स०√तप्+यत्] १ तपाने योग्य। २ जो तपा करके शुद्ध किया जा सके। ३ तप करनेवाला।

पु० शिव।

तफज्जुल—पु०[अ०] श्रेष्ठता। बडप्पन।

तफतीश—स्त्री०[अ०] छान-बीन, जाँच-पडताल या पूछ-ताछकर किसी भेद या रहस्यपूर्ण बात अथवा उसके मूल कारण का पता लगाना।

तफरका—पु० [अ० तफर्क] आपस मे होनेवाला वैर-विरोध-मूलक अन्तर। मन-मुटाव।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

तफरीक—स्त्री०[अ०]१ फरक होने की अवस्था या भाव। अन्तर। २ भिन्नता। ३ अलग होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। ४ बँटवारा। विभाजन। ५ गणित मे घटाने या बाकी निकालने की क्रिया।

क्रि० प्र०—निकालना।

तफरीह—स्त्री० [अ०] १ मन-बहलाव। मनोविनोद। २ मन बहलाने के लिए इधर-उधर घूमना फिरना। सैर। ३ मन मे होनेवाली प्रफुल्लता। ४ आपस मे होनेवाला हास परिहास। हँसी-दिल्लगी।

तफरीहन—अव्य० [अ०] १ मन बहलाने के निमित्त। २ हँसी-दिल्लगी के लिए।

तफसीर—स्त्री० [अ०] १ किसी क्लिष्ट, गहन या दुरूह पद या वाक्य का सरल शब्दो मे किया हुआ विवेचन या स्पष्टीकरण। टीका। २ कुरान की आयतो की व्याख्या।

तफसील—स्त्री० [अ०] १ विस्तृत वर्णन। २ कैफियत। विवरण। ३ कठिन पदो, वाक्यो आदि की टीका या स्पष्टीकरण। ४ ब्योरेवार बनाई हुई तालिका। सूची।

तफावत—पु० [अ०] १ अन्तर। फरक। २ दूरी। फासला। ३ वैर-विरोध आदि के कारण आपस मे होनेवाला अन्तर। मन-मुटाव।

तब—अव्य० [स० तदा] १ किसी उल्लिखित या विशिष्ट परिस्थिति या समय मे। जैसे—(क) तब हम वहाँ रहते थे। (ख) इतना हो जाय, तब तुम्हारा काम करूँगा। २ इसके पश्चात् या तुरत बाद। जैसे—वहाँ तब निस्तब्धता छा गई। ३ इस कारण या वजह से। जैसे—मुझे जरूरत थी, तब तो मैने माँगा था।

तबक—पु० [अ०] १ परत। तह। २ चाँदी, सोने आदि धातुओ को खूब कूटकर बनाया हुआ बहुत पतला पत्तर जो औषधो आदि मे मिलाया और शोभा के लिए मिठाइयो आदि पर लगाया जाता है। वरक। ३ एक प्रकार की चौडी और छिछली थाली। ४ वह उपचार जो मुसलमान स्त्रियाँ भूत-प्रेत और परियो की बाधा से बचने के लिए करती है।

क्रि० प्र०—छोडना।

४ इसलामी, पौराणिक कथाओ के अनुसार पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तल या लोक। ५ रक्त-विकार आदि के कारण शरीर पर पडनेवाला चकत्ता। ६ घोडो का एक रोग जिसमे उनके शरीर के किसी भाग मे सूजन हो जाती और चकत्ता पड जाता है।

तबकगर—पु० [अ० तबक+फा० गर] वह व्यक्ति जो सोने-चाँदी आदि के वरक बनाता हो। तबकिया।

तबकड़ी—स्त्री० [अ० तबक+डी (प्रत्य०)] छोटी रिकाबी।

तबक-फाड़—पु० [अ० तबक+हि० फाड] कुश्ती का एक पेंच।

तबका—पु० [अ० तबक] १ पृथ्वी या भूमि का कोई बडा खड या विभाग। भू-खड। २ पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तल या लोक। ३ परत। तह। ४ मनुष्यो का वर्ग या समूह।

तबकिया—वि० [हि० तबक] तबक-सबधी। जिसमे तबक या परते हो। जैसे—तबकिया हरताल।

पु०=तबकगर। (देखे)

तबकिया हरताल—पु० [हि० तबकिया+स० हरताल] एक प्रकार की हरताल जिसके टुकडो मे तबक या परते होती है।

तबदील—वि० [अ०] [भाव० तबदीली] १ (पदार्थ) जिसे परिवर्तित कर या बदल दिया गया हो। २ (व्यक्ति) जो एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर भेजा गया हो।

तबदीली—स्त्री० [अ०] १ तबदील होने की अवस्था या भाव। परिवर्त्तन। २ एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर जाना। तबादला।

तबद्दुल—पु०=तबदीली।

तबर—पु० [फा०] १ कुल्हाडी। टाँगी। २ कुल्हाडी के आकार का लडाई का एक हथियार। परशु।

पु० [देश०] मस्तूल के ऊपरी भाग मे लगाया जानेवाला पाल। (लश०)

तबरदार—वि० [फा०] (व्यक्ति) जिसके पास तबर (कुल्हाडी) हो या जो तबर चलाना जानता हो।

तबरदारी—स्त्री० [फा०] तबर या कुल्हाडी चलाने की क्रिया या भाव।

तबर्रा—पु० [अ०] १ घृणा। नफरत। २ वे घृणासूचक दुर्वचन जो शीया लोग मुहम्मद साहब के कुछ मित्रो के सबध मे (सुन्नियो की 'यदहे सहाबा' के उत्तर मे) कहते है। ३ उक्त दुर्वचनो के पद या गीत।

तबल—पु० [फा०] १ बडा ढोल। २ डका। नगाडा। उदा०—तबल बाज त्तिण ही समै, निथ से सुभट अपार।—जटमल।

तबलची—पु० [अ० तबलः+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तबला बजाने का काम करता हो। तबलिया।

तबला—पु० [अ० तबल] १ ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा जिस पर चमडा मढा होता है, और जो साधारणत 'डुग्गी' या 'बायाँ' नामक दूसरे बाजे के साथ बजाया जाता है।

विशेष—तबला और बायाँ दोनो पास-पास रखे जाते है, और तबला दाहिने हाथ से और बायाँ बाएँ हाथ से बजाया जाता है।

मुहा०—तबला खनकना या ठनकना=ऐसा नाच-गाना होना जिसके साथ तबला भी बजता हो। **तबला मिलाना**=तबले का बधन या बद्धी आवश्यकतानुसार कसकर या ढीली करके ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिसमे तबले के ठीक स्वर निकले।

तबलिया—पु० [अ० तबल+इया (प्रत्य०)] दे० 'तबलची'।

तबलीग—पु० [अ०] १ किसी के पास कुछ पहुँचाना। २ अपने धर्म का प्रचार करना। ३ दूसरो को दीक्षित करके अपने धर्म का अनुयायी बनाना।

तबस्सुम—पु० [अ०] मधुर तथा हलकी हँसी। मुस्कराहट।

तबाख—पु० [अ० तबाक] बडी काली परात।

तबाखी—पु० [हि० तबाख] थाल या परात मे रखकर सौदा बेचनेवाला।

तबाखी कुत्ता—पु० [हि०] ऐसा साथी जो अपना स्वार्थ सिद्ध होने के समय तक साथ दे और दुर्दिन मे साथ छोड दे।

तबादला—पु० [अ० तबादल] १ लेन-देन के क्षेत्र मे होनेवाला चीजो का विनिमय। २ रूप आदि मे होनेवाला परिवर्त्तन। ३ व्यक्ति को एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर भेजा जाना। अतरण। बदली।

तबाबत—स्त्री० [अ०] तबीब अर्थात् चिकित्सक का काम या पेशा। चिकित्सा का व्यवसाय।

तबाशीर—पु० [स० तवक्षीर] बसलोचन।

तबाह—वि० [फा०] [भाव० तबाही] १ जो बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट या ध्वस्त हो गया हो। जैसे—भूकप ने नगरी को तबाह कर डाला। २ (व्यक्ति) जिसकी बहुत बडी हानि हुई-हो अथवा जिसका सर्वस्व लुट गया हो।

तबाही—स्त्री० [फा०] १ तबाह करने या होने की अवस्था या भाव। २ बरबादी। विनाश।

मुहा०—तबाही खाना=जहाज का टूट-फूट कर रद्दी होना। (लश०)

तबिअत—स्त्री० =तबीअत।

तबीअत—स्त्री० [अ०] १ स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी की शारीरिक या मानसिक स्थिति। मिजाज।

मुहा०—तबीअत खराब होना=शरीर अस्वस्थ या रोगी होना। बीमार होना। जैसे—इधर महीनो से उनकी तबीअत खराब है। **तबीअत बिगडना**=(क) कै या मिचली मालूम होना। (ख) अस्वस्थता या रोग का आक्रमण होता हुआ जान पडना।

२ आचरण या व्यवहार की दृष्टि से किसी की प्रवृत्ति या मनोवृत्ति। मन की रुझान। ३ जी। मन। हृदय।

मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना=मन मे किसी के प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न होना। **(किसी चीज पर) तबीअत आना**=मन मे कोई चीज पाने या लेने की इच्छा होना। **तबीअत फडक उठना या जाना**=कोई अच्छी चीज या बात देखकर चित्त या मन बहुत अधिक प्रसन्न होना। **तबीयत पाना**—अच्छे स्वभाववाला होना। जैसे—उन्होने अच्छी तबीअत पाई है। **(किसी काम या बात से) तबीअत भर जाना**=मन मे अनुराग, कामना आदि न रह जाना और विरक्ति-सी उत्पन्न होना। **(अपनी) तबीअत भरना**=अपनी तसल्ली या समाधान करना। जैसे—पहले मकान देखकर अपनी तबीअत भर लो, तब उसे लेने का विचार करना। **(किसी की) तबीअत भरना**=किसी का पूरा सतोष या समाधान करना। **(किसी काम मे) तबीअत लगना**=कोई काम करने मे चित्त, ध्यान या मन लगना। जैसे—लिखने-पढने मे तो उसकी तबीअत ही नही लगती। **(किसी से) तबीअत लगाना**=अनुराग या प्रेम करना।

४ बुद्धि। समझ।

मुहा०—तबीअत पर जोर डालना या देना=अच्छी तरह मन लगाते

हुए समझदारी से काम लेना। जैसे—जरा तबीअत पर जोर डालोगे तो कोई न कोई रास्ता निकल ही आवेगा। **तबीअत लड़ाना**=तबीअत पर जोर डालना।

तबीअतदार—वि० [अ० तबीअत+फा० दार] [भाव० तबीअतदारी] १ अच्छी तबीअत या बुद्धिवाला। २ सहज मे औरो से मेल-मिलाप करने और रसपूर्ण कामो या बातो मे सम्मिलित होनेवाला। भावुक। रसिक।

तबीअतदारी—स्त्री० [अ० तबीअत+फा० दारी] १ तबीअतदार होने की अवस्था या भाव। २ समझदारी। ३ भावुकता। रसिकता।

तबीब—पु० [अ०] १ यूनानी चिकित्सा पद्धति के अनुसार जडी-बूटियो आदि के द्वारा इलाज करनेवाला चिकित्सक। हकीम। २ चिकित्सक। वैद्य।

तबीयत—स्त्री०=तबीअत।

तबेला—पु० [अ० तवेल] वह घिरा हुआ स्थान जहाँ पशु बाँधे जाते हो। अस्तबल।

मुहा०—तबेले मे लत्ती चलना=कोई विशिष्ट काम करनेवाले व्यक्तियो मे आपस मे लडाई-झगडा होना।

†पुं० [हि० ताँबा] ताँबे का बना हुआ एक प्रकार का बडा पात्र।

तबोरी—स्त्री० [स० ताबोल या हि० तबूल] लगाया हुआ पान। उदा०—अधर अधर सो भीज तबोरी।—जायसी।

तब्बर*—पु० १=तबर। २=टावर।

तभी—अव्य० [हि० तब+ही] १ उसी वक्त। उसी समय। २ किसी उल्लिखित या विशिष्ट अवस्था या स्थिति मे ही। जैसे—तभी तो आप भी आये है। ३ उसी कारण या वजह से।

तमग—पु० [स०] १ रग-मच। २ मच।

तमंगक—पु० [स०] छत या छाजन का बाहर निकला हुआ भाग। छज्जा।

तमंचा—पु० [फा० तबान्च] १ पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी बन्दूक। (आज-कल की पिस्तौल इसी का विकसित रूप है) २ वे लबे पत्थर जो दरवाजे के दोनो ओर मजबती के लिए खडे बल मे लगाये जाते है।

तमःप्रभ—पु० [स० तमस्-प्रभा, ब० स०] एक नरक।

तमःप्रभा—स्त्री०=तम प्रभ।

तम प्रवेश—पु० [स० तमस्-प्रवेश, स० त०] १ अधकारपूर्ण स्थिति मे प्रवेश करना या होना। २ ऐसी मानसिक स्थिति जिसमे बुद्धि कुछ काम न करती हो।

तम—पु० [स०√तम् (विकल होना)+क] १ अधकार। अँधेरा। २ कालिख। कालिमा। ३ पाप। ४ नरक। ५ अज्ञान। अविद्या। ६ माया। मोह। ७ राहु का एक नाम। ८ क्रोध। गुस्सा। ९ पैर का अगला भाग। १० तमाल वृक्ष। ११ वराह। सूअर। १२ प्रकृति के तीन गुणो मे से अतिम गुण (शेष दो गुण सत्त्व और रज है)।

विशेष—इसी गुण की प्रबलता से काम, क्रोध, हिंसा आदि की प्रवृत्ति मानी गई है।

वि० १ काला। २ दूषित। ३ बुरा।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो सस्कृत विशेषणो के अत मे लगकर सबसे बढकर का अर्थ देता है। जैसे—अधिकतम, श्रेष्ठतम।

तमअ—स्त्री० [अ०] १ लालच। लोभ। २ इच्छा। चाह।

तमक—स्त्री० [हि० तमकना] १ तमकने की क्रिया या भाव। २ आवेश। जोश। ३ तीव्रता। तेजी। ४ क्रोध। गुस्सा।

पु० दे० 'तमक श्वास' (रोग)।

तमकनत—स्त्री० [अ०] १ अधिकार। जोर। वश। २ गौरव। प्रतिष्ठा। ३ गौरव या प्रतिष्ठा का अनुचित प्रदर्शन। ४ आडबर। टीम-टाम। ५ अभिमान। घमड।

तमकना—अ० [अनु०] १ आवेश या क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना। उदा०—सो सुनि तमक उठी कैकेई।—तुलसी। २ क्रोध के कारण चेहरा लाल होना। तमतमाना।

तमक-श्वास—पु० [स०√तम्+वुन्—अक, तमक-श्वास, कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार श्वास रोग का एक भेद जिसमे दम फूलने के साथ-साथ बहुत प्यास लगती है, पसीना आता है और मतली तथा घबराहट होती है।

तमकाना—स० [हि० तमकना का स०] १ किसी को तमकने मे प्रवृत्त करना। २ क्रोध के आवेश मे कुछ (हाथ आदि) उठाना। उदा०—दोउ भुजदड उद्दड तोलि ताने तमकाए।—रत्नाकर।

तमगा—पु० [तु० तमग] पदक। (मेडल)

तमगुन—पु०=तमोगुण।

तमगेही—वि० [स० तम+हि० गेही] अधकार रूपी घर मे रहनेवाला। पु० पतगा। उदा०—दीपक कहाँ कहाँ तमगेही।—नूरमुहम्मद।

तमचर—पु० [स० तमीचर] १ राक्षस। निशाचर। २ उल्लू। ३ पक्षी।

वि० तम या अँधेरे मे विचरण करनेवाला।

तमचुर*—पु० [स० ताम्रचूड] मुरगा।

तमचोर†—पु०=तमचुर।

तमच्छन्न—वि०=तमाच्छन्न।

तमजित्—वि० [स० तम√जि (जीतना)+क्विप्] अधकार को जीतनेवाला। उदा०—तेजस्वी हे तमजिज्जीवन।—निराला।

तमतमाना—अ० [स० ताम्र हिं०, ताँबा] [भाव० तमतमाहट] १ अधिक ताप के कारण किसी चीज का लाल होना। २ आवेश या क्रोध मे चेहरा लाल होना। ३ चमकना।

तमतमाहट—स्त्री० [हिं० तमतमाना] तमतमाने की अवस्था या भाव।

तमता—स्त्री० [स० तम+तल्—टाप्] १ तम का भाव। २ अधकार। अधेरा। ३ कालापन।

तमद्दुन—पु० [अ०] १ नगर मे रहना। नगर-निवास। २ नागरिकता। ३ सभ्यता। सस्कृति।

तमन—पु० [स०√तम्+ल्युट्—अन] ऐसी स्थिति जिसमे सास लेना कठिन हो जाता हो। दम घुटने की अवस्था।

तमना—अ०=तमकना।

तमन्ना—स्त्री० [अ०] आकाक्षा। कामना।

तम-प्रभ—पु० [स० ब० स०] पुराणानुसार एक नरक।

तमयी—स्त्री० [सं० तममयी] रात।

तमरंग†—पुं० [देश०] एक प्रकार का नीबू।

तमर—पुं० [सं० तम√रा (दान)+क] बंग।
पुं० [सं० तम] अन्धकार। अँधेरा।

तमराज—पुं० [सं० तम√राज् (चमकना) +अच्] एक तरह की खाँड।

तमलूक—पुं०=तामलूक।

तमलेट—पुं० [अं० टम्बलर] १ लुक फेरा हुआ टीन या लोहे का बरतन। २ फौजी सिपाहियों का लोटा।

तमस्—पुं० [सं०√तम् (विकल होना)+असच्] १ अधकार। अँधेरा। २ अज्ञान। अविद्या। ३ प्रकृति का 'तम' नामक तीसरा गुण। ४ नगर। शहर। ५ कूआँ। ६ तमसा नदी।

तमसा—स्त्री० [सं० तमस्+अच्—टाप्] इस नाम की तीन नदियाँ, एक जो बलिया के पास गगा मे मिलती है, दूसरी जो अमरकटक से निकल कर इलाहाबाद मे सिरसा के पास गगा मे मिलती है और तीसरी जो हिमालय के पहाडी प्रदेश मे बहती है। टौस।

तमस्क—पुं० [सं० तमस्+कन्] अधकार।

तमस्काड—पुं० [ष० त०] घोर अधकार।

तमस्तति—स्त्री० [ष० त०] घोर अधकार।

तमस्तूर्य—पुं० [ष० त०] तम का तूर्य। अँधेरे की तुरही। उदा०—अस्तमित आजरे तमस्तूर्य दिङ् मडल।—निराला।

तमस्वती—स्त्री० [सं० तमस्+मतुप्+ङीप्] अँधेरी रात।

तमस्विनी—स्त्री० [सं० तमस्विन्+ङीप्] १ अँधेरी रात। २ रात्रि। ३ हल्दी।

तमस्वी (स्विन्)—वि० [सं० तमस्+विनि] अधकारपूर्ण।

तमस्सुक—पुं० [अ०] १ वह लेख्य जो ऋण लेनेवाला महाजन को लिखकर देता है। २ किसी प्रकार का विधिक लेख्य। दस्तावेज।

तमहँडी—स्त्री० [हिं० ताँबा+हाँडी] ताबे की बनी हुई एक तरह की छोटी हाँडी।

तमहर—पुं० [सं० तमोहर] तम अर्थात् अधकार हरने या दूर करनेवाला।

तमहाया—वि० [सं० तम+हिं० हाया (प्रत्य०)] १ अधकारपूर्ण। २ तमोगुण से युक्त।

तमहीद—स्त्री० [अ०] १ प्राक्कथन। प्रस्तावना।
क्रि० प्र०—बाँधना।
२ ग्रथ आदि की भूमिका।

तमाँचा—पुं०=तमाचा।

तमा—स्त्री० [सं०तम+अच्—टाप्] रात। रात्रि। रजनी।
पुं० [सं० तामा तमस्] राहु।
स्त्री० [अ० तमअ] लालच। लोभ।

तमाई—स्त्री० [सं० तम+हिं० आई (प्रत्य०)] तम। अधकार। अँधेरा। उदा०—कहै रत्नाकर औ कचन बनाई काम ज्ञान अभिमान की तमाई बिनसाई कै।—रत्नाकर।
स्त्री० [देश०] खेत जोतने के पूर्व उसकी घास आदि साफ करना।

तमाकू—पुं० [पुर्त्त० टबैको, सं० ताम्रकूट] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपो मे नशे के लिए काम मे लाये जाते है। २ उक्त पौधे का पत्ता। ३ उक्त पत्तो से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिडी जिसे चिलम पर रख और सुलगाकर उसका धूआँ पीते है। ४ दे० 'सुरती'।

तमाचा—पुं० [फा० तवनच या तबान्च] हथेली विशेषत उसकी पाँचो सटी हुई उगलियो से किसी के गाल पर किया जानेवाला जोर का आघात। थप्पड।
क्रि० प्र०—जडना।—देना।—मारना।—लगाना।

तमाचारी (रिन्)—वि० [तमा√चर् (चलना)+णिनि] अधकार मे विचरण करनेवाला।
पुं० राक्षस।

तमादी—वि० [अ०] जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो। अवधि-बाधित। (बार्ड बाइ लिमिटेशन)
स्त्री० १ किसी काम या बात की मीयाद अर्थात् अवधि का बीत जाना। २ विधिक क्षेत्रो मे वह अवधि बीत जाना या मीयाद गुजर जाना जिसके अन्दर दीवानी न्यायालय मे कोई अभियोग उपस्थित किया जाना चाहिए।

तमान—पुं० [?] तग मोहरीवाला एक प्रकार का पाजामा।

तमाम—वि० [अ०] १ कुल। सब। समस्त। २ पूरा। सारा। ३ खतम। समाप्त।
मुहा०—(किसी का) काम तमाम करना=किसी को जान से मार डालना।

तमामी—स्त्री० [फा०] एक तरह का देशी रेशमी कपडा जिस पर कला-बत्तू की धारियाँ बनी होती है।

तमारि—पुं० [तम-अरि, ष० त०] सूर्य।
†स्त्री० दे० 'तँवारि'।

तमाल—पुं० [सं०√तम्+कालन्] १ एक प्रकार का बडा सदाबहार पेड, जिसके दो भेद है—साधारण तमाल और श्याम तमाल। २ एक प्रकार का बडा वृक्ष जिससे गोद निकलता है। इस गोद से कही-कही सिरका भी बनता है। उनवेल। मन्होला। ३ काले खैर का पेड। ४ वरुण नामक वृक्ष। ५ तिलक का पेड। ६ तेजपत्ता। ७ बाँस की छाल। ८ पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

तमालक—पुं० [सं० तमाल+कन्] १ तेजपत्ता। २ तमाल।

तमालिका—स्त्री० [सं० तमाली+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ भुँईआवला। २ ताम्रवल्ली लता। ३ काले खैर का पेड। ४ ताम्रलिप्त देश।

तमाली—स्त्री० [सं० तमाल+ङीष्] १ वरुण वृक्ष। २ ताम्रावल्ली लता।

तमाशगीर—पुं० [अ० तमाश+फा० गीर] [भाव० तमाशगीरी] १ वह जो तमाशा देखना पसद करता हो। २ दे० 'तमाशबीन'।

तमाशबीन—पुं० [अ० तमाश+फा० बीन (देखनेवाला)] [भाव० तमाशबीनी] १ तमाशा देखनेवाला व्यक्ति। २. वेश्यागामी। रडीबाज।

तमाशबीनी—स्त्री० [हिं० तमाशबीन+ई (प्रत्य०)] १ तमाशा देखने की क्रिया या भाव। २ रडीबाजी।

तमाशा—पुं० [अ० तमाश] १ कोई ऐसा अनोखा, विलक्षण या मनोरजक काम या बात जिसे देखने मे लोगो का जी रमे। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २ इस प्रकार दिखाया जानेवाला खेल या प्रदर्शित

की जानेवाली घटना या दृश्य। ३ ऐसा कार्य जिसका सपादन सरलता या सुगमता से किया जा सके। जैसे—लेख लिखना कोई तमाशा नही है। ४ बहुत ही बढिया या हास्यास्पद बात या वस्तु। जैसे—सभा क्या है, तमाशा है। ५ पुरानी चाल की एक तरह की तलवार।

तमाशाई—पु० [अ०] १ वह जो तमाशा देख रहा हो। तमाशा देखने-वाला। २ तमाशा दिखलानेवाला व्यक्ति।

तमासा†—पु० = तमाशा।

तमाह्वय—पु० [स० तम-आह्वय, ब० स०] तालीश-पत्र।

तमि—पु० [स०√तम् (खेद)+इन्] १ रात। रात्रि। २ हल्दी।

तमिनाथ—पु० [ष० त०] चद्रमा।

तमिल—पु० [?] १ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध देश। २ उक्त देश मे बसनेवाली एक जाति जो द्रविड जातियो के अन्तर्गत है।

स्त्री० उक्त जाति (और देश) की बोली या भाषा।

तमिस्र—वि० [स० तमस्+र, नि० सिद्धि [स्त्री० तमिस्रा] अध-कारपूर्ण।

पु० १ अधकार। अँधेरा। २ क्रोध। गुस्सा। ३ पुराणानुसार एक नरक।

तमिस्र-पक्ष—पु० [मध्य० स०] चाद्र मास का अँधेरा पक्ष। कृष्ण-पक्ष।

तमिस्रा—स्त्री० [स० तमिस्र+टाप्] अँधेरी रात।

तमी—स्त्री० [स० तमि+ङीष्] १ रात। २ हल्दी।

पु० [स० तमीचर] राक्षस।

तमीचर—वि० [स० तमी√चर् (गति)+ट] १ जो अधकार मे चलता हो। २ रात के समय विचरण करनेवाला।

पु० राक्षस।

तमीज—स्त्री० [अ० तमीज़] १ भले-बुरे की पहचान। विवेक। २ किसी चीज या बात को परखने की बुद्धि या योग्यता। ३ कोई काम अच्छी तरह से करने की जानकारी या योग्यता। ४ आचार, व्यवहार आदि के पालन का उचित ज्ञान या बोध।

तमी-पति—पु० [ष० त०] चद्रमा।

तमीश—पु० [स० तमी-ईश, ष० त०] चद्रमा।

तमु†—पु०=तम।

तमूरा†—पु०=तबूरा।

तमूल†—पु०=ताबूल।

तमेड़ा†—पु०[स० ताम्र+भाड] [स्त्री० अल्पा० तमेडी] ताँबे का एक प्रकार का बड़ा गोलाकार बरतन।

तमेरा—पु० [हि० ताँबा+एरा (प्रत्य०)] वह जो ताँबे के बरतन आदि बनाने का काम करता हो।

तमोऽन्त्य—वि० [स०] ग्रहण के दस भेदो मे से एक जिसमे चद्रमडल की पिछली सीमा मे राहु की छाया बहुत अधिक और बीच के भाग मे थोडी-सी जान पडती है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे ग्रहण से फसल को हानि पहुँचती है और चोरी का भय होता है।

तमोऽन्ध—वि० [स० तमस्—अन्ध, तृ० त०] १ अज्ञानी। २ क्रोधी।

तमोगुण—पु० [स० तमस्-गुण, ष० त०] सृष्टि को अस्तित्व मे लाने वाले तीन गुणो या अवयवो मे से एक (अन्य दो गुण, सतोगुण और रजोगुण है) जो अधकार, अज्ञान, भ्रम, क्रोध, दु ख आदि का कारण होता है।

तमोगुणी (णिन्)—वि० [स० तमोगुण+इनि] जिसमे सतोगुण तथा रजोगुण की अपेक्षा तमोगुण की अधिकता हो। फलत अज्ञानी या अभिमानी।

तमोघ्न—वि० [स० तमस्√हन् (मारना)+टक्] तम अर्थात् अन्धकार नाश करनेवाला।

पु० १ सूर्य। २ चद्रमा। ३ दीपक। दीआ। ४ अग्नि। आग। ५ ज्ञान। ६ विष्णु। ७ शिव। ८ गौतम बुद्ध। ९ बौद्ध धर्म के आचार और नियम।

तमोज्योति(स्)—पु० [स० तमस्-ज्योतिस्, ब० स०] जुगनूँ।

तमोदर्शन—पु० [स० तमस्-दर्शन ब० स०] वैद्यक मे पित्त के प्रकोप से होनेवाला ज्वर।

तमोनुद—पु० [स० तमस्√नुद् (प्रेरणा)+क्विप्] १ ईश्वर। २ चन्द्रमा। ३ अग्नि। आग।

तमोऽपह—पु० [स० तमस्-अप√हन्+ड] १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ दीपक। दीया। ४ अग्नि। आग।

तमोभिद्—वि० [स० तमस्√भिद् (विदारण)+क्विप्] अधकार को भेदने अर्थात् उसका नाश करनेवाला।

पु० जुगनूँ (कीडा)।

तमोमणि—पु० [स० तमस्—मणि, स० त०] १ जुगनूँ। २ गोमेद नामक मणि।

तमोमय—वि० [स० तमस्+मयट्] १ अधकारपूर्ण। २ तमोगुणी। (दे०)

पु० राहु।

तमोर*—पु० [स० ताम्बूल] पान।

तमोरि—पु० [स० तमस्-अरि, ष० त०] सूर्य।

तमोरी†—पु० = तमोली।

तमोल—पु० [स० ताम्बूल] १ पान का बीडा। २ विवाह के समय, बरात चलने से पहले वर को लगाया जानेवाला टीका या दिया जानेवाला धन। (पश्चिम) ३ इस प्रकार वर को टीका लगाकर धन देने की रीति।

तमोलिन—स्त्री० [हि० तमोली का स्त्री० रूप] १ तमोली की स्त्री। २ पान बेचनेवाली स्त्री।

तमोलिप्ती—स्त्री० दे० 'ताम्रलिप्त'।

तमोली—पु० [स० ताबूलिक] १ एक जाति जो पान पकाने और बेचने का काम करती है। २ वह जो पान बेचता हो।

तमोविकार—पु० [स० तमस्-विकार, ष० त०] तमोगुण की अधिकता के कारण होनेवाले विकार। जैसे—अज्ञान, क्रोध आदि।

तमोहत—पु० [स०] 'ग्रहण' के दस भेदो मे से एक।

वि० १ तम या अन्धकार दूर करनेवाला। २ सासारिक मोह-माया का नाश करनेवाला।

तमोहर—वि० [स० तमस्√हृ (हरना)+अच्] १ तम या अधकार का नाश करनेवाला। २ अज्ञान, अविद्या, मोह, माया आदि का नाश करनेवाला।

पु० १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ अग्नि। आग। ४ ज्ञान।

तमोहरि—पु० [स० तमस्-हरि, ष० त०] = तमोहर

तय—वि० = तै।
तयना*—अ० = तपना।
स० = तपाना।
तयनात—वि० = तैनात।
तया†—पु० = तवा।
तयार—वि० [भाव० तयारी] = तैयार।
तय्यार—वि० [भाव० तय्यारी] = तैयार।
तरग—स्त्री० [स०√तृ(तैरना)+अगच्] १ पानी की लहर हिलोर। क्रि० प्र०—उठना।
२ किसी चीज या बात का ऐसा सामजस्यपूर्ण उतार-चढाव जो लहरो के समान जान पडे। जैसे—सगीत मे तान की तरग। ३ उक्त के आधार पर कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजो के नाम के साथ लगकर, उत्पन्न की जानेवाली स्वर-लहरी। जैसे—जल-तरग, तबला तरग। ४ सहसा मन मे उत्पन्न होनेवाली कोई उमग या भावना। जैसे--जब मन मे तरग आई, तब उठकर चल पडे। ५ हाथ मे पहनने की एक प्रकार की चूडी जिसके ऊपर की बनावट लहरियेदार होती है। ६ घोडे की उछाल या फलाँग। ७ कपडा। वस्त्र।
तरगक—पु० [स० तरङ्ग+कन्] [स्त्री० तरगिका] १ पानी की लहर। हिलोर। २ स्वरलहरी।
तरगभीरु—पु० [ष० त०] चौदहवे मनु के एक पुत्र।
तरगवती—स्त्री० [स० तरग+मतुप्+ङीप्] नदी।
तरगायित—वि० [स० तरगित] १ जिसमे तरग या तरगे उठ रही हो। २ तरगो की तरह का। लहरियेदार। लहरदार।
तरगालि—स्त्री० [स० तरग-अलि, ब० स०] नदी।
तरगिणि—वि० स्त्री० [स० तरग+इनि+ङीप्] जिसमे तरगे या लहरे उठती हो।
स्त्री० नदी। सरिता
तरगित—वि० [स० तरग+इतच्] [स्त्री० तरगिता] १ (जलाशय) जिसमे तरगे या लहरे उठ रही हो। २ (हृदय) जो तरग या उमग से प्रफुल्लित या मग्न हो रहा हो। ३ जो बार-बार कुछ नीचे गिरकर फिर ऊपर उठता हो।
तरगी (गिन्)—वि० [स० तरग+इनि] [स्त्री० तरगिणी] १ जिसमे तरगे या लहरे उठती हो। २ जो मन की तरग या मौज (आकस्मिक भावावेश या स्फूर्ति) के अनुसार सब काम करता हो। ३ भावुक। रसिक।
पु० बहुत बडी नदी। नद।
तरंड—पु० [स० √तृ (तैरना) +अडच्] १ नाव। नौका। २ नाव खेने का डाँड। ३ मछलियाँ मारने की बसी मे बँधी हुई वह छोटी लकडी जो पानी के ऊपर तैरती रहती है।
तरडा—स्त्री० [स० तरड+टाप्] नौका।
तरडी—स्त्री० [स० तरड+ङीष्] = तरडा।
तरत—पु० [स०√त+झच्-अन्त] १ समुद्र। २ मडूक। मेढक। ३ राक्षस।
तरती—स्त्री० [स० तरन्त+ङीष्] नाव। नौका।
तरबुज—पु० [स० तर-अम्बु कर्म० स०, तरबु√जन्+ड] तरबूज।

तरँहुत—क्रि० वि० [स० तल या हि० तले] १ नीचे। २ नीचे की ओर। वि० १ नीचे की ओर का। नीचेवाला। २ नीचा।
तर—वि० [फा०] १ किसी तरल पदार्थ मे भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। नम। जैसे—तर कपडा, तर जमीन। २ जिसमे यथेष्ट आर्द्रता या नमी हो। जैसे—तर हवा। ३ ठढा। शीतल। जैसे—तर पानी। ४ जो शरीर मे ठढक पैदा करता हो। जैसे—कोई तर दवा खाओ। ५ चित्त को प्रफुल्लित या प्रसन्न करनेवाला। बहुत अच्छा और बढिया। जैसे—तर माल। ६ खूब हरा-भरा। ७ तरह-तरह से भरा-पूरा। ८ श्रेष्ठ रूप मे वाछनीय गुणो या बातो से युक्त। जैसे—तर असामी धनवान व्यक्ति।
पु० [स० √तृ (पार करना)+अप्] १ नदी आदि पार करने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ अग्नि। आग। ३ पेड। वृक्ष। ४ मार्ग। रास्ता। ५ गति। चाल।
प्रत्य० [स०] एक सस्कृत प्रत्यय जो गुणवाचक विशेषणो मे लगकर उनकी विशेषता अपेक्षाकृत कुछ अधिक बढा देता है। जैसे--अधिकतर, गुरुतर, श्रेष्ठतर।
*पु० [स० तल] तल।
अव्य० १ तले। नीचे। उदा०—प्रभु तरु तर कपि डार पर।—तुलसी। २ तो। उदा०—नहि तरहोती हाणि।—कबीर।
*पु० = तरु (वृक्ष)।
तरई†—स्त्री० [स० तारा] नक्षत्र।
तरक†—पु० [स० तर्क] १ सोच-विचार। २ उक्ति। कथन। ३. अडचन। बाधा। ४ गडबडी। व्यतिक्रम। ५ भूल। चूक। ६. दे० तर्क।
पु० [हि० तर=नीचे] लेख आदि का कोई पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे लिखा जानेवाला वह शब्द जिससे बादवाला पृष्ठ आरभ होता है।
†स्त्री० = तडक।
तरकना†—अ० [स० तर्क] १ तर्क करना। २ सोच-विचार करना। ३ बहस या विवाद करना। ४ झगडना। ५ अनुमान या कल्पना करना।
अ० [?] उछलना-कूदना।
अ० दे० 'तडकना'।
†वि० जल्दी चौकने या भडकनेवाला (बैल)। उदा०—बैल तरकना टूटी नाव, या काहू दिन देहै दाव।—कहा०।
तरकश—पु० [फा०] कधे पर लटकाया जानेवाला वह आधान जिसमें तीर रखे जाते है। तूणीर।
तरकश-बद—पु० [फा०] वह जो तरकश रखता हो।
तरकस—पु० [स्त्री० अल्पा० तरकशी]=तरकश।
तरका—पु० [अ० तर्क] १ वह सपत्ति जो कोई व्यक्ति छोडकर मरा हो। २ उत्तराधिकारी या वारिस को मिलनेवाली सपत्ति। ३ उत्तराधिकार।
†पु०=तडका।
तरकारी—स्त्री० [फा० तर=सब्जी, शाक+कारी] १ वे हरे और विशेषत कच्चे फल आदि जिन्हे आग पर भून या पकाकर रोटी आदि

के साथ खाया जाता हैं। हरी सब्जी। २ आग पर भून या पकाकर खाने के योग्य बनाई हुई सब्जी। ३ पकाया हुआ गोश्त या मास।

तरकी—स्त्री० [स० ताडकी] कान मे पहनने का एक तरह का गहना।

तरकीब—स्त्री० [अ०] १ मिलान। मेल। २ बनावट। रचना। ३ रचना का प्रकार या शैली। ४ सोच-समझकर निकाला हुआ उपाय या युक्ति।

तरकुल†—पु० [स० ताल+कुल] ताड का पेड।

तरकुला—पु० [हिं०] कान मे पहनने की बडी तरकी।

तरकुली—स्त्री०=तरकी (कान मे पहनने की)।

तरक्की—स्त्री० [अ०] १ शारीरिक अवस्था मे होनेवाली अभिवृद्धि तथा सुधार। जैसे—यह पौधा तरक्की कर रहा है। २ किसी कार्य या व्यापार का बराबर उन्नत दशा प्राप्त करना। जैसे—लडका हिसाब मे तरक्की कर रहा है। ३ पदोन्नति। जैसे—पिछले वर्ष उनकी तरक्की हुई थी।

तरक्षु—पु० [स० तर√क्षि (हिसा करना)+डु] एक प्रकार का छोटा बाघ। लकडबग्घा।

तरखा†—पु० [स० तरग] नदी आदि के पानी का तेज बहाव।

तरखान—पु० [स० तक्षण] लकडी का काम करनेवाला। बढई। (पश्चिम)

तरगुलिया—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा छिछला पात्र जिसमे अक्षत रखे जाते है।

तरचखी—स्त्री० [देश०] सजावट के लिए बगीचो मे लगाया जानेवाला एक तरह का पौधा।

तरछट†—स्त्री०=तलछट।

तरछत*—क्रि० वि० [हि० तर] १ नीचे। तले। २ नीचे की ओर से। नीचे से।

स्त्री०=तलछट।

तरछन†—स्त्री०=तलछट।

तरछा—पु० [हिं० तर=नीचे] वह स्थान जहाँ गोबर इकट्ठा किया जाता है। (तेली)

तरछाना*—अ० [हि० तिरछा] १ तिरछी नजर से किसी की ओर देखना। २ आँखो से सकेत करना।

तरज—पु०=तर्ज।

तरजना—अ० [स० तर्जन] १ क्रोधपूर्वक या बिगडते हुए कोई बात कहना। भला-बुरा कहते हुए डाँटना। २ भविष्य मे सचेत रहने के लिए कुछ धमकी देते हुए कोई बात कहना।

तरजनी—स्त्री० [स० तर्जन] डर। भय।

†स्त्री०=तर्जनी।

तरजीला—वि० [स० तर्तन] १ तर्जन करनेवाला। २ क्रोधपूर्ण। ३ उग्र। प्रचड।

तरजीह—स्त्री० [अ०] दे० 'वरीयता'।

तरजुई†—स्त्री० [फा० तराजू] छोटा तराजू।

तरजुमा—पु० [अ०] १ एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद करने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार किया हुआ अनुवाद। उलथा। भाषान्तर।

तरजुमान—पु० [अ०] अनुवाद करनेवाला व्यक्ति। अनुवादक।

तरजौहाँ*—वि०=तरजीला।

तरण—पु० [स०√तृ (पार करना)+ल्युट्—अन] १ नदी आदि को पार करना। पार जाना। २ जलाशय आदि पार करने का साधन। जैसे—नाव, बेडा आदि। ३ छुटकारा। निस्तार। ४ उबारने की क्रिया या भाव। उद्धार। ५ स्वर्ग।

तरणि—पु० [स०√तृ+अनि] १ सूर्य। २ सूर्य की किरण। ३ आक। मदार। ४ ताँबा।

स्त्री०=तरणी।

तरणि-कुमार—पु० [ष०त०] तरणिसुत। (दे०)

तरणिजा—स्त्री० [स० तरणि√जन्+ड—टाप्] १ सूर्य की कन्या। यमुना। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक नगण और एक गुरु होता है।

तरणि-तनय—पु० [ष०त०] तरणिसुत। (दे०)

तरणि-तनूजा—स्त्री० [प०त०] सूर्य की पुत्री, यमुना।

तरणिसुत—पु० [प०त०] १ सूर्य का पुत्र। २ यमराज। ३ शनि। ४ कर्ण।

तरणि-सुता—स्त्री० [ष० त०] सूर्य की पुत्री। यमुना।

तरणी—स्त्री० [स० तरण+ङीप्] १ नाव। नौका। २ घीकुँआर। ३ स्थल-कमलिनी।

तरतराता—वि० [हि० तरतराना=तडतडाना] तड तड शब्द करता हुआ।

वि० [हि० तर] घी मे अच्छी तरह डूबा हुआ (पकवान)। जिसमे से घी निकलता या बहता हो (खाद्य पदार्थ)।

तरतराना*—अ०, स०=तडतडाना।

तरतीब—स्त्री० [अ०] विशेष प्रकार से वस्तुएँ रखने या लगाने का क्रम। सिलसिला।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

तरदी—स्त्री० [स० तर√दो (खडन करना)+क+ङीप्] एक प्रकार का कँटीला पेड।

तरदीद—स्त्री० [अ०] १ काटने या रद्द करने की क्रिया। मसूखी। २ किसी की उक्ति या कथन का किया जानेवाला खडन।

तरद्दुद—पु० [अ०] १ किसी काम या बात के सम्बन्ध मे होनेवाली चिंता। परेशानी। २ झझट। बखेडा।

तरद्वती—स्त्री० [स०√तृ+मतुप्+ङीप] आटे को घी, दही आदि मे सानकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।

तरन*—पु० १ दे० 'तरण'। २ दे० 'तरौना'।

तरनतार—पु० [स० तरण] निस्तार। मोक्ष।

वि०=तरन-तारन।

तरन-तारन—पु० [स० तरण, हिं० तरना] १ उद्धार। २ वह जो भवसागर से किसी को पार उतारता हो। ईश्वर।

वि० १ डूबते हुए को तारने या उबारनेवाला। २ भवसागर से पार करनेवाला।

तरना—अ० [स० तरण] १ पानी के तल के ऊपर ऊपर रहना। 'डूबना' का विपर्याय। जैसे—पानी मे तेल का तैरना। २ अगो के सचालन अथवा किसी अन्य शारीरिक व्यापार के द्वारा जल को चीरते हुए आगे

बढना। तैरना। ३ आवागमन या सासारिक बधनो से मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना। ४ व्यापारिक क्षेत्रों मे, ऐसी रकम का वसूल होना या वसूल हो सकने के योग्य होना जो प्राय डूबी हुई समझ ली गई हो। जैसे—वे मुकदमा जीत गये है, इसलिए हमारी रकम भी तर गई।
स० नदी आदि को तैरकर या नाव से पार करना।
पु० माल ढोनेवाले जहाजो का वह अधिकारी जो रास्ते मे व्यापारिक कार्यों की देख-रेख और व्यवस्था करता है।
†अ० दे० 'तलना'।

तरनाग—पु० [देश०] एक तरह की चिडिया।

तरनाल—पु० [?] पुरानी चाल के जहाजो मे लगा रहनेवाला वह रस्सा जिससे पाल को धरन मे बाँधते थे। (लश०)

तरनि—स्त्री० [स० तरणि] नदी। सरिता।

तरनिजा—स्त्री०=तरणिजा (यमुना)।

तरनी—स्त्री० [स० तरणी] नाव। नौका।
पु० [स० तरणि] सूर्य। उदा०—तेज राशि द्रिग छोर हुए मानो सत तरनी।—रत्ना०।
स्त्री० [हि० तरे=तले] डमरू के आकार की वह लबी रचना जिस पर खोमचेवाले अपना थाल रखकर सौदा बेचते है।

तरन्नि*—स्त्री०=तरनी (नदी)।

तरप†—स्त्री०=तडप।

तुरपट—वि० [हिं० तिरपट ?] (चारपाई) जिसमे टेढापन हो। जिसमे कनेव पडी हो।
पु० १ टेढापन। २ अतर। भेद।

तरपत†—पु० [स० तृप्ति] १ सुभीता। २ आराम। चैन। सुख।

तरपन†—पु०=तर्पण।

तरपना†—अ०=तडपना।

तर-पर—अ० अव्य० [हि० तर=तले+पर=ऊपर] १ एक दूसरे के ऊपर तथा नीचे। जैसे—पहलवान कुश्ती मे तर-पर होते ही रहते है। २ एक के ऊपर एक-एक करके। जैसे—साडियो का तर-पर थाक लगा हुआ था। ३ एक के बाद एक-एक करके। जैसे—ये घटनाएँ तर-पर होती रही। ४ बिना क्रम भग किए हुए। निरतर। जैसे—वह सवाल-जवाब तर-पर पूछे तथा दिये जाते थे।

तरपरिया†—वि० [हि० तर-पर] १ क्रम या स्थिति के विचार से ऊपर और नीचे का। २ जो एक के बाद दूसरे के क्रम से हो। जो क्रम के विचार से दूसरे के ठीक बाद पडता हो। ३ (बच्चे) जो ठीक आगे-पीछे के क्रम से एक के बाद हुए हो। जैसे—तर-परिया भाई-बहन।

तरपीला—वि० [हि० तडप+ईला (प्रत्य०)] तडपदार। चमकीला।

तरपू—पु० [देश०] एक तरह का वृक्ष जिसकी लकडी कुछ भूरे रग की होती और इमारत के काम आती है।

तरफ—स्त्री० [अ०] १ ओर। दिशा। जैसे—आप किस तरफ जायँगे। २ दो या अधिक दलो, पक्षो आदि मे से हर एक। जैसे—इस तरफ राम थे और उस तरफ रावण। ३ किसी वस्तु के दो या अधिक तलो मे से कोई तल। जैसे—पत्र की दूसरी तरफ भी तो देखो। ४. किनारा। तट। (क्व०)

तरफदार—वि० [अ० तरफ+फा० दार] [भाव० तरफदारी] जो किसी तरफ अर्थात् पक्ष मे हो। किसी का पक्ष लेने या समर्थन करनेवाला।

तरफदारी—स्त्री० [अ० तरफ+फा० दारी] १ तरफदार होने की अवस्था या भाव। २ पक्ष-पात।

तरफराना†—अ०=तडफडाना।

तरब—पु० [हि० तरपना, तडपना] सारगी मे ताँत के नीचे एक विशेष क्रम से लगे हुए तार जो बजने के समय एक प्रकार की गूँज उत्पन्न करते है।

तर-बतर—वि० [फा०] जल या किसी तरल पदार्थ से बहुत अधिक भीगा हुआ। जैसे—खून या पसीने से तर-बतर।

तर-बहना—पु० [हि० तर=तले+बहना] वह छोटा कटोरा जिसमे छोटी देव-मूर्त्तियो को पूजा के समय स्नान कराया जाता है।

तरबियत—स्त्री० [अ०] १ पालने-पोसने का काम। पालन-पोषण। २ देख-रेख करके जीवित रखने और बढाने का काम। सवर्धन। ३ शिक्षा।

तरबूज—पु० [फा० तर्बुज] १ एक प्रसिद्ध गोल बडा फल जिसका ऊपरी छिलका मोटा, कडा तथा गहरे हरे रग का होता है और जिसमे गुलाबी रग का गूदा होता है जो खाया जाता है। २ वह लता जिसमे उक्त फल लगता है।

तरबूजई—वि० [हि० तरबूज+ई (प्रत्य०)] तरबूज की तरह गहरे हरे रग का।
पु० गहरा हरा रग।

तरबूजा—पु०=तरबूज।

तरबूजिया—वि० [हि० तरबूज] तरबूजे के छिलके के रग का गहरा हरा।
पु० उक्त प्रकार का रग।

तरबोना—स० [फा० तर+हि० बोरना] अच्छी तरह तर या गीला करना। भिगोना।
अ० तर होना। भीगना। उदा०—पर-निद्रा रसना के रस मे अपने पर तरबोरी।—सूर।

तरमाची—स्त्री० [हि० तर+माचा] बैलो के जुए मे नीचे लगी हुई लकडी। मचेरी।

तरमाना†—अ० [?] नाराज होना। बिगडना। उदा०—सूर रोम अति लोचन देत्यौ बिधना पर तरमात।—सूर।
स० किसी को क्रुद्ध या नाराज करना।
अ० [फा० तर+हि० माना (प्रत्य०)] तर होना। तरी से युक्त होना।
स० गीला या तर करना।

तरमानी—स्त्री० [हि० तरमाना] जोती हुई भूमि मे होनेवाली तरी।
क्रि० प्र०—आना।

तरमिरा—पु०=तरामीरा।

तरमीम—स्त्री० [अ०] १ किसी कार्य या बात मे किया जानेवाला सुधार। २ प्रस्तावो, लेखो आदि मे होनेवाला सशोधन।

तरराना†—अ० [अनु०] ऐठ या ऐड दिखाना। गर्व-सूचक चेष्टा करना।
स० ऐठना। मरोडना।

तरल—वि० [स०√तृ+कलच्] [भाव० तरलता] १ तेल, पानी आदि की तरह पतला और बहनेवाला। द्रव। २ हिलता-डोलता हुआ।

चलायमान। ३ अस्थिर। चचल। ४ जल्दी नष्ट हो जानेवाला। ५ चमकीला। कातिवान्। ६ खोखला। पोला। ७ अबाध रूप से बराबर चलता रहनेवाला। उदा०—स्मित बन जाती है तरल हँसी।—प्रसाद।

पु०१ गले मे पहनने का हार। २ हार के बीच मे लगा हुआ लटकन। लोलक। ३ हीरा। ४ लोहा। ५ तल। पेदा। ६ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। ७ उक्त देश के निवासी। ८ घोडा।

तरलता—स्त्री०[स० तरल+तल—टाप्]१ तरल होने की अवस्था या भाव। द्रवता। २ चचलता। चपलता।

तरल-नयन—पु०[ब०स०] एक तरह का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण होते है।

तरल-भाव—पु०[ष० त०]१ तरलता। द्रवता। २ चचलता।

तरला—स्त्री०[स०तरल+टाप्]१ जौ का माँड। यवागू। २ मदिरा। शराब। ३ शहद की मक्खी। मधु-मक्खी। ४ छाजन के नीचे लगे हुए बाँस।

तरलाई*—स्त्री०=तरलता।

तरलायित—वि०[स० तरल+क्यङ्+क्त] लहर की तरह काँपता या हिलता हुआ।

स्त्री० बडी तरग। हिलोर।

तरलित—भू० कृ० [स० तरल+णिच्+क्त] १ तरल किया या बनाया हुआ। द्रव रूप मे लाया हुआ। २ उदारता, दया, प्रेम आदि से युक्त। जिसका चित्त कोमल हो।

तरवछ†—स्त्री० दे० 'तरमाची'।

तरवडी†—स्त्री० [स० तुला+डी (प्रत्य०)] १ छोटा तराजू। २ तराजू का पल्ला।

तरवन—पु०[हि० तरौना]१ कान मे पहनने का तरकी नाम का गहना। २ करन-फूल।

तरवर—पु०[स० तरुवर]१ पेड। वृक्ष। २ एक प्रकार का बडा पेड जिसकी छाल से चमडा सिझाया जाता है। तरोता।

तरवरा†—पु०=तिरमिरा। (दे०)

तरवरिया—पु० [हि० तरवर] १ वह जो तलवार चलाता हो। २ तलवार से युद्ध करनेवाली एक जाति।

तरवरिहा†—पु०=तरवरिया।

तरवाँची—स्त्री०=तरमाची।

तरवाँसी†—स्त्री०=तरवाँची (तरमाची)।

तरवा†—पु०=तलवा।

तरवाई-सिरवाई—स्त्री०[हि० तर+सिर] १ किसी चीज के ऊपरी और नीचेवाले भाग। २ ऊँची और नीची जमीन। ३ पहाड और घाटी।

तरवाना—स०[हि० तारना का प्रे०] तारने का काम किसी से कराना। †स०=तलवाना।

अ०[हि० तलवा] पैर के तलवे का घिसना। विशेषत बैल का पैरो के तलवो को घिसना।

तरवार†—स्त्री०=तलवार।

पु०=तरुवर(वृक्ष)।

तरवारि—स्त्री०[स० तर√वृ+णिच् (रोकना)+इन्]= तलवार।

तरवारी—पु०=तरवरिया।

तरस्—पु०[स०√तृ (तरना)+असुन्]१ बल। शक्ति। २ तेजी। वेग। ३ बीमारी। रोग। ४ तट। किनारा। ५ वानर। बन्दर।

तरस—पु०[स०√त्रस्=डरना]अभागे, दडित, दुखी या पीडित के प्रति मन मे उत्पन्न होनेवाली करुणा या दया।

क्रि० प्र०—आना।

मुहा०—(किसी पर) तरस खाना- किसी के प्रति करुणा या दया दिखलाना और फलत उसका कष्ट या दुख दूर करने का प्रयत्न करना।

तरसना—अ०[स० तर्षण] अभीष्ट तथा प्रिय वस्तु के अभाव के कारण दुखी या निराश व्यक्ति का उसके दर्शन या प्राप्ति के लिए लालायित या विकल होना। जैसे—(क) किसी को मिलने के लिए अथवा कुछ खाने के लिए मन तरसना (ख) प्रिय को मिलने के लिए आँखे तरसना।

अ० [स० त्रसन] त्रस्त या पीडित होना।

स० त्रस्त या पीडित करना।

तरसान—पु०[स०] नौका।

तरसाना—स०[हि० तरसना का प्रे०]१ ऐसा काम करना जिससे कोई तरसे। २ किसी प्रकार के अभाव का अनुभव कराते हुए किसी को ललचाना। आशा दिलाकर या प्रवृत्ति उत्पन्न करके खिन्न या दुखी करना।

सयो० क्रि० —डालना।—मारना।

तरसौहाँ—वि०[हि० तरसना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० तरसौही] जो तरस रहा हो। तरसनेवाला। जैसे—तरसौहे नेत्र।

तरस्वान् (स्वत्)—वि०[स० तरस्+मतुप्]१ जिसकी गति बहुत अधिक या तीव्र हो। २ वीर। बहादुर। साहसी।

पु० १ वायु। २ गरुड। ३ शिव।

तरस्वी (स्विन्)—वि० पु०[स० तरस्+विनि]=तरस्वान्।

तरह—स्त्री०[फा०]१ आकार-प्रकार, गुण, धर्म, बनावट, रूप आदि के विचार से वस्तुओ, व्यक्तियो आदि का कोई विशिष्ट और स्वतन्त्र वर्ग। जैसे—(क) इसी तरह का कोई कपडा लेना चाहिए। (ख) यहाँ तरह-तरह के आदमी आते रहते है। २ ढग। प्रकार। जैसे—तुम यह भी नही जानते कि किस तरह किसी से बात की जाती है।

मुहा०—तरह देना=किसी की त्रुटि, भूल आदि पर ध्यान न देना। जाने देना।

तरहटी—स्त्री०=तलहटी।

तरहदार—वि०[फा०] [भाव० तरहदारी] १ अच्छे ढब या प्रकार का। २ अनोखी और सुन्दर बनावटवाला। ३ सज-धज से युक्त। सजीला।

तरहदारी—स्त्री०[फा०] तरहदार होने की अवस्था या भाव।

तरहर†—क्रि० वि०[हि० तर+हर (प्रत्य०)] तले। नीचे।

पु० नीचे का भाग। तला। पेदा।

वि०१ जो सब के नीचे का हो। २ निकृष्ट। बुरा।

तरहरि—स्त्री०=तलहटी।

तरहा—पु० [हि० तर] १ कूँए की खुदाई मे एक माप जो प्राय एक हाथ की होती है। २ वह कपडा जिस पर मिट्टी फैलाकर चीजे ढालने के लिए साँचा बनाते है।

तरहेल†—वि० [हि० तर+हर, हल (प्रत्य०)] १ अधीन। निम्नस्थ। २ वश मे किया हुआ। ३ हारा या हराया हुआ। पराजित।

तराधु—पु० [स० तर-अधु, च०त०] एक तरह की चौडे पेंदेवाली नाव। तरालु।

पु० [देश०] पटुआ। पटसन। पाट।

तरा†—पु० १ =तैला। २ =तलवा।

तराइन—स्त्री० [स० तारक] तारो का समूह। तारावली।

तराई—स्त्री० [हि० तर=नीचे] १ पहाड के नीचे का समतल मैदानी-भू-भाग। २ दे० 'घाटी'। ३ मूँज के वे मुट्ठे जो छाजन मे खपरैल के नीचे लगाये जाते है।

स्त्री० [हि० तारा+ई] तारो का समूह। तारागण।

तराजू—पु० [फा०] वस्तुएँ तौलने का एक प्रसिद्ध उपकरण जिसमे दोनो ओर वे दो पल्ले रहते है जिनमे से एक पर बटखरा या बाट और दूसरे पर तौली जानेवाली चीज रखी जाती है। तुला।

मुहा०—(किसी से) तराजू होना=किसी की बराबरी या सामना करने अथवा उसके समान बनने के लिए मुकाबले पर या सामने आना।

तरात्यय—पु० [स० तर-अत्यय, ष०त०] प्राचीन काल मे वह दड जो बिना आज्ञा के नदी पार करनेवाले पर लगाया जाता था।

तराना—पु० [फा० तरान] १ अच्छे ढग मे गाया जानेवाला सुन्दर गीत। २ एक प्रकार का गाना जिसके बोल इस प्रकार के होते है—तानूम्, तानूम ता दारा दारा, दिर दिर दारा आदि। (इसमे प्राय सितार और तबले के बोल मिले हुए होते है।)

†स०=तैराना (तैरने मे प्रवृत्त करना)।

तराप†—[अनु०] तडाक (शब्द)।

तरापा—पु० [हि० तरना] पानी मे तैरता हुआ वह शहतीर जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते है। (लश०)

पु० [हि० त्राहि से, स्यापा का अनु०] त्राहि त्राहि की पुकार। हाहाकार।

क्रि० प्र०—पडना।—मचना।

तराबोर—वि० [फा० तर+हि० बोरना] पानी या और किसी तरल पदार्थ मे अच्छी तरह डूबा या भीगा हुआ। शराबोर।

तरामल—पु० [हि० तर=नीचे] १ मूँज के वे मुट्ठे जो छाजन मे खपरैल के नीचे लगे होते है। २ बैलो के गले के जूए मे की नीचेवाली लकडी।

तरामीरा—पु० [देश० प० तारामीरा] एक तरह का पौधा जिसके बीजो से तेल निकाला जाता है।

तरायला†—वि० [?] १ तेज। २ चचल।

तरारा—पु० [?] १ उछाल। कुलाँच। छलाग।

मुहा०—तरारे भरना या मारना=(क) खूब उछल-कूद करना। (ख) किसी काम मे बहुत जल्दी-जल्दी आगे बढते चलना। (ग) बहुत बढ-बढकर बाते करना। खूब डीगे हाँकना।

२ किसी चीज पर गिराई जानेवाली पानी की पतली धार।

क्रि० प्र०—देना।

तरालु—पु० [स० तर√अल् (पर्याप्त होना)+उण्] चौडे पेंदेवाली एक तरह की नाव। तराधु।

तरावट—स्त्री० [फा० तर+आवट (प्रत्य०)] १ तर अर्थात् आर्द्र या नम होने की अवस्था या भाव। तरी। जैसे—वातावरण मे आज तरावट है। २ प्रिय और वाछित ठढक या शीतलता। ३ ऐसा पदार्थ जिसके सेवन से शारीरिक गरमी शात होती हो और प्रिय ओर सुखद ठढक मिलती हो। ४ स्निग्ध भोजन।

तराश—स्त्री० [फा०] १ तराशने अर्थात् धारदार उपकरण से किसी चीज के टुकडे करने की क्रिया, ढग या भाव। २ किसी रचना मे की वह काट-छाँट या बनावट जिससे उसका रूप प्रस्तुत हुआ हो। ३ ढग। तर्ज।

तराश खराश—स्त्री० [फा०] किसी प्रकार की रचना मे की जानेवाली काट-छाँट।

तराशना—स० [फा०] १ धारदार उपकरण से किसी चीज विशेषत किसी फल को कई टुकडो मे विभाजित करना। काटना। जैसे—अमरूद या सेब तराशना। २ कतरना (कपडे आदि का)।

तरास—पु०=त्रास।

स्त्री०=तराश।

तरासना*—स० [स० त्रास+ना (अन्य०)] १ त्रास या कष्ट देना। त्रस्त करना। २ भयभीत करना।

†स०=तराशना।

तरासा†—वि० [स० तृषित] प्यासा।

स्त्री०=तृषा (प्यास)।

तराहि†—अव्य०=त्राहि।

तराहीं*—क्रि० वि० [हि० तले] नीचे।

तरिंदा—पु० [हि० तरना+इदा (प्रत्य०)] नदी, समुद्र आदि मे तैरता हुआ वह पीपा जो किसी लगर मे बँधा होता है। तरेंदा।

तरि—स्त्री० [स०√तृ (तरना)+इ] १ नाव। नौका। २ बडी पिटारी। पिटारा। ३ कपडे का छोर या सिरा।

तरिक—पु० [स० तर+ठन्—इक] १ लकडियो का वह ढाचा जो जलाशय पार करने के लिए बनाया जाता है। बेडा। २ वह जो नदी आदि पार करने का पारिश्रमिक लेता हो। ३ केवट। मल्लाह।

तरिका—स्त्री० [स० तरिक+टाप्] नाव। नौका।

*स्त्री० [स० तडित्] बिजली।

तरिकी (किन्)—पु० [स० तरिका+इनि] नदी आदि के पार उतारने वाला। माँझी। मल्लाह।

तरिकौ—पु० दे० 'तरौना'।

तरिणी—स्त्री० [स० तर+इनि—ङीप्]=तरणी।

तरिता—स्त्री० [स० तर+इतच्—टाप्] १ तर्जनी उँगली। २ भाँग। भग। ३ गाजा।

†स्त्री०=तडित् (बिजली)।

तरित्र—पु० [स०√तृ+ष्ट्रन्] बडी नाव। पोत।

तरित्री—स्त्री० [स० तरित्र+ङीप्] छोटा तरित्र।

तरिया†—पु० [हि० तरना] तैराक।

वि० तैरनेवाला।

तरियाना—स० [हि० तरे=नीचे] १ किसी चीज को तले या नीचे रखना। २ किसी चीज को झुकाकर नीची कर देना। ३ बटुए के पेंदे मे इसलिए मिट्टी का लेवा लगाना कि आग पर चढाने से उसका पेंदा जलने न पावे। लेवा लगाना। ४ धन-सपत्ति आदि अथवा और कोई चीज चुपचाप अपने अधिकार मे करते जाना या छिपाकर रखते चलना।
†अ० तले या तल मे बैठ जाना या जमना।
स० [फा० तर] पानी आदि के छीटे देकर तर या गीला करना। जैसे—चुनाई करने से पहले ईंटे तरियाना।

तरिवन†—पु०=तरवन (तरौना)।

तरिवर†—पु०=तरुवर।

तरिहँत —क्रि० वि० [हि० तर+अंत, हँत (प्रत्य०)] नीचे। तले।

तरी—स्त्री० [स० तरि+ङीष्] १ नाव। नौका। २ गदा। ३ धूआँ। धूम। ४ कपडे रखने का पिटारा। ५ कपडे का छोर या सिरा।
स्त्री० [फा० तर] १ तर होने की अवस्था या भाव। आर्द्रता। गीलापन। २ वातावरण मे होनेवाली आर्द्रता। ३ प्रिय और सुखद ठढक। शीतलता। ४ तलहटी। तराई। ५ तलछट। तलौछ। ६ वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा होता हो।
†स्त्री०=तरकी (कान का गहना)।
†स्त्री०=तल्ला (जूते का)। उदा०—जो पहिरी तन त्राण को माणिक तरी बनाय।—केशव।

तरीका—पु० [अ० तरीक] १ काम करने का कोई उपयुक्त, मान्य या विशेष ढग। २ आचार या व्यवहार की चाल-ढाल। ३ उपाय। युक्ति।

तरीनि —स्त्री० [हि० तर=तले] पहाड के नीचे का भाग। तलहटी। (बुदेल) उदा०—फूटे है सुगध घट श्रवन तरिनि मे।—केशव।

तरीष—पु० [स० √तृ (तरना) +ईषन्] १ सूखा गोबर। २ नाव। ३ जलाशय पार करने का बेडा। ४ समुद्र। सागर। ५ स्वर्ग। ६ रोजगार। व्यवसाय।

तरीषी—स्त्री० [स० तरीष+ङीष्] इद्र की एक कन्या।

तरु—पु० [स० √तृ+उन्] १ पेड। वृक्ष। २ पूर्वी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का चीड जिससे तारपीन का बढिया तेल निकलता है।

तरुआ†—पु० [हि० तरना=तलना] उबाले हुए धान का चावल। भुजिया चावल।
पु०=तलवा (पैर का)।

तरुण—वि० [स० √तृ+उनन्] १ जो बाल्यावस्था पार करके सासारिक जीवन की आरभिक अवस्था मे प्रवेश कर रहा हो। जवान। जैसे—तरुण व्यक्ति। २ जो जीवन की आरभिक अवस्था मे हो। जैसे—तरुण पौधा। ३ जिसमे ओज, नवजीवन या शक्ति हो। जैसे—तरुण हँसी। ४ नया। नवीन।
पु० १ बडा जीरा। २ मोतिया (पौधा और उसका फूल)। ३. रेंड।

तरुणक—पु० [स० तरुण+कन्] अकुर।

तरुण-ज्वर—पु० [कर्म० स०] ऐसा ज्वर जो सात दिन पार कर के और आगे चल रहा हो।

तरुण-तरणी—पु० [कर्म० स०] मध्याह्न का सूर्य।

तरुणता—स्त्री० [स० तरुण+तल्—टाप्] तरुण होने की अवस्था या भाव।

तरुण-दधि—पु० [कर्म० स०] पाँच या अधिक दिन से पडा हुआ बासी दही जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। (वैद्यक)

तरुण-पीतिका—स्त्री० [कर्म० स०] मैनसिल।

तरुण-सूर्य—पु० [कर्म० स०] मध्याह्न का सूर्य।

तरुणाई*—स्त्री० [स० तरुण+हि० आई (प्रत्य०)] तरुण होने की अवस्था या भाव। जवानी।

तरुणाना—अ० [स० तरुण+हि० आना (प्रत्य०)] तरुण होना। जवानी पर आना।

तरुणास्थि—स्त्री० [स० तरुण—अस्थि, कर्म० स०] पतली लचीली हड्डी।

तरुणिमा (मन्)—स्त्री० [स० तरुण+इमनिच्] तरण होने की अवस्था या भाव। तरुणाई।

तरुणी—वि० स्त्री० [स० तरुण+ङीष्] जवान। युवा।
स्त्री० १ जवान स्त्री। युवती। २ चीड नामक वृक्ष। ३ घी-कुआर। ४ जमाल गोटा। दती। ५ मोतिया नाम का पौधा और उसका फूल। ६ सगीत मे, मेघ राग की एक रागिनी।

तरु-तलिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] चमगादर।

तरुन*—वि०, पु०=तरुण।

तरुनई*—स्त्री०=तरुणाई।

तरुनाई*—स्त्री०=तरुणाई।

तरुनापन*—पु० [हि० तरुन+पन (प्रत्य०)] तारुण्य। जवानी।

तरुनापा—पु० [हि० तरुन+ पा (प्रत्य०)] युवावस्था। जवानी।

तरुबाँहीं*—स्त्री० [स० तर+हि० बाँह] वृक्ष की बाँह अर्थात् शाखा।

तरुभुक्—पु० [स० तरु√भुज् (खाना)+क्विप्] बाँदा। बदाक।

तरुभुज—पु० [स० तरु√भुज्+क] दे० 'तरुभुक्'।

तरु-राग—पु० [ब० स०] नया कोमल पत्ता। किशलय।

तरु-राज—पु० [ष० त०] १ कल्पवृक्ष। २ ताड का पेड।

तरुरुहा—स्त्री० [स० तरु√रुह् (उगना) +रु—टाप्] बाँदा।

तरु-रोपण—पु० [ष० त०] २ वृक्ष लगाने की क्रिया। २ वह विद्या जिसमे वृक्ष लगाने, बढाने और उनकी रक्षा करनेकी कला सिखाई जाती है। (आर्बोरी कलचर)

तरुरोहिणी—स्त्री० [स० तरु√रुह्+णिनि—ङीप्] बाँदा।

तरुवर—पु० [स० त०] १ श्रेष्ठ या बडा वृक्ष। २ रहस्य सप्रदाय मे, (क) प्राण। (ख) परमात्मा या ब्रह्म।

तरुवरिया†—स्त्री० [हिं० तरवारि] तलवार। उदा०—लिहलन ढाल तरुवरिया, त अवरु कटरिया नु हो।—गीत।

तरु-वल्ली—स्त्री० [स० त०] जतुका लता। पानडी।

तरुसार—पु० [ष० त०] कपूर।

तरुस्था—स्त्री० [स० तरु√स्था (ठहरना)+क—टाप्]. बाँदा।

तरूट—पु० [स० तरु—उट, ष० त०] भसीड। कमल की जड।

तरेंदा—पु० [स० तरड] जलाशय पार करने का लकडियो आदि का ढाँचा। बेडा।

तरे†—क्रि० वि०=तले (नीचे)।

तरेट—पु० [हिं० तर+एट (प्रत्य०)] पेडू।
तरेटी—स्त्री०=तलहटी (तराई)।
तरेड़ा—पु०=तरेरा।
तरेरना—स० [स० तर्ज=डाटना+हि० हेरना=देखना] रोषपूर्वक या तिरछी आँखो से घूरते हुए किसी की ओर अथवा इधर-उधर देखना।
तरेरा—पु० [अ० तरार] १ लगातार डाली जानेवाली पानी की धार। २ जल की लहरो का आघात। थपेडा।
पु० रोष-भरी दृष्टि।
तरैंनी—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] हरिस और हल को मिलाने के लिए दिया जानेवाला पच्चर।
तरैया—स्त्री० [हिं० तारा] तारा।
वि० [तरना] १ तरनेवाला। २ तारनेवाला।
तरैला—पु० [हिं० तरे] [स्त्री० तरैली] १ किसी स्त्री के दूसरे पति का वह पुत्र जो उसकी पहली पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। २ किसी पुरुष की दूसरी स्त्री का वह पुत्र जो उसके पहले पति के वीर्य से उत्पन्न हो।
तरैली†—स्त्री०=तरैनी।
तरोच—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] १ कधी के नीचे की लकडी। २ दे० 'तलौछ'।
तरोंचा†—पु० [हिं० तर—नीचे] [स्त्री० तरोंची] जूए की निचली लकडी।
तरोंछा—पु० [देश०] फसल का वह अश जो हलवाहो, मजदूरो आदि को देने के लिए अलग कर दिया जाता है।
तरोई†—स्त्री०=तोरी (तरकारी)।
तरोता—पु० [स० तरवट] मध्य तथा दक्षिण भारत मे होनेवाला एक तरह का ऊँचा पेड जिसकी छाल चमडा सिझाने के काम आती है।
तरोबर*—पु० [स० तरुवर] श्रेष्ठ वृक्ष।
†वि०=तरोबोर।
तरौंछ—स्त्री०=तलछट।
तरौंछी—स्त्री० [हिं० तर+ओछी (प्रत्य०)] १ करघे के हत्थे के नीचे लगी हुई लकडी। २ बैलगाडी के सुजावे के नीचे लगी हुई लकडी।
तरौंटा—पु० [हि० तर+पाट] नीचेवाला पाट (चक्की आदि का)।
तरौंता—पु० [हि० तर+औता (प्रत्य०)] छाजन मे की वह लकडी जो ठाट के नीचे रखी या लगाई जाती है।
तरौंस*—पु० [हि० तट+औस (प्रत्य०)] जलाशय का तट। किनारा।
तरौना—पु० [स० तालपर्ण, प्रा० तालउन्न] कानो मे पहनने का एक आभूषण जो ताड के पत्ते की तरह फाँकदार और गोल होता है। तरकी। तरवन।
तर्क—पु० [स०√तर्क् (अनुमान)+अच्] १ कोई बात जानने या समझाने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। २ किसी तथ्य, धारणा, विचार, विश्वास आदि की सत्यता जाँचने के लिए अथवा उसके समर्थन या विरोध मे कही हुई कोई तथ्यपूर्ण युक्ति-सगत तथा सुविचारित बात। दलील। (आर्ग्यूमेन्ट) ३ कोई चमत्कारक कथन या बात। व्यग्यपूर्ण बात। ४ ताना। ५ बहस।
पु० [अ०] छोडने या त्यागने की क्रिया या भाव। जसे—उन्होने यह ख्याल तर्क दिया है।
तर्कक—वि० [स०√तर्क्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ तर्क करनेवाला। २ [तर्क√कै (प्रकाश)+क] मागनेवाला। याचक।
तर्कण—पु० [स० √तर्क्+ल्युट्—अन] [वि० तर्कणीय, तर्क्य] तर्क करने की क्रिया या भाव।
तर्कणा—स्त्री० [स०√तर्क्+णिच्+युच्—अन, टाप] १ किसी बात या विषय के सब अगो पर किया जानेवाला विचार। विवेचन। २ किसी पक्ष या विचार के समर्थन मे उपस्थित की जानेवाली युक्ति। दलील।
तर्कना—स्त्री०=तर्कणा।
अ०=तरकना।
तर्क-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १ तात्रिक उपासना मे एक प्रकार की शारीरिक मुद्रा।
तर्क-वितर्क—पु० [द्व० स०] १. यह सोचना कि यह बात होगी या वह। ऊहा-पोह। २ दो पक्षो मे परस्पर एक दूसरे द्वारा प्रस्तुत की हुई सुविचारित बातो का किया जानेवाला खडन या विरोध और अपनी बातो का किया जानेवाला समर्थन। ३ वाद-विवाद। बहस।
तर्कश—पु०=तरकश।
तर्क-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] १ वह विद्या या शास्त्र जिसमे किसी के द्वारा प्रतिपादित सिद्धातो आदि के खडन-मडन करने की पद्धतियो का विवेचन होता है। (लाजिक) २ दे० न्याय शास्त्र'।
तर्क-सगत—वि० [तृ० त०] १ (बात) जो तर्क के आधार पर ठीक बैठे या सिद्ध हो। २ (मत) तर्क-वितर्क करने पर उसके परिणाम के रूप मे निकलने या ठीक सिद्ध होनेवाला। (लॉजिकल) ३ =युक्ति-युक्त।
तर्कस—पु० [स्त्री० अल्पा० तर्कसी] =तरकश।
तर्क-सिद्ध—वि० [तृ० त०] जो तर्क की दृष्टि से बिलकुल ठीक या प्रमाणित हो।
तर्काभास—पु० [तर्क—आभास, प० त०] ऐसा तर्क जो ऊपर से देखने पर ठीक-सा जान पडता हो परन्तु जो वास्तव मे ठीक न हो।
तर्कारी—स्त्री० [स० तर्क√ऋ (गति) +अण्—ङीप्] १ अँगेथू या अरणी का वृक्ष। २ जैत नामक वृक्ष।
स्त्री०=तरकारी।
तर्किण—पु० [स०] चकवँड। पँवार।
तर्कित—वि० [स०√तर्क्+क्त] (विषय या सिद्धात) जिस पर तर्क किया गया हो।
तर्किल—पु० [स०√तर्क्+इलच्] चकवँड। पँवार।
तर्की (किन्)—पु० [स०√तर्क्+णिनि] [स्त्री० तर्किनी] वह जो प्राय तर्क करता रहता हो।
†स्त्री०=टरकी (पक्षी)।
तर्कीब—स्त्री०=तरकीब।
तर्कु—पु० [स०√कृत् (काटना)+उ, नि० सिद्धि] सूत कातने का तकला। टेकुआ।
तर्कुक—वि० [स० तर्कु+कन्] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

पु० १ प्रार्थी। २ अभियोग उपस्थित करनेवाला। मुद्दई। वादी।

तर्कुटी—स्त्री० [स०√तर्क्+डटन्—ङीप्] छोटा तकला।

तर्कु-पिंड—पु० [मध्य० स०] तकले की फिरकी।

तर्कुल—पु० [हि० ताड+फल] १ ताड का पेड। २ ताड का फल।

तर्क्य—वि० [स०√तर्क्+ण्यत्] १ जिसके सबध मे तर्क किया जा सके। २ विचारणीय।

तर्क्षु—पु० [स०=तरक्षु पृषो० सिद्धि] लकडबग्घा।

तर्क्ष्य—पु० [स०√तृक्ष् (गति)+ण्यत्, बा० गुण] जवाखार।

तर्ज—पु० [अ०] १ बनावट या रचना-प्रणाली के विचार से किसी वस्तु का आकार-प्रकार या स्वरूप। किस्म। प्रकार। २ किसी वस्तु को आकार-प्रकार या स्वरूप देने का विशिष्ट ढग, प्रकार या प्रणाली। तरह।

तर्जन—पु० [स०√तर्ज् (भर्त्सना करना)+ल्युट्—अन] १ कोई काम करने से किसी को रोकने के लिए क्रोधपूर्वक कुछ कहना या सकेत करना। २ डराना-धमकाना।

तर्जना*—अ० [हि० तर्जन] तर्जन करना।

तर्जनी—स्त्री० [स० तर्जन+ङीप] अँगूठे के पास की उँगली।

विशेष—इस उँगली को होठो पर रखकर अथवा खडी करके किसी को तर्जित किया जाता है इसी लिए इसका यह नाम पडा है।

तर्जनी-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तत्र की एक मुद्रा जिसमे बाएँ हाथ की मुट्ठी बाधकर तर्जनी और मध्यमा को फैलाते है।

तर्जिक—पु० [स०√तज्+घञ्+ठन्—इक] एक प्राचीन देश।

तर्जित—भू० कृ० [स०√तर्ज् +क्त] जिसका तर्जन किया गया हो। जिसे डाँटा-डपटा या डराया-धमकाया गया हो।

तर्जुमा—पु० [अ०] अनुवाद। उलथा। भाषातर।

तर्ण—पु० [स०√तृण् (भक्षण)+अच्] गाय का बछडा। बछवा।

तर्णक—पु० [स० तर्ण+कन्] १ तुरत का जनमा गाय का बछडा। २ बच्चा। शिशु।

तर्णि—पु०=तरणि (नाव)।

तर्तरीक—वि० [स०√तृ+ईक, नि० सिद्धि] १ पार जानेवाला। २ पार करने या ले जानेवाला।

पु० नाव। नौका।

तर्पण—पु० [स०√तृप् (सतुष्ट करना)+ल्युट्—अन] [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १ तृप्त करने की क्रिया। २ हिदुओ का वह कर्मकाडी कृत्य जिसमे वे देवताओ, ऋषियो पितरो आदि को तृप्त करने के लिए अजुली या अरघे मे जल भर कर देते है।

तर्पणी—वि० [स० तर्पण+ङीप्] तृप्ति देनेवाली।

स्त्री० १ गगा नदी। २ खिरनी का पेड और फल।

तर्पणीय—वि० [स०√तृप्+अनीयर्] १ जिसका तर्पण करना आवश्यक या उचित हो। २ जिसका तर्पण किया जा सकता हो। ३ जिसे तृप्त करना आवश्यक हो।

तर्पणेच्छु—वि० [स० तर्पण-इच्छु, ष० त०] १ जिसे तर्पण करने की इच्छा हो। २. जो अपना तर्पण कराना चाहता हो।

पु० भीष्म।

तर्पिणी—स्त्री० [स०√तृप्+णिच्+णिनि—ङीप्] पद्मचारिणी लता। स्थल कमलिनी। स्थलपद्म।

तर्पित—भू० कृ० [स०√तृप्+णिच्+क्त] १ तृप्त किया हुआ २ जिसका तर्पण हुआ हो।

तर्पी (पिन्)—पु० [स०√तृप्+णिच्+णिनि] [स्त्री० तर्पिणी] १ वह जो दूसरो को तृप्त करता हो। २ तर्पण करनेवाला व्यक्ति।

तर्बट—पु० [स०] १ चकवॅड। पॅवार। २ चाद्र वर्ष।

तर्बूज—पु०=तरबूज।

तर्यौना*—पु०=तरौना। (दे०)

तर्रा—पु० [देश०] चाबुक की डोरी या फीता।

तर्राना—पु० दे० 'तराना'।

†अ० दे० 'चर्राना'।

तर्री—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

तर्ष—पु० [स०√तृष् (तृष्णा)+घञ्] १ अभिलाषा। इच्छा। २ तृष्णा। ३ सूर्य। ४ समुद्र। ५ जलाशय पार करने का बेडा।

तर्षण—पु० [स०√तृष्+ल्युट्—अन] [वि० तर्षित] १ पिपासा। प्यास। २ अभिलाषा। इच्छा।

तर्षित—वि० [स० तर्ष+इतच्] १ प्यासा। २ अभिलाषा करनेवाला। इच्छुक।

तर्षुल—वि० [स०√तृष्+उलच्] =तर्षित। (दे०)

तल—पु० [स०√तल् (स्थिर होना)+अच्] १ किसी चीज के बिलकुल नीचे का अश या भाग। तला। पेदा। २ जलाशय आदि के बिलकुल नीचे की जमीन जिस पर जल होता है। जैसे—नदी या समुद्र का तल। ३ किसी चीज के नीचेवाला भाग या स्थान। जैसे—तरु-तल। ४ सात पातालो मे से पहला पाताल। ५ एक नरक का नाम। ६ किसी चीज की ऊपरी सतह। जैसे—धरातल या समुद्रतल से १००० फुट की ऊँचाई। ७ किसी पदार्थ के किसी पार्श्व का फैलाव या विस्तार। जैसे—चौकोर वस्तु के चारो तल। ८ चमडे का वह पट्टा जो धनुष की डोरी की रगड से बचने के लिए बायी बाह पर पहना जाता था। ९ बाएँ हाथ से वीणा बजाने की कला या क्रिया। १० हाथ की हथेली। ११ कलाई। पहुँचा। १२ बित्ता। बालिश्त। १३ पैर का तलवा। १४ गडढा। १५ ताड का पेड और फल। १६ दस्ता। मुठिया। हत्था। १७ गोह नामक जतु। १८ आधार। सहारा। १९ चपत। थप्पड। २० जगल। वन। २१ शिव का एक नाम। २२ कारण। मूल। २३ उद्देश्य। २४ स्वभाव।

तलक—पु० [स० तल√कै (प्रकाश)+क] ताल। पोखरा।

*अव्य० हि० 'तक' का पुराना रूप।

तल-कर—पु० [ष० त०] ताल या तालाब मे होनेवाली वस्तुओ पर लगनेवाला कर।

तलकी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड जिसकी लकडी का रग ललाई लिये हुए भूरा होता है।

तलकीन—स्त्री० [अ० तल्कीन] शिक्षा।

तलख—वि० [फा०] १ जिसमे कडुआपन हो। २ उग्र। प्रचड।

तलखी—स्त्री० [फा० तल्खी] १ कडुआपन। कडुआहट। २. स्वभाव का चिडिचिडापन।

तलगू—स्त्री०=तेलगू।

तलघेरा—पु० [स० तल+हि० घर] तल अर्थात् नीचे का कमरा या घर। तहखाना।

तल-छट—स्त्री० [हि० तल+छँटना] १ किसी तरल या द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाद या मैल। तलौछ। २ तरल पदार्थ मे घुली या मिली हुई चीज का वह अश जो भारी होने के कारण नीचे बैठ जाता है। कल्क। (सेडिमेन्ट)

तलछटी—वि० [हि० तल-छट+ई (प्रत्य०)] १ तल-छट-सबधी। २ जिसमे तल-छट हो।

तलना—स० [स० तरण=तिराना] पिघले हुए गरम स्निग्ध द्रव्य मे कोई खाद्य-वस्तु छोडकर पकाना। जैसे—पापड, पकौडे या पूरियाँ तलना।

तलप*—पु०=तल्प।

तल-पट—पु० [मध्य० स०] आय-व्यय फलक।
वि० [हि० तले+पट] चौपट। नष्ट। बरबाद। उदा०—कही न मुफ्त मे देखो य माल तलपट हो।—नासिख।

तलपना†—अ०=तडपना।

तलफ—वि० [अ०] [भाव० तलफी] नष्ट। बर्बाद।

तलफना†—अ०=तडपना।

तलफाना†—स०=तडपाना।

तलफी—स्त्री० [फा०] १ तलफ अर्थात् नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश। बरबादी। २ नुकसान। हानि।
पद—हक-तलफी। (दे०)

तलफ्फुज—पु० [अ०] अक्षरो तथा शब्दो का उच्चारण।

तलब—स्त्री० [अ०] १ खोज। तलाश। २ प्राप्त करने की इच्छा।
मुहा०—तलब करना=किसी मे अधिकारपूर्वक कुछ माँगना।
३ आवश्यकता। ४ बुलाना। बुलाहट। उदा०—आवै तलब बाधि लै चालै बहुरि न करिहे फेरा।—कबीर। ५ तनख्वाह। वेतन।

तलबगार—वि० [फा०] १ तलब करने या चाहनेवाला। २ माँगनेवाला।

तलबाना—पु० [फा० तल्बान] १ गवाहो को कचहरी मे तलब करने अर्थात् बुलाने के लिए अदालत के अधिकारी के पास जमा किया जानेवाला व्यय। २ वह अर्थदड जो जमीदार को समय पर मालगुजारी न जमा करने पर भरना पड़ता था।

तलबी—स्त्री० [अ०] १ बुलाहट। २ माँग।

तलबेली—स्त्री० [हि० तलफना] १ कुछ प्राप्त करने के लिए मन मे होनेवाली व्यग्रता। छटपटी। २ विकलता। बेचैनी।

तल-मल—पु० [मध्य० स०] तल-छट। तलौछ।

तलमलाना*—अ० [भाव० तलमलाहट] दे० 'तिलमिलाना'।

तलव—पु० [स० तल√वा (गति) +क] गानेवाला। गवैया।

तलव-कार—पु० [ष० त०] १. सामवेद की एक शाखा। २ एक उपनिषद्।

२—६६

तलवा—पु० [स० तल] पैर के बिलकुल नीचे का वह चिपटा अश जो खडे होने और चलने के समय जमीन पर पडता है। पद-तल।
मुहा०—तलवा (या तलवे) खुजलाना=तलवे (या तलवो) मे खुजली होना जो लोक मे इस बात का सूचक माना जाता है कि शीघ्र ही कोई यात्रा करनी पडेगी या कही बाहर जाना पडेगा। **तलवा (या तलवे) न टिकना**=एक जगह कुछ देर बैठे न रहा जाना। बराबर इधर-उधर आते-जाते या घूमते रहना। **चलते-चलते तलवे चलनी या छलनी होना**=इतनी अधिक दौड-धूप करना कि पैरो मे दम न रह जाय। **(किसी के) तलवे चाटना**=किसी को प्रसन्न करने के लिए उसकी छोटी-से छोटी सेवाएँ करना। **(किसी के) तलवे धो-धो कर पीना**=अत्यत सेवा-शुश्रूषा करना। अत्यत प्रेम प्रकट करना। **(किसी के) तलवे सहलाना**=प्रसन्न करने के लिए बहुत ही दीन बनकर सभी तरह की सेवाएँ करना। **(कोई चीज) तलवो तले मेटना**=कुचल कर नष्ट करना। रौद डालना। (स्त्री०) **(कोई बात) तलवो तले मेटना**=पूरी तरह से अवज्ञा या उपेक्षा करना। तुच्छ या हेय समझना। **(किसी के) तलवो से आँखे मलना**=दीन भाव से बहुत अधिक आदर-सत्कार और सेवा-शुश्रूषा करना। **(कोई चीज) तलवो से मलना**=पैरो से कुचल या रौदकर नष्ट करना। **(कोई बात देख या सुनकर) तलवों से लगना, सिर मे जाकर बुझना**=इतना अधिक क्रोध चढना कि मानो सारा शरीर जल रहा हो। नीचे से ऊपर तक सारा शरीर जल जाना। (कभी-कभी इस मुहावरे का सक्षिप्त रूप होता है—तलवो से लगना, जैसे—उसकी बाते सुनकर मुझे तो तलवो से (आग) लग गई।)

तलवार—स्त्री० [स० तरवारि] लोहे का एक लबा धारदार प्रसिद्ध हथियार जिसके आघात से प्राणियो के अग काटकर अलग किये जाते अथवा सिर काटकर उनकी हत्या की जाती है।
मुहा०—तलवार करना=तलवार की सहायता से युद्ध या वार करना। तलवार चलाना। **तलवार कसना**=तलवार का फल झुकाकर उसके लोहे की उत्तमता की परीक्षा करना। **(किसी को) तलवार का पानी पिलाना**=तलवार से आघात या वार करना। **तलवार की छाँह (या छाहो) मे**=ऐसी स्थिति मे जहाँ चारो ओर अपने सिर पर नगी तलवारे ही दिखाई देती हो। **(किसी को) तलवार के घाट उतारना**=तलवार का आघात करके प्राण लेना। **तलवार खींचना**=आघात या वार करने के लिए म्यान से तलवार बाहर निकालना। **तलवार तौलना**=भरपूर वार करने के लिए तलवार ठीक ढग से ऊपर उठाना। **तलवार पर हाथ रखना (या ले जाना)**=तलवार से वार या आघात करने को उद्यत होना। **तलवार बाँधना**=इस उद्देश्य से तलवार सदा अपनी कमर मे लटकाये रखना कि जब आवश्यकता हो, तब उसका उपयोग किया जा सके। **तलवार सौंतना**=तलवार तौलना। (देखे ऊपर)
पद—तलवार का खेत=लडाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र। **तलवार का छाला**=तलवार के फल पर उभरा हुआ चिह्न या दाग। **तलवार का डोरा**=तलवार की धार या बाढ जो डोरे या सूत की तरह जान पडती है। **तलवार का पट्टा या पट्ठा**=तलवार का चौडा फल। **तलवार का पानी**=तलवार की चमकीली रगत जो उसके बढिया होने की सूचक होती है। **तलवार का फल**=मूठ के आगे का सारा भाग। **तलवार का बल**=तलवार के फल का टेढापन जो काट करने मे

सहायक होता है। **तलवार का बाट**=तलवार मे वह स्थान जहाँ से उसका टेढापन आरंभ होता है। **तलवार का मुँह**=तलवार की धार। **तलवार का हाथ**=(क) तलवार का आघात। (ख) तलवार चलाने का ढग या प्रकार। **तलवार की आँच** =तलवार का आघात या वार। **तलवार की माला**= तलवार की मूठ और फल का वह जोड जो दुवाले के पास होता है।

तलवारिया—पु० [हि० तलवार] वह व्यक्ति जो अच्छी तरह तलवार चलाना जानता हो।

तलवारी—वि० [हि० तलवार] तलवार-सबधी। जैसे—तलवारी हाथ।

तलहटी—स्त्री० दे० 'तराई'।

तलहा†—वि० [हि० ताल] ताल-सबधी। ताल का या ताल मे होनेवाला। वि० [हि० तल] तल अर्थात् नीचेवाले भाग मे होने या रहनेवाला।

तलांगुलि—स्त्री० [स० तल-अगुलि, ष० त०] पैर की उँगली।

तला—पु० [स० तल] १=तल (पेंदा)। २ तलवा। ३ जूते के नीचे का वह चमडा जो चलते समय जमीन पर पडता है।

तलाई—स्त्री० [हि० ताल] छोटा ताल। तलैया।
स्त्री० [हि० तलना] तलने की क्रिया, भाव और मजदूरी।
स्त्री० [हि० तलाना] तलाने का भाव या मजदूरी।

तलाउ†—पु०=तलाव।

तलाक—पु० [अ०] १ पति और पत्नी का विधि या नियम के अनुसार वैवाहिक सबधो का होनेवाला पूर्ण विच्छेद। २ बोल-चाल मे, किसी चीज को सदा के लिए छोड या त्याग देने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।

तलाची—स्त्री० [स०] चटाई।

तलातल—पु० [स० तल-अतल, प० त०] पुराणनुसार सात पातालो मे से एक।

तलाफी—स्त्री० [अ० तलाफी] क्षति-पूर्ति।

तलाब†—पु०=तालाब।

तलाबेली—स्त्री०=तलबेली (बेचैनी)।

तलामली†—स्त्री०=तलाबेली (तलबेली)।

तलाव—पु० [हि० तलना] तलने की क्रिया, ढग या भाव।
†पु० [स० तल्ल] तालाब।

तलाश—स्त्री० [तु०] १ किसी खोई हुई अथवा लुप्त वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने का काम। अन्वेषण। खोज। २ किसी नई चीज या बात का पता लगाने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ३ आवश्यकता की पूर्ति के लिए होनेवाली चाह।

तलाशना—स० [फा० तलाश] १ तलाश करना। खोजना। ढूँढना। २ किसी बात या विषय का अनुसधान करना।

तलाशा—स्त्री० [स०] एक तरह का पेड।

तलाशी—स्त्री० [फा०] १ तलाश करने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। २ अवैध रूप से छिपाई गई वस्तु का पता लगाने के लिए किसी सदिग्ध व्यक्ति के शरीर, घर आदि की होनेवाली देख-भाल।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।

तलि†—क्रि० वि०, पु० हि० मे तले का एक रूप। उदा०—तलि कर साखा उपरि करि मूल।—कबीर।

तलिका—स्त्री० [स० तल+ठन्—इक+टाप्] पशुओ विशेषत घोडो के मुँह पर बाँधी जानेवाली वह थैली जिसमे दाना आदि भरा होता है। तोबडा।

तलित्—स्त्री० [स०=तडित्, ड—ल] दे० 'तडित्'।

तलित—भू० कृ० [हि० तलना से ?] तला हुआ।

तलिन—वि० [स०√तल्+इनन्] १ दुबला-पतला। २ जीर्ण-शीर्ण। टूटा-फूटा। ३ इधर-उधर छितरा या फैला हुआ। विरल। ४ कम। थोडा। ५ साफ। स्वच्छ।
स्त्री० शय्या। सेज।

तलिम—पु० [स०√तल्+इमन्] १ छत। पाटन। २ खाट या पलग। शय्या। ३ चँदोआ। ४. खाँगा। ५ बडी छुरी। छुरा। ६. जमीन पर का पक्का फर्श।

तलिया—स्त्री० [स० तल] समुद्र की थाह। (डिं०)

तली—स्त्री० [स० तल] १ तल। पेंदा। २ हाथ और पैर का तल। जैसे—हाथ की तली, पैर की तली। ३ पूजन आदि के समय पैर की तली के नीचे रखा जानेवाला पैसा। ४ दे० 'तलछट'।

तलुआ†—पु०=तालू।

तलुन—पु० [स०√तृ (गति)+उनन्] १ वायु। हवा। २ जवान आदमी। मरद।

तले—क्रि० वि० [स० तल] १ किसी चीज के तल या नीचेवाले भाग मे। २ किसी ऊँची या ऊपर टँगी हुई वस्तु से नीचे।
पद—तले-ऊपर—(क) एक के ऊपर दूसरा। (ख) उलट-पलट किया हुआ। **तले-ऊपर के**=ऐसे दो बच्चे जिनमे एक दूसरे के ठीक बाद उत्पन्न हुए हो। **तले-ऊपर होना**=उलट-पलट हो जाना। विश्रृखल होना। **(किसी के साथ) तले-ऊपर होना**=प्रसग या सभोग करना। **(जी) तले-ऊपर होना**=(क) घबराहट या विकलता होना। (ख) जी मिचलाना। मितली होना।
३ किसी के वश या शासन मे। जैसे—इस अधिकारी के तले पाँच आदमी काम करते है।

तलेक्षण—पु० [स० तल-ईक्षण, ब०स०] सूअर (जन्तु)।

तलेटी—स्त्री० [स० तल] १=पेंदी। २=तलहटी (तराई)।

तलैंड—वि० [स० तल] १ तल मे होने या नीचे रहनेवाला। २ तुच्छ। हीन।

तलैचा—पु० [हि० तले] वास्तु शास्त्र मे, छत और मेहराब के बीच का भाग या रचना।

तलैया—स्त्री० [हि० ताल] छोटा ताल या तालाब।

तलोदर—वि० [स० तल-उदर, ब०स०] [स्त्री० तलोदरी] तोंदवाला।

तलोदरी—स्त्री० [स० तलोदर+ङीष्] स्त्री। भार्या।
वि० 'तलोदर' का स्त्री० रूप।

तलोदा—स्त्री० [स० तल-उदक, ब०स०, उदादेश] नदी।

तलौंछ—स्त्री० [स० तल=नीचे] द्रव पदार्थ के पात्र के तल मे जमी हुई मैल। तल-छट।

तलौवन—पु० [अ०] १ मत, विचार, सिद्धात, स्थिति आदि मे होनेवाला परिवर्त्तन। २ किसी बात या विचार पर स्थिर न होने का भाव।

तल्क—पु० [स०√तल्+कन्] वन। जगल।

तल्ख—वि० [फा० तल्ख] [भाव० तल्खी] १ (पदार्थ) कड्आ। कटु। २. (स्वभाव) जिसमे कटुता, चिडचिडापन आदि बाते अधिक हो।

तल्प—पु० [स०√तल+पक्] १ पलग। सेज। शय्या। २ बिछौना। बिस्तर। उदा०—दूर्वादल हो तल्प तुम्हारा।—पत। ३ मकान का ऊपरी खड। ४ अटारी।

तल्पक—पु० [स० तल्प+कन्] १ पलग। २ पलग पर बिस्तर करनेवाला सेवक।

तल्प-कीट—पु० [मध्य०स०] पलग मे रहनेवाला कीडा। खटमल।

तल्पज—पु० [स०तल्प√जन् (उत्पन्न होना)+ड] क्षत्रज पुत्र।

तल्पन—पु० [स० तल्प+क्विप् (नाम धातु)+ल्युट्—अन] १ हाथी की पीठ। २ हाथी की पीठ का मास।

तल्पल—पु० [स० तल्प√ला (लेना)+क] हाथी की रीढ।

तल्ल—पु० [स० तत्√ली (लीन होना)+ड] १ बिल। विवर। २ गड्ढा। ३ ताल। तालाब।

तल्लज—वि० [स० तत्√लज् (कान्ति)+अच्] उत्तम। श्रेष्ठ।

तल्लह—पु० [स० तल्ल√हा (त्यागना)+क] कुत्ता।

तल्ला—पु० [स० तल] १ तल। पेदा। २ जूते मे चमडे का वह अश या भाग जो तलवे के नीचे रहता है और जमीन पर पडता है। तला। ३ किसी प्रकार की दोहरी चीज मे तले या नीचे की परत या पल्ला। ४. कपडे मे लगाया जानेवाला अस्तर। ५ निकटता। समीपता।

पु० [स० तल्प] मकान का कोई खड या मजिल। जैसे—तीन तल्ले का मकान।

तल्लिका—स्त्री० [स० तल्ल+कन्—टाप्, इत्व] ताले की कुजी। ताली।

तल्ली—स्त्री० [स० तत्√लस् (शोभित होना)+ड—ङीष्] १ तरुणी। युवती। २ नौका। नाव। ३ वरुण की पत्नी का नाम।

स्त्री० [स० तल] १ जूते का तल्ला। तला। २ दे० 'तल-छट'।

तल्लीन—वि० [स०तत्-लीन, स०त०] जो किसी काम या बात के सपादन मे दत्तचित्त होकर लगा हो। मग्न।

तल्लुआ—पु० [देश०] मध्य युग मे गाढे या सल्लम की तरह का एक प्रकार का मोटा कपडा। तुकरी। महमूदी।

तल्लो†—पु० [स० तल] जाँते का नीचेवाला पाट।

तल्वकार—पु०=तलवकार।

तवँचुर*—पु० [स० ताम्रचूड, हि० तमचुर] मुर्गा।

तव—सर्व० [स०] तुम्हारा।

तवक्का—स्त्री० [अ० तवक्कुअ] आशा। भरोसा।

तवक्कुफ—पु० [अ० तवक्कुफ] १ देर। बिलब। २ ढील।

तव-क्षीर—पु० [स०√तु (पूर्ति)+अच्, तव-क्षीर, ब० स०, फा० तबाशीर] १ तीखुर। २ वशलोचन।

तवक्षीरी—स्त्री० [स० तवक्षीर+ङीप्] कनकचूर जिसकी जड से एक प्रकार का तीखुर बनता है। अबीर इसी तीखुर का बनता है।

तवज्जह—स्त्री० [अ०] १ कोई कार्य या बात जानने, समझने, सीखने, सुनने आदि के लिए उसकी ओर एकाग्रचित्त होकर दिया जानेवाला ध्यान।

क्रि० प्र०—देना।

२. अनुग्रह या कृपा की दृष्टि और व्यवहार।

तवन*—स्त्री० [स० तपन] १ तपन। २ गरमी। ताप। ३ अग्नि। आग।

†सर्व०=वह।

तवना—अ० [स० स्तवन] स्तुति करना। उदा०—स्त्री पति कृण सुमति तूझ गुण जुतवति।—प्रिथीराज।

†अ० [स० तपन] १ तपना। उदा०—साँसो का पाकर वेग देश की हवा तवी सी जाती है।—दिनकर। २ दुखी या पीडित होना। ३ गुस्से से लाल होना। ४ तेज या प्रताप दिखलाना।

†स०=तपाना।

तवनी—स्त्री० [हि० तवा] छोटा और हलका तवा। तई।

तवर—पु०=तोमर (क्षत्रियो का कुल)।

तवरक—पु० [स० तुवर] जलाशयो के किनारे होनेवाला एक तरह का पेड।

तवराज—पु० [स०√तु (पूर्ति)+अच्, तव√राज् (शोभित होना)+अच्] तुरजवीन। यवास शर्करा।

तवर्ग—पु० [ष०त०] देवनागरी वर्ण-माला के त, थ, द, ध और न इन पाँचो वर्णो का वर्ग या समूह।

तवलची†—पु०=तवलची।

तवल्ला†—पु०=तबला।

तवा—पु० [हि० तवना=जलना] [स्त्री० अल्पा० तई, तवी, तौई, तोनी] १ लोहे की चादर का बना हुआ गोलाकार छोटा टुकडा जिस पर रोटी आदि पकाई जाती है।

मुहा०—तवा सिर से बाँधना=(क) बडे-बडे आघात या प्रहार सहने के लिए तैयार होना। (ख) अपने को खूब दृढ और सुरक्षित करना। **तवे का हँसना**=तवे के नीचे जमी हुई कालिख का तपकर लाल हो जाना और चमकने लगना जो घर मे लडाई-झगडा होने का सूचक समझा जाता है।

पद—तवे की बूँद=(क) इतना अल्प या कम जो तवे पर पडी हुई घी, तेल या पानी की बूँद के समान हो और तुरत समाप्त हो जाय। (ख) बहुत ही अस्थायी और नश्वर। **तवे सा मुँह**=तवे के नीचेवाले भाग की तरह काली और कुरूप आकृति।

२ उक्त आकार-प्रकार का लोहे का बहुत बडा गोल टुकडा। ३ मिट्टी या खपडे का गोल ठीकरा जो चिलम मे तमाकू के ऊपर और अगारों या आग के नीचे रखा जाता है।

पु० [?] एक प्रकार की लाल मिट्टी जो प्राय हीग मे मिलावट करने के काम आती है।

तवाई†—स्त्री० [हि० ताव=ताप] १ ताप। २ लू।

तवाखीर—पु० [स० त्वक्क्षीर या तवक्षीर] १ तवाशीर। तीखुर। २ वशलोचन।

तवाजा—स्त्री० [अ० तवाज] आदर-सत्कार। खातिरदारी।

तवाना—वि० [फा०] मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।

†स० [हि० तवा] ढक्कन चिपका या बैठाकर बरतन का मुँह बन्द करना।

†स०=तपाना।

तवायफ—स्त्री० [अ०] गाने-नाचने का पेशा करनेवाली वेश्या।

तवारा—पु० [स० ताप, हि० ताव] १ अत्यधिक गरमी। २ अत्यधिक गर्मी के कारण होनेवाला कष्ट। ३ जलन।

तवारीख—स्त्री० [अ०] इतिहास। (दे०)

तवारीखी—वि० [अ०] ऐतिहासिक।

तवालत—स्त्री० [अ०] १ तवील अर्थात् लबे होने की अवस्था या भाव। लबाई। २ किसी काम मे होनेवाली ऐसी झझट या बखेडा जिससे उसके सपादन मे प्राय व्यर्थ का विस्तार हो या अधिक समय लगे।

तविष—पु० [स०√तु (पूर्ण करना)+टिषच्] १ स्वर्ग। २ समुद्र। सागर। ३ बल। शक्ति। ४ रोजगार। व्यवसाय।
वि० १ पूज्य और बडा। वृद्ध। २ महत्त्वपूर्ण या महान्। ३ बलवान। शक्तिशाली।

तविषी—स्त्री० [स० तविष+डीष्] १ पृथ्वी। २ शक्ति। ३ नदी। ४ इन्द्र की एक कन्या।

तवी—स्त्री० [हि० तवा] १ छोटा तवा। २ ऊँचे किनारोवाली थाली की तरह का लोहे का वह पात्र जिसमे इमरती, जलेबी आदि तली जाती है।

तवीयन—पु० तबीब (चिकित्सक)।

तवीष—पु० [स०=तविष] १ स्वर्ग। २ समुद्र। ३ सोना।

तवेला†—पु०=तबेला।

तशखीस—स्त्री० [अ०] १ अच्छी तरह की जानेवाली जाँच-पडताल या उसके फलस्वरूप होनेवाला निश्चय। २ लक्षण आदि देखकर की जानेवाली रोग की पहचान। निदान।

तशद्दुद—पु० [अ०] १ आक्रमण। २ किसी के प्रति किया जानेवाला कठोर या कष्टदायक व्यवहार।

तशरीफ—स्त्री० [अ०] १ महत्त्व। बडप्पन। २ बडो के व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे सम्मानसूचक सज्ञा। जैसे—(क) तशरीफ रखिए या लाइए=पधारिये या विराजिए। (ख) आप भी वहाँ तशरीफ ले गये थे? अर्थात् पधारे थे।

तश्त—पु० [फा०] १ थाली के आकार का हल्का छिछला बरतन। बडी रिकाबी। २ परात। ३ वह पात्र जिसमे मल-त्याग किया जाता है। गमला।

तश्तरी—स्त्री० [फा०] धातु की चादर की बनी हुई छोटी, चिपटी तथा छिछली थाली।

तष्ट—वि० [स०√तक्ष् (छीलना)+क्त] १ छीला हुआ। २ कूटा, दला या पीसा हुआ। ३ पीटा हुआ।

तष्टा (ष्टृ)—पु० [स०√तक्ष् +तृच्] १ छीलनेवाला। २ काट-छाँट कर गढनेवाला। २ कूटने, दलने या पीसनेवाला।
पु० १ विश्वकर्मा। २ एक आदित्य या सूर्य का नाम।
पु० [फा० तश्त] ताँबे की एक प्रकार की छोटी रिकाबी जिसमे पूजन की सामग्री रखते अथवा छोटी मूर्तियो को स्नान कराते है।

तस—वि० [स० तादृश, प्रा० तारिस, पु० हि० तइस] तैसा। वैसा।
पद—जस का तस=ज्यो का त्यो। जैसा था, वैसा ही।

तसकर†—पु०=तस्कर।

तसकीन—स्त्री० [अ० तस्कीन] ढाढस। सात्वना।

तसगर—पु० [देश०] ताने मे नौलक्खी के पास की दो लकडियो मे से एक। (जुलाहे)

तसगीर—स्त्री० [अ० तस्गीर] १ हलका या छोटा रूप देने की क्रिया या भाव। सक्षेपण। २ उक्त प्रकार से दिया हुआ रूप। सक्षेप।

तसदीक—स्त्री० [अ० तस्दीक] १ सच्चे होने की अवस्था या भाव। सचाई। सत्यता। २ इस बात की जाँच और निर्णय कि जो कुछ सामने रखा या लगाया गया है, वह वस्तुत वही है जो होना चाहिए। जैसे—दस्तावेज या उस पर के दस्तखत की तसदीक। ३ किसी बात की सत्यता के सम्बन्ध मे किया जानेवाला समर्थन। ४ गवाही।

तसदीह—स्त्री० [अ० तस्दीअ] १ कष्ट। तकलीफ। २ झझट। बखेडा। ३ परेशानी।

तसद्दुक—पु० [अ०] १ सदके अर्थात् निछावर करने की क्रिया या भाव। २ सदके या निछावर की हुई चीज। ३ कुरबानी। बलिदान।

तसनीफ—स्त्री० [अ० तस्नीफ] किसी प्रकार की साहित्यिक कृति या रचना।

तसफीया—पु० [अ० तस्फिय] १ फैसला। २ समझौता।

तसबी*—स्त्री०=तसबीह।

तसबीह—स्त्री० [अ० तस्बीह] वह जप-माला या सुमिरनी जो मुसलमान लोग ईश्वर का नाम लेने के समय फेरते है।
मुहा०—तसबीह फेरना=नाम की माला जपना। जप करना।

तसमा—पु० [फा० तस्म] कोई चीज कसकर बाँधने के लिए उसमे लगा या लगाया हुआ चमडे, सूत आदि का फीता या डोरी। जैसे—जूते का तसमा।
मुहा०—तसमा खींचना=मध्ययुग मे तसमा लपेटकर किसी-किसी का गला घोटना और उसकी हत्या करना।

तसला—पु० [फा० तश्त+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० तसली] खडी तथा ऊँची दीवारवाला एक तरह का गोल पात्र जिसमे तरकारी, दाल आदि पकाई जाती है।

तसलीम—स्त्री० [अ० तस्लीम] १ कोई बात मान लेने या कोई आदेश पालन करने की क्रिया या भाव। २ किसी का महत्त्व मानते हुए किया जानेवाला अभिवादन। नमस्कार। सलाम।

तसल्ली—स्त्री० [अ०] ऐसी बात जिससे किसी निराश या हतोत्साह व्यक्ति का धैर्य बँधता हो। ढाढस। सात्वना।

तसवीर—स्त्री० [अ०] १ वह कलापूर्ण रचना जिससे किसी वस्तु के बाहरी आकार-प्रकार या स्वरूप का ज्ञान होता हो। चित्र। (दे०)
क्रि० प्र०—उतारना।—खीचना।—बनाना।
२ किसी घटना या स्थिति की यथार्थता बतलानेवाला विवरण।
वि० बहुत सुन्दर।

तसी†—स्त्री० [देश०] ऐसा खेत जो बोये जाने से पहले तीन बार जोता गया हो।

तसु—सर्व० [स० तस्य] उसका। उसके। उदा०—जुआलि नालि तसु गरभ जेहवी।—प्रिथीराज।

तसू—पु० [स० त्रि+शूक=जौ की तरह का एक अन्न] प्रायः सवा इच के बराबर की एक देशी नाप।

तस्कर—पु० [स० तद्√कृ (करना)+अच्, (नि० सुट् द-लोप)] १ दूसरों

की चीजें चुरानेवाला। चोर। २ चोर नामक गन्ध-द्रव्य। ३ सुनने की इन्द्रिय। कान। ४ मदन नाम का वृक्ष। मैनफल। ५ बृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार के केतु जो बुध ग्रह के पुत्र माने गये है और जिनकी सख्या ५१ कही गई है।

तस्करता—स्त्री०[स० तस्कर+तल्—टाप्] तस्कर का कार्य या भाव। चोरी।

तस्कर-स्नायु—पु०[ब०स०] काकनासा लता।

तस्करी—स्त्री० [स० तद्√कृ+ट—ङीप्] १ चोर की स्त्री। २ चोर स्त्री। चोरनी। ३ चोरी।

तस्थु—वि०[स०√स्था (ठहरना)+कु, द्वि०] एक ही स्थान पर दृढता-पूर्वक स्थित रहनेवाला। अचल।

तस्नीफ—स्त्री०=तसनीफ।

तस्बीह—स्त्री०=तसबीह।

तस्मा—पु०=तसमा।

तस्मात्—अव्य०[स०] इसलिए। अत।

तस्य—सर्व०[स०] उसका।

तस्लीम—स्त्री०=तसलीम।

तस्वीर—स्त्री०=तसवीर।

तस्सू—पु०=तसू।

तहँ—क्रि० वि०[हि० तहाँ] उस स्थान पर। वहाँ।

तहँवाँ—क्रि० वि०=तहाँ (वहाँ)।

तह—स्त्री०[फा०]१ कागज, कपडे आदि के बडे टुकडे का वह अश जो मोडने पर उसके दूसरे अश के ऊपर या नीचे पडता हो। परत। जैसे—इस कपडे की चार तहे लगाओ।

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—लगाना।

मुहा०—तह करना=किसी फैली हुई (चद्दर आदि के आकार की) वस्तु के भागो को कई ओर मे मोड और एक दूसरे के ऊपर लाकर उस वस्तु को समेटना। चौपरत करना। **तह कर रखना**=छिपा या दबाकर रोक रखना। (व्यग्य) जैसे—आप अपनी लियाकत तह कर रखिए। **(किसी चीज पर) तह चढाना या देना**=(क) लेप आदि के रूप मे ऊपर परत या स्तर चढाना या जमाना। (ख) हलका रग चढाना।

२ किसी पदार्थ का बिलकुल नीचेवाला भाग या स्तर। **जैसे**—(क) किसी बात की तह तक पहुँचना। (ख) गिलास की तह मे मिट्टी जमना या बैठना।

मुहा०—(किसी बात की) तह तोडना=मूल आधार नष्ट करना। जैसे—झगडे या बखेडे की तह तोडना। **(कूएँ की) तह तोडना**=कूआँ साफ करने के लिए या उसकी मरम्मत करने के लिए उसका सारा पानी बाहर निकाल देना। **(किसी चीज की) तह देना**=नीचे का या मूल स्तर प्रस्तुत या स्थापित करना। जैसे—फुलेल मे मिट्टी के तेल की तह दी जाती है। **(जानवरो की) तह मिलाना**=सभोग के लिए नर और मादा को एक साथ रखना।

पद—तह का सच्चा=वह कबूतर जो बराबर सीधा अपने छत्ते पर चला आवे, अपना स्थान न भूले। **तह की बात**=(क) अन्दर की, छिपी हुई या रहस्य की बात। (ख) यथार्थ ज्ञान या तत्त्व की बात।

३ पानी के नीचे की जमीन। तल। ४ बहुत पतला या महीन पटल। झिल्ली।

क्रि० प्र०—जमना।—बैठना।

तहकीक—स्त्री० [अ०] १ यथार्थता, वास्तविकता या सत्यता। २ यथार्थता या सत्यता के सम्बन्ध मे होनेवाली छान-बीन या जाँच-पडताल। ३ जिज्ञासा। पूछ-ताछ।

तहकीकात—स्त्री० [अ० 'तहकीक' का बहु०] यथार्थता या सत्यता का पता लगाने के लिए की जानेवाली छान-बीन या जाँच-पडताल।

तहखाना—पु०[फा०] किसी मकान, महल आदि का वह कमरा जो आस-पास की जमीन या उस मकान की कुरसी के नीचे पडता हो।

तहजीब—स्त्री०[अ०]१ किसी चीज को दर्शनीय और सुन्दर बनाने का काम। २ शिष्टाचार। ३ सभ्यता। (देखे)

तहत—पु०[अ०] १ अधिकार। वश। २ अधीनता। मातहती।

तह-दरज—वि०[फा०] (कपडा) या और कोई पदार्थ जिसकी तह अभी तक न खुली हो अर्थात् जिसका उपयोग या व्यवहार न हुआ हो। बिलकुल नया।

तहना†—अ०[हि० तेह] तेहा दिखाना। क्रुद्ध होना।

तहनिशाँ—पु०[फा०] १ लोहे पर सोने, चाँदी आदि की की हुई पच्चीकारी। २ उक्त प्रकार से पच्चीकारी करने का काम।

तहपेच—पु०[फा०] वह कपडा जिसे पहले सिर पर लपेटकर उपर से पगडी बाँधी जाती है।

तह-बाजारी—स्त्री०[फा०] हाट, बाजार, सट्टी आदि मे दुकान लगानेवालो से लिया जानेवाला कर।

तहमत—पु०[फा० तहबद या तहमद] कमर मे लपेटी जानेवाली लूगी।

तहम्मुल—पु०[अ०] बरदाश्त करने या सहने की शक्ति। सहनशीलता।

तहरा—पु०=ततहँडा।

तहरी—स्त्री०[अ० ताहिरी=ताहिर नामक व्यक्ति का?] १ चावलो की वह खिचडी जो चने, मटर, पेठे की बरी आदि मिलाकर बनाई जाती है। उदा०—तहरी पाकि लोनि और बरी।—जायसी। २ कालीन बुनने के करघे मे की ढरकी।

तहरीक—स्त्री०[अ०]१ ऐसी क्रिया या बात जिससे किसी को बढावा मिलता हो अथवा वह उत्तेजित होता हो। २ प्रस्ताव।

तहरीर—स्त्री०[अ०]१ लिखाई। लिखावट। २ अक्षरो के रूप आदि के विचार से लिखने का ढग या शैली। ३ लिखी हुई चीज या बात। ४ लिखा हुआ कागज। लेख्य। ५ अदालतो मे मुहर्रिरो, मुशियो आदि को लिखने आदि के बदले मे दिया जानेवाला पारिश्रमिक या पुरस्कार। ६ कपडों पर होनेवाले गेरू की कच्ची छपाई जो कसीदा काढने के लिए की जाती है। (छीपी) ७ दे० 'खुलाई' (चित्रकला की)।

तहरीरी—वि०[फा०] जो तहरीर या लेख के रूप मे हो। लिखा हुआ। लिखित। जैसे—तहरीरी सबूत।

तहलका—पु० [अ० तहल्क =हलाक करना या मार डालना]? १ बहुत बडा उत्पात या उपद्रव। २ बहुत बडी खलबली या हलचल। जैसे—यह खून हो जाने से महल्ले भर मे तहलका मच गया है।

क्रि० प्र०—पडना।—मचना।

३ बरबादी। विनाश। (क्व०)

तहवाँ—अव्य०=तहाँ (वहाँ पर)।

तहवील—स्त्री०[अ०]१ किसी के हवाले या सुपुर्द करने की क्रिया या भाव। सपुर्दगी। २ अमानत। धरोहर। ३ वह स्थान जहाँ धन या रोकड रखी जाती हो।

तहवीलदार—पु०[अ० तहवील+फा० दार] वह जिसके पास तहवील रहती हो। खजानची।

तहस-नहस—वि०[अ० नहस] १ पूरी तरह से तोडा-फोडा या नष्ट किया हुआ। नष्ट-भ्रष्ट। २ ध्वस्त।

तहसील—स्त्री०[अ०]१ लोगो से चीजे या रुपए वसूल करने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार वसूल किया हुआ धन या पदार्थ। ३ आधुनिक भारत मे शासन की सुविधा के लिए जिले के विभक्त भागो मे से कोई एक जिसका प्रधान अधिकारी तहसीलदार कहलाता है। ४ तहसीलदार का कार्यालय।

तहसीलदार—पु०[अ० तहसील+फा० दार] १ भूमिकर या लगान तहसीलने, अर्थात् वसूल करनेवाला अधिकारी। २ आज-कल किसी तहसील (जिले के विभाग) का प्रधान अधिकारी।

तहसीलदारी—पु०[अ० तहसील+फा० दार+ई] तहसीलदार का काम, पद या भाव।

तहसीलना—स०[अ० तहसील] (कर, लगान, मालगुजारी, चदा आदि) वसूल करना। उगाहना।

तहाँ—क्रि० वि०[स० तत्+स्थान, प्रा० थाण, थान] उस स्थान पर। वहाँ।

तहाना—स०[हि० तह] कपडे, कागज आदि के वडे टुकडे की तहे या परते लगाना। तह करना।

तहाशा—पु०[अ०]१ परवाह। २ डर। भय।

तहियाँ—क्रि० वि०[स० तदाहि]१ उस समय। तब। २ वही।

तहियाना—स०=तहाना।

तही†—क्रि० वि०[हि० तहाँ] उसी जगह। वही।

तही—स्त्री०[हि० तह]१ तह। परत। २ एक के ऊपर एक करके रखी हुई चीजो का थाक।

क्रि० प्र०—लगाना।

३. किसी चीज का जमा हुआ थक्का।

तहोबाला—पु०[फा०] उलट-पुलट।

ता—प्रत्य०[स० तल् और टाप् प्रत्य० से निष्पन्न] एक प्रत्यय जिससे विशेषणो और सज्ञाओ के भाववाचक रूप बनाये जाते है। जैसे—विशेष से विशेषता, मानव से मानवता।

अव्य०[फा०]तक। पर्यन्त।

*सर्व[स० तद्] उस।

वि०=उस।

ताँई—क्रि० वि०=ताई।

ताँकना*अ०, स०=ताकना।

ताँगा—पु०=टाँगा।

ताँडव—पु०[स० तण्डु+अण्]१ वह बहुत ही उग्र और विकट नृत्य जो शिव जी प्रलय या ऐसे ही दूसरे महत्त्वपूर्ण अवसरो पर करते हैं। २ पुरुषो के द्वारा होनेवाला नृत्य (स्त्रियो के नृत्य या लास्य से भिन्न)। ३ उग्र ओर उद्धत नृत्य। ४ एक प्रकार का तृण।

ताडवी—पु०[स० ताडव+डीप्] सगीत के १४ तालो मे से एक।

ताडि—पु०[स० ताड्य+इञ्, यलोप] (तडि मुनि का निकाला हुआ) नृत्य-शास्त्र।

ताडी (डिन्)—पु०[स० ताड्य+इनि, यलोप],१ सामवेद की ताड्य शाखा का अध्ययन करनेवाला। २ यजुर्वेद के एक कल्प सूत्रकार का नाम।

ताड्य—पु०[स० तडि+यञ्]१ तडि मुनि के वशज। २. सामवेद के एक ब्राह्मण (भाग) की सज्ञा।

ताण*—पु०[हि० तानना] खिचाव।

ताँत—स्त्री०[स० ततु]१ पशुओ की अँतडियो, नसो आदि से अथवा चमडे को बटकर बनाई हुई पतली डोरी। २ धनुष की डोरी जो पहले प्राय उक्त प्रकार की होती थी। ३ डोरी। रस्सी। ४ सारगी आदि बाजो मे लगा हुआ तार। ५ जुलाहो की राछ।

वि० [स० त-अत, ब०स०] १ (शब्द) जिसके अत मे त हो। २ [√तम्(थकावट)+क्त] थका हुआ। श्रात।

ताँतडी—स्त्री०[हि० ताँत+डी (प्रत्य०)] ताँत।

पद—ताँतडी-सा=ताँत की तरह क्षीणकाय और लबा।

तातव—वि०[स० ततु+अञ्]१ ततु-सबधी। २ ततुओ से बना हुआ। ३ जिससे ततु या तार निकल अथवा बन सके।

ताँतवा—पु०[हि० आँत] एक रोग जिसमे आँत अडकोश मे उतर आती है। आँत उतरने का रोग।

ताँता—पु०[स० तति=श्रेणी]१ किसी काम, चीज या बात का कुछ समय तक लगातार चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—बरसनेवाले पानी का ताँता। २ निरन्तर एक के बाद एक घटना घटित होते चलने का भाव। जैसे—(क) मौतो का ताँता। (ख) बातो का ताँता। ३ जीवो या प्राणियो की कतार। पक्ति। जैसे—(क) आदमियो का ताँता। (ख) चिडियो का ताँता।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

मुहा०—ताता बाँधना=बहुत से लोगो का एक पक्ति मे खडा होना या खडा किया जाना।

ताँति†—स्त्री०=ताँत।

पु०=ताँती।

ताँतिया—वि०[हि० ताँत]१ ताँत-सबधी। २ ताँत की तरह क्षीणकाय और लबा।

ताँती—पु०[हि० ताँत]१ कपडा बुननेवाला। जुलाहा। २ जुलाहो की राछ।

स्त्री०[हि० ताँता] १ कतार। पक्ति। श्रेणी। २ बाल-बच्चे। औलाद। सन्तान।

तातुवायि—पु०[स० ततुवाय+इञ्] जुलाहे का लडका।

तान्त्रिक—वि०[स० तत्र+ठक्—इक] [स्त्री० तान्त्रिकी] १ तत्र-सबधी। २ तत्र-शास्त्र सबधी।

पु०१ वह जो तत्र-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो और तत्र-मत्र के प्रयोगो से सब काम सिद्ध करता हो। २ वैद्यक मे एक प्रकार का सन्निपात।

तांँदुल†—पु०=तदुल (चावल)।
तॉबई—वि० [हिं० ताँबा] ताँबे के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग।
तॉबा—पु० [स० ताम्र] लाल रग की एक प्रसिद्ध धातु जो खानो मे गधक, लोहे आदि के साथ मिली हुई मिलती है। इसमे ताप और विद्युत् के प्रवाह का सचार बहुत जल्दी और अधिक होता है। इसी लिए इसका प्रयोग प्राय इजनो और बिजली के काम मे होता है। भारत मे इसके अनेक प्रकार के पात्र भी बनते है जो धार्मिक दृष्टि से बहुत पवित्र माने जाते है।
पु० [अ० तअम] हिंसक पक्षियो को खिलाये जानेवाले मास के छोटे-छोटे टुकडे।
ताँबिया—वि० [हि० ताँबा] १ ताँबे का बना हुआ। २ ताँबे के रग का। ३ ताँबे से सबध रखनेवाला।
पु० चौडे मुँह का एक प्रकार का छोटा बरतन।
तॉबी—स्त्री० [हि० ताबा] १ ताँबे की बनी हुई एक प्रकार की करछी। २ छोटा ताँबिया।
ताबूल—पु० [स०√तम् (ग्लानि)+उलच्, बुक् आगम, दीर्घ] १ पान का पत्ता। २ पान का लगा हुआ बीडा। ३ मुख-शुद्धि के लिए भोजन के बाद खाई जानेवाली कोई सुगधित चीज। (जैन)
ताबूल-करंक—पु० [ष० त०] १ पान और उसके लगाने की सामग्री का बरतन। पानदान। २ पान के लगे हुए बीडे रखने की डिबिया। बिलहरा। पन-बट्टा।
ताबूल-नियम—पु० [ष०त०] पान, सुपारी, लवग, इलायची आदि रखने का नियम। (जैन)
ताबूल-पत्र—पु० [ष० त०] १ पान का पत्ता। २ अरुआ या पिडालू नाम की लता जिसके पत्ते पान के आकार के होते है।
ताबूल-बीटिका—स्त्री० [प० त०] लगे हुए पान का बीडा।
ताबूल-राग—पु० [मध्य० स०] १ पान की पीक। २ मसूर नामक कदन्न जिसकी दाल बनती है।
ताबूल-वल्ली—स्त्री० [ष० त०] पान की बेल। नागवल्ली।
ताबूल-वाहक—पु० [ष० त०] प्राचीन तथा मध्य काल मे राजा, नवाबो आदि का वह सेवक जो उनके साथ पानदान लेकर चलता था।
तांबूलिक—पु० [स० ताबूल+ठन्—इक] पान बेचनेवाला व्यक्ति। तमोली।
तांबूली (लिन्)—पु० [स० ताबूल+इनि] तमोली। पनवाडी।
स्त्री० [स० ताबूल+ङीष्] पान की बेल।
तॉबक [illegible]स्त्री० [हिं० ताँबा+फा० कारी] एक प्रकार का लाल रग।
ताँबेल—पु० [?] कच्छप। कछुआ।
तॉवर—पु०=ताँवरा।
तॉवरना—अ० [हिं० ताँवर] १ ताप से युक्त होना। तप्त होना। २ ज्वर के कारण शारीरिक तापमान अधिक होना। बुखार होना। ३ अधिक ताप के कारण मूर्च्छित या बेसुध होना। ४ क्रुद्ध या नाराज होना। बिगडना।
तॉवरा—पु० [स० ताप, हिं० ताव] १ शरीर का ताप नामक रोग। ज्वर। बुखार। २ जाडा देकर आनेवाला बुखार। जूडी। ३ बहुत अधिक गरमी या ताप। ४ गरमी आदि के कारण होनेवाली बेहोशी। मूर्च्छा। उदा०—रीतौ पर्‌यौ जबै फल चाख्यो उडि गयौ तूल तॉवरो आयो।—सूर।
तॉवरी—स्त्री०=तॉवरा।
ताँसना†—स० [स० त्रास] १ किसी को त्रास देना। डॉट-डपटकर डराना-धमकाना। २ अनुचित व्यवहार करके किसी को बहुत कष्ट देना और दुखी करना। सताना। जैसे—वह दिन भर अपनी बहू-बेटियो को तॉसती रहती है।
ताईं—अव्य० [हिं० तईं] १ किसी की ओर या किसी के प्रति। २ किसी के विषय या सबध मे। ३ निमित्त। लिए। वास्ते। उदा०—कीन्ह सिंगार मिलन के ताईं।—कबीर।
अव्य० [स० तावत् या फा० ता] १ तक। पर्यंत। २ निकट। पास।
ताई—स्त्री० [स० ताप, हिं० ताप+ई (प्रत्य०)] १ ताप। हलका ज्वर। हरारत। २ जाडा देकर आनेवाला बुखार। जूडी।
स्त्री० [हिं० ताया का स्त्री०] ताया अर्थात् पिता के बडे भाई की पत्नी।
†स्त्री०=तई (छोटा तवा)।
ताईत—पु०=तावीज (जन्तर)।
ताईद—स्त्री० [अ०] १ पक्षपात। तरफदारी। २ किसी के कथन, पक्ष, प्रस्ताव आदि का किया जानेवाला समर्थन।
पु० १ किसी के अधीन या साथ रहकर काम सीखनेवाला व्यक्ति। २ किसी मुख्तार या वकील का मुशी, मुहर्रिर या लेखक।
ताउ†—पु०=ताव।
ताउल†—स्त्री० [हि० उतावला] उतावली। जल्दी। उदा०—बहुत ताउल है तो छप्पर से मुँह पोछ।—खुसरो।
ताऊ—पु० [स० तात] [स्त्री० ताई] सबध के विचार से पिता का बडा भाई। ताया।
पद—बछिया का ताऊ=बैल की तरह निरा मूर्ख। गावदी।
ताऊन—पु० [अ०] एक प्रसिद्ध घातक और सक्रामक रोग जिसमे बुखार के साथ गिलटी निकलती है। प्लेग।
ताऊस—पु० [अ०] १ मोर। मयूर।
पद—तख्त-ताऊस। (देखे)
२ सारंगी की तरह का एक बाजा जिसके ऊपरी सिरे की आकृति मोर की तरह होती है।
ताऊसी—वि० [अ०] १ मोर-सबधी। मोर का। २ आकार, रूप आदि मे मोर की तरह का। ३ मोर के पर की तरह का ऊदा या बैंगनी।
पु० एक प्रकार का रग जो मोर के पर की तरह गहरा ऊदा, नीला या बैंगनी होता है। मोर-पखी।
ताक—स्त्री० [हि० ताकना] १ ताकने की क्रिया, ढग या भाव।
पद—ताक-झाँक। (देखे)
मुहा०—(किसी पर) ताक रखना=किसी के कामो, व्यवहारो आदि पर दृष्टि, ध्यान या निगाह रखना। देखते रहना कि क्या किया जाता है या क्या होता है।
२ स्थिर दृष्टि। टकटकी।

मुहा०—ताक बाँधना=टकटकी लगाकर या निगाह जमाकर देखते रहना।

३ स्वार्थ-साधन के विचार से आघात, लाभ आदि के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते हुए पूरा ध्यान रखना। घात।

मुहा०—(किसी की) ताक मे निकलना=किसी को ढूँढने या पाने के लिए कही जाना या निकलना **(किसी की) ताक मे रहना**=किसी पर आक्रमण, प्रहार आदि करने के लिए उपयुक्त अवसर, स्थान आदि की प्रतीक्षा करना। **ताक लगाना**=कही ठहर या बैठकर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते रहना। **ताक मे रहना**=उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करना। अवसर या मौका देखते रहना।

पु० [अ० ताक] १ दीवार की चुनाई मे प्राय चौकोर गड्ढे की तरह छोडा हुआ वह खाली स्थान जो छोटी-छोटी चीजे रखने के काम आता है। आला। ताखा।

मुहा०— ताक पर धरना या रखना=व्यर्थ समझकर पडा रहने देना या ध्यान न देना। जैसे—हमारी बाते तो तुम ताक पर रखते चलते हो। **ताक पर रहना या होना**=यो ही पडा रहना। किसी काम मे न आना। व्यर्थ जाना। जैसे—उनका यह हुकुम ताक पर ही रह जायगा। **ताक भरना**=मुसलमानो का एक धार्मिक कृत्य जिसमे वे किसी मसजिद या दूसरे पवित्र स्थान मे जाकर (मन्नत पूरी करने के लिए) वहाँ के ताको या आलो मे मिठाइयाँ, फल आदि रखते है और तब उन्हे प्रसाद के रूप मे लोगो को बाँटते है।

वि० १ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला। २ जिसके जोड या बराबरी का और कोई न हो। अद्वितीय। निरुपम। बेजोड। ३ जो सख्या मे समान हो अर्थात् जिसे दो से भाग देने पर पूरा एक बच रहे। विषम। जसे—३, ५, ७, ९ आदि ताक है, और ४, ६, ८, १० आदि जुफ्त या जूस है।

ताकजुफ्त—पु० [अ० ताक=विषम+फा० जुफ्त=जोडा] कौडियो से खेला जानेवाला जुस, ताक (देखे) नाम का खेल।

ताक-झाँक—स्त्री० [हि० ताकना+झाँकना] १ टोह लेने, ढूँढने, पाने आदि के उद्देश्य से रह-रहकर इधर-उधर बराबर ताकते या देखते और झाँकते रहने की क्रिया या भाव। २ छिपकर या औरो की दृष्टि बचाकर बुरे भाव से ताकने की क्रिया या भाव।

ताकत—स्त्री० [अ०] १ कोई काम कर सकने की शक्ति या सामर्थ्य। जैसे—(क) आँखो मे इतनी दूरी तक देखने की ताकत नही रही। (ख) इस कुरसी मे इतनी ताकत नही है कि वह तुम्हारा बोझ सह सके। २ शारीरिक या मानसिक बल। जैसे—बच्चे से नदी पार करने की या अँगरेजी बोलन की ताकत कैसे हो सकती है।

ताकतवर—वि० [फा०] जिसमे ताकत हो। शक्तिशाली। जैसे—वह दल इसकी अपेक्षा अधिक ताकतवर है।

ताकना—स० [स० तर्कण] १ तर्क या बुद्धि के द्वारा कोई बात जानना या समझना। (क्व०) २ देखना। ३ ध्यानपूर्वक या आँख गडाकर किसी की ओर देखना। ४ बुरे उद्देश्य या दुष्ट भाव से किसी की ओर देखना। उदा०—जे ताकहिं पर धन पर दारा।—तुलसी। ५ पहले से देखकर कुछ स्थिर करना। ६ अवसर की प्रतीक्षा या घात मे रहना। ७ आघात या वार करने के लिए लक्ष्य की ओर ध्यानपूर्वक देखना। उदा०—नावक सर से लाइकै तिलक तरुनिहत ताकि।—बिहारी। ८ देख-रेख या रखवाली करना।

ताकरी—स्त्री०=टाकरा (देश और लिपि)।

ताकि—अव्य० [फा०] इसलिए कि। जिसमे। जैसे—तुम यहीं बैठे रहो, ताकि यहाँ से कोई चीज गायब न होने पावे।

ताकीद—स्त्री० [अ०] कोई काम करने, न करने आदि के सबध मे जोर देकर या कई बार कही जानेवाली बात। जैसे—नौकर को ताकीद कर दो कि वह सौदा लेकर तुरन्त लौट आवे।

क्रि० प्र०—करना।

ताकोली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा।

ताख—पु० =ताखा।

वि०=ताक।

ताखडा—वि०=तगडा। (राज०)

ताखडी—स्त्री० [स० त्रि+हि० कडो] तराजू।

ताखा—पु० [अ० ताक] १ दीवार मे छूटा हुआ वह चौकोर स्थान जिसमे चीजे आदि रखी जाती है। आला। ताक। २ गत्ते पर लपेटा हुआ कपडे का थान।

ताखी—वि० [अ० ताक] (प्राणी) जिसकी एक आँख दूसरी आँख से आकार, रग, रचना आदि की दृष्टि से कुछ भिन्न हो।

ताग—पु०=तागा।

तागड—स्त्री० [देश०] रस्सो आदि की बनी हुई सीढी जिसके सहारे बडे-बडे जहाजो से समुद्र मे उतरा तथा चढा जाता है। (लश०)

तागडी—स्त्री० [हि० तागा+कडी] १ कमर मे बाँधने की डोरी। करधनी। २ एक तरह की करधनी जिसमे सोने-चाँदी आदि के घुँघुरू लगे रहते है।

तागना—स० [?] १ तागे से सीना या बखिया करना। पिरोना। २ रूईदार कपडो को बीच-बीच मे इसलिए मोटे डोरो से लबाई के बल सीना कि रूई इधर-उधर खिसकने न पावे।

ताग-पहनी—स्त्री० [हिं० ताग+पहनाना] करघे मे की एक लकडी जिससे बय मे तागा पहनाया जाता है।

ताग-पाट—पु० [हिं० तागा+पाट=रेशम] एक प्रकार का गहना जो रेशम के तागे मे सोने-चाँदी के टिकडे आदि पिरोकर बनाया जाता है और जो विवाह के समय पहना जाता है।

क्रि० प्र०—डालना।

विशेष—यह गहना प्राय वधू का जेठ उसे देता या पहनाता है।

तागा—पु० [स० तार्कव, प्रा० ताग्गो] १ वह पतला ततु जो ऊन, रूई, रेशम आदि को तकले आदि पर कातने से तैयार होता है। सूत २ इस प्रकार काते हुए ततुओ या सूतो को बटकर तैयार किया हुआ वह रूप जिससे कपडे सीये या मालाएँ आदि गूँथी जाती है।

मुहा०—कपडे मे तागा डालना=(क) सीये जानेवाले कपडे मे दूर-दूर पर कच्ची सिलाई करना। (ख) दे० 'तागना'।

३ जनेऊ। यज्ञोपवीत। ४ वह कर जो मध्य-युग मे घर के प्रति व्यक्ति के हिसाब से लिया जाता था।

ताछन—पु० [स० तक्षण] १ शत्रु का वार बचाने के निमित्त उसके बगल से होकर आगे बढना। कावा। २ घोडे का कावा काटना।

उदा०—उडत अमित गति कटि कटि ताछन।—पद्माकर।

ताछना*—अ० [हिं० ताछन] वार बचाने के लिए शत्रु के बगल से होकर आगे बढना।

ताज—पु० [अ०] बडे राजाओ या बादशाहो के पहनने का मुकुट। राज-मुकुट। २ गजीफे के पत्तो का एक रग जिसमे ताज या मुकुट की आकृति बनी रहती है। ३ अपने वर्ग मे सर्वश्रेष्ठ पदार्थ।
पद—ताज-महल। (देखे)
४ कलगी। तुर्रा। ५ मुरगे, मोर आदि कुछ विशिष्ट पक्षियो के सिर पर के खडे बाल। कलँगी। चोटी। शिखा। ६ मकान के ऊपरी भाग मे शोभा के लिए बनाई जानेवाली, छोटे बुर्ज के आकार की रचना। ७ दीवार के ऊपरी भाग मे शोभा के लिए बनाई जानेवाली उभारदार रचना। कँगनी। कारनिस। ८ दे० 'ताज महल'।
†पु०=ताजन (कोडा)।

ताजक—पु० [फा०] १ एक ईरानी जाति जो तुर्किस्तान के बुखारा प्रदेश से काबुल और बलोचिस्तान तक पाई जाती है। २ ज्योतिष का एक प्रसिद्ध ग्रथ जो पहले अरबी और फारसी भाषाओ मे था और जिसका भारत मे सस्कृत मे अनुवाद हुआ था। यह यवनाचार्य कृत माना जाता है।

ताजगी—स्त्री० [फा०] १ 'ताजा' होने की अवस्था, गुण या भाव। ताजापन। २ फूल-पौधो आदि का हरापन। ३ शिथिलता आदि दूर होने पर प्राप्त होनेवाली मन की प्रफुल्लता और स्वस्थता। जैसे—जरा छाँह मे बैठकर ठढी हवा खाओ, अभी थकावट दूर हो जायगी और ताजगी आ जायगी।

ताजदार—वि० [फा०] १ ताज के ढग का। २ जिसमे ताज की-सी आकृति या रचना बनी हो। जैसे—ताजदार कँगूरा।
पु० ताज पहननेवाला, अर्थात् बादशाह या बहुत बडा राजा।

ताजन—पु० [फा० ताजियाना] १ कोडा। चाबुक। २ दड। सजा।

ताजना—पु०=ताजन।

ताजपोशी—स्त्री० [फा०] १ नये राजा का पहले-पहल राज-सिहासन पर बैठने के समय ताज पहनने या राजमुकुट धारण करने का कृत्य या रीति। २ उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह।

ताजबीबी—स्त्री० [फा० ताज+बीबी] मुगलकालीन भारत सम्राट् शाहजहाँ की पत्नी मुमताजमहल का एक नाम।
विशेष—इसी की स्मृति मे शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया था।

ताजमहल—पु० [अ०] उत्तर प्रदेश के आगरा शहर मे यमुना नदी के तट पर सगमरमर का बना हुआ एक भव्य तथा विशाल मकबरा जिसे भारत सम्राट् शाहजहाँ ने अपनी पत्नी ताजबीबी की स्मृति मे बनवाया था। (इसकी गणना ससार की सर्वश्रेष्ठ सात सुदर वास्तुओ मे होती है।)

ताजा—वि० [फा० ताज] [स्त्री० ताजी, भाव० ताजगी] १ (वान-स्पतिक पदार्थ) जिसे अभी-अभी चयन किया गया हो। जो अधिक समय से पडा या रखा हुआ न हो, फलत जो हरा-भरा हो तथा जिसके मूल गुण नष्ट न हुए हो। जैसे—ताजा फल या फूल। २ (खाद्य पदार्थ) जो अभी-अभी या आज ही बना हो। जो बासी न हो। जैसे—ताजी रोटी, ताजा दूध। ३ (पदार्थ) जिसे तैयार हुए या बने अधिक समय

न बीता हो। जैसे—उनके यहाँ अभी दिसावर से ताजा माल आया ४ (पदार्थ) जो अपने उद्गम या मूल स्थान से अभी-अभी निकल और जिसमे अभी तक कोई मिश्रण या विकार न हुआ जैसे—ताजा खून, ताजा दूध, ताजा पानी। ५ (बात या विचा जिसकी अनुभूति या बोध पहले पहल हो रहा हो। जैसे—ताजी खब ६ (बात या विचार) जो फिर से नये रूप मे या नये उद्देश्य से सा लाया गया हो। जैसे—(क) बीता हुआ झगडा फिर से ताजा करः (ख) कोई चीज या बात देखकर किसी की याद ताजी होना। (चीज) जो शुद्ध तथा स्वच्छ हो। जैसे—ताजी हवा। ८ (चीः जिसकी गदगी या विकार दूर करके ठीक किया गया हो और फिर से काम मे आने के योग्य हो गया हो। जैसे—ताजी भरी चिलम, ताजा किया हुआ (पानी बदला हुआ) हुक्का। ९ (व्यक्ति जिसकी क्लाति या शिथिलता दूर हो चुकी हो और जो प्रफुल्लित स्वस्थ होकर फिर से अपना पूरा काम ठीक तरह से करने के लिए तैय हो गया हो। जैसे—कुछ देर तक सुस्ता लेने (अथवा नहा लेने जलपान कर लेने) पर आदमी ताजा हो जाता है।

ताजिया—पु० [अ०] बाँस की कमाचियो पर रग-बिरगे कागज, प आदि चिपका कर बनाया हुआ मकबरे के आकार का वह मडप मुहर्रम के दिनो मे मुसलमान लोग हजरत इमाम हुसेन की कब्र के प्रती रूप मे बनाते है, और जिसके आगे बैठकर मातम करते और मासि पढते है। ग्यारहवे दिन जलूस के साथ ले जाकर इसे दफन किया जाता
मुहा०—ताजिया ठढा करना=मुहर्रम के आरभिक दस दिन समा हो जाने पर नियत स्थान पर ताजिया गाडना। (मगल-भाषित **(किसी का) ताजिया ठढा होना**=सारा आवेश, क्रोध या प्रयत्न विफ होने के कारण नष्ट या समाप्त हो जाना। (परिहास और व्यग्य

ताजियादारी—स्त्री० [फा०] मुसलमानो मे एक प्रथा जिसमे वे मुहर के आरम्भिक दस दिनो तक ताजिया रखकर उसके आगे मातम कर या शोक मनाते है।

ताजियाना—पु० [फा०] कोडा। चाबुक।

ताजी—वि० [फा०] अरब सबधी। अरब का। अरबी।
पु० १ अरब देश का घोडा जो बढिया समझा जाता है। २ एव प्रकार का शिकारी कुत्ता।
स्त्री० अरब देश की भाषा। अरबी।
स्त्री० हि० 'ताजा' का स्त्री०।

ताजीम—स्त्री० [अ०] किसी बडे के सामने उसके आदर के लिए उठ कर खडे होना और सम्मान प्रदर्शित करते हुए झुककर अभिवादन करना।

ताजीमी सरदार—पु० [फा० ताजीम +अ० सरदार] वह बडा सरदार जिसके दरबार मे आने पर राजा या बादशाह सम्मान प्रदर्शित करने के लिए थोडा उठकर खडे हो जाते थे।

ताजीर—स्त्री० [अ०] दड। सजा।

ताजीरात—पु० [अ०] आपराधिक दडो से सबध रखनेवाली विधियों का सग्रह।

ताजीरी—वि० [अ०] १ दड या दड-विधान सबधी। २ जो किसी को किसी प्रकार का दड देने के उद्देश्य से हो।

ताजीरी पुलिस—स्त्री० [हि०] पुलिस का वह दस्ता या सिपाहियो का दल जो ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ के लोग अधिक या प्राय उपद्रव करते हों। (ऐसी पुलिस रखने का सारा व्यय उस स्थान के निवासियो से दड-स्वरूप लिया जाता है।)

ताज्जुब—पु०=तअज्जुब।

ताटक—पु० [स० ताड–अक, ब० स०, पृषो० ड—ट] १ एक तरह का करनफूल। २ छप्पय का २४ वाँ भेद। ३ एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३० मात्राएँ और अत मे एक भगण होता है।

ताटस्थ्य—पु० [स० तटस्थ+ष्यञ्] तटस्थ होने की अवस्था या भाव। तटस्थता। (देखे)

ताडक—पु० =ताटक (करनफूल)।

ताड—पु० [स० ताल] १ एक प्रकार का बहुत अधिक ऊँचा और लबा पेड जिसमे डाले या शाखाएँ नही होती, केवल ऊपरी सिरे पर कुछ बडे और लबे पत्ते होते है। इसी का मादक रस 'ताडी' कहलाता है।

पद—**ताडपत्र**। (देखे)

२ मारना-पीटना या डाँटना-डपटना। ताडना। ३ ध्वनि। शब्द। ४ पर्वत। पहाड। ५ मृत्ति का ऊपरी भाग या सिरा। ६ बाँह पर पहनने का टाड नाम का गहना। ७ डठलो आदि का पला। जुट्टी।

ताड़क—वि० [स०√तड् (ताडना)+णिच्+ण्वुल्—अक] ताडना करनेवाला।

पु० १ वधिक। २ जल्लाद।

ताड़का—स्त्री० [स०] एक राक्षसी जिसे रामचद्रजी ने मारा था।

ताडका-फल—पु० [स० तारका-फल, ब० स०, नि० र—ड] बडी इलायची।

ताड़कायन—पु० [स० ताडक+फक्—आयन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि—पु० [स० ताडका-अरि, ष० त०] (ताडका के शत्रु) रामचद्र।

ताड़केय—पु० [स० ताडका+ढक्—एय] ताडका का पुत्र, मारीच।

ताड़घ—पु० [स० ताल√हन् (मारना)+टक्, नि० ल—ड] प्राचीन काल मे वह राज-पुरुष जो अपराधियो को कोडे लगाता था।

ताड़घात—पु० [स० ताड√हन्+अण्] हथौडे आदि से चीजे पीटकर काम करनेवाला कारीगर। जैसे—लोहार, सुनार आदि।

ताड़न—पु० [स०√तड्+णिच्+ल्युट्—अन] १ आघात या प्रहार करना। मारना-पीटना। २ डाँट-डपट। घुडकी, झिडकी आदि। ३ दड। सज़ा। ४ गणित मे गुणा करने की क्रिया। गुणन। जरब। ५ तत्र-शास्त्र का एक विधान जिसमे किसी चीज पर मत्र के वर्ण लिखकर वह चीज कुछ दूसरे मत्र पढते हुए किसी पर या कही फेंकी या मारी जाती है।

ताड़ना—स्त्री० [स०√तड्+णिच्+युच्—अन] १ ताडन करने अर्थात् मारने-पीटने की क्रिया या भाव। २ किसी के कार्य, व्यवहार आदि से असतुष्ट होकर उसे सचेत करने तथा कर्तव्यपरायण बनाने के उद्देश्य से कही हुई कडी बात। ३ प्रहार। मार। ४ दड। सजा। ५. किसी को दिया जानेवाला कष्ट, दुख आदि।

स० १. मारना-पीटना। २ किसी के कार्य, व्यवहार आदि से अप्रसन्नता प्रकट करते हुए उस व्यक्ति को सचेत करना और उसका ध्यान कर्त्तव्यपालन की ओर आकृष्ट करना। ३ दड या सजा देना।

स० [स० तर्कण या ताडन ?] कुछ दूरी पर, लोगो की आँखें बचाकर या लुक-छिपकर किये जाते हुए काम को अपने कौशल या बुद्धि-बल से जान या देख लेना।

ताडनी—स्त्री० [स० ताडन+डीप्] कोडा। चाबुक।

ताडनीय—वि० [स०√तड्+णिच्+अनीयर्] जिसे ताडना देना आवश्यक या उचित हो।

ताडपत्र—पु० [स० तालपत्र] ताड वृक्ष के पत्ते जिन पर प्राचीन काल मे ग्रन्थ, लेख आदि लिखे जाते थे।

ताड़बाज—वि० [हि० ताडना+फा० बाज] जो प्राय और सहज मे कोई बात ताड या भाँप लेता हो।

ताडित—भू० कृ० [स०√तड्+णिच्+क्त] १ जिसे ताडना दी गई हो या मिली हो। २ जो मारा-पीटा गया हो। ३ जिसे घुडका या डाँटा गया हो। ४ जिसे दड या सजा मिली हो। ५ जिसे डाँट-डपट कर या मार-पीट कर कही से निकाल, भगा या हटा दिया गया हो।

ताडी—स्त्री० [स० √तड्+णिच्+इन्+डीष्] १ एक प्रकार का छोटा ताड वृक्ष। २ एक प्रकार का गहना। ३ ताड के फूलते हुए डठलो से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मादक द्रव्य के रूप मे होता है।

†स्त्री० दे० 'तारी' (अरबी)।

ताडुल—वि० [स० √तड्+णिच्+उल] ताडना करनेवाला।

ताड़ू—वि० [हि० ताडना] (वह) जो हर बात बहुत जल्दी ताड या भाँप लेता हो। ताडने या भाँपनेवाला।

ताड्य—वि० [स०√तड्+णिच्+यत्] १ जिसका ताडन हो सके। ताडना का अधिकारी या पात्र। २ जिसे डाँटा-डपटा जा सकता हो या डाँटना-डपटना उचित हो। ३ जिसे दड दिया जा सकता हो या दिया जाने को हो। दडनीय।

ताड्यमान—वि० [स०√तड्+णिच्+शानच् (कर्म मे)] १ जो पीटा जाता हो। जिस पर मार पडती हो। २ जिसे डाँटा-डपटा जाता हो।

पु० डडे से बजाया जानेवाला एक प्रकार का बडा ढोल। ढक्का।

तात—पु० [स०√तन् (विस्तार)+क्त, दीर्घ, नलोप] १ पिता। बाप। २ पूज्य और बडा या माननीय व्यक्ति। ३ आपसदारी के लोगो, इष्ट-मित्रो के लिए आदरसूचक और प्रेमपूर्ण सबोधन।

वि० [स० तप्त] तपा हुआ। गरम। तत्ता।

पु० १ कष्ट। दुख २ चिन्ता। फिकर। उदा०—तुम्ह जावउ घर आपणोइ म्हारी केही तात।—ढो० मा०।

तातगु—पु० [स० तात+गो (वाचक शब्द), ब० स०, ह्रस्व] चाचा।

तातन—पु० [स० तात√नृत् (नाचना)+ड] खजन पक्षी। खँडरिच।

तातरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड।

तातल—पु० [स० तात√ला (लाना)+क] १ सबध मे वह पूज्य और बडा व्यक्ति जो पिता के समान या उसके स्थान पर हो। २ बीमारी। रोग। ३ पूर्ण या पक्के होने की अवस्था या भाव। पक्कापन। पक्वता। ४ लोहे का काँटा या कील।

+वि०=तत्ता (तप्त या गरम)।

ताता†—वि०[स० तप्त, प्रा० तत्त] [स्त्री० ताती] तपा या तपाया हुआ। बहुत गरम।

तातार्थेई—स्त्री०[अनु०]१ नृत्य मे विशेष प्रकार से पैर रखने के बोल। २ नाच। नृत्य।

तातार—पु०[फा०] मध्य एशिया का एक प्रदेश।

तातारी—वि०[फा०] १ तातार प्रदेश मे होनेवाला। २ तातार प्रदेश-सबधी।

पु० तातार प्रदेश का निवासी।

स्त्री० तातार प्रदेश की भाषा।

ताति—पु०[स०√ताय् (पालन करना)+क्तिच्] पुत्र। लडका।

तातील—स्त्री०[अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक—वि०[स० तत्काल+ठञ्—इक]१ तत्काल या तुरत का। २ उस समय का।

तात्त्विक—वि०[स० तत्त्व+ठक्—इक]१ तत्त्व-सबधी। २ तत्त्व से युक्त। ३ मूल सिद्धात-सबधी। जैसे—तात्त्विक विचार। ४ यथार्थ। वास्तविक।

पु० वह जो तत्त्व या तत्त्वो का अच्छा ज्ञाता हो।

तात्पर्य—पु०[स० तत्पर+ष्यञ्]१ शब्द, पद, वाक्य आदि का मुख्य आशय। २ अभिप्राय। हेतु।

तात्पर्यार्थ—पु०[स० तात्पर्य-अर्थ, ष०त०] वाक्यार्थ से और शब्दार्थ से कुछ भिन्न अर्थ जो वक्ता के अभिप्राय या आशय का बोध कराता है।

तात्स्थ्य—पु०[स० तत्स्थ+ष्यञ्]१ एक चीज या बात के अन्तर्गत दूसरी चीज या बात रहने की अवस्था या भाव। २ तर्क-शास्त्र और साहित्य मे व्यजनात्मक अर्थ बोध का वह भेद जिसमे किसी चीज के नाम से उस चीज के अन्दर की और सब चीजो, बातो आदि का आशय ग्रहण किया जाता है। जैसे—यदि कहा जाय, 'सारा घर मेला देखने गया है।' तो उसका आशय यही माना जायगा कि घर मे रहनेवाले सभी लोग या परिवार के सभी सदस्य मेला देखने गये है।

ताथ†—अव्य०[?]तिससे। उससे।

ताथेई—स्त्री०=तातायेई।

तादर्थ्य—पु०[स० तदर्थ+ष्यञ्]१. तदर्थी होने की अवस्था या भाव। २ अर्थ की एकरूपता या समानता। ३ उद्देश्य या प्रयोजन की समानता। ४ उद्देश्य। प्रयोजन।

तादात्म्य—पु०[स० तदात्मन्+ष्यञ्] ऐसी अवस्था जिसमे कोई एक चीज किसी दूसरी वस्तु के साथ तदात्म हो जाय या उसके साथ मिलकर उसका रूप धारण कर ले। अभेद मिश्रण या सबध।

तादात्विक—वि० [स०] (ऐसा राजा) जिसका खजाना खाली रहता हो। (कौ०)

तादाद—स्त्री०[अ० तअदाद] वस्तुओ, व्यक्तियो आदि की कुल इकाइयो का जोड। सख्या।

तादृश—वि०[स० तद्√दृश् (देखना)+कञ्] [स्त्री० तादृशी] जो उसी अर्थात् किसी इगित या उल्लिखित वस्तु, व्यक्ति आदि के समान दिखाई देता हो। उसके समान। वैसा।

ताधा—स्त्री० दे०'ताताथेई'।

तान—स्त्री० [स०√तन् (विस्तार)+घञ्] १ तनने या तानने अ किसी ओर खिचे हुए होने या खीचे जाने की अवस्था या भाव। वह चीज जो किसी दूसरी चीज के अगो को कस या खीचकर अ मे मिलाये रखती हो और उन्हे एक दूसरे से अलग न होने देती जैसे—पलग, हौदे आदि मे अन्दर की ओर मजबूती के लिए लगाये लोहे के छड 'तान' कहलाते है। ३ नदी या समुद्र की तरग या र जो नावो को किसी एक ओर ले जाती है। ४ कोई ऐसी चीज बात जिसका ज्ञान इद्रियो से होता हो।

पद—तान की जान=किसी चीज या बात का मूल तत्त्व या सार। ५ कबल बुनने के समय उसमे लगनेवाला ताना। (गडेरिए) सगीत मे गाने-बजाने का वह अग जिसमे सौन्दर्य लाने के लिए बीच-ब मे कुछ स्वरो को खीचते हुए अर्थात् अधिक समय तक उतार-चढ़ के साथ उच्चारण करते हुए कलात्मक रूप से उनका विस्तार कि जाता है।

विशेष—आज-कल व्यवहारत गवैयो मे दो प्रकार की ताने प्रचलित है एक तो हलक (या गले) की तान जो बहुत ही स्पष्ट रूप मे गले से निकार या ली जाती है और जो विशेष अभ्यास-साध्य होती है। दूसरी जब की तान जिसमे गले पर बहुत थोडा जोर पडता है और इसी लिए निम्न कोटि की मानी जाती है।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—तान उडाना=यो ही मन मे मौज आने पर कुछ गाने लगना **तान तोड़ना**=सगीत का अभ्यास न होने पर भी तान लेते हुए गाना (व्यग्य) **(किसी पर) तान तोडना**=किसी को अपने क्रोध, रोष,व्यग आदि का लक्ष्य बनाना। **तान लगाना या लेना**=कलात्मक ढग से गा हुए स्वरो के उतार-चढाव आदि का विस्तार करना।

†पु०[?]एक प्रकार का पेड।

तान-तरंग—स्त्री०[ष०त०] सगीत मे, कलात्मक रूप से होनेवाला अने प्रकार की तानो का उपयोग या प्रयोग।

तानना—स० [स०√तन् (विस्तृत करना या फैलाना)]१ किसी वस्त के एक या अनेक सिरो को इस प्रकार उपयुक्त दिशा या दिशाओ मे खीचना कि उसमे किसी प्रकार का झोल, बल या सिकुडन न रह जाय जैसे—(क) ताना तानना, रस्सी तानना। (ख) छाया आदि के लिए चँदोआ तानना। २ कोई चीज ठीक तरह से खडी करने के लिए अथवा खडी की हुई वस्तु को गिरने से रोकने के लिए उसे कई ओर से रस्सियो आदि से खीचकर बाँधना। जैसे—(क) खेमा या तबू तानना। (ख) रामलीला मे मेघनाद, रावण आदि के कागजी पुतले तानना। ३ किसी प्रकार का खिचाव उत्पन्न करनेवाली कोई क्रिया करना। जैसे—भौहे तानना। ४ आघात, प्रहार आदि करने के लिए कोई चीज ऊपर उठाना। जैसे—डडा, मुक्का या लाठी तानना। ५ कोई चीज किसी दूसरी चीज के ऊपर फैलाना। जैसे—सोते समय शरीर पर चादर तानना।

मुहा०—तान कर सोना=किसी बात से बिलकुल निश्चिन्त हो जाना। किसी प्रकार की आशका, चिंता या भय से रहित होकर रहना।

६ किसी को हानि पहुँचाने या दड देने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित या खडी करना। ७ बलपूर्वक किसी ओर पहुँचाना, प्रवृत्त

करना या भेजना। जैसे—अदालत ने उन्हे साल भर के लिए तान दिया, अर्थात् जेल भेज दिया। ९ किसी व्यक्ति को ऐसा परामर्श देना कि वह दूसरे की ओर प्रवृत्त न हो या उससे मेल-जोल की बात न करे। जैसे—आप ने ही उन्हे तान दिया, नही तो अब तक समझौता हो जाता।

तानपूरा—पु०[स० तान+हिं० पूरना] सितार के आकार का पर उससे कुछ बडा एक प्रसिद्ध बाजा जिसका उपयोग बडे-बडे गवैये गाने के समय स्वर का सहारा लेने के लिए करते है।

तान बाना—पु०=ताना-बाना।

तानव—पु०[स० तनु+अण्] तनु अर्थात् कृश होने की अवस्था या भाव। तनुता।

तानसेन—पु० मुगल सम्राट् अकबर के दरबार का प्रसिद्ध गवैया त्रिलोचन मिश्र जो सगीतज्ञ स्वामी हरिदास का शिष्य था और जिसे अकबर ने तानसेन की उपाधि से विभूषित किया था, और जो अन्त मे मुहम्मद गौस नामक मुसलमान फकीर से दीक्षित हो मुसलमान हो गया था। मध्य तथा आधुनिक युग मे वह भारत का सर्वश्रेष्ठ गायक माना जाता है। उसकी कब्र ग्वालियर मे है।

ताना—पु०[हिं० तानना]१ तानने की क्रिया या भाव। २ तनी या तानी हुई वस्तु। ३ करघे की बुनाई मे वे सूत या तागे जो लबे बल मे ताने जाते है।

विशेष—जो सूत या तागे चौडाई के बल बुने जाते है, उन्हे 'बाना' कहते है।

क्रि० प्र०—तानना।—फैलाना।—लगाना।

पद—ताना-बाना। (दे०)

३ कालीन, दरी आदि बुनने का करघा।

स०[हिं० ताव+ना (प्रत्य०)]१ आग से अथवा किसी और प्रक्रिया से किसी चीज को खूब गरम करना। तपाना। जैसे—(क) तदूर ताना। (ख) घी या मक्खन ताना। २ परीक्षा करने के लिए धातुओ आदि को तपाना। ३ किसी को दुखी या सतप्त करना।

स० [हिं० तवा] गीली मिट्टी या आटे आदि से ढक्कन चिपकाकर किसी बरतन का मुँह बद करना। मूँदना।

पु०[अ० तअनः] ऐसा कथन जिसमे किसी को उसके द्वारा किए हुए अनुचित या अशोभनीय व्यवहार का उसे स्पष्ट किंतु कटु शब्दो मे स्मरण कराकर लज्जित किया जाय।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।

ताना-पाई—स्त्री० [हिं० ताना+पाई=ताने का सूत फैलाने का ढाँचा] १ पाइयो पर ताना तानने या फैलाने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार पाइयो पर फैलाए हुए ताने को बार-बार इधर-उधर आ जा कर कूची आदि से साफ करना तथा सीध मे लाना। ३ बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

ताना-बाना—पु०[हिं० ताना+बाना]बुनाई के समय लबाई के बल ताने या फैलाये जानेवाले और चौडाई के बल बुने जानेवाले सूत।

मुहा०—ताना-बाना करना=बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

ताना-रीरी—स्त्री०[हिं० तान+अनु० रीरी]साधारण गाना।

तानाशाह—पु०[हिं० तनना या तानना+फा० शाह]१ अब्दुल हसन नामक एक स्वेच्छाचारी बादशाह का लोक प्रसिद्ध नाम। २ ऐसा शासक जो मनमाने ढग से सब काम करता हो और किसी प्रकार के नियम या बधन न मानता हो। ३ ऐसा व्यक्ति जो अपने अधिकारो का बहुत दुरुपयोग करता हो।

तानाशाही—स्त्री० [हिं० तानाशाह] तानाशाह होने की अवस्था या भाव। मनमाना आचरण या शासन करने की वृत्ति। स्वेच्छाचारी।

तानी —स्त्री०[हिं० ताना] उन सब सूतो, तागो का समूह जो करघे आदि मे कपडा बुनते समय लबाई के बल लगाये जाते है।

स्त्री०=तनी (बद)।

तानूर—पु०[स० √तन् (विस्तार) + ऊरण्] १ पानी का भँवर। २ वायु का भँवर। चक्रवात। बवडर।

तानो—पु०[देश०] ऐसा भूखड जिसमे कई खेत होते है। चक।

तान्व—पु०[स० तनु+अव, गुणाभाव]१ पुत्र। बेटा। २ तनु नामक ऋषि के पुत्र एक प्राचीन ऋषि।

ताप —पु०[स०√तप् (तपना)+घञ्]१ एक प्रसिद्ध ऊर्जा या शक्ति जो अग्नि, घर्षण अथवा कुछ रासायनिक क्रियाओ के द्वारा उत्पन्न होती है और जिसके प्रभाव से चीजे गलती, जलती, पिघलती, फैलती अथवा भाप बनकर हवा मे उडने लगती है। (हीट) २ गरमी। तपिश। ३ आँच। आग। ४ ज्वर। बुखार। ५ कोई ऐसा मानसिक या शारीरिक कष्ट जिससे प्राणी दुखी होता हो।

विशेष—हमारे यहाँ धार्मिक क्षेत्रो मे ताप तीन प्रकार के कहे गये है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। (देखे ये तीनो शब्द)

तापक—वि० [स०√तप् +णिच् +ण्वुल्—अक] १ ताप या गर्मी उत्पन्न करनेवाला। २ ताप या कष्ट देनेवाला।

पु०१ रजोगुण। २ ज्वर। ताप। बुखार। ३ एक वैद्युतिक उपकरण जो चीजो या वातावरण को गरम करता है। (हीटर)

तापकी—वि०[स० तापक] ताप उत्पन्न करनेवाला। उदा०—तापकी तरनि मानौ मरनि करत है।—सेनापति।

ताप-क्रम—पु०[ष०त०] किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अवस्थाओ मे घटता-बढता रहता है।

ताप-क्रम-यत्र—पु०[ष०त०] वह यत्र जिससे किसी स्थान या पदार्थ के तापक्रम के घटने या बढने का पता चलता है। (बैरोमीटर)

ताप-चालक—पु०[ष०त०]ऐसा पदार्थ जिसमे ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच जाय।

तापचालकता—स्त्री०[स० तापचालक+तल्—टाप्] वस्तुओ का वह गुण जिससे वे ताप-चालक होती है।

ताप-तरग—स्त्री०[ष०त०] वातावरण की वह विशिष्ट स्थिति जिसमे कुछ समय के लिए हवा बहुत गरम और तेज हो जाती है और गरमी बहुत बढ जाती है। (हीट वेव)

तापतिल्ली—स्त्री० [हिं० ताप+तिल्ली] एक रोग जिसमे पेट के अन्दर की तिल्ली या प्लीहा मे सूजन होती है और इसी लिए वह कुछ बड़ी हो जाती है तथा ज्वर उत्पन्न करती है।

तापती—स्त्री०[स०]१ सूर्य की एक कन्या का नाम। २ ताप्ती नदी जो सतपुडा पर्वत से निकलकर खभात की खाडी मे गिरती है।

तापत्य—वि०[स० तपती +ष्यञ्] तापती-सबधी

पु० अर्जुन।

ताप-त्रय—पु०[ष०त०] भारतीय धार्मिक क्षेत्रों मे आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनो ताप।

ताप-दुख—पु०[मध्य०स०] पातजल दर्शन के अनुसार एक तरह का दुख।

तापन—वि०[स० √तप् (तपना)+णिच्+ल्यु—अन] १ ताप या गरमी देनेवाला। २ ताप या कष्ट देनेवाला।

पु० १ तप्त करने या तपाने की क्रिया या भाव। २ सूर्य। ३ सूर्यकात मणि। ४ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक जो विरही प्रेमी को ताप या कष्ट पहुँचाता है। ५ एक नरक का नाम। ६ एक प्रकार का तात्रिक प्रयोग जो शत्रु को ताप या कष्ट पहुँचाने के लिए किया जाता है। ७ आक का पौधा। मदार। ८ ढोल।

तापना—अ०[स० तापन]१ अधिक सरदी लगने पर आग जलाकर उसके ताप से अपना शरीर या कोई अग गरम करना। २ तपस्या आदि के प्रसग मे, ताप सहने के लिए आग जलाकर उसके पास या सामने बैठना। जैसे—धूनी तापना, पचाग्नि तापना।

स०१ आग पर रखकर गरम करना या तपाना। २ जलाना। ३ बहुत बुरी तरह से व्यय करते हुए धन-सपत्ति नष्ट करना। जैसे—दो-तीन बरस के अन्दर ही उन्होने लाखो रुपए फूँक ताप डाले।

विशेष—ऐसे अवसरो पर मुख्य आशय यही होता है कि जिस प्रकार शीत का कष्ट दूर करने और गरमी का सुख लेने के लिए लकडियाँ जलाते है उसी प्रकार धन को लकडियो की तरह जलाकर उसकी गरमी या ताप का सुख भोगा गया है।

४ दे० 'तपाना'।

तापनिक—वि०[स० तापन+ठक्—इक]१ तापने या तपाने से सबध रखनेवाला। २ तापन या तपाने के रूप मे होनेवाला।

तापनीय—वि०[स० तपनीय+अण्] सोनहला।

पु० एक उपनिषद् का नाम।

ताप-मान—पु०[ष०त०] शरीर अथवा किसी पदार्थ मे की अधिक या कम गरमी की कोई विशिष्ट स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार के उपकरणो से जानी जाती है। (टेम्परेचर)

तापमान-यत्र—पु० =तापमापक-यत्र।

ताप-मापक-यत्र—पु०[ष०ताप-मापक, ष०त०, तापमापक-यत्र, कर्म०स०] वह यत्र या उपकरण जिससे शरीर, पदार्थ, वातावरण आदि का तापमान जाना जाता है। (थरमामीटर)

तापमापी—पु० =तापमापक-यत्र।

तापल—पु०[स० ताप] क्रोध। (डि०)

तापलेखी (खिन)—पु०[स० ताप√लिख् (लिखना)+णिनि] एक प्रकार का तापमापक-यत्र जिसमे ताप मात्रा के घटने-बढने का क्रम आप से आप अकित होता रहता है। (थरमोग्राफ)

तापु-व्यजन—पु०[मध्य०स०] साधु के वेश मे रहनेवाला गुप्तचर।

तापश्चित—पु०[स० तपस्-चित्, स०त०, +अण्] एक प्रकार का यज्ञ।

तापस—पु०[स० तपस्+ण] [स्त्री० तापसी] १ तपस्या करनेवाला साधु। तपस्वी। २ तमाल। ३ तेजपत्ता। ४ दमनक। दौना। ५ एक प्रकार की ईख। ६ बगला (पक्षी)।

तापसक—पु०[तापस+कन्] १ छोटा तपस्वी। २ तपस्वी। (व्यग्य)

तापसज—पु०[स० तापस√जन् (उत्पन्न होना)+ड] तेजपत्ता।

तापस-तरु—पु०[मध्य०स०] इगुदी या हिगोट का पेड।

तापस-द्रुम—पु० [स० मध्य स०] इगुदी का पेड।

तापस-प्रिय—वि०[ष०त०]१ जो तपस्वियो को प्रिय हो। २ जिसे तपस्वी प्रिय हो।

पु०१ इगुदी या हिंगोट का पेड। २ चिरौजी का पेड।

तापस-प्रिया—स्त्री०[ष०त०] १ दाख। अगूर। २ मुनक्का।

तापस-वृक्ष—पु०[मध्य०स०] इगुदी का पेड।

तापसह*—पु०[स० तापस] तपस्वी। उदा०—श्राप दियौ तापसह।—चदवरदाई।

तापसी—वि०[स० तापस+ङीप्]१ तापस-सबधी। २ तपस्या-सबधी।

स्त्री०१ तपस्विनी। २ तपस्वी की स्त्री।

तापसेक्षु—पु०[तापस-इक्षु, मध्य०स०] एक प्रकार की ईख।

तापस्य—पु०[स० तापस+ष्यञ्]१ तापस धर्म। २ सन्यास। वैराग्य।

ताप-स्वेद—पु० [तृ०त०] वैद्यक मे उष्णता पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना। जैसे—गरम बालू या गरम कपडे से सेककर लाया जानेवाला पसीना।

तापहरी—स्त्री०[स० ताप√हृ (हरना)+ट+ङीप्] एक तरह का व्यजन। (भाव प्रकाश)

तापा†—पु०=टापा।

तापायन—पु०[स० ताप+फक्—आयन] वाजसनेयी शाखा का एक भेद।

तापावरोध—पु०[स० ताप-अवरोध, ष०त०] किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व जो उसे ताप सहन करने की शक्ति देता है। (रिफ्रैक्टरीनेस)

तापावरोधक—पु०[स० ताप-अवरोधक, ष०त०] ताप का प्रभाव रोकने या सहन करनेवाला। (रिफ्रैक्टरी)

तापिछ—पु० दे० 'तापिज'।

तापिज—पु०[स० तापिन्√जि (जीतना)+ड] १ सोनामक्खी। २ श्याम तमाल।

तापिच्छ—पु० [स० तापिन्√छद् (ढकना)+ड, पृषो० सिद्धि] १ तमाल का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष का फूल।

तापित—भू० कृ०[स०√तप् (तपना)+णिच्+क्त] जो तपाया गया हो। तप्त। तापयुक्त। २ जिसे कष्ट या दुख पहुँचाया गया हो।

तापी (पिन्)—वि० [स०√तप्+णिच्+णिनि] १ ताप देनेवाला। २ [ताप+इनि] जिसमे ताप हो। ताप से युक्त। तप्त।

पु० बुद्धदेव का एक नाम।

स्त्री०[√तप्+णिच्+अच्—ङीष्] १ सूर्य की एक कन्या। २ तापती या ताप्ती नदी जो सूरत के समीप समुद्र मे गिरती है। ३ यमुना नदी।

तापीज—पु०[स० तापी√जन् (पैदा होना)+ड] सोनामाखी। माक्षिक धातु।

तापीय—वि०[स० ताप+छ—ईय] ताप-सबधी। ताप का।

तापेंद्र—पु०[स० ताप-इद्र, ष०त०] सूर्य।

तापोपचार—पु०[स०ताप-उपचार, ष०त०] कोई विशेष प्रकार का प्रभाव

उत्पन्न करने के लिए कोई चीज आग पर चढाना या गरम करना। (हीट ट्रीटमेंट)

ताप्ती—स्त्री०=तापती (नदी)।

ताप्य—पु०[स० ताप+यत्] सोना-मक्खी।

ताफ्ता—पु०[फा० ताफ्त] एक तरह का रेशमी कपडा जिस पर प्रकाश की किरणे पडने से कई रग झलकते है। धूपछाँह।

ताब—स्त्री०[स० ताप से फा०] १ ताप। गरमी। २ चमक। दीप्ति। जैसे—मोती या हीरे की ताब। ३ शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—अब तो उनमे उठने-बैठने की भी ताब नही है। ४ कष्ट, दुख आदि सहने की शक्ति। ५ विरोध, सामना आदि करने की शक्ति। मजाल। जैसे—किसी की क्या ताब है जो तुम्हारी तरफ आँख उठाकर भी देखे। **मुहा०—(किसी काम या बात की) ताब लाना**=सहने या सामना करने का साहस करना।

ताबड-तोड—अव्य० [हिं० ताब+ तोडना] कोई घटना या बात होने पर उसके प्रतिकार, समर्थन आदि के उद्देश्य से, तत्काल। तुरत।

ताबा—वि०=ताबे।

ताबूत—पु०[अ०] वह सदूक जिसमे मृत शरीर बद करके गाडे जाते है।

ताबे—वि०[अ० ताबअ]१ जो किसी के अधीन या वश मे हो। मातहत। २ अनुगामी या अनुवर्ती।

ताबेदार—वि०[अ० ताबअ+फा० दार] [भाव० ताबेदारी] सब प्रकार से आज्ञा और वश मे रहनेवाला। आज्ञाकारी।

पु० नौकर। सेवक।

ताबेदारी—स्त्री० [फा०] १. ताबेदार अर्थात् आज्ञाकारी होने की अवस्था या भाव। २ तुच्छ कामो की नौकरी। चाकरी। ३ टहल। सेवा।

तामस†—पु०=तामस।

ताम—पु० [स०√तम् (खेद करना) + घञ्] १ दोष। विकार। २ चित्त या मन का विकार। मनोविकार। ३ कष्ट। तकलीफ। ४ क्लेश। व्यथा। ५ ग्लानि।

वि० १ डरावना। भीषण। विकराल। २ दुखी। पीडित। ३ परेशान। व्याकुल।

पु०[स० तामस]१ क्रोध। रोष। २ अन्धकार। अँधेरा।

†अव्य०[स० तु?] तब। तो।

†वि०[स० ताम्र] ताँबे की तरह का लाल।

तामजान (म)—पु०[हिं० थामना+स० यान=सवारी] एक तरह की खुली पालकी (सवारी) जिसे दो या चार कहार कन्धे पर लेकर चलते है।

तामडा—वि०[स० ताम्र, हिं० ताँबा+डा (प्रत्य०)] ताँबे के रग का। लाली लिये हुए भूरा।

पु० १ ताँबे के रग का-सा स्वच्छ आकाश। २ गजी खोपडी जिसका रग प्राय ताँबे का-सा होता है।

मुहा०—तामडा निकल आना=सिर के बाल झड जाने के कारण खोपडी गजी होना।

३. उक्त रग का एक प्रकार का मोटा देशी कागज। ४ भटठे मे पकी हुई वह ईंट जिसका रग अधिक ताप लगने के कारण कुछ-कुछ काला पड गया हो।

पु० [स० ताम्राश्म] ताँबे के रग का एक प्रकार का रत्न। पद्मराग मणि।

तामना—स०[देश०] खेत जोतने से पहले उसमे की घास आदि खोदकर निकालना।

तामर—पु०[स० ताम√रा (दान)+क]१ पानी। २ घी।

तामरस—पु०[स० तामर√सस् (सोना)+ड]१ कमल। २ सोना। स्वर्ण। ३ धतूरा। ४ ताँबा। ५ सारस पक्षी। ६ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण, दो जगण और तब एक यगण होता है।

तामरसी—स्त्री०[स० तामरस+ङीप्] वह तालाब जिसमे कमल खिले या खिलते हो।

तामलकी—स्त्री०[स०] भूम्यामलकी। भू-आँवला।

तामलूक—पु०[स० ताम्रलिप्त] बगाल राज्य के मेदिनीपुर जिले के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम।

तामलेट—पु०[अ० टबलर] टीन का गिलास जिस पर चमकदार रोगन या लुक लगाया गया हो।

तामलोट—पु०=तामलेट।

तामस—वि०[स० तमस्+अण्]१ जिसमे तमोगुण की अधिकता या प्रधानता हो। जैसे—तामस स्वभाव।

पु०१ अधकार। अँधेरा। २ अज्ञान और उससे उत्पन्न होनेवाला मोह। ३ दुष्ट प्रकृति का मनुष्य। खल। ४ क्रोध। गुस्सा। ५ सर्प। साँप। ६ उल्लू। ७ पुराणानुसार चौथे मनु का नाम। ८ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ९ दे० 'तामस-कीलक'।

तामस-कीलक—पु० [उपमि०स०] एक प्रकार के केतु जो राहु के पुत्र माने और सख्या मे ३३ कहे गये है, इनका चन्द्रमडल मे दिखाई पडना शुभ और सूर्यमडल मे दिखाई पडना अशुभ माना जाता है।

तामस-मद्य—पु०[कर्म० स०] कई बार की खीची हुई शराब जो बहुत तेज हो जाती है।

तामस-वाण—पु०[कर्म० स०] एक तरह का शस्त्र।

तामसिक—वि० [स० तमस्+ठञ्—इक] १ अधकार सबधी। २ तमोगुण सबधी।

तामसी—वि० [स० तामस+ङीप्] तमोगुण सबधी। तामसिक। जैसे—तामसी प्रकृति।

स्त्री०१ अँधेरी रात। २ महाकाली। ३ जटामासी पौधा। बालछड। ४ पुराणानुसार माया फैलाने की एक कला या विद्या जो शिव ने मेघनाद के निकुमिला यज्ञ से प्रसन्न होकर उसे सिखाई थी।

तामस्स—पु०=तामस।

तामा†—पु०[स० ताम्र] ताँबा नामक धातु।

तामिल—पु०, स्त्री०=तमिल।

तामिस्र—पु०[स० तमिस्रा+अण्]१ क्रोध, द्वेष, राग आदि दूषित और तामसिक मनोविकार। २ पुराणानुसार अविद्या का वह रूप जो भोग-विलास की पूर्ति मे बाधा पडने पर उत्पन्न होता है और जिससे मनुष्य क्रोध, वैर आदि करने लगता है।

तामी—स्त्री०[हिं० ताँबा]१ ताँबे का तसला। २ एक प्रकार का बरतन जिससे मध्ययुग मे द्रव पदार्थ नापे जाते थे।

तामीर—स्त्री०[अ०] [वि० तामीरी, बहु० तामीरात]१ इमारत या भवन आदि बनाने का काम। निर्माण। २ इमारत। भवन। ३ रचना।

तामील—स्त्री०[?]१ अमल मे लाने अर्थात् कार्य रूप मे परिणत करने की क्रिया या भाव। २ आज्ञा, निर्णय आदि का निर्वहण या पालन।

तामेसरी—स्त्री० [देश०] गेरू के मेल से बनाया हुआ एक तरह का तामडा रग।

तामोल†—पु०१ =ताबूल।२ =तमोल।

ताम्मुल—पु० [अ० तअम्मुल] १ सोच-विचार। आगा-पीछा। सकोच। २ देर। बिलब।

ताम्र—पु०[स०√तम् (आकाक्षा)+रक, दीर्घ]१ एक प्रसिद्ध धातु। ताँबा। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग या कोढ।

ताम्रक—पु०[स० ताम्र+कन्] ताँबा।

ताम्रकर्णी—स्त्री०[स० ब०स०, ङीष्] पश्चिम के दिग्गज अजन की पत्नी का नाम।

ताम्रकार—पु०[स० ताम्र√कृ (करना)+अण्] ताँबे के बरतन आदि बनानेवाला कारीगर।

ताम्रकूट—पु०[ष० त०] तमाकू का पौधा।

ताम्रकृमि—पु०[मध्य० स०] इन्द्रगोप या बीरबहूटी नामक कीडा।

ताम्रगर्भ—पु०[ब०स०] तूतिया।

ताम्रचूड—पु० [ब० स०] १ कुकरौधा नामक पौधा। २ कुक्कुट। मुरगा।

ताम्र-दुग्धा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] छोटी दुद्धी।

ताम्र-पट्ट—पु०[मध्य०स०] ताम्र-पत्र।

ताम्र-पत्र—पु०[ष० त०]१ ताँबे का पत्तर। २ ताँबे का वह पत्तर जिस पर स्थायी रूप से रहने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण बात लिखी गई हो।

विशेष—प्राचीन काल मे प्राय ताँबे के पत्तर पर अक्षर खोदकर दान-पत्र, विजय-पत्र आदि लिखे जाते थे जो अब तक कही-कही मिलते और ऐतिहासिक शोधो मे सहायक होते है।

ताम्र-पर्णी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्]१ छोटा पक्का तालाब। बावली। २ दक्षिण भारत की एक छोटी नदी।

ताम्र-पल्लव—पु०[ब०स०] अशोक वृक्ष।

ताम्रपाकी(किन्)—पु०[स०ताम्र-पाक, कर्म०स०,+इनि] पाकर का पेड।

ताम्र-पादी—स्त्री० [ब०स०, ङीष्] लाल रग की लज्जालु लता। हस-पदी।

ताम्र-पुष्प—पु०[ब०स०] लाल फूल का कचनार।

ताम्र-पुष्पिका—स्त्री०[ब०स०, कप्—टाप्,—इत्व] निसोथ।

ताम्र-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] १ धव का पेड। धातकी। २ पाढर का पेड। पाटल।

ताम्र-फल—पु०[ब०स०] अकोल का वृक्ष। टेरा।

ताम्र-मूला—स्त्री०[ब०स०,टाप्]१ जवासा। धमासा। २ छूई-मूई। लज्जावती। ३ कौछ। केवाँच।

ताम्र-युग—पु०[मध्य०स०] इतिहास का वह आरभिक युग जब लोग ताँबे के औजार, पात्र आदि काम मे लाया करते थे।

विशेष—आधुनिक पुरातत्त्व-विदो के अनुसार यह युग लौह-युग से पहले और पत्थर युग के बाद का है।

ताम्रलिप्त—पु०[स०] तमलूक। (दे०)

ताम्र-वर्ण—वि०[ब०स०]१ तामडा रग का। २ लाल रग का। रक्त-वर्ण का।

पु०१ पुराणानुसार सिंहल द्वीप का पुराना नाम। २ वैद्यक में, मनुष्य के शरीर पर की चौथी त्वचा।

ताम्र-वर्णा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] गुडहर का पेड। अडहुल।

ताम्र-वल्ली—स्त्री०[कर्म०स०]१ मजीठ। २ चित्रकूट के आस-पास होनेवाली एक प्रकार की लता।

ताम्रबीज—पु०[ब०स०] कुलथी।

ताम्र-वृत—पु०[ब०स०] कुलथी।

ताम्र-वृत्ता—पु०[ब०स०, टाप्] कुलथी।

ताम्र-वृक्ष—पु०[कर्म०स०]१ कुलथी। २ लाल चन्दन का वृक्ष।

ताम्रशिखी(खिन्)—पु०[स० ताम्रा, शिखा कर्म०स०,+इनि] मुरगा।

ताम्र-सार—पु०[ब०स०] लाल चदन का वृक्ष।

ताम्रसारक—पु०[स० ताम्रसार+कन्] १ लाल चदन का पेड। २ [ब०स०, कप्] लाल खैर।

ताम्रा—स्त्री०[स० ताम्र+टाप्]१ सिंहली पीपल। २ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को ब्याही थी और जिसके गर्भ से पाँच कन्याएँ उत्पन्न हुई थी।

ताम्राक्ष—पु० [ताम्र-अक्षि, ब० स०, षच् समा०] कोकिल। वि० लाल आँखोवाला।

ताम्राभ—पु० [ताम्रा-आभा ब० स०] लाल चदन।

ताम्रार्द्ध—पु० [ताम्र अर्ध, ब० स०] काँसा।

ताम्राश्म (न्)—पु० [ताम्र-अश्मन्, कर्म० स०] पद्मराग मणि।

ताम्रिक—पु० [स० ताम्र+ठञ्—इक] वह जो ताँबे के बरतन आदि बनाता हो।

ताम्रिका—स्त्री० [स० ताम्रिक+टाप्] गुजा। घुघची।

ताम्रिमा (मन्)—स्त्री० [स० ताम्र+इमनिच्] ताँबे का रग।

ताम्री—स्त्री० [स० ताम्र+अण्+ङीप्] एक तरह का ताँबे का बाजा।

ताम्रेश्वर—पु० [ताम्र ईश्वर, ष० त० ?] ताँबे की भस्म।

ताम्रोपजीवी (विन्)—पु० [स० ताम्र+उप√जीव् (जीना)+णिनि] १ वह जिसकी जीविका का साधन ताँबा हो।-ताँबे का रोजगारी। २ कसेरा।

तायँ*—अव्य० १ से। २ तक।

ताय*—पु० १ =ताप। २ =ताव।

सर्व० = ताहि (उसे)।

तायत—स्त्री० [अ० इताअत]१ आज्ञाकारिता। २ चेष्टा। प्रयत्न। (क्व०)

तायदाद†—स्त्री० = तादाद।

तायना†—स०=ताना (तपाना)।

तायनि*—स्त्री० [हिं० तायना=तपाना] १ ताने अर्थात् तपाने की

क्रिया या भाव। २ तपने की अवस्था या भाव। ३ दुख। व्यथा।

तायफा—पु० [अ० तायफ = गरोह या दल] नाचने-गाने आदि का व्यवसाय करनेवाले लोगो का सघटित दल। जैसे--भाँडो या रडियो का तायफा।
स्त्री० नाचने-गाने का व्यवसाय करनेवाली वेश्या। तवायफ।

ताया—पु० [स० तात] [स्त्री० ताई] सबध के विचार से पिता का बडा भाई।

तार—वि० [स०√तॄ (विस्तार, तरना)+णिच्+अच्] १ जोर का। ऊँचा। जैसे—तार ध्वनि या स्वर। २ चमकता हुआ। प्रकाशमान। ३ अच्छा। बढिया। ४ स्वादिष्ठ। ५ साफ। स्वच्छ। ६ बहुत कम या थोड़ा। अल्प (क्व०) उदा०--काँचा भडाँ कसूर पिण, किलाँ कसूर न तार।—बाँकीदास।
पु० ऊँचाई और नीचाई अथवा कोमलता और तीव्रता के विचार से ध्वनि या स्वर की कोई स्थिति। (पिच)
पु० [स० तारा] १ तारा। नक्षत्र। २ आँख की पुतली। ३ ज्योति। प्रकाश। उदा०—तेज कि रतन कि तार कि तारा।—प्रिथीराज। ४ ओकार। प्रणव। ५ शिव। ६ विष्णु। ७ असल या सच्चा मोती। ८ किनारा। तट। ९ राम की सेना का एक बदर जो तारा का पिता था और बृहस्पति के अश से उत्पन्न हुआ था। १० साख्य के अनुसार एक प्रकार की गौण सिद्धि जो गुरु से विधिपूर्वक वेदो का अध्ययन करने पर प्राप्त होती है। ११ अठारह अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त। १२ सगीत के तीन सप्तको (सातो स्वरो के समूहो) मे से अतिम और सब से ऊँचा सप्तक जिसका उच्चारण कठ से आरभ होकर कपाल के भीतरी स्थानो तक होता है। इसे 'उच्च' भी कहते है।
पु० [स० करताल] करताल या मँजीरा नाम का बाजा।
पु० [स० ताटक] कान मे पहनने का ताटक नाम का गहना।
*पु० [स० ताडन] १ डाँट-फटकार। २ डर। भय।
पु० [फा०] डोरा। तागा। सूत।
मुहा०—तार तार करना=कपडे आदि के इस प्रकार टुकडे-टुकडे करना कि उसके तागे या सूत तक अलग-अलग हो जायँ। धज्जियाँ उडाना।
३ किसी धातु से तैयार किया हुआ डोर या लँबे तागेवाला रूप। जैसे—चाँदी या सोने का तार, सारगी या सितार का तार।
क्रि० प्र०—खीचना।
मुहा०—तार दबकना=गोटा, पट्ठा आदि तैयार करने के लिए चाँदी या सोने का तार पीटकर चिपटा और चौडा करना।
४ धातु का वह पतला लबा खड जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार आदि भेजे जाते है। जैसे—सारे भारत मे तारो का जाल फैला हुआ है। ५ उक्त के द्वारा भेजा जानेवाला समाचार अथवा वह कागज जिस पर उक्त समाचार लिखा रहता है। जैसे—उनके लडके के ब्याह का तार आया है।
मुहा०—तार देना=तार के द्वारा किसी के पास कोई समाचार भेजना।
६. सोने-चाँदी के थोड़े से गहने। (तुच्छता-सूचक) जैसे—घर मे जो चार तार थे, वे बेचकर लडकी के ब्याह मे लगा दिये। ७ चाँदी। रूपा। (सुनार) ८ डोरी। रस्सी। (लश०) ९ किसी काम या बात का बराबर कुछ दूरी या समय तक चलता रहनेवाला क्रम। ताँता। सिलसिला। जैसे—आज कई दिनो से पानी का तार लगा है।
क्रि० प्र०—टूटना।—बँधना।—लगना।
१० किसी प्रकार की उद्देश्य-सिद्धि का सुभीता या सुयोग। जैसे-वहाँ तुम्हारा तार न लगेगा।
पद—तार-घाट। (देखें)
मुहा०—तार जमना, बँधना बैठना या लगना -कार्य-सिद्धि का सुभीता या सुयोग होना।
११ पहनी जानेवाली चीजो का ठीक नाप। जैसे--इस लडके के तार का एक कुरता ले आओ। १२ भेद। रहस्य। उदा०--जत्र-मत्र औ बेद तत्र मे सबै तार कौ तार।—हरिराम व्यास।

तारक—वि० [स०√तॄ+णिच+ण्वुल्-अक] तारने या तैरानेवाला। २ भव-सागर से उद्धार करनेवाला। जैसे—तारक मत्र।
पु० १ आकाश का तारा। नक्षत्र। २ आँख की पुतली। ३ आँख। ४ राम का छ अक्षरोवाला यह मत्र 'ओ रामाय नम' जिसे सुनने से मनुष्य का मोक्ष होना माना जाता है। ५ इन्द्र का शत्रु एक असुर जिसे नारायण ने नपुसक का रूप धरकर मारा था। ६ एक असुर जिसे कार्तिकेय ने मारा था और जो तारकसुर के नाम से प्रसिद्ध है। ७ भिलावाँ। ८ नाविक। मल्लाह। ९ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण और एक गुरु वर्ण होता है। १० एक सकेत या चिह्न जो ग्रन्थ, लेख आदि मे किसी शब्द, पद या वाक्य के साथ लगाया जाता है, जिसका पाद-टिप्पणी मे विवरण आदि देना होता है। इसका रूप है —*।

तारकजित्—पु० [स० तारक √जि (जीतना)+क्विप्] कार्तिकेय।

तारक-टोडी—स्त्री० [स० तारक+हिं० टोडी] एक प्रकार की टोडी रागिनी जिसमे ऋषभ और कोमल स्वर लगते है और पचम वर्जित होता है। (सगीत रत्नाकर)

तारक-तीर्थ—पु० [कर्म० स०] गया। (जहाँ पिडदान करने से पुरखे तर जाते हैं)

तारक-ब्रह्म—पु० [कर्म० स०] 'ओ रामाय नम' का मत्र।

तार-कमानी—स्त्री० [हिं० तार+कमानी] नगीने आदि काटने की धनुष के आकार की कमानी जिसमे डोरी के स्थान पर लोहे का तार लगा रहता है।

तारकश—पु० [हिं० तार+फा० कश=(खीचनेवाला)] [भाव० तारकशी] वह कारीगर जो धातुओ के तार खीचने या बनाने का काम करता हो।

तारकशी—स्त्री० [हिं० तारकश] तारकश का काम या पेशा।

तारकस —पु० = तारकश।

तारकांकित—वि० [तारक-अकित, तृ० त०] (शब्द, पद या वाक्य) जिस पर तारक (*चिह्न) लगा हो।

तारका—स्त्री० [स० तारक+टाप्] १ तारा। नक्षत्र। २ आँख की

पुतली। कनीनिका। ३ इद्र वारुणी लता। ४ नाराच छद का दूसरा नाम। ५ बालि की पत्नी का नाम। ६ दे० 'तारिका'।

*स्त्री० दे० 'ताडका'।

तारकाक्ष—पु० [स० तारक-अक्षि, ब० स०] तारकासुर का बडा लडका।

तारकामय—पु० [स० तारका+मयट्] शिव। महादेव।

तारकायण—पु० [स० तारक+फक्—आयन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

तारकारि—पु० [स० तारक-अरि, ष० त०] कार्तिकेय।

तारकासुर—पु० [स० तारक-असुर, कर्म० स०] एक असुर जिसका वध कार्तिकेय ने किया था। (शिव पुराण)

तारकिणी—वि० [स० तारकिन्+डीप्] तारो से भरी।
स्त्री० रात।

तारकित—वि० [स० तारका+इतच्] तारो से भरा हुआ।

तारकी (किन्)—वि० [स० तारका+इनि] [स्त्री० तारकिणी] =तारकित।

तार-कूट—पु० [स० तार =चाँदी+कूट =नकली] चाँदी, पीतल आदि के योग से बननेवाली एक मिश्र धातु।

तारकेश—पु० [स० तारका-ईश, ष० त०] चद्रमा।

तारकेश्वर—पु० [स० तारका-ईश्वर, ष० त०] १ शिव। २ शिव की एक विशिष्ट मूर्ति या रूप। ३ वैद्यक मे एक प्रकार का रस (औषध)।

तारकोल—पु० [अ० टार—कोल] अलकतरा। (दे०)

तार-क्षिति—पु० [स० ब० स०] पश्चिम दिशा मे एक देश जहाँ म्लेच्छो का निवास है। (बृहत्सहिता)

तारख*—पु० [स० तार्क्ष्य] गरुड। (डिं०)

तारखी*—पु० [स० तार्क्ष्य] घोडा। (डि०)

तारघर—पु० [देश०] वह कार्यालय जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते और आये हुए समाचार लोगो के पास भेजे जाते हैं।

तार-घाट—पु० [हिं० तार+घात] तार लगने अर्थात् कार्य सिद्ध होने की सभावना या घाट अर्थात् सभावित स्थिति। जैसे—हो सके तो वहाँ हमारा भी कुछ तार-घाट लगाओ।

तार-चरबी—पु० [देश०] मोम चीना का पेड।

तार-जाली—स्त्री० [हि०] बहुत ही पतले तारो से बनी हुई जाली जिसका उपयोग यात्रिक और रासायनिक कार्यों मे होता है। (वायर गेज)

तारण—पु० [स०√तृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ जलाशय आदि से तारने या पार करने की क्रिया या भाव। २ कठिनता, सकट आदि से उद्धार करने की क्रिया। निस्तार। ३ भव-सागर से पार करके मोक्ष दिलाने की क्रिया या भाव। ४ [√तृ+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु। ५ साठ सवत्सरो मे से एक सवत्सर।
वि० १ तारने या पार करनेवाला। २ उद्धार या निस्तार करनेवाला।

तारणी—स्त्री० [स० तारण+ङीप्] कश्यप की एक पत्नी जिसके गर्भ से याज और उपयाज उत्पन्न हुए थे।

तार-तडुल—पु० [स० ब० स०] सफेद ज्वार।

तारतम्य—पु० [स० तारतम+ष्यञ्] [वि० तारतम्यिक] १ 'तर' और 'तम' होने की अवस्था या भाव। एक दूसरे की तुलना मे घट और बढकर होने की अवस्था या भाव। २ उक्त प्रकार की दृष्टि से की जानेवाली तुलना या पारस्परिक मिलान। ३ उक्त प्रकार के विचारो से लगाया जानेवाला क्रम या सिलसिला।

तारतम्य-बोध—पु० [ष० त०] आपेक्षिक स्थितियो या चीजो के घट-बढ होने का ज्ञान। सापेक्ष सबध का ज्ञान।

तार-तार—पु० [स०, प्रकार अर्थ मे द्वित्व] साख्य के अनुसार एक गौण सिद्धि जो आगम या शास्त्र अच्छी तरह समझ-बूझकर पढने से प्राप्त होता है।
वि० [हि०] १ जो इस प्रकार फटा या फाडा गया हो कि उसके तार या सूत अलग-अलग हो गये हो, अर्थात् जिसके बहुत से छोटे-छोटे टुकडे या धज्जियाँ हो गई हो। २ परी तरह से छिन्न-भिन्न।

तार-तोड़—पु० [हिं० तार+ तोडना] कपडो आदि पर किया हुआ कारचोबी या जरदोजी का काम।

तारदी—स्त्री० [स० तरदी+अण् (स्वार्थे मे) +ङीप्] १ कँटेदार पेड। २ तरदी वृक्ष।

तारन—पु० [हिं० तर=नीचे ?] १ छत या छाजन की ढाल अर्थात् नीचे की ओर का उतार। २ छाजन के वे बाँस जो काँडियो के नीचे रहते है।
वि०, पु०=तारण।

तारना—स० [स० तारण] १ ऐसा काम या यत्न करना जिससे कोई (नदी, नाला आदि) तर कर उसके पार उतर जाय। पार लगाना। २ डूबते हुए को सहारा देकर किनारे पर पहुँचाना। ३ भव-सागर मे जनमने-मरने से मुक्त करना। मोक्ष या सद्गति देना।

तार-पत्र—पु० [स०] भारतीय सेना मे प्रचलित एक प्रकार का पत्र (चिट्ठी) जो स्वदेश की सीमा के अन्तर्गत एक जगह मे दूसरी जगह भेजा जाता है। (पोस्टग्राम)

तारपीन—पु० [अ० टरपेंटाइन] चीड के पेड से निकला हुआ एक तरह का तेल। (टरपेन्टाइन)

तार-पुष्प—पु० [स० ब० स०] कुद का पेड।

तारबर्की—पु० [हिं० तार+फा० बर्की=बिजली का] धातु का वह तार जिसके द्वारा बिजली की शक्ति से समाचार दूर तक भेजे जाते है।

तार-माक्षिक—पु० [स० उपमि० स०] रूपामक्खी नाम की उपधातु।

तारयिता (तृ)—पु० [स०√तृ+णिच्+तृच्] [स्त्री० तारयितृ+ङीप्, तारयित्री] १ तारनेवाला। २ उद्धार करनेवाला। २ मोक्ष देनेवाला।

तारल्य—पु० [स० तरल+ष्यञ्] १ तरल होने की अवस्था या भाव। तरलता। २ चचलता।

तार-विमला—स्त्री० [स० उपमि० स०] रूपामक्खी नामक उपधातु।

तार-सार—पु० [स० ब० स०] एक उपनिषद्।

तारहीन—वि० [हिं० तार+स० हीन] १ जिसमे तार न हो। २ (सूचना, समाचार आदि) जो बिजली के द्वारा तार-हीन प्रणाली से आवे या जाय। बिना तार की सहायता के भेजा जानेवाला।
पु० विद्युत् की सहायता से समाचार भेजने की एक प्रणाली या प्रक्रिया जिसमे समाचार, सूचनाएँ आदि भेजनेवाले और पानेवाले स्थानो के बीच मे तार का सबध नही रहता। (वायरलेस)

तारा—पु० [सं० तार+टाप्] १ आकाश मे चमकनेवाला नक्षत्र। सितारा।

मुहा०—तारा टूटना=तारे का आकाश से अपनी कक्षा से निकलकर पृथ्वी पर या आकाश मे किसी ओर गिरना। **तारा डूबना**=(क) किसी तारे या नक्षत्र का अस्त होना। (ख) शुक्र का अस्त होना। (शुक्रास्त मे हिंदुओ के यहाँ मगल कार्य नही किये जाते) **तारा सी आँखें हो जाना**=इतनी ऊँचाई या दूरी पर पहुँच जाना कि तारे की तरह बहुत छोटा जान पडने लगे। **तारे खिलना या छिटकना**=आकाश मे तारो का चमकते हुए दिखाई देना। **तारे गिनना**=चिता, विकलता आदि से नीद न आने के कारण कष्टपूर्वक जागकर रात बिताना। **(आकाश के) तारे तोड लाना**=कठिन से कठिन अथवा प्राय असभव से काम कर दिखाना। **तारे दिखाई देना**=दुर्बलता, रोग आदि के कारण आँखो के सामने रह-रहकर प्रकाश के छोटे-छोटे कण दिखाई देना। **तारे दिखाना**=प्रसूता स्त्री को छठी के दिन बाहर लाकर आकाश की ओर इसलिए तकाना कि भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर हो जाय। (मुसल०)

पद—तारो की छाँह=इतने तडके या सबेरे कि तारो का धुँधला प्रकाश दिखाई दे।

२ आँख की पुतली। जैसे—यह लडका हमारी आँखो का तारा है। ३ किस्मत या भाग्य जिसका बनना-बिगडना आकाश के तारो या नक्षत्रो की स्थिति का परिणाम या फल माना जाता है। सितारा। (मुहा० के लिए दे० 'सितारा' के मुहा०)

पु० [?] सिर पर पगडी की तरह बाँधा जानेवाला पुरानी चाल का चीरा।

†पु०=ताला।

स्त्री० [सं०] १ बृहस्पति की स्त्री जिसे चद्रमा ने अपने पास रख लिया था। २ तात्रिको की दस महाविद्याओ मे से एक। ३ जैनो के अनुसार एक देवी या शक्ति। ४ बालि नामक बदर की स्त्री जिसने बालि के मारे जाने पर उसके भाई सुग्रीव के साथ विवाह कर लिया था।

तारा-कूट—पु० [ष० त०] वर-कन्या के शुभाशुभ फल को सूचित करनेवाला एक कूट जिसका विचार विवाह स्थिर करने से पहले किया जाता है। (फलित ज्योतिष)

ताराक्ष—पु० [सं० तार-अक्षि, ब० स०] तारकाक्ष दैत्य।

तारा-ग्रह—पु० [सं० मयू० स०] मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पाच ग्रहो का समूह। (बृहत्सहिता)

ताराज—पु० [फा०] १ लूट-पाट। २ ध्वस। नाश। बरबादी।

तारात्मक-नक्षत्र—पु० [सं० तारा-आत्मन्, ब० स०, कप्, तारात्मक-नक्षत्र, कर्म० स०] आकाश मे क्राति वृत्त के उत्तर और दक्षिण दिशाओ के तारो का समूह जिनमे अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्र है।

ताराधिप—पु० [तारा-अधिप, ष० त०] १ चद्रमा। २ शिव। ३ बृहस्पति। ४ तारा के पति बालि और सुग्रीव।

ताराधीश—पु० [तारा-अधीश, ष० त०]=ताराधिप।

तारा-नाथ—पु० [ष० त०]=ताराधिप।

तारा-पति—पु० [ष० त०] =ताराधिप।

तारा-पथ—पु० [तारा-पथिन्, ष० त०, समा० अच्] आकाश।

तारापीड—पु० [तारा-आपीड, ष० त०] १ चद्रमा। २ अयोध्या के एक प्राचीन राजा।

तारा-पुंज—पु० [ष० त०] पास-पास और सदा साथ रहनेवाले विशिष्ट तारो का वर्ग या समूह। (एस्टेरिज्म)

ताराभ—पु० [तारा-आभा, ब० स०] पारद। पारा।

तारा-भूषा—स्त्री० [ब० स०] रात्रि। रात।

ताराभ्र—पु० [तार-अभ्र, कर्म० स०] कपूर।

तारा-मंडल—पु० [ष० त०] १ नक्षत्रो का समूह या घेरा। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का बटोदार कपडा। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे जगह-जगह चमकते हुए तारे दिखाई पडते है।

तारा-मंडूर—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का मडूर जो अनेक द्रव्यो के योग से बनाया जाता है। (वैद्यक)

तारा-मृग—पु० [मध्य० स०] मृगशिरा नक्षत्र।

तारायण—पु० [तारा-अयन, ष० त०, णत्व] आकाश।

तारारि—पु० [तारा-अरि, ष० त०] विटमाक्षिक नाम की उपधातु।

तारावती—स्त्री० [सं० तारा+मतुप्+ङीप्] एक दुर्गा।

तारावली—स्त्री० [तारा-आवली, ष० त०] तारो की पक्ति।

ताराहर—पु० [सं० तारा√हृ (हरना)+अच्] १ सूर्य। २ दिन।

तारा-हार—पु० [ब० स० ?] वह जिसके गले मे तारो या नक्षत्रो का हार हो।

तारिक—पु० [सं० तार+ठन्—इक] १ नाव से नदी पार करने का भाडा। २ नदी आर-पार करने का महसूल।

तारिका—स्त्री० [सं० ताडिका, ड—र] ताड नामक वृक्ष का रस। ताडी।

स्त्री० [सं० तारका] १ आज-कल सिनेमा आदि की प्रसिद्ध और सफल अभिनेत्री। २ दे० 'तारका'।

तारिका-धूलि—स्त्री० [सं०] सारे विश्व मे, तारो-तारिकाओ के बीच के अवकाश मे सब जगह व्याप्त एक प्रकार की बहुत ही बारीक तथा सूक्ष्म धूल या रज। (स्टार-डस्ट)

तारिणी—वि० स्त्री० [सं०√तॄ (तरना)+णिच्+णिनि—ङीप्] तारने या उद्धार करनेवाली।

स्त्री० १ एक प्रकार की बहुत लबी पुरानी नाव जो ४८ हाथ लबी, ५ हाथ चौडी और ५ हाथ ऊँची होती थी। २ दे० 'तारा' (देवी)।

तारित—वि० [सं०√तॄ+णिच्+क्त] १ पार कराया हुआ। २ जिसका उद्धार किया गया हो।

तारी—स्त्री० [देश०] एक चिडिया।

स्त्री० [फा० तारीक का सक्षि० रूप] १ अधकार। अँधेरा। २ बेहोशी। मूर्च्छा। ३ किसी प्रकार के ध्यान मे मग्न होने के समय की तन्मयता। उदा०—सुन्नि समाधि लागि गै तारी।—जायसी। ४ समाधि। उदा०—हाट बजोर लावै तारी।—कबीर। ५ उत्कट इच्छा। लगन। लौ। उदा०—लागी दरसन की तारी।—मीराँ।

†स्त्री० [सं० तडित्] बिजली। विद्युत्।

†स्त्री० १=ताली। २=ताडी।

तारीक—वि० [फा०] [भाव० तारीकी] १ काला। स्याह। २ अधकारपूर्ण। अँधेरा। धुँधला।

तारीकी—स्त्री० [फा०] १ कालिमा। स्याही। २ अन्धकार। अँधेरा।

तारीख—स्त्री० [अ०] १ गिनती के हिसाब से पडनेवाला महीने का दिन जो सख्याओ मे सूचित किया जाता है। दिनाक। (डेट) जैसे—(क) अगस्त की १५ वी तारीख को भारत मे स्वतत्रता दिवस मनाया जाता है। (ख) मुकदमा ७ तारीख को पेश होगा। २ घटना के घटित होने, लेख्य आदि के लिखे-जाने का दिन जो कही अकित होता है। जैसे—इस किताब पर तारीख नही लिखी है। ३ दे० 'तवारीख' (इतिहास)।

तारीखी—वि०=तवारीखी (ऐतिहासिक)।

तारीफ—स्त्री० [अ०] १ लक्षणो आदि से युक्त परिभाषा। २ उक्त प्रकार की परिभाषा से युक्त वर्णन या विवरण। ३ प्रशसा। श्लाघा। ४ प्रशसनीय काम या बात। ५ विशिष्टता। जैसे—यही तो आप मे तारीफ है।

तारीफी†—स्त्री०=तारीफ (प्रशसा)।

तारुण—वि० [स० तरुण+अञ्] जवान। युवा।

तारुण्य—पु० [स० तरुण+ष्यञ्] तरुण होने की अवस्था, गुण या भाव। तरुणता। यौवन।

तारू—पु० [हिं० तरना=तैरना] तैरनेवाला। तैराक। उदा०—तारू कवण जु समुद्र तरै। —प्रिथीराज।

†पु०=ताल।

तारेय—पु० [स० तारा+ढक्—एय] १ तारा का पुत्र अगद। २ बृहस्पति (की स्त्री तारा) का पुत्र बुध।

तार्किक—वि० [स० तर्क+ठक्—इक] तर्क सबधी। तर्क क।

पु० १ वह जो तर्क-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। २ तत्त्ववेत्ता। ३ वे नास्तिक (आध्यक्षिक से भिन्न) जो केवल तर्क के आधार पर सब बाते मानते हो। इनके दो भेद है—क्षणिकवानी (बौद्ध) और स्याद्वादी (जैन)।

तार्क्ष—पु० [स० तृक्ष+अण्] १ कश्यप। २ कश्यप के पुत्र गरुड।

तार्क्षज—पु० [स० तार्क्ष√जन् (पैदा होना)+ड] रसाजन।

तार्क्षी—स्त्री० [स० तार्क्ष+ङीष्] पाताल गारुडी लता। छिरेटी। छिरिहटा

तार्क्ष्य—पु० [स० तृक्ष+यञ्] १ तृक्ष मुनि के गोत्रज। २ गरुड और उनके बडे भाई अरुण। ३ घोडा। ४ रसाजन। ५ साँप। ६ एक प्रकार का साल वृक्ष। अश्वकर्ण। ७ महादेव। शिव। ८ सोना। स्वर्ण। ९ रथ। १० एक प्राचीन पर्वत।

तार्क्ष्यज—पु० [स० तार्क्ष्य√जन्+ड] रसौत। रसाजन।

तार्क्ष्य-प्रसव—पु० [ब० स०] अश्वकर्ण वृक्ष।

तार्क्ष्य-शैल—पु० [स० मध्य० स०+अण्] रसाजन। रसौत।

तार्क्ष्यी—स्त्री० [स० तार्क्ष्य+ङीप्] एक प्रकार की जगली लता।

तार्प्य—पु० [स० तृपा+ष्यञ्] तृपा नामक लता से बनाया हुआ वस्त्र जिसका व्यवहार वैदिक काल मे होता था।

तार्य—वि० [स० तृ+णिच्+यत्] १ पार करने योग्य। २ विजित करने योग्य।

पु० [तर+ष्यञ्] नाव आदि का किराया।

तालक—पु० [स०=ताडक (नि० लत्व)] ताटक।

ताल—पु० [स० तल+अण्] १ हाथ की हथेली। कर-तल। २ [√तड्+णिच्+अच्, ड—ल] हथेलियो के आघात से उत्पन्न होनेवाला शब्द। करतल-ध्वनि। ताली। ३ सगीत मे समय का परिमाण ठीक रखने के लिए थोडे-थोडे, परन्तु नियत अतर पर हथेलीया और किसी चीज से किया जानेवाला आघात। ४ सगीत मे उक्त प्रकार के आघातो का क्रम, मान, सख्या आदि स्थिर रखने के लिए कुछ निश्चित आघातो का (जिनमे से प्रत्येक 'आघात', मात्रा कहलाता है) अलग और विशिष्ट वर्ग या समूह। जैसे—तीन मात्राओ का ताल, पाँच मात्राओ का ताल आदि। ५ सगीत मे तबले, मृदग, ढोल आदि बजाने का कोई विशिष्ट प्रकार जो उक्त अनेक तालो के योग से बना और किसी विशिष्ट राग या लय के विचार से स्थिर किया गया हो। जैसे—चौताल, झूमर, रुद्र या रूपक ताल।

मुहा०—ताल देना=गाने-बजाने के समय, कालमान ठीक रखने के लिए राग-रागिनी आदि के अनुरूप विशिष्ट प्रकार के आघात करना। **ताल पूरना (अकर्मक)** =ताल का आकार ठीक समय पर पूरा होना। ताल का क्रम ठीक बैठना। उदा०—इस मनु आगे पूरै ताल।—कबीर। **ताल पूरना (सकर्मक)**=सगीत के समय उक्त प्रकार का आघात करते हुए ताल देना।

६ झाँझ, मजीरा आदि बाजे जो उक्त विचार से समय का परिमाण ठीक रखने के लिए बजाये जाते है। ७ कुश्ती लडने के समय जाँघ या बाँह पर हथेली के आघात से उत्पन्न किया जानेवाला शब्द।

मुहा०—ताल ठोकना=उक्त प्रकार का आघात करके या और किसी प्रकार यह सूचित करना कि आओ हम से लडकर बल-परीक्षा कर लो।

८ ताड का पेड। ९ ताला। १० ऐनक या चश्मे मे लगा हुआ काँच, बिल्लौर आदि का टुकडा।

पु० [स० तल्ल] [स्त्री० अल्पा० तलैया] छोटा जलाशय।

ताल-कद—पु० [ब० स०] तालमूली। मुसली।

तालक—पु० [स० ताल+कन्] १ हरताल। २ ताला। ३ गोपी चदन।

†पु०=तअल्लुक (सबध)।

तालकट—पु० [स० ताल+कटच्] बृहत्सहिता के अनुसार दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश।

तालकाभ—वि० [तालक-आभा, ब० स०] हरा।

पु० हरा रग।

तालकी—स्त्री० [स० तालक+अण्+ङीप्] ताड वृक्ष का रस। ताडी।

तालकूटा—पु० [हिं० ताल+कटना] १ ताल देने के लिए झाझ आदि बजानेवाला। २ वह भजनीक जो गाते समय झाझ आदि बजाता हो।

ताल-केतु—पु० [ब० स०] १ केतु जिस पर ताल के पेड का चिह्न हो। २ वह जिसकी पताका पर ताड के पेड का चिह्न हो। ३ भीष्म। ४ बलराम।

तालकेश्वर—पु० [स० दे० तारकेश्वर] एक तरह की ओषधि।

तालकोशा—स्त्री० [सं० ताल√कुश् (शब्द करना)+अच्—टाप्] एक तरह का पेड़।

ताल-क्षीर—पुं० [मध्य० स०] खजूर या ताड़ के रस को पाग कर बनाई जानेवाली चीनी।

तालचर—पुं० [सं० ताल√चर् (गति)+ट] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी।

ताल-जंघ—पुं० [ब० स०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी। ३ एक यदुवंशी राजा जिसके पुत्रों ने राजा सगर के पिता को राज्य से अलग किया था।

ताल-ध्वज—पुं० [ब० स०] १ दे० 'तालकेतु'। २ एक प्राचीन पर्वत का नाम।

ताल-नवमी—स्त्री० [मध्य० स०] भाद्रपद शुक्ला नवमी।

ताल-पत्र—पुं० [ष० त०] ताड़ के वृक्ष का पत्ता। ताड़-पत्र।

विशेष—प्राचीन काल में ताल-पत्रों पर ही लेख आदि लिखे जाते थे।

तालपत्रिका—स्त्री० [सं० तालपत्री+कन्—टाप्, ह्रस्व] तालमूली। मुसली।

तालपत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] मूसाकर्णी। मूषकपर्णी। मूसाकानी बूटी।

ताल-पर्ण—पुं० [ब० स०] कपूर कचरी।

ताल-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ सौंफ। २ कपूर कचरी। ३ तालमूली। मुसली। ४ सोआ नाम का साग।

ताल-पुष्पक—पुं० [ब० स०,+कप्] पुंडरिया। प्रपौंडरीक।

तालबंद—पुं० [सं० तालिक—बंध] वह लेखा जिसमें आमदनी की समस्त मदें दिखलाई गई हों।

तालबेन—स्त्री० [सं० तालवेणु] एक तरह का बाजा।

ताल-बैताल—पुं० [सं० तालवेताल] ताल और बैताल नाम के दो यक्ष जिनके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था और ये बराबर उनकी सेवा में रहते थे।

तालमखाना—पुं० [हिं० ताल+मक्खन] १. गीली जमीन या दलदलों के आस-पास होनेवाला एक पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है। २ दे० 'मखाना'।

तालमतूल—वि० [हिं० ताल?+मतूल (अनु०)] किसी के जोड़ या बराबरी का। एक-सा।

ताल-मूल—पुं० [ब० स०] लकड़ी की बनी हुई ढाल।

तालमूलिका—स्त्री० [सं० तालमूली +कन्—टाप्, ह्रस्व] दे० 'तालमूली'।

ताल-मूली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] मुसली।

ताल-मेल—पुं० [हिं० ताल+मेल] १ ताल का सुरों के साथ होनेवाला मेल या संगति। २ किसी के साथ होनेवाली उपयुक्त या ठीक योजना। संगति। उदा०——ताल-मेल सौं मेलि रतन बहु रंग लगाए।—रत्ना०।

क्रि० प्र०—खाना। —बैठना।

३ उपयुक्त अवसर। मौका।

ताल-रंग—पुं० [बं०स०] ताल देने का एक तरह का पुरानी चाल का बाजा।

ताल-रस—पुं० [ष०त०] ताड़ के वृक्ष का रस। ताड़ी।

ताल-लक्षण—पुं० [ब०स०] तालध्वजा। बलराम।

ताल-वन—पुं० [ष०त०] १ ताड़ के पेड़ों का जंगल। २ व्रज में गोवर्धन पर्वत के पास का एक वन जहाँ बलराम ने धेनुक को मारा था।

तालवाही (हिन्)—वि० [सं० ताल√वह् (वहन करना)+णिनि] (बाजा) जिससे ताल दिया जाय।

ताल-वृंत—पुं० [ब०स०] १ ताड़ के पत्ते का बना हुआ पंखा। २ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का सोम (प्राचीन वनस्पति)।

तालव्य—वि० [सं० तालु+यत्] १ तालू संबंधी। २ (ध्वनि, वर्ण या शब्द) जिसका उच्चारण मुख्यतः तालू की सहायता से होता हो। पुं० वह वर्ण जिसका उच्चारण मुख्यतः तालू की सहायता से होता हो। जैसे—इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ् और य्।

ताल-षष्ठी—स्त्री० [मध्य०स०] भादों के कृष्ण पक्ष की छठ जिस दिन स्त्रियाँ पुत्र की कामना से व्रत करती हैं। ललही छठ।

तालसाँस—पुं० [सं० ताल+बं० साँस=गूदा] ताड़ के फल का गूदा जो प्रायः खाया जाता है।

ताल-स्कंध—पुं० [ब०स०] एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

तालांक—पुं० [ताल-अंक, ब०स०] १, वह जिसका चिह्न ताड़ हो। २ भीष्म। ३ बलराम। ४ आरा। ५ एक प्रकार का साग। ६ शिव। महादेव। ७ किताब। पुस्तक। ८ ऐसा पुरुष जिसमें सामुद्रिक के अनुसार अनेक शुभ लक्षण हों।

तालांकुर—पुं० [ताल-अंकुर, ष०त०] मैनसिल धातु।

ताला—पुं० [तालक] एक प्रसिद्ध उपकरण जो ढकने, दरवाजे आदि बन्द करने के लिए होता और ताली की सहायता से खुलता और बंद होता है।

क्रि० प्र०—खोलना।—जड़ना।—बंद करना।—लगाना।

मुहा०—(किसी के घर में) ताला लगना=ऐसी अवस्था होना कि घर में कोई रहनेवाला न बच जाय।

२ किसी प्रकार के आने-जाने का मार्ग या मुँह बंद करने का कोई उपकरण या साधन। जैसे—नहर का ताला।

मुहा०—ताला जड़ना=पूरी तरह से रोकना या बंद करना।

३ आवरण के रूप में रहनेवाला वह बाधक तत्त्व जिसे बिना हटाये अन्दर की बात या रहस्य का पता न चल सकता हो। ४ तवे के आकार का लोहे का वह उपकरण जिसे प्राचीन काल में योद्धा छाती पर बाँधते थे।

ताला-कुंजी—स्त्री० [हिं० ताला+कुंजी] १ किवाड़, संदूक, आदि बंद करने का ताला और उसे खोलने-बंद करने की कुंजी या ताली।

मुहा०—(किसी के हाथ में) ताला-कुंजी होना (क) आय-व्यय आदि का सारा अधिकार होना। (ख) संपत्ति पर पूर्ण अधिकार होना।

२ लड़कों का एक प्रकार का खेल।

तालाख्या—स्त्री० [सं० ताल-आख्या, ब०स०] कपूर कचरी।

ताला-ताली—स्त्री०=ताला-कुंजी।

तालाबंदी—स्त्री० [हिं० ताला+फा० बंदी] १ तालाबंद करने या लगाने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ औद्योगिक क्षेत्र में किसी कारखाने का अनिश्चित काल के लिए उसके स्वामी या स्वामियों के द्वारा बन्द किया जाना। (लॉक आउट)

तालाब—पु० [हिं० ताल+फा० आब] वह छोटा जलाशय जिसके चारो ओर स्नानार्थियो की सुविधा के लिए सीढियाँ आदि बनी होती है।

तालि—स्त्री० [?] समय। उदा०—तिणि तालि सखी गलि स्यामा तेही। —प्रिथीराज।

तालिक—पु० [स० तल+ठक्—इक] १ फैली या फैलाई हुई हथेली। २ वह डोरा जिससे ताड-पत्र या उन पर लिखे हुए लेख नत्थी करके एक मे बाँधे जाते थे। ३ ताडपत्रो का पुलिदा।

तालिका—स्त्री० [स० ताली+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ ताली। कुजी। २ लिखित ताल-पत्रो, कागजो आदि का पृथक् और स्वतन्त्र पुलिदा। नत्थी। ३ ऐसी सूची जिसमे बहुत-सी वस्तुओ आदि के नामो का उल्लेख हो। फेहरिस्त। सूची। ४ [तलिक+टाप्] चपत। थप्पड। ५ ताल-मूली। मुसली। ६ मजीठ।

तालिब—वि० [अ०] १ तलब करनेवाला। २ खोजने या ढूँढनेवाला। ३ चाहनेवाला।

तालिब इल्म—पु० [अ०] [भाव० तालिब-इल्मी] १ वह जिसे इल्म अर्थात् विद्या की चाह हो। २ विद्यार्थी।

तालिम*—स्त्री० [स० तल्प] १ शय्या। २ बिस्तर। (डि०)

तालियामार—पु० [हिं० ताली+मारना] जहाज का आगे या सामने का वह निचला अश जो पानी को काटता है। गलही। (लश०)

तालिश—पु० [स०√तल् (प्रतिष्ठा)+इश, णित्—वृद्धि] पर्वत। पहाड।

ताली—स्त्री० [स०√तल्+णिच्+अच्—ङीष्] १ एक प्रकार का पहाडी ताड। बजर-बट्टू। २ ताल-मूली। मुसली। ३ भू-आँवला। ४ ताम्रवल्ली लता। ५ अरहर। ६ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ७ मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईट जो दोनो ओर के पत्थरो या ईटो को गिरने से रोके रहती है। ८ [ताल+अण्] ताड का रस। ताडी।

स्त्री० [हिं० ताला] १ ताले के साथ रहनेवाला वह छोटा उपकरण जिसकी सहायता से ताला खोला और बद किया जाता है। कुजी। चाबी।

क्रि० प्र०—खोलना।—लगाना।

२ किसी प्रकार का आवागमन या मार्ग खोलने और बद करने का कोई उपकरण या साधन। जैसे—बिजली के तार मे उसका प्रवाह रोकने की ताली। विशेष दे० 'कुजी'।

स्त्री० [स० ताल] १ थप थप शब्द उत्पन्न करने के लिए दोनो हाथो की हथेलियो को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। २ उक्त क्रिया से उत्पन्न होनेवाला शब्द जो किसी की प्रशसा और अपनी प्रसन्नता का सूचक होता है। करतल-ध्वनि। थपोडी।

विशेष—कभी-कभी दूसरो का ध्यान आकृष्ट करने के लिए ऐसा शब्द उत्पन्न किया जाता है।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

मुहा०—ताली पिटना=किसी की दुर्दशा होने पर लोगो मे उसका उपहास होना। **ताली पीटना**=कोई अच्छा काम या बात देखकर और उससे प्रसन्न होकर उसकी प्रशसा और अपना समाधान सूचित करने के लिए हथेलियो से कई बार उक्त प्रकार का शब्द करना।

कहा०—एक हाथ से ताली नही बजती=कोई क्रिया या व्यवहार एक पक्ष से तब तक नही पूरा होता जब तक दूसरे पक्ष से भी वैसी ही क्रिया या व्यवहार न हो।

पु० शिव।

स्त्री० [हिं० ताल=जलाशय] छोटा ताल। तलैया। पोखरी।

स्त्री० [?] पैर की बिचली उँगली का अगला भाग।

तालीका—पु० [अ० तअलीक] १ माल-असबाब की कुर्की या जब्ती। २ कुर्क या जब्त किए हुए माल-असबाब की सूची। तालिका।

ताली-पत्र—पु० [ब०स०] तालीश-पत्र।

तालीम—स्त्री० [अ०] १ निपुण तथा योग्य बनाने के लिए किसी को सिखाई जानेवाली बाते या दिये जानेवाले उपदेश। २ पढना-लिखना सीखने या सिखाने का कार्य या कार्य-प्रणाली। शिक्षा।

तालीश-पत्र—पु० [ब०स०] १ तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक पेड जिसके कई अगो का उपयोग औषधि के काम मे होता है। २ भू-आँवले की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

तालीश-पत्री—स्त्री० [स० ब०स०, ङीष्] तालीश-पत्र।

तालु—पु० [स०√तॄ (तैरना)+ञुण्, लत्व] [वि० तालव्य] तालू।

तालु-कटक—पु० [ब०स०] एक रोग जिसमे तालू मे काँटे निकल आते है।

तालुक—पु० [स० तालु+कन्] १ तालू। २ तालू मे होनेवाला एक तरह का रोग।

†पु०=ताल्लुक (सबध)।

तालुका—स्त्री० [स० तालुक+टाप्] तालू के अन्दर की एक नाडी।

†पु०=ताअल्लुका।

तालु-जिह्व—पु० [ब०स०] घडियाल।

तालु-पाक—पु० [ब०स०] तालू मे होनेवाला एक रोग।

तालु-पुप्पुट—पु० [ब०स०] तालुपाक रोग।

तालुशोष—पु० [ब०स०] तालू मे होनेवाला एक तरह का रोग।

तालू—पु० [स० तालु] १ मुँह के अन्दर का वह ऊपरी भाग जो ऊपरवाले दाँतो की पक्ति और गले के कोए या घटी तक विस्तृत रहता है तथा जिसके नीचे जीभ रहती है। (पैलेट)

मुहा०—तालू उठाना=तुरन्त के जन्मे हुए बच्चे के तालू को दबाकर कुछ ऊपर और ठीक स्थान पर करना जिसमे मुँह अच्छी तरह खुल सके और उसके अन्दर कुछ अवकाश या जगह निकल आवे। **(किसी के) तालू मे दाँत जमना**=किसी का ऐसे बहुत बुरे या विकट काम की ओर प्रवृत्त होना जिससे अत मे स्वय उसी की बहुत बडी हानि हो। **(किसी के) तालू मे दाँत निकलना**=दे० 'दाँत' के मुहा० के अतर्गत। **तालू से जीभ न लगना**=बराबर कुछ न कुछ बकते-बोलते रहना। कभी चुप न रहना।

२. खोपडी के अन्दर और मुँह के उक्त अग के ऊपर का सारा भाग। दिमाग। मस्तिष्क।

मुहा०—तालू चटकना=प्यास, रोग आदि के कारण सिर मे बहुत अधिक गरमी जान पडना।

३ घोडो का एक अशुभ लक्षण जो ऐब या दोष माना जाता है।

तालूफाड—पु० [हिं० तालू+फाडना] हाथियो के तालू मे होनेवाला एक तरह का रोग जिसमे घाव हो जाते है।

तालूर—पु० [सं० √तल् (प्रतिष्ठा करना)+णिच्+ऊर्] पानी का भँवर।

तालूषक—पु० [सं० √तल्+णिच्+ऊषक] =तालु।

तालेवर—वि० [अ० ताला=भाग्य।फा० वर (प्रत्य०)] १ धनाढ्य। धनी। २ भाग्यवान। सौभाग्यशाली।

ताल्लुक—पु० [अ० तअल्लुक] १ सबध। २ लगाव।

ताल्लुका—पु० [अ०तअल्लुक] आस-पास के कई गावो का समूह जो किसी एक ही जमीदार के अधिकार मे होता था। इलाका।

ताल्लुकेदार—पु० [अ० तअल्लुक।फा० दार] १ किसी ताल्लुके का जमीदार। २ अगरेजी शासन मे अवध प्रदेश मे वह जमीदार जिसे सरकार से कुछ विशिष्ट अधिकार प्राप्त होते थे।

ताल्वर्बुद—पु० [सं० तालु-अर्बुद, ष०त०] तालू मे उत्पन्न होनेवाला एक तरह का काँटा जिससे बहुत कष्ट होता है।

ताव—पु० [सं० ताप, प्रा० ताव] १ आँच, धूप आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह गरमी जो वस्तुओ को लगकर तपाती या पकाती और व्यक्तियो को लगकर शारीरिक कष्ट देती है। गरमी। ताप।

क्रि० प्र०—लगना।

मुहा०—(किसी वस्तु मे) ताव आना=किसी वस्तु का जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। जैसे—जब तक तवे मे ताव न आवे तब तक उस पर रोटी नही डालनी चाहिए। **(किसी वस्तु का) ताव खा जाना**=तेज आँच लगने पर आवश्यकता से अधिक गरम होकर जल या बिगड जाना अथवा बे-सवाद हो जाना। कुछ या बहुत जल जाना। जैसे—शीरा ताव खा जायगा तो कडुआ हो जायगा। **(किसी व्यक्ति का) ताव खाना**=अधिक गरमी या धूप लगने से अस्वस्थ या विकल हो जाना। जैसे—लडका कल दोपहर मे ताव खा गया था, इसी से रात को उसे बुखार आ गया। **(आँच का) ताव बिगडना**=आँच का इस प्रकार आवश्यकता से कम या ज्यादा हो जाना कि उस पर पकाई जानेवाली चीज ठीक तरह से न पकने पावे।

२ वह आवेश या मनोवेग का उद्दीप्त रूप जो काम, क्रोध, घमड आदि दूषित भावो या विचारो के फलस्वरूप अथवा बढावा देने, ललकारने आदि पर उत्पन्न होता और भले बुरे का ध्यान भुलाकर मनुष्य को किसी काम या बात मे वेगपूर्वक अग्रसर या प्रवृत्त करता है।

मुहा०—ताव चढ़ना=मन मे उक्त प्रकार का विकार या स्थिति उत्पन्न होना। जैसे—अभी इन्हे ताव चढेगा तो बात की बात मे सौ-दो-सौ रुपए खर्च कर डालेगे। **(किसी को) ताव दिखाना** उक्त प्रकार की स्थिति मे आकर अभिमानपूर्वक किसी को दबाने, नीचा दिखाने, हराने आदि की तत्परता प्रकट करना। जैसे—बहुत ताव मत दिखाओ, नही तो अभी तुम्हे दुरुस्त कर दूंगा। **ताव-पेंच खाना**=रह-रहकर क्रोध का आवेश दिखाते हुए रुक-रुक जाना। **(किसी व्यक्ति का) ताव मे आना**=अभिमान, आवेश, क्रोध, दूषित मनोविकार आदि से युक्त होकर कोई दुस्साहसपूर्ण काम करने पर उतारू होना या किसी ओर प्रवृत्त होना।

३ कोई काम या बात तुरत या बहुत जल्दी पूरी करने या होने की प्रबल उत्कठा या कामना। उतावलेपन से युक्त चाह या वासना।

क्रि० प्र०—चढना।

पद—ताव पर=प्रबल आवश्यकता, इच्छा, मनोवेग आदि उत्पन्न होने की दशा मे अथवा उत्पन्न होते ही तत्काल या तुरत। जैसे—तुम्हारे ताव पर तो पुस्तक छप नही जायगी, उसमे समय लगेगा।

पद—ताव-भाव।

४ पदार्थो आदि की वह स्थिति जिसमे वे कृत्रिम उपायो या स्वाभाविक रूप से कुछ कडे, खडे या सीधे रहते है और उनमे लचक या लुजलुजाहट या शिथिलता नही रहती। जैसे—(क) इस्तरी करने से कपडो मे ताव आ जाता है। (ख) लाखो रुपए के कर्जदार होने पर भी वे बाजार मे बहुत ताव से चलते है।

मुहा०—मूँछो पर ताव देना=मूँछे उमेठ या मरोडकर खडी या सीधी करते हुए अपनी ऐंठ, पराक्रम या शान दिखाना।

५ मन को दुःखी या शरीर को पीडित करनेवाली कोई बात। कष्ट। तकलीफ। ताप। उदा०—चद्रावत तज साम ध्रम, विणही पडियो ताव।—बाँकीदास।

पु० [फा० ता=सख्या] कागज का चौकोर और बडा टुकडा जो पूरी इकाई के रूप मे बनकर आता और बाजारो मे मिलता है। तख्ता। जैसे—दो-तीन ताव कागज भी लेते आना।

विशेष—यद्यपि फरहग आसफिया के आधार पर हिंदी शब्द-सागर मे भी इस अर्थ मे 'ताव' शब्द फा० 'ता' से व्युत्पन्न माना गया है, परन्तु यह व्युत्पत्ति कुछ ठीक नही जान पडती। हो सकता है कि 'ताव' का कागज के तख्तेवाला यह अर्थ भी 'ताव' के उस चौथे अर्थ का ही विस्तृत रूप हो जो ऊपर 'ताप' से व्युत्पन्न प्रसग मे बतलाया गया है और जिसके अन्तर्गत कपडे मे ताव आने और बाजार मे ताव से चलने के उदाहरण दिये गये है।

तावत—अव्य० [सं० तद्+डावतु] १ उस अवधि या समय तक। तब तक। २ उस सीमा या हद तक। वहाँ तक। ३ उस परिमाण या मात्रा तक। (यावत् का नित्य-सबधी या सबध-पूरक)

तावदार—वि० [हि० ताव+फा० दार] [भाव० तावदारी] १ (व्यक्ति) जिसमे ताव हो। जो उमग या जोश मे आकर अथवा साहसपूर्वक कोई काम कर सकता हो। २ (पदार्थ) जिसमे कुछ विशेष कडापन तथा सौदर्य हो। जैसे—तावदार कपडा या जूता।

तावना*—स० [तपाना] १ गरम करना। जलाना। २ कष्ट या दुःख देना।

तावबद—पु० [हि० ताव+फा० बद] वह रसायन जिसके चाँदी का खोट उसे तपाने पर भी दृष्टिगत नही होता।

ताव-भाव—पु० [हि० ताव+भाव] १. वह स्थिति जो किसी काम, बात या व्यक्ति की विशिष्ट प्रवृत्ति या स्वरूप के कारण उत्पन्न होती है और जिससे उसके बल, मान, वेग आदि का अनुमान किया जाता है। जैसे—जरा उनका ताव-भाव तो देख लो, फिर समझौते की बातचीत चलाना। २ किसी काम, चीज या बात का ठीक-ठीक अन्दाज या हिसाब। जैसे—वह तरकारी मे बहुत ताव-भाव से मसाले डालता है। ३ ऐंठ। ठसक। शेखी। जैसे—जरा देखिए तो आप कैसे ताव-भाव से चले आ रहे है। ४ रग-ढग। तोर-तरीका।

तावर†—पु०=तावरा।

तावरा†—पु० [सं० ताप] १ गरमी। ताप। २ आँच, धूप आदि के कारण होनेवाली गरमी। ३ गरमी के कारण सिर मे आनेवाला चक्कर या होनेवाली बेहोशी।

क्रि० प्र०—आना।

तावरी—स्त्री०[स० ताप, हि० ताव+री (प्रत्य०)]१ गरमी। ताप। २ जलन। दाह। ३ घाम। धूप। ४ गरमी लगने पर सिर मे आनेवाली घुमटा या चक्कर। ५ ज्वर। बुखार। ६ ईर्ष्या। जलन।

तावरो*—पु०=तावरा।

तावल—स्त्री०[हि० ताव] उतावलापन। हडबडी।

तावला—वि०=उतावला।

तावा†—पु० [हि० ताव]१ तवा। २ वह कच्चा खपडा जिसके किनारे अभी मोडे न गये हो और इसीलिए जिसका रूप तवे का-सा हो। (कुम्हार)

तावान—पु०[फा०] आर्थिक क्षति आदि होने पर उसकी पूर्ति के लिए या बदले मे दिया अथवा लिया जानेवाला धन। डाँड।

क्रि० प्र०—देना।—लगना।—लगाना।—लेना।

ताविष—पु०[स० √तव् (गति)+टिषच्, णित्वात् वृद्धि]=तावीष।

ताविषी—स्त्री०[स० ताविष+ङीप्] १ देवकन्या। २ नदी। ३ पृथ्वी। भूमि।

तावीज—पु०[अ० तअवीज]१ कागज, भोज-पत्र आदि पर लिखा हुआ वह यत्र-मत्र जो अपनी रक्षा आदि के विचार मे छोटी डिबिया के आकार के सपुट मे बन्द करके गले मे या बाँह पर पहना अथवा कमर मे बाँधा जाता है। रक्षा-कवच।

क्रि० प्र०—पहनना।—बाधना।

२ चाँदी, सोने आदि का वह गोलाकार या चौकोर छोटा सपुट जो गहने के रूप मे गले मे या बाँह पर पहना जाता है।

क्रि० प्र०— पहनना।

तावीष—पु०[स०=ताविष, पृषो० दीर्घ] १ सोना। स्वर्ण। २ स्वर्ग। ३ समुद्र। सागर।

विशेष—वाचस्पत्य अभिधान मे शब्द का यह रूप अशुद्ध ओर असिद्ध कहा गया है।

तावुरि—पु०[यूना० टारस] वृष राशि।

ताश—पु०[अ० तास=तश्त या चोडा बरतन]१ एक तरह का चमकीला कपडा जिसका ताना रेशम का और बाना बादले का होता है। २ गत्ते या दफ्ती के ५२ चोखूँटे पत्तो की गड्डी जिसके पत्तो पर काले और लाल रगो की बूटियाँ, तसवीरे आदि बनी होती है तथा जिससे विभिन्न खेल खेले जाते है। ३ उक्त गड्डी मे का कोई पत्ता। ४ उक्त पत्तो से खेला जानेवाला खेल। ५ वह छोटी दफ्ती जिस पर कपडे सीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा—पु०[फा० तास] डुग्गी की तरह का परन्तु उससे कुछ बडा और चिपटा बाजा जो गले मे लटकाकर तीलियो के आघात से बजाया जाता है।

तास*—सर्व० पु० हि० मे 'तिस' या 'उस' का एक रूप। उदा०—जास का सेवक तास कौ पाइहै।—कबीर।

†पु०=ताश।

तासन, तासों*—सर्व० [हि० तास] उससे।

तासला—पु०[देश०] भालू को नचाने के लिए उसके गले मे बाँधी जानेवाली रस्सी।

तासा—स्त्री०[स० त्रय=तिहरा] तीन बार की जोती हुई भूमि।

†पु०=तागा (बाजा)।

तासीर—स्त्री०[अ०] किसी वस्तु को उपयोग मे लाने अथवा उसका सेवन करने पर उसके तात्त्विक गुण का पडनेवाला प्रभाव। जैसे—इस दवा की तासीर गरम (या ठढी) है।

तासु—सर्व० [हि० ता+सु (प्रत्य०)]१ उसका। २ उसको।

तासूं†—सर्व०=तासो।

तासो†—सर्व० [हि० ता+सो (प्रत्य०)]उससे।

तास्कर्य—पु०[स० तस्कर+ष्यञ्] तस्कर होने की अवस्था या भाव। तस्करता।

तास्सुब—पु०=तअस्सुब।

ताहम—अव्य०[फा०] इतना या ऐसा होने पर भी। (प्राय विरोधी भाव सूचित करने के प्रसग मे) जैसे—ताहम आप तो चले ही जायेगे।

ताहि†—सर्व० [हि० ता० हि० (प्रत्य०)]उसको। उसे।

ताहिरी—स्त्री०[अ०] तहरी नाम की खिचडी।

ताही†—अव्य० दे० 'ताई' या 'तई'।

तिंतिड—पु०[स०=तितिडी, पृषो० सिद्धि] इमली।

तिंतिडिका—स्त्री०[स० तितिडी+कन्—टाप्, ह्रस्व] इमली।

तिंतिडी—स्त्री०[स०√तिम् (आर्द्र होना) +ईकन्, पृषो० सिद्धि] इमली।

तिंतिडीक—पु०[स०√तिम्+ईकन्, नि० सिद्धि] इमली।

तिंतिडीका—स्त्री०[स० तितिडीक+टाप्] इमली।

तितिराग—पु०[स० तितिर-अग, ब०स०] इसपात। वज्रलोह।

तितिलिका—स्त्री०[स०=तितिडिका, ड—ल]=तितिडिका।

तितिली—स्त्री०[स०=तितिडी, ड—ल]=तितिडी।

तिंदिश—पु०[स०=ढिंडिश, नि० सिद्धि] टिंडसी नाम की तरकारी। डेढसी। टिंडा।

तिंदु—पु० [स०√तिम्+कु, नि०सिद्धि] तेंदू का पेड।

तिंदुक—पु० [स० तिदु+कन्]१ तेंदू का पेड। २ [तिदु√क (प्रतीत होना)+क] एक कर्ष या दो तोले की तौल।

तिंदुकतीर्थ—पु०[मध्य०स० ?] ब्रज मडल के अन्तर्गत एक तीर्थ।

तिंदुकी—स्त्री०[स० तिंदुक+ङीप्] तेंदू का पेड।

तिंदुकिनी—स्त्री०[स० तिदुक+इनि—ङीप्] आवर्तकी। भगवत-वल्ली।

तिंदुल—पु० [स० तिंदुक, पृषो० क—ल] तेंदू का पेड।

ति—सर्व० [स० तद् या त] वह।

वि० हिं० तीन का सक्षिप्त रूप जो उपसर्ग के रूप मे कुछ शब्दो के आरम्भ मे लगता है। जैसे—तिआह, तिकोना आदि।

तिआ—स्त्री०=तिय (स्त्री)।

पु० दे० 'तीया'।

तिआह†—पु०[हि० ति+स० विवाह]१ किसी का (दो बार विधवा या विधुर हो चुकने पर) तीसरी बार होनेवाला विवाह। २ वह व्यक्ति जिसका इस प्रकार तीसरी बार विवाह हुआ हो।

पु०[स० त्रि+पक्ष] वह श्राद्ध जो किसी की मृत्यु के पैंतालीसवे दिन अर्थात् तीन पक्ष पूरे होने पर किया जाता है।

तिउरा†—पु०[देश०] केसारी या खेसारी नामक कदन्न।

स्त्री०[देश०] केसारी। खेसारी।

तिउरी —स्त्री०=त्योरी।
तिउहार†—पु०=त्योहार।
तिकड़म—पु०[स० त्रि+क्रम] ऐसी गहरी अनैतिक चाल या तरकीब जिससे कोई कठिन और प्राय असभव प्रतीत होनेवाला काम सहज मे हो जाय।
तिकड़मी—वि०[हिं० तिकडम] जो तिकडम से काम करता हो।
तिकड़ा—पु०[स० त्रिक्]१ एक साथ बनी या रहनेवाली तीन चीजो का समूह। २ पहनने की वे धोतियाँ जो तीन एक साथ बुनी गई हो।
विशेष—आज-कल जिस प्रकार धोतियो के जोडे बनते और बिकते है, उसी प्रकार पहले मोटी धोतियो के तिकडे भी बनते और बिकते थे।
तिकड़ी—स्त्री०[हि० तीन+कडी] १ जिसमे तीन कडियाँ हो। २ चारपाई की बुनावट का वह प्रकार या रूप जिसमे तीन-तीन रस्सियाँ एक साथ बुनी जाती है।
स्त्री०=तिक्का या तिक्की (ताश का पत्ता)।
तिक तिक—स्त्री० [अनु०] किसी पशु को हाँकते समय मुँह से किया जानेवाला तिक तिक शब्द।
तिकरि—अव्य०[स० त्वत्कृते] तुम्हारे लिए। उदा०—बाँहाँ तिकरि पसारी बेड।—प्रिथीराज।
तिकानी—स्त्री०[हि० तीन+कान] धुरी मे लगाई जानेवाली वह तिकोनी लकडी जो पहिये को धुरी से बाहर निकलने से रोकती है।
तिकार†—पु०[स० त्रि+कार]१ तीसरी बार जोता हुआ खेत। २ तीन बार खेत जोतने का काम।
तिकुरा—पु०[हि० तीन+कूरा]उपज का तीसरा अश या भाग।
तिकोन —पु०=त्रिकोण।
वि०=तिकोना।
तिकोना—वि०[स० त्रिकोण][स्त्री० तिकोनी] जिसके या जिसमे तीन कोने हो। जैसे—तिकोना मकान।
पु०१ समोसा नाम का पकवान। २ धातुओ पर नक्काशी करने की एक प्रकार की छेनी। ३ क्रोध-सूचक या चढी हुई त्योरी।
तिकोनिया†—वि० [हि० तिकोना] तीन कोनोवाला।
स्त्री०[हि० तिकोना] बढइयो का लकडी का एक तिकोना उपकरण या औजार जिससे कोनो की सीध नापते है।
तिक्का—पु०[स० त्रिक्]ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती है। तिक्की। तिडी।
पु०[फा० तिक्क-] मास की कटी हुई बोटी।
मुहा०—तिक्का बोटी करना=पूरी तरह से काटकर खड-खड करना।
तिक्की—स्त्री०[स० त्रिक्]१ ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं। तिडी। २ गजीफे का उक्त प्रकार का पत्ता।
तिक्ख*—वि०[स० तीक्ष्ण,प्रा० तिक्ख]१ तीखा।तीक्ष्ण। २ चोखा। तेज। ३ तीव्र बुद्धिवाला। चालाक।
तिक्त—वि०[स०√तिज् (तीखा करना) +क्त]जो गुरुच, चिरायते आदि के स्वाद की तरह का हो। तीता।
पु०१ पित्त-पापडा। २ कुटज। कुरैया। ३ वरुण वृक्ष। ४ खुशबू। सुगध।

तिक्तकदिका—स्त्री०[स० तिक्त-कद, मध्य०स०,+कन्—टाप्, इत्व] गधपत्रा। बनकचूर।
तिक्तक—वि०[स० तिक्त+कन्] तिक्त।
पु०१ चिरायता। २ नीम। ३ काला खैर। ४ इगुदी। हिंगोट। ५ परवल। पटोल। ६ कुटज। कुरैया।
तिक्त-काड—पु०[ब० स०] चिरायता।
तिक्तका—स्त्री०[स० तिक्त√कै (प्रकाशित होना)+क—टाप्] कडआ कद्दू। तितलौकी।
तिक्त-गधा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] वराहीकद।
तिक्तगधिका—स्त्री०[स०तिक्तगन्धा+कन्–टाप्, ह्रस्व,इत्व]वराहीकद।
तिक्त-गुजा—स्त्री०[उपमि०स०, परनिपात]कजा। करज।
तिक्त-घृत—पु०] कर्म०स०] वैद्यक मे, कुछ विशिष्ट औषधियो के योग से बनाया हुआ घी जो बहुत से रोगो का नाशक माना जाता है।
तिक्त-तडुला—स्त्री०[ब०स०] पिप्पली। पीपल।
तिक्तता—स्त्री०[स० तिक्त+तल—टाप्] तिक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। तीतापन।
तिक्त-तुडी—स्त्री०[स०=तिक्त-तुबी, पृषो० सिद्धि] कडई तुरई।
तिक्त-तुबी—स्त्री०[कर्म०स०] कडआ कद्दू। तितलौकी।
तिक्त-दुग्धा—स्त्री०[ब०स०]१ खिरनी। २ मेढासिगी।
तिक्त-धातु—स्त्री०[कर्म०स०] शरीर के अदर का पित्त जो तिक्त या तीता होता है।
तिक्त-पत्र—पु०[ब०स०] ककोडा। खेखसा।
तिक्त-पर्णी—स्त्री०[स० ब०स०, डीष्] कचरी। पेहटा।
तिक्त-पर्वा—पु०[ब०स०,टाप्]१ दूब। दूर्वा। २ हुलहुल। ३ जेठी मधु। मुलेठी। ४ गिलोय। गुडुच।
तिक्त-पुष्पा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] पाठा।
तिक्त-फल—पु०[ब०स०] रीठा। निर्मलफल।
तिक्त-फला—स्त्री० [स० ब०स०,टाप्] १ भटकटैया। २ खरबूजा। ३ कचरी।
तिक्त-भद्रक—पु०[कर्म०स०] परवल। पटोल।
तिक्त-यवा—स्त्री०[स० ब०स०, टाप्] शखिनी।
तिक्तरोहिणिका—स्त्री०[स० तिक्तरोहिणी+कन्,—टाप्, ह्रस्व]कुटकी।
तिक्तरोहिणी—स्त्री० [स० तिक्त√रुह् (उगना)+णिनि—डीप्] कुटकी।
तिक्त-वल्ली—स्त्री०[कर्म०स०] मूर्वालता। मरोडफली। चुरनहार।
तिक्त-बीजा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] तितलौकी। कडुआ कद्दू।
तिक्त-शाक—पु० [ब० स०] १ खैर का पेड। २ वरुण वृक्ष। ३ पत्र-सुन्दर नाम का साग।
तिक्त-सार—पु० [ब० स०] १ रोहिस नाम की घास। २ खैर का पेड।
तिक्तागा —स्त्री० [स० तिक्त-अग, ब० स०, टाप्] +अच्+टाप्] पाताल गारुडी लता। छिरेटा।
तिक्ता—स्त्री० [स० तिक्त+अच्—टाप्] १ कुटकी। २ पाठा। पाढा। ३ खरबूजा। ४ नक-छिकनी। ५ यवतिक्ता नाम की लता।
तिक्ताक्ति—स्त्री० [स० तिक्त से] एक प्रकार का वाष्प (गैस) जो

वर्ण-हीन ओर उग्र गधवाला होता है। इसके योग से जमे हुए कण प्राय औषध, खाद आदि के काम आते है। (एमोनिया)

तिक्ताख्या—स्त्री० [स० तिक्त–आख्या, ब० स०] तितलौकी।

तिक्तिका—स्त्री० [स० तिक्ता+कन्—टाप्, इत्व] १ तितलोकी। २ काक-माछी।

तिक्तिरी—स्त्री० [?] सँपेरो की बीन। तूमडी।

तिक्ष—वि० [भाव० तिक्षता]=तीक्ष्ण।

तिख—वि० [स० त्रि] (खेत) जो बीज बोये जाने से पहले तीन बार जोता गया हो।

तिखटी†-स्त्री० =तिकठी।

तिखरा—वि० दे० 'तिख'।

तिखाई—स्त्री० [हि० तीखा] तीखे होने की अवस्था, गुण या भाव। तीखापन।

तिखारना—स०[स० त्रि+हि० आखर] ताकीद करते हुए किसी से कोई बात तीन अथवा कई बार कहना।

तिखूँट† —वि०=तिखूँटा।

तिखूँटा—वि० [हि० तीन+खूँट] जिसके तीन खूँट अर्थात् तीन कोने हो। तिकोना।

तिग† —पु० =त्रिक्।

तिगना†—स० [देश०] देखना। (दलाल)

वि० दे० 'तिगुना'।

तिगला† —पु० [हि० तीन+गली] [स्त्री० अल्पा० तिगली] वह स्थान जहाँ से तीन गलियो को रास्ते जाते हो। तिरमुहानी।

तिगुना—वि० [स० त्रिगुण] [स्त्री० तिगुनी] जो किसी मान या मात्रा के अनुपात मे तीन गुना हो। जितना होता हो, उतना तथा उससे दूना और।

तिगूचना—स०=तिगना (देखना)।

तिगून—पु० [हि० तिगुना] १ तिगुने होने की अवस्था या भाव। २ गाने-बजाने मे, क्रमश आगे बढते और तेज होते हुए ऐसी स्थिति मे पहुँचना जब कि आरभवाले मान से तिहाई समय मे गाना-बजाना होता है और गति या वेग तिगुना बढ जाता है।

तिग्म—वि० [स०√तिज् (तीखा करना)+मक्] [भाव० तिग्मता] तीक्ष्ण। तेज।

पु० १ वज्र। २ पीपल।

तिग्म-कर—पु० [ब० स०] सूर्य।

तिग्म-केतु—पु० [ब० स०] भागवत मे वर्णित एक ध्रुववशीय राजा।

तिग्मता—स्त्री० [स० तिग्म+तल्—टाप्] तिग्म अर्थात् तीक्ष्ण होने की अवस्था या भाव।

तिग्म-दीधिति—पु० [ब० स०] सूर्य।

तिग्म-मन्यु—पु० [ब० स०] महादेव। शिव।

तिग्म-रश्मि—पु० [ब० स०] सूर्य।

तिग्माशु—पु० [तिग्म-अशु, ब० स०] सूर्य।

तिघरा—पु० [स० त्रिघट] चौडे मुँहवाला एक तरह का घडा या मटका जिसमे दही, दूध आदि रखते है।

२—६९

तिचिया—पु० [?] जहाज पर का वह आदमी जो नक्षत्रो आदि की गति-विधियाँ देखता है।

तिच्छ (न)—वि०=तीक्ष्ण।

तिजरा—पु० [स० त्रि+ज्वर] हर तीसरे दिन आने, चढने या होनेवाला ज्वर। तिजारी।

तिजवाँसा—पु० [हि० तीजा=तीसरा+मास=महीना] कुछ विशेष जातियो मे होनेवाला वह उत्सव जो किसी स्त्री को तीन महीने का गर्भ होने पर मनाया जाता है।

तिजहरिया† —पु०=तिजारी (बुखार)।

तिजार†—पु०=तिजारी (ज्वर)।

तिजारत—स्त्री० [अ०] [वि० तिजारती] १ रोजगार। व्यापार। व्यवसाय। २ वाणिज्य।

तिजारी—स्त्री० [हि० तीन+ज्वर] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर या बुखार जो मलेरिया का एक प्रकार है।

तिजिया†—वि० [हि० तीजा=तीसरा] (व्यक्ति) जिसके तीन विवाह हो चुके हो।

तिजिल—पु० [?] १ चद्रमा। २ राक्षस।

तिजोरी—स्त्री० [देश०] लोहे की वह मजबूत छोटी किंतु भारी अलमारी या पेटी जिसमे गहने, नकदी आदि सुरक्षा की दृष्टि से रखी जाती है।

तिड† —पु० [?] पक्ष। (डि०)

तिडलना—स० [?] खीचना। उदा०—जनि अनुरागे पाछ धरि पेललि कर धरि काम तिडली। —विद्यापति।

तिडी—स्त्री० [स० त्रि=तीन] ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ बनी होती है। तिक्की।

वि० [स० तिर्यक् ?] (व्यक्ति) जो कही से खिसक, टल या हट गया हो। (बाजारू) जैसे—मुझे देखते ही वहाँ वहाँ से तिडी हो गया।

तिडी-बिडी† —वि०=तितर-बितर। (दे०)

तिणि—अव्य० [स० तेन] इसलिए। उदा०—तथापि रहे न हूँ सकूँ बकूँ तिणि।—प्रिथीराज।

तित*—क्रि० वि० [स० तत्र] १ उस स्थान पर। वहाँ। २ उस ओर। उधर।

तितना—वि०=उतना।

तितर-बितर—वि० [हि० तीतर+बटेर=कुछ एक तरह का, कुछ दूसरी तरह का] १ जो अपने क्रम या स्थान से हट-बढ कर या अव्यवस्थित रूप से कुछ इधर और उधर हो गया हो। अस्त-व्यस्त। जैसे—भीड (या सेना) तितर-बितर हो गई। २ अनियमित रूप से बिखरा हुआ। जैसे—घर का सारा सामान तितर-बितर पडा है।

तितरात—पु० [?] एक पौधा जिसकी जड ओषध के काम मे आती है।

तितरोखी—स्त्री० [हि० तीतर+रोख] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

तितल†—वि०=शीतल।

तितली†—स्त्री० [स० तित्तरीक] १ एक तरह का उडनेवाला छोटा कीडा जिसके पख रग-बिरगे और बहुत सुदर होते है ओर जो प्राय फूलो पर मँडराता रहता तथा उनका रस चूसता है। २ लाक्षणिक रूप मे, सुन्दर बालिका या स्त्री जो बहुत चचल हो ओर प्राय खूब बनी-ठनी रहती हो। ३ वन-गोभी का एक नाम।

तितलौआ—पु० दे० 'तितलौकी'।

तितलौकी† स्त्री० [देश०] १ एक प्रसिद्ध लता जिसमे कद्दू के आकार-प्रकार के ऐसे फल लगते है जो स्वाद मे कडवे या तीते होते है। २ उक्त लता का फल।

तितारा†—पु० [स० त्रि+हि० तार] १ सितार की तरह का तीन तारोवाला ताल देने का एक बाजा। २ फसल की तीसरी बार की सिचाई।
वि० तीन तारोवाला। जैसे—तितारा डोरा या ताना।

तितिंबा†—पु०=तितिम्मा।

तितिक्ष—वि० [स०√तिज् (सहन करना)+सन्+अच्] तितिक्षु। पु० एक प्राचीन ऋषि।

तितिक्षा—स्त्री० [स०√तिज्+सन्+अ—टाप्] सरदी, गरमी आदि सहन करने की शारीरिक शक्ति। २ कष्ट, दु ख आदि झेलने का सामर्थ्य। ३ धैर्यपूर्वक या चुप-चाप कोई आघात, आक्षेप आदि सहन करने का भाव। ४ क्षमाशीलता। ५ दे० 'मर्षण'।

तितिक्षु—वि० [स०√तिज्+सन्+उ] १ जिसमे तितिक्षा अर्थात् सहन-शक्ति हो। सहनशील। २ क्षमाशील। क्षात।
पु० एक पुरुवशी राजा जो महामना का पुत्र था।

तितिभ—पु० [स० तिति√भण् (बोलना)+ड] १ बीर बहूटी। २ जुगनूँ।

तितिम्मा—पु० [अ०] १ शेष बचा हुआ अश। अवशिष्ट अश। २ पुस्तको आदि का परिशिष्ट। ३ व्यर्थ का झझट या विस्तार। ४ व्यर्थ का आडबर। ढकोसला।

तितिर (तिरि)—पु० [स०=तित्तिरि, पृषो० सिद्धि] तीतर (पक्षी)।

तितिल—पु० [स०√तिल् (चिकना करना)+क, द्वित्व] १ मिट्टी की नाँद। २ ज्योतिष मे, तैत्तिल नामक करण।

तितीर्षा—स्त्री० [स०√तृ (तैरना)+सन्+अ—टाप्] १. तैरने की इच्छा। २ तरने अर्थात् भव-सागर से पार होने की इच्छा।

तितीर्षु—वि० [स०√तृ +सन्+उ] १ जो तैरने अर्थात् पार उतरने का इच्छुक हो। २. मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करनेवाला।

तितुला†—पु० [देश०] गाडी के पहिये का आरा।

तिते*—वि० [स० तति] उतने। (सख्या वाचक)

तितेक—वि० [हि० तितो+एक] उस मान या मात्रा का। उतना।

तितै*—क्रि० वि० [हि० तित+ई (प्रत्य०)] १ उस ओर। उधर। २. उस जगह। वहाँ। ३ वहाँ ही। वही।

तितो*—क्रि० वि० =तेता (उतना)।

तित्तह*—अव्य० [स० तत्र] उस स्थान पर। वहाँ।

तित्तिर—पु० [स० तित्ति√रा (दान)+क] [स्त्री० तित्तिरी] १ तीतर नामक पक्षी। २ तितली नाम की घास।

तित्तिरी—पु० [स० तित्ति√रु (शब्द करना)+डि] १ तीतर पक्षी। २ यास्क मुनि के एक शिष्य जिन्होने यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा चलाई थी। ४ यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा।

तिथ—पु० [स०√तिज् (तीखा करना)+थक्] १. अग्नि। आग। २ कामदेव। ३ काल। समय। ४ वर्षा। काल। बरसात।
†स्त्री०=तिथि।

तिथि—स्त्री० [स०√अत् (सतत गमन)+इथिन्] १ चाद्रमास के किसी पक्ष का कोई दिन अथवा उसे सूचित करनेवाली कोई सख्या। मिती।
विशेष—प्रतिपदा से अमावस या पूर्णिमा तक साधारणत १५ तिथियाँ होती है।
२ उक्त के आधार पर पद्रह की सख्या। ३ श्राद्ध आदि करने के विचार से किसी की मृत्यु की तिथि। ४ दे० 'दिनाक'।

तिथि-क्षय—पु० [ष०त०] चाद्र गणना के अनुसार पक्ष मे किसी तिथि का घटना या मान न होना। तिथिहानि।

तिथित—भू०कृ० [स० तिथि से] जिस पर तिथि या तारीख डाली गई या पडी हुई हो। (डेटेड)

तिथि-पति—पु० [ष०त०] वह देवता जो किसी तिथि का स्वामी हो।
विशेष—बृहत्सहिता के अनुसार प्रतिपदा के ब्रह्मा, दूज के विधाता, षष्ठी के षडानन आदि आदि देवता माने गये है।

तिथि-पत्र—पु० [ष०त०] पचाग। पत्रा।

तिथिप्रणी—पु० [स० तिथि+प्र√नी (लेजाना)+क्विप्] चद्रमा।

तिथ्थ†—स्त्री०=तिथि।
पु०=तथ्य।

तिथ्यर्ध—पु० [तिथि-अर्ध, ष०त०] करण। (ज्योतिष)

तिदरा—वि० [हि० तीन+फा० दर=दरवाजा] [स्त्री० अल्पा० तिदरी] तीन दरोवाला।
पु० तीन दरोवाला कमरा।

तिदारी—स्त्री० [देश०] बत्तख की तरह की एक शिकारी चिडिया।

तिदुआरा—वि०, पु० [स्त्री० तिदुआरी]=तिदरा।

तिधर†—क्रि० वि० [स० तत्र] उधर। उस ओर।

तिधारा—पु० [स० त्रिधार] एक प्रकार का थूहर (सेहुड) जिसमे पत्ते नही होते। इसे बज्री या नरसेज भी कहते है।

तिधारी काडवेल—स्त्री० [स०] हडजोड (पौधा)।

तिन—सर्व० हि० 'तिस' का अवधी भाषा मे बहुवचन रूप।
पु०=तृण।
मुहा०—***तिन तूरना**=दे० (तिनका के अतर्गत) 'तिनका तोडना।'

तिनउर—पु० [स० तृण+हि० उर या और (प्रत्य०)] तिनको का ढेर।

तिनकना—अ० [हि० चिनगारी, चिनगी या अनु०] अपने विरुद्ध कोई बात अप्रत्याशित रूप से या सहसा सुनकर क्रुद्ध हो जाना। तिनगना।

तिनका—पु० [स० तृण] सूखी घास या वनस्पति के डठलो आदि का छोटा टुकडा। तृण।
मुहा०—**(अपने सिर से) तिनका उतारना**=नाममात्र को थोडा-बहुत काम करके यह जतलाना कि हमने बडा उपकार किया है। बला टालना। **(किसी से) तिनका तोडना**=स्थायी रूप से सबध छोडना। कुछ भी लगाव या वास्ता न रखना। जैसे—हमने तो उसी दिन तिनका तोड दिया था।
विशेष—हिन्दुओ मे मृतक का शवदाह कर चुकने पर उपस्थित मित्र और सबधी एक साथ बैठकर तिनका तोडने की एक रसम पूरी करते है। इसी से यह मुहा० बना है।
मुहा०—**(किसी के सिर से) तिनका तोडना**=(क) रूपवान या

सुन्दर व्यक्ति को देखकर उसे नजर लगने से बचाने के लिए स्त्रियो का उसके सिर पर से तिनका उतारकर तोडते हुए फेकना। (ख) उक्त प्रकार से तिनका तोडते हुए किसी का कष्ट या सकट अपने ऊपर लेना। बलाएँ लेना। **(दाँतो मे) तिनका पकड़ना या लेना**=किसी का अनुग्रह या कृपा प्राप्त करने के लिए उसके आगे उसी प्रकार परम दीन या विनीत बनना जिस प्रकार गौ मुँह मे तिनका लेकर दीनतापूर्वक सामने आती है। **तिनके का पहाड़ करना**=जरा-सी या बहुत छोटी बात को बहुत अधिक बढा-चढा देना। **तिनके चुनना**=विरह, शोक आदि के कारण पागलो की तरह और बहुत उदास होकर बिलकुल तुच्छ और निरर्थक काम करते हुए समय बिताना।

पद—तिनके का सहारा=बहुत ही थोडा या नाम-मात्र का वैसा ही सहारा जैसा 'डूबते को तिनके का सहारा' वाली कहावत मे कहा जाता है। **तिनके की आड या ओट**=नियम, मर्यादा आदि के पालन के लिए बीच मे रखा जानेवाला नाम-मात्र का परदा या व्यवधान।

कहा०—तिनके की ओट पहाड=कभी-कभी किसी छोटी-सी बात की आड मे भी बहुत बडी बात होती या हो सकती है।

तिनका-तोड—पु०[हिं० तिनका+तोडना]पारस्परिक सबध इस प्रकार टूटना कि फिर स्थापित न हो सके। ('किसी से तिनका तोडना' वाले मुहा० के आधार पर)

तिनगना†—अ०= तिनकना।

तिनगरी—स्त्री०[देश०] एक तरह का मीठा पकवान।

तिनतिरिया—स्त्री०[हिं० तीन+तार?]मनुआ नाम की कपास।

तिन-दरी—स्त्री०[हिं० तीन+फा० दर] वह कमरा जिसमे तीन दर या दरवाजे हो।

तिनधरा—स्त्री०[देश०] एक तरह की रेती जो तिकोनी होती है और जिससे आरी के दाँते तेज किये जाते है।

तिनपहल—वि०=तिनपहला।

तिनपहला—वि०[हिं० तीन+पहल][स्त्री० तिनपहली] जिसमे तीन परते, पहलू या पार्श्व हो।

तिनमिना—पु०[हिं० तीन+मनिया] ऐसी माला जिसके बीच मे जडाऊ जुगनूं हो।

तिनवा—पु०[देश०] एक तरह का बाँस।

तिनषना*—अ०=तिनकना।

तिनस—पु०[स० तिनिश] शीशम की तरह का एक पेड।

तिनसुना—पु०=तिनस। (दे०)

तिनावा—वि०[हिं०तीन+नाव=खाँचा या गहरी रेखा][स्त्री०तिनावी] (कटार, तलवार आदि का फल) जिसपर तीन नावे (खाँचे या धारियाँ) हो। जैसे—तिनावा तेगा।

तिनाशक—पु०[स० तिनिश+कन्, पृषो० आत्व] तिनिश वृक्ष।

तिनास—पु०=तिनस।

तिनिश—पु०[स० अति√निश् (समाधि)+क, पृषो० अलोप] बबूल या खैर की तरह का एक वृक्ष जिसके फल वैद्यक मे कफ, पित्त, रुधिर विकार आदि दूर करनेवाले माने जाते हैं।

तिनुअर—वि०[स० तृण] तिनके के समान पतला-दुबला। क्षीण-काय। उदा०—तन तिनुअर भा झूरौ खरी।—जायसी।

पु० तिनका या तिनको का ढेर।

तिनुका†—पु०=तिनका।

तिनुवर—वि०, पु०=तिनुअर।

तिनूका†—पु०=तिनका।

तिन्नक—पु०[हिं० तनिक]१ तुच्छ वस्तु। २ छोटा बच्चा। उदा० —खसम धतिंगड, जोडू तिन्नक। (कहा०)

तिन्ना—पु०[स०]१ तिन्नी नाम का पौधा या उसके चावल। २ रसेदार तरकारी या सालन। ३ सती नामक वर्ण-वृत्त।

तिन्नी—स्त्री०[स० तृण, हिं० तिन]१ आप से आप जलीय किन्तु बिना जोती-बोई जमीन मे होनेवाला धान्य। २ उक्त के बीज जिनकी गिनती फलाहार मे होती है। वैद्यक मे ये पित्त, कफ और वातनाशक माने जाते है।

स्त्री०[देश०] नीवी। फुफुती।

तिन्ह†—सर्व० हिं० 'तिस' का अवधी भाषा मे होनेवाला बहुवचन रूप।

तिपडा—पु०[हिं० तीन+पट]कमख्वाब बुननेवालो के करघे की वह लकडी जिसमे तागा लपेटा रहता है और जो दोनो बैसरो के बीच मे होती है।

तिपति*—स्त्री०=तृप्ति।

तिपल्ला—वि०[हिं० तीन+पल्ला] [स्त्री० तिपल्ली] १ जिसमे तीन पल्ले या परते हो। तीन पल्लोवाला। २ तीन तागो या तारोवाला।

तिपहला—वि०[हिं० तीन+पहल] [स्त्री० तिपहली] तीन पहलो, पार्श्वों या परतोवाला।

तिपाई—स्त्री०[हिं० तीन+पाय] तीन पायोवाली एक तरह की बैठने अथवा सामान आदि रखने की ऊँची चौकी।

तिपाड़—पु०[हिं० तीन+पाड] १ वह कपडा जो तीन पाट जोडकर बनाया गया हो। जैसे—तिपाड चादर, तिपाड लहँगा। २ वह कपडा जिसमे तीन परते या पल्ले हो। ३ वह धोती या साडी जिसमे तीन पाड या चौडे किनारे हो (दो ऊपर नीचे और एक बीच मे)।

तिपारी—स्त्री०[देश०] एक तरह का झाड़ जिसमे रसभरी की तरह के छोटे फल लगते हैं।

तिपरा†—पु०[हिं० तीन+पुर] वह बडा कूआँ जिसमे तीन चरसे या मोट एक साथ चल सके।

तिफल—पु०[अ० तिफ्ल] [भाव० तिफली] छोटा नन्हा बच्चा।

तिफली—स्त्री० [अ० तिफ्ली] बचपन।

तिब—स्त्री०[अ० तिब्ब] यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। हकीमी।

तिबद्धी—स्त्री०[हिं० तीन+बाँध]चारपाई बुनने का एक ढग जिसमे हर बार तीन-तीन रस्सियाँ साथ खीची जाती है।

तिबाई†—स्त्री० [देश०] एक तरह की छिछली थाली जिसमे प्राय आटा गूथते है।

तिबारा—क्रि० वि०[हिं० तीन+बार] तीसरी बार।

पु० वह शराब जो तीन बार चुआने पर तैयार की गई हो।

वि०, पु दे० 'तिदरा'।

तिबासी—वि०[हिं० तीन+बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

तिबी†—स्त्री० [देश०] खेसारी।

तिब्ब—स्त्री०=तिब।

तिब्बत—पु०[स० त्रिविष्टप] हिमालय के उत्तर का एक देश जिसकी सीमा भारत से मिली हुई है।

तिब्बती—वि०[तिब्बत देश] तिब्बत-सबधी। तिब्बत का। तिब्बत मे उत्पन्न।

पु० तिब्बत देश का निवासी।

स्त्री० तिब्बत देश की भाषा।

तिमजिला—वि०[हिं० तीन+अ० मजिल] [स्त्री० तिमजिली] (भवन) जिसके तीन खड या मजिले हो।

तिम—पु०[हिं० डिडिम] डका। नगाडा। (डिं०)

तिमाना—स०[देश०] भिगोना।

तिमाशी—स्त्री० [हिं० तीन+माशा] १ तीन माशे की एक तौल। २ उक्त तौल का बटखरा या बाट। ३ पहाडी देशो की एक तौल जो ४० जौ की होती है।

तिमिंगिल—पु०[स० तिमि√गृ (लीलना)+क, मुम्] १ समुद्र मे रहनेवाला एक प्रकार का बहुत बडा और भारी जतु जो तिमि नामक बडे मत्स्य को भी निगल सकता है। बडी भारी ह्वेल। २ एक प्राचीन द्वीप का नाम। ३ उक्त द्वीप का निवासी।

तिमिंगिलाशन—पु० [स० तिमिंगिल-अशन, ष०त०] १ दक्षिण का एक देश जिसके अतर्गत लका आदि है और जहाँ के निवासी तिमिंगिल मत्स्य का मास खाते है। (बृहत्सहिता) २ उक्त देश का निवासी।

तिमि—पु०[स०√तिम् (गीला होना)+इन्]१ एक तरह की समुद्री बडी मछली। २ समुद्र। सागर। ३ आँखो का रतौंधी नामक रोग।

†अव्य०[स० तर्+इमि] उस प्रकार। वैसे।

तिमिकोश—पु०[ष०त०] समुद्र।

तिमिज—पु०[स० तिमि√जन् (पैदा होना)+ड]तिमि नामक मत्स्य से निकलनेवाला मोती। (बृहत्सहिता)

तिमित—वि० [स०√तिम्+क्त]१ अचल। निश्चल। स्थिर। २ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला।

तिमि-ध्वज—पु०[ब०स०] शबर नामक दैत्य जिसे मारकर रामचन्द्र ने ब्रह्मा से दिव्यास्त्र प्राप्त किया था।

तिमिर—पु०[स०√तिम्+किरच्] १ अधकार। अधेरा। २ आँखो का एक रोग जिसमे चीजे धुँधली, फीके रग की या रग-बिरगी दिखाई देती है। वैद्यक मे रतौंधी नामक रोग को भी इसी के अन्तर्गत माना है। ३ एक प्रकार का वृक्ष।

तिमिरनुद्—वि०[स० तिमिर√नुद् (नष्ट करना)+क्विप्] अधकार का नाश करनेवाला।

पु० सूर्य।

तिमिरभिद्—वि०[स० तिमिर√भिद् (भेदना)+क्विप्] अधकार को भेदने या नष्ट करनेवाला।

पु० सूर्य।

तिमिरमय—वि०[स० तिमिर+मयट्] जिसमे अधकार हो। अधकार-पूर्ण। अधकार से युक्त।

पु० १ राहु। २ ग्रहण। (सूर्य, चद्र आदि का)

तिमिर-रिपु—पु०[ष०त०] अधकार का शत्रु, सूर्य।

तिमिरहर—वि०[स० तिमिर√हृ (हरना)+अच्] तिमिर या अधकार दूर करनेवाला।

पु० १ सूर्य। २ दीपक। दीया।

तिमिरात—पु०[तिमिर-अत, ष०त०]१ तिमिर या अधेरे का अत। २ प्रभात। तडका।

तिमिरारि—पु०[तिमिर-अरि, ष०त०] अधकार का शत्रु अर्थात् सूर्य।

तिमिरारी—स्त्री०[स० तिमिराली] अधकार। अँधेरा।

तिमिला—स्त्री०[स०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

तिमिश—पु० =तिनिश (वृक्ष)।

तिमिष—पु०[स०√तिम् (गीला होना)+इसक् (षत्व)] १ ककडी। २ सफेद कुम्हडा। ३ पेठा। ४ तरबूज।

तिमी—पु०[स० तिमि+ङीष्]१ तिमि नाम की मछली। २ दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिससे तिमिंगलो की उत्पत्ति कही गई है।

तिमीर—पु०[स० तिमि√ईर् (गति)+अच्] एक तरह का पेड।

तिमुहानी†—स्त्री०=तिरमुहानी।

तिय—स्त्री०[स० स्त्री]१ स्त्री। औरत। २ पत्नी। भार्या।

तियतरा—वि०[स० त्रि-अतर] तीन पुत्रियो के उपरात जन्मनेवाला (पुत्र)।

तियला—पु०[हिं० तिय+ला(प्रत्य०)]१ कपडा। २ पहनने के कपडे। ३ पोशाक।

तिया*—स्त्री०=तिय (स्त्री)।

पु०=तीया।

तियागना†—स०=त्यागना।

तियागी*—वि०, पु०=त्यागी।

तिर—वि०[स० त्रि] हिं० तीन का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तिरकुटा, तिरपाई, तिरमुहानी।

तिरक—पु०[स० त्रिक]१ रीढ के नीचे का वह स्थान जहाँ दोनो कूल्हों की हड्डियाँ मिलती है। २ दोनो टाँगो के ऊपरवाले जोड का स्थान। ३ हाथी के शरीर का वह पिछला भाग जहाँ से दुम निकलती है।

तिरकट—पु०[?] आगे का पाल। अगला पाल। (लश०)

तिरकट गावा सवाई—पु०[?] जहाज का आगे का और सबसे ऊपरवाला पाल। (लश०)

तिरकट गावी—पु०[?] सिरे पर का पाल। (लश०)

तिरकट डोल—पु० [?] आगे का मस्तूल। (लश०)

तिरकट तवर—पु०[?] एक तरह का छोटा पाल जो जहाज के सब से ऊँचे मस्तूल पर लगाया जाता है। (लश०)

तिरकट सवर—पु०[?] जहाज मे लगा रहनेवाला सबसे ऊँचा पाल। (लश०)

तिरकट सवाई—पु०[?] एक तरह का पाल। (लश०)

तिरकना—अ०[अनु०] 'तिर' शब्द करते हुए किसी चीज का टूटना या फटना।

अ०=थिरकना।

तिरकस†—वि० [स० तिरस्] १. तिरछा। २ टेढ़ा।

तिरकाना—स० [?] रस्सा या और कोई बन्धन ढीला छोडना। (ल०) †अ०=थिरकना।

तिरकुटा—पु० [स० त्रिकट्] पीपल, मिर्च और सोठ ये तीनो एक मे मिली हुई कडवी वस्तुएँ।

तिरखा—स्त्री० [स० तृषा] १ प्यास। उदा०—जाट का मै लाडला तिरखा लगी सरीर।—लोकगीत। २ लोभ।

तिरखावत—वि०=तृषित।

तिरखित—वि० [स० तृषित, हिं० तिरखा] १ प्यासा। २ जिसे किसी बात की कामना हो।

तिरखूंटा—वि० [स० त्रि+हि० खूंट] [स्त्री० अल्पा० तिरखूंटी] तीन खूंटो या कोनोवाला। तिकोना।

तिरच्छ—पु० [?] तिनिश (वृक्ष)।

तिरछई†—स्त्री० [हि० तिरछा] तिरछापन।

तिरछा—वि० [स० तिर्यक् या तिरस] [स्त्री० तिरछी] १ कोई सीधी रेखा या इसी तरह की कोई और चीज जो लब रूप मे तथा क्षितिज के समानान्तर न हो बल्कि कुछ या अधिक ढालुई हो। २ जिसमे टेढापन या वक्रता हो।

पद—तिरछी चितवन या नजर=बिना सिर घुमाये पार्श्व या बगल मे कुछ देखने का भाव। **तिरछी बात या वचन**=मन को कष्ट पहुँचानेवाली कटु या अप्रिय बात।

पु० एक प्रकार का रेशमी कपडा जो प्राय अस्तर के काम मे आता है।

तिरछाई†—स्त्री० [हि० तिरछा+ई (प्रत्य०)] तिरछापन।

तिरछाना—अ० [हि० तिरछा] तिरछा होना।

स० तिरछा करना।

तिरछापन—पु० [हि० तिरछा+पन (प्रत्य०)] 'तिरछा' करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तिरछी उडी—स्त्री० [हि० तिरछा+उडना] माल खभ की एक कसरत।

तिरछी बैठक—स्त्री० [हि० तिरछी+बैठक] माल खभ की एक कसरत जिसमे दोनो पैरो को कुछ घुमाकर एक दूसरे पर चढाया जाता है।

तिरछे—क्रि० वि० [हि० तिरछा] १ तिरछेपन की अवस्था मे। २ वक्रता से।

तिरछौंहाँ†—वि० [हि० तिरछा] १ जिसमे कुछ या थोडा तिरछापन हो। २ तिरछा।

तिरछौहै—क्रि० वि० [हि० तिरछौहा] १ तिरछापन लिये हुए। २ वक्रता से।

तिरतालीस—वि०=तैंतालिस (४३)।

तिरतिराना†—अ० [अनु०] द्रव पदार्थ का बूंद बूंद करके टपकना।

तिरना—अ० १=तरना। २=तैरना।

तिरनी—स्त्री० [?] १ वह डोरी जिससे घाघरा आदि कमर मे बाँधा जाता है। नीवी। तिन्नी। फुफती। २ घाघरे या धोती का वह भाग जो कमर पर या नाभि के नीचे पडता है।

तिरप—स्त्री० [स० त्रिसम] नृत्य मे एक प्रकार का ताल जिसे त्रिसम या तिहाई कहते हैं।

क्रि० प्र०—लेना।

तिरपट†—वि० [देश०] १ (लकडी की धरन, पटले आदि के सबध मे) जो सूखकर ऐठ गया हो। २ टेढा-मेढा। तिडबिडगा। ३ कठिन। मुश्किल।

तिरपटा—वि० [हि० तिरपट] (व्यक्ति या पशु) जिसकी सामने की ओर ताकते समय पुतलियाँ कोनो मे चली जाती हो। ऐंचा-ताना। भेगा।

तिरपन—वि० [स० त्रिपचाशत्, प्रा० तिपण्ण] जो गिनती मे पचास से तीन अधिक हो। पचास से तीन ऊपर।

पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५३।

तिरपाई—स्त्री०=तिपाई।

तिरपाल—पु० [स० तृण+हि० पालना=बिछाना] फूस, सरकडे आदि के लबे पूले जो खपडो आदि के नीचे बिछाये जाते है। मुट्ठा।

पु० [अ० टारपालिन] एक प्रकार का मोटा कपडा जिस पर राल या रोगन चढाया गया हो। इसको जल नही भेदता।

तिरपित*—वि०=तृप्त।

तिरपौलिया—वि० [स० त्रि+हिं० पोल=फाटक] (वह बाजार, मकान आदि) जिसमे जाने के तीन बडे द्वार या रास्ते हो।

तिरफला—स्त्री० =त्रिफला।

तिरबेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

तिरबो—स्त्री० [हि० तिरबा] एक तरह की नाव। (सिंध)

तिरमिरा—पु० [स० तिमिर] १ एक रोग जिसमे अधिक प्रकाश के कारण आँखे चौधिया जाती है और कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देने लगता है। २ चकाचौध।

पु० [हिं० तेल+मिलना] घी, तेल या चिकनाई के छीटे जो पानी, दूध या और किसी द्रव पदार्थ के ऊपर तैरते हुए दिखाई पडते है।

तिरमिराना—अ० [हिं० तिरमिरा] (तिरमिरा के रोगी की) अधिक प्रकाश के कारण आँखे चौधियाना।

अ०=तिलमिलाना।

तिरमुहानी—स्त्री० [हि० तीन+फा० मुहाना] १ वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने के तीन मार्ग या रास्ते हो। २ वह स्थान जहाँ तीन ओर से तीन नदियाँ आकर मिलती हो।

तिरनाक—पु० [अ० तिर्याक] १ जहर-मोहरा जिससे साँप के विष का प्रभाव नष्ट होता है। २ सब रोगो की रामबाण औषधि।

तिरलोक†—पु०=त्रिलोक।

तिरलोकी—स्त्री०=त्रिलोक।

तिरवट—पु० [देश०] तराने (राग) का एक भेद। (सगीत)

तिरवराना—अ० १=तिरमिराना। २=तिलमिलाना।

तिरवाँह—पु० [स० तीर+वाह] नदी के तीर की भूमि। किनारा। तट।

क्रि० वि० नदी के किनारे किनारे।

तिरवा—पु० [फा०] वह दूरी जो उडान भरते समय तीर आदि पार करे। प्रास।

तिरविष्ट—पु० =त्रिविष्टप (स्वर्ग)।

तिरश्चीन—वि० [स० तिर्यक्+ख—ईन] १ तिरछा। २ टेढा। वक्र।

तिरश्चीन-गति—पु० [कर्म० स०] कुश्ती का एक पेच या पैतरा।

तिरसठ—वि० [स० त्रिषष्टि, प्रा० तिसट्ठि] जो गिनती मे साठ से तीन अधिक हो।
पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—६३।

तिरसा—पु० [?] वह पाल जिसका एक सिरा दूसरे सिरे की अपेक्षा अधिक चौडा होता है।

तिरसूल†—पु०=त्रिशूल।

तिरस्कर—वि० [स० तिरस्√कृ (करना)+ट] १ जो दूसरे से अधिक अच्छा या बढा-चढा हो। २ ढाँकनेवाला।

तिरस्करिणी—स्त्री० [स० तिरस्करिन्+ङीप्] १ ओट। आड। २ आड करने का परदा। चिक। चिलमन। ३ एक प्रकार की प्राचीन विद्या जिसकी सहायता से मनुष्य सब की दृष्टि से अदृश्य हो जाता था।

तिरस्करी (रिन्)—पु० [स०तिरस्√कृ+णिनि] परदा।

तिरस्कार—पु०[स० तिरस्√कृ+घञ्] [वि० तिरस्कृत] १ वह मनोभाव जो किसी को निकृष्ट या हेय समझने के कारण उत्पन्न होता है और उसका अनादर करने को प्रवृत्त करता है। २ वह स्थिति जिसमे उपयुक्त स्वागत, सत्कार आदि न किये जाने के फलस्वरूप अपने को अपमानित समझता हो। ३ डाँट-फटकार। भर्त्सना। ४ साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी अच्छी चीज मे भी कोई दोष दिखलाकर उसका अनादरपूर्वक त्याग तथा उसे तुच्छ सिद्ध किया जाता है।

तिरस्कृत—भू० कृ० [स० तिरस्√कृ+क्त] १ जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादरपूर्वक त्यागा या दूर किया हुआ। ३ आड या परदे मे छिपा हुआ।

तिरस्क्रिया—स्त्री० [स० तिरस्√कृ+श, इयङ्, टाप्] १ तिरस्कार २ ढकने का कपडा। आच्छादन। ३ पहनने के कपडे। पोशाक। वस्त्र।

तिरहा—पु० [देश०] एक तरह का उडनेवाला कीडा जो धान को क्षति पहुँचाता है।

तिरहुत—पु० [स० तीरभुक्ति] [वि० तिरहुतिया] बिहार के उस प्रदेश का पुराना नाम जिसमे इस समय मुजफ्फरपुर, दरभगा आदि नगर हैं।

तिरहुति—स्त्री० [हिं० तिरहुत] तिरहुत मे गाया जानेवाला एक तरह का गीत।

तिरहुतिया—वि०, पु० स्त्री०=तिरहुती।

तिरहुती—वि० [हि० तिरहुत] तिरहुत देश का। तिरहुत सबधी।
पु० तिरहुत का निवासी।
स्त्री० तिरहुत देश की बोली।

तिरहेल—वि० [स० त्रि] जो गणना मे तीसरे स्थान पर हो अथवा तीसरी बार आया या हुआ हो उदा०—जो तिरहेल रहै सौ तिया। —जायसी।

तिरा—पु० [देश०] १ एक पौधा जिसके बीजो की गिनती तेलहन मे होती है। २ उक्त पौधे के बीज।

तिराठी—स्त्री० [?] निसोत।

तिरानबे—वि० [सं० त्रि+हिं० नब्बे] जो गिनती मे नब्बे से तीन अधिक हो।
पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९३।

तिराना—स० [हि० तिरना] १ तिरने (अर्थात् तरने या तैरने) मे प्रवृत्त करना। २ दे० 'तारना'।

तिरास†—पु०=त्रास।

तिरासना—अ० [स० त्रासन] भयभीत या त्रस्त होना।
स० भयभीत या त्रस्त करना।

तिरासी—वि० [स० त्र्यशीति, प्रा० तियासिई] जो गिनती मे अस्सी से तीन अधिक हो।
पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८३।

तिराहा—पु० [हि० तीन+फा० राह] वह स्थान जहाँ से तीन ओर रास्ते जाते या आकर मिलते हो। तिरमुहानी।

तिराही—वि० [हिं० तिराह एक प्रदेश] १ तिराह प्रदेश मे बनने या होनेवाला। २ तिराह प्रदेश-सबधी।
स्त्री० उक्त प्रदेश मे बननेवाली एक तरह की कटारी।
क्रि० वि० [?] नीचे।

तिरि†—वि० [स० त्रि] तीन। उदा०—पुनि तिहि ठाउ परी तिरि रेखा।—जायसी।
स्त्री०=तिरिया (स्त्री)।

तिरिगत्त—पु०=त्रिगर्त्त (देश)।

तिरिच्छ—पु० [स तिनिश] दे० 'तिनिश'।

तिरिजिह्विक—पु० [स०] एक प्रकार का पेड।

तिरिदिवस—पु०=त्रिदिवस (स्वर्ग)।

तिरिनि*—पु०=तृण।

तिरिम—पु० [स०√तृ (तैरना)+इमक्] एक प्रकार का धान।

तिरिया—स्त्री० [स० स्त्री] स्त्री। औरत।
पद—तिरिया चरित्तर=स्त्रियो द्वारा होनेवाला कोई ऐसा चालाकी भरा विलक्षण तथा हेय काम जिसका रहस्य जल्दी सब की समझ मे न आता हो।
पु० [देश०] नैपाल मे होनेवाला एक तरह का बाँस।

तिरीछा†—वि०=तिरछा।

तिरीट—पु० [स०√तृ (तैरना)+कीटन्] १ लोध्र। लोध। २ दे० 'किरीट'।

तिरीफल—पु०=त्रिफला।

तिरी-बिरी—वि०=तिडी-बिडी।

तिरेंदा—पु०=तरेंदा।

तिरं—पु० [अनु०] हाथियो को जल मे लेटने के लिए दी जानेवाली आज्ञा का सूचक शब्द या सकेत।

तिरोजनपद—पु० [स० तिरस्-जनपद, ब० स०] अन्य राष्ट्र का मनुष्य विदेशी (कौ०)

तिरोधान—पु० [तिरस्√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. अतर्धान या लुप्त होने की अवस्था या भाव। २ इस प्रकार किसी चीज का हटाया-बढाया जाना कि वह फिर जल्दी दिखाई न पडे।

तिरोधायक—वि० [स० तिरस्√धा+ण्वुल्—अक] कोई चीज आड मे करने या छिपानेवाला।

तिरोभाव—पु० [तिरस्√भू (होना)+घञ्] १. आँखो से ओट होकर

अदृश्य हो जाना । अतर्धान । अदर्शन। २ गोपन। छिपाव। दुराव ।

तिरोभूत—भू० कृ० [स० तिरस्√भू+क्त] जो अदृश्य या गायब हो गया हो। अंतर्हित ।

तिरोहित—भू०कृ० [स० तिरस्√धा (धारण करना)+क्त, हि आदेश] १ छिपा हुआ। अर्तहित। अदृश्य। २ ढका हुआ। आच्छादित

तिरौंछा†—वि०=तिरछा ।

तिरौंदा†—पु०=तरेंदा।

तिर्यंचानुपूर्वी—स्त्री० [स० तिर्यच्-आनुपूर्वी, ब० स०] जैनियो के अनुसार वह अवस्था जिसमे जीव को तिर्यग्योनी मे जाने से पहले रहना पडता है।

तिर्यंची—स्त्री० [स० तिर्यच्+डीष्] पशु-पक्षियो की मादा ।

तिर्यक् (च्)—वि० [स० तिरस्√अञ्च् (जाना)+क्विन्] ढालुआँ।

तिर्यक्ता—स्त्री० [स० तिर्यच्+तल्—टाप्] तिरछापन। आडापन।

तिर्यक्त्व—पु० [स० तिर्यच्+त्व] तिरछापन। आडापन ।

तिर्यक्पाती (तिन्)—वि० [स० तिर्यक्√पत्(गिरना)+णिनि] आडा फैलाया या रखा हुआ। बेडा रखा हुआ।

तिर्यक्-भेद—पु० [तृ० त०] दो खभो आदि पर स्थित किसी वस्तु का अधिक दाब के कारण बीच मे से टूट जाना ।

तिर्यक्-स्रोतस्—पु० [ब० स०] १ वह जिसका फैलाव आडा हो। २ ऐसा जतु या जीव जिसके गले मे की आहार-नलिका सीधी नही, बल्कि टेढी हो और जिसके पेट मे आहार टेढा या तिरछा होकर पहुँचता हो।

विशेष—प्राय सभी पक्षी और पशु इसी वर्ग मे आते है।

तिर्यगयन—पु० [तिर्यक्-अयन, कर्म० स०] सूर्य की वार्षिक परिक्रमा ।

तिर्यगीक्ष—वि० [स०तिर्यक्√ईक्ष् (देखना)+अच्] तिरछे देखनेवाला।

तिर्यग्गति—स्त्री० [कर्म० स०] १ तिरछी या टेढी चाल । २ जीव का पशु योनि मे जन्म लेना ।

तिर्यग्गामी (मिन्)—पु० [स० तिर्यक्√गम् (जाना)+णिनि] केकडा।

तिर्यग्दिक् (श्)—स्त्री० [कर्म० स०] उत्तर दिशा।

तिर्यग्दिश्—स्त्री० [कर्म स०] उत्तर दिशा ।

तिर्यग्यान—पु० [ब० स०] केकडा ।

तिर्यग्योनि—स्त्री० [ष० त०] पशु-पक्षियो आदि की योनि। विशेष दे० 'तिर्यक् स्रोतस्' ।

तिर्यच—अव्य=तिर्यक् ।

तिलंगनी—स्त्री० [हि० तिल+अँगिनी] एक प्रकार की मिठाई जो तिलो को चीनी की चाशनी मे पागकर बनाई जाती है।

तिलगसा—पु० [देश०] एक तरह का पेड।

तिलगा—पु० [हि० तिलगाना, स० तैलग] १ तिलगाने या तैलग देश का निवासी । २ भारतीय सेना का सिपाही ।

विशेष—पहले-पहले अँगरेजो ने तैलग देश के आदमियो की ही भारतीय सेना बनाई थी, इसी से यह नाम पडा था।

३ एक प्रकार का कन-कौआ या पतग ।

तिलगाना—पु० [स० तैलग] तैलग देश ।

तिलगी—पु० [स० तैलग] तिलगाने का निवासी । तैलग ।

स्त्री० तिलगाने की बोली ।

स्त्री० [हि० तीन+लग] एक तरह की गुड्डी या पतग ।

तिलंतुद—पु० [स० तिल√तुद् (पीडित करना)+खश्, मुम्] तेली ।

तिल—पु० [स०√तिल् (चिकना होना)+क] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी खेती उसके दानो या बीजो के लिए की जाती है। २ उक्त पौधे के दाने या बीज जो काले, सफेद और लाल तीन प्रकार के होते है और जिन्हे पेरकर तेल निकाला जाता है। हिंदुओ मे यह पवित्र माना जाता है, इसी लिए इसे पापघ्न और पूतधान्य भी कहते है। इसे दान करने और इससे तर्पण, होम आदि करने का माहात्म्य है। यह कई प्रकार के पकवानो और मिठाइयो के रूप मे खाया भी जाता है। वैद्यक मे तिल कफ, पित्त, वातनाशक तथा अग्नि को दीपित करनेवाले माने गये है।

पद—तिल तिल करके=बहुत थोडा-थोडा करके । जैसे—बरसात के शुरू मे तिल तिल करके दिन छोटा होने लगता है। **तिल भर**=(क) बहुत ही जरा-सा या थोडा। जैसे—तिल भर नमक तो ले आओ। (ख) बहुत थोडी देर। क्षण भर। जैसे—तुम तो तिल भर ठहरते नही, बात किससे करे।

मुहा०—तिल का ताड करना=किसी बहुत छोटी-सी बात को बहुत बढा देना। बात का बतगड करना या बनाना। **तिल चाटना**=मुसलमानो मे एक प्रकार का टोटका जिसमे दूल्हा अपनी दुलहिन के वश मे रहना सूचित करने के लिए उसकी हथेली पर रखे हुए तिल चाटकर खाता है। **(किसी के) काले तिल चाबना**=किसी का इस प्रकार बहुत अधिक अनुगृहीत या ऋणी होना कि आगे चलकर उसका कोई बुरा परिणाम भोगना पडे। जैसे—मैंने तुम्हारे काले तिल चाबे थे, जिसका फल भोग रहा हूँ ।

विशेष—तिल का दान प्राय लोग शनि ग्रह का अरिष्ट या दोष टालने के लिए करते है, इसी आधार पर यह मुहा० बना है।

मुहा०—(किसी स्थान पर) तिल धरने की भी जगह न होना= जरा सी भी जगह खाली न रहना। पूरा स्थान ठसाठस भरा रहना। जैसे—कमरे मे इतने अधिक आदमी थे (या इतना अधिक सामान भरा था) कि कही तिल धरने की भी जगह नही थी। **(किसी के) तिलो से तिल निकालना**=किसी से बहुत कठिनतापूर्वक अपना कोई काम निकालना या स्वार्थ सिद्ध करना ।

कहा०—तिल की ओट पहाड=किसी छोटी-सी बात की आड मे होनेवाली कोई बहुत बडी बात। **इन तिलो मे तेल नही है**=इनसे किसी प्रकार की सहायता नही मिल सकती, अथवा कोई कार्य अथवा स्वार्थ सिद्ध नही हो सकता।

२ काले रग का वह छोटा दाग जो शरीर पर प्राकृतिक रूप से लक्षण आदि के रूप मे होता है। जैसे—गाल, ठोढी या बाह पर का तिल। ३ काली बिंदी के आकार का गोदना जो स्त्रियाँ शोभा के लिए गाल, ठोढ़ी आदि पर गोदाती है। ४ आँख की पुतली के बीच की गोल बिंदी जिस पर दिखाई पडनेवाली चीज का छोटा-सा प्रतिबिब पडता है। तारा। ५ किसी प्रकार का छोटा काला, गोल बिंदु। जैसे—कुछ स्त्रियाँ काजल से गाल या ठोढी पर तिल बनाती है।

मुहा०—तिल बँधना=सूर्यकात शीशे से होकर आये हुए सूर्य के प्रकाश का केंद्रीभूत होकर बिंदु के रूप मे एक स्थान पर पडना ।

६ किसी वस्तु का तुच्छ से तुच्छ या बहुत ही थोडा अश या कोई बहुत छोटी चीज। जैसे—तिल चोर, सो बज्जर चोर।—कहा०। ७ बहुत ही थोड़ा समय, क्षण या पल। उदा०—(क) एहि जीवन कै आस का, जस सपना तिल आधु।—जायसी। (ख) तिल मे दिल लेके यूँ मुकरते है कि गोया इन तिलो मे तेल नही।—कोई शायर।

तिल-कठी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] विष्णु काँची। काली कौवा ठोंठी।

तिलक—पु० [स० तिल+कन्] १ केसर, चदन, रोली आदि से ललाट पर लगाई जानेवाली गोल बिंदी। लबी रेखा आदि के आकार का लगाया जानेवाला चिह्न।

विशेष—ऐसा चिह्न मुख्यत विशिष्ट धार्मिक सप्रदायो के अनुयायी होने का सूचक होता है, और प्राय प्रत्येक सप्रदाय का तिलक कुछ अलग आकार-प्रकार का रहता तथा कभी कभी माथे के सिवा छाती, बाहो आदि पर भी लगाया जाता है। परन्तु प्राय शारीरिक शोभा के लिए भी और कुछ विशिष्ट मागलिक अवसरो पर प्रथा या रीति के रूप मे भी तिलक लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—धारना।—लगाना।—सारना।

२ उक्त प्रकार का वह चिह्न जो नये राजा के अभिषेक अथवा पहले-पहल राज-सिहासन पर बैठने के समय उसके मस्तक पर लगाया जाता है। राज-तिलक। ३ भावी वर के मस्तक पर लगाया जाने-वाला उक्त प्रकार का वह चिह्न जो विवाह-सबध स्थिर होने का सूचक होता है और जिसके साथ कन्या-पक्ष की ओर से कुछ धन, फल, मिठाइयाँ आदि भी दी जाती है। टीका।

क्रि० प्र०—चढना।—चढाना।

मुहा०—तिलक देना या भेजना=उक्त अवसर पर धन, मिठाइयाँ आदि देना या भेजना।

४ माथे पर पहनने का स्त्रियो का एक गहना। टीका। ५ वह जो अपने वर्ग मे सब से श्रेष्ठ हो। शिरोमणि। जैसे—रघुकुल तिलक श्रीराम चद्र। ६ किसी ग्रथ के कठिन पदो, वाक्यो आदि की विशद और विस्तृत व्याख्या। टीका। ७ पुन्नाग की जाति का एक पेड जिसके पुष्प तिल के पुष्प से मिलते-जुलते होते है। इसकी लकडी और छाल दवा के काम आती है। ८ मूँज आदि का घूआ या फूल। ९ लोध का पेड। १० मरुअक। मरुआ। ११ एक प्रकार का अश्वत्थ। १२ एक प्रकार का घोडा। १३ पेट के अन्दर की तिल्ली। क्लोम। १४ साँचर नमक। १५ सगीत मे ध्रुवक का एक भेद जिसमे एक-एक चरण पचीस पचीस अक्षरो के होते हैं।

पु० [तु० तिरलीक का सक्षिप्त रूप] १ एक प्रकार का ढीला-ढाला जनाना कुरता जो प्राय मुसलमान स्त्रियाँ सूथन के साथ पहनती हैं। २. राजा या बादशाह की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाले पहनने के कपडे। खिलअत। सिरोपाव।

वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। २ कीर्ति, शोभा आदि बढानेवाला। जैसे—रघुकुल तिलक।

तिलक-कामोद—पु० [कर्म० स०] ओडव-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है।

तिलकट—पु० [स० तिल+कटच्] तिल का चूर्ण।

तिलकडिया—पु० [स० तिलक] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और एक गुरु होते है। उगाध। यशोदा।

तिलकना—अ० [हि० तडकना] गीली मिट्टी का सूखकर स्थान-स्थान पर दरकना या फटना। ताल आदि की मिट्टी का सूखकर दरार के साथ फटना।

†अ० = फिसलना। (पश्चिम)

तिलक-मार्ग—पु० [स०] १ माथे पर का वह स्थान जहाँ तिलक लगाया जाता है। २ माथे पर लगा हुआ तिलक या उसका चिह्न।

तिलक-मुद्रा—पु० [स० मध्य० स०] धार्मिक क्षेत्र मे माथे पर लगा हुआ तिलक और शरीर पर अकित किए हुए साम्प्रदायिक चिह्न।

तिल-कल्क—पु० [ष० त०] तिल का चूर्ण। तिलकुट।

तिलकहरु†—पु० दे० 'तिलकहार'।

तिलकहार—पु० [हि० तिलक+हार (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो कन्या-पक्ष की ओर से वर को तिलक चढाने के लिए भेजा जाता है।

तिलका—स्त्री० [स० तिल√कै (शब्द करना)+क+टाप्] १ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण (IIS) होते है। इसे 'तिल्ला' 'तिल्लाना' और डिल्ला' भी कहते है। २ गले मे पहनने का एक गहना।

तिल-कालक—पु० [उपमि० स०] १ शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न। तिल। २ एक प्रकार का रोग जिसमे पुरुष की लिंगेंद्रिय पक जाती है और उस पर काले दाग पड जाते है।

तिलकावल—वि० [स० तिलक+अव√ला (लाना)+क ?] १ जिसने अपने शरीर के किसी अग पर तिल का चिह्न बनाया हो। २ तिल सरीखे चिह्न से युक्त।

तिलकाश्रय—पु० [स० तिलक-आश्रय ष० त०] तिलक लगाने का स्थान। ललाट।

तिल-किट्ट—पु० [ष० त०] तिल की खली। पीना।

तिलकित—भू० कृ० [स० तिलक+इतच्] जिस पर या जिसे तिलक लगा हो।

तिलकुट—पु० [स० तिलकल्क] १ एक प्रकार की मिठाई जो गुड, चीनी आदि की चाशनी मे तिल पागकर बनाई जाती है। २ [स० तिलखलि] तिल की खली।

तिलकोडा—पु० [देश०] एक तरह का जगली कुदरू जिसकी पत्तियो का साग बनाया जाता है।

तिलखलि—स्त्री० [स०] तिल की खली।

तिलखा—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तिलचटा—पु० [हि० तिल+चाटना] एक तरह का झींगुर। चपडा।

तिल-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ कृष्ण चतुर्थी।

तिल-चाँवरा†—वि० = तिल-चावला।

तिल-चावला—वि० [हि० तिल+चावल] [स्त्री० तिल-चावली] जो तिलो और चावलो के मेल की तरह कुछ काला और कुछ सफेद हो। जैसे—तिल-चावलीदाढी, तिल-चावले बाल।

तिल-चावली—स्त्री० [हि० तिल+चावल] तिलो और चावलो की खिचडी। उदा०—जैसी तरी तिल चावली बैसे मेरे गीत।—कहावत।

तिल-चित्र-पत्रक—पु० [ब० स०, कप्] तैलकद।

तिल-चूर्ण—पु० [प० त०] तिलकुट।

तिलछना—अ० [अनु०] १ विकल तथा व्यग्र होना। २ छटपटाना।

तिलडा—वि० [हि० तीन लड] [स्त्री० तिलडी] जिसमे तीन लड हो। तीन लडोवाला। जैसे—तिलडी करधनी, तिलडा हार।

पु० [देश०] धातु पर नक्काशी करने की छेनी।

तिलडी—स्त्री० [हि० तीन+लड] तीन लडियो की एक माला जिसके बीच मे एक जुगनी लटकती है।

तिल-तडुलक—पु० [स० तिल-तडुल, ष० त०, √कै (प्रतीत होना)+क] १ गले लगाना। आलिगन। २ भेट। मिलन।

तिल-तैल—पु० [ष० त०] तिलो को पेरकर निकाला हुआ तेल। तिल का तेल।

तिलदानी—स्त्री० [हि० तिल्ला+स० आधान] सूई, तागा, अगुश्ताना आदि रखने की थैली। (दरजी)

तिल-धेनु—स्त्री० [स० मध्य० स०] दान करने के लिए तिलो की बनाई हुई गौ की आकृति।

तिलपट्टी—स्त्री० [हि० तिल+पट्टी] खॉड या गुड मे पगे हुए तिलो का जमा हुआ टुकडा।

तिल-पपडी—स्त्री० =तिलपट्टी।

तिल-पर्ण—पु० [स० ब० स०] १ चदन। २ साल का गोद।

तिलपर्णिका—स्त्री० [स० तिलपर्णी+कन्--टाप्, ह्रस्व]=तिल-पर्णी।

तिलपर्णी—स्त्री० [स० तिलपर्ण+ङीष्] रक्त चदन।

तिलपिज—पु० [स० तिल+पिज] तिल का वह पौधा जिसमे बीज आदि न लगे।

तिल-पिच्चट—पु० [ष० त०] तिलो की पीठी। तिलकुटा

तिलपीड—पु० [स० तिल√पीड् (पीडित करना)+अच्] तेली जो तिल पेरकर तेल निकालता है।

तिल-पुष्प—पु० [ष० त०] १ तिल का फूल। २ व्याघ्रनख या बघनखा नामक गन्ध-द्रव्य।

तिल-पुष्पक—पु० [ब० स०, कप्] १ बहेडा। २ नाक जिसकी उपमा तिल के फूल से दी जाती है।

तिलफरा—पु० [देश०] एक तरह का वृक्ष।

तिलबढा—पु० [देश०] पशुओ को होनेवाला एक रोग जिसमे उनके गले मे सूजन हो जाती है और जिसके कारण उनसे कुछ खाया-पीया नही जाता।

तिलबर—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तिलभार—पु० [ब० स०] एक प्राचीन देश।

तिलभाविनी—स्त्री० [स० तिल√भू (होना)+णिच्+णिनि–ङीप्] चमेली। मल्लिका।

तिलभुग्गा—पु० [हि० तिल+स० भुक्त] तिल तथा खोये आदि के योग से बननेवाला एक तरह का चूर्ण।

तिल-भृष्ट—वि० [तृ० त०] तिल के साथ भूना या पकाया हुआ। (खाद्य-पदार्थ)

तिल-भेद—पुं० [ष० त०] पोस्ते का दाना।

तिल-मयूर—पु० [मध्य० स०] एक पक्षी जिसके परो पर तिलो के समान काले-काले चिह्न होते है।

तिलमापट्टी—स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत के कुछ प्रदेशो मे होनेवाली एक तरह की कपास।

तिलमिल—स्त्री० [हि० तिरमिर] १ ऐसी अवस्था जिसमे अधिक प्रकाश के कारण अथवा रोग आदि के कारण आँखो के सामने कभी प्रकाश और कभी अँधेरा आ जाता हो। २ चकाचौध।

तिलमिलाना—अ० [हि० तिरमिल] [भाव० तिलमिलाहट] १ तिलमिल होना। आँखो के आगे कभी अँधेरा और कभी प्रकाश आना। २ चकाचौध होना।

अ० [अनु०] [भाव० तिलमिलाहट, तिलमिली] १ पीडा के कारण विकल होना। २ पछताना।

तिलमिलाहट—स्त्री० [हि० तिलमिलाना] तिलमिलाने की अवस्था या भाव। बेचैनी।

तिलमिली—स्त्री० =तिलमिलाहट।

तिल-रस—पु० [ष० त०] तिलो का तेल।

तिलरा—पु० [देश०] कसेरो की एक तरह की छेनी।

†पु० =तिलडा।

तिलरिया†—स्त्री० = तिलडी।

तिलरी—स्त्री० = तिलडी (तीन लडोवाला हार)।

तिलवट—पु० = तिल-पट्टी।

तिलवन—स्त्री० [देश०] एक तरह का जगली पौधा जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती है।

तिलवा†—पु० [हि० तिल] तिलो का लड्डू।

तिलशकरी—स्त्री० [हि० तिल+शकर] तिलो और शक्कर के योग से बना हुआ एक तरह का पकवान। तिलपपडी।

तिल-शिखी (खिन्)—पु० [मध्य० स०]=तिल-मयूर।

तिल-शैल—पु० [मध्य० स०] दान करने के लिए तिलो का लगाया हुआ ऊँचा ढेर या राशि।

तिलस्म—पु० [यू० टेलिस्मा] १ इन्द्रजाल या जादू के जोर से कोई अलौकिक काम कर या करा सकने की शक्ति। २ इस प्रकार किया या कराया हुआ कोई काम। अलौकिक व्यापार।

मुहा०—तिलस्म तोडना=ऐसी प्रतिक्रिया करना जिससे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया हुआ तिलस्म या जादू का सारा स्वरूप नष्ट हो जाय।

तिलस्मात—पु० [यू० टेलिस्मन] १ जादू। २ अद्भुत या अलौकिक कार्य। चमत्कार। करामात।

तिलस्मी—वि० [हि० तिलस्म] तिलस्म या जादू-सबधी।

तिलहन—पु० =तेलहन।

तिलाकित दल—पु० [स० तिल-अकित-दल, ब० स०] तैलकद।

तिलाजली—स्त्री० [स० तिल-अजली, मध्य० स०] १ किसी के मरने पर उसके सबधियो द्वारा किया जानेवाला एक कृत्य जिसमे वे हाथ मे तिल और जल लेकर उसके नाम से छोडते है। २ सदा के लिए किसी का सग या साथ छोडना। जैसे—लडका घरवालो को तिलाजली देकर चला गया।

क्रि० प्र०—देना।

तिलाबु—पु० [स० तिल-अबु, मध्य० स०] =तिलाजली।

तिला—पु० [हि० तेल] एक तरह का तेल जिसे लिंगेंद्रिय पर मलने से पुसत्व शक्ति बढती है।
†पु० = तिल्ला।

तिलाक—पु० = तलाक।

तिलादानी†—स्त्री०= तिलदानी।

तिलान्न—पु० [स० तिल-अन्न, मध्य० स०] तिल की खिचडी।

तिलापत्या—स्त्री० [स० तिल-अपत्य, ब० स०,टाप्] काला जीरा।

तिलाम—पु० [अ० गुलाम का अनु०] गुलाम का गुलाम। दासानुदास।

तिलावा—पु० [हि० तीन+लावना, लाना, ?] १ वह बडा कूआँ जिस पर एक साथ तीन पुरवट चल सके। २ नगर-रक्षकों, पुलिस आदि का रात के समय बस्ती मे लगनेवाला गश्त।

तिलिंग—पु० [स०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध देश।

तिलिंगा†—पु० =तिलगा (तैलग देश का निवासी या सिपाही)।

तिलित्स—पु० [स० √तिल् (चिकना करना)+इन्, तिलि√त्सर् (कुटिल गति)+उ] गोनस साँप।

तिलिया—पुं० [देश०] सरपत।
†वि०, पु० = तेलिया

तिलिस्म—पु० = तिलस्म।

तिलिस्मी—वि० = तिलस्मी।

तिली—स्त्री० १ =तिल्ली। २ =तिल।

तिलेगू—पु० = तेलगू।

तिलेती—स्त्री० [हि० तेलहन+एती (प्रत्य०)] तेलहन (तिल, सरसो आदि पौधे) काटने पर खेत मे बची रहनेवाली खूँटी।

तिलेदानी—स्त्री० =तिलदानी।

तिलोक—पु० =त्रिलोक।

तिलोकपति—पु०=त्रिलोकपति (विष्णु)।

तिलोकी—पु० [स० त्रिलोकी] १ इक्कीस मात्राओ का एक छद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त मे लघु और गुरु होता है। २ =त्रैलोक्य। जैसे—त्रिलोकी नाथ।

तिलोचन—पु० =त्रिलोचन।

तिलोत्तमा—स्त्री० [स० तिल-उत्तमा, मध्य० स०] एक अप्सरा जिसके सबध मे कहा जाता है कि ब्रह्मा ने ससार के सभी सुन्दरतम पदार्थों से एक-एक तिल भर अश लेकर इसके शरीर की रचना की थी।

तिलोदक—पु० [स० तिल-उदक, मध्य० स०] =तिलाजलि।

तिलौना—वि० =तेलौना (स्निग्ध)।

तिलोरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मैना जिसे तेलिया मैना भी कहते हैं।
†स्त्री० = तिलौरी।

तिलोहरा†—पु० [देश०] पटसन का रेशा।

तिलौंछ—स्त्री० [हि० तिल+औछ (प्रत्य०)] तेल की वह उग्र गध जो उसमे तली हुई या उससे मिली हुई वस्तुओ मे से निकलती है।

तिलौंछना—स० [हि० तेल+औछना (प्रत्य०)] १ किसी चीज पर तेल लगाना या रगडना। २ चिकना करना।

तिलौंछा—वि० [हि० तेल+औछा (प्रत्य०)] १ जिसमे तिलौछ हो। २ जिसमे तेल की-सी गध, रग या स्वाद हो।

तिलौरी—स्त्री० [हि० तिल+बरी] वह बरी जिसमे तिल भी मिले हुए हो।
स्त्री० = तिलोरी।

तिल्य—वि० [स० तिल+यत्] (खेत) जिसमे तेलहन की खेती हो सकती हो।
पु० उक्त प्रकार का खेत।

तिल्लना—पु० [स० तिलका] तिलका नाम का वर्ण-वृत्त।

तिल्लर—पु० [देश०] होबर नामक पक्षी का एक नाम।

तिल्ला—पु० [अ० तिला = स्वर्ण] १ कलाबत्तू, बादले आदि के तार जो कपडो मे ताने-बाने के साथ बुने जाते है।
पद—तिल्लेदार। (देखे)
२ दुपट्टे, पगडी, साडी आदि का वह आँचल जिसमे उक्त प्रकार का कलाबत्तू या बादले का काम किया हो।
पद—नखरा तिल्ला। (देखे)
३ वह सुदर पदार्थ जो किसी वस्तु की शोभा बढाने के लिए उसमे जोड दिया जाता है। (क्व०)
पु० तिलका (वर्ण-वृत्त') का दूसरा नाम।

तिल्लाना†—पु० = तराना।

तिल्ली—स्त्री० [स० तिलक] १ पेट के भीतर का गुठली के आकार का वह छोटा अवयव जो बाई ओर की पसलियो के नीचे होता है। २ एक रोग जिसमे उक्त अवयव मे सूजन आ जाती है।
स्त्री० [स० तिल] तिल (बीज)।
स्त्री० [देश०] एक तरह का बाँस।
†स्त्री० = तिली।

तिल्लेदार—वि० [हि० तिल्ला+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमे कलाबत्तू, बादले आदि के तार भी बुने या लगे हो।
जैसे—तिल्लेदार पगडी या साडी।

तिल्व—पु० [स०√तिल् (चिकना करना)+वन्] लोध्र। लोध।

तिल्वक—पु० [स० तिल्व+कन्] १ लोध। २ तिनिश वृक्ष।

तिल्हारी†—स्त्री० [?] घोडे के माथे पर बाँधी जानेवाली झालर। नुकता।

तिवाडी—पु०=तिवारी (त्रिपाठी)।

तिवान—पु० [?] चिंता। फिक्र।

तिवारी†—पु०=त्रिपाठी।

तिवास†—पु० [स० त्रिवासर] तीन दिन।

तिवासी†—वि०=तिबासी।

तिवी—स्त्री० [देश०] खेसारी।

तिशना—पु० [फा० तशनीय] ताना। मेहना।
†स्त्री०=तृष्णा।

तिष्ट*—वि० [हि० तिष्टना] बनाया हुआ। रचित।

तिष्टना—स०[स० स्थिति] रचना। बनाना। उदा०—कोउ कहै यह काल उचावत कोई कहै यह ईसुर तिष्टी।—सुंदर।

तिष्ठद्गु—पु० [स० अव्य० स० (नि०)] गोधूली का समय। सध्या।

तिष्ठना—अ०[स० तिष्ठत्] १ ठहरना। २ बैठना। ३ स्थिर रहना। बने रहना।

तिष्ठा—स्त्री० [?] एक नदी जो हिमालय से निकलकर नवाबगज के पास गगा मे मिली है।

तिष्य—पु० [स०√तुष् (सन्तोष करना)+क्यप्, नि०सिद्धि] १ पुष्य नक्षत्र। २ पौष मास। पूस। ३ कलियुग।
वि० कल्याण या मगल करनेवाला।

तिष्यक—पु० [स० तिष्य+कन्] पौस मास।

तिष्य-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] आमलकी।

तिष्या—स्त्री० [स० तिष्य+अच्—टाप्] आमलकी।

तिष्छन*—वि०=तीक्षण।

तिस†—सर्व० [स० तस्मिन्, पा० तिस्स] 'ता' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। 'उस' का पुराना और स्थानिक रूप। जैसे—तिसने, तिसको, तिससे इत्यादि।
पद—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था मे भी। जैसे—सौ रुपये तो ले गये, तिस पर अभी तक नाराज ही है।

तिसकार—पु०=तिरस्कार।

तिसखुट†—स्त्री० [हिं० तीसी+खूँटी] तीसी के पौधे की खूँटी।

तिसखुर†—स्त्री०=तिसखुट।

तिसन*—स्त्री०=तृष्णा।

तिसरा†—वि०=तीसरा।

तिसरायके—अव्य० [हिं० तिसरा] तीसरी बार।

तिसरायँत—स्त्री० [हिं० तीसरा] तीसरा अर्थात् गैर या पराया होने का भाव।
†पु०=तिसरैत।

तिसरैत—पु० [हिं० तीसरा] १ दो विरोधी दलो, पक्षो, व्यक्तियो से भिन्न ऐसा तीसरा व्यक्ति जिसका उनके वैर-विरोध से कोई सम्बन्ध न हो। तटस्थ। जैसे—किसी तिसरैत को बीच मे डालकर झगडा निबटा लो। २ लाभ, सपत्ति आदि मे तीसरे अश या हिस्से का अधिकारी अथवा मालिक।

तिसा†—वि० [स० तादृश] [स्त्री० तिसी] तैसा। वैसा।
*स्त्री०=तृषा।

तिसाना†—अ० [स० तृषा] प्यासा होना। तृषित होना। उदा०—सरवर तटि हसिनी तिसाई।—कबीर।

तिसार† —पु०=अतिसार।

तिसूत—पु० [?] एक प्रकार की ओषधि।

तिसूती—वि० [हिं० तीन+सूत] (कपडा) जिसमे तीन-तीन सूत एक साथ ताने और बाने मे होते हे।
स्त्री० उक्त प्रकार से बुना हुआ कपडा।

तिसे*—सर्व०=उसे।

तिस्ना—स्त्री०=तृष्णा।

तिस्रा—स्त्री० [?] शख-पुष्पी।

तिस्स—पु० [स० तिष्य] सम्राट् अशोक के एक भाई का नाम।

तिहत्तर—वि० [स० त्रिसप्तति, पा० तिसत्तति, प्रा० तिहत्तरि] जो गिनती मे सत्तर से तीन अधिक हो।
पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७३।

तिहद्दा—पु० [हिं० तीन+हद्द=सीमा] वह स्थान जहाँ तीन हद्दे मिलती हो।

तिहरा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० तिहरी] दही जमाने या दूध दुहने का मिट्टी का बरतन।
†वि०=तेहरा।

तिहराना†—स०=तेहराना।

तिहरी†—स्त्री० [हिं० तीन+हार] तीन लडो की माला।
+वि०='तेहरा' का स्त्री०।

तिहवार†—पु०=त्योहार।

तिहवारी—स्त्री०=त्योहारी।

तिहा (हन्)—पु० [स०√तुह् (पीडित करना)+कनिन्, नि० सिद्धि] १ रोग। व्याधि। २ सद्भाव। ३ चावल। ४ धनुष।

तिहाई—स्त्री० [स० त्रि+हिं० हाई (प्रत्य०)] १ किसी चीज के तीन समान भागो मे कोई या हर एक। तीसरा अश, भाग या हिस्सा। २ खेत की उपज या पैदावार जिसका केवल तीसरा भाग काश्तकार को मिला करता था और दो-तिहाई जमींदार ले लेता था। ३ दे० 'तिहैया'। ४ उपज। फसल। (पहले खेत की उपज का तृतीयाश काश्तकार लेता था इसी से यह नाम पडा।)
मुहा०—तिहाई मारी जाना=फसल का न उपजना या नष्ट हो जाना।

तिहउ†—पु०=तिहाव (गुस्सा)।

तिहानी—स्त्री० [देश०] चूडियाँ बनानेवालो की एक लकडी जो तीन बालिश्त लबी और एक बालिश्त चौडी होती हे।

तिहायत† पु० दे० 'तिसरैत'।

तिहारा, तिहारो* —सर्व० [हि०] तुम्हारा का ब्रज रूप।

तिहाली—स्त्री० [देश०] कपास की बौडी।

तिहाव†—पु० [हि० तेह=गुस्सा+ताव] १ क्रोध। गुस्सा। २ आपस की अनबन। बिगाड।

तिहि—सर्व०=तेहि।

तिहीं†—क्रि० वि० [?] १ उसी मे। २ उसी जगह।

तिहूँ† —वि० [हिं० तीन+हूँ (प्रत्य०)] तीनो। जैसे—तिहू लोक।

तिहैया—पु० [हि० तिहाई] १ किसी चीज का तीसरा अश या भाग। तिहाई। २ ढोलक, तबला, पखावज आदि बजाने मे कलापूर्ण सौन्दर्य लानेवाली तीन थापे जिनमे से प्रत्येक थाप जो अतिम या समवाले ताल को तीन भागो मे बाटकर प्रत्येक भाग पर दी जाती है और जिसकी अतिम थाप ठीक सम पर पडती है।

ती—स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री। औरत। उदा०—(क) तीरथ चलत मन ती-रथ चलत है—सेनापति। (ख) औ तैसे यह लच्छन ती के।—रत्नाकर। २ जोरू। पत्नी। ३ नलिनी या मनोहरण छन्द का एक नाम।

तीअन†—स्त्री० [स० तृणान्न] शाक। भाजी। तरकारी।

तीकरा†—पु० [देश०] अँखुआ। अकुर।

तीकुर—पु० [हि० तीन+कूरा=अश] १ दे० 'तिहया'। २ किसी चीज का बहुत छोटा टुकडा।
†पु०=तीखुर।

तीक्षण* —वि०=तीक्ष्ण।

तीक्षन—वि० =तीक्ष्ण।

तीक्ष्ण—वि० [स०√तिज् (तीखा करना)+क्स्न, दीर्घ] १ (पदार्थ) जिसका स्वाद चरपरा, झालदार या हलकी चुनचुनी उत्पन्न करनेवाला हो। तीखे स्वादवाला। जैसे—प्याज, लहसुन आदि। २ (शस्त्र) जिसकी धार बहुत चोखी या तेज अथवा नोक बहुत पैनी हो। जैसे—तलवार, बरछी आदि। ३ जिसकी गति या वेग बहुत अधिक हो। प्रचड। जैसे—तीक्ष्ण वायु। ४ जिसका परिणाम या प्रभाव बहुत उग्र या तीव्र हो। जैसे—तीक्ष्ण स्वभाव। ५ जो किसी बात मे औरो से बहुत बढ-चढकर हो या अधिक गहराई तक पहुँच सके। जैसे—तीक्ष्ण बुद्धि। ६ (कथन) जो अप्रिय और कटु हो। जैसे—तीक्ष्ण वचन। ७ आत्मत्यागी। ८ जो कभी आलस्य न करता हो। निरालस्य। ९ जिसे सहना कठिन हो। जैसे—तीक्ष्ण ताप या शीत।

पु० [स०] १. उत्ताप। गरमी। २ जहर। विष। ३ वत्सनाभ। बछनाग। ४ मृत्यु। मौत। ५ युद्ध। लडाई। ६ महामारी। मरी। ७ चव्य। चाब। ८ मुष्यक। मोखा। ९ जवाखार। १० सफेद कुश। ११ समुद्री नमक। करकच। १२ कुंदरू गोद। १३ इस्पात। १४ शास्त्र। १५ योगी। १६ ज्योतिप मे मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र। १७ पूर्वा और उत्तरा भाद्रपदा, ज्येष्ठा, अश्विनी और रेवती नक्षत्रो मे बुध की गति।

तीक्ष्ण-कटक—पु० [ब० स] १ धतूरे का पेड। २ बबूल का पेड। ३ करील का पेड। ४ इगुदी या हिंगोट का पेड।

तीक्ष्ण-कटका—स्त्री० [स० तीक्ष्णकटक+टाप्] एक प्रकार का वृक्ष जिसे ककारी कहते है।

तीक्ष्ण-कद—पु० [ब० स०] प्याज।

तीक्ष्णक—पु० [स० तीक्ष्ण+कन्] १ मोखा वृक्ष। २ सफेद सरसो।

तीक्ष्ण-कल्क—पु० [ब० स०] तुबरू का पेड।

तीक्ष्ण-कांता—स्त्री० [कर्म० स०] पुराणानुसार तारा देवी का एक नाम।

तीक्ष्ण-क्षीरी—स्त्री० [ब० स०, डीष्] बसलोचन।

तीक्ष्ण-गंध—पु० [ब० स०] १ शोभाजन। सहिजन। २ लाल तुलसी। ३ सफेद तुलसी। ४ छोटी इलायची। ५ लोबान।

तीक्ष्ण-गंधक—पु० [स० तीक्ष्ण-गध+कन्] सहिजन।

तीक्ष्णगधा—स्त्री० [स० तीक्ष्णगध+टाप्] १ राई। २ छोटी इलायची। ३ सफेद बच। ४ जीवती। ५ कथारी का वृक्ष।

तीक्ष्ण-तडुला—स्त्री० [स० ब० स०, +टाप्] पिप्पली। पीपल।

तीक्ष्णता—स्त्री० [स० तीक्ष्ण+तल —टाप्] तीक्ष्ण होने की अवस्था या भाव।

तीक्ष्ण-ताप—पु० [ब० स०] महादेव। शिव।

तीक्ष्ण-तेल—पु०=तीक्ष्ण-तैल।

तीक्ष्ण-तैल—पु० [स० तीक्ष्ण+तैलच्] १ सरसो का तेल। २ सेहुड का दूध। ३ मद्य। शराब। ४ राल।

तीक्ष्ण-दंत—वि० [ब० स०] जिसके दाँत बहुत तेज या नुकीले हो।

तीक्ष्ण-दष्ट्र—वि० [ब० स०] तीखे या तेज दाँतोवाला।

पु० बाघ (हिंस्रक जतु)।

तीक्ष्ण-दृष्टि—वि० [ब० स०] जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण हो। सूक्ष्म दृष्टि-वाला (व्यक्ति)।

तीक्ष्ण-धार—वि० [ब० स०] जिसकी धार बहुत तेज हो।

पु० खड्ग, तलवार आदि शस्त्र।

तीक्ष्ण-पत्र—वि० [ब० स०] जिसके पत्तो के पार्श्व तेज धारवाले हो।

पु० १ एक प्रकार का गन्ना। २ धनिया।

तीक्ष्ण-पुष्प—पु० [स० ब० स०] लवग। लौग।

तीक्ष्ण-पुष्पा—स्त्री० [स० तीक्ष्णपुष्प+टाप्] केतवी।

तीक्ष्ण-प्रिय—पु० [कर्म० स० ?] जौ।

तीक्ष्ण-फल—पु० [ब० स०] तुबुरू। धनिया।

तीक्ष्ण-फला—स्त्री० [स० तीक्ष्णफल+टाप्] राई।

तीक्ष्ण-बुद्धि—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसकी बुद्धि प्रखर हो।

तीक्ष्ण-मजरी—स्त्री० [ब० स०] पान का पौधा।

तीक्ष्ण-मूल—वि० [ब० स०] जिसकी जड मे से उग्र या तेज गध आती हो।

पु० १ कुलजन। २ सहिजन।

तीक्ष्ण-रश्मि—वि० [ब० स०] जिसकी किरणे बहुत तेज हो।

पु० सूर्य।

तीक्ष्ण-रस—पु० [ब० स०] १ जवाखार। यवक्षार। २ शोरा।

तीक्ष्ण-लौह—पु० [कर्म० स०] इस्पात।

तीक्ष्ण-शूक—पु० [ब० स०] यव। जौ।

तीक्ष्ण-सारा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] शीशम का पेड।

तीक्ष्णाशु—पु० [तीक्ष्ण-अशु, ब० स०] सूर्य।

तीक्ष्णा—स्त्री० [स० तीक्ष्ण+टाप्] १ बच। २ केवाच। कौंछ। ३ बडी माल-कगनी। ४ मिर्च। ५ सर्पककाली नामक पौधा। ६ अत्यम्लपर्णी नाम की लता। ७ जोक। ८ तारा देवी का एक नाम।

तीक्ष्णाग्नि—स्त्री० [तीक्ष्ण-अग्नि, कर्म० स०] १ प्रबल जठराग्नि। २ अजीर्ण या अपच नाम का रोग।

तीक्ष्णाग्र—वि० [तीक्ष्ण-अग्र, ब० स०] (अस्त्र) जिसका अगला भाग नुकीला हो।

तीक्ष्णायस—पु० [तीक्ष्ण-आयस, कर्म० स०] इस्पात। लोहा।

तीख†—वि०=तीखा।

तीखन†—वि०=तीक्ष्ण।

तीखर†—पु०=तीखुर।

तीखल†—पु०=तीखुर।

तीखा—वि० [स० तीक्ष्ण] [स्त्री० तीखी] [भाव० तीखापन] १ (शस्त्र) जिसकी धार या नोक बहुत तेज या पैनी हो। चोखा। जैसे—तीखी छुरी। २ (व्यक्ति या उसका व्यवहार) जिसमे किसी प्रकार की उग्रता, तीव्रता या प्रखरता हो। कोमलता, मृदुता, सरलता, आदि से रहित। जैसे—तीखी नजर, तीखा स्वभाव। ३ (पदार्थ) जिसका स्वाद उग्र, चरपरा या तेज हो। जैसे—तरकारी मे पडा हुआ तीखा मसाला। ४ (कथन या बात) जिसमे अप्रियता या कटुता हो। जैसे—मैं किसी की तीखी बाते नही सुनना चाहता। ५ किसी की तुलना मे अच्छा या बढ़कर। चोखा। जैसे—यह भी

(या तेल) उससे तीखा पडता है। ६ (दृष्टि) तिरछा। तिर्यक्। जैसे—सुदरी का किसी को तीखी नजर से देखना।

पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।

तीखापन—पु० [हि० तीखा+पन (प्रत्य०)] तीखे होने की अवस्था या भाव।

तीखी—स्त्री० [हि० तीखा] एक उपकरण जिससे रेशम फेरा या बटा जाता है।

तीखुर—पु० [स० तवक्षीर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड का सार सफेद चूर्ण के रूप मे होता और खीर, हलुआ आदि बनाने के काम आता है। अब एक प्रकार का तीखुर विदेशो से भी आता है जिसे आरारूट (देखे) कहते है।

तीखुल†—पु०=तीखुर।

तीछन†—वि०=तीक्ष्ण।

तीछा*—वि०=तीखा।

तीज—स्त्री० [स० तृतीया] १ प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। तृतीया। २ भादो सुदी तीज जिस दिन सुहागनि स्त्रियाँ निजल व्रत रखती है। ३ हरितालिका।

तीजा—वि० [हि० तीज] तीसरा।

पु० किसी के मरने के बाद का तीसरा दिन। इस दिन मृतक के सबधी गरीबो को भोजन बाँटते है। (मुसलमान)

तीत*—वि०=तीता। (तिक्त)

तीतर—पु० [स० तित्तिरि] मुरगी की जाति का एक पक्षी जिसका मास खाया जाता है। काले रग का तीतर काला और चित्रित रग का तीतर गौर कहलाता है।

कहा०—आधा तीतर और आधा बटेर=ऐसी वस्तु जिसके दो विभिन्न अगो या अशो का अनुपात या सौंदर्य एक-सा न हो।

विशेष—वैद्यक मे तीतर का मास खाँसी, ज्वर आदि का नाशक माना गया है।

तीता—वि० [स० तिक्त] १ जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त। जैसे—मिर्च। २ कडुआ। कटु।

वि० [?] भीगा हुआ। आर्द्र। तर।

पु० १ जोती-बोई जानेवाली जमीन की तरी या नमी। २ ऊसर भूमि। ३ ढेकी और रहट का अगला भाग। ४ ममीरे का पौधा।

तीतुर*—पु०=तीतर।

तीतुरी†—स्त्री० =तितली।

तीतुल†—पु० तीतर।

तीन—वि० [स० त्रीणि] जो गिनती मे दो से एक अधिक हो।

पु० १ दो और एक के योग की सख्या। २ उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३

मुहा०—तीन पाँच करना=घुमाव-फिराव, बहानेबाजी या हुज्जत की बात करना।

३ सरयूपारी ब्राह्मणो मे गर्ग, गौतम और शाडिल्य इन तीन विशिष्ट गोत्रो का एक वर्ग।

मुहा०—तीन तेरह करना=(क) अनेक प्रकार के वर्ग या विभेद उत्पन्न करना। (ख) इधर-उधर छितराना या बिखरना। तितर-बितर करना।

कहा०—न तीन मे न तेरह मे=जिसकी कही गिनती या पूछ न हो।

†स्त्री०=तिन्नी (धान्य)।

तीन काने—पु० [हि०] चौपड के खेल मे वह दाँव जो तीनो पासो पर एक ही एक बिदी ऊपर रहने पर माना जाता है। (खेल का सबसे छोटा दाँव)

तीनपान—पु० [देश०] एक तरह का बहुत मोटा रस्सा। (लश०)

तीनपाम—पु०=तीनपान।

तीनलडी—स्त्री० [हि० तीन+लडी] तीन लडियोवाला गले मे पहनने का हार।

तीनि†—वि०, पु०=तीन।

तीनी—स्त्री० [हि० तिन्नी] तिन्नी का चावल।

तीपडा—पु० [देश०] रेशमी कपडा बुननेवालो का एक उपकरण जिसके नीचे-ऊपर वे दो लकडियाँ लगी रहती है जिन्हे बेसर कहते है।

तीमन—पु० [?] बनी हुई तरकारी या उसका रस। (पूरब)

तीमार—पु० [फा०] १ टहल। सेवा-शुश्रूषा। २ रक्षा।

तीमारदारी—स्त्री० [फा०] रोगी की की जानेवाली सेवा-शुश्रूषा।

तीय—स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री। ओरत। नारी। २ पत्नी। जोरू।

तीरदाज—पु० [फा०] [भाव० तीरदाजी] तीर से लक्ष्य-भेद करनेवाला व्यक्ति।

तीरदाजी—स्त्री० [फा०] तीर से लक्ष्य-भेद करने की क्रिया या भाव।

तीर—पु० [स०√तीर् (पार जाना)+अव्] १ नदी का किनारा। तट।

मुहा०—तीर पकडना या लगना=किनारे पर पहुँचना।

२ किसी चीज का किनारा। ३ निकटता। सामीप्य। ४ सीसा नामक धातु। ५ रागा।

अव्य० निकट। पास। समीप।

पु० [फा०] १ धनुष से छोडा जानेवाला वाण। शर।

क्रि० प्र०—चलाना। छोडना।—फेकना।—लगाना।

२ लाक्षणिक रूप मे, कौशल या चालाकी से भरी हुई तरकीब। चाल।

मुहा०—तीर चलाना या फेंकना=ऐसी तरकीब या युक्ति लगाना जिससे काम निकलने की बहुत-कुछ सभावना हो। **तीर लगना**=युक्ति सफल होना। काम बनना।

पु० [?] जहाज का मस्तूल। (लश०)

तीरगर—पु० [फा०] तीर बनानेवाला कारीगर।

तीरण—पु० [स०√तीर् (पार जाना)+ल्युट्—अन] करज।

तीरथ—पु०=तीर्थ।

तीर-भुक्ति—स्त्री० [स० ब० स०] गगा, गडकी और कौशिकी इन तीन नदियो से घिरा हुआ तिरहुत प्रदेश।

तीरवर्त्ती (तिन्)—वि० [स० तीर√वृत् (रहना)+णिनि] १. तट पर रहनेवाला। २ तीर या तट पर स्थित होनेवाला।

तीरस्थ—पु० [स० तीर√स्था (स्थित होना)+क] नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति।
तीरा—पु० [?] गुलहजारा नामक फूल।
पु०=तीर।
तीराट—पु० [स० तीर√अट् (घूमना)+अच्] लोध।
तीरित—भू० कृ० [स०√तीर् (कार्य समाप्त होना)+क्त] निर्णीत।
तीरु—पु० [स०√तृ (तैरना)+क्रु (बा०)] १ शिव। महादेव। २ शिव की स्तुति।
तीर्ण—वि० [स०√तृ (पार करना)+क्त] १ जो पार हो गया हो। उत्तीर्ण। २ जिसने सीमा का उल्लघन किया हो। ३ भीगा हुआ। गीला। तर।
तीर्णपदा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] तालमूल। मूसली।
तीर्णपदी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्]=तीर्णपदा।
तीर्णा—स्त्री० [स० तीर्ण+टाप्] एक प्रकार का छद।
तीर्थंकर—पु० [स० तीर्थ√कृ (करना)+ख,]जैनियो के प्रमुख देवता। **विशेष**—कुल ४८ तीर्थंकर माने गये है जिनमे से २४ गत उत्सर्पिणी मे और २४ वर्त्तमान उत्सर्पिणी मे हुए है।
तीर्थ—पु० [स०√तृ (पार करना)+थक्] १ जलाशय आदि मे उतरने अथवा नाव के यात्रियो के उतरने-चढने के लिए बनी हुई सीढियाँ। घाट। २ मार्ग। रास्ता। ३ वह जिसके द्वारा या सहायता से कोई काम होता या हो सकता हो। कार्य सिद्ध करने का उपाय, युक्ति या साधन। ४ कोई ऐसा स्थान, विशेषत जलाशय, नदी, समुद्र आदि के पास का स्थान जिसे लोग धार्मिक दृष्टि से पवित्र या मोक्षदायक समझते हो और श्रद्धापूर्वक दर्शन, पूजन आदि के लिए जाते हो। जैसे—काशी हिंदुओ का और मक्का मुसलमानो का बहुत बडा तीर्थ है। ५ कोई ऐसा स्थान जिसे लोग अन्य स्थानो से विशिष्ट महत्त्व का या कार्य-सिद्धि मे सहायक समझते हो। जैसे—आज-कल के राजनीतिज्ञो का तीर्थ तो बस दिल्ली है। ६ कोई ऐसा महात्मा या महापुरुष जिसे लोग पूज्य और श्रद्धेय समझते हो। जैसे—गुरु, पिता, माता आदि तीर्थ है। ७ धार्मिक गुरु या शिक्षक। उपाध्याय। ८ किसी चीज या बात का मूल कारण या स्रोत अथवा मुख्य साधन। ९ उपयुक्त अथवा योग्य परामर्श या सूचना। १० किसी काम या बात के लिए उपयुक्त अवसर या स्थल। ११ धार्मिक ग्रथ, विज्ञान या शास्त्र। १२ यज्ञ। १३ हथेली और उँगलियो के कुछ विशिष्ट स्थान जिनमे कुछ विशिष्ट देवी-देवताओ का अवस्थान माना जाता है। १४ ईश्वर अथवा उसका कोई अवतार। १५ किसी देवता या देवी का चरणामृत। १६ दर्शन-शास्त्र की कोई शाखा या सिद्धात। १७ ब्राह्मण। १८ अग्नि। आग। १९ पुण्य-काल। २० अतिथि। मेहमान। २१ दशनामी सन्यासियो का एक भेद और उनकी उपाधि। २२ योनि। भग। २३ रजस्वला स्त्री का रज। २४ वैर-भाव छोडकर किया जानेवाला सद्व्यवहार या सदाचरण। २५ परामर्श देनेवाला व्यक्ति। मत्री। २६ प्राचीन भारत मे, वे विशिष्ट अठारह अधिकारी जो राष्ट्र की सपत्ति माने जाते थे। यथा—मत्री-पुरोहित, युवराज, भूपति, द्वारपाल, अतर्वेशिक, कारागार का अध्यक्ष, द्रव्य या धन एकत्र करनेवाला अधिकारी, कृत्याकृत्य अर्थ का विनियोजक प्रदेष्टा, नगराध्यक्ष, कार्यनिर्माण कारक, धर्माध्यक्ष, सभाध्यक्ष, दडपाल, दुर्गपाल, राष्ट्रान्तपाल और अटवीपाल। २७ रोग का निदान या पहचान।
वि० १ तारने या पार उतारनेवाला। २ उद्धार करने या बचानेवाला।
तीर्थकृत्—पु० [स० तीर्थ√कृ (करना)+क्विप्] १ जैनियो के देवता। जिन। देव। २ शास्त्रकार।
तीर्थंक—पु० [स० तीर्थ√कै (शब्द करना)+क] १ ब्राह्मण। २ तीर्थंकर। ३ तीर्थों की यात्रा करनेवाला व्यक्ति।
तीर्थंकर—पु० [स० तीर्थ√कृ+ट] १ विष्णु। २ जैनो के विशिष्ट महापुरुष जो सख्या मे २४ है और जिन कहे जाते है।
तीर्थ-काक—पु० [स० त०] वह जो तीर्थ मे रह कर धर्म के नाम पर लोगो से धन ऐंठता हो।
तीर्थ-देव—पु० [ष० त० वा उपमि० स०] शिव। महादेव।
तीर्थ-पति—पु [ष० त०]=तीर्थराज।
तीर्थ-पाद्—पु० [ब० स०] विष्णु।
तीर्थपादीय—पु० [स० तीर्थपाद+छ—ईय] वैष्णव।
तीर्थ-पुरोहित—पु० [स० त०] वह जो किसी विशिष्ट तीर्थ मे रहकर आनेवाले यात्रियो का पौरोहित्य करता और उन्हे स्नान, दर्शन आदि कराता हो। पडा।
तीर्थयात्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तीर्थ-स्थानो के दर्शनार्थ की जानेवाली यात्रा।
तीर्थ-राज—पु० [ष० त०] प्रयाग।
तीर्थराजि—स्त्री० [ब० स०] काशी।
तीर्थ-व्यास—पु०=तीर्थ-काक।
तीर्थसेनि—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
तीर्थ-सेवी (विन्)—पु० [स० तीर्थ√सेव् (सेवन करना)+णिनि] वह जो पुण्य, मोक्ष आदि प्राप्त करने के विचार से और धार्मिक भावनाओ से सदाचारपूर्वक किसी तीर्थ मे जाकर रहने लगता हो।
तीर्थाटन—पु० [स० तीर्थ-अटन, मध्य० स०] तीर्थ यात्रा।
तीर्थिक—पु० [स० तीर्थ+ठन्—इक] १ तीर्थ का ब्राह्मण। पडा। २ तीर्थंकर। ३ बौद्धो की दृष्टि मे वह ब्राह्मण जो बौद्ध-धर्म का द्वेषी हो।
तीर्थिया—पु० [स० तीर्थ+हिं० इया (प्रत्य०)] जैनी जो तीर्थकरा के उपासक होते है।
तीर्थोदक—पु० [स० तीर्थ-उदक, ष० त०] किसी तीर्थ-स्थल का जल जो पवित्र माना जाता है।
तीर्थ्य—पु० [स० तीर्थ+यत्] १ एक रुद्र का नाम। २ सहपाठी।
तीर्न—वि० [स० तीर्ण] १ उत्तीर्ण। २ भीगा हुआ।
तीलखा—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।
तीला—पु० [फा० तीर=बाण] [स्त्री० अल्पा० तीली] तिनका, विशेषत बडा या लबा तिनका।
तीली—स्त्री० [हिं० तीला] १ वनस्पति आदि का बडा तिनका। सीक। २ धातु आदि का पतला कडा तार। ३ तीलियो की वह कूँची जिससे जुलाहे करघे पर का सूत साफ करते है। ४ जुलाहो की ढरकी मे की वह सीक जिसमे नरी पहनाई रहती है।

तीवई*—स्त्री० [स० स्त्री] स्त्री।
तीवट—पु० [स० त्रिवण] १ एक राग जो दोपहर के समय गाया जाता है। २ सगीत मे १४ मात्राओ का एक ताल जिसे तेवर या तेवरा भी कहते है।
तीवन—पु० [स० तेमन=व्यजन] १ पकवान। २ रसेदार तरकारी।
तीवर—पु० [स०√तृ (तैरना)+ष्वरच्, नि० सिद्धि] १ समुद्र। सागर। २ [√तीर् (कर्म-समाप्ति)+ष्वरच्] व्याध। शिकारी। ३ मछुआ। ४ पुराणनुसार एक वर्ण-सकर जाति जिसकी उत्पत्ति राजपूत माता और क्षत्रिय पिता से कही गई है।
†वि०=तीव्र।
तीव्र—वि० [स०√तीव् (मोटा होना)+रक्] १ बहुत अधिक। अतिशय। अत्यत। २ बहुत अधिक तीक्ष्ण या तीखा। तेज। ३ बहुत गरम। ४ मान, सीमा आदि मे बहुत बढा हुआ। बेहद। ५ कडुआ। कटु। ६ जो सहा न जा सके। असह्य। ७ उग्र, प्रचड, या विकट। ८ जिसमे यथेष्ट वेग हो। ९ (सगीत मे स्वर) जो अपने मानक या साधारण रूप से कुछ ऊँचा या बढा हुआ हो। 'कोमल' का विपर्याय।
विशेष—ऋषभ गान्धार, मध्यम, धैवत और निषाद ये पाचो स्वर दो प्रकार के होते है—कोमल और तीव्र।
पु० १ लोहा। २ नदी का किनारा या तट। ३ महादेव। शिव।
तीव्र-कन्द—पु० [ब० स०] सूरन। जमीकद। ओल।
तीव्र-गधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अजवायन। यवानी।
तीव्रगधिका—स्त्री० [स० तीव्रगन्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] अजवायन।
तीव्र-गति—स्त्री० [ब० स०] वायु। हवा।
तीव्र-ज्वाला—स्त्री० [स० तीव्र√ज्वल् (जलना)+णिच्+अच्—टाप्] धव का फूल जिसे छूने से लोगो का विश्वास था कि शरीर मे घाव हो जाता है।
तीव्रता—स्त्री० [स० तीव्र+तल्—टाप्] तीव्र होने की अवस्था या भाव। (सभी अर्थों मे)
तीव्र-सव—पु० [कर्म० स०] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
तीव्रा—स्त्री० [स० तीव्र+टाप्] १ षडज स्वर की चार श्रुतियो मे से पहली श्रुति। २ खुरासानी अजवायन। ३ राई। ४ गाँडर दूब। गड-दूर्वा। ५ तुलसी। ६ कुटकी। ७ बडी मालकगनी। ८ तरवी नामक वृक्ष।
तीव्रानन्द—पु० [तीव्र-आनन्द, ब० स०] शिव। महादेव।
तीव्रानुराग—पु० [तीव्र-अनुराग, कर्म० स०] १ किसी वस्तु के प्रति होनेवाला अत्यधिक अनुराग। २ उक्त प्रकार का अनुराग जो जैनो मे अतिचार माना गया है।
तीस—वि० [स० त्रिंशति, पा० तीसा] जो गिनती मे बीस से दस अधिक हो।
स्त्री० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है–३०।
पद—तीस मार खाँ=बहुत बडा बहादुर। (व्यग्य) **तीसो दिन**=सदा। नित्य।
तीसर†—स्त्री० [हिं० तीसरा] खेत की तीसरी जुताई।
वि०=तीसरा।
तीसरा—वि० [हिं० तीन+सरा (प्रत्य०)] १ क्रम मे तीन के स्थान मे पडनेवाला जो गिनती मे दो के उपरात और चार से पहले हो। २ जिसका प्रस्तुत विषय अथवा दोनो पक्षो मे से किसी एक से भी कोई सबध या लगाव न हो।
तीसवाँ—वि० [हिं० तीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम मे तीस के स्थान मे पडनेवाला। तीसवाँ दिन।
तीसी—स्त्री० [स० अतसी] १ डेढ हाथ ऊँचा एक पौधा जिसमे नीले रग के फूल तथा बीज मटमैले रग के घुडीदार गोल होते है। २ उक्त बीज जो वैद्यक के अनुसार वात, पित और कफनाशक होते है।
स्त्री० [हिं० तीस+ई (प्रत्य०)] वस्तुएँ गिनने का एक मान जिसका सैकडा तीस गाहियो का अर्थात् १५० का होता है।
स्त्री० [?] एक प्रकार की छेनी जिससे लोहे की थालियो आदि पर नक्काशी करते है।
तीहा†—पु० [स० तुष्टि ?] तसल्ली। आश्वासन।
वि०=तिहाई। जैसे—आधा-तीहा माल।
तुग—वि० [स०√तुज् (हिंसा करना)+घञ्, कुत्व] १ बहुत ऊँचा। २ उग्र। तीव्र। ३ प्रधान। मुख्य।
पु० १ महादेव। शिव। २ बुध नामक ग्रह। ३ ज्योतिष मे ग्रहो के उच्च होने की अवस्था। दे० 'उच्च'। ४ चतुर व्यक्ति। ५ पर्वत। पहाड। ६ पुन्नाग वृक्ष। ७ नारियल। ८ कमल का केसर। किजल्क। ९ झुड। समूह। १० एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और दो गुरु होते है। ११ एक प्रकार का झाडदार छोटा पेड जो पश्चिमी हिमालय मे होता है। इसे आमी और एरडी भी कहते है।
तुगक—पु० [स० तुग+कन्] १ पुन्नाग वृक्ष। नागकेसर। २ एक प्राचीन तीर्थ जहाँ सारस्वत मुनि ऋषियो को वेद पढाते थे।
तुग-नाथ—पु० [मध्य० स०] हिमालय पर एक शिवलिग और तीर्थस्थान।
तुग-नाभ—पु० [ब० स०] एक तरह का कीडा जिसके काट लेने पर शरीर मे जलन होती है।
तुग-बाहु—पु० [ब० स०] तलवार चलाने का एक पुराना ढग या प्रकार।
तुग-बीज—पु० [ष० त०] पारद। पारा।
तुग-भद्र—पु० [कर्म० स०] मतवाला हाथी।
तुगभद्रा—स्त्री० [स० तुग-भद्र+टाप्] दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो सह्याद्रि पर्वत से निकलती है और कृष्णा नदी मे मिलती है।
तुग-मुख—पु० [ब० स०] गैडा।
तुगरस—पु० [ब० स०] एक प्रकार का गध-द्रव्य।
तुगला—पु० [देश०] एक तरह की छोटी झाडी।
तुगवेणा—स्त्री० [स०] तुगभद्रा नदी का पुराना नाम।
तुंग-शेखर—पु० [ब० स०] पर्वत। पहाड।
तुंगा—स्त्री० [स० तुग+टाप्] १ वशलोचन। २ शमी वृक्ष। ३ तुग नामक वर्णवृत्त।
तुंगारण्य—पु० [तुग-अरण्य, कर्म० स०] झाँसी, ओडछा आदि प्रदेशो के आस-पास के जगलो का पुराना नाम।
तुगारन्न*—पु०=तुगारण्य।

तुगारि—पु० [तुग–अरि, ष० त० ?] सफेद कनेर का पेड।

तुंगिनी—स्त्री० [स० तुग+इनि—ङीप्] महाशतावरी। बडी सतावर।

तुगिमा (मन्)—स्त्री० [स० तुग+इमनिच्] ऊँचाई।

तुंगी (गिन्)—वि० [स० तुग+इनि] ऊँचा।

पु० उच्चस्थ ग्रह।

स्त्री० [स० तुग+ङीष्] १ हल्दी। २ रात्रि। रात। ३ बन-तुलसी। ममरी।

तुंगी-नाभ—पु० [ब० स०] दे० 'तुगनाभ'।

तुगी-पति—पु० [ष० त०] चद्रमा।

तुंगीश—पु० [तुगि-ईश, कर्म० स०] १ शिव। २ सूर्य। ३ कृष्ण।

तुज—पु० [स०√तुज् (हिसा करना)+अच्] वज्र।

तुंजाल—पु० [स० तुरग–जाल] घोडो की पीठ पर डाली जानेवाली एक तरह की जाली या जालीदार कपडा जिससे मक्खियाँ उन्हे तग नही करने पाती।

तुजीन—पु० [स०तुज+ख—ईन?] प्राचीन काल के कश्मीरी नरेशो की उपाधि।

तुंड—पु० [स०√तुड् (तोडना)+अच्] १ मुख। मुँह। २ चोच। ३ कुछ बडा तथा आगे निकला हुआ मुँह। थूथन। ४ तलवार का अगला भाग। ५ शिव। ६ एक राक्षस।

तुडकेरिका—स्त्री० [स० तुडकेरी+कन्–टाप्, ह्रस्व] कपास का पौधा।

तुडकेरी—स्त्री० [स० तुड+कन्√ईर् (प्रेरित करना)+अण्—ङीप्] १ कपास। २ बिबाफल। कुदरू।

तुंडके-शरी—पु० [स० मध्य० स० ?] वैद्यक के अनुसार तालु मे होनेवाली एक तरह की सूजन (रोग)।

तुंडि—स्त्री० [स०√तुड्+इन्] १ नाभि। २ बिबाफल। कुदरू। ३ दे० 'तुड'।

तुडिक—वि० [स० तुडि√कै (शब्द करना)+क] जिसका मुँह आगे की ओर निकला हुआ हो। थूथनवाला।

तुडिका—स्त्री० [स० तुड+कन्—टाप्] १ टोटी। २ बिबाफल। कुदरू। ३ चोच। ४ गले के अदर जीभ की जड के पास की दो अडाकार ग्रथियाँ। कौआ। घटी। (टासिल्स)

तुडिका-शोथ—पु० [ष० त०] तुडिका अर्थात् घटी मे होनेवाली सूजन। (टॉन्सिलाइटिस)

तुंडिकेशी—स्त्री० [स० पृषो० सिद्धि] कुदरू।

तुडिभ—वि० [स० तुडि+भ] जिसकी तोद या नाभि आगे निकली तथा बढी हुई हो।

तुंडिल—वि० [स० तुडि+लच्] १ तोद या निकले हुए पेटवाला। तोदिल। २ जिसकी नाभि मोटी और बाहर निकली हुई हो।

तुंडी (डिन्)—वि० [स० तुड+इनि] १ तुडवाला। तुड से युक्त। २ चोचवाला। ३ थूथनवाला।

पु० गणेश।

स्त्री० [स० तुडि+ङीप्] ढोढी। नाभि।

तुंडी-गुद-पाक—पु० [स० तुडी-गुद, द्व० स०, तुडीगुद+पाक, स० त०] एक रोग जिसमे नाभि और गुदा दोनो मे सूजन हो जाती है।

तुंडीर-मंडल—पु० [ब० स०] एक प्राचीन देश जो दक्षिण मे था।

तुद—पु० [स०√तुद् (व्यथा)+दन्, नुम्] उदर। पेट।

वि० [फा०] तीव्र। तेज। प्रचड। जैसे—तुद हवा।

तुदि—पु० [स०√तुद्+इन्, नुम्] १ नाभि। २ एक गधर्व का नाम।

तुदिक—वि० [स० तुद+ठन्—इक] जिसकी तोद निकली या बढी हुई हो। तोदिल।

तुदिक-फला—स्त्री० [स० ब स०, टाप] खीरे की बेल।

तुदिका—स्त्री० [स० तुदिक+टाप्] नाभि।

तुदित, तुदिभ—वि० [स० तुद+इतच्, तुदि+भ] तुदिल। (दे०)

तुँदियाना†—अ० [हि० तोद] तोद बढना।

स० तोद बढाना।

तुदिल—वि० [स० तुद+इलच्] जिसकी तोद निकली या बढी हुई हो।

तुदिलीकरण—पु० [स० तुदिल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] १ फुलाना। २ बढाना।

तुदी—स्त्री० [स० तुन्द+ङीप्] नाभि।

तुदैल† —वि०=तुदिल।

तुदैला†—वि०=तुदिल।

तुंब—पु० [स०√तुब् (नष्ट करना)+अच्] १. घीया। लौकी। २ सुखाई हुई लौकी का तूँबा।

तुबडी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी लकडी अदर से सफेद और चिकनी होती तथा मकानो मे लगती है।

स्त्री०=तूबडी।

तुंबर—पु० [स०तुब√रा (लाना)+क] तुबुरु। (दे०)

तुंबरी—स्त्री० [स० तुम्बर+ङीप्] एक कदन्न।

तुबवन—पु० [स०] दक्षिण दिशा का एक प्राचीन देश। (बृहत्सहिता)

तुबा—पु० [स० तुब+टाप्] [स्त्री० अल्पा० तुबी] १ कडआ कद्दू। गोल कडुआ घीया। तूबा। २ सुखाये हुए कडए कद्दू को बीच मे से काट कर बनाया हुआ कटोरे के आकार का पात्र। ३ एक प्रकार का जगली धान जो जलाशयो के किनारे होता है।

तुंबिका—स्त्री० [स०√तुब्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] =तुबी।

तुबी—स्त्री० [स०√तुब्+इन्—ङीष्] १ छोटा कडवा कद्दू। तितलौकी। २ उक्त को सुखाकर बनाया हुआ पात्र। छोटा तूबा।

तुंबुक—पु० [स०√तुब् (पीडित करना)+उक] कद्दू का फल। घीया।

तुबुरी—स्त्री० [स० तुब√रा+क—ङीष्, पृषो० उत्व] १ धनिया। २ कुतिया।

तुबुरु—पु० [स०=तुबर, पृषो० सिद्धि] १ धनिया। २ चैत्र मास मे सूर्य के रथ पर रहनेवाला एक गधर्व जो बहुत बडा सगीतज्ञ कहा गया है। ३ धनिये की तरह के एक प्रकार के बीज जो बहुत झालदार या तीखे स्वादवाले होते है।

तुअ*—सर्व०=तव (तुम्हारा)।

तुअना† —अ० [हि० चूना, चुवना] १ चूना। टपकना। २ गर्भपात या गर्भस्राव होना। ३ गिर पडना। गिरना।

तुअर—पु० [स० तुवरी] अरहर।

तुइ—सर्व०=तू।

तुई—स्त्री० [?] कपडे पर बनी हुई एक प्रकार की बेल जो स्त्रियाँ दुपट्टो पर लगाती है।

†सर्व०१ =तू ही। २ =तू।

तुक—स्त्री० [हि० टूक=टुकडा] १ कविता, गीत आदि के चरण का वह अतिम व्यजन (या स्वरयुक्त व्यजन), शब्द या पद जिसके अनुप्रास का निर्वाह आगे के चरणो, पदो आदि मे करना आवश्यक होता है। अत्यानुप्रास। अक्षर-मैत्री। काफिया।

पद—**तुक-बदी**। (देखे)

मुहा०—**तुक जोडना**=कविता, गीत आदि के लिए ऐसे चरण या पद बनाना जिनके अतिम वर्णो, शब्दो आदि मे ध्वनिसाम्य मात्र हो, कौशलपूर्ण या भावमय कवित्वगुण का अभाव हो। जैसे—हम तुक जोडनेवाले कवियो की बात नही कहते।

२ बोल-चाल मे आनेवाले किसी शब्द के जोड का वह दूसरा शब्द जो उच्चारण या ध्वनि के विचार से उस पहले शब्द के जोड या बराबरी का होता है। काफिया। जैसे—'कच्चा' का तुक 'बच्चा' और 'कडा' का तुक 'बडा' है। ३ दो बातो या कार्यो का पारस्परिक सामजस्य। ४ ऐसा औचित्य जिसका निर्वाह पूर्वापर सबध को देखते हुए आवश्यक, उपयुक्त या शोभन हो। जैसे—आप उनके प्रीति-भोज मे जो बिना बुलाये चले गये, इसमे क्या तुक था? ५ तीर के अगले भाग मे लगी हुई घुडी।

तुकना—स० हि० 'तकना' का अनु०।

तुकबदी—स्त्री० [हि० तुक+फा० बदी] ऐसी साधारण कविता करना जिसके चरणो के अत मे एक-सी तुक या अत्यानुप्रास के सिवा कोई विशेष भाव या रस न हो। भद्दी या साधारण कविता जिसमे भाव या भाषा का कुछ भी सौदर्य न हो। (व्यग्य)

तुकमा—पु०[फा०] वह फदा जिसमे पहनने के कपडो की घुडी फँसाई जाती है। पाशक। मुद्धी।

तुकात—स्त्री०[हि० तुक+स० अत] चरणो के अत मे होनेवाला तुक का मेल। अत्यानुप्रास।

तुका—पु०[फा० तुक]१ बिना गाँसी का तीर। तुक्का। २ ऐसा उपाय या तरकीब जिससे कार्य की सिद्धि होने की सभावना न हो।

तुकार—स्त्री०[हि० तू+स० कार] 'तू' कहकर किसी को पुकारने की क्रिया या भाव। (अपमान-सूचक)

तुकारना—स०[हि० तुकार]'तू' कहकर किसी को पुकारना या सबोधित करना।

तुकारी*—स्त्री०[हि० तुकारना] तुकारने की क्रिया या भाव। तुकार।

तुक्कड—पु०[हि० तुक+अक्कड (प्रत्य०)] केवल तुक जोडनेवाला अर्थात् बहुत ही निम्नकोटि का कवि।

तुक्कल—स्त्री०[फा० तुक्का] एक तरह की बडी पतग।

तुक्का—पु०[फा० तुक]१ वह तीर जिसमे गासी के स्थान पर घुडी सी बनी होती है। २ नरकट, सरकडे आदि का वह टुकडा जो लडके खेल मे छोटी सी कमान पर इधर-उधर चलाते या फेकते है। जैसे—लगा तो तीर, नही तो तुक्का है ही। ३ कोई लबी और सीधी चीज या उसका टुकडा। जैसे—वह अपने दरवाजे पर तुक्का-सा खडा था। ४ छोटा टीला। टेकरी।

२—७१

तुक्खार—पु०[स०]=तुखार।

तुख—पु०[स० तुष]१ भूसी। छिलका। २ अडे के ऊपर का छिलका।

तुखम—पु०[फा० तुख्म]१ बीज। २ वीर्य-कण।

तुखार—पु०[स०]१ एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख अथर्ववेद, रामायण, महाभारत आदि मे है। यहाँ के घोडे बहुत अच्छे माने जाते थे। वि० दे० 'तुषार'। २ उक्त देश का निवासी। ३ उक्त देश का घोडा। ४ घोडा।

पु०=तुषार।

तुखारा—वि०[स० तुषार] [स्त्री० तुखारी] तुषार देश-सबधी।

पु० तुषार देश का घोडा।

तुखारी—पु०[हि० तुखार] तुखार देश का घोडा।

वि० तुखार-सबधी।

तुख्म—पु०[अ० तुख्म] १ फलो, वृक्षो आदि का बीज। २ वीर्य-कण जिससे सतान उत्पन्न होती है।

तुगलक—पु०[अ०]१ सरदार। २ एक प्राचीन मुसलमान राजवश जिसने मध्य युग मे थोडे समय के लिए भारत पर शासन किया था। मुहम्मद शाह तुगलक इसी वश के थे।

तुगा—स्त्री०[स०√तुज् (हिंसा)+घ—टाप्] वशलोचन।

तुगाक्षीरी—स्त्री०[मयू०स०] वशलोचन।

तुग्र—पु०[स०√तुज्+रक्, कुत्व] वैदिक काल के एक राजर्षि जिन्होने अश्विनीकुमारो की उपासना की थी।

तुग्र्य—पु०[स० तुग्र+यत्] तुग्र का वशज।

वि० तुग्र-सबधी। तुग्र का।

तुचा†—पु०[स० त्वच्]१ चमडा। २ छाल।

तुचा†—स्त्री०=त्वचा।

तुच्छ—वि०[स०√तुद् (पीडित करना)+क्विप्, तुद्√छो (काटना)+क] [भाव० तुच्छता] १ जो अदर से खाली हो। खोखला। २ जिसमे कोई सत्व या सार न हो। नि सार। ३ जिसका कुछ भी महत्त्व, मान या मूल्य न हो। क्षुद्र। हीन। ४ अल्प। थोडा।

पु०१ अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। २ तूतिया। ३. नील का पौधा।

तुच्छक—पु०[स० तुच्छ√कै (मालूम पडना)+क] एक तरह का काले और हरे रग का मरकत जो घटिया माना जाता है।

तुच्छता—स्त्री०[स० तुच्छ+तल्—टाप्] तुच्छ होने की अवस्था या भाव।

तुच्छत्व—पु०[स० तुच्छ+त्व] तुच्छता।

तुच्छद्रु—पु०[कर्म०स०] रेड का पेड।

तुच्छधान्यक—पु०[कर्म०स०] भूसी। तुस।

तुच्छा—स्त्री०[स० तुच्छ+टाप्]१ नील का पौधा। २ छोटी इलायची। ३ नीला थोथा। तूतिया।

तुच्छातितुच्छ—वि०[तुच्छ-अतितुच्छ, स०त०]तुच्छो मे भी तुच्छ। अत्यन्त तुच्छ।

तुच्छार्थक—वि०[स० तुच्छ-अर्थ, ब०स०, कप्] (शब्द का वह) विकृत रूप जो वस्तु या व्यक्ति के वाचक शब्द की तुलना मे तुच्छता सूचित करनेवाला हो। तुच्छता के भाव से युक्त अर्थ देने या रखनेवाला।

(डिमिन्यूटिव) जैसे—'बात' का तुच्छार्थक 'बतोला', 'घोडा' का तुच्छार्थक 'घोडवा'।

तुछ*—वि०=तुच्छ।

तुजीह—स्त्री०[हि०] धनुष।

तुजुक—पु०[तु०]१ वैभव आदि की शोभा। शान। २ नियम। ३ प्रथा। ४ अभिनदन। उदा०—भूषण भनत भौसिला के आय आगे ठाढे बाजे भर उमराय तुजुक करन के।—भूषण।

तुझ—सर्व०[स० तुभ्यम्, पा० तुटह, प्रा० तुज्झ] तू का वह रूप जो उसे द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पचमी और सप्तमी की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तुझको, तुझसे, तुझमे आदि आदि।

तुझे—सर्व०[हि० तुझ] 'तू' का वह रूप जो उसे द्वितीया और चतुर्थी की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। तुझको। जैसे—(क) तुझे मारूँगा। (ख) तुझे भी मिलेगा।

तुट*—वि०[स० त्रुट=टूटना] बहुत थोडा।

तुटितुट—पु०[स०] शिव।

तुट्ठना*—स०[स० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] तुष्ट या प्रसन्न करना।
अ० तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुठना—अ०[स तुष्ट] सतुष्ट होना। उदा०—तुठी सारदा त्रिभुवन-भाई।—नरपति नाल्ह।
स० सतुष्ट करना।

तुडवाई—स्त्री०[हि० तुडवाना] तुडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुड़वाना—स०[हि० 'तोडना' का प्रे०]१ किसी को कोई चीज तोडने मे प्रवृत्त करना। तुडाना। २ बडे सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे-छोटे सिक्को मे बदलवाना। भुनाना।

तुड़ाई—स्त्री०[हि० तोडना] तोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
†स्त्री०=तुडवाई।

तुड़ाना—स०[हि० तोडना का प्रे०]१ तोडने का काम कराना। तुडवाना। २ बन्धन तोडकर उससे अलग या मुक्त होना। जैसे—गौ रस्सा तुडाकर भाग गई। ३ सम्बन्ध-विच्छेद करके अलग करना। जैसे—बच्चे को माँ से तुडाना, अर्थात् अलग या दूर करना। ४ बडे सिक्के को छोटे-छोटे सिक्को के रूप मे परिवर्तित कराना। जैसे—नोट या रुपया तुडाना। ५ कुछ खरीदने के समय चीज का दाम कम कराना।

तुडी—स्त्री० [स०√तुड्(तोडना)+इन—ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (कदाचित् आधुनिक टोडी)

तुडुम—पु०[स० तुरम]तुरही। बिगुल।

तुणि—पु०[स०√तुण्(सकोच)+इन्] तुन का पेड।

तुतरा†—वि०[स्त्री० तुतरी]=तोतला।

तुतराना†—अ०=तुतलाना।

तुतरौहाँ†—वि०=तोतला। उदा०—बोलत है बतियाँ तुतरौही चलि चरननि न सकात।—सूर।

तुतला—वि०[स्त्री० तुतली]=तोतला।

तुतलाना—अ०[स० त्रुट्=टूटना वा अनु० अथवा हि० तोट]१ कठ और जीभ मे किसी प्रकार का प्राकृतिक विकार होने के कारण कोई शब्द कहने से पहले 'तुत्' 'तुत्' शब्द निकलना। २ बोलने मे शब्द का मुँह से रुक-रुक कर तथा अस्पष्ट रूप से निकलना।

तुतुई†—स्त्री०=तुतुही।

तुतुही—स्त्री०[स० तुड] मिट्टी की एक तरह की छोटी झारी।

तुत्थ—पु०[स०√तुद् (पीडित करना)+थक्] तूतिया। नीला थोथा।

तुत्थक—पु०[स० तुत्थ+कन्]=तुत्थ।

तुत्थाजन—पु०[स० तुत्थ-अजन, कर्म० स०] तूतिया। नीलाथोथा।

तुत्था—स्त्री०[स० तुत्थ+टाप्] १ नील का पौधा। २ छोटी इलायची।

तुत्यो—अ०य०=त्यो त्यो। उदा०—तुत्यो गुलाल मुठी मुठी झझकावत पिय जात।—बिहारी।

तुदन—पु०[स०√तुद्+ल्युट्—अन्]१ कष्ट या व्यथा देने की क्रिया। पीडन। २ गडाने या चुभाने की क्रिया। ३ कष्ट। ४ पीडा।

तुन—पु०[अनु०] तुन तुन शब्द।
मुहा०—तुन-फुन करना=किसी बात मे सहमत न होने पर कुछ रोष दिखाते हुए आना-कानी करना।
पु० तूनी नामक वृक्ष।

तुनक—वि०[फा०] १ दुर्बल। कमजोर। २ नाजुक। कोमल। ३ हलका। सूक्ष्म।
स्त्री०[हि० तुनकना] १ तुनकने की क्रिया या भाव। २ गुड्डी या पतग उडाते समय डोर या नख को दिया जानेवाला झटका।

तुनकना—अ० [फा० तुनक] छोटी सी बात से अप्रसन्न या रुष्ट होना।
वि० तुनक-मिजाज।
अ० [देश०] उँगली से डोर को झटका देना।

तुनक-मिजाज—वि०[फा०] [भाव० तुनक-मिजाजी] जो बात-बात पर अप्रसन्न या रुष्ट हो जाता हो अथवा बिगड या रूठ जाता हो।

तुनकामौज—पु० [फा० तुनक=छोटा+मौज=लहर] छोटा समुद्र।

तुनकी—स्त्री०[फा०] १ तुनक(अर्थात् कोमल, दुबले या हलके)होने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की खस्ता रोटी।

तुनतुनी—स्त्री० [अनु०] १ एक प्रकार का बाजा जिसमे से तुन तुन शब्द निकलता है। २ सारगी। (परिहास और व्यग्य)

तुनना† —स०=धुनना। (पश्चिम)

तुनी—स्त्री०[हि० तुन] तूनी का पेड।

तुनीर†—पु०=तूणीर।

तुनुक—वि० स्त्री०=तुनक।

तुन्न—वि०[स०√तुद्+क्त] कटा या फटा हुआ।
पु०१ कपडे का टुकडा। २ तुन नाम का पेड।

तुन्नवाय—पु०[स० तुन्न√वे (सीना, बुनना)+अण्] दरजी।

तुपक—स्त्री०[तु० तोप]१ छोटी तोप। २ पुरानी चाल की बन्दूक। कडाबीन।

तुपकची—पु०[हि० तुपक] वह जो छोटी तोप या बन्दूक चलाता हो।

तुफग—स्त्री०[तु० तोप, हि० तुपक]१ प्राचीन काल की वह नली जिसमे मिट्टी की गोलियाँ, लोहे के छोटे टुकडे आदि भरकर जोर से फूँककर दूसरो पर चलाए या फेके जाते थे। २ हवाई बन्दूक।

तुफ—पु०[फा०]१ मुँह की थूक या लार। २ उक्त के आधार पर धिक्कार, लानत। जैसे—तुफ है तुम्हारे मुँह पर, अर्थात् नही है या तुम इस योग्य हो कि लोग तुम्हारे मुँह पर थूके।

तुफान†—पु०=तूफान।

तुफैल—पु०[अ० तुफ़ैल] किसी के अनुग्रह या कृपा के द्वारा प्राप्त होने वाला साधन। जैसे—मेरी सारी योग्यता (या विद्या) आप के ही तुफैल से है।

तुबक—पु०=तुपक।

तुभना—अ०[स० स्तुभ, स्तोभन] स्तब्ध होना।

तुम—सर्व० [स० त्वम्]'तू' शब्द का वह बहुवचन रूप जिसका व्यवहार सबोधित व्यक्ति के लिए होता है तथा जो कहनेवाले की तुलना मे छोटा या बराबरी का होता है। जैसे—तुम भी साथ चल सकते हो।

तुमडी—स्त्री०=तूँबडी।

तुमतडाक—स्त्री०=तूमतडाक।

तुमरा—सर्व०=तुम्हारा।

तुमरी†—स्त्री० = तूँबडी।

तुमरू—पु०=तुँबुरू।

तुमल*—पु०, वि०=तुमुल।

तुमाना—स०[हि० 'तूमना' का प्रे०] किसी को कुछ तूमने मे प्रवृत्त करना।

तुमारा—सर्व०=तुम्हारा।

तुमुती—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिडिया।

तुमुर—पु०[स० तुमुल, ल—र] क्षत्रियो की एक प्राचीन जाति या वश। †वि०, पु०=तुमुल।

तुमुल—पु० [स०√तु (हिसा करना)+मुलन्]१ सेना का कोलाहल। लडाई की हलचल। २ सेना की भिडत। ३ बहेडे का पेड।
वि० बहुत उत्कट, तीव्र या विकट। घोर। प्रचड। जैसे—तुमुल ध्वनि।

तुमुली—स्त्री० [?] पुरातत्त्व मे एक दूसरे पर चुने हुए पत्थरो का वह ढेर या स्तूप जो प्राय किसी स्थान की विशेषता या समाधि-स्थल आदि सूचित करने के लिए बनाया जाता था। (केयर्न)

तुम्ह*—सर्व०=तुम।

तुम्हारा—सर्व० [हि० तुम] [स्त्री० तुम्हारी] 'तुम' का षष्ठी की विभक्ति लगने पर बननेवाला रूप। जैसे—तुम्हारा भाई।

तुम्हीं*—सर्व०=तुमही।

तुम्हे—सर्व० [हि० तुम] 'तुम' का वह विभक्तियुक्त रूप जो उसे द्वितीया और चतुर्थी लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तुम्हे पकडूँगा या दूँगा।

तुरग—वि० [स० तुर√गम् (जाना)+ख, मुम्] जल्दी चलनेवाला।
पु० १ घोडा। २ चित्त या मन जो बहुत जल्दी हर जगह पहुँच सकता है। ३ सात की सख्या।

तुरगक—पु० [स० तुरग√कै (शब्द करना)+क] बडी तोरी (फल)।

तुरग-गौड़—पु० [स० कर्म० स० ?] सगीत मे गौड राग का एक भेद।

तुरग-द्वेषिणी—स्त्री० [स० तुरग√द्विष् (द्वेष करना)+णिनि=ङीप्] भैस। महिपी।

तुरंगप्रिय—पु० [ष० त०] जौ। यव।

तुरगम—वि०[स० तुर√गम् (जाना)+खच्, मुम्] जल्दी चलनेवाला।
पु० १ घोडा। २ चित्त। मन। ३ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और दो गुरु होते है।

तुरंगमी (मिन्)—पु० [स० तुरङ्गम+इनि] अश्वारोही। घुडसवार।

तुरग-वक्त्र—वि०[ब० स०] जिसका मुँह घोडे के मुँह की तरह लबा हो। पु० किन्नर।

तुरग-वदन—पु० [ब० स०] किन्नर।

तुरग-शाला—स्त्री० [ष० त०] घुडसाल। अस्तबल।

तुरगारि—पु० [तुरग-अरि, ष० त०] १ कनेर। करवीर। २ भैसा।

तुरगिका—स्त्री० [स० तुरग+ठन्—इक्] देवदाली। घघरबेल।

तुरगी—स्त्री० [स० तुरग+अच्—ङीष्] अश्वगधा। असगध।

तुरज—पु० [फा० तुरुज] १ चकोतरा नीबू। २ बिजौरा नीबू। ३ सूई-धागे से कपडे पर बनाई जानेवाली एक तरह की बूटी।

तुरजबीन—स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार की चीनी जो खुरासान देश मे प्राय ऊँटकटारे के पौधो पर ओस के साथ जमती है। २ नीबू के रस का शरबत। शिकजवी।

तुरत—क्रि० वि० [स० तुर=वेग, जल्दी] १ ठीक इसी समय। २ जितनी जल्दी हो सके। जल्दी से जल्दी।

तुरता—पु० [हि० तुरत] गाँजा (जिसका नशा पीते ही तुरत चढता है)।

तुरबीन—स्त्री० [?] भवासे की जड की शर्करा जो दवा के काम आती है तथा जो वैद्यक मे ज्वरहर तथा अग्निप्रदीपक मानी जाती है और पुरानी होने पर दस्तावर होती है।

तुर—अव्य० [स०√तुर् (जल्दी करना)+क] शीघ्र। जल्द।
वि० बहुत तेज चलनेवाला। वेगवान्। शीघ्रगामी।
पु० [?] १ करघे की वह मोटी लकडी जिस पर बुना हुआ कपडा लपेटा जाता है। २ वह बेलन जिस पर बुना हुआ गोटा लपेटा जाता है।

तुरई—स्त्री० [स० तूर=तुरही बाजा] तोरी नाम की बेल जिसके लबे फलो की तरकारी बनाई जाती है। तोरी।
पद—तुरई के फूल-सा=(क) बहुत ही कोमल और हलका। (ख) जिसका कोई विशेष महत्त्व, मान या मूल्य न हो। जैसे—तुरई के फूल-से इतने रुपए उड गये, पर काम कुछ भी न हुआ।
† स्त्री०=तुरही।

तुरक—पु०=तुर्क।

तुरकटा—पु० [फा० तुर्क+हि० टा (प्रत्य०)] मुसलमान। (उपेक्षा तथा घृणा-सूचक)

तुरकान†—पु० [फा० तुर्क] १ तुर्क देश। २ तुर्की की बस्ती।

तुरकाना—पु० [फा० तुर्क] मुसलमान।
वि० तुर्को का-सा।

तुरकिन—स्त्री० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति की स्त्री। †२ मुसलमान स्त्री।

तुरकिस्तान—पु०=तुर्की (देश)।

तुरकी—वि० [फा०] तुर्क देश का।
पु० पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध देश। तुर्की।
स्त्री० उक्त देश की भाषा।

तुरग—वि० [स० तुर√गम् (जाना)+ड] तेज चलनेवाला।
पु० १ घोडा। २ चित्त। मन।

तुरग-गधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अश्वगधा। असगध।

तुरग-दानव—पु० [मध्य० स०] एक दैत्य जो कस के आदेशानुसार घोडे का रूप धारण करके कृष्ण को मारने गया था।

तुरग-ब्रह्मचर्य—पु० [ष० त०] वह ब्रह्मचर्य जो केवल स्त्री की अप्राप्ति के कारण चलता हो।

तुरगारोह—पु० [स० तुरग+आ√रुह् (चढना)+अच्] अश्वारोही।

तुरगास्तरण—पु० [स० तुरग–आस्तरण, मध्य० स०] घोडे की पीठ पर बिछाया जानेवाला कपडा। पलान।

तुरगी—स्त्री० [स० तुरग+ङीष्] १ घोडी। २ [तुरग+अच्—ङीष्] अश्वगधा या असगध नाम की ओषधि।

पु० [स० तुरग+इनि] घुडसवार।

तुरगुला—पु० [देश०] १ कान मे पहनने का झुमका। २ लटकन। लोलक।

तुरगोपचारक—पु० [स० तुरग-उपचारक, ष० त०] साईस।

तुरतं—अव्य०=तुरत।

तुरतुरा—वि० [स० त्वरा] [स्त्री० तुरतुरी] १ वेगवान्। तेज। २ जल्दबाज। ३ जल्दी-जल्दी या तेज बोलनेवाला।

तुरतुरिया—वि०=तुरतुरा।

तुरपई—स्त्री० [हि० तुरपना] एक प्रकार की सिलाई। तुरपन।

तुरपन—स्त्री० [हि० तुरपन] १ तुरपने की क्रिया या भाव। २ सीयन।

तुरपना—स० [हि० तूर=नीचे+पर=ऊपर+ना (प्रत्य०)] १ सूई-धागे से बडे बडे और कच्चे टाँके लगाना। तोपे भरना या लगाना। २ सीना।

तुरपवाना—स० [हि० 'तुरपना' का प्रे०] तुरपने का काम किसी से कराना।

तुरपाना—स०=तुरपवाना।

तुरबत—स्त्री० [अ० तुर्बत] कब्र।

तुरम—पु० [स० तूरम] तुरही।

तुरमती—स्त्री० [तु० तुरमता] एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

तुरमनी—स्त्री० [देश०] नारियल की खोपडी रेतने की एक तरह की रेती।

तुरय*—पु० [स० तुरग] [स्त्री० तुरी] घोडा।

तुररा—पु०=तुर्रा।

तुरसीला—वि० [फा० तुर्श=खट्टा] १ तीखा। २ घायल करनेवाला। उदा०—करधनी सब्द है तुरसीले। —नारायण स्वामी।

तुरही—स्त्री० [स० तूर] फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का लबा बाजा।

तुरां—पु० [स० तुरग] घोडा।

स्त्री० [स० तूरा] जल्दी। शीघ्रता।

ंपु०=तुर्रा।

तुराई—अव्य० [हि० तुराना] १ आतुरतापूर्वक। २ जल्दी से।

तुराई—स्त्री० [स० तूल=रूई, तूलिका=गद्दा] १ रुई भरा हुआ गुदगुदा बिछावन। गद्दा। तोशक। २ ओढने की हलकी रजाई। तुलाई। दुलाई।

तुराट*—पु० [स० तुरग] घोडा। (डि०)

तुराना*—अ० [स० तुर] १ आतुर होना। २ जल्दी मचाना।

ंस०=तुडाना।

तुरायण—पु० [स०√तुर् (शीघ्रता)+क, तुर+फक्—आयन] चैत्र शुक्ल पचमी और वैशाख शुक्ल पचमी को होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

तुरावत—वि० [स० त्वरावत्] [स्त्री० तुरावती] वेगपूर्वक चलनेवाला।

तुरावान—वि०=तुरावत।

तुराषाट्—पु० [स० तुर√सह् (सहना)+णिच्+क्विप्, दीर्घ] इद्र।

तुरास*—पु० [स० तुर] वेग।

क्रि० वि० १ वेगपूर्वक। २ जल्दी से।

तुरासाह—पु०=तुराषाट्।

तुरिया*—वि०, स्त्री०=तुरीय।

स्त्री० दे० 'तोरिया'।

तुरी—स्त्री० [स० तुरगी] १ घोडी। २ घोडे की लगाम।

पु० घुडसवार।

स्त्री० [स० त्वरा] जल्दबाजी। शीघ्रता।

वि० स्त्री० जल्दी या तेज चलनेवाली।

स्त्री० [अ० तुर्रा] १ फूलो का गुच्छा। २ मोतियो, सूतो आदि का वह झब्बा जो शोभा के लिए पगडी आदि मे लगाया जाता है। ३ जुलाहो की वह कूँची जिससे वे ताने के सूत बराबर करते है।

स्त्री०=तुरही।

तुरी-यत्र—पु० [स०] वह यत्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।

तुरीय—वि० [स० चतुर+छ—ईय, चलोप] चतुर्थ। चौथा।

स्त्री० १ वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुँह से उच्चरित होती है। बैखरी। २ प्राणियो की चार अवस्थाओ मे से अन्तिम अवस्था जो ब्रह्म मे होनेवाली लीनता या मोक्ष है। (वेदान्त)

पु० निर्गुण ब्रह्म।

तुरीय-वर्ण—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जो चौथे वर्ण का अर्थात् शूद्र हो।

पु० शूद्र।

तुरुक—पु०=तुर्क।

तुरुप—पु० [अ० ट्रप] कुछ विशिष्ट ताश के खेलो म वह रग जो प्रधान मान लिया जाता है तथा जिसके छोटे से छोटा पत्ता दूसरे रग के बडे से बडे पत्ते को काट या मार सकता है।

पु० [अ० ट्रूप=सेना] १ सेना की टुकडी या दस्ता। २ घुडसवारो का रिसाला।

तुरुपना—स०=तुरपना।

तुरुष्क—पु० [स० तुरुस्+कन्] १ तुर्किस्तान का रहनेवाला व्यक्ति। २ तुर्क देश मे बसनेवाली जाति। तुर्क। ३ तुर्किस्तान या तुर्की देश। ४ उक्त देश का घोडा। ५ लोबान जो पहले उक्त देश मे आता था।

तुरुष्क गौड—पु०=तुरग गौड।

तुरुहीं—स्त्री०=तुरही।

तुरै—पु० [स० तुरग] घोडा। उदा०—जोबन तुरै हाँथ हाथ गहि लीजै।—जायसी।

तुरैया—स्त्री०=तोरी।

तुर्क—पु० [स० तुरुष्क से तु०] १ तुर्किस्तान का निवासी। २ मुसलमान। ३ सैनिक।
तुर्क-चीन—पु० [?] सूर्य ।
तुर्कमान—पु० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति का व्यक्ति। २ तुर्की घोडा जो बहुत बढिया होता है।
तुर्क-सवार—पु० [फा० तुर्क+फा० सवार] घुडसवार।
तुर्किन—स्त्री०=तुरकिन।
तुर्किनी—स्त्री०=तुरकिन ।
तुर्किस्तान—पु० [फा०] पश्चिमी एशिया का एक राज्य जहाँ तुर्क जाति रहती है।
तुर्की—वि० [फा०] तुर्किस्तान का। तुर्किस्तान मे होनेवाला। जैसे—तुर्की घोडा।
पु० १ तुर्किस्तान देश। २ तुर्किस्तान का घोडा ।
स्त्री० १ तुर्किस्तान की भाषा। २ तुर्कों की-सी ऐठ, शान या शेखी। अकड ।
मुहा०—(किसी को) तुर्की-बतुर्की जवाब देना=किसी के उग्र या तीव्र कथन या व्यवहार का वैसा ही उत्तर देना। **(किसी की) तुर्की तमाम होना**=अकड, ऐठ या घमड नष्ट या समाप्त होना ।
तुर्की टोपी—स्त्री० [हि०] एक प्रकार की गोलाकार ऊँची या कुछ लबी और फूँदनेदार टोपी जो पहले तुर्क लोग पहना करते थे।
तुर्फरी—पु० [स०√तृफ् (हिसा करना)+अरी (बा०)] अकुश का अगला नुकीला सिरा।
तुर्य—वि० [स० चतुर+यत्, च का लोप] १ चौथा। २ चौगुना।
तुर्या—स्त्री० [स० तुर्य+टाप्] प्राणियो की चार अवस्थाओ मे से अन्तिम अवस्था जो ब्रह्म मे होनेवाली लीनता या मोक्ष है। (वेदात)
तुर्याश्रम—पु० [स० तुर्य-आश्रम, कर्म० स०] चौथा आश्रम । सन्यास।
तुर्रा—पु० [अ० तुर] १ घुँघराले बालो की लट जो इधर-उधर या माथे पर लटकती हे। काकुल। २ कुछ पक्षियो के सिर पर की परो या बालो की चोटी। कलगी। ३ टोपी, पगडी आदि मे खोसा या लगाया जानेवाला पक्षियो का सुदर पर, फूलो का गुच्छा अथवा बादले, मोतियो आदि का लच्छा। कलगी। गोशवारा। ४ किसी चीज या बात मे होनेवाली ऐसी विलक्षण विशेषता जो उस चीज या बात को दूसरी चीजों या बातो से भिन्न और श्रेष्ठ सिद्ध करती हो।
विशेष—परिहास या व्यग्य मे इस शब्द का प्रयोग अनोखी असबद्धता सूचित करने के लिए होता है। जैसे—जबरदस्ती हमारी किताब भी उठा ले गये, तिस पर तुर्रा यह कि हमे ही चोर (या झूठा) बनाते है।
५ किसी चीज मे लगाया हुआ सुदर किनारा या हाशिया। ६ मकान का छज्जा। ७ कोड़ा। चाबुक।
मुहा०—तुर्रा करना=(क) कोडा या चाबुक मारना। (ख) उत्तेजित या प्रोत्साहित करना।
८ एक प्रकार की बुलबुल जो जाडे भर भारतवर्ष के पूर्वीय भागो मे रहती है, पर गरमी मे चीन और साइबेरिया की ओर चली जाती हे। ९ एक प्रकार का बटेर। डुबकी। १० जटाधारी या मुर्गकेश नाम का पोधा और उसका फूल। गुलतर्रा। ११ मुहाँसे आदि का ऊपरी नुकीला भाग। कील।
वि० [फा०] अनोखा। विलक्षण।
पु० [?] दूध, भाँग आदि का थोडा-थोडा करके लिया जानेवाला घूँट। (क्व०)
मुहा०—तुर्रा चढ़ाना या जमाना=खूब ढेर-सी भाँग पीना।
तुर्वसु—पु० [स०] राजा ययाति का एक पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और जिसने पिता के माँगने पर उसे अपना योवन नही दिया था।
तुर्श—वि० [फा०] [भाव० तुर्शी] खट्टा ।
तुर्शरू—वि० [फा०] तीखे मिजाजवाला। कटु-भाषी।
तुर्शाई† —स्त्री०=तुर्शी।
तुर्शाना—अ० [फा० तुर्श] खट्टा हो जाना।
स० खट्टा करना या बनाना।
तुर्शी—स्त्री० [फा०] १ तुर्श होने की अवस्था या भाव। अम्लता। खट्टापन। २ खटाई।
तुर्शीदर्दां—स्त्री० [फा०] घोडो का एक रोग जिसमे उसके दाँतो पर मैल जमने लगती है।
तुल† —वि०=तुल्य ।
तुलक—पु० [?] राज-मत्री ।
तुलन—पु० [स०√तुल् (तौलना)+ल्युट्—अन] तुलने या तौलने की अवस्था, क्रिया या भाव ।
तुलना—अ० [हि० तौलना का अ०] १ काँटे, तराजू आदि पर रखकर तौला जाना। २ भार या मान का हिसाब लगाया जाना या विचार होना। ३ उक्त प्रकार का विचार होने या हिसाब लगने पर किसी की बराबरी का या किसी के समान ठहरना। ४ किसी की बराबरी मे होकर या उसके साथ अच्छी तरह मिलकर उसी के समान हो जाना। उदा०—सौकन ने पायजामा पहना है गुल-बदन का। फूलो मे तुल रहा है, काँटा मेरे चमन का।—जानसाहब। ५ किसी आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार से बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर झुका न हो। ठीक अदाज के साथ टिकना। जैसे—बाइसिकल पर तुलकर बैठना। ६ अस्त्र, शस्त्र आदि का इस प्रकार ठीक स्थान पर और ऐसे अन्दाज या हिसाब से स्थित होना कि वह लक्ष्य तक पहुँचकर अपना ठीक और पूरा काम करे। ७ कोई काम करने के लिए पूरी तरह से कटिबद्ध या सन्नद्ध होना। जैसे—किसी के साथ झगडा करने पर तुलना ।
सयो० क्रि०—जाना।
८ किसी चीज या बात का ठीक-ठीक अनुमान या कल्पना होना।
९ किसी चीज मे पूरी तरह से भरा जाना।
अ० [हि० तूलना का अ०] गाडी के पहिए का औगा जाना या उसमे तेल दिया जाना। तूला जाना।
स्त्री० [स०√तुल्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ दो या अधिक वस्तुओ के गुण, मान आदि के एक दूसरे से घट या बढकर होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २ बराबरी। समता। ३ सादृश्य। ४ उपमा। ५ तौल। वजन। ६ गणना। गिनती।
तुलनात्मक—वि० [स० तुलना-आत्मन्, ब० स०, कप्] जिसमे दो या कई चीजो के गुणो की समानता और असमानता दिखलाई गई हो।

जिसमे किसी के साथ तुलना करते हुए विचार किया गया हो। जैसे—कबीर और नानक का तुलनात्मक अध्ययन।

तुलनी—स्त्री० [स० तुला] तराजू या काँटे की सूई मे का दोनो तरफ का लोहा।

तुलनीय—वि० [स०√तुल्+अनीयर्] तुलना किये जाने के योग्य। जिसकी या जिससे तुलना की जा सके।

तुलबुली†—स्त्री० [अनु०] जल्दबाजी।

तुलवाई—स्त्री० [हि० तौलवाना, तुलना] १ तौलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'तुलाई'। ३ पहियो को औगने या तूलने (उनमे तेल देने) का पारिश्रमिक या मजदूरी।

तुलवाना—स० [हि० तौलना का प्र० रूप] [स्त्री० तुलवाई] १ किसी को कुछ तोलने मे प्रवृत्त करना। २ गाडी के पहिये की धुरी मे तेल दिलाना। औगवाना।

तुलसारिणी—स्त्री० [स० तुर√सृ (जाना)+णिनि—ङीप्, र—ल] तूणीर।

तुलसी—स्त्री० [स० तुला√सो (नष्ट करना)+क—ङीष्, पररूप] १ एक प्रसिद्ध पौधा जो बहुत पवित्र माना गया है और जिसकी पत्तियो मे तीक्ष्ण गध होती है। यह काली और धौली दो प्रकार की होती है। २ उक्त पौधे की पत्ती जो अनेक प्रकार के रोगो की नाशक तथा कफ और पित्त तथा अग्नि प्रदीपक, हृदय को हितकारी, पित्त को बढानेवाली मानी जाती है। ३ उक्त के बीज जो ढाँस का कम करते तथा शुक्र को गाढा करते है।

पु० गोस्वामी तुलसीदास (हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि)।

तुलसीघरा—पु० [स० तुलसी+हि० घर] आँगन के मध्य का वह स्थान जहाँ कुछ हिंदू घरो मे तुलसी के पौधे लगे होते है।

तुलसी दल—पु० [ष० त०] तुलसी के पौधे का पत्ता। तुलसी पत्र।

तुलसीदाना—पु० [हि० तुलसी+फा० दाना] एक तरह का आभूषण।

तुलसीदास—पु० [स०] मध्यकाल के एक प्रसिद्ध सगुणोपासक भक्त कवि जिन्होने रामचरितमानस, विनय पत्रिका आदि बारह ग्रथ रचे थे।

तुलसी-द्वेष—स्त्री० [स० तुलसी√द्विष् (द्वेष करना)+अण्—टाप्] बन-तुलसी। बर्बरी। ममरी।

तुलसी पत्र—पु० [ष० त०] तुलसी का पत्ता।

तुलसीबास—पु० [हि० तुलसी+बास=महक] एक तरह का अगहनी धान जिसका चावल सुगधित होता है।

तुलसी-वन—पु० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ पर तुलसी के बहुत अधिक पौधे हो। तुलसी का जगल। २ वृदावन।

तुला—स्त्री० [स०√तुल् (तोलना)+अङ्—टाप्] १ सादृश्य का मिलान। तुलना। २ चीजो का भार तौलने का तराजू। कॉटा।

पद—तुला-दड।

३ भार का मान। तौल। ४ अनाज नापने का बरतन। भाड। ५ प्राचीन काल की एक तौल जो १०० पल या लगभग ५ सेर की होती थी। ६ ज्योतिष की बारह राशियो मे से सातवी राशि जिसके तारो की आकृति बहुत-कुछ तराजू की तरह होती है। ७ प्राचीन वास्तु कला मे, खभे का एक विशिष्ट अश या विभाग। ८ दे० 'तुला-परीक्षा'।

तुलाई—स्त्री० [स० तूल=रूई] कुछ छोटी, पतली और हलकी रजाई। दुलाई।

स्त्री० [हि० तौलना] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

स्त्री० [हि० तूलना या तुलाना] गाडी के पहियो को औगाने या धुरी मे चिकना दिलवाने की क्रिया।

तुला-कूट—पु० [ष० त०] १ इस प्रकार कोई चीज तौलना कि वह तुला पर अपने उचित तौल से कम चढे। तौलने मे धोखेबाजी या बेईमानी करना। २ इस तरह तौलने मे होनेवाली कमी या कसर।

वि० [स० तुला√कूट् (निन्दा करना)+घञ्] तौल मे कमी या कसर करनेवाला। डाँडी मारनेवाला।

तुला-कोटि—स्त्री० [ष० त०] १ तराजू की डडी के दोनो छोर जिनमे पलडे की रस्सी बँधी रहती है। २ प्राचीन काल की एक प्रकार की तौल या मान। ३ गणित मे अर्बुद की सख्या। ४. घुँघरू। नूपुर।

तुला-कोश—पु० [ष० त०] तुला-परीक्षा। (दे०)

तुला-दड—पु० [ष० त०] तराजू की वह डडी जिसके दोनो सिरो पर पलडे बँधे रहते है।

तुलादान—पु० [तृ० त०] अपने शरीर के भार के बराबल तौलकर दिया जानेवाला अन्न, वस्त्र आदि का दान।

तुलाधार—पु० [स० तुला√धृ (धारण)+अण्] १ तुलाराशि। २ तराजू की वे रस्सियाँ जिनमे पलडे बँधे रहते हे। ३ वणिक्। बनिया। ४ एक प्रसिद्ध व्याध जिसने केवल माता-पिता की सेवा के बल पर मुक्ति पाई थी।

वि० तुला धारण करने अर्थात् तराजू से चीजे तौलने का काम करनेवाला।

तुलाना—अ० [हि० तुलना=तौल मे बराबर आना] १ किसी चीज का तौला जाना। २ तुल्य या समान होना। पूरा पडना या होना। ३ नष्ट या समाप्त हो जाना। उदा०—नार्चाहे राकस आस तुलानी।—जायसी। ४ आ पहुँचना। उदा०—काल रामय जब आनि तुलानी।—ध्रुवदास।

स०=तुलवाना।

स० [हि० तुलना] गाडी के पहियो मे तेल डलवाना। औगवाना।

तुला-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसमे आय-व्यय तथा लाभ-हानि का लेखा लिखा रहता है। तल-पट। (बैलेन्स शीट)

तुला-परीक्षा—स्त्री० [तृ० त०] प्राचीन काल मे होनेवाली एक तरह की परीक्षा जिससे यह जाना जाता था कि अभियुक्त दोषी हे या निर्दोष।

तुला-पुरुष-कृच्छ्र—पु० [स० तुला-पुरुष मध्य० स०, तुला, पुरुष-कृच्छ्र, ष० त०] एक प्रकार का व्रत जिसमे पिण्याक (तिल की खली) भात, मट्ठा, जल और सत्तू मे से प्रत्येक क्रमश तीन तीन दिन तक खाकर पद्रह दिनो तक रहना पडता है।

तुला-पुरुष-दान—पु० [स० तुला-पुरुष, मध्य० स०, तुलापुरुष-दान, ष० त०] तुलादान।

तुला-बीज—पु० [ष० त०] घुँघची के बीच।

तुलाभवानी—स्त्री० [स०] शकर दिग्विजय के अनुसार एक नदी और उसके किनारे बसी हुई नगरी का नाम।

तुला-मान—पु० [ष० त०] १ वह मान जो तोलकर निश्चित किया

जाय। तौल कर निकाला हुआ भार या वजन । २ तराजू की डाँडी। ३ बटखरा । बाट।

तुला-यंत्र—पु० [ष० त०] तराजू।

तुला-यष्टि—स्त्री० [ष० त०] तुला-दड ।

तुलावा—पु० [हि० तुलना] ठेले आदि के अगले भाग मे टेक या सहारे के रूप मे लगाई जानेवाली वह लबी लकडी जिससे ठेले का अगला भाग कुछ ऊँचा उठा रहता है और पिछला भाग कुछ नीचे झुक जाता है ।

तुला-सूत्र—पु० [ष०त०] वह मोटी रस्सी जो तराजू की डडी के बीच मिरोई रहती है और जिसे पकडकर तराजू उठाते है।

तुलि—स्त्री०[स०√तुर्(शीघ्रता)+इन्, र—ल] १ जुलाहो की कूँची। हत्थी। २ चित्रकारो की कूँची। कलम।

तुलिका—स्त्री०[स०√तुल्(तोलना)+क्वुन्—अक, टाप्, इत्व] एक तरह की चिडिया।

तुलित—वि०[स०√तुल्+क्त] १ तुला हुआ। २ समान। बराबर।

तुलिनी—स्त्री०[स० तूल+इनि—डीप्, पृपो० ह्रस्व] शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड।

तुलि-फला—स्त्री०[स० ब० स०, पृषो० ह्रस्व] सेमर का पेड।

तुली—स्त्री०[स० तुलि+डीप्?] छोटा तराजू। काँटा।
स्त्री०[?]१ तमाकू। २ सुरती का पत्ता।
स्त्री०=तुलि।

तुलुव—पु०[?] उत्तर कनाडा का एक प्राचीन नाम।

तुलूली—स्त्री०[अनु० तुलतुल] द्रव पदार्थ की पतली किंतु बँधी हुई धार। जैसे—पेशाब की तुलूली।
क्रि० प्र०—बँधना।

तुल्य—वि०[स० तुला+यत्]१ जो किसी की तुलना मे समान हो। बराबर। २ अनुरूप। सदृश्य।

तुल्यता—स्त्री०[स० तुल्य+तल्—टाप्] तुल्य होने की अवस्था या भाव। बराबरी। समता।

तुल्य-पान—पु०[तृ०त०] छोटे-बडे सब तरह के लोगो का एक साथ मिलकर मद्य आदि पीना।

तुल्य-प्रधान व्यग्य—पु० [स० तुल्य-प्रधान, ब०स०, तुल्य-प्रधान-व्यग्य, कर्म० स०] साहित्य मे ऐसा व्यग्य जिसमे वाच्यार्थ और व्यग्यार्थ बराबर हो। गुणीभूत व्यग्य का एक भेद।

तुल्ययोगिता—स्त्री०[स० तुल्ययोगिन्+तल्—टाप्] साहित्य मे एक अलकार जिसमे अप्रस्तुत अथवा प्रस्तुत पदार्थों के किसी एक धर्म से युक्त या सम्बद्ध होने का उल्लेख होता है। जैसे—उस सुन्दरी की कोमलता को देखकर किस तरुण के हृदय मे मालती के फूल, चन्द्रमा की कला और केले के पत्ते कठोर नही जँचने लगे।

तुल्ययोगी (गिन्)—वि० [स० तुल्य√युज् (जोडना)+णिनि] समान सबध रखनेवाला।

तुल्ल*—वि०=तुल्य।

तुव—सर्व०=तव (तुम्हारा)।

तुवर—वि०[स०√तु (नष्ट करना)+ष्वरच्]१ कसैला। २ जिसे दाढी और मूँछ न हो।
पु०१ कषाय रस। कसैला स्वाद। २ जलाशयो के किनारे होनेवाला एक पेड जिसके बीज खाने से मादा पशुओ का दूध बढता है। ३ अरहर।

तुवर-यावनाल—पु०[स० कर्म० स०] लाल जोवरी या ज्वार।

तुवरिका—स्त्री० [स० तुवर+ठन्—इक, टाप्] १ गोपीचदन। २ अरहर।

तुवरी—स्त्री० [स० तुवर+डीष्] १ तुवरिका। (दे०) २ वैद्यक मे एक तरह का तैल जो रक्त, विकार दूर करने तथा चर्म रोगो का नाशक माना जाता है।

तुवरीशिब—पु०[स० ब० स०] चँकवड का पेड। पवाँर।

तुवि—स्त्री०[स०=तुम्बी, पृषो० सिद्धि] तूँबी।

तुशियार—पु० [स० तुष] एक तरह का झाड जिसकी छाल को बटकर रस्सियाँ आदि बनाई जाती है। पुरुनी।

तुष—पु० [स०√तुष्+क] १ अन्न-कण के ऊपर का छिलका। भूसी। २ अडे के ऊपर का छिलका। ३ बहेडे का पेड।

तुषग्रह—पु०[स० तुष√ग्रह् (पकडना)+अप्] अग्नि । आग।

तुष-धान्य—पु०[स० मध्य०स०] ऐसा अन्न जिसके दानो के ऊपर छिलका रहता हो।

तुषसार—पु०[स० तुष√सृ (जाना)+अण्] अग्नि। आग।

तुषाबु—पु० [स० तुष-अबु, ष० त०] एक तरह की काजी। (वैद्यक) वि० दे० 'तुषोदक'।

तुषाग्नि—स्त्री०[स० तुष-अग्नि, ष०त०] तुषानल। (दे०)

तुषानल—पु०[स० तुष-अनल, ष०त०]१ भूसी की आग। घास-फूस की आग। करसी की आँच। २ उक्त प्रकार की वह आग जिसमे प्रायश्चित्त करने के लिए लोग जल मरते थे।

तुषार—पु०[स०√तुष्(प्रसन्न होना)+आरन्] १ हवा मे उडनेवाले वे जलकण जो जम जाने के फलस्वरूप जमीन पर गिर पडते है। पाला। २ लाक्षणिक रूप मे, ऐसी बात जो किसी चीज को नष्ट कर दे। ३ बरफ। हिम। ४ एक प्रकार का कपूर। चीनिया कपूर। ५ हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश जहाँ के घोडे प्रसिद्ध थे। ६ उक्त प्रदेश मे रहनेवाली एक जाति।
वि० बरफ की तरह ठढा।

तुषार-कर—पु०[स० ब०स०] हिमकर। चद्रमा।

तुषार-गौर—पु०[स० उपमि०स०] कपूर।

तुषार-मूर्ति—पु०[ब०स०] चद्रमा।

तुषार-पाषाण—पु०[ष०त०]१ ओला। २ बरफ। हिम।

तुषार-रश्मि—पु०[ब०स०] चद्रमा।

तुषार-रेखा—स्त्री० [ष०त०] पर्वतो पर की वह कल्पित रेखा जिससे ऊपरवाले भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है। (स्नो लाइन)

तुषारर्तु—स्त्री०[तुषार-ऋतु, ष०त०] जाडे का मौसम। शीतकाल।

तुषाराशु—पु०[तुषार-अशु, ब०स०] चद्रमा।

तुषाराद्रि—पु०[तुषार-अद्रि, ष०त०] हिमालय पर्वत।

तुषित—पु०[स०√तुष् (प्रसन्न होना)+कितच् (बा०)] १ एक प्रकार के गण देवता जो सख्या मे १२ है। २ विष्णु। ३. बौद्धो के अनुसार एक स्वर्ग।

तुषोत्थ—पु० [स० तुष-उद्√स्था (उठना)+क] तुषोदक। (दे०)

तुषोदक—पु०[तुष-उदक, ष० त०]१ छिलके समेत कूटे हुए जौ को पानी मे सडाकर बनाई हुई काँजी, जो वैद्यक मे अग्नि को दीप्त करनेवाली मानी गई है। २ भूसी को सडाकर तैयार किया हुआ खट्टा जल।

तुष्ट—भू० कृ० [स०√तुष्+क्त][भाव० तुष्टता]१ जिसका तोष या तृप्ति हो चुकी हो या कर दी गई हो। तृप्त। २ जो अपना अभीष्ट सिद्ध होने के कारण प्रसन्न हो गया हो।

तुष्टता—स्त्री०[स० तुष्ट+तल्—टाप्]१ तुष्ट होने की अवस्था या भाव। २ सतोष। प्रसन्नता।

तुष्टना—अ०[स० तुष्ट] तुष्ट होना।

स० तुष्ट करना।

तुष्टि—स्त्री०[स०√तुष्+क्तिन्]१ तुष्ट होने की अवस्था या भाव। २ प्रसन्नता। ३ कस का एक भाई।

तुष्टीकरण—पु०[स०तुष्टि+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ(करना)+ल्युट्—अन] किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। (एपीजमेंट)

तुस—पु०[स०=तुष, पृषो० सत्व] तुप (भूसी)।

तुसार—पु०=तुषार।

तुसी—स्त्री०[स० तुष] भूसी।

तुस्त—स्त्री०[स० √तुस् (शब्द करना)+क्त]धूल । गर्द।

तुहफा†—पु०=तोहफा।

तुहमत—स्त्री०=तोहमत।

तुहार—सर्व० हिं०'तुम्हारा' का भोजपुरी रूप।

तुहिं—सर्व०[हि० तू+हि(प्रत्य०)] तुझको। तुझे। (भोजपुरी)

तुहिन—पु०[स०√तुह (पीडित करना)+इनन्] १ तुषार। पाला। २ बरफ। हिम। ३ चद्रमा की चाँदनी। ४ ठढक। शीतलता। ५ कपूर।

तुहिन-कर—पु०[ष०त०]१ चद्रमा। २ कपूर।

तुहिन-किरण—पु०=तुहिन-कर।

तुहिन-गिरी—पु०[ष०त०] हिमालय पर्वत।

तुहिन-शर्करा—पु०[ष०त०] बरफ। हिम।

तुहिन-शैल—पु०=तुहिन-गिरि।

तुहिनांशु—पु०[स० तुहिन-अशु, ब०स०] १ चद्रमा। २ कपूर।

तुहिनाचल—पु०[तुहिन-अचल, प०त०] तुहिन-गिरि। (दे०)

तुहिनाद्रि—पु०[तुहिन-अद्रि, ष० त०] तुहिन-गिरि। (दे०)

तुहें†—सर्व०=तुम्हे। (भोजपुरी)

तूं—सर्व०=तू।

तूंगी†—स्त्री०[देश०]१ पृथ्वी। भूमि। २ नाव। नौका।

तूंबड़ा—पु०=तूँबा।

तूंबना—स०=तूमना।

तूँबा—पु०[स० तुम्बक] [स्त्री० अल्पा० तूँबी]१ कडुआ गोल कद्दू। कडुई गोल घीया। तितलौकी। २ उक्त का सूखा हुआ वह रूप जिसके सहारे नदी-नाले आदि पार किये जाते है। ३ उक्त को सुखाकर और खोखला करके बनाया हुआ पात्र जो प्राय साधु-सन्यासी और भिखमगे अपने पास खाने-पीने की चीजे रखने के लिए रखते है।

पद—तूँबा पलटी या तूँबा फेरी=इधर की चीजे उठाकर उधर करना या एक की चीजे दूसरो को देना। चोरो, चालबाजो आदि का लक्षण। उदा०—ऐसी तूमा-(तूँबा) पलटी के गुन नेति नेति स्तुति गावै।—सत्यनारायण।

तूँबी—स्त्री०[हि० तूँबा] १ छोटा तूँबा। २ उक्त का बना हुआ छोटा तूँबा या पात्र।

मुहा०—तूँबी लगाना=वात से पीडित या सूजे हुए स्थान का रक्त या वायु खीचने के लिए तूबी की विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया करना।

तू—सर्व० [स० त्वम्] एक सर्वनाम जिसका प्रयोग मध्यम पुरुष एकवचन मे ऐसे व्यक्ति के लिए होता है जो अपने से बहुत छोटा, तुच्छ या हीन हो। जैसे—तू चुप रह।

मुहा०—तू तड़ाक या तू तुकार=किसी को तू कहकर उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक सबोधित करना। **तू-तू मैं-मैं करना**=आपस मे अशिष्टता पूर्वक कहा-सुनी, तकरार या हुज्जत करना।

विशेष—कुछ अवसरो पर इसका प्रयोग ईश्वर अथवा सर्वशक्तिमान् सत्ता के लिए भी होता है। जैसे—(क) हे ईश्वर, तू हम पर दया कर। (ख) हे राजन् तू यज्ञ कर।

पु०[अनु०]कुत्तो, कौओ आदि को बुलाने का शब्द। जैसे—तू'तू' आओ।

तूअर—पु०[स० तुवरी]१ अरहर का पौधा। २ उक्त पौधे के बीज।

तूख†—पु०[स० तुष=तिनका] दो पत्तो को (दोना या पत्तल बनाते समय) जोडने के लिए उनमे लगाई जानेवाली सीक। खरका।

तूखना—अ०[स० तोषण] तुष्ट होना।

स० तुष्ट करना।

तूझ—सर्व०[स० तुभ्यम्, प्रा० तुज्झ] तेरा। मेरे। उदा०—स्त्री पति कुण सुमति तूझ गुण जू तवति।—प्रिथीराज।

तूटना†—अ०=टूटना।

तूठना*—अ०[स० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ]१ तुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। उदा०—मानि कामना सिद्ध जानि तूठे दुखहारी—रत्ना०। २ प्रसन्न होना।

तूण—पु०[स०√तूण् (पूरा करना)+घञ्]१ तीर रखने का चोगा। तरकश। २ चामर वृत्त का दूसरा नाम।

तूणक—पु०[स० तूण+कन्] एक प्रकार का छद जिसके चरणो मे १५-१५ वर्ण होते है।

तूण-क्ष्वेड—पु०[म० ब०स०] बाण। तीर।

तूणव—पु०[स० तूण+व] बाँसुरी।

तूणि—वि०[स०√तूण्(पूरा करना)+इन्] तेज या वेगपूर्वक चलने या कोई काम करनेवाला।

पु० १ मन। २ श्लोक। ३ गर्द। ४ मल।

तूणी (णिन्)—वि०[स० तूण+इनि] तूण अर्थात् तरकशवाला।

स्त्री०[स० तूण+ङीष्]१ तरकश। निषग। २ नील का पौधा। ३ एक प्रकार का वात-रोग जिसमे मूत्राशय के पास से दर्द उठकर गुदा और पेडू तक पहुँचता है।

†पु०[स० तूणीक] तूनी (वृक्ष)।

तूणीक—पु०[स० तूणी√कै (शब्द करना)+क] तुन का पेड़।

तूणी-धर—पु०[स० प०त०] तूण या तरकश रखनेवाला योद्धा।

तूणीर—पु०[स०√तूण+ईरन्] तूण। तरकश। भाथा।

तूत—पु० [स० नूद] १ मँझोले आकार का एक प्रकार का पेड जिसके पत्ते पान की तरह तथा अनीदार होते है। २ उक्त पेड की मीठी फलियाँ जो फल के रूप मे खाई जाती है। शहतूत।

तूतक—पु० [स०=तुत्थ, पृषो० सिद्धि] तूतिया। नीलाथोथा।

तूतिया—पु० [स० तुत्थ] ताँबे का क्षार या लवण जो कुछ नीले रग का होता है और जिसे वैद्यक मे ताँबे की उप-धातु कहा गया है। यह खानो मे प्राकृतिक रूप मे भी मिलता है और गधक के तेजाब और ताँबे के योग से बनाया भी जाता है। नीलाथोथा। वैद्यक मे यह वमनकारक और दस्तावर माना जाता है तथा रगाई के काम मे भी आता है।

तूती—स्त्री० [फा०] १ छोटी जाति का एक प्रकार का तोता जिसकी चोच पीली, गरदन बैंगनी और पर हरे होते है। २ कनेरी नाम की छोटी सुन्दर चिडिया। ३ मटमैले रग की एक प्रकार की छोटी चिडिया। जो बहुत मधुर स्वर मे बोलती है। ४ बाँसुरी या शहनाई की तरह का एक प्रकार का पतला लबा बाजा।

विशेष—उर्दूवाले यह शब्द उक्त अर्थों मे प्राय पुलिग बोलते है। यथा—जहाँ मे है शरारत-पेशा जितने। उन्ही का आज तूती बोलती है।—कोई शायर।

मुहा०—(किसी की) तूती बोलना=किसी की खूब चलती होना। किसी का खूब प्रभाव जमना।

कहा०—नक्कार खाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है=(क) बहुत भीड-भाड या शोरगुल मे कही हुई किसी साधारण आदमी की बात कोई नही सुनता। (ख) बडे लोगो के सामने छोटो की कुछ नही चलती।

५ मिट्टी की एक प्रकार की छोटी टोटीदार घरिया या पुरवा जिससे छोटे बच्चे पानी पीते है।

तू-तू मैं-मैं—स्त्री० [हि०] आपस मे अशिष्टतापूर्वक होनेवाली कहा-सुनी या झगडा।

तूद—पु०=तूत (शहतूत)।

तूदह—पु० = तूदा।

तूदा—पु० [फा० तूद] १ ढेर। राशि। २ सीमा का चिह्न जो पहले मिट्टी का ढेर खडा करके बनाया जाता था। ३ मिट्टी की वह ऊँची और बडी राशि या टीला जिस पर तीर, बन्दूक आदि चलाकर निशाना साधने का अभ्यास किया जाता है।

तून—पु० [स० तुन्नक] १ तुन का पेड। दे० 'तुन'। २ तूल नाम का लाल रग का कपडा।

†पु० = तूण (तूणीर)।

तूना—अ० [हि० चूना] १ तरल पदार्थ का बूँद-बूँद करके गिरना। चूना। टपकना। उदा०—रति रूप लुनाई तुई सीप रैं।—प्रतापशाह। २ खडा या स्थिर न रहकर गिर पडना। ३ गर्भपात या गर्भ-स्राव होना।

तूनी—पु० [स० तूणी] एक तरह का बडा पेड जिसकी पत्ती नीम के पेड की तरह होती है और लकडी लाल रग की और हलकी किंतु मजबूत होती है। तुन।

तूनीर*—पु० = तूणीर (तरकश)।

तूफाँ—पु० = तूफान।

तूफान—पु० [अ०, चीनी ताई फू] १ वह बडी बाढ जो आस-पास की चीजो या स्थानो को डुबा दे। २ बहुत तेज चलनेवाली, विशेषत समुद्र-तल पर उठने या चलनेवाली वह आँधी जिसके साथ खूब बादल गरजते और जोरो की वर्षा होती है। ३ ऐसा भीषण या विकट उत्पात या उपद्रव जिसमे या तो बहुत से लोग सम्मिलित हो या जिससे बहुतो की भारी हानि हो। भारी आफत, झझट या बखेडा। जैसे—तुम तो जरा-सी बात मे तूफान खडाकर देते हो।

क्रि० प्र०—उठाना। —खडा करना।

४ ऐसी बहुत अधिक चीख-पुकार या हो-हल्ला जिसे सुनकर आस-पास के लोग घबरा जायँ। ५ किसी पर लगाया जानेवाला झूठा कलक या दोष। तोहमत।

मुहा०—तूफान जोडना या बाँधना=किसी पर झूठा आरोप करना या कलक लगाना।

तूफानी—वि० [फा०] १ तूफान-सम्बन्धी। तूफान का। जैसे—तूफानी रात। २ तूफान की तरह का तेज या प्रबल और चारो ओर वेगपूर्वक फैलने या होनेवाला। जैसे—उन दिनों देश मे कई बडे-बडे नेताओ के तूफानी दौरे हो रहे थे। ३ तूफान अर्थात् बहुत बडा उपद्रव या बखेडा खडा करनेवाला। जैसे—उसकी बातो मे मत आना, वह बहुत बडा तूफानी है।

तूबर—पु० [स० तूवर] १ ऐसा बैल जिसके सिर पर सीग न हो। २ नपुसक। हिजडा।

तूबरक—पु० [स० तूबर+कन्] नपुसक। हिजडा।

तूबरी—स्त्री० [स० तूबर+ङीष्] १ गोपी चदन। २ अरहर।

तूमडी—स्त्री० [हि० तूबाँ+डी (प्रत्य०)] १ तूँबी। २ तूँबी से बनाया हुआ एक प्रकार का बाजा जो प्राय सँपेरे बजाते है।

तूम-तड़ाक—स्त्री० [अनु० तूम+तडक (भडक)] १ तडक-भडक। २ व्यर्थ का दिखौआ आडबर। ३ ठसक।

तूमना—स० [स० स्तोम=ढेर+हि० ना (प्रत्य०)] १ रूई आदि के पहल या रेशे नोचकर अलग-अलग करना। २ किसी चीज को काट-पीट कर उसके बहुत छोटे-छोटे टुकडे करना। धज्जियाँ उडाना। ३ मसलना। ४ अच्छी तरह सारा रहस्य खोलना। ५ बहुत मारना पीटना। ६ गालियाँ आदि देते हुए पूरी दुर्दशा करना। उदा०—तरुन तरुन तन तूमत फिरत है।—देव। ७ इकट्ठा करना। चुनना। उदा०—सजा दे प्रिय पथ पर प्रति बार लजाती रहे स्नेह दल-तूम—निराला।

तूमरा—पु० [स्त्री० तूमरी] =तूबा।

तूमा—पु० = तूबा।

तूमार—पु० [अ०] साधारण बात का होनेवाला व्यर्थ का विस्तार। बात का बतगड।

क्रि० प्र०—खडा करना।—बाँधना।

तूमारिया सूत—पु० [हि० तुमना+सूत] ऐसा महीन सूत जो तूमी हुई रूई से काता गया हो।

तूया—स्त्री० [देश०] काली सरसो।

तूरंत—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तूर²—पु० [स०√तूर् (ताडन करना)+क] १ एक प्रकार का नगाडा। २ तुरही या नरसिंहा नाम का बाजा।
†स्त्री० [स० तुवरि] १ अरहर का पौधा और उसके बीज। २ अनाज। अन्न। उदा०—पूर्वाषाढा धूल किन उपजै साती तूर।—भड्डरी।
पु० [अ०] शाम देश का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसके सबध मे कहा जाता है कि हजरत मूसा को इसी पर अलौकिक प्रकाश दिखाई पडा था।
मुहा०—तूर चमकना=ज्ञान का प्रकाश दिखाई पडना।
स्त्री० [फा० तूल=लबाई] १ गज-डेढ गज लबी एक लकडी जो जुलाहो के करघे मे लगी रहती है और जिसमे तानी लपेटी जाती है। लपेटनी। फनियाला। २ डोली, पालकी आदि पर डाले हुए परदे को यथा स्थान रखने के लिए उसके चारो ओर बाँधी जानेवाली रस्सी। चौबदी।
स्त्री० [स० तूल] १ कपास। २ रूई।
तूरज*—पु० = तूर्य।
तूरण*—अव्य० [स० तूर्ण] १ चट-पट। तुरत। २ शीघ्र। जल्दी।
तूरण*—क्रि० वि० [सं० तूर्ण] १ चट-पट। तुरन्त। २ शीघ्र जल्दी।
तूरन*—पु० = तूर्ण।
क्रि० वि०=तूरण।
तूरना†—पु० [स० तूर] तुरही।
†पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।
†स० = तोडना। (पूरब) उदा०—मन तन वचन तजे तिन तूरी। —तुलसी।
†अ० =टूटना। उदा०—परिहैं तूरि लटी कटि ताकी। —नन्ददास।
तूरा—पु० [स० तूर] तुरही नामक बाजा।
तूरान—पु० [फा०] मध्य एशिया, जो तुर्क, तातारी, मगोल आदि जातियो का निवास स्थान है।
तूरानी—वि० [फा०] तूरान देश का। तूरान-सबधी।
पु० तूरान देश का निवासी।
स्त्री० १ तूरान देश की भाषा। २ उक्त भाषा की लिपि।
तूरी—स्त्री० [स०√तूर्+अच्+ङीष्] धतूरे का पेड।
तूर्ण—क्रि० वि० [स०√त्वर् (शीघ्रता करना)+क्त, नत्व] शीघ्र। जल्दी।
वि० १ जल्दी या शीघ्रता करनेवाला। २ शीघ्रगामी। तेज।
तूर्णक—पु० [स० तूर्ण+कन्] सुश्रुत के अनुसार एक तरह का चावल।
तूर्त—अव्य० [स०√त्वर्+क्त, ऊठ्] १ तुरत। तत्काल। २ जल्दी। शीघ्र।
तूर्य—पु० [स० √तूर् (पूर्ण करना)+ण्यत्] १ तुरही या नरसिंहा नाम का बाजा। २ मृदग।
तूर्य-खंड—पु० [ष० त०] एक प्रकार का ढोल।
तूर्व—अव्य० [स०√तुर्व् (हिंसा करना) +अच्, दीर्घ] तुरत। शीघ्र।
तूल—पु० [स०√तूल् (पूर्ति करना) +क] १ आकाश। २ कपास, मदार, सेमल, आदि के डोडो के अदर का घूआ जो रूई की तरह होता है। ३ शहतूत का पेड। ४. धतूरा। ५ तृण की नोक।
पु० [हिं० तून=एक पेड जिसके फूलो से कपडे रगे जाते है] १ सूती कपडा जो चटकीले रग का होता था और पहले तूल के फूलो के रग से रगा जाता था। २ गहरा और चटकीला लाल रग।
*वि० = तुल्य (समान)।
पु० [अ०] लबाई के बल का विस्तार। लबाई।
पद—तूल व अर्ज = लबाई और चौडाई। **तूल-कलाम**=(क) लबी-चौडी बाते। (ख) कहासुनी। **तूल-तवील**=बहुत लबा-चौडा।
मुहा०—(किसी बात का) तूल खींचना=किसी बात या कार्य का आवश्यकता से बहुत अधिक बढ जाना। **तूल देना**=व्यर्थ का विस्तार करना। **तूल पकडना**=तूल खीचना। (देखे ऊपर)*
तूलक— पु० [स० तूल+कन्] रूई।
तूल-कार्मुक—पु० [च० त०] १ इद्र-धनुष। २ रूई धुनने की धुनकी।
तूल-चाप—पु० = तूल-कार्मुक।
तूलत—स्त्री० [हिं० तुलना] जहाज की रेलिग मे लगी हुई एक खूँटी।
तूलता*—स्त्री० = तुल्यता। (समता)
तूलना—स० [स० तूलन या तुलना] गाडी के पहिए निकाल करके उनके भीतरी छेद मे तेल डालना। औगना।
*अ० [स० तुलना] १ तौला जाना। २ किसी से होड लगाना। बराबर होने का प्रयत्न करना। उदा०—रग न तेरो है कछू सुबरन रग न तूनि।—दीनदयाल गिरि। ३ किसी के बराबर या समान होना। ४ किसी की बराबरी का या समान बनकर उसके सपर्क मे या साथ रहना अथवा विचरण करना। उदा०—मजुल रसातल की मजरी के पुजन मे, पाय कै प्रसाद तहाँ गूँज गूँज तूलेहो।—प्रसाद। ५ तुलना करना। उपमा देना।
तूलम-तूल—अव्य० [अ० तूल = लबा] १ लबाई के बल। २ आमने सामने।
तूलवती—स्त्री० [स० तूल+मतुप्—ङीप्] नील का पौधा।
तूल-वृक्ष—पु० [ष० त०] शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड।
तूल-शर्करा—स्त्री० [ष० त०] कपास का बीज। बिनौला।
तूल-सेचन—पु० [ष० त०] रूई से सूत कातने का काम।
तूला—स्त्री० [स० तूल+टाप्] १ कपास। २. दीए की बत्ती।
* वि० = तुल्य।
तूलि—स्त्री० [स०√तूल् (पूर्ति करना)+इन्] १. तकिया। २ चित्रकार की कूची। तूलिया।
तूलिका—स्त्री० [स० तूलि+कन्—टाप्] १ हलकी रजाई। दुलाई। २ चित्र अकित करने की कूँची।
तूलिनी—स्त्री० [स० तूल+इनि—ङीष्] १ लक्ष्मण कद। २ सेमल का पेड।
तूलि-फला—स्त्री० [स० ब० स०] सेमर का पेड़।
तूली—स्त्री० [स० तूलि+ङीष्] १ नील का पौधा। २ चित्रो आदि मे रग भरने की कूँची। उदा०—आज क्षितिज पर जाँच रहा है तूली कौन चितेरा।—महादेवी। ३ जुलाहो की कूँची जिससे वे ताने का फैला हुआ सूत ठीक जगह पर बैठाते है।
तूवर—पु० [स० तु+वरच्, दीर्घ]=तूवरक।
तूवरक—पु० [स० तूवर+कन्] १ बिना सीग का बैल। डूँड़ा।

२ बिना दाढी-मूँछो का आदमी। ३ कषाय रस। ४ कसैला स्वाद। ५ अरहर।

तूवरिका—स्त्री० [स० तूवरक+टाप्, इत्व] १ अरहर। २ गोपी चदन।

तूवरी—स्त्री० [स० तूवर+ङीष्] १ अरहर। २ गोपी चदन।

तूष—पु० [स०√तूष् (सन्तोष करना)+अच्] किनारा (कपडे का)।

तूष्णी—वि० [स० तूष्णीम् (अव्य०)] मोन। चुप।
स्त्री० चुप्पी। मौन।

तूष्णीक—वि० [स० तूष्णीम्+कन्, मकार-लोप] मौनावलम्बी। मौन रहनेवाला।

तूष्णीयुद्ध—पु० [स० कर्म० स०] वह युद्ध या होड जिसमे कौशल, षडयत्र आदि के द्वारा शत्रु पक्ष के मुख्य मुख्य लोगो को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया जाय।

तूस—पु० [तिब्बती थोश] [वि० तूसी] १ एक प्रकार का बहुत बढिया और मुलायम ऊन जो काश्मीर से लेकर नैपाल तक की एक तरह की पहाडी बकरियो के शरीर पर होता है। पशम। २ उक्त ऊन का जमाया हुआ कबल या नमदा। ३ उक्त ऊन की बुनी हुई बढिया चादर। पशमीना।
†पु०=तुष (भूसी)।

तूसदान—पु० [पुर्त्त० कार्टूश+दान (प्रत्य०)] कारतूस।

तूसना*—अ० [स० तुष्ट] १ सतुष्ट होना। २ प्रसन्न होना।
स० १ सतुष्ट करना। २ प्रसन्न करना।

तूसा†—पु० [स० तुष] चोकर। भूसी।

तूसी—वि० [स० तुष] धान के छिलके के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग। (हस्क)

तूस्त—पु० [स०√तुस् (शब्द करना)+तन् (दीर्घ)] १ धूल। रज। रेणु। २ किसी चीज का बहुत छोटा टुकडा। कण। ३ जटा। ४ धनुष।

तृक्ष—पु० [स०√तृक्ष् (जाना)+अच्] कश्यप ऋषि।

तृक्षाक—पु० [स०√तृक्ष्+आकन्] एक प्राचीन ऋषि।

तृख—पु० [स०√तृष् (प्यासा होना)+क, पृषो० ष—ख] जातीफल। जायफल।

तृखा*—स्त्री०=तृषा।

तृजग*—वि०=तिर्यक्।

तृण—पु० [स०√तृह् (हिसा करना)+क्न, हकारलोप] १ कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियो की एक जाति या वर्ग जिसके काड या पेडी मे काठ या लकडीवाला अश नही होता, गूदा ही गूदा होता है। इस वर्ग के पौधो मे ऐसी लबी-लबी पत्तियाँ होती है जिनमे केवल लबाई के बल नसे होती है। जैसे—ऊख, नरकट, सरकडा आदि। २ घास या उसका डठल।

मुहा०—(मुँह या दाँतों से) तृण गहना या पकडना= उसी प्रकार दीन-हीन बनकर सामने आना जिस प्रकार सीधी-सादी गौ मुँह मे घास या उसका डठल लिये हुए आती है। **तृण गहाना या पकड़ाना**=पूरी तरह से दीन और नम्र बनाकर वशीभूत करना। **तृण तोड़ना**=किसी सुदर वस्तु को देखकर उसे बुरी नजर से बचाने के लिए तिनका तोडने का टोटका करना। **(किसी से) तृण तोडना**= सदा के लिए सबध तोडना। (दे० 'तिनका' के अतर्गत 'तिनका तोडना' मुहा०)

पद—तृणवत्=अत्यत तुच्छ।

तृणक—पु० [स० तृण+कन्] तृण। घास।

तृण-कर्ण—पु० [ब० स०] एक ऋषि।

तृणकीया—स्त्री० [स० तृण+छ—ईय, कुक्, टाप्] ऐसी जमीन जहाँ घास उगी हुई हो।

तृण-कुकुम—पु० [मध्य० स०] एक सुगधित घास। रोहिश घास।

तृणकुटी—स्त्री० [मध्य० स०] घास-फूस की बनी हुई कुटिया या झोपडी।

तृण-कूर्म—पु० [मध्य स०] गोल कद्दू।

तृण-केतु—पु० [स० त०] १ बाँस। २ ताड।

तृणकेतुक—पु० [स० तृणकेतु+कन्] तृण-केतु।

तृण-ग्रथी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] स्वर्ण जीवती।

तृणा-ग्राही (हिन्)—पु० [स० तृण√ग्रह् (पकडना)+णिनि] १ नीलम। २ कहरुवा।

तृणचर—वि० [स० तृण√चर् (गति)+अच्] तृण चरनेवाला।
पु० १ पशु। २ गोमेदक मणि।

तृण-जलायुका—पु० [मध्य० स०] तृण-जलौका। (दे०)

तृण-जलौका—पु० [मध्य० स०] एक तरह की जोक।

तृण-ज्योतिष—पु० [स० त०] ज्योतिष्मती लता।

तृण-द्रुम—पु० [उपमि० स०] १ ताड का पेड। २ सुपारी का पेड। ३ खजूर का पेड। ४ नारियल का पेड। ५. हिंताल। ६ केतकी का पौधा।

तृण-धान्य—पु० [मध्य० स०] १ तिन्नी या धान का चावल। २ साँवा।

तृण-ध्वज—पु० [स० त०] १ बाँस। २. ताड का पेड।

तृण-निंब—पु० [मध्य० स०] चिरायता।

तृणप—पु० [स० तृण√पा (रक्षा करना)+क] एक गधर्व का नाम।

तृण-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] इक्षुदर्भ नामक तृण।

तृण-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्]=तृण-पत्रिका।

तृण-पीड—पु० [ब० स०] आपस मे होनेवाला गुत्थम-गुत्था या हाथा-पाई।

तृण-पुष्प—पु० [ष० त०] १ गठिवन। २. सिन्दूर पुष्पी।

तृण-पूली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] घास-फूस या नरकट की चटाई।

तृण-बीज—पु० [ब० स०] साँवाँ।

तृण-मणि—पु० [मध्य० स०] तृण को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला एक तरह के गोंद का डला। कहरुवा। कपूरमणि।

विशेष—प्राचीन साहित्यकारो ने इसे पत्थर माना था।

तृणमय—वि० [स० तृण+मयट्] [स्त्री० तृणमयी] घास-फूस का बना हुआ।

तृणवत्—वि० [स० तृण+वति] जिसका महत्त्व तृण के समान कुछ भी न हो अर्थात् नगण्य। तुच्छ।

तृणराज—पु० [ष० त०] १ खजूर का पेड। २ नारियल का पेड। ३. ताड का पेड।

तृण-वृक्ष—पु० =तृण-द्रुम ।
तृण-शय्या—स्त्री० [ष० त०] १ घास का बिछौना । २ चटाई ।
तृणशील—पु० [म० त०] १ रोहिस घास, जिसमे से नीबू की-सी सुगंध आती है। २ जल-पिप्पली ।
तृण-शून्य—वि० [तृ० त०] जिसमे तृण न हो। तृण से रहित ।
पु० १ चमेली । मल्लिका । २ केतकी ।
तृण-शूली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] एक प्रकार की लता ।
तृणशोषक—पु० [स० तृण√शुष् (सूखना)+णिच्+ण्वुल्—अक] एक प्रकार का साँप ।
तृण-षट्पद—पु० [उपमि० स०] बर्रे। भिड ।
तृण-सवाह—पु० [स० तृण-सम्√वह् (ढोना)+णिच्+अच्] वायु। हवा।
तृण-सारा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] कदली। केला ।
तृण-सिंह—पु० [स० त०] कुठार । कुल्हाडा ।
तृण-स्पर्श-परीषह—पु० [ष० त०] दर्भादि कठोर तृणो को बिछाकर उन पर सोने का व्रत । (जैन)
तृण-हर्म्य—पु० [मध्य० स०] कुटिया। झोपडी ।
तृणाजन—पु० [तृण-अजन, उपमि० स०] एक तरह का गिरगिट।
तृणाग्नि—स्त्री० [तृण-अग्नि, मध्य० स०] तुषानल। (दे०)
तृणाढ्य—पु० [तृण-आढ्य, स० त०] एक तरह का तृण जो औषध के काम मे आता है। पर्वतृण ।
तृणान्न—पु० [तृण-अन्न, ष० त०] तिन्नी का जगली धान।
तृणाम्ल—पु० [तृण-अम्ल, स० त०] नोनिया नामक घास ।
तृणारणिमणि न्याय—पु० [तृण-अरणि मणि, द्व० स०, तृणारणिमणि-न्याय, ष० त०] तर्क-शास्त्र मे तृण, अरणी और मणि की तरह का स्पष्ट निर्देशन।
विशेष—इन तीनो चीजो से आग जलाई जाती है परन्तु इन तीनो के जलाने के ढग अलग-अलग है।
तृणावर्त्त—पु० [स० तृण+आ+वृत्(घूमना)+णिच्+अण्] १ बवडर। चक्रवात। २ एक दैत्य जिसे कस ने कृष्ण को मार डालने के लिए गोकुल भेजा था।
तृणेंद्र—पु० [तृण—इद्र, उपमि० स०] ताड का पेड।
तृणोत्तम—पु० [तृण-उत्तम, स० त०] ऊखल तृण। उखर्वल।
तृणोद्भव—पु० [स० तृण+उद्√भू (उत्पन्न होना)+अच्] तिन्नी (धान)।
तृणोल्का—स्त्री० [तृण—उल्का, मध्य० स०] घास-फूस की बनी हुई मशाल।
तृणौक (स्)—पु० [तृण—ओकस्, मध्य० स०] घास-फूस की झोपडी।
तृणौषध—पु० [तृण-औषध, मध्य० स०] एलुवा।
तृण्या—स्त्री० [स० तृण+य—टाप्] तृणो अर्थात् घास-पात का ढेर।
तृतीय—वि० [स० त्रि+तीय (सम्प्रसारण)] जो क्रम सख्या, महत्त्व आदि के विचार से दूसरे के बाद का हो। तीसरा।
तृतीयक-पु० [स० तृतीय+कन्] वह ज्वर जो हर तीसरे दिन आता हो। तिजारी ।

तृतीय-प्रकृति—स्त्री० [कर्म० स०] पुलिंग और स्त्री लिंग से भिन्न और तीसरा अर्थात् नपुसक । हिजडा ।
तृतीय-सवन—पु० [कर्म० स०] अग्निष्टोम आदि यज्ञो का तीसरा सवन—जिसे साय सवन भी कहते है। दे० 'सवन'।
तृतीयाश—पु० [तृतीय-अश, कर्म० स०] तीसरा उपश या भाग। तिहाई।
तृतीया—स्त्री० [स० तृतीय+टाप्] १ चाद्रमास के प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २ व्याकरण मे, करण कारक या उसकी विभक्ति की सज्ञा।
तृतीया प्रकृति—वि० [स०] नपुसक। हिजडा।
तृतीयाश्रम—पु० [तृतीय-आश्रम, कर्म० स०] चार आश्रमो मे से तीसरा आश्रम। वानप्रस्थ ।
तृतीयी (यिन्)—वि० [स० तृतीय+इनि] तीन बराबर भागो मे से एक का हकदार।
तृन†—पु०=तृण।
तृपत्—पु० [स०√तृप् (प्रसन्न करना)+अति] चद्रमा।
तृपति†—स्त्री०=तृप्ति ।
तृपल—पु० [स०√तृप्+कलच्] १ उपल। २ पत्थर।
तृपला—स्त्री० [स० तृपल+टाप्] १ लता। बेल। २ त्रिफला।
तृपित†—वि०=तृप्त ।
तृपिता*—स्त्री०=तृप्ति ।
तृपिताना—अ० [हि० तृपित, स० तृप्त] तृप्त होना ।
स० तृप्त करना ।
तृप्त—वि० [स०√तृप्+क्त] १ जो अपनी आवश्यकता पूरी हो जाने पर सतुष्ट हो चुका हो। २ अघाया हुआ। ३ प्रसन्न।
तृप्ताना*—अ० [स० तृप्त] तृप्त होना।
स० तृप्त करना ।
तृप्ति—स्त्री० [स०√तृप्+क्तिन्] आवश्यकता अथवा इच्छा की पूर्ति हो जाने पर होनेवाली मानसिक शान्ति या मिलनेवाला आनद ।
तृप्र—पु० [स०√तृप्+रक्] १ घी। घृत। २ पुरोडाश ।
वि० तृप्त करनेवाला।
तृफला—स्त्री०=त्रिफला।
तृषा—स्त्री० [स०√तृष् (लालच करना)+क्विप्—टाप्] [वि० तृषित, तृष्य] १ पानी अथवा कोई तरल पदार्थ पीने की आवश्यकता से उत्पन्न होनेवाली इच्छा। प्यास। २ अभिलाषा। इच्छा। ३. लालच। लोभ। ४ कलिहारी नाम की वनस्पति।
तृषातुर—वि० [तृषा-आतुर] तृषा से आतुर या विकल। बहुत अधिक प्यासा।
तृषा-द्रुम—पु० [मध्य० स०] वह वृक्ष जिसमे से प्यास बुझाने का साधन अर्थात् जल मिलता हो। जैसे—नारियल, ताड आदि।
तृषाभू—स्त्री० [ष० त०] पेट मे जल रहने का स्थान । (क्लोम)
तृषालु—वि० [स०√तृष् (प्यास लगना)+आलुच्] बहुत अधिक प्यासा। तृषित ।
तृषावत—वि० [स० तृषावान्] प्यासा।
तृषावान् (वत्)—वि० [स० तृषा+मतुप्] प्यासा।
तृषा-स्थान—पु० [ष० त०] पेट के अन्दर का वह स्थान जहाँ जल रहता है। (क्लोम)

तृषाहा—स्त्री० [स० तृषा√हन् (मारना)+ड—टाप्] सौफ।

तृषित—वि० [स० तृषा+इतच्] १ प्यासा। २ विशेष इच्छा या कामना रखनेवाला। ३ घबराया हुआ। विकल। उदा०—कुआर मास तन तृषित घाम से कातिक चहुँदिसि दियरी बराई।—लोक-गीत।

तृषितोत्तरा—स्त्री० [तृषित-उत्तर, ब० स०, टाप्] पटसन।

तृष्णा—स्त्री० [स०√तृष्+न—टाप्] १ प्यास। तृषा। २ लाक्षणिक अर्थ मे, मन मे होनेवाली वह प्रबल वासना जो बहुत कुछ विकल रखती हो और जिसकी सहज मे तृप्ति न होती हो। ३ प्राय अधिक समय तक बनी रहनेवाली कामना।

तृष्णारि—पु०[तृष्णा-अरि, ष० त०] पित्त-पापडा जिसके सेवन से रोगी को प्राय लगनेवाली प्यास बहुत-कुछ कम हो जाती है।

तृष्णालु—वि० [स० तृष्णा+आलु] १ तृषित। प्यासा। २ लालची। लोभी।

तृष्य—पु० [स०√तृष् (लालच करना)+क्यप्] १ लालच। लोभ। २ तृषा। प्यास।

वि० लोभ उत्पन्न करने वाला।

तृसालवाँ—वि० [स० तृषालु] प्यासा। तृषित।

तृस्ना—स्त्री०=तृष्णा।

तें*—अव्य० [स० तस् (प्रत्य०)] १ द्वारा। २ से अधिक या बढकर। उदा०—चपला तें चमकत अति फारी, कहा करौगी श्यामहि।—सूर। ३ *किसी समय या स्थान से।

तेंतरा—पु० [देश०] बैलगाडी मे फड के नीचे की लकडी।

तेंतालीस—वि० [स० त्रिचत्वारिंशत्, प्रा० तिचत्तालीसा] जो गिनती या सख्या मे चालिस से तीन अधिक हो।

पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—४३।

तेंतालिसवाँ—वि० [हिं० तेतालिस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम मे तेतालिस के स्थान पर पडने या होनेवाला।

तेंतिस—वि० [स० त्रयस्त्रिंशत्, पा० तितिंसति, प्रा० तितीसा] जो गिनती मे तीस से तीन अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—३३।

तेंतिसवाँ—वि० [हिं० तेतिस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती मे तेतिस के स्थान पर पडे।

तेंदुआ—पु० [देश०] चीते की जाति का एक हिसक पशु।

तेंदुस—पु० [स० टिंडिश] डेडसी नामक पौधा और उसका फल।

तेंदू—पु० [स० तिदुक] १ ऊँचे कद का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पत्ते शीशम की तरह गोल, नोकदार और चिकने होते है और लकडी काली और बहुत मजबूत होती है। आबनूस। २ उक्त पेड का फल जो नीबू के आकार का होता है और वैद्यक मे वातकारक माना गया है। ३ एक तरह का तरबूज। (पश्चिम)

ते—विभ० [हिं०] से।

सर्व०= [स० तद् का बहु०] वे (वे लोग)।

तेइ*—सर्व०[स० ते] वे लोग ही।

तेइस—वि०, पु०=तेईस।

तेइसवाँ—वि०=तेईसवाँ।

तेईस—वि० [स० त्रिविंशति, पा० तेवीसति, प्रा० तेवीस] गिनती मे बीस से तीन अधिक। बीस और तीन।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२३।

तेईसवाँ—वि० [हिं० तेईस+वाँ (प्रत्य०)] गिनती के क्रम मे बाईस के बाद तेईस पर स्थान पर पडनेवाला।

तेखना*—अ० [हिं० तेहा] क्रुद्ध होना।

तेखी—वि०=क्रोधी।

तेग—स्त्री० [अ० तेग] तलवार।

तेगा—पु० [अ० तेग] १ खड्ग या खाँडा नाम का अस्त्र। २ दरवाजे, मेहराब आदि के बीच का खाली स्थान बन्द करने या भरने के लिए उसमे ईंट, पत्थर आदि की जोडाई करके भरने की क्रिया। ३ दे० 'कमरतेगा' (कुश्ती का पेच)।

तेज—पु० [स० तेजस्] १ पाँच महाभूतो मे से अग्नि या आग नामक महाभूत। २ गरमी। ताप। ३ कोई ऐसी तीव्रता या प्रभावकारक विशेषता जिसके सामने ठहरना या जिसे सहना कठिन हो। जैसे—महात्माओ के चेहरे पर एक विशेष-प्रकार का तेज होता है। ४ प्रताप। ५ पराक्रम। बल। ६ कांति। चमक। ७ तत्त्व। सार। ८ वीर्य। ९ पित्त। १० लज्जा। ११ सत्त्व गुण से उत्पन्न लिग शरीर। १२ घोडो आदि के चलने की तेजी या वेग। १३ सोना। स्वर्ण। १४ नवनीत। मक्खन।

वि० [स० तेजस् से फा० तेज] १ ऐसा उग्र, प्रबल या विकट जिसे सहना कठिन हो। जैसे—तेज धूप। २ जिसकी गति मे बहुत अधिक वेग हो। शीघ्रगामी। जैसे—तेज घोडा, तेज हवा। ३ जिसकी धार बहुत चोखी या पैनी हो। जैसे—तेज चाकू। ४ जिसका स्वाद बहुत चरपरा, झालदार या तीखा हो। जैसे—तेज मिर्च। ५ जिसमे कोई काम बहुत अच्छी तरह और जल्दी करने की विशेष बुद्धि, योग्यता या सामर्थ्य हो। जैसे—पढने-लिखने मे तेज लडका। ६ बहुत जल्दी और यथेष्ट प्रभाव उत्पन्न करनेवाला। जैसे—तेज दवा। ७ बहुत अधिक या बढ-चढकर बोलनेवाला। जैसे—उनकी औरत बहुत तेज है। ८ जिसमे चचलता या चपलता की अधिकता हो। जैसे—यह बच्चा अभी से बहुत तेज है। ९ जिसका दाम या भाव अपेक्षया अधिक हो या पहले से बढ गया हो। जैसे—आज-कल अनाज और कपडा बहुत तेज हो गया है।

तेजक—पु० [स०√तिज् (क्षमा करना)+ण्वुल्—अक] १ मूँज। २ सरपत।

तेजग*—वि०=तेज।

तेजधारी—वि० [स० तेजोधारिन्] (व्यक्ति) जिसके चेहरे पर तेज हो। तेजस्वी।

तेजन—वि० [स०√तिज्+णिच्+ल्यु—अन] १ तेज उत्पन्न करनेवाला। २ दीप्त करनेवाला। ३ जल्दी जलने या जलानेवाला।

पु० १ बाँस। २ सरपत। ३ मूँज।

तेजनक—पु० [स० तेजन+कन्] शर। सरपत।

तेजना*—स० [हिं० तजना] छोड देना। त्यागना। उदा०—तेजि अह गुरु-चरन गहु जम से बाचे जीव।—कबीर।

तेजनाख्य—पु० [स० तेजन-आख्या, ब० स०] मूँज।

तेजनी—पु० [स० तेजन+ङीष्] १ मूर्वा लता। २ मालकगनी। ३ चव्य। चाब। ४ तेजबल।

तेजपत्ता—पु० [सं० तेजपत्र] १ दारचीनी की जाति का एक पेड जिसकी पत्तियाँ दाल, तरकारी आदि मे मसाले की तरह डाली जाती है।

२ उक्त वृक्ष का पत्ता जो वैद्यक मे बवासीर, हृदयरोग, पीनस आदि को दूर करनेवाला माना गया है।

तेजपत्र—पु० [स० √ तिज् (सहना) + णिच्+अच्, तेज-पत्र, ब० स०] तेजपत्ता। तेजपात।

तेजपात—पु०=तेजपत्ता।

तेजबल—पु० [स० तेजोवती] १ एक तरह की लता जिसकी छाल लाल रग की होती है और बीज काली मिरच की तरह के होते है जो दवा के काम आते है। २ उक्त वृक्ष की छाल और बीज जो सुग- धित होते है।

तेजल—पु० [स०√तिज् (सहना)+कलच्] चातक। पपीहा।

तेजवत—वि०=तेजवान्।

तेजवान्—वि० [स० तेजोवान्] [स्त्री० तेजवती] १ जिसमे तेज हो। तेज से युक्त। तेजस्वी। २ वीर्यवान्। ३ बलवान्। शक्तिशाली। ४ कातिमान्। चमकीला।

तेजस्—पु० [स०√तिज् (सहना)+असुन्] दे० 'तेज'।

तेजस्-चिकित्सा—स्त्री० [तृ० त०] दे० 'रश्मि चिकित्सा'।

तेजसी—वि० [हिं० तेजस्वी] जिसमे तेज हो। तेजस्वी।

तेजस्कर—वि० [स० तेजस्√कृ (करना)+ट] तेज को प्रदीप्त करने या बढानेवाला। तेज उत्पन्न करनेवाला।

तेजस्काम—वि० [स० तेजस्√कम् (चाहना)+अण्] शक्ति या प्रताप की कामना करनेवाला।

तेजस्क्रिय—वि० [स० ब० स०] (वह पदार्थ) जिसमे से तेज निकलकर दूसरे पदार्थों को प्रभावित करता हो। (रेडियो-एक्टिव)

तेजस्क्रियता—स्त्री० [स० तेजस्क्रिय+तल्—टाप्] कुछ विशिष्ट मौलिक तत्त्वो या पदार्थों मे निहित वह विद्युत् शक्ति जो विशेष अवस्थाओ मे तेज या रश्मि के रूप मे बाहर निकलकर दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालती है। (रेडियो एक्टिविटी)

तेजस्वत्—वि० [स० तेजस्+मतुप् (वत्व)] तेजस्वी।

तेजस्वान्—वि० [स० तेजस्वत्] तेजस्वी।

तेजस्विता—स्त्री० [स० तेजस्विन्+तल्—टाप्] तेजस्वी होने की अवस्था, गुण या भाव।

तेजस्विनी—स्त्री० [स० तेजस्विन्+ङीप्] मालकगनी।

तेजस्वी (स्विन्)—वि०[स० तेजस्+विनि] [स्त्री० तेजस्विनी] १ जिसमे यथेष्ट तेज हो। २ जिसके बल, बुद्धि, वैभव आदि का दूसरो पर यथेष्ट प्रभाव पडता हो। प्रतापी।

पु० इद्र के एक पुत्र का नाम।

तेजा—पु० [फा० तेज] १ एक प्रकार का काला रग जिससे कपडा रगनेवाले रगरेज मोरपखी रग बनाते है। २ चीजो का दाम तेज या बढा हुआ होने की अवस्था या भाव। तेजी।

तेजाब—पु० [फा०] [वि० तेजाबी] एक तरह के रासायनिक खट्टे तरल पदार्थ जो जल मे घुलनशील होते है और जो नीले शैवलपत्र को लाल कर देते हैं। अम्ल। (एसिड)

तेजाबी—वि० [फा०] १ तेजाब-सबधी। २ जिसमे तेजाब मिला हुआ हो। ३ तेजाब की सहायता से तैयार किया, बना या साफ किया हुआ। जैसे—तेजाबी सोना।

तेजाबी सोना—पु० [फा० तेजाबी+हि० सोना] वह सोना जो पुराने गहनो को गलाकर और तेजाब की सहायता से अच्छी तरह साफ करके तैयार किया जाता है।

तेजायन—पु० [स० तेज+आयतन] तेज का भडार। परम तेजस्वी। उदा०—घोर तेजायतन घोर राशी।—तुलसी।

तेजारत† —स्त्री०=तिजारत।

तेजारती† —वि०=तिजारती।

तेजिका—स्त्री० [स० तेजक+टाप्, इत्व] मालकगनी।

तेजित—वि० [स०√तिज् (सहना)+णिच्+क्त] १ तेज से युक्त किया हुआ। २ उत्तेजित।

तेजिनी—स्त्री० [स०√तिज्+णिच्+णिनि—ङीष्] तेजबल।

तेजिष्ठ—वि० [स० तेजस्विन्+इष्ठन्] तेजस्वी।

तेजी—स्त्री० [फा० तेजी] १ तेज होने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव। २ उग्रता। प्रचडता। ३ तीव्रता। प्रबलता। ४ गति आदि मे होनेवाली शीघ्रता। ५ चीजो की दर या भाव मे होनेवाली असाधारण या विशिष्ट वृद्धि। मँहगी। 'मन्दी' का विपर्याय।

तेजोज—पु० [स० तेजस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] रक्त। खून।

तेजोजल—पु० [स० तेजस्-जल, ष० त०] आँख का वह ऊपरी अर्द्ध गोलाकार भाग जो शीशे के ताल की तरह जान पडता है। (लेस)

तेजोन्वेष—पु० [स० तेजस्-अन्वेष, ष० त०] एक प्रकार का बहुत बडा वैज्ञानिक यत्र जिसकी सहायता से परावर्तित ध्वनि-तरगो के आधार पर यह जाना जाता है कि आकाश अथवा स्थल मे किस दिशा मे और कितनी दूरी पर शत्रु आकाशयान जल-यान अथवा सैनिक महत्व के सघटन स्थित है, अथवा कोई आकाशयान या जलयान किधर से आ रहा है या किधर जा रहा है। (राडार)

तेजोबल—पु० [स० तेजस्—बल, ब० स०] एक तरह का कँटीला जगली पेड जिसका छिलका दवा और मसाले के काम आता है।

तेजोभंग—पु० [स० तेजस्-भग, ष० त०] अपमान। बेइज्जती।

तेजोभीरु—स्त्री० [स० तेजस्-भीरु, प० त०] छाया।

तेजोमंडल—पु० [स० तेजस्-मडल, ष० त०] सूर्य, चद्रमा आदि आकाशीय पिंडो के चारो ओर का मडल। छटा मडल। भा-मडल।

तेजोमथ—पु० [स० तेजस्√मन्थ् (मथना)+अण्] गनियारी का पेड।

तेजोमय—वि० [स० तेजस्+मयट्] १ तेज से परिपूर्ण। २ शक्ति से परिपूर्ण। ३ तेजस्वी।

तेजोमूर्ति—वि० [स० तेजस्-मूर्ति, ब० स०] तेजस्वी।

पु० सूर्य।

तेजोरूप—वि० [स० तेजस्-रूप, ब०स०] जो अग्नि या तेज के रूप मे हो।

पु० ब्रह्म।

तेजोवती—स्त्री० [स० तेजस्+मतुप्+ङीप्] १ गजपिप्पली। २ बाच। चव्य। ३ माल-कगनी। ४ तेजबल।

तेजोवान् (वत्)—वि० [स० तेजस्+मतुप्] [स्त्री० तेजोवती] तेज-वाला। तेजस्वी।

तेजोवृक्ष—पु० [स० तेजस्-वृक्ष, मध्य० स०] छोटी अरणी का वृक्ष।

तेजोहत—वि० [स० तेजस्-हत, ब० स०] जिसका तेज नष्ट हो चुका हो।

तेजोह्व—स्त्री० [स० तेजस्√ह्वे (स्पर्धा करना)+क] १ तेजबल। २ चाब। चव्य।

तेडना†—स०=टेरना (पुकारना)।

तेणि—अव्य०[स० तेन] से। उदा०—वैंदे कहियौ तेणि विसेखि।—प्रिथीराज।

तेतना†—वि०=तितना (उतना)।

तेतर—वि० [हि० तोतला] (व्यक्ति) जो तुतला कर बोलता हो।

तेता†—वि० [स्त्री० तेती]=तितना (उतना)।

तेतालिस†—वि०, पु०=तेतालिस।

तेतिक†—वि० [हि० तेता] उस मात्रा या मान का। उतना।

तेती†—वि० स्त्री० हि० तेता (उतना) का स्त्री रूप।

तेतो* वि०=तेता (उतना)।

तेन—पु० [स० ते=गौरी+न=शिव, ब० स०] गीत का आरभिक स्वर।

तेम—पु० [स०√तिम् (गीला होना)+घञ्] आर्द्र होने की अवस्था या भाव। आर्द्रता।

†अव्य०=तिमि (उस प्रकार)।

तेमन—पु० [स०√तिम्+ल्युट्—अन्] १ आर्द्रता। २ चटनी। ३ व्यजन।

तेमनी—स्त्री० [स० तेमन+ङीप्] चूल्हा।

तेमरू—पु० [देश०] १ तेंदू का पेड। आबनूस। २ उक्त पेड की लकडी।

तेरज—पु० [देश०] वह लेखा जिसमे आय-व्यय की विभिन्न मदो का उल्लेख हो। खतियौनी का गोशवारा।

तेरवाँ†—वि०=तेरहवाँ।

तेरस—स्त्री० [स० त्रयोदश] चाद्रमास के किसी पक्ष की तेरहवी तिथि या दिन।

तेरह—वि० [स० त्रयोदस; प्रा० तेदृह, अर्द्धमा० तेरस] जो गिनती या सख्या मे दस से तीन अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या और अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१३।

मुहा०—तीन तेरह होना—दे० 'तीन' के अन्तर्गत मुहा०। **तेरह बाइस करना**=टाल-मटोल या बहानेबाजी करना।

तेरहवाँ—वि० [हि० तेरह+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या सख्या के विचार से तेरह के स्थान पर पडने या होनेवाला।

तेरहीं—स्त्री० [हि० तेरह+ई (प्रत्य०)] हिंदुओ मे, किसी के मरने के दिन से तेरहवाँ दिन।

विशेष—इसी दिन अनेक प्रकार के कृत्य और पिंडदान आदि कराकर मृतक के सबधी शुद्ध होते है।

तेरहुत†—पु० = तिरहुत।

तेरा†—सर्व० [स० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एकवचन सबध कारक अर्थात् षष्ठी का सूचक सर्वनाम। 'तू' का सबधकारक रूप। जैसे—तेरा नाम क्या है?

मुहा०—तेरा मेरा करना=यह कहना कि यह तुम्हारा और वह हमारा है, अर्थात् दुजायगी या पार्थक्य के भाव से युक्त बाते करना।

तेरुस*—पु० =त्यौरुस।

स्त्री० = तेरस।

तेरे—सर्व० [हि० तेरा] १ हि० 'तेरा' का बहुवचन रूप। जैसे—तेरे बाल-बच्चे। २ हि० तेरा' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तेरे सिर पर।

†अव्य० [हि० ते या ते] १ से। २ तुझसे।

तेरो†—सर्व०=तेरा।

तेलग†—पु० = तैलग।

तेल—पु० [स० तैल] १ तिल अथवा किसी तेलहन के बीजो अथवा कुछ विशिष्ट वनस्पतियो को पेरकर निकाला हुआ प्रसिद्ध स्निग्ध द्रव तरल पदार्थ जो खाने-पकाने, जलाने, शरीर मे मलने अथवा औषध आदि के रूप मे काम आता है। चिकना। स्नेह। जैसे—तिल, नीम बदाम या सरसो का तेल।

मुहा०—तेल मे हाथ डालना=अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए खौलते हुए तेल मे हाथ डालना। (मध्य युग की एक प्रकार की परीक्षा) **आँखो का तेल निकालना**=ऐसा परिश्रम करना जिससे आँखो को बहुत अधिक कष्ट हो।

२ विवाह की एक रीति जो साधारणत विवाह से दो दिन और कही कही चार-पाँच दिन पहले भी होती है और जिसमे वर अथवा वधू के शरीर मे हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।

मुहा०—तेल उठना या चढ़ना=विवाह से पहले उक्त रीति का सम्पादन होना। **तेल चढ़ाना** = उक्त रीति का सपादन करना।

३ पशुओ के शरीर से निकलनेवाली पतली चरबी जो सहज मे जल सकती और दवा, रगाई आदि के काम मे आती है। जैसे—मगर या साँडे का तेल। ४ कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज द्रव्य पदार्थ जो सहज मे जल सकते हैं। जैसे—मिट्टी का तेल।

तेलगू—पु०, स्त्री० =तेलुगू।

तेलचलाई—स्त्री० [हि० तेल+चलाना] दे० 'मिडाई' (छीट की छपाई की)।

तेलवाई—पु० [हि० तेल+वाई (प्रत्य०)] १ शरीर मे तेल मलने या लगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ विवाह की एक रसम जिसमे कन्या-पक्ष की ओर से जनवासे मे वर के लगाने के लिए तेल और कुछ रुपए भेजते है।

तेलसुर—पु० [?] एक तरह का लबा वृक्ष जिसकी लकडी नावें आदि बनाने के काम आती है।

तेलहडा†—पु० [हि० तेल+हडा] [स्त्री० अल्पा० तेलहँडी] १ मिट्टी की वह हाँडी जिसमे तेल रखा जाता हो। २ तेल रखने का कोई पात्र।

तेलहन—पु० [स० तैल धान्य] कुछ वनस्पतियो के वे बीज जिन्हे पेरने से उनमे से चिकना और तरल पदार्थ (अर्थात् तेल) निकलता हो।

तेलहा—वि० [हि० तेल] [स्त्री० तेलही] १ जिसमे तेल हो (बीज

या पौधा)। २ तेल के योग से बना या पका हुआ। जैसे—तेल-ही जलेबी। ३ जिस पर तेल गिरा या लगा हो ४ जिसमे तेल की-सी गध या चिकनाहट हो।

तेला—पु० [हि० तीन] वह उपवास जो तीन दिनो तक बराबर चले।

तेलिन—स्त्री० [हि० तेली की स्त्री०] १ तेली की या तेली जाति की स्त्री। २ एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा जिसके स्पर्श से शरीर मे जलन होने लगती है।

तेलियर—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसके काले रग के शरीर पर सफेद रग की बहुत सी चित्तियाँ होती है।

तेलिया—वि० [हि० तेल] १ जो तेल की तरह चमकीला और चिकना हो। २ तेल की तरह हलके काले रगवाला। ३ जिसमे तेल होता या रहता हो। तेल से युक्त।

पु० १ तेल की तरह का काला और चमकीला रग। २ उक्त रग का घोडा। ३ एक प्रकार का कीकर या बबूल। ४ कोई ऐसा पक्षी या पशु जिसका रग तेल की तरह काला और चिकना हो। ५ सीगिया नामक विष।

स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।

तेलिया-कद—पु० [स० तैल कद] एक प्रकार का कद।

विशेष—यह कद जिस भूमि मे होता है वह तेल से सीची हुई जान पडती है।

तेलिया कत्था—पु० [हि० तेलिया+कत्था] एक तरह का कत्था या खैर जो तेल की तरह कुछ कालापन लिये होता है।

तेलिया काकरेजी—पु० [हि० तेलिया+काकरेजी] कालापन लिये गहरा ऊदा रग।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

तेलिया कुमैत—पु० [हि० तेलिया+कुमैत] १ घोडे का एक रग जो अधिक कालापन लिये लाल या कुमैत होता है। २ उक्त रग का घोडा।

तेलिया गर्जन—पु० [स०] =गर्जन।

तेलिया पाखान—पु० [हि० तेलिया+पखान] एक तरह का चिकना और मजबूत पत्थर।

तेलिया पानी—पु० [हि० तेलिया+पानी] वह जल जिसमे कुछ चिकनाहट हो अथवा जिसका स्वाद तेल जैसा हो।

तेलिया मुनिया—स्त्री० [हि०] मुनिया पक्षी की एक जाति। इस मुनिया के ऊपर और नीचे के पर बादामी रग के, सिर, ठोडी तथा गला कत्थई रग का होता है।

तेलिया मैना—स्त्री० [हि०] एक तरह की मैना। तिलारी।

तेलिया सुरंग—पु० =तेलिया कुमैत।

तेलिया सुहागा—पु० [हि० तेलिया+सुहागा] एक तरह का सुहागा जिसमे कुछ चिकनापन होता है।

तेली—पु० [हि० तेल+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० तेलिन] १ वह जो तेलहन पेरकर तेल निकालता और बेचता हो। २ हिन्दुओ मे एक जाति जो उक्त काम व्यवसाय के रूप मे करती है।

पद—तेली का बैल=वह जो अपना अधिकतर समय बहुत ही तुच्छ और परिश्रम के कामों मे लगाता हो।

तेलुगू—पु० [स० तैलग] १ तैलग देश का आधुनिक नाम। २ उक्त देश का निवासी।

स्त्री० तैलग देश की भाषा।

तेलौंची—स्त्री० [हि० तेल+औची (प्रत्य०)] तेल रखने की प्याली।

तेलौना—वि० [हि० तेल+औना (प्रत्य०)] [स्त्री० तेलौनी] दे० 'तेलहा'।

तेवई—स्त्री० =तिरिया (स्त्री)।

तेवट—स्त्री० [देश०] सगीत मे, सात दीर्घ अथवा चौदह लघु मात्राओ का एक ताल जिसमे तीन आघात और एक खाली रहता है।

तेवड़ा—पु० [?] एक तरह का ताल।

तेवन†—पु० [स०√तेव् (खेलना)+ल्युट्-अन] १ महल के आगे का एक छोटा बाग। नजरबाग। २ आमोद-प्रमोद, क्रीडा आदि करने का वन। ३ आमोद-प्रमोद। क्रीडा।

तेवर—पु० [स० त्रिकुटी, पु० हि० तिउरी] १ किसी विशिष्ट उद्देश्य या भाव से किसी की ओर फेरी जानेवाली या किसी पर डाली जानेवाली दृष्टि। त्योरी। जैसे—उनके तेवर देखकर ही मैंने उनके मन का भाव समझ लिया था।

मुहा०—तेवर चढना=भौहो का इस प्रकार ऊपर की ओर खिचना कि उनसे कुछ-कुछ क्रोध या नाराजगी झलकने लगे। **तेवर बदलना या बिगडना**=व्यवहार मे क्रोध या रुखाई प्रकट करना।

२ भौह। भृकुटी।

पु० [हि० तीन] स्त्रियो के पहनने के तीन कपडो (साडी, ओढनी और चोली) की सामूहिक सज्ञा।

तेवरसी—स्त्री० [देश०] १ ककडी। २ खीरा। ३ फूट।

तेवरा—पु० [देश०] दून मे बजनेवाला रूपक ताल।

तेवराना—अ० [हि० तेवर+आना (प्रत्य०)] १ तेवर का इस प्रकार ऊपर की ओर खिचना कि उससे कुछ आश्चर्य, क्रोध या चिन्ता प्रकट हो। २ बेसुध या मूर्च्छित होना।

तेवरी—स्त्री० = त्योरी।

तेवहार—पु० = त्योहार।

तेवान*—पु० [देश०] सोच-विचार। चिंता। फिक्र।

तेवाना—अ० [हि० तेवान] चिंतित होना। फिक्र करना। उदा०—ठाढि तेवानि टेकिकर लका।—जायसी।

तेह†—पु० [स० तस्=तिरस्कृत करना, दूर हटाना] १ क्रोध। गुस्सा। तेहा। २ अभिमान। घमड। ३ तेजी। तीव्रता। ४ प्रचडता।

तेहर—स्त्री० [स० त्रि+हि० हार] तीन लडो की करधनी जो स्त्रियाँ कमर मे पहनती है।

तेहरा—वि० [हि० तीन+हरा] [स्त्री० तेहरी] १ तीन तहो या परतो मे लपेटा हुआ। २ जिसमे तीन तहे या परते हो। ३ जो दो बार हो चुकने के बाद फिर से तीसरी बार करना पडे या किया गया हो। जैसे—तेहरा काम, तेहरी मेहनत। ४ जो एक साथ तीन हो। ५ तिगुना। (क्व०)

तेहराना—स० [हि० तेहरा] १ लपेटकर तीन तहो या परतो मे करना।

२ कोई काम दो बार कर चुकने के बाद कोर-कसर ठीक करने के लिए फिर से तीसरी बार करना, जाँचना या देखना।

तेहवार†—पु० = त्योहार।

तेहा—पु० [स० तम्=तिरस्कृत या दूर करना] १ अपने अभिमान, बडप्पन, महत्त्व आदि की भावना से उत्पन्न होनेवाला ऐसा हलका क्रोध या गुस्सा जो जल्दी उत्पन्न होने पर भी सहसा उग्र या विकट रूप न धारण करता हो। २ क्रोध। गुस्सा। ३ अभिमान। घमड।

तेहि†—सर्व० [स० ते] उसे। उसको।

तेही—पु० [हि० तेह+ई (प्रत्य०)] १ जिसमे तेहा हो या जो तेहा दिखलाता हो। क्रोधी। २ अभिमानी। घमडी।

तेहेदार—पु० = तेही।

तेहेबाज—पु० = तेही।

तै†—सर्व० = तू।

विभ० = ते (मे)।

तैतिडीक—वि० [स० तिन्तिडीक+अण्] इमली की काजी से बनाया हुआ।

तैतिस, तैतीस—वि०, पु० = तेतिस।

तै†—अव्य० [स० तत्] उस मात्रा या मान का। उतना हि० 'जै' का नित्य-सम्बन्धी। जैसे—जै आदमी कहो, तै आदमी आवे।

† वि० [अ०] १ जो ठीक ओर पूरा या समाप्त हो चुका हो। जैसे—काम तै करना। २ (झगडा) जिसका निपटारा निर्णय या फैसला हो चुका हो। जैसे—आपस का झगडा या मुकदमा तै करना। ३ जो निर्णीत या निश्चित हो चुका हो। जैसे—किराया या दाम तै करना।

स्त्री० = तह।

तैकायन—पु० [स० तिक+फक्—आयन] तिक ऋषि के वशज या शिष्य।

तैक्त—पु० [स० तिक्त+अण्] तिक्त होने का भाव। तीतापन। चरपराहट।

तैक्ष्ण्य—पु० [स० तीक्ष्ण+ष्यञ्] तीक्ष्णता।

तैखाना†—पु० = तहखाना।

तैजस—वि० [स० तेजस्+अण्] १ तेज-सम्बन्धी या तेज से युक्त। २ तेज से उत्पन्न।

पु० १ भारतीय दर्शन मे, राजस अवस्था मे, उत्पन्न होनेवाला अहकार जिसमे शरीर की ग्यारहा इन्द्रियो और पच तन्मात्रो का विकास होता है। २ कोई ऐसा पदार्थ जो खूब चमकता हो। जैसे—धातुएँ, रक्त आदि। ३ परमात्मा जो स्वय प्रकाश है और जिससे सूर्य आदि को प्रकाश प्राप्त होता है। ४ वैद्यक मे वह शारीरिक शक्ति जो भोजन को रस के रूप मे तथा रस को धातु के रूप मे परिवर्तित करती है। ५ पराक्रम। पौरुष। बल। ६ घी। घृत। ७ महाभारत के समय का एक प्राचीन तीर्थ। ८ बहुत तेज चलनेवाला घोडा।

तैजसावर्तनी—स्त्री० [स० तैजस-आवर्त्तनी, ष० त०] चाँदी, सोना आदि गलाने की घरिया।

तैजसी—स्त्री० [स० तैजस+ङीप्] गजपिप्पली।

तैतालीस—वि० = तेतालिस।

तैतिक्ष—वि० [स० तितिक्षा+ण] बरदाश्त या सहन करनेवाला। सहनशील।

तैतिर—पु० [स० तैत्तिर=पृषो० सिद्धि] तीतर।

तैतिल—पु० [स०] १ फलित ज्योतिष मे, ग्यारह करणो मे से चौथा करण जिसमे जन्म लेनेवाला कलाकुशल, रूपवान, वक्ता, गुणी और सुशील होता है। २ देवता। ३ गैडा।

तैतीस—वि० = तेतिस।

तैत्तिर—पु० [स० तित्तिर+अण्] १ तीतर पक्षी। २ तीतरो का समूह। ३ गैडा (पशु)।

तैत्तिरि—पु० [स०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक ऋषि का नाम।

तैत्तिरिक—पु० [स० तैत्तिर+ठक्—इक] तीतर पकडनेवाला बहेलिया।

तैत्तिरीय—स्त्री० [स० तित्तिर+छण्—ईय] १ कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओ मे से एक जो आत्रेय अनुक्रमणिका और पाणिनि के अनुसार तित्तिरि नामक ऋषि प्रोक्त है। २ उक्त शाखा का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

तैत्तिरीयक—पु० [स० तैत्तिरीय+कन्] तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी या अध्येता।

तैत्तिल—पु० = तैतिल।

तैथिक—पु० [स०] १५ मात्राओ के छदो की सज्ञा।

तैना—अ० [स० तपन] १ तप्त होना। तपना। २ दुखी होना। स० = ताना (तपाना)।

तैनात—वि० [अ० तअय्युन] [भाव० तैनाती] (वह) जो किसी स्थान की सुरक्षा अथवा किसी विशिष्ट काम के लिए कही नियत या नियुक्त हुआ हो। मुकर्रर।

तैनाती—स्त्री० [हि० तैनात+ई (प्रत्य०)] तैनात करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तैमिर—पु० [स० तिमिर+अण्] तिरमिरा (दे०)।

तैया—पु० [देश०] छीपियो का रग घोलने का छोटा प्याला।

तैयार—वि० [अ० तय्यार] १ जो कुछ करने के लिए हर तरह से उद्यत, तत्पर या प्रस्तुत हो चुका हो। जैसे—चलने को तैयार। २ जो हर तरह से उपयुक्त ठीक या दुरुस्त हो चुका हो। जिसमे कोई कोर-कसर न रह गई हो। जैसे—भोजन (या मकान) तैयार होना। ३ सामने आया, रखा या लाया हुआ। उपस्थित, प्रस्तुत, मौजूद। जैसे—जितनी पुस्तके तैयार है, वे सब ले लो। ४ (शरीर) जो हर तरह से स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो। जैसे—इधर कुछ दिनो से उसका बदन खूब तैयार हो रहा था। ५ (काम करने के लिए हाथ) जिसमे यथेष्ट अभ्यास के फलस्वरूप पूरा कौशल या दक्षता आ चुकी हो। जैसे—चित्र बनाने या तबला बजाने मे हाथ तैयार होना। ६ (सगीत के क्षेत्र मे कठ या गला) जिससे सब तरह के खटके, ताने, पलटे, मुरकियाँ आदि अनायास या सहज मे और बहुत ही मधुर या सुन्दर रूप मे निकलती हो। पूर्ण रूप से अभ्यस्त और कुशल। जैसे—इतना तैयार गला बहुत कम देखने मे आता है।

तैयारी—स्त्री० [फा० तय्यारी] १ तैयार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ तत्परता। मुस्तैदी। ३ शरीर की अच्छी गठन और पुष्टता तथा स्वस्थता। ४ वैभव, शोभा, सौन्दर्य आदि दिखाने के लिए की जानेवाली धूम-धाम या सजावट। ५ सगीत कला की वह पटुता

जो बहुत अधिक अभ्यास से आती है, जिससे गवैया कठिन-कठिन ताने बहुत सहज मे सुनाता है।

तैयो*—क्रि० वि० [स० तद्यपि] तिस पर भी। तो भी।

तैर—वि० [स० तीर+अण्] तीर या तट-सबधी। तट का।

तैरणी—स्त्री० [स० तीर√नम् (नमस्कार करना) +ड, तीरण+अण् +ङीष्] एक प्रकार का क्षुप जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती है।

तैरना—अ० [स० तरण] १ प्राणियो का अपने हाथ-पैर, पख या डैने अथवा दुम हिलाते हुए पानी के ऊपरी तल पर इस प्रकार इधर-उधर घूमना या आगे बढना कि वे डूबने से बचे रहे। ऐसी युक्ति से पानी मे चलना कि डूब न जायँ। २ मनुष्यो का अपने हाथ-पैर इस प्रकार चलाते या हिलाते हुए आगे बढना कि शरीर पानी के तल मे बैठने न पावे। पैरना।

विशेष—प्राय सभी जीव-जन्तु प्राकृतिक रूप से पानी पर तैरना जानते है, परन्तु मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक तैरने की कला सीखनी पडती है। ३ पानी से हलकी चीज का पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ की ऊपरी तह पर ठहरा रहना, अथवा उसके प्रवाह या बहाव के साथ-साथ आगे बढना। जैसे—लकडी का पानी पर तैरना। ४ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्राणी अथवा वस्तु का इस प्रकार सहज मे और सरल गति से इधर-उधर हटना-बढना जिस प्रकार जीव-जन्तु जल के ऊपरी भाग पर तैरते है। जैसे—कीटाणुओ अथवा गुड्डी (या पतग) का हवा मे तैरना।

तैराई—स्त्री० [हि० तैरना+ई (प्रत्य०)] १ तैरने की क्रिया या भाव। २ तैरने या तैराने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक।

तैराक—वि० [हि० तैरना+आक (प्रत्य०)] (वह) जो खूब अच्छी तरह तैरना जानता हो।

तैराकी—स्त्री० [हि० तैराक+ई (प्रत्य०)] १ तैरने की क्रिया या भाव। २ वह उत्सव या मेला जिसमे तैरने की कलाओ, जल-क्रीडाओ आदि का प्रदर्शन या प्रतियोगिता हो।

तैराना—स० [हि० तैरना का प्रे०] १ दूसरे को तैरने मे प्रवृत्त करना। तैरने का काम दूसरे से कराना। २ धारदार शस्त्रो के सम्बन्ध मे, शरीर के अन्दर अच्छी तरह धँसाना या प्रविष्ट कराना। जैसे—किसी के पेट मे कटार तैराना।

तैर्थ—वि० [स० तीर्थ+अण्] १ तीर्थ-सबधी। तीर्थ का। २ तीर्थ मे होनेवाला।

पु० वे धार्मिक कृत्य जो किसी तीर्थ मे जाने पर करने पडते है।

तैर्थक—वि० [स० तीर्थ+वुञ्—अक] १ स्थल-सबधी। २ तीर्थ-स्थल मे बनने, मिलने या होनेवाला।

तैर्थिक—पु० [स० तीर्थ+ठञ्—इक] शास्त्रकार।

तैर्यगयनिक—पु० [स० तिर्यक—अयन, ष० त०,+ठञ्—इक] एक प्रकार का यज्ञ।

तैलग—पु० [स० त्रिकलिंग] आधुनिक आध्र प्रदेश का पुराना नाम तैलग।

तैलंगा—पु०=तिलगा।

तैलंगी—वि० [हि० तैलग+ई (प्रत्य०)] तैलग देश का।

पु० तैलग देश का निवासी।

स्त्री० तैलग देश की भाषा। तेलगू।

तैल—वि० [स० तिल+अञ्] तिल-सबधी। तिल या तिलो का।

पु० १ तिल के दानो या बीजो को पेरकर निकाला हुआ तेल। २ दे० 'तेल'।

तैल-कद—पु० [मध्य० स०] तेलिया-कद।

तैलकार—पु० [स० तैल√कृ (करना)+अण्] तेल पेरने और बेचनेवाला व्यक्ति। तेली।

तैल-किट्ट—पु० [ष० त०] खली।

तैल-कीट—पु० [मध्य० स०] तेलिन नाम का कीडा।

तैल-चित्र—पु० [मध्य० स०] बहुत मोटे कपडे पर तैल रगो की सहायता से अकित किया हुआ चित्र। (आयल पेंटिंग)

तैलत्व—पु० [स० तैल+त्व] तेल का भाव या गुण।

तैल-द्रोणी—स्त्री० [मध्य० स०]तेल रखने का एक तरह का बहुत बडा पात्र जिसमे कुछ विशिष्ट रोगियो को प्राचीन काल मे लेटाया जाता था।

तैल-धान्य—पु० [मध्य० स०] १ धान्य का एक वर्ग जिसके अतर्गत तीनो प्रकार की सरसो, दोनो प्रकार की राई, खस और कुसुम के बीज है। २ तेलहन।

तैलपक—पु० [स० तैल√पा (पीना)+क+कन्] झीगुर नामक कीडा।

तैल-पर्णक—पु० [ब० स०, कप्] गठिवन।

तैलपर्णिक—पु० [स० तिलपर्ण+ठन्—इक] सलई का गोद।

तैलपर्णी—स्त्री० [स० तिलपर्ण+अण्—ङीष्] १ चन्दन। २ लोबान। ३ तुरुष्क। शिलारस।

तैलपायी (यिन्)—पु० [स० तैल√पा (पीना)+णिनि] झीगुर। चपडा। (कीडा)

वि० तेल पीनेवाला।

तैल-पिष्टक—पु० [ष० त०] खली।

तैलपिपीलिका—स्त्री० [मध्य० स०] एक तरह की चीटी।

तैल-फल—पु० [ब० स०] १ इगुदी। २ बहेडा।

तैल-भाविनी—स्त्री० [स० तैल√भू (होना)+णिच्+णिनि—ङीप्] चमेली का पेड।

तैलमाली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] तेल की बत्ती।

तैल-यत्र—पु० [मध्य० स०] कोल्हू।

तैल-रग—पु० [स०] चित्र कला मे, जल रग से भिन्न वे रग जो कई तरह के तेलो या साफ किए हुए पेट्रोल मे मिलाकर तैयार किये जाते है। ऐसे रग जल-रग की अपेक्षा अच्छे समझे जाते और अधिक स्थायी होते है। (आयल कलर)

तैल-वल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] शतावरी। शतमूली।

तैल-साधन—पु० [स० तैल√साध् (सिद्ध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] शीतलचीनी। कवाबचीनी।

तैलस्फटिक—पु० [मध्य० स०] १ अबर नामक गध-द्रव्य। २ कहरुवा। तृण-मणि।

तैलस्यदा—स्त्री० [स० तैल√स्यन्द् (चूना)+अच्—टाप्] १ गोकर्णी नाम की लता। मुरहटी। २ काकोली।

तैलाक्त—वि० [स० तैल-अक्त, तृ० त०] जिसमे तेल लगा हो। तेल मे सना हुआ।

तैलाख्य—पु० [सं० तैल-आख्या, ब०स०] शिला रस या तुरुष्क नाम का गंध द्रव्य ।

तैलागुरु—पु० [सं० तैल-अगुरु, मध्य० स०] अगर की लकड़ी ।

तैलाटी—स्त्री० [सं० तैल√अट्(जाना)+अच्—ङीष्] बर्रे। भिड़।

तैलाभ्यंग—पु०[सं० तैल-अभ्यंग, ष०त०] शरीर मे तेल लगाने की क्रिया या भाव।

तैलिक—वि० [सं० तैल+ठक्—इक] तेल-संबधी।
पु० [तैल+ठन्—इक] तेली ।

तैलिक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] तिल आदि पेरने का यंत्र। कोल्हू ।

तैलिनी—स्त्री० [सं० तैल+इनि—ङीष्] बत्ती ।

तैलि-शाला—स्त्री० [सं० ष०त०] वह घर या स्थान जहाँ कोल्हू चलता हो।

तैली (लिन्)—पु० [सं० तैल+ इनि] तेली ।

तैलीन—पु० [सं० तिल+खञ्—ईन] तिल का खेत।

तैल्वक—वि० [सं० तिल्व+वुञ्—अक] लोध की लकड़ी से बना हुआ।
पु० लोध।

तैश—पु० [अ०] अत्यधिक क्रुद्ध होने पर चढ़नेवाला आवेश।
क्रि० प्र०—दिखाना।
मुहा०—तैश मे आना=मारे क्रोध के कोई अनुचित बात कहने या काम करने के लिए आवेशपूर्वक प्रस्तुत होना।

तैष—पु० [सं० तिष्य+अण्, य-लोप] चांद्र पौष मास ।
विशेष—पौष मास की पूर्णिमा के दिन तिष्य (पुष्य नक्षत्र) होने के कारण यह नाम पड़ा है।

तैषी—स्त्री० [सं० तैष+ङीप्] पुष्य-नक्षत्र से युक्त पूस की पूर्णिमा।

तैस—वि०=तैसा ।

तैसा—वि० [सं० तादृश, प्रा० ताइस] उस आकार, प्रकार, रूप, गुण आदि का । उस जैसा। वैसा।

तैसे—क्रि० वि०=वैसे ।

तो†—क्रि० वि०=त्यों।

तोअर†—पु०=तोमर ।

तोंद—स्त्री० [सं० तुंड] छाती या वक्ष से अधिक फूला तथा बढ़ा हुआ पेट ।
क्रि० प्र०—निकलना।—बढ़ना ।
मुहा०—तोंद पचना—(क) मोटाई कम होना । (ख) घमंड या शेखी दूर होना।

तोंदरी—स्त्री० [?] एक तरह के बीज जो मसूर से कुछ छोटे होते है और सूजे हुए अंग पर बाँधे जाने पर सूजन दूर करते है।

तोंदल—वि० [हि० तोंद+ल (प्रत्य०)] जिसकी तोंद निकली या बढ़ी हुई हो। तोंदवाला ।

तोंदा—पु० [देश०] वह मार्ग जिसमे से होकर तालाब का पानी बाहर निकलता है।
पु० दे० 'तोदा'।

तोंदी—स्त्री० [सं० तुंडी] नाभी। ढोंढी।

तोंदीला—वि० =तोंदल ।

तोंदैल—वि० =तोंदल (तोंदवाला) ।

तोंबा—पु० [स्त्री० तोंबी]=तूँबा ।

तोंर—पु०=तोमर।

तोहका—सर्व०=तुम्हे ।

तो—अव्य० [सं० तु] एक अव्यय जिसका प्रयोग वाक्य मे किसी कथन, पद या संभावित बात पर जोर देने या पार्थक्य, विशिष्टता आदि सूचित करने के लिए अथवा कभी-कभी यों ही किया जाता है । जैसे—(क) जरा दिन तो चढ़ लेने दो। (ख) वे किसी तरह आवे तो सही। (ग) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।—मीराँ। (घ) अब तो बात फैल गई, जानत सब कोई ।—मीराँ।
अव्य० [सं० तत्] उस अवस्था या दशा मे। तब । जैसे—यदि आप चलेंगे तो हम भी आप के साथ ही लेंगे ।
*सर्व० [सं० तव] १ ब्रजभाषा मे 'तू' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है । जैसे—तोको, तोसो आदि। २ तेरा ।
†अ० [पु० हिं० हतो=था का संक्षि०] था। (क्व०)

तोअर†—पु०=तोमर।

तोइ*—पु० [सं० तोय] जल। पानी ।

तोई—स्त्री० [देश०] १ अंगे, कुरते आदि मे कमर पर लगी हुई गोट या पट्टी । २ चादर आदि की गोट । ३ लहँगे का नेफा।
† स्त्री० [हिं० तवा] छोटा तवा। तौनी ।

तोईज—अव्य० [हि०] तभी। तभी तो। उदा०—भला भलो सति तोईज भजिया।—प्रिथीराज।

तोक—पु० [सं० √तु (बरतना)+क] १ श्रीकृष्णचंद्र के एक सखा। २ बच्चा। शिशु ।

तोकक—पु० [सं० तोक+कन्] चातक। पपीहा।

तोकरा—स्त्री० [देश०] एक तरह की लता जो अफीम के पौधो से लिपटती है और उन्हे सुखा डालती है।

तोक्म—पु० [सं०√तक् (हँसना)+म, पृषो० सिद्धि] १ अंकुर । २ कच्चा या हरा जौ। ३ हरा रंग। ४ बादल । मेघ। ५ कान की मैल ।

तोख*—पु०=तोषा।

तोखार—पु० १ =तुखार (एक प्रदेश) । २ =तुषार ।

तोखो—सर्व० [सं० तव, हिं० तो+खो (को)] तुझको। उदा० —जननी जनम दियो है तोखो बस आजहि के लाने।—लोकगीत ।

तोट†—पु० [सं० त्रुटि या हि० टूटना] १ टूटने की क्रिया या भाव । २ कमी। त्रुटि। ३ घाटा। ४ दोष। बुराई।

तोटक—पु० [सं० त्रोटक] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण होते है। २ शंकराचार्य के चार मुख्य शिष्यो मे से एक जिनका दूसरा नाम नंदीश्वर भी था।

तोटका†—पु०=टोटका।

तोटकी—स्त्री० [देश०] एक तरह की वनस्पति जो प्रायः घास के साथ होती है।

तोटना*—अ०=टूटना।
स०=तोड़ना।

तोड़—पु०[हिं० तोड़ना] १ तोड़े या तोड़े जाने की क्रिया, दशा या भाव। २ पानी, हवा आदि का वह तेज बहाव जो सामने पड़नेवाली

चीजों को तोड-फोड डालता हो या तोड-फोड सकता हो। जैसे—(क) इस घाट पर पानी का जबरदस्त तोड पडता है। (ख) छोटे-मोटे पेड़ हवा का तोड नहीं सह सकते। ३ कोई ऐसा काम, चीज या बात जो किसी दूसरे बडे काम, चीज या बात का प्रभाव नष्ट कर सकता या उसे व्यर्थ कर सकता हो। जैसे—नशे का तोड खटाई है। ४ कुश्ती मे वह दाँव-पेंच जो विपक्षी का दाँव-पेंच व्यर्थ कर सकता हो। ५ किले की दीवार का वह अश जो गोलो की मार से टूट-फूट गया हो। ६ दफा। बार। जैसे—उनसे कई तोड लडाई या मुकदमेबाजी हो चुकी है। ७ दही का पानी (जो उसके छूटने अर्थात् गलने से बनता है)

तोडक—वि० [स०√तुड् (तोडना)+ण्वुल्—अक] तोडनेवाला। जैसे—जात-पात तोडक मडल। (असिद्ध रूप)

पु० [?] स्त्रियो का माँग-टीका नीम का गहना। (पूरब)

तोड-जोड—पु० [हि० तोड+जोड़] १ कही से कुछ तोडने और कही कुछ जोडने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—तोडी जो उसने मुझसे जोडी रकवी से। इन्शा तू अपने यार के ये तोड-जोड देख।—इन्शा। २ ऐसा उपाय, युक्ति या साधन जो किसी बिगडती हुई बात को बना सके अथवा बनी-बनाई बात बिगाड सके। जैसे—वह तोड-जोडकर जैसे-तैसे अपना काम निकाल ही लेता है।

क्रि० प्र०—करना।—भिडना।—मिलाना।—लगाना।

तोडन—पु० [स०√तुड्+ल्युट्—अन] १ तोडने की क्रिया या भाव। २ भेदन करना। ३ आघात या चोट पहुँचाना।

तोडना—स० [हि० टूटना] १ किसी चीज पर बराबर आघात करते हुए उसे छोटे-छोटे खडो मे विभक्त करना। जैसे—पत्थर या गिट्टी तोडना। २ ऐसा काम करना जिससे कोई वस्तु खडित, भग्न या नष्ट-भ्रष्ट हो जाय तथा काम मे आने योग्य न रह जाय। जैसे—शीशे का गिलास तोडना।

स० क्रि०—डालना।—देना।

३ किसी वस्तु के कोई अग अथवा उसमे लगी हुई कोई दूसरी वस्तु काट-कर या और किसी प्रकार उससे अलग करना या निकाल लेना। जैसे—वृक्ष से फल या फूल तोडना, किताब की जिल्द तोडना, जानवर के दाँत तोडना। ४ किसी वस्तु का कोई अग इस प्रकार खडित या भग्न करना कि वह ठीक तरह से या पूरा काम करने योग्य न रह जाय। जैसे—(क) घडी या सिलाई की मशीन तोडना। (ख) किसी के हाथ-पैर तोडना। ५ नियम, निश्चय आदि का पालन न करके अपनी दृष्टि से उसे निरर्थक या व्यर्थ करना। जैसे—(क) अपनी प्रतिज्ञा (या किसी के साथ किया हुआ समझौता) तोडना। (ख) व्रत तोडना। ६ किसी चलते या होते हुए काम, व्यवस्था, सघटन आदि का स्थायी रूप से अन्त या नाश करना। जैसे—शासन का कोई पद या विभाग तोडना। ७ बल, प्रभाव, महत्त्व, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना। अशक्त, क्षीण या दुर्बल करना। जैसे—(क) बाजार की मन्दी ने बहुत से व्यापारियो को तोड दिया। (ख) दमे (या यक्ष्मा) ने उनका शरीर तोड दिया। ८ किसी प्रकार नष्ट या विच्छिन्न करके समाप्त कर देना। चलता या बना न रहने देना। जैसे—(क) किसी का घमड तोडना। (ख) किसी से नाता (या सबध) तोडना। किसी की दृढ़ता, बल आदि घटाकर या नष्ट करके उसे उसके पूर्व रूप मे स्थित या स्थिर न रहने देना। जैसे—(क) मुकदमे मे विपक्षी के गवाह तोडना। (ख) कमर या हिम्मत तोडना। १० खरीदने के समय किसी चीज का दाम घटाकर कुछ कम करना। जैसे—तुमने भी तोडकर दस रुपये कम करा ही लिये। ११ खेत मे हल चलाकर उसकी सतह की मिट्टी खडित करके ढेलो के रूप मे लाना। १२ किसी कुमारी के साथ पहले-पहल समागम करना। (बाजारू) १३ चोरी करने के लिए सेंध लगाना। जैसे—चोर ताला तोडकर सब माल उठा ले गये। १४ बडे सिक्को को छोटे-छोटे सिक्को मे बदलवा देना।

विशेष—यह क्रिया अनेक सज्ञाओ के साथ लगकर उन्हे मुहावरो का रूप देती है, और ऐसे अवसरो पर उसके भिन्न प्रकार के अर्थ होते है। जैसे—किसी के पैर या मुँह तोडना, किसी से तिनका तोडना, किसी की रोटी (रोटियो) तोडना आदि। ऐसे मुहावरो के लिए सम्बद्ध शब्द या सज्ञाएँ देखनी चाहिएँ।

तोड-फोड—स्त्री० [हि० तोडना+फोडना] १ तोडने और फोडने की क्रिया या भाव। २ जान-बूझकर हानि पहुचाने के उद्देश्य से किसी भवन या रचना के कुछ अशो को खडित करना। ३ दे० 'ध्वसन'।

तोडर†—पु०=तोडा।

तोडवाना—स० [भाव० तुडवाई] तुडवाना।

तोडा—पु० [स० त्रुट्, हि० तोडना] १ टूटने या तोडने की क्रिया या भाव। टूट। २ किसी चीज को तोडकर उसमे से अलग किया या निकाला हुआ अश या भाग। खड। टुकडा। जैसे—रस्सी या रस्सो का तोडा। ३ घाटा। टोटा। (देखे)

क्रि० प्र०—आना।—पडना।

४ वह मैदान या स्थान जो नदी के तोड के कारण कटकर अलग हो गया हो। ५ वह स्थान जो प्राय नदियो के सगम पर उस बालू और मिट्टी के इकट्ठे होने से बनता है जो नदी अपने साथ मैदानो मे से तोडकर लाती है।

क्रि० प्र०—पडना।

६ नदी का किनारा। तट। ७ नाच का उतना टुकडा जितना एक बार मे नाचा जाता है और जिसमे प्राय एक ही बोल की गतियाँ अथवा एक ही प्रकार के भावो की सूचक अग-भगिया या मुद्राएँ होती है।

क्रि० प्र०—नाचना।

८ चाँदी आदि की लच्छेदार और चौडी जजीर या सिकडी जिसका व्यवहार आभूषण की तरह पहनने मे होता है। जैसे—गले, पैर या हाथ मे पहनने का तोडा ९ टाट की वह थैली जिसमे चाँदी के (१०००) आने या रखे जाते हो।

मुहा०—(किसी के आगे) तोडा उलटना या गिराना (किसी को) सैकडो, हजारो रुपए देना। बहुत-सा धन देना।

१० हल के आगे की वह लबी लकडी जिसके अगले सिरे पर जूआ लगा रहता है। हरिस। ११ खूब अच्छी तरह साफ की हुई वह चीनी जिसके दाने या रवे कुछ बडे होते है और जिससे ओला बनता था। कन्द। १२ अभिमान। घमड।

मुहा०—तोडा लगाना=अभिमान या घमड दिखाना।

पद—नकतोड। (देखे)

पु० [स० तुड या टोटा] १. नारियल की जटा की वह रस्सी जिसके ऊपर

सूत बुना रहता था और जिसकी सहायता से पुरानी चाल की तोडदार बदूक छोडी जाती थी। पलीता।

• पद—तोडदार बदूक=पुरानी चाल की वह बन्दूक जो तोडा दागकर छोडी जाती थी।

२ वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है और जिसकी सहायता से तोडेदार बन्दूक चलाने का तोडा या पलीता सुलगाया जाता था।

तोडाई†—स्त्री०=तुडवाई।

तोतक*—पु०[हि० तोता?] पपीहा।

तोतरगी—स्त्री०[देश०] एक तरह की चिडिया।

तोतरा†—वि०=तोतला।

तोतरा—वि०=तोतला।

तोतराना—अ०=तुतलाना।

तोतला—वि०[हि० तुतलाना] [स्त्री० तोतली] १ जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। जैसे—तोतला बालक। २ (जबान) जिससे रुक-रुककर और तुतलाकर उच्चारण होता हो। ३ (उच्चारण) जो बच्चो की तरह का अस्पष्ट और रुक-रुककर होता हो।

तोतलाना—अ०=तुतलाना।

तोता—पु०[फा०] [स्त्री० तोती] १ एक विशिष्ट प्रकार के पक्षियो की प्रसिद्ध जाति या वर्ग जिसमे से कुछ उप-जातियाँ ऐसी होती है जिनके तोते मनुष्य की बोली की ठीक-ठीक नकल उतारते हुए बोलना सीख लेते और प्राय इसी लिए घरो मे पाले जाते हैं। कीर। सुग्गा। सूआ।

विशेष—इस जाति के पक्षियो की चोच अकुडीदार या नीचे की ओर घूमी हुई होती है, पर कई तरह के चमकीले रगो के होते हे और पैरो मे दो उँगलियाँ आगे की ओर तथा दो पीछे की ओर होती है।

मुहा०—**तोता पालना**=दोष, दुर्व्यसन, रोग को जान-बूझकर अपने साथ लगाये रहना, उसते छूटने का प्रयत्न न करना। **तोते की तरह आँखे फेरना या बदलना**=बहुत बेमुरोवत होना।

विशेष—कहते हे कि तोता चाहे कितने दिनो का पालतू क्यो न हो, पर जब एक बार पिजरे के बाहर निकल जाता हे, तब वह फिर अपने पिजरे या मालिक की तरफ देखता तक नही। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है।

मुहा०—**तोते की तरह पढ़ना**=बिना समझे-बूझे पढते या रटते चलना। **हाथो के तोते उडना**=इस प्रकार बहुत घबरा जाना कि समझ मे न आवे कि अब क्या करना चाहिए।

पद—**तोता-चश्म।**

२ बन्दूक का घोडा।

तोता-चश्म—वि० [फा०] [भाव० तोता-चश्मी] १ जिसकी आँखो मे तोते की तरह लिहाज या सकोच का पूर्ण अभाव हो। २ बे-वफा। बे-मुरोवत।

तोता-चश्मी—स्त्री०[फा० तोताचश्म+ई (प्रत्य०)] तोताचश्म होने की अवस्था, गुण या भाव।

तोतापरी—पु०[देश०] एक तरह का बढिया आम।

तोती—स्त्री०[फा० तोता] १ तोते की मादा। २ रखेली स्त्री। रखनी।

तो-तो—पु०[अनु०] कुत्तो, कौओ की तरह तिरस्कारपूर्वक किसी व्यक्ति को बुलाने का शब्द।

तोत्र—पु०[स०√तुद् (पीडित करना)+ष्ट्रन्] पशु हाँकने की चाबुक या छडी।

तोत्र-वेत्र—पु०[कर्म०स०] विष्णु के हाथ का दड।

तोद—वि०[स०√तुद्+घञ्] कष्ट या पीडा देनेवाला।

पु० पीडा। व्यथा।

तोदन—पु०[स०√तुद्+ल्युट्—अन] १ पशुओ को हाँकने का उपकरण। २ पीडा। व्यथा। ३ एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल वैद्यक मे कसैले, रूखे ओर कफ तथा वायु नाशक कहे गये हे।

तोदरी—स्त्री०[फा०] फारस देश मे होनेवाला एक तरह का पेड और उसका फल।

तोदा—पु०[फा० तोद] वह मिट्टी की दीवार या टीला जिस पर तीर या बदूक चलाने का अभ्यास करने के लिए निशाना लगाते हे। २ ढेर। राशि।

तोदी—स्त्री०[देश०] सगीत मे, एक प्रकार का ख्याल।

तोन*—पु०[स० तूण] तूणीर। तरकश।

तोप—स्त्री०[तु०] एक आधुनिक यत्र जिसकी सहायता से युद्ध के समय शत्रुओ पर गोले, बम आदि बहुत दूर-दूर तक फेके जाते हे।

विशेष—आज-कल समुद्री और हवाई जहाजो पर रखने के लिए ओर हवा मे उडते हुए हवाई जहाज आदि नष्ट करने के लिए अनेक आकार-प्रकार की तोपे बनती है।

क्रि० प्र०—चलाना।—छोडना। दागना।—मारना।

मुहा०—**तोप कीलना**=तोप की नाली मे लकडी का कुदा कसकर ठोक देना जिसमे वह गोला छोडने के योग्य न रह जाय। **तोप की सलामी उतारना**=किसी प्रसिद्ध और बडे अधिकारी के आने पर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के अवसर पर तोप चलाना जिससे बहुत जोरो का शब्द होता हे। **तोप के मुँह पर रखकर उडाना**=किसी को तोप की नाली के आगे बाँध, बैठा या रखकर उस पर गोला छोडना जिससे उसका शरीर टुकडे-टुकडे हो जाय। **तोप दम करना**=तोप के मुँह पर रखकर उडाना।

पद—**तोप का ईंधन या चारा**=युद्ध-क्षेत्र मे वे सैनिक जो जान-बूझकर इसलिए आगे किए जाते है कि शत्रुओ की तोपो के गोलो के शिकार बने। (व्यग्य)

२ आतिशबाजो का लोहे का वह बडा नल जिसमे रखकर वे बहुत जोर की आवाज करनेवाले गोले छोडते हे। पाली।

तोपखाना—पु० [अ० तोप+फा० खाना] १ वह स्थान जहाँ तोपे, गोला, बारूद आदि रहता हो। २ कई तोपो का कोई स्वतन्त्र वर्ग या समूह जो प्राय एक साथ रहता और एक इकाई के रूप मे काम करता हे।

तोपची—पु०[अ० तोप+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तोप से गोले छोडता हो।

तोपड़ा—पु०[देश०] १ एक प्रकार का कबूतर। २ एक प्रकार की मक्खी।

तोपना—स०[स० √तुप्][भाव० तोपाई]१ किसी चीज के ऊपर कोई दूसरी चीज इस प्रकार रखना कि नीचेवाली चीज बिलकुल ढक जाय।२ (गड्ढा आदि) भरना। पाटना।

तोपवाना—स०[हि० तोपना का प्रे०] तोपने का काम दूसरे से कराना।

तोपा—पु०[हि० तुरपना]१ सूई से होनेवाली उतनी सिलाई जितनी एक बार मे एक छेद से दूसरे छेद तक की जाती है। सिलाई मे का कोई टाँका।

मुहा०—तोपा भरना या लगाना=टाँके लगाते हुए सीना। सीधी सिलाई करना।

तोपाई—स्त्री०[हि० तोपना] तोपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तोपाना—स०=तोपवाना।

तोपास—पु०[देश०] झाड़ू देनेवाला। झाड़ूबरदार।

तोपी—स्त्री०=टोपी।

तोफगी—स्त्री०=तोहफगी।

तोफा—वि०[अ० तोहफा] बहुत बढ़िया।

पु०=तोहफा।

तोबड़ा—पु०[फा० तोबरा या तुबरा]चमड़े, टाट आदि का वह थैला जिसमे चने भरकर घोड़े के खाने के लिए उसके मुँह पर बाँध देते है। क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँधना।—लगाना।

मुहा०—(किसी के मुँह) तोबड़ा लगाना=बलपूर्वक किसी को बोलने से रोकना। (बाजारू)

तोबा—स्त्री०[अ० तौब] १ भविष्य मे फिर वैसा काम न करने की प्रतिज्ञा। क्रि० प्र०—करना।—तोड़ना।

मुहा०—तोबा तिल्ला करना या मचाना=रोते-चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए यह कहना कि हम पर दया करो, अब हम ऐसा नही करेंगे। २ किसी बुरे काम से बाज रहने की प्रतिज्ञा। जैसे—ऐसे कामो (या बातो) से तो तोबा ही भली।

मुहा०—तोबा करके (कोई बात) कहना=अभिमान छोड़कर या ईश्वर से डरकर (कोई बात) कहना। **(किसी से) तोबा बुलवाना**=किसी को दबाते या परेशान करते हुए इतना अधिक दीन और विवश बनाना कि फिर कभी वह कोई अनुचित काम या विरोध करने का साहस न कर सके। पूर्ण रूप से परास्त करना।

अव्य० ईश्वर न करे कि फिर ऐसा कभी हो। जैसे—तोबा! भला अब मैं कभी उनसे बात करूँगा। (उपेक्षा तथा घृणा सूचक)

तोम—पु०[स० स्तोम] समूह। ढेर।

तोमड़ी—स्त्री०[?] एक प्रकार की आतिशबाजी।

स्त्री०=तूँबड़ी।

तोमर—पु०[स० √ तुम्प्(मारना)+अर, पृषो० सिद्धि]१ भाले की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। २ पुराणानुसार एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी। ४ राजपूतो की एक जाति।

विशेष—इसी जाति ने ८वी से १२वी शती तक दिल्ली मे शासन किया था। अनगपाल, जयपाल इसी वंश के राजा थे।

५ बारह मात्राओ का एक छद जिसके अंत मे एक गुरु और एक लघु होता है।

तोमरिका—स्त्री०[स० तोमर+कन्—टाप्, इत्व] १ गोपी चदन। २ अरहर।

तोमरी*—स्त्री०[हि० तुमड़ी] तूँबड़ी।

तोय—पु० [स०√तु+विच्, तो√या (जाना)+क] १ जल। पानी। २ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

तोयकाम—पु०[स० तोय√कम् (चाहना)+अण्] एक प्रकार का बेत जो जल के पास होता है। वानीर।

तोय-कुंभ—पु०[ष०त०] सेवार।

तोय-कृच्छ्र—पु०[तृ०त०] एक प्रकार का व्रत जिसमे जल के सिवा और कुछ ग्रहण नही किया जाता।

तोयडिंब—पु०[ष०त०] ओला। पत्थर। करका।

तोय-डिंभ—पु०[ष०त०] ओला।

तोयद—पु०[स० तोय√दा(देना)+क] १ मेघ। बादल। २ नागरमोथा। ३ घी। घृत। ४ वह जो किसी को जल देता हो। ५ उत्तराधिकारी जो किसी का तर्पण करता है।

वि० जल देनेवाला।

तोयदागम—पु० [स० तोयद-आगम, ष०त०] वर्षा ऋतु। बरसात।

तोय-धर—पु०[ष०त०] १ बादल। मेघ। २ मोथा।

तोय—पु० [ब० स०]=तोयधर।

तोय-धि—पु०[स० तोय√धा(धारण करना)+कि] समुद्र। सागर।

तोयधि-प्रिय—पु०[ब०स०] लौंग।

तोय-निधि—पु०[ष०त०] समुद्र। सागर।

तोयनीवी—स्त्री०[ब०स०] पृथ्वी।

तोयपर्णी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] करेला।

तोय-पिप्पली—स्त्री०=जलपिप्पली।

तोय-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] पाटला वृक्ष। पाँढर।

तोय-प्रसादन—पु०[ष०त०] निर्मली।

तोय-फला—स्त्री०[ब०स०, टाप्] तरबूज या ककड़ी आदि की बेल।

तोय-मल—पु०[ष०त०] समुद्र-फेन।

तोयमुच—पु०[स० तोय√मुच्(छोड़ना)+क्विप्, उप०स०] १ बादल। मेघ। २ मोथा।

तोय-यंत्र—पु०[मध्य०स०]१ पानी के द्वारा समय बताने का यंत्र। जल-घड़ी। २ फुहारा।

तोय-राज—पु०[ष०त०] समुद्र। सागर।

तोयराशि—पु०[ष०त०] १ बड़ा तालाब। झील। २ समुद्र। सागर।

तोयवल्ली—स्त्री०[मध्य०स०] करेले की बेल।

तोय-वृक्ष—पु०[स०त०] सेवार।

तोय शुक्ति—स्त्री०[मध्य०स०] सीपी।

तोय-शूक—पु०[ष०त०]=तोय-वृक्ष।

तोय-सर्पिका—स्त्री०[स०त०] मेढक।

तोय-सूचक—पु०[ष०त०] १ ज्योतिष का वह योग जिसमे वर्षा होने की संभावना मानी जाती है। २ मेढक।

तोयाधार—पु०[तोय-आधार, ष०त०] पुष्करिणी। तालाब।

तोयाधिवसिनी—स्त्री०[स० तोय-अधि√वस् (रहना)+णिनि—ङीप्, उप०स०] पाटला वृक्ष।

तोयालय—पु० [तोय-आलय, ष०त०] समुद्र।

तोयालिक—वि०[स० तोय से]१ तोय या जल से सबध रखनेवाला। २ तोय या जल के प्रवाह अथवा शक्ति से चलनेवाला।(हाइड्रॉलिक)

तोयालिकी—स्त्री०[स० तोय से] वह विद्या जिसमे जलाशयो, नदियो, समुद्रो आदि की गहराई और प्रवाह का इस दृष्टि से अध्ययन या विचार किया जाता है कि उनमे जहाज या नावे कब और कैसे चलाई जानी चाहिए। (हाइड्रोग्रैफी)

तोयालेख—पु०[तोय-आलेख, ष०त] वह आलेख या नकशा जिनमे किसी जलाशय की गहराई, प्रवाहो की दिशाएँ आदि अकित होती है। (हाइड्रोग्राफ)

तोयाशय—पु०[तोय-आशय, ष०त०]=तोयाधार।

तोयेश—पु० [तोय-ईश, ष० त०] १ वरुण। २ शतभिषा नक्षत्र। ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र।

तोयोत्सर्ग—पु०[तोय-उत्सर्ग, ष०त०] वर्षा।

तोर—पु०[स० तुवर] अरहर।
|वि०=तेरा।
†पु०=तोड।

तोरई—स्त्री०=तोरी।

तोरण—पु०[स० √तुर् (जल्दी करना)+ल्युट्—अन्]१ किसी बडी इमारत या नगर का वह बडा और बाहरी फाटक जिसका ऊपरी भाग मडपाकार हो ओर प्राय पताकाओ, मालाओ आदि से सजाया जाता हो। २ उक्त फाटक को सजाने के लिए लगाई जानेवाली पताकाएँ, मालाएँ आदि। ३ ऐसी बनावट या वास्तु-रचना जिसका ऊपरी भाग अर्द्ध-गोलाकार और बेल-बूटेदार हो। मेहराब। (आर्च) ४ उक्त फाटक के आकार-प्रकार की कोई अस्थायी रचना जो प्राय शोभा-सजावट आदि के लिए की जाती है। ५ वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिए खभो और दीवारो आदि मे बाँधकर लटकाई जाती है। बदनवार।
पु० [स०√तुल (तौलना)+ल्युट्, ल—र] १ ग्रीवा। गला। २ महादेव। शिव।

तोरण-माल—पु०[ब०स०] अवतिकापुरी।

तोरण-स्फटिका—स्त्री०[ब०स०] दुर्योधन की वह सभा जो उसने पाडवो की मयदानव वाली सभा देखकर उसके जोड की बनवाई थी।

तोरन*—पु०=तोरण।

तोरना†—स०=तोडना।

तोरश्रवा—पु०[स०] अगिरा ऋषि का एक नाम।

तोरा—पु०[तु० तोरह्]१ भेट रूप मे देने या स्वागत-सत्कार के लिए रखा जानेवाला वह बडा थाल जिसमे स्वादिष्ठ पकवान, मास, मिठाइयाँ आदि रखी जाती है। २ विवाह के अवसर पर वर-पक्ष को उक्त प्रकार के थाल भेट करने या भेजने की रसम। (मुसल०)
†सर्व० दे० 'तेरा'।
†पु०- तोडा।
†पु० तुर्रा (कलगी)।

तोराई*—अ०[अव्य० त्वर।] १ वेगपूर्वक। तेजी से। २ जल्दी। शीघ्र।

तोराना*—स०=तुडाना।

तोरावान†—वि०[स० त्वरावत्] [स्त्री० तोरावली] वेगवान्। तेज।

तोरिया—स्त्री०[स० तूरी] गोटा-किनारी बुननेवालो का वह छोटा बेलन जिस पर वे बुना हुआ गोटा-आदि लपेटते चलते है।
स्त्री०[देश०]१. वह गाय या भैस जिसका बच्चा मर गया हो और जिसका दूध दूहने के लिए कोई युक्ति करनी पडती हो। २ एक प्रकार की सरसो।

तोरी—स्त्री०[स० तूर] १ एक प्रकार की बेल जिसकी फलियो की तरकारी बनती है। २ उक्त बेल की फली जो प्राय नेनुए की तरह की होती और तरकारी बनाने के काम आती है। ३ काली सरसो।

तोल—पु०[स०√तुल्(तौलना)+घञ्] बारह माशे की तौल। तोला।
स्त्री०[हिं०]=तौल।
†वि०=तुल्य (समान)। उदा०—मदने पाओल आपन तोल।—विद्यापति।
†पु०[देश०] नाव का डाँडा। (लश०)

तोलक—पु०[स० तोल+कन्] तोला (तौल)। बारह माशे का वजन।

तोलन—पु०[स०√तुल् (तौलना)+ल्युट्—अन]१ तौलने की क्रिया या भाव। २ ऊपर उठाने की क्रिया।
स्त्री० चाँड। थूनी।

तोलना—स०=तौलना।

तोलवाना—स०=तौलवाना।

तोला—पु०[स० तोलक]१ एक तौल जो बारह माशे या छानबे रत्ती की होती है। २ उक्त तौल का बाट।

तोलाना—स०=तौलाना।

तोलिया—पु० दे० 'तौलिया'।

तोल्य—वि०[स०√तुल्(तौलना)+ण्यत्] तोले जाने योग्य।
पु० तौलने की क्रिया या भाव।

तोश—वि०[स०√तुश्(वध करना)+घञ्] हिंसा करनेवाला। हिंसक।
पु०१ हिंसा। २ हिंसक पशु या प्राणी।

तोशक—स्त्री०[तु०] दोहरी चादर या खोल मे रूई, नारियल की जटा आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशक खाना—पु० दे०'तोशाखाना'।

तोशदान—पु०[फा० तोश दान]१ वह झोला या थैली जिसमे मार्ग के लिए यात्री विशेषत सैनिक अपना जलपान आदि या दूसरी आवश्यक चीजे रखते है। २ चमडे की वह पेटी जिसमे सैनिक कारतूस या गोलियाँ रखते है।

तोशल—पु०=तोषल।

तोशा—पु० [फा० तोश]१ वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २ खाने-पीने का सामान। ३ बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

तोशाखाना—पु०[तु० तोशक+फा० खाना]वह बडा कमरा या स्थान जहाँ राजाओ और अमीरो के पहनने के बढिया कपडे, गहने आदि रहते हो। वस्त्रो और आभूषणो आदि का भण्डार।

तोष—पु०[स०√तुष्(सन्तोष करना)+घञ्]१ अघाने या मन भरने

की क्रिया या भाव। तुष्टि। तृप्ति। २ असंतोष, कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार हो जाने पर मन में होनेवाली तृप्ति। (सोलेस) ३. खुशी। प्रसन्नता। ४ पुराणानुसार स्वायंभुव मनु के एक देवता। ५ श्रीकृष्ण के एक सखा।
अव्य० अल्प। कुछ। थोडा।

तोषक—वि०[स०√तुष्+णिच्+ण्वुल्—अक] तोष देने या तृप्त करनेवाला। सन्तुष्ट करनेवाला

तोषण—पु०[स०√तुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १. किसी को तुष्ट या तृप्त करने की क्रिया या भाव। २ [√तुष्+ल्युट्] तृप्ति।
वि०[√तुष्+णिच्+ल्यु—अन] तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। (यो० पदों के अन्त मे)

तोषता*—स्त्री०=तोष (तुष्टि)।

तोषणिक—पु० [स० तोषण+ठन्—इक] वह धन जो किसी को तुष्ट करने के उद्देश्य से दिया जाय।

तोषना*—स०[स० तोष] तृप्त या सतुष्ट करना। तृप्त करना। उदा० —विप्र, पितर, सुर, दान, मान, पूजा सौ तोषे।—रत्नाकर।
अ० तृप्त या सन्तुष्ट होना।

तोष-पत्र—पु० [मध्य०स०] वह पत्र जिसमे राज्य की ओर से जागीर मिलने का उल्लेख रहता है। बख्शिशनामा।

तोषल—पु०[स०]१ कंस का एक असुर मल्ल जिसे धनुर्यज्ञ मे श्रीकृष्ण ने मार डाला था। २ मूसल।

तोषार*—पु०१ ='तुषार'। २ =तुखार। (देश०)

तोषित—वि०[स०√तुष्+णिच्+क्त] जिसका तोष हो गया हो, अथवा जिसे तृप्त किया गया हो। तुष्ट। तृप्त।

तोषी (षिन्)—वि०[स०√तुष्+णिनि] समस्त पदो के अन्त मे, (क) सतुष्ट होनेवाला। थोडी-सी चीज या बात से तुष्टहोनेवाला। जैसे—अल्प-तोषी। (ग) [√तुष्+णिच्+णिनि] तुष्ट या सतुष्ट करनेवाला। जैसे—सर्व-तोषी=सबको तुष्ट करनेवाला।

तोस*—पु०=तोष।

तोसक†—स्त्री० =तोशक।
पु०=तोषक।

तोसल*—पु० =तोषल।

तोसा*—पु० =तोशा।

तोसाखाना—पु०=तोशाखाना।

तोसागार*—पु० दे०'तोशाखाना'।

तोहफगी—स्त्री० [अ० तोहफा+फा० गी (प्रत्य०)] तोहफा अर्थात् बढिया और विलक्षण होने की अवस्था या भाव।

तोहफा—पु०[अ० तुहफ] १ अद्भुत और सुन्दर पदार्थ। बढिया और विलक्षण चीज। २ उपायन। बैना। सौगात। ३ उपहार। भेट।
वि० अच्छा। उत्तम। बढिया।

तोहमत—स्त्री०[अ०] किसी पर लगाया जानेवाला झूठा और व्यर्थ का अभियोग या आरोप। झूठा दोषारोपण।
क्रि० प्र०—जोडना।—धरना।—लगाना।

तोहमती—वि०[अ० तोहमत+ई (प्रत्य०)]दूसरो पर झूठा अभियोग या तोहमत लगानेवाला। मिथ्या कलक लगानेवाला।

तोहरा†—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तोहार—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तोहिं†—सर्व०[हि० तू या तै] मुझको। तुझे।

तौंकन†—स्त्री०=तौंस।

तौंकना—अ०=तौंसना।

तौंस†—स्त्री०[स० ताप, हि० ताव+स० उष्म; हि० ऊमस, ओस] वह प्यास जो बहुत अधिक गरमी या धूप लगने से होती है और जल्दी शान्त नही होती।

तौंसना—अ०[हि० तौंस] गरमी से झुलस जाना। गरमी के कारण सतप्त होना।
स० १ गरमी पहुँचाकर विकल या सतप्त करना। २ झुलसना। उदा०—तात ताल तौंसियत झौंसियत झारहिं।—तुलसी।

तौंसा—पु०[स० ताप, हि० ताव+स० ऊष्म, हिं० ऊमस, ओस] बहुत अधिक ताप। कडी गरमी।

तौ—अ०[हि० हतौ का सक्षि०] था।
क्रि० वि०=तो।
†अव्य० हाँ, ठीक है। ऐसा ही है।

तौक—पु०[अ०]१ हँसुली के आकार का गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना। २ अपराधियो, पागलो आदि के गले मे पहनाया जानेवाला लोहे का वह भारी घेरा या मडल जिसके कारण वे इधर-उधर जा या भाग नही सकते। ३ पक्षियो आदि के गले मे होनेवाला प्राकृतिक गोलाकार चिह्न या मडल। ४ कोई गोल घेरा या पदार्थ। ५ गले मे लटकाई जानेवाली चपरास या उसका परतला।

तौकीर—स्त्री०[अ०]आदर। सम्मान। प्रतिष्ठा।

तौक्षिक—पु०[स०] धनु राशि।

तौचा—पु०[देश०] एक प्रकार का गहना जो देहाती स्त्रियाँ सिर पर पहनती है।

तौजा—पु० [अ० तौजीह] १ वह धन जो खेतिहरो का विवाहादि मे खर्च करने के लिए पेशगी दिया जाता था। बियाही। २ उधार दिया हुआ धन।
वि० यों ही कुछ समय के लिए उधार दिया या लिया हुआ।

तौतातिक—पु०[स० तुतात+ठञ्—इक] कुमारिल भट्ट कृत मीमासा शास्त्र।

तौतातित—पु०[स०] १ जैनियो का एक भेद या वर्ग। २ कुमारिल भट्ट का एक नाम।

तौतिक—पु०[स० मुक्ता, नि० सिद्धि]१ मुक्ता। मोती। २ शुक्ति। सीप।

तौन—स्त्री०[देश०] वह रस्सी जिससे गौ दुहने के समय उसका बछवा उसके अगले पैर से बाँध दिया जाता है।
†सर्व०=तवन (वह)।
†अव्य०=सो।

तौनी—स्त्री०[हि० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।
वि०, स्त्री०=तौन।

तौफीक—पु० [अ०] १ शक्ति। सामर्थ्य। २ हिम्मत। हौसला। ३ ईश्वर के प्रति होनेवाली भक्ति और श्रद्धा।

तौबा—स्त्री० =तोबा।

तौर—पु० [स० √तुर्व् (हिंसा करना)+कञ् बा०] एक प्रकार का यज्ञ।
पु० [अ०] १ ढग। तरीका।
पद—तौर-तरीका। (देखे)
२ चाल-चलन। चाल-ढाल।
मुहा०—तौर बे-तौर होना=रग-ढग खराब होना। लक्षण बुरे जान पडना।
३ अवस्था। दशा। हालत।
†पु० [देश०] मथानी मथने की रस्सी। नेत्री।

तौर-तरीका—पु० [अ०] १ चाल-ढाल। २ रग-ढग।

तौरश्रवस—पु० [स० तोरश्रवस्+अण्] एक प्रकार का साम (गान)।

तौरात—पु० दे० 'तौरेत'।

तौरायणिक—पु० [स० तूरायण+ठञ्—इक] वह जो तूरायण यज्ञ करता हो।

तौरि*—स्त्री० [हिं० ताँवरि] सिर मे आनेवाली घुमरी या चक्कर।

तौरीत—पु० दे० 'तौरेत'।

तौरेत—पु० [इब्रा०] यहूदियो का प्रधान धर्म-ग्रथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था। इसमे सृष्टि और आदम की उत्पत्ति आदि का उल्लेख है।

तौर्य—पु० [स० तूर्य+अण्] १ ढोल, मँजीरा आदि बाजे। २ उक्त बाजे बजाने की क्रिया।

तौर्य-त्रिक—पु० [मध्य०स०] नाचना, गाना और बाजे बजाना आदि काम।

तौल—पु० [स० तुला+अण्] १ तराजू। २ तुला राशि।
स्त्री० [हिं० तौलना] १ कोई चीज तौलने की क्रिया या भाव। २ किसी पदार्थ का वह भार या मान जो उसे तौलने पर जाना जाता है। वजन। (वेट) ३ बटखरो के अलग-अलग प्रकार के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक। जैसे—कच्ची या पक्की तौल, छोटी या बडी तौल। ४ किसी प्रकार की जाच की कसौटी या मानक। सर्व-मान्य परिमाण। ५ गम्भीरता, परिमाणु, महत्त्व आदि का अनुमान। कल्पना या थाह। उदा०—बालपना की प्रीत रमइया जी कदे गंही आयो थारो तोल (तौल)।—मीराँ।

तौलना—स० [स० तोलना] १ काँटे, तराजू, बटखरे आदि की सहायता से यह पता लगाना कि अमुक वस्तु का गुरुत्व या भार कितना है। जोखनी। २ कोई चीज हाथ मे लेकर या हाथ से उठाकर यह अनुमान करना कि यह तौल, भार या वजन मे कितनी होगी।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।
३ अस्त्र-शस्त्र आदि चलाने के समय, उसे हाथ मे लेकर ऐसी मुद्रा या स्थिति मे लाना कि वह ठीक तरह से अपने लक्ष्य पर पहुँचकर पूरा काम कर दिखलावे। साधना। जैसे—डडा या तलवार तौलना। ४ दो या अधिक वस्तुओ के गुण, मान आदि की परस्पर तुलना करके उनके महत्त्व आदि का विचार करना। तारतम्य जानना। मिलान करना। ५ किसी बात का ठीक महत्त्व, मान, स्वरूप आदि जानने के लिए अथवा किसी व्यक्ति के मन की थाह लेने के लिए उसकी सब बातो, व्यवहारो आदि को अच्छी तरह देखते हुए उसके सम्बन्ध मे मन मे अनुभव या कल्पना करना। जैसे—किसी का मन (या किसी को) तौलना (या तौलकर देखना)। ६ गाडी के पहिये के छेद मे इसलिए तेल डालना कि वह बिना रगड खाये सहज मे घूमता रहे। औगना।

तौलनिक—वि० =तुलनात्मक।

तौलवाई—स्त्री० =तौलाई।

तौलवाना—स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को तौलने मे प्रवृत्त करना। तौलाना।

तौला—पु० [हिं० तौलना] १ वह जो चीजे तौलने का काम या पेशा करता हो। २ दूध नापने का मिट्टी का बरतन।
पु० [फा० तबल] [स्त्री० अल्पा० तौली] १ एक प्रकार का बडा कटोरा। २ मिट्टी का घडा।
पु० [?] महुए की शराब।

तौलाई—स्त्री० [हि० तौल+आई (प्रत्य०)] १ तौलने की क्रिया या भाव। २ तौलने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

तौलाना—स० = तौलवाना।

तौलिक, तौलिकिक—पु० [स० तूली+ठक्—इक, तूलिका+ठक—इक] चित्रकार।

तौलिया—पु० [अ० टावेल] एक प्रकार का मोटा अँगोछा जिससे स्नान आदि करने के उपरात शरीर पोछते है।

तौली—स्त्री० [अ० तबल] १ एक प्रकार की मिट्टी की छोटी प्याली। २ मिट्टी का घडा जिसमे अनाज, गुड आदि रखते है।

तौलैया—पु० [हि० तौलना+ऐया (प्रत्य०)] अनाज तौलने का काम करनेवाला व्यक्ति। बया।

तौल्य—पु० [स० तुला+ष्यञ्] १ वजन। तौल। २ सादृश्य। समानता।

तौषार—पु० [स० तुषार+अण्] तुषार का जल। पाले का पानी।

तौस†—स्त्री० = तौस।

तौसना—अ०, स०=तौसना।

तौहीद—स्त्री० [अ०] यह मानना कि ईश्वर एक ही है। एकेश्वरवाद।

तौहीन—स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

तौहीनी—स्त्री० = तौहीन।

त्यक्त—भू० कृ० [स० √त्यज् (त्यागना)+क्त] [स्त्री० त्यक्ता] १ (पदार्थ) जिसका त्याग कर दिया गया हो। छोडा या त्यागा हुआ। २ यौ० पदो के आरभ मे, जिसने छोड या त्याग दिया हो। जैसे—त्यक्त प्राण = मृत, त्यक्त-लज्ज=निर्लज्ज। ३ यौ० पदो के आरभ मे, जो किसी के द्वारा छोड या त्याग दिया गया हो। जैसे—त्यक्त श्री=जिसे श्री या लक्ष्मी ने त्याग दिया हो। अर्थात् अभागा या दरिद्र।

त्यक्तव्य—वि० [स० √त्यज्+तव्यत्] जो छोडे जाने के योग्य हो। जिसे त्यागना उचित हो।

त्यक्ता (क्तृ)—वि० [स० √त्यज्+तृच्] त्यागने वाला। जिसने त्याग किया हो।

त्यक्ताग्नि—वि० [स० त्यक्त-अग्नि, ब० स०] गृहाग्नि की उपेक्षा करनेवाला। (ब्राह्मण)

त्यक्तात्मा (मन)—वि० [स० त्यक्त-आत्मन्, ब० स०] हताश। निराश।
त्यग्नायि—पु० [स०] एक प्रकार का साँप।
त्यजन—पु० [स० त्यज्+ल्युट्—अन] [वि० त्यजनीय, त्याज्य, भू० कृ० त्यक्त] छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग।
त्यजित—भू० कृ० दे० 'त्यक्त'।
त्यजनीय—वि० [स०√त्यज्+अनीयर] जो त्यागे जाने के योग्य हो। त्याज्य।
त्यज्यमान—वि० [स०√त्यज्+शानच्, यक्] जिसका त्याग कर दिया गया हो। जो छोड दिया गया हो।
त्याँह—सर्व० [स० तेषाम्] उनका या उनके। उदा०—अरि देखे आराण मै, तृण मुख माँझल त्याह।—बाकीदास।
त्याग—पु० [स०√त्यज् (त्यागना)+घञ्] १ किसी चीज पर से अपना अधिकार या स्वत्व हटा लेने अथवा उसे सदा के लिए अपने पास से अलग करने की क्रिया। पूरी तरह से छोड देना। उत्सर्ग। जैसे—घर-गृहस्थी, सपत्ति या सासारिक सबधो का त्याग।
पद—त्याग-पत्र। (देखे)
२ किसी काम, चीज या बात से लगाव या सम्बन्ध हटा लेने अथवा उसे छोडने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) मोह-माया का त्याग। (ख) दुर्व्यसनो का त्याग। ३ मन मे विरक्ति या वैराग्य उत्पन्न होने पर सासारिक व्यवहार, सम्बन्ध आदि छोडने की क्रिया या भाव। जैसे—सन्यास ग्रहण करने से पहले मन मे त्याग की भावना उत्पन्न होना आवश्यक है। ४ दूसरो के उपकार या हित के विचार से स्वय कष्ट उठाने या अपना सुख-सुभीता छोडने की क्रिया या भाव। जैसे—लोकमान्य तिलक (या अरविन्द घोष) का त्याग अनुकरणीय है। ५ इस प्रकार सम्बन्ध तोडना कि अपने ऊपर कोई उत्तरदायित्व न रह जाय। जैसे—पत्नी या पुत्र को त्याग करके उनसे अलग होना। ६ उदारता पूर्वक किया जानेवाला उत्सर्ग या दान। ७ कन्या-दान। (डि०)
त्यागना—स० [स० त्याग] त्याग करना। छोडना। तजना।
सयो० क्रि०—देना।
त्याग-पत्र—पु० [स० मध्य० स०] १ वह पत्र जिसमे यह लिखा हुआ हो कि हमने अमुक काम, चीज या बात सदा के लिए छोड दी है। २ वह पत्र जो कोई कार्यकर्त्ता या सेवक अपने अधिकारी या स्वामी की नौकरी या पद छोडने के समय लिखकर देता है और जिसमे यह लिखा रहता है कि अब मैं अपने पद पर नही रहूँगा या उसका काम नही करूँगा। इस्तीफा। (रेजिग्नेशन)
त्यागवान् (वत्)—वि० [स० त्याग+मतुप्] जिसने त्याग किया हो अथवा जिसमे त्याग करने की शक्ति हो। त्यागी।
त्यागि (गिन्)—वि० [स०√त्यज्+घिनुण्] १ त्यागने या छोडनेवाला। २. ससार की झझटो से विरक्त होकर वैभव या सुख-भोग के सब साधनों या सामग्री का त्याग करनेवाला। 'सग्रही' का विपर्याय। ३ किसी अच्छे काम के लिए अपने स्वार्थ या हित का त्याग करनेवाला।
त्याजना*—स०=त्यागना।
त्याजित—भू० कृ० [स० √त्यज्+णिच्+क्त] १ जिससे परित्याग कराया गया हो। २. जिसकी उपेक्षा कराई गयी हो। ३ दे० 'त्यक्त'।
त्याज्य—वि० [स०√त्यज्+ण्यत्] जिसे त्याग देना उचित हो। छोडे या त्यागे जाने के योग्य।
त्यार†—वि० दे० 'तैयार'।
त्यारन*—पु०, वि० — तारण।
त्यारा†—वि० [स्त्री० त्यारी] =तेरा या तुम्हारा।
त्यूँ†—क्रि० वि० दे० 'त्यो'।
त्यूरस—पु० दे० 'त्योरस'।
त्यो—क्रि० वि० [स० तत्-एवम्] १ उस प्रकार। उस तरह। २ उसी समय। उसी वक्त।
†अव्य० [स० तनु] ओर। तरफ। उदा०—(क) हरि त्यो टुक डीठि पसारत ही । —केशव। (ख) सब ही त्यौं (त्यो) समुहाति छिनु, चलित सबनि दै पीठि।—बिहारी।
त्योनार—पु० [हिं० तेवर ?] १ ढग। तर्ज। २ तेवर। (देखे)
त्योर*—पु० दे० 'त्योरी'।
त्योरस—पु० [हिं० ति (तीन)+बरस] १ गत वर्ष से पहले का अर्थात् वर्त्तमान वर्ष के विचार से बीता हुआ तीसरा वर्ष। २ आनेवाले वर्ष के बाद का अर्थात् वर्त्तमान वर्ष के विचार से तीसरा वर्ष।
त्योरी—स्त्री० [हिं० त्रिकुटी, स० त्रिकूट (चक्र)] किसी विशिष्ट उद्देश्य से देखनेवाली दृष्टि। निगाह। तेवर।
मुहा०—त्योरी चढ़ना=दृष्टि का ऐसी अवस्था मे हो जाना जिससे कुछ असन्तोष या रोष प्रकट हो। आँखे चढना। **त्योरी चढ़ाना या बदलना**=दृष्टि या आकृति से क्रोध के चिह्न प्रकट करना। भौहें चढाना। **त्योरी मे बल पडना** = त्योरी चढना।
त्योरुस—पु० = त्योरस।
त्योहार—पु० [स० तिथि+वार] १. वह दिन जिसमे कोई बडा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाता हो। पर्व दिन। (फेस्टिवल) जैसे—जन्माष्टमी, दशहरा, दीवाली, होली आदि हिन्दुओ के प्रसिद्ध त्योहार हैं। २ वह दिन या समय जिसमे बहुत से लोग मिलकर उत्सव मनाते हो।
क्रि० प्र०—मनाना।
त्योहारी—स्त्री० [हिं० त्योहार+ई (प्रत्य०)] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष्य मे छोटो, लडको या नौकरो आदि को दिया जाता है।
त्यौं—क्रि० वि० दे० 'त्यो'।
त्यौनार—पु० = त्योनार।
त्यौर—पु० १ दे० 'त्योरी'। २ दे० 'त्योनार'।
त्यौराना—अ० [हिं० ताँवर] सिर मे चक्कर आना। सिर घूमना।
त्यौरी—स्त्री० = त्योरी।
त्यौरुस—पु० दे० 'त्योरस'।
त्यौहार—पु० दे० 'त्योहार'।
त्यौहारी—स्त्री० = त्योहारी।
त्र—त् और र के योग से बना हुआ एक सयुक्त वर्ण जिसकी गिनती स्वतत्र वर्ण के रूप मे होने लगी है। यह कुछ शब्दो के अत मे प्रत्यय के रूप मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है— (क) त्राण या रक्षा करनेवाला। जैसे—अगुलित्र, आतपत्र। (ख) किसी स्थान पर आया या लाया हुआ, जैसे—अपरत्र, एकत्र, पूर्वत्र, सर्वत्र आदि। और (ग) उपकरण

या यत्र के रूप मे कोई काम करनेवाला। जैसे—चूषित्र, प्रेषित्र, वाष्पित्र आदि।

त्रंग—पु० [स०√त्रङ्ग् (जाना)+अच्] राजा हरिश्चद्र के राज्य की राजधानी।

त्रंबाल†—पु० [?] नगाडा। (राज०) उदा०—गुडै धणीचा गाजणा, तो माथे त्रबाल।—कविराजा सूर्यमल।

त्रपा—स्त्री० [स०√त्रप् (लज्जा करना)+अङ्-टाप्] [वि० त्रपमान्] १ कीर्ति। यश। २ लज्जा। शरम। ३ छिनाल स्त्री। पुश्चली। वि० १ कीर्तिमान्। २ लज्जित। शरमिन्दा।

त्रपा-रंडा—स्त्री० [स० त०] १ छिनाल स्त्री। २ रडी। वेश्या। ३ कीर्ति। यश। ४ कुल। वश।

त्रपित—भू० कृ० [स० √त्रप्+क्त] लज्जित।

त्रपु—पु० [स०√त्रप्+उन्] १ सीसा। २ रागा।

त्रपु-कर्कटी—स्त्री० [मध्य० स० ?] १ खीरा। २ ककडी।

त्रपुटी—स्त्री० [स०√त्रप्+उटक् (बा०)–ङीप्] छोटी इलायची।

त्रपुरी—स्त्री० = त्रपुटी।

त्रपुल—पु० [स०√त्रप्+उलच् (बा०)] राँगा।

त्रपुष—पु० [स०√त्रप्+उष (बा०)] १ राँगा। २ खीरा, ककडी आदि।

त्रपुषी—स्त्री० [स० त्रपुष+ङीष्] १ ककडी। २ खीरा।

त्रपुस—पु० [स०√त्रप्+उस (बा०)] १ राँगा। २ खीरा, ककडी आदि।

त्रपुसी—स्त्री० [स० त्रपुस+ङीष्] १ ककडी। २ खीरा। ३ बडा इन्द्रायन।

त्रप्सा—स्त्री० [स०√त्रप्+सन्+अङ्-टाप्] जमा हुआ कफ या श्लेष्मा।

त्रप्स्य—पु० [स०√त्रप्+सन्+ण्यत्] मठा। लस्सी।

त्रय—वि० [स० त्रि+अयच्] १ तीन अगो, अशो, इकाइयो या रूपोवाला। २ तीसरा। ३ तीनो। जैसे—ताप-त्रय।

त्रय-ताप—पु० [मध्य० स०] आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये तीनो प्रकार के ताप।

त्रयारुण—पु० [स०] पद्रहवे द्वापर के एक व्यास का नाम।

त्रयारुणि—पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जो भागवत के अनुसार लोमहर्षण ऋषि के शिष्य थे।

त्रयी—स्त्री० [स० त्रय+ङीप्] १ तीन विभिन्न इकाइयो का योग, सग्रह या समूह। (ट्रिपलेट) जैसे—वेदत्रयी (अथर्ववेद के अतिरिक्त तीनो वेद), लोकत्रयी (स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक) देवत्रयी (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)। २ इस प्रकार ली जाने वाली तीनो वस्तुएँ। ३ वह विवाहिता स्त्री जिसका पति और बच्चे जीवित हो। ४ दुर्गा। ५. सोमराजी लता।

त्रयी-तनु—पु० [ब० स०] १ सूर्य। २ शिव।

त्रयी-धर्म—पु० [मध्य० स०] ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद तीनो मे बतलाया हुआ या इन तीनो के अनुसार विहित धर्म।

त्रयीमय—पु० [स० त्रयी+मयट्] १ सूर्य। २ परमेश्वर।

त्रयी-मुख—पु० [ब० स०] ब्राह्मण।

त्रयो-दश (न्)—वि० [स० त्रि-दशन्, द्व० स०] तेरह।

त्रयोदशी—स्त्री० [स० त्रयोदशन्+डट्–ङीप्] चाद्र मास के किसी पक्ष की तेरहवी तिथि। तेरस।

त्रष्टा—पु० [स० तष्टा] बढई।
पु० [फा० तश्त] ताँबे की छिछली और छोटी तश्तरी।

त्रस—वि० [स०√त्रस् (भय करना)+क] चलनेवाला। चलनशील।
पु० १ वन। जगल। २ चलने-फिरनेवाले समस्त जीव। जैसे—पशु, मनुष्य आदि। ३ धूल का वह कण जो प्रकाश-किरणो मे उडता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है।

त्रसन—पु० [स०√त्रस्+ल्युट्-अन] १ किसी के मन मे त्रास या भय उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २ डर। भय। ३ भयभीत होने की अवस्था या भाव। ४ चिंता। फिक्र। ५ वह आभूषण जो पहनने पर झूलता या हिलता-डुलता रहे।

त्रसना*—अ० [स० त्रसन] १ भयभीत होना। २ त्रस्त होना।
स० चिंतित या भयभीत करना।

त्रसर—पु० [स०√त्रस्+अरन् (बा०)] जुलाहो की ढरकी। तसर।

त्रस-रेणु—पु० [स० उपमि० स०] धूल का वह कण जो प्रकाश-रश्मियो मे उडता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है।
स्त्री० सूर्य की एक पत्नी।

त्रसाना—स० [हिं० त्रासना का प्रे० रूप] किसी को किसी दूसरे के द्वारा त्रस्त या भयभीत कराना।

त्रसित—भू० कृ० [स० त्रस्त] १ डरा हुआ। २ पीडित।

त्रसुर—वि० [स०√त्रस्+उरच्] १ जो भय से काँप रहा हो। २ डरपोक। भीरु।

त्रस्त—भू० कृ० [स०√त्रस्+क्त] १ बहुत अधिक डरा हुआ। भयभीत। २ पीडित।

त्रस्नु—वि० [स०√त्रस्+क्नु] जो भय से काँप रहा हो। बहुत अधिक डरा हुआ।

त्रहक्कना†—अ० दे० 'बजना'। (राज०)

त्रागा†—पु० = तागा। (राज०) उदा०—तितरै हेक दी पवित्र गलित्रागौ।—प्रिथीराज।

त्राटक—पु० दे० 'त्राटिका'।

त्राटिका—स्त्री० [स०] योग की एक क्रिया जिसमे दृष्टि तीव्र या प्रखर करने के लिए कुछ समय तक किसी सूक्ष्म बिंदु को एकटक देखना पडता है।

त्राण—पु० [स०√त्रै (रक्षा करना)+ल्युट्-अन] १ किसी को विपत्ति या सकट से छुटकारा दिलाने तथा उससे सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। २ शरण। ३ सहायता। ४ रक्षा का साधन। बचाने वाली चीज (यौ० के अन्त मे)। जैसे—पादत्राण, शिरस्त्राण। ५ कवच। बक्तर। ६ त्रायमाणा लता।

त्राणक—पु० [स० त्रायक] त्राण करने या बचानेवाला। रक्षक।

त्राणा—स्त्री० [स० त्राण+टाप्] बनफशे की जाति की एक लता।

त्रात—भू० कृ० [स०√त्रै (रक्षा करना)+क्त] जिसे त्राण दिया गया हो। विपत्ति या सकट से बचाया हुआ।

त्रातव्य—वि० [स०√त्रै+तव्यत्] विपत्ति, सकट आदि मे जिसकी रक्षा करना उचित या वाछनीय हो। त्राण पाने का अधिकारी या पात्र।

त्राता (तृ)—वि० [स०√त्रै (रक्षा करना)+तृच्] त्राण या रक्षा करनेवाला।
पु० वह जो किसी का त्राण या रक्षा करे।
त्रातार—पु० = त्राता।
त्रापुष—वि० [स० त्रपुष+अण्] १ त्रपुष-सम्बन्धी। २ त्रपुष अर्थात् टीन, राँगे आदि का बना हुआ।
त्रायक—वि० [स०√त्रै (रक्षा करना)+ण्वुल्-अक] त्राण या रक्षा करनेवाला।
त्रायती—स्त्री० [स० त्रा√त्रै+विवप्, त्रा√इ (जाना)+शतृ—ङीप्] त्रायमाण (लता)।
त्रायमाण—वि० [स०√त्रै +शानच्] त्राता। रक्षक।
पु० बनफशे की तरह की एक लता।
त्रायमाणा—स्त्री० [स० त्रायमाण+टाप्] त्रायमाण (लता)।
त्रायमाणिका—स्त्री० [स० त्रायमाणा+कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व।] =त्रायमाणा।
त्राय-वृंत—पु० [स०√त्रै +क, त्राय-वृत, ब० स०] गडीर या मुडिरी नामक साग।
त्रास—स्त्री० [स०√त्रस् (डरना)+घञ्] १ ऐसा भय जिससे विशेष अनिष्ट, क्षति, हानि आदि की आशका हो। २. कष्ट। तकलीफ। २ मणि का एक अवगुण या दोष।
त्रासक—वि० [स०√त्रस्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ त्रास देनेवाला। डरानेवाला। २ दूर करने या हटानेवाला। निवारक।
त्रासन—पु० [स०√त्रस्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० त्रासनीय] त्रास देने अर्थात् डराने का कार्य।
वि० =त्रास देने या डरानेवाला। (यौ० के अन्त मे)
त्रासना*—स० [स० त्रासन] किसी को त्रस्त या भयभीत करना। डराना।
त्रासित—भू० कृ० [स०√त्रस्+णिच्+क्त] १ जिसे त्रास दिया गया हो। डराया-धमकाया हुआ। २ जिसे कष्ट पहुँचा या पहुँचाया गया हो।
त्रासी (सिन्)—वि० [स०√त्रस्+णिच्+णिनि] =त्रासक।
त्राहि—अव्य० [स०√त्रै+लोट्—हि] इस घोर कष्ट या सकट से त्राण दो। रक्षा करो! बचाओ!
त्रिंश—वि० [स० त्रिंशत्+डट्] तीसवाँ।
त्रिंशत्—वि० [स० त्रि-दश, नि० सिद्धि] तीस।
त्रिंशत्पत्र—पु० [स० ब० स०] कोई का फूल। कुमुदनी।
त्रिंशांश—पु० [स० त्रिंश-अश, कर्म० स०] १ किसी पदार्थ का तीसवाँ भाग। २ फलित ज्योतिष मे, राशि का तीसवाँ अश या भाग जिसका उपयोग जन्मपत्री बनाने और शुभाशुभ फल निकालने मे होता है।
त्रि—वि० [स०√तृ (तैरना)+ड्रि] तीन अगो, अवयवो, इकाइयो, खडो या रूपोवाला (यौ० के आरभ मे)। जैसे—त्रिदेव, त्रिदोष, त्रिवर्ग आदि।
त्रि-कंट—पु० [स० ब० स०] =त्रिकटक।
त्रि-कटक—पु० [स० ब० स०, कप्] १ त्रिशूल। २ गोखरू। ३ तिधारा। थूहर। ४ जवासा। ५ टेंगरा नाम की मछली।
त्रिक—वि० [स० त्रि+कन्] १ तीन अगो, इकाइयो या रूपोवाला। २ तीसरी बार होनेवाला। ३ तीन प्रतिशत।
पु० १ एक ही तरह की तीन चीजो का वर्ग या समूह। २ रीढ के नीचे का वह भाग जो कूल्हे की हड्डियो के पास पडता है। ३ कटि। कमर। ४ कधो के बीच का भाग। ५ त्रिकटु। ६ त्रिफला। ७ त्रिमद। । ८ त्रिमुहानी। ९ मनु के अनुसार ३ प्रतिशत होनेवाला लाभ या मिलनेवाला ब्याज।
त्रि-ककुद्—वि० [स० ब० स०] जिसके तीन शृग हो।
पु० १ त्रिकूट पर्वत। २ जगली सूअर। वाराह। ३ विष्णु जिन्होंने एक बार वाराह का अवतार लिया था। ४ दस दिनो मे पूरा होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
त्रि-ककुभ्—पु० [स० त्रि-क (जल) √ स्कुम्भ् (रोकना) +क्विप्] १ इद्र। २ वज्र।
त्रिकट—पु० [स० त्रि√कट् (ढकना)+अच्, उप० स०] त्रिकट। (दे०)
त्रि-कटु—पु० [स० द्विगु स०] १ तीन कडवी वस्तुओ का वर्ग। २ ये तीन कडवी वस्तुएँ—सोठ, मिर्च और पीपल। (वैद्यक)
त्रिकटुक—पु० [स० त्रिकटु+क (स्वार्थे)] त्रिकटु। (दे०)
त्रिक-त्रय—पु० [स० ष० त०] त्रिफला, त्रिकुटा और त्रिमेद अर्थात् हड, बहेडा और आँवला, सोठ, मिर्च और पीपल तथा मोथा, चीता और बायबिडग इन सब का समूह।
त्रि-कर्मा (र्मन्)—पु० [स० ब० स०] ब्राह्मण, जो वेदो का अध्ययन, यज्ञ और दान ये तीन मुख्य कर्म करते है।
त्रि-कल—वि० [स० ब० स०] तीन कलाओ या मात्राओवाला।
पु० १ तीन मात्राओ का शब्द। प्लुत। २ दोहे का एक भेद जिसमे ९ गुरु और ३० लघु होते है।
त्रिकलिंग—पु० = तैलग।
त्रिक-शूल—पु० [स० ष० त०] एक तरह का वात रोग जिसमे कमर, पीठ और रीढ तीनो मे पीडा होती है।
त्रि-कांड—वि० [स० ब० स०] जिसमे तीन काड हो।
पु० १ अमरकोश, जिसमे तीन काड है। २ निरुक्त शास्त्र का एक नाम। ३ वाण तीर।
त्रिकांडी—वि० = त्रिकाडीय।
त्रिकांडीय—वि० [स० त्रि-काड, द्विगु स०, +छ—ईय] जिसमे तीन काड हो। तीन काडोवाला।
पु० वेद, जिनमे कर्म, उपासना और ज्ञान तीनो की चर्चा या विवेचन है।
त्रिका—स्त्री० [स० त्रि√कै (भासित होना)+कँ—टाप्] कूएँ मे से पानी निकालने के लिए लगी हुई गराडी।
त्रि-काय—पु० [स० ब० स०] गौतम बुद्ध।
त्रि-कार्षिक—पु० [स० कर्ष+ठक्-इक, त्रि-कार्षिक, ष० त०] सोठ, अतीस और मोथा इन तीनो समूह।

त्रि-काल—पु० [स० द्विगु स०] १ भूत, वर्त्तमान और भविष्य ये तीनो काल। २ प्रात, मध्याह्न और साय ये तीनो काल।

त्रिकालज्ञ—पु० [स० त्रिकाल√ज्ञा (जानना) +क] [भाव० त्रिकाल-ज्ञता] वह जो भूत, वर्त्तमान और भविष्य तीनो कालो मे हुई अथवा होनेवाली बातो को जानता हो।

त्रिकालज्ञता—स्त्री० [स० त्रिकालज्ञ+तल्–टाप्] त्रिकालज्ञ होने की अवस्था, भाव या शक्ति।

त्रिकाल-दर्शक—वि० [स० ष० त०] त्रिकालज्ञ।

पु० ऋषि।

त्रिकालदर्शिता—स्त्री० [स० त्रिकालदर्शिन्+तल्–टाप्] त्रिकालदर्शी होने की अवस्था, गुण, भाव या शक्ति।

त्रिकालदर्शी (र्शिन्)—पु० [स० त्रिकाल√दृश् (देखना)+णिनि, उप० स०] वह जिसे भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनो कालो मे होनेवाली घटनाएँ या बाते दिखाई देती हो।

त्रिकुट—पु० =त्रिकूट।

त्रिकुटा—पु० [स० त्रिकुट] सोठ, मिर्च और पीपल इन तीनो वस्तुओ का समूह।

†वि० [स० त्रिक] [स्त्री० त्रिकुटी] तीसरा। तृतीय। उदा०—इकुटी, बिकुटी, त्रिकुटी सधि।—गोरखनाथ।

त्रिकुटी—स्त्री० [स० त्रिकूट] दोनो भौहो के बीच के कुछ ऊपर का स्थान जिसमे हठ योग के अनुसार त्रिकूट का अवस्थान माना गया है।

त्रि-कूट—पु० [स० ब० स०] १ वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हो। २ पुराणानुसार वह पर्वत जिस पर लका बसी हुई मानी गई है और जो रूप-सुन्दरी नामक देवी का निवास-स्थान कहा गया है। इसकी गिनती पीठ-स्थानो मे होती है। ३ क्षीरोद समुद्र मे स्थित एक कल्पित पर्वत। ४ हठयोग के अनुसार मस्तक के कुछ चक्रो मे पहला चक्र जिसका स्थान दोनो भौहो के बीच मे माना गया है।

त्रिकूट-गढ़—पु० [स० त्रिकूट+हि० गढ] त्रिकूट पर्वत पर स्थित लका।

त्रिकूटा—स्त्री० [स० त्रिकूट+टाप्] तात्रिको की एक भैरवी।

त्रि-कूर्चक—पु० [स० ब० स०] एक तरह की छुरी जिसमे तीन तरफ धारे होती है।

त्रि-कोण—वि० [स० ब० स०] तीन कोणोवाला।

पु० १ तीन कोणो वाली कोई वस्तु। २ भग। योनि। ३ ज्यामिति मे ऐसी आकृति या क्षेत्र जिसके तीन कोण हो। जैसे—△। ४ कामरूप के अतर्गत एक तीर्थ जो सिद्ध-पीठ माना जाता है। ५ जन्म कुडली मे लग्न स्थान से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोण-घंटा—पु० [कर्म० स०?] लोहे के छड का बना हुआ एक प्रकार का तिकोना बाजा जिस पर लोहे के एक दूसरे टुकडे से आघात करके ताल देते है।

त्रिकोण-फल—पु० [ब० स०] सिघाडा।

त्रिकोण-भवन—पु० [कर्म० स०] जन्मकुडली मे लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोण-मिति—स्त्री० [स० ब० स०?] गणित शास्त्र की वह शाखा जिसमे त्रिभुजो के कोण, बाहु, वर्ग, विस्तार आदि का मान निकाला जाता है।

त्रि-क्षार—पु० [स० द्विगु स०] जवाखार, सज्जी और सुहागा ये तीनो क्षार अथवा इनका समूह।

त्रि-क्षुर—पु० [स० ब० स०] ताल-मखाना।

त्रि-ख—पु० [स० ब० स०] खीरा।

त्रिखा†—स्त्री० तृषा।

त्रिखी†—वि० =तृषित।

त्रि-गग—पु० [स० अव्य० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

त्रि-गधक—पु० [स० द्विगु० स०] इलायची, दारचीनी और तेज पत्ता ये तीनो पदार्थ अथवा इनका समूह। त्रिजातक।

त्रि-गभीर—पु० [स० तृ० त०] वह जिसका स्वत्व (आचरण), स्वर और नाभि ये तीनो गभीर हो। कहते है कि ऐसा पुरुष सदा सुखी रहता है।

त्रि-गण—पु० [स० ष० त०] त्रिवर्ग। (दे०)

त्रि-गर्त्त—पु० [स० ब० स०] १ रावी, व्यास, और सतलज की घाटियो का अर्थात् आधुनिक कॉगडे और जालधर के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम। २ उक्त देश का निवासी।

त्रि-गर्त्ता—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] छिनाल स्त्री। पुश्चली।

त्रिगर्तिक—पु० =त्रिगर्त।

त्रि-गुण—पु० [स० द्विगु स०] सत्त्व, रज और तम ये तीनो गुण।

†वि० [ब० स०] =तिगुना।

त्रि-गुणा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ दुर्गा। २ माया। ३ तत्र मे एक प्रकार का बीज।

त्रिगुणात्मक—वि० [स० त्रिगुण-आत्मन्, ब० स०, कप्] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] १ सत, रज और तम नामक तीनो गुणो से युक्त। जिसमे तीनो गुण हो। २ किसी प्रकार के तीन गुणो से युक्त।

त्रिगुणी—स्त्री० वि० [स० त्रिगुण] जिसमे तीन गुण हो। त्रिगुणात्मक।

स्त्री० [ब० स०, ङीप्] बेल का पेड।

त्रि-गूढ़—पु० [स० ब० स०] पुरुष का ऐसा नृत्य जो वह स्त्री का वेष धारण करके करता है।

त्रि-घटा—स्त्री० [स० ब० स०] एक कल्पित नगरी जो हिमालय की चोटी पर अवस्थित मानी जाती है। कहते है यहाँ विद्याधर आदि रहते है।

त्रि-चक्र—पु० [स० ब० स०] अश्विनीकुमारो का रथ।

त्रि-चक्षु (स्)—पु० [स० ब० स०] महादेव।

त्रिचित्—पु० [स० त्रि√चि (बटोरना)+क्विप्, उप० स०] गार्हपत्याग्नि।

त्रि-चीवर—पु० [स० ब० स०?] एक प्रकार का वस्त्र।

त्रिजगत्—पु० १ =त्रिलोक। २ =तिर्यक्।

त्रि-जट—पु० [स० ब० स०] महादेव। शिव।

वि० [स्त्री० त्रिजटा] तीन जटाओवाला।

त्रि-जटा—स्त्री० [स० ब० स०] १ विभीषण की बहन जो अशोक वाटिका मे सीता जी के पास रहा करती थी। २ बेल का पेड।

त्रिजटी (टिन्)—पु० [स० त्रिजटा+इनि] महादेव। शिव।

स्त्री० =त्रिजटा।

त्रि-जड़—पु० [डि०] १ कटारी। २ तलवार।

त्रि-जात—पु० [स० द्विगु स०] त्रिजातक। (दे०)

त्रिजातक—पु० [सं० त्रिजात+कन्] इलायची (फल), दारचीनी (छाल) और तेजपत्ता (पत्ता) ये तीनों पदार्थ अथवा इन तीनों का मिश्रण।
त्रिजामा—स्त्री० [सं० त्रियामा] रात। रात्रि।
त्रि-जीवा—स्त्री० [सं० सं० त०] तीन राशियों अर्थात् ९० अंशो तक फैले हुए चाप की ज्या।
त्रि-ज्या—स्त्री० [सं० ष० त०?] किसी वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खिंची हुई रेखा जो व्यास की आधी होती है। व्यासार्द्ध। (रेडियस)
त्रिण*—पु० =तृण।
त्रिण-ता—स्त्री० [सं० सं० त०, णत्व] धनुष।
त्रि-णव—पु० [सं० मध्य० स०, णत्व] सामगान की एक प्रणाली जिसमे एक विशेष प्रकार से उसकी (३+९) सत्ताईस आवृत्तियाँ करते है।
त्रि-णाचिकेत—पु० [सं० ब० स०, णत्व] १ यजुर्वेद का एक विशेष भाग। २ वह जो उक्त भाग का अध्ययन करता हो या उसका अनुयायी हो। ३ परमात्मा।
त्रिण्ह*—वि० = तीन।
त्रि-तंत्री—स्त्री० [सं० मध्य० स०] पुरानी चाल की एक तरह की तीन तारोवाली वीणा।
त्रित—पु० [सं०] १ एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते है। २ गौतम मुनि के तीन पुत्रो मे से एक।
त्रितय—पु० [सं० त्रि + तयप्] धर्म, अर्थ और काम इन तीनो का समूह।
त्रि-ताप—पु० [सं० द्विगु स०] दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनो ताप या कष्ट।
त्रि-दंड—पु० [सं० द्विगु स०] सन्यासियो का वह पतला लबा डंडा जिसके ऊपरी सिरे पर दो छोटी लकडियाँ बँधी होती है तथा जिसे वे हाथ मे लेकर चलते है।
त्रिदंडी (डिन्)—पु० [सं० त्रिदण्ड+इनि] १ वह सन्यासी जो त्रिदंड लिये रहता हो। २ मन, वचन और कर्म तीनो का दमन करने या इन्हे वश मे रखनेवाला व्यक्ति। ३ यज्ञोपवीत। जनेऊ।
त्रि-दल—पु० [सं० ब० स०] बेल का वृक्ष।
त्रि-दला—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] गोधापदी। हंसपदी।
त्रि-दलिका—स्त्री० [सं० ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] एक प्रकार का थूहर। चर्मकशा। सातला।
त्रि-दश—पु० [सं० ब० स०] १ वह जो भूत, भविष्य और वर्त्तमान अथवा बचपन, जवानी और बुढापे की तीनो दशाओ मे एक-सा बना रहे। २ देवता। ३ जिह्वा। जीभ।
त्रिदश-गुरु—पु० [ष० त०] देवताओ के गुरु बृहस्पति।
त्रिदश-गोप—पु० [ब० स०] बीरबहूटी नामक कीडा।
त्रिदश-दीर्घिका—स्त्री० [ष० त०] आकाश-गंगा।
त्रिदश-पति—पु० [ष० त०] इंद्र।
त्रिदश-पुष्प—पु० [मध्य० स०] लौंग।
त्रिदश-मंजरी—स्त्री० [ब० स०] तुलसी।
त्रिदश-वधू—स्त्री० [ष० त०] अप्सरा।
त्रिदश-सर्षप—पु० [मध्य० स०] एक तरह की सरसो। देवसर्षप।
त्रिदशांकुश—पु० [सं० त्रिदश-अंकुश, ष० त०] वज्र।
त्रिदशाचार्य—पु० [सं० त्रिदश-आचार्य, ष० त०] बृहस्पति।
त्रिदशाधिप—पु० [सं० त्रिदश-अधिप, ष० त०] इंद्र।
त्रिदशाध्यक्ष—पु० [सं० त्रिदश-अध्यक्ष, ष० त०] विष्णु।
त्रिदशायन—पु० [सं० त्रिदश-अयन, ब० स०] विष्णु।
त्रिदशायुध—पु० [सं० त्रिदश-आयुध, ष० त०] वज्र।
त्रिदशारि—पु० [सं० त्रिदश-अरि, ष० त०] असुर।
त्रिदशालय—पु० [सं० त्रिदश-आलय, ष० त०] १ स्वर्ग। २ सुमेरु पर्वत।
त्रिदशाहार—पु० [सं० त्रिदश-आहार, ष० त०] अमृत।
त्रिदशेश्वर—पु० [सं० त्रिदश-ईश्वर, ष० त०] इंद्र।
त्रिदशेश्वरी—स्त्री० [सं० त्रिदश-ईश्वरी, ष० त०] दुर्गा।
त्रिदिनस्पृश्—पु० [सं० त्रि-दिन, द्विगु स०, √स्पृश् (छूना) +क्विप] वह तिथि जिसका थोडा बहुत अंश या मान तीन दिनो तक रहता हो। एक दिन आरंभ होकर पूरे दूसरे दिन तक बनी रहनेवाली और तीसरे दिन समाप्त होनेवाली तिथि।
त्रि-दिव—पु० [सं०√दिव् (क्रीडा)+क, त्रि-दिव, ब० स०] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ सुख।
त्रिदिवाधीश—पु० [सं० त्रिदिव-अधीश, ष० त०] इंद्र।
त्रिदिवेश—पु० [सं० त्रिदिव-ईश, ष० त०] देवता।
त्रिदिवोद्भवा—स्त्री० [सं० त्रिदिव-उद्भव, ब० स०, टाप्] १ गंगा। २ बडी इलायची।
त्रि-दृश—पु० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।
त्रि-देव—पु० [सं० द्विगु स०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनो देवता अथवा इन तीनो देवताओ का समूह।
त्रि-दोष—पु० [सं० द्विगु स०] १ ये तीन दोष या शारीरिक विकार-वात, पित्त और कफ। २ सन्निपात नामक रोग जो इन तीनो के कुपित होने से होता है। ३ काम, क्रोध और लोभ, ये तीनो मानसिक दोष या विकार।
त्रिदोषज—वि० [सं० त्रिदोष√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो त्रिदोष से उत्पन्न हुआ हो।
पु० सन्निपात नामक रोग।
त्रिदोषना—अ० [सं० त्रिदोष] १ वात, पित्त और कफ इन तीन दोषो या विकारो से पीडित होना। २ काम, क्रोध और लोभ नामक तीनो दोषो से युक्त होना।
त्रिधनी—स्त्री० [सं० ?] एक रागिनी का नाम।
त्रि-धन्वा (न्वन्)—पु० [सं० त्रि-धनुस्, ब० स० (अनङ्)] हरिवंश के अनुसार सुधन्वा राजा का एक पुत्र।
त्रि-धर्मा (र्मन्)—पु० [सं० ब० स०, अनिच्] शंकर। शिव।
त्रिधा—क्रि० वि० [सं० त्रि+धाच्] तीन तरह से। तीन रूपो मे।
वि० १ तीन तरह या प्रकार का। २ तीन रूपो वाला।
त्रिधातु—पु० [सं० द्विगु स०] १ चाँदी, ताँबा और सोना ये तीनो धातुएँ। २ [त्रि√धा (पोषण करना)+तुन्] गणेश का एक नाम।
त्रि-धाम(न्)—पु० [सं० ब० स०] १ विष्णु। २ अग्नि। ३ शिव। ४ स्वर्ग। ५ मृत्यु।
त्रिधा-मूर्ति—पु० [ब० स०] परमेश्वर जिसके अंतर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनो है।

त्रि-धारक—पु० [स० ब० स०, कप्] १ बडा नागरमोथा। गुंदला। २. कसेरू का पौधा।

त्रि-धारा—स्त्री० [स०ब०स०] १ तीन धाराओवाला सेहुड। तिधारा। २ गगा जिसकी स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनो मे तीन धाराएँ बहती है।

त्रिधा-विशेष—पु० [कर्म० स०] साख्य के अनुसार सूक्ष्म मातृ, पितृज और महाभूत तीनो प्रकार के रूप धारण करनेवाला शरीर।

त्रिधा-सर्ग—पु० [कर्म० स०] दैव, तिर्यग् और मानुष ये तीनो सर्ग जिसके अतर्गत सारी सृष्टि आ जाती है।

त्रिन†—पु० =तृण।

त्रि-नयन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० त्रिनयना] तीन आँखो या नेत्रोवाला।

पु० महादेव। शिव।

त्रि-नयना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] दुर्गा।

त्रि-नाभ—पु० [स० त्रि-नाभि, ब० स०, अच्] विष्णु।

त्रि-नेत्र—वि० [स० ब० स०] तीन नेत्रोवाला।

पु० १ महादेव। शिव। २ सोना। स्वर्ण।

त्रिनेत्र-चूडामणि—पु० [ष० त०] चन्द्रमा।

त्रिनेत्ररस—पु० [स० मध्य० स०] (शोधे हुए) पारे, गधक और फूंके हुए ताँबे के योग से बनाया हुआ एक तरह का रस। (वैद्यक)

त्रिनेत्रा—स्त्री० [स० त्रिनेत्र+टाप्] बाराही कद।

त्रि-पटु—पु० [स०] काँच। शीशा।

त्रिपत†—वि० = तृप्त।

त्रि-पताक—पु० [स० ब० स०] ऐसा मस्तक जिस पर तीन प्राकृतिक बेडी रेखाएँ बनी या बनती हो।

त्रि-पत्र—वि० [स० ब० स०] जिसमे तीन पत्ते या तीन-तीन पत्तो के समूह हो।

पु० बेल का वृक्ष।

त्रिपत्रक—पु० [स० त्रिपत्र+कन्] १ पलाश या ढाक का पेड। २ कुद, तुलसी और बेल, के पत्तो का समूह।

त्रिपत्रा—स्त्री० [स० त्रिपत्र+टाप्] १ अरहर का पौधा। २ तिपतिया नाम की घास।

त्रि-पथ—पु० [स० द्विगु स०, अच्] १ आकाश, पाताल और भूमि ये तीनो मार्ग। २ कर्म, ज्ञान और उपासना जो आत्म-लाभ के तीन मार्ग कहे गये हैं। ३ तिर-मुहानी।

त्रिपथगा—स्त्री० [स० त्रिपथ√गम् (जाना)+ड-टाप्] गगा नदी।

विशेष—गगा नदी के सबध मे कहा गया है कि इसकी तीनो लोको मे एक-एक धारा बहती है।

त्रिपथगामिनी—स्त्री० [स० त्रिपथ√गम्+णिनि—ङीप्] गगा।

त्रिपथा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] मथुरा।

त्रिपद—वि० [स० ब० स०] १ तीन पैरोवाला। २ तीन पदोवाला।

पु० १ यज्ञो की बेदी नापने की एक नाप जो प्राय तीन कदम या डग की होती थी। २ त्रिभुज। ३ तिपाई। ४ तीन पदो अर्थात् चरणोवाला छद।

त्रिपदा—स्त्री० [स० त्रिपद+टाप्] १ वैदिक छदो का एक भेद। गायत्री। २ लाल लज्जावती। हसपदी।

त्रिपदिका—स्त्री० [स० त्रिपदा+कन्-टाप् इत्व] १ शख आदि रखने के लिए पीतल की बनी हुई छोटी तिपाई। २ तिपाई। ३ सगीत मे, सकीर्ण राग का एक भेद।

त्रिपदी—स्त्री० [स० त्रिपद+ङीप्] १ गायत्री। २ हसपदी। लाल लज्जावती। ३ हाथी की पलान बाँधने का रस्सा। ४ तिपाई। ५ तिपाई के आकार का वह चौखटा जिस पर शख रखा जाता है।

त्रिपन्न—पु० [स०] चद्रमा के दस घोडो मे से एक।

त्रि-परिकात—पु० [स० स० त०] ऐसा ब्राह्मण जो यज्ञ करता हो, वेदो का अध्ययन करता हो और दान देता हो।

त्रिपर्ण—पु० [स० ब० स०] पलाश (वृक्ष)।

त्रिपर्णा—स्त्री० [स० त्रिपर्ण+टाप्] पलाश (वृक्ष)।

त्रिपर्णिका—स्त्री० [स० त्रिपर्ण+कन्, टाप्-इत्व] १ शालपर्णी। २ बन-कपास। ३ एक प्रकार की पिठवन लता।

त्रिपर्णी—स्त्री० [स० त्रिपर्ण+ङीष्] १ एक प्रकार का क्षुप जिसका कद औषध के काम आता है। २ शालपर्णी।

त्रिपल†—स्त्री० = त्रिफला।

त्रिपाठी (ठिन्)—पु० [स० त्रि√पठ् (पढना)+णिनि] १ तीन वेदो का जाननेवाला व्यक्ति। त्रिवेदी। २ ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग। त्रिवेदी। तिवारी।

त्रि-पाण—पु० [स० त्रि-पान, ब० स०, णत्व] १ वह सूत जो तीन बार भिगोया गया हो। (कर्मकाड) २ छाल। वल्कल।

त्रि-पाद—वि० [स० ब० स०] १ तीन पैरोवाला।

पु० १ परमेश्वर। २ ज्वर। बुखार।

त्रिपादिका—स्त्री० [स० त्रिपाद+कन्-टाप्, इत्व] १ तिपाई। २ हसपदी लता। लाल लज्जालु।

त्रि-पाप—पु० [स० ब० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिससे किसी मनुष्य के किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जाना जाता है।

त्रि-पिंड—पु० [स० द्विगु० स०] पार्वण श्राद्ध मे पिता, पितामह और प्रपितामह के निमित्त दिये जानेवाले तीनो पिड। (कर्मकाड)

त्रि-पिटक—पु० [स० ब० स०] बौद्धो का एक धर्म-ग्रथ जिसके तीन पिटक या खड है और जिसमे गौतम बुद्ध के उपदेशो का सग्रह है।

त्रिपिताना*—अ० [स० तृप्त] तृप्त होना।

स० तृप्त करना।

त्रिपिब—पु० [स० त्रि√पा (पीना) + क, नि० पिब] वह खसी जिसके दोनो कान पानी पीने के समय पानी से छू जाते हो। ऐसा बकरा मनु के अनुसार पितृकर्म के लिए बहुत उपयुक्त होता है।

त्रि-पिष्टप—पु० [स० कर्म० स०] १ स्वर्ग। २ आकाश।

त्रिपुंड—पु० [स० त्रिपुड्र] मस्तक पर लगाया जानेवाला तीन आडी रेखाओ का तिलक।

क्रि० प्र०—देना।—रमाना।—लगाना।

त्रिपुंडी—वि० [हि० त्रिपुड] माथे पर त्रिपुड लगानेवाला।

त्रि-पुंड्र—पु० [स० द्विगु स०]=त्रिपुड।

त्रि-पुट—पु० [स० ब० स०] १ गोखरू का पेड। २. मटर। ३ खेसारी। ४ तीर। ५ ताला।

त्रिपुटक—पु० [स० त्रिपुट+कन्] १ खेसारी। २ फोडे का एक आकार।

त्रि-पुटा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ बेलका वृक्ष। २ छोटी इलायची। ३ बडी इलायची। ४ निसोथ। ५ कनफोडा बेला। ६ मोतिया। ७ तान्त्रिको की एक अभीष्टदात्री देवी।

त्रि-पुटी—स्त्री० [स० ब० स०, डीप्] १ निसोथ। २ छोटी इलायची। ३ तीन वस्तुओ का समूह। जैसे—ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय।

पु० [स० त्रिपुट+इनि] १ रेड का पेड। २ खेसारी।

त्रि-पुर—पु० [स० द्विगु स०] १ वे तीनो नगरियाँ जो मयदानव ने तारकासुर के तीन पुत्रो के रहने के लिए बनाई थी और जिन्हे शिव ने एक ही बाण से नष्ट कर दिया था। २ वाणासुर का एक नाम। ३ तीनो लोक। ४ चदेरी नगर।

त्रिपुरघ्न—पु० [स० त्रिपुर√हन् (मारना)+टक्] महादेव जिन्होने एक ही बाण से तारकासुर के तीनो पुत्रो के तीनो पुर या नगर नष्ट कर दिये थे।

त्रिपुर-दहन—पु० [ष० त०] महादेव।

त्रिपुर-भैरव—पु० [उपमि० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सन्निपात का नाशक कहा गया है।

त्रिपुर-भैरवी—स्त्री० [त्रिपुरा-भैरवी, कर्म० स०] एक देवी।

त्रिपुर-मल्लिका—स्त्री० [मध्य० स०?] एक तरह की मल्लिका।

त्रिपुरांतक—पु० [त्रिपुर-अतक, ष० त०] महादेव। शिव।

त्रिपुरा—स्त्री० [स० त्रि√पुर् (देना)+क—टाप्] १ कामाख्या देवी की एक मूर्ति। २ भारत के पूर्वी आचल का एक नगर और उसके आस-पास का प्रदेश।

त्रिपुरारि—पु० [त्रिपुर-अरि, ष० त०] महादेव। शकर।

त्रिपुरासुर—पु० [त्रिपुर-असुर, कर्म० स०] =त्रिपुर।

त्रि-पुरुष—पु० [स० द्विगु स०] १ पिता, पितामह और प्रपितामह ये तीनो पुरखे। २ सम्पत्ति का ऐसा भोग जो लगातार तीन पीढियो तक चला हो।

त्रिपुष—पु० [स० त्रि√पुष् (पुष्टि करना)+क] १ ककडी। २. खीरा। ३ गेहूँ।

त्रिपुषा—स्त्री० [स० त्रिपुष+टाप्] काली निसोथ।

त्रि-पुष्कर—पु० [स० द्विगु स०] फलित ज्योतिष मे, एक योग जो पुनर्वसु-उत्तराषाढा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी पूर्वभाद्रपद और विशाखा नक्षत्रो रवि, मगल और शनि वारो तथा द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियो मे से किसी एक नक्षत्र, वार या तिथि के एक साथ पडने से होता है। बालक के जन्म के लिए ये यह योग जारज योग समझा जाता है।

त्रि-पृष्ठ—पु० [स० ब० स०?] जैनमत के अनुसार प्रथम वासुदेव।

त्रिपौरुष—पु० [स० त्रिपुरुष+अण्, उत्तरपदवृद्धि] =त्रिपुरुष।

त्रिपौलिया—पु० =तिरपौलिया।

त्रि-प्रश्न—पु० [स० ष० त०] दिशा, देश और काल सबधी प्रश्न। (फलित ज्योतिष)

त्रि-प्रस्नुत—पु० [स० स० त०] वह हाथी जिसके मस्तक, कपोल और नेत्र इन तीनो स्थानो से मद निकलता हो।

त्रि-प्लक्ष—पु० [स० ब० स०] वैदिक ग्रथो मे उल्लिखित एक देश।

त्रि-फला—स्त्री० [स० द्विगु स०, टाप्] आँवले, हड और बहेडे के फल अथवा इन तीनो फलो का मिश्रण जो अनेक प्रकार के रोगो का नाशक माना गया है।

त्रि-बलि—स्त्री० = त्रिबली।

त्रि-बली—स्त्री० [स० मध्य० स०] व्यक्ति विशेषत स्त्री के पेट पर नाभि से कुछ ऊपर पडने या बननेवाली तीन रेखाएँ। (सौंदर्य सूचक)

त्रि-बलीक—पु० [स० ब० स०, कप्] १ वायु। २ गुदा। ३ मलद्वार।

त्रि-बाहु—पु० [स० ब० स०] १ रुद्र का एक अनुचर। २ तलवार चलाने का एक ढग या हाथ।

वि० जिसकी तीन बाँहे हो।

त्रिबेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

त्रि-भग—वि० [स० ब० स०] जिसमे तीन बल पडे हुए हो।

पु० खडे होने की मुद्रा जिसमे टाँग, कमर और गरदन मे कुछ टेढापन रहता है। यह मुद्रा बाँकपन, सुकुमारता और सौन्दर्य की सूचक मानी गई है।

त्रिभगी (गिन्)—वि० [स० त्रि-भग, द्विगु स०,+इनि] १ जिसमे तीन बल पडे हुए हो। २ त्रिभगवाली मुद्रा से जो खडा हुआ हो।

पु० [स० त्रिभग+डीष्] १ ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक जिसमे एक गुरु, एक लघु और एक प्लुत मात्रा होती है। २ शुद्ध राग का एक भेद। ३ ३२ मात्राओ का एक तरह का छद जिसमे १०, ८, ८, और ६ मात्राओ पर विश्राम होता है। ४ दण्डक का भेद। ५ दे० 'त्रिभग'।

त्रिभडी—स्त्री० [स० त्रि√भड् (परिहास)+अण्—डीन्] निसोथ।

त्रिभ—वि० [स० ब० स०] तीन नक्षत्रोवाला।

पु० [स०] चन्द्रमा के हिसाब से रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र युक्त आश्विन मास, शतभिषा पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद नक्षत्रयुक्त भाद्रमास और पूर्वफाल्गुणी उत्तर फाल्गुणी और हस्त नक्षत्र युक्त फाल्गुन मास।

त्रिभ-जीवा—स्त्री० [स० ष० त०] त्रिज्या। व्यासार्द्ध।

त्रि-भज्या—स्त्री० [स० ष० त०] =त्रिज्या। व्यासार्द्ध।

त्रि-भद्र—पु० [स० ब० स०] स्त्री-प्रसग। सभोग।

त्रि-भुक्ति—पु० [स० ब० स०] तिरहुत या मिथिला देश।

त्रि-भुज—पु० [स० ब० स०] ज्यामिति, मे वह आकृति या क्षेत्र जिसकी तीन भुजाएँ हो।

त्रि-भुवन—पु० [स० द्विगु० स०] स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल ये तीनो लोक।

त्रिभुवन-नाथ—पु० [स० ष० त०] ईश्वर। परमेश्वर।

त्रिभुवन-सुन्दरी—स्त्री० [स० स० त०] १ दुर्गा। २ पार्वती।

त्रिभूम—पु० [स० त्रि-भूमि, ब० स०,+अच्] वह भवन जिसमे तीन खड हो।

त्रिभोलग्न—पु० [स०] क्षितिज वृत्त पर पडनेवाले क्रातिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रि-मडला—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] मकडियो की एक जाति।

त्रि-मद—स्त्री० [स० द्विगु स०] १ मोथा, चीता और बायविडग ये तीनो पदार्थ अथवा इनका मिश्रण। २ [मध्य० स०] परिवार, विद्या और धन तीनो के कारण होनेवाला अभिमान या मद।

त्रि-मधु—पु० [स० ब० स०] १ ऋग्वेद का एक अश। २ वह जो विधि-

पूर्वक उक्त अश पढता हो। ३ ऋग्वेद का एक यज्ञ। ४ [द्विगु स०] घी, चीनी और शहद का समूह।

त्रि-मधुर—पु० [स० द्विगु स०] घी, मधु और चीनी ये तीनो पदार्थ।

त्रिमात—वि०=त्रिमात्रिक।

त्रि-मात्र—वि० [स० ब० स०] (स्वर) जिसमे तीन मात्राएँ हो। प्लुत।

त्रिमात्रिक—वि० [स० त्रिमात्र+ठन्—इक] (स्वर) जिसमे तीन मात्राएँ हो। प्लुत।

त्रि-मार्ग-गामिनी—स्त्री० [स० त्रिमार्ग, द्विगु स०, त्रिमार्ग√गम् (जाना)+णिनि—ङीप्] गगा।

त्रि-मार्गा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ गगा। २ तिर-मुहानी।

त्रिमास—पु० [स० द्विगु स०] [वि० त्रैमासिक] १ तीन महीनो का समय। २ वर्ष के तीन महीनो के चार विभागो मे कोई एक। (क्वार्टर) जैसे—यह चदा इस वर्ष के तीसरे त्रिमास का है।

त्रि-मुड—वि० [स० ब० स०] जिसके तीन मुड या सिर हो।
पु० १ त्रिशिर राक्षस का दूसरा नाम। २ ज्वर। बुखार।

त्रि-मुकुट—वि० [स० ब० स०] तीन मुकुटोवाला।
पु० त्रिकूट।

त्रि-मुख—वि० [स० ब० स०] जिसके तीन मुख हो। तीन मुँहोवाला।
पु० १ गायत्री जपने की चौबीस मुद्राओ मे से एक मुद्रा की सज्ञा। २ शाक्य मुनि।

त्रिमुखा—स्त्री० = त्रिमुखी।

त्रिमुखी—स्त्री० [स० त्रिमुख+ङीष्] बुद्ध की माता। माया देवी।
वि० [स० त्रिमुखिन्] तीन मुखो या मुँहोवाला।

त्रि-मुनि—पु० [स० द्विगु स०] पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि ये तीनो मुनि।

त्रिमुहानी—स्त्री० = तिरमुहानी।

त्रि-मूर्ति—पु० [स० ब० स०] १ ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनो देवता। २ सूर्य।
स्त्री० १ ब्रह्मा की एक शक्ति। २ बौद्धो की एक देवी।

त्रिमृत—पु० [स०?] निसोथ।

त्रिमृता—स्त्री० = त्रिमृत।

त्रिय*—स्त्री० = त्रिया।
वि० = त्रय (तीन)।

त्रियना*—अ० = तरना।

त्रि-यव—पु० [स० ब० स०] तीन जौ का एक तौल।

त्रि-यष्टि—पु० [स० ष० त०] पितपापडा। शाहतरा।

त्रिया*—स्त्री० [स० स्त्री] औरत। स्त्री।

त्रि-यान—पु० [सं० द्विगु स०] महायन, हीनयान और मध्यम यान, बौद्धो के ये तीन सम्प्रदाय।

त्रियामक—पु० [स० त्रि√यम् (नियन्त्रण करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] पाप।

त्रि-यामा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ रात्रि। २ यमुना देवी। ३ हलदी। ४ नील का पेड। ५ काला निसोथ।

त्रि-युग—पु० [स० द्विगु स०] १ सतयुग, द्वापर और त्रेता ये तीनो युग। २ [ब० स०] वसत, पावस और शरद ये तीनो ऋतुएँ। ३ विष्णु।

त्रियूह—पु० [स०] सफेद रग का घोडा।

त्रि-रत्न—पु० [स० द्विगु स०] बौद्ध धर्म मे बुद्ध, धर्म और सघ इन तीनो का वर्ग या समूह।

त्रिरश्मि—स्त्री० =त्रिकोण।

त्रि-रसक—पु० [स० ब० स०, कप्] वह मदिरा, जिसमे तीन प्रकार के रस या स्वाद हो।

त्रि-रात्रि—पु० [स० द्विगु स०] १ तीन रात्रियो (और दिनो) का समय। २ उक्त समय तक चलनेवाला उपवास या व्रत। ३ एक प्रकार का यज्ञ।

त्रि-रूप—पु० [स० ब० स०] अश्वमेध यज्ञ के लिए उपयुक्त माना जानेवाला एक प्रकार का घोडा।

त्रि-रेख—वि० [स० ब० स०] जिसमे तीन रेखाएँ हो।
पु० शख।

त्रिल—पु० [स० ब० स०] नगण, जिसमे तीनो लघु वर्ण होते है।

त्रि-लघु—पु० [स० ब० स०] १ नगण, जिसमे तीनो वर्ण लघु होते है। २ ऐसा व्यक्ति जिसकी गरदन, जाँघ और मूत्रेंद्रिय तीनो छोटी हो। (शुभ)

त्रि-लवण—पु० [स० द्विगु स०] सेधा, साँभर और सोचर (काला) ये तीनो प्रकार के नमक।

त्रि-लिग—पु० [स० द्विगु स०] १ पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नपुसक तीनो लिग। २ तैलग शब्द का वह रूप जो उसे सस्कृत व्याकरण के अनुसार मिला है।

त्रिलोक—पु० [स० द्विगु स०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनो लोक।

त्रिलोक-नाथ—पु० [म० ष० त०] १ तीनो लोको का मालिक ईश्वर। २ राम। ३ कृष्ण। ४ विष्णु का कोई अवतार। ५ सूर्य।

त्रिलोक-पति—पु० [स० ष० त०] = त्रिलोकनाथ।

त्रिलोकी—स्त्री० [स० त्रिलोक+ङीप्] =त्रिलोक।

त्रिलोकी-नाथ—पु० = त्रिलोकनाथ।

त्रिलोकेश—पु० [स० त्रिलोक-ईश, ष० त०] १ ईश्वर। २ सूर्य।

त्रिलोचन—पु० [स० ब० स०] महादेव। शिव।

त्रि-लोचना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] = त्रिलोचनी।

त्रि-लोचनी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] दुर्गा।

त्रिलौह—पु० [स० द्विगु स०] सोना, चाँदी और ताँबा ये तीनो धातुएँ।

त्रि-लौही—स्त्री० [स० त्रिलौह, ब० स०, +ङीष्] प्राचीन काल की वह मुद्रा या सिक्का जो सोने, चाँदी और ताँबे को मिलाकर बनाया जाता था।

त्रिवट—पु०=त्रिवण।

त्रि-वण—पु० [स०] सपूर्ण जाति का एक राग। यह दोपहर के समय गाया जाता है। इसे हिडोल राग का पुत्र कुछ लोग मानते है।

त्रिवणी—स्त्री० [स० त्रिवण से] शकराभरण, जयश्री और नरनारायण के मेल से बननेवाली एक सकर रागिनी।

त्रि-वर्ग—पु [स० द्विगु स०] १ तीन चीजो का वर्ग या समूह। २ धर्म, अर्थ और काम जो सासारिक जीवन के तीन मुख्य उद्देश्य हैं। ३ सत्व,

रज और तम इन तीनो गुणो का समूह। ४ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनो वर्ण। ५ त्रिफला। ६ त्रिकुटा।

त्रि-वर्ण—पु [स० द्विगु स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनो वर्ण।

त्रिवर्णक—पु [स० त्रिवर्ण+कन्] १ गोखरू। २ त्रिफला। ३ त्रिकुटा ४ लाल, काला, और पीला रग। ५ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीनों जातियाँ।

त्रि-वर्णा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] वन कपास।

त्रिवर्त्त—पु [स० त्रि√वृत् (रहना)+अण्] एक तरह का मोती, जिसे अपने पास रखने से आदमी दरिद्र हो जाता है।

त्रिवलि—स्त्री०=त्रिबली।

त्रिवलिका—स्त्री०=त्रिबली।

त्रिवली—स्त्री०=त्रिबली।

त्रिवल्य—पु [स० त्रिवलि+यत्] पुराने जमाने का एक बाजा, जिसपर चमडा मढा होता था। पुरानी चाल का एक तरह का ढोल।

त्रि-वाचा—स्त्री० [स० मध्य०स०] कोई बात जोर देने के लिए तीन बार कहने की क्रिया। उदा०—कहहिं प्रतीति प्रीति नीतिहूँ त्रिवाचा बाँधि ऊधौ साँच मनको हिये की अरु जी के हौ।—रत्ना०।

क्रि० प्र०—देना। —बाँधना।

त्रिवार—पु० [स०] गरुड के एक पुत्र का नाम।

त्रिवाहु—पु०=त्रिबाहु।

त्रि-विक्रम—पु [स० ब० स०] १ वामन अवतार। २ विष्णु।

त्रिविद्—पु० [स० त्रि√विद् (जानना)+क्विप्] वह जिसने तीन वेद पढे हो। तीन वेदो का ज्ञाता।

त्रि-विध—वि० [स० ब० स०] तीन तरह का। तीन रूपोवाला।

क्रि० वि० तीन प्रकार से।

त्रि-विनत—पु० [स० स० त०] देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखनेवाला व्यक्ति।

त्रि-विष्टप—पु० [स० कर्म० स०] १ स्वर्ग। २ तिब्बत।

त्रि-विस्तीर्ण—पु० [स० तृ० त०] एसा व्यक्ति जिसका ललाट, कमर और छाती विस्तीर्ण हो। (शुभ)

त्रि-वीज—पु० [स० ब० स०] साँवाँ।

त्रिवृत्—वि० [स० त्रि√वृ (वरण करना)+क्विप्] जिसके तीन भाग हो।

पु० १ एक यज्ञ। २ निसोथ।

त्रिवृता—वि०=त्रिवृत्त।

त्रिवृत्करण—पु० [स० त्रिवृत्-करण, ष० त०] अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीनो तत्वों मे से प्रत्येक मे शेष दोनो तत्वो का समावेश करके प्रत्येक को अलग-अलग तीन भागो मे विभक्त करने की क्रिया। (दर्शन शास्त्र)

त्रि-वृत्त—वि० [स० तृ० त०] तिगुना।

त्रिवृत्ता—स्त्री० [स० त्रिवृत्त+टाप्] =त्रिवृत्ति।

त्रिवृत्ति—स्त्री० [स० ब० स०] निसोथ।

त्रिवृत्पर्णी—स्त्री० [स० त्रिवृत्-पर्ण, ब० स०, ङीष्] हुरहुर। हिलमोचिका।

त्रिवृद्वेद—पु० [स० त्रिवृत्-वेद, कर्म० स०] १ ऋक्, यजु और साम तीनो वेद। २ प्रणव।

त्रि-वृष—पु० [स० ब० स०] ग्यारहवे द्वापर के व्यास का नाम। (पुराण)

त्रि-वेणी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] १ वह स्थान जहा तीन नदियाँ आकर मिलती हो। २ तीन नदियो की सयुक्त धारा। ३ गगा, यमुना और सरस्वती नदियो का सगम जो प्रयाग मे है। ४ हठयोग मे इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडियो का सगम स्थान, जो मस्तक मे दोनों भौहो के बीच माना जाता है। ५ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

त्रि-वेणु—पु० [स० ब० स०] रथ के अगले भाग का एक अग।

त्रि-वेद—पु० [स० द्विगु स०] १ ऋक्, यजु और साम ये तीनो वेद। २ [त्रि√विद् (जानना)+अण्] इन तीनो वेदो का ज्ञाता या पण्डित।

त्रिवेदी (दिन्)—पु० [स० त्रिवेद+इनि] १ ऋक्, यजु और साम इन तीनो वेदो का ज्ञाता। २ ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।

*स्त्री० [स० त्रिपदी] १ तिपाई। २ छोटी चौकी।

त्रिवेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

त्रि-वेला—स्त्री० [स० ब० स०] निसोथ।

त्रि-शकु—पु० [स० ब० स०] १ एक प्रसिद्ध सूर्यवशी राजा, जो यज्ञ करके स-शरीर स्वर्ग पहुँचना चाहते थे, परतु देवताओं के विरोध के कारण वहाँ नही पहुँच सके थे। पुराणो की कथा के अनुसार जब विश्वामित्र अपनी तपस्या के बल से इन्हे स्वर्ग भेजने लगे, तब इन्द्र ने इन्हे बीच मे ही रोककर लौटना चाहा, जब ये उलटे होकर गिरने लगे, तब विश्वामित्र ने इन्हे मध्यआकाश मे ही रोक दिया, जहाँ ये अब तक एक तारे के रूप मे स्थित है। २ एक प्राचीन पर्वत। ३ पपीहा। ४ बिल्ली। ५ जुगनूँ।

त्रिशकुज—पु० [स० त्रिशङ्कु√जन् (पैदा होना)+ड] त्रिशकु के पुत्र, राजा हरिश्चन्द्र।

त्रिशकुयाजी (जिन्)—पु० [स० त्रिशकु√यज् (यज्ञ करना)+णिच्+णिनि] त्रिशकु को यज्ञ करानेवाले, विश्वामित्र ऋषि।

त्रि-शक्ति—स्त्री० [स० द्विगु स०] १ इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीन ईश्वरीय शक्तियाँ। २ बुद्धितत्त्व या महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक है। ३ गायत्री। ४ तांत्रिको की काली, तारा और त्रिपुरा नाम की तीना देवियाँ।

त्रिशक्तिधृत्—पु० [स० त्रिशक्ति√धृ (धारण करना)+क्विप्] १ परमेश्वर। २ राजा विजिगीषु का दूसरा नाम।

त्रि-शरण—पु० [स० ब० स०] १ महात्मा गौतम बुद्ध। २ एक जैन आचार्य।

त्रि-शर्करा—स्त्री० [स० द्विगु स०] गुड, शक्कर और मिश्री तीनो का समूह।

त्रि-शला—स्त्री० [स० त्रि-शाला, ब० स०, पृषो० सिद्धि] वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीसवे तीर्थंकर महावीर की माता का नाम।

त्रि-शाख—वि० [स० ब० स०] तीन शाखाओवाला।

त्रिशाख-पत्र—पु० [स० ब० स०] वेल का पेड।

त्रि-शाल—पु० [स० ब० स०] वह घर जिसमे तीन बडे-बडे कमरे हो।

त्रि-शालक—पु० [स० ब० स०, कप्] वह मकान, जिसकी उत्तर दिशा मे कोई और मकान बना हुआ न हो।

त्रि-शिख—वि० [स० ब० स०] तीन शिखाओ या चोटियोंवाला।

पु० १ त्रिशूल। २ किरीट। ३ रावण का एक पुत्र। बेल का वृक्ष। ४ तामस मन्वन्तर के इन्द्र।

त्रि-शिखर—पु० [स० ब० स०] १ तीन चोटियोवाला पहाड। २ त्रिकूट।

त्रिशिखि-दला—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] मालाकद लता और उसका कद।

त्रिशिखी (खिन्)—वि०, पु० [स० त्रिशिखा+इनि]=त्रिशिख।

त्रि-शिर (स्)—वि० [स० ब० स०] तीन सिरोवाला।

पु० १ खर-दूषण की सेना का एक राक्षस जिसका वध राम ने दडक-वन मे किया था। २ कुबेर। ३ त्वष्टा प्रजापति का एक पुत्र।

त्रिशिरा—स्त्री० = त्रिजटा।

पु०=त्रिशिर।

त्रिशिरारि—पु० [स० त्रिशिर-अरि, ष० त०] त्रिशिर को मारनेवाले रामचन्द्र।

त्रि-शीर्ष—वि० [स० ब० स०] तीन चोटियोवाला।

पु० १ त्रिकूट नामक पर्वत। २ त्वष्टा प्रजापति का एक पुत्र।

त्रि-शीर्षक—पु० [स० ब० स०,+कप्] त्रिशूल।

त्रिशुच्—पु० [स० ब० स०] १ धर्म, जिसका प्रकाश स्वर्ग, अतरिक्ष और पृथ्वी तीनो स्थानो मे है। २ वह जिसे दैहिक, दैविक और भौतिक तीनो प्रकार के कष्ट या दुख हो।

त्रि-शूल—पु० [स० ब० स०] १ लोहे का एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन नुकीले फल होते है और शिव जी का अस्त्र माना जाता है। २ दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनो ताप या दुख। त्रिताप। ३ एक मुद्रा, जिसमे अँगूठे को कनिष्ठा उँगली के साथ मिलाकर बाकी तीनो उँगलियो को फैला देते है। (तत्र) ४ हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी जो २३४०४ फुट ऊँची है।

त्रिशूल-घात—पु० [स० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ जहाँ स्नान और तर्पण करने से गाणपत्य देह प्राप्त होती है।

त्रिशूलधारी (रिन्)—पु० [स० त्रिशूल√धृ (धारण करना)+णिनि] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव।

त्रिशूल-मुद्रा—स्त्री० [स० मध्य० स०] तत्र मे हाथ की एक मुद्रा।

त्रिशूली (लिन्)—पु० [स० त्रिशूल+इनि] त्रिशूल धारण करने-वाले शिव।

स्त्री० [त्रिशूल+अच्—डीष्] दुर्गा।

त्रि-शोक—पु० [स० ब० स०] १ जीव, जिसे आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये तीन प्रकार के शोक (दुख) सताते हो। २ कण्व ऋषि के एक पुत्र का नाम।

त्रिशृग—पु० [स० ब० स०] १ त्रिकूट पर्वत जिस पर लका बसी थी। २ त्रिकोण।

त्रिशृगी—स्त्री० [स० त्रिशृग+डीष्] एक तरह की मछली जिसके सिर पर तीन काँटे होते है। टेंगर।

त्रिश्रुतिमध्यम—पु० [स०] एक प्रकार का विकृत स्वर, जो सदीपनी नाम की श्रुति से आरभ होता है। (सगीत)

त्रि-षवण—पु० [स० द्विगु स०] प्रात, मध्याह्न और साय ये तीनो काल। त्रिकाल।

त्रिषष्ट—वि० [स० त्रिषष्टि+ड] तिरसठवाँ।

त्रि-षष्टि—स्त्री० [स० मध्य० स०] तिरसठ की सख्या।

त्रिषा—स्त्री० = तृषा।

त्रिषित—वि० = तृषित।

त्रिषुपर्ण—पु० = त्रिसुपर्ण।

त्रिष्टक—पु० = त्रीष्टक।

त्रिष्टुप्†—पु० = त्रिष्टुभ्।

त्रिष्टुभ्—पु० [स० त्रि√स्तुभ् (रोकना)+क्विप्, षत्व] एक वैदिक छद, जिसके चरणो मे ग्यारह-ग्यारह अक्षर होते है।

त्रि-ष्टोम—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ, जो क्षत्रधृति यज्ञ करने से पहले या बाद मे किया जाता था।

त्रिष्ठ—पु० [स० त्रि√स्था (स्थित होना) +क, षत्व] ऐसी गाडी या रथ जिसके तीन पहिये हो।

त्रि-सगम—पु० [स० ष० त०] १ तीन नदियो के मिलने का स्थान। त्रिवेणी। २ तीन प्रकार की चीजो का मिश्रण या मेल।

त्रि-सधि—स्त्री० [स० ब० स०] १ एक वृक्ष, जिसका फूल लाल, सफेद और काले तीन रगोवाला होता है। २ उक्त वृक्ष का फूल।

त्रिसध्य—पु० [स० द्विगु स०] दिन के तीन भाग प्रात, मध्याह्न और साय। (ये तीनो सधि-काल है।)

त्रिसध्यव्यापिनी—वि० [स० त्रिसन्ध्य – वि√आप् (व्यप्ति)+णिनि – डीप्] तिथि, जिसका भोगकाल सूर्योदय के पहले से सूर्यास्त के बाद तक रहे।

त्रि-सध्या—स्त्री० [स० द्विगु स०] प्रात, मध्याह्न और साय ये तीनो सध्याएँ, या सधि-काल।

त्रिस*—स्त्री० [स० तृषा] प्यास। उदा०—त्रिगुण परसतै षुधा त्रिस।—प्रिथीराज।

त्रि-सप्तति—स्त्री० [स० मध्य० स०] तिहत्तर की सख्या।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७३।

त्रिसप्तति-तम—वि० [स० त्रिसप्तति+तमप्] तिहत्तरवाँ।

त्रि-सम—वि० [स० ब० स०] (क्षेत्र) जिसकी तीनो भुजाएँ बराबर हो।

पु० [द्विगु स०] सोठ, गुड और हर्रे इन तीनो का समूह।

त्रि-सर—पु० [स० त्रि√सृ (गति)+अप्] खेसारी।

त्रि-सर्ग—पु० [स० ष० त०] सत्व, रज और तम, इन तीनो गुणो का सर्ग या सृष्टि।

त्रि-सामा (मन्)—पु० [स० ब० स०] परमेश्वर।

स्त्री० पुराणनुसार एक नदी, जो महेन्द्र पर्वत से निकली है।

त्रि-सिता—स्त्री० = त्रि-शर्करा।

त्रि-सुगधि—स्त्री० [स० द्विगु स०] दालचीनी, इलायची और तेजपात इन तीनो सुगधित मसालो का समूह।

त्रि-सुपर्ण—पु० [स० ब० स०] १ ऋग्वेद के तीन विशिष्ट मत्रो की सज्ञा। २ यजुर्वेद के तीन विशिष्ट मत्रो की सज्ञा।

त्रिसुपर्णिक—पु० [स० त्रिसुपर्ण+ठक्—इक] त्रिसुपर्ण का ज्ञाता।

त्रिसौपर्ण—पु० [स० त्रिसुपर्ण+अण्] १ त्रिसुपर्णिक। २ पर-मेश्वर।

त्रि-स्कंध—पु० [स० ब० स०] ज्योतिषशास्त्र, जिसके संहिता, तंत्र और होरा ये तीन स्कंध या विभाग है।

त्रि-स्तनी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] १ गायत्री। २ महाभारत के अनुसार तीन स्तनोवाली एक राक्षसी।

त्रि-स्तवन—पु० [स० मध्य० स०] तीन दिनो तक बराबर चलनेवाला एक तरह का यज्ञ।

त्रि-स्तावा—स्त्री० [स० मध्य० स०, अच्—टाप्, टिलोप नि०] अश्वमेध यज्ञ की वेदी (जो साधारण वेदी से तिगुनी बडी होती थी)।

त्रि-स्थली—स्त्री० [स० द्विगु स०, ङीप्] ये तीन पवित्र नगरियाँ—काशी, प्रयाग और गया।

त्रि-स्थान—पु० [स० द्विगु स०] १ सिर, ग्रीवा और वक्ष इन तीनो का समूह। २ [ब० स०] तीन स्थानो या तीनो लोको मे रहनेवाला व्यक्ति या ईश्वर।

त्रि-स्नान—पु० [स० ष० त०] सवेरे, दोपहर और सध्या इन तीन समयो मे किये जानेवाले स्नान।

त्रिस्पृशा—स्त्री० [स० त्रि√स्पृश् (छूना) +क—टाप्] वह एकादशी, जिससे एक ही सायन दिन मे उदयकाल के समय थोडी-सी एकादशी और रात के अत मे त्रयोदशी होती है।

त्रिस्रोता(तस्)—स्त्री० [स० ब० स०] १ गगा। २ उत्तरी बगाल की एक नदी।

त्रि-हायण—वि० [स० ब० स०, णत्व] जिसकी अवस्था तीन वर्ष की हो चुकी हो।

त्रि-हायणी—स्त्री० [स० ब० स०], ङीप् णत्व] द्रौपदी।

त्रिहुँ*—वि० १ = तीन। २ = तीनो।

त्रिहुत†—पु० = तिरहुत।

त्री*—स्त्री० = स्त्री।

त्रीकम—पु० [स० त्रिविक्रम] भगवान् का वामन अवतार। (तीन कदम चलने के कारण उनका यह नाम पडा है) उदा०—तिणि ही पार न पायौ त्रीकम।—प्रिथीराज।

त्रीषु—पु० [स० त्रि-इषु, ब० स०, +कन् (लुक्)] तीन बाणो की दूरी का स्थान।

त्रीषुक—पु० [स० त्रि-इषु, ब० स०,+कप्] वह धनुष जिससे एक साथ तीन बाण छोडे जा सके।

त्रीष्टक—पु० [स० त्रि-इष्टका, ब० स०] एक प्रकार की अग्नि।

त्रुटि—स्त्री० [स० √त्रुट् (टूटना)+इन्] १ तोडने-फोडने आदि की क्रिया या भाव। २ ऐसा अभाव जिसके फलस्वरूप कोई कार्य, बात या वस्तु ठीक, पूर्ण या शुद्ध न मानी जा सकती हो। कमी। (डिफेक्ट) ३ भूल। ४ प्रतिज्ञा या वचन का भग। ५ सदेह। सशय। ६ कार्तिकेय की एक मातृका। ७ छोटी इलायची। ८ समय का एक मान जो आधे लव के बराबर माना गया है।

त्रुटित—वि० [स० √त्रुट्+क्त] १ जिसमे कोई त्रुटि (अभाव या कमी) हो। २ त्रुटि-पूर्ण। ३ चोट खाया हुआ। ४. आहत।

त्रुटि-बीज—पु० [स० ब० स०] अरवी। घुइयाँ।

त्रुटी—स्त्री० [स० त्रुटि+ङीष्] =त्रुटि।

त्रूटना—अ० [स० त्रुट्] टूटना। उदा०—त्रूटै कथ मूल जड त्रूटे।—प्रिथीराज।

त्रेता—पु० [स० त्रि—इता, पृषो० सिद्धि] १ तीन चीजो का समूह। २ गार्हपत्य, दक्षिण और आहवनीय ये तीन अग्नियाँ। ३ हिंदुओ के अनुसार चार युगो मे से दूसरा युग, जिसका भोगकाल १२९६००० वर्षो का था तथा जिसमे भगवान् राम का अवतार हुआ था। ४ जूए मे तीन कौडियो का अथवा पासे के उस भाग का चित पडना, जिसपर तीन बिंदियाँ हो। तीया।

त्रेताग्नि—स्त्री० [स० त्रेता-अग्नि, कर्म० स०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय—ये तीन अग्नियाँ।

त्रेतिनी—स्त्री० [स० त्रेता+इनि—ङीप्] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय तीनो प्रकार की अग्नियो से होनेवाली क्रिया।

त्रेधा—अव्य० [स० त्रि+एधाच्] तीन प्रकारो या रूपो मे।

त्रै—वि० [स० त्रय] तीन।

त्रैकंटक—वि० [स० त्रिकटक+अण्] जिसमे तीन काँटे हो।
पु० = त्रिकटक।

त्रैककुद्—पु० [स० त्रिककुद्+अण्] १ त्रिकूट पर्वत। २ विष्णु।

त्रैककुभ—पु० [स० त्रिककुभ्+अण्] = त्रिककुभ।

त्रैकालज्ञ—पु० [स० त्रिकालज्ञ+अण्] = त्रिकालज्ञ।

त्रैकालिक—वि० [स० त्रिकाल+ठञ्—इक] १ भूत, भविष्य और वर्तमान तीनो कालो मे अर्थात् सदा होनेवाला। २ प्रात, मध्याह्न और सध्या तीनो कालो मे होनेवाला।

त्रैकाल्य—पु० [स० त्रिकाल+ष्यञ्] १ भूत, वर्तमान और भविष्यत् ये तीनो काल। २ प्रात काल, मध्याह्न और सायकाल। ३. जीवन की आरभिक, मध्यम और और अतिम ये तीनो स्थितिया। बचपन, जवानी और बुढापा।

त्रैकूटक—पु० [स० त्रिकूटक (त्रिकूट+कन्)+अण्] एक प्राचीन राजवश।

त्रैकोणिक—वि० [स० त्रिकोण+ठञ्—इक] १ जिसमे तीन कोण हो। २ जिसके तीन पार्श्व हो। तिपहला।

त्रैगर्त—पु० [स० त्रिगर्त+अण्] १ त्रिगर्त्त देश का राजा। २ त्रिगर्त्त देश का निवासी।

त्रैगुणिक—भू० कृ० [स० त्रिगुण+ठक्—इक] १ तिगुना किया हुआ। २ तीन बार किया हुआ।

त्रैगुण्य—पु० [स० त्रिगुण+ष्यञ्] सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणो का भाव या समूह।

त्रैदशिक—पु० [स० त्रिदशा+ठञ्—इक] उँगली का अगला भाग जो तीर्थ कहलाता है।

त्रैध—वि० [स० त्रि+धमुञ्] १ तिगुना। २ तेहरा।
अव्य० तीन प्रकार से।

त्रैधातवी—स्त्री० [स० त्रिधातु+अण्—ङीप्] एक प्रकार का यज्ञ।

त्रैपिष्टप—वि० पु० [स० त्रिपिष्टप+अण्] दे० 'त्रैविष्टप'।

त्रैपुर—पु० [स० त्रिपुर+अण्] = त्रिपुर।

त्रैफल—पु० [स० त्रिफला+अण्] वैद्यक मे त्रिफला के योग से तैयार किया हुआ घी।

त्रैवलि—पु० [स०] महाभारत के समय के एक ऋषि।
त्रैमातुर—पु० [स० त्रिमातृ+अण्, उत्व] लक्ष्मण।
त्रैमासिक—वि० [स० त्रिमास+ठञ्-इक] हर तीसरे महीने होनेवाला। जैसे—त्रैमासिक पत्रिका।
त्रैमास्य—पु० [स० त्रिमास+ष्यञ्] तीन महीनो का समय।
त्रैयबक—वि० [स० त्र्यम्बक+अण्] त्र्यबक-सबधी। त्र्यबक का। पु० एक प्रकार का होम।
त्रैयबिका—स्त्री० [स० त्रैयम्बक+टाप्, इत्व] गायत्री।
त्रैराशिक—पु० [स० त्रिराशि+ठञ्-इक] गणित की एक क्रिया, जिसमे तीन ज्ञात राशियो की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का मान निकाला जाता है। (रूल ऑफ थ्री)
त्रैरूप्य—पु० [स० त्रिरूप+ष्यञ्] तीन रूपो का भाव।
त्रैलोक—पु० [स० त्रिलोक+अण्] = त्रैलोक्य।
त्रैलोक्य—पु० [स० त्रिलोकी+ष्यञ्] १ स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनो लोक। २ इक्कीस मात्राओ के छदो की सज्ञा।
त्रैलोक्य-चितामणि—पु० [स० स० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस, जो (क) सोने, चाँदी और अभ्रक के योग से अथवा (ख) मोती, सोने ओर हीरे के योग से बनता है।
त्रैलोक्य-विजया—स्त्री० [स० ब० स०] भाँग।
त्रैलोक्य-सुदर—पु० [स० स० त०] पारे, अभ्रक, लोहे, त्रिफला आदि के योग से बननेवाला एक तरह का रस। (वैद्यक)
त्रैलोक्य-सुदरी—स्त्री० [स० स० त०] दुर्गा या देवी का एक रूप।
त्रैवर्गिक—पु० [स० त्रिवर्ग+ठञ्-इक] वह कर्म, जिससे धर्म, अर्थ और काम इन तीनो की साधना हो।
वि० १ त्रिवर्ग-सबधी। तीन वर्गों का। २ तीन वर्गो मे होने-वाला।
त्रैवर्ग्य—पु० [स० त्रिवर्ग+ष्यञ्] धर्म, अर्थ, काम ये तीनो वर्ग या जीवन के उद्देश्य अथवा साधन।
त्रैवर्णिक—वि० [त्रिवर्ण+ठञ्-इक] जिसका सबध तीन वर्णो से हो। तीन वर्णोवाला।
पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनो जातियो का धर्म।
त्रैवार्षिक—वि० [स० त्रिवर्ष+ठञ्-इक] हर तीसरे वर्ष होनेवाला। (ट्रीनियल)
त्रैविक्रम—पु० [स० त्रिविक्रम+अण्] विष्णु।
त्रैविद्य—वि० [स० त्रिविद्या+अण्] तीन वेदो का ज्ञाता। २ बहुत बडा चालाक। चलता-पुरजा। (व्यग्य)
त्रैविष्टप—पु० [स० त्रिविष्टप+अण्] स्वर्ग मे रहनेवाले अर्थात् देवता।
त्रैशकव—पु० [स० त्रिशकु+अण्] त्रिशङ्कु के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र।
त्रैस्वर्य—पु० [स० त्रिस्वर+ष्यञ्] उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीनो प्रकार के स्वर।
त्रैहायण—वि० [स० त्रिहायण+अण्] = त्रैवार्षिक।
त्रोटक—पु० [स०√त्रुट् (टूटना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ नाटक का एक भेद, जिसका नायक कोई दिव्य पुरुष होता है तथा जिसमे ५, ७, ८ या ९ अक होते हे और प्रत्येक अक मे विदूषक रहता है। २ सगीत मे एक प्रकार का राग।
त्रोटकी—स्त्री० [स० त्रोटक+ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (सगीत)
त्रोटि—स्त्री० [स०√त्रुट् (छेदन)+णिच्+इ] १ कायफल। २ चोच।
पु० एक पक्षी।
त्रोण—पु० [स०] तरकश।
त्रोतल—वि० [स०] तोतला।
त्रोत्र—पु० [स०√त्रै (रक्षा करना)+उत्र] १ अस्त्र। २ चाबुक। ३ एक रोग।
त्रोन*—पु० = त्रोण।
त्र्यगर—पु० [स०] १ ईश्वर। २ चद्रमा। ३ छीका। सिकहर।
त्र्यंगुल—वि० [स० त्रि-अगुलि, तद्धितार्थ द्विगु स०, +द्वयसच् (लुक्) +अच्] जो नाप मे तीन उँगलियो की चौडाई के बाराबर हो।
त्र्यंजन—पु० [स० त्रि-अजन, द्विगु स०] कालाजन, रसाजन और पुष्पाजन ये तीनो अजन। काला सुरमा, रसौत और वे फूल जो अजनो मे मिलाये जाते है। जैसे—चमेली, तिल, नीम, लौग, अगस्त्य इत्यादि।
त्र्यबक—पु० [स० त्रि-अम्बक, ब० स०] १ महादेव। शिव। २ ग्यारह रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम। ३ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
वि० तीन आँखो या नेत्रोवाला।
त्र्यबक-सख—पु० [स० प० त०, टच् समा०] कुबेर।
त्र्यबका—स्त्री० [स० त्र्यम्बक+टाप्] दुर्गा, जिसके सोम, सूर्य और अनल ये तीनो नेत्र माने जाते है।
त्र्यबुक—पु० [स०] एक तरह की मक्खी।
त्र्यक्ष—वि० [स० त्रि-अक्षि, ब० स०, षच् समा०] तीन आँखोवाला। जिसके तीन नेत्र हो।
पु० १ महादेव। शिव। २ पुराणानुसार एक दैत्य जिसकी तीन आँखे थी।
त्र्यक्षक—पु० [स० त्र्यक्ष+क (स्वार्थे)] शिव।
त्र्यक्षर—वि० [स० त्रि-अक्षर, ब० स०] त्र्यक्षरक। (दे०)
त्र्यक्षरक—वि० [स० त्र्यक्षर+कन्] जो तीन अक्षरो से मिलकर बना हो।
पु० १ ओकार या प्रणव। २ एक प्रकार का वैदिक छद। ३ तत्र मे तीन अक्षरोवाला मत्र।
त्र्यक्षी—स्त्री० [स० त्र्यक्ष+ङीष्] एक राक्षसी का नाम।
त्र्यधिपति—पु० [स० त्रि-अधिपति, ष० त०] तीनो लोको के स्वामी, विष्णु।
त्र्यध्वगा—स्त्री० [स० त्रि-अध्वन्, द्विगु स०, त्र्यध्व√गम् (जाना)+ड—टाप्] = त्रिपथगा (गगा)।
त्र्यमृतयोग—पु० [स० अमृत-योग, उपमि० स०, त्रि-अमृतयोग, ष० त०] एक योग, जो कुछ विशिष्ट वारो, तिथियो और नक्षत्रो के योग्य से होता है। (ज्योतिष)
त्र्यवरा—स्त्री० [स० त्रि-अवर, ब० स०, टाप्] तीन सदस्योवाली परिषद्।
त्र्यशीति—स्त्री० [स० त्रि-अशीति, मध्य० स०] अस्सी और तीन की सख्या, तिरासी।

त्र्यस्त—पु० [स० त्रि-अस्त, स० त०] त्रिकोण।

त्र्यहस्पर्श—पु० [स० त्रि-अहन्, द्विगु स०, त्र्यह√स्पृश् (छूना)+अण्] वह सावन दिन, जो तीन तिथियां स्पर्श करता हो।

स्त्री० [स० त्र्यह√स्पृश्+क्विन्] वह तिथि, जो तीन सावन दिनो को स्पर्श करती हो। ऐसी तिथि विवाह, यात्रा आदि के लिए निषिद्ध मानी जाती है।

त्र्यहिकारि रस—पु० [स०] पारा, गधक, तूतिया और शख आदि के योग से बनाया जानेवाला रस। (वैद्यक)

त्र्यहीन—पु० [स० त्र्यह+ख—ईन] तीन दिनो मे होनेवाला एक यज्ञ।

त्र्यहैहिक—वि० [स० त्र्यह-ऐहिक, ब० स०] जिसके पास तीन दिन तक के निर्वाह के लिए यथेष्ट सामग्री हो।

त्र्यार्षेय—पु० [स० त्रि-आर्षेय, ब० स०] १ वह गोत्र जिसके तीन प्रवर हो। त्रिप्रवर गोत्र। २ अधे, गूगे और बहरे लोग, जिन्हे यज्ञो मे नही जाने दिया जाता था।

त्र्याहण—पु० [स० त्रि-आ√हन् (मारना)+अच्] १ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

त्र्याहिक—वि० [स० त्र्यह+ठञ्—इक] तीन दिनो मे होनेवाला।

पु० हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। तिजारी।

त्र्यूषण—पु० [स० त्रि-उषण, द्विगु स०, पृषो० दीर्घ] १ सोठ, पीपल और मिर्च इन तीनो का समूह या मिश्रण। २ वैद्यक मे उक्त तीनो चीजो के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का घृत।

त्वक्(च्)—पु० [स०√त्वच् (ढकना)+क्विप्] १ वृक्ष की छाल। २ फलो आदि का छिलका। ३ शरीर पर की खाल। चमडा। त्वचा। ४ पाँच ज्ञानेद्रियो मे से एक जो सारे शरीर के ऊपरी भाग मे व्याप्त है। इसके द्वारा स्पर्श होता है। ५ दारचीनी।

त्वक्-क्षीरा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] = त्वक्क्षीरी।

त्वक्-क्षीरी—स्त्री० [ब० स०, डीष्] बसलोचन।

त्वक्-छद—पु० [ब० स०] क्षीरीश का वृक्ष। क्षीरकचुकी।

त्वक्-पचक—पु० [ष० त०] वट, गूलर, अश्वत्थ, सिरिस और पाकर ये पाँचो वृक्ष।

त्वक्-पत्र—पु० [ब० स०] १ तेजपत्ता। तेजपात। २ दारचीनी।

त्वक्पत्री—स्त्री० [स० त्वक्पत्र+डीष्] १ हिगुपत्री। २ केले का पेड।

त्वक्-पाक—पु० [ब० स०] एक रोग, जिसमे पित्त और रक्त के कुपित होने से शरीर मे फुसियाँ निकल आती है। (सुश्रुत)

त्वक्-पुष्प—पु० [ष० त०] एक रोग जिसमे त्वचा पर सफेद रग की चित्तियाँ निकलने या पडने लगती है। सेहुआँ रोग। २ शरीर के रोएँ खडे होने की अवस्था। रोमाच।

त्वक्पुष्पिका—स्त्री० [स० त्वक्पुष्पी+क (स्वार्थे)—टाप्, ह्रस्व] = त्वक्पुष्प।

त्वक्-पुष्पी—स्त्री० [स० त्वक्पुष्प+डीष्] = त्वक्पुष्प।

त्वक्-सार—पु० [ब० स०] १ बाँस। २ दारचीनी। ३ सन का पेड़।

त्वक्-सारा—स्त्री० [स० त्वक्सार+अच्-टाप्] बसलोचन।

त्वक्-सुगधा—पु० [ब० स०, टाप्] १ एलुआ। २ छोटी इलायची।

त्वगकुर—पु० [स० त्वच्-अकुर, ष० त०] रोमाच।

त्वगाक्षीरी—स्त्री० [स० त्वक्क्षीरी, पृषो० सिद्धि] बसलोचन।

त्वगिद्रिय—स्त्री० [स० त्वच्-इद्रिय, कर्म० स०] स्पर्शेद्रिय।

त्वगध—पु० [स० त्वच्-गध, ब० स०] नारगी का पेड।

त्वाज—पु० [स० त्वच्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ रोआँ। रोम। २ रक्त। खून।

त्वग्जल—पु० [स० त्वच्-जल, ष० त०] पसीना।

त्वग्दोष—पु० [स० त्वच्-दोष, ब० स०] कुष्ट। कोढ।

त्वग्दोषापहा—स्त्री० [स० त्वग्दोष-अप√हन् (नष्ट करना)+ड—टाप्] बकुची। बाबची।

त्वग्दोषारि—पु० [स० त्वग्दोष-अरि, ष० त०] हस्तिकद।

त्वग्दोषी (षिन्)—पु० [स० त्वग्दोष+इनि] कोढी।

वि० जिसे कुष्ट या कोढ नामक रोग हो।

त्वच—पु० [स० त्वच्+अच्] १ दारचीनी। २ तेजपात। ३ त्वचा। चमडा।

त्वचकना—अ० [स० त्वचा] १ वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमडा झूलना। २ भीतर की ओर धँसना। ३ पुराना पडना।

त्वचा—स्त्री० [स० त्वच्+टाप्] १ जीव की काया का ऊपरी और प्राय रोओ से युक्त कोमल आवरण। चमडा। २ छाल।

त्वचा-ज्ञान—पु० [ष० त०] किसी विषय की केवल ऊपरी या बाहरी बातो का स्थूल ज्ञान।

त्वचा-पत्र—पु० [ब० स०] १ तेजपत्ता। २ दारचीनी।

त्वचि-सार—पु० [स० ब० स०, अलुक् समा०] बाँस।

त्वचि-सुगधा—स्त्री० [स० ब० स०, अलुक् समा०] छोटी इलायची।

त्वदीय—सर्व० [स० युष्मद्+छ—ईय, त्वद् आदेश)] तुम्हारा।

त्वन्मय—वि० [स० त्वच्+मयट्] त्वचा से युक्त।

त्वम्—सर्व० [स०] तुम।

पु० जीव।

त्वरण—पु० [स० √ त्वर् (वेग)+ल्युट्—अन] [वि० त्वरणीय] १ शीघ्रतापूर्वक कोई काम होने की अवस्था, गुण या भाव। २ अधिक वेग से किसी यत्र के चलने का भाव। (एक्सलेरेशन)

त्वरा—स्त्री० [स०√त्वर्+अङ्—टाप्] १ शीघ्रता। जल्दी। २ वेग। तेजी।

त्वरारोह—पु० [स० त्वरा-आरोह, ब० स०] कबूतर।

त्वरावान्(वत)—वि० [स० त्वरा+मतुप्] १ शीघ्रता करनेवाला। २ वेगपूर्वक चलनेवाला। २ जल्दबाज।

त्वरि—स्त्री० [स०√त्वर् (शीघ्रता करना)+इ] =त्वरा।

त्वरित—वि० [स०√त्वर्+क्त] तेजी से या वेगपूर्वक चलता हुआ।

क्रि० वि० जल्दी या तेजी से।

त्वरितक—पु० [स० त्वरित√कै (प्रकाशित होना)+क] एक प्रकार का चावल। तूर्णक। (सुश्रुत)

त्वरित-गति—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, जगण, नगण और एक गुरु होता है। इसे अमृतगति भी कहते हैं।

त्वरिता—स्त्री० [स० त्वरित+टाप्] एक देवी, जिसकी पूजा युद्ध मे जल्दी विजय पाने के लिए की जाती है। (तत्र)

त्वलग—पु० [स० पृषो० सिद्धि] पानी मे रहनेवाला साँप। डेड्हा।

त्वष्टा (ष्टृ)—पु० [स० √त्वक्ष् (छीलना, पतला करना)+तृच्] १ बढई। विश्वकर्मा। ३ प्रजापति। ४ ग्यारहवे आदित्य, जो आँखो के अधिष्ठाता देव माने गये है। ५ वृत्रासुर के पिता का नाम। ६ शिव। ७ पशुओ और मनुष्यो के गर्भ मे वीर्य का विभाग करनेवाले एक वैदिक देवता। ८ सूत्रधार नामक प्राचीन जाति। ९ चित्रा नक्षत्र के अधिष्ठाता देवता।

त्वष्टि—पु० [स०√त्वक्ष्+क्तिन्] एक सकर जाति। (मनु)

त्वाच—वि० [स० त्वच्+अण्] त्वचा-सबधी। त्वचा का।

त्वाष्टी—स्त्री० [स० तुष्टि, नि० सिद्धि] दुर्गा।

त्वाष्ट्र—पु० [स० त्वष्टृ+अण्] १ वज्र नामक अस्त्र, जो विश्वकर्मा ने बनाया था। २ चित्रा नक्षत्र। ३ वृत्रासुर का एक नाम।

त्वाष्ट्री—स्त्री० [स० त्वाष्ट्र+ङीप्] १ विश्वकर्मा की पुत्री, जो सूर्य की पत्नी तथा अश्विनी कुमारो की माता थी। २ चित्रा नक्षत्र।

त्विषा—स्त्री० [स० त्विष्+टाप्] चमक। दीप्ति। प्रभा।

त्विषामीश—पु० [स० ष० त०, अलुक् समा०] १ सूर्य। २ आक का पेड।

त्विषि—स्त्री० [स०√त्विष् (दीप्ति)+इन्] किरण।

त्वेष—वि० [स०√त्विष्+अच्] १ दीप्त। २ प्रकाशित।

त्सरु—पु० [स०√त्सर् (टेढी चाल)+उन्] १ तलवार की मूठ। २ सर्प। साँप।

त्सारुक—पु० [स० त्सरु+कन्+अण् (स्वार्थे)] तलवार चलाने मे निपुण व्यक्ति।